सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशब्द भंडार

चौवीआं भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती–सम्मत	नाम	स्थान	पंना नं:
१ भादरों शहिनशाही सम्मत १०	हरि भगत दुवार रात नूं	जेठूवाल अमृतसर	०१
८ भादरों शहिनशाही सम्मत १०	लछमण सिँघ बलवंत सिँघ तलवंडी जल्हे खां जरनैल सिँघ शाहवाला नछत्तर सिँघ शाहवाला करतार कौर रटौल सुरजीत कौर मनावां मुखत्यार सिँघ कामल वाला	वाड़ा पहू विंड	११
६ भादरों शहिनशाही सम्मत १०	साधू सिँघ हरी सिँघ महिंदर सिँघ अरजन सिँघ बसती खलील तेज कौर वलूर	बसती तेगा सिँघ वाली फिरोज़पुर	१३
६ भादरों शहिनशाही सम्मत १०	हरबंस कौर दे अंतम ससकार समें	मुगला रुकना फिरोज़पुर	१४
६ भादरों शहिनशाही सम्मत १०	राम सिँघ गुरचरन कौर शहर संपूरन सिँघ फिरोज़शाह सुलखण सिँघ मूंगला रुकना गुरदीप सिँघ तूत रमेश चंद फिरोज़पुर शहर जुगिंदर सिँघ बसती खलील सरदूल सिँघ बालस चंदर	फिरोज़पुर छाउणी	१६
१० भादरों शहिनशाही सम्मत १०	हरजिंदर कौर परसिंन कौर धर्मजीत कौर माया कौर,	शेख	१६
१० भादरों शहिनशाही सम्मत १०	हरचंद सिँघ तारा सिँघ धंन कौर चक फतिह सिँघ जगीर सिँघ बरे बख्तावर सिँघ खिआली वाला साधू सिँघ गामी वाला प्रीतम कौर रूप कौर ख्याली वाला सरदारा सिँघ छाज़ला मल सिँघ अकाल गढ़ करनैल सिँघ मलूका,	हरिराए पुर	२२

११ भादरों शहिनशाही सम्मत १० इकबाल सिँघ, राज सिँघ, कृपाल सिँघ, गुरदेव कौर,
जुगिंदर कौर गोलेवाल, अज़ैब सिँघ फरीदकोट फरीदकोट २४
११ भादरों शहिनशाही सम्मत १० खेम सिँघ, माधो सिँघ बठिंडा नछत्तर सिँघ
सुरजीत सिँघ इकबाल सिँघ बठिंडा कोटकपूरा २६
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत १० सुहावा सिँघ बिशन सिँघ जसवंत सिँघ राजेआणा
सुरजीत कौर चंनण कौर माड़ी मुसतफा गुरनाम सिँघ गालब रण सिँघ
बसंत कौर समालसर पंज गरांई २८
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत १० नाज़र सिँघ हरजीत कौर पूरन सिँघ सुदागर सिँघ
महिंदर सिँघ प्रीतम सिँघ मिस्त्री प्रीतम सिँघ इंदर सिँघ
नाथेवाल बंसत कौर पतोहीरा गुलज़ार सिँघ सरूप सिँघ ढुडी
मुकंद सिँघ मह्राज़ नाथेवाल ३०

2 2

२४ २४

१३ भादरों शहिनशाही सम्मत १० कपूर सिँघ हरदयाल कौर रतन चंद गुरदीप सिँघ मोगा
गुरतेज़ सिँघ घल कलां मल सिँघ रज़ीवाल केहर सिँघ, मोगे ३२
१३ भादरों शहिनशाही सम्मत १० गुरदयाल सिँघ रामूवाला, अवतार सिँघ रामूवाला,
तार सिँघ गाजीआणा, नरायण सिँघ, निहाल सिँघ वाला
करतार सिँघ चड़िक, महिंदर कौर चड़िक,
नराइण कौर दीदारे वाला, दलीप सिँघ बदनी,
बुगड़ सिँघ बरगाड़ी, करतार सिँघ रामूवाला ३५
१४ भादरों शहिनशाही सम्मत १० सीतल सिँघ मेला सिँघ धंना सिँघ डगरू हरबंस सिँघ
सुरजीत सिँघ निधां वाला गुरबचन सिँघ
गुरदयाल सिँघ सदा सिँघ वाला नंद सिँघ थमण वाला
गहिणा सिँघ कलाश डगरू ३६

१४ भादरों शहिनशाही सम्मत १० बगीचा सिँघ फतिह गड़ पंज तूर इंदर सिँघ कादर वाला
सोहण सिँघ चंद सिँघ शाह बुकर शाह बुकर ३७
२८ भादरों शहिनशाही सम्मत १० दरबार निवासी संगत नवित जेठूवाल अमृतसर ३६

पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर ४१

५ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० आत्मा सिँघ, फौजा सिँघ, दरबारा सिँघ, प्यारा सिँघ,
जीवण सिँघ, दर्शन सिँघ, किशन सिँघ मलूवाल,
गुरदयाल सिँघ मैणीआ, प्रीतम कौर, जगीर कौर मैणीआ,
गुलज़ार सिँघ रूपोवाल, मलूवाल अमृतसर ५५
६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० सुरजन सिँघ, महिंदर सिँघ, प्रीतम सिँघ, अजीत सिँघ,
बचन सिँघ, जसवंत सिँघ करतार, चरन सिँघ,
चंनण सिँघ मांगा सराए, केसर सिँघ मैसम पूरा,
जगीर सिँघ मैणीआ मांगा सराए अमृतसर ५७
६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० बख्शीश सिँघ, करनैल सिँघ, सवरन सिँघ, अजीत सिँघ,
संपूरन कौर, करम सिँघ, महिंदर सिँघ कादराबाद, गुरबचन सिँघ,
अजीत कौर बाबोवाल, मस्सा सिँघ बल, अमराओ सिँघ बल,
जुगिंदर कौर मलूवाल कादराबाद गुरदासपुर ५६
७ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० जसवंत सिँघ, प्रीतम सिँघ धंनतो, बलवंत सिँघ,
ठाकर सिँघ, गुरदित सिँघ निज़ामपुर, बचन कौर मलकपुर, इंदर कौर,
सरमुख सिँघ तरनतारन, चरनजीत कौर दीवाना ज़िला हिसार
निज़ामपुर अमृतसर ६०

3 २४

०७ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० हरजीत सिँघ, गुरनाम सिँघ, पिशौरा सिँघ,
हरनाम कौर, जुगिंदर कौर, नरायण सिँघ वेरका, रतन कौर,
गुरदयाल सिँघ, हरबंस कौर मूधल, कुंदन सिँघ पंडोरी,
हज़ारा सिँघ जेठू नंगल, आशा चंद कांगड़ा,
जगदीश कौर अमृतसर, सूरत सिँघ गिलवाली, वेरका ६३

१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० सुरैण सिँघ, तेजा सिँघ, दलीप सिँघ, संतोख सिँघ,
गुलज़ार सिँघ, जरनैल सिँघ, सवरन सिँघ, सुरैण सिँघ, तॅलोक सिँघ
जंडिआला गुरू, शिंगारा सिँघ पखो के, दलीप सिँघ टांगरा
बंती धारड़, जुगिंदर कौर धारड़, हरबंस कौर ठठीआं,
अमर कौर बंडाला, जुगिंदर कौर धंनतो बंडाला जंडिआला गुर ६७

१३ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० उतम सिँघ चंनण सिँघ वैरोवाल सोहण सिँघ रामपुर
जरनैल सिँघ सरलीखुरद अवतार सिँघ अैकल गडा
उजागर सिँघ खडूर साहिब वैरोवाल अमृतसर ६६

१३ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० ऊधम सिँघ, गुलज़ार सिँघ, बलवंत सिँघ, मुखत्यार सिँघ,
धरमबीर जलालाबाद, फौजा सिँघ, भजन सिँघ, महिंदर सिँघ,
शिंगारा सिँघ, सुचा सिँघ, तरसीम सिँघ भलाईपुर,
महिंदर सिंघ लाट, तेजा सिँघ, रछपाल सिँघ सठिआला,
गुरचरन सिँघ, दरबारा सिँघ फेरूमान रात नूं जलालबाद ७२

१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० सुखदेव राज प्रीतम सिँघ जगीर कौर करम सिँघ
प्यार कौर गुरबचन सिँघ सरदारा सिँघ गुरमुख सिँघ पूरन सिँघ
नाज़र सिँघ तारा सिँघ सवरन सिँघ प्रीतम सिँघ दर्शन सिँघ

4 २४

साधू सिँघ करनैल सिँघ बीर कौर गेज़ा सिँघ मंगल सिँघ
जिंदर सिँघ प्रीतम सिँघ हरी सिँघ हरदीप सिँघ दयाल सिँघ
कुंदन सिँघ ईशर कौर कल्ला, कशमीर कौर तखत चक
तसवीर कौर सरजा करम सिँघ भलाई पुर
सवरन सिँघ फतिहबाद कल्ला अमृतसर ७४

१४ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० नरैण सिँघ गुरनाम सिँघ कंग कुंदन सिँघ माल चक
सोहण सिँघ माल चक महिंदर सिँघ सवरन सिँघ बाठ कंग ७६
१५ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० मस्सा सिँघ दारा सिँघ करनैल सिँघ
मक्खण सिँघ नोरंगाबाद करनैल कौर शफीपुर अजैब कौर बाठ
आतमा सिँघ पटी हरबंस कौर बाठ नौरंगाबाद अमृतसर ७६
१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० तृपत सिँघ, सोहण सिँघ, संता सिँघ, सवरन सिँघ,
करतार कौर तरनतारन, दलीप सिँघ, दयाल सिँघ, संत कौर तरनतारन,
संता सिँघ, सरमुख सिँघ बुघे पंडोरी गोला ८१
१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० दीदार सिँघ भगवंत सिँघ जुगिंदर सिँघ जट्टा तेजा सिँघ
पूरन सिँघ चंनण सिँघ निरंजण सिँघ अनोख सिँघ मोहन सिँघ
हीरा नंद दलीप सिँघ सजण सिँघ रतन सिँघ
करतार सिँघ चंबल जट्टा अमृतसर ८३
१७ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० दरबारा सिँघ वरयां गुरबचन सिँघ अरजन सिँघ
पूरन सिँघ उसमा फौजा सिँघ सरहाली अजीत सिँघ चोहला साहिब
गुपाल सिँघ मुंडा पिंड दर्शन सिँघ दरगाहपुर गुरनाम कौर
छोटा चोहला खुरद रूड़ सिँघ धुंन वरयां ८५

5 २४

१७ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० मक्खण सिँघ जौड़ा बली सिँघ कैरो दलीप सिँघ
सुरजन सिँघ नूरपुर केशो राम सरहाली करमी बरनाला जौड़ा अमृतसर ८७

१८ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० मनी राम सिधव, मिलखा सिँघ, समुंद सिँघ माड़ी मेघा,
हरबंस कौर नारला, दर्शन सिँघ लाखणा, काबल सिँघ,
जीतो बासरके, गुपाल सिँघ, लछमण सिँघ भूरे,
वीरो माड़ी कंबोके सिधवां अमृतसर ६०

१८ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० मौता सिँघ, दलीप सिँघ, परताप सिँघ, फुम्मण सिँघ,
सुरजीत कौर, सेवा सिँघ, बीरो, शाम सिँघ, सज्जण सिँघ कलसी,
गुलाब कौर डल, गंडा सिँघ दराज़के, अमरीक कौर डलीरी,
गुरमुख सिँघ डलीरी कलसी अमृतसर ६२

१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० दलीप सिँघ, मुखत्यार सिँघ, गुरबख्श सिँघ,
करम सिँघ, जगीर सिँघ, चंनण सिँघ, भजन कौर गग्गोबूआ,
करतार सिँघ, प्रताप कौर भोजीआं, सेवी ठठा, वीरो बघिआड़ी,
जगीर सिँघ सबरा, गगोबूआ अमृतसर ६४

१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० पूरन सिँघ, हरी सिँघ, महिंदर सिँघ, बचन सिँघ,
गुरदीप कौर सोहल, सुरजीत कौर, गुरदीप सिँघ भरोभाल,
चरन कौर भुसे, वरयाम सिँघ मलीआं, वीरो माड़ी कंबोकी,
राज कौर खर सोहल अमृतसर ६७

२० अस्सू शहिनशाही सम्मत १० नरायण सिँघ, अजीत सिँघ, सवरन सिँघ,
हरनाम सिँघ गुमानपुर भाग सिँघ माहल, करम सिँघ, गुरमेज कौर मीआपुर,
गुरमेज़ कौर मीआपुर, जगमोहण सिँघ, आस कौर बोपाराए,
अवतार सिँघ काउँके, महिंदर सिँघ बोपाराए, भाग सिँघ महावा,

6
२४

समा सिँघ मोदे छिंदो गुरबचन कौर धनोए, गुमानपुरा ६७

२० अस्सू शहिनशाही सम्मत १० चरन सिँघ, गुरदित सिँघ, दलीप सिँघ,
तारा सिँघ मानावाला, सुरिंदर सिँघ भुलर, हज़ारा सिँघ छीने जसतरआल,
मंगल सिँघ, तारू सिँघ सांरगड़ा, संता सिँघ जगीर कौर,
दर्शन कौर लेलीआं मानावाला अमृतसर ६८

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० मिहर सिँघ भानश किदार नाथ दे नवित चंडीगड़ १००

२८ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० भगत सिँघ, जुगिंदर सिँघ, हरदित सिँघ, सुरिंदर सिँघ,
चमन लाल इटारसी, मंगल सिँघ भूपाल, इटारसी मध प्रदेश १०१

२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत १० जसवंत सिँघ टोपन राम पारूमल, वधीआ मल,
पूरन मल कौड़ा मल सदन मल इटारसी, मांह सिँघ जबल पुर,
अरजन सिँघ दुरग, गुरमुख सिँघ भलई इटारसी मध प्रदेश १०५

पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं विहार होया
जेठूवाल अमृतसर १०८

३ कत्तक शहिनशाही सम्मत १० रणजीत कौर, अमरजीत सिँघ, जगीर कौर, सुरजीत सिँघ,
हरभजन सिँघ, प्रीतम सिँघ, गुरमीत सिँघ, जगजीत सिँघ,
वरयाम सिँघ, सतबीर सिँघ, जगमेल सिँघ, अमर सिँघ,
मिलखा सिँघ, दलीप सिँघ, संतोख सिँघ, ठाकर सिँघ,
करतार सिँघ, सरूप सिँघ, चंनण सिँघ, भगवंती, नंती,
हरजीत सिँघ, पाल सिँघ, सवरन कौर, तृपत कौर,
जुगिंदर कौर गिरधारा सिँघ, प्रेम सिँघ, कशमीर सिँघ,
जगीर सिँघ, प्यारा सिँघ, रतन सिँघ, दलीप सिँघ,
प्रीतम सिँघ, प्रीतम सिँघ, सुलक्खण सिँघ, भान सिँघ,

7
२४

ईशर सिँघ, जरनैल सिँघ, हरबंस सिँघ, जोगा सिँघ,
वरयाम कौर, कशमीर सिँघ, आसा सिँघ, प्रीतो,
बंती जेठूवाल, परमजीत कौर रणजीत बाग गुरदासपुर
हरभजन सिँघ दरबार दा जेठूवाल अमृतसर ११६
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत १० हरजीत सिँघ दे सरीर छुट्टण नवित बालेचक १२५
१२ कत्तक शहिनशाही सम्मत १० बराज़ील तों आए फारनरां दी बेनंती ते जेठूवाल १२६
२७ कत्तक शहिनशाही सम्मत १० दलीप सिँघ, प्रीतम सिँघ, रतन सिँघ, जरनैल सिँघ,
कशमीर सिँघ, प्रीतम सिँघ, सुलक्खण सिँघ, जगीर सिँघ,
आसा सिँघ, जोगा सिँघ, दरबार निवासी सेवादारां नवित
जेठूवाल अमृतसर १३१
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १३३
७ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० पंजवें विशव धर्म समेलन समें
राम लीला गराउँड दिल्ली १४५
८ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० पंजवें विशव धरम समेलन समें सटेज ते
रामलीला गराउँड दिल्ली १४५
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर १४७
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० जुगिंदर सिँघ दे गृह, जगीर सिँघ सोहल, परसिंन कौर
फतिह नंगल, दर्शन सिँघ नयाशाला, करम सिँघ नयाशाला
डडवां गुरदासपुर १४६
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० शोहण गुरदासपुर १५१

२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १५३

२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० मुणशा सिँघ मेला सिँघ हज़ारा सिँघ दलीप सिँघ प्यारी
दलीप सिँघ दीदार सिँघ संता सिँघ हज़ारा सिँघ मुणशा सिँघ
आसा सिँघ बलाका सिँघ प्यारा सिँघ रवेल कौर करतार कौर
मक्खण सिँघ भाग सिँघ दर्शन कौर विरसा सिँघ महिंदर कौर
हरनाम कौर बाबूपुर गुरदासपुर १५६

२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० करम सिँघ महिंगा सिँघ जरनैल सिँघ बीबी देवां
बीबी गुरोराम कौर चतुर कौर गुरमेज सिँघ सदा चरन सिँघ
दर्शन सिँघ अजीत सिँघ राज सिँघ हमराजपुर छिंदो मदेपुर
दीपो उचा पिंड गुरमेज़ कौर कठिआली सदा गुरदासपुर १५८

२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० ज्ञान सिँघ चतुर सिँघ अतर सिँघ लक्खा सिँघ हरदीप सिँघ
9 त्रलोक सिँघ बिशन सिँघ ओगरा चरन सिँघ अंतोर संसार सिँघ 9
२४ हमराजपुर चरन सिँघ संतोख सिँघ सोहण सिँघ ज्ञानो २४
अवतार सिँघ सकोल प्रीतो अंतोर ओगरा गुरदासपुर १६०

२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० मुखत्यार सिँघ ममीआ जसवंत सिँघ चेबे बूड़ सिँघ
महिंदर कौर वज़ीरपुर गुरबखश सिँघ रतन कौर नुशहरा
ममीआ गुरदासपुर १६२

२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० लाल सिँघ शांती देवी भीमपुर प्रकाश कौर पुनी सालोवाल
बचन सिँघ भाड़े चक कुशलया देवी देव राज भीमपुर
भीमपुर गुरदासपुर १६३

२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० अजीत सिँघ, गुरचरन सिँघ कतोवाल, चरन सिँघ,
जवंद सिँघ दुरगी, ज्ञान देई नवां पिंड कतोवाल गुरदासपुर १६५

२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० लाल सिँघ, महिंदर सिँघ, भजन सिँघ, सवरन सिँघ,
बलकार सिँघ, सरूप सिँघ, बावा सिँघ हरीजन कलोनी दीनानगर १६६
२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० मंगल सिँघ, गुलज़ार सिँघ, समा सिँघ फतूपुर, जुगिंदर सिँघ,
दयाल सिँघ, सुरिंदर सिँघ डेढ गुवाड़, गुरमीत कौर रसूलपुर,
जसबीर सिँघ, सोहण सिँघ भोले के, तरलोक सिँघ अठवाल
फतूपुर गुरदासपुर १६८
२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० सुरजीत सिँघ, दलीप सिँघ, हुकम सिँघ, अजीत सिँघ,
जसवंत सिँघ फैज़पुर, चरन सिँघ सनेईआ,
कांशी राम सनेईआ, सुरजीत कौर शिकार माछीआ
पिंड फैज़पुर गुरदासपुर १६६

10
२४

२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० अजीत सिँघ, सीतल सिँघ हरदो झंडे, हरबंस सिँघ तारा गड़्,
नवां पिंड करतार कौर पंज गरांईआ, धंन कौर, तेज कौर
खहिरै, बीबी दीपो कोटली, भान सिँघ बटाला शहर विखे १७२
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत १० विरसा सिँघ, अवतार सिँघ माड़ी पनूआ, मोहण सिँघ कादीआं,
चंदन सिँघ ठीकरी वाला, राम लुभाया श्री हरि गोबिंद पुरा
श्री हरि गोबिंद पुर शहर गुरदासपुर १७४
पहली पोह शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर १७६
७ पोह शहिनशाही सम्मत १० इंदर सिँघ दे अंतम ससकार समें जेठूवाल अमृतसर १८२
७ पोह शहिनशाही सम्मत १० रणजीत सिँघ कलसीआं वाले दे नवित जेठूवाल १८५
२१ पोह शहिनशाही सम्मत १० २५ रतन सिँघ सुखनिंदर सिँघ २५ बी० बी०
जगीर सिँघ, अजमेर सिँघ सजावल पुर,
ठाकर सिँघ पदम पुर गंगा नगर १८७

२२ पोह शहिनशाही सम्मत १० २५ बी० बी० मांह सिँघ, तारा सिँघ, तरलोक सिँघ,
२५ बी० बी० गंगा नगर मलकीत सिँघ बनवाली प्रकाश सिँघ
२५ बी० बी० मंगता, २१ बी० बी० सुरजीत सिँघ बनवाली,
गुरदयाल सिँघ, प्रेमी कनेडा २५ बी बी १८६
२६ पोह शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार दुपहिर नूं छत्ती देगां चावलां दीआं
बणाउण समें जेठूवाल अमृतसर १६१
फिर सदी चौधवीं दा लिबास पा के दुबारा विहार होया १६३
२६ पोह शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर १६६
२७ पोह शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर २२६
२८ पोह शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार सवेरे शादीआं समें जेठूवाल अमृतसर २३६
३० पोह शहिनशाही सम्मत १० लोहड़ी वाली रात दे समें जेठूवाल अमृतसर २४२
11 पहली माघ शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर २४३ 11
२४ ६ माघ शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार दी नींह रक्खण समें २४
सवेरे साढे १० वजे धीरपुर दिली-६ २४६
६ माघ शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात दे समे धीरपुर दिली-६ २६४
१२ माघ शहिनशाही सम्मत १० बलविंदर सिँघ दर्शन सिँघ अवतार सिँघ रतन सिँघ
माया देवी सुरिंदर कौर दर्शन सिँघ हरभजन सिँघ
चंदा सिँघ पूरन सिँघ गुरचरन सिँघ भजन सिँघ गुरमेज़ सिँघ
सूरत सिँघ करतार सिँघ रुलदा सिँघ सवरन सिँघ
कलवाकड़ी गुवालीअर रतन सिँघवनूरपुर मोहण सिँघ दिल्ली
तरलोक सिँघ हरीपुर धीरपुर दिल्ली ६ २६७
१४ माघ शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार धीरपुर दिल्ली ६ २६८

१६ माघ शहिनशाही सम्मत १० सेवा सिँघ दविंदर सिँघ रजिंदर सिँघ हरबंस सिँघ गुड़गाओं
आसा सिँघ खांग गुड़गाउँ २७१
२० माघ शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार धीरपुर दिल्ली २७३
२१ माघ शहिनशाही सम्मत १० महिंदर सिँघ, गुरबचन सिँघ नयाशाला, विशवा मित्र
गुरदीप सिँघ प्रेमी देवी हंस राज मुलख राज मेरठ
मेरठ छाउणी २८२
२३ माघ शहिनशाही सम्मत १० इकबाल सिँघ, शकुंतला देवी, मंगला देवी
नज़ीबाबाद यू० पी० २८६
पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर २८६
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० करम सिँघ दे सरीर छड्डण नवित नयाशाला गुरदासपुर२६३
३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० सुलक्खणी नयाशाला गुरदासपुर ३००
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत १० अवतार सिँघ आहमपुर वाले दी शादी नवित
हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर ३०२
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत १० सेवा करन आई संगत नवित जेठूवाल अमृतसर ३०६
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० बलकार सिँघ ते बीबी बीरो दी शादी समें
हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर ३०८
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० अवतार सिँघ कृपा सिँघ सतवंत कौर गुरबचन सिँघ
महिल सिँघ गुरदित सिँघ अमृत कौर महू
शस्त्री नगर कानूपुर ३१२
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० करनैल सिँघ, जरनैल सिँघ, मलूक सिँघ पोखरपुर ३१५
२७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर ३१८
२८ फग्गण शहिनशाही सम्मत १० हरि संगत नवित रात समे धीरपुर दिली ६ ३२६

३० फग्गण शहिनशाही सम्मत १० शाम पंज वजे निऊयारक हवाई अड्डे ते अमरीका ३२८
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ११ रेशम सिँघ दे गृह हरि संगत नवित रात नूं
टरानटों आनटेईउ ३१ कैनथ अै वी ई कनेडा ३३७
३ चेत शहिनशाही सम्मत ११ कनेडा रजिंदर सिँघ रात नूं १४० उनटेवीउ हमिंलटन शहर ३४१
६ चेत शहिनशाही सम्मत ११ मुकंद सिँघ, जगजीत सिँघ, गुरदयाल सिँघ, लाल सिँघ
४६४ रीवरटोन एवेनीऊ अैलमवुड मैनीटोबा विनीपैग कनेडा ३४७
११ चेत शहिनशाही सम्मत ११ तरलोचन सिँघ दे गृह विनीपैग कनेडा ३५७
१३ चेत शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह ४१६ शेर बरुक सटरीट विनीपैग
मैनीटोबा कनेडा ३६२
१४ चेत शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ प्रेमी दे गृह १५-४० केट सटरीट विंनीपैग
मैनीटोबा कनेडा ३६६

13
२४
१५ चेत शहिनशाही सम्मत ११ मुकंद सिँघ, जगजीत सिँघ दे गृह ४६४ रीवरटन अैवेनीऊ
अैलमवुड मैनीटोबा विंनीपैग कनेडा ३७०
२१ चेत शहिनशाही सम्मत ११ सुखनिंदर सिँघ दे गृह १७२५ पैरल सटरीट विकटोरीआ
कनेडा ३७४
२१ चेत शहिनशाही सम्मत ११ हरभजन सिँघ दे गृह बी० सी० कनेडा ३७८
२१ चेत शहिनशाही सम्मत ११ दविंदर सिँघ चौहान दे गृह ४०६४ सीडर हिल करौस रोड
विकटोरीआ कनेडा ३८०
२३ चेत शहिनशाही सम्मत ११ बीबी अमर कौर दे गृह वैंनकूवर कनेडा ३८८
२४ चेत शहिनशाही सम्मत ११ रजिंदर सिँघ दे गृह विलीअम लेक लिसिंगटन सब
डवीज़न मकान नंबर २४२४ कनेडा ३९२
२५ चेत शहिनशाही सम्मत ११ सुरजीत सिँघ दे गृह रात नूं ४७१६ सटरोम टैरस कनेडा ४०२

२६ चेत शहिनशाही सम्मत ११ सुरजीत सिँघ दे गृह रात वेले
४७१६ सटरौम टैरस कनेडा ४०८

२७ चेत शहिनशाही सम्मत ११ गुरबचन सिँघ धामी दे गृह ४६१६ सटरौम टैरस कनेडा ४११

२८ चेत शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ तक्खर दे गृह २-५००८ पारक अैवेनिउ
टैरस कनेडा ४१७

पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ११ मुकंद सिँघ दे गृह विनीपैग कनेडा ४२३

६ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ अरजन सिँघ दे गृह डीटराइट २२१ फारचून
यू० अैस० ए० ४२७

८ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह ४० परीओरी ए० वी० ई० होरनसे
लंडन नं० ८ इंगलैंड ४३४

९ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ मलकीअत सिँघ दे गृह ३२ करानबोरन रोड
लंडन नं० १० मुसुरल हिल ४३७

14
२४

१० विसाख शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत सिँघ दे गृह ६ गुडविंन वेल रोड
मुसविल हिल नं० १० लंडन ४४१

११ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ निरभै सिँघ दे गृह ४१ वुड लैंड
गारडन नं १० लंडन ४४४

११ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ प्यारा सिँघ दे गृह ३० बलफोर रोड साउथ हाल
मिडलअैकस लंडन ४४७

१२ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह ८२ रनेलाघ रोड साऊथ हाल
मिडअैकस इंगलैंड ४४६

१३ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ ईशर कौर दे गृह २३ ए बेले वाक मोसेली
बिरमिनगोम १३ लंडन ४५२

१३ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह ६५ केरनस सटरीट
वालसाल सटाफ लंडन ४५७

१४ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश राम दे गृह १०३ रालघ सटरीट
वालसाल सटाफ लंडन ४६२

१४ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ केसर सिँघ दे गृह ६७ केरनज़ सटरीट
वालसाल सटाफ इंगलैंड ४६३

१४ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ तीरथ सिँघ दे गृह नं० १८ पूल रोड
टरैच टैलेफोरड शरुप शिर लंडन ४६६

१५ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ दर्शन सिँघ दे गृह २५ होली रोड थोरटन लोझ
हुडेरस फीलड लंडन ४७०

१६ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरभजन कौर दे गृहनं० २ बासिल सटरीट हुडरज
फीलड लंडन ४७३

१७ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह१११ सटरीट अवडरी ५ रोड
बारहिंग अैसअैकस लंडन ४७४

१६ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत सिँघ मनजीत कौर दे गृह
गुड वीनज वले नं० १० इंगलैंड ४७८

१६ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह ४० प्रीअरी इवेनिऊ हेरनसे
लंडन ८ ४७६

२० विसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरनेक सिँघ दे गृह ४८२

२० विसाख शहिनशाही सम्मत ११ मुखत्यार सिँघ दे गृह
७८ मुसविल हिल रोड लंडन नं० १८ ४८४

२० विसाख शहिनशाही सम्मत ११ निरभै सिँघ दे गृह ४१ वुड लैंड गारडन नं १० लंडन ४८६

२१ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरचंद सिँघ दे गृह ३६ टुडोर रोड साउथ हाल मिडअैकस लंडन ४८८

२१ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ प्यारा सिँघ दे गृह ३० बालफोर रोड साऊथ हाल लंडन ४६४

२२ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह ३८ रनले रोड साउथ हाल लंडन ४६८

२४ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दवार विदेश यात्रा तो वापस पुज्जण ते धीर पुर किंगज़वे कैंप दिल्ली ५०७

२५ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ फूला राणी दे गृह साईदा महल्ला गली नंबर ६ लुध्याणा ५१५

२६ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ रुड़का गुरमेज़ सिँघ दे गृह जलंधर दुआबा संगत नवित ५१६

२७ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार विदेश टूर तों वापस पुज्जण ते जेठूवाल ५२०

२८ विसाख शहिनशाही सम्मत ११ राम सिँघ दे गृह गवाल टोली फिरोज़पुर छाउणी ५२६

पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल अमृतसर ५२६

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार कल्ला हरि संगत दे सेवा करके जाण समें जेठूवाल अमृतसर ५३५

१८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरि संगत नवित जंडिआला गुरू अमृतसर ५३८

16
२४

१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	पाल सिँघ दे गृह रात नूं	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	५४०
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११		भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	५४५
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	लाट साहिब दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	५४९
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	तरसेम सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	५५२
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	फौजा सिँघ दे घर रात नूं खेतां विच			
					भलाईपुर डोगरा		अमृतसर	५५४
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	ऊधम सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	५५७
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	सुखदेव राम दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५५९
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५६०
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	हरदीप सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५६१
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	सरदार सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	५६२
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	५६३
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	दीदार सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	५६५
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	५६६
२४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	हीरे दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	५६७
२५	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	चेला सिँघ दे गृह	वज़ारत रोड	जम्मू	५६८
२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	संसार सिँघ दे गृह	नानक नगर	जम्मू	५७१
२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	अजीत सिँघ दे गृह	वज़ारत रोड	जम्मू	५७२
२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	फुमण सिँघ दे गृह	वज़ारत रोड	जम्मू	५७३
२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	बीबी राम कौर दे गृह	वज़ारत रोड	जम्मू	५७४
२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	बाज़ सिँघ दे गृह	शकती नगर	जम्मू	५७५
२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	सरदारा सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	५७७

17
२४

२६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	जुगिंदर सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	५७८
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	५८०
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	बीबी लछमी दे गृह	सीड़	जम्मू	५८१
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	हरबंस कौर दे गृह	सीड़	जम्मू	५८३
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	लछमी देवी दे गृह	सीड़	जम्मू	५८४
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	देवी सिँघ दे गृह	मघोवाली	जम्मू	५८४
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	भगत सिँघ दे गृह	कीर	जम्मू	५८५
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	प्रकाश चंद दे गृह	मघोवाली	जम्मू	५८६
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	माया देवी दे गृह	मघोवाली	जम्मू	५८७
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	दौलत राम दे गृह	कोटली	जम्मू	५८९
२७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	तेजभान दे गृह	सेई कला	जम्मू	५९०
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	शिव सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	५९३
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	गूहड़ा राम दे गृह	सेई कलां	जम्मू	५९८
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	फत्तु राम दे गृह	सेई कलां	जम्मू	५९९
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	चरन दास दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६००
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	ज्ञान चंद दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६०१
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	फकीर सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६०३
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	सरदारा सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६०४
२८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	मेवा राम दे गृह	गोकले चक्क	जम्मू	६०५
२९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	जसवंत कौर दे गृह	कोठे निहालपुर सिंबल	जम्मू	६०६
२९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	नानक चंद दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६०८
२९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	११	झंडू राम दे गृह	जिउड़ीआं	जम्मू	६०९

२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	गुरा राम दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६१०
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	चंद प्रकाश दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६११
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	बेलू राम दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६१२
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	शांती देवी दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६१३
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	प्रेम सिँघ दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६१४
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	हरी सिँघ दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६१५
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	राम चंद दे गृह	निकोवाल	जम्मू	६१६
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	केसरी देवी दे गृह	रानी बाग	जम्मू	६१८
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	सोभा सिँघ दे गृह	सेई कला	जम्मू	६१९
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	लछमण सिँघ दे गृह	सेई खुरद	जम्मू	६२१
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	लछमण सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६२२
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	करतार कौर दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६२३
२६	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	प्यारे लाल दे गृह	सेई कलां कलोए	जम्मू	६२४
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	कुलवंत सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६२६
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	प्रेमी देवी दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६२७
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	जलंधर सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६२८
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	पुनूं राम दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६२९
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	रोशन लाल दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३०
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	पूरन सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३१
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	भगवान सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३२
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	खेम कौर दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३२
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	राजा सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३३

३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	बेला सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३४
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	बंती देवी दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३५
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	सेवा सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३६
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	भाईआ देवी दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३७
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	देवा सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३८
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	अंग्रेज़ सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६३९
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	वकील सिँघ दे गृह	हंसा	जम्मू	६४१
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	वकील सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४२
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	रमेश सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४३
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	सवर्गवासी बाऊ राम दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४४
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	इंदर राम दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४५
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	बंसो देवी दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४६
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	संतोख सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४७
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	प्रकाश सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४८
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	गुरमुख सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६४९
३०	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	कृपाल सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५०
३१	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	कृपाल सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५३
३१	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	सवरनो देवी दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५४
३१	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	बचन सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५४
३१	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	देवा सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५५
३१	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	मान कौर दे गृह	सतवारी अशोक नगर	जम्मू	६५६
३१	जेठ	शहिनशाही सम्मत	११	बिशन सिँघ दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५७

20
२४

21 २४

३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ फरंगी राम दे गृह	त्रेवा	जम्मू	६५८
३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ राजो देवी दे गृह	सेई कलां	जम्मू	६५९
३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह	नांगा कैंप	जम्मू	६६०
३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पूरन चंद दे गृह	नांगा कैंप	जम्मू	६६१
३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भगवान चंद दे गृह	नांगा कैंप	जम्मू	६६२
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रसाल सिँघ दे गृह	घाहपोत कैंप	जम्मू	६६३
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ गुरदित सिँघ दे गृह	किशनपुर कैंप	जम्मू	६६४
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सरदार सिँघ दे गृह	किशनपुर कैंप	जम्मू	६६४
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ ईशर सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	६६५
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरबंस सिँघ दे नवित	दड़	जम्मू	६६६
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	६६७
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	६६७
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान चंद दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	६६९
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ खोजू राम दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	६७०
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रोलू राम दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	६७०
३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत सिँघ दे गृह	मूसेचक	जम्मू	६७१

पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	६७३
२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ सुरैण सिँघ, सवरन सिँघ, दलीप सिँघ, तेजा सिँघ, गुलज़ार सिँघ, संतोख सिँघ, जरनैल सिँघ, सुरैण सिँघ दे गृह	जडिआला गुरू	अमृतसर	६८०
१४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ दरबार निवासी संगत नवित	जेठूवाल	अमृतसर	६८४

21 २४

१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात वेले	जेठूवाल	अमृतसर	६८७
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ शादीआं दे समें सवेरे	जेठूवाल	अमृतसर	७१३
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात वेले	जेठूवाल	अमृतसर	७३१
३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ सुभाग वंती दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७३५
पहली सावण शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	७३६
७ सावण शहिनशाही सम्मत ११ हरजीत सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७४७
१२ सावण शहिनशाही सम्मत ११ सुरिंदर सिँघ करनाल वाले दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७४६
२४ सावण शहिनशाही सम्मत ११ अरजन सिँघ दे गृह	सलीम पुर	कपूरथला	७५२
२५ सावण शहिनशाही सम्मत ११			७५६
२५ सावण शहिनशाही सम्मत ११ पाल सिँघ दे गृह	दाऊदपुर	कपूरथला	७५८
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ चरन सिँघ दे गृह	ढिलवां	कपूरथला	७६०
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ चरन कौर दे गृह	ढिलवां	कपूरथला	७६३
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह	ढिलवां	कपूरथला	७६४
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ हज़ारा सिँघ दे गृह	ढिलवां	कपूरथला	७६६
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ हज़ारा सिँघ दे गृह	फत्तू चक्क	कपूरथला	७६७
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ दौलत सिँघ दे गृह	कपूरथला		७६८
पहली भादरों शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	७७२
०२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार हरि संगत नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७८७
०४ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ केहर सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	७८६
०७ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ	माहल	अमृतसर	७६०
०८ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ गुरदित सिँघ दे गृह	तले	अमृतसर	७६५

22
२४

०८ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ चरन सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	७६७
०८ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ दलीप सिँघ दे गृह	मानांवाला	अमृतसर	७६८
०८ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ मंगल सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	७६६
०६ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ कारज सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	८०१
०६ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ बीबी गुरबचन कौर, बीबी छिंदो दे गृह धनोए			८०२
०६ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ अवतार सिँघ दे गृह	काउँके	अमृतसर	८०४
१० भादरों शहिनशाही सम्मत ११ जगमोहण सिँघ दे गृह	बोपाराए	अमृतसर	८०६
१० भादरों शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह	बोपाराए	अमृतसर	८०८
१० भादरों शहिनशाही सम्मत ११ नरायण सिँघ दे गृह	गुमान पुर	अमृतसर	८१०
१० भादरों शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह	गुमान पुर	अमृतसर	८१२
११ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह	गुमान पुर	अमृतसर	८१४
११ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृह	भोजीआं	अमृतसर	८१६
११ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	८१८
११ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ वरयाम सिँघ दे गृह	मलीआं	अमृतसर	८२०
११ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ चंनण सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	८२१
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ गुरबख्श सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	८२२
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ करम सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	८२३
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ जगीर सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	८२५
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ दलीप सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	८२६
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ मुखत्यार सिँघ दे गृह	गगोबूआ	अमृतसर	८२७
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ साधू सिँघ दे गृह	झांमके	अमृतसर	८२६
१२ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ गंडा सिँघ दे गृह	दराजके	अमृतसर	८३१

23
२४

१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	मिलखा सिँघ समुंद सिँघ	माड़ी	अमृतसर	८३२
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	रघुबीर सिँघ दे गृह	डलीरी	अमृतसर	८३५
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	बीर सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	८३६
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	बेबे मनी दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	८३८
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	मोता सिँघ, दलीप सिँघ, रणजीत सिँघ, फुमण सिँघ, प्रताप सिँघ, गुलाब कौर डल	कल्सीआं	अमृतसर	८३६
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	सज्जण सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	८४१
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	मनी राम दे गृह	सिधम	अमृतसर	८४२
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	तेजा सिँघ दे गृह	बासरके	अमृतसर	८४४
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	जीतो दे गृह	बासरके	अमृतसर	८४५
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	मक्खण सिँघ दे गृह	सुगा	अमृतसर	८४६
१६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	केशो राम दे गृह	जंडो की सरहाली	अमृतसर	८४८
१६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	पूरन सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	८५०
१७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	मोहण सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	८५२
१७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	तेजा सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	८५४
१७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	निरंजण सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	८५५
१७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	अनोख सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	८५५
१७	भादरो	शहिनशाही	सम्मत ११	चरन सिँघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	८५६
१७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	दीदार सिँघ दे गृह रात नूं	जट्टा	अमृतसर	८५६
१७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	गुरबचन सिँघ दे गृह उसमा		अमृतसर	८५६
१८	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	दरबारा सिँघ दे गृह	वरयां	अमृतसर	८६१
१८	भादरों	शहिनशाही	सम्मत ११	सवरन सिँघ दे गृह	तरनतारन	अमृतसर	८६२

१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	तरिपत सिँघ दे गृह	पंडोरी	अमृतसर	८६३
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८६५
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	करनैल सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८६६
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८६७
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	दारा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८६८
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	अजैब कौर दे गृह	बाठ	अमृतसर	८६९
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	फिनो दे गृह	बाठ	अमृतसर	८७१
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	महिंदर सिँघ दे गृह	बाठ	अमृतसर	८७१
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	कुंदन सिँघ दे गृह	माल चक्क	अमृतसर	८७२
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरनाम सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	८७४
१९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	नरायण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	८७५
२०	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	सुखदेव सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	८७६
२०	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदयाल सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	८७७
२०	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	करम सिँघ, सवरन सिँघ	कल्ला	अमृतसर	८७८
२०	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	नाज़र सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	८७९
२०	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	सरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	८८१
२०	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदयाल सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	८८१
२१	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	उत्तम सिँघ दे गृह	वैरोवाल	अमृतसर	८८२
२१	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	सोहण सिँघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	८८४
२१	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	अवतार सिँघ दे गृह	अैकलगंडा	अमृतसर	८८५
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	बूटा सिँघ सवर्गवासी	अैंकलगंडा	अमृतसर	८८७
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	बलवंत कौर दे गृह	धारड़	अमृतसर	८८८

25
२४

२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११		शफी पुर	अमृतसर	८८९
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	करम सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	८९१
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	बुढा सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	८९२
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	किरपा सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	८९३
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	जसवंत सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	८९४
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	तरलोक सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	८९४
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	संतो दे गृह	बंडाला	अमृतसर	८९५
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	शंगारा सिँघ दे गृह	पक्खो के	अमृतसर	८९६
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	बंसो दे गृह	ठट्ठीआं	अमृतसर	८९८
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	सवरन सिँघ दे गृह	जंडीआला गुरू	अमृतसर	८९९
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	सुरैण सिँघ दे गृह	जंडीआला गुरू	अमृतसर	९०१
२२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	हरि संगत जंडिआला नवित	जंडिआला गुरू	अमृतसर	९०२
२३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	संतोख सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	९०४
२३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	दलीप सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	९०५
२३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	तेजा सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	९०६
२४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदयाल सिँघ दे गृह	मूधल	अमृतसर	९०७
२४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	अजीत सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	९०९
२४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	हरनाम कौर दे गृह	वेरका	अमृतसर	९११
२४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	करतार सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	९१२
२४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरनाम सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	९१४
२८	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	११	गुलज़ार सिँघ दे गृह	रूपोवाली	अमृतसर	९१५

26
२४

२८ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ सुरजन सिँघ, महिंदर सिँघ,
बचन सिँघ दे गृह मांगा सराए अमृतसर ६१८

२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ चरन सिँघ दे गृह मांगा सराए अमृतसर ६२१

२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह मांगा सराए अमृतसर ६२२

२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ जगीर सिँघ दे गृह मैणीआं कहारां अमृतसर ६२३

२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ गुरा सिँघ, सरमुख सिँघ निज़ामपुर अमृतसर ६२४

२९ भादरों शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह, ठाकर सिँघ, करतार सिँघ,
जसवंत सिँघ, बलवंत सिँघ, इंदर कौर बोहड़ निज़ामपुर अमृतसर ६२५

३० भादरों शहिनशाही सम्मत ११ दरबार निवासी दलीप सिँघ, रतन सिँघ, कशमीर सिँघ,
सुलक्खण सिँघ, प्रीतम सिँघ, भजन सिँघ, ईशर सिँघ,
जोगा सिँघ, भान सिँघ जेठूवाल अमृतसर ६२७

पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात जेठूवाल अमृतसर ६२९

२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ कुलवंत सिँघ दे गृह हेरां अमृतसर ६३४

३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरि संगत नवित जेठूवाल अमृतसर ६४०

५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ धुस्सी ते शाम नूं आदी गुरदासपुर ६४१

५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरि संगत नवित बाबूपुर गुरदासपुर ६४३

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हज़ारा सिँघ दे गृह बाबूपुर गुरदासपुर ६४६

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ किशन सिँघ दे गृह अलड़ पिंडी गुरदासपुर ६४७

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सुलक्खणी, वीरो दे गृह अलड़ पिंडी गुरदासपुर ६४८

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ ओगरा हरि संगत नवित ओगरा गुरदासपुर ६४९

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सवर्गवासी करम सिँघ दे नवित नयाशाला गुरदासपुर ६५१

७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृह भूमली गुरदासपुर ६५२

27
२४

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गैहणा सिँघ जेठूवाल अमृतसर ६५३
१६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सवर्ग वासी गुरबचन कौर कल्ला नवित जेठूवाल ६५४
२२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ नाज़र सिँघ दे गृह बंगा लुध्याणा ६५६
२३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गुरचरन सिँघ दे गृह रजोवाल लुध्याणा ६५८
२३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ उजागर सिँघ दे गृह महौण लुध्याणा ६६०
२३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ जरनैल सिँघ दे गृह महौण लुध्याणा ६६३
२३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गुरदर्शन सिँघ दे गृह राम सरूप, सुखराम दास,
कृष्न कुमार, देवी दयाल सरहंद लुध्याणा ६६४
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गुरदर्शन सिँघ दे गृह सरहंद लुध्याणा ६६७
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह रौणी लुध्याणा ६६८
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम सिँघ, जसवंत सिँघ, प्रेम सिँघ, शमशेर सिँघ,
राज सिँघ, करनैल सिँघ, इंदर सिँघ हरबंस पुरा लुध्याणा ६७०
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ नछत्तर सिँघ दे गृह दोराहा लुध्याणा ६७२
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गज्जण सिँघ दे गृह दोराहा लुध्याणा ६७४
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह दोराहा लुध्याणा ६७५
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम कौर दे गृह दोराहा लुध्याणा ६७७
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ श्री राम दे गृह मकसूदड़ा लुध्याणा ६७६
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरबंस सिँघ, जगदीस सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह
अजनौध लुध्याणा ६८०
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ गुरवंत कौर दे गृह साहनेवाल लुध्याणा ६८२
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह नत्त लुध्याणा ६८३
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ बग्गा सिँघ दे गृह शिमलापुरी लुध्याणा ६८४

२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरभजन सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६८५
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	महिंदर सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६८६
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	कुलदीप कौर दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६८७
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	फूला राणी दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६८७
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरबंस कौर दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६८८
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	जसवंत सिँघ दे गृह	शमला पुरी	लुध्याणा	६८६
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	कौर दे गृह	संगो वाल	लुध्याणा	६६२
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरबंस सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६६३
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	मदन सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६६६
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदेव सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६६७
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	निरवैर सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	६६७
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	लाल सिँघ दे गृह	जबद्दी	लुध्याणा	६६८
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	सुरजन सिँघ दे गृह	ज़बद्दी	लुध्याणा	१०००
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	निरंजण सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	१००१
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरचरन सिँघ दे गृह	सराभा नगर	लुध्याणा	१००३
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	अज़ैब सिँघ दे गृह	गुड़े	लुध्याणा	१००३
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	सरदार सिँघ दे गृह	मसताक गंज	लुध्याणा	१००४
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	सवित्री देवी दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	१००५
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	मलकीअत सिँघ दे गृह	चंदा सिँघ कालोनी	लुध्याणा	१००६
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	मग्घर सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	१००७
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	मलकीअत सिँघ दे गृह	लुध्याणा शहर	लुध्याणा	१००८
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	मोहण सिँघ दे गृह	सनेत	लुध्याणा	१००६

29
२४

२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	महिंदर सिँघ दे गृह	झंमट	लुध्याणा	१०१०
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	भगवान सिँघ दे गृह	भनहौड़	लुध्याणा	१०११
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	महिंदर सिँघ जुगिंदर सिँघ	दाखा	लुध्याणा	१०१२
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	पूरन सिँघ दे गृह	मुंडिआणी	लुध्याणा	१०१४
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	नाहर सिँघ दे गृह	रकबा	लुध्याणा	१०१५
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरनाम सिँघ दे गृह	बुढेल	लुध्याणा	१०१६
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदयाल कौर दे गृह	बोपा राए	लुध्याणा	१०१८
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरचंद सिँघ दे गृह	मुलां पुर	लुध्याणा	१०२०
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	पाखर सिँघ दे गृह	मोही	लुध्याणा	१०२२
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	धन्ना सिँघ दे गृह	ढैह पई	लुध्याणा	१०२४
३०	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरी सिँघ दे गृह	महिंमा सिँघ वाला	लुध्याणा	१०२६
३०	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	बलवंत सिँघ दे गृह	गुज़रवाल	लुध्याणा	१०२६
३०	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	मंगल सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	१०३०
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	करम सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	१०३३
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	सरदारा सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	१०३४
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	साधू सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	१०३६
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	सरवण सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	१०३७
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	जसवंत सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुध्याणा	१०३८
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	नाहर सिँघ दे गृह	डांगो	लुध्याणा	१०३६
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	खुशीआ सिँघ दे गृह	डांगो	लुध्याणा	१०४०
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	हरचरन सिँघ दे गृह	डांगो	लुध्याणा	१०४१
३१	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत	११	लाल सिँघ दे गृह	शाह पुर	लुध्याणा	१०४४

30
२४

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ तेजा सिँघ दे गृह लताला लुध्याणा १०४५

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ भान सिँघ दे गृह लताला लुध्याणा १०४७

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह शाहजहान पुर लुध्याणा १०४८

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ जगजीत सिँघ दे गृह कालसा लुध्याणा १०५३

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ निहाल कौर दे गृह कामलपुरा लुध्याणा १०५४

पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ मेहर सिँघ दे गृह जगराउँ लुध्याणा १०५५

पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात दे समें जेठूवाल अमृतसर १०५७

१८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार दीवाली दी रात जेठूवाल अमृतसर १०६१

१६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरमीत कौर दे गृह पहू विंड वाड़ा फिरोज़पुर १०६३

२० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जरनैल सिँघ दे गृह शाहवाला फिरोज़पुर १०६४

२० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ बलवंत सिँघ दे गृह तलवंडी जलो के फिरोज़पुर १०६७

२१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह शाह बुक्कर फिरोज़पुर १०६६

२१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ बगीचा सिँघ दे गृह फतिह गड़्ह फिरोज़पुर १०७०

२२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ इंदर सिँघ दे गृह कादर वाला फिरोज़पुर १०७४

२२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ मल सिँघ दे गृह रजीवाला फिरोज़पुर १०७७

२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम सिँघ दे गृह गालब रण सिँघ वाला फिरोज़पुर १०७६

२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरतेज सिँघ दे गृह घल कला फिरोज़पुर १०८२

२३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सीतल सिँघ दे गृह डगरू फरीदकोट १०८४

२४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जगदीश दे गृह डगरू फरीदकोट १०८६

२४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ धंना सिँघ दे गृह डगरू फरीदकोट १०८७

२४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ मेला सिँघ दे गृह डगरू फरीदकोट १०८८

२४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान सिँघ गहिणा सिँघ दे गृह डगरू फरीदकोट १०८६

२४	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	सुंदर सिँघ दे गृह फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	१०८९
२४	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	साधू सिँघ दे गृह बसती तेगा सिँघ वाली	फिरोज़पुर	१०९०
२५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	राम सिँघ दे गृह गवाल टोली	फिरोज़पुर छाउँणी	१०९२
२५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरचरन कौर दे गृह हीरा मंडी गेट	फिरोज़पुर	१०९४
२५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	सरदूल सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर छाउणी	१०९६
२६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	ब्रह्म कुमारीआं दे आशर्म विच	फिरोज़पुर	१०९७
२६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदीप सिँघ दे गृह तूतां वाला	फिरोज़पुर	११०१
२६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	सुलक्खण सिँघ दे गृह रुकना मूंगला	फिरोज़पुर	११०२
२६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	संपूरन सिँघ दे गृह चक निधाना	फिरोज़पुर	११०३
२७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	करनैल सिँघ, इकबाल सिँघ, राज सिँघ अजैब सिँघ, नछत्तर सिँघ दे नवित	फरीदकोट	११०५
२७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	खेम सिँघ दे गृह कोटकपूरा	फरीदकोट	११०८
२८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	मग्घर सिँघ दे गृह बरगाड़ी	फरीदकोट	१११३
२८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	चंनण सिँघ दे गृह वांदर	फरीदकोट	१११४
२८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	सतिनाम सिँघ दे गृह दबड़ी खाना	फरीदकोट	१११६
२८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	हरचंद सिँघ दे गृह हरिराए पुर	बठिंडा	१११७
२९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	बसंत कौर दे गृह समालसर	बठिंडा	१११९
२९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	जसवंत सिँघ दे गृह राजेआणा	फरीदकोट	११२०
२९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	प्रीतम सिँघ दे गृह नाथेवाल	फरीदकोट	११२३
३०	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	प्रीतम सिँघ दे गृह नाथेवाल	फरीदकोट	११२६
३०	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	जुगिंदर सिँघ दे गृह नाथेवाल	फरीदकोट	११२७
३०	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	११	सुरजीत कौर दे गृह नाथेवाल	फरीदकोट	११२८

32 २४

३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ दे गृह रामूवाला	फरीदकोट	११२६
३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृह चड़िक	फरीदकोट	११३२
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत कौर दे गृह चड़िक	फरीदकोट	११३४
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कपूर सिँघ दे गृह मोगा	फरीदकोट	११३५
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात नूं जेठूवाल	अमृतसर	११४०
०२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ आत्मा सिँघ मल्लूवाल दे नवित हरि भगत दुवार जेठूवाल	अमृतसर	११४४
०६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार प्यारो जेठूवाल वाली दे नवित जेठूवाल	अमृतसर	११४६
१४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ स्वर्गवासी निरंजण कौर जलालाबाद नत्थू वाली खूही	अमृतसर	११४७
१५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सवर्गवासी दातो दे नवित रामपुर	अमृतसर	११५०
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जगजीत सिँघ दे गृह नानक नगर	जम्मू	११५२
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ उत्तमजीत सिँघ दे गृह नानक नगर	जम्मू	११५८
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बागो देवी दे नवित वज़ारत रोड	जम्मू	११५६
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह वज़ारत रोड	जम्मू	११५६
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ राम कौर दे गृह वज़ारत रोड	जम्मू	११६०
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ फुम्मण सिँघ दे गृह वज़ारत रोड	जम्मू	११६०
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ भाईआ देवी दे गृह जम्मू		११६१
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ ओम प्रकाश अंबा राए अखनूर	जम्मू	११६२
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सोमनाथ दे गृह अंबा राए अखनूर	जम्मू	११६३
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जीवण सिँघ दे गृह झमां अखनूर	जम्मू	११६५

33
२४

२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ केसर सिँघ दे गृह झमां तहिसील अखनूर जम्मू ११६६
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जीवण सिँघ दे नवित झमां तहिसील अखनूर जम्मू ११६७
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ शांती देवी दे गृह अंबा राए तहिसील अखनूर जम्मू ११६८
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बंती देवी दे गृह अंबा राए तहिसील अखनूर जम्मू ११६९
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ किशन लाल दे गृह बंमभड़वा तहिसील अखनूर जम्मू ११६९
२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ शिव राम दे गृह अखनूर जम्मू ११७२
२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बारी राम दे गृह देई पुर तहिसील अखनूर जम्मू ११७४
२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कुलदीप राज दे गृह मुठी तहिसील अखनूर जम्मू ११७६
२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ झण्डू राम दे गृह जिउड़ीआं जम्मू ११७९
२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सधरो देवी दमाना नवित जिउड़ीआं जम्मू ११८०
२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ यशपाल रजवाल जिउड़ीआं जम्मू ११८०

34
२४

२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ रतन सिँघ दे गृह हमीपुर कोना जम्मू ११८२
२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ केसरी देवी दे गृह रानी बाग जम्मू ११८२
२५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बचनो देवी सरवाल जम्मू ११८३
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ परभात सिँघ दे गृह हमीपुर कोना जम्मू ११८४
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ करोड़ सिँघ दे गृह हमीपुर कोना जम्मू ११८५
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ ईशर सिँघ दे गृह दड़ जम्मू ११८६
२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश सिँघ दे गृह दड़ जम्मू ११८९
२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रताप सिँघ दे गृह दड़ जम्मू ११९१
२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ हयात मुहंमद दे गृह स्रोट तहिसील अखनूर जम्मू ११९२
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ भगत सिँघ दे गृह कीर जम्मू ११९५
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जसवंत कौर दे गृह कोठे निहाल सिँघ सिंबल जम्मू ११९७

२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सेवा सिँघ दे गृह कीर जम्मू ११६८
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ तेजभान दे गृह सई कलां जम्मू १२००
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ शिव सिँघ दे गृह सई कलां जम्मू १२०५
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ भगवान सिँघ दे गृह सई कला जम्मू १२०५
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान चंद मनवाल कैंप सई कलां जम्मू १२०६
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सोभा सिँघ दे गृह धंगाली जम्मू १२०७
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ लछमण सिँघ दे गृह अंदर वड़दयां ही
धंगाली कैंप जम्मू १२०८
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ लछमण सिँघ दे गृह रात नूं धंगाली जम्मू १२०६
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ गूड़ा राम दे गृह सई खुरद जम्मू १२११
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ रोशन लाल दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१२
२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ किशना देवी धंगाली कलां जम्मू १२१२
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ खेमो देवी दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१३
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कुलवंत सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१४
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बिशन सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१४
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जलंधर सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१५
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ देवा सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१५
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ पूरन सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१६
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बचनो देवी दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१७
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सवरनो देवी दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१७
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बलबीर सिँघ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१८
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ वकील सिँघ दे गृह धंगाली कलां जम्मू १२१६

36
२४

३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बाबू राम दे गृह	दीवान गड़्ह	जम्मू	११२१
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ माया देवी दे गृह	मघोवाली	जम्मू	११२२
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश सिँघ दे गृह	मघोवाली	जम्मू	११२४
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ देवी सिँघ दे गृह	मघोवाली	जम्मू	१२२५
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह दरवाज़े अंदर वड़दयां सीड़			१२२६
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	१२२६
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	१२२७
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	१२२८
३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ, संतोख सिँघ, सोहण सिँघ, जगदीश सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	१२२९
पहली पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१२३१
२ पोह शहिनशाही सम्मत ११ दिलबाग सिँघ दे नवित हरि भगत दुवार जेठूवाल			१२३८
५ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दवार निहाल बाई बटाला दे नवित परलोक सिधारन उपरांत	जेठूवाल	अमृतसर	१२३९
२१ पोह शहिनशाही सम्मत ११ दरबार निवासी निहंग सिँघ, प्रीतम सिँघ, दलीप सिँघ, रतन सिँघ ईशर सिँघ, भान सिँघ, कशमीर सिँघ, जोगा सिँघ, जगीर सिँघ	जेठूवाल	अमृतसर	१२४१
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ११ रात दे समें	जेठूवाल	अमृतसर	१२४३
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ११ रात दे समें	जेठूवाल	अमृतसर	१२६५
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ११ सवेरे शादीआं दे समें	जेठूवाल	अमृतसर	१२७८
२९ पोह शहिनशाही सम्मत ११ लोहड़ी वाली रात	जेठूवाल	अमृतसर	१२८१
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात दे समें जेठूवाल		अमृतसर	१२८३

४	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	प्यारे लाल दर्शन सिँघ	दुसांझ	जलंधर	१२८५
५	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	संतोख सिँघ सोढीआं दे	नवित दुसांझ	जलंधर	१२८८
५	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११		बताला	अमृतसर	१२८९
६	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२९२
६	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२९३
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	१२९४
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	सुरजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	१२९५
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	मोहण सिँघ दे गृह	तारा चक	गुरदासपुर	१२९६
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	विरसा सिँघ दे गृह	श्री हरि गोबिंदपुर	गुरदासपुर	१२९७
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	अवतार सिँघ दे गृह	माड़ी पनूंआ	गुरदासपुर	१२९८
११	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	रणधीर सिँघ दे गृह	माड़ी पनूंआ	गुरदासपुर	१३००
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	मोहन सिँघ दे गृह	कादीआं	गुरदासपुर	१३०१
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	चंनण सिँघ दे गृह	ठीकरी	गुरदासपुर	१३०२
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	करतार सिँघ दे गृह	भूमली	गुरदासपुर	१३०३
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	सुखजिंदर सिँघ दे गृह	माने पुर	गुरदासपुर	१३०४
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	हरदीप कौर दे गृह	फतूनंगल	गुरदासपुर	१३०६
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	जुगिंदर सिँघ दे गृह	डडवां	गुरदासपुर	१३०७
१२	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	जगीर सिँघ दे गृह	सोहल	गुरदासपुर	१३०९
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	दारा सिँघ दे गृह	गज़नीपुर	गुरदासपुर	१३११
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	सुलक्खणी दे गृह	गज़नीपुर	गुरदासपुर	१३१२
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	हरबंस कौर दे गृह	गज़नीपुर	गुरदासपुर	१३१३
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत ११	गुरमुख सिँघ दे गृह	शोहण	गुरदासपुर	१३१५

37
२४

१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	भजन सिँघ दे गृह	जीउ जलाई	गुरदासपुर	१३१६
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरदेव सिँघ दे गृह	शोहण	गुरदासपुर	१३१७
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	दीपो दे गृह	दोस्तपुर	गुरदासपुर	१३१९
१३	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	१३२०
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	वकील सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	१३२३
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	दलीप सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२३
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	दविंदर सिँघ दे नवित	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२४
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	संता सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२४
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	प्यारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२५
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	दलीप सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२६
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	मक्खण सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२७
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	आसा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२८
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	हज़ारा सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२८
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	भाग सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३२९
१४	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	दीदार सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३३०
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	मेला सिँघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदासपुर	१३३५
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	सवरनी दे गृह	आंधी	गुरदासपुर	१३३६
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	गुरबख्श सिँघ दे गृह	नुशहरा	गुरदासपुर	१३३७
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	अतर सिँघ, चतुर सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	१३३८
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	ज्ञान सिँघ, त्रलोक सिँघ	ओगरा	गुरदासपुर	१३३९
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	त्रलोक सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	१३४०
१५	माघ	शहिनशाही	सम्मत	११	अजीत सिँघ दे गृह	ओगरा	गुरदासपुर	१३४१

38
२४

१५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरदीप सिँघ दे गृह ओगरा गुरदासपुर १३४२
१५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ मुखत्यार सिँघ दे गृह ममीआं गुरदासपुर १३४३
१६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ संतोख सिँघ दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३४४
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ चरन सिँघ दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३४७
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ त्रलोक सिँघ दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३४९

१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुरजन सिँघ दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३५०
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अवतार सिँघ दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३५१
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञानो दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३५३
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह सिंमल सकोल गुरदासपुर १३५३
१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ संसार सिँघ मराहज पुर तहिसील हीरा नगर
डाकखाना पंनू कोट कठूआ जम्मू कशमीर १३५५

39
२४

39
२४

१७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ चरन सिँघ दे गृह अंतोर गुरदासपुर १३५६
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ बचन सिँघ दे गृह पहाढू चक्क गुरदासपुर १३५९
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ, सवरन सिँघ, भजन सिँघ, लाल सिँघ,
बावा सिँघ, बलकार सिँघ दे गृह दीना नगर गुरदासपुर १३६१

१८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ बलकार सिँघ दे गृह दीना नगर गुरदासपुर १३६३
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ भजन सिँघ दे गृह दीना नगर गुरदासपुर १३६५
१८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ लाल चंद अते शांती देवी दे गृह भीमपुर गुरदासपुर १३६५
१९ माघ शहिनशाही सम्मत ११ बलदेव सिँघ कृष्ना राणी भीमपुर गुरदासपुर १३६६
१९ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह कतोवाल गुरदासपुर १३६७
१९ माघ शहिनशाही सम्मत ११ जवंद सिँघ दे गृह नवां पिंड गुरदासपुर १३६९
१९ माघ शहिनशाही सम्मत ११ भगविंदर सिँघ दे गृह रणजीत बाग गुरदासपुर १३७०

१६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सरूप सिँघ दे गृह सुखे शाह फकीर दे नाल
गुरदासपुर १३७२

१६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ करम सिँघ दे नवित	नया शाला	गुरदासपुर	१३७६
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुंदर सिँघ दे गृह	रोसे	गुरदासपुर	१३८०
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ धिरता सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१३८३
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ बलकार सिँघ दे गृह	रसूलपुर	गुरदासपुर	१३८४
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ मंगल सिँघ दे गृह	फत्तूपुर	गुरदासपुर	१३८६
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ गुलज़ार सिँघ दे गृह	फत्तूपुर	गुरदासपुर	१३८७
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११	अठवाल	गुरदासपुर	१३८८
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह	शिकार माछीआं	गुरदासपुर	१३८८
२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ काशी राम दे गृह	सनयीआ	गुरदासपुर	१३९०
३० माघ शहिनशाही सम्मत ११ मांगे संगत दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१३९३
०१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार रात नूं	जेठूवाल	अमृतसर	१३९४
०२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सवर्गवासी दरबारा सिँघ दे ससकार समें	मल्लूवाल	अमृतसर	१४०१
०२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ जसवंत सिँघ दे नवित	जेठूवाल	अमृतसर	१४०५
०२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ बख्शीश सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	१४०६
०३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ चंनण सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	१४०८
०३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ करनैल सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	१४०८
०३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	१४०९
०३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	१४०९
०३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	१४१०

40
२४

०३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह कादराबाद गुरदासपुर १४११
०८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्यारो जेठूवाल नवित संतोख सिँघ, अमर सिँघ,
दलीप सिँघ, प्यारा सिँघ, जेठूवाल जेठूवाल अमृतसर १४११
०६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ चरन सिँघ दे गृह, हज़ारा सिँघ फत्तू चक,
ज्ञान सिँघ सुरखपुर दे नवित ढिलवां कपूरथला १४१३
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह ढिलवां कपूरथला १४१६
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ दौलत सिँघ, गुरदयाल सिँघ, करतार सिँघ, अमर कौर,
मनजीत कौर नूरपुर, करतार कौर माही जीतपुर दे नवित कपूरथला १४१८
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरमीत सिँघ दे गृह फिआली कपूरथला १४१६
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ रेशम सिँघ दे गृह खैहिरा कपूरथला १४२१
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरबचन सिँघ, फुमण सिँघ, अजीत सिँघ, अवतार सिँघ

अहिमदपुर कपूरथला १४२३
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ लाला सिँघ, अजीत कौर, हरदयाल सिँघ,
नगीना सिँघ जलंधर मल सिँघ, पाल सिँघ ललीआं,
सवरन सिँघ बाम्हनीआ नवित हेरां जलंधर १४२५
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरचरन कौर दे नवित हेर जलंधर १४२७
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश कौर दे गृह सुनड़ा जलंधर १४२८
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सरवण सिँघ दे गृह हेर जलंधर १४२६
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ, गुरनाम सिँघ, महिंदर कौर नवित
जंडिआला जलंधर १४३०
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ चीमां कला, प्रेम सिँघ महिंदर खेड़ा जलंधर १४३१
१३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरमेज सिँघ दे गृह रुड़का जलंधर १४३३

41
२४

१३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ किहर सिँघ, दलीप कौर, दर्शन सिँघ, सुरजीत सिँघ, गेजो, छिबो, भजन कौर, गिरदावर सिँघ, जुगिंदर सिँघ, ऊधम कौर, हरी पुर भजन कौर	रुड़का	जलंधर	१४३५
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ बंत सिँघ दे गृह	रुड़का	जलंधर	१४३६
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरदेव सिँघ दे गृह	नवां पिंड	जलंधर	१४४०
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह	डलेवाल	जलंधर	१४४२
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ संसार सिँघ दे गृह	जजे	जलंधर	१४४३
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ हज़ूरा सिँघ, नछतर कौर	गुराया	जलंधर	१४४५
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ बंती दे अंतम ससकार समें	जेठूवाल	अमृतसर	१४४७
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ संतोख सिँघ दे गृह	सोढीआं	जलंधर	१४४७
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ मिलखा सिँघ, महल गैला प्रीतम कौर	सैला खुरद		१४५२
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरपाल सिँघ दे गृह	सकरूली	हुशिआरपुर	१४५४
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ जीत सिँघ, नसीब कौर डविडा	रिहाणा	हुशिआरपुर	१४५६
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ राम सिँघ, मुणशा सिँघ, चरन कौर, गुरदीप कौर	फराला	जलंधर	१४५८
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरमीत सिँघ दे गृह	हरदोफराला	जलंधर	१४६१
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ चरन कौर दे गृह	हरदोफराला	जलंधर	१४६२
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ जीत कौर दे गृह आदम पुर हरभजन सिँघ, सगवाल जरनैल सिँघ	जलपोता	हुशिआरपुर	१४६३
१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सुरिंदर सिँघ सराई अमरीक सिँघ मेला सिँघ, बैरम पुर मल्हार सिँघ, खुरदा तरसेम सिँघ, कंधाला शेख गुरदेव कौर दे नवित	रूपोवाला	हुशिआरपुर	१४६६

42
२४

43
२४

१८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ ख्याल सिँघ कुलीआं धंना सिँघ कराला
गुरमीत कौर दसूहा हुशिआरपुर १४६८
१८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ वतन सिँघ दे गृह शरीहपुर हुशिआरपुर १४७०
१८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह पंज ढेरा हुशिआरपुर १४७२
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृह पंज ढेरा हुशिआरपुर १४७४
१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ राम सिँघ, दरबारा सिँघ, मंगल सिँघ, ज्ञान चंद ते
आतम चंद तलवाड़ा गालड़ीआं हुशिआरपुर १४७५
२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ रेशम सिँघ दे गृह मकेरीआं महल्ला बाणीआं
मकान नंबर ४४ हुशिआरपुर १४७७
२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ दयाल सिँघ दे गृह डडवां हुशिआरपुर १४७८
२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सोमराज सिँघ दे गृह कोटला हुशिआरपुर १४७६
२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ अरजन सिँघ, मिआणी मुणशी राम, फतिह गड़्
जुगिंदर सिँघ दे नवित सलीम पुर हुशिआरपुर १४८१
२१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सूरत सिँघ, संत सिँघ दे गृह डाला कपूरथला १४८३
२१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पाल सिँघ दे गृह दाउदपुर कपूरथला १४८६
२१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ संतोख सिँघ जंडिआला नवित जेठूवाल अमृतसर १४८६
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर १४८६
पहली चेत शहिनशाही सम्मत १२ दविंदर सिँघ दे गृह मलूवाल अमृतसर १४६१
पहली चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरि भगत दुवार रात दे समें जेठूवाल अमृतसर १४६२
५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ मोता सिँघ शाम सिँघ दलीप सिँघ
प्रताप सिँघ फुम्मण दे गृह कल्सीआं अमृतसर १५०७
६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ रणजीत सिँघ दे गृह कल्सीआं अमृतसर १५१२

६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सुरजीत कौर दे नवित	कल्सीआं	अमृतसर	१५१३
६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बीरा सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१५१४
६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सज्जण सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१५१५
६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ फुम्मण सिँघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१५१६
६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ मनी राम दे गृह	सिधवां	अमृतसर	१५१७
११ चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरि भगत दुवार रात दे समें (कोठी उते विसराम धाम ते)	जेठूवाल	अमृतसर	१५१६
१२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ गुरदेव सिँघ दे गृह	लुध्याणा	लुध्याणा	१५२२
१२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ जुगिंदर सिँघ बग्गा दे गृह	लुध्याणा	लुध्याणा	१५२३
१२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ गुरभेज कौर दे गृह	कहेरू	संगरूर	१५२३
१३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ माधा सिँघ, अमरजीत कौर, बलजीत सिँघ दलजीत सिँघ दे गृह	धूरी शहर	संगरूर	१५२४
१३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ शाम सिँघ दे गृह	बरनाला	संगरूर	१५२६
१३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरबंस सिँघ दे गृह	संगरूर शहर	संगरूर	१५२८
१४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सुरिंदर कौर दे गृह	छोटा कमो माजरा	संगरूर	१५३०
१४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ दलीप कौर दे गृह	सुनाम	संगरूर	१५३०
१४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सरदारा सिँघ दे गृह	छाजला	संगरूर	१५३२
१५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सुरजीत सिँघ दे गृह	छाजला	संगरूर	१५३४
१५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ आसा सिँघ दे गृह	खांग	संगरूर	१५३५
१५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ मोहण सिँघ दे गृह	नाभा शहर		१५३७
१५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बलवंत सिँघ दे गृह	पटिआला	पटिआला	१५३८
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ राज सिँघ दे गृह	पटिआला	पटिआला	१५४१

44
२४

१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सतिंदर पाल दे गृह १०१ डी, पटिआला पटिआला १५४३
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ शाम कौर दे गृह पटिआला पटिआला १५४४
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बिकर्मजीत सिँघ दे गृह पटिआला पटिआल १५४४
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ अशोक कुमार दे गृह पटिआला पटिआला १५४६
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ प्यारा सिँघ दे गृह राजपुरा पटिआला १५४७
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ करतार सिँघ दे गृह राजपुरा पटिआला १५४८
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ आसा सिँघ, सरैण सिँघ, बंता सिँघ, काला सिँघ दे गृह
कलसाणी कुरूकशेत्र १५४६
१७ चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरबंस सिँघ दे गृह संपूरन सिँघ, लक्खा सिँघ ठीकरी,
सलविंदर सिँघ कौमी फारम, रणधीर सिँघ हरनाया,
मोहण सिँघ गड़ी लांगरी, सुदागर सिँघ भट्ठ माजरा

45
२४
बीर सिँघ जीत नगर दे नवित ठीकरी कुरकुशेतर १५५१
१८ चेत शहिनशाही सम्मत १२ अरजन सिँघ दे गृह बलोचपुर कुरकुशेतर १५५३
१८ चेत शहिनशाही सम्मत १२ भान सिँघ ठाकर सिँघ सोहण सिँघ प्रीतम सिँघ
जगतार सिँघ नानक पुर निरंजण सिँघ
गुरमेज़ सिँघ थनेसर नानक पुर करनाल १५५६
१६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ त्रलोक सिँघ, गुरचरन सिँघ, चंदा सिँघ, हरभजन सिँघ,
रुलदा सिँघ, महिंदर सिँघ, अवतार सिँघ, गुरबलविंदर सिँघ,
महिंगा सिँघ, भजन सिँघ, गुरदर्शन सिँघ सरहंद,
मल सिँघ फरीदाबद धीरपुर दिल्ली १५५८
२० चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरि भगत दुवार पूरन सिंघ, सरूप सिँघ, सुरिंदर कौर,
महिंदर कौर, रतन सिँघ, करतार सिँघ, श्री नाथ दास धीरपुर दिल्ली १५६०

२१ चेत शहिनशाही सम्मत १२	महिंदर सिँघ सवर्नजीत कौर दे गृह			
	यू-१५ गरीन पारक अैकसटैन्शन दिल्ली			१५६१
२१ चेत शहिनशाही सम्मत १२	सेवा सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	१५६४
२२ चेत शहिनशाही सम्मत १२	हरबंस सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	१५६९
२२ चेत शहिनशाही सम्मत १२	गुरदेव सिँघ, जेठा सिँघ,			
	बीर सिँघ बठलाणा माणक पुर कल्लर		अंबाला	१५७०
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	संत सिँघ दे गृह	माणक पुर कल्लर	रोपड़	१५७२
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	हज़ारा सिँघ दे गृह	चूनी कला	रोपड़	१५७३
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	गुरदेव सिँघ निरमल सिँघ दे गृह		चंडीगढ़	१५७४
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	हरचरन सिँघ दे गृह		चंडीगढ़	१५७५
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	सुवरग वासी करम सिँघ दे नवित		चंडीगढ़	१५७६
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	अमर चंद दे गृह		चंडीगढ़	१५७९
२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२	नत्था सिँघ जगीर सिँघ बंना सिँघ करनैल सिँघ			
	नसीब कौर	बड़हेड़ी	चंडीगढ़	१५७०
२४ चेत शहिनशाही सम्मत १२	महिंदर सिँघ दे गृह	बड़हेड़ी	चंडीगढ़	१५८२
२४ चेत शहिनशाही सम्मत १२	सुरजीत सिँघ दे गृह	घड़ूआ	रोपड़	१५८२
२४ चेत शहिनशाही सम्मत १२	गुरदेव सिँघ दे गृह	घड़ूआं	रोपड़	१५८३
२४ चेत शहिनशाही सम्मत १२	सेवा सिँघ दे गृह	रुड़की	रोपड़	१५८४
२५ चेत शहिनशाही सम्मत १२	हरभजन सिँघ दे गृह	शेखपुर	रोपड़	१५८६
२५ चेत शहिनशाही सम्मत १२	मेहर सिँघ दे गृह	शेखपुर	रोपड़	१५८८
२५ चेत शहिनशाही सम्मत १२	बचन सिँघ दे गृह	ध्यानपुर	रोपड़	१५८९
२५ चेत शहिनशाही सम्मत १२	लछमण सिँघ, दे गृह	धनौरी	रोपड़	१५९०

46
२४

२६	चेत	शहिनशाही सम्मत १२ दर्शन सिँघ दे गृह	धनौरी	रोपड़	१५६२
२६	चेत	शहिनशाही सम्मत १२ अजीत सिँघ दे गृह	गोसलां	रोपड़	१५६४
२६	चेत	शहिनशाही सम्मत १२ जगीर सिँघ दे गृह	रंगीलपुर	रोपड़	१५६५
२६	चेत	शहिनशाही सम्मत १२ प्रीतम सिँघ दे गृह	राजो माजरा	रोपड़	१५६६
२७	चेत	शहिनशाही सम्मत १२ सर्जीतम सिँघ दे गृह	राजो माजरा	रोपड़	१६०१

47

२४

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✪ पहली भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

भाद्रों कहे नारदा बिना भाई तों तेरी आई भरजाई, गंगा भज्जी वाहो दाहीआ। गोदावरी देंदी फिरे दुहाई, कूक कूक सुणाईआ। सरस्वती नैणां नीर वहाई, नेत्र रो रो रही वखाईआ। यमुना कहे मेरा माही, गल पल्लू वास्ता पाईआ। सरस्वती कहे मैं इशारा देवां इक गुसांई, बिन इशारे अक्ख उठाईआ। चारे इक्ठीआं हो के कहिण बिन रसना देईए सुणाई, सोहणा रंग दृढ़ाईआ। रावी आपणे चुक के भज्जे बूटे काही, कायनात नूं रही वखाईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्ह्रो की रुत जगत विच आई, जुगती समझ कोए ना पाईआ। खुल्ल्हे केस वखावे हवा माई, आदम दोवें हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। भाद्रों कहे नारदा की कहिंदी तेरी भाबी, भाबो की जणाईआ। की धार इस दी दोआबी, दोहरी खेल खिलाईआ। कुछ आवाज़ सुण लै एस दी विच्चों नाभी, की धुनां नाद दृढ़ाईआ। की एस दा रूप रंग रेख जगत वाला पंजाबी, पंजां ततां नाल वड्याईआ। की एस दे कोल कोई लेखा बग़दादी, जो नानक आया समझाईआ। की एस दा प्यार हकीकी ते मजाज़ी, की मुहब्बत रही दृढ़ाईआ। ज़रा निगाह मार शताबी, बिन नैणां नैण उठाईआ। उह वेख की सितार कहे अगम्मी रबाबी, रबी नूर नूर जणाईआ। जिस दी खेल सब तों सादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह्राईआ । भाद्रों कहे नारदा की कहिंदी तेरी भाबो, भेव की खुल्ह्राईआ। गंगा कहे मैं कूक के कहां उह शेर शेर जिस नूं ततां वाला रूप दिता सी ताबो, जिस दी ताब्या विच दो जहान नज़री आईआ। जिस दी ख़ुशी विच होई बाग़ बाग़ो, ख़ुशीआं ढोले गाईआ। जिस दा घर घर जगणा चराग़ो, चरागाहां करे रुशनाईआ। संदेशा देवे दुनियादारो दुनिया कूड़ी त्यागो, त्रैगुण अतीता की जणाईआ। उठ उठ सारे सतिगुर शब्द दुआरे भागो, भज्जो वाहो दाहीआ। उह माही महबूब तकणा तको देस माझो, मजलस

भगतां नाल रखाईआ। जिस दा इक इक रिवाजो, रसम कसम नाल दए बदलाईआ। चरणी ढहि जाओ शाह नवाबो, तख्त निवासीओ तख्तां दा लेखा दयो मुकाईआ। आ जाओ वक्त सुहञ्जणा बण जाओ हँस कागो, कागों हँस बणाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़ो, पतित पुनीत आप अख्वाईआ। जिस दी इक्को इक इमदादो, दूसर लोड़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। भाद्रों कहे नारदा की संदेशा देवे तेरी भरजाई, भागां भरी की दृढ़ाईआ। गंगा कहे मैं देण आई दुहाई, दो जहानां दयां सुणाईआ। यमुना सरस्वती गोदावरी नाल मिलाई, गृह इक्को रंग रंगाईआ। इशारा दिता रावी तूं वी भज्जणा चाँईं चाँईं, आपणा पैंडा पन्ध मुकाईआ। अर्जन दा लेखा दस्सणा थांउँ थाँईं, थान थनंतर मिले वड्याईआ। बौहड़ी साडीआं पंजां दीआं खड़ीआं बाहीं, कूक कूक सुणाईआ। साडा अमृत जल किसे दी मेट सके ना छाही, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। अठसठ तीर्थ रोवण मारन धाही, इक्को तेरा ढोला गाईआ। किरपा कर हरि गुसांई, मेहरवान तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे भाद्रों मेरी भाबो लै के आ गई पाती, पत्रका समझ किसे ना आईआ। ना लिखी कलम दवाती, शाही रंग ना कोए वटाईआ। इस दा झगड़ा दिसे ना काग़ज़ाती, अक्खर अक्खर ना कोए समझाईआ। एह खेल बहु बिध भांती, भेव अभेदा रही जणाईआ। उठो वेखो खेल कमलापाती, की पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कूड़ निशाना मेटणा कलयुग काती, कालख टिक्के दए धुआईआ। उह वेस वटाए लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। जिस दा झगड़ा नहीं कोई ज़ाती, अज़ाती रंग ना कोए रंगाईआ। साची देवे नाम सौग़ाती, वस्त अमुल अतुल वरताईआ। मैं उस दी चरण धूड़ नहाती, इश्नान अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर भेव आप चुकाईआ। नारद कहे भाद्रों मेरी भाबो दा सुण लै बचन, की ढोले रही गाईआ। एह कहिंदी सब दा माही इक्को सज्जण, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दे नाम नगारे घर घर अन्दर वजण, गृह गृह करे शनवाईआ। उह भगतां भगती धार आया सद्दण, संदेसे आप सुणाईआ। लख चुरासी विच्चों आया कढण, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। कूड़ क्रिया मेट के हद्दण, हदूद इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे दीपक जोती इक्को जगण, नूर नूर नूर कर रुशनाईआ । जन भगत सुहेले लभ्भण, दूजा वेखण कोए ना पाईआ। उथे तत शरीर नहीं कोई बदन, आत्म प्रमातम मिलके वजे वधाईआ। उह इक संदेशा देवे इक्को सुणावे बचन, संदेशा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे भाद्रों मेरी भाबी दी सुण लै खबर, बेख़बरां

२
२४

की जणाईआ। प्रभ दा हुक्म अगम्मा ज़बर, ज़ालमां ज़ुल्म दए मिटाईआ। जो आशा रखी मुहम्मद ने वड़न लग्गयां विच कबर, मकबरा की सुणाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार ने सब दा तोड़ना सबर, सबूरी रहिण कोए ना पाईआ। जिस मानव ज़ाती इक बणाउणा टब्बर, कुनबा इक्को इक वखाईआ। मेरी दुहाई वे ओह पाउण लग्गा ग़दर, गदागर करे लोकाईआ। सतिगुर शब्द दी पूरी होवे सधर, सदमे विच दिसे लोकाईआ । मैं उस दी अवाज़ सुणी जिस दा गीत अनोखा ते धुन सुणी मधुर, खुशी खुशी नाल जणाईआ। जिस ने भगतां दा करना कदर, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। मैनूं इयों जापदा साल बसाला सृष्टी ने फिरना उस दे मगर, पिच्छे भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। भाद्रों कहे नारदा तेरी भाबो बड़ी चलाक, मेरे अन्तर आई हैरानी। नारद कहे भाद्रों ज़रा खोल्ह के वेख लै ताक, हथ्थ रख के आपणी उत्ते पेशानी। एह रूप नही कोई मिट्टी ख़ाक, ततां वाली नहीं जवानी। एह इक इक दी ज़ात, एहदा नूर नूर नुरानी। एहदी अगली समझण वाली बात, अक्खरां वाली नहीं कहाणी। झट गंगा बोली सुणो मैथों हालात, हालत दयां जणाईआ। जेहड़ा लेखा लिख्या नहीं नाल कलम दुआत, जिस दी कागज़ दए ना कोई गवाहीआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले खेल करना आपणी भांत, बहु भांती समझ किसे ना आईआ। आह वेखो बिना अक्खरां तों पत्रका पात, पढ़ के सके ना कोए समझाईआ। उह आया लोकमात, मता सतिगुर शब्द नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप वखाईआ। गंगा कहे नारदा तूं क्यों मैनूं किहा भाबी, सच दे सुणाईआ। मैं बणी नहीं किसे दी बांदी, बन्दना विच सीस ना किसे निवाईआ। मैं किसे दा कुछ नहीं पींदी खांदी, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। किसे दे गृह मन्दिर नहीं जांदी, घराणे वंड ना कोए वंडाईआ। किसे दी रिधी कदे नहीं हाण्डी, जगत वासना ना कोए जणाईआ। मैं वणजारन बणी नहीं रुपै सोने चांदी, सूर्या चन्द्रमा मेरी देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। गंगा कहे नारदा मैनूं क्यों किहा भरजाई, की तेरी वड्याईआ। मैनूं भेद दे खुल्हाई, तैनूं सच रही सुणाईआ। तूं चार जुग दा पाँधी राही, मैं वी जुग चौकड़ी भज्जां वाहो दाहीआ। मैं इक्को मंग मंगाई, दूसरी वंड ना कोए वंडाईआ। जे मेरा दयोर बणना मैनूं दस्स दे क्यों गोबिन्द ने किहा लेखा मुके मेरा ढाई, ढईए की चतुराईआ। सोहणया अज्ज पहली भाद्रों तों दवा दे गवाही, शहादत अक्खरां नाल भुगताईआ । नहीं ते आपणे मूंह ते ला लै श्याही, लाअनत दिआ मारया मुख जाणा भुआईआ। मैं अजे तक कोटन जुग ना किसे नाल मंगी ते ना किसे नाल व्याही, नेत्र अक्ख ना कोए मिलाईआ।

मैनूं इयों दिसदा तैनूं कलयुग ने कर दिता शुदाई, पिछल्यां जुगां विच तूं एह बचन ना दिता सुणाईआ। हुण तेरे गल विच मैं पा लैणी फाही, एह फाही फाँसी यसूह वाली लेखा रही समझाईआ। उस ने दोवें हथ्थ चुक्क के दिती दुहाई, वाहिद अल्ला तेरी ओट तकाईआ। नाले किहा मुरीदो तुहाडे मुर्शद दा मुर्शद जिस वेले आया धुर दा माही, महबूब नूर अलाहीआ। उह बड़ा होवेगा वड्डा दाई, आपणा दाउ ना किसे समझाईआ। आपणी खेल खेली जाएगा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसांईआ। गंगा कहे नारदा मैं आदि जुगादि कँवारी, किसे कंवर नाल ना कदे परनाईआ। मेरा जुग चौकड़ी इक्को श्रृंगारी, वेस अवेस ना रूप वखाईआ। मेरी धार सदा ठण्डी ठारी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मैं भज्जी जावां वारो वारी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। ना मैं पुरख ना मैं नारी, तन वजूद ना कोए जणाईआ। शंकर मेरी पावे सारी, जटा जूट जिस दी दए गवाहीआ। मैं इक दी पूजा करां ते बणां पुजारी, इक इक नूं सीस निवाईआ। जुग जुग जिस दी खेल न्यारी, नित नित वेखां चाँईं चाँईंआ। तूं उठके निगाह मारी, बिन नैणां नैण तकाईआ। उह कलि कल्की अवतारी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा अमाम अमामा सब दा सिक्दारी, महबूब अगम्म अथाहीआ। मैं उस दे चरण कवल पनिहारी, जुग जुग सीस निवाईआ। उस दे दर ते देवां बहारी, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे गंगा बेशक मेरा नहीं कोई भ्रा, भाबी तैनूं ल्या बणाईआ। मसख़री करना मेरी अदा, मेरे प्रभ ने दिती वड्याईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती साहमणे लए बुला, रावी आपणे नाल रखाईआ। मैं इक संदेशा देवां सुणा, जो ढोला धुर दरगाहीआ। तुसां सुणना नाल चाअ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। नाले आपणीआं उठावो बांह, बहीआं दयो वखाईआ। रसना बोलो इक्को नाँ, जो नाउँ निरँकारा दयां सुणाईआ। सारीआं कहो साडा पिच्छे पिच्छा रिहा ना थाँ, थान थनंतर ना कोए वड्याईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला सब दा पिता माँ, मात पित इक अख्वाईआ। जिस दी चरण सरन सरना, चरण कवल वड्याईआ। नी कमलीओ नैण खोल्हो तुहानूं उह साहिब दयां वखा, जिस वखरे वखरे रूप धारन करके अवतार पैग़म्बर गुरु दिते बणाईआ। उस ने मैनूं सिख्या दिती सिखा, सहिज नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे गंगा भाबो आख्या होया की, मैनूं दे जणाईआ। तूं अगों कहिणा सी जी, सति सच नाल सुणाईआ। अगे वास्ते धर्म दी बणदी लीह, लाइन इक वखाईआ। सतिजुग दी रखदे नींह, धर्म धार वड्याईआ। झगड़ा मुकदा जगत सींअ, हिस्से वंड ना

कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा कहे नारदा मैं की दस्सां तेरा रिश्ता, रिश्तेदारी की जणाईआ। आह वेख लै संदेशा लै के गया जबराईल फ़रिश्ता, मेकाईल असराईल असराफ़ील आपणे नाल मिलाईआ। की हाल दस्से गुज़शतह, माज़ी की समझाईआ। वेख लै कढ के बहि गया नक्शा, ख़ाका ज़िमीं असमान समझाईआ। नी कमलीओ मेरे महबूब ने सब दा हाल करना ख़सता, ख़सारा तकणा थाउँ थाईंआ। वे मेरी दुहाई अन्त इक्को रहिणा भगत दुआरा वसदा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड वेख्यो नसदा, भज्जे वाहो दाहीआ। अन्धेरा होणा रैण अन्धेरी मस्स दा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा पैणा हथ्थो हथ्थ दा, जगत खंडयां ख़ाक मिलाईआ । झट नारद बोलया गंगा गंगोत्रीए एहो लहिणा सी जो गोबिन्द सथ्थर यार दा घतदा, आसण कंडयां उत्ते लाईआ । उस वेले नेत्र वसदा सी पत्त दा, टहणीआं कूक कूक सुणाईआ। कलयुग खुशीआं दे विच हसदा, तालीआं रिहा वजाईआ। नाले तीर अणयाले कसदा, बिना चिल्ले रिहा उठाईआ। उह वक्त आउणा गोबिन्द शब्द अगम्मे जट्ट दा, जो जटा जूटां ख़ाक मिलाईआ। वेख्यो मेरा ढईआ किस बिध जांदा टपदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर वक्त सुहञ्जणा होणा परमेश्वर पति दा, पत्रका पिछली दए गवाहीआ। एह मानस प्यासा होणा प्यो पुत दी रत दा, रत्न अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त भरोसा रखे कोई ना यति दा, सति विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुलाईआ । नारद कहे गंगा की होया जे भाबी दिता आख, अक्खरां नाल अक्खर बदलाईआ। मैनूं शुरू तों प्रभू ने बणाया गुस्ताख़, शरारत इक्को इक दृढ़ाईआ। मैं इक गल्ल आखी सी गोबिन्द नूं जिस वेले सिखी बणाई पहली बैसाख, इक सत्त पंज छे नाल मिलाईआ। क्यों ख़बर अगम्मी गई भाख, किसे बेख़बर ने दिती सुणाईआ। मैं सक्या मूल ना वाच, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। फेर सुणी अगम्मी बात, किसे अन्दरों दिती सुणाईआ। नारदा उठ वेख लै कलयुग अन्धेरी रात, चारो कुण्ट अन्धेरा छाईआ। किसे मिले ना अमृत बूँद स्वांत, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती ख़ाली कलस रहीआं वखाईआ। नाले शब्दी धार बिन अक्खरां लिख्या पात, जिस नूं पत्रका कहे लोकाईआ। उस विच एस वेले दा हालात, जो हालत दिसे लोकाईआ। नारद कहे गंगा ना पहली ना दूजी ना तीजी ना चौथी दिसे जमात, पंजवीं वंड ना कोए वंडाईआ। नी तुसीं पंजे धारां फिरो विच कायनात, भज्जो वाहो दाहीआ। ज़रा निगाह मारो झात, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। किस दा किस नाल जुड़या नात, कवण कौण किस दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। गंगा कहे नारदा

छड देईए जगत वाली कहाणी, देवर भाबी मात पित भैण भाई की चतुराईआ। आ इक शब्द ते इक गाईए बाणी, जो बाण अणयाला तीर चलाईआ। सानूं पता नहीं साडा किधर गया अमृत रस ठंडा पाणी, कलयुग अग्नी अग्ग दिती तपाईआ। साडे विच नहाउण वाल्यां नूं आत्मा परमात्मा मिले किसे ना हाणी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। एह पिछली कथा पुराणी, पुराण अठारां चार लख सतारां हज़ार सलोक देण गवाहीआ। अगे खेल तक्कीए महानी, की महिमा बेपरवाहीआ। जिस दा रूप रंग रेख बेपहचानी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उस दी इक्को सतिगुर शब्द शब्द दिसे निशानी, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे गंगा छड दईए पिछली कथा, कथनी दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को इक तक्कीए जिस दा खेल यथार्थ यथा, यदी आपणा हुक्म वरताईआ। इक्ट्ठे हो के उस नूं टेक देईए मथ्था, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जेहड़ा भगतां दे सथ्थर लथ्था, भगती आपणी सेज बणाईआ। उह देवे अगम्मी वथा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। क्यों उस दे विच सर्ब समरथा, समरथ पुरख नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे गंगा क्यों भाद्रों हो गया चुप, ख़ामोशी विच समाईआ। गंगा कहे नारदा एहदी बड़ी करड़ी धुप्प, सब नूं रही सताईआ। भाद्रों कहे मित्रों मैनूं दिसदा जगत अन्धेरा घुप, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। सति सच गया छुप, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। झगड़ा प्या प्यो पुत, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। अपराधी हो गए सुत, मईआ नैण नैण शरमाईआ। की खेल करे अबिनाशी अचुत, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आपणी बदलण वाला रुत, रुतड़ी वेख कूड़ लोकाईआ। चारों कुण्ट दिसे लुट्ट, लुटेरा कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। सब दा नाता रिहा तुट, टुटया सके ना कोए मिलाईआ। सृष्टी भाग रहे निखुट्ट, भागमंद दिसे लोकाईआ। ओह तक लै दोस्ता मूसा ईसा मुहम्मद दी धार रही जुट, झगड़ा लहिंदी दिशा वखाईआ। झट गंगा ने उंगल रख लई आपणे बुल्ल्हां उत्ते बुट, फिर ठोडी उत्ते टिकाईआ। नारद फड़ के ज़ोर दी गुट, हलूणा दिता वखाईआ। भाद्रों हस के कहे कुछ मैथों अग्गा लओ पुछ, सहिज नाल समझाईआ। उह वेखो सज्जण सज्जणां नाल रहे रुस, रशीआ इशारे नाल दृढ़ाईआ। मैनूं इयों जापदा मेरे अगले समें आउण तों पहलां होणा कुछ दा कुछ, कसम नाल दयां समझाईआ । किसे दा हथ्थ किसे दी दाढ़ी ते किसे दी होणी मुछ, मुश्किल समझ किसे ना आईआ। एह प्रभ दा हुक्म वरतणा तुछ, तुछ मातर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। भाद्रों कहे नारदा होर सुण लै पेशीनगोई, पश्चिम वल ध्यान

लगाईआ। जिस नूं दुनियादार समझे ना कोई, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। फिरनी फर्श उत्ते दरोही, अर्श दा मालक वेखे चाँईं चाँईंआ। जगत जुगत मिले ना ढोई, जिज्ञासू चले ना कोए चतुराईआ। एह इशारा दिता कबीर ने लोई, लोयण दोहां हथ्थां नाल दबाईआ। कमलीए उह वेख लै कलयुग दा अन्त सदी चौधवीं बिना कसाई तों कसम नाल दुनिया जाणी कोही, छत्रे बकरे सारे देण गवाहीआ। ऐहो जेही होणी जेहड़ी पिच्छे कदी नहीं होई, होका दे के काहन कृष्ण रिहा सुणाईआ। कायनात शरअ दे दो धड़ विच जाणी परोई, पंडतां दे थाँ कलयुग प्रोहत बण के सब नूं थाँ थां जगत गृह नक्षत्र दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। भाद्रों कहे नारदा मैनूं किहा भारदुआज, सप्तस ऋषीआं विच्चों जणाईआ। सो मैं दस्सण लग्गा आज, आजज़ हो के प्रभ नूं सीस झुकाईआ। मेरे साहिब तेरी करनी तेरा काज, करते पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। जगत दीन दुनी दा डुब्बण वाला जहाज़, बेड़ा पार ना कोए कराईआ । क्यों कलयुग ने कूड़ी क्रिया दा चलाया रिवाज, रसम मोह ममता वाली रखाईआ। गोबिन्द दा उडदा दिसे किसे ना बाज़, बाज़ां वाला की आपणा भेव छुपाईआ। जिस ने शब्दी धार दी नवीं साजणा लई साज, साजण बणे धुर दा माहीआ। उस दे हुक्म विच हुक्म दी पैणी भाज, सृष्टी दृष्टी भज्जे वाहो दाहीआ। दीन दुनी लंगड़ी लूली दिसे अपाहज, सच रंग ना कोए समाईआ। जो इशारा कीता हज़रत मुहम्मद ने अली आपणे दामाद, दम आख़री स्वास नाल सुणाईआ। मेरा अमाम अमामा नूर अलाह सदी चौधवीं आपणे हुक्म दी हुक्म करे इमदाद, दूसर लोड़ ना कोए रखाईआ। जिस आउणा अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं तों बाद, बांग अज़ां आपणा हुक्म सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संगी इक अख्वाईआ। भाद्रों कहे मैं दस्सां बात भली, प्रेम नाल समझाईआ। जिस वेले स्वासे छडण लग्गा अली, अलाह इक ध्यान रखाईआ। मेरी शहादत तेरी बली, बलधारी तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द दी धार जिस सीस सुहाउणा तली, जगत तल्ब ना कोए रखाईआ। तूं सच दुआरा परवरदिगारा इक्को बैठा मली, मालक ख़ालक तेरी वड वड्याईआ। उह वेख लै तेरे हुक्म दी सदी चौधवीं लँघदी चली, भज्जे वाहो दाहीआ। तेरे हुक्म तों बिना जाए ना ठल्ली, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मैनूं इयों दिसदा जिस वेले हरि भगत दुआर विच जन भगतां वजाई टल्ली, टाल मटोल दे सारे लेखे ख़त्म कराईआ। इक्को यार रहिणा ते इक्को रहिणी यार दी गली, गलवकड़ी इक्को नाल पाईआ। उस वेले मुहम्मद दी उम्मत होणी फली, अन्तिम फल फुल्ल तेरी भेंट कराईआ। मेरा दुलदुल नहीं फिरना विच दली, दिलदार तेरी ओट रखाईआ। तूं वाहिद मालक नूर नुराना तेरी धार इकल्ली, कलमा कायनात बदलाईआ। सब दी अन्तर अन्तर

जाए सली, सलल तेरा हुक्म बेपरवाहीआ। फिरनी दरोही जली थली, महीअल देण दुहाईआ । चरागां विच रहिणी नहीं तेल दी पली, साडे मकबरे रोवण मारन धाहीआ। तेरा वेस होणा अछल अछल्ली, वल छलधारी तेरी समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। भाद्रों कहे नारदा सारे मिलके कहीए वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रावी दी लईए सलाह, मशवरा इक्को इक बणाईआ। फेर इक दूजे दे बणीए गवाह, शहादत देईए भुगताईआ। फेर इक्को प्यार मुहब्बत विच बणाईए मलाह, बेड़ा इक्को कंध टिकाईआ। फेर भगतां नूं देईए सुणा, सुनेहड़ा चाँईं चाँईंआ। गुरमुखो सब दा इक्को पिता इक्को माँ, पुरख अकाल नूर अलाहीआ। इक्को इष्ट लैणा मना, सीस जगदीस इक झुकाईआ। इक्को ढोला लैणा गा, जो दस्सया गोबिन्द माहीआ। इक्को मौला लैणा मना, जो मनसा पूर कराईआ। इक्को कौल इकरार लैणा निभा, जो वायदे नाल समझाईआ। इक्को सब ने करनी दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। इक्को सब दा हक खुदा, ख़ालक ख़लक नूर अलाहीआ। जो कदे ना होवे जुदा, जुज़ वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। सारे उसे तों होईए फ़िदा, आपणा आप मिटाईआ। जिस ने मार्ग करना सिधा, सति सच समझाईआ। जन भगतां मिलण दी बणा के बिधा, मेला मेले सहिज सुभाईआ । भाद्रों कहे नारदा सारे मिल के पाईए गिध्धा, ताड़ी बिन हथ्थां हथ्थ वजाईआ। आह वेख लै मैं उस दी सरनी डिग्गा, निव निव सीस झुकाईआ। प्यार मुहब्बत दे विच भिज्जा, प्रेम विच समाईआ। मैं पिछले सतिजुग दा गिज्झा, उसे दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। नारद कहे भाद्रों मित्रा मेरया, सज्जण सुण लै मीत। मेरे अन्दर चाउ घनेरया, दस्सां साची रीत। पहलों पिछलीआं ढाह लै ढेरीआं, झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत। शरअ दीआं छड दे घुंमण घेरीआं, मसल्यां वाली नहीं कोई रीत। हुण करनीआं पैणीआं दलेरीआं, हौसला करना चीत। मैनूं ऐं जापदा लहिंदयों चलणीआं हनेरीआं, जिस सब दी पुट्ठी करनी नीत। समुंदरां विच पैणीआं घुंमण घेरीआं, सागराँ मारनी चीक। शाह सुल्ताना ढाउणीआं ढेरीआं, कलयुग अन्तिम समां रिहा उडीक। हज़रत नूह ने डोबणीआं बेड़ीआं, जिस नूं खुदा ने दिती हक तौफ़ीक। उह वेख सब दीआं जड़ां दिसण उखेड़ीआं, सदी चौधवीं वेला नज़दीक। पता नहीं बचणीआं केहड़ीआं केहड़ीआं, किस दा लेखा जाणे लाशरीक। उठ वेख लै तन वजूदां खेड़ीआं, निगाह मार लै नाल बारीक। प्रभ दीआं जुग जुग धारां केहड़ीआं, जो खेले खेल हस्त कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक साहिब अनडीठ। नारद कहे गंगा मैं पिछला बोलया दिता छड्ड, छडी जगत लोकाईआ। आपां

हो जाईए अड्ड, वखरा वखरा गृह सुहाईआ। झट भाद्रों लेखा बैठा कढ्ढ, पूरब रिहा वखाईआ। निगाह मारो प्रभ धर्म निशाना रिहा गड्ड, गॉड हो के आपणी कार भुगताईआ। खुशीआं विच लडावे लड, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। जिस दे हुक्म नाल कलयुग कूड़ कूड़यारा जावे भज्ज, भज्जे वाहो दाहीआ । सतिजुग साचा जावे सज, साजण मिल के वजे वधाईआ। सारे मिल के बेनन्ती करीए अज्ज, भाद्रों रिहा सुणाईआ । नारदा तूं बोल जैकारा गज्ज, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रावी नाल मिलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे चरण कवल बहीए सज, सज्जणा देणी माण वड्याईआ। तूं सानूं लोकमात लैणा लभ्भ, वेखणा थांउँ थाईंआ। तूं नूर अलाही अगम्मा रब्ब, यामबीन तेरी सरनाईआ। जन भगत सुहेले आपणे दर ते सद्द, सदके वारी घोल घुमाईआ। तैनूं वेखदे रहे जुग चौकड़ी कद, कदीम दे मालक ध्यान लगाईआ। आपणी कलयुग अग्नी वेख लै अग्ग, अगला भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे नी गंगा ना कोई देवर ना कोई भाबी, जगत नाता ना कोए रखाईआ। उठ निगाह मार शताबी, शरअ तों बाहर वेख वखाईआ। इक जल्वा जोत नूर जल्वागर आफ्ताबी, जिस नूं रवि शशि सीस निवाईआ। जिहदी सूरत सब तों वखरी सादी, सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस दा हुक्म पुराणा माज़ी, कदीम दा चलया आईआ। जिस दे हुक्म विच नाम कलमे शरअ निमाज़ी, जगत जुगत वड्याईआ। जिसने गुर अवतार पैग़म्बरां दीन मज़्ब दी दिती आराज़ी, राज़क रिज़क रहीम अख्वाईआ। उह शहिनशाह शाह नवाबी, पातशाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मेला आप मिलाईआ। गंगा कहे नारदा साडी जगत वाली नही गाथा, दीन दुनी समझाईआ। साडा संसारीआं वाला नहीं साथा, जम्मे ते मर जाईआ। साडा मालक इक रघुनाथा, जिस नूं रघुपति सीस निवाईआ। जो सदा अनाथ अनाथा, निमाणयां दए वड्याईआ। उस दे चरण टेकीए माथा, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया राथा, रथवाही हो के वेख वखाईआ। उस दा इक्को सिमरन इक्को पूजा इक्को पाठा, नाम कलमा इक दृढ़ाईआ। इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदुआला माठा, चर्चा गुरुदुआरयां इक्को रंग वखाईआ। इक्को सति सरूप दिसे तीर्थ ताटा, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती जिस दे निव निव लागे पाईआ। इक्को अमृत रस निझर सरोवर देवे बाटा, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। जिस जुग जुग मेटणीआं वाटां, कलयुग अन्तिम लहिणा दए चुकाईआ। जन भगतां पूरा करे घाटा, वस्त अगम्म नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी सहिज सुखदाईआ। नारद कहे भाद्रों कुछ भगतां देईए दस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। झट गंगा बोली हस, नेत्र

लोचण नैण नैण बिगसाईआ। गोदावरी आई नस्स, कूक कूक सुणाईआ। झट मैं गोबिन्द दे लए चरण झस, हथ्थ तलीआं हेठ रखाईआ। पर उहने मैनूं नहीं किहा बस, मस्त हो के बैठा सेज हंढाईआ। मेरे अन्दर आया रस, रोम रोम वजी वधाईआ। मैं खुशीआं विच गाया जस, ढोले सिफ्त सालाहीआ। झट गोबिन्द ने मेरे हथ्थ उत्ते हथ्थ दिता रख, आपणी तली हेठ टिकाईआ। नाल इशारा दिता खेल वेख पुरख समरथ, की करनी कार कमाईआ। जिस वेले सति धर्म दा बुरज गया ढठ, धरनी धरत धवल धौल रहिण ना पाईआ। माण रहिणा नहीं अठसठ, तीर्थ तट नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गोदावरी उस वेले आउणा उस नठ, जो मैनूं आपणी गोद टिकाईआ। उलटी गेड़नी लठ, नव सत्त भुआईआ। तुहाडा सब दा करना इक्ट्ठ, इक्को दर वखाईआ। जोत नूर जगाउणा लट लट, ज़हूर आपणा इक चमकाईआ। दीन दुनी ने उस नूं कहिणा जट्ट, जटा जूट समझ कोए ना पाईआ। जिस शरअ दी मेटणी वट्ट, वटणे भगतां नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। झट नारद कहे गंगा मैनूं समझीं ना देवर छोटा, मेरी आयू समझ किसे ना आईआ। मेरा पाटा ना वेखी लंगोटा, लंगोटी जगत ना कोए बंधाईआ। मैं जुग चौकड़ी वेखे कोटी कोटा, कोटन कोटि चौकड़ीआं खुशी बणाईआ। मैं किसे माई ने जम्मया नही पुत ना उस दा अगे होया कोई पोता, पुत पोतरे बणत ना कोए बणाईआ। मैं सेज नहीं कोई सोता, जगत सिँघासण ना कोए विछाईआ। मैं हस्सया नहीं कदे रोता, नेत्र नैणां ना नीर वहाईआ । मैं हथ्थ ना फड़ी गढ़वी ना फड़या लोटा, शरअ विच कदे ना आईआ। मैं इक्को नूर नूर दी जोता, जोती जाते दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ । नारद कहे गंगा कुझ मैनूं दस्स गाउण, गावत गावत गावत खुशी बणाईआ। नी तेरी ठण्डी धारा पौण, पाणीआं विच समाईआ। एस वेले उठ के निगाह मार लै प्रभू दे भगत कौण, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल मिलाईआ । किस नाम कलमे दी उच्ची धौण, कवण ग्रन्थ शास्त्र दए वड्याईआ। कवण जगत कूड़ कूड़यार दलिद्र आवे लौहण, पतित पुनीत बणाईआ। कौण नाम निधाने आवे प्रचाउण, पर्चा ज़िमीं असमान वखाईआ। कौण सचखण्ड दुआर आए बहाउण, दरगाह साची सच टिकाईआ। कौण विछड़े आए मिलाउण, मेला हरि जगदीस कराईआ। झट गंगा लगी समझाउण, समझ सहिज सहिज समझाईआ। नारदा उह परम पुरख परमात्मा जेहड़ा रुस्सयां नूं आया मनाउण, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रंग इक रंगाईआ। गंगा कहे नारदा वे सुण लै मेरी गल्ल, हथ्थ कन्नां उत्ते टिकाईआ। तूं नेत्र मीट लै पल, पलकां दे पिच्छे वेख धुर दा माहीआ। फेर निगाह मार लै बलख दुआरे राजे

बलि, बावन की समझाईआ। जिस दा हुक्म सदा अटल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। की सुनेहड़े देवे घल, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। ज़रा उस दे वल चल, जो निहचल बैठा धुर दा माहीआ। जिस खेल खेलणा कलयुग कल, कलि कल्की इक अख्वाईआ। उस दा दुआरा लईए मल्ल, दर ठांडे डेरा लाईआ। उस दा भाणा लईए झल, जो आपणी झलक रिहा वखाईआ। नारद कहे गंगा पता नहीं उहदा केहड़ा होणा छल, वल छल धारी आपणा हुक्म वरताईआ। की खेल करे जल, समुंद सागर वेखण नैण उठाईआ। की लेखा जाणे थल, मारू रेत अक्ख खुल्लाईआ। की धरनी दा देवे फल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। भाद्रों कहे प्रभू मेरी निमस्कार तेरे चरण, चरणोदक देणा जाम प्याईआ। झगड़ा मेटणा वरन बरन, दर साचे मंग मंगाईआ। तूं मालक करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। तेरा ढोला सारे इक्को पढ़न, दीन दुनी देणा समझाईआ। तेरी मंज़ल रैहबर महबूब तेरे प्यारे चढ़न, राह विच ना कोए अटकाईआ। निरगुण धार तेरा दर्शन करन, जोती जाते पुरख बिधाते देणी वड्याईआ। पुरख अकाले बख्शणी साची सरन, सरनगति रखाईआ। जन भगतां नेत्र खोल्ल दे हरन फरन, निज लोचण नैण कर रुशनाईआ । तेरे सच दुआरे वड़न, पूरब पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। भाद्रों कहे प्रभू मैं मंगता, भागहीण जग मंद। मेल मिला दे साची संगता, अज्ञान अन्धेर मिटा दे अन्ध। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, खुशी करा दे बन्द बन्द। लेखा चुका दे भुख नंग दा, हरिजन चमका लै आपणे चन्द। लहिणा देणा पूरा कर दे हँ ब्रह्म दा, आवण जावण मिटा दे पन्ध। साडा निशाना तेरे धर्म दा, मेहरवान लगा लै अंग। साडा लेखा रहे ना कलयुग कर्म दा, आत्म धार बख्श अनन्द । लहिणा पूरा कर दे जन्म दा, जन भगतां तेरा गाया छन्द। वक्त दुहेला रहे ना भरम दा, भाण्डा भरम ढाह दे कंध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा इक्को तेरा ल्या मंग।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड वाड़ा पहूविंड, लक्ष्मण सिँघ बलवन्त सिँघ तलवंडी जल्ले खां,
जरनैल सिँघ शाहवाला, नछत्र सिँघ शाहवाला, करतार कौर रटौल,
सुरजीत कौर मनावां, मुखत्यार सिँघ कामल वाला ✪

पंज तत कहिण प्रभ तेरी सरन सरनाई गए लाग, लग मातर जग खेत्र डेरा ढाहीआ। दीन दुनी दे मालक साडा

जगदा रहे चराग़, चरागाहां तेरी होवे रुशनाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते साडी बुझा आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्ह दे जाग, जागरत जोत बिन वरन गोत नज़री आईआ। हँस रूप बणा दे काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। दुरमति मैल धो दे दाग़, पतित पुनीत तेरे हथ्थ वड्याईआ । अन्तर अन्तष्करन उपजा दे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। त्रैगुण माया ना डस्से नाग, त्रैगुण अतीते होणा आप सहाईआ। सच स्वामी बणना धुर दा कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहल तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी सरन सरनाई गए ढठ, जगत माण ना कोए वड्याईआ। साडा लेखा जाण लै अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध नाल मिलाईआ। इक दुआरे होया इक्ठ्ठ, गृह मन्दिर वजे वधाईआ। पिछला पन्ध मुकाया नठ, अगे मार्ग इक दृढ़ाईआ। मन मनसा उलटी गेड़ दे लठ, मनुआ उठ ना दहि दिश धाईआ। कूड़ी क्रिया कर दे भठ, खेड़ा काया गढ़ सुहाईआ। झगड़ा मुका दे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, काया काअबा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे भगत सुहेले, जुग जुग सेव कमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेले मेले, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। आपणे दसणे खेल नवेले, निज घर पर्दा देणा चुकाईआ। किरपा करनी सजण सुहेले, दर ठांडे मंग मंगाईआ। दीन दुनी तों कर के वेहले, रंग आपणा देणा रंगाईआ। इक्को घर समझा दे गुरु गुर चेले, चेला गुर इक वड्याईआ। दीपक जोत जगा दे बिन तेले, बाती कमलापाती नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे चरण कवल नमस्ते, नमो नमो सीस झुकाईआ। सानूं पा लै आपणे रस्ते, रैहबर हो के दया कमाईआ। तेरा खेल तक्कीए हसदे हसदे, हस्ती वेखीए बेपरवाहीआ। झगड़े मेट दे रैण अन्धेरी मस दे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अमृत धार बख्श दे साचे रस दे, अंमिओं रस आप चुआईआ । मुख भरे होण सिफ्त सलाही तेरे जस दे, ढोले गाईए चाँईं चाँईंआ। खेल तक्कीए तेरे रवि शशि दे, सूरीआं चन्द नाल मिलाईआ। चरण कवल सदा रहीए वसदे, धरनी धौल देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक वेख वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ किरपा कर पुरख समरथ, हरि करते ओट तकाईआ। कूड़ी क्रिया साडी मथ, मस्तक धूड़ दे रमाईआ। नाम अगम्मी झोली पा दे वथ, अतोट अतुट आप वरताईआ। परम पुरख परमात्म सब कुझ तेरे हथ्थ, दूसर नज़र कोए ना आईआ। सगल वसूरे जाण लथ, निज नेत्र लोचन कर रुशनाईआ। लेखा पूरा

कर दे जो आशा रखी राम बेटे दशरथ, त्रेता जुग दए गवाहीआ। तूं गहर गम्भीर अलखणा अलख, कथनी कथ ना सके राईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म मेट दे रथ, रथवाही बणके धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सब कुझ तेरे हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लहिणा देणा कलयुग अन्त कन्त भगवन्त देणा चुकाईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड बस्ती तेगा सिँघ, वाली साधू सिँघ हरी सिँघ
महिन्दर सिँघ अर्जन सिँघ बसती खलील, तेज कौर वलूर ✪

पंज तत कहिण प्रभ जुग जुग हुंदी रही राख, मिट्टी ख़ाक विच समाईआ। साडे अन्तष्करन अन्दर आई अन्तिम भाख, भाख्या दे के दईए जणाईआ। सच स्वामी तेरा सदा मंगीए साथ, सगला संग बणाईआ। सानूं रखणा दे कर हाथ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा निरगुण तेरी गाईए गाथ, सूखम ढोला अगम्म अथाहीआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब कला समराथ, पति पतिवन्ता नूर अलाहीआ। असीं ग़रीब निमाणे अनाथा अनाथ, दीनन हो के मंग मंगाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे मस्तक माथ, धूड़ी तेरे चरणां ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी दीन दुनी उडदी धूड़, चारों कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। साडा नाता जुड़या कूड़, कूड़ कुटम्ब दिसे लोकाईआ। असीं मूर्ख होए मूढ़, ततव तत ना कोए चतुराईआ। किरपा निधान सच बख्श दे आपणी धूड़, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। धुर दा नाम रंग चाढ़ दे गूढ़, एथे ओथे उतर कदे ना जाईआ। लख चुरासी कट दे जूड़, जन्म जन्म ना कोए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेखा आप मुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी तेरे अगे अरजोई, बेनन्ती विच सीस निवाईआ। सानूं मिले किते ना ढोई, चारे खाणी भज्जीए वाहो दाहीआ। साडा मित्र सुहेला बणया ना कोई, अवतार पैग़म्बर गुरु पल्ला गए छुडाईआ। दुरमति मैल किसे ना धोई, पापां करे ना कोए सफ़ाईआ। आत्म परमात्म तेरे नाल प्रोई, पारब्रह्म ब्रह्म तेरे विच समाईआ। अन्त तेरे अगे साडी दरोही, रो रो के नेत्र नैणां नीर वहाईआ, साडी पत पतिपरमेश्वर गई खोही, ख़लक दे ख़ालक देणी सरनाईआ। असीं पंज तत तेरे हुक्म दे गरोही, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा

वेख लै अन्त अख़ीर, आख़र देईए जणाईआ। सानूं इशारा दे के गए अवतार पैग़म्बर गुरु पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर जणाईआ। तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे बेनज़ीर, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जिस दी नज़र ना आवे तस्वीर, त्रैगुण अतीता धुर दा माहीआ। संदेसा दे के गया कबीर, कबरां तों बाहर सुणाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला जिस वेले शरअ तोड़े ज़ंजीर, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडी बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। झगड़ा मेट के शाह हकीर, दीन दुनी इक्को रंग वखाईआ। रविदास दा लेखे ला कसीर, कूड़ कुकर्म दा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान होवे गुणी गहीर, गहर गवर आपणा भेव चुकाईआ। तुहानूं अन्तिम देवे धीर, धीरज नाल समझाईआ। जन्म मरन दी कट के भीड़, आप आपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं मालक बेपरवाह, बेपरवाह इक अख्वाईआ। साडी मिन्नत इक दुआ, दर ठांडे मंग मंगाईआ। अन्त तेरे विच जाईए समा, समाप्त होवे ख़लक ख़ुदाईआ। सतिगुर शब्द साडा गवाह, शहादत अवतार पैग़म्बर गुरु भुगताईआ । विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिला, सगला संग संग वखाईआ। फेर लोकमात ना जाईए आ, मात गर्भ ना डेरा लाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते आपणी जोत लैणा मिला, आत्म संग ततां पार कराईआ। बिन रसना तों तेरा ढोला गाईए वाह वाह, वहिगुरु तेरी वड वड्याईआ। तूं नूर नुराना इक अलाह, आलमीन इक अख्वाईआ । राम रामा काहन कान्हा रिहा अख्वा, आख़र तेरी ओट तकाईआ। दर ठांडे सीस देईए झुका, सीस जगदीस तेरे भेंट कराईआ। असीं पंज तत तेरे भगत सुहेले तूं मालक अगम्म अथाह, अगम्मड़े तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडा हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा आपणे लेखे ला, चम्म दृष्टी अगे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सानूं तेरे मिलण दा चाअ, चाउ घनेरा एकँकार इक्को इक जणाईआ।

१४
२४

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड मुगला रुकना ज़िला फ़िरोज़पुर
हरबंस कौर दे अन्तिम संस्कार समें ✪

आत्मा कहे मैं पुज्जी सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेरी साहिब नूं निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। जन भगतो तुसीं मेरे धर्म धार दा परिवार, बंस सरबंस सोहणा नज़री आईआ। किरपा कीती आप निरँकार, निरवैर पुरख दिती वड्याईआ। गोबिन्द दा लहिणा देणा लेखा दिता निवार, पूरबला पूरब झोली पाईआ। मैं

छड जगत संसार, भज्जया वाहो दाहीआ। पंज तत जगत दा अधार, दीन दुनी रंग रंगाईआ। मेरी सब नूं जै जैकार, खुशीआं ढोले गाईआ। सोहणा दिवस दिहाढ़ा दीन दुनी जगत शनिचरवार, भाद्रों नौ नव रंग रंगाईआ। मैं खुशीआं दे करां इज़हार, सिफ्तां दे ढोले गाईआ। धन्नभाग मेरा वक्त सुहञ्जणा कीता आप निरँकार, कुदरत दे मालक दया कमाईआ। मेरा लेखा पूरा कीता निर्धन पाई सार, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। मेरा खुशीआं वाला होए सस्कार, अग्नी अग्ग नाल वड्याईआ। मेरी मढ़ी दा पुकारे धूंआधार, पवण पवणां विच समाईआ। संदेशा देवे मेरा लेखा ज़िमीं असमाना बाहर, त्रैगुण दा संग रिहा ना राईआ। मैनूं कोई रोवे ना ज़ारो ज़ार, बच्चे बृद्ध बाल नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं खुशी नाल आपणे घर दी महकदी महकदी छडी गुलज़ार, चिन्ता जगत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। आत्मा कहे मैं दस्सां आपणी वंड, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणीआं दितीआं तजाईआ। मैं तज के खण्ड ब्रह्मण्ड, पुरीआं लोआं गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। मैं पुजी दरगाह साची सचखण्ड, जिथ्थे सतिगुर शब्द दए वड्याईआ। मैं सदा सुहागण सुलखण सिंघ ना समझे आप नूं रंड, जगत विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। मेरा साहिब स्वामी मेरे गृह मेरे बच्चयां नूं पावण आया ठंड, सुख सागर विच रखाईआ। जिस दी प्यार मुहब्बत वाली धर्म धार वाली गंढ, दो जहान ना कोए खुल्लाईआ। सब ने इक्को ढोला गाउणा तूं मेरा मैं तेरा छन्द, सोहँ राग अगम्म अथाहीआ। जिस दे नाल लख चुरासी मुके पन्ध, जगत जन्म दा लेखा रहे ना राईआ। मेरे प्यार विच ढोले गावण मेरे फ़र्जंद, इकबाल दिलबाग़ आपा संग बणाईआ। मैं उस प्रभ दा नूरी बणां चन्द, जिस दी दो जहान रुशनाईआ। मेरा मेल मिल्या जिस दा खेल पुरी अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मैं रूप सति सरूप होया ब्रह्म हँ, आत्मा परमात्मा विच मिलके वजी वधाईआ। जगत जहान दी मंज़ल गया लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ । सतिगुर शब्द शब्दी धार सुआया उत्ते पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी बणत ना कोए बणाईआ। मेरा लहिणा देणा जगत दीन दुनी दा मुका संग, सगले संगी मिलके वजी वधाईआ। सारे खुशीआं विच प्रभू कोलो मंगो खुशी वाली मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। साहिब सुल्ताना श्री भगवाना जन भगतां एसे तरह चाढ़ीं आपणा रंग, रंगत आपणी नाल रंगाईआ। जिस दे चरणां विच यमुना सरस्वती गोदावरी बहै गंग, गंगोत्री भज्जे वाहो दाहीआ । उह मेरे लेखे लावे शरीर दे तत पंज, पंचम दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। जन भगतो मेरे वलों करयो कोई ना रंज, ग़मी चिन्ता ना कोए रखाईआ। धन्नभाग गुरमुख गुरसिख आत्मा कहे मेरी खुशी दी चढ़े अज्ज जंञ, लाड़ा धुर दा ल्या बणाईआ। नेत्र नीर वहावे कोई ना अंझ, खुशीआं ढोले गाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा

ना कोई सवेर ना सञ्झ, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जिस वेले मेरा संस्कार होवे अरंभ, जैकारे इक्की देणे लगाईआ । मेरा साहिब दीन दयाल सदा बख्शंद, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धार सतिगुर एथे ओथे दो जहाना संग, सगला संगी बहु रंगी आपणी दया कमाईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस फ़िरोज़पुर छाउणी राम सिँघ गुरचरण कौर फ़िरोज़पुर शहर, संपूरन सिँघ फ़िरोज़शाह, सुलखण सिँघ मुगला रुकना, गुरदीप सिँघ तूत, रमेश चन्द फ़िरोज़पुर शहर, जुगिंदर सिँघ बस्ती खलील, सरदूल सिँघ बालसचन्द्र ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडे मीत सज्जणा, स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। चरण धूड़ कराउणा अगम्मा मजना, दुरमति मैल दो जहान रहिण किछ ना पाईआ। काया माटी ठीकर अन्तिम सब दा भज्जणा, तन वजूद हक महबूब लोकमात रहिण ना पाईआ। तेरा नाम नगारा एकँकारा इक्को वजणा, दो जहानां करे शनवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा पड़दा कजणा, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरे प्रकाश दा इक्को दीपक जगणा, जोती जाते पुरख बिधाते अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ। लोकमात मेहरवान हो के लभ्भणा, खोजणा थांउँ थाईंआ । असीं आसा रखी सभना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रहे सुणाईआ। साडे नूर अलाही रबना, यामबीन तेरी वड्याईआ। धुर दे गोपाल मूर्त मदना, मद सूदन तेरी सरनाईआ। साडी पिछली मेट दे हदना, हदूद नज़र कोए ना आईआ। साडा लेखे ला लै बदना, बदीआं दा पन्ध मुकाईआ। तेरी सरन सरनाई आहला अदना, अदल इन्साफ़ लैणा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ आपणे लेखे लैणा ला, वखरा जुज़ ना कोए रखाईआ। निरगुण धार बणना मलाह, सरगुण बेड़ा आप उठाईआ। साडे वाहिगुरु नूरी अल्ला, राम राम तेरी दुहाईआ। नूरी मालक हक खुदा, ख़ादम हो के सीस झुकाईआ। भगत उधारना तेरी अदा, अदब नाल मंग मंगाईआ। पूरब वायदा पूर करा, करनी दे करते होणा सहाईआ। तेरा नूर ज़हूर होवे रुशना, जोती जाते डगमगाईआ। अन्ध अन्धेरा देणा गुआ, कूड़ कूड़यार दा लेखा रहे ना राईआ। सच स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट लई तका, आसरा इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभू असीं तेरे दर दे मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ।

गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बोध अगाधी धुर दे पंडते, बिन अक्खरां अक्खर दे दृढ़ाईआ। झगड़े मेट दे कूड़े मन दे, मनसा आपणे नाम विच समाईआ। प्रकाश देदे नूरी चन्द दे, जोती जाते डगमगाईआ। खेल वेखीए तेरे अगम्म दे, अगम्म अगम्मड़े पड़दा देणा उठाईआ। असीं प्यारे प्रीतम तेरी धार ब्रह्म दे, पारब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। साडे लहिणे मुकाउणे काया माटी चम्म दे, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। वणजारे होईए तेरे दम दे, स्वास स्वास तेरा नाम ध्याईआ। झगड़े मिटा दे चिन्ता ग़म दे, ग़मख़्वार होणा सहाईआ। असीं फेर रहीए ना जम्मदे, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा तेरे चरण कवल जाए लग, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। सानूं हँस बणा लै कग, दुरमति मैल धुआईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, हरि करता इक अख्वाईआ। असीं कलयुग जीव अल्पग, तेरी ओट तकाईआ। सानूं दर्शन देणा उपर शाह रग, नव दुआरयां डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया साड़े ना अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। इक्को परसीए तेरे पग, दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। किरपा कर दे स्वामी झब, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साडे नूर अलाही रब्ब, यामबीन तेरे हथ्थ वड्याईआ। सानूं चुरासी विचों कढ, जम की फाँसी दे तुड़ाईआ। साडे लेखे ला लै मास नाड़ी हड, रक्त बूंद तेरी भेंट चढ़ाईआ। दरोही लोकमात जाईं ना छड, सचखण्ड मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। तेरा धर्म दा धर्म निशाना देईए गड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। पंज तत कहिण साडी आसा करदे पूरी, पूरन ब्रह्म दे जणाईआ। तेरा दर्शन तक्कीए नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। जो इशारा दिता मूसा उत्ते कोहतूरी, तुरीआ तों परे पड़दा लाहीआ। कलयुग अन्तिम साडी तक मजबूरी, बिन नैणां नैण उठाईआ। तेरी मंज़ल होई दूरी, दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाईआ । असीं दर्शन करना चाहुंदे हज़ूरी, हज़रतां दे हज़रत तेरी ओट तकाईआ। बिना भगतां तों तेरी करे ना कोए मशहूरी, मशवरे वाला नज़र कोए ना आईआ। साडी पूरबले जन्म दी दे दे मज़दूरी, दर तेरे मंग मंगाईआ । साडी शरअ नहीं कोई कूड़ी, कूड़ कुटम्ब दिते तजाईआ। तेरे चरण दी मस्तक लाईए धूड़ी, टिक्के ख़ाक रमाईआ । आपणी खुमारी दे दे मस्ती वाली गूढ़ी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा इक रखाईआ। पंज तत कहिण साडी आसा तक लै तृष्ना, तृखा तेरे चरण कवल टिकाईआ। साडा लेखा पुछ लै कोलों शिव ब्रह्मा विष्ना, विश्व दे मालक ध्यान लगाईआ । लहिणा तक लै जो संदेशा दे के गया रामा कृष्णा, काहन घनईया इक दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त तेरी

किरपा बिन मनुआ किसे नहीं टिकणा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। दीन दुनी ने शरअ दे हट्ट विच विकणा, अन्त कीमत कोए ना पाईआ। अन्तष्करन किसे ना जितणा, ममता मोह लोभ हल्काईआ। तन वजूद अन्दर कूड़ी क्रिया कर कर पिटणा, सांतक सति ना कोए रखाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी किसे ना लिटणा, धूंणीआँ जगत ख़ाक रमाईआ। नूर नुराना शाह शहाना श्री भगवाना किसे ना दिसणा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मेल मिला धुर दे पितना, पतिपरमेश्वर गोद ना किसे उठाईआ। बिना साहिब सुल्तान भगतां कारज ना किसे नजिठणा, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। करवट विच आपणी बदल लै पिठना, सनमुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी इक्को इक अलख, अलख अगोचर देईए सुणाईआ। सानूं दर्शन दे प्रतख, नूर नुराना डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों रख, रक्षक होणा थांउँ थाँईंआ। असीं तेरा विछाया सथ, सथर यारड़े सेज लैणी हंढाईआ। निज नेत्र खोल्ह दे अक्ख , बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। दीन दुनी तों होईए वख, वखरा घर देणा वखाईआ। जिथ्थे तेरी जोत जोती जाते जगे लट लट, नूर नुराने डगमगाईआ। शब्द अगम्मी मार सट्ट, धुन अनादी नाद जणाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा पूरा करदे झट, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। तेरी सरन सरनाई बिन कदमां तों जाईए ढठ, फड़ बाहों लैणा उठाईआ। निगाह मार लै असीं संगी बणे अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध नाल रलाईआ। जगत जहान दी मंज़ल जाईए टप, टापूआं दा पैंडा रहे ना राईआ। पिछला लेखा पिच्छे देणा ठप, अगे आपणा हुक्म सुणाईआ। सानूं करना पए कोई ना तप, जगत तप्सया ना कोए रखाईआ। तूं परमेश्वर स्वामी पति, पारब्रह्म प्रभ देणी दया कमाईआ। सानूं आउणा पए फेर ना वत, वतनां दे मालक बेवतना आपणे घर वसाईआ। निरगुण धार जोड़ लै आपणा नत, सरगुण हो के देईए सुणाईआ। लेखा रहे ना साडा रत, रत्न अमोलक हीरे आपणे लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच देणी वड्याईआ । पंज तत कहिण साडे आदि निरञ्जणा, आदि पुरख तेरी सरनाईआ। धुर दाते दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। निज नेत्र नाम दा पा के अंजणा, लोचन नैण देणा खुल्हाईआ। इक्को तेरा सुणीए नदना, नादी धुन देणी दृढ़ाईआ। तूं गोपाल मूर्त मदना, सति सरूप सोभा पाईआ। तेरा दीपक जोती इक्को जगणा, दो जहानां डगमगाईआ। सानूं आपणे गृह विच सद्दणा, सदके वारी घोल घुमाईआ। असां तेरा दुआरा लँघणा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साडा भाग होए ना मंदना, मंद भागां देणी वड्याईआ। साडा पन्ध मुका दे विच वरभण्डणा, ब्रह्मांड दा पन्ध चुकाईआ। झगड़ा रहे ना जेरज

अंडणा, उत्भुज सेत्ज ना कोए वखाईआ। सच स्वामी इक्को बख्श अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। असीं पंज तत तेरे भगत सुहेले साडी मन्ज़ूर कर लै बन्दना, बन्दगी विच सारे सीस निवाईआ। फेर समां कदे नहीं लभ्भणा, जुग चौकड़ी बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को दर दवारा बख्शणा पदणा, गृह इके विच रखाईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड शेख़ हरजिंदर कौर परसिंन कौर धर्मजीत कौर माया कौर ✪

पंज तत कहिण सो पुरख निरञ्जण साडे मेहरवान, हरि पुरख निरञ्जण तेरी सरनाईआ। एकँकार देणा दान, आदि निरञ्जण दया कमाईआ। अबिनाशी करते होणा मेहरवान, श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म होणा निगहबान, बिन नैणां नैण तकाईआ। सतिगुर शब्द आपणे गृह करीं परवान, पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। असीं अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जगत निशान, दीन दुनी रूप वखाईआ। त्रैगुण माया साडा बणया विधान, जगत तृष्ना नाल रलाईआ। नव
१६ दुआर वेख दुकान, नव रस जगत जगत हल्काईआ। आत्म दरसी नौजवान, गृह मन्दिर पड़दा देणा चुकाईआ। तूं शाहो १६
२४ भूप सुल्तान, निरवैर पुरख अगम्म अथाहीआ । असीं आजिज़ हो के मंगीए दान, ग़रीब निमाणयां झोली डाहीआ। तेरे २४
बालक बाल नादान, बाली बुद्ध ना कोए चतुराईआ। करते पुरख साडी बेनन्ती करीं परवान, पारब्रह्म आसा आसा पूर कराईआ। जन भगत भगती धार विच्चों पहचान, सतिगुर शब्द नाल वड्याईआ। बिन अक्खरां तों निरअक्खर धार दे ज्ञान, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। अमृत रस निझर झिरना दे पीण खाण, बूंद स्वांती नाभी कवल टपकाईआ। तेरे शब्द दी शब्द सुणीए धुन्कान, अनहद नादी नाद देणा वजाईआ। जोती जोत तेरा तक्कीए रूप महान, बिन रंग रेख सोभा पाईआ। साडे आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सति सरूपी साचे काहन, रहमत रहीम रहमान देणी कमाईआ। तेरे चरण कवल तत निमाणे बिना सीस तों सीस झुकाण, जगदीस तेरी बेपरवाहीआ। साडा काया काअबा पवित्र कर मकान, गृह मन्दिर दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर स्वामी होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभू साडा सुहा दे मन्दिर, तन वजूद महबूब तेरी वजे वधाईआ। भाग लगा दे डूंघी कंदर, काया कुटीआ वेख वखाईआ। बजर कपाट तोड़ दे जंदर, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ । मनुआ दहि दिश उठ ना धाहे बन्दर, नव नव दा पन्ध मुकाईआ। प्रकाश दे दे बिना सूर्या चन्द्र, जोती जाता डगमगाईआ। भाग लगा दे साडे अंगण, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। असीं तत विचारे

एकँकारे तेरा दर आए मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं सहिब सूरा सरबंगण, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। पुरख अकाले चाढ़ दे रंगण, रंग रंगीले आपणा रंग रंगाईआ। लेखे ला लै तत पंजण, पंचम देणी माण वड्याईआ। पन्ध रहे ना दीन दुनी जगत ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड दा डेरा ढाहीआ। लेखा मुका दे जेरज अंडण, उत्भुज सेत्ज रूप ना कोए बणाईआ। दूई द्वैती ढाह दे कंधन, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। आपणी चरण धूड़ बख्श दे चन्दन, टिक्के ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। सच दुआर बख्श अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अंतश बख्श दे नूर, नूर नुराने दया कमाईआ। तेरा वेखीए सच ज़हूर, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। सानूं शब्द सुणा दे आपणी अगम्मी तूर, तुरीआ दा भेव रहे ना राईआ। साडी आसा मनसा पूर, तृष्ना कूड़ जगत चुकाईआ। तेरा दर्शन करीए हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक इक्को नज़री आईआ। तेरे शुकराने विच होईए मशकूर, शुक्रिया कहि के सीस निवाईआ। साडे अन्दरों तोड़ना गढ़ ग़रूर, गुरबत देणी मिटाईआ। मनसा मन ना पाए फ़तूर, फ़तवा पंजां देणा थांउँ थाईंआ। साडी बेनन्ती कर मन्जूर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पूरब पिछला बख्श कसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ। असीं चाकर तेरे मज़दूर, जुग जुग सेव कमाईआ। सानूं बख्श दे नाम सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। तेरा प्यार करीए मशहूर, मुहब्बतां विच वड्याईआ। तेरा पन्ध रहे ना दूर, नेरन नेरा अन्दरों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच मिले वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा अन्तष्करन खोल्ह दे पड़दा, भेव अभेद रहे ना राईआ। तेरा गृह मन्दिर तक्कीए साचे गढ़ दा, सच दुआरा सोभा पाईआ। जिथ्थे सूर्या ना कदे डुबदा ना कदे चढ़दा, थित वार वंड ना कोए वंडाईआ। भय विच कोई ना डरदा, भाउ सीस ना कोए जणाईआ। आत्म धार ना जन्मे ना मरदा, मर जीवत रूप ना कोए दरसाईआ। तेरा खेल तक्कीए नरायण नर दा, नर हरि देणी माण वड्याईआ। पड़दा लाह दे निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड साचा इक वखाईआ। लहिणा रहे ना जल थल दा, महीअल पन्ध देणा मुकाईआ। लेखा पूरा कर दे कलयुग कल दा, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। तेरा विछोड़ा होवे ना घड़ी पल दा, पलकां दे पिच्छे मिलणा साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्दरों खोल्ह दे ताकी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। लेखे ला लै तन ख़ाकी, वजूद महबूब तेरे चरण टिकाईआ। मनुआ मन रहे ना आकी, मनसा कूड़ देणी मिटाईआ। आपणी धार बणा लै जाती, जोती जाते वेख वखाईआ। निरगुण

धार जोड़ लै नाती, दर तेरे पन्ध मुकाईआ। तेरा खेल सदा बहु भांती, बिध आपणी दे समझाईआ। साडी रहे कोई ना ज़ाती,
जोती जाते तेरे विच समाईआ। तेरा तक्कीए खेल इकांती, एकँकार देणा वखाईआ। साडा लहिणा मुका दे लोकमाती, तन
वजूद रहे कुरलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं दे दे अन्तिम शांती, सति विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे मित,
मित्र प्यारे देणी वड्याईआ। निरगुण सरगुण करना हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। ठगौरी रहे कोई ना चित, चेतन
सुरती देणी कराईआ। तेरा दर्शन होवे नित, निरगुण मिलणा साचे माहीआ। तूं आदि जुगादी पित, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ।
साडी सुहञ्जणी कर दे थित, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। साडी पूजा रहे ना पत्थर इट्ट, पाहन सीस ना कोए निवाईआ।
सुरती शब्द विच सतिगुर जाए टिक, टिकटिकी तेरे नाल रखाईआ। तेरी सेजा जाईए लिट, सच सिंघासण लैणा सुआईआ।
साडा लहिणा देणा अन्तिम लैणा नजिठ, कूक कूक सुणाईआ। करवट धार बदल लै पिठ, सनमुख साचे सोभा पाईआ।
साडी अन्दरों मंजल वेख लै सवा गिठ, धुर दा बण के पाँधी राहीआ। तैनूं खोजदे कोटन कोटी कित, केते ध्यान लगाईआ।
२१ पंज तत कहिण प्रभ तूं सदा वसणा साडे विच, विचला भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, २१
२४ एका देणा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखे ला लै हड्ड मास नाड़ी चाम, चम्म दृष्टी २४
दे बदलाईआ। तूं मालक ख़ालक अगम्मी राम, रम्ईआ तेरी ओट तकाईआ। अन्ध अन्धेरा मेट दे शाम, शमअ नूर जोत
कर रुशनाईआ। जल्वागर अगम्म अमाम, अमलां तों रहित तेरी वड वड्याईआ। सच संदेसा दे पैग़ाम, पैग़म्बरां तों बाहर
पढ़ाईआ। तेरा नाम इक्को सतिनाम, नाम सति सति समझाईआ। अमृत धार तेरा जाम, गोबिन्द देवणहारा माहीआ। तूं
आदि जुगादी शहिनशाह शाह पातशाह इक सुल्तान, श्री भगवान इक अख्वाईआ। साडे उत्ते होणा मेहरवान, मेहर नज़र
नज़र तकाईआ। साडा कर देणा कल्याण, कायनात विच लेखा रहे ना राईआ। पंज तत कहिण असीं ना ज़िमीं रहीए ना
असमान, इस्म तेरे विच समाईआ। जिथ्थे भगत आत्मा करें परवान, उथे ततां लेखा लैणा लगाईआ। साडी बन्दना डण्डावत
सजदयां वाली प्रणाम, नमों नमों नमों कहि के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका
देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी नौजुआन,
जोबनवन्ते श्री भगवन्ते धुर दे कन्ते तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड हरिराए पुर हरचन्द सिँघ तारा सिँघ धन्न कौर चक फ़तिह सिँघ, जगीर सिँघ बरे, बखतावर सिँघ ख्याली वाला, साधू सिँघ गामी वाला, प्रीतम कौर रूप कौर ख्याली वाला, सरदारा सिँघ छाज़ला, मल सिँघ अकाल गढ़, करनैल सिँघ मलूका ✪

पंज तत कहिण प्रभू साडी नमों नमों निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। तूं किरपा निधान निरगुण निरवैर निराकारा, जोती जाता पुरख बिधाता बेपरवाहीआ। सच स्वामी अन्तरजामी साडी पा सारा, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया साडे अन्दरों मेट अँधयारा, नूर नुराना कर रुशनाईआ। साचे शब्द नाद दी दे धुन्कारा, अनहद नादी नाद शनवाईआ। अमृत रस देदे ठंडा ठारा, बूंद स्वांती आप टपकाईआ । पुरख अकाले दीन दयाले तेरा तक्कीए सच दुआरा, सचखण्ड निवासी होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण सति सच दी दे खुमारी, नाम निधान रस प्याईआ। आदि जुगादी तेरे नाल रहे यारी, ब्रह्म ब्रह्मादी विछड़ कदे ना जाईआ। साडा लेख रहे ना कोए पुरख नारी, नर नरायण तेरी ओट तकाईआ। तूं निरवैर साडा बण अधारी, उदर दा लेखा दे मुकाईआ। सति सच बख्श चरण प्रीती यारी, प्रीतम हो के दया कमाईआ। मनुआ मन ना करे ग़द्दारी, मनसा कूड़ ना कोए हल्काईआ। सतिगुर शब्द शब्द दी दे उडारी, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा दरस करीए अपारी, अपरम्पर तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं इक्को दे दे रस, रस्ता हरि जगदीश जणाईआ। असीं तेरे होईए वस, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। अन्दरों मेट रैण अन्धेरी मस, जोती नूर कर रुशनाईआ। शब्दी धार गाईए जस, रसना जिह्वा ना कोए वड्याईआ। जगत जहान पैंडा मुके नस्स, भज्जीए वाहो दाहीआ। तीर अणयाला मार कस, अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे मीत, मित्र प्यारे देईए जणाईआ। तूं हिरदे वसणा चीत, चित ठगौरी रहे ना राईआ। किरपा कर त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी सरनाईआ। काया करदे ठांडी सीत, अग्नी अग्ग अग्ग बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाईए गीत, गोबिन्द ढोला इक शनवाईआ। साडा झगड़ा मिटा दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक रुशनाईआ। कूड़ कुकर्म ते मार दे लीक, लाईन ऐन दे समझाईआ। ख़ालक मालक तेरे विच हक तौफ़ीक, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते तेरी करदे रहे उडीक, परवरदिगार सांझे यार होणा सहाईआ। सतिगुर

शब्द शब्द करे तस्दीक, शहादत इक्को इक भुगताईआ। साडा लहिणा मुका दे हस्त कीट, ऊँच नीच ना वंड वंडाईआ।
मिट्ठे कौड़े कर दे रीठ, रस नाम राम भराईआ। करवट विच बदल लै पीठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। एका चाढ़
दे रंग मजीठ, दुतीआ भाउ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर,
सच आसा पूर कराईआ। पंज तत कहिण प्रभ परम पुरख साडे सज्जणा, मित्रा तेरी बेपरवाहीआ। तुध बिन पड़दा किसे
ना कजणा, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। चरण धूड़ करा दे मजणा, दुरमति मैल धुआईआ। नाम अनादी सुणा दे नदना,
अनहद आपणा राग दृढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा दीपक जोत कदे ना जगणा, जोती जोत ना डगमगाईआ। तूं गोपाल मूर्त
मदना, मध सूदन इक अख्वाईआ। सति सतिवादी चाढ़ दे रंगणा, रंगत इक्को इक जणाईआ। तेरा दुआरा इक्को सब
ने मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं दीन दयाल दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ । नेत्र नाम निधान
पा दे अंजणा, लोचन नैण निज कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रख लै आपणे
अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा वेख हिसाब, निरअक्खर धार ध्यान लगाईआ। तूं
२३ मित्र प्यारा इक अहिबाब, महबूब नूर अलाहीआ। साडे मालक हक जनाब, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। साडी सति दी २३
२४ साजणा साज, सच सच दे वड्याईआ। मानस जन्म दा पूरा करना काज, करनी करते आपणे रंग रंगाईआ। तैनूं कहीए २४
गुरु महाराज, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। साडी बेनन्ती सुण अगम्मी आवाज़, दर तेरे रहे सुणाईआ। साडा पूरन कर
दे काज, करते पुरख आपणी दया कमाईआ। मेहरवाना आपणे सन्त बणा लै साध, साधना इक समझाईआ। बिना रसना
तों तैनूं लईए अराध, पवण स्वास ना कोए वड्याईआ। तूं आदि जुगादी लेखा जानणहारा विच ब्रह्माद, परम पुरख तेरी वड
वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज
तत कहिण प्रभ साडे धुर दे ठाकरा, स्वामी गहर गम्भीर। निगाह मार लै काया गागरा, लेखा तक लै शाह फ़कीर। साडा
निर्मल कर्म कर उजागरा, लहिणा रहे ना जगत कीर। दर आपणे दे दे आदरा, पंजां ततां बख्श दे धीर। तूं सूरबीर बहादरा,
तेरा लेखा अन्त अख़ीर। तूं करता करीम कादरा, कुदरत दा मालक बेनज़ीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
कर, एका देणा साचा वर, सच दी बदल दे तकदीर। पंज तत कहिण साडे मेहरवान महबूबा, मिहबान बीदो तेरी ओट
तकाईआ। सानूं दस्स दे आपणी इक हदूदा, हद जगत ना कोए जणाईआ। तेरा तक्कीए आलीशान अरूजा, अर्श फर्श
तेरी वजे वधाईआ। सानूं वखा दे आपणी मंज़ल हक मकसूदा, दरगाह साची सच जणाईआ। कूड़ क्रिया कर दे नेस्तो

नाबूदा, लोकमात रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनुभव भेव खुल्हा दे गूझा, पर्दा पर्दानशीं देणा उठाईआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस फ़रीदकोट शहर इकबाल सिँघ, राज सिँघ, कृपाल सिँघ, गुरदेव कौर, जुगिंदर कौर गोलेवाल, अजैब सिँघ फ़रीदकोट ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडीआं आसा होण पुन्नीआं, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर देणी माण वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादी गुण गुनीआ, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी तेरीआं कथा कहाणीआं सुणीआं, अक्खरां नाल अक्खर वजदी रही वधाईआ। लहिणा देणा तक्कया रिख़ीआं मुनीआं, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं संग बणाईआ। हुण लेखे पूरे कर दे जन भगतां जिन्हां सीस रखीआं चुन्नीआं, दस्तारां नाल वड्याईआ। हर घट अन्दर तेरीआं उपजण धुनीआं, धुन आत्मक राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साचा संग बणाईआ।
२४ पंज तत कहिण प्रभ साडी अन्तिम रखणी लाज, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। असीं लंगड़े लूल्हे होए अपाहज, २४
२४ तन वजूद ना कोए वड्याईआ। साडी नवीं साजणा लईं साज, साजण मीत आपणी दया कमाईआ। मानस जन्म दा पूरा २४
करीं काज, करनी करते आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेखा देणा समझाईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे दासी दास, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। साडे गृह कर प्रकाश, घर मन्दिर होए रुशनाईआ। जगत तृष्ना ना रहे प्यास, ममता मोह देणा मिटाईआ। विषयां तों बाहर आपणा दे विश्वाश, विश्व दे मालक हो सहाईआ। साडा लेखा हथ्थ ना रहे शंकर कैलाश, कल धारी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। असीं आत्मा नाल सदा चलीए तेरे साथ, सगला संग बणाईआ। साडा रूप अप तेज वाए रहे ना पृथ्मी आकाश, आकाशां तों परे तेरे विच समाईआ। जोत दी धार विच पाईए अगम्मी रास, रस्ता साहिब देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ किरपा करीं आप निरँकार, निरवैर दया कमाईआ। सानूं लै के जाणा सच दुआर, सचखण्ड साचे विच टिकाईआ। जिथ्थे ततां दा नहीं कोई अधार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। चुरासी वंड ना कोई संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण कोए ना पाईआ। तेरा मेला होए जगदीस अपर अपार, अपरम्पर स्वामी देणी वड्याईआ। दर ठांडे भिच्छया देणी अन्त होए भिखार, भिखक हो के झोली

डाहीआ। कोटां विच्चों तेरे भगत सुहेले थोड़े दो चार, चौथे जुग आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच्चों करना बाहर, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी जगत होवे ना वंड, हिस्सा दीन दुनी ना कोए रखाईआ। फेर आईए ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज ना बणत बणाईआ। नाता रहे ना नवखण्ड, नव नव दा पन्ध मुकाईआ। तेरे दर कूक के पाईए डण्ड, डण्डावत विच सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सानूं पाउणी ठंड, अग्नी तत तत बुझाईआ। आत्म धार आपणे नाल लै गंढ, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। निरगुण धार बख्शणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर मालक होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरा रूप होईए अपार, अपरम्पर देणी माण वड्याईआ। छडीए जगत संसार, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। तूं करना हक प्यार, प्रीतम प्रेम देणा समझाईआ। फड़ बाहों कढणा बाहर, बिन हत्थां हत्थ छुहाईआ। लै जाणा सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे आत्मा उथे भगतां दे तत तेरा रूप होण निरँकार, निरवैर तेरे विच समाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों अर्ज़ दिती गुज़ार, निव निव सीस झुकाईआ। परम पुरख परमात्म पाउणी सार, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। तूं वाहिद परवरदिगार, यामबीन नूर अलाहीआ। तेरा लेखा लहिणा देणा होए ना दूजी वार, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को बख्शणा सच्चा घर बाहर, गृह मन्दिर तेरे वजदी रहे वधाईआ। इक्को सुणीए शब्द सची धुन्कार, अनहद नादी नाद देणा सुणाईआ। इक्को जोत होवे उज्यार, नूर नुराने तेरा नूर नज़री आईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पाउणी सार, महासार्थी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा बणना आप मलाह, खेवट खेटा इक अख्वाईआ। चार जुग दे भगत बणाउणे गवाह, कबीर रविदासा नाल मिलाईआ। जो देवणहार सच सलाह, सिफ्त सिफ्त नाल वड्याईआ। जिन्हां दा भेव खुल्हाया नाल कलम शाह, काग़ज़ां रंग रंगाईआ। सूफ़ी मंगदे रहे दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। अन्तिम कहि के गए हक खुदा, खुद मालक ख़ालक तेरी बेपरवाहीआ। तूं ततां नालों आत्मा रूह नालों बुत करदा रिहों जुदा, जुज़ वखरा वंड वंडाईआ। मढ़ीआं गोरां विच दिते दफ़ना, मकबरयां विच टिकाईआ। सड़ सड़ हुंदे रहे सुआह, दीन दुनी भज्जे वाहो दाहीआ। अन्त कन्त भगवन्त वास्ता रहे पा, निव निव सीस रहे झुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभू साडा ना कोई पिता ना कोई माँ, साक सज्जण सैण ना कोए अख्वाईआ। जो साढे तिन्न हत्थ सींआ दिती थाँ, थनंतर जगत रंग रंगाईआ। एह वी तेरे चरण कवल देईए टिका,

आपणी वंड ना कोए वंडाईआ। असीं चाहुंदे सचखण्ड जाईए नाल चाउ, चाउ घनेरा देणा बणाईआ । सतिगुर शब्द फड़ा दे बांह, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। असीं भगत सुहेले पंज तत तेरा ढोला गाउंदे नाँ, नाउं निरँकार तेरा वड्याईआ। साडा पैंडा मुका दे थल असगाह, दो जहान रहिण ना पाईआ। निरगुण धार सानूं आत्मा परमात्मा आपणे विच रला, वखरा जुज़ ना कोए रखाईआ। तूं नूरी अलाह इक खुदा, खुद मालक बेपवराहीआ। साडी कबूल कर दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। लहिणा देणा आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी दे मुका, मुकम्मल आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेले इक इकेले एकँकार देणी ठण्डी छाँ, अग्नी तत तत ना लागे राईआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस कोटकपूरा शहर खेम सिँघ माधो सिँघ बठिंडा नछत्तर सिँघ सुरजीत सिँघ इकबाल सिँघ बठिंडा ✪

पंज तत कहिण प्रभ खेल वेख लै भगतां तन का, ततव तत ध्यान लगाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार फेर लै मणका, मनसा मनसा विच समाईआ। हरिजन मीत बणा लै आपणे जन का, आपे हो जणेंदी माईआ। नाद राग सुणना पए ना जगत कन्न का, अनहद नादी धुन देणी उपजाईआ। लालच लोभ रहे ना धन का, नाम भण्डारा देणा भराईआ। झगड़ा मेटणा खुशी ग़म का, गृह मन्दिर आपणा रंग रंगाईआ। भेव खुल्हाउणा आपणे ब्रह्म का, पारब्रह्म देणी वड्याईआ। अन्तिम लेखा रहे ना जम का, जम फास देणी कटाईआ । तेरा मार्ग इक्को नज़री आवे धर्म का, धर्म दी धार देणा दृढ़ाईआ। सहारा बख्श दे आपणी सरन का, सरनगति इक अख्वाईआ। पतिपरमेश्वर करता करनी करन का, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। मार्ग दस्स दे काया मन्दिर अन्दर आपणे गृह वड़न का, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। ढोला समझा दे तूं मेरा मैं तेरा पढ़न का, निरअक्खर अक्खर विच्चों प्रगटाईआ। नाता तोड़ दे जगत वासना वरन बरन का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वसा दे घर, गृह मन्दिर मिले वड्याईआ। इक्को इक दरसा दे दर, दहि दिशा दा पन्ध मुकाईआ। तेरा नूर ज़हूर तक्कीए नरायण नर, निरगुण देणी माण वड्याईआ। किरपा निधान किरपा कर, मेहरवान महबूब आपणा पड़दा दे खुल्हाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी आपणी किरपा दा दे दे वर, किरपा निध होणा सहाईआ। निरभउ भय चुका दे डर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत

धार नुहा दे अगम्मे सर, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ । पंज तत कहिण प्रभ दे दे साचा नाम निधान, निरअक्खर अक्खर समझाईआ। तूं मालक ख़ालक श्री भगवान, भगवन तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी निरगुण सरगुण निगहबान, बिन नेत्र लोचन नैणां वेख वखाईआ। साडी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरी ओट तकाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा लख चुरासी रहे ना विच जहान, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज वंड ना कोई वंडाईआ। तेरा दर्शन करीए नौजुआन, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जे भगतां आत्मा करी परवान, परम पुरख आपणे विच समाईआ। सानूं ततां नूं दे दे दान, दाते दानी ख़ाली झोली दे भराईआ। असीं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तैनूं लग्गे सुणाउण, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ । अप तेज वाए पृथ्मी आकाश साडा मेला तेरे नाल होवे भगवान, ततां विच फेर तत ना कदे मिलाईआ। सचखण्ड दुआर वसाउणा हक मकान, हकीकत दे मालक देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी मंज़ल जाईए चढ़, जगत दुआर ना कोए चतुराईआ। सानूं आपणे गृह खड़, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। तेरे दुआरे जाईए वड़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तेरा निरगुण धार फड़या लड़, सरगुण लेखा देणा मुकाईआ। साडा झगड़ा फेर रहे ना गोर मड़्ह, पवण मसाण ना कोई चतुराईआ। साडा नवां घाड़न लैणा घड़, धुर दी बणत लैणी बणाईआ। असीं तेरा पंजां ततां वाला भगतां वाला धड़, जिस विच तेरा आत्मा झट लँघाईआ। जे उस उत्ते किरपा दिती कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं मंगदे तेरा गृह, अस्थान भूमिका दूजी नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे आदि जुगादी निरगुण धार रहे, जोती जाते पुरख बिधाते आसण लाईआ। जिथ्थे इक्को निरगुण धार दा इक्को तेरा अमृत धार वहिण वहे, जल पाणी नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे चरण कवल कोटन कोटि अवतार पैग़म्बर गुरु गए बहि, थिर घर आपणा डेरा लाईआ। जिथ्थे एकँकार निरगुण धार तेरी शक्ती शवै, दूसर नज़र कोए ना आईआ। तूं बेपरवाह अगम्म अथाह इक इकल्ला निर्भय, भाउ सब नूं रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच घर देणी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ आपणा घर वखा सुहञ्जणा, सचखण्ड साचा नज़री आईआ। तूं आदि पुरख निरञ्जणा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागराँ पार कराईआ। तेरे प्यार दा करीए मजना, बिन धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जे तूं आत्मा दा बणें सज्जणा, क्यों भगतां दे ततां लोकमात

रुलाईआ। हुण तैनूं सचखण्ड दुआर पएगा सद्दणा, सद्दा धुर दा शब्द जणाईआ। लेखे लाउणा पएगा भगत सुहेला आहला अदना, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। तूं नूर अलाही रब्बना, यामबीन बेपरवाह अख्वाईआ। असां तेरे दीपक विच दीपक हो के जगणा, जोती जाते तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच दुआर निरगुण धार आपे सद्दणा, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द धुर दा शब्द शब्द कर शनवाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड पंज ग्रांई सुहावा सिंघ बिशन सिंघ जसवन्त सिंघ राजेआणा सुरजीत कौर चन्नण कौर माढ़ी मुसतफ़ा गुरनाम सिंघ गालब रण सिंघ बसन्त कौर समालसर ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी धार तक अदमुची, दूर दुराडे ध्यान लगाईआ। आपणी मंज़ल पन्ध मुका दे उच्ची, मुसाफ़रां सफ़र रहे ना राईआ। आपणी खेल प्रगटा दे सुची, संजम सच धर्म समझाईआ। निरगुण धार तेरे नाल रहे रुची, रचना आपणी देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं मालक अगम्म अथाह, अथाह देणी वड्याईआ। तूं स्वामी बेपरवाह, बेपरवाह इक अख्वाईआ। सानूं मार्ग दे दे इक्को राह, रैहबर हो के भेव खुल्हाईआ। पंजां ततां बण मलाह, बेड़ा आत्म नाल तराईआ। सानूं सचखण्ड जाण दा चाअ, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। अगे सके ना कोए अटका, पाँधीआं पन्ध देणा मुकाईआ। तूं शहिनशाह शाह पातशाह, परम पुरख तेरी सरनाईआ। असीं इक्को ध्याउँदे तेरा नाँ, दूजा ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। तूं आदि जुगादी पिता माँ, परम पुरख तेरी शरनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पकड़ी बांह, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। सतिगुर धार सीस देणी ठण्डी छाँ, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। तेरा सुहञ्जणा तक्कीए सच दुआर गराँ, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को दीप जोत होवे रुशना, नूर नुराना डगमगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले उस दे विच जाईए समा, समाप्त होवे पिछली जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा कर लै आप मिलाप, ततव तत रहिण कोए ना पाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी धुर दा बाप, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। आत्म धार परमात्म तेरा जाप, जग जीवण दाते तेरा ढोला गाईआ। कोट जन्म दे दुरमति मैल धो दे पाप, पतित पुनीत कराईआ। लहिणा देणा रहे ना लोकमात, धरनी धरत धवल धौल लेखा देणा मुकाईआ।

असीं पंज तत तेरी बणीए ज़ात, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तेरे विच समाईआ। साडी मेट अन्धेरी रात, नूर नुराने कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गृह वजदी रहे वधाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं सोहीए तेरे चरण, दूसर दर नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, ज़ात अज़ाती डेरा ढाहीआ। तूं मालक करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। साडा जगत जहान ना होवे मरन, मर जीवत तेरे विच समाईआ। साडा शब्दी धार होवे परन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। सानूं बन्न्हणा आपणे लड़न, पल्लू गंढु ना कोए खुल्हाईआ। सानूं सचखण्ड दुआरे दस्सदे चढ़न, भज्जीए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक मेल मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा निरगुण धार कर लै मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। साडा लेखा तक गुरु गुर चेला, सुरत शब्द तों बाहर वंड वंडाईआ। तूं आदि जुगादि मालक अकेला, एकँकार नूर अलाहीआ। निरगुण धार सज्जण सुहेला, सतिगुर शब्द बेपरवाहीआ। साडा आवण जावण धर्म राय कट दे जेल्हा, लख चुरासी ना कोए भुआईआ। सानूं दस्सदे धाम नवेला, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं दे दे अगम्मा माण, निमाणयां दे वड्याईआ। बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। साडा मुके आवण जाण, जूनी गर्भ ना कोए भुआईआ। असीं वेखीए तेरा धर्म निशान, सच दुआर देणा जणाईआ। तेरा नाम अमृत रस होवे पीण खाण, दूजी तृष्न ना कोए रखाईआ। शब्द नाद देणी धुन्कान, बिन कन्नां राग सुणाईआ। अन्तर जोत वेखीए महान, नूर नुराने नज़री आईआ। सानूं वसाउणा सचखण्ड सच मकान, जिथ्थे मकबरा मढ़ी गोर नज़र कोए ना आईआ। साडा तेरे उत्ते इक ईमान, दूजा धर्म इष्ट दृष्ट विच ना कोए समाईआ। तूं करनी दा करता करता पुरख बलवान, बलधारी बेपरवाहीआ। असीं बालक तेरे अंञाण, नन्हे हो के सीस झुकाईआ। सचखण्ड निवासी हुक्म दे फ़रमान, संदेसा धुरदरगाहीआ। तेरा सतिगुर शब्द सानूं करे परवान, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। साडा नाता तुटे जगत जहान, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। साडे तत तेरे विच मिल जाण, जोती जोत विच मिलाईआ । तूं समरथ पुरख सरगुण निरगुण शहिनशाह नूर अलाही तैनूं झुकदे ज़िमीं असमान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड मण्डल मण्डप निव निव लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चरण प्रीती साची रीती निरगुण धार बख्श इक ध्यान, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण नाल मिलाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड नाथेवाल नाज़र सिँघ हरजीत कौर पूरन सिँघ सौदागर सिँघ महिन्दर सिँघ प्रीतम सिँघ मिस्तरी प्रीतम सिँघ इन्द्र सिँघ नाथेवाल बंसत कौर पतोहीरा, गुलज़ार सिँघ सरूप सिँघ ढुडी, मुकन्द सिँघ मरा़ज ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडा सरगुण धार देणा सोधी, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। सानूं तेरे प्यार दी इक्को मिले चोगी, दूजा रस ना कोए वखाईआ। असीं जगत जिज्ञासू नहीं जोगी, तपीशरां वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मालक ख़ालक धुर संजोगी, हरि करता इक अख्वाईआ। आत्म रस तेरा रहे भोगी, भस्मड़ तेरे रंग समाईआ। तूं तन शरीरा हक हकीकत नाल सोधी, सो साहिब तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेख लै अन्तष्करन, बिन नैणां नैण उठाईआ। तेरी मंगदे इक्को धूड़ी चरण, ख़ाकी ख़ाक देणी रमाईआ। इक्को ढोला तेरा चाहुंदे पढ़न, निरअक्खर धार सिफ्त सलाहीआ। असीं लख चुरासी चाहुंदे नहीं सड़न, जन्म मरन रूप ना कोए बदलाईआ। तूं आदि जुगादि घाड़न घड़न, घड़न भन्नणहार तेरी वड्याईआ। सानूं आपणे बन्न लै लड़न, पल्लू सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग इक समझाईआ। पंज तत कहिण प्रभ किरपा कर अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ । सरगुण धार तेरे सुते, पतित पुनीत देणे बणाईआ। साडी सुहञ्जणी कर दे रुते, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ । सानूं धरती उत्तों लै जा असमानां उत्ते, सचखण्ड आपणे विच समाईआ। साडी आशा दो जहान कदे ना रुके, अगे हो ना कोए अटकाईआ। आत्मा नाल साडे पैंडे जाण मुके, भगती धार तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक वेख वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं पुजीए तेरे दरबार, ततां विच तत ना कोए मिलाईआ। आत्मा नाल सानूं देणा अधार, उदर दा लेखा देणा चुकाईआ। अप तेज वाए पृथमी आकाश दी पाउणी सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। किरपा कर एकँकार, इक इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडा नाता रहे ना रूप रंग रेख नाल संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग ना कोए बणाईआ। असीं चाहुंदे सचखण्ड पुजीए तेरे दरबार, दरगाह साची पन्ध मुकाईआ। जोती जाते पाउणी सार, पुरख बिधाते वेखणा चाँईं चाँईंआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दार, हुक्मरान इक अख्वाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तत कहिण असीं होए तेरे भिखार, भिखकां झोली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं

भगती धार तेरे सज्जण, भगवन देणी माण वड्याईआ। जिस वेले साडे काया माटी भाण्डे भज्जण, नाता जगत जुग तुड़ाईआ।
तूं निरगुण धार आत्मा आवें सदण, सतिगुर शब्द शब्द संग बणाईआ। उस वेले साडा लेखे लाउणा बदन, बन्दीख़ान्यों बाहर
कढ्ढाईआ। असीं गुरमुख हीरे तेरे रत्न, अमोलक आपणे लैणे बणाईआ। सानूं करना पए कोई ना यतन, यथार्थ तेरी ओट
तकाईआ। आत्मा नाल सानूं लै के जाणा आपणे वतन, माटी ख़ाक जगत नज़र कोए ना आईआ। तूं पुरख अकाल सदा
समरथण, हरि करता इक अख्वाईआ। साडा लहिणा देणा देणा हथ्थो हथ्थन, जगत उधार ना कोए बणाईआ। जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर गृह इक वसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ वसणा तेरे घर,
गृह मन्दिर ख़ुशी बणाईआ। तूं मालक नरायण नर, हरि करता इक अख्वाईआ। आपणी किरपा देणी कर, किरपा निधान
हो के वेख वखाईआ। तेरी सरन सरनाई गए पर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा पन्ध देणा मुकाईआ। तेरा भाणा रहे जर,
निव निव सीस झुकाईआ। तूं शरअ दी मेटणी शर, शरीअत डेरा ढाहीआ। सच दुआर एकँकार तेरे जाईए तर, तारनहार
तेरी बेपरवाहीआ। जगत जहान विच्चों ज़िंदगी धार जाईए मर, मर जीवत रूप बदलाईआ । सचखण्ड दुआर खुल्ह्आ रखणा
३१ दर, दर दरवाज़ा बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच ३१
२४ दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरा शुकर मनावांगे। सरगुण हो के ढोले गावांगे। निरगुण तेरा रंग २४
रंगावांगे। तेरी नाद अनादी सुण धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ावांगे। तूं मालक होणा कुल्ल, कुल मालक तेरा राह तकावांगे।
तूं सच स्वामी सुल्हकुल, साहिब इक्को वेख वखावांगे। जे लोकमात गए भुल, अभुल तेरे अगे वास्ता पावांगे। जे आत्मा
धार तेरी कुल, असीं पंज तत तेरे रंग समावांगे। साडा बूटा कदे ना जावे हुल, फल भगती वाला तेरे दर तों पावांगे।
साडा रस जाए ना डुल्ह, अनरस तेरा रस चखावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा
वर, सच दा संग आप बणावांगे। जन भगत कहिण प्रभ साडी तन वजूद मिट्टी, जगत जहान जुग जुग नज़री आईआ ।
साडे दुआरे बणदे रहे पत्थर इट्टीं, जगत निशान वड्याईआ। साडी आशा तेरे चरण कवल लिटी, दूसर संग ना कोए रखाईआ।
कलयुग अन्तिम सानूं धरनी धरत धवल उत्ते ना सिट्टीं, निरगुण धार आपणी गोद टिकाईआ । साडी जन्म कर्म दी रेख करनी
चिट्टी, दुरमति मैल धुआईआ। असीं कोई हाहे वाली सदा नहीं रहिणी टिप्पी, सो पुरख निरञ्जण तेरे विच समाईआ। साडी
धार दरगाह साची होवे लिटी, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। साडा लहिणा देणा अन्त नजिठ्ठी, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ।
पुरख अकाले दीन दयाले कदी ना देवी पिठ्ठी, करवट लोकमात ना कदे बदलाईआ। तेरी चरण प्रीती सानूं लग्गे मिठ्ठी, अनरस

देणा चखाईआ। पंज तत कहिण साडे कोल बावन धार पुराणी चिठ्ठी, बलि दुआरा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर ठांडे तेरे मंगदे आण, पंज तत करीं परवान, दरगाह साची सचखण्ड आत्म धार नाल मेलणा चाँईं चाँईंआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस मोगे शहर कपूर सिँघ हरदयाल कौर रत्न चन्द गुरदीप सिँघ मोगा, गुरतेज सिँघ घल कलां, मल सिँघ रजीवाल, केहर सिँघ ✪

पंज तत कहिण प्रभ साचा चाढ़ आपणा रंग, जन भगतां मेल मिलाईआ। निरगुण धार बख्श दे संग, सगले संगी बहुरंगी आपणी दया कमाईआ। दर ठांडे एकँकार मंगीए मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जगत तृष्ना मेट दे भुख नंग, सांतक सति सति वरताईआ। अमृत धार वहा दे निझर गंग, अंमिओं रस आपणा आप चुआईआ। पंच विकार करे ना जंग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आपणे विच समाईआ। दिवस रैण तेरे नाम दा वजे मृदंग, नाद अनादी धुन देणी शनवाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। असीं तत विचारे पंज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सीस निवाईआ। तूं साडी चिन्ता जगत मेट दे रंज, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडे सूरे सरबगी, हरि करते धुरदरगाहीआ। साडे अन्तष्करन बुझा दे अग्गी, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। असीं तेरी धार बणीए ना जगत अल्पगी, मेहरवान देणी वड्याईआ। साडे अन्तर आपणा दरस देणा उपर शाह रगी, नौ दुआर दा डेरा ढाहीआ। तेरीदस्म दुआरी दी धार वेखीए बग्गी, बग्गे अस्व वेखणा चाँईं चाँईंआ। तूं नूर अलाही रब्बी, आदि पुरख इक अख्वाईआ। तेरा मेल हुंदा सब्बी, साहिब सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे इशारे दे के गए पैग़म्बर रसूल नबी, कलमा कायनात जणाईआ। तूं अमाम अमामा खेल कराई चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। साडी आशा तेरे चरणां हेठा दब्बी, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। असीं जगत प्यार विच तेरे दर दे होए लबी, लोभ मोह विकार हँकार देणा तजाईआ। साडी धार तेरे नाल रहे बध्धी, बन्दना विच दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सानूं लोकमात विच्चों कढ्ढीं, धरनी धरत धवल धौल कायनात दा पन्ध मुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेख लै खेल अपार, अपरम्पर स्वामी तेरी ओट तकाईआ। जुग जुग जन्मे मरे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखदे रहे चाँईं चाँईंआ। लहिणा देणा तकदे रहे नाल पैग़म्बर गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नित पन्ध मुकाईआ। चुरासी विच फिरदे रहे वारो वार, अण्डज जेरज उत्भुज

सेत्ज चारे खाणी भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा सुणदे रहे शब्द धुन्कार, अक्खर अक्खरां नाल पढ़ाईआ। संदेसे दिते निरगुण धार, अवतरी तेरा भेव चुकाईआ। धन्न भाग तूं पाई सार, महासार्थी तेरे चरण कवल सीस निवाईआ। तूं लहिणा देणा पूरब कर्ज़ दे उतार, मकरूज साडे हथ्थ फड़ाईआ। असीं चाहुंदे जिथ्थे आत्मा दी पैज दिती संवार, दिती माण वड्याईआ। पंज तत भगतां तन जाईए तेरे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। रूप होईए तेरा जोत नूर उज्यार, नूर नुराने तेरे विच समाईआ। एह बेनन्ती कीती नव नौ चार पिच्छों पहली वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी चोली तक शरीर, सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। तूं शहिनशाह गुणी गहीर, गहर गवर तेरी बेपरवाहीआ। सानूं देवे कोई ना धीर, धीरज नज़र कोए ना आईआ। साडे ओढण वस्त्र वेख चीर, चिरी विछुन्ने रहे कुरलाईआ। साडी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ाईआ। साडा नेत्र वगे नीर, हंझू हार रहे बणाईआ। तूं दाता बेनज़ीर, मेहर नज़र नाल तराईआ। साडी मंज़ल तक अख़ीर, आख़र तेरे अगे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा इक्को नज़री आईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे मालक हक हज़ूर, हाज़र हो के दया कमाईआ। बेनन्ती कर मन्ज़ूर, दर ठांडे सीस झुकाईआ। अगला पन्ध रहे ना दूर, पैंडा दीन दुनी मुकाईआ। जो इशारा कीता मूसा उत्ते कोहतूर, सो लहिणा साडी झोली पाईआ। जो हस के किहा मनसूर, सूली चढ़दयां दिता सुणाईआ । असीं मूर्ख मुगध मूढ़, मतहीण दर ठांडे मंग मंगाईआ। साडा तत रहे ना कूड़, कूड़ी क्रिया डेरा देणा ढाहीआ। असीं चाहुंदे सचखण्ड अन्दर बिना तेरे चरण तों चरणां लाईए धूड़, बिना मस्तक तों मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा जगत तुटे नाता, चुरासी बन्धन रहे ना राईआ। तूं परम पुरख बिधाता, देवणहार गुसांईआ। निरगुण पिता माता, पुरख अकाल अख्वाईआ। जे आत्म धार तेरी ज़ाता, जोती जाते रंग रंगाईआ । अन्तिम साडी पुछ वाता, जन भगतां तन रहे कुरलाईआ। तूं सब तों वड्डा दाता, देवणहार गुसाईंआ। साडी मेट अन्धेरी राता, साचा चन्द नूर कर रुशनाईआ। असीं वेखणा चाहुंदे सचखण्ड तेरा अहाता, जिथ्थे सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। बिना रसना जिह्वा तों होवे गाथा, बिना अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। तेरा नूर ज़हूर नज़र आवे पुरख समराथा, जोती जाता डगमगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरा मंगदे साथा, सगला संग देणा निभाईआ। तूं मालक नाथ अनाथा, दीनां आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साचा संग बणाईआ।

पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे मित्र मीत, जगत भगत कहे लोकाईआ। निरगुण धार बख्श दे प्रीत, प्रीतम मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तेरा गाईए गीत, गोबिन्द ढोला धुरदरगाहीआ। साडी पवित्र करनी नीत, पतित पुनीत बणाईआ। पुरख अकाले वसणा चीत, चित ठगौरी रहे ना राईआ। काया काअबा वखाउणा हक मसीत, मन्दिर इक्को इक रुशनाईआ। तेरा दरस करीए त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी देणी वड्याईआ। असीं भगत सुहेले ना वेखीं हस्त कीट, ऊचां नीचां इक्को रंग रंगाईआ । तेरा भाणा लग्गे मीठ, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। साडा तन कौड़ा ना होवे रीठ, अमृत रस देणा भराईआ। तेरा धाम सुहञ्जणा तक्कीए अनडीठ, सचखण्ड वेखीए चाँईं चाँईंआ। परम पुरख परमात्म सानूं कदे ना देवीं पीठ, करवट जगत ना कदे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक वसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं दाता बेपरवाहो, बेपरवाही विच समाईआ। तेरा खेल थल अस्गाहो, जल थल महीअल डेरा लाईआ। सानूं तेरे वेखण दा चाउ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। शब्दी धार फड़ लै बाहों, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। साडा अन्तिम करीं न्याउँ, अदल इन्साफ़ इक जणाईआ। फड़ के हँस बणाईं काउँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। तूं ही पिता तूं ही माउं, परम पुरख तेरी गोद इक्को नज़री आईआ। तेरे नाम दा लेखा सभनी थाओं, थान थनंतर देणी माण वड्याईआ। इक्को जपाउणा साचा नाउँ, नर निरँकार इक अख्वाईआ। सदा कहिंदे रहीए वाहो वाहो, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मीत दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं आदि जुगादि थक्के मांदे, जुग जुग भज्जे वाहो दाहीआ। मानस देही तेरे ढोले गांदे, शब्दी शब्द नाद शनवाईआ। तेरा नैणां राह तकांदे, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। गल पल्लू वास्ता पाउँदे, निव निव सीस झुकाईआ। कोटन वार घोली घोल आपा आप घुमाउँदे, घोली घोल घुमाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कूक कूक सुणाउँदे, सोहले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव अभेद खुल्ह़ाईआ। पंज तत कहिण प्रभ खोल्ह़ दे धुर दा भेव, अभेद देणा जणाईआ। तूं सब दा देवी देव, देवत सुर तेरी सरनाईआ। तूं वसें निहचल धाम निहकेव, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। साचे नाम दा देवीं मेव, अंमिओं रस चखाईआ। साडी मन्जूर कर लै सेव, सेवक सेवा चरण टिकाईआ। सिफ्तां गाए रसना जिह्वा, जिह्वा हरि गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि अन्त पाए कोए ना भेत, अभेद आपणे विच रखाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड रामूवाला गुरदयाल सिँघ, अवतार सिँघ रामूवाला, तारा सिँघ गाज़ीआणा, नरायण सिँघ निहाल सिँघ वाला, करतार सिँघ चड़िक, महिन्दर कौर चड़िक, नरायण कौर दीदारे वाला, दलीप सिँघ बदनी, बुगढ़ सिँघ बरगाड़ी, करतार सिँघ रामूवाला ✪

पंज तत कहिण प्रभ जुग जुग तकीआं तेरीआं खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जे वाहो दाहीआ। परम पुरख परमात्म शब्द अनादी सुणीआं बाणीआं, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोले रहीआं गाईआ। चार जुग दे शास्त्र ग्रन्थ तेरी महिमा वालीआं कहाणीआं, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। अठसठ तीर्थ नहाते पाणीआं, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती भज्जे वाहो दाहीआ। सुखआसण जगत सुहंजणीआ सेजां माणीआं, मन ममता नाल मिलाईआ। खेल खेले बण बण राजे राणीआं, शाह हकीरां रूप दरसाईआ। तूं किरपा निध स्वामी शाह पातशाह श्री भगवानीआ, हरि भगवन तेरी बेपरवाहीआ। साडीआं अन्त वेख निशानीआं, निशाने अवतारां पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। बिरहों दे तीर चलदे रहे कानीआं, जो विछोड़े विच घायल करदे रहे थांउँ थाईंआ। साडीआं मंज़लां अन्तिम कर आसानीआं, असल दे मालक वसल आपणा इक जणाईआ। तूं आदि जुगादी हर घट जाण जाणीआं, जानणहार नूर अलाहीआ । साडे तन वजूद वेंहदे रहे खाणीआं, मिट्टी ख़ाक विच मिलाईआ। तूं मालक ख़ालक दो जहानीआं, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडीआं मुश्किलां कर आसानीआं, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। साडीआं मंज़लां तक रुहानीआं, रूह बुत नाल मिलाईआ। तूं मालक ज़िमीं असमानीआं, लोक परलोक वजदी रही वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा लहिणा तक, बिन नैणां नैण उठाईआ। हकीकत वेख लै हक, हरि करते धुरदरगाहीआ। तूं मालक वाहिद यक, नूर नुराना नूर अलाहीआ। असीं तेरे सथ्थर गए लथ, यारड़े सेज हंढाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। सानूं इक्को दे दे वथ, दूजी मंग ना कोए मंगाईआ । जिस वेले साडा बुरज जावे ढठ, नाता आत्म धार तुड़ाईआ। असीं बेनन्ती करीए अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध नाल मिलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे सचखण्ड जाईए नठ, राह विच ना कोए अटकाईआ। थिर घर दुआर एकँकार तेरी सरनाई जाईए ढठ, आपणा आप तेरी भेंट कराईआ। फेर ना आईए वत, बेवतना आपणे वतन लैणा टिकाईआ। साडा नाता जुड़े ना बूंद रक्त नत, तन वजूद ना कोए वखाईआ। साडे लेखे लाउणे निरगुण धार तत, ततव तत तेरे विच समाईआ। तूं साहिब स्वामी परमेश्वर पति, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, दरगाह साची आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं करनीआं आपणीआं मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। साडा मिट जाए कूड़ अन्धेरा, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। इक वखाउणा सानूं सञ्झ सुवेरा, बिन शमअ दीप कर रुशनाईआ । तेरा वेखीए धर्म दुआरे डेरा, दरगाह साची पड़दा देणा लाहीआ। जिथ्थे इक्को राग तूं मेरा मैं तेरा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण जोत तेरा नूर नुराना कदे ना होए अन्धेरा, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आईआ। तत कहिण तूं सतिगुर साहिब असीं बिना शरीर तों तेरा चेरा, वख वख रूप तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त कन्त भगवन्त साडा करना हक निबेड़ा, अदल इन्साफ़ जगत जहान आप कमाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड डगरू सीतल सिँघ मेला सिँघ धन्ना सिँघ डगरू, हरबंस सिँघ
सुरजीत सिँघ निधां वाला, गुरबचन सिँघ गुरदयाल सिँघ सदा सिँघ वाला,
नंद सिँघ थमण वाला गहिणा सिँघ कलाश ✪

पंज तत कहिण प्रभ सानूं आपणे बणा लै पुत्तर, पिता पूत गोद उठाईआ। असीं तेरा करीए शुकर, शुकराने विच सीस निवाईआ। निरगुण धार निराकार निरवैर हो के उतर, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। मानव ज़ाती तक लै तड़फदी बिना टुक्कर, टुकड़े टुकड़े कर लोकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां चुक लै कुच्छड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। दीन दयाले असीं तेरे प्यार दे भुखड़, परम पुरख देणी माण वड्याईआ । साडा दीन दुनी दा तक लै दुखड़, दुखी हो के रहे सुणाईआ। उलटा फेर होईए ना रुक्खड़, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। साडा भेव चुका दे दुत्तर, दुतीआ भाउ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। पंज तत कहिण सानूं बख्श दे चरण कवल सहारा, सहायक नायक तेरी ओट तकाईआ। तेरी धूड़ी लाईए मस्तक छारा, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। तेरा गाईए नाम जैकारा, जै जै तेरा नाम सुणाईआ। साची शब्द दी दे धुन्कारा, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। अमृत रस बख्श दे ठंडा ठारा, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। जोती जोत कर उज्यारा, कमलापाती डगमगाईआ । साडा तेरे चरण कवल इक इशारा, बिन नैणा रहे लगाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, परवरदिगार नूर अलाहीआ। सानूं बख्श दे सचखण्ड दुआरा, दरगाह साची दे वड्याईआ। लेखा रहे ना विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी लहिणा देणा

मुकाईआ। फेर आईए ना दूजी वारा, जन्म जन्म ना कोए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर वजदी रहे वधाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे चरण कवल होवे इक्को तृष्ना, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जो इशारा दिता ब्रह्मा शिव विष्ना, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। जो आशा रख के गया रामा कृष्णा, काहन घनईया नैण तकाईआ। जो नूर ज़हूर तेरा पैग़म्बरां दिसणा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। जो नानक गोबिन्द धार लेखा लिखणा, बिन कलम शाही देणा समझाईआ। असीं चाहुंदे पंज तत तेरे सचखण्ड दुआरे लिटणा, दूसर थान ना कोए वड्याईआ। दीन दुनी विच साडा कूड़ निशाना मिटणा, दरगाह साची वजदी रहे वधाईआ। फेर संग रहे ना पत्थर इट्टना, पाहना सीस ना कोए निवाईआ। तेरी धार विच निरँकार तेरा रूप हो के टिकणा, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे लेखे अन्तिम आप नजिठणा, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे उत्ते करनी किरपा, कृपाल दया कमाईआ। दीन दुनी दी रहे ना बिपता, विप्रीत दए गवाहीआ। सानूं रूप बणाउणा साचे सिख दा, सति सति नाल समझाईआ। साडा लेख तुध बिन कोए ना लिखदा, गणती गणत ना कोए गिणाईआ । साडा रूप नहीं किसे मुन रिख दा, जगत हिस्सा ना कोए रखाईआ। असीं प्यार चाहुंदे इक्को हित दा, हितकारी देणी माण वड्याईआ। साडा नाता जोड़ना हित दा, हितकारी हो के वेख वखाईआ। झगड़ा मेटणा आवण जावण नित दा, नवित तेरे विच समाईआ। साडा वक्त सुहञ्जणा कर दे जित दा, हार दा लेखा रहे ना राईआ। लहिणा देणा तक लै आपणी साची थित दा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तुध बिन अवर कोए ना दिसदा, नेत्र अक्ख ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दुआरा सुहञ्जणा दिसे इक दा, एकँकार देणी माण वड्याईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड शाह बुकर बगीचा सिँघ फ़तिह गढ़ पंज तूर इन्द्र सिँघ कादर वाला सोहण सिँघ चन्द सिँघ शाह बुकर ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडे जन्म मरन मेट दे दुखड़े, चुरासी फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। उलटे मात गर्भ ना होईए रुखड़े, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। साडे उजल कर दे मुखड़े, दुरमति मैल धुआईआ। असीं तेरे दरस दे भुखड़े,

तृष्ना कूड़ दैणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा आदि जुगादि मेट दे रोग, चिन्ता ग़म रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना सोग, सगले संगी होणा सहाईआ। निरगुण देणा दरस अमोघ, सरगुण मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। तेरा चरण प्रीती होवे जोग, जुगती धर्म धार समझाईआ। आत्म रस बख़्श दे भोग, भस्मड़ आपणी दया कमाईआ। जगत जहान ना होए विजोग, विछोड़ा अन्त रहिण ना पाईआ। आपणे नाल करना संजोग, धुर मेला लैणा मिलाईआ। सदा मुहब्बत दी बख़्शणी मौज, मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा खोल्ह दे अन्तर पड़दा, पर्दानशीं दया कमाईआ। एह खेल तेरा अगम्मे घर दा, गृह मन्दिर देणी वड्याईआ। तूं रूप नरायण नर दा, नर हरि इक अख्वाईआ। जुग जुग भगतां किरपा करदा, किरपन आपणे गले लगाईआ। धाम वखा दे धुर दे सर दा, सरोवर इक्को इक जणाईआ। जिस विच भगत सुहेला तरदा, दुरमति मैल मैल धुआईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जे आत्म धार भगतां वरदा, तत वजूद आपणे रंग रंगाईआ। साडा खेल नहीं कोई हँकारी गढ़ दा, हउमे हंगता ना कोए रखाईआ। तूं मालक चेतन चोटी जड़ दा, लेखा वेखणा थांउँ थाँईंआ। तत कहिण बिना साथों तेरा नाम कोए ना पढ़दा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। क्यों नहीं साडे उत्ते किरपा करदा, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। पंज तत कहिण जुग जुग तेरा भगत शरीर रिहा छडदा, मढ़ी गोरां संग बणाईआ। आत्मा तेरे सचखण्ड दुआरे रिहा वड़दा, जोत जोत विच समाईआ। हुण लहिणा देणा दे दे साडे दर दा, दर ठांडे मंग मंगाईआ। साडा तत वणजारा होवे तेरे घर दा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तेरे विच समाईआ। तुध बिन घाड़न कोए ना घड़दा, घड़न भन्नणहार ना कोए अख्वाईआ। विछोड़ा होवे अगे ना घड़ी पल दा, पलकां दे पिच्छे बहण वाल्या देणी माण वड्याईआ। साडा लेखा रहे ना कलयुग कल दा, कलकाती देणा पन्ध मुकाईआ। तूं स्वामी जल थल दा, महीअल तेरी ओट तकाईआ। सानूं विछोड़ा होए ना घड़ी पल दा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। हुण विछोड़ा देणा नहीं कलयुग कल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी मेट दे हरस, हवस रहिण कोए ना पाईआ। सानूं चुक लै उत्तों फ़र्श, ज़िमीं मिट्टी ख़ाक ना कोए रुलाईआ। साडी मंज़ल बणा दे उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम होणा आप सहाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते तेरा जोती धार करीए दरस, दूसर नज़र किछ ना आईआ। मेहरवाना श्री भगवाना साडे उत्ते करना तरस, रहमत रहीम देणी कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा देणा बरस, बूंदा बांदी जगत

नज़र कोए ना आईआ। साडा वायदा पूरा कर दे गुर अवतारां पैग़म्बरां वाली शर्त, शरअ दे मालक देणी माण वड्याईआ। तूं निरगुण धार निरवैर हो के आएयों परत, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल सदा असचरज, अचरज लीला देणी वखाईआ।

२८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल दरबार निवासी संगत नवित

पंज तत कहिण प्रभ साडी पूरी करदे मनसा, माया ममता मोह विकार हँकार बाहर कढ्ढाईआ। साडा रूप सति सरूप बणा लै हँसा, पतिपरमेश्वर श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। असीं तन वजूद माटी ख़ाक तेरा होईए बंसा, बंसरी वाले काहन बिन नैणा वेखणा चाँईं चाँईआ। तेरे हुक्म विच कोटन कोटि जुग बीते सहँसा, सहँसर मुख शेष नाग दए गवाहीआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता मन ममता मार दे कंसा, काहनां दे काहन तेरी इक सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक आदि जुगादी बेअन्ता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार नूर अलाहीआ । सति सरूप शाहो भूप बणा लै सन्ता, साजण मीत पतित पुनीत आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी दे मालक साडे अन्तष्करन विच्चों मेट दे चिन्ता, ग़मी ग़मख़ार देणी गुवाईआ। सति धर्म दी धार बणा बणता, घड़न भन्नणहार आपणा रंग रंगाईआ। तूं मालक स्वामी इक्को होवें कन्ता, कन्त कन्तूहल तेरी ओट तकाईआ। तन वजूदां रंग चाढ़ बसन्ता, एथे उथे दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जगत कूड़ा मोह मेट दे ममता, माया मनसा ना कोए हल्काईआ। मैं तेरे दर दा मंगता, भिखक हो के झोली डाहीआ। मेरा लेखा रहे ना जीअ जंत दा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे शाहो भूप राजना, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। मित्र प्यारे संवारना काजना, करते पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा देणा मुकाउणा कल कि आजना, अगला पन्ध देणा चुकाईआ । शब्दी धार मार अवाज़ना, सोई सुरत सुरत उठाईआ। सच सरनाई तेरी लागना, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ । बिन तेरी किरपा मूल ना जागणा, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख दे खुल्हाईआ। मेरे मोहन माधव माधना, मधुर धुन देणी सुणाईआ। सद तैनूं इक अराधना, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साडा संवार काजना, करता पुरख होणा सहाईआ। दुरमति मैल धोणा दाग़णा, पतित पुनीत आप कराईआ। तेरा सुणीए ढोला अगम्म नादना, नादी धुन करनी शनवाईआ। त्रैगुण माया बुझाउणी

आगना, तृष्ना तृखा ना कोए रखाईआ। लख चुरासी विचो काढणा, जम दी फाँसी देणी तुड़ाईआ। लेखे लाउणा हड्ड मासना, नाड़ी नाड़ी रही कुरलाईआ। तेरा सच दुआर एकँकार होवे वासना, वासा इक्को इक समझाईआ। तेरा जोत नूर होवे प्रकाशना, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। तूं शाहो भूप शाबाशना, शहिनशाह नूर अलाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्तिम साडी पत राखणा, पतिपरमेश्वर आपणे रंग रंगाईआ। तूं निरगुण धार सच्चा साकणा, मित्र प्यारा अगम्म अथाहीआ। अन्त जन भगतां पड़दा काजणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी डण्डावत करीए बन्दना, जगत जगदीश सीस निवाईआ। तूं बख्शणा इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरा नूर नुराना तक्कीए चन्दना, जोती जाते वेख वखाईआ। इक्को दर दुआर तेरा मंगणा, दूसर अगे ना झोली विछाईआ। तूं दीना नाथ दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार देणा कराईआ। नेत्र नाम निधान पाउणा अंजना, लोचन नैण रुशनाईआ। तुध बिन पड़दा किसे ना कजणा, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं आदि जुगादी एका मालक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। दीन दुनी दा सच्चा ख़ालक, मख़लूक तेरी ओट तकाईआ। मैं नन्हा बच्चा तेरा बालक, पंज तत भगत रूप दरसाईआ। तूं लहिणा देणा पूरा कर संचालक, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं एथे ओथे दो जहाना प्रितपालक, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ आदि जुगादी तेरे दर दे मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। नाम निधाने चोली रंग दे, रंगत इक्को इक समझाईआ। अंगीकार हो के आपणा अंग दे, गृह इक्को मिले वड्याईआ। दर सवाली हो के मंगदे, ख़ाली झोली देणी भराईआ। असीं वणजारे रहीए ना काया काची वंग दे, तन वजूद दा पन्ध मुकाईआ । विछोड़े होण ना तत पंज दे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सीस निवाईआ। की तेरे लहिणे देणे मन कल्पणा जंग दे, झगड़े वेखणे थांउँ थाईंआ। पिछले तेरे जुग वेखे लँघदे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ । हुण खेल तक लै कलयुग मलंग दे, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। सुखआसण माण रहे ना किसे पलँघ दे, सेज सुहञ्जणी ना कोए वड्याईआ। भरम भुलेखे कढ दे दुवैती कंध दे, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। साडे लहिणे देणे पूरे कर दे तत पंज दे, पंचम नाद शब्द धुन कर शनवाईआ। विछोड़े रहिण ना नार दुहागण रंड दे, कन्त सुहागी देणी माण वड्याईआ। असीं वणजारे होईए ना नवखण्ड दे, सत्त दीप ना भज्जीए वाहो दाहीआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवान

आपणा वंड दे, वस्त अमुली अमुल अतुल आप वरताईआ। जुग जन्म दीन दुनी आपणे नाल गंढु दे, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणा रंग चढ़ाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार आपणी ठंड दे, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। निरगुण धार सरगुण आपणा सच अनन्द दे, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पन्ध मुका दे मुहाणे वञ्झ दे, दूसर ओट ना कोए तकाईआ।

✪ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल
ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

अस्सू कहे मैं जुग जुग आसा रखी, बिन आस आस बणाईआ। जो संदेसा दिता काहन ने सखी, राधका रिध सिध तों बाहर समझाईआ। कलयुग खेल वेखणा बिना नेत्र लोचन अक्खी, नैण नैण बदलाईआ। धर्म दा होणा नहीं कोई पक्खी, पशू पंछी देण गवाहीआ। मिलणे साक करोड़ी लखी, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। कूड़ कूड़यार होणा बहुभखी, सति सच धर्म नूं खाईआ। मन कल्पणा फिरनी नस्सी, भज्जणी वाहो दाहीआ। लाड़ी मौत खिड़ खिड़ा के हस्सी, ताली दुहरी धार लगाईआ। मैनूं सच ख़बर अगली दस्सी, काहनां दे काहन की करनी खेल अगम्म अथाहीआ। किस बिध मेरा लेखा होणा लख चार नाल अस्सी, चुरासी वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी जगत विकार विच होणी फसी, फ़ैसला सके ना कोए कराईआ। दीन दुनिया बन्धन होवे दीन मज़्हब दी रस्सी, रस्ता हक ना कोए जणाईआ। कूड़ कुड़यार दी गंढु होणी कसी, कसम नाल सके ना कोए खुल्ह्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म आप दृढ़ाईआ। अस्सू कहे मैं आसावंद, बिन जगत दलील बणाईआ। धुर दे हुक्म दा बण पाबन्द, दर ठांडे सीस निवाईआ। बोल सकां ना मुख दन्द, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। मैं संदेशा देवां जो दिता गोबिन्द पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । कलयुग कूड़ धार दा होणा बन्द, बन्धन दीन दुनी समझाईआ। नूरी दिसे कोई ना चन्द, चांदनी जगत ना कोए रुशनाईआ। भरमां ढाहे कोए ना कंध, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना छन्द, आत्म परमात्म वजे ना कोए वधाईआ। फिरनी दरोही जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। खेल खिलाउणा नवखण्ड, ब्रह्मण्ड नाल वड्याईआ। शब्दी धार चण्ड प्रचण्ड, दीन दुनी वेख वखाईआ। किसे अन्तर पए मूल ना ठण्ड, सांतक सति

ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे मैं आशा रखी तमाम, बिन ख़ाहिश ख़ाहिश जणाईआ। जो संदेशा दिता सीआ ने राम, राम सीआ गया समझाईआ। कलयुग तक लै धुर दा लए कोए ना नाम, निरँकार नर ना कोए दृढ़ाईआ। शरअ दी शरअ होई गुलाम, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। अन्तर दिसे ना कोए ज्ञान, अन्ध अन्धेरा छाईआ। धर्म दा धर्म ना रहे निशान, कलयुग डंका कूड़ वजाईआ। राम राम रसना सारे गाण, हिरदे राम ना कोए वसाईआ। उह लेखा तक लै श्री भगवान, की भगवन भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे मैं आस अगम्मी तकी, तकवा इक रखाईआ। मेरा मालक हकीकी हकी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादि कदे ना होवे शक्की, शिकवे सारे दए मिटाईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाल कीती पक्की, मशवरा, शब्द गुरु बणाईआ । उसदा खेल वेखणा हथ्थो हथ्थी, जगत जुगत ध्यान रखाईआ। जो पुरख अकाला दीन दयाला पुरख वड समर्थी, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जिस दे सथ्थर आदि जुगादि दीन दुनी दी भगती लथ्थी, भगवन देवणहार माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। अस्सू कहे मेरी आस अगम्मी, अगम्मे दिती वड्याईआ। जगत धार कदे ना जम्मी, जुग चौकड़ी रूप ना कोए वखाईआ। जिस दी हद्द नहीं कोई बंनी, हदूदां वंड ना कोए वंडाईआ। सरवण सुणे कुछ ना कन्नी, कायनात दी कथनी ना कोए चतुराईआ। जगत धनाढ कोए ना धनी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। वसेरा करे ना छप्पर छन्नी, महल अटल ना कोए रखाईआ। जनणी कुक्खों किसे ना जणी, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। किसे दी दुख़तर बणी ना चन्नी, नूर नूर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। अस्सू कहे मेरी आसा आदि आदि पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जिस दा भेव खोल्हे कोए ना बाणी, पर्दा अक्खर अक्खर ना कोए चुकाईआ। चार जुग दी नहीं कहाणी, शरअ दी वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा नहीं नाल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज संग ना कोए निभाईआ। जिस दा आदि जुगादि मिल्या कोए ना हाणी, आसू पूर ना कोए कराईआ। मेरी आशा दी तरल जवानी, जोबनवन्ती आपणा रूप प्रगटाईआ। बोले बोल बिना ज़बानी, रसना रस ना कोए चतुराईआ। जिस दी कथा अकथ कहाणी, कथनी कथ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। अस्सू कहे मेरी आशा विच यार मित्र नारद मुन, मुनीशरां बाहर जणाईआ। मेरी आवाज़ लए सुण, बिन

रसना जिह्वा दृढ़ाईआ। आ के दस्से आपणा गुण, भेव अभेद खुल्हाईआ। जगत मार्ग लवे चुण, रस्ता इक समझाईआ। झट नारद कहे मैं पहुंच गया हुण, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा मालक इक कुन, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जिस दी शब्द अगम्मी धुन, धुन आत्म राग दृढ़ाईआ। लख चुरासी करे छाण पुण, मानस मानव मानुख खोज खुजाईआ। उस दा भेव जाणे कौण, गत कहिण किछ ना पाईआ। जिस दे विछोड़े विच सारे रोण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आपणी पत आपे खोहण, जगत मिले ना कोए वड्याईआ। जिस दा राह तके पाणी पौण, पवण पवणां रिहा तकाईआ। उह जुग जुग उजड़े आए वसाउण, वसदयां लेखा दए मुकाईआ। गढ़ हँकारी आए ढाउण, जगत जहान रहिण ना पाईआ। धुर दा नाम आए वरताउण, नाम निधान इक वरताईआ। जन भगत सुहेले आप आए पर्चाउण, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आए मिलाउण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। घर मन्दिर दीप आए जगाउण, जोती जाता कर रुशनाईआ। सच संदेशा आए सुणाउण, नाद अनादी धुन उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे अस्सू जी मैं पुज्जा, पूजण योग किस नूं सीस निवाईआ। मैं तेरा इशारा बिना रमज़ तों बुज्झा, सैनत दी लोड़ रहे ना राईआ। कुछ भेव दस्स दे गुज्झा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। दुतीआ भाउ रहे ना दूजा, दोए जोड़ सीस निवाईआ। किस बिध धुर दा हुक्म होणा उग्घा, उग्घण आथण मिले वड्याईआ। जिस दा लए कोए ना भुग्गा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जो शरअ मेटे कलयुगा, सतिजुग आपणा रंग रंगाईआ। उह लेखा तक लै जो इशारा दे के बुध्धा, बुद्धी तों परे दृढ़ाईआ। मालक ख़ालक निरगुण धार निरँकार आउणा उत्ते वसुधा, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। जिस दा शब्दी धार अगम्मी युद्धा, युधिष्टर दा लहिणा झोली पाईआ। जो हनवन्त नूं राम ने दस्सया मुद्दा, मुदतां दा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे अस्सू जी मैं आ गया तेरे कोल, कौल इकरार वेख वखाईआ। कुछ शब्द अगम्मा बोल, की अनबोलत रिहा दृढ़ाईआ। की खेल होणा उपर धौल, धर्म नाल समझाईआ। मैं बैठा मस्त हो अडोल, डुल कदे ना जाईआ। मैनूं सच दस्स दे किस किस दा होणा घोल, कवण कूटे ध्यान लगाईआ । कवण मारे पहलों ढोल, की मूसा आपणे हथ्थ उठाईआ। कि ईसा पड़दा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक जणाईआ। कि मुहम्मद आपणा पूरा करे रोल, नम्बर सब दा दए समझाईआ। क्यों न्आज़ वंडी हज़रत ने सवा पा चौल, चुली चुली पाणी हथ्थ किसे ना आईआ। किउ गोबिन्द ने हथ्थां नाल छकाई पाहुल, पंज पंज तुपके दिते टपकाईआ । एह वक्त हुण पुजणा जिस दा भेव खुल्हाया कृष्ण कला

सौल, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। दुनियादार नूं दुनिया करे मख़ौल, मसखरी जगत उडाईआ। नारद कहे मैं सज्जणा सब दा कढणा पोल, भुलेखा भरांत रहे ना राईआ। तैनूं मित्रा पूरा तोलणा पैणा तोल, अस्सू तेरी आस नाल मिलाईआ। बचन दस्स इक निरोल, की निर्भय रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। अस्सू कहे नारदा मैनूं चढ़या चाउ घनेरा, की घनईया गया सुणाईआ। की बावन कीतीआं मेहरां, बलि दुआर दए वड्याईआ। की काहन ने काहन दा वक्त दस्सया नेरा, नेरन नेर नेर दरसाईआ। की पैग़म्बरां भेव खुलाया सञ्झ सवेरा, शबे रोज़ की चतुराईआ। की नानक गोबिन्द नाम दृढ़ाया तेरा मेरा, मेरा तेरा खेल की वखाईआ। कुछ लहिणा देणा दस्स दे बण दलेरा, हौसला हिम्मत आपणी नाल रखाईआ। किस बिध नौ खण्ड पृथ्मी पैणा घेरा, घुम्मण घेरी विच लोकाईआ। कौण चलाए चुरासी वाला बेड़ा, कवण कंध उठाईआ । दस्स दे पहलों केहड़ा उजड़ना खेड़ा, सत्तां दीपां देणा जणाईआ। मैं चाहुंदा इक दो चार चार दो तिन्न इक तिन्न ते इक दे विच इक दा हो जाए झेड़ा, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। नारद कहे अस्सू जी मैं वी ओथे जा के लावां डेरा, वेखां नैण उठाईआ। जोती जोत

४४ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा करता बेपरवाहीआ। अस्सू कहे नारदा तूं बहुत पुराणा ४४

२४ मीत, मित्रा दे जणाईआ। तूं जुग जुग वेखी रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जया वाहो दाहीआ। की लेखा मन्दिर २४

मसीत, काअबे की रहे सुणाईआ। की लहिणा देणा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी की दृढ़ाईआ। किस बिध लख चुरासी परखी नीत, घर घर अन्दर वेख वखाईआ। उह वेख लै सदी चौधवीं रही बीत, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग सब नूं रिहा जीत, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। सब दी नंगी होई पीठ, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग जीव कौड़ा होया रीठ, अमृत रस ना कोए भराईआ। की साहिब दा खेल होणा अनडीठ, जग नेत्र लोचन नैण वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे अस्सू जी मैं प्रभ दी सुणावां डुग डुगी, बिन ताल ताल बणाईआ। कलयुग दी औध दिसदी पुगी, वेखां नैण उठाईआ। मेरा लहिणा जुग जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर नाल मिलाईआ। जगत जहान दी पवित्र रही ना बुद्धी, मतहीण होई लोकाईआ। लेखा समझ ना आए वदी सुदी, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। उह वेख लै धरती रोंदी भुब्बी भुब्बी, बिन नैणां नीर वहाईआ। मैं जगत विचार दे कीचड़ खुभ्भी, बाहर ना सके कोए कढ्ढाईआ। मेरी धार रही ना दुद्धी, रस नज़र कोए ना आईआ। मेरी सुरती होई बेसुधी, मतहीण जगत कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा साचा

वर, सच आसा पूर कराईआ। नारद कहे अस्सू मैं वजावां ढोल ढमक्का, बिन जगत ताल सुणाईआ। किसे दा कोई रहे ना सका, सज्जण मीत नज़र कोए ना आईआ। मेरा प्रभ नाल वायदा कौल इकरार पक्का, पक्की तरह सुणाईआ। दुनियादारो तुहाडे नाल प्रभ ने करना नहीं कोई धक्का, ज़बरदस्ती ना कोए वखाईआ। तुहाडा लालच तकणा पैसा टका, माया ममता मोह वेख वखाईआ। मैंनूं ऐंउं जापदा सृष्टी लँघाउणी विच्चों सूई दे नक्का, नाका बन्दी करे ख़लक खुदाईआ। नारद कहे जे मैं सच दस्सां ते दस्सां हकीकत हका, हक हक नाल जणाईआ। ज़रूर तीजे साल नूं खेल होणा मदीना मक्का, काअब्यां पए दुहाईआ। नेत्र रोवे बूरा कक्का, कलमा नज़र कोए ना आईआ । एह इक्को हुक्म यका, वाहिद अल्ला रिहा दृढ़ाईआ। आपणा आपणा सब ने वेखणा पटा, सदी सदीवीं खोज खुजाईआ। मैं चारों कुण्ट फिरदा नठा, नारद कहे भज्जा वाहो दाहीआ। मेरी बोदी नूं सारे करदे ठठ्ठा, मख़ौल रहे उडाईआ। मैं वी ताली मार के आख्या दुनियादारो मैं वीं सतिगुरु शब्द दा पठ्ठा, दूजा मुर्शद ना कोए मनाईआ। वेख्यो घर घर पुआवांगा रट्टा, रिटन दा लेखा समझे कोए ना राईआ। जिन्हां ने खाधा वच्छा कट्टा, कटाकश नाम वाला लगाईआ। मज़्हबां वाल्यो मज़्हबां नाल होणा दीन दुनी दा बटा, ज़ीरो ज़ीरो दिसे ख़लक खुदाईआ। किसे नूं घर नहीं लभ्भणा छटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे अस्सू जी मैं वजावण आया तालीआं, तल्बां वाल्यां दयां जणाईआ। मैं गल्लां नहीं करनीआं बाहलीआं, बहुती ना कोए चतुराईआ। मैं संदेशा देवां दीन मज़्हबां दे मालीआं, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जणाईआ। आपणीआं आपणीआं झोलीआं वेखो ख़ालीआं, ख़ालक ख़लक की दृढ़ाईआ। फल रिहा किसे ना डालीआं, पत्त टहणी गई कुमलाईआ। तुसां रसमां दस्सीआं सुखालीआं, ग्रन्थ शास्त्रां नाल पढ़ाईआ। अन्दरों मिटीआं ना शाहीआं कालीआं, कालख टिक्का ना कोए गंवाईआ। कलयुग अन्तिम करे ना कोए दलालीआं, विचोला नज़र कोए ना आईआ। आपणीआं वेखो हक हलालीआं, हकीकत खोज खुजाईआ। किसे दे मस्तक चढ़ीआं दिसण ना लालीआं, लाल गुलाला रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। नारद कहे अस्सू मैं दस्सां ख़बर अणहोणी, दो जहान जणाईआ। प्रभ दा रूप कोई जगत दिसे ना मोहणी, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। जिस दे हुक्म ने सृष्टी सारी कोहणी, कोह काफ़ां पए दुहाईआ। खेल नज़र ना आए लोयणी, नेत्र अक्ख ना कोए वड्याईआ । सृष्टी कलयुग धार नाल परोणी, दिवस आपणे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे अस्सू जी मैं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं देवा सद्दा, हथ्थ पुठ्ठे सिध्धे कराईआ।

मैं धुर दे हुक्म दा बध्धा, बन्दगी विच प्रभ नूं सीस झुकाईआ। धुर दे हुक्म सुणा के नदा, अनादी नाद दृढ़ाईआ। आपणा लेखा वेखो जो जगत धार दी अद्धा, हिस्सा जगत जुग वंडाईआ। नाम खुमारी तको मधा, मधुर धुन नाल मिलाईआ। मंज़ल हक दा समझो पदा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु आदि जुगादी मेरे मित्रो, सज्जणो मेरी दुहाईआ। निरगुण धार विचों नितरो, निरवैर आपणा रूप बदलाईआ। अगला करो फ़िकरो, पिछला लेखा रहिण ना पाईआ। चोटी चढ़ के वेखो सिख़रो, मंज़ल मज़ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर आ गए धर्म दुआर, सोहणा पन्ध मुकाईआ। जोती दा चमत्कार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। बिन रसन करन गुफ़तार, गुफ़त शनीद शनवाईआ। चारों कुण्ट वेखण नैण उग्घाड़, बिन नैणां नैण तकाईआ। की खेल करे करतार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं किहा कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ समझाईआ। ब्राह्मण गौड़ा हो तैयार, पूत सपूता वेस वटाईआ। अमाम अमामा नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दे चौदां लोक हट्ट बाज़ार, चौदां तबकां वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दे कलमे नाम आए उच्चार, रसना जिह्वा ढोले बत्ती दन्द गाईआ। जिस दे चरण कवल सजदयां विच कीती निमस्कार, निव निव लागे पाईआ । जिस दी मंज़ल सब ने दस्सी दुष्वार, पौड़ी डण्डा चढ़न कोए ना पाईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणा खेल वखाईआ। उस दे नाल काहदा तकरार, निव निव सीस जगदीश झुकाईआ। जो बीस बीसा हरि जगदीसा हो के आया ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लहिणा पूर कराईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो सतिगुर आपणा मीत, शब्द इक्को नज़री आईआ। जिस ने जुग जुग चलाई रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। हुण तुहाडी बणावण आया प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। तुसीं इक्को कलमा रखणा चीत, चित वित ठगौरी रहे कोए ना राईआ। तुहाडा लहिणा देणा नाल त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा छडणा मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। उह वेख लओ सब दा वक्त सुहञ्जणा रिहा बीत, सदी सदीवी देवे नाल गवाहीआ। तुहाडे धर्म दी दु:ख विच निकले चीक, चीक चिहाढ़ा रिहा पाईआ। की तुहाडे विच तौफ़ीक, पुरख अकाल कहे मैनूं दयो समझाईआ। की मार्ग जगत बारीक, नेत्र नैणां वेखण कोए ना पाईआ। सच दस्सो किस बिध करदे रहे उडीक, बिन नैणां नैण उठाईआ। आपणे भविख्त दा वक्त तको तारीख, तवारीख बिन अक्खरां फोल फुलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सतिगुर शब्द तेरे बरदे, बन्धन जगत जुगत दीन दुनी वड्याईआ। असीं प्रेमी तेरे घर दे, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। तेरा नाम कलमा रहे पढ़दे, तेरी सिफ्त सालाहीआ। जुग जुग रहे डरदे, आप आपणा बल ना कोए प्रगटाईआ। तन वजूद साडे जम्म के रहे मरदे, ततां चली ना कोए चतुराईआ। हथ्थीं तीर कमाना रहे फड़दे, शस्त्रां खंडयां नाल लड़ाईआ। वंडां वंडदे रहे सीस धड़ दे, हिस्से दीन दुनी समझाईआ। भेव खुल्हाउँदे रहे चोटी जड़ दे, जड़ चेतन नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण वक्त सुहञ्जणा होया पहली अस्सू, आसा इक जणाईआ। सयदे विच कहे यसूह, मसीह मसल्यां बाहर दृढ़ाईआ। नारद कहे मैं खुशीआं दे विच हसूं, हस्ती तकां अगम्म खुदाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नसूं, भज्जां वाहो दाहीआ। किसे दे मज़्ब विच ना फसूं, शरअ रंग ना कोए रंगाईआ । आपणा कमरकसा आपे कसूं, कसम नाल आपणा बल प्रगटाईआ। प्रभ नूं कहिणा जिन्हां ने खाधे ढोर पशू, पंछीआं खल्ल लुहाईआ। उहनां दा दुआरा राय धर्म दुआरे वसू, दूसर धाम नज़र कोए ना आईआ।

४७ एह इशारा दिता समुंद सागराँ विच कछू, कछप गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा ४७

२४ साचा वर, सच स्वामी वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरा खेल आदि जुगादी, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। २४

तूं पारब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मांड तेरी वड्याईआ। तेरी वस्त अगम्मी तेरे कोलों लाधी, अन्त तेरे विच टिकाईआ। बिसमिल बिसमिल होए विस्मादी, विश्व दे मालक तेरी ओट रखाईआ। तूं मालक ख़ालक बोध अगाधी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करें पढ़ाईआ। तेरी दीन दुनिया जुग जुग तेरे हुक्म नाल साधी, सदके वारी घोल घुमाईआ। तेरी शरअ नाल बांधी, बन्दना समझाउण वाल्या बन्दगी विच तैनूं सीस निवाईआ । एस विच साडी वड्याई काहदी, कलमे पढ़ाउण वाल्या कलमा तेरा नाम जणाईआ। तैनूं जुग बदलणा आदि जुगादि दी वादी, वायदे सब दे वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण बौहड़ी तेरे सतिगुर शब्द ने धुर हुक्म नाल कर देणी बर्बादी, आबादी रहिण कोए ना पाईआ। तेरे अगे हो सके ना कोए बाग़ी, बग़लगीर वेखणे चाँईं चाँईआ। साडा ना कोई सवाल ना जवाबी, जवाब तल्बी तेरे चरण टिकाईआ। बिन तेरे दिसे ना कोए इमदादी, सगला संग ना कोए बणाईआ। साडी लेखे लग्गी तेरे पिच्छे मास नाड़ी हाडी, चम्मढ़ी चम्म ना कोए वड्याईआ। की संदेसा दिता बिना स्वास तों यसूह दी बाडी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तूं मालक पीरन पीरा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरा लेखा शाह हकीरा,

शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा देणा तक ग़रीब अमीरा, अमरापद दे मालक पड़दा आप उठाईआ। चार जुग साडीआं सिफ्तां वालीआं तकरीरां, तेरे नाम ढोले सोहले गए गाईआ। तेरीआं शरअ वालीआं शमशीरां, शरीअत दे मालक जगत उठाईआ। तूं स्वामी गहर गम्भीरा, गवर नूर अलाहीआ। तेरा लहिणा बेनज़ीरा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। तेरा रूप लातस्वीरा, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। की संदेशा दिता कबीरा, कहिके गया दृढ़ाईआ। की हथ्थ फड़ के कौडी रूप कसीरा, रवीदास चमार जणाईआ। लहिणा किस बिध होणा अख़ीरा, कलयुग कूड़ मिटाईआ। किस बिध देवे धीरा, धीरज धीर समझाईआ। ओढण सीस दिसे किसे ना चीरा, चिरी विछुंने ना कोए मिलाईआ। सरगुण कढ के गए लकीरा, लाईन तेरी इक समझाईआ। तेरा लेखा नाल फ़कीरा, फ़िकरयां विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। अस्सू कहे मैनूं चढ़दीआं जांदीआं मस्तीआं, मस्त दीवाना हो के दृढ़ाईआ। मैं तक के गुर अवतार पैग़म्बरां हस्तीआं, हस के दयां सुणाईआ। नाले वेखो मज़्हबां वालीआं बस्तीआं, घराने खोज खुजाईआ। जिथ्थे तुहाडीआं अक्खरां वालीआं बाणीआं होईआं सस्तीआं, कीमत सके कोए ना पाईआ। तुहाडे सिक्खां मुरीदां मनसा वेखो नसदीआं, भज्जण वाहो दाहीआ। भरीआं नहीं प्रेम रस दीआं, रस्ते घुथ्थीआं मारन धाहीआं। नौवां दुआरयां दे विच ढठदीआं, फड़ बाहों ना कोए उठाईआ। वणजारनां होईआं तत अठ्ठ दीआं, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध नाल मिलाईआ। कूड़ दुआरा फिरन टपदीआं, कदम कदम नाल बदलाईआ। वणजारनां हो गईआं काया मट दीआं, मटके हथ्थ किसे ना आईआ। कूड़ विकार रस चटदीआं, रसना जिह्वा नाल हल्काईआ। आपणा आप आपे फटदीआं, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो पै गया ग़ज़ब, मेरी हौके नाल दुहाईआ। तक लओ आपणा आपणा मज़्हब, दीन दुनी वेखो चाँईं चाँईंआ। शरअ वाल्यो ना होयो तअज्जुब, हैरानी अन्दर ना कोए रखाईआ। मैं सच दस्सां नारद कहिंदा कोई झगड़ा पैणा विच मग़रब, सोहणी वंड वंडाईआ। नौवां देशां हलूणा मिलणा विच्चों अरब, अरब खरब दा लेखा रहे ना राईआ। नौवां नूं नौवां नाल फेर देणी ज़रब, ईसा मूसा मुहम्मद देणे डिगाईआ। फेर मशरक नूं बदल ल्यो करब, कदम कदम नाल उलटाईआ। धन दौलत रहिणा नहीं किसे दरब, मेरी खुशीआं वाली दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण नारदा साडी सुण लै बात, बातन देईए जणाईआ। साडा लेखा तक लै बिना कलम दुआत, बिन कागद शाही जो लेखा लिखाया धुरदरगाहीआ। असीं खुशीआं विच झोली डाह के मंगी दात,

बेनन्ती कर कर सीस निवाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला पारब्रह्म परमेश्वर पात, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। झगड़ा चुकाउणा ज़ात पात, दीन मज़्ब ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म जोड़ना नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ । एका शब्द सब नूं देणी दात, काया मन्दिर अन्दर आप टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होवे ज़ात, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। धुर दे राम तेरा होवे वड प्रताप, काहनां दे काहन तैनूं मिले वड्याईआ। तूं नज़री आवें भगतां साख्यात, सनमुख हो के सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले बणाउणे पारजात, मेहर मेहर मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण नारदा साडी तक लै खुशहाली, खुशीआं विच ढोले गाईआ। साडा सब दा इक्को माली, मालक ख़ालक नूर अलाहीआ। जिस दे दर दे सारे सवाली, मांगत हो के झोलीआं डाहीआ । साडे पुरख अकाले दीन दयाले असीं तेरी सेव कमा लई बाहली, तेरे हुक्म विच भज्जे वाहो दाहीआ। हुण आपणा भेव चुका दे शाली, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। तेरी तक्कीए चाल निराली, नरायण देणी दृढ़ाईआ। नाले बिन हथ्थां मारीए ताली, दो जहानां देईए सुणाईआ। उह तक लओ ख़लक दा वाली, वारस इक्को इक अख्वाईआ। जिस ने घर घर अन्दर दीपक जोती बाली, लख चुरासी डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी खुशीआं होई रुत, गुरु गुरदेव रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द इक्को दुलारा धुर दा सुत, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ । जिस दा प्यारा अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जिस सुहञ्जणी करनी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पुट, हरि हिरदिउँ बाहर कढ्ढाईआ। शौह दरयाए देवे सुट, जगत जहान रहिण ना पाईआ। फेर भाग लगाए काया बुत, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। अमृत जाम प्या के घुट, निझर झिरना दए झिराईआ। सोई सुरती जाए उठ, आपणी लए अंगड़ाईआ। मनुआ मनसा वाला लुक के गुठ, आपणा नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे अवतार पैग़म्बरो मेरे नाल पूरी कर लओ शर्त, शरतीआ दयां सुणाईआ। गुरु गुरदेव वेखो उत्ते धरत, धरनी धवल धौल ध्यान लगाईआ। सब दा मालक इक्को आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिंदे योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, जोबनवन्ता अगम्म अथाहीआ। जो ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। शरअ छुरी रहिण ना देवे करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। कलयुग मेट अन्धेरा गरद, सतिजुग नूरी चन्द चमकाईआ। जिस दा खेल होणा असचरज,

अचरज लीला इक दरसाईआ। जो लहिणा देणा पूरा करे राम लेखा नाल भरत, कैकेई कुशल्या रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी वड वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण हरि साचे सच स्वामीआ, प्रभ तेरी एका ओट। आदि जुगादी अन्तरजामीआ, शब्द नगारे ला दे चोट। तेरीआं जुग जुग मेहरवानीआं, मेहरवान मेहर करे अतोट। तेरे उत्तों दितीआं कुरबानीआं, शहादतां होईआं कोटी कोट। तेरे लेखे लाईआं जवानीआं, मेल मिलाया निर्मल जोत। साडीआं मंज़लां कर आसानीआं, दीन मज़्ह्ब रहे ना सोच । सब दीआं मंज़लां इक्को होण रूहानीआं, झगड़ा मेट दे ओत पोत। तूं आत्म धार सब दा काहनीआं, काहन कान्हा तेरा इक्को सुणीए सलोक। लेखे ला लै चारे बाणीआं, तेरा नाम निधाना इक्को बहुत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा सच सच प्रगटाईआ। अस्सू कहे प्रभ तेरा नाम निधाना सच, हरि सच तेरी वड्याईआ। जगत जहाना दिसे कच, कंचन गढ़ ना कोए वखाईआ। मन ममता विच रिहा नच, नटुआ आपणा स्वांग बणाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा नाम लूं लूं जाए किसे ना रच, रोम रोम ना कोए समाईआ। तूं पुरख अकाला परमेश्वर पत, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। जन भगतां लेखे ला लै हड्ड मास नाड़ी रत, रत्न अमोलक हीरे लै बणाईआ। जेहड़े तेरे चरण दुआरे आए वत, बेवतनां आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । सच दी करनी कार कमाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। भेव अभेदा आप खुल्हाएगा। अछल अछेद पड़दा लाहेगा। वेद कितेब लेखे पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताएगा। सच आपणा हुक्म वरतावेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण भेव चुकावेगा। एकँकारा रंग रंगावेगा। आदि निरञ्जण जोत रुशनावेगा। अबिनाशी करता डगमगावेगा। श्री भगवान आपणा घर सुहावेगा। पारब्रह्म दर मन्दिर इक वडयावेगा। सति सतिवादी साची कार कमावेगा। शब्द अनादी सुत प्रगटावेगा। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलावेगा। करोड़ तेतीसा गंढु पुआवेगा। गण गंधरव रंग चढ़ावेगा। किन्नर यशप राग सुणावेगा। सूर्या चन्द नूर रुशनावेगा। मण्डल मण्डप आप सुहावेगा। लोक परलोक वेख वखावेगा। ज़िमीं असमानां पड़दा लाहवेगा। चौदां तबक आप दृढ़ावेगा। चौदां लोक पन्ध मुकावेगा। सच सलोक इक गावेगा। पन्ध मुका के जुग चौकड़ी कोटन कोट, अन्त आपणा हुक्म वरतावेगा। शब्दी शब्द लगा के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखावेगा। कलयुग अन्तिम अन्दरों कढ्ढके खोट, खोटे खरे आप बणावेगा। प्रकाश दे के निर्मल जोत, जोती जाता डगमगावेगा। आत्म परमात्म दस्सके गोत, गोर मढ़ी दा डेरा ढाहवेगा। हरिजन कदे ना

होवे फ़ौत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे घर वसावेगा। ख़सम ख़समाना बणके ख़ौंत, शौहर आपणा दर दृढ़ावेगा। भगत सुहेला कदे ना जाए औंत, जुग जुग बंस सरबंस सुहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलावेगा। साचा खेल आप खिलावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। भगत सुहेले आप उठावेगा। गुर चेले जोड़ जुड़ावेगा। सज्जण सुहेले वेख वखावेगा। धाम नवेले आप बहावेगा। अमृत रस नाम मुख चुआवेगा। जन भगतां पूरन कर काम, जन्म मरन दा दुःख मिटावेगा। घर नगर सुहा के ग्राम, गृह मन्दिर डेरा लावेगा। कूड़ी क्रिया मेट तमाम, तमा लालच लोभ चुकावेगा। अन्तर रहे ना अन्धेरी शाम, शमअ दीप जोत नूर रुशनावेगा। साचे नाम दा दे पैग़ाम, संदेशा इक्को इक सुणावेगा। जन भगतो तुहाडा करा आप इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखावेगा। अन्तर आत्म दे कलाम, कलमा कइनात तों बाहर सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावेगा। हरि करता कार कमावेगा। दीन दयाल आपणे रंग रंगावेगा। भगत सुहेले मेल मिलावेगा। काल महाकाल पन्ध चुकावेगा। चित्रगुप्त ना लेख वखावेगा। राय धर्म चुरासी वंड ना कोए वंडावेगा। लाड़ी मौत नाल ना कोए परनावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। आत्म आपणे रंग रंगावेगा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार करावेगा। दरगाह साची सचखण्ड आप टिकावेगा। जुग जन्म दी टुट्टी धार गंढु, गंढुणहार गोपाल आपणे घर वसावेगा। जिथ्थे आदि जुगादी ठण्ड, जुग जुग अग्न ना कोए तपावेगा। नाता तुट्टे तत पंज, पंचम मेला मेल मिलावेगा। जिस दी हथ्थ ना आवे मुहाणयां वञ्झ, वहिणां तों पार आप करावेगा। जन भगत सुहेला जगत दुहेला पन्ध जाए लँघ, फड़ बाहों पार करावेगा। साची सेज सुहञ्जणी वखा पलँघ, बिन पावा चूल दरसावेगा। जिथ्थे इक्को उपजे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटावेगा। जन भगत सुहेले चाढ़ के आपणे चन्द, सचखण्ड डगमगावेगा। पहली अस्सू कहे जन भगतो जेहड़े तुसीं मार के आए पन्ध, पाँधीओ तुहाडा अगला पन्ध मुकावेगा। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ गाया जिस ने छन्द, शंकर ब्रह्मा विष्न तिस दा रंग रंगावेगा। तुहाडा लहिणा देणा फेर नहीं होणा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज विच्चों बाहर कढावेगा। खुशी विच कदे ना आवे रंज, ग़मी ग़मख़ार मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणावेगा। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो खेल तक लओ भगत भगवान, हरि करता आप जणाईआ। जिन्हां धर्म दा धर्म बणाया निशान, निशाना जगत ना कोए वखाईआ। इक्को इष्ट इष्ट मनाण, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। इक्को नाम कलमा गाण, ढोला इक सुणाईआ। सोहँ शब्द कर परवान, अल्ला हू अन्ना हू रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द बणा के राम,

सीता सुरती विच टिकाईआ। निरगुण धार अगम्मा काहन, राधा रिध सिध तों बाहर सीस निवाईआ। पैग़म्बरां दा पैग़म्बर नूर अमाम, अमलां तों रहित इक अख्वाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बलधारी वड वड्याईआ। निहकलंका नौजवान, कलि कल्की आपणी कल वरताईआ। भगत सुहेले कर पहचान, फड़ फड़ अन्दरों मेल मिलाईआ। नव सत्त बणा विधान, कायदा कानून इक जणाईआ। जिस नूं मन्नण राज राजान, शाह सुल्तान सीस निवाईआ। जिस दा लेखा ज़िमीं असमान, दो जहानां वेख वखाईआ। सो भगत सुहेले कर परवान, परवाने धुर दे लए बणाईआ। जेहड़े चरण दुआरे पहुंचे आण, दीन दुनी दा पन्ध मुकाईआ। उन्हां दे भाग लगाए काया मकान, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर वेख वखाईआ। बिना मंग्यां देवे दान, नाम निधाना भगतो तुहाडी झोली पाईआ। तुसीं अजे बाल अंञाण, बाली बुद्ध अख्वाईआ। तुहाडे लेखे लाए स्वास प्राण, साह साह विच आपणा नाम टिकाईआ। तुहाडा परवान करे पीण खाण, पवण पाणीआं लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। अस्सू कहे मेरी आस अनोखी, बिन अक्खरां दयां जणाईआ। जन भगतो प्रभ दी मंज़ल तक लओ सौखी, सजणो सच नाल समझाईआ। जेहड़ी धार पहली दूजी तीजी नहीं कोई चौथी, चौथे पद दा आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। आपणे घर वसावण आया, करता धुरदरगाही । पिछला पन्ध चुकावण आया, बण अगम्मा माही। जन्म जन्म दे विछड़े जोड़ जुड़ावण आया, वेखणहारा थांउँ थाईं। साचा नाम निधाना जाम प्यावण आया, जगत जहान तृष्ना रिहा मिटाई। इक्को घर वसावण आया, दूसर कोई दिसे नाहीं। तूं मेरा मैं तेरा नाम जपावण आया, ढोला सोहँ गाउणा चाँई चाँई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाई। नारद कहे जन भगतो किरपा करे हरि जगदीश, जगदीश्र हथ्थ वड्याईआ। जिस दे छत्र झुले सीस, शाह पातशाह शहिनशाह नूर अलाहीआ । जिस लहिणा देणा मुकाउणा बीस इकीस, इकीसा इक्को इक बेपरवाहीआ। आसा पूरी करे तीस बतीस, अक्खर अक्खर नाल वड्याईआ। जिस दा हक हक दा कलमा सच सच हदीस, हज़रतां बाहर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। साचा रंगे रंग प्रभ, आपणी दया कमांयदा। भगत सुहेले जगत लभ लभ, लोभ मोह हँकार मिटांयदा। अमृत रस चुवा के कवल नभ, बूंदा बांदी आप टपकांयदा। तृष्ना हवस मेट के सभ, सबब नाल आपणा जोड़ जुड़ांयदा। भावें तत समझो भावें जोत समझो अलाही रब्ब, नूर नुराना डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमांयदा। भिन्नड़ी रैण कहे

मैनूं चढ़ी खुमारी, अस्सू आस रखाईआ। जन भगतो भगती धार लग्गे प्यारी, प्रेमीओ प्रेम नाल जणाईआ। सब तों सची साहिब सतिगुर नाल यारी, जगत यराना कम्म किसे ना आईआ। जो शाहो भूप सदा तुहाडी करे वफ़ादारी, शहिनशाह हो के सेव कमाईआ। तुहाडे अन्दरों कढे ग़द्दारी, कूड़ी क्रिया बाहर सुटाईआ। इक्को जेहा माण दे के पुरख नारी, बृद्ध बालां होए सहाईआ । तुहानूं धर्म दी चाढ़ के खारी, रंग इक्को इक रंगाईआ। फिर जन्म लैणा ना पए दुबारी, चुरासी विच ना कोए भुआईआ। तुहाडे वास्ते इक अटारी, सचखण्ड दिती सुहाईआ। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, नूर नुराना नज़री आईआ। तुहाडी खुशीआं वाली होवे बहारी, सोहणी रुत सुहाईआ। तुहाडी आत्मा रहिण ना देवे कँवारी, परमात्म हो के आप परनाईआ। ज़रूर दरस दिआ करेगा वारो वारी, घर सुत्तयां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। अस्सू कहे जन भगतो मेरी आसा बड़ी लम्मी, लमह लमह दए गवाहीआ। मेरा प्यार नहीं काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी दयां जणाईआ । जे भगतो जीणा ते जीउ प्रभू नाम दे दमी, स्वास स्वास उसे दा नाम ध्याईआ। ना खुशी रहे ना ग़मी, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। ना लालच रहे ना तमी, तृष्ना कूड़ ना कोए हल्काईआ। तुहानूं कदे याद ना आवे आपणी अम्मी, पिता हो के पूत आपणी गोद उठाईआ। तुहाडा बेड़ा रिहा बन्नी, फड़ फड़ आपणी गंढु बंधाईआ। धुर दा हुक्म सुण लओ नाल कन्नीं, कायनात दा मालक रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे जन भगतो तुहाडी लेखे लग्गे मज़दूरी, जो साह साह कमाईआ। तुहाडे अन्दर बख्शे चन्द नूरी, नूर नुराना आप चमकाईआ। जो इशारा दिता मूसे उत्ते कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर वखाईआ। तुहाडी सुत्तयां सुत्तयां ज़रूर आसा करेगा पूरी, पूरन सतिगुर नूर नुराना नज़री आईआ। तुहाडी काया चोली रंग चाढ़ेगा गूढ़ी, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। हरिजन कोई रहे ना मूर्ख मूढ़ी, चतुर सुघड़ दए बणाईआ। साची बख्श के चरण धूड़ी, टिक्के ख़ाक रमाईआ। तुहाडे कोट जन्म दे मेट कसूरी, कसर इशारीए नाल उडाईआ। मनुआ मन ना पाए फ़तूरी, फ़तवा दे के दए सज़ाईआ । अन्दरों कढ मग़रूरी, निवण सु अक्खर इक पढ़ाईआ। पन्ध मुका के नेड़े दूरी, काया मन्दिर इक सुहाईआ। तुहाडी नौ खण्ड पृथ्मी करनी मशहूरी, मशवरा शब्द गुरु रखाईआ। जिस कारन नानक मोढे ते चुक्की भूरी, खेसी तन उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच आप जणाईआ। अस्सू कहे जन भगतो उह वेख लओ सीता आई भज्जी, राम संदेश सुणाईआ। जिस दी अड्डी तको सज्जी, सहिज नाल उठाईआ। खुशीआं नाल रज्जी, ढोले रही गाईआ। ग़रीब

५३
२४

निमाणयां इक्को दी तार वेखो वज्जी, जो सितार रही हिलाईआ। जोत निराली जगी, जोग अभ्यास समझाईआ। जगत बुझावे अग्गी, तृष्ना कूड़ मुकाईआ। दरस देवे शाह रगी, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। जोत प्रकाश वखावे बग्गी, बग्गे अस्व सोभा पाईआ । एह राम रामा नूर अलाही रब्बी, जिसनूं यामबीन कहि के सारे सीस निवाईआ। एह प्यार मुहब्बत दा बड़ा जे लबी, जगत लोभ वाल्यो आपणे नाम दा लोभ लए कराईआ। पर एह आउँदा कदी कदी, कदीम दे विछड़े लए मिलाईआ। तुहाडी इक्को पुश्त ते इक्को यदी, दशरथ दा बेटा राम दए गवाहीआ । एह कौल इकरार कीता सी वहिंदी धार सुरजू नदी, जलां थलां अस्गाह बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपाणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ। अस्सू कहे जन भगतो तुहाडी आशा होवे पुन्नी, पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। बणावे वड गुणी, गहर गम्भीर समझाईआ। सुणावे नाद धुनी, धुन आत्मक राग प्रगटाईआ। चुरासी विच्चों कर के छाण पुणी, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। याद रखयो जदों शहिनशाही सम्मत आया उन्नी, इक नौ लेखा दए मुकाईआ। किसे दे सीस रहिणी नहीं चुन्नी, ओढण वेखण कोए ना पाईआ । सब दी चोटी जाणी मुन्नी, मौला आपणा हुक्म वरताईआ। भाग लगणा नहीं किसे दी कुल्ली, कुल मालक खेल
५४ खिलाईआ। उम्मत वाल्यो किसे हथ्थ नहीं आउणी गुल्ली, शरअ दा गुलाम रहिण कोए ना पाईआ। जे तुसीं नाम कलमा ५४
२४ पढ़दे बुल्ल्हीं, लबां दे रस वाल्यो लबां तुहाडीआं दितीआं कटाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों फुलवाड़ी कदे ना फुली, पत्त २४
टहणी ना कोए महकाईआ। उह तको अवतार पैग़म्बरो गुरुओ भगतां दी धार प्रभ दे चरण घोल घुली, घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे प्रभ तेरे भगत निमाणे जग, जग जीवण दाते तेरी ओट रखाईआ। कलयुग तृष्न बुझा दे अग्ग, अग्नी तत ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणा दे कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। जे सतिगुर शब्द ते दर्शन दे दे उपर शाह रग, शहिनशाह हो के नज़री आईआ। भगतां दी आत्म सेजा एसे तरह जाणी सज, सज्जण हो के मिलणा चाँईं चाँईंआ। जदों अन्दर वड़ें तेरा नाम नगारा जावे वज, सोई सुरती लैणी उठाईआ। फेर तेरा घर बैठयां काअबे तों परे हो जाए हज्ज, हाजत अवर रहे ना राईआ। वेखीं भगतां नाल कदी ना लावीं पज्ज, अछल अछल्ल ना खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा एका वर, दर साचे आस रखाईआ। अस्सू कहे प्रभ मेरी आसा तक लै आप, आपणी दया कमाईआ। जो जन तेरा करदे जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। कोट जन्म दे मेट दे पाप, पतित पुनीत दे बणाईआ। जगत रोग ना रहे संताप, सतिगुर शब्द होणा सहाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पुछणी वात, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग

वेख अन्धेरी रात, तुध बिन साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरी इक बेनन्ती निक्की जेही बात, बातन भगतां पड़दा देणा उठाईआ। तूं आत्म दा परमात्म आदि जुगादी पिता मात, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा निधान श्री भगवान पहली अस्सू कहे दर आया नूं दे दे आपणे प्यार दी दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचा आप सुहाईआ। घर सुहा सुहञ्जणा, तन मन्दिर इक वजूद। तूं मालक आदि निरञ्जणा, नूर अलाही हक महबूब। दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, तेरा आलीशान अरूज। तेरा नाम नगारा इक्को वजणा, नव सत्त मेटणी हदूद। तूं गोपाल मूर्त मदना, हर घट रिहा मौजूद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी मंज़ल बख्शणी हक मकसूद।

५५
२४

✪ ५ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर आत्मा सिँघ फ़ौजा सिँघ दरबारा सिँघ प्यारा सिँघ जीवण सिँघ दर्शन सिँघ किशन सिँघ मलूवाल गुरदयाल सिँघ मैणीआ, प्रीतम कौर जगीर कौर मैणीआ, गुलज़ार सिँघ रूपोवाल, ✪

पंज तत कहिण प्रभ आत्म नाल सानूं तेरी लोड़, लुड़ींदे साजण देईए जणाईआ। परम पुरख आपणे नाल नाता जोड़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश हो के देईए सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपे बौहड़, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। मिट्ठे कर लै रीठे कौड़, अमृत रस नाम भराईआ। सच दुआर दा ला दे पौड़, पौड़ी डण्डे दीन दुनी पन्ध मुकाईआ। तेरी दरगाह साची सचखण्ड दुआर जाईए दौड़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तूं परम पुरख परमात्म ब्राह्मण गौड़, वेद व्यासा पुरख अबिनाशा तेरी दए गवाहीआ। सति सच चढ़ा लै आपणे घोड़, रासां निरगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत जहान दे बाहर कढ लै विच्चों जोहड़, जलां थलां विच ना कोए भुआईआ। तेरा भगत सुहेला इक विच्चों लख करोड़, कोटां विच्चों सोभा पाईआ। तेरे नाम दा पाईए शोर, शौहर बांके वेखणा चाँईं चाँईआ। सदी चौधवीं अन्तिम तक लै कर के ग़ौर, गहर गम्भीर देईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे पैंडे जाण मुक, पाँधी अगे रहीए ना राईआ। असीं तूं मेरा मैं तेरा गाई तुक, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। साडी मंज़ल जाए ना रुक, रुकमणी कृष्ण दी धार दए गवाहीआ। तेरे निशान्यों जाईए कदी ना उक, निरगुण सरगुण वेखणा

चाँईं चाँईंआ। साडा पैंडा जाए मुक, चुरासी फाँसी रहिण कोए ना पाईआ। तेरे चरण कवल एका जाईए झुक, निव निव सीस निवाईआ। साडा अन्त कन्त भगवन्त रिहा ढुक, वेला वक्त दए गवाहीआ। दरोही असीं वणजारे बणना नहीं टुक, जगत तृष्ना ना कोए रखाईआ। फेर कदे ना आईए जनणी कुक्ख, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। साडा उजल कर दे मुख, पंज तत भगतां रहे कुरलाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार सानूं दे दे सुख, आत्मा नाल साडा पन्ध मुकाईआ। तेरे लाडले जगत असीं सुत, दुलारे सोभा पाईआ। तूं स्वामी अबिनाशी अचुत, करनी दा करता इक अख्वाईआ। साडी सुहञ्जणी करदे रुत, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ। दीन दुनिया नालों साडा नाता जाए टुट्ट, रिश्ता तेरे नाल बणाईआ। सानूं सीने लाउणा घुट्ट, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे उत्ते दया कमा, करते पुरख तेरी सरनाईआ। साडी कबूल करीं दुआ, रहमत करनी धुरदरगाहीआ। दर ठांडे मंग रहे मंगा, ख़ाली झोली देणी भराईआ। तूं पातशाह शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी बेपरवाहीआ। तूं अगम्म अगम्मड़ा इक ख़ुदा, ख़ुद मालक नूर अलाहीआ। असीं तेरे उत्तों होईए फ़िदा, आप आपणा भेंट कराईआ। पंज तत कहिण सानूं मार्ग दस्स दे सिधा, सिध सादकां बाहर पढ़ाईआ । तेरे मिलण दी तेरे विच्चों मिले बिधा, बिदना दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा वेखीए दर सुहञ्जणा, सोभावन्त बेपरवाह। किरपा कर दे आदि निरञ्जणा, नूर नुराने नूर रुशना। तूं दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्म अथाह। आत्म धार साचा सज्जणा, सतिगुर शब्द शब्द मलाह। तन कहिण साडा अन्तिम ठीकर भज्जणा, थिर रहे कोए ना। सानूं आपणे दुआरे सदणा, प्रभू तेरे मिलण दा चाअ। जगत दीन दुनी दुआरा तजणा, लख चुरासी देणा पन्ध मुका। सच प्रीती तेरी विच बज्झणा, नाता सके ना कोए तुड़ा। अन्त तेरे गृह वंञणा, वञ्झ मुहाणा दे दे नाम अलाह। नेत्र पा निधान अंजणा, निज लोचन कर रुशना। तुध बिन पड़दा किसे ना कजणा, सिर सिर होए ना कोए सहा। परम पुरख परमात्म सानूं पए कोई ना लभणा, घर घर भगतां आपणा दरस दिखा। लेखा रहे ना आहला अदना, शाह कंगाल इक्को रंग रंगा। तेरा दीपक जोती दो जहान जगणा, जागरत जोत कर रुशना। पंज तत कहिण प्रभू असां सचखण्ड दुआरे वसणा, आत्म नाल लहिणा देणा दे चुका। तेरा जोती दर्शन कर कर हसणा, बिन नैणां दर्शन पा। तेरे चरण कवलां झसणा, बिन हथ्थां हथ्थ टिका। तूं मार्ग अगम्मा दस्सणा, पर्दा अन्दरों देणा उठा। असां बिन कदमां तेरे सचखण्ड दुआरे वसणा, मंज़ल मंज़ल पन्ध चुका। फेर खुशीआं दे विच हसणा, हस्ती

तेरी तक नूर अलाह। पंज तत कहिण प्रभ जन भगतां तेरे नाम दा लैणा रसना, रस्ता अगम्म देणा दरसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होणा अन्तिम आप सहा।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड मागा सराए ज़िला अमृतसर सुरजण सिँघ महिन्दर सिँघ प्रीतम सिँघ अजीत सिँघ बचन सिँघ जसवन्त सिँघ करतार चरण सिँघ चन्नण सिँघ मागा सराए, केसर सिँघ मैसम पूरा, जगीर सिँघ मैणीआ, ✪

पंज तत कहिण प्रभ तूं दाता बेपरवाह, आदि जुगादि परम पुरख अख्वाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार अगम्म मलाह, बेड़ा दो जहान श्री भगवान आप चलाईआ। दोए जोड़ सीस जगदीस देईए निवा, चरण धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म साडी आशा पूर करा, मेहरवान महबूब आपणे रंग रंगाईआ । जुग जुग सड़ सड़ हुन्दे रहे सुआह, मिटी ख़ाक रूप बदलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सानूं मिल्या ना सचखण्ड थाँ, दरगाह साची नज़र कोए ना आईआ। अन्त कन्त भगवन्त पकड़े कोई ना बांह, सहायक नायक तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। मकबरयां विच दिता दबा, कबरां साडी धार दबाईआ। असीं भगत सुहेले सूफ़ी तेरे अगे करीए दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं मालक इक खुदा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। तेरा ज़हूर दो जहां, जोती जाते तेरी बेपरवाहीआ। साडी ख़ाली झोली दे भ्रा, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। पंज तत कहिण सानूं चुरासी वाली भुगतणी ना पए सज़ा, चारे खाणी लेखा देणा मुकाईआ। असीं चलीए तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। आत्मा मेलणा तेरी आदि आदि अदा, अदल दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ । सानूं तेरे सचखण्ड दुआर जाण दा चाअ, चाउ घनेरा इक दरसाईआ। असीं कलयुग अन्त दुक्खां विच भरीए आह, हौकयां विच रहे सुणाईआ। बिन हथ्थां साडी पकड़ीं बांह, बलधारी होणा आप सहाईआ। इक्को तेरा नगर खेड़ा इक्को तेरा तक्कीए गराँ, जिथ्थे बिन सूर्या चन्द होवे रुशनाईआ। साडा नाता रहे ना पिता माँ, जगत तत ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण असीं प्रभ जुग जुग रहे मिटदे, तन वजूदां पन्ध मुकाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रहे टिकदे, भज्जे वाहो दाहीआ। चुरासी विच रहे विकदे, करते कीमत कोए ना पाईआ। अन्त सहारे तके तेरे इक दे, एकँकार तेरी सरनाईआ। साडे लेख अनोखे

लिख दे, लिखणहार तेरी बेपरवाहीआ। सानूं प्यार दे दे साचे सिख दे, सिख्या इक्को इक समझाईआ। असीं वणजारे जगत ना होईए भिख दे, भिक्ख्या मंगण कदे ना जाईआ। तेरे चरण कवलां होईए लिटदे, लिट्टां खोल्ह के सीस झुकाईआ । साडे लहिणे देणे मुक जाण पत्थर इट्ट दे, पाहनां सीस ना कोए निवाईआ। साडे नाते टुट जाण बूँद रित दे, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। असीं दर्शन मंगदे नित दे, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। प्यारे होईए तेरे हित दे, हितकारी हो के वेखणा चाँईं चाँईंआ। हुक्म संदेशे सुणे शब्द गुरु गुर मित दे, मित्र प्यारा की समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां लहिणे आप नजिठ दे, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं भगतां तन शरीर, जगत वजूद सोभा पाईआ। तूं शहिनशाह शाह गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। साडी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणी इक जणाईआ। तूं बेपरवाह बेनज़ीर, नज़रीए नाल देणा बदलाईआ। साडे वस्त्र वेख लै चीर, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। साडे ओढण होए लीरो लीर, अल्फ़ी गल ना कोए चतुराईआ। तूं शहिनशाह असीं हकीर, फ़कीर दरवेश मंग मंगाईआ। तूं शहिनशाह पीरां दा
५८ पीर, पैग़म्बरां दा पैग़म्बर नूर अलाहीआ। तेरे कलमे दी इक्को पढ़ीए तकबीर, ढोला सोहला इक जणाईआ। साडी मंज़ल ५८
२४ तक अख़ीर, आख़र तेरे अगे वास्ता पाईआ। जो इशारा दे के गया कबीर, कबरां तों बाहर सुणाईआ। तेरे चरण कवल २४
साडा नेत्र वगे नीर, नैण रहे कुरलाईआ। साचे नाम दा बख्श दे धुर दा सीर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। बजर कपाटी पड़दा लाह चीर, चिरी विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। नौ दुआर कट दे भीड़, वासना कूड़ रहे ना राईआ। दस्म दुआरी आपणी वखा तस्वीर, जोती जाता नज़री आईआ। बूँद स्वांती अमृत रस दे ठांडा हस्त कीर, कीट कीटां आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं काया भगतां चोले, दीन दुनी नज़री आईआ। तूं वसणा साडे कोले, घर मन्दिर डेरा लाईआ। भेव चुका दे पड़दे ओहले, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। असीं बिना रसना तों सुणीए तेरे ढोले, गीत गोबिन्द देणा जणाईआ। सब दे पड़दे देणे खोल्ह, ख़ालक खलक आपणा रंग रंगाईआ। असीं तत विचारे आले भोले, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। तेरे दर दे होए गोले, सेवक हो के सेव कमाईआ। सानूं राय धर्म ना अन्त विरोले, चित्रगुप्त लेख ना कोए समझाईआ। लाड़ी मौत ना गावे ढोले, कज़ा कज़ाक नाल मिलाईआ। साडी सुरती तेरे शब्द विच मौले, मौला आपणा रंग रंगाईआ। असीं पड़दे तेरे अगे खोल्ह, भेव अभेद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन पूरा तोल कोई ना तोले, तोलणहार एकँकार निराकार निरँकार नज़र कोए ना आईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर बख्शीश सिँघ, करनैल सिँघ, सवरन सिँघ, अजीत सिँघ, संपूरन कौर, कर्म सिँघ, महिन्दर सिँघ कादराबाद, गुरबचन सिँघ, अजीत कौर बाबोवाल, मस्सा सिँघ बल, अमराउ सिँघ बल, जुगिंदर कौर मलूवाल ✪

पंज तत कहिण प्रभ आपणा वेख सुहञ्जणा वक्त, जगत जहान श्री भगवान ध्यान लगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी लेखे ला लै बूँद रक्त, तन वजूद हक महबूब तेरे चरण टिकाईआ। श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना आपणी बख्श दे शक्त, शख्सीयत वलदीअत आपणी इक समझाईआ। निरगुण धार निरवैर निरँकार तेरे होईए भगत, भावनी सब दी पूर कराईआ। तेरा हुक्म नाम निधाना जगत ना होवे सख्त, मेहरवान मेहर नजर नाल तराईआ। तेरी मंजल विच जाए कोई ना अटक, रैहबर रस्ता इक्को देणा वखाईआ। मानस जन्म रहे ना भटक, भावना कूड़ रहे ना राईआ। मात गर्भ ना आईए लटक, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे लेखे जाईए लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबग, हरि करता अगम्म अथाहीआ । फड़ फड़ हँस बणा कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दर्शन दे उपर शाह रग, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ । कलयुग कूड़ी क्रिया पोह सके ना अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दीन दुनी दी पार करा दे हद्द, हदूद आपणी दे वखाईआ। असीं आत्मा नाल तेरी होईए यद, यदी देणी माण वड्याईआ। की होया जे बण गए रूप मास नाड़ी हड, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दीन दुनी रंग रंगाईआ। साहिब सतिगुर किरपा निधान अन्त ना छड, छुटकारा एकँकारा चुरासी विच्चों देणा कराईआ। निरगुण निरवैर तेरे नालों ना होईए अड्ड, वखरा गृह ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा गृह सुहा सुहञ्जणा, सोभावन्त दे वड्याईआ। किरपा कर आदि पुरख निरञ्जणा, नर नरायण तेरी सरनाईआ। तूं दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार देणा कराईआ। नेत्र नाम निधाना पा दे अंजणा, जोती जाते कर रुशनाईआ। सच स्वामी दर तेरा इक्को मंगणा, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। परवरदिगार सांझे यार चाढ़ दे रंगणा, दुरमति मैल दे

धुआईआ। दर ठांडे सीस जगदीस झुकाईए विच बन्दना, सजदयां विच निव निव लागीए पाईआ। तूं सब नूं लाउणा आपणे अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। नाम निधान श्री भगवान अगम्मा वंडणा, काया मन्दिर अन्दर टिकाईआ। शब्दी शब्द दे अनन्दना, अंमिओं रस बूँद स्वांती आप टपकाईआ। झगड़ा रहे ना तत पंजना, पंचम देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभू साडे लेखे लाउणे तत, ततव तत तत दृढ़ाईआ। अन्तर बख्श दे ब्रह्म मति, पारब्रह्म समझाईआ। जिस नाल फेर ना आईए वत, बेवतना वतन देणा वखाईआ। जिथ्थे झगड़ा होवे मूल ना रत, रत्न अमोलक हीरे लैणे बणाईआ। इक्को मार्ग होवे सति, सच नाल वड्याईआ। अन्त कन्त भगवन्त साडी रखणी पत, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, हरि करता नूर अलाहीआ। तेरे दुआर बोलीए अलख, अलख अगोचर देणी माण वड्याईआ। सतिगुर धार होणा प्रतख, सनमुख हो के सोभा पाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, भगत सुहेले हो के आस तकाईआ। बिन रसना जिह्वा तेरा गाईए जस, बिन सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। साडा वसेरा होवे कदे ना वख, वखरा गृह ना कोए जणाईआ। तेरी सरन सरनाई गए ढठ, सरनगति इक समझाईआ। उह लेखा तक लै पंज तिन्न अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन
मति बुद्ध नाल रलाईआ। साडा लहिणा देणा रहे ना अठसठ, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती लेखा अवर ना कोए समझाईआ। झगड़ा मुकाउणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, काअब्यां पड़दा देणा चुकाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। असीं तत निमाणे जोड़ीए हथ्थ, निव निव सीस झुकाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, परम पुरख इक अख्वाईआ। तेरे चरण कवल जाईए ढठ, ममता मोह ना कोए जणाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार आत्मा नाल साडा करना इक्ठ, इक्को रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सद तेरा गाईए जस, सिफ्तां नाल सिफ्त सिफ्त सलाहीआ।

✪ ७ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड निज़ामपुर ज़िला अमृतसर जसवन्त सिँघ, प्रीतम सिँघ धन्नतो, बलवन्त सिँघ, ठाकर सिँघ, गुरदित सिँघ निज़ामपुर, बचन कौर मलकपुर, इन्द्र कौर सरमुख सिँघ तरनतारन, चरणजीत कौर दीवाना ज़िला हिसार, ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर जगा दे जोती, जोती जाते पुरख बिधाते आपणी दया कमाईआ। सच स्वामी साडी

सुरत रहे ना सोती, शब्दी धार हरि निरँकार लैणी उठाईआ। परम पुरख परमात्म जे आत्म तेरा गोती, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे रंग रंगाईआ। साडे अन्दरों कढ वासना खोटी, खोटे खरे लै बणाईआ। मंज़ल चाढ़ के वेख चोटी, हकीकत दे मालक पड़दा आप उठाईआ। असीं जन्म भोग लए कोटन कोटी, राय धर्म देंदा रिहा सज़ाईआ। साडी आशा तेरे चरण रोती, बिन नैणां नीर वहाईआ। साडी आयू होर होवे ना बहुती, चारे खाणी संग ना कोए बणाईआ। लेखा पूरा कर दे जो इशारा दे गया रवीदास चमारा मोची, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। वेखीं जगत धार कदे ना सोची, सोच विच कदे ना आईआ। साडी आशा पूरी कर दे लोची, निज लोचन नैण तेरा दर्शन पाईआ। दुरमति मैल जाए धोती, पतित पुनीत देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा रंग रंग दे आप, आपणी दया कमाईआ। तेरा अन्तर इक्को होवे जाप, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। तूं आदि जुगादी माई बाप, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता मेट दे ताप, त्रैगुण अतीते होणा सहाईआ। अन्तर रहे ना अन्धेरी रात, नूरी चन्द देणा चमकाईआ। जे आत्म तेरी ज़ात, पंज तत कहिण गृह आपणे दे वड्याईआ। अमृत बख्श दे बूँद स्वांत, नाभी कवल कवल उलटाईआ। दर्शन दे दे बहु बिध भांत, रूप अनूपा आप जणाईआ। सदा रहीए तेरे चरण कवल इकांत, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। खाणी बाणी मुके वाट, रसना जिह्वा जगत ना कोए पढ़ाईआ। मंज़ल हकीकी दे दे सचखण्ड दुआरा घाट, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा वेख लै जगत जहान, भगत जन हो के सीस निवाईआ । तूं आदि जुगादी एका काहन, काहन कान्हा नूर अलाहीआ। तेरा सति दा सति निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। तेरे धर्म दा धर्म ईमान, अमान तक ख़लक खुदाईआ। निरगुण होणा निगहबान, निरवैर आपणी अक्ख उठाईआ। पतिपरमेश्वर देणा दान, परम पुरख झोली देणी भराईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरी मंज़ल होवे आसान, अगे हो ना कोए अटकाईआ। दर ठांडे देणा माण, निमाणे हो के सीस झुकाईआ। साडे अन्दरों कढ पंज शैतान, शरअ कूड़ रहिण ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा होवे गान, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। साडा बंक दुआर सुहा दे मकान, काया काअबा सोभा पाईआ। तूं योद्धा सूरबीर जुआन, मर्द मर्दान इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण असीं तेरे बाल निधान, बाली बुध ना कोए चतुराईआ। साडी आप करीं पहचान, बेपहचान वेखणा चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दुआर बख्श अस्थान, थान थनंतर बहि के वजे वधाईआ । जे भगतां आत्मा करें परवान, पंजां ततां देणी नाल

सरनाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ भगत सुहेले तेरे मीत, साजण सज्जणां वेख वखाईआ। त्रैगुण नालों कर अतीत, त्रैभवण धनी दे वड्याईआ। दिवस रैण वसणा चीत, ठगौरी मन देणी गंवाईआ। असीं तेरी चलाईए रीत, रीतीवान तेरी सरनाईआ। सति सच दा दस्सणा गीत, गोबिन्द ढोला धुरदरगाहीआ। झगड़ा मेटणा हस्त कीट, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। साडी नंगी ना होवे पीठ, पुश्त पनाह हथ्थ देणा टिकाईआ। तेरा नाम रस सदा चखीए मीठ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। तेरा इक्को कलमा होवे हदीस, हज़रतां तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। छत्र तक्कीए तेरे सीस, जगदीश इक्को नज़री आईआ। जुग जुग लख चुरासी पीसण ल्या पीस, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक आपणा रंग चढ़ाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी अन्त अन्त अरज़ोई, आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोई, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान मिले ना ढोई, ढोला गीत सुहागी तेरा ना कोए सुणाईआ। दुरमति मैल जाए ना धोई, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म जाए ना मोही, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। दरोही साडी पत गई खोही, ख़लक दे मालक तेरी ओट तकाईआ। तेरा नाम कलमा तेरी कदमां दी दरोही, महिबान बीदो बीखैरीया अल्ला तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। पंज तत कहिण किबले अज़ मबलू चश्मे नविश ख़ज़िलतो ज़वा अवज़ी मबू नूरे यशा रहमते खुदा खुद वज़ी वज़ीउल ज़मा काज़ुसता महस्ता अज़ा नज़ीबे नगिस कोशे कुना कुनिंदे गुमा ज़वीते ज़हिब अदाबे महबूब आलीशान अर्शे अरूज मंज़ले हक मकसूद नूर नुराने नूर नूर अलाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ चरण कवल दे सहारा, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। धर्म दी धार मिले दुआरा, नर निरँकारा गृह मन्दिर देणा सुहाईआ। तेरा शब्द दा शब्द होवे जैकारा, निरअक्खर धार देणा पढ़ाईआ। अन्तर खोल्ह दे बन्द किवाड़ा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। अमृत बूँद दे दे ठण्डी ठारा, अग्नी तत तत बुझाईआ। अनादी नाद सुणीए धुन्कारा, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। तेरा नूरी जोत होवे उज्यारा, जोती जाते डगमगाईआ। तेरे चरण सरन निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। तूं मेहरवान परवरदिगारा, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा जन्म ना होवे दुबारा, जनणी कुक्ख ना कोए टिकाईआ। चुरासी विच्चों कढणा बाहरा, फाँसी राय धर्म ना कोए वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे श्रृंगारा, काल रंग ना कोए रंगाईआ। सतिगुर शब्द दा देणा सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

जन भगतां भगवन बख्श आपणा दुआरा, सचखण्ड साचा दरगाह साची इक वखाईआ। जिथ्थे निरगुण दीप जोत होवे उज्यारा, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। तूं शाहो भूप होवे सिक्दारा, शहिनशाह तेरी वड वड्याईआ। थिर घर बहि के आत्मा नाल करीए निमस्कारा, निव निव लागीए पाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पंज तत कहिण तेरा दरस करीए अपारा, अपरम्पर देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी दर ठांडे बैठे सीस निवाईआ।

✪ ७ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर हरजीत सिंघ, गुरनाम सिंघ, पिशौरा सिंघ, हरनाम कौर, जुगिंदर कौर, नरायण सिंघ वेरका, रत्न कौर, गुरदयाल सिंघ, हरबंस कौर मूधल, कुंदन सिंघ पंडोरी, हज़ारा सिंघ जेठूनंगल, आशा चन्द कांगढ़ा, जगदीश कौर अमृतसर, सूरत सिंघ गिलवाली, ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी पूरी करदे आसा, आसा राम दा तत जन भगतां नाल मिलाईआ। धुर दा चरण कवल दे भरवासा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। साचे मण्डल पा रासा, सुरती शब्दी गोपी काहन खेल खिलाईआ। साडा लेखे ला लै पवण स्वासा, साह साह तेरे विच समाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अलखणा अलाखा, अलख अगोचर अगम्म अथाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। एथे उथे दो जहानां होणा राखा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं साहिब सुल्तान आदि जुगादी देणा साथा, सगला संग बणाईआ। हउँ तत विचारा अनाथ अनाथा, दीनन दीन दीन अख्वाईआ। सरगुण धार हो के निरगुण तेरी गावे गाथा, गहर गम्भीर बेनज़ीर दस्सणी सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर कर प्रकाश, नूर नुराने नूर कर रुशनाईआ। तन वजूद पवित्र कर दे लाश, पंज विकारां लशकर दे मिटाईआ। साडा लेखा रहे ना नाल शंकर कैलाश, कलाधारी आपणा रंग देणा रंगाईआ। कूड़ कूड़यार हउमे हँकार अन्तर निरंतर करना विनाश, विषयां तों बाहर देणी वड्याईआ। साडा तेरे उत्ते अहिसास, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। लेखे लाउणा नाड़ी हड्ड मास, मस्त दीवाने देणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज

तत कहिण प्रभ आदि जुगादी कलाधारी, कलयुग अन्त कन्त भगवन्त वेख वखाईआ। असीं रोईए ज़ारो ज़ारी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पावीं सारी, श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान वेखणा थांउँ थाँईंआ। चारों कुण्ट रैण अँधयारी, नूरी चन्द देणा चमकाईआ। पर्दा ओहला रहे ना नौ दुआरी, दस्म दी धार देणी प्रगटाईआ। अमृत बूँद बख़्शणी ठण्डी ठारी, सांतक सति सति कराईआ। तेरे नाम शब्द दी सुणीए अगम्म धुन्कारी, अनहद नादी नाद देणा जणाईआ। निरगुण जोत होवे उज्यारी, उजाला दो जहान वखाईआ। सुरत शब्द तेरे दर होवे भिखारी, दर दरवेशा रूप अलख जगाईआ। तूं करता पुरख करनेहारी, नर नरायण तेरी बेपरवाहीआ। जिस तरह आत्मा परमात्मा करें प्यारी, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां तत कहिण सानूं लै जा सचखण्ड दुआरी, दरगाह साची धाम टिकाईआ । जिथ्थे आउणा पए ना फेर दुबारी, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सिक्दारी, हउ सेवक जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। भगतन तत कहिण प्रभ भेव ना जाणना नर नारी, बृद्ध बाल जुआन इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा वेख लै निरगुण धार, सरगुणां लहिणा देणा चुकाईआ। तूं जोती जाता पुरख भतार, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। जो आत्मा तेरी निरवैर पुरख नार, नर नरायण आपणे रंग रंगाईआ। साडी पैज दे संवार, पंचम रो रो मारीए धाहीआ। तूं सब कुछ करनेहार, करते पुरख तेरी वड्याईआ। कोटां विच्चों तेरे भगत सुहेले दो चार, चुरासी विच्चों आपणे रंग रंगाईआ। किरपा निधान कढ लै बाहर, फड़ बाहों गले लगाईआ । तेरे चरण कवल होईए पनिहार, निव निव सीस झुकाईआ। तूं साजण साहिब मीत मुरार, मित्र प्यारा अगम्म अथाहीआ। साडा जन्म मरन ना होवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दा लहिणा देणा मुकाईआ। साडा मेला नाल होवे सतिगुर शब्द सांझे यार, यराना अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी वेख लै अन्तिम हालत, बिन नैणां नैण उठाईआ। बेनन्ती सुण विच हक अदालत, अदल इन्साफ़ दे मालक दर तेरे दईए जणाईआ। तन वजूदां अन्दर मनुआ करे बग़ावत, बग़लगीर संग ना कोए बणाईआ। साचे नाम दी बख़्श निआमत, निरगुण सरगुण झोली दे भराईआ। साडा लहिणा देणा लेखा नाल किसे क्यामत, सच मुकाम देणा पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे वेख लै तन वजूद शरीर, माटी ख़ाक ख़ाक वड्याईआ। तूं मालक गहर गम्भीर, गवर इक अगम्म अथाहीआ। साडी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणी

इक जणाईआ। असीं जगत होए हकीर, वस्त हथ्थ ना कोए उठाईआ। आपणी दस्स सच तस्वीर, नूर नुराने नूर चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच नाम नाम समझाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत तेरे निक्के बाले, जगत जुगत ना कोए वड्याईआ। तुध बिन सार ना कोए संभाले, सम्बल दे मालक दूजा नज़र कोए ना आईआ। साडे लेखे मुका दे शाह कंगाले, जगत कीमत ना कोए रखाईआ। साडा सब कुछ तेरे हवाले, अहिवाल आपणा देणा दृढ़ाईआ। फल रिहा ना साचे डाले, पत्त टहणी गई कुमलाईआ। तेरी घाल कोई ना घाले, घायल हुन्दी वेख लोकाईआ। पतिपरमेश्वर साडी करे ना कोए प्रितपाले, प्रितपालक हो के वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे मालक ख़ालक ख़लक, मख़लूक वेख लोकाईआ। की तेरा नज़ारा तक्कीए उत्ते फ़लक, अर्शां बाहर वेख वखाईआ। साडा विछोड़ा होवे ना पलक, पलकां दे ओहले बैठा नज़री आईआ । जोती जाते पुरख बिधाते तन मन्दिर अन्दर दे दे आपणी झलक, नूर नुराने नौजुआने आपणा रंग वखाईआ। सच प्यार एकँकार विच संसार पए ना फ़र्क, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। असीं दीन दुनी करीए तरक, तुरत आपणे नाल लैणा मिलाईआ। साडा वायदा पूरी कर दे शर्त, शरअ दे मालक तेरे अगे मंग मंगाईआ। लहिणा देणा लेखा रहे ना उपर धरत, धरनी धरत धवल दा पन्ध देणा मुकाईआ। वासा कदे ना होवे विच नरक, स्वर्गां दा लहिणा देणा भगतां दे चरणां हेठ रखाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, शाह पातशाह शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ भगतां वंडीं दर्द, दुखियां होणा सहाईआ। बेनन्ती मन्ज़ूर करीं अर्ज़, आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। सब दी आशा पूरी करनी ग़रज़, ग़रज़ आपणी ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साचे धुर दे संगी, सगला संग लैणा बणाईआ। लाउणा आपणे अंगी, अंगीकार अख्वाईआ। काया चोली जाए रंगी, तन वजूद मिले वड्याईआ। दर वस्त अगम्मी मंगी, मांगत झोली देणी भराईआ। तेरे नाम दी कदे ना आवे तंगी, तंग दस्त होवे लोकाईआ। साडी पिठ करीं ना नंगी, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। लेखे लाउणीआं प्रकृतीआं पंझी, पंजां ततां देणी वड्याईआ। तूं योद्धा सूरबीर बहादर जंगी, जंगजू इक अख्वाईआ। मनुआ मनसा वाला मारना फ़रंगी, फ़ारस दा लेखा देणा चुकाईआ। साडी आशा रहे ना लम्बी, लमह लमह तेरा ध्यान लगाईआ। नाता तोड़ना करीर जंडी, पाहनां सीस ना कोए झुकाईआ। जिथ्थे लोड़ रहे ना पंडत पंडी, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को दस्सणी डण्डी, डण्डावत इक दृढ़ाईआ। झगड़ा मुक जाए जेरज

अंडी, उत्भुज सेत्ज लेखा देणा मुकाईआ। तेरे नाल निरँकार पावे गंढ्ढी, गंढु सके ना कोए खुल्हाईआ । साडी अग्नी तत तेरी पवण वेखे ठण्डी, जिथ्थे उनन्जा पवण सीस झुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार साडी आशा होवे ना रंडी, कन्त सुहाग देणी माण वड्याईआ। अन्त किनारा तक लै कन्ढी, कन्ढी बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ आपणा दस्स दे सच घराना, गहर गम्भीर भेव खुल्हाईआ। जिथ्थे दीपक जगे नूर नुराना, बिन तेल बाती होए रुशनाईआ। बिना रसना तों शब्द दा होवे तराना, तुरीआ तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। बिना ततां तों तेरा होवे बाना, जोती जाता वेख वखाईआ। नज़री आवे इक्को कान्हा, राम रम्ईआ एका सोभा पाईआ। एको होवे नूर अमामा, नूर ज़हूर तेरा तक्कीए चाँईं चाँईंआ। खेल वेखीए सति सति श्री भगवाना, भगवन आपणा पड़दा देणा उठाईआ। असीं भगत सुहेले मंगदे दाना, दर ठांडे अलख जगाईआ। तेरा तक्कीए सचखण्ड मकाना, मुकामे हक वेख वखाईआ। जिथ्थे फेर ना होवे आवण जाणा, पाधीआं पन्ध रहे ना राईआ। साडी बेनन्ती कर परवाना, परम पुरख दिती सुणाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। एथे उथे मालक दो जहाना, निरगुण सरगुण आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे कदमां विच सलाम, सही सलामत सीस निवाईआ। साडे शाहो भूप अमाम, नूर नुराने नूर अलाहीआ। तेरे बरदे होईए ग़ुलाम, ग़ुरबत अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। शरअ दा लेखा मेट तमाम, तमअ लालच लोभ रहिण ना पाईआ। नाम हकीकी प्या दे जाम, रस अंमिओं रस आप चखाईआ। धुर कलमे दा दे पैग़ाम, पैग़म्बरां तों बाहर कर पढ़ाईआ। जिथ्थे अक्खरां दा नहीं कोई निशान, निरअक्खर धार दे जणाईआ। साडा झगड़ा रहे ना माटी चाम, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। नज़री आए इक्को राम, काहन कान्हा रूप देणा दृढ़ाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी आपणा भेव खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ आपणा भेव खोल्ह, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नाम निधाना दे अनमोल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। आपणा घर दरसा दे कोल, गृह मन्दिर इक जणाईआ। तेरे शब्द दा सुणीए ढोल, बिन ढोलक छैणे दे खड़काईआ। तेरी खेल तक्कीए उपर धौल, धरनी धरत धवल देणी माण वड्याईआ। वेखीं भगतां नाल ना मारीं रोल, अछल अछल्ल तेरे अगे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडा इक दरसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा ठांडा होवे दरबारा, दर दरवाज़ा दे खुल्हाईआ। जिथ्थे बिन तेल बाती

नूर होवे उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। बिन मन्दिर मस्जिद शिवदुआले ठाकर तेरा दर्शन करीए निरगुण धारा, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आईआ। बिना शास्त्रां तेरा सुणीए धुन्कारा, शब्द अनादी नाद देणा दृढ़ाईआ। बिना गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती अठसठ तीर्थ तेरे नाम दा रस लईए ठंडा ठारा, अग्नी तत तत बुझाईआ। अन्तष्करन मेट दे काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, मन मति बुद्ध आपणे रंग रंगाईआ। परम पुरख परमात्म साचे चरण कवल बख्श प्यारा, प्रीतम हो के आपणा प्रेम समझाईआ। कलयुग वेख लै धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। तुध बिन सार पाए कोए ना मीत मुरारा, मित्र प्यारा नजर कोए ना आईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकलंकी अवतारा, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। पंज तत कहिण प्रभू तेरे चरण कवल उपर धवल साडी निमस्कारा, डण्डावत बन्दना साहिब सुल्तान श्री भगवान सीस जगदीस निवाईआ।

✪ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड जंडयाला ज़िला अमृतसर सुरैण सिँघ तेजा सिँघ दलीप सिँघ सन्तोख सिँघ गुलजार सिँघ जरनैल सिँघ सवरन सिँघ सुरैण सिँघ त्रिलोक सिँघ जंडयाला गुरु, शृंगारा सिँघ पखो के, दलीप सिँघ टांगरा, बंती धारड़, जुगिंदर कौर धारड़, हरबंस कौर ठठीआं, अमर कौर बंडाला, जुगिंदर कौर धन्नतो बंडाला ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल दयाल आपणी दया कमाईआ। आत्मा नाल जन भगतां धार लै जा सचखण्ड, दरगाह साची सच सच टिकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण साडी करीं फेर ना वंड, हिस्सा दीन दुनी जणाईआ। लहिणा देणा लेखा मुक जाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रूप ना कोए दरसाईआ। तेरा वेखे खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड दा भेव देणा मिटाईआ। असीं भिखारी होए पंज, अप तेज वाए पृथमी आकाश संग बणाईआ। साडा जन्म जन्म दा मेटणा रंज, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। निरगुण धार आपणे लाउणा अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। साडी तृष्ना पूरी कर दे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, हरि करता अगम्म अथाहीआ। चुरासी फाँसी रहे ना पन्ध, भटकणा जगत ना कोए रखाईआ। शब्दी धार दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। साचे नूर चाढ़ दे चन्द, जोती जाते आपणे रंग रंगाईआ। दो जहाना मंज़ल जाईए लँघ, अगे अवर ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार शब्द सिँघासण वखा पलँघ, जिस दी पावा चूल बाडी बणत ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण साडे वल तक, बिन नैणां नैनण नैण उठाईआ । मार्ग दे हकीकत हक, हक हक नाल समझाईआ। सानूं दीन दुनी कायनात विच्चों चक्क, जगत जहान दा पन्ध मुकाईआ। चुरासी विच असीं गए थक, थकावट विच तेरी दुहाईआ। तेरे चरण कवल रगढ़ीए नक, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। साडा वायदा पूरा करदे पक्क, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। तूं मालक ख़ालक वाहिद यक, यके बाद दीगरे अवतार पैग़म्बर गुर तेरी देण दुहाईआ। पूरब लेखा सब दा करदे पक्क, हुक्म फ़रमाना इक समझाईआ। किरपा कर मेहरवान परमेश्वर पति, परम पुरख तेरी ओट तकाईआ। साडी लेखे ला लै हड्ड मास नाड़ी रत, रत्न अमोलक हीरे लै बणाईआ। साचा नाम निधान दे सति, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी नाद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, दर तेरे सीस झुकाईआ। तूं शहिनशाह पातशाह शाह हज़ूर, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। जुग बदलणा तेरा दस्तूर, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। कुछ आसा तक लै मनसूर, की दीन दुनी समझाईआ। जगत शरअ दा वेख कसूर, नव सत खोज खुजाईआ। तूं शाहो भूप सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। धुर दा जोती बख्श दे नूर, नूर नुराना दे चमकाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे जो वायदा कीता मूसा उत्ते कोहतूर, तुरीआ तो परे आपणा पड़दा दे उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरा पन्ध रहे ना नेड़ा दूर, इक्को रंग देणा रंगाईआ। हउं चाकर सेवक तेरा मज़दूर, ख़ाकी ख़ाक तन रमाईआ। तेरा नाम कलमा जुग जुग करदे रहे मशहूर, ढोले सोहले सिफ्तां वाले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच सच तेरी सरनाईआ । पंज तत कहिण प्रभ आपणा सचखण्ड वखा दे घर, गृह मन्दिर इक जणाईआ। जिथ्थे आत्मा मिले वर, परमात्म होए सहाईआ। निरभउ भय चुका दे डर, धीरज धीर धीर धराईआ। तत वजूद जन भगतां लए वर, कन्त कन्तूहल रूप बदलाईआ। दीन दुनी विच कदे ना जावण मर, मर जीवत रूप वटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा वेखीए घर सुहञ्जणा, सोभावन्त देणा वखाईआ। तूं मालक आदि जुगादि निरञ्जणा, नूर नुराना नूर अलाहीआ । दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। इक्को नाम निधान पा दे अंजणा, नूर नुराने नूर कर रुशनाईआ । घर मिलावा होवे धुर दे सज्जणा, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। इक्को प्रेम चाढ़ दे रंगणा, दूसर रंग ना कोए वटाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्को तेरा दुआरा मंगणा, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ । सच दुआर एकँकार तेरे

हुक्म नाल लँघणा, जगत पाँधी पन्ध ना कोए समझाईआ। सानूं लेखे ला लै तत कहिण पंजणा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक दरसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे गृह रहीए वसदे, वसल यार देणा दृढ़ाईआ । खुशीआं विच रहीए हसदे, हस्ती तक्कीए बेपरवाहीआ। बिन कदमां रहीए नसदे, भज्जीए वाहो दाहीआ। ढोले गाईए तेरे जस दे, बिन रसना सिफ्त सलाहीआ। इशारे दे दे बिना अक्ख दे, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। साडे विछोड़े चंगे नहीं तैथों वख दे, वखरा गृह ना कोए बणाईआ। तेरा खेल तक्कीए अलखणा अलख दे, अलख अगोचर देणी वड्याईआ । तेरे चरण कवल सथ्थर आपणा घतदे, घायल हो के सीस निवाईआ। नज़ारे वेखीए परमेश्वर पति दे, पति पतिवन्ते देणी वड्याईआ। पंज तत कहिण असीं भगत सुहेले तेरी चरण प्रीती नत दे, नाता बिधाता इक्को देणा जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आदि जुगादि भण्डारे सति दे, सति सतिवादी शब्द देणी वड्याईआ।

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड वैरोवाल जिला अमृतसर, उतम सिँघ चन्नण सिँघ वैरोवाल, सोहण सिँघ रामपुर जरनैल सिँघ सरलीखुरद, अवतार सिँघ ऐकल गडा, उजागर सिँघ खडूर साहिब ✪

६६
२४

पंज तत कहिण प्रभ पुरख समराथी, हरि करते पुरख तेरी वड्याईआ। आत्मा नाल सानूं बणा लै साथी, जन भगत सन्त सूफ़ी रहे सुणाईआ। साडा लहिणा देणा वेख लै मस्तक माथी, निगहबान बिन नैणां नैण उठाईआ । तूं दीन दयाल ठाकर स्वामी अनाथ अनाथी, हरि करता धुरदरगाहीआ। कूड़ी विस साडी अन्तर जाए लाथी, ममता मोह देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगतां तन वजूद, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सीस निवाईआ। तूं मालक ख़ालक साडा हक महबूब, मुहब्बत तेरी विच समाईआ। सानूं बख्श दे आलीशान अर्श अरूज, आलीज़ाह तेरी वड्याईआ। चुरासी वंड ना रहे हदूद, फाँसी जगत ना कोए लटकाईआ। जिधर तक्कीए दिसे मौजूद, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। आत्मा नाल सानूं बख्श दे मंज़ल मकसूद, दरगाह सच सच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जन भगत हो करीए अरदास, निव निव सीस झुकाईआ। निरगुण तेरे वसीए पास, सरगुण तेरे विच समाईआ । साडा लहिणा देणा लेखे ला लै रास, रस्ता बावस्ता आपणे नाल कराईआ। झगड़ा रहे ना दस दस मास, अग्नी

गर्भ ना कोए तपाईआ। तेरी याद विच तेरा निकले स्वास स्वास, साह साह तेरा रंग रंगाईआ। सानूं लेखा ना देणा पए शंकर कैलाश, कलाधारी मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। जगत विषयां तों बाहर देणा विश्वाश, विश्व दे मालक दया कमाईआ। जे आत्मा तेरा नूर जोत प्रकाश, अन्त तेरे रंग समाईआ। साडा लहिणा देणा मुका दे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। तेरे चरण कवल भिखारी होईए दासन दास, सेवक साची सेव कमाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला इक अबिनाश, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे दर दे होईए मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं लेखे लेखे ला लै साडे अंग अंग दे, अंगीकार आप हो जाईआ। आत्मा नाल भगतां काया चोली रंग दे, दुरमति मैल रहे ना राईआ। नाम मुहाणा इक्को वञ्झ दे, शौह सागराँ पार कराईआ। तेरे प्यार विच सारे होईए लँघदे, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सुख देणे सतिगुरु अनन्द दे, अनंदपुर वाला गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। लेखे वेखीए तेरे सच सिँघासण पलँघ दे, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। साडे तत रहिण ना तत पंज दे, पंचम दा मेला आपणे विच लैणा मिलाईआ। साडे झगड़े मेट दे रंज दे, विछोड़े विच रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साचा दे दे नाम उधार, उदर दा लेखा दे मुकाईआ। मंगण आए तेरा दुआर, दर ठांडे सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादी एकँकार, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। शाह सुल्ताना भूप सिक्दार, शहिनशाह शाह नूर अलाहीआ। तेरे अतोट अतुट भरे भण्डार, निखुट्ट कदे ना जाईआ। किरपा कर सची सरकार, सच सच नाल समझाईआ। जे आत्मा तेरा नूर उज्यार, अन्त तेरे विच समाईआ। असीं उसे दे मित्र प्यार, नाता दीन दुनी जुड़ाईआ। तूं भगत वछल गिरधार, मेहरवान महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह इक अख्वाईआ । तेरे चरण कवल बिना सीस जगदीश निमस्कार, नमो नमो कहि के सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव देण गवाहीआ। असीं तत विचारे तेरे दर करीए पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तूं बख्शणहार सदा करतार, करनी दा करता नूर अलाहीआ। सानूं बख्श दे सचखण्ड दुआर, दरगाह साची सच दे वड्याईआ। थिर घर बहि के तेरा नूर जोत करीए दीदार, नूर नुराने तेरा दर्शन पाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा साडा लहिणा देणा कर्ज़ दे उतार, मकरूज़ साडा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं जाईए खण्ड सच, आत्मा नाल मिलके वजे वधाईआ। की

होया जे साडा माटी भाण्डा कच्च, हड्ड मास नाड़ी रंग रंगाईआ। साडा लूं लूं तेरे प्यार विच गया रच, रचना आपणी दए वखाईआ। असीं दीन दुनी तों गए बच, बचपन तेरी झोली पाईआ। जगत अग्न ना जाईए मच, त्रैगुण तत ना लागे राईआ। साडी जगत ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे लै बणाईआ। तूं स्वामी परमेश्वर पति, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर लै वत, बेवतनां आपणे वतन लैणा पहुंचाईआ। असीं सथर बैठे घत, यारड़े तेरी सेज हंढाईआ। साडे सगल वसूरे जाण लथ, दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। तूं अगम्म अथाह पुरख समरथ, हरि करता इक अख्वाईआ। साडा लहिणा देणा दे दे हथ्थो हथ्थ, दो जहान निरगुण सरगुण उदार ना कोए जणाईआ। तेरे चरण कवल सरनाई स्वामी रहे ढठ, निव निव सीस झुकाईआ। तूं वसणहारा घट घट, वेखणहारा थांउँ थाईंआ। लेखे ला लै काया माटी मट, मटकी नाम रस भराईआ। तुध बिन अवर ना दिसे कोए किनारा तट, तीर्थ अठसठ रोवण मारन धाहीआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती खेड़ा होया भठ, भठियाला कलयुग अग्नी नाल तपाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तेरे चरण दुआरे कीता इक्ठ, इक इकल्ले तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी आपणा रंग रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी मंज़ल तक्कीए अगम्म, अगम्मड़े देणी माण वड्याईआ। साडा लेखे ला लै माटी चम्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। असीं तेरी धार ब्रह्म, पारब्रह्म वेखणा चाँईं चाँईंआ । साडा उजल कर दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। साडे अन्दर रहे ना भरम, भाण्डा भरम देणा भनाईआ । लोकमात फिर ना लईए जरम, जन्म जन्म दा लेखा देणा चुकाईआ। तूं करनी दा करता सब कुछ करन, हरि करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडा लहिणा देणा मेट दे वरन बरन, ज़ात अज़ाती नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले सचखण्ड तेरी इक्को होवे सरन, सरनगति इक्को अख्वाईआ। तूं आदि जुगादी तारन तरन, तारनहार देणी माण वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म धार भगत सुहेले तेरा ढोला पढ़न, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक तेरी मंज़ल हकीकी चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। दर दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरे खड़न, दरगाह साची सचखण्ड दुआर मुकामे हक तेरा नूर नज़री आईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी अन्त कन्त पुकार, भगवन भगवन्त तेरे चरण रखाईआ। लहिणा देणा लेखा करना स्वीकार, साहिब सुल्तान नौजवान देणी माण वड्याईआ। दर ठांडे दरवेश हो के होए भिखार, भिच्छया भिखकां देणी पाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तेरे नूर दा होवे दीदार, दीन दयाल दर तेरे दर्शन पाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पैज देणी संवार, सिर सर आपणा हथ्थ टिकाईआ। असीं भगत सुहेले तेरे मीत मुरार, मित्र प्यारा एकँकारा इक्को

इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शाहो भूप सची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट ओट तकाईआ।

✪ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस रात नूं पिण्ड जलालबाद ज़िला अमृतसर ऊधम सिँघ, गुलज़ार सिँघ, बलवन्त सिँघ, मुख्त्यार सिँघ, धर्मबीर जलालाबाद, फौजा सिँघ, भजन सिँघ, महिन्दर सिँघ, श्रृंगारा सिँघ, सुचा सिँघ, तरसीम सिँघ भलाईपुर, महिन्दर सिँघ लाट, तेजा सिँघ, रछपाल सिँघ सठिआला, गुरचरण सिँघ, दरबारा सिँघ फेरूमान ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी सुण फ़रयाद, पुरख अकाले दीन दयाले मेहरवान महबूब आपणी नज़र उठाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी सति सच दी देदे दाद, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना सुणीए नाद, अनहद नादी धुन देणी उपजाईआ। तेरा खेल तक्कीए विच ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड दा पर्दा देणा उठाईआ। जुग चौकड़ी साडा लेखा तक लै आदि दा आदि, जुग जगादि तेरी सेव कमाईआ। रसना जिह्वा तेरा नाम कलमा लईए अराध, राधा कृष्ण साडी दए गवाहीआ। निरगुण धार तेरे विच होईए विस्माद, बिस्मिल हो के तेरी ओट तकाईआ। तूं मालक ख़ालक इक्को वाहिद, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। नाम निधाना दे बोध अगाध, बुद्धी तों परे दे समझाईआ। हरि हिरदे अन्दर तेरी होवे याद, यादव दा लहिणा देणा लेखा वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दाया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पवित्र कर बुद्ध, बुध्ध दी आसा वेख वखाईआ। अन्तष्करन होवे शुद्ध, हरि हिरदे देणी माण वड्याईआ। तेरे प्यार दी उपजे सुध, सुदी वदी दा लेखा देणा मुकाईआ। पंच विकार करे ना युद्ध, मनमति जगत ना कोए हल्काईआ। तेरा दुआरा एकँकारा जावे सुझ, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले भाग लगाउणा काया बुत, बुतख़ाने वजदी रही वधाईआ । सच स्वामी अन्तरजामी साडी सुहञ्जणी कर दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जे आत्मा तेरा सुत, दुलारे पंज तत लए बणाईआ। तूं ठाकर स्वामी पारब्रह्म अचुत, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। आवण जावण पतित पावन साडा मेट दे दु:ख, दीनन हो के दर तेरे अलख जगाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार देणा सुख, सुख सागराँ विच समाईआ। जननी फेर आउणा पए ना कुक्ख, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां आपणी गोदी चुक, चार कुण्ट वेखणा थांउँ थाईंआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआर दर ठांडे

रहे झुक, निव निव सीस जगदीस झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाईए तुक, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आपणा देणा उच्च, दरगाह साची सच सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे वल कर निगाह, बिन नैणां नैण उठाईआ। असीं पुजीए तेरी दरगाह, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। एकँकारे बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उपर उठाईआ। सतिगुर शब्द होवे गवाह, शहादत इक्को वार भुगताईआ। तेरा धुर दा दिसे राह, रैहबर इक्को देणा वखाईआ। तूं आदि जुगादि पिता माँ, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। जन भगत कहिण असीं ना सूर खाधा ना गाँ, पशू पंछीआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। सचखण्ड दुआर बख़्श दे आपणा गराँ, थिर घर वजदी रही वधाईआ। सदा सद तेरा गाईए नाँ, नांउ निरँकार देणा दृढ़ाईआ। बिना हथ्थां तों फड़ लै बांह, पारब्रह्म प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। धुर दी धार देणी सरना, सरनगति इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ खोलृ दे आपणा भेत, भेद अभेद जणाईआ। स्वामी हो के वसणा नेतन नेत, निज नेत्र लोचण नैण कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स दे हेत, हितकारी हो के खोज खुजाईआ। साडी रुत बसन्ती कर दे चेत, चेतन सुरती आप जगाईआ। कूड़ी क्रिया काया माटी अन्दर कर दे खेत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा दर दरवाज़ा जाए खुलृ, भीतर पर्दा रहे ना राईआ। भाग लगा दे आपणी कुल, कुल मालक दया कमाईआ। जे तेरे प्यारे तेरा प्यार गए भुल, अभुल देणी माण वड्याईआ। जन भगतां हिरदे वस हलाउणे पैण कदे ना बुल्लृ, रसना रस ना कोए वड्याईआ। सच प्रीती तेरी जाण घुल, घोली घोल आपा आप कराईआ। नाम निधान श्री भगवान दे अनमुल, अनमुलड़ी दात वरताईआ । तूं मालक ख़ालक आदि जुगादी सुल्हकुल, सति स्वामी अन्तरजामी नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते आपणी दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ देदे वस्त अगम्मी, अगम्मड़े दया कमाईआ। भाग लगा दे काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर दे कमी, वस्त अतोट अतुट झोली पाईआ। साची धार बख़्श दे नवीं, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ । आत्म सेज सुहाउणी सवीं, सुख आसण डेरा लाईआ। तख़्त निवासी गृह मन्दिर आपणे बहवीं, सच दुआर डेरा ढाहीआ। नाम निधाना श्री भगवाना इक आपणा कहवीं, कहि कहि समझाईआ। तूं पतिपरमेश्वर अवतार चवी, चौबीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। जो इशारा दे के गया रवीदास चमारा रवी, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। उस दा लहिणा देणा अन्तिम दवीं, दो जहाना

वेख वखाईआ। सोहला ढोला गीत अनोखा गवीं, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर भेव अभेद खुल्हाईआ । पंज तत कहिण प्रभ तेरी मंज़ल तक्कीए हदूद, मुकामे हक ध्यान लगाईआ। तेरा आलीशान अरूज, अर्श फर्श दा पन्ध देणा मुकाईआ। तेरी मंज़ल इक मकसूद, मेहरवान देणी दरसाईआ। दर दरवाज़ा जाए बूझ, सूझ सूझ विच्चों समझाईआ। लेखा पूरा कर दे जो हज़रतां गाया हज़ारा दारूद, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तूं ठाकर स्वामी आदि जुगादी सद मौजूद, मुफ़लिसां देणी माण वड्याईआ। असीं पंज तत जगत विचारे कलबूत, पंज भूतक रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ दे दे वस्त अनमुल्ली, अनमुल आप वरताईआ। भाग लगा दे काया कुल्ली, कुल मालक होणा आप सहाईआ। तेरा नाम जपणा पए ना भगतां बुल्ल्हीं, शब्द अनादी धुन कर शनवाईआ । तेरी फुलवाड़ी वेखीए फुल्ली, पत्त टहणी देणी महकाईआ। तेरी अमृत धार आदि जुगादि कदे ना डुल्ल्ही, बिन रसना रस देणा चखाईआ। तेरे चरण कवल मस्तक लगे धूली, धूड़ टिक्के ख़ाक रमाईआ। ओह लेखा वेख लै जो इशारा कीता ईसा चढ़दयां सूली, सलीव गल विच लटकाईआ। जुग बदलणा तेरा खेल मामूली, लहिणा देणा सब दा लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा धर्म धार असूली, असल दे मालक वसल हक देणा जणाईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर सुखदेव राज प्रीतम सिँघ जगीर कौर कर्म सिँघ प्यार कौर गुरबचन सिँघ सरदारा सिँघ गुरमुख सिँघ पूरन सिँघ नाज़र सिँघ तारा सिँघ सवरन सिँघ प्रीतम सिँघ दर्शन सिँघ साधू सिँघ करनैल सिँघ बीर कौर गेज़ा सिँघ मंगल सिँघ जिंदर सिँघ प्रीतम सिँघ हरी सिँघ हरदीप सिँघ दयाल सिँघ कुंदन सिँघ ईश्र कौर कल्ला, कश्मीर कौर तख्तू चक, तस्वीर कौर सरजा, कर्म सिँघ भलाई पुर, सवरन सिँघ फ़तिहबाद ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडे पुरख समरथ, समरथ अकथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी चलावण वाले रथ, रथ रथवाही अगम्म अथाह तेरी बेपरवाहीआ। सति सरूप शाहो भूप साडा तन वजूद तेरे सथ्थर गया लथ, यारड़े सेज लैणी हंढाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा मुका दे हथ्थो हथ्थ, अगे उदार ना कोए जणाईआ। तेरे चरण दुआर निरगुण

धार टेकीए मथ, सरगुण हो के सीस निवाईआ। साडा सगल वसूरा जाए लथ, विख अन्दर रहिण ना पाईआ। नित नवित तेरा गवीए गथ, रसना जिह्वा ढोले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे पुरख अकाल अगम्मड़े, अलख अगोचर तेरी सरनाईआ। साडे लेखे ला लै काया माटी चम्मड़े, चम्म दृष्टी देणी गंवाईआ । साडी कीमत रहे ना पैसे धेले टके दमड़े, दामनगीर देणी माण वड्याईआ। निरवैर पुरख आपणे चुक लै कंधड़े, फड़ बाहों लै उठाईआ। जग नेत्रहीण रहीए ना अन्धड़े, निज नेत्र लोचन नैण देणा खुल्हाईआ। तेरे गीत गोबिन्द गवीए चंगढ़े, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ। साडे हाल होण ना मंदड़े, चुरासी विच ना कोए भुआईआ। सानूं धाम वखा दे ठण्डड़े, थिर घर दरगाह साची पड़दा आप उठाईआ। एकँकार निरँकार लाउणा आपणे अंगड़े, अंगीकार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा घर मन्दिर तक्कीए इक, एकँकार देणा दरसाईआ। दरगाह साची जाईए टिक, मस्तक टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। परम पुरख परमेश्वर दर्शन करीए नित, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। साडी ठगौरी मेट दे चित, चेतन सुरती आप कराईआ। सुरती शब्द करावे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। बन्द किवाड़ी
७५
२४
खोल्ह दे भित्त, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आप खुल्हाईआ। वक्त सुहञ्जणा कर दे थित, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। काया माटी तन वजूद अमृत रस नाल सिंच, सिंज हरी क्यारी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत निमाणे जग, जगजीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बुझा दे अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। दरस दिखा दे उपर शाहरग, नौ दुआर दा डेरा ढाहीआ। कूड़ी क्रिया मेट दे हद्द, हदूद आपणी इक समझाईआ। तेरे नाम निधान दा सुणीए नद, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। किरपा कर सूरे सरबग, हरि करते धुरदरगाहीआ। निरगुण धार हो के जन भगत सुहेले गुर चेले आप लभ्भ, नव सत खोजणा चाँईं चाँईंआ। शब्दी धार बणाउणा सबब, मेल मिलाउणा थांउँ थाँईंआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी सचखण्ड दुआर एकँकार सद्द, सदके वारी घोल घुमाईआ। तत कहिण प्रभ आत्मा नालों होईए जगत अलग, सचखण्ड मिल के दोहां वजे वधाईआ। असीं होईए गद गद, खुशीआं विच तेरे ढोले गाईआ। ठाकर स्वामी अन्तरजामी इक्को देणा पद, दर इक्को इक सुहाईआ। जे निरगुण धार आत्मा तेरी यद, यदी पंज तत कहिण सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। असीं तूं मेरा मैं तेरा गाउँदे रहे छन्द, सोहँ ढोला चाँईं चाँईंआ। साडा खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दना विच सीस झुकाईआ।

असीं तेरे प्यार दा माणीए इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। सच दुआर दे बणा दे धुर दे चन्द, चांदने आपणा नूर नाल रखाईआ । असीं ग़रीब निमाणे तत पंज, पंचम मिल के देईए दुहाईआ। तेरे वैराग अन्दर नेत्र वहाईए अंझ, हंझूआं हार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर वजदी रहे वधाईआ । पंज तत कहिण प्रभ सानूं वखा दे सच घराना, गृह मन्दिर इक वखाईआ। जिथ्थे तेरा दीपक जोत नूर नुराना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिन रसना तों शब्द तराना, तुरीआ तों बाहर पढ़ाईआ। बिना मदि तों तेरा दिसे मैख़ाना, सच सरूर देणा चढ़ाईआ। बिना तत वजूद तों नज़री आवीं रामा, कान्हा आपणा खेल खिलाईआ । किरपा करनी सच अमामा, अमलां तो रहित नूर अलाहीआ। तूं आदि जुगादी जाणी जाणा, जानणहार इक अख्वाईआ। बिन सजदयां तों करां सलामा, निव निव सीस झुकाईआ। किरपा करीं मेहरवाना, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। पंज तत कहिण असीं शरअ दे रहीए ना अन्त गुलामा, बन्धन जगत ना कोए बंधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाईए गाणा, आत्म परमात्म तेरी सिफ्त सलाहीआ। तूं अन्त कन्त भगवन्त होणा निगहबाना, बिन नैणा नैण उठाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा तेरे नाल पुराणा, चार जुग दे शास्त्र

देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे गृह मन्दिर जाईए वस, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। साडी पूरी कर दे अस, आसा तेरे नाल मिलाईआ। मार्ग आपणा अगम्म दस्स, दहि दिशा तों बाहर पढ़ाईआ। तीर अणयाला मार कस, कसम खा के सीस निवाईआ । असीं दीन दुनी विच्चों करीए बस, अगे संग ना कोए रखाईआ। दर तेरे जाईए नस्स, सचखण्ड पुजीए चाँईं चाँईआ । बिन रसना जिह्वा ढोला गाईए जस, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणे प्यार दा देदे रस, रस्ता इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे ना कोई रवि होवे ना शशि, सूर्या चन्द लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडी पूरी करनी आस, तृष्ना तृखा जगत दीन दुनी पूर कराईआ।

✪ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर, नरैण सिँघ गुरनाम सिँघ कंग
कुंदन सिँघ मालचक, सोहण सिँघ मालचक, महिन्दर सिँघ सवरन सिँघ बाठ ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडीआं मुश्किलां कर दे हल, हालत जहालत वेख ख़लक खुदाईआ। लहिणा देणा झोली पा

दे जो बावन इशारा कीता बलि, भेव अभेद अछल अछेद आपणा आप दृढ़ाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी तेरे दुआरे आए चल, निहचल धाम धुर दे राम देणी सरनाईआ। तेरा खेल वेखीए जल थल, महीअल तेरा ध्यान लगाईआ। सच संदेशा नर नरेशा साडे काया मन्दिर अन्दर घल, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। तेरा विछोड़ा होए घड़ी ना पल, पलकां दे ओहले नज़री आउणा धुर दे माहीआ। झगड़ा मेटणा अन्दरों कलयुग कल, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। जे आत्मा तेरे नाल जाए रल, पंजां ततां आपणी धार विच मिलाईआ। साडे अन्तर निरंतर दूई दुवैती मेटणा सल, साहिब सुल्तान मेहरवान आपणी दया कमाईआ। मानव ज़ाती लाउणा धर्म दा फल, फल फुल पत्त टहणी आप महकाईआ। पंज विकार अन्दरों मेट दे सल, दलिद्रीआं दलिद्र देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वस्त सच नाम वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा जगत विछोड़ा कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सच दुआर दा खोल्ह हट्ट, नाम निधाना दे वरताईआ। भाग लगा दे काया मट, नव नव दा डेरा ढाहीआ। इक्को सति सच तेरा प्यार लए रट, रट्टा अवर ना कोए रखाईआ। तूं वसणहारा घट घट, घट भीतर देणी माण वड्याईआ। दूई दुवैती शरअ शरैती अन्दरों कढ दे वट्ट, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा होवे तट, किनारा इक्को इक वखाईआ। बिना वासना सुरती शब्दी धार आवे नठ, बिन कदमां कदम उठाईआ। लेखा रहे ना अठसठ, सर सरोवर चरण धूड़ देणा नुहाईआ। सरन सरनाई तेरी जाईए ढठ, बिन धूड़ी धूड़ी ख़ाक रमाईआ । जगत वासना कूड़ी क्रिया करदे भठ, अग्नी तत ना लागे राईआ। काया मन्दिर अन्दर निरगुण निरवैर मन मनसा भुआ दे लठ, गेड़ा कर्म कांड चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक वसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्दरों कट दे मैल, दुरमति तन वजूद रहे ना राईआ। नौ दुआरे रही फैल, दिवस रैण आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां धार पहलों कर लै वहल, पहली आपणी गंढु पुआईआ। जगत जहान विच हरिजन कोई ना होवे फ़ेल, फ़ैसला हको हक सुणाईआ। आत्मा जे मेलया आपणा मेल, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंजां ततां देणी माण वड्याईआ। आवण जावण लख चुरासी राय धर्म दी कट जेल, लेखा चित्रगुप्त ना कोए वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा वेखीए अचरज खेल, ख़लक दे ख़ालक देणा वखाईआ। तूं निरगुण सरगुण सदा सहाई सखा सुहेल, साजण मीत तेरी वड्याईआ । भेव चुका दे गुरु गुर चेल, चेला गुर आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण पुरख समरथ, दर तेरे अलख जगाईआ। सगल वसूरे साडे जाण लथ, दुरमति मैल रहे ना राईआ। नाम

निधान दे दे वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। लेखा पूरा कर दे जो कीता कौल राम बेटे दशरथ, सीता सति सतिवाद दृढ़ाईआ । लहिणा रहे ना धार जगत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध नाल रलाईआ। तेरी सरन सरनाई होए इक्ठ्ठ, सच दुआर देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जगत विछोड़ा मेट दे दु:ख, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। माया ममता तृष्ना रहे ना भुख, लालच लोभ ना कोए हल्काईआ। जनणी पैणा पए ना कुक्ख, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। उलटा लटकीए फेर ना रुख, मेहर नज़र नाल तराईआ। जे आत्मा तेरा सुत, परमात्म जोत नूर रुशनाईआ। साडी सुहञ्जणी कर दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। की होया जे पंज तत काया बण गए बुत, बुतख़ाना रूप दरसाईआ। तूं पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, देवणहार वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्तिम सानूं दीन दुनी विचो चुक्क, सचखण्ड दुआर दे सरनाईआ। अधवाटे कदे ना जाईए रुक, अगे हो ना कोए अटकाईआ । साडी रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़दी रही तूं मेरा मैं तेरा तुक, सोहला ढोला गाया चाँईं चाँईंआ। अन्त कन्त भगवन्त जन भगतां धार धार पुछ, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह सच मिले सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा मेट दे चिन्ता रोग, ग़मी ग़मख़ार दे चुकाईआ। रहे हरख ना सोग, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। चरण प्रीती बख्श दे योग, जोगीशरां बाहर पढ़ाईआ। जे आत्मा तेरी माणे मौज, ततां रंग रंगाईआ। आपणा भेव खोल्हणा गोझ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। साडा जगत विकार लैणा सोध, सुदी वदी संग ना कोए बणाईआ। तूं दाता सूरबीर योद्धन योद्ध, बलधारी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच चरण सरन बख्श सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ किरपा करनी आप, आपणी दया कमाईआ। साडा जन्म कर्म दा मेट संताप, दीन दयाल दर्द दु:ख ना लागे राईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द कर रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहानां बख्श नात, नाता बिधाता लैणा जुड़ाईआ। तूं स्वामी अन्तरजामी कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जे आत्मा तेरी ज़ात, पंजां ततां नाल देणी वड्याईआ। असीं दर दुआरे तेरे करीए अरदास, बेनन्ती बिन सीस जगदीस झुकाईआ। साडा लेखे लाउणा स्वास स्वास, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। साडा झगड़ा मुका दे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। असीं चाहुंदे तेरी जोत दा नूर होवे प्रकाश, अन्त जोत जोत विच मिलाईआ। चुरासी वाला कट दे फास, ततव तत दा डेरा ढाहीआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों जन भगतां तन पूरी कर दे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। परम पुरख परमात्म सानूं तेरे विच

विश्वाश, विषयां तों बाहर लहिणा देणा देणा मुकाईआ। साडा लेखा रहे ना नाल शंकर कैलाश, कलाधारी आपणी कल देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान पंज तत कहिण सदा सदा सद वसीए तेरे चरण कवल पास, पासा दीन दुनी विच्चों लैणा बदलाईआ।

✪ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर
मस्सा सिँघ दारा सिँघ करनैल सिँघ मक्खण सिँघ नोरंगाबाद
करनैल कौर शफ़ीपुर, अजैब कौर बाठ,
आत्मा सिँघ पटी, हरबंस कौर बाठ ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडे कन्त कन्तूहली, करता पुरख हरख सोग तों बाहर तेरी सरनाईआ। भगत उधारना तेरा खेल मामूली, मेहरवान महिबान श्री भगवान तेरी वड वड्याईआ। दरोही कलयुग अन्त किसे नाल करीं ना बेअसूली, असल दे मालक वसल देणा यार नूर अलाहीआ। प्रेम दी धार परम पुरख कदे ना भूली, हरिजन भुल्लयां मार्ग लैणा पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी चरण धूड़ दी पावीं धूली, बिन ख़ाक टिक्के देणे रमाईआ । तेरी फुलवाड़ी दो जहान श्री भगवान होवे फूली, भगत भगवन्त आपणे रंग लैणा रंगाईआ। तेरा जाप जप्या जाए बिना होठां बुल्ल्हीं, बिन रसना रस देणा चखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भाग लगाउणा काया कुल्ली, काअबा दो दोआबा इक्को घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्श दे सच टिकाणा, दरगाह सच सच दरसाईआ। तूं आदि जुगादि सदा मेहरवाना, महिबान बीदो इक अख्वाईआ। जे आत्मा नाल तेरा याराना, विछड़यां कलयुग अन्त मिलाईआ। क्यों अप तेज वाए पृथ्मी आकाश समझें बेगाना, दर ठांडे देणी माण वड्याईआ। असीं सरगुण धार तेरे चरण कवल करीए ध्याना, धूड़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। वस्त अमोलक दे दे दाना, दयावान देणी वरताईआ। तूं गहर गम्भीर गुण निधाना, गुणवन्त कन्त भगवन्त इक अख्वाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा मुका दे दो जहाना, आवण जावण पतित पावन रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं मंज़ल

दे दे हक हकीकी, हकीकत दे मालक दया कमाईआ। तूं वाहिद लाशरीकी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। तेरे विच अगम्म तौफ़ीकी, तेरे दर मंग मंगाईआ। साडी पिछली आयु जुग चौकड़ी बीती, चुरासी विच भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त सच दी तेरी तक्की प्रीती, प्रीतम दया देणी कमाईआ। आपणे रंग रंगाउणा जन भगत सुहेला हस्त कीटी, ऊँच नीच दा डेरा ढाहीआ। सच दा रंग चढ़ाउणा मजीठी, दो जहाना उतर कदे ना जाईआ। दरगाह धार दस्स अनडीठी, बिन अक्खां आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं मिला लै धार आपणी जोती, जोती जाते दया कमाईआ। साडी आशा रहे ना रोती, जगत नैणा नीर ना कोए वहाईआ। जे आत्मा परमात्मा तेरी धार गोती, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। असीं वी जन्म भोगे पिच्छे कोटन कोटी, तेरे अगे वास्ता कदे ना पाईआ। पंज तत कहिण जे साडी वासना खोटी, खरे सतिगुर लै बणाईआ। साडी मंज़ल तक लै चढ़ के आपणी चोटी, चोट प्रेम वाली लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा इक दरसाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडे उत्ते कर दे तरस, रहमत हक हक कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, जगत तृष्ना भुख मिटाईआ। दीन दुनी मेट दे हरस, हवस कूड़ रहिण ना पाईआ। जोती जाते देदे दरस, बिन नेत्र लोचन नज़री आईआ। साडा सुहञ्जणा वेख लै बरस, नव नौ चार पिच्छों मिले वड्याईआ। ना सोग रहे ना हरस, चिन्ता ग़म देणा गुआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा अन्त नहीं रहिणा शरीर, तन वजूद ना नज़री आईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। निगाह मार लै बेनज़ीर, बिन नैणां नैण तकाईआ। तेरे चरण कवलां भेंट करीए आपणी ज़मीर, आशा अवर ना कोए रखाईआ। अमृत धार प्या दे सीर, सोई सुरत लै उठाईआ। सो लहिणा देणा पूरा करदे जो आसा रख करके गया कबीर, कबरां तों बाहर दृढ़ाईआ। शरअ दा कट जगत ज़ंजीर, छुरी रहे ना जगत कसाईआ। तेरे कलमे दी इक्को पढ़ीए तकबीर, तदबीर आपणी नाल समझाईआ। झगड़ा मुक जाए शाह हकीर, फ़कीर दरवेश तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी दरगाह जाईए भज्ज, भजन बन्दगी तेरी झोली पाईआ। बिना काअब्यों साडा लेखे ला लै हज्ज, हाज़त अवर रहे ना राईआ। सच दुआरे जाईए सज, सज्जणा साडी आशा पूर कराईआ । साडा पड़दा अन्तिम लैणा कज, भगतां तत देण दुहाईआ। लोक परलोक रखणी लज, लाजावन्त तेरी सरनाईआ। निगाह मार लै विच

जग, जागरत जोत अक्ख खुल्हाईआ। दर्शन देणा उपर शाहरग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। तूं नूर अलाही रब्ब, यामबीन तेरी वड्याईआ। साडी दीन दुनी मुकाउणी हद्द, हदूद आपणी देणी वखाईआ। धुर दे हुक्म नाल लैणा सद्द, सदके वारी घोल घुमाईआ । पंज तत कहिण पुरख अकाले दीन दयाले अन्तिम करीं मूल ना अड्ड, वखरा गृह ना कोए वखाईआ। भगतन आत्मा नालों सानूं पिच्छे ना जाईं छड, विछोड़ा जगत रहे ना राईआ। साडा लेखे लाउणा मास नाड़ी हड, रक्त बूंद तेरे चरणां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे सच दुआर एकँकार जाईए सज, साजण मीत त्रैगुण अतीत त्रैभवण धनी देणी माण वड्याईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड पंडोरी गोला तृप्त सिंघ सोहण सिंघ सन्ता सिंघ
सवरन सिंघ करतार कौर तरनतारन, दलीप सिंघ दयाल सिंघ
सन्त कौर तरनतारन, सन्ता सिंघ सरमुख सिंघ बुघे ✪

पंज तत कहिण प्रभ आदि जुगादी शाह सुल्तानी, शहिनशाह बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कर मेहरवानी, मेहर नज़र बेनज़ीर उठाईआ। परम पुरख परमात्म निरगुण तक साडी कुरबानी, सरगुण हो के मंग मंगाईआ। जे आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्मा तेरी नूर नुरानी, जोती जाते नज़री आईआ। असीं पंज तत तेरी जगत वाली निशानी, निशाना दीन दुनी प्रगटाईआ। परम पुरख परमात्म अन्त भगतां गृह खावीं महिमानी, दर दर आपणा खेल खिलाईआ। साडी इक बेनन्ती मानीं, मनसा तेरे चरण टिकाईआ । तूं मालक ख़ालक परवदिगार इक रुहानी, रूह बुत तेरी वजदी रहे वधाईआ। साडी आशा तक पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। साडा लेख बणा दे मस्तक विच पेशानी, पेशीनगोईआं पिछलीआं नाल मिलाईआ। तेरे चरण कवल इक्को होवे ध्यानी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। बेशक तन शरीर अन्तिम होणा फ़ानी, तन वजूद रहिण ना पाईआ। तेरे नाम कलमे दी साडी होवे कुरबानी, शहादत अबादत वाली भुगताईआ। सानूं मंज़ल देणी असमानी, ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघाईआ। तेरी जोत नूर साडी जोबन वाली होवे जवानी, जोती जाते तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा मन्दिर तक्कीए महला, महबूब उच्च अरूज देणा वखाईआ। जिथ्थे एकँकार निराकार वसे आप इकल्ला,

दूसर नज़र कोए ना आईआ। साडा लहिणा देणा मुका दे जला थला, महीअल वंड ना कोए वंडाईआ। विछोड़ा होवे ना घड़ी पला, सदा सद तेरा दर्शन पाईआ। जे भगतां आत्मा तेरे विच रला, पंचम दे माण वड्याईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दर दुआर तेरे होवे खला, ख़ालक ख़लक देणी माण वड्याईआ। तूं नूर अलाही आलमीन अल्ला, दूसर नज़र कोए ना आईआ। असीं वेखणा चाहुंदे तेरा महल अटला, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर ठांडे सोभा पाईआ। शब्दी धार एकँकार फड़ा दे पल्ला, बिन दस्त दस्त उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा वेखीए गृह मन्दिर, बिन भूमिका मिले वड्याईआ। जिथ्थे प्रकाश नहीं सूर्या चन्द्र, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। इक्को नूर नुराना शाह सुल्ताना तेरा होवे अन्दर, छप्पर छन्न श्री भगवन सोभा कोए ना पाईआ। भाग लगा दे अन्धेरी डूंघी कंदर, काया पड़दा आप चुकाईआ। घर स्वामी ठाकर तोड़ दे जंदर, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। मनुआ दहि दिश उठ ना धाहे बन्दर, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा दुआरा तक्कीए बंक, बंक दुआरी देणी वड्याईआ। झगड़ा रहे ना राउ रंक, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जो इशारा दे के गया जनक, शब्द संदेशे विच दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा वेखे वासी पुरी घनक, घनईया अगम्म अथाहीआ। निरगुण धार जोती लावे तनक, इशारा शब्द गुरु समझाईआ। आत्म परमात्म दस्से बणत, मंत्र नाम दृढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बणके पंडत, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। सब दा लेखा जाणे अन्त, अन्तष्करन वेख वखाईआ। जिस दी महिमा जुग जुग अगणत, गिणती गिण ना कोए समझाईआ। उह खेले खेल विच जीव जंत, निरगुण धार करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा देस सुहावा लईए वेख, बिन लोचन नैण नैण उठाईआ । जिथ्थे ना कोई रंग रूप रेख, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को डगमगाईआ। सतिगुर शब्द शब्द देवे शंदेस, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को शाहो भूप शहिनशाह होए नर नरेश, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। जो नित नवित निरगुण सरगुण धारे भेस, भेख अवलड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जेहदीआं सिफ्तां करे दो सहँसर जिह्वा शेष, ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, गणपति निव निव लागण पाईआ। तेती करोड़ करे आदेस, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर भेव खुल्हावण संखेप, शब्दी नाद नाद कर शनवाईआ। तेरा नित नवित दा तक्कीए लेख, लेखणी दीन दुनी दए गवाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तत कहिण जन भगत दर तेरे होए पेश, पेशतर सब दा लहिणा देणा देणा मुकाईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर दीदार सिँघ भगवन्त सिँघ जुगिंदर सिँघ जटा तेजा सिँघ पूरन सिँघ चन्नण सिँघ निरञ्जण सिँघ अनोख सिँघ मोहन सिँघ हीरा नंद दलीप सिँघ सजण सिँघ रत्न सिँघ करतार सिँघ चम्बल ✪

पंज तत कहिण प्रभ तेरे दर सवाली, ख़ाली झोली ख़लक दे ख़ालक देणी भराईआ। निरगुण धार निरँकार निराकार असीं वस्त मंगीए ना बाहली, लालच लोभ ना कोए रखाईआ। साडे अन्दरों साही मेट दे काली, कलमा कायनात समझाईआ। दीन दयाल ठाकर साचे नाम दी चाढ़ दे लाली, लालन आपणा रंग रंगाईआ। तेरी नित नवित सेवा दी घाल घाली, घायल हो के दईए सुणाईआ। फल लगा दे साडी काया डाली, पत्त टहणी दे महकाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह साडा वाली, वारस एकँकार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे चरण कवल सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा मेला मेलणा घर गृह, दर तेरे आस रखाईआ। नाता रहे ना त्रैगुण त्रै, त्रैभवन धनी देणी माण वड्याईआ। वस्त अमोलक नाम निधान बख्श दे शैअ, वस्त शहिनशाह अगम्म वरताईआ। तुध बिन अवर दूजा कोई ना है, बेनज़ीर नज़र कोए ना आईआ। बेशक तेरी सृष्टी होवे लैअ, जन भगत सन्त वजदी रहे वधाईआ। जो चरण कवल उपर धवल तेरी बहि, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण देणी माण वड्याईआ। निरभउ आपणा बख्शणा भय, भय भयानक विच होणा सहाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए कहि, भविख्तां विच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पाउणी सार, महासार्थी आपणी दया कमाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार निरँकार, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी पैज देणी सुआर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। असीं मांगत तेरे दर भिखार, भिच्छया भिखकां देणी पाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी होणा सिक्दार, तख्त निवासी इक्को नज़री आईआ। तेरे शब्द गुरु दा शब्द होवे जैकार, दो जहानां जै जैकार कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर दूर दुराडे करन निमस्कार, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। पंज तत कहिण तेरे भगत सुहेले जुग जुग तेरा मंगण दीदार, बिन नैणां नैण देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा होणा सहायक, दूसर ओट ना कोए तकाईआ । तूं आदि जुगादी इक्को नायक, ख़सम मेरे बेपरवाहीआ। तेरा नाम निधाना सदा सुखदायक, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां बणाउणा लायक, मन मति बुद्ध देणी समझाईआ। तेरा भेव अभेद जाणे कोए ना शायद, लेख लिख सके ना कोए राईआ। तूं नूर नुराना परवरदिगार इक्को वाहिद, वाहवा तेरे हत्थ वड्याईआ। परवरदिगार सांझे यार आपणा तक लै कौल इकरारां वाला अहिद, बिन अलिफ़ ये ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं वेखणा नाल चाउ, ख़ुशीआं नैण उठाईआ। तूं मालक ख़ालक बेपरवाहो, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। तेरा लहिणा देणा थाँईं थाओं, दो जहानां तकणा चाँईं चाँईंआ। तूं आदि जुगादी पिता माउँ, पुरख अकाला इक अख्वाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले शब्दी धार पकड़ लै बाहों, बिन हत्थां हत्थ उठाईआ। फड़ फड़ हँस बणाउणा काउं, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरे हत्थ न्याउँ, अदल इन्साफ़ देणा कराईआ। चार जुग दे लहिणे देणे तैनूं करन वाहो वाहो, वहिगुरु तेरे हत्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेद आप खुल्ह्राईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेखणा अन्त, अन्तश्करण ध्यान लगाईआ। तूं साहिब श्री भगवन्त, भगवन इक अख्वाईआ। तेरा नाता लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी रिहा समाईआ। तेरा नाम निधान अगम्मा मंत, मंतव सब दे हल कराईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, गत कहिण किछ ना पाईआ। तूं बोध अगाधा पंडत, बुद्धी तों परे करें पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। जन भगतां लेखा रहे ना स्वर्ग बहिश्त जन्नत, सचखण्ड साचे दरगाह साची देणी माण वड्याईआ। झगड़ा रहे ना जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज लहिणा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा बणना संगी, अप तेज वाए पृथमी आकाश ध्यान लगाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मंग मंगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आस ना कोए रखाईआ। तूं शाहो भूप सूरा सरबंगी, हरि करता इक अख्वाईआ। सानूं करना आपणे कार अंगी, अंगीकार इक अख्वाईआ। जुग जन्म दी मेटणी तंगी, दुःख दर्द ना लागे राईआ। तेरी सिफ्त सलाह सानूं लागे चंगी, ढोले सोहले तेरे नाम गाईआ। साडा लहिणा देणा रहे ना प्रकृती पंझी, पंचम ततां देणी माण वड्याईआ । साडा नेत्र लोचन वेखणा अक्ख रहे ना अन्धी, अन्ध अँधयार देणा मिटाईआ। चुरासी वाली कट फंदी, राय धर्म ना दए सज़ाईआ।

अमृत धार बख्श ठण्डी, अग्नी तत बुझाईआ। साडी प्रीती निरगुण धार तेरे नाल जाए गंढी, गंढुणहार गोपाल दयाल मेला मेलणा चाँई चाँईआ। जे आत्मा तेरा नूर धुर दा चन्दी, चन्द चांदने तेरे विच समाईआ। पंज तत कहिण प्रभ क्यों सानूं सचखण्ड जाण दी लाएं पाबन्दी, पारब्रह्म देणा समझाईआ। जन भगतां आशा पुरातन वेख लै लम्बी, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। हुण चुकणा पैणा आपणी कंधी, लैणा भार उठाईआ। पन्ध मुकाउणा दो जहाना पन्धी, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए अटकाईआ। सच दुआर वसाउणा जिथ्थे इक्को होवे अनन्दी, अनन्दपुर वाला मिले गोबिन्द धुर दा माहीआ। तेरी शब्द गुरु गुर अवतार पैग़म्बरां नाल पिछली संधी, लेखा जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपाणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां धार निरगुण आपणे नाल गंढी, गंढुणहार गोपाल तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ १७ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड वरयां दरबारा सिँघ वरयां गुरबचन सिँघ अर्जन सिँघ
पूरन सिँघ उसमा, फौजा सिँघ सरहाली, अजीत सिँघ चोहला साहिब, गोपाल सिँघ मुण्डा पिण्ड,
दर्शन सिँघ दरगाहपुर, गुरनाम कौर चोहला खुरद रूड़ सिँघ धुंन ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडा कबूल करीं सजदा, बिन सीस जगदीश निवाईआ। तेरे दर दा दर दरवेश होवे बरदा, तन ख़ाकी देणी माण वड्याईआ। भेव खुलाउणा अगम्मे घर दा, जिस गृह मन्दिर अन्दर वजे वधाईआ। इक्को नूर ज़हूर नज़री आए नर हरि दा, नर हरि पड़दा देणा चुकाईआ। तेरे हुक्म विच मनुआ होवे डरदा, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। डण्डावत बन्दना होवे करदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे दुआरे जगाया अलख, अलख अगोचर देणी माण वड्याईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नाले भण्डारे वेख लै सख, सच स्वामी वस्त देणी वरताईआ। निज नेत्र खोलूणी अक्ख , नूर नुराने नूर देणा चमकाईआ। भेव अभेद देणा दस्स, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बूंद स्वांती निझर देणा रस, नाभी कवल उलटाईआ। तेरी सिफ्त सलाह शब्दी धार होवे जस, अनबोलत राग देणा दृढ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त होईए कदे ना वख, गृह मन्दिर घर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साची बख्श दे टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ।

तूं आदि जुगादी एकँकारा एक, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण बुद्धी कर बिबेक, दूई दुवैती डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरा दर्शन लईए पेख, पेखत पेखत खुशी बणाईआ। साडे जन्म जन्म दी बदल दे रेख, ऋषीआं मुनीआं तों बाहर ओट तकाईआ। तूं मालक स्वामी सतिगुर दर दरवेश, दहि दिशा वेखणा चाँईं चाँईंआ। सदा सुहेला रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढ कलेश, कुदरत दे मालक देणी वड्याईआ। दर ठांडे होईए पेश, पेशीनगोईआं तेरे अगे टिकाईआ। तूं शाह सुल्ताना इक नरेश, नूर नुराना नूर अलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर भेव अभेद आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं देणा आपणा माण, निमाणे हो के मंग मंगाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह नूर अलाहीआ। वेखणहारा दो जहान, ज़िमीं असमानां भेव चुकाईआ। निरगुण धार लख चुरासी काहन, राम रहीम रहमान इक अख्वाईआ। आदि जुगादी देवणहारा दान, दाते दानी तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरे अगे वास्ता पाईआ। चरण कवल उपर बख्श ध्यान, धरनी धरत धौल तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी आपणे रंग रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं सानूं दे सहारा, सहायक नायक दया कमाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त इक अख्वाईआ। नूर अलाही परवरदिगारा, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। शब्दी नाद दे धुन्कारा, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। अमृत बख्श ठण्डी ठारा, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। जोती जाते हो उज्यारा, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। जे आत्मा तेरा प्यारा, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। पंज तत कहिण असीं मंगदे तेरा दुआरा, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिगुर सच सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ चरण कवल बख्श दे ओट, ओड़क आपणी दया कमाईआ। धुर दे नाम दी ला दे चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। घर प्रकाश होवे निर्मल जोत, जोती जाता नज़री आईआ। जे आत्मा तेरी गोत, क्यों ततां दईं जुदाईआ। सानूं तेरे मिलण दा शौक, सचखण्ड दुआर देणा पहुंचाईआ। साडा लेखा रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। तेरा नाम गाईए इक सलोक, सोहला धुर दा देणा समझाईआ। तेरी किरपा तेरे दुआरे जाईए पहुंच, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे मालक इक सुणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पाउणी सार, सतिगुर शब्द शब्द शरनाईआ। तेरे चरण निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। साडा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर

अवतार, अवतरी तेरी जुग जुग सेव कमाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले हो के मांगत बणे भिखार, दर ठांडे अलख जगाईआ। देवणहार दातार, दाता दानी अगम्म अथाहीआ। साडी पैज दे संवार, कलयुग अन्त श्री भगवन्त होणा आप सहाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत माटी ख़ाक लोकमात रहे ना छार, धूड़ी ख़ाक आपणे चरण लैणा बणाईआ। तेरा जोत दा जोत तक्कीए उज्यार, नूर नुराने नूर देणा दरसाईआ। थिर घर वासी पुरख अबिनाशी बख़्शणा आपणा इक दुआर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। असीं लोकमात आईए ना दूजी वार, जन्म जन्म ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तुध बिन अवर ना कोअ, कूक कूक सुणाईआ। सच मुहब्बत बख़्श दे मोह, ममता मोह मात मिटाईआ। पंच विकार रहे ना गरोह, तन वजूद वजे वधाईआ। तेरा हुक्म संदेशा सुणीए सो, सो पुरख निरञ्जण देणा समझाईआ। आत्म परमात्म धार रहे ना दो, हँ ब्रह्म प्रभ पड़दा देणा चुकाईआ। निझर आपणा अमृत रस चो, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। बिन नेत्र नैणां बख़्श लोअ, निज लोचन इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच घर दा पड़दा आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेखणा लेखा अन्त, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। तूं साहिब श्री भगवन्त, भगवन बेपरवाहीआ। तेरा नाम गाईए मंत, हरि ढोला सिफ्त सलाहीआ। तेरी महिमा सदा अगणत, अलख लख सके कोए ना राईआ। साचा लहिणा देणा मुकाउणा विच्चों जीव जंत, लख चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे दर ते होए मंगत, ख़ाली झोली देणी भराईआ। साडा लेखा मुका दे तत पंकज, पंज तत दर तेरे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचे नाम दी पाउणी बन्दश, बन्दगी बन्दना आपणे चरण कवल दरसाईआ।

✪ १७ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड जौड़ा ज़िला अमृतसर मक्खण सिँघ जौड़ा, बली सिँघ कैरो, दलीप सिँघ सुरजन सिँघ नूरपुर, केशो राम सरहाली, कर्मी बरनाला ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडे धुर दे सईआ, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार फड़ लै बहीआ, परवरदिगार सांझे यार आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साडी पार करा दे नईया, नौका नर नरायण आपणे कंध उठाईआ। साडा नाता कूड़ा तुट्टया भैणां भईआ, साजण मीत ना कोए वड्याईआ। लहिणा

देणा लेखा राय धर्म हथ्थ रहे ना वहीआ, चित्रगुप्त ना वंड वंडाईआ । आसा पूरी कर दे जो सुंभ निसुंभ सँघार के संदेसा दिता दुर्गा मईआ, अष्टभुज जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ किरपा कर श्री भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। साडा वेख लै अन्त निशाना, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। जुग चौकड़ी तेरा बदलदा रिहा ज़माना, ज़िमीं ज़मां दे मालक होणा सहाईआ। लेखा पूरब तक लै धुर दे रामा, काहन कान्हा नैण उठाईआ। की मुहम्मद पैग़म्बरां नाल तेरा अमामा, नूर नुराने नूर रुशनाईआ। तूं आदि पुरख अपरम्पर स्वामी अन्तरजामा, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। पंज तत तेरा सदा सदा गुलामा, नित नवित सीस झुकाईआ। मंनदे रहे दीन दुनी विच भाणा, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा गाउँदे रहे गाणा, ढोला सोहला इक दृढ़ाईआ। तूं अन्त श्री भगवन्त होणा आप मेहरवाना, मेहरवान महबूब तेरी ओट तकाईआ। साडे गुणवन्त गुण निधाना, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। पंज तत तत कर परवाना, परम पुरख आपणे घर बख्श वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार आपणी दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा लै तक, तकवा इक्को इक जणाईआ। लहिणा देदे हकीकत हक, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। तेरा फ़रमान इक्को होवे यक, दूजी अवर ना कोए शनवाईआ। साडा पड़दा दीन दुनी विच ढक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरी सरन सरनाई एकँकार गए ढठ, निरँकार देणी वड्याईआ। साडा झगड़ा नहीं कोई मन्दिर मठ, शिवदुआले वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा नूर नुराना शाह सुल्ताना जोत धार तक्कीए लट लट, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। तूं वसणहारा घट घट, जन भगत सुहेले तकणे चाँईं चाँईंआ। भाग लगा दे काया माटी मट, शब्द अनादी धुन कर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेला मेलणा सहिज सुभाईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे भगत दुलारे, दूलहा इक्को नज़री आईआ। भिक्ख्या मंगीए बणके चरण भिखारे, दर ठांडे सीस झुकाईआ। तूं देवणहार निरँकारे, निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ। याद विच जुग लँघ गए चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर भज्जे वाहो दाहीआ। अन्त आसा पूरी कर दे धुर दे परवरदिगारे, सांझे यार तेरी वड्याईआ। साडे ख़ाली भर भण्डारे, अतोट अतुट नाम वरताईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुर दे के गए इशारे, बिन सैनत सैनत लगाईआ। तेरा दर सुहञ्जणा एका एकँकारे, अकल कल धारी नज़री आईआ। साडी पैज दे संवारे, स्वार्थ तेरे चरण टिकाईआ। फेर जन्म होए ना दूजी वारे, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ । असीं पहुंचीए सचखण्ड सच्चे दरबारे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, सच गृह आप वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा वेखीए अगम्म घराना, दरगाह सच सच जणाईआ। जिथ्थे इक्को नाद होवे तराना, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। इक्को मन्दिर होवे मकाना, छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ। इक्को दीपक जोत जगे महाना, बिन तेल बाती रुशनाईआ। इक्को सिँघासण सोहे कान्हा, काहनां दे काहन तेरी वड्याईआ। इक्को तेरा वजे शब्द दमामा, निरगुण सरगुण धार दृढ़ाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जगत शरअ करे ना कोए गुलामा, दीन दुनी बन्धन ना कोए रखाईआ। साडा लहिणा देणा मेट तमामा, तमअ लालच ना कोए रखाईआ। जोती धार तेरा सतिगुर शब्द अगम्मी जामा, रूप रंग वेखण कोए ना पाईआ । पंज तत कहिण सानूं बख़्श दे इक टिकाणा, टिक्के चरण धूड़ी ख़ाक रमाईआ। तूं मेहरवान होणा मेहरवाना, महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह आलमीन तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लहिणा देणा दे दे मालक, ख़ालक ख़लक तेरी सरनाईआ । कलयुग अन्त वेख लै हालत, हाल हाल साडी दुहाईआ। चारों कुण्ट कूड़ जहालत, सच रंग ना कोए समाईआ। सब नूं अन्दरों भुल्ली तेरी अबादत, बांग अज़ां ना कोए शनवाईआ। तूं महबूब सदा सही सलामत, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। सति सच दी दे निआमत, रस आपणा आप चखाईआ। असीं मूर्ख मुगध बाल अणजाणत, बुधहीण मात अख्वाईआ। तूं करी आप पहिचाणत, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जे आत्मा तेरा साडे विच अमानत, अन्त तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सच सच रंग रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं रंगदे रंग चलूल, चौथे जुग दुहाईआ। समरथ ना जाईं भूल, अकथ अकथ तेरी वड्याईआ। भगत उधारना तेरा रूल, नीती नित नवित चली आईआ। तूं मालक कन्त कन्तूहल, हरि करता इक अख्वाईआ। मेहरवान जाईं ना भूल, अभुल देणी वड्याईआ। तेरा हुक्म इक माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरे चरण कवल सद लाउँदे रहीए धूल, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। तत उधारना तेरा काम मामूल, आत्मा नाल भगतां तन देणी सरनाईआ। राय धर्म साथों लहिणा देणा ना करे वसूल, वसल यार आपणा देणा वखाईआ। साडी बेनन्ती कर कबूल, काअब्यां तों परे दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी कन्त कन्तूहल, कुदरत दे कादर करते पुरख पुरख पुरखोतम तेरी ओट ओड़क इक तकाईआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड सिधवां ज़िला अमृतसर मनी राम सिधवां, मिलखा सिँघ समुंद सिँघ माढ़ी मेघा, हरबंस कौर नारला, दर्शन सिँघ लाखणा, काबल सिँघ, जीतो बासरके, गोपाल सिँघ, लक्ष्मण सिँघ भूरे, वीरो माढ़ी कम्बोके ✪

पंज तत कहिण प्रभ जुग चौकड़ीआं लँघीआं बड़ीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी नित नवित तेरीआं वेखदे रहे घड़ीआं, पलकां दे पिच्छे ध्यान लगाईआ। तेरे हुक्म नाल सड़दे रहे कक्खां नाल विच मढ़ीआं, जगत मसाणां रूप वटाईआ। अनक बार तेरीआं नाम बाणीआं पढ़ीआं, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। साडीआं धारां तेरी मंज़ल मूल ना चढ़ीआं, दरगाह सच ना कोए टिकाईआ। अन्त सरन सरनाई तेरे पड़ीआं, परम पुरख देणी माण वड्याईआ। साडीआं जगत जहान वालीआं तोड़ी कड़ीआं, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक वेख वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे लहिणे वेख लै सब दे, भगवन भगती धार रहे कुरलाईआ। जुग जुग तैनूं रहे लभदे, खोजया थाँईं थाँईंआ। तेरे दरस ना पाए नूरी रब्ब दे, भेव अभेद ना कोए चुकाईआ। हुण लहिणे देणे तक सब दे, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा भेव चुकाईआ। साडे पन्ध मुका दे सड़ने अग्ग दे, ततव तत ना कोए तपाईआ। साडे लेखे पूरे कर दे जग दे, जागरत जोत तेरी वड्याईआ। हुक्म सुणा दे शब्द अनादी नद दे, अनहद नाद कर शनवाईआ। पन्ध मुका दे दीन दुनी दी हद्द दे, हदूद आपणी इक वखाईआ। झगड़े मेट दे रहिण अलग दे, मेल मिलाउणा सहिज सुभाईआ। असीं झोली तेरे अगे अड्डदे, ख़ाली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे उत्ते हो कृपाल, कृपानिध दया कमाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, ठाकर स्वामी हो के वेख वखाईआ। असीं तेरी घालीए घाल, जुग जुग सेव कमाईआ। तूं साहिब बण प्रितपाल, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जे आत्मा तेरा लाल, तन भगतां दे वड्याईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कहे असीं वसीए तेरी सची धर्मसाल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। साडी सुरत आप संभाल, सम्बल दे मालक वेख वखाईआ। तेरी तक्कीए अगम्मी चाल, चाल निराली इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी संभाल सुरत, शब्दी शब्द वेख वखाईआ। तेरा नूर अकाल मूर्त, भगवन तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाद सुणा अगम्मी तूरत, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। साडी आसा मनसा पूरत, पारब्रह्म देणी माण वड्याईआ। तूं सर्ब कला भरपूरत, भरपूर रिहा

सर्ब ठांईआ। तेरे चरण लाईए धूड़त, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। साडा लेखा रहे ना मूर्ख मूढ़त, मुगध अंञाण लैणे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे उत्ते तरस कमाउणा, रहमत रहीम आप कमाईआ। जे भगतां आत्मा आपणे नाल मिलाउणा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। भगतां तत सचखण्ड आपणे गृह वसाउणा, घर मन्दिर देणा टिकाईआ। दर तेरे वास्ता पाउणा, निव निव सीस झुकाईआ। असीं तेरी धार विच गूढ़ी नींद सौणा, सुत्तयां फेर ना कोए उठाईआ। चुरासी विच फेर कदे ना आउणा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज ना कोए भुआईआ। तेरा रूप तेरे विच समाउणा, तेरी धार तेरा रंग रंगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे उत्ते तरस कमाउणा, करनी दे करते देणी माण वड्याईआ। साडा पंज तत दा बुरज इक्को वार ढाउणा, फेर ढाउण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं लै चल चरण हज़ूर, जन भगत सीस निवाईआ। तेरा तक्कीए नूर नुराना नूर, जल्वागर देणा वखाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। साडा नाता जगत तोड़ना कूड़, कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साडी मंज़ल रहे ना नेड़े दूर, दुतीआ भाओ देणा चुकाईआ। तूं योद्धा महाबली सूर, सूरबीर इक अख्वाईआ। हुण तेरे नाद शब्द दी सुणीए तूर, तुरत देणी दृढ़ाईआ। असीं तेरा सचखण्ड वेखणा चाहुंदे ज़रूर, ज़रूरत तेरे अगे रखाईआ। तत कहिण आसा तक लै जेहड़ी रखी मनसूर, मनसा तेरे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक ख़ालक मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पंज तत कहिण जे आत्मा तेरा गोती, गौतम बुध्ध गया सुणाईआ। निरगुण धार तेरा जोती, जोती जाते इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण साडी आयू तक लै बहुती, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। साडी आसा वेख लै रोती, बिन नैणां नीर वहाईआ। असीं जन्म भोग लए कोटी, कोटन कोटि वेस वटाईआ। खेल खेलया बूँद रक्त बोटी, ततव ततां संग मिलाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तेरी रखी ओटी, सहारा इक्को इक सुणाईआ। साडी बेनन्ती सुण लै छोटी, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। साडा झगड़ा मेट दे लोक परलोकी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। असीं तेरा गाया सलोकी, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सचखण्ड दुआरयों कदे ना रोकीं, रुकमणी दी आसा तक जो कृष्ण गया दृढ़ाईआ। असीं भगत सुहेले तेरे माणक मोती, चरण कवल लैणे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगतां तन वजूद, माटी ख़ाक वजे वधाईआ। तूं मालक इक महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। साडे नाल लेखा ना करी दूज, दुतीआ भाओ

देणा चुकाईआ। तेरा सतिगुर शब्द आदि जुगादी दूत, दो जहानां करे शनवाईआ। हरि थाँ तूं सदा मौजूद, मुफ़लिसां वेखणा थांउँ थाँईंआ। साडी दीन दुनी दी मेट हदूद , हद्द रहिण कोए ना पाईआ। सानूं बख्श दे आलीशान अरूज, शहिनशाह दरगाह सच दे वड्याईआ। तेरी इक्को कीती पूज, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ आत्मा नाल सानूं दे माण, जन भगत सुहेले हो के सीस निवाईआ। तूं पतित पावन भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। किरपा कर दे धुर दे काहन, काहनां दे काहन वेख वखाईआ। मेहरवान हो के मेहर कर दे अगम्मे राम, रम्ईआ तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साडा कर इंतज़ाम, बन्दोबस्त तेरे हथ्थ नज़री आईआ। असीं ततां ने तत नहीं रहिणा ग़ुलाम, जगत ज़ंजीर कटाईआ। तेरे सचखण्ड दुआर एकँकार करीए आराम, दरगाह साची बहि बहि ख़ुशी बणाईआ। तेरे चरण कवल इक्को इक प्रणाम, नमस्ते कहि के सजदयां विच सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा वेख तमाम, तमअ लालच अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा पकड़ना निरगुण धार अगम्मी दाम, दामनगीर आप अख्वाईआ।

✪ १८ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर मौता सिँघ दलीप सिँघ प्रताप सिँघ फुम्मण सिँघ सुरजीत कौर सेवा सिँघ बीरो शाम सिँघ सज्जण सिँघ कल्सी, गुलाब कौर डल, गंडा सिँघ दराज़के, अमरीक कौर डलीरी, गुरमुख सिँघ डलीरी, ✪

पंज तत कहिण प्रभ सुण लै साडी गिरयाज़ारी, गहर गम्भीरे बेनज़ीर नज़रीआ नज़र विच्चों बदलाईआ। जुग चौकड़ी तन वजूद माटी ख़ाक साडी हुन्दी रही ख्वारी, परम पुरख परमात्म दर तेरे सीस झुकाईआ। आदि जुगादि ब्रह्म बहिमाद तेरी आत्मा नाल बज्झदी यारी, यराना नौजवाना श्री भगवाना इक जणाईआ। असीं अग्नी सड़ के बणदे रहे छारी, मिट्टी ख़ाक ख़ाक रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग साडी आशा किसे ना कीती प्यारी, अवतार पैग़म्बर गुरूआं अगे वास्ता पाईआ। सच संदेशा नर नरेशा सुणा के गए अगम्मी धारी, धरनी धरत धवल धौल तेरी ओट तकाईआ। पंज तत कहिण साडी नमों नमों निमस्कारी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सानूं अन्त कन्त भगवन्त पार उतारी, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण लेखा जगत जहान रहिण ना पाईआ। तूं निरवैर निराकार निरँकारी, जोती

जाता इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे अगे सुणाईए बोल, कूक कूक जणाईआ। अन्त तोलणा पूरा तोल, तराज़ू नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। सच दुआरा एकँकारा साडा पड़दा देणा खोल्ह, ख़लक दे ख़ालक दया कमाईआ। जे निरगुण धार आत्मा नाल करे चोहल, परमात्मा आपणा मेल मिलाईआ। क्यों विछोड़ा जन भगतां ततां देवें उपर धौल, धरनी दे मालक भेव खुल्हाईआ। अगे रहे ना पड़दा ओहल, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी बोल, कौल इकरारनामा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ सद तेरा करीए दरस, दर सच देणी सरनाईआ। साडी आदि आदि दी हरस, हवस देणी मिटाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करना तरस, रहमत हक कमाईआ। मेहर दा अमृत बरस, मेघ नाम जणाईआ। साडा खुशीआं वाला होवे बरस, मास दिवस देणी वड्याईआ। चिन्ता सोग मेट दे हरख, क्रिया कूड़ मिटाईआ। बौहड़ी कलयुग अन्त करीं ना परख, पारखू रूप ना कोए दरसाईआ। साडा वायदा पिछला तक लै शर्त, शरअ तों बाहर जणाईआ। जे निरगुण धार आएयों परत, पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे उत्ते धरत, धवल दे मालक होणा सहाईआ। साडा वसेरा होवे तेरे अर्श, अर्शी प्रीतम देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं सचखण्ड वसाउणा आप, दरगाह सच देणी वड्याईआ । तेरा नित नवित जप्या जाप, जग जीवण दाते सेव कमाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर दे पाक, ततां मैल रहे ना राईआ। थिर घर दा खोल्ह दे ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जे परमात्मा आत्मा तेरा साथ, भगतां दे तत आपणे रंग लैणे रंगाईआ। मंज़ल पन्ध मुका दे वाट, लेखा अगे रहे ना राईआ। असीं पुजीए तेरे घाट, पतण इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे जोती नूर ललाट, मस्तक जगत ना कोए वखाईआ। सच दुआर वखाउणा हाट, हटवाणे भेव खुल्हाईआ। साडा लहिणा देणा आवण जावण देणा काट, कटाकश आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा वेखणा घर अथाह, थिर घर वासी देणा वखाईआ। साडा लेखा रहे ना जल थल अस्गाह, महीअल पन्ध मुकाईआ। तूं आदि जुगादी इक मलाह, खेवट खेटा नूर अलाहीआ। तैनूं मंनीए हक खुदा, ख़ुद मालक देणी वड्याईआ। जो सूफ़ी आसा गए रखा, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। सदी चौधवीं जन भगतां ततां देणी शफ़ा, शफ़कत आपणे हथ्थ रखाईआ। तूं स्वामी मेहरबां, महबूब नूर अलाहीआ। सानूं कदी ना करीं जुदा, जुज़ वखरा वंड वंडाईआ। साडी बेनन्ती तेरे अगे दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन

भगतां तत आपणे चरण कवल टिका, दरगाह सच दे सरनाईआ। विछोड़े विच फेर भरीए कदे ना आह, उफ़ हाए ना कोए सुणाईआ। तूं आदि जुगादि पिता माँ, मात पित इक अख्वाईआ। सचखण्ड दुआरा एकँकारा आपणा देणा थाँ, थान थनंतर इक सुहाईआ। सदा सुहेले इक अकेले देणी ठण्डी छाँ, अग्नी तत ना लागे राईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त करना हक न्याँ, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी सिफ्त करीए वाह वाह, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण भगतां पकड़नहारा बांह, तुध बिन दूजा अवर नज़र कोए ना आईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड गगोबूआ ज़िला अमृतसर दलीप सिँघ मुखत्यार सिँघ गुरबख्श सिँघ कर्म सिँघ जगीर सिँघ चन्नण सिँघ भजन कौर गग्गोबूआ, करतार सिँघ प्रताप कौर भोजीआं, सेवी ठठा, वीरो बघिआड़ी, जगीर सिँघ सबरा, ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडा जुग जुग मेट दे रट्टा, झगड़ा तत रहिण ना पाईआ। सब दा लेखे ला लै लिख्त वाला पटा, पाटल हो के ध्यान लगाईआ। कलयुग नाल सतिजुग कर दे वटा, वटांदरा आपणे हथ्थ रखाईआ । साडा चीथड़ वेख लै फटा, जुग चौकड़ी पुरातन देईए वखाईआ। साडा तन वजूद वेख लै मटा, अन्दर अन्दर ध्यान लगाईआ। मनुआ मनसा वाला फिरे ना नठा, भज्जे वाहो दाहीआ। लेखा रहिण ना देणा अठसठा, तीर्थ तट्टां पन्ध मुकाईआ। उलटी गेड़ पुरख अकाले लठा, गेड़ा गेड़े विच्चों बदलाईआ। दीन मज़्हब शरअ दा रहे कोई ना रट्टा, झगड़ा दिसे ना ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा देखीए दर सुहावा, सोहणी देणी वड्याईआ। साडा तेरे उत्ते दाहवा, दाहवेदार जगत अख्वाईआ। दरगाह साची साडा ला लै नावां, नर निरँकार हो सहाईआ। साडा रूप रहे ना वांग कावां, हँस आपणे रंग रंगाईआ। तेरा भगत सुहेला मात रहे ना कोए निथावां, सचखण्ड देणी माण वड्याईआ। पंज तत कहिण आपणी गोदी चक लै बिना बाहवां, पतिपरमेश्वर मेहर नज़र उठाईआ । आत्मा नाल साडा वज़न कर दे सावां, इक्को कंडे तराज़ू तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दी वस्त आप वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पूरी कर दे मनसा, ममता जगत ना कोए रखाईआ। जे आत्मा तेरी अंसा, तेरे रूप विच समाईआ। सानूं आपणा बणा लै बंसा, परवरदिगार

तेरी वड्याईआ। साडा अन्तर रहे ना संसा, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। धर्म दी धार बणा लै बणता, घड़न भन्नणहार वेख वखाईआ। साडा झगड़ा रहे ना मन दा, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। जिस वेले नाता तुट्टे तन का, लोकमात रहिण ना पाईआ। फेर लेखा वेखणा आपणे जन का, बण जणेंदी माईआ। प्रकाश देणा आपणे नूरी चन्न का, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी खेल आप खिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा लग्गे तेरे कवल चरण, चरण कवल देणी वड्याईआ। तकी तेरी सरन, सरनगति इक रखाईआ। जे आत्मा मेलणा तेरा परन, जन भगतां देणी वड्याईआ। पंज तत तेरा लड़ फड़न, पल्लू इक्को गंढु वखाईआ। उह क्यों ना तेरी मंज़ल चढ़न, सचखण्ड पुज्जण चाँईं चाँईंआ। लेखा मुकाउणा चोटी जड़न, चेतन आपणे रंग रंगाईआ। जेहड़े जुग जुग अग्नी विच सड़न, सड़ सड़ धूड़ी ख़ाक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा रहे अन्त ना लेखा, जगत लेख देणा मिटाईआ। जगत भरांत ना रहे भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। तेरा निरगुण धार तक्कया वेसा, जोती जाते नज़री आईआ। साडा लहिणा देणा मुका दे देस पर्देशा, धरनी धरत धवल पन्ध देणा चुकाईआ। तेरे चरण कवल रहीए हमेशा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आत्मा उधारना जे तेरा पेशा, पंजां ततां नाल देणी वड्याईआ। साडा इक्को इक तेरे दर संदेशा, अणसुणत देईए सुणाईआ। आवण जावण पतित पावन मेट कलेशा, कल काती बहुभांती आपणा मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरण कवल इक आदेसा, दहि दिशा दे मालक देणी माण वड्याईआ।

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर पूरन सिँघ, हरी सिँघ, महिन्दर सिँघ, बचन सिँघ, गुरदीप कौर सोहल, सुरजीत कौर, गुरदीप सिँघ भरोभाल, चरण कौर भुसे, वरयाम सिँघ मलीआ, वीरो माढ़ी कम्बोकी, राज कौर खर ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी पूरी कर दे आस, तृखा तृष्ना दीन दुनी मिटाईआ। साडा लहिणा देणा मुका दे नालों शंकर कैलाश, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। गर्भ विच फेर ना होए निवास, जनणी कुक्ख ना कोए रखाईआ। राय धर्म ना देवे फास, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। तूं शहिनशाह शाहो शाबाश, हरि करता इक अख्वाईआ। जुग

जुग मालक पुरख अबिनाश, परम पुरख नूर अलाहीआ। हउँ सेवक तेरे दास, सेवा जुग जुग मात कमाईआ। साडी अन्तर मेट उदास, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। साडी तृष्ना ना करीं निरास, निरगुण होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मेला आप मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा चुरासी तोड़ ज़ंजीर, बन्धन बंध ना कोए रखाईआ। तूं मालक बेनज़ीर, नज़रीआ आपणा लै बदलाईआ। साडी लेखे ला तकदीर, तक्बर जगत ना कोए जणाईआ। तेरे हथ्थ तेरी तदबीर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अन्दरों साडी बदल ज़मीर, ज़ामन हो के वेख वखाईआ। साडी बेनन्ती इक अख़ीर, आख़र देईए सुणाईआ। साडे नेत्र वगे नीर, हंझूआं हार बणाईआ। तूं शहिनशाह शाह पीरां दा पीर, हरि करता नूर अलाहीआ। आदि जुगादी गहर गम्भीर, गवर अगम्म अथाहीआ। पंज तत कहिण जन भगतां लेखे ला शरीर, तन वजूद आपणे रंग रंगाईआ। लहिणा रहे ना हस्त कीर, कीट कीटां गोद उठाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले देणी धीर, धीरज धर्म धार समझाईआ। सच स्वामी अगम्मा अमृत बख़्श दे सीर, तृखा दीन दुनी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच देणी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी चोग ना जाए निखुट, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रीतम प्रीत जाए ना टुट, गंढुणहार गोपाल वेखणा चाँईं चाँईंआ। तेरा दुआरा जाए ना छुट, छुटकी लिव लैणी लगाईआ। अमृत जाम प्या दे घुट, रसना रस रस चखाईआ। असीं आदि जुगादी तेरे सुत, पिता पूत लैणे गल लाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरे धर्म दा नूर गया छुप, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। तेरे अगे दसीए दुःख, दुखी हो के जगत जणाईआ । साडी तृसना मेट दे भुख, कामना काम ना कोए वड्याईआ। उलटा फेर होईए ना रुख, रुख़सत दीन दुनी विच्चों कराईआ। तेरे दुआरे साडी सुहञ्जणी होवे रुत, रुतड़ी सचखण्ड महकाईआ। तूं पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग इक रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे लेखे जाईए लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। दे वड्याई विच जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ बुझा दे अग्ग, तृष्ना तृखा ना कोए तपाईआ। साडे धुरदरगाही रब्ब, यामबीन तेरी सरनाईआ। सानूं चुरासी विच्चों लभ, जे मेला मेलया चाँईं चाँईंआ। हुण किरपा कर दे झब, अगला पन्ध ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दुआर वखा दे हद्द, हदूद इक्को इक समझाईआ। जिथ्थे तेरे नाम दा वजे नद, धुन आवाज़ ना कोए सुणाईआ। दीपक जोती दीआ जाए जग, बिन तेल बाती डगमगाईआ। सच दुआर एकँकार धुर धाम अवलड़े जाईए सज, साजण देणी माण वड्याईआ। पंज तत कहिण सानूं तेरे

मिलण दा लब, लोभ लालच कूड़ दिता तजाईआ। खुशीआं नाल साहिब सुल्ताने लैणा सद्द, सद्दा देणा थांउँ थाँईंआ। असीं होईए गद गद, गदागर दा लेखा दे मुकाईआ। जे आत्मा तेरी यद, जन भगतां तत आपणे नाल मिलाईआ। असीं तेरी सेवा कीती वध, भज्जे वाहो दाहीआ। साडा हिस्सा दे दे अध, अधविचकार ना कदे रखाईआ। आपणे नालों करीं ना अड्ड, वखरा गृह वखाईआ। जन भगतां सचखण्ड दुआरे आउणा छड, अगे हो ना कोए अटकाईआ। लेखे लाउणा नाड़ी मास हड, ततां वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर एकँकार निरगुण धार लैणा सद्द, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ।

✪ २० असू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड गुमानपुरा ज़िला अमृतसर नरायण सिँघ अजीत सिँघ
सवरन सिँघ, हरनाम सिँघ गुमानपुरा, भाग सिँघ माहल, कर्म सिँघ गुरमेज़ कौर मीआपुर,
जगमोहण सिँघ आस कौर बोपाराए, अवतार सिँघ काउँके, महिन्दर सिँघ बोपाराए,
भाग सिँघ महावा, समा सिँघ मोदे, छिन्दो गुरबचन कौर धनोए ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी दुरमति मैल धो, माया ममता मोह मिटाईआ। कूड़ी क्रिया साडे अन्दरों खोह, हुक्म धुर दे नाल मिटाईआ। पंज विकार रहे ना गरोह, गहर गम्भीर देणी वड्याईआ। तेरा नाम उपजे सो, सो पुरख होणा आप सहाईआ। आत्म धार तेरा गया जे हो, पंज तत मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। तेरे चरण सरगुण धार जाईए छोह, शहिनशाह तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्दर सुणा दे नाद, अनादी धुन उपजाईआ। भेव चुका दे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड वजे वधाईआ। तूं मालक ख़ालक पुरख अकाला आदि, अन्त तेरी ओट तकाईआ। जन भगतां हिरदे सद तेरी रहे याद, मन मनसा मोह मिटाईआ। शब्द संदेशा दे दे बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। जे आत्मा तेरा सच समाज, सच दे मालक साडा मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच घर वजदी रहे वधाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्दर बख्श दे निर्मल नूर, नूर नुराने नूर चमकाईआ। तेरा तक्कीए हक ज़हूर, ज़ाहर भेव देणा चुकाईआ। पन्ध रहे ना नेड़ा दूर, गृह मन्दिर मिलके वजदी रहे वधाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। तेरे चरण कवल शुक्रिए विच होईए मशकूर, निव निव सीस झुकाईआ। साडे जन्म जन्म दे बख्श कसूर, मेहरवान मेहर

नज़र उठाईआ। साडी आसा मनसा अन्तिम कर पूर, पूरन ब्रह्म दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर अमृत बख्श दे मिउं, बरखा अगम्म अथाह निरगुण धार लगाईआ। जोती जाते लगा लै निहु, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा दयो, देवत सुर तेरी सरनाईआ। तूं मालक अलख अभिउ, भय भञ्जण तेरी बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा भगतां तत कहिण सानूं बख्शदा नहीं क्यों, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जुग जुग तेरे चरण कवल गए निउँ, निव निव सीस झुकाईआ। साडा झगड़ा मुका दे साडे तिन्न हथ्थ सीउँ, सीवां जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्दर चाढ़ दे रंग, रंगत अगम्म अथाहीआ। बिरहों विछोड़े विच मंगीए मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। बेशक अप तेज वाए पृथ्मी आकाश असीं तत पंज, पंचम शब्द नाल शनवाईआ। साडा मेट दे ग़म रंज, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। तेरे दुआरे नेत्र वहाईए हंझ, हंझूआं हार बणाईआ। जगत विकार रहे ना जंग, लेखा कूड़ देणा मुकाईआ। निज घर वासी निज घर देणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सानूं आपणे बणा लै चन्द, चन्द चांदनी इक रुशनाईआ। जे आत्मा आपणे नाल लई गंढ, जन भगतां तत संग बणाईआ। सचखण्ड दुआरे सानूं पई ठण्ड, थिर घर बहि के वजदी रहे वधाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले भगतां देवीं कदे ना कंड, करवट लोकमात बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मेरा मैं तेरा सदा सद गाया छन्द, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ।

✪ २० अस्सू शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड मानावाला ज़िला अमृतसर चरण सिँघ गुरदित सिँघ दलीप सिँघ तारा सिँघ मानावाला, सुरिंदर सिँघ भुलर, हज़ारा सिँघ छीने जसतरआल, मंगल सिँघ तारू सिँघ सांरगढ़ा, सन्ता सिँघ जगीर कौर दर्शन कौर लेलीआं ✪

पंज तत कहिण प्रभ किरपा कर प्रभू कमलापाती, पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार तेरी सरनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख अन्धेरी राती, नव सत तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा तक लै काग़ज़ाती, कलमा नाम कायनात वेख वखाईआ। की खेल खिलाए कलयुग अन्तिम काती, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। अमृत बूंद मिले ना किसे स्वांती, निझर झिरना ना

कोए झिराईआ। ग़रीब निमाणयां भगतां पुछे कोए ना वाती, सिर सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। फिरी दरोही लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल रही कुरलाईआ। झगड़ा वेख लै ज़ात पाती, दीन मज़ब् करे लड़ाईआ। तेरी मंज़ल हक महबूब चढ़े कोए ना घाटी, सच दुआर नज़र कोए ना आईआ। फिरी दरोही तीर्थ अठ्ठ साठी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रही कुरलाईआ। निगाह मार लै पुरख अकाले दीन दयाले समराथी, मेहरवान महबूब मेहर नज़र उठाईआ। असीं तत विचारे अनाथ अनाथी, ग़रीब निमाणे हो के मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द दूलहे बणना धुर दे साथी, सगला संग निभाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे मस्तक माथी, धूड़ी इक्को ख़ाक रमाईआ। पिछला पन्ध मुका दे अगे अवर रहे ना घाटी, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा वेख लै काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी बाहर ध्यान लगाईआ। जगत चिन्ता वेख लै ग़म, ग़मी ग़मख़्वार देणी गुआईआ। साडा लेखे लाउणा पवण स्वासी दम, दामनगीर आप हो जाईआ। जे आत्मा तेरा नूर माया धार तेरा ब्रह्म, पारब्रह्म पड़दा देणा उठाईआ। असीं नेत्र रोईए छमां छम, छहबर नैणां वाली लाईआ। पुरख अकाल साडा बेड़ा अन्तिम बन्न्, बन्न्णहार दया कमाईआ। असीं भगत सुहेले तेरे जन, सूफ़ी हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वस्त सच सच वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा ला लै लोकमाती, मन मति दा डेरा ढाहीआ। धुर दे राम बण जा कमलापाती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। साडे तन वजूदां हक महबूबा दे दे शांती, अग्नी तत ना लागे राईआ। बेशक तेरे जगत विच आउणी करांती, नव सत खेल करना थांउँ थाँईंआ। साडी मंज़ल अन्त मुका दे वाटी, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ भगत सुहेले तेरे मित, मित्रा दे वड्याईआ। निरगुण धार करना हित, सरगुण वेखणा चाँईं चाँईंआ। परम पुरख हो के वसणा चित, ठगौरी कूड़ रहे ना राईआ। दर्शन देणा नित, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणना पित, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। तेरे चरणां जाईए टिक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। लहिणा देणा मुकाउणा पत्थर इट्ट, पाहनां सीस ना कोए झुकाईआ। सानूं धाम वखा दे अनडिठ, सचखण्ड साचा इक दरसाईआ। करवट विच बदल लै पिठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक भेव चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा भेव चुका दे तन, वजूदां दे वड्याईआ। दीन दुनी विच बेड़ा दे बन्न्, बन्न्णहार तेरी सरनाईआ। धुर दा शब्द जणा दे बिना कन्न, कायनात

९६
२४

तों बाहर कर पढ़ाईआ। नूरी जोत चाढ़ दे चन्न, चन्द चांदने कर रुशनाईआ। नाम निधाना दे दे धन, अतोट अतुट आप वरताईआ। जन भगतां सच बख्श दे सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। लेखा रहे ना मरन डरन, चुरासी भउ ना कोए जणाईआ। खुशीआं नाल तेरी मंज़ल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआरे वड़न, थिर घर आपणा आसण लाईआ। बिन रसना जिह्वा तेरा नाम पढ़न, हरि ढोला सिफ्त सलाहीआ। तूं करता पुरख करनी करन, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि नित नवित जुग चौकड़ी तेरा भगतां नाल परण, परम पुरख तेरा रंग देणा रंगाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस चण्डीगढ़ शहर मेहर सिँघ भानशी किदार नाथ दे नवित ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी मंज़ल कट, भगत सुहेले इक इकेले दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तूं वसणहारा घट घट, गृह मन्दिर काया अन्दर सोभा पाईआ। दुरमति मैल निरगुण निरवैर हो के कट, कटाकश धुर दा नाम लगाईआ। सच दुआर एकँकार वखा दे आपणा हट्ट, गृह मन्दिर अन्दर पड़दा आप चुकाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी मारदे सट्ट, सोई सुरत अकाल मूर्त दे जगाईआ। दर दुआर तेरा दर्शन करीए झट, बिन जगत लोचन वेख वखाईआ। प्रकाश देणा काया मट, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। मनुआ दहि दिशा फिरे ना नठ, चार कुण्ट ना उठ उठ धाईआ। दूई दुवैती शरअ शरायती अन्दरों मेट दे फट, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवाना तेरा लईए रट, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। निझर झिरना बूंद स्वांती तेरा नाम लईए चट, जगत तृष्ना भुख मिटाईआ। मानस देही लाह लईए खट, सतिगुर तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। पंज तत कहिण साडा अन्तष्करन कर दे साफ़, पतित पुनीत बणाईआ। कोट जन्म दे कर्म कर मुआफ़, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। साडी दीन दुनी विच पुछ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। चारो कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जे प्रभू आत्मा तेरी ज़ात, अन्त जोत जोत विच मिलाईआ। क्यों नहीं पंजां ततां देंदा दात, जन भगत सुहेले दर तेरे वास्ता पाईआ। साडा लहिणा देणा मुका दे लोकमात, चुरासी वंड रहे ना राईआ। तेरा दर्शन करीए इक इकांत, अकल कलधारी पड़दा देणा चुकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पुछ लै वात, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। चरण कवल उपर धवल जे साडा जोड़या नात, अन्त सचखण्ड दे वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक सब दा पित

मात, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। सच प्रीती जोड़ लै नात, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा रहे ना अन्ध घोर, घोरी हो के सतिगुर शब्द जणाईआ। सुरती नाल बन्नृ लै डोर, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। लेखा रहे ना पंज चोर, पंच विकार देणा मिटाईआ। तेरा प्रेम दा होवे घनघोर, सोहणी रुत देणी सुहाईआ। मनुआ मन ना पावे शोर, शौहर बांके होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सचखण्ड तेरा वसेरा, वसल यार दरसाईआ। मेहरवान कर दे मेहरा, महबूब तेरी वड्याईआ। दीन दुनी ना रहे अन्धेरा, नूरी चन्द देणा चमकाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों निरगुण तेरा होवे फेरा, जुग चौकड़ी रूप ना कोए दरसाईआ। परम पुरख परमात्म तेरा भेव पावे केहड़ा, अन्त कहिण किछ ना आईआ। चुरासी वाला साडा मुका दे झेड़ा, जन भगतां दे तत देण गवाहीआ। सचखण्ड सुहा दे आपणा वेहड़ा, गृह मन्दिर दे वड्याईआ। आवण जावण पतित पावन छुडा दे खहिड़ा, जूनी जून ना कोए वखाईआ। निज घर वासी नज़री आवे नेरन नेरा, निज घर मिल के वजे वधाईआ। पिछला वक्त लँघ गया बथेरा, नव नव चार पन्ध मुकाईआ। साडा सतिगुर शब्द वेख लै जेरा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज फिर फिर आपणा पन्ध मुकाईआ। जे कलयुग अन्त आ गयों सतिगुर शब्द शब्द दी धार शेरा, सिँघ आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां सञ्झ सवेरा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस इटारसी मध प्रदेश भगत सिँघ जुगिंदर सिँघ हरदित सिँघ सुरिंदर सिँघ चमन लाल इटारसी, मंगल सिँघ भूपाल ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना सयदे विच सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी करता पुरख करनेहार, कुदरत कादर बेऐब नूर अलाहीआ। दीन दयाल साडी पाउणी सार, समरथ स्वामी अन्तरजामी आपणी दया कमाईआ। असीं वेस वटाउँदे रहे जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। मेला मिलदा रिहा नाल पैग़म्बर गुर अवतार, तन वजूदां वजदी रही वधाईआ। तेरा नाम कलमा सोहला ढोला रसना जिह्वा आए

उच्चार, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्त कन्त भगवन्त तेरे अगे करीए पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तूं बख्शणहार एकँकार, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। जम्मण मरन तेरा खेल बणया विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी आपणा हुक्म वरताईआ। अन्त रो रो दर ठांडे करीए पुकार, दरोही कूक कूक सुणाईआ। जे भगतां आत्मा दएं अधार, जोती जाते पुरख बिधाते आपणे नाल मिलाईआ। क्यों पंज तत तन वजूद होवे माटी छार, ख़ाकी ख़ाक विच मिलाईआ। असीं चाहुंदे सानूं बख्श दे सति दा सचखण्ड दुआर, दरगाह सच दे वड्याईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तेरा रूप सति सरूप तक्कीए अपर अपार, अपरम्पर स्वामी देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह आप सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे आदि जुगादी मीत, जन भगतां संग रखाईआ। आत्म उधारना तेरी रीत, जुग चौकड़ी चली आईआ। असीं गाउँदे तेरे ढोले गीत, सिफ्तां नाल सालाहीआ। तूं साहिब इक अतीत, त्रैभवण धनी नूर अलाहीआ। आपणा भेव खोलू अनडीठ, अनडिठड़ा भेव चुकाईआ। साडा लेखा रहे ना कौड़ा रीठ, अमृत रस देणा भराईआ। करवट बदल आपणी अन्तिम पीठ, सनमुख नूर नुराने नज़री

१०२ आईआ। साडा तत वजूद कर दे ठांडा सीत, अमृत मेघ अगम्म बरसाईआ। तेरे चरण कवल कीती प्रीत, प्रीतम प्रेम तेरे १०२

२४ नाल रखाईआ। तूं साहिब त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी वड्याईआ। जे आत्मा आपणे नाल मेलणी ठीक, भगतां रंग २४

रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं लै जा आपणे घर, आत्म नाल गृह मन्दिर इक सुहाईआ। किरपा कर मेहरवान महबूब हरि, हरि करते तेरी इक सरनाईआ। विछोड़े विच विछड़ ना जाए तेरा दर, दरगाह सच मिले वड्याईआ। तूं दीन दयाल नरायण नर, नर हरि इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुरु सानूं दे के गए वर, शब्दी धार धार दृढ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त निरगुण धार फड़ा दे लड़, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल तेरी जाईए चढ़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साडा ततां वाला शरीर जे लोकमात जाए सड़, वजूद रहिण कोए ना पाईआ। साडी आशा तेरे चरण कवल असीं दिती धर, धरनी धरत धवल धौल दा लेखा देणा मुकाईआ। सच नुहा अगम्मे सर, सरोवर इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं देखणा तेरा घर सुहञ्जणा, दरगाह सच मिले वड्याईआ। जिथ्थे नूर अलाही आदि निरञ्जणा, जोती जाते डगमगाईआ। तूं दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। दो जहानां मीत सज्जणा, साहिब सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। अन्त साडा

पड़दा कजणा, दर तेरे मंग मंगाईआ। जे भगतां आत्मा आपणे दुआरे सद्दणा, क्यों तत्तां करें जुदाईआ । साडी पिछली पिच्छे मुका दे हद्दना, अगे वंड ना कोए रखाईआ। साडा झगड़ा मुका दे तन बदना, वजूद महबूब आपणे लेखे पाईआ। तूं नूर नुराना अलाही रूप रब्बना, रहमत रहीम देणी कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगतां दी तन वजूद चोली, चोजी प्रीतम देईए जणाईआ। तेरे उत्तों घोल घोली, सदके वारी घोल घुमाईआ। तेरे नाम कलमे दी गाई बोली, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। अन्त आपणे गृह मन्दिर दा कुण्डा खोल्हीं, ख़ालक ख़लक दया कमाईआ। सानूं मिट्टी ख़ाक विच ना रोलीं, चुरासी गेड़यां विच भुआईआ। साडा पूरब तक लै इकरार कौली, वायदे पिछले वेख वखाईआ। सब ने किहा जिस वेले आवे पुरख अकाला उपर धौली, धर्म दी धार नाल वड्याईआ। उस वेले जन भगतां तन वजूद दी चुक्के आप डोली, कहार अवर ना कोए रखाईआ। जित्थे आत्मा सचखण्ड दुआर दी होवे गोली, दर ठांडे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असां तेरे दुआरे वञणा, दूसर गृह ना कोए वड्याईआ। चरण धूड़ करना मजना, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जे भगतां आत्मा लाया आपणे अंगना, अंगीकार सानूं लै बणाईआ। तेरी धूड़ मस्तक ख़ाक लाईए चन्दना, टिक्के ख़ाक रमाईआ । साडी मन्ज़ूर कर लै डण्डावत बन्दना, बन्दगी विच मंग मंगाईआ। साडा लेखा रहे ना तत पंजना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश हो के देईए दुहाईआ। तेरे दुआर दा सच माणीए अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों देणा प्रगटाईआ । चुरासी विच्चों सानूं कढणा, ततव तत ना कोए समाईआ। दो जहान पार कराउणी हद्दना, हदूद आपणी देणी वखाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआर एकँकार आत्मा नाल सब नूं सद्दणा, संदेशा इक जणाईआ। तूं ठाकर गोपाल मूर्त मदना, मधसूदन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ मंगते दर भिखारी, भिक्खक भिच्छया देणी पाईआ । तूं शाहो भूप सिक्दारी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। दाता नूर उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द नाद धुन्कारी, अनहद नाद शनवाईआ। अमृत रस ठण्डी ठारी, सांतक सति सति वरताईआ। जे आत्मा नाल तेरी यारी, यराना ततां नाल तोड़ निभाईआ। असीं भगतां तत तेरे भिखारी, दूसर नज़र कोए ना आईआ। सदा सदा सद तेरे सेवादारी, सेवा सच कमाईआ। जगत कीती नहीं कोई ग़द्दारी, गदागराँ दा लेखा लेखे लैणा पाईआ। सचखण्ड दुआर तेरे बणीए पुजारी, पूजा अवर ना कोए रखाईआ। तेरा रूप अनूप सति सरूप होईए जोत निरँकारी, निरवैर तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त बिन दस्त आप वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ आत्मा नालों ना होए विछोड़ा, भगती धार तेरी सरनाईआ। साडा ततां दा कर दे जोड़ा, जोड़ी जगत जुगत वड्याईआ। सतिगुर शब्द चढ़ा लै आपणे घोड़ा, रथ रथवाही आपणी दया कमाईआ। अन्तिम कलयुग तेरी पै गई लोड़ा, लुड़ींदे साजण होणा सहाईआ। अगला वक्त दिसदा थोड़ा, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्ध घोरा, घोरी बैठे मुख छुपाईआ। कूड़ कुकर्म फिरे नौ खण्ड पृथ्मी वांग चोरा, भज्जे वाहो दाहीआ। किसे समझ ना आवे मोरा तोरा, मोह मुहब्बत ना कोए रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्श दे आपणी दात भोरा भोरा, पंज तत काया फेर रहिण ना पाईआ। आपणे नाल बन्नृ लै डोरा, डोरी सतिगुर शब्द तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ दर तेरे ते मंगदे, इक्को रखी ओट। खुशीआं दे विच रंग दे, लेखे ला लै जन्म कोटी कोट। आदि जुगादी साचा संग दे, मेल मिला लै विच निर्मल जोत। जे तेरे लेखे नाल हँ ब्रह्म दे, क्यों साडे नालों करें छोट। ततां विच तत रलके फेर ना फिरीए जम्मदे, जन्म भोगीए कोटन कोट। साडे झगड़े मेट दे ग़म दे, अगली रहे कोई ना सोच। असीं वणजारे बणना ना फेर हड्ड मास नाड़ी चम्म दे, पिछले जन्म भोग लए बहुत। साडे लेखे मुका दे कर्म दे, लहिणे देणे तेरे कोल लेखा कोटी कोट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी दुरमति मैल देणी धोत। पंज तत कहिण तूं साहिब पुरख समराथी, हरि करता धुरदरगाहीआ। असीं आत्मा दे साथी, भगत सुहेले जगत जगत अख्वाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाई गाथी, ढोले तेरे सिफ्त सालाहीआ। तूं साडा लहिणा देणा तक लै मस्तक माथी, तिलक ललाटी वेख वखाईआ। हउँ ग़रीब निमाणे साहिब अनाथ अनाथी, दीनन तेरी ओट रखाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अलखणा अलाखी, अलख अगोचर अगम्म अथाहीआ। जे नूर नुराना शाह सुल्ताना आत्मा तेरे साथी, सगला साथी संग बणाईआ। क्यों ना साडी मुके वाटी, आवण जावण गेड़ कटाईआ। असीं अगे विकणा नहीं जगत जुगत दी हाटी, कीमत तत ना कोए रखाईआ। साडा पूरब लहिणा काटी, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। साडी मंज़ल मुके वाटी, पन्ध रहे ना राईआ। दरगाह सच चढ़ाउणा घाटी, सचखण्ड दुआर देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच महल इक सुहाईआ। पंच तत कहिण असीं प्रभ भगतां दे वजूद, ख़ाकी ख़ाक नज़री आईआ। तूं मालक हक महबूब, नूर नुराना नूर अलाहीआ। सानूं आपणा दे सबूत, सबर नाल बैठे राह तकाईआ। साडी मंज़ल वेख हदूद, हद्द जगत ना कोए रखाईआ। जे तूं वसें आलीशान

उच्च अरूज, दरगाह साची सोभा पाईआ। क्यों साडे नाल करें दूज, दुतीआ भाओ वखाईआ। साडी अन्तिम आशा बूझ, अन्तरजामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। क्यों नहीं भेव खोल्हदा गूझ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। असीं तत नहीं रहिणा पंज भूत, भूतक नूर नूर तेरा नूर नज़री आईआ। साडा लेखा मुका दे चारे कूट, दहि दिशा ना कोए वड्याईआ। भगतां आत्मा तत कहिण साडे दोहां दा ताणा पेटा इक्को कर लै सूत, दूसर रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन पाए कोई ना सूझ, सिर सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ।

२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत दस इटारसी मध प्रदेश जसवन्त सिँघ टोपन राम पारूमल वधीआ मल पूरन मल कौड़ा मल सदन मल इटारसी, मांह सिँघ जबल पुर, अर्जन सिँघ दुरग, गुरमुख सिँघ भलई

पंज तत कहिण प्रभ खेल तक्कीए तेरी सरबग दी, सूरबीर सुल्तान शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। साडी खेल मिटाउणी
१०५ कूड़ कुड़यारे जग दी, जागरत जोत बिन वरन गोत आपणा रंग रंगाईआ। कल्पणा रहे ना तृष्ना अग्ग दी, काम क्रोध १०५
२४ लोभ मोह हँकार देणा मिटाईआ। प्यास रहे ना जगत तृष्ना मदि दी, माया ममता मोह विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आवाज़ २४
सुणीए तेरे शब्द अनादी नद दी, अनहद करनी आप शनवाईआ। मंज़ल पार कराउणी शाह रग दी, नव दुआरयां डेरा ढाहीआ। धार मेटणी विछोड़े वाले अड्ड दी, गृह मन्दिर देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा तक्कीए जोती नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। तेरा वेखीए हक जहूर, जाहर ज़हूर डगमगाईआ। कोटी कोट जन्म बख्श कसूर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। साडी मंज़ल मुका दे नेड़े दूर, पाँधीआं पन्ध दे चुकाईआ । अन्तष्करन ना रहे ग़रूर, गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। सच खुमारी दे सरूर, मस्ती नाम वाली चढ़ाईआ। तेरा दर्शन करीए हाज़र हज़ूर, हज़रतां तों परे पड़दा देणा उठाईआ। सो आशा पूरी कर दे जो मूसा दस्सया उत्ते कोहतूर, तुरीआ तों बाहर भेव जणाईआ। जो आवाज़ दिती जगत जुगत मनसूर, मनसा तेरे नाल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आप रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सुणा अगम्मी नाद, अनादी धुन उपजाईआ। तूं मालक ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरी वड्याईआ। तूं बिस्मिल रूप विस्माद, खेले खेल थांउँ थाँईआ। तेरा

जल्वा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी तेरी वजदी रहे वधाईआ। तेरा नाम कलमा संदेशा बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। पंज कहिण प्रभ दीन दुनी नालों साडा बदल दे समाज, समग्री जगत ना कोए वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साडा पूरन कर दे काज, करता पुरख आपणे रंग रंगाईआ। तूं मालक ख़ालक इक्को वाहिद, वाहिगुरु तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर बख़्श दे जोती, जोती जाते दया कमाईआ। जे आत्मा तेरा गोती, नूर नुराना नूर डगमगाईआ। साडी सुरत रहे ना सोती, सुत्तयां लए उठाईआ। साडी आयू बीती चोखी, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। चुरासी वाली खेल बड़ी औखी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरे अगे वास्ता पाईआ। साडा ना कोई हरख ना कोई सोगी, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। तूं ठाकर आदि जुगादी मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। तूं प्रीतम प्यारा चोजी, चोज निराले आपणे आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्दर मार लै झाकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। पड़दा अन्दरों खोल्ह दे ताकी, बजर कपाटी आपणी दे मिटाईआ। धुर दा जाम प्या दे बण के साकी, नाम प्याला इक वखाईआ। साचे घोड़ चढ़ा दे राकी, शाह सवारा आपणी दया कमाईआ। बेशक असीं तन वजूद ख़ाकी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण धार सरगुण हो के तेरे नाल जोड़या नाती, रिश्ता जगत जहान वखाईआ। तूं भेव खोल्हणा बातन बाती, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। साडी आशा पूरी करनी लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल साडी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच रंग सूरे सरबग हरि करते देणा रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर जाणा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। बिना रसना देणा रस, निझर झिरना बूँद स्वांत चुआईआ। तीर अणयाला मारना कस, कमान वेखण कोए ना पाईआ। अन्ध अन्धेर मेटणा मस, नूर नुराना डगमगाईआ। मनुआ मन करना वस, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। शब्दी धार मार्ग देणा दस्स, मन मति बुद्ध ना कोए चतुराईआ। बिन रसना जिह्वा तेरा होवे जस, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच देणी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा अन्तष्करन कर पवित, पतित पुनीत दे बणाईआ। अबिनाशी करते वसणा चित, ठगौरी चित रहे ना राईआ। तेरा दर्शन होवे नित, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। ठाकर बणना अबिनाशी पित, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। गृह मन्दिर अन्दर करना हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। साडा झगड़ा मेटणा बूँद रित, रक्त बूँद ना कोए चतुराईआ। धाम वखाउणा इक

अनडिठ, दरगाह सच देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा गृह कर सुहञ्जणा, दर घर देणी माण वड्याईआ । तूं आदि पुरख निरञ्जणा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। सच सति करा दे मजना, दुरमति मैल धुआईआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना नौजुआना इक्को वजणा, दूजी अवर ना कोए शनवाईआ। सच सति चाढ़ दे रंगणा, रंगत इक्को वेख वखाईआ। दर ठांडा तेरा मंगणा, ख़ाली झोली देणी भराईआ। पंज तत कहिण प्रभ सतिगुर साडे सज्जणा, मित्रा मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्तिम तैनूं रखणी पैणी लजणा, लाजवन्त तेरी वड्याईआ। तूं भगतां तन लेखे लाउणा आहला अदना, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे सद्दणा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा अन्दर तक लै आप, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। तूं निरगुण धार माई बाप, पिता पुरख अख्वाईआ। असीं तेरा जप्या जाप, दूसर सिफ्त ना कोए सलाहीआ। साडा त्रैगुण मेट दे ताप, त्रैभवण तेरी सरनाईआ। त्रैगुण कूड़ रहे ना रात, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। जे आत्मा तेरी ज़ात, अन्त तेरे विच समाईआ। क्यों नहीं सानूं करदा पाक, पतित पुनीत बणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले दरगाह सच खोल्ह दे ताक, कुण्डा खिड़की आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा कर दे वाक, जो भविख्तां विच गए सुणाईआ। चरण प्रीती अगली रीती बख्श दे नात, नाता बिधाता आपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे मातलोक, मता तेरे नाल रखाईआ। निरगुण धार तेरा पढ़ीए सलोक, सोहला अवर ना कोए जणाईआ। सचखण्ड दुआरयों सानूं सके कोई ना रोक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। असीं अन्तिम मिलीए तेरी विच जोत, जोती जोत विच समाईआ। असां जन्म भोग लए बहुत, अगे लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक साडी दुरमति मैल धोत। पंज तत कहिण प्रभ तेरे दर आवांगे। तन वजूद मात तजावांगे। अग्नी अग्ग रंग रंगावांगे। धुर दे संगी सगला संग बणावांगे। निरगुण धार तेरा माण अनन्द, अनन्द अनन्द विच समावांगे। जे आत्मा तेरा चन्द, नूर नूर नाल रुशनावांगे। तेरी सेजा सौं पलँघ, सुख आसण इक वडयावांगे। जिथ्थे शब्द वजे मृदंग, दूसर नाद ना कोए दरसावांगे। फेर रहिणा नहीं रूप साडा तत पंज, पंचम दे मालक इक्को तेरा रूप अख्वावांगे। जोती जाते पुरख बिधाते पाउणी ठण्ड, अग्नी अग्ग तेरे चरण भेंट करावांगे। जुग जन्म दे विछड़यां पाउणी गंढु, पल्लू तेरे नाल बंधावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचा इक वडयावांगे। पंज तत कहिण घर साचा इक सुहाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जोती जाता वेख वखावेगा। पुरख बिधाता रंग रंगाएगा। पिता माता गोद उठाएगा। जोती जाता डगमगाएगा। माणक मोती आपणे आप प्रगटाएगा। जन भगतां वासना रहिण ना देवे खोटी, खोटे खरे आप बणाएगा। अन्तिम चाढ़ के आपणी चोटी, चोटा हो के वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाएगा। साचा भेव अन्तिम चुक्केगा। आवण जावण पैंडा मुकेगा। पुरख अकाल मूल ना लुकेगा। जन भगतां दरगाह साची साचा बुक्केगा। तन वजूद काया माटी लोकमाती बूटा सुक्केगा। जीवण ज़िंदगी बदल हयाती, दीन दयाल ततव धार तत आपणी गोदी चुक्केगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा इक्को इक रखेगा। हरि लेखा सच रखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। भगत वछल पड़दा उठाएगा। अछल अछल्ल मेल मिलाएगा। जल थल महीअल पार कराएगा। बलधारी आपणा बल प्रगटाएगा। जन भगतां काया माटी ला के फल, पत्त टहणी आप महकाएगा। अन्तिम लहिणा देणा मुका के कलयुग कल, कला आपणी इक दरसाएगा। धाम वसा के निहचल अटल, पद इक्को इक जणाएगा। जिथ्थे दीपक जोती रिहा बल, बिन तेल बाती नज़री आएगा। आत्म धार तत सार जाए रल, परमात्म आपणे विच टिकाएगा। सच सिँघासण हरिजन लैण मल्ल, फड़ बाहों आप टिकाएगा। अगे विछोड़ा होए ना घड़ी पल, पारब्रह्म प्रभ इक्को रंग रंगाएगा। आशा पूरी करे बावन धार बलि, पूरब लहिणा झोली पाएगा। जो जोती जाता पुरख बिधाता आया चल, निरगुण आपणा संग निभाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सदा सदा अटल, अटल पदवी इक रखाएगा।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं विहार होया ✪

कत्तक कहे कलयुग वेख लै आपणा कर्म, निहकर्मी रिहा जणाईआ। धर्म दा रिहा कोई ना धर्म, धरनी धरत धवल धौल दुहाईआ। नेत्र लोचन नैण लज्जया रही ना शर्म, शरअ रंग ना कोए रंगाईआ। हउमे गढ़ तोड़े कोई ना भर्म, भाण्डा कूड़ ना कोए भनाईआ। माया ममता घर घर होया जरम, नव सत लई अंगड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी हो गई चर्म, चम्म दृष्टी विच हल्काईआ। भेव खोल्ले कोई ना ब्रह्म, ब्रह्म पड़दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वखाईआ। कलयुग कहे कत्तका मेरा वक्त सुहावा, सोहणी खुशी बणाईआ। मैं इक प्रभू नूं रावां, जो मालक हक गुसाँईंआ। इक्को दा नाम ध्यावां, इक्को नूं सीस झुकाईआ। इक्को दा दर्शन पावां, जो जोत नूर अलाहीआ । उसे दा हुक्म सुणावां, सहिज सहिज दृढ़ाईआ। मैं फिरनां नाल चावां, नव सत वेख वखाईआ। शाह सुल्तान करां निथावां, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। विछोड़ा पा के पुत्तरां मावां, कलयुग आपणा नाउँ प्रगटाईआ। धर्म दा रहे कोई ना सावां, सच विच ना कोए समाईआ। मैं मित्रा आपणीआं उठावां बाहवां, बलधारी हो के आप सुणाईआ। दीन दुनी दी बुद्धी करनी वांग कावां, काग रूप दिसे लोकाईआ। इक्को पुरख अकाल अगे वास्ता पावां, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। कत्तक कहे कलयुगा तेरा वेख्या खेल अनहोणा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। अन्तिम तैनूं पैणा रोणा, बिन नैणां नीर वहाईआ। ख़ाली हथ्थ पैणा धोणा, जगत वस्त रहिण किछ ना पाईआ। जगत जहान चार दिन दा पराहुणा, चौथे जुग सुणना चाँई चाँईंआ। तेरा बुरज हँकारी जोत निरँकारी ढाउणा, ढईआ गोबिन्द वाला नाल मिलाईआ। माण ताण आपणा खोहणा, ख़लक मिले ना कोए वड्याईआ। अमृत रस किसे ना चोणा, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे कत्तका मेरा साहिब स्वामी एक, एकँकार अख्वाईआ। जिस दी पकड़ी टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जो मेरे वसे नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाईआ। मैं करां उस नाल हेत, जो आदि जुगादि दा पिता माईआ। जिस दे हुक्म नाल करनी दीन दुनी खेत, ख़ातर आपणी ना कोए रखाईआ। मेरा कोई पा सके ना भेत, पड़दा सके ना कोए चुकाईआ। मेरी मौलण वाली रुत बसन्ती चेत, चेतन सब नूं दयां कराईआ। बेशक जुग चौकड़ी अगे लँघ गए केती केत, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा सब ने वेखणा छेती छेत, छत्र धारीआं ख़ाक मिलाईआ। मैं कूड़ दा बण के खेवट खेट, बेड़ा जगत जहान चलाईआ। बुद्धी किसे दी पवित्र रहिण नहीं देणी विच माता दे पेट, वासना कूड़ नाल भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप कराईआ। कत्तक कहे कलयुगा मैं सुणी अगम्मी ख़बर, बेख़बरां दयां जणाईआ। सतिगुर शब्द निराला बब्बर, बेनज़ीर नूर अलाहीआ । जिस दा धुर फ़रमाना जबर, जबराईल सीस निवाईआ। जिस दा राह तके मुहम्मद विच कबर, मकबरे देण गवाहीआ। उस दी जाणे कौण कीमत कदर, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। जिस सब दी पूरी करनी सध्धर, गुर अवतार पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। दीन दुनी नूं करना पध्धर, पारब्रह्म ब्रह्म भेव चुकाईआ।

निरगुण धार मेहर करके नदर, नदरी नदर उठाईआ। तेरी धार नाल कूड़ दा पाउणा ग़दर, गदागर करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेद आप चुकाईआ। कलयुग कहे नारदा मेरी कत्तक धार दी सुण लै बात, मित्रा कत्तक नाल मिलाईआ। प्रभू दे हुक्म दी मेरी रात, रैण अन्धेरा आपणा रही प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी मेरा वेख लै खात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं इक्को करनी बात, बातन भेव रहे ना राईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जिस मैनूं दिती दात, वस्त अमुल अतुल मेरी झोली पाईआ। मैं उस नूं बणाया कमलापात, पतिपरमेश्वर कहिके सीस निवाईआ। बण के दासी दास अनाथी अनाथ, निर्धन हो के सीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरा देणा साथ, सांझे यार तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ । कलयुग कहे कत्तका तूं कर्म कमाउँदा की, कुदरत दा कादर की जणाईआ। की लहिणा देणा तेरा धरनी उत्ते साढे तिन्न हथ्थ सींअ, रवीदास चमारा की गया समझाईआ। की गुरदास समझाया वीह इकीह, एकँकार की हुक्म सुणाईआ। जिस दी सब ने दिती तरजीह, प्रेम नाल सुणाईआ। उस दा लेखा किस बिध मुकणा वीह इकीह,
११० इकीसा जगदीसा की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच ११०
२४ दा भेव आप चुकाईआ। कलयुग कहे कत्तका मैं कर्म की दस्सां, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। मैं खुशीआं दे विच हस्सां, २४
हस्ती तक बेपरवाहीआ। मैनूं मिल्या वक्त मसां, मसिआ रैण अन्धेरी छाईआ। चारों कुण्ट बिन कदमां तों नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। खुशीआं दे विच मारां कच्छां, बाज़ू बल उठाईआ । जो इशारा कीता मच्छां कच्छां, जल धारा गए दृढ़ाईआ। जिस नूं गोबिन्द धार किहा अच्छा, अच्छी तरह समझाईआ । जिस दा नाम निधाना दो जहानां बाहर रसा, बिन रसना रस चखाईआ। उस दे हुक्म नाल होड़ा प्रसिद्ध होणा उपर सस्सा, साहिब नाल चतुराईआ। हँ ब्रह्म हो के निरगुण धार ततां अन्दर वसा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ । उस दी वड्याई काहदी सिफ्त सलाह जसा, धुर दे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। कत्तक कहे कलयुग वेख लै धुर दीआं तारां, त्रैगुण अतीता की जणाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जिस दीआं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नवीआं नित बहारां, रुतड़ी रुत आपणे नाल महकाईआ। जिस दीआं शब्दी धार धुन्कारां, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। जिस दीआं जोती नाल जोत चमत्कारां, जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस दीआं लख चुरासी चारे खाणीआं नारां, नर नरायण कन्त अगम्म अथाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पावण आया सारा, महासार्थी आपणा

फेरा पाईआ। मैं उस नूं करां निमस्कारा, निव निव लागां पाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कलयुग तेरा मेटणा धूंआँधारा, धरनी धरत धवल धौल करे रुशनाईआ। उस दा नूर नुराना दो जहाना होए उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। उह तक लै जिस दा सतिगुर शब्द दए इशारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। कलयुग तेरा अन्त दा अन्त किनारा, नईया नौका कूड़ वेखणी चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। कलयुग कहे कत्तका मैनूं नहीं भुलेखा, भरम ना कोए भुलाईआ। मेरा साहिब दे नाल लेखा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। मेरी बदलण वाली रेखा, ऋषीआं मुनीआं तों बाहर दयां जणाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल दस दस्मेसा, दहि दिशा दयां जणाईआ। उह वेख लै मैनूं साहिब दा दिसदा वेसा, जो आपणा रूप वटाईआ। जिस नूं कहिंदे नर नरेशा, नरायण अगम्म अथाहीआ। जुग बदलणा जिस दा पेशा, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मेरे कोल रहे हमेशा, हम साजण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप चुकाईआ। कलयुग कहे कत्तक प्रभ दोस्त हमारो मीत, मित्र इक अख्वाईआ। जगत नीथारो प्रीत, प्रीतम बेपरवाहीआ। जिस दी धार बदलणी रीत, रीतीवान अख्वाईआ। ठगौरी पावे चीत, चित वित नाल मिलाईआ। सब दी परखणहारा नीत, निरगुण निरवैर नूर अलाहीआ। मैं उसे दे ढोले गावां गीत, जो सतिगुर शब्द गोबिन्द धुर दा माहीआ। जो तेरे मेरे वस्या चीत, भीतर डेरा ढाहीआ। जो सदा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी गए बीत, कलयुग कहे अन्तिम मेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। कत्तक कहे कलयुगा मैनूं आउँदा डर, मित्रा दयां सुणाईआ। तैनूं छडणा पैणा घर, घराना लोकमात तजाईआ। तेरा पूरा होणा वर, गुर अवतार पैग़म्बर देण गवाहीआ। हुण अगला फ़िकर कर, बिन नैणां नैण उठाईआ। तेरे कोल रहिणा नहीं धन ज़र, दौलत कम्म किसे ना आईआ। तेरी बुद्धी होई वांग खर, बिबेकी रूप ना कोए दरसाईआ। हुण मित्रा आपणा भाणा सिर ते जर, सिर सके ना कोए उठाईआ। उह तक लै की करता पुरख रिहा कर, करनी दा करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। कलयुग कहे कत्तका मैं अज्ज करन लग्गा अरदास, बेनन्ती बिना ज़बान सुणाईआ। किरपा निधान मेरे आ पास, मेरी आसा पूर कराईआ। पहलों मैनूं दे शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस सति धर्म दा कीता नास, कूड़ी क्रिया दिती प्रगटाईआ। पुरख अकाले

१११
२४

दीन दयाले तेरे उत्ते किसे दा रहिण नहीं दिता विश्वाश, विषयां विच कूड़ लोकाईआ। शंकर वेख लै रोंदा उत्ते कैलाश, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म नूं करे तलाश, भज्जे वाहो दाहीआ। विष्न विश्व दी पूरी करे ना आस, घर घर रिज़क ना कोए सबाईआ। कलयुग कहे मैं प्रभू दा बण के दासी दास, सेवा सच सच कमाईआ। सुरत शब्द दी पैण नहीं दिती रास, गोपी काहन संग ना कोए निभाईआ। मिल्या मेल ना किसे सर्ब गुणतास, गुणवन्ता घर ना कोए वसाईआ। जिधर वेखो कलयुग कहे मैं दुनिया कीती उदास, सांतक सति ना कोए कराईआ। हरि हिरदा कीता प्रभास, जंगल जूह दिसे लोकाईआ। मैं प्रभ नूं इक्को वार देणा आख, बिन अक्खरां देणा सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साची कार कमाईआ। कलयुग कहे कत्तका प्रभ मैनूं दए दलेरी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेहरवान करे मेहरी, मेहर नज़र नाल तराईआ। चारों कुण्ट कर रैण अन्धेरी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन दुनी लए घेरी, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। साडे अन्दर दे दे गेड़ी, मन मनुआ मन भुआईआ। धर्म दी जड़ दे उखेड़ी, तन वजूदा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग बच्चू सच दी चढ़े कोए ना बेड़ी, नौका नाम हथ्थ किसे ना आईआ। चारो कुण्ट वखा दे झेड़ी, झगड़ा जगत लोकाईआ। अगे करे मूल ना देरी, दोहरा ताल बणाईआ। तेरे पिच्छे पुरख अकाल ने मारी फेरी, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। तेरे अन्तर खुशी होवे बथेरी, चाउ घनेरा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। कलयुग कहे कत्तका मेरी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दर्शन देवे हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म इक दस्तूर, दस्त बन्नृ के सीस झुकाईआ। जिस ने मेरे मुआफ़ करने कसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। मैनूं वड्याई देवे ज़रूर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं दीन दुनिया विच पाउणा फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लगाईआ। मनुआ मन कर मग़रूर, ग़ुरबत भरनी कूड़ लोकाईआ। जो आसा रखी मूसा उत्ते कोहतूर, सो लहिणा देणा जणाईआ। जिस कारन ईसा ईसवी कीती मशहूर, मशवरा खुदा नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कत्तक कहे कलयुगा, सुण लै मीत। अगम्म वक्त सुहञ्जणा तेरा पुग्गा, वेखणी अगली रीत। सति धर्म होणा उग्घा, देवे वड्याई पतित पुनीत । तेरा मित्रा उजड़ना झुग्गा, झगड़ा मिटणा मन्दिर मसीत। दुतीआ भाओ रहे ना दुज्जा, एका गाउणा सब ने गीत । धुर दा हुक्म अगम्मी सुझा, जो करे पतित पुनीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करे बख्शीश। कलयुग कहे कत्तका ऐंवे ना कर विचारां, दलीलां जगत बणाईआ।

मेरीआं खेलां तकीं बहारां, नव सत ध्यान लगाईआ। जो सलाह कीतीआं मुहम्मद नाल चार यारां, मशवरे काअब्यां विच बणाईआ। जो जबराईल खड़काईआं सितारां, वही नाज़ल रूप दरसाईआ। अगला भेव दस्सणा ज़ाहरा, सहिज नाल सुणाईआ। मुहम्मद अल्ला हू दा ला के नाअरा, नैणां नीर वहाईआ। तेरा खेल बेऐब परवरदिगारा, तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं अन्ध अँधयारा, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। ज़िमीं असमानां धन्दूकारा, धरत धवल दुहाईआ। मेरा इक्को हक हक दा नाअरा, लाशरीक देणा सुणाईआ। अमाम अमामा होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर* डगमगाईआ। फेर झगड़ा छेड़ना विच काहरा, कदम कदम नाल बदलाईआ। तेरा समझे कोए ना दाइरा, हदूद वेखण कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं होए मुशाहरा, ढोले सोहले राग सुणाईआ। कलयुगा किते हो ना रहीं बहरा, सुणना थांओं थाँईंआ। लेखा मुकणा सवा पहरा, पारब्रह्म की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक हुक्म सुणाईआ। कलयुग कहे कत्तका मैं कोई बच्चा नहीं नन्हा, जोबनवन्त अख्वाईआ। मैं कोई सुणदा नहीं नाल कन्नां, अणसुणत की समझाईआ। मैं जगत वाला नहीं कोई चन्ना, आपणा पक्ख बदलाईआ। मैं कोई अक्खरां वाला नहीं मम्मा, पढ़ पढ़ दीन दुनी दृढ़ाईआ। मैं कोई हिस्सा नहीं खंना, जगत वंड ना कोई वंडाईआ। मैं कोई कांड नहीं कर्मा, जगत जुग शनवाईआ। मैं कोई दीन दुनी नहीं धर्मा, धीरज रंग ना कोए रंगाईआ। मैनूं नहीं हया कोई शरमा, शहिनशाह दिती वड्याईआ। मैं झगड़ा मेटणा वरना बरना, शतरी ब्राह्मण शूद्र वैश रहिण कोए ना पाईआ। मैं लेखा तकणा उत्ते धरनी धरना, धवल ध्यान रखाईआ। कलयुग कहे कत्तका मैं अज्ज तों लहिंदी कूटे चढ़ना, खुशीआं नाल पन्ध मुकाईआ। मुहम्मदीआं दे अन्दर वड़ना, आसण लवां जमाईआ। अल्ला हू अन्ना हू दा नाअरा पढ़ना, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। जो मुहम्मद वज़ीउल ता अम बादिल ता खेल बू चश्मे रछस जदीमे अवद रज़ीओम माओल जहम्मबा ताज़ू वहुबल ज़ावीज़म मस्ताए वाए ज़ुल जमूदा हमल ज़ुमा तेरा नूर नूर नूर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। कत्तक कहे कलयुगा तूं बड़ा चलाक, सूरबीर नज़री आईआ। कलयुग कहे मित्रा प्रभ ने मेरा खोल्ल्या ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जे मैं कलयुग ना होवां किथों अवतार पैग़म्बरां गूरूआं दा पूरा होवे वाक, पुरख अकाल दी की वड्याईआ। सतिगुर शब्द फिर किस नूं देवे शब्द दी दात, कवण हुक्म हुक्म सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरां दा बणे कवण साक, गुरुआं दा सज्जण कवण अख्वाईआ। कत्तका पुरख अकाल मेरे वल्ल रिहा झाक, बिन नैणां नैण उठाईआ। पर मैं वी छेती मुकाउणी आपणी वाट, वटणा दीन दुनी लगाईआ। सब नूं ल्याउणा आपणे घाट, पतण इक्को इक अख्वाईआ। सब तों पहलों मुकाउणी

आपणी वाट, प्रभ दी साची सेव कमाईआ। पर इक वेरां साहिब सतिगुर नालों दीन दुनिया देणी काट, सुरत शब्द ना कोए जणाईआ। बेशक सतिगुर शब्द मैनूं रिहा डांट, भय रिहा वखाईआ। मैं वी बड़ा नटुआ नाट, आपणा स्वांग प्रगटाईआ। नाले हस के कहवां मेरे साहिब सतिगुर मैं वेख लै दीन दुनिया दी सुत्ता काया अन्दर वाली खाट, बाहर सिँघासण नज़र कोए ना आईआ। मैं कोई जगत गवईआ नहीं भाट, जगत सोहले ढोले दयां सुणाईआ। मेरी इक छोटी जेही बात, बातन दयां सुणाईआ। मैं वंगार के कहवां ओ प्रभू जे मैं कलयुग ना होवां तूं किस तरह आवें लोकमात, निरगुण हो के आपणा खेल खिलाईआ। ते फेर मैं कलयुग वी तेरी ज़ात, मैनूं जन्मया किसे नहीं माईआ। ना कोई मेरी भैण ते ना कोई भरात, पत्नी संग ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एसे करके तूं पुछी मेरी वात, मेरे पिच्छे आएयों चल के पाँधी राहीआ। पर मेरे कोल इक पत्रका बिना अक्खरां तों पात, जिस दा जगत विद्या लेख ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक दरसाईआ। कत्तक कहे कलयुगा क्यों प्रभू नूं रिहा वडया, वड्डे दी की वड्याईआ। कोटन कोटि कलयुग वहि गए उहदे विच वहिणा वाले दरया, तेरी की वड्याईआ। उह बेपरवाह अगम्म अथाह, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जिस ने पता नहीं कितने विष्न ब्रह्मा शिव दिते उपा, कोटन कोटि अवतार पैग़म्बर गुरु आपणे विच समाईआ। कितने जुग चौकड़ीआं दिते बदला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ । झट कलयुग मुच्छां नूं दे के ताअ, कत्तक नूं रिहा सुणाईआ। उह मित्रा मैं सभे छडे थाँ, जगत निशाने दिते गंवाईआ। इक्को इष्ट ल्या मना, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस दे ढोले अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिते सुणा, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। पैग़म्बरां कहि के हक खुदा, खुद मालक दिता दृढ़ाईआ। गुरुआं कहि के वाह वाह, वाहिगुरु ढोला ल्या गाईआ। अवतरा रूप अनूप दरसा, भेव अभेदा दिता जणाईआ। शाहां दा शाह, शहिनशाह इक अख्वाईआ। कलयुग कहे सो मेरी पकड़े बांह, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस ने मेरे बदले सारी सृष्टी नूं जपाउणा इक नाँ, मार्ग इक्को इक दृढ़ाईआ। सब दा बण के पिता माँ, गोदी आपणे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खुशी आप प्रगटाईआ। कलयुग कहे मेरे सतिगुर सज्जण सुहेले, साहिब तेरी सरनाईआ। निरगुण धार कर लै मेले, मिलणी हरि जगदीश जणाईआ। तुध बिन खेल कोई ना खेले, ख़ालक खलक ना वेख वखाईआ। आपणे गृह वखा नवेले, जिथ्थे वजदी रहे वधाईआ। परम पुरख ना गुरु रहे ना चेले, कलयुग कहे एह मेरी बेपरवाहीआ । धर्म दी धार नालों सारे कीते वेहले, कूड़ी क्रिया रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग

आप रंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरे कोलों मंगां मंगीआं, मांगत हो के झोली डाहीआ। जो मैनूं लग्गीआं चंगीआं, दर तेरे भेंट कराईआ। तूं मैनूं करना कार अंगीआं, अंगीकार अख्वाईआ। मैं चाहुंदा दीन दुनी दीआं चोटीआं होवण नंगीआं, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। सब दा लेखा होवे मेरे कन्ढीआं, घाट पतण रोवण मारन धाहीआ। जगत दुहागण दिसण रंडीआं, कन्त सुहाग ना कोए हंडाईआ। कलयुग कहे मेरी धार फिरे वांग पखण्डीआं, भज्जे वाहो दाहीआ। दीनां मज़्हबां वेखे डण्डीआं, शरअ शरीअत फोल फुलाईआ। नेत्रहीण वेखे अन्धीआं, जिन्हां भुल्लया नूर अलाहीआ। कूड़ कुड़यार दीआं मेरीआं होवण पाबन्दीआं, हुक्म तेरा इक सुणाईआ। जिस तरह पिछलीआं जुग चौकड़ीआं लँघीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। हुण खेल खिला दे दया कमा दे वेख लै सूरबीरां जंगीआं, जंगजू तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा चरण कवल विच सजदा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। मैं तेरे दर दा बरदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं भेव खुल्हाउणा आपणे घर दा, गृह पड़दा देणा उठाईआ। मैं दर्शन करां नरायण नर दा, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
११५ किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरी करां ताब्यादारी, तल्ब अवर ११५
२४ ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट निगाह मारी, बिन नैणां नैण तकाईआ। सति सच दी रहिण दिती नहीं कोई यारी, याराना २४
तोड़ ना कोए निभाईआ। नाम दी दिसे ना किसे खुमारी, मदि मत्ती कीती लोकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे नाल सारे करन ग़द्दारी, सति विच ना कोए समाईआ। तेरा धर्म उडया मार उडारी, धरनी धरत धवल नज़र कोए ना आईआ। तेरे कूड़ दी तेरे प्यार नालों सब नूं चंगी लगे यारी, यार प्यारे मित्र लए बणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरी पनिहारी, प्रभू तेरी सेव ना कोए कमाईआ। तूं वेखणा आपणी धारी, जोती जाते ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरा देण उधारी, भविख्तां विच सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त आवे कलि कल्की अवतारी, निहकलंका नूर अलाहीआ। अमाम अमामे तेरी होवे सिक्दारी, सिर सिर हुक्म मनाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पा सारी, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। तूं निरगुण नूर जोत उज्यारी, नूर नुराना नज़री आईआ। तेरा खेल सदा जुग चारी, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। कलयुग कहे मैं तेरा सुत सूरबीर बलकारी, बल आपणा दिता प्रगटाईआ। धर्म दा महल रहिण देणा नहीं कोई अटारी, अटल पदवी हथ्थ किसे ना आईआ। दो चार सालां विच सब नूं करा ख्वारी, ख़ातर तेरी प्रभू सेव कमाईआ। बचया रहे ना कोई नर नारी, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। मैं संदेशे देवां समुंद सागराँ जंगलां जूहां पहाड़ी, टिल्लयां पर्वतां देणा सुणाईआ।

सारे ख़बरदार हो जाओ शंकर ने हुक्म दे दिता मौत लाड़ी, राय धर्म चित्रगुप्त लेखे नाल मिलाईआ। जिस ने फिरना घर घर झाड़ी झाड़ी, कोने कोने वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे सज्जणो मेरी करनी इमदाद, खुशीआं नाल जणाईआ। राय धर्म पिछला लहिणा रखणा याद, चित्रगुप्त भुल कदे ना जाईआ। लाड़ी मौत तूं वीं चखणा स्वाद, लख चुरासी खा खा खुशी मनाईआ। मैं फेर आउणा सतिजुग त्रेता द्वापर तों बाद, तिन्न जुग तुहानूं फेर सके ना कोए रजाईआ। साथीओ सज्जणो सारे खोलो जाग, कलयुग कहे आपणी लओ अंगड़ाईआ। तुहाडे वड्डे होण वाले भाग, भागां भरयो तुहानूं मिले वड्याईआ। वायदा करीए दीन दुनी उत्ते जगदा रहिण नहीं देणा कोई चराग़, चरागाहां फिरे दुहाईआ। हँस बुद्धी वाले बणा देणे काग, काग रूप दिसे लोकाईआ। किसे तख्त निवासी दा रहिण नहीं देणा राज, शाह पातशाह ख़ाक विच मिलाईआ। राय धर्म चित्रगुप्त लाड़ी मौत कलयुग कहे अज्ज साडी सारयां दी हो जाए इक अवाज़, इक्को सुखन देईए सुणाईआ। फिर प्रभू नूं कहीए साडी रखणी लाज, तेरे चरण सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द नूं कहीए साडा पूरा करना काज, देणी माण वड्याईआ। क्यों अन्त सब नूं देणा पैणा जवाब, जवाब तल्बी करे बेपरवाहीआ। पैग़म्बरां दे सुपने नहीं कोई ख्वाब, खुद मालक दा हुक्म ते खुद मालक आप वरताईआ। मुहम्मद ने लबां कटाउण लग्गयां किहा सी जे आया ते आएगा विच पंजाब, पंजे दोवें मिला के दुआ खुदा अगे करके वज़िहम वज़िहम वज़िहम कहि के सीस दिता झुकाईआ। उह मेरा शहिनशाहां दा शहिनशाह नवाबां दा नवाब, बेमुहताज मुहताजां आपणे गले लगाईआ। जिस दिन नानक ने पहले दिन वजाई रबाब, मर्दाने दिती सुणाईआ। ओ मर्दानया जो आउणा दसां तों बाद, धुर दा मालक अगम्म अथाहीआ। उह जोत रूप जिसने रचना रची आदि, आदि दा मालक इक अख्वाईआ। उहदा हुक्म उस दा शब्द शब्द बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। उहदा प्रेम ठग्गां चोरां नूं बणा दए सन्त साध, भगत बणा के भगवन देवे माण वड्याईआ। ऐसी आपणे प्यार दी लावे लाग, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां दा बण जाए कन्त सुहाग, आत्मा दा परमात्मा हो के आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा स्वामी धुरदरगाहीआ। कलयुग कहे प्रभू एह मेरी कोई नहीं जुंमेवारी, ओह धुर दिआ ज़ामना तैनूं दयां सुणाईआ । तेरे हुक्म दी मेरे सीस उत्ते खारी, ख़ैरख़्वाह तेरी सेव कमाईआ। तेरे चरण कवलां विच कदे ना करां ग़द्दारी, गदागर हो के होका देवां थांउँ थाँईंआ। प्रभू जे सच पुछें कलयुग आखे मेरे तों बिना दुनिया विच कोई नहीं तेरा पुजारी, अक्खरां नूं पढ़ पढ़ के तेरा नाम गए भुलाईआ। ऐवें

मारदे लम्मीआं उडारी, अन्दर वड़ वड़ बैठे ध्यान लगाईआ। कलयुग कहे मेरे साहिबा जे सच पुछें बिना तेरी किरपा तों सब दी आत्मा कँवारी, कन्त सुहाग नज़र किसे ना आईआ। मैं जदों तकां ते रोवण ज़ारो ज़ारी, हंझूआं हार बणाईआ। उह वेख लै हसदी मौत लाड़ी, खुशीआं दे ढोले गाईआ। वाह कलयुगा तेरी किहो जेही फुलवाड़ी, पत्त टहणी दिती महकाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखी झूठ भरया नाड़ी नाड़ी, बहत्तर नाड़ी दए गवाहीआ। कलयुग कहे मैं वी सब दे फिरां पिच्छे अगाड़ी, सतिगुर शब्द दे अगे वास्ता पाईआ। मेरे साहिबा इहनां नूं आपणे घर ना वाड़ीं, जेहड़े प्रभू नूं गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मेरा साहिब सच्चा मीत जो, नज़र किसे ना आंयदा। मेरे नाल करे मुहब्बत मोह, प्यार नाल समझांयदा। सब दा कर्म धर्म लैणा खोह, आपणा बल प्रगटांयदा। इक गल्ल याद रखीं कलयुग जिथ्थे अवाज़ निकले सोहँ सो, सो पुरख आदि निरञ्जण आप सुणांयदा। उथे आत्मा परमात्मा नहीं दो, दोहां दा इक्को रूप नज़री आंयदा। कलयुग कहे प्रभू जे उहनां दे अन्दरों तेरे नूर दा नूर ते नज़र आई लो, लोयण तीजा वेख वखांयदा। फेर उथे कदे ना सकां छोह, दूर दुराडा सीस झुकांयदा। क्यों उह भगत
११७ तेरे तेरे जोगे गए हो, उथे कलयुग की कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा ११७
२४ हरि, सच दा हुक्म इक सुणांयदा। कलयुग कहे मैं बड़ा सूरबीर बहादर, अणखीला जगत अख्वाईआ। जिस ने करना २४
हक आदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। मेरे नाल सतिजुग दा करना तबादल, तबदीली भगतां दिती जणाईआ। दुनिया सृष्टी कायनात मैनूं इयों दिसदी कोई मक्तूल कोई कातिल, कत्लगाह धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। जे मुकद्दस दिसे बातल, बैतल पवित पाक अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे कलयुगा अन्त करीए सलाह, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों वक्त गया आईआ। दस्स केहड़ा लभ्भीए मलाह, बेड़ा जगत कवण उठाईआ। कलयुग कहिंदा कत्तका वाह वा, एह की दिता सुणाईआ। मेरा मालक अगम्म अथाह, बेअन्त नूर अलाहीआ। जिस धुर फ़रमाना मैनूं दिता जणा, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल दिता मिला, सहिज सहिज पड़दा विच्चों उठाईआ। कलयुगा तूं नौ खण्ड पृथ्मी लाउणा आपणा दाअ, दाओ समझ किछ ना पाईआ । हरि हिरदिउँ प्रभू दा कढणा नाँ, तन वजूदां करनी सफ़ाईआ। प्यार तोड़ के पुत्तरां माँ, पिता पूत देणा लड़ाईआ । बुद्धी कूड़ बणाउणी ख़ाहिश रलाउणी नाल काँ, चारों कुण्ट कूक सुणाईआ। फेर कलयुग खेल बच्चू ऐं करीं जिस तरह हुक्म देवां जणा, बण जणेंदी माईआ। जिन्हां ने सूर खाधा जिन्हां ने खाधी गाँ, दोहां नूं देणा टकराईआ।

फेर दोवें खड़ीआं करनीआं बांह, चढ़दी लहिंदी दिशा देणीआं हिलाईआ। नाले कहीं प्रभू किसे नूं देवीं ना ठण्डी छाँ, अग्नी तपदी दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच आप प्रगटाईआ। कलयुग कहे कत्तका तूं की कर्म कमाउणा, कमलया मैनूं दे जणाईआ। कत्तक कहे कलयुगा मैं प्रभ नूं सीस निवाउणा, निव निव लागां पाईआ। मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाउणा, टिक्के जोत ललाटी नाल चमकाईआ। गल पल्लू वास्ता पाउणा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। इक संदेश सुणाउणा, आपणी इच्छया ना कोए प्रगटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां आप तराउणा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जिथ्थे होण उथे दरस दिखाउणा, एह तेरी बेपरवाहीआ। सुत्तयां आप उठाउणा, फड़ बाहों गले लगाईआ। जन्म मरन दा रोग मिटाउणा, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। राय धर्म दा लेख मुकाउणा, चित्रगुप्त ना हिसाब रखाईआ। लाड़ी मौत ना पए अन्त परनाउणा, परम पुरख तेरी इक सरनाईआ। सतिगुर शब्द नाल जन भगतां सचखण्ड टिकाउणा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जिन्हां तेरा दरस करना तिन्हां दा कर्म कांड लेखे लाउणा, कत्तक कहे इस तों परे कर्म नज़र कोए ना आईआ। मेरा दिवस सुहञ्जणा मैं जन भगतां सीस झुकाउणा, दर साची मंग मंगाईआ। जन भगतो बिना प्रभू तों अन्त कोई कम्म नहीं आउणा, जगत कामना ना कोए चतुराईआ । एह शरीर चार दिन दा पराहुणा, जो आया सो उठ जाईआ। मैं इक गल्ल दस्सां जिन्हां सोहँ ढोला गाउणा, तिन्हां मिले धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। कत्तक कहे कर्म कांड दा लेखा जाए मुक, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। जो जन तूं मेरा मैं तेरा पढ़े तुक, तुख्म ताअसीर जाए बदलाईआ। मंज़ल चढ़दयां कदे ना जावे रुक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर शब्द जन भगत दुलारे गोदी लए चुक्क, फड़ बाहों गले लए लगाईआ। सचखण्ड दुआरे धुर दरबारे दरगाह साची मुकामे हक देवे सुट्ट, सच टिकाणे आप टिकाईआ। कत्तक कहे कर्मां वाल्यो निहकर्मी दी पई लुट्ट, लुटेरयो लुट्ट लओ चाँईं चाँईंआ। बिना पुरख अकाले तों भगतां नूं किसे बणाया नहीं कदे पुत, गोदी गोद ना कोए टिकाईआ। सदा सदा सदा तुहाडी सुंहजणी रहे रुत, रुतड़ी सतिगुर शब्द नाल महकाईआ। कत्तक कहे मैं सच दस्सां दर आया दे सब दे मिट जाणे दुःख, एथे दुखीओ दुःख जाणे तजाईआ। घर जा के खुशीआं दा माणना सुख, सुख साहिब सतिगुर झोली विच रखाईआ। सब दा उजल होवे मुख, दुरमति मैल ना लागे राईआ। फेर आउणा पए ना जनणी कुक्ख, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेटणहारा कलयुग अन्धेरा घुप्प, सतिजुग सति सच चन्द चमकाईआ।

✪ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल अमृतसर रणजीत कौर, अमरजीत सिँघ, जगीर कौर, सुरजीत सिँघ, हरभजन सिँघ, प्रीतम सिँघ, गुरमीत सिँघ, जगजीत सिँघ, वरयाम सिँघ, सतबीर सिँघ, जगमेल सिँघ, अमर सिँघ, मिलखा सिँघ, दलीप सिँघ, सन्तोख सिँघ, ठाकर सिँघ, करतार सिँघ, सरूप सिँघ, चन्नण सिँघ, भगवन्ती, नंती, हरजीत सिँघ, पाल सिँघ, सवरन कौर, तृप्त कौर, जुगिंदर कौर, गिरधारा सिँघ, प्रेम सिँघ, कश्मीर सिँघ, जगीर सिँघ, प्यारा सिँघ, रत्न सिँघ, दलीप सिँघ, प्रीतम सिँघ, प्रीतम सिँघ, सुलखण सिँघ, भान सिँघ, ईश्र सिँघ, जरनैल सिँघ, हरबंस सिँघ, जोगा सिँघ, वरयाम कौर, कश्मीर सिँघ, आसा सिँघ, प्रीतो, बंती जेठूवाल, परमजीत कौर रणजीत बाग़ गुरदासपुर हरभजन सिँघ दरबार दा, ✪

पंज तत कहिण कीना कमज़ी कोमिस्त मबी तलवज़ू चन हफ़तल बख़मल मज़बल बाहम वा कोज़ू तवस्तुल तख़मवा ओसल ख़ज़ीउल नूरे निशा मुहम्मदे दुआ रहमते खुदा अल गविम अल गज़िम ज़वीनो ज़बी ज़बीउल मुफ़ा कुदरते निजा चश्मे चन्नीद अर्शे वज़ीद नूरे निगाहबान नौजुआन अगम्म अथाहीआ। सकलो मजिस दीवाना बवज़ी ज़मका अल वहम महम्बम वलज़ंका जूने जगुसते अलवीज़ो यकसमम मोविवज़े रूहा मुहम्मबा ज़ोऊ कादरे कुनिंद शवल तुमाएसाऊ वज़ू अर्शे नखू फ़र्शे मफ़ी असमाने ज़वग ज़फ़लाऊ कोवल कोज़ी कमबल पिसते दुआए खुदा वलज़मूउल नज़ीते ज़वद शाहो मेहरो ज़ूए ज़मी शाहेनज़ी कुलिलदा दऊ ख़ाके ज़मीं बन्दा ए नवीं काबले ज़म्बल अवी कोना शरअ शाहे नफ़लू नूरे तलू असमाने वज़ू मोवीउल मुबा मुहम्मदे अदा काहबे दुआ जुसतजू जख़दम महला वज़ी वज़ीहते नसीहते नसीहते नसीहते जोहमला मुहम्मदे खुदाए खुदाए खुदा पंज तत नबीउला दामिस्तो दामिस्तो कज़ीने कवक्ख रसूले ज़वक्ख नबीए प्रतख परवरदिगारे यखू वाहिदे मबी नूरे अज़ी नूर नुराना इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा हक कलबूत, काया काअबा नज़री आईआ। तेरा कलमा दए सबूत, सबर सबूरी नाल समझाईआ। नूरी नूर रूहे रवां तेरा दूत, जगत जहान खेल खिलाईआ। हकीकत हक दए सबूत, सति सच नाल सुणाईआ। मेरे मेहरवान महबूब, तेरी मुहब्बत विच वड्याईआ। सदा सदा रहिणा मौजूद, विछोड़े विच विछड़ ना जाईआ। अन्दरों कढ के कूड़ी क्रिया कर नेस्तो नाबूद, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। दुतीआ रहे ना कोए हदूद, गृह इक्को देणा सुहाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं तन वजूद बणे पैग़म्बर, काअब्यां खुशी बणाईआ। जगत धार वेखे सुवम्बर, सोहणा खेल खिलाईआ। जगत वजूद सुहा के मन्दिर, तेरी बणत बणाईआ। तूं निरगुण धार वस के अन्दर, भेव अभेद दिता समझाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे खण्डर, नूर नुराना डगमगाईआ। भेव चुका के सूर्या चन्द्र, दीपक जोती जोत वखाईआ। निरगुण धार ला के आपणे अंगण, अंगीकार आप हो जाईआ। सानूं पूरब चेता जिस वेले मुहम्मद लग्गा मंगण, दर तेरे झोली डाहीआ। नूर अलाह चाढ़नी रंगण, रंगत इक दरसाईआ। तेरा तन वजूद मेरे महबूब ना होवे बदन, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। धुर दे हुक्म नाल तेरा हुक्म आवे सद्दण, सद्दा इक्को इक सुणाईआ। तेरे दीपक जोती जगण, नूर नुराना डगमगाईआ। प्यार विच होवण मग्न, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मेरे मालका ख़लक दे ख़ालका तूं आप मनाउणा सगन, मौली तन्द ना कोए चतुराईआ। मेरी आशा तक लै तत पंजण, पंचम दे मालक तेरा ध्यान लगाईआ। मेरा ग़म मेटणा रंजन, रंजस देणी गंवाईआ। इक्को आपणा पा के अंजण, दो जहान देणा चमकाईआ। तैनूं पैग़म्बरां किहा दु:ख भंजन, भव सागर पार कराईआ। बेड़ा चुकणा कंधन, खेवट खेटा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ मुहम्मद हत्थ रख के उत्ते छाती, सीना खुशीआं नाल दबाईआ। दुआ कीती अगे कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। मेरी ज़िंदगी तेरी हयाती, जीवन तेरे कदम टिकाईआ। अन्तिम मेरी पुछणी वाती, वातावरन तकणा ख़लक खुदाईआ। सदी चौधवीं होणी अन्धेरी राती, तेरा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी हक दी दिसे ना कोए प्रभाती, सांतक सति ना कोए जणाईआ। मेरे मालका मैनूं बख्श अगम्मी दाती, वस्त अतुल वरताईआ। मेरे अमामा आउणा लोकमाती, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। मेरी पुछणी वाती, लहिणा लहणयां विच्चों कढ्ढाईआ। सति सच जोड़ना नाती, रिश्ता फ़रिश्तयां बाहर समझाईआ। मेरा लेखा नहीं कागज़ाती, अलिफ़ ये ना कोए वड्याईआ। तूं मालक नूर अलाही सफ़ाती, हस्ती तेरी वेख वखाईआ। तैनूं किहा सब ने कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी वड्याईआ। मेरी अन्त मुकाउणी वाटी, पन्ध जगत रहे ना राईआ। मंज़ल चढ़ाउणा घाटी, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे मेरी दो हत्थां वाली दुआ, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। परवरदिगार बेपरवाह, बेपरवाही तेरी वेख वखाईआ। सच संदेशा दे सुणा, हुक्म इक्को इक दृढ़ाईआ। किस बिध नूर नुराना करें रुशना, जोती जाता सोभा पाईआ। झट ख़बर अगम्मी गई आ, बिन आहट दिती दृढ़ाईआ। मेरे नबी कर ध्याँ, रसूल सहिज नाल

जणाईआ। अन्तिम करां हक न्याँ, इन्साफ़ विच वड्याईआ। अमाम अमामा वेस वटा, नूर नुराना डगमगाईआ। लहिंदउँ चढ़दे नैण उठा, नेत्र लै बदलाईआ। की खेल करे तेरा खुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। जो हक दा दिल रुबा, मुहब्बत विच समाईआ। जिस अवतारां आपणा भेव दिता समझा, भुल रहे ना राईआ। पैग़म्बरां दिता दृढ़ा, सहिज नाल समझाईआ। जिस वेले वक्त सुहञ्जणा गया आ, लोकमात खुशी बणाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशना, जोती जाता सोभा पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ डेरा ला, सम्बल इक्को रंग रंगाईआ। साचा मार्ग इक वखा, नव सत्त दए समझाईआ। मुहम्मदा तेरी कबूल करां दुआ, दो जहानां मालक होए सहाईआ। काअब्यां तों परे आपणा भेव दए खुल्हा, पर्दानशीं नज़री आईआ। जेहड़ा सब तों रहे जुदा, जुज़ वखरा वंड वंडाईआ। नूर नुराना कर रुशना, ज़हूर आपणा दए चमकाईआ। सति सुहञ्जणा थाँ दए सुहा, सोहणी बणत बणाईआ। चार जुग दे मानस मानव मानुख इन्सान इन्सानां नाल दए मिला, आपणी गंढु पुआईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठां पन्ध दए मुका, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। झट जबराईल ने रौला दिता पा, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। हज़रत हज़रत मुहम्मद की खेल करे मेहरवां, महबूब नूर अलाहीआ। जिस इक्को गृह देणा वसा, दूसर वंड
१२१ ना कोए वंडाईआ। मैनूं इयों दिस्या जबराईल कहे उस मालक ख़ालक इक भगत दुआर देणा बणा, जिस दी वंड ना कोए १२१
२४ वंडाईआ। भगत सुहेले सूफ़ीआं इक्को घर देणा वसा, वास्ता आपणे नाल बणाईआ। जिथ्थे तेरी आशा फिरदी वाहो दाह, २४
भज्जे चाँई चाँईआ। उस धवल नूं भाग देणा लगा, लग मातर दा डेरा ढाहीआ। जिथ्थे बिना सजदयां सब ने सीस देणा झुका, कदम बोसीआं विच खलक खुदाईआ। निगाह मार लै बिन नैणा नैण तका, तकवा इके उत्ते जणाईआ। अन्तिम लहिणा मदीना मक्का दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म सुणाईआ। दीन दुनी मानव इक्को रंग दए रंगा, शरअ ज़ंजीर बेनज़ीर दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण मुहम्मद ने मारी आह, हौकयां नाल सुणाईआ। मेरे मौला बेपरवाह, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। मेरे अगम्म अथाह आलीजाह, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। तेरा हुक्म ल्या प्रना, सेवक हो के सेव कमाईआ। चलया विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी वड्याईआ। तेरे कलमे दा काअबे विच तक्कया मज़ा, मज़ाक वेख्या खलक खुदाईआ। मेरे महबूबा क्यों सदी चौधवीं अन्त सब नूं देवें सज़ा, सज़ायाफ़ता दीन दुनी नज़री आईआ। क्यों सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, कज़ाक कलयुग आपणा खेल खिलाईआ। क्यों नहीं इन्सानां हैवानां हथ्थ औणी ग़ज़ा, ग़ज़ब नाल तेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण जिस वेले मुहम्मद नूं रखया

बणा के लाश, मकबरे विच टिकाईआ। शंकर तक के उत्तों कैलाश, नेत्र नैण बिघसाईआ। मिट्टी ख़ाक ने किहा शाबाश, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। किस बिध तैनूं करन तलाश, खोजण थांउँ थाँईंआ। कवण पूरी करे आस, तृष्ना जगत मिटाईआ। कवण देवे धरवास, धर्म धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण असीं मकबरे विच गए लुक, मुहम्मद नज़र कोए ना आईआ। फेर बिन अक्खरां पढ़ी तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। नूरी धार बिन नेत्रां नेत्र लए चुक, वेख्या चाँईं चाँईंआ। जेहड़ा मात गर्भ दा उलटा रुख़, धरनी अन्दर बैठा डेरा लाईआ। जो दो जहानां देवणहारा साचा सुख, जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण असीं बण गए मिट्टी, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। साडे मकबरे सोहे पत्थर इट्टीं, पाहनां नाल वड्याईआ। इक अवाज़ अगम्मी आई जिस संदेशा दिता मुहम्मदा तैनूं फेर मिलांगा जिस वेले हाहे ते लाई टिप्पी, आपणा रूप बदलाईआ। उस वेले सदी चौधवीं जाणी छिपी, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। फेर नाम कलम्यां दी सांझी करांगा लिपी, होंटां लिपां विच्चों इक्को वार कढ्ढाईआ। तेरा लहिणा देणा चुकावांगा जिस वेले शहिनशाही दस दी आई मिती, मित्रा दयां दृढ़ाईआ। दीन दुनिया कूड़ दी सेजा होवे लिटी, टिक्के मस्तक ख़ाक ना कोए रमाईआ । जगत रसना होंणी मिट्ठी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। आपणी खेल करां अनडिट्ठी, नूर नुराना डगमगाईआ। पिछली धारा सब दी करां चिट्टी, कालख मूल रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण असीं मकबरे विच गए छुप, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। असां वेख अन्धेरा घुप्प, कूक कूक दिती दुहाईआ। परवरदिगारा सांझे यारा जे पैग़म्बरां बणाया आपणा सुत, दुलारा आपणा रंग रंगाईआ। अन्तिम वात साडी पुछ, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। तेरा लहिणा की कुछ, करनी दे करते देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। पंज तत कहिण मकबरे विच्चों आई अवाज़, नाद बांग अज़ां दिती जणाईआ। नाले तैनूं खोलू के बातन बात, राज़क रिज़क रहीम दिता समझाईआ। मुहम्मद मेरा लहिणा नहीं नाल वुज़ू निमाज़, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा खेल वेखणा अन्त होणा नहीं किसे नराज़, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। पर याद कर तेरे तों बाद गोबिन्द दा उडणा बाज़, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। फेर सदी चौधवीं धुर कलमे दा चलणा जहाज़, नौका नज़र कोए ना आईआ। इक्को हुक्म संदेस सुणना वाहिद, वाज़या करके दिता जणाईआ। नूर अलाही बेपरवाही दा वखरा होणा

मिज़ाज, तबीअत तबीब समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मकबरा कहे जिस वेले पंज तत निगाह मारी चड़दा, बिन नैणां नैण उठाईआ। लेखा तक्कया गोर मड़् दा, धरनी धवल खोज खुजाईआ। झगड़ा तक्कया सीस धड़ दा, दीन दुनी लड़ाईआ। हँकार वेख्यो हउमे गढ़ दा, हंगता दए तुड़ाईआ । उस वेले परवरदिगार सांझा यार घाड़न होवे घड़दा, घड़न भन्नृणहार आपणा खेल खिलाईआ। उह नूर अलाही अमाम अमामा सम्बल दे अन्दर वेख्या वड़दा, आपणा नूर आपणे विच छुपाईआ। फेर संदेशा दिता धुर दे घर दा, मुकामे हक हक समझाईआ। जिस खेल खेलणा वल छल दा, अछल छलधारी इक अख्वाईआ। उह रलाइआं किसे नाल नहीं रलदा, वखरा आपणा घर बणाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना बलि दा, बावन नाल वड्याईआ। जिस दे संदेशे रामा रिहा घलदा, सीता सति समझाईआ। जिस नूं काहन घनईया आपणा काहन रिहा मंनदा, मनसा तो बाहर इक अख्वाईआ। जिस नूं मूसे मालक मन्नया सारे तन दा, वजूदां रंग रंगाईआ । ईसा खुशीआं नाल उस दे प्यार विच फलदा, पत्त टहणीआं नाल महकाईआ। नानक लेख जणाया कलयुग कल दा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। गोबिन्द खेल खेलया उस दे बल दा, खण्डा खड़ग नाल चमकाईआ । अन्त इशारा दिता जो मालक महीअल जल थल दा, हर घट रिहा समाईआ। उस दा भेव नहीं आउणा पल दा, पलकां दे ओहले बहि के की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा जोबन कदे ना ढलदा, जवानी बदल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं माटी बिन स्वास, कम्म किसे ना आईआ। साडी अन्तिम इक्को आस, आशा नाल जणाईआ । बण के दासी दास, प्रभ चरण सीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्त वसणा साडे पास, सगला संग बणाईआ। तूं शहिनशाह शाहो शाबाश, सतिगुर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। पंज तत कहिण साडा साहिब मन्नणा कहिणा, कहि के दईए जणाईआ। असां मकबरयां विच नहीं रहिणा, कबरां विच ना कोए दफ़नाईआ। असां तेरा भाणा सहणा, निव निव सीस झुकाईआ। सदा सदा सद तेरे चरण कवल विच बहणा, दूसर धाम ना कोए वड्याईआ। तेरा दर्शन करीए सदा नैणां, बिन नैणां नैण लैणा मिलाईआ। सानूं कदी ना करीं त्रफ़ैणा, तरफ़दारी आपणी इक समझाईआ। तूं मात पित साक सज्जण साडा भाई भैणा, नार कन्त भगवन्त इक्को नज़री आईआ। असीं तेरे धाम अवल्ले तेरे चरण ढहणा, धूड़ी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद दे मकबरे

कीती पुकार, तूं ही तूं ही सुणाईआ। वाह मेरे परवरदिगार, नूर नुराने नूर अलाहीआ। मैं तेरा ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। तेरे चरण कवल निमस्कार, कदम बोसी विच सीस झुकाईआ। मेरी बेनन्ती सुण पुकार, कूक कूक दृढ़ाईआ। सच दस्स की खेल करे अमाम अमामा बण सिक्दार, सिर सिर आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे नाल काहदा तकरार, झगड़ा दुनी ना कोए रखाईआ। मेरे नाल वायदा कर इकरार, कौल देणा समझाईआ। झट हुक्म दिता सची सरकार, खुद मालक आप सुणाईआ। मुहम्मद सुण लै नाल प्यार, आशा तेरी नाल रखाईआ। सदी चौधवीं लए विचार, विचर के सके ना कोए समझाईआ। जिस वेले होया अन्ध अँधयार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ । मित्रां दा मित्र रहे कोई ना यार, यराना तोड़ ना कोए निभाईआ। दीनां मज़्बां होणी खार, नाम कलमा करे लड़ाईआ। खण्डा खड़ग चले तलवार, आपणी लै अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, अग्नी तत बुझाईआ। सच ईमान रहे ना विच संसार, सच विच ना कोए समाईआ। मन्दिर मस्जिद रो रो करन पुकार, बिन नैणां नीर वहाईआ। उस वेले परवरदिगार पावे सार, सांझा यार नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। उह कलयुग अन्तिम लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, मकरूज
१२४ आपणा हुक्म वरताईआ । जिस वेले मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ होण ख्वार, पत्थर इट्ट नाल टकराईआ। शास्त्र सिमरत १२४
२४ वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। धरनी करे हाहाकार, हौक्या विच सुणाईआ। २४
किरपा कर आप निरँकार, निरवैर तेरी वड्याईआ। उस वेले अमाम अमामा बण के होवां ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करां रुशनाईआ। सांझा बणा के भगत दुआर, भगवन हो के वेख वखाईआ। सम्मत शहिनशाही दस लैणा विचार, थित वार ना कोए जणाईआ। जिस वेले भगतां ने भगत दुआरे विच भगतां दा कीता भण्डार, सोहणी खुशी बणाईआ। विष्नूं वेखे नैण उग्घाड़, आपणा ध्यान लगाईआ। ब्रह्मा करे विचार, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। शंकर तके अगम्म नज़ार, नज़रीआ लए बदलाईआ। उस वेले खेल होणा अपर अपार, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। भगत सुहेला बणे आप निरँकार, कुदरत दा कादर अगम्म अथाहीआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, कोझयां कमल्यां गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परम पुरख आप करतार, कुदरत दा कादर करनी दा करता करनहार एकँकार आप अख्वाईआ।

४ कत्तक शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड बालेचक ज़िला अमृतसर हरजीत सिँघ दे शरीर छुट्टण नवित

पंज तत कहिण प्रभ मेरा नाउँ रखया हरजीत, हरि दिती माण वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे चरण प्रीत, प्रीतम मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। तैगुण नालों कर अतीत, त्रैभवन धनी दिती वड्याईआ । छोटे बाले दी परख के नीत, नीतीवान होया सहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाया गीत, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। पिछला लेखा मेरा मातलोक गया बीत, अगे सचखण्ड मिली वड्याईआ। मेरा आत्मा होया ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। तूं साहिब स्वामी मेरे वस्या चीत, चेतन धार ल्या प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असां छड्डया जगत नाता, दीन दुनी दी लोड़ रही ना राईआ। तूं मालक ख़ालक मिल्या पुरख बिधाता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस कूड़ी क्रिया मेटणी अन्धेरी राता, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी पुछी वाता, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धीरज देणी मेरे पिता माता, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाईआ। तूं सब दा जोती जाता, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। तेरा खेल बहु बिध भांता, भेव सके कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पंज तत कहिण नाता साडा छुट्टया जग, जग जीवण दाते दिती वड्याईआ। तन वजूद सड़या अग्नी अग्ग, धुआँधार जगत वखाईआ। किरपा कर सूरे सरबग, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। मैनूं सब दे नालों कर अलग, आत्मा परमात्मा आपणे रंग रंगाईआ। मैं जगत जहान दी मंज़ल गया लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सच धार दा वेख पलँघ, सुखआसण डेरा लाईआ। जिथ्थे शब्द दा शब्द अनन्द, दूसर अवर ना कोए शनवाईआ। प्रकाश तक्कया बिना सूर्या चन्द, जोती जाता डगमगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेरे वस्या संग, सगला संग रखाईआ। मानस जन्म मेरा नहीं होया भंग, प्रभ दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडा जगत छुट्टया लड़, दीन दुनी मेल ना कोए वखाईआ। छडे किले कोट गढ़, छप्पर छन्न दीन दुनी तजाईआ। तेरी मंज़ल महबूब गया चढ़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़, आत्मा परमात्मा विच मिलाईआ। सच सुहञ्जणा आदि निरञ्जणा तेरा वेख्या गढ़, सचखण्ड दुआर इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे ना कोई भय ना कोई डर, भयानक रूप ना कोए दरसाईआ। इक्को पतिपरमेश्वर तेरा मिल्या घर, गृह मन्दिर ख़ुशी बणाईआ। बेशक दुनिया कहिंदी हरजीत सिँघ गया मर, मर जीवत आपणा आप ल्या बदलाईआ। तेरे चरण कवल आपणा आप धर, बिन सीस सीस झुकाईआ।

तूं साहिब सुल्तान नरायण नर, नर हरि वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर इक सुहाईआ। तेरा सच दर सुहञ्जणा, प्रभ एकँकारे एक। मिली वड्याई आदि निरञ्जणा, सतिगुर बख्शी साची टेक। तूं मालक दर्द दुःख भय भञ्जणा, त्रैगुण माया ना लाए सेक। जोती धार पा के अंजणा, बुद्धी कीती हक बिबेक। तेरे चरण कवल करां मजना, बख्शी साची टेक। मेरे पुरख अकाले सज्जणा, दर्शन होवे नेतन नेत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच्चा करे हेत। पंज तत कहिण प्रभ असीं बाल नादाने, बेअन्त तेरी सरनाईआ। शाहो भूप वड सुल्ताने, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ । आदि जुगादि धुर दे काहने, नौजवाने नूर अलाहीआ। साचा बख्श्या इक ज्ञाने, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ । आत्म मिल्या नाल भगवाने, परमात्म तेरे विच समाईआ। नाता छुट्टया कूड़ जहाने, मातलोक ना कोए वड्याईआ। मात पित भैण भ्रा मेरे समझाणे, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। मैं पुज्जया सचखण्ड टिकाणे, दरगाह साची आसण लाईआ। जिथ्थे विष्न ब्रह्मा शिव अवतार पैग़म्बर गुर गावण गाणे, भगत सन्त ढोले रहे सुणाईआ। इक्को शब्द नाद तराने, तुरीआ बाहर शनवाईआ। इक्को नूर जोत महाने, जोती जोता डगमगाईआ। मेरा परम पुरख जिस मेरी कीती पहचाने, बिन नैणां नैण मिलाईआ। मैं आपणे घर आया छड के घर बेगाने, गृह मन्दिर कूड़ दिते तजाईआ। हुण सुत्ता दे कर बांह सरहाणे, जुग चौकड़ी ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने, निरगुण धार एकँकार कल आपणे रंग रंगाईआ।

१२६
२४

✪ १२ कत्तक शहिनशाही सम्मत दस बराज़ील तों आए फ़ारनरां दी बेनन्ती ते हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

पंज तत कहिण साडा लेखा नाल तेई अवतारा, अवतरी धार निरगुण निरँकार निराकार आप जणाईआ। पैग़म्बरां सुल्हकुल दा कीता इशारा, बिन सैनत जगत जुगत बाहर जणाईआ। गुरुआं दिता धर्म अधारा, उदर दा लेखा कवण मुकाईआ। भगतां सूफ़ीआं करीआं निमस्कारां, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। साडे पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार ज़ाहरा, ज़हूर तेरी वड वड्याईआ। कवण वक्त श्री भगवन्त साडा लेखा मेटे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी लोड़ रहे ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म फ़रमान सतिगुर शब्द दिता अपारा, अपरम्पर स्वामी अन्तरजामी आप जणाईआ।

तत वजूद हक महबूब धुर दा गौड पावे सारा, मेहरवान मिहबान मेहर नज़र उठाईआ। जिस नूं निरगुण धार सब ने कहिणा चवीआं अवतारा, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। अमाम अमामा नूर नुराना होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सो लहिणा देणा अन्त कन्त भगवन्त पूरा करे आप करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जिस नूं सरगुण धार सृष्टी दृष्टी अन्दर करे निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी अन्त लहिणा देणा वेखे वेखणहारा, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जिस नूं सब ने कहिणा चवीआं अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण गुर अवतार पैग़म्बरां दिता संदेशा सद्दा, शब्द कलमा नाम दृढ़ाईआ। परवरदिगार सांझा यार हक महबूब आपणा हुक्म वजाए नदा, दो जहान नौजवान करे शनवाईआ। जिस दी शब्दी धार अनोखी होवे गदा, गदागर करे लोकाईआ। भय भाउ भयानक वाला देवे दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस नूं सब ने कहिणा अब्बा, पित मात नूर अलाहीआ। उस दा दीपक नूर जोत प्रकाश इक्को होवे जगा, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। जन भगतां मेल मिलाए उपर शाह रगा, शहिनशाह पर्दा आप उठाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मिटा के अग्गा, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। ख़त्म कराए कूड़ मलेछ सभा, सभापती आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच दो जहान ज़िमीं असमान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर होवे बध्धा, बन्दना विच सारे सीस निवाईआ। उह कूड़ कुड़यार विच संसार मेट के हद्दा, हद्द हदूद आपणी इक जणाईआ। जिस दा दीपक जोत अगम्मा होवे जगा, नव सत करे रुशनाईआ। जिस शरअ मेटणी मुहम्मद कटीआं लबां, लबरेज़ करे ख़लक खुदाईआ। उस दी आदि आदि दी इक्को होवे यदा, यदी आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। पंज तत कहिण सानूं अवतारां दिता लारा, सहिज सहिज जणाईआ। पैग़म्बरां कीता इशारा, हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद दए गवाहीआ। गुरुआं गोबिन्द धार दस्स दुआरा, भेव अभेद दिता दृढ़ाईआ । जिस दा लहिणा देणा ग्रन्थ शास्त्रां बाहरा, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। सो निरगुण धार निरवैर होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी अन्त ना पारावारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता एका शब्दी शब्द दा लाए नाअरा, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। जिस दा नव सत्त दा होवे दाइरा, दामनगीर ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पंज तत कहिण सानूं अवतारां दिती तसल्ली, प्यार मुहब्बत विच जणाईआ। पैग़म्बरां दस्सी

महबूब दी गली, गलवकड़ी इक्को पाईआ। गोबिन्द आख्या सीस रख के आपणी तली, मेल मिलणा धुर दे माहीआ। जन भगतो जगत विकार दी देणी पैणी बली, बलि दी आसा पूरब चली आईआ। धुर दी खेल आदि जुगादि कदे ना टली, टाल मटोल ना कोए वखाईआ। सच दुआर दी धार धर्म दे प्यार नाल जाए मल्ली, मालक इक्को इक नज़री आईआ। जो आदि जुगादी वली छली, अछल छल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पैग़म्बर कहिण पंज तत वखा के हैंड, ज़िमीं असमान हिलाईआ। भाग लगणा सम्बल वाली लैंड, लैंड मारक बाडी तन वजूद जणाईआ। जिस दे थरू हुक्म होणा सैंड, दीन दुनी शनवाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया करना ऐंड, इंनडैकस वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस दीन मज़्ब करना जुआंन्ट, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा सब तों दिसे बीहाईंड, बीफ़ोर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं समझे कोई ना माईंड, माईनस होवे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज तत कहिण मुहम्मद सानूं किहा बिना ववू ज़आ जम्बा जागू उलू अलम्बाए अनज़ा अम्बाए तवज़ी ज़ोखू ज़म्बल हफ़ती तख़सतल

१२८ बेवज़ू नूरे ज़ुमा वाहिदे खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा १२८

२४ साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज तत कहिण सानूं गुरु गुरदेव गए दस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। तुसां २४

राह तकणा हस हस, बिन नैणां नैण उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतो तुहाडे अन्तर जाए वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। निझर झिरना अमृत दे के रस, बिन रसना रस समझाईआ। नाम निधाना तीर अणयाला मारे कस, बिन चिल्ले जगत जुगत उठाईआ। तुहाडा अन्तर मेल मिलावा होवे आत्म धार नस्स, मनसा मन ना कोए वड्याईआ। त्रैगुण तत ना सके डस, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। लेखा रहे ना रवि शशि, सूर्या चन्द ना कोए चमकाईआ। अन्तर मेट रैण अन्धेरी मस, नूर नुराना चन्द दए चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा जस, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण सानूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दितीआं तारीख़ां, सदी चौधवीं बीसवीं ढईआ नाल वड्याईआ। खेले खेल जगत जगदीसा, जगदीश्र धुर दा माहीआ। जिस दी करे कोई ना रीसा, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। उह शहिनशाह शाहो शाबीसा, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को कलमा हुक्म नाम होवे हदीसा, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस वेखणा लहिणा देणा पूरब लेखा बीता, बातन पड़दा दए उठाईआ। सति सच चला के रीता, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। आत्म धार परमात्म होवे मीता, मित्र प्यारा

नूर अलाहीआ। त्रैगुण धार वस अतीता, त्रैभवण धनी खेल खिलाईआ। लहिणा देणा जाणे राम सीता, राधा कृष्ण मूल रहे ना राईआ। पैग़म्बरां वेखे कौल इकरार कीता, वायदा वाअदयां विच्चों पूर कराईआ। जो गोबिन्द अन्त अखीर आसा रखी बैठण लग्गयां विच अंगीठा, शब्दी शब्द नाल वड्याईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले तेरा खेल होवे अनडीठा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। तेरा भाणा सब नूं मन्नणा पए करके मीठा, कलयुग अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। तूं लेखा मुकाउणा हस्त कीटा, ऊचां नीचां वेख वखाईआ। आपणा भेव खुल्हाउणा भीतर भीता, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत परखणीआं नीतां, नीतीवान तेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीता, काअब्यां चर्चा ना कोए चतुराईआ। तेरे नाम कलमे विच होवण हक तौफ़ीकां, तोहफ़ा दीन दुनी वरताईआ। दीन मज़्ब शरअ दा मेटणा शरीका, शरीअत वलदीअत इक्को इक जणाईआ। तेरे नाम दीआं सारे करन तमहीदा, सिफ्तां विच सालाहीआ। साडीआं पूरीआं करनीआं उम्मीदां, आशा तेरे उत्ते रखाईआ। चार जुग दे शास्त्र तेरे संदेशे दीआं रसीदां, यादाशत दीन दुनी जणाईआ। तेरा खेल दीन दुनी होवे पेचीदा, पेशीनगोईआं समझ किछ ना पाईआ। वड्याई कर सके कोई ना जीभा, जिह्वा गुण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह आप दरसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ गुर अवतारां कौल इकरार कीता सचा, सच सच नाल दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार जन भगत तेरा बच्चा, बचपन आपणे नाल मिलाईआ। लेखे लावे तन वजूद माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ बणाईआ। लूं लूं अन्दर होवे रचा, रचना आपणी दए समझाईआ। मनुआ दहि दिश फिरे ना नच्चा, शब्दी डोर तन्द बंधाईआ। आत्म परमात्म दस्स के पता, पतिपरमेश्वर मेल मिलाईआ। भगत भगवान फ़र्क रहे ना रता, रत्न अमोलक गुरमुख हीरे लए प्रगटाईआ। लेखा जाणे पंज तता, ततव तत खोज खुजाईआ। अन्तिम जोड़े साचा नत्ता, रिश्ता आपणे नाल रखाईआ। जिथ्थे आत्मा होवे सत्ता, नाल ततां रंग रंगाईआ। एसे कारन गोबिन्द जैकारा बोलया फ़तिह, फ़ातिहा पढ़े खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेल आप मिलाईआ। पंज तत कहिण सानूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता दिलासा, शब्दी शब्द शब्द धार जणाईआ। कलयुग अन्त अन्त रखो भरवासा, भगवन देवे माण वड्याईआ। जिस दे हुक्म विच पाईआं रासा, रस्ते दीन दुनी समझाईआ। उह सब दीआं पूरीआं करे आसा, तृष्ना वेखे थांउँ थाँईआ। जिन्हॖ लहिणा देणा तकणा शंकर उत्ते कैलाशा, कलाधारी खोज खुजाईआ। ब्रह्मा वेखे धाम निवासा, विष्न विश्व दा पड़दा आप चुकाईआ। तिस दा नूर ज़हूर होवे प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ। हरिजन होण देवे ना कदे उदासा, चिन्ता ग़म दए कढ्ढाईआ। निज

घर अन्तर रखे वासा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। लेखे लाए स्वास स्वासा, साह साह आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा होवे सहायक, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। इक्को मालक मंनीए नायक, ख़सम ख़समाना नूर अलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा वाहिद, लाशरीक अगम्म अथाहीआ। जिस दा हुक्म दो जहानां होणा राइज़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। उह खेल खिलावे दया कमावे निरगुण धार अगम्मी शायद, शहिनशाह भेव कोए ना पाईआ। कौल इकरारा पूरा करे वाहिद, गुर अवतार पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। जिस दा संदेशा फ़रमाना होवे जाइज़, जाइज़ा तके ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण असीं विकदे रहे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं हाट, दीनां मज़्बां वंड वंडाईआ। साडा पन्ध ना मुक्कया वाट, तन वजूद लेख ना कोए मुकाईआ। असीं आउँदे रहे आन बाट, जन्म जन्म नाल बदलाईआ। साडा पूरा होया मूल ना घाट, घाट पतण बहि के ध्यान लगाईआ। खेल वेखदे रहे बण के नटुआ नाट, की स्वांगी आपणा स्वांग वखाईआ। बिन अक्खरां वाली तकदे रहे पात, जो पत्रका जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कवण वेला प्रभू कलयुग अन्त मेटे अन्धेरी रात, रुतड़ी निरगुण धार आपणे नाल महकाईआ। झगड़ा मुकावे ज़ात पात, दीन दुनी करे सफ़ाईआ। लेखा वेखे काग़ज़ात, कलम शाहीआं खोज खुजाईआ। लहिणा रहिण ना देवे विच निबातात, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जो भेव खुल्हावे बातन बात, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। साडा लेखा वेखे लोकमात, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म बख़्शे सची दात, वस्त अमोल अमुल वरताईआ। जिस दे नाम कलमे पढ़दे रहे बहु बिध भांत, अक्खरां नाल अक्खर बदलाईआ। सो पुरख अगम्मा अन्तिम पुछे वात, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ । सच दी सच बणा के सौग़ात, सगला संग जणाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नात, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। पंज तत कहिण गुर अवतार पैग़म्बरां कीतीआं मेहरा, मेहर नज़र नाल जणाईआ। अन्त सतिगुर शब्द प्रगट होवे इक दलेरा, दलेरी नाल जणाईआ। जो इक्को रंग रंगाए सञ्झ सवेरा, शबे रोज़ आपणा खेल खिलाईआ। उस दे मिलण दा जन भगतां चाउ घनेरा, घनईया आसा गया तकाईआ। जिस दा सम्बल होवे डेरा, दर घर साचा इक वड्याईआ। जो जोती जाता हो के देवे गेड़ा, जगत जुगत नाल भवाईआ। उहदा धर्म दा धर्म वसणा खेड़ा, खण्डा ना कोए उठाईआ। अन्तिम भगतां ततां बन्न्हे बेड़ा, बेड़ी नईया नौका आपणा नाम बणाईआ। चरण छोह गया जेहड़ा जेहड़ा, जिउड़ा जमां वाला कटाईआ। अगला पन्ध मुका के

नेड़ा, नेरन नेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी आसा मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण असीं उडीकदे रहे वक्त, बिन नैणां नैण उठाईआ। कवण वेला आवे विच जगत, मिले मेल सहिज सुभाईआ। लेखा चुक्के भगवान भगत, भगवन देवे माण वड्याईआ। नाता फेर ना होए बूँद रक्त, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। मेला मिले अगम्मी शक्त, शख्सीयत जगत ना कोए वड्याईआ। फेर आईए मूल ना उत्ते धरत, धवल ना वजे वधाईआ। मेल मिले अगम्मे मालक नाल उपर अर्श, अर्शी प्रीतम होवे सहाईआ। बिन नैणां पाईए दरस, बिन नेत्र लोचन लईए बिघसाईआ। अगली रहे कोई ना हरस, हवस दए बुझाईआ। मेहरवान हो के नौजवान हो के श्री भगवान करे तरस, रहमत सच सच समझाईआ। जिस भगतां ततां लेखा लाउणा विच शहिनशाही बरस, दसवां दस दस मास दा पन्ध मुकाईआ। उह निरगुण धार एकँकार आए परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। जिस सब दा लहिणा देणा पूरा करना गुर अवतार पैग़म्बरां वाली शर्त, शरअ दा डेरा ढाहीआ । सब दी मन्ज़ूर करे अर्ज़, बेनन्ती आपणे रंग रंगाईआ। इक्को माण दे के जनो मर्द, बाल बृद्ध वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,
 निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तत कहिण अन्त साडी वंडे दर्द, दुखियां दुःख विछोड़े वाला १३१
 मिटाईआ। २४

✪ २७ कत्तक शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर दरबार निवासी सेवादारां नवित दलीप सिँघ, प्रीतम सिँघ, रत्न सिँघ, जरनैल सिँघ, कश्मीर सिँघ, प्रीतम सिँघ, सुलखण सिँघ, जगीर सिँघ, आसा सिँघ, जोगा सिँघ ✪

पंज तत कहिण प्रभ तेरे बरखुरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा मीत मुरार, मित्र प्यारा एकँकारा इक अख्वाईआ। तेरे चरण कवल उपर धवल निमस्कार, नमो नमो डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। तूं कुदरत कादर करनेहार, करता पुरख इक अख्वाईआ। अगम्म अथाह तेरे भरे भण्डार, अतोट अतुट तेरी बेपरवाहीआ। असीं याचक मंगते तेरे भिखार, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। वस्त अमोलक काया गोलक देणी डार, निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दार, सिर सिर आपणा हुक्म वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं सेवक तेरे गोले, गोलक काया दे भराईआ।

साचे नाम दे बख्श दे ढोले, गीत गोबिन्द देईए सुणाईआ। भेव चुका दे पड़दे ओहले, सनमुख हो के नज़री आईआ। किरपा निधान वसणा कोले, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरे प्यार विच जन भगतां रुतड़ी मौले, पत टहणी आप महकाईआ। पिछले पूरे कर दे इकरार कौले, कौल धवल नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी सेवा करीए दिन रात, रैण भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले देणी दात, परवरदिगार सांझे यार चरण कवल देणी सरनाईआ। तूं निरवैर पुरख पिता मात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। असीं आत्म तेरी ज़ात, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जाते जोड़ लै नात, नूर नुराने कर रुशनाईआ। अन्त साडी पुछ वात, वातावरन वेख ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे सुहेले भगत, भगवन दे वड्याईआ। साडी लेखे ला लै बूँद रक्त, तन वजूद तेरे चरण टिकाईआ। निरगुण धार आपणी बख्श शक्त, शख्सीयत आपणी इक समझाईआ। साडा सुहञ्जणा होवे वक्त, घड़ी पल तेरे नाल मिलाईआ। जगत जहान असीं फिरीए विच मटक, काया मटके कर सफ़ाईआ। चुरासी विच ना जाईए भटक, चारे खाणी ना वंड वंडाईआ। गर्भ जून ना जाईए लटक, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे उपर धरत, धवल दे मालक होणा सहाईआ। जे निरगुण धार आयों परत, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। तेरा लहिणा देणा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम मेल मिलाउणा चाँईं चाँईआ। साडी जन्म जन्म दी पूरी कर दे हरस, हवस राम नाल रखाईआ। साडा खुशीआं वाला होवे बरस, गृह मन्दिर अन्दर वजदी रहे वधाईआ। निज नेत्र निरगुण धार देणा दरस, बिन लोचन लोचन लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे दर दे दरवेश पुजारी, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। तूं साहिब सुल्तान शाहो भूप सिक्दारी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तेरे चरण कवल सदा निमस्कारी, निव निव लगीए पाईआ। जिस कलयुग अन्त जन भगतां पैज संवारी, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। असीं बरदे तेरे तूं मालक धुरदरबारी, दरगाह साची सच तेरी सरनाईआ। साडी कत्तक वाली तूं लेखे लाउणी दिहाढ़ी, लेखे आपणे विच पाईआ। दरगाह साची सचखण्ड पुरख अकाले अन्तिम वाड़ीं, दूजा गृह नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण साडा लेखा रहे ना नाल मौत लाड़ी, लाड़े धुर दे लैणा आप परनाईआ। शब्द अगम्मे घोड़े चाढ़ीं, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। दो जहानां पार कराउणी खाड़ी, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड अगे हो ना कोए अटकाईआ। जन भगत कहिण तेरे दर आपणी भेंटा दिती चाढ़ी,

चार जुग दा लेखा देणा मुकाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण साडी बणी रहे साउणी हाढ़ी, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। पंज तत कहिण असीं भगत सुहेले दर तेरे सदा फिरना पिच्छे अगाड़ी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सहायक होणा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वत समुंद सागर काया गागर तेरी ओट तकाईआ।

✪ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

मग्घर कहे जन भगतो प्रभ दी धार विच होवो मग्न, मस्ती नाम खुमारी एकँकार इक चढ़ाईआ। सुरत रहे ना तन वजूद बदन, पंज तत ब्रह्म मति नाड़ी रत इक्को रंग रंगाईआ। जिस दे दीप जोती गृह गृह काया मन्दिर अन्दर जगण, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सज्जण, सच स्वामी अन्तरजामी निहकामी इक अख्वाईआ। जो दीन दुनी जगत जहान नौजवान श्री भगवान बुझावण आया अग्न, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं निराकार निरवैर किहा मोहण माधव मदन, मूर्त अकाल दयाल नूर अलाहीआ। जो एथे

१३३
२४

उथे दो जहाना साहिब सुल्ताना होवे सज्जण, मीत मुरारा परवरदिगारा सांझा यार इक अख्वाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी सारे खोज खोज लभ्भण, नव सत्त ध्यान लगाईआ । जिस दा चार जुग दे शास्त्र करदे भजन, बन्दगी सिफ्तां वाली सिफ्त सलाहीआ। जो साहिब स्वामी अन्तरजामी कटणहारा बन्धन, बन्दगी बिना मुशंदगी इक समझाईआ। आत्म धार देवे सच अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक चाढ़े रंगण, दुरमति मैल अन्दर बाहर धुआईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां लावे अंगण, अंगीकार इक अख्वाईआ। जिस दे दवारयों अवतार पैग़म्बर गुरु मंगण, जुग चौकड़ी झोली डाहीआ। उह साहिब सूरा सरबंगण, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस नूं नूर अलाही सब ने किहा रब्बण, यामबीन तेरी वड्याईआ। उह लख चुरासी विच्चों आया कढण, शब्दी धार पार कराईआ। दूई दुवैती शरअ शरायती धार आया वढण, नाम खण्डा खण्डां ब्रह्मण्डां इक चमकाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार आया गंढुण, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दा प्रकाश दिसदा सूर्या चन्दन, रवि शशि आपणा रंग रंगाईआ। उह कूड़ कुड़यारा कलयुग आया खण्डण, सतिजुग सति धर्म प्रगटाईआ। नाम निधाना निरगुण धार आया वंडण, जन भगतां अन्तर निरंतर आप टिकाईआ। भेव खुल्हाए ब्रह्म ब्रह्मण्डण, पारब्रह्म प्रभ पड़दा आप चुकाईआ। हिरदे अन्दर पावे आपणी ठण्डण, बूँद स्वांती निझर झिरनिउँ आप टपकाईआ ।

आत्म होण देवे कदे ना रंडण, कन्त सुहागी लए परनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा सब ने छन्दण, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जन भगत सुहेले दो जहान शौह दरया लँघण, अगे हो ना कोए अटकाईआ। बेड़ा चलाए बिना मुहाणयों वञ्झण, थल अस्गाहां पार कराईआ। लेखा पूरा करे तत पंजण, पंचम देवे माण वड्याईआ। नेत्र नाम निधाना पावे अंजण, लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। शब्दी धार चुक के कंधन, जगत जहाना पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मग्घरा की भगतां दए सलाह, मशवरा की जणाईआ। उठ खेल वेख लै बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। जिस मेरी पकड़ी बांह, सिर सिर हत्थ टिकाईआ। इक्को दस्स अगम्मा नाँ, नाउँ निरँकारा दिता जणाईआ। मेरा खेल तक लै मैं सच दिता सुणा, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। उच्ची कूक सुणावां कढ्ढके बांह, धरनी धरत धवल धौल दुहाईआ। मैं खेल खिलाउणा दीन दुनी आपणे थाँ, थान थनंतर इक जणाईआ। झगड़ा पा के सूर गाँ, ग़रीब निमाणयां खेल देणा वखाईआ। जन भगतां संदेशा देवां अगम्म अथाह, इक्को वार जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिन्हां दा होए सहा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे कलयुगा तूं लै के आएयों की संदेश, सज्जणा दे जणाईआ। कलयुग कहे मेरा मालक इक नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा सतिगुर शब्द दस दस्मेश, दहि दिशा रिहा समाईआ। उह हर घट वसे सदा हमेश, हम साजण इक अखाईआ। जिस दा लहिणा देणा दीन दुनी दे देस, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। उस दा वेस अवलड़ा भेस, भेखाधारी रूप बदलाईआ। जिस दे अगे सारे होए पेश, पेशीनगोईआं आपणे हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा इक अख्वाईआ। कलयुग कहे मग्घरा उह तक लै गोई पेशीन, पेशतर सब नूं दयां जणाईआ। जो लेखा मेरा होणा उत्ते ज़मीन, धरनी धरत नाल वड्याईआ। मैनूं इशारा देवे मेरा मालक ख़ालक इक आमीन, आलमीन नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म अन्दर सारे अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। उस दा हुक्म सारे रहे चीन, बिन रसना रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे मेरा लेखा नाल मुहम्मद महिबू, महबूब रिहा जणाईआ। मैं वेखणी काअब्यां वाली जूह, जो हज़रतां दिती जणाईआ। मैं तकणे बुतख़ानयां विच रूह, रहमत तकणी बेपरवाहीआ। मेरा शहिनशाह शाहे अज़मू, नाविज़ले नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। मग्घर कहे कलयुगा मुहम्मद मज़वली लबे हिज़ कुज़ा चाविस्ते नज़ी मबी ज़वा मुज़फ़्फ़तल

कुजिशती पौंमल जउल ज़वी ज़ाकहम बाए कुलिसतम मदो हस्ती तुखम्बाए वज़ीहुम अल तावुल ज़ू कोमल कज़ी कुमशता अज़ू ज़म्बा जम्बा दवखतम्बाए कुमस्ती शोवल खाहम्बा सहंदी तोरू ज़मी नूरे नुरां अलाह बेपरवाह, बेपरवाह इक अख्वाईआ। कलयुग कहे मग्घरा कलमा कुफ़र नज़ूल नज़ हिम ज़ोको मबीं सुनिशते सुनी दानिस्ते ज़वी नूरे निज़ा अर्शे मिज़ा कुल हस्ती बेअज़म चवीज़ुल जाकुमहा ज़ाविस्तो तख़मीने तमहा दावीचा दाविस्ती दज़ूना मुर्शदे मुहम्मद दीदे नज़ू वुज़ू वाकल्सी हम्बा बेज़वाले वज़ी वज़ीउल रुमा नूरे रहिनुमा, रैहबर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मग्घर आह वेख लै मेरीआं अगम्मी किताबां, कुतबखानयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस विच शरअ दीआं दिसण महिराबां, महबूब रिहा समझाईआ। तन वजूदा दिसण अदाबां, सजदयां विच सीस झुकाईआ। इस तों परे तक लै इक हुक्म बोध अगाधा, बुद्धी तों परे दृढ़ाईआ। जो संदेशा बिना कन्नां तों कृष्ण ने दिता राधा, बिन रसना अक्खर जणाईआ। राम सीता नूं किहा राम रामा मोहण माधव माधा, मधुर धुन तों बाहर जिस दी शनवाईआ। जो आदि जुगादी सोया सदा जागा, आपणी समझ ना किसे समझाईआ। उस दा लेखा अन्त निरगुण धार निरवैर हो के होणा विच पंज आबा, पंचम दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। बिन तन्द सितार वजाए रबाबा, रबीउल सानी जिस दी दए गवाहीआ। उस दा लहिणा देणा निरगुण धार सतिगुर शब्द होवे नाल वाले बाज़ा, बाज़ी समझ किसे ना आईआ। नादां तों बाहर वजाए आपणा अगम्मी वाजा, जिस दी सुर ताल वेखण कोए ना पाईआ। शाहो भूप बणे अगम्मी राजा, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। मग्घर कहे नारदा तूं किधरों आया गौंदा, सति सच दे जणाईआ। नारद कहे मैं नवीं बणत आया बणाउँदा, जिस दी समझ कोए ना पाईआ । बिना अक्खरां तों अक्खर आया दृढ़ाउँदा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसांईआ। नारद कहे मित्रा मैं लै के आया ख़बर अगम्मी, अगम्मड़े दिती जणाईआ। जेहड़ी सुणी नहीं किसे काया माटी चम्मी, सरवणां मिली ना कोए वड्याईआ। गाई नहीं किसे बुल्ह नाल दमी, मुख बणत ना कोए बणाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक किसे नहीं जम्मी, जणेंदी बणी कोई ना माईआ। जिस दी अवाज़ आई नहीं सरवण कन्नी, कायनात विच भेव ना कोए खुल्हाईआ। ब्रह्म धार उहनूं कोई नहीं कहि सकदा ब्रह्मी, रूप रंग ना कोए वखाईआ। उहदी ज़ात नहीं कोई वरनी बरनी, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। मैं इक गल्ल सति सच दी करनी, जो कुदरत दे करते दिती दृढ़ाईआ। मैनूं ऐउँ जापदा सब ने अन्तिम इक्को तुक पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ।

इक्को मंज़ल चढ़नी, जिथ्थे मिले धुर दा माहीआ। इक्को डोरी फड़नी, जिस दा पल्लू ना कोए छुडाईआ। जिथ्थे वंड नहीं कोई सीस धड़नी, तत वजूद ना कोए चतुराईआ। घाड़त नवीं पए ना घड़नी, मार्ग राह ना कोए दरसाईआ। शरअ लड़ाई पए ना लड़नी, कलमा नाम रंग रंगाईआ। इक्को पुरख अकाल दी सब ने पैणा चरणी, सरनगति इक समझाईआ। इक्को धार होणी उत्ते धरनी, धरत धवल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मैं लै के आया धुर फ़रमाना अनोखा, सच दयां सुणाईआ। दुनिया नाल होण वाला धोखा, धर्म नाल धर्म दयां समझाईआ। मेरे कोल बिना अक्खरां तों निरअक्खर धार दा पोथा, पुस्तक वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं इयों दिसदा इक दो तिन्न साल विच नौ खण्ड पृथ्मी चढ़नी लोथ उत्ते लोथा, तन माटी ख़ाक रुलाईआ। उह वेख लै खुशीआं विच हसदा जुग चौथा, कलयुग तालीआं रिहा वजाईआ। नाले कहे मैं दीन दुनी दा अन्दर कीता खोटा, खोटे खरे ना कोए बणाईआ। जिस दीन दुनी मज़्हबां विच कराई टोटा टोटा, पैग़म्बर गुरुआं संग बणाईआ। अन्तिम सब दा ख़ाली करना शरअ वाला लोटा, लुटीआ कम्म किसे ना आईआ। धरनी वेखणी पोटा पोटा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ।
१३६ बेशक कलयुग बड़ा चोटा, चोटी सब दी रिहा मुन्नाईआ। नारद कहे मेरे कोल लेखा इस दा वक्त नहीं हुण बहुता, सदी १३६
२४ चौधवीं दए दुहाईआ। उह लेखा तक लै जिस कारन नानक मारया गोता, जलधार दए समझाईआ। जिस गनका नूं दे २४
के तोता, ब्रह्म विद्या दिती समझाईआ। उह पुरख अकाला निरगुण धार जोती जाता, जागरत जोत नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मग्घरा सुण लै मेरे यार, की यारड़ा रिहा जणाईआ। मैं पहुंचया भगत दुआर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मैनूं संदेशा दिता तेई अवतार, राम कृष्ण कृष्ण समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कीता इज़हार, सिफ्त सिफ्त सिफ्त वड्याईआ । नानक गोबिन्द किहा पुकार, शब्दी शब्द नाल जणाईआ। नारदा तूं होणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। कलयुग नूं कहिणा नाल ललकार, भुल रहे ना राईआ। अन्तिम लेखा एका कलि कल्की अवतार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अमाम अमामा नूर अलाही परवरदिगार, शाह सुल्तान इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी रखण चाँईं चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। नारद कहे मैं लै के आया सच धार दीआं धारां, सचखण्ड निवासी दिती वड्याईआ। जिथ्थे दीन दुनी दी दिसे ना कोए विचारा, विचर के दस्से ना कोए जणाईआ। मन मति बुद्ध पावे कोए ना सारा, अक्ल आकला ना कोए वड्याईआ। जिस दा खेल दीन मज़्हब तों बाहरा,

ज़ात पात ना रंग रंगाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। दुनिआदारो जिस दा इक्को होणा नाअरा, कलमा नाम इक समझाईआ। इक्को होणा दुआरा, दूजा गृह ना कोए जणाईआ। इक्को होणा प्यारा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को होवे निमस्कारा, सीस जगदीश इक झुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे मैं की दस्सां की कुछ मेरे कोल, कमलापति की दिती वड्याईआ। मैं उहदे हुक्म दा वजावण आया ढोल, डंका इक्को नाम करां शनवाईआ। जिस सच दुआरा दिता खोल्ह, ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। निरगुण धार पूरा तोले तोल, तोलणहारा अगम्म अथाहीआ। जो हर घट अन्दर रिहा मौल, मौला रूप नूर अलाहीआ। जो सब दा पूरा करे कौल, इकरारनामे वेख वखाईआ। लहिणा देणा जाणे धरनी धरत धवल धौल, धर्म दी धार नाल मिलाईआ। जिस दा संदेशा दिता काहन सवल सौल, साँवल सुंदरीआ गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं लै के आ गया धुर दरगाह दीआं चिठ्ठीआं, जिन्हां दा अक्खर वेखण कोए ना पाईआ। उन्हां विच ख़बरां अगम्मी मिट्ठीआं, रस रसना ना कोए चखाईआ। जिस विच खेलां जगत अनडिठ्ठीआं, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं हैरान हो के गिणदा रिहा गिट्टीआं, हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। किस बिध कलयुग अन्दर मैनूं धारा दिसण चिट्टीआं, आपणा रूप बदलाईआ। जन भगतां रूहां दिसण लिटीआं, आत्म सेजा सच हंढाईआ। जो इक्को साहिब दे हट्ट विकीआं, कीमत अवर ना कोए रखाईआ। जिन्हां दीआं उमरां नहीं वड्डीआं निक्कीआं, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। उन्हां दा लहिणा देणा नाल सस्सा होड़ा हाहे दीआं टिप्पीआं, सोहँ रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे दिवस सुहञ्जणा चढ़या, चढ़दा लहिंदा वेख वखाईआ। जिस साहिब ने घाड़न घड़या, दो जहानां बणत बणाईआ। सो सच दुआर एकँकार खड़या, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा धुर फ़रमाना आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब ने पढ़या, अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। सो लेखा जाणे सीस धड़या, तन वजूदां फोल फुलाईआ। निरगुण धार हो के वेखे हँकारी गढ़या, मन मति बुद्ध खोज खुजाईआ। लेखा जाणे चेतन जड़या, मेहरवान आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ । जो निरभउ भय विच कदे ना डरया, भय सब नूं रिहा वखाईआ। अग्नी अग्ग कदे ना सड़या, जलधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं शाहो भूप सुल्ताना, सतिगुर इक अख्वाईआ। आदि जुगादि मेहरवाना, महबूब नूर अलाहीआ। चार जुग कलमा हक

१३७
२४

कलामा, नाम निधाना सिफ्त सालाहीआ। शब्द नाद तराना, तुरीआ बाहर शनवाईआ। जोत नूर महाना, नूर नुराना डगमगाईआ। खेल खेल महाना, महिमा अगम्म अथाहीआ। जुग जुग बदल ज़माना, आपणा हुक्म वरताईआ। अवतर रूप पहर के जामा, सरगुण खेलां खेल चाँईं चाँईंआ। निरवैर हो के नौजवाना, मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। दीन दुनी चला निशाना, जगत शरअ संग बणाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेला श्री भगवाना, भगवन रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे गहर गम्भीरा, गुणवन्त इक अख्वाईआ। मेरा रूप बेनज़ीरा, जगत नेत्र वेखण कोए ना आईआ। मेरा तन वजूद नहीं शरीरा, माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। मैं शाहो भूप पीरन पीरा, पारब्रह्म दिती वड्याईआ। मेरा खेल गहर गम्भीरा, गवर दिता दृढ़ाईआ। मैं वेखणहारा दीन दुनी तकदीरा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। मेरा नाम शब्द शमशीरा, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। मेरे कोल अगम्म तदबीरा, तरीका हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। अन्तिम मेरा खेल कलयुग नाल जिस दा काला चीरा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। कलयुग कहे सतिगुर शब्द जे तेरा मेरे नाल तअल्लुक,
१३८ तल्ब अवर ना कोए रखाईआ। मेरी खेल वेख लै पलक, पलकां दे ओहले बहि के ध्यान लगाईआ। मैं निराली वखावां १३८
२४ झलक, झल्ली करां खुदाईआ। फिरे दरोही उत्ते फ़लक, ज़िमीं असमान कुरलाईआ। संदेशा देवां मौत मलक, मलकुल २४
मौत नाल मिलाईआ। ज़रा निगाह मार लै अज्ज कि भलक, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। कलयुग कहे सतिगुर शब्द जे तूं मेरा साथी, सगला संग बणाईआ। मैं चलावां कूड़ दा राथी, भज्जां वाहो दाहीआ। सब दा लेख बदलावां मस्तक माथी, बिदना लेख मिटाईआ। तूं सर्ब कला समराथी, मालक इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करना हाथो हाथी, बहुती देर ना कोए कराईआ। दीन दुनी दी उलटी गेड़ दे लाठी, चारों कुण्ट भवाईआ। पूजा वाला रहे कोए ना पाठी, पुस्तक कम्म किसे ना आईआ। दुहाई फेर दे तीर्थ अठ्ठ साठी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रोवे मारे धाहीआ। जोत जगे ना किसे ललाटी, नूर ज़हूर ना कोए चमकाईआ। बजर सके ना किसे दी पाटी, बजर कपाट ना कोए खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द दीन दुनी सारी भेज दे मेरी हाटी, मैं हटवाणा इक अख्वाईआ। की होया जे गोबिन्द धार अमृत रस चखाया विच बाटी, पंजां नाल मिली वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले किसे दी मंज़ल पूरी होण ना देवीं घाटी, सच दर चढ़न कोए ना पाईआ। मेरी चार कुण्ट दहि दिशा कर अन्धेरी राती, रुतड़ी मेरे नाल महकाईआ। आह तक लै सतिगुर शब्द मेरे कोल चार जुग दी तेरी पाती, जो गुर

अवतार पैग़म्बर गए लिखाईआ । मेरा सीना पाड़ के वेख लै छाती, सहिज नाल सीस झुकाईआ। बिना सतिगुर शब्द मेरी पुछे कोए ना बाती, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तेरे चरण कवल मेरा जुड़या रहे नाती, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग निरगुण धार दया कमावांगा। धुर दा हुक्म संदेश सुणावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेश नाल रलावांगा। तूं संदेशा देणा देस परदेस, दो जहानां आप दृढ़ावांगा। अन्तिम झगड़ा मेट के मुल्ला शेख़, मुसायकां पन्ध मुकावांगा। दीन दुनी दी बदल के रेख, ऋषीआं मुनीआं आप पढ़ावांगा। आत्म धार दस्स के भेख, परमात्म वंड वंडावांगा। धर्म दुआरा प्रसिद्ध करके माझे देस, मजलस भगतां नाल रखावांगा। जिथ्थे सब ने होणा पेश, पेशतर आपणा हुक्म वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावांगा। सतिगुर शब्द कहे कलयुग जिस वेले महीना आया मग्घर, सम्मत शहिनशाही दस नाल मिलाईआ। तेरी पूरी करां सध्धर, आशा वेखां चाँईं चाँईंआ। तेरा प्यार विच करां कदर, कुदरत दे कादर नाल मिलाईआ। सच धर्म दा करके अदल, इन्साफ़ दयां समझाईआ। दीन दुनी दी धारा देवां बदल, बदला चुक्के थाउँ थाँईंआ। सब दी लेखे लावां मज़ल, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। उस वेले कलयुग अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाम कलमे दी इक्को सांझी गाउणी ग़ज़ल, जिस दी ग़रज़ ना कोए रखाईआ। फेर दीन दुनी दा नाता जुड़ना नाल अज़ल, लेखा सके ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग सच सुहञ्जणा वक्त सुहाउणा, सोहणी मिले वड्याईआ। सम्मत शहिनशाही नाल मिलाउणा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। मग्घर महीना वंड वंडाउणा, थित वार पहला प्रविष्टा दयां जणाईआ। ढोला गीत इक्को गाउणा, गोबिन्द शब्द शब्द शनवाईआ। सीस जगदीश इक निवाउणा, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। घर स्वामी दर्शन पाउणा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस ने हुक्म संदेशा इक दृढ़ाउणा, बुद्धी तों परे परे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग निगाह मार लै रती, रत्न अमोलक हीरे जन भगत दयां वखाईआ। जिन्हां दे अन्दर इक्को नाम दी सिफ्त राग छती, छतीसे नाल चतुराईआ। उन्हां दा मालक कमलापती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिन्हां दा निरगुण धार जुड़या नती, आत्म परमात्म मिल के वजदी रहे वधाईआ। उन्हां दे अन्तर अग्नी जगत कदे ना तपी, तपीशरां तों बाहर दए वड्याईआ। भाग लगा के काया मटी, तन वजूद करे सफ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़ा के पट्टी, पटने वाले नाल मेला मेले सहिज सुभाईआ।

फेर भरनी पए ना चट्टी, लख चुरासी विच कदे ना आईआ। जम की फाँसी जाए कटी, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। झगड़ा मुक जाए अठ्ठ सठ्ठी, तीर्थ तट ना कोए नहाईआ। जोत जगाए लट लटी, नूर नुराना कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। कलयुग कहे सतिगुर शब्द तूं आदि जुगादि लिखारी, जुग जुग तेरी सिफ्त सलाहीआ। तेरे नाम दी महिमा न्यारी, तेरी वड वड्याईआ। झट नारद पुज्ज गया हस के कहे सुणो मेरी सची सरकारी, सतिगुर शब्द सीस निवाईआ। तूं पुरख कि नारी, नर नरायण दे दृढ़ाईआ। तूं इष्ट दो कि चारी, चार जुग की तेरी बेपरवाहीआ। तूं शरअ कि पुजारी, कि इष्ट देव अख्वाईआ। तूं जोत नूर कि नूर निरँकारी, निरगुण डगमगाईआ। कि तत शरीर अहारी, पंचम संग बणाईआ। मेरी तेरे अगे निमस्कारी, निव निव सीस निवाईआ। सच दस्स किस बिध कलयुग अन्तिम होवे ख्वारी, सहिज नाल दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म इक जैकारी, जै जैकार कराईआ। कलयुग कहे मैं जावां बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। नारद कहे इक सुणो बात हमारी, हम साजण हो के दयां जणाईआ। निगाह मारो विष्न ब्रह्मा शिव संसारी भण्डारी सँघारी, लोकमात नैण उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला की खेल करे अपर अपारी, अपरम्पर आपणी कार भुगताईआ। जो हुक्म संदेशा दे के आए वारो वारी, सतिजुग त्रेता द्वापर लोकमात दृढ़ाईआ। अन्तिम आवे कलि कल्की अवतारी, निहकलंका रूप बदलाईआ। अमाम अमामा वड सिक्दारी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। सो जन भगतां देवे नाम खुमारी, मस्ती मस्तीउँ बाहर जणाईआ। आत्म धार लगा के यारी, परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा होणा जगत त्योहारी, लोकमात मिले वड्याईआ। जिस फिरना जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वतां सोभा पाईआ । उहदा लेखा दो जहानां पिच्छाड़ अगाड़ी, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे नारद तूं क्यों प्या हस, हस के दे जणाईआ। नारद कहे प्रभू तेरा भेव ना सकां दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। उधरों कलयुग आया नस, आपणा पन्ध मुकाईआ। नेत्र खोल्ले रवि शशि, सूर्या चन्न अक्ख उठाईआ। पृथमी आकाश गावे जस, मण्डल मण्डप ढोले रहे सुणाईआ। सब दा एका गृह होया इक्ठ, मिल के वजे वधाईआ। करोड़ तेतीसा सरन सरनाई रिहा ढठ, निव निव लागे पाईंआ। गुर अवतार पैग़म्बर जोती नूर तकण लट लट, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ । सतिगुर शब्द हुक्म दिता झट, सहिज नाल सुणाईआ। कलयुग आपणी करवट वट, पासा लै बदलाईआ। नारदा तूं नहीं रहिणा वख, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। उह वेख लै दीन दुनी दे भाण्डे हुन्दे सख, वस्त नाम सच ना कोए वरताईआ। अवतार

पैग़म्बर गुरु करे कोई ना किसे दा पक्ख, पारखू नज़र कोए ना आईआ। बिना पुरख अकाल तों जैकारा बोले ना कोए अलख, अलख अगोचर सीस ना कोए निवाईआ। जिस दे गोबिन्द सथ्थर गया लथ, यारड़ा सेज हंढाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां देवे नाम अगम्मी वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जिस दी सिफ्त सलाह वड्याई अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। अन्त उस दे सब किछ हथ्थ, जो आदि जुगादी पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म सच सुणाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द शहिनशाही सम्मत जाए लँघदा, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। की कुछ अन्तिम मंगदा, सतिगुर दे समझाईआ। जिस विहार कीता जन भगतां पंज पंज दा, पंचम बख्शी माण वड्याईआ। झगड़ा मेट के ग़म रंज दा, खुशी खुशी विच्चों समझाईआ। भेव चुका के सवेर सञ्झ दा, इक्को गृह वड्याईआ। पड़दा लाह के आपणे अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। सज्जण बणा के आपणे अंग दा, अंगीकार आप हो जाईआ। ढोला जणा के सोहँ छन्द दा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पन्ध मुका के मुहाणे वञ्झ दा, दो जहानां पार कराईआ। लेखा रहे ना नव खण्ड दा, ब्रह्मण्ड दा डेरा ढाहीआ। अगला हुक्म संदेशा सूरे सरबग दा, सहिज नाल सुणाईआ। जिस निशाना मेटणा तारे चन्न दा, आशा मुहम्मद पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे नारद जन भगत सुहेले ढोले गाउणगे। गुर चेले खुशी मनाउणगे। छब्बी पोह दा वक्त सुहाउणगे। दो इक दा रूप वटाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाउणगे। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरा वक्त होणा सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जोत जगाए आदि निरञ्जणा, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जिस ग़रीब निमाणयां लाउणा अंगणा, आपणी गोद टिकाईआ। नूरी नूर चमका के चन्दना, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतो घरों सब ने करके चलणा बन्दना, धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। प्रेम प्यार दा प्रशाद छकणा, गृह गृह वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगत बावन धार सुहाउणगे। बवन्जा बवन्जा रंग रंगाउणगे। पीले टिक्के मस्तक विच लगाउणगे। वड्डे निक्के रंग ना कोए रंगाउणगे। चिट्टे वस्त्र सारे पाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाउणगे। बवन्जा होणगे शस्त्रधारी, खण्डे खड़ग नाल वड्याईआ। बवन्जा रूप बदल के नारी, खुल्ही मेंढी देण वखाईआ। बवन्जा बण के शाह सिक्दारी, कल्गी सीस लगाईआ। बवन्जा नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारी, हंझूआं हार बणाईआ। बवन्जा बणे होण पुजारी, तसबी माला हथ्थ उठाईआ।

बवन्जा चढ़ी होवे खुमारी, मस्ती वंड वंडाईआ। बवन्जा बणे होण भण्डारी, फुलके पंज पंज हथ्थ उठाईआ। बवन्जा बणे होण पुजारी, सोहणा रूप बदलाईआ। पंजां दी बवन्जा नाल होवे यारी, पंज प्यारे जोड़ जुड़ाईआ। पंज दरबारी मस्तक लिख के लाई होवे मौत लाड़ी, नीले रंग नाल लिखाईआ। पंजां लिखारीआं बिना मुच्छ तों रखी होवे दाढ़ी, आपणा रूप जणाईआ। बवन्जा मारदे आउण ताड़ी, तूं ही पिता तूं ही माईआ। बवन्जा फिरन पिच्छे अगाड़ी, भज्जण वाहो दाहीआ। बवन्जा बीबीआं गीत गाउणगीआं पहाड़ी, सोहणा राग सुणाईआ। बवन्जा फड़ी होवे हथ्थ पटारी, पटने वाला लिखणा चाँईं चाँईंआ। बवन्जा कज्जल नैण होवे धारी, काला रंग सुहाईआ। बवन्जा रूप बणया होवे पनिहारी, पनघट आपणा आप बणाईआ। बवन्जा कीता होवे श्रृंगारी, सीस सग्गी नाल वड्याईआ। बवन्जा गुरमुख चरण चरण नाल आउणगे झाड़ी, पैर पैर नाल बदलाईआ। बवन्जा बावन धार नाल दोहां हथ्थां दी मारन उडारी, सोहणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ । छब्बी पोह कहे मेरा दिवस सुहञ्जणा आउणा, मैं सच दयां सुणाईआ। सब ने इक्को गीत गाउणा, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। इक्को इष्ट मनाउणा, पुरख अकाल सीस
१४२ झुकाईआ। इक्को घर वसाउणा, गृह मन्दिर मिले वड्याईआ। बावन धार बवन्जा रंग रंगाउणा, रंगत पीली पगड़ी इक १४२
२४ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर २४
शब्द कहे नव नव दी धार, प्रभ सोहणी वंड वंडाईआ। हरिसंगत संगत प्यार, हरि मेला सहिज सुभाईआ। हरिसंगत संगत दीदार, दर्शन धुरदरगाहीआ। हरिसंगत गुलशन धर्म दी मौले बहार, रुत्त बसन्त वड्याईआ। सब ने बोलणा इक जैकार, इक अवाज़ उठाईआ। बवन्जा वार सब करनगे निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। बवन्जा भेंटा करनगे अपर अपार, जिस दा भेव ना कोए जणाईआ। बवन्जा प्रेम दी वजाउँदे आउण सितार, सोई सुरत उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो तुहाडी मेरे नाल हिस्सा पत्ती, सज्जणो दयां जणाईआ। तुसां फ़िकर ना करना रती, रत्न अमोलक हीरयो मिले वड्याईआ। तुहाडा मालक कमलापती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तुसां खुशीआं विच देगां चाढ़नीआं छत्ती, चावल रावल नाल वड्याईआ। बारां नौ अठ्ठ सत्त माझा मालवा दुआबा जम्मू खुशीआं नाल हिस्सा देवण घत्ती, आपणी खुशी बणाईआ। एह मंग मंगी सी सप्तस ऋषीआं जिस वेले बणे जगत दे तपी, तपीश्वर रूप बदलाईआ। राम ने सीता नूं कीती पक्की, सहिज नाल दृढ़ाईआ। कृष्ण ने राधा नूं इशारा कीता नाल अक्खी, अक्खीआं मार जणाईआ। जिस वेले आत्मा परमात्मा दी बणी सखी, सुख़न

सब दे पूर कराईआ। उह दाता गहर गम्भीर जेहड़ा कक्खों करे लखी, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जिस ने चौथे जुग दी तपाउणी भठ्ठी, भठियाला कलयुग नाल मिलाईआ। बवन्जा गुरमुख अग्ग डाहुणगे इक्ठ्ठी, माचिस इक्को वार लगाईआ। मुहम्मद कूकेगा मेरी सदी चौधवीं जांदी नठी, भज्जे वाहो दाहीआ। ईसा अक्ख खोल्ले आपणी पट्टी, पटने वाले नाल मिलाईआ। उठ वेख लै गोबिन्दा निरगुण जोत इक जट्ट दी बण गई जट्टी, जोबन आपणा गई हंढाईआ। ना कोई अक्खर पढ़दी ना कोई लिखदी पट्टी, हरफ़ां वंड ना कोए वंडाईआ। मूसा कहे उसे दे हुक्म विच सानूं भरनी पैणी चट्टी, चेटक अवर ना कोए रखाईआ। कलयुग कहे मेरी डोरी जाणी कटी, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। नारद कहे मैं वी छब्बी पोह नूं बिना तेल तों जगावांगा वट्टी, सब नूं दयां वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वी वसांगा घट घटी, जन भगतो तुहाडे अन्दर डेरा लाईआ। जोत जगावां लट लटी, नूर नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा वक्त सुहावा, जन भगतो मिले वड्याईआ। मेरा प्रभू दे नाल दाअवा, दाअवेदार हो के दयां सुणाईआ। सब दा सचखण्ड विच लग्गणा नावां, निरँकार बिन अक्खरां दए लिखाईआ।
१४३ अन्त छडणा जगत गरावां, गृह मन्दिर संग ना कोए निभाईआ। जन भगतो भगत रहे ना कोए निथावां, सचखण्ड मेला १४३
२४ मिले सहिज सुभाईआ। तुसां आउणा नाल चावां, चाउ घनेरा इक बणाईआ। सतिगुर मिले अग्गों दोवें चुक के बाहवां, बिना २४
तन वजूद तों गलवकड़ी लए पाईआ। तुहाडा नाता जोड़ना बिना भरावां तों वांग भरावां, जेहड़े वीर विछड़ कदे ना जाईआ। किसे ने हौका भरना नहीं हावा, हाए उफ़ ना कोए सुणाईआ। याद रखयो छब्बी पोह कहे तुसां सतिगुर शब्द नाल लैणीआं लावां, लाइन सतिजुग वाली समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिजुग कहे मैं छब्बी पोह ते आवांगा। जोती जाते पुरख बिधाते विच समावांगा। निरगुण धार जोड़ के नाते, रिश्ता आपणा इक वखावांगा। जन भगतो तुहाडे नाल करके दो चार बातें, बातन आपणा भेव खुल्लावांगा। मेरे विच झगड़ा रहिणा नहीं ज़ात पाते, दीन मज़्ब ना वंड वंडावांगा। कलयुग दे पेटे पा के दीन मज़्ब दे खाते, ख़तरा शरअ वाला चुकावांगा। इक्को दस्सके प्रभू दी गाथे, ढोला सोहला राग सुणावांगा। जो होए सहाई अनाथ अनाथे, दीन दयाल इक दृढ़ावांगा। जो लहिणा देणा बदले मस्तक माथे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणावांगा। सतिगुर शब्द कहे छब्बी पोह दिवस दिहाढ़ा होणा चंगा, सच दयां सुणाईआ। कुछ हिस्सा लै के यमुना सरस्वती गोदावरी गंगा, आपणा पन्ध मुकाईआ। भज्जा आवे नाल नारद पंडा, बोदी खुशीआं वाली

हिलाईआ। नाले कलयुग दा दस्सदा आवे कन्ढा, कन्ढी घाट दुहाईआ। कलयुग फड़ के हथ्थ विच विंगा टेढा डण्डा, भज्जे वाहो दाहीआ। नाले धर्म आवे कहे मैं हो गया रंडा, मेरी जगत दुहाईआ। उधरों चमक के कहे गोबिन्द दा खण्डा, खड़गां दए हिलाईआ। वेखो नौ खण्ड पृथ्मी वंडा, हिस्से दीन दुनी जणाईआ। की लहिणा देणा चण्ड प्रचण्डा, तीर तरकशां नाल की खेल खिलाईआ। की इशारा देवे तारा चन्दा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। दो जहान कहिण वेखो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार जोती धार बण गया बन्दा, बन्दगी तों रहित आपणा खेल खिलाईआ। जिस नाम कलमे दा किसे नूं लैण देणा नहीं चन्दा, माया ममता वंड ना कोए वंडाईआ। बिना अनुभव दृष्टी तों रहिण देवे कोई ना पंडा, जगत विद्या लेखा ढाहीआ। लहिणा देणा जाणे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जो मुहम्मद इशारा दिता मेरा मेहरवान खेल करेगा यक शंभा, महिबान बीदो नूर अलाहीआ। उस दा हुक्म वरतणा अचंभा, अचरज आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मग्घरा कुछ कर लै बात, आपणा हाल जणाईआ। तेरी खुशीआं वाली रात, भिन्नड़ी वजे वधाईआ। भगतां तक जमात, बैठे आसण लाईआ। जिन्हां दा मालक
१४४ कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। अन्तिम पुछे वात, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १४४
२४ किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप रखाईआ। मग्घर कहे सतिगुर शब्द मैं दस्सां नाल प्यार, प्रेम विच २४
जणाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कार, जन भगतां सीस निवाईआ। जो आए भगत दुआर, बण के पाँधी राहीआ। सब दी पैज देणी संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राती सुत्तयां सब नूं देणा दीदार, छब्बी पोह तक ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। यारां नूं मिलणा बण के धुर दा यार, यराना सके ना कोए तुड़ाईआ। तूं जोती जाता कन्त भतार, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। शब्दी शब्द शब्द अस्वार, शाह अस्वारा इक अख्वाईआ। सब दा लहिणा देणा देणा कर्ज़ उतार, पूरब लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे कलयुग प्रभू दे वेख लै भगत, भगवन दिती वड्याईआ। नारदा तक लै जगत, दीन दुनी पड़दा आप उठाईआ। सच साहिब दा सोहणा वक्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। निरगुण धार बदल के शक्त, शख़सीअत इक समझाईआ । जन भगत सुहेले बणा के उपर धरत, धवल धौल सुहाईआ। जिन्हां कारन आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ । कौल इकरार पूरी करे शर्त, शरअ तों बाहर कढ्ढाईआ। घर सुहा के उपर अर्श, अर्शी प्रीतम दए वड्याईआ । जन्म जन्म दी मेट के हरस, हवस दए गंवाईआ। जन भगतो सम्मत शहिनशाही दा शहाना जावे बरस, बरसी खुशीआं नाल मनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सची सरकारा।

✪ ७ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस राम लीला ग्राउँड दिल्ली विखे पंजवें विश्व धर्म समेलन समें ✪

सच प्रार्थना उप राष्ट्रपती जोती, जोती हरि जणाईआ। मानव ज़ाती सारी समझणी इक्को गोती, मानस मानुख मानव वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी सुरत उठाउणी सोती, शब्दी डण्डा हथ्थ उठाईआ। मुनी सुशील कुमार बतरा इक्को इक ते इक्को यार ते इक्को लंगोटी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्मा परमात्मा सिख्या सारयां साधूआं सन्तां महात्मा सूफ़ी फ़कीरां दरवेशां जिज्ञासुआं सिआसतदानां राष्ट्रपती उपराष्ट्रपती प्रधान मन्त्रीआं बहुती, बहुती सिख्या कम्म किसे ना आईआ। वेखो खेल इक मंच इक सटेज सारे प्यार मुहब्बत विच इक दूजे दे साथी बण जाओ किसे दी मति रहे ना थोथी, आत्म परमात्म नूर नुराना पारब्रह्म ब्रह्म इक रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, देवणहारा एका वर, एका रंग रंगाए ख़ालक ख़लक खुदाईआ।

✪ ८ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस राम लीला ग्राउँड दिल्ली शहर पंजवीं विश्व धर्म समेलन समें सटेज ते ✪

सुणो सन्तो सूफ़ी फ़कीरो दरवेशो जिज्ञासूओ प्रभू दे प्रेमीओ प्यारयो भगतो वरड कानफ़रंस दा करना हिता नवम्बर दिवस बाई, बाईबल दा लेखा सब दे अन्दरों रिहा जणाईआ। सारे निगाह मार लओ महाराज सन्त कृपाल सिँघ दी धार दी धार विच्चों साडे साहमणे बैठी ऐह ताई, उह तख्तां दा मालक तख्त निवासी तख्त मानव एकता दा रिहा सुहाईआ। अज्ज उस दे प्यार दी हर हिरदे विच दे दयो दुहाई, ढोला सोहला इक्को इक नाम दा गाईआ। मित्रो सज्जणो प्रेमीओ प्यारयो अज्ज उस कृपाल दी जुदाई, जिस दे विछोड़े विच रौणक नज़र कोए ना आईआ। सारे सावधान हो जाओ हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, बोधी जैनी आपणा अन्तर लओ टिकाईआ। मानव एकता जगत कथा कहाणी नहीं रसना कहिणा भाई भाई, अन्तर अन्तर निरंतर आत्म परमात्म दर्शन देणा थांउँ थाँईंआ। वायदा कर लओ इक खुदा इक परमात्मा इक अल्ला वाहिगुरु गॉड उस दे नाम कलम्यां दी अज्ज हथ्थो हथ्थ इक दूजे नाल कर लईए साई, सब दा मालक ते सांई गुसांई इक्को नज़री आईआ।

जिस दी याद विच दीन मज़्ब रीती ततां वाली दुनिया विच चलाई, तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नानक धार गोबिन्द संग बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ साहिब जिस दी अक्खर अक्खर सिफ्तां वाली सलाही, वाहवा कहि के सारे ढोले गाईआ। उस दा इक नाम इक पैग़ाम इक संदेशा इक्को राम इक्को रैहबर जिस नूं सारे सजदयां विच करन सलाम, सलामालैकम कहि के सारे सीस निवाईआ। तुसीं सारे मुसाफ़र आत्म धार परमात्म दे मिलण वाले राही, रैहबर धुर दा इक्को शब्द सतिगुर लैणा बणाईआ। जो तुहानूं सदा नाल लै के चले चाँईं चाँईं, दूई दुवैत दा लेखा दए मुकाईआ। तुहाडा कोई लहिणा देणा जगत ज़िमीं धरनी धरत धवल धौल कायनात विच वख वख नहीं कोई थाँईं, इक तुहाडा टिकाणा सचखण्ड दरगाह साची मुकामे हक जिथ्थे इक्को नूर अलाहीआ। एह ज़िंदगी ज़िंदगानी मातलोक विच भावें इस नूं सैंकड़े बरस समझ लओ ते भावें समझ लओ दिन ढाई, ढईआ गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। जो इलहाम दिता जो पैग़ाम दिता जबराईल वही नाज़ल हो के हज़रत मुहम्मद साहिब नूं संदेशा इक अलाही, सदी चौधवीं कूक कूक रही सुणाईआ। आउ हज़रत मूसा मुसलसल रिहा जणाई, ईसा वीहवीं सदी आपणी नाल मिलाईआ। नानक गोबिन्द गया समझाई, एका रूप सति सरूप पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक इकल्ला जिस नूं सारे सजदयां विच सीस निवाईआ। सच संदेशा नर नरेशा देवणहारा जिस नूं कहिंदे अगम्म अथाही, अलख अगोचर घट घट अन्तर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ । बाई नवम्बर कहे मित्रो मैं आ गया आज, जुग चौकड़ी तों बदल बदल के आपणा पन्ध मुकाईआ। विश्व धर्म वाल्यो मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे बड़े धर्म समाज, रीती नीती मानव मानुख मानुष विच जुग जुग बदलदी आईआ। हुण सारे इक्ठे हो के इक दयो आवाज़, परम पुरख परमात्म असीं तेरे आत्म तूं सब दा पिता माईआ। आपणी सुरती अन्दर मन दी कल्पणा विच्चों जाए जाग, शरअ शरीअत जगत वाला पन्ध मुकाईआ । इक साहिब दा परम पुरख दा वाहिद खुदा दे हुक्म दा चलणा राज, रईयत सारे इक्को वार हो के दयो वखाईआ । तुहाडी इक्को दे हथ्थ विच होवे वाग, इक्को हुक्म देण वाला होवे धुर दा माहीआ। इक्को शब्द इक्को धुन इक्को नाद इक अवाज़ पारज़ात, जिस नूं सारे आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरअक्खर धार अक्खरां विच गाईआ। सब दे उत्तम ते वड्डे श्रेष्ट होण भाग, जो इक मंच उत्ते इक सटेज उत्ते इक धर्म दी धार ते मुहब्बत दे प्यार विच बैठे इक्ठे हो के वड्डे छोटे सभे भाई भाईआ। अगे दा समां वेख्यो इक दो चार पंज छे सतवें साल तों बाद की खेल खेलणा उस परवरदिगार सांझे यार, जिस नूं कहिंदे नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

१४६
२४

खेल धुर दा हरि, धुर दा दाता बेपरवाहीआ। बाई नवम्बर कहे मैं सारे वेखे मुनीश्र जुगीशर तपीश्र फ़कीर साधू सन्त, सज्जे खब्बे अगे पिच्छे ध्यान लगाईआ। सब दा स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार इक्को कन्त, कन्त कन्तूहल कहि के जिस नूं सारे गाईआ । उसे दे नाम उसे दे कलमे उसे दी बाणी उसे दी सिफ्त उसे दी सलाह उसे दे मंत, रसना जिह्वा ढोले गा गा दीन दुनी आपणा झट लँघाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी अगे लँघ गए अणगणत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। अगे सारे मानव इक प्यार विच इक्ठे हो जाओ एस धरती उत्ते रुत बणा दयो बसन्त, पत्त टहणी फल फुलवाड़ी दीन मज़्बां वाली दयो महकाईआ। याद रख लओ सदी चौधवीं दा होण वाला अन्त, बीसवीं दा संदेशा दिता उस नूर अलाहीआ। नानक दी धार ने गोबिन्द उपजाए सन्त, ढईए दा लेखा जणाए बेपरवाहीआ। सोए नहीं रहिणा सब जीव जंत, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बच्चा बच्चा सारे अन्तर निरंतर आपणी अक्ख लओ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आपणे हथ्थ रखाईआ। बाई नवम्बर कहे मेरा इक्ठु कीता मुनी सुशील, सुशीलता विच जणाईआ। पर मैं इक दिवस

१४७ दिहाढ़ा मेरी मानवता अगे अपील, बिन हथ्थां तों हथ्थ बन्न्ह के दयां सुणाईआ। जगियासूओ संसारीओ धर्म दे प्यार विच अन्दरों १४७

२४ बदल लओ आपणी दलील, मन दे विचार मन विच लओ दबाईआ। तुहाडा लहिणा देणा उस दरगाह ते सच्चे घर विच २४

जिथ्थे इक्को मालक सारयां दा छैल छबील, जिस दीन मज़्ब दा लेखा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ।

✪ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

पंज तत कहिण प्रभ आदि जुगादी निहकेवा, निहचल धाम धुर दे राम तेरी वड्याईआ। नाम निधान श्री भगवान तेरा अगम्म मेवा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन रसना जिह्वा चखाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी निरगुण धार देवी देवा, देव आत्मा परमात्मा तेरी ओट तकाईआ। सति सरूप शाहो भूप पंज तत कहिण साडी लेखे लाउणी सेवा, भगत सुहेले दर तेरे सेव कमाईआ। नाम निधान नौजवान कौस्तक मणीआ मस्तक ला दे थेवा, दो जहान तेरी ओट रखाईआ। तेरी सिफ्त सलाह बेपरवाह करीए नाल जिह्वा, मुख रसना नाल वड्याईआ । पुरख अकाले दीन दयाले तूं अलख अगोचर अगम्म अथाह अभेवा, भेव आपणा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ।

पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्शणी चरण धूड़, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। दीन दयाल जाए ना भूल, अभुल देणी माण वड्याईआ। साडा लेखा रहे ना शंकर नाल त्रशूल, त्रैलोकी दा पन्ध देणा मुकाईआ। तेरा सच सिंघासण शब्द भंघूड़ा लईए झूल, हुलारा दो जहान जणाईआ। तूं मालक ख़ालक स्वामी कन्त कन्तूहल, हरि करता इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे हथ्थ साडा मूल, आदि अन्त तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं सेवक तेरे बरदे, दर ठांडे सेव कमाईआ। बच्चे तेरे घर दे, गृह देणी माण वड्याईआ। दीन दुनी ना रहीए सड़दे, अग्नी तत देणी बुझाईआ। चुरासी विच ना रहीए लड़दे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध देणा मुकाईआ। राय धर्म कोलों ना रहीए डरदे, चित्रगुप्त ना लेख बणाईआ। सदा सदा सद तेरा दर्शन रहीए करदे, बिन नैणां नैण बिघसाईआ। साडा नवां घाड़न घड़ दे, जीवण जगत जुगत बदलाईआ। तेरी मंज़ल जाईए चढ़दे, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सानूं शब्दी आपणा वर दे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं सेवक भगत दुआर, नन्हे बच्चे रूप वटाईआ। तूं साडा पालणहार, सिर सिर हथ्थ रखाईआ। साडा लहिणा सदा रहे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वजदी रहे वधाईआ। भेव रहे ना पुरख नार, बृद्ध बालां नौजवानां मेल मिलाईआ। आपणे रंग रंगणा करतार, कुदरत दे मालक देणी वड्याईआ। साडी कबूल करनी निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच दर तेरे सीस निवाईआ। तूं बख्शणहार इक निरँकार, निरवैर तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढणा बाहर, दुरमति मैल देणी धुआईआ। अमृत रस देणा ठण्डा ठार, अग्नी तत तत गंवाईआ। मस्तक धूड़ बख्शणी छार, टिक्के ख़ाक रमाईआ। तूं साचा परवरदिगार, सांझा यार इक अख्वाईआ। दर तेरे करीए पुकार, कूक कूक सुणाईआ। तूं देणा इक अधार, हर हिरदा वेख वखाईआ। भगतां बणना मीत मुरार, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। असीं सेवक दर तेरे भिखार, भिक्खकां भिच्छया देणी पाईआ। सदा सदा सद तेरा करदे रहीए दीदार, दीन दयाल दर्शन अगम्म अथाहीआ। साची मौली रहे बहार, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। भगत सुहेले तेरा गुलशन तेरी अगम्म गुलज़ार, बिन तेरे समझ कोए ना पाईआ। साडा लहिणा देणा तेरे हथ्थ करतार, कुदरत कादर तेरी शरनाईआ। लख चुरासी विच्चों तेरे भगत सुहेले थोड़े दो चार, बहुती गणत ना कोए गिणाईआ। साडी आशा मनसा पूरी करनी विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव वेखण चाँईं चाँईआ। तेई अवतार जाण बलिहार, खुशीआं ढोले गाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहे

पुकार, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। नानक गोबिन्द बोले जैकार, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर किछ कहिण कोए ना पाईआ। भगत सुहेले देणे तार, दर तेरे आस रखाईआ। पंज तत तन सेवक सेवादार, साची सेव कमाईआ। वीह मग्घर कहे मैं खुशीआं दा करां इज़हार, सिफ्ती ढोले गाईआ। मंज़ल किसे ना रहे कोई दुष्वार, पाँधीआं पन्ध देणा मुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत तेरा परिवार, परम पुरख तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा चरण कवल उपर धवल इक उधार, उदर दा लेखा देणा मुकाईआ।

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड डडवां ज़िला गुरदासपुर जुगिंदर सिँघ दे गृह,
जगीर सिँघ सोहल, परसिंन कौर फ़तिह नंगल, दर्शन सिँघ नयाशाला,
कर्म सिँघ नयाशाला ✪

१४६ पंज तत कहिण प्रभ आदि जुगादि तेरे मीत, मित्र प्यारे एकँकारे दईए दृढ़ाईआ। नित नवित जुग चौकड़ी तेरी वेखी १४६
२४ नीत, पतित पुनीत बेपरवाहीआ। साडा लहिणा देणा लेखा जुड़या रिहा नाल मन्दिर मसीत, ततां वंडण वंड वंडाईआ। तूं २४
पुरख अकाला दीन दयाला त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी सरनाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना सानूं कर दे ठांडे सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। आत्म परमात्म तेरा गाईए गीत, गोबिन्द मेला होवे सहिज सुभाईआ। नव सत पवित्र कर दे नीत, नीतीवान तेरी वड्याईआ। मानस देही दीन दुनी लईए जीत, जग जीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। मनुआ मन तेरे हुक्म विच होवे भय भीत, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। सति सच बख्श चरण प्रीत, प्रीतम इक्को आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा जावे लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। त्रैगुण मूल ना साड़े अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दर्शन देणा निरगुण धार उपर शाहरग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। तेरा दीपक जोती नूर नुराने जाए जग, अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ । आत्म धार परमात्म मूल ना रहे अलग, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं मांगत दर भिखारी, भिच्छया नाम देणी वरताईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारी, हरि करता इक अख्वाईआ। साडी पैज

देणी संवारी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वंड रहे ना पुरख नारी, नर नरायण तेरी बेपरवाहीआ। जन भगतां आत्मा रहे ना कँवारी, कन्त कन्तूहल लैणी परनाईआ। एथे उथे दो जहान देणा उधारी, उदर दा लहिणा देणा देणा मुकाईआ। सच नाम दी बख्श खुमारी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। गृह मन्दिर वखा दे आपणी अटारी, सचखण्ड साचा इक जणाईआ। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, बिन तेल बाती डगमगाईआ। बिन शब्द नाद होवे धुन्कारी, अनरागी राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लैणा मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पूरी करनी आस, तृष्ना कूड़ जगत मिटाईआ। साडे अन्तर दे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा अन्तष्करन रहे ना राईआ। बिन गोपी काहन पा दे रास, मण्डल मण्डप वजदी रहे वधाईआ। तेरा नाम जपीए बिना रसन स्वास, अजपा जाप देणी वड्याईआ। पन्ध मुकाउणा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां डेरा ढाहीआ। तूं परमात्मा वसणा साडे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। मानव मानस मानुख जन्म करना रहिरास, रस्ता इक्को इक दरसाईआ। मनुआ मन ना रहे उदास, मति बुद्ध ना कोए हल्काईआ। साडा लहिणा मुका दे नालों शंकर कैलाश, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार कराउणा वास, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। मढ़ी गोर दा लेखा रहे ना विच प्रभास, जंगल जूह ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ दर तेरे होए मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। मेल मिला दे साची संगते, सतिगुर शब्द नाल कुड़माईआ । जगत जहान मंज़ल जाईए लँघदे, अगे हो ना कोए अटकाईआ। लेखे मुका दे ग़मी रंज दे, खुशीआं रंग चढ़ाईआ । असीं दुआरा तेरा पंज तत मंगदे, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले दो जहानां साडा संग दे, सगला साथ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्श दे चरण धूड़, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। नाता तुट्टे कूड़ो कूड़, सति सच विच समाईआ। चतुर सुघड़ बणा लै मूर्ख मूढ़, मुगधां आपणा रंग चढ़ाईआ। शरअ दा रहे कोई ना जूड़, जगत ज़ंजीर देणा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ भगत सुहेले तेरे लोकमात, धरनी धरत धवल सुहाईआ। किरपा कर दे कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। साडा झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। चरण कवल जोड़ दे नात, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। अठ्ठे पहर करीए प्रभात, दिवस रैण ना वंड

वंडाईआ। किरपा करनी प्रभू प्रभ आप, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साडा लेखा रहे ना रोग संताप, सच जाप देणा समझाईआ। जन्म कर्म दे मेटणे पाप, पतित पुनीत बणाईआ। तूं जोती जाता साडा बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। साडी सची थापणा थाप, सतिजुग सच दे वड्याईआ। कलयुग पिछली पिच्छे रह जाए वाट, अगला पन्ध ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच देणी अगम्मी दात, दाते दानी मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड शोहण ज़िला गुरदास पुर ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा मुका दे उलटा रुक्ख, गर्भवास फंद रहिण ना पाईआ। निरगुण धार बख़्श दे साचा सुख, सतिगुर शब्द होणा सहाईआ। उजल करदे दीन दुनी विच मुख, दुरमति मैल रहे ना छाहीआ। जगत तृष्ना मेट दे भुख, माया ममता मोह मिटाईआ। कूड़ क्रिया विच्चों बदल दे रुख, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत
१५१ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा मेट १५१
२४ दे दीन दुनी, लोकमात रहिण ना पाईआ। सच पुकार एकँकार आप सुणी, बिन रसना जिह्वा ढोले दईए जणाईआ। तूं शाहो २४
भूप वड गुण गुणी, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ । तेरे नाम दी सदा अन्तर उपजदी रहे धुनी, धुन आत्मक राग देणा दृढ़ाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक शाहो भूप कुंनी, गहर गम्भीर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा रहे ना लोकमात, तन वजूद तेरी भेंट चढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी पित मात, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। निरवैर निराकार निरँकार जोड़ लै नात, साक सज्जण इक अख्वाईआ। जे आत्मा जोती जाते तेरी ज़ात, पंजां ततां हो सहाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साडी पुछणी वात, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश इक्ठे हो के सीस निवाईआ। सति सच तेरे नाम दी मिले दात, दाते दानी देणी वरताईआ। तेरा खेल तक्कीए बहु बिध भांत, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। अमृत रस देणा अगम्मी बूँद स्वांत, बिन रसना जिह्वा चखाईआ। तेरा दर्शन होवे इक इकांत, नूर नुराने साचा नूर देणा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, ख़ाली झोली देणी भराईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे भगत सुहेले, दर तेरे आस तकाईआ। निरगुण धार सरगुण करने मेले, मेल मिलाउणा चाँईं चाँईंआ। एका रंग रंगाउणे गुरु गुर चेले, गुर शब्द

तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तूं अचरज खेल खेले, अलख अगोचर अगम्म अथाह इक अख्वाईआ। साडा आवण जावण पतित पावन कट दे राय धर्म दी जेले, चुरासी फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। सदा वसीए तेरे धाम नवेले, सचखण्ड देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी धार इक जणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ किरपा कर निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। असीं मंगते बणे भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। वस्त अमोलक देणी डार, करते कीमत ना कोए जणाईआ। मेहर नज़र नाल देणा तार, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। शब्दी शब्द बख्श प्यार, प्रीतम मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। सानूं वखाउणा सचखण्ड दुआर, दरगाह साची इक जणाईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगे अपार, अपरम्पर स्वामी तेरा नज़री आए नूर अलाहीआ। आवण जावण रहे ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव दा लेखा देणा मुकाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक साडा बणना कन्त भतार, कन्तूहल तेरी इक्को सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे गृह मन्दिर, दूसर दर ना कोए वड्याईआ। साडा लेखा रहे ना अन्धेरी कंदर,
१५२ अन्ध अज्ञान देणा मिटाईआ। बजर कपाट तोड़ दे जंदर, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। मनुआ दहि दिश उठ ना धाए १५२
२४ बन्दर, बन्दगी सच देणी समझाईआ। प्रकाश देणा बिना सूर्या चन्द्र, जोती जाते इक्को नूर देणा चमकाईआ। साडी मन्ज़ूर २४
करनी बन्दन, बन्दगी विच सीस निवाईआ। जे तूं आत्मा परमात्मा देवे अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। तूं साहिब सुल्ताना आदि जुगादि हारा टुट्टी गंढुण, सति सच गंढु पुआईआ। असीं तन वजूद रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा गाउँदे छन्दन, ढोले सिफ्त सलाहीआ। अन्त सानूं लाउणा अंगण, अंगीकार इक अख्वाईआ। साडा पन्ध मुकाउणा धरनी धवल आकाश ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड दा डेरा ढाहीआ। लेखा रहे ना जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। निरगुण धार आपणे चुकणा कंधन, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे प्यार विच करन बन्दन, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। सानूं पार कराउणा बिना मुहाणे वञ्झण, दो जहानां पन्ध ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ निरगुण तेरी कीती सेव, सरगुण सच सच सरनाईआ। तूं दाता अलख अभेव, अगोचर अगम्म इक अख्वाईआ। सदा सदा निहकेव, निहचल बैठा आसण लाईआ। तेरी सिफ्त करे की जिह्वा, रसना ढोला की वड्याईआ। तूं आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद वड वड्डा देवी देव, देवत सुर सब बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग बणाईआ। पंज तत

कहिण प्रभ साडी भगती धार मंग, भगवन आसा इक जणाईआ। जोती जाते चाढ़ दे रंग, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सुखआसण डेरा लाईआ। निझर झिरनिउँ बख्श अनन्द, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। नाभी कवल सुणा छन्द, अनरागी राग दृढ़ाईआ। साडी खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी तेरे चरण कवल शरनाईआ। जे आत्मा भगतां होवे कदे ना रंड, कन्त सुहाग इक हंढाईआ। क्यों नहीं पंजां ततां पाउँदा ठण्ड, अग्नी अग्ग बुझाईआ। साडा झगड़ा मुका दे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज जूनी जून ना कोए भुआईआ। तेरी मंज़ल महबूब जाईए लँघ, अगे सके ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार परवरदिगार तेरा माणीए अनन्द, सांझे यार मिलके वजे वधाईआ। असीं बेनन्ती करीए भगतां तत पंज, पंचम दे मालक मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। ना खुशी रहे ना रंज, ग़मी ग़मखार देणी मिटाईआ। साडा लेखा रहे ना जगत अन्धेरा अन्ध, सच प्रकाश विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सदा जुआन जोबनवन्ते श्री भगवन्ते इक तेरी ओट तकाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड अल्लड़पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरा अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी अगम्मी मंग, अगम्म अथाह बेपरवाह दईए जणाईआ। निरगुण धार सरगुण चोली रंग, रंग मजीठ अनडीठ आप चढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान होणा संग, सगला साथी पुरख समराथी आप रंगाईआ। नाम निधान नाल कट भुख नंग, तृष्ना तृखा जगत जुगत दूर कराईआ। दीन दयाल तेरी मंज़ल हक महबूब जाईए लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सच प्यार दी वखा गंग, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ भगतां दे दे सच दा नाम, नाउँ निरँकार दे वरताईआ। भाग लगा दे काया माटी चाम, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। प्रकाश करदे नगर खेड़े ग्राम, तन वजूद डगमगाईआ। मेला मेल स्वामी आपणा आत्मा राम, राम रहीम रहमत देणी कमाईआ। अन्तर रहे ना अन्धेरा शाम, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। बिना ज़बान प्या दे जाम, हकीकी हक हक प्याईआ। मनूए मन दा , हुक्म धुर दा इक समझाईआ। बिना अक्खरां निरगुण धार दे कलाम, कलम्यां बाहर शनवाईआ। तेरे चरण कवल होए प्रणाम, निमस्कार इक्को इक वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तन वजूद शरीर, माटी ख़ाक ख़ाक नज़री आईआ । तूं शहिनशाह शाह पातशाह बेनज़ीर, नूर नुराना नूर अलाहीआ। साडी आशा पूरी कर दे जो संदेशा दे के गया कबीर, कबरां तों बाहर गया शनवाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी साडी बिना ततां तों कर तामीर, बाडी आपणी घाड़त घड़ाईआ। साडी आशा मनसा ना होए दिलगीर, मन का मणका दे बदलाईआ। तेरे कोल हक हकीकत दी तदबीर, तरीका नीकन नीका इक समझाईआ। साडा लेखा वेख अन्त अख़ीर, आख़र दईए समझाईआ। जे भगतां आत्मा तेरा वज़ीर, तूं पीरन पीर नूर अलाहीआ। असीं तन वजूद जगत वस्त्र चीर, चिरी विछुन्ने वेख वखाईआ। किरपा कर दे मालक गहर गम्भीर, गवर तेरी ओट तकाईआ। नेत्र साडे विरोलण नीर, नैणां छहबर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेख लै अन्तष्करन, बिन नैणां नैण उठाईआ। सहारा दे दे अगम्मे चरण, बिना तन वजूद नज़री आईआ। तूं आदि जुगादी करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। साडा लहिणा देणा मुका दे उत्ते धरन, धरनी धवल धौल नाल रलाईआ। साडा अन्तर आत्मा तेरी प्या शरन, सरनगति इक अख्वाईआ। साडा झगड़ा मिटया वरन बरन, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। पंज तत कहिण असीं तेरी चाहुंदे मंज़ल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सानूं सचखण्ड देणा वड़न, पिछले जुगां दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर चाउ घनेरा, खुशीआं ढोले गाईआ। जे भगतां आत्मा रूप तेरा, क्यों पंजां ततां दएं जुदाईआ। साडे उत्ते कर दे मेहरा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। इक्को रंग रंगा दे सञ्झ सवेरा, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। साडा आपणे गृह बणा दे खेड़ा, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। चुरासी विच रहे ना गेड़ा, जम की फाँसी दे कटाईआ। साडा पन्ध कर दे नेरन नेरा, दूर दुराडा राह ना कोए वखाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सतिगुर शब्द शेरा, तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरा रूप, तुध बिन अवर ना कोए ध्याईआ। तूं शहिनशाह साडा भूप, पातशाह बेपरवाहीआ। साडा लेखा मुका दे अन्ध कूप, जोती जाते कर रुशनाईआ। तेरा सतिगुर शब्द आदि जुगादी धुर दा दूत, दो जहानां वेख वखाईआ। सानूं लै जाए तेरी कूट, काया कुटीआ फेर ना कदे वसाईआ। नाता तुट जाए जूठ झूठ, माया ममता मोह ना कोए हल्काईआ। साडे उत्ते साहिब सुल्ताने तुठ, दर तेरे वास्ता पाईआ। साडी सुंहजणी

कर दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तूं पतिपरमेश्वर पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चारों कुण्ट तेरी दुहाईआ। सानूं आपणे बणा लै सुत, अप तेज वाए पृथ्मी, आकाश तेरे अगे वास्ता पाईआ। असीं तेरयां भगतां दा जगत सुहाया बुत, जिस बुतख़ाने विच आत्मा दिता टिकाईआ। जे आत्मा साडे विच्चों ल्या चुक, सचखण्ड खण्ड कीती रुशनाईआ। क्यों साडे कारन गयों रुक, रुक्का गोबिन्द दा दए गवाहीआ। असीं तेरी गाई तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला धुरदरगाहीआ। अन्त साडी वात पुछ, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आशा पूर कराईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा साचा घाड़न घड़ दे, घड़न भंडणहार तेरी वड्याईआ। लहिणे देणे चुका दे चेतन जड़ दे, चोटी जड़ ना वंड वंडाईआ। तेरा ढोला गीत रहीए पढ़दे, सोहला बिन अक्खर धार समझाईआ। सचखण्ड दुआर जाईए वड़दे, अगे हो ना कोए अटकाईआ। बरदे बणीए तेरे दर दे, दर ठांडे सेव कमाईआ। कुफ़ल खोल्ह दे आपणे घर दे, गृह मन्दिर दे वखाईआ। जिथ्थे दर्शन होण नरायण नर दे, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। लेखे पूरे कर दे कलयुग कल दे, कल कातीआ डेरा ढाहीआ। साडे वायदे वेख लै राजे बलि दे, बावन दए गवाहीआ। त्रेते जुग विच संदेशे रहे घलदे, राम सीता नाल वड्याईआ। द्वापर आशा विच रहे फलदे, काहन कृष्ण गया समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साडे विछोड़े मेट दे घड़ी पल दे, सद आपणे रंग रंगाईआ। असीं वणजारे नहीं जल थल दे, महीअल वंड ना कोए वंडाईआ। जे भगतां आत्मा परमात्मा तेरे विच रलदे, क्यों पंजां ततां दएं जुदाईआ। पिच्छे केते जुग तेरा विछोड़ा आए झलदे, अगे विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगतां दी भगती तेरी धार, धर्म धर्म नाल जणाईआ। साडा लहिणा देणा वेख विच संसार, दीन दुनी दे मालक ख़ालक पड़दा आप उठाईआ। दर दरवेश नर नरेश तेरे होए भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी जोती जाता पुरख बिधाता कलि कल्की अवतार, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार साडी पैज संवार, महिबान बीदो बी ख़ैरया तेरी ओट तकाईआ। तूं नूर नुराना शाहो भूप सिक्दार, परवरदिगार यांझा यार अगम्म अथाहीआ। असीं बुतख़ानयां विच होए बेज़ार, बन्दीख़ाने दे तुड़ाईआ। सानूं शरअ दे विच्चों कर फ़रार, फ़ुरस्त दीन दुनी विच्चों दवाईआ। साडा तेरे नाल नहीं कोई तकरार, झगड़ा जगत ना कोए जणाईआ। वायदा वेख लै जो कीता कौल इकरार, इकरारनामे फोल फुलाईआ। तूं माही महबूब मुहब्बत नाल बख़्श प्यार, आशा आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका दे पुरख नार, नर नरायण तेरी सरनाईआ। जे आत्मा दिता अधार, भगतां होया सहाईआ। क्यों

भगतां दे तत शरीर तेरे सचखण्ड दुआरे विच्चों रहिण बाहर, अग्नी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। असीं जाणा तेरे उस दुआर, जिथ्थे द्वारका वासी बैठे सीस निवाईआ। इक्को शब्द होवे धुन्कार, नादी धुन सुणीए चाँईं चाँईंआ। इक्को दीपक जोत होवे उज्यार, बिन तेल बाती डगमगाईआ। इक्को शाहो भूप होवे सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लहिणा देणा तेरे होवे विच दरबार, दरगाह साची वजे वधाईआ। जन भगतां आत्मा नाल कीता जगत विवहार, विवहारी देईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर दूसर पाए कोई ना सार, महासार्थी नज़र कोए ना आईआ।

२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास मुणशा सिँघ मेला सिँघ हज़ारा सिँघ
दलीप सिँघ प्यारी दलीप सिँघ दीदार सिँघ सन्ता सिँघ हज़ारा सिँघ मुणशा सिँघ
आसा सिँघ बलाका सिँघ प्यारा सिँघ रवेल कौर करतार कौर मक्खण सिँघ भाग सिँघ
दर्शन कौर विरसा सिँघ महिन्दर कौर हरनाम कौर

पंज तत कहिण प्रभ साडा रूप बणदा रिहा लख चुरासी, चुराहा जगत जहान वेख वखाईआ। आत्म धार परमात्म तूं साडे अन्दर करदा रिहों वासी, वास्ता तन वजूद वखाईआ। खेल खेलदा रिहों कर कर हासी, हस्ती विच मस्ती आप जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी होई ना बन्दखुलासी, बन्धन सक्या ना कोए तुड़ाईआ। असीं बणदे रहे तन वजूद मदिरा मासी, खूंखार रूप बदलाईआ। तेरा नाम जपदे रहे स्वास स्वासी, साह साह ध्याईआ। साडी कटी ना गलों सिलक जम फाँसी, फ़ैसला हक ना कोए सुणाईआ। सुण शाहो भूप पुरख अबिनाशी, हरि करते दईए दृढ़ाईआ। साडे अन्तर निरंतर आई उदासी, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण असीं फिरदे रहे विच चुरासी लख, अलख अलखणे तेरा खेल वेख वखाईआ। साडे तन वजूद भाण्डे रहे सख, सच वस्त ना कोए वरताईआ । साडी दीन दुनी कीमत रही कोई ना कौडी कक्ख, दर तेरे अगे इक दुहाईआ। असीं जूनी भोगी वख वख, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जे वाहो दाहीआ। अन्त जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं पुरख अकाले दीन दयाले होया प्रतख, साहिब सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा नाम जैकारा बोलीए इक अलख, अलख अगोचर तेरी इक ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं फिर फिर वेखी लख चुरासी जूनी, अजूनी रहित तेरी सरनाईआ। तूं हुक्म दा मालक हाकम इक कानूनी, कायदा बाकायदा आपणा ल्या बणाईआ। तेरा नूर ज़हूर वड जनूनी, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। तेरा हुक्म फ़रमान संदेश नहीं कोई मामूली, मालक ख़ालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं सांझा यार कन्तूहली, निरवैर इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण साडी धार रहे ना भूली, अभुल देणी वड्याईआ। कोटन वार राय धर्म दी चढ़े सूली, फाँसी गल ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ लख चुरासी भोगया भोग, भस्मड़ रूप ना कोए दरसाईआ। साडा कर्म कर्म दा मिटया ना रोग, दुखी हो के देईए दुहाईआ। चिन्ता चिखा खा गया सोग, ग़मी ग़मखार ना कोए गंवाईआ। पुरख अकाले प्रितपाले तेरे नाल होया ना कोए संजोग, मिलणी हरि जगदीश ना कोए कराईआ। कुदरत दे कादर आपणी वखा मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। साडी बुद्धी बसुधी विच कर सके ना खोज, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। चरण प्रीती बख्श दे इक्को जोग, जुगती नाम वाली दृढ़ाईआ। तेरा दर्शन करीए स्वामी रोज़, बिन नैणां नैण बिघसाईआ। प्रीतम प्रेम वाला करना चोज, प्यार मुहब्बत इक रखाईआ। आपणा भेव खुलाउणा गोझ, पर्दा परदयां विच्चों खुल्हाईआ। साडा जन्म दे सोध, सुदी वदी ना वंड वंडाईआ। हुक्म संदेशा दस्स दे अगाध बोध, बुद्धी तों परे तेरी पढ़ाईआ। तृष्ना तृखा रहे ना लोभ, लालच देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा चुरासी वाला चकर, चक्रवत्रिया की खेल खिलाईआ। तेरा खेल अगम्मा कोई वाच ना सके पत्र, निरअक्खर धार समझाईआ। समझ आवे ना कोई सतर, सत्ता बुलंदी वेखण कोए ना पाईआ। तेरा सतिगुर शब्द निराला फ़क्कर, फिकरे गुर अवतार पैग़म्बरां गया पढ़ाईआ। निरगुण धार एकँकार जिवें पंजां ततां कीता इकत्तर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ाईआ। साडा गृह बख्श दे सच नछत्तर, निरगुण आपणे रंग रंगाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते आपणा वखा दे वतन, बेवतनां पड़दा लाहीआ। साडा कम्म ना आवे कोई यतन, यथार्थ दईए दृढ़ाईआ। असीं ग़रीब निमाणे तूं हीरे बणा लै रत्न, अमोलक रूप दरसाईआ। चरण प्रीत जोड़ लै नतन, नाता बिधाता इक रखाईआ। लहिणा देणा दे दे हथ्थो हथ्थन, अगे उधार ना कोए वखाईआ। तेरी सरन सरनाई इक्को वार सारे ढठ्ठण, निव निव लागण पाईआ। तूं साहिब पुरख समरथण, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं लख चुरासी ल्या भर्म, जुग जुग फेरा पाईआ। तन वजूद

हंढाए माटी चर्म, जगत जुगत जणाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात वेखे धर्म, धरनी धरत धौल सुहाईआ। निरगुण सरगुण तेरा खेल अगम्म आपणा वेख लै ब्रह्म, ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। नूर नुराने शाह सुल्ताने साडा मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। साडा लेखा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात ना रंग रंगाईआ। दरोही तेरा सच दुआरा ते इक्को मंगदे शरन, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। तूं करता पुरख करनी करन, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। तेरा पल्लू गहर गम्भीर आए फड़न, आत्म परमात्म देणा फड़ाईआ। तेरी मंज़ल हक महबूब आए चढ़न, बिन कदमां कदम टिकाईआ। तूं खुशीआं नाल आपणे गृह मन्दिर सचखण्ड दुआर देणा वड़न, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी लख चुरासी तक्की, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। तूं मालक ख़ालक नूर अलाही हकी, हकीकत आपणी इक समझाईआ। मेहरवाना महबूबा साडा पड़दा अन्तिम ढक्कीं, ओढण नाम सीस टिकाईआ। साडी धार फिर फिर थक्की, थकावट विच दुहाईआ। इक वार निरँकार साडे वल तक्कीं, बिन नैणा नैण उठाईआ। कौल इकरार वायदे वेख लै जो गुर अवतार पैग़म्बरां नाल कीती पक्की, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। साडा वक्त सुहञ्जणा होवे लक्की, खुशीआं नाल ढोले गाईआ। लख चुरासी पीसणी पए फेर ना चक्की, चार जुग दा लहिणा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी धार प्यार वाली सदा सदा सद साजण मीत होवे सकी, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ।

२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर कर्म सिँघ महिंगा सिँघ जरनैल सिँघ
बीबी देवां बीबी गुरो राम कौर चतुर कौर गुरमेज सिँघ सदा चरण सिँघ दर्शन सिँघ अजीत सिँघ
राज सिँघ हेमराजपुर छिन्दो मदेपुर दीपो उच्चा पिण्ड गुरमेज कौर कठिआली

पंज तत कहिण प्रभ तेरे चरण कवल निमस्कारी, नमो नमो सीस जगदीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे वल्ल निगाह मारीं, बिन नेत्र नैणां नैण उठाईआ। जुग चौकड़ी सानूं हुन्दी रही ख्वारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदे रहे दुहाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फिरदे रहे वारो वारी, आप आपणा रूप बदलाईआ। तेरा लहिणा देणा तेरे हथ्थ जोत निरँकारी, निरवैर तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त पैज दे संवारी, स्वार्थ अवर ना कोए रखाईआ। सानूं लै जा सचखण्ड

दुआरी, दरगाह साची सच टिकाईआ। जिथ्थे दीपक जोत होवे उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द नाद होवे धुन्कारी, अनरागी राग शनवाईआ। तेरे चरण कवल जाईए बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जे आत्मा तैनूं लग्गे प्यारी, प्रीतम साडा मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। साडी मंज़ल कट दुष्वारी, दर तेरे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा तन वजूद लेखे लाउणा, लगमातर डेरा ढाहीआ। सीस हथ्थ टिकाउणा, मेहर नज़र इक उठाईआ। पूरब लेखा मात चुकाउणा, धरनी धरत धवल धौल रहिण ना पाईआ। सानूं आपणे घर वसाउणा, दरगाह साची सच मिले वड्याईआ। नाता दीन दुनी तुड़ाउणा, जगत वंड ना कोए वखाईआ। असां तेरा दर्शन पाउणा, दूजा इष्ट ना कोए जणाईआ। जोती जाते आपणी जोत मिलाउणा, जागरत जोत विच समाईआ। आदि जुगादी पन्ध मुकाउणा, चुरासी वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी शरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्श दे अगम्मा दर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साडा पूरा होवे वर, पूरब लेखा रहे ना राईआ। तेरे चरण कवल नहाउणा साचे सर, सरोवर इक्को इक वड्याईआ। दो जहानां जाईए तर, तारनहार तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवान हो के किरपा कर, करता पुरख अगम्म अथाहीआ । तूं आदि जुगादी नरायण नर, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। जुग चौकड़ी दुखड़े लोकमात लए भर, भरमां विच भरम भुलाईआ। साडा राय धर्म चुका दे डर, लेखा अवर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा तेरे नाल होवे जोड़, जोड़ी हरि जगदीश बणाईआ। पुरख अकाले अन्तर बौहड़, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। शब्द अगम्मी चाढ़ना घोड़, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा लेखा नाल ब्राह्मण गौड़, गोबिन्द धार तेरी सरनाईआ। साडी आवण जावण मुका दे दौड़, लख चुरासी पन्ध रहे ना राईआ। साडा रस ना वेखीं मिठ्ठा कौड़, अमृत धार लैणी प्रगटाईआ। पन्ध रहे ना लम्मा चौड़, मंज़ल मंज़ल होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण सच वखा दे आपणा महल, मेहरवान दया कमाईआ। गृह वेखीए इक अटल, जिथ्थे वजे नाम वधाईआ। जिस नूं कहिंदे सदा निहचल, निहकामी देणा दरसाईआ। तन वजूदां ला दे फल, पत्त टहणी आप महकाईआ। कूड़ विकारा मेट दे दल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अमृत धार बख्श दे जल, बूंद स्वांती इक टपकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे कल, कलकाती रहिण कोए ना पाईआ। साडी मुश्किल कर हल, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साडे नाल

करे ना कपट छल, वल छल धारी होणा आप सहाईआ। तेरे चरण कवल जाईए बलि बलि, बलि बलि आपणा आप कराईआ। साडा विछोड़ा होवे घड़ी ना पल, पलकां दे पिच्छे बहि के दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। अन्तिम तेरी जोत धार जाईए रल, तन वंड ना कोए वंडाईआ। दीपक दीप हो के जाईए बल, नूर नुराने नज़री आईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण लईए मल्ल, सोभावन्त देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा लेखा मेटणा जल थल, महीअल वंड रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २४ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ज्ञान सिँघ चतुर सिँघ अतर सिँघ लखा सिँघ हरदीप सिँघ तरलोक सिँघ बिशन सिँघ ओगरा चरण सिँघ अन्तोर संसार हेमराजपुर चरण सिँघ सन्तोख सिँघ सोहण सिँघ ज्ञानो अवतार सिँघ सकोल प्रीतो अन्तोर ✪

पंज तत कहिण प्रभ तेरा खेल नित नविता, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक तेरा हुन्दा रिहा हिता, हितकारी निरँकारी इक्को नज़री आईआ। परम पुरख परमात्म वसदा रिहों निरगुण धार साडे चित्ता, ठगौरी जगत ना कोए जणाईआ। सानूं बालां तों बणा के अन्त माता पिता, पति पत्नीआं गंढु पवाईआ । तेरी समझ ना आवे केहड़ी सुहञ्जणी वार थिता, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। दो जहान श्री भगवान नौ खण्ड तेरा ख़िता, मण्डल मण्डप वजदी रहे वधाईआ। तन वजूद शरीर माटी ख़ाक पुरख अकाले दिता, देवणहार तेरी इक सरनाईआ। अन्त कन्त भगवन्त चढ़दे रहे अग्नी धार दी चिता, चिखा मढ़ी गोर नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जुग चौकड़ी साडा गवाह, शहादत सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहे भुगताईआ। लेखा तक लै अगम्म अथाह, बेपरवाह तेरी ओट तकाईआ। जूनीआं विच सानूं दिता भुआ, लख चुरासी भज्जे वाहो दाहीआ। रसना जिह्वा मानव धार तेरा गाउँदे रहे नाँ, ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। थान थनंतर वेखदे रहे तेरे थाँ, भज्जदे रहे वाहो दाहीआ। साडा लहिणा देणा जुड़या नाल सूर गाँ, दीन मज़्ब तेरे हुक्म रंग रंगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी फड़ी किसे ना बांह, सिर हथ्थ ना किसे टिकाईआ। अन्त तूं ही पिता तूं ही माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच स्वामी अन्तरजामी सिर दे ठण्डी छाँ, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। साडी बुद्धी रहे वांग ना काँ, हँस

रूप लैणे बदलाईआ। तेरी वड्याई विच करीए वाह वाह, वाहवा तेरी इक सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर वस्त नाम वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा वेखीए थान थनंतर, गृह मन्दिर दे वड्याईआ। सच दस्स नाम अगम्मा मन्त्र, मंतव सारे हल कराईआ। साडी नवीं बणा दे बणतर, घड़न भन्नणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा सति सरूप तक्कीए निरंतर, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। तेरा दर्शन तक्कीए उत्ते गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। जो आशा रख के गया धनंतर, धनवन्तर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा रंग नाम रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जुग जुग तेरी आशा रखी, आस आस विच्चों प्रगटाईआ। सानूं ख़बर अगम्मी दस्सी, दहि दिशा तों बाहर कर पढ़ाईआ। जिस धार विच भगतां आत्मा वसी, वसल यार तेरा वेख वखाईआ। इक्को गृह माणे सुख रसी, रस्ता इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण साडे श्री भगवाना, भगवन दे वड्याईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह इक अख्वाईआ। आदि जुगादी रामा, रम्ईआ हो के वेख वखाईआ। साडे
१६१ सचखण्ड दे कान्हा, तेरी ओट तकाईआ। जोती नूर अगम्म अमामा, अमलां तों बाहर वेख वखाईआ। सच दे मन्त्र सतिनामा, १६१
२४ सति सतिवादी देणी दया कमाईआ। तूं मालक ख़ालक वाली दो जहाना, दोहरा आपणा रूप बदलाईआ। जे भगतां अन्तर २४
जाणी जाणा, आत्म मेला मेलें सहिज सुभाईआ । क्यों ततां तत करे बेगाना, पंज तत रो के देण दुहाईआ। सानूं बख़्श दे सचखण्ड सच्चा मकाना, जिथ्थे तेरा नूर जोत अलाहीआ। बिना तन वजूद तों करीए बिश्रामा, बिसमिल हो के तेरे विच समाईआ। ना दिवस रहे ना रैण रहे कोई शामा, शमअ जोत तेरा नूर दिसे अलाहीआ। तेरे दर दे होईए गुलामा, नित नवित सेव कमाईआ। मेहरवान होणा मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। तेरे चरण कवल करीए बिश्रामा, दूजा दर ना कोए वखाईआ। साडी डण्डावत बन्दना सजदयां तो बाहर सलामा, सीस जगदीस इक झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दा सद वजदा रहे दमामा, दामनगीर बेनज़ीर इक्को नज़री आईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड ममीआ ज़िला गुरदासपुर मुखत्यार सिँघ ममीआ
जसवन्त सिँघ चेबे बूड़ सिँघ महिन्दर कौर वज़ीरपुर
गुरबख्श सिँघ रत्न कौर नुशहरा ✪

पंज तत कहिण प्रभ धुर दे श्री भगवाना, भगवन भगवान तेरी ओट तकाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी शाहोभूप सुल्ताना, शहिनशाह शाह पातशाह नौजवान बेपरवाहीआ। शब्दी धार एकँकार तेरा बिना अक्खरां तों ज्ञाना, बिन रसना जिह्वा हक पढ़ाईआ। सच दुआर सुहञ्जणा दिसे मकाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगे अगम्म अस्थाना, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सो पुरख अकाले दीन दयाले साडी बेनन्ती करीं परवाना, परम पुरख दर तेरे मंग मंगाईआ। जे भगतां आत्मा नाल तेरा यराना, मीत मुरारे आपणा रंग रंगाईआ। क्यों भगतां तत करें बेगाना, अप तेज वाए पृथमी आकाश कूक के दईए दुहाईआ। सचखण्ड दुआर सानूं बख्श अस्थाना, मढ़ी गोर दा पन्ध मुकाईआ। तूं रहमतां वाला रहीम रहमाना, राम रामे तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती धार धुर दे कान्हा, काहन कान्हा तेरी सरनाईआ। जल्वागर नूर अमामा, अमलां तों रहित वेख वखाईआ। तेरे कदम कदीम दे मालक साडी सलामा, सिर सिर तेरे चरण टिकाईआ । तूं शाहो भूप मर्द मर्दाना, नौजवान इक अख्वाईआ। दीन दयाल साडी झोली पा दे दाना, दयानिध ठाकर आशा पूर कराईआ। पंज तत कहिण तेरा दर्शन बिन नेत्र होवे रोज़ाना, बिन नैणां नैण बिघसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण सानूं बख्श दे आपणा नूर, नूर नुराने नूर दे चमकाईआ। सानूं बख्श दे आपणी तूर, तुरीआ तों बाहर शनवाईआ । तूं सर्ब कला भरपूर, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। साडा पन्ध मुका दे नेड़े दूर, निज घर मेला लैणा मिलाईआ। हर घट थाँ वसणा हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे मालक होणा सहाईआ। जो आशा रखी मूसा उत्ते कोहतूर, कुदरत दे मालक लहिणा देणा चुकाईआ। लेखा मुकाउणा अन्त ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर तेरी सरनाईआ। असीं जुग चौकड़ी तेरे सेवक रहे मज़दूर, जन भगतां तत देण गवाहीआ। तेरा नाम कलमा कीता मशहूर, रसना जिह्वा ढोले सोहले सिफ्ती गाईआ। मनुआ मन ना पाए फ़तूर, मनसा कूड़ देणी गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा गृह कर सुहञ्जणा, तन माटी ख़ाक दे वड्याईआ। जोती धार साहिब आदि निरञ्जणा, पुरख पुरखोतम तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार देणा कराईआ। नाम निधाना निज नेत्र पा दे अंजणा, दोए लोचन लोड़ रहे ना राईआ।

निरगुण निरगुण बणना साक सैण सज्जणा, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ । साडी कबूल करनी बन्दना, सीस जगदीस तेरे चरण टिकाईआ। बिना रसना देणा अनन्दना, रस रस विच्चों प्रगटाईआ । दर ठांडा इक्को तेरा मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। पंजां ततां चाढ़ दे रंगणा, भगत कलबूत रहे कुरलाईआ। राय धर्म अन्त ना देवे दंडणा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। सानूं लोकमात कूड़ कुड़यारा देस चंगा छडणा, थिर घर तेरे ओट तकाईआ। सचखण्ड दुआरे आपणा प्यार वंडणा, देणा चाँईं चाँईंआ। जे तूं भगतां आत्म आपणे नाल गंढुणा, क्यों ततां दएं जुदाईआ। निरगुण धार सरगुण होणा सज्जणा, साजण मीत इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडे लेखे लाउणे तन वजूद, माटी ख़ाक तेरी सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक हक महबूब, मेहरवान नूर अलाहीआ। साडे अन्तर शरअ दी रहे कोई ना दूज, दुतीआ भाओ देणा मिटाईआ। साडा अन्तष्करन करना सूध, पतित पुनीत देणे बणाईआ। पंच विकार करे ना युद्ध, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा मिटाईआ । साडी पवित्र करनी बुद्ध, दुरमति मैल मैल धुआईआ। सच दुआर एकँकार तेरा जावे सुझ, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। अन्त
१६३ कन्त भगवन्त साडा वक्त सुहञ्जणा रिहा पुज, पूजण योग तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १६३
२४ कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक भेव खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे साथी, जुग जुग २४
तेरी सेव कमाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब कला समराथी, समरथ अकथ तेरी वड्याईआ। हउ सेवक अनाथ अनाथी, दीन दयाल दीनन तेरी ओट तकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे मस्तक माथी, जोत ललाटी नाल रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा अगम्म अथाह बेपरवाह लहिणा देणा मुकाउणा हाथो हाथी, जगत उधार एकँकार निराकार नज़र कोए ना आईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड भीमपुर ज़िला गुरदासपुर लाल सिँघ
शांती देवी भीमपुर प्रकाश कौर पुनी सालोवाल बचन सिँघ भाड़े चक
कुशलया देवी देव राज भीमपुर ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी मन्ज़ूर कर बेनन्ती, बन्दना विच सीस जगदीश झुकाईआ। साडा गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती,

हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं बोध अगाधा आदि दा पंडती, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। तेरे नाम दी धार होवे साडी पंगती, पंचम दा लेखा देणा चुकाईआ। साडी आशा तेरे दर मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। साडा लेखा तेरे चरण कवल होवे संगती, सतिगुर शब्द देणी सरनाईआ। मनसा कूड़ रहे ना मन दी, ममता मोह देणा मिटाईआ। खेल तक लै साडे तन दी, पंज तत रहे कुरलाईआ। साडी सिख्या वेख लै मन दी, कायनात दे मालक होणा सहाईआ। साडी धार तक लै ब्रह्म दी, पारब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। जे आत्मा तेरी धारों जम्मदी, तन वजूद कहे साडी तेरे चरण सरनाईआ। साडी खेल मुका दे ग़म दी, ग़मख़ार देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखे ला लै तन माटी ख़ाक, तेरे चरण सरन सरनाईआ। मनुआ मन रहे ना आक, ममता मोह देणा चुकाईआ। बजर कपाट खोल्ह दे ताक, नौ दुआर दा डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म बण साक, सज्जण सैण इक अख्वाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना साडे वल झाक, बिन नैणा नैण उठाईआ। चार जुग दा पूरब पूरा कर वाक, अवतार पैग़म्बर गुर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा भेव खोल्ह दे आप, पर्दा जगत रहिण ना पाईआ। निरगुण धार तेरा होवे जाप, जग जीवण दाते देणी माण वड्याईआ। अन्तष्करन मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। ब्रह्म धार वेख लै ज़ात, परमात्म आत्म संग बणाईआ। चुरासी वाला तक लै खात, चारे खाणी फोल फुलाईआ। असीं मंगते होए लोकमात, सचखण्ड निवासी देणी माण वड्याईआ । साडी इक्को सुण लै बात, बातन भेव देणा खुल्हाईआ। तूं मालक कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सो पुरख निरञ्जण दे दे दात, दाते दानी आप वरताईआ। तेरा खेल बहु बिध भांत, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर जोड़ लै नात, एकँकार आपणी गंढ पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ सचखण्ड दुआर बख्श दे एक, उत्ते साडे दया कमाईआ। असीं तेरी रखी टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। तूं करना सानूं बिबेक, पतित पुनीत कराईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। निरगुण धार हो के वेख, निरवैर अक्ख खुल्हाईआ। साडी पूरब पिछली बदल दे रेख, लेखा अवर रहे ना राईआ। सानूं लै जा सचखण्ड देस, दरगाह साची आप टिकाईआ। जिथ्थे वसे नर नरेश, नर नरायण सोभा पाईआ। साडा तेरे चरण कवल आदेस, निव निव सीस झुकाईआ। तूं मालक रहें हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। तेरे दर ते होए पेश, दर ठांडे देणी वड्याईआ। साडा अन्त अख़ीर संदेश, सँध्या

सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। चुरासी वाला कट कलेश, कायनात दा पन्ध मुकाईआ। तेरे चरण कवल दरगाह साची रहीए हमेश, हम साजण होणा सहाईआ। तूं मालक खालक प्रितपालक नर नरेश, परवरदिगार नूर अलाहीआ। साडा पन्ध मुका दे लोकमात परदेस, घर आपणे इक टिकाईआ। जिथ्थे दर्शन होवे नेतन नेत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर कर हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडी रुत बसन्ती खुशीआं वाली करनी चेत, चेतन हो के पंज तत वास्ता पाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड कतोवाल ज़िला गुरदासपुर अजीत सिँघ गुरचरण सिँघ कतोवाल, चरण सिँघ जवंद सिँघ दुरगी, ज्ञान देई नवां पिण्ड ✪

पंज तत कहिण प्रभ असीं जुग जुग रहे भरमदे, जन्म जन्म नाल बदलाईआ। वणजारे रहे माटी चर्म दे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मिल के खुशी बणाईआ। चारे खाणीआं रहे भरमदे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जे वाहो दाहीआ। प्यासे रहे तेरे निरगुण रूप ब्रह्म दे, पारब्रह्म तेरी आस रखाईआ। वणजारे रहे कांड कर्म दे, काया माटी रंग रंगाईआ। शब्द संदेशे सुणदे रहे तेरे धर्म दे, अक्खर अक्खरां नाल वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी होणा आप सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जुग चौकड़ी सरगुण धार रहे तरसदे, तत ततां ध्यान लगाईआ। अमृत मेघ अगम्मा कलयुग अन्तिम बरस दे, बरस शहिनशाही नाल मिलाईआ। साडे लेखे मेट दे हवस हरस दे, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। तेरी याद विच जन भगत सुहेले तड़फदे, दिवस रैण नेत्र नैण उठाईआ। आत्म धार फिरन भटकदे, मनुआ मन ना कोए चतुराईआ। शब्द डोरी नाल लटकदे, फाँसी अवर ना कोए रखाईआ। बेशक असीं रूप बणे बूँद रक्त दे, तन वजूद वजूद दरसाईआ। सानूं माण दे दे साचे भगत दे, भगवन होणा आप सहाईआ। पन्ध मुका दे आवण जावण जगत दे, दीन दुनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साडे लेखे ला लै स्वास स्वास आपणे चरण वक्त दे, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी गलों कट जम फाँसी, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। साडी ज़िंदगी होवे रहिरासी, जीवण तेरे चरण टिकाईआ। साडा लेखा मुका दे शंकर कैलाशी, सरगुण वंड ना कोए वंडाईआ। परम पुरख मेट उदासी, चिन्ता चिखा

बाहर कढ्ढाईआ। नाम जपा स्वास स्वासी, साह साह तेरी वड्याईआ। तेरा नूर जोत होवे प्रकाशी, जोती जाता नज़री आईआ। तूं परम पुरख परमात्म इक अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। असीं पंज तत तेरे दास दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। पन्ध मुका दे दस दस मासी, मात गर्भ फेर ना आईआ। तेरे चरण कवल सचखण्ड दुआर होवे वासी, दरगाह साची देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडी तेरे चरण कवल अरज़ोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। साडी मातलोक दरोही, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। साडा मीत मुरार दिसे ना कोई, साजण संग ना कोए निभाईआ। जोती जाते धरनी धरत धवल धौल मिले ना ढोई, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सुरत उठाए कोई ना सोई, शब्दी नाद ना कोए शनवाईआ। आत्म धार जाए ना मोही, मुहब्बत हक ना कोए कमाईआ। साडे कोल तेरी पेशीनगोई, जो अवतार पैग़म्बर गुर गए दरसाईआ। जो संदेशा दिता कबीर लोई, लोयणा तों बाहर जणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी पत गई खोही, मेहरवान महबूब तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच अमृत रस धार अगम्मी दे चोई, निझर झिरना आप झिराईआ। पंच विकार मेटणा गरोही, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी करता पुरख जो करे सो होई, करन करावणहार करतार तेरे हथ्थ वड्याईआ।

१६६
२४

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस दीनानगर शहर हरीजन कलोनी लाल सिँघ महिन्दर सिँघ भजन सिँघ सवरन सिँघ बलकार सिँघ सरूप सिँघ बावा सिँघ ✪

पंज तत कहिण प्रभ जुग जुग फिरदे रहे चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जदे रहे वाहो दाहीआ । निरगुण सरगुण तेरीआं सुणदे रहे बाणीआं, अक्खरां नाल अक्खर सिफ्त सालाहीआ। तूं शाहो भूप सुल्तानीआ, गहर गम्भीर बेनज़ीर नूर अलाहीआ। साडे उत्ते कर मेहरवानीआं, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। तूं आदि जुगादी जाण जाणीआ, जानणहार इक अख्वाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आत्म धार सच दस्स दे निशानीआं, निशाना श्री भगवाना आपणा इक जणाईआ। तेरे हुक्म विच लख चुरासी जूनी मौजां माणीआं, तन वजूदां वजदी रही वधाईआ। तेरे खेल वेखे अठसठ तीर्थ पाणीआं, समुंद सागराँ विच आपणा रूप बदलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दस्सीआं तेरे हुक्म दीआं कहाणीआं, कथनी कथ कथ दृढ़ाईआ।

सच स्वामी अन्तरजामी जे भगतां आत्मा तेरीआं सुवाणीआं, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंज तत कहिण क्यों ना सानूं करें परवानीआं, परम पुरख आपणे अंग लगाईआ। हउँ जगत विछुन्नीआं निमाणीआं, जुग चौकड़ी तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ जुग चौकड़ी तेरा धरदे रहे ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। किरपा कर श्री भगवान, हरि करते हो सहाईआ। निगाह मार लै विच जहान, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। हउँ बालक तेरे अंञाण, बाली बुद्ध ना कोए वड्याईआ। सच प्रीती बख्श दे चरण कवल कर परवान, परम पुरख तेरी ओट तकाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग बीते विच जगत जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर नाम कलमे देंदे गए दान, ढोले सोहले सिफ्त सिफ्ती राग दृढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा सचखण्ड मिले ना किसे अस्थान, दरगाह साची भूमिका सच ना कोए टिकाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी धुर दा काहन, राम रम्ईआ तेरी ओट तकाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी पंज तत कहिण अन्त सानूं कर परवान, परम पुरख तेरी शरनाईआ। भगत सुहेले तेरे बाल अंञाण, मन मति बुद्ध ना कोए वड्याईआ। तूं शाहो
१६७ भूप सुल्तान, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। साडी बेनन्ती कर परवान, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १६७
२४ आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी वस्त इक वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ जुग जुग तेरीआं आसां २४
तकीआं, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कीतीआं पक्कीआं, पारब्रह्म प्रभ तेरा भेव खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आत्म धार जोड़े नतीआं, परमात्म आपणी गंढु पवाईआ। कूड़ कुड़यार दीआं मेटे मत्तीआं, सति सतिवादी शब्द करे शनवाईआ। जन भगतां काया जाण रतीआं, रत्न अमोलक हीरे लए बणाईआ। लेखा चुकावे जगत तपसिआ वाली तपीआं, तपीशरां तों बाहर दए वड्याईआ। आवण जावण लख चुरासी मंज़लां जाण कटीआं, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। विकणा पए ना दीन दुनी दी धार विच हट्टीआं, दीनां मज़्बां ना वंड वंडाईआ। निरअक्खर धार पढ़ावे पट्टीआं, पटने वाला नाल मिलाईआ। राय धर्म दीआं भरनीआं पैण ना चट्टीआं, चेटक आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे घर दे रहे वणजारे, जुग जुग भज्जे वाहो दाहीआ। सच वस्त बख्श दे थारे, थिर घर देणी माण वड्याईआ । गृह बख्शणा सचखण्ड दुआरे, दरगाह साची आस रखाईआ। तेरा तक्कीए नूर उज्यारे, जोती जोत जोत रुशनाईआ । सद वसीए तेरे चरण कवल सहारे, धवल लेखा देणा मुकाईआ। तुध बिन पार ना कोए उतारे, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। सतिगुर शब्द जणा जैकारे,

तूं ही तूं ही राग दृढ़ाईआ। तेरे खेल तके जुग चारे, जुग चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पा सारे, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। असीं भगत सुहेले तेरे दो चारे, बहुती गणत ना कोए गिणाईआ। साडा आवण जावण गेड़ दे निवारे, जन्म जन्म रहे ना राईआ। जे भगतां आत्मा तेरा रूप अपारे, अपरम्पर तेरे विच समाईआ। क्यों पंज तत होण ख्वारे, ख़ैरख़ाह हो के देणी माण वड्याईआ। तुध बिन पैज ना कोए संवारे, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। साडी मन्ज़ूर करीं निमस्कारे, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा खेल अपारे, अपरम्पर स्वामी अन्तरजामी निहकामी तेरी ओट तकाईआ।

✪ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड फ़तूपुर ज़िला गुरदास पुर मंगल सिँघ गुलज़ार सिँघ समा सिँघ फ़तूपुर जुगिंदर सिँघ दयाल सिँघ सुरिंदर सिँघ डेढ गुवाड़, गुरमीत कौर रसूलपुर, जसबीर सिँघ सोहण सिँघ भोले के, तरलोक सिँघ अठवाल ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडा वक्त सुहञ्जणा कर, करनी दे करते दया कमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मंगीए तेरा दर, दर दरवेश नर नरेश तेरे अगे सीस झुकाईआ। परम पुरख परमात्म तेरी सरनी रहे पर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर होणा आप सहाईआ। तूं शाहो भूप नरायण नर, सुल्तान नौजुआन इक अख्वाईआ। चुरासी फाँसी जम का मेट दे डर, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी लै जाणा आपणे घर, गृह मन्दिर इक्को इक वखाईआ। चरण धूड़ सच सरोवर नुहाउणा सर, दुरमति मैल रहे ना राईआ। आत्म धार परमात्म तैनूं लईए वर, पतिपरमेश्वर तेरे रंग समाईआ। मेहरवान हो के पंज तत जन भगतां आपणे गृह खड़, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। साडा लेखे ला लै तन वजूद धड़, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुद्ध दईए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा धुर दा इक स्वामी, करनी करता इक अख्वाईआ। निरगुण धार अन्तरजामी, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जगत अन्धेरा मेट दे शामी, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। सानूं वखा दे देश अनामी, जिथ्थे तेरी वजदी रहे वधाईआ। मेहरवान हो के भगत सुहेले आप पहचानी, बेपहचान पड़दा मात उठाईआ। तूं निरवैर पुरख सुल्तानी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। साडे उत्ते करीं मेहरवानी, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ।

आवण जावण साडा लेखा मुका दे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। साडी आशा तक लै जुग चौकड़ी पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच रंग रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं रंग रंगा अगम्मड़ा, अलख अगोचर दया कमाईआ। लेखे ला लै काया माटी चम्मड़ा, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। लोकमात साडा हाल होवे ना मंदड़ा, मंद भाग लै तराईआ। साडी कीमत रही ना कौडी दमड़ा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मनुआ मन ना रहे निकम्मड़ा, बुध बिबेक देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह सच मिले सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्श दे सच दरगाह, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द बणा मलाह, बेड़ा धुर दे कंध उठाईआ। तेरा प्यार होवे गवाह, शहादत भगती वाली रखाईआ। तेरा जगत करे वाह वाह, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। इक्को चरण तेरी मिले सरना, सरनगति इक अख्वाईआ। तूं आदि जुगादी पिता माँ, पुरख अकाल तेरी बेपरवाहीआ। साडा पन्ध मुका दे थल अस्गाह, जल थल ना कोए भुआईआ। सानूं तेरे चरण कवल रहिण दा चाअ, चाउ घनेरा इक बणाईआ। निथाव्याँ दरगाह साची देणा थाँ, थान थनंतर वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरा मिले अनोखा धाम, गृह मन्दिर वजे वधाईआ। जिथ्थे इक्को होवे तेरा अगम्मा नाम, रसना रस ना कोए वड्याईआ। इक्को नूर अलाही होवे राम, जोती जाता नज़री आईआ। साडा लहिणा देणा लेखा मुका तमाम, तमअ लालच अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तत कहिण चारे खाणी विच ना रहीए गुलाम, शरअ ज़ंजीर बेनज़ीर देणी कटाईआ।

२७ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड फ़ैज़पुर ज़िला गुरदास पुर सुरजीत सिँघ दलीप सिँघ हुक्म सिँघ अजीत सिँघ जसवन्त सिँघ फ़ैज़पुर, चरण सिँघ सनेईआ, काशी राम सनेईआ, सुरजीत कौर शिकार माछीआ

पंज तत कहिण प्रभ दीन दयाल बख्शंद, बख्शिश रहमत मेहरवान महिबान बीदो देणी कमाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण नूर चाढ़ चन्द, बिन तेल बाती काया माटी कर रुशनाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी दे अनन्द,

पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी बिना मुशंदगी इक दृढ़ाईआ। कूड़ विकारा विच संसार कर दे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी विछड़ी धार आपणे नाल गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी दयाल तेरे अगे वास्ता पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बिन रसना जिह्वा अन्तर निरंतर उपजे छन्द, अक्खर निरअक्खर धार देणा समझाईआ। सतिगुर शब्द साडे भाग होण ना देवीं मंद, मधुर धुन करनी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं देणा अनन्द सच, हरि सच तेरी सरनाईआ। भाग लगा दे काया माटी कच्च, कंचन देह दे वड्याईआ। मनुआ दहि दिशा ना जावे नच, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। लूं लूं अन्दर जा रच, रचना आपणी दे वखाईआ। तूं पारब्रह्म परमेश्वर पति, परम पुरख तेरी सरनाईआ। लेखे ला लै पंज तत, अप तेज वाए पृथमी आकाश तेरे अगे वास्ता पाईआ। झगड़ा मेट दे कूड़ कुड़यारी रत, रक्त बूँद दा डेरा ढाहीआ। सति सच नाम नाल जोड़ लै नत, मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। साचा बीज बीज दे नाम अगम्मे वत, तन काया माटी दे महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ दया कमा दे आप, मेहरवान महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह तेरी इक सरनाईआ। तेरा कलम्यां तों बाहर दा होवे जाप, अजपा जाप देणा दृढ़ाईआ। त्रैगुण तीनो मेट दे ताप, तृष्ना कूड़ दे बुझाईआ। जगत रहे ना कोए संताप, सति सतिवादी दर्शन देणा थांउँ थाँईआ। तेरा सुणीए शब्द अगम्मी नाद, धुन आत्मक राग देणा दृढ़ाईआ। तेरा नूर तक्कीए इक्को वाहिद, वाहवा वाहिगुरु तेरा मेल मिले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक दरसाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे अगे निमस्कार डण्डावत, नमो नमो सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट बग़ावत, बग़लगीर कर ख़लक ख़ुदाईआ। धुर दा नाम कलमा कर सख़ावत, सुख़न आपणे पूर कराईआ। दीन दुनी ना रहे अदावत, अदल इन्साफ़ इक जणाईआ। मनुआ मन कर ममानत, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। आदि जुगादी आत्मा तेरी अमानत, तन मन्दिर वेखणी चाँईं चाँईंआ। जिस नूं रखणा सदा सही सलामत, बेऐब परवरदिगार होणा सहाईआ। साडा लेखा रहे ना नाल क्यामत, कुदरत दे कादर देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साचा दे हकीकी जाम, बिन रसना रस चखाईआ। किरपा कर दे धुर दे राम, राम रहीम तेरी सरनाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी शाम, शाम सुंदर शमअ नूर कर रुशनाईआ। चुरासी रहे ना कोए ग़ुलाम, ज़ंजीर

बेनज़ीर देणे कटाईआ। साडा लेखा मेट तमाम, दर तेरे मंग मंगाईआ। बिना कलम्यां सजदयां तैनूं करीए प्रणाम, बिन सीस जगदीस धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत निमाणे जग, जग जीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे अग्ग, अमृत मेघ आप बरसाईआ। साचा मार्ग दे दे पग, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। दर्शन बख़्श दे उपर शाहरग, नव दर दा डेरा ढाहीआ। साडी मनसा रहे ना वांग कग, हँस रूप लैणे बणाईआ। घर स्वामी आपणे सद्द, होका शब्द वाला कर शनवाईआ। तूं नूर अलाही रब्ब, यामबीन तेरी सरनाईआ। बिना काअब्यां करा दे हज्ज, हुजरा इक वखाईआ। तेरे चरण कवल श्री भगवान जाईए सज, थिर घर सच देणी वड्याईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार वेखीए भज्ज, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साचा पन्ध देणा मुकाईआ। किरपा करनी परवरदिगार नूर अलाही रब्ब, रहमत आपणी आप कमाईआ। असीं पंज तत विचारे भगत सुहेले लोकमात सभ, सारे देईए सुणाईआ। सानूं जगत जीवण दा लालच नहीं कोई लब, मोह विच ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा गृह आप वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ आपणा घर वखा सुहञ्जणा, धुर दा भेव चुकाईआ। पर्दा लाह दे गोपाल मूर्त मदना, मध सूदन तेरी सरनाईआ। जन भगत सुहेले लेखे ला लै आहला अदना, निरगुण देणी माण वड्याईआ। कलयुग अन्तिम पड़दा कजणा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार ग़रीब निमाणयां सद्दणा, सद्दा सतिगुर शब्द वाला जणाईआ । साडा प्यार नगारा तेरे दुआरे वजणा, दूसर ताल सुणन कोए ना पाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म प्रीतम हो के भगत सुहेला साचा लभणा, खोजणा चाँईं चाँईंआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार चाढ़ दे रंगणा, रंगत अगम्म रंगाईआ। इक्को तेरा दुआरा मंगणा, दूजा दर वेखण कदे ना पाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले तेरा सुणदे नाम निधाना नदना, बिन सुर ताल जगत दृढ़ाईआ। सानूं अन्त कन्त भगवन्त लख चुरासी विच्चों कढणा, जम की फाँसी ना कोए लटकाईआ। असीं खुशीआं नाल इस लोकमात नूं छडणा, माया ममता संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर तेरा डंका सदा सद वजणा, वजूहात समझ किसे ना आईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस बटाला शहर विखे अजीत सिँघ, सीतल सिँघ हरदोझण्डे,
हरबंस सिँघ तारा गढ़, नवां पिण्ड करतार कौर पंज ग्रांईआ,
धन्न कौर तेज़ कौर खहिरै, बीबी दीपो कोटली, भान सिँघ ✪

पंज तत कहिण प्रभ अवतार पैग़म्बर गुर तेरे दुलारे धुर दे, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बणत बणाईआ । तन वजूद माटी ख़ाक नाल रहे फिरदे तुरदे, जगत जहान नौजुआन श्री भगवान भज्जे वाहो दाहीआ। वणजारे बणे रहे तेरे नाद शब्द धुन धुर दे, सचखण्ड निवासी तेरी ओट तकाईआ। अन्धेरे दूर करदे रहे अन्धघोर दे, सच सति ब्रह्म मति दृढ़ाईआ। परम पुरख परमात्म अन्तिम लोकमात बणे मुरदे, मुरीदां छड विछोड़ा गए पाईआ। सच दस किस बिध तेरे नाल होवण जुड़दे, जोड़ी हरि जगदीश बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ गुर अवतार पैग़म्बर तेरी धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। निरगुण सरगुण खेल तेरा अपर अपार, अगम्म स्वामी अन्तरजामी दिती माण वड्याईआ। तेरा नाम संदेशा दीन दुनी गए उच्चार, रसना जिह्वा सिफ्तां नाल सलाहीआ। तूं मेहरवान हो के महबूब देंदा रिहों दीदार, हर घट अन्तर निरंतर आपणा डेरा लाईआ। तेरी धार नाल हुन्दी रही निमस्कार, निव निव सारे सीस झुकाईआ। अन्त श्री भगवन्त हुन्दे वेखे छार, मिट्टी ख़ाक विच समाईआ। लहिणा देणा ततां चुक्कया ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाता आपणे नाल रखाईआ। आत्मा पुजदी रही तेरे दुआर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। तूं देंदा रिहों अधार, उदर दा लेखा लहिणा मूल चुकाईआ। की खेल तेरा सची सरकार, हरि करते देणा दृढ़ाईआ। पंज तत कहिण असीं रोईए ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ गुर अवतार पैग़म्बर तेरे गाउँदे रहे ढोले, शब्द अनादी नाद गीत दृढ़ाईआ। सच संदेशे दस्सदे रहे सोहले, सो पुरख निरञ्जण तेरी सिफ्त सलाहीआ। तूं घट निवासी पुरख अबिनाशी जुग चौकड़ी साचे तोल तोले, तोलणहार इक अख्वाईआ। मेहरवान महबूब हो के मुहब्बत विच पड़दे खोल्हे, पर्दानशीं पर्दा दिता चुकाईआ । तेरे हुक्म विच निरगुण धार रूप मौले, मौला तेरे हथ्थ वड्याईआ। अन्त तेरे नालों तेरी धार होई कदे ना ओहले, आत्म परमात्म विच समाईआ। क्यों साडे पंज तत काया ख़ाली कीते चोले, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ । बिन तेरे पुरख अबिनाश साडी लाश मूल ना बोले, पवण सवास ना कोए चलाईआ। असीं अग्नी माटी ख़ाक दे बण गए गोले, ततां तत मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच दे सरनाईआ।

पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सन्त बण गए फ़कीर, फ़िकरे तेरे ढोले गाईआ । तेरा नाम देंदा रिहा धीर, धीरज धर्म धार जणाईआ। अमृत बख़्शदा रिहा नीर, निझर बूँद स्वांती अगम्म टपकाईआ। शरअ दी कटदा रिहा ज़ंजीर, शरीअत इक दरसाईआ। लेखा बज्झदा रिहा नाल शरीर, तन वजूद वजी वधाईआ। अन्त हुन्दा रिहा अख़ीर, आख़र भेव चुकाईआ। दीन दुनी किसे ना दिती धीर, धीरज धर्म ना कोए जणाईआ। घतदे रहे आदि जुगादि वहीर, भज्जे वाहो दाहीआ। साडे नज़र ना आवण वस्त्र चीर, जो कोटी कोट जन्म भुगताईआ। जुग जुग तत होए दिलगीर, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। साडी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। तूं मालक बेनज़ीर, साडा नजरीआ दे बदलाईआ। लेखा रहे ना शाह हकीर, ग़रीब निमाणयां दे वड्याईआ। अमृत धार बख़्श दे सीर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। जे सचखण्ड धार तेरा भगत सुहेला पुज्जा कबीर, की कबरां विच लाश दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण असीं बणदे रहे सूफ़ी सन्त, सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। गाउंदे रहे तेरे नाम दा मंत, अक्खर अक्खरां सिफ्त सलाहीआ। खेल खेलदे रहे विच जीव जंत, जागरत जोत विच समाईआ।
१७३ तूं बोध अगाधा पंडत, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। साडी मंन लै अन्तिम मिन्नत, मनसा तेरे चरण रखाईआ। तूं आजा भगतां १७३
२४ दी सिम्मत, दिशा वंड ना कोए वंडाईआ। साडी रही कोई ना हिम्मत, हौसले गए ढाहीआ। कलयुग अन्त मेट दे चिन्त, २४
चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक भेव खुल्हाईआ। पंज तत कहिण असीं भगत सन्त तेरे सूफ़ी, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। साडा हक जगत ना रहे मरूसी, मेहरवान मेहर नज़र देणी कराईआ। साडी तक लै हक ख़सूसी, ख़सूसीअत समझ किसे ना आईआ। साडे अन्तर निरंतर जगत वासना फिरे ना कोए जसूसी, मनुआ मन ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे होए सन्त फ़क्कर साध, जगत जुगत वड्याईआ। तत हो के तैनूं ल्या अराध, रसना ढोले गाईआ। तेरे प्यार विच होए विस्माद, बिस्मिल धार बणाईआ। सुणीए तेरा अगम्मी नाद, धुन आत्मक नाद शनवाईआ। सानूं चार जुग दा लेखा याद, भुल विच अभुल भुल कदे ना जाईआ। साडी देदे सानूं दाद, दर तेरे मंग मंगाईआ। लेखा रहे ना नाल वाद विवाद, विख अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। तेरा गृह वेखीए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड देणा जणाईआ। तूं स्वामी आदि दा आदि, अन्त आपणे घर लै के जाणा चाँईं चाँईआ। सतिजुग दा कलयुग विच्चों चला दे रिवाज, रस्ता मार्ग इक समझाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले आपणे लै लाध, बाहर खोजण दी लोड़

रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि तेरी इक इमदाद, दूसर अवर लोड़ ना कोए रखाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत दस श्री हरि गोबिन्द पुर शहर ज़िला गुरदास पुर विरसा सिँघ अवतार सिँघ माढ़ी पनूआ, मोहण सिँघ कादीआं, चन्दन सिँघ ठीकरी वाला, राम लुभाया श्री हरि गोबिन्द पुरा ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी धार कर दे चिट्टी, कलयुग कूड़ कुड़यार कालख टिक्का दे मिटाईआ। दीन दुनी जगत जहान साडी उडे ख़ाक ना मिट्टी, चरण धूड़ तेरे चरण कवल मस्तक लईए रमाईआ। साडा लहिणा देणा मुकाउणा पत्थर इट्टी, निरगुण धार एकँकार दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। साडी ख़ाहिश तमंना तेरे चरण कवल होवे लिटी, लिटां खोलृ के दईए दुहाईआ। सुरती शब्द नाल होवे टिकी, टिकटिकी लोचन नैण नाल रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म धार करनी हिती, हितकारी हो के वेख वखाईआ। साडी याद रखणी वार थिती अज्ज दी मिती, मित्र प्यारे दईए सुणाईआ। साडी कल्पणा कदे ना होवे दो चिती, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा दर्शन करीए नित नविती, निज घर मिलणा चाँईं चाँईंआ। साडी चुरासी वाली धार जाए जित्ती, हार विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं गृह करीं मन्जूर, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। तूं साहिब हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। कोट जन्म दे साडे मुआफ़ करीं कसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, मेहरवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडा पन्ध मुका दे नेड़ा दूर, जगत जहान ना कोए भुआईआ। सच नाम दा दे सरूर, सुरती शब्द नाम विच समाईआ। बिना नाद वजा दे तूर, तुरीआ दे मालक भेव चुकाईआ। मन मनसा ना रहे ग़रूर, गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। तेरे चाकर सेवक रहीए मज़दूर, सच साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे कट चुरासी गेड़े, जम फाँसी राय धर्म नज़र ना आईआ। निरगुण धार आपणे चाढ़ लै बेड़े, बेपरवाह मलाह इक्को इक अख्वाईआ। दीन दुनी जगत जहान मेट दे झेड़े, झगड़ा मात रहे ना राईआ। परम पुरख परमात्म लै जा आपणे खेड़े, सचखण्ड साचे आप टिकाईआ । जिथ्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां दे खुल्ले वेहड़े, बन्द कवाड़ ना कोए कराईआ। सति स्वामी

कलयुग अन्त ना लाईं देरे, चिरीं विछुन्ने लैणे मिलाईआ। सतिगुर शब्द पंज तत तेरे चेरे, चेले गुरु देणी वड्याईआ। असां अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज जन्म भोगे बथेरे, चारे खाणी भज्जे वाहो दाहीआ। अन्त कन्त भगवन्त साडे कट अन्धेरे, जोती नूर चन्द दे चमकाईआ। मेहरवान करनी आपणी मेहरे, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच घर इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेख लै जगत जहान अन्त, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। तेरा रसना जिह्वा गाईए मंत, मंतव हल्ल देणा कराईआ। ठाकर स्वामी अन्तरजामी साची बणा दे बणत, घड़न भन्नणहार तेरी बेपरवाहीआ। दीन दयाल बण धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल तेरी ओट तकाईआ। तेरे चरण कवल उपर धवल साडी मौले रुत बसन्त, पत्त टहणी तन वजूद देणी महकाईआ। सतिगुर शब्द धार बणा दे बणत, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले निमाणे, निव निव सीस झुकाईआ। सद चलीए तेरे भाणे, सीस ना कोए उठाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताने, गहर गम्भीर अख्वाईआ। साडे वल कर ध्याने, बिन नैणां नैण उठाईआ। बेशक साडे जिस्म जुग चौकड़ी

१७५ पुराणे, तन वजूद नज़री आईआ। सानूं करीं ना मातलोक बेगाने, दर तेरे मंग मंगाईआ। जे भगतां आत्मा करी परवाने, १७५

२४ परम पुरख दिती वड्याईआ। क्यों ना ततां बख्शें सच मकाने, दरगाह सच सच टिकाईआ। सचखण्ड तेरा घर मकाने, २४

महिमा कथ कथ जणाईआ। असीं पंज तत तेरे बाल अंञाणे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सीस निवाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे लेखा लेख आप महाने, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। साडे अन्तर चाउ घनेरे, सद वजदी रहे वधाईआ। जिन्हां खातर निरगुण मारे फेरे, सरगुण मेला लैणा मिलाईआ। जे भगतां आत्मा तेरे वसे सचखण्ड डेरे, दरगाह साची जोत विच समाईआ। क्यों सानूं लोकमात निखेड़ें, विछोड़े विच रखें जुदाईआ। कलयुग अन्तिम बन्नू बेड़े, धुर दे कंध लै टिकाईआ। फेर पईए ना चुरासी विच गेड़े, लेखा शंकर नालों चुकाईआ। असीं जुग वेख लए बथेरे, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। सानूं कढणा विच्चों लोकमात अन्धेरे, सच प्रकाश विच मिलाईआ। मेहरवान महबूब हो के करीं मेहरे, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत निमाणे विच दीन दुनी, जगत जुगत जणाईआ। निरगुण साडी पुकार सुणीं, अणसुणत होणा सहाईआ। तूं शाहो भूप गुण गुणी, गहर गम्भीर नूर अलाहीआ।

आपणे नाम नाद दी देणी धुनी, धुन आत्मक राग समझाईआ। तूं मालक ख़ालक कुंन कुंनी, कायनात तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा लेखा रहे ना नाल किसे जूनी, अजूनी रहित होणा आप सहाईआ।

✪ पहली पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

पहली पोह कहे क्यों नारद पाउँदा आया डण्ड, बिना डण्डावत भज्जया वाहो दाहीआ। नारद कहे मित्रा मैं कलयुग दा वेख घमंड, चारों कुण्ट दिती दुहाईआ। जिस फेरी दरोही विच जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। दीन दुनी कीती खण्ड खण्ड, खण्डा कूड़ वाला चमकाईआ। पंच विकारा घर घर वंड, नाम निधान दिता भुलाईआ। टुट्टी सके कोई ना गंढु, कूड़ क्रिया कीती जुदाईआ। फिरी दरोही विच ब्रह्मण्ड, मातलोक लोक दुहाईआ। नारद कहे पोह जी आपणे प्रभ नूं कहो कुछ पावे सब नूं ठण्ड, अग्नी तत बुझाईआ। कूड़ दी चुक्क सके कोए ना पंड, भार हेठ सर्ब कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे सुण लै मेरी आशा पहली पोह, वदी सुदी तों बाहर जणाईआ। बिना अक्खां तों पहलां लवां रो, बिन नैणां नीर वहाईआ। मित्रा असीं जगत विच इक्खे होए दो, अवर नज़र कोए ना आईआ। निगाह मारीए कलयुग ने सति धर्म ल्या खोह, सच वस्त रहिण कोए ना पाईआ। नव सत्त दिसे कोई ना लो, लोचन लोयण ना कोए खुल्हाईआ। जिधर तक्कीए पंच विकारा गरोह, इक्खे बैठे सोभा पाईआ। माया ममता वध्या मोह, मुहब्बत सच ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म सके कोई ना छोह, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। बिन भगतां शब्द गाए कोई ना सो, हँ ब्रह्म ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पोह कहे नारदा एह खेल नहीं अनडिठ्ठा, मित्रा दयां जणाईआ। प्रभ दा भाणा मंन लै मिठ्ठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। अन्तिम कलयुग नंगी होणी पिठ्ठा, सिर हत्थ ना कोए रखाईआ। उह तक लै सतिगुर शब्द वाचदा चिठ्ठा, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। जिस दा अन्तिम निकलणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी तके ख़लक खुदाईआ। फेर निगाह मार लै भगतां लेखा चिट्टा, काला रंग ना कोए रंगाईआ। झट कलयुग आ के मार दुहत्थड़ पिट्टा, बौहड़ी मेरी दुहाईआ। मित्रो मेरे अन्दर मेरा प्रभू लिटा, सुखआसण सोभा पाईआ। जो आदि जुगादी मेरा पिता, पतिपरमेशवर नूर अलाहीआ। सद मैनूं करे हिता, सिर सिर हत्थ रखाईआ। वसे मेरे चिता, जगत

ठगौर जणाईआ। जिस दी समझे कोई ना थिता, वार भेव ना राईआ। उह खेले खेल नित नविता, जुग जुग अगम्म अथाहीआ। जिस ने मैनूं माण दिता, देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पड़दा आप उठाईआ। कलयुग कहे नारद मित्र मीत, सज्जणा दयां जणाईआ। उठ वेख लै मेरी रीत, जगत जुगत तों बाहर समझाईआ। मैं झगड़े पाए मन्दिर मसीत, काअब्यां विच दुहाईआ। पवित्र रहिण दिती नहीं किसे दी नीत, नीतीवान ना कोए अख्वाईआ। मेरा अन्तिम समां सुहञ्जणा रिहा बीत, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं प्रभू वस्या रहिण दिता नहीं किसे चीत, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। मेरा वसेरा हर घट अन्दर भीत, बैठा सोभा पाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा ठांडा सीत, धर्म दी अग्नी दिती बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। कलयुग कहे नारदा मित्रा कर ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। मैं सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। मैनूं प्रभ ने दिता ज्ञान, पट्टी सच पढ़ाईआ। नाल शरअ दा जोड़ शैतान, शरीअत दिती जणाईआ। निरगुण हो के निगहबान, वेखे चाँईं चाँईंआ। मैं धर्म दा धर्म रहिण नहीं दिता कोई निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। ना कोई सीआ सीता राम, घनईया संग ना कोए निभाईआ। ना पैग़म्बरां रहिण दिता ईमान, अमलां विच ना कोए लोकाईआ। सति नाम होण नहीं दिता प्रधान, एह मेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते किरपा कीती श्री भगवान, सिर सिर हथ्थ रखाईआ। मैं जोबनवन्ता नौजवान, बलधारी इक अख्वाईआ। मेरे ढोले सारे गाण, घर घर वजे वधाईआ। मैं इक नवीं ख़बर आया सुनाउण, सब नूं दयां सुणाईआ। मैं हुण वेखणा दीन दुनी दा मैदान, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पोह कहे कलयुगा तूं बड़ा बरखुरदार, बरखुरदारी तेरी नज़री आईआ। तेरा किस दे नाल प्यार, सति सच दे समझाईआ। कवण सुहञ्जणा वेखें दुआर, कवण दर सोभा पाईआ। कवण तेरा मीत मुरार, कवण रंग रंगाईआ। कवण गृह वसें घर बाहर, मन्दिर कवण सुहाईआ। कलयुग हस के किहा वाह मेरे मित्र मुरार, सज्जणा दयां सुणाईआ। मैं सब नूं करां ख्वार, एह मेरी बेपरवाहीआ। मेरी सब तों वखरी धार, धरनी उत्ते दृढ़ाईआ। मेरी एह मुहब्बत नाल कलि कल्की अवतार, दूजा मित्र नज़र कोए ना आईआ। मैं अज्ज उस नूं करन आया निमस्कार, निव निव सीस निवाईआ। मेरे उत्ते किरपा कर दे करनेहार, कुदरत दे कादर तेरी सरनाईआ। की होया जे तूं भगत तारने आप करतार, कुदरत दे कादर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। नारद कहे पोह जी कलयुग दी अभिलाशा, मैनूं दे समझाईआ।

कलयुग कहे मित्रा मेरा वेख तमाशा, सोहणा रंग रंगाईआ। भावें खुशी करीं भावें करीं हासा, भावें नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं ज़रूर दीन दुनी दी चाढ़नी लाश उत्ते लाशा, लशकर शाही ख़ाक मिलाईआ। मैं पुरख अकाल दे हुक्म नाल दीन दुनी दा उलटाउणा पासा, आपणी खेल खिलाईआ। मेरा प्रभू दे चरण विच वासा, दूसर धाम ना कोए रखाईआ। ओह तक लै मेरा साथी शंकर कैलाशा, चोटी चढ़ के ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द मैनूं दए दिलासा, मेहर नज़र उठाईआ। अगे मिलण वाली शाबाशा, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी सच खेल खिलाईआ। नारद कहे कलयुगा मित्रा ना कर दलेरी, दिलबर हो के दयां सुणाईआ। जिस पुरख अकाल ने निरगुण धार मारी फेरी, जोती जाता वेस वटाईआ। उह मेहरवान महबूब करे मेहरी, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्त अगे करे ना देरी, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जिस मित्रा तेरी ख़ाक करनी ढेरी, मिट्टी मटी रहिण कोए ना पाईआ। तेरी आयू जितनी भोग लई बथेरी, बहुती अवर ना कोए वधाईआ। तेरे कूड़ दी वेखे चारों कुण्ट अन्धेरी, चौथे जुग ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पोह कहे कलयुग सुण लै होर इशारा, सच नाल सुणाईआ। निगाह मार लै भगत दुआरा, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिथ्थे कलि कल्की अवतारा, निहकलंका नूर अलाहीआ। अमाम अमामा पवरदिगारा, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। अन्तिम तेरा वेखे किनारा, पतण घाट फोल फुलाईआ। जो रूप बदल के आया दुबारा, सोहणा वेस वटाईआ। दो जहानां होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु जिस दा लैंदे रहे सहारा, निव निव सीस झुकाईआ। उह खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। नूर नुराना नूर हो उज्यारा, दो जहाना करे रुशनाईआ। कलयुग कहे मैं वी उस नूं करां निमस्कारा, निव निव सीस झुकाईआ। जिस दे हुक्म तों कोई दिसे ना बाहरा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर भेव आप चुकाईआ। पोह कहे कलयुग उह मीत मुरारा आया, निरगुण नूर अलाहीआ। जिस जुग जुग खेल खिलाया, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। सो वेखणहारा सृष्ट सबाया, खोजे थांउँ थाँईंआ। जिस दा सतिगुर शब्द बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। जो सब दा दाई दाया, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। उह वेखे कलयुग तेरी कूड़ दी काया, काया कप्पड़ फोल फुलाईआ। जिस नूं आदि जुगादि किसे जननी मूल ना जाया, जननी बणे मूल ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे पोह

जी मेरा स्वामी उह, जो मालक इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि सदा निर्मोह, कूड़ मुहब्बत ना कोए रखाईआ। जिस दे रूप अनूप निरगुण सरगुण दो, दो जहानां वेख वखाईआ। उसे ने मैनूं बख्शी लो, लोयण दिता खुल्हाईआ। मैं वी सुणदा शब्द अगम्मा सो, जो हँ ब्रह्म तराईआ। जिस मेरा सब कुझ लैणा खोह, ख़ालक ख़लक विच दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। कलयुग कहे मैं आपणे वक्त दा कलाकार, सोहणा रूप वखाईआ। दीन दुनी नाल करां प्यार, अन्दर वड़ के वेख वखाईआ। मेरा नाच गाणा झूठ दी धार, सच नज़र कोए ना आईआ। मेरा कूड़ विकार दा शृंगार, माया ममता कज्जल नैणां पाईआ। मैं वेखां दीन दुनी विच संसार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मैं हर घट अन्दर बण के शरअ दा नचार, नच्चां टप्पां चाँईं चाँईंआ। मेरे साथी बेशुमार, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। पोह जी की हो गया जे प्रभू ने भगत बणा लए दो चार, चौथा जुग कहे एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं आपणे नाल मिला लए पुरख नार, जीवां जंतां संग रखाईआ। उठ वेख लै मित्रा पोह केहड़ी गिणती प्रभू दे विच भगत दुआर, जनसंख्या जगत दी गिणन कोए ना पाईआ। मैं सतिगुर दा बच्चा होणहार, जिस आपणी कला दिती वखाईआ।
१७६ अगला खेल करां अपर अपार, जो अपरम्पर स्वामी रिहा दृढ़ाईआ । शाह सुल्तानां करां छार, मिट्टी ख़ाक विच मिलाईआ। १७६
२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पोह कहे कलयुगा २४
प्रभ दे भगत बड़े रंगीले, रंगत जगत ना कोए जणाईआ। इहनां दे वेख लै उदम वाले हीले, सोहणी वंड वंडाईआ। आत्म धार बण के छैल छबीले, सच सिँघासण सोभा पाईआ। छड के वस्त्र काले पीले नीले, नीली धारों बाहर बहि के वेखण चाँईं चाँईंआ। जिन्हां दे सतिगुर शब्द बणाए वसीले, वसल यार रहे हंढाईआ। एह इक्को पिता पुरख अकाल दे बण गए कबीले, किबले अज़ जिस नूं सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पोह कहे मेरा वक्त सुहावा मात, दो जहान जणाईआ। मेरी भिन्नड़ी वेखो रात, रैण वजे वधाईआ। मेरा मेला नाल कमलापात, पतिपरमेश्वर जो अख्वाईआ। जिस भगतां दिती दात, वस्त अनमुल वरताईआ। उह रखणहारा पात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिस दा सब तों वड्डा खात, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। अन्तिम पुछण आया बात, निरगुण हो के वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पोह कहे मेरा साहिब सतिगुरु सतिवन्त, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को होणा मंत, इक्को नाम दरसाईआ। जिस ने भगत उधारने सन्त, साजण मीत दए वड्याईआ। सतिजुग सच बणाउणी बणत,

घड़न भन्नृणहार आप अख्वाईआ। आत्म धार बणना कन्त, कन्तूहल नूर अलाहीआ। महिमा दरसाउणी अगणत, कथनी कथ ना सके राईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। चार वरन बणा के संगत, देवणहार सर्ब सरनाईआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी अगणत, लेखा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। उह लहिणा देणा जाणे शहिनशाही दस सम्मत, समां समें नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पोह कहे मैं भज्जा आया नठा, साल बसाला पन्ध मुकाईआ। मैनूं सारे करदे ठठ्ठा, मख़ौल रहे उडाईआ। कलयुग बणके परम पुरख दा पठ्ठा, वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पैग़म्बर हो के इक्ट्ठा, शब्द रहे सुणाईआ। दुहाई देवे अठ्ठ सठ्ठा, तीर्थ तट रिहा कुरलाईआ। दरोही दिसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठा, हाहाकार ख़लक खुदाईआ। सांतक रही ना अठ्ठ सठ्ठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध नाल रलाईआ। कलयुग चुक्के आपणे आप गठ्ठा, भार रिहा दरसाईआ। नारद कहे मैं पंडत हो के केहड़ी गेड़ां लठा, उलटा गेड़ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप चुकाईआ। पोह कहे मेरा लेखा नाल धरनी, धर्म दुआर जणाईआ। परम पुरख दी इक्को सरनी, सरनगति इक्को नज़री आईआ। जिस भेव चुकाउणा वरनी बरनी, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। जिस दी इक्को तुक सब ने पढ़नी, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को मंज़ल चढ़नी, बिन पौड़ी डण्डे दए वखाईआ। इक्को घाड़न घड़नी, सति सति नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पहली पोह कहे जन भगतो मीत मुरार इकल्ला, अकल कलधार इक अख्वाईआ। जिस नाम फड़ाया पल्ला, पल्लू गंढु ना कोए छुडाईआ। दूई दुवैती मेटे सला, दुखियां दर्द वंडाईआ। हो के नूर अलाही अल्ला, आलमीन दया कमाईआ । जो वसे जलां थलां, महीअल डेरा लाईआ। जो आत्मा नाल परमात्मा हो के रला, इक्को रंग वखाईआ। उह आ गया भगत दुआरे भगतो तुहाडे महला, महल अवर ना कोए रखाईआ। भावें उस नूं सतिगुर शब्द कहो भावें कहि दयो जट्ट झल्ला, झलक आपणी इक रखाईआ। उहदा वक्त अगे किसे तों जाणा नहीं ठल्ला, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जो गोबिन्द इशारा कीता डल्ला, कलयुग विछोड़े वाली जगत जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पोह कहे जन भगतो दिवस सुहञ्जणा अज्ज, सब नूं मिले वड्याईआ। दर्शन करो रज्ज, नैण नैण बिघसाईआ। इस तों परे नहीं कोई हज्ज, जो मुहम्मद चार यारां गया समझाईआ। जिस सब दे पड़दे लैणे कज्ज, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। उस

वक्त लँघाया दीन दुनी विच ला के आपणा पज्ज, भेव अभेद छुपाईआ। ओहदा नाम निधाना चारों कुण्ट जाणा गज्ज, गज दा लेखा नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पोह कहे जन भगतो कलयुग वेखो झुकदा, खुशीआं सीस निवाईआ। नारद भेव खोल्हे इक तुक दा, जो निरगुण धार समाईआ। कूड़ कुड़यारा फिरे लुकदा, जगत नैण शरमाईआ। जन भगतां प्रभू गोदी चुकदा, बिन हथ्थां आप उठाईआ। लेखा जाणे धर्म दी धार सुत दा, पुरख अकाल नूर अलाहीआ। जिस वक्त सुहाउणा आपणी रुत दा, सदी चौधवीं सीस निवाईआ। उहदा खेल होणा सब कुछ दा, किछ समझ ना आवे जगत लोकाईआ। उह प्यासा जन भगतां वाली भुख दा, प्रेम विच समाईआ। उह भण्डारा आदि जुगादी सुख दा, सुख सागर रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पोह कहे मेरा चढ़ गया सुहञ्जणा महीना, माह रुतड़ी नाल वड्याईआ। जन भगतां ठांडा होया सीना, अमृत मेघ प्रभू बरसाईआ। जिहनूं वेखदे लोक तीना, बिन नैणां नैण तकाईआ। जिस दा हुक्म सब ने चीना, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। उह जन भगत सुहेले वेखे जिउँ जल मीना, जल थल दा मालक दया कमाईआ। जिस दे कलयुग चरण कवल बैठा अधीना, निव निव लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संग आप निभाईआ। पोह कहे जन भगतो बेनन्ती विच करो प्रणाम, आशा जगत ना कोए रखाईआ। घर मिले स्वामी राम, रम्ईआ अगम्म अथाहीआ। काहन दा सच वेखो बिश्रराम, सति दुआरे सोभा पाईआ। नूर ज़हूर तको अमाम, अमलां तों रहित नूर खुदाईआ। जिस दा सब तों वखरा पैग़ाम, कलम्यां बाहर पढ़ाईआ। जिस दा इक्को होणा इस्लाम, इस्म आज़म इक जणाईआ। जिस दा इक्को होणा सतिनाम, नाम नामा सिफ्त सालाहीआ। सो करन आया इंतजाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। उह खेल करे तमाम, तमअ लालच ना कोए जणाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी शाम, नूर चन्द करे रुशनाईआ। उह वसे सम्बल खेड़े हक ग्राम, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर भेव आप चुकाईआ। पोह कहे भगतो मैं खिड़ खिड़ा के हस्सया, खुशीआं ढोले गाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी फिरां नस्सया, भज्जां वाहो दाहीआ। नाले तकां कलयुग रैण अन्धेरी मस्सया, बिन नैणां नैण उठाईआ। जां निगाह मारी नज़र आया होड़ा उत्ते सस्सया, सति पुरख निरञ्जण दिता समझाईआ। मैं आपणा कमरकसा कसिआ, कसम खा के दयां सुणाईआ। जां फेर वेख्या हँ ब्रह्म दी धार नाल मेरा परमात्म वस्या, घर भगतां डेरा लाईआ। भगतां नूं पता नहीं उह उहनां दा करे जसिआ, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। बिना रसना तों देवे रसिआ, रसक रसक आपणा

१८१
२४

नाम चुआईआ। मैं हैरान हो गया क्यों कलयुग अन्त भगतां दे प्यार विच फसिआ, तन ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच गृह जन भगतां मन्दिर वस्या, डेरा आपणे घर सुहाईआ।

७ पोह शहिनशाही सम्मत दस इन्द्र सिँघ दे अन्तिम संस्कार समें हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर

सत पोह कहे मेरी सुहञ्जणी होई घड़ी, जगत वक्त भगत नाल वड्याईआ। जन भगत कहे मैं इक्को तुक पढ़ी, दूसर अक्खर ना कोए रखाईआ। आत्मा कहे मैं सचखण्ड दुआर वड़ी, प्रभ जोत जोत समाईआ। आशा कहे मेरा लेखा मुक्कया चमकौर गढ़ी, गोबिन्द दिती माण वड्याईआ। जगत जहान नालों टुट्टी कड़ी, नाता मोह ना कोए रखाईआ। लेखा रिहा ना हड्ड मास नड़ी, पंज तत पन्ध मुकाईआ। निरगुण धार जोत निरँकार जिस दे प्यार विच आदि जुगादि कदे ना सड़ी, मरन रूप ना कोए वखाईआ। सच दुआर जन भगतां नाल जुड़ गई लड़ी, कन्नी कन्नी गंढ पुआईआ। जिस दा लेखा दो जहान तोल विच नहीं सेर धड़ी, वंडण वंड ना कोए रखाईआ। उसे प्यार मुहब्बत विच मेरी बांह फड़ी, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। मेरी तृष्ना जगत जहान समझे कोए ना छड़ी, सतिगुर शब्द धुर दा साथी मेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। जन भगत खुशीआं करे तन वजूद, सच मिली सरनाईआ। घर मिल्या इक महबूब, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जिस मेरा लेखा पूरा कीता असल नाल सूद, शरअ शरअ रंग रंगाईआ। मंज़ल दे के इक मकसूद, लहिणा देणा लेखा झोली पाईआ। मेरा तन वजूद गया झूज, शहादत सतिगुर चरण चरण रखाईआ। जो आशा रखी पैग़म्बरां विच हज़ारा दरूद, दाउद दी आशा नाल मिलाईआ। सो पुरख अकाले दीन दयाले मेरी कीती सूझ, समझ जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। आत्मा कहे मेरा लहिणा शरीर नाल सिँघ इन्द्र, इन्द इन्द्रासण ध्यान लगाईआ। जिस दा धर्म दुआर खुल्ल्या जिंदर, कुण्डी खिड़की बन्द ना कोए वखाईआ। जित्थे आलस नहीं कोई निंदर, तृष्ना जगत ना कोए जणाईआ। ममता भय नहीं कोई चिन्दन, सति सति विच वड्याईआ। भगत भगतां मूल ना निंदन, मिल मिल खुशी बणाईआ। मेरा लेखा शरीर लग्गा विच हिन्दन, काअब्यां पए दुहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला

दीन दुनी लग्गा पिंजण, पेंजा मेरा शरीर जणाईआ। मैनूं खुशी होई किसे भगत सन्त भगत दुआर वहाई नहीं हिंझण, हंझू नज़र कोए ना आईआ। मेरे मस्तक सोहे सोहणी बिन्दन, आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। आत्मा कहे मैं तन दा दस्सां हिसाब, लेखा धुरदरगाहीआ। जेहड़ा वजूद मित्र बणया अहिबाब, सतिगुर संग निभाईआ। जिस दे अन्तर शेर सिँघ प्यार दी अगम्मी किताब, बिन रसना जिह्वा पढ़ाईआ। उस दी आकड़ जगत मिजाज़, दुनिया बाहर रखाईआ। इन्द्र सिँघ कहे मैं मार के कहां अवाज़, सच नाल सुणाईआ। जिस साहिब ने सीस उत्ते पहन के ताज, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। दीन दुनी दा बदल रिवाज, भगत दुआर दिती वड्याईआ। मेरा सोहणा करके काज, घोड़े उत्ते ल्या टिकाईआ। हरिसंगत सारी गई जाग, सवाधान कराईआ। आपणे हथ्थ विच फड़ के वाग, भगत दुआर विच भुआईआ। मेरा वड्डा होया भाग, खुशीआं ढोले गाईआ। मातलोक बुझया चिराग़, सचखण्ड होई रुशनाईआ। दीन दुनी दिती त्याग, भगतां मिल के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। शरीर कहे जिस वेले मैं घोड़े उत्ते चढ़या पिच्छाड़ी,
१८३ सतिगुर अगे सोभा पाईआ। लाड़े दे नाल बण गई सोहणी लाड़ी, सोहणा सगन जणाईआ। मेरी खुशीआं नाल हिल्ली दाढ़ी, १८३
२४ बिन रसना बुल्ल्ह फरकण चाँईं चाँईंआ। मेरा खेल सोहणा होया हाढ़ी, इक सत सत रलाईआ। भगत दुआर मैं सोहणा २४
वेख्या अखाड़ी, हरिसंगत ढोले गाईआ। नेत्र रोवे मौत लाड़ी, हाए उफ़ दुहाईआ। धरनी कहे एह गुरमुख आउणा नहीं विच जंगल झाड़ी, मसाणा नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तन कहे मैं दस्सां नाल प्यार, की प्रीतम दिती वड्याईआ। जिथ्थे मेरी सीढ़ी होई तैयार, सोहणी सेज सुहाईआ। एथे आ के मैनूं अस्व उत्तों दिता सी उतार, हथ्थ मस्तक उत्ते छुहाईआ। तेरा लेखा सदा रहे भगत दुआर, भगवन आपणा घर सुहाईआ। दर्शन हुन्दा रहे दीदार, नेत्र नैणां नैण रलाईआ। खुशीआं वाली वेखणी खुशी बहार, सचखण्ड साचे वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। आत्मा कहे मैं जावां बलिहार, बलि बलि सीस निवाईआ। मैनूं चरणी वाजां रही मार, दोवें हथ्थ उठाईआ। आजा छड़यां दे सरदार, सच थान सुहाईआ। जिथ्थे खेल सची सरकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। असीं ढोले गाईए दो चार, बिन रसना रस बणाईआ। फेर होईए ख़बरदार, भगतां दईए जणाईआ। साडा लहिणा देणा जुग चौकड़ी बणया नाल निरँकार, कुदरत कादर दिता बणाईआ। असीं सचखण्ड

पुज्जे आपणी वार, वारता अगली दईए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चरणी आत्मा कहे सुण वे मेरया भाईआ, भैण भाई नजर कोए ना आईआ। आजा दो जहान दिआ राहीआ, पन्ध मुक्कया चाँईं चाँईंआ। जगत जहान दीआं लथ्थीआं साहीआं, शहिनशाह दिती वड्याईआ। साडा लेखा होया नहीं विच बेले काहीआं, जंगलां विच ना कोए भुआईआ। बेशक तेरा गोबिन्द दा लहिणा छींबे झीवर नाईआं, जट्टां वंड वंडाईआ। तेरीआं शब्द शहादत शहादत गवाहीआं, सदा सदा करन शनवाईआ। मैनूं याद आउँदीआं तेरीआं प्रीतां लाईआं, प्रेम सक्या ना कोए तुड़ाईआ। जिस दा लेखा हिन्दसिआं वालीआं नहीं विच इकाईआं, दहाईआं वंड ना कोए वंडाईआ। मेला मिल्या नाल भगतां भाईआं, भैण भैणां नाल मिलाईआ। बसन्त कौर कहे मैं खुशीआं विच देवां वधाईआं, बिशन कौर नाल मिलाईआ। पाल सिँघ कहे मैं सिधीआं कर कलाईआं, हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। साडी पंजां दी इक सलाहीआ, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ । पंजे कहिण इक्को गाईए सच्चा राग, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। पूरन सतिगुर पकड़ी वाग, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रेम प्यार दा बख्श वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। धर्म दा दे त्याग, त्रैगुण अग्न बुझाईआ। हँस बणा के काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। लेखा रहे ना कोई जगत रबाब, सुर ताल तों बाहर शनवाईआ। साडा खुशीआं वाला महकया बाग़, पत्त टहणी आप महकाईआ। साडा दीपक जोती जगदा रहे चिराग़, तेरे घर रुशनाईआ। तृष्ना मेटणी आग, हवस ना कोए वखाईआ। असीं पंजे बेनन्ती करदे तेरे चरण कवल लाग, निउँ निउँ सीस निवाईआ। दिल्ली दरबार दी नींह रखणी नौ माघ, अगे पिच्छे थित ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला लैणा मिलाईआ। पंज तत कहे मैं शरीर जगत इक, इन्द्र सिँघ वड्याईआ। मैं चाहुंदा भगत दुआरे जावां टिक, गृह अवर ना कोए रखाईआ। मेरा धुर दा लेख लिख, पूरब पन्ध मुकाईआ। बाल बाला तेरा सिख, तेरे विच समाईआ। मेरा नाता नहीं कोई किसे नाल मुन रिख, तपीआं वंड ना कोए वंडाईआ । सच दुआर पा दे भिख, देवणहार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। भस्म कहे मैं मढ़ी गोर होणा सुआह, अग्नी तत जलाईआ। मेरा मालक बेपरवाह, जिस अगे वास्ता पाईआ। मेरी कबूल करीं दुआ, रहमत करनी धुर दे माहीआ। पंच मेरे होण गवाह, पंचम देणी माण वड्याईआ। सच सिँघासण मिले सच्चा थाँ, सोहणा संग बणाईआ। दिल्ली दरबार फेर खड़ना नाल चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। मैं भगतां दयां सुणा, सहिज

नाल समझाईआ। जन भगतो भगत प्यार दी फड़नी बांह, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। जुग चौकड़ी नालों नवां चलणा राह, रैहबर बेपरवाहीआ । सच दुआर देणा सुहा, सोहणा रंग रंगाईआ। हर इक गुरसिख जनभगत मेरे प्यार विच सेवा लए कमा, छोटा वड्डा बुढ्ढा बाल नौजुआन रहिण कोए ना पाईआ। इन्द्र सिँघ कहे मैं खुशीआं नाल सेवक हो के सब नूं दयां सुणा, बिन रसना बोल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर गृह दए वड्याईआ। इन्द्र सिँघ कहे सतिगुर शब्द ने दितीआं मौजां, मजलस भगतां नाल बणाईआ। मैं बेनन्ती करां मेरे थाँ प्यारा होवे सिँघ फ़ौजा, बसन्त कौर खुशीआं नाल जणाईआ। एहदा लेखा पूरब जो गोबिन्द नाल सिँघ जोगा, जुगती जगत नाल दृढ़ाईआ। साचा सुख आत्म धार सच दुआर भोगा, भगवन दिती माण वड्याईआ। कोई लालच नहीं लोभा, ममता मोह ना कोए रखाईआ। मेरे थाँ गुरमुख तेरे दर ते पावे सोभा, सोहणी खुशी बणाईआ। सद आपणी रखणा गोदा, गोदी गोद विच टिकाईआ। उह लेखा याद कर लै जिस वेले गोदावरी उत्ते अरदासा सोधा, नैण ज़िमीं असमान तों बाहर रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर शब्द मेरा रूप होवे योद्धा, बलधारी बल प्रगटाईआ। बुद्धी तों परे होवे बोधा, अक्ल ना कोए चतुराईआ । जिस दो जहान होवे सोधा, सुदी वदी तों बाहर वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं करना अग्नी भेंट, रीती जगत जणाईआ। आत्मा कहे मेरा बण के खेवट खेट, सचखण्ड सच धार सुहाईआ। पंज तत कहिण फेर असीं तेरी दरगाह जाईए लेट, धरनी धवल धौल ना कोए चतुराईआ। फेर जन्म लईए ना कदी माता दे पेट, जूनी जून ना कोए भुआईआ। अगे जुग लँघ गए केती केत, केतड़े पन्ध मुकाईआ। तुध बिन करे कोई ना हेत, हितकारी संग ना कोए निभाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरी रुत मौले बसन्ती चेत, चेतन सब नूं आप कराईआ। जन भगतां वसणा नेतन नेत, नेरन नेर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरे प्यार विच होवण खेत, मुहब्बत तेरी विच समाईआ।

७ पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर
रणजीत सिँघ कल्सीआं वाले दे नवित

पंज तत कहिण प्रभ रूप बणा लै जन का, निरगुण धार एकँकार बण जणेंदी माईआ। साडा लहिणा देणा लेखा रहे

ना वजूद माटी ख़ाक तन का, ततव दे मालक देणी माण वड्याईआ। झगड़ा रहे ना मनसा वाला मन का, ममता मोह विकार देणा गंवाईआ। वसेरा दिसे कोए ना छप्पर छन्न का, चरण कवल तेरी सरनाईआ। भण्डारा देणा नाम वाले धन का, जगत दौलत कम्म किसे ना आईआ। मार्ग दस्सणा इक धर्म दा, धरनी धरत धवल धौल मिले वड्याईआ। रूप दरसा दे आपणे ब्रह्म का, पारब्रह्म पड़दा आप चुकाईआ। भेव खुल्हा दे आपणे गृह खड़न दा, सचखण्ड साचे वजे वधाईआ। मार्ग दस्स दे आपणे मन्दिर चढ़न का, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मीत बेपरवाहीआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी जुग जन्म दी मेट दे तपस, तपस्या दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत तृष्ना रहे ना हवस, हम साजण देणी माण वड्याईआ। किरपा निधान करना तरस, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। अमृत मेघ देणा बरस, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। मेल मिलाउणा उत्ते फ़र्श, अर्शी प्रीतम दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडा आदि जुगादि वेख लै गेड़, जुग चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। साडा अन्तिम कर निबेड़, लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। चुरासी वाला कट दे गेड़, जम की फाँसी ना कोए भवाईआ। लहिणा देणा दे निबेड़, घर मन्दिर वजे वधाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले करीं ना देर, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरा तत सरूप, सरगुण धार सोभा पाईआ। तूं शहिनशाह शाहो भूप, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। तेरा लहिणा देणा चारे कूट, दहि दिशा तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मेट दे झूठ, कूड़ कुकर्म देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा मुकाउणा जग, जग जीवण दाते देणी वड्याईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, हरि करता नूर अलाहीआ। धर्म दी धार बख्श दे अध, अगला पैंडा दे मुकाईआ। तेरा नाम संदेशा धुर दा शब्द सुणीए नद, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच दुआर एकँकार निरगुण धार मेल लै झब, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरे हथ्थ कुझ सभ, कूड़ दे मालक सति सच देणा प्रगटाईआ।

✪ २१ पोह शहिनशाही सम्मत दस २५ बी० बी० गंगा नगर ज़िला बीकानेर, रत्न सिँघ सुखनिंदर सिँघ, २५ बी० बी० रतेवाल जगीर सिँघ, अजमेर सिँघ सजावल पुर, ठाकर सिँघ पदम पुर ✪

पंज तत कहिण प्रभ भगतन नाम कर उग्घा, उगण आथण पुरख समराथण दे वड्याईआ। दीपक जगत जहान दुनी विच होवे ना बुझा, जोत चराग़ चरागाहां कर रुशनाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा होवे सुझा, सच स्वामी अन्तरजामी देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सचखण्ड वखाउणा झुग्गा, गृह मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। साडा लहिणा देणा रहे ना उत्ते वसुधा, धरनी धरत धवल धौल दा पन्ध मुकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर साडा लेखा मात पुज्जा, पवण पाणी तेरी ओट तकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते साडा आदि जुगादी वेख लै मुद्दा, मुदतां दे मालक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जन भगतां पाउणी सार, महासार्थी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म वेख अँधयार, अन्ध अज्ञान खोज खुजाईआ। काया मन्दिर अन्दर बिन नेत्र निगाह लैणी मार, बिन लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं जुग चौकड़ी मिट्टी ख़ाक हुन्दे छार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी फिरदे रहे वाहो दाहीआ। तेरा करदे रहे इंतज़ार, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग ध्यान लगाईआ। धन्नभाग जे होया तेरा दीदार, बिन नैणां नैण मिलाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते इक इकल्ले पाउणी सार, समरथ स्वामी अन्तरजामी आपणी दया कमाईआ। बिन धूड़ तों चरण कवल बख़्शणी छार, मस्तक टिक्के बिन ख़ाक ख़ाक रमाईआ। साडा आवण जावण पतित पावण गेड़ निवार, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। असीं पहुंचीए सचखण्ड सच्चे दुआर, दरगाह साची मुकामे हक हक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच देणी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरे भगत सुहेले लोकमाती, ग़रीब निमाणे वेख वखाईआ। साडी कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी राती, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पाती, शरअ शरीअत अन्दरों देणी मिटाईआ। साडा लहिणा देणा दीन दुनी रहे ना काग़ज़ाती, कलमे दे मालक कायनात देणी वड्याईआ। साडी ज़िंदगी तेरे चरण कवल हयाती, जीवण तेरे कदमां विच रखाईआ। तूं शाहो भूप मेहरवान कमलापाती, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। साडी अन्तिम मुका दे वाटी, पाँधी पन्ध ना कोए रखाईआ। साडी मंज़ल चढ़ा दे घाटी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साडा लेखे ला लै तन वजूद माटी, पंज तत वास्ता पाईआ। साची बख़्श दे इक्को खाटी, सिँघासण आसण इक दृढ़ाईआ। तेरा तक्कीए नूर जोत ललाटी, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे, तुरीआ तों बाहर दे वड्याईआ। निरगुण धार वस जा नेरे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। साडे अन्तर बख्श दे चाउ घनेरे, माया ममता ना कोए हल्काईआ। असीं अगे जन्म भोग लए बथेरे, जम्मे जम्मे मर मर जाईआ। खेल तक लै गुरु गुर चेरे, चेले गुरु रूप दरसाईआ। अन्तिम कढ लै विच्चों कलयुग अन्धेरे, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। इक्को रंग वखा दे सञ्झ सवेरे, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ । असीं गृह मन्दिर सचखण्ड वसीए तेरे, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना कर दे मेहरे, मेहरवाना मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तुध, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ । साडी निर्मल कर दे बुद्ध, पतित पुनीत बणाईआ। पंज विकार करना पए ना युद्ध, खण्डा कूड़ ना कोए खड़काईआ । तेरा भेव अवलड़ा लईए बुज्झ, पर्दा ओहला देणा चुकाईआ। तेरा दुआरा जाए सुझ, गृह मन्दिर इक वखाईआ । साडा लोकमात लहिणा देणा गया पुग, अगे आस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले मंगीए तेरा दुआर, दर ठांडे सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मेला मेलणा आपणी धार, साडी धरनी धरत धवल धौल तेरी दुहाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रोईए ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। साडा लेखा मुका दे मढ़ी गोर नालों विच्चों संसार, संसारी भण्डारी सँघारी साडी देण गवाहीआ। उह लेखा पूरा करदे जो आशा रख के गए तेई अवतार, अवतरी तेरी ओट रखाईआ। पैग़म्बरां पैग़ाम वाली सुण पुकार, जो बिना अलिफ़ ये सुणाईआ। जो गुरुआं बोलया जैकार, बिन रसना ढोले गाईआ। लहिणा देणा तक लै आप आपणी अन्तिम वार, वारस हो के वेख वखाईआ। पंज तत कहिण साडी बिन नेत्रां गिरयाज़ार, बिन हंझूआं हार बणाईआ। तूं बख्श लै बख्शण योग निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सद वसीए तेरे सच दुआर, दरगाह साची आसण लाईआ। जे आत्मा तेरा रूप नूर उज्यार, जोती जाते तेरे विच समाईआ। क्यों भगतां तत होण ख्वार, ततव तत रंग ना कोए रंगाईआ। साडी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे कलि कल्की अवतार, कलयुग कल काती डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर भेव अभेद आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जन भगतां दीन दुनी रहे ना भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। साडा लेखा मुका दे कांड कर्म, निहकर्मी दया कमाईआ।

तेरी इक्को आवे सरन, सरनगति इक रखाईआ। लेखा मुका दे जन्म मरन, मर जीवत तेरा रूप दरसाईआ। तूं आदि जुगादी करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। साडी घाड़न आएयों घड़न, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। भगत सुहेले आएयों फड़न, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। लेखा मुका दे सीस धड़न, चोटी जड़ आपणे रंग रंगाईआ। जो तेरी धार तेरा नाम ढोला पढ़न, तेरे तेरे विच समाईआ। अन्तिम तेरी मंज़ल चढ़न, सचखण्ड साचे पुजण चाँईं चाँईंआ। तूं निरगुण धार आपणे लाउणा लड़न, अंगीकार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा गृह इक सुहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा गृह वेखीए सुहञ्जणा, सोभावन्त अगम्म। जिथ्थे दीपक जगे आदि निरञ्जणा, नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्को अलाही खेल होवे पारब्रह्म। दर्शन करीए दर्द दु:ख भय भञ्जणा, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेटणा भरम। बिन धूड़ी ख़ाक तेरे चरण कवल होवे मजना, सति सच साहिब स्वामी अन्तरजामी देणा सरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, जन भगत सुहेले मंगण तेरा दरन। पंज तत कहिण प्रभ तेरे दर भिखारी, भगतन देणी माण वड्याईआ। तूं निरगुण जोत निरँकारी, तत सुहेले लैणे मनाईआ।
१८६ जे आत्मा दएं अधारी, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। क्यों ना पंजां ततां करें उधारी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग १८६
२४ चौकड़ी पिच्छों तेरे दर कीती पुकारी, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पंजां ततां अन्तिम पार उतारी, परम पुरख देणी सरनाईआ । २४
दरगाह साची सचखण्ड मुकामे हक तेरी करीए ताब्यादारी, बिन सीस सीस जगदीस झुकाईआ। तेरा खेल तक्कीए नूर उज्यारी, जोती जाते ध्यान लगाईआ। सति दी सच बख्श दे दात अपारी, अपरम्पर स्वामी दया कमाईआ। निरगुण निरँकार दाता साडी अन्तिम पैज संवारी, अन्तिम मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरण कवल बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ।

✪ २२ पोह शहिनशाही सम्मत दस २५ बी० बी० मांह सिँघ, तारा सिँघ, तरलोक सिँघ, २५ बी० बी० गंगा नगर
मलकीत सिँघ बलवाली प्रकाश सिँघ २५ बी० बी०, मंगता २१ बी० बी०
सुरजीत सिँघ बनवाली, गुरदयाल सिँघ, प्रेमी कनेडा ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडी तेरे चरण कवल अरज़ोई, आरज़ू आदि जुगादि दे मालक पूर देणी कराईआ। परवरदिगार

सांझे यार तेरे दर दरोही, हउका दे दे कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा साथ देवे ना कोई, सगला संग ना कोए बणाईआ। पतिपरमेश्वर साडी पत गई खोही, ख़लक दे ख़ालक देणी वड्याईआ। साडी आशा बिना हंझूआं धार रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। साडे अन्तर निरंतर जन भगतां सुरत उठा दे सोई, सोवत जागत रूप दरसाईआ। सो आसा पूरी कर दे जो वायदा कीता कबीर नाल लोई, लोयण अन्दरों अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा मेट दे पंज गरोही, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। आत्मा परमात्मा तेरे नाल जाए छोही, शौहर बांके आपणा रंग देणा रंगाईआ। साडी दुरमति मैल बिन अठसठ तीर्थ जाए धोई, पतित पुनीत दे कराईआ। साडी लेखे ला लै अवतार पैग़म्बरां वाली पेशीनगोई, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग तक लै रैण अन्धेरी होई, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा तक लै आप, आपणी दया कमाईआ। तूं आदि जुगादी माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। साडे मेट रोग संताप, संसा अवर रहे ना राईआ। इक्को तेरा जपीए जाप, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। तूं शहिनशाह कमलापात, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। जे आत्मा तेरी ज़ात, क्यों ततां करें जुदाईआ। साडा जोड़ लै निरगुण धार नात, मेला मेलणा सहिज सुभाईआ।
साडी अन्तिम पुछीं वात, वक्त सुहञ्जणा गया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सच प्यार दी पा दे भिक्ख्या, भिखक भिखारी मंग मंगाईआ। गुण निधाने दे दे सिख्या, साची सच सच दृढ़ाईआ । वायदा पूरा कर दे जो कौल इकरार निरअक्खर धार लिख्या, धुर दा हुक्म हुक्म जणाईआ। बेशक तेरी सृष्टी दिसे मिथ्या, दीन दुनी रहिण ना पाईआ। तूं परम पुरख अबिनाशी अचुत्या, चेतन सब नूं देणा कराईआ। साडा वक्त सुहा दे सुहञ्जणी कर दे रुतया, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तेरा भगत सुहेला तेरे राहों जाए ना घुथया, फड़ बाहों लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख़्शणा धुर संजोग, विछोड़ा जगत ना कोए रखाईआ। भसमड़ भोगीए तेरा भोग, भरम विच ना कोए भुलाईआ। इक्को नाम निधान दा बख़्शणा जोग, जुगती दीन दुनी बाहर समझाईआ। सचखण्ड निवासी तेरे दर ते माणीए मौज, मजलस शब्द गुरु नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे दर ठांडे होए पेश, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। तूं मालक नर नरेश, नरायण नूर अलाहीआ। साडा सुण लै इक संदेश, बिन ख़बरां ख़बर जणाईआ।

जो संदेशा दिता गोबिन्द दस दस्मेस, दहि दिशा बाहर समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जोती जामा धारे भेख, भेखाधारी आपणा भेख वटाईआ। जिस दी नज़र ना आए मुच्छ दाढ़ी कोई केस, मूंड मुण्डाया रंग ना कोए वखाईआ। उह मालक ख़ालक रहे सदा हमेश, हमसाजण बेपरवाहीआ। जो एथे उथे नर नरेश, दो जहानां हुक्म वरताईआ। जिस दे मंगते विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेश, दर ठांडे ख़ाली झोलीआं बैठे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा तेरे अगे वास्ता, वास्तक भेव देणा खुल्हाईआ। इक्को दस्स दे रास्ता, रैहबर धुर दे नूर अलाहीआ। खेल तक्कीए तेरा आत्मा परमात्मा वाली रास दा, गोपी काहन नाच देणा जणाईआ। साडा लहिणा रहे ना पूरब आस दा, तृष्ना देणी मिटाईआ। तेरा रूप पुरख अबिनाश दा, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। तेरा खेल सचखण्ड निवास दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को नूर ज़हूर तेरी जोत प्रकाश दा, दीवा बाती अवर ना कोए रुशनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे विच संसार, सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। निरगुण हो के निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। असीं कूक कूक करीए पुकार, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा कर्ज उतार, मकरूज़ तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। साडी पैज दे संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं कलि कल्की अवतार, निहकलंक तेरी सरनाईआ। अमाम अमामा कर उधार, उदर दा लेखा रहे ना राईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां विच्चों कर लै बाहर, दरगाह सच सच टिकाईआ। जिथ्थे तेरा इक्को होवे दीदार, दर्शन दीद दीद कर खुशी मनाईआ। इक्को गृह होवे घर बाहर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत सुहेले तेरे मित्र मुरार, साजण मीत तेरी बेपरवाहीआ। साडी कलयुग अन्त दीन दुनी विच्चों पैज संवार, भवजल लेखा रहे ना राईआ। परम पुरख परमात्म साडी मन्ज़ूर करीं निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सची सरकार, शहिनशाह शाह तेरी सरनाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर दुपहर नूं छत्ती देगां चावलां दीआं बणाउण समें ✪

छब्बी पोह कहे मेरा मालक पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता अगम्म अथाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं वेखणा

खेल तमाश, चार जुग दा पूरब लेखा नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर अगम्मी आस, बिन शरअ जगत शनवाईआ। मैं दीन दुनी तकी उदास, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मैनूं संदेशा देवे शंकर उत्तों कैलाश, जटा जूट रिहा सुणाईआ। कलयुग वक्त सुहञ्जणा नौ खण्ड पृथ्मी बुतख़ानयां वाली तक लै लाश, मुहम्मद मकबरा नाल मिलाईआ। जिस दे अन्तर निरंतर इक्को नूर नूर प्रकाश, जोती जाता रिहा दरसाईआ । सारे इक्ठे हो के कहिण सतिगुर शब्द दा सदी चौधवीं दा बणया होवे लिबास, सोहणा रूप दरसाईआ। एह वक्त सुहञ्जणा जुग चौकड़ी पिच्छों ख़ास, ख़ालस आपणा भेव चुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पृथ्मी आकाश पाताल गगन गगनंतर पावण रास, दो जहान ख़ुशीआं नाच नचाईआ। जिस पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार सब नूं देणी शाबाश, शहिनशाह हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। छब्बी पोह कहे मेरी आसा अगम्मी, निरअक्खर धार जणाईआ । जेहड़ी ख़ाहिश चार जुग किसे अन्तर मूल ना जम्मी, रसना जिह्वा ना कोए वड्याईआ। मेरी बिरहों वैराग तों बाहर इक तमी, लालच निरगुण धार जणाईआ। जो नानक धार छत्तीवें जुग दी वेखी कमी, अक्खर वाहिगुरु शब्द शहादत इक भुगताईआ। जिस नूं सृष्टी दृष्टी अन्तर गाया मूल ना दमी, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। उस दी दूर करनी दर्द धार दी ग़मी, ग़मख़ार हो के वेख वखाईआ। एह रसम जगत जहान तों नवीं, नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप दीप समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल अवतार चवी, चौबीसा हरि जगदीसा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी कदम बोसी ज़ल बवम तूज़े ज़वी अर्शे नुज़ा कूज़े खुदा लावलज़ली जाबवमाए तोऊ तोज़ू ज़विक्ती जाहिदाउलशी नूरे खुदा मेहरवान महिबान बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। मुहब्बते वज़ू खुदाए रवू दुआए अज़ू बिन रसना ज़बां जबराईल बावगल ज़वली जामस्तो तानीज़े जहम मुहम्मद ज़ुवाए अर्शे नुराए फ़र्शे खुदाए खुद मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे धुर दे परवरदिगारा, यामबीन तेरी सरनाईआ। जे निरगुण धार नानक तेरा प्यारा, सरगुण तत वजे वधाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। मैं चाहुंदी मेरे लिबास विच अज्ज तों हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर दे कर रुशनाईआ। फेर वेखणा खेल विच काहरा, काअब्यां परे की तेरा लेखा धुर दे माहीआ। मैं चाहुंदी हज़रत दी आसा मुताबिक गोबिन्द दी धार जे खेलया खेल दुबारा, दोहरा रंग रंगाईआ। मैं तेरे लिबास विच शाहो शाबाश सजदा करां इक वारा, एकँकार

तेरी ओट रखाईआ। जन भगतां अगे करां पुकारा, निव निव सीस झुकाईआ। मेरे मालक सब दा लेखा तक तक आपणे किनारा, कन्ढा घाट जगत ना कोए रखाईआ। तेरा लिबास शाहो शाबाश चौदां तबक बिना अलिफ़ ये तों होवे ज़ाहरा, बिन अक्खरां अक्खर दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा पर्दा धुर दे मालक देणा उठाईआ।

✪ फिर सदी चौधवीं दा लिबास पा के दुबारा विहार होया ✪

धरनी कहे मैं जुग जुग रखदी रही उडीकां, बिन आसा जगत रखाईआ। छब्बी पोह सुहञ्जणी होवे तारीख़ा, सम्मत शहिनशाही नाल मिलाईआ। उठ निगाह मार लै बाल्मीका, बटवारया ध्यान लगाईआ। आह ज़िमीं वेख लै जिथ्थे मारीआं लीकां, बिना राम तों दिती राम दुहाईआ। जिस मालक विच हक तौफ़ीका, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह तेरीआं करन आया तस्दीकां, शहादत भगतां वाली भुगताईआ। चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ वेख लै चारों कुण्ट निकलणीआं चीकां, चीक
१६३ चिहाढ़ा जगत लोकाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा हो गया ठीका, जो ठाकर ब्राह्मण गौड़े नाल वड्याईआ। बावन खेल खेलया १६३
२४ बण के नीकन नीका, बलि देवणहार गवाहीआ। जो मालक ख़ालक लख चुरासी जीव जीअ का, चारे खाणी चारे बाणी २४
आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे बाल्मीकी वेख लै आपणा बुढेपा, नढ्ढुया रूप जणाईआ। धुर दे राम दा तक लै पेचा, पेशीनगोई नाल रखाईआ। जो तेरे प्यार विच मित्रा आया उच्चेचा, निरगुण आपणा रूप बदलाईआ। उह समां रख लै चेता, चेतन हो के रिहा दृढ़ाईआ। जिस वेले मूधा पै के विच खेता, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश तों बाहर ध्यान लगाईआ। नाले इक्को मन्नया नेता, नर निरँकार सीस झुकाईआ। जिस हस के किहा बटवारया नीचा मेरा नीची ज़ात नाल ठेका, रवीदास फिर तेरे नाल मिलाईआ। जिन्हां पिच्छे गोबिन्द ने बच्चे करने भेंटा, सुत नीहां हेठ दबाईआ। फिर पुरख अकाला दीन दयाला बण के आवे खेवट खेटा, धुर मलाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे बाल्मीक ने मंन के इक्को पती, पत्त टहणी जंगलां वाली मुख विच पाईआ। आपणी हवस रखी ना रती, तमंना जगत ना कोए जणाईआ। फेर नैण मूंद के चारों कुण्ट तक्कया सब दा मालक कमलापती, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। उस वेले एस धरती विच्चों आवाज़ आई नानक निरगुण धार आउणा जिस ने भेव खुल्हाउणा जुग छत्ती, छतीसा धार वड्याईआ।

जिस दी जोत गोबिन्द धार होणी बत्ती, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस विच फ़र्क होणा नहीं रती, भेव अभेदा दिता समझाईआ। बाल्मीक फेर मीट के अक्खी, बिन अक्खीआं अक्ख खुल्हाईआ। राम सीआ तों बाद तक लई काहन दी सखी, सख़ावत विच बख्शी धुरदरगाहीआ। कलमे धार सुणी सुमती, अक्खर अक्खरां विच्चों बदलाईआ। कलयुग दी खेल वेखी दीन दुनिया अग्नी तपी, सांतक सति ना कोए कराईआ। जां निगाह मारी सदी चौधवीं फिरे भजदी टप्पी, आपणा पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दी धार वेखी छपी, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। उस वक्त धुर दे राम ख़बर अगम्मी दस्सी, दहि दिशा तों बाहर दिता दृढ़ाईआ। भगतां अन्दर मेरी धार भगतां दे प्यार विच होवे वसी, दूजा घर नज़र कोए ना आईआ। शब्द दी डोरी होवे रस्सी, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप चुकाईआ। बाल्मीक ने मथ्थे नूं लाई धरती ऐस दी धूड़ी, खुशीआं ख़ाक रमाईआ। मुख पल्ला पा के किहा मेरी तृष्ना अन्दरों रहे ना कूड़ी, कूड़ी क्रिया ना कोए वड्याईआ। मैं मूर्ख तेरा मूढ़ी, देणी माण वड्याईआ। मैनूं रंगण चाढ़नी बिना रंग तों गूढ़ी, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। उस वेले मैनूं भगत बणावीं सन्त बणावीं मैं तेरी करां मशहूरी, पड़दा
१६४ अक्खीआं उत्ते रखाईआ। नाता वेखीं दीन दुनी कूड़ी, कूड़ कुटम्ब बणे जगत लोकाईआ। मेरे राम रामा तेरा पन्ध रहे ना १६४
२४ दूरी, दूर दुराडे मिलणा धुर दे माहीआ। मेरा लेखा तेरे नाल होवे ज़रूरी, ज़रूरत अगली नाल जणाईआ। जोती जोत २४
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। बाल्मीक बिन हथ्थां कीती निमस्कार, बिन डण्डावत डण्डावत जणाईआ। वाह मेरे धुर दे मित्र मुरार, तेरी बेपरवाहीआ। मैं कलयुग वेखणा चाहुंदा तेरी बहार, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। तेरी गुलशन वेखां गुलज़ार, धरनी उत्ते ध्यान लगाईआ। उस वेले बेशक तेई हो जाण अवतार, पैग़म्बर गुरु आपणा पन्ध मुकाईआ। सारयां संदेशा देणा वारो वार, पेशीनगोईआं भविख्तां नाल जणाईआ। नाले बाल्मीक ने ताड़ी मारी जे आवें ते आवीं बण कलि कल्की अवतार, कला दिआ मालका सोलह कला तेरीआं कम्म किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप बणीं सब दा सांझा यार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सांझा बणाईं इक दुआर, जिथ्थे दुआरका वासी बैठे सीस निवाईआ। इक्को नाम करीं जैकार, इक्को शब्द शब्द शनवाईआ। नाले रो के हस के दोहां दी धार विच बाल्मीक ने किहा जिंनां चिर प्रभू मेरया सांझा करें ना जगत वाला आहार, खाणा पीणा जगत ना रंग रंगाईआ । तेरा खेल उस वेले तकां जिस वेले छत्ती राग संदेशा दे चुकण ते कूकण कूक पुकार, दरोही दरोही दरोही तेरी दुहाईआ। तेरा खेल होवे इस धरनी उत्ते जिथ्थे मैं कीती गिरयाज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। धुर दा हुक्म होया शब्द संदेशा दिता

सची सरकार, सति सति सति नाल समझाईआ। मैं आवां निरगुण सरगुण नानक धार तों बाहर, बेऐब नूर नुराना नूर अलाहीआ। सब दा लहिणा देणा कर्ज़ा दयां उतार, मुहम्मद दी आशा नाल जुड़ाईआ। सदी चौधवीं तेरे कदमां विच रोवे होवे बेज़ार, गिरयाज़ारी विच दुहाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चार वरन अठारां बरन चारे खाणी चारे बाणी नाम कलम्यां देणा उधार, भगतां उदर दा लेखा देणा मुकाईआ। उस वेले तेरा रूप अगम्मा होवे नर निरँकार, नर नरायण देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे मेरा अन्त अख़ीरी इक सुआल, मैं नैणां नीर वहा के दयां सुणाईआ। मेरे शहिनशाह मैं होई कंगाल, कमली कोझी रोवां मारां धाहीआ। मेरे उत्ते धर्म दा रिहा ना कोए दलाल, विचोला सच मिलण कोए ना पाईआ। हकीकत दिसे ना हक हलाल, अमलां विच ना दिसे लोकाईआ। पवित्र दिसे ना कोई धर्मसाल, काअबे कूक कूक देण दुहाईआ । मेरी बेनन्ती इक्को इक तेरा तकां जल्वागर नूर जलाल, ज़हूर तेरा वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं आसा नाल तूं खेल कर कमाल, कमलापाती आपणा रंग रंगाईआ। मैं चाहुंदी जन भगतां सन्तां सूफ़ी फ़कीरां दरवेशां जिज्ञासुआं संसारीआं इक्को भोजन देणा खुआल, ख़ालक आपणा रंग चढ़ाईआ। जो चार जुग दे विछड़े लए भाल, मेल मेलया सहिज सुभाईआ। छती देगां नहीं जन भगतां दा महकया पत्त टहणी डालू, महक दो जहान वखाईआ। इस दा लेखा बेमिसाल, छब्बी पोह दी रैण कहे मैं गावां चाँईं चाँईंआ। बाल्मीक बटवारया पाल सिँघा उठ के सब नूं कहि दे जन भगतो देगां थल्ले अग्ग दयो बाल, माचिस खुशीआं नाल लगाईआ। अगे वास्ते जन्म मरन दा खाण पीण दा सब दा हल होया सवाल, तृष्ना कूड़ ना कोए रखाईआ। जैकारे बोलो इक्की बण के धुर दे लाल, लालन मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो तुहाडी लेखे लावे घाल, अगे घाल घालण दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

छब्बी पोह कहे जन भगतो सतिगुर शब्द दा हुक्म कहिणा, जो पुरख अकाला दीन दयाला रिहा जणाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सब ने खुशीआं नाल बहणा, अन्तर निरंतर इक ध्यान लगाईआ। हथ्थ जोड़ के दर्शन कर लओ आपणे नैणां, नेत्र सतिगुर अक्ख मिलाईआ। फेर तक लओ हरिसंगत भाई भैणां, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार जुग दे मित्रो अज्ज

लै लओ आपणा लहिणा, लेखा पूरब झोली पाईआ। सति धर्म दा तन वजूद सुहावे गहिणा, तन माटी दए वड्याईआ। जो आशा रखी बाल्मीक विच रमायणा, राम रामा रंग रंगाईआ। तुहाडा मिल्या धुर दा साक सैणा, सज्जण नूर अलाहीआ। जिस दे कोल रहे ना कोए त्रफ़ैणा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। कूड़ विकार वहिण ना वहिणा, सति सच नाल जुड़ाईआ। नाता तोड़े लाड़ी मौत डैणा, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मेला लए मिलाईआ। सम्मत शहिनशाही दस कहे जन भगतो बाहरों होणा चुप, अन्तर सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। प्रकाश तकणा अन्धेरा घुप, लोयण लोचन नाल मिलाईआ। जेहड़ा परमात्मा तुहाथों बैठा छुप, सो पर्दा दए उठाईआ। तुसीं भगत सुहेले उस दे लाडले पुत, पिता पूत गोद टिकाईआ। अज्ज सुहञ्जणी होई रुत, खुशीआं ढोले गाईआ। लेखा वेखो अबिनाशी अचुत, जो चेतन सब नूं रिहा कराईआ। जिस धुर दे नाम दी बिना कीमत पाई लुट्ट, लुटेरयो लुटणा थांउँ थाँईंआ। अज्ज नाम निधाना अमृत पीणा घुट, अंमिओं रस निझरों दए झिराईआ। कूड़ दी लिव लग्गी जाए छुट, सति नाल मिलाईआ। तुहाडा नाता जाए ना टुट्ट, टुटयां जोड़े चाँईं चाँईंआ। किसे दा भाग ना जाए निखुट, खोटे खरे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो धरती दा वेखो भाग, भगवन की दए वड्याईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगा चिराग़, नूर नुराना करे रुशनाईआ। कूड़ क्रिया जगत अग्न बुझा के आग, अमृत मेघ बरसाईआ। तुहाडा सच दा वेख त्याग, त्रैगुण अतीता दए वड्याईआ। किसे हरिजन रूप नहीं बणना काग, हँस गुरमुख आप बणाईआ। अन्तर निरंतर दे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। सावधानी विच सब ने जाणा जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगत सुहेले धर्म दे बणना साध, साधना सतिगुर चरण सरनाईआ। जिस नूं आदि जुगादि सारे रहे अराध, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। उह आया गुर अवतार पैग़म्बरां बाद, निरगुण निरवैर आपणा फेरा पाईआ। जिस दा रसना वाला नहीं स्वाद, मुख दन्द ना कोए चतुराईआ। अन्तर आत्म होए विस्माद, बिस्मिल आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा शब्द बोध अगाध, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। नाम निधाना सुणाए नाद, अनहद नादी नाद जणाईआ। सो लहिणा देणा सब दा देवे आज, अज़ल दा लेखा रहे ना राईआ। जन्म जन्म संवार के काज, करनी दा करता होए सहाईआ। आत्मा अन्दर बिन रसना सारे मारो आवाज़, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। सतिगुर प्रेम दा दए जवाब, अक्खर अक्खर ना कोए चतुराईआ। निरगुण धार वजाए रबाब, जगत साज ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मेला लए मिलाईआ। धरनी कहे जन भगतो पहलों मेरा लओ प्यार,

सदके वारी घोल घुमाईआ। जिन्हां मिल्या धुर दा यार, मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जिस पैग़म्बर बणाए बरखुरदार, अज़ीज़ अज़ीज़ां रंग चढ़ाईआ। कलमा कायनात दे अधार, संदेशा दिता धुरदरगाहीआ। सो खेल करे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी वेस वटाईआ। जिस दा लेखा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। जिस नूं भगतां कीता जै जैकार, बाल्मीक सीस निवाईआ। चरण कवल बेनन्ती दिती गुज़ार, गुज़ारश विच मंग मंगाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। त्रेता द्वापर तेरी धार, धर्म दी धार नाल वड्याईआ। कलयुग खेल अन्ध अँधयार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नव सत धूंआँधार, क्रिया कूड़ अन्धेरा छाईआ। तेरा दरस ना होए दीदार, नेत्र नैण ना कोए बिघसाईआ। मैं कूक करां पुकार, दरोही नाम तेरा खुदाईआ। ख़लक दे ख़ालक होणा मददगार, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरा सब नूं इक्को इक संदेश, सज्जणो दयां सुणाईआ। जो मालक रहे हमेश, निरगुण दाता नूर अलाहीआ। उह तुहाडे दुआर बणया दरवेश, वेस अगम्म प्रगटाईआ। जिस दा ना कोई मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुण्डाया वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल दस दस्मेस, गोबिन्द धारा नाल मिलाईआ। ओह जानणहारा आदि जुगादी लेख, लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ। जिस आसा पूरी करनी मुसायक मुल्ला शेख़, पैग़म्बरां रंग रंगाईआ । तिस साहिब नूं इक आदेस, निव निव सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस कलयुग मेटणा कलेश, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजुआना आदि अन्त दा इक नरेश, नर नरायण आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरी सब नूं अन्त प्रेम वाली सलाम, सजदा सीस निवाईआ। मेरे अमाम दी सुणो कलाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। जो हज़रत मुहम्मद होया इलहाम, जबराईल सिफ्त सलाहीआ। सो सदी चौधवीं देवे पैग़ाम, पैग़म्बरां बाहर शनवाईआ। जिस सब दा करना इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां देवे हकीकी जाम, सूफ़ीआं आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे तमाम, तृष्ना दए खपाईआ। उह लेखा जाणे जीव जंत अवाम, आलम फ़ाज़ल जाणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरे कोल पेशीनगोईआं, पेशतर दयां जणाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाल सलाहां होईआं, मशवरे शब्द गुरु जणाईआ। जिस दे हुक्म विच पैणीआं दरोहीआं, हाहाकार ख़लक खुदाईआ। उस दीआं धारां धर्म धार किसे ना ढोईआं,

नेत्र वेखण कोए ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो अज्ज वक्त सुहञ्जणा आया, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरुआं हुक्म सुणाया, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। मुन नारद नाल मिलाया, बिन रूप रंग वखाईआ। चार जुग दा लेखा हथ्थ फड़ाया, बिन अक्खर धार समझाईआ। त्रैगुण लेखा वेखो दीन दुनी दी माया, ममता मोह नाल वड्याईआ। क्यों चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जिन्हां ने नाम कलमा रसना गाया, गा गा ना खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरे कोल चार जुग दी पिछली पुराणी पोथी, अक्खर जगत ना वंड वंडाईआ। जिस दी धार कदे ना थोथी, बदली विच बदल कदे ना जाईआ। मनसा कदे ना होवे होछी, नफ़रत ना वंड वंडाईआ। उहदा भेव खुल्ल्हे किसे ना कोशी, जगत अक्खर ना कोए चतुराईआ। बुद्धी सोच सके ना सोची, अक्ल ना कोए वड्याईआ। उहदी सार पाई रवीदास चमारे मोची, बाल्मीक बटवारे भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर रंग आप रंगाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरी पोथी दा लेखा चंगा, चंगी तरह जणाईआ। जो पूरब पिछला वक्त लँघा, आपणा पन्ध मुकाईआ। अगला हुक्म सुणो सूरा सरबंगा, की करता रिहा दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दा मानण संगा, संगी संग रखाईआ। यमुना सरस्वती गोदावरी जिस दी धार गंगा, गंगोत्री रंग रंगाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मानव धार कराया जंगा, खण्डे खड़गां नाल खड़काईआ। उह साहिब सुल्तान सूरा सरबंगा, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पड़दा आप उठाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा दिवस सुहञ्जणा लोकमात, मातृ भूमी नाल मिलाईआ। पिछला वायदा तकां जो लेखा अज्ज दी रात, रुतड़ी रैण प्रभ दे नाम नाल वड्याईआ। जो संदेशा दिता कमलापात, पतिपरमेश्वर हुक्म जणाईआ। अन्त पुछां तेरी बात, लेखा जाणा थांउँ थाँईंआ। जिस वेले आत्म परमात्म टुटया नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। झगड़ा पैणा ज़ात पात, दीन मज़्ह्ब करे लड़ाईआ। सति धर्म दी होणी वफ़ात, क्रिया कूड़ कूड़ चमकाईआ। गुरु चेले करन इक दूजे दा घात, सति विच ना कोए समाईआ। उस वेले लेखा जाणे कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जन भगतां पुछे वात, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो आपणे वायदे नाल उह तक लओ आउंदा नारद गंजा, बोदी धर्म धार हिलाईआ। जगत सिँघासण

१६८
२४

वेखे मंजा, पावा चूल ध्यान लगाईआ। दीन दुनी नूं वेख के उस दे अन्तर आवे रंजा, रंजश विच कुरलाईआ। बौहड़ी दुनिया विच किस तरह कूड़ दा समां लँघा, जगत मिल के खुशी बणाईआ। फेर याद आ गया जो संदेशा दिता गोबिन्द पुरी अनन्दा, अनन्द नाल समझाईआ। मेरे ढईए तों बाद पवित्र रहे कोई ना बन्दा, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। अन्तर सब दा होवे गंदा, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। प्रकाश होए ना अन्धेरी खड्डा, खण्डर दिसे ख़लक खुदाईआ। भार चुक्के कोए ना कंधा, गुर अवतार पैग़म्बर संग ना कोए निभाईआ। जगत जिज्ञासू होवे अन्धा, निज नेत्र लोचन नैण ना कोए खुलाईआ। माण रहे ना सरघी संधा, घड़ी पल ना कोए चतुराईआ। मोह विकारा कलयुग होवे धन्दा, धर्म दी धार दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप वखाईआ। नारद कहे मेरे कोल पिछला कौल इकरार, लेखा धर्म धार जणाईआ। उह तक लओ आउँदे तेई अवतार, आपणा पन्ध मुकाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नूरी नूर हो के ख़बरदार, भज्जण वाहो दाहीआ। गुरू गुरदेव बोल जैकार, बैठण पन्ध मुकाईआ। अमृत धार विच संसार, नदीआं वहिण संग मिलाईआ। नारद कहे मैं खेल तकां अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा वखाईआ। नाले तालीआं रिहा मार, दो हथ्थां ताल मिलाईआ। वेखो दीन दुनी आपणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट होया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ तको गुरुदुआर, चर्चा फोल फुलाईआ। काया मन्दिर अन्दर काअबे निगाह लओ मार, हकीकत हक खोज खुजाईआ। साचा मिले किसे ना यार, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़े ना पुरख नार, नर नरायण ना रंग रंगाईआ। की होया जे लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले बणा लए दो चार, मेहर नज़र नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं पुजया छब्बी पोह तेरे दरबार, दरगाह साची वेख वखाईआ। अज्ज मित्रा कुछ कर लईए तकरार, झगड़ा दस्सीए ख़लक खुदाईआ। किधर जित्त ते किधर होवे हार, कवण दर मिले वड्याईआ। मैनूं प्रेम नाल पुछ लैण दे की संदेशा देण तेई अवतार, वेद व्यासा की समझाईआ। की पैग़म्बर करन इज़हार, हज़रत मुहम्मद कवण कलमा दए सुणाईआ। सदी चौधवीं किस दी करे पुकार, कूक कूक सुणाईआ। नानक गोबिन्द केहड़ी दस्से धार, धर्म दुआरा की जणाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती केहड़ी बख्शे रस ठण्डी ठार, अग्नी तत बुझाईआ। मैं वेखे सदा जुग चार, चौकड़ीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं पुज्जे सच अस्थान, अस्थिल गृह वेख वखाईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत

महान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को शब्द नाम ज्ञान, इक्को सिफ्त सलाहीआ। इक्को मन्दिर हक मकान, काअबा इक्को नज़री आईआ। इक्को शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह इक अख्वाईआ। इक्को नूर दिसे ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक देण गवाहीआ। इक्को नूर नुराना खेले खेल दो जहान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक समाईआ। इक्को दिसे धर्म निशान, निशाना अवर ना कोए जणाईआ। इक्को स्वामी मेहरवान, महबूब इक अख्वाईआ। इक्को देवणहारा दान, जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं झोली कलमे नाम भराईआ। इक्को पुरख अकाला परवरदिगारा जोती जाता नौजुआन, बृद्ध बाल ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। नारद कहे मेरे सज्जण मीत मुरारो, गुरु गुरदेव दयो जणाईआ । पैग़म्बर दस्सो इज़हारो, बिन सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। अवतार मेरा संसा रोग निवारो, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। आपणा भविख्त आप विचारो, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। लेखा दस्सो कलि कल्की अवतारो, की अवतर हुक्म वरताईआ। निहकलंका कवण सची सरकारो, हरि करता अगम्म अथाहीआ। अलाही नूर अमाम परवरदिगारो, सांझा यार कवण खुदाईआ। जिस दे गृह नहीं तकरारो, झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। उस दा गुण सर्ब विचारो, अवगुण नज़र कोए ना आईआ। जिस ने आदि कीता पसारो, अपरम्पर स्वामी धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग निरगुण सरगुण धार जणाईआ । नारद कहे मेरे स्वामीओ, सतिगुर साहिब सच। चार जुग दे अन्तरजामीओ, काया माटी वेखो कच। निरअक्खर धार उच्चारनहार बाणीओ, पड़दा खोल्हो पंज तत। पुरख अकाल दी सच सवाणीओ, आत्म धार जोड़ो नत। की लहिणा देणा नाल लेखा जगत प्राणीओ, किस कारन आए वत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं पंडत बिन विद्या जाणां अक्खर, जगत किताब ना कोए रखाईआ। मेरा इष्ट नहीं कोई इट पत्थर, पाहन रूप ना कोए दरसाईआ। मैं इक्को यार दे लथ्था सथर, साची सेज सुहाईआ। जिस दे वैराग विच मेरी वहिंदी अथ्थर, नैणां नीर वहाईआ। उस दा हुक्म संदेशा आया दस्सण, खुशीआं नाल समझाईआ। जिस दा बिना ज़बान तों रसन, अंमिओं रस अन्तर दए चुआईआ। जिस दी महिमा चार जुग दे शास्त्र लखण, काग़ज़ कलम शाही नाल वड्याईआ। उह साहिब सच्चा समरथण, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दी कथनी करे कोए ना कथन, कहि कहि ना कुछ जणाईआ। उह कूड़ कूड़यार आया मथण, मथन करे लोकाईआ। जिस कलयुग धार तकणा रथण, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिस दा लेखा ना कोए समझे असंख असंखन, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। धरनी कहे नारदा कुछ मेरा दस्स दे लेखा, पंडता भेव चुकाईआ। जे तूं आ गिउं माझे देसा, आपणा पन्ध मुकाईआ। की लहिणा नर नरेशा, नर नरायण की समझाईआ। जिस दा जग तों अवलड़ा वेसा, जगत समझ किछ ना पाईआ। जो आया मातलोक विच परदेसा, सचखण्ड आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा राह तकणा शेषा, बाशक नैण अक्ख उठाईआ। उस दा आदि जुगादि अगम्मा पेशा, पेशीनगोईआं सब नूं गया सुणाईआ। जो सदा रहे हमेशा, हम साजण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरो मेरे उत्ते मार लओ झाकी, गुरु गुरदेव दया कमाईआ। मेरी नौ खण्ड दी खोल्ह के वेखो ताकी, पड़दा सत्त दीप उठाईआ। फेर मानस वेखो ख़ाकी, तन वजूदां फोल फुलाईआ। जिन्हां नूं नाम प्याला जाम प्या के गए साकी, आबेहयात नाल चतुराईआ। उह मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, सच दर नज़र कोए ना आईआ। चुरासी मुके किसे ना वाटी, जम की फाँसी फंद ना कोए तुड़ाईआ। वेखो कलयुग कूड़ दी विक गए हाटी, धर्म दी कीमत रही ना राईआ। मनुआ हो गया जगत नटुआ नाटी, आपणा नाच वखाईआ। आत्म परमात्म प्रीती गई काटी, कटाकश लग्गा थांउँ थाँईंआ। किसे हथ्थ ना आया गोबिन्द धार अमृत बाटी, अंमिओं रस ना कोए चुआईआ। आत्म सेजा सोए कोए ना खाटी, सच सिँघासण ना कोए वड्याईआ। जोत नूर जगे ना कोए ललाटी, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच आप समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सुण नी धरनी धरत, धवल धौल ध्यान लगाईआ । साडी साहिब दे नाल शर्त, शरतीआ दईए समझाईआ। तूं कलयुग अन्तिम आउणा परत, पतिपरमेश्वर रूप बदलाईआ। तेरा लेखा जाणे कोए ना उत्ते अर्श, फर्श तेरी बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करना तरस, रहमत सच कमाईआ। क्रिया कूड़ दी मेटणी हरस, हवस मोह देणी मिटाईआ। जन भगतां देणा दरस, पर्दा काया अन्दर चुकाईआ। अमृत मेघ देणा बरस, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। सब दी मन्ज़ूर करनी अर्ज़, आरज़ू तेरे चरण रखाईआ। जुग बदलणा तेरा फ़र्ज़, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे मेरा होया गृह सुहञ्जणा, सोहणी मिली वड्याईआ। जन भगतां नेत्र नाम पाउणा अंजणा, अन्ध अज्ञान गुआईआ। चरण धूड़ करना मजना, दुरमति मैल मिटाईआ। घर स्वामी तकणा सज्जणा, गृह मन्दिर खुशी वखाईआ। जिस दा दीपक जोती जगणा, नूर नूर चमकाईआ। उह दर्शन देवे उपर शाह रगना, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। जिस दा शब्द अनादी नदना, बिन रसना दए समझाईआ। उह

गोपाल मूर्त मदना, जोती जाता इक अख्वाईआ। जेहड़ा लभयां किसे नहीं लभणा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। उहदा लेखा नाल आहला अदना, शाह सुल्तानां वेख वखाईआ। जिस दा डंका नाम वजणा, दो जहानां करे शनवाईआ। उह भगतां रखे लजणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा प्रेम आप समझाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरी अज्ज दी खुशीआं वाली दिहाढ़ी, दयोहाढ़ी खुशी बणाईआ। उह वेख लओ रोंदी फिरदी मौत लाड़ी, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। लेखा तकदी अष्टभुज दा झाड़ नाल झाड़ी, बन खोजे चाँईं चाँईंआ। जिस दा लहिणा देणा नाल बहत्तर नाड़ी, तन वजूदां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आओ मिलके करीए सलाह, मशवरा हक हक सुणाईआ। इक्को सारे लभ्भीए मलाह, बेड़ा इक्को कंध टिकाईआ। इक्को सब दा सांझा होवे राह, रैहबर होवे नूर अलाहीआ। इक्को कलमा दए समझा, इक्को नाम करे शनवाईआ। जिस नूं सब ने किहा वाह वाह, वाहिगुरु अल्ला राम तेरी बेपरवाहीआ। जो मालक ख़ालक कदे ना होवे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। जुग बदलणा जिस दी अदा, आदत विच अबादत सब नूं दए समझाईआ। कवण सब दा होवे दिलरुबा, महबूब कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेवा गुर गुर सेव कमाईआ। मेरे कोल लेखा जो लिखाए अलख अभेवा, अगम्म अगोचर आप दृढ़ाईआ। जिस नूं सारे मंनदे देवी देवा, देव आत्मा संग बणाईआ। जो वसे धाम निहचल निहकेवा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके जिह्वा, अक्खर ना कोए चतुराईआ। उह देवणहारा सब नूं मेवा, नाम अगम्मा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं वेखी आपणी किताब, कुतबख़ान्यां बाहर ध्यान लगाईआ। जिस विच साडा जगत हिसाब, लेखा दीन दुनी दृढ़ाईआ। जो हुक्म संदेशे दिते मित्र अहिबाब, हरि करते आप जणाईआ। जिस दी अन्तर निरंतर वजी रबाब, सुर ताल शब्द शनवाईआ। जिस दा हुक्म बोध अगाध, बुद्धी तों बाहर दृढ़ाईआ । उह मंगणहारा अन्त जवाब, जवाब तल्बी विच रखाईआ। जिस दा दीन दुनी लैंदी रही ख्वाब, बिन आसा जगत जणाईआ। जिस दा जल्वा नूर महताब, दो जहाना करे रुशनाईआ। जो देवणहारा हयाते आब, अमृत रस चखाईआ। जो आया अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, जगत जहान लेखा दए चुकाईआ। जिस दीन दुनी दीन मज़्ह़ब तों करनी आज़ाद, ज़ात पात दा पन्ध मुकाईआ। जिस ने रचना रची आदि,

२०३
२४

अन्त दा लेखा दए समझाईआ । सो मोहण माधव माध, मधुर धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक दरसाईआ। नारद कहे मेरे साहिब श्री सिरताजो, तख्त निवासीओ दयो जणाईआ । दीन दुनी विच खुशीआं नाल भाजो, नौ खण्ड पृथ्मी वेखो चाँईं चाँईआ। दीन मज़्हब आपणा तको समाजो, अवतार पैग़म्बर गुरु ध्यान लगाईआ। जो दस्स के आए रिवाजो, शरअ शरअ नाल समझाईआ। उस दा क्यों मिल्या जवाबो, भुल्ली ख़लक खुदाईआ। तुहाडा सब दा इशारा सरगुण धार घर आवे ताबो, ताब्यादारी नज़र कोए ना आईआ। जिसदा खेल दीन दुनी वेखे अज़ाबो, अज़ल दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सारे उठ उठ बिन कदम तों भागो, भज्जो वाहो दाहीआ। क्यों सति धर्म दा बुझया चराग़ो, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। क्यों हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बण गए हँस कागो, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। त्रैगुण माया लग्गी आगो, जगत सके ना कोए बुझाईआ। दीन दुनी दे शाह नवाबो, आपणी लओ अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हुक्म संदेशा हका, हकीकत नाल जणाईआ। असां दीन मज़्हब आपणा तका, बिन नैणा नैण उठाईआ। किसे दा अन्तष्करन रिहा ना पक्का, सच विच ना कोए समाईआ। फिरी दरोही मदीना मक्का, काअबे करन शनवाईआ। लहिणा तक्कया बूरा कक्का, हज़रत ईसा रिहा दृढ़ाईआ। मूसा कहे मेरी कीमत रही ना टका, हट्टो हट्ट विकाईआ। अवतार कहिण जगत दा खेल बाज़ीगर नटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। सृष्टी सृष्टी नाल होणी वटा, ज़ीरो रूप दिसे ख़लक खुदाईआ। नाले आपणा आपणा कढुके वेखण पट्टा, पटने वाला नाल मिलाईआ। वेखो सब दा वक्त जांदा टप्पा, सदी बीसवीं चौधवीं नाल मिलाईआ। दीन मज़्हब दा ज़रूर पवेगा रट्टा, झगड़ा सके ना कोए चुकाईआ। सब तों छेती सब तों जल्दी सृष्टी अन्दर उडणा घट्टा, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। सब दा लेखा मुकणा इक्ट्ठा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु कलयुग नूं लओ सद, सद्दा नाम जणाईआ। हदूदां खोज खुजाईआ। केहड़ी पवित्र रहिण दिती यद, यादव बंसी गया समझाईआ। पिछले जुग केते गए लद, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। सारे खुशीआं विच होवो गद गद, सोहणे ढोले गाईआ। जगत खुमारी वेखो मदि, मधुर धुन गए भुलाईआ। आपणे मुरीद सिख मुर्शद लओ लभ, खोजो थांओं थाँईंआ। उलटी दिसे किसे ना कवल नभ, अंमिओं रस ना कोए चुआईआ। पंच विकारे सब नूं ल्या दब, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म परमात्म धार होई अड्ड, सगला संग ना कोए रखाईआ। प्रकाश दिसे ना अन्धेरी खड्ड, नूरी

चन्द ना कोए चमकाईआ। सच लडाए कोई ना लड, गोदी गोद ना कोए उठाईआ । तुहाडे सिख मुरीद तुहानूं गए छड, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साचा आप दरसाईआ। धरनी कहे पहले मेरी सुणो पुकार, कूक कूक सुणाईआ। जे निरगुण सरगुण धार तुसीं अवतार, तेई आपणा संग बणाईआ। जे हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद बण गए यार, यराना जगत जुगत जणाईआ। जे नानक गोबिन्द एक जोत उज्यार, नूर नूराना डगमगाईआ। जे सतिगुर शब्द सब दा मीत मुरार, साजण इक अख्वाईआ। सारे उस दा बोलो जैकार, तूं ही पिता तूं ही माईआ। तूं ही ख़ालक परवरदिगार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। तूं ही साहिब नर निरँकार, निरगुण निरवैर इक अख्वाईआ । असीं तेरे बरखुरदार, सतिजुग त्रेता द्वापर सेव कमाईआ। तेरे नाम कलमे दिते उच्चार, शास्त्र हुक्म नाल समझाईआ। तूं पावणहारा सार, वेखणहारा थांओं थाँईंआ। की होया जे सृष्टी दृष्टी अन्दर हो गई गुनाहगार, ऐबां भरी लोकाईआ। तूं वेखे विगसे पावें सार, वेखणहार तेरी वड्याईआ। असीं भविख्तां विच लिख्तां विच तेरा हुक्म संदेसा आए उच्चार, पेशीनगोईआं नाल शनवाईआ। कलयुग अन्त आए कलि कल्की अवतार, निहकलंका रूप वटाईआ। अमाम अमामा होए ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। असीं सारे तेरे ताब्यादार, ख़ादम हो के ख़िदमत विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। नारद कहे मैं ल्याया ख़बरां अगम्मीआं, अगम्मड़े दिती वड्याईआ। जेहड़ीआं धारां धार विच्चों किसे ना जम्मीआं, जगत निशान ना कोए वखाईआ। उस विच खेलां दिसण नवीआं, नौवां खण्डां खण्डां दृढ़ाईआ। जेहड़ी सार पाई नहीं चार जुग दे कवीआं, अक्खरां नाल अक्खर सलाहीआ। उह लेखा जाणे निरगुण धार अवतार चवीआं, चौबीसा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बरो आओ तक्कीए नवीं रीती, रीतीवान की समझाईआ । जिस दा लेखा मन्दिर मसीती, मन्दिर मठां संग बणाईआ। जिस दा खेल त्रैगुण अतीती, त्रैभवण की आपणा हुक्म समझाईआ। जिस लख चुरासी परखणी नीती, नीतीवान इक अख्वाईआ। जिस दी याद विच याद पुराणी बीती, जुग चौकड़ी देण गवाहीआ। जिस दे प्यार विच अक्खी मीटी, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सो खेल करे अनडीठी, अनडिठड़ा हुक्म वरताईआ। जिस दी धार सब ने मंनी मीठी, हुक्म विच भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बरो ओ गुरु साहिबानो मेरी इक्को इक अवाज़, बिन रसना जिह्वा दयां सुणाईआ। आपणे साहिब दा वेखो राज़, की राज़क रिज़क रहीम रिहा खुल्हाईआ।

जिस दे उत्ते तुहानूं सब नूं नाज़, सईयदयां विच सीस झुकाईआ। उस दा नवां तक लओ रिवाज, की आपणी बणत बणाईआ। की करे अगम्मा काज, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं सब ने मन्नया गुरु महाराज, महबूब नूर अलाहीआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता सीस जगदीस रख के ताज, ताजां वाल्यां करे सफ़ाईआ। निगाह मार लओ बिन नेत्रां तन वजूद देस माझ, बिन अक्खीआं अक्ख खुल्हाईआ। बिन रसना गावो राग, ढोले सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब अगम्म अथाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो साहिब दा कम्म, कर्म कांड दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जो लेखा जाणे आत्म धार ब्रह्म, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। जन भगतां लेखे लाए बिना स्वास तों दम, दामनगीर आप हो जाईआ। लहिणा देणा चुकाए काया माटी चम्मढ़ी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। रैण अन्धेरी रहिण ना देवे शम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। अन्दरों कढुके कूड़ कूड़यार दा ग़म, ग़मख़ार होए सहाईआ। सारी मानव ज़ाती इक्को समझा के धर्म, दीन मज़्हब दा पन्ध मुकाईआ । सतिगुर शब्द शब्द दे घर दे के जरम, आप बणे जणेंदी माईआ। जिस नूं सब ने मन्नया पुरख परम, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। दीनां मज़्हबां दे कढुके विच्चों भरम, भाण्डे कूड़ रिहा भनाईआ। इक्को प्रीतम दस्स के प्रीत चरण, चरणोदक जाम प्याईआ। नेत्र खोल्ह के हरन फरन निज लोचन करे रुशनाईआ। जो आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, पारब्रह्म ब्रह्म नाल मिलाईआ। बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल चढ़न, दरगाह साची सचखण्ड दए वड्याईआ। उह आ गया नवां घाड़न घड़न, घड़न भन्नणहार आपणा हुक्म वरताईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा सीस धड़न, वजूदां वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मैनूं खुशीआं विच आउँदा हासा, हस के दयां जणाईआ। आओ रल मिल के जगत वेखीए तमाशा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। फेर वेखो किस दे अन्दर पुरख अबिनाश दा वासा, घर मन्दिर बैठा डेरा लाईआ। किस गृह पावे आपणी रासा, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। किस तरह नाम जपाए स्वास स्वासा, साह साह विच समाईआ। नाले निगाह मारो धरती उत्ते आकाशा, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जिस नूं कहिंदे पुरख अबिनाशा, पुरख अकाल अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादी दासी दासा, नित नवित सेव कमाईआ। कवण धाम गृह कूट उस दा प्रकाशा, कवण मन्दिर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच आप समझाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो इक नवीं सुणो कहाणी, कहावत ग्रन्थ ना कोए जणाईआ। एह कोई शास्त्रां वाली नहीं बाणी, सिफ्तां नाल ना सिफ्त सलाहीआ। एह कोई तीर्थां वाला नहीं पाणी,

अठ्ठां सठ्ठां सोभा पाईआ। एह कोई जगत जहान दा नहीं हाणी, जोबनवन्ता रूप अनूप चमकाईआ। एहदा लेखा नहीं कोई चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। एहदा नाता नहीं चार बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग ना कोए सुणाईआ। एहदा प्यार नहीं नाल किसे सुआणी, मित्र प्यारा ना कोए अख्वाईआ। एहदा लहिणा देणा नाल मंज़ल रूहानी, रूह बुत नाल मिलाईआ। एह मित्रां दा मित्र ते सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। आपणे भविख्त वेखो ते नाले वेखो इसदी नवीं निशानी, जो निशाने दीन दुनी बदलाईआ। एहदी मंज़ल तको आसानी, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। जिस दे पिच्छे दे के आए कुरबानी, करबल्यां दा मालक लेखा जाणे थांओं थाँईंआ। जिस नूं नूरी अलाह कहिंदे असमानी, इस्म आज़म मंन के सीस निवाईआ। उस दा इक्को हुक्म कलमा मज़ीउल दुज़ाउ कौज़ी शम्बाए मुफ़लज़ा हम्बा दवी कोतल कम्मबा विस्तल तुज़ा माज़ी चश्मे नज़ू नूरे खुदा अमीवल दुआ मुहम्मदे रज़ा रसूलाए वही वही वज़लदा जसतमल मुहम्मदे बेऐब बेऐब नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच सच समझाईआ। गुरु अवतार पैग़म्बर कहिण साडा इक्को इक विचार, विचर के दईए जणाईआ। नारदा जिस दी करदे आए गुफ़तार, गुफ़त शनीद शनवाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी दस्सदे आए रफ़तार, भज्जे वाहो दाहीआ। जो मित्र प्यारा सब दा सांझा यार, यारड़ा इक अख्वाईआ। उसे दे नाम दस्से विच संसार, ढोले सिफ्तां विच गाईआ। उसे दे हुक्म विच खण्डे खड़ग चमकाए हथ्थ पकड़ी तलवार, तीर तरकशां नाल सुहाईआ। असीं जुग जुग दे सेवादार, सेवा कीती चाँईं चाँईंआ। साडा वक्त सुहञ्जणा होणा पार, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। बीसवीं रोवे ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। मूसा कहे किसे दा नहीं कोई अख्त्यार, मुखतारे सारे दईए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। छब्बी पोह कहे अवतार पैग़म्बर गुरु नारद मुन मेरी इक दलील, दूसर संग ना कोए बणाईआ। सारे आपणे प्यार दी करो अपील, बिन अक्खरां अक्खरां लेख लिखाईआ। सतिगुर शब्द बणाओ वकील, वुकल्यां लोड़ रहे ना राईआ। नाले लेखा याद कर लओ जो संदेशा दिता अर्जन नूं सनमुख रखा के भील, भीलनी राम गया समझाईआ। जो इशारा कीता हज़रत मुहम्मद मार के कील, खण्डे खड़ग नाल वड्याईआ । की खेल करे मेरा मालक अमीन, कामल मुर्शद धुरदरगाहीआ। जिस आउणा उत्ते ज़मीन, अमाम अमामा फेरा पाईआ। सब दा हक हकूक लैणा छीन, ख़ाली हथ्थ दए वखाईआ। जिस दे चरणां हेठ झुकणे लोक तीन, चौदां तबक सिर ना कोए उठाईआ। उस दे उत्ते करना इक यकीन, जो वाहिद अल्ला नूर अलाहीआ। असीं ओस दे मस्कीन, निव निव सीस निवाईआ।

ओस दी सब तों वखरी होणी तालीम, तुलबे सूफ़ी फ़कीर भगत लए बणाईआ। जिस मज़्बां दी रहिण नहीं देणी तकसीम, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। नाले इशारा कीता डण्डा वेख के मीम, नुक्ता मीम नाल समझाईआ। जिस दे सारे अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। उह परम पुरख परवरदिगार ना नर ना मदीन, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जिस ने सब दी बुद्धी करनी मलीन, अक्ल आकलां ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे गुरु अवतार पैग़म्बरो मेरे बणो साथी, सगला संग बणाईआ। वेखो खेल पुरख समराथी, की करता कार कमाईआ। जिस दा लेखा अनाथ अनाथी, वेखणहारा थांओं थाँईंआ। लहिणा देणा चुका दए मस्तक माथी, पूरब सब दी झोली पाईआ। जिस दी महिमा जगत अकाथी, कथनी कथ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी बेपरवाहीआ। सच स्वामी साहिब सुल्ताना, हरि करता अगम्म अथाह। शाहो भूप नौजवाना, परम पुरख बेपरवाह। देवणहारा साचा दाना, नाम कलमे जगत सुणा। धर्म झुलावणहार निशाना, लेखा जाणे दो जहां। आदि जुगादी मेहरवाना, महबूब नूर अलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक होए सहा। सहायक नायक इक्को ख़ालक, हरि करता धुरदरगाही। आदि जुगादि सदा प्रितपालक, मेहरवान नूर अलाही। एथे उथे साचा मालक, लहिणा देणा जाणे थांओं थाईं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाई। सच करनी कार कमाउँदा ए। सो पुरख निरञ्जण खेल खिलाउँदा ए। हरि पुरख निरञ्जण वेख वखाउँदा ए। आदि निरञ्जण नूर रुशनाउँदा ए। अबिनाशी करता वंड वंडाउँदा ए। एकँकारा चन्द चमकाउँदा ए। श्री भगवान रूप दरसाउँदा ए। पारब्रह्म खेल खिलाउँदा ए। शब्दी धार सुत उपजाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आपणा रूप समझाउँदा ए। त्रैगुण माया पंज तत वंड वंडाउँदा ए। लख चुरासी पा के गंढु, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज जोड़ जुड़ाउँदा ए। निरगुण नूरी जोत चाढ़ के चन्द, आत्म परमात्म वेस वटाउँदा ए। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी गए लँघ, समें समें नाल बदलाउँदा ए। सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती धार एकँकार परवरदिगार बैठ धर्म पलँघ, सच सिँघासण इक सुहाउँदा ए। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडी पूरी होणी मंग, तृष्ना सब दी वेख वखाउँदा ए। उह निगाह मार लओ सदी अन्तिम चौधवीं होणा जंग, जंग जू बहादर आप अख्वाउँदा ए। जिस ने सब दी तुहाथों कराई वंड, हिस्से मज़्बां वाले बणाउँदा ए। अन्तिम इक्को देवे गंढु, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाउँदा ए। पहलों भगतां पा के ठण्ड, सांतक सति कराउंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, भेव अभेद आप खुल्हाउँदा ए। भेव अभेदा आप खुल्हाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जन भगतां भाग लेखे लाएगा। काल महाकाल नेड़ ना आएगा। सतिगुर शब्द दलाल रखाएगा। सच वसाल वसल इक्को यार जणाएगा। हरिजन प्रीतम प्यारा आपे भाल, गुरमुख गुर गुर गोद उठाएगा। सम्बल बैठ के करे संभाल, साचा नगर इक वडयाएगा। त्रैगुण माया तोड़ के जंजाल, जागरत जोत जोत रुशनाएगा। लेखे ला के शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे गोद टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक दरसाएगा। छब्बी पोह कहे मेरा वक्त सुहाया आप, प्रभ दिती माण वड्याईआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, अग्नी तत बुझाईआ। सोहँ शब्द दस्स के जाप, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। जन्म जन्म दे मेट के पाप, दुरमति मैल धुआईआ। माया डस्से ना डसणी सांप, कूड़ क्रिया ना होए हल्काईआ। किरपा करे कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह जन भगतो कहे मेरे नाल करो मेला, मिलणी हरि जगदीश जणाईआ। सतिगुर शब्द जिस दा आदि जुगादी चेला, चेले दी सेवक ख़लक ख़ुदाईआ। जेहड़ा लख चुरासी नालों हो के वेहला, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। उह वसे धाम नवेला, निरगुण दाता नूर अलाहीआ। उह अचरज खेल कलयुग अन्तिम खेला, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक प्रगटाईआ। मार्ग कहे मैनूं आ गया धुर दा होर पैग़ाम, पैग़म्बरो दयां सुणाईआ। की संदेशा देवे धुर अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस दी सति सच कलाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ । जिस ने सब दा लैणा अंजाम, अंजमल दा लेखा वेखे चाँईं चाँईंआ। जिन्ह माटी ख़ाक तकणी चाम, चम्म दृष्टी फोल फुलाईआ। जिस दी आसा रख के गया शाम, काहन घनईया अक्ख उठाईआ। जिस दा संदेसा दिता सीआ नूं राम, राम सीआ गया समझाईआ। जिस नूं बावन हस के किहा मेरा मेहरवान, भगवन भागवान अख्वाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना खेल खेले दो जहान, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जोती जाता पुरख बिधाता पहर के जामा, जन भगतां ज़ामन होवे थांउँ थाईंआ। साचे गृह करे बिश्रामा, आसण सिँघासण इक सुहाईआ। जिथ्थे शब्दी शब्द दा वजे दमामा, जगत ताल ना कोए रखाईआ। जिथ्थे ना कोई सजदा डण्डावत बन्दना ना कोई सलामा, सिर सर ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक रखाईआ। नारद कहे भगतो छब्बी पोह ओह सब दा सांझा मीत, मित्रो दयां जणाईआ। जिस विच दीन दुनी दी बदलणी रीत, रीतीवान इक हो आईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, मसले सब दे हल्ल कराईआ। आत्म धार सब

ने गाउणा गीत, गोबिन्द देवणहार वड्याईआ। सब ने पवित्र करनी आपणी अन्दरों नीत, मन कल्पणा देणी गुआईआ। इक्को पुरख अकाला वसणा चीत, मन चित ठगौरी कोए ना पाईआ। पर्दा रहिणा नहीं भीतर भीत, ओहला अन्तर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। जन भगत कहिण की संदेसा देवें मित्रा पोह, सज्जणा दे सुणाईआ। किस बिध सानूं करे निर्मोह, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। किस बिध लेखा मुकाए पंज गरोह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। कवण धार दस्से अन्दर लो, लोयण अन्तर दए खुलाईआ। आत्म परमात्म जाए छोह, मेला मिले सहिज सुखदाईआ। अन्दरों अवाज़ निकले सो, हँ ब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। आत्म परमात्म रहे ना दो, दूआ एके विच मिलाईआ। कूड़ी क्रिया सब किछ लए खोह, अन्तर सच सच समझाईआ। निझर झिरनिउँ अमृत देवे चो, बूंद स्वांती इक टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। नारद कहे मैं इक होर वेख्या रुक्का, जो बिन अक्खरां नज़री आईआ। जिस विच इक्को अगम्मी तुका, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जिस विच सब दा पैंडा मुका, अगे कदम ना कोए उठाईआ। एह भेत रहिणा नहीं लुका, पोशीदा राज़ ना कोए रखाईआ। इक महबूब दे कदमां उत्ते सिर सब दा होणा झुका, डण्डावत बन्दना इके नूं सीस निवाईआ। जिस दा लेखा दीन दुनी विच कदे ना सुका, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं नाल घुंमदी, आदि जुगादि भज्जां वाहो दाहीआ। जन भगतो अज्ज तुहाडे चरण चुंमदी, बिन रसना जिह्वा रस चखाईआ। क्यों तुहाडी आशा नहीं किसे रिख मुन दी, तुहाडा मेला नाल धुरदरगाहीआ। मैं हस्ती तकी तुहाडे दुआरे कुंन दी, कुल मालक नज़री आईआ। जिस दी खेल सदा जग फुंन दी, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। मैं उस दा एहसान कदे नहीं भुलदी, जो इन्सानां दए वड्याईआ। मैं वणजारन पुजारन ओस दी कुल दी, जो सतिगुर शब्द शब्द अख्वाईआ। मेरी प्यार विच हंझू नेत्र डुलदी, नैणां नीर वहाईआ। उहदी वड्याई नहीं किसे बुल्ल दी, रसना जिह्वा ना सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर दए वड्याईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरा बाल्मीक नाल पुराणा तअलुक, प्राणीओ दयां जणाईआ। जेहदा लेखा उत्ते फ़लक, ज़िमीं ज़मां वेख वखाईआ। जिस दा खेल कल कि भलक, भेव ना कोए दृढ़ाईआ। मैं संदेशा देवां ख़लक, दीन दुनी जणाईआ। मेरे स्वामी दी वेखो झलक, झल्लयो तको नूर अलाहीआ। जिस दी सब तों वखरी डलक, दो जहाना सोभा पाईआ। जिस दे हुक्म विच उठण वाली मौत मलक, आपणी लए अंगड़ाईआ।

चौदां तबकां निकले कलक, चौदां लोक रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी धार इक समझाईआ। धरनी कहे भगतो मैं प्रभ नूं सब किछ दस्सदी, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। तुहानूं वेख वेख के हसदी, खुशीआं ढोले गाईआ। मैं वणजारन सदा जस दी, रसना बिन सिफ्त सलाहीआ। मैं भरी प्रेम रस दी, रस्तयों घुथ्थयां दयां समझाईआ। कलयुग कूड़ी आसा सब दी नसदी, भज्जे वाहो दाहीआ। जगत धार रैण अन्धेरी मस दी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर धर्म इक समझाईआ। धरनी कहे भगतो मैं अर्ज करां अगे हज़ूर, चरण बन्दन करके सीस निवाईआ। मेरी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, मेहरवान दया कमाईआ। जो आशा रखी मनसूर, सो लेखा देणा चुकाईआ। जो मूसा किहा उत्ते कोहतूर, तुरीआ तो बाहर समझाईआ। जो ईसा कीता मशहूर, मशवरा तेरा कलमा बणाईआ। जो मुहम्मद दस्सया दस्तूर, चार यारी गंढु पुआईआ। जो नानक किहा भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जो गोबिन्द दरसाया नूर, नूर नुराना इक चमकाईआ। अन्त भगतां दा लेखा वेखणा पन्ध मुका के दूर, नेरन नेरे ध्यान लगाईआ। गढ़ तोड़ना ग़रूर, हंगता देणी मिटाईआ। नाम देणा सरूर, सुरत शब्द मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू जे तूं आया मेरे दुआरे, सोहणयां फेरा पाईआ। किरपा कर मेरे निरँकारे, निरवैर तेरी सरनाईआ। मेरे सांझे परवरदिगारे, जल्वागर नूर अल्लाईआ। मेरे लेखे तक लै जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। संदेशे सुण लै तेई अवतारे, अवतरी आपणी कार कमाईआ। की पैग़म्बर गए पुकारे, कूक कूक सुणाईआ। जो गुरुआं दिते इशारे, बिन सैनत सैनत दरसाईआ। जद आवे ते आवेगा कलि कल्की अवतारे, नेहकलंक रूप वटाईआ। अमाम अमामा होवे ज़ाहरे, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। आपणे चार जुग दे पूरे कर दए लारे, लेखे पिछले वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरी बेनन्ती मेरे प्रभू तेरे भगत हुण मूल ना रहिण कँवारे, अज्ज दी रैण आपणे नाल लैणे परनाईआ। जो आ गए तेरे दुआरे, जगत दा पन्ध देणा चुकाईआ। वेख लओ खुशीआं नाल सारे मारदे नाअरे, तेरे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे मैं तेरे गुण गावां, गा गा शुकर मनाईआ। तेरा नाम ध्यावां, तूं ही धुर दा माहीआ। मैं फिरां नाल चावां, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरा प्यार जिउँ पुत्तरां नाल मावां, सोहणी गोद सुहाईआ । तेरा भगत ना रहवे कोई निथावां, दरगाह सच दे सरनाईआ। मैं कूक कूक के वास्ता पावां, गल पल्लू ख़ाक रमाईआ। तेरे कदमां बलि बलि जावां, आपणा आप मिटाईआ। सच स्वामीआ अन्तरजामीआ आत्म प्यारया परमात्मा

आपणयां भगतां नाल लै लै लावां, इक्को गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा होवे सुहञ्जणा ब्याह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म दा इक्को होवे राह, रैहबर बणना नूर अलाहीआ। मेरी तेरे नाल सलाह, मशवरा अवर ना कोए जणाईआ। भगतो अज्ज भगतां दे बणिओ सारे गवाह, शहादत सतिगुर शब्द वाली भुगताईआ। प्रभू दे प्यार विच सारे खड़्हीआं करो बांह, इक्को वार उठाईआ। मुखों कहो सानूं सचखण्ड जाण दा चाअ, अगे सके ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी आत्म परमात्म निरगुण निरगुण होवे शादी, शादिआने अवतार पैग़म्बर गुरु गुरु वजाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तेरी धर्म धार दी वधे आबादी, बर्बादी होवे कूड़ी ख़लक ख़ुदाईआ। तेरा नाम होवे शब्द अनादी, धुन आत्मक राग दए सुणाईआ। तेरा लेखा तकां ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मांड दा पड़दा उठाईआ। तूं पुरख आदि दा आदी, अन्त तेरी सरनाईआ। धरनी कहे हुण शर्म हया काहदी, जद मिल्या धुर दा माहीआ। जो संदेशा दिता सी गोबिन्द बच्चयां गुज़री दादी, सहिज नाल सुणाईआ। जो इशारा कीता मर्दाने नानक रबाबी, बिन तन्द सितार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे प्रभू आपे वेख लै प्यारे सज्जण, सज्जणा ध्यान लगाईआ। नाले भगतां दी चरण धूड़ दा कर लै मजन, सोहणी खुशी बणाईआ। जेहड़े तैनूं सचखण्ड विच्चों सद्दण, लोकमात मात टिकाईआ। तूं उन्हां दे पवित्र करने बदन, तन वजूदां कर सफ़ाईआ। तेरा दर्शन कर कर रज्जण, तृष्ना भुख मिटाईआ। जे आएयों पड़दे कज्जण, होणा आप सहाईआ। तैनूं जंगलां विच मूल ना लभ्भण, रातीं सुत्तयां घर घर मिलणा चाँईं चाँईंआ। जे कोई आसा रखे आवे कृष्ण काहन मूर्त मदन, राम रामा रूप लैणा बदलाईआ। जे पैग़म्बर दी धार मारे अवाज़ण, नूर नुराना देणा चमकाईआ। नानक गोबिन्द तेरा खेल रहे ना अड्डण, साचा सरूप देणा वखाईआ। वेखीं अगे करीं ना अज्जण पज्जण, पिछली रीती देणी बदलाईआ। सब दे अन्दरों हँकारी भाण्डे भज्जण, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं वेखां तेरी आस, सोहणयां देणी वखाईआ। नाले मैनूं दईं शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं तेरी दासी दास, जुग जुग सेव कमाईआ । उह इशारे देंदा शंकर उत्तों कैलाश, बिन सैनत सैनत लगाईआ। धरनीए नी तेरा बड़ा लम्मा विश्वाश, प्रभ तेरी आशा कलयुग अन्तिम पूर कराईआ। नाले नूर तक लै नाले जोत वेख प्रकाश, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ । नी बाहरों ना तकीं ते बाहरों दिसे पूरन दी लाश, पूरन सतिगुर

अन्दर नज़री आईआ। जिस ने भगतां दा खोल्हणा ताक, कुण्डीआं दए खुल्हाईआ। रातीं सुत्तयां नूं दिने जागदयां आपणे नाम दी देवे दात, संदेशे चाँईं चाँईंआ। आह वेखो इशारा देंदा हज़रत ईसा वाला कलाक, की कुल मालक हुक्म वरताईआ। पैग़म्बर हो रहे बेताब, आपणी लए अंगड़ाईआ। नाले कहिण साडा वाहिद अल्ला जनाब, नूर नुराना नूर अलाहीआ। नाले हसदे नचदे टपदे उह मीत मुरारा नूर नुराना आ गया विच पंजाब, पंजां दा मालक पंजा आपणा दए लगाईआ । जिस नूं इक्को इक अदाब, सजदयां विच सारे सीस झुकाईआ। उथे ना कोई पुन्न ना कोई सुआब, शरअ दी वंड ना कोए वंडाईआ। एह आवाज़ दिती सी नानक दी रबाब, रबीउल सानी दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे उह मेरया मालका, मेरी इक दुहाई। उह मेरया धर्म दिआ संचालका, तेरी की वड्याई। की होया जे तेरा भगत सुहेला निक्का जेहा बालका, क्यों देवें लोकमात जुदाई। तेरा सतिगुर शब्द सच्चा सालसा, फड़ फड़ बाहों लए मिलाई। गोबिन्द ने किहा मेरा पुरख अकाल करेगा सच्चा ख़ालसा, रैहबर होवे नूर अलाही। जिस नूं मज़्ह़ब दी नहीं कोई लालसा, तन वजूद ना वंड वंडाई। उह लेखा जाणे पत डाल्ह का, वेखणहारा थांउँ थाँईं। उह लेखा जाणे शाह कंगाल का, ग़रीब निमाणे होए सहाई। जिस दा इशारा कीता गगन थाल का, मण्डल मण्डप सोभा पाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह कहे मैं वी वक्त सिआल का, ठण्ड रिहा वरताई। भगतो अज्ज तुहाडा लेखा नहीं सी रोटी दाल दा, त्रेता जुग दए गवाही। बाल्मीक नूं राम अन्दर वड़ वड़ सिखालदा, बिन रसना जिह्वा कर पढ़ाई। उह बेपरवाह सब नूं संभालदा, जो मालक सृष्ट सबाई। भगतो अज्ज उह बणया तुहाडे नाल दा, जिस दा हिन्दसा इक इकाई। जो लख चुरासी कदे मारदा कदे जवालदा, एह उहदी बेपरवाही। उथे कोई हुक्म नहीं जवाब सुआल दा, ना कोई पुछण वाला शहिनशाही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा बण इक रथवाही। धरनी कहे वेखो आ गया अवतार कल्की, किकली दो जहान पवाईआ। एह आशा पूरी करे बलि की, बावन देवणहार वड्याईआ। जिस खेल खेलणी जल थल की, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। किसे नूं समझ नहीं घड़ी पल की, पलकां दे ओहले बैठा धुर दा माहीआ। जन भगतो तुहाडी धार दुनिया नूं छलदी, अछल छल तुहाडा लेखा वेख वखाईआ। तुहानूं पता नहीं क्यों तुहाडी आत्मा परमात्मा नाल रलदी, रल मिल के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरया भगवाना, ओए भगवना दे वड्याईआ। मेरा उजड़या घर होया वैराना, वैरी घर घर नज़री आईआ। धर्म दा रिहा ना कोए

निशाना, निशाने सारे गए बदलाईआ। आपणा वेख लै नाम वाला पैमाना, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। सब नूं भुल गईआं अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दीआं कलामां, कलम्यां तों ख़ाली दिसे लोकाईआ। दुहाई तेरे प्यार दी क्यों बिना शमअ तों पै गईआं शामां, शाम सुंदर घनईया की गया समझाईआ। की गोबिन्द दा कहे दमामा, अनन्दपुरी खड़काईआ। की हज़रत मुहम्मद दा कहे इलहामा, असमाईल पैग़म्बर की दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच भेव खुलाईआ। धरनी कहे वे नारदा आ जा छेती, पंडता आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं पुराणा प्रभू दा भेती, कुछ पिछला हाल दे समझाईआ। नारद कहिंदा एहदा हुक्म कदे नहीं हुन्दा बत्तीआं तों तेती, तती वाअ भगतां ना लागे राईआ। तूं ते धरनीए खुशीआं नाल एहदे चरणां विच लेटी, आपणा आसण लाईआ। ते नाले इहनूं पिता कहि के बण जा एहदी बेटी, आपणी खुशी वखाईआ। नी उठ वेख लै की रंग चढ़या असमानां उत्ते सलेटी, रूप रूप लैणा बदलाईआ। ते नारद कहे धरनीए मैं तेरे नाल इक होर करन आया नेकी, निक्कीए बालीए तैनूं दयां समझाईआ। ओह एह प्रभू पुराणा जुगां दा बड़ा वड्डा धारी भेखी, भेख जुग जुग लए बदलाईआ। एहदी खेल पिछली सारी देखी, अग्गा फेर बैठा छुपाईआ।
 एसे दे प्यार विच नानक ने धर के मोढे ते खेसी, दीन दुनी विच हुक्म दिता सुणाईआ। उह मालक शाह नरेशी, नरायण २१३
 नूर अलाहीआ । उस दे अगे सारयां दी अन्तिम होणी पेशी, पेशीनगोईआं आपणे हथ्थ फड़ाईआ। तेरा मालक बण जाणा २४
परदेसी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा संगी इक्को इक अख्वाईआ। नारद कहे नी धरनीए तैनूं सारे कहिंदे माता, ओ अम्मीए की तैनूं दयां जणाईआ। उठ वेख लै आपणा पुरख बिधाता, जो बिधना दे लेखे रिहा मिटाईआ। जिस झगड़ा मेटणा तेरे उत्ते ज़ाता पाता, दीन मज़्हब दी करे सफ़ाईआ। नी मैनूं ऐं दिसदा उहदा इक्को नाम ते इक्को कलमा इक्को होणी गाथा, इक्को सिख्या दए समझाईआ। फेर मैं वेख्या ते उह भगतां दा देवे साथा, सगला संगी धुरदरगाहीआ। नारद कहे मैनूं वी टेक लैण दयो माथा, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। नाले मसख़री करके कहे नी धरनीए नी धवले नी धरत नी उस ने तेरे उत्ते कमलीए बदल देणा पासा, पेशीनगोईआं पैग़म्बरां वालीआं नाल मिलाईआ। नी उह आ गया उत्तों आकाशा, आकाश बाणी सुणन वाल्यां सारयां नूं दए समझाईआ। जेहड़ीआं तुसां पाईआं रासा, नाच गोपीआं नाल नचाईआ। वे रामा जिस तैनूं फिराया विच प्रभासा, सीता सति सति संग बणाईआ। उहदी हुण वेख लओ सारयां तों वखरी भाषा, नवीं सिख्या रिहा समझाईआ। फेर धरनीए मैं होर तक ल्या नारद कहिंदा ओह वेख लै तीजे चौथे साल नूं उस चाढ़नी लाश उत्ते लाशा, दुहाई दुहाई करे लोकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे वे नारद वीरा, भईआ कुझ होर दे सुणाईआ। नारद कहे धरनीए मैनूं ऐं जापदा किसे दे सिर ते शहिनशाही ताज दा रहिणा नहीं चीरा, चिरी विछुन्नीए तैनूं दयां समझाईआ। जो आसा रखी पैग़म्बरां पीरां, दीन दुनी तों बाहर अक्ख उठाईआ। नी उस प्रभू ने सब दीआं बदल देणीआं तकदीरां, तक्बर वाल्यां नूं दए खपाईआ। जिस नूं अज्ज कोई याद नहीं करदा ते अठ्ठां सालां तक लभणीआं एहदीआं तस्वीरां, नौ खण्ड पृथ्मी हथ्थ मथ्थे उत्ते मार मार के दए दुहाईआ। जिस दीआं दो जहान जगीरां, उह मालक ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दी आशा रख के गया कबीरा, शरअ तों बाहर सुणाईआ। पैग़म्बरां किहा बेनज़ीरा, नज़रां तों ओहले नूर अलाहीआ। गोबिन्द ने किहा उहने माण देणा छींबिआं ते झीरां, जट्टां विच जट्ट हो के सोभा पाईआ। ओ जे जट्ट ना होवे ते किस तरह कटे ग़रीबां दीआं पीड़ां, मज़लूमां होवे कवण सहाईआ। ओ भगतो तुहाडीआं ज़रूर बन्न्ेगा बीड़ां, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे नारदा मेरे वल्ल कर लै अक्ख , अक्खी लै बदलाईआ। नारद कहे धरनीए
२१४ आपणे उत्ते वेख प्रतख, परम पुरख बेपरवाहीआ। जिस सब दे भाण्डे कीते सख, सच वस्त नज़र कोए ना आईआ। जिस २१४
२४ नूं कहिंदे अलखणा अलख, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जिस दीन दुनी जुग जुग कीती वख, वखरी वंड वंडाईआ। २४
नाम कलमे अक्खरां वाले जस, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। उठ दोवें लईए हस, खुशीआं दे ढोले गाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आईए नस्स, भज्जीए वाहो दाहीआ। धरनी कहे ओ नारदा मैं किथे जावां ते मैं अज्ज भगतां दे नाल एहदे प्यार विच गई फस, पल्लू मूल ना सकां छुडाईआ। मैनूं ते डर लगदा किते मेरी उलटी कर ना देवे सफ़, सफ़ा दीन दुनी उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे धरनीए एह मेरा साहिब सच्चा सुल्ताना, बेपरवाह अख्वाईआ । नी एह बड़ा मेहरवाना, मेहर नज़र नाल तराईआ। मैं तैनूं इक गल्ल दस्सां जेहड़ी कहि गया सी रामा, राम राम राम कहि के दिती दुहाईआ। नाले इशारा दिता कान्हा, घनईया की वड्याईआ। नाले पैग़म्बरां दा दस्सया पैग़ामा, बिन अक्खरां अक्खर वखाईआ। नाले नानक दा दस्सया सतिनामा, सच सच समझाईआ। फेर सारयां तों बाद दस्सया उह प्रभू बेअन्त सब दा कन्त जिस दा जाणे ना कोए निशाना, निशाने सब दे दए बदलाईआ। उन आउणा उस वेले जिस वेले लेखा जाणे ज़िमीं असमाना, धरनी धरती धवल धौल तेरे धौले झाटे दी खेल तैनूं दए वखाईआ। उस वेले तेरे उत्ते वसण वाला इन्सान परमात्मा नाल होणा बेगाना, प्रभू दा प्यारा नज़र कोए ना आईआ। बेशक कोई हिन्दू

होवे कोई मुसलमाना, ईसाई सिख जगत वंड वंडाईआ। सब दे हथ्थीं लाड़ी मौत ने बन्नणा गाना, सदी चौधवीं मुहम्मद दी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच हुक्म वरताईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू मैं ते बड़ा ठण्डा, सीतल धार नज़री आईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मेरी पई वंडा, दूर दुराडा वेखां अक्ख उठाईआ। पर मैनूं पता नहीं एह अज्ज किधरों आ गया नारद पंडा, आपणा फेरा पाईआ। पर इक खुशी तेरे हथ्थ विच सत्त रंग दा डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। एह कोई लुहार तरखाण दा घड़या होया नहीं खण्डा, जो अग्नी तत जलाईआ। तेरे शब्द दी धार ने सब दा तोड़ना घमंडा, मन तन दी करे सफ़ाईआ। नूरी जोत दा चाढ़ना चन्दा, दो जहानां डगमगाईआ। जो मुहम्मद ने आशा रखी मेरा लेख होवे यक शंभा, यके बाद दीगरे आपणा हुक्म वरताईआ। मैनूं इयों जापदा तेरा हुक्म नहीं होणा लम्बा, लमह लमह दए गवाहीआ। नारद कहे धरनीए नी एस दा खेल होणा अचंभा, हैरानी विच सारे रहे कुरलाईआ। धरनी कहे वे नारदा मेरा सीना कम्बा, कम्ब कम्ब के दयां वखाईआ। नारद कहे धरनीए तूं नहीं वेखे भगत सुहेले राजे बण गए ते सिर ते रख के मोर दे खम्बा, खम्ब मोर दा लेखा नाल अष्टभुज दुर्गा दए मिलाईआ। जिस ने सुंभ निसुंभ ते दैंतां दा लेखा ते हाल कीता मंदा, धरनी कहे उस वेले मेरे उत्ते पई दुहाईआ।
इस समें वास्ते धरती कहे गोबिन्द ने पुरी अनन्द विच्चों निकलण लग्गयां सज्जे हथ्थ दा लाया सी पंजा, पंजा ला के मुख नाल चुम्म के पुरख अकाल दे अगे वास्ता पाईआ। नाले ज़ोर दी हलूण के कंधा, खड़ग खिच के सज्जे हथ्थ नाल हिलाईआ। मेरे दीन दयाला जे गोबिन्द धार होए ते तेरा नूर होवे शब्द सूरबीर होवे चंगा, चंगी तरह दृढ़ाईआ। ते तेरा जे निशान होवे ते निशान होवे जोत दी धार मेरा होवे रंगा, दूजा रंग नज़र कोए ना आईआ। तेरा प्रेम होवे मेरा अनन्दा, सुख भगतां अन्दर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते बहि गए भगत प्यारे, नैणां वालीए नैणीं ध्यान लै लगाईआ। धरनी कहिंदी नारदा हुण मैं इहनां दे सहारे, बिना भगतां तों मेरा मित्र नज़र कोए ना आईआ । मेरी आशा कूक कूक पुकारे, दो जहानां रही सुणाईआ। आजा आजा आजा कलि कल्की अवतारे, कायनात दिआ मालका मेरा हो सहाईआ। मैनूं तेरे सारे दे के गए लारे, अवतार पैग़म्बर गुरु ख़बरां विच सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग एह जुग केहड़े विचारे, तेरे हुक्म विच भज्जण वाहो दाहीआ। ते बिन तेरे मेरी पैज ना कोए संवारे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू सतिगुर साहिब इक, एकँकार तेरी सरनाईआ। जेहड़े

तेरे भगत मेरे उत्ते गए टिक, टिक्के मस्तक खुशीआं वाले लगाईआ। इहनां दे अज्ज नवें लेख लिख, पिछले लेखे दे मिटाईआ। जे तैथों मंग नहीं सके भिख, बिन मंगयां झोली दे भराईआ। एह हिन्दू नहीं एह सिख नहीं एह ईसाई नहीं एह मुसलमान नहीं एह गोबिन्द दे प्यारे उह सिक्ख, जिन्हां दी सिख्या गोबिन्द ने आपणे विच टिकाईआ। एह किसे नूं नेत्रां नाल नहीं पैंदे दिस, दहि दिशा रही कुरलाईआ। अज्ज इन्हां दा दे दे हिस, हिस्सा इन्हां दे अन्दर दे टिकाईआ। पता नहीं तेरे प्यार विच रहिणा किस किस, किस्मत सब दी दे बदलाईआ। वेखीं तेरा निशाना कदे ना जावे मिस्स, उह मिस्तरीआ अज्ज इन्हां नूं बणा दे स्त्रीआं इस्म आज़म विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। आह ! धरनी कहे मेरी छाती विच वजा सतरंगा, उफ़ मेरी दुहाईआ। उह रोंदी आ गई गंगा, नैणां नीर वहाईआ। भज्जा आ गया तारा चन्दा, सदी चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दे अन्दर खुशी नाल ग़मा, खुशी ग़मी आपणी वंड वंडाईआ। ते सब नूं आपणा आपणा तमअ, लालच रहे वखाईआ। उधरों नारद कहिंदा प्यारयो मित्रो एथे ते मार्ग चलणा नवां, तुहाडी की चतुराईआ। उह वेखो सारे भगत सुहेले हो गए जम्हां, जवां आपणा लेखा गए मुकाईआ। एह ते नवीं जगण वाली शमअ, नूर जोत करे रुशनाईआ। किसे नूं हुण भरोसा नहीं आपणयां दमां, स्वासां की वड्याईआ। भगत बण नहीं सकदा हमां तमां, बिना सतिगुर किरपा तों भगवन देवे ना माण वड्याईआ। तुहानूं पता नहीं उह जिन्ह रोटी खाधी जवां, तते पाणी नाल आपणा झट लँघाईआ। हुण बदल के दीन दुनी दा समां, भगतां नूं मिट्ठे चावल रिहा खुआईआ। छत्ती देगां ने आपणा गीत गवां, अवाज़ सूंअ सूंअ सूअ करके दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब सच दी धार इक प्रगटाईआ। देगां कहिण असीं कोई जगत वाला नहीं बणाया पलाअ, पलालीआं दा लेखा दिता मुकाईआ। आपणे थल्ले करके सुवाह, ख़ाक जगत वाली उडाईआ। जन भगतां दीआं बणके गवाह, शहादत शहीदी वाली रखाईआ। भगतो तुहानूं पता नहीं उह मित्रो तुसां सानूं हथ्थां नाल दिता ताअ, माचिस ज़ोर ज़ोर नाल घसाईआ। पर फिर वी असीं ठण्डीआं कि पुरख अकाल ने साडी पकड़ी बांह, होया आप सहाईआ। जब तक तुसीं रहोंगे जुग चौकड़ी साडा वी तुहाडे नाल रहेगा नाँ, उह प्रभ ने दिती वड्याईआ। भावें सानूं जम्मयां नहीं किसे माँ, ना कोई बणी जणेंदी माईआ। पर असीं उस धरती उत्ते गईआं आ, जिथ्थे बाल्मीक लेखा गया लिखाईआ। जे तुसां हुण खुशीआं नाल ल्या खा, खा के बैठे सोहणे सोभा पाईआ । ते सानूं याद आउँदी मुहम्मद वाली न्आज़ इक पा, चावल दा दाणा इक इक समझाईआ। जिस कारन गोबिन्द ने अमृत रस दिता प्या, चूलीआं हथ्थां

नाल वरताईआ। अज्ज उस दा लहिणा देणा पूरा कीता उस खुदा, जो रैहबर नूर अलाहीआ। जिस दी खुशी विच गाया वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। इहो राम गया सी समझा, हनवन्त नूं अन्दर वड़ के आप उठाईआ। बिदर दे अलूणे साग नूं भोग लगा, कृष्ण ने कलयुग दा समां दिता दरसाईआ। जदों आया कान्हा दा काहन धरनी उत्ते नवां रंग दए रंगा, रंगत इक्को इक समझाईआ। जन भगतो फ़िकर ना करयो देगां कहिण जो तुहाडे घर घर दे विच्चों चौल लए मंगा, तुहाडा इक इक दा दाणा दो जहानां दा लेखा वेख वखाईआ। पैसा टका किसे दा बणया नहीं कोई सहा, सहाई नज़र कोए ना आईआ। अज्ज ते तुहाडा पता नहीं किस तरह लग्ग गया दाअ, पेचा सतिगुर ल्या पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच आप समझाईआ। चावल कहे जन भगतो मैं इक इक दाणा रिझदा, तुसीं अग्नी खुशीआं नाल डाहीआ। मैं फेर प्यारा बणया तुहाडे लहू मिझ दा, खुशीआं विच समाईआ। तुसां मेरा वहिण नहीं वेख्या हिंझ दा, की नैणां नीर वहाईआ। पर मैनूं आस मैं भगतां दे नाल प्रभू मिलण नूं गिझदा, रीती भगतां दिती समझाईआ। जिन्हां दा प्यार परम पुरख नाल भिजदा, मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

२१७ कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। नारद कहे ओ चावलो ना करो आपणी वड्याई, ऐवें ना सिफ्त २१७

२४ सलाहीआ। निमाणे हो के दयो दुहाई, कूक कूक सुणाईआ। गल पल्लू लओ पाई, हथ्थ बन्ह के सीस झुकाईआ। छत्ती २४

देगां दा इक इक दाणा कहे सानूं खा के बण जाओ भाई भाई, भैण भईआ इक्को रूप नज़री आईआ। वेख्यो गुरसिख गुरसिख दा बणिउ ना कदे कसाई, एह गोबिन्द दी रीती पुराणी चली आईआ। तुहाडा इक्को गृह इक्को दुआरा इक्को थाँईं, थान थनंतर इक्को इक समझाईआ। सतिगुर प्यार विच किते मस्तक ला ना ल्यो कूड़ दी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। तुहाडा मेला मेलया चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसांईंआ। छब्बी पोह कहे धरनीए मेरी वी आ लैण दे वारी, मैं वी पुराणा बैठा आस रखाईआ। नारद कहे इक साडी वी पिछली यारी, यारां नूं यार मिल के खुशी बणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण साडा वी पिछला उधारी, लेखा वेखीए चाँईं चाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे एह खेल अपर अपारी, जगत समझ किछ ना पाईआ। निरगुण जोत कहे नूर नूर उज्यारी, दो जहानां डगमगाईआ। मैं लहिणा देणा पूरा करना जो धरती रही पुकारी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। चारों कुण्ट वेखां करां ख़बरदारी, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। सब तों उत्तम श्रेष्ट विचार जो सब तों वसे बाहरी, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। उह भगत सुहेला इक इकेला जुग जुग आए वारो वारी, वारस हो के फेरा पाईआ। जो

साची दए बहारी, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जगत महकाए फुलवाड़ी, पत्त टहणी धुर दे हुक्म विच इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी सरनाईआ। तूं मेरे उत्ते होइउँ दयाल, दीनन दिती वड्याईआ। सच बणा के सची धर्मसाल, भगत दुआरा दिता सुहाईआ। जिथ्थे इक्ठे होए बृद्ध बाल, नौजवान मिल के वजे वधाईआ। एथे लेखा नहीं शाह कंगाल, वड्डा छोटा ना कोए वखाईआ। तेरी सच प्रीती ते प्रीती आत्मा नाल, आत्मा परमात्मा एह तेरी बेपरवाहीआ। मेरी इक बेनन्ती ते इक सुआल, इक आरज़ू अर्ज़ तेरे चरण कवल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा सच रूप दरसाईआ। धरनी कहे जे मेरे दुआरे लाया भाग, दिती माण वड्याईआ। मेरी आशा दे अन्दर इक चराग़, नूरी जोत जोत डगमगाईआ। जिस दे नाल मैनूं उपज्या वैराग, मेरा अन्तर रिहा कुरलाईआ। जे मेरा धोणा दाग़, दुरमति मैल करनी सफ़ाईआ। भगतां दा भगत बणाउणा समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दा मेटणा राज, सति धर्म सच नाल वड्याईआ। कुझ लेखा लिख दे आज, अगला हुक्म हुक्म नाल सुणाईआ। सारी सृष्टी जावे जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब तेरे चरण कवल सीस निवाईआ। धरती कहे मेरे निरँकारा, निरवैर तेरी सरनाईआ। मैं कूक करां पुकारा, दर तेरे वास्ता पाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जे भगतां दिता सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अगला खेल करना अपारा, अपरम्पर स्वामी होणा सहाईआ। सुहाउणा यमुना दा किनारा, पूरब लेखा काहन वाला मुकाईआ। बणाउणा दिल्ली दरबारा, दिल दयां प्यारयां लैणा मिलाईआ। उह तिन्नां सालां विच प्रसिद्ध कर देणा संसारा, चारे कुण्टां वजे वधाईआ। उहदा अक्खर छाप ना सकण इलमां वाली अख़बारा, उह धुर दे शब्द नाल करनी जणाईआ। वेखीं किते हो ना जाईं बेएतबारा, एतबार आपणा लैणा जमाईआ। धरनी कहे मेरी पुनह पुनह पुनह निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी समग्री सच वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरुओ मैं तुहाडा करां धन्नवाद, दर आया खुशी बणाईआ। मैनूं खेल तुहाडा पुराणा याद, यादाशत ना कदे भुलाईआ। जिस कारन सारे रहे अराध, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सो स्वामी मैनूं गया लाध, खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। जिस मेरे उत्ते सब दा सांझा भगत दुआरा कीता आबाद, सोहणी दिती वड्याईआ। एह लेखा बोध अगाध, वदी सुदी तों परे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच गृह इक वखाईआ। सच गृह तक लओ हकीकी, हिकमत नाल समझाईआ। जिथ्थे मिटदी दीन दुनी दी तारीकी, अन्ध अज्ञान रहे ना राईआ। शरअ दी रहे ना कोए शरीकी, शरक्त अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीकी, तोहफ़ा नाम देवे थांउँ थाँईंआ। जिस दी धार त्रैगुण अतीती, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। एथे झगड़ा नहीं मन्दिर मसीती, साचा घर इक सुहाईआ। जिथ्थे हुन्दे पतित पुनीती, पतित पावन आपणा रंग रंगाईआ। एह कोई पिछली कहाणी नहीं बीती, नवां मार्ग दिता चलाईआ। जन भगतो इक प्रभू दे नाल होवे प्रीती, प्रीतम इक्को इक वखाईआ। जिस दी तुसीं फुलवाड़ी बग़ीची, बूटे जगत जहान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। जन भगतो उस प्रभू दे प्यार दा बण जाओ बूटा, बूटे नाम वाले लगाईआ। उस दा अगला अगे लै के वेख्यो हूटा, बिना हुलारयों दए झुलाईआ। तुहाडा जस करांगा चारे कूटां, एह मेरी बेपरवाहीआ। एह कोई भज्जण वाला नहीं ठूठा, एह मालक नूर अलाहीआ। एह रुस्सण वाला नहीं रूठा, सगों रुस्सयां लए मिलाईआ। तुहाडा प्यार मुहब्बत वाला सतिगुर चरण दा जूता, जोतां जगदीआं घर घर दए वखाईआ। तुहाडा आवा कदे ना जाए ऊता,
२१६ सौंतरे जगत विच बणाईआ। एथे कोई नहीं रहेगा अछूता, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर वसाईआ। ओ तुहाडा लेखे २१६
२४ लाया शरीर पंज भूता, पंजां दा लेखा गिण गिण दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा २४
साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे उह प्रभू सुहा दे घर, गृह मन्दिर दे वड्याईआ। दे दे आपणा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जे आ गए तेरे दर, दरवेशां आपणे गले लगाईआ। तेरे प्यार विच जाण मर, मर के फिर जम्मण दी लोड़ रहे ना राईआ। नुहा दे उस सर, दुरमति मैल दे धुआईआ। इन्हां उत्ते किरपा उह कर, जिस दी धू प्रहलाद आसा गए रखाईआ। रवीदास ने सुट्ट के जोरू ज़र, तेरे चरण सरन लई तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा सच आपणा दर वखाईआ। पुरख अकाल कहे नी धरतीए तूं की दएं इशारे, आपणी दलील जणाईआ। एह भगत प्रभू दे प्यारे, जुग जुग संग रखाईआ। कोटन वार लोकमात विच तारे, जुग चौकड़ी गणत ना कोए गिणाईआ। एह खेल करे अपर अपारे, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। जिन्हां इक वारी मेरे नाम दे ला लए नाअरे, सति सच विच समाईआ। अज्ज फ़ैसला दिता भगत रहिण ना मूल कँवारे, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। जो शरीर छड के आ गया दुबारे, दोहरा वेस वटाईआ। लै के जावांगा सचखण्ड दुआरे, चोबदार हो के सेव कमाईआ। एह पिछले पिछले पिछले हुदारे, कर्जे सब दे दयां मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दे लेखे आपणे हथ्थ रखाईआ। नारद कहे जन भगतो किते आउँदी नहीं जांदी थकावट, सहिज नाल मैनूं दयो जणाईआ। मैं तुहाडी बणावां बनावट, सोहणा ढंग समझाईआ। मेरी ते पुराणयां जुगां दी कहावत, कहि कहि सुणाईआ। इक गल्ल याद रखयो प्रभू दे प्यार विच अज्ज जन भगतो आपणे अन्दरों कढ के जाणा अदावत, दुवैत रहिण कोए ना पाईआ। एह कलयुग दी कूड़ी क्यामत, कलयुग दी झोली देणी टिकाईआ। बाकी ते सारी दुनिया ते आउणी शामत, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। क्यों मुहम्मद कहे मेरे अमामा मेरी छेती ल्या क्यामत, सदी चौधवीं भज्जे वाहो दाहीआ। ते भगतो तुहानूं नवीं मिली निआमत, नाम अनरस दिता चखाईआ। तुहानूं पता नहीं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तों तुहाडी सांभ के रखी अमानत, सहिज सहिज तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे भगतो सौणा चंगा कि जागणा, छेती दयो बतलाईआ। प्रभू दे प्यार विच रहिणा चंगा कि छड के भागणा, खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। नाल रहिणा कि अलागणा, ऐवें ई दयो दरसाईआ। क्यों प्रेमीओ तुहाडी नवीं साजी साजणा, नवां राग अलाईआ। तुहानूं पता नहीं किथ्थों मार मार के अवाज़णा, ते इक्ठे कीते थांउँ थाँईंआ। एह कोई भगत दुआरा हिस्से नहीं आया माझना, माझे वाल्यां ना कोए वड्याईआ। इस दी ते नानक ने वजाई रबाबना, सितार सितार सितार विच्चों हिलाईआ। गोबिन्द ने उडाया बाज़ना, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। शब्द सतिगुर दा नादना, जेहड़ा तुहानूं करे शनवाईआ। तुहाडा भगती दा इक समाजना, भगवन दए वड्याईआ। तुहाडा मेला नाल माधव माधना, जो मधुर धुन दे राग रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखाईआ। नारद कहे ऐवें ना मिलायो हां विच हां, मित्रो मैं सच विच दयां सुणाईआ। अज्ज वक्त भावें हँस बण जाओ भावें बण जाओ काँ, दोवें राह समझाईआ। थल्लउँ कूक के कहे धरनी माँ, बच्चयो मेरी दुहाईआ। एह सतिगुर ने पकड़ी तुहाडी बांह, नाल मैनूं वी बाहर लए कढ्ढाईआ। उह तुसीं ना सूर खाणा ते ना गाँ, दोहां दा लेखा दिता मुकाईआ। तुसीं ना ज़िमीं रहिणा ना असमां, सचखण्ड बैठणा चाँईं चाँईंआ। तुहाडी अज्ज दी पहली ते अज्ज दी अख़ीरी लांअ, लांवां चार जुग दीआं चारे कुण्टां देण गवाहीआ। तुहाडे सिर ते सदा रखे ठण्डी छाँ, मेहरवान हो के आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडे शरीर दा साढे तिन्न हथ्थ दा सुहा के गराँ, घर घर दर्शन देवे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसांईआ। धरनी कहे मैं वी अज्ज पुकारदी, खुशीआं दे ढोले गाईआ। भगतो यारी लभणी नहीं एस यार दी, यराने कोटन कोटि गए तुड़ाईआ। उह तुहाडी मिलणी अन्तिम वार दी, जेहड़ी अन्तष्करन

दी करे सफ़ाईआ। एहदी कोई धारा नहीं नर नार दी, नर नरायण नूर अलाहीआ। एह खेल इक करतार दी, जो कुदरत दा कादर हो के रिहा वखाईआ। एह आशा पैग़म्बर गुर अवतार दी, लेखे सब दे झोली पाईआ। एहदी मेहर दी निगाह बिना भगती तों तारदी, जिस नूं चाहे फड़ बांहो पार कराईआ। एहदी कोई बेड़ी नहीं उरार दी, बेड़ी शौह दरया ना कोए डुबाईआ। एह खेल एस सची सरकार दी, जो सरकारे आहला आदि जुगादि इक इक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। धरनी कहे जन भगतो अज्ज दी घड़ी बड़ी सुलखणी, सोहणे समें नाल वड्याईआ। मैं चाहुंदी किसे दे प्यार वाली गोदी रहे ना सखणी, ख़ाली सब दी दए भराईआ। पर एह दुनिया विच्चों सांभ के रखणी, आपणे काया मन्दिर अन्दर टिकाईआ। कदी समां सी काहन ने सखीआँ तों खाधी मखणी, हुण तुहाडे प्रेम रस नाल आपणा झट लँघाईआ। तुहानूं अगली इक्को ख़बर दस्सणी, दहि दिशा तों बाहर समझाईआ। भगतो हुण भगतां दी बस्ती वसणी, बाकी होवे सर्ब सफ़ाईआ। तुसां वेखणा तुहाडे पिच्छे दुनिया नस्सणी, आखणा सानूं धुर दा माही दयो मिलाईआ। असीं सुणीए उस दे बचनी, जो अणमुल्ले बचन सुणाईआ। जिस दी प्यार दी धार साडे लूं लूं विच रचणी, साढे तिन्न करोड़ खुशी बणाईआ। जिस भाग लगाउणा काया गढ़ कंचनी, सोहणा रंग रंगाईआ। एस प्रभू दे वैराग विच सारी सृष्टी दी आशा मचणी, छत्तीआं जुगां दी धार दा लेखा छत्ती माचिसां देण समझाईआ। एह कोई जगत वणजारयां दी नहीं हट्टणी, सौदा कूड़ वाला रखाईआ। इस प्रभू ने पहलों कूड़ कुड़यार दी जड़ पट्टणी, पटने वाले दा लेखा आपणे नाल रखाईआ। तुसीं वेख्यो जिस वेले सदी चौधवीं टपणी, दीन दुनी दा नकशा देवे बदलाईआ। बिना प्यार तों वस्त किसे नहीं खटणी, खटके विच दिसे लोकाईआ। वक्त आवेगा तूं मेरा मैं तेरा सब ने तुक रटणी, रट्टा मुकणा जगत ख़लक खुदाईआ। इक्को जोत जगे लट लटणी, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस ने पिछली डोरी कटणी, अगे इक्को गंढु रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच दा लेखा दए मुकाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैनूं कहिंदे धौल, धर्म नाल सुणाईआ। मैनूं उस वेले खुशी होई जिस वेले गोबिन्द ने छकाई पौल, अमृत रस बणाईआ। उस वेले शरअ दी शरीअत ने कीता मखौल, हासीआं दितीआं उडाईआ। पर उस ने कीता इक कौल, इकरार गया दरसाईआ। जिसनूं समझे कोई ना पंडत पांधा रौल, विद्यावान ना कोए समझाईआ। धरनी कहे जे कोई मेरा सीना वेखे फोल, मेरी छाती दए दुहाईआ। मैनूं याद गोबिन्द दे बोल, मेरे अन्दरों अवाज़ आए चाँईं चाँईंआ। मैनूं दस्सण लग्गी नूं पैंदा हौल, हाए मेरी दुहाईआ। उह वक्त उदों आउणा जिस वेले मेरा ढईआ लँघया ते मेरे सिख जाणगे डोल, मुरीद मुर्शद नज़र कोए ना

आईआ। फेर धरवास बन्नांगा नानक दी धार देगां चाढ़ के छतीवें जुग दे खवा के चौल, सांतक सति सति वरताईआ। बाकी सब कुछ मेरे कोल, जदों चाहवां दयां वरताईआ। तुहाडा प्रेम प्यार विच देवां घोल, घोली आपणा आप घुमाईआ। बिना तराज़ू तों देवां तोल, तोलणहारा इक अख्वाईआ। एथे उथे रखां अडोल, दो जहानां आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे जन भगतो की तुसीं हुण थक्के, प्रेम नाल सुणाईआ। उह वेखो की अवाज़ आउंदी मदीने मक्के, काअबे की सुणाईआ। दरोही सब नूं पैणे धक्के, हाए हाए कर कुरलाईआ। एह हुक्म मिलणा दीगरे बाद यके, यक हुक्म इक सुणाईआ। हलूणा मिलणा बूरे कक्के, साबत रहिण कोए ना पाईआ। किसे दे कम्म नहीं आउणे टके, दीन दुनी टकयां हट्ट विकाईआ। सब दे कूड़ कुड़यार दे लेखे जाणे कटे, कटाकश लग्गे थांउँ थाँईंआ। उच्चे मन्दिर जाणे ढठ्ठे, महल वेखण विच खुशी ना कोए बणाईआ। उह रहिणे जेहड़े प्रभू दे पठ्ठे, भगत जन बैठे सोभा पाईआ। सच प्यार दे बणना बच्चे, बचपन सतिगुर चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कलयुग

२२२ बड़ा ज़बर, ज़बरदस्ती सब दे नाल कराईआ। किसे दा रहिण नहीं देणा सबर, सबूरी अन्दर ना कोए रखाईआ। मैं निगाह २२२

२४ मारदी ते मेरे उत्ते एस गाल दिते टब्बरां दे टब्बर, कुंनबे दीनां मज़्बां वाले आपणे विच रुढ़ाईआ। एह बड़ा सूरबीर बहादर २४

ज़बर, भय सब नूं रिहा वखाईआ। पर इक अवाज़ आउंदी विच्चों मुहम्मद दी कबर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अलाही नूर आ गया अमाम अमामा उत्तों अम्बर, ज़िमीं असमानां खेल खिलाईआ। जिस ने नवां रचणा सुवम्बर, सोहणी बणत बणाईआ। जिस ने लेखा वेखणा तारा सूर्या चन्द्र, आपणा चन्द चमकाईआ। जगत धार वेखणी डूंघी कंदर, कोना कोना फोल फुलाईआ। झगड़ा मेटणा मसीतां मन्दिर, मंद भाग तके ख़लक खुदाईआ। फेर वड़ना भगतां दे अन्दर, आपणा डेरा लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्दन, साची करे पढ़ाईआ। दीनां मज़्बां दे तोड़ के बन्धन, बन्दगी अगली दए समझाईआ। जन भगतो प्रभू दे प्यार दी चाढ़ रंगण, रंगत आपणी दए वखाईआ। क्यों सतिगुर शब्द कदे जांदा ना किसे तों मंगण, अंगीकार आप अख्वाईआ। जदों चुक्के ते चुक्के आपणे कंधन, दो जहाना पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आपणे आप समझाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं बड़े देखे जुग, आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दे समें गए पुग, भज्जे वाहो दाहीआ। जे कोई होर पुछे मुझ, मैं दयां समझाईआ। मैं की आखां मेरा प्रभू कदे कुझ ते कदे कुझ, पता नहीं की एहदी बेपरवाहीआ। मैनूं कुछ नहीं आउँदा सुझ, कितने रूप जुग चौकड़ीआं

आपणे लए वटाईआ। एहदा भेव नहीं खुल्दा गुझ, गुज्झी रमज़ आपणी आपे रिहा लगाईआ। कदे प्यार करे ते कदे दुनिया विच दुज, दुवैत दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। झट नारद मार के हुझ, धरती नूं रिहा हिलाईआ। नाले प्या कुद्द, टप्पे चाँईं चाँईंआ। नी तैनूं वसुधा अजे नहीं आई सुध, सुदी वदी दा लेखा वेखे थाउँ थाँईंआ। उह वेख की कहि के गया बुद्ध, तेईवां अवतार बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। जिस वेले सति दी धार दा दीपक गया बुझ, प्रभू फेर आपणी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा समां आप सुहाईआ। छब्बी पोह कहे मेरी भिन्नड़ी रैण सुहावी, सोहणी मिली वड्याईआ। उह भज्जी नठी आ गई रावी, आपणा पन्ध मुकाईआ। बेल्यां काहींआं विच बण गई बावी, बौरा रूप दरसाईआ। नाले भरे हावी, हौकयां नाल ढोले गाईआ। मेरे प्रभू मेरे घर वी आवीं, आपणी दया कमाईआ। आपणे सज्जे चरण नाल मेरा तन छुहावीं, सोहणी देवीं वड्याईआ। मैं चावां नाल उडां ते तेरा राह तकां ते तूं मेरे वल तकावीं, एह तेरी बेपरवाहीआ। वेखीं किते मैनूं कर ना देवीं निथावीं, गुर अर्जन मेरी दए गवाहीआ। मेरी तक्कड़ तोल देवीं सांवीं, साँवल सुंदर तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी सार पावीं, पंजाब विच मेरे आउण दा लेखा दईं मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरा धौला हो गया झाटा, जुग चौकड़ी मेरे उत्ते बीते मैनूं समझ किछ ना आईआ। पता नहीं हुण मैनूं किधरों आ गया घाटा, मेरी तेरा नाम दुहाईआ। मेरा चीथड़ वेख लै पाटा, ओढण नज़र कोए ना आईआ। मेरे हथ्थों छुट गया गोबिन्द वाला बाटा, अमृत रस ना कोए छकाईआ। मेरा मुहब्बत वाला रिहा ना हाटा, कूड़ वणज करे लोकाईआ। मेरी पवित्र रही ना खाटा, साधां सन्तां दे नेत्र नैण शर्म हया गंवाईआ। उह किसे नूं याद नहीं देवी वाली लाटा, दुर्गा अष्टभुज वेखे नैण उठाईआ। पैग़म्बर कहिण साडा रिहा कोई ना साता, सत्त ज़िमीं असमान देण गवाहीआ। अवतार इक दूजे नाल करन बातां, खुशीआं दे ढोले गाईआ। नाले कहिण राम कृष्ण जी साडा जगत नालों तुट गया नाता, नातवां हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। नाले साडा पिछला हिसाब मुक्कया खाता, लहिणा जगत ना कोए रखाईआ । असीं पहलों दीन दुनी अख्वाउँदे रहे चाचा, हुण पिता पुरख अकाल आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा लूं लूं अन्दर राचा, रचना आपणी दए समझाईआ। जिस भाग लगाया काया माटी काचा, पंजां ततां सोभा पाईआ। उस दा हुक्म चार जुग दे शास्त्रां वाचा, वाचक हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरा धर्म दुआरा सुहञ्जणा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। किरपा कीती आदि निरञ्जणा, मेहरवान होया सहाईआ। मैं

चाहुंदी जन भगतो तुहाडा मित्र होवे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। तुहाडे अन्दर नेत्र नाम पा के अंजणा, नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस ने तुहाडा पड़दा कजणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दा डंका दो जहाना वजणा, चार कुण्ट शनवाईआ। उह तुहाडे प्रेम प्यार दा प्यारा हो के तुहाडे विच सजणा, सज्जणो सज्जण बण के देणा वखाईआ। वेख्यो जगत विहार विच कदे ना छड के भज्जणा, भज्जयां हथ्थ कुछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा प्यार मुहब्बत दा सोहणा समां सुहाया, मिली माण वड्याईआ। मैं प्रभ दा दर्शन पाया, नेत्र नैण बिघसाईआ। भगतो तुहानूं दयां सुणाया, खुशीआं ढोले गाईआ। तुसां आपणा आपणा कदम जो मेरे वास्ते उठाया, भज्ज के आए वाहो दाहीआ। मैं तुहाडा शुकर मनाया, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू मेरी खुशीआं वाली कर दे रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। इन्हां बच्चयां नूं दे दे दात, प्रीतम हो के प्यार दी वस्त झोली दे भराईआ। तेरे नालों टुट्टे ना नात, विछोड़ा अगे रहे ना राईआ। तूं आदि जुगादी पिता मात, मात पित इक अख्वाईआ। तेरा खेल सदा बहु भांत, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। दर आयां दे हिरदे दे दे सांत, अग्नी तत बुझाईआ। इन्हां दर्शन दिआ कर इकांत, राती सुत्तयां दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरे हथ्थ जोड़े, मैं सच सच सुणाईआ। अज्ज चढ़ के जाइउ सतिगुर शब्द दे घोड़े, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ । सचखण्ड नूं जाइउ दौड़े, अगे हो ना कोए अटकाईआ। चढ़ना उस प्रभू दे पौड़े, जिथ्थे पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। बेशक उथे मार्ग बड़े सौड़े, फड़ बाहों पार कराईआ। तुहानूं नहीं पता सस्से उत्ते ला के होड़े, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। हँ ब्रह्म आपे बौहड़े, पारब्रह्म हो के वेख वखाईआ। तुहाडे फल मिट्ठे करे कौड़े, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। बेशक तुसां आपणे सिर ते चुक्के तौड़े, घड़यां सीस उठाईआ। एह लेखा ब्राह्मण गौड़े, जो वेद व्यासा गया लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप मुकाईआ। छब्बी पोह कहे अज्ज कोई मैनूं पुछे, मैं की दयां सुणाईआ। मैं इहो दस्सां एह भगत प्रभू दे सुच्चे, जो सच विच समाईआ। बेशक दुनिया इन्हां नालों रुस्से, रुस्से ना धुर दा माहीआ। जे भगतो तुसीं हो जाओ गुस्से, फेर वी गलवकड़ी पा के लवां मनाईआ। तुहाडे प्यार दे ख़ज़ाने कदे ना जावण खुस्से, ख़ाली झोली ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप

समझाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू आपणा बण जा संगी, संगी भगत लै बणाईआ। इन्हां दी हुण कट दे तंगी, क्यों भुखे रिहा मराईआ। तेरे कोल बथेरे ढंगी, लहिणे देणे सब दे झोली पाईआ। की हो गया जे शरीर विच प्रकृतीआं पंझी, पंजां दिआ मालका पंजां लेखा अन्दर दे बणाईआ। तूं सूरबीर बहादर जंगी, छत्रधारी इक अख्वाईआ। भगतां दी पिठ होण ना देवीं नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जे इन्हां तों वस्त नहीं गई मंगी, अणमंगी दौलत झोली दे पाईआ। पता नहीं तेरी किन्नी आयू लम्बी, कितने जुग तेरी सेव कमाईआ । झट नारद टिंड कढुके गंजी, सिर उत्ते हथ्थ घसाईआ। नाले कहे प्रभू मेरीआं तेरे अगे मिन्नतां करदे दीआं घस गईआं दन्दी, जुग जुग तेरे अगे वास्ता पाईआ। जे तूं सृष्टी कीती अन्धी, अज्ञान अन्धेरे विच रखाईआ । भगतां दे अन्दरों ज़रूर वासना कढ दे गंदी, पतित पुनीत आप कराईआ। किसे दी रहिण ना दे पाबन्दी, शरअ दे तन्द देणे कटाईआ। आपणे कर लै कार अंगी, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरा तुहानूं प्यार विच निमस्कार, नमस्ते विच सीस झुकाईआ। आओ अज्ज सारे इक ते इक दा करीए दीदार, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। जिस दी फुलवाड़ी गुलशन बणी गुलज़ार, सोहणी महक विच महकाईआ। ओ जिस दा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कीता इंतज़ार, लेखे लेखणी नाल लिखाईआ। उह अज्ज बणा के तुहाडा परिवार, विच बैठा धुर दा माहीआ। जिस दी याद विच सारे करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच सच विच्चों प्रगटाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो सारे खोल्हो अक्खां, अक्खीआं वाल्यो ध्यान लगाईआ। बेशक सृष्टी असंख असंख ते करोड़ां लखां, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ । पर मैनूं इयों जापदा थोड़यां उत्ते साहिब दीआं रखां, जिन्हां अन्तर आपणा पर्दा लाहीआ। लहिणा देणा दे दे हथ्थो हथ्था, जगत उधार ना कोए बणाईआ। मैं वायदे नाल कहवां छब्बी पोह कहे जिस इक वार टेक ल्या मथ्था, मथुरा दे काहन कोल सचखण्ड दए पहुंचाईआ। एह हुक्म यथार्थ यथा, यदप यदी दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे एह मेरा धुर अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस ने इक वेरां कर ल्या सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। उहदा झगड़ा मेटया तमाम, तमअ लालच ना कोए वखाईआ। शरअ दा रहिण ना देवे ग़ुलाम, ज़ंजीरां दए कटाईआ। सच मुहब्बत दा देवे इनाम, दरगाह साची विच टिकाईआ। जित्थे ना कदी सुभा ते ना कोई शाम, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर इक वखाईआ।

छब्बी पोह कहे मैं खुशीआं विच सब दा होवां बग़लगीर, दस्तगीर दिती वड्याईआ। एस दर उत्ते ना कोई ग़रीब ते ना अमीर, सारे इक्को रंग वेख वखाईआ। जिन्हां अन्दर मेरे साहिब दी तस्वीर, तिन्हां तसव्वर करां ते निव निव लागा पाईआ। इहो कहि के गया सी कबीर, जदों आया ते आएगा सभना दा सांझा पीर, पीरां दा पीर नूर अलाहीआ। जिस ने सारयां दी बदल देणी ज़मीर, ज़िमीं असमान दा पन्ध चुकाईआ। उहदे कोल शब्द दी शमशीर, खण्डा खड़ग नाम वाला उठाईआ। नौ खण्ड पृथमी दी बदल देवे तकदीर, तक्ब्बर दा डेरा ढाहीआ। जे कोई उहनूं पातशाह कहे जे कोई उहनूं कहे फ़कीर, ओह फ़कीरां दा फ़कीर शहिनशाहां दा शहिनशाह नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो सच दा खेल खिलाउणा, सच खुशी बणाईआ। मार्ग सति चलाउणा, चार कुण्ट वड्याईआ। सच रंग रंगाउणा, उतर कदे ना जाईआ। सच शब्द दृढ़ाउणा, सच विच समझाईआ। कलयुग चार दिन दा पराहुणा, अन्त रहिण ना पाईआ। तुसां हुण खुशीआं दे नाल सौणा, आपणी खुशी रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा गृह इक वसाउणा, जिस घर सद मिलदी रहे माण वड्याईआ।

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात समें ✪

सताई पोह कहे सुण दूए साते, सति सतिवादी ध्यान लगाईआ। सरगुण निरगुण नाल जुड़ गए नाते, रिश्ता समझ कोए ना पाईआ। कीते खेल पुरख बिधाते, बिध आपणे हथ्थ वखाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी राते, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। दीन दुनिया दे तक खाते, फोल फुलाए थांउँ थाँईंआ। सच वस्त दिसे किते ना दाते, सति सच ना कोए समाईआ। झगड़ा तके ज़ात पाते, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। प्रभ दी बातन सुणे कोए ना बाते, रसना जिह्वा ढोले सारे गाईआ। सच दे वड़े कोई ना हाते, दुआरा सच ना कोए सुहाईआ। दरोही फिर गई लोकमाते, मातृ भूमी रही कुरलाईआ। मेरे उत्ते अन्तर सब दी होणी वफ़ाते, संगी संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। पोह कहे मेरा दिवस दो सत्त, अंक अंक नाल मिलाईआ। मेरा लहिणा देणा बिना हड्ड मास नाड़ी रत, ततव तत ना कोए जणाईआ। मैं की खेल दस्सां परमेश्वर पति, पारब्रह्म की हुक्म वरताईआ। जेहड़ा

निरगुण धार आया वत, वतनां दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस दीन दुनी दा तकणा सति, सति सतिवादी ध्यान लगाईआ। साधां सन्तां वेखणा यत, धीरज धर्म खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पोह कहे मेरा दो सत्त दा जोड़ा, सोहणी बणत बणाईआ। सस्से उत्ते वेख्या होड़ा, हँ ब्रह्म नाल वड्याईआ। शब्दी धार तक्कया घोड़ा, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। मैं निरगुण हो के हथ्थ जोड़ा, सीस जगदीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरी अन्तिम लोड़ा, लुड़ींदे साजण देणी माण वड्याईआ। मैं भगतां कहां भगतो जो मंगया सो थोड़ा, मंगण दी जाच सिखणी चाँईं चाँईंआ। जिस विच कोई अटका ना सके रोड़ा, लेखा जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे जन भगतो दो सत्त लेखा नाल जगत, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। जो लेखा जाणे बूँद रक्त, ततव तत आपणा भेव चुकाईआ। जिस दी आदि जुगादी इक्को शक्त, शख़सीअत वंड ना कोए वंडाईआ। पोह कहे उह देवणहारा इक्को वस्त, वस्तू आपणी आप वरताईआ। जिस दे नाल करे कोई ना हसद, दुतीआ भाउ ना कोए दृढ़ाईआ । जो सदा खुमारी देवे मस्त, मस्ती विच रखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पुरख अकाल दा आया वक्त, परवरदिगार होए सहाईआ। जिस बिन मंगयां तों ग़रीब निमाणिउ तुहानूं बणा दिता भगत, भगत तों परे दरजा नज़र कोए ना आईआ। तुहाडी ख़ातर आया परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। फेर गोबिन्द दी वेखो शर्त, जो शरअ तों बाहर समझाईआ। जिस भाग लगाया उत्ते धरत, धवल खुशीआं ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पोह कहे मेरा दो सत्त दा मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। चार जुग अगम्मा खेला, अवतार पैग़म्बर गुर गुर आपणा रूप दरसाईआ। संग बणा के गुरु गुर चेला, मुरीद मुर्शदां नाल रलाईआ। आप वस के धाम नवेला, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। अचरज खेल जुग जुग खेला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दो सत्त कहे मेरा आदि जुगादि इक्को नाम स्वासा, जगत अक्खर ना कोए वड्याईआ। मेरे गृह अगम्मी आसा, तृष्ना जगत ना कोए जणाईआ। प्रभ दा बण के दासी दासा, जुग जुग सेव कमाईआ। अन्तर होया ना कदे निरासा, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। मैं वेखां पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां ध्यान लगाईआ। मण्डलां वेखां रासा, गोपी काहन नच्चण टप्पण चाँईं चाँईंआ। मेरा खुशीआं विच निकले हासा, हस्ती तक बेपरवाहीआ। जिस ने करना बन्द खुलासा, खुलासी दो जहान कराईआ। उस

उत्ते भगतो सब नूं रखणा पैणा भरवासा, भाण्डा भरम भरम दए भनाईआ। सब दा पूरा करे काया कासा, तृष्ना जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। दो सत कहिण साडा लेखा नाल पोह सताई, सति सतिवादी दया कमाईआ। जन भगतो तुसीं बण जाओ वड्डे दाई, दाओ आपणा लओ लगाईआ। सच मार्ग दे बण जाओ राही, भज्जो चाँईं चाँईंआ। नाता जोड़ो भाई भाई, जगत वंड ना कोए वखाईआ। इक्क्ठे होवो झीवर नाई, जट्टां गंढु पुआईआ। शरअ दा रहे ना कोए कसाई, छुरी कूड़ ना कोए उठाईआ। मेल मेलो आपणे माही, मुहब्बत विच समाईआ। बिना हथ्थां तों करो दुआई, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। तूं मालक धुरदरगाही, सच तेरी वड्याईआ। सो देवे ठण्डीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। किते भुल ना जायो जट्ट करदा फिरदा वाही, भज्जे वाहो दाहीआ। उह सब दा मालक ते सब दा बण गुसांई, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। लहिणा देणा देवे थांउँ थाँईं, थान थनंतर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दो सत कहे साडा पोह नाल प्यार, सच सच सुणाईआ। मिल के इक अलाही यार, मुहब्बत विच समाईआ। फेर कीती पुकार, तेरा नाम दुहाईआ। उठ वेख आपणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। लेखा तक तेई अवतार, निरगुण निरवैर पड़दा आप चुकाईआ। पैग़म्बर तक धार, ईसा मूसा मुहम्मद संग जणाईआ। गुरु गुरदेवा तक किनार, कन्ढी घाट ध्यान लगाईआ। जीव जंत वेख दीन दुनी गंवार, गहर गम्भीर आपणा भेव चुकाईआ। भगत सुहेले तक जो रोवण ज़ारो ज़ार, विछोड़े विच कुरलाईआ। साडा पिछला कर्ज उतार, मकरूज लेखा दे चुकाईआ। अगे करना नहीं उधार, लहिणा हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ। साडी खुशीआं मौले बहार, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। मज़्बां विच ना रहीए गृफ़तार, शरअ ज़ंजीर देणे कटाईआ। इक्को माण देणा पुरख नार, स्त्री मर्द ना वंड वंडाईआ। सब दी पैज देणी संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा यार, यराना आपणा देणा जणाईआ। तेरे सब कुछ अख्त्यार, खुद मालक होणा सहाईआ। तूं देवणहार दातार, दयावान तेरी वड्याईआ। असीं मंगते तेरे भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। नाम निधाना बख्श दे सच्चे सच विच्चों दरबार, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। चरण धूड़ बख्श दे छार, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। पूरब लहिणा तक लै रवीदास चमार, की चमरेटा गया जणाईआ। बाल्मीक तक इशार, शब्द सैनत नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सताई पोह कहे जन भगतो बण जाओ साचे रिंद, जाम हकीकी दए वखाईआ। इक प्रभू दी हो जाओ बिन्द, वृंदावन दा काहन

जिस नूं सीस निवाईआ। तुहानूं पहलों माण दिता विच हिन्द, अगे नौ खण्ड पृथ्मी आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडी जन्म मरन दी मेट के चिन्द, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। पूजा करन नहीं दिती किसे पत्थर पाहन लिंग, पत्थरां सीस ना किसे निवाईआ। झगड़ा रिहा नहीं करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द, इन्द इन्द्रासण पन्ध मुकाईआ। तुहाडा मालक हो के गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर दए वड्याईआ। अमृत धारा बख्श के सागर सिन्ध, अंमिओं रस जाम आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। दूआ साता कहे जे पीणा जाम हकीकी, हुक्म मंनो चाँईं चाँईंआ। तुहाडे अन्दरों मिटे तारीकी, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। सतिगुर वेखो लाशरीकी, जिस दी शरअ तों बाहर पढ़ाईआ। जिस दे कोल हक तौफ़ीकी, तोहफ़े घर घर देवे चाँईं चाँईंआ। तुहाडा लहिणा देणा जगत अक्खरां वाला नहीं रसीदी, सिफ्तां वाली ना कोए वड्याईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों सब दी पूरी कीती उम्मीदी, आशा आपणे नाल मिलाईआ। तुहाडी अन्दरों खोल्ह के नींदी, आलस दीन दुनी वाला चुकाईआ। तुहाडी पगडण्डी करके सीधी, रस्ता सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ । सताई पोह कहे जन भगतो मंगत्यो होवो तैयार, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। सच प्यार विच करो निमस्कार, जगत तृष्ना ना कोए वखाईआ। किरपा करे आप निरँकार, निरवैर होए सहाईआ। नाता तोड़ के नौ दुआर, जगत वासना डेरा ढाहीआ। अमृत बूँद बख्शे ठण्डी ठार, नाभी कवल कवल उलटाईआ। शब्द अनादी दे धुन्कार, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। अन्दर मेट के धूंआँधार, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। जोती नूर कर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। जगत मंगां कोटन कोटि अगणती गणत ना लख हज़ार, मन तृष्ना विच लिपटाईआ। इक्को मंग जे पूरी करे आप करतार, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। फड़ बाहों चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, चरण कवल दए सरनाईआ। अन्दर वड़ के दए उधार, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। राती सुत्तयां दए दीदार, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मंगत्यां दे घर मंगता बणे निरँकार, प्रेम प्रीती मंगे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप समझाईआ। पोह कहे जन भगतो मंगणा आदि जुगादि चंगा, चंगी तरह जणाईआ। सदा मंगो प्रभू दा संगा, जो सगला संग दए निभाईआ। जो निरगुण हो के लावे अंगा, अंगीकार आप अख्वाईआ। सीस होण ना देवे नंगा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीन मज़्हब दा भरन ना देवे चन्दा, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा लेखा नहीं पंज तत दा बन्दा, बन्दगी आपणी दए समझाईआ। बिना रस तों दए अनन्दा, अनन्दपुर वासी जिस दी दए गवाहीआ । जिस

आत्म परमात्म समझाया आपणा छन्दा, ढोला सोहला इक समझाईआ। सो आप सुहाए इक पलँघा, आसण सिँघासण इक विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सताई पोह कहे मैं वेख के जगत जुग दी धार, धर्म वाल्यो दयां सुणाईआ। मैं वेखे जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। लेखे तके पैग़म्बर गुर अवतार, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। सब ने प्रभू दे नाम कलमे हुक्म विच दिते उच्चार, सिफ्त सिफ्ती ढोले गाईआ। डण्डावत बन्दना सजदयां विच करदे गए निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। ख़ाली झोली डाहुन्दे गए बण भिखार, भिखक हो के मंग मंगाईआ। किरपा कर सची सरकार, दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले थोड़ा थोड़ा आपणे नाम दा हिस्सा झोली दिता डार, वंड हिस्सयां वाली रखाईआ। पोह कहे मैं सच करां पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मेरे साहिब दा खेल अपार, जो अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। मैं जुग जुग वेखणहार, नित नित ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जद किरपा करे भगतां नूं देवे आप दीदार, धरनी धरत धवल धौल दए वड्याईआ। फड़ बाहों पैज दए संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सताई पोह कहे ओ वेखो नारद आउँदा लेटदा, पासा कंध नाल बदलाईआ। नाले इशारा दस्से पेट दा, हथ्थ हथ्थां नाल छुहाईआ। की लहिणा देणा होणा खेवट खेट दा, जो मालक धुर दरगाहीआ। जिस दा सहारा इक्को टेक दा, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक सारे रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। नारद कहे जन भगतो आउ मिल के मंगीए, मंगणा दयां जणाईआ। पहलों कूड़ कुकर्म दी लीक लँघीए, बिन कदम कदम बदलाईआ। दीन दुनिया कोलों ना संगीए, नाता जगत जहान तुड़ाईआ। भार चुक्कीए आपणे कंधीए, आपणा बल प्रगटाईआ। सति धर्म दी करीए संधीए, लेखा बिन कलम दवात लिखाईआ। दीन मज़्ब शरअ दी तोड़ीए पाबन्दीए, बन्दीख़ाना ना कोए जणाईआ। फेर खुशीआं प्रशाद वंडीए, जो गुरमुख गुरसिख कूड़ी क्रिया कढ घुमंडीए, निव निव सीस झुकाईआ। झगड़ा रहे ना जेरज अंडीए, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। प्रीती विच प्रभू दे नाल हंडीए, जगत नाता ना कोए रखाईआ। नारद कहे जन भगतो अज्ज तों कसम खा लओ आत्मा परमात्मा एस नाल गंढीए, जो गंढे खा के आपणा झट लँघाईआ। सानूं फेर कोई कहे ना रंडीए, रंडेपा जगत रहिण ना पाईआ। सतिगुर प्यार दी पवण लईए ठण्डीए, अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप समझाईआ। नारद जन भगतां हिला के मोढे, मंगण दी जाच रिहा सिखाईआ।

२३० २४

नाले हस के किहा क्यों मुहम्मद शरअ विच्चों कीते कोडे, निगाह धरती उत्ते टिकाईआ। क्यों मूधे मार के गोडे, हथ्थ ज़िमी असमान उठाईआ। क्यों गुरुआं अरदासे सोधे, निव निव सीस झुकाईआ। क्यों अवतारां रखाए बोदे, सीस जगदीस वड्याईआ। क्यों दीन दुनी विच प्रभ ने दिते औहदे, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। आओ कुझ भेव दस्सां गोझे, गुंझलां विच लुकाईआ। जो इशारा कीता गोबिन्द सिँघ जोगे, जुगती नाल जणाईआ। गुरसिखा जे तूं मेरे नाल भोग भोगे, मेरे विच समाईआ। तेरे अन्दर ना लालच रहे ना लोभे, ममता मोह ना कोए रखाईआ। मेरे नाम दे तेरे भरे रहिण बोझे, ख़ाली हथ्थ दुनिया देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो मंगणा औखा, मैं सच सच सुणाईआ। प्रभू नूं मिलणा नहीं कोई सौखा, सुक्खीं सांदी हथ्थ किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब नाल करे धोखा, धोखेबाज़ आपणी रचन रचाईआ । गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों आपणीआं सिफ्तां दा बणा के पोथा, ग्रन्थ शास्त्रां नाल वड्याईआ। नाम कलम्यां बणा के होका, हुक्म धुर दा इक दरसाईआ। भेव खुल्ला के लोक परलोका, ब्रह्मण्डां खण्डां संग बणाईआ। आपणे विच्चों थोड़ी थोड़ी सब दे अन्दर रख के जोता, जोती जाते दिती चमकाईआ। जिस नाल शरीर गया धोता, किरपा निधान करी सफ़ाईआ। फेर निगाह मार लओ गुर अवतार पैग़म्बर जो आया सो गया रोता, हंझूआं हार बणाईआ। जन भगतां उत्ते प्रभ होया आप मोहता, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। दुनिया विच्चों फड़ उठाया सोता, सुत्तयां ल्या जगाईआ। काया मन्दिर अन्दर मार के गोता, समुंद सागराँ विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जन भगतो तुहानूं शरअ दा कोई हथ्थ फड़ाया नहीं लोटा, तसबी माला ना कोए भवाईआ। सौदा कीता नहीं कोई खोटा, साई कूड़ ना कोए जणाईआ। तुहाडी भगती वास्ते तुहाडे परवार दी लई कोई ना वोटा, वीटो आपणा हुक्म सुणाईआ। फेर नहीं समझया वड्डा छोटा, बृद्ध बालां नौजवानां इक्को रंग रंगाईआ। तुहाडे परवार नूं कोई कर ना सके टोटा, खण्डे खड़ग ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे भगतो बेशक महिफ़ल चंगी महबूब, जाम हकीकी दए प्याईआ। उस दी मंज़ल हक मकसूद, दरगाह साची सोभा पाईआ। उहदी सब तों वखरी हदूद, हद्दां वंड ना कोए वंडाईआ। जिधर तको बिन शरअ तों तुहाडे अन्दर बाहर मौजूद, आप आपणा मेल मिलाईआ। जे तुसीं नहीं सी आपणा आप दे सकदे एह शरीर शेर सिँघ दा तुहाडे पिच्छे गया जूझ, हस्ती हस्ती हस्ती जगत विच्चों फेर प्रगटाईआ। हुण ना कोई मज़्हब ना कोई दूज, जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

२३१
२४

नारद कहे जन भगतो मंगण वास्ते बणीए निक्के निक्के काके, कुकू पप्पू आपणा नाम रखाईआ। प्यार मुहब्बत विच बणीए लड़ाके, सुख़न सुणीए चाँईं चाँईंआ। नाले तक्कीए पिछले भविख्त वाके, की वाकया भेव खुल्हाईआ। नारद कहे भगतो तुहानूं पता नहीं की नानक किहा विच ढाके, ढाकां उत्ते हथ्थ रखाईआ। नाले हस के किहा ओ वक्त आउणा जिस वेले गोबिन्द दयां सिक्खां ने सिक्खां नूं मारने डाके, डाकू घर घर नज़री आईआ। उस दा अमृत रस कोई ना चाटे, रसना कूड़ नाल होवे हल्काईआ। पर्दा किसे दा किसे दे होणे साके, जगत जहान जुगत ना कोए वखाईआ। उस वेले परम पुरख परमात्म आपणा खोल्हे ताके, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। प्रगट हो के लोकमाते, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां पुछे वाते, वेखे विच्चों ख़लक खुदाईआ। काया दे अन्दर मन्दिर वड़ के झाके, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। उह जिस ने गुरमुखां दे खुल्ल्हे करा के झाटे, रूप अनूप दिता बदलाईआ। पिछले पन्ध मुका के वाटे, अगे आपणा रंग रंगाईआ। भगतो भगत विके ना कदे किसे दे हाटे, जगत कीमत ना कोए रखाईआ। नारद कहे तुहाडे प्रेम दे प्रेम विच चले पटाके, पटने वाला आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप वखाईआ। नारद कहे जन भगतो रल मिल गाईए तराना, तुरीआ तों बाहर जणाईआ। साडा शहिनशाही सम्मत दस सालाना, एका सिफ़रे नाल वड्याईआ। शाहो भूप तक्कीए सुल्ताना, करता धुरदरगाहीआ। जल्वागर वेखीए नूर नुराना, नूर जोत रुशनाईआ। गल पल्लू पा के कहीए साडा तेरे नाल यराना, यारी सके ना कोए तुड़ाईआ। नाता छुट जाए दीन दुनी जहाना, ततव वंड ना कोए वंडाईआ। सानूं मेलया पता नहीं किस बहाना, केहड़ी वंड वंडाईआ। साडा लेखा बण गया रवीदास दा साढे तिन्न हथ्थ दा काना, कसीरा कौडी गंढु वखाईआ। नारद कहे मैनूं याद आ गया जो नानक हुक्म दिता मर्दाना, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। उह निगाह मार लै की खेल दस्से भगवाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग वक्त आउणा जिस वेले मेरे नालों मेरा होणा बेगाना, प्रेम विच ना कोए समाईआ। मानसां पंछीआं पंखीआं खाणा, पशूआं खल्ल लुहाईआ। साचा मन्दिर किसे ना पाणा, गृह वेखण कोए ना आईआ। मस्ती विच ना होए कोई मस्ताना, नाम खुमारी ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो मंगण लई होईए इक्ठे, एकता लईए बणाईआ। पहलों फ़ैसला करीए साडा लेखा कढया तीर्थ अठसठे, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती संग ना कोए बणाईआ। साडा लहिणा देणा नाल नहीं मन्दिर मस्जिद मठे, शिवदवाल्यां रंग ना कोए रंगाईआ। असीं इक साहिब दे पठ्ठे, जो सब दा पिता माईआ। जिस ने सतिगुर शब्द भेजया गुर अवतार पैग़म्बरां

दे वट्टे, वटणा आपणे नाल लगाईआ। जिस दे चरण विष्न ब्रह्मा शिव चट्टे, रस रसना बिन रसना मुख लगाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी टप्पे, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दे सिफ्ती ग्रन्थ शास्त्र छपे, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। नारद कहे जन भगतो उस ने माण दिता कलयुग अन्तिम इक्को पप्पे, पूरन पतिपरमेश्वर रूप समाईआ। जिस दा सथर सतिगुर गोबिन्द घत्ते, सोहणी सेज हंढाईआ। उह भगतां तन वजूद रत्ते, धुर दा आपणा रंग चढ़ाईआ। जिस ने इक जैकारा बुलाया फ़तिह, फ़ातया करे सर्ब लोकाईआ। जो चार जुग अवतार पैग़म्बर गुर नाम कलमे दे सिर ते चुक्कके भत्ते, दीन दुनी गए वरताईआ। अन्तिम सब दे भार लथ्थे, ख़ाली हथ्थ दुहाईआ। लेखा रिहा ना किसे मथ्थे, मस्तक देण दुहाईआ। उह खेल वेखीए पुरख समरथे, की करता कार कमाईआ। जिस कलयुग विच सतिजुग चलाउणा रथे, रथ रथवाही इक अख्वाईआ। जिस लेखे लाउणे खण्डे खड़ग तलवारां नाल भथ्थे, तीर कमानां जोड़ जड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो मंगण लई होवो दलेर, आप आपणा बल प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द वेख लओ शेर, भय भाउ सब नूं रिहा वखाईआ। आपणी मुहब्बत विच मेहरवान लओ घेर, घेरा प्रेम वाला पाईआ। सज्जणो मूल ना करयो देर, भज्जो चाँईं चाँईंआ। जिस दीन दुनिया करनी ज़बर तों ज़ेर, ज़ेर ज़बर दी समझ कोए ना आईआ। उह वेखणहारा कलयुग अन्ध अन्धेर, सूर्या चन्द तों बाहर खोज खुजाईआ। पता नहीं उस दा किहो जेहा हेर फेर, की हेरा फेरी करे ख़लक ख़ुदाईआ। मैनूं याद आउँदी नारद कहे गोबिन्द इक संदेशा दिता नंदेड़, नेड़े हो के गया सुणाईआ। आपणे ढईए तों बाद दीन दुनी नूं लवां घेर, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। उम्मत उम्मती झगड़ा देवे छेड़, सोहणी खेल खिलाईआ। जन भगतो जिस तुहाडे शरअ दे कटे जेड़, बन्धन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभ तों मंगीए माल धन, माया ममता जगत संग रलाईआ। आशा पूरी कराईए मन, जो मनसा विच हल्काईआ। सुणीए हुक्म कन्न, जो कायनात दृढ़ाईआ। आपणा खुशी करीए तन, वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो तुहाडीआं मंगां अजे पुराणीआं, प्रेमीउ दयां जणाईआ। तुहाडा प्रेम जगत सवाणीआं, तृष्ना ममता नाल वधाईआ। तुहाडा नाता नाल खाणीआं, चारे खाणी भज्जो वाहो दाहीआ। तुहाडा तअल्लुक नाल बाणीआं, पढ़ पढ़ ढोले गाईआ। सज्जणो जब तक आत्मा परमात्मा मिले ना मेल हाण हाणीआं, सेज सुहञ्जणी वजे ना कदे वधाईआ। उठ के वेखो हुण रोणे राजे राणीआं, महल अटल ना कोए वड्याईआ।

फिरनी दरोही अठसठ तीर्थ पाणीआं, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रही कुरलाईआ। जिस कलयुग दी धार पिच्छे गोबिन्द ने दितीआं कुरबानीआं, करबले दा लेखा दए चुकाईआ। हज़रत मुहम्मद दीआं सदी चौधवीं दीआं तको निशानीआं, निशाने दो जहान प्रगटाईआ। उह तुसीं हुण भगती नहीं करदे सगों परमात्मा दीआं खाण आउँदे महिमानीआं, इस तों वड्डी की वड्याईआ। सतिगुर जागे ते तुसीं उत्ते चादरां हुन्दीआं ताणीआं, सुते चाँईं चाँईंआ। जिस ने तुहाडीआं रूहां पछाणीआं, उह देवणहार गुसांईआ। उहदा लेखा कलमां की लिखण निमाणीआं, कागज़ शाही की चतुराईआ। उह जदों आया ते उदों भगतां उत्ते करे मेहरवानीआं, मेहर नज़र नाल तराईआ। तुहाडा झगड़ा नहीं कोई अदालतां दीवानीआं, जगत शहादत संग ना कोए रखाईआ। बिना तुहाडे मंग्यां तों तुहाडे अन्दर मारे ध्यानीआ, सुत्तयो तुहानूं सुत्तयां ल्या जगाईआ। उह तुसीं आत्मा परमात्मा दीआं शाहणीआं, शौहर दे नाल मिल के तुहाडी वजे वधाईआ। तुहानूं बख्श दिता बख्शीश विच्चों पद निरबानीआं, गृह इक्को इक वखाईआ । जिस दी सिफ्त करदे राग नाल मधाणीआं, ढोले सोहले जगत जुगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब दया कमाईआ। नारद कहे भगतो मंगण लई तैयार करो आपणी काया चोली, चारे कन्नीआं लओ उठाईआ। पहलों सारे मिल के आपणी इक करो बोली, जो अनबोलत दिती समझाईआ। किसे दी अन्दरों सुरत रहे ना भोली, भोले भालयो आपणी लओ अंगड़ाईआ। फेर ओ प्रभू दी बण जाओ गोली, जो तुहाडी काया गोलक दए भराईआ। जिस ने सच दी हट्टी खोल्ही, हटवाणा बणया धुर दा माहीआ। नारद कहे उह बड़ा पक्का उस ने छेती आपणी गंढु कदे नहीं खोल्ही, शूमां दा शूम नज़री आईआ । उह ठूंगे मार के तोलदा रिहा तोली, इस करके कोटां विच्चों कोई विरला भगत सुहेला मिलण आईआ। पर नारद कहे मैं सच दस्सां जदों किरपा करे भगतां नाल प्रेम दी खेले होली, रंग गुलाला आप चढ़ाईआ। मैं जदों जदों जद तकां आपणयां प्यारयां दी चुक्क के डोली, बण कहार धुर दा यार भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसांईआ। नारद कहे जन भगतो सब तों पहलां मंगीए दाल रोटी, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जिस खाध्याँ अन्दरों नीत रहे ना खोटी, दुरमति मैल धुआईआ। झट आपणी मंज़ल चढ़ा लै चोटी, चोटे मन दा डेरा ढाहीआ। फेर दर्शन करा दे आपणी जोती, जोती दा जाता नज़री आईआ। भगत कहिण प्रभ असीं तेरे गोती, गौतम दा लिख्या देण वखाईआ। जिस ने किहा सी नर निरँकारा जदों चाहवे मिट्टी खाक तों बणा देवे माणक मोती, अनमुलड़े हीरे आपणे विच्चों प्रगटाईआ । बेशक उस नूं याद करदे कोटन कोटी, अणगिणत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

साचा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं तुहानूं पुराणी सुणावां कथा, कहाणी जगत वाली जणाईआ। प्रभ नूं मिलण वास्ते धरती ते रगढ़दे मथ्था, पत्थरां नूं सीस निवाईआ। जल धारां करदे नाल हथ्थां, नेत्र नैणां अक्ख छुहाईआ। वाचक बण के सुणाउँदे कथा, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ । पर सच पुछो जिंनां चिर प्रभू दे प्यार विच सथ्थर ना होवे लथ्था, यारड़ा सेज ना रंग रंगाईआ। ओनां चिर उह बेपरवाह नहीं आउँदा नठा, भज्जे वाहो दाहीआ। नारद कहे भगतो शुकर करो तुहाडा लेखा मुकाया इक्ठा, दुर दुराडउँ इक्को वार तराईआ। उस दा पिछला हिसाब बड़ा मट्ठा, हौली हौली जुग जुग भगतां नाल करे सलाहीआ। पर याद रखयो भगतां नूं सदा जगत जहान ने कीता ठट्ठा, मखौल सारे रहे उडाईआ। नौ वार कबीर ने सिर विच पाया घट्टा, चम्यार नूं ठोकरां नाल उठाईआ। लै ओए रवीदास्या टका, पानहे गंढुण वाल्या तेरी की वड्याईआ। उस इक दिन हस के आपणी रम्बी नाल तिन्न लाए टप्पा, चम्म चीर चीर चीर के दिता वखाईआ। ओस चारों तरफ़ फेर वेख्या उफ़ उफ़ मेरे प्रभू ने दुनिया नूं दुनिया नाल कर देणा बटा, ज़ीरो दा ज़ीरो अंक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे भगतो मंगण लई भज्जो, भजन बन्दगी वाल्यां दयां सुणाईआ। प्रभ दा लेखा वेखो किस बिध मुकदा अज्जो, अज़ल तों सारे लए बचाईआ। नारद कहे हिरदे प्यार विच सज्जो, सज्जणो मेल मिल्या धुर दे माहीआ। बिना अक्खीआं तों अक्खीआं वाल्यो दर्शन कर कर रज्जो, नेत्र नैण नैण बिघसाईआ। आपणे कूड़ विकार दा पड़दा कज्जो, सीस चरणां उत्ते टिकाईआ। ना कोई जगत शरअ रहे ना लज्जो, मेहरवान देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । नारद कहे मैनूं ऐं दिस्या मंगण वास्ते इक्ठा होया जम्मू मालवा माझा नाल दुआबा, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। सलाह कीती अज्ज सतिगुर नूं मारो दाबा, दब दबा आपणा रहे वखाईआ। जिवें राम कृष्ण तों फेर भाग लग्गा विच काअबा, काअब्यां तों परे सतिगुर नानक दिता प्रगटाईआ। नानक तों बाद बण के गोबिन्द वाला बाज़ा, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। नारद कहे भगतो एहदा इहो रिवाजा, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। जदों दिल चाहे भगतां दा उहनां दे अन्दरों आपणा वजा देवे वाजा, वजह समझ कोए ना पाईआ। एसे करके सतिगुर नानक तन्द सितार हिलाई रबाबा, दीन दुनी तों बाहर पढ़ाईआ। उह मित्रां दा मित्र प्यारा अहिबाबा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस अन्तिम आउणा विच पंज आबा, पंजां ततां दा लेखा दए चुकाईआ। जिस दा लेखा लिख्या नाल माई हवा ते आदम बाबा, उह बाबल बेपरवाहीआ। जिस नूं हज़रतां मन्नया अमाम धुर दा नवाबा, उह नूर नुराना नूर अलाहीआ। उस विच इक नवां होणा वाधा,

वदी सुदी तों बाहर देणा वखाईआ। इक नवां बग़ीचा लगाउणा बाग़ा, बाग़बान आप हो जाईआ। फेर दीपक जोत जगा चराग़ा, बूटे बूटे करे रुशनाईआ। दुनिया तों हो के अलहिदा, वखरी वंड वंडाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा पूरा करे मुआहदा, पेशीनगोईआं संग रखाईआ। नारद कहे सब नूं किहा उस कोलों बिना भगतां तों होणा नहीं किसे नूं फ़ायदा, नुकसान दीन दुनी नज़री आईआ। नारद कहे उह सब दा लैण वाला जाइज़ा, जाइज़ आपणा हुक्म सुणाईआ। पर मैनूं इक गल्ल याद आई बावन आख्या जिस वेले कलयुग अन्त होणा दीन दुनिया विच कूड़ क्रिया दा फैलेगा हैज़ा, घर घर घर कुरलाईआ। फेर मेरा मेहरवान बिना जनणी तों होवेगा पैदा, जिस दी पैदाइश समझ कोए ना पाईआ। उस दा नवां कानून नवां होवेगा कायदा, नवीं करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संगी इक अख्वाईआ। नारद कहे भगतो मंगण नूं दस्सो की जीअ करदा, कसम नाल इक्को वार सुणाईआ। मैं ते उस प्रभू दा बरदा, जो बन्दीख़ान्यों बाहर कढ्ढाईआ। जो मालक साचे घर दा, घर घर अन्दर बैठा डेरा लाईआ। जिस दा लहिणा देणा चोटी जड़ दा, अस्थूल दा मूल मुकाईआ। हिसाब जाणे हँकारी गढ़ दा, गृह मन्दिरां फोल फुलाईआ। भय विच कदे नहीं डरदा, भउ सब दे सिर रखाईआ। मैं उस दा लड़ फड़दा, जो कन्नी जगत जुग ना कदे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। नारद कहे भगतो प्रभ नूं आखीए साडे ना कढा तरले, त्रैलोकी नाथां दयां मालका त्रैगुण दा लेखा दे मुकाईआ। असीं तेरे तूं सानूं हुण वर लै, वरलाप करके तैनूं देईए सुणाईआ। सख़ीआँ दे मालक साडा अन्तर हर लै, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। दीन दुनी दा साडा लाह डर लै, भय सिर ना कोए जणाईआ। जो करनी साडे नाल कर लै, भावें दुःख भुख नाल सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे भगतो मेरे अन्दर आ गई अवाज़, सब नूं दयां सुणाईआ। परम पुरख खोल्ह के राज़, पर्दा दिता उठाईआ। तुहाडा लेखा रिहा ना नाल रोज़ा निमाज़, गायत्री मन्त्र ना कोए पढ़ाईआ । नवीं साजणा दिती साज, साजण हो के वेख वखाईआ। किरपा करे ग़रीब निवाज़, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडीआं मंगां पूरीआं करे जो मंगीआं आज, आजज़ हो के तुहाडी सेव कमाईआ। तुहाडा सब तों उतम बणाए समाज, समग्री नाम वाली वरताईआ। तुहानूं उड उड वेखे सतिगुर शब्द गोबिन्द दा बाज़, बाज़ां वाला खेल खिलाईआ। जिस दा इशारा दिता वेद व्यासे ब्राह्मण गौड़ा सम्बल नगरी सुहाए देस माझ, मजलस भगतां नाल रखाईआ। ब्रह्मे नूं नाभी विच्चों आई आवाज़, कवल कवल कवल उलटाईआ। शंकर दी खुल्ह गई जाग, नेत्र नैण रिहा उठाईआ।

विष्नूं रिहा भाज, भज्जे वाहो दाहीआ। जदों तक्कीए अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कौण भगतां दी रखे लाज, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीन दुनी विच संवारे काज, करनी दा करता होए सहाईआ। जो आत्म सेजा जाए बिराज, सुखआसण सोभा पाईआ। नारद कहे जन भगतो तुसीं एथे ओथे दो जहानां विच फिरना नाल मजाज़, आकड़ नाल चलणा चाँईं चाँईंआ। छाती ते हथ्थ मार के कहिणा साडे साहिब दे सीस ते ताज, जिस ताजां वाले देणे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभ तों लईए छुट्टीआं, छुट्टी प्रेम विच समाईआ। साडीआं पूरीआं करे तरुटीआं, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। साडे अन्दर अगले छब्बी पोह नूं शाख़ां नवीआं होण फुटीआं, नवें तों नवां रूप बदलाईआ। साडीआं ख़ाहिशां जगत जहान नालों होण टुट्टीआं, प्रभ दी सरन मिले सरनाईआ। नाले खुशीआं मनाईआं जदों सतिगुर मिले सानूं साडी काया विच कुटीआ, कुटलता अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। फेर असीं कहावांगीआं असीं नहीं जाणा लुट्टीआं, लोटे फड़न वाल्यो तुहाडे घर घर पए दुहाईआ। नाले हस के कहो वेखो साडा साहिब साडीआं करन आया बुतीआं, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। जिस दीआं घर घर फिरदे दीआं घस गईआं जुत्तीआं, जोती दा जाता आपणा रंग रंगाईआ। भगतां दीआं रूहां रहिण ना सुतीआं, सुत्तयां लए उठाईआ। नारद कहे जन भगतो तुहानूं मिल गईआं मंज़लां उच्चीआं, थिर घर बहि के सचखण्ड निवासी दा दर्शन पाईआ। तुहाडीआं अन्दरों धारां हो गईआं सुच्चीआं, संजम इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे जन भगतो सारे हो गए मंगते, मंगण दी खुशी बणाईआ। इक बचन सुण लओ संगते, सहिज नाल नारद समझाईआ। असीं रूप हँ ब्रह्म दे, पारब्रह्म वड्याईआ। असीं प्यारे इक्को धर्म दे, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। असीं सदा सदा सदा प्रभू दे घर जन्मदे, फेर आत्मा प्रभ दे विच मिलाईआ। चुरासी विच कदे नहीं भरमदे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी ना संग रखाईआ। असीं रूप अगम्मे ब्रह्म दे, पारब्रह्म रंग रंगाईआ। साडे लेखे मुक गए पिछले कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। वणजारे रहे नहीं ज़ात पात वरन दे, बरनां दा पन्ध दिता मुकाईआ। असीं सहारे तक लए इक्को पूरन दी सरन दे, सरनगति इक्को इक जणाईआ। सानूं मार्ग मिल गए सचखण्ड मंज़ल चढ़न दे, दरगाह साची जाईए चाँईं चाँईंआ। साडे कोल हुक्मनामे थिर घर वड़न दे, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा शब्दी धार प्यार, प्रेम विच सरनाईआ। भगत वछल बण गिरधार, देवां माण वड्याईआ। जो जन आए भगत दुआर, आपणा पन्ध मुकाईआ। उस बंस सरबंस

सारे दिते तार, अधविचकार ना कोए अटकाईआ। खुशीआं नाल जाणगे सचखण्ड सच्चे दरबार, जिथ्थे मिले धुर दा माहीआ। उस नूं जन भगतो सारे इक्को वार कर दयो निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। फेर बोलणगे इक्की जैकार, खुशीआं ढोले गाईआ। सताई पोह कहे मेरा पूरा होया विहार, विवहारी दिती वड्याईआ। भगतो तुहाथों जाणा बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। वेख्यो बणिउ ना कोए ग़द्दार, पल्लू जगत ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सची सरकार, सरकारे आहला खुदा तुआला इक्को इक नूर अलाहीआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर सवेरे शादीआं समें ✪

धरनी कहे मेरे पुरख अकाले रब्बा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरा नूर जहूर इक्को लभ्भा, लोभ लालच तों बाहर तेरी सरनाईआ। मेरी आशा पूरी कर दे हब्बा, पूरन सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। सच धर्म दी सच प्रगटा दे सभा, सोभावन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मानव ज़ाती बदल दे शरअ, असूल आपणा इक समझाईआ । मेरे उत्ते खुशीआं वाला शहिनशाही दसवां वरा, वारस हो के वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक खुल्हाए दरा, दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा इक समझाईआ। मेरे उत्ते धर्म कर दे हरा, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। सब नूं इक वखा दे घरा, मानव ज़ाती इक्को रंग रंगाईआ। मैं तेरी सरन सरनाई परा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां शब्द सुणा दे खरा, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां किसे दा रहे मूल ना डरा, भय जगत ना कोए जणाईआ। जो खेल अनोखा दीन दुनी विच करा, करामात तों बाहर तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै जगत जहान ज़रा, ज़र्रा ज़र्रा वेख वखाईआ। जुग बदलना जिस तरह, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते बदल समाज, समग्री सच सच वरताईआ। मेरी आशा भरी आवाज़, प्रेम विच सुणाईआ। तेरा धर्म दा तकां राज, रईयत दीन दुनी तकां चाँईं चाँईंआ। कुछ लेखा लिख दे आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तेरे धर्म दा चले जहाज़, बेड़ा इक्को इक प्रगटाईआ। जन भगतां रखी लाज, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दीन दुनी दी अन्दरों बदल

मिज़ाज, निरँकार आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेखा आप समझाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा धौला हो गया झाटा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। मेरी मुकी अजे ना वाटा, दीनां मज़्बां वेखां थांउँ थाँईंआ। मेरा काया चीथड़ पाटा, लीरो लीर वेखां ख़लक खुदाईआ। किसे हथ्थ ना आवे गोबिन्द अमृत बाटा, अंमिओं रस ना कोए चुआईआ। सुहञ्जणी होए कोए ना खाटा, खटीआ रंग ना कोए रंगाईआ। ख़ाली दिसे काया माटा, वस्त नाम ना कोए जणाईआ। लेखा दिसे ना देवी वाली लाटा, नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां जो शब्द गाया बण के भाटा, ढोले सोहले रागां नादां विच सुणाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म मेरा पिछला लेखा देणा काटा, कटाकश आपणा नाम देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा तक लोकमाती, मितर प्यारे ध्यान लगाईआ। झगड़ा वेख लै ज़ात पाती, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। सच संदेशा दे दे धुर दी पाती, पत्रका नाम वाली समझाईआ। जेहड़ा समाज वन्डया बहु बिध भांती, हिस्से मानव मानव पाईआ। अन्तिम उन्नां पुछ बाती, वारस हो के वेख वखाईआ। आशा किसे दी रहे
२३६ ना नार कमज़ाती, कुलखणी रूप ना कोई दरसाईआ। सब दा समां कर प्रभाती, सँध्या पन्ध मुकाईआ। मेरा सीना ठांडा २३६
२४ करदे छाती, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे चरण कवल सृष्टी दृष्टी होवे नहाती, जल धार ना कोए २४
चतुराईआ । बिरहों निशाने तीर दी मार काती, कुदरत दे कादर दया कमाईआ। सब नूं बणा लै इक जमाती, इक्को अक्खर पढ़ाईआ। तेरा नाउं शब्द सफ़ाती, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। तेरा आउणा होया इत्फिाकी, भेव कोए ना पाईआ। मेरी अन्तिम पुछ वाती, वतनां दे मालक दया कमाईआ। मैं मिन्नतां करां इकांती, इक इकल्ली वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे प्रभ मैं खा के कहां कसम, सुगंदीआं नाल जणाईआ। मेरी लेखे ला लै भस्म, तन वजूद तेरी भेंट चढ़ाईआ। मेरा लहिणा तक लै नूरी चशम, चश्मे दीद वेख वखाईआ। सब नूं इक जणा दे इस्म, इस्म आज़म इक दरसाईआ। तूं ही राम तूं ही कृष्ण, पैग़म्बर निरगुण नूर अलाहीआ। गुरु गुर धार तेरी दिसण, दूसर नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणा लै सिक्खण, सिख्या इक समझाईआ। पंज प्यारे पंज लिखारे धुर दा लेखा लिखण, पंच दरबारी नाल वड्याईआ। लहिणा रहे ना पत्थर इट्टण, पाहनां कर सफ़ाईआ। सब दे मनूए तेरे चरण टिकण, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। अमृत मेघ बरस दे छिट्टण, बूंदी बूंद आप टपकाईआ। कूड़ी क्रिया मूल ना विकण, विकारे हट्ट कोए ना जाईआ। तूं साहिब स्वामी नीकन नीकन, घर

घर वेखणा चाँई चाँईआ। मेरी छाती फाड़ के वेख लै हिकण, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तूं स्वामी तूं ही पितण, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। मेरे नाल कर हित्तन, प्रेमीओ प्रेम लैणा बणाईआ। जे जगत जहान दी धार आएयों जित्तण, हार दा लेखा देणा मुकाईआ। जीव जहान तेरी चरणी लिटण, लिटां वाले सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी इक्को मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा घाड़न घड़ दे, घड़न भन्नणहार तेरी सरनाईआ। हुक्म सुणा दे लहिंदे चढ़दे, दक्खण पहाड़ वजे वधाईआ। मैं चाहुंदी तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे होण पढ़दे, सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। तेरे मन्दिर होण वड़दे, दूजा घर ना कोए रखाईआ। झगड़े मुका दे चोटी जड़ दे, जड़ चेतन दे समझाईआ। तेरे अगे कोई ना दिसण अड़दे, सीस जगदीश देणा निवाईआ। तेरा पल्लू होण फड़दे, लाड़ी रूप दिसे ख़लक खुदाईआ। उह आशा पूरी कर दे जो बुध्ध ने रखी हेठां बड़ दे, बुद्धी तों बाहर ध्यान लगाईआ । नाते तक लै सीस धड़ दे, धड़े बाज़ा आपणा रूप लै बदलाईआ। दुनीदार वेख लै हड़दे, रुढ़दे जांदे थांओं थाईंआ। हुण मेहरवान हो के कढ दे, फड़ बाहों गले लगाईआ। दीनां मज़बां बणाउण वाल्या आपणी आदत छड दे, अगे वंड ना कोए वंडाईआ। सब दे अन्दरों शरअ दी डोरी वढ दे, वढीखोर रहिण कोए ना पाईआ । क्यों झगड़े पाए मास नाड़ी हड्ड दे, ततां रिहा लड़ाईआ। हुण मेरे उत्ते धर्म निशाना गड्ड दे, सो पुरख निरञ्जण तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं दे दे आपणे हुक्म दी इतलाह, संदेशा सच जणाईआ। बण जा इक मलाह, बेड़ा लै उठाईआ। मैं करां वाह वाह, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा तक लै थल अस्गाह, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। दीन दुनी नवां दस्स दे राह, मेरे रैहबर बेपरवाहीआ। झगड़ा मुका दे सूर गाँ, झटका हलाली वंड ना कोए वंडाईआ। हँस बुद्धी बणा लै काँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। मैनूं धर्म दी फेर बणा लै माँ, निमाणी हो के वास्ता पाईआ। चरण कवल बणा लै थाँ, थान थनंतर इक सुहाईआ। मैं तेरा जपां नाँ, नाउँ निरँकार तेरी वड्याईआ। सच सुहञ्जणा करीं गराँ, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। कोझी कमली पकड़ीं बांह, फड़ बाहों आप उठाईआ। सिर रखीं सदा छाँ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सब दी इक्को नाम नाल पूरी कर लै लां, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। मेरे मालका खुशीआं विच कर दे हां, मेहर नज़र उठाईआ। मैं भज्जां नाल चाअ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। खुशीआं दे ढोले लवां गा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरीआं बहुतीआं नहीं बेनन्तीआं, बिनै

इक्को इक रखाईआ। अक्खरां वालीआं नहीं पंगतीआं, अक्खरां वाली ना कोए लिखाईआ। तूं मालक धुर दा कन्तीआ, कन्तूहल इक गुसांईआ। मैनूं चाढ़ दे रंग बसन्तीआ, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। मैं तेरे दर दी मंगतीआ, ख़ाली झोली जगत भराईआ । दीन दुनी दा मेला कर लै आपणी संगतीआ, सतिगुर आपणा रंग रंगाईआ। अन्दरों गढ़ तोड़ दे हउमे हंगतीआ, हँ ब्रह्म जणाईआ। तूं सब तों वड्डा पंडतीआ, ब्राह्मण ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। लेखा मुका दे नव खण्डतीआ, नव नव दा लेख चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म दी कर आबादी, आबादकारी इक जणाईआ। मैं निरगुण धार तैनूं रही अराधी, राधका तों परे आपणा रूप बणाईआ। जुग चौकड़ी ला के बैठी समाधी, जलां ते आपणा आप टिकाईआ। तैनूं समझ के इक अमदादी, दर तेरे वास्ता पाईआ। जगत शरअ दी मेट दे हादी, हदूद इक्को इक समझाईआ। साचा शब्द सुणा दे नादी, नाद धुन कर शनवाईआ। तूं मोहण माधव माधी, मेहरवान इक अख्वाईआ। लेखा पूरा कर दे नानक धार बग़दादी, बग़लगीर सारे लै बणाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब दी सांझी करे शादी, शादिआने मेरे उत्ते वजाईआ। मैनूं इयों दिसदा दीन

२४१ दुनिया दी हो जाणी बर्बादी, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ। जिन्हां ने कूड़ क्रिया रसना धार खाधी, खा खा आपणा झट लँघाईआ। २४१

२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा २४

इक्को होवे राह, रैहबर इक अख्वाईआ। धर्म दा बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणा गवाह, शहादत नाम कलम्यां वाली भुगताईआ। सब नूं संदेशा दे दे वक्त सुहञ्जणा गया आ, सोहणी वजे वधाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले दया दे कमा, कामल मुर्शद तेरी ओट तकाईआ। सब थाँईं हो सहा, सहायता इक्को इक जणाईआ। साची बख्श चरण सरना, चरणोदक जाम देणा प्याईआ। वरनां बरनां दीनां मज़्बां फड़ बांह, फड़ बाहों आप उठाईआ। तूं ही पिता तूं ही माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक जणा दे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। आत्म धार परमात्म बख्श दे साचा थाँ, थनंतर इक सुहाईआ। बिना दीन मज़्ब ज़ात पात तों बिना जन भगतां भगती धार होवे ब्याह, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं ख़ुशीआं होवण अनोखीआं, मैं गावां ढोले गीत। तेरीआं मंज़लां होवण सौखीआं, झगड़ा मिटे मन्दिर मसीत। जन भगतां पढ़नीआं पैण ना पोथीआं, लहिणा देणा त्रैगुण अतीत। सब दीआं अन्दरों वासना जाण धोतीआं, करना पतित पुनीत। शब्दी धार परोणा मोतीआं, काया करनी ठांडी सीत। गुरमुखां रूहां रहिण ना सोतीआं, चरण कवल

बख़्शणी प्रीत। लहिणा मुकाउणा जञ्जू धोतीआं, किरपा करनी धुर दे मीत। किसे आशा रहे ना लोटीआं, झगड़ा रहे ना ऊँच नीच। अन्दरों दलीलां कढ दे खोटीआं, हिरदे वसणा बीच। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक सब दी पवित्र करनी नीत। धरनी कहे प्रभू मैं खुशीआं अर्ज़ गुज़ारदी, गुज़रया हाल जणाईआ। रसम तकी पैग़म्बर गुर अवतार दी, जुग जुग ध्यान लगाईआ। आख़री खेल वेखणी धुर दे यार दी, यराने तेरे नाल रखाईआ। आवाज़ सुणी दीन दुनी सितार दी, सति सतिवादी वेख वखाईआ। मैं सिख्या सुणी ग्रन्थ शास्त्र धर्म दरबार दी, अक्खर अक्खरां संग बणाईआ। जां निगाह मारी मंज़ल मिली परवरदिगार दी, जो आत्म परमात्म रूप समाईआ। तन माटी ढेरी वेखी छार दी, शरअ संग किसे ना जाईआ। खेल तकी मढ़ी गोर बाहर दी, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। दीन दुनी वेखी तन वजूद श्रृंगारदी, लाड़ी लाड़ा रूप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा होवे पूरी, पूरन ब्रह्म देणा समझाईआ। तूं दाता अगम्म नूरी, नूर नुराने तेरी सरनाईआ। जन भगतां कारज होण तेरे हज़ूरी, हज़रतां तों बाहर तेरी वड्याईआ। इक मेरी मंग ज़रूरी, पूरी करनी धुर दे माहीआ। जो मूसा कहिण गया उत्ते कोहतूरी, कुदरत दे कादर तेरी ओट रखाईआ। जिस कारन गुर अवतारां तेरी कीती मज़दूरी, नाम वाली सेव कमाईआ। सो पन्ध रिहा ना दूरी, नेरन नेर गया आईआ। जन भगतां सब नूं बख़्श दे चरण धूड़ी, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। मैं तेरा खुशीआं विच करां मशकूरी, मुसकरा के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेरे साहिब सर्ब कला भरपूर, भरपूर हो के देणा वखाईआ।

✪ ३० पोह शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर लोहड़ी वाली रात दे समें ✪

लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दा लओ रुपईआ, रूपा सोना चांदी जगत कम्म किछ ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बणाओ धुर दा सईया, मालक मित्र प्यारा एकँकारा संग निभाईआ। साजण मीत इक दूजे दे बणो सईया, सगले संगी बहु रंगी आपणी खुशी बणाईआ। धुर दे राम दी चढ़ो अगम्मी नईया, नौका सतिगुर शब्द आप वखाईआ। राय धर्म लेखा कढ ना सके वहीआ, वायदे सब दे पूर कराईआ। जिस कारन बुल्हे गाया थईआ, थईआ थईआ कहि कहि खुशी

बणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला तुहाडा इक रम्ईआ, राम रहीम नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। लोहड़ी कहे भगतो धर्म धार दे चब्बो दाणे मक्की, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। प्रभू दा प्यार वेखो हकी, हकीकत नाल सुणाईआ। जिस दी धार जीव जहान किसे ना तकी, जगत नेत्र दर्शन कोए ना पाईआ। उस दे नाल प्रीती जोड़ो पक्की, पारब्रह्म प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। निगाह मार के वेखो अक्खी, बिन नैण नैण उठाईआ। जिस दा लेखा दीगरे बाद यकी, यकी इक्को नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दा लओ रस, मिट्ठा इक्को नाम दृढ़ाईआ। हिरदे हरिजू जाए वस, अनडिठड़ा खेल वखाईआ। पन्ध मारना पए ना नस्स नस्स, भज्जण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा लेखा बाहर रवि शशि, सूर्या चन्द ना कोए चतुराईआ । उह मेटणहार अन्धेरी मस, चन्द चांदना करे रुशनाईआ। सो पुरख अकाला तुहाडा गावे जस, सिफ्तां नाल सलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो सच प्यार दी पीवो मदि, मधुर धुन नाम शनवाईआ। सतिगुरु दुआर सुहञ्जणी हद्द, हदूदां डेरा ढाहीआ। तुसीं उस प्रभ दी यद, जो यदी आपणा खेल वरताईआ। सच प्रीत विच जाओ लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। तुहाडे अन्दरों बुझावे अग्ग, अमृत मेघ बरसाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो आपणी आशा लैणी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। परम पुरख चाढ़्ह दे रंग, दो जहाना उतर ना जाईआ। निरगुण धार होणा संग, सगले संगी बहुरंगी भेव देणा चुकाईआ। परम पुरख परमात्म तेरा सच दुआरा जाईए लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, देणी सच सच सरनाईआ। आत्म सेज सुहाउणी पलँघ, दर ठांडे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो अज खुशीआं दिवस धरनी वेखो दस्सदी, दहि दिशा रही जणाईआ। मस्ती दे विच हसदी, खुशीआं ढोले गाईआ। प्यासी प्रेम रस दी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। आपणी बिरहों कहाणी दस्सदी, कूक कूक जणाईआ। मेरे उत्ते धार रही नहीं सच दी, कलयुग कूड़ कुटम्ब वधाईआ। मेरी छाती वेखो मचदी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप समझाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो सतिगुर शब्द दा लओ प्यार, जोती जाता सिर हथ्थ टिकाईआ। मेरा खुशीआं दा विवहार, दिवस रैण ढोले गाईआ। धन्न भाग

जे तुहानूं होया दीदार, निरगुण नूर जोत अलाहीआ। तुहाडी पैज जाए संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो प्रभ दीआं लोड़ां, लुड़ींदा साजण दए वड्याईआ। आदि जुगादि भगत भगवान दा जोड़ा, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। जन भगतां प्रभ सदा होवे बौहड़ा, बाहों फड़ फड़ बाहर कढ्ढाईआ। तुहाडा अन्तर रहे ना कौड़ा, सतिगुर मिठ्ठा रस दए प्याईआ। जिस दा शब्द अगम्मी घोड़ा, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उस दी सदा सदा सद लोड़ा, लुड़ींदा सज्जण धुरदरगाहीआ। जिस सस्से उपर ला के होड़ा, हँ ब्रह्म दिती वड्याईआ। जिस दा वक्त अगे थोड़ा, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच प्रेम दा बख्शणहारा घोड़ा, बिन रासां चार कुण्ट दौड़ाईआ।

✪ पहली माघ शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

पहली माघ कहे जन भगतो प्रभ चरण धूड़ करो इश्नाना, जगत तीर्थ दी लोड़ रही ना राईआ। अन्तर आत्म धरो ध्याना, जगत अक्ख ना कोए चतुराईआ। मिले मेल श्री भगवाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी कान्हा, शाहो भूप नूर अलाहीआ। जो देवे नाम निधाना, वस्त अमुल अतुल वरताईआ। चरण प्रीती बख्शे विच जहाना, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो जुग जुग खेल खिलाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेला मेले चाँईं चाँईंआ। आदि जुगादी शाहो भूप सुल्ताना, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। माघ कहे जन भगतो प्रभ चरण धूड़ी करो मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। घर स्वामी वेखो सज्जण, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जिस दे प्यार विच शब्द अनादी नाद वजण, अनरागी राग सुणाईआ। कूड़ विकारे भाण्डे भज्जण, भरम भरांत रहे ना राईआ। उह सब दा पड़दे कज्जण, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जिस दे आत्म दीपक जोती जगण, लख चुरासी डगमगाईआ। उह नाउँ निरँकारा देवणहारा सगन, वस्त सच वरताईआ। धुर प्रेम विच करे मग्न, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। लेखे लावे जन भगतां बदन, तन वजूद दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ बुझा के अग्न, अमृत मेघ इक बरसाईआ। कूड़ी क्रिया पार करा के हद्दन, हदूद आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पहली माघ कहे जन भगतो प्रभ नूं करो निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। जिस दा लहिणा नाल पैग़म्बर गुर अवतार, भगतां भगती नाल वड्याईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा सोहणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण नैण उठाईआ। उस दा लेखा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । पहली माघ कहे सब दा मित्र प्यारा इक्को तनी, जो तन वजूदां करे सफ़ाईआ। जिस संदेशा दिता सिँघ मनी, मन मनसा बाहर दृढ़ाईआ। उह पुरख अकाला वड धन धनी, धनाढ इक अख्वाईआ। जो वसे बिना छप्पर छन्नी, महल अटल ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। मनी सिँघ कहे मेरा पिछला शब्द ब्याना, शब्दी धार जणाईआ। ना जिस्म रिहा ना जगत जिस्माना, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। ना रसना रस रिहा तराना, जिह्वा गुण ना कोए शनवाईआ। शब्दी हुक्म श्री भगवाना, हरि भगवन रिहा दृढ़ाईआ। जो निरगुण धार पहर के बाणा, खेल खेले चाँईं चाँईंआ। सन्त मनी सिँघ कहे मैं प्रेम दा बचन सुणाउणा, खुशीआं राग दृढ़ाईआ। नौ माघ दा वक्त होए सुहाउणा, सोहणी वजे वधाईआ। कृष्ण दा लेखा पूर कराउणा, जो काहन गिआ दृढ़ाईआ। यमुना कहे मेरा लहिणा पुराणा, पूरब आस रखाईआ। मैं राह तकां कवण वेले आए जवाना, जोबनवन्ता धुरदरगाहीआ। जिस दी ख़ातर धरनी उत्ते लाया निशाना, निशान वेखण कोए ना पाईआ। जो मालक ख़ालक दो जहाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। मनी सिँघ कहे मैं उस नूं सीस झुकाउणा, निव निव लागा पाईआ। मैं तकां ज़िमीं असमाना, ब्रह्मण्डां खण्डां अक्ख उठाईआ। सारे कहिण असीं जुग बदलदा वेखणा ज़माना, ज़िमीं असमान नैण उठाईआ। अगों नारद कहे पंज लिखारीआं बध्धा होए गाना, मौली तन्द मुहम्मद वाली सत रंग वखाईआ। कोल लिख के रखया होवे हरिजन होए ना कदे बेगाना, सतिगुर इक्को रंग रंगाईआ। कोल फोटू होए नानक ते मर्दाना, सितार हथ्थ विच सुहाईआ। गोपाल रूप होवे कृष्णा कान्हा, सोहणा रंग रंगाईआ। राम रामा नाल करे ध्याना, आपणा नैण उठाईआ। मसीह दा साचा संग बणाना, विछड़ कोए ना जाईआ। चरणी दा लेखा साथ रलाना, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। मनी सिँघ कहे लिखारीओ सुणनी मेरी गल्ल, जगत जुगत ना कोए जणाईआ। मेरी इच्छया दा प्रभ ने तुहानूं लाया फल, सोहणा रंग रंगाईआ। विछड़े घड़ी ना पल, लेखा

बलि दा पूर कराईआ। सब ने सवा सवा सेर कोल रखणा जल, जिस वेले निशान लगाईआ। नाल रेता रखणी मारूथल, थल अस्गाहां नाल मिलाईआ। नीला लिख्या होए कलयुग कल, सोहणा रंग रंगाईआ। हिरन दी लथ्थी होए खल्ल, सतिगुर चरणां हेठ सुहाईआ। गुरमुख सिँघ वजाउंदा होवे टल्ल, सोहणा ताल बणाईआ। चेला सिँघ लूण दा लै के डल, दोंह हथ्थां उत्ते टिकाईआ। प्रीतम सिँघ खुशी दे लै के फल, चरण कवल कवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक रखाईआ। मनी सिँघ कहे लिखारीओ मेरा इक परवाना, सच नाल जणाईआ। पंज पंज कलमां नाल रखणीआं काना, आपणी घड़त घड़ाईआ। एह मेरा पिछला निशाना, जो अगे दए गवाहीआ। पहला लेख लिखणा नाल शहाना, सोहणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सन्त मनी सिँघ कहे मैं आखां नाल प्यार, प्रेमीउं प्रेम नाल जणाईआ। लिखारीआं कोल इक रम्बी होवे आर, रवीदास दी धार नाल मिलाईआ। पाल सिंघ कोल साढे तिन्न होणगे हार, बाल्मीक दा लेखा नाल मिलाईआ। दर्शन सिँघ पुत्ती कर तलवार, ज़िमीं असमान भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मनी सिँघ कहे मैं खुशीआं नाल आखां हस, सोहणा ढोला गाईआ। जन भगतो किसे दा चले नहीं कोई वस, वास्ता जगत ना कोए रखाईआ। दिल्ली दरबार दी नींह रखणी साढे दस, वक्त अवर ना कोए जणाईआ। सब ने अन्तर लैणा रस, प्रेम प्यार विच समाईआ। बिन रसना लैणा चख*, सिफ्ती ढोले इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सन्त मनी सिँघ कहे चार लिखारी बहणगे चारे कुण्ट, मुख चार कुण्ट भवाईआ । किसे दे पैर जोड़ा जगत जुत्ती ना होवे बूट, ख़ाली पैर सोभा पाईआ। अन्तर प्यार होवे अतुट, तुट कदे ना जाईआ। सब ने लिखण तों पहलां अमृत पीणा घुट, रस बुल्ल्हां नाल चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सन्त मनी सिँघ कहे जन भगतो लेख लिखणा अगे रख के सज्जा चरण, लत्त सिध्धी देणी कराईआ। एह आशा रखी जिस वेले मैं अन्तिम लग्गा मरन, स्वास तन वजूदों बाहर कढ्ढाईआ। प्रभू दा लड़ लग्गा फड़न, फड़ पल्लू बाहर कढ्ढाईआ। दरगाह साची मंज़ल लग्गा चढ़न, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। जिस वेले सचखण्ड लग्गा वड़न, थिर घर आपणी ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। सन्त मनी सिँघ कहे जन भगतो तुहाडीआं तिन्न होणगीआं अक्खां, निज नेत्र नाल वड्याईआ। सतिगुर सज्जण मिले सखा, सगला संग बणाईआ। जिस

नूं लभदे करोड़ी लखां, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। उह आउँदा किसे नहीं हथ्था, नेत्र रोवण मारन धाहीआ। जिस तुहाडा लेखे लाउणा मस्तक मथ्था, धूड़ी खाक रमाईआ। जिस दे गोबिन्द सथर लथा, उह यारड़ा नूर अलाहीआ। उस दी शब्द कहाणी अगम्मी कथा, कथनी कथ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आप बणाईआ। मनी सिँघ कहे मैं लिखारीआं दस्सां बात, खुशीआं नाल जणाईआ। प्रभू दा ना कोई दिवस ना कोई रात, अठ्ठे पहर इक्को रंग वखाईआ। धन्न भाग जे तुहानूं मिली दात, वस्त अमुल दिती वरताईआ। अमृत बख्शे बूंद स्वांत, रस निझर इक झिराईआ। तुसां बैठणां हो इकांत, बिन जगत नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। मनी सिँघ कहे जन भगतो तुहाडे कोल शाही ज़रूर होवे लाल, नीली धार नाल वड्याईआ। कुछ संदेशा देवे सिँघ पाल, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। इक चेत सिँघ दा सवाल, जो सहिज नाल समझाईआ। तेजा सिँघ ज़रूर कढ्ढेगा गाल, पूरब आशा नाल मिलाईआ। ठाकर सिँघ करे ख्याल, सिँघ इन्द्र नैण तकाईआ। एह खेल होवे कमाल, हरि करता आप कराईआ। सेवा सिँघ दे कोल होवेगी
२४७ ढाल, जगत रंग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा २४७
२४ हुक्म इक वरताईआ। सन्त मनी सिँघ कहे मैं पुज्जां ज़रूर, जमन किनारा वेख वखाईआ। जिथ्थे मेरा साहिब आवे हज़ूर, २४
हरि करता धुरदरगाहीआ। जो जोती बख्शे नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा सब तों वखरा दस्तूर, दो जहाना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सन्त मनी सिँघ कहे हरि भगत दुआरा बणे आपणे धाम, धरनी धरत मिले वड्याईआ। जो इशारा दिता सीआ नूं राम, बिन अक्खरां अक्खर लिखाईआ। जिसदा लेखा नाल घनईए काहन, काहन कान्हा वड वड्याईआ। सो लहिणा देणा पूरा करे आण, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। पहली माघ कहे मैं रखदा रिहा उडीकां, जुग जुग ध्यान लगाईआ। मैनूं अवतार पैग़म्बरां दस्सीआं तारीखां, तवारीख़ां गए जणाईआ। साडे साहिब ने पूरब लेखे ते मारनीआं लीकां, लाईन ऐन इक समझाईआ। शहादत करे तस्दीकां, शहादत कलम्यां वाली भुगताईआ। दीन दुनी दीआं बदल दए रीतां, मार्ग इक दरसाईआ। झगड़ा मेटे मन्दिर मसीतां, काअब्यां दए वड्याईआ। खेले खेल त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं जुग जुग लेखे रिहा तकदा, बिन अक्खरां खोज खुजाईआ। एह

लहिणा देणा हकीकी हक दा, सच सच समझाईआ। की हुक्म वरतणा अलखणा अलख दा, अगोचर की आपणा भेव चुकाईआ। किस बिध भगत दुआरे नींह होवे रखदा, इटां पाहनां नाल वड्याईआ। उस वेले लिखारीआं कोल होवे पुतला इक कक्ख दा, कक्खां कसीरे रवीदास नाल वड्याईआ। जिस दा लहिणा नहीं किसे पक्ख दा, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। उह प्यासा दीन दुनी दी रत दा, जो रत्न अमोलक हीरे गुरमुख लए प्रगटाईआ। अगला हुक्म सतिगुर साहिब स्वामी सच दा, सच नाल वड्याईआ। फौजा सिँघ कोल ग्लास होवे इक कच दा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। मनी सिँघ कहे मेरे अन्दर वड्डीआं आसा, सच सच नाल जणाईआ। जन भगतो सब नूं मिले भरवासा, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। शंकर वेखे उत्तों कैलाशा, ब्रह्मा ब्रह्मलोक नैण उठाईआ। विष्नूं विश्व दा खोल्हे खुलासा, भेव अभेद समझाईआ। की लहिणा शाहो शाबासा, शहिनशाह की चतुराईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुर दासी दासा, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

२४८ सन्त मनी सिँघ कहे मैं खुशीआं नाल जावां लिट, सच सिँघासण इक सुहाईआ। मेरे कोल बिन अक्खरां वाली चिट, जिस २४८

२४ दा अक्खर नज़र कोए ना आईआ। वेखो धरती रही पिट, रो रो दए दुहाईआ। झगड़ा प्या पत्थर इट्ट, पाहन रहे कुरलाईआ। २४

किसे दा मनुआ जाए ना टिक, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। मनी सिँघ कहे मेरा लेखा मैं धुर दी बणां बांदी, बन्दना विच सीस निवाईआ। मेरी आशा होवे गांदी, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। जगत तृष्ना वेखां थक्की मांदी, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। जगत वासना इक दूजे नूं होवे खांदी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। धर्म दा बणे कोए ना पाँधी, मंज़ल चढ़न कोए ना आईआ। सीस दिसे ना कोए परांदी, जगत दुहागण रोवे मारे धाहीआ। सच सरोवर कोई आत्मा दिसे ना नहांदी, सतिगुर धूड़ चरण मजन ना कोए कराईआ। सन्त मनी सिँघ कहे हरि भगत दुआर सुगंद सब नूं सूर गाँ दी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को रंग रंगाईआ। एह आशा बिशन कौर बुढेपे वाली माँ दी, ममता जगत वाली तजाईआ। धरनी सुहञ्जणी हो के कहे मैनूं खुशी मिलणी साचे थाँ दी, सोहणी रंगत मेरे उत्ते नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते विवहार होणा नवां, प्रभ देवे माण वड्याईआ। मैं खुशीआं दे विच भवां, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे उत्ते धर्म दा जुग होणा रवां, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मैं नौ खण्ड

पृथ्मी भवां, भज्जां वाहो दाहीआ। परम पुरख दी सरनी परां, निव निव लागां पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़ां, गा गा खुशी बणाईआ। मैनूं लालच नहीं कोई तमअ, लोभ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । मनी सिँघ कहे जन भगतो सुहञ्जणी होणी रुत, नव माघ वड्याईआ। हरिजन प्रभ दे सोहणे सुहञ्जणे होणे सुत, जगत मिले वड्याईआ। नींह थल्ले सब तों पहलां सवा तोला चांदी दा रख्या जाएगा बुत, अमरजीत सिँघ दए टिकाईआ। उत्ते अमृत पाया जाएगा घुट, सोहणा सगन मनाईआ। फेर रुपै सोने चांदी पिच्छे दीन दुनी च पैणी लुट, कलयुग आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे हुक्म अबिनाशी अचुत, गुरदर्शन दे लाल रंग नाल रंगे होणगे गुट्ट, निशान गोडयां उत्ते रखाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत दस दिल्ली धीरपुर हरि भगत दुआर दी नींह रखण समें सवेरे साढे दस वजे ✪

२४६ २४

सो पुरख निरञ्जण साचा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। हरि पुरख निरञ्जण ठांडा सीत, सति सतिवादी अगम्म अथाहीआ। एकँकारा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। आदि निरञ्जण सदा जगजीत, निरगुण निरवैर इक अख्वाईआ। अबिनाशी करता पतित पुनीत, पतित पावन धुरदरगाहीआ। श्री भगवान धर्म दी धार चलाए रीत, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। पारब्रह्म खेल करे आदि जुगादी ठीक, ठाकर स्वामी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर रंग इक रंगाईआ। सतिगुर शब्द आदि आदि दी धार, निरगुण निरवैर निरँकार खेल खिलाईआ। जिस दा रूप अनूप अगम्म अपार, अलख अगोचर सति सतिवादी वड वड्याईआ। जो खेले खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी वंड वंडाईआ। जिस दा लहिणा देणा दीन दुनी नाल तेई अवतार, रामा कृष्णा नूर नुराना नूर नूर रुशनाईआ। हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद देवणहारा अधार, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। नानक निरगुण सरगुण गोबिन्द शब्द जैकार, सिँघ सिँघ इक अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे धुर दा हुक्म सदा जुग चार, जुग चौकड़ी आप वरताईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर तेई अवतार, अवतर आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल धरनी धरत धवल धौल विच संसार,

संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव देण गवाहीआ। भगत सुहेले वेखे विगसे वेखणहार, गुर चेले खोज खुजाईआ। जिस दा रसना जिह्वा जगत विद्या बाहर इज़हार, सिफ्तां वंड ना कोए वंडाईआ। चार जुग दे शास्त्र अक्खरां नाल करन पुकार, निरअक्खर धार धार शनवाईआ। सो परम पुरख धुर दा राम करनी दा करता एकँकार, अकल कलधारी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे पैग़म्बरां अज़मज़ी वज़ूउल ज़मीउल ज़कूते आयशहेजमा नूरे रुशना मुहम्मदे दुआ ज़बीउल ज़मा मुविवज़ी नविस्तुल ज़म्बाए ख़ुदा खुद मालक इक अख्वाईआ। कोना कुनिज़ शाहे ज़विज रोज़म मबी मुवस्ती तुवला जम्बाए जुकन्ननिसता जबराईले ज़मू रूहे नवास्ते मज़ा असतेमज़ा मुवज़ल तुवज़ल मज़ीउल कमोज़े जामिस्ती दम्बाए ख़ुदा काअबाए कुविद शरअ ए ज़ुविद नूरे चशम अर्शे वज़ी नवीज़े तरजीह ज़मीउल ज़मा रहिनुमा इक नूर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतिगुर शब्द अगम्मी धार, धरत धवल वड्याईआ। नानक निरगुण सरगुण खेल अपार, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। चार वरन इक अधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा जाणे आप निरँकार, निरवैर इक अख्वाईआ। जिस दे शब्द संदेशे भविख्तां विच गुर अवतार पैग़म्बर गए उच्चार, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। सो खेले खेल आपणी वार, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे शब्द दी धार आदि जुगादी भगत, भगवन देवणहार वड्याईआ। जिन्हां दे अन्तर नाम दी शक्त, शख्सीयत जगत विच प्रगटाईआ। ओस दा सदा सुहञ्जणा होवे वक्त, वेला आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल दीन दुनी फ़कत, फ़िकरे ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे वक्त सुहञ्जणा आया, सोहणी मिले वड्याईआ। प्रभ जोती जोत रुशनाया, दो जहानां डगमगाईआ। अवतर आपणा खेल खिलाया, खेलणहार अगम्म अथाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर संग मिलाया, एका गंढु पुआईआ। धुर दा पर्दा आप खुल्हाया, भेव रहे ना राईआ। रवीदास दए गवाहया, शहादत नाम वाली भुगताईआ। बाल्मीक वेख वखाया, त्रेता जुग नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। रवीदास कहे जन भगतो मैं भगत प्यारा मीत, मित्रां दयां सुणाईआ। ग़रीबां विच ग़रीबी वाली रीत, जुग चौकड़ी चली आईआ। अन्दरों काया सब ने करनी ठण्डी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मन मनुआ लैणा जीत, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा

गीत, सोहँ सच पढ़ाईआ। साचा दयोहरा मन्दिर मसीत, काया काअबा नज़री आईआ । मेला होणा नाल हस्त कीट, शाह सुल्तान ना कोए वड्याईआ। पिछला लेखा पिच्छे गया बीत, अगला हुक्म चले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। बाल्मीक कहे मैं बटवारा, त्रेता मेरी दए गवाहीआ। मैं लेखा लिख्या गुप्त ज़ाहरा, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। संदेशा सुणदा रिहा बिन सरवणां आपणे अन्तर अन्तर करदा रिहा विचारा, जगत अक्ल बुद्धी ना कोए रखाईआ। धरनी धरत धवल धौल राम रामा होए उज्यारा, राम रम्ईआ राम राम रूप प्रगटाईआ । जिस दा खेल चारे कुण्ट होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। अन्त कन्त दे के सच इशारा, भगवन्त आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी धार आप समझाईआ । धुर दी धार कहे मैं आदि जुगादी सच, प्रभ दी सच वड्याईआ। लूं लूं अन्दर सब दे जावां रच, रचना प्रभ दी दयां वखाईआ। मेरा नाता नहीं नाल काया माटी कच्च, कंचन गढ़ ना कोए चतुराईआ। सब दा स्वामी मालक इक्को परमेश्वर पति, पारब्रह्म अख्वाईआ। जिस भगतां लेखे लाउणी रत, रत्न अमोलक हीरे आप प्रगटाईआ। धर्म दा धर्म दवार खोल्हणा हट्ट, वस्त सच नाम टिकाईआ। शरअ ज़ंजीर देणी कट, कटाकश इक्को इक वखाईआ। दूई दुवैत मेटणा फट्ट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। शरअ दी रहे कोई ना वट, वटणा नाम वाला मलणा चाँईं चाँईंआ। सो खेल करे प्रभ जो वसे घट घट, घट घट बैठा सोभा पाईआ। जिस दे नाम कलमे रहे रट, रसना जिह्वा सुरती सोहले ढोले गाईआ। उह आत्म सेज सुहञ्जणा सुहाए खट, खटीआ इक वड्याईआ। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। शब्दी सुरत मार के सट्ट, सोई सवाणी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । करनी कहे मैं आदि जुगादि दी करनी, कुदरत कादर दिती वड्याईआ। मैं वेखणा खेल प्रभू दी चरणी, चरणी दी धार शहादत फोटो दए गवाहीआ। मेरा झगड़ा नहीं वरनी बरनी, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। मैं चाहुंदी इक्को मार्ग होवे उत्ते धरनी, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। पुरख अकाल दी पौड़ी सब ने चढ़नी, राम रामा रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया जगत जहान विच्चों हड़्नी, दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया कहे मेरा कलयुग नाता, सच सच सुणाईआ। कलयुग कहे मेरा खेल नाल पुरख बिधाता, जो बिधना दा मालक अगम्म अथाहीआ। जिस मेरा वक्त सुहञ्जणा दीन दुनी कीता अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा पा के दीन मज़्हब ज़ाता पाता, माणस मानव दिते टकराईआ। आपणे हुक्म

दा रख के डूँग्घा खाता, भेव अभेद ल्या छुपाईआ। मैं सच संदेशा देवां दीप साता, नव खण्ड खण्ड सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नव सत्त कहिण साडा रूप अनूप अपारा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। साडी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा नाल तेई अवतारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गंढु पवाईआ। साडा खेल संग हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद यारा, मेहरवान महिबान बीदो आपणा खेल समझाईआ। साडा लहिणा देणा नानक निरगुण धार गोबिन्द धार अपारा, अपरम्पर दए वड्याईआ। साडा मीत साजण भगत सुहेला जो भगवन होए प्यारा, धर्म दी धार विच समाईआ। नौ खण्ड कहिण सत्त दीप असीं ओस प्रभू दा बोलीए जैकारा, जो आदि जुगादि इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ । सत्त दीप कहिण साडी धरनी धरत धवल अपार, अपरम्पर दए वड्याईआ। साडी नमो नमो निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। धन्नभाग जे धुर दा हुक्म चले विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी खुशी मनाईआ। मानव ज़ाती इक होए प्यार, आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। जो भगत सन्त सूफ़ी संदेशा दे के गए आपणी वार, पूरब लेखे नाल मिलाईआ। भगतां दा गृह होवे भगत दुआर, भगवन मिल के वजे वधाईआ। शरअ दा होवे ना कोए सिक्दार, मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर जोत उज्यार, नूर नुराना नज़री आईआ । इक्को शब्द होवे धुन्कार, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैं आदि जुगादि दी धवल, धर्म नाल समझाईआ । मेरा मालक पुरख अकाला नूर अलाही इक्को अवल, आलमीन इक अख्वाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा राम रामा नाल कृष्ण काहन सवल, सांवरीआ आपणा रंग रंगाईआ। जिस गोबिन्द धार छकाई पवल, अमृत रस बिन रसना रस चखाईआ। ओह भगत सुहेले प्रगटाए आपणे कवल, कमलापाती आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे वक्त सुहञ्जणा आया नौ माघ, खुशीआं ढोले गाईआ। मेरे अन्तर उपज्या इक वैराग, वैरी कूड़े बाहर कढाईआ। जन भगतो दुरमति मैल धोणा दाग़, पाप रहे ना राईआ। काया मन्दिर दीपक जोत वेखणा चराग़, जोती जाता करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चार कुण्ट दहि दिशा चारे लिखारीउ लिखो लगणी आग, अग्नी सके ना कोए बुझाईआ। शाह सुल्तानां रईयत हकूमतां जाणीआं त्याग, त्रैगुण अतीता आपणा खेल समझाईआ। किसे दी पुछे कोई ना वात, संगी संग ना कोए निभाईआ। सत्तां दीपां होवे अन्धेरी रात, चारे कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। धरनी कहे लिखारीओ तुहाडा दिसे गाना बध्धा मैहन्दी तन्दा, संग मुहम्मद चार यार रलाईआ। एह लेखा किसे नहीं संधा, अक्ल बुद्धी समझ किसे ना आईआ। जगत जहान नौजवान कर्म कांड विच अन्धा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग आपणी धार विच्चों लँघा, भज्जा जाए चाँईं चाँईंआ। अन्तिम सब दा हाल होणा मंदा, मंदभाग दिसे लोकाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम होया कन्ढा, कन्ढी घाट सारे बैठे ध्यान लगाईआ। जो वेद व्यासे पाईआं वंडां, चार लख सतारां हज़ार सलोक अठारां प्राण देण गवाहीआ। केहड़ी खेल खेले गौड़ ब्राह्मण नूरी धार हो के पंडा, पारब्रह्म ब्रह्म भेव आप खुलाईआ। शब्दी धार चमके चण्ड प्रचण्डा, जगत जहान नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ । धरनी कहे मैं खुशीआं गावां ढोले, प्रभ नूं सीस निवाईआ। शब्दी धार जो शब्द अगम्मा बोले, अनबोलत राग सुणाईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुरु धर्म धार दे तोले, नाम कंडे हथ्थ उठाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां वाले हट्ट खोल्हे, चार कुण्ट दिती वड्याईआ। जिस दे लेखे विच लहिणे देणे सब दे कोले, कौल इकरार नाल बणाईआ। उह वेखे धार उपर धौले, धर्म धार नाल जणाईआ। जिस ने सच दुआरे खोल्हे, ख़ालक ख़लक ख़लक समझाईआ। नव सत्त तकणे रौले, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट मारां ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। औह वेखो पंडत नारद आउँदा बिना रसना तों दए ज्ञान, बिन जिह्वा जिह्वा रिहा हिलाईआ । उठ वेख ला की खेल करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस सत्त दीप हुक्म चलाया ते वरतणा विच जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लहिंदी दिशा अक्ख पुट्ट ला ते नाल सुण लै कान, बिन कन्नां दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ । धरनी कहे मैं नारद की दस्सां, सच सच जणाईआ। मैं दीन दुनी नूं वेख वेख हस्सां, जो मेरे उत्ते सोभा पाईआ। किसे अन्दर प्रभू दे प्यार दा रिहा नहीं रसा, रसना जिह्वा ढोले सारे गाईआ। मैं दूर दुराडी जगत जिज्ञासुआं कोलों नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं ऐं जापदा प्रभू दा भगत कोई विरला कोटां विच्चों लखां, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। पर याद कर लै नारदा सृष्टी ऐं सड़नी जिवें सड़दा पुतला कक्खां, चारों कुण्ट वेखणा थांउँ थाँईंआ। कलयुग खेल होणा वांग बाज़ीगर नटां, नटुआ हो के आपणा स्वांग वरताईआ। मैं अन्त इक प्रभू ते आपणी आसा सुट्टां, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जिस दीन मज़्ब दीआं मेटणीआं वट्टां, झगड़े नाम ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । नारद कहे धरनीए मैं वी होया हैरान, हैरानी मेरे अन्दर छाईआ। कलयुग कूड़ दिसे प्रधान, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। शरअ रूप बणी शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। इन्सान दा वैरी बणया इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। पर याद कर लै जो सीआ नूं संदेशा दिता राम, बनवासी आपणा हुक्म सुणाईआ। कलयुग कूड़ कूड़यार होणा जगत जहान, नव सत्त आपणा रंग रंगाईआ। जो अर्जन नूं गीता लिखण लग्गयां दस्सया काहन, घनईया धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त प्रभू दी करे ना कोए पहचान, भगवन रंग ना कोए समाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होवे परेशान, परेशानी विच दुहाईआ। अन्तर आत्म उपजे ना कोए ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। अमृत रस मिले ना पीण खाण, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। घर स्वामी ठाकर मिले किसे ना आण, तन मन्दिर ना वजे कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। नारद कहे धरनीए मैं होर कुछ तक्कां, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। उह वेख लै तीजे साल नूं झगड़ा पैणा विच मदीना मक्का, काअबे आपणा हाल दृढ़ाईआ। फेर लहिणा देणा होणा नाल बूरा कक्का, हज़रत ईसा देवणहार शहादत नाल गवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी रशीआ नाल अमरीका लगणा धक्का, अगे हो ना कोए अटकाईआ। दीन दुनी दी कीमत रहिणी नहीं कोई टका, शाह सुल्तान राज राजान मायाधारी मिट्टी ख़ाक विच रुलाईआ। इक्को धर्म दी धार प्रभू दे नाम दी होणी सत्ता, जिसनूं सतिगुर शब्द मंने जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे नारद जी मैं वी चुक्कया भार, नव खण्ड चुरासी लख आपणे उत्ते उठाईआ। मेरी दिवस रैण पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मेरे प्रीतम प्यारे मेरी पा सार, परम पुरख होणा आप सहाईआ। चारो कुण्ट होया धूंआँधार, तेरा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरे नाम कलम्यां वाली खार, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। तूं आत्म परमात्म नूर उज्यार, नूर नुराना इक अख्वाईआ। कलयुग मेट दे धुआँधार, धर्म दी धार इक समझाईआ। इक्को तेरा नाम होवे जैकार, इक्को तेरी सिफ्त सलाहीआ। इक्को तेरा मन्दिर होवे दुआर, शिवदुआला मठ गुरुदुआर इक वखाईआ। इक्को शब्द होवे धुन्कार, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म वजदी रहे वधाईआ। इक्को तेरी होवे निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सारे सीस झुकाईआ । तूं शाहो भूप होवें सिक्दार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरी वजे वधाईआ। धरनी कहे मेरी नमों नमों निमस्कार, निव निव तेरे लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे धरनीए परम पुरख बड़ा चालाक, मैं जुग

चौकड़ी वेख वखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग बीते सब नूं करदा रिहा ख़ाक, माटी ख़ाक विच मिलाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां खोल्हदा रिहा ताक, बजर कपाटी पड़दा आप चुकाईआ। आपणा दस्सदा रिहा शब्द अगम्मी वाक, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सच प्रीती जोड़दा रिहा नात, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। सो अन्त पुछणहारा वात, जुग चौकड़ी जिस दे हुक्म अन्दर भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारद जी मैं उसे नूं टेकां मथ्था, जो मालक धुरदरगाहीआ । जिस दे गुर अवतार पैग़म्बर सथर लथ्था, यारड़ा सेज हंढाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र करदे कथा, वेद पुराण अञ्जील कुरान बाईबल तुरैत गीता गुरु ग्रन्थ ढोले सोहले राग सुणाईआ। उस दा खेल वेखणा यथार्थ यथा, जो यदी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे शब्दी धार दा अगम्मी इक्को भथ्था, तीर तरकश कमान हथ्थ ना कोए रखाईआ। उहदा युद्ध बिना तन वजूद हथ्थां, हुक्मी हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक नूर अलाहीआ। नारद कहे धरनीए उह मालक परम पुरख अपार, परमात्म इक अख्वाईआ। जिस जुग चौकड़ी खेलया खेल विच संसार, सतिगुर शब्द नाल वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिता अधार, उदर दा लेखा दिता मुकाईआ। निरअखर धार विच्चों अक्खर दिते उच्चार, जगत शास्त्र देण गवाहीआ। जिस ने मन्दिर मस्जिद शिवदवारे मठ बणाए गुरुदुआर, चर्चा दिती माण वड्याईआ । दीनां मज़्बां दस्स नाम जैकार, शरअ दा रंग दिता रंगाईआ। झगड़यां विच खेल कीता वारो वार, वारता पिछली दए गवाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी परम पुरख परवरदिगार, राम रामा काहन कान्हा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। धरनी कहे मेरा वक्त होया सुहञ्जणा, सोहणी मिले वड्याईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, आदि पुरख दया कमाईआ। जिस नूं कहिंदे दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार लँघाईआ। उह भगतां पावे नाम दा अंजणा, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस दे हुक्म विच जगत जहान वंञणा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस सब दा पड़दा कज्जणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दा नाम डंका वजणा, चारो कुण्ट करे शनवाईआ। उह झगड़ा मेटे दीन दुनी काया माटी बदना, जिस्म जिस्म ज़मीर विच्चों आप समझाईआ। सो साहिब सूरा सरबगणा, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी आप कमाईआ। धरनी कहे मेरे वक्त कवण संभाले, सम्बल बैठा नजर किसे ना आईआ । जो लेखा जाणे शाह कंगाले, ग़रीब ग़रीबां वेख वखाईआ। जिस

दा नाम सच्चा धन माले, धन दौलत कम्म किसे ना आईआ। जो भाग लगाए साचे डाले, पत्त टहणी आप महकाईआ। मेरे धोए दाग़ काले, दुरमति रहे ना राईआ। अमृत धार अन्दरों उछाले, सवा सेर पाणी लिखारीआं दए गवाहीआ। पंज पंज भगतां दे शहादत देण भाले, भाण्डा भरम भनाईआ। आत्म धार वसे नाले, परमात्म विछड़ कदे ना जाईआ। जिस दे पिच्छे भगत सुहेले जुग जुग घालणा रहे घाले, रविदास रवीदास नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप दरसाईआ। धरनी कहे मैं कूक कहां पुकार, दो जहानां दयां सुणाईआ। सब दा इक्को मित्र मुरार, परम पुरख इक अख्वाईआ। जिस ने बाल्मीक दिता तार, बटवारा आपणे रंग रंगाईआ। डाके मारदा विच संसार, सच लुटेरा इक अख्वाईआ। जिस दी दक्षिणा राम दे लेखे साढे तिन्न हार, कलयुग लहिणा पूर कराईआ। गऊ पाल गोपाल काहन कृष्ण वेखे नैण मुँधार, नैण मूंद दया कमाईआ। ईसा कहे मेरा लेखा नाल परवरदिगार, जो यार यारा अगम्म अथाहीआ। मुहम्मद कहे मैं ओस दा करां इज़हार, जो सिफ्तां दा मालक सिफ्त सलाहीआ। नानक कहे मैं उस दी वजावां सितार, जो सुत्तयां लए जगाईआ। जन भगतो एह सारी सृष्टी दा सतिजुग विच होवेगा भगत दुआर, अज्ज दा लेखा इस दी दए गवाहीआ। दर्शन सिँघ दी पुठ्ठी दिसे तलवार, ढाल आपणा रूप दरसाईआ। ख़ाली ग्लास कहे चारों कुण्ट होणी हाहाकार, फल कहिण फल किसे हथ्थ ना आईआ। नेत्र रोवे नारी नार, बिन हंझूआं हंझू वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। नारद कहे धरनीए वेख लै भगतां ने दोवें रंगे होए गुट, लाल आपणा रंग वखाईआ। इक वार प्रभ नालों सब दी प्रीती जाणी तुट, टुटयां फेर प्रभू जुड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पैणी लुट, कलयुग लुटेरा फिरे चाँईं चाँईंआ। दीनां मज़्बां होणी फुट, मेला सके ना कोए मिलाईआ। बेशक सृष्टी प्रभू दा नाम जपदी रसना जिह्वा बुल्ल्हां नाल बुट, हिरदे राम ना कोए वसाईआ। सब दा भाग जाणा निखुट, खोटे खरे रूप ना कोए दरसाईआ। फेर सति सच दी मौलणी रुत, रुतड़ी आपणा रंग रंगाईआ। भगत दुआर दी नींह थल्ले चांदी दा दब्बणा बुत, बुतख़ाने वेखण थांउँ थाँईंआ। एह विहार ओस साहिब दा जिस दा शब्द दुलारा सुत, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए मैं की वेखां हुन्दा सगन, सगला ध्यान लगाईआ। भगतां अन्तर आत्मा होवे मग्न, जगत वासना बाहर कढ्ढाईआ। ओढण दिसे किसे ना सीस सृष्टी होई नग्न, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बिना भगतां तों काया मन्दिर अन्दर दीपक किसे ना जगण, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। की होया जे भगत दुआर दी धार नाल लग्गी

अग्न, अग्न जगत वाली समझाईआ। किसे दा रहिणा नहीं कोई सज्जण, मित्र मीत ना कोए अख्वाईआ। अन्त गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, मन ममता दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा मैं अवतार पैग़म्बर गुरु तकां साख्यात, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जिन्नां चार जुग दी पिछली लिखी गाथ, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलदा वेख्या राथ, निरगुण सरगुण हो के भज्जे चाँईं चाँईंआ। अन्त लहिणा देणा उस हथ्थ पुरख समराथ, जो करता धुरदरगाहीआ। जो होए सहाई अनाथां अनाथ, दीनन आपणे गले लगाईआ। सो सब दा लहिणा देणा देवे मस्तक माथ, पूरब लेखा बिधना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरा लेखा बहुत पुराणा, पुराण अठारां देण गवाहीआ। मेरा काहन नाल यराना, जो सखीआँ सुख़न गया समझाईआ। दुनिया दीन विच बदल जाणा ज़माना, जमन किनारा संग रखाईआ। कलयुग कूड़ होणा प्रधाना, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। धर्म दा रहिणा नहीं कोई निशाना, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। दीन मज़्हब होणा बेगाना, नाम कलमा करे लड़ाईआ। अन्तर गाए ना कोए तराना, तुरीआ वेखण कोए ना पाईआ। ओस समें खेल करे धुर दा कान्हा, काहन काहन नाल वड्याईआ। जिस दा लहिणा देणा दो जहाना, ज़िमीं असमान वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द करे प्रधाना, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मैं वी सुणी बात, पिच्छे हो के ध्यान लगाईआ। जो खेल होणा लोकमात, काहन घनईया गया दृड़ाईआ। किसे दी पुछणी नहीं किसे ने वात, संगी संग ना कोए बणाईआ। की होया जे अठारां कशूणीआं होईआं खात, धर्म युद्ध युद्ध समझाईआ। कलयुग अन्तिम हुक्म वरते कमलापात, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे मैं करदी रही काहन नूं याद, गोपाल सीस निवाईआ। जो मैनूं दे के गया दाद, वस्त अमुल नाम वरताईआ। तेरा खेड़ा होए आबाद, हरि भगत दुआर सोभा पाईआ। जिथ्थे सारे इक्ठे होणगे सन्त साध, सूफ़ीआं रंग रंगाईआ। अन्तर रहे ना वाद विवाद, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। शरअ दी दिसे कोई ना हाद, मज़्बां रंग ना कोए रंगाईआ। इक्को मालक नज़री आए वाहिद, गॉड इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनी मैं वी सुणया संदेश, जो कृष्ण घनईया काहन काहन गया दृढ़ाईआ। मैं दूरों हो के पेश, पेशीनगोई पुछी चाँईं चाँईंआ। सच दस्स

एह धाम सुहञ्जणा कौण करे ते केहड़ा होवे नरेश, कवण हुक्म हुक्म वरताईआ। ओस हस के किहा मेरा बिना अक्खरां तों लेख, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। जोती जाता धारे भेख, अवल्लड़ा रूप प्रगटाईआ। जिस कूड़ कूड़यार दी मेटणी रेख, ऋषीआं मुनीआं दए समझाईआ। उह आवे जमन कनारा एस देस, देस दसन्तर वेख वखाईआ। जिस जगत जहान दा तकणा कलेश, कल कातीआं खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं विच दस्सां आज, हकीकत सच दृढ़ाईआ। सारी सृष्टी दा भगत धार होणा समाज, समग्री प्रभू नाम वरताईआ। मेरे उत्ते मेरा बंक दुआर सुहाए सेवा करनगे राजन राज, रईयत आपणा संग बणाईआ। एह नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों होणा काज, करनी दा करता आप समझाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को महाराज, परम पुरख इक अख्वाईआ। जिस ने धर्म चलाया जहाज़, नईया नौका नाम दृढ़ाईआ। चारे कुण्ट मारनी अवाज़, चारे वरनां लए उठाईआ। सब दा सांझा होवे समाज, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरी आसा मनसा होवे पूर, पूरब बैठी ध्यान लगाईआ। मेरे राम दा सच दस्तूर, जुग चौकड़ी चलया आईआ। जो काहनां दा काहन हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। जिन्ह शब्दी धार दिता सरूर, गुरु गुरदेव दे वड्याईआ। जिस दी मंज़ल ना नेड़े ना दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन भगतो तुहाडी भगती करे मन्ज़ूर, दर आयां लेखे लाईआ। तुसां सब ने आत्मा धार होणा मशकूर, शुक्रिया कहि के शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरी आसा पूरी होवे मनसा, खुशीआं राग जणाईआ। मेरा मालक मिले मैनूं कान्हा जिस हँकार मेटया कंसा, दिती माण वड्याईआ। जिस दा खेल सहँस सहँसा, गणती गणत ना कोए गिणाईआ । जिस सतिजुग विच मानव ज़ाती इक बणाउणा बंसा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जो लेखा लिख्या वेद व्यासे गौड़ ब्राह्मण प्रथाए पंडता, भविख्त पुराण नौ हज़ार सलोक देण गवाहीआ। उह खेल खेले धरती उत्ते नव खण्डता, सति सति वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा झगड़ा नहीं मन मति दा, ममता मोह ना कोए रखाईआ। उहदा खेल परमेश्वर पति दा, पतित पावन वड वड्याईआ। जो लेखा जाणे मित गत दा, अन्तर निरंतर बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु सारे करो मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। कलयुग अन्त मिटे तीनो ताप, त्रैगुण अग्न ना कोए तपाईआ।

सब दा इक्को नाम होवे जाप, इक्को सोहला ढोला कलमा सिफ्त सलाहीआ। इक्को मालक होवे कमलापात, पतिपरमेश्वर इक मनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़्हब ना करे लड़ाईआ। आपणा भविख्तां वाला वेखो खात, सदी चौधवीं बीसवीं नाल मिलाईआ। ढईआ गोबिन्द वाला पुछणवाला वात, वातावरन तके ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबान करो ख्याल, बिन नैणां नैण उठाईआ। धर्म दुआर दा धर्म होवे दलाल, विचोला अवर ना कोए बणाईआ। जिस दी साहिब सतिगुर शब्द करे संभाल, सम्बल दा मालक दया कमाईआ। जिथ्थे सोहणे शाह कंगाल, ग़रीब ग़रीबां दए वड्याईआ। दीन दुनी दा होवे ना कोए जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ । जिस दी आशा रखी सिँघ पाल, मेहरवान मेहरवान मेहरवान वेख वखाईआ। जिस दा ठाकर स्वामी दिता ज्ञान, इन्द्र सिँघ सिँघ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मन्दिर इक सुहाईआ। धरनी कहे गुर अवतार पैग़म्बर मेरा वेखो मीत, मित्रो सच जणाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी सब ने रख्या चीत, चित्र के सक्या ना कोए वखाईआ। जो जुग जुग बदलदा रिहा रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। सो सब दी अन्तर मन कल्पणा करे पतित पुनीत, पतित पावन दया कमाईआ। जिस नूं कहिंदे सदा जगजीत, जग जीवण दाता इक अख्वाईआ। जिस दा लेखा नाल मन्दिर मसीत, काअब्यां फोल फुलाईआ। उह आत्म परमात्म बंधाए सब दी प्रीत, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते होणा वक्त सुहञ्जणा, सोहणी मिले वड्याईआ। घर सुहाए आदि निरञ्जणा, बंक दुआरा वेख वखाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक जगणा, जोती जोत डगमगाईआ। जो सब दा होवे सज्जणा, मीत मुरारा अगम्म अथाहीआ। जो नाम निधान दी चाढ़े रंगणा, रंगत आपणी आप प्रगटाईआ। उह भगतो तुहाडी भगती दा मनावे सगना, सगले संगी आप रखाईआ। निरगुण धार लावे अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। अन्तर निरंतर दे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। लेखे लग्गे पंज तत शरीर पंजना, पंजम तत मिले माण वड्याईआ। सम्मत शहिनशाही दस कहे दीन दुनी दा लेखा जिस हथ्थ मुकन्द मनोहर मुकन्दना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे मेरी प्यार मुहब्बत वाली तशरीह, खुशीआं नाल जणाईआ। भगतां दी भस्म चरणी दी धार गुरमुख इक इक चूंढी भरनगे वीह, माझा मालवा दुआबा जम्मू वंड वंडाईआ। टिकाउणगे चढ़दे वाली कूट विच नींह, खुशीआं नाल रखाईआ। धर्म दा बीज देणा बीअ, सतिजुग फल नाल फुल्ल लए

२५६ २४

महकाईआ। रवीदास दा लेखा जो लिख्या साढे तिन्न हथ्थ सींअ, धरनी धरत धवल खुशी बणाईआ। अगे पता नहीं होणा की, धरनी निव निव सीस निवाईआ। लख चुरासी प्रभ दे जी, जीव जंतां विच समाईआ। तुहाडे उत्तों बलि बलि जावां थीं, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे मिट्टी ख़ाक भस्म रखणी नींह थल्ले इक इक चूंडी, बीस बीसा रंग रंगाईआ। उत्ते धर्म धार दी होवे खूंडी, खड़गां खंडयां बाहर समझाईआ। धरनी कहे मैं बिना ज़बान तों कूंदी, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं सार सारयां बुत रूह दी, रूह बुतां वेख वखाईआ। मैं ख़बर सुणावां उस शब्द गुरु दी, जो गुर अवतार पैग़म्बरां दए वड्याईआ। जन भगतो अज्ज दी मनिआद सतिजुग धार शुरू दी, सति धर्म साचा रंग रंगाईआ। अजे ते खेल होणी दुड़ू दुड़ू दी, सत्तां सालां तों बाद एथे धर्म दे झण्डे झुलणे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते बणना गृह मन्दिर, सोहणी मिले वड्याईआ । जिथ्थे भगतां दा भगती धार तुटणा बजर कपाटी जंदर, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी दए बदलाईआ। प्रकाश होवे अन्धेरी कंदर, तन वजूद नूर नुराना डगमगाईआ। मनुआ दहि दिशा ना उठ उठ धावे बन्दर, मन मनसा ना कोए हल्काईआ। जन भगतां हरिजनां सूफ़ीआं सन्तां लेखे लगे तत पंजण, पंचम दा मेला मिले सहिज सुभाईआ । किसे दे अन्तष्करन विच ना होवे रंजण, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते केते जुग चौकड़ीआं लँघण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। कोटन वार दीन दुनी शरअ दी लग्गी अग्न, भस्म हो के मिट्टी ख़ाक विच मिलाईआ। कोटन वार मेरे उत्ते शादिआने वजण, गुर अवतार पैग़म्बर धुर दे राग नाद गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए मेरा जीअ करदा मैं तैनूं करां इक मख़ौल, मसख़रा हो के दयां सुणाईआ। तैनूं धरनी कहां धरत कहां धवल कहां कि कहां धौल, धर्म नाल दे जणाईआ। सच दस्स तेरा अवतार पैग़म्बरां नाल की कौल, वायदा गुरु दुरदेव की जणाईआ। मेरा जीअ करदा कूड़ कूड़यार दा वजा देवां ढोल, डंका सुणावां थांओं थाँईंआ। सारी सृष्टी दी दृष्टी जावे डोल, साबत रहिण कोए ना पाईआ। तेरा धर्म दा दुआर धर्म दा मालक देवे खोलू, ख़लक दा ख़ालक वेख वखाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई पंडत पांधा रौल, थितां वंड ना कोए वंडाईआ। एह लेखा उस दा जिस नूं त्रैलोकी नाथ कहिंदे साँवल सौल, सांवरीआ आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । धरनी कहे नारदा कुछ मैं वी दस्सणा ज़रूर, ज़रूरत

आपणी दयां जणाईआ। मैनूं दिसदा मेरे उत्ते प्या फ़तूर, धर्म नूं फ़तवा लग्गा थांउँ थाँईंआ। सच दा सच दिसे ना नूर, नूर नुराना चन्द ना कोए चमकाईआ। साचे नाम दी सुणे कोए ना तूर, तुरीआ पद दी मंजल हथ्थ किसे ना आईआ। मैनूं कलयुग कूड़ कीता मशहूर, चारों कुण्ट झूठ दे डंके रिहा वजाईआ। मैं आसा रखी मेरा साहिब मैनूं कदों बख़्शेगा चरण धूड़, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जगत दा वक्त मिटे हरिजन रहे ना कोए मूर्ख मूढ़, गुरमुख हरिजन भगत सुहेले लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए ओह वेख लै कलयुग काला मलंग, नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप भज्जे वाहो दाहीआ। जो वजावे मोह ममता दा मृदंग, ममता माया वाली नाल रलाईआ। जिस घर घर छेड़या जंग, मन का मणका दिता भुआईआ। दीन दुनी नूं कीता तंग, तंग दस्त होई लोकाईआ। जिधर वेखें कलयुग ने कीती भुख नंग, भण्डार सके ना कोए रजाईआ। अन्तर आत्म मिले ना किसे अनन्द, अनन्द विच्चों अनन्द ना कोए प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा गाए कोई ना छन्द, पारब्रह्म ब्रह्म संग ना कोए रखाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी दिसे ना किसे पलँघ, सथर यार ना कोए हंढाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्तष्करन विच होई रंड, पती पति पतिवन्ता हरि कन्त नज़र किसे ना आईआ। निगाह मार लै विच नवखण्ड, सत्तां दीपां ध्यान लगाईआ। जिधर वेखें ओधर शरअ दी पवे डण्ड, डण्डावत विच प्रभ नूं सीस ना कोए निवाईआ। दरोही मची जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। सृष्टी दी धार होई भेख पखण्ड, सति सच वेखण कोए ना पाईआ। मेरी इक्को आशा इक्को मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे साहिब सूरे सरबंग, हरि करते तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे सुण नारद मुनी, मुनीश्रां बाहर जणाईआ। मेरी पुकार अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सुणी, अणसुणत नज़र कोए ना आईआ। जो जुग चौकड़ी धर्म दे धार बणे वड गुणी, गुणवन्त जगत अख्वाईआ। शब्द नाम दी जणाई धुनी, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप समझाईआ । धरनी कहे मेरी नींह रखणी नाल जगत दी इट्ट, माटी कच्च रंग रंगाईआ। प्रभू विच रखे बिन अक्खरां तों चिट, चिट्टे उत्ते काला रंग ना कोए रंगाईआ। नीली लाल शाही दोवें रहीआं पिट, दरोही तेरा नाम दुहाईआ । कलमां कानयां कहिण असीं किथे जाईए टिक, कवण धाम मिले वड्याईआ। किस दे उत्ते आशा दईए सिट्ट, सिट्टाबाज़ी वेखी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पल्लू आप फड़ाईआ। धरनी कहे मेरे वेख लै पिछले कर्म, कांडां बाहर जणाईआ। जुग

जुग दा तक लै धर्म, नारदा बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। कलयुग तक लै की झगड़ा वरन बरन, ज़ात ज़ाती की चतुराईआ। मेरे नेत्र नैणां आवे शर्म, प्रभ नूं भुली सर्ब लोकाईआ। मेरा लेखा नाल उस करनी करन, जो करनी करता धुरदरगाहीआ। मैं उस दा पल्लू लग्गी फड़न, बिन हत्थां हत्थ उठाईआ। ओस दी मंज़ल लग्गी चढ़न, बिन कदमां कदम टिकाईआ। ओसे दा नाम लग्गी पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओसे दे फ़राक विच वैराग विच लग्गी सड़न, बिरहों अन्दरों रही कुरलाईआ। मेरे प्रभू झगड़ा मेट दे पंज तत धड़न, सीस जगदीस आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह आप सुहाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरी इक बेनन्ती, खुशीआं विच सुणाईआ। एह लेखा नहीं किसे पंडती, अक्ल बुद्धी ना कोए वड्याईआ। आसा नहीं किसे मन दी, कल्पणा तृष्ना ना कोए रलाईआ। एह खेल अगम्मे चन्न दी, जो नूर नुराना आदि जुगादी नूर अलाहीआ। एह अवाज़ नहीं किसे कन्न दी, सरवणां बाहर शनवाईआ। एह वड्याई नहीं किसे धन दी, लोभ लालच ना कोए वड्याईआ। इक प्रीती प्रीतम होवे जन दी, जन भगतो मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरा लेखा प्रभू नाल आदि, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी हुंदी रही बर्बाद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरी दए गवाहीआ। प्यार मुहब्बत विच हुंदे रहे विस्माद, बिस्मिल हो के आपणा खेल खिलाईआ। मैं जुग जुग सुणदी रही नाद, शब्दी धार बिन अक्खरां अक्खर हुन्दी रही शनवाईआ। मेरा लहिणा देणा अन्त कलयुग सब तों बाद, आख़र आख़र दयां दृढ़ाईआ। जिस कारन नानक वजाई रबाब, सितार दीन दुनी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। धरनी कहे जन भगतो धर्म दुआरा वसणा, सतिजुग मिले माण वड्याईआ। दीनां मज़्बां बहि बहि हस्सणा, एको खुशी बणाईआ। नौ खण्ड पृथमी नस्सणा, भज्जे वाहो दाहीआ। नाम अंमिउं रस चखणा, बिन रसना रस चखाईआ। तुहाडी प्यार मुहब्बत वाली दक्षिणा, प्रभ लेखे लए लगाईआ। सच प्रेम विच्चों रहे कोई ना सखणा, काया चोली दए टिकाईआ। एह लहिणा देणा हत्थो हत्थणा, अगे उधार ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरा प्रेम दा साचा दरस, नैण दीद खुशी बणाईआ। मेरी पूरी होई हरस, हवस दिती मिटाईआ। निरगुण धार कीता तरस, जोत नूर नूर रुशनाईआ। मेरा सुहञ्जणा होया फ़र्श, मिट्टी ख़ाक खुशी बणाईआ। अम्बरां तों वेखण अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव नाल अर्श, अर्शी प्रीतम सोभा पाईआ। ना सोग रिहा ना

हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। इस भगत दुआर ते सारी सृष्टी दी होणी परख, परखणहारा इक्को धुर दा माहीआ। एहदा लेखा सतिजुग धार दे सतिजुग वाले बरख, बरस आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ । धरनी कहे मेरे उत्ते वेखो सोभदी परांदी लाल, लाड़ी मौत खुशी बणाईआ। नारीअल कहिण असीं वी बणना विच दलाल, विचोले जगत जगत जणाईआ। कूड़ कुड़यारां करनी भाल, खोजणा थांओं थाँईंआ। साडा लेखा नहीं शाह कंगाल, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाईआ। साडी इक बेनन्ती ते इक सवाल, दूजी आस ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच सच प्रगटाईआ। धरनी कहे मेरा अन्त अख़ीरी संदेश, सँध्या सरघी बाहर जणाईआ। जन भगतो तुहाडी भगती रहे हमेश, भगवन देवे माण वड्याईआ। तुहाडा लेखा तके बाशक सुहञ्जणा शेष, विष्नूं रंग रंगाईआ। ब्रह्मा दए आदेश, सुख़न सोहले आप जणाईआ। शंकर होवे पेश, धर्म धार दृढ़ाईआ। अवाज़ देवे आप गणेश, गणपति की सुणाईआ। तेई अवतार कहिण जगत बुद्धी ना रहे मलेछ, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पैग़म्बर कहिण झगड़ा मुके मुलां शेख़, मुसायकां रंग रंगाईआ। जो संदेश दिता नानक निरगुण गोबिन्द दस दस्मेश, दीन मज़्ह़ब वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा परमात्म आत्म धार एक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो भगतां दी साहिब उत्ते टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ। धरनी कहे जन भगतो खुशीआं नाल प्रशाद वंडणा, मेरी ख़ुशी बणाईआ। नाता सब दे नाल गंढुणा, मुहब्बत मुहब्बत विच्चों रखाईआ। पल्लू सतिगुर शब्द कदे ना छडणा, नाता तुट्टे जगत लोकाईआ। तुहाडा लेखे लग्गे नाड़ी मास हडणा, बूंद रक्त आपणे रंग रंगाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैत वाला कढणा, शरअ शरीअत देणी तजाईआ। तुसीं इक्को परम पुरख दी यदणा, आत्म परमात्म खेल तकणा थांओं थाँईंआ। मेरी धर्म दी धार हदणा, हद हदूद इक रखाईआ। सच प्रकाश दा दीपक जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सूरा सरबंगणा, सूरबीर नूरी नूर इक अख्वाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर धीर पुर किंगज़वे कैंप दिल्ली-६ रात दे समें ✪

नौ माघ कहे मेरी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। बिन रसना जिह्वा शब्दी धार बोल जैकारा, ढोला सोहला इक्को इक सुणाईआ। निरगुण सरगुण वेखां खेल अपारा, जो अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। शाहो भूप वेखां सिक्दारा, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता देवणहार सहारा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल जमन किनारा, घाट कन्ढ़ा खोज खुजाईआ। जिस दी आशा रख के गया कृष्ण मुरारा, मोहण माधव आपणा भेव चुकाईआ। जिस पैग़म्बरां नूर कीता ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ । जिस सति धर्म चलाया नाअरा, गुरु गुरदेव देव दृढ़ाईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी परवरदिगारा, सांझा यार नूर अलाहीआ। जिस लहिणा देणा पूरब कर्ज देणा उतारा, मकरूज आपणा लेख मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नौ माघ कहे मैं खुशीआं दे विच हस्सां, मुस्कराहट नज़र किसे ना आईआ। मैं गुर अवतार पैग़म्बरां दस्सां, बिन ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। बिन कदमां जगत जहान नस्सां, नव सत्त भज्जां वाहो दाहीआ। बिन नेत्रां वेखां रैण अन्धेरी मस्सा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। अमृत धार मिले किसे ना रसा, रसना जिह्वा दीन दुनी ना कोए हल्काईआ। किसे नज़र ना आवे होड़ा उपर सस्सा, हाहे टिप्पी हँ ब्रह्म भेव ना कोए चुकाईआ। प्रभू अन्तर निरंतर दिसे किसे ना वसा, वास्तवक रंग साचा ना कोए चढ़ाईआ। सच प्रेम दा करे कोई ना जसा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। नौ माघ कहे मेरा खुशीआं वाला वक्त, प्रभ देवे माण वड्याईआ। मैं प्रसिद्ध होवां विच जगत, दीन दुनी नाल मिल के वजे वधाईआ। मेरे साहिब स्वामी माण देणा आपणे भगत, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। आत्म धार बख्शणी शक्त, जोती जाता डगमगाईआ। लेखे लाउणा बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। नव माघ कहे मेरा लेखा नाल अमाम, जो अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस दी वखरी सदा कलाम, कलम्यां बाहर पढ़ाईआ। उह देवणहारा पैग़ाम, बिन अक्खरां अक्खर शनवाईआ। सो पूरा करे आपणा काम, कामना जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। नव माघ कहे मैं खुशीआं

दे विच झुकदा, बिन सीस सीस जगदीस निवाईआ। जिस भेव खुल्हाउणा इक तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पड़दा दए उठाईआ। भगतां कोलों कदे ना होवे लुकदा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। नाता जोड़े पिता पुत दा, पूत सपूते गोद उठाईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा होणा आपणी रुत दा, रुतड़ी भगतां नाल महकाईआ। मैं चाकर उस अबिनाशी अचुत दा, जो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक होए सहाईआ। नव माघ कहे मेरा झुके इक्को सीस, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ । मेरा मालक इक जगदीश, जगदीश्र नूर अलाहीआ। जिस दा पीसण रिहा पीस, कलयुग चक्की कूड़ चलाईआ। उह वेखणहारा कलमे नाम हदीस, हज़रतां दी धार खोज खुजाईआ। जिस नूं किहा बीस इकीस, वीह इकीह गुरदास नाल वड्याईआ। जो लेखा जाणे राग छत्तीस, बत्तीसा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक आपणा रंग रंगाईआ। नव माघ कहे मेरा खुशीआं वाला महीना, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जन भगतां ठांडा होवे सीना, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। क्यों प्रभू प्रेम प्यार विच जिस ने जीणा, जन रसना सिफ्त सलाहीआ। उह लेख चुकाए लोक तीना, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। नाम रंग चढ़ाए भीना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। लेखे लावे जन भगतां जगत जुगत दा जीणा, जिंदगी आपणे कदम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। नव माघ कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा आया, प्रभ देवे माण वड्याईआ। मैं निव निव सीस झुकाया, बिन कदमां लागा पाईआ। बिन रसना जिह्वा गाया, बिन सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। तूं शाहो भूप बेपरवाहया, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। जिस भगतां भाग लगाया, काया माटी सोभा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। नव माघ कहे मैं खुशीआं दे विच नचदा, टप्पां कुद्दां चाँईं चाँईंआ। मैं बचन दस्सां सच दा, सच सच समझाईआ। जन भगतो काया माटी भाण्डा कच्च दा, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। आत्मा प्यारा करो परमेश्वर पति दा, ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तुहाडा लेखा मुके हड्ड मास नाड़ी रत दा, रत्न अमोलक हीरे लए बणाईआ। मार्ग दस्से इक्को सति दा, सति सतिवादी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नव माघ कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। मैं धूड़ी करां मजना, दुरमति मैल धुआईआ। घर स्वामी मिले सज्जणा, खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा नाम नगारा डंका वजणा, दो जहान करे शनवाईआ। मैं उस नूं करां बन्दना, निव निव लागां पाईआ। जो ग़मी मेटे रंजणा,

रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जो झगड़ा मुकाए तत पंजणा, पंचम देवे माण वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। उह लेखा जाणे आहला अदना, शाह सुल्तानां खोज खुजाईआ। जो शरअ दी मेटे हदना, हदूद इक्को इक रखाईआ। जो मालक सूरा सरबगणा, सच स्वामी नूर अलाहीआ। जिस दा दीपक जोती जगणा, दो जहाना डगमगाईआ। उह झगड़ा मेटे काया माटी बदना, तन वजूदां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां करे कार अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। सच प्रेम दी चाढ़े रंगणा, निरगुण देवे माण वड्याईआ। मानस जन्म ना होवे भंगणा, जो चल आए सरनाईआ। सतिगुर चुक्के आपणे कंधणा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। नाम मुहाणा देवे वञ्झणा, बेड़ा इक्को इक वखाईआ। जिस दी जगत होवे ना वंडणा, हिस्सा दीन दुनी ना पाईआ। उह पन्ध मुकाए धरनी धरत धवल धौल ब्रह्मण्डणा, पारब्रह्म प्रभ आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर स्वामी बेपरवाहीआ। नव माघ कहे प्रभू मेरी इक अरज़ोई, आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। जन भगतां मिले किते ना ढोई, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। नव सत्त पई दरोही, हाहाकार विच लोकाईआ। कलयुग सृष्टी दृष्टी अन्दरों मोही, मुहब्बत सच नाम तुड़ाईआ। की होया जे तेरा भगत कोई कोई, कोटां विच्चों विरला नज़री आईआ। निझर धार बूंद स्वांती कवल नाभी विच्चों चोई, बिन रसना रस चखाईआ। उन्हां सुरत उठाई सोई, सुत्तयां ल्या जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। नव माघ कहे मैं निमस्कार करां डण्डावत, साहिब सतिगुर सीस निवाईआ। मेरे परम पुरख दीन दुनी दी तक अदावत, चारो कुण्ट ध्यान लगाईआ। शरअ दी शरअ तों होई बग़ावत, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। तूं मालक सही सलामत, वाहिद मुर्शद नूर अलाहीआ। किस बिध दीन दुनी दे उत्ते आउणी कयामत, कलम्यां दिआ मालका देणा समझाईआ। किस बिध मेटे अन्धेरी शामत, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नाम दी दे निआमत, वस्त अतोल अतुल आप वरताईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत दस दिल्ली हरि भगत दुआर बलविंदर सिँघ दर्शन सिँघ
अवतार सिँघ रत्न सिँघ माया देवी सुरिंदर कौर दर्शन सिँघ हरभजन सिँघ
चन्दा सिँघ पूरन सिँघ गुरचरण सिँघ भजन सिँघ गुरमेज़ सिँघ सूरत सिँघ
करतार सिँघ रुलदा सिँघ सवरन सिँघ कलवाकड़ी गुवालीअर
रतन सिँघ नूरपुर मोहण सिँघ दिल्ली तरलोक सिँघ हरीपुर ✪

पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा जावे मुक, तन माटी ख़ाक अवर रहे ना राईआ। पर्दा ओहला भेव चकाउणा लुक, अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाईए तुक, सोहँ ढोला सिफ्त सलाहीआ। साडी मंज़ल जाए ना रुक, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। दो जहाना गोदी लैणा चुक, फड़ बाहों आप उठाईआ। कलयुग वक्त सुहञ्जणा रिहा ढुक, घड़ी पल दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा तेरे हथ्थ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। वस्त अगम्मी दे दे वथ, नाम अमोलक आप
२६७ वरताईआ। तूं सर्ब कला समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। सति सच चलाउणा रथ, रथवाही हो के वेख वखाईआ। साडा २६७
२४ भाग ना निखुट्टे मथ, मस्तक देणी माण वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा २४
वर, सच करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, दर तेरे मंग मंगाईआ। तूं शाहो भूप हज़ूर, शहिनशाह इक अख्वाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। तेरा जोती होवे नूर, नूर नुराना नज़रीं आईआ। शब्द अनादी बख्श दे तूर, तुरीआ बाहर कर शनवाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, हरि पूर रिहा सर्ब थाँईंआ। असीं सेवक तेरे मज़दूर, चाकर जगत विच अख्वाईआ। साडा लहिणा पूरा कर दे जो आसा रखी मूसा उत्ते कोहतूर, काया काअब्यां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा तेरे अगे इक्को वास्ता, वसल यार देणा समझाईआ। तेरे गृह दा मिले रास्ता, मंज़ल अवर ना कोए जणाईआ। नूर मिले सच प्रकाश दा, जोती जाता डगमगाईआ। मण्डल वखा दे आपणी रास दा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। साडा लहिणा मुके दस दस मास दा, जनणी कुक्ख फेर ना आईआ। गृह सुहा दे उत्ते आकाश दा, गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। लहिणा फेर ना रहे शंकर कैलाश दा, पर्वत पाहिन देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी आसा अन्त अख़ीर,

आख़र इक जणाईआ। तेरे हथ्थ धर्म धार तदबीर, तरीका तेरे चरण कवल सरनाईआ। साडा शरअ दा तोड़ ज़ंजीर, बन्धन तन रहे ना राईआ । मनुआ मन ना होए दिलगीर, मनुआ मन ना कोए हल्काईआ। सो आसा पूरी कर जो रख के गया कबीर, कबरां बाहर दरसाईआ। तूं दाता गुणी गहीर, गहर गवर इक अख्वाईआ। अमृत आत्म बख्श दे सीर, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। सच स्वामी देवे धीर, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। तूं साहिब बेनज़ीर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी अन्तिम वेखो ख़ाहिश, सच सच जणाईआ। साडी लेखे लाउणी माटी वाली लाश, तन वजूद देणी वड्याईआ। सदा सदा सद तेरे रहीए दास, दासी दास सेव कमाईआ। तूं वसणा अन्तर निरंतर साडे पास, परम पुरख परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। साडा लेखे लाउणा स्वास स्वास, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा रहे ना मात, मता तेरे नाल पकाईआ। सच वस्त देणी दात, दीन दयाल दया कमाईआ। कलयुग कूड़ मेट अन्धेरी रात, सच चन्द कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म जोड़ना नात, विछोड़ा जगत देणा कटाईआ। बातन दस्सणी आपणी बात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ । सच प्रीती जुड़या रहे नात, चरण कवल मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण बुहभांत, भेव अभेद आपणा देणा खुल्हाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत दस दिल्ली हरि भगत दुआर ✪

उन्नी सौ पचत्तर जनवरी कहे मेरा दिवस सताई, दो सत आत्म परमात्म निरगुण सरगुण धार मिल के वजे वधाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीन दुनी सति धर्म दे हरिजन साचे राही, रैहबर मालक ख़ालक इक्को नूर अलाहीआ। जिस दा संदेशा दे के गए चाँईं चाँईं, रामा कृष्णा रमायण गीता गंढु पवाईआ। हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद जिस नूर अलाह दी दिती दुहाई, मबीउल ज़मा ज़ुकसते नज़ूआ नूरे ख़ुदा महिबान बीदो बेपरवाहीआ। गुरुआं जिस दा संदेशा दिता सो पुरख अकाला लख चुरासी सर्ब मलाही, नव सत्त ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान नौजवान श्री भगवान आपणा खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सताई जनवरी कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस

झुकाईआ। जो परम पुरख परमात्म मेला मेले विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी देण गवाहीआ। चार जुग दे शास्त्र करन पुकार, निरअक्खर धार अक्खरां विच प्रगटाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा तन वजूद माटी ख़ाक पावणहारा सार, लख चुरासी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी वेख वखाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार, राम रहीमा कृष्णा कान्हा मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। जो भगतां सन्तां सूफ़ीआं अन्तर निरंतर निज नेत्र देवणहार दीदार, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आईआ। जिस दा नाद शब्द धुन तन मन्दिर अन्दर सची धुन्कार, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्ती ढोले नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सताई जनवरी कहे मेरी नमों नमो डण्डावत, परम पुरख परमात्म सीस निवाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां सही सलामत, नूर अलाह बेपरवाह इक अख्वाईआ। जिस दीन दुनी ज़ात पात दीन मज़्हब मेटणी बग़ावत, बग़लगीर चार वरन अठारां बरन देण गवाहीआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला जोती धार सब नूं साचे नाम दी देवें दावत, बिन रसना जिह्वा अमृत रस निझर दए झिराईआ। जिस दा नाम कलमा तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म अगम्मी अमानत, निआमत सति सच जगत वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ । सताई जनवरी कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा चंगा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जन भगतां अन्तर निरंतर वहाए हिरदे धार जल गंगा, गोदावरी यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। हरिजन प्रभू भगत निज नेत्र रहे कोए ना अन्धा, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म ईश जीव जगदीश्र लाए आपणे अंगा, अंगीकार इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर लँघा, कलयुग वेखणहारा थांउँ थाँईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कूड़ी क्रिया करे दंगा, मन कल्पणा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा इक इकल्ला इक प्रगटाईआ। सताई जनवरी कहे मेरी पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मैं चाहुंदी सारी सृष्टी दा इक होवे जैकार, नाम ढोला सोहला इक्को राग जणाईआ। इक्को मन्दिर होवे दुआर, गुरुदुआरा शिवदुआले मठ चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को शब्द होवे धुन्कार, नाम निधाना वजे वधाईआ। इक्को नूर होवे उज्यार, जोती जाता हर घट अन्दर बैठा नज़री आईआ। इक्को शाहो भूप होवे सिक्दार, शाह सुल्ताना इक अख्वाईआ। इक्को हुक्म संदेसा देवे धुर दी धार, धर्म दा मार्ग इक समझाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक वखाए घर बार, जिस घर वसे धुर दा माहीआ। जगत धरनी धरत धवल धौल उत्ते वेखे विगसे पावे सार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल खिलाईआ।

सताई जनवरी कहे जिस धरती उत्ते धीर पुर बणना भगत दुआर, एह निशाना कृष्णा कान्हा जमन किनारे गोपाल हो के बंसरी धुन नाल गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संगी इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैं जुग जुग रही घुम्मदी, भज्जी वाहो दाहीआ। श्री भगवान दे चरण रही चुम्मदी, बिन बुल्ह्लां रस चखाईआ। उस दी मधुर धुन रही सुणदी, जो बिन कन्नां करी शनवाईआ। मेरी खेल आदि जुगादि मालक कुन दी, दो जहाना वेख वखाईआ। ख़बर याद रखणी हुण दी, सहिज नाल रही दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग विचार रही ना पाप पुन्न दी, कूड़ चारों कुण्ट हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं काहन दे छोहे चरण, मेरे अन्तर ख़ुशी आईआ। मेरा खुल्ह्या हरन फरन, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं भय विच लगी डरन, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पल्लू लगी फड़न, आपणी गंढु पवाईआ। धरनी कहे मैनूं इशारा दिता धरती कलयुग अन्त जिस वेले सृष्टी मन कल्पणा विच लगी सड़न, चारों कुण्ट अग्न ना कोए बुझाईआ। कूड़ी विद्या लगी पढ़न, आत्म विद्या जाण भुलाईआ। घर घर शरीर हँकारी बणे गढ़न, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। साचे मन्दिर सच दुआर जिज्ञासू मूल ना वड़न, जगत वासना भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू साचे भगतां दे अधार, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। चार वरनां दे प्यार, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ । दीनां मज़्बां इक वखा सच्चा घर बार, दरगाह साची सचखण्ड मुकामे हक हक समझाईआ। मेरी अन्त कन्त भगवन्त सदी चौधवीं पैज संवार, तेरे अगे मंग मंगाईआ। मेरी आशा पुराणी सारी दुनिया उत्ते सारी सृष्टी मानवता दा इक्को तेरे प्यार दा होवे भगत दुआर, भगवन सब नूं मिलके वजे वधाईआ। दूई दुवैत शरअ शरायत अन्दरों कढणी बाहर, मन कल्पणा कूड़ क्रिया करनी आप सफ़ाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दार, तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे एस धाम दा लेख लिखण लई आ गए इनस्पैक्टर साहिब ते नाल तहसीलदार, तसल्ली करके जाण चाँईं चाँईंआ। एह कोई ठग्गां चोरां दा नहीं बाज़ार, मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। एथे इक्को परम पुरख परमात्म नूं होणी निमस्कार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा होवे जै जैकार, तूं मेरा मैं तेरा साचा मेला मिले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह इक अख्वाईआ।

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत दस   गुड़गाउँ शहर   सेवा सिँघ दविंदर सिँघ रजिंदर सिँघ हरबंस सिँघ गुड़गाउँ आसा सिँघ खांग ✪

पंज तत कहिण प्रभ किरपा कर अपारी, अपरंपर स्वामी तेरी ओट तकाईआ। तूं आदि जुगादि शाहो भूप वड सिक्दारी, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण सरगुण निरवैर हो के पैज संवारी, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नव नौ चार पिच्छों आई तेरी वारी, वारस हो के वेखणा थांउँ थाँईंआ। जन भगतां आत्मा प्रभू ना रहे कँवारी, कायनात दे मालक लैणी अन्त कन्त परनाईआ। सच दुआर एकँकार चरण धूड़ बख्शणी छारी, टिक्के प्रेम प्यार लगाईआ। साडी आसा तेरे चरण कवल होवे वणजारी, दूसर हट्ट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा लाउणा जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कूड़ तृसना मेट दे अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। हँस बुद्धी बणा लै कग, काग हँस रूप वखाईआ। तेरी धारों रहे ना कोई अलग, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगत सुहेला दिसे ना कोए अल्पग, सरबग देणी माण वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा तक लै अन्त किनारा, जुग चौकड़ी पूरब ध्यान लगाईआ। साडी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। तेरा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी तेरा भेव कोए ना पाईआ। निगाह मार लै जुग चौकड़ी चारा, चारे खाणी खोज खुजाईआ। साडा आवण जावण बणया रिहा दुबारा, तन वजूदां रंग रंगाईआ। जे आत्मा तेरे सोहे बंक दुआरा, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। क्यों ततां लोकमात दुरकारा, भगतां तत मिले ना कोए वड्याईआ। अन्त वेख सुण साडी पुकारा, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं जुग जुग रहे सड़दे, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। वणजारे बणे रहे गोर मढ़ दे, माटी ख़ाक नाल वड्याईआ। कलयुग अन्त साडा नवां घाड़न घड़ दे, घड़न भन्न्हणहार तेरी सरनाईआ। आवण जावण लख चुरासी विच्चों कढ दे, नाता लोकमात रहे ना राईआ। पूरब लहिणा देणा पुरख बिधाते साडा छड दे, अगे आपणा रंग रंगाईआ। असीं चाहुंदे आत्मा नाल सचखण्ड दा सानूं पद दे, दरगाह साची सच तेरे विच समाईआ। हुक्म नाल साडा हिस्से नाल अध दे, बिन तन वजूद आत्म भगतां नाल लोकमात नज़र कोए ना आईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सानूं पिच्छे नालों लेखा वध्ध दे, वायदे गुर अवतार पैग़म्बरां

पूर कराईआ। असीं प्यारे आदि जुगादि तेरी यद दे, बिन भगतां तेरा बंस नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ । पंज तत कहिण प्रभ साडी जगत नहीं कोई वंड, हिस्सा नज़र कोए ना आईआ। असीं जाणा आत्मा नाल तेरे सचखण्ड, सच दुआरे सोभा पाईआ। फेर आउणा नहीं जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। साडा नाता नहीं कोई नव खण्ड, दीप सत्त ना रंग रंगाईआ। जे आत्मा आपणे नाल लई गंढ, क्यों जन भगतां ततां करें जुदाईआ। असीं कोई पूजा कीती नहीं करीर जंड, पाहन पत्थर ना सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह देणी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा जगत ना होवे मरना, मर जीवत रूप बणाईआ। निवास देणा आपणे चरणां, सचखण्ड मिले सरनाईआ। तेरी किरपा नाल तरना, तारनहार वेखणा चाँईं चाँईंआ। सच सुहाउणा आपणा घरना, गृह मन्दिर देणी माण वड्याईआ। असां तेरी मंज़ल चढ़ना, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तेरा ढोला पढ़ना, तेरी सिफ्त सलाहीआ । तेरा पल्लू फड़ना, दूसर कन्त ना कोए हंढाईआ। अन्त साचा घाड़न घड़ना, घड़न भन्नणहार आपणा रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी पूरी करनी आस, तृष्ना जगत ना कोए रखाईआ। तेरे गृह होवे निवास, घर सच मिले वड्याईआ। साडा लेखा रहे ना विच भरवास, माटी ख़ाक ना कोए चतुराईआ। जे आत्मा तेरा नूर तेरा सति प्रकाश, भगतां तत तेरा रंग समाईआ। जुग चौकड़ी असीं हुन्दे रहे उदास, गुर अवतार पैग़म्बरां अगे वास्ता पाईआ। साडा पन्ध मुकाउणा दस दस मास, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। साडी करनी बन्द खुलास, बन्दीख़ान्यां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सारे देंदे गए शाबाश, खुशीआं ढोले सोहले नाल जणाईआ। जिस वेले आवे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। उह लेखा मुकावे शंकर उत्ते कैलाश, राय धर्म दा पन्ध मुकाईआ। तुहाडी पूरी करे आस, तृष्ना आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं तेरे भगत मीत, मित्रा तेरी सरनाईआ । बिन तेरे साडी चले कोई ना रीत, रीतीवान नज़र कोए ना आईआ। किस दे नाल करें प्रीत, प्रीतम कहि ना तैनूं कोए बुलाईआ। बेशक तूं मालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी अख्वाईआ। बिन भगतां तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना गीत, गहर गम्भीर तेरे रंग ना कोए समाईआ। ना कोई तैनूं वसण देवे चीत, गृह मन्दिर ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के झोली ढाहीआ। जन भगत तत तेरे बरदे, जुग जुग सेव कमाईआ। सरगुण धार निरगुण

तैथों रहे डरदे, नित नवित सीस झुकाईआ। दु:ख कष्ट तेरे पिच्छे रहे झलदे, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। भिखारी बणे रहे तेरे दर दे, काया मन्दिर अन्दर अलख जगाईआ। आत्म धार परमात्म तैनूं रहे वरदे, जगत रंग ना कोए रंगाईआ। हुण मेहरवान हो के किरपा कर दे, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। इश्नान करवा दे आपणे सर दे, दुरमति मैल मैल धुआईआ। नज़ारे तक्कीए तेरे नरायण नर दे, नर हरि पड़दा देणा चुकाईआ। मालक बणीए तेरे सचखण्ड घर दे, पर्दा अन्दरों देणा उठाईआ। फेर जम्म के रहीए ना मरदे, जन्म मरन रहे ना राईआ। इक्को वार किरपा कर दे, कृपाल हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तत कहिण तेरे नूर विच जाईए रलदे, अगे लेखे रहिण ना कलयुग कल दे, कल कलेश लहिणा देणा देणा मुकाईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर दिल्ली धीर पुर विखे ✪

२७३ धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते रोवे धर्म, धर्म दी धार दए दुहाईआ। साची करनी दा करे कोई ना कर्म, कर्म कांड क्रिया कूड़ जगत हल्काईआ। माया ममता मोह दा घर घर होया जरम, जगत वासना बणी जणेंदी माईआ। दीन दुनी दृष्टी हो गई चर्म, चम्म दृष्टी विच सर्ब हल्काईआ। काया मन्दिर अन्दर सब नूं होया भरम, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। तेरा प्यार रिहा ना वरन बरन, पारब्रह्म ब्रह्म प्रभ मिलण कोए ना पाईआ। मेरे नेत्र लोचन नव खण्ड सत दीप खांदे शर्म, नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते धर्म मारदा चीकां, चारों कुण्ट दुहाईआ। नव सत्त वेख शरीका, सगला संग ना कोए निभाईआ। झगड़ा प्या जीव जीअ का, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। तेरा भेव जाणे कोए ना नीकन नीका, नर नरायण नज़र किसे ना आईआ। मेरा अन्तर पुरख अकाले होया फीका, अमृत रस ना कोए भराईआ। कूड़ कुड़यारे सब नूं लाईआं लीकां, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। ग्रन्थ शास्त्रां समझे कोए ना टीका, टीका टिपणी ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म रिहा पुकार, बिन रसना जिह्वा सुणाईआ। नेत्र नैणां रोवे ज़ारो ज़ार, हंझूआं हार बणाईआ। बिना ज़बान करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद भेव चुकाईआ। चारों कुण्ट होया धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कूड़ी क्रिया वेख पुरख नार, नर नरायण

तेरे रंग ना कोए समाईआ। वरन बरन धाहां रहे मार, सांतक सति ना कोए वरताईआ। लेखा रिहा ना तेई अवतार, पैग़म्बर रंग ना कोए रंगाईआ। गुरु गुरदेव ना कोए अधार, कुदरत दा लेख ना कोए मिटाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ करन विचार, सोच समझ कोए ना आईआ। अठसठ तीर्थ भज्जण वारो वार, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। साचा मिले ना किसे दुआर, दरगाह सच ना कोए वड्याईआ। दीनां मज़्ह्बां वेख खार, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ । तेरे नाम दे खण्डे खड़कदे नाल तलवार, तरकश तीर कमानां जोड़ जुड़ाईआ। मैं वेख होई बेज़ार, हैरानी विच दुहाईआ। अन्तर निरंतर रिहा ना किसे प्यार, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू मेरी नमों नमों निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। साचा मार्ग दे इक संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग रखाईआ। इक्को नाम दे जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। दुवैत लेखा रहे ना किसे दुआर, गृह मन्दिर कर सफ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर निरगुण धार कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। दिलां दे मालक दिलां दी पाउणी सार, दिलबर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म वेख लै रोंदा, बिन नैणां नीर वहाईआ । नव सत्त फिरे भौंदा, सच दुआर ना कोए टिकाईआ। तेरा ढोला फिरे गाउंदा, भज्जे वाहो दाहीआ। बल तके कलयुग काउँ दा, जो चार कुण्ट अपणा खेल खिलाईआ। प्यार रिहा ना किसे धरती माउं दा, ममता कूड़ जगत हल्काईआ। इन्साफ़ रिहा ना किसे न्याउँ दा, अदल सच ना कोए कमाईआ। शब्द रिहा ना वाहो वाहो दा, वाहिगुरु तेरे विच ना कोए समाईआ। सतिकार रिहा ना किसे पाउँ दा, चरण कवल ना कोए सरनाईआ। माण रिहा ना किसे राउ दा, रैहबर गुर अवतार देण गवाहीआ। वणज दिसे ना किसे शाहो दा, साची वस्त ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू धर्म मेरे विच छुपदा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस रूप धरया चुप दा, रसना जिह्वा मुख ना सिफ्त सालाहीआ। तूं खेल वेख लै कलयुग अन्धेरे घुप्प दा, कूड़ क्रिया नाल हल्काईआ। प्यार रिहा ना पिता पुत दा, मात पित रोवण मारन धाहीआ। वक्त सुहञ्जणा दिसे किसे ना रुत दा, रुतड़ी सच ना कोए महकाईआ। झगड़ा तक लै काया पंज भुत दा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेखणा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे आस ना कोए रखाईआ। झट नारद आया नी धरनीए तूं क्यों कुरलाउँदी, की तेरी वड्याईआ। किस साहिब नूं सुणाउँदी, दुक्खां भरी दएं दुहाईआ। की वड्याई तेरे थांउँ दी, थनंतर दे सुणाईआ। की खेल अगम्म अथाहो दी, बेपरवाह की जणाईआ। की आशा रखी सच्चे शाहो दी,

शहिनशाह अगे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे धरनी मैं सुणीआं तेरीआं गल्लां, जो प्रेम नाल सुणाईआ। जिस ने सच सिँघासण मल्ला, सुखआसण बैठा धुरदरगाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा अल्ला, अलाही नूर इक अख्वाईआ। उह आदि जुगादी इकल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जिस दा लहिणा देणा जलां थलां, महीअल वेखे धुरदरगाहीआ। उहदा सब तों वखरा हल्ला, हुलड़बाज़ी समझ किसे ना आईआ। जो करदा वला छला, अछल छल आपणी खेल खिलाईआ। जिस ने सतिगुर शब्द संदेशा घल्ला, पैग़ाम नूर अलाहीआ। उह वेखणहारा काया माटी खल्ला, ख़ालक ख़लक खोज खुजाईआ। उह वसे निहचल धाम अटला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस ने कमलीए तेरे उत्ते भगत दुआर वसाउणा महल्ला, महल धुर दा आप प्रगटाईआ। सति धर्म नूं सति दा देवे फला, सतिजुग सच रंग रंगाईआ। जिथ्थे कृष्ण काहन ने बंसरी नाल हथ्थ फड़ वजाया टल्ला, शंख नाद धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए तूं की प्रभू नूं दस्सदी, कमलीए दे जणाईआ। तूं जुग चौकड़ी उहदे चरणां हेठ वसदी, नित नवित सेव कमाईआ। तूं भरी प्रेम रस दी, सुख सांतक रूप समाईआ। तेरी सिफ्त वड्याई जस दी, ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। तूं बिन कदमां तों नसदी, भज्जें वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल रिहा खिलाईआ। नारद कहे धरनीए मैं फड़ के हलूणा देवां तैनूं गुट्ट, पोटे सहिज नाल दबाईआ। तूं मेरी बोदी विच्चों इक वाल पुट्ट, दुःख दर्द ना लागे राईआ। फेर उस नूं प्रभ दे चरणां विच सुट, सोहणी गणत गणाईआ। जेहड़ी प्रीती धर्म दी दीन दुनी नालों गई छुट, छुटकी लिव दए लगाईआ। फेर आपणे संवार बुट, बुल्ह्लां नाम रंग रंगाईआ। फेर आपणी आशा अन्दरों कढ फुट, बिन रसना ढोले गाईआ। तेरा भाग ना जाए निखुट, प्रभ देवणहार वड्याईआ। औह तक लै कलयुग कूड़ कुड़यार दी चारों कुण्ट लुट, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते धर्म होणा उग्घा, उगण आथण मिले वड्याईआ। तेरा वक्त सुहञ्जणा पुग्गा, पूरब लेखा वेखण पाईआ। तेरा कर्म कांड दा लहिणा बुज्झा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तूं क्यों नेत्र रोवें नैण मूंद वसुधा, सुध साची सच लै अंगड़ाईआ। तेरे उत्ते होणा युद्धा, चारों कुण्ट दुहाईआ। फेर भगत दुआर दा समझणा मुद्दा, मुदतां दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे धरनीए तेरा धर्म जावे उठ, आपणी लए अंगड़ाईआ। तूं वेख लै चारे

गुठ, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। पवित्र दिसे ना कोई मिट्टी ख़ाक मुठ, चारों कुण्ट कूड़ हल्काईआ। तेरे तेरे नालों रहे रुठ, रुठयां सके ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारद मैं वेख के होवां दुखी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। प्रभू प्यार विच दिसे कोई ना सुखी, सति विच ना कोए समाईआ। धर्म दी धार रही ना मुखी, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। जगत अन्धेरा होया घुप्पी, सति सच ना कोए रुशनाईआ। मेरी आशा धर्म धार दी भुक्खी, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। नारद कहे धरनीए मैं तेरे दुक्खां वेख हसणा, तालीआं रिहा वजाईआ। चारों कुण्ट नसणा, भज्जां वाहो दाहीआ। तकां रैण हनेरी मस्सणा, जो चारों कुण्ट आपणा रंग रंगाईआ। वेखां खेल अलख अलखणा, जो करता रिहा कराईआ। मेरा हुक्म धुर दा इक्को जो प्रभ दा भेव खोल्ह जिस रचाँई रचना, जगत जुगत वंड वंडाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मंनयां बचना, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे नारद मैं इक दी रखां टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जो बुद्धी करे बिबेक, पतित पुनीत बणाईआ। अग्नी तन ना लाए सेक, ततव तत ना कोए जलाईआ। चरण कवल बख़्शे आपणी एक, एकँकार दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं तैनूं करां ख़बरदार, बेख़बरे ख़बर जणाईआ। उठ वेख अगम्मा यार, जो मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ीआं आपणा हुक्म वरताईआ। सो लहिणा देणा पूरब लेखे लाए सर्ब संसार, संसा जगत रहे ना राईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कर्ज़ा दए उतार, मकरूज आपणा हुक्म वरताईआ। सो तेरे उत्ते धर्म दा कर पसार, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। पहलों उस नूं डण्डावत बन्दना धूड़ी विच कर निमस्कार, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जिस ने सच दुआर खोल्ह्या आपणी धार, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। भगतां दा बण आप सिक्दार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेखणहारा पावे सार, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तेरे उत्ते सुहञ्जणा करना दिल्ली दरबार, दरगाह सच दा सच रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते भगत दुआर दी रखी नींह, नेंहों भगतां नाल रखाईआ। सति सच दा बीज के बीअ, पत्त टहणी आप प्रगटाईआ। रवीदास दा लहिणा साढे तिन्न हथ्थ सींअ, दीन दुनी वंड वंडाईआ। जो लेखा जाणे लख चुरासी जंत जीअ, जग जीवण दाता इक अख्वाईआ।

उहदा लेखा जाणे कोई की, कातब लिखण कोए ना पाईआ। जिस दा इशारा गुरदास ने कीता वीह इकीह, बीस बीसा अगम्म अथाहीआ। जिस दी सब तों वखरी लीह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए गुर अवतार पैग़म्बरां वेख लै हस्तीआं, जो नूर जोत रुशनाईआ। भगतां चढ़दीआं वेख लै मस्तीआं, मस्त खुमारी इक रखाईआ। तेरे गृह अन्दर प्रभू प्यारयां दीआं रखीआं गईआं असतीआं, अर्थी जगत ना कोए उठाईआ । इन्हां दीआं कीमतां नहीं कोई सस्तीआं, जगत कीमत ना कोए रखाईआ। एह चारों कुण्ट तीर अणयाले कसदीआं, बिन तरकश हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी डसदीआं, विख नव सत्त नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनी तूं लेखा तक पुराणा, तैनूं दयां सुणाईआ। जो मनी सिँघ दिता ब्याना, उगलां दस मुख विच टिकाईआ। तेरी खेल श्री भगवाना, मेरी कलम ना सके समझाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मैं सेवक तेरा निमाणा, निव निव लागां पाईआ। तेरे हथ्थ विच कलम काना, कायनात दा तेरा रंग चढ़ाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना, बलधारी इक अख्वाईआ। उह वेख लै मैं वी जमन किनारे लाया निशाना, निशाना तेरे नाल बणाईआ। जिस कारन तेरा लहिणा देणा होणा जगत जहाना, सहिज नाल दयां दृढ़ाईआ। तेरे लिखारीआं बध्धा होणा गाना, शहादत शहीदी जगत वाली समझाईआ। एह कोई कौम मज़्हब दा बणना नहीं मकाना, हद्दां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मनी सिँघ कहे मैं मारीआं नौ नौ लकीरां, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस वेले भगत दुआरा करे तामीरा, तरह तरह दा खेल खिलाईआ। फेर झगड़ा पैणा ग़रीबां अमीरां, नौ खण्ड पृथ्मी पए दुहाईआ। किसे नूं सार ना आए आपणे शरीरा, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। सब दीआं बदल जाण ज़मीरां, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। इहो आशा रख के गया कबीरा, हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। रवीदास ने हथ्थ फड़ कसीरा, कसम खा के तेरे चरणां विच टिकाईआ। तेरा भगत दुआरा नौ खण्ड पृथ्मी दी होणी इक जागीरा, दूजा वारस नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे बदलणीआं सब दीआं तकदीरां, तदबीर समझ कोए ना पाईआ। जिस दे लेखे विच लेखे लग्गणा गुरमुख हीरा, हरिजन आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए आह वेख मैं तैनूं पत्रा वखावां पाड़, जो बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। जिस दा ना कोई पिच्छा ना अगाड़, अगे समझ ना कोए समझाईआ। जिस ने नीहां रखण कारन तेरा सीना दिता पाड़, सोहणी वंड वंडाईआ। उस

ਦਾ लेखा फेर समझावांगा सतारां हाढ़, हाढ़े कढण वालीए तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जिस दा प्रकाश होणा जंगल जूह उजाड़, पहाड़ां डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा मैं विचारी भोली, भुल विच आपणा झट लँघाईआ। मैं आदि जुगादि गोली, जुग जुग सेव कमाईआ। मैं सुणनहार गुर अवतार पैग़म्बरां बोली, जो मेरे उत्ते गए सुणाईआ। मैं कलयुग अन्त कूड़ कुड़यार वेख के डोली, धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। धन्न भाग जे तूं भेत रिहा खोल्ही, पर्दा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला ल्या मिलाईआ। नारद कहे धरनीए आ इक दूजे नाल गल्ल करीए गुज्झी, जगत समझ ना कोए समझाईआ। धरनी कहे नारदा मैनूं इक गल्ल सुझी, सहिज नाल दृढ़ाईआ। नारद कहे धरनीए हुण ते वेला कलयुगी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। धरनी कहे नारदा किसे दी पवित्र रही ना बुद्धी, बुद्धहीण दिसे लोकाईआ। नारद कहे धरनीए, मेरे अन्दर हुन्दी गुदगुदी, मैनूं हासा रिहा आईआ। उह निगाह मार लै पिछली औंध सब दी पुग्गी, अगे पन्ध ना कोए वधाईआ। दीन दुनिया कूड़ दे कीचड़ खुभी, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मैं तैनूं हौली जेही मारां निक्का जेहा धक्का, धकेल के दयां जणाईआ। तूं नहीं वेखदी की तेरे नाल वायदा पक्का, कौल इकरार की नज़री आईआ। नाले लेखा तक लै की लहिणा पैसा टका, दीन दुनी वंड वंडाईआ। फेर निगाह मार लै जो मालक हकीकी हका, साहिब इक गुसाँईआ। जो तेरा बणया सका, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा संग इक रखाईआ। नारद कहे धरनीए मैं तेरे उत्ते किड्डा लाया भाग, भागवाने तैनूं दयां जणाईआ। जगत दीए सुतीए जग विच्चों जाग, जागरत जोत नेत्र नैण वेख चाँईं चाँईंआ। तेरे उत्ते सति दा सच जग्या चराग़, बिन तेल बाती डगमगाईआ। तेरी बुझावणहारा आग, अग्नी तत गंवाईआ। उस साहिब दी सरन लाग, जो सिर सिर रिज़क सभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारदा मैं उस दा करां शुकराना, निव निव सीस झुकाईआ। जो पहर के अगम्मी बाणा, बाण अणयाले तीर चलाईआ। जिस द्वापर दा बदल दिता ज़माना, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। तेरा पवित्र कराया अस्थाना, सोहणी दिती वड्याईआ। भगतां नाल जुड़ाया याराना, प्रीती सके ना कोए तुड़ाईआ। धरनी कहे नारदा मैनूं पता नहीं हरिजन ल्याया किस बहाना, बाहों फड़ फड़ आपणा संग बणाईआ। जिन्हां दिवस रैण सेवा करदयां खुशीआं दा गाया तराना, तरह तरह दे गीत दिते

दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते सति दा सच दा झुला के निशाना, निशान दीन दुनी दिते बदलाईआ । मैं इन्हां दा करां माणा, निमाणी हो के सीस झुकाईआ। जिन्हां मेरे सीने उत्ते बहि के खाधा खाणा, खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा सच आप प्रगटाईआ। धरनी कहे मैं भगतां करां धन्नवाद, खुशीआं विच सीस निवाईआ। भगतो तुसां मेरा खेड़ा करना आबाद, जिथ्थे दीन दुनी मिले वड्याईआ। जिस दा नाम रहे आदि जुगादि, जुग चौकड़ी वजे वधाईआ। मेरा असली रूप फेर बणेगा कलयुग दी धार तों बाद, सतिजुग आपणा रंग प्रगटाईआ। जिस वेले सारी सृष्टी दा होया इक रिवाज, इक्को मार्ग दीन दुनी चले चाँईं चाँईंआ। इक्को नाम शब्द दी आवेगी आवाज़, इक्को सरोता होवे धुर दा माहीआ। इक्को शब्द गोबिन्द दा होवे बाज़, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। मैं तुहाडा शुकर करां जिन्हां ने भगत दुआर सुहाया पहलों विच पंजाब, फेर दिल्ली दुआर दिती वड्याईआ। जिथ्थे साहिब सतिगुर दे शब्द दा होणा राज, रईयत नौ खण्ड पृथ्मी बैठे सीस निवाईआ। जिस दा शाह सुल्तान करनगे काज, करनी दा करता आपणे हुक्म विच भुआईआ। तुसीं प्रभू दे भगतो मेरे वड्डे मैं तुहानूं करां आदाब, धरनी कहे मैं निव निव लागां पाईआ। जिन्हां ने मेरा पूरा कीता ख्वाब, माझा मालवा दुआबा जम्मू आया चाँईं चाँईंआ। पर याद रखयो एथे सारी सृष्टी वास्ते धर्म दी खुल्ह्रेगी किताब, जिस दा मज़मून जगत कानून ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे भगतो तुसां मेरे उत्ते कोई सुट्टी नहीं मिट्टी, जगत घट्टा ना वंड वंडाईआ। मैं इथे सुख दे आसण उत्ते लिटी, सोहणी सेज सुहाईआ। क्यों तुहाडे अन्दर प्रभू दे प्यार दी धार वेखी चिट्टी, जो चिट्टे उत्ते काले अक्खर रिहा लिखाईआ। जिस दे कोल दोहथ्थड़ा मार के पिट्टी, पटने वाला नाल मिलाईआ। उन्हृ मैनूं इशारा दिता जा भगतां कोलों वेख लै हाहे उत्ते लग्गी टिप्पी, होड़ा सस्से वाला नाल मिलाईआ। मैं जां निगाह मारी उन्हां दे अन्दरों आवाज़ आई मिट्ठी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा ढोला कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नवां खण्डां दे लेख लिखाउणे वख वख, नौ दरवाज़े नवां खण्डां दा राह तकाईआ। सत्तां दीपां ने सति दा करना पक्ख, सत रंग दा निशाना दए गवाहीआ। बाकी सृष्टी दे लाउणे भक्ख, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मेरे धर्म दुआर दी गिणती कोई कर नहीं सकेगा करोड़ी लख, टकयां वंड ना कोए वंडाईआ। जगत दीआं धारां दा होवेगा इक्ट्ठ, भज्जण सारे वाहो दाहीआ। कोई समां नहीं बहुतां ते साल सारे अठ्ठ, खेल वेखणा चाँईं चाँईंआ। शुकर तुहाडा तुसां मेरी कीती चठ्ठ, जगत दी रीती धुर दी चली आईआ। एह कोई जगत वाला नहीं मठ, दयोरयां वंड ना कोए वंडाईआ।

जिस ने सब दी गेड़ देणी उलटी लठ, गेड़ा आपणे घरों चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक वड्याईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरी इक इक चूंढी मथ्थे नूं ला के जायो ख़ाक, जिथ्थे गुरमुखां दीआं असथीआं दितीआं दबाईआ। फेर सुंघ के जायो नाल नाक, महक अन्दरे अन्दर टिकाईआ। नाले कहिंदे जायो प्रभू ने पूरा कीता वाक, जो कृष्ण आसा गया रखाईआ। हस के कहिंदे जायो सारी सृष्टी दा खुल्ह्या ताक, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। भगतां नूं मारदे जायो हाक, मेला मिल्या चाँईं चाँईंआ। सब तों बण के जायो चालाक, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जो दर आए सब दे रूह बुत हो गए पाक, प्रभू देवे माण वड्याईआ। सतिजुग विच सच समझयो एहदे विच्चों अगम्मी निकलदी रहेगी लाट, नूर जोत जोत रुशनाईआ। भगतां दी धार विच्चों निकलेगी पाट, पटने वाला वेखे चाँईं चाँईंआ। एह होवेगा दीन दुनी दा घाट, पतण इक्को इक सोभा पाईआ। सब ने धीरज रखणा हाठ, मेरी धर्म नाल दुहाईआ। धरनी कहे भगतो मेरे प्यार दे बचनां दी घुट्ट के बन्न्हणी गाठ, राह विच जांदयां विसर कोए ना जाईआ। कदे ख्याल नहीं करना भगत दुआरे आ के असीं सुते नहीं उत्ते खाट, सोहणा आसण ना कोए लगाईआ। जे कोई मैनूं पुछे धरनी कहे मैं खुशीआं विच दस्सां बात, बातन भेव खुल्हाईआ। जिस वेले मेरे उत्ते भगत सौंदे मेरी काली तों चिट्टी हो जांदी रात, बिन सूर्या चन्द रुशनाईआ। तुसां मैनूं दिल्ली दुआर आ के प्यार दी दिती दात, मैं आपणी ख़ाली झोली लई टिकाईआ। क्यों तुहाडा ना कोई मज़्हब ना कोई ज़ात, आत्मा परमात्मा मिल के खुशी बणाईआ। मैं सच दस्सां जिस वेले तुहाडे आटे वाली मेरे सीने उत्ते हिलदी परात, पुरातन लेखे याद कराईआ। क्यों बावन ने बलि नूं सहिज नाल दिता सी आख, शब्दी शब्द शब्द कीती शनवाईआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरी होई रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दा धर्म नालों छुट्टया नात, नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। फेर आवेगा कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। खेल करेगा विच लोकमात, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं मिन्नतां करां अगे हज़ूर, निव निव सीस झुकाईआ। मेरे साहिब इन्हां दी सेवा करीं मन्ज़ूर, जो चल के आए पाँधी राहीआ। जिन्हां पैंडे मारे दूर, भज्जे वाहो दाहीआ। कोटन कोटि जन्म दे पिछले बख़्श देणे कसूर, अगे आपणा रंग रंगाईआ। एह कोई जगत चाकर नहीं मज़दूर, भगत सुहेले तेरे सोभा पाईआ। एस भगत दुआर पिच्छे जगत जहान उत्ते कर देणे मशहूर, देश परदेशां विच नाम करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे भगतो तुहानूं नहीं पता रोज़

सतिगुर तुहाडे नाम रिहा लिखदा, दिवस रैण हिसाब लगाईआ। सिदक परख्या साचे सिख दा, जो गोबिन्द गया समझाईआ। नाले कौल पूरा कीता भविख दा, अवतार पैग़म्बरां बारां दिन नाल रखाईआ। तुहाथों सहारा ल्या नींह वाली इट्ट दा, जगत रीती जुगत नाल चलाईआ। जिस दा खेल शब्दी धार अगम्मी चिट दा, जगत जहान शास्त्र भेव ना कोए समझाईआ। उह आपणा खेल आपे नजिठ्ठदा, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। सदा सहारा बणया रहे तुहाडी पिठ दा, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडे अन्दर पैंडा सिर्फ़ सवा गिठ दा, दो जहानां पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे जन भगतो तुहाडे चरण बड़े पवित्र, जो मेरे उत्ते टिकाईआ। क्यों प्रभू तुहाडे पिच्छे आया मेरा मित्र, तुहाडे पिच्छे आपणा फेरा पाईआ। जिस ने भगत दुआरे दा बणा देणा सोहणा चित्र, चात्रिकां दी तृखा दए बुझाईआ। तुहाडे प्रेम विच्चों आए निकल, बाहरों लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस नूं झुकणे लोक सितल वितल इतल, बैठण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे भगतो बणीए भाई भैण, प्रेम नाल जणाईआ। तुहाडा मेरा सांझा होवे नैण, अक्ख अक्ख विच रखाईआ। मुहब्बत विच रहे ना कोए त्रफैण, दुतीआ वंड ना कोए वंडाईआ। जो इशारा दिता बाल्मीक विच रमायण, मेरे महबूब ने पूरा दिता कराईआ। जो आख्या नाई सैण, सैनत नाल समझाईआ। जो रवीदास दस्सया गहण, रस्ता रसत्यां विच्चों प्रगटाईआ। अगे दिसे ना कोई परायण, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं कोझी कमली शुदैण, धरनी हस के रही सुणाईआ। मेरे उत्ते पता नहीं किन्नी कु सृष्टी नूं खा गई मौत लाड़ी डैण, शाह सुल्तान बचया रहिण कोए ना पाईआ। मैं कहां भगतो तुहाडे धन्न भाग जिन्नां नूं आप आया लैण, आप आपणा फेरा पाईआ। तुहाडे पिच्छे वीरो उहनूं कदे नहीं आउँदा चैण, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। क्यों उस आपणी किरपा नाल तुहानूं तारना विच्चों काली रैण, भगती चरण प्रीती झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दुआर इक सुहाईआ। धरनी कहे भगतो मैं तुहाडा ज़रूर करांगी दरस, दरस प्यासी नाउँ धराईआ। क्यों एह मेरे शहिनशाह दा ख़ुशीआं वाला बरस, दहि दिशा गंढु पवांयदा। मेरी भटकणा मिटे हरस, हवस अवर ना कोए जणांयदा। तुसां मेरे उत्ते करके जाणा तरस, तुहाडी रहमत प्रभ दा नूर नज़री आंयदा। बेशक दुनिया कहिंदी उह दिसे उत्ते अर्श, मैनूं तुहाडे अन्दर दिसे सोभा पांयदा। वेख्यो मात पित भैण भ्रा नार कन्त पिता पूत कदे ना कहि दयो साडा होया खर्च, गिणती गणत ना कोए गणांयदा। एह आशा रखी सी यसूह ने जिस वेले मेरा लेखा लगणा नालों चर्च, चार जुग दे अन्त आपणा

२८१
२४

मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरतांयदा। धरनी कहे जन भगतो मेरी निक्की जेही अरज़ोई, अरज़ां करन वाल्यो दयां जणाईआ। जुगां विच्चों भगती करके प्रभू दा भगत बणया कोई कोई, कोटां विच्चों कोई नज़री आईआ। हुण तुहाडी आपे सुरत उठा लई सोई, सुत्तयो तुहानूं आप जगाईआ। तुहाडी आत्मा आप मोही, मुहब्बत आपणे नाल जणाईआ। जिन्हां नाल जाए छोही, शौहर बांका आपणे रंग रंगाईआ। तुहाडी दुरमति मैल जाए धोई, धोबी हो के खुम्ब पटका नाम वाला लगाईआ। अमृत रस जाए चोई, जगत तृष्ना भुख मिटाईआ। लेखे लाउँदा जाए पेशीनगोई, गुर अवतार पैग़म्बरां मेल मिलाईआ। सच पुछो धरनी कहे इहो जेही अगे कदी नहीं होई, अणहोणी आपणी खेल खिलाईआ। जिस दी याद विच सारे करदे गए दरोही, दो जहानां दा मालक आपणा वेस वटाईआ। तुसीं भगत सुहेले तुहाडी आशा सदा रहे नवीं नरोई, निरगुण आशा आपणे नाल मिलाईआ। किसे दी पत जाए ना खोही, पत पतिवन्ता हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा गृह इक सुहाईआ। जन भगतो तुहाडा प्यार गहरा सागर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो रखया विच काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ आप टिकाईआ। दर आयां नूं देवे प्रभू आप आदर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडा निर्मल कर्म करे उजागर, तुहाडी उजरत आपणे लेखे पाईआ। तुसीं सच दे बणे सौदागर, वस्त नाम तुहाडे हट विकाईआ। बड़े सूरबीर बणे बहादर, योद्धे आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धर्म दी धार करे आदल, इन्साफ़ विच पिछले कर्म कुकर्म माफ़ सर्ब कराईआ।

✪ २१ माघ शहिनशाही सम्मत दस मेरठ छाउणी महिन्दर सिंघ, गुरबचन सिंघ नयाशाला, विश्वा मित्र गुरदीप सिंघ प्रेमी देवी हँस राज मुलख राज मेरठ ✪

पंज तत कहिण प्रभ धुर दे कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। दीन दयाल कलयुग वेख अन्धेरी राती, नव खण्ड विच वरभण्ड, ध्यान लगाईआ। धर्म रिहा ना नव साती, चार वरन अठारां बरन रहे कुरलाईआ। आत्म परमात्म बणे ना कोए जमाती, विद्या निरअक्खर धार ना कोए समझाईआ। अमृत मिले ना बूँद स्वांती, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ

चारों कुण्ट अन्धेरा जग, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरी धार तैथों होई अलग, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान सूरा सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। सृष्टी दीन दुनी वखावे इक्को पग, मार्ग राह रैहबर इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा नेत्र वगे नीर, चार कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। वजूद धरे ना कोई धीर, धर्म धार ना कोए प्रगटाईआ। असीं कोझे कमले होए हकीर, शाह फ़कीर सार कोए ना पाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए बेनज़ीर, निज लोचन नैण ना कोए रुशनाईआ। जो संदेशा दे के गया भगत सुहेला जगत कबीर, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे धुर अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। तेरा संदेशा सुणीए पैग़ाम, पैग़म्बरां तों बाहर कर शनवाईआ । भेव खुल्हा दे जगत अन्धेरा शाम, शमअ नूर कर रुशनाईआ। साडा लेखा पूरा कर तमाम, तामस तृष्ना मेट मिटाईआ। साडा इक्को कलमा होए कलाम, कायनात इक पढ़ाईआ। इक्को संदेशा देणा अगम्मे नाम, नाउँ निरँकार इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ झगड़ा मेट विच दीन दुनी, निरगुण सरगुण हो सहाईआ। तूं मालक कुन कुनी, ख़ालक ख़लक इक अख्वाईआ। साडी पुकार निरगुण धार सुणीं, अणसुणत तेरी सरनाईआ। हरि हिरदे अन्तर तेरे नाम दी वजे धुनी, धुन आत्मक राग देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तेरी इक्को होवे तबलीक, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। मानस मानव कर करीब, करबले दा लेखा रहे ना राईआ। नौ सत्त दे तरतीब, तरीका धुर दा इक दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना अमीर ग़रीब, गुरबत सब दे अन्दरों बाहर कराईआ। लेखा वेख लै कुरान मजीद, जो तीस बतीसे नाल समझाईआ। पंज तत कहिण तेरे प्यार विच हुन्दे रहे शहीद, शहादत जगत वाली रखाईआ। साडी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना तेरे अगे टिकाईआ। असीं तन वजूद तेरे अज़ीज़, आलीज़ाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण जे भगतां आत्मा दएं अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। क्यों नहीं साडा खुशी करदा बन्द बन्द, जो बन्दगी तेरी विच समाईआ। असीं वजूद माटी ख़ाक तेरे सोहणे चन्द, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा दर्शन पाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची साडी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ।

सच दुआर तेरा आत्मा नाल आईए लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। साडी ग़मी मेट दे रंज, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं जुग जुग रखीआं आशा, अवतार पैग़म्बर गुर नाल मिलाईआ। जो शब्दी धार देंदे गए दिलासा, कलमा कलम्यां विच्चों समझाईआ। कुदरत दा कादर तुहाडीआं पूरीआं करे आसां, खुशीआं आपणा रंग रंगाईआ। मकबरयां विच तक लै लाशां, लाशरीक पर्दा आप उठाईआ। साडा वेख खेल विच भरवासा, मढ़ी गोरां नाल वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण प्रभ कलयुग वेख लै अन्त किनारा, नव सत्त ध्यान लगाईआ। साडा दिसे ना कोए प्यारा, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अँधयारा, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। लहिणा पूरा कर दे पैग़म्बर गुर अवतारा, जो भविख्तां विच आसां धुर दीआं गए रखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरा तक्कीए इक दुआरा, गृह मन्दिर अन्दर इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे नूर जोत होवे उज्यारा, बिन तेल बाती दीपक दीआ डगमगाईआ। तूं शाहो भूप नज़री आएं सिक्दारा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। साडी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे अन्त कन्त भगवन्त आपणी धारा, धरनी धरत धवल धौल लेखा रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द दा शब्दी दे इशारा, सैनत अवर ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण वज़ीउल ज़बा ज़ूई नवल अल्ला मवल महुम्मदे दुआ नूरे खुदा खुद मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। पंज तत कहिण प्रभ निगाह मार लै चौदां लोक, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। तेरा सुणीए इक सलोक, सोहला ढोला अनबोलत बोला देणा जणाईआ। जिस दा हुक्म सके कोई ना रोक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तेरा प्रकाश तक्कीए दो जहानां निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब नूं आपणी बणा लै गोत, गौतम दा लेखा पूरा देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं पुतले माटी ख़ाक, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ाईआ। साडा अन्तर खोल्ह दे ताक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तन वजूद कर दे पाक, पतित पुनीत दया कमाईआ। तेरे सेवक बणीए चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। मनुआ मन रहे ना आक, तृष्ना कूड़ ना कोए हल्काईआ। शब्द घोड़ चढ़ाउणा राक,

शाह अस्वारे दया कमाईआ। साडा पन्ध मुकाउणा वाट, लेखा अगे देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा करना आप मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दा होवे जाप, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। त्रैगुण अतीते मेटणा ताप, त्रैगुण दा लेखा देणा चुकाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरा करना वाक, वाकया वेखणा चाँईं चाँईंआ। तेरे दरस दा मेला होवे नाल इत्फ़िाक, इत्फ़िाकीआ आउणा वाहो दाहीआ। जगत जहान मुकाउणी वाट, बिन कदमां कदम टिकाईआ। तेरा दर्शन तक्कीए नूर जोत ललाट, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मेला आप मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा करना घर सुहञ्जणा, साढे तिन्न हथ्थ देणी वड्याईआ। तूं आदि पुरख निरञ्जणा, अपरम्पर बेपरवाहीआ। सदा सुहेला दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। कलयुग नेत्र नाम दा पा दे अंजणा, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। ठाकर स्वामी बणना सज्जणा, मीत हो के वेख वखाईआ। अन्त कन्त जगत जहान रखणी लजणा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां पड़दा कजणा, मेहरवान दया कमाईआ। तेरा दीपक जोती इक्को जगणा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। भगतां कूड़ बुझाउणी अगणा, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। चरण प्रीती विच करना मग्ना, चरणोदक नाम मुख देणा चवाईआ। तूं नूर अलाही सब दा रब्बना, यामबीन तेरी वड्याईआ। तूं गोपाल मूर्त मदना, स्वामी इक अख्वाईआ। लेखे लाउणा आहला अदना, शाह हकीरां इक्को घर वसाईआ। जन भगतां खुशीआं नाल तैनूं सद्दणा, होका देण थांउँ थाँईंआ। साडा लहिणा देणा चुकाउणा काया माटी पंज तत बदना, बदी दा डेरा ढाहीआ। तूं निरगुण निरवैर नूर अलाही रब्बना, यामबीन तेरी सरनाईआ। साडी आवण जावण लख चुरासी मेटणी हद्दना, हदूद आपणी देणी वखाईआ। जिथ्थे इक्को डंका वजणा, दूसर अवर ना कोए शनवाईआ । इक्को दीपक जोत जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी तेरे अगे अरदास, बेनन्ती चरण कवल टिकाईआ। साडा जन्म करना रास, रस्ता रैहबर देणा वखाईआ। निरगुण धार वसणा पास, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जाते देणा प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। साडा लेखे लाउणा स्वास स्वास, पवण पवणां रंग रंगाईआ। तूं शाहो भूप अबिनाश, करनी दा करता इक अख्वाईआ। साडा लेखा मुकाउणा दस दस मास, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। झगड़ा रहे ना नाल शंकर कैलाश, लाड़ी मौत ना कोए चतुराईआ । राय धर्म ना करे उदास, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुरु साडे होणा साथ, सगला

संग बणाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाल आदि जुगादि समराथ, समरथ तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण तेरे अगे प्रभू जोड़ीए हाथ, निव निव सीस झुकाईआ। असीं ग़रीब निमाणे अनाथां अनाथ, दीनन तेरी ओट तकाईआ। तूं गहर गवर रघुपति रघुनाथ, रैहबर तेरी इक सरनाईआ। साडा लेख बदल दे मस्तक विच्चों माथ, मथन दे कराईआ। सो लहिणा तक लै जो आशा रख के गया राम बेटा दसराथ, बनवासी आपणा ध्यान लगाईआ। जो कृष्ण संदेशा अर्जन दिता साख्यात, सहिज नाल दृढ़ाईआ । जिस वेले कलयुग होवे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म टुट्टे नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। धर्म दा धर्म पाए वफ़ात, कूड़ कुड़यारा भज्जे वाहो दाहीआ। उस वेले बिना प्रभू तों पंजां ततां लेखा चुक्के ना कोई लोकमात, मातृ भूमी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी निरगुण धार एकँकार परवरदिगार सांझे यार पुछ वात, वतनां दे मालक बेवतनां पार कराईआ।

✪ २३ माघ शहिनशाही सम्मत दस इकबाल सिँघ, शकुंतला देवी, मंगला देवी नज़ीबाबाद यू० पी० ✪

पंज तत कहिण प्रभ अन्तर निरंतर दे वैराग, वैरी अन्दरों काया मन्दिरों बाहर कढ्ढाईआ। सुरती शब्द खुल्हा जाग, अनरागी आपणा राग नाद धुन कर शनवाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत करना चाँई चाँईआ। फड़ फड़ हँस बणा काग, काग हँस रूप बदलाईआ। साडे उत्तम कर भाग, भगवन देणी माण वड्याईआ। अन्तर निरंतर दीपक जोत जगा चराग़, अन्ध अज्ञान दूर कराईआ। सच सरनाई जाईए लाग, लग मातर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर मेट अन्धेरा, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। इक्को रूप दरसा दे सञ्झ सवेरा, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। भेव खुल्हा दे तेरा मेरा, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। आत्मा बख्श दे चाउ घनेरा, परमात्मा मिल के वजे वधाईआ। भेव रहे ना गुरु चेरा, चेला गुर रूप दरसाईआ। दर वखा दे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पंज तत कहिण साडे उत्ते कर दे मेहरा, मेहरवान महबूब होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी सरनाईआ। वस्त अमोलक दे दाती, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। घर दीपक जोत जगा बाती, बिन तेल बाती डगमगाईआ। अमृत बूँद बख्श

स्वांती, निझर झिरना कवल नाभ झिराईआ। शब्द संदेशा दे दे पाती, पत्रका निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। तूं मेहरवान महबूब कमलापाती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। साडे अन्तर मेट अन्धेरी राती, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बिन तन वजूद सानूं ला ला सीने नाल छाती, छत्रधारीआं पन्ध मुकाईआ। तेरे चरण कवल ज़िंदगी नाल हयाती, जीवन तेरी झोली पाईआ। इक्को वक्त सुहा दे गृह मन्दिर प्रभाती, सँध्या लोड़ रहे ना राईआ। आत्म धार जोड़ लै नाती, ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। तूं परम पुरख बिधाती, बिध आपणी देणी समझाईआ। दर्शन बख़्शणा इक इकांती, एकँकार तेरी ओट तकाईआ। अन्त काल पुछणी साडी वाती, बेवतन हो के दईए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ तूं मालक पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। साडी पूरी करनी आस, तृष्ना तेरे चरण टिकाईआ। साडा लहिणा देणा तक लै जंगल जूह विच भरवास, टिले पर्वतां ध्यान लगाईआ। साडा लहिणा नाल पृथ्मी आकाश, अप तेज वाए मिल के दईए दुहाईआ। अन्तर निरंतर साडा लेखे लाउणा स्वास स्वास, साह साह तेरे विच समाईआ। झगड़ा रहे ना दस दस मास, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। घर ठाकर वखाउणी आपणी रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे अन्तर तेरी आशा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। भेव खुल्हाउणा बोध अगाध, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। शब्दी शब्द सुणाउणा नाद, अनहद नादी धुन प्रगटाईआ। कूड़ा कढणा वाद विवाद, विख अमृत रूप महकाईआ। बिन रसना जिह्वा बख़्शणा स्वाद, बूँद स्वांती अमृत रस टपकाईआ। तेरा लहिणा देणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, बादेसहर तेरी ओट तकाईआ। साडा काया कप्पड़ करना आबाद, अन्तर वसणा चाँईं चाँईंआ। धुर दा शब्द करना अहिलाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी मंग इक मंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे मार के तक लै अन्तर झाती, बिन नैणां नैण उठाईआ। मनुआ मन होया आकी, भय भाउ ना कोए रखाईआ। मेहरवान महबूब हो के खोल्ह दे अन्दरों ताकी, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। जाम हकीकी बख़्श दे महबूब साकी, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। लहिणा देणा दीन दुनी विच रहे ना बाकी, बाकायदा मंग मंगाईआ। फिर तन वजूद ना पाईए ख़ाकी, ख़लक दे ख़ालक देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। पंज तत कहिण तलज़े ज़जबम्म नज़ीउल जख़मा ज़म्मबी ज़ऊ नूरे नज़ी अर्शे मज़ी मुहम्मदे दुआ रहमते रहिनुमा नूर नुराने नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा धुर दा वर, धुरदा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा वेख लै पुन्न सवाबा, शरअ तों बाहर जणाईआ। तेरी कदम बोसी विच अदाबा, निव निव सीस झुकाईआ। भेव खुल्ा दे नूर नूरे अगम्मे काअबा, किबले अज़ तेरी सरनाईआ। पर्दा रहे ना दो दो आबा, आबे हयात देणा चाँईं चाँईंआ। साडा लेखा रहे ना इश्क हकीकी नाल मजाज़ा, दोहां दा पन्ध देणा चुकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त निरगुण रखणी आपणी लाजा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो इशारा दे के गया खिज़र ख्वाजा, जल पीर नीर नीर नैणां विच्चों वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी आसा बहु पुराणी, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। साडा लेखा नाल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जे वाहो दाहीआ। साडा नाता नाल चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोले गाईआ। तूं मालक ख़ालक जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। साडी करीं आप पछाणी, बेपहचान होणा सहाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल जगत महानी, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। अन्त देणा साचा माणी, निमाणयां होणा सहाईआ। जे भगतां आत्मा तेरा हाणी, मिल के वजे वधाईआ। क्यों ततां धार समझें बेगानी, बेघर कीता विच ख़लक खुदाईआ। साडा लेखा तेरे नाल श्री भगवानी, भगवन सच देईए दृढ़ाईआ। बेशक पंज तत असीं हुंदे रहे फ़ानी, अन्त मिट्टी गोर मढ़ी नाल वजदी रही साडी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। पंज तत कहिण तूं साहिब इक मलाह, खेवट खेटा इक अख्वाईआ। मालक ख़ालक बेपरवाह, बेअन्त नूर अलाहीआ। साडी कबूल करीं दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं रैहबर नूर अलाह, आलमीन तेरी सरनाईआ। तूं हकीकत हक खुदा, खुद वेखणा चाँईं चाँईंआ। तेरे नालों ना होईए जुदा, जुज़ वखरा वंड वंडाईआ। तेरी रहमत सानूं करे फ़िदा, फ़ितरत तेरे चरणां विच टिकाईआ। सद चलीए तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम देणी वड्याईआ। बेशक सृष्टी उत्ते कूकदी कज़ा, कज़्ज़ाक कलयुग नाल मिलाईआ। भगतां तत कहिण तेरे प्यार दा चक्खणा मज़ा, बेशक सानूं मज़ाक करे लोकाईआ। साडा लहिणा मुकाउणा जगह बजगह, थान थनंतर देणी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा अब्बा, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। मेला होया नाल सबबा, कलयुग अन्त जगत दए गवाहीआ। लोकमात ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां साडीआं पार करनीआं हद्दां, हदूद महिदूद इक्को देणी वखाईआ। जे आत्मा तेरी यदा, परमात्मा तेरे विच समाईआ। क्यों पंजां ततां भगतां देवें दग़ा, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। साडा लेखा वेख लै अगा, पिछला पिच्छे पन्ध मुकाईआ। तेरी मुहब्बत विच साडा रिश्ता होवे बध्धा, फ़रिश्ता जबराईल असराईल असराफ़ील

मेकाईल ना सके तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक तेरी ओट तकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं फेर ना रहीए जम्मदे, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। साडे झगड़े मेटणे ग़म दे, ग़मख़ार होणा सहाईआ। असीं सुख़न करने धर्म दे, धर्म नाल दृढ़ाईआ। असीं वणजारे रहिणा नहीं काया माटी चर्म दे, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। साडे हिस्से नहीं वरन बरन दे, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। असीं अन्त प्यासे हो गए तेरे चरण दे, चरण कवल दे सरनाईआ। सानूं मार्ग दस्स दे सचखण्ड मंज़ल चढ़न दे, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मेहरवान महबूब सानूं हुक्म दे दे दरगाह साची वड़न दे, मुकामे हक पुजीए चाँईं चाँईंआ। साडे लेखे लगण सड़न दे, झगड़ा जगत ना कोए रखाईआ। भाण्डे फेर ना बणीए ठठिआर तेरे घड़न दे, घड़न भन्नणहार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड मिले सची सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी बुझाउणी प्यास, तृष्ना जगत मिटाईआ। सचखण्ड बख़्शणा निवास, थिर घर मिलके वजे वधाईआ। तेरा तक्कीए नूर जोत प्रकाश, बिन तेल बाती डगमगाईआ। तूं शाहो भूप अबिनाश, हरि करता इक अख्वाईआ। साडा अन्तर ना होए उदास, अन्त तेरे विच समाईआ। असीं बेशक पंज तत अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, पंचम मिलके वजदी रहे वधाईआ। अन्त पुजीए तेरे पास, सचखण्ड बख़्शणी सच सरनाईआ। साडा लहिणा देणा रहे ना नाल शंकर कैलाश, कलधारी होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर एकँकार निरगुण धार आपणी वखाउणी रास, दूसर नज़र कोए ना आईआ।

✪ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे फल्गुणा मेरी वेख फुलवाड़ी, चार कुण्ट दहि दिशा नवखण्ड ध्यान लगाईआ। खुशीआं नाल मित्रा मार दे ताड़ी, हथ्थ हथ्थां नाल मिलाईआ। फेर निगाह मार लै की खेल होणा अगाड़ी, बिन नैणां नैण उठाईआ। उह वेख संदेशा दिन्दा ख्वाजा फेर के हथ्थ उत्ते दाढ़ी, लबां रंग ना कोए रंगाईआ। नव सत अग्नी तपदी दिसे हाढ़ी, हाढ़ा तक ख़लक खुदाईआ। दरोही फिरनी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वत समुंद सागर रहे कुरलाईआ। सगला संगी नज़र आए ना कोए पिच्छे अगाड़ी, एथे ओथे ना कोए सहाईआ। उह तक लै नचदी टपदी फिरे मौत लाड़ी, सोहणा अणहोणा वेस वटाईआ। कलयुगा तेरी डूँग्घी दिसे अखाड़ी, कन्ढा घाट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। कलयुग कहे फल्गुणा सज्जणा मेरी वेख लै रुत, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। मैं प्रभू दा लाडला बण के पुत, पिता पूत खेल खिलाईआ। सृष्टी दा खेल तक लै जो खिलाए अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ हुक्म वरताईआ। ख़ाली दिसण काया माटी बुत, बुतख़ाने देण दुहाईआ। अपराधी होई दीन दुनी दी धार सुत, सुत्तयां सके ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। कलयुग कहे फल्गुणा मेरा वेख लै वक्त सुहावा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। मेरा कूड़ कूड़ दा दाअवा, दाअवेदार अख्वाईआ। दीन दुनी बुद्धी कीती वांग कावां, कायनात वेख वखाईआ। प्रेम रहिण दिता नहीं विच भरावां, पिता पूत ना कोए चतुराईआ। फिरी दरोही विच पंज तत गरावां, साढे तिन्न हथ्थ हाल दुहाईआ। सीस देवे कोई ना ठण्डीआं छावां, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग कहे फल्गुणा मेरे पंच विकार दा तक लै दल, सूरबीर जगत अख्वाईआ। जेहड़ा टिके घड़ी ना पल, पलकां वंड ना कोए वंडाईआ। जो सब नाल करदा छल, वल छल आपणी खेल खिलाईआ। त्रैगुण माया गया रल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। दूई द्वैती लाया सल, तीर अणयाला इक चलाईआ। पवित्र रहिण दिता नहीं कोई जल, अठसठ रोवण मारन धाहीआ। दीपक जोत किसे गृह जाए ना बल, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। अग्नी तन तपाया खल्ल, ख़ालक ख़लक दिती वड्याईआ। मेरा कूड़ कुड़यारा जगत सिँघासण बैठा मल्ल, आसण सके ना कोए उलटाईआ। मेरा लहिणा देणा सच धाम जिथ्थे दीपक जोती बिन तेल बाती रिहा बल, नूर नुराना नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा मैं सुणी तेरी अगम्मी बात, जो बातन भेव खुल्हाईआ। बेशक चारों कुण्ट तेरी अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मन कल्पणा कूड़ दिसे कमज़ात, कुलखणी आपणा रूप बदलाईआ। सति सच दा जोड़े कोई ना नात, प्रीतम प्रेम विच ना कोए समाईआ। उठ खेल तक लै जन भगतां प्रभ देवे आपणी दात, दयावान दया कमाईआ। शब्द संदेश सुणाए पात, बिन पत्रका आप दृढ़ाईआ। तेरे विच पुछे वात, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा प्रभ दा तक अगम्मी नूर, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ। जिस दा नाम कलमा जगत जहान मशहूर, मशवरे जुग चौकड़ी गया समझाईआ। जो नाम मस्ती देवे सरूर, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। जिस दी अनादी इक्को तूर, तुरत करे शनवाईआ। उह साहिब हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक

२६०
२४

नूर अलाहीआ। भगत उधारना जिस दा दस्तूर, रीती जुग चौकड़ी चली आईआ। उह हरिजन पार कराए ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा मेरी रुतड़ी तक बसन्त, प्रेमीआं प्रभू प्रेम नाल महकाईआ। जो आदि जुगादी धुर दा कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस गढ़ तोड़या हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। उस दा लहिणा देणा वेख अन्त, अनक कलधारी खेल खिलाईआ। जिस नूं खोजदे जुग चौकड़ी सन्त, साधना विच समाईआ। उह मालक ख़ालक बेअन्त, बेऐब नूर अलाहीआ। जिस तेरे विच आत्म परमात्म दस्स के छंत, सोहँ ढोला दिता दृढ़ाईआ। जो पार उतारे जीव जंत, साध सन्त रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप दरसाईआ। फल्गुण कहे कलयुग खेल वेख सूरे सरबंग दा, की करता हुक्म वरताईआ। जिस कोलों अवतार पैग़म्बर गुरु मंगदा, भगतां झोली दए भराईआ। उस दा लहिणा देणा इक्को अंग दा, अंगीकार आप अख्वाईआ। जो आदि जुगादी कदे नहीं मंगदा, देवणहार साहिब सुखदाईआ। जिस भगतां खेल खिलाया कारज अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। भेव चुकाया सोहँ छन्द दा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलया चाँईं चाँईंआ। सफ़र रिहा ना अगले पन्ध दा, मुसाफ़र आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा मित्रा चारों कुण्ट नस्स, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। फेर खुशीआं विच प्या हस, ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। कवण कूटे मिले रस, अनन्द अनन्द विच्चों समझाईआ। केहड़ा सुणना जस, सिफ्ती ढोले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । फल्गुण कहे कलयुग उठ लेखा तक लै हरि करतार, की करता कार कमाईआ। जो बण के सांझा यार, मित्र प्यारा रूप बदलाईआ। सद देंदा रहे अधार, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। भगतां पैज रिहा संवार, देवणहार माण वड्याईआ। गृह मन्दिर वखाए घरबार, सुहञ्जणा इक जणाईआ। जगत विद्या वसे बाहर, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। तिस विच मेरी मौले रुति बहार, पत्त टहणी फल फुल आप महकाईआ। मैं वेखां भगतां गुलज़ार, गुलशन सोहणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा बिन हथ्थां कर सलाम, सीस जगदीश झुकाईआ। तक लै नूर अलाही अमाम, अमलां तों रहित बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को इक हकीकी जाम, जगत तृष्ना कूड़ मिटाईआ। शरअ दा लेखा ना रहे तमाम, तमअ लालच लोभ दए गंवाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा पुरख अकाल तक लै अदली, इन्साफ़ सच कमाईआ। तेरी होण वाली बदली, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ। हुण आपणे संगी साथी सद्द लईं, सद्दा देणा चाँईं चाँईंआ। तेरी कूड़ क्रिया वध गई, वाधा दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। हुण निगाह मार लै आपणी हद्द लई, बिन हदूदां वेख वखाईआ। तेरी खेल दीन दुनिया जग लई, जागरत जोत बिन वरन गोत प्रभ भगतां दिती वड्याईआ। जिन्हां नव सत फिर फिर हकीकी धार लभ लई, लोभ लालच नज़र कोए ना आईआ। उहदी मुहब्बत मित्रा सब लई, दीन मज़्हब ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा भगतां वेख लै रूप रंग, रेख रेखणी नाल मिलाईआ। जो प्रभ दी सेजा सुते पलँघ, आसण अवर ना कोए चतुराईआ। निरगुण धार लग्गे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। जिस दा अमृत धार सोमा वहे गंग, गंगोत्री आपणा माण गुआईआ। उह साहिब सूरा सरबग, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा भगतां तक लै मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस दी सब तों वखरी नीत, नीतीवान धुरदरगाहीआ। जिस झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काअब्यां रंग रंगाईआ। उह मालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी नूर अलाहीआ। जो सब नूं रिहा जीत, जित्त हार वंड ना कोए वखाईआ। जिस तेरे अन्दर सोहँ शब्द सुणा के गीत, गहर गम्भीर कीती पढ़ाईआ। उह वेख लै चार जुग दी रीत, रीतीवान दिती दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा मेरी रुत मौली वेख बहार, पत्त टहणी दए गवाहीआ । तेरा लेखा लहिणा कूड़ होया कुड़यार, कलयुग गंढु पुआईआ। मेरा शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जिस भगत सुहेले दिते तार, फड़ फड़ बाहों पार कराईआ। उस नूं कहिंदे कलि कल्की अवतार, निहकलंका नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेखण थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे फल्गुणा जो भगत सुहेले दस्सदा, खुशीआं नाल जणाईआ। वेख वेख के हसदा, बिन नैणां नैण तकाईआ। चारों कुण्ट , सोहले ढोले रागां नाल शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे कलयुग जन भगतां वेख घराणा, गृह मन्दिर ध्यान लगाईआ। जिथ्थे धर्म धार निशाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। उस दा भगतां नाल यराना, यारी सके ना कोए तुड़ाईआ। जिस

दा शहिनशाही सम्मत दस महाना, महिमा गणत ना कोए गिणाईआ। उस दा हुक्म करना पए परवाना, सिर सके ना कोए उठाईआ। उह निरगुण धार कान्हा दा कान्हा, काहन इक अख्वाईआ। जिस नूं सब ने मन्नया रामा, राम रामा वेस वटाईआ। जिस दा शब्द धार दमामा, दो जहानां लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ। उस दा खेल तकणा ज़िमीं असमाना, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो सच धर्म दा तको राह, पुरख अकाल दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ दा दिसे मलाह, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। तुसीं फिरो थल अस्गाह, भज्जो वाहो दाहीआ। गृह गृह ख़ुशी लैणी मना, मिल सख़ीआँ ढोले गाईआ। हरिजन कहिणा वाह वाह, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। तूं परम पुरख परमात्म सब दे कटणहार गुनाह, मुश्किल रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे कलयुगा तेरा पैंडा जांदा मुकदा, अन्त नज़र किछ ना आईआ। हुण वेला रिहा नहीं लुक दा, तन वजूद ना कोए छुपाईआ। प्रभ ने भेव खोल्ह्या इक तुक दा, तुख्म तासीर सब दी दिती बदलाईआ। जेहड़ा मनुआ किसे नहीं झुकदा,
२६३ उह प्रभ सरन लागे पाईआ। साचा वक्त सुहञ्जणा होवे सुख दा, सुख सागर रूप बदलाईआ। वक्त दुहेला ना होवे दु:ख २६३
२४ दा, दर्दीआं दर्द चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण २४
नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फल्गुण कहे जन भगतां घर घर फिरदा पुछदा, बचया जगत ज़िमीं असमान रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस कर्म सिँघ दे शरीर छडण नवित पिण्ड नयाशाला ज़िला गुरदासपुर ✪

दो फल्गुण कहे मेरा धर्म धार दा फल, प्रविष्टा इष्ट इक जणाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा नाल राजे बलि , बावन धार मिली वड्याईआ। जिस सच दुआरा धर्म दी धार ल्या मल्ल, सिँघासण इक्को इक सुहाईआ। जो देवणहारा अमृत जल, जल धारा विच समाईआ। जिस दा लेखा महीअल थल, अस्गाहां खोज खुजाईआ। सो लहिणा देणा जाणे घड़ी घड़ी पल पल, पलकां दा मालक नूर अलाहीआ। वसणहारा निहचल धाम अटल, सचखण्ड दुआरा इक सुहाईआ। जो सति सच संदेशा निरगुण सरगुण देवे घल, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । फल्गुण कहे मेरा लेखा बलि दुआर, बावन नाल मिली वड्याईआ। सतिजुग

कूक कहे पुकार, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेख वखाईआ। जिस दा लेखा जगत अक्खर नहीं इज़हार, सिफ्तां विच ना सिफ्त सलाहीआ। जो बिना ज़बान तों कूक करे पुकार, दो जहान शनवाईआ । सो पतित पावन पावणहारा सार, वेखणहार अगम्म अथाहीआ। जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा दो, दो जहान खुशी मनाईआ। मेरे अन्तर आई लो, लोयण प्रभ ने दिता खुल्हाईआ। मैं सुण के शब्द अगम्मी सो, सो पुरख निरञ्जण सीस निवाईआ। जो आत्म धार आपे हो, निरगुण खेल खेले चाँईं चाँईंआ। जिस दा भेव जाणे ना को, पर्दा सके ना कोए खुल्हाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला दीन दुनी नालों हो निर्मोह, मुहब्बत भगतां नाल रखाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी अमृत रस निझर देवे चो, बिन रसना जिह्वा आप चखाईआ। पंच विकार मेट के गरोह, घर मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे मेरी रुत सुहञ्जणी दिसे जगत, प्रभ देवे माण वड्याईआ। मेरा कोई ना जाणे वक्त, घड़ी पल थित वार ना कोई चतुराईआ। मेरा नाता नहीं नाल बूँद रक्त, ततव तत ना रंग रंगाईआ। मेरे अन्तर इक्को प्रभू दी शक्त, जो साख्यात आपणा दरस दिखाईआ। मैं लेखा जाणा बलि दुआरे भगत, की भगवन दए वड्याईआ। खुशीआं विच मौले धरत, धवल धौल आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी सतिगुर शब्द धार शर्त, शरअ तों बाहर समझाईआ। आदि जुगादी आवे परत, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जो मालक ख़ालक वाली अर्श, नूर नुराना इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण देवे दरस, बिन नेत्र लोचण नैणां पर्दा दए चुकाईआ। जुग जुग दी मेटे हरस, हवस कूड़ दए मिटाईआ। जन भगतां उत्ते करे तरस, मेहरवान महिबान मेहर नज़र इक उठाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे मैं कथा दस्सां पुराणी, प्रविष्टा दो नाल मिलाईआ। जिस दा लेखा नाल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज संग मिलाईआ । चार जुग दे शास्त्र जिस दी अगम्मी बाणी, नाम अणयाले तीर चलाईआ। उह आदि जुगादी सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। जिस दे चरण कवल विटहों कुरबानी, आप आपणा भेंट कराईआ। सो आदि अन्त सब दी करे पछाणी, बेपहचान आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दो फल्गुण कहे उह तक लओ नारद आया दौड़ा, आपणा पन्ध मुकाईआ। नाले चढ़ के अगम्मी पौड़ा,

पौड़ी डण्डे पन्ध मुकाईआ। संदेशा देवे तक लओ ब्राह्मण गौड़ा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जिस दा मार्ग सब तों लम्मां चौड़ा, चार जुग समझ किसे ना आईआ। जो मिट्ठा करनहारा रीठा कौड़ा, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। जो आत्म परमात्म जुग जुग बणाए जोड़ा, भगत भगवान रंग रंगाईआ । जिस दा लेखा कलयुग अन्तिम नाल थोड़ा, बहुती सतिजुग दए वड्याईआ। उह वेखणहारा सस्से उत्ते होड़ा, हाहे टिप्पी नाल मिलाईआ। जिस दा शब्द अगम्मी घोड़ा, दो जहान भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं दस्सां पुराणी कथा, बिन कथनी दयां दृढ़ाईआ। जो प्रभ दा खेल यथार्थ यथा, यदप यदी दयां समझाईआ। पहलों बिना हथ्थां तों टेक के मथ्था, सीस जगदीश झुकाईआ। फेर कहां पुरख समरथा, तेरी वड वड्याईआ। जिस दा गोबिन्द सथर लथ्था, यारड़ा सेज हंढाईआ। उस दा जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलदा रथा, रथ रथवाही वेख वखाईआ। जिस दा शब्दी तीर कमान भथ्था, जगत खण्डे ना कोए खड़काईआ। जो लख चुरासी आत्म धार पावे नथ्था, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। सो लहिणा देणा देवे जुग जुग हथ्थो हथ्था, उधार रहिण कोए ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं दस्सां पिछली पुराणी बात, बातन भेव खुल्हाईआ। नीज़ू नाम ब्राह्मण ज़ात, खत्री वंड ना कोए वंडाईआ। खुशीआं नाल गुण गावे प्रभू दे रात, रैण भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। अन्तर आत्म जोड़ के नात, खेल वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सरनाईआ। नारद कहे मेरी कथा बहुत अनमुली, जग कीमत कोए ना पाईआ। मैं सुणाई कदे नहीं बुल्हीं, रसना रस ना कोए चतुराईआ। मेरी धार कदे ना भुल्ली, अभुल दिती वड्याईआ। मेरा लेखा नाल काया कुल्ली, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मेरा मालक सुल्हकुली, कुल मालक इक अख्वाईआ। मेरी बात जुग चौकड़ी कदे ना रुली, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जिस वेले बावन आया बलि दुआर, आपणा रूप बदलाईआ। अश्वमेध यग दा खेल अपार, अपरम्पर रचना दिती रचाईआ। तेरां सौ सतासी रिषीआं दा लेखा नाल अधार, मेला मिल्या चाँईं चाँईंआ। जो इक्को वार करन पुकार, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। उह वेखण नैण उग्घाड़, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। धर्म दी धार भरे भण्डार, अतोट अतुट तोट नज़र कोए ना आईआ। सारे करदे जै जैकार, खुशीआं ढोले गाईआ। बलि बैठ आपणे दुआर, मजलस आपणी रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। नारद

कहे मैं कूक करां पुकार, सच सच सुणाईआ। जिस वेले बावन तेरी धार, धरनी धरत धवल वजे वधाईआ। ब्राह्मण हो के ख़बरदार, परोहित आपणी लई अंगड़ाईआ। बलि करके निमस्कार, संदेशा दिता चाँईं चाँईंआ। तेरे दरवेश आया कोई भिखार, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। चारे वेदां रिहा उच्चार, नेत्र अक्ख ना कदे उठाईआ। बलि हस के किहा मेरे यार, मित्रा दयां सुणाईआ। कुछ प्रेम प्रीती घाल, घाल घालणा तेरी तेरी झोली पाईआ। उस नूं प्यार मुहब्बत विच भोजन आप खुवाल, खुशीआं रंग रंगाईआ। सच दुआर लैणा बहाल, दर इक्को इक वखाईआ। पता नहीं उह शाह कि कंगाल, कवण ज़ाती वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे झट ब्राह्मण सीस दिता झुका, नमों नमों कहि के खुशी बणाईआ। बिना अक्खां तों धर्म दी धार लै के रुक्का, भज्जया वाहो दाहीआ। नाले भोजन दा थाल चुक्का, दो हथ्थां उत्ते उठाईआ। फेर मीट के दोवें मुठ्ठां, भज्जया वाहो दाहीआ। सज्जा कदम पहले पुट्टा, सोहणी आपणी गणत गणाईआ। फेर हलूण के आपणे गुट्टा, सावधान ल्या कराईआ। अन्दर याद कीता अबिनाशी अचुता, चेतन सुरती लई कराईआ। किड्डी सुहावी होई रुता, रुतड़ी प्रभ ने दिती महकाईआ। ब्राह्मण ने ब्रह्म रूप तक्कया इक गिठ ते इक मुट्ठा, बावन सोभा पाईआ। जो अगे हथ्थ करके पुठ्ठा, इशारयां नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे पंडत ने थाल ल्यांदा परोस, सोहणी खुशी बणाईआ। हथ्थ जोड़ के किहा मैं निर्दोष, दोष नज़र कोए ना आईआ। तुसीं पन्ध मारया कोटन कोट, आए चाँईं चाँईंआ। मेरी आशा इक्को लोच, मनसा दयां सुणाईआ। तुसीं करो कोई ना सोच, भोजन छको चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। झट बावन इक संदेशा दिता आप, आपणी खुशी बणाईआ। पंडता पहलों सुणा जाप, की मन्त्र रिहा ध्याईआ। किस बिध तन शरीर उतरे पाप, पतित पुनीत बणाईआ। लेखा मुके लोकमात, जन्म जन्म रहे ना राईआ। सच प्रीती जुड़े नात, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। तूं किस दुआरिउ ल्याया दात, जो मेरे अगे टिकाईआ। ना एह चावल ना एह भात, पदार्थ ब्रह्म ना रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। ब्राह्मण किहा मैनूं राजे बलि दिता भेज, हुक्म हुक्म नाल जणाईआ। मैं वेख के तेरा तेज, हैरानी विच बिघसाईआ। तेरा सिँघासण अगम्मी सेज, सुख आसण सोभा पाईआ। मैनूं पता नहीं एह भख के भोज लेहज फेहज, चारे खाणी चारे बाणी की रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ ।

बावन किहा पंडता मैं खाणा नहीं आहार, रसना रस ना मूल लगाईआ। जा के कहि दे बलि दुआर, प्रेम प्रेम नाल जणाईआ। बुढ्ढा पंडत पुराणा आया दर भिखार, मांगत हो के मंग मंगाईआ। ढाई करमां दा अधार, धरनी देणी चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे छप्पर छन्न लवां उसार, आपणा सीस लुकाईआ। नाता तोड़ जगत संसार, संसा दीन दुनी मुकाईआ। इक्को मेल मिले धुर दे यार, मित्र प्यारा वेख वखाईआ। जो सदा देवे आहार, जुग जुग तृष्ना भुख मिटाईआ। पंडत रो के किहा पुकार, कूक कूक सुणाईआ। तुसीं खाओ मेरी सरकार, तुहाडे अगे भेंट कराईआ। बावन किहा सुण शब्द अगम्म विचार, विचर के दयां सुणाईआ। तूं पंडता होणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। तेरा मेरा होया उधार, लेखा तेरे नाल रखाईआ। उह वेख लै सतिजुग त्रेता द्वापर जुग हुंदे पार, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग निगाह मार लै विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट होणा अन्ध अँधयार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जिस वेले दुःख भुख नाल सृष्टी विच होवे हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मेरा रूप होवे नर अवतार, कलि कल्की वेस वटाईआ । तेरा जन्म फेर होवे अपार, अपरम्पर आप कराईआ। मानस तों मानस चुरासी नाल नहीं तकरार, झगड़ा जून ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। बावन किहा ब्राह्मणा ब्रह्म दृढ़ावांगा। निरगुण नूर जोत रुशनावांगा। सतिगुर शब्द नाल मिलावांगा। जोती जाता इक अख्वावांगा। पुरख बिधाता नाउँ प्रगटावांगा। कलयुग अन्तिम वेस वटावांगा। सम्बल वस के साचे देस, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगावांगा। धुर दा मालक बण नरेश, नर नरायण इक अख्वावांगा । गोबिन्द शब्द दस दस्मेश, दहि दिशा संग निभावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कलेश, कल कातीआं पन्ध मुकावांगा। आत्म परमात्म दे के सच संदेश, सिख्या सतिगुर इक रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावांगा। बावन किहा पंडत शब्दी धार होया धर्म, सच नाल जणाईआ। कलयुग फेर देवां जरम, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। दीन दुनी विच्चों मेट के भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। तेरा नाउँ रख के सिँघ कर्म, गोबिन्द गोदी गोद उठाईआ। लेखे ला के काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी जगत बदलाईआ। सचखण्ड दवा के साची सरन, सरनगति इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। बावन किहा मेरा तेरा होया कौल इकरार, वायदा सच सच समझाईआ। जिस वेले आवां बण कलि कल्की अवतार, निहकलंक रूप बदलाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। इक्को शब्द होवे जैकार, दो जहान वजे वधाईआ। कलयुग कूड़ वेखां अँधयार, अन्ध आत्म खोज

२६७ २४

खुजाईआ। नव सत्त पावां सार, ब्रह्म मति भेव चुकाईआ। ततव तत दयां अधार, त्रैगुण अतीता हो के बणां गुसाँईंआ। तेरा लहिणा देणा देवां कर्ज उतार, मकरूज हो के तेरी झोली पाईआ। मानस जन्म दयां सुआर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरे धर्म दा धर्म होवे जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। तेरे प्रेम विच तेरा तार देवां परवार, बंस सरबंसा रंग रंगाईआ। तेरी खुशीआं वाली महकी रहे गुलज़ार, गुलशन आपणा इक वखाईआ। तेरा अन्त लहिणा देणा लेखा अन्त होणा सचखण्ड दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे भगत सुहेले करन इंतज़ार, गुरु गुरदेव बैठे राह तकाईआ। जोती जोत होवे चमत्कार, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। ब्राह्मण कहे मेरा उत्तम श्रेष्ट होवे जरम, मिले माण वड्याईआ। मनसा मन रहे ना भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। लोकमाती नाँ रख्या सिँघ कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा रिहा ना नाल किसे वरन, वरन बरन ना कोए जणाईआ। इक्को पुरख अकाल दी मिली सरन, सचखण्ड साची वजी वधाईआ। जो मालक ख़ालक आदि जुगादी तारन तरन, तारनहार इक अख्वाईआ। जिस दे ढोले गीत नाम कलमे सारे पढ़न, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मेरा पल्लू आया फड़न, फड़ बाहों गले लगाईआ। धन्न भाग मेरा लोकमात विच्चों छुटया लड़न, कन्नी गंढु ना कोए रखाईआ। जिस वेले मेरा तन वजूद लग्गा सड़न, अग्नी अग्ग खुशी मनाईआ। मेरा आत्मा सच दुआर लग्गा चढ़न, भज्जया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। कर्म सिँघ कहे मैं जगत नहीं कोई मरया, मर जीवत रूप वटाईआ। लख चुरासी विच्चों तरया, आवण जावण पन्ध रिहा ना राईआ। मैं पुज्जया आपणे घरया, जिस गृह मन्दिर वजे वधाईआ। जिथ्थे इक्को नरायण नरया, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस जुग जुग खेल करया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। मैं उस दी सरनी परया, जो साहिब सुल्तान नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। कर्म सिँघ कहे मेरा सोहणा घर सुहञ्जणा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगे आदि निरञ्जणा, नूर नुराना डगमगाईआ। मेरा मालक गुसांई दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। जिस नेत्र नाम निधाना पा के अंजणा, दो जहान दा अन्धेरा दिता मिटाईआ। सो साहिब सुल्ताना सज्जणा, सचखण्ड मेला मेले चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे भगतो अन्त सब ने वंजणा, जगत सके ना कोए अटकाईआ। मेरी मौत दा ना कोई दु:ख करे ना रंजणा, बंस सरबंस दिता सुणाईआ। जो घड़या सो ठीकर भज्जणा, पंज तत ना कोए चतुराईआ। धन्न भाग जे प्रभ दे चरण मिले मजना,

धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जिस ने अन्तिम पड़दा कज्जणा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ । सो रखणहारा लजणा, जुग जुग होए सहाईआ। उह मेरा गोपाल मूर्त मदना, मधसूदन इक अख्वाईआ। जिस ने भगतां वारो वारी सद्दणा, हुक्म संदेशे शब्द शब्द नाल शनवाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं आहला अदना, वड्डा छोटा ना कोए अख्वाईआ। उस लेखा मुकाया मेरा तत पंजना, पंचम दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। कर्म सिँघ कहे मेरा नाता छछुट्टया जग, जग जीवण दाते दिती वड्याईआ। बेशक मेरा शरीर सड़या विच अग्ग, ततां तन तपाईआ। मैं दीन दुनी तों हो के अलग, वखरा गृह इक सुहाईआ। जिथ्थे मेरा शहिनशाह सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। मैं पन्ध मुकाया भज्ज भज्ज, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार दरस करां रज रज, जगत तृष्ना रही ना राईआ। मेरा सच संदेशा शब्दी धार खुशीआं नाल सुणावां अज्ज, धुर दे हुक्म नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दो फग्गण कहे मेरी साची बन्दना, बन्दगी विच सीस निवाईआ। भगत सुहेला माणे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस ढोला गाया सोहँ छन्दना, सो सतिगुर शब्द विच समाईआ। नाता तोड़ के तत पंजना, पंचम मेला मिल्या सहिज सुभाईआ। ना कोई ग़म रिहा ना रंजणा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। घर ठाकर स्वामी मिल्या सज्जणा, जो छिन्न विच आपणे कंध उठाईआ। ना कोई नेत्र नीर वहाया हंझणा, उफ़ हाए ना कोए सुणाईआ। मेरा लेखे लग्गा बदना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। जन भगत कहे मैं घर सुहञ्जणा पाया, पारब्रह्म दिती सरनाईआ। बिन रसना जिह्वा शुकर मनाया, बिन सीस सीस जगदीस झुकाईआ। तूं मालक खालक सर्ब सुखदाया, सच स्वामी तेरी वड वड्याईआ। जिस पूरब लहिणा झोली पाया, बावन दा पिछला लहिणा झोली पाईआ। मेरे गृह सच पकवान भोग लगाया, भगवन दिती वड्याईआ। मैं सचखण्ड विच तेरा शुकर मनाया, तेरे ढोले गावां सिफ्त सलाहीआ। जिस लहिणा देणा पूरब मेरे लेखे लाया, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं ख़ुशीआं मंगल गाया, ढोला तेरा धुरदरगाहीआ। हरिसंगत दयां सुणाया, अनबोलत रूप जणाईआ। प्रभ मालक ख़ालक बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। जिस मैनूं सचखण्ड दुआर भगतां विच रलाया, भगवन दिती वड्याईआ। मैं जोती नूर नूर विच समाया, जोत रूप रूप अख्वाईआ। चुरासी गेड़ा पन्ध मुकाया, जम की फाँसी रही ना राईआ। रसन स्वासी सोहँ ढोला गाया, अन्तर वजदी रही वधाईआ। त्रैगुण माया लेख मुकाया, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। मेरे सतिगुर शब्द मेरा पन्ध चुकाया, आपणे कंध उठाईआ। दरगाह

साची सच थान पहुंचाया, थिर घर दिता टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच करनी कर्म कमाया, कर्म सिँघ कर्म कांड दा लेखा रिहा ना राईआ।

३ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस पिण्ड नयाशाला ज़िला गुरदास पुर सुलखणी

पंज तत कहिण प्रभ साडे अलख अभेवा, पारब्रह्म प्रभ तेरी इक सरनाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी देवी देवा, देव आत्मा परमात्मा तेरी ओट रखाईआ। सदा सदा सद तेरे गुण गाईए नाल जिह्वा, तीस बतीसा तेरी सिफ्त सालाहीआ। तूं वसणहारा सचखण्ड धाम निहकेवा, निहचल बैठा आसण लाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी लेखे लाईं सेवा, सेवा सतिगुर सरन सरन देणी सरनाईआ। नाम भण्डारा अमृत रस बख्शणा अगम्मी मेवा, फल आपणा आप खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी सेवा करनी कबूल, कुदरत दे कादर दया कमाईआ । आपणे चरण बख्शणी धूल, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जो आसा रख के गए अवतार पैग़म्बर रसूल, गुरु गुरदेव ध्यान लगाईआ। सो साहिब स्वामी आदि जुगादी ना जाणा भूल, भुल्लयां मार्ग आप लगाईआ। तूं मालक कन्त कन्तूहल, हरि करता इक अख्वाईआ। तेरा शब्द पंघूड़ा लईए झूल, हुलारा दो जहान वखाईआ। भगत उधारना तेरा असूल, असल दे मालक वसल देणा यार खुदाईआ। तेरा हुक्म मंनीए माकूल, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं कबूल करीं आपणे दर, गृह मिले माण वड्याईआ। चरण कवल बख्शणा घर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। आत्म परमात्म लैणा वर, मेल मेलणा सहिज सुभाईआ। तूं किरपा निधान एकँकार हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। साडे उत्ते किरपा कर, किरपा निधान तेरी वड्याईआ। साडा लेखा रिहा ना जोरू ज़र, ज़ेर ज़बर दा रूप ना कोए दरसाईआ। अमृत सरोवर नुहा दे सर, दुरमति मैल मैल धुआईआ। खाली भण्डारे देणे भर, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। तूं मालक ख़ालक नरायण नर, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक संग निभाईआ। पंज तत कहिण साडा लेखे लाउणा जन्म, जन्म जन्म दा लेख चुकाईआ। माटी ख़ाक वेखणा चर्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। अन्तष्करन मेटणा भरम, भाण्डा कूड़ देणा

भनाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात वरन, आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। शब्दी धार लाउणा लड़न, अंगीकार इक अख्वाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तूं आदि जुगादी भन्नणहारा घड़न, समरथ तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा तेरे चरण जावे लग्ग, चरणोदक जाम देणा प्याईआ। तेरे नालों ना होईए अलग, वखरा गृह ना कोए वखाईआ। तूं सूरबीर सरबग, शाहो भूप इक अख्वाईआ। बेशक साडा नाता तुटे नालों जग, जग जीवण दाते देणी वड्याईआ। असीं भस्म होईए ना नाल अग्ग, माटी ख़ाक ख़ाक रुलाईआ। साडी धार होवण ना देवीं कग, कागों हँस बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह देणा वखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा तन वजूद जाए सड़, माटी गोरां विच दबाईआ। निरगुण तेरा फड़ीए लड़, पल्लू नाम गंढु बंधाईआ। तूं लेखा जाणें चेतन जड़, वेखणा थाउँ थाँईंआ। अन्त तेरी मंज़ल जाईए चढ़, राह विच ना कोए अटकाईआ। राय धर्म ना सके फड़, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। पुरी लोअ किला रहे ना गढ़, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। साडा लेखे लाउणा पंजां ततां वाला धड़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सारे मिल के मंग मंगाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार तेरे जाईए वड़, थिर घर बहि के ख़ुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे मेल मिलाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडे बेपरवाह, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। साडा सतिगुर शब्द शब्द गवाह, शहादत दो जहान भुगताईआ। बेशक असीं सड़ के होईए सुआह, जगत माटी ख़ाकी रूप दरसाईआ। तूं पंजां ततां पकड़नी बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। दो जहानां बणना इक मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सचखण्ड वखाउणा साचा राह, रैहबर हो के भेव खुलाईआ। साडा नाता तुटे जगत जहां, दीन दुनी संग ना कोए रखाईआ। लेखा रहे ना पिता माँ, पूत गोद ना कोए वखाईआ। धरनी धरत धवल धौल छडीए झूठ गराँ, घर मन्दिर ना कोए सुहाईआ। सच दुआर दरगाह साची देणा थाँ, थान थनंतर बहि के वजे वधाईआ। इक्को सुणीए तेरा नाँ, दूसर अवर ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ दर तेरे वास्ता पाउणा, निव निव सीस झुकाईआ। साडा लेखा अन्त मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। चार जुग दा पन्ध चुकाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। मेहरवान मेहर नज़र नाल तराउणा, तारनहार तेरी सरनाईआ। पंज तत साडा लेखे लाउणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जे आत्मा तेरे विच समाउणा, भगतां देवें माण वड्याईआ। पंज तत कहिण असीं सचखण्ड दुआर तेरा दर्शन पाउणा, पवण

पाणी सारे मिल के सीस निवाईआ। तूं निरगुण धार साडा माण रखाउणा, निमाणे हो के मंग मंगाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरा होवे आउणा, आवण जावण तेरी खेल बेपरवाहीआ। परम पुरख सानूं चुरासी विच पए ना भाउणा, त्रैभवण धनी देणी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी दरगाह साची आप वसाउणा, गृह मन्दिर इक वखाईआ। इक्को दीपक जोत जगाउणा, जोती जाते तेरा नूर नज़री आईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान इक अख्वाउणा, आख़र बिन अक्खरां करनी पढ़ाईआ। शब्द अनादी नाद दृढ़ाउणा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। पंज तत कहिण प्रभ भगतां आपणे दर बहाउणा, चरण कवल कवल चरण देणी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा आवण जावण पतित पावण सरगुण धार पन्ध मुकाउणा, निरगुण निराकार आपणे विच समाईआ।

✪ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत दस अवतार सिँघ आहमपुर वाले दी शादी नवित हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

३०२
२४

सतिगुर शब्द कहे जन भगतो मौले रुत, रुतड़ी परम पुरख परमात्म आत्म नाल महकाईआ। किरपा करे मेहरवान महबूब अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सन्त सुहेले तारे सुत, श्री भगवान नौजुआन मर्द मर्दान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी सुहञ्जणी होए बहार, भगवन देवे माण वड्याईआ। आदि जुगादी एकँकार, इक इकल्ला नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। जिस दा नाम निधाना विच जहाना देवण वारो वार, अवतार पैग़म्बर गुर ढोले सोहले राग जणाईआ। सो शाहो भूप शहिनशाह सची सरकार, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र करन इज़हार, अक्खर सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह इक वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा सुहञ्जणा होया वक्त, थित वार घड़ी पल आपणी ख़ुशी बणाईआ। मेरा लहिणा देणा जुग चौकड़ी नाल जगत, जागरत जोत बिन वरन गोत प्रभ नाल मिल के वजे वधाईआ। मेरा लेखा हरिजन साचे नाल भगत, भगवन भावना धुर दी नाल दृढ़ाईआ। जिस आदि पुरख अपरम्पर स्वामी निरगुण धार बख़्शणी शक्त, सति

सतिवादी दया कमाईआ। जो लेखा जाणे बूँद रक्त, तन वजूदां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा होया वक्त सुहञ्जणा, लोकमात वजे वधाईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, पुरख पुरखोतम धुरदरगाहीआ। जो निरगुण साचा साक सज्जणा, सरगुण मेला मेले सहिज सुभाईआ। एथे ओथे दो जहानां होवे दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। जो नेत्र नाम निधाना पावे अंजणा, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ । चिन्ता ग़म मिटाए रंजणा, सुरती शब्द शब्द समाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक चाढ़े रंगणा, एथे ओथे उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ । सतिगुर शब्द कहे मेरी आदि जुगादी धार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। मेरा रूप पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। सच संदेशे दे के वारो वार, शब्दी शब्द करी पढ़ाईआ। लेख लिखा के अक्खरां नाल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग मिलाईआ। बोध अगाधा खेल करा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी हो के वेख वखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेरी पावणहारा सार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो वेखे विगसे वेखणहार, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जो लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण होए आप सहाईआ। जो भविक्ख्तां विच आशा रख के गए निरगुण नूर जोत उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ। जिस आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव दस्सणा आप करतार, करनी दा करता हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा आत्म परमात्म साचा संग, सगला संगी इक अख्वाईआ। जन भगतां काया माटी चाढ़ के रंग, रंगत इक्को इक समझाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नाम निधान वजा मृदंग, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। गृह मन्दिर आपणे लँघ, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म हँ, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। निरगुण नूर चाढ़ के चन्द, जोती जाता नज़री आईआ। मन मनसा मेट के मन, मनसा कूड़ विकार चुकाईआ। जन भगतां भेव खुल्हा के ब्रह्म, पारब्रह्म दयां मिलाईआ। जगत तृष्ना रहे ना तम, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। पवण स्वासी लेखे ला के दम, दामनगीर आप हो जाईआ । लहिणा देणा वेखां काया माटी चम्म, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ततव तत खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा आदि जुगादी खेल तमाशा, नित नवित वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता

भरवासा, धीरज धीर सति धर्म समझाईआ। साचे मण्डल बिन गोपी काहन पा के रासा, सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची आप सुहाईआ । निरगुण नूर जोत कर प्रकाशा, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। लहिणा मुका के शंकर धार कैलाशा, विष्न विश्व दा मेला दए मिलाईआ। ब्रह्मा पूरी करे आसा, जगत तृष्ना दूर कराईआ। खेले खेल शाहो शाबाशा, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह इक वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे भगतन साचा होए मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होवे जाप, सोहँ ढोला शब्द अगम्म अथाहीआ। त्रैगुण त्रैभवण धनी मेटे ताप, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। जन भगतां नाम निधाना दे के दात, जगत तृष्ना कूड़ मिटाईआ। अमृत बूंद प्या स्वांत, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साचा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा आदि जुगादी वखरा राह, जुग जुग भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बणा मलाह, बेड़े दीन दुनी कंध उठाईआ। नाम संदेशा निरगुण सरगुण धार सुणा, शब्दी अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। जगत रीती दीनां मज़्बां वंड वंडा, तन वजूदां सोभा पाईआ। भेव अभेदा आपणा आप खुल्हा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सच संदेशा नर नरेशा हो के दिता सुणा, अणसुणत दिता समझाईआ। सब ने निरगुण धार निरवैर अगे कीती दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं मालक ख़ालक बेऐब नूरी नूर खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। जो वखरा वखरा मार्ग जगत जुगत दयां चला, चारों कुण्ट खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी धर्म समाज, समग्री आपणे हथ्थ रखाईआ। मेरी सति सच निरगुण सरगुण धार आवाज़, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। आत्म परमात्म भगत भगवन्त काज, करनी दा करता हो के आप कराईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां रखां लाज, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस कारन गोबिन्द उडाया बाज़, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे भगतां दा भगती धार जोड़ा, तन वजूद मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म शब्दी धार अगम्मा घोड़ा, शाह अस्वारा इक अख्वाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब ने रखी लोड़ा, लोड़ींदा सज्जण इक अख्वाईआ । जिस सस्से उपर लाया होड़ा, हाहे टिप्पी नाल मिलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार आपे बौहड़ा, सरगुण वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर

शब्द कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा फल्गुण होया दस, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे हस, अवतार पैग़म्बर गुर गुरदेव ढोले गाईआ। दो जहान पीवण अमृत रस, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड गगन गगनंतर रहे नस्स, ज़िमीं असमान भज्जण वाहो दाहीआ। खुशी मनावण रवि शशि, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। गण गंधरव गावण जस, बिन रसना ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्लाईआ । दस फग्गण कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, दर ठांडे सीस निवाईआ। मेरा शाहो भूप सची सरकार, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जो लहिणा देणा पूरा करे पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जिस चार वरन अठारां बरन देणा इक अधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। दीनां मज़्हबां अन्तर निरंतर मेटणी खार, खरे खोटे आप बणाईआ। आत्म परमात्म दे प्यार, अन्तर दृष्टी सृष्टी इक समझाईआ। तन वजूदां लेखा जाण आप करतार, कुदरत दा कादर होए सहाईआ। मेल मिला के नारी नार, नर नरायण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप
३०५ वड्याईआ। दस फल्गुण कहे मेरा मालक अगम्म अथाह, अगम्मड़ा इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी बण मलाह, बेड़ा ३०५
२४ दो जहान चलाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र महिमा रहे गा, अक्खर अक्खर ढोले सिफ्त सलाहीआ। सो सतिजुग २४
सति दा मार्ग रिहा लगा, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। जुग बदलणा जिस दी सदा अदा, अदालत दा मालक नूर अलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां मन्नया हक खुदा, वाहिगुरु कहि के गुर गुर सीस निवाईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द सदा अनादी, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। जिस दा खेल ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्म ब्रह्मांड आपणी रचन रचाईआ। जिस दा हुक्म सदा अहिलादी, ना कोई मेटे मेटे मिटाईआ। जो भगतां बणे इमदादी, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला हरिजन जन हरि धर्म दी धार करे शादी, शादिआने दो जहान वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा सदा सतिगुर शब्द शब्द दी धार बणे समाजी, समग्री आपणा हुक्म सच वरताईआ।

✪ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल सेवा करन आई संगत नवित ✪

नारद कहे सुण बसुध्धे, सुध आपणी लै अंगड़ाईआ। तेरा भाग होण वाला उदय, उगन आथण मिले वड्याईआ । लेखा तक लै जो इशारा दिता बुध्धे, बुद्धी तों बाहर गया समझाईआ। नव सत्त जगत धार होणा युद्धे, युधिष्टर दा लेखा कृष्ण नाल मिलाईआ। सीर रहिणा नहीं किसे अमृत रस दुद्धे, सति सच शांत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए धवले तैनूं कहिण वसुधा, बेसुध हो के ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम तक लै मुद्दा, मुदतां तों रहिण वालीए आपणी अक्ख खुल्हाईआ। नव सत्त कूड़ क्रिया तक लै युद्धा, पंच विकार करे लड़ाईआ। सति धर्म रिहा कोए ना हुद्दा, जगत जुगत ना कोए चतुराईआ। कलयुग कूड़ विकार तेरे उत्ते कुद्दा, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे वसुधा तक लै आपणी अक्ख , बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सब दे काया माटी भाण्डे होए सख, सच वस्त विच ना कोए टिकाईआ। प्रभ दा दर्शन सनमुख करे ना कोए प्रतख, साख्यात नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीव अणगिणत करोड़ी लख, गणती गणत ना कोए समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पाउणा भक्ख, नव सत्त रंग ना कोए रंगाईआ। प्रभ दा खेल तक अलखणा अलख, अलख अगोचर की समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते होया अन्धेरा, अन्ध आत्म दिसे लोकाईआ। नज़र आए ना सञ्झ सवेरा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। भरमां ढाहे कोए ना डेरा, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म शब्द गाए ना कोई तेरा मेरा, सच सरूप ना कोए समाईआ। कलयुग वक्त गुज़रया बथेरा, पाँधी बण के भज्जया वाहो दाहीआ। प्यार रिहा ना गुरु चेरा, चेला गुर ना कोए चतुराईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दिसे ना नेरा, निज घर ना कोए मिलाईआ। उह तक लै कमलीए तेरे पिच्छे परम पुरख मारया फेरा, जोती जाता पुरख बिधाता हो के वेस वटाईआ। जो जन भगतां उत्ते करे मेहरा, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा मैं तकां केहड़ा राह, कवण कूटे ध्यान लगाईआ। नारद कहे तूं लेखा छड थल अस्गाह, जूहां जंगलां पन्ध मुकाईआ। इक्को नैण लए उठा, बिन लोचन आपणी अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण जोत करे रुशना, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा लहिणा देणा दो जहां, निरगुण निरवैर हो के वेख वखाईआ । उह खेल करे अगम्म अथाह, अलख अगोचर

बेपरवाहीआ। जन भगतां बण के पिता माँ, सतिगुर हो के गोद टिकाईआ। सदा सुहेला देवे ठण्डी छाँ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। उह कलयुग अन्त करे हक न्याँ, निरगुण हो के खोज खुजाईआ। जन भगतां साढे तिन्न हथ्थ तके नगर गराँ, काया खेड़ा ध्यान लगाईआ। नाता जोड़ के पुत्तरां माँ, पिता हो के गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। नारद कहे धरनीए आपणे उत्ते मार लै झाती, बिन नैणां नैण उठाईआ। पुरख अकाला तक लै कमलापाती, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जो मेटणहारा अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। जन भगतां जोड़ के साचा नाती, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। दर्शन देवे इक इकांती, इक इकल्ला सोभा पाईआ। सो हरिजन साचे पुछे वाती, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। लेखा जाणे नाल कलम दवाती, शाही काग़ज़ वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे नारदा मैं तकां धुर दा स्वामी, निरगुण धार नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादी अन्तरजामी, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। तिस दी बिना बुद्धी तों कर पहचानी, जगत अक्ल ना कोए चतुराईआ। जो शाहो भूप सुल्तानी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस झगड़ा मेटणा दीन दुनी जिस्मानी, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। सो मालक ख़ालक बण असमानी, इस्म आज़म इक जणाईआ। जन भगतां मंज़ल बख़्शे रुहानी, रूह बुत वजदी रहे वधाईआ । झगड़ा मुकावे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध रहे ना राईआ। दरगाह साची देवे सच मुकामी, सच दुआरा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा शाहो भूप तक सुल्ताना, मैं वेख वेख बिगसाईआ। मेरा मालक धुर दा रामा, मेहरवान इक अख्वाईआ। निरगुण धार अगम्मी कान्हा, जो लख चुरासी सख़ी रिहा परनाईआ। जिस दा धर्म धार इस्लामा, शरअ आपणी गंढु पुआईआ। जिस दा मन्त्र सतिनामा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी बेपरवाहीआ। उह खेल करे विच दो जहानां, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जन भगतां दे के नाम निधाना, निरअक्खर धार विच्चों समझाईआ। सच प्रेम दा बख़्श हकीकी जामा, अमृत रस रस चुआईआ। अन्दरों मेट अन्धेरी शामा, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां चरण प्रीती देवे दाना, दयावान होए सहाईआ। सब दा लेखे लाए आणा, जो आए चल सरनाईआ। नारद कहे धरनीए मैं खुशीआं विच बोदी खूब हलाना, त्रैलोकी रंग रंगाईआ। जन भगतो जगत विहार दुनिया दा बहाना, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। तुहाडा बलि दुआर दा लेखा ते सम्मत शहिनशाही दस दा अन्तिम खाणा, प्यार मुहब्बत विच तुहाडे रसना मुख

नाल लगाईआ। लहिणा देणा जुग चौकड़ी पुराणा, पुराण अठारां जिस दी देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं चरण धूड़ कराए इश्नाना, जन्म जन्म दी दुरमति मैल रहे ना राईआ।

✪ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस बलकार सिँघ ते बीबी बीरो दी शादी समें
हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पुरख अकाले धुर दे मीत, सो पुरख निरञ्जण तेरी इक सरनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण आदि जुगादी ठांडे सीत, एकँकार अगम्म अथाहीआ। आदि निरञ्जण त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरे हथ्थ वड्याईआ। अबिनाशी करते सति सच तेरा लेखा ठीक, ठाकर स्वामी अन्तरजामी बेनज़ीर तेरी तेरे रंग विच समाईआ। श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान आत्म परमात्म सच प्रीत, प्रीतम देणी माण वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करनी आप तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। जुग चौकड़ी तेरे विच निरगुण सरगुण धार तौफ़ीक, ततव तत रंग देणा रंगाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण सब नूं दस्सणा गीत, गोबिन्द मेला होवे सहिज सुभाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग सति धार बदल दे रीत, रीतीवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा देणा वेख मन्दिर मसीत, काया काअब्यां भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण श्री भगवान, हरि करते तेरी इक शरनाई । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीत्या विच जहान, चौथा जुग भज्जे वाहो दाही। शाहो भूप शहिनशाह अगम्म सुल्तान, बेऐब परवरदिगार नूर अलाही। दर दरवेश मंगीए तेरा इक्को दान, दाते दानी देणी माण वड्याई । सृष्टी दृष्टी अन्तर निरंतर वेख मार ध्यान, सत्त दीप पर्दा ओहला रहे ना राई। मानव मानस मानुख तेरे जीव दिसण जगत जहान, चारों कुण्ट सोभा पाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाई। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरा धर्म दा होवे समाज, समग्री इक्को नाम वरताईआ। तन वजूदां सोहे काज, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। सोई सुरती जाए जाग, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझा आग, ततव तत ना कोए तपाईआ। घर सुहञ्जणा बख़्श कन्त सुहाग, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती दे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ । कूड़ी क्रिया होवे त्याग, त्रैगुण अतीते होणा आप सहाईआ। हँस गुरमुख बणा काग, माणक मोती चोग

चुगाईआ । सच वस्त सच दी दे दे दाद, अमुल अतुल आप वरताईआ। तेरा खेल होवे विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड वजे वधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ इक्को तेरी होवे रंगत, रंगत सच देणी रंगाईआ। मानव ज़ाती आत्म धार होवे संगत, दीन मज़्ह्ब वंड ना कोए वंडाईआ। वरन बरन तों बाहर होवे पंगत, चारे बाणी अन्तर निरंतर भेव देणा खुल्हाईआ। दर तेरे सारे होवण मंगत, भिखारी हो के झोली डाहीआ। तूं देवणहारा जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। बोध अगाधा धुर दा पंडत, अक्ल बुद्धी तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ सतिजुग सच बणा दे धर्म, धरनी धरत धवल धौल वजे वधाईआ। भेव खुल्हा दे आत्म धार ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा आप उठाईआ। निशकर्मी सच कमा दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। मानव ज़ाती तेरे घरों लए जरम, मात तेरा नूर नज़री आईआ। जगत शरअ मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। लेखा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। तूं करनी दा करता सब कुछ हारा करन, करता पुरख इक अख्वाईआ।
३०६ नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सारे तेरी होवण सरन, सरनगति इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म ढोला परमात्म सारे पढ़न, ३०६
२४ सति सच देणा समझाईआ। निरगुण धार तेरी मंज़ल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २४
आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ । गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। धरनी उत्ते बणा दे सची धर्मसाल, सच दुआर इक प्रगटाईआ। जगत अवलड़ी निरगुण सरगुण तेरी होवे चाल, चाल निराली इक जणाईआ। मानस मानव मानुख तेरे होवण लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। जोती नूर दे जमाल, अन्तष्करन कर रुशनाईआ। भाग लगा दे काया माटी खाल, पंचम तत तत पढ़ाईआ। तेरे अगे धुर दा इक सवाल, सवाली हो के मंग मंगाईआ। झगड़ा मुका दे शाह कंगाल, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, साचे मुर्शद धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह वजदी रहे वधाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण दीन दुनी कारज होवे साचा अनन्द, मेल मिलाउणा थांउँ थईंआ। जन भगतां खुशी करना बन्द बन्द, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। सति सच दरसाउणा इक छन्द, संसा मन रहे ना राईआ। भरमां ढाउणी अन्दरों कंध, दूई दुवैत दा डेरा ढाहीआ। निरगुण नूर चाढ़ के चन्द, जोती जाते डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला घर आपणे लैणा मिलाईआ। अवतार

पैग़म्बर कहिण साडी इक अरज़ोई, आरज़ू तेरे कदम रखाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी सच सुण साडी दरोही, बिन रसना जिह्वा दईए सुणाईआ। जो इशारा दिता कबीर नूं लोई, लोयणां तों बाहर बाहर दरसाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ह़ब दा लेखा मेट सके ना कोई, जगत बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर धार अगम्मी शब्द, बिन तन वजूद तेरी सरनाईआ। दो जहान तेरा करन अदब, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान ढोले गाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा तक लै दीन मज़्ह़ब, ज़ात पात खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट जगत शरअ ने कीता ग़ज़ब, हैरानी विच दीन दुनी कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। धुर दा शब्द हुक्म दृढ़ाउँदा ए। निरअक्खर धार विच्चों अक्खर प्रगटाउँदा ए। अवतार पैग़म्बर गुर गुर सतिगुर रंग रंगाउँदा ए। नानक गोबिन्द धार जो निरगुण निरगुण नाल गई जुर, जोड़ी जगत जहान वखाउँदा ए। जिस नूं वेखण देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाउँदा ए। जो संदेशा दे के गया अनन्दपुर, पुरीआं लोआं बाहर दरसाउँदा ए। जिस वेले कलयुग होया घोर, ढईआ गोबिन्द पन्ध मुकाउँदा ए। कलयुग जीव होए ठग चोर, यारी हक ना कोए निभाउँदा ए। माया ममता पावे शोर, शरअ दीन दुनी वंड वंडाउँदा ए। पुरख अकाला दीन दयाला सदी चौधवीं अन्तिम करे ग़ौर, गोर मढ़ी मुहम्मद नाल राह तकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाउँदा ए। मढ़ी कहे मुहम्मद मेरी इक सलाम, बिन सजदयां सीस झुकाईआ। मेरा मालक नूर अलाही इक अमाम, बेऐब अगम्म अथाहीआ। जिस शरअ दा झगड़ा मेटणा तमाम, तमअ सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। मानव ज़ाती बदलणा निज़ाम, नियम कलयुग धुर दा इक्को दए दृढ़ाईआ। जिस रिश्ता जोड़ना कायनात अवाम, मेल मिलाउणा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पैग़म्बर कहिण हरि वज़ीउल ज़मा अफ़ती तवीज़े अज़म चाकुतूनं तौफ़ीके खुदा रहिनुमा नूरे अलाह, अलाह इक अख्वाईआ। जिस सृष्टी नव सत्त तन वजूद हक महबूब धुर दे कलमे नाल करना निकाह, नकाब पर्दे सारे दए उठाईआ। जिस दे अगे मुहम्मद कीती दुआ, ईसा सलीव लैंदयां वास्ता गया पाईआ। तूं मालक मैं सदा चलां तेरी विच रज़ा, राज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। मूसा कोहतूर उत्ते कूक के दिता सुणा, जल वांग तेरी धार इक्को नज़री आईआ। क्यों जगत शरअ वंड रिहा वंडा, मानव मानस मानुख आपणा हुक्म वरताईआ। साडी आशा पूरी करीं मेरे महबूब रब्बे खुदा, खुद मालक तेरी ओट तकाईआ । उह

तक लै नानक निरगुण धार खण्डा रिहा चमका, दो जहानां रिहा जणाईआ। जिस संदेसा देणा थांओं थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ क्रिया लेखा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। दीनां मज़्बां शरअ ज़ंजीर दए कटा, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मार्ग दए समझा, रस्ता बावस्ता आपणे नाल कराईआ। जिस दा लेखा नाल होवे हकीकी खुदा, खुद मालक संग निभाईआ। दीनां मज़्बां तों बाहर कलमा दए सुणा, जबराईल दी लोड़ रहे ना राईआ। धुर दा शब्द पैग़ाम बिन रसना जिह्वा देवे आ, कायनात दा कन्ना गोबिन्द वाला इक समझाईआ। जिस नूं सारयां कहिणा वाह वाह, वाहवा प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। मानव ज़ाती तन वजूद प्यार मुहब्बत इक्को होवे राह, जोड़ा जुड़े थांउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणयां निथाव्याँ परम पुरख चरण कवल देणा थाँ, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भाग लगाउणा साढे तिन्न हथ्थ गराँ, सच दुआर वजदी रहे वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सचखण्ड दुआर तेरा खेल वेखण नाल चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। सतिगुर शब्द सब दा होवे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जगत रीती बग़ैर मन्दिर मसीती सब दा हकीकी होवे निकाह, शादी दे शादिआने खुशीआं नाल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। फल्गुण कहे मैं इक इक ग्यारां, निरगुण निरगुण नाल मिल के वजे वधाईआ। मेरीआं खुशीआं वालीआं बहारां, बहिश्तां जन्नतां स्वर्गां तों बाहर दयां समझाईआ । मेरीआं दीन दुनिया तों वखरीआं सरकारां, शाह सुल्तान श्री भगवान इक्को नज़री आईआ। जिस दीआं लख चुरासी चारे खाणीआं नारां, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आदि जुगादि परनाईआ। जिस संदेशा दिता पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल खेलया विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म हुक्म विच चलाईआ। शरअ दीआं चार कुण्ट शरीअत वालीआं खड़ीआं कर दीवारां, हद हदूदां वंड वंडाईआ। अन्त खेल करे अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी धुरदरगाहीआ। मानव ज़ाती एका दर इक दुआरा, घर इक्को इक सुहाईआ। शब्द अनादी इक धुन्कारा, धुन आत्मक दए दृढ़ाईआ । पुरख अकाला मीत मुरारा, घर बैठा सज्जण सोभा पाईआ। जिस दा खेल सदा सद न्यारा, निरगुण हो के सरगुण दए जगाईआ। सो कलयुग अन्तिम कूड़ क्रिया करे पार किनारा, मेहरवान महबूब आपणे रंग रंगाईआ। चार वरन अठारां बरन हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई देवे इक अधारा, मार्ग इक्को इक समझाईआ। तन वजूद नाता मानस जुड़े पुरख नारा, जोड़ी जगत जहान नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह इक वखाईआ। फल्गुण कहे मैं खुशीआं गावां गीत गोबिन्द, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। जो सब दी मेटणहारा

चिन्द, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर रखाईआ। जो भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख आत्म धार बणा के आपणी बिन्द, नूर नुराना शाह सुल्ताना आपणा भेव चुकाईआ। देवे माण वड योद्धा सूरबीर मरगिंद, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जिस दा लहिणा भारत नाल हिन्द, नव सत्त आपणा हुक्म वरताईआ। उह वेखणहारा जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। फल्गुण कहे मेरा वक्त सुहावणा, इक इक नाल वड्याईआ। मैं इक्को ढोला गावणा, गोबिन्द गोबिन्द धुर दा माहीआ। जिस सच मार्ग चलावणा, नव सत्त सति समझाईआ। इक्को इष्ट दरसावणा, पुरख अकाला नूर अलाहीआ। जिस कलयुग पार करावणा, सतिजुग सच सच दरसाईआ। गृह मन्दिर इक सुहावणा, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। शब्द अनादी इक दृढ़ावणा, बिन रसना जिह्वा दए सुणाईआ। दीपक जोती इक जगावणा, नूर नुराना कर रुशनाईआ। अन्तर आत्म मेल मिलावणा, परमात्म हो के संग निभाईआ। अनन्द कारज तन वजूद जगत सुहावणा, जुगत दीन दुनी नाल वड्याईआ। ग्यारां फल्गुण कहे मैं निव निव सीस झुकावणा, बिन चरणां चरण धूड़ी ख़ाक रमाईआ। दोहां मेल मिल्या परमात्मा प्रभ पूरी करे भावना, आशा मनसा मनसा नाल मिलाईआ।
३१२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं ३१२
२४ भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार निरँकार निराकार निरवैर सब दा पकड़े दामना, दामनगीर बेनज़ीर लाशरीक २४
इक अख्वाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस कानूपुर शास्त्री नगर अवतार सिँघ किरपा सिँघ सतवन्त कौर गुरबचन सिँघ महल सिँघ गुरदित सिँघ अमृत कौर महू ✪

पंज तत कहिण प्रभ साचे कमलापति, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे लेखे ला लै हड्ड मास नाड़ी रत, रत्न अमोलक हीरे लै बणाईआ। चरण कवल ?उपर? जोड़ लै नत, नर निरँकार प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। सति सच दी दे दे बुद्ध मति, मन मनसा कूड़ विकार दे मिटाईआ। आत्म धार बख्श दे सति, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सद आपणा बणा लै दास, दासी दास सेव कमाईआ। मानस जन्म कर दे रास, रस्ता आपणा इक दरसाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी साडी पूरी कर दे आस, तृष्ना कूड़ जगत मिटाईआ। तूं मालक ख़ालक शाहो शाबाश,

शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। तन वजूदां साडी लेखे लाउणी लाश, लखमी नरायण तेरी ओट तकाईआ। साडा लेखा रहे ना नाल शंकर कैलाश, कलाधारी देणी माण वड्याईआ। नाम निधाना बख्श पवण स्वास, साह साह तेरे विच समाईआ। निरगुण नूर जोत कर जगत प्रकाश, अन्ध अज्ञान दे मिटाईआ। निज घर स्वामी करना वास, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साचे सूरे सरबंग, हरि करते तेरी सरनाईआ। निरगुण धार लगा लै अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। सच प्रेम चाढ़ दे रंग, रंगत इक्को इक दरसाईआ। घट निवासी साडी पूरी करनी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जे आत्मा सेज सुहाएं पलँघ, गृह मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। साडा खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी केते गए लँघ, दर तेरे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं गाउँदे तेरा गीत, आदि जुगादि तेरी सरनाईआ। जुग जुग तेरी वेखी रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। तूं मालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी नूर अलाहीआ। साडे झगड़े मेट दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाईए इक गीत, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाईआ। साचा कलमा इक देणा हदीस, हज़रतां तों बाहर करनी पढ़ाईआ। तेरे कदमां झुके सीस, जगदीश तेरी सरनाईआ। लेखा वेख लै बीस इकीस, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। लेखा तक लै राग छतीस, तीस बतीसा की आपणी वंड वंडाईआ। साडा लेखा लहिणा रहे ना प्रकृती पचीस, दर तेरे मंग मंगाईआ। इक्को छत्र सोहे अगम्मे सीस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं भगत बणा लै जग, जग जीवण दाते दे वड्याईआ। कलयुग क्रिया कूड़ बुझा दे अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दर्शन दे उपर शाहरग, शहिनशाह पर्दा आप उठाईआ। तेरे नालों ना होईए अलग, वखरा जुज ना कोए वंडाईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, हरि करता नूर खुदाईआ। साडी शरअ दी मेट दे हद्द, हदूद आपणी दे समझाईआ। जे आत्मा तेरी यद, क्यों ततां दएं जुदाईआ। तेरा नाम इक्को सुणीए नद, अनहद करनी आप शनवाईआ। सानूं हँस बणा दे कग, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख्श दे चरण धूड़, टिक्के धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। नाता तोड़ दे क्रिया कूड़, माया ममता मोह गंवाईआ। चतुर सुघड़ बणा लै मूर्ख मूढ़, अवगुण रहिण कोए

ना पाईआ। सच प्रीती रंग चाढ़ दे गूढ़, दुरमति मैल दे धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा मेटणा भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। लेखे लाउणा काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। कलयुग कूड़ रहे ना कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जे तेरा सति सरूप ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। साडा इक्को होवे धर्म, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। साची बख़्शणी सरन, सरनगति इक्को इक तकाईआ। साडा अन्त ना होवे मरन, मर जीवत तेरा रूप नज़री आईआ। तूं आदि जुगादि करनी करन, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जे भगतां आत्मा तेरी मंज़ल चढ़न, क्यों ततां करें जुदाईआ। असीं तेरा लड़ आए फड़न, पल्लू आपणी गंढु पुआईआ। साडा लेखे लाउणा सीस धड़न, ततव तत देणी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी घाड़न घड़न, भन्नणहार नूर अलाहीआ। बेशक तन वजूद जन भगतां अन्तिम सड़न, सड़ के तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। पंज तत कहिण प्रभ असीं जन्म भोगे कोटन कोटी, चारे खाणी भज्जे वाहो दाहीआ । अन्तिम रखी तेरी ओटी, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। साडी वासना

३१४ कढ दे खोटी, खोटे खरे लै बणाईआ। साडी तकीं ना जगत धार लंगोटी, कप्पड़ वंड ना कोए वंडाईआ। सानूं चाढ़ ३१४

२४ लै दरगाह साची आपणी चोटी, मंज़ल हक हक वखाईआ। साडी ख़ाहिश रहे ना इकलोती, इक इकल्ले तेरे विच समाईआ। २४

जे आत्मा तेरी जोती, जोत तेरे विच मिल के तेरा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं बख़्श सच दुआर, दरगाह साची सच सच सरनाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर तेरा उज्यार, जोती जाते डगमगाईआ। जिथ्थे भगतां आत्मा मिले अधार, उदर दा लेखा रहे ना राईआ। साडी पैज देणी संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साडी मंज़ल मूल ना रहे दुश्वार, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। तेरे गृह जाईए एकँकार, इक इकल्ले तेरी सरनाईआ। तूं साडा परवरदिगार, बेऐब नूर अलाहीआ। तेरा वेखीए हक हकीकी दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग करदे रहे इंतज़ार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नैण उठाईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, रसना जिह्वा ढोले सिफ्त सलाहीआ। सो वक्त सुहञ्जणा कर दे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण चाँईं चाँईंआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा कादर साडा बण मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। असीं डण्डावत बन्दना सजदयां विच करीए निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनादी साडा बेड़ा कर दे पार, किनारा जगत रहिण कोए ना पाईआ। पंज तत कहिण असीं अन्तिम मिट्टी

ख़ाक होणा छार, मढ़ी गोरां खेल खिलाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंजां आपणे गृह देणा अधार, सचखण्ड सच मिले सरनाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते पाउणी सार, परम पुरख परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। सो पुरख निरञ्जण तुध बिन दिसे ना कोए सहार, हरि पुरख निरञ्जण तेरी ओट तकाईआ। एकँकारे साडा लहिणा देणा देणा कर्ज़ उतार, आदि निरञ्जण आपणा रंग रंगाईआ। अबिनाशी करते चरण प्रीती बख़्शणा प्यार, श्री भगवान होणा आप सहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा दरस होवे दीदार, बिन नेत्र लोचन नैण नैण बिगसाईआ। सतिगुर शब्द तूं शाहो भूप सिक्दार, दो जहानां इक अख्वाईआ। त्रैगुण माया देणा कर्ज़ उतार, पंज तत मंग मंगाईआ। असीं भगत सुहेले तेरे मीत मुरार, मित्र प्यारे तेरे नाल मिलके वजदी रहे वधाईआ। जे भगतां आत्मा जाए सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची तेरे नूर विच समाईआ। तूं भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। साडी नमों नमों नमों निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा गृह सुहञ्जणा करना आप करतार, कुदरत दे कादर देणी वड्याईआ। दर भिखक हो के मंगदे भिखार, झोली धुर दे मालक देणी भराईआ। साडा लहिणा देणा आवण जावण लख चुरासी नाता तुट्टे विच संसार, चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भरम ना कोए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोए सिक्दार, मालक ख़ालक प्रितपालक निरगुण सरगुण नज़र कोए ना आईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस करनैल सिँघ जरनैल सिँघ मलूक सिँघ पिण्ड पोखरपुर (उतर परदेस) ✪

पंज तत कहिण प्रभ सचखण्ड निवासी सो पुरख निरञ्जण, हरि पुरख निरञ्जण तेरी इक सरनाईआ। एकँकारा आदि जुगादि दर्द दुःख भय भञ्जण, आदि निरञ्जण नूर नुराने तेरी जोत रुशनाईआ। श्री भगवान निरगुण सरगुण धार साचे सज्जण, अबिनाशी करते परम पुरख परमात्म तेरे हथ्थ वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच सति दा पा दे अंजण, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द शब्द अनादी तेरे नाद वज्जण, अनहद करनी आप शनवाईआ। सच दुआर करा दे आपणा मजन, दुरमति मैल रहे ना राईआ। रसना जिह्वा तेरा गाईए भजन, बन्दगी बिना मुशंदगी देणी समझाईआ। गढ़ हँकारी विकारी भाण्डे भज्जण, माया ममता मोह ना कोए हल्काईआ। अन्तर आत्म परमात्म तेरा दीपक जोत जगण, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ । तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी अकाल मूर्त मदन, मध सूधन तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन

दुनी शरअ शरीअत मेट के हद्दन, हदूद महबूब इक वखाईआ। साडा लेखे लाउणा तन वजूद बदन, ततव तत आपणे रंग रंगाईआ । तुध बिन अवर कोई दिसे ना पड़दे कजण, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नव सत्त होए नग्न, ओढण सीस जगदीश ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडी तेरे अगे अरज़ोई, सचखण्ड निवासी दर ठांडे सीस निवाईआ। निरगुण धार साडी सुरत जगा दे सोई, शब्दी शब्द नाल मिलाईआ। साडी तेरे चरण कवल दरोही, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तेरी वस्त साडे अन्दरों गई खोही, साचा नाम ना कोए वरताईआ। पूरब लेखा तक लै जो इशारा दिता कबीर ने लोई, जगत लोयणां तों बाहर जणाईआ। कलयुग अन्त मिले किते ना ढोई, सच दर ना कोए सरनाईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती कवल नाभ देवे कोए ना चोई, रसना रस ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सानूं जुग जुग मिल्या इशारा, सतिजुग त्रेता द्वापर दए गवाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता अधारा, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। शास्त्रां लिख्या लेख अपारा, कलम शाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतां कीती कूक पुकारा, अन्तष्करन तेरी दुहाईआ। साडा लहिणा देणा पूरा कर दे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तुध बिन अवर ना कोए सहारा, ख़सम नायक गुसाँई नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी पा सारा, परवरदिगार सांझे यार तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अँधयारा, सति सच कर रुशनाईआ। अन्तर निरंतर तेरे प्रेम दी होवे जै जैकारा, बिन रसना जिह्वा ढोले सिफ्त सलाहीआ। साडी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरा चरण कवल इक दुआरा, दुआरका वासी जिस दा भेव गया खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज तत कहिण प्रभ जन भगतां पाउणी सार, महासार्थी दया कमाईआ। लेखा तकणा तेई अवतार, त्रैगुण अतीते ध्यान लगाईआ। पैग़म्बर गुर रहे ना कोए उधार, लहिणा सब दा झोली पाईआ। गुरु गुरदेव कर्ज़ा देणा उतार, मकरूज आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे रहे तेरे दुआर, दर दुआर लेख अलख ?जगाईआ?। साडा जन्म मरन लेखा दे संवार, दर तेरे आस रखाईआ। जे भगतां आत्मा दएं अधार, उदर दा लेखा मात मुकाईआ। क्यों ततां करें ख्वार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत रोईए मारीए धांहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। पंज

तत कहिण प्रभ तूं शहिनशाह शाहो भूप, धुर मालक इक अख्वाईआ। असीं भगत सुहेले तेरे रूप, बिन रूप रंग रेख वेखणा चाँईं चाँईंआ। जे आत्मा तेरा पूत, सुत दुलारा इक अख्वाईआ। उस दी सुहञ्जणी कर रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। क्यों ना लेखे लाएं काया माटी बुत, बुतख़ानयां दएं वड्याईआ। तूं पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चातृक हो के रहे बिल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेखा आप मुकाईआ । पंज तत कहिण प्रभ असीं भगत तेरे दुलारे, नन्हे बच्चे नज़री आईआ। साडी पैज दे संवारे, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म लैणा ना पए दुबारे, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। बेशक साडी ख़ाक दिसे विच संसारे, अग्नी तत तत जलाईआ। साडी आशा पुज्जीए तेरे चुबारे, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे तेरा नूर उज्यारे, जोती जाते डगमगाईआ। रूप बणीए तेई अवतारे, पैग़म्बरां विच समाईआ। गुरु गुरदेव खेल अपारे, अपरम्पर स्वामी देणा वखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दे तेरे लारे, अन्तिम पूरे दे कराईआ। कलयुग विच्चों कढ अँधयारे, सति सच विच टिकाईआ। तेरा सुणीए शब्द नाद धुन्कारे, बिन कन्नां होए शनवाईआ। तक्कीए नूर जोत चमत्कारे, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पंज तत कहिण प्रभ सचखण्ड वखाउणा घर, गृह मन्दिर मिले वड्याईआ। इक्को सुहञ्जणा होवे दर, दूसर नज़र कोए ना आईआ। दर्शन पाईए तेरा हरि, अन्त तेरे विच समाईआ। लेखा रहे ना जोरू ज़र, तृष्ना हवस देणी मिटाईआ। तूं मालक नरायण नर, नर हरि तेरी वड वड्याईआ। आपणी किरपा देणी कर, करनी दे करते हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर देणी सरनाईआ। पंज तत कहिण प्रभ साडा लेखा रहे ना लोकमात, भगवन तेरे विच समाईआ। साडी लेखे लाउणी अज्ज दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। बातन दस्सणी अगम्मी बात, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। दर घर साचे पुछणी वात, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ । साडा लेखा नहीं काग़ज़ात, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। चरण कवल जुड़े नात, रिश्ता अवर ना कोए रखाईआ। तूं स्वामी कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। मेहरवान हो के देणी धुर दी दात, दाते दानी दया कमाईआ। जन भगतां हिरदा करना शांत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरा दरस होए इकांत, इक इकल्ले मिलणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरा खेल बहु बिध भांत, भेव अभेद अछल अछेद छल तेरा समझ कोए ना पाईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

बेनन्ती करे तेरे अगे हज़रत ईसा, मालक मख़लूक तेरी सरनाईआ। मेरा लेखा तक लै शाहो शाबाश बीसा, बेपरवाह अगम्म अथाह दया कमाईआ। तेरा नूर ज़हूर नज़री आए एका इक इकीसा, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। शाह सुल्तान नौजुआन तेरा नूर ज़हूर अगम्मी सीसा, तन वजूद शरीर वंड ना कोए वंडाईआ । मैनूं याद आउँदी तेरी साहिब सच हदीसा, जो हुक्म हुक्म नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। हज़रत कहे मेरे नूर नुराने परवरदिगार, सति सच तेरी सरनाईआ। दो जहानां मालक निरगुण मीत मुरार, मित्रा तेरी बेपरवाहीआ। सदी सदीवी तेरा करदा रिहा इंतज़ार, जगत दिवस वंड ना कोए वंडाईआ। ख़ादम हो के बणया रिहा ख़िदमतगार, खुद मालक तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान महबूब बिन नेत्रां निगाह मार, बिन नैणां नैण तकाईआ। मेरी बन्दना कदमबोसी तेरे चरण दुआर, धूड़ी ख़ाक मस्तक टिक्के जगत रमाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार, निरँकार तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी ओट तकाईआ। हज़रत ईसा कहे मेरे नवाब, निरगुण धार तेरी सरनाईआ। मैथों पिछला लै हिसाब, लेखा तेरे अगे टिकाईआ । बिन अक्खरां खोल्ह किताब, बिन नेत्रां कर पढ़ाईआ। मेरे नूर नुराने हक अहिबाब, साजण तेरे हथ्थ वड्याईआ । मैं झुक के करां अदाब, निव निव लागां पाईआ। तेरी मंज़ल हक महिराब, महबूब तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच दे रंग रंगाईआ। ईसा कहे मेरे नूर नुराने गॉड, गुड ईवनिंग कहि के सीस निवाईआ। तेरा शब्द नुराना अगम्मा राड, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस वेले तेरे कलमे ने मैनूं दिता अज़ाब, अज़ल दा रूप बदलाईआ। मैं निगाह मारी रवि शशि तक्कया महताब, बिन नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। इक्को नज़र आया जनाब, जनाबेआली धुरदरगाहीआ। मैनूं इशारा कीता ईसा आवांगा ते आवांगा विच पंजाब, पंचम दी धार रंग रंगाईआ। नाल नानक दी वखाई रबाब, जो रब्बी हुक्म रिहा सुणाईआ। फेर इशारा दिता लेखा मुका के बग़दाद, बग़लगीर करां ख़लक खुदाईआ । निरगुण धार हो सब दी करां इमदाद, बचया रहिण कोए ना पाईआ। अज्ज सलीब लैणी ते फेर मग़रब विच होवेगी तेरी सारी जायदाद, दूजा वारस नज़र कोए ना आईआ। ईसा हथ्थ उठा के ल्या अराध, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। फेर हुक्म होया मैं आवांगा पैग़म्बरां गुरुआं तों बाद, आप आपणा फेरा पाईआ। मेरे हुक्म नूं रखणा याद, भुल विच ना कदे भुलाईआ। खेल होवे विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड दयां समझाईआ। निरगुण धार बदल के स्वांग, स्वांगी हो के खेल खिलाईआ। तेरा लहिणा देणा

जलधारा दी पार करके कांग, समुंद सागराँ पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे बावन दी दूजी गई सी पलांघ, फेर मुख ल्या भवाईआ। नाले हुक्म दिता उह लैंड जिस नूं टरन-टू-से कहि के बीलांग, आप आपणा रूप दरसाईआ। अन्त जिस वेले शरअ दी शरअ तों परे लगी छलांग, कदम कदम नाल बदलाईआ। उस वेले मेरी रखीं तांघ, तरह तरह नाल दिता दृढ़ाईआ। ईसा दी ज़ोर नाल निकली चांघ, कूक कूक दिता सुणाईआ। की प्रगट होवे अवतारां पैग़म्बरां वांग, तन वजूद डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। ईसा कहे मेरे मालक हक, हक तेरी सरनाईआ। मैं खुशी विच खुशहाल लक्क, ऐल-यू-सी-के जिस दा भेव सके ना कोए समझाईआ। तेरे हुक्म दा दो जहान दा कलक, वैल बिगिन वन टू कहि के तेरे दर ते सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। ईसा कहे झट मेरीआं अक्खां अगे आ गया माटो, मिट्टी ख़ाक तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। नाल इशारा दिता जिथ्थों टरन कीता उस दा नाम होवे टरानटो, टरन टू दूसरा आपणा रूप बदलाईआ । कोई भेव ना जाणे वट यू वानटो, वट यू वांट दैट दोज़ समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे मैं निगाह मारी उत्ते लैंड, फिर नेत्र नैण उठाईआ। फिर झुका के आरमज़ आपणे हैंड, हैंडज़ अप करके दिती दुहाईआ। की हुक्म संदेशा करे सेंड, सटैंड सटारमां विच पए दुहाईआ। पता नहीं तेरा किथ्थे बिगिन ते किथ्थे ऐंड, इंडैकस समझ कोए ना पाईआ। सब नूं आपणे नाल कर के जांइड, मेला मेले सहिज सुभाईआ। खेले खेल बीहाईंड, भेव अभेद ना कोए खुलाईआ। तेरा पहला हुक्म ते पहला होवे सटैंड, तेरी सिट सिटिंग नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। ईसा किहा मेरे शहिनशाह मेरी अरज़ोई, बिन सीस सीस निवाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोई, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत फिरे दरोही, दो जहान देण दुहाईआ। निरगुण धार निरगुण नाल जाए ना छोही, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। सब दी पत जाए खोही, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। झट नारद आ गया आ के कीता सलाम, सीस दिता निवाईआ। मित्रा किस नाल करें कलाम, किस रिहा समझाईआ। कि हुक्म संदेशे सुणें बनाम, सुण सुण खुशी बणाईआ। ईसा किहा एह खेल नहीं अवाम, समझ कोए ना पाईआ। मैं धुर दा सुण पैग़ाम, जो हुक्म रिहा जणाईआ। जिस अन्त अख़ीर करना इंतज़ाम, इंतकाम लए लोकाईआ। शरअ ज़ंजीर कटणे ग़ुलाम, ग़ुरबत

३१६
२४

दूर कराईआ। लेखे लाउणे माटी चाम, चम्म दृष्टी दए गुआईआ। जिस झगड़ा मिटाउणा शरअ हंज़ाम, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। उह मेरा मालक जिस नूं करां सलाम, निव निव लागां पाईआ। जो सचखण्ड दुआर करे आराम, आरामगाह इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। हज़रत किहा नारदा मैनूं दीन दुनी दिसदी वांग भेडां, ?भण्डारी? सब दा इक्को नज़री आईआ। मेरी अज्ज दी विचार ते बीसवीं सदी दीआं खेडां, तैनूं सच दयां समझाईआ। नाले ज़ोर दी धरनी ते मार के ठेडा, धूड़ विच्चों धूड़ दिती उडाईआ। नाले नक दी रख के सेधा, हथ्थ मस्तक उत्ते छुहाईआ। की लेखा लिख्या ब्रह्मा ने विच चारे वेदा, ज़रा मैनूं दे दृढ़ाईआ। अन्तर निरंतर खुल्ले भेदा, भेव ना कोए रखाईआ। नारद किहा उह मालक अछल अछेदा, बल धारी अगम्म अथाहीआ । उह आपणे वरगा ते आपणे जेडा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। हज़रत ईसा निगाह मार लै जिस वेले उस नूरी दीपक जोत जगाया विच कनेडा, कन्ढी घाट सारे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। ईसा किहा नारदा कनेडा केहड़ी होवे धरती, धर्म धार जणाईआ। उथे कवण होवे निध परती, कवण करे शनवाईआ। नारद हस के किहा उह साहिब स्वामी एह खेल उस दे घर दी, घराना दो जहान जणाईआ। मेरी आशा तेरी मनसा खेल जणाए वर दी, सहिज सहिज नाल दृढ़ाईआ। उहदी जोत नुरानी रूप धरे नरायण नर दी, नर मादी समझ कोए ना पाईआ। जिस खेल खेल के दिशा चढ़दी, आपणा हुक्म दरसाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जगत प्यार तृष्ना पढ़दी, अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। उह खेल जाणे चोटी जड़ दी, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। उस वेले उस ने सेवा लैणी तेरे बारां चेल्यां विच्चों इक धड़ दी, तैनूं सहिज नाल समझाईआ। जिस लुबांग दी कथा तैनूं होवे फड़दी, बन्धन जगत नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। ईसा किहा नारदा उह केहड़ी होवे धार, सच दे समझाईआ। नारद किहा पहलों कहि तूं शब्द गुरु सब कुछ करनेहार, शरारती इबारती जुग जुग इक अख्वाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अथाह तेरी बेपरवाहीआ। मैं संदेशा दस्सां साचे यार, सच दयां जणाईआ। उह मालक नूर नुराना होवे निरगुण नूर जोत उज्यार, ततां वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा धरनी उत्ते होवे घरबार, गृह मन्दिरां ध्यान लगाईआ । तूं रहिणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद किहा सतिगुर शब्द हो सुणावांगा। हज़रत ईसा भेव चुकावांगा । धुर दी हदीसा इक सुणावांगा। बीस बीसा नाल मिलावांगा। उनीसा

३२० २४

तेरी गंढु पुआवांगा। ख़ाली ख़ीसा सर्ब वखावांगा। जगत सीस ताज दरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकावांगा। नारद किहा हज़रत धुर दी सुण लै बात, बातन दयां जणाईआ। अन्त खुशीआं वाली मोहणी रात, जंगलां वंड वंडाईआ। तेरा साथी संदेशा लै के जावे पात, सुनेहड़ा इक सुणाईआ। आउ वेखो मारो झात, ईसा बैठा सोभा पाईआ। तेरा लेखा उस दे नाल होवे नात, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। तुहानूं फड़ावे वेले विच प्रभात, तेरा कलाक देवे गवाहीआ। जिस कारन तेरा वजूद पाए वफ़ात, बाडी नज़र कोए ना आईआ । ईसा लिखण लग्गा नाल कलम दवात, नारद हथ्थ दिता उठाईआ। मेरे नाल कर टाक, जिस लैंगूवेज दी समझ कोए ना पाईआ। दो जहानां वेख पलाट, जगत वंड ना कोए रखाईआ। नाले इशारा कीता तेरा अन्त अख़ीर टरानटो विच्चों होणा सटारट, लाईन ऐन ऐन समझाईआ। आपणी शरअ दा फड़ लै पाट, कासा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद किहा हज़रता प्रभ साचा खेल खिलावेगा। निरगुण नूर जोत रुशनावेगा। सच सरूर इक चढ़ावेगा। नाम कलमा कर मशहूर, मशवरा आपणे नाल रखावेगा। दीन दुनी दा करे इक दस्तूर, दस्त सब दे बन्नृ वखावेगा। जिस दी आशा रखी मूसा उत्ते कोहतूर, उह करता करनी कार कमावेगा। ईसा किहा उह मेरा मालक इक हज़ूर, जो नूर नूर प्रगटावेगा। नारद किहा उह आवे ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखावेगा। ईसा किहा मैं होणा मशकूर, शुक्रिए विच सीस निवावेगा। नारद किहा उह वसे नेड़े दूर, दोहरी वंड वंडावेगा। जिस दी नाम सितार तुरीआ वाली तूर, तुरत आपणा रूप वटावेगा। प्रगट हो के नूरो नूर, नूर नुराना इक चमकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणावेगा। नारद कहे हज़रता उस दा हुक्म शब्द दी धार, जगत अक्खर ना वंड वंडाईआ। अक्ल बुद्धी ना कोए विचार, मनमति ना कोए रखाईआ। उह सब तों वसे बाहर, दो जहानां वेखण कोए ना आईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। वसे सचखण्ड दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस भेजे तेई अवतार, अवतरी आपणी कल वरताईआ। जिस मूसा बणाया सिक्दार, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ईसा करे ख़बरदार, धुर दी ख़बर दिती जणाईआ। उस दा करना इंतज़ार, नेत्र लोचन नैण उठाईआ। उह आवे कलि कल्की अवतार, अमाम अमामा धुरदरगाहीआ। हुक्म संदेशा देवे आपणी वार, वारस हो के आप जणाईआ। ईसा कूक के किहा पुकार, दरोही नाम ख़ुदाईआ। मैं उस दा दुलारा विच संसार, पिता पूत रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। ईसा किहा नारदा की उस दी

होवे धर्म निशानी, सच नाल जणाईआ। किस बिध मेरी करे पहचानी, वेखे थांउँ थाँईंआ। कवण जूह होवे बेगानी, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे अन्दर आवे हैरानी, मैनूं दे समझाईआ। पसीना आवे पेशानी, मस्तक दए दुहाईआ। की खेल करे नुरानी, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। नारद किहा हज़रता निगाह मार दो जहानी, तैनूं दयां समझाईआ। जिस वेले तेरे गृह खाण आवे महिमानी, आपणा वेस वटाईआ। उस दी सधरां भरी होवे जवानी, जोबन अन्तर निरंतर रखाईआ। जिस दा लेखा लिख ना सके कानी, कायनात ना कोए वड्याईआ। जिस ने पार करने समुंद सागर पाणी, उस ने चरणां हेठ दबाईआ। ज़रा निगाह मार ध्यानी, वेखणा चाँईं चाँईंआ। उह शहिनशाह होवे शहानी, शाहो भूप बेपरवाहीआ। रूह बुत तों बाहर उस दी मंज़ल होवे रुहानी, रौनक जगत जहान कराईआ। उस वेले हरिजन साचे भगत दी प्रेम दी लए कुरबानी, लहिणा आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद किहा ईसा क्यों सुण के होएं हैरान, हैरानी क्यों आईआ। उह सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जो सब दी करे पहचान, बेपहचान नूर अलाहीआ। झट ईसा ने फड़ के आपणी ज़बान, ज़ोर नाल दिती खिचाईआ। धन्न भाग जे मेरे घर बण के आवे महिमान, मेहरवान नूर अलाहीआ। फेर भावें सारी धरती होवे भूमी शमशान, शमअ नूर नज़र कोए ना आईआ। नाले हथ्थ दोवें करके वल्ल असमान, इस्म आज़म आपणा वेख वखाईआ। मैं बालक तेरा निधान, तूं बाप वड वड्याईआ। मैनूं हक दा दे दे दान, हकीकत दे वरताईआ। मैं वेखां सुंञ मसाण, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरे स्वामी होणा निगहबान, नैण नैण विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे ईसा उस वेले झलणा पए दुःख, सच नाल सुणाईआ। चारों कुण्ट वरतणी भुख, सांतक सति ना कोए कराईआ। दरोही फिरनी विच मनुक्ख, मानसां धीर ना कोए धराईआ। धर्म दा रहिणा नहीं कोई रुक्ख, साया सच ना कोए जणाईआ। जे तूं परवरदिगार दा बणया पुत, सुत दुलारा इक अख्वाईआ। किस किस दा भार लएं चुक, मैनूं दे दृढ़ाईआ। उधरों इक बृद्ध आ गया जिस ने ईसा नूं जफ्फी पाई घुट्ट, गल नाल ल्या लगाईआ। पैग़म्बरा उह तक लै तेरी वीहवीं सदी दा तारा रिहा टुट, असमान रहे कुरलाईआ। मैनूं आपणा बणा लै जुट, जोड़ीदार अख्वाईआ। बांह फड़ा लै गुट, हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। मुख हिला लै बुट, बुल्ल्हां नाल सुणाईआ। तेरी मेरी प्रीत ना जाए टुट, सके ना कोए तुड़ाईआ। मेरा भाग ना जाए निखुट, कर्म ना रूप दरसाईआ। इक्को धार पईए उठ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भावें मैनूं दोज़कां विच सुट, भावें बहिश्तां विच टिकाईआ। भावें सुक्का दे दे टुक, खा के झट लँघाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। ईसा फड़ के लाया नाल छाती, प्रेम नाल रखाईआ। झट संदेशा सुणया कमलापाती, अन्तर अन्तर दिता जणाईआ। बिना निगाह तों निगाह मार के झाकी, बिना नैण नैण उठाईआ। उह लेखा तक लै बाकी, तैनूं दयां समझाईआ। तेरी छेती मुकणी हयाती, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी सिफ्त काग़ज़ाती, अक्खरां नाल सलाहीआ। एह जो तेरा बणया साथी, सोहणा संग रखाईआ। एहदे हथ्थ विच वेख लै लाठी, लूला लंगड़ा हेठों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा निगाह मारी मुसकराया विच्चों बुल्लां बुट्टीआं, हथ्थ हथ्थां उत्ते टिकाईआ। सानूं खुल्हीआं मिलीआं छुट्टीआं, मिल मिल के निगाह मिलाईआ। जां निगाह मारी मित्र दीआं लत्तां वेखीआं टुट्टीआं, दोवें ध्यान जणाईआ। फेर मीट के आपणीआं मुट्ठीआं, ज़ोर नाल दबाईआ। मैं तेरा पुत तेरीआं करनहारा बुतीआं, बुतख़ानयां अन्दर डेरा लाईआ। मेरे मालका मेरीआं सुहाउणीआं रुतीआं, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। झट हुक्म होया जिस वेले तुहाडीआं अन्तिम आशा मुकीआं, जगत लहिणा रहिण कोए ना पाईआ। सब दीआं ख़ाली होवण हुक्कीआं, हुक्म मिले धुरदरगाहीआ। इक्को पढ़नी सब ने तुकीआ, तुख्म तासीर दए बदलाईआ। जिस मित्र प्यारे तेरे तेरीआं बाहवां चुक्कीआं, सीने नाल लगाईआ। एह प्रीतां रहिण ना लुकीआं, पर्दा परदयां विच्चों खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। ईसा किहा मेरा मित्र जिस दा नाम सी जानसन, अक्खरां चौह नाल वड्याईआ। मेरा महबूब विच्चों दिस्या ख़ालस, नूर नूर अलाहीआ। मैं विचोला बण के सालस, सहिज नाल सीस झुकाईआ। इस दा दलिद्र कट के आलस, जगत रोग गंवाईआ। सच जीवण दा दे चानस, चरण तेरे सरनाईआ। फेर बणाउणा मानस तों मानस, मानवता आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक दरसाईआ। परवरदिगार किहा सुण मेरे मसीह, मसला दयां समझाईआ। मेरा लेखा बड़ा वसीह, आदि अन्त ना कोए समझाईआ। जिस मित्र दी कीती तशरीह, सहिज नाल सुणाईआ। एहदा अगे करना की, मंग मंग लै चाँईं चाँईंआ। एह मानव होवे कि जीअ, जीव आत्मा वंड वंडाईआ। कि वसे साढे तिन्न हथ्थ दी सीअ, सीने अन्दर मेरा नाम रखाईआ। झट ईसा ने मारी लीह, लीक दिती लगाईआ। जिस वेले मेरे मालका मेरे अन्त दी रखें नींह, जड़ जगत जुगत उखड़ाईआ। उस वेले मेरा लेखा होवे उन्नी नाल वीह, बीसवीं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। झट नारद दा मित्र नाल होया विचार, जानसन नूं रिहा सुणाईआ। की तूं कीता

३२३
२४

दीदार, मैनूं दे दृढ़ाईआ । उस हस के किहा मैं गुज्झी सुणी गुफ़तार, भेव ना कोए खुल्हाईआ। पता नहीं ईसा दा केहड़ा यार, अन्दर वड़ के यराने रिहा निभाईआ। बिना रसना तों बोले जैकार, संदेसे देवे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। ईसा किहा मेरा लेखा अन्त हिसाब, सच सच दृढ़ाईआ। मेरा मालक हक जनाब, पर्दा देणा उठाईआ। तैनूं करां अदाब, निव निव सीस झुकाईआ। धुर हुक्म कीता महाराज, सहिज नाल सुणाईआ। ईसा निरगुण धार तक लै ताज, तख्त निवासी इक अख्वाईआ । जिस वेले चारों कुण्ट पैणी भाज, दीन दुनी दुहाईआ। धर्म दा रहे ना कोए समाज, समग्री सच ना कोए वरताईआ। झट उस वेले उठ के लूल्हे लंगड़े अपाहज, प्रभ अगे वास्ता पाईआ। जे उस वेले मेरे नाल सवरे तुहाडा काज, फेर वी आपणा मैं तन भेंटा दयां कराईआ। झट ईसा दे मुख विच्चों निकली अवाज़, खुशीआं नाल सुणाईआ। हुण तूं मेरा मित्र फेर तेरा साथी होवेगा जिस दे हथ्थ उत्ते होवेगा बाज़, बाज़ां वाला रूप प्रगटाईआ। फेर उस तों निरगुण नूर हो के आवेगा बाद, जोती जाता इक अख्वाईआ। तैनूं जन्म विच्चों जन्म दे के फेर लएगा लाध, होणा आप सहाईआ। बेशक तूं लंगड़ा लूल्हा अपाहज, दोवें लत्तां नज़र कोए ना आईआ। उस हस के किहा जे मेरा मालक मेरे शरीर बेनज़ीर दीन दुनी दा बदल देवे राज, रईयत हो के आपणा आप भेंट कराईआ। झट हुक्म होया ईसा एह खेल बोध अगाध, बुद्धी तों परे दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। झट ईसा ने मीटीआं अक्खां, पुठ्ठे हथ्थ लए कराईआ। तेरा रूप करोड़ करोड़ी लखां, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। जिधर वेखां दीन दुनी रूप कक्खां, सड़दी दिसे लोकाईआ। केहड़ी कूटे नस्सां, जावां चाँईं चाँईंआ। अगों अवाज़ आई ज़रा निगाह मार लै होड़ा उत्ते सस्सा, सतिजुग दए वड्याईआ। जिस वेले कलयुग रैण अन्धेरी होई मस्सा, हँ रूप ना कोए दरसाईआ। सब दे गल विच तेरी फाँसी दे थाँ शरअ दा होणा रस्सा, ज़ंजीर बेनज़ीर सके ना कोए कटाईआ। एह खेल अनोखा दस्सां, दहि दिशा तों बाहर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। ईसा किहा मेरी इक्को इक ख़्वाहिश, धुर दे मालक दयां दृढ़ाईआ। मेरी इक्को इक आस, सच दयां समझाईआ। झट लंगड़े लूल्हे ने किहा मेरी ज़रूर लेखे लायो लाश, किसे लशकर दी लोड़ रहे ना राईआ। पर इक गल्ल मेरे साहिब मैनूं आप करीं तलाश, तसबी माला हथ्थ ना कोए रखाईआ। मेरे अन्तर दईं विश्वाश, विषयां तों बाहर रखाईआ। झट ईसा ने किहा शाबाश, मित्रा तेरे हथ्थ वड्याईआ। तैनूं मार नहीं सकदा शंकर बैठा उत्ते कैलाश, कलाधारी तेरा होए सहाईआ। मेरी

वीहवीं सदी ते मैं वी होणा नहीं निराश, मालक अगे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। धुर हुक्म होया सुण ईसा मेरे सुत, सच दयां सुणाईआ। मेरा नूर अबिनाशी अचुत, आदि जुगादि अगम्म अथाहीआ। जिस वेले मेरी मौली रुत, रुतड़ी जगत भगत महकाईआ। तूं वी पैणा उठ, लैणी सच अंगड़ाईआ। मैं साहिब हो के जावां तुठ, देवां माण वड्याईआ। जिस वेले आवां तेरी निगाह पार दी गुठ्, तन वजूद वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। ईसा किहा उस वेले प्रभू तेरी की होवे निशानी, भेव देणा खुल्हाईआ। हुक्म होया बिना ज़बानी, धुर दा कलमा दिता सुणाईआ। उठ वेख खेल जहानी, दो जहानां बाहर दयां वखाईआ। तेरी मुहब्बत पिछली पुराणी, प्रेमीआ वेखणी चाँईं चाँईंआ। जानसन दा जामा फेर होवे इन्सानी, इन्सान इन्सानां वरगा सोभा पाईआ। एह खेल बड़ा महानी, मुहब्बत विच दयां दृढ़ाईआ। सब दा बणके बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। ईसा किहा मेरा अन्त देणा सुधार, तेरी इक सरनाईआ। कूक कीती पुकार, दरोही नाम खुदाईआ। हुक्म मिल्या अपार, अपरम्पर दिती वड्याईआ। उस वेले कलि कल्की होणा अवतार, नूर नुराना डगमगाईआ। पूरब लहिणा देणा कर्ज़ देवां उतार, कौल इकरार वेख वखाईआ। तेरे मित्र नूं जन्म दुआ के विच संसार, नाम ऊधम सिँघ धराईआ। कलयुग नूं उलटाउण बदले उहदा लेखा लग्गे अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा समझाईआ। उह एसे तरह चल ना सके लत्तां भार, ईसा तेरी याद फेर दयां रखाईआ। चारों कुण्ट होवे हाहाकार, हाहाकार करे लोकाईआ। फेर दे के दोंह हथ्थां दा प्यार, प्रेमी प्यारा आपणा लवां बणाईआ। ओनां चिर सम्मत शहिनशाही दस विच जा ना सकां समुंदरों पार, पूरब लेखा वायदे वाला नाल मिलाईआ। उह ईसा अज्ज उस दा कर शुकर गुज़ार, जो भगत दुआर बैठा सोभा पाईआ। एह शब्द दी खेल जो जुगो जुग पूरी करे ते वेखे वारो वार, जो अभुल हो के भुल कदे ना जाईआ। हुण नवां जीवन देवे ते नवां देवे प्यार, खुशीआं रंग रंगाईआ। जिस दी वीहवीं सदी करदी इंतज़ार, बैठी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे भगतां दा भगती दा लेखा भगतन पूरा कीता उधार, अदल दा अदल इन्साफ़ सति सच वाला कराईआ।

✪ २८ फग्गण शहिनशाही सम्मत दस हरि भगत दुआर दिल्ली-६ धीर पुर हरिसंगत नवित रात समें ✪

यसूह कहे शेर सजदा बीस बीसे विच भारत, भगत दुआर दिल्ली सीस निवाईआ। जिस दा हुक्म फ़रमान संदेशा होणा सटारट, शुरू विच आपणा हुक्म कराईआ। जो चार जुग दे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा वेखणहारा आरट, ग्रन्थ शास्त्रां फोल फुलाईआ। मेहरवान महबूब नव सत्त तके अन्धेरा डारक, नूर मूनलाईट नज़र कोए ना आईआ। मैं चरण छूहां बिन तन वजूद जिस वेले पहुंचे विच न्यू यॉर्क, यक मालक वेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। हज़रत ईसा कहे मैं कदमबोसी करां फ़ुट फ़ीट, सिफ्तां दा मालक वेख खुशी मनाईआ। जिस मेरी धार दी वेखणी सटरीट, सटैंड सिट नज़र किसे ना आईआ। जिस दी समझ सके ना कोई बीट, बिटवीन दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे मेरा खुशीआं नाल झुके हैड, गॉड कहि के सीस निवाईआ। मेरे अन्तर निरंतर पड़दा खोल्हे लिड, लैंड दा मालक नूर अलाहीआ। सच सुहञ्जणा गृह वेखे आपणा बैड, ज़िमीं असमान वेखण कोए ना पाईआ। जिस दे हुक्म विच मेरी आशा होणी डैड, डिड डू डज़ समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। ईसा कहे मेरी सुहञ्जणी होवे लैंड, लैंडमारक वेख वखाईआ । मेरे बद्धे होण हैंड, हिन्द दा मालक वेखां चाँईं चाँईंआ। जिस दे हुक्म विच वीहवीं सदी कर सटैंड, कदम कदम ना कोए उठाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा होणा ऐंड, इंनडैकस आपणे विच छुपाईआ। जो आदि जुगादि निरगुण धार सब दा फ़रैंड, परवरदिगार अगम्म अथाहीआ। सो धुर फ़रमान हुक्म संदेशा करे सेंड, सैंड सटारमां उस नूं पार कराईआ। जिस दीन दुनी आत्म धार करनी जाईंड, आदि दा मालक अन्त आपणा हुक्म वरताईआ । जिस दा भेव अभेदा सदा सदा बीहाईंड, नेत्र लोचन नैण अक्ख वेखण कोए ना पाईआ। जिस नूं समझ सके कोई ना मांईड, मांईनस करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। झट नारद कहे सुण हज़रत ईसा मसीह, की मसला तेरे अगे प्रभू रिहा रखाईआ। तूं इख़लाक विच कर तशरीह, बेनकाब पर्दा दए उठाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि वसीह, वसीअतां दा मालक सब नूं गया बणाईआ। किस बिध उस तेरी लैंड उत्ते करन आउणा तफ़री, तफ़सील नाल देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच

पर्दा आप उठाईआ। हज़रत कहे नारदा मेरे कोल अगम्मा कार्ड, जिस दा अक्खर नज़र किसे ना आईआ। उस दे उत्ते हुक्म संदेशा हारड, भय विच दिसे ख़लक खुदाईआ। उह सब दा मालक ख़ालक लारड, दो जहाना नज़री आईआ। दीन दुनी जिस दा इक्को वारड, हिस्से वंड समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे ईसा की हुक्म संदेसा देवे मीत, मित्रा दे जणाईआ। की तेरे वस्या चीत, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। हज़रत कहे जिस बदल देणी दीन दुनी दी रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। निरगुण धार दस्सणी आपणी प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। मेरी सदी गई बीत, उनीसा बीसा आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं गावां उसे दे गीत, जो गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। जिस लहिणा देणा वेखणा हस्त कीट, लख चुरासी फोल फुलाईआ। उह साहिब बीठलो बीठ, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस मिट्ठा कौड़ा करना रीठ, अमृत रस रस भराईआ। उह पुश्त पनाह हथ्थ रखे मेरी पीठ, लेखा वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे हज़रत उस दे कोल की तरीका, जुग जुग की समझाईआ। की हक हक तौफ़ीका, तोहफ़े देवे नाम ख़लक खुदाईआ। क्यों पिछलीआं उत्ते मारे लीकां, लाइन अगली दए वखाईआ। हज़रत किहा मेरा पूरब लहिणा जिस विच चरण छुहाए विच अमरीका, अमरापद दा मालक अगम्म अथाहीआ। उह लहिणा देणा जाणे जीव जीअ का, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस दे छत्र झुले इक्को सीसा, सीस जगदीश सोभा पाईआ । मैं उस दी सुणां हक हदीसा, जो पिता पूत गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। हज़रत कहे मैं की खेल दस्सां बहुती, जगत जहान ना कोए वड्याईआ। जिस दा इक्को हुक्म धार सलोकी, सोहले ढोले राग दृढ़ाईआ। जिस दीन दुनी उठाउणी सोती, सवाधान धार लोकाईआ। जन भगत सुहेले बणाए माणक मोती, कीमत दीन दुनी ना कोए चुकाईआ। सो मेहरवान महबूब अमरीका विच पहन के सत्त रंग दी टोपी, सति दा सति निशान वखाईआ। लहिणा देणा जाणे कोटन कोटी, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जिस दीन दुनी कराउणी बोटी बोटी, नव सत्त सत कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। नारद कहे हज़रता तेरा केहड़ा सोहणा पारक, प्रेम नाल दे जणाईआ। केहड़ा तन वजूद अगम्म बारक, वेखें अक्ख उठाईआ। हज़रत किहा मेरी आशा पुराणी योरोशलम दा लेखा नेत्र निशानी न्यू यॉर्क, जूह बेगानी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगली अगे मेरी वीहवीं सदी दी दिसे आखर अक्खरां वाली इबारत, इबरत दा लेखा अब्बू आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत दस शाम पंज वजे न्यू यॉर्क हवाई अड्डे ते अमकीरा विखे ✪

फल्गुण कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा तीस, तीस बतीसा हरि जगदीसा दया कमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला छत्र झुल्ले जिस दे अगम्मी सीस, बिन तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत सोभा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नाम कलमे सिफ्तां वाली हदीस, अवतार पैग़म्बर गुर निरगुण सरगुण ढोले गाईआ। जो लेखा जाणे बीस बीसा हरि जगदीस, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। जिस आशा पूरी करनी निरगुण सरगुण धार हावगरीव, एकँकार अकल कलधारी अगम्म अथाहीआ। जो कलयुग विच बदलणहारा सतिजुग साची रीत, रीतीवान श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान इक अख्वाईआ। परवरदिगार सांझा यार जिस विच हक तौफ़ीक, मेहरवान महबूब आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा धरनी धरत धवल धौल उत्ते दिसे नज़दीक, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान जिस दा ध्यान लगाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला बदलणहार तारीख, तवारीखां आपणे विच समाईआ। फल्गुण कहे मैं अन्त दर ठांडे मंगां भीख, भिखक हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे मेरा तीस जगत दिहाढ़ा, सम्मत शहिनशाही दस नाल वड्याईआ। परम पुरख परमात्म दो जहान तक्कया इक्को अगम्मी लाड़ा, सति सरूप शाहो भूप बिन रंग रूप नज़री आईआ। थिर घर दुआर अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल जिस दा लग्गा अखाड़ा, सति सतिवादी शब्द अनादी आपणा हुक्म वरताईआ। नव सत्त कूड़ी क्रिया जगत वेखे सृष्टी अग्नी लग्गी बहत्तर नाड़ा, ततव तत शांत ना कोए कराईआ। पंच विकार विच संसार कूड़ी क्रिया रंग चाढ़या गाढ़ा, दुरमति मैल सके ना कोए धुआईआ। फिरी दरोही जंगल जूह उजाड़ विच पहाड़ा, टिल्ले पर्वत समुंद सागर रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे सुण शब्द संदेशा धवल धौल धरती, धरनी दयां जणाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म धार बण के निध परती, प्रीतम आपणा खेल खिलाईआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लहिणा देणा पूरा करना शरती, शरीअत दा लेखा वेखे थांउँ थाँईंआ। उह खेल करे अगम्मी नरायण नर दी, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी रही

मरदी, मर जीवत आपणा रूप बदलाईआ। उह अन्तिम धार तके आपणे घर दी, गृह मन्दिर अन्दर नव खण्ड सत्त दीप फोल फुलाईआ। जिस दे नाम कलमे ढोले दीन दुनी रही रसना जिह्वा पढ़दी, सिफ्तां वाली सिफ्त सलाहीआ। उह खेल वेखे सीस धड़ दी, दीन दुनी पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे फल्गुणा मैं निगाह मारी बिना नैण, लोचन नज़र कोए ना आईआ। जोत धारी तक्कया साक सज्जण सैण, पुरख अकाला दीन दयाला तक्कया धुर दा माहीआ। चार जुग दे शास्त्र जिस दी सिफ्त कहिण, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। जिस दा इशारा दिता बाल्मीक विच रमायण, राम रम्ईआ धुर दा मालक इक अख्वाईआ। सो सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सब दा बण साक सज्जण सैण, सति स्वामी अन्तरजामी आपणा खेल खिलाईआ। उस ने पूरा करना बावन वाला लहण देण, सतिजुग सच सच नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं तकदी रही मेरे निज नेत्र लोचन नैण अक्ख , अक्खरां तों बाहर दयां समझाईआ । मेरा परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह दिस्या प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। मैं बोल जैकार अलख, अलख अगोचर दिता सुणाईआ। मेरे नौजवाना श्री भगवाना क्यों दीन दुनी दीन मज़्हब विच कीती वख वख, वखरी वंड वंडाईआ। सब दे काया माटी भाण्डे होए सख, नाम सच नज़र कोए ना आईआ। तन वजूद तक लै कंचन होए कच्च, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विकार नाल लड़ाईआ। साहिब सतिगुर तेरा नाम निधाना लूं लूं अन्दर सके कोई ना रच, रचना तेरी वेखण कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या बुद्ध मन मति, मातृ भूमी हो के दयां दुहाईआ। मेरी आशा प्यासी होई मानस रत, रुतड़ी कलयुग नाल महकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच वस्त मेरी झोली घत, ख़ाली हथ्थ दयां दुहाईआ। मेहरवान महबूब निरगुण धार आएयों वत, बेवतनां दे मालक मेरा वतन दे सुहाईआ। सच दुआरयों नूर अलाह जोड़ां हथ्थ, समरथ तेरी ओट तकाईआ। बिन कदमां तेरे चरण जावां ढठ, निमाणी हो के सीस निवाईआ। तूं वसणहारा घट घट, लख चुरासी सोभा पाईआ। तेरी जोत नूर जगे लट लट, दो जहानां डगमगाईआ। सति दुआर खोल्ह दे हट्ट, हटवाणे इक्को नाम वस्त दे वरताईआ। झगड़ा रहे ना तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती भेव चुका दे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, काया काअबा इक समझाईआ। शब्द अनादी मार दे सट्ट, सोई सुरती दीन दुनी जगाईआ। इक्को नाउँ निरँकार सृष्टी दृष्टी अन्दर तेरा लईए रट, रट्टा मुके ख़लक खुदाईआ। मैं दिवस रैण रही नठ, धरनी कहे भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे उत्ते विछोड़े वाला मेट दे फट्ट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। मैं संदेशा देवां झट, सहिज सहिज नाल दृढ़ाईआ।

कलयुग अन्तिम करवट वट, पासा दीन दुनी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे मैनूं याद आउँदी तेरी खुशीआं वाली रात, भिन्नड़ी रैण खुशी बणाईआ। मेरी झोली पा दे दात, दाते दानी दया कमाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पुछ वात, वातावरन वेख ख़लक खुदाईआ। तेरा लेखा नव सात, नौ खण्ड पृथमी तेरी ओट तकाईआ। मैनूं सारी सृष्टी कहिंदी मात, निव निव सीस झुकाईआ। अन्त मेरा वेख हालात, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख परमात्म मेरा अन्तष्करन कर शांत, अग्नी तत तत गंवाईआ। दर्शन दे इक इकांत, एकँकार मेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे धरनीए निगाह मार लै पलक, बिन लोचन अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण धार तक लै झलक, झल्लीए तैनूं दयां समझाईआ। जो मालक दीन दुनी सृष्टी ख़ालक ख़लक, मख़लूक इक गुसाँईआ। उस दा लहिणा तक लै पिछला भलक, भेव भाव समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे साहिब सुल्ताना, हरि सच तेरी सरनाईआ। तूं मालक दो जहानां, बेपरवाह नूर अलाहीआ। तेरा वेखां सच निशाना, निशान निशानयां विच्चों बदलाईआ। मेरे आदि जुगादी कान्हा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं महबूब मेरा मेहरवाना, मुहब्बत विच सीस निवाईआ। तेरी अम्बरां विच उडाना, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरे रहीम रहमाना, रहमत तेरी विच सरनाईआ। मेरा चुरासी वाला निशाना, नव सत्त रंग रंगाईआ। मैं निगाह मारी वेखां नाल ध्याना, धर्म नाल समझाईआ। समुंद सागर तेरा खेल महाना, महासार्थी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ । धरनी कहे मेरी आशा बहु पुराणी, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। तूं मालक ख़ालक दो जहानी, निरवैर नूर अलाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरी कहाणी, जगत विद्या अक्खर ना कोए चतुराईआ । गुर अवतार पैग़म्बर तेरी देंदे गए निशानी, निशाना दीन दुनी दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शाहो भूप होए सुल्तानी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मेरी जूह ना करीं पुराणी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं गावां गीत, तीस फग्गण नाल मिलाईआ। मेरा पूरब गया बीत, अग्गा वेखां चाँईं चाँईंआ। तूं साहिब इक जगदीश, जगदीश्र धुरदरगाहीआ। लेखा तक लै बीस इकीस, इकीसे तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी सच सुहञ्जणी होवे हदीस, हज़रतां बाहर पढ़ाईआ। तेरे विच अगम्म तौफ़ीक, तोहफ़े देवे ख़लक खुदाईआ। मेरे उत्तों

मेट अन्धेरा तारीक, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। उस वेले तेरा ज़हूर तकां ठीक, ठाकर तैनूं सीस निवाईआ। जो पैग़म्बर कर के गए तबलीक, अलिफ़ ये नाल समझाईआ। तूं सब दा बणना रफ़ीक, फ़रीक नज़र कोए ना आईआ। मैं वेखां तेरी असलीअत वलदीत, वलदीअत देणी समझाईआ। सच चरण बख़्शणी प्रीत, प्रीतम मेरे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरी नमो नमो सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरे नूर अलाही अमाम, अमलां तों रहित तेरी वड्याईआ। तेरी सुण अगम्मी कलाम, कायनात देणी दृढ़ाईआ। मैनूं याद आउँदी जिस वेले मेरे उत्ते निगाह मारी ना सुबा ना शाम, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे तीस फग्गण दी होई अलल सुबह, सुबान अल्ला कहि के कदम बोसी विच सीस निवाईआ। बिना रसना तों किहा बिसमिला, बिसमिल दे मालक तेरी वड वड्याईआ। तूं नूर अलाह यक सज्ज जुफ़ते ज़वी शमअ उल ज़वी तानिख़ते ज़विद अरबे शविद मुहम्मदे रोज़ू नूरे नविस शाहो शविज़ मुख़तुल ज़वी ज़ुवमम्बा ज़वी ज़ोनूं ज़विख अर्शे कविश ज़मींउल ज़ुमा मेरे रहिनुमा नूरे नूर नूर

३३१ २४ नूर अलाहीआ। धरनी कहे मेरे छख़माए बाए ज़विद चौदां तबके नविद सोहँ बीज़ा निलदी ज़ोकशम शबे रोज़ ज़वीअत ज़वा ३३१ २४

मेरे खुदा मुहम्मदे दुआ रहमते रहिनुमा रैहबर धुरदरगाहीआ। धरनी कहे मेरी मिट्टी ख़ाक, कदम बोसी विच ध्यान लगाईआ। निगहबान मैनूं करना पाक, पतित पुनीत बणाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबकां खोल्हदे ताक, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। अवतारां पैग़म्बरां पूरा कर दे वाक, वाकयात वेख ख़लक खुदाईआ। जो हज़रत ईसा तेरे नाल कीती टाक, बिन टंग जिह्वा ज़बान हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा दे चुकाईआ। धरनी कहे मैं तेरा निरगुण नूर तक्कया अगम्मी जोती, जोती जाते नज़री आईआ। मेरी आशा उठी सोती, सुती लई अंगड़ाईआ। मेरी मंज़ल वेखी चढ़ के चोटी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। मैनूं नज़र आई सत्त रंग दी टोपी, टोपां वाल्यां करनी सफ़ाईआ । नाल मुहम्मद दी वेखणी लोटी, पड़दा ओहला देणा चुकाईआ। तैनूं खोजदे कोटन कोटी, अणगिणत बैठे ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा धरनी कहे मेरी मैल ना जाए धोती, दुरमति दूर ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैं टोपी दे तके रंग सत्त, सति सतिवादी ध्यान लगाईआ। मेरी कायम रही ना मति, बुध्धहीन हो के दयां दुहाईआ । चारों कुण्ट रिहा ना धीरज यत, सच विच ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म जुड़या किसे ना नत, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी उबले रत,

रत्न अमोलक हीरा गुरमुख हरिजन सोभा कोए ना पाईआ। तेरे लथ्था कोए ना सथ, सथर यारड़े सेज ना कोए हंढाईआ। मैं नेत्र रोवां बिन अक्खीआं अक्ख , हंझूआं हार बणाईआ। तूं परम पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। तेरे चरण कवल धवल कहे मैं जाणा ढठ, निव निव लागां पाईआ। मेरे उत्ते आपणे हुक्म दी गेड़ दे लठ, दो जहानां दे हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सत्त रंग कहिण धरनीए असीं दस्सीए हालत, भेव अभेद खुल्हाईआ। तेरे उत्ते सृष्टी दृष्टी अन्दर होई जहालत, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। उठ खेल तक ख़लक दे ख़ालक, करनी दा करता की आपणा हुक्म वरताईआ। किस बिध धुर शब्द दी करे अदालत, इन्साफ़ आपणा दए दृढ़ाईआ। जिस विच वुकला करे ना कोए वकालत, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। सो तेरा लहिणा देणा वेखे सही सलामत, जिस नूं कहिंदे नूर अलाहीआ। आपणा पूरब लेखा तक लै बावन वाली अमानत, राजा बलि दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसाँईंआ। टोपी कहे मेरा सत्त रंग आदि जुगादि नूर, नूर नुराने दिती वड्याईआ। मेरा मालक सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जो दो जहानां हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक इक अख्वाईआ। जुग बदलणा जिस दा दस्तूर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ । तेरी आशा मनसा पूरी करे ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेखे थाँईं थाँईंआ। जो मूसा इशारा दिता उत्ते कोहतूर, तुरीआ परे दृढ़ाईआ। जिस कारन ईसा कीता मशहूर, मसीह मसला इक पढ़ाईआ। जो मुहम्मद ज़गमम्म ज़मद नवीउल ज़मुक ज़वी तोशेउल वज़ी मम्मबाए नवल जोखू मम्मबाए चाववल ज़वदी ज़ुंबा ज़ुंबा नूरे अशद शमअ उल ज़मां मेरा मेहरवां महबूब नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा आसण तेरे चरण टिकाईआ। सत्त रंग कहिण धरनी जिस वेले तेरा दुआरा तक्कया न्यू यॉर्क, यके बाद दीगरे ध्यान लगाईआ। ज़रा हज़रत मसीह करदा मारच, हैंड दोवें रिहा वखाईआ। जिस दे कोलों खुदा ने खुद लैणा चारज, जारज खुद बैठा अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, उस दा लहिणा देणा नाल भारत, भावना पूरन दयां समझाईआ। न्यू यॉर्क कहे मेरी धरती दस्से याद पुराणी, पुराण अठारां ध्यान लगाईआ। जिस दी चार लख सतारां हज़ार सलोक कहे कहाणी, नौ हज़ार सलोक भविख्त पुराण रिहा दृढ़ाईआ। लेख लिख्या वेद व्यास आपणी कलम कानी, कायनात भेव चुकाईआ। जिस वेले मंज़ल रही ना कोए रुहानी, रूह बुत रोवण मारन धाहीआ। ईसा किहा मेरा बाप आवे असमानी, इस्म आज़म इक अख्वाईआ। मुहम्मद सुण के हक पैग़ामी, कूक कूक दिता जणाईआ। जो मालक आलमे जाबदानी, दो

जहानां फोल फुलाईआ। जिस दी निरगुण नानक दिती सच निशानी, जोती जाता डगमगाईआ। गोबिन्द किहा उह शाहो भूप सुल्तानी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जो झगड़ा मेटे ज़िमीं असमानी, अर्श फर्श फ़लक पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ । धरनी कहे मेरा न्यू यॉर्क वाला पिछला टिकाणा, बिना टकयां तों दयां जणाईआ। सुकंद पुराण विच लिख्या लेख महाना, नौ सौ नड़िनवे सलोक दी धार दए गवाहीआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं वीहवीं खेल होए महाना, महिमा गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता पहरे बाणा, नूर नुराना डगमगाईआ। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लेखा पूरा करे विच जहाना, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। सम्मत शहिनशाही दस अन्तिम उस दा खुशीआं वाला होणा नज़राना, नज़र बेनज़ीर लए बदलाईआ। जिस तन वजूद शब्दी धार मेल मेल के आत्म परमात्म खेल खिलाना, सति सच दा चरण टिका के चरणोदक धरनी धरत धवल तेरी धार रखाईआ। बावन जिस दा दे के गया ब्याना, बलि राजे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे चरण छोहया मेरी उत्ते छाती, छत्रधारीआं दयां जणाईआ। वेखो जगत अन्धेरा राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी दिसे ना कोए प्रभाती, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। हकीकी मंज़ल पन्ध मुके किसे ना वाटी, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। कलयुग खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। भाग लगे ना काया माटी, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए वड्याईआ। आत्म सेजा सोए कोए ना खाटी, आसण सिँघासण ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मुके ना ज़ात पाती, दीन मज़्ब ना संग निभाईआ। की खेल करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस अन्तिम मेरी पुछणी वाती, जो जुग जुग होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मेरी इक्को इक अवाज़, बिन रसना दयां जणाईआ। न्यू यॉर्क दा खोल्ह देवां राज़, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। की हुक्म वरते परम पुरख महाराज, हरि करता की वरताईआ। शाहो भूप सुल्तान कायम रहे कोई ना राज, रईयत रोवे मारे धाहीआ। चौथे साल नूं चारों कुण्ट पैणी भाज, सारे भज्जणे वाहो दाहीआ। मैनूं चेता आ गया जिस वेले गोबिन्द ने पहले दिन उडाया बाज़, बाज़ां वाला गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ । धुर खेल आप खिलावेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण पड़दा लाहवेगा। एकँकारा वेख वखावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता रंग चढ़ावेगा। श्री भगवान सोभा पावेगा। पारब्रह्म ब्रह्म

वेस वटावेगा। जोती जाता डगमगावेगा। सतिगुर शब्द शब्द प्रगटावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव शिव उठावेगा। धुर संदेशा बिन संधिउं सरधी आप समझावेगा। नर नरेशा हुक्म वरतावेगा। अवतार पैग़म्बर गुरु जो जोती धार रहे हमेशा, हम साजण नाल मिलावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान संदेशा देवे देश प्रदेशा, दो जहानां आप जणावेगा। जुग बदलणा जिस दा आदि जुगादी पेशा, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखावेगा। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा कलेशा, कलि कल्की नाउँ प्रगटावेगा। जिस दा लहिणा देणा नाल बदेशा, सत्तां दीपां सोभा पावेगा। जिस पड़दा लौहणा मुलां शेख़ां, भेव अभेदा आप खुल्हावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावेगा। सच करनी कार कमाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। बावन आशा वेख वखाएगा। राम रामा आप समझाएगा। कृष्ण कान्हा वंड वंडाएगा। पैग़म्बरां साचा संग निभाएगा। नानक गोबिन्द अंग लगाएगा। सतिगुर शब्द डंक वजाएगा। राउ रंक आप उठाएगा। सच दुआर बंक सोभा पाएगा। दीन दुनी फेर मन का मनक, मनसा कूड़ वेख वखाएगा। जो आशा रखी भगत जनक, जनक इशारा न्यू यॉर्क इक दरसाएगा। जो लेख लिख्या ब्रह्मे सुत सनक, सन्त कुमार वेख वखाएगा। जो बराह वजाया डंक, दो जहानां आप सुणाएगा। यगअ पुरुष मेट के शंक, हावगरीव वंड ना कोए वंडाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाएगा। धरनी कहे मेरा पुरातन लेखा अमरीका, अमर नाउँ धराईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं समझाया इक तरीका, जिस दी समझ अक्ल बुद्धी जगत कोए ना पाईआ। प्रभ दा खेल नीकन नीका, नेत्र लोचन अक्ख नज़र किसे ना आईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना लख चुरासी जीव जी का, जागरत जोत डगमगाईआ। कलयुग अन्तिम वेख फल फ़ीका, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। नर नरायण जिस दी समझाई रीता, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। उठ वेख प्रभू दी शक्त, जो शख़सीअत सब दी दए बदलाईआ। अन्त अख़ीरी वेख लै वक्त, वाकिफ़कार हो के दयां सुणाईआ। दीन दुनी झगड़ा मेटणा बूँद रक्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एसे करके चरण छुहाया न्यू यॉर्क फ़कत, फ़िकरे अक्खरां वाले बणाईआ। उह वायदा वेख लै कृष्ण ने कीता नाल बधक, तीर कमान विच्चों खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल पुराणीआं धारां, जगत शास्त्रां तों बाहर समझाईआ। मैनूं लहिणे याद जो आशां रखीआं तेई अवतारां, अवतर हो के वेख वखाईआ। जो पैग़म्बरां कीता इशारा, हज़रत हज़ूर दा भेव गए खुल्हाईआ। जो गुरुआं

गुरदेव दा लाया नाअरा, तूं ही तूं ही दिता समझाईआ। जिस नूं मन्नया सब ने निहकलंक कल्की चौवीआ अवतारा, अमाम अमामा अगम्म अथाहीआ। जिस वेले उह आए तेरे दुआरा, दुआरका वासी दी आशा पूर कराईआ। जो अर्जन नूं अठारां ध्याए दस्सदयां बाहर दा दिता इशारा, सैनत शब्द वाली लगाईआ। उह तक लै कलयुग धूंआँधारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रभ दा खेल होणा अपारा, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं समझे कोए ना पुरख नारा, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। उह समुंद सागराँ वेखे पार किनारा, नईया नौका जाणे बेपरवाहीआ। सो रूप अनूपा शाहो भूपा जोती जाता पुरख बिधाता होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए गोबिन्द ने तीर दी मुखी नाल तैनूं दिता चीर, चिरी विछुन्नीए दयां जणाईआ। जो मालक पीरां दा पीर, पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जिस नूं सब ने कहिणा गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ । जिस तेरे उत्तों दीन दुनी दी बदल देणी तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। उस दा नूर होणा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। पर याद रखीं जिस वेले चरण छुहाया ते आपणे खेल दा समझीं अख़ीर, आख़र कन्ना गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। इहो आशा रखी बिन मकबरयां तों कबीर, बिना शरीर ध्यान लगाईआ । रवीदास ने हथ्थ विच फड़ के कौडी कसीर, सौगंद खा के दिता जणाईआ। मेरा मालक स्वामी निरगुण धार घत के आवे वहीर, वहिणां पार कराईआ। समुंद सागर जिस दी चरण छोह नूं तड़फण सारे नीर, ओशन आपणा मोशन लैण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सत्त रंग कहिण असीं टोपी बण के सचखण्ड चढ़ गए उत्ते चोटी, सोहणा रंग समाईआ। साडा हड्ड मास नाड़ी दिसे कोए ना बोटी, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। साडा रूप अनूप सति सरूप इक्को जोती, जोती जाते नाल मिलके वजे वधाईआ। साडे अन्तष्करन अन्तर आशा आई बहुती, बहि के दईए समझाईआ। परम पुरख परमात्म तेरी दीन दुनी वेखी रोती, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आत्म धार बणे कोए ना गोती, गौतम दा लहिणा तक लै जो तेईवां अवतार हो के गया समझाईआ। सृष्टी अन्दरों वासना कढ्ढे कोए ना खोटी, खोटे खरे ना कोए बणाईआ। तेरे नालों प्यारी हो गई जगत वाली रोटी, रुटीन विच यामबीन तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। ज़रा निगाह मार लै चौदां लोकी, चौदां तबक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। न्यू यॉर्क कहे मेरे साहिब श्री भगवाना, निव निव सीस झुकाईआ। तूं मालक रहीम रहमाना, महिबान इक अख्वाईआ। मेरी आशा पूरब लिखी जो विच पुराणा, वेद व्यास गया समझाईआ।

बावन ने मैनूं दिता दाना, झोली गया टिकाईआ। गोबिन्द कस के तीर कमाना, निशान दीन दुनी वखाईआ। अर्जन भेव खुल्हा के कान्हा, घनईया नईया इक चढ़ाईआ। मसीह ने मुसलसल तेरे नाल लगाया यराना, यामबीन तेरी ओट तकाईआ। गॉड गुड्ड कहि के कीती सलामा, सयदे विच सीस झुकाईआ। सदी वीहवीं मेरा बाप ऐहबाब खेल करे नौजवाना, बाल बृद्ध समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त वस्त वरताईआ। धरती कहे मैं बेशक आदि जुगादि घुम्मदी, भज्जां वाहो दाहीआ। परम पुरख दे चरण चुम्मदी, बिन रसना जिह्वा बुल्ह्लां रस आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मैं वणजारन मालक कुंन दी, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मैं अराधन गुण अवगुण दी, वेखणहारी चाँईं चाँईंआ। मेरे साहिब दी खेल फुंन दी, जिस दा मन्त्र इक्को इक सोभा पाईआ। हुण कथा कहाणी दस्सां हुण दी, फल्गुण तीह नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मैनूं हुक्म आया फ़रमान, बिन कन्नां दयां सुणाईआ। उठ खेल तक श्री भगवान, की करता कार कमाईआ। कलयुग कुड़ मेटणा निशान, निशाना धर्म धार प्रगटाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप बैठण सीस निवाईआ। जिस सृष्टी उत्ते बदल देणा विधान, विद्या दा विद्दत इक्को हुक्म वरताईआ। जो नौ खण्ड पृथ्मी सतिगुर सुबाह बणाए प्रधान, प्रधानगी इक्को हथ्थ रखाईआ। जिस उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण इक्को कलमा समझाउणा नाल ज़बान, इक्को ढोला गाईआ। इक्को सति दा धर्म होवे ईमान, इक्को इष्ट सृष्टी दए समझाईआ। इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ धर्म दा होवे मकान, काअबा दुआबा इक समझाईआ। इक्को पारब्रह्म पतिपरमेश्वर होवे जाणी जाण, जानणहार इक अख्वाईआ। धरनीए सुणना बिना कान, बिना सरवणां दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मैनूं चार जुग दी उडीक, बैठी ध्यान लगाईआ। कवण वेला सुहञ्जणी होवे तरीक, तवारीख नाल मिलाईआ। मैं सच दस्सां मेरा लेखा लिख के गया बाल्मीक, बाली बुध बुध वड्याईआ। मेरा राम रामा मेरी पूरी करे उम्मीद, आशा आशा विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैनूं इशारा दिता दत्ता त्रैअ, सहिज नाल सुणाईआ। कपल मुन गया कहि, प्रेम विच वड्याईआ। रिखव दिती शहि, शहिनशाह आवे धुरदरगाहीआ। पृथू मेरे उत्ते बहि, नौवां अवतार अक्खरां ध्यान लगाईआ। मत्तस जलधारा वहिण वहि, समुंद सागराँ दिती वड्याईआ। कछप इक्को नूर दी बोल के जै, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। धनंतर बिना शरीर तों प्रभ दे चरणी ढह, धूड़ी खाक ख़ाक रमाईआ।

३३६
२४

नर सिँघ नर नरायण हो के मेटे दवै, दवैश वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे मेरा लेखा नहीं कोई आम, न्यू यॉर्क दी धरती दए गवाहीआ। मेरे वल्ल इशारा कीता परस राम, जगत शास्त्र हथ्थ उठाईआ। धुर दा राम कलयुग वेखे शरअ दे गुलाम, शरीअत दीन दुनी खोज खुजाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा अमाम, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस नूं सजदयां विच करन सलाम, कदम बोसीआं विच झट लँघाईआ। उह आवे अमरीका वाले ग्राम, गृह पूरब वेख वखाईआ । जिथ्थों बलि दुआरे रिषीआं दा गया सी तवाम, तमअ जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो मेटणहारा आदि जुगादि जुग चौकड़ी अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत जोती जाता करे रुशनाईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ११ रेशम सिँघ दे गृह टरानटों आनटेईउ ३१ कैनथ ऐ वी ई कनेडा हरिसंगत नवित रात नूं ✪

पहली चेत कहे सम्मत इक इक ग्यारां, इक नाल इक मिल के आत्म परमात्म वजे वधाईआ। मेरीआं खुशीआं वालीआं बहारां, पत्त टहणी फल फुल्ल प्यार वाली महकाईआ। मेरी आशा नाल तेई अवतारां, त्रैगुण अतीता गया समझाईआ। मेरीआं पैग़म्बरां नाल चलदीआं रहीआं विचारां, विचरके दयां दृढ़ाईआ। गुरुआं नाल खेल होया दस दस वारां, दहि दिशा तों बाहर भेव अभेद खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर आदि जुगादि होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। पहली चेत कहे मैं इशारा देवां विच काहिरा, कहर वरते ख़लक खुदाईआ। सतारां सौ सठ्ठ मील दा होवे दाइरा, चारों कुण्ट इक्को रंग रंगाईआ। दीन दुनी कोई हो रहे ना बाहरा, बैहरेहाल गया समझाईआ। दीनां मज़्बां होण वाला मुशाहरा, मुशकिल हल ना कोए कराईआ। हुक्म वरते गम्भीर गहरा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी इक गुसाँईआ। पहली चेत कहे मैं जगत जहान चढ़या, चढ़दिउँ लहिंदे वेख वखाईआ। मैं निर अक्खर धार विच्चों बिना अलिफ़ ये हो अक्खर पढ़या, जिस दी ए बी सी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा ना कोई लेख सीस धड़या, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। मैं तक्कया सतिगुर शब्द साची मंज़ल खड़या, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं लड़ फड़या, आदि जुगादि सके ना कोए छुडाईआ। जिस ने लख चुरासी चारे

खाणी जीव जंत घाड़न घड़या, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। जिस दे भय विच ब्रह्मा विष्न शिव डरया, करोड़ तेतीसा सिर ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। चेत कहे शहिनशाही सम्मत मेरा जग, इक इक नाल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी दिसे अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होई कग, सोहँ माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। प्रभ दा दरस करे कोई ना उपर शाहरग, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे कोई ना हद्द, हदूद सच ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म बणे कोई ना यद, युधिष्टर दा लेख कृष्ण वाला सारे गए भुलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वासना वेखी मदि, मधुर धुन ना कोए सुणाईआ। हुण लेखा मुकणा झब, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। नव सत्त लगणी अग्ग, अग्नी तत तत तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरा खुल्लया हरन फरन, सच सच जणाईआ। पुरख अकाला खेल लग्गा करन, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। जिस ने झगड़ा मेटणा ज़ात पात वरन बरन, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जो लेखा जाणे बावन धार जिस दूजे कदम नाल टरानटो तों कीता टरन, आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ । टरानटो कहे मेरी धरती सुहञ्जणी, सोहणी मिले वड्याईआ। मेरे नेत्र प्या अंजनी, अन्धकार दिता गंवाईआ। किरपा कीती दर्द दुःख भय भञ्जणी, सागराँ पार कराईआ। जिस दी हाथ ना आवे वञ्झनी, गहर गम्भीर गुसाँईंआ । जिस दी जोती इक्को जगणी, दो जहानां डगमगाईआ। जिस ने मैनूं लाया अंगणी, अंगीकार अख्वाईआ। मैं सच कहिणा मेरी आशा मूल ना संगणी, धरनी रही जणाईआ। प्रभ ने दीन दुनी लाड़ी मौत नाल कीती मंगणी, जगत गंढु पुआईआ। जिस खेल वेखणी तत पंजणी, पंचम गुर देवणहार गवाहीआ। जिस खेल खिलाउणी जेरज अंडणी, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। उह धार जाणे विच ब्रह्मण्डणी, ब्रह्मण्ड दा पड़दा आप उठाईआ । फिरे दरोही विच वरभण्डणी, भंड हो के सतिगुर शब्द करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे जिस वेले बावन टरानटो उत्तों पाया मोड़, बलख वल ध्यान लगाईआ। मैं आशा कीती मैनूं फेर तेरी लोड़, लुड़ींदे साजण दयां सुणाईआ। क्यों मैनूं चलया विछोड़, विछोड़े विच दुहाईआ। मेरे स्वामी मैनूं बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी कहि के दयां जणाईआ। उस हस के किहा धरनीए कलयुग अन्तिम सतिगुर धार शब्द चढ़ अगम्मे घोड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे नाल प्रीती निभावां तोड़, अधविचकार ना कोए रखाईआ। उस वेले मैनूं किसे कहिणा ब्रह्मण गौड़, लेखा वेद व्यास

समझ कोए ना पाईआ। मेरे हुक्म दा फिर पहला वजणा पौड़, पौड़ी डण्डे सब दए हिलाईआ। कलयुग जीवां वेखणा मिट्ठा कौड़, भेव अभेद रहे ना राईआ। उस वेले सस्से उपर होवे मेरा होड़, हाहे टिप्पी दयां समझाईआ। किसे दा चले कोई ना ज़ोर, जोरू ज़र रोवे मारे धाईंआ। जिस वेले चारों कुण्ट प्या शोर, शौहर बांका नज़र किसे ना आईआ। कलयुग होया घोर, घोरी बैठण मुख छुपाईआ। कलयुग साध सन्त जीव जंत होवण चोर, ठग्गी प्रभू दे नाल कमाईआ। उस वेले बावन किहा मेरा रूप होवे होर दा होर, अवर दा अवर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ । धरनी किहा बावन मेरे शाह, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। अन्त बणीं आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। बावन हस के किहा आपणी मिट्टी मेरे चरणां दे छुहा, उड उड खुशी बणाईआ। मैं लै के जाणा नाल चाअ, बलि दुआर दयां टिकाईआ। जिथ्थे रिषी मेरा उडीकण राह, बैठे नैण उठाईआ। तूं करना वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। धरनी चुक्क उँची बांह, बिन हथ्थां हथ्थ हिलाईआ। कलयुग अन्त मैं भरी होणा नाल गुनाह, मेरा दामन साफ़ ना कोए कराईआ। धर्म दी बणाए कोई ना माँ, पिता संग ना कोए रखाईआ। कलयुग बुद्धी होई वांग काँ, सृष्टी काग वांग कुरलाईआ। हिरदे वसे किसे ना नाँ, नाउँ निरँकार ना कोए जणाईआ । सिर देवे कोई ना ठण्डी छाँ, छत्रधारी सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। बावन किहा धरनीए मेरे कदम तेरे उत्ते उह ढाई, सच सच समझाईआ। बलि दी बाकी रहे कोई ना शाही, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। मेरा रूप अगम्म अथाही, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। सारे मैनूं रहे ध्याई, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। मैं आदि जुगादि वड्डा दाई, अछल छल इक अख्वाईआ। उने चिर नूं आ गया इक राही, जो निउँ के सीस निवाईआ। केहड़ा मेरा भाई, की तेरी चतुराईआ। बावन हस के किहा भुल ना जाईं, जांदा जांदा तैनूं दयां समझाईआ । जिस वेले कलयुग अन्धेरा गया छाई, चारो कुण्ट साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। फेर बण के आवां नूर अलाही, भेव अभेद आपणे विच समाईआ। जन्म तैनूं देवां दवाई, मानस मानस रूप प्रगटाईआ। फेर मोड़ां एसे थाँईं, थान थनंतर सोभा पाईआ। प्रीतम सिँघ दा लहिणा फिर चुकाई, प्रभ दी प्रभ दे हथ्थ वड्याईआ। रिषीआं दा रूप चेला सिँघ जेहड़ा इथे रह के गया सी साल ढाई, बलि दुआर आपणा पन्ध मुकाईआ। सुरजीत सिँघ इक निक्का जेहा हुन्दा सी घाई, जो जगत जिज्ञासुआं वाली वंड वंडाईआ। बावन धार तक थल्ले आपणा ओढण दिता विछाई, खुशी विच विछाईआ। सानूं आपणे नाल लै रलाई, रल मिल के आपणा झट लँघाईआ। झट बावन ने बिना कलम शाही तों कीती लिखाई, बिन अक्खरां अक्खर पवाईआ।

३३६
२४

३४० २४

जिस वेले निरगुण जोत बण के आवे धुर दा माही, मालक महबूब इक अख्वाईआ। तेरा लेख आपणे नाल लए मिलाई, मिल्या मेल विछड़ कदे ना जाईआ। उठ निगाह मार लै नाले तक लै कलयुग अन्ध अन्धेरा ना होवे सच रुशनाई, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ । बावन किहा धरनीए तूं रखणा धरवासा, धर्म दी धार धार दृढ़ाईआ। तेरा अन्तर ना होए उदासा, त्रेता द्वापर कलयुग वेखणे चाँईं चाँईंआ। उह तक लै की इशारा देवे शंकर उत्तों कैलाशा, निव निव सीस निवाईआ। क्यों ब्रह्मा करे हासा, हस हस रिहा वखाईआ। विष्नूं केहड़ी धार पावे रासा, रूप अनूप समझाईआ। धरनी किहा बावन तेरी चरण छोह मेरा बदल जाणा पासा, पासा दीन दुनी उलटाईआ। मैं फेर खुश होवां कलयुग अन्त मेरी धार उत्ते आ के तेरी बदल जावे भाषा, लिपी नवीं नवीं देणी उलटाईआ। झट जोती नूर होया प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच्चों सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेल आप मिलाईआ। धरनी कहे मेरे भगवन्त, मेरी तेरे तेरे अगे दुहाईआ। मेरे स्वामी धुर दे कन्त, की वेस ल्या वटाईआ। तेरा केहड़ा मंत, की करें पढ़ाईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, गणती गणत ना कोए रखाईआ। तूं मालक लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत तेरी नज़री आईआ। तूं बोध अगाधा पंडत, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। की लेखा दस्सें कलयुग अन्त, अन्तष्करन वेख ख़लक खुदाईआ। तूं तोड़नहारा गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी किहा बावन मैं तेरा रूप तक्कां की बावन, सब तों निक्का नज़री आईआ । बावन हस के किहा जिस वेले राम रूप हो के सँघारां रावन, आपणा आप बदलाईआ। जिस वेले खेल करां बण काहनण, द्वापर जुग दयां उलटाईआ। फेर बणां नौजवानण, नूर नुराना इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त तेरी करां पहचानण, बेपहचान आपणी खेल खिलाईआ। धरनी खुशी विच खुशी लग्गी मनावण, अन्तर अन्तर लई अंगड़ाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी मैं धरनी तेरी कोझी कमली समुंद सागराँ पार मेरा पकड़ीं दामन, दामनगीर इक अख्वाईआ। झट इक पासिउँ राही आ गए तिन्न तिन्ने कहिण सानूं बणा लै आपणा ज़ामन, अन्त शाहदत दईए पाईआ। धरनी किहा हुण बचन आपणा मानण, पड़दा ओहला ना कोए रखाईआ। मैनूं नहीं पता उस वेले बृद्ध रूप होवे की गौड़ ब्राह्मण, ब्रह्म विद्या दी ब्रह्म विद्या विच्चों पढ़ाईआ। ना कोई तृष्ना होवे तामन, जगत तृखा ना कोए रखाईआ। बावन हस के किहा जो तुहाडी आशा भावन, भावना पूर कराईआ। एसे कारन मेल मिल्या रजिंदर सिँघ बलदेव सिँघ गुरचरण सिँघ वक्त सुहञ्जणा आप करी पहचानण, आपणा रंग रंगाईआ।

फेर बावन ने निगाह मारी बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठानण, नेत्र जगत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी किहा बावन ने इथों कीता ध्यान, टरानटो दी धरती दए गवाहीआ। मैनूं पता नहीं केहड़े चढ़या विच बबाण, कवण रूप ल्या बदलाईआ। नाले मैनूं इशारा कीता धरनीए उठ उह वेख राजे बलि दा दरबान, जो मैनूं पहलों नज़री आईआ। धरनी किहा मेरे भगवान, एह तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं चाहुंदी जिस वेले कलयुग अन्त तूं मैनूं देवण आवें दान, आपणी दया कमाईआ। उह ज़रूर पुजया होवे धरती उत्ते नौजवान, आपणा पन्ध मुकाईआ। एसे कारन जगजीत आया विच मैदान, भज्जया वाहो दाहीआ। रेशम सिँघ इस दा पिछला सी जाणीजान, बलि दुआरे ते आपणी सेव कमाईआ। इस दे अन्दर इक्को याद हुन्दी सी भगवान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस वेले बलि दुआरे पहुँचया इहनां इक्ठ्ठी कीती सी प्रणाम, दूरों वेख सीस झुकाईआ। अन्तर आशा रखी अश्वमेध यग विच्चों इहनूं खुवाईए पकवान, बुढ्ढा ब्राह्मण नज़री आईआ। झट बावन ने हुक्म दिता फ़रमान, प्यार नाल समझाईआ। मैं कुझ नहीं आया पीण खाण, चारे वेद मेरी शनवाईआ। पर तुहाडा उधार पूरा कराणा विच जहान, मनुषा जन्म विच्चों मनुषा जन्म फेर दयां प्रगटाईआ। झट टरानटो दी धरती ने किहा जे मेरी करनी कल्याण, कलधारी आपणा रंग रंगाईआ। मेरी सुहञ्जणी ख़ाक उत्ते भगतां दी धार बणीं महिमान, मेहरवान आपणा संग बणाईआ। भगतां नूं भगती दा देवीं दान, भगत वछल बख़्शणी सच सरनाईआ। वेखीं प्रभू ना जाणीं एह बच्चे नादान, जुग जुग आपणा संग रखाईआ। तूं सदा सदा सद मेहरवान, महबूब नूर अलाहीआ। टरानटो दी धरती कहे मेरा पूरब लेखा पहली चेत होवे परवान, सम्मत शहिनशाही ग्यारां वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह आदि जुगादि इक अख्वाईआ।

३४१ २४

३४१ २४

✪ ३ चेत शहिनशाही सम्मत ११ कनेडा रजिंदर सिँघ १४० उनटेवीउ हमिलटन शहर विखे रात नूं ✪

धरनी कहे मेरे धुरदरगाही अब्बा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। जोत धार नूर अलाही रब्बा, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरा कूड़ दा मेट दे धब्बा, दुरमति मैल अन्तर निरंतर रहिण कोए ना पाईआ। मोह विकार जगत उठा दे सभा, सही सलामत आपणी दया कमाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जगत तृष्ना वेख लै मधा, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। सच स्वामीआ अन्तरजामीआ घट निवासीआ पुरख अबिनाशीआ मैं तैनूं देवां

सद्दा, मर्द मर्दान नौजवान श्री भगवान आउणा चाँईं चाँईंआ। मालक ख़ालक मेरे उत्तों शरअ दी मेटणी हद्दा, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। सति दुआर एकँकार जन भगतां दर्शन देणा उपर शाहरगा, नव सत्त नव दर दा पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म आपणा देणा मज़ा, मेहरवान महबूब आपणे रंग रंगाईआ। तेरा दीपक नूरी जोत इक्को होवे जगा, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। तूं साहिब सुल्तान पुरख अकाल सूरा सरबगा, बलधारी अगम्म अथाहीआ। मैं तेरे चरण कवल आपणा हस्त बध्धा, निव निव सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। परम पुरख परमात्म मेरी पाउणी सार, महासार्थी आपणी दया कमाईआ। नव सत्त मेरे उत्ते वध्या विभचार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। कलयुग जीव होवणे गंवार, मानस मानव मनुख रंग ना कोए रंगाईआ। जिधर तक्कां हाहाकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कलयुग कीता धूंआँधार, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। लहिणा पूरा कर दे जो आशा रख के गए पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी आपणा ध्यान लगाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार, कलयुग लहिणा अन्त दे मुकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मैं तेरी सेवादार, जुग चौकड़ी याचक ख़ादम हो के सेव कमाईआ। तेरे चरणां उत्तों मेरी लगदी रहे धूड़ी छार, मिट्टी ख़ाक ख़ाक शरनाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी पैज संवार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे मैं रोवां ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा धुर दा बणना संगी, सगला संग निभाईआ। मेरे उत्ते आपणी दीन दुनी वेख बहुरंगी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। दरोही मेरी पिठ होई नंगी, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। उह तक लै सदी बीसवीं जांदी लँघी, चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्ते झगड़ा पैण वाला मुहम्मद धार नाल फ़रंगी, फ़ारस दा लेखा समझ कोए ना पाईआ। मैं नेत्र धार वहावां अंझी, हंझूआं वहिण वहाईआ। झगड़ा होण वाला प्रकृती पंझी, पंज तत नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे शहिनशाह सुल्तानी, हरि करते धुरदरगाहीआ। मेरी आशा तक पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मेरे अन्तर आए हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। जिधर तक्कां नवखण्ड दिसे बेईमानी, बेवा रूप होई खलक खुदाईआ। झगड़ा प्या जिस्म जिस्मानी, ज़मीर सके ना कोए बदलाईआ। मंज़ल रही ना कोए रुहानी, रूह बुत रहे कुरलाईआ। ईसा कहे मेरा आवे बाप असमानी, इस्म

आज़म इक जणाईआ। मुहम्मद तके नूर नुरानी, जल्वा तेरा दिता समझाईआ। तूं मालक ख़ालक दो जहानी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। तैनूं सब ने मन्नया बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। धरनी कहे मैं कोझी कमली निमाणी, निव निव लागां पाईआ। आ के लेखा तक लै आपणी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भेव रहे ना राईआ। मेरे उत्ते झगड़ा तकणा जिस दा लेखा नाल शाह इरानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक भेव खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते लाया निशाना, अवतार तेरे गए समझाईआ। पैग़म्बरां कलमे धार दिता ब्याना, अक्खर अक्खरां नाल रलाईआ। गुरुआं कहि के सच फ़रमाना, फ़रमाबरदार हो के गए दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त खेल करे श्री भगवाना, भगवन आपणा वेस वटाईआ। जो आदि जुगादि धुर दा कान्हा, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जो लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्डां खण्डां ज़मीन असमान वेख वखाईआ। उस दा इक्को शब्द इक नाम कलमा होवे तराना, तुरीआ तुरीआ तों बाहर दए समझाईआ। इक्को नूर जोत होए अमामा, अमलां तों रहित अगम्म अथाहीआ। जिस दा हकीकत वाला हक हक होए पैग़ामा, पैग़म्बरां तों बाहर होए पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे जगत मैदाना, दीपां सत्तां फोल फुलाईआ। सति सच धर्म दी धार बण हुक्मराना, हुक्म इक्को इक समझाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा निशाना, निशाना सति धर्म वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। झट नारद खुशीआं दे नाल हस्सया, धरनी रिहा दृढ़ाईआ । की गुर अवतार पैग़म्बरां भेव दस्सया, दहि दिशा की समझाईआ। झट कलयुग आया नस्सया, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा लेखा चारों कुण्ट रैण अन्धेरी कीती मस्सया, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। नारद कहे उह तक होड़ा उपर सस्सया, सो पुरख निरञ्जण खेल खिलाईआ। जिस ने शब्द अणयाला तीर कसिआ, हँ ब्रह्म होए सहाईआ। तेरा अन्त हँकारी बुरज ढठिआ, लोकमात रहिण ना पाईआ। झगड़ा मुकणा तत अट्ठया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध ना कोए चतुराईआ। पन्ध रहे ना अठ्ठ सट्ठया, तीर्थ तट गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती वेखे नैण उठाईआ। फिरे दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठया, गुरुदुआर चर्चा सार कोए ना पाईआ। मानस कीमत रही कोए ना टकया, कंचनगढ़ ना कोए सहाईआ। कलयुग खुशीआं दे विच टप्पया, कदम कदम नाल बदलाईआ। नारदा मेरे कोल परम पुरख दा वेख लै पटया, जो पटने वाला गया दृढ़ाईआ । अन्त सृष्टी ज़ीरो नाल ज़ीरो करनी बटया, अन्त नज़र कोए ना आईआ। इक्को जोत प्रकाश प्रभ नूर होए लट लटया, दो जहानां डगमगाईआ। दीन दुनी दा चीथड़ वेख फटया, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। जिधर तको उधर होवे रट्टया, रट्टा सके ना कोए मुकाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे नारद मेरी वेख तकदीर, बिन नेत्र अक्ख उठाईआ । गुर अवतार पैग़म्बरां मारी लकीर, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। धुर दे साहिब दे हथ्थ तदबीर, तरीका जगत ना कोए जणाईआ। जिस ने मेरे उत्तों शरअ दे कटणे ज़ंजीर, छुरी मज़्ह्ब ना कोए कसाईआ। उह मालक गहर गम्भीर, गवर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए की तेरा लहिणा दिशा लहिंदी, भेव अभेद देणा खुल्हाईआ। की सगनां वाली लावें मैहन्दी, बिन हथ्थां हथ्थ रंगाईआ। धरनी खुशीआं नाल कहिंदी, कहि कहि रही दृढ़ाईआ । मेरी अन्तिम धार होवे ढहन्दी, ढईआ गोबिन्द वाला नाल मिलाईआ। समुंद सागराँ धार वेख नैं दी, नेत्र लोचन अक्ख खुल्हाईआ। निशानी दिसे किसे ना शै दी, शहिनशाह लेखे पूर कराईआ। वड्याई रहिणी नहीं हउमे हैं दी, हंगता गढ़ रिहा तुड़ाईआ। आशा तक मुहम्मद वाली लै दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल पुराणी किताब, कुतबख़ान्यां हथ्थ किसे ना आईआ। लेखा लिख्या धुर अहिबाब, मित्र गया जणाईआ। जिस विच अक्खर हिन्दसिआं दा नहीं हिसाब, सतरां वंड ना कोए वंडाईआ। गिणती नहीं कोई तादाद, अंक अंक ना कोए मिलाईआ। जो आशा दे के आया नानक विच बग़दाद, बग़लगीर इक्को इक रखाईआ। जिस तों पैग़म्बरां मंगी इमदाद, दुआ विच सीस जगदीश निवाईआ। उह सब दे पूरे करे ख्वाब, खम्मज़े वली लावीज़ा अली नानके तामली चशमे चाविज़ अर्शे नविज़ फ़र्शे मज़ूआ मज़ीउल मुबा नूरे खुदा खुद मालक दया कमाईआ। नानक किहा आज़वअली पर्दानशीं नकाबे ज़वूआ नाज़ुकते खुदा अर्शे ज़ुबाअ शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि धुर मालक अगम्म अथाहीआ। नारद कहे धरनीए मेरी किताब लेखा वेख जग, जग जीवन दाता की जणाईआ। जिस दा समझे ना कोए सबब, भेद अभेद ना कोए खुल्हाईआ। खोजयां पए किसे ना लभ्भ, लबां नाल गावण वाले रोवण मारन धाहीआ। जिस दी शरअ तों बाहर हद्द, हदूदां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस ने अन्तिम आत्म परमात्म बणाउणी यद, यदी यदप आपणा खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया धार करनी अलग, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। तूं परसीं उस दे पग, धूड़ी चरण ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे नारद मुनीआ गुर अवतार पैग़म्बरां दितीआं थापीआं, थपक थपक गए जणाईआ। भविख्तां वालीआं लिखीआं कापीआं, पेशीनगोईआं नाल वड्याईआ। कलयुग आउणी अन्धेरी रातीआ, रुतड़ी जगत ना कोए सुहाईआ। झगड़ा

पैणा शरअ जमातीआं, मेट सके कोए ना राईआ। पवित्र रहिणीआं नहीं हयातीआं, जीवन सच ना कोए वखाईआ। कलयुग कूड़ा मारे कातीआं, कत्लगाह बणे लोकाईआ। अन्त सब ने पाउणी वफ़ातीआ, बचया नज़र कोए ना आईआ। लेखा रहे ना ज़ात पातीआ, दीन मज़्ब ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते लख चुरासी वसदी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी खुशी बणाईआ। तेरी सिफ्त वड्याई जस दी, महिमा अगम्म अथाहीआ। तूं आदि जुगादी रही नसदी, भज्जें वाहो दाहीआ। मेरी किताब बिन अक्खरां तों कुझ दसदी, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ । अगे खेल वरतणी अलखणा अलख दी, अलख अगोचर आप वरताईआ। तेरी झोली खाली दिसे सख दी, झोली वस्त ना कोए टिकाईआ। तूं प्यासी होणा मानव रत दी, मानस सारे जाणे खाईआ। निशानी रहे ना कूड़े तत दी, ततव तत दए जणाईआ। झट धरनी वास्ता घतदी, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मैं आशा रखी उस परमेश्वर पति दी, जो पतित पावन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए की लहिणा तिन्न चेत्र दी धार, त्रैगुण अतीता की जणाईआ। बेख़बरे ज़रा आपणी निगाह मार, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। की संदेशा देवे आपणी वार, वारस हो के की समझाईआ। हमिंलटन दा लेखा की नाल करतार, कुदरत दा कादर की वखाईआ। एथे सप्त ऋषीआं मुख नूं ला के छार, आपणा रूप ल्या बदलाईआ। मंगी मंग बण भिखार, प्रभ अगे झोली डाहीआ। अत्री कूक किहा पुकार, दरस देणां चाँईं चाँईंआ। तेरा तक्कीए नूर जोत उज्यार, उजाला होवे थांउँ थाँईंआ । सतिगुर शब्द संदेशा दिता तुसीं सारे करो दीदार, बिन नेत्रां दर्शन पाईआ। अगे निगाह लओ मार, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रहे ना विच संसार, विष्न ब्रह्मा शिव दए गवाहीआ। कलयुग अन्तिम होए धूंआँधार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा मीत नज़र ना आए कोए मुरार, संगी संग ना कोए निभाईआ । एह धाम धरनीए तेरा रहे बरकरार, इकरार भुल कदे ना जाईआ। भगतां संग होवे भगत दुआर, भगवन रंग रंगाईआ। चरण धूड़ी तैनूं बख्शे छार, शहिनशाह आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा रंग चढ़ाईआ। धरनी कहे मैं खुशी विच होई चुप्प, रसना कहिण किछ ना पाईआ। धुर शब्द संदेशा दिता जिस वेले अन्धेरा होया घुप्प, कलयुग नाल मिलाईआ । तेरे उत्ते धर्म दा रिहा कोई ना पुत, पिता पूत गोद ना कोए सुहाईआ। सुहञ्जणी दिसे कोई ना रुत, रुतड़ी प्रभ नाम नाल ना कोए महकाईआ। उस वेले तेरे दर आवे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिस दा खेल होवे पंज

भुत, पंचम आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लेखा पूर कराईआ। धरनी कहे हमिंलटन दे थाँ एहदा नाँ हुन्दा सी हिम्म, सप्तस ऋषी देण गवाहीआ। जिथ्थे कौड़ी धार बूटा सी इक निम्म, पत्त टहणी नाल महकाईआ। जल धारा थल्ले रिहा सी सिम्म, आपणा वहिण बणाईआ। जिस दा लेखा नाल पर्वत हिम्म, हेम कुण्ड नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरा लेखा लिख्या विच गरड़ पुराण, हिम्मा कहि के हमिलटन नाउँ जणाईआ। वेद व्यास नौ वार कीता ध्यान, हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। बिना अक्खरां तों बोल ज्ञान, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त तेरी होवे पहचान, बेपहचान वेख वखाईआ। किरपा करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। बाहरों ततां वाला होए इन्सान, अन्तर निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जिस दी आशा रखी कृष्ण काहन, घनईया मुकन्द मनोहर लखमी नरायण गया दृढ़ाईआ। ईसा दोहां हथ्थां मंगया दान, सलीब लैंदयां आस रखाईआ। मुहम्मद इशारा कीता मजीद कुरान, कुरान शरीफ़ दए गवाहीआ। नानक निरगुण सरगुण लाया निशान, निशाना ज़िमीं असमान नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द शब्दी खिच कमान, चिल्ला तीर कमान अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा वक्त आप सुहाईआ। धरनी कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा पुजा, पूजणयोग दिती वड्याईआ। मेरा भेव खुल्हाया गुज्झा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बेशक दुनिया मैनूं अक्खरी धार कहे बसुध्धा, धवल धौल कहि के ढोले गाईआ। कुझ आसा रख के गया बुध्धा, बुद्धी तों बाहर गया जणाईआ। कलयुग अन्तिम नव सत्त दा होवे युद्धा, युधिष्टर दी आशा कृष्ण काहन नाल मिलाईआ । सो वक्त सुहञ्जणा मेरा पुग्गा, परम पुरख दिती वड्याईआ। मेरा भाग होवे उदा, उदय असत मेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते सप्तस रिषीआं लाया अंगूठा, पंजा ज़िमीं नाल छुहाईआ। फिर करके ख़ाली ठूठा, कासा चारों कुण्ट भुआईआ। फिर आपणा आप बणाया रूठा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। फिर दीन दुनी जगत नूं दस्सया झूठा, सद रहिण कोए पाईआ। फिर फड़ के काही काने दा बूटा, जड़ तों दिता हिलाईआ। फिर दो हथ्थां दा लै के झूटा, ज़िमीं असमान वेख वखाईआ। फिर पैरां तों लाह के जूता, नंगे हो के मेरे उत्ते चरण छुहाईआ । फेर धार रूप अवदूता, कलयुग कूड़ दिता वखाईआ। मैं हस के सप्तस रिषीआं पूछा, बेनन्ती इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। सप्तस रिख सच दृढ़ाया ए। धरनीए तेरे उत्ते लेखा दिता लिख, अगे सके ना कोए

मिटाया ए। सच दी धार पाए भिक्ख, ख़ाली झोली जगत भराया ए। जो कुझ सानूं रिहा दिख, तैनूं दिता दृढ़ाया ए। एह दुनिया सृष्टी सारी दिसे मिथ, अन्त रहिण कोए ना पाया ए। साचा दिसे कोए ना मित, मित्र प्यारा ना कोए अख्वाया ए। प्रभ दा खेल तेरे उत्ते होवे नित, नवित वंड वंडाया ए। कलयुग अन्तिम करे हित, हितकारी हो के वेख वखाया ए। तिन्न चेत्र होवे थित, सम्मत शहिनशाही ग्यारां संग निभाया ए। तूं याद रखणी आपणी चित, ठगौरी चित ना कोए जणाया ए। झट धरनी चरणां उत्ते गई लिट, लिटां खोल्ह के सीस निवाया ए। फिर दोहथ्थड़ मार के ल्या पिट, दरोही तेरा नाम खुदाया ए। सप्तस ऋषी फड़ के इक इट्ट, पाहन नाल जुड़ाया ए। बिन काग़ज़ दे के चिट, चिट्टे उत्ते चिट्टा लेख लिखाया ए। तेरी आशा इथे जावे टिक, टिकटिकी इक्को नाम जणाया ए। पुरख अकाला दीन दयाला जो आदि जुगादि इक, एकँकार इक अख्वाया ए। कलयुग तेरी अन्तिम पूरी करे सिक्क, आशा तेरी तेरे नाल मिलाया ए। जन भगतां बणके धुर दा पित, पतिपरमेश्वर वेख वखाया ए। तेरा लहिणा देणा लेखा लए नजिठ्ठ, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं आशा आपणे विच समाया ए। कमलीए खेल होणा अनडिठ्ठ, जग नेत्र वेखण कोए ना आया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाया ए। हमिलटन कहे मैं पुराणा वसनीक, चार जुग दी आशा नाल मिलाईआ। मेरी सप्तस ऋषीआं करनी तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। मेरी आशा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना जगत रही ना राईआ। मेरी पुरातन बिन हिन्दसिआं वाली तरीक, तवारीख नवीं नाल जणाईआ । मैं सति सच चलावां रीत, रीती प्रभ ने दिती समझाईआ। मेरे उत्ते सप्तस ऋषीआं ढोला गाया सी गीत, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द पढ़ाईआ। अज्ज मेरी काया होई ठांडी सीत, अग्नी तत तत गंवाईआ। मेरी ख़ाक होई पुनीत, पतित दा लेखा दिता मुकाईआ। किरपा कीती त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी बख्शी सरनाईआ। राजिंदर सिंघ तेरी सति दी सच प्रीत, प्रीतम आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ११ मुकन्द सिंघ, जगजीत सिंघ, गुरदयाल सिंघ, लाल सिंघ
४६४ रीवरटोन एवेनीऊ ऐलमवुड मैनीटोबा विनीपैग कनेडा ✪

नव चेत कहे मेरी नमों नमों निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सीस जगदीस झुकाईआ। सो पुरख निरञ्जण तेरा खेल अगम्म अपारा, हरि पुरख निरञ्जण तेरी बेपरवाहीआ। एकँकारा शाहो भूप सिक्दारा, आदि निरञ्जण नूर अलाहीआ। अबिनाशी

करते तेरा अन्त ना पारावारा, श्री भगवान शाह सुल्तान तेरे हथ्थ वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा सच दुआरा, निरगुण निरवैर निराकार सोभा पाईआ। शब्द अनादी तेरा इक दुलारा, दो जहान नव जवान नज़री आईआ। आदि अन्त तेरा लेख सब तों बाहरा, भेव अभेद समझ कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा सेवादारा, जुग चौकड़ी धुर दी सेव कमाईआ। त्रैगुण माया पंज तत तेरा पसारा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा हुक्म संदेशा उपजे तेरी विच्चों धारा, दूसर सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नव चेत कहे तेरा खेल नव खण्ड, नव नव ध्यान लगाईआ। तेरा लेखा कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड तेरे विच समाईआ। तेरी धारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वजदी रहे वधाईआ। तेरा प्रकाश सूर्या चन्द, नूर नुराने नज़री आईआ। तूं शाहो भूप सूरा सरबंग, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। निरगुण तेरा सरगुण चढ़या रंग, ततव तत खेल खिलाईआ। शब्दी धार अगम्मी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नव चेत कहे मेरी आशा आदि जुगादि पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तानी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। तेरा जल्वा नूर नुरानी, जोती जाता सोभा पाईआ। तेरी महिमा अकथ कहाणी, सिफ्ती सिफ्त ना कोए वड्याईआ। तूं सचखण्ड निवासी आदि जुगादि हुक्मरानी, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। मेहरवान महबूब तेरी इक्को दिसे मेहरवानी, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। सति सच तेरी इक निशानी, सति सतिवादी सोभा पाईआ। तेरा हुक्म संदेशा तेरा धुर फ़रमानी, जगत अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। नव चेत कहे मेरे परम पुरख सुल्तान, हरि करते धुरदरगाहीआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, मर्द मर्दान तेरी बेपरवाहीआ। थिर घर तेरा निशान, निशाना तेरे विच समाईआ। तेरा लेखा दो जहान, निरगुण सरगुण वजदी रहे वधाईआ। मेरी बेनन्ती दर भिखारी हो के मंगां दान, दाते देणी दया कमाईआ। आशा रखां बिना ज़बान, जिह्वा रसन ना कोए हिलाईआ। अक्खरां वाली नहीं कलाम, कायनात ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नव चेत कहे प्रभू तेरी आदि जुगादि धारा, धुर मालक वेख वखाईआ। तेरा नूर जोत उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। तेरा शब्द सुत दुलारा, दूलहा इक्को सोभा पाईआ। तेरा विष्न ब्रह्मा शिव पसारा, विश्व दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। त्रैगुण तेरा खेल न्यारा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। चुरासी तेरा लख अखाड़ा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कारा,

निव निव सीस झुकाईआ। मेरा पूरब लेखा तक उधारा, लहिणा तेरे अगे टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा पसारा, पसर पसारी तेरा खेल वेख वखाईआ। तेई अवतार तेरा नूर उज्यारा, जोती जाते सोभा पाईआ। पैग़म्बर तेरा हकीकत वाला नाअरा, हक हक दृढ़ाईआ। गुरु गुरदेव तेरा बोल जैकारा, तूं ही तूं ही ढोले गाईआ। चार जुग दे शास्त्र तेरा देण इशारा, सैनत नाम वाली लगाईआ। तूं सब तों वसें बाहरा, पारब्रह्म ब्रह्म बेपरवाहीआ। निगाह मार मेरे एकँकारा, अकल कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी धरत धवल धौल तेरा रूप अपारा, अपरम्पर दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। नव चेत कहे प्रभू मेरा लेखा तक पूरब कौल इकरार, वाहिदा शब्द गुर समझाईआ। जिस दी जगत अक्खर कर ना सकण विचार, कलम शाही लेख ना कोए बणाईआ। रसना वाला नहीं कोई तकरार, झगड़ा बुद्धी ना कोए समझाईआ। रसना बोल सके ना कोए जैकार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। दर तेरे भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। तूं देवणहार दातार, दाता दानी इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब वेख विचार, मेहरवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नव चेत कहे प्रभू मेरा धुर दा इक्को बोला, अणबोलत दयां जणाईआ। सतिगुर शब्द मेरा विचोला, आदि जुगादि जो इक अख्वाईआ। जिस दा सब तों वखरा इक्को ढोला, सरवण सुणन कोए ना पाईआ। जिस ने तेरा नाम निधान दुबारा खोल्हा, लोकमात खुशी बणाईआ। भाग लगा के काया माटी चोला, ततव तत दिती वड्याईआ। तेरे हुक्म दा बण के गोला, सेवक हो के सेव कमाईआ। ना कोई पड़दा रख्या ओहला, भेव अभेद दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नव चेत कहे प्रभू मेरा धरनी नाल इशारा, धरत धवल धौल नाल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे के गया अधारा, त्रैगुण अतीते तेरा भेव खुल्हाईआ। ब्रह्मा सुत बोल के अगम्म जैकारा, सन्त कुमार गया जणाईआ। बराह कूक कूक पुकारा, तेरा नाम दुहाईआ। यगह पुरुष इक्को नाम उच्चारा, उच्चर के दिता दृढ़ाईआ। हावगरीव लए सहारा, सिर सिर तेरे कदम टिकाईआ । नर नरायण तेरा खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी समझ कोए ना पाईआ। कपल मुन ला के सच अखाड़ा, दो जहान गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नव चेत कहे धरनीए तूं वी उठ के जाग, सुतीए लै अंगड़ाईआ। आपणे अन्तर कर वैराग, बिरहों चोट लगाईआ। पुरख अकाले सरनी लाग, जो आदि जुगादि धुर दा माहीआ। जिस दो जहानां पकड़ी वाग, डोरी नज़र कोए ना आईआ। जो वेखणहारा हँस काग, लख

चुरासी फोल फुलाईआ। तेरे उत्ते जगाए चराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। शब्दी शब्द सुणाए आवाज़, बिन रसना रसन दृढ़ाईआ। अगला खोल्हे राज़, राज़क रिज़क रहीम दए गवाहीआ। सुहञ्जणी रुत नव चेत कहे होई आज, आजिज़ हो के सीस निवाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर बदलदा आया समाज, कलयुग लहिणा दए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया मेटणहारा राज, रईयत सच विच समाईआ। उस दे कोलों लै लै लाभ, हिस्सा आपणी झोली पाईआ। जो सब दा शहिनशाह नवाब, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दा नूर जोत महताब, रोशन दीन दुनी कराईआ। उस नूं बिना कदमां कर अदाब, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दे हुक्म दी सद वजदी रहे रबाब, जगत सितार नज़र कोए ना आईआ। उह सब दा मित्र अहिबाब, मेहरवान इक अख्वाईआ। जिस दी बिना अक्खरां तों किताब, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ । धरनी कहे नव चेत मेरा मिन्नतां नाल हाढ़ा, निव निव सीस झुकाईआ। मैनूं याद आ गया अज्ज दा दिहाढ़ा, जो दत्ता त्रै गया दृढ़ाईआ। रिखप एसे दा कीता इशारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। पृथू बोल इक जैकारा, बिन रसना ढोले गाईआ। मत्तस वड़ जल धारा, रूप अनूप दिता समझाईआ। कछप खेल कर न्यारा, समुंद सागराँ फोल फुलाईआ। धनंतर धूड़ी मस्तक ला के छारा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ। नव चेत कहे धरनीए पिछला लेखा आप मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरा साहिब सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्म विच कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जो सच सिँघासण सचखण्ड सुत्ता अगम्म पलँघ, जिस दी पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। सो देवणहार अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस निशाने मेटणे तारा चन्द, सूर्या वेखे नैण उठाईआ। उह मुकावणहारा तेरा पन्ध, जो पाँधी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। निगाह मार लै क्यों होया अन्धेरा अन्ध, चारों कुण्ट रैण अन्धेरी छाईआ। साचा करे ना कोए किसे कार अंग, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे नव चेत मेरी नमो नमो निमस्कार मस्तक टेकां मथ्था, बिन धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मैं भेद अभेद दस्सां यथार्थ यथा, यदी दयां समझाईआ। मेरा साहिब पुरख समरथा, हरि करता इक अख्वाईआ। जो लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्था, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जिस दे सथर दो जहान लथ्था, यारड़ा सेज नज़र किसे ना आईआ। उह लख चुरासी चलावणहारा रथा, रथवाही बेपरवाहीआ। मैं खुशीआं विच वेख के हस्सा, हस्ती तक नूर अलाहीआ। जो लख चुरासी अन्तर निरंतर

वेखणहारा धर्म दा रसा, रस रसना बाहर रखाईआ। उह जाणे मेरी रैण अन्धेरी मस्सा, मत्तस दा लेखा नाल मिलाईआ । मैनूं बराह शब्द संदेशा इक दस्सा, दहि दिशा तों बाहर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे मैनूं बराह ने दिता आख, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। खेल तक अलखणा अलाख, जो अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जो जुग जुग तेरी मस्तक लाए राख, सिर सर तेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं उस दी आशा लैणी भाख, अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । धरनी कहे मैनूं बराह ने दिता इशारा, खुशीआं नाल जणाईआ। तेरे नाल कौल इकरारा, वायदा सच सच समझाईआ। खेल खेले हरि निरँकारा, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जिस दा नूर ज़हूर होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पसारा, पसर पसारी दया कमाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा होवे नाल तेई अवतारा, त्रैगुण अतीता रंग रंगाईआ। पैग़म्बरां देणा सच सहारा, मेहरवान महबूब मेहर नज़र टिकाईआ। गुरु गुरदेव बोल जैकारा, नाद धुन शनवाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिफ्ती सिफ्त करन इज़हारा, अक्खर
३५१ अक्खरां नाल मिलाईआ। नव नव चार दा फेर वेखणा अन्त किनारा, नव सत्त ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ३५१
२४ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वरताईआ। नव चेत कहे धरनीए पूरब लेखा गया बीत, बेवतने २४
तैनूं दयां समझाईआ। लेखा तक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी की वड्याईआ। जो सब दा आदि जुगादी मीत, मित्र प्यारा अगम्म अथाहीआ। जुग चौकड़ी बदलणहारा नीत, नीतीवान इक अख्वाईआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दस्सया गीत, कलमा नाम शब्द दिता समझाईआ । जो वसणहारा हर घट चीत, गृह गृह अन्दर आपणा डेरा लाईआ। जिस खेल खिलाया मन्दिर मसीत, काअब्यां नाल शनवाईआ। हुक्म संदेशा दे हदीस, हज़रतां कीती पढ़ाईआ। जिस दा लहिणा देणा बीस इकीस, इकीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। जिस दी सिफ्त करे राग छतीस, ढोले अक्खरां नाल सुणाईआ। उह सति दा सच मालक करनहार प्रीत, प्रीतम वड वड्याईआ। जिस दी सब ने रखी उडीक, बिन नैणां नैण उठाईआ। उस दे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े देवे थांउँ थाँईंआ। उह जुग जुग मेटणहारा तारीक, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। जिस दी सतिगुर शब्द करे तस्दीक, शहादत अवतार पैग़म्बर गुर भुगताईआ। जिस दी आशा मनसा रखी उम्मीद, बैठे ध्यान लगाईआ। उह सब दी खोल्हणहारा नींद, आलस निंद्रा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। चेत कहे धरनीए अज्ज दा दिवस लै विचार, विचर के दयां जणाईआ। निगाह मार विच संसार, संसारी

भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। लेखा तक पैग़म्बर गुर अवतार, की अवतरी रिहा जणाईआ। भेव खोल्ह आपणी विच्चों धार, धर्म दी धार नाल समझाईआ। जिस दा लेखा नाल वेद चार, चारे खाणी चारे बाणी जिस दी सिफ्त सलाहीआ। सो परम पुरख परमात्म की करे विवहार, विवहारी की आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। नारद कहे मैं झट धरनी तेरे कोल पुज्जा, सतिगुर शब्द रूप दरसाईआ। निरगुण धार भेव खुल्हावां गुज्झा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। निगाह मार लै आपणे उत्ते बसुध्धा, सुध आपणी विच लै अंगड़ाईआ। तेरे उत्ते होण वाला युद्धा, युधिष्टर दा लेखा कृष्ण नाल समझाईआ। जो इशारा दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों बाहर आपणे विच्चों कढ्ढाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा पुज्जा, पूजणयोग दिता सुणाईआ। झगड़ा वेखणा आथण उदा, उदै असत तेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे कोल पुराणा हिसाब, हिन्दसा नज़र कोए ना आईआ। मैं वेखी अगम्म किताब, जिस दा अक्खर ना कोए दरसाईआ। जिस दा इशारा दे के आया विच बग़दाद, बग़लगीर कर खलक खुदाईआ। सयदे विच कर अदाब, नमो कहि के सीस निवाईआ । सो साहिब इक महाराज, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दा इक्को बिना सीस तों सोहे ताज, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि बुझावणहारा आग, अग्नी तत तत गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा संग आप समझाईआ। धरनी कहे मैनूं बावन कीता इशारा, बिना सैनत जगत लगाईआ। चरण छुहा टरानटो दुआरा, बलि दा लहिणा नाल मिलाईआ। बिना कलम शाही तों मारी लकारा, लाइन ऐन दिती दृढ़ाईआ। धुर दा हुक्म संदेशा दिता अगम्मी धारा, धरनी धरत धवल जणाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर होवे पार किनारा, कलयुग अन्तिम खेल खिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी होवे धूंआँधारा, सत्त दीप ना कोए रुशनाईआ। माण रहे ना पैग़म्बर गुर अवतारा, सीस जगदीस ना कोए निवाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक गढ़ बणे हँकारा, हउमे हंगता नाल मिलाईआ। पंज तत होए विकारा, काम क्रोध मोह लोभ हँकार हल्काईआ। शास्त्र सिमरत पावे कोई ना सारा, खाणी बाणी रंग ना कोए रंगाईआ। जगत विद्या करे हाहाकारा, सांतक सति ना कोए कराईआ। स्त्री पुरुष करे विभचारा, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। प्यार रहे ना नारी नारा, नार कन्त ना कोए हंढाईआ। दरोही फिरे विच संसारा, विष्न ब्रह्मा शिव रोवण मारन धाहीआ। धवले तैथों चुक्कया जाए ना भारा, धवले वेखणा अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। धरनी कहे जिस वेले बावन

टरानटो तों कीता टरन, बिन कदमां कदम बदलाईआ। मेरे नाल कीता प्रण, वायदा वाअदयां विच्चों जणाईआ। नाल खुल्हा के हरन फरन, नेत्र लोचन बिना अक्ख अक्ख वखाईआ। छुहा के मेरे सीने उत्ते चरण, चरणोदक जाम प्याईआ। नवीं घाड़त लग्गा घड़न, घड़न भन्नृणहार दए वड्याईआ। बिना अक्खरां लग्गा पढ़न, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। धरनीए कलयुग अन्तिम जिस वेले नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी लड़न, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आईआ । लख चुरासी लग्गी सड़न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कूड़ी क्रिया विच लग्गी हड़्हन, अगे हो ना कोए अटकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु पल्लू किसे ना फड़न, साचा संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैनूं बावन दस्सी अगम्मी बात, बातन भेव खुल्हाईआ। कलयुग होणी अन्त अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी रहे ना कोए जमात, सच विच ना कोए समाईआ। झगड़ा पैणा ज़ात पात, दीन दुनी दुनी दुहाईआ। पिता पूत करे घात, दीन मज़्हब बणे रूप कसाईआ। झगड़ा पैणा काग़ज़ात, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। किसे दी पुछे कोई ना वात, वातावरन विगड़े ख़लक ख़ुदाईआ। दरोही फिरनी लोकमात, मातृ भूमीए तेरी सार कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम मारनी झात, झाकी लैणी चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस दे कोल डूँग्घा खात, खाते आपणे विच समाईआ। उह लेखा जाणे कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे बावन ने इशारा कीता भेव दरसाया वेद रिग, खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। परम पुरख परमात्म जिस दा लहिणा सब तों बिग, बिगिन समझ कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त टरानटो दी धार तेरा लेखा जाणे विनीपैग, पैग़ाम शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे विनीपैग जगत वाला नहीं ग्राम, दीन दुनी ना वंड वंडाईआ। मसीह ने इशारा कीता सलीब लैंदयां विच अवाम, नूरी अलाह वेख वखाईआ। मूसा कहि के इक कलाम, कलम्यां बाहर दृढ़ाईआ। संदेशा दिता कृष्ण काहन, घनईया सांवरीआ इक समझाईआ। वनवासी हो के सीता नूं किहा राम, रमईए मेरा इक गुसाँईंआ। बावन ने आपणा पल्लू जणा के दामन, दामनगीर इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा नूर इक चमकाईआ। धरनी कहे नव चेत दिहाढ़ा होवे चंगा, बावन दा लेखा पूरब दयां जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर होवे लँघा, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ । मेरा सीस धर्म दी धार होवे नंगा, ओढण उपर ना कोए टिकाईआ। दीन दुनी दा अन्त अन्तर गंदा, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर

निरंतर होवे गंदा, सच विच ना कोए समाईआ। उस वेले मेरा महबूब अन्धेरा वेखे अन्धा, अन्ध अज्ञान खोज खुजाईआ। जो इशारा कीता गोबिन्द ने कवी धार बवन्जा, बावन आपणा रंग रंगाईआ। हरिजन मेरी धरनी उत्ते सुहावे आपणे नाल पंजा, पंचम मेला मेले चाँईं चाँईंआ। मेरे नेत्र लोचन नैण बिना अक्खीआं वगे हंझा, हंझूआं हार बणाईआ। मैनूं दरोही आवे रंजा, रंजश विच दुहाईआ । दरोही मेरे उत्ते होणा दंगा, नव खण्ड खण्ड कुरलाईआ। अन्त अख़ीरी बेनज़ीरी मेरा वेखे कन्ढा, कन्ढी घाट खोज खुजाईआ। जिस दा शब्दी होवे डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। हुक्म वरतावे विच ब्रह्मण्डा, ब्रह्मांड दए समझाईआ। जिस दा भेव पाए कोई ना पंडा, विद्या विदिक ना कोए चतुराईआ। जिस दा शब्द अगम्मी खण्डा, खण्डा खड़गा करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विनीपैग कहे मेरी धरनी धरत धवल, धौल जगत समझाईआ। मेरा लहिणा नाल नूरी अलाही अवल, जो आलमीन अख्वाईआ। मैनूं याद आउंदा जदों गोबिन्द छकाया पवल, अमृत रस रस प्रगटाईआ । मेरे नाल कीता कवल, इकरार बिना अक्खरां दिता लिखाईआ। तेरे उत्ते खेल करे साँवल सवल, सुंदर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
३५४ किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। विनीपैग कहे मेरा डण्डावत बन्दना विच सजदा, ३५४
२४ गॉड कहि के सीस निवाईआ। मैं अन्दरों चुक के वेख्या पर्दा, पर्दानशीन दिती वड्याईआ। जिस दा दो जहान बरदा, बन्दीख़ाने २४
विच बैठे सीस निवाईआ। उह लेखा जाणे नौ खण्ड प्रिथवी घर दा, गृह गृह फोल फुलाईआ। जिस दा अगम्मा रूप नरायण नर दा, नर हरि इक गुसाँईंआ। जो आत्म धार लख चुरासी वरदा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस खेल खेलणा लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ पर्दा दए उठाईआ। जुग जुग नवीं घाड़न घड़दा, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। उस दे हुक्म विच कलयुग वहिण वेख्या हड़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। किला तक्कया हँकारी गढ़ दा, हउमे हंगता नाल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला कोए ना पढ़दा, सोहला सच ना कोए समझाईआ। दीन मज़्ब शरअ दी धार विच वेख्या लड़दा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सच रंग आप रंगावेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण भेव खुल्लावेगा। एकँकारा पड़दा लाहवेगा। आदि निरञ्जण नूर रुशनावेगा। अबिनाशी करता वेख वखावेगा। श्री भगवान डगमगावेगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सोभा पावेगा। सतिगुर शब्द हुक्म वरतावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। अवतार पैग़म्बर गुर भेव चुकावेगा। लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी फोल फुलावेगा। नाम कलमे जणा के मंत, मंतव सब दे हल्ल करावेगा। कलयुग लहिणा

मेट के अन्त, अन्तष्करन सब दा आप बदलावेगा। सतिजुग रुति बसन्त, पत्त टहणी फुल्ल आप महकावेगा। महिमा दस्स अगणत, बेअन्त आपणी खेल खिलावेगा। बोध अगाधा बण पंडत, बुद्धी तों परे आप समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा गृह इक वखावेगा। धुर गृह इक दरसाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। हरिजन सन्त सुहेले लाल उठाएगा। गुरु गुर चेले मेल मिलाएगा। सज्जण सुहेले वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाएगा। धरनी कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। मैं नेत्र चरण धूड़ पावां अंजना, लोचन अक्ख अक्ख चमकाईआ। घर स्वामी मिले सज्जणा, गहर गम्भीर इक गुसाँईंआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग लँघणा, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दे दवारयों हभ कुछ मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैनूं नवीं चाढ़ दे रंगणा, दुरमति मैल दे धुआईआ। पवित्र करदे तत पंजणा, पतित पुनीत तेरी सरनाईआ। तेरा इक्को दीपक जोती दो जहान जगणा, जागरत जोत डगमगाईआ। सति सच दा पा दे सगना, सगल मनोरथ मेरे पूर कराईआ। कलयुग जीव बुद्धी रहे ना कगना, हँस गुरमुख लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी हो सहाईआ। धरनी कहे मेरा विनीपैग बिना अक्खरां तों संदेश, विद्या जगत ना कोए चतुराईआ। मेरा मालक इक नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जो सदा रहे हमेश, आदि जुगादि अगम्म अथाहीआ। जो मेरे उत्तों मेटे कलेश, कलधारी इक अख्वाईआ। लहिणा जाणे गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा फोल फुलाईआ। मैं उस दे अगे होई पेश, पेशतर पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। ज़रा निगाह मार लै वस के आपणे सम्बल देश, देस देसांतरां खोज खुजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा नहीं कोई परदेश, परदेशां दे मालक होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी मंग इक मंगाईआ। धरनी कहे मेरी डण्डावत बन्दना, बांदी हो के सीस निवाईआ। मैं तेरा सुणां इक्को छन्दना, शहिनशाह देणा दृढ़ाईआ। साचा बख्शणा इक अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। धर्म दी धार चाढ़ दे रंगणा, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। तेरे हुक्म नाल कूड़ विकार वंञणा, शौह दरयाए देणा रुढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी इक सरबंगणा, सतिगुर शब्द तेरी इक बेपरवाहीआ। दीन दुनी तेरा ढोला इक्को सुणे छन्दना, इक्को नाम सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा सुहञ्जणा होया वक्त, घड़ी पल थित पिछली नाल मिलाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल जगत, दीन दुनी खोज खुजाईआ। धन्न भाग जे मेरे उत्ते सोंहदे तेरे भगत, भगवन देणी इक सरनाईआ। इन्नां

दी लेखे लाउणी बूँद रक्त, ततव तत आपणे विच समाईआ। जिन्हां दे कारन आएयों फ़कत, फ़िकरे सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू चरण धूड़ी लावां ख़ाक, मस्तक आप रमाईआ। मेरा दर दुआर करना पाक, पतित पुनीत तेरी सरनाईआ। सच सच खोल्हणा ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जो पेशीनगोईआं विच अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं कीता वाक, पूरा सब दा देणा कराईआ। कलयुग मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ । तूं मालक ख़ालक प्रितपालक कायनात, मख़लूक तेरा नूर नजरी आईआ। आत्म परमात्म सब नूं दे इत्फ़ाक, इत्फ़ाकीआं आपणा मेल कराईआ। लख चुरासी तेरी ज़ात, अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेलणा नात, सुरत शब्द शब्द जणाईआ। तेरा हुक्म संदेशा सुणे दीप सात, सति सतिवादी कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप वखाईआ। धरनी कहे मेरे भाग होए चंगे, चंगी तरह जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मेरे उत्ते लँघे, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैनूं खुशी होई निरगुण धार लगाया अंगे, अंगीकार आप हो जाईआ। मेरे लेख ना होवण मंदे, मंदहीण दयां दुहाईआ। ज़रा निगाह मार लै किस बिध निशान मेटणे तारा चन्दे, मुहम्मद दी आसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक वेख वखाईआ। मुहम्मद आशा सदी चौधवीं मज़लूवल्ल ज़वा नावोफ़ते ज़वी गोलूशतो खुदा बविशते मुबा रहीमे ज़ुवा ज़कविल ज़ोओमम्म चाकिसतल ज़वी माविल मज़ी आसते नरूअ नूरे नुज़ा हकीके खुदा खुद मालक तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आपणा आप बणाईआ। धरनी कहे मेरी आशा पुन्नी, प्रभ दिती माण वड्याईआ। नूर अलाही मालक तक्कया कुंनी, अगम्म अगम्मड़ा धुरदरगाहीआ। जिस लेख मुकाउणा लख चुरासी जूनी, जूनी रहित इक अख्वाईआ। झगड़ा मेटणा दीन दुनी, दोहरी आपणी कल वरताईआ। मैं चरण प्रीती घोल घुली, आपणा आप घुमाईआ। जिस लेख मुकाउणा रसना जिह्वा जाप बुल्ल्हीं, आत्म परमात्म सुरत शब्द पारब्रह्म ब्रह्म प्रभ मेला मेले सहिज सुभाईआ। जन भगतां भाग लगाया काया माटी कुल्ली, साढे तिन्न हथ्थ समरथ दए सुहाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा सुल्हकुली, कुल मालक नूर अलाहीआ। धरनी कहे मैं उस दे तोल तुली, जो तोलणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं कीमत दिती बहुमुली, गणती गणत ना कोए गिणाईआ।

धरनी कहे मेरे भगवन्त, हरि भगवन तेरी बेपरवाहीआ। मेरे आदि जुगादि सचखण्ड निवासी कन्त, मालक ख़ालक अगम्म अथाहीआ। दीन दुनी आपणे नाम कलमे तक लै मंत, अक्खर अक्खरां फोल फुलाईआ। निरगुण धार दिसे कोई ना सन्त, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव कोए ना पाईआ। बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, जगत विद्या होई हल्काईआ। धर्म दी धार रुत मौले ना कोई बसन्त, सति सच पत्त टहणी ना कोए महकाईआ। दरोही फिरी विच जीव जंत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। वरन बरन बणे कोई ना संगत, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे भगवाना, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह नूर अलाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सचखण्ड निवासी प्रधाना, परम पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मेरे उत्ते गुज़रया ज़माना, कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। चार जुग दे शास्त्र तेरा देण ब्याना, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं शब्द संदेशा दिता विच जहाना, दीन दुनी दुनी समझाईआ। परम पुरख परमात्म कलयुग अन्तिम खेल महाना, निरगुण निरवैर आपणा भेव दरसाईआ। नौ खण्ड पृथमी धरनी कहे तेरा मानव होया बेगाना, सगला संग ना कोए रखाईआ। शब्द अनादी धुन आत्मक सुणे ना कोए तराना, तुरीआ दी धार मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। अमृत रस निझर मिले ना पीणा खाणा, तृष्ना कूड़ ना कोए मिटाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म मैं सदी चौधवीं होई हैराना, हैरत विच मेरी दुहाईआ। निराधार निरँकार निरवैर मेरे उत्तों कल कलेश मेट ज़माना, ज़मीं दे मालक ख़ालक आपणी दया कमाईआ। उह लेखा तक लै जो कहि के गया रामा, दशरथ सुत सुत समझाईआ। जो इशारा कीता कृष्णा कान्हा, घनईया हो के भेव खुल्हाईआ। मूसा गा के तेरा तराना, त्रैगुण अतीते दिता दृढ़ाईआ। ईसा बोल के बिना ज़बाना, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। मुहम्मद चार यारी ला यराना, चौथे जुग गया दृढ़ाईआ। नानक बिना अक्खां दे ध्याना, बिन तत तत दरसाईआ। गोबिन्द खिच्च के चिल्ला तीर कमाना, कमलापति गया समझाईआ। धरनी धरत धौल कहे मेरा लेखा अन्त अन्त मुकाउणा, मुकम्मल तेरे चरणां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं चार जुग दी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी चौकड़ी सदा सदा सद रहे लँघदी, सतिजुग त्रेता द्वापर संग मिलाईआ। मेरी धार वेख लै आपणे अंग दी, अंगीकार इक बणाईआ। मेरे उत्तों खेल मेट दे विकारे पंज दी, पंचम

धार शब्दी नाद नाद कर शनवाईआ। मेरी ग़मी वेख लै रंज दी, चिन्ता चिखा विच जलाईआ। मेरी धार वेख लै नेत्र अंझ दी, नैणां नीर वहाईआ। उह आसा वेख लै यमुना सरस्वती गोदावरी गंग दी, की रो रो रही मनाईआ। शरअ मेट दे दूई दुवेती कंध दी, कन्धी दे मालक ध्यान लगाईआ। रैण अन्धेर रहे ना अन्ध दी, अज्ञान देणा चुकाईआ। मैनूं खेल नज़र आउंदी मेरे उत्ते धार होणी तेरे जंग दी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत समुंद सागर रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरी अन्तष्करन वेख, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। मेरी कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रेख, ऋषी ऋषीशर जिस दा भेव कोए ना पाईआ। तेरा अवलड़ा दो जहानां होवे भेख, भेखाधारी आपणा रूप बदलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक झगड़ा रहे ना मुलां शेख़, मुसायक आपणे रंग रंगाईआ । मैं तेरी एकँकार इक्को रखी टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। मेरे उत्ते मानव ज़ाती बुद्धी कर बिबेक, मानस मानव इक्को घर वसाईआ। परम पुरख परमात्म निरगुण धार आपणा खोल्ह भेत, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिस कारन गुर अर्जन सीस पुआई तती रेत, अग्नी तत जलाईआ। तिस दा वक्त सुहञ्जणा होवे ते मौले रुत चेत, चेतन सब नूं दए कराईआ। आत्म परमात्म दस्स हेत, पारब्रह्म ब्रह्म प्रभ मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। निज घर निज गृह दिसणा नेतन नेत, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरीआं जुग पुराणीआं आशा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग ध्यान लगाईआ। तेरा नूर तकां प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। मैनूं याद आवण काहन वालीआं रासां, गोपीआं आपणा संग निभाईआ। तेरा लहिणा देणा तूं देवणहारा शाहो शाबाशा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मैनूं याद आउंदा तेरा अन्तिम सम्बल होणा वासा, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। तैनूं झुकदे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर सीस निवाईआ। दो जहानां करना हासा, विष्न ब्रह्मा शिव अवतार पैग़म्बर गुर ढोले गाईआ। तूं सब दा भेव खोल्हणा खुलासा, ख़लक दे ख़ालक आपणा रंग रंगाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी सदी चौधवीं अन्तिम वेखणा तमाशा, तमाशबीन हो के आपणा हुक्म वरताईआ। मैनूं इयों जापदा नव सत्त चढ़नी लाश ते लाशा, लशकर नेत्र नज़र कोए ना आईआ। हुक्म मिलणा शंकर उत्ते कैलाशा, कलाधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। लाड़ी मौत बदल लए पासा, राय धर्म अक्ख उठाईआ । कलयुग अन्तिम जाए नासा, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे वल मार झाती, बिन नेत्र अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा

चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा वेख लै ज़ात पाती, दीन दुनी कुरलाईआ। आह वेख सीने अन्तर अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाली पाती, जो निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। जिस दी ज़िंदगी समझे ना कोए हयाती, आयू वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी आशा तके इक इकांती, अकल कलधारी ध्यान लगाईआ। जिस दा लेख लिख्या नहीं कलम दवाती, जगत शाही ना रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं सुणदी रही संदेशे, बिन सरवणां ध्यान लगाईआ। मैनूं इशारे दिते विष्न ब्रह्मा शिव गणेशे, गणपति आपणी अक्ख खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लिखे लेखे, धुर शब्द नाल वड्याईआ। मैनूं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दे पिछले चेते, चेतन हो के दयां सुणाईआ। कोटन कोटि जुग बीते केते, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। शाह सुल्तान बणे नेते, नर निरँकार तेरे हुक्म विच खेल खिलाईआ। तेरा कोई पा ना सके भेते, भेव समझ विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। झट नारद आ गया कहे धरनीए बिन अक्खरां तों लै चिट्ठी, कोझी कमलीए तेरे हथ्थ फड़ाईआ। उठ निगाह मार लै चार कुण्ट दहि दिशा खेल होण वाली अणडिठ्ठी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दे हुक्म दी धार पैग़म्बरां गुरुआं मंनी मिठ्ठी, अवतर गए सीस निवाईआ। उस दा हुक्म संदेशा फ़रमान इक निक्की जेही चिट्ठी, अक्खर समझ कोई ना पाईआ। तेरे उत्ते ख़ाक उडण वाली मिट्टी, चार कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए सचखण्ड निवासी की कुझ कहिंदा, बिन अक्खरां हुक्म जणाईआ। जिस दा भाणा जुग चौकड़ी लख चुरासी जीव जंत सहिंदा, साध सन्त सीस ना कोए उठाईआ। जो निरगुण निराकार निरँकार साचे तख्त तख्त निवासी बहिंदा, जिस दी बाडी घड़त ना कोए घड़ाईआ। की खेल उस दा होणा दिशा लहिंदा, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। धरनी कहे नारदा मैं की दस्सां हाल, हालत की जणाईआ। मैं बेसुध होई बेहाल, बहिबल हो के रोवां मारां धाहीआ। मेरा धर्म दा लुट्टया गया धन माल, सच वस्त रहिण ना पाईआ। मेरे उत्ते कूकदा काल, कलयुग नगारा डंक वजाईआ। मेरा परम पुरख परमात्म जो वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद इक्को धुरदरगाहीआ। जो मेरी सुरत लए संभाल, सम्बल विच आपणा नूर कर रुशनाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुरु घालणा गए घाल, हुक्मे विच हुक्मी सेव कमाईआ। उह वखरी चलणवाला चाल, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं सुणीआं अगम्मी

ख़बरां, बेख़बरे दयां जणाईआ। की संदेशा आवे उत्तों अम्बरा, बिन रसना जिह्वा हुक्म की दृढ़ाईआ। जिस ने नवां रचणा सुवम्बरा, नव सत्त जोड़ जुड़ाईआ। लेखा मुकाउणा मस्जिदां मन्दिरां, काअब्यां पड़दा रहे ना राईआ। जगत जहान वेखणा डूँग्घी कंदरां, टिल्ले पर्वत फोल फुलाईआ। सृष्टी दृष्टी होई वांग खण्डरा, महल अटल ना कोए सुहाईआ। लहिणा मुकणा सूर्या चन्दना, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। जिस दा हुक्म वरतणा ते वरतणा सदी चौधवीं अन्तिम कत्तक पंदरां, थित वार जगत जुगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा मेरे अन्दर आवे डर, भय विच की जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला की रिहा कर, करता पुरख धुर दा माहीआ। जिस ने कलयुग कूड़ दा दिता वर, ममता मोह विकार नाल मिलाईआ । धर्म दा दिसे कोई ना सर, सरोवर नज़र कोए ना आईआ। सति सच धर्म मेरे उत्तों गया खर, जगत जुगत वेखण कोए ना पाईआ। नज़री आए किसे ना हरि, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दीन दुनी जगत विकार विभचार विच रही सड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। झगड़ा प्या सीस धड़, तन वजूद ना कोए सफ़ाईआ । पुरख अकाला दीन दयाला मेरे उत्ते नवां घाड़न लए घड़, घड़न भन्नणहार आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग तोड़े किला हँकारी गढ़, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आत्म धार लए फड़, अन्तर अन्तर निरंतर आपणा मेल मिलाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़, चेतन आपणा खेल खिलाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर तूं मेरा मैं तेरा इक्को अक्खर जाए पढ़, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल चार जुग दी कथा कहाणी, जगत शास्त्र समझ कोए ना पाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी समझे कोए ना बाणी, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। मैं लेखा जाणां नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप एथे ओथे दो जहानी, पृथमी आकाश गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। मेरा साहिब सुल्तान श्री भगवान नौजवानी, जोबनवन्ता हरि भगवन्ता इक अख्वाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी निशानी, निशाना धर्म धार प्रगटाईआ। लहिणा देणा मुकाउणा अठसठ तीर्थ पाणी, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। जो आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे नारदा मैं बिना अक्खरां तों अक्खर उलीकदी, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। मैं उस प्रभू नूं उडीकदी, जिस दे अवतार पैग़म्बर गुरु ढोले गाईआ। जिस दी खेल हक तौफ़ीक दी, तोहफ़े नाम देवे थांउँ थाँईंआ। जिस दी सति सच रीती प्रीत दी, प्रीतम होवे धुरदरगाहीआ। मैं बिना अक्खीआं तों अक्खां मीटदी,

निज नेत्र ध्यान लगाईआ। जिस खेल मिटाउणी हस्त कीट दी, ऊचां नीचां इक्को घर वसाईआ। उह तक लै मुहम्मद दी सदी चौधवीं बीतदी, भज्जे वाहो दाहीआ। सदी बीसवीं ईसा वाली तस्दीक दी, शहादत कलमे वाली भुगताईआ। खेल होणी इक भय भीत दी, जो सब दे भीतर वस्या धुरदरगाहीआ। वंड रहे ना मन्दिर मसीत दी, काया काअबा इक्को इक समझाईआ। जिस दी शरअ होणी हदीस दी, हज़रतां तों बाहर पढ़ाईआ। उह आशा वेखे बीस इकीस दी, जो गुरदास गया समझाईआ। जिस दी धार होणी इक्को छत्र सीस दी, जगदीश नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म नाल सतिजुग त्रेता द्वापर दुनिया आई पीसदी, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। उहदी धार तक लै पतित पुनीत दी, पावन अगम्म अथाहीआ। जिस दी अवाज़ होई तूं मेरा मैं तेरा इक्को गीत दी, सोहँ धार धार प्रगटाईआ। मैं उसे दी धार विच चीकदी, चीक चिहाढ़ा रही पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेल आप मिलाईआ। नारद कहे धरनीए सो पुरख निरञ्जण आवेगा। हरि पुरख निरञ्जण खेल खिलावेगा। एकँकार वेस वटावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान वेख वखावेगा। पारब्रह्म रूप दरसावेगा। शब्द अनादी सुत प्रगटावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावेगा। त्रैगुण लेखा मूल चुकावेगा। पंज तत तत मूल समझावेगा। लख चुरासी वेख वखावेगा। जोत प्रकाशी नूर डगमगावेगा। तेरी पूरब पूरी करे आसी, तृष्ना तृखा तेरी बुझावेगा। झगड़ा मेट पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर संग निभावेगा। कलयुग मेटे तेरी उदासी, चिन्ता ग़मी बाहर कढावेगा। जिस कारन ईसे गल विच पाई फाँसी, सलीब दा लहिणा सब दी झोली टिकावेगा। तूं ख़ुशीआं नाल कर हासी, हस्ती दा मालक इक्को नज़री आवेगा। जिस दा लहिणा देणा शंकर नाल कैलाशी, कलाधारी हुक्म वरतावेगा। कलयुग मेटे कूड़ क्रिया बदमाशी, बदी दा लेखा उस दे हथ्थ फड़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वावेगा। धरनी कहे नारदा मेरे बन्ने वेख लै हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ। मिले साहिब मेरा समरथ, जिस दे गोबिन्द सथर गया लथ, यारड़ा सेज हंढाईआ। मेरी बिरहों विछोड़े विच हंझू नेत्र वगे अथ्थ, जल धार नाल मिलाईआ। जिस कलयुग चलाया रथ, रथ रथवाही हो के वेख वखाईआ। जो अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया देवे मथ, सच सच सच वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए पुरख अकाल दया कमावेगा। मेहरवान मेहर नज़र उठावेगा। कलयुग अन्त देर ना लावेगा। भगत सुहेले जगत सन्त जगावेगा। जिस दी महिमा सदा अगणत, गिणती गणत ना कोए रखावेगा। तूं मेरा मैं तेरा दस

के मंत, मंतव तेरा हल्ल करावेगा। लेखा देवे जीव जंत, जागरत जोत डगमगावेगा। सति धर्म दी नवीं बणा के बणत, घड़न भन्नणहार वेख वखावेगा। उसे दर दी होणा मंगत, जो भिखक भिखारन तेरी झोली भरावेगा। चार वरन अठारां बरन बणा के संगत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई जोड़ जुड़ावेगा। कलयुग कूड़ कुड़यार दा करके अन्त, अन्तष्करन तेरा वेख वखावेगा। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह श्री भगवन्त, भगवन आपणा संग निभावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद बणाई बणत, सो वेखणहारा एकँकार आपणी कल वरतावेगा।

✪ १३ चेत शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह ४१६ शेर बरुक सटरीट
विनीपैग मैनीटोबा कनेडा ✪

बावन कहे मेरा लेखा नाल बलि, सतिजुग सति सति वजी वधाईआ। खेल खेलया बणके अछल अछल्ल, वल छलधारी हो के आपणा आप छुपाईआ। लेखा जाण के समुंद सागराँ जल, महीअल थल वेख वखाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाशां पातालां धाम अटल, आसण सिँघासण इक सुहाईआ। निरगुण धार सरगुण तत रल, जगत जुगत आपणा खेल खिलाईआ। धुर संदेशा नाम निधाना अगम्मा घल, भेद अभेद दिता समझाईआ। निगाह मारी अन्तिम वेख्या कलयुग कल, कलकाती ध्यान लगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों रही हल्ल, सांतक सति ना कोए कराईआ। भाग लग्गा ना किसे काया माटी खल्ल, ख़लक ख़ालक रंग ना कोए समाईआ। धुर दा नाम तन दिसे किसे ना फल, अमृत रस ना कोए चखाईआ। कूड़ विकार सके कोई ना ठल्ल, कलयुग आपणा वहिण वहाईआ। दूई दुवैती मेटे कोई ना सल, सलल विच ना कोए समाईआ। माया ममता होई प्रबल, पर्वत टिल्ले रोवण मारन धाहीआ। फिरी दरोही विच अस्गाहां थल, चार कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा भेव आप समझाईआ। बावन कहे मेरा खेल न्यारा, अक्ल बुद्धी जगत ना कोए वड्याईआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, अवतरी हो के वेख वखाईआ। नव खण्ड पृथ्मी पाई सारा, सत्तां दीपां चरणां हेठ दबाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणा हुक्म दस्सया बाहरा, जगत विद्या वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा बोल नाअरा, नर नरायण रंग रिहा रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी

पा सकण ना सारा, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि विच संसारा, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखाईआ। झट संदेशा दिता कलयुग अन्त श्री भगवन्त कलि कल्की लए अवतारा, चौबीसा जगदीशा इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा जगत शरअ तों होवे बाहरा, बन्धन दीन दुनी ना कोए रखाईआ। मानस मानुख तन वजूद दए अधारा, माटी ख़ाक पतित पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेले खेल दुबारा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। धरनी धरत धवल धौल नव सत्त पाए सारा, नव नव चार दा पन्ध मुकाईआ। जिस दा नर सिँघ दे के गया इशारा, बिन सैनत सैनत आप समझाईआ। प्रहलाद खोल्ह के बन्द किवाड़ा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उह तक कलयुग अन्त श्री भगवन्त चौबीसा अवतारा, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। जिस दा रूप रंग रेख ना नारी ना नारा, ततव तत तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी कुदरत कादर करनी दा करता होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर नूर आपणा दए चमकाईआ। जिस नूं दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान अवतार पैग़म्बर गुर निरगुण धार करन निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां
३६३ विच सीस झुकाईआ। सो वेखे विगसे पावे सारा, महासार्थी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा आदि अन्त जुगा जुगन्त ३६३
२४ अन्त ना पारावारा, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, २४
सच दा खेल आप खिलाईआ। बावन कहे मैं निगाह चों निगाह बदली, लोचन नैण अक्ख उठाईआ। सचखण्ड दुआर दा बण के अदली, अदल इन्साफ़ दिता जणाईआ। कलयुग सतिजुग खेल वेखणा मध लई, त्रेता द्वापर नाल मिलाईआ। नाल इशारा दिता लोकमात अज्ज लई, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। धरनीए अन्त कन्त भगवन्त कलयुग आपणे उत्ते सद्द लईं, सद्दा देणा सीस निवाईआ। पूरब मेरा लेखा कढ लईं, बिन काग़ज़ बिन शाही लिखाईआ। उह तक इशारा सदी चौधवीं हद्द लई, हदूद अवर ना कोए रखाईआ। सदी बीसवीं धार तेरी जग लई, ईसा आपणी अक्ख उठाईआ। तूं तरसणा परम पुरख दे पग लई, चरण कवलां ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरे बावन, बिना भुजां तों सीस निवाईआ। मेरा पकड़ीं दामन, दामनगीर इक अख्वाईआ। अगों हस के किहा तेरा लेखा नाल रामा रामन, रम्ईआ आपणा भेव चुकाईआ। निगाह मार लै कृष्णा काहन, घनईया सईआ सोभा पाईआ। पैग़म्बरां तेरा बणाउणा ज़ामन, मूसा ईसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। नानक गोबिन्द तेरी धार पहचानण, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। फिर अन्धेरा होणा अन्धेरी शामन, कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। कूड़ क्रिया वेख

कलेश कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल मिलाईआ। साचा अमृत मेघ बरसे कोई ना सावण, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। बेशक दुनिया सृष्टी कायनात मानस अठसठ तीर्थ नहावन, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती भज्जण वाहो दाहीआ। परम पुरख परमात्म मिले ना किसे पतित पावन, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए समाईआ। सति सच गाए कोई ना गावन, जगत विद्या होए हल्काईआ। धरनी उस वेले खेल करे श्री भगवानन, हरि भगवन धुरदरगाहीआ । जन भगतां दे के नाम निधानन, निज आत्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे बावन मेरी नमो नमो निमस्कार, तेरे चरणां धूड़ रमाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सोहणी सरकार, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। मेरी बिन आशा तों सुण पुकार, बिन तृष्ना तेरे अगे टिकाईआ। जे तूं प्रगट होया बलि दे दुआर, आप आपणा रूप बदलाईआ। भिखारी हो के बणयों भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। आप आपणा कर आकार, अकल कलधारी की आपणी खेल खिलाईआ। की ढाई करमां दा विवहार, मैनूं दे समझाईआ। क्यों चरण टिकाया मेरे उत्ते दूजी वार, चरण चरण नाल बदलाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सब कुझ जानणहार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। बावन हस के किहा सुण हुक्म मेरा जो देवां आपणी धार, बिन अक्खरां अक्खर लिखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तेरे उत्ते बीते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सेव कमाईआ। आउँदे रहे पैग़म्बर गुर अवतार, तन वजूदां जगत हंढाईआ। नाम कलमे गए उच्चार, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। दीनां मज़्बां कर पसार, मानव ज़ाती वंड वंडाईआ। शरअ दी खड़ी कर दीवार, हिस्से दीन दुनी पाईआ। कातिल मक्तूल दा खेल कीता अपार, शस्त्र खण्डे तीर कमानां हथ्थ उठाईआ। नाले कूक कूक करदे गए पुकार, परम पुरख तेरी बेपरवाहीआ। तूं आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक एकँकार, अकल कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। संदेशा देंदे गए वारो वार, भविख्त पेशीनगोईआं पेशतर जगत जणाईआ। कलयुग अन्त आवे कलि कल्की अवतार, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। वसे साढे तिन्न हथ्थ सम्बल नगर अपार, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। लख चुरासी पावे सार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखा जाणे आप करतार, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, मकरूज आपणा लेखा दए मुकाईआ। धरनीए तेरे उत्ते किरपा करे आप दातार, दाता दानी हो के वेख वखाईआ। जन भगत सुहेले कर तैयार, त्रैगुण अतीता देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं विच होई बेहाल, बहिबल

हो के सीस निवाईआ। बावन मैं किस बिध करां भाल, खोजां केहड़ी थाईंआ। कवण बणावां दलाल, विचोला कवण अख्वाईआ। किस बिध फल लग्गे मेरे डाल्, पत्त टहणी नाल महकाईआ। आ के पुछे मेरा हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। बावन कहे कमलीए उह आदि जुगादि तेरा हल्ल करे सवाल, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। साचा देवे तैनूं धन माल, नाम निधाना तेरी झोली पाईआ। उहदा भगत सुहेला तेरे उत्ते आए अनोखा लाल, लाल आपणे रंग रंगाईआ। तेरी लेखे लावे घाल, घालणा अवर रहे ना राईआ। बेशक उह बाल होए अंञाणा बाल, बाली बुद्ध रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन किहा धरनी तक लै धर्म दवार, धवले तैनूं दयां दृढ़ाईआ । तेरा शाहो भूप सिक्दार, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। जिस मेरा रूप बणाया पावे कोई ना सार, अन्त कहिण कुछ ना आईआ। चार जुग दे शास्त्र जिस दे पनहार, नित नवित सेव कमाईआ। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दए अधार, उदर दे लेखे नाल मिलाईआ। अन्त कलयुग जोती जाता पुरख बिधाता तेरी पावे सार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणी दया कमाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा तेरी झोली देवे डार, बचया रहिण किछ ना पाईआ। फिर हो जावीं ख़बरदार, बेख़बरे ख़बर सुणाईआ। नव खण्ड पृथ्मी तेरे उत्ते होणी हाहाकर, हौकयां विच दिसे लोकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा तेरे उत्तों कढ्ढे बाहर, अन्तर निरंतर रहिण मूल ना पाईआ। सतिजुग सति सच दा कर उज्यार, उजाला आपणा नाम रखाईआ। रवि शशि सूर्या चन्द मण्डल मण्डप करन निमस्कार, निव निव लागण पाईआ। तूं उस दी करीं इंतज़ार, उडीक विच आपणे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे वड्डे होवण भाग, ख़ुशीआं ढोले गाईआ। सरन सरनाई जावां लाग, लग मातर डेरा ढाहीआ। जिस वेले मेरे उत्ते जगे चराग़, जोती जाता नज़री आईआ। मेरी हँस बुद्धी बणे काग, दुरमति मैल धुआईआ। मेरे अन्दर उपजे वैराग, वैरी रहिण कोए ना पाईआ। जगत तृष्ना बुझाए आग, अमृत मेघ बरसाईआ। मानव ज़ाती बदल समाज, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जिथ्थे सुआल रहे ना जुआब, जुआब तल्बी विच सारे सीस निवाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं ल्या ख्वाब, पेशीनगोईआं विच जणाईआ। जिस दे हुक्म विच सूर्या दिसे महताब, महबूब अगम्म अथाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा वाहिद, लाशरीक इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को कानून होवे कविज़ कायद, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा हुक्म कर आयद, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मैं ख़ुशीआं

विच नच्चदी, बिन कदमां कदम उठाईआ। मेरे अन्दरों बिरहों प्रेम दी अग्नी मचदी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरी आशा भरी सच दी, सच नाल मिले वड्याईआ। मैं निगाह मारी लख चुरासी जीव जंत काया माटी कच्च दी, कंचन गढ़ नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त अखीर दीन दुनी दी ख़ाहिश वेखी ढठदी, आशा पूर ना कोए कराईआ। वड्याई रहिणी नहीं किसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दी, गुरुदुआर रंग ना कोए रंगाईआ। निशानी रहे ना तीर्थ अठसठ दी, जल धार ना कोए समाईआ। कलयुग अन्तिम खेल होणी भठ दी, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप साचा संग ना कोए बणाईआ। मैं चारों कंट खुशीआं दे विच नठदी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं सोच सुट्टी पुरख समरथ दी, जो करता पुरख इक अख्वाईआ। जिस खेल मुकाउणी कलयुग कूड़े रथ दी, सतिजुग सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते बावन कीता ध्यान, मेरा अन्तष्करन जणाईआ। मैनूं बिना विद्या तों आया ज्ञान, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। मैं नूर तक्कया श्री भगवान, जोती जाता सोभा पाईआ। जिस मेरी करनी कल्याण, कायनात दा लेख मुकाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा पुजया आण, घड़ी पल थित वार दए गवाहीआ। मैं खुशीआं विच गाउँदी गाण, ढोले धुरदरगाहीआ। घर स्वामी ठाकर मिल्या आण, खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं चरण कवल कवल चरण धूड़ी करां पान, धूल आपणे विच समाईआ। खुशी वाला दिवस महान, रैण भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। सतिगुर होए आप मेहरवान, महिबान बीदो दिती वड्याईआ। भगत सुहेला जगत पहचान, गुर चेला रंग रंगाईआ। लाल सिँघ सुहावा सिँघ दा लाल कर परवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रभ देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी आत्म परमात्म लेखा जाणे गोपी काहन, पारब्रह्म ब्रह्म मेलणहार इक अख्वाईआ।

३६६
२४

✪ १४ चेत शहिनशाह सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ प्रेमी दे गृह १५-४० केट सटरीट विंनीपैग मैनीटोबा कनेडा ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा तक लै रूप ख़ाकी, मिट्टी ख़ाक ध्यान लगाईआ। मेरे उत्ते जीव रिहा कोई ना पाकी, पतित पावन की तेरी बेपरवाहीआ। आत्म रस दा दिसे कोई ना साकी, निझर झिरना जाम ना कोए प्याईआ । मन मनुआ सब

दा होया आकी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लहिणा देणा देदे बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण धार नौ खण्ड पृथमी खोल्ह ताकी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मैं बिना अक्खां तों रही झाकी, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। मेरी दुरमति मैल दे काटी, दूई द्वैत देणी गंवाईआ। सच धर्म दी खोल्ह हाटी, कलयुग कूड़ कुटम्ब मुकाईआ। भाग लगा दे काया पंज तत माटी, पंचम मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। सदी चौधवीं अन्त मेट दे वाटी, मुहम्मद आशा तेरे चरण रखाईआ। जो नूर दरसाया मूसा कोहतूर उत्ते ललाटी, ज़हूर आपणा इक दृढ़ाईआ। मसीह मंज़ल वेख लै घाटी, धुर दे पाँधी पन्ध मुकाईआ। नानक निरगुण धार मेरी सेज सुहाई खाटी, गोबिन्द सथर यारड़ा सेज गया हंढाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी पुछ वाती, वातावरन तक ख़लक ख़ुदाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म दिसे ना कोए जमाती, निरअक्खर धार विच ना कोए समाईआ। कलयुग अन्त ज़िंदगी तक हयाती, आयू आरजा फोल फुलाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना झगड़ा मेट काग़ज़ाती, कलमा शरअ नाम ना होए कोए लड़ाईआ। तेरी चरण धूड़ सृष्टी दृष्टी अन्तर होवे नहाती, दुरमति मैल मैल गंवाईआ । आ तक लै मेरे कोल बावन दी बिन अक्खरां वाली पाती, जगत विद्या वंड ना कोए वंडाईआ। जिस संदेशा दिता कलयुग अन्त जोती जाता आवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जो तेरी तके डूँग्घी खाती, गहर गम्भीर बेनज़ीर फोल फुलाईआ। दर्शन देवे इक इकांती, इक इकल्ला वेस वटाईआ। अमृत बख़्श के बूँद स्वांती, तेरी तृखा दए बुझाईआ। चरण छुहाए तेरे उत्ते सीने छाती, छत्रधारीआं करे सफ़ाईआ। सति धर्म तैनूं देवे दाती, दाता हो के आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रुत, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ। मानस ज़ाती बणा लै आपणे सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। पवित्र कर दे पंज भुत, अप तेज वाए पृथमी आकाश आपणे रंग रंगाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती सब दी दे कराईआ। सदी चौधवीं मेरी खुल्ही वेख लै गुत्त, मैंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैनूं रोंदी करा चुप, चुप चुपीते आप दया कमाईआ । दरोही मेरे उत्ते होया अन्धेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी धार गई छुप, नव सत्त अन्धेरा छाईआ। मेरे अन्तर कलयुग अन्तिम वध्या दुःख, दुखी हो के मंग मंगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग ममता वधी भुख, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। जनणी सुफल होए कोए ना कुख, भगत जन्मे कोए ना माईआ। मात गर्भ दे मानव दिसदे उलटे रुक्ख, चुरासी फाँसी ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे परम पुरख बख्श दे प्रेम, प्रेमी प्यारयां नाल मिलाईआ। मेरा सति सच दा होवे नेम, धर्म दी धार वजे वधाईआ। जो इशारा कीता गोबिन्द ने कुण्ट हेम, सप्तसरिंग धार समझाईआ। नेत्र तक अगम्मी आपणे नेम, नैनण नैणां नाल मिलाईआ। जिस दी सिफ्त अवतार पैग़म्बर कहिण, गुरु गुरदेव शब्द शनवाईआ। सो मेरा पूरा कर दे लहण देण, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जो आसा रखी भगत सैण, सैनत अन्दर अन्दर दृढ़ाईआ। जो बाल्मीक इशारा दिता विच रमायण, सकंद दसवां सच सच समझाईआ। रविदास तेरा लहिणा दस्सया परायण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर ज्ञान समझाईआ। सूफ़ीआं इशारा कीता ऐन दा ऐन, ऐहनलकक नाल मिलाईआ। तुध बिन आवे किते ना चैन, चिरी विछुंने होणा आप सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नव सत्त शौह दरया रुढ़ा दे वहिण, डूंग्घे सागर आप सुटाईआ। आत्म परमात्म रहे ना कोई तरफ़ैन, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आशा तक पुराणी, पुराण अठारां देण गवाहीआ। चार लख सतारां हज़ार सलोक जिस की कहाणी, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। वेद व्यासा जिस लिख्या लेख महानी, महिमा कथ कथ दृढ़ाईआ। बावन हो के मेरे उत्ते लाई अगम्म निशानी, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। बलि दुआर जिस दा लेखा दो जहानी, बलख आपणी वंड वंडाईआ। निगाह मारी शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणी अक्ख उठाईआ। जिस नूं समझे कोए ना चारे खाणी, चारे बाणी भेव कोए ना आईआ। तूं मेहरवान महबूब करीं आप मेहरवानी, मुहब्बत विच तेरी ओट तकाईआ। तूं आदि जुगादि दो जहानां दानी, विष्न ब्रह्मा शिव अवतार पैग़म्बर गुर मांगत हो के झोलीआं डाहीआ। मेरी कलयुग अन्त आपणे चरण सरन लाउणी कुरबानी, करबले दा लेखा मुहम्मद नाल मिलाईआ। तूं मालक ख़ालक आलमे जाबदानी, नूर नुराना इक अख्वाईआ। मेरी अन्त मेट परेशानी, परीछत दा लहिणा मेरी झोली पाईआ। जो अथरबन विच ब्रह्मे लेखा लिख्या बिना कानी, वेद चौथा नाल मिलाईआ। तेरी शब्द अगम्मी निरअक्खर धार सुणां बाणी, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा निरगुण भूप दो जहानी, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं कर पवित, दुरमति मैल रहे ना राईआ। तेरा खेल नित नवित, सतिजुग त्रेता द्वापर वजदी रहे वधाईआ। जन भगत सुहेला बणा मित, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मेरी सुहञ्जणी होवे थित, घड़ी पल जगत जुग वंड ना कोए वंडाईआ। दर्शन करां नित, निज नेत्र लोचण नैण देणी अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढ विच्चों चित, ठगौरी मन रहे ना राईआ।

तूं ठाकर स्वामी सब दा पित, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जन भगतां करना हित, कोझे कमले आपणे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श दे चरण धूड़, धूड़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। कलयुग क्रिया मेट दे कूड़, सति धर्म नाल शनवाईआ। चतुर सुघड़ बणा लै मूर्ख मूढ़, अन्ध अज्ञान दे मिटाईआ। तूं मालक ख़ालक हाज़र हज़ूर, हज़रतां तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। मैं तकां तेरा अगम्मी नूर, नूर नुराने देणा दरसाईआ। जिस धार विच सूली चढ़या मनसूर, मनसा भगतां पूर कराईआ। मनुआ मन ना करे फ़तूर, फ़ातिहा अन्दरे अन्दर कराईआ। मेरी आसा मनसा पूरी करीं ज़रूर, ज़रूरत तेरे चरण टिकाईआ। नाम खुमारी मस्ती दईं सरूर, सुरती भगतां शब्द नाल मिलाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। तेरा पन्ध रहे ना नेड़े दूर, दो जहाना इक्को रंग रंगाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां बख्शणे कसूर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह देणा सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरीआं बेनन्तीआं अगम्म मिट्ठीआं, रसना जगत ना कोए जणाईआ। मेरीआं ख़बरां अनडिठ्ठीआं, जग वेखण कोए ना पाईआ। मेरे कोल अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दीआं चिट्ठीआं, जो पेशीनगोईआं विच गए दृढ़ाईआ। जिन्नां आशा तेरे चरण कवल सिट्टीआं, सिट्टे बाज़ी दस्सी ख़लक खुदाईआ। खेल खिला के पत्थर इट्टीआं, पाहनां दीन दुनी रंग चढ़ाईआ। मैं एस वेले बिन हथ्थां दुहथ्थड़ मार के पिटीआं, पटने वाला नाल मिलाईआ। उठ वेख लै हाहे उत्ते टिप्पीआं, हँ ब्रह्म रूप ना कोए दरसाईआ। पिछलीआं बीतदीआं गईआं मितीआं, मित्र प्यारे होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों बुझा दे अग्ग, अग्नी तत ना लागे राईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो भगत सुहेले तेरे सरनी गए लग्ग, लग मातर डेरा देणा ढाहीआ। दर्शन देणा उपर शाह रग, नौ दुआरयां पन्ध मुकाईआ। आत्म रहे ना तैथों अलग, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सचखण्ड दुआर दा बख्शणा पद, मंज़ल अवर ना कोए जणाईआ। आवण जावण लख चुरासी मेटणी हद्द, जम की फाँसी राय धर्म ना दए सज़ाईआ। मेहरवान महबूब जन भगतां आपणे चरण कवल लैणा सद्द, हउँ सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। नाम खुमारी बख्शणी मदि, मधुर धुन करनी शनवाईआ। लहिणा देणा रहे ना दीन दुनी जग, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। शब्द धार विच्चों प्रेम प्यार विच्चों लैणे लभ, हरिजन पड़दा आप उठाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेलणा तेरा सबब, संग निभाउणा थांउँ थाईंआ। जन भगतां अन्तष्करन करना गद गद, गुरदयाल सिँघ गुरु गुरदेव आपणे विच समाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर उजाला जोती जाते पुरख बिधाते जाए मघ, मग्न भगतां आपणे नाम विच रखाईआ।

१५ चेत शहिनशाही सम्मत ११ मुकन्द सिँघ, जगजीत सिँघ दे गृह विंनीपैग ४६४ रीवरटन ऐवेनीऊ ऐलमवुड मैनीटोबा कनेडा

धरनी कहे प्रभू मेरे समरथ, परम पुरख तेरी इक सरनाईआ। सच वस्त देदे अगम्मी वथ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। कलयुग कूड़ क्रिया मेरे उत्तों मथ, मथन कर ख़लक खुदाईआ। मेरी नेत्र वहिंदी वेख अथ, वहिणा धार वहाईआ। जिस कारन गोबिन्द सथर गया घत, यारड़े तेरी सेज हंडाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सति सच चला रथ, रथ रथवाही हो के दया कमाईआ। मेरे सगल वसूरे जाण लथ, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। बिना हथ्थां तों जोड़ां हथ्थ, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, जुग जुग तेरी वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू सति सच दी बख़्श दे दात, सतिजुग मेरा संग बणाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जीवां जंतां पुछ वात, वातावरन तक ख़लक खुदाईआ। दरोही फिरी विच मात, मातृ भूमी हो के रही कुरलाईआ। झगड़ा वेख लै ज़ात पात, दीन दुनी मज़्ब करे लड़ाईआ । तेरा नाम निधाना श्री भगवाना पा गया वफ़ात, चार कुण्ट दहि दिशा नज़र कोए ना आईआ। फिरी दरोही तीर्थ ताट, अठसठ रोवण मारन धाहीआ। धर्म रिहा ना मन्दिर मस्जिद शिवदुआले माठ, गुरुदुआर ना कोए चतुराईआ। रसना जिह्वा सृष्टी करे पाठ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्ते उलटी गेड़ दे लाठ, करवट आपणी लै बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते वेख अन्धेरा अन्ध, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। दूई दुवैती भरमां ढाहे कोई ना कंध, भय भउ सिर ना कोए रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पूरब गया लँघ, कलयुग अन्त वेख वखाईआ। की इशारा देवे तारा चन्द, बिन सैनत सैनत रिहा जणाईआ। निगाह मार विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड ध्यान रखाईआ। हाहाकार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जण आत्म परमात्म टुट्टी धार गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। मेरे उत्ते दीनां मज़्बां मानव ज़ाती कीती खण्ड खण्ड, हिस्से ततव तत रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी इक्को अगम्म आसा, बिन अक्खरां देणा जणाईआ। तूं शाहो भूप शाबासा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे उत्ते रख्या भरवासा, अवतार पैग़म्बर गुर नाल मिलाईआ। तेरा नूर जोत निरगुण धार होए प्रकाशा, दो जहानां डगमगाईआ। मण्डल मण्डप पुरी लोअ तेरी वेखण रासा, आकाश पाताल गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। पताल गगन मेरे अन्तष्करन विच होण ना देईं निराशा, निराकार देणी माण वड्याईआ। मेरा ख़ाली भर दे कासा, धरनी धरत धवल धौल हो के अगे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। कलयुग कहे धरनीए तूं क्यों रही चीक, बिन नैणां नीर वहाईआ। चार जुग दे साशतर मेरी करन तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। पेशीनगोईआं रहीआं उडीक, भविख्त बैठे ध्यान लगाईआ। मैं चारों कुण्ट करना अन्धेरा तारीक, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ । मेरे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़ा दिता धुर दे माहीआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा नज़दीक, खेल खेलां चाँईं चाँईआ। सृष्टी दो धड़ बणा शरीक, शरक्त भरां ख़लक ख़ुदाईआ। लेखा रहे ना हक हकीक, हकीकत समझ कोए ना पाईआ। शाह सुल्तानां रहे ना कोए प्रीत, प्रीतम आपणा हुक्म वरताईआ। नौ खण्ड तेरे उत्ते होवण भय भीत, सत्त दीप सिर सके ना कोए उठाईआ। उह तक सतिगुर शब्द तेरे उत्ते मारन वाला लीक, लाईन ऐन रिहा बणाईआ। जिस आत्म परमात्म सब दी बदलणी रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को इक प्रगटाईआ। जिस दे हुक्म विच सदी चौधवीं रही बीत, मुहम्मद बैठा नैण तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सारे गाउँदे इक्को गीत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मिटाउणा जिस हस्त कीट, ऊचां नीचां इक्को रंग रंगाईआ। उह मालक ख़ालक मेरा बीठलो बीठ, जिस नूं कहिंदे धुर दा माहीआ। जिस दे हुक्म नाल मैं अन्तर निरंतर काया मन्दिर मन कल्पणा कौड़ा कीता रीठ, अमृत रस नजर कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों लई जीत, जग जीवण दाता मिलण कोए ना पाईआ। काया होए ना किसे ठण्डी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। तेरे उत्ते होए हुक्मरान, हुक्म आपणा इक वरताईआ। ना कोई रोके शाह सुल्तान, मानव सिर ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट कूड़ निशान, तेरे उत्ते दिता झुलाईआ। अन्तर आत्म रहिण दिता नहीं कोई ज्ञान, साध सन्त ना कोए वड्याईआ। घर घर अन्दर शरअ होई शैतान, दीन मज़्हब करन लड़ाईआ। अगे वेखीं झगड़ा पाउणा अञ्जील कुरान, काअबे रोवण मारन धाहीआ। साबत रहिण देणा नहीं ईमान, अबलन

नज़र कोए ना आईआ। मैं तैनूं ख़बर आया सुणाउण, अणसुणत तैनूं दयां जणाईआ। की हुक्म देवे श्री भगवान, जो मालक अगम्म अथाहीआ। जिस दा लहिणा देणा ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। जो जुग जुग लेखा मंगे आण, आवण जावण आपणा खेल खिलाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना सतिगुर शब्द करे प्रधान, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ । कलयुग कहे धरनीए मैं प्रभ दा सुत दुलारा, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। मैं देवां कूड़ कुड़यार दा हुलारा, हलूणा वजे थांउँ थाँईंआ। खेल वेख विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। चारो कुण्ट करां धूंआधारा, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण समझ कोए ना आईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे कराए आप करतारा, कुदरत दा कादर हुक्म सुणाईआ। इक दो चार साल विच मेरा वेख लईं नज़ारा, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। नव सत्त प्यार विच रहे ना कोए प्यारा, साजण मीत नज़र कोए ना आईआ। तेरे उत्ते नव नौ दा लग्गे अखाड़ा, सति सच वजे वधाईआ। थित सुहञ्जणी होणी सतारां हाढ़ा, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मानव रत तैनूं रंग चढ़ना गाहड़ा, रामा कृष्णा वेखणा चाँईं चाँईंआ। बावन दा लहिणा देणा विच उजाड़ा, बलि दुआर नाल वड्याईआ। जिस सृष्टी चबणी हेठां दाहड़ा, लख चुरासी समझ कोए ना पाईआ। अग्ग लगा दे बहत्तर नाड़ा, ततव तत तत जलाईआ। मैं उस दे अगे कढ्डां हाढ़ा, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। कलयुग कहे धरनीए मेरा कोई नहीं गुनाह, कूड़ कुड़यार मेरी वड्याईआ। मेरा मालक इक मेहरवां, महिबान नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म नाल दिता ऐलां, कूक कूक दिता सुणाईआ। उहदे हुक्म नाल खेलणा खेल विच जहां, दो जहाना मालक जो अख्वाईआ। मैं प्यार नाल जगत दी बुद्धी कीती वांग काँ, हँस रूप नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरी पकड़नी बांह, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरी ठोक पुश्त पनाह, माण दिता चाँईं चाँईंआ। लहिणा देणा तकणा सूर गाँ, लेख वेखणा बण के दीन दुनी दा राहीआ। जिस कारन गोबिन्द किहा वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। उस दा भेव देणा चुका, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मेरे कोल इक अगम्म अथाह दा रुक्का, जिस दा लेखा कृष्ण रुकमणी गया समझाईआ । सतिगुर शब्द अगम्मी उठणा सुत्ता, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। ना तन वजूद होवे बुता, माटी ख़ाक वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे धरनीए मेरी खेल न्यारी, परम पुरख दिती समझाईआ। मैं चारों कुण्ट करावां हाहाकारी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ।

३७२
२४

मुहब्बत रहे ना नर नारी, नर नरायण मिलण कोए ना पाईआ। शाह सुल्तान करन ग़द्दारी, गदागर करां ख़लक खुदाईआ। अन्तिम लहिणा देणा मुकाउणा मुहम्मद संग चार यारी, चौथा जुग कहे मेरे हथ्थ वड्याईआ। ईसा कूक के किहा जिस वेले सलीव गल विच डारी, बिन रसना रसन हिलाईआ। मूसा डिग्ग के मूंह दे भारी, कोहतूर गया समझाईआ। मेरा मालक ख़ालक परवरदिगारी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस अन्त कन्त भगवन्त अन्तर आत्मा करनी प्यारी, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। उस ने कोझीए कमलीए मैनूं दिती मुखत्यारी, मुखत्यार दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे कलयुग ना पा रौला, चारों कुण्ट दुहाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को मौला, जिस नूं कहिंदे अवल नूर अलाहीआ। उस दा मेरे नाल इकरार कौला, वायदा पिछला दयां वखाईआ। जिस भार करना मेरे उत्ते हौला, हौली हौली आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कारन गोबिन्द अमृत धार छकाई पौला, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे कलयुग तेरा कूड़ रहे ना वक्त, धर्म दी धार नाल समझाईआ। मेरा मालक स्वामी जिस दा लहिणा नाल जगत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। उह आसा मनसा पूरी करे भगत, भगवान वेखणहार बेपरवाहीआ। जिस लेखे लाउणी बूंद रक्त, वजूदां रंग चड़ाईआ। उह निरगुण धार आवे फ़कत, फ़िकरा ढोला इक्को इक गाईआ। लहिणा देणा मेरा पूरा करे उत्ते धरत, धरनी धवल धौल कहे मैं निव निव लागां पाईआ। जिस दी तेई अवतारां नाल शर्त, पैग़म्बरां गुरुआं लेखा गया दृढ़ाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निरवैर हो के आवे परत, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। मालक ख़ालक बण के वाली अर्श, अर्शी प्रीतम दया कमाईआ। मेरी जुग जुग दी मेटे हरस, कलयुग अन्तिम आशा पूर कराईआ। मेहरवान हो के खावे तरस, हरिमत आपणी नाल तराईआ। मेरा खुशीआं वाला सुहञ्जणा चढ़या बरस, शहिनशाही वजदी रहे वधाईआ। जो भगतां अन्तर निरंतर अमृत मेघ देवे बरस, बूंद स्वांती इक टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच आप बणाईआ। धरनी कहे मेरा खुशी बन्द बन्द, परम पुरख आप कराईआ। देवणहारा सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस लेख वखाउणा तारा चन्द, चन्द चादना निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा पन्ध, सतिजुग सति धर्म प्रगटाईआ। आत्म परमात्म जिस भगतां देणा संग, सगला संगी इक अख्वाईआ। काया चोली देवे रंग, दो जहान रंगत उतर कदे ना जाईआ। नव दुआर मंज़ल जाए लँघ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जन भगतां ला

के आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। लहिणा देणा झोली पा के सिँघ मुकन्द, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण काहन कृष्ण दा पूरब पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जगजीत अतीत नेत्र अक्ख होवण ना देवे अन्ध, अन्ध अज्ञान दा पन्ध मुकाईआ। जिन्हां इक वार तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाया छन्द, सो पुरख निरञ्जण लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी नाम शब्द धुन आत्मक वजावणहार मृदंग, जिस दा तान सुणन कोए ना पाईआ।

✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत ११ सुखनिंदर सिँघ दे गृह १७२५ पैरल सटरीट विकटोरीआ कनेडा ✪

बराह कहे प्रभू मेरी बेनन्ती इक निक्की, निराकार निरँकार तेरे चरण कवल टिकाईआ। तेरी धार नाल धरनी जलधारा उत्ते टिकी, जल थल महीअल तेरी वजदी रहे वधाईआ। पूरब लेखा मेरा दिवस दिहाढ़ा तक लै चेत चेतन इक्की, इक इकल्ले तेरी बेपरवाहीआ। जिस दी कलम धार शाही कागज़ लेख नहीं लिखी, ब्रह्मा सुत, सन्त कुमार नाल रखाईआ। निरगुण तेरा रूप अनूप भेद अभेद अनडिठ्ठी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरी आशा तेरे चरण कवल तेरे प्यार विच मिट्ठी, मिट्ठास रस समझ कोए ना पाईआ। जिस कारन धरनी बिन नैणा नीर वहा के पिट्टी, पाटल तेरे अगे सीस निवाईआ। तेरी खेल वेख चिट्ठी, चार जुग दे मालक आपणी खुशी बणाईआ। उस वेले धुर शब्द इशारा दिता हाहे उत्ते टिप्पी, सो पुरख निरञ्जण पड़दा आप चुकाईआ। हुक्मी हुक्म दीन दुनी जाए जित्ती, हार जित्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। बराह कहे प्रभू तेरी किरपा मिल्या उधार, उदर दा लेखा समझ कोए ना पाईआ। मेरा रूप अनूप अपार, अपरम्पर स्वामी दिती माण वड्याईआ। धरनी जलधारा विच्चों आई बाहर, धूड़ी तेरे चरण कवल ख़ाक रमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेख वारो वार, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते तेरा खेल अगम्म अथाहीआ। विष्नूं विश्व निगाह लई मार, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण पाई सार, महासार्थी दो जहानां पन्ध मुकाईआ। धरनी कूक कीती पुकार, होका दिता चाँईं चाँईंआ। मेरे मेहरवाना मेरी पैज संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धुर हुक्म कीता निरँकार, निरवैर दिता जणाईआ। धरनीए रहिणा ख़बरदार, बेख़बरां अक्ख उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते विच संसार, चार जुग दे साशतर नाल मिलाईआ। संदेशा देवण तेई अवतार, पैग़म्बर गुर नाल मिलाईआ। कलयुग अन्त आवे कलि कल्की अवतार, निहकलंका नूर अलाहीआ। तेरा लखण

दीप वेखे वेखणहार, आप आपणा रंग रंगाईआ। करता पुरख दए अधार, नव खण्ड दा डेरा ढाहीआ। तूं लैणी सुरत संभाल, सम्बल दा मालक आवे धुरदरगाहीआ। जिस लहिणा देणा मेटणा शाह कंगाल, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। भगत सुहेले वेखे लाल, लालन आपणा मेल मिलाईआ। तेरी करे भाल, जिथ्थे बराह इशारा दे के गया समझाईआ। फल लगाए धर्म दे डाल, पत्त टहणी नाम महकाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ। झट धरनी कीता सवाल, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। बराह कहे मेरा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस मेरी सेवा दिती ला, निरगुण सरगुण रूप प्रगटाईआ। धुर शब्द दिती सलाह, संदेशा इक समझाईआ। जिथ्थे नव सत्त दा लेखा दिता मुका, मुकम्मल खेल जणाईआ। बराह कहे मैं एथे नौ सौ चौरानवे वार प्रभू दा ल्या नाँ, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सो सुहञ्जणी धरनी धवल धौल धरत सुहाए थाँ, थनंतर रंग रंगाईआ। जन भगतां पकड़े बांह, होए आप सहाईआ। करे सच न्याँ, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ। बराह कहे धरनी उत्ते मैं इथे गया टिक, वक्त समझ ना कोए समझाईआ। बिन आशा गया लिट, तमंना जगत ना कोए जणाईआ। मैनूं हुक्म होया कलयुग अन्त खेल होणा सटैंड सिट, सिटीज़न नज़र कोए ना आईआ। धरनी धरत धवल धौल डूंग्घा होणा पिट, पिटीशन चले ना जगत लोकाईआ। धुर दे हुक्म दी लगणी हिट, हीट विच सड़े ख़लक खुदाईआ। सति धर्म ने करनी रिट, रिटन दा लेखा ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। बराह कहे धरनी सुण के मारी चीक, रो रो दिती दुहाईआ। सतिगुर शब्द ने मारी लीक, लाइन ऐन दिती वखाईआ। बराह कहे मैं कीती तस्दीक, शहादत सच वाली भुगताईआ। कलयुग कहे अन्तिम रख उडीक, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। तेरा वक्त आए नज़दीक, दूर दुराडा रहे ना राईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, उह मालक धुरदरगाहीआ। जो सदा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। लख चुरासी परखे नीत, नीतीवान वड वड्याईआ। जन भगतां देवे चरण प्रीत, प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। उस वेले धरनीए तूं मेरा मैं तेरा होए गीत, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। तेरी अग्नी करे ठांडी सीत, अमृत मेघ आपणा नाम बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करनी आप कमाईआ। बराह कहे धरनीए तैनूं सब ने कहिणा धरत धवल धौल, मिट्टी ख़ाक तेरी वजे वधाईआ। मैं तेरे नाल करां कौल, कवल इकरार समझ कोए ना पाईआ। मेरा सुण अगम्मा बोल, जो अणबोलत रिहा दृढ़ाईआ। जिस

वेले कलयुग अन्त कूड़ दा वजे ढोल, धर्म नगारा रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द रस रिहा ना पौल, परम पुरख आपणा खेल खिलाईआ। कोझीए कमलीए अन्त आवे तेरे कोल, करनी दा करता फेरा पाईआ। जिस दा लेखा कोई समझ सके ना पांधा रौल, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ । सो स्वामी अन्तरजामी पूरा तोलणहारा तोल, कंडा नाम तराज़ू आपणा आप उठाईआ। लख चुरासी अन्तष्करन निरगुण धार लए फोल, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती समुंद सागर काया गागर तन वजूदां लए फोल, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बराह कहे धरनीए उह तक पृथू वाली धार, नावां अवतार खेल खिलाईआ। तैनूं मथन करे विच संसार, संसारी भण्डारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। तेरा रस तेरे विच्चों कढ्ढे बाहर, तेरी तेरे नाल वड्याईआ। उह वक्त सुहञ्जणा जिस दी पावे कोई ना सार, थित वार सके ना कोए समझाईआ। जल धारा जिस दी होवे श्रृंगार, मत्तस फेर आवे चाँईं चाँईंआ। इथे निगाह लए मार, जिस नूं ब्रह्मे इशारे नाल दिता समझाईआ। जिस धरती दा नाम इथे लखणां वाली धार, कुशा आपणी गंढु पुआईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा सब तों बाहर, बहिरहाल समझ कोए ना पाईआ। निगाह मार लै कलयुग आपणी कला लए धार, अवतर आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं सारे करन निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। उह आवे तेरे दर दुआर, भिखारने तेरी खाली झोली दए भराईआ। धरनी कहे मैं चरण कवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। बराह ने कूक किहा पुकार, बिन रसना जिह्वा ढोला दिता दृढ़ाईआ। तूं उस दा रखणा इंतज़ार, उडीकां विच आपणा नैण उठाईआ। जिस ने पृथू नाल करना प्यार, पृथ्मी तेरा संग बणाईआ। मत्तस समुंद सागराँ विच लए उधार, कछप मछ कछ धार वड्याईआ। मिन्दिरा पर्वत चुक्क आपे भार, रत्न विरोले चौदां थांउँ थाँईंआ। चौदां लोक दए अधार, चौदां तबक कलयुग पैग़म्बरां संग बणाईआ। चौधवीं सदी अन्त सब दा लहिणा देणा दए निवार, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। नूर नुराना नूरी नूर होवे उज्यार, उजाला करे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप बणाईआ। धरनी कहे मेरा पुरातन नाम लखण दीप विच लिंक, डूंग्घे सागराँ संग रलाईआ। वेद व्यासे लिख्या शाही नाल इंक, पुराण गरड़ दए गवाहीआ। एह लहिणा देणा लेखा होया सारा नौ मिन्ट, घड़ी पल अवर ना कोए मिलाईआ। जिस नूं कर सके ना कोई हिंट, भय भाउ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धरनी कहे बराह इशारा कीता तेरा निरगुण धार नाल होणा लिंक, दूसरा अवतार पैग़म्बर गुर नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं नाल जोड़े हैंड, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। शब्द अगम्मी धुन अनादि सुणया बैंड, राग रागनी बाहर शनवाईआ । आशा रखी

मेरी सुहञ्जणी होवे लैंड, लैंड मारक बराह गया लगाईआ। फेर कलयुग कूड़ी क्रिया होणा अंेड, इंडैकस वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। पता नहीं की लेखा इस तों बाद बीहाईंड, मेहरवान आपणी कार कमाईआ। जिस आत्म परमात्म निरगुण निरगुण जोती धार सोल करना जांइड, ज़ुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा खेल खिलाईआ। धरनी किहा मत्तस मारी बिन नेत्रां निगाह अगम्म, लोचन नज़र कोए ना आईआ। इशारा कीता बिन स्वास दम, पवन पवन ना कोए वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरंतर धार वेखी ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा संग रखाईआ। जो बिना जनणी कुक्ख तों पए जम्म, चुरासी संग ना कोए रखाईआ। जो गगन रहाए बिना थम्म, गगनंतर आपणा हुक्म वरताईआ । जिस धरनीए तेरे उत्ते दीन दुनी दा इक्को करना धर्म, धर्म दी धार इक समझाईआ। मानस मानव मानुख इक्को होवे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जन भगतां लेखे लाए माटी चर्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ । झगड़ा मेटे दीन मज़्हब ज़ात पात वरन बरन, ... संग ना कोए रखाईआ। मेहरवान हो के आवे करनी करन, करता पुरख आपणा वेस वटाईआ। तूं कौल इकरार याद रखणा प्रण, परम पुरख दए समझाईआ। अन्त कन्त भगवन्त आपणी लावे शरन, शरनगत इक समझाईआ। जिस वेले दीन दुनी मानव ज़ाती लग्गे लड़न, सांतक सति ना कोए वरताईआ। उह इक इकेला भगत सुहेला सब नूं आवे फड़न, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जन भगतां अन्तर निरंतर मंज़ल आवे चढ़न, चढ़दिउँ लहिंदा लहिंदिउँ चढ़दा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक बेपरवाहीआ । धरनी कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, निव निव सीस निवाईआ। जिस वेले आए मेरे दुआर, दो जहाना मालक धुरदरगाहीआ। मैं चरण धूड़ लावां छार, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जिस कलयुग अन्तिम करना अन्त किनार, अन्तष्करन वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता होवे ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। जिस चरण छुहाउणा मेरे अन्त किनार, विकटोरीआ दी धरनी खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। मैं सदा सदा सद तकदी रहां सहार, आशा आशा विच्चों प्रगटाईआ। पृथू बोलणा सच जैकार, शब्दी शब्द शनवाईआ। उह शाहो भूप आवे अवतार, पैग़म्बरां गुरुआं बाहरा जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस खेल खलाउणा भेव चुकाउणा पुरख नार, नर नरायण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सारा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जुग चौकड़ी वारो वार, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद आपणा हुक्म वरताईआ।

खण्ड कहे मेरा लेखा विच कुला खण्ड, लखण दीप नाल वड्याईआ। मैं तके बिन नेत्र लोचन नैण ब्रह्मण्ड, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। निगाह मारी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले लख चुरासी वंडी वंड, चारे खाणी सोभा पाईआ। हर घट अन्तर निरंतर सुहा दे कंड, गृह मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। खण्ड कहे मेरे अन्तर निरंतर मिह्वास, रस वेखण कोए ना पाईआ। मैं परम पुरख परमात्मा दी तकां रास, दो जहाना सोभा पाईआ। मेरा लहिणा देणा मानस मानव मानुख रसना जिह्वा पवन स्वास, साह साह आपणा रंग वखाईआ। की इशारा देवे मैनूं उत्ते कैलाश, कलाधारी की दृढ़ाईआ। निगाह मार विच प्रभास, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत समुंद सागर ध्यान लगाईआ । धरनी कहे मेरी जुग चौकड़ी पुराणी आस, बराह इशारा दे के गया जणाईआ। पृथू ने दस्सी अगम्मी बात, बातन पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। बलि ने बावन नाल संदेशा दिता ख़ास, जिस दा लेख कलम शाही काग़ज़ जाणे कोए ना राईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण निरवैर निराकार निरँकार अगम्म अथाह आपणा करे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा आपणे विच्चों समझाईआ। खण्ड कहे मेरा दीन दुनी नाल साथ, सगला संग बणाईआ। मेरा परम पुरख समराथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी चलावणहारा राथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे हुक्म विच चलाईआ। जिस दी निरगुण सरगुण धार शब्द अगम्मी गाथ, निरअक्खर धार विच्चों अक्खर अक्खर प्रगटाईआ। सो मेहरवान श्री भगवान मेरा देवे साथ, सगला संगी बहुरंगी आपणा रंग रंगाईआ। मैं निमाणी अनाथण अनाथ, दीनन हो के सीस झुकाईआ। मैनूं याद आ गई जो संदेशा दिता भगत रवीदास, कबीर कबरां तों बाहर सुणाईआ। की आवाज़ दिती मुहम्मद दी ततां वाली लाश, सदी चौधवीं ध्यान रखाईआ । ईसा गल लैण लगिआं फास, इशारा कीता वल नूर अलाहीआ। मूसा कोहतूर ते तक प्रकाश, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण गया बिगसाईआ। खण्ड कहे मेरा रूप रंग रेख जगत विच नहीं कोई पारजात, जाती समझ कोए ना आईआ। मेरी निरगुण सरगुण धार सतिगुर नानक पुछी वात, बेवतनां दा मालक हो के आपणा वतन दए वड्याईआ। गुर गोबिन्द अमृत रस भरया विच परात, खण्डा खड़ग शस्त्र धुर दा नाम नाम नाल रखाईआ। मैं जुग जुग जन भगतां रही दासी दास, नित नवित सेवक हो के सेव कमाईआ। मेरी इक बेनन्ती गुरमुखां अगे अरदास, बिन

रसना जिह्वा दयां दरसाईआ। जन भगतो आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादि इक्को ज़ात, दूजा वरन नज़र कोए ना आईआ। जिस खेल खिलाया उत्ते लोकमात, धरनी धरत धवल धौल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। खण्ड कहे मैं मिल जावां विच दुद्ध, आपणा आप छुपाईआ। मेरे अन्तष्करन प्रभू प्रेम दी धार पए कुद्द, नच्चे टप्पे चाँईं चाँईआ। मैनूं खुशी होई एस धरनी उत्ते बेसुध, वसुधा शुकर कर के आपणी खुशी बणाईआ । जिस गुरमुख ने प्रेम नाल प्रेम विच्चों प्रेम दी धार दिता दुद्ध, एह पृथू दा पिछला साथी नज़री आईआ। इस दा लेखा नहीं कोई नाल लकड़ी वुड्ड, वंडण वंड ना कोए वंडाईआ। पुरातन दी धार शब्द दा उधार लहिणा देणा पूरबला शुड्ड, परम पुरख दा लहिणा चलया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच मिलाईआ। खण्ड कहे मेरा दुद्ध विच होया मिलाप, आप आपा दिता मिटाईआ । मेरा रिहा ना तीनो ताप, रजो तमो सतो दा संग ना कोए जणाईआ। मेरा आपणा आप ना कोई रिहा माई बाप, जगत संगी संग ना कोए रखाईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरी पुछे वात, वातावरन जो तके ख़लक खुदाईआ। जिस ने दुद्ध दी धार विच मेरी मिला दिती ज़ात, जोती जाता आपणा रंग रंगाईआ। मैं हो गई इक इकांत, दर्शन करया इक इकल्ले धुर दे माहीआ। जिस दा खेल बहु बिध भांत, जुग चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मालक इक अख्वाईआ। खण्ड कहे मैं गुरमुखां दे अन्दर जावां लँघ, दुद्ध विच आपणा आप मिलाईआ। सच धार दा वेखां रंग, जिस दी रंगत जगत वेखण नज़र कोए ना पाईआ। फेर तक्कां सच सिँघासण आत्मा उत्ते पलँघ, जिस दी घाड़त बाडी ना कोए घड़ाईआ। फिर सुरती शब्दी डोरी तक्कां पतंग, जो अन्तर निरंतर उडे चाँईं चाँईंआ। मेरी इक्को आशा इक्को मंग, इक्को इक दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। खण्ड कहे जन भगतां मैं जावां काया अन्दर, तन वजूद सोभा पाईआ। मैं वेखां साढे तिन्न हथ्थ दा मन्दिर, नव दवारयां खोज खुजाईआ। बजर कपाटी तक्कां जंदर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। अन्धेरा वेखां डूँग्घी कंदर, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। फेर परम पुरख नूं इक्को करां बन्दन, बिन मस्तक सीस सीस निवाईआ। मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी सब दे अन्तर देणा अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान जो निरगुण धार हो के जुग जुग आवे वंडण, दाता दानी हो के आप वरताईआ। वेखीं खण्ड कहे प्रभू मेरा लेखा करीं ना खण्डण, खण्ड खण्ड हो के आप आपा तेरे भेंट कराईआ।

बेशक जुग चौकड़ीआं केते लँघण, भज्जण वाहो दाहीआ। पर मेरा लेखा बणया रहे नाल तत पंजण, पंचम शब्द धुन नाद सुणदी रहां शनवाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेरे मालक आदि निरञ्जण, नर नरायण तेरी ओट रखाईआ। तूं सदा सदा कृपालू दीन दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागराँ पार कराईआ। मेरा प्यार विच प्यार तेरी चाढ़े रंगण, रंगत उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत ११ दविंदर सिँघ चौहान दे गृह ४०६४ सीडर हिल करास रोड विकटोरीआ कनेडा ✪

धरनी कहे मेरे उत्ते दिवस दिहाढ़ा इक्की चेत, चेतन नव सत्त दीन दुनी दयां कराईआ। परम पुरख परमात्म मेहरवाना मेरे नाल कर हेत, हितकारी एकँकारी हो के वेख वखाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरे उत्ते जुग चौकड़ी लँघ गए केत, केते विष्न ब्रह्मा शिव आपणा पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी हुन्दे गए खेत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरा बोध अगाध दा दस्सदे गए भेत, निरअक्खर धार अक्खरां विच समाईआ। परम पुरख परमात्म भेव खुल्हा दे आपणा केतन केत, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू केते जुग गए लँघ, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरी नव नव चार दी मंग, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग देण गवाहीआ। मैं सुणना चाहुंदी तेरे नाम निधान दा अगम्म मृदंग, जिस दी सुर ताल समझ कोए ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सृष्टी दृष्टी अन्दर भेव खुल्हा दे ब्रह्म हँ, निरगुण आपणा नूर चमकाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत दे रंग, सति सतिवादी आपणा संग बणाईआ। जन भगतां आत्म सेज सुहा पलँघ, सिँघासण आसण इक वड्याईआ। निझर झिरना अमृत धार वहा दे गंग, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती लोड़ रहे ना राईआ। सति सतिवादी सुरती शब्द दे अनन्द, अनन्दपुर वासी मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। परम पुरख निरवैर हो के बदल कंड, करवट आपणी आप वटाईआ। मेरे उत्तों दूई दुवैत शरअ दी ढाह दे कंध, विकार हँकार विभचार रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मेट दे पन्ध, सतिजुग सच सच वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा दीन दुनी गावे छन्द, सो पुरख निरञ्जण तेरी वजदी रहे वधाईआ। पंच विकार एकँकार कर दे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। भेद खुल्हा दे आपणा आप ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड दा डेरा ढाहीआ। निगाह मार लै जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। धरनी

कहे मेरे उत्ते कोटन कोटि जुग गए हंढ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आशा वेख बहुभांती, भेव अभेद समझ कोए ना पाईआ। निगाह मार लोकमाती, मता अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट तक लै होई अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा वेख लै ज़ात पाती, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। अमृत बूँद बख्शे ना कोए स्वांती, सांतक सति ना कोए कराईआ। शरअ शरअ दी होई घाती, घायल दिसे ख़लक खुदाईआ। तुध बिन पुछे कोए ना वाती, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म बणे ना कोए जमाती, अनुभव भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे तेई अवतार मेरे उत्ते धरो ध्यान, बिन ततां ध्यान लगाईआ। शास्त्रां रिहा ना कोए ज्ञान, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। चारों कुण्ट कलयुग कूड़ फिरे शैतान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, सदी चौधवीं कूक कूक सुणाईआ। पैग़म्बरो होवो निगहबान, मूसा ईसा मुहम्मद आपणा संग बणाईआ। कायनात करो पहचान, बेपहचान हो के वेखो थांउँ थाँईआ। नव सत्त मैं ख़ाक रही छाण, मिटी धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। आपणा भविख्त बिना लिख्त तों वेखो ब्यान, बिना अक्खरां अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। मैं सच संदेशा इक्को इक आई सुणाउण, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। मेरे उत्ते धर्म दी धार रिहा ना कोए निशान, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे पैग़म्बरो निगाह मारो वज़ीउल ज़वा जोकुसते दवा नूरे खुदा मज़ीउल अबाअ महबूब बेपरवाहीआ। तुहाडा तुहाडे नालों होवे जुदा, जुज़ वखरा वंड वंडाईआ। नव सत्त ब्रह्म मति रिहा ना कोए रहिनुमा, अल्ला हू अन्ना हू संग ना कोए बणाईआ। मेरी सब दे अगे दुआ, दस्त बदस्त आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे नानक गोबिन्द धार, दहि दिशा वेख वखाईआ। मेरी बेनन्ती अगम्म पुकार, बिन रसना जिह्वा दयां सुणाईआ। नव सत्त वेखो विभचार, कूड़ी क्रिया विच कुरलाईआ। सति सच सोहे ना कोए दुआर, मंज़ल हक ना कोए जणाईआ। धर्म दा पन्ध होया दुष्वार, मार्ग सच ना कोए रखाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते खेल कराउणा अगम्म अपार, अलख अगोचर हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर तुसीं वेखो बिना नैणां, जोती धार ध्यान लगाईआ। मुश्किल हो गया मेरे उत्ते दीन दुनी दा रहिणा, दरोही तेरा नाम

खुदाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सब ने उस दा भाणा सहणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस ने दीन दुनी दा लहिणा देणा देणा, झोली सब दी आप भराईआ। नाल इशारा तक लै जो बाल्मीक दिता विच रमायणा, राम दी राम राम दुहाईआ। कलयुग अन्त बुरज हँकारी ढहणा, मिट्टी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दिवस होए सुहावणा, सोहणी मिले वड्याईआ। मेरी पूरी कर भावना, भावना भगतां नाल रखाईआ। जोती जाते पकड़ दामना, दामनगीर नूर अलाहीआ। मेरी चार जुग दी कामना, कामल मुर्शद पूर कराईआ। जो इशारा कीता बलि नूं बावना, बलि दुआर दए गवाहीआ। जो संदेशा दिता अर्जन कृष्णा काहनना, अक्खर अक्खर नाल जुड़ाईआ। जिस कारन मूसा नूर नूर चमकावणा, कोहतूर डगमगाईआ। ईसा तत वजूद पा के फ़ाहंदणा, फाँसी फ़ैसला हक सुणाईआ। मुहम्मद ज़जीउल ज़मा नाकुशते नवां अर्शे वजां नूज़े नज़ावना, नूरे नूर नूर अलाहीआ। नानक किहा पतित पावना, परम पुरख अगम्म अथाहीआ । गोबिन्द कहि के शाह सुल्ताननना, सुत दुलारा हो के सीस निवाईआ। धरनीए तेरा लेखा कलयुग अन्तिम जिस मुकावणा, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा सोहला ढोला नौ खण्ड पृथ्मी इक्को गावणा, तूं मेरा मैं तेरा दूसर संग ना कोए जणाईआ। उह खेल करे भगवानना, भगवन देवणहार वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे पतित पावना, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह इक सुहाईआ। इक्की चेत कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा धरनी धरत, धवल धौल दयां जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस दी सब दे नाल शर्त, शरअ शरीअत संग रखाईआ। सो निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आवे परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि दो जहानां उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम इक अख्वाईआ। उह तेरी मेटे हरस, हवस पूर दए कराईआ। मेहरवान हो के करे तरस, रहमत सति सच कमाईआ। जिस दा खुशीआं वाला होवे बरस, सुहञ्जणी घड़ी तेरे नाल मिलाईआ। निरगुण धार हो के देवे दरस, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। इक्की चेत कहे धरनीए मेरा सति सच दिहाढ़ा, दयोहड़ी सीस निवाईआ। मेरा स्वामी ठाकर धुर दा लाड़ा, दो जहाना इक अख्वाईआ। जो चाढ़नहारा रंग गाड़ा, आदि जुगादि उतर कदे ना जाईआ। तेरे उत्ते वेखे कूड़ अखाड़ा, नव खण्ड खोज खुजाईआ। अग्नी तती तक हाढ़ा, तन माटी ख़ाक वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं मेरा दे दे हक, हकीकत

३८३
२४

पिछली नाल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी निगाहबान हो के तक, अतकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मैं कलयुग अन्तिम गई थक, थकावट विच मेरी दुहाईआ। मेरी दुरमति मैल कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सति धर्म दा खोल्ह दे हट्ट, वस्त इक्को नाम वरताईआ। झगड़ा रहे ना तीर्थ तट, जल सागराँ वंड ना कोए वंडाईआ। पवित्र कर दे मानव ज़ाती बुद्ध मति, मन ममता दूर कराईआ। भाग लगा दे पंज तत, ततव आपणा भेव खुल्हाईआ। मैं शरन शरनाई तेरी जाणा ढठ, ढहि ढहि धूड़ी ख़ाक रमाईआ। परम पुरख सति धर्म दी उलटी गेड़ दे लठ, कलयुग कूड़ कूड़ मिटाईआ। मैं पन्ध मुकाया नठ नठ, भज्जी वाहो दाहीआ। उह तक लै नेत्र रोंदे तीर्थ अठसठ, बिन अक्खीआं हंझूआं हार बणाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, गुरुदुआर गुरदेव सार कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथमी मेरा खेड़ा होया भठ, सांतक सति ना कोए वरताईआ। धर्म दा बुरज गया ढठ, कलयुग डंका कूड़ वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। चेत कहे धरनीए सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण वेख वखावेगा। एकँकारा रंग रंगावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता भेव खुल्हावेगा। श्री भगवान पड़दा आप उठावेगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा संग निभावेगा। सतिगुर शब्द शब्द जणावेगा। बिन जननी रूप प्रगटावेगा। मात पित ना कोए रखावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। पंजां ततां वंड वंडावेगा। जेरज अंडां वेख वखावेगा। उत्भुज सेत्ज राह वखावेगा। चारे बाणी शब्द अलावेगा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरी धार दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणावेगा। परम पुरख प्रभ दया कमाएगा। तेई अवतार नाल मिलाएगा। पैग़म्बरां धुर दी गंढु नाल रखाएगा। नानक गोबिन्द अंग जुड़ाएगा। खेल करके विच भारत हिन्द, नव खण्ड वेख वखाएगा। तेरी सगली लाहे चिन्द, चिन्ता चिखा विच सुटाएगा। योद्धा सूरबीर बण मरगिंद, पुरख अकाला हुक्म वरतावेगा। भगत सुहेले बणा के आपणी बिन्द, वृंदावन दे वासी दा लेखा पूर कराएगा। तूं नेत्र मूल ना वहाई हिंझ, अमृत मेघ आप बरसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पड़दा आप उठाएगा। चेत कहे धरनीए तूं सुण अगम्मा बोल, अणबोलत की जणाईआ। जिस चौदां तबकां तोलणा तोल, चौदां लोक नाम कंडे उत्ते टिकाईआ। जिस दा शब्द अनादी वजणा ढोल, दो जहान करे शनवाईआ। तेरे उत्ते अन्त कन्त भगवन्त दीन दुनी करा के घोल, लेखा मेटे थांउँ थाँईंआ। जन भगतां अन्तर जाए मौल, मौला हो के वेख वखाईआ। उह तक लै जो बावन नाल कीता बलि कौल, इकरार पिछला रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । धरनी कहे मैं आदि जुगादि दी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरा लेखा नहीं जगत विद्या नाल पंडती, शास्त्र संग ना कोए बणाईआ। मैं वणजारन नहीं कोई अन्न दी, मिट्टी ख़ाक सोभा पाईआ। मैं सरोती नहीं कन्न दी, सरवणां वजदी रहे वधाईआ। मैनूं आशा नहीं सूर्या चन्द दी, मण्डल मण्डप ना कोए चतुराईआ। मैं धार नहीं कोई ब्रह्म दी, तन वजूदां विच जम्मे ते मर जाईआ। मेरी ख़ुशी नहीं कोई ग़म दी, चिन्ता विच ना कोए कुरलाईआ। मैं वणजारन उस राम दी, जो रम्ईआ इक अख्वाईआ। मैं प्यारी उस काहन दी, जिस नूं घनईया दे के गया वड्याईआ। मैं उदाहरन उस मेहरवान दी, जो महबूब नूर अलाहीआ। मैं वणजारन सति नाम दी, जो नानक निरगुण सरगुण गया दृढ़ाईआ। मेरी आशा गोबिन्द वाली प्रणाम दी, बिन सीस सीस जगदीस झुकाईआ। मेरी आवाज़ नहीं कोई अक्खरां वाली कलाम दी, मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं प्यासी उस अमाम दी, जिस नूं पैग़म्बरां किहा नूर अलाहीआ। मैं वणजारन इक पैग़ाम दी, जो बिन रसना दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त इक वरताईआ । धरनी कहे मेरा वक्त सुहावा, सोहणी मिली वड्याईआ। मैं इक्को गोबिन्द गुण गावां, गा गा ख़ुशी बणाईआ। पुरख अकाला कन्त रावां, दूसर सेज ना कोए हंढाईआ। इक्को साहिब दे बलि बलि जावां, चरण कवल जो देवे माण वड्याईआ। इक्को ढोला गीत नाम निधाना गावां, जिस दी चार जुग दे शास्त्र सिफ्तां नाल सिफ्ती देण सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव मारो झाकी, मेरे उत्ते नैण उठाईआ। सचखण्ड दुआर दी खोल्हो ताकी, दरगाह साची पर्दा लओ चुकाईआ। की हालत होई बन्दा ख़ाकी, बन्दगी विच ना कोए समाईआ । आपणा आपणा लहिणा तको बाकी, सदी बीसवीं चौधवीं नाल मिलाईआ। गोबिन्द ढईए वाली तक लै हाटी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा प्या तन वजूद माटी, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, सच दुआर नज़र किसे ना आईआ। मस्तक नूर रिहा ना कोए ललाटी, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी इक अलख, अगोचर दयां जणाईआ। कलयुग अन्त मेरी पत रख, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। मेरे उत्ते जीवां जंतां साधां सन्तां काया माटी भाण्डे होए सख, वस्त नाम विच ना कोए टिकाईआ। नव सत्त चार कुण्ट दहि दिशा भाउँदे सख, लखण दीप मेरी दए गवाहीआ। आदि जुगादि सब कुझ तेरे हथ्थ, हथ्थ बन्न्ह के सीस निवाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, देवणहार बेपरवाहीआ। तेरी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना कोए सके राईआ। तेरे चरण कवल निरगुण

धार जावां ढठ, सरगुण रूप ना कोए दरसाईआ। मेरे उत्तों झगड़ा मेटणा विच साल अठ्ठ, अगे आयू ना कोए वधाईआ। तूं वसणहारा घट घट, हर घट रिहा समाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि बाज़ीगर नट, स्वांगी तेरा स्वांग समझ कोए ना पाईआ। मेरी कूड़ क्रिया डोरी कट, शरअ छुरी रहे ना कोए कसाईआ। तेरा जोती नूर तक्कां लट लट, चारो कुण्ट नज़री आईआ। सति धर्म खुल्हा दे हट्ट, सच वस्त नाम वरताईआ। उह तक मुहम्मद दी सदी चौधवीं रही टप, टापू सारे रहे कुरलाईआ। बीसवीं दा लेखा देणा ठप्प, ठप्पा मोहर आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर सुणो मेरी बेनन्ती, बिना हथ्थां मंग मंगाईआ। निरगुण धार दी अगम्मी पढ़ो पंगती, जिस दा लेख लिख सके कोए ना कलम शाहीआ। जिस विच आशा नहीं कोई मन दी, ममता मोह ना कोए जणाईआ। नाले धार तक गोबिन्द चन्न दी, जो नूर नुराना डगमगाईआ। जिस खेल वेखणी छप्पर छन्न दी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप निभाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनीए आ वेख साडे भविख्त, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। चार जुग दे शास्त्रां वाली लिख्त, अक्खर अक्खर दए गवाहीआ। अन्त साबत रहिणा नहीं किसे दा इष्ट, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। बुद्धी सब दी होणी भृष्ट, भरमां भुल्ले कूड़ लोकाईआ। जो संदेशा राम नूं दिता वशिष्ट, विषयां तों बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण धरनीए साडा वक्त अख़ीरी, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। साडा मालक ख़ालक एकँकार शहिनशाह अगम्म अमीरी, अमरापद दा मालक इक अख्वाईआ। जिस अन्त शरअ दी तोड़नी ज़ंजीरी, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। लेखा मुकाउणा शाह हकीरी, ऊचां नीचां इक्को दर सुहाईआ। उस दा आउंणा होवे तकदीरी, तकदीर सब दी दए बदलाईआ। जो धर्म दी धार दस्से फ़कीरी, फ़िकरा इक्को नाम सुणाईआ। जो आशा रखी कबीरी, रवीदास ध्यान लगाईआ। उस दा नूर तक बेनज़ीरी, नज़रां तों ओहले नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मैनूं दयो दिलासा, पुरख पुरखोतम हथ्थ टिकाईआ। मैं प्रिथवीं तकां उत्ते आकाशा, आकाश आकाशां फोल फुलाईआ। मण्डलां तों परे वेखां रासा, बिन गोपी काहन खोज खुजाईआ। जल्वागर नूर नुराना खेल जाणां शाहो शाबाशा, जो शहिनशाह इक अख्वाईआ। जिस दे तुसीं चार जुग दे होए दासी दासा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। जिस नाम कलम्यां दा तुहानूं खुल्हाया खुलासा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तुसां लेख लिख्या शब्द धार

अगम्मी भाषा, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। सो महबूब अन्त करे ना कदे उदासा, उदासी मेरी दूर कराईआ। उह वेखो इशारे देंदा शंकर उत्तों कैलाशा, ब्रह्मा ब्रह्म धार समझाईआ। विष्नूं खुशीआं विच करे हासा, हस्ती तक अगम्म अथाहीआ। जिस तेरे उत्ते धरनीए दीन दुनी उलटाउणा पासा, सतिगुर शब्द शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वर वरदाता झोली पाईआ। धरनी कहे चेत तेरा इक्की दिवस चंगा, चार जुग दे शास्त्र खुशी मनाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग मेरे उत्ते लँघा, कोटन कोटि अवतार पैग़म्बर गुर गए पन्ध मुकाईआ। मेरा लहिणा देणा शब्दी धार धार बवन्जा, बावन बावन भेद खुलाईआ। मेरी धार उत्ते तक लै पवन उनन्जा, खेल खेले चाँईं चाँईंआ। निगाह मार लै सूर्या चन्दा, चन्द चांदनी वेख वखाईआ। फेर तक लै पंज तत दा बन्दा, बन्दगी विच नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीता गंदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मोह विकारा बणया धन्दा, धुआँधार दिसे लोकाईआ। मेरा सीना होवे ना ठंडा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी चौथे जुग दा कन्ढा, कन्ढी घाट दयां दृढ़ाईआ। अगला सफ़र रिहा ना लम्बा, लम्मी पै के दयां दुहाईआ। परम पुरख दा खेल होणा अचंभा, अचरज आपणा हुक्म वरताईआ । जिस दी धार विच जम्बू देश जम्मा, जिसनूं जन्मे कोए ना माईआ। उस भेव चुकाउणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। जिस दी उडीक विच राह तके विष्न शिव ब्रह्मा, बिन नैणां नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहे धरनी साडा वेख लै इशारा, बिन सैनत जगत जणाईआ। साडा अन्त अन्त तक किनारा, नईया नौका संग ना कोए रखाईआ। तेरे उत्ते खेल करे दुबारा, दोहरी धार बेपरवाहीआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं किहा चवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। पैग़म्बरां किहा नूर उज्यारा, अमाम अमामा अगम्म अथाहीआ। सो प्रगट होए आपणी धारा, धर्म दी धार नाल रखाईआ। सतिगुर शब्दी शब्द दए सहारा, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस लहिणा देणा तकणा पुरख नारा, नर नरायण होए सहाईआ। जिस दा मानव ज़ाती इक्को होवे जैकारा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला दए जणाईआ। उस दे चरण कवल करीं निमस्कारा, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। धरनी कहे बलि बलि जावां बलिहारा, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे मेरा सुहञ्जणा दीप लखण, विकटोरीआ विकटर वजे वधाईआ। मेरा गृह ना होवे सक्खण, ख़ाली झोली अगे डाहीआ । मेरी पत आवे रखण, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो साहिब सदा समरथण, पुरख अगम्म अथाहीआ। जो लख चुरासी

हारामथण, मथण करे कूड़ लोकाईआ। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थण, कलयुग लेखा नाल रलाईआ। जोती नूर जगाए लट लटण, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी धार इक दृढ़ाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब साहिब बेअन्त, बेऐब तेरी सरनाईआ। मेरा पूरा कर दे मंत, मंतव तेरे चरण टिकाईआ। तैनूं खोजदे केते सन्त, चार कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। तेरा लेखा मेरे उत्ते नाल जीव जंत, जागरत जोत जोत कर रुशनाईआ। तूं बोध अगाधा पंडत, बिन अक्खरां करें पढ़ाईआ। मेरी इक्को इक मिन्नत, निमाणी हो के मंग मंगाईआ। चड़दा लहिंदा मेरी वेखीं बार सिम्मत, पहाड़ दक्खण खोज खुजाईआ। नव सत्त रहे ना कोई निन्दक, निंदया विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, प्रभू सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं आसा अन्त रखी, ओड़क ओट तकाईआ। लहिणा पूरा कर दे जो कृष्ण ने किहा राधा सखी, सखी सुख़न शब्द धार दृढ़ाईआ । मेरा लखण दीप तक लै लखी, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। भण्डारा भरना आपणे हथ्थीं, बिन हथ्थां आप वरताईआ। तूं सर्ब कला समर्थी, समरथ पुरख इक अख्वाईआ। मैं तेरे सथर लथ्थी, यारड़ा सेज गोबिन्द दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारयों आप वरताईआ । धरनी कहे प्रभू मेरी होर अगम्म अरदास, अर्शी प्रीतम दया कमाईआ। सचखण्ड तेरा तकां निवास, निवास इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे नूर जोत प्रकाश, बिन तेल बाती डगमगाईआ। तन वजूद तेरी दिसे कोई ना लाश, माया संग ना कोए बणाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मण्डल ना कोए वड्याईआ। ना कोई पवण धार स्वास, साह साह ना कोए समाईआ। मेरी इक बेनन्ती ख़ास, ख़ालस हो के मंग मंगाईआ। मैनूं तेरे उत्ते विश्वास, विषयां तों बाहर दयां सुणाईआ। जन भगतां होण ना दईं उदास, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। परम पुरख सब किछ तेरे पास, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। मानस जन्म करना रास, रस्ता आपणा इक दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। जन भगतां सुहञ्जणी करदे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ । सचखण्ड दवारयों धर्म दी धार बख्श दे सुत, ख़ाली जगत झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक होणा सहाईआ। पुरख अकाले जोती जाते, धरनी धरत धवल धौल मंगती। मेरे उत्तों मेट अन्धेरी राते, हँकार रहे ना हंगती। नव नव खेल खिला दे, साडे बोध अगाधे धुर दे पंडती। झगड़ा मेट दे ज़ात पाते, आत्म ब्रह्म दी दस्स दे संगती। जन भगतां अन्तिम पुछ वाते, परम पुरख

परमात्म पूरब जन्म दी वेख लै भगती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धरनी कहे मैं तेरे दर मंगती। धरनी कहे मंगणहारी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जन भगतां चाढ़ आपणा रंग, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। काया मन्दिर अन्दर लँघ, नव दुआर डेरा ढाहीआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, आसण अबिनाशण इक अख्वाईआ। भाग होण ना देवीं मंद, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी आपणी इक दृढ़ाईआ। जगत निराशा मिटाउणा पन्ध, आशा अगली होर बणाईआ । घर गृह धुर दरगाहों बख्शणा इक फ़र्जंद, मात पित गोदी देणी सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, हरिजन जन हरि आत्म धार लगाउणे आपणे अंग, परमात्म अंगीकार इक अख्वाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ११ बीबी अमर कौर दे गृह वैंनकूवर कनेडा ✪

सतिगुर शब्द आदि जुगादि आपे बोलदा, अनबोलत नादी नाद धुन शनवाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म पड़दा खोल्हदा, भेव अभेद आपणा आप समझाईआ। शब्द अनादि अगम्मी हो के तोल तोलदा, तोलणहारा धुरदरगाहीआ। अमृत नाम रस भण्डारा देवे अनमोल दा, रसना जिह्वा जिस दी समझ कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलावे कोल दा, कुल मालक हो के संग बणाईआ। खेल खेले रंग गुलाल दा, लालण हो के धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बोलणहारा, आदि जुगादि हुक्म दृढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्हणहारा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। दो जहानां देवणहार सहारा, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां गंढु पवाईआ। लख चुरासी वेखणहारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज मेला मेले सहिज सुभाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले जुग जुग वेखणहारा, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख अक्ख बदलाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के देवणहार दीदारा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण सति सच दस्स जैकारा, जै जैकार दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा बोल अगम्मा, जगत विद्या समझ कोए ना पाईआ । पवण स्वासी समझे कोए ना दमा, साह साह रंग ना कोए रंगाईआ। सार पा सके ना कोए काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को

३८८
२४

बोल सुणाया आदि अनादी हो के ब्रह्मा, ब्रह्म विद्या दिती दृढ़ाईआ । जिस विच लालच ना कोई तमअ, मोह ममता ना कोए रखाईआ। ना कोई हरख सोग ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बोलां सदा आप, आप आपणे रंग समाईआ। त्रैगुण जगत मिटावां ताप, त्रैगुण अतीते नाल मिलाईआ। कोट जन्म दे मेट के पाप, पतित पुनीत दयां कराईआ। जन भगतां जुग जुग पुछां वात, वातावरन तकां ख़लक ख़ुदाईआ। करां प्रकाश तक अन्धेरी रात, जोती नूर नूर चमकाईआ। अमृत बूँद बख्श स्वांत, रस अंमिओं इक बरसाईआ। दरस दिखा के इक इकांत, इक इकल्ला मेलां धुर दा माहीआ। जिस दा वरन नहीं कोई ज़ात, मज़्ह़बां वंड ना कोए वंडाईआ। जो वेखणहारा जुग चौकड़ी लोकमात, कलयुग अन्त ध्यान लगाईआ। सच सति दी देवे दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बोलां सदा अलख, अलख अगोचर दए वड्याईआ। जन भगतां काया माटी भाण्डे भरां सख, सतिनाम वस्त विच टिकाईआ। निरगुण धार हो के दरस देवां प्रतख, साख्यात नज़री आईआ। अन्त कन्त भगवन्त हो के पैज लवां रख, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म होण ना देवां वख, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं हुक्म संदेशा कहिणा, धुर दी धार धार प्रगटाईआ। परम पुरख परमात्म वेखणा निज नेत्र लोचन नैणां, जग अक्ख ना कोए चतुराईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी निरगुण साक सज्जण सैणा, मीत मुरारा इक अख्वाईआ। जिस दा इशारा दिता बाल्मीक विच रमायणा, राम रम्ईआ अगम्म अथाहीआ। सो जुग जुग नित नवित जन भगतां देवे लहिणा देणा, देवणहार इक अख्वाईआ। नाम निधान श्री भगवान तन वजूद पाए गहिणा, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं कहिणा सदा योग, जुगती अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव जणाईआ। मेरा बिन रसना जिह्वा जगत सुलाह तों भोग, भस्मड़ रूप रूप दरसाईआ। जिस दा स्वामी अन्तरजामी दरस सदा अमोघ, बिन नेत्र नेत्र नूर चमकाईआ। उह देवणहारा सति सच दा योग, जुगती जगत जगत दृढ़ाईआ। जिस नाल मन शांत रहे रोज़, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे कहिण दा अनोखा ढंग, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। जन भगतां पूरी करां मंग, तृष्ना तृखा पूर कराईआ। काया मन्दिर अन्दर लँघ,

साढे तिन्न हथ्थ वेखां चाँईं चाँईंआ। शब्द अनादि वजा मृदंग, सोई सुरत सुरत उठाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सिँघासण इक्को इक समझाईआ। मैं रसना जिह्वा दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। प्रकाश करके बिना सूर्या चन्द, जोती जाता हो के डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। सचखण्ड दुआर इक्को वस्त देवां वंड, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। इक्को बोल विच सदा सदा सदा पए ठण्ड, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा बोल अनोखा, जगत शास्त्र कहिण किछ ना पाईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, दो जहान वजदी रहे वधाईआ। जिस दा निरअक्खर धार पोथा, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। उह जुग चौकड़ी हुक्म सुणाए लोक परलोका, दो जहान करे शनवाईआ। जिस दा आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद इक्को होका, हकीकत हक हक दृढ़ाईआ। रूप अनूप सति सरूप जोता, जोती जाता डगमगाईआ। उह बोलणहारा निरगुण धार एकँकारा इक्को इक बहुता, बहु लोड़ ना कोए रखाईआ। ना जागरत ना सोता, आलस निंद्रा वंड ना कोए वंडाईआ। जो एथे उथे दो जहान होता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी अनोखी गल्ल, जगत समझ किछ ना आईआ। मेरा हुक्म सदा अटल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्द संदेशा दिता बलि, बलि आपणी कार कमाईआ। बावन धार लाया फल, फली भूत दिता वखाईआ। भेव खुल्ला के नेहचल धाम अटल, दरगाह सच सच वड्याईआ। पावे सार जल थल, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा फ़रमान सदा घड़ी घड़ी पल पल, पलकां ओहले बैठा नूर अलाहीआ। जे आत्म धार परमात्म हो के जाए रल, हरिजन आपणे विच समाईआ। पंच विकारां दए दल, कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। जन भगतां ज़िंदगी जीवन दा मसला करे हल्ल, अगे वंड ना कोए वंडाईआ। भाग लगा के काया माटी डूँघे डल, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जो वेखणहारा अस्गाह थल, खोजे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सची बात आप दृढ़ावेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण खेल खिलावेगा। एकँकारा कल वरतावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान संग रखावेगा। पारब्रह्म ब्रह्म दृढ़ावेगा। सतिगुर शब्द शब्द जगावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। त्रैभवण धनी त्रैगुण रंग चढ़ावेगा। पंच तत ब्रह्म मति आप दरसावेगा। शाहो भूप बण सूरा सरबंग, गल्ल इक्को इक जणावेगा। सच स्वामी बख्श के संग, सगला संग दरसावेगा। काया मन्दिर अन्दर दे अनन्द, अनन्दपुर वासी नाल मिलावेगा। सतिगुर

शब्द बण बख्शंद, बख्शिश रहमत आप वरतावेगा। जन्म जन्म दा मेट के पन्ध, चुरासी फाँसी जम कटावेगा। अगे रहे ना अन्धेरा अन्ध, अन्ध अज्ञान दूर करावेगा। भरमां ढाह के दुवैती कंध, सगला संग आप समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावेगा। साची गल्ल इक दृढ़ाएगा। वल छल भेव खुल्ह्एगा। पंच विकारा दूर कराए दल, आलस निंद्रा मेट मिटाएगा। जीवण जिंदगी करके हल्ल, हालत पिछली नाल दरसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाएगा। आपे आप दस्से मीत, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। जन भगतां अन्तर अन्तर बदल के नीत, नीतीवान दए वड्याईआ। आत्म ब्रह्म बख्श प्रीत, प्रीतम मेला मेले सहिज सुभाईआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबे करे रुशनाईआ। माटी ख़ाक होए ठांडी सीत, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ । परम पुरख प्रभ करनहारा पतित पुनीत, पुरख पुरखोतम इक अख्वाईआ। जिस दी इक गल्ल नाल मानस जन्म लैणा जीत, हार रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया होवे भय भीत, सिर सके ना कोए उठाईआ। सति सच दी सच होवे हदीस, हज़रतां बाहर पढ़ाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल तीस बतीस, राग छतीस देण गवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक आपणा गृह वखाईआ। साची बात सतिगुर सरन, सरनगति सरनाईआ। साची बात प्रभ दे चरण, परसणे चाँईं चाँईंआ। साची बात प्रभ खोल्हे नेत्र हरन फरन, निज लोचन डगमगाईआ। साची बात चुक्के मरन डरन, आवण जावण लख चुरासी फाँसी कटाईआ। साची बात जन भगत मंज़ल हकीकी चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साची बात सन्त सुहेले शब्दी लड़ फड़न, सुरती शब्द विच समाईआ। साची बात बिन अक्खरां निरअक्खर धार पढ़न, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप दरसाईआ। साची बात कथनी अकथ, रसना कथ सके ना राईआ। देवणहार पुरख समरथ, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस दे सब कुछ हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लेखा दए मुकाईआ। नाम निधाने चाढ़ के रथ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सगल वसूरे जाण लथ, जगत संताप रोग रहिण ना पाईआ। कूड़ विकारा देवे मथ, माया ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। साची बात आदि जुगादी इक, एकँकार आप दृढ़ाईआ। जिस नाल मन मनुआ जाए टिक, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। जन्म मरन दी पूरी होवे सिक, ख़ाहिश तमंना दीन दुनी ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा रस रहे ना फिक, अंमिओं रस निझर झिरना बूँद स्वांती आपणी आप टिकाईआ। झगड़ा

मिटे पत्थर इट्ट, पाहनां लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर आप सुहाईआ। आपणे विच्चों आपणी नहीं कोई विचार, आशा जगत ना कोए रखाईआ। सतिगुर शब्द शब्द दी धार, धरनी धरत धवल धौल दए वड्याईआ। जो संदेशा सुणदे रहे पैग़म्बर गुर अवतार, बिन रसना जिह्वा अणसुणत दयां सुणाईआ। जो संदेशा देवे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दा भगत सन्त सूफ़ी करन दीदार, निज नेत्र लोचन नैण दर्शन पाईआ। सो मालक ख़ालक परवरदिगार, सांझा यार नूर ख़ुदाईआ। जिस दा लेखा दीन दुनी तों बाहर, ज़ाहर ज़हूर आपणा हुक्म वरताईआ। सो आसा मनसा पूरी करनेहार आप करतार, कुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण भगतां होवे यार, मीत मित्र इक अख्वाईआ। तिस दे चरण कवल उपर धवल सारे जावण बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जिस दी इक गल्ल जुग चौकड़ी चार जुग दे शास्त्रां दए अधार, आदि अन्त इक्को रंग रंगाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला नित नवित पावणहारा सार, परम पुरख आपणा भेव चुकाईआ। अमर कौर अमरापद दा इक्को गृह इक्को मन्दिर इक्को घर इक्को दर दुआर, जिस दा दरवाज़ा सतिगुर शब्द नाम कुंजी नाल खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहार सर्ब संसार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान सूर्या चन्द चन्द चानणा आपणा नूर जोत करे रुशनाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ११ रजिंदर सिँघ दे गृह विलीअम लेक लिसिंगटन सब डवीज़न मकान नम्बर २४२४ कनेडा ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा हिस्सा तक लै विलीअम लेक, लोक परलोक दे मालक ध्यान लगाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरी रखी टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तूं आदि पुरख अपरम्पर स्वामी निरगुण धार एक, इक इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। सो पुरख निरञ्जण मेरा अन्तष्करन कर बिबेक, दुरमति मैल मैल धुआईआ। हरि पुरख निरञ्जण त्रैगुण माया लाए ना सेक, अग्नी तत तत बुझाईआ। दो जहानां वाली हो के वेख, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। आदि निरञ्जण जोती जाते कूड़ी क्रिया मेट दे भेख, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। अबिनाशी करते लहिणा देणा

तक लै मुनी रेख, ऋषीशरां दा लहिणा दे मुकाईआ। श्री भगवान नौजुआन लोकमात मेरे उत्ते वेख आपणा देस, नवखण्ड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं तैनूं रही चेत, महीना चेत मेरी दए गवाहीआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार खोल्ह दे भेत, अनुभव पड़दा आप उठाईआ। तेरा दर्शन करां नेतन नेत, बिन नेत्र लोचन नैण डगमगाईआ। मेरे उत्ते जुग चौकड़ी लँघ गए केतन केत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सरगुण धार तेरा दस्सया हेत, हितकारी हो के गए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू वेख लै आपणा लखण दीप, देश देशंतरां ध्यान लगाईआ । मेरी तेरे चरण कवल आदेस, निव निव सीस झुकाईआ। जो इशारा दे के गया गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा तों बाहर बाहर दृढ़ाईआ। जिस दा हुक्म आदि जुगादि सदा चले हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त धरनीए तेरा मेटे कलेश, कलि कल्की आपणा फेरा पाईआ। जो मालक ख़ालक दो जहानां होवे नरेश, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा निव निव लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आदि जुगादि दी आसा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तेरा ध्यान लगाईआ। मैनूं इशारा देवे शंकर उत्ते कैलाशा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। ब्रह्मा शब्द जणाए बिन स्वासा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ । विष्नूं विश्व दी जणाए रासा, मण्डल मण्डप सूर्या चन्द बैठे सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह शाह शाबाशा, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। तेरे हुक्म विच पृथ्मी कहे खेल तके कोटन कोटि आकाशा, ज़िमीं असमान दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरा बणके दासी दासा, जुग जुग तेरा हुक्म गए दृढ़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक वखाउंदे रहे तमाशा, सुरती शब्द शब्द प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा इक रखाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले मीत, मित्र प्यारे तेरी ओट तकाईआ। निरगुण धार सरगुण मेरे उत्ते बदल दे रीत, रीतीवान अवर ना कोए वड्याईआ। झगड़ा मेट दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। मनसा मन कूड़ी लए जीत, जग जीवण दाते सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक करदे ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बैठी आपणा पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना ऊँच नीच, राउ रंक ना कोए चतुराईआ। सतिगुर धार हो के शब्दी शब्द कर तस्दीक, शहादत अवतार पैग़म्बर गुर भुगताईआ। तेरा लहिणा देणा नाल हस्त कीट, कीट कीटां वेख वखाईआ। मेरे साहिब स्वामी बीठलो बीठ, हरि करते धुरदरगाहीआ। मेरा

लहिणा देणा वेख अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ क्रिया भन्न दे कौड़ा रीठ, सतिजुग अमृत रस मेरे उत्ते दे चुआईआ। क्यों सुत्ता दे कर पीठ, सचखण्ड निवासी आपणी करवट लै बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे महबूब, मेहरवान महिबान बीदो तेरी बेपरवाहीआ। तेरा आलीशान अगम्म अरूज, अर्शां दे मालक नूर अलाहीआ। मेरे उत्तों जगत शरअ दी मेट हदूद, हद इक्को इक समझाईआ। तेरी मंज़ल इक मकसूद, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेहरवान हो के नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट कर महफ़ूज़, शब्दी शब्द हुक्म वरताईआ। मेरी चार जुग दी पिछली आशा बूझ, भेव अभेदा दे खुलाईआ। मेरी बेनन्ती बिना अक्खरां तों बूझ, जगत विद्या संग ना कोए मिलाईआ। जिस नूं जाण सके ना कोए मन मति बुधि, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं तेरी रखी ओट, ओड़क दयां सुणाईआ। मेरे उत्ते जुग लँघ गए कोटी कोट, केते आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। मेरी आशा पुराणी जिस दी तृष्ना
३६४ बहुत, तृखा सके ना कोए बुझाईआ। निगाह मारो जो झगड़ा प्या वरन गोत, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। साचा नज़र ३६४
२४ आए किसे ना खौंत, ख़सम ख़समाना संग ना कोए निभाईआ। उह तक शंकर की इशारा दिन्दा लाड़ी मौत, मलकल भज्जे २४
वाहो दाहीआ। जिस नव खण्ड वरनां बरनां पाउणी अदाउत, अदल इन्साफ़ ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे अवतार तेई मेरी सुणो साखी, सुख़न धुर दे नाल सुणाईआ। मैं बेनन्ती इक्को आखी, आख़र दयां दृढ़ाईआ। धर्म दी करे कोए ना राखी, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना साथी, मनसा ममता कूड़ कूड़ हल्काईआ। मैं लेखा दस्सां जो गोबिन्द दी धार मेरे उत्ते आउण वाली बैसाखी, वास्ता पा के दयां सुणाईआ। मैनूं ख़बर अगम्मी भाखी, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र समझ सकण ना राईआ । मेरा मालक लखणा लाखी, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जिस दी जुग जुग दास दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जो मण्डल मण्डप पावे रासी, दो जहानां वेख वखाईआ। जिस दा लहिणा देणा पृथ्मी आकाशी, पृथ्मी कहे प्रिथव मेरी आशा पूर कराईआ। उह सचखण्ड निवासी दरगाह सच दा सच निवासी, निराकार निरँकार नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप कराईआ । धरनी कहे पैग़म्बरो करो ध्यान, धरत धवल धौल नैण उठाईआ। आपणा आपणा वेखो ब्यान, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। की खेल

करे मेहरवान महबूब नौजवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो लेखा जाणे जीव जंत तन वजूद पंज तत इन्सान, गृह गृह मन्दिर वजूदां फोल फुलाईआ। जो एथे उथे दो जहानां हुक्मरान, कलमे नाम संदेशे देवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे दस गुरु गुरदेव देखो नस्स, लोकमाती पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्ते धर्म दा रिहा कोई ना रस, रस्ता दीन दुनी गई बदलाईआ। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मोह विकार सृष्टी दृष्टी गई फस, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। मेरा खेड़ा हुन्दा वेखो भठ, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। जैकारा नाम बोले कोई ना अलख, लखण दीप मेरी दए गवाहीआ। निज नेत्र लोचन नैण खुल्ले किसे ना अक्ख , कलयुग जीव रोवण मारन धाहीआ। परम पुरख दा दरस करे ना कोए प्रतख, साख्यात नज़र किसे ना आईआ। ब्रह्म धार पारब्रह्म नालों होई वख, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना जस, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सलाहीआ। धरनी कहे मैनूं इक संदेशा जो गोबिन्द गया दस्स, दहि दिशा तों बाहर जणाईआ। तेरा लहिणा देणा अन्त मत्तस नाल कछ, कछप रंग रंगाईआ। जो पृथू लेखा लिख्या बिना हथ्थ, कलम शाही संग ना कोए रखाईआ। जिस कारन बराह चरण गया ढठ, बिन चरण सीस झुकाईआ। उस दा लहिणा देणा जुग जुग जो देवे पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ । धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरे उत्ते करो ख्याल, जोती धार वेख वखाईआ। शरअ दा रिहा ना कोए दलाल, विचोला नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट कूकदा काल, कलयुग डंका कूड़ वजाईआ। सच दा रिहा ना कोए धन माल, नाम वस्त हट्ट ना कोए विकाईआ। भाग लगे ना किसे काया माटी खाल, पंज तत तत तत ना कोए रुशनाईआ। सच प्रीती सके कोई ना घाल, घायल हुन्दी दिसे लोकाईआ। मेरी इक बेनन्ती इक अगम्मा सवाल, जिस दी वंड जगत ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सचखण्ड विच्चों मारी झाकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेहरवान हो के खोल्हे अगम्मी ताकी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। शब्द अगम्मे घोड़े चढ़े राकी, अस्व इक्को नाम दौड़ाईआ। आ के वेखो बन्दे खाकी, खाक मिट्टी मेरी फोल फुलाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तुहाडा रिहा ना कोए जमाती, सगला संग ना कोए निभाईआ। नूर रिहा ना आफ्ताबी, जल्वागर ना कोए दरसाईआ। धर्म दा दिसे ना कोई अमदादी, सच विच ना कोए समाईआ। साध सन्त बणे ना कोए बोध अगाधी, बुद्धी तों परे ना कोए पढ़ाईआ।

मैं इक्को प्रेम नाल मारां अवाज़ी, खुशीआं नाल सुणाईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ दी उलटण वाली बाज़ी, जो बाज़ां वाला गया समझाईआ । नाले आपणा लेखा तको माज़ी, पूरब लहिणा नाल मिलाईआ। अन्त झगड़ा मुकणा मुल्ला शेख़ मुसायक काज़ी, कज़ा वेखे ख़लक खुदाईआ। धन्न दौलत साबत रहे ना किसे आराज़ी, शाह सुल्तान रोवण मारन धाहीआ। मुहब्बत रहे ना हकीकी मजाज़ी, प्यार विच ना कोए समाईआ। सति सच दिसे ना कोए समाधी, समां आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी करो मदद, मुदतां दे मालक ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट देखो तशदद्द, झगड़ा करे कूड़ लोकाईआ। सूफ़ी रहे कोटां विच्चों कुझ अदद, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। निगाह मारो आपणे आपणे विच दीन मज़्हब, सूफ़ी वेखो चाँईं चाँईंआ। दरोही मेरे उत्ते होया ग़ज़ब, नेत्र रो रो दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी मात, मातलोक तेरा ध्यान लगाईआ। प्रभ दा लेखा सद लिख्या बिना कलम दुआत, शाही वंड ना कोए वंडाईआ। जिस झगड़ा पुआया ज़ात पात, शरअ दीन दुनी संग रलाईआ। उह वेखणहारा तेरा हालात, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। अन्तिम तेरी पुछे वात, वारस हो के लए अंगड़ाईआ । जिस दा रूप अनूप बहुभांत, भेव सके कोए ना पाईआ। तेरा लहिणा चुकाए दीप सात, नौ खण्ड पृथ्मी खोज खुजाईआ। सच प्रीत बख्श के नात, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण धरनी साडा मालक एकँकार, इक इकल्ला अगम्म अथाहीआ। जिस नूं किहा परवरदिगार, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। उह वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। जिस दे नाम कलमे असीं आए उच्चार, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। दीनां मज़्हबां वंड विच संसार, मानस मानव मानुख आपणे रंग रंगाईआ। सो लेखा जाणे जानणहार, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस दे चरण कवल निमस्कार, बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जो लेखा जाणे आपणी वार, दूसर संग ना कोए मिलाईआ। प्रगट होवे जोती जाता निरगुण नूर कर उज्यार, ततव तत ना कोए चतुराईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण देखे आप करतार, कुदरत दा कादर ध्यान लगाईआ। तूं क्यों रोंदी ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। असीं चार जुग दे मज़्हबां दे मुख्त्यार, मुख्त्यारनामे साडे हथ्थ फड़ाईआ । वीहवीं चौधवीं साडा उधार, कर्ज़ा मकरूज दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण धरनी, हरि करता दया

कमावेगा। पुरख अकाला वेख वखावेगा। पर्दा ओहला भेव चुकावेगा। साचा ढोला सोहला इक दृढ़ावेगा। निरगुण धार बणके तोला, लख चुरासी तोल तुलावेगा। अवतार पैग़म्बर जिस दा गोला, सो पुरख निरञ्जण वेस वटावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे रौला, रौणक आपणी इक दरसावेगा। जिस नूं पैग़म्बरां किहा मौला, सो मेहरवान हो के फेरा पावेगा। तेरा भार करे हौला, हौली हौली आपणा रंग रंगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावेगा। हरि करनी कार कमाएगा। दीन दयाला वेख वखाएगा। अवतार पैग़म्बर गुरु आपणे संग मिलाएगा। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाएगा। तेरा भाग होण ना देवे मंद, सिर तेरे हथ्थ टिकाएगा। जिस निशान मेटणा तारा चन्द, चार यारी मुहम्मद आपणे गृह वसाएगा। जो इशारा दे के गया गोबिन्द पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाएगा। तेरी नंगी होण ना देवे कंड, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाएगा। जो लेखा जाणे विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड खोज खुजाएगा। झगड़ा मेटे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाएगा। तेरी आशा होण ना देवे रंड, कन्त सुहागी सोभा पाएगा। निगाह मारे नव खण्ड, सत्तां दीपां फोल फुलाएगा। तेरी टुट्टी लए गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताएगा। झट कलयुग कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मेरी इक सलाम, डण्डावत बन्दना कहि के सीस निवाईआ। मैं वी उस साहिब दा ग़ुलाम, जो परवरदिगार नूर अलाहीआ। मेरी आशा रख के गया बावन इक भगवान, बलि दुआरा नाल मिलाईआ। मेरा संदेशा दिता राम, बाल्मीक दए गवाहीआ। मेरी आशा रखी काहन, घनईया आपणी आस जणाईआ। मेरा लहिणा देणा जगत जहान, जीव जंत नाल वड्याईआ। मैनूं पैग़म्बरां कीता सलाम, निव निव सीस झुकाईआ। मैं हस के किहा सब नूं तमाम, तमअ लालच मेरी बेपरवाहीआ। कोई कर ना सके इंतज़ाम, बन्दोबस्त दिसे ना ख़लक खुदाईआ। दीन दुनी मेरी होवे ग़ुलाम, सिर सके ना कोए उठाईआ। मैं अन्तिम आपणा पूरा करना काम, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच सृष्टी दृष्टी करनी हल्काईआ। कूड़ी क्रिया करनी शाम, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा नाल अगम्मी अमाम, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस अन्तिम वसणा सम्बल नगर अनोखे ग्राम, धरनी तेरे उत्ते समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे धरनीए की गुर अवतार पैग़म्बरां देवें सद्दा, शब्द गुर की शनवाईआ। मेरी अन्त अख़ीर वेख लै हद्दा, हदूद आपणी दयां समझाईआ। मैं माण रहिण देणा नहीं विच किसे यदा, युधिष्टर दा लेखा कृष्ण नाल पूर कराईआ। नव सत्त

तेरे उत्ते होणा दग़ा, फ़रेब करना ख़लक खुदाईआ। उह वेख लै गोबिन्द लेख लिख्या बिन कलम शाही बग्गा, कागज़ वंड ना कोए वंडाईआ। माछूवाड़ा धार तक लै जिथ्थे सुहञ्जणी होई जगह, दीन दुनी समझ कोए ना पाईआ। निरवैर निराकार निरँकार मैनूं दिता पदा, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। तेरे उत्ते दीन दुनी अन्तिम भोगणी सब ने सज़ा, सज़ा याफ़ता दिसे ख़लक खुदाईआ। कमलीए दो चार साल विच मैं सब नूं चखा देवां मज़ा, जो मज़ाक करके मैनूं रिहा वखाईआ। मेरा साहिब सुल्ताना नौजवाना श्री भगवाना मर्द मर्दाना जोती धार एकँकार परवरदिगार तेरे लखण दीप विच करदा फिरे गजा, ग़ज़ब दी धार समझ कोए ना पाईआ। नी तूं चलणा उस दी विच रज़ा, जो राज़क रिज़क रहीम नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म दी समझ सके कोई ना वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। मैं वी उसे दे हुक्म विच फिरदा भज्जा, भज्जां वाहो दाहीआ। उह वेख लै जिस कारन गोबिन्द ने हथ्थ उठाया सज्जा, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे धरनीए मेरा मालक अगम्म स्वामी, जो समें समें आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं सब ने मन्नया अन्तरजामी, अन्तर निरंतर वेखे थाउँ थाँईंआ।
३९८ जिस दी चार जुग दे शास्त्र गाउँदे बाणी, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कीता फ़ानी, अन्त ३९८
२४ मेरा फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाईआ। पर याद कर लै जिस दिन अर्जन गुर ने चुकी कलम कानी, कागज़ शाही नाल मिलाईआ। २४
पुरख अकाला दीन दयाला बणके सचखण्ड दा दानी, वस्त अगम्म दिती वरताईआ। संदेशा दिता बिना ज़बान कलामी, कलम्यां तों बाहर समझाईआ। उह वेख कलयुग अन्त दीन दुनिया हुन्दी फ़ानी, फ़नाह फ़िल्ला दिसे ख़लक खुदाईआ। किसे समझ नहीं आउणी केहड़ा महीना होवे रमज़ानी, रमज़ समझ कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट तक बेईमानी, बेवा दिसे कूड़ लोकाईआ। मेरे हुक्म दी इक्को लहर चलणी तुफ़ानी, जिस नूं जगत सके ना कोए अटकाईआ। उस वेले मंज़ल रहिणी नहीं कोई रुहानी, रूह बुत ना कोए चतुराईआ। कलयुग कहे धरनीए तेरा मेरा महबूब इक एकँकार जो जुग जुग सरगुण निरगुण प्यार विच खाण आए महिमानी, मेहरवान आपणा वेस वटाईआ। बिन अक्खां तों उस नूं तूं पहचानी, जो बेपहचान धुर दा माहीआ। जिस दी जूह कदे ना होई बेगानी, बेघरां दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे कलयुग की मैनूं दएं इशारा, सच सति दृढ़ाईआ। मैं रो रो करदी गिरयाज़ारा, प्रभू तेरा नाम दुहाईआ। चारों कुण्ट मेरे उत्ते हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। दीन मज़्ह्ब तेरे नाम कलमे ललकारा, शरअ शरअ नैण उठाईआ। जीव जंत दृष्टी अन्दर वध्या विभचारा, विभचार करे ख़लक खुदाईआ।

प्यार रिहा ना नारी नारा, नर नरायण तेरा दरस कोए ना पाईआ। माण रिहा ना वेद चारा, पुराण अठारां संग ना कोए निभाईआ। गीता ज्ञान दिता ना कोए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं बड़ा सूरबीर बहादर, गुर तेग़ बहादर मेरी दए गवाहीआ। मैनूं हुक्म दिता करीम कादर, जो करता पुरख इक अख्वाईआ। जिस दा भेव जाणे कोई ना शादो नादर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं आपणा कर्म कीता उजागर, नव खण्ड तेरे उत्ते दिता वरताईआ। माण रिहा ना पिदर मादर, पिता पूत ना कोए चतुराईआ। धर्म दा रहे कोई ना आदल, इन्साफ़ हक ना कोए जणाईआ। दीन दुनी बणी कातिल, मक्तूल मज़्ब रूप दरसाईआ। भेव खोल्हे कोई ना बातन, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। तेरे उत्ते कीती अन्धेरी रातन, धर्म दा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे कलयुग मेरे साहिब बड़े बलवन्त, बलधारी इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी धुर दा कन्त, कन्तूहल नूर अलाहीआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा बदल देवे मंत, मंतव आपणा हल कराईआ। जिस तेरी बणाई बणत, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ।

३६६ जिस दी महिमा सदा अगणत, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस खेल खिलाया मेरे उत्ते लख चुरासी जीव जंत, साध ३६६

२४ सन्त नाल मिलाईआ। तेरा कूड़ कुड़यार करे भस्मंत, भस्मड़ आपणा रूप दरसाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए २४

जणाईआ । बोध अगाधा बण के पंडत, साची सिख्या इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं वी प्रभ दा सुत दुलारा, दूलहा इक अख्वाईआ। मेरी पावे कोई ना सारा, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। मैं तेरे उत्ते नव खण्ड दिता हुलारा, सत्त दीप दिते हिलाईआ। जगत विद्या कीता ख्वारा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। मन कल्पणा कूके करे पुकारा, दरोही दरोही कर सुणाईआ। पंच विकार वधा विच संसारा, माया ममता नाल मिलाईआ। उह वेख लै मैनूं सतिगुर शब्द दए इशारा, सैनत अगम्म लगाईआ। तेई अवतार बोलण जैकारा, इक्को राग सुणाईआ। पैग़म्बरां वेख उधारा, पूरब लहिणा नाल मिलाईआ। नानक गोबिन्द जिस ने मेरा अन्त अन्त दा दस्सया किनारा, किनारा सरसा दए गवाहीआ। मेरा लहिणा देणा नाल अन्त कलकल्की अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। उस दे हुक्म विच मैं फिरां वारो वारा, उत्तर पूरब दक्खण पश्चिम भज्जां वाहो दाहीआ। जिस जोती जाते होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। दीन दुनी विच कोई हो रहे ना बाहरा, धुर दा हुक्म दयां समझाईआ। तेरे उत्ते अन्त होण वाला मुशाहरा, मुशकिल हल्ल ना कोए कराईआ। हुक्म वरते गम्भीर गहरा, गवर आपणी कार कमाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे कलयुगा मेरी बेनन्ती सच दुआरे आज, चवी चेत चौबीसे सीस निवाईआ। जो मेरा संवारे काज, करनी दा करता इक अख्वाईआ। दीन दुनी बदले समाज, समग्री नाम वाली वरताईआ। मेरे उतम करे भाग, दुरमति मैल दए धुआईआ। जोती नूर जगा चराग़, नवखण्ड करे रुशनाईआ। हँस बुद्धी बणाए काग, मानस मानव भेव चुकाईआ। सुरती शब्दी जन भगतां खोल्हे जाग, पर्दा अन्तष्करन लाहीआ। मेरी आपणे हथ्थ विच पकड़े वाग, चारों कुण्ट कुण्ट भुआईआ। धर्म दा मेरे उत्ते महके बाग़, पत्त टहणी सोभा पाईआ। जिस दी याद विच मेरे अन्तर आउँदा वैराग, वैरी कूड़े दए खपाईआ। तैनूं कलयुगा करना पए त्याग, त्रैगुण अतीता हुक्म देवे थांउँ थाँईंआ। जिस दा लहिणा देणा होवे अन्तिम देस माझ, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिस तेरी साजणा लई साज, सज्जण होवे धुर दा माहीआ। जिस गोबिन्द शब्द उडाया बाज़, बाज़ी तेरी दए उलटाईआ। नाम निधाना वजाए नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। सृष्ट सबाई करे आज़ाद, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। जिस ने आउणा अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं बाद, आप आपणा फेरा पाईआ। उस नूं सब ने करना अदाब, सिर सर सीस निवाईआ। जिस नूं निरगुण धार सरगुण रहे अराध, अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। उह नाम निधाना श्री भगवाना वजाए आपणी इक रबाब, जिस नूं रबीउल सानी विच मुहम्मद गया आस रखाईआ। जिस दा समझे ना कोई पुन्न सुवाब, भेव भेत ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। धरनी कहे कलयुगा मेरे साहिब साहिब निरँकारी, निरवैर इक अख्वाईआ। जिस दे चरण जावां बलिहारी, धूड़ी मस्तक ख़ाक ख़ाक नाल रमाईआ। उस दी चार जुग दे शास्त्र करन इंतज़ारी, गुर अवतार पैग़म्बर नैण उठाईआ। जिस तेरा झगड़ा मेटणा तकरारी, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। उह वेख लै वाअदा कौल इकरारी, इकरारनामा तैनूं दयां दरसाईआ। जिस दी जोत अगम्म होणी ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। अमाम अमामा जिस नूं पैग़म्बरां कीता कलम्यां विच मुज़ाहरी, मशीउल मुवस्ते मज़ू अज़ू हमवा नविस्तुल मम्म बाज़ी ज़ौ कू ज़मम दस्ते अशम्म मम्बाए रूए नवा खुदाए मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। धरनी कहे कलयुगा मेरी बेनन्ती सुण अरज़ोई, मैं निव निव सीस निवाईआ। मेरी उस दे अगे दरोही, जो दो जहानां मालक इक अख्वाईआ। जिस दा भेव पाए ना कोई, समझ सके कोई ना राईआ। जिस दा इशारा कबीर ने दिता लोई, बिन लोइना नैणां गया समझाईआ। मैं उस दी दासी होई, होका दे के दयां सुणाईआ। जिस ने मेटणा विकार पंज गरोही, गृह मन्दिर मेरे करे

सफ़ाईआ । ग़रीब निमाणयां देवे ढोई, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शाह सुल्तानां पत जाए खोही, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। उह तक लै पैग़म्बरां दी पेशीनगोई, जो लिख्त भविख्त अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल मिलाईआ। मेरी आशा होणी नवीं नरोई, नर नरायण दए वड्याईआ। जन भगतां आत्म परमात्म जाणी छोही, सुरती शब्द शब्द जुड़ाईआ। दुरमति मैल जाणी धोई, पतित पुनीत कराईआ। सच मुहब्बत विच दुनिया जाणी मोही, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरा खुशीआं वाला दिहाढ़ा, निव निव सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरा मंनीं हाढ़ा, हर हिरदे अन्दर करनी सफ़ाईआ। सति धर्म दा रंग चाढ़ना गाड़ा, एथे उथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया इक्को वार लगाउणा अखाड़ा, जड़ उखेड़नी थांउँ थाँईंआ। अग्नी लाउणी कूड़ कुड़यारा बहत्तर नाड़ा अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। फिरे दरोही जंगल जूह टिल्ले पर्वत विच उजाड़ा, समुंद सागर सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरी अज्ज दी घड़ी सुलखणी, परम पुरख दए वड्याईआ। मेरी आशा रहे ना सखणी, ख़ाली झोली दए भराईआ। जिस अन्त कलयुग पत रखणी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नाता जोड़े चरण प्रीती नतनी, कवल दए सरनाईआ। कूड़ कुड़यारी मेट के मतनी, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। सुरत शब्द मेल करा के पति पत्नी, आत्म सेजा दए सुहाईआ। हरिजन मेले आपणे वतनी, बेवतनां गले लगाईआ । मेरी दुहाई दरोही पैग़म्बरो तुहाडी लेख लेखणी बीसवीं चौधवीं सदी अन्त नहीं टपणी, टापू सारे रहे कुरलाईआ। लेखा मुकणा पंज तत ख़ाक मटणी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। नवखण्ड विच वरभण्ड चार कुण्ट नच्चणी, भज्जे वाहो दाहीआ। कीमत किसे दी रहिणी नहीं हट्टणीं, हटवाणा नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम मिट्टी ख़ाक होणी भठणी, भठियाला कलयुग अग्नी डाहीआ। धार रहिणी नहीं तीर्थ अठ्ठ सठ्ठणी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे वक्त सुहावा चेत चौबीसा, जगदीशा सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस दा इक्को नाम कलमा होए हदीसा, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। इक्को छत्र झुल्ले साहिब दे सीसा, जो मालक ख़ालक नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी पीसन पीसा, सेवक हो के सेव कमाईआ। उह साहिब स्वामी अन्तरजामी अन्तिम बणे मेरा मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो ठगौरी मेटे तन चीता, चेतन सुरती दए कराईआ। जो आशा रखी कृष्ण विच गीता, गायत्री मन्त्र नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद जो बदलणहारा रीता, रीतीवान श्री भगवान मेहरवान इक अख्वाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ११ सुरजीत सिँघ दे गृह ४७१६ सटोरोम टैरस कनेडा रात दे वेले ✪

गुरमुख सदा आए लैण, देवणहार सतिगुर शब्द इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि नित नवित निज नेत्र लोचन खोले नैण, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलावे धुर नरायण, नर हरि मेला होवे सहिज सुभाईआ। जिस दी सिफ्त वड्याई रसना किछ ना सके कहिण, अक्खर अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुरमुख आदि जुगाद दा मंगदा, हरि देवणहार करतार। तन काया माटी चोली रंगदा, रंग चाढ़े अपर अपार। नाद सुणाए शब्द मृदंग दा, अनादी धुनां दए धुन्कार। गृह मन्दिर अन्दर लँघदा, बजर कपाटी पड़दा पाड़। धाम सुहाए आत्म सेज पलँघ दा, सच सिँघासण अपर अपार। भेव चुका के सूर्या चन्द दा, जोती जाता जोत करे उज्यार। मेल मिलावा होवे वासी पुरी अनन्द दा, गोबिन्द माही कन्त भतार। झगड़ा मेटे विकारे पंज दा, काम क्रोध लोभ मोह रहे ना हँकार। लेखा रहे ना सवेर सञ्झ दा, अठ्ठे पहर अगम्म बहार। नाता तोड़े ग़मी रंज दा, अमृत बख्शे बूँद स्वांत ठण्डी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साहिब एकँकार। गुरमुख साचा सदा मंगदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। सतिगुर शब्द गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। मेल मिलाए आपणे अंग दा, अंगीकार इक अख्वाईआ। विकार मेटे बन्द बन्द दा, बन्दगी धुर दी इक समझाईआ। पर्दा लाहे दूई दुवैती कंध दा, भाण्डा भरम भउ निवार। लेखा मुके भाग मंद दा, लोकमात होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप सची सरकार। गुरमुख मंगे मंग एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द बख्शे धुर दी टेक, बिन धूड़ी ख़ाक मस्तक टिक्के नाम रमाईआ। अन्तर निरंतर करे बुध बिबेक, दुरमति मैल नज़र कोए ना आईआ। सच स्वामी अन्तरजामी दिसे एका एक, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जो जुग चौकड़ी रूप अनूप धारनहार अनेक, तन वजूद माटी ख़ाक सोभा पाईआ। त्रैगुण माया बुझावणहारा सेक, अमृत मेघ नाम बरसाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। गुरमुख मंगे सच दुआर, सचखण्ड ध्यान लगाईआ। सो पुरख निरञ्जण देवणहार, हरि पुरख निरञ्जण झोली दए भराईआ ।

एकँकारा पावे सार, आदि निरञ्जण निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ख़ाली भरनहार भण्डार, श्री भगवान मेहर नज़र उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लेखा जाणे विच संसार, सतिगुर शब्द शब्द नाल वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दर खड़े भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण वेखणहार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चारे जुग दए उधार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणी दया कमाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले आत्म परमात्म मेला मेले मेलणहार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। सति वस्त सति नाम सति काया मन्दिर अन्दर कर उज्यार, अन्ध अज्ञान विच जहान दूर कराईआ। माया ममता शरअ मेटे विच जहान, छुरी कूड़ जगत रहे ना मूल कसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स ज्ञान, निरअक्खर धार दए समझाईआ। भाग लगा के काया काअबा हक मकान, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। गुरमुख मांगे आदि जुगादि, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। प्रभ देवणहार शब्द दाद, नाम सति सति वरताईआ। भेव खुल्हा के बोध अगाध, बुद्धी तों परे दए समझाईआ। शब्द धुन्कार सुणा नाद, अनरागी आपणा राग दृढ़ाईआ। बिन रसना जिह्वा मार अवाज़, सोई सुरत लए उठाईआ। अन्तर आत्म खुल्हा के राज़, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द देवणहार अगम्म, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो वसणहारा पवण स्वासी दम, साह साह आपणा रंग समाईआ। भेव चुका के आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा रहे ना हरख़ सोग ग़म, चिन्ता चिखा दए जलाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। पंच विकारा कूड़ कुड़्यारा देवे डंन, भाण्डा भरम भाउ भनाईआ। अन्तर निरंतर मेट अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच सच दृढ़ाईआ। गुरमुख मंगे प्रभ दा दरस, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द मेटणहारा हरस, हवस जगत देणी चुकाईआ । अन्तर आत्म मेघ बरस, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी दात दाता दानी हो के आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरीआं मंगां, मांगत हो के दर ठांडे अलख जगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरा सीस हो गया नंगा, परवरदिगार सांझे यार ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। निगाह मार लै अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा भविख्त लँघा, चार जुग दे शास्त्र नाल मिलाईआ। जो शब्द संदेशा दिता गोबिन्द पंजा, पंज आब दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। दीन दयाल भगत

वछल कृपाल तेरा संसार होया अन्धा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन कल्पना कलयुग कूड़ कुड़यार कीता गंदा, सति धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। मोह हँकार विकार उत्ते मेरे पाया फंदा, जगत जंजाल सके ना कोए तुड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेख कन्धा, मुहम्मद संग चार यार बैठा नैण उठाईआ। ईसा आस वक्त करीं मूल ना लम्बा, सदी बीसवीं नाल मिलाईआ। शब्द गोबिन्द धार तिक्खा तक लै खण्डा, जो खड़ग जगत शस्त्रां बाहर चमकाईआ। जिस कारन नव खण्ड पृथ्मी पाई वंडा, सत्तां दीपां तकणा थांउँ थाँईंआ। झगड़ा वेख लै जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज मेल ना कोए मिलाईआ। मेरी दरोही विच वरभण्डा, भंडी पावे तेरी ख़लक खुदाईआ। तेरा आत्म परमात्म हो गया रंडा, जगत दुहागण दिसे नार लोकाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप धरनी धरत धवल धौल कहे मेरा लेखा रिहा मूल ना चंगा, चारों कुण्ट कुण्ट दुहाईआ । नेत्र रोवे यमुना सरस्वती गोदावरी गंगा, तीर्थ मारन धाहीआ। जो इशारा दे के गया मेरे उत्ते गोबिन्द पुरी अनन्दा, अनन्दपुर दा वासी तेरा शब्द शब्द कर शनवाईआ। जिस कारन अन्त निशान मेटणा तारा चन्दा, चन्द सितार वेखण थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ।

४०४ धरनी कहे प्रभ मेरे ठाकर स्वामी, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरी इक सरनाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी अन्तरजामी, घट ४०४

२४ निवासी पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। मेरे उत्ते लेखा तक लै चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। २४

भेव खोल्हे कोई ना तेरी अगम्म अथाह बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी समझ कोए ना पाईआ। झगड़ा तक शास्त्र वेद पुराणी, अञ्जील कुरानी रंग ना कोए रंगाईआ। दरोही तेरे उत्ते मेरे नाम दी होई हानी, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। अमृत रस रिहा ना किसे सरोवर पाणी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तुध बिन दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी चार जुग दी पिछली तक कहाणी, वारता वास्तव तेरे अगे टिकाईआ। तेरी मंजल हकीकी चढ़े ना कोई रुहानी, रूह बुत रहे कुरलाईआ। तैनूं इशारा दिता ईसा मेरा बाप आवे असमानी, इस्म आज़म इक अख्वाईआ। मुहम्मद किहा मेरा महबूब नूर नुरानी, अमाम अमामा हक खुदाईआ। गोबिन्द इशारा दे के तीर कमानी, चिल्ला तेरा नाम चढ़ाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता इक सुल्तानी, सूरबीर वड वड्याईआ। जो कलयुग अन्त मेटे कूड़ निशानी, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वेख लै अन्तष्करन, बिन नेत्र ध्यान लगाईआ। मैं तेरे चरण लगी फड़न, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। दरोही तेरी सृष्टी मेरे उत्ते लगी लड़न, कायनात हाहाकार करे लोकाईआ। किसे भेव ना आवे चोटी जड़न, आत्म परतमातम संग ना कोए निभाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणया गढ़न,

हउमे हंगता दूर ना कोए कराईआ। तेरा नाम कलमा मूल ना पढ़न, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तूं मालक ख़ालक भन्नणहार घड़न, समरथ तेरी ओट तकाईआ। अन्त तेरा पल्लू फड़ां लड़न, दामनगीर तेरी आस रखाईआ। मेरे महबूब तेरी ख़लक ख़ालक कूड़ शौह दरया विच लग्गी हड़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब इक गुसाँईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्त अख़ीरी तेरे चरण सहारा, सहायक तेरी ओट तकाईआ। मैनूं इशारा दे के गए तेई अवतारा, अवतर तेरा ध्यान रखाईआ। पैग़म्बर अल्ला हू दा ला के नाअरा, लाशरीक दिता दृढ़ाईआ। नानक निरगुण सरगुण सतिनाम कर वरतारा, भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। गोबिन्द सिँघ शब्द डंक वजा नगारा, दो जहान दिता सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त धरनीए तेरी पावे सारा, महासार्थी इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि शब्द अनादी वेखे विगसे वेखणहारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ कूड़यार करे पार किनारा, समुंद सागराँ डेरा ढाहीआ। सति धर्म सति सति दए उधारा, उदर तेरा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू मेरी चार जुग दी आसा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी पूरब नाल मिलाईआ। मैनूं सब ने दिता भरवासा, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। मेरे उत्ते खुशीआं वाली होई रासा, निरगुण सरगुण तेरा रूप गोपी काहन काहन जणाईआ। कलमे दीआं सुणीआं शाखां, सिफ्तां वाली सिफ्त सलाहीआ। मैं निमाणी हो के बेनन्ती इक आखां, बिन अक्खरां जगत सुणाईआ। तुध बिन अन्त होए कोई ना राखा, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। तूं परम पुरख समराथा, समरथ तेरी सरनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले लगा दे आपणी चरण धूड़ मेरे मस्तक माथा, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। मैं दीनन दीन दयाल अनाथ अनाथा, तूं देवणहार गुसांईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी इक अख्वाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी सुण लै कूक, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तेरी सृष्टी सुत्ती घूक, लोचन नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। निगाह मार लै काया काअबे विच पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश फोल फुलाईआ। झगड़ा दिसे चारे कूट, दहि दिशा होई हल्काईआ। दीनां मज़्बां पई फूट, मेल सके ना कोए मिलाईआ। आत्म परमात्म प्रीती गई टूट, टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। सुरती शब्दी लिव गई छूट, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। चारो कुण्ट तक लै जूठ झूठ, माया ममता विच दीन दुनी हल्काईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्ते तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची विच्चों उठ, लोकमात आपणा फेरा पाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण चारे तक लै मेरी वारो वार गुठ, कोना कोना फोल फुलाईआ।

तेरे प्यारे तेरे नालों गए रुठ, प्रीतम प्रेम विच ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ कूड़यारे पाई लुट, लुटेरा बणया थांउँ थाँईंआ। सति धर्म दी जड़ दिती पुट, पटने वाल्या तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं हलूणा दे दे फड़के मेरे गुट, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ । धरनी कहे प्रभू मैनूं जुग जुग मंगण दी आदत, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरी दरगाह साची सच अदालत, सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। मेरे उत्ते निगाह मार लै मानव मानस मानुख करे बग़ावत, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। सति सच दी देवे ना कोए सख़ावत, वस्त नाम ना कोए वरताईआ। मुहब्बत प्यार वाली रही ना कोई निआमत, रसना रस ना कोए चखाईआ। मेरे साहिबा मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना की मेरे उत्ते आई क्यामत, कायम मुकाम नज़र कोए ना आईआ। मैं बुधहीण अणजाणत, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। तूं साहिब सतिगुर मेरी करें पहचानत, बेपहचान आपणी दया कमाईआ। सति धर्म सच वस्त मेरी झोली पा दे पिछली अमानत, जो तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त वस्त वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे सूरे सरबंगा, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। उह तक कलयुग करन वाला दंगा, चारे कुण्ट लए अगंड़ाईआ। जो पुरीआं लोआं जगत धार दी धार तों बाहर लँघा, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। जिस तेरा प्यार रहिण नहीं दिता चंगा, चार कुण्ट कुण्ट कीती हल्काईआ । तेरे कोल स्वामी अनोखा ढंगा, तेरा भेव कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द गोबिन्द धार चमका के खण्डा, ब्रह्मण्डां करे सफ़ाईआ। मैं खुशी विच तेरे प्यार नूं जगत संसार अन्दर वंडा, काया माटी पंज तत विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं मंग मंग थक्कां, मेरी थकावट विच दुहाईआ। तेरे नाल अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वायदा कीता पक्का, पेशीनगोईआं भविख्तां नाल भविख्त गए समझाईआ। अन्त लेखा वेख लै बूरा कक्का, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ । जो लहिणा देणा सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मुहम्मद धारा विच नाल मक्का, काअबे बेआबे देवे समझाईआ। नव सत्त मेरे स्वामी अन्तरजामी मेरे उत्ते लग्गण वाला धक्का, चारो कुण्ट संभल कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती कीमत अन्त रहिणी नहीं कोई टका, जगत माया संग ना कोए निभाईआ। तेरा खेल होणा हकीकत हका, हक दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी मैं तेरे वल तका, तकदीर मेरी देणी बदलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी बदल दे तकदीर, तरीका आपणा इक दृढ़ाईआ। जो संदेशा दे के गया कबीर, कबरां बाहर समझाईआ। तेरा लहिणा देणा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जो नानक

निरगुण सरगुण बग़दाद विच मारी लकीर, दजला फ़रात दए गवाहीआ। जिस कारन गोबिन्द पकड़ी शमशीर, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, फ़कीरां फ़िकरा इक समझाईआ। लेखा मुका दे ग़रीब अमीर, अमरापद इक समझाईआ। सति धर्म मेरे उत्ते कर तामीर, कलयुग कूड़ा बुरज देणा ढाहीआ। तूं शाहो भूप सुल्तान पीरां दा पीर, भूपत भूप इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर इक सुहाईआ। धरनी कहे मेरे आदि निरञ्जणा, मेहरवान महबूब। मेरा कर दे घर सुहञ्जणा, आलीशान अरूज। तेरे चरण धूड़ करां मजना, दीन दुनी विच्चों कढ दुवैती दूज। आत्म परमात्म सब दा बण सज्जणा, सच प्रीती विच जावां जूझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच भेव खुल्हाउणा गूझ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कर सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ। तूं परम पुरख अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दे कराईआ । पवित्र कर दे काया माटी बुत, बुतख़ानयां कर सफ़ाईआ। आत्म धार सर्ब बणा लै आपणे सुत, सोई सृष्टी लै जगाईआ। सतिगुर शब्द हो के आपणी गोदी चुक, ज़ात पात दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार जणा दे अगम्मी तुक, तुख्म तासीर बेनज़ीर दए बदलाईआ। पड़दा ओहला काया चोला रहे मूल ना लुक, जोती जाते जोत नूर कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्ते पाँधी जाए मुक, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। सुफल करा दे मेरी कुक्ख, जननी हो के वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा तेरे चरण टिकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा पूर, परम पुरख तेरी वड्याईआ। जन भगतां अन्तर आत्म दे सरूर, अमृत रस रस भराईआ। निरगुण आपणा बख्श दे नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। उह तक लै जो आशा रखी मूसा उत्ते कोहतूर, तुरीआ तों बाहर आपणा संग बणाईआ। तूं मालक ख़ालक इक हज़ूर, हज़रतां दे मालक बेपरवाहीआ। तूं साहिब स्वामी सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ। मेरा पन्ध मुका दे नेड़ा दूर, दूर दुराडे वेखणा चाँईं चाँईंआ। मेरे उत्तों कल्पना कढ दे कूड़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सति धर्म मेरी झोली पाउणा ज़रूर, ज़रूरत तेरे अगे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी झोली ख़ाली भर, ऊनता रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं सब ने दिता वर, जुग चौकड़ी संदेशे गए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा लेखा नाल नरायण नर, नर हरि तेरी ओट तकाईआ। मेरा सुहञ्जणा पवित्र कर दे गृह घर, मिट्टी ख़ाक हो के सीस निवाईआ। अमृत धार वहा दे सच सरोवर सर, सरसे दा लेखा गोबिन्द वाला पूर कराईआ। तूं स्वामी इक्को नरायण नर, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

मेरा भय भाओ चुका दे डर, भयानक रूप ना कोए दरसाईआ। दीन दुनी दी शरअ मेट दे शर, शरीअत रूप बणे ना अन्त कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी धार देणी समझाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरी इक्को मंग अख़ीरी, बिन अक्खरां आख़र दयां जणाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह अमीरी, अमरापद दे मालक तेरी ओट तकाईआ। तूं ख़ालक बेनज़ीरी, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। आपणा लेखा तक लै जो शब्दी हुक्म कीता तहरीरी, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी तकां हस्ती, आदि जुगादी वेखां चाँईं चाँईंआ। मैं तेरे हुक्म विच जुग चौकड़ी नसदी, भज्जां वाहो दाहीआ। पिछले जुगां दा हाल दस्सदी, खुशीआं ढोले गाईआ। बौहड़ी कलयुग अन्तिम गल्ल रही नहीं मेरे वस दी, वास्ता तेरे अगे पाईआ। तेरी सृष्टी कूड़ी कल्पना विच वेख लै फसदी, फाँसी गल ना कोए कटाईआ। ज़बान भरी रही ना तेरे नाम रस दी, रस्ता सारे गए भुलाईआ। वड्याई रही ना सतिगुर शब्द जस दी, सिफ्ती ढोले कोए ना गाईआ। खेल रही ना निज नेत्र अक्ख दी, लोचन नैण ना कोए खुल्हाईआ। दरोही मेरे तों कथा कहाणी मुकी सच दी, सच विच ना कोए समाईआ। तूं निगाह मार लै आपणी सृष्टी तक लै पंज तत काया माटी कच्च दी, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। ना कल्पणा विच फिरे नचदी, दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। पंच विकार विच फिरे टपदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरा सतिनाम नाम सति ना मूल जपदी, जिस दी सतिगुर नानक दए गवाहीआ। उह वेख लै मुहम्मद दी सदी चौधवीं जांदी टपदी, टापू सारे रहे कुरलाईआ। मेरे उत्ते पंड वध गई भार वाले पप्प दी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। विचार रही नहीं गुरमति दी, मन मति आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनिया प्यासी होई मानस रत दी, रत्न अमोलक हीरा तेरा रूप ना कोए वटाईआ। मेरे साहिब स्वामी सतिगुर तेरे अगे वास्ता घतदी, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, तेरी चरण धूड़ मेरी ख़ाहिश पूरी करे मस्तक मथ दी, जगत तिलक नज़र कोए ना आईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ११ सुरजीत सिँघ दे गृह रात वेले ४७१६ सटरौम टैरस कनेडा ✪

हरिजन सदा जाए आपणे घर, गृह मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जिस दा खुल्हा रहे सदा दर, नौ दुआरे वंड ना कोए वंडाईआ। अन्तर निरंतर मिले सरोवर सर, बूंद स्वांती सोभा पाईआ। घर दीपक जोत प्रकाश करे नरायण नर, बिन

तेल बाती कमलापाती डगमगाईआ। बिन कदमां सच दुआरे जाए चढ़, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। दरगाह साची तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला लए पढ़, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सच स्वामी लाए आपणे लड़, पल्लू गंढु नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। गुरमुख जावे आपणे मन्दिर, गृह साचे वजे वधाईआ। भाग लगे डंघी कंदर, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मनुआ मन दहि दिशा उठ ना धाए बन्दर, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। बजर कपाटी तुटे जंदर, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। घर प्रकाश मिले बिना सूर्या चन्द्र, जोती जाता दया कमाईआ। सन्त सुहेले घर आपणे साचे लँघण, अगे हो ना कोए अटकाईआ। बिना पावे चूल सिँघासण वेखण मंजण, बिस्तर लेफ़ तलाई ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट दीपक जगण, नूर नुराने डगमगाईआ। स्वामी मिल के घर साचे होवे मग्न, सुरती सुरत ना कोए चतुराईआ। सच प्रीती लगे लग्न, लग मातर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे इक सुहाईआ। गुरमुख गृह आपणे सदा जांदा, आवण जावण खेल बणाईआ। शब्द अनादी ढोला गांदा, बिन रसना जिह्वा करे पढ़ाईआ। सर
४०६ सरोवर धुर दे नहांदा, दुरमति मैल मैल धुआईआ। अमृत रस बूंद स्वांती पींदा खांदा, निझर झिरना टपके अगम्म अथाहीआ। ४०६
२४ सच दुआरे बणे पांधा, पाँधी बण के पन्ध मुकाईआ। जगत वासना जाए ढांदा, कूड़ी क्रिया ख़ाक मिलाईआ। गृह मन्दिर २४
जिस स्वामी सतिगुर आप वखाउँदा, मार्ग दूर कराईआ। फड़ सुरती राहे पाउँदा, शब्दी शब्द नाल जुड़ाईआ। मंज़ल हकीकत हक चढ़ाउँदा, दरगाह साची सच टिकाईआ। सचखण्ड दुआर वसाउँदा, विछोड़ा जिथ्थे रहे ना राईआ। जोती जाता डगमगाउँदा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। घर मन्दिर इक वखाउँदा, जिथ्थे वसे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर इक्को इक सुहाईआ। गुरमुख आपणे गृह जावे भज्ज, बिन कदमां कदम उठाईआ। जगत वासना जाए तज, दीन दुनी ना रंग रंगाईआ। बिन काअब्यों करे हज्ज, हज़रत मेले धुर दा माहीआ। जो पर्दे लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर्शन देवे रज्ज रज्ज, तृष्ना दो जहान मुकाईआ। माण वड्याई देवे विच जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। घर वखा के उपर शाहरग, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया बुझा के अग्ग, गृह मन्दिर करे सफ़ाईआ। घर वसाए सूरा सरबग, हरि करता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच घर इक सुहाईआ। हरिजन वेखे घर सुहञ्जणा, काया माटी तन वजूद। जिथ्थे वसे दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अलाही महबूब। जो अन्दर बाहर साक सज्जणा, जगत शरअ मेटे हदूद। दो

जहाना रखे लजणा, घर आपणे रखे महिदूद। जिस दा डंका नाम निधाना वजणा, आलीशान अगम्म अरूज। निरगुण धार सतिगुर प्यार हो के सद्दणा, जिस दा इशारा देवे हज़ारा दरूद। सच सिँघासण गुरमुख बहि बहि सजणा, भाग लगे काया माटी तन वजूद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिस दी मंज़ल इक मकसूद। घर सुहावणे हरिजन जांदे, भज्जण वाहो दाहीआ। रातीं सुत्तयां पन्ध मुकाउँदे, जागदयां वंड ना कोए वंडाईआ। पुरीआं लोआं पार कराउँदे, ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। करोड़ तेतीसा वेख वखाउँदे, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द दे ढोले गाउँदे, बिन अक्खरां सिफ्त सलाहीआ। बिन पल्लू लड़ फड़ाउँदे, भज्जण वाहो दाहीआ। दरगाह साची सचखण्ड आपणे घर सुहाउँदे, जिस गृह इक्को मिले सच्चा माहीआ। सच सुहञ्जणी सेजा डेरा लाउँदे, आलस निंद्रा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर इक वखाईआ। सच घर जावां आपणे भज्ज, भजन बन्दगी नाल मिलाईआ। सच मुहब्बत विच पड़दा लैणा कज, ओढण सीस नाम टिकाईआ। शब्द जैकारा बोलणा गज्ज, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना जाणी तज, त्रैगुण डेरा ढाहीआ।

सच सिँघासण सौणा रज्ज, सुत्तयां फेर ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच घर करे रुशनाईआ। सच घर जिन्हां जाण दा चाअ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। पन्ध मुकावणा थल अस्गाह, जल थल महीअल पार कराईआ। पुरीआं लोआं पन्ध मुका, भज्जण वाहो दाहीआ। निज नेत्र लोचण नैण उठा, वेखण थांउँ थाँईंआ। कवण गृह मन्दिर जिस घर स्वामी ठाकर स्वामी लए बुला, शब्द अगम्मी अवाज़ लगाईआ । जो संदेशा देवे मालक हो के कुला, कुल्ली काया भाग दए लगाईआ। जिस घर मन्दिर गृह जाण विच उत्ते लैणा पए ना जुल्ला, जगत वस्त्र लोड़ रहे ना राईआ। घर सिँघासण मिले अनमुला, आत्म सेजा सोभा पाईआ । जिस दा वेहड़ा सदा सदा सद खुल्हा, खिड़की दरवाज़ा बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच घर इक सुहाईआ। घर कहे मैं बणया बिना चार दीवार, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। सानूं वेखण पैग़म्बर गुर अवतार, भगत सन्त नैण उठाईआ। साडा लहिणा देणा नहीं विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग ना कोए चलाईआ। साचा दर सच्चा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण इक्को नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादी सांझा परवरदिगार, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत होवे उज्यार, तेल बाती ना कोए चतुराईआ। उह भगतां दा सदा सुहञ्जणा सचखण्ड सच्चा दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे सन्त सुहेले

४१० २४

आउँदे वारो वार, लोकमात आपणा पन्ध मुकाईआ। सति विच सौंदे पैर पसार, सुत्तयां फेर ना कोए जगाईआ । सो घर सुहावा जिथ्थे वसे आप करतार, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। उस गृह जाण दा सारे करो इंतज़ार, दिवस रैण भज्जो वाहो दाहीआ। सो अन्तर निरंतर आत्म परमात्म कीता कौल इकरार, वायदा वाअदयां विच्चों वेख वखाईआ। जे घर लभणां ते लभ्भो एकँकार, जिथ्थे इक इकल्ला बैठा सब दा हक गुसांईआ। छब्बी चेत कहे अज्ज दी थित सुहञ्जणी ते सुहञ्जणा दिसे वार, वारता आदि जुगादि दी चली आईआ। सुरजीत सिँघ दा काया मन्दिर जिस मन्दिर विच सदा खुशीआं वाली बहार, ख़िज़ां नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण वेखे विगसे वेखणहार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार अगम्म अथाह इक इकल्ला नूर अलाहीआ।

✪ २७ चेत शहिनशाही सम्मत ११ गुरबचन सिँघ धामी दे गृह ४६१६ सटरौम टैरस कनेडा विखे ✪

सतिगुर शब्द मेटणहारा शंका, भेव अभेद आदि जुगादि खुल्ाईआ। जो सुहावणहारा सचखण्ड दुआर बंका, थिर घर आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा नाम निधाना दो जहानां डंका, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे शनवाईआ। जो निरगुण सरगुण धार लाए तनका, तन वजूद हक महबूब वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जो जुग चौकड़ी भुआवणहारा मन का मणका, मानस मानव मानुख आपणा हुक्म वरताईआ। जो लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत धरनी धवल धरत धौल धन का, खोजणहारा बेपरवाहीआ। जो सरोता बणे सरवन कन्न का, कायनात आपणा हुक्म वरताईआ। जो रूप अनूप धारे अनेक अनका, अकल कलधारी आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा लहिणा देणा कलयुग अन्तिम तारा चन्न का, सूर्या लेखा लए लगाईआ। जो भेव खुल्ावे आत्म परमात्म ब्रह्म का, पारब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। जो मालक ख़ालक होवे सच धर्म का, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। जो लहिणा देणा जाणे जन भगत सुहेले जरम का, जन्म जन्म दा पन्ध मुकाईआ। जो सहायक नायक होवे काया माटी चर्म का, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। जो भन्नणहारा भाण्डा भरम का, भय भाउ आपणा इक दरसाईआ। जो सहारा देवणहारा चरण का, चरणोदक अगम्मा जाम प्याईआ। जो इशारा देवे नेत्र हरन फरन का, फुरनयां तों बाहर आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। जो मालक महबूब होवे जम्मण मरन का, चुरासी वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। जो भेव चुकाए चोटी

जड़न का, जड़ चेतन आपणा रंग रंगाईआ। जो निरअक्खर धार रूप बणे अक्खर पढ़न का, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। जो साहिब सुल्तानां नौजवाना मालक होवे मंज़ल चढ़न का, चारे कुण्टां आपणा पन्ध मुकाईआ । जो शस्त्र तीर अणयाला होवे लड़न का, घाउ दो जहान लगाईआ। जो मालक बण के भन्नण घड़न का, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। जो लेखा मुकावे सीस धड़न का, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द जुग जुग शंका कढ्ढे आप, आप आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण बण के माई बाप, पिता पुरख अकाल हो के वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखणहारा तीनो ताप, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिस दी जगत शास्त्र दस्सदे अगम्मी बात, बातन भेव दए खुलाईआ। जो निरगुण सरगुण खेल करे लोकमात, धरनी धरत धौल आपणा रंग रंगाईआ। जिस दे नाम कलमे सति सच सौग़ात, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप वरताईआ। जिस दे हुक्म संदेशे पाक, पत्रिका नाम वाली वड्याईआ। जिस दा खेल बहु बिध भांत, वेस अनेका आपणा रूप धराईआ। जो जुग जुग पुछणहारा वात, वातावरण तके ख़लक खुदाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग तके अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सच वक्त ना रिहा प्रभात, प्रभाती रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द झगड़ा वेखे मुकदा, शंका जगत जहान ना कोए रखाईआ। जो निरगुण सरगुण लुकायां कदी ना लुकदा, पर्दा जगत ना कोए रखाईआ। उहदा निधाना नाम इक्को तुक दा, तुख्म तासीर सब दी दए बदलाईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा ढुकदा, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। उहदा भाणा कदे ना रुकदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा खेल अगम्मे सुत दा, सतिगुर शब्द शब्द वड्याईआ। जो संदेशा देवे अबिनाशी अचुत दा, पारब्रह्म की समझाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना काया माटी पंज भुत दा, तन वजूद भेव चुकाईआ। उस दा वक्त सुहञ्जणा होणा रुत दा, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ । जो भगत सुहेले जुग जुग गोदी चुकदा, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं जुग जुग शंका कढदा, अवतर मेरा ध्यान लगाईआ। धर्म निशाना गडदा, दो जहान ध्यान लगाईआ। बिन कदमां अगे वधदा, ना कोई रोके रोक रुकाईआ। मेरा भेव पाया नहीं किसे हद्द दा, हदूद समझ कोए ना आईआ। मेरा सुत दुलारा इक्को यद दा, यदप यदी दिती माण वड्याईआ। मेरा नूर अलाही रब्ब दा, यामबीन कहि के सारे सीस निवाईआ। मेरा खेल सूरे सरबग दा, हरि करता इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा

देणा आदि जुगादि मध दा, सति सति आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा शंका कोए ना करदा, बुद्धी मति मन ना कोए चतुराईआ । अवतार पैग़म्बर गुर मेरा बरदा, जुग जुग धुर दी सेव कमाईआ। भेव खुल्हावां साचे घर दा, सच घर पड़दा आप उठाईआ। रूप दरसा के नरायण नर दा, नर हरि हो के आपणा रंग रंगाईआ। हुक्मे अन्दर सब कुछ करदा, करता पुरख इक अख्वाईआ। ना जीवत ना मरदा, जीवन मरन वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जाता हो के जगदा, नूर नुराना डगमगाईआ। रहिणा आपणा वखरा दस्सदा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जिस दा शब्दी धार परवार वधदा, आत्म आपणा खेल खिलाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लधदा, भज्जे वाहो दाहीआ। उहदा लेखा नित नवित कद दा, कदीम दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा खोजयां किसे नहीं लभदा, नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। उहदा मेला नाल सबब दा, साहिब सुल्तान आपणा खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे सब दा शंका कीता दूर, निरगुण सरगुण भेव खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दे के जोती नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द अनादी दे के तूर, तुरीआ तों बाहर दिता दृढ़ाईआ। हाज़र हो के हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे मालक कीती पढ़ाईआ। नाम कलमा दीन दुनी दस्तूर, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। सच सति मस्ती दे सरूर, रस रस नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे शंके दा लेखा नहीं नाल प्रभ, भगवान संग ना कोए रखाईआ। अनुभव दृष्टी विच्चों मूल पए ना लभ, शंका रूप नज़र कोए ना आईआ। जिस दा आदि जुगादि दो जहान किछ सभ, मालक ख़ालक इक अख्वाईआ। उस दी आदि अन्त जुगा जुगन्त जाणे कोई ना हद्द, हदूद नज़र कोए ना आईआ। जो निरगुण सरगुण खेल खेले विच जग, जागरत जोत डगमगाईआ। जुग जुग दीन दुनी मेटणहार काया अन्दर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ आपणी दया कमावेगा। परम पुरख प्रभ खेल खिलावेगा। अवतार पैग़म्बर गुर नाल मिलावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हावेगा। धरनी धरत धवल धौल पड़दा लाहवेगा। चार जुग दे शास्त्रां अक्खर अक्खर वेख वखावेगा। जिस कारन गोबिन्द यारड़े लथ्था सथर, सो सूली सेज रंग रंगावेगा। जिस दा प्यार विच प्यार वगिआ अथ्थर, नेत्र हंझूआं गंढु पुआवेगा। जिस दी महिमा सदा कथन, कथ कथ आपणा हुक्म सुणावेगा। जो आदि जुगादि चलाए रथन, रथ रथवाही वेख वखावेगा। कलयुग अन्तिम

आवे मथन, नाम मधाणा हथ्थ उठावेगा। जिस दे हुक्म नाल हँकारी बुरज ढठ्ठण, हंगता गढ़ तुड़ावेगा। कूड़ कुड़यार चारों कुण्ट नठ्ठण, धुर दा हुक्म आप वरतावेगा। कूड़ी क्रिया करे भठ्ठण, त्रैगुण माया अग्न जलावेगा। लेखा मुके अठ्ठ सठ्ठण, तीर्थ तट ना वंड वंडावेगा। खेल करे पुरख समरथण, जीव जंत भेव ना आवेगा। सब दा लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थण, चार जुग दा पूरब उधार मंगावेगा। दीन दुनी दी उलटी गेड़ के लठ्ठण, गेड़ा शब्द नाम गिढ़ावेगा। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी टप्पण, उह टापूआं पन्ध मुकावेगा। जो इशारा कीता गोबिन्द पाटल पटन, पटने वाला वेख वखावेगा। जिस दा सच दुआर इक्को होवे हट्टण, वणज सच नाम करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह्‌ावेगा। सतिगुर शब्द कहे मेरे उत्ते शंका करे कोई की, भेव सके कोई ना पाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत पुतले जगत जीअ, जीवण समझ किसे ना आईआ। जिस कारन लहिणा देणा बणया साढे तिन्न हथ्थ सींअ, रविदास चमार जिस दी दए गवाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाम कलमे वाली चलाई लीह, लाइन ऐन सतिगुर शब्द शब्द समझाईआ। की गुरदास इशारा दिता वीह इकीह, बीस बीसा हरि जगदीसा की आपणा हुक्म वरताईआ। की संदेशे दिन्दे कलमे वाले सपारे तीह, तीस बतीसा की खेल खेले आप गुसाँईंआ। जिस कलयुग विच सति धर्म दी रखणी नींह, निराकार निरँकार आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां अन्दर प्रेम प्यार दा बीज के बीअ, फुल फुलवाड़ी तन वजूद आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप कराईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा शंका आदि जुगादि, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जिस नूं सारे रहे अराध, उदर दे अन्दर बैठे सारे ध्यान लगाईआ। जो हर घट अन्दर सारे रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा नाम अगम्मा नाद, बिन सरवणां करे शनवाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना कलयुग मेटणहारा वाद विवाद, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। भेव खुल्ह्‌ा के बोध अगाध, शब्दी शब्द दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा चार जुग दे शास्त्र देण इशारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, रसना जिह्वा ढोले बत्ती दन्द सिफ्त सलाहीआ। शब्द अनादी नाद जणा जैकारा, जै जैकार गए समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अमाम अमामा नूर नुराना शाहो भूप हरि जगदीशा आए निरँकारा, निरवैर निराकार हो के आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा लहिणा देणा एथे उथे दो जहान सदा जुग चारा, चारे खाणी चारे बाणी आपणा रंग रंगाईआ। जो बीस बीसा जगत जगदीशा हो के पावे सारा, महासार्थी आपणा हुक्म वरताईआ। जिन्ह्‌ां लहिणा देणा

पूरब सब दा देणा उधारा, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को दस्स के नाअरा, नर नरायण आपणा रंग रंगाईआ। जो दीनां मज़्बां ज़ातां पातां ऊचां नीचां राउ रंकां वसे बाहरा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची परवरदिगार पारब्रह्म सांझा यार आपणा गृह सुहाईआ। जिस दी याद विच उस किहा उह मालक ख़ालक नूर अलाह अमाम अमामा मेहरवान महबूब सब दा होवे सिक्दारा, सिर सिर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल होवे अवल्ला, जगत समझ कोए ना पाईआ। वेस वटावां इक इकल्ला, एकँकारा नूर अलाहीआ। जो वसणहारा जल थला, महीअल आपणा खेल खिलाईआ। दीपक जोत प्रकाश हो के आपे आप बला, तेल बाती लोड़ रहे ना राईआ। सच संदेशा शब्दी धार घल्ला, जगत अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्यार विच इक बोला हल्ला, हालत विगड़े ख़लक ख़ुदाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर किसे दा फड़े कोई ना पल्ला, पलकां दे ओहले दिसे कोए ना माहीआ। भाग लग्गा रहिण ना देवे काया माटी खल्ला, पंज तत वजे ना कोए वधाईआ। सदी चौधवीं अन्त सतिगुर कहे मेरा महबूब मचाए तरथल्ला, थल अस्गाह रोवण मारण धाईआ। जो गोबिन्द इशारा दे के गया डल्ला, लेखा बिन कलम शाही लिखाईआ। जो कृष्ण ने बिना तीर तों लाया सल्ला, निशाना निशाने विच्चों बदलाईआ। जो राम ने राम नूं संदेशा घल्ला, त्रेते आपणी गंढु पुआईआ। जो बावन हो के झल्ला, झलक आपणी गया वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म अगम्म फ़रमान, जगत शास्त्र समझ कोए ना आईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव करन परवान, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान मन्नण आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को हुक्म संदेशा वरते शाहो भूप श्री भगवान, दूजा नजर कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। इक्को मालक होवे हुक्मरान, रईयत इक्को रंग रंगाईआ। इक्को इष्ट होवे जीव जहान, गुरदेव इक दरसाईआ। इक्को मंज़ल होवे मकान, काअबा इक्को इक समझाईआ। इक्को धर्म होवे ईमान, इक्को प्रेम वजदी रहे वधाईआ। इक्को पीण होवे खाण, इक्को रंग दए रंगाईआ। इक्को हुक्म सब ने करना परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस ने बीस इकीसा हो के बदल देणा विधान, विद्या दी लिपी इक जणाईआ। जिस नूं पैग़म्बर वेखण नाल ध्यान, अवतार नैण नैण उठाईआ। गुरु गुरदेव खुशीआं ढोले गाण, वाहवा वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। नव खण्ड पृथ्मी धरनी धरत धवल लेखा

४१५
२४

मुके जगत जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर निगाह मारो जल्दी, जल थल महीअल ध्यान लगाईआ। वेखो खेल कलयुग कल दी, की करता हुक्म वरताईआ। किसे नूं समझ नहीं घड़ी पल दी, पर्दा पड़दा ना कोए उठाईआ। की आशा राजे बलि दी, बावन नाल गया मिलाईआ। की मूसा धार संदेशा घलदी, बिन सैनत सैनत लगाईआ। की इशारा देवे फाँसी ईसा गल दी, सत रंग रंग वड्याईआ। मुहम्मद पुकार करे मेरे अन्त क्यामत सदी चौधवीं मूल ना टल्दी, चार यार बैठे सीस निवाईआ। गोबिन्द धार कहे प्रभ दी खेल आदि जुगादि अगम्मे छल दी, वल छल आपणी कार कमाईआ। जिस दी निरगुण जोत हर घट अन्दर रलदी, जोती जाता हो के डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा धरनी नाल लहिणा, लहिणेदार इक अख्वाईआ। मैं धुर दा हुक्म कहिणा, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। मेरे पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड निवासी साचे धाम बहणा, जिस नूं सम्बल कहि के सारे गाईआ। जिस नूं तक सके ना नाल कोई नैणां, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ । उस दा खेल नहीं कोई त्रफ़ैणा, तरफ़दारी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा इशारा दिता बाल्मीक विच रमायणा, राम दा राम बेपरवाहीआ। जिस कारन अर्जन काहन दा मन्नया कहिणा, कहि के गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों नारदा आवें नठिआ, सोहणया मैनूं दे समझाईआ। प्रभू दे भगत प्यारे पठ्ठया, पाठका की तेरी वड्याईआ। झट नारद बिना सीस तों चरणी ढठ्ठया, बिना चरणां सीस निवाईआ। मस्तक धूड़ी लाया घट्टया, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। दुहाई दिती मेरे सतिगुर शब्द क्यों सृष्टी करन लग्गा ज़ीरो नाल ज़ीरो बटया, अंक नज़र कोए ना आईआ। उह वेख कलयुग हँकार बुरज जांदा ढठ्ठया, ढहि ढहि ढेरी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ । सतिगुर शब्द किहा नारदा मैं लोकमात अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दे आया वटया, अन्त मेरा कोए ना पाईआ । जिस दा कलमा नाम नबी रसूलां रटया, ढोले शरअ शरीअत वाले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द सुण मेरीआं उडीकां, नारद रिहा जणाईआ। मेरे कोल चार जुग दीआं तरीकां, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए सुणाईआ। जिस दा लेख लिख्या बिन कलम शाही काग़ज़ लीकां, लाइनां वंड ना कोए वंडाईआ। जिंन्हां विच हक तौफ़ीकां, तोहफ़े मेरी झोली गए भराईआ। उह तेरे हुक्म वाली हदीसा, हज़रतां दे मालका दयां सुणाईआ। इक्को छत्र झुला अगम्मा सीसा,

छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। आह वेख लै की इशारा कीता ईसा, ईसउल सलाम की सुणाईआ। मुहम्मद की तकदा मार के नीझां, बिन नैणां नैण उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब दीआं पूरीआं करनीआं रीझां, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द तेरा कलमा कायनात हकीकत हक, सति सच नाल वड्याईआ। उह वेख मुहम्मद इशारा देंदा नूर अलाही यक, यकमुल वज़ी अरज़े वज़ू नूरे चिशा जमिंनज़े अलाह मवज़लू खुद मालक अगम्म अथाहीआ। पोज़िसती पवन चूज़े चुकसत नज़रे बेदज़ शहिनशाहे शवज शुरफ़ा ए अज़मी उल्माए अज़ी तवीउल जकाऊ जमुसते मज़ा मेहरवान मेहरवान मेहरवान महबूब नूर अलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म की सुणाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द उह तक ईसा उठावे हैंड, हैंडज़ अप वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस दी ख़ाली होणी लैंड, लैंडमारक आपणी रिहा जणाईआ। तेरा हुक्म संदेशा तेरे विच्चों किस नूं होणा सेंड, अगे हो ना कोए अटकाईआ। पता नहीं की भेव अभेदा तेरा अगम्म बीहाईंड, पर्दा सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द मूसा कहे मसवली ज़ब ज़मी रोज़े शबा सीउमज़ुल मुफ्ते ज़वा कोशे अवद शमसे शमी जमीउल ज़वा नूरे अलाह ज़कमो ज़विद तासीनो सदि गुसतो गवा फ़रिश्तो दुआ महबूबे निवा शाहे सुवा शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। नारद कहे सतिगुर शब्द नानके नज़ू अर्शे मज़ू मुहबते मिज़ा सुसकते ज़िवा शमीउल शिबे बहिश्तुल वज़ी सदके सुदा अदबे खुदा नूरे नूर आपणा हुक्म वरताईआ। ... ...

✪ २८ चेत शहिनशाही सम्मत ११ महिन्दर सिँघ तक्खर दे गृह २-५००८ पारक ऐवेनिउ टैरस कनेडा ✪

टैरस कहे मेरा जुगां बाद आया टरम, टरमीनल समझ किसे ना आईआ। धन्न भाग सतिजुग पिच्छों कलयुग विच होया मेरा जरम, त्रेता द्वापर अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मेहरवान प्रभ मेरे उत्तम कीते कर्म, जगत कांड वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा दूर कीता भुलेखा भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पुरख अबिनाशी बख़्शी सरन, सरनगति इक जणाईआ।

जो मत्तस दिता वरन, जल धारा विच गया रुढ़ाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा मैं खुशीआं विच ढोले लग्गा पढ़न, बिन रसना जिह्वा गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरे उत्ते छुहाए चरण, बिन चरणां चरण टिकाईआ। मेरा खोल्ल्या हरन फरन, निज नेत्र करी रुशनाईआ। मेरा लेखा नहीं किसे ज़ात पात बरन, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। टैरस कहे मेरी धरती जुग चौकड़ी पुराणी, पुराण अठारां देण गवाहीआ । मेरे उत्ते लाई रिखप देव निशानी, अवतार अठ्वां दए गवाहीआ। ईसा संदेश दिता ज़बानी, लेख लिख्या बिन कलम शाहीआ। नानक निरगुण धार कर ध्यानी, बिन सैनत सैनत गया समझाईआ। सतिगुर गोबिन्द कीती मेहरवानी, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया वधी बेईमानी, बेवा रूप दिसे ख़लक खुदाईआ। सलामत रहे ना कोई ईमानी, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। नव सत्त होए हैरानी, हैरत घर घर आपणा डेरा लाईआ। माण रहे ना किसे ग्रन्थ शास्त्र बाणी, बाण अणयाला तीर प्रभ आपणा हुक्म चलाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखां चाँईं चाँईंआ। सो शाहो भूप सुल्तानी, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। जन भगत सुहेले गुरमुख विरोले अमृत रस अगम्मा पाणी, जिस दा रूप नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। टैरस कहे मेरा लहिणा देणा अजीब, रिग वेद दए वड्याईआ। मुहम्मद इशारा कीता विच कुरान मजीद, मुत्तलाअ करके गया समझाईआ। भगत कबीर कीती तमहीद, खुशीआं खुशीआं ढोले गाईआ। मनसूर आपणी खुशी विच हक दस्सी ईद, ईदुल फितर नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द खोल्हे नींद, धुर दा कलमा लए अंगड़ाईआ। सब दी आशा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना पिछली दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। टैरस कहे मत्तस मेरे उत्ते रखया कदम, कदीम दा भेव दयां जणाईआ। की लेखा जाणे मोहन माधो मदन, मध सूदन आपणी धार प्रगटाईआ। जिस नूं कलयुग अन्तिम अवतार पैग़म्बर गुरु सद्दण, सद्दे धुर नाम कलमे वाले लए लगाईआ । जो दीन दुनी शरअ दी मेटे हद्दन, हदूद इक्को इक प्रगटाईआ। नाम निधान वजाए नदन, दो जहान करे शनवाईआ। जिस दे लख चुरासी जीव जंत दीपक जोती जगण, जोती जाता डगमगाईआ। उह अन्त कन्त भगवन्त मेरी बुझावण आए अगण, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। जन भगतां नाल आत्म परमात्म पावे सगन, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। सति सच दे के भजन, घड़न भन्नणहार आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण धार नेत्र पाए अंजण, नर नरायण करे रुशनाईआ। एथे उथे बणे सज्जण, सगला संग रखाईआ। सन्त सुहेला आवे पड़दे

कज्जण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। टैरस कहे मैं उस दे चरण धूड़ी करां मजन, आप आपणा चरण कवल टिकाईआ। जिस कलयुग कूड़ कुड़यार करना दझण, मिट्टी ख़ाक ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। टैरस कहे मेरी धरती होई पवित्र, पतित पावन दए वड्याईआ। घर स्वामी मिल्या मित्र, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा खेल अनोखा बचित्र, बचित्र नाटक विच गोबिन्द गया जणाईआ। जो निरगुण धारों आवे नितर, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जो सब दा स्वामी पित्र, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिस दा मत्तस दसवें अवतार ने कीता ज़िकर, ज़करीआ जिस नूं आशा विच गया गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। टैरस कहे मैं जुग जुग रिहा तकदा, तकदीर प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ । मेरा मनसा बणया रिहा हक दा, हकीकत आपणे विच टिकाईआ। मैं खेल तकणा ओस अलख दा, जो अलख अगोचर नूर अलाहीआ। जिस दा जुग चौकड़ी सतिगुर शब्द मार्ग दरसदा, नव सत्त सत समझाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर दो जहान वसदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। उह मालक ख़ालक होवे घट घट दा, घट भीतर वेख वखाईआ। जोत प्रकाश होवे लट लट दा, निरगुण नूर डगमगाईआ। वणजारा होवे नाम अगम्मी हट्ट दा, वस्त इक्को इक वरताईआ। जो प्यार विच हर हिरदा होवे फटदा, सलल आपणा तीर चलाईआ। जिस दा खेल बाज़ीगर नट दा, स्वांगी आपणा रूप बदलाईआ। उस दे प्यार विच टैरस कहे मैं खुशीआं दे विच टपदा, भज्जां नठ्ठां वाहो दाहीआ। दिवस रैण बिन रसना जिह्वा मिट्टी ख़ाक दे तूं मेरा मैं तेरा नाम जपदा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैनूं सहारा मिल्या इक परमेश्वर पति दा, जो पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जो जुग जुग जन भगतां पैज रखदा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। टैरस कहे मेरी परम पुरख अगे अरज़ोई, जन भगतो दयां जणाईआ। जिस मेरी आशा उठाई सोई, सुत्तयां ल्या जगाईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोई, पड़दा सके ना कोए खुल्हाईआ। मैं उस दे नाम दी देवां दरोही, दो जहानां दयां सुणाईआ। जो इशारा दिता कबीर ने लोई, लोयणा तों बाहर बाहर दृढ़ाईआ। इस दे प्यार विच धरनी धरत जाणी मोही, मुहब्बत आपणे विच्चों प्रगटाईआ। उस दी सब ने देणी पेशीनगोई, पैग़म्बर आसा गए रखाईआ। जिस दे प्यार विच अमृत धार जाणी चोई, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मैनूं समझो ना मिट्टी ख़ाक, ख़ाकी बंदयां दयां जणाईआ। मेरा जुग जुग खुल्हदा ताक, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आप खुल्हाईआ।

मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सुणे भविख्त वाक, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए सुणाईआ। मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी दा मेरे उत्ते आउण दा होवे इत्फिाक, इत्फिाकीआ आपणा फेरा पाईआ। जो दीन दुनी आत्म परमात्म बणाए सज्जण साक, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर जणाईआ। रूह बुत तन वजूद करे पाक, पतित पुनीत आप अख्वाईआ। जुग जुग दा मेरा पूरा पिछला करे घाट, मत्तस दा लेखा नाल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी जोती जाता शब्दी धार पन्ध मुका के वाट, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। मैं निरगुण नूर सच ज़हूर तकां जोत ललाट, लिलाटी आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह गाउँदे गए भाट, भटनागर आपणा हुक्म वरताईआ। जो आत्म सेज सुहावे सुहञ्जणी खाट, खटीआ आपणी आप सुहाईआ। मेरी दुरमति मैल धरनी कहे देवे काट, पापां करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब होए सहाईआ। धरनी कहे मैं जुग जुग रखी आस, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। मैं तकदी रही उत्ते आकाश, गगन मण्डल बाहर वेख वखाईआ। कवण वेला मेरा साहिब करे प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। मेरे उत्ते निरगुण धार करे वास, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जिस नूं सीस झुकाए शंकर उत्ते कैलाश, ब्रह्मा विष्न निव निव लागण पाईंआ। जिस दे आदि जुगादि सारे दासी दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। जिस दी मण्डल मण्डप वेखां रास, गोपी काहन नच्चण टप्पण कुद्दण चाँईं चाँईंआ। मेरा लहिणा देणा अन्तिम पूरा करे आप अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस अगे मेरी बेनन्ती इक ख़ास, ख़सूसीअत समझ किसे ना आईआ। मेरा दुखड़ा करे नास, दलिद्री डेरा ढाहीआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ मेरे टिल्ले वेखे प्रभास, समुंद सागराँ फोल फुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तके हड्ड नाड़ी मास, अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरी जुग जुग ख़ाहिश अगम्मी, जगत विद्या समझ किसे ना आईआ। किसे जनणी कुक्खों मूल ना जन्मी, शास्त्र वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी पूरी कर सके ना कोए कमी, कामल मुर्शद नज़र कोए ना आईआ। बेशक मैनूं सारी सृष्टी कहिंदी अम्मी, अम्मी कहि के सीस निवाईआ। मेरा लेखा नहीं काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी ना कोए रखाईआ। मैं ब्रह्मा धार नहीं कोई ब्रह्मी, पारब्रह्म दिती वड्याईआ। मेरी वंड नहीं कोई बरनी, वरना रंग ना कोए रंगाईआ । मैं इक्को पुरख अकाल दी समझां करनी, जो करता पुरख इक अख्वाईआ। जिस दी आदि जुगादि ढठ्ठां चरणी, बिन चरणां सीस निवाईआ। कलयुग अन्त उसे मेरी बांह फड़नी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी मंज़ल हक हकीकी चढ़नी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जिस लेख मुकाउणा तन वजूद धरनी, सीस जगदीस फोल

फुलाईआ। जिस दी इक्को तुक सति धार विच सब ने पढ़नी, दूजा इष्ट सृष्टी ना कोए वखाईआ। सो तोड़नहारा हँकार गढ़नी, हउमे हंगता दए गंवाईआ। जन भगत सुहेले जिन्हां धुर दी मंज़ल चढ़नी, दरगाह सच सच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ । टैरस कहे मेरी मिट्टी ख़ाक वाली धरत, धर्म नाल जणाईआ। जिस दा लहिणा देणा पूरब वाली शर्त, मत्तस आपणा भेव खुल्हाईआ। परम पुरख परमात्म तेरे उत्ते आवे परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। तेरी आसा मनसा पूरी करे हवस, हरस अवर ना कोए जणाईआ। शाह शहाना इक इक दा होवे बरस, जगत बरसी वंड ना कोए वंडाईआ। नूर नुराना तेरा धाम सुहाए फ़र्श, अर्शी प्रीतम आपणा खेल खिलाईआ। तेरा लहिणा देणा चार जुग दा झोली पाए कर्ज़, मकरूज आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे मैनूं पुराणी ग़रज़, आशा विच ध्यान रखाईआ। मैं हैरान होई किस बिध खेल होया असचरज, अचरज लील्हा दिती वरताईआ। मेरा नाम सतिगुर शब्द नाम वाला कीता दरज, दरजा आपणा आप समझाईआ। कलयुग अन्त होण नहीं दिता हरज, हरिजन पिछले वेख वखाईआ। मेरी बेनन्ती इक्को अर्ज़, आरज़ू विच सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां नाल
४२१ वंडीं दर्द, दुखियां दर्द आपणे विच समाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कत्ल करे किसे ना करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। ४२१
२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी सच वस्त वरताईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते २४
लग्गा भाग, वडभागण हो के दया कमाईआ। जोती जाते जगाया चराग़, बिन तेल बाती कीती रुशनाईआ। जुग जुग दी बुझाई आग, तृष्ना तृप्त कराईआ। मेरे अन्तर बख्शे इक वैराग, बिरहों तीर तीर लगाईआ। मेरे उत्ते फुल्ल फुलवाड़ी धर्म दी धार महके बाग़, गुलशन आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन हँस बणाए फड़ फड़ काग, दुरमति मैल मैल धुआईआ। धरनी कहे जिस वेले गोबिन्द पहले दिन उडाया बाज़, बाज़ां वाला मेरे उत्ते अक्ख उठाईआ। जो दसवें अवतार ने दिती अवाज़, मत्तस गया सुणाईआ। उस दा लहिणा देणा दीन दुनी कलयुग अन्त जगत दा बदले रवाज, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । टैरस कहे सुण लै धरनी मईआ, मम्मीए अम्मीए तैनूं दयां जणाईआ। पूरब लेखा कढ के वेख लै विच वहीआ, वहिणां गहणां तों बाहर तेरा लेखा नज़री आईआ। की हुक्म संदेशा देवे धुर दा सईआ, श्री भगवान साहिब सुल्तान नौजवान की समझाईआ। जिस दे प्यार विच बुल्हे ने गाया थईआ थईआ, थईआ थईआ कहि के सीस निवाईआ। जिस दा इशारा दिता राम रम्ईआ, बनवासी हो के सीआ गया जणाईआ। जिस दा निशान लगाया काहन घनईया, काहन कान्हा दा मालक इक अख्वाईआ।

जिस लहिणा देणा पूरा करना गोबिन्द वाला ढईआ, ढौंका वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। टैरस कहे मेरा पिछला नाम टिंनमली, रिगवेद मेरी दए गवाहीआ। मेरा मालक खालक ज़ूए अर्ज़ ज़मी, पैग़म्बरां नाल मिलाईआ। मेरी पिछली वेख तशरीह, जो सिफ्तां नाल सलाहीआ। मेरा लहिणा देणा जग विच की, क्यों करता कीमत पाईआ। तूं बलि बलि धरनीए उस साहिब तों थी, जो थिर दा मालक इक अख्वाईआ। जो अमृत धार नाम दा बरसे मींह, मेघला इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरा साहिब बड़ा मेहरवान, मेहरवान इक अख्वाईआ। जो जुग जुग देवे दान, दाता दानी ख़ाली झोली दए भराईआ। एथे ज़रूर धर्म दा धर्म झुलेगा निशान, जिस दा निशान ना कोए मिटाईआ। सतिजुग विच ज़रूर होवेगा प्रधान, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा लेखा नाल ज़िमीं असमान, दो जहान वेखे चाँईं चाँईंआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला टैरस दी धरती करे परवान, जिस दा परवाना जगत लेख ना कोए जणाईआ। धरनी कहे धर्म दी धार मेरा अज्ज दा दिवस महान, महिमा विच प्रभ दे ढोले गाईआ। गुरमुखो गुरसिखो उस सतिगुरु दा धरो ध्यान, जो अन्तर निरंतर सब दे अन्दर वस्या धुर दा माहीआ। जिस गृह सतिगुर नानक गोबिन्द मिले आण, पीर पैग़म्बर अवतार बैठे आसण लाईआ। बिना रसना जिह्वा बत्ती दन्द शब्द अगम्मी गीत गाण, गा गा आपणी खुशी वखाईआ। सच दुआर बंक सोहे अगम्मा मकान, बिन तेल बाती होए रुशनाईआ। धरनी कहे मेरी अन्तर आशा मेरे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार हरि हिरदे अन्दर आपणे प्यार दा दे ज्ञान, अज्ञान अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। तूं आत्मा गोपी दा परमात्मा साचा काहन, आत्म परमात्म गोपी काहन हो के वजे वधाईआ। मैं तेरा शुकर शुक्रिए विच जगत आई मनाण, मन दी मनसा ना कोए रखाईआ । मेरी बेनन्ती बेपरवाह करीं परवान, परम पुरख तेरे चरण कवल टिकाईआ। जन भगतां गुरमुखां सब नूं सच प्रीत दा देवीं दान, दाते दानी काया मन्दिर अन्दर आप टिकाईआ। मन कल्पना कूड़ ना फिरे शैतान, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। निज घर वासी निज गृह निज मन्दिर निज आत्म परमात्म बख्शीं माण, निमाणयां आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी कहे जुग जुग तेरा खेल महान, महिमा अकथ कथनी कथ सके ना राईआ।

✪ पहली बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ मुकन्द सिँघ दे गृह विनीपैग कनेडा ✪

बैसाख कहे प्रभ नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा खेल तक्कया आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण तेरी लख चुरासी वेखी रीत, रीतीवान अगम्म अथाह तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। आत्म परमात्म शब्द नगारा सुणदा रिहा गीत, ढोला सोहला रसना जिह्वा नाल जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणदा रिहों मीत, मित्र प्यारे आपणा खेल खलाईआ। जुग चौकड़ी हर घट जाणदा रिहों नीत, नीतीवान तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरी दस्सदे गए प्रीत, प्रीतम तेरा भेव चुकाईआ। खेल खलाउँदा रिहों मन्दिर शिवदुआले मठ गुरुदुआर मसीत, चर्चा चरागाहां दे वड्याईआ। बिन तेरी किरपा पुरख अकाले दीन दयाले कोए करे ना सांतक सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। तूं मालक ख़ालक एकँकारा जग जीत, जग जीवण दाते तेरी बेपरवाहीआ। बैसाख कहे प्रभू मैं कलयुग अन्तिम होया भय भीत, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जगत जिज्ञासुआं करे ना कोए पतित पुनीत, पावन तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। बैसाख कहे प्रभू मेरे सूरे सरबंग, हरि करते तेरी ओट तकाईआ। निराकार निरँकार ला ला आपणे अंग, अंगीकार आपणी दया कमाईआ। मेरी ख़ाहिश तमंना नव नव चार दी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं बाल निधाना तेरा भुयंग, बृद्ध रूप ना कोए दरसाईआ। तेरे शब्द दा देखदा रिहा तुरंग, जो तुरीआ तों बाहर भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी केते गए लँघ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं वेख वेख हुन्दा रिहा दंग, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। मेरे अन्तर निरंतर कदे ना आया रंज, रंजश विच ना कोए दुहाईआ। मैनूं याद आउँदी जिस वेले कलयुग गोबिन्द धार बणाई प्यारे पंज, पंचम आपणी गंढु पुआईआ। फिर खुशीआं विच नेत्र वगे हंझ, हंझूआं हार बणाईआ। मैं वेखां जगत जहान मंझ, मँझधारा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साची आस रखाईआ। बैसाख कहे प्रभू मेरा नव नव चार तों वखरा प्रविष्टा, पारब्रह्म दयां जणाईआ। मेरा तेरे उत्ते इष्टा, इष्ट देव गुर स्वामी इक्को इक रखाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार आपणी दीन दुनी नव खण्ड तक ला सृष्टा, श्रेष्ट आपणा ध्यान लगाईआ। तेरे उत्ते धर्म दा रिहा किसे ना निस्चा, प्रेम विच ना कोए समाईआ। चारे कुण्ट अन्धेरा दिसदा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं लेख दस्सां किस किस दा, अवतार पैग़म्बर गुर सारे वेखण थांउँ थाँईंआ। हितकार रिहा ना किसे परमेश्वर पित दा, पारब्रह्म तेरी ओट ना कोए तकाईआ। मेरे कोल लहिणा देणा तेरा नित नवित दा, जुग चौकड़ी

आपणे विच छुपाईआ। औह लेखा वेख लै गोबिन्द वाले हित दा, जो हितकारी हो के गया समझाईआ। अन्त प्यार रहिणा नहीं किसे मित दा, मित्र प्यारे जिस तेरी सेज हंढाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा बैसाख कहे मेरे वाली थित दा, घड़ी पल अवर वंड ना कोए वंडाईआ। जगत जिज्ञासू ठगौरा प्या मनूए चित दा, चेतन सुरत ना कोए कराईआ। प्यार रिहा ना एकँकार तेरा इक दा, इक इकल्ले मेल ना कोए मिलाईआ। मनुआ मन किसे ना टिकदा, दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। खेल वेख लै बूँद रित दा, रक्त बूँद खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। बैसाख कहे प्रभू मेरे कोल सतिगुर शब्द दा अगम्मी पत्र, जिस दी काग़ज़ कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। जगत नज़र आवे कोई ना सतर, अक्खरां रंग ना कोए रंगाईआ। जिस विच लेखा गोबिन्द धार दो सत्त सत्त दा पिछला दो सौ सततर, सति सतिवादी तेरे रंग रंगाईआ। जिस नूं समझ सके ना सुघड़ स्याणा चतुर, जगत विद्या कम्म कोए ना आईआ। जिस दा लेखा नहीं नाल गृह नक्षत्र, घड़ी पल वंड कोए ना वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। बैसाख कहे मेरा पत्र की कुछ लिखदा, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। जग नेत्र किसे नहीं दिसदा, लोचन वेखण कोए ना पाईआ। जिस विच भेत अगम्मा भविख दा, भविख्त चार जुग दा फोल फुलाईआ। अन्त प्यार रहिणा नहीं गुरु गुरदेव किसे सिख दा, मुर्शद मुरीद संग ना कोए बणाईआ। धर्म कलयुग कूड़ी क्रिया विच होणा विकदा, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। जगत झगड़ा होवे पत्थर इट्ट दा, पाहन दीन दुनिया वेख बिगसाईआ। बैसाख कहे मैं एस दिवस नूं वेख के पिट्ट दा, पटने वाल्या दयां सुणाईआ। मेरा लहिणा तक लै इक चिट दा, जिस दे चिट्टे उत्ते काला अक्खर ना कोए टिकाईआ। मेरा खेल तेरी धार विच्चों नित दा, नर नरायण तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। बैसाख कहे मेरी चिट्ठी बहु पुराणी, पुराण अठारां सार कोए ना पाईआ। जिस दी बोध अगाध कहाणी, वेद शास्त्र वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं गा सके ना कोए ज़बानी, जिह्वा वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी मंज़ल हथ्थ ना आए रुहानी, रूह बुत ना वेख वखाईआ। कातब लिखे कोए नाल ना कानी, कायनात ना कोए चतुराईआ। जिस दा खेल नहीं जिस्मानी, तन वजूद ना रंग चढ़ाईआ। बैसाख कहे मेरे परम पुरख तेरा हुक्म इक *इस्मानी, इस्म आज़म तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी मंज़ल पन्ध निरबानी, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। बैसाख कहे प्रभू मेरी लिख्त दा वेख ला सिरलेख, निरगुण

धार धार जणाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां पेख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा केहड़ा होवे भेख, रूप अवलड़ा की वटाईआ। की नाम कलमा दएं संदेश, संदेशा धुरदरगाहीआ। केहड़े वसें अनोखे देश, दिशा आपणी दे जणाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मेरे उत्ते तक कलेश, कलकाती बणी लोकाईआ। तूं वेखणहारा आदि जुगादि हमेश, हम साजण तेरी बेपरवाहीआ। जिस कारन मैनूं माण दिता गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा आपणा रंग रंगाईआ। उस दा इशारा देवे विष्न दी धार थल्ले शेष, सहंसर मुख नाल दृढ़ाईआ। औह तक लै अवतार पैग़म्बर सारे प्रभ दे हुन्दे अग्गे पेश, पेशीनगोईआं आपणे हथ्थ उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। बैसाख कहे प्रभू मेरा नाम धरया बैसाखी, विखम दा मार्ग इक दृढ़ाईआ। मैं गोबिन्द मंनी आखी, जो सहिज नाल गया सुणाईआ। मैं तेरी करां राखी, रक्षक हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। मेरे अन्तष्करन इक ख़बर अगम्मी भाखी, भाख्या दे के दयां सुणाईआ। चारों कुण्ट मेरे सतिगुर वेख अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जीवण विच्चों बदले ना कोए हयाती, ज़िंदगी हथ्थ किसे ना आईआ। चार जुग दे शास्त्रां दा लहिणा तक लै काग़ज़ाती, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। मेरी इक बेनन्ती ते इक्को निक्की जेही बाती, बातन पड़दा देणा चुकाईआ। तेरे धर्म दा रिहा ना कोए जमाती, साचा संग ना कोए वखाईआ। अमृत रस रिहा ना किसे प्रभाती, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। निगाह मार लै लोकमाती, मातृ भूमी नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। झट सतिगुर शब्द कहे सुण बैसाख मेरे मीता, मित्रा दयां जणाईआ। औह वेख लै की इशारा दिता राम ने सीता, सति सति विच समझाईआ। कृष्ण संदेशा दे के विच गीता, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। मूसा बिन रसना कहे हदीसा, ईसा इस्म आज़म इक समझाईआ। मुहम्मद सदी चौधवीं दस्सी हक तौफ़ीका, तोफे दिते खलक खुदाईआ। नानक निरगुण धार बदल दिती तवारीखा, तारीख शब्द वाली जणाईआ। गोबिन्द खण्डे धार मार के लीकां, लाइन लाइन विच्चों वखाईआ। बैसाखीए तेरे धर्म धार दी रीता, मन्दिर मसीतां बाहर समझाईआ। इक्को रंग रंगाउणा हस्त कीटा, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाईआ। नाम अमृत रस दे के मीठा, अनरस दयां चखाईआ। अगला खेल कराए अनडीठा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे बैसाखी खेल तक लै बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जो बणया रिहा मलाह, खेवट खेटा धुरदरगाहीआ। जिस ने अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दस्सया राह, रस्ता नाम कलमे वाला

जणाईआ। सुरती शब्द दिती सलाह, मशवरा आपणा हुक्म रखाईआ। अन्तर कहि के वाह वाह, वाहिगुरु शब्द दिता दृढ़ाईआ। खेल दस्स के थल अस्गाह, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर भेव अभेदा आप *तों खुल्हा, ख़ालक खलक दिता समझाईआ। अवतार पैग़म्बरां पन्ध मुका, गुरुआं गोबिन्द जोत कीती रुशनाईआ। अमृत रस आत्म धार चुआ, रस रस विच्चों प्रगटाईआ। खण्डा खड़ग खड़ग छुहा, शौहर बांके दए वड्याईआ। वरन बरन मेट मिटा, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। सच सच दा रंग रंगा, रंगत नाम वाली वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेले आपणे अंग लगा, अंगीकार आप हो जाईआ। पंजां ततां पंचम मेला लए मिला, पंचम मीता होए सहाईआ। पंचम शब्द नाद धुन जणा, अन्तर आत्म राग दृढ़ाईआ। पंच विकारा मोह चुका, अमृत रस रस भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा साचा वक्त सुहाईआ। बैसाख कहे सतिगुर शब्द जुग केते गए लँघदे, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर गए मंगदे, प्रभ अगे झोलीआं डाहीआ । खेल वेखदे रहे तत पंज दे, पंचम पंचम फोल फुलाईआ। अन्तिम जो खेल खिलाए गोबिन्द नूरी चन्द दे, चन्द चांदनयां बाहर रुशनाईआ। जिस भेव खुल्हाए ब्रह्म हँ दे, हँ ब्रह्म दिता समझाईआ। जिस धारो आदि जुगादि निरगुण धार भगत सन्त गुरमुख गुरसिख जम्मदे, आप बणे जणेंदी माईआ। खेल खिला के काया माटी चम्म दे, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। लेखे पूरा कर दे पवण स्वासी दम दे, दामनगीर आप अख्वाईआ। संसा रहे ना हरख सोग ग़म दे, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। बैसाख कहे सतिगुर शब्द मेरे कोल लेख जिस दा कोई ना जाणे अक्खर, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। आह वेख जिस दे गोबिन्द लथ्था सथ्थर, यारड़ा सेज हंढाईआ। नेत्र विरोलया मूल ना अथ्थर, हंझूआं हार ना कोए रखाईआ। जिस नूं कथनी करे कोई ना कथन, कथ कथ ना कोए समझाईआ। बैसाख कहे मेरे उत्ते भेद आया दस्सण, बैसाखी गोबिन्द वाली नाल मिलाईआ। जिस लेख मुकावणा हथ्थो हथ्थण, जगत उधार ना कोए जणाईआ। जिस मेरी धार आउणा मथण, रिड़के ख़लक खुदाईआ। मेरा रोग आवे कटण, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। बैसाख कहे सतिगुर शब्द मेरी वेख अगम्मी तकदीर, कुदरत दे कादर दिती जणाईआ । जिस नूं कर सके ना कोए तहरीर, तारीख विच ना सिफ्त सलाहीआ। जिस नूं लख सके ना कोई फ़कीर, फ़िकरे ढोले ना कोए गाईआ। जिसदा खेल तक्कया कबीर, कबरां तों बाहर वेख वखाईआ। अन्त कहि के बेनज़ीर, नजरीआ आप भुआईआ। शब्द किहा उह मालक पीरां दा पीर, पैग़म्बरां

दा पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जिस नूं कहिंदे लातस्वीर, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जिस दा नाम खण्डा शमशीर, शरअ शरअ विच्चों उलटाईआ । उह लेखा जाणे शाह हकीर, हकीकत आपणी इक प्रगटाईआ। जो निरगुण धार शहिनशाह ते सम्मत शहिनशाही जिस दा वज़ीर, वज़ारत जगत दए बदलाईआ। जो गोबिन्द धार अमृत रस चखाए सीर, अंमिओं रस आप चुआईआ। उह मालक गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। जिस दा खेल बिना शरीर, तन वजूद सोभा पाईआ। जिस ने अन्त चरणा दूर रखणे समुंद सागराँ नीर, जलां थलां भेव कोए ना आईआ। धरनी धरत धवल धौल कीमत रहे ना कोए कसीर, कसीरा रविदास दा दए गवाहीआ। अन्त शरअ दे तोड़े ज़ंजीर, शरीअत आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। बैसाखी कहे प्रभू मैं गोबिन्द दी धार आई दो सौ सततर साल बाद, बादे सहर सीस निवाईआ। मैं अज्ज वखरी मंगणी दाद, दीदा दानिस्ता तेरे अगे वास्ता पाईआ। तूं स्वामी मेरा आदि जुगादि, जुग जुग तेरी ओट रखाईआ। तेरा नाम सुणदी रही नाद, कलमे कलम्यां नाल शनवाईआ। तेरा खेल तक्कया मोहण माधव माध, माधव तेरे हथ्थ वड्याईआ। निगाह मार लै सति धर्म मेरे उत्ते होया बर्बाद, सच विच ना कोए समाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मैनूं कर दे आज़ाद, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। मेरे अन्तष्करन मेट दे वाद विवाद, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मेरे वड वड कर भाग, वडभागण होवां विच ख़लक खुदाईआ। सुत्ती दी खोल्ह दे जाग, विच लोचन नैण कर रुशनाईआ। आपणी सृष्टी दृष्टी अन्दर तक लै बणी काग, काग हँस ना कोए रूप बदलाईआ। रसना जिह्वा कूड़ी क्रिया बुझाए कोई ना आग, गोबिन्द अमृत हथ्थ किसे ना आईआ। बैसाखी कहे मैं लूल्ही लंगड़ी होई अपाहज, कदम सकां ना अगे उठाईआ। मेरे साहिब सतिगुर परम पुरख परमात्म कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों बदल दे राज, रंग आपणा इक रंगाईआ। सच प्यार बख्श दे इक समाज, समग्री इक्को इक वरताईआ। तूं मालक अगम्म अथाह गोबिन्द धार जिस खेल खेलया विच पंज आब, पंचम मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तैनूं पैग़म्बरां किहा जनाब, मैं वी जनाबेआली कहि के सीस निवाईआ। मैनूं दे ख़ताब, ख़ता मेरी मुआफ़ कराईआ। उह लेख वेख जो नानक दस के आया विच बग़दाद, बग़लगीर बग़लीआं बग़ल विच रखाईआ। ... ...

✪ ६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ अर्जन सिँघ दे गृह डीटराइट २२१ फ़ारचून यू० ऐस० ए० ✪

धरनी कहे मेरा खुशीआं वाला दिहाढ़ा छे बैसाख, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे अन्तष्करन अगम्मी आई भाख,

जिस नूं जगत विद्या अक्खरां विच ना कोए गाईआ। जो सच संदेशा नर नरेशा बिन तन वजूद बावन गया आख, बिन रसना जिह्वा ढोले सोहले शब्द सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त खेल करे अलखणा अलाख, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा खेल खिलाईआ। मैं बेनन्ती कीती निमाणी हो के अनाथन नाथ, दीनन हो के सीस झुकाईआ। किरपा कर मेरे परम पुरख समराथ, पारब्रह्म भेव अभेद खुल्हाईआ। मैं ख़ाली बिना हथ्थां उठाए हाथ, धरनी कहे आसमानां बाहर ध्यान लगाईआ। झट शब्द अगम्मी सुणी बात, जिस दा चार जुग दे शास्त्र भेव ना कोए खुल्हाईआ। मैं निव निव टेकया माथ, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं नाल चरण कवल कीती डण्डावत, बन्दना विच सीस निवाईआ। परम पुरख चरण धूड़ देणी निआमत, निराकार निरँकार आपणा रंग रंगाईआ। मेरे अन्तर तेरे प्यार दी रहे अमानत, जुग चौकड़ी सके ना कोए मिटाईआ। तूं मालक ख़ालक नूर नुराना सही सलामत, साहिब स्वामी अन्तरजामी इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी मेरे उत्ते क्यों हुन्दी रही क्यामत, नव सत वेखणा थांउँ थाँईंआ। मेहरवाना महबूबा तेरे हुक्म नाल मेरी बणी बनावट, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण समझ कोए ना पाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों मेरे अन्तष्करन आवे थकावट, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। दरोही क्यों मेरे उत्ते होई बग़ावत, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे जिस वेले बावन निरगुण शब्दी धार मेरे उत्तों लँघया, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा खुशीआं नाल अंगन गया रंगया, लाल गुलाल अगम्म रंग रंगाईआ। प्रेम प्यार "च दासी हो इक्को प्यार मंगया, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे परम पुरख परमात्म दीन दुनी सच चढ़ाउणा चंदिआ, बिन सूर्या चन्द करे रुशनाईआ। बावन खुशी विच किहा जिस वेले सतिजुग त्रेता द्वापर लँघया, कलयुग अन्त वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द खेल करे पुरी अनंदिआ, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रंग रंगाईआ। जिस दा लहिणा देणा अन्तिम होणा नव खंडया, सत्त दीप सोभा पाईआ। जो वेखे विगसे दो जहान ब्रहमंडया, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। लेख मुकाए अन्तिम उत्भुज सेत्ज जेरज अंडया, चारे खाणी खोज खुजाईआ। नाम निधान वखाए खण्ड खंडया, खड़ग इक प्रगटाईआ । जिस ने दीन दुनी विच जगत जहान वन्डया, नाम कलमे संग बणाईआ। उह धरनीए तेरा वेखे अन्तिम कंढया, कन्ढी घाट आपणा डेरा लाईआ। सतिगुर धार एकँकार भेव खुल्हाए अगम्मी डंडया, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। तेरा धर्म सुहाग होण ना देवे रंडया, शाहो भूप मेहर नज़र उठाईआ। उस वेले निशान होणा तारा चंदिआ, सूर्या भान पर्दा परदयां विच्चों

चुकाईआ। धवल तेरा मेटणा हद्द बन्नया, धरनी वेखणा चाँईं चाँईंआ। मानव धार मन मनसा होणी गंदिआ, सच सति विच ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ विकार होणा धंदिआ, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। मानस मानस प्यार होवे ना किसे बंदिआ, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं उस वेले वक्त होणा लँघया, पिछला पन्ध ना कोए जणाईआ। फिरनी दरोही जंगल जूह उजाड़ बेले डूँग्घे डलया, शौह दरया देण दुहाईआ। जगत नेत्र जहान होणा अंध्या, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्ह़ाईआ। अमृत रस रहिणा नहीं गंगया, गोदावरी यमुना सरस्वती रोवे मारे धाहीआ। नवखण्ड तेरे उत्ते वधे पखंडया, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ कल्पना होवे घुमंडया, निम्रता विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं बावन अगे कीती मिन्नत, बिन आसा जगत जणाईआ। निगाह मारी मेरी सिम्मत, दिशा कूट वंड ना कोए वंडाईआ। जिस वेले तेरी सृष्टी होई निन्दक, सच विच ना कोए समाईआ। धर्म दी रहे कोई ना हिम्मत, हौसला हथ्थ किसे ना आईआ। मेरी कल्पणा वाली मेटणी चिन्द, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । धरनी कहे मेरी खुशीआं वाली डेट, डीटरोट विच ध्यान लगाईआ। मैं चार जुग कीता वेट, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। किस वेले मेरा महबूब माही आवे खेवट खेट, ख़ालक ख़लक नूर अलाहीआ। मैं दर्शन करां नेतन नेत, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। जो निरगुण सरगुण करे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेरा पूरब खोल्ह़े भेत, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मैं सच दस्सां जिस कारन गुर अर्जन सीस पुआई तत्ती रेत, तत्ती तवी सोभा पाईआ। तन वजूद करके खेत, पंजां ततां संग छुडाईआ। उह होका दे के गया संदेश, संदेशा धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्त किरपा करे नर नरेश, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। जिस दे अगे सारे होए पेश, पेशीनगोईआं आपणीआं हथ्थ उठाईआ। उह करे अवलड़ा भेस, भेखाधारी आपणा वेस वटाईआ। जिस दा नज़र ना आए मुच्छ दाढ़ी केस, केसगढ़ दा लेखा गोबिन्द नाल मिलाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची सोभा पाईआ। सो धरनीए तेरे उत्तों मेटे कलेश, कलि कल्की आपणी कल वरताईआ। इस दा इशारा सो दिता गोबिन्द दस दस्मेश, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । धरनी कहे मैं बावन अगे कीती अरदास, बिन सीस सीस निवाईआ। मेरी बेनन्ती सुण उत्ते आकाश, आकाश आकाशां तों परे ध्यान लगाईआ। मैं तेरी मण्डल मण्डप तकां रास, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। मेरे

परम पुरख परमात्म तूं आउणा मेरे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। सतिगुर शब्द संदेशा दिता ख़ास, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। धरनीए तूं ना होईं उदास, उदासी चिन्ता ना कोए जणाईआ। उह वेख की आशा रखी बैठा शंकर उत्ते कैलाश, कलधारी आपणा ध्यान लगाईआ। जिस वेले सति सच प्रभू दा नाम रिहा ना किसे विच स्वास, साह साह ना कोए ध्याईआ। नव सत्त कूड़ विकार होवे विलास, बिस्मिल रूप ना कोए दरसाईआ। शरअ दा शरअ करे नास, नाम कलमा कलमे नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे जिस वेले मैं बावन वल्ल तक्कया, निगाह ज़िमीं असमान तों बाहर रखाईआ। मेरा संसा रिहा ना शक्कया, भरमां भरम ना कोए भुलाईआ। मेरा अन्तष्करन होया पक्कया, धीरज धीर विच प्रगटाईआ। मैनूं हुक्म संदेशा मिल्या यकया, वाहिद इक्को इक सुणाईआ। धवले निगाह मार लै बिना परम पुरख तों तेरा पड़दा किसे ना ढकया, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। पुश्त पनाह हथ्थ किसे ना रखया, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बणे कोए ना सख़िआ, सगला संग ना कोए निभाईआ। दीन दुनी जगत जहान जुग जुग तेरे उत्ते जाणे मथिआ, मथन हुन्दी रहे लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा लेखा रसना जिह्वा बत्ती दन्द शब्दी धार नाल जावे कथया, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलदा जावे रथिआ, रथवाही होवे धुरदरगाहीआ। उह वेख लै त्रेता द्वापर कलयुग जांदा नठ्ठया, भज्जे वाहो दाहीआ। अन्तर माण रहिणा नहीं तीर्थ अठ्ठ सठ्ठया, चारों कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। नेत्र रोवे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठया, गुरुदुआर सार कोए ना पाईआ। कलयुग सब दा खेड़ा करना भठ्ठया, अग्नी कूड़ कुड़यार तपाईआ। किसे दी कीमत रहिणी नहीं टका वट्टया, जगत रंग ना कोए रंगाईआ। भाग लग्गे ना किसे काया मट्टया, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरा थान सुहञ्जणा, बैसाख छे मिले वड्याईआ। किरपा करे प्रभ दर्द दु:ख भय भञ्जणा, सागराँ पार मेरे उत्ते दया कमाईआ। जिस दी चरण धूड़ नाल मेरे नेत्र प्या अंजणा, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं चार जुग दा मिल गया साक सज्जणा, मीत मुरारा अगम्म अथाहीआ। जिस दा नव सत्त इक्को नाम दा डंका वजणा, वजह सके ना कोए समझाईआ। जिस दा नूरी दीपक जोत चार कुण्ट जगणा, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। जिस दे हुक्म विच शाह सुल्तान भज्जणा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। जिस दे हुक्म विच कूड़ कुड़यारा वञ्झणा, वञ्झी हाथ किसे ना आईआ। जिस दे हुक्म विच पैंडा पन्ध लँघणा, बीस बीस हरि जगदीश आपणा रंग रंगाईआ। जिस दे अंगीकार सब ने लगणा, गोदी गोद इक सुहाईआ।

जिस ने शरअ दी मेटणी हद्दना, हदूद रहिण कोए ना पाईआ। गोपाल स्वामी मध मदना, मध सूदन जिस नूं सारे सीस निवाईआ। जिस ने आत्म धार कराउणा हज्जना, मक्के काअबे वेखण नैण उठाईआ। सच दुआर दा इक्को पदना, दरगाह साची इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैं बावन चरण झुकदी, निव निव सीस निवाईआ। मैं आवाज़ सुणी अगम्मी तुक दी, जिस नूं रसना जिह्वा सके ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दे नाल मेरी जुग चौकड़ी मुकदी, सतिजुग त्रेता द्वापर बैठण पन्ध मुकाईआ। जिस खेल खिलाउणी मानस ज़ाती उलटे रुक्ख दी, तन वजूदां फोल फुलाईआ। मेरे उत्ते दर्द वंडाउणी मानस मनुख दी, मनुक्खता वेखे थांउँ थाँईंआ । अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जुग चौकड़ी रही पुछदी, सुनेहड़े शब्द शब्द वाले जणाईआ। की खेल होणी उस अबिनाशी अचुत दी, जो चेतन सब नूं दए कराईआ। जिस खेल सुहाउणी आपणी सुहञ्जणी रुत दी, रुतड़ी प्रेम वाली महकाईआ। रख्या करनी मेरी खुल्ही गुत्त दी, गौतम दी आशा वेख वखाईआ। जिस फ़रयाद सुणनी गोबिन्द सुत दी, पिता पूत हो के गोद उठाईआ। जिस कलयुग कूड़ी शरअ मेटणी लुट्ट दी, लुटेरा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरे नेत्रां वगिआ नीर, हंझूआं हार बणाईआ। मैं बावन अगे रखी आपणी तकदीर, जगत हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मैनूं तकणा नाल आपणी तदबीर, तरीका अवर ना कोए जणाईआ। किस बिध मेरा लहिणा देणा होवे नाल शाह हकीर, शाह सुल्तानां रंग रंगाईआ। उस इशारा दिता धरनीए उह खेल तक गुणी गहीर, गहर गवर की दृढ़ाईआ। जो तेरे उत्ते दीन मज़्हब करने तामीर, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गंढु पुआईआ। मानव मानुख मानस देणे चीर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। आपणे हुक्म दा अणयाला ला के तीर, दो जहान विंन्हे थांउँ थाँईंआ। तेरे उत्ते पंज ततां शरअ दे पा ज़ंजीर, नाम कलम्यां बंध बंधाईआ। एह खेल बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। तूं लहिणा देणा लैणा अन्त अख़ीर, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ । जिस नूं सब ने मन्नणा पीरां दा पीर, पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जिस दी दो जहान जागीर, आदि जुगादि जागरत जोत डगमगाईआ। उह तेरे बिना मुख तों अमृत रस पावे सीर, कूड़ कुड़यार अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मैं बावन तक्कया नूर अलाह, तन वजूद माटी ख़ाक नजर कोए ना आईआ। जो बणया बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। दोए करमां विच मिणया मेरा थाँ, थान थनंतर वंड ना कोए वंडाईआ। मैं उस दा सुण अगम्मी नाँ, नाअरा इक्को दिता सुणाईआ। तेरे कदमां बलि बलि जां, चरण कवल तेरी सरनाईआ।

तूं होणा मेहरवां, मेहर नज़र उठाईआ। मेरा पवित्र करना थाँ, थनंतर देणी सरनाईआ। झट शब्द सतिगुर संदेशा दिता आ, आनन फ़ानन गया समझाईआ। धरनी तक लै जल थल नैण उठा, महीअल ध्यान लगाईआ। उह वेख सतिजुग त्रेता द्वापर अन्तिम कलयुग जावे पन्ध मुका, भज्जे वाहो दाहीआ। किरपा करे आप खुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। तैनूं कदे ना करे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं जुग बदलण दी अदा, अदावत तेरी दए मिटाईआ। सदी चौधवीं बणके आवे रहिनुमा, रहमत तेरे उत्ते कमाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां कहिणा साडा नूर अलाह, अमाम अमामा इक अख्वाईआ। जोती जाता हो के पुरख बिधाता हो के आवे वेस वटा, रूप अगम्म अथाहीआ। धरनी धरत धवल तेरा लेखा दए चुका, चुकन्नी हो के रहिणा थांउँ थाँईंआ। तेरे सीने चरण कवल दए टिका, धूड़ी टिक्के तेरे मस्तक ख़ाक रमाईआ। तैनूं कूड़ कुड़यार दीए मुरदीए दए जवा, जीवन जीवन विच बदलाईआ। धरनी कहे मैं झट शुकर ल्या मना, शुकराने विच लागी पाईआ। बिना ज़बान तों कहि के वाह वाह, वाहवा कहि के तेरे ढोले गाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी मेरी कलयुग अन्तिम पकड़ीं बांह, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन किहा धरनीए सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण नैण उठावेगा। एकँकार वेख वखावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान खेल खिलावेगा। पारब्रह्म आप अख्वावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान भेव चुकावेगा। त्रैगुण माया पंज तत लख चुरासी खेल खिलावेगा। सृष्टी दृष्टी अन्दरों वेखे ब्रह्म मति, पारब्रह्म आपणा भेख वखावेगा। तेरे उत्ते धर्म दा फेर बीज बीजे वत, बेवतने वतन तेरा फेर वसावेगा। चरण प्रीती जोड़ के नत, नाता आपणे नाल रखावेगा। जिस उत्ते गोबिन्द यारड़े सथ्थर जाणा घत, सो साहिब सुल्ताना तेरा रंग रंगावेगा। तूं ख़ाली रखणे हथ्थ, झोली तेरी आप भरावेगा। जिस नूं सब ने कहिणा पुरख समरथ, सो साहिब तेरा सगला संग निभावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावेगा। बावन किहा धरनीए इक्को पुरख अकाल दी रखीं ओट, ओड़क तैनूं वेख वखाईआ। बेशक तेरे हिस्से दा नाम होणा डीटरोट, जगत अक्खरां संग बणाईआ। उस वेले दीन दुनी डिग्गी होणी आलणयों बोट, फड़ बाहों ना कोए टिकाईआ। शब्द नाम दी लाए चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जिस दा नूर होवे निर्मल जोत, जोती जाता इक अख्वाईआ। जो सतिगुर शब्द दो जहानां इक्को बहुत दूसर लोड़ रहे ना राईआ। तेरी दुरमति मैल जाए धोत, पतित पावन दया कमाईआ। जिस सारी सृष्टी तेरे उत्ते

आत्म परमात्म इक्को करनी गोत, दूसर वरन बरन रहिण कोए ना पाईआ। सच प्यार मुहब्बत विच कमलीए कोझीए होणा मोहत, मुहब्बत प्रभ दे नाल रखाईआ। तेरे नव खण्ड दे अन्तर अन्तर खोल्हे सोत, सुतीए तैनूं लए जगाईआ। तेरा मालक ख़ालक इक्को इक अगम्मा खौंत, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस दी जुग जुग होवे धौंस, धौंसा नाम वाला वजाईआ। जिस दा वज़न कोई नहीं विच पौंड औंस, गणती गणत ना कोए रखाईआ। उस ने सतिजुग सति चलाउणी रौंस, कलयुग कूड़ कुड़यार मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा साचा संग बणाईआ। धरनी कहे मैं ख़ुशीआं विच हस्सी, बावन दिती वड्याईआ। मैं बिन कदमां तों नस्सी, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। फेर मैं वेखी आपणे उत्ते चारे खाणी चार नाल अस्सी, चुरासी सोभा पाईआ। मैं बेख़बरां ख़बर अनोखी दस्सी, दहि दिशा दिशा दृढ़ाईआ। दीन दुनी अन्तिम प्रभ ने बन्न्हणी दीन मज़्हब वाली रस्सी, गंढु शरअ वाली पवाईआ। मन कल्पणा सृष्टी होणी फसी, फ़ैसला हक ना कोए सुणाईआ। कलयुग धार वेख के मैनूं पै गई गशी, होश मति ना कोए रखाईआ। मैं चड़दी दिशा निगाह मारी मैनूं खेल दिस्या पोशी, बेअन्त बेपरवाह दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैनूं बावन दिता भरोसा, भरवासे विच समझाईआ। मेरा अन्तर नहीं होया होछा, होछी मति ना कोए जणाईआ। मैं चार जुग दे शास्त्रां सुणदी रही पोथा, अक्खरां अक्खरां ध्यान लगाईआ। मेरी बदल ना सकी होशा, बुद्धी जगत ना कोए समझाईआ। मेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरां जगत खेल खेलया अन्त हो ख़ामोशा, पर्दा पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदी रही सोचा, समझ समझ विच्चों उठाईआ। कवण वेला मेरा परम पुरख परमात्म मेरी पूरी करे लोचा, लोचन आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेरा लेखा पूर कराईआ। धरनी कहे मैं आशा विच रखी उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। निमाणी हो के मंगदी रही भीख, भिखक हो के झोली डाहीआ। मेरा साहिब स्वामी मेरे आउणा नज़दीक, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा दर्शन करां लाशरीक, शरअ तों बाहर वेख वखाईआ। ख़ुशीआं नाल करां तारीफ़, ढोले सोहले राग जणाईआ। मेरी आयू होण ना दईं ज़ईफ़, ज़इफ़ल उमर ना कोए रखाईआ। तेरा नाम कलमा सुणां अगम्म हदीस, हज़रतां तों बाहर देणी पढ़ाईआ। मेरा लहिणा देणा तेरे नाल जगदीश, जगदीश्र तेरी ओट तकाईआ। तेरी सिफ्त सलाह बाहर राग छतीस, अक्खर अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीस, दो जहान श्री भगवान बैठण सीस निवाईआ। मेरा लेखे लाउणा चार जुग दा पीसण पीस, पिसर पिदर तेरी आस रखाईआ। तूं मालक

स्वामी मेरा इक जगदीश, जगदीश्र तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब दा मित्र प्यारा मीत, साजण इक अगम्म अथाहीआ। धन्न भाग मेरे उत्ते धर्म दी बदले रीत, मन्दिर मसीत पन्ध मुकाईआ। मानस मानव मानुख करके पतित पुनीत, पतित पावन आपणी दया कमाईआ। केते जुग चौकड़ीआं गए बीत, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। अन्त मेरी काया कर दे ठांडी सीत, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। तूं मेहरवान महबूब त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। मैं तेरा ढोला सोहला गावां एकँकारा गीत, गोबिन्द मेला मेलया सहिज सुभाईआ। मेरा बिना सीस तों तेरे कदमा झुके सीस, बिन धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा आदि जुगादि लेखा एकँकार निराकार इक इकीस, इक इकल्ले तेरी आस आस विच्चों रखाईआ।

✪ ८ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह ४० परीओरी ए० वी० ई० होरनसे लंडन नं० ८ इंगलैंड ✪

धरनी कहे मेरे साहिब श्री भगवाना, भगवन्त कन्त प्रभ तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वाली दो जहाना,
४३४ पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख परवरदिगार शाह सुल्ताना, अगम्म अथाह नूर अलाह ४३४
२४ तेरे हथ्थ वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मैनूं देंदे रहे तेरा पैग़ामा, निरअक्खर धार अक्खरां विच बदलाईआ। तूं किरपा २४
निधान नौजवाना, मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। मैं कलयुग अन्त अन्तष्करन विच होई हैराना, हैरानी विच मेरी दुहाईआ। चार कुण्ट नवखण्ड मेरे उत्ते कूड़ होया प्रधाना, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे ज्ञाना, पारब्रह्म प्रभ मेल ना कोए मिलाईआ। आदि जुगादि जाणी जाणा, जानणहार एकँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं अन्त मेरा कर कल्याणा, कायनात दा कलमा दे बदलाईआ। मेरे रहमान रहीम रहमाना, रहमत मेरे उत्ते कमाईआ। मेरी मिट्टी ख़ाक पवित्र कर अस्थाना, धवल धरत हो के मंग मंगाईआ। तूं मर्द मर्दान वड बलवाना, बलधारी इक अख्वाईआ। सति सच मेरी झोली पा दे दाना, दाते दानी मेहर नज़र उठाईआ। कोझी कमली मातलोक देणा माणा, निमाणी हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे साहिब सतिगुर सरबग, शाहो भूप तेरी सरनाईआ। मेरी धार ना करीं अलग, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। निगाह मार लै चारों कुण्ट लग्गी अग्ग, नवखण्ड अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मैं कूड़ कल्पना विच गई दग्ग, दग़ा फ़रेब करे तेरी खलक खुदाईआ। कलयुग जीव बपड़े हो गए बग, हँस रूप नज़र कोए ना आईआ। दिवस रैण मोह विकार

ततो वाअ रही वग, पवण रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी दुहाई निगाह मार लै आपणी दीन दुनी जग, जागरत जोत बिन वरन गोत वेख वखाईआ। मानस मानव मानुख तेरा दरस करे ना उपर कोई शाह रग, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। धुन आत्मक सुणे कोई ना नद, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। मेरे महबूबा दीन मज़्हब शरअ मेट दे हद्द, हदूद आपणी दे समझाईआ। लख चुरासी तेरी निरगुण धार यद, यदप आपणा पड़दा दे उठाईआ। कलयुग कूड़ कल्पना रहे ना मध, मोहन माधव देणी माण वड्याईआ। मेरे उत्ते सतिजुग त्रेता द्वापर गए लद, कलयुग अन्त वेखणा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी सुण पुकार, बेनन्ती बिनै तेरे चरण कवल टिकाईआ । सो पुरख निरञ्जण सांझे यार, हरि पुरख निरञ्जण तेरी आस रखाईआ। एकँकारे दे अधार, आदि निरञ्जण कर रुशनाईआ। अबिनाशी करते पा सार, श्री भगवान हो सहाईआ। पारब्रह्म मेरा बेड़ा कर दे पार, ब्रह्मा पड़दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द मेरा लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। मैनूं संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, रामा कृष्णा अक्ख अक्ख नाल बदलाईआ। हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद कीती गुफ़तार, गुफ़त शनीद तेरा भेव चुकाईआ। नानक गोबिन्द बोल जैकार, तेरा सोहला ढोला दिता सुणाईआ। मैं संदेशे सुणे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी अक्ख उठाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले अन्त मेरी पाउणी सार, महासार्थी होणा आप सहाईआ। मेरे उत्ते मेट दे धूंआँधार, धरनी धरत धवल धौल कूक कूक सुणाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, बिन नैणां अक्खीआं नीर वहाईआ। मेरी मंज़ल वेख दुष्वार, दुश्मण गृह गृह नज़री आईआ। तेरा करे ना कोई दीदार, दीद ईद ना कोए रुशनाईआ। तन वजूदां अन्दर तक पंच विकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। शब्द अनादी सुणे ना कोई धुन्कार, ब्रह्मादी भेव ना कोए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। तूं मालक ख़ालक अमाम अमामा अगम्म सिक्दार, साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता कलि कल्की अवतार, कल कलेश दा लेखा दे चुकाईआ । तेरे चरण कवल धूड़ी ला के छार, मस्तक टिक्के नाम वाले रमाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते भगत सुहेले होण उज्यार, उजल मुख देणा कराईआ। अमृत रस निझर झिरनिउँ बूँद स्वांती देणा ठंडा ठार, अग्नी तत तत बुझाईआ। घर मन्दिर गृह सुहाउणा बंक दुआर, दुआरका वासी कृष्ण जिस दा इशारा गया कराईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा कागज़ कलम शाही तों बाहर, रसना जिह्वा सिफ्ती सिफ्त ना कोए वड्याईआ। मैं मांगत हो के मंगां तेरा दुआर, धर्म दी धर्म आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं कलयुग अन्तिम बणी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी निरअक्खर धार दी पंगती, पारब्रह्म जगत वंड ना कोए वंडाईआ। मैं तेरे दुआर ते भुखी नंगती, दरवेश हो के सीस निवाईआ। मेरा लहिणा तक लै सदी चौधवीं जांदी लँघदी, मुहम्मद बैठा अक्ख उठाईआ। की धारा वहिणी कूड़ी गंग दी, गहर गम्भीर देणा समझाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं बीस बीसे हरि जगदीशे अन्तिम आशा रखी जंग दी, जगह जगह आपणा नैण उठाईआ। मेरे उत्ते किस बिध निशानी मिटणी तारा चन्द दी, चन्द चांदना कवण रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पुश्त पनाह ना होवे नंगण, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। भागहीण ना होवां मंदन, मंदभाग देणी वड्याईआ। मेरा नेत्र नैण रहे ना अन्धण, लोचन तेरा दर्शन पाईआ। धूड़ी ख़ाक रमा के साहिब स्वामी चन्दन, चन्द सितारे दयां सुणाईआ। जिस नव खण्ड पृथ्मी भरमां ढाउणी कंधन, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जन भगतां आत्म परमात्म टुट्टी आवे गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा दो जहानां विच ब्रह्मण्डण, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेखे चाँईं चाँईंआ। मैं उसे निमस्कार करां चरण बन्दन, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघण, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। मैनूं देवे सच अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द दी धार लेखा जाणे कंगण, तन वजूदां फोल फुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मैनूं तेरा जणाए अगम्मा छन्दन, पारब्रह्म प्रभ मेला मेले सहिज सुभाईआ। धरनी कहे मैं भाग भरी होवां विच लंडन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुधि अठ्ठ दा अठ्ठ रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे अन्तर इक वैराग, वैरी कलयुग देणा मिटाईआ। दुरमति मैल धोणा दाग़, पतित पुनीत देणा बणाईआ। बुद्धी कूड़ रहे ना काग, हँस रूप देणा दरसाईआ। त्रैगुण तत बुझाउणी आग, रजो तमो सतो डेरा ढाहीआ। मेरे गृह जगाउणा चराग़, जोती जाते कर रुशनाईआ। मेरे गृह धरनी कहे लगाउणा भाग, भगवन भाग सिंघ संग आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे प्यार विच परम पुरख होणा विस्माद, दूसर ओट ना कोए तकाईआ।

✪ ६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ मलकीअत सिँघ दे गृह ३२ करानबोरन रोड लंडन नं० १० मुसुरल हिल ✪

नारद कहे धरनीए मैं प्रभ दा भगत चिरां का, चिरी विछुन्नीए तैनूं दयां जणाईआ। मेरे कोल जुग चौकड़ी पुराणा साका, जो निरअक्खर धार विच आपणे कंध उठाईआ। जिस विच्चों हुक्म संदेशा सुणया भविख्त वाका, अवतार पैग़म्बर गुर दीद शनीद ध्यान लगाईआ। मैं हैरान हो गया पुरख अकाले दीन दयाले हुक्म दिता शब्द अगम्मी काका, कलयुग कलकाती ध्यान लगाईआ। जो नौ खण्ड पृथ्मी सब नूं मारे हाकां, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। तूं चार कुण्ट दहि दिशा खोल्ह के रखीं ताका, कुण्डी खिड़की बन्द ना कोए कराईआ। उस दा रूप अनूप बिन अक्खीआं तकणा बांका, छौहर बांका दो जहानां नज़री आईआ। जो ज़िमीं ज़मा वेखणहारा ख़ाका, ख़लक ख़ालक पड़दा आप उठाईआ। अगम्मी अस्व चढ़या होवे राका, जगत जहानां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं प्रभ दा भगत पुराणा एक, एकँकार दिती वड्याईआ। बिना तन वजूद रखी टेक, हड्ड मास नाड़ी रंग ना कोए रंगाईआ। मन मति बुद्ध बाहर आपणा अन्तर रख्या बिबेक, मनसा जगत ना कोए रखाईआ। बिना शरअ तों बणया रिहा नेक, हुक्म विच्चों हुक्म सुणां चाँईं चाँईआ। तेरा कलयुग कूड़ी क्रिया तकां सेक, ममता मोह अग्न तपाईआ। मैं सच दा सच खोल्हण आया भेत, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। उठ के धर्म दी धार नाल वेख, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जिस बिध लहिणा देणा मुकणा मुलां शेख़, मुसायक बैठण पन्ध मुकाईआ । तेरे उत्ते धर्म दी धार बदलणी रेख, ऋषी मुनी ऋषीशर जगदीशर ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै सम्बल देश, देस देसातरां पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तेरा साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी शाहो भूप नर नरेश, एकँकार इक इकल्ला आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए मैं प्रभ दा आदि जुगादी सुत, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। मेरा मालक खालक अबिनाशी *अचुत, चेतन सब नूं दयां कराईआ। जिस तेरी वेखणी कलयुग अन्तिम रुत, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। तूं सावधान हो के उठ, आप आपणी लै अंगड़ाईआ। निगाह मार लै पश्चिम वाली गुठ, की खेल खेले बेपरवाहीआ। जो अन्त कन्त भगवन्त रिहा तुठ, मेहरवान महबूब आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा पाए लुट, लुटेरा कलयुग नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए मेरी आशा जुग जुग प्रभ ने सोधी,

विशा जगत ना कोए जणाईआ। मेरी ज़िमीं असमानां बाहर हिलदी बोदी, अन्त कहिण किछ ना आईआ। मैं खेल खेलया अगम्मी गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द मेरी दए गवाहीआ। मैनूं जुग चौकड़ी प्रभ ने दिती सोझी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। मैं चार जुग दा पुराणा बोधी, बुद्धी तों परे मेरी पढ़ाईआ। तूं की सोचणा उंगल रख के उत्ते ठोडी, ठोकर लग्गे थांउँ थाँईंआ। मैं पुराणा पंडत मेरे हत्थ ला लै गोडी, गुड मारनिंग कहि के सीस निवाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा जोगी, जुगती प्रभ ने दिती चाँईं चाँईंआ । तेरे नाल मेल होया कलयुग अन्त संजोगी, जुग विछड़ीए दयां समझाईआ। क्यों कलयुग मानव ज़ाती माया ममता होई भोगी, आत्म रस नज़र कोए ना आईआ। तेरे उत्ते भार वध्या बोझी, हौला सके ना कोए कराईआ । तूं तृष्ना दी होई रोगी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। की हुक्म संदेशा देवे प्रीतम चोजी, दो जहानां बाहर रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होणा सहाईआ। नारद कहे धरनीए बेख़बरे मार झाकी, तैनूं पूरब भेव खुल्हाईआ। की तेरा लहिणा देणा बाकी, बाकायदा दयां दृढ़ाईआ। की नवीं चलणी साखी, हुक्म संदेशा की सुणाईआ। किस बिध तेरी मैल जाणी काटी, दुरमति मैल रहे ना राईआ। धर्म दुआर दी खुल्हे हाटी, हटवाणा दिसे इक्को माहीआ। धर्म दी मंज़ल दस्से वाटी, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। लेखे लावे गोबिन्द रस अमृत वाली बाटी, पारब्रह्म प्रभ आपणा संग बणाईआ। जोत जगाए मस्तक तेरे नूर ललाटी, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सच सुहञ्जणी करे सेजा खाटी, बिन पावे चूल दए वड्याईआ। पवित्र होवे तेरी नव सत्त दी माटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी वेख वखाईआ। नारद कहे धरनीए मैं आ गया फिरदा फिरदा, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। नी तेरा लहिणा देणा पुराणा चिर दा, चार जुग दा लेखा दयां समझाईआ। बिना अक्खां तों वेख आपणा हिरदा, बिन नैणां नैण तकाईआ। की खेल पुरख अकाल गिरवर गिर दा, गहर गम्भीर की समझाईआ। तेरा खेल सुहञ्जणा रूप तक लै नरायण निर दा, निराकार वेखणा चाँईं चाँईंआ। जिस दे हुक्म नाल गेड़ा गिढ़दा, चारे जुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए मैं प्रभू दा सज्जण मीत, साजणूआ दए वड्याईआ। जिस तैनूं करना ठांडी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। बख़्शणी हक प्रीत, प्रीतम मेला मेले धुरदरगाहीआ। मेरे कोल लेखा अगम्मा जिस दी सारे करन तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। जिस दा बणे कोई ना फ़रीक, शरक्त विच ख़लक ख़ुदाईआ। उस दी सारे करन उडीक, घड़ी पल खोज खुजाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा आया नज़दीक, नेरन नेर नेर अख्वाईआ। जिस दा मार्ग अति बारीक, कदम सके ना कोए टिकाईआ। उह

खेले खेल लाशरीक, वाहिद इक्को नूर अलाहीआ। जिस दी पैग़म्बरां कीती तबलीक, अलिफ़ ये सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल अगम्मा कोश, कुशा दीप ध्यान लगाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी रिहा रूपोश, पेशीनगोईआं विच भेव ना कोए खुल्हाईआ। जिस दी धार विच सारे होए मधहोश, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। जिस सारे कीते ख़ामोश, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। जिस अन्त दीन दुनी लाया दोष, दोसत मित्र मित्र ना कोए बणाईआ। उह वेखणहारा काया माटी पोश, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक खिलाईआ। नारद कहे धरनीए आह वेख लै हाहे उत्ते टिप्पी, टीका टिपणी समझ किसे ना आईआ। आह वेख लै सम्मत शहिनशाही मिती, इक इक नाल मिलाईआ। आह तक लै जिस दी धार जाए ना जिती, दो जहानां संग ना कोए बणाईआ। उस दी सुहञ्जणी वेख लै थिती, घड़ी पल आपणा संग बणाईआ। जिस दी धार अगम्मी निक्की, दो जहानां मुख छुपाईआ। झट धरनी आपणी आशा सिट्टी, बलहीण हो के रही जणाईआ। नारदा मेरी खुल्ही वेख लै लिटी, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मैं दुहथ्थड़ मार के पिट्टी, पटने वाल्या तेरी झल्ली ना जाए जुदाईआ। मेरा झगड़ा मेट दे पत्थर इट्टी, पाहनां सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल पुराणा लेख, जगत अक्खर ना कोए वखाईआ। जिस विच होणा अवल्लड़ा भेस, भेखाधारी आपणा रूप बदलाईआ। दीन दुनी सके कोई ना वेख, लोचन नैण जगत ना कोए चतुराईआ। जो मालक ख़ालक साजण रहे हमेश, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। सो उह सुहञ्जणा करे तेरा देस, परदेसी हो के वेख वखाईआ। जिस कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटणा कलेश, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। सो स्वामी बण नरेश, नर नरायण आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं उस दे होणा पेश, पेशीनगोईआं पिछलीआं नाल मिलाईआ। जिस नूं सतिगुर शब्द सब ने कहिणा दस दसमेश, दहि दिशा दा मालक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए आह तक लै मेरे कोल पुराणी लिख्त, बिन अक्खरां दयां जणाईआ। जिस विच शब्द गुरु दा भविख्त, दूसर समझ किसे ना आईआ। जो लेखा जाणे सबाए सृष्ट, श्रेष्ट आपणा भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म दस्से इष्ट, ईश जीव जगदीश दए समझाईआ। जो संदेशा दिता राम नूं वशिष्ट, विषयां तों बाहर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ।

नारद कहे धरनीए मैनूं मूल ना जाणी पुराणा ब्राह्मण, ब्रह्म विद्या मेरी पढ़ाईआ। मैं प्रभ दा पकड़या दामन, दामनगीर इक रखाईआ। मैं चार जुग दी तृष्ना तकी तामन, आशा मनसा नाल मिलाईआ। तूं दर्शन करना साहिब दा आमन साहमन, सनमुख हो के वेख वखाईआ। जिस खेल खिलाया राम रामन, राम रामा बेपरवाहीआ। जिस संग निभाया कृष्णा काहनन, घनईया सईआ वड वड्याईआ। जिस पैग़म्बरां मेटी अन्धेरी शामन, शमअ नूर जोत कीती रुशनाईआ। जिस गुरु गुरदेव बणाया पतित पावन, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। सो तेरे उत्ते मेहरवान नाम निधाना मेघ बरसे सावण, सावरीआ आपणी दया कमाईआ। भाग लगाए काया माटी चामन, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे तृष्ना तामन, तृखा माया ममता दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल होर पुराणीआं चिठ्ठीआं, बिन अक्खरां लेख जणाईआ। जग नेत्र किसे ना डिठीआं, पुस्तकां वंड ना कोए वंडाईआ। उस विच ख़बरां अगम्मी मिठ्ठीआं, रसना रस ना कोए चखाईआ। जिस कोटन जुग चौकड़ीआं नजिठ्ठीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे पन्ध मुकाईआ। मैं अन्त आशां उसे ते सिटीआं, जो सट्टेबाज़ी वेखे खलक

४४० खुदाईआ। तूं वी उस दे चरणां विच लिटी आं, लम्मी पै के दे दुहाईआ। वक्त लँघा ना लईं गिण के गिटीआं, वेला गया ४४०

२४ हथ्थ ना आईआ । आह वेख लै जिस दीआं धारां आदि जुगादि चिट्टीआं, काला रंग ना कोए चढ़ाईआ। जिस दी आशा २४

विच गुर अवतार पैग़म्बरां ख़ाहिशां टिकीआं, तृष्ना अवर ना कोए जणाईआ। उह वेखणहारा जुग चौकड़ी वार थितीआं, घड़ी पल तेरीआं पलकां पिच्छे खोज खुजाईआ। जिस ने तैनूं वड्याईआं दितीआं, देवणहार अगम्म गुसाँईआ। उह अन्तिम करे हितीआं, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। नारद कहे धरनी इक अगम्मी सुण लै बात आह तक लै की लेख लिख्या पुरातन अज्ज दी रात, नव नव दा भेव चुकाईआ। जिस दा लहिणा देणा नहीं नाल किसे काग़ज़ात, कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे उत्तों झगड़ा मेटणा ज़ात पात, दीन दुनी आपणा भेव खुलाईआ। मालक ख़ालक बण के कमलापात, पतिपरमेश्वर बणे नूर अलाहीआ। सब नूं अन्तर निरंतर अमृत बूँद दए स्वांत, निझर झिरने नाभी कवल विच आप प्रगटाईआ। तेरा लहिणा देणा वेखे लोकमात, मातृ भूमीए तैनूं दयां जणाईआ। अन्त तेरी पुछे वात, वारस हो के वेख वखाईआ। धरनी धरत धवले धौले तेरा बंधाए नात, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। नारद कहे धरनीए आह वेख लै बिन अक्खरां दे धार, धर्म धार जणाईआ।

उह कलि कल्की अवतार, निहकलंका नूर अलाहीआ। जिस नूं सारे रहे चितार, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। गुर अवतार बोल जैकार, ढोले सोहले राग सुणाईआ। उह वसणहारा सचखण्ड दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा निर्मल नूर जोत उज्यार, जोती जाता इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द सुत दुलार, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। तेरा दुखड़ा दए निवार, दुखियां दर्द गंवाईआ। तूं खुशीआं विच जिस दा कीता इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। उह तेरे मस्तक धूड़ी लावे छार, टिक्का नज़र किसे ना आईआ। तूं चरण कवल जाणा बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जिस तेरा लहिणा देणा पूरा करना विच साल दो चार, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। नारद कहे मैं पंडत पुराणा मेरा मेला नाल ओस निरँकार, जो निराकार अख्वाईआ। मैं तैनूं दस्सां नाल प्यार, प्रीती विच समझाईआ। जिस तेरी धरनी धरत धवल धौल दिता अधार, उदर दा लेखा रिहा ना राईआ। धरनी कहे नारदा मैं जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जो आदि जुगादी मीत मुरार, ब्रह्म ब्रह्मादी इक अख्वाईआ। जुग जुग भगत सुहेले करे पार, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। मैं उस नूं करां निमस्कार, निव निव लागां पाईंआ। जो शाहो भूप दो जहानां सिक्दार, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए सुण मैथों असलीअत, असल दयां जणाईआ। मेरे कोल जुग चौकड़ी दी वसीयत, बिन अक्खरां अक्ख आप उठाईआ। जिस दा लेखा समझ सके ना कोए वलदीयत, वलद वालदा नज़र कोए ना आईआ। बुद्धी विच विचार सके ना कोए नीअत, नैण वेखण कोए ना पाईआ। मेरे साहिब दी इक हैसीयत, जिस दा हासल ज़रब अंक नज़र कोए ना आईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त दो जहान उस दी मलकीअत, जो मलकीत सिँघ दए वड्याईआ। जिस तेरे उत्तों झगड़ा मेटणा शरीअत, शरअ शुरू दी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शब्द अनादी नौजवान मर्द मर्दान श्री भगवान इक अख्वाईआ।

✪ १० बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत सिँघ दे गृह ६ गुडविंन वेल रोड
मुसविल हिल नं० १० लंडन ✪

धरनी कहे नारद मेरीआं रोंदीआं अक्खीआं, ब्राह्मणा ब्रह्म विद्या बाहर जणाईआ। की खेल करे मेरा साहिब सुल्तान

अलखीआ, अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। आत्म धार प्यार विच विछड़ीआं सखीआँ, सखी सुल्तान नौजवान नज़र किसे ना आईआ। मैं जुग चौकड़ी आशां ख़ाहिशां सांभ के रखीआं, बिन परदिउँ परदयां विच टिकाईआ। मैं इक वार निरगुण धार गोबिन्द गोबिन्द दस्सीआं, सरगुण संग ना कोए जणाईआ। जिस विच जुग चौकड़ीआं वसीआं, वास्ता प्रभ दे नाल रखाईआ। नाल तकदी रही अन्धेरी मसीआं, अमावस आपणा रूप बदलाईआ। मेरीआं ख़ाहिशां बिना कदमां तों फिरीआं नस्सीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। मैं शरअ ज़ंजीर तके बिना रस्सीआं, तन वजूदां बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे नारदा मैं रोंदी मार के उभी, धीरज नज़र कोए ना आईआ। मैं कमलया फस गई कूड़ कुड़यार विकार दे कीचड़ खुभ्भी, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। दरोही मेरे उत्ते पवित्र रही कोए ना बुद्धी, बुधहीण होई लोकाईआ। धर्म दी धार दिसे कोए ना सुध्धी, शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। उह तक लै की खेल होणा नव सत्त मेरे उत्ते युद्धी, युधिष्टर दी आशा काहन कारन पूर कराईआ। धरनी धरत धवल धौल मैनूं सब ने किहा बसुधी, बेसुध हो के दयां सुणाईआ। अन्तिम सति दी आशा पुज्जी, पाँधी पन्ध ना कोए रखाईआ। मेरे उत्ते वसदी रहे कोए ना झुग्गी, झगड़ा दिसे ना ख़लक खुदाईआ । इक्को जोत निरँकार एकँकार होणी उग्घी, उगण आथण वेखे चाँईं चाँईंआ। मेरी होश हवास आपणी आप उडी, हवस विच समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे नारदा मेरा रिहा ना धीरज यत, सति विच ना कोए समाईआ। मेरी चारों कुण्ट लथ्थी पत, पतिपरमेश्वर दयां सुणाईआ। मेरे स्वामी मेरा लेखा पूरा कर दे वत, बेवतनां दे मालक दया कमाईआ। मैं तेरा सथर बैठी घत, घायल हो के रही सुणाईआ। दीन दुनी तेरे उत्ते उबले रत, हड्ड मास नाड़ी सांतक सति ना कोए कराईआ। चार जुग दे शब्द संदेशे निरअक्खर धार वेख लै ख़त, जगत ख़तूतां वंड ना कोए वंडाईआ। परम पुरख परमात्म सच दिसे ना कोई ब्रह्म मति, पारब्रह्म तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा ख़ालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए तूं किस बिध नीर वहाउँदी, वैणां धार बणाईआ। किस बिध ढोले गांदी, गहर गम्भीर रही सुणाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम थक्की मांदी, बलहीण रूप वटाईआ। किथे आशा गई तेरी सृष्ट सबाई माँ दी, ममताहीण क्यों अख्वाईआ। अन्त खेल तक लै तेरे उत्ते होणी सूर गाँ दी, शरअ शरअ नाल टकराईआ। कलयुग जीवां बुद्धी तक लै काँ दी, कूक कूक रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारदा

मैनूं जुग जुग सब ने दिता भरवासा, धीरज जगत वाली धराईआ। मैं रखदी रही आशा, आशा आशा विच्चों प्रगटाईआ। मैं तकां उपर आकाशा, बिन नैणां नैण उठाईआ। किस बिध मेहर करे मेरा शहिनशाह शाहो शाबाशा, पातशाह नूर अलाहीआ। जो धर्म दी धार पावे रासा, आत्म परमात्म गोपी काहन नचाईआ। मैं उस नूं खोलू के दस्सां खुलासा, ख़ालस आपणा पड़दा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा घर इक सुहाईआ। नारद कहे धरनी उह परम पुरख बेपरवाह, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि दो जहान मलाह, बेड़ा निरगुण सरगुण आपणे कंध उठाईआ। जो दीन दुनी जुग जुग बदले राह, रैहबर बणे नूर अलाहीआ। जिस नूं सब ने कहिणा वाह वाह, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण धार गया आ, आदम रूप शाहो भूप समझ कोए ना पाईआ। जिस दा रसना जिह्वा ढोला सारे गए गा, सिफ्तां वाला सिफ्त सालाहीआ। उह सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी बण के नूर अलाह, आलमीन आपणा रंग रंगाईआ। जो निथावींए तेरी पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे नारदा
४४३ मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी थक्की मांदी, बलहीण हो के दयां दुहाईआ। मैनूं इक्को ओट उस प्रभू दे नाँ दी, जो नाम ४४३
२४ निधाना आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जिस दी धार मेरे उत्ते उस अगम्मी छाँ दी, जिस दा हथ्थ ना कोए उठाईआ । जिस २४
खेल मुकाउणी अन्तिम मेरे उत्तों धर्म धार गाँ दी, गोबिन्द आपणा रंग रंगाईआ। मेरी खुशी बणाउणी चाअ दी, चाउ घनेरा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे धरनीए तैनूं सुणावां ख़बर अज्ज दी, सचखण्ड धार विच्चों प्रगटाईआ। की खेल होणी उस सूरे सरबग दी, जो शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस कला मेटणी कूड़ी अग्ग दी, अग्नी तत बुझाईआ। पैज रखणी सृष्टी पग दी, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। शरअ मेटणी दीन मज़्हब हद्द दी, हदूदां डेरा ढाहीआ। वड्याई बख्शणी आत्म परमात्म यद दी, यदी आपणा खेल खिलाईआ। जिस नूं सारी सृष्टी फिरनी लभदी, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए बेसबरे आपणा कर लै सबर, धीरज धर्म धार जणाईआ। उह मालक ख़ालक ज़ाहर ज़हूर ज़बर, जबराईल जिस नूं बैठा सीस निवाईआ। जिस दा नूर अलाही अगम्मा शेर बब्बर, बाबल दो जहान इक अख्वाईआ। उस दी नाम धार धुन सुण लै मधुर, धुन धुन विच्चों शनवाईआ। जिस तेरे उत्ते दीन दुनी धार पाउणा ग़दर, गदागर करे ख़लक खुदाईआ। तेरी आशा मनसा वेखे सध्धर, पर्दा परदयां

विच्चों उठाईआ। मेहरवाना मेहरवाना महबूब करे नदर, महिबान बीदो आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे धरनीए धवले धौल माज़ीज़ल माज़ूल तुल ज़मी कुज़ाह नूरे अलाह ज़बहीज़ूमा ज़ुफ़तो ज़मी शाहो ज़कूआ नूरे ज़वा ज़बले खुदा मेहरवान महबूब महिबान इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे नारदा मैनूं ख़बर अगम्मी दस्स, दास्तान दे समझाईआ। जिस साहिब दा होणा जस, सिफ्तां विच सिफ्त सलाहीआ। किस बिध हर हिरदे जाए वस, वास्ता तन वजूद रखाईआ। मेरे उत्तों मेटे अन्धेरा मस, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। शब्द अणयाला तीर मारे कस, बिना कमंद उठाईआ। कूड़ कुड़यार हँकार बुरज जाण ढठ, गढ़ रहिण कोए ना पाईआ। मेहर निगाह नाल गेड़ के उलटी लठ, पासा दीन दुनी बदलाईआ। मैं उस दी सरन चरण कवल जावां ढठ, मिट्टी ख़ाक हो के ख़ाक रमाईआ। जिस मेरा पन्ध मुकाउणा नठ नठ, निरगुण हो के भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नारद कहे धरनीए ना पा उच्ची रौला, कूक कूक सुणाईआ। उह मालक ख़ालक धुर दा मौला, गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। जिस दा सब दे नाल इकरार कौला, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जिस दा रूप अलाही अवला, आलमीन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक प्रगटाईआ । नारद कहे धरनीए तेरी वेखे सच प्रीत, प्रीतम हो के खोज खुजाईआ। उह मालक त्रैगुण अतीत, त्रैगुण अतीता इक अख्वाईआ। तूं अन्तर निरंतर गाउणा गीत, बिन रसना जिह्वा ढोला ढोल्यां विच्चों जणाईआ। तेरी काया करे ठांडी सीत, अमृत निझर झिरना रस झिराईआ। बेशक कोटन जुग चौकड़ी तेरे उत्ते गए बीत, नव नव चार पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम बदले रीत, सतिजुग सच सच चमकाईआ। झगड़ा मेटे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। जिस दा नाम नगारा दो जहान गोबिन्द धार वजे रणजीत, रणजीत सिँघ नाम वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हथ्थ रखे तेरी पुश्त पनाह पीठ, भय भाउ अवर रहे ना राईआ।

✪ ११ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ निर्भय सिँघ दे गृह ४१ गुड लैंड गारडन नं० १० लंडन ✪

इक इकल्ले इक एकँकार, इक इक मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तूं आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद नूरी नूर जोत उज्यार,

प्रकाश प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरी धुन्कार, दो जहान नौजवान मर्द मर्दान करनी शनवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले दरगाह साची सच स्वामी परवरदिगार, दरगाह साची नूर अलाह अगम्म अथाह इक अख्वाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी बेनन्ती सुणी पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तूं मालक ख़ालक सदा जुग चार, जुग चौकड़ी तेरी सेव कमाईआ। मैं ख़ादम हो के मंगां धूड़ी छार, चरण चरणोदक देणा जाम प्याईआ। निरवैर हो के मेरे उत्ते निगाह मार, निर इच्छत आपणी अक्ख उठाईआ। मैं धवल दब्बी पापां भार, कूड़ कुड़यार बैठी सीस निवाईआ। मैनूं संदेशा दे के पैग़म्बर गए गुर अवतार, अवतरी तेरी ओट तकाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दार, हुक्म हुक्म विच्चों दे बदलाईआ। नव सत्त मेरी वेख लै गिरयाज़ार, गृह मेरा खोज खुजाईआ। रुत बसन्त रही ना कोए बहार, बहार ख़िज़ां आपणा रूप बदलाईआ। तेरी चुरासी महकी दिसे ना कोए गुलज़ार, गुलशन रूप सच रंग ना कोए रंगाईआ। मैं कोझी कमली रोवां ज़ारो ज़ार, ज़ाहर ज़हूर धुर दे नूर तेरे अगे वास्ता पाईआ। मेरा लहिणा देणा कलयुग अन्तिम दे निवार, निवाज़श विच बैठी सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे
४४५ वल्ल कर ध्यान, वेखणा चाँईं चाँईंआ। तूं मालक ख़ालक दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरी सरनाईआ। मैं पूरब ४४५
२४ दयां ब्यान, अक्खर अक्खरां नाल जणाईआ। मैनूं बावन दे के गया दान, पहला कदम मेरे उत्ते टिकाईआ। पूरब भाषा २४
इंगनाम दस्स के गया इंगलिसतान, चौथा जुग जुग समझाईआ। त्रेते राम सुणाया बिना कान, शब्दी शब्द शब्द धार प्रगटाईआ। भेव खोल्ह्या घनईए आप काहन, काहन कान्हा तेरा पड़दा आप चुकाईआ। पैग़म्बरां तेरा नूर जोत दस्सया महान, नूर नुराने नूर अलाहीआ। नानक निरगुण सरगुण बग़दाद खेलया खेल महान, दजला शहादत रिहा भुगताईआ। गोबिन्द चिल्ला खिच्च के तीर कमान, कामल मुर्शद वंड वंडाईआ। मैं निमाणी तूं मेरा जाणी जाण, जानणहार इक अख्वाईआ। मेरी धरनी पवित्र तेरा अस्थान, अस्थिल आपणा रंग रंगाईआ। मैं खुशीआं ढोले गीत गावां गाण, तेरी तेरी सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरा पुरातन लेखा इंग, पुराण सकंद दए गवाहीआ। जिस दा इशारा कीता शंकर धार लिंग, पाहनां बाहर वंड वंडाईआ। निगाह मारी गोबिन्द कुण्ड हेम, हम साजण हो के वेख वखाईआ। मेरा बावन नाल नेम, निमस्कार डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। मेरा लेखा नाल कामधेन, चौदां रत्नां वेखणा चाँईं चाँईंआ। मैं इशारा दिता भगत रविदास नाल सैण, सैनापत तेरी ओट रखाईआ। मेरे ते निगाह रखी जिस वेले पैग़म्बरां हरफ़ लिख्या ऐन, ऐन दिता दृढ़ाईआ। मैं तेरा ढोला गीत गाउँदी रही गायण, गा

गा शुकर मनाईआ। कवण वेला मेरा माही महबूब मैं तक्कया नैण, नेत्र नेत्रां नाल मिलाईआ। मैं दर दुआर सच बेनन्ती आई कहिण, कहि कहि दयां दृढ़ाईआ। मेरा बुरज कलयुग अन्त लग्गा ढहण, ढाह ढाह ढेरी ख़ाक रमाईआ। मोह विकार शौह दरयाए रोड़्ना वहिण, वञ्झीधार हाथ कोए ना आईआ। मेरे परमात्म आत्म धार देवां देण, देवणहार तेरी सरनाईआ। मेरा लेखा तक लै जो इशारा कीता राम दी धार बाल्मीक विच रमायण, राम रामा खोज खुजाईआ। मैनूं त्रेता द्वापर कलयुग मूल ना आया चैन, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मेरे परम पुरख परमात्म झगड़ा मेट दे दूई द्वैत तर्फैण, तरफ़दार पारब्रह्म ब्रह्म दे समझाईआ। उह लेखा तक लै करबला जो कलमा सुणाया हुसैन, अबास आपणा हुक्म वरताईआ। जो संदेशा दिता रिखव देव जिस धार बन्नी उजैन, उजल तेरा नाम कराईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे चरण कवल तकदी रही बिन नैण, लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं ला लै आपणे अंगी, अंगीकार तेरी सरनाईआ। मेरी चोटी होवे ना नंगी, चोटी चढ़ के वेखणा चाँईं चाँईंआ। जिस नूं गुर तेग़ बहादर किहा फ़रंगी, फ़ैसला शब्द गुर सुणाईआ। गोबिन्द
४४६ धार पंज पंज किहा पंझी, पचीसे तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस निरगुण धार नानक ख़ज़ाना किहा गंजी, बेअन्त तेरे हथ्थ ४४६
२४ वड्याईआ। जिस दा संदेशा दिता कवी धार बवंजी, बावन आपणा हुक्म वरताईआ। मेरे मेहरवाना मेरी अक्ख होण ना २४
देवीं अन्धी, अन्ध अज्ञान दे मिटाईआ। जिस कारन मार के आयों पन्धी, पाँधी हो के फेरा पाईआ। उह तक लै मेला योरोशलम दी नाल संधी, सँध्या सरघी वक्त वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी छाती कमलापाती करनी ठण्डी, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। मेरी आशा मूल ना होण देवीं रंडी, कन्त सुहाग तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादि मेरी टुट्टी गंढी, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। उह निशाना तक लै जो धर्म धार दा जंगी, जगत जहान समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे निगाह मार लै मेरी गाइल, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। सच प्यार मुहब्बत विच कर लै काइल, कादर कुदरत आपणा रंग रंगाईआ। मेरे उत्तों कूड़ कुड़यार मेट दे वाइल, विशा विकार रहिण ना पाईआ। धर्म दा धर्म नौ खण्ड प्रिथवीं जावे फैल, सति दा सति रंग चढ़ाईआ। तेरा नाम निधाना सतिगुर होवे छैल, छैल छबीला इक्को नज़री आईआ। हर हिरदे तेरा होवे डाइल, सिर सके ना कोए उठाईआ। भगत उधारना मेहरवान हो के निर्भयल, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आवण

जावण पतित पावन लख चुरासी जम की फाँसी राय धर्म दी कटणी जेल, दरगाह साची सचखण्ड दुआर एकंकार देणी सरनाईआ।

✪ ११ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ प्यारा सिँघ दे गृह ३० बलफ़ोर रोड साउथ हाल मिडलसऐकस लंडन ✪

धरनी कहे मेरे श्री भगवाना, भगवन भगवन्त भाग मैनूं देणा लगाईआ। नूर प्रकाश दे अगम्मी चन्ना, चन्द चांदनी नव सत्त कर रुशनाईआ। उह लेखा तक लै गोबिन्द वाला कन्ना, कायनात दा लहिणा देणा झोली पाईआ । जिस दी शहादत देवे चौदां सौ तीह अंक दा पन्ना, पारब्रह्म प्रभ वेखणा थांउँ थाँईंआ। जिस दी याद करावे ग़रीब निमाणा जट धन्ना, वड धनाढ ध्यान लगाईआ। मेरा तन वजूद हिस्सा तक लै खंना खंना, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जीव जंत मन मनसा वेख लै मना, तन वजूदां अन्दर ध्यान लगाईआ। नव खण्ड प्रिथवीं मेरा गृह तक लै छप्पर छन्ना, महल अटल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे परम पुरख गोबिन्द कन्ना की की कहिंदा, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। तेरी सरन सरनाई पैंदा, पारब्रह्म धूड़ी ख़ाक रमाईआ। की लेखा होणा दिशा लहिंदा, चढ़दिउँ आपणी अक्ख उठाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद होए खहन्दा, ख़ालक ख़लक की तेरी बेपरवाहीआ। लाल गुलाला रंग चढ़े महिन्दा, जगत नज़र किसे ना आईआ। दीन मज़्हब तेरा भाणा होवे सहिंदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। धरनी कहे मेरा पाटा चीथड़ वेख लै लहिंगा, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। कन्ना कहे मैं गोबिन्द रूप अपारा, अपरम्पर दिती माण वड्याईआ। मेरा रूप अनूप साकारा, शाह पातशाह बैठण सीस निवाईआ। मैं खेल खेलणा विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण थांउँ थाँईंआ। मेरा लहिणा देणा नाल चवीआं अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा अन्त समझ सके कोई ना दाइरा, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। मेरा लेख ग्रन्थ शास्त्रां तों बाहरा, बहरहाल दयां समझाईआ। मैनूं सतिगुर शब्द दिता इशारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। मैं हो गया हुशियारा, सवाधानी विच लई अंगड़ाईआ। मैं लेखा तक्कया चन्द सितारा, सतृा बुलंदी खोज खुजाईआ। मैं धरनी तकी धूंआँधारा, धर्म निशान ना कोए उठाईआ। मैं कूक कीती पुकारा, पुरख अकाल दिता सुणाईआ। तेरा हक दा हक लाए कोई ना नाअरा, नर नरायण तेरी ओट ना कोए

तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दीन मज़्ब कीता ग़द्दारा, गदागर होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा वक्त आप सुहाईआ। कन्ना कहे जिस वेले गोबिन्द मेरी बणाई बणत, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा नाता जोड़या नाल अगम्मी कन्त, जो पुरख अकाल धुर दा माहीआ। जिस दा भेव पाए कोई ना सन्त, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जो लहिणा देणा जाणे जीव जंत, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस नूं बोध अगाधी सब ने कहिणा पंडत, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जिस दी आत्म परमात्म निरगुण निरगुण धार संगत, दीनां मज़्बां लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कन्ना कहे जिस वेले मैं बिना कलम शाही लग्गा, लग मातर नज़र कोए ना आईआ। मेरा रूप होया काला बग्गा, बग बपड़ा डेरा ढाहीआ। मैनूं नज़र आया कलयुग अन्तिम अग्गा, आगमन विच खुशी मनाईआ। मैनूं सति सति दी मिली जगह, जागरत जोत नूर रुशनाईआ। मैं दीनां मज़्बां अगे बन्द कीती हद्दा, हदूद अवर ना कोए रखाईआ। इक्को पुरख अकाल दा दस्स के पदा, पतिपरमेश्वर दिता दृढ़ाईआ। जिस दी चार जुग चुरासी लख यदा, यदी यदप आपणा हुक्म वरताईआ। धुर दा नाम सुणावे नदा, अनहद नादी नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ । कन्ना कहे मेरा बावन धार कर चेता, चरण चरण वेख वखाईआ। जिस ने इक्को दृढ़ाया नेता, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। बलि दुआर खुल्हा भेता, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। कलयुग अन्तिम कर लै हेता, शब्दी शब्द समझाईआ। मैं उस दी रखी टेका, टिक्का मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दा रूप आदि जुगादि अनेका, एकँकारा इक अख्वाईआ। जिस आत्म धार जगत जहान करना एका, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। मैं उस दी होया भेंटा, आप आपणा भेंट कराईआ। जिस गोबिन्द बणाया बेटा, सुत दुलारा गोद सुहाईआ। बण के खेवट खेटा, बेड़ा बिना वञ्झ मुहाणयों आप उठाईआ। मैं उस दी धार लेटा, सुख आसण आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा वक्त आप सुहाईआ। कन्ना कहे मेरा लहिणा देणा नाल निरँकार, निराकार दिती सरनाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आया विच संसार, चार जुग नज़र किसे ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर करां ख़बरदार, बिन रसना जिह्वा ढोला दयां सुणाईआ। कलयुग वेला वक्त लओ विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। जो आसा रख के गए तेई अवतार, त्रैगुण अतीता आप समझाईआ। पैग़म्बर गुरुआं गोबिन्द खेड कीती अपार, अपरम्पर आपणा भेव चुकाईआ। मैं कूक कहां ललकार,

ढोला गावां थांउँ थाहींआ। नव सत्त वेखां हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बावन चरण छुहाया धरनी तेरा कीता उधार, धर्म दी धार नाल दृढ़ाईआ। जिस दी पा सके कोई ना सार, समझ विच ना कोए समझाईआ। कन्ना कहे मैं उस प्रभू नूं करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। जिस दी चार जुग करदे रहे इंतज़ार, बिना अक्खां नैण उठाईआ। उह शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह अगम्म रूप अलाहीआ। मैं उस दा ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। मेरा रूप नहीं पुरख नार, तन वजूद ना कोए रखाईआ। मैं मांगत बणां भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। किरपा करनी आप करतार, कुदरत दे कादर दया कमाईआ। गोबिन्द दी धार विच्चों बख्शणा प्यार, प्यार प्यारे लाल लाल रंग रंगाईआ। जन भगतां लेखे लाउणी घाल, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम करना हल्ल सवाल, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १२ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह ८२ रनेलाघ रोड साऊथ हाल मिडऐकस इंगलैंड ✪

४४६ २४

नारद कहे धरनीए मेंढी गुंद लै सीस, पट्टी पटने वाले दे वखाईआ। निगाह मार लै की खेल करे जगदीस, हरि जगदीश्र धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी पीसण ल्या पीस, घायल हो के सेव कमाईआ । जिस दे प्यार विच लख चुरासी भार चुक्कया आपणे सीस, सरगुण आपणा संग बणाईआ। निगाह मार लै की लेखा तेरा लिख्या नाल दन्द बतीस, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। दीन मज़्हब वाली तक हदीस, हज़रतां हज़ूर की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए कज्जल पा लै अगम्मे नैण, लोचण जगत ना कोए रखाईआ। परम पुरख तक लै साक सैण, मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जो जुग जुग देवणहारा देण, लहिणा सब दी झोली पाईआ। जिस दा लेखा शरअ विच नहीं कोई त्रफ़ैण, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं उस दा संदेशा आया कहिण, बिन रसना दयां सुणाईआ। उहदा नूर तक लै ऐन दा ऐन, जोती जाता सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए आपणा साहिब तक मरगिंदी, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। कमलीए खुशीआं विच मस्तक ला लै बिन्दी, जो वृंदावन विच काहन

गया दृढ़ाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल हिन्दी, खेल खेले थांउँ थाँईंआ। जिस ने लेख मुकाउणा शंकर धार पिण्डी, तेरा पड़दा आप चुकाईआ। जो आशा रखी जीउ पिण्ड इंडी, ब्रह्मण्डां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे धरनीए आपणे तन सुहा लै अंगी, अंगीकार इक्को नज़री आईआ। याद कर लै जो सतिजुग धार मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जिस दे हुक्म विच तेरे उत्ते आउण वाली तंगी, तंग दस्त होए लोकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा होणा अन्धी, धुँदूकार दिसे ख़लक खुदाईआ। तेरा मुकण वाला कलयुग पन्धी, जगत मुसाफ़र रहिण कोए ना पाईआ। शरअ वाली टुट्टण लग्गी बन्दी, बन्दीख़ाना रहिण कोए ना पाईआ। उह तक लै की आसा रख के बैठी गोदावरी यमुना सरस्वती गंगी, गोबिन्द वल्ल ध्यान लगाईआ। जो कलयुग अन्तिम सब दे आवे कन्ढी, कन्ढुण पतण घाट फोल फुलाईआ। नव सत्त तके पाखण्डी, पर्दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। जिस दे हुक्म नाल खड़कणी चण्ड प्रचण्डी, चण्डका चण्ड रूप बदलाईआ। बिना भगतां आत्मा परमात्मा जाए किसे ना गंढी, गंढुणहार गोपाल स्वामी नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा सच हुक्म वरताईआ। नारद कहे धरनीए उह तक अवतार पैग़म्बर गुरु मारदे झातीआं, सचखण्ड बैठे ध्यान लगाईआ। भविख्तां वालीआं कढ के पातीआं, पतिपरमेश्वर चरणां विच टिकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले झगड़ा मेट दे ज़ात पातीआं, दीनां मज़्बां लेखा आपणे नाल मिलाईआ। शब्द निराले तीर मार कातीआं, कत्लगाहां दा डेरा ढाहीआ। कूड़ी क्रिया दे वफ़ातीआ, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। तूं सतिगुर देवणहारा दातीआ, वस्त अगम्म दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सच सच सुहाईआ। नारद कहे धरनीए उह वेख अवतार पैग़म्बर गुरु तकदे, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। आपणे हकूक मंगण हक दे, हकीकत विच्चों आस रखाईआ। साडे शरअ ज़ंजीर कट दे, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। वणजारे बणा लै इक्को नाम हट्ट दे, वस्त अनमुल अतुल दे वरताईआ। तैनूं भेद लख चुरासी घट घट दे, जानणहार तेरी सरनाईआ। दीपक जोत जगा दे लट लट दे, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। परम पुरख परमात्म जे तन वजूद घेरे आएयों जट्ट दे, जटाधारीआं लेखा रहे ना राईआ। असीं डोरी तेरे उत्ते सटदे, आसा तेरे चरण टिकाईआ। झगड़े मेट दे दीन मज़्ब वट्ट दे, मेहरवान महबूब मेहर नज़र इक उठाईआ। जीव जंत तेरा नाम कलमा होवण जपदे, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। सांतक सति शरीर कर दे तपदे, अग्नी कूड़ ना लागे राईआ। लहिणे मुका दे मन मति दे, गुरमति इक जणाईआ। संसे रहिण ना बूँद रत दे, रक्त बूँद आपणा रंग वखाईआ। असीं वास्ता तेरे चरण कवल घतदे, गहर

गम्भीर बेनज़ीर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह आप सुहाईआ। नारद कहे धरनीए गुर अवतार पैग़म्बर तेरे वल ध्यान लगाउंदे, जगत नैण ना कोए उठाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले इक शब्द सुणाउँदे, तूं ही तूं ही राग जणाईआ। निरगुण जोती धार इष्ट मनाउँदे, पंज तत ना कोए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहाउँदे, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम खोज खुजाउँदे, चारे कूटां वेखणा चाँईं चाँईंआ। अन्तिम सब दे नेत्र नैण शरमाउँदे, शरअ शरीअत रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ । नारद कहे धरनीए मेरी सुण खुशख़बरी, बेख़बरे दयां जणाईआ। प्रभू दा खेल होणा ज़बरी, ज़ाबर ज़बर रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा नूर ज़हूर तकणा सब दे उपर अम्बरी, असमानां ध्यान लगाईआ। जो आशा पूरी करन वाला पैग़म्बरी, पीरन पीर नूर अलाहीआ। उस खेल खिलाउणा तेरे जूह कंदरी, टिल्ले पर्वतां वेख वखाईआ। तेरे अन्तष्करन दा तोड़े जंदरी, कुंजी आपणा नाम लगाईआ। तूं कोझीए कमलीए इक मंग मंग लईं, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले दया कमाउणी गोबिन्द चन्न लईं, चन्द चांदना इक चमकाईआ। खेल खिलाउणा साढे तिन्न हथ्थ धार तत पंज लईं, पंचम आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग बणाईआ। नारद कहे धरनीए निगाह मार लै जल्दी, जल धारा बाहर ध्यान लगाईआ। की खेल होणी कलयुग कल दी, कलि कल्की की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस आशा पूरी करनी बलि दी, बावन मिल के वजे वधाईआ। जिस खेल मिटाउणी जल थल दी, महीअल वेखे चाँईं चाँईंआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, की पलकां दे ओहले बहि के हुक्म वरताईआ। ज़रा धार तक लै छल दी, अछल छलधारी की आपणा वेस वटाईआ। किस बिध आत्म परमात्म जन भगतां जोती रलदी, रल मिल इक्को रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। धरनी कहे नारद मेरा साहिब गुणी गहिन्दा, गहर गवर अख्वाईआ। जो मेटे मेरी चिन्दा, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर रखाईआ। मैं उस दी निरगुण धार सरगुण बिन्दा, बिन्दी टिप्पी मेरा रंग बदलाईआ। जिस दे प्यार विच जगत जहान ज़िंदा, ज़िंदगी उसे दे चरण टिकाईआ। जिस दा खेल होणा विच हिन्दा, हिन्दी आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब सहिज सुखदाईआ। धरनी कहे नारदा मैं उसे दी रखी आशा, आहिस्ता आहिस्ता दयां जणाईआ। जिस नूं तकदे उपर आकाशा, आकाश आकाशां खोज खुजाईआ। जिस दा हुक्म मन्नण वाला शंकर कैलाशा, कलाधारी ध्यान लगाईआ। मैं उस नूं गाउँदी

स्वास स्वासा, साह साह समाईआ। मेरा उस दे अगे इक्को अरदासा, जे बेनन्ती सुणे धुर दा माहीआ। मेरी चार जुग दी पूरी करे ख़ाहिशा, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी मिरतक होण ना देवे लाशा, चरण छोह नाल लए उठाईआ। मेरे उत्ते नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जिस इक चलाउणी भाषा, लिपी आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। जिस दे हुक्म नाल नव सत्त उलटणा पासा, करवट आपणी लए बदलाईआ। मैनूं खुशीआं विच आउँदा हासा, हस्ती तकां अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। धरनी कहे नारदा मैं घालणा रही घाल, कलयुग अन्तिम सेव कमाईआ। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। मेरी सुरत लए संभाल, सम्बल दा मालक दया कमाईआ। झगड़ा मेट के शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को रंग रंगाईआ। नाम निधान दे के धन माल, ख़ाली झोली दए भराईआ। जन भगतां हल्ल करे सवाल, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। फल लगावे काया डाल्ह, पत्त टहणी आप महकाईआ। जो सदा सुहेला वसे नाल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोगिंदर सिंघ बिना जोग जुगत बणा के आपणा लाल, लालन आपणी गंढु वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर,
४५२ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सदा होए प्रितपाल, प्रितपालक हो के आपणी गोद ४५२
२४ उठाईआ। २४

✪ १३ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ ईश्वर कौर दे गृह २३ ए बेले वाक मोसैली बिरमिनगोम १३ लंडन ✪

सतिगुर शब्द जन भगतां सदा रंगदा, अन्तर निरंतर आपणा रंग चढ़ाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत करनों कदे ना संगदा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के नज़र उठाईआ। जगत तरीका रखे आपणे ढंग दा, भेव अभेद आपणे विच्चों खुल्हाईआ। स्वामी हो के अन्तरजामी हो के जन भगतां अन्दर लँघदा, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। शब्द सुणाए अनाद अगम्मी मृदंग दा, तन्द सितार अवर ना कोए हिलाईआ। अमृत सरोवर बख्शे निझर धारा गंग दा, बूँद स्वांती नाभी कवल कवल उलटाईआ। भेव खुल्हाए सागर गागर काया मुहाणे वञ्झ दा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द रंग चाढ़े अगम्मा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। लेखे लावे पवण स्वासी दमा, दामनगीर हो के मेला मेले सहिज सुभाईआ। भाग लगावे काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी अन्दरों दए बदलाईआ। भेव खुल्हाए आत्म धार रस देवे परमानंदा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दीन दयाल हो के बदल देवे

जन्मा, जन्म जन्म विच्चों दरसाईआ। साची धार बख्शे धर्मा, धर्म दी धार आप प्रगटाईआ। झगड़ा मुका के वरना बरना, पारब्रह्म ब्रह्म प्रभ मेला मेले सहिज सुभाईआ। निज नेत्र खोल्हे हरना फरना, लोचण इक्को इक दरसाईआ। जिस दे नाल नज़री आवे सतिगुर चरणा, चरण कवल देवे माण वड्याईआ। भेव खुल्हाए अलाही नूर अवला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द साचा रंग जोग, जुगती नाल हथ्थ किसे ना फड़ाईआ। जन भगतां आत्म परमात्म मेला मेले सच संजोग, धुर संजोगी आप अख्वाईआ। माया ममता मोह विकार अन्तर कटे रोग, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। नाम निधान श्री भगवान बख्शे साची चोग, चुगली निंदया अन्तर रहिण कोए ना पाईआ। आत्म सेज सुलखणी परमात्म अगम्मा दस्से भोग, भगवन आपणा संग बणाईआ। जिस नूं समझ सके कोई ना जोग, जगत विद्या वेखण कोए ना पाईआ। साचे रंग दी जीउंदयां हो के देवे मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ। घट स्वामी अन्तर वड़ के करे चोज, चोजी प्रीतम आपणा पड़दा लाहीआ। सच स्वामी सदा दर्शन देवे रोज़, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां चाढ़े रंग चलूल, काया चोली आप रंगाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी कदे ना जावे भूल, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। कन्त सुहागी बण कन्तूहल, कुदरत दा कादर लहिणा देणा देवे अगम्म अथाहीआ। जो आदि आदि दा जाणे मूल, अन्त अन्त विच समाईआ। जिस दी याद रख के गए पैग़म्बर रसूल, बिस्मिल हो के ध्यान लगाईआ। उह जन भगतां सूफ़ीआं सन्तां आपणे दर करे कबूल, किबलेअज़ पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर चाढ़े रंग जगत जगदीश्र, दयावान दया कमाईआ। जिस नूं लभदे कोटन कोटि तपीश्र, सुरती अन्दर भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दी आशा रख के गए रखीश्र, बिन नैणां नैण उठाईआ। सो साहिब स्वामी जन भगतां काया करनहारा सीतल, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। काया गढ़ कंचन करे पीतल, पतित उधारी आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म बण के मीतल, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। भगत उधारना जिस दी रीतल, जुग जुग आपणा संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गीतल, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच विच समाईआ। सतिगुर शब्द रंग चाढ़े अनडिठ, जग नेत्र नजर किसे ना आईआ। अमृत आत्म रस देवे मिठ, बिन रसना रस चखाईआ। पन्ध मुका के सवा गिठ, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। सच सिँघासण अबिनाशण हो के जाए लिट, बिन तन वजूद सोभा पाईआ। दीन

दयाल हो के दर्शन देवे नित, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। ठगौरी रहिण ना देवे चित, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। तन क्यारी देवे सित, नाम निधाना मेघ बरसाईआ। जिस दी सुहञ्जणी घड़ी सुहावी होवे थित, घड़ी पल आपणी बणत बणाईआ। सो लेखे लावणहारा बूँद रित, रक्त बूँद आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। सतिगुर बख़्शणहारा चरण धूड़, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मन ममता दूर कराईआ। विशा विकार अन्दरों कढ्ढे कूड़, क्रिया कुकर्म दा डेरा ढाहीआ। शब्द अनादी बख़्शे तूर, तुरीआ दा पड़दा आप उठाईआ। जोती जाता हो के देवे नूर, ज़हूर नूर इक चमकाईआ। मस्ती नाम बख़्शे सरूर, सुरती शब्द शब्द समाईआ। जो पन्ध मारे नेड़े दूर, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धूड़ कहे मैं रूप प्रभू चरण, चरणोदक रूप दरसाईआ । मेरा ना कोई ज़ात बरन, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं इक्को साहिब दा फड़या लड़न, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मैं निरअक्खर धार ढोले लग्गी पढ़न, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। मंज़ल अगम्मी लग्गी चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मैं भगतां आत्मा लगी फड़न, बिन हथ्थां हथ्थ रखाईआ। अनोखी सेवा लगी करन, करनी दा करता आपणा हुक्म सुणाईआ। मैं तक्कया सुहावणा घरन, गृह मन्दिर वजदी वेखी वधाईआ। मेरा खुल्ल्या नेत्र हरन फरन, फ़ुरनयां तों बाहर दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संगी इक अख्वाईआ। रंग कहे मेरा रंगणहारा इक स्वामी, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादि अन्तरजामी, हरिजन वेखे थांउँ थाँईंआ। जो अन्तर रस देवणहारा ठण्डा पाणी, झिरना आपणा आप झिराईआ। जिस दा लहिणा देणा चारे बाणी, चारे खाणी आपणा संग निभाईआ। उह शाहो भूप बण सुल्तानी, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दा संदेशा दे के गए ज़बानी, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। उह जल्वागर नूर नुरानी, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जो वेखणहारा जन भगतां अन्तर अन्तर निशानी, निशाने दीन दुनी तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। रंग कहे मैं खुशी नाल चढ़दा अन्तर जन भगत, सतिगुर शब्द चढ़ाईआ। जुग जुग निशान मेरा दिसे जगत, रवीदास कबीर दए गवाहीआ। मेरा लहिणा देणा आत्म धार नाल फ़कत, फ़िकरा इक्को इक समझाईआ। अज्ज सुहञ्जणा होया वक्त, ईश्र कौर ईश्वर नाल दयां मिलाईआ। लेखा मुक जाए बूँद रक्त, पंज तत ततां विच समाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को नूर शक्त, शख़्सीयत अवर ना कोए रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां दर खोल्हणा, बन्द किवाड़ रहिण ना पाईआ। बिन रसना जिह्वा बोलणा, शब्द अनादी करां शनवाईआ। बिन कंडे तराज़ू तोलना, नाम निधाना हथ्थ उठाईआ। भगत सुहेला धर्म दी धार विच्चों विरोलणा, आप आपणे रंग रंगाईआ। मेल मिला के नाल माही साचे ढोलणा, दर घर साचा दयां जणाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म इक्को रूप होवणा, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मीत इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां चाढ़्हना रंग अनोखा, निरगुण धार धार नाल मिलाईआ। कलयुग करना अन्त मूल नहीं धोखा, कूड़ क्रिया ना कोए हल्काईआ। मेहरवान हो के मार्ग दस्सया सौखा, जगत मंज़ल पन्ध ना कोए भुआईआ। मनुआ मन होण नहीं देणा थोथा, तृष्ना कूड़ ना कोए हल्काईआ। प्रकाश करना काया कोठा, साढे तिन्न हथ्थ होवे रुशनाईआ। नाम जपाउणा बिना बुल्ल्हां होठां, अजपा जाप विच रखाईआ। प्रकाश दे के निर्मल जोता, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। रंग कहे मैं भगतां चढ़ना ज़बरदस्ती,
४५५ बिन हथ्थां गलवकड़ी लैणी पाईआ। सच खुमारी देणी मस्ती, मस्ती मस्ती विच्चों प्रगटाईआ। नाल मिलाउणा प्रभू दी हस्ती, ४५५
२४ हस्त कीट दा डेरा ढाहीआ। अन्दर इक्को नूर नज़र आवे शरती, साख्यात सोभा पाईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड फिरे उह भगतां २४
अन्दर वसदी, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। खेल मुक जाए जगत कहाणी जस दी, बिन सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। धार देवे आपणे अमृत अगम्मे रस दी, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच आपणे विच्चों प्रगटाईआ। रंग कहे प्रभू भगतां आसा करदे पूरी, पूरन ब्रह्म दे समझाईआ। तूं मालक ख़ालक हाज़र हज़ूरी, शाहो भूप तेरी सरनाईआ। आपणा नूर बख्श दे नूरी, नूर नुराने डगमगाईआ। तुरीआ दा पड़दा लाह दे तूरी, तुरत मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ । रंग कहे अज्ज भगत नूं तारना ज़रूरी, राम राम राम दशरथ दे बेटे दे संग दी वेख वखाईआ। बेशक एह जगत जहान दुनिया कूड़ी, लालच लोभ विच हल्काईआ। हरिजन बख्श दे आपणी धूड़ी, टिक्के नाम नाम ख़ाक रमाईआ। तूं आदि जुगादि बड़ा दस्तूरी, शाहो भूप अगम्म अथाहीआ। सब दी लेखे ला लै जन्म जन्म दी मज़दूरी, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मन्दिर आप सुहाईआ। सतिगुर शब्द रंग कहे मैं इक्को इक मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं स्वामी दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागराँ पार कराईआ। तैनूं सब ने किहा गोपाल मूर्त मदना, मधसूदन इक अख्वाईआ। आत्म धार

बख्श दे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सच दुआर एकँकार कबूल करे बन्दना, बन्दगी आपणे लेखे पाईआ। तूं आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। बिन तेरी किरपा सच दुआर किसे ना लँघणा, सचखण्ड मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे रंग, साचे रंग ज़रूर चढ़ावांगा। जगत अन्धेरा मेट के अन्ध, अन्ध अज्ञान दा डेरा ढाहवांगा। काया मन्दिर अन्दर नौ दुआर दा मेट के पन्ध, दस्म दुआर आप टिकावांगा। अमृत धार चवा के बिना दन्द, बिन रसना रस चखावांगा। जोती जाता हो के जावां लँघ, सच सिँघासण इक सुहावांगा। बिन पावा चूल वेख पलँघ, सोभावन्त हो के डेरा लावांगा। दिवस रैण नूरी चाढ़ के चन्द, जोती जाता हो के डगमगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणावांगा। सतिगुर शब्द कहे ईश्र कौर आत्मा तारी, तन वजूद जगत दी चोली जगत रखाईआ। सच आत्मा ना पुरख ना नारी, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। घर मन्दिर अन्दर सोहे महल अटारी, छप्पर छन्न दा पन्ध मुकाईआ। किरपा करे आप बनवारी, बसन कसुंभड़ा रंग ?बदलाईआ?। धूड़ दे के मस्तक छारी, टिक्के सच सच रमाईआ। आवण जावण पन्ध दए निवारी, चुरासी फाँसी जम रहिण कोए ना पाईआ। राय धर्म ना लेख दस्से लिखारी, चित्रगुप्त ना कोए चतुराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेख सकण ना नैण उग्घाड़ी, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर खुशीआं नाल देवण प्यारी, बिन हत्थां हत्थ टिकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सचखण्ड बंक वखाए जिथ्थे जगे जोत अपर अपारी, अपरम्पर स्वामी सोभा पाईआ। फेर जन्म लैणा पए ना दूजी वारी, आवण जावण रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर इक वखाईआ। आत्मा कहे मैं सच घर जावांगा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आकाशां पन्ध मुकावांगा। नाम निधाना श्री भगवाना, बिन रसना जिह्वा गावांगा। बण के सूरबीर मर्द मर्दाना, बिन कदमां कदम उठावांगा। जो खेल करे मेरा मेहरवाना, तिस नूं आपणी झोली पावांगा। जा के दर्शन करां उस कान्हा, जिस काहन नाल मिल के सखी रूप ना फेर वखावांगा। इक्को गृह मन्दिर घर सचखण्ड होवे मकाना, दरगाह साची सोभा पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेल आप मिलावांगा। आत्मा कहे मेरे अन्तर हुन्दा चाउ घनेरा, जो रम्ईआ राम गया जणाईआ। मैं गोबिन्द धार सतिगुर शब्द दा बणया चेरा, जो चिरीं विछुंनयां मेल मिलाईआ। मेरा काया काअबा मन्दिर बणाया साचा दयोहरा, दोहरा आपणा रंग रंगाईआ। मैं पिच्छे होर दा बण गया होरा, अगे अवर दा अवर रूप वखाईआ। लेखा रिहा ना तोरा मोरा, मोर तोर

दा रूप ना कोए वटाईआ। मैं सतिगुर शब्द दा बण के बांका छोहरा, जोबनवन्ता हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मेरा आवण जावण लख चुरासी पन्ध मुक गया धरनी धरत धवल धौल उत्ते अन्धघोरा, गर्भ निवास रहिण ना पाईआ। अगे शरीर दा वक्त रह गया थोड़ा, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा परमात्म नाल निरगुण निरगुण होणा जोड़ा, जुड़या जोड़ ना कोए तुड़ाईआ। मैनूं बिना अक्खां तों नज़र आउँदा सस्से उत्ते होड़ा, हाहे टिप्पी हँ ब्रह्म रूप रूप दरसाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक होए सहाईआ। रंग कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। मेरे भगत वछल गिरधार, मेहरवान महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। चरण कवल उपर धवल देणा सहार, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतां पूरब लहिणा देणा झोली देणा डार, मकरूज कर्ज़ा सब दा देणा मुकाईआ। उह तक चारों कुण्ट अन्ध अँधयार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण होवे ना कोए रुशनाईआ। नव सत्त हाहाकार, हउमे हंगता भरी लोकाईआ। निगाह मार लै जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। नव सत्त धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। चार जुग दे शास्त्र करन पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तीर्थ तट रोवण ज़ारो ज़ार, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रोवण मारन धाहींआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ पाए कोई ना सार, महासार्थी नज़र कोए ना आईआ। पंज तत ब्रह्म मति दए ना कोए अधार, उदर दा लेखा ना कोए मुकाईआ । रंग कहे प्रभू आप निरँकार, निरवैर हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले अन्तर आत्म परमात्म धार करने मेले, मिलणी हरि जगदीश आपणे नाल कराईआ।

✪ १३ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह ६५ केरनस सटरीट वालसाल सटाफ़ लंडन ✪

सतिगुर शब्द कहे विष्नूं लै अंगड़ाई, बाशक सेजा सांगोपांग तजाईआ। विश्व दी धार तक दुहाई, दरोही फिरी ख़लक ख़ुदाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होई निर्मोही, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। प्रभू दा भगत प्यारा दिसे कोई, कोटां विच्चों सूफ़ी सन्त फ़कीर नज़री आईआ। नाल तक लै अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी पेशीनगोई, लिख्त भविख्त नाल मिलाईआ। सुरती उठे किसे ना सोई, शब्द नाद धुन ना कोए शनवाईआ । अमृत बूँद निझर झिराए ना कोई, बिन रसना रस जगत वखाईआ। धर्म दी धार पत गई खोही, सति सच ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, सच दुआर ना कोए सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मे वेख लै ब्रह्म मति, मातलोक ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै पंज तत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। धीरज रिहा कोई ना जत, सति सतिवाद रंग ना कोए रंगाईआ। विकार हँकार विच उबले रत, रत्न अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं भविख्तां वाले दिते ख़त, ख़तूतां पढ़ के ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म प्यार रिहा ना नत, साचा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ । सतिगुर शब्द कहे निगाह मार लै शंकर कैलाश, कलाधारी की खेल खिलाईआ। लख चुरासी जीव जंत तक लै लाश, हड्ड मास नाड़ी फोल फुलाईआ। पवण पवणी वेख स्वास, साह साह ध्यान लगाईआ। प्रभू उत्ते रिहा नहीं किसे दा विश्वाश, विषयां विच ख़लक खुदाईआ। काया मण्डल पाए ना कोए रास, गोपी काहन सुरत शब्द नाच ना कोए नचाईआ। नूरी दीपक जोत दए ना कोए प्रकाश, बिन तेल बाती डगमगाईआ। नव सत्त दिसे प्रभास, प्रभ दा रंग नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने लाह के वेखो पड़दा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। खेल वेखो चोटी जड़ दा, की चेतन आपणा संग बणाईआ। जगत जहान वेखो सड़दा, बिन अग्नी तत तपाईआ। बिन शत्रुआं वेखो लड़दा, मन मनसा होई हल्काईआ। नव खण्ड गृह बणया हँकार गढ़ दा, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। निशाना तको सीस धड़ दा, तन वजूदां फोल फुलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे सतिगुर शब्द मैं तक्कया संसार, बिन अक्खीआं वेख वखाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, नूर चन्द ना कोए रुशनाईआ । सृष्टी दृष्टी अन्दर हाहाकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। माण रिहा ना किसे पैग़म्बर गुर अवतार, चार जुग दे शास्त्र रोवण मारन धाहीआ। दरोही फिरी अठसठ तीर्थ मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआर, काअबा दो दो आबा मेल ना कोए मिलाईआ। अमृत रस किसे मिले ना ठंडा ठार, बूंद स्वांत ना कोए टपकाईआ। मानस मानव मानुख धरनी धरत धवल धौल उत्ते होण ख्वार, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। विश्व दा मालक मिले ना किसे निरँकार, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। मैं बिना अक्खीआं तों दो जहान निगाह लई मार, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। मेरी इक बेनन्ती बिना अक्खरां तों गुफ़तार, गुफ़त शनीद दयां सुणाईआ। निगाह मार लै जो वायदे कीते नाल पैग़म्बर गुर अवतार, शब्दी शब्द शब्द संदेश सुणाईआ। सो लहिणा देणा मकरूज कर्ज़ा दे उतार, उत्तर पूरब पश्चिम

दक्खण झोली ख़ाली दे भराईआ। जगत मंज़ल महबूब वाली होई दुष्वार, मुकद्दस हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा इक रखाईआ। ब्रह्मा कहे सतिगुर शब्द आदि जुगादि पारब्रह्म, ब्रह्म वेता हो के दयां जणाईआ। सति सच दा रिहा कोई ना धर्म, धरनी धरत धवल धौल उत्ते दुहाईआ। निहकर्मी हो के दीन दुनी दा वेख लै कर्म, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। निगाह मार लै काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी भरी दिसे लोकाईआ। भाण्डा भन्ने कोई ना भरम, भय भउ ना कोए रखाईआ । फिरी दुहाई वरन बरन, ज़ात पात प्रेम ना कोए रखाईआ। दीन मज़्ब इक दूजे नाल लड़न, नाम कलमे झगड़ा रहे पाईआ। साची विद्या जगत जिज्ञासू मूल ना पढ़न, सोहँ सति सरूप ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म फड़े कोई ना लड़न, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। भय विच मूल ना डरन, हँकार विच ख़लक खुदाईआ। तूं स्वामी करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। महिमानत हो के मंगां तेरे दरन, दरवेश हो के अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। शंकर कहे सतिगुर शब्द की दस्सां खेल अपारी, भेव अभेद जणाईआ। बेशक मैं लख चुरासी दा सँघारी, जीवत रहिण कोए ना पाईआ। मेरा भय रिहा ना विच संसारी, सहिंसिआं विच दीन दुनी नज़री आईआ। चारों कुण्ट हाहाकारी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। आत्म परमात्म दिसे कोए ना यारी, यराना सतिगुर शब्द ना कोए निभाईआ। प्यार रिहा ना पुरख नारी, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। जिधर तकां हाहाकारी, हैरत विच मेरी दुहाईआ। मैं सदा तेरी रहां विच ताब्यादारी, निव निव सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी मेटां दीन दुनी ग़द्दारी, गदा तेरा नाम भवाईआ। मैं वक्त तकणा की संदेशा दिता पैग़म्बर गुर अवतारी, अवतरी की जणाईआ। चारों कुण्ट करां ख्वारी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव उठो लओ अंगड़ाई, ग़फ़लत रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द दा वक्त लँघया वेखो सदीआं ढाई, ढईआ आपणा पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं दोवें भुजां रही उठाई, चौदां तबकां ख़ाली हथ्थ वखाईआ। सदी बीसवीं रो रो मारे धांही, बिन नैणां नीर वहाईआ। किरपा करीं मेरे गुसांई, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। जिस कारन गोबिन्द बूटा पुटया काई, कायनात दा लेखा देणा मुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी वेखणी धरनी वाली थाँईं, थनंतरां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मार्ग आप दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव वेखो आपणा पिछला वक्त कदीम, कुदरत दे कादर की जणाईआ। जो मालक ख़ालक वाली दो जहान अज़ीम, आलीजाह

शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस ने जुग चौकड़ी कीती तकसीम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। उह ते करन वाला तरमीम, तरतीब आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा सके कोई ना चीन, बुद्धी विच समझ कोए ना आईआ। उस दा मार्ग अगम्म महीन, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उह प्रगट हो के उत्ते ज़मीन, ज़िमीं ज़मां वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा रूप नहीं नर मदीन, नर नरायण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण सतिगुर शब्द असीं उस दे बरदे, बन्दगी विच सारे सीस निवाईआ। सेवक सेवादार उस दे घर दे, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। आदि जुगादि रहे डरदे, भय विच बैठे सीस निवाईआ। भिखारी रहे अगम्मे दर दे, ख़ाली झोलीआं अगे डाहीआ। साडे भण्डारे भर दे, दो जहान दे वरताईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर आपणी कर दे, करता पुरख तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त वस्त वरताईआ । सतिगुर शब्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव पुरख अकाला करे इन्साफ़, अदली इक्को इक अख्वाईआ। दीन दुनी तके गुस्ताख़, सृष्टी दृष्टी अन्दर वेख वखाईआ। बिना भगतां कदे किसे करे ना मुआफ़, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ । शंकरा तूं ख़बरदार रहिणा उत्ते कैलाश, कलधारी आपणी कल वरताईआ। धरनी उत्ते चढ़नी कूड़ कुड़यारी लाश ते लाश, लशकर नज़र कोए ना आईआ। माया ममता करनी नास, मोह विकार देणा मिटाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म दी करनी तलाश, भज्जणा वाहो दाहीआ। विष्नूं विश्व दा भेव खोलृणा शहिनशाह शाहो शाबाश, शरअ दी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। विष्न शिव ब्रह्मा तिन्ने करन सलाह, मशवरा सतिगुर शब्द नाल बणाईआ। सब दा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा नूर अलाह, आलमीन कहि के सीस निवाईआ। जिस नूं गुरुआं किहा वाह वाह, वाहिगुरु तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस नूं अवतारां किहा राम रामा अगम्म अथाह, अगम्मढ़ी खेल खिलाईआ। सो वेखणहारा दो जहां, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलाईआ। सुणे पुकार जगत धरनी माँ, की आपणा हाल जणाईआ। कलयुग अन्तिम दीन दुनी तके बुद्धी काँ, जो काग वांग कुरलाईआ। अन्त झगड़ा वेखे सूर गाँ, गोबिन्द हो के धुर दा माहीआ। कोटां विच्चों जन भगतां पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं अन्त करे हक न्याँ, हकीकत दा मालक हो के वेख वखाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग दए बदला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक दरसाईआ। विष्नूं कहे मैं देवां रिज़क सबा, सतिगुर शब्द दिती वड्याईआ। ब्रह्मा कहे मैं ब्रह्म नूर करां रुशना, पारब्रह्म

भेव खुल्हाईआ। शंकर कहे मैं लहिणे देणे दयां मुका, दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल दा इक्को राह, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादि बणे मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। जो सब दा होवे पिता माँ, पूत सपूते आपणी गोद टिकाईआ। निरगुण धार सरगुण दृढ़ा के धुर दा नाँ, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ। सदा सुहेला हो के देवे ठण्डी छाँ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां नित नवित पकड़े बांह, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तिस साहिब कोलों सतिगुर शब्द कहे आदि जुगादि बलि बलि जां, विष्न ब्रह्मा शिव निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे तिन्ने करो विचार, जगत अक्ल ना कोए रखाईआ। बिन नेत्रां निगाह लओ मार, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जिस दे हुक्म विच सेवा कीती नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण सरगुण हो के बणे रहे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कीता इज़हार, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे अपर अपार, अपरम्पर हो के आप खिलाईआ। जिस नूं सब ने किहा कलि कल्की अवतार, निहकलंक आपणा रूप प्रगटाईआ। सब दा लहिणा देणा झोली देवे डार, पूरब लेखा आप मुकाईआ। उठो वेखो दीद दरस करो दीदार, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण सतिगुर शब्द साडी इक बेनन्ती, जगत तृष्ना ना कोए रखाईआ। सानूं याद आदि दी उस दी इक पंगती, जो शास्त्रां ग्रन्थां बाहर दृढ़ाईआ। जिस ने सतिगुर शब्द तैनूं बोध अगाध बणाया पंडती, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। उह खेल जाणे ब्रह्म हँ दी, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस दी धार विच्चों साडी धार जम्मदी, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। जिस खेल खिलाई त्रैगुण माया पंज तत काया माटी चम्म दी, चारे खाणी रंग रंगाईआ। जिस दा हुक्म दो जहानां धार मंनदी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस आशा पूरी करनी अन्त आपणे गोबिन्द चन्न दी, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। पैज रखणी आपणे भगत जन दी, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। खेल मुकाउणी छप्पर छन्न दी, जूह जंगल उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत समुंद सागर वेख वखाईआ। इक्को अवाज़ आउणी जिस दे नाम धन्न धन्न धन्न दी, धरनी धरत धवल धौल निव निव लागे पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग खेल मुकाए ग़म दी, ग़मखार हो के आपणा हुक्म वरताईआ।

४६२
२४

✪ १४ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश राम दे गृह १०३ रालघ सटरीट वालसाल सटाफ़ लंडन ✪

विष्न ब्रह्मा शिव प्रभ दर बण सवाली, भिखक हो के ध्यान लगाईआ। किरपा कर निरगुण नूर जोत अकाली, अक्ल कल धारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी दीन दुनी सति धर्म विच्चों होई ख़ाली, ख़लक दे ख़ालक ख़ालस रूप ना कोए दरसाईआ। तूं आदि जुगादि लख चुरासी माली, मालक मेहरवान नूर अलाहीआ। तेरे हुक्म विच जुग चौकड़ी घाल घाली, घायल हो के सेव कमाईआ। तूं निगाह मार के वक्त तक लै हाली, हालत वेख थांउँ थाँईंआ। नाम कलमा शरअ करे ना कोए दलाली, विचोला नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान मेहरवान आपणी मेहर कर दे शाली, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। निगाह मार लै जीवां जंतां काया गगन मण्डल ख़ाली, मण्डप आपणा ध्यान लगाईआ। आत्म धार तेरे प्यार विच किसे ना ढाली, ढईआ गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। नव सत्त दिसे रैण अन्धेरी काली, कलि कल्की तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। निगाह मार लै शरकन शमाली, चारे कुण्टां वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीती कमाली, कामल मुर्शद तेरे अगे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आशा तेरे चरण टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभ कूड़ी क्रिया तक लै दरब, दीनन आपणा ध्यान लगाईआ। जन संख्या वेख लै अरब ख़रब, खेरया पर्दा आप चुकाईआ। हुण ज़ीरो नाल ज़ीरो दे के ज़रब, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। सानूं तेरी मेहर दी इक्को ग़रज़, दूसर आस ना कोए तकाईआ। साडी बेनन्ती मन्ज़ूर कर अर्ज़, आरज़ू तेरे चरण रखाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी असचरज, अचरज लीला तेरी नज़री आईआ। दीन दुनी दे मालक साडी वंड दर्द, दुखी हो के रहे सुणाईआ। जगत शरअ वेख लै छुरी करद, कातिल मक्तूल रूप वटाईआ। जो योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, शहिनशाह इक अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण सति दी पुट्ठी हो गई नरद, पासा दीन दुनी उलटाईआ। असीं कूक सुणाईए गरज, दर तेरे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभू निगाह मार लै उत्ते फ़लक, आसमानां बाहर ध्यान लगाईआ। तेरा नूर अलाही अगम्मा झलक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। आह तक लै आपणी ख़लक, ख़ालक पड़दा आप चुकाईआ। तेरा मेल होवे ना किसे पलक, पलकां ओहले नज़र आए ना धुर दा माहीआ। नूर ललाटी लग्गे किसे ना तिलक, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। नाम खुमारी करे कोई ना मस्त, मस्ती विच ना कोए समाईआ। झगड़ा तक लै कीट हस्त, कीट कीटां खोज खुजाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा कर दे दस्त, हथ्थो हथ्थ लेखा दे मुकाईआ। जो इशारा दे गया मुनी अगसत, सप्तस ऋषीआं संग बणाईआ। जिस कारन

अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरी सृष्टी विच कीती गशत, बिन कदमां कदम उठाईआ। अन्त सब नूं आउँदी वेख शकसत, जित बैठी मुख छुपाईआ। धर्म दी धार रही कोई ना वस्त, अमुल नाम ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभ साडी वेख लै हालत, हाल अहिवाल तैनूं दईए जणाईआ। धर्म दी धार कर अदालत, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम वस्त रही ना कोए अमानत, ख़ाली दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। ईमान विच रिहा ना कोए सलामत, सुल्हकुल नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे बग़ावत, बग़लगीरां संग तुड़ाईआ। अंमिओं रस मिले ना कोए निआमत, अनरस ना कोए चखाईआ। सानूं सच दस किस वेले दीन दुनी उत्ते आउणी क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। सति कूड़ दी होए मुज़ाहमत, मसला समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक खेल खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण असीं प्रभ आदि आदि दे भिखारी, जुग जुग मंग मंगाईआ। तूं देवणहार दातारी, दया निध इक अख्वाईआ। साची तेरे चरण कवल निमस्कारी, निव निव सीस झुकाईआ। कलयुग मेट रैण अँधयारी, अन्ध आत्म पड़दा लाहीआ । निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, उजाला दो जहान वखाईआ। असीं रहीए विच तेरी ताब्यादारी, जुग जुग सीस झुकाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। इक बेनन्ती सुण हमारी, हम साजण हो के दईए जणाईआ। शंकर कहे मैं जल्दी करां तैयारी, त्रैगुण अतीते देणी माण वड्याईआ। लाड़ी मौत देवां शृंगारी, सोहणी मेंढी सीस गुंदाईआ। नैण पावां कज्जल धारी, मस्तक बिन्दी तेरा हुक्म वरताईआ। संदेशा देवां फिर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वत वेख वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत मानव ज़ाती आपणी फ़सल तकणी हाढ़ी, हाढ़ सतारां थित नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेले इक इकेले साडी लाज रखणी चरण छुहाई दाढ़ी, दाढ़ां हेठ पीसे ख़लक ख़ुदाईआ।

✪ १४ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ केसर सिँघ दे गृह ६७ केरनज़ सटरीट
वालसाल सटाफ़ इंगलैंड ✪

विष्न ब्रह्मा शिव कहे प्रभू तूम्बी दीआं वेख लै तिन्न लड़ीआं, रजो तमो सतो खेल खिलाईआ। तेरीआं जुग चौकड़ीआं लँघीआं बड़ीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। निरअक्खर धार दे मालक तेरीआं अक्खरां वालीआं पोथीआं

पढ़ीआं, ग्रन्थ शास्त्रां ध्यान लगाईआ। दो जहान नौजवान मर्द मर्दान तेरीआं तकीआं पल घड़ीआं, बरस मास बैठे पन्ध मुकाईआ। कोटन कोटि आत्म धारां तेरे दर खड़ीआं, अनन्त आपणी आस प्रगटाईआ । मेहरवान महबूब तेरे शब्द दीआं वेखीआं जड़ीआं, बन्धन दीन दुनी बंधाईआ। तेरे प्यार दीआं तकीआं कड़ीआं, कुण्डा सके ना कोए खुल्हाईआ। जगत वासना विच तन वजूद दीआं वेखीआं नड़ीआं, नाड़ी नाड़ी ध्यान लगाईआ। त्रैगुण दे मालक त्रैलोकी धार तेरा खेल सीस धड़ीआं, तन वजूदां वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तूम्बी कहे मेरीआं तिन्ने लड़ीआं दे तक लओ मोती, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जिन्हां नूं तूं रूप दिता निरगुण धार अगम्मी जोती, जोती जाते दया कमाईआ। मेरी कोझी कमली दी सुरत उठाई सोती, मैं सुत्तयां लई अंगड़ाईआ । जां निगाह मारी मैनूं भगत सुहेले सारे दिसे गोती, गौतम दा लेखा पिछला याद कराईआ। जिस साहिब नूं लभदे कोटन कोटी, जुग चौकड़ी खोजण थाउँ थाँईंआ। उह चढ़ के आए मंजल हक हकीकी चोटी, हरिजन अन्तर आपणा डेरा लाईआ। जिस दा लबास ना टिक्का ना धोती, वस्त्र तन ना कोए छुहाईआ। उह खेल वेखणहार एकँकार इक इकलौती, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जिस दे विछोड़े विच दो जहान आशा रोती, बिन नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। मोती कहिण विष्न ब्रह्मा शिव साडा वेख होया मेल, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। जिस दा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेल, निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। जो लख चुरासी नालों आप हो के वेहल, संसारी भण्डारी सँघारी तुहाडी सेवा दिती लगाईआ। दीपक जोती बाल बिना बाती तेल, त्रैगुण अतीता आपणा खेल खिलाईआ। आप वस के सचखण्ड धाम नवेल, दरगाह साची सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द शब्द बणा के चेल, दीन दुनी वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। लड़ीआं कहिण साडे अन्दर तको कच्चा धागा, तन्दी तन्द ध्यान लगाईआ। साडा अन्तष्करन वेखो जागा, आलस निंद्रा दूर कराईआ। साडे अन्दर अगम्मी वैरागा, बिरहो विछोड़े विच प्रभ दा ध्यान लगाईआ। साडा रूप रिहा ना कागा, हँस बण के मोती चोग चुगीए चाँईं चाँईंआ। साडा जन्म जन्म दा धोया गया दाग़ा, दुरमति मैल दिती मुकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला घर मिल गया कन्त सुहागा, स्वामी ठाकर इक्को नज़री आईआ। साडे हो गए वड वड भागा, भागहीण ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धागा कहे मेरा प्यार नाल सितार, तन्दी तन्द तन्द जणाईआ। जो तूं ही तूं ही गाए नर निरँकार,

निरवैर कहि के सीस निवाईआ। असीं ख़ुशी नाल सुणीए गुफ़तार, गुफ़त शनीद जो पड़दे रही खुल्हाईआ। मस्ती विच चढ़े खुमार, हस्ती तक्कीए धुरदरगाहीआ। जिस दा रूप ना पुरख ना नार, जोती जाता नज़री आईआ। जिस दा सचखण्ड सच्चा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। बिना सीस जगदीश करीए निमस्कार, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ । जो देवणहार अधार, धीरज धीर इक धरवाईआ* । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। तूम्बी कहे मेरी विष्न ब्रह्मा शिव तक लओ तार सितार तन्दी, तन्दूए दा पूरब लेखा *रही* नाल सोभा पाईआ। जो वसे धरनी दी धार तों सदा उत्ते बुलंदी, आकाश आकाशां परे डेरा लाईआ। जिस नूं सीस निवाउँदे तारा चन्दी, सूर्या झुक झुक लागे पाईआ। उहदा शब्द संदेशा मेरे विच्चों निकलया छन्दी, सोहला ढोला राग सुणाईआ। मैनूं प्रेम दी आई सुगंधी, जगत वासना रहिण कोए ना पाईआ। मेरी अन्तर आशा सीतल धार होई ठण्डी, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। मेरी तृष्ना रही ना रंडी, रंडेपा दो जहान कटाईआ। मेरी पूरब पिछली टुट्टी गंढ्ढी, तन्दूआ वेखे चाँईं चाँईंआ। एह राग सुणया गोबिन्द ने जिस दिन पहले हथ्थ उठाई चण्डी, प्रचण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। तन तूम्बी दी धार जिस दी अन्तर शब्द गुंजार प्रभ मिलण दी सिध्धी डण्डी, डण्डावत दीन दुनी बदलाईआ। जो पार करावे एथे उथे दो जहाना कन्ढ्ढी, अद्ध विचकार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। तूम्बी कहे मैं प्यार नाल वजदी, सुर ताल आप बणाईआ। मैं खुशीआं दे विच गज्जदी, कूक कूक दृढ़ाईआ। मेरी कथा कहाणी नहीं कोई अज्ज दी, नारद मेरी सुर ताल गया बणाईआ। ब्रह्मा मैनूं दात दिती जग दी, विष्नूं विश्व दी धार हो के सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। शंकर ने खेल सुणाई उपर शाहरग दी, नवां दवारयां पन्ध मुकाईआ। पर मैं वणजारन सां काया माटी अन्दर जिथ्थों वेखयां किसे ना लभदी, खोजण खोज ना कोए खुजाईआ। मैनूं सप्तस ऋषीआं दस्सी गल्ल सच दी, सच सच नाल मिलाईआ। नी तूम्बीए एह काया माटी सदा रहिणी भजदी, थिर रहिण कोए ना पाईआ। नहीं कोई मुनिआद सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जग दी, जुग जुग बैठण पन्ध मुकाईआ। तूं ते कोझीए कमलीए सिफ्त करनी उस परमेश्वर पति दी, जिस नूं दो जहान बैठण सीस निवाईआ। तेरी बनावट नहीं कोई हड्ड मास नाड़ी रत दी, लकड़ी काठ तेरा वजूद नज़री आईआ। तूं संसारीआं नूं फिरीं ठगदी, ते भगतां दे अन्दर वड़ के आपणी सितार देणी वजाईआ। फेर मस्ती लईं उस अगम्मी मदि दी, जो मधुर धुन सति सच दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तूम्बी कहे जन भगतो मेरी तुसां वजदी वेखी सितार, उंगली

उंगली सोभा पाईआ। पर मेरे विच्चों जिस लभणा ते लभणा मेरे प्रभू दा प्यार, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जो भेव खुलाए काया मन्दिर अन्दर दस्म दुआर, दहि दिशा दा डेरा ढाहीआ। अमृत आत्म निझर झिरन्उँ देवे ठण्डा ठार, बूँद स्वांती कवल नाभी विच टपकाईआ। शब्द अनादी दए धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोती नूर करे उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। अन्त कन्त भगवन्त जन भगतां लै के जाए सचखण्ड दुआर, दरगाह साची मुकामे हक हकीकत दा मालक आपणे विच मिलाईआ। तूम्बी कहे मेरा अज्ज दा अजब निराला विवहार, विवहारी हो के दयां सुणाईआ। मैं उस मालक दी सेवादार, जो जुग जुग सेव कमाईआ। जिस कारन मेरा नाता नानक नाल जोड़या दातार, दयावान दया कमाईआ। मैं फिरदी विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव दयां सुणाईआ। मेरी उस साहिब नूं निमस्कार, नमों नमों कहि के सीस झुकाईआ। जो भगतां मीता भगतां दए दीदार, निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। तूम्बी कहे जिस तरह मेरा केसर सिँघ नाल प्यार, सतिगुर शब्द एसे तरह केसर रंग जन भगतां देणा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण पावणहारा सार, महासार्थी हो के वेखे चाँईं चाँईंआ।

४६६ २४

१४ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ तीर्थ सिँघ दे गृह नं० १८ पूल रोड
टरैच टैलेफ़ोरड शरुप शिर लंडन

कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा, दूल्हा लोकमात सोभा पाईआ। चारों कुण्ट तक मेरा हुलारा, नव सत्त धरनी धरत धवल धौल हलाईआ। हँकार विकार तक मेरा जैकारा, हंगता गढ़ नाल वड्याईआ। कूड़ी क्रिया वेख पसारा, घट घट अन्तर दिता टिकाईआ। मानस मानव अन्तर कीता अन्ध अँधयारा, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। तेरा शब्द अनादी सुणे ना कोए धुन्कारा, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस किसे मिले ना ठण्डा ठारा, बूँद स्वांत ना कोए टपकाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण मेरा खेल वेख अपारा, अपरम्पर स्वामी दयां वखाईआ। मैं माण रहिण नहीं दिता तेई अवतारा, राम कृष्ण बैठे सीस निवाईआ। पैग़म्बरां नूरी चन्द ना दिसे कोई चमत्कारा, ज़हूर रहिण कोए ना पाईआ। गुरुआं मिले ना कोई मीत मुरारा, मन मति कीती जगत हल्काईआ। दरोही फिरी मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआरा, चर्च चरागाहां रहे कुरलाईआ। तीर्थ तट अमृत रस नज़र ना आए कोई तेरा प्यारा, पारब्रह्म तेरे रंग ना

कोए समाईआ। मैं चौथा जुग तेरा पूत सपूता तेरा मंगां सहारा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। उह तक लै मैनूं सतिगुर शब्द दए इशारा, बिन नेत्र अक्ख सैनत रिहा लगाईआ। तेरा लहिणा देणा नाल कलि कल्की अवतारा, कलयुग आपणी लए अंगड़ाईआ। मैं सवाधान हो के होया हुशियारा, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत बड़ा बलकार, बलधारी इक अख्वाईआ। मैं नव सत्त कहां ललकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी चले ना कोए चतुराईआ। मैं माण रहिण दिता नहीं पैग़म्बर गुर अवतार, एह मेरी बेपरवाहीआ। तेरा बण के फ़रमांबरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। सृष्टी दृष्टी भरी नाल कूड़ विभचार, कर्म कांड समझ किसे ना आईआ। नव सत्त ब्रह्म मति विच कीता धूंआँधार, मानस मानव मानुख पड़दा ना कोए उठाईआ। मैं तेरे चरण कवल करां पुकार, निव निव सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी पुश्त पनाह दे दे थापी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आह तक मेरे कोल सतिगुर शब्द दी अगम्मी कापी, जिस दी नकल नज़र कोए ना आईआ। जिस दा हुक्म मन्नया लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल भज्जया वाहो दाहीआ। मेरे खेल वेख लै झगड़ा पाया दीन मज़्ह्ब ज़ात पाती, नाम कलमे शरअ शरअ नाल टकराईआ। नव नव चार वेख अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पवित्र रहिण नहीं दिती किसे दी हयाती, मानस जन्म सुफल ना कोए कराईआ। मेहरवाना श्री भगवाना मैनूं होर बख़्श दे दाती, दयावान हो के आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा नन्हा जेहा बच्चा, बचपन तेरे चरण टिकाईआ। मैं बचन बोलां सचा, सच सच दयां दृढ़ाईआ। मैं कूड़ी क्रिया नाल पंज तत भरया काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ नज़र कोए ना आईआ। मैं घट घट दे अन्दर वड़ के नच्चा, मन चंचल नाल बणाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां अन्दर रचा, साढे तिन्न करोड़ मेरी दए गुवाहीआ। आत्म धार तेरा किसे नूं लग्गण नहीं दिता पता, पतिपरमेशवर तेरा दरस कोए ना पाईआ। हर हिरदे अन्दर मेरी वेख लै फ़तह, फ़तिह दा डंका दिता वजाईआ। कूड़ बीजया आपणे वता, सच दी जड़ दिती उखड़ाईआ। धर्म दी धरती उत्ते करके हत्ता, हत्या कीती थांउँ थाँईंआ। बिन तेरे मैनूं भय नहीं कोई रता, गुर अवतार पैग़म्बरां डर के सीस ना कोए निवाईआ। तेरे अगे वास्ता घत्तां, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी मनसा वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी तक लै मनसा, ख़ाहिश

तेरे चरण टिकाईआ। कलयुग जीव काग बणाए हँसा, माणक मोती चोग चुगण कोए ना पाईआ। पंच विकार बणा के आपणे बंसा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कीता हल्काईआ। मेरे अन्तर निरंतर रहे कोई ना संसा, संसा जगत देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मालक होणा सहाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे उत्ते किरपा होर कर दे, किरपन आपणी दया कमाईआ। मेरे ख़ाली भण्डारे भर दे, वस्त अमुल अतुल वरताईआ । खेल वेख लै मेरे सुहञ्जणे घर दे, लोकमात ध्यान लगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे कोलों जीव मूल ना डरदे, भय विच ना कोए समाईआ। मन कल्पणा विच सारे लड़दे, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। मैं भरांत भुलेखे रखे चोटी जड़ दे, चेतन समझ कोए ना आईआ। घर घर किले बणाए तेरे हँकारी गढ़ दे, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। मेरी कूड़ दी अग्नी विच सारे वेख लै सड़दे, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैनूं प्यार नाल बठा लै आपणी गोदी, गोदावरी लेखा गोबिन्द वाला पूर कराईआ। उह तक लै नारद हिलाउँदा आ गया बोदी, बिन पवणां पवण उडाईआ। नाले बोलदा आवे तेरा प्रभू खेल बड़ा अमोघी, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। तेरी सृष्टी जगत मूल ना जाए सोधी, सुदी वदी संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं सुत तेरा जोबनवन्ता, जवानी विच लवां अंगड़ाईआ। माण रहिण देणा नहीं किसे पंडता, अक्ल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। मैं खेल खिलाउणा जेरज अण्डजा, उत्भुज सेत्ज हलूणा देणा थांउँ थाँईंआ। मेरा रूप नहीं कोई तत पंज दा, पंचम संग ना कोए रखाईआ। मेरा दिल करदा सदी चौधवीं अन्त खेल वेखां नौ खण्ड पृथ्मी जंग दा, सत्तां दीपां नाल मिलाईआ। डण्डावत बन्दना सजदा करके पुरख अकाले इक्को मंग मंगदा, परवरदिगार सांझे यार मेरी झोली देणी पाईआ। उह वेख लै मूसा ईसा वक्त जांदा लँघदा, सारे तकण थांउँ थाँईंआ। तूं खेल वेख लै गोबिन्द आपणे फ़र्जंद दा, फ़ाज़ल हो के ध्यान लगाईआ। जिस लेखा पूरा करना पुरी अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। उह वेख इशारा मिलदा तारा चन्द दा, चन्द सितार की सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं सेवा करां अपार, अपरम्पर स्वामी देणी वड्याईआ। मेहरवान हो के मेरे उत्ते निगाह मार, महिबान तेरी ओट तकाईआ। मैं खेलां खेल विच संसार, संसा जगत रहे ना राईआ। तूं मेरा होणा मददगार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हलूणा देवां एका वार, एकँकार तेरी ओट तकाईआ। मैं आपणा खेल वखाउणा

चाहुंदा विच साल दो चार, बहुती मंग ना कोए मंगाईआ। दरोही फेरां विच पुरख नार, नर नरायण दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरी बेनन्ती सुण लै गिरयाज़ार, गिराबान हो के ध्यान लगाईआ। मैं तेरा सुत दुलारा मांगत बणां भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। मेरे ख़ाली भर भण्डार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे उत्ते कर मेहरवानी, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। मैं चारों कुण्ट कूड़ दी दस्सां निशानी, निशाना धर्म रहिण कोए ना पाईआ। हर हिरदे अन्दर तकां बेईमानी, बेवा करां ख़लक ख़ुदाईआ। नूर नज़र ना आए असमानी, इस्म आज़म समझ कोए ना पाईआ। चारे कुण्ट कुण्ट करां परेशानी, पश्चाताप विच दिसे लोकाईआ। सब नूं दस्सां जूह बेगानी, घर मन्दिर ना कोए सुहाईआ। मंज़ल रहे ना किसे रूहानी, रूह बुत दोवें रोवण मारन धाहीआ। मेरे मालक ख़ालक मेरा लेखा लिख दे बिना कलम कानी, कायनात विच्चों मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं दिवस रैण तेरी सेव करदा, करता पुरख देणी सरनाईआ। मैं मालक बणया घर घर दा, हर घट अन्दर डेरा लाईआ। मेरे प्यार विच तेरे नाल प्यार कोई ना करदा, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। मेरा नाता लहिणा नाल पंज दल दा, दूसर संग ना कोए बणाईआ। कूड़ कुड़यार मेरा परवार वेख लै फलदा, फलीभूत देणा कराईआ । मैं माण रहिण दिता नहीं तीर्थ अठसठ जल दा, जलधार अमृत रूप ना कोए समाईआ। स्वास पवित्र रहिण दिता नहीं काया माटी खल दा, ख़ालक ख़लक तेरी ओट तकाईआ। मेरा लहिणा देणा तक लै जल थल दा, महीअल खोज खुजाईआ। धरनी उत्ते दीपक रहे कोई ना जलदा, जागरत जोत नज़र किसे ना आईआ। मैनूं तेरा सतिगुर शब्द सुनेहउड़े घलदा, बिन रसना जिह्वा सुणाईआ। भाणा मेटणा पुरख अकाल अटल दा, जो निहचल बैठा आसण लाईआ। लेखा पूरा करना नानक वाली इक गल्ल दा, जिस दा पड़दा सके ना कोए चुकाईआ । कलयुग कहे प्रभू मेरा वक्त सुहञ्जणा अछल छल दा, छलधारी देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं ख़ुशीआं दे विच नठ्ठा, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं सतिजुग त्रेता द्वापर करदे ठठ्ठा, मख़ौल रहे उडाईआ। मैं हस के किहा सोहणिओ मैं उस परम पुरख दा पठ्ठा, जिस दी गोबिन्द यारड़ा सेज हंढाईआ। मैं उस दी शरन शरनाई ढठ्ठा, बिन कदमां सीस निवाईआ। जिस ने नौ खण्ड पृथ्मी दीन मज़्हब करके इक्ट्ठा, इक्को हुक्म देणा समझाईआ । मेरे अन्त श्री भगवन्त उलटी गेड़नी लठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ।

झट सतिगुर शब्द अगम्मी धार प्या हस, हस हस के रिहा जणाईआ। कलयुग कुझ आपणी होर हकीकत दस्स, दहि दिशा दा पड़दा लाहीआ। की कूड़ विकार दा वरताया रस, रस्ता कवन कवन वखाईआ। केहड़ा दीन मज़्ब तेरे विकार विच गया फस, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग कहे सतिगुर शब्द उह तक लै चारों कुण्ट अन्धेरी मस, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ । प्रभू दा कर सके कोई ना जस, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं कूड़ कुड़यारी माया नाल हर हिरदा दिता डस, नागणी हो के आपणा डंग चलाईआ। सूरबीरां शाह सुल्तानां करके कूड़ दे वस, वास्ता ममता नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । कलयुग कहे सतिगुर शब्द मेरा सुण लै कूड़ दा डंका, डौरु दिता वजाईआ। माण रहिण नहीं दिता राउ रंका, राज राजान शाह सुल्तान बचया नज़र कोए ना आईआ। सति दा रूप बणाया धार पंज ??गवका, वजूद महबूब नज़र किसे ना आईआ। प्यार रिहा ना तेरे नाल जगत जन का, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। खेल खेलया माया ममता मोह विकार अनका, अनक कल आपणी दिती वरताईआ। तेरे नाम नाल लोभ लालच वधाया धन का, धर्म दी धार नजर कोए ना आईआ। प्यार रहिण दिता नहीं किसे नूं ब्रह्म का, ब्रह्म विद्या पढ़न कोए ना पाईआ। डर रिहा नहीं शंकर वाले जम का, लाड़ी मौत भय ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कहे इक्को सहारा तेरे चरण का, चरण कवल उपर धवल देणी सरन सची सरनाईआ।

४७० २४

✪ १५ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ दर्शन सिँघ दे गृह २५ होली रोड थोरटन लोझ हुडेरसफ़ीलड लंडन ✪

कलयुग कहे प्रभू मेरा बणना सका, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार मेरा नाता जोड़ना पक्का, पारब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। मैनूं हुक्म संदेशा इक्को दे दे यका, वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे हुक्म विच दीन दुनी लावां धक्का, धरनी धरत धवल धौल दयां हलाईआ। हलूणा दे के बूरा कक्का, करबले काअब्यां लवां उठाईआ। शरअ शरीअत हलूणा देवां मदीनां मक्का, मकबरे पैग़म्बरां दे देण गवाहीआ। तूं परवरदिगार नूर अलाह मालक हका, हकीकत तेरी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप समझाईआ। कलयुग कहे प्रभू तेरे हुक्म दी अगम्मी लोड़, लुड़ींदे सज्जण दयां जणाईआ। मैं कूड़ कुड़यार दे

चढ़ां घोड़, बिन कदमां भज्जां वाहो दाहीआ। तेरी कायनात फल करां मिट्ठा कौड़, रसना रस रहिण कोए ना पाईआ। बेशक तैनूं वेद व्यासे किहा आवे ब्राह्मण गौड़, ब्रह्म तों परे पड़दा आप चुकाईआ। अन्त कलयुग तैनूं जावे बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे ख़लक खुदाईआ। जिस दा मार्ग होवे बड़ा सौड़, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरा कूड़ सब दा बणे मुदई, मुद्दा समझ किसे ना आईआ। मैं खेल खिलावां बण के शरअ दा शरई, शरीअत आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी आशा पूरी करनी जो राम संदेशा दिता त्रेते जुग कैकेई, मतरेई आपणा हुक्म वरताईआ। कृष्ण अर्जन नाल पाई सेई, सहिज सहिज आपणा भेव चुकाईआ। मुहम्मद नूं संदेशा दिता जबराईल वही, मेकाईल असराईल असराफ़ील वेख वखाईआ। गोबिन्द इशारा दिता लहिणा तक लै ढईआ ढई, लोकमाती आपणा पन्ध मुकाईआ। उसे वेले राय धर्म सब दा लेखा कढुके वेखे वही, चित्रगुप्त नाल मिलाईआ। लाड़ी मौत आपणी खेल करे नई, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। तेरे हुक्म विच जुग लँघ गए केतड़े कई, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरे पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं वस्त अगम्म दई, देवणहार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरीआं पूरीआं कर मुरादां, मुर्शद बण के धुरदरगाहीआ। अगे सतिजुग त्रेता द्वापर मेरीआं रहिण यादां, गुण सके ना कोए भुलाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादा, ब्रह्मांड तेरी वड वड्याईआ। तूं निरगुण धार बोध अगाधा, बुद्धी तों परे देणी पढ़ाईआ। मैनूं जिस कारन लडाया लाडा, आपणी गोद टिकाईआ। उह वक्त याद कर लै जिस वेले ईसा तैनूं किहा गॉडा, गुड गॉड कहि के तैनूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आशा पूर कराईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी इक्को इक आशा, असल वसल यार दयां कराईआ। तूं शहिनशाह ते शाहो शाबाशा, पातशाह नूर अलाहीआ। मैनूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरा दिता भरवासा, भगवन तेरा राह जणाईआ। मैनूं संदेशा देवे शंकर उत्तों कैलाशा, बिन रसना जिह्वा रिहा दृढ़ाईआ। कलयुगा दीन दुनिया उलटा दे पासा, पेशीनगोईआं पिछलीआं नाल मिलाईआ। शरअ दा रहे ना कोए बदमुआशा, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तैनूं गावां स्वास स्वासा, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। उह तक लै तेरे हुक्म विच लाड़ी मौत करदी हासा, आपणा नाच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दे साहिब मेरे गुसाँईआ। शंकर कहे कलयुग सोहणया आपणी कलाधार, कलकाती हो के लै अंगड़ाईआ। निगाह मार विच संसार, गृह गृह अन्दर वेख वखाईआ। तेरा

लहिणा देणा नाल पुरख नार, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। प्यार रहिण देणा नहीं नाल किसे पैग़म्बर गुर अवतार, प्रीती विच नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं तक लै मुहम्मद दी आशा करे इज़हार, इसतग़ुफ़ार कहि के सीस निवाईआ। मेरे मेहरवान महबूब मैं तेरा करां इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं मेरा नूर अलाह बेपरवाह परवरदिगार, सांझा यार इक अख्वाईआ। तेरी कदमबोसी विच आपा देणा वार, हउ घोली घोल घुमाईआ। मेरे बाकी रहिंदे गिणती दे कोई साल दो चार, पंज सत्त दा लेखा देणा मुकाईआ। मैं मांगत हो के बणां भिखार, दरवेशण हो के झोली डाहीआ। कलयुग कहे मैं बणां उस दा मीत मुरार, साजण सजणूआ इक अख्वाईआ। मेरा वायदा मुहम्मद नाल कौल इकरार, शहादत चार यार रहे भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। कलयुग कहे मेरा मालक अर्ज़ी, अर्शे आलीज़ाह नूर अलाहीआ । लेखा याद कर जो आशा रखी मसीह, मसला तेरे कदम कदम टिकाईआ। जिस दी बिना ज़बान तों कीती तशरीह, बिन कलम शाही लेख बणाईआ। उहदी आशा कहिंदी की, कायनात की जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ।
४७२ कलयुग कहे ईसा सदी बीसवीं मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैनूं करना कार अंगी, आप आपणी गोद उठाईआ। ४७२
२४ जिस वेले तूं जल धारा होवे लँघी, चौथे आपणे कदम टिकाईआ। मेरी उम्मत ईमान वाली होवे फ़रंगी, फ़ैसला हक देणा २४
कराईआ। तूं बाप मेरा मेरी याद विच अन्तिम वेखीं मेरी तंगी, बिन नैणां नैण उठाईआ। तेरा लेखा होवे धार दो कंधी, कायनात वंड वंडाईआ। तेरे शब्द दी बिना नुहार तों चमके चण्डी, आपणा रूप बदलाईआ। दरोही फेरनी विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड खण्ड हल्काईआ। तेरा रूप अनूप शाहो भूप सतिगुर शब्द अनन्त होवे जंगी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा कौल इकरार परवरदिगार मीत मुरार गल फाँसी वाली संधी, सलीब शहादत दए भुगताईआ। उस वेले सदी बीसवीं विच साल रहिंदे होणे पंझी, पंजां दे मालक मेरा लहिणा देणा मेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा लहिणा पूर कराईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरे नेत्रां नीर डुल्हदा, बिन अक्खीआं रिहा वहाईआ। तूं मालक स्वामी कुल दा, अगम्म अथाह धुरदरगाहीआ। मेरा लहिणा देणा होया कोई नहीं भुल दा, भुल्लयां मार्ग आप लगाईआ। मेरा इक्को बचन मुल्ल दा, करनी कीमत देणी चुकाईआ। मेरा कूड़ कुड़यार दुआर तेरे हुक्म नाल खुल्हदा, जिस नूं बन्द ना कोए कराईआ। मैं लख चुरासी तेरा बूटा वेखां हुलदा, फल फुल्ल सिम्मल वाले नज़र कोए ना आईआ। तेरे हुक्म विच मेरा कूड़ निशाना होवे झुलदा, झलक तके ख़लक खुदाईआ। मैं प्यासा तेरे चरण कवल धुल दा,

धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। मेरा मोह विकार विच संसार होवे फुलदा, पत्त टहणी देणी महकाईआ। बिन तेरी किरपा तेरी चरण प्रीती कोई ना घुलदा, घोली घोल ना कोए घुमाईआ। तूं प्यारा आदि जुगादि मालक सुल्हकुल दा, कुल मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं माण रहिण देणा नहीं किसे रसना जिह्वा बात बुल्ल्ह दा, बत्ती दन्द दन्द ना कोए वड्याईआ।

४७३ २४

✪ १६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरभजन कौर दे गृह नं० २ बासिल सटरीट हुडरज़ फ़ीलड लंडन ✪

नारद कहे सुणो पैग़म्बर गुर अवतार, चार जुग दे रैहबरो तुहानूं दयां सुणाईआ। सतिगुर शब्द दा खेल वेखो अपार, अपरम्पर हो के की आपणा खेल खिलाईआ। पुरख अकाल दी तको अगम्मी धार, धरनी धरत धवल धौल उत्ते की अक्ख उठाईआ। जोती जाता हो के फिरे विच सर्ब संसार, नव सत्त आपणे खेल वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा शब्द संदेशा दे के आए वारो वार, उह वारस तुहाडे लहिणे रिहा मुकाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण जिस दी मौलण वाली बहार, रुत आपणे हुक्म नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप समझाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो की होया ग़ज़ब, हैरानी विच मेरी दुहाईआ। प्रभू ने तुहाडे कोलों निक्के निक्के बणा के मज़्हब, हिस्से मानव ज़ाती दिते बणाईआ । दीन दुनिया तों तुहाडे पूज करा के कदम, मिट्टी ख़ाक पंज तत रंग रंगाईआ। मैं हो गया वेख तअजुब, परेशानी विच दयां सुणाईआ। उस तुहानूं अन्त सब नूं आपणे विच कर लैणा जज़ब, जुज़ वखरी वंड रहिण कोए ना पाईआ। तुसीं चार जुग उस दी समझ ना सके रमज़, जो इशारयां विच इशारे गया कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे पैग़म्बरो तुसीं पहलों तको आपणा वक्त, वक्तन फ़वक्तन जिस दा ध्यान लगाईआ। जिस लहिणा देणा लेखा नाल जगत, जुगत तुहाडी वेखे थांउँ थाँईंआ। वक्त सुहञ्जणा बीसवीं सदी चौधवीं फ़कत, फ़िकरे सब दे पूर कराईआ। अन्तर अन्तर सब दी आपणे विच मिलाए शक्त, शक्तीशाली रहिण कोए ना पाईआ। जो चरण छुहाए तुहाडी लैंड होवे धरत, उह धरत धवल दा मालक बेपरवाहीआ। झट ईसा निगाह फेर के वेख्या परत, नैण नैण विच्चों बदलाईआ। उह मेरा मालक ख़ालक फ़ादर जिस नाल अगम्मी शर्त, शरतीआ मेरा लेखा पूर कराईआ। दीन दयाल हो के वंडे दर्द, दयावान हो के

दया कमाईआ। जिस दे कोल कोटन आदि जुगादि गुर अवतार पैग़म्बर वाली फ़रद, फ़ैसले हक हक हक सुणाईआ। उह साडी बेनन्ती मन्ज़ूर करके अर्ज़, आरज़ू सब दी लेखे लाईआ। जिस नूं आदि जुगादि नहीं कोई ग़रज़, ग़रज़ जगत जहान पूरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक प्रगटाईआ। नारद कहे पैग़म्बरो आपणा खोलू के वेखो ताक, तकवा इक्को इक रखाईआ। ईसा आपणा बिन नेत्रां वेख कलाक, जो कलाधारी दिता दृढ़ाईआ। जो बिन कदमां करदा वाक, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस तेरा लेखा पूरा करना इंगलैंड वाले बलाक, बलैक पर्दे आप खुलाईआ। अन्त शरअ दा शरअ ने देणा तलाक, शरीअत बैठी मुख भुआईआ । उह वेख मानस मानव जिस दा रूप दिसे बहुभांत, तन वजूद माटी ख़ाक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे हज़रत हाज़र वेख हज़ूर, मालक नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म करना पए मन्ज़ूर, सिर सके ना कोए उठाईआ। जुग बदलणा जिस दा दस्तूर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। उह पन्ध मुका के नेड़ा दूर, दो जहानां तके चाँईं चाँईंआ। जिस दे कोलों कोई हो ना सके मफ़रूर, ओहला नज़र कोए ना आईआ। पता नहीं उन किस बिध सब नूं बणाउणा वार कसूर, लेखा कसर इशारीए नाल उडाईआ। उह वेख लै की अवाज़ देंदा मूसा उत्ते कोहतूर, तुरत आपणी लए अंगड़ाईआ। मेरा खुदा इज़हमी आवे ज़रूर, ज़िमीं ज़मां ज़ाएज़ूम आपणा रंग रंगाईआ । मुहम्मद शुकराने विच कहे गाफ़ूर, गज़ीमान जुमाअ मेरा मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा जाणे सर्ब कला भरपूर, भरपूर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १७ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह १११ सटरीट अवडरी ५ रोड बारहिंग ऐसऐकस लंडन ✪

धरनी कहे मैं भुजां उठावां बांही, बिन हथ्थां दयां दुहाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण धार मेरे माही, महबूब तेरी आस रखाईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरी देण गवाही, शहादत धर्म धार भुगताईआ। सतिगुर शब्द बणा दे राही, रैहबर इक्को इक प्रगटाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा तक लै गोबिन्द दा लँघया ढईआ ढाई, ढौंके विच आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी दीन मज़्ब शरअ बणी कसाई, कातिल मक्तूल दिसे ख़लक खुदाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छाई, साचा

चन्न नज़र कोए ना आईआ। मैं वास्ता निर्धन हो के रही पाई, सरधन वेखणा चाँईं चाँईंआ। मेरा लहिणा देणा पुरख अकाले देणा पूर कराई, सो पुरख निरञ्जण तेरे हथ्थ वड्याईआ। हरि पुरख निरञ्जण तेरे चरण कवल आस रखाई, एकँकारे होणा आप सहाईआ। आदि निरञ्जण दर्द दुःख भय भञ्जण मेट अन्धेरा छाही, नूर नुराना इक चमकाईआ। अबिनाशी करते मेरी कट दे बिन रस्सीआं वाली फाही, फ़ैसला हक सुणाईआ। अबिनाशी करते तेरे चरण धूड़ ख़ाक रही रमाई, बिन ख़ाक ख़ाक उठाईआ। पारब्रह्म मेरा पूरब लेखा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा झोली देणा पाईआ। मैं आपणा आप तेरे कदमां हेठ बैठी विछाई, विश्व दे मालक वेख अक्ख उठाईआ। सतिगुर शब्द मेरे उत्ते भेजणा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक रखाईआ। मैं विष्न ब्रह्मे शिव संदेशा देवां बिना पवन हवाई, तेरा नाम नाम दृढ़ाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं देणा सुणाई, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दे ग्रन्थां नाल मिलाई, शास्त्र सगला संग बणाईआ। तीर्थ तटां सुत्तयां लवां उठाई, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। नौ खण्ड मेरा सत्त दीप तेरे अगे दए दुहाई, दो जहानां मालक तुध बिन अवर ना कोए गुसाँईंआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठां हलूणा देणा थांउँ थाँईं, गुरुदुआर गुरदेव देणा दृढ़ाईआ। धरनी कहे मेरे परम

४७५ पुरख परमात्म लख चुरासी सुनेहड़ा देवां तेरा सहिज सुखदाई, इक्को इक एकँकार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ४७५

२४ आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मैं पुरख अकाले कूकदी, दर तेरे २४

वास्ता पाईआ। आसा पूरी कर दे गोबिन्द दुलारे सुत दी, जो सुत्तयां लए जगाईआ। खेल वेख लै काया पंज भूत दी, तन वजूदां फोल फुलाईआ। दरोही तक लै मेरे उत्ते चारे कूट दी, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। वस्त तक लै कलयुग कूड़ी क्रिया झूठ दी, घर घर बैठी डेरा लाईआ। मेरी मनसा दिवस रैण बिना घड़ी पल तों चूकदी, आलस निंद्रा गई तजाईआ। कलयुग जीवां आशा वेख लै कूकदी, अग्नी काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। मेरी छाती भरी दुःख दी, तुध बिन दर्द ना कोए मिटाईआ। मेरे उत्ते घड़ी सुलखणी कर दे सुख दी, सूख़म रूप आपणा दे समझाईआ। मैं ख़बर सुणना चाहुंदी कलयुग वक्त मनसूख़ दी, मनसा तेरे चरण रखाईआ। मैनूं खेल वखा दे सतिगुर शब्द अगम्मे दूत दी, दुतीआ भाउ दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे भगवान मेरे तक लै ख़ाली हथ्थ, हथेली तेरे अगे टिकाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाल साहिब समरथ, अन्तरजामी स्वामी धुरदरगाहीआ। तेरी महिमा आदि जुगादि अकथ, जुग चौकड़ी कोई कथ सके ना राईआ। तूं कलयुग चलावणारा रथ, रथ रथवाही धुरदरगाहीआ। मेरे उत्तों कूड़ कल्पणा किरपा कर दे मथ, मथन कर ख़लक खुदाईआ।

तेरी शरन शरनाई जावां ढठ, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। वेखीं किते कलयुग आयू वध करीं ना साल अठ्ठ, अठ्ठां ततां पन्ध मुकाईआ। मैं तेरा नूर ज़हूर तकां लट लट, जोती जाते डगमगाईआ। मेहरवान हो के धर्म दी धार खोल्ह दे हट्ट, नाम वस्त सति वरताईआ। कूड़ क्रिया डोरी देणी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। धरनी कहे मैं चाहुंदी हर हिरदा तेरा नाम लए रट, साह साह तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा घर देणा सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे वेख लै पुट्ठे सिध्धे गुट, घुटने टेक के दयां दुहाईआ। तेरा प्यार सब दे अन्दरों गया टुट, टुटयां सके ना कोए मिलाईआ। सुरत शब्द प्रीती गई छुट, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना कूड़ी क्रिया मेरे अन्दरों कढ दे कुट, कुटलता दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। दीनां मज़्हबां मेट दे फुट, फुटकल रूप ना कोए वखाईआ। अमृत जाम प्या दे आपणा घुट, अंम्यों रस बिन रसना आप चखाईआ। मेहरवान हो के जाणा तुठ, दीन दयाल वेखणा थांउँ थाँईंआ। निगाह मार लै मेरी चारे गुठ, चारे कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन
४७६ वेख लै आप, आपणी दया कमाईआ। तेरयां तेरा भुलया जाप, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। नव सत्त वध्या पाप, पतित ४७६
२४ होई लोकाईआ। झगड़ा तक लै ज़ात पात, नाम कलमा दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म जोड़े कोई ना नात, २४
पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, अन्ध अज्ञान ना कोए गंवाईआ। साची देवे कोई ना दात, वस्त सच ना कोए वरताईआ। दरोही फिर गई लोकमात, मातृ भूमी हो के वास्ता पाईआ। मेरी कोई ना पुछे वात, वारस नज़र कोए ना आईआ। तूं परम पुरख मेरा कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन वेख लै उत्ते जग, जागरत जोत ध्यान लगाईआ। तेरे तेरे नालों होए अलग, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। कूड़ कुड़यार ने हँस रूप कीते कग, कलयुग काती आपणा खेल खिलाईआ। मेरे चारों कुण्ट लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मेरे दीन दयाले तेरे परसे कोई ना पग, पाहना पूजे जगत लोकाईआ। तेरा दरस होवे ना किसे उपर शाहरग, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। मेरा रूप तक लै हो गया बपड़ा बग, सरबग तेरा संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरीआं मीटीआं वेख लै मुठ्ठीआं, बिन हथ्थां दयां वखाईआ। मैं जगत विकारे अन्तिम कुट्ठी आं, तन वजूद हक नज़र कोए ना आईआ। कलयुग रीतां वेख लै पुट्ठीआं, सति

सच विच ना कोए समाईआ। जगत जिज्ञासुआं विचारां होईआं झूठीआं, मनसा मन मन हल्काईआ। भाग लग्गा दिसे ना काया पंज भूतीआं, ततव तत रंग ना कोए रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर रूहां वेखीआं सुत्तीआं, शब्दी लए ना कोए अंगड़ाईआ। ख़ाली दिसे काया भाण्डे पंज बुतीआं, बुतख़ाने देण दुहाईआ। मेरे उत्ते होईआं खिज़ां दीआं रुतीआं, रुत बसन्त ना कोए महकाईआ । जीवां जंतां साधां सन्तां आसा होईआं दो चितीआं, चेतन तेरे रंग ना कोए समाईआ। मैनूं भाग लग्गया नहीं कलयुग अन्तिम धर्म धार दी पुतीआं, पूत सपूता नज़र कोए ना आईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी मैं कलयुग गई लुट्टी आं, कलयुग चौथा जुग लुटेरा नज़री आईआ। पवित्र रहीआं नहीं किसे दीआं कुटीआं, काया गढ़ ना कोए सुहाईआ। तेरा नाम निधान गावे कोई ना दो तुकीआं, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ । वाटां दिसण किसे ना मुकीआं, चुरासी पन्ध ना कोए चुकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले सतिगुर शब्द दूल्हे दुलारे दे दे छुट्टीआं, हुक्म हुक्म नाल जणाईआ। जिस दे हुक्म नाल कलयुग जड़ां जाण पुट्टीआं, पटने वाला संगी साथी नाल सोभा पाईआ। मैं चाहुंदी तेरे नाम दीआं नवीआं लिखीआं जाण पट्टीआं, अक्खर अक्खरां नाल रलाईआ। मैं खुशी विच तेरे दर ते आवां नट्ठीआं, भज्जां वाहो दाहीआ। सति धर्म दीआं सतिगुर पूरे खोल्ह दे गट्ठीआं, गंढु आपणी आप खुल्हाईआ। मेरे उत्ते उलटी गेड़ दे लठीआ, सतिजुग सच लए अंगड़ाईआ। औह वेख लै पैग़म्बरां सदीआं जादीआं टप्पीआं, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। धरनी कहे मैं चाहुंदी मेरे उत्ते दीन मज़्हब दीआं रहिण कोई ना पत्तीआं, पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। तेरा नाम निधान होवे ना कोई तोले मासे रतीआं, कीमत जगत ना कोए जणाईआ। उह लेख पूरा कर दे जो आशा रखीआं रागां छत्तीआं, छतीसे बतीसे तेरे अगे मेरी दुहाईआ। धरनी कहे मैं चाहुंदी मेरे उत्ते हर हिरदे विच तेरे प्यार दीआं जगदीआं होण बत्तीआं, जोत जोत विच्चों रुशनाईआ। आत्मा तेरे चरण कवल होण रतीआं, रत्न अमोलक हीरे हरिजन आप बणाईआ। मैं तेरे चरण सरन आपणा सथर बैठी घती आं, यारड़े आपणी सेज देणी सुहाईआ । कलयुग कूड़ कुड़यार मेटणीआं मतीआं, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। जन भगतां बीज बीजणा आपणे वतीआ, नाम निधान इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे दीन दयाले बख़शिंद, बख्शिश रहमत देणी कमाईआ। मैं तेरी धर्म धार दी बिना मात पित तों बिन्द, रूप अनूप तेरा नज़री आईआ। मेरा पवण स्वास तेरी चरण कवल जिंद, ज़िंदगी जगत ना कोए रखाईआ। मैं आस रखी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग विच हिन्द, हिन्द दे मालक दया देणी कमाईआ। तेरा रूप अनूप सागर सिन्ध, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। जन भगतां लेखे ला लै जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड आपणा रंग रंगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी रखीं लाजा, लाजवन्त अख्वाईआ। जन भगतां पूरा करना काजा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। तूं शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तैनूं सब ने किहा ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ । सतिगुर शब्द हो के नौ खण्ड फिरना भाजा, बिन कदमां कदम उठाईआ। सतिजुग सति धर्म चलाउणा रिवाजा, रवाइत आपणी देणी दृढ़ाईआ। जिस कारन निरगुण धार आयों देस माझा, सम्बल आपणा थान सुहाईआ। जिस बिध जन भगत उठाए मार के अवाज़ा, शब्दी शब्द कीती शनवाईआ। सीस पहन अगम्मी ताजा, तख्त निवासी होणा सहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरे उत्ते बणाउणा इक समाजा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस बिध तेरा भगत सुहेला जुगिंदर सिँघ जागा, ?जोत? बिन वरन गोत दीन दुनी देणी जगाईआ।

✪ १६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत सिँघ मनजीत कौर दे गृह गुड वीनज़ वले नं० १० इंगलैंड ✪

खुशी नाल उत्तों तके अर्श, अर्शी प्रीतम आरश तेरी खुशी मनाईआ। तेरा जल्वा नूर वेखां उत्ते फ़र्श, ज़िमीं ज़मां दे मालक ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी मिटावणहारा हरस, हवस सब दी पूर कराईआ। जन भगतां उत्ते करके तरस, रहमत निरगुण धार कमाईआ। जोती जाते दे के दरस, तृष्ना तृखा जगत कूड़ बुझाईआ। खुशीआं वाला सुहञ्जणा दिसे बरस, बरसी चार जुग दी नाल मिलाईआ। तेरा खेल अनोखा असचरज, अचरज लीला वेख वखाईआ। मैं कूक के बोलां गरज, ब्रह्मण्ड खण्ड दयां सुणाईआ। वेखो जिन अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मंनी अर्ज़, आरज़ू आपणे चरणां हेठ टिकाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे कर्ज़, मकरूज लेखा दए मुकाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। कलयुग शरअ शरीअत मेटे करद, कत्लगाह दा पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अन्धेरा गरद, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणा पूरा करे फ़र्ज़, फ़ाज़ल हो के आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। अर्श कहे मेरा मालक उत्ते मिट्टी ख़ाक, ख़ाकी जगत जहान वेख वखाईआ। शब्दी अस्व चढ़े राक, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। सच दुआर खोल्ह के ताक, भगत भगवान मेल मिलाईआ।

आत्म परमात्म बणा के साक, साजण हो के वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते मारे झाक, निरगुण हो के अक्ख खुल्ाईआ। जो ईसा करके गया टाक, तिस दा लेखा झोली दए टिकाईआ । बिन कदमां करके वाक, लैंड इंगलैंड वाली सुहाईआ। जिस दा लेखा हुक्म वाला अगे शारट, शूट करे ख़लक खुदाईआ। जो वेखणहारा जगत जहान वड्डे छोटे पारट, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा सब तों वखरा होणा आरट, अटैनशन हो के तके ख़लक खुदाईआ। उस दा बिन अक्खरां वाला पढ़ सके कोई ना कार्ड, भेव सके ना कोई खुल्ाईआ। जो सचखण्ड निवासी सब दा जारज, मालक दो जहान अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अर्श कहे मेरे मालक गॉड दा इक्को पोल, सतह बुलंदी नज़र कोए ना आईआ। जो निरगुण धार करे आपणा रोल, रोल नम्बर पिछले सब दे फोल फुलाईआ। जिस दा रूप रंग रेख नज़र आए ना किसे विच्चों होल, होली सोली आपणा खेल खिलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला लेखा जाणे उपर आपणा धौल, धरनी धार धार जणाईआ। सच दुआरा एकँकारा रिहा खोल्, गृह दुआरा इक्को इक सुहाईआ। सब दे लेखे पूरे करे कौल, इकरार इक इकल्ला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अर्श कहे मेरा मालक बिन रसना जिह्वा दए रस सवीट, गुण अवगुण समझ किसे ना आईआ। जो निरगुण धार आत्म करे टरीट, टंग वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी सोल धार दी हीट, अग्नी अग्ग अग्ग वखाईआ। सो भगतां पहुंच के उत्ते बीट, बिटवीन दा लेखा दए मुकाईआ। जिस दी सब तों मुश्किल सटरीट, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। हरिजन बख्श के आत्म धार सीट, सिट सटैंड दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार एकँकार धरनी धरत धवल धौल भेव खुल्ाए आपणा मार्ग धुर दी रीत, रीतीवान दया कमाईआ।

✪ १६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिंघ दे गृह ४० प्रीअरी इवेनिउँ हेरनसे लंडन ८ ✪

अर्श कहे फ़र्शा खुशीआं विच हो खुशहाल, बिन मस्ती मस्ती अन्तर चढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल वेख सची धर्मसाल, सच दुआर एकँकार आप सुहाईआ। तेरी जुग चौकड़ी दी पूरी करे घाल, कीती घाल आपणे लेखे पाईआ। सोहणयां कुझ आपणा दस्स लै हाल, हालत बीती दे जणाईआ। जिस साहिब दी सारे करदे रहे भाल, खोजदे रहे थांउँ थाँईआ।

जो आदि जुगादि इक इकल्ला परम पुरख अकाल, अकल कलधारी अगम्म अथाहीआ। तेरी बेनन्ती सुणे ते आपणा अगला दस्स सवाल, ख़ाहिश दीन दुनी जगत नाल मिलाईआ। जो वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। जिसदी जुग चौकड़ी जगत समझ तों बाहर अवलड़ी चाल, मार्ग पन्ध समझ कोए ना पाईआ। उह जल्वागर तैनूं देवे नूर जलाल, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दी सम्बल विच सारे करदे भाल, खोजत खोजत खोज खुजाईआ। उह दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध ठाकर आपणी दया कमाईआ। जो जुग जुग तैनूं देवे नाम सच्चा धन माल, अतोट अतुट ख़ज़ीना आप वरताईआ। जुग चौकड़ी लेखा जाणे शाह कंगाल, शहिनशाह हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग सच हुक्म वरताईआ। अर्श कहे फ़र्शा आपणी खुशीआं नाल लै अंगड़ाई, आलस निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तक नूर अलाही, अर्श फर्श दा मालक इक्को नज़री आईआ। जिस दा हुक्म संदेशा सब ने सुणना जून जुलाई, जुलाहा कबीर इशारे नाल दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु रहे ध्याई, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सो वेखणहारा तेरे उत्ते ख़लक खुदाई, खुद मालक हो के भेव चुकाईआ। सतिगुर शब्द बण के धर्म धार दा राही, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। जिस कलयुग तेरी दुरमति मैल धोणी शाही, शहिनशाह हो के करे सफ़ाईआ। जिस नूं सारे लभदे थल अस्गाही, महीअल खोजण थांउँ थाँईंआ। सो परम पुरख पुरखोतम आपणा भेव रिहा चुकाई, चुकन्ना हो के आपणी अक्ख लैणी उठाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा मैं देवां चाँईं चाँईं, खुशीआं खुशीआं खुशीआं ढोले गाईआ। मेरा मालक अगम्म गोसांई, गहर गम्भीर आपणी दया कमाईआ। वक्त सुहञ्जणा मैं तैनूं दयां वधाई, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण नूर जोत करे रुशनाई, अन्ध अन्धेरा दीन दुनी मिटाईआ। अर्श कहे फ़र्शा खुशीआं दे विच नच, तेरा रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। मैं तैनूं बचन सुणावां सच, संदेशा देवां धुरदरगाहीआ। जो लूं लूं अन्दर हर घट गया रच, लख चुरासी विच समाईआ। जो लहिणा देणा वेखे काया माटी कच्च, ततव ततां फोल फुलाईआ। जिस दे हुक्म विच कोई ना सके बच, बचपन सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अर्श कहे फ़र्शा निगाह मार लै आपणे चारों कुण्ट, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की खेल करे जिस नूं सारे कहिंदे वासी बैकुण्ठ, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ । जो दीन दुनी दो जहानां देवे कुट्ठ, कुटलता कढ्ढे कूड़ लोकाईआ। अरबां खरबां विच्चों हरि भगत सुहेले मेले इक्को मुठ्ठ, मुठ्ठी भर सृष्टी चरणां हेठ रखाईआ। एह खेल प्रभू दा कलयुग अन्तिम होणा अतुट,

बेअन्त हो के आप वरताईआ। सृष्टी भाग जाणे निखुट, खोट्टयां खरे ना कोए बणाईआ। आत्म धार प्यार जाणे तुट, टुटयां गंढु ना कोए पुआईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब दी जड़ देणी पुट्ट, पटने वाला सतिगुर शब्द आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे उत्ते शरअ दी होणी फुट्ट, फुटकल दिसे कूड़ लोकाईआ। सब नूं हलूणा देदे फड़ के गुट, बाहू बल आप प्रगटाईआ। दीन दुनी शरअ शरीअत इक दूजे नाल जाणे जुट, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अर्श कहे फ़र्शा मैं खुशीआं दे विच हसदा, हस्ती तक बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दस्सदा, देवत सुर बचया रहिण कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कोल बोल जैकारा अलख दा, अलख अलख कहि के सीस निवाईआ। उह वेखो तक्को बिन पुरख अकाले किसे दी पत कोए ना रखदा, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। जगत वणजारा रूप तके अन्तिम कक्ख दा, लख करोड़ी रोवण मारन धाहींआ। परमात्म खेल दरसाए आपणा प्रतख दा, पृथ्मी आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी करनी कार कमाईआ। अर्श कहे फ़र्शा वेख लै नूर अलाही झलक, झल्लया आपणी होश लै बदलाईआ। मालक वेख लै अर्शी प्रीतम जो वसे उत्ते फ़लक, ज़िमी असमानां बाहर डेरा लाईआ। जिस दी लख चुरासी ख़लक, ख़ालक हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा भेव पा सके कोई ना पलक, पलकां दा मालक आपणी कार भुगताईआ। निरगुण धार जोती नूर वेख लै डलक, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा उडीके मौत मलक, मलकुलमौत बैठी सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । अर्श कहे तैनूं कहिंदे ख़ाक मिट्टी, फ़र्शा तेरी की वड्याईआ। जुग चौकड़ी सृष्टी तेरे उत्ते पिट्टी, दुखी हो के सर्ब कुरलाईआ। प्रभू दा रूप वेख लै पत्थर इट्टी, पाहनां बैठे सीस निवाईआ। सुरती तन अन्दर किसे ना टिकी, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। ऋषी मुनी फिरदे खुल्ही लिटी, साचा सीस ना कोए गुंदाईआ। निरअक्खर धार दिसे कोई ना चिट्ठी, चेटक कूड़ जगत ना कोए चुकाईआ। उह तक लै अन्तिम इक्को हाहे उत्ते टिप्पी, जो टीका टिपणी मेटे खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अर्श कहे फ़र्शा मेरी लै सलाह, सज्जणा दयां जणाईआ। पुरख अकाल मंन लै इक मलाह, बेड़ा दो जहान चलाईआ। जो फिरे जलां थलां अस्गाह, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस नूं सब ने किहा वाह वाह, वाहिगुरु कहि के सीस निवाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां मन्नया नूर अलाह, आलमीन इक्को इक ख़लक खुदाईआ। सो तेरा गृह सुहञ्जणा दए सुहा, सेज सुहञ्जणी दए बणाईआ।

तूं सेवा करनी नाल चाअ, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। धूड़ी ख़ाक लैणी रमा, रमता वेखणा धुर दा माहीआ । जिस तेरे उत्ते दीन दुनी दा समां देणा बदला, समाप्त करे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। अर्श कहे फ़र्शा मैं संदेशा देवां अगम्मा, जिस दी सार कोए ना पाईआ। धुर संदेश दयां दृढ़ा, दृढ़ विश्वाश नाल समझाईआ। मेरा मालक इक खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। जिस दीन दुनी सृष्टी मज़्बां विच कीती जुदा, जुज़ वखरा वंड वंडाईआ। सो अन्तिम सब दा लहिणा देणा पूरा दए करा, करनी दा करता पूरा दए कराईआ। सब दी कबूल करे दुआ, पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त बेअन्त बेपरवाह, बेपरवाही आपणी विच समाईआ।

✪ २० बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरनेक सिंघ दे गृह ✪

अर्श कहे फ़र्शा आपणे तक लै नव खण्ड, बिन खण्डे खड़ग ध्यान लगाईआ। किस बिध सतिगुर शब्द वंडां रिहा वंड, हिस्सा दीन दुनी बणाईआ। फेर निगाह मार लै विच वरभण्ड, वरभण्डी दा मालक की आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा इशारा तक लै उत्ते ब्रह्मण्ड, पुरीआं लोआं तों बाहर दयां वखाईआ। फिरनी दरोही जेरज अंड, मित्रा उत्भुज सेत्ज दए दुहाईआ। शाह सुल्तानां नंगी होणी कंड, सीस हथ्थ ना कोए रखाईआ। सीने पए किसे ना ठण्ड, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। उह तक लै कलयुग औध गई हंड, अगे अवर ना कोए वधाईआ। फर्श कहे अर्शा मैं वी कूड़ी क्रिया पापां चुकी पंड, बोझल हो के दयां दुहाईआ। मेरे उत्ते सृष्टी दृष्टी अन्दर हो गई रंड, हरि कन्त सुहाग ना कोए हंडाईआ। आत्म धार टुट्टी सके कोई ना गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी नज़र किसे ना आईआ। मैं वी निर्धन हो के मंगां रिहा मंग, मांगत भिखक हो के झोली डाहीआ। मेरे साहिब सुल्तान नौजवान आपणी धारों आपे बाहर लँघ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सच स्वामी हो के देणा संग, सगला संग रखाईआ। निगाह मार लै गोदावरी गंग, यमुना सरस्वती रही कुरलाईआ । भेव खुल्ले ना किसे ब्रह्म हँ, पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा तक लै तत पंज, पंचम शब्द ना कोए शनवाईआ। हर हिरदे अन्दर रंज, रंजश दूर ना कोए कराईआ। मेरी नेत्र वगे हंझ, रो रो दयां दुहाईआ। दरोही नव सत्त तेरे हुक्म दा

होण वाला जंग, खण्डा खड़के थांउँ थाँईंआ। तेरा समझे कोई ना ढंग, किनारा वेखण कोए ना पाईआ। कलयुग किनारा तक लै कन्ढ, कन्ढी बैठे अवतार पैग़म्बर गुरु ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब दया कमाईआ। अर्श कहे फ़र्शा खेल तक लै सुदीआं वदीआं, पख पक्खां विच्चों बदलाईआ। जगत धार वेख लै नदीआं, कूड़े वहिणां वहिण वहाईआ। कलयुग बीतदीआं तक लै सदीआं, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। शाह सुल्तानां मिटदीआं वेख लै गद्दीआं, गदागर होवे ख़लक खुदाईआ। शरअ दीआं अन्त रहिणीआं नहीं हद्दीआं, हदूदां वंड ना कोए वंडाईआ। मनसां मज़्बां रहिण ना बध्धीआं, बन्धन सारे रिहा तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फर्श कहे मेरे अर्शी मीत मुरार, मित्रा तैनूं दयां जणाईआ। बिन नेत्र नैणां निगाह लैणी मार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। दीन दुनी तक संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। अर्शी प्रीतम की हुक्म संदेशा देवे आपणी धार, धरनी धरत धवल धवल जणाईआ। हलूणा दे दे शब्दी शब्द तेई अवतार, पैग़म्बरां आपणा रंग वखाईआ। गुरु गुरदेवां दे हुलार, हलूणा धुर दा नाम लगाईआ। सचखण्ड दा खोल्ह किवाड़, कुण्डी खिड़की बन्द ना कोए रखाईआ। पुरख अकाले कर निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। जो मालक ख़ालक जोती जाता नूर उज्यार, धरनी धरत धवल धौल आपणा डेरा लाईआ। मेरी पावण आया सार, महासार्थी हो के वेखे थांउँ थाँईंआ। मैं करां दरस दीदार, ईद चन्द नूर रुशनाईआ। जो मेरा लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, मकरूज़ मेरा लेखा झोली पाईआ। नव सत्त मेटे धूंआँधार, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। जिस दा इक्को निरअक्खर धार होवे जैकार, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दए सुणाईआ। जिस दा सोहे बंक दुआर, एकँकारा इक्को इक वखाईआ। सच सति दा देवे आप अधार, आदर्श आपणा इक वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दए निवार, निरगुण हो के आपणा हुक्म वरताईआ। फर्श कहे मैं उस प्रभू दे चरण कवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। धूड़ी माटी ख़ाक लावां छार, मस्तक टिक्के अगम्म रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब दया कमाईआ। अर्श कहे फ़र्शा मैं सचखण्ड दुआरे विच्चों तकदा, धरनी धरत ध्यान लगाईआ। साचा खेल वेखणा हकीकत हक दा, जो धुर मालक आप कराईआ। मेरा तेरा वअदा आदि जुगादी कौल इकरार पक्क दा, कच्ची गंढ ना कोए रखाईआ। धुर दा साहिब वेस करे नटूए नट दा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। नव खण्ड कूड़ी क्रिया जड़ वेख लै पटदा, पाटल हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जो वणजारा बणे धुरदरगाही अगम्मी हट्ट दा, नाम वस्त इक वरताईआ। जिस दा नूर जोत प्रकाश लट लट

दा, दो जहानां डगमगाईआ। जो लहिणा देणा जाणे तेरे उत्ते तीर्थ तट दा, मन्दिर मस्जिद खोजे थांउँ थाँईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्म वरते आपणा समरथ दा, दूसर नज़र कोए ना आईआ।

✪ २० बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ मुखत्यार सिँघ दे गृह ७८ मुसविल हिल रोड लंडन नं० १८ ✪

अर्श कहे फ़र्शा तक लै जोती जाता, निरगुण निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। आदि जुगादि वेख लै पित माता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ध्यान लगाईआ। निराकार निरँकार जो सदा सुहेला इक इकांता, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। उह तेरे उत्ते सरगुण बंधाए आपणा नाता, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर समझाईआ। सच सच दी देवणहारा दाता, दाता दानी दया कमाईआ। जो दो जहानां पन्ध मार के वाटा, दर तेरा इक सुहाईआ। तूं सुहञ्जणी रखणी आपणी खाटा, खटीआ अवर ना कोए जणाईआ। तेरा चीथड़ वेखे कलयुग अन्तिम पाटा, पारब्रह्म प्रभ आपणा ध्यान लगाईआ। धरनी धरत धवल धौल दा तके खुल्ह् झाटा, मेंढी सुहाग सीस ना कोए गुंदाईआ । जिस लहिणा देणा लेखा पूरा करना गोबिन्द धार अमृत बाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अर्श कहे फ़र्शा तक लै जल्वा नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दा दो जहानां वड ज़हूर, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। जो लेखा जाणे मण्डल मण्डप चन्द सितार सूर्या सूर, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। सब दी आशा मनसा करे पूर, पूरन ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। शब्द अनादी दे के तूर, तुरत सुरत सोई लए जगाईआ। कलयुग लेखा लए ज़रूर, ज़रूरत धरनी धरत धवल आपणे नाल मिलाईआ। जन भगतां हो हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक वेखे चाँईं चाँईंआ। कोटन कोटि जन्म दे बख्श कसूर, बिन कसर इशारीए दए उडाईआ। जिस दीन दुनी करनी मजबूर, मजबूरी विच दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी कार अगम्म कमाईआ। अर्श कहे फ़र्शा मेरे अन्दर ख़बरां अगम्मीआं भाखीआं, बिन जगत विद्या दयां दृढ़ाईआ। जो सतिगुर शब्द गल्लां निरअक्खर धार आखीआं, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। जो तेरे उत्ते गुर अवतार पैग़म्बरां लिखीआं साखीआं, सुख़न धुर दे गए दृढ़ाईआ। उन्हां सब ने परम पुरख दीआं मन्नणीआं आखीआं, सिर सर जगत गए झुकाईआ। सो साहिब स्वामी लहिणा देणा देवे बाकीआ, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। तूं नव खण्डां दीआं खोल्ह् के रखणीआं ताकीआं, सत्तां दीपां पड़दा आप चुकाईआ। जिस कलयुग अन्त मेटणीआं वाटीआं,

वारस हो के वेख वखाईआ। उह तेरीआं मंज़लां तके घाटीआं, घट घट वसणहारा धुरदरगाहीआ। निरगुण नूर जोत जगाए नूर ललाटीआं, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। फर्श कहे अर्शा मैं उसे दा तकां राह, जो रैहबर धुरदरगाहीआ। जो लख चुरासी बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। तेरा लहिणा देणा मेरे उत्ते जाणे थल अस्गाह, समुंद सागर टिल्ले पर्वत अस्गाहां खोज खुजाईआ। जिस दा सब ने अक्खरां विच गाया नाँ, नाउँ निरँकार कहि के सीस निवाईआ। उह अन्त कन्त भगवन्त मेरी पकड़े बांह, साजण हो के होए सहाईआ। मैं उस दे बलि बलि जां, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जो मेरी धरत सुहञ्जणी करे पवित्र थाँ, थनंतरां देवे माण वड्याईआ। मेरा पवित्र करे गराँ, खेड़ा सच दा सच दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। फर्श कहे अर्शा मैं उसे दा राह तकदा, तकवा इक्को उत्ते रखाईआ। जो मालक हकीकत हक दा, हाकम दिसे नूर अलाहीआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि यक दा, यके बाद दीगरे गुर अवतार पैग़म्बर गए सुणाईआ। तूं सत्त दीप मंज़लां कटदा, कटाकश आपणा नाम लगाईआ । मैं
४८५ उसे दी सरन सरनाई ढठ्ठ दा, निव निव लागा पाईआ। जिस उलटा देणा गेड़ा कलयुग कूड़ी लठ दा, नव सत्त सत ४८५
२४ भुआईआ। बुरज हँकारी वेखां ढठदा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ २४
दा, गुरुदुआरा इक्को रंग चढ़ाईआ। उस दा खेल तकणा आत्म परमात्म धार मानव ज़ाती इक्खु दा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जो भगतां अन्दर प्यार विच सतिजुग त्रेता द्वापर आया नठदा, कलयुग अन्तिम आपणा पड़दा दए चुकाईआ। मैं उसे दा नाम रटदा, जो रट्टा मेटे खलक खुदाईआ। मैं ओट उसे ते घतदा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह आप सुहाईआ। अर्श कहे फ़र्शा सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। दीन दयाल वेस वटावेगा। काल महाकाल नाल मिलावेगा। जगत जहान बेमिसाल खेल खिलावेगा। जाणी जाण हो के वेख वखावेगा। शब्द बाणी डंक वजावेगा। आत्म परमात्म हाणी जोड़ जुड़ावेगा। शाह सुल्तानी भूप इक्को आपणा हुक्म वरतावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव चुकावेगा । आप आपणा भेव चुकावेगा। पर्दा ओहला दो जहान उठावेगा। साचा सोहला नाम दृढ़ावेगा। काया चोला रंग चढ़ावेगा। मौला हो के मेल मिलावेगा। पूरब कीता कौल इकरारा वेख वखावेगा। प्रगट हो के उपर धवला, धरनी धरत धौल जोत चमकावेगा। जिस नूं सब ने कहिणा नूर अलाही अवला, आलमीन हो के वेख वखावेगा। जिस दा इशारा दे के गया काहन सँवला,

साँवल सुंदरीआ रूप अनूप प्रगटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरतावेगा। अर्श कहे फ़र्श तेरी तकां फ़रमाबरदारी, फ़ारग़ हो के वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। तूं आदि जुगादि मंनी इक्को ताब्यादारी, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। तेरा नाता नाल जोत निरँकारी, जो निरवैर नूर अलाहीआ। जिस ने तेरे उत्ते सृष्टी पसारी, पसर पसारी हो के वेख वखाईआ। जिस जुग चौकड़ी पार उतारी, कोटन कोटि गए पन्ध मुकाईआ। सो वेखे विगसे पावे सारी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला जिस दा रूप ना पुरख ना नारी, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। तूं आपणा खोल्ह के रखीं दर दरवाज़ा जिथ्थे मिले मित्र मुरारी, मोहण माधवा आपणा दरस दिखाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारी, बिन सीस सीस निवाईआ। उह पावे तेरी सारी, सर्ब घट वासी दया कमाईआ। तूं निव निव करें निमस्कारी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ । फर्श कहे अर्शा मैं उस दा होणा शुकर गुज़ारी, शुकराने विच लागां पाईंआ। धन्न भाग जो निरगुण खेल कीता दुबारी, दोहरी आपणी कल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरण कवल बिना धूड़ तों लावां छारी, बिना मस्तक मस्तक ख़ाक रमाईआ।

✪ २० बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ निर्भय सिँघ दे गृह ४१ वुड लैंड गारडन नं० १० लंडन ✪

नारद कहे धरनीए मैथों लै अगम्मी पर्ची, प्राचीन दा लेखा दयां जणाईआ। मैं फिरदा आया मन्दिर मसीतां विच चर्ची, चारागाहां खोज खुजाईआ। मेरे कोल चार जुग दी सब दी पुराणी अर्ज़ी, जो बिन अक्खरां लेख बणाईआ। उह संदेशा देवे की परवरदिगार दी मर्ज़ी, करनी दा करता की खेल खिलाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा बणे दर्दी, दुखियां दर्द वंडाईआ। उठ खेल तक लै आपणे घर दी, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। की धार होवे नरायण नर दी, की आपणी कल वरताईआ। धरनी कहे नारदा मैं दिवस रैण डरदी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण बिन कदमां तों चढ़दी, पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। मैं खेल वेखां आपणे उत्ते हँकार गढ़ दी, हउमे विच ख़लक ख़ुदाईआ। किसे ख़बर नहीं चोटी जड़ दी, चेतन भेव ना कोए खुल्हाईआ। आत्म धार परमात्म नाम कोई ना पढ़दी, जगत विद्या होई हल्काईआ। त्रैगुण अन्दर सृष्टी मेरे उत्ते सड़दी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। शरअ दी धार वेख लड़दी, सीस धड़ रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे

धरनीए आपणा अन्दरों खोल्ह लै भेत पड़दा, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जुग जुग नवां घाड़न घड़दा, भन्न्हणहार धुरदरगाहीआ। जो जोती जाता हो के साढे तिन्न हथ्थ अन्दर वड़दा, सम्बल आपणा धाम सुहाईआ। जो निरगुण निरवैर हो के नौ खण्ड पृथ्मी खड़दा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मैं वी उसे दे कोलों डरदा, भय विच सीस झुकाईआ। भिखारी बण के अगम्मे दर दा, दरवेश हो के अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे धरनीए मेरी बोदी दए इशारा, बुद्धीवान समझ कोए ना पाईआ। मेरा खेल सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी मेरी दए गवाहीआ। मैं प्रभू दा भगत प्यारा, प्रेमणे तैनूं दयां सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा कुँवारा, जगत कन्नया ना कोए परनाईआ। मैं आदि जुगादि तूं मेरा मैं तेरा लाउँदा रिहा नाअरा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैं तकदा रिहा निरगुण सरगुण खेल पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा लेख लिख सके ना काग़ज़ कलम विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव भेव कोए ना आईआ। उह निरगुण नूर ज़ाहर ज़हूर जोती जाता खेल करे दुबारा, दोहरी आपणी कल प्रगटाईआ। जिस ने कलयुग मेटणा अन्ध अँधयारा, सतिजुग नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। तेरा मेटणहारा धूंआँधारा, धरत धवल धौल तूं फिरना चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। धरनी कहे नारद तूं बड़ा पुराणा पंडत, जगत विद्या तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। मैं उसे दर दी मंगत, भिखक हो के झोली डाहीआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मानस ज़ाती चाढ़ दे रंगत, रंग चलूल आप चढ़ाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। चार वरन बणा दे इक्को संगत, दीन मज़्हब रहिण कोए ना पाईआ। मेरी निमाणी दी मन्ज़ूर करनी मिन्नत, निव निव लागां पाईआ। जे आ गयों लहिंदी सिम्मत, कूट आपणे लेखे लाईआ। मेरे विच नहीं कोई हिम्मत, कलयुग अन्तिम हौसला बैठी ढाहीआ। परम पुरख मेरी अन्दरों मेट दे चिन्नत, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मैं चाहुंदी मेरे भगवन्त मेरे उत्ते रहे कोई ना निन्दक, चुगली मुख ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा वक्त आप सुहाईआ। नारद कहे धरनीए उठ मना लै अगम्मा सगन, सगला भउ मिटाईआ। सच प्रीती विच हो जा मग्न, मगरला पन्ध रहे ना राईआ। नी तेरे लेखे लाए वजूद बदन, तन माटी रंग चढ़ाईआ। उह तक लै की लेखा होण वाला विच अदन, इन्साफ़ आपणा रिहा जणाईआ । मूसा की करे यतन, यथार्थ दयां दृढ़ाईआ। ईसा खोल्ह के वेखे अख़ीरी पतन, पत्रका पिछली हथ्थ उठाईआ। की खेल करे परवरदिगार सांझा यार जो सब दी डोरी आवे कटण,

कटाकश आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए मेरी बोदी तों पुछ लै हाल, हालत तैनूं दए जणाईआ। जिस दी याद विच बीत गए कोटन काल, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। उह ख़लक दा ख़ालक खेल करे कमाल, कमलापाती आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी समझ सके कोई ना चाल, अवलड़ी चले थांउँ थाँईंआ। जो सुहावणहारा गगन मण्डल थाल, धवले तेरा पड़दा दए चुकाईआ। फल वेखे लख चुरासी वाले डालू, पत्त टहणीआं खोज खुजाईआ। तूं बिना सुरती तों करीं ख्याल, बिना बुद्धी तों ध्यान लगाईआ। जिस दा सब ने दिता अहिवाल, संदेश्यां विच गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी लेखे पावे आदि जुगादि घाल, अगे घायल होण दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ २१ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरचन्द सिँघ दे गृह ३६ टुडोर रोड साउथ हाल मिडऐकस लंडन ✪

नारद कहे फर्श मैं नव सत्त भज्जां सारी रैण, बिन कदमां आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तक्कया साचा मिल्या कोई ना सज्जण सैण, मीत मुरार नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी आत्म परमात्म धार होई त्रफ़ैण, पारब्रह्म ब्रह्म संग ना कोए निभाईआ। मैं तैनूं सच संदेशा आया कहिण, कहि के दयां दृढ़ाईआ। वक्त सुहञ्जणा तक लै जो बाल्मीक इशारा दिता विच रमायण, राम रामा ध्यान लगाईआ। मैनूं वेख के मूल ना आया चैन, हैरानी विच मेरी दुहाईआ। उह तक लै अवतार पैग़म्बर गुर दीनां मज़्बां धार इक दूजे नाल खहण, कलमा नाम करे लड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट वहिन्दा वहिण, जीवां जंतां साधां सन्तां रिहा रुढ़ाईआ। धर्म दा नाता रिहा ना मात पित भाई भैण, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे फर्श मैनूं अर्श तों परे सतिगुर शब्द मारीआं आवाज़ां, ज़िमीं असमानां बाहर हुक्म दिता दृढ़ाईआ। उठ तक लै निरगुण धार शाह पातशाह शहिनशाह धुर दा राजा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस आदि आदि सृष्ट सबाई साजण साजा, विष्न ब्रह्मा शिव आपणे हुक्म विच चलाईआ। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं अनहद शब्द वजाउँदा रिहा वाजा, आपणी धुन आप प्रगटाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम आपणा रचणवाला काजा, करनी दा करता आपणा

हुक्म वरताईआ। उस नूं सब ने निरगुण धार मन्नया ग़रीब निवाजा, निरगुण निराकार निरँकार आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं दो जहानां फिरे भाजा, भजन बन्दगी तकां ख़लक ख़ुदाईआ। दिवस रैण घड़ी पल ना सोया ना जागा, जागरत जोत बिन वरन गोत इक्को आपणा रूप दरसाईआ। जो वेखणहारा सृष्टी दृष्टी अन्दर अन्तष्करन वैरागा, गृह गृह अन्दर काया माटी खोज खुजाईआ। जिस दी तार सितार अगम्मी होए रबाबा, जगत साज वंड ना कोए वंडाईआ। उस दा हुक्म सुण लै जो देवणवाला विच काअबा, मकबरयां विच मुर्शद माटी ख़ाक लैण अंगड़ाईआ । जो शाहो भूप सुल्तान दरगाह साची बण नवाबा, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे फर्श मैं धुरदा दस्सां फ़रमाना, फ़रमाबरदार हो के सुणना चाँईं चाँईंआ। उह वेख की खेल करे वाली दो जहाना, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा सतिगुर शब्द शब्द बलवाना, बिन तन वजूद माटी ख़ाक सोभा पाईआ। जिस दा विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण खेल दीन दुनी विच जहाना, जागरत जोत इक्को इक डगमगाईआ। सो परम पुरख परमात्म बदलणहार विधाना, बिध आपणी इक समझाईआ। जिस दा तुरीआ तों बाद इक्को इक तराना, त्रैगुण अतीता आप दृढ़ाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुर दस के गए निशाना, निशाना आपणा नाम चलाईआ। सो परम पुरख परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह पहर के साचा बाणा, महिबान बीदो आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा बिना अक्खरां लेख जग नेत्र नज़र ना आए जो हुक्म हुक्म देवे फ़रमाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। फर्श कहे नारद मेरा मिट्टी ख़ाक तन वज़ूद, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप नज़री आईआ। मेरा मालक ख़ालक हक हकीकत वाला इक महबूब, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दी मंज़ल अगम्मी बैठा हक मकसूद, मुश्किल मेरी हल कराईआ। जिस दा इशारा दिता पैग़म्बरां विच हज़ारा दारूद, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। सो हर घट हर थाँ दिसे मौजूद, गृह गृह अन्दर आपणा डेरा लाईआ। जिस मेरे उत्तों दीन दुनी दी मेटणी दूज, शरअ शरअ दा पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म भेव खोल्हणा गूझ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म बख़्शणी सूझ, सोई सुरती शब्द उठाईआ। भाग लगा के काया बुत, बुतखानयां करे सफ़ाईआ। जिस कलयुग अन्दर सतिजुग सुहाउणी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सो पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। जो मेरे उत्ते मेहरवान हो के पए तुठ, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ देवे पुट, पटने वाला सतिगुर शब्द शब्द नाल मिलाईआ। अमृत जाम धरनी धरत धवल धौल अंमिओं रस

देवे घुट, बिन रसना रस चखाईआ। जिस नाल हरि हिरदे धर्म दी धार पए फुट, फुटकल दिसे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप चढ़ाईआ। फर्श कहे नारद मैं उस नूं उडीकदा, थित वार वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग जांदा बीतदा, सदी चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं वणजारा होणा अन्तिम उस दे इक्को गीत दा, जो गोबिन्द सोहला ढोला दए सुणाईआ। मेरे उत्तों झगड़ा मिटणा मन्दिर मसीत दा, काअबा कायनात रहिण कोए ना पाईआ। मैं प्यासा आत्म परमात्म प्रीत दा, प्रीतम मेला मेले सहिज सुभाईआ। मैं रूप तकणा ठांडे सीत दा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। इक्को माण तकणा हस्त कीट दा, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। रंग चढ़ाउणा अगम्म मजीठ दा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। रस बख्शे जो आपणे मीठ दा, बिन रसना जिह्वा दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। नारद कहे फ़र्श, सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण वेख वखावेगा। एकँकारा भेव चुकावेगा। आदि निरञ्जण नूर रुशनावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान डगमगावेगा। पारब्रह्म रूप प्रगटावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। सचखण्ड खण्ड दुआर सुहावेगा। दरगाह साची दर दरवाज़ा आप खुल्हावेगा। ग़रीब निवाज़ा आपणा हुक्म वरतावेगा। तेरा खेल तके शाहो भूप बण राजा, शहिनशाह आपणा पर्दा आप उठावेगा। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द वाला बाज़ा, बाज़ी दीन दुनी उलटावेगा। जो मानस मानव मानुख बुद्धी हो गई वांग कागा, काग हँस रूप बदलावेगा। हर हिरदे अन्तर बख्श अगम्म वैरागा, वैरी अन्दरों बाहर कढावेगा। शब्द धुन सुणा के अनादी वाजा, अनहद आपणा आप वजावेगा। जोती जाता हो के जावे जागा, जागरत जोत डगमगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हावेगा। नारद कहे फ़र्शा मेरे कोल बहुत पुराणी हदीसा, हज़रतां तों बाहर दयां जणाईआ। जिस विच खेल इक इक्कीसा, बीस बीसा नाल मिलाईआ। जो संदेशा दिता बिन अक्खरां नूर अलाही ईसा, इस्म आज़म इक जणाईआ। जो गोबिन्द धार कहि के गया जगदीसा, जगदीशर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे भय विच आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब ने पीसण पीसा, सेवक हो के सेव कमाईआ। उस दा लहिणा देणा पूरा होणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल विच उनीसा, एका नाया मिल के वजे वधाईआ। इक्को छत्र झुल्ले साहिब दे सीसा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे फ़र्शा मेरे कोल नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दीआं पूरब किताबां, कुतबख़ान्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दे विच ब्रह्मण्ड खण्ड दीआं महिराबां, शरअ

दी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस विच संदेशा देवे इक अगम्म अहिबाबा, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। जिस दा सब दे नाल निरगुण धार होया वायदा, इकरार इकरार विच्चों प्रगटाईआ। उह आपणा हुक्म वरते बाकायदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आह तक लै सचखण्ड निवासी जो जोती जाते कीता मुआयदा, मेहरवान हो के आपणा हुक्म वरताईआ। पता नहीं कोटां विच्चों किस नूं मिलणा फ़ायदा, जगत गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक दरसाईआ। नारद कहे फर्श मेरे कोल चिठ्ठी बिन अक्खरां वेख लै लिखी, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। जिस विच गोबिन्द धार नज़री आवे सिक्खी, बिन जग नेत्रां वेखणा चाँईं चाँईंआ। जिस दी समझ सके कोए ना थिती, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। उह मित्र प्यारे दी याद विच अगम्मी मिती, जो यारड़ा सेज दए गवाहीआ । हकीकत नाल बिन कलम शाही काग़ज़ तों गोबिन्द ने हाहे उत्ते लाई टिप्पी, हँ ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म दृढ़ाईआ। जिस दी धार उत्ते जोत निरँकार सदा लिटी, आत्म सेजा सेज सुहाईआ। जिस दी बनावट बणे कदे ना पत्थर नाल इट्टी, पाहिनां गंढु ना कोए पुआईआ। जदों वेखो जोती नूर नूर नूर दी धार चिट्टी, दूजा रंग ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे फ़र्शा गोबिन्द फड़ के मुखी तीर, दन्दां हेठ दिती दबाईआ। फेर कट के शरअ ज़ंजीर, कड़ी कड़ी दिती बदलाईआ। इशारा दे के भगत कबीर, चरण कवल ल्या बुलाईआ। नानक बाणा पहर फ़कीर, फ़िकरा इक्को ढोला गाईआ। मुहम्मद आप पढ़ी तकबीर, तकरीर सुणन कोए ना पाईआ। ईसा नेत्र वहा के नीर, छहबर नैण लगाईआ। मूसा कहि के शाह जज़ीर, ज़ोमूउल ज़ुमा नज़मूअर ज़ुम नूरे ज़वा रौशने नुमा नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे फर्श मेरे कोल वेख होर निशानी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं समझे ना कोए अक्ल विद्या विद्वानी, विद्दत वंड ना कोए वंडाईआ। मंज़ल हक ना आए रुहानी, रूह बुत रोवण मारन धाहीआ। गोबिन्द हथ्थ रख के उत्ते पेशानी, पेशीनगोई दिती सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मानव ज़ाती पुरख अकाला सब दा होणा बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। नानक मूसा ईसा मुहम्मद किहा विच हैरानी, हैरत नाल सुणाईआ। गोबिन्द उह वक्त सुहेला जिस वेले आवे नूर अलाह नुरानी, इक इकल्ला अकल कलधारी आपणा वेस वटाईआ। धरनी धरत धवल धौल चार कुण्ट दहि दिशा वधी होवे बेईमानी, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। दीनां मज़्हबां अन्दर होवे शैतानी, शरअ संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे फर्श निगाह मार लै इकी बैसाख, बिना अक्खां अक्ख तकाईआ। जो चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुर गए आख, अक्खरां नाल अक्खर मिलाईआ। उह मेरे अन्तष्करन विच अगम्मी बात गई भाख, भाख्या तैनूं दयां सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल करना लोकमात विच बैसाख, साख्यात आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। फर्श कहे मेरे कोल नारदा हुक्म तहरीरी, गुर अवतार पैग़म्बर उंगलां नाल गए लिखाईआ। कलयुग अन्त शरअ दी टुटणी ज़ंजीरी, मज़्ज़बां गंढु ना कोए बंधाईआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीरी, दीन दुनी रंग वख ना कोए रंगाईआ। जो संदेशा दिता लोई नूं कबीरी, कबरां तों बाहर जणाईआ। रविदास आपणे वस्त्र पाटे वेख के चीरी, चिरी विछुंनयां गया जणाईआ। पैग़म्बरां अन्त होणी दिलगीरी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। झगड़ा वेखणा हस्त कीड़ी, कीट कीटां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा साहिब इक गुसाँईंआ। फर्श कहे नारदा मेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी ओट, ओड़क दयां जणाईआ। मेरे विच अवतार पैग़म्बर
४६२ गुरु हो गए कोटन कोट, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। नाम शब्द दी लाउँदे गए चोट, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। मैं ४६२
२४ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लँघदे वेखे बहुत, भज्जे वाहो दाहीआ। खेल तकदा रिहा निरगुण निराकार अगम्मी जोती जोत, २४
जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस नूं पोह सके ना आदि जुगादि कोई मौत, मलकल बैठी सीस निवाईआ। शरअ विच होवे कोई ना फ़ौत, फ़तवा सके ना कोए लगाईआ। सो मालक स्वामी कन्त कन्तूहल इक्को दिसे खौंत, ख़सम ख़समाना इक अख्वाईआ। जिस नूं गा सकण ना बुल्लृ होंट, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त आप वरताईआ। फर्श कहे नारदा मैं जुग जुग सुणदा रिहा संदेश, सँध्या सरघी ध्यान लगाईआ। चार जुग दे शास्त्रां वेख्या उपदेश, उपनिशदां देण गवाहीआ । मैं अक्खर अक्खर घोख्या चारे वेद, चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी नाल मिलाईआ। मेरे परम पुरख दा अन्त पा सके कोई ना भेत, भेव भाव कहिण किछ ना आईआ। जो आदि जुगादि अछल अछेद, वल छलधारी इक अख्वाईआ। जुग बदलणा जिस दी खेड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग डेरा ढाहीआ। उस दा नाम संदेशा सब तों वखरी डेड, रागां नादां बाहर दए जणाईआ । जो कलमा कायनात रिहा भेज, भजन बन्दगी इक दृढ़ाईआ। जो मानणहारा भगतां आत्म सेज, सुहञ्जणी इक्को इक वखाईआ। जिस दा जोती जल्वा तेज, अप तेज़ वाए पृथमी आकाश आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद बिन ज़बान तों बोलदा, फर्श ख़ाकी तैनूं दयां जणाईआ। सुण हुक्म संदेशा मेरे माही ढोल दा, जो निरअक्खर धार विच्चों जणाईआ। जिस दा लहिणा देणा नहीं कला सोल दा, हटवाणा वंड ना कोए वंडाईआ। उह नाम निधाना देवणहारा इक दुआरा खोल्हदा, ख़ालक ख़लक इक समझाईआ। जो हर घट अन्दर मौलदा, मौला हो के दिसे नूर अलाहीआ। जिस दा प्रेम हकीकी चोहल दा, चोजी हो के संग निभाईआ। उस दा नज़ारा तक लै आपणे अन्तर कोल दा, कुल मालक हो के पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आपणे आप उठाईआ। झट नारद खुशीआं दे विच हस्सया, हस के रिहा जणाईआ। फ़र्शा मैं तेरे कोल आया नस्सया, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। मेरे कोल तक लै होड़ा उपर सस्सया, सो पुरख निरञ्जण दिता वखाईआ। जिस तीर अणयाला दो जहानां कसिआ, कसम खा के दयां जणाईआ। जिस तेरे उत्तों कलयुग रैण अन्धेरी मेटणी मसिआ, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। जो भगतां अन्दर होवे वस्या, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जिस दे हुक्म नाल जगत जहान त्रैगुण माया डसिआ, नव खण्ड विख उतर कोए ना जाईआ। माया ममता मोह विकारे मानस मानव मचिआ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जिस अन्तिम भन्न्हणा काया माटी कच्चया, तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। उह लेखा पूरा करे मनूए मन जो साढे तिन्न हथ्थ अन्दर नच्चया, नटुआ हो के आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फर्श कहे नारदा मैं बिन हथ्थां करां अरदास, निमाणा हो के सीस झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरे आ जा पास, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी अन्तर निरंतर पवण तक स्वास, साह साह खोज खुजाईआ। सुरती शब्द तक लै रास, गोपी काहन वेख वखाईआ। निगाह मार लै पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। तेरी सृष्टी ख़ाली दिसे लाश, नाम वस्त नज़र कोए ना आईआ। मनुआ घर घर होया बदमुआश, बदी दा पन्ध ना कोए मुकाईआ। पंच विकारा भोग बिलास, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। तेरा मित्र प्यारा बणे कोई ना ख़ास, ख़ालस रूप नज़र कोए ना आईआ। निरगुण हो के कर तलाश, नव सत्त वेखणा चाँईं चाँईंआ। जीवां जंतां बुद्धी होई फ़ाहश, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। जोती नूर दिसे ना कोई प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। तेरे उत्ते रिहा किसे नूं नहीं विश्वाश, विश्व दे मालक मेरा लेखा देणा मुकाईआ। फर्श कहे मैं धरती रूप होया उदास, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब नूं भर भर दए ग्लास, अमृत रस ना कोए चखाईआ। माया ममता पूरी होवे किसे ना ख़ाहिश, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। तेरा धर्म मेरे उत्तों होया नास, नास्तक रूप दिसे

लोकाईआ। पन्ध मुके ना किसे दस दस मास, चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां आप कर तलाश, लख चुरासी चारे खाणी घट घट अन्तर निरंतर वेख वखाईआ।

✪ २१ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ प्यारा सिँघ दे गृह
३० बाल फ़ोर रोड साऊथ हाल लंडन ✪

इक्की बैसाख कहे नारद पाउँदा आवे रौला, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले अगम्म सुणाईआ। माटी ख़ाक रूप फर्श तक लै आपणा मौला, निरगुण निराकार निरँकार अगम्म अथाहीआ। बिन मति बुद्धी समझ ला उस दा इकरार कौला, जो वअदे अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाल रखाईआ। जिस दा खेल होणा उपर धरनी धरत धवल धौला, धर्म दी धार वेख वखाईआ। नव सत्त जिस भार करना हौला, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। जिस दे गृह घर दा निरगुण सरगुण नानक बणया गोला, गोबिन्द ढोला गाया धुर दे माहीआ। उस दा सतिगुर शब्द दो जहानां बण विचोला, विचला भेव रिहा चुकाईआ। जो संदेशा देवे निरअक्खर धार अगम्मी ढोला, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आप जणाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा बणे तोला, तोलणहार एकँकार इक अख्वाईआ। जिस ने सच दुआर इक्को होवे खोल्हा, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द उस दा सुण ला बोला, अनबोलत की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी चरण धूड़ लाए शंकर नाथ भोला, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाईआ। बैसाख कहे नारदा तूं किधरों आया दौड़ा, धर्म दी धार जणाईआ। नारद कहे मैं वेख के आया दीन दुनी रस मिट्ठा कौड़ा, तन वजूदां ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म मेल मिले ना किसे जोड़ा, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। मैं संदेशा देवण आया नौ खण्ड पृथ्मी ससे उपर होड़ा, जो होका देवे थांउँ थाँईंआ। जो हैं ब्रह्म कलयुग अन्तिम होवे बौहड़ा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दे हुक्म विच अगला पन्ध रह गया थोड़ा, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक पावे लोहड़ा, लुड़ींदा सज्जण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं दस्सण आया खेल अतीत, त्रैगुण अतीता की जणाईआ। जिस दी वखरी सब तों रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। जो लेखा मुकाए मन्दिर मसीत, काअब्यां

खोजे चाँईं चाँईंआ। जिस सृष्टी दृष्टी लैणी जीत, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी परखे नीत, नीतीवान नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म विच विष्न ब्रह्मा शिव होवे भय भीत, आपणा बल ना कोए दरसाईआ। उह स्वामी साहिब अनडीठ, जोती जाता नूर अलाहीआ। जो लहिणा देणा पूरा करे हस्त कीट, ऊचां नीचां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे मेरा गुसाँईं साहिब सुल्तान, जोती जाता इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि नौजवान, बृद्ध बाल ना रूप वटाईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुर कीते प्रधान, हुक्मनामे नाम कलमे वाले हथ्थ फड़ाईआ। जोती नूर दे महान, महिमा कथ कथ समझाईआ। अक्खरी अक्खर दे ज्ञान, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। सो लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत नूर अलाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप बैठे सीस निवाईआ। जो आदि जुगादि धुर दा काहन, सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ मेटे शैतान, धर्म ईमान इक दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोले सारे गाण, तूं ही तूं ही राग दृढ़ाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले आण, तन मन्दिर अन्दर आपणा डेरा लाईआ। सुरती शब्द करे परवान, परम पुरख आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा आया, फर्श ख़ाकी धरनी धरत धवल दयां जणाईआ। संदेशा देवे बेपरवाहया, जो बेपरवाह रिहा दृढ़ाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाया, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जिस नूं रागां नादां विच सब ने गाया, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। तिस रूप अनूपा आपणा वेस वटाया, शाहो भूप इक अख्वाईआ। जो लहिणा देणा पूरा करे त्रैगुण माया, रजो तमो सतो संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब हुक्म वरताईआ। फर्श कहे सुण नारद मुन पंडे, जगत विद्या तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। निगाह मार लै चारे खाणी जेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज ध्यान लगाईआ। खेल तक लै विच ब्रह्मण्डे, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। की लहिणा देणा दीन दुनी वरभण्डे, सृष्टी दृष्टी खोज खुजाईआ। की खेल करना शब्दी धार गोबिन्द खण्डे, खड़ग खड़गां पड़दा लए चुकाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ के वेख आपणे डण्डे, आपणी डण्डावत लै बदलाईआ। नव सत्त तक चण्ड प्रचण्डे, प्रचण्डका आपणा रूप बदलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं वक्त कन्ढे, कलयुग अन्तिम दए गवाहीआ। सदी चौधवीं अख़ीरी आई कन्ढे, मुहम्मद कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। इशारा देवे सूर्या तारा चन्दे, चन्द चांदनी नाल मिलाईआ। धर्म ईमान रिहा ना विच किसे बन्दे, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। सति सरूप

दिसे ना प्यारे पंजे, पंजा नानक रिहा दृढ़ाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघे, पूरब आपणा पन्ध मुकाईआ। उह लेखा जाणे साहिब सूरा सरबंगे, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस भेव चुकाउणा यमुना सरस्वती गोदावरी गंगे, गंगोत्री वंड ना कोए वंडाईआ। जिस लेखे लाउणे रविदास दे टुट्टे छित्तर गंढे, गंढणहार गोपाल स्वामी दया कमाईआ। जिस लेखे पूरे करने गोबिन्द धार पुरी अनन्दे, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप समझाईआ। सच भेव समझाएगा। भेद अभेदा भेव खुल्हाएगा। चारे वेदां वेख वखाएगा। अछल अछेदा वेस वटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाएगा। झट धरनी कहे नारदा की लै के आया संदेशा, पंडत पांध्या बिन रसना जिह्वा दे जणाईआ। की हुक्म संदेशा कहे नर नरेशा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। की भेव जणाए गोबिन्द दस दस्मेशा, दहि दिशा की दृढ़ाईआ। झट नारद हस के कहे जो मालक सद रहे हमेशा, हम साजण इक अख्वाईआ। जुग बदलणा उस दा पेशा, पेशीनगोई दयां दृढ़ाईआ। जिस पन्ध मुकाउणा मुल्ला शेखा, मुसायकां डेरा ढाहीआ। सृष्टी दा रूप करना धारी केसा, केसगढ़ दा लहिणा झोली पाईआ। हुक्म वरते देस परदेसा, नव सत्त वजे वधाईआ। खुशी विच गीत गाए बाशक विष्नूं सेज शेषा, सहिसर मुख दो सहिसर जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप प्रगटाईआ । नारद कहे धरनीए तूं होणा चुकन्नी, चारे कन्नीआं लै उठाईआ। मेरी इक बेनन्ती मंनीं, मनसा जगत ना कोए रखाईआ। इक्को पुरख अकाला आपणा समझणा तनी, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जो तैनूं आपणी धारों रिहा जनी, आदि जुगादि बणे जणेंदी माईआ। तेरा लेखा वेखे छप्पर छन्नी, शहिनशाह हो के फेरा पाईआ। तूं खुशी विच फिरीं भन्नी, भज्जीं वाहो दाहीआ। ना खुशी रखीं ना ग़मी, ग़मखार मिल के वजे वधाईआ। फेर उह मेटे तृष्ना तमी, तृष्ना कलयुग कूड़ी दए गंवाईआ। सतिजुग धार चलावे नवीं, नवखण्ड धुर दा हुक्म चलाईआ। जिस दा संदेशा दे के गए बवन्जा धार कवी, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द ढोला गाईआ। सो लहिणा देणा लेखा पूरा करे अवतार चवी, चौबीसा जगदीसा सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं उस दी सरन सरनाई पवीं, बिन सीस सीस निवाईआ। इक्को दा ढोला गवीं, जो गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। इक्को दी सेजा सवीं, जिथ्थों सुत्तयां ना कोए उठाईआ। उह वक्त याद कर लै धरनीए जिस वेले अर्जन इशारा दिता उत्ते तती तवी, चौदां तबकां बाहर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । धरनी कहे नारद मैं उडीकां रखदी, जग नज़र किसे ना आईआ। मेरी सैनत नहीं कोई अक्ख दी, जगत

इशारा ना कोए जणाईआ। मैं प्रेमण उस अलखणा अलख दी, जो लख लख आपणा रूप बदलाईआ। उस दे अगे वास्ता घतदी, रो रो दयां दुहाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले धार रही नहीं कोई धर्म सति दी, सति सतिवादी विच ना कोए समाईआ। सृष्टी प्यासी हो गई दीन मज़्हब दी रत दी, रत्न अमोलक हीरा गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। वणजारन हो गई कूड़ी क्रिया मन मति दी, गुरमति अन्दरों गई भुलाईआ। उठ के खेल तक लै अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध तत अठ्ठ दी, अठ्ठ दस दा लेखा तेरे अगे टिकाईआ । धार वेख लै मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दी, गुरुदुआर गुरदेव रहे कुरलाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे हुक्म विच रही नठदी, भज्जां वाहो दाहीआ। अमृत बूँद रही ना अठसठ दी, तीर्थ तट किनारे रो रो रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आस पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पूरी कर दे तृष्ना, तृखावन्त हो के दयां दुहाईआ। जो संदेशा दे के गए ब्रह्मा शिव विष्ना, विश्व दे धार तेरे चरणां विच टिकाईआ। जो भेव खुल्हाया रामा कृष्णा, काहनां दे काहन तेरी बेपरवाहीआ। जो पैग़म्बरां किहा तेरा नूर अलाही ज़व ज़ितना, ज़ूज़े ज़मा ज़कीउल तेरा नूर नूर रुशनाईआ। गुरुआं संदेशा दिता सुणा, गोबिन्द ढोला गया गाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोत करे रुशना, दो जहानां डगमगाईआ। जिस नूं सब ने किहा नूर अलाह, खुद मालक इक अख्वाईआ। उह धरनीए तेरा लहिणा देणा दए चुका, पूरब लेखा झोली पाईआ। कलयुग अन्त पन्ध दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ । दीन दुनी दा झगड़ा रहे ना राअ, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा मालक ख़ालक इक्को होवे रहिनुमा, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा खुदा, खुदी तक्ब्बर दा डेरा देवे ढाहीआ। तेरे नालों कदे ना होवे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। उह महबूब होवे दिलरुबा, रहमत विच आपणी दया कमाईआ । तेरे उत्ते सति धर्म दी करे अलल सुबा, सुबा शाम वक्त ना कोए जणाईआ। आत्म धार सब दा बणे मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। इक्को इक जपाए नाँ, नाउँ निरँकारा इक दरसाईआ। इक्को धरनी धरत तेरा सुहाए थाँ, थनंतर देवे माण वड्याईआ। अन्तिम झगड़ा मेट के सूर गाँ, गायत्री मन्त्र दा लेखा पूर कराईआ। मानस मानव कूड़ बुद्धी रहिण ना देवे काँ, काग हँस रूप बदलाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू वाह वाह, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं खुशीआं ढोले लवां गा, गावत गावत गावत खुशी बणाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया देणी मिटा, मिट्टी ख़ाक ख़ाक शौह दरया रुढ़ाईआ। सतिजुग सति सतिवादी मार्ग देणा ला, लहिणा देणा मेरी झोली पाईआ। मैं धर्म दी धार सब दी बणां माँ, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी बिन हथ्थां सिर मेरे देणी ठण्डी छाँ, छहबर आपणा प्रेम प्रेम प्रेम बिन मेघ मेघ बरसाईआ।

✪ २२ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह ३८ रनले रोड साउथ हाल लंडन ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे दीन दयाल, ठाकर स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना मेरी लेखे लाउणी घाल, सरगुण हो के निरगुण तेरे अगे वास्ता पाईआ। मेरा निर्धन रूप मातलोक कंगाल, कोझी कमली हो के सीस निवाईआ। तूं साहिब सतिगुर मेरी करनी संभाल, सम्बल दे मालक होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द आपणा विचोला दे दलाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे उत्ते हकीकत वेख हक हलाल, दीन दुनी खोजे थांउँ थाँईआ। मेरी बेनन्ती मंन सुआल, मांगत हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी वेख लै दिवस रैण, बिन नैणां नैण उठाईआ। मैं दुखी हो के लग्गी कहिण, बेनन्ती तेरे चरण टिकाईआ। उह आशा पूरी कर दे जो बाल्मीक रखी विच रमायण, राम रामा ध्यान लगाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरा साक सज्जण सैण, स्वामी अन्तरजामी इक अख्वाईआ। मेरे उत्ते कूड़ी क्रिया कलयुग वहिन्दा वेख लै वहिण, जगत जहान दीन दुनी रिहा रुढ़ाईआ। प्यार रिहा ना मात पित भाई भैण, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। माया राणी नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणी डैण, साधां सन्तां जीवां जंतां रही खाईआ। निरगुण धार एकँकार नुकता तक लै आपणा ऐन नाल ग़ैन, ग़मखार हो के वेख वखाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं दिवस रैण ना आवे चैन, बेचैनी विच मेरी दुहाईआ। मानव मानव मानव मेरे उत्ते इक दूजे नाल खहण, ख़ालस रंग ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धर्म कहे मेरे मालक आदि जुगादि ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड तेरा ध्यान लगाईआ। दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागराँ मेरा बेड़ा पार कराईआ। तूं मेहरवान महबूब मेरा पड़दा आउणा कज्जण, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दर रिहा ना तेरा भजन, बन्दगी विच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट कूड़ नगारे वज्जण, शब्द अनादी धुन ना कोए शनवाईआ। जगत जिज्ञासू कूड़ी माया विच दझण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मेरा इक्को इक मन्नणा बचन, बचपन तेरे चरण टिकाईआ। तूं आदि जुगादी शाहो भूप सो पुरख निरञ्जण, हरि पुरख निरञ्जण तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा ख़ाकी धार मिट्टी वेख लै बदन, तन वस्त्र ना कोए रखाईआ। बौहड़ी दरोही फिरन

वाली विच अदन, काअबे रोवण मारन धाहीआ। किसे दा चले कोई ना यतन, यथार्थ तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे हुक्मरान, दो जहानां वाली तेरी इक सरनाईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, जोबनवन्ते तेरी बेपरवाहीआ। आह तक लै की संदेशा दे के गया सीआ नूं राम, काहन कान्हा की दृढ़ाईआ। की पैग़म्बरां किहा पैग़ाम, अलिफ़ ये सिफ्त सलाहीआ। की संदेशा दिता नानक गोबिन्द दो जहान, दोहरी आपणी कल वरताईआ। तेरा खेल होवे ख़लक विच महान, महिमा कथ कथी ना जाईआ। धरनी कहे मैं बाली बुद्ध अंजाण, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धरत धवले कर ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। धुर दा कलमा सुण फ़रमान, अणसुणत तैनूं दए सुणाईआ। किरपा करे श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। तेरी बेनन्ती करे परवान, परम पुरख आपणी जगह जोत डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जगत शैतान, निशाना सति धर्म झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मैं निमाणी होई मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। इक्को नाम सुणा दे आपणी पंगती, आत्म परमात्म आपणा भेव खुल्हाईआ। कल्पणा रहे ना कूड़े मन दी, मनसा मन ही मन छुपाईआ। सृष्टी धार बणा दे जन दी, आप बण जणेंदी माईआ। मिट्टी ख़ाक लेखे ला लै तन दी, तन वजूदां कर सफ़ाईआ। आसा पूरी कर दे सूर्या तारा चन्न दी, चन्द चांदनी दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी पुरख अकाल दया कमावेगा। दीन दयाल वेख वखावेगा। सो पुरख निरञ्जण वेस वटावेगा। हरि पुरख निरञ्जण फेरा पावेगा। एकँकारा रंग रंगावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान हुक्म सुणावेगा। पारब्रह्म वेख वखावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। त्रैगुण खेल आप खिलावेगा। पंजां ततां भाण्डा भरम भन्नावेगा। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गंढु रखावेगा। योद्धा सूरबीर बलवान, आपणा हुक्म चलावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशान, निरगुण आपणा रंग रंगावेगा। सतिजुग सच कर प्रधान, परम पुरख आप प्रगटावेगा। तैनूं दे के नाम निधान, ख़ाली झोली आप भरावेगा। आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अन्दर होवे गाण, तूं मेरा मैं तेरा रंग चढ़ावेगा। साचा शब्द देवे धुन्कान, अनहद नादी नाद वजावेगा। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता ब्यान, लेखे सब दे पूर करावेगा। निगाह मार के उत्ते असमान,

धरनीए तेरा पन्ध चुकावेगा। कलयुग होणा नहीं अन्त हैरान, हैरानी विच खेल खिलावेगा। जगत आशा वेख शैतान, शरअ शरीअत डेरा ढाहवेगा। तूं सुणना बिना कान, कायनात वेख वखावेगा। जिस नूं कहिंदे वाली दो जहान, दोहरा रूप आपणा बदलावेगा। कमलीए तूं उस दी करीं पहचान, बेपहचान आपणा पड़दा लाहवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलावेगा। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं चरण जावां बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। मैं वेखां नैण उग्घाड़ी, बिन नेत्रां अक्ख उठाईआ। मैं चार जुग दी करदी रही इंतज़ारी, नव नव दा पन्ध मुकाईआ। मेरे कोल लेखा तेई अवतारी, जो अवतर गए दृढ़ाईआ। मैनूं पैग़म्बरां कीता इशारी, बिन सैनत सैनत लगाईआ। नानक गोबिन्द दिता अधारी, सहिज नाल समझाईआ। धरनीए धौले तेरे उत्ते अन्तिम आवे कलि कल्की अवतारी, निहकलंका नूर अलाहीआ। जिस दा नूर होवे जोत उज्यारी, जोती जाता डगमगाईआ। तूं उस नूं करीं निमस्कारी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। मिट्टी ख़ाक बणीं पनिहारी, पनघट इक्को वेख वखाईआ। नी उस दा रूप तकीं ना पुरख होवे ना नारी, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। तूं आपणा वक्त संभालणा नाल हुशियारी, सम्बल बहि के आपणी खेल वेख वखाईआ। तेरे नौ खण्ड वेखे हट्ट बाज़ारी, सत्तां दीपां ध्यान वेख वखाईआ। नी उह शब्दी शब्द दा होवे खिडारी, खण्डे खड़गां हथ्थ ना कोए उठाईआ। जिस अगे वास्ता पाउणा विष्नूं विश्व भण्डारी, शंकर निव निव लागे पाईआ। ब्रह्मा जिस दा नूर जोत उज्यारी, नूर नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी उह माही महबूब अगम्मा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जनणी कुक्खों कदे ना जम्मा, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। जिस लालच नहीं कोई तमअ, मोह विकार ना कोए रखाईआ । ना खुशी ना ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। जिस दी ताब्यादारी विच विष्न शिव ब्रह्मा, ब्रह्मांड बैठे सीस निवाईआ। तेरे उत्ते कलयुग कूड़ दा मेटे कुकर्मा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सतिजुग सति दा दस्स के धर्मा, धरनीए तैनूं दए समझाईआ। मेटे वरना बरना, ज़ातां पातां नज़र कोए ना आईआ। तूं ओट रखणी उस प्रभू दे चरणां, जो चरणोदक तैनूं जाम प्याईआ। जिस तेरा ख़ाली भण्डारा भरना, वस्त अतोल अतुल दए वरताईआ। नेत्र खोल्हे हरिजन हरना फरना, निज लोचन करे रुशनाईआ। तूं अन्त सदी चौधवीं मूल ना डरना, भय विच ना कोए रखाईआ। इक्को ढोला पढ़ना, गीत गाउणा धुर दे माहीआ। जिस दे हुक्म विच सृष्ट सबाई होवे लड़ना, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। उस ने तेरे उत्ते नवां घाड़न घड़ना, घड़नहार आपणी दया कमाईआ। किस बिध अगला साल चढ़ना, चढ़दा लहिंदा वेख

वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द निगाह मार लोकमात, मेहरवान हो के दया कमाईआ। जन भगतां मेरे उत्ते दे अगम्मी दात, बिन हथ्थां आप वरताईआ। तूं पिता तूं ही मात, पुरख अकाल तेरा रूप नज़री आईआ। अन्त कन्त मेरी पुछ वात, वारस हो के हो सहाईआ। मेरी लेखे ला लै अज्ज दी रात, बैसाख बाई दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरी कर दे पूरी आशा, तृष्ना तेरे अगे टिकाईआ। जन भगतां लेखे लाउणा स्वास स्वासा, जो साह साह तेरे विच समाईआ। धर्म दी धार देणा भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ निरगुण नूर जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा देणा गुआईआ। सुरती शब्द गोपी काहन हो के पा रासा, मस्त खुमारी दे चढ़ाईआ। मेरी बेनन्ती मन्ज़ूर कर लै गोबिन्द आपणा अरदासा, अर्ज़ आरज़ू तेरे अगे टिकाईआ। तेरा गृह बेशक उपर आकाशा, धरनी कहे मेरे दर दईं वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी चिन्ता मेट दे सोग, ग़मी रहिण कोए ना पाईआ। हउमे वाला कट दे रोग, हंगता गढ़ दे तुड़ाईआ। जन भगतां मेला मेल धुर संजोग, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। अगे होवे ना कदे वियोग, लख चुरासी डेरा देणा ढाहीआ। तेरी धार आत्म परमात्म मिल के माणे मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ। मेहरवान हो के दर्शन देणां रोज़, निज घर आपणा पड़दा लाहीआ। तेरी चरण प्रीती सब तों वड्डा होवे योग, जुगती धर्म धार दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। धरनी कहे प्रभू मैं निमाणी हो के मंगदी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं प्यासी तेरे अंग दी, अंगीकार करना चाँईं चाँईंआ। उह तक लै सदी सदीवी जांदी लँघदी, भज्जी जाए वाहो दाहीआ। वड्याई रहिणी नहीं किसे तत पंज दी, पंचम मेल ना कोए मिलाईआ। सब ते घड़ी आउणी रंज दी, रंजश सके ना कोए चुकाईआ। अन्त निशानी मिटणी तारा चन्द दी, चन्द चांदना नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। सच दी वस्त दे दे आप, आपणी दया कमाईआ। जन भगतां दे के सोहँ जाप, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा भेव खुल्हाईआ। जन्म जन्म दे पूरब लाह दे पाप, पतित पुनीत पतित पावन आपणा रंग रंगाईआ। आवण जावण दा संसा रहे ना संताप, चुरासी फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। लेखा रहे ना नाल शंकर कैलाश, कलाधारी आपणी कल देणी वरताईआ। निरगुण हो के वसणा पास, दूर दुराडा पन्ध देणा मुकाईआ। मेरी बेनन्ती इक्को ख़ास, ख़ालस हरिजन

लैणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं कूक के दयां दुहाई, दो जहान दयां सुणाईआ। मेरे उत्ते थित सुहञ्जणी बैसाख बाई, बाईबल दा लेखा यसूह रिहा दृढ़ाईआ। गोबिन्द दा हिन्दसा दस्से इकाई, इक इकल्ला की जणाईआ। जो दो जहानां बणे राही, रैहबर नूर अलाहीआ। वेखणहारा थाउँ थाँईं, दो जहानां खोज खुजाईआ। जो भगतां सदा पकड़े बांही, फड़ बांहो गले लगाईआ। उस दा मेला हुन्दा कदे कदाई, जो नित नवित आपणा खेल खिलाईआ। सब ने चलणा सच रजाई, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। देखो तुहाडे पिच्छे वास्ता पावे धरनी माई, मईआ हो के सीस निवाईआ। गल पल्लू रही पाई, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त वस्त वरताईआ। धरनी कहे वेखो दिहाढ़ा अज्ज दा, खुशीआं नाल सुणाईआ। जो सब दे पड़दे कज्जदा, मालक धुरदरगाहीआ। जिस लेखा पूरा करना मानस जन्म हज्ज दा, हुजरा हक हक सुहाईआ। जो तुहाडे पिच्छे फिरे भज्जदा, दीन दुनी पन्ध मुकाईआ। उह नूर अलाही रब्ब दा, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस दा मेल हुन्दा सबब दा, जुग जन्म दे विछड़े आपणे संग रखाईआ। उस नालों प्यार चंगा नहीं कूड़ी मध दा, मधुर धुन करे ना कोए शनवाईआ। जिस नूं जगत जहान फिरे लभदा, उह जन भगतो तुहाडा आप होवे सहाईआ। तुहानूं पता नहीं तुहाडा लेखा पिछला कद दा, बावन लहिणा गया समझाईआ। तुहाडा तन वजूद ततां वाला नहीं जग दा, जागरत जोत प्रभ आपणा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा तक साऊथ हाल, मेहरवान महबूब ध्यान लगाईआ। मेरी बेनन्ती मंन सवाल, सवालण हो के झोली डाहीआ। तूं पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद मालक नूर अलाहीआ। मैं कोझी कमली कंगाल, लाशरीक तेरे अगे वास्ता पाईआ। फल लगा दे मेरे डाल्ह, पत्त टहणी दे महकाईआ। आपणे भगत सुहेले मेल लै आपणे नाल, मेहरवान आपणी गंढु बणाईआ। जिस निरगुण धार हो के लंडन विच्चों लए भाल, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। मानस जन्म जन्म विच्चों करना बहाल, कर्म कुकर्म आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां पोह ना सके काल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे भगत सुहेले जदों जाण ते जाण सचखण्ड सची धर्मसाल, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। तूं दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध तेरे हथ्थ वड्याईआ। बेशक तेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तों बाद अवलड़ी चाल, चाल निराली आप प्रगटाईआ। पर फेर वी कलयुग विच वेख तेरे भगत कमाल, कामल मुर्शद तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा

सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पिछली वेख लै बाकी, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। बेशक मैं धूड़ मिट्टी ख़ाकी, चारों कुण्ट बैठी आसण लाईआ। पर मेरे उत्ते तेरे नाम दी सदा खुल्ह्रे हाटी, जुग जुग दे हटवाणे की तेरी बेपरवाहीआ। मेरा बिस्तर सिँघासण सुहञ्जणा तक लै खाटी, बिन पावा चूल नज़री आईआ। मेरे स्वामीआं अन्तरजामीआं मैनूं प्यार बख़्श दे अज्ज दी राती, रुतड़ी आपणे नाल लै महकाईआ। मैं चाहुंदी तेरे भगत हो जाण तेरी ज़ाती, आत्म परमात्म तेरा नूर नज़री आईआ। तूं भेव खोल्हणा बातन ते आपणी दस्सणी बाती, बेवतना वतन देणा वखाईआ। धरनी कहे आह वेख लै मेरे कोल गोबिन्द वाली उह पाती, जिस दा अक्खर जग नज़र किसे ना आईआ। जिस दा रूप नहीं काग़ज़ाती, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। जिस ने मेरी ज़िंदगी बदलणी हयाती, हिरदे अन्तर करनी सफ़ाईआ। मैं उस दा दर्शन करां लोकमाती, मातलोक पड़दा देणा चुकाईआ। मैं चाहुंदी मेरे महबूबा तेरा चरण कवल छोहे उपर छाती, शहिनशाह छत्र धारीआं लेखा देणा मुकाईआ। बेशक तेरी जोत जगत बेपछाती, वेख सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे उठ वे बैसाख बाई आपणी खेल तक लै अक्ख, चार जुग दे साथीआ तैनूं दयां सुणाईआ। सज्जणा आपणा भाण्डा तक लै गोबिन्द अमृत वाला होया सख, रस विच ना कोए टिकाईआ। उह तक लै दीन दुनी दी कीमत रही नहीं कौडी कक्ख, करता कीमत कोए ना पाईआ। बिना भगतां तों जैकारा बोले ना कोए अलख, अलख अगोचर मिलण कोए ना पाईआ। उह तक लै आह तक लै दो जहानां मालक निरगुण जोत जोत प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल खिलाईआ। झट नारद आ के कहे धरनीए तूं की बैसाख नूं रही दस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। उह वेख लै कलयुग चारों कुण्ट रिहा नस्स, भज्जे वाहो दाहीआ। दुहाई देवे प्रभू मेरा वक्त सुहञ्जणा अजे करीं ना बस्स, वास्ता तेरे अगे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट कलयुग कहे धरनीए इक मेरी सुण लै गल्ल, गलवकड़ी पा के दयां जणाईआ। पूरब लेखा याद कर लै जो लहिणा नाल राजे बलि, बावन बैठा ध्यान लगाईआ। तैनूं उस दा मिलण लग्गा फल, तेरी वस्त तेरी झोली टिकाईआ। अगे निगाह कर लै की खेल होणी थल जल, महीअल रोवण मारन धाहींआ। धौले धरनीए तूं चारों कुण्ट जाणा हल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। तेरे उत्ते खेल होणा तिन्न दिन सत घड़ी ते पंज पल, पलकां दे पिच्छे नज़र कोए ना आईआ। फेर जावीं बलि बलि, आप आपणा भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। झट धरनी ने उंगल रख लई उत्ते ठोडी, सोचां विच ध्यान लगाईआ।

हो के भार गोडीं, प्रभ अगे वास्ता पाईआ। जे तूं निरगुण धार बण के आएयों वेदी ते सोढी, सोहणा आपणा रूप वखाईआ। मेरे मालका हुण बणके ठाकर मौजी, मजलस भगतां नाल बणाईआ। उधरों नारद भज्जा आउँदा बण के जोगी, बिन कपड़यां रंग रंगाईआ। धरनीए मेरी हिलदी वेख लै बोदी, दो जहानां रही हिलाईआ। क्यों सृष्टी अन्दरों हो गई लोभी, माया ममता विच हल्काईआ। मन वासना कल्पना हो गई भोगी, भस्मड़ रूप ना कोए जणाईआ। उह मेरा साहिब प्रीतम चोजी, चोजी हो के आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट सतिगुर शब्द ने मारया कड़का, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। मेरा खेल चोटी जड़ दा, चेतन आपणे हुक्म विच भुआईआ। मैं लहिणा देणा पूरा करना लख चुरासी सीस धड़ का, धड़े दो करां ख़लक खुदाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा रूप बणे हँकारी गढ़ दा, गढ़ हँकार वेखणी ख़लक खुदाईआ। मैं लहिणा देणा पूरा करना महात्मा बुध्ध जिथ्थे संदेशा दिता हेठ बड़ दा, टहणी टहणी पत्त पत्त रोवे मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू उह मेहरवाना मेरी इक अरज़ोई, अर्ज़ तेरे चरण टिकाईआ। मैं हैरान हो गई कोटां विच्चों तेरा भगत कोई, मेरे उत्ते नज़री आईआ। मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना तेरी सृष्टी तैनूं विसर के सोई, सुत्तयां सके ना कोए जगाईआ। मेरी तेरे नाम दी दरोही, दो जहानां दे मालक दयां दुहाईआ। मैनूं मिले किते ना ढोई, ढोर खावे तेरी ख़लक खुदाईआ। आत्म परमात्म तेरे नाल कोई ना छोही, शौहर बांके तेरा दरस कोए ना पाईआ। मैनूं याद आउँदा जो संदेशा दिता नानक निरगुण सरगुण तलवंडी भौंई, भुजां पसार के दिती दुहाईआ। कलयुगा तैनूं मेटेगा ओही, जिस दी उस्तत करे लोकाईआ । जिस दे हुक्म विच गोबिन्द ने अमृत रस धार चोई, जाम जाम विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैं वेख लै लथ्थी सथ्थर, यारड़े तेरी सेज हंढाईआ। मेरे उत्ते पूजा हुन्दी पाहनां पत्थर, तेरी ओट ना कोए तकाईआ। मेरा बिन नैणां वगदा अथ्थर, हंझूआं हार बणाईआ। कुझ कर ना सकां कथन, कहि ना कुछ जणाईआ। मेरे ख़ाली वेख लै हथ्थण, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मानस रूप तक लै तत अठ्ठण, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध खोज खुजाईआ। माण रिहा ना अठ्ठ सठ्ठण, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। हाहाकार करे मन्दिर मठ्ठण, मस्जिदां संग ना कोए बणाईआ। चारों कुण्ट कलयुग कूड़ कुड़यारी अग्नी जीव तपण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ । अन्त सारे बैठे मौत दे पतण, घाट नज़र कोए ना आईआ। अख़ीर चलणा नहीं किसे दा यतन, यथार्थ तेरी बेपरवाहीआ। दीन दुनी विच्चों आपणे भगत कढ

लै रत्न, अमोलक हीरे आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। बैसाख कहे प्रभू मेरा वेख लै महीना, मास दिवस बरस घड़ी पल तेरा ध्यान लगाईआ। मेरे मालक महबूब यामबीना, नूर अलाह तेरी वड्याईआ। निगाह मार लै लोक तीना, त्रैगुण अतीते ध्यान लगाईआ। मेरा ठांडा करे कोई ना सीना, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मुश्किल हो गया लोकमात विच जीणा, जीवण जगत जुगत नज़र कोए ना आईआ। मैं बेनन्ती करां हो के अधीना, निव निव सीस झुकाईआ। मेरा मालक जदों आपणा हुक्म वरते खेल खिलाए नाल रूसा चीना, अमरीका शरीका दए बणाईआ। बैसाख कहे उह दिन बाई बैसाख ते बैसाख दा होए महीना, तारीख वध्ध घट्ट ना कोए कराईआ। तेरे तों परे किसे दी होर ना होवे तालीमा, संदेशा सके ना कोए सुणाईआ। तूं आलीज़ाह शहिनशाह अज़ीमा, आदि जुगादि तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं सब दा महबूब कदीमा, कुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। दीन दुनी दी जगत धार करनी तरमीमा, लेखा लेखे विच्चों बदलाईआ । मैनूं ऐं जापदा मक्का ते काअबा ते हद्द होणी दो जहान दी सीमा, सीमा आर पार वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। तेरी सब तों वखरी तकसीमा, लाइन जगत ना कोए जणाईआ। तैनूं पैग़म्बरां किहा करीमा, रहमत रहमान रहीम इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ । बैसाख कहे प्रभू मैं बहुत बड़ा पुराणा, पुराण अठारां मेरी देण गवाहीआ। बाई बैसाख वाले दिन बावन बलि दे घर गया सी खाण खाणा, सतिजुग पिछला दए गवाहीआ। सप्तस ऋषीआं एसे दिन तेरा रूप पछाणा, बेपहिचाण तेरा नूर जोत नज़री आईआ। एसे दिवस बाल्मीक ने लिख्या लेख महाना, रमायण राम राम विच्चों प्रगटाईआ। एसे दिवस भीलणी ने याद कीता अन्तर आत्म गाणा, राम दे राम मेलणा चाँईं चाँईंआ। एसे दिवस रावण ने सीता नूं आपणे कंध उठाणा, त्रेता आपणे रंग रंगाईआ। एसे दिवस अर्जन नूं ?निरबल? किहा कान्हा, गीता अठारां ध्याए समझाईआ। एसे दिन मूसा कोहतूर उत्ते तक के जल्वा नूर नुराना, हथ्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। ईसा एसे दिन पढ़ के कलमा कलामा, काया विच तके धुरदरगाहीआ। मुहम्मद नूं बाई बैसाख नूं होया सी इलहामा, काअबे दा कोना कोना दए गवाहीआ। एसे दिन नानक निरगुण सरगुण धार साधूआं नूं खुवाया सी खाणा, खुशी खुशी खुशी वरताईआ। बाई बैसाख नूं गोबिन्द ने पहले दिवस फड़या हथ्थ चिल्ला तीर कमाना, कमंद ज़ोर नाल खिचाईआ। नाले शब्द गाया तराना, वाहिगुरु तेरे हथ्थ वड्याईआ । मैं तेरा ज़रूर मंनांगा भाणा, चरण कवल कवल उत्ते टिकाईआ। तूं मालक दो जहानां, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। फेर हस के किहा बदल जाणा ज़माना, ज़िमीं ज़मां सारे रोवण मारन धाहींआ। मेरा सिख मेरे नालों हो जाए बेगाना, सिख्या

सच ना कोए कमाईआ। पैग़म्बरां दा रहे ना कोए इस्लामा, इस्म आज़म ना कोए चतुराईआ। माण रहिणा नहीं कृष्णा कान्हा, घनईया संग ना कोए बणाईआ। प्यार करे ना कोई सीता रामा, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। फेर हथ्थ ते हथ्थ मार के किहा तेरा खेल मेरे मेहरवाना, पुरख अकाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। झट उस वेले बावन ने किहा गोबिन्द सतिगुर शब्द हो के होए प्रधाना, दो जहानां तेरी वजे वधाईआ। तूं उथे पहुंचणा जिथ्थे मैं पहला चरण टिकाणा, चारों कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। एह खेल करे पुरख अकाल मर्द मर्दाना, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। बैसाख कहे जन भगतो मेरी नहीं कोई थिती मिती, मित्रो तुहानूं दयां जणाईआ। ज़रा धरती दी वेखो मिट्टी, जो मिट्टी ख़ाक हो के आपणा आप गई मिटाईआ। जिस ने इक्को ओट पुरख अकाल ते सिट्टी, जो सिटेबाज़ी वेखे ख़लक खुदाईआ। झट धरनी बिना ज़बान तों उच्ची कूक के पिट्टी, पटने वाल्या तेरे बिना मैनूं दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई मैनूं धार दिसे चिट्टी, कूड़ी कालख ना कोए धुआईआ। गोबिन्द हस के किहा उह धरनीए मरनीए उह वेख लै मेरी हाहे उत्ते टिप्पी, पर्दा हँ ब्रह्म दयां चुकाईआ। जिस विच्चों धार निकले मिट्ठी, रस अमृत दयां चखाईआ। फेर कढुके शब्द धार बावन वाली चिठ्ठी, पुठ्ठी सिध्धी दिती भुआईआ। उह वेख लै कूड़ विच सारी सृष्टी विकी, आप आपणा गई मुकाईआ। जगत वासना हो गई फिक्की, सच रस ना कोए प्रगटाईआ। फेर इक धार नज़र आई निक्की, निक्के तों निक्का रूप बदलाईआ। उस वेले गोबिन्द ने किहा सी सिक्खी दी धार तिक्खी, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। धरनी कहे मेरे स्वामी सज्जणा, हरि सतिगुर बेपरवाह। जन भगतां चरण धूड़ करा दे मजणा, दुरमति मैल धुआ। नेत्र नाम निधान दा पा के अंजना, अन्ध अज्ञान गुआ। सब दी इक्को होवे बन्दना, इक्को इष्ट लैणा मना। निरगुण धार हो के लाउणा अंगणा, अंगीकार आप अखवा। मैं निमाणी हो के इक्को वर मंगणा, मेरी ख़ाली झोली देणी भरा। जन भगतो मेरे उत्तों अन्त सब ने वंञणा, अगे हो सके ना कोए अटका। एह काया माटी भाण्डा सब दा भज्जणा, बिन सतिगुर होए ना कोए सहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा लेखा लैणा लगा। धरनी कहे जन भगतो मैं तुहानूं दयां वधाई, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जो बण के आए पाँधी राही, भज्जे वाहो दाहीआ। हरिसंगत मेल मिल्या चाँईं चाँईं, सोहणा रंग बणाईआ। पुरख अकाल रही सुणाई, उच्ची कूक दयां दुहाईआ। हरिजन मेल मिलाउणा भाई भाई, भैण भैणां सब नूं नज़री आईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले आत्म धार देवीं ना किसे नूं जुदाई,

विछोड़े विच रहिण कोए ना पाईआ। रातीं सुत्तयां दर्शन देणा ज़रूर चाँईं चाँईं, इंगलैंड दी लैंड देणी सुहाईआ। तूं दो जहानां दा राही, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर ज़िमीं असमान तेरे चरणां ध्यान लगाईआ। बेशक तैनूं सारी सृष्टी कहे तन वजूद तेरा जट्ट करनवाला वाही, पर मेरे वास्ते तूं मालक धुरदरगाहीआ। धरनी कहे जन भगतो मैं आपणी मुहब्बत तुहाडी झोली पाई, तुहाडा प्यार सतिगुर चरणां विच टिकाईआ। जेहड़ा आदि जुगादि जुग चौकड़ी एथे उथे कदे भुल्ले नाही, भुलेखे विच ना कोए भुलाईआ। सारे रल मिल के ढोला लओ गाई, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां प्रीती प्रेम विच निभाई, प्रीतम हो के आपणा संग बणाईआ।

✪ २४ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर दिल्ली धीर पुर किंगज़वे कैंप नेड़े निरँकारी कलोनी विदेश यात्रा तो वापस पुज्जण ते ✪

बावन किहा मेरी बिना तन वजूद अक्ख खुल्ही, नैण बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरी अवाज़ निकले बिना रसना दन्दां बुल्ल्हीं, पवण स्वास ना कोए चलाईआ। मेरी आशा ख़ाहिश मूल ना भुल्ली, भरमां विच ना कोए भुलाईआ। मेरी होंद बड़ी अणमुली, कीमत जगत ना कोए चुकाईआ। जिस धरती ते मैं लाई चरण धूली, धूड़ी धवल ख़ाक रमाईआ। उस दी सच सच दिसी असूली, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। मेरा संदेशा बणया हुक्म माकूली, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरा नूर ज़हूर कन्त कन्तूहली, जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन कहे मैं बिना बदन लई अंगड़ाई, मनसा मन ना कोए रखाईआ। मेरा खेल बेपरवाही, भेव सके कोए ना पाईआ। मेरा रूप अनूपा खेल खेला बण धुरदरगाही, जोती जाता डगमगाईआ। मेरे अन्त दी कर सके ना कोए लिखाई, कागज़ कलम शाही ना कोए चतुराईआ। आदि जुगादि नित नवित निरगुण सरगुण मैं बणा धरत धवल दा राही, पाँधी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। वञ्झ मुहाणा बेड़ा रखां हो के धुर दा मलाही, दो जहानां आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। बावन कहे मैनूं आउँदी पुराणी याद, बलि दुआर दए गवाहीआ। जिस विच नहीं कोई विवाद, विख नज़र कोए ना आईआ। मैं

सति सच दी दे के गया दाद, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। मेरा नूर ज़हूर शाहो भूप जो आउणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। जिस ने मेरे प्यार दा सतिजुग करना फेर आबाद, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। हुक्म संदेशा होवे बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सुणन नाद, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं करे शनवाईआ। संदेशा देवे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड पर्दा दए उठाईआ। जिस दा हुक्म वरते जुग जुगादि, निरगुण सरगुण आपणा खेल खिलाईआ। उहदा रूप अनूपा सति सरूपा होणा देस माझ, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म जिस दी होणी सांझ, दीनां मज़्बां वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन कहे मैं देवणहार वधाई, खुशीआं ढोले गाईआ। जो मेरा लेखा पूर रिहा कराई, करनी दा करता इक अख्वाईआ। मैं वेखां चाँईं चाँईं, बिन नैणां नैण उठाईआ। मैनूं नज़र आउँदा इक्को हिन्दसा बिन रूप रंग रेख इकाई, काग़ज़ कलम शाही ना कोए चतुराईआ। मैं वेख के देवां दुहाई, दोहरा आपणा हुक्म सुणाईआ। प्रभू वाहवा तेरी बेपरवाही, जो रूप अनूपा लए प्रगटाईआ। बावन बण के धरती मंगी कदम ढाई, दोए कदमां विच दबाईआ। अगे हुक्म दी कर के गयों साई, सौदा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस नूं समझ सक्या कोई ना राई, रसना कहिण किछ ना पाईआ। इक गोबिन्द इशारा दिता जिस वेले मेरा गुज़रया ढईआ ढाई, सदी सदी नाल मिलाईआ। उस वेले जोती जाता पुरख बिधाता आवे धुर दा माही, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो आसा बावन तेरी पूर दए कराई, पूरन ब्रह्म दरसाईआ। तूं वेखणा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। बावन कहे धन्न भाग मेरी सुहञ्जणी कीती थाँईं, धरनी धरत धवल धौल रंग रंगाईआ । मैं अन्त देवण आया गवाही, शहादत हुक्म वाली भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। बावन कहे मैं भेव दस्सां गूझा, पर्दा ओहला रहे ना राईआ । जिस वेले मेरा लेखा तक्कया जिथ्थे मैं चरण रख्या दूजा, टरांनटो टरन दी धार वखाईआ। उस वेले खुशी नाल हस पई वसुधा, प्रेम दे ढोले गाईआ। बावना तेरा स्वामी होवे उग्घा, उगण आथण खेल खिलाईआ। उह वेख लै सब दा वेला वक्त पुग्गा, अवतार पैग़म्बर गुर बैठे सीस निवाईआ। तेरा अगला कदम मेरे स्वामीआं होवे खुशी वाला लुघा, दोहरे ढोले गाईआ। उस दा भेव खोल्हां मुद्दा, मुदतां दा पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मेरा लेखा बावन कहे बग़ैर लिख्त, चार जुग शास्त्र कहिण किछ ना पाईआ। मेरा सब तों वखरा भविख्त, पेशीनगोईआं विच हथ्थ ना आईआ। मेरा सब तों अनोखा इष्ट, तन वजूद पूजण

कोए ना पाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल सृष्ट, श्रेष्ट दयां समझाईआ। मेरा संदेशा दिता राम नूं वशिष्ट, विषयां तों बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन कहे जिस वेले दूजा कदम टरांनटो दे विच रखया, मेरा अन्तर खुशी मनाईआ। मैनूं अगला समां भख्या, भाख्या दयां जणाईआ । जिस दा वक्त नहीं कोई वदी सुदी किशना सुखला पक्ख्या, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा अन्त किसे ना लख्या, कहिण किछ ना पाईआ। मैं झट खुशीआं दे विच हस्सया, बिन हथ्थ ताली दिती लगाईआ। नाले निगाह मारी चारों कुण्ट अन्धेरी मस्सया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झट पुरख अकाल इशारा दिता उह तक लै बावन होड़ा उपर सस्सया, सो पुरख निरञ्जण रिहा वखाईआ। जो हाहे टिप्पी हँ ब्रह्म आत्म परमात्म निरगुण धार हो के वस्या, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती जाता हो के फिरे नस्सया, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कीता इकट्ठया, मेला मेलया सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। बावन कहे दूजा चरण छोहया नाल धरती, मेरी पूरब आसा दए गवाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला एथे आवे शरती, शरतीआ आपणा फेरा पाईआ। ओस दा नूर होवे धार नरायण नर दी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस कला मेटणी कलयुग कल दी, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। सार पावे महीअल जल थल दी, टिल्ले पर्वतां खोज खुजाईआ। मत्तस आसा पूरी करे जल दी, समुंद सागरँ तृष्ना दूर कराईआ। नाल कामना होवे राजे बलि दी, बावन खुशीआं नाल समझाईआ। अगे ख़बर नहीं किसे नूं घड़ी पल दी, पारब्रह्म की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। झट धरनी कहे बावना मैं पूरब तेरी दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। निगाह मार लै किधरों आ गया घनकपुर वासी, जोती जाता फेरा पाईआ । जेहड़ा मण्डल मण्डप पावे रासी, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। जिस मेरी सुहञ्जणी कीती रासी, रस्ता आपणा ल्या अपनाईआ। जिस नूं समझ सके ना कोई पंडत काशी, विद्या विद्वत विच ना कोए दृढ़ाईआ। मैं सच दस्सां धरनी कहे जिस वेले ईसा नूं चाढ़या फाँसी, फ़ैसला हुक्म नाल सुणाईआ। ओस वेले ओस ने कीती हासी, इशारा धरनी टरांनटो वल कराईआ। नाले सैनत मारी निगाह मार लै शंकरा कैलाशी, कला आपणी विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ । धरनी कहे सुण बावन मेरे भगवान, भगवन दयां जणाईआ। मैनूं याद तेरा ब्यान, जो बिन रसना दिता सुणाईआ। मैनूं संदेशा दिता बिन अक्खरां वाला ज्ञान, बुद्धी तों बाहर दृढ़ाईआ। धरनीए उह तक लै राम दा राम

राम दा काहन, काहन काहनां खेल खिलाईआ। पैग़म्बरां दस्सया दे के दान, कलमा कायनात वरताईआ। गुरुआं मन्त्र जणा के सतिनाम, वाहवा वाहिगुरु फ़तिह डंक दिता जणाईआ। मैं सुण सुण हुन्दी रही हैरान, हैरत मेरे अन्दर आईआ। फेर बावन तूं प्रेम नाल किहा धरनीए तूं होणा जाणी जाण, अणजाणत तैनूं दयां सुणाईआ। तेरे उत्ते जुग बीतणे जगत महान, त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्त कलयुग होवे प्रधान, नव सत्त आपणी कल वरताईआ। धर्म दा रहिणा नहीं निशान, सति विच ना कोए समाईआ। ओस वेले मेरा रूप अनूप पुरख अकाला जोत धरे महान, महिमा कथ कथ जणाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के तेरा अस्थिल वेखे आण, भूमिका आपणा ध्यान लगाईआ। तूं सुणना संदेशा बिना कान, कायनात दीए मालके कलम्यां बाहर दृढ़ाईआ। वेखीं भुल के समझ ना लईं इन्सान, पंजां ततां वाला नज़री आईआ। उह योद्धा सूर बली बलवान, जिस मैनूं दिती वड्याईआ। जिस दे हुक्म नाल मेरा दूजा कदम टिकया आण, तूं धूड़ी ख़ाक लैणी रमाईआ। अगला हिस्सा कोई समझ ना सके इन्सान, राजे बलि की चतुराईआ। मेरा तीजा कदम ना ज़िमीं होवे ना असमान, दो जहानां परे आपणा रूप वखाईआ। झट धरनी नीवीं हो के धूड़ी ख़ाक लग्गी रमाण, मस्तक रंग रंगाईआ। मैं बाली बुद्ध समझ सकां ना विच जहान, भेव अभेदा ना कोए खुलाईआ। तेरा बचन करां परवान, परम पुरख इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। बावन हस के चरण नाल धरनी नूं दिता दब, सहिज सहिज भार टिकाईआ। फेर शब्द इशारा दिता झब, बिन रसना रसन दृढ़ाईआ। तूं उस प्रभू नूं लैणा लभ, जो सब दा पिता माईआ। जिस दा आउणा होवे नाल सबब, थित वार समझ कोए ना पाईआ। उस दा लहिणा देणा सब तों होवे वख, वखरी आपणी कार कमाईआ। जोती जाता प्रगट होवे जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ । जन भगतां दर्शन देवे उपर शाहरग, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। नी जा के तेरे उत्ते कोझीए कमलीए आपणा रखे पब्ब, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। तूं शरन शरनाई जाणा लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। बावन किहा धरनीए तूं दिवस रैण रही घुम्म, घुंमण घेरी विच भज्जें वाहो दाहीआ। खुशीआं नाल चरण लएं चुम्म, चम्म दृष्टी नज़र कोए ना पाईआ। इक बचन संदेशा मेरा लैणा सुण, सच सच नाल सुणाईआ। हुण मेरा रूप तकदी सरगुण, सब तों निक्का निक्का नज़री आईआ। एह मेरी सब तों वखरी होई चुण, चोण आपणे हथ्थ रखाईआ। इस नूं पहिचाण सके कौण, गत कोए किछ ना पाईआ। झट धरनी लग्गी रोण, नैणां नीर वहाईआ। इशारा देण लग्गी उनन्जा पौण, पवण पवणां खुशी बणाईआ।

धरती ज़ोर नाल लग्गी भौण, भज्जे वाहो दाहीआ। झट बावन किहा धरनीए तेरे उत्ते इक युद्ध करना राम ते रौण, रम्ईआ आपणी खेल खिलाईआ। काहन आए रथ चलाउण, कौरवां पांडवां संग बणाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद धार आए बदलाउण, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। नानक गोबिन्द रंग आए रंगाउण, रंगत इक्को इक समझाईआ। तूं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणे गाउणे गौण, ढोला धुर दा माहीआ। उस वेले कलयुग ने धर्म दा बुरज आउणा ढाउण, ढईआ गोबिन्द वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। धरनी कहे बावन मैनूं कवण देवे धीर, धीरज नज़र कोए ना आईआ। मेरा अन्तर होया दिलगीर, सांतक सति ना कोए वरताईआ। झट बावन किहा मानव ज़ाती बज्झी होणी विच शरअ ज़ंजीर, मानव मानव मानव वंड वंडाईआ। किसे नाम पढ़ना किसे कलमा पढ़ना तकबीर, तहरीर अवतार पैग़म्बर जाण कराईआ। झगड़ा पैणा अन्तिम पंज तत शरीर, शरअ शरअ नाल टकराईआ। धरनी रो के किहा उस वेले कवण अमृत बरसे सीर, मेघला इक वरसाईआ। बावन किहा धरनीए मेरा रूप पीरां दा पीर, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द होवे वज़ीर, शहिनशाह इक्को नूर अलाहीआ। तेरी बदल देवे तकदीर, तक्बर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी इक अख्वाईआ। झट बावन ने धरती उत्तों कदम दूजा चुक्कया, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। धरनी दा बिन पाणी मुख सुक्कया, तृष्ना तृखा तृप्त ना कोए कराईआ। झट हुक्म संदेशा दिता लुकया, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। हलूणा दिता बिन गुट्टया, हुलारयां विच हलाईआ। धरनीए उह तक लै कलयुग अन्त आत्म परमात्म सब दा नाता होवे टुट्टया, टुटयां गंढु ना कोए पुआईआ। तन वजूद दूई दुवैती नाल होवे फछुट्टया, फुटकल दिसे ख़लक खुदाईआ। सच दवारयों मानस मानव होवे रुठ्ठया, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। उस वेले पुरख अकाला दीन दयाला तेरे उत्तों होवे तुठ्ठया, मेहर मेहर मेहर नज़र उठाईआ। तेरी सुहञ्जणी करे रुत्या, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तेरा अन्तष्करन रहिण ना देवे सुत्या, सुतड़ी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा हुक्म जणाईआ। बावन कहे धरनीए मेरा अगला कदम ना ज़िमीं ना असमान, ब्रह्मण्ड नज़र किसे ना आईआ। धरनी हस के किहा मेरे मेहरवान, कुझ मैनूं दे जणाईआ। बावन किहा कर ध्यान, धौले तैनूं दयां दृढ़ाईआ। धरनी कहे मेरा कौण होवे निगाहबान, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। बावन किहा कलयुग वेख सतिगुर शब्द शब्द प्रधान, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। धरनी बिना अक्खरां तों कीता ब्यान, बिन ख़ाहिशां ख़ाहिश जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म

इक वरताईआ। बावन किहा धरनीए आह वेख मेरे चरण दी धूड़ अगम्मी, तेरे सीने दयां लगाईआ। तेरी ज़िंदगी बिना स्वासां दमी, सास स्वास वेखण कोए ना पाईआ। तेरा रूप नहीं हड्ड मास नाड़ी चम्मी, चम्म दृष्टी नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरी धार विच्चों जम्मी, जणेंदी बणी इक्को माईआ। तैनूं ख़बर सुणावां नवीं, नौ खण्ड वालीए पड़दा लैणा उठाईआ। धरनी किहा भगवान खुशीआं नाल कवीं, कहि के दईं सुणाईआ। उस वेले इशारा दिता बावन किहा जिस वेले मेरा नूर आया अवतार चवी, चौबीसा आपणा खेल खिलाईआ। तूं उस दी चरणी पवीं, बिन पैरां हथ्थ छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लेखा दए जणाईआ। बावन किहा धरनीए दूसरा कदम होणा पूरा, कदीम दा लेखा पूर कराईआ। उस दा तकीं निरगुण जोती नूरा, नूर नुराना वेख वखाईआ। जिस ने मेरा बचन करना पूरा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताईआ। उस दे शब्द दी अगम्मी सुणनी तूरा, तुरीआ तों बाहर दे समझाईआ। उस दा हुक्म होणा मशहूरा, मशवरे सतिगुर शब्द नाल कराईआ । उह तेरे उत्ते आवे ज़रूरा, ज़रूरत तेरी मेरी वेख वखाईआ। सर्ब कला होवे भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ । तूं उस नूं समझना हाज़र हज़ूरा, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। शुकराने विच होणा मशकूरा, मुश्किल तेरी हल्ल कराईआ। पन्ध मुकावे नेड़ा दूरा, दूर दुराडा आवे धुर दा माहीआ। तैनूं मस्ती देवे नाम सरूरा, सुरती सुरती शब्द शब्द विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह आप सुहाईआ। धरनी कहे बावन जी मेरी इक बेनन्ती निक्की, निक्की वड्डी करके तेरे चरण टिकाईआ। मेरी आसा किथे होवे टिकी, मैनूं दे समझाईआ। क्यों मैं ख़ाक मिट्टी, तन वजूद ना कोए चमकाईआ। मेरा रूप नहीं कोई पत्थर इट्टी, पाहनां संग ना कोए बणाईआ। मेरी धार नहीं कोई चिट्टी, नूर नुराने विच समाईआ। मैं सब दे चरणां हेठ लिटी, लिटां खोल्ह के दयां दुहाईआ। फेर दोहथ्थड़ मार के पिट्टी, बौहड़ी बौहड़ी कर के नेत्र नैणां नीर वहाईआ। झट बावन ने बिना लेख तों खोल्ह के दस्सी चिठ्ठी, बिना हरफ़ हरूफ़ समझाईआ। धरनी आपणे अन्दर गल्ल ना रखीं दो चिती, दोहरा भेव दयां चुकाईआ। तूं समझ लैणा उस दी थिती, थितवार वार नाल मिलाईआ। इक इक दी धार सम्मत शहिनशाही नाले बिन अक्खरां तों लिख दिती चिठी, बिना हरफ़ हरूफ़ बणाईआ। फेर उस नूं किहा एह चार जुग रहेगी अनडिठ्ठी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। फेर परत के वेख्या इक वेख लै सस्से उत्ते होड़ा ते हाहे उत्ते टिप्पी, जिस दे उत्ते टीका टिपणी कर सके ना कोए लोकाईआ। उस विच्चों धार निकली मिट्ठी, अनरस अन्दरों दए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। झट

धरनी किहा बावना मेरया प्रभू नाल मेरे कर लै कुझ हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। झट बावन किहा धरनीए जिस वेले सम्मत शहिनशाही दस मुकण ते ग्यारां दा चढ़ना चेत, चेतन तैनूं दए कराईआ। दर्शन देवे हो के हाज़र नेतन नेत, बिन नैणां नैण प्रगटाईआ। आपणा पड़दा लाह के दस्से भेव, भेव अभेद तैनूं दए समझाईआ। तूं खुशीआं नाल लैणा वेख, पेख पेख पेख खुशी बणाईआ। पर याद रखीं जिस वेले एथे चरण दूजा धरया ते फेर बदल जाणी तेरी रेख, जिस नूं ऋषी मुनी समझ सके कोए ना राईआ। उस दा अनोखा अवलड़ा होणा भेख, भेखाधारी आपणा रूप प्रगटाईआ। याद कर लै उह आवेगा एसे तेरे देस, जिस देस उत्तों तीजा कदम चुक के बावन सब कुझ आपणे लेखे लए पाईआ। इहो इशारा देवेगा गोबिन्द दस दस्मेश, पुरख अकाल अगे वास्ता पाईआ। तूं रहिण वाला सदा हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। फेर रो के कहेगा विष्नूं दी सेज वाला बाशक शेष, सहिसर मुख मुख दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा सारे होणगे पेश, अवतार पैग़म्बर गुरु पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। सारे मन्नणगे इक नरेश, नर नरायण तेरी ओट नज़री आईआ। फेर उस वक्त धरनीए ना कोई मुल्ला रहे ना शेख़, मुसायकां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस धरनी नूं सारे कहिंदे प्रदेश, इस उत्ते आवे तेरा माहीआ। तूं खुल्ड़े करीं केस, चरण कवलां उत्ते खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आपणे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे बावन जी मेरे भगवन्त, मेरी बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। उह किहो जेहा होवेगा मेरा कन्त, कन्तूहल दे समझाईआ। की उहदी होवेगी बणत, कि तेरे वांगू गिठ मुठ दा हो के भज्जे वाहो दाहीआ। झट बावन ने किहा नी उस दा सब तों वखरा मंत, तैनूं दयां सुणाईआ। ना उह साध होवे ना सन्त, ततां वंड ना कोए वंडाईआ। ना उह जीव होवे ना जंत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। नी उसदी सदा इक्को जेही रुत बसन्त, ख़िज़ां रुत ना कोए वखाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बणके बोध अगाधा पंडत, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। उस दी करीं मिन्नत, निव निव सीस झुकाईआ। तेरी पिछली मेटे चिन्नत, चिन्ता चिखा रहिण कोए ना पाईआ। जो चढ़दिउँ आ गया लहिंदी वाली सिम्मत, सिम्मत तेरी वेख वखाईआ। फेर ओहदी पता नहीं किहो जही होणी इल्लत, आलमां फ़ाज़लां दा लेखा दए मुकाईआ। इक्को सतिगुर शब्द नूं दे के खिलत, ताजपोशी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिधर फेर वेखें धरनीए होवेगी ज़िल्लत ज़िल्लत ज़िल्लत, ख्वारी विच नज़री आए ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक गुसाँईआ । धरनी कहे बावन जी मैनूं आउँदा भय, क्यों भउ रिहा जणाईआ। बावन हस के किहा मैं तैनूं कुझ रिहा कहि, कहि के दयां दृढ़ाईआ। तूं धरनीए खुशीआं नाल

आसा रख के एथे बहि, आप आपणा बल प्रगटाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ क्रिया विच जगत जहान गया वहि, वहिणा हाथ कोए ना आईआ। धर्म दी धार विच रही कोई ना शैअ, शहिनशाह रूप ना कोए दरसाईआ। हर हिरदे अन्दर हो गई मैं, हंगता विच भरी लोकाईआ। काग वांग करू कैंअ कैंअ, काग हँस ना कोए बणाईआ। मानव मानव मानव मानसां नाल जाण खहि, खहि खहि आपणा आप मिटाईआ। उस वेले चारों कुण्ट तेरे उत्ते वधणी दुवै, दुवैत आपणा रूप बदलाईआ । बिना प्रभू दी किरपा तों सच पुछें धरनीए तेरे उत्ते भगत कोई ना रहे, भगवन मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन कहे नी धरनीए सुण नी धरत, धवल दयां सुणाईआ। उह मेरी धार दा मालक आवे परत, जिस नूं पतिपरमेश्वर कहि के सारे गाईआ। आह तेरे नाल ला के जाणी शर्त, शरतीआ दयां दृढ़ाईआ। बेशक उह वसदा उत्ते अर्श, तेरा फर्श वेखे चाँईं चाँईंआ। मेहरवान हो के करे तरस, रहमत आपणी आप कमाईआ। पर याद रखीं बीह सौ बत्ती नहीं सरगुण ज़ीरो ते तिन्न दो दी धार नहीं होणा उह शहिनशाही ग्यारां दा बरस, बरसी सारे लैण मनाईआ। तेरी मेटे पुराणी हरस, हवस हरस रहमत तेरे उत्ते कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा सच सच विच्चों प्रगटाईआ। बावन किहा धरनीए तेरे उत्ते ला के भाग, आप आपणा रंग रंगाईआ। फेर भारत जा जगाए चराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। अगे नवें वरते स्वांग, भेव भेव विच्चों खुल्हाईआ। तेरे उत्ते लग्गणी आग, अग्नी अग्ग अग्ग तपाईआ। तूं बिरहों विछोड़े विच मारीं आवाज़, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे परमात्मा आत्मा दा आपणा बणा लै समाज, समग्री सच सच वरताईआ। मेरा कलयुग अन्त संवार दे काज, कज़ा तों लेखा दे मुकाईआ। तूं बेनन्ती करीं मेरा वक्त सुहञ्जणा करना मेरी रखणी लाज, लाजावन्त तेरी सरनाईआ। नाले खुशी विच कहिवीं जिस कारन गोबिन्द उडाया बाज़, बाजां वाले दयां प्यारयां मिलके मिलके मिलके खुशी आपणी दरसाईआ। फेर वेखीं तैनूं इक अनोखा वखरा निराला जगत विद्या अक्खरां तों बाहर मिलणा जवाब, जिस दी जवाब तल्बी करनवाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब आपणा खेल खिलाईआ। बावन ने किहा धरनीए उह मेहरवान मेहरवान मेहरवान अपार, अपरम्पर स्वामी इक अख्वाईआ । चरण छुहा के तेरे उत्ते पहला कदम वेखे फेर निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। फेर परत के धरत तेरे उत्ते जाए उस अगम्मे दिल्ली दरबार, जिस दी काहन घनईया आशा जाए रखाईआ। फेर तैनूं अगला अगे तों दस्से विहार, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। उस दा कदम उह उठणा जिस दे नाल सारी सृष्टी ते हो जाणा वार, ते आर

पार दिसे ख़लक खुदाईआ। धरनीए पर उस दा करीं ना एतबार, उह वल छलधारी अछल छल इक अख्वाईआ। आपणे नाल रला पैग़म्बर गुर अवतार, जो तेरी देण गवाहीआ। नाले उन्हां नूं कहिवीं आपणे हथ्थां विच उठा लओ उह पेशीनगोईआं वाले इशतयार, भविख्तां वाले काग़ज़ नाल मिलाईआ। ते मुहम्मद नूं कहि देईं वे मुहम्मदा तेरा लेखा मुकणवाला नाल चार यार, चौथा जुग आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। ते मूसा नूं हलूणा दे दईं नाल प्यार, मुहब्बत विच समझाईआ। उह वेख नूर नुराना आ गया तेरा बाप जिस नूं किहा परवरदिगार, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मूसा नूं किहा उठ वे मूंह दे भार डिग्या आपणी निगाह लै मार, कोहतूर तों परे की ज़हूर नज़र आवे धुर दे माहीआ। नानक दा प्यार वेखीं निराकार, निरँकार तेरे रंग विच रंग बदलाईआ। जिस कारन गोबिन्द ने म्यान विच्चों खिच्ची सी तलवार, तरह तरह तैनूं दए समझाईआ। पर बावन ने किहा धरनीए तूं हो के रहिणा हुशियार, आप आपणी लई अंगड़ाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा होवेगा जिस वेले तेरा लेख लिखेगा आप निरँकार, निरवैर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। बेशक उहनूं सारे जोत दी धार कहिणगे चौवीआं अवतार, चौवी बैसाख सम्मत शहिनशाही ग्यारां उस दी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद पावणहारा सार, सिर सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ २५ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ फूला राणी दे गृह साईदा महला गली नम्बर छे लुध्याणा शहर ✪

धरनी कहे मेरी पूरी होई आस, निरास नज़र कोए ना आईआ। मैं लेखा तक्कया जो लिख्या वेद व्यास, ब्राह्मण ब्रह्म गोत गोत दृढ़ाईआ। मेरा खुशी नाल चलया स्वास, बिन पवणां रंग रंगाईआ। मैं निगाह मारी उत्ते आकाश, असमानां बाहर ध्यान लगाईआ। जोती जल्वा तक्कया नूर प्रकाश, परम पुरख पड़दा दिता उठाईआ। जो किरपा कर के पुज्जा मेरे पास, पासा दीन दुनी उलटाईआ। मेरा लेखा कीता रहिरास, रस्ता आपणा इक समझाईआ। मैनूं हस्सण लग्गा वेख शंकर उत्ते कैलाश, कलाधारी आपणी कल प्रगटाईआ। धरनीए तक लै जिस दा सम्बल अन्तर वास, निवासी आपणी खेल खिलाईआ। धरनी कहे मैनूं देण आया शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस दी मुहब्बत निरंतर रही भास, बाहरों रूप ना कोए दरसाईआ।

जो देवणहार सदा विश्वाश, विषयां बाहर वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरे अन्तर आई खुशहाली, खुशीआं ढोले गाईआ। नूर तक्कया जोत अकाली, अकल कलधारी पड़दा दिता उठाईआ। मेरी मिट्टी ख़ाक बणी सची धर्मसाली, धर्म दुआर इक अख्वाईआ। मेरे अन्तर मुहम्मद दी आई बाणी, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। मैं हस के किहा मेरी लेखे ला लै घाल घाली, घायल हो के सीस निवाईआ। तूं पारब्रह्म सृष्टी माली, मालक ख़ालक इक अख्वाईआ। निगाह मार लै फल रिहा किसे ना डाली, पत्त टहणी रही कुरलाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी बाल अंजाणी, बाली बुध्ध तेरे अगे वास्ता पाईआ। तूं मेरी सुरत संभालीं, सम्बल दे मालक दया कमाईआ। कलयुग रैण मेट अन्धेरी काली, कलि कल्की आपणा हुक्म वरताईआ। मैं बिन हथ्थां मारां ताली, ताल आपणा दयां वखाईआ । मेरे उत्ते शरअ दा मेट जंजाली, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। तेरे नाम दी करे ना कोए दलाली, विचोला जगत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं दे विच भज्जदी, भजन बन्दगी तेरा ढोला गाईआ। तेरे चरणां दे विच सजदी, शाह सुल्तान तेरी सरनाईआ। मैं कथा कहाणी सुणावां अज्ज दी, आजिज़ हो के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। की खेल तकी जग दी, चारो कुण्ट वेख वखाईआ। तेरी सृष्टी रूप बणी कल्पणा अग्ग दी, तृसना तृखा ना कोए बुझाईआ। नव सत्त शरअ वेखी हद्द दी, हदूद पड़दा ना कोए उठाईआ। मैं एसे कारन प्रभू तेरे चरण ढठदी, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सृष्टी धार तेरी यद दी, यदप आपणा हुक्म वरताईआ। मन कल्पणा रहिण ना देवीं बद दी, बदी दा लेखा देणा मुकाईआ। मैं उडीकदी तैनूं कद दी, कदीम दे मालक ध्यान लगाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर रही लभदी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैं सुणी आवाज़ तेरे अगम्मी नद दी, जो अनादी धुन धुन प्रगटाईआ। मैं पूरब लेखा तेरे चरणां दे विच कढदी, पर्दा परदयां विच्चों रखाईआ। मैं पिछली रीती सारी छडदी, दर तेरे वास्ता पाईआ। मैनूं चंगी नहीं लगदी खेल अड्ड दी, वखरी रह ना झट लँघाईआ। मै प्यार निशाना तेरे कदमां विच गडदी, गॉड हो के वेखणा चाँई चाँईआ। मेरी धार नहीं मास नाड़ी हड्ड दी, रक्त बूंद रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी आशा वेख लै डूंग्घी खड्ड दी, गहर गवर आपणी अक्ख उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणां साचा वर, सच दा संग आप समझाईआ। धरनी कहे प्रभू अज्ज मेरा वक्त सुहेला, साहिब सुल्तान दिता जणाईआ। मेरा खुशी वाला वेला, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को रूप नज़री आए गुरु गुर चेला, सुरती शब्द सुरत सुरत समाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेहरवान हो के कीता मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ।

मैं तेरे चरण कवलां विच खेलां, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। मेरा वक्त होण ना दईं दुहेला, दो जहान दिआ मालका तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे चरण कवल पैरीं पुज्जी नंगी, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। मैं जगत जहान दी मंज़ल लँघी, अगे हो ना कोए अटकाईआ । मेरे उत्ते शरअ दी मेट पाबन्दी, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा मुका दे खानाबन्दी, बन्दश नज़र कोए ना आईआ। वासना कूड़ कढ दे गंदी, गण गधंरव सब तेरी ओट तकाईआ। आह तक लै मेरी आदि जुगादि तेरे नाल संधी, शरतीआ शर्त पूर देणी कराईआ। मेरी आयू बेशक बड़ी लम्बी, आदि जुगादि तेरे हुक्म विच तेरी सेव कमाईआ। सच प्यार दा देणा अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं तेरे दुआरे निमाणी हो के खड़ी इक टंगी, बिन हथ्थां वास्ता पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट पाखण्डी, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ । सच पदार्थ आपणा नाम वंडीं, दाता दानी हो के आप वरताईआ। जन भगतां पूरब जन्म दी पिछली टुट्टी गंढीं, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। अन्तर धार सब दी कर दे ठण्डी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। किसे नूं पूजणा पए ना करीर जंडी, पाहनां सीस ना कोए निवाईआ। आत्म होण नाँ देवीं रंडी, कन्त सुहाग लैणी हंडाईआ। धर्म दा मार्ग दस्सणा डण्डी, डण्डावत सब दी देणी बदलाईआ। लेखा मुकणा जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण कवल तीर्थ अठसठे, अमृत रस रस चवाईआ। तेरी चरण धूड़ मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठे, चर्च चरागाहां आपणा संग बणाईआ। मेहरवान तेरी याद विच मेरे जुग लँघे मठे मठे, हौली हौली आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं आपणीआं खोलू के वेखीआं पुराणीआं गठ्ठे, कन्नी गंढु रहिण कोए ना पाईआ। जिस कारन भगत सुहेले कीते इक्ट्ठे, मेल मेलया चाँईं चाँईंआ। हरिजन प्रेम प्रीती विच आए नठे, भज्जे वाहो दाहीआ। जगत विछोड़ा मेट के रट्टे, रिटन राईट लेखा दे बणाईआ। आपणे प्यार नाल विचार वटांदरा कर झटे, सच नाल बदलाईआ। धर्म दी धार पा दे पटे, पटने वाले सतिगुर शब्द तेरी सरनाईआ। तेरा रूप अनूपा पंचम पंच जट्टे, जगत जहान नज़री आईआ। आपणा प्रकाश बख्श दे लट लटे, जोती जाते दे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे जन भगतो तुहाडा की इरादा, प्रेमीओ प्रेम नाल दयो जणाईआ। तुहाडा सतिगुर शब्द पिता पुरख अकाल दादा, मईआ माता दूजी नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी अराधा, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। उह मेहरवान मेहर करे बण के बोध अगाधा, बुद्धी तों परे

परे समझाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां नाल वअदा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ । जन भगत कहिण धरनीए असीं मंगीए की, मंगण दी लोड़ रही ना राईआ। साडा तृप्त होया जीअ, जीवण जगत मिली वड्याईआ। अमृत धार बख़्शया सीत मींह, मेघला आप बरसाईआ। लेखा मुक्कया साढे तिन्न हथ्थ सीअ, आवण जावण रहे ना राईआ। धर्म दी धार बीज्या बीअ, पत्त टहणी दए महकाईआ। गुरदास दी आसा पूरी करे वीह इकीह, इक्कीस बीस दया कमाईआ। जन भगतां बणा के आपणे पुत्तर धी, ध्यान नाल वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। जन भगत कहिण धरनीए असीं इक्को मंगदे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सानूं सदा बख़्शणा संग, सगला संग निभाईआ। ग़रीब निमाणयां लाउणा अंग, अंगीकार तेरी वड्याईआ। तेरे प्यार दी रहे ना भुख नंग, तृष्ना ममता देणी चुकाईआ। तेरा सच दुआर जाईए लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साडी सेज सुहाउणी सति सरूप पलँघ, शब्द सिँघासण इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर,
५१८ सच दा दर इक सुहाईआ। धरनी कहे जन भगतो तुहाडा सोहणा जुड़या जोड़, जोड़ी हरि जगदीश बणाईआ। सब ने ५१८
२४ चढ़ना शब्दी घोड़, रासां आपणे हथ्थ उठाईआ। मन दीन दुनी नालों लैणा मोड़, सतिगुर चरण चरण टिकाईआ। कूड़ वासना २४
नालों लैणा होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। सच दुआर पहुंचणा दौड़, पिछला पन्ध मुकाईआ। तुहाडी इक्को मंज़ल इक्को पौड़, पौड़ी डण्डा वंड ना कोए वंडाईआ। घर स्वामी मिल्या ब्राह्मण गौड़, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। बेशक प्रभू दा मार्ग बड़ा सौड़, तुसां भज्जणा वाहो दाहीआ। तुहाडे होवण भाग मथोर, मिथन दिसे जगत लोकाईआ। तुसीं एथे होर ते अगे बणना होर, होर दा होर रूप बदलाईआ। तुहाडा अन्धेरा मुके घोर, अन्धघोर नज़र कोए ना आईआ। तुसां आपणी वस्त मंगणी नाल ज़ोर, हक आपणा लैणा चाँईं चाँईंआ। खुशी विच खुशी पाउणा शोर, छोहर बांके नाल मिलके वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे जन भगतो सब दा वड्डा वड्डा भाग, भाग मेरा नाल मिलाईआ। बेनन्ती करीए प्रभू एस घर विच जगा दे चराग़, मेहरवान मेहर मेहर नज़र उठाईआ। दो बच्चयां दी खुशी नाल दे दे दाद, तेरे हथ्थ तेरी बेपरवाहीआ। सदा सदा सदा सद रखणा याद, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मालक जुगादि आदि, जुग चौकड़ी तेरी रीती चली आईआ। असीं भगत सुहेले तेरा खुशी सुणीए नाद, ढोला सोहला देणा दृढ़ाईआ। तेरे प्यार विच होईए विस्माद, विस्मादी तेरा रूप नज़री

आईआ। जगत शरअ तों कर आज़ाद, ज़ंजीर रहिण कोए ना पाईआ। धुर चरणां दी दे इमदाद, शरन बख़्श अगम्म सरनाईआ। तूं मालक इक्को वाहिद, वाहिदे सब दे पूर कराईआ। जिन्हां दा लेखा उह जिन्हां दा लहिणा तेग़ बहादर दे नाल जलाद, जल्दी जल्दी लैणा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म दा हुक्म होए समाज, दूजी शरअ रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ रुढ़का गुरमेज़ सिँघ दे गृह ज़िला जलन्धर दुआबा संगत नवित ✪

धरनी कहे प्रभू नव सत्त तेरा सुणां जैकारा, जै जैकार करे ख़लक खुदाईआ। मेरा पूरबला दे उधारा, लेखा लेखयां विच्चों झोली पाईआ। तूं निरगुण धार शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मैं डण्डावत बन्दना करां निमस्कारा, निव निव लागां पाईआ। तूं मेहरवान मेहरवान जोती जाता चौवीआं अवतारा, अवतरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरा पसारा, पश्चिम दक्खण उत्तर पूरब रहिण ना पाईआ। मैनूं देणा अगम्म सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तेरा लहिणा देणा अन्तिम वारा, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू नव सत्त तेरे नाम दा होए डंका, डौरु सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। मेरा नव सत्त सुहा दे बंका, गृह मन्दिर वजदी रहे वधाईआ। प्रीतम प्यारा बण जा आपणे जन का, जन भगतां बण जणेंदी माईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे तन काया माटी तन का, ततव तत आपणा रंग वखाईआ। सति प्रकाश दे दे नूरी चन्न का, चन्द चांदना डगमगाईआ। झगड़ा मेट दे दूई दुवैती मन का, मनसा मोह विकार चुकाईआ। लालच रहिण नहीं देणा कूड़े धन का, धर्म दी धार देणी प्रगटाईआ। भेव खुल्हाउणा आपणे ब्रह्म का, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। निशाना गड्ड दे सच धर्म का, धरनी धरत धवल धौल मेरी अन्त दुहाईआ। झगड़ा मेट दे काया माटी चर्म का, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। सहारा बख़्श दे आपणी सरन का, सति सतिवादी दया कमाईआ। नेत्र खोल्ह दे हरन फरन का, निज लोचन डगमगाईआ। पैंडा मुका दे मंज़ल चढ़न का, पाँधी पन्ध रहे ना राईआ। भेव खुल्हा दे आत्म परमात्म ढोला पढ़न का, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। तूं मालक स्वामी घाड़न घड़न का, भन्नणहार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं कर दे पतित पुनीत, पतित पावन तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं इक्को गावां तेरा गीत, गोबिन्द ढोला सहिज सुभाईआ। मेरे उत्ते

मानस ज़ाती बदल दे नीत, नीतीवान तेरी ओट तकाईआ। इक्को रंग रंगा दे हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। वेखीं सौं ना रहिणा दे कर पीठ, करवट आपणी लैणी बदलाईआ। मेरे उत्ते चाढ़ना जन भगतां रंग मजीठ, एथे ओथे दो जहान उतर कदे ना जाईआ। आपणा धाम अवलड़ा दस्स अनडीठ, निज लोचन लोचन खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरी तेरे चरण दुहाई, दोहथ्थड़ मार सीने दयां जणाईआ। निगाह मार लै मेरे गुसाँईं, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तक लै शाही, शहिनशाही आपणा पड़दा लाहीआ। धर्म दा रिहा कोई ना राही, रैहबर संग ना कोए निभाईआ। तेरा हिन्दसा समझे ना कोए इकाई, एकँकारे ज़ीरो रूप ना कोए बदलाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मैं मिन्नतां करदी मेरे उत्ते झगड़ा होणा ते होणा विच जुलाई, जुलाहा कबीर जिस दी शहादत दए भुगताईआ। की संदेशा देंदी अगम्मी ए माई, विष्न ब्रह्मा शिव चेल्यां नाल मिलाईआ। हुक्म वरतणा तेरा थल अस्गाही, गहर गम्भीर बेनज़ीर देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक भेव खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणा भेव खोल्ह दे जग, जग जीवण दाते दया कमाईआ। मैं तेरी सरन सरनाई गई लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। तैथों कदे ना होवां अलग, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। मेरे मालक ख़ालक कवण वेला मेरे सीने लग्गी अग्ग, अग्नी सके ना कोए बुझाईआ। की लेखा होवे हँस बुद्धी कग, मानव मानस रूप बदलाईआ । कग धार दिसण बपड़े बग, हँस रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेरी आसा मनसा पूरी करनी झब, झलक पलक आपणी देणी वखाईआ।

✪ २७ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर
विदेश टूर तों वापस पुज्जण ते ✪

बैसाख कहे मेरा प्रविष्टा सताई, सताई चक्क दा लेखा दयां समझाईआ। की खेल कीता मेरे बेपरवाही, बेपरवाह आपणी कार भुगताईआ। शेर सिँघ शेर तन वजूद विच्चों लै अंगड़ाई, आप आपणा रूप बदलाईआ। जोत नूर हो के दो जहान तक्कया चाँईं चाँईं, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। फेर निगाह मारी चार जुग दे तक्के राही, अवतार पैग़म्बर गुर खोज खुजाईआ। फेर खुशी कीती सब नूं आपणे अन्तर ल्या बुलाई, बिन बुल्ल्हां हुक्म सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु पन्ध मुकाउणा

थाँईं थाँईं, थनंतर इक्को इक दरसाईआ। आपणी कथा कहाणी दयो सुणाई, चार जुग दा पूरब नाल मिलाईआ। नाले मेरा नाम कलमा तक्को जो कायनात आए गाई, दीन दुनी कर शनवाईआ। मेरा शब्द संदेशा दयो समझाई, भेव अभेद खुल्हाईआ। फेर पर्दा लओ उठाई, ओहला नज़र कोए ना आईआ। दीनां मज़्हबां तको जिंन्हां नाल प्रेम वाली साई, शहादत शरअ नाल रखाईआ। नाले आपणी आपणी वखाओ कलाई, सज्जा हथ्थ लओ उठाईआ। आपणा भविख्त दयो दृढ़ाई, ओहला ओहल्यां विच्चों चुकाईआ। पैग़म्बरो पैग़ाम दस्सो चाँईं चाँईं, जो सुणाया धुर दे माहीआ। अवतारो आपणा लेखा दयो वखाई, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। गुरु गुरदेव मेरा हुक्म सुणो अलाही, हक हकीकत विच्चों प्रगटाईआ। आपणे आपणे दीनां मज़्हबां दी दयो सफ़ाई, सफ़ा दीन दुनी वेख वखाईआ। क्यों तुहाडी नाम वस्त होई पराई, परा पसन्ती मद्धम बैखरी भेव ना कोए खुल्हाईआ। की खेल तको थल अस्गाही, टिल्ले पर्वतां खोज खुजाईआ। क्यों अन्धेरा गया छाई, साचा चन्न ना कोए चमकाईआ। आपणी आपणी पेशीनगोई लओ उठाई, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। नेत्र तको नैण मिलाई, ओहला ओहल्यां विच्चों चुकाईआ। झट गोबिन्द किहा मेरा ढईआ बीतिआ साल लँघ गए सौ ढाई, पाँधी पिछला पन्ध मुकाईआ। मुहम्मद
५२१ किहा मेरी सदी चौधवीं आई, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। ईसा किहा मेरी बीसवीं बैठी रूप बदलाई, पड़दा नजर कोए ५२१
२४ ना आईआ। मूसा किहा मेरे नूर दी रही ना कोए रुशनाई, चन्द चांदना चन्द ना कोए रुशनाईआ। झट पुरख अकाल ने २४
किहा अवतारो तुसीं भेव दयो खुलाई, रामा कृष्णा लैण अंगड़ाईआ। झट वेद व्यासा बैठा सीस झुकाई, निव निव लागा पाईआ। बावन बोलया एह खेल अगम्म अथाही, कथनी कहिण किछ ना पाईआ। असीं सारे चलदे तेरी हुक्म रज़ाई, राज़क रिज़क रहीम तेरे हथ्थ वड्याईआ। झट हुक्म आया अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो मेरी इक अनोखी मर्ज़ी, मज़ाक विच ना कोए जणाईआ। मैनूं इयों दिस्या तुसीं सारे आपणे दीनां मज़्बां दे ग़रज़ी, मार्ग पंथ आपणी समझी वड्याईआ। कुछ मैनूं आपणे बिना हथ्थां तों लिख के दयो अर्ज़ी, बिन अक्खरां अक्खर बणाईआ। सारे ब्यान दे दयो असीं ततां वाले गुरु फ़र्ज़ी, बिन सतिगुर शब्द तों कामल रहिण कोए ना पाईआ। नाले कहो प्रभू साडी पंजां ततां वाली तेरी बख्शी होई वरदी, मिट्टी ख़ाक ख़ाक रंग रंगाईआ। जिस विच खेल चोटी जड़ दी, चेतन तेरी बेपरवाहीआ। तेरी सिख्या साख्यात पढ़दी, बिन रसना ढोले गाईआ । झट पुरख अकाल किहा मेरी खेल नरायण नर दी, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। तुहाडा केहड़ा केहड़ा दर्दी, मैनूं दयो समझाईआ। की धार सच सरोवर सर दी, अमृत मेघ की बरसाईआ। कवण तुहाडे प्यार विच सुवाणी तुहाडा पाणी भरदी, कन्ढी घाट बैठी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सच दा भेव आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो तुसां तके बड़े नज़ारे, नज़रीआ समझ कोए ना पाईआ। तुसां मज़्बां दे खोल्हे हट बाज़ारे, सौदा मेरा नाम विकाईआ। शरअ दे वख वख लगाए नाअरे, नर हरि नरायण दृढ़ाईआ। रसना जिह्वा बोल जैकारे, जै जैकार दिती सुणाईआ। मेरे हुक्म दे बणे बणजारे, हुक्म हुक्मे हुक्म मनाईआ। हुण तुसीं सारे आपणा भविख्त लओ विचारे, विचरके दयो जणाईआ। नाले आपणा लेखा तको बैठा केहड़े किनारे, कन्ढी घाट सोभा पाईआ। सब ने इक्को वार कीती निमस्कारे, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। चरण धूड़ी लाई छारे, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। प्रभू असीं तेरे दुलारे, दूल्हे दो जहान देणी वड्याईआ। झट सतिगुर शब्द किहा मेरा हुक्म सुणो इक करारे, इकरार करके दयां सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरो गुरुओ जे सच पुछो तुसीं मेरे प्रभू दे लोकमात दे मुज़ारे, मज़्बां दा वारस नज़र कोए ना आईआ। तुहानूं पता नहीं कितने जुग लँघ गए विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी केते पन्ध मुकाईआ । आओ मैं तुहानूं दस्सां इक अगम्म इशारे, बिन सैनत सैनत समझाईआ। तुसीं सारे इक्ठे हो के आपणा बल लओ धारे, सवाधान लओ कराईआ। तुसीं अवतार पैग़म्बर गुरु जथे बणाओ भारे, हजूम आपणा दयो वखाईआ। नाले खण्डे खड़गां खिचो तीर कमान लओ उभारे, शस्त्र हथ्थां विच उठाईआ। पुरख अकाल नूं कहो असीं जंगजू बहादर योद्धे बड़े करारे, सूरबीर बीर अख्वाईआ। फेर हुक्म सुणो निरँकारे, की करता दए दृढ़ाईआ। झट सब ने किहा सतिगुर शब्द असां खेल कीते अपारे, अपरम्पर स्वामी नाल मिल के खेल खिलाईआ। हुण संदेशा देईए इक्को वारे, एकँकार कार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पुरख अकाल किहा गुर अवतार पैग़म्बरो तुसीं बड़े सूरबीर, सूरमिओ तुहानूं दयां समझाईआ। तुसां मेरे नाम दे नाम नाल झगड़ा कीता ते खिच्चे कमानां तीर, जगत निशाने गए बणाईआ। चारों कुण्ट घतदे रहे वहीर, भज्जे वाहो दाहीआ। तुहानूं पता नहीं मैं अछल अछल्ल अक्खां तों परे वसणवाला बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। तुसीं मेरी महिमा कर सके खिच्च नहीं सके तस्वीर, मेरा रूप बाहर ना कोए समझाईआ । पर मैं बड़ा शरारती लिखावणहार इबारती नाम कलमे दा तजारती तुहानूं खिच्च के विच ज़ंजीर, कड़ी नाम कलमे वाली दिती लगाईआ। तुहाथों शास्त्रां बंधाई बीड़, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। मैं इक बचन पुछणा अख़ीर, आख़र दयां सुणाईआ। अवतारो पैग़म्बरो गुरुओ आपणयां दीनां मज़्बां विच्चों मैनूं उह दयो जो तुहाडा सारयां दा होवे वीर, नाम कलमे तों बाहर तुहाडे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो तुहाडे वड्डे वड्डे वड्डे सिख मुरीद, मुर्शदो मुर्शदो मुर्शदो तुहानूं दयां सुणाईआ।

बिना अक्खां तों मेरे वल्ल सारे करो दीद, बिन नैणां नैण नैण नैण मिलाईआ। उन्हां वल्ल वेखो जेहड़े तुहाडे प्यार विच होए शहीद, शहादत जगत ततां वाली भुगताईआ। फेर खुशी विच सारे खोल्ह लओ आपणी नींद, आलस निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ । फेर हुलारा लैणा उस अगम्मी पींघ, जो झूला दो जहानां बाहर झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सताई बैसाख कहे मैं वी उस दिन मूल ना सुत्ता, सुत्तयां दयां जणाईआ। किसे नूं पता नहीं उह केहड़ी घड़ी केहड़ा पल केहड़ी रुता, कवण कवण कवण रिहा महकाईआ। फेर मैनूं हलूणा दिता सतिगुर शब्द किहा वेख खेल अबिनाशी अचुता, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बिना अक्खरां दिता रुक्का, लेख नज़र कोए ना आईआ। नाले हुक्म संदेशा पक्का दिता सुक्का, कलम शाही शाही कलम ना कोए छुहाईआ। नाले फड़ के हलूणयां गुट्टा, झंजोड़ के दिता वखाईआ। मेरे अवतारो पैग़म्बरो गुरु साहिबानो मैनूं उह सिख मुरीद वखाओ जेहड़ा तुहाडे नालों नहीं टुट्टा, विछोड़े विच घड़ी पल विछड़ कदे ना जाईआ। जेहड़ा एथे ओथे मन्दिर अन्दर प्यार दीदार विच कदे नहीं रुठा, मुख मुख ना कदे बदलाईआ। नाले हलूणयां वेखो चारे गुठ्ठा, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। फेर हथ्थ खोल्हो फेर मीटो मुठ्ठां, घुट्ट घुट्ट के उंगलीआं लओ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो बैसाख महीना ते दिवस सताई, सत्ता बलंदी दो जहान ना कोए रखाईआ। पहलों एह दस्सो तुसीं हिन्दसा इक दो कि इकाई, कवण वंड वंडाईआ। जे मेरा भेव समझ गए उठा लओ दोवें बांही, भुजा भुजा नाल मिलाईआ। नाले होका दयो मेरे मालक खुदा धुर दे माही, महबूब की आपणी खेल खिलाईआ। फेर हुक्म सुणो जो धुर दा दए सुणाई, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। उह पैग़ाम आया इलहाम आया उह कलम्यां दा कलाम आया जिस दा अक्खर किसे दिसे नाही, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। फ़रमान कीता अज्ज वक्त सारे लओ अंगड़ाई, आपणा आप आप बल प्रगटाईआ। जे तुसीं लिख नहीं सकदे मेरे चरणां दे थल्ले अंगूठा लओ लगाई, मुखों कहो असीं दीन मज़्हब सारे गए तजाई, झट इक दूजे वल तकण हथ्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ। फिर उम्मत वेखी दीन मज़्हब तके सच दा मिल्या कोई ना राही, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां किहा तेरी खेल तेरे हथ्थ फड़ाई, दूजा नज़र कोए ना आईआ। असीं बाल अंञाणे तूं शहिनशाह धुर दरगाही, मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल किहा गुर अवतार पैग़म्बरो सुणो हुक्म इक इलाही, इक्को वार सुणाईआ। सब ने सुणना

नाल चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक वखाईआ। आपणा बल लओ प्रगटाई, प्रगट हो के मेरे अग्गे रूप लओ बदलाईआ। फेर आपणी ताकत लओ अज़माई, आज़म हो के आपणा बल जणाईआ। फेर कहो पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार मेरे हथ्थ सृष्ट सबाई दे फड़ाई, नव सत्त आपणा हुक्म वरताईआ। मैं दीनां मज़्हबां करां जुदाई, तेरे हुक्म विच समाईआ। झट सारे बैठे सीस निवाई, प्रभू तेरा अन्त कोए ना आईआ। असीं जिस मार्ग ते लाए उसे मार्ग दे राही, अगे कदम ना कोए टिकाईआ। साडी इक बेनन्ती इक अरदास तेरे चरण कवल टिकाई, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। अज्ज असीं फ़ैसला दिता साडे वलों जिस नूं चाहें उसे नूं दे वड्याई, वड्डे तेरी वड वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नौ वार एकँकार जिमीं असमान दो जहान मर्द मर्दान निगाह मारी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। फेर कीता जोत उज्यार, वेख्या पैग़म्बर गुर अवतार, निगाह मारी सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी अन्दर ध्यान लगाईआ। फेर दूजी वार किहा गुर अवतार पैग़म्बरो आपणा वक्त लओ संभाल, सम्बल दा मालक हुक्म सुणाईआ। तुसीं शाह बणना कि कंगाल, कि पातशाह नाल मिलके आपणी ख़ुशी बणाईआ। तुसीं शब्द बणना कि दलाल, विचोल्यो आपणा पड़दा दयो उठाईआ। सारयां हथ्थ जोड़ के किहा सानूं दीनां मज़्हबां विच्चों कर बहाल, एह तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द ने दोवें हथ्थ गरदन पिच्छे डाल, निउँ निउँ के सीस झुकाईआ। जे किरपा करनी ते मैनूं फेर बणा लै आपणा लाल, लाल आपणी गोद टिकाईआ। मैं तेरी नौ खण्ड पृथ्मी दी इक बणा देवां धर्मसाल, दूजा दुआरा रहिण कोए ना पाईआ। पर पता कीता पुरख अकाल किहा गुर अवतार पैग़म्बरो आओ सारयां दी करो भाल, भज्जो वाहो दाहीआ। सारे दौड़े दीनां मज़्हबां तकण वड्डे छोटे बाल, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। फेर हार के किहा प्रभू असीं तेरे साडे तों हल्ल ना होए सवाल, अन्त कहिण कुछ ना पाईआ। फेर हस के किहा गुर अवतार पैग़म्बरो उठो निगाह मारो छेती ते घर वेखो सिँघ पाल, जिस दा पालण वाला इक्को माहीआ। जे उस जन्म ल्या ते उसनूं सब कुझ देणा संभाल, ततां तों बग़ैर जोत विच जोत दयां मिलाईआ। पर मैं किसे दवारयों नहीं निकलणा मैं आवांगा सचखण्ड सच विच्चों धर्मसाल, ते धर्म दुआरा साढे तिन्न हथ्थ शरीर दा दयां बणाईआ। मेरे हुक्म नूं कोई ना सके टाल, अगे हो ना कोए अटकाईआ। उस दा हुक्म ते मेरा नाम धुर दा शब्द सति दी ढाल, दो जहाना इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सताई बैसाख कहे जन भगतो संन ईसवीं उन्नी सौ अठारां, अठ्ठां ततां वेख वखाईआ। मनी सिँघ प्या विच विचारां, सोचां विच सोच बदलाईआ। झट धुर दे हुक्म दा होया इशारा, सैनत दिती लगाईआ। सन्ता नक्क दे नाल लिख दे वार चारा, पूरन विच पूरन विच पूरन

सतिगुर दीआं बहारां, जिस दी रुत ना कोए बदलाईआ। जिस दा रूप होणा सांझा यारा, यराने यारां नाल निभाईआ। उह अवतारो पैग़म्बरो गुरु साहिबानो मनी सिँघ ने किहा उहने कोई फड़नीआं नहीं खण्डे ते तलवारां, तीर कमान ना कंध उठाईआ। जिधर वेखेगा बिना अक्खीआं तों पावेगा सारा, महासार्थी इक अख्वाईआ। पर उस दी जदों महकी ते महकेगी भगतां वाली गुलज़ारा, गुलशन आपणा नवां दए लगाईआ। फेर मुहम्मद ने किहा ईसा ने किहा मूसा ने किहा जे उह ख़ुदा खुद तैनूं बड़ा प्यारा, प्यार प्यार प्यार तेरे विच रखाईआ। जे उह तेरा नूर ते तूं अमाम ते अमामा दा रूप न्यारा, तेरा रूप उस दा रूप इक्को नज़री आईआ। पर साडी इक अर्ज़ इक अरज़ोई उह ज़रूर साडयां मज़्बां विच दीनां विच आवे ते फिरे जगत धार तों बाहरा, भेद आपणा आपणे नाल रखाईआ। पुरख अकाल किहा उह दुलारयो दूलहयो बच्चयो उहदा रूप मेरा बेअन्त पारावारा, पारब्रह्म हो के दयां समझाईआ। उह ज़रूर ज़रूर ज़रूर समुंद सागराँ पार करेगा किनारा, बिन नईया नौका पन्ध मुकाईआ। उह सताई बैसाख दा दिवस ते जिस वेले शेर सिँघ सताई साल दा होया ते सताईवें साल विच दिता इशारा इशारा इशारा, बिन मुख ज़बान दन्दां तों आप सुणाईआ। इस दा लेखा लेखा लेखा अगे दीन दुनी तों बाहरा, हौली हौली हौली सतारां हाढ़ तक सारा दए समझाईआ। पर लिखारीओ लिखण दा तुहानूं बड़ा आएगा नज़ारा, सुणन वाल्यो बच्चयो बचपन तुहाडा खुशी मनाईआ। उह जिस कारन सन्त मनी सिँघ जेल्हां विच जीवन गुआ के गया सारा, उह सारा जीवन तुहाडे अन्दर रखाईआ। बेशक तुसीं नहीं जाणदे एह पूरन कि पूरन सतिगुर नूर अपारा, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। किसे नूं पता नहीं जिस वेले पंज पोह नूं बधक नूं दिता सी इशारा, घरों कढुके बाहर दुआबे विच लेखा दिता बणाईआ। उस विच इक नुक्ता रख्या जिंनां चिर इक्की वार इक्वीआं ना करें निमस्कारा, तेरा जन्म अगला ना कोए वधाईआ। एसे करके दूर दुराडे लेख लिख के घलया जिस वेले भारत आए ते अगले दिन ज़रूर जाणा पएगा बधक दे दुआरा, नहीं ते उहदा लेखा लेखा लेखा दीन दुनी विच नज़र कोए ना आईआ। उह काग़ज़ ते कलम शाही कोई मेट नहीं सकदा ते ना हुण लिखण दी लोड़ पए दुबारा, पूरब दा लहिणा पूरब झोली पाईआ। सताई बैसाख कहे मैं वी उस प्रभू दे चरण कवल तों आपणा आप वारा, वारस बणे मेरा धुरदरगाहीआ। जन भगतो जे तुसां लभणा ते यारां विच्चों इहो यारा, जिस दा यराना सके ना कोए तुड़ाईआ। पर एहदी वंड नहीं कोई पुरख नारा, बृद्ध बालां इक्को रंग रंगाईआ। पर बेपरवाह अगम्म अथाह जे किते खुशी विच तुहाडे अन्दरों कर जाए किनारा, ते तुहानूं राह खहिड़ा नज़र कोए ना आईआ। जे किरपा करे ते भर दए दुबारा, हथ्थ सिर उत्ते टिकाईआ। क्यों एह धुर दा मीत मुरारा, जगत यरानयां तों बाहर आपणा याराना दए निभाईआ।

जे इस तरह दा ना हुन्दा ते इहनूं काहनूं कहिंदे चौवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा धुर दा माहीआ। बच्चयो तुहानूं आयां नूं इक्को वार इकट्ठयां नूं देवां प्यारा, प्यार विच आपणे चरण टिकाईआ। सताई दा लेखा बड़ा न्यारा, उह पता नहीं छल्लीआं चबदयां दिता कि गन्ने चूपदयां दिता कि मोढे मार के सिर हिला के हलूणा दिता लगाईआ। पता नहीं मूँह ते पड़दा रख के ते शेर सिँघ केहड़ी मंज़ल चाढ़ा, चढ़दा लहिंदा पन्ध ना कोए रखाईआ। पर सताई बैसाख कहे मेरा इक दिवस चंगा पाल सिँघ ने खुशी विच इके रात विच सताई वार आपणे सतिगुर दे चरण छुहाया सी दाहड़ा, फेर मुख मुख मुख विच टिकाईआ। पर उह दिन उह सी जिस कारन गुरमुखो तुहानूं माण मिल्या सतारां हाढ़ा, पर इस सतारां हाढ़ ते सारा पर्दा दयां उठाईआ। नाले भेव दस्सांगा किस तरह सेवक बणीदा ते बणना सेवादारा, ते सेवक हो के सेव कमाईआ। तुहानूं उह प्रदखणा भुल गई जेहड़े लैंदे सी चार दुआरा, चारों कुण्ट भज्जदे वाहो दाहीआ। जदों चाहुंदे सी घर मोड़ ल्याउँदे सी दुबारा, घर घर विच टिकाईआ। जन भगतो सतिगुरु कोई खाण पीण दा नहीं वणजारा, रसना रस ना कोए वड्याईआ। उह ते बहाने लभ्भदा किस बिध मैं आपणयां बच्चयां नूं तारां, ते घर घर आपणा चरण टिकाईआ। ऐस साल दा लेखा जिस नूं समझ सके ना कोई गुर अवतारा, दूसर समझ कोए ना आईआ। तुसीं मेरे अगे होवोगे ते मैं पिच्छे होवांगा तुसीं मेरे ते मैं तुहाडा लावांगा नाअरा, एह वड्डी वड्डी वड्डी मेरी बेपरवाहीआ। फेर मैं दस्सांगा निशान किस कोल होवेगा चन्द ते किहदे कोल होवेगा सितारा, ते कौण वेखणवाला होवे धुर दा माहीआ। जन भगतो तुहानूं समझ आ जाऊ किस कारन समुंद सागराँ दा टप्पया किनारा, ते पूरबल्यां पैग़म्बरां अवतारां दे लेखे आया मुकाईआ। तुसीं खुशीआं विच प्यार दा लाउणा नाअरा, जैकारा इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन दा पूरन रूप पूरन सतिगुर दा लेख अगे सतारां हाढ़ तों बदल जाणा सारा, बदली आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ २८ बैसाख शहिनशाही सम्मत ११ राम सिँघ दे गृह ग्वाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

हस के कहे दुःख रोग संताप, बिन रसना जिह्वा ढोले ढोल रिहा सुणाईआ। सतिगुर शब्द तूं आदि जुगादी साडा माई बाप, तुध बिन दूजा गोद ना कोए टिकाईआ। मेहरवान हो के सानूं हुक्म दिता आप, आप आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे दर प्यार रूप कलयुग दी धारा ताप, अग्नी तत तत तपाईआ। मेरे दीन दयाल जे असीं ना होईए तेरा कोई ना जपे जाप,

तेरी लोड़ ना कोए रखाईआ। जगत अन्धेरा हो जाए रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मेहरवाना असीं सब दे सांझे साडी वंड नहीं किसे नाल ज़ात, दीनां मज़्बां विच आपणी खुशी बणाईआ। निगाहबान हो के साडे वल्ल मारीं झात, झाकी आपणी इक वखाईआ। साडा खेल वेख बहु भांत, भज्जीए नठीए वाहो दाहीआ। साडे हिस्से आया साढे तिन्न हथ्थ शरीर दा इक प्रांत, बहुती मंग ना कोए मंगाईआ। असीं तेरे हुक्म विच सृष्टी दे अन्दर वड़ के बहिंदे इकांत, ध्यान तेरे चरण टिकाईआ। सानूं बड़ी आउँदी शांत, जिस वेले भगतां अन्तर तेरा रंग वेख वखाईआ। तेरा नाम मिलदा अमृत बूँद स्वांत, अग्नी तत तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। संताप कहे मेरे साथी जगत दु:ख रोग, सोहणा संग बणाईआ। एह मेरा जिज्ञासुआं वाला जोग, जुगती तेरे हथ्थ फड़ाईआ। असीं हर घट अन्दर वड़ के भोगीए भोग, रस आपणा आप प्रगटाईआ। साडा मेला हुन्दा धर्म संजोग, विजोग विच तेरी खुशी मनाईआ। पर असीं किसे दे घर जांदे नहीं रोज़, कदी कदी आपणा फेरा पाईआ। हे प्रभू साडे नाल मिल के जिज्ञासुआं मिलदी नहीं मौज, खुशी रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। दु:ख रोग कहिण प्रभू रूप वेख दलिद्र, जगत जहान वखरा नज़री आईआ। ज़रा निगाह मार उधर इधर, एथे बैठे तेरी ओट तकाईआ। पता नहीं असीं फिरदे किधर किधर, भज्जीए वाहो दाहीआ। वेखीए बिटर बिटर, बिन नैणां नैण उठाईआ। साडे अन्तर सदा रहिदी सध्धर, सध्धरां तेरे चरण टिकाईआ। सानूं याद आउँदा साडे नाल प्यार कीता सी बिदर, सुदामा खुशीआं वाली गलवकड़ी पाईआ। काया मन्दिर दा खोल्ह के जिंदर, ताकी सानूं दिती वखाईआ। तुसीं फिरदे किधर, दर मेरे आउणा चाँईं चाँईंआ। ताकि मेरी आलस मिटे निंदर, ग़फ्लत रहिण कोए ना पाईआ। बेशक मेरा दुखी होवे पिंजर, तन वजूद हड्ड मास नाड़ी कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। रोग सोग कहिण प्रभू साडा नाउँ चिन्ता दु:ख, सांतक सति सति ना कोए कराईआ। सानूं वेख के सब दे कुमला जांदे मुख, खुशी विच कोए ना आईआ। साडे अन्दर वड़दयां इन्सानां दी मिट जांदी भुख, रसना जिह्वा रस ना कोए चखाईआ। सानूं कोई नहीं कहिंदा प्यार विच मनुक्ख, प्रेम नाल साडे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। दु:ख रोग कहिण प्रभू असीं सदा घतदे रहीए वहीर, भज्जीए वाहो दाहीआ। ना साडा वस्त्र ना कोई चीर, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। असीं कदे नहीं हुन्दे दिलगीर, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। पींदे नहीं कोई सीर, अमृत रस

मुख ना कोए छुहाईआ। पर जिस दे वल्ल जाईए उहदे नेत्रां वगे नीर, रो रो दए सुणाईआ। असीं फिरदे वांग कीर, कीरने तेरे नाम दे पाईआ। इक गल्ल याद जिस वेले बधक ने कृष्ण नूं मारया तीर, निशाना आपणा दिता लगाईआ। उस दुःख विच कृष्ण ने बधक नूं किहा आ मेरे वीर, गलवकड़ी लई पाईआ। नाले मस्तक ते हथ्थ रख के बदल दिती तकदीर, तरीका आपणे विच छुपाईआ। दुःख कहे सानूं उस वेले आई धीर, धर्म नाल धर्म दईए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ । दुःख रोग कहिण प्रभू की खेल दस्सीए कलयुग कल दा, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। साडा लहिणा देणा पूरब पिछला राजे बलि दा, बावन आपणा संदेश गया दृढ़ाईआ। साडा प्यार जिस अन्दर वड़दा उस नूं सलदा, तीर अणयाला इक वखाईआ। साडा प्यार कोई झल नहीं सकदा पल दा, दुखी हो के सारे देण दुहाईआ। साडा सवाल नहीं कोई हल्ल दा, अंकड़ा समझ कोए ना आईआ। तूं मेहरवाना सदा सदा सब नूं छलदा, अछल अछल्ल इक अख्वाईआ। झट सतिगुर शब्द किहा दुःख रोग बिना अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं तों तुहानूं नहीं कोई झलदा, झल्यो तुहाडी झलक विच आपणी ख़ुशी ना कोए बणाईआ। ते बिना तुहाडे प्यार तों जगत भगत कोई नहीं फलदा, सतिगुर ओट ना कोए तकाईआ। क्यों तुहानूं हुक्म अन्दर आप घलदा, वेखणहारा बणे आप गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । दुःख रोग कहिण प्रभू सानूं कदे किसे कीता नहीं प्यार, मुहब्बत नाल घर ना कोए बुलाईआ। जिधर जाईए उह रोवण धाई मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साडे नाल करन तकरार, झगड़ा दिसे थांउँ थाँईंआ। असीं इक वार धनंतर अगे कीती पुकार, अन्तष्करन आशा उस दे अगे टिकाईआ। क्यों साडा नाता जोड़या नाल संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तिन्नां दे समझाईआ। ओस हस के किहा तुहाडा फल रहे सदा जुग चार, लोकमात वजदी रहे वधाईआ। मैं तुहाडे प्यार नाल औशध करां तैयार, लेखा दीन दुनी बणाईआ। पर इक गल्ल याद रखयो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तुहाडा दुक्खां दा भरया रहे भण्डार, अतोट अतुट अतुट वरताईआ। सृष्टी विच हुन्दी रहे हाहाकार, हाए उफ़ कर कुरलाईआ। तुहाडी गिणती वधणी चुरासी लख नाल चुरासी होर वार, चुरासी नाल चुरासी फेर अंकड़े होर लओ वधाईआ। उस वेले सृष्टी नूं पता नहीं कितनी गिणती तुहाडी वधे बारमबार, अरबां खरबां नाल गणत ना कोए गिणाईआ। पर याद रखयो तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे आप निरँकार, निराकार हो के वेख वखाईआ। तुहाडा नाता जोड़े भगतां नाल विच संसार, संसारी हो के आपणा खेल खिलाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त कीता सतिजुग विच सति दा होया प्रचार, तुहाढुयां पिछल्यां परचिआं दा लेखा रहे ना राईआ। सब

५२८
२४

तों उत्तम श्रेष्ट जन भगत दिसणगे तन वजूद करन श्रृंगार, सोहणा रूप बणाईआ। तुहाडा वक्त बहुता नहीं थोड़ा नहीं पंज छे साल ते महीने नाल चार, दुःख रोग तुहाडा वक्त अगला नज़र कोए ना आईआ। फेर भगतां दी भगवान नाल सदा रहेगी बहार, खुशीआं दे ढोले गाईआ। पर इक बख्शिश ज़रूर करांगा तुहानूं सद्दया करांगा भगतां दे घर बाहर, इक सौ इक कदम तों पिच्छे सीस निवा के जाणा चाँईं चाँईंआ। सतिजुग विच सतिगुर दा भगत कदे ना होवेगा बीमार, तन वजूद कंचन वरगा सोभा पाईआ। झट दुक्खां रोगां खुशीआं नाल कीती निमस्कार, निउँ निउँ के सीस झुकाईआ। प्रभू जे असीं बधक दे अन्दर ना वड़दे साडा किस तरह हुन्दा उदार, सतिजुग विच सानूं मिलदी की वड्याईआ। जिस दे हिरदे विच वसिउं तूं आप निरँकार, निरवैर हो के आसण आपणा आप लगाईआ। उहदी बुद्धी दी नहीं सी पुकार, आत्मा तेरे ढोले गाईआ। ना कोई दुनिया वाला बुख़ार, सिर्फ़ विछोड़ा सी सतिगुर सी यार, यार दे यराने बिना यारी कम्म किसे ना आईआ। जिस दे प्यार विच पिछले जुग बीते ते लँघ गए , आपणा पन्ध मुकाई भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लहिणा झोली पाईआ। दुःख रोग कहिण प्रभू सानूं पंज छे साल चारों कुण्ट लैण दे भज्ज, भजन बन्दगी वाले फड़ीए थांउँ थाँईंआ। नाले वेखीए उह केहड़े साहिब दा करदे हज्ज, हुजरे विच केहड़ा मालक बैठा टिकाईआ। असीं बेनन्ती करदे अज्ज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तूं मालक सृष्ट सबाई जग, जागरत जोत नूर अलाहीआ। पर इक बेनन्ती प्रभू तूं जदों वसणा ते वसीं भगतां दे उपर शाहरग, हेठला हिस्सा साडी झोली देणा पाईआ। असीं खुशी होईए गद गद, गद्दी नशीनां वेखीए थांउँ थाँईंआ। अगे साडी भगतां नालों पूरी होवे हद्द, हदूद लँघण कोए ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा मेरा होया तेरे नाल सबब, साडी चले ना कोए चतुराईआ।

✪ पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

जेठ कहे प्रभू मेरी नवीं जड़ दे जड़त, जड़ चोटी दा पन्ध देणा मुकाईआ। सतिगुर शब्द नाल करा दे लिख्त पढ़त, संधी दो जहान जणाईआ। तेरे नाम दी लोकमात लए कोई ना धड़त, माया गंढु ना कोए पवाईआ । तेरा रूप नहीं कोई अणघड़त, घड़न भन्नृणहार तेरी वड वड्याईआ। मेहरवान हो के मेरे उत्ते करना तरस, रहमत सच कमाईआ। निगाह मारनी उत्तों अर्श, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। तेरा खुशीआं वाला बरस, एका एके नाल मिलाईआ। मेरे उत्ते करना तरस,

५२६
२४

रहमत सच कमाईआ। मेरी पिछली मेटणी हरस, हवस अवर ना कोए वधाईआ। बिन नेत्रां करां दरस, नूरी चन्द दरसाईआ। जोती जाते आयों परत, पतिपरमेश्वर रूप बदलाईआ। मेरी सुहञ्जणी होई धरत, धवल होई रुशनाईआ। मेरी बेनन्ती मन्नणी अर्ज़, आरज़ू दयां दृढ़ाईआ । तेरा खेल होवे असचरज, अचरज लीला देणी जणाईआ। मेरे योद्धे बीर मर्दाने मर्द, मदद तेरी इक रखाईआ । मेहरवान हो के मेरा वंडणा दर्द, दीन दयाल तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। जेठ कहे जन भगतो बण जाओ प्रभू दे जेठे सुत, जननी अवर नज़र कोए ना आईआ। जिस लेखे लाउणे काया माटी बुत, पंजां ततां रंग रंगाईआ। तुहाडी सुहञ्जणी करे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तुहाडा प्यार होवे नाल अबिनाशी अचुत, चेतन हो के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । जन भगत कहिण सुण जेठ मीता, मित्रा दईए जणाईआ। साडा तन मन होया ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सच प्यार वस्या चीता, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। साडी अन्दरों बदल गई नीता, नीतीवान दिता समझाईआ। जगत रस दिस्या फीका, फिकी दिसी जगत लोकाईआ। निरगुण सरगुण आपणा भेव खुल्हाया तरीका, तरह तरह समझाईआ। आत्म परमात्म करनी प्रीता, प्रीतम मिले चाँईं चाँईंआ । जिस दी याद विच पिछला वक्त बीता, अगे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। जेठ कहे मैं दस्सां हो दलेर, ताकत निरगुण नाल मिलाईआ । जो मेरे उत्ते करे मेहर, मेहरवान हो के दया कमाईआ। जिस दा रूप नज़र आया ततां वाला सिँघ शेर, तन वजूद वंड ना कोए वंडाईआ। अन्तिम माटी ख़ाकी करके ढेर, ढईआ गोबिन्द वाला संग मिलाईआ। रूप बदला के गुरु गुर चेर, चेला गुर रूप प्रगटाईआ। भेख वटाया ना लाई देर, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। शब्दी शब्द दवाया गेड़, गेड़ा दो जहान दवाईआ। साची धर्म दी छेड़ के छेड़, छेकड़ आपणा हुक्म वरताईआ। जो आशा रख के गया गोबिन्द अन्त नदेड़, गोदावरी कन्ढा आस रखाईआ। जद आवांगा शरअ दे कटां गेड़, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग दा अन्तिम लहिणा देणा नबेड़, नबेड़ा करां चाँईं चाँईंआ। मेरा सति सरूप दा सुहञ्जणा होवे खेड़, जिस दा दरवाज़ा वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पहली जेठ कहे मेरा दिवस सुहावणा, सोहणा दयां जणाईआ। मैं बीत्या हाल सुणावणा, संदेशा संदेश्यां विच्चों प्रगटाईआ। जो इशारा दिता बलि बावना, रूप अनूप दरसाईआ। जो राम रामा खेल सुहावणा, सोहणा संग बणाईआ। जो इशारा कीता कृष्ण कान्हना, कान्ही हो के कंध उठाईआ। जिस

दा पैग़म्बरां पकड़या दामना, दामनगीर नूर अलाहीआ। जिस दा नानक निरगुण गाया सतिनामना, सरगुण सति सति समझाईआ। जिस दा गोबिन्द खेल खिलावणा, खेल आपणी आप प्रगटाईआ। उस मैनूं रंग चढ़ावणा, जो आदि जुगादि उतर कदे ना जाईआ। पहली जेठ कहे मैं खुशीआं ढोला गावणा, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। पहली जेठ कहे मैं दस्सां नाल धर्म, सति सच सुणाईआ। मेरे महीने दा वड्डा होया कर्म, निहकर्मी दिती वड्याईआ। मेरे अन्दरों कढुया भरम, भुलेखा दिता चुकाईआ। नाल संदेशा दिता तेरे विच ततां लैणा जरम, लोकमात वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। जेठ कहे मैनूं पहले दिवस संदेशा घलया, शब्दी धार गुरदेव। सुण बल्लू मेरे बलया, हुक्म मन्नणा इक नेहकेव। जिस आदि जुगादि सब नूं छलया, जिस दी सिफ्त करे कोई ना जिह्वा। जो जोती जाता धार रलया, सब नूं देवणहारा साचा मेव। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पहली जेठ कहे मैनूं आया हुक्म तकदीरी, मेरी तकदीर समझ सकी ना राईआ। मैं निगाह मारी खेल वेख्या शाह हकीरी, फ़कीरी तों बाहर सोभा पाईआ। जिस दे कोल बिना कड़ीआं तों ज़ंजीरी, कुण्डी गंढु नजर कोए ना आईआ। मैनूं वेख होई दिलगीरी, हैरानी विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जेठ कहे मैनूं संदेशा आया अलाही, अलाह दिता दृढ़ाईआ। सोहणया सुणना चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक बणाईआ। पंजां दिनां विच पंजां ततां मिलणी वड्याई, पंचम वेखणा नैण उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणा हुक्म रिहा वरताई, वारस हो के आप सुणाईआ। बेपरवाह ने बणना पाँधी राही, दो जहानां वेख वखाईआ। नाले बावन दी धार याद कराई, बावन बावन हुक्म वरताईआ । पहली जेठ कहे मैनूं मिल्या हुक्म करारा, कर्म कांड तों बाहर जणाईआ। दो जेठ वेखणा नज़ारा, नज़र नज़रीए विच्चों बदलाईआ। तिन्न जेठ होवे इशारा, बिन सैनत सैनत समझाईआ। चार जेठ रहिणा ख़बरदारा, बेख़बरां ख़बर ख़बर दृढ़ाईआ। पंचम जेठ होवे ज़ाहरा, पंचम तत रूप समाईआ। जिस नूं माप्यां कहिणा दुलारा, शेर सिँघ नाम प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द तन वजूद दे अन्दर करना किनारा, तट दीन दुनी तजाईआ। सिँघासण आसण ला के भारा, बैठे चाँईं चाँईंआ। पहिल्यां पंजां सकिंटां विच बावन नूं बुलाए बिन रसना जिह्वा आपणे विच संसारा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तूं तकणा खेल अपारा, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। जिस नूं सब ने किहा चवीआं अवतारा, जोती जाता इक अख्वाईआ। जो निरगुण नूर होवे उज्यारा, उजाला

करे थांउँ थाँईंआ। बावन बिन अक्खरां बण लिखारा, लेख लेख विच्चों बदलाईआ। मैं बवन्जा साल बिन तन वजूद तों रखणा सहारा, धरनी धवल धवल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पहली जेठ कहे मैं पंच दिवस करदा रिहा इंतज़ार, अगला अगला ध्यान लगाईआ। किस बिध आवे आप करतार, करनी दा करता वेस वटाईआ। मैं माता दे गर्भ विच निगाह रिहा मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। उह ख़ाली भाण्डा अन्दरों दिसदा रिहा जिस नूं आत्मा दा अधार, जगत वासना नाल वड्याईआ। जिस वेले वक्त सुहञ्जणा आया पंचम जेठ थित जगत विचार, सोहणा खेल खिलाईआ । साढे दस तन वजूद प्रगट कर अपार, आपणा रंग वखाईआ। पहले सकिंट अन्तर आई जोत निरँकार, दूजे शब्द शब्द शब्द समाईआ। तीजे दो जहानां वेख विखार, चौथा आपणा आपणे विच समाईआ। पंजवें सकिंट बलि बावन करके ख़बरदार, भगत भगवान दोवें रंग रंगाईआ। मेरा वेख लै रूप निराकार, जो साकार विच टिकाईआ। बावन साल करां श्रृंगार, ततां रंग चढ़ाईआ। फिर जोती जाता हो के होवां बाहर, आपणा आप प्रगटाईआ। गोबिन्द दा तक के कौल इकरार, इकरारनामे पिछले नाल मिलाईआ। वेद व्यास दा लाहवां उधार, उदर दा पन्ध मुकाईआ। सम्बल दा बण सिक्दार, सिँघासण देवां सुहाईआ। जोती जाता हो के शब्द दी देवां गुंजार, शब्दी शब्द प्रगटाईआ। खेल करां विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेख वखाईआ। लहिणा देणा पूरा करां पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के हुक्म वरताईआ। पहली जेठ कहे मैं निउँ निउँ कीती निमस्कार, बिन सीस सीस झुकाईआ। पंज दिन करदा रिहा इंतज़ार, दो जहानां राह तकाईआ। कवण वेला आए सांझा यार, मीत मुरारा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पहली जेठ कहे मैं तक्कया नाल रीझां, नैण नैणां नाल मिलाईआ। मेरे अन्दर प्रगट होईआं रीझां, खुशीआं खुशीआं विच्चों प्रगटाईआ। मैं खलो के दो जहानां दी विच दहलीज़ां, दलीलां आपणीआं लईआं बदलाईआ। नाल वड्डीआं रखीआं उम्मीदां, आसा आसा विच्चों प्रगटाईआ। मेरीआं खुल्ह गईआं नीदां, आलस निंद्रा रिहा ना राईआ। मैं ना मरया ना जींदा, दोवें रूप गया तजाईआ। मैं प्यार विच्चों प्रभू प्यार दे रस पींदा, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पहली जेठ कहे पंचम जेठ मैं रिहा उडीकदा, आपणा ध्यान लगाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा अठारां मई तरीक दा, साढे दस वंड वंडाईआ। जो नवें ख़ाके उलीकदा, लाइन लाइनां विच्चों बदलाईआ। जिस दा झगड़ा नहीं कोई शरीक दा, शिरक्त सब दी रिहा मिटाईआ। जिस दा हुक्म इक तौफ़ीक दा, तोहफ़े देवे थांउँ थाँईंआ। जिस

दा जैकारा इक्को गीत दा, गोबिन्द धार नाल मिलाईआ। एह खेल अनोखा अनोखी रीत दा, रीतीवान आप समझाईआ। जिस पन्ध मुकाया मन्दिर मसीत दा, काया काअबा कर रुशनाईआ। जो वारस होवे लख चुरासी नीत दा, नीतीवान होवे धुरदरगाहीआ। जिस दा सहारा ठांडा सीत दा, अग्नी तत बुझाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी जांदा बीतदा, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पहली जेठ कहे पंचम जेठ गया आ, आमद विच खुशी मनाईआ। जिस ढोला इक्को ल्या गा, बिन सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। बिन रसना किहा वाह वाह, वाहिगुरु तेरे हथ्थ वड्याईआ। पहली जेठ कहे मैं पंचम जेठ खुशीआं नाल ल्या मना, निव निव सीस झुकाईआ। दर्शन तक्कया नूर अलाह, जोती जाता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पहली जेठ कहे पंचम जेठ मैं तकी इक इक दी धार, धरनी धरत ध्यान लगाईआ। जो सब दा मीत मुरार, शत्रु रूप ना कोए बणाईआ। मैं हस के कीती निमस्कार, निव निव लागा पाईआ। धूड़ी लाई छार, टिक्के ख़ाक रमाईआ। झट शब्द दी सुणी गुंजार, संदेशा दिता दृढ़ाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा जिस नूं समझे ना कोई विच संसार, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। तूं खुशीआं विच करना इज़हार, ढोला गाउणा धुर दा माहीआ। इक संदेशा देवां जिस नूं कर सके ना कोए विचार, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पहली जेठ कहे मैं सुणया हुक्म अलाही, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। नाल हिन्दसा तक्कया इकाई, इक इक रूप दरसाईआ। फेर हुक्म मिल्या वेखणा नैण उठाई, लोचन लोचनां विच्चों बदलाईआ। जिस वेले आया सम्मत शहिनशाही, इक इक मिलके गिआंरा रूप बदलाईआ। उस वेले रूप अनूप होणा जिस नूं जन्मे कोए ना माई, जोती जाता इक अख्वाईआ। सम्बल होवे आसण लाई, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जन भगतां मेला मेले चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। पहली जेठ कहे मैं सुणया ख़बर आई अवल्ली, अवल दिता जणाईआ। जिस वेले इकाई नाल इकाई दिसी इकल्ली, कला वरते बेपरवाहीआ। जिस कारन काहन ने सख़ीआँ नाल पाई जली, रासां वंड वंडाईआ। जिस कारन पैग़म्बरां खेल खिलाया थली, मारूथल रहे कुरलाईआ। जिस कारन गोबिन्द हथ्थ रखाया तली, सीस जगदीस जणाईआ। उह मालक ख़ालक जो वसणहारा धाम अटली, दरगाह साची सोभा पाईआ। उह बण के वली छली, ख़ालक ख़लक नूर अलाहीआ। जिस दा झगड़ा नहीं नाल दली, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पहली जेठ कहे मैं सुणया अगम्मी नाअरा, निरगुण निराकार दिता जणाईआ। जिस वेले सम्मत शहिनशाही आवे ग्यारा, एका एके नाल जुड़ाईआ। उस वेले भगतां मिले अधारा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जोती जाता होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दा खेल वेद पुराणां बाहरा, शास्त्रां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा हद्द नहीं कोई दाइरा, हदूदां बन्द ना कोए कराईआ। उस दा हुक्म अपारा, अपरम्पर आप जणाईआ। पंचम जेठ होवे त्योहारा, सोहणा वक्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पहली जेठ कहे मैं सुण के होया हैरान, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। झट सतिगुर शब्द दिता ज्ञान, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बिन अक्खां कर ध्यान, बिन लोचनां लैण अंगड़ाईआ। बिन रसना कहिण ज़बान, बिन सरवणां दए सुणाईआ। जिस वेले कोई धर्म ना रिहा ईमान, सति विच ना कोए समाईआ। जीव जंत सारे कुरलाण, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। धरनी वेखे उत्ते असमान, धरती वल ध्यान लगाईआ। जो सब दा लहिणा देणा चुकावे आण, आप आपणा हुक्म वरताईआ। उस वेले पंचम जेठ हरिजन साचे घर घर खुशी मनाण, साढे दस वक्त सुहाईआ। एह तन वजूद सिँघ शेर दा निशान, निशान लोकमात दरसाईआ। अगला हुक्म होर महान, महिमा कथ कथ जणाईआ। फेर भेत खोल्णा किस बिध गोबिन्द धार पूरन होया परवान, परम पुरख दिती वड्याईआ। जिस नूं समझणा मुश्किल होवे बोल ना सके ज़बान, जिह्वा ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। पहली जेठ कहे पंचम जेठ रखणा याद, जन भगत भुल कोए ना जाईआ। जिस दा लहिणा नाल नहीं किसे जगत दे साध, मनसा मन ना कोए रखाईआ। जिस विच पंज तत दा खेल होणा आबाद, सोहणा संग बणाईआ। जिस दा लहिणा देणा विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड वेख वखाईआ। उस दा नवां हुक्म संदेशा चलणा इस तों बाद, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सतिगुर शब्द पूरन दी धार होणा आज़ाद, आज़ादी विच्चों आज़ादी दए बदलाईआ। पता नहीं केहड़ी धुन ते केहड़ा वजणा नाद, कवण सुणन वाला होवे धुर दा माहीआ। नाले गुरमुखो दरस होवेगा ते हथ्थ उत्ते उडदा होवेगा बाज़, बाज़ी दीन दुनी बदलाईआ । एह प्रभू दा उलटा रिवाज, रवाइत आपणे हथ्थ रखाईआ। एह धरनी दा करना काज, कलयुग लहिणा झोली पाईआ। सतारां हाढ़ नूं सतिगुर शब्द दस्सेगा क्यों आया देस माझ, आप आपणा वेस वटाईआ। किस कारन भगत दुआरे पाई सांझ, सज्जणो तुहानूं ल्या मिलाईआ। हालत दस्सेगी सतिगुर नानक दी आ के रबाब, किस कारन तूं ही तूं ही गीत गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच करनी कार कष्माईआ। पंचम जेठ कहे मैं शहिनशाही ग्यारा लँघणा, आपणी खुशी बणाईआ। मैं इक्को वार प्रभू तों मंगणा, दर ठांडे झोली डाहीआ। जे भगतां दा बणना ई ते बण जा पक्का सज्जणा, क्यों लारयां विच लँघाईआ। तेरा दीपक मित्रा घर घर जगणा, क्यों दीपक बैठा बुझाईआ। तूं तत नहीं कोई पंजणा, शेर दा शेर रूप बदलाईआ। जिस ने दो जहानां दब्बणा, चरण कवल कवल दे सरनाईआ। जिस दे हुक्म विच सब ने लदना, भज्जणा वाहो दाहीआ। जिस पूरन दी धार पूरन दा लेखा कढणा, पूरन सतिगुर विच्चों पूरन जोत प्रगटाईआ। एह पूरन तुहाडा मित नहीं फेर किसे नूं नहीं लभणा, सब ने भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। जन भगतो सतिगुर नूं कदे नहीं लभण जाइउ घर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। आपणा भय विच रखयो उस ते डर, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। खुशीआं विच कहिओ जे सतिगुर हैं ते सानूं आ के वर, दर ठांडे दरस दिखाईआ। तूं मालक नरायण नर, नर हरि तेरी इक सरनाईआ। बिना मिन्नतां तों आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर निगाह उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैं आ गया धर के रूप ग्यारा, ग्यारवां गुरु नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द दा सतिगुर शब्द नाल इशारा, बिना सैनत सैनत दृढ़ाईआ। जद आवेगा आवेगा चवीआं अवतारा, अवतरी आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं समझे ना कोए विच संसारा, बुद्धी भेव कोए ना पाईआ। उह भगतां बणे मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। पहली जेठ कहे मैं उस नूं निव निव करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि जुगादि सहारा, श्रेष्ट सृष्टी दा मालक इक्को नज़री आईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर
कल्ला हरिसंगत दे सेवा करके जाण समें ✪

नारद कहे मेरा पैंडा पिछला पिच्छे रह गया दूर, दूर दुराडा नज़री आईआ। मैं शाह पातशाह शहिनशाह तक्कया हज़ूर, हाज़र हो के सीस निवाईआ। मैनूं मस्ती चढ़ी नाम खुमारी वाला सरूर, सुरत शब्द विच मिलाईआ । मेरे अन्तर निरंतर उपज्या

नूर, अन्ध अन्धेरा दिता गंवाईआ। मैं उस वेले खुशीआं विच गाई अगम्मी तूर, तुरत इक्को नाम ध्याईआ। प्रभू तेरा नाम सदा मशहूर, मशवरे भगतां नाल रखाईआ। नारद कहे मैं लेखा होर दस्सां पा के फ़तूर, फ़तवा दीन दुनी जणाईआ। जिस दा समझ सके ना कोए कसूर, कसम खा के दयां सुणाईआ। मैं जुग जुग प्रभू दा बण के रिहा मज़दूर, सेवक सेवा सच सच कमाईआ। इक दिन अंगद दे कोल आया विच खडूर, जेठ सतारां दिवस सुहाईआ। नाले थक के होया चकना चूर, थकावट विच कुरलाईआ । मेरा अन्तश होया मजबूर, दु:ख दर्द दर्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं अंगद वल तक्कया, नैण नैण विच्चों बदलाईआ । मैं हो गया हक्कया बक्कया, हैरानी मेरे अन्तर आईआ। मैं आपणे आप नूं अगांह धक्कया, धक्का प्रेम वाला रखाईआ। झट वैरागी साधू आ गया नट्ठया, भज्जया वाहो दाहीआ। पिच्छे पंजां ने होर कीता इकट्ठया, इक दूजे नूं रहे सुणाईआ। असीं पूजदे मन्दिर मट्ठया, शिवदवाल्यां संग रखाईआ। नारद कहे मैं झट आपणा नेत्र पट्टया, अक्ख अक्ख विच्चों खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे इक्ट्ठे हो
५३६ के छे वैरागी, छे गुर उपदेश सुणाईआ। छे कन्त घर सुहागी, सोहणी सेज हंडाईआ। नारद कहे मैनूं आदि जुगादि बोलण ५३६
२४ दी वादी, वअदे नाल दयां सुणाईआ। मैं हस के किहा मेरा पुरख अकाल वड प्रतापी, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। २४
जो तुहाडी काया रिहा साधी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झट शब्द सुणया अगम्म नादी, धुन धुन विच्चों सुणाईआ। उन्ह़ां दी सोई सुरती जागी, जारगत जोत विच रुशनाईआ। अन्तर अन्तर प्रीती लागी, प्रेम विच खुशी बणाईआ। मैं हस के किहा हुण चिन्ता ग़मी काहदी, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं बैरागीआं वल अक्ख खोल्ी, नेत्र लोचन नैण उठाईआ। मैनूं याद आ गई राम वाली बोली, त्रेता जुग दए गवाहीआ। जेहड़ी सीता सति दी पई डोली, सच सच विच समाईआ। उस नूं राम इशारा कीता हौली हौली, सहिज नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आया उत्ते धौली, धौल धर्म ना कोए रखाईआ। कूड़ कुड़यारी दीन दुनी होणी मौली, रुतड़ी सति सच ना कोए महकाईआ। उस वेले धुर दे राम ने सति सच राम दी खेलणी होली, रंग आपणा आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा प्रेम इक जणाईआ। नारद कहे खडूर अंगद सुहाया अखाड़ा, सोहणी बणत बणाईआ। प्रेम दा रंग चढ़ाया गाड़्हा, उतर कदे ना जाईआ। मैं बैरागीआं अगे कढ्या हाढ़ा, निम्रता विच समझाईआ। एस बुढ्ढे दा वेखो चिट्टा दाहड़ा, जो बुढेपा

अमरू नाल हंढाईआ। जिस दा प्रकाश होणा नाड़ी नाड़ा, बहत्तर साल दी आयू बहत्तरां नाल मिलाईआ। खेल होणा जंगल विच उजाड़ा, जूहां संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बैरागीआं किहा साडी पंडत जी अरदास, बिनै दईए जणाईआ। ततां वाला सतिगुरु साडे पास, अंगद अंगीकार वखाईआ। जिस नाल मिलके लेखे लग्गे स्वास, साह साह विच रलाईआ। झट नारद तक्कया उपर आकाश, आकाश आकाशां परे वेख वखाईआ। उह वेखो मेरा मालक निरगुण नूर जोत प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा खेल अवल्ला होणा जन भगतां दए शाबाश, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोत जगाए बिना तन वजूद लाश, माटी ख़ाक वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। बैरागीआं किहा उह नूर नुराना की, निरगुण दे समझाईआ। नारद हस के किहा जो अमृत बरसे मींह, मेघला इक बरसाईआ। जिस कलयुग विच सति धर्म दी लाउणी नींह, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। सब दा लेखा पूरा करना वीह इकीह, एकँकार आपणा खेल खिलाईआ। जन भगत बणाउणे पुत्तर धी, पिता पुत्तर गोद सुहाईआ। रविदास दी साढे तिन्न हथ्थ लेखे लाउणी

५३७ २४ सीअ, सतिगुर हो के दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां जेठ कहे मैं आपणी खोल्ह के वेखी पोथी, पुस्तकां बाहर ध्यान लगाईआ। मेरी मति नहीं होई थोथी, कूड़ कुकर्म ना होई हल्काईआ। मैं जल्दी वेखी इक्को जोती, जोती जाता नज़री आईआ। भगत सुहेले जिस दे गोती, गुरमुख आपणे रंग वखाईआ। प्रेम प्यार दी वस्त दे के बहुती, अतोट अतुट वरताईआ। मंज़ल चाढ़ के धुर दी चोटी, चेटक आपणा इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। बैरागीआं किहा नारदा कवण रूप मिले निरँकार, नरायण कवण वड्याईआ। नारद हस के किहा सुणो मेरे यार, मित्रो दयां सुणाईआ। जिस नूं सब ने कहिणा कलि कल्की अवतार, निहकलंक नूर अलाहीआ। खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। झट बैरागीआं कीती निमस्कार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। असीं किस बिध करीए दीदार, दरस तक्कीए चाँईं चाँईंआ। नारद किहा उह धुर दा मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मेहरवान हो के तुहाडा जन्म फेर देवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी आपणा हुक्म वरताईआ । पंजां हस के किहा एस धरती दे कोल साडी होवे बहार, सोहणी खुशी बणाईआ। इक ने नेत्र रो के किहा मैं पंज दस कोस तों होवां बेशक बाहर, अन्तर वंड ना कोए वंडाईआ। नारद खुशी विच किहा साढे तिन्न कोस दी दीवार, पंचम पंचम पंचम बन्द कराईआ। इक इक दी पैज संवार,

एका पांजे नाल मिलाईआ। सताढ़ां जेठ कहे मैं वीं दस्सां हो के हुशियार, खुशीआं ढोले गाईआ। नाल बेनन्ती देवां गुज़ार, गुज़ारश विच सीस झुकाईआ। हरि भगत सुहेले जिन्ह़ां राम दा लेखा वक्त दा कीता इंतज़ार, समां समां समां आपणा वेस वटाईआ। जो रहिंदे हरि भगत दुआर, भगवन मिल के वजे वधाईआ। पंच वैरागी कल्ल्हे विच आपणा जन्म रहे संवार, जन्म जन्म जन्म आपणा संग बणाईआ। बूटा सिँघ बेशक पंज दस कोस तों बाहर, छेवें दा मेला मेलया सहिज सुभाईआ। नारद कहे जन भगतो एह कोई कम्म दीन दुनी दा नहीं विहार, जगत किरसाणा ना कोए चतुराईआ। तुहाडा अंगद दा लेखा अमरदास दा उधार, ते नारद हस के कहे मेरी पुकार, पुरख अकाल सुणी चाँईं चाँईंआ। सतारां जेठ दा दिवस सुहञ्जणा जिस दा कर्ज़ा दिता उतार, मकरूजो तुहाडी झोली दिती भराईआ। नाले धर्म दा धर्म कर्म दा कर्म सिरोपाउ दी दस्तार, सतिगुर कदम कदम टिकाईआ। नारद कहे मैं वीं खुशीआं नाल तुहाडे नाल जावांगा तुहाडे वेखांगा घरबार, गृह गृह ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सची सरकार, सतिगुर शब्द शब्द शब्द अख्वाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ जंडयाला गुरु हरिसंगत नवित ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे मैं प्रभू दा भगत हो के टपदा, टापू जगत जहान चरणां हेठ दबाईआ। बिन रसना तों तूं मेरा मैं तेरा इक्को अगम्मा नाम जपदा, रसना जिह्वा जगत मुख ना कोए वड्याईआ। मैं नूर ज़हूर तकां परमेश्वर पति दा, पारब्रह्म इक्को नज़री आईआ। जिस खेल खिलाया आदि जुगादी धार सति का, सति सति विच्चों प्रगटाईआ। जो भेव खुल्ह़ाउणहारा ब्रह्म पद का, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। उस लेखा मुकाउणा अन्तिम पंज तत दा, भगत सुहेले आपणे अंग लगाईआ। जो गृह गृह मन्दिर अन्दर वणजारा बणे काया माटी रत दा, रत्न अमोलक हीरे आपणे गृह टिकाईआ। जिस दा आदि जुगादी मेला साचे नत्त दा, शब्दी शब्दी शब्द समझाईआ। मैं उस दे चरण वास्ता घतदा, निव निव लागा पाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले जगत जहान वेख लै तपदा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया रूप धारया सप्प दा, डसणी घर घर डंग लगाईआ। मोह विकारा खेल वेख लै अत्त दा, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। साध सन्त प्यारा रिहा कोई नहीं यति दा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। तेरा भेव खोल्ह़े कोई ना मित गत दा, गहर गम्भीर पड़दा ना

कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। नारद कहे मैं भगत पुराणा प्रभ दा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। ठाकर स्वामी वसे मेरे चीत, चित वित ठगौरी नज़र कोए ना आईआ। मैं आत्म परमात्म गावां गीत, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मेरा काया काअबा दयोहरा हक मसीत, मठ गुरुदुआर सोभा पाईआ। जगत वासना मेरी बदल ना सके नीत, नीतीवान होए सहाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखी प्रभ दी रीत, मार्ग पंथ राह रैहबर रिहा वखाईआ। जो करनहारा पतित पुनीत, पतित पावन धुरदरगाहीआ। जिस दी याद विच जुग चौकड़ी गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जो लेखा जानणहारा हस्त कीट, ऊचां नीचां ध्यान लगाईआ। सो स्वामी मेरा बीठलो बीठ, मेहरवान नूर अलाहीआ। जिस दा खेल जगत अनडीठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सो भगतां चाढ़नहारा रंग मजीठ, एथे उथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। सदा सुहेला हो के हथ्थ रखे आपणा पीठ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। हरिजन कौड़े मिट्ठे करे रीठ, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं भगत पुराणा मेरी सब तों वखरी बोदी, बुद्धिवान समझ कोए ना पाईआ । मैं निरगुण धार हो के खेलां प्रभू दी गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द मेरी दिती गवाहीआ। जिस आशा कल्पना मेरी सोधी, सुदी वदी तों बाहर दिता समझाईआ। चरण प्रीत बणा के बणाया धुर दा जोगी, जुगीशरां बाहर पढ़ाईआ। मेल मिलाया धुर संजोगी, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। मैं फिरां जगत जहान बण के मौजी, भज्जां वाहो दाहीआ। दीन दुनी दा बण के खोजी, खोजत खोजत आपणा पन्ध मुकाईआ। मैनूं लालच नहीं किसे दीन दुनी दी रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। मैनूं परम पुरख परमात्म इक्को दिती सोझी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे मैं भगत बिना ततां तन वजूद, प्रेमीआं प्रेम नाल जणाईआ। मेरा मालक इक महबूब, मेहरवान नूर अलाहीआ। जो हर घट अन्दर मौजूद, बैठा सोभा पाईआ। जिस दी शरअ तों बाहर हदूद, हुजरा हक हक सुहाईआ। जिस दी इक्को मंज़ल मकसूद, दरगाह सच सच वड्याईआ। जो अन्तर निरंतर कढ्ढणहारा दूज, दूई दुवैती डेरा ढाहीआ। भाग लगा के पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए वड्याईआ। मैं उस दे चरण कवल जावां झूझ, आप आपणा भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। नारद कहे मैं भगत पुरातन दस्सां हाल, जन भगतो दयां जणाईआ। पिछला समां बीतिआं वेखो काल, महाकाल की दए दुहाईआ।

नव सत्त फल रिहा किसे ना डाल्ह, तन माटी ख़ाक रही कुरलाईआ। गृह मन्दिर वेखो जलाल, बिन तेल बाती ध्यान लगाईआ। हड्ड मास नाड़ी तको खाल, रती रत खोज खुजाईआ। आपणे अन्तर आपणा करो सवाल, सवाली हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक वखाईआ। नारद कहे जन भगतो भगती धार मारो झाकी आ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जन्म कर्म दीआं लओ बाकी आ, लहिणे प्रभ दे कोलों मंग मंगाईआ। लेखे वेखे पंज तत ख़ाकी आ, माटी ख़ाकी खोज खुजाईआ। आपणे अन्दर मेटे अन्धेरी राती आ, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पाती आ, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। सीना पाड़ के वेखो आपणीआं छाती आ, राम रामा नाल समझाईआ। गृह मन्दिर वेखो कमलापाती आ, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ । मानस जन्म लेखे लाउणा लोकमाती आ, मता सतिगुर शब्द नाल पकाईआ। लहिणा मुके डूँग्घे खाती आ, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। परम परमात्म पुरख पुरखोतम तको धुर दा साथी आ, सगला संग बणाईआ। जो देवे माण अनाथ अनाथी आ, दीनन आपणी गंढु पुआईआ। लहिणा चुकावे मस्तक माथी आ, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ । मेरी निमस्कार डण्डावत बन्दना जोड़ के दोवें हाथी आ, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। किरपा करे प्रभू रघुनाथी आ, किरपन हो के वेख वखाईआ। जिस दी आत्म परमात्म सब ने गाउणी गाथीआ, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समराथीआ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड भलाई पुर डोगरां
पाल सिँघ दे गृह रात नूं ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे वाह उए जेठ अठारां, इक इक दे मालक ग्यारां दए वड्याईआ। मैं खुशी होवां वेख के तेई अवतारां, दूआ तीआ सरगुण त्रैगुण आपणा भेव चुकाईआ। शब्दी धार सतिगुर तकां बहारां, दो जहानां नौजवाना हो के वेख वखाईआ। बिना नेत्र लोचन नैण वेखां इशारा, बिना सैनत दीन दुनी प्रभू रिहा समझाईआ । जो लहिणा देणा जुग चौकड़ी पूरा करे उधारा, लेखा सब दी झोली पाईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेखे हट्टी बाज़ारा, ब्रह्मण्डां खण्डां ध्यान लगाईआ। जिस खेल खिलाया लख चुरासी जीव जंत पुरख नारा, तन वजूदां सोभा पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला हो के पुरख ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर हो के आपणी कल प्रगटाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के एकँकारा, लख चुरासी

आपणी कल प्रगटाईआ। मैं निव निव बिना चरण करां निमस्कारा, बिन धूड़ी धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे तेई अवतारो मेरे प्यारे मित्रो, सज्जणो ध्यान लगाईआ। प्रभ दी धार विच्चों बाहर नितरो, निरवैर हो के वेख वखाईआ। चोटी चढ़ के वेखो सिखरो, अन्त पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे अवतरी तीना धार तमीना तवसी राम ज़वूह जोती नाल ज़वददी गोशे मैं रहूआ मेहरवान मेहरवान मेहरवान की खेल करे आपणी बिध दी, बिदना दोवें हथ्थ बधू आ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुरु आ। गुरदेव स्वामी अत्री, तेई तरेई धार। तुसीं ब्राह्मण कि क्षत्री, शूद्र वैश दसो विचार। बिन अक्खरां फोलो पत्री, बिन नैणां नैण उग्घाड़। बिन रसना गाउ मन्त्री, बिन शब्द नाद धुन्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक एकँकार। नारद कहे तेई अवतार वेखो आपणा साहित, सतिजुग त्रेता द्वापर ध्यान लगाईआ । क्रिया कांड दी वेखो रहित, कर्मा नाल समझाईआ। सच प्रेम दी तको महक, दीन दुनी वेख वखाईआ। जगत सिँघासण वेखो बहिक, आसण आपणा फोल फुलाईआ। की शब्दी ढोले सतिगुर शब्द कहत, कहि कहि रिहा जणाईआ। की हुक्म संदेशा मिले हदायत, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। की बख़्शिश होई अनायत, वस्त अगम्म वरताईआ। कवण तुहाडी करे हमायत, हम साजण कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे अवतारो बिन अक्खरां वेखो आपणीआं कापीआं, कलम शाही रंग ना कोए रंगाईआ। दरगाह सच दी पढ़ो पातीआं, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सीने पाड़ के वेखो छातीआं, अन्तर ध्यान लगाईआ। आपणीआं आपे पुछो वातीआं, आपणी आप लओ अंगड़ाईआ। क्यों कलयुग होईआं अन्धेरीआं रातीआं, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म रिहा ना लोकमातीआ, मातृ भूमी रोवे मारे धाहीआ। पिछलीआं दस्सो कथा कहाणीआं बातीआं, बातन भेव चुकाईआ। नाम दीआं रहीआं मूल ना हाटीआं, हटवाणिओ किथ्थे वस्त गए लुटाईआ। मंज़लां दूर होईआं घाटीआं, पाँधी चढ़न कोए ना पाईआ। आत्म सेजां सुंञी होईआं खाटीआं, सिँघासण हक ना कोए सुहाईआ। सच प्रेम दीआं डोरां गईआं काटीआं, टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। जोत नूर जगे ना कोए लिलाटीआ, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। मंज़ल मुकण किसे ना वाटीआ, पाँधीओ आपणा पन्ध दयो समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। अठारां जेठ कहे सुण नारद पंडा, पंडता तैनूं दयां जणाईआ।

५४२
२४

निगाह मार लै विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। खेल तक लै जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज पर्दा आप उठाईआ। दीन दुनी दीआं वेख लै वंडां, मानस मानव मानुख बैठे रूप बदलाईआ। जगत विकार तक लै गंढ्ढा, मोह विकारे नाल बंधाईआ। आत्म सब दा हो गया रंडा, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। सीना होवे किसे ना ठण्डा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। धर्म दा रिहा कोई ना खण्डा, खड़गां चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। जेठ कहे सुण पंडत धर्म धार दे मीते, सजणूआ दयां जणाईआ। जो अवतारां कौल इकरार कीते, जुग जुग भेव खुल्हाईआ। सब दे वक्त अन्त बीते, सतिजुग त्रेता द्वापर दए गवाहीआ। अगला हुक्म करे परम पुरख अतीते, त्रैगुण बाहर आप जणाईआ। जिस ने जुग चौकड़ी जीते, सतिजुग त्रेता द्वापर पिछले पन्ध मुकाईआ। जिस दी सब तों वखरी रीते, रीतीवान नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। अठारां जेठ कहे नारद मेरे विच हुन्दा रिहा कौल इकरार, इकरारनामे बिन अक्खरां देण गवाहीआ। एह हुक्मे बद्धे तेई अवतार, जगत शरीर गए हंढाईआ। रसना जिह्वा प्रभू दा नाम गए उच्चार, ग्रन्थ शास्त्रां नाल लिखाईआ। संदेशा देंदे गए वारो वार, लोकमात आपणी सेव कमाईआ। भविख्तां विच गए उच्चार, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। सब दा मालक एकँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं करदे रहे निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। जो वसे सचखण्ड सच्चे दरबार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। उस दा खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जो नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आवे कलि कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। झट वेद व्यासे उठ के मारी इक ललकार, कूक कूक सुणाईआ। उह ब्राह्मण गौड़ा सब दा मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो होवे उदर तों बाहर, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जाता हो के होवे ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप कराईआ। शब्दी शब्द दी बणा के धार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। तेई अवतार उसे दा करन इज़हार, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसाँईआ। तेई अवतार कहिण साडा नहीं कोई तकरार, बोल जगत ना कोए जणाईआ। असीं आए वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर फेरा पाईआ। हुक्म मंनदे रहे सची सरकार, जो शहिनशाह रिहा दृढ़ाईआ। अक्खरां नाल अक्खर देंदे रहे अधार, मेल मिलाया चाँईं चाँईंआ। ग्रन्थ शास्त्र गए उच्चार, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। राम रामा कर प्यार, रम्ईआ रूप समझाईआ। कान्हा काहन दस्स सिक्दार, घनईया इक्को इक दरसाईआ। बुद्धी तों परे जिस दा विवहार, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ।

उस दे बणके सेवादार, जुग जुग सेव कमाईआ। अन्त करदे रहे इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिस दे हुक्म विच हुक्म दी मौलणी बहार, बसन्त बैठे सीस निवाईआ। भगत वछल होए गिरधार, भगवन आपणा रूप वटाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पावणहारा सार, महासार्थी वड वड्याईआ। जिस नूं सब ने करनी निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ । अवतार कहिण पंडता साडा प्रभ सदा बेअन्त, तैनूं देईए जणाईआ। जो मालक धुर दा कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस दी सारे करदे मंनत, निव निव सीस निवाईआ। उस साडी बणाई बणत, घड़न भन्न्णहार धुरदरगाहीआ। भेव खुल्हाया विच जंनत, जीवां दिता जणाईआ। महिमा दस्स अगणत, सिफ्तां नाल सलाहीआ । जिस दे नाम दा गाया मंत, मंतव दीन दुनी हल कराईआ। उह लेखा लहिणा पूरा करे अन्त, अन्त उसे हथ्थ वड्याईआ। उस दा लहिणा समझ सके कोई ना पंडत, पंडता तेरी की चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। नारद कहे अवतारो मैं कोई भगत नहीं शरीर, तन वजूद ना कोए रखाईआ। मेरा रूप बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना

 पाईआ। मैं शाह नहीं हकीर, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी मनसा नहीं ज़मीर, ख़ाहिश दुनी ना कोए जणाईआ। ५४३

 मेरी बदली ना कदे तकदीर, तदबीर जगत ना कोए जणाईआ। मैं परम पुरख परमात्म दा इक्को पीता सीर, बिन रसना २४

जिह्वा मुख लगाईआ। जिस नाल मैनूं आई धीर, धीरज दिती टिकाईआ। मैं ग़रीब नहीं अमीर, अमरापद बहि के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। तेई अवतार कहिण नारद साडा इक्को इक बचन, बिन रसना दईए जणाईआ। तेरा केहड़ा गढ़ कंचन, सानूं दे सुणाईआ। नारद किहा मेरा मन्दिर नूर नुराना इक निरञ्जण, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो मालक दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागराँ पार कराईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुरु जोती धार जगण, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जो नाम निधान सब दे मुख लगावे सगन, वस्त अगम्म आप वरताईआ। प्रेम प्यार मस्ती विच करके मग्न, आपणा रंग चढ़ाईआ। जिस दी मंज़ल सारे लँघण, भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दे अवतर हो के सारे मंगण, ख़ाली झोलीआं अगे डाहीआ। उह नाम निधाना जुग जुग आवे वंडण, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अठारां जेठ कहे मैं सब नूं देवां संदेशा, अवतर तेई ध्यान लगाईआ। नारदा तक लै इक्को नर नरेशा, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जो सदा रहे हमेशा, साजण इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर विष्न

ब्रह्मा शिव गणेशा, देवत सुर भज्जण वाहो दाहीआ। जो वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी वखरा वेसा, तेई अवतारां वेस वटाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। जो मेटणहारा कूड़ कलेशा, कुकर्म दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। जेठ कहे मेरी बात इक अवल्ली, अवल्लड़ी दयां जणाईआ। मेरी आशा इक इकल्ली, अकल कलधारी दिती बणाईआ। जो आदि जुगादी वल छली, अछल छल आपणा हुक्म वरताईआ। उस ने ख़बर बिन अक्खरां दस्सी भली, जो भाण्डा भरम भनाईआ। जो सदा फिरे भगतां दी गली, काया कूटे भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दी धार आत्मा नाल परमात्मा हो के रली, रल मिल के खुशी बणाईआ। जो खेल खिलावे काया माटी खल्ली, खुद मालक आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे जेठ उह मित्र प्यारा चंगा, चंगी दए वड्याईआ। जिस दा प्यार अमृत रस अगम्मी गंगा, गंगोत्री समझ किछ ना आईआ। जिस दे हुक्म विच तेई अवतारां वक्त लँघा, आपणा पन्ध मुकाईआ। जो देवणहारा भगतां संगा, सगला संगी इक हो जाईआ। जो ओढण बख्शे सीस नंगा, सो सिर सिर आपणा हथ्थ वखाईआ। जिस लेखा पूरा करना ततां पंजां, पंचम देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक खुल्हाईआ। अवतार कहिण साडा मालक इक जगदीश, जगदीश्र नज़री आईआ। जिस नूं झुकदे सीस, सीस बिन कदमां कदम टिकाईआ। जिस दी करे कोई ना रीस, रूप अनूप ना कोए दरसाईआ। उस दा खेल इक इकीस, दूआ एका मिल के वजे वधाईआ । जिस दे छत्र झुलदा सीस, दो जहानां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। अवतार कहिण उस दा वक्त सुहञ्जणा आया, असीं मिल के दईए जणाईआ। जिस दा जुग जुग ढोला गाया, सिफ्तां नाल सलाहीआ। उह वेखणहारा त्रैगुण माया, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर खेल रचाया, कलयुग अन्तिम खोज खुजाईआ। जो भगत सुहेला निरगुण नूर जोत करे रुशनाया, जोती जाता डगमगाईआ। उस दा हुक्म संदेशा इक्को इक सुणाया, निरअक्खर धार पढ़ाईआ। अठारां जेठ खुशी मनाया, निव निव लागा पाईआ। नारद कहे मैं लख लख शुकर मनाया, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। अवतारो तुहानूं दयां सुणाया, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ । तुहाडा अन्तिम पन्ध मुकाया, कदम अगे ना कोए उठाईआ। सब दा मार्ग इक समझाया, दीन मज़्हबां ना वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म भेव खुलाया, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पूरब लहिणा सब दा झोली पाया,

बाकी नज़र कोए ना आईआ। जिस ने भगतां वक्त सुहाया, भगवन दए वड्याईआ। उस दी धूड़ी ख़ाक रमाया, मस्तक टिक्के नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस आदि जुगादी खेल रचाया, रचणहार इक अख्वाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे जन भगतो मैं तुहाडे अन्दर जावां लँघ, खुशीआं नाल मिलणा चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे प्रभू प्यारयां दा साचा संग, साचा संगी इक्को वेख वखाईआ। प्रेम प्यार दी धार वगे अमृत गंग, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। मैनूं चंगा सोहणा दिसे ढंग, तरीका मेरे मन नूं भाईआ। तुसीं खुशीआं ढोले गाउणे छन्द, सोहँ सच पढ़ाईआ। आत्म धार होए पाबन्द, परमात्म मिल के वजे वधाईआ। जिथ्थे रहे ना भुख नंग, तृष्ना कूड़ ना कोए हल्काईआ। सेज सुहञ्जणी होए पलँघ, छप्पर छन्न मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिसंग वेख्या अगम्म अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिथ्थे खुशी हुंदा बन्द बन्द, बन्दगी प्रभ दी विच समाईआ। नूरी जोत तक के चन्द, अन्ध अन्धेरा अन्ध मिटाईआ। साची मंज़ल हकीकी जल्वा वेखे लँघ, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिसंग हुन्दा काया मन्दिर घर, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जिथ्थे अमृत मिले डूँघे सर, सरोवर इक्को सोभा पाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहर किरपा देवे कर, करनी दा करता कार कमाईआ। सच भण्डारा देवे भर, ख़ाली नजर कोए ना आईआ। मेल मिलावा होवे इक्को हरि, जो हर हिरदे बैठा सोभा पाईआ। आत्म परमात्म लए वर, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे नरायण नर, नर निरँकार अगम्म अथाहीआ। निरभउ हो के चुकावे डर, भाओ आपणा इक समझाईआ। जिस दी सरन सरनाई जाईए पर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा पड़दा दए उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सतिसंग होवे काया मन्दिर, तन वजूद वजे वधाईआ। भाग लग्गे डूँघी कंदर, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। मनुआ दहि दिशा ना उठ उठ धाए बन्दर, मनसा कूड़ ना कोए हल्काईआ। बजर कपाटी तुट्टे जंदर, त्रैगुण तत रहे ना राईआ। होवे प्रकाश बिना सूर्या चन्द्र, जोती जाता डगमगाईआ। शरअ दा रहे कोई ना बन्धन, मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। सच स्वामी लाए अंगण, अंगीकार इक अख्वाईआ। जिस दे दुआरयों सारे मंगण,

ख़ाली झोलीआं अगे डाहीआ। उह साहिब सूरा सरबंगण, हरि करता इक अख्वाईआ। जो भगतां सदा सतिसंगण, साथी इक्को नज़री आईआ। जो टुट्टी आवे गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी बेपरवाहीआ। साची दात आवे वंडण, नाम निधाना झोली पाईआ। जो लेखा जाणे विच ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। जो वेखे कलयुग घाट कन्ढुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । सतिसंग कहे मैनूं करदा कोई, कोटां विच्चों नज़री आईआ। मेरी दो जहान दरोही, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। नव सत्त सब दी पत गई खोही, पति पतिवन्ता मिलण कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर रही रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। सुरती उठे किसे ना सोई, शब्दी शब्द ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतिसंग कहे मेरा रूप निराला जग, दीन दुनी दयां जणाईआ। मेरा मार्ग वखरा अलग, रस्ता इक्को इक दरसाईआ। मेरा मालक सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरा लहिणा देणा जन भगतां जो प्रभ दी सरनी गए लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ । मैं खुशीआं विच होवा गद गद, सिफ्ती ढोले गाईआ। मेरी चार दीवारीआं बाहर हद्द, जिस हदूद विच वसे धुर दा माहीआ। जिस दी लख चुरासी यद, यदी यदप हुक्म वरताईआ। उस दा नाम संदेशा सुणां नद, जो अनहद नादी धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिसंग कहे मेरी विष्न ब्रह्मा शिव चलाई रीत, निरगुण निरगुण ढोले गाईआ। सोहँ शब्द गाया गीत, तूं मेरा मैं तेरा हक पढ़ाईआ। त्रैगुण नालों आपणी वखरी दस्स प्रीत, प्रीतम हो के दयां जणाईआ। सदा सुहेला हो के वसां चीत, ठगौरी तन रहे ना राईआ। मेरा ब्रह्म ब्रह्मादी सति सतिवादी शब्द अनादी एका गीत, गोबिन्द ढोला सहिज सुभाईआ। मैं परखणहारा निरगुण धार रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। मेरा लेखा नाल हस्त कीट, कीट कीटां डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। सतिसंग कहे मैनूं विष्न ब्रह्मा शिव गाया, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। त्रैगुण माया गुण गाया, रजो तमो सतो वंड वंडाईआ। पंजां ततां पन्ध मुकाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना कोए चुकाईआ। नूर नुराना दीप इक जगाया, जोती जाता इक रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला गाया, बिन रसना सिफ्त सलाहीआ। तिन्नां मिलके मेरा साचा संग बणाया, तिन्नां लोकां वजी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिसंग कहे विष्न ब्रह्मा शिव होए इक्ठे, आदि दी धार दयां जणाईआ। पहलों प्रभ दी सरन सरनाई ढठ्ठे, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। फिर

थिर घर फिरन नठे, भज्जण वाहो दाहीआ। नाले इक दूजे नूं करन ठट्ठे, मसख़री रहे उडाईआ। आओ सतिगुर शब्द दे बणीए पट्ठे, जो सिख्या दए समझाईआ। जिस उलटी गेड़नी लठे, लख चुरासी वंड वंडाईआ। उस वेले तिन्नां मिलके तूं मेरा मैं तेरा गाए टप्पे, सोहँ कीती सच पढ़ाईआ। फिर अक्खरां विच माण दिता इक्को पप्पे, पूरन ब्रह्म दिता समझाईआ। जिस दे हुक्म विच त्रैगुण अग्नी तपे, त्रैगुण अतीता खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। सतिसंग कहे मेरी रीत बहु पुराणी, पुराण अठारां कहिण कुछ ना पाईआ। मेरी ब्रह्मा विष्न शिव जाणे कहाणी, चारे वेद पड़दा ना कोए उठाईआ। मेरा गृह पद निरबाणी, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा शहिनशाह नूर नुरानी, पातशाह इक अख्वाईआ। जिस नूं जगत जहान गाउणा ज़बानी, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। ख़लक वेखे ख़ालक असमानी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। मेरा लहिणा देणा नहीं नाल समुंद सागराँ पाणी, जलां थलां ना वंड वंडाईआ। मेरी मंज़ल नहीं रुहानी, रूह बुत ना कोए शनवाईआ। मेरी खेल नहीं कोई चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी अवतार पैग़म्बर गुरुआं तों पहलां दी कहाणी, बिना कथा तों कथा दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा राह इक दरसाईआ। सतिसंग कहे मैनूं विष्न ब्रह्मा शिव कीता, करनी दा करता पुरख नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द साडा बणया मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस ने मिल के चलणा दस्सी रीता, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। साडी तिन्नां दी इक्को कीती नीता, नीतीवान होया सहाईआ। बिन रसना नाम निधान अगम्मा पीता, पतित पावन दिआ प्याईआ। साडा अन्तष्करन होया ठांडा सीता, जुग चौकड़ी ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण साडा सतिसंग होया पहला नाल पुरख अकाल, जिस कला दिती वरताईआ। सो हो के आप दयाल, सो पुरख निरञ्जण वेख वखाईआ। हरि पुरख निरञ्जण चला के चाल, चाल निराली इक दरसाईआ। एकँकार करी संभाल, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। श्री भगवान वस्या नाल, अबिनाशी करता संग निभाईआ। पारब्रह्म कीती भाल, खोज खोजया चाँईं चाँईंआ। सतिगुर शब्द हो के नाल, मेल मिलाया धुरदरगाहीआ। असां तिन्नां कीता सवाल, निव निव सीस झुकाईआ। की खेल तेरा कमाल, कमलापाती दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द किहा सुण विष्न ब्रह्मा शिव धुर दा हुक्म रखणा याद, यादाशत भुल कदे ना जाईआ। तुहाडी धार सृष्टी करनी आबाद, लख चुरासी वंड वंडाईआ। त्रैगुण माया पंज तत दी

देणी दात, आत्म परमात्म देणी वरताईआ। खेल खेलणा बण के मोहण माधव माध, मधुर धुन देणी शनवाईआ। हुक्म संदेश देणा बोध अगाध, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। तुसां निरगुण धार निरगुण लैणा अराध, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। नेड़ रहे ना विवाद, विख रूप ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप जणाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव बणे मेरे सतिसंगी, संगीउ दयां जणाईआ। सृष्टी खेल होणी बहुरंगी, रंगत समझ कोए ना पाईआ। इक खबर सुणावां चंगी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। साचे नाम दी लावां पाबन्दी, आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी नाल करावां संधी, साचा हुक्म सुणाईआ। शरअ विच शरअ जाणी वंडी, हिस्से गंढु वखाईआ। जुग चौकड़ी जाणी लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दी आउणी कन्ढी, घाटां फोल फुलाईआ। किते पवण नहीं वगणी ठण्डी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। चारों कुण्ट कूड़ दी चमके चण्डी, चण्डालका रूप वटाईआ। सृष्टी दृष्टी होणी पखण्डी, बहुरूपां विच कुरलाईआ। दरोही फिरनी विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड देण सुणाईआ। सच मार्ग दी किसे हथ्थ नहीं आउणी डण्डी, डण्डावत सारे जाण भुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होणी तंगी, सत्त दीप रोवण मारन धाहीआ। प्रभू दी दात मिले किसे ना मंगी, खाली झोली ना कोए भराईआ। अमृत रस रहिणी नहीं धार गंगी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती सार कोए ना पाईआ। विद्या रहिणी नहीं किसे कोल पंडी, पंडत पन्ध ना कोए मुकाईआ। प्रीती टुट्टी जाए ना गंढी, सुरत शब्द ना कोए जणाईआ। भार चुक्के कोए ना कंधी, बोझल दिसे कूड़ लोकाईआ। माण रहे ना प्रकृती पंझी, पंचम तत ना कोए चतुराईआ। मानव ज़ाती होई रंजी, रंजश विच ख़लक खुदाईआ। उस वेले धरनी रोवे नेत्र हंझी, हंझूआं हार बणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार पहर के बाणा जंगी, चारों कुण्ट लए अंगड़ाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव जेहड़ा उस वेले भगतां नाल भगत बणेगा संगी, सगला साथी आत्म परमात्म लए परनाईआ । उस दा लेखा वेखणहारा जिस दी हाथ ना आवे वञ्झी, वञ्झ मुहाणा जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। सतिसंग कहे मेरी प्रभ चरण कवल अरदास, बेनन्ती इक जणाईआ। प्रभू रखणा आपणे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। बेशक तेरा लेखा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां सोभा पाईआ। मण्डल मण्डप तेरी रास, रवि शशि सूर्या चन्न तेरी रुशनाईआ । जन भगत सुहेले बणाओ आपणे दास, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ। लेखे लाओ पवण स्वास, साह साह तेरे चरण टिकाईआ। शहादत देवे शंकर उत्ते कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्मलोक विच करे शनवाईआ। विष्नूं विश्व दी धार आवे पास, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिसंग विच जन भगत सुहेला

होए ना कोए उदास, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। काया मन्दिर अन्दर करना प्रकाश, जोती जाते डगमगाईआ। सब दी पूरी करनी आस, तृष्ना तृखा जगत कूड़ मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे उत्ते विश्वाश, विश्व दा मालक विशा आपणा देणा समझाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ लाट साहिब दे गृह पिण्ड भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सो पुरख निरञ्जण धार सति, सति सति विच्चों प्रगटाईआ। हरि पुरख निरञ्जण धार सति, बिन रूप रंग रेख सोभा पाईआ। एकँकार धार सति, जिस दी बणत जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। आदि निरञ्जण धार सति, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते धार सति, सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। श्री भगवान धार सति, सति सति सति आप हो जाईआ। पारब्रह्म धार सति, परम पुरख वेख वखाईआ। सचखण्ड धार सति, बिन छप्पर छन्न मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सो पुरख निरञ्जण साचा संग, हरि संगी इक अख्वाईआ। हरि पुरख निरञ्जण धुर दा रंग, रंगत जगत ना कोए वड्याईआ। एकँकारा सच दुआरा वेखे आपणा आपे लँघ, दूजी मंज़ल ना कोए जणाईआ। आदि निरञ्जण सेज सुहाए पलँघ, बिन पावा चूल सोभा पाईआ। श्री भगवान नौजुआन वजाए मृदंग, बिन ताल तलवाड़ा आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। अबिनाशी करता खेल करे अगम्म, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। पारब्रह्म हुक्म सुणाए बिन रसना जिह्वा दम, स्वास स्वासा ना कोए सचखण्ड दुहाईआ। निरगुण धार जाणे आपणा कर्म, कर्म कांड ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिसंग कहे मैं बिना फिरना स्वास दमिआ, दामनगीर इक अख्वाईआ। मैनूं जनणी किसे नहीं जम्मया, तन वजूद ना वेस वटाईआ। मैनूं माण दिता नहीं किसे ब्रह्मया, सृष्टी संग ना कोए रखाईआ। मेरा लेखा नहीं काया माटी चम्मया, चम्म दृष्टी नज़र कोए ना आईआ। मैनूं हरख सोग नहीं ग़मिआ, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। मेरा हद्द नहीं कोई बन्नया, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा अक्खर मुक्ता नहीं कोई कन्नया, कायनात ना वेख वखाईआ। मेरा समझे कोई ना समिआ, जुग चौकड़ी समाप्त हुन्दी वेखी लोकाईआ। मेरा लेखा निरगुण सरगुण धार चौंदा सौ तीह अंक दा पंनयां, अक्खर अक्खरां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिसंग कहे मेरा मालक इक स्वामी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र अगम्मी बाणी, बाण अणयाला तीर ?चलाईआ। जिस दा लेखा दो जहानी, ज़िमीं असमानां हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बैठी वेस वटाईआ। जिस दी मंज़ल हक नुरानी, नूर नुराना सोभा पाईआ। जो वसे सचखण्ड मकानी, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस ने लोकमात मेरी बणाई निशानी, निशाना दीन दुनी समझाईआ। मेरा लेखा लिख सके ना कोए कानी, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। मेरे उत्ते मेहरवान कीती मेहरवानी, महबूब दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। सतिसंग कहे मेरा खेल न्यारा, निराकार दयां दृढ़ाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल पुरख नारा, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। मैं खेल खेलया नाल तेई अवतारां, अवतरी हो के आपणा संग बणाईआ। धर्म धार दीआं तकीआं बहारां, खुशी खुशीआं विच्चों रखाईआ। मेरे सिफ्त दीआं बणीआं वारां, वारस हो के वेखे धुर दा माहीआ। मैं लहिणा देणा दस्सां सम्मत शहिनशाही ग्यारां, इक इक नाल मिलाईआ। जिस स्वामी अन्तर आत्म हिलाउणीआं तारां, सुत्तयां भगतां आप जगाईआ। बिना हुलारयां दए हुलारा, ज़िमीं असमानां बाहर हिलाईआ। साचा संगी होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सतिसंग कहे जिस मैनूं प्रेम नाल कीता, करनी दा करता दए वड्याईआ। उह हरिजन होए पतित पुनीता, पतित पावन वेख वखाईआ। मेरा इशारा वशिष्ट नाल कीता राम नाल सीता, सीता राम गया दृढ़ाईआ। भेव खुल्हाया काहन अर्जन विच गीता, अठारां ध्याए बोलण चाँईं चाँईंआ। पैग़म्बरां किहा मेरा खेल अवल्ला चर्चा बाहर मसीता, मसला इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। सतिसंग कहे मेरा लेखा नाल रसूला, रसम पिछली दयां दृढ़ाईआ। मेरा हुक्म इक माकूला, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतारां किहा चरण धूला, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। उस नूं पैग़म्बरां कदम बोसी कहि कबूला, किबले अज़ अज़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । सतिसंग कहे मेरा मालक नूर अलाह, आलमीन इक अख्वाईआ। जेहड़ा बिन वञ्झ मुहाणयों होए मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जिस पैग़म्बरां दिती सलाह, मूसा ईसा मुहम्मद कलम्यां नाल पढ़ाईआ। अबादतख़ाने मेरे बणने गवाह, शहादत जगत वाली भुगताईआ। जमात विच बहि के खुदा अगे करन दुआ, दोए दस्त दस्त उठाईआ।

मैं सब दा रहनुमा, रैहबर भेव दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। सतिसंग कहे मैनूं मूसा दिती तरजीह, नूरे चश्म चश्म रुशनाईआ। जिस दा मालक इक तलवज़ी, मोज़ोले जम्म नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म दाइरा अगम्म वसीह, वसीयत विच हथ्थ किसे ना आईआ। उस ने दिती सच तरजीह, तरीके नाल सुणाईआ। जिस ने मालक लभणा रब्बी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह मविस्ती मदीउल दुआ दस्ते दुआ गोशे ज़मा जमूवल ज़मीअल ज़मने ज़र्रे ज़र्रे तके अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साथ आप बणाईआ। सतिसंग कहे मैनूं ईसा कीता परवान, मन्ज़ूरी हज़ूरी विच्चों आईआ। जिस इक उत्ते इक लाया ईमान, इक इक नाल मिलाईआ। कलमा गांदे बिना ज़बान, सोहला सोहल्यां विच्चों समझाईआ। जिस मिलणा रहीम रहमान, नूर नुराना वेखणा चाँईं चाँईंआ। उह मेरा प्यार करे परवान, संगी बणके साचा संग बणाईआ। जिस विच दु:ख मिले महान, सुख नज़र कोए ना आईआ। यूनाह धरती उत्ते लाया निशान, उंगलां दस दस सुहाईआ। की खेल करे निगाहबान, बिन नैणां नैण उठाईआ। ईसा तक के उत्ते असमान, गॉड गुड कहि के सीस निवाईआ। मेरा बाप वड्डा पहलवान, सूरबीर अख्वाईआ। जिस ने मेरी बीसवीं सदी करनी कल्याण, बीस बीसा नूर अलाहीआ। सब दा रखे आप ध्यान, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। इक्वे हो के उस दा गाईए गाण, तूं ही पिता तूं ही माईआ। सतिसंग कहे हज़रत ईसा बणाया विधान, शरअ शरीअत संग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिसंग कहे मेरा लेखा नाल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा मालक ख़ालक दस्तगीर, दामनगीर नूर अलाहीआ। जिस शरअ दे पाए ज़ंजीर, कुण्डी सके ना कोए तुड़ाईआ। उस संदेशा दिता अखीर, अक्खर अलिफ़ ये नाल मिलाईआ। नाम कलमे दी दस्सी तदबीर, तरीका दिता समझाईआ। मेरा मालक पीरां दा पीर, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जो लहिणा देणा जाणे शाह हकीर, फ़कीर दरवेशां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिसंग कहे मेरी धार न्यारी, निराकार दिती वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा नाल मुहम्मद चार यारी, अबू बकर शहादत दए भुगताईआ। ऐली कूक कूक गया पुकारी, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। मुहम्मद कीता कौल इकरारी, वायदा वाअदयां विच जणाईआ। चार यार करयो ना कोए तकरारी, झगड़ा दुनी ना कोए रखाईआ। सजदा करना परवरदिगारी, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं शहिनशाह इक सिक्दारी, पातशाह नूर अलाहीआ। तेरी मिल के करीए दारी, दीन दुनी दे मालक देणी वड्याईआ। सतिसंग कहे मैनूं याद उह दिहारी, दिवस

रैण वेख वखाईआ। उन्नी जेठ अगम्मी वारी, वारता पिछली दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप खुल्हाईआ। सतिसंग कहे मैनूं सब ने कीता मन्ज़ूर, मुतला सब नूं दयां कराईआ। मेरा लहिणा देणा सूफ़ीआं भगतां नाल ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। साचा सतिसंगी नूरे ज़वा बिन रसना किहा मनसूर, खुद खुदा इक अख्वाईआ। जिस दा पन्ध नहीं कोई दूर, दूर नेड़ा वंड ना कोए वंडाईआ। जिस ने मूसा मुसलसल इशारा कीता तूर, तुरीआ तों बाहर दयां जणाईआ। जिस ईसा सलीव उत्ते कीता मन्ज़ूर, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। सतिसंग कहे उह मालक स्वामी सब दी ज़रूरत पूरी करे ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम क्रिया मेटे कूड़, कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। जन भगतां बख्श के चरण धूड़, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जिस दा आदि जुगादि सच्चा दस्तूर, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिसंग कहे जन भगतो मेरी साची रंगत, रंगणहार इक अख्वाईआ। जिस दे दर दे सारे बणो मंगत, भिक्ख्या नाम वाली वरताईआ। चार वरन बणाए इक्को संगत, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। धर्म दी धार बणे पंडत, बोध अगाधा दए समझाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाईआ। सच दुआर बणाए आपणी संगत, सति सति विच मिलाईआ। अन्तिम लेखा मुके विच जीव जंत, लख चुरासी रहे ना राईआ। आत्म परमात्म मेला मेले धुर दा कन्त, कन्तूहल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल आदि अन्त, जुगा जुगन्त धुर दा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ तरसेम सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

साचा संगी पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। जो धर्म दी धार पावे रहिरासी, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने गुरु गुरदेव बणाए दास दासी, सेवक सेवा विच रखाईआ। भेव खुल्हा के पृथ्मी आकाशी, पर्दा दो जहान चुकाईआ। सच दुआर दा बण के वासी, संदेशा दिता चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वखाईआ। साचा सतिसंगी सतिगुर पुरख देवी देव, देव आत्मा दए वड्याईआ। जिस दा खेल अलख अभेव, अगोचर कहिण किछ ना पाईआ। जो जन भगतां देवे अन्तर आत्म साचा मेव, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। नाम जपावे रसना जिह्व, पवण स्वासां नाल वड्याईआ। धाम वखाए इक निहकेव, निहचल आपणा

५५२
२४

दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सतिसंग वेख्या गोबिन्द धार, दस दस आपणा भेव चुकाईआ। नानक कीता नाल प्यार, प्रेम प्रीती विच वड्याईआ। नाम सति बणा के यार, मित्र प्यारा मेल मिलाईआ। ढोला गाया अगम्म अपार, सोहँ साचा सहिज सुखदाईआ। नाल सुरंगी वजाई सितार, तूं ही तूं ही राग जणाईआ। सतिसंग वखाया विच संसार, जीवां जंतां साधां सन्तां कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिसंग कहे मेरा गुरुआं दिता संदेश, दीन दुनी जणाईआ। मेरा सब तों वखरा उपदेश, उपनिशदां वेखण नैण उठाईआ। चुकन्ना होया गणपति गणेश, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगड़ाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल दस दस्मेश, गोबिन्द ढोला गाया धुर दा माहीआ। चार वरनां इक जणा के भेस, मार्ग इक्को इक लगाईआ। सतिसंग दस्सया मुच्छ दाढ़ी रखणा केस, केसगढ़ दिती वड्याईआ। बुद्धी रहे ना कोए मलेछ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। पुरख अकाल जणाया नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस सतिसंग विच सारे होए पेश, पेशीनगोईआं आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा विशा इक विशेष, विश्व दा आपणा भेव चुकाईआ। कलयुग होणा अन्त कलेश, कलधारी होए लोकाईआ। फेर भाग लगणा सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जोती जाता होए प्रवेश, पराा पसन्ती मद्धम बैखरी दा पड़दा आप चुकाईआ। निरगुण धार लिखे लेख, लेख लेखणी देवे माण वड्याईआ । दीन दुनी दी बदले रेख, ऋषीआं मुनीआं पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। सतिसंग कहे मैनूं गोबिन्द कीता ललकार, बिना शरअ तों शरअ जणाईआ। खण्डे खड़ग दी दस्स चमकार, जगत अन्धेरयां पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल अग्गे किहा पुकार, कूक कूक सुणाईआ। तूं सतिसंगी मेरा यार, यारड़े तेरी सेज लवां हंढाईआ। मेरा लेखा वेख विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। मैं संदेशा देवां गुरसिखो आपणी वार, गुरमुखां दयां जणाईआ। सतिसंगीउ रहिणा सदा तैयार, सति सति नाल वड्याईआ। अमृत दे के ठण्डा ठार, रस अंमिओं दिता चुआईआ। पंचम मीता बण कीता सच प्यार, प्रीत प्रीती विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दुआर इक समझाईआ। सतिसंग कहे मेरा गोबिन्द कीता इक्ठ, सोहणी दिती वड्याईआ। धीरज धर्म दा बख्श्या हठ, सन्तोख गुरमुखां झोली पाईआ। प्रेम प्रीती खोल्ह्या हट्ट, वणजारा बणया धुर दा माहीआ। जिस इक्ठे कीते छींबे झीवर नाई जट्ट, ग़रीबां अंग लगाईआ। दुखियां दर्द मेट के फट्ट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। जगत शरअ दी डोरी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। दूई दुवैती मेट के वट,

वटणा मलया चाँईं चाँईंआ। सतिसंग कहे गुरसिखां साचा लाहा ल्या खट, खटका जन्म रिहा ना राईआ। जिन्नां इक्को नाम ल्या रट, वाहवा वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। सतिसंग कहे मैं शुकराने विच जोड़े हथ्थ, खुशीआं विच खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, महिमा कथ कथ जणाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ फौजा सिँघ दे घर रात नूं पिण्ड भलाई पुर खेतां विच ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरा सीना होया ठंडा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी अग्न दिती बुझाईआ। मैं नाम निधान श्री भगवान तेरा इक्को वंडा, नव सत्त भज्जां वाहो दाहीआ। झट बिना कदमां तों चल के आ गया नारद पंडा, शब्दी शब्द रूप दरसाईआ। धरनीए निगाह मार लै विच वरभण्डा, दो जहान अक्ख खुल्हाईआ। नाल तक लै कलयुग अख़ीरी कन्ढा, कन्ढी घाट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे धरनी आपणी सिध्धी कर लै नीत, नीतीवान दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वाली तक लै प्रीत, प्रीतम हो के की समझाईआ। नाले ज़ोर दी मार के चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। फेर हस के किहा मेरे साहिब विच हक तौफ़ीक, जो तोहफ़े देवे थांउँ थाँईंआ। जगत निशान वेख लै जिथ्थे बाल्मीक मारी लीक, लाईन लाईन विच्चों समझाईआ। जिस दी करदी रहीउँ उडीक, आपणा ध्यान लगाईआ। उह मित्र प्यारा धुर दा मीत, यारड़ा हक समाईआ। जो वसणहारा चीत, ठगौरी चित दए मिटाईआ। जिस दा ढोला इक्को गीत, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। करनहारा पतित पुनीत, परम पुरख इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर लेख आप समझाईआ। धरनी कहे नारदा मेरी अन्तर आई विचार, विचरके दयां सुणाईआ। मेरा त्रेते जुग दा वेख विहार, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैनूं बाल्मीक दिता अधार, लहिणा लहिणयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। बिन हथ्थां तों मार लकार, चरण चरण नाल बदलाईआ। नाले कूक के कीती पुकार, दो जहान कीती शनवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मेरा जगत पुराणा लेखा, लिख्ती सबूत दयां जणाईआ। जिस विच रहे ना कोए भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। बाल्मीक दे के गया संदेशा, सँध्या सरघी बाहर सुणाईआ। जो मालक रहे हमेशा, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। उह कलयुग धारे आपणा भेसा, भेखाधारी बेपरवाहीआ। सम्बल सुहाए आपणा देसा,

साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे जिस वेले बाल्मीक लीक मारी मेरी सोई सुरती जागी, आलस निंद्रा रही ना राईआ। मैं बिन कदमां तों भागी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैं तकां कन्त सुहागी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जुग बदलणा जिस दी वादी, वायदे सब दे पूर कराईआ। उदों एस थाँ नौ घर ब्राह्मणां दी हुन्दी सी आबादी, प्रोहत आपणी खेल खिलाईआ। जिन्हां दी सांझी इक पड़दादी, नवीता नाम बाल्मीक गया समझाईआ। जिस दा पोतरा होया इक वैरागी, मनसू कहि के सारे गाईआ। उह गऊआं बणया वागी, दिवस रैण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। बैरागी बाई साल दा नौजवान, मनसा जगत ना कोए रखाईआ। बाल्मीक तक्कया नाल ध्यान, नैण नैणां विच रखाईआ। झट उस नूं आया ज्ञान, सुरती सुरत विच्चों बदलाईआ। निगाह मार ज़िमीं असमान, जगत जहान वेख वखाईआ। शब्द सुणया बिना कान, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। एह रिषी बड़े महान, महिमा कथ कथ वखाईआ। झट वैरागी होया सवाधान, आपणी लई अंगड़ाईआ। दुद्ध दोह ल्यावां इस नूं देवां दान, खुशीआं नाल प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बैरागी दुद्ध ल्याया दोह, बाल्मीक अगे टिकाईआ। रसना बुल्ल्हां नाल लैणा छोह, छोहर बांका रिहा दृढ़ाईआ। अगों बाल्मीक प्या रो, बिन नैणां नीर वहाईआ। मित्रा तेरा प्यार मेरी मुहब्बत रिहा मोह, दूसर नज़र कोए ना आईआ। नाल इशारा अन्तष्करन कीती लो, लोयण तीजा दिता खुल्हाईआ। बिना राम तों नज़र आवे ना को, नूर नुराना इक दरसाईआ। नाम शब्द सुणाया सो, सोहँ शब्द दिती वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे बाल्मीक दिता इक प्यार, खुशीआं नाल जणाईआ। तेरा दुद्ध दा मेरा उधार, लेखा तेरे हथ्थ रखाईआ। निगाह मार लै विच संसार, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। बिना प्रभू तों मित्र ना कोए मुरार, संगी संग ना कोए निभाईआ । उह तक त्रेते होणा राम अवतार, द्वापर काहन काहन समझाईआ। कलयुग वेख लै धूंआँधार, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। अन्त कलयुग होणा अवतार, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। जिस नूं समझे ना कोए विच्चों संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। उह बणे भगतां सहार, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। झट बैरागी बाल्मीक चरणां उत्ते कीती निमस्कार, निव निव सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बाल्मीक किहा वैरागीआ कलयुग अन्त तकणीआं मौजां, मजलस भगतां नाल रखाईआ। तेरा नाम होवे सिँघ फ़ौजा, दूसर

वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी भगती दी धार होवे उदा, मंज़ल हक हक समझाईआ। तेरा नाम होणा सोहँ सो दा, सुरती शब्द विच समाईआ। जोड़ा बणना इक दो दा, दोहरी कल वरताईआ। उस वेले जगत लेखा होणा खोह खोह दा, प्रेम मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। बैरागी किहा मैनूं मिली वस्त अथाह, बाल्मीक दिती वरताईआ। रिषी जी मेरा बणना अन्त गवाह, शहादत सच वाली भुगताईआ। जिस वेले वक्त सुहञ्जणा गया आ, आलम इलम सुणन कोए ना पाईआ। लेखा देखे बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। मैं रसना जिह्वा बत्ती दन्दां नाल ल्या गा, गहर गम्भीर वड वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा वक्त आप सुहाईआ। बाल्मीक हस जणाउँदा ए। धुर फ़रमान इक दृढ़ाउँदा ए। भेव अभेदा आप खुल्हाउँदा ए। चारे वेदां बाहर पढ़ाउँदा ए। अछल अछेदा वेख वखाउँदा ए। जोती जाता वेस वटाउँदा ए। सम्बल देस सोभा पाउँदा ए। धरनी धरत धवल धौल चरण टिकाउँदा ए। जुग विछड़यां मेल मिलाउँदा ए। जन्म जन्म दा लहिणा झोली पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाउँदा ए। सच करनी कार कमावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। निरगुण हो के वेख वखावेगा। सरगुण आपणा रंग चढ़ावेगा। धरनी धरत वायदा कौल इकरार कीता पूर करावेगा। जन भगतां अन्दर जावे मवल, आपणा खेल खिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरतावेगा। साचा हुक्म इक वरताएगा। परम पुरख खेल खिलाएगा। निरगुण धार दरस दिखाएगा। जन्म जन्म दी हरस मिटाएगा। अमृत मेघ अगम्म बरसाएगा। घर स्वामी देवे दरस, लोचन नैण खुल्हाएगा । जो मालक हो के वसे उत्ते अर्श, फर्श आपणा पड़दा लाहेगा। सम्मत शहिनशाही ग्यारां होणा बरस, बरसी आपणे नाल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाएगा। धरनी कहे मेरे उदै होए भाग, भगवन दिती वड्याईआ। मेरे गृह जगिआ चराग़, जोती जाता डगमगाईआ। मेरी तृष्ना मिटी आग, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। मेरे अन्तष्करन आया वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। दुरमति मैल रिहा ना दाग़, पापां होई सफ़ाईआ। मैं हँस बण गई काग, माणक मोती चोग चुगाईआ। मैं सुत्ती गई जाग, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं बाल्मीक मारी आवाज़, सहिज सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा होया जग, धवल हो के दयां सुणाईआ। बाल्मीक ने मेरे उत्ते रखे पब्ब, पाल सिँघ जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। वैरागी फ़ौजा सिँघ आया भज्ज, भजन बन्दगी प्रभ दी विच समाईआ। मैं दर्शन करां

उपर शाहरग, नूर नुराना वेखां चाँईं चाँईंआ। जिस नूं कहिंदे सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस मेरा थान पूरब ल्या लभ्भ, खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। पता नहीं आया केहड़े नाल सबब, समझ चले ना कोए चतुराईआ। मेरी धार चरणां हेठां लई दब्ब, कवल कवल उठाईआ। मैं तक के नूर अलाही रब्ब, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। धरनी कहे बाल्मीक नौ उंगल लीक मारी लम्मी, लमह लमह ध्यान लगाईआ। भेव खुल्हा के काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी बाहर दृढ़ाईआ। पड़दा लाह के पवण स्वासी दमी, दामनगीर इक जणाईआ। भेव चुकाया बाहर खुशी ग़मी, ग़मखार दयां वखाईआ। नाल संदेशा दिता जिस वेले खेल होणी नवीं, नवखण्ड ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द होणा कवी, कविता कायनात बाहर सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला प्रगट होणा अवतार चवी, चौबीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। धरनीए उस कोलों लहिणा लवीं, निव निव लगणा पाईआ। उसे दा ढोला गवीं, गा गा शुकर मनाईआ। उस दे चरणां हेठां सवीं, सेज सुहञ्जणी इक बणाईआ। तेरा लेखा लिखणा रवीदास रवी, बलि दी गोली नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहिणा देणा सब दा दवीं, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ।

५५७ २४

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ ऊधम सिँघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

साचा सतिसंग सतिगुर चरण, चार जुग दे सतिसंगी देण गवाहीआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं ज़ात पात वरन बरन, मानस मानव वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को गीत आत्म परमात्म ढोला पढ़न, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। सच प्यार दी मंज़ल चढ़न, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। जोती जाते लड़ फड़न, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। सच दुआर धुर दे वड़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर स्वामी तरनी तरन, तारनहार इक अख्वाईआ । जो आदि जुगादी करनी करन, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जिस दी सब ने मंगी शरन, टेक इक्को इक जणाईआ। सो भगत सुहेला सुहाए आपणा दरन, दर दुआरा इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। सतिसंग कहे मैं सोभा लोकमात, सतिगुर शब्द दए वड्याईआ। मेरी झोली पावे अगम्मी दात, वस्त अमुल आप वरताईआ।

मेरा वक्त नहीं कोई दिवस रात, अठ्ठे पहर खुशीआं दे ढोले गाईआ। मेरी वखरी नहीं कोई जमात, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। मेरी सब तों वखरी ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए दरसाईआ। मेरा झगड़ा नहीं कोई नाल काग़ज़ात, दुवैत विच कदे ना आईआ। सदा सदा आबाद, जुग जुग प्रभ दी ओट तकाईआ। मेरा मालक मोहण माधव माध, जो देवणहार सरनाईआ। जिस मेरी रचना रची आदि, अन्त वेखे धुरदरगाहीआ। मेरा हुक्म नहीं कोई ततां , तन वजूद ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिसंग कहे मैं सतिगुर शब्द दी धार संयोगी, मेला सच नाल मिलाईआ। मैं अमृत रस प्यालदा तेगी, दूसर रस ना कोए जणाईआ। मैं कूड़ विकार दा वियोगी, ममता मोह ना कोए रखाईआ। मैं बिन अक्खर धार दा बोधी, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। मेरी आशा तृष्ना कदे बणी ना लोभी, लालच तृष्ना विच कदे ना आईआ। मैं सेवक दुरमति मैल दा धोबी, पापां करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद मेरा होया सहाईआ। सतिसंग कहे मैं इक्को रख्या इष्ट, देव आत्मा दीन दुनी जणाईआ। मेरा प्यार सबाई सृष्ट, श्रेष्ट दयां दृढ़ाईआ। मेरा रूप नहीं टांक जिसत, हिस्सयां विच कदे ना आईआ। मेरा लेखा नहीं स्वर्ग बहिश्त, दोज़ख़ गंढु ना कोए बंधाईआ। मेरे अन्तर इक्को सच प्यार दा इश्क, आशक माशूक दोवां दयां दृढ़ाईआ। मेरी मंज़ल हकीकी कदे ना जाणा तिलक, तिलक ललाटी सब नूं दयां वखाईआ। मेरी बिरहों विछोड़े विच निकले किलक, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। सतिसंग कहे जन भगतो मेरी आदि जुगादि सिख्या, शरअ विच बदल कदे ना जाईआ। मेरा लेखा बिन कलम शाही तों लिख्या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैनूं आदि पुरख पाई भिक्ख्या, भिच्छया मेरी झोली पाईआ। निरगुण हो के कीता हित्तया, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेरा ... ... बण के मित्तया, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। मेरा ठांडा कीता चित्तया, ठगौरी चित नज़र कोए ना आईआ। मेरा आपणा आप मिटया, हँकार जगत ना कोए रखाईआ। मेरा लहिणा देणा होया चिट्टया, कालख रहिण कोए ना पाईआ। मेरा संग नहीं कोए पत्थर इट्टया, पाहनां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं धरनी उत्ते जन भगतां अन्दर टिकया, गुरमुखां अन्दर डेरा लाईआ। सच प्यार दी कीमत विकया, दूसर कीमत समझ किसे ना आईआ। मालक इक्को पित्तया, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो सच सुहञ्जणी सेजा अन्दर लिटया, सिँघासण आसण सोभा पाईआ। जो मेरे विच नाम फल रस देवे मिट्ठया, अनडिठड़ा आप चखाईआ। जिस जुग जुग आपणा खेल आप नजट्टया, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा जाणे नित नवित्या, निरगुण हो के निरवैर आपणा रंग रंगाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सुखदेव दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभ किरपा कीती ?आप करतार,? मेहरवान सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैनूं दिती वस्त अपार, अपरम्पर स्वामी झोली आप टिकाईआ। जुग चौकड़ी भर भण्डार, तृष्ना तृखा नाल वड्याईआ। माया ममता मोह दे विकार, हँकार नाल मेरा संग बणाईआ। सति धर्म मेरे प्यार विच्चों कढ के बाहर, वखरी गंढु दिती कराईआ। मैनूं बच्चा बणा के होणहार, लोकमात भेजया चाँईं चाँईंआ। तूं माण रहिण देणा नहीं किसे पैग़म्बर गुर अवतार, ग्रन्थ शास्त्रां चले ना कोए चतुराईआ। दीन दुनी रखणी विच विभचार, विख कूड़ी नाल रलाईआ । चारों कुण्ट कराउणी हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। तूं बणना मेरा बरखुरदार, कलयुग तूं मेरी सेव कमाईआ। कलयुग कहे मैं नौ खण्ड पृथ्मी फिरां वारो वार, दहि दिशा भज्जा वाहो दाहीआ। धर्म दा रहिण देवां ना कोए जैकार, धरनी धरत धवल कुरलाईआ। मानव ज़ाती बणना ठग चोर यार, कुटलता सब दे अन्दर भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान हो के मेरी पाउणी सार, महासाथीं आपणी दया कमाईआ।

कलयुग कहे मैनूं दिती प्रभ ने अगम्मी दात, दयावान दया कमाईआ। नाल बिन अक्खरां लिख के दिती पात, पत्रका समझ कोए ना आईआ। फिर प्यार नाल ल्या झाक, बिन नैणां नैण उठाईआ। कलयुगा तूं जाणा लोकमात, मातृ भूमी आपणी सेज सुहाईआ। नव सत्त करनी अगम्मी रात, सच चन्द ना कोए चमकाईआ । मेरे नाम कलमे वंडे होणे उत्ते काग़ज़ात, अक्खर अक्खरां नाल बदलाईआ। तूं धर्म धार मेरी पाउणी वफ़ात, कूड़ कुकर्म देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे मैनूं प्रभ ने दिती थापी, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। तूं मेरा बणना साथी, ढोला गाउणा चाँईं चाँईंआ। तेरा होणा वड प्रतापी, जगत जहान वजे वधाईआ। तेरा खेल तकां बहुभांती, भेव अभेद रहे ना राईआ। तूं दीन दुनी करनी पापी, पतित नज़र कोए ना आईआ। कलयुग तेरी छेती मुकणी हयाती, आयू आपणे हथ्थ रखाईआ। भगवान हो के पुछां वाती, वातावरन तक खलक खुदाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। कलयुग कहे मैनूं साहिब सतिगुर घलया, लोकमात दिती वड्याईआ। मैनूं शब्द गुरदेव ने किहा बल्लया, बच्चू कहि के गोद उठाईआ । मैं उसे दी छत्र छाया हेठ पलया, जोबनवन्ता हो के दयां सुणाईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल जगत अस्थान मल्लया, सिँघासण कूड़ वाला विछाईआ। पंच विकार नाल रलाया दलया, सगला संग जणाईआ। मैं सृष्ट सबाई वल छल करके छलया, अछल छलधारी मेरा होया आप सहाईआ। मैं हर हिरदे अन्दर कूड़ विकार हो के रलया, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। वेखो मेरा समां सुहञ्जणा जगत विकारे नाल ठल्लया, प्रभू ने फलीभूत दिता कराईआ। मैं वेखां उपर थलया, दो जहानां अक्ख उठाईआ। मेरे साहिब दे हुक्म दा होण वाला हल्लया, हालत विगड़े जगत खुदाईआ। लख चुरासी जीव जंत मेरी अग्नी विच जाणा तलया, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। प्रभ दा भाणा किसे कोलों नहीं जाणा ठल्लया, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मैं दीन दुनी दा अन्तर आपणे तीर निशाने नाल सल्लया, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। मैं दो जहान सृष्टी विच चारों कुण्ट फिरां इकल्लया, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी करनी ने कलयुग जीवां विच पाउणी तरथलया, थिर घर वासी आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा खेल रखाया सुखलया, सुखला पख मेरा संग बणाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू बिन अक्खरां हुक्म दिता लिख, लेखणी जगत समझ कुछ ना पाईआ। मेरी झोली पाई अगम्मी भिख, भिच्छया दिती वरताईआ। कलयुग अन्तिम कोई रहिण देणा नहीं मुन रिख, पंडत विद्या रहे ना कोए चतुराईआ। धर्म दी धार दिसे कोई ना सिक्ख, मुरीद मुर्शद जाण भुलाईआ। नाल समां वखाया अगला भविख, पेशीनगोई नाल मिलाईआ। मैनूं बिन नेत्रां गया दिस, बिन अक्खरां कीती पढ़ाईआ। नाल संदेशा दिता तेरे अन्तर रहिणा किस किस, किस नूं मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भरम आप चुकाईआ। कलयुग कहे मैनूं प्रभू दिता अगम्म भरोसा, यकीन दिता बंधाईआ। चारो कुण्ट वखाया गोशा, गोशा कोना फोल फुलाईआ। कूड़ खुमारी नाल करना मदहोशा, मधुर धुन सुणन कोए ना आईआ। सब दा अन्तर करना कोसा, अग्नी कलयुग कूड़ देवां तपाईआ। दीन दुनी इक दूजे नाल करे धोखा, धुखदी रहे लोकाईआ। मेरा पन्ध रहे ना सौखा, मार्ग चलण कोए ना पाईआ। तेरा

फेर जुग मुकणा चौथा, अन्त लोकमात रहिण ना पाईआ। पूरब लहिणा देणा रहिण देणा नहीं किसे पुस्तक पोथा, अक्खरां संग ना कोए जणाईआ। कलयुग कहे मैं झट आपणा भरया हौका, हाए उफ़ दुहाईआ। प्रभू जगत जहान तेरी वड्डी नौका, तुध बिन मलाह नज़र कोए ना आईआ। बेशक मैं सृष्टी रूप बणाउणा काउँ का, कलकाती खेल खिलाईआ। तूं सहारा बणना मेरी बांहो का, फड़ बांहो लैणा तराईआ। तेरा हुक्म संदेशा वाहो वाहो का, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे अन्तर तेरा प्रेम होवे चाउ का, चाउ घनेरा देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं प्रभ दी सुणी अगम्मी ख़बर, बेख़बर दिती सुणाईआ। मेरा धीरज रिहा ना सबर, सति सच ना कोए जणाईआ । मेरे अन्दर पै गया ग़दर, मेरी मनसा करे लड़ाईआ। मेरी आशा बण गई होर सध्धर, सदके वारी घोल घुमाईआ। मैं किसे दा रहिण देणा नहीं कदर, कुदरत दा कादर मिलण कोए ना पाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी पाउणा दलिद्र, आलस वेखणा थांउँ थाँईंआ। मेरा कूड़ विकार दा दूणा छल छिद्र, हँकार आपणा संग बणाईआ। दीन दुनी दी करा उधर इधर, अदल करन कोए ना पाईआ। उह लहिणा पूरा करना जो संदेशा दिता काहन ने बिदर, बिध नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूरी करे सिधर, सध्धर सब दी वेख वखाईआ।

५६१ २४

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू मेरी आयू कर दे छोटी, छुटकारा दीन दुनी कराईआ। तूं मंज़ल चढ़के तक लै अगम्मी चोटी, मैं चोटा हो के खेल खिलाईआ। दीन दुनी दी वासना कीती खोटी, खरा रहिण कोए ना पाईआ। धर्म दी रहिण दिती नहीं तेड़ लंगोटी, पंच विकार नाल जगत हल्काईआ। पशूआं मानसां खवाई बोटी, बुट्टां काले लाल रंग रंगाईआ। सब दी नीती तेरे प्यार नालों गई धोती, स्वामी सच मेल ना कोए रखाईआ। काया मन्दिर तेरी नज़र ना आवे जोती, जोतां वाले बैठे मुख भुआईआ। सब दी सुरती वेख लै सोती, सोई सके ना कोए जगाईआ। माणक हीरा नज़र आए कोए ना मोती, गुरमुख रंग ना कोए रंगाईआ। तेरा नाम जपदे सारे बुल्लां होंटी, हिरदे सके ना कोए टिकाईआ। रूह कल्पणा भरी काया कोठी, कप्पड़ तन वजूद ना कोए धुआईआ । मानस तरसदे पेट कारन रोटी, भुक्खयां सके ना कोए रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। कलयुग कहे मैं बेनन्ती करां हो के

हज़ूरी, हज़रतां दे मालक वेख वखाईआ। मेरी लेखे ला मज़दूरी, जो दीन दुनी कमाईआ। मेरा मुआफ़ करीं कसूरी, कसम खा के मंग मंगाईआ। तूं सर्ब कला भरपूरी, पारब्रह्म अख्वाईआ। तेरी चरण लावां धूड़ी, धूड़ी ख़ाक रुमाईआ। तूं मालक मेरा नूरी, नर नरायण नूर अलाहीआ। मेरा पन्ध मुका दे दूरी, नेरन नेरा गेड़ा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी पाउणी सार, सतिगुर हो के वेख वखाईआ। निगाह मारनी विच संसार, बिन नैणां नैण उठाईआ। चारों कुण्ट कीता धुँदूकार, धरनी धरत तेरा रूप नज़र कोए ना आईआ। मुहब्बत रहिण नहीं दिता प्यार, प्रेम विच ना कोए समाईआ। घर घर भरया गढ़ हँकार, हउमे हंगता नाल वजी वधाईआ। मेरा डंका सुण लओ कूड़ कुड़यार, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। मैं तेरा चौथा सुत दुलार, निक्का बाला हो के मंग मंगाईआ। मेरा ख़ाली भर भण्डार, वस्त अगम्मी दे वरताईआ। मैं तेरी तेरे नालों कीती दुनी ग़द्दार, तेरा संग ना कोए रखाईआ। नव सत्त वेख विभचार, कुकर्म भरी लोकाईआ। मैं बण के सूरबीर बलकार, बल आपणा दिता वखाईआ। तूं मेहरवान हो के मेरे सीस देणा प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं निव निव कर निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। किरपा कर कलि कल्की अवतार, निहकलंका तेरी ओट तकाईआ। अमाम अमामा मेरे परवरदिगार, पतिपरमेश्वर होणा आप सहाईआ। मैं चाहुंदा मैं जावां तेरे सच सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। सतिजुग आवे आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। मेरा लहिणा पूरा कर कौल इकरार, वअदा वेखणा चाँईं चाँईंआ। मैं तेरा हो के शुकर गुज़ार, शुक्रिया कहि के सीस निवाईआ। बहुता करना ना पवे इंतज़ार, उडीक जगत ना कोए रखाईआ। तूं सब किछ करनेहार, करता पुरख नूर अलाहीआ। लेखा पूरा कर दे पैग़म्बर गुर अवतार, सतिगुर शब्द तेरी वड्याईआ। मैं तेरा बच्चा होणहार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा पूरब कर्ज़ा दे उतार, मकरूज़ लेखा अवर ना कोए रखाईआ।

५६२
२४

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सरदार सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे मैं आपणे जुग दा बड़ा सवाबी, वस्त सब नूं रिहा वरताईआ। मानव ज़ाती कीती कबाबी, मानस पशू पंछी रहे खाईआ। कल्पना कूड़ कीती शराबी, शरअ मज़ाक रही उडाईआ। इश्क रहिण दिता नहीं हकीकी मज़ाजी, प्रेम

विच ना कोए समाईआ। नूर चमके ना कोए आफ्ताबी, सूर्या सति ना कोए रुशनाईआ। मैं बणके सति दा हक जनाबी, हुक्म हाकमां दिता सुणाईआ। मेरा खेल वेखणा शताबी, अन्त शुरू इक्को रंग रंगाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब सब दे नाल माज़ी, लेखा दयां दृढ़ाईआ। मैं खेल खिलाउणा मुल्ला काज़ी, शरअ शरीअत वंड वंडाईआ। किसे दी कायम रहिण नहीं देणी अराज़ी, रिज़क राज़क रहीम रिहा समझाईआ। कलमा रहिण देणा नहीं कोई वाअज़ी, वाअज़कार ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। कलयुग कहे मैं बड़ा होया हुशियार, जगत जहान आपणी लई अंगड़ाईआ। धर्म दा बणके होणहार, सच नूं पाया चाँईं चाँईंआ। कूड़ कुड़यारा करके ज़ाहर, सृष्टी सिव्याँ विच टिकाईआ। मैं कल्पणा दा वड्डा माहर, कुकर्मा आपणा रंग रंगाईआ। झूठ दा बण के सार, सिख्या दिती दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। कलयुग कहे मैं वक्त दा बणया मालक, मेहरवान दिती वड्याईआ। सृष्टी कूड़ दा बणया ख़ालक, ख़लक खुदा नालों भुलाईआ। विषे प्यार दा बण के बालक, प्रेम मुहब्बत सब दे नाल रखाईआ। शरअ दा बण संचालक, रस्ते दीन दुनी दृढ़ाईआ। मेरे विच नहीं कोई आलस, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। मैं कुकर्म दा बण के सालस, सालसी हक हक कमाईआ। मानस रहिण दिता नहीं कोई ख़ालस, ख़ालस रंग ना कोए समाईआ। सब दे अन्दर भरी तामस, तृष्ना कूड़ नाल हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा पूरा कर मेरी बुद्धी ना रहे अणजानत, जानणहार होए सहाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे प्रभू ने दिती साची शक्ती, शक्तीशाली दिता बणाईआ। मैं खुशी नाल फिरां उत्ते धरती, धरनी वेखां चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरी खेल बणी घर दी, घराना आपणा ल्या सुहाईआ। धार वखावां नरायण नर दी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरे प्यार विच दुनी जगत वेखो लड़दी, शरअ शरअ नाल टकराईआ। मैं मुहब्बत रहिण दिती नहीं किसे धड़ दी, वजूदां संग ना कोए बणाईआ। बस्ती बणी हँकार गढ़ दी, हउमे नाल वड्याईआ। मेरी आशा खेल तके दिशा चढ़दी, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वखाईआ। कलयुग कहे मेरी परम पुरख नाल होई संधी, सतिगुर शब्द लेख बणाईआ। मैं खेल खिलाउणा

जगत धार पाबन्दी, हुक्म कूड़ नाल वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी करनी अन्धी, नेत्र लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन वासना बणाउणी गंदी, तृष्ना कूड़ नाल हल्काईआ। ममता मोह दा बणना जंगी, खण्डे खड़ग खड़ग उठाईआ। दुनी दो जहान धार जाणी वंडी, दोहरी आपणी कल वरताईआ। वरभण्डी पाउणी भंडी, भंड हो के नच्चां टप्पां थांउँ थाँईंआ। सति दी धार करनी रंडी, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। मेरी मंज़ल पुज गई अन्तिम कन्ढी, कन्ढा घाट वेख वखाईआ। मैं जगत जहान दा लेख बणाया पाखण्डी, रूप अनूप दिता प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कलयुग कहे मैं प्रभ दा सुत दुलारा इक, सूत्रधारी वंड ना कोए वंडाईआ। धरनी धरत धवल उत्ते गया टिक, टिकटिकी प्रभ दे नाल लगाईआ। जिस दा वासा मेरी छाती हिक, सीने अन्दर डेरा लाईआ। जो मेरे लेख रिहा लिख, लेखणी आपणा हुक्म सुणाईआ। जगत जहान दी पा के भिख, मेरी झोली रिहा भराईआ। नाले खोल्ह वखावे जगत जहान भविख, पैग़म्बर अवतार गुर नाल मिलाईआ। मैनूं बिना अक्ख तों सब कुछ रिहा दिस, दो जहान अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर दए सरनाईआ। कलयुग कहे मैं बण के प्रभ दा पुत्तर, पूत हो के सेव कमाईआ। निराकार दी धारों आया उतर, जन्म दिता किसे ना माईआ। मैं प्रगट होया द्वापर तों बाद वार शुक्कर, शुकर परोहित बावन धार गया दृढ़ाईआ। कौल इकरारों कदे ना जावां मुकर, मुकरा वक्त नाल मिलाईआ। मैं दीन दुनी नूं ख़ाली करना हथ्थों टुकड़, टुकड़ा हथ्थ किसे ना आईआ। मेरा दाइरा मुरीद जाणे कोई ना कुतर, निसफ़ो निसफ़ करां ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। कलयुग कहे मैं प्यारा प्रभू अंग दा, अंगीकार इक अख्वाईआ। मैं मंगां रिहा मंगदा, तृष्ना झोली अगे डाहीआ। मेरे स्वामी मेरा वक्त जांदा लँघदा, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा कर के सो खेल खिलावे नौ खण्ड पृथमी जंग दा, जुग जुग हुक्म वरताईआ। मेरा खेल अनोखा ढंग दा, बुद्धिवान समझ कोए ना पाईआ। मेरा कूड़ कुड़यारा शौह दरयाए बणे अगम्मी गंग दा, गंगा गंगोत्री चले ना कोए चतुराईआ। मैं खेल खिलाउणा चारों कुण्ट दंग दा, हैरानी विच मेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा वक्त सुहाए अनन्द दा, अनन्द दा मालक अनन्द आपणा इक जणाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

जेठ कहे मेरा दिवस दिहाढ़, इक्की एकँकार वेख वखाईआ। मेरे फिरना पिच्छे अगाड़, परम पुरख होणा आप सहाईआ। प्रकाश करना नाड़ नाड़, जोती जाते डगमगाईआ। मेरा अग्नी तत देणा झाड़, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। सच दुआरे लैणा वाड़, चरण कवल देणी सरनाईआ। मेरे अन्दरों कढणी पंचम धाड़, पंचम दे मालक दया कमाईआ। सहायता करनी जंगल जूह विच पहाड़, टिल्यां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के मंग मंगाईआ। जेठ कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा आया लोकमात, इक्की एकँकार दयां जणाईआ। मेहरवान मेरे वल मार झात, झाकी आपणी आप वखाईआ। मैनूं संदेशा दे दे आपणा पात, कमलापाती रंग रंगाईआ। मेहरवान हो के पुछ वात, वारस हो के हो सहाईआ । मेरा जुग चौकड़ी तेरे नाल नात, बावन मैनूं गया समझाईआ। अवतारां तेरे प्यार दा दिता रस स्वांत, बिन रसना रस चखाईआ। तेरा नूर ज़हूर शहिनशाह इकांत, अकल कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा ख़ाली भर दे खात, ख़ाहिश तृष्ना दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। इक्की जेठ कहे प्रभू मेरा पूरब वेख उदार, मकरूज ध्यान लगाईआ। मैनूं सप्तस ऋषी किहा पुकार, खुशी नाल जणाईआ। वेद व्यासा कर के तैनूं निमस्कार, सच गया समझाईआ। राम ने सीआ दिता अधार, सहिज नाल समझाईआ। कृष्ण राधा किहा नाल प्यार, प्रेमका प्रेम नाल दृढ़ाईआ । मूसा तक तेरा चमत्कार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। ईसा खेल तक नज़ार, बिन नज़र नैण उठाईआ। मुहम्मद मिल के नाल चार यार, यारी तेरे नाल लगाईआ। नानक ने इक्की जेठ पहले दिन वजाई सितार, रबाब आपणे हथ्थ उठाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दा कर दीदार, जोती जोत विच समाईआ। सतिगुर शब्द निगाह लई मार, मेरे वल अक्ख उठाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे कलि कल्की अवतार, हरि करता धुर दरगाहीआ। जो निरगुण धार आवे विच संसार, जोती जाता वेस वटाईआ। इक नाल इक दा मेला करे अपार, एका एके नाल जुड़ाईआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां दी होवे बहार, बहिश्त स्वर्ग वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे आप निरँकार, निरगुण हो के झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी तेरा बणके मीत प्यार, मित्र प्यारा हो के दया कमाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ मक्खण सिंघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

कलयुग कहे रसना जिह्वा ना दे सफ़ाई, आपणी सिफ्त ना कोए सलाहीआ। मेरी चार जुग दी तक लै गवाही, पैग़म्बर गुर शहादतां रहे भुगताईआ। मैं अक्खरां नाल अक्खर मिला के लाई साई, टोटे दीन दुनी कराईआ। मेरे हिन्दसे तक लै इकाई नाल मिला दहाई, सिफ़रे सिफ़र रूप दसी लोकाईआ। मैं कूक सुणावां उच्ची करके बांही, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। मेरी मेट सके कोए ना शाही, कूड़ दे टिक्के दिते लगाईआ। मैनूं याद आउँदा जिस वेले गोबिन्द माण दिता झीवर छींबे नाई, जट्टां रंग रंगाईआ। उस वेले मैं बिना मुख तों भरी आही, बिन हौकयां दिता दृढ़ाईआ। नाले फड़ के आपणी कलाई, कलम्यां वाल्यां दिता वखाईआ। मैं मेल रहिण देणा नहीं नाल भैणां भाई, भाई भाईआं संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे जेठ प्रभ उत्ते कर मूल ना माण, मैं सच दयां सुणाईआ। उह सब दा सांझा भगवान, साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ। जिस ने मैनूं दिता दान, जगत वस्त झोली दिता टिकाईआ। बणा के हुक्मरान, लोकमात भेजया चाँईं चाँईंआ। संदेशा दे धुर फ़रमान, हुक्म हुक्म विच समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करना ध्यान, सत्तां दीपां खोज खुजाईआ। मेरे उत्ते हो मेहरवान, महबूब दिती वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रहिण नहीं देणा ज्ञान, शास्त्र संग ना कोए निभाईआ। कूड़ी क्रिया तन मन्दिर अन्दर करनी प्रधान, ममता मोह संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे जेठ किस दी करें सिफ्त सलाह, सिफ्त सज्जणा दे सुणाईआ। तेरे कोल केहड़ा गवाह, जो शहादत दए भुगताईआ। मेरा मालक बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। जिस मेरी बणत लई बणा, तन वजूदां रंग रंगाईआ। धरनी धरत धवल धौल दिता वसा, वास्ता लख चुरासी नाल जणाईआ। हुक्म संदेशा दिता आप सुणा, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। मानस ज़ाती वेखणी थाउँ थाँ, थान थनंतर ध्यान लगाईआ। जीवां जंतां बुद्धी करनी वांग काँ, काग वांग कुरलाईआ। प्यार रहिण देणा नहीं पुत्तरां माँ, पिता पूत ना कोए सुहाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं माण सके कोए ना ठण्डी छाँ, अग्नी तत देणा तपाईआ। मैं वी उस प्रभू नूं खुशी विच कर लई हां, हां कहि के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा अन्तिम करे हक न्याँ, न्याँकार इक्को इक नजरी आईआ।

✪ २४ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर हीरे दे नवित ✪

५६७
२४

गुरमुख साचा अणमुला हीरा, जगत कीमत ना कोए चुकाईआ। जिस दा लेखे लग्गे धर्म धार शरीरा, सुरती सतिगुर शब्द समाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला किरपा करे वड पीरन पीरा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। हरिजन साचे होण ना देवे दिलगीरा, धीरज धीर धीर रखाईआ। नेत्र नैण सच प्यार दा वहिण वेखे नीरा, हंझू आपणा रंग वखाईआ। जिस दा लेखा शब्दी धार कबीरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ाईआ। गुरमुख हीरा सदा अणतुल, जगत तराज़ू वंड ना कोए वंडाईआ। सच दुआर कदे ना जाए भुल, मार्ग कूड़ ना कोए रखाईआ। सच प्रीती विच जाए घुल, आपणा आप घोल घुमाईआ। दीन दुनी विच जाए ना रुल, करता कीमत आपणे हथ्थ वखाईआ। भाग लगावे साची कुल, काया कायनात विच वड्याईआ। देवे वस्त नाम अणमुल, बिन कीमत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। गुरमुख हीरा वणजारा इक तुक दा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जिउँ प्यार विच पैंडा मुकदा, पाँधी पन्ध ना कोए रखाईआ। तन वजूद लेखे लग्गे सुकदा, सुक्के हरे आप कराईआ। माण दे के आपणे सुत दा, दुलारा आपणी गोद उठाईआ । एह खेल अबिनाशी अचुत दा, चेतन हो के सब नूं दए सुणाईआ। वक्त सुहञ्जणा जिस दी रुत दा, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप अख्वाईआ। गुरमुख हीरा लाल अपार, लालन देवणहार वड्याईआ। जन्म कर्म दए संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे बाहर, हउमे अग्नी तत बुझाईआ। सच प्रीती बख्श अधार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहार इक गुसाँईंआ। रोग सोग दए निवार, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। पूरब लहिणा दे उतार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मानस जन्म पैज सुआर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। गुरमुख हीरा परखे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती बख्शे जाप, ढोला आत्म परमात्म समझाईआ। शब्द संदेशा देवे कमलापात, पतिपरमेश्वर आप सुणाईआ। जगत मेट अन्धेरी रात, सति दा सच चन्द दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। गुरमुख हीरा सतिगुर चरण चरण भेंट, दीन दुनी वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला बण के खेवट खेट, पैंडा दो जहान चुकाईआ। आत्म परमात्म साची सेजा लए लेट, सच सिंघासण वजदी रहे वधाईआ। पतिपरमेश्वर बण के

५६७
२४

खेवट खेट, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। सच स्वामी आपणे दुशाले लए लपेट, दुरमति मैल ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। हरिजन हीरा सोहे सतिगुर चरण, सति सच मिले वड्याईआ। किरपा करे करनी करन, करता पुरख धुरदरगाहीआ। झगड़ा मेटे जन्म मरन, मर जीवत रूप दरसाईआ। माण रखाए धरनी धरन, धवल वजदी रहे वधाईआ। सतिगुर दीन दयाला आवे फड़न, फड़ पल्लू गंढु बंधाईआ। मंज़ल हक दी आवे चढ़न, पाँधी हो के पन्ध चुकाईआ। जन भगतां लेखा जाणे चोटी जड़न, पड़दा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला बणके घाड़न घड़न, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां हो के तरनी तरन, तारनहार देवे वड्याईआ। गृह मन्दिर सुहाए घरन, तन वजूद वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी घाड़न घड़न, घड़न भन्नृणहार इक अख्वाईआ।

✪ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ चेला सिँघ दे गृह वज़ारत जोड जम्मू शहर ✪

५६८
२४

पंझी जेठ कहे प्रभू मेरी आशा कर दे सुखी, सुख आसण दे मालक दया कमाईआ। दीन दुनी रहे कोई ना दुखी, दुखियां दुःख देणा गंवाईआ। ख़ाली नज़र आए कोए ना कुक्खी, तन वजूद रंग रंगाईआ। निगाह मार लै मानस मानव विच मानुखी, नव सत्त खोज खुजाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना जन भगतां उजल कर दे मुखी, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंझी जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुर प्रभ अगे करो डण्डावत, बन्दना सीस जगदीस झुकाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना दीन दुनी विच्चों कढ बग़ावत, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण धार एकँकार परवरदिगार सांझे यार कर सख़ावत, मेहरवान महबूब वस्त नाम नाम वरताईआ। आदि निरञ्जण दर्द दुःख भय भञ्जण साची दे अगम्म निआमत, नर नरायण बिन रसना जिह्वा अन्तर निरंतर आप टिकाईआ। कूड़ क्रिया विकार हँकार कर ममानत, लालच लोभ रहिण कोए ना पाईआ। घर स्वामी अन्तरजामी ठाकर मिलणा सही सलामत, सुल्हकुल दे मालक पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ साडी इक अरज़ोई, निम्रता विच सीस निवाईआ। तेरा भगत नज़र आए कोई कोई, कोटन कोटि सृष्टी दृष्टी अन्दर फिरे हल्काईआ।

सुरती दिसे सब दी सोई, साचा संग ना कोए बणाईआ। कलयुग माया दीन दुनी मोही, पंच विकार हँकार विच कुरलाईआ। पैग़म्बर कहिण साडी दरोही, दो जहानां मालका दईए सुणाईआ। अवतार कहिण सब दी पत गई खोही, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। गुरु गुरदेव कहिण अमृत रस निझर झिरना रिहा कोई ना चोई, बूँद स्वांती नाभी कवल ना कोए उलटाईआ। तन वजूदां अन्तर निरंतर पंच विकार बणया गरोही, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आपणा संग बणाईआ। दरगाह साची सचखण्ड मुकामे हक मिले किसे ना ढोई, दर दुआर वेखण कोए ना पाईआ। साडे पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार साडी वेख पेशीनगोई, भविख्त तेरे चरणां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण साडी पेशीनगोई तेरे चरण कवल, कदमां कदमां विच टिकाईआ। मालक ख़ालक निगाह मार लै उपर धवल, धर्म दी धार एकँकार ध्यान लगाईआ। साडे मालक ख़ालक नूर अलाही अवल, आलमीन यामबीन तेरी ओट तकाईआ। जगत आशा तक लै होई बवल, बौरी होई ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे भविख्त कर परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख निशान, निशाना दो जहान बदलाईआ । तेरा संदेशा दिता सब ने धुर दे काहन, काहन कान्हा तेरी ओट तकाईआ। साडा तेरे उत्ते ईमान, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। धुरदरगाही सच अमाम, मविज़ले ज़मिना ज़कूउल ज़म्बाए नूरे अल्ला अलाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण आपणीआं पिछलीआं तक तहरीरां, तारीक अन्धेरा जगत नाल मिलाईआ। निगाह मार लै काया माटी विच शरीरा, शरअ दे मालक पर्दा आप उठाईआ। तेरा खेल बेनज़ीरा, नज़रां तों बाहर बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त तक आख़ीरा, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी शरअ दी कट ज़ंजीरा, ज़ाहर ज़हूर हो के वेख वखाईआ। उह आशा तक लै की कहिंदी भगत कबीरा, रवीदासा की दृढ़ाईआ। जिस तेरी भेंट कराया कसीरा, जगत माया डेरा ढाहीआ। तूं शहिनशाह पीरां दा पीरा, पैग़म्बर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडीआं भविख्तां वालीआं वेख लै पातीआं, बिन अक्खर कलम शाही रहीआं जणाईआ। तेरा खेल तक्कीए लोकमातीआ, मातृ भूमी धरनी धरत धवल धौल नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट होई अन्धेरी रातीआ, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरे प्यार दी गावे कोई ना गाथीआ, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरे रंग

ना कोए समाईआ। किरपा कर सर्ब कला समराथीआ, बेअन्त बेपरवाह बेऐब नूर अलाहीआ। साडीआं मंज़लां तक लै घाटीआ, पौड़ी डण्डे खोज खुजाईआ। पैग़म्बर कहिण साडीआं मुकीआं वाटीआ, अगे पन्ध नज़र कोए ना आईआ। साडा खेल दिसे बाज़ीगर नाटीआ, स्वांगीआ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ साडा दे दे लहिणा, लहिणेदार तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेहरवाना साडा मंन लै कहिणा, बिन रसना जिह्वा दईए जणाईआ। आपणा जगत जहान तक लै बिना नैणां, बिना लोचन नैण उठाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए साक सैणा, सज्जण ना कोई संग निभाईआ। तेरे तेरे नालों होए त्रफ़ैणा, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तन वजूदां बणया गहिणा, माया ममता आपणा रंग रंगाईआ। नाता टुट गया भाई भैणां, पिता पूत ना कोए सुहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नव खण्ड वहिण वहिणा, रुढ़दी दिसे तेरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पंझी जेठ कहे अवतार पैग़म्बर गुरु प्रभू करे मूल ना धक्का, धिंगोज़ोरी नज़र कोए ना आईआ। सारे वायदा वेखो कौल इकरार पक्का, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। किस बिध लहिणा मुकणा मदीना मक्का, काअबे कूक कूक सुणाईआ। की इशारा दे के गया ईसा बूरा कक्का, सलीब गल लटकाईआ। मूसे किहा मेरा महबूब इक्को वाहिद होवे यका, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दीनां मज़्हबां दा दिता सब नूं पटा, अन्त पटा पटने वाले हथ्थ रखाईआ। कीमत किसे दी रहे कोई ना टका, जगत हटवाणे हट्टो हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडा वक्त अख़ीरी, आख़र दईए जणाईआ। तूं शहिनशाह शाह हकीरी, बेनज़ीरी इक अख्वाईआ। आपणी दीन दुनी दी मेट दिलगीरी, दिलबर हो के वेख वखाईआ। निगाह मार लै विच ग़रीब अमीरी, अमरापद दे मालक पर्दा देणा उठाईआ। असीं चाहुंदे झगड़ा शरअ ना रहे शरीरी, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। सच धर्म दी कर तहरीरी, हुक्म आपणा इक वरताईआ। सब दे अन्दरों बदल दे ज़मीरी, अन्तष्करन कर सफ़ाईआ। लेखा रहे ना शाह हकीरी, ऊचां नीचां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची आप रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी इक्को सब दी मनसा, ख़ाहिश तेरे चरण टिकाईआ। सब दा रूप बणा दे हँसा, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। मन हँकारी मेट दे कंसा, केस गढ़ दा मालक गोबिन्द नाल रलाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब तेरा होवे बंसा, ज़ात अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे गुण गाए विष्न दी धार बाशक

मुख सहँसा, दो सहँसर जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण निरगुण धार बख़्श मिलाप, मिलणी हरि जगदीश आप कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दा होवे जाप, बिन रसना रस देणा चखाईआ। त्रैगुण माया कूड़ कल्पना मेटणा पाप, पतित पुनीत आप बणाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सब दा बाप, पूत सपूते हरिजन आपणी गोद टिकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारी जगत मेट रैण अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मानस ज़ाती झगड़ा रहे ना ज़ात पात, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे चरण कवल उपर धवल सब दा होवे इक्को नात, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा कर दे वक्त सुहावणा, प्रभ सोहणी दे वड्याईआ। तूं परम पुरख पतित पावना, पुनीतां आपणे रंग रंगाईआ। सब दी पूरी कर दे भावना, तृष्ना आपणे चरण टिकाईआ। आशा कूड़ रहे ना कामना, काम क्रोध दा डेरा ढाहीआ। सतिगुर शब्द फड़ा दे दामना, दामनगीर आप हो जाईआ। जन भगतां दर्शन दे दे आहमो साहमणा, सनमुख हो के नज़री आईआ। तैनूं सब ने किहा काहनना, काहन कान्हा तेरी बेपरवाहीआ। पैग़म्बरां तेरा नूर चमकावणा, नूर अलाही नूर कर रुशनाईआ। गुरुआं तेरा ढोला गावणा, गीत गोबिन्द नाम सलाहीआ। तूं परम पुरख परमात्म हो के साचा वक्त सुहावणा, सोहणी सेज हंढाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग प्रगटावणा, प्रगट हो के दया कमाईआ। धरनी धरत धवल धौल टिकावणा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आप सुहाईआ। राउ रंकां आप समझावणा, शाह सुल्तानां भेव चुकाईआ। साचा दर बंक इक प्रगटावणा, प्रगट आपणा आप कराईआ। जिथ्थे चार वरनां अठारां बरनां सीस निवावणा, सजदयां विच बैठण सीस झुकाईआ। तेरा मंगल गीत गोबिन्द इक्को गावणा, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार हुक्म वरतावणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ संसार सिँघ दे गृह जम्मू शहर विखे ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरी ख़बर अगम्मी भाखी, भाख्या दीन दुनी दिती जणाईआ। तेरे नाम कलमे दी धुर दी साखी, साख्यात ग्रन्थ शास्त्रां नाल वड्याईआ। तेरे दीनां मज़्बां दी करदे रहे राखी, रक्षक हो के वेख वखाईआ। तेरे

हुक्म दी मंनदे रहे आखी, जो अक्खरां बाहर दिता समझाईआ। साडे साहिब अलखणा अलाखी, अलख अगोचर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरी अन्तर सुणी आवाज़, जिह्वा गुण ना कोए वड्याईआ। साडा अन्दरों खोल्ह्या राज़, राज़क रिज़क रहीम रहमत सच दिती कमाईआ। सानूं तेरे उत्ते नाज़, दर तेरे मंग मंगाईआ। साडे लेखे ला लै नाम कलमे रोज़े निमाज़, निवाज़श विच बैठीए सीस झुकाईआ। सति सच दा दीन दुनी दे अज़ाज़, फ़ज़ल आपणा इक कमाईआ। तेरा इक्को नाम कलमा होवे वाहज़, वाहज़िआ कर ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरीआं गाईआं कथा कहाणीआं, सतिगुर शब्द सिफ्त सलाहीआ। तेरे नाम कलमे चलाए बाणीआं, बाण अणयाला तीर चलाईआ। फिरदे रहे विच चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जे वाहो दाहीआ। तेरे प्यार विच मौजां माणीआं, खुशीआं दा गीत खुशीआं ढोले गाईआ। किरपा कर दे शाह सुल्तानीआ, सतिगुर मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरीआं मंज़लां मिलण रुहानीआं, रूह बुत तेरी वजदी रहे वधाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू शहर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धुर दे परवरदिगार, नर निरँकार तेरी ओट तकाईआ। दो जहान श्री भगवान पा सार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाह आपणा भेव चुकाईआ। दरगाह साची सचखण्ड मंगीए तेरा दुआर, मांगत हो के झोली डाहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर निगाह मार, कायनात कलम्यां दे मालक वेख वखाईआ। चारों कुण्ट होया धूंआँधार, सति जोत नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्हब वेख आप करतार, कुदरते कादर दया कमाईआ। मानव ज़ाती रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सच मुहब्बत रिहा ना कोए प्यार, प्रेमी प्यार विच ना कोए समाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ होई हाहाकार, गुरुदुआर रहे कुरलाईआ। तेरा नूर नुराना शाह सुल्ताना नज़र ना आए रूप अपार, जोती जाते तेरा संग ना कोए रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे मेहरवान खुदा, खुद मालक तेरी बेपरवाहीआ। असीं तेरे उत्तों होए फ़िदा, फ़ितरत तेरे कदम टिकाईआ। तेरी दुनिया तेरे नालों होई जुदा, विछोड़े विच रोवे मारे धाहीआ। किरपा कर साडे मेहरवां, मेहरवान

नूर अलाहीआ। बिन अक्खीआं कर ध्याँ, दो जहानां वेख वखाईआ। चौदां तबक हो निगाहबां, चौदां लोक तेरी ओट रखाईआ। सति धर्म वखा इक निशां, निशाना तारा चन्द नाल मिलाईआ। सो पैग़म्बरां कीती दुआ, दस्त बन्ह् सीस निवाईआ। जो पैग़म्बरां दिता सुणा, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। गुरुआं संदेशा दिता आ, धरनी धरत धवल धौल दृढ़ाईआ। सो किरपा करनी होणा आप मेहरवां, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ आपणा वेख लै वक्त, दीन दुनी खोज खुजाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा बणे कोई ना भगत, सूफ़ी फ़कीर नज़र कोए ना आईआ। आत्म धार बख्श दे शक्त, शख्सीयत इक्को इक दृढ़ाईआ। तेरा सहारा मंगदे फकत, फ़िकरा इक्को देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडी भविख्तां वाली पूरी कर दे शर्त, पेशीनगोईआं तेरे कदम टिकाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ फुमण सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू शहर ✪

५७३
२४

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे धुर दे राम, रम्ईआ तेरी बेपरवाहीआ। नूर अलाही हक अमाम, अमाम अमामा तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुरु गुरदेव कहिण तेरा खेल महान, महिमा कथ कथी ना जाईआ। आपणी दीन दुनी वेख जगत जहान, नव सत्त खोज खुजाईआ। धर्म दा धर्म सति दा रिहा ना कोए ईमान, कूड़ी क्रिया विच जगत हल्काईआ। शरअ शरअ दा करे कत्लेआम, मक्तूल दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। तूं मालक कुल तमाम, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट वेख अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। तैनूं सजदा हक करे ना कोए सलाम, सीस जगदीस ना कोए निवाईआ। घर घर अन्दर वेख हराम, हैरत विच साडी दुहाईआ। सब नूं भुलया तेरा कलमा कलाम, कायम मुकाम नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर कर इंतज़ाम, इंतकाम लै जगत लोकाईआ। असीं चाहुंदे शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मानव ज़ाती इक्को तेरा धरे ध्यान, इष्ट देव इक्को नज़री आईआ। तूं योद्धा बली बलवान, बलधारी वड वड्याईआ। रहमत कर रहीम रहमान, रैहबर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच वस्त दे दे दान, दाते दानी दया कमाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बीबी राम कौर दे गृह वज़ारत रोड जम्मू शहर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी नमो नमो डण्डावत, सजदयां विच सीस निवाईआ। तूं मालक सही सलामत, सुल्हकुल नूर अलाहीआ। दीन दुनी विच्चों कढ बग़ावत, बग़लगीर कर ख़लक ख़ुदाईआ। नाम कलमा इक्को सब नूं दे निआमत, वसल असल यार दे समझाईआ। आपणा भेव दस्स दे सदी चौधवीं किस बिध आउणी अन्त क्यामत, चौदां तबक वेखण नैण उठाईआ। तेरे कोल सब दी हक अमानत, वस्त अगम्म देणी वरताईआ। दीन दुनी जगत जिज्ञासू मानव इन्सान होए अणजाणत, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा रूप अनूप सके ना कोए पहचानत, बेपहचान पड़दा देणा उठाईआ।

५७४ २४ अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू साडा सानूं दे दे हक, हकीकत दे मालक मेहर नज़र उठाईआ। तूं स्वामी वाहिद इक्को यक, यके बाद दींगरे अवतार पैग़म्बर गुर तेरी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाया गए थक, थकावट विच तेरी दुहाईआ। सदी बीसवीं हज़रत ईसा धार लए तक, मुसल्ला वेखणा चाँईं चाँईंआ । सदी चौधवीं रहे कोई ना शक्क, हज़रते मुहम्मद रसूल अल्ला कहि के गया जणाईआ। नानक गोबिन्द जो संदेशा दिता वत, बेवतनां दे मालक तेरे अगे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी आशा इक्को प्यार मंगदी, दूसर लोड़ ना कोए रखाईआ। खुमारी मस्ती दे दे आपणे रंग दी, रंगत नाम कलमे वाली चढ़ाईआ। दीन दुनिया घड़ी दिसदी अगे आउण वाली तंग दी, तंगदस्त होए लोकाईआ। धरनी उत्ते खेल होणी शरअ वाले जंग दी, जुगती समझ कोए ना पाईआ। किसे हाथ नहीं आउणी मुहाणे वञ्झ दी, अन्त कहिण कुछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू किरपा कर जल्दी, जलधारा वेख वखाईआ। कला तक लै कलयुग कल दी, कलकाती की आपणा खेल खिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अग्ग वेख लै बलदी, अमृत मेघ आबे हयात मुख ना कोए चुआईआ। पवण हवा तती वेख लै चलदी, सांतक सति ना कोए कराईआ। किसे कीमत पाई नहीं धर्म वाली गल्ल दी, कुकर्म आपणा खेल खिलाईआ। दीन दुनी रूप बणी छल दी, कपटां भरी लोकाईआ। मैनूं याद आई सतिजुग धार राजे बलि दी, जो बावन गया समझाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा हुक्म ना मालूम, समझ विच किछ ना आईआ । असीं चार जुग दे साथी तेरा हजूम, इक्ठे हो के दईए सुणाईआ। तेरे चरण कदम बिन रसना जिह्वा लईए चूम, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। साडा पेशीनगोईआं वाला वेख मज़मून, अलिफ़ ये तों बाहर ध्यान लगाईआ। तेरे हुक्म दा हुक्म होवे कानून, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। असीं सारे तेरे ममनून, गुर अवतार पैग़म्बर शुकराने विच सीस निवाईआ। तेरी सोहणी वेखीए रसूम, रसम अगली देणी समझाईआ। जिस विच मालक रहे कोई ना उत्ते भूम, ज़िमीं ज़मां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी नाम खुमारी मस्ती विच निरगुण धार जाईए झूम, सरगुण वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बाज़ सिँघ दे गृह जम्मू शहर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पुरख अकाल जोती जाते, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ । आदि जुगादी दो जहान पित माते, निरगुण निराकार निरँकार तेरी ओट तकाईआ। निगाह मार लै लोकमाते, धरनी धरत धवल धौल अक्ख उठाईआ। आत्म परमात्म तेरे नालों टुट्टे नाते, पारब्रह्म ब्रह्म साचा मेल ना कोए मिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप अन्धेरी राते, साचा नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा पुछे कोई ना वाते, अवतार पैग़म्बर गुर बैठे सीस निवाईआ। तेरे नाम कलमे कलयुग अन्त पए डूँघे खाते, बाहर सके ना कोए कढाईआ। झगड़ा तक लै दीन मज़्ह़ब ज़ात पाते, ऊँच नीच मेल ना कोए मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोई ना गाथे, सति विच ना कोए समाईआ। किरपा कर पुरख समराथे, हरि करते तेरी आस रखाईआ। दीन दुनी दा लेख बदल दे मस्तक माथे, बिदना लहिणा झोली दे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण पुरख अकाले वेख लै आपणी खलक, मख़लूक दे मालक ध्यान लगाईआ। जोती नूर तेरी नज़र ना आए झलक, जगत अन्धेर ना कोए मिटाईआ। तेरा रूप परसे कोई ना पिच्छे पलक, पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। निगाह पार करे कोई ना फ़लक, फर्श ख़ाकी ज़िमीं ना कोए वड्याईआ। साडी बिरहों वैराग विच निकले कलक, कल्की तेरे अगे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मार्ग इक

दरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ कलयुग मेट अन्धेरा अन्ध, अन्ध आत्म दे रुशनाईआ। आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अन्दर दस्स दे छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे गाईआ। दीन दुनी शरअ दुवैती कूड़ कुड़यारी ढाह दे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मोह विकार हँकार अन्दरों मेट दे गंद, जगत तृष्ना ना कोए हल्काईआ। नूर नुराने शाह सुल्ताने जोती धार चाढ़ दे चन्द, कूड़ क्रिया अज्ञान अन्धेर देणा मिटाईआ। मानव ज़ाती खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी आपणी इक समझाईआ। तन वजूद हक महबूब नौ दुआर जाणा लँघ, जगत वासना डेरा ढाहीआ। आत्म सेज सुहाउणी पलँघ, सुख आसण सोभा पाईआ । तेरे नाम दा वजे घर घर मृदंग, धुन आत्मक राग देणा दृढ़ाईआ। हरिजन भगत सुहेले निरगुण लाउणे आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। अमृत धार निझर सरोवर वखा दे गंग, बूँद स्वांती नाभी कवल कवल टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन मज़्ब दा मेट दे बन्धन, झगड़ा शरअ रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म सब नूं बख्श अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। धूड़ी मस्तक ख़ाक टिक्का रमा दे चन्दन, दुरमति मैल मैल धुआईआ। मानस मानव मानुख वरन बरन सब तेरा इक्को दुआरा मंगण, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी डण्डावत सईयदयां वाली धर्म दी धार होवे बन्दन, नमों नमों कहि के सारे सीस निवाईआ । ऊचां नीचां राउ रंकां शाह सुल्तानां ग़रीब निमाणयां चाढ़ रंगण, रंगत इक्को इक वखाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना हथ्थ पहना दे सति सच दा कंगन, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। हर हिरदे अन्दर निरंतर हो के पा दे ठंडण, त्रैगुण अग्नी अग्ग बुझाईआ। भाग लगा दे काया माटी तत पंजण, पंचम शब्द धार नाद सुणाउणा चाँईं चाँईंआ। नाम निधान नेत्र पा दे अंजन, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सदा दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। तेरी चरण धूड़ जन भगतां होवे मजन, दुरमति मैल देणी मिटाईआ। तेरे नाम नगारे विच संसार मस्जिद शिवदुआले मठां विच वजण, गुरुदुआर चर्च तेरा ढोला गाईआ। नव सत्त ब्रह्म मति ततव तत एका आपणा मेल करा लै धुर दे सज्जण, सगले साथी आपणा संग बणाईआ। शरअ दी रहे कोई ना हद्दण, हदूद इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे मिलदा परमानंदन, जगत दुःख रोग ना लागे राईआ। जोती धार दीपक अगम्मे जगण, बिन तेल बाती डगमगाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा ज़िमीं असमानां बाहर उपर गगन, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दर तेरे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर निरगुण धार हो के प्रेम प्रीती विच मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ।

५७६
२४

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग मेट दे विच्चों दीन दुनी जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। शरअ दी सड़े कोई ना अग्ग, अमृत मेघ नाम देणा बरसाईआ। जन भगतां दर्शन देणा उपर शाह रग, नव दुआर दा पन्ध मुकाईआ। तेरे नालों तेरे होण ना कदे अलग, विछड़यां मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तूं सूरबीर सरबग, हरि करता इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी शरअ दी मेट दे हद्द, हदूद आपणी इक वखाईआ। असीं ख़ुशी होईए गद गद, सृष्टी दृष्टी अन्दर तेरा नाम इक्को नज़री आईआ। लोकमात जोती जाते पुरख बिधाते तैनूं रहे सद्द, सद्दे देईए चाँईं चाँईंआ। मानव ज़ाती सारे तेरी आत्म धार यद, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तन वजूदां वंड वंडाईआ। सब नूं नाम ख़ुमारी अमृत रस प्या दे मदि, मधुर धुन शब्द शब्द कर शनवाईआ । काया माटी अन्तर भगत सुहेले तैनूं लैण लभ्भ, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सरन सरनाई सृष्ट सबाई जाए लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरा इक्को होवे ढोला, गीत संगीत राग नाद शब्द धुन शनवाईआ। निरअक्खर धार एकँकार धर्म धार दा होवे सोहला, सो पुरख निरञ्जण तेरी वड वड्याईआ। आत्म परमात्म निरवैर तेरा होवे बोला, अनबोलत आपणा पड़दा देणा उठाईआ। मानस मानव मानुख तेरे दर दा होवे गोला, चाकर सेवक हो के सेव कमाईआ। सतिगुर शब्द दो जहान बणे विचोला, विचला पड़दा आप उठाईआ। तेरा नूर नज़र आए जोती जाते अगम्मी उपर धौला, मालक ख़ालक प्रितपालक तेरी वजदी रहे वधाईआ। धरनी धरत धवल धौल दा भार कर हौला, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। मन कल्पणा तन वजूद रहे ना रौला, रौणक आपणे नाम शब्द लगाईआ। सच दुआरा विच संसारा तेरा इक्को होवे खोल्ला, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। सच तराज़ू पुरख अकाले बणना तोला, राम दे राम तेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा इक्को नाम होवे रस, रस्ता अवर ना कोए जणाईआ। भेव अभेदा देणा दस्स, दहि दिशा दी वंड ना कोए वंडाईआ। नव दुआरे पन्ध मुकाउणा हस हस, हस्ती आपणी इक प्रगटाईआ। शब्द अणयाला तीर मारना कस, कूड़ कुकर्म कसर इशारीए नाल उडाईआ। जगत विकारा चरणां हेठ देणा धस्स, लालच लोभ रहे ना राईआ। निझर झिरना अगम्मी देणा रस, बिन रसना जिह्वा आप

चखाईआ। काया मन्दिर अन्दर रैण अन्धेरी मेटणी मस, सूर्या चन्द जोत कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा गाउँदे होण जस, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरे टिक्के मस्तक लाईए धूड़ी, ख़ाकी ख़ाक राख रमाईआ। दीन दुनी चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़ी, बुध बिबेक देणी कराईआ। कलयुग क्रिया बाहर कढ दे कूड़ी, कूड़ कुटम्ब रहिण ना पाईआ। बेनन्ती करीए तेरे सचखण्ड हज़ूरी, हज़रतां दे मालक सीस निवाईआ। आपणा जल्वा बख़्श दे नूरी, नूरी नूर कर रुशनाईआ। मूसा कहे मैं इशारा दिता उत्ते कोहतूरी, कुदरत दे कादर तेरी ओट तकाईआ। ईसा कहे मेरी आसा ना रहे अधूरी, हदूदां डेरा देणा ढाहीआ। मुहम्मद कहे मैं तेरा होवां मशकूरी, शुकराने विच सीस निवाईआ। नानक कहे सब दी आशा करनी पूरी, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे गढ़ तोड़ना हँकार ग़रूरी, ग़ुरबत सब दे अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। चार जुग दी सब दी झोली पाउणी मज़दूरी, मांगत हो के मंग मंगाईआ। अगला पन्ध रहे ना दूरी, मंज़ल मंज़ल देणी चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्ती नाम देणी सरूरी, सुरत शब्द नाल मिलाईआ।

२६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे परवरदिगार पाकी पाक, पतित पुनीत तेरा नाम दुहाईआ। बन्द किवाड़ी बजर कपाट खोल्ह दे ताक, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मनुआ मनसा विच रहे ना आक, गढ़ हँकार देणा तुड़ाईआ । निगाहबान हो के दीन दुनी वल झाक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सचखण्ड निवासी जीवां जंतां पुछ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। चरण प्रीत बख़्श दे नात, नर नरायण दया कमाईआ। साडी सब दी इक्को बात, बातन पड़दा देणा खुल्हाईआ। तूं मालक कमलापात, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। कलयुग अन्तिम दे दे अगम्मी दात, दाते दानी आप वरताईआ। तेरा खेल तक्कया जुग चौकड़ी बहुभांत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सब दे हिरदे कर दे शांत, अग्नी तत तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरी अनोखी ओट, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों कढ दे खोट, खोटे खरे आप बणाईआ। जगत जहान आलणयों डिग्गा बोट, तुध बिन गोद ना कोए रखाईआ।

भरमे भुल्ले कोटी कोट, अणगिणत रहे कुरलाईआ। सब दे अन्दर आपणी प्रगट कर दे निर्मल जोत, जोती जाते डगमगाईआ। झगड़ा मेट दे वरन गोत, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। कलयुग वेला लँघ गया बहुत, अगे अवर ना होर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर दे मालक होणा सहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कहिण आपणी दीन दुनी कर लै शुद्ध, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। निर्मल धार बणा लै दुद्ध, पतित पापी आप तराईआ। पंच विकार करे ना युद्ध, युधिष्टर दा लेखा पूर जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे जुग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। सब दी औध गई पुग, गुर अवतार पैग़म्बर सीस निवाईआ। तेरा सतिगुर शब्द दो जहानां पए कुद्द, कुदरत दे कादर लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ आपणी वेख लै सृष्टी, श्रेष्ट आपणा ध्यान लगाईआ। तेरा रिहा कोई ना इष्टी, इष्ट देव दरस कोए ना पाईआ। सब दी अन्दरों धारा तक भृष्टी, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। धर्म दा रिहा ना कोई गृहस्ती, नार कन्त वजे ना कोए वधाईआ। मुहब्बत रही ना किसे सिख दी, सिख्या विच ना कोए समाईआ। साडी आशा तक लै भविख दी, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। कलयुग कला मेट दे नित दी, नर नरायण तेरी आस रखाईआ। घड़ी सुलखणी कर दे सब दी वार थित दी, पलां नाल पल मिलके देण गवाहीआ। ठगौरी रहे ना कलयुग चित दी, चेतन सब नूं आप कराईआ। मुहब्बत भर दे हितकारी हित दी, निज नेत्र लोचन कर रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा सुरती किसे ना टिकदी, टकयां विच विकी लोकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरी थाँ पूजा हुन्दी पत्थर इट्ट दी, तेरा नूरी दरस कोए ना पाईआ। अन्त खेल मुका दे मानस मानव भिट दी, आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। आशा वेख लै गोबिन्द वाली चिट दी, जो यारड़े माछूवाड़े तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। चिट कहे मैं लिखी बिना अक्खर, कलम कानी गोबिन्द शाही रंग ना कोए रंगाईआ। मैं यारड़े लथ्थी सथ्थर, सेज सूलां नाल हंढाईआ। नेत्र मूल ना विरोलया अथ्थर, हंझूआं हार ना कोए बणाईआ। पिछली सच कहाणी लग्गी दस्सण, दहि दिशा दयां सुणाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द लग्गी हसण, बिन मुख मुख खुलाईआ। बिन कदमां पैंडा लग्गी नस्सण, भज्जी वाहो दाहीआ। अन्त करके आपणा यतन, यथार्थ आपणा पन्ध मुकाईआ। दुनियादारो वेखो माही दा पतण, जिथ्थे जगत नईया नौका नज़र कोए ना आईआ। उथे पुजदे गुरमुख हीरे रत्न, अमोलक आपणा रूप बदलाईआ। जिथ्थे शब्द धार जोत नूर दिसे लट लटण, बिन तेल बाती रुशनाईआ। उह सचखण्ड दुआरा अगम्मा

घटण, बंक दुआर सोभा पाईआ। जिस गृह सन्त सुहेले वसण, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को कथा कहाणी कथण, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप समझाईआ। चिठ्ठी कहे मेरा चार जुग तों वखरा लेख, गोबिन्द धार मिली वड्याईआ। मेरे साहिब दा होणा अवल्ला भेख, भेखाधारी इक अख्वाईआ। जिस दी नज़र आवे ना कोई किसे रेख, रिख मुन वेखण कोए ना पाईआ। उस दा अगम्मड़ा होवे वेस, दो जहान करे रुशनाईआ। मालक बण नरेश, नर नरायण हुक्म वरताईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, गणपति सीस निवाईआ। उस सुहावणा अन्तिम सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा कलेश, कलि कल्की हुक्म वरताईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा नाल गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा पड़दा दए चुकाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। जिस दे चरण दुआर अवतार पैग़म्बर गुर होए पेश, पेशीनगोईआं नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा हुक्म सदा विशेष, विषयां तों बाहर विश्व दा मालक आप जणाईआ।

५८०
२४

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर मैं वेखदा रिहा पत्रीआं, रैण सबाई बिन अक्खरां फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्टां वेखो कतरीआं, कोना कोना दए गवाहीआ। तुहाडीआं आशां अन्तिम हो गईआं सत्तरीआं बहत्तरीआं, बहत्तरां दा मालक की आपणा हुक्म वरताईआ। बावन दा संदेशा राजे बलि दी धार जन्म ल्या घर खत्रीआं, खतरेटा चमरेटा इक्को रंग वखाईआ। जिस दे हुक्म विच माण रहिणा नहीं किसे क्षत्रीआं, छत्रधारी सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानों मैं पढ़दा रिहा पट्टीआं, रैण सुबाई अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। मैनूं दो जहान चौदां तबक चौदां लोक दिसदीआं रहीआं हट्टीआं, हटवाणिओ तुहानूं दयां सुणाईआ । चार जुग दे शास्त्रां दीआं नजर आउँदीआं रहीआं खट्टीआं, वस्तू दीन दुनी नाल मिलाईआ। जिधर निगाह मारी तुहाडीआं शरअ दीआं डोरां दिसीआं कटीआं, कटाकश कलयुग कूड़ लगाईआ। प्रेमीओ प्यारयो मित्रो अन्त सब नूं भरनीआं पैणीआं चट्टीआं, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पैग़म्बरो शमादानां दीपकां विच रहिणीआं नहीं वट्टीआं, पली

तेल ना कोए वड्याईआ। निगाह मार लओ तुहाडीआं शरअ दीआं मरयादां टप्पीआं, टापूआं दयो मालको तुहानूं दयां सुणाईआ। तुहाडीआं ख़ाहिशां कलमे धार फिरदीआं नट्ठीआं, नाम नामा रूप बदलाईआ। खुशी नाल राती सारीआं हो गईआं इक्ट्ठीआं, मिल मिल खुशी बणाईआ। बिन सीस जगदीश चरणां ढट्ठीआं, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। मैनूं ऐं जाप्पा तुहाडीआं दलीलां सब दीआं शब्दी धार नाल मिल के बण गईआं जट्टीआं, जिन्हां दा मालक इक्को नज़री आईआ। तुहाडीआं वारां गावणीआं नहीं अगे किसे भट्टीआं, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक भेव खुल्हाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर मैं रैण सबाई तकदा रिहा अगम्मे पत्र, बिन काग़ज़ां वेख वखाईआ । लभदा रिहा तुहाडे गृह नक्षत्र, घड़ी पल खोज खुजाईआ। मैनूं इक्को नज़र आई बिन अक्खरां वाली सतर, जिस दी सतह बुलंदी समझ कोए ना पाईआ। उस दा लिख्या लेख नहीं किसे इट्ट पाहन पत्थर, लीक तस्दीक ना कोए कराईआ। इक्को प्रभू दा प्यार यारड़े टिकयां सथ्थर, सोहणी सेज बणाईआ। मैं अगली कहाणी लग्गा दस्सण, दहि दिशा ध्यान लगाईआ । आपणी वेखो रैण अन्धेरी मसण, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तुहाडा हुक्म धुर दे हाकमो लोकमात विच्चों लग्गा नस्सण, भज्जे वाहो दाहीआ। नारद कहे मैं खुशीआं विच लग्गा हसण, हस हस के दयां सुणाईआ। मैनूं प्रभ दा आउण लग्गा रसण, बिन रसना रस चखाईआ। जिस दा इक्को होणा जसण, इक्को सिफ्त सलाहीआ। जो दीन मज़्हब सब दे लग्गा कछण, कछ मछ दा लेखा नाल मिलाईआ। जिस खेल खिलाउणा लहिंदी धार उतर पूरब पश्चिम दक्खण, दहि दिशा वेख वखाईआ। सब दे भाण्डे करने सखण, सखावत नज़र कोए ना आईआ। मैं हो गया हक्कण बक्कण, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। मैं इक संदेशा बिना रसना देवां बचन, बिन सँध्या सरघी सुणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले अगे नवीं रचाउणी रचन, रचना आपणी आपणे नाल मिलाईआ। नाल खुशीआं लग्गा नच्चण, नारद बोदी रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग सब नूं आया दस्सण, दहि दिशा इक्को हुक्म वरताईआ।

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बीबी लक्ष्मी दे नवित पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

जन भगत कहे मेरा तन वजूद ख़ाकी, मिट्टी जगत वंड वंडाईआ। मेरा अमृत जाम साकी, सतिगुर शब्द शब्द पिलाईआ। मेरी दीन दुनिया आशा वाली बाकी, ख़ाहिश जगत विच टिकाईआ। सतिगुर शब्द आपणा पड़दा खोल्ह के ताकी, गृह साचा

रिहा वखाईआ। फड़ बाहों चढ़ाए अगम्मे राकी, बिन रकाबां दए टिकाईआ। बिन अक्खां मरवाए झाकी, झाती इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। जन भगत कहे मेरा तन वजूद शरीर, ख़ाकी माटी नज़री आईआ। मेरे अन्दर मालक बेनज़ीर, नज़रां तों ओहले बैठा डेरा लाईआ। जो अमृत बख्शे ठण्डा सीर, बिन रसना रस चखाईआ। जन्म जन्म दी बदल तकदीर, तदबीर आपणी नाल बदलाईआ। मेरा रूप नहीं शाह हकीर, जगत शरअ ना वंड वंडाईआ। मेरा साथी इक कबीर, जो सहिज नाल गया दृढ़ाईआ। जिस दे पाटे दिसे चीर, जगत रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जन भगत कहे मेरा लहिणा देणा नाल लखमण, लक्ष्मण धार दए गवाहीआ। मेरा तन वजूद कदे ना होया सक्खण, सति सच वस्त विच नज़री आईआ। मेरा साहिब मेरी जुग जुग पैज आवे रखण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच घाट वखाए पतण, तट्टां आपणा रंग रंगाईआ। सच प्यार दा बख्श के यतन, यथार्थ आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। जन भगत कहे मेरी पूरब धार दासी, दशरथ दहि मिली वड्याईआ। मैनूं लक्ष्मण सदा प्रेम नाल कहिंदा सी मासी, मसेर रिश्ता ना कोए जणाईआ। दिवस रैण करदा रहिंदा हासी, हस हस जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप वखाईआ। जन भगत कहे मैं दासी संग कुशलया, सुमित्रा दिती वड्याईआ। लक्ष्मण इक दिन मेरी गोद सिँघासण मल्लया, बहि के ख़ुशी बणाईआ। फेर आपणा पासा थल्लया, करवट विच लई अंगड़ाईआ। मैनूं प्यार नाल संदेशा दिता इकल्यां, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। दासी कहे मेरा नाम हुन्दा सी लच्छी, लक्ष्मण ख़ुशीआं ढोले गाईआ। इक दिन गल्ल दस्सी अच्छी, सहिज नाल समझाईआ। मैं चाउ घनेरे विच नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। झट मैनूं पै गई गशी, सुरत रही ना राईआ। मेरे अन्दर आवाज़ आई मैं बिना सरवनां भखी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। इक ख़बर अगम्मी याद रखीं, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। हुण जगत जहान चों मीट जाणा अक्खीं, तन रहिण कोए ना पाईआ। फेर दर्द होई डाहडी वखी, तन वजूद गई तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। लछी कहे मेरा स्वास होया पूरा, जगत संग रिहा ना राईआ। मैनूं सुणी अगम्मी तूरा, आवाज़ दिती सुणाईआ। निगाह मार लै की हुक्म देवे नूर नुराना नूरा, जोती जाता की जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। शब्द सुणाया याद इक्को गल्ल रखणी, संदेशा धुरदरगाहीआ। तेरा लहिणा मुकयां जगत जहान उत्तर पूरब पश्चिम दक्खणी, पाँधी पन्ध रिहा ना राईआ। कलयुग अन्त खट्टी साची खटणी, खटका जगत रहे ना राईआ। जिस वेले सदी चौधवीं टपणी, तेरा लेखा वेखे धुर दा माहीआ। तूं जट्ट दी धार होणा जट्टणी, सेवक सेवा लेखे पाईआ। तूं इक्को पढ़नी पटणी, जो पटने वाला दए समझाईआ। इक्को तुक जपणी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र ना आईआ। फिर तेरी साहिब पत रखणी, होए आप सहाईआ। लख चुरासी मंज़ल टपणी, जन्म मरन दा डेरा ढाहीआ। तेरा रूप होवे अमोलक हीरा रत्नी, करता कीमत आपे पाईआ। सच दुआर एकँकार जोड़े नतनी, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। खुशीआं नाल पहुंचणा आपणे वतनी, बेवतनां पन्ध मुकाईआ। लच्छी तेरा कलयुग अन्तिम नाम होणा लक्ष्मी, लक्ष्मण दी आसा तेरी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिन्हां जाप जप्या रसनी, रस्ता दीन दुनी गए बदलाईआ।

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरबंस कौर दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

५८३
२४

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरो मैं निरगुण धार रिहा सोचदा, जगत अक्ल ना साथ रखाईआ। मनसा अन्दर मनसा रिहा लोचदा, बिन लोचन नैण अक्ख उठाईआ। नगारा सुणदा रिहा अगम्मे सलोक दा, जो अणसुणत रिहा सुणाईआ। की लेखा होणा मातलोक दा, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। की वेस धरया निरगुण धार जोत दा, जोती जाता की आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा वरन गोत दा, गौतम दी आसा नाल मिलाईआ। मेरा हिस्सा ठीक होवे प्रोहित दा, ब्राह्मण हो के दयां समझाईआ। माण टुटणा गढ़ हँकारी कोट दा, दर नज़र कोए ना आईआ। नगारा वजणा इक्को शब्द अगम्मी चोट दा, चोटी चढ़ के दए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मैं तकदा रिहा बिन नेत्र लोचन नैणां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं जगत जहान दिस्या त्रफ़ैणां, सगला संग ना कोए निभाईआ। तुहाडा मंने कोई ना कहिणा, दीन मज़ुब गए भुलाईआ। की अगला हुक्म वरते नर नरायणा, नर हरि आपणी दया कमाईआ। जिन्हां कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा, जगत धार नज़र कोए ना आईआ। बाल्मीक दा लेखा पूरा करना विच रमायणा, राम दे राम आपणा हुक्म वरताईआ । जिस दीन दयाल हो के सब दा देण देणा, देवणहार इक अख्वाईआ। उस दा भाणा अन्तिम सब ने सहणा, सिर सके

ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर एकँकार इक्को बहणा, दूसर गृह नज़र कोए ना आईआ।

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ लक्ष्मी देवी दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी विद्या तको पुराणी, पूरब लेखे रही जणाईआ। जो संदेशा दे के आए ज़बानी, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। परम पुरख परमात्म खेल खेले नौजवानी, योद्धा सूर इक अख्वाईआ। पैग़म्बरो जिस नूं मन्नया बाप असमानी, इस्म आज़म इक अख्वाईआ। गुरुओ जिस दी सतिगुर शब्द निशानी, दो जहानां रंग रंगाईआ। उस दी सारे वेखो मेहरवानी, मेहरवान की आपणा हुक्म वरताईआ। जो भगतां मंज़ल करे आसानी, बिन पाँधीआं पन्ध मुकाईआ। चरण प्रीती मंज़ल देवे रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। आत्म परमात्म कलमा दए कलामी, कायनात दए समझाईआ। जिस नूं सब ने किहा मालक कुल असमानी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह सब दी अन्तिम कटे गुलामी, शरअ ज़ंजीर ज़ंजीर तुड़ाईआ। हर घट बण के अन्तरजामी, वेखे थांउँ थाँईंआ। सति धर्म दी देवे वस्त महानी, महिमा कथ कथ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक खिलाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी विद्या बिना अक्खरां तों सति, सति वणजारे दयां जणाईआ। जिस दे विच इक्को ब्रह्ममत, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी प्रभू प्यार नाल जोड़े नत, रिश्ता जगत ना कोए जणाईआ। सतिगुर धार धुर दी देवे मति, मन मति दा डेरा ढाहीआ। जिस विच इक्को पूजा इक्को सिमरन प्रभू दा तप, दूसर तपसिआ वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म साची थापना रिहा थप, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ।

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ देवी सिँघ दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु वेखो निगाह नाल गहरी, गहर गम्भीर बेनज़ीर ध्यान लगाईआ। तुहाडे सिख मुरीद परम पुरख दे बण गए वैरी, मित्रो नाम संग ना कोए रखाईआ। कोई पेंडू ते कोई दिसे शहरी, शरअ ने सारे कीते कसाईआ। मन मनसा सब दे अन्दर वरती कहरी, नव सत्त नज़री आईआ। सब दी अन्दरों वासना हो गई ज़हिरी, विस कूड़ रूप

चढ़ाईआ। दीन दुनी सरवना नाल हो गई बहिरी, धुर दा हुक्म सुणन कोए ना पाईआ। उह वेखो निगाह मारो राय धर्म ला बैठा कचहरी, चित्रगुप्त भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरुओ कलयुग वेखो घटा कालीआं, कल काती की आपणा खेल खिलाईआ। तुहाडीआं मंज़लां लँघ गईआं बाहलीआं, अगे पन्ध नज़र ना आईआ। बिन हथ्थां मारो तालीआं, ख़ाली हथ्थ दयो जणाईआ। बूटे सुकदे जांदे तुहाडे धर्म दे मालीआं, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। शरअ दीआं धरतीआं होणीआं कालीआं, ख़ालक रंग ना कोए चढ़ाईआ। धर्म बीज बीजे कोए ना हालीआं, सति वस्त ना कोए टिकाईआ। धर्म दे ज़िमींदारो तुहाडीआं चुक्के ना कोए पंजालीआं, पंजां वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार जीजे वेखो जगत सालीआं, नेत्र नैण नैण तकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब नूं करन वाला दिवालीआ, दिवाले सब दे रिहा कढ्ढाईआ। योद्धे सूरबीर बण के आपणीआं बन्ह्‌णो रुमालीआं, रूह बुतां संग मिलाईआ। जलवे नूर जणाओ जलालीआं, ज़ाहर ज़हूर करो रुशनाईआ। फल वेखो आपणी आपणी डाल्हीआं, मज़्ह़ब दीन खोज खुजाईआ। चिल्लह रिहा किसे ना चालीआ, चार कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर तको दीन दुनी दी करनी, करता पुरख रिहा जणाईआ। सच दी मरे कोई ना मरनी, मर जीवत रूप ना कोए बदलाईआ। दो जहानां तरे कोई ना तरनी, तारनहार ना कोए सहाईआ। अन्तिम फल कच्चे वाली रहिणी नहीं जड़नी, जड़ चेतन ध्यान लगाईआ। झगड़ा मिटणा वरनी बरनी, पारब्रह्म प्रभ आप मुकाईआ। सच दुआर एकँकार लग्गे तको कोई ना चरणी, चरणोदक जाम ना कोए प्याईआ। नेत्र खुल्ल्हे किसे ना हरनी फरनी, हरि दर्शन पेखण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, की खेल खिलाए उपर धरनी, धवल धुर दा रंग रंगाईआ।

२७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भगत सिँघ दे गृह पिण्ड कीर पिण्ड ज़िला जम्मू

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणीआं आपणीआं तको वंडां, नव सत्त ध्यान लगाईआ। दीन मज़्ह़ब दीआं खोल्ह्‌ो गंढां, बिन उंगलां लओ बदलाईआ। चारों कुण्ट वेख लओ पैंदीआं किसे ना ठंडां, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। आत्म सब दा हो गया रंडा, रंडेपे विच ख़लक खुदाईआ। कलयुग नेड़े आ गया कन्ढा, कन्ढी घाट सारे आसण लाईआ। कूड़

क्रिया दा खड़कण वाला खण्डा, खंडयां वाल्यो दयां दृढ़ाईआ। फिरनी दरोही विच वरभण्डां, भंडी पवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर कुछ आपणीआं दस्सण दलीलां, ख़ाहिशां जगत नाल मिलाईआ। तुहाडीआं किस दे अगे अपीलां, कवण करे शनवाईआ। कवण धार बणे वसीला, वसल देवे धुर दा माहीआ। तुसीं इक दा कुनबा इक दा कबीला, कामल मुर्शद कवण अख्वाईआ। कवण आपणे हुक्म विच बदलण वाला ततीला, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। उह मालक ख़ालक छैल छबीला, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर सारे करो इक मता, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। निगाह मारो आपणी रता, नैण नैण विच्चों बदलाईआ। तुहाडे दीन मज़्ब दी रही कोए ना सतह, सतह बलंदी रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग जीवां अन्तष्करन हो गया तत्ता, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। आत्म परमात्म टुटया नाता, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। चार जुग दा डूँग्घा फोल के वेखो खाता, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। नव सत्त अन्धेरी राता, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धरनी रोवे जगत दी माता, बिन नैणां हंझूआं हार बणाईआ। किरपा कर दे कमलापाता, पतिपरमेश्वर तेरी ओट रखाईआ। मेरे उत्ते सति सच रूप दरसा प्रभाता, सँध्या वंड ना कोए वंडाईआ। तूं नूर नुराना जोती जाता, लख चुरासी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करनी पुरख बिधाता, पुरखोतम हो के मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

५८६
२४

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश चन्द दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर किस कारन प्रभ ने तुहानूं जणया, निरगुण धार बणी जणेंदी माईआ। किस कारन तीर अणयाला मारया अणया, अनडिठड़ा आप जणाईआ। दीन मज़्ब दा युद्ध वखाया रणया, रण भूमी रंग रंगाईआ। की लेखा अन्त तुहाडा बणया, भेव अभेद दयो खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, की सच दा लेख दृढ़ाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर किस कारन प्रभ ने घलया, लोकमात दिती वड्याईआ। कवण सिँघासण दीन दुनी मल्लया, मालक हो के सोभा पाईआ। कवण हुक्म संदेशा नाम चलया, कलम्यां रंग रंगाईआ। की भाग लगाया काया माटी खलया, ख़ालक दयो सुणाईआ। किस बिध जगत जहान जाणा दलया, दलिद्रीआं डेरा ढाहीआ।

प्रभ दा वहिण किस बिध हुक्म दा जाणा ठल्लया, अगे हो कवण अटकाईआ। की हुक्म संदेशा देवे निहचल धाम अटलया, धुर हुक्म आप वरताईआ। तुहाडा दीन मज़्ब किस करनी नाल फलया, पत टहणी दयो वखाईआ। वेखो कलयुग अन्धेर झक्खड़ जगत जहान झुल्लया, नव सत्त आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर किस बिध आए लोकमाती, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। आपणी ज़िंदगी वेखो हयाती, जीवण जीवण खोज खुजाईआ। की खेल खिलाया कमलापाती, पतिपरमेश्वर की दृढ़ाईआ। की नाम कलमा दस्सया सफ़ाती, सिफ्तां वाली सिफ्त सलाहीआ। की शरअ चलाई जमाती, ततां वंड वंडाईआ। की खेल वेख्या इक इकांती, एकँकारा की वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सारे निगाह मारो बाकायदा, नव नव ध्यान लगाईआ। धर्म दी धार रिहा ना कोए अलायदा, वखरी गंढु ना कोए पुआईआ। जगत हँकार गढ़ वेखो मैं दा, माया ममता विच समाईआ। कूड़ विकार वहिण वेखो नैं दा, शौह दरया रूप बदलाईआ। दीन दुनी झगड़ा वेखो खैह दा, खैरख्वाह नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु निगाह मारो धरनी उत्ते हुक्म नहीं किसे नूं बैअ दा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी मालक नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला ज़ुमेवार निरगुण शैअ दा, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा सम्बल साढे तिन्न हथ्थ गृह दा, घर आपणा इक सुहाईआ। जिस दा नाम जैकारा दो जहानां होणा जै दा, जै जैकार करे लोकाईआ। जिस झगड़ा मेटणा दीन दुनी दुवै दा, दूती रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा खेल होणा आदि जुगादी है दा, हैभी होसी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जगत जहान धरनी धरत धवल थैं का, थनंतरां पड़दा आप उठाईआ।

✪२७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ माया देवी दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो आपणे अन्दरों कढ्ढो खुदी, खुद मालक ध्यान लगाईआ। आपणी पवित्र करो बुद्धी, बुध्ध दा लहिणा नाल मिलाईआ। जगत विकार छडो युद्धी, युधिष्टर कहि कहि रिहा सुणाईआ। प्रभू दी रमज़ समझ लओ गुझी,

पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। आपणी दीपक जगाउ बुझी, जोत जोत जोत रुशनाईआ। आपणी आशा करो उग्घी, उग्घण आथण वजे वधाईआ। वेखो की पुकार करे बसुधी, धरती रही सुणाईआ। मेरे उत्ते खेल हुन्दा प्रभू जुग जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरब नाल मिलाईआ। मैं जीव जहानां नाल रहिंदी रुझी, रुझेवां जगत जुगत जणाईआ। प्रेमीउ मेरे प्यार दी उजड़न ना दयो झुग्गी, महल अटल देणा बणाईआ। मैं भज्जी नठ्ठी चारों कुण्ट उछली कुद्दी, टप्पी चाँईं चाँईंआ। मैं कोटन कोटि बरस दी प्रभू प्यार विच होई ना बुढ्ढी, बुढेपा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे जन भगतो आपणा जन्म वेखो अलड़ मलूक, मलकल मौत तों लैणा बचाईआ । सतिगुर शब्द नाल रखो सलूक, सोहला गाउणा चाँईं चाँईंआ। मैं उच्ची पुकारां कूक, जगत जहान रिहा सुणाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया सब नूं रही फूक, फुंकारा माया ममता मोह लगाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक ख़ाली होवे भूक, सति नज़र कोए ना आईआ। जिधर तकां उधर दिसे छात छूत, छत्रधारी रूप ना कोए दरसाईआ। झगड़ा प्या पंज भूत, पंचम मेल ना कोए मिलाईआ। जिधर वेखां जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। धर्म रिहा किसे ना कूट, काया कुटीआ ख़ाली नज़री आईआ। कलयुग वेख अवल्ला तन वजूदां सूट बूट, बूटा धर्म ना कोए लगाईआ। परम पुरख दे बणो सच सपूत, पिता पूत लए गल लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर दए वड्याईआ। नारद कहे जन भगतो अन्तष्करन होए ना किसे गुमराह, हँकार विच कोए ना आईआ। धुर दा नाम निकले तुहाडे स्वास साह, साह साह विच समाईआ। सतिगुर शब्द बणाउणा इक मलाह, बेड़ा दो जहानां पार कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गा, गावत गावत खुशी रखाईआ। पन्ध मुकाउणा थल अस्गाह, महीअल रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ मिलण दा सब ने रखणा चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। गृह मन्दिर सुहञ्जणा होवे थाँ, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। घर स्वामी मिले आ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दयाला दरस देवे दिखा, देखत पेखत आपणा रंग रंगाईआ। साचा मन्दिर देवे सुहा, सोभावन्त डेरा लाईआ। जीवण जीवण विच्चों दए बदला, बदला रहे ना ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला हो के पकड़े बांह, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ।

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ दौलत राम दे गृह पिण्ड कोटली ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे धरनीए तूं वी दस्स दे आपणा रोणा, दुखीए आपणा दर्द जणाईआ। कोझीए कमलीए तेरे उत्ते खेल होणा अणहोणा, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। सुख दी नींद सच विच किसे ना सौणा, सुरती सतिगुर विच ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्त तेरा विछड़न वाला पराहुणा, मेला रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कूड़ कुड़यार तेरे उत्ते कोहणा, हलाली झटका वंड ना कोए वंडाईआ। धन्न दौलत ग़रीबां अमीरां कोलों खोहणा, खोह खोह दी खेल दए वखाईआ। जो आशा रख के गया आचारज दरोणा, गुरदेव पांडव ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक खेल खिलाईआ । नारद कहे धरनीए आपणी दस्स बेहाली, बहिबल हो के दे जणाईआ। तेरी धार प्रेम होई काली, काला दाग़ ना कोए मिटाईआ। सच धर्म दी गोदी होई ख़ाली, नाम सति ना कोए भराईआ। जगत विकारा कूड़ वध्या जाहली, जूठ झूठ वजी वधाईआ। कलयुग औंध भोग लई बाहली, अगे अवर ना कोए रखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला करे कमाली, कमलापति हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द विचोला बणे दलाली, सौदा हक हक जणाईआ। तेरे उत्ते फल वेखे लख चुरासी डाली, पत टाहणी फोल फुलाईआ। तूं उस अगे होणा सवाली, जो आया धुर दा माहीआ। आपणे गृह लैणा भाली, बाहर खोजण दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे धरनीए आपणे रो के दस्स दुखड़े, कूक कूक सुणाईआ। मानस जगत जहान वेख लै भुखड़े, धीरज धीर ना कोए रखाईआ । सतिगुर प्यार नालों रुठड़े, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। गेड़ मुकण मूल ना पुठड़े, चुरासी पन्ध ना कोए कटाईआ। हर हिरदे अन्दर दिसण गुसड़े, गिले विच ख़लक खुदाईआ। मानस मानुख वेख लै टुकड़े टुकड़े, दीनां मज़्हबां वंड वंडाईआ। ग़रीबां भुखे सुक गए रुकड़े, रुकमणी दा लेखा कृष्ण नाल समझाईआ। प्रभ नूं सीस मूल ना झुकड़े, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। खुल्ही सब दी वेख लै गुतड़े, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ । मैनूं इयों जापदा नव खण्ड तेरे उजड़े, सत्तां दीपां ना कोए वसाईआ। कूक पुकारन सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बुढड़े, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। जिस प्यार विच धरनीए तेरे लँघ गए जुगढ़े, जुग चौकड़ी अक्ख उठाईआ। उह आया सम्बल वाली गुठड़े, गोबिन्द आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी खेल खिलाईआ। नारद कहे धरनीए आपणा दस्स दे अवल्ला रोग, रोगणे तैनूं दयां जणाईआ। घर घर अन्दर वेख लै सोग, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया कीता विजोग, विछोड़े विच ख़लक खुदाईआ।

हिरदा सके कोई ना सोध, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। बुद्धी दा बणे कोई ना बोध, अनुभव नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म मिले ना कोई संयोग, साचा संग ना कोए रखाईआ। कूड़ कुड़यारा दिसे भोग, भगवन रंग ना कोए रंगाईआ। भगवन उत्ते भगत रखदे रोब, आप आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। नारद कहे धरनीए आपणीआं पूरीआं कर लै मंगां, मंगतीए तैनूं दयां जणाईआ। वक्त सुहञ्जणा वेख लै चंगा, चारों कुण्ट वजे वधाईआ। पिछला समां तेरे उत्ते लँघा, अगे नवां रंग चढ़ाईआ। जिस दे चरणां विच छोंहदी गंगा, छौहर बाकां नूर अलाहीआ। तेरे सीने सिँघासण लाया पलँघा, छाती कमलापाती वेख वखाईआ। उस दा सुण नाम मृदंगा, मर्द मर्दाना रिहा वजाईआ। जिस ने लेख मुकाउणा ततां पंजां, पंचम आपणी गंढु बंधाईआ। तेरे अन्तष्करन वेखणहारा रंजा, रंजश वेखे खलक खुदाईआ। मैं सच आखदा तैनूं ब्राह्मण गंजा, नारद हस के रिहा सुणाईआ। झकोला देवे पवण उनन्जा, पवण पवणां नाल मिलाईआ। लेखा वेख लै निरअक्खर धार बवन्जा, बावन तेरी गंढु रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तैनूं इक्को सुणाए छन्दा, मुशंदगी दीन दुनी गंवाईआ।

✪ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ तेजभान दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बरो गुरु गुरदेव निगाह मारो दीप जम्बू, जमा हो के ध्यान लगाईआ। की लेखा लहिणा देणा हिस्सा समझाए शंकर शम्भू, बिन हिन्दसिआं गणत गिणाईआ। की फ़रमान देवे धुर दा दीनां बंधू, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। कवण खेल कुदरत दे कादर लग्गे चंगू, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। किस दी धार सब नूं लावे अंगू, अंगीकार हो जाईआ। दीन दुनी दी शरअ डोरी वेखो पतंगू, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर ध्यान लगाईआ। मेरे मित्रो निगाह मार लओ किस बिध लगणा लम्बू, लम्बीआं बाहवां करके दयां सुणाईआ। उस वेले दो जहान कम्बू, थर थराहट विच लोकाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला मज़्बां दी धार हुक्म अरंभू, अरंभा आपणा नाच दए वखाईआ। सारे इक्को बचन सुणावो जोती धार छन्दू, शब्दी शब्द वड्याईआ। परवरदिगार सांझा यार किस बिध दोज़ख बहिश्त स्वर्गां धार लँघू, बिन कदमां कदम उठाईआ। की लहिणा देणा मित्रो तत पंजू, पंचम भेव कवण चुकाईआ। मुहम्मदा केहड़ी धार होणा जंगू, मूसा नाल अक्ख मिलाईआ। ईसा सीस ओढण होवे नंगू, हैट नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द कवण वजाए मृदंगू, मर्द मर्दाना की सुणाईआ।

नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मेरे नेत्र वगदे हंझू, नैणां नीर वहाईआ। बेशक मेरा सीस होवे गंजू, बोदी आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बर जम्बू देश दा कवण किनारा, जम्बक की जणाईआ। भेव खोल्लणहारा, बिना सरस्वती जिह्वा जगत हिलाईआ। बोल सुणाईआं धारा, जिह्वा ज़बां ना कोए हलाईआ। बिन अक्खीआं करना इशारा, सैनत दीन दुनी बाहर वखाईआ। की हुक्म वरते करतारा, कुदरत कादर की दृढ़ाईआ। की तुहाडे होवे अख्त्यारा, मुख्त्यारो सच सच दयो समझाईआ। सारे इके वार बोल के नाअरा, नर नरायण सीस निवाईआ। नारदा उह तक लै कलि कल्की चवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीशा नूर अलाहीआ । जिस नूं सब ने मन्नया परवरदिगारा, जल्वागर इक अख्वाईआ। जो निरगुण रूप धर दोबारा, दुहरी आपणी खेल वखाईआ। जम्बू दीप दीपक कर उज्यारा, उजाला करे चाँईं चाँईंआ। जिस दा शब्दी धार तककारा, बेकरारा हुक्म सुणाईआ। उहदा रूप ना पुरख ना नारा, ततां वंड ना कोए वंडाईआ। शब्दी शब्द लगा के नाअरा, दो जहानां करे शनवाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जो कलयुग अन्तिम पावे सारा, महासार्थी बणे ख़लक खुदाईआ। उस
५६१ नूं सदा सदा निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। जो एथे उथे पावे सारा, सिर सिर आपणा हथ्थ ५६१
२४ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब अगम्म अथाहीआ। जम्बू २४
दीप कहे मेरा धर्म दी धार दाइरा, दाइआं बाइआं आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां वखावां आपणा मुशाहरा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ । प्रभ दा रूप अनूप करावां ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। दीन दुनी विच कोई हो रहे ना बहिरा, अणसुणत सुणत समझाईआ। जिस कारन पुरख अकाले दीन दयाले जोती जामा पहरा, रूप अनूप आप बदलाईआ। उस दा हुक्म संदेशा इक्को गहरा, गहर गवर समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। जम्बू कहे मेरा घाट नौ सौ चौरानवे कोह, कोह करोड़ी ध्यान लगाईआ। जिथ्थे आवाज़ सुणे सोहँ सो, सो पुरख निरञ्जण दए वड्याईआ। हरि पुरख निरञ्जण आपे हो, होका देवे चाँईं चाँईंआ। आदि निरञ्जण करके लो, लोयण धुर दा आप खुल्लाईआ। एकँकार बख्श के मोह, मुहब्बत आपणे विच टिकाईआ। अबिनाशी करता नाल छोह, शौहर बांका हो के वेख वखाईआ। श्री भगवान भेव चुका के दोअँ दो, एका एक रूप दृढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे हो, होका देवे चाँईं चाँईंआ। सतिगुर शब्द शब्द निर्मोह, जगत मुहब्बत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप समझाईआ। जम्बू दीप कहे मैं शुक्रिए विच करां

शुकराना, शंकरा तेरी खुशी मनाईआ। प्यार मुहब्बत दा अन्तिम बन्नू दे गाना, सोहणा सगन समझाईआ। खेल वखा ज़िमीं असमाना, दो जहानां भेव चुकाईआ। लेखे ला लै रवीदास चमार वाला काना, कायनात पड़दा आप उठाईआ। बचन पूरा करे जो नानक बग़दाद विच किहा मर्दाना, मुदतां दा भेव खुल्हाईआ। लेखा तक लओ ज़िमीं असमानां, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, नौजवान तेरी वड्याईआ। रहमत कर रहीम रहमाना, रहमत सच सच कमाईआ। सब दा लेखे ला ब्याना, पेशीनगोईआं जोड़ जुड़ाईआ। खुशीआं वाला आपणा दस्स तराना, तुरीआ तों बाहर बाहर पढ़ाईआ। किरपा कर मर्द मर्दाना, योद्धे सूरबीर तेरी सरनाईआ। जम्बू दीप कहे मेरे उत्ते सब तों पहले झुल्ले तेरा निशाना, सत्त रंग दे मालक सत्त रंग देणे वखाईआ। तेरा युद्ध होवे बिना तीर कमाना, शत्रु शस्त्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरा धर्म धार दा होवे इक मैदाना, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक वेख वखाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर जम्बू दीप तको निशानीआं, निशाने पूरब नाल मिलाईआ। भविख्तां वालीआं तको कहाणीआं, पेशीनगोईआं अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। अक्खरां वालीआं वेखो बाणीआं, शास्त्रां नाल मिलाईआ। निगाह मारो चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। अन्दर वड़ के तको अठसठ तीर्थ पाणीआं, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। जम्बू दीप कहे मेरा लेखा धार जम्बक, मिकनातीसी नज़र किसे ना आईआ। मेरा इक्को होवे सबक, सिख्या सच समझाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल चौदां तबक, चौदां लोक संग निभाईआ। जेहड़े सारे रहे भटक, तड़फण थांउँ थाँईंआ। बिन शरअ ज़ंजीरीआं रहे लटक, ज़िमीं असमानां नज़र कोए ना आईआ। सब दा पूरा होणा वक्त, घड़ी पल नाल मिलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे उत्ते जगत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। जो मेल मिलाए हरिजन साचे भगत, भगवन आपणी गंढु पुआईआ। लेखे लावे बूँद रक्त, तन वजूदां वेख वखाईआ। जोती जाता हो के आवे परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। राम दी आशा वेखे जो संदेशा दिता भरत, अयोध्या बाहर कदम टिकाईआ। जो अर्जन नाल काहन ने लाई शर्त, धर्म दी धार गंढु बंधाईआ। जो पैग़म्बरां सुल्हकुल दा लेखा दस्सया उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। अन्तिम सब दी पूरी करे हरस, हवस दए मिटाईआ। जन भगतां दे के दरस, दीद ईद चन्द चमकाईआ। जुग बदलणा जिस दा फ़र्ज़, फ़ाज़ल होवे धुर दा माहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मन्ज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे चरण टिकाईआ। जम्बू कहे उस दा वेस होवे असचरज, अचरज लीला आप वखाईआ। सतिगुर शब्द पए गरज, ग़रज़ आपणी ना कोए

५९२
२४

जणाईआ। कलयुग दी थाँ सतिजुग दा नाम करे दरज, दरजा बदरजा सब दा पन्ध मुकाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण मर्द, मर्द मर्दाना हो के वेख वखाईआ। नव सत दा मेटे अन्धेरा गरद, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल दीन दुनी वंडे दर्द, दर्द दु:ख भय भंजन मेहरवां मेहरवां मेहरवां मेहर नज़र उठाईआ।

✪ ८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ शिव सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जम्बू मैं तेरी चारे कूट लँघी, बिन पैरां बिन कदमां कदम बदलाईआ। मेरी धर्म धार दिसी नंगी, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मेरे अन्तष्करन एह खेल लग्गी चंगी, चंगी तरह दृढ़ाईआ। मैनूं शंकर मिल्या बाणा पहर के जंगी, शस्त्र हत्थ ना कोए उठाईआ। हत्थ कलयुग आयू फड़ी लम्बी, लम्मां पै के वेख वखाईआ। नाले अन्दरों रिहा कम्बी, जटा जूट सीस हिलाईआ। फेर निगाह मारी दुनिया वेखी डंभी, पाखण्ड विच वड्याईआ। फिर हत्थ मार के आपणी कन्ढी, धूणी ख़ाक दिती उडाईआ। फेर कर्म कांड दी वेखी डण्डी, ओझड़ राह पई लोकाईआ। फिर बिना धार तों वेखी चण्डी, जो आपणा रूप बदलाईआ। जां नैण उठाया सब दी आशा पूरब जांदी लँघी, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल तक्कया शाह सूरा सरबंगी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल संधी, लेख जणाया थांउँ थाँईंआ। नारद कहे मैं निगाह बदली मैनूं पिच्छे भज्जदी आउँदी दिसी गंगी, गंगा आपणा कदम उठाईआ। नाल यमुना आए दो टंगी, दुहरा आपणा रूप बदलाईआ। सरस्वती पिच्छे रहिण ना दिती वंडी, भज्जी वाहो दाहीआ। गोदावरी बिना आशा तों आपणी आशा पार लँघी, अग्गा पिच्छा वेखण कोए ना पाईआ। मैं पासा बदलया नाल इशारा तक्कया नूर नुराने चन्दी, चन्द चांदना की चमकाईआ। फेर ज़ोर नाल गंगा मईआ हो के कम्बी, आपणी अवाज़ दिती सुणाईआ। मैं रूप बदला के किहा मैं तेरा भुयंगी, भुजां बाहवां वेखण कोए ना पाईआ। झट सतिगुर शब्द इशारा दिता सारे आपणे आपणे हिलाओ कंधी, मोढे दीन दुनी वखाईआ। अमृत धार वेखो किस बिध होई गंदी, रस रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे झट मेरे वल गंगी उठाया नैण, अक्ख अक्ख मिलाईआ। फेर यमुना लग्गी कहिण, बिन रसना ढोले गाईआ। सरस्वती तेरा लेखा नाल त्रिबैण, त्रिबैणी दे मालक राम राम जणाईआ। गोदावरी कहे मेरा गोबिन्द साक सैण, मालक इक्को नज़री आईआ। नारद किहा कमलीओ तुहाडा पाणी

दा वगदा वहिण, जलधारा नाल मिलाईआ। ज़रा निगाह मार लओ की इशारा दिता बाल्मीक विच रमायण, रमते रमते तुहाडा पन्ध मुकाईआ। तुसीं वसण वालीआं विच हिन्दवायण, हिन्दसा इकाई वाला नाल मिलाईआ। उह वेख लओ कलयुग कूड़ी क्रिया बण गई डैण, डौरु डंक आपणा रही वजाईआ। तुहाडे विछड़ गए साक सज्जण सैण, ब्राह्मण पंडत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। गंगा कहे नारदा सुण मेरा संदेश, सतिगुर शब्द शब्द जणाईआ। मेरे खुल्ले वेख लै केस, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। मैं तक्कया इक नरेश, नर नरायणा धुरदरगाहीआ। जिस ने दीन दुनी विच पाया कलेश, कला आपणी इक प्रगटाईआ। मैनूं संदेशे दे के गया शेष, दो सहँसर जिह्वा मुख सहसर नाल हिलाईआ। मैं एसे कारन पुरख अकाल दे होई पेश, पेशतर आपणा हाल जणाईआ। उह तक लै जिस शंकर ने सीस उडाया आपणे सुत गणेश, गणपति की जणाईआ। उह वेखणहारा देस परदेश, दो जहानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे यमुना होर अगम्मा गीत गांदी, खुशीआं नाल सुणाईआ। सीस रही ना कोए परांदी, लाल गुलाला रंग ना कोए चढ़ाईआ। मैं मईआ सब दी बण गई बांदी, कलयुग आपणी कला वरताईआ। मैनूं कसम सूर गाँ दी, रो रो दयां दुहाईआ। वड्याई रही नहीं किसे तीर्थ तट थाँ दी, थान थनंतर रोवण मारन धांहीआ। वड्याई रही नहीं मेरी शकंगणा वाली बांह दी, लाल रंग हथ्थ ना कोए रखाईआ। मेरे उत्ते विद्वानां दी बुद्धी होई काँ दी, काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। नारद कहे मैं निगाह मारी रोंदी दिसी सरस्वती, सुरत सच ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट मस्ती, मस्त दीवाना नज़र कोए ना आईआ। त्रबैणी धार मेरी उजड़न वाली बस्ती, खण्डर ख़ाक दिसे लोकाईआ। मैं तकण आई इक्को हस्ती, बिन नैणां दर्शन पाईआ। एह खेल जिसदे वस दी, वास्ता उसे चरण टिकाईआ। मैं वणजारी उस दे जस दी, सिफ्तां नाल सलाहीआ। नाले रोंदी नाले हसदी, दोवें रूप बदलाईआ। कलयुग धार वेख लै कूड़ कुड़यार भक्ख दी, साचा संगी संग ना कोए निभाईआ। शर्म रही नहीं मेरे उत्ते किसे अक्ख दी, अक्खरां वाले करन लड़ाईआ। माया राणी वेख लै नचदी, घूँगट मूल ना कोए रखाईआ। कीमत रही ना लज पत दी, पतित होई लोकाईआ। वे नारदा मैं एसे करके वास्ता घतदी, रो रो दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सद आपणी दया कमाईआ। नारद कहे मैं निगाह मारी गोदावरी मेरी तकदी बिना अक्खां तों बोदी, बुद्धीवान समझ कोए ना पाईआ। मैं हस के किहा नी तैनूं प्रभू

क्यों कढ्या आपणी विच्चों गोदी, गोद विच ना कोए रखाईआ। तेरा लेखा नाल उस वेदी सोढी, जो गोबिन्द धुर दा माहीआ। जिस दा फ़ल किसे नज़र ना आए गुंचा फुल डोडी, डण्डावत सब दी वेख वखाईआ। गोदावरी कहे नारदा मैं उसे दे प्यार दी रोगी, दु:ख सकां ना कोए समझाईआ। जो मेरे धर्म धार दा जोगी, जुगती आपणी गया समझाईआ। जिस वेले कलयुग दुनिया हो गई लोभी, लालच विच कुरलाईआ। गोदावरी तेरा अमृत रस रहे मूल ना धोबी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। उस वेले मेरा ठाकर आउणा मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। तूं उस दी बणना खोजी, खोजणा थांउँ थाँईंआ। मैनूं इयों जापदा अन्त तुहाडी मुक जाणी रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम आपणी कला वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ । नारद कहे मैं रैण सबाई घुम्मया, पन्ध नज़र कोए ना आईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल किनारा चुम्मया, बिन रसना रस चखाईआ। फेर शब्द अगम्मा सुणया, अणसुणत दिता दृढ़ाईआ। मैं मालक ख़ालक कुंन कुन्नया, कायनात मेरी दुहाईआ। मैं लख चुरासी विच्चों भगत प्यार चुणया, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप चढ़ाईआ।
५६५ नारद कहे मैनूं गंगा सहिज नाल मारी थापी, थपक दिता हिलाईआ। पंडता आपणी पुराणी कढ लै कापी, बिन अक्खरां ५६५
२४ अक्खर जणाईआ। जिस विच इक्को प्रभू दा जापी, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल होणा वड प्रतापी, दो २४
जहानां वजे वधाईआ। जिस नूं सब ने मन्नणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर कहि के सीस निवाईआ। जो कलयुग मेटे अन्धेरी राती, सतिजुग सति चन्द चमकाईआ। गंगा कहे मेरा सीना पाड़ के वेख लै छाती, छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं इयों जापदा पंडता किसे घर जगणा दीवा नहीं कोई बाती, बेवतन दिसे लोकाईआ। मैं सोचदी रही सारी राती, सुत्तयां नींद कोए ना आईआ। फेर निगाह मारी आपणे विच्चों झाती, झाकी लई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म की वरताईआ । नारद कहे यमुना सरस्वती तुसीं होईआं क्यों दिलगीर, गोदावरी नाल मिलके दयो सुणाईआ। सारीआं कहिण साडे वस्त्र लथ्थे चीर, ओढण नज़र कोए ना आईआ। साडा अमृत रस रिहा ना सीर, कलयुग विख भरी दिसे लोकाईआ। साडा नेत्र वगे नीर, रो रो कुरलाईआ। बौहड़ी वेला आया अन्त अख़ीर, आख़र दईए समझाईआ । सानूं देवे कोई ना धीर, धीरज रहिण कोए ना पाईआ। पंडत पांधे घत गए वहीर, कलयुग वहिण गया रुढ़ाईआ। धर्म दी रही ना कोई तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी ब्राह्मण वाली महूरत, नछत्तर सच सच

जणाईआ। मैनूं खुशी नाल वखाओ आपणी सूरत, सुतीओ लओ अंगड़ाईआ। पिछला पन्ध छडो नेड़ दूरत, अग्गा वेखो चाँईं चाँईंआ। जे कलयुग पाँधी हो गए मूर्ख मूढ़त, आपणा आप गए बदलाईआ। सतिगुर शब्द दी सुणो तूरत, तुरत तुहानूं दए समझाईआ। जिस कलयुग नाता तोड़ना कूड़त, सति सच नाल मिलाईआ। उस दी चरण मस्तक लाओ धूड़त, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जो आसा मनसा पूरी करे पूरत, पूरन ब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती सहिज नाल मुख तों चुक के पड़दा, नैण नैणां विच्चों मटकाईआ। फेर वेख्या लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ खोज खुजाईआ। झट नारद तूं मेरा मैं तेरा पढ़दा, बिन हरफ़ हरूफ़ सुणाईआ। कदे अन्दर कदे बाहर वड़दा, घराना नज़र कोए ना आईआ। कदे रूप वखाए आपणे सरूप धड़ दा, कदे जोत नूर रुशनाईआ । झट गंगा दी बांह फड़दा, हलूणे नाल हिलाईआ। ओह सतिगुर तक लै जो ना जम्मे ना मरदा, मर जीवत रूप ना कोए दरसाईआ। जो आदि जुगादि सब किछ करदा, करनी दा करता इक अख्वाईआ। जो कमलीओ तुहाडे अमृत भण्डारे भरदा, अंमिओं रस आप वखाईआ। उह लेखा जाणे कलयुग कल दा, कल कातीआं करे सफाईआ । जो मालक निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना राजे बलि दा, बावन मेला सहिज सुभाईआ। उह सम्बल सिँघासण आपणा मलदा, सच दुआर सोभा पाईआ। जो दिवस रैण संदेशे घलदा, रैण सबाई तुहानूं रिहा समझाईआ। उस दा वसेरा नहीं किसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत झल्ल दा, झल्लीओ आपणी झलक दए वखाईआ। जो सब नूं फिरे छलदा, अछल छल हो के आपणा हुक्म वरताईआ । मैं सच दस्सां उह सेई आया होया कल्ल दा, कलम्यां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जाता हो के भगतां अन्दर रलदा, रल मिल आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती झट नेत्र पाया सुरमा, नूर नूर विच रखाईआ। नारदा साडे अन्दर फ़ुरया फ़ुरना, पता नहीं किस दिता सुणाईआ। असीं हुणे उस पासे नूं तुरना, जिथ्थे तुरत मिले धुर दा माहीआ। किसे दे मोड़यां नहीं मुड़ना, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जिस दे चरणां अन्तिम सब नूं पैणा जुड़ना, जोड़ी हरि जगदीश नाल रखाईआ। साडा जल पाणी दा वहिण उपरों नीचे रुढ़ना, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दे विच पाहन पाथर खुरना, मिट्टी ख़ाक रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तुसीं प्रभू दे प्यार विच वड्डीआं, वड्डे दी वड वड्याईआ। मैं कूक सुणावां चुक के आपणीआं अड्डीआं, अड्डी

५६६ २४

चोटी ज़ोर लगाईआ। आह वेख लओ मैं पुराणीआं लिख्तां तुहाडीआं कढ्ढीआं, जुग चौकड़ी नाल रलाईआ। जिन्नां विच लिख्या जिस वेले कलयुग विच परम पुरख ने आउणा तुसां सब दीआं चुक्कके लै जाणीआं हडीआं, जो तुहाडे विच मानस मानव गए टिकाईआ। बेशक तुसीं प्रभू दे प्यार विच अज्जे नढ्ढीआं, नौजवाना नज़री आईआ । तुहाडीआं जोतां पाणी दी तहि अन्दर जगीआं, बाहर दिसे ना कोए रुशनाईआ। जे प्रभू नूं मिलणा ते सिर ते पा लओ सग्गीआं, सगनां नाल चढ़ना चाँईं चाँईंआ। तुहाडीआं सोहणीआं होवण झग्गीआं, अंगीआं अंग नाल सुहाईआ। तहिमतां साड़ीआं होवण लम्बीआं, कन्नी कन्नी नाल जुड़ाईआ। मस्तक बिन्दीआं होवण चन्दीआं, चन्द चांदने नाल रुशनाईआ। मेंढी सीस वाहीआं होवण कंघीआं, पट्टी धर्म धार बंधाईआ। तुहाडीआं मनसा होवण ठण्डीआं, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। आशा सतिगुर नाल होवण गंढ्ढीआं, विछोड़ा विच ना कोए रखाईआ। तुसां भज्जणा वाहो दाही पगडण्डीआं, बिखड़े राह पन्ध मुकाईआ। सब ने इक्को वार गाउणा छन्दीआ, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। अन्दर वासना रहिण मूल ना गंदीआं, कलयुग जीवां धारा बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ।

५६७ गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहिण साडा रूप होवे अणहोणा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। पंडता असीं प्रेम प्यार विच ५६७

२४ प्रीतम माही मोहणा, मुहब्बत विच समाईआ। आपणा उस दे अगे दस्सणा रोणा, रो रो हाल सुणाईआ। क्यों मालका साडा २४

हक हकूक खोहणा, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे यमुना गोदावरी सरस्वती गंगा तुहाडा रूप अलाही होवे हिन्दी, हिन्द भारत नाल वड्याईआ। मस्तक लाल होवे बिन्दी, वृंदावन दा काहन नाल मिलाईआ । तुहाडी आशा होवे ज़िंदी, ज़िंदगी दीन दुनी तजाईआ। तुहाडी इक इक लिट होवे खिण्डी, बौरा रूप दरसाईआ। तुहाडी पवित्र होवे पिण्डी, आपणा रंग बदलाईआ। किसे दा रूप होवे ना बंगाली सिन्धी, संधी वेखणी चाँईं चाँईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म की वरताईआ। चारे कहिण नारद असीं फिरीए विच उजाड़, किनारा घाट तट नज़ारा नज़र कोए ना आईआ। साडे वस्त्र लहिंगे कलयुग जीवां दिते पाड़, अंगी अंग ना कोए सुहाईआ। साडी दुखी होई नाड़ी नाड़, बूँद बूँद रही कुरलाईआ। साडा वक्त दुहेला समां दिसे माढ़, धर्म दी धार धर्म ना कोए जणाईआ। झट नारद मुख बोलया पाड़, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नी उह मालक ख़ालक धुर दा लाड़, नर नरायण इक अख्वाईआ। जिस सब दे पिच्छे लाई कलयुग धाड़, कूड़ी क्रिया कूड़ मिलाईआ। उह अन्तिम सब नूं देवे झाड़, मिट्टी ख़ाक ख़ाक रुलाईआ। चरण कवण दुआरे लए वाड़, गृह

मन्दिर इक वखाईआ। जिथ्थे अग्नी अग्ग ना लग्गे हाढ़, ततव तत ना कोए तपाईआ। नीं तुसीं चलदीआं उत्तों चोटी पहाड़, अन्त सागराँ विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। नारद कहे चारे वेखो चहुं जुगां, जुगती आपणी नाल मिलाईआ। सब दा वक्त वेख लओ पुग्गा, अगे अवर ना कोए वधाईआ। तुहाडा लए कोई ना भुग्गा, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। इक्को प्रभ दा नाम होणा उग्घा, उग्घण आथण वजे वधाईआ। वेखो तुहाडे नाल सीस निवाए बसुद्धा, धरनी धरत धवल धौल बैठी माण गुआईआ। जिस उत्ते होवण वाला युद्धा, कलयुग योद्धा बीर लए अंगड़ाईआ। तुहाडा सीर धर्म दी धार दिसे ना दुद्धा, अमृत रस ना कोए चुआईआ। उह वेख लै सब दा दीपक बुज्झा, नूर नज़र ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाए सब दा मुद्दा, मुदतां दे लेखे पूर कराईआ।

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ गूहड़ा राम दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

५६८
२४

गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहे साडा खेल नाल बेपरवाहया, बेपरवाही धुरदरगाही आपणी दया कमाईआ। जिस निरगुण धार सरगुण साडा रचन रचाया, जल थल दे मालक दिती वड्याईआ। अमृत रस विच भराया, अमरापद दा मालक होया आप सहाईआ। साडा रूप अनूप आपणे विच छुपाया, ज़ाहर नज़र किसे ना आईआ। लहिणा शंकर नाल जुड़ाया, जटा जूट मिल के वजी वधाईआ। पर्वत टिल्यां संग बणाया, सगले साथी तेरी खेल समझ किसे ना आईआ। तीर्थ तट्टां नाल सुहाया, किनारयां वजदी रही वधाईआ। साधां सन्तां मेल मिलाया, रिषीआं मुनीआं जोड़ जुड़ाईआ। शास्त्र ग्रन्थां नाल सजाया, मन्दिर मठां रंग चढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वंड वंडाया, सोहणी बणत बणाईआ। साडा चरण चरणोदक जीवां जंतां मुख चुआया, रसना रस वखाईआ। असीं मिल के तेरा ढोला गाया, मालक तेरी इक सरनाईआ। जोती जाते तेरे विच आपणा आप लुकाया, लोक परलोक नज़र किसे ना आईआ। जोती जाते तेरा नूर जोत जोत रुशनाया, पुरख अबिनाशी डगमगाईआ। हथ्थ बन्नृ के बिन कदमां सीस झुकाया, सरन सरनाई लई सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। चारे कहिण प्रभू तेरे सरन रखी ओट, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साडे अन्तर रहिण ना देणा खोट, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। साडे पाप कलेवर देणे धोत, दुरमति

मैल कर सफ़ाईआ दर्शन करीए तेरी निर्मल जोत, जोती जाते तेरे विच समाईआ। साडी वखरी रहे कोई ना गोत, ज़ात पाती पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहे साडी तेरे अगे बन्दना, हथ्थ बन्न् के सीस निवाईआ। तूं मालक खालक विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड तेरी सरनाईआ। तूं कूड़ी क्रिया कलयुग दंडणा, सतिगुर करनी सच सफ़ाईआ। सानूं अंगीकार लाउणा अंगना, दर ठांडे देणी वड्याईआ। तेरा मस्तक धूड़ी लाईए चन्दना, टिक्के धुर दे ख़ाक रमाईआ। साडा वहिण तेरे चरण कवलां विच वंञणा, वञ्झी हाथ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सूरे सरबंगना, सतिगुर तेरी इक सरनाईआ।

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ फत्तू राम दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती आपणा वेला लओ विचार, वक्त गया हथ्थ ना आईआ। दर ठांडे करो पुकार, कूक कूक सुणाईआ। चरण कवल जाउ बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। तुहाडी सुणे गिरयाज़ार, गृह गृह खोज खुजाईआ। लेखा दस्सो की होवे तुहाडे तट किनार, की घाटां खेल खिलाईआ। की कलयुग जीव करन विभचार, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। की माया मोह कीता दुख्यार, ममता रूप बणी कसाईआ। की कलयुग कप्पड़ काया दिता उतार, ओढण भूषन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। नारद कहे सुणो चारे सख़ीआँ, सच दयां सुणाईआ। आपणा हाल दस्सो वेख्या अक्खीआं, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। किस कारन घर टिकाणे छड के आईआं नस्सीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। तुहाडीआं जगत प्यार दीआं टुट्टीआं रस्सीआं, बन्धन बंध ना कोए रखाईआ। बिना पाणी तों तड़फो मच्छीआं, बहिबल आपणा आप कराईआ। क्यों तुहानूं पैंदीआं ग़शीआं, सुरती सुरत ना कोए रखाईआ। क्यों वैराग विच गईआं पच्छीआं, पश्चिम आईआं वाहो दाहीआ। क्यों उलझण विच फसीआं, फ़ैसला दयो दृढ़ाईआ। झट नेत्र रोवण लगीआं अक्खीआं, नैणां नीर वहाईआ। असीं लखों होईआं कक्खीआं साडी कीमत जगत कोए ना पाईआ। साडे उत्ते पंडतां पांध्या प्रभू दे नाम दीआं पाईआ पतीआं, हिस्से माया वाले रखाईआ। धीरज रिहा किसे ना यतीआं, सति विच ना कोए समाईआ। साडीआं अन्दरों आशा तपीआं, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। नारद कहे क्यों तुहाडे अन्दर आया ग़मा, ग़मगीन नज़री आईआ। क्यों तुहानूं चढ़या दमा, सांस स्वास ल्या बदलाईआ । झट सब ने किहा जगत दी सृष्टी हो गई चम्मा, चम्म दृष्टी विच लोकाईआ। प्रभू ने किहो जेहा ल्यांदा समां, सच विच ना कोए समाईआ। धर्म दा रिहा हद्द ना बंना, हदूद रहिण कोए ना पाईआ। असीं सब कुछ सुणया आपणे कन्नां, कायनात रोवे मारे धाहीआ। निशान मिटणा तारा चन्ना, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। अगे सफ़र रिहा नहीं लम्मा, पाँधी बैठे पन्ध मुकाईआ। सानूं संदेशा दिता बिना कन्नां तों ब्रह्मा, ब्रह्म भेव गया जणाईआ। विष्णूं विश्व दी धार दस्सया खेल नवां, नर निरँकार की कराईआ। शंकर किहा मैं लेखा रहिण नहीं देणा हमां तमां, तामस तृष्ना दूर कराईआ। जिस कारन असीं चारे होईआं जमां, चौथे जुग वेख वखाईआ । साडा किहो जेहा होणा कर्मा, कर्म कांड दा भेव देणा खुलाईआ। किस बिध सतिजुग प्रगटे धर्मा, धर्म धार दृढ़ाईआ। झगड़ा मुके वरनां बरनां, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। किस बिध इक प्रभू दी सब ने रखणी सरना, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। सीस झुके जगदीश चरणां, चारों कुण्ट वजे वधाईआ। जिस ने आपणे हुक्म नाल सब कुछ करना, करनी दा करता आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिस स्वामी सब दा लड़ फड़ना, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ।

६०० २४

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ चरण दास दे गृह पिण्ड सेई कला ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तुसीं क्यों दिसो अक्कीआं, गुस्से विच करवट बदलाईआ। की जगत जहान पन्ध मार मार थक्कीआं, पाँधी हो के भज्जीआं वाहो दाहीआ। तुसीं आपणीआं धारा पिछलीआं वेखो पक्कीआं, पारब्रह्म की समझाईआ। मैं खेल दस्सां अनझकीआं, झाका नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त जिस वेले पवित्र रहीआं कोई ना ढकीआं, गृह मन्दिरां ना कोए वड्याईआ। सब दीआं आशा होणीआं खट्टीआं, खटकल दिसे लोकाईआ। प्रेम प्यार नाल ख़ाली होणीआं मट्टीआं, भाण्डे सच ना कोए भराईआ। माण रहिणा नहीं अक्खरां वालीआं पट्टीआं, सिफ्तां विच ना कोए सलाहीआ। कमलीओ तुहानूं बणना पैणा जट्टीआं, जंगलां बेल्यां खेतां विच भज्जो वाहो दाहीआ। उस वेले पैग़म्बरां दीआं सदीआं होणीआं टप्पीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। धर्म दीआं धारां होणीआं छपीआं, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रभ दा नाम हथ्थ ना आवे रतीआं, जगत तराज़ू तोल ना कोए तुलाईआ। माण रहिणा नहीं राग छतीआं, छत्रधारी ना कोए

वड्याईआ। तुसीं सच दसो किस बिध आईआं इक्ठीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। किस साहिब दे सरनी ढठ्ठीआं, माण ताण गंवाईआ। केहड़ी विकीआं विच हट्टीआं, कीमत जगत रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप समझाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती क्यों मस्तक पाई तिउड़ी, खुशी ग़मी विच बदलाईआ। तुसीं आपणी वेखो हरि की पौड़ी, बिना डंडयां खोज खुजाईआ। सब ने रो के किहा उथे प्रेम दी भगती रह गई थोड़ी, सच प्रेम ना कोए कमाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना जोड़ी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। साधां सन्तां जीवां जंतां आशा हो गई कौड़ी, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। साडी दुहाई साडी बौहड़ी, रो रो दईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। नारद कहे तुसीं किस बिध आईआं भज्जीआं, भजन बन्दगी केहड़ी गाईआ। केहड़ी कूटे आ के सजीआं, कवण सज्जण मिल्या धुर दा माहीआ। क्यों प्रेम प्रीती अन्दर बज्झीआं, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। किस दी शरअ विच रखो लज्जीआं, नैण नैण शरमाईआ। चारे हसीआं कढुके दन्दीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। सानूं इक्को साहिब दीआं पाबन्दीआं, दूजा नज़र कोए ना आईआ।
६०१ २४ साडा ना कोई घाट ना कोई कन्ढीआं, किनारे तट ना कोए सुहाईआ। असीं भज्जीआं आईआं ओझड़ डण्डीआं, पगडण्डी ना कोए रखाईआ। साडा नाता तुट्टे नालों पाखण्डीआं, कलयुग क्रिया ना कूड़ हल्काईआ। साडा लेखा लावे आपणे अंगी आ, अंगीकार आप हो जाईआ। साडीआं पूरीआं करे संधीआं, लेख भविख्त ना कोए समझाईआ। असीं तूं मेरा मैं तेरा गाईए छन्दीआं, सोहँ ढोला सच सलाहीआ। साडीआं अक्खां रहिण ना अन्धीआं, निज लोचन करे रुशनाईआ। असीं सच दुआर आईआ लँघीआं, दर दुआर मिले वड्याईआ। सानूं याद आउँदी रवीदास वाली रम्बी आ, जो ढोरां खल्ल लुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा सच सच दा संगीआ, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ। ६०१ २४

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मेरा निक्का जेहा मुख, वड्डी गल्ल कहिण कुछ ना पाईआ। तुसां बड़ा माणया सी सुख, सुख विच आपणा झट लँघाईआ। पता नहीं किस बिध प्रभू ने तुहानूं दिता दुःख, दुख्यारो तुहानूं दयां सुणाईआ।

तुसीं बदल के आईआं आपणा रुख, भज्जीआं वाहो दाहीआ। मैनूं इयों जापदा तुहानूं लग्गी होवेगी भुख, भुखीओ दयां सुणाईआ। मैं तुहानूं खुआवां कुछ दा कुछ, हथ्थ बोदी उत्ते टिकाईआ। भावें मेरी नहीं कोई मुच्छ, मुश्किल सब दी हल कराईआ। मैं प्यार विच रिहा पुछ, पुश्त पनाह हथ्थ देवां टिकाईआ। किते वेख्यो मेरीआं गल्लां तों ना जायो रुस्स, हासी करनी मेरी आदि दी रीती चली आईआ। पुरातन गल्लां पुछण दा मैनूं भुस, मैं सच दयां सुणाईआ। मैनूं हुक्म दिता परमात्मा उस, जिस दी उस्तत करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ । नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तुहाडे नाल मेरा केहड़ा रिश्ता, मैनूं दयो सुणाईआ। मेरा गृह टिकाणा तुहानूं केहड़ा दिसदा, कवण कूटे सोभा पाईआ। मैं ब्राह्मण ब्रह्म धार परदेशी नित दा, जुग जुग भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे कोल इक्को हिस्सा साचे हित दा, हितकारी हो के दयां सुणाईआ। मैं जुग चौकड़ी सब नूं प्यार नाल जित्तदा, सो प्यार तुहाडे अन्दर देवां टिकाईआ। तुहाडा मेल होवे परमेश्वर पित दा, पारब्रह्म आपणा रंग देवे वखाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा अज्ज दी घड़ी थित दा, घड़ी पल सोहणी नज़री आईआ। तुसीं विचार ना करयो आपणे चित दा, चेतन हो के लओ अंगड़ाईआ। साडा लहिणा देणा लेखा होवे इक दा, एकँकार मिल के वजे वधाईआ। जे तुहाडा मन मेरे नाल होवे टिकदा, टिकटिकी मेरे वल लगाईआ। मैं वेखो पांधा तुहाडे अगले लेख लिखदा, लेखणी चले चाँईं चाँईंआ। कलयुग विच रूप साचे सिख दा, सिख्या मेरे अन्दर आईआ। मैं वणजारा बणया सब दे भविख दा, भविख्त आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे गंगा मैं वक्त लैणा नहीं चाहुंदा बाहला, छेती छेती दयां समझाईआ। धुर दा हुक्म मैनूं मिले काहला, तुरदा आवे वाहो दाहीआ। मेरा तेरे नाल नहीं कोई रिश्ता मेरा जीअ करदा तेरे भ्रा नूं बणावां आपणा साला, जगत दी वंड वंडाईआ। इस दे विच भावें मेरा प्रभू दे दुआर विच निकल जावे दुवाला, ख़ाली हथ्थ दयां वखाईआ। कुछ वस्तू मेरे कोल खा ला, जिस दा रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। झट नारद दन्दीआं कढ्ढके प्या हस, मुस्कराहट बुल्ह्लां उत्ते लिआईआ। गंगी मेरा चले कोई ना वस, तैनूं सच दयां समझाईआ। बेशक तूं दूरों आई नस्स, भज्जी वाहो दाहीआ। मेरा दिल करदा तेरी माँ नूं बणावां आपणी सस्स, तेरे नाल रिश्ता ना कोए जणाईआ। एह मेरी दुनिया वाली नहीं गप्प, झूठी गल्ल ना कोए सुणाईआ। मैं कोई ब्राह्मण नहीं कोई बाल नहीं कोई पंडत नहीं मैं नूर अलाही रब्ब, जोती जाता रूप प्रगटाईआ। मेरी धार उत्ते दो जहानां होवे कोई

ना शक्क, शकवे सब दे मेट मिटाईआ। तेरे पर्दे लवां ढक, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अमृत धार तेरे विच्चों देवे रस, रस्ता रस्ते विच्चों बदलाईआ।

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ फ़कीर सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहिण नारद साडी आशा बड़ी प्यारी, प्रेमीआ प्रेम नाल जणाईआ। साडा रूप तक लै स्त्री मर्द नहीं कोई नारी, तन वजूद खोजण चाँईं चाँईंआ। साडा ततां वाला नहीं कोई हार श्रृंगारी, वस्त्र अंग ना कोए लगाईआ। साडी मनसा जगत ममता नालों कँवारी, कोटन कोटि जुग गए बिताईआ। असीं आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रभू दी बण के रहीआं धारी, धरनी धरत धवल धौल उत्ते भज्जीआं वाहो दाहीआ। साडा मेला बणया रिहा नाल विष्न ब्रह्मा शिव नाल जगत सँघारी, सोहणा संग बणाईआ। असीं दर्शन कीते जगत अवतारी, बिन नैणां नैण उठाईआ। साडी औध बीती केते जुग वारी, चौकड़ीआं गईआं पन्ध मुकाईआ। साडे उत्ते करना एतबारी, तैनूं सच दईए सुणाईआ। साडे अन्दर कदी आई नहीं सी ख्वारी, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। पता नहीं कलयुग किहो जेही लाई बीमारी, जिस दी औखध हथ्थ किसे ना आईआ। असीं रोईए ज़ारो ज़ारी, बिन नैणां नीर वहाईआ। सानूं सतिगुर शब्द ने कीती ख़बरदारी, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। उठो वेखो खेल तको जोत निरँकारी, जो नर नरायण नूर अलाहीआ। जो सब दे लहिणे देणे कर्जे रिहा उतारी, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुर बणे पुजारी, निव निव सीस निवाईआ। जिस ने जुग जुग आपणी पैज सुआरी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उह आया कलि कल्की अवतारी, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। उस दे चरण सरन जाओ बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जो कलयुग कला मेटे कुड़यारी, कूड़ कुटम्ब दा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग सति धर्म करे उज्यारी, उजाला होवे थांउँ थाँईंआ। उस दे चरण बणो पनिहारी, पनघट आपणा लओ बणाईआ। जो अमृत रस देवे ठण्डा ठारी, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे अगम्म अपारी, अलख अगोचर आपणा हुक्म आपणे हुक्म विच्चों वरताईआ।

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे यमुना गोदावरी सरस्वती गंगा तुसीं कदो दीआं वगदीआं, वहिणां विच आपणा पन्ध मुकाईआ। सच दस्सो तुसीं प्रभू दीआं की लगदीआं, नाता जगत जहान दृढ़ाईआ। बिन कदमां सदा भजदीआं, भज्जो वाहो दाहीआ। दर्शन कर मूल ना रजदीआं, तृष्ना तृखा ना कोए बणाईआ। मैं ते खेलां दस्सां अज्ज दीआं, पिछली कथा ना कोए दृढ़ाईआ। तुसीं किस प्यार मुहब्बत विच बझदीआं, बन्धन जगत ना कोए तुड़ाईआ। किस दुआरे बहि के सजदीआं, साजण सजणूआ कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तिन्ने रहीआं आख, चौथी धर्म धार वड्याईआ। साडे अन्तष्करन भाख्या गई भाख, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जिस सब दी पूरी करनी आस, तृष्ना सब दी वेख वखाईआ। सानूं होर संदेशा दए शंकर उत्तों कैलाश, हुक्म हुक्म विच्चों दृढ़ाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी आपणे अन्दर इक इक डिगदी वेखो लाश, लशकर गणती गणत विच ना आईआ । जो बैठे पवण विच बिना स्वास, तुहाडी तहि ते डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप समझाईआ। चारे कहिण नारद साडे खेल अगम्मे सतिगुर दे, सच सच दईए दृढ़ाईआ। असीं हुक्म मंने धुर दे, धुर दे हुक्म विच सीस निवाईआ। बेशक साडे विच अगिणत सुट्टे मुरदे, मर जीवत रूप ना कोए प्रगटाईआ। साडे ख्याल तक लै जो वहिणा विच रुढ़दे, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । नारद कहे मेरे कोल नव नव चार दीआं रसीदां, बिन अक्खरां दयां वखाईआ। जिस विच सब नूं होईआं ताकीदां, हुक्म होया धुर दे माहीआ। कलयुग अन्तिम सब दीआं पूरीआं होणीआं उम्मीदां, तृष्ना विच ना कोए हल्काईआ। सब ने खोल्हणीआं आपणीआं नीदां, ग़फ्लत आलस विच ना कोए वड्याईआ। सच दस्सो तुहाडे विच्चों मुर्दा फेर निकलया कोई ना जीउँदा, जीवत जगत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गंगा कहे मेरे अन्दर आउँदीआं रहीआं असतीआं, दीन दुनी भेंट कराईआ। मैनूं जीवां जानां दिसदीआं सस्तीआं, कीमत करता कोए ना पाईआ । मेरे अन्दर ब्राह्मणां वसाईआं वस्तीआं, हिस्से वंड वंडाईआ। असीं सब कुझ बिना भेद भाव दे दस्सदीआं, पर्दे परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। चारे कहिण असीं रोईए साह उभिआ, हौकयां विच दुहाईआ। जो साडे अन्दर खुभिआ, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जे कोई

प्रभू दी याद विच होवे डुब्या, फेर फड़ के लईए तराईआ। साडा अज्ज तक समझया ना किसे मुद्दया, मुदतां दा भेव ना कोए जणाईआ। चतुराई चले ना किसे बुध्या, अक्ल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा लेखा जाणे उत्ते बसुध्या, बेसुध हो के दईए जणाईआ।

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ मेवा राम दे गृह पिण्ड गोकले चक ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे चारे उठावो हथ्थ, चार कुण्ट लओ घुंमाईआ। गंगा लाह दे आपणी नक्कों नथ, कंगण रवीदास वाला दे वखाईआ। यमुना आपणी कथा कहाणी दस्स, कान्हा कृष्णा की दृढ़ाईआ। सरस्वती तूं किस बिध होईउँ वख, वसल विच गई समाईआ। गोदावरी किस बिध गोबिन्द चरण गई ढठ, आप आपणा आप मिटाईआ। निगाह मार लओ तीर्थ अठसठ, लोचन नैण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भरम आप मिटाईआ। चारे कहिण नारद साडे अन्दर हुन्दीआं चोरीआं, चोर यार बैठे आसण लाईआ। माण रिहा ना किसे घोरीआं, घोरी बैठे मुख छुपाईआ। साडीआं कूड़ कुड़यारां हथ्थ आईआं डोरीआं, सच नाम ना कोए बंधाईआ। माया ममता नाल बणीआं जोड़ीआं, जोड़ी जगदीस ना कोए जणाईआ। साडी दुहाई साडी बौहड़ी आ, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। साडी अन्तिम आयू रह गई थोड़ी आ, थुड़े थिड़के भज्जे वाहो दाहीआ। पता नहीं धरनी उत्ते किथ्थे किथ्थे गडीआं रहिणीआं मोड़ीआं, मोड़ा नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे अज्जे वक्त दुहेला, सच दयां सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दुनी नालों वेखो वेहला, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द चेला, चेला गुर इक्को रंग दरसाईआ। जो मातलोक वस्या धाम नवेला, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। तुहाडा मिलण दा दिवस अज्ज पहला, पहली वार दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जे मिलणा होवे जगदीश, जुगती दयां जणाईआ। पहलों आपणे ढको सीस, ओढण लओ रखाईआ। फेर सुणो हमारी हदीस, सच सच पढ़ाईआ। जो मालक बीस इकीस, हरि करता धुरदरगाहीआ। उस दा नाम गाउणा बिना दन्द बतीस, बिन रसना रस वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ । नारद कहे मेरा सुणो धर्म ज्ञान, अक्खरां बाहर समझाईआ।

आपणे अन्तष्करन दा करो इश्नान, दुवैती मैल धुआईआ। मेरा हुक्म करो परवान, जो परम पुरख सुणाईआ। इक्को सब ने मन्नणा राम, रम्ईआ इक गुसाँईआ। इक्को इष्ट रखणा काहन, जो लख चुरासी सखीआँ रिहा हंढाईआ। इक्को सब ने मन्नणा अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। इक्को शाहो भूप सुल्तान, हरि करता इक अख्वाईआ। जे उस नूं मिलणा विच जहान, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती आपणी लओ अंगड़ाईआ। पहलां अन्दरों कढ लओ आपणा मान, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। मुखों कहो असीं बाली बुद्ध अन्जाण, साडी चले ना कोए चतुराईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम होणा निगाहबान, दो जहानां नैण उठाईआ। जे तूं वसदा उत्ते असमान, ज़िमीं उत्ते तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडी बेनन्ती करे परवान, परवाना आपणा हुक्म हथ्थ फड़ाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ जसवन्त कौर दे गृह पिण्ड कोठे निहालपुर सिम्बल ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जे सतिगुर दर्शन पाउणा, पवण पाणी तों बाहर ध्यान लगाईआ। पंचम पंचम तत माण मिटाउणा, पंच विकार ना वंड वंडाईआ। जोती जाता इक्को परम पुरख मनाउणा, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती दर्शन कर कर बिगसाउणा, आपणी खुशी बणाईआ। धूड़ी टिक्का ख़ाक रमाउणा, रहमत सच दे कमाईआ। जिस सब दा वक्त सुहाउणा, सुंञी वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक वखाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहिण नारद असीं दर्शन करना ज़रूर, ज़र्रे ज़र्रे दा मालक वेख वखाईआ। जिस दा आदि जुगादि नाम मशहूर, मशवरयां वाले कलमे सिफ्त सलाहीआ। उस दा जल्वा तकणा नूर, जोत नूर नुराना इक अख्वाईआ। जो मस्ती देवे सरूर, खुमारी आपणे नाम चढ़ाईआ। अगे सच दा दस्से दस्तूर, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह इक दरसाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहे किस बिध जाईए अप्पड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण वस्त्र पहनीए कपड़, ओढण कवण वड्याईआ। कवण तुलीए तकड़, कीमत आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। नारद कहे नी सुणो नाल हुशियारी, होश आपणी लओ बदलाईआ । जे पुजणा प्रभ दे चरण दुआरी, दुआरका वासी नाल मिलाईआ। राम नूं आवाज़ लओ मारी, खुशीआं नाल सुणाईआ। फेर

प्रेम विच करो तैयारी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। आपणा रूप ना समझणा नारी, नैण अक्ख जगत ना कोए रखाईआ। धर्म दी धार बणना पुजारी, हिरदे हरि वसाईआ। डण्डावत नाल करनी निमस्कारी, लम्मी पै के सीस निवाईआ। धूड़ी लाउँदे जाणा छारी, टिक्के ख़ाक रमाईआ। भज्जीआं जाणा वारो वारी, कदम कदम विच उलटाईआ। नाल बोलणा सोहँ जैकारी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फेर साहिब गुसाँईं तकणा जो शाहो भूप सिक्दारी, हरि करता नूर अलाहीआ। उह बैठा होवे भगतां दे दुआरी, सच सिँघासण सोभा पाईआ। उहदा नूर होवे जोत निरँकारी, नूर नुराना डगमगाईआ। तुसां गल विच पल्लू लैणा डारी, बिन हथ्थां हथ्थ बंधाईआ। उह वेखणहारा निगाह लए मारी, जगत जहाना पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहिण नारदा सानूं सब मन्ज़ूर, मर्ज़ी आपणी ना कोए रखाईआ। जे सतिगुर मिले हज़ूर, हाज़र हो के सीस निवाईआ। असीं चाकर हो के उस दे मज़दूर, सेवक हो के सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम सानूं कीता मजबूर, भज्जे आए वाहो दाहीआ। उस दा जल्वा तक्कीए नूर, नूर नुराना सोभा पाईआ। नारद कहे वाह मेरे सतिगुरु उह वेख लै जुग चौकड़ी बुढ्ढीआं माईआं, आईआं पन्ध मुकाईआ। जिंन्हां दीआं ख़ाली दिसण बाहींआं, लाल रंग ना कोए रंगाईआ। तेरे प्यार दीआं जिन्हां कोल साईआं, सौदे सच वखाईआ। कूक कूक देण दुहाईआं, दुहरा हाल सुणाईआ। साडे उत्ते ब्राह्मणां रूप धरया कसाईआं, छुरी कूड़ जगत उठाईआ। साडीआं धर्म दीआं आसा ढाहीआं, मिट्टी ख़ाक विच मिलाईआ। धर्म दीआं रहीआं ना कोए पढ़ाईआं, विद्या सच ना कोए सुणाईआ। साडीआं धोवे कोए ना छाहीआं, दुरमति मैल ना कोए सफ़ाईआ। साडे तटां उत्ते होण बुराईआं, बुरयार होई लोकाईआ। बेनन्ती सुण लै धुर दे माहीआ, महबूब तेरी ओट रखाईआ। असीं चारे तेरी कुल चों जाईआं, सानूं जम्मण वाली कोए ना माईआ। धन्नभाग जे तूं आपणीआं फेरीआं पाईआं, निरगुण हो के वेस वटाईआ। आ जा साडया दो जहान दिआ राहीआ, रैहबरा तेरी आस रखाईआ। वेखीं कलयुग अन्त ना करीं पराईआं, दूसरयां हथ्थ फड़ाईआ। असीं तेरी लग्गीआं इक सरनाईआ, सरनगति इक तकाईआ। अज्ज चल के खुशीआं नाल आईआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। उच्ची कूक के दस्सीए भगतां आपणयां भाईआं, भरावो तुहानूं दईए दृढ़ाईआ। असीं लँघ के आईआं विच्चों बेल्यां काईआं, रावी राह विच सानूं दिता समझाईआ। उह मालक बेपरवाहीआ, बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआं, वड वड्डे तेरी ओट तकाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ नानक चन्द दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहे नारदा सानूं अगम्मी आया ख्वाब, सुफ़ना सच दईए जणाईआ। पवित्र रिहा साडा ना आब, जल रस ना कोए वखाईआ। निगाह मार लै आपणी विच किताब, जो कुतबख़ान्यां बाहर रखाईआ। की खेल करे धुर नवाब, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा नूर जोत महताब, नूर नुराना नज़री आईआ। उस दा हुक्म मिल्या शताब, तुसां भज्जणा वाहो दाहीआ। अमृत दीआं धारां वेखणा आ के विच पंजाब, पंचां लँघणां चाँईं चाँईंआ। असां इक्वीआं हो के कीता अदाब, सिर सर निवाईआ। राह लँघदयां वेख्या सारी दीन दुनी मधी विच शराब, शरअ दा रंग गई भुलाईआ। झट नारद किहा एसे करके होण वाली बर्बाद, बर्बादी चारों कुण्ट वेख वखाईआ। ना कोई धर्म रिहा ना साध, साधना सच ना कोए जणाईआ। तुसीं पुरातन लेखा रखो याद, यादाशत दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले अवतार पैग़म्बरां गुरुआं किहा पुरख अकाला आउणा साथों बाद, लोकमात वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द वजाए नाद, दो जहान करे शनवाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा होणा बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। भगतां अन्दर हो विस्माद, विश्व दा आपणा भेव चुकाईआ । सुफ़नयां विच्चों तुहाडी खोल्हे जाग, आलस निंद्रा रहिण ना पाईआ। तुसीं पहला हिस्सा आपणा वेखो भाग, पहली वार दया कमाईआ। अगे होर तको की नानक दी दस्से रबाब, जो बिन तन्द सितार हिलाईआ। फेर सुणो सतिगुर शब्द अवाज़, ढोला की सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जिस साजणा दिती साज, लोकमात दिती वड्याईआ। जिस शाह सुल्तानां सीस टिकाया ताज, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। जो बदलणहार रिवाज, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग वेखो किस बिध संवारे काज, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा धाम न्यारा देस माझ, मौजूदा आपणा हुक्म वरताईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना दो दो आब, आबे हयात वेख वखाईआ। जिस दे अगे किसे दा होणा नहीं सवाल जवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दा इशारा दे के गया सिँघ मताब, मनी सिँघ मनसा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे यमुना सरस्वती गोदावरी गंगा वेखो गोबिन्द धार, की आपणा हुक्म वरताईआ। तुसां फिरना विच संसार, भज्जणा वाहो दाहीआ। चारे कूटां करनी विचार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण खोज खुजाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए दुआर, सच विच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़यार, माया ममता मोह हल्काईआ। अमृत रस रिहा ना ठंडा ठार, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। लेखा मुकदा वेखणा पैग़म्बर गुर अवतार, लहिणा सब दी झोली पाईआ। जिस दी सारे करदे रहे इंतज़ार, बैठे राह तकाईआ। उह

आया परवरदिगार, जल्वागर नूर अलाहीआ। शाहो भूप बण सिक्दार, आपणा हुक्म दए वरताईआ। जिस नूं सब ने कहिणा कलि कल्की अवतार, निहकलंका रूप प्रगटाईआ। लहिणा देणा देवे सब दा उधार, कर्ज़ा सिर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती बिन रसना रहीआं बोल, आपणा हाल सुणाईआ। केहड़ी वस्त उस दे कोल, सानूं दे समझाईआ। नारद कहे मैं वजा के दस्सां ढोल, दो जहानां दयां जणाईआ। जिस सच दुआरा दिता खोल्ह, ख़लक दा ख़ालक नूर अलाहीआ। उहदा नाम अनमुल अनमोल, अनमुलड़े हीरे रिहा बणाईआ। जन भगतां तोल के आपणे तोल, तराज़ू आपणे विच रखाईआ। तुहाडे अन्तष्करन दे पड़दे लए खोल्ह, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। चारे कहिण नारदा असीं वेख्या की कुझ आज, आजज़ हो के दईए सुणाईआ । सारी सृष्टी दृष्टी अन्दर कूड़ भरया मजाज़, कुकर्मा नाल हल्काईआ। जिधर तक्कया रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे खांदे कबाब, किबल दे मालक मिलण कोए ना पाईआ। तन वजूदां लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। दीवा बाती जगे ना कोए चराग़, चरागाहां ना कोए रुशनाईआ। लख चुरासी बिन माली सुंञा दिसे बाग़, मालक नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने रचना रची आदि, अन्त वेखणहार आप अख्वाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ झण्डू राम दे गृह पिण्ड जिउड़ीआं ज़िला जम्मू ✪

दरस करन आईआं धर्म सवाणीआं, नारद कहे स्त्री मर्द रूप नज़र कोए ना आईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती गाउँदीआं बिना मुख तों बाणीआं, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आपणा नाता तोड़दीआं नाल चारे खाणीआं, ख़ालक आपणा रंग वखाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला जाणी जाणीआ, तेरी इक सरनाईआ। निरगुण निरगुण हाणी हाणीआं, आयू वंड ना कोए वंडाईआ। साडीआं तक लै तरल जवानीआं, जोबनवन्ते बेपरवाहीआ। असीं सतिजुग त्रेता द्वापर तेरे प्यार विच मौजां माणीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। तीर्थ तट्टां सहारा दिता प्राणीआं, जो आए चल सरनाईआ। कलयुग अन्तिम साडी रही ना धर्म निशानीआ, निशाना कूड़ गया बदलाईआ। बौहड़ी साडे उत्ते वधीआं बेईमानीआं, ईमान रहिण कोए ना पाईआ। तत विरोले कोए ना पाणीआं, पौण पाणी रहे कुरलाईआ। असीं कंगाल होईआं धर्म दीआं शाहणीआं, शहिनशाह

सच वस्त हथ्थ किछ ना आईआ। तूं किरपा कर गुण निधानीआं, गुणवन्ते तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लेख आप बणाईआ। चारे कहिण असीं दरस करन नूं भज्जीआं, भुजां बाहवां जगत उठाईआ। साडे अन्तर आशां गज्जीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। असीं आ के सच दुआरे सजीआं, सज्जण मिल्या धुरदरगाहीआ। साडे नेत्र अक्खीआं रज्जीआं, तृष्ना रही ना राईआ । परम पुरख परमात्म साडी रखी लजीआ, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ। चारे कहिण दर्शन तक्कया नूर नुराना नूर, नर नरायण मिली सरनाईआ। शब्द अनादी सुणी तूर, तुरत दिती दृढ़ाईआ। साडी आसा मनसा कीती पूर, पूरन ब्रह्म दिता समझाईआ। मस्ती नाम दे सरूर, सुरती आपणे नाल मिलाईआ। साडा लेखे लाया पन्ध दूर, नेरन नेरा नज़री आईआ। साडे उत्ते किरपा करे ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे फ़तूर, फ़तवा देवे थांउँ थाँईंआ। असीं चार जुग दे इस दे मज़दूर, जुग जुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आशा मनशा सब दीआं करे पूर, तृष्ना तृखा जगत रहिण ना पाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ गुरा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

चारे कहिण साडा अन्तर होया अनन्द, सतिगुर सरन मिली सरनाईआ। साडा खुशी बन्द बन्द, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। जल्वा तक्कया नूरी चन्द, जोती जाता नज़री आईआ। असुते साडे मुख विच्चों निकल गया छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। झट हस के कहे गंग, गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। गोदावरी प्रेम वजाया मृदंग, नारद दिता सुणाईआ। यमुना दर दहलीज़ां लँघ, सीस जगदीस निवाईआ। सरस्वती कहे मेरे निरंतर पई ठंड, अग्नी तत रही ना राईआ। नारद कहे प्रभ चरणां आपणे सीस तों लाह दयो पंड, जो गठड़ी हडीआं आई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। नारद कहे शुकर करो सच्चे सतिगुर दे, गुरदेव स्वामी इक मनाईआ। जिस लाउणे लेखे अन्तर तुहाडे मुरदे, मुदतां दे लेखे पूर कराईआ। लहिणे देणे तक लओ करोड़ तेतीसा सुर दे, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। संदेशे सुण लओ गोबिन्द वाले अनन्दपुर दे, पुरीआं लोआं बाहर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चारे कहिण नारदा असीं

पिछला भार ल्यांदा चुक, चाकर हो के सेव कमाईआ। साडा लहिणा पूरब गया मुक, मुकम्मल दईए सुणाईआ। अगे इक्को गाईए तुक, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। सच दुआर ओहला रिहा कोई ना लुक, भेव अभेद दिता मिटाईआ। प्रभ दा भाणा मूल जाए ना रुक, संदेशा सच सच सुणाईआ। ज़रूर कलयुग बूटा जाणा सुक, हरया अन्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे मेटणहारा दुःख, दुखियां दर्दीआं आपणा दर्द वंडाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ चन्द प्रकाश दे गृह पिण्ड सेई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

चारे कहिण दरस कीता धुर दे सज्जण, जो साजण नवीं साजणा रिहा बणाईआ। धूड़ी ख़ाक रमाया मजन, सोहणा रंग चढ़ाईआ। नेत्र पाया कजल, नैण नैण बदलाईआ। सच दुआरयों सच दा मिल्या भजन, बन्दगी इक समझाईआ। साडे अन्दर नाम नगारे वजन, धुर दी धार करे शनवाईआ। दीपक जोती जगण, घर होई रुशनाईआ। असीं खुशीआं विच होईआं मग्न, मस्ती विच वड्याईआ। साडा पवित्र होया बदन, बदी दा रंग ना कोए रखाईआ। असीं चारे इक्वीआं हो के सतिगुर शब्द नूं आईआं सद्दण, सदके वारी घोल घुमाईआ। तूं मुकन्द मनोहर लखमी नरायण नंदन, अनन्द दा मालक इक अख्वाईआ। मेहरवाना नौजवाना साडी लँघ के आवीं हद्दन, जगत हदूदा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। चारे कहिण दरस करके होईआं निहाल, तृष्ना जगत मिटाईआ। साडा इक्वा हल कर सवाल, बेनन्ती दईए दृढ़ाईआ। साडी आ के सुरत संभाल, सम्बल दे मालक वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी लेखे ला घाल, घायल हो के दईए सुणाईआ। साडा अमृत सर सुहा दे ताल, रस आपणा इक भराईआ। धुर दा नाम निधाना दे दे धन माल, अमोलक वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। चारे कहिण साडी अरदास, दर्शन करके सीस निवाईआ। साडे साहिब पुरख अबिनाश, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। सम्मत शहिनशाही बारां आउणा साडे पास, पासा दीन दुनी तजाईआ। नाल शंकर ल्याउणा कैलाश, जटा जूट धारी आपणा सीस निवाईआ। नाल इक्की भगतां दी पैंदी आवे रास, नारी मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी सत्त रंग दी होवे पोशाक, पेशानी लाल रंग रंगाईआ। सम्मत पंदरां जिस दर दा खोल्ह के आएयों ताक, अन्तिम पर्दा देणा उठाईआ। आपणा पूरा करना वाक, जो त्रिबैणी आया लिखाईआ। असीं छड के सारे सज्जण साक, दर आईआं चाँईं चाँईंआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडे गृह इक इक कटणी रात, रैण सबाई तेरा दर्शन पाईआ।

२६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बेलू राम दे गृह पिण्ड सेई खुर्द ज़िला जम्मू

गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती नारद नूं करन इशारा, पंडता तैनूं दईए सुणाईआ। तूं प्रभ दा मीत मुरारा, जुग चौकड़ी चलया आईआ। साडे नाल मिल के कर निमस्कारा, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। नाले बोल दे धर्म जैकारा, सच सच सुणाईआ। मिन्नतां करके कहिण साडा लेखा याद रखणा सम्मत बारां, अभुल भुल कदे ना जाईआ। साडे आवे चल किनारा, काना रवीदास वाला साढे तिन्न हथ्थ नाल लिआईआ। जो हरिजन भगत नाल होवे दुलारा, सोहणा गुरमुख रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। गंगा कहे प्रभू मैं तकदी रहांगी वाट, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कवण वेला आवे मेरे घाट, घाटा मेरा पूर कराईआ। मेरी सेज सुहञ्जणी करे खाट, सिँघासण आपणा इक वखाईआ। मेरा पूरब लहिणा देणा देवे काट, अगे आपणा रंग रंगाईआ। मैं तेरे चरण कवल बिना रसना लवां चाट, चेटक अवर ना कोए जणाईआ। बिना ज़बान तों करां बात, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। तूं मेरा कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तेरी तकां भगतां वाली जमात, गुरमुख सोहणे वेख वखाईआ। जो सोहँ गाउँदे आउण गाथ, आत्म परमात्म राग अलाहीआ। मैं सब नूं झुक के टेकां माथ, निम्रता विच सीस निवाईआ। तूं किरपा करनी पुरख समराथ, मेरी तेरे अगे दुहाईआ। मैं होई अनाथां अनाथ, दीनन हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। यमुना कहे मैं जम्म जम्म तकां राह, बिना जनणी ध्यान लगाईआ। बिन नेत्र नैण उठा, वेखां चाँईं चाँईंआ। कवण कूटे आए मेरा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जो भगतां नाल करे सलाह, मशवरा गुरमुखां नाल रलाईआ। पंजां लिखारीआं इक्को रूप लए बणा, वस्त्र दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। पंजां दरबारीआं मस्तक टिक्के लए लगा, चरण धूड़ धूड़ रमाईआ। पंजां प्यारयां सोहँ शब्द कन्नी गंढु बन्नृा, सोहणी खेल खिलाईआ। मैं झट झुक के सीस देवां निवा, निव निव लागा पाईंआ। प्रेम सिँघासण देवां विछा, विछोड़ा जगत ना कोए रखाईआ। बिन पावे चूल पलँघ देवां डाह, डण्डावत करके सीस निवाईआ। आपणा दुखड़ा दयां सुणा, जो कृष्ण काहन गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल

आप खिलाईआ। सरस्वती कहे मैं खुशीआं नाल सुती उठां, आपणी लै अंगड़ाईआ। आपणीआं घुट्ट के दोवें मुट्ठां, सीने नाल लगाईआ। फिर अन्तष्करन करके पुट्ठा, वेखां धुरदरगाहीआ। जो मेरे उत्ते होवे तुठा, मेहर नज़र उठाईआ। मेरी सच सुहाउणी करे गुठ्ठा, कोने गोशे फोल फुलाईआ। मैं ढोला गावां बिना बुल्ल्हां बुट्टां, बिन रसना सिफ्त सलाहीआ। जिस दा प्यार अजे नहीं टुट्टा, टुट्टयां फेर लए जुड़ाईआ। मेरा भाग ना जगत निखुट्टा, खोटे खरे लए बणाईआ। जो मेरी सुहावे रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मेरा मालक स्वामी अबिनाशी अचुता, चेतन मैनूं लए कराईआ। जिस दे नाल भगत सुहेले होणे सुता, सतिगुर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे चरण कवल झुकां, झुक झुक सीस निवाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ शांती देवी दे गृह पिण्ड सेई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

गोदावरी कहे नारदा मैं उठा के वेखां भुजा बांहीआं, हथ्थ ज़िमीं असमान भुआईआ। वाजां मारां आ जा दो जहान
६१३ दिआ राहीआ, रैहबरा आपणा पन्ध मुकाईआ। तैनूं लभ्भ ना सकां विच्चों बेले काहीआं, सरां सरोवरां हथ्थ किते ना आईआ। ६१३
२४ मैं भज्ज भज्ज के लम्मीआं मंज़लां मुकाईआं, दिवस रैण कदम कदम उठाईआ। मैनूं नज़र ना आए मेरा गोबिन्द माहीआ, २४
परम पुरख तेरी ओट तकाईआ। मेरा घाट तक लै जिथ्थे लाईआं चरण प्रीती नाल साईआं, सौदे सच सच कराईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ कुड़यार सब नूं लग्गीआं शाहीआं, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। सब दे हिन्दसे मुकण वाले इकाईआं, दहाईआं बैठण मुख छुपाईआ। जेहड़े सिख बणाए जट्ट झीवर छींबे नाईआं, नैण जाण बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धार बणनी कसाईआं, शरअ शरअ रूप बदलाईआ। पुत्तरां प्यार नहीं रहिणा विच माईआं, ममता मोह ना कोए रखाईआ। गोबिन्द हस के किहा गोदावरी उस वेले मेरे सिख खाणगे गांईआं, हत्या करे जगत लोकाईआ। भगत जणने नहीं किसे जगत दीआं दाईआं, कुक्खीं भाग ना कोए लगाईआ। चार जुग दे शास्त्र अन्दर कर ना सकण सफ़ाईआं, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। तुहाडा माण नहीं रहिणा गोदावरी जेहड़ीआं प्रभ दी कुक्खों जाईआं, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । गोदावरी कहे नारदा मैं खुल्ल्हड़े रखां केस, किस्मत आपणी आप बदलाईआ। मेरा वैरागणां वाला होवे वेस, अवल्लड़ी धार जणाईआ। मैं तकां माही गोबिन्द दस दस्मेस, शब्दी शब्द रूप बदलाईआ। जिस संदेशा दिता मैनूं नदेड़ दे देस, देस देसांतरां डेरा ढाहीआ। उह होवे

मेरा ऋषी रखेश, ऋषीआं मुनीआं बाहर नज़री आईआ। मैं उस दी आशा रखी हमेश, हम साजण हो के ध्यान लगाईआ। जिस कलयुग कूड़ मेटणा कलेश, कला आपणी इक प्रगटाईआ। उस दे चरण आपा करां पेश, भेंटा हब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। गोदावरी कहे नारद मैं चक चक वेखां अक्खां, नैण नैण उठाईआ। किधरों आवे मेरा साहिब सखा, सगला संग जणाईआ। मेरा लेखा मेटे किशना सुखला पखा, पख आपणा दए दृढ़ाईआ। उस दे चरण कवल टेकां मथ्था, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। नाल पुरख अकाल होवे जिस दे यारड़े सथ्थर लथ्था, सोहणी सेज हंढाईआ। जन भगतां प्रेम दा होवे जथा, यथार्थ आपणी गंढु पुआईआ। किरपा करे पुरख समरथा, हरि करता धुरदरगाहीआ। कंढे घाट होवे टिका, टिके ख़ाक रमाईआ। उस दे चरण कवल लिटां, लिटा खोल्ह सीस निवाईआ। आप आपणा वार सिटां, सिट्टे बाज़ी वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। नाल दुहथ्थड़ मार के पिट्टां, पटने वाल्या तेरी दुहाईआ। मेरा लेखा कर जा चिट्टा, दुरमति मैल धुआईआ। तेरा धर्म दा दुद्ध वेख लै फिट्टा, कलयुग कूड़ रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे अन्तर सच अमृत मार दे छिटा, बूँद स्वांती बूँद बूँद टपकाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड सेई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मैनूं वी लओ सद्द, प्रेम दी गंढु मेरी झोली पाईआ। मैं आदि जुगादि दा जानणहारा तुहाडी यद, पंडत पुराणा नज़री आईआ। की होया कलयुग कूड़ कुकर्म ने कीता अड्ड, रूप वखरा वखरा समझाईआ। मैं तुहाडे नालों चंगा गावां प्रभू दा छन्द, सोहणे ढोले गाईआ। नी मानसां मनुषां खाधे हड, हडीआं तुहाडे अन्दर नज़री आईआ। हुण पिछला लेखा दयो छड, अगे अगला हाल सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लेखा वेखे कढ, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे गंगा मेरा साहिब आवे तेरी पौड़ी आपणी हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। तेरा लेखे लाए सरोवर सर, देवे माण वड्याईआ। तूं वस्त मंगणी दोवें ख़ाली करके कर, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। प्रभू सच प्रीती मेरे हस्तां उत्ते धर, धरनी धरत धवल दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे गंगा मैं कोई पंडत बणना नहीं लोभी, लालच विच कदे ना आईआ। मेरी वेख लै साफ़

सुथरी बोदी, बदीआं तों बाहर रूप दरसाईआ। जिस ने आपणा आप ल्या सोधी, सुदी वदी दी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मेरे हथ्थ ला दे गोडीं, निव निव सीस झुकाईआ। मैं तैनूं ख़बर दस्सां की संदेशा दे के गया गोबिन्द सोढी, सोढ सरबंस सुहाईआ। झट गंगा उंगल रख लई आपणी उत्ते ठोडी, सोचां विच आपणा आप डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे गंगा तूं वेखणा उस प्रभू दा चित्र, जिस दा चलित्र समझ किसे ना आईआ। जो बिना भगतां बणया नहीं किसे दा मित्र, मीत मुरारा संग ना कोए रखाईआ। आपणी धारों आवे नितर, आप आपणा लए प्रगटाईआ। उस दा खेल बड़ा बचित्र, बचित्र नाटक विच गोबिन्द गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप प्रगटाईआ। नारद कहे उह आवे घाट तेरे पतण, पत्रका तेरी वेख वखाईआ। तूं सोहणा करना यतन, यथार्थ दयां समझाईआ। आपणा साफ़ रखीं वतन, गृह दर पवित लैणा कराईआ। जिस दे नाल गुरमुख हीरे होणे रत्न, जड़त तेरे नाल जुड़ाईआ। नारद कहे मैं वीं सच संदेशा आवां दस्सण, खुशीआं ढोले गाईआ। नाले तेरी हालत वेख के आवां हसण, हस हस दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। गोदावरी कहे नारदा तूं आउणा मेरे गृह, दर दरवाज़ा दयां खुल्हाईआ। की ल्यावें वस्त मेरे लई शै, जो शहिनशाह भेंट कराईआ। नारद हस के किहा गंगा मैं तेरे वहिण विच नहीं जाणा वहि, हड़्हां विच ना कोए रुढ़ाईआ। मेरे अन्दर इक्को प्रभू दा भय, भय सीस जगदीस रखाईआ। नी जिस ने सारी सृष्टी करनी लैअ, जगत जहान रहिण कोए ना पाईआ। उह आवे चल के तेरे गृह, गहण तेरे वेख वखाईआ। मैं सरन सरनाई जाणा ढह, निव निव सीस झुकाईआ। वेखीं तूं हँकार विच करीं ना मैं, हंगता अन्दर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि सदा सद रहे, रहिणहारा इक अख्वाईआ।

६१५
२४

✪ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरी सिँघ दे गृह पिण्ड सेई खुर्द ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तुसां खुशीआं विच रखणी उडीक, घड़ी पल ध्यान लगाईआ। बेशक प्रभू दा मार्ग बड़ा बारीक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस जुग चौकड़ी दीन दुनी शरअ दी मारी लीक, शरक्त विच कीती लोकाईआ। जिस दी नाम कलम्यां वाली तबलीक, सिख्या जगत जहान दृढ़ाईआ। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दी

करे तस्दीक, शहादत आपणा हुक्म वरताईआ। उस दी ज़रूर रखणी उम्मीद, आमद विच आवे धुर दा माहीआ। तुसां सिध्धी रखणी दीद, दीदा लोकमात ना जाणा बदलाईआ । आह वेखो मेरे कोल उस दे पिछले हुक्म दी रसीद, जो बिन लेखां गया लिखाईआ। नाले कर के गया ताकीद, कलयुग अन्तिम आवां चाँई चाँईंआ। जिस वेले धर्म दा रिहा कोई ना बीज, अमृत रस रसन ना कोए चखाईआ। भगतां पूरी करे कोई ना रीझ, जगत तृष्ना ना कोए मिटाईआ। उस वेले मेरा निशाना इक्को होवे ते इक्को होवेगी सीध, सिध्धा मार्ग इक दरसाईआ। ना शरअ रहे ना ईद, ना कलमा जगत ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे तुसां उस दी याद विच रहिणा खड़ीआं, थकावट विच कदे ना आईआ। जुग चौकड़ी लँघ जाण ते उस प्रभू दीआं निक्कीआं जिहीआं घड़ीआं, पलां दी वंड समझ किसे ना आईआ। पता नहीं जुग चौकड़ीआं लँघीआं बड़ीआं, आपणा आपणा पन्ध मुकाईआ। कितनीआं लाशां अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दीआं उस दे पिच्छे सड़ीआं, मिट्टी ख़ाक विच आपणा आप मिलाईआ। पता नहीं कितने वेद शास्त्रां दीआं बणीआं कड़ीआं, किस बिध दीनां मज़्बां बंध बंधाईआ। उह मालक ख़ालक नरायण नरीआ, नूर नुराना इक अख्वाईआ। गंगा कहे नारदा असीं उसे दी सरनी परीआं, जो परम पुरख अगम्म अथाहीआ। उसे दे कोलों डरीआं, जो जुग जुग रीती दए बदलाईआ। नारद कहे तुसीं अणजाणो उस दा सबक नहीं पढ़ीआं, निरअक्खर धार समझ किसे ना आईआ। तुसीं उस दी मंज़ल नहीं चढ़ीआं, जो जगत जहान तों बाहर डेरा लाईआ। तुहाडे कंढिआं घाटां उत्ते ब्राह्मणां बणाईआं थड़ीआं, पाहन पूजण पूज के आपणा झट लँघाईआ। तुहाडा अमृत वेचिआ विच सेरां धड़ीआं, पा पा आपणी कीमत दिती पाईआ। तुहाडा पाणी पाया विच हुक्के दीआं नड़ीआं, तुहाडा रूप दिता बदलाईआ। नी तुसां बैरागणो त्यागणो कलयुग कूड़ी क्रिया दे विच सड़ीआं, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ज़रा आपणीआं पिछलीआं जुगां दीआं फोल के वेखो लड़ीआं, कन्नी कन्नी गंढु खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दीआं आदि जुगादि जुग चौकड़ी खरीआं, खरयां खोट्टयां वेख वखाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ राम चन्द दे गृह पिण्ड निकोवाल ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मैं खुशीआं विच तुहानूं की वंडां, की भेंटा देवां कराईआ। ज़रा निगाह मारो तुहाडे घाटां नालों भगतां दा चंगा कन्ढा, कन्ढी बैठे सोभा पाईआ। तुहाडे अमृत रस नालों भगतां दा चंगा पसीना ठण्डा,

ठण्डक मैनूं रिहा वखाईआ। बेशक तीर्थ तट्टां उत्ते निशानी रह गई पिपल लंडा, पत्त टहणी नज़र कोए ना आईआ। एथे भगतां दे प्यार दीआं भगवन नाल बज्झणीआं गंढां, गंढ सके ना कोए खुल्हाईआ। निगाह मार लओ ना कोई भेख ना पाखण्डा, झूठ लालच लोभ ना कोए रखाईआ। ना कोई ब्राह्मण ना कोई पंडा, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती जन भगतां तों सिखो प्रभू दे प्यार दा जीणा, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। नाले खुशीआं वाला वेखो जेठ महीना, महिमा जिस दी बेपरवाहीआ। तुहानूं रस मिल्या नहीं कोई लोक तीना, त्रिबैणी दा मालक काहन तुहानूं गया दृढ़ाईआ। बिना प्रभू तों ठांडा करे कोई ना सीना, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। तुहाडा लहिणा देणा पुरातन नहीं कोई प्राचीना, पूरब वंड ना कोए वंडाईआ। अन्त सब नूं होणा पैणा अधीना, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती वेखो किड्डा सोहणा दिन, ठण्डक ठण्ड रिहा वरताईआ। जिस दा रूप नज़र ना आवे चिन्न्ह, रेख सके ना कोए समझाईआ। जेहड़ा लेखा होणा अन्तिम दिन तिन्न, त्रै त्रै दी धार वखाईआ। जिस दा इशारा गोबिन्द दे के गया कोट हिम्म, हेम कुण्ट दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। जेठ कहे नी चार जुग दीउ धारो, वहिणां विच आपणा वहिण वखाईआ। ज़रा लोकमात निगाह मारो, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। जन भगतां दा लेखा विचारो, विचरके दयो सुणाईआ। जोबन वन्तीओ जगत मुटयारो, नेत्र लोचन अक्ख उठाईआ। वेखो खेल सची सरकारो, की करता कार कमाईआ। तुसीं आईआं छड के घर बाहरो, भज्जीआं वाहो दाहीआ। प्रभू दा दुआर तको ठंडा ठारो, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। चारे कहिण असीं सब कुछ वेख्या अक्खीआं, अक्खीं वेख के दईए जणाईआ। प्रभू दे प्यार दीआं भगत तकीआं सख़ीआँ, सुख़न सच सच जणाईआ। जिंन्हां दीआं पैजां आप प्रभू ने संवारीआं रखीआं, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। उन्हां नूं लोड़ नहीं रही जगत दीआं पक्खीआं, पवण ठण्डी अन्दर आवे धुर दे माहीआ। फिर खिड़ खिड़ा के हस्सीआं, हस्ती तक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चारे कहिण नारदा तेरी बोदी ज़रूर होऊ तपदी, सीस उत्ते नंगी नज़री आईआ। नारद कहे एह अन्दरे अन्दर तूं मेरा मैं तेरा जपदी, सोहँ ढोला रही गाईआ। हस के गोदावरी किहा सानूं एहदी शकल दिसे सप्प दी,

६१७ २४

विंगी टेढी सोभा पाईआ। नारद किहा एह पगडण्डी बण गई ओस जट्ट दी, जो दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। नी हुण लोड़ रहिणी नहीं तुहाडे किनारे तट दी, घाटां आसण ना कोए रखाईआ। अमृत धार बन्द होणी नहीं मटकी मट दी, बरतनां बन्द ना कोए कराईआ। ओह वेख लओ सब दी औध जांदी टपदी, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कला वरते समरथ दी, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ केसरी देवी दे गृह पिण्ड रानी बाग़ जम्मू शहर ✪

कलयुग कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती वेखो वक्त सुहावणा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। तुसां इक्को गीत सुणावणा, जो जगत सुणन कोए ना पाईआ। बिन अक्खरां ढोला गावणा, गोबिन्द रंग रंगाईआ। आपणा खेल दस्सणा नाल आपणी भावना, भेव भाव चुकाईआ। नाल सहिजे खिच्चके अंचल दामना, हलूणा दिता लगाईआ। झट ग़ुस्से विच किहा गंगा ने

६१८ की करें पंडत ब्राह्मणा, आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ६१८

२४ सच दी खेल आप खिलाईआ। नारद कहे वेख लओ जेठ ठंडा ठार, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सारीआं निव निव २४

करो निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। नाल मांगत बणो भिखार, ख़ाली झोली दयो वखाईआ। नाले रोवो ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किरपा करनी सची सरकार, हरि करते धुरदरगाहीआ। सम्मत बारां तेरा करदीआं रहीए इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं पहलों आउणा हरि के दुआर, हरी हरि आपणा रूप दिखाईआ। फेर त्रिबैणी पाउणी सार, त्रैगुण अतीते तेरे हथ्थ वड्याईआ। गोदावरी कहे मैं धूड़ी लावां छार, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। मेरा कन्ढा घाट तेरा होवे घर बार, गृह मन्दिर इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। गंगा कहे मैं अगों आवां दौड़ी, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी गली करीं ना सौड़ी, भीड़ा राह ना कोए वखाईआ। मेरे घाट पुजणा आपणी पौड़ी, हरि तेरी वड वड्याईआ। नाल ल्याउणी लकड़ दी इक फौड़ी, जेहड़ी हडीआं फोल फुलाईआ। इक मिट्टी दी होवे तौड़ी, काचा कुम्ब नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हथ्थ सब दी डोरी, डोरी तन्द आपणे नाल बंधाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सोभा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहे किरपा कर आप निरँकार, सो पुरख निरञ्जण मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। हरि पुरख निरञ्जण बिन नेत्र लोचन नैण निगाह मार, एकँकार आपणा पड़दा आप उठाईआ। आदि निरञ्जण जोती जाते हो ज़ाहर, अबिनाशी करते तेरी ओट तकाईआ। श्री भगवान तुध बिन पावे कोई ना सार, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पारब्रह्म प्रभ देणा आप अधार, ब्रह्म दा लेखा वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द दुलारा भेज विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। धरनी धरत धवल धौल नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप निगाह मार, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडी दर तेरे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। साडा अमृत जल पाणी वेख वहिंदी धार, जो भज्जे वाहो दाहीआ। साडे तक लै तट किनार, तीर्थां वेखणा चाँईं चाँईंआ। चारों कुण्ट होया अँधयार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग कूड़ वध्या कुड़यार, विभचार भरी तेरी लोकाईआ। सच शास्त्र सके ना कोए विचार, ब्राह्मण ब्रह्म विद्या विच ना कोए समाईआ। साडे गृह होया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहिण प्रभ साडे वेख लै तीर्थ तट, किनार घाट पतण फोल फुलाईआ। धर्म दा रिहा कोई ना सति, सति विच ना कोए समाईआ। साधां सन्तां छुट्टया यत, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वधी मति, मन मति करे लड़ाईआ। तेरे प्यार दा सथर लवे कोए ना घत, यारड़े सेज ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती उच्ची कूक के कढण बांह, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। साडा पवित्र रिहा कोई ना थाँ, थान थनंतर रोवण मारन धाहीआ। सानूं सच दी समझे कोई ना माँ, पूत सपूता नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। धर्म दे पात्र खा गए सूर गाँ, आपणा आप बदलाईआ। सति दी नज़र ना आए छाँ, कूड़ी अग्नी तत तपाईआ। जीव जंत साध सन्त प्रभ तेरा भुल्ले राह, रैहबर मिलण कोए ना पाईआ। साडे तट किनारे बणन गवाह, शहादत देण भुगताईआ। ब्राह्मण ब्रह्म विद्या भेव सके कोई ना पा, ब्रह्मचारी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। चारे कहिण प्रभू कलयुग वेख लै कलकाती, आपणा हुक्म वरताईआ। साडा अमृत बूँद ना रिहा स्वांती, तृष्ना तृखा ना जगत बुझाईआ। निगाह मार लै कमलापाती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। साडे गृह दीपक जगे

कोए ना बाती, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। साडी मंज़ल मुकी वाटी, अन्तिम बैठी पन्ध मुकाईआ। साडे ख़ाली होए तीर्थ ताटी, किनारे घाट रहे कुरलाईआ। झगड़ा तक लै शरअ दी ज़ात पाती, दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप जणाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती चारे रहीआं कूक, परम पुरख तेरा नाम दुहाईआ। तूं आण के वेख लै मातलोक दी कूट, कुटीआ धरनी धरत धवल धौल डेरा लाईआ। तेरा प्यार दा नाता हर हिरदिउँ गया टूट, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। मानस मानव मनुक्खां अन्दर आई फूट, फुटकल होई लोकाईआ। पवित्र रिहा नहीं कोई काया पंज भूत, तन वजूदां करन सफ़ाईआ । सुहञ्जणी दिसे कोई ना रुत, रुतड़ी तेरे नाल ना कोए महकाईआ। तेरे नाम तों ख़ाली हो गए बुत, बुतख़ाने रोवण मारन धाहीआ। तूं किरपा कर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ तेरी आस रखाईआ। निरगुण धारों निरवैर हो के उठ, निराकार आपणा फेरा पाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपे तुठ, धुर दे राम तेरी दुहाईआ। बौहड़ी साडयां तटां किनारयां उत्ते कलयुग जीवां पाई लुट, लुटेरे बणे थांउँ थाँईंआ। सानूं धर्म दा दिसे कोई ना पुत, अपराधी होई तेरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। चारे कहिण प्रभू साडे नेड़े आ नज़दीक, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। साडी धार तक बारीक, बिन नेत्र लोचन नैण वेख वखाईआ। साडी धर्म दी धार ना रही लीक, लाईन रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग जीव सारे होए शरीक, शरक्त विच कूड़ लोकाईआ। सति दी सति करे कोए ना प्रीत, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना गीत, गोबिन्द रंग ना कोए रंगाईआ। उह वेख लै झगड़ा पैण वाला मन्दिर मसीत, काअबे रोवण मारन धाहीआ। साडा जल पवित्र ना रिहा अतीत, त्रैगुण की तेरी खेल खिलाईआ। बूँद स्वांती किसे मिले ना ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। कलयुग जीवां बदल गई नीत, नीतीवान रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक वेख वखाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती प्रभ अगे करो डण्डावत, बिन सीस सीस निवाईआ। जो अमृत रस देवणहार निआमत, नर निरँकार धुरदरगाहीआ । जिस ने सति वस्त दी तुहानूं दिती निआमत, धर्म दी धार विच रखाईआ। उस दा लहिणा देणा अन्तिम वेखो जिस दे हुक्म विच होणी क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे तुसीं इक्को वार मंगो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। पृथ्मी आपणा नाम दस्स दे गंगोत्री गंग, यमुना सरस्वती गोदावरी नाल मिलाईआ। तुहाडी

धार अन्दर निरँकार आवे लँघ, जग नेत्र लोचन नैण नज़र किसे ना आईआ। जोती जाता हो के बख्शे आपणा संग, सगला संगी बहु रंगी आपणा वेस वटाईआ। जो नाम निधान श्री भगवान नौजवान दो जहान वजाए मृदंग, डौरु डंका इक्को नाम वखाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म करे कोई ना भंग, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सूरा सरबंग, हरि करता कुदरत कादर इक अख्वाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

चारे कहिण असीं रहीआं भुल्लीआं, भुलेखयां विच भरमाईआ। साडयां नैणां धारां पाणी डुल्ल्हीआं, जगत वहिणा तों बाहर नज़री आईआ। नारदा साडे नालों प्रभू नूं चंगीआं भगतां दीआं कुलीआं, कुल मालक वेख वखाईआ। असीं जुग चौकड़ी ऐंवे रहीआं फुलीआं, माण विच रखाईआ। हैरान हो गईआं जद भगतां दीआं हिलदीआं वेखीआं बुल्ल्हीआं, प्रभ दे ढोले सिफ्त सलाहीआ। उन्हां दे तोल मूल ना तुलीआं, आपणा वज़न ना कोए रखाईआ । वे जिंनां दे घरों साडे साहिब ने खाणीआं ढोडे बाजरे वालीआं गुल्लीआं, सोहणा रस बणाईआ। सौणा जगत प्यार दीआं विच जुल्लीआं, साडीआं ज़ुलफ़ां कम्म किसे ना आईआ। उन्हां नूं छुट्टीआं दितीआं खुल्लीआं, खहिड़ा छुट्टया जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारदा भगतां अन्दर वेखी खुशहाली, जो खुशीआं ढोले गाईआ। सच नूर दी चढ़ी लाली, लाल गुलाला आपणा रंग बणाईआ। वे असीं प्यार तों पिच्छे रह गईआं ख़ाली, ख़ाली हथ्थ दुहाईआ। साडी खुशीआं नाल अज्ज कर दलाली, विचोला तैनूं लईए बणाईआ। अन्तिम फल रिहा नहीं साडी डाली, पत टहणी गई कुमलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे पहलों मेरी लओ सलाह, मशवरा दयां जणाईआ। आपणा भरम लओ गुआ, अन्तर रहिण किछ ना पाईआ। बिना मुख तों कहो तूं ही पिता तूं ही माँ, दूजा नजर कोए ना आईआ। सानूं चरण कवल दे सरना, सरनगति इक अख्वाईआ। असीं दूर दुराडीआं गईआं आ, भज्जीआं वाहो दाहीआ। साडा रिहा ना कोए सहा, सहायक नजर कोए ना आईआ। जन भगत दुआरे भगत पकड़न बांह, बहीआ तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे चारे भैणां जाओ लेट, मुख मस्तक ज़िमीं वल रखाईआ।

ज़िमीं तों उच्चा रखणा आपणा पेट, मिट्टी ख़ाक लग्गण ना पाईआ। निराकार निरँकार नूं आपणा आप दयो टेक, बचया रहिण कुछ ना पाईआ। सब कुछ कर लओ बिना लालच लोभ तों भेंट, भेंटा आपणा आप चढ़ाईआ। फेर वेखो आपणा खेवट खेट, जो मालक धुरदरगाहीआ। तुहानूं दर आईआं नूं आपणे नाम दुशाले विच लए लपेट, फड़ बाहों विच टिकाईआ। तुसां दर्शन करना नेतन नेत, निज नेत्र लोचन अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेल आप मिलाईआ। गंगा कहे मैं निमस्कार बिना सीस तों करनी, चरण जगदीश ध्यान लगाईआ। आपणी आशा सब कुछ हरनी, हरि करते अगे भेंट चढ़ाईआ। यमुना कहे मैं इक्को सरनी पड़नी, सरनगति जो अख्वाईआ। सरस्वती कहे मैं पल्लू लड़ फड़नी, अगे सके ना कोए छुडाईआ। गोबिन्द कहे मैं उसे दी तुक पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। मेरा लेखा नाल नहीं सीस धड़नी, पंज तत ना कोए वखाईआ। असीं हैरान करन वाली अज्ज इक्को बेनन्ती करनी, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र समझ सकण किछ ना राईआ। जिस विच सानूं चट्टी पए ना भरनी, भार सिर ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस सब दी घाड़न घड़नी, घड़न भन्न्हणहार एकँकार इक अख्वाईआ।

६२२ २४

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे खुशीआं वाली आ गई रात, भिन्नड़ी भिन्नी आपणा रूप बदलाईआ। आउ सखी सहेलीउ मिल के करीए बात, बातन पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। पहलों इक दूजे नाल प्रेम दा जोड़ीए नात, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर रखाईआ। फेर समाधी विच होईए इकांत, एकँकार चरण कवल ध्यान रखाईआ। फेर आपणा अन्तष्करन करीए शांत, कलयुग अग्न ना कोए तपाईआ। फेर आपणा गृह तक्कीए प्रांत, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। फेर आपणा मज़्हब वेखीए ज़ात, कवण वरन नज़री आईआ। फेर बिना नेत्रां मारीए झात, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। झट नारद करवट बदल के किहा रूप तको कमलापात, पतिपरमेश्वर जो अख्वाईआ। जेहड़ा सब नूं देवणहारा दात, दाता दानी इक अख्वाईआ। आदि जुगादि पुछणहारा वात, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। उह आया लोकमात, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जिस दा खेल सदा बहुभांत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं आपणी धोती बोदी लवां संभाल, करमण्डली हथ्थ विच उठाईआ। तुसीं आपणे साफ़

कर लओ वाल, सीस सोहणा रूप बदलाईआ। फेर खुशीआं वाला गाओ ताल, तलवाड़ा समझ कोए ना पाईआ। मैं भगत प्रभू दा आदि जुगादी नढ्ढा बाल, बाली बुद्ध मेरी बेपरवाहीआ। तुसीं अमृत रस भरया जगत ताल, *तारीआं लावो थांउँ थाँईंआ। सारे इक्त्ते होवो इक सची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ । जिथ्थे शाहो भूप शहिनशाह सची सरकार, दूजा संग ना कोए वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सब दी करे संभाल, सम्बल दा मालक बेपरवाहीआ। आओ सारे उस दे अगे करीए सवाल, बेनन्ती चरणां विच टिकाईआ । क्यों कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट पाया जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। धर्म दी धार दीन दुनी रिहा ना कोए दलाल, विचोला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे मैं आदि जुगादि पंडत पुराणा, पुराण अठारां मेरी देण गवाहीआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तुहाडा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा किसे समझया नहीं टिकाणा, गृह नज़र कोए ना आईआ। तुहाडा जल धार वहिन्दा बेमुहाणा, भज्जे वाहो दाहीआ। ज़रा निगाह मारो ज़िमीं असमाना, दो जहानां नैण उठाईआ। की खेल करे श्री भगवाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्म विच बदल जाणा ज़माना, ज़िमी ज़मा वेखण चाँईं चाँईंआ। जिस लेखे लाउणा खेल घनईया कान्हा, सोलह कलाधारी गया दृढ़ाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा अमामा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दा गोबिन्द वजाया हक दमामा, डंका शब्द शनवाईआ। उह खेल करे श्री भगवाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस सब दा लहिणा देणा चुकाउणा, लेखा जुग चौकड़ी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखणहार सदा निशाना, बेनिशान आपणा खेल खिलाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ करतार कौर दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे मेरा पुराणा बड़ा तजरबा, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। मैं अवतार पैग़म्बर गुरु वेखे अरबां खरबां, गिणती गणत ना कोए जणाईआ। मेरी आयू नूं गिण सकदा नहीं कोई दे के ज़रबां, अंकड़यां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं प्यारा इक्को पुरख अकाल दे घर दा, दूजा गृह ना कोए सुहाईआ। ना जम्मदा ना कदे मरदा, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला मैनूं शब्दी धार घलदा, नित नवित हुक्म वरताईआ। मैं कुछ लेखा लहिणा दस्सणा राजे बलि दा, की बावन गया दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त माण रहिणा नहीं किसे जल दा, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मैं केहड़ीआं पढ़ के दस्सां पंगतीआं, पंडत हो के दयां जणाईआ। जुग चौकड़ीआं लँघीआं ते लँघीआं दीन दुनी दीआं सम्मतीआं, समझ सके कोए ना राईआ। प्रभ दीआं खेलां आदि जुगादि अगणतीआं, गिणती गिण ना कोए समझाईआ। जिस दे अगे अवतार पैग़म्बर गुरु करदे गए बेनन्तीआं, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चारे कहिण ब्राह्मणा साडी मंन सलाह, मनसा इक जणाईआ। प्रभ दाता बेपरवाह, बेअन्त अगम्म अथाहीआ। जो होवे सदा सहा, सहायक नायक नूर अलाहीआ । उस अगे वास्ता दईए पा, हथ्थ जोड़ के सीस निवाईआ। प्रभू लोकमात वेख लै साडा थाँ, थान थनंतर ध्यान लगाईआ। सानूं धर्म दी बणाए कोई ना माँ, ममता दीन दुनी चुकाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। तेरा जपे कोई ना नाँ, नाउँ निरँकार हिरदे सके ना कोए वसाईआ। सब दे मस्तक लग्गी शाह, शहिनशाह कूड़ी क्रिया ना कोए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नारद कहे मैं जुग चौकड़ी रिहा फिरदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। मैं फोलणहारा हर दा हिरदा, हर घट वेखणा चाँईं चाँईंआ। कमलीउ अमृत झिरना किसे अन्दर मूल ना झिरदा, नाभी कवल ना कोए टपकाईआ। ऐस वेले प्रेमी नज़र आए ना कोई धुर दे पिर दा, पीआ प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। साध सन्त वासी दिसदा नहीं कोई घर थिर दा, सचखण्ड चढ़न कोए ना पाईआ। उह वेख लओ कलयुग कूड़ी क्रिया गेड़ा गिढ़दा, लख चुरासी रिहा भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी अन्तिम निबड़दा, लहिणे सब दे वेख वखाईआ।

✪ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ प्यारे लाल दे गृह पिण्ड सेई कलां पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मैनूं निर्मल कर लैण दयो बुद्ध, बुद्ध महात्मा गया जणाईआ। तुसीं आपणी आपणी संभालो सुध, सति धर्म विच लओ अंगड़ाईआ। बिन लत्तां बाहवां खुशी विच लओ कुद्द, कुदरत दा कादर वेखो चाँईं चाँईंआ। जिस ने कलयुग अन्तिम बदल देणा जुग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। सब दी औध गई पुग्ग, अगे अवर ना कोए वधाईआ। अमृत रस सीर रहिणा नहीं दुद्ध, दुद्धी धार ना कोए वहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चारे कहिण नारदा सो पुरख निरञ्जण इक मनावांगी। हरि पुरख निरञ्जण सीस निवावांगी। एकँकारा इष्ट रखावांगी। आदि निरञ्जण नूर रुशनावांगी। अबिनाशी करता वेख वखावांगी। श्री भगवान दर सुहावांगी। पारब्रह्म खोज खुजावांगी। सतिगुर शब्द संग निभावांगी। जिस दा अगम्मी चढ़ना रंग, रंगत कूड़ी कलयुग लाहवांगी। साची वस्त लवां मंग, मांगत हो के झोली डाहवांगी। तूं साहिब सूरा सरबंग, तुध बिन इष्ट ना कोए रखावांगी। बेशक मैं पाणी धार गंगोत्री गंग, यमुना तेरा रूप अख्वावांगी। सरस्वती देणा उह अनन्द, गोदावरी तेरी गंढु बंधावांगी। तेरा शरीर नहीं कोई तत पंज, पंचम मीते तेरी ओट तकावांगी। मेरी नेत्र वगे अंझ, हंझूआं नीर वखावांगी। मेरे दीन दयाले मेरा देणा संग, सगला संगी तैनूं बणावांगी। कलयुग कूड़ कुड़यारा लोकमात रहिण नहीं देणा मलंग, मौला डोरी तेरे हथ्थ फड़ावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगावांगी। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती धार हो के आस रखावांगी। मिल के परम पुरख शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा सीस निवावांगी। तूं मालक पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर तेरे वेख वखावांगी। तेरे मण्डल तकां रास, तेरा गोपी काहन हो के संग निभावांगी। तूं देणा नूर जोत प्रकाश, तेरी आस तकावांगी। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी नास, नास्तकां तेरी झोली पावांगी। सतिजुग सच करना वास, वास्ता तेरे चरण टिकावांगी। तूं शहिनशाह शाहो शाबाश, सतिगुर तेरी ओट रखावांगी। मेरा मेला नाल शंकर कैलाश, ब्रह्मे आपणा भेव खुल्हावांगी। विष्नूं अगे कर अरदास, विश्व दा पड़दा आप चुकावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी मंग मंगावांगी। आसा कहे मैं होई मंगण योग, युगती नारद देणी दृढ़ाईआ। जिस विच चिन्ता रहे कोई ना सोग, ग़मी ग़मखार दए मिटाईआ। दुनियादारी दा दिसे कोई ना रोग, दुःख दर्द ना लागे राईआ। प्रभू दे प्यार दा होवे ना कदे विजोग, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। सद माणा उस दी मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिस कलयुग मेटणी औध, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। सब दा हिरदा देवे सोध, सुध आपणी इक समझाईआ। बुद्धी तों परे हुक्म दस्से अगाध बोध, शब्दी शब्द नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि सब दा कटे विजोग, संजोग धुर दा इक समझाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ कुलवंत सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

गोदावरी कहे मैं सीस निवावां हथ्थ बध्धी, बन्दना कर कर सीस निवाईआ। सच प्यार मस्ती विच होवां मधी, मधुर धुन ढोले गावां चाँईं चाँईंआ। मेरा साहिब स्वामी मैनूं मिले यदी, यदी यदप आपणी दया कमाईआ । मेरी पवित्र होवे नदी, वहिणां दा धार खुशी बणाईआ। मैं वी तकदी रही धुर दे हुक्म वाली सदी, सदीवी आपणा संग बणाईआ। मेरा मालक जो देवणहारा धुर दी पदी, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। पर उह लोकमात आउँदा कदी कदी, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। जो जुग चौकड़ी पिछली कीती करे रद्दी, अगला आपणा हुक्म वरताईआ। मेरे विच्चों कूड़ कुड़यार दी कढ्ढे बदी, बदकारां डेरा ढाहीआ। मैं उस दा नूर वेखां अलाही रब्बी, जोती जाता ध्यान लगाईआ। जिस दा मेला होवे नाल सबब्बी, जोड़ जुड़ाए चाँईं चाँईंआ। साडी लेखे लावे पसली हड्डी, असथीआं जगत वेख वखाईआ। मैं राह तकां चुक्कके अड्डी, आप आपणा बल प्रगटाईआ। जिस दी आशा जुग चौकड़ी मूल ना छडी, सद हवसां विच वक्त लँघाईआ। उह धुर दुआर निशाना देवे गड्डी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोदावरी कहे मैं दरस पावां अक्खीआं, नैण नैण बिगसाईआ। खुशीआं हाल दस्सां आपणीआं सखीआँ, सोहणे राग दृढ़ाईआ । मेरा मालक अलख अलखीआ, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जो कक्खों करे लखीआं, कीमत आपणे हथ्थ रखाईआ । मैं उसे दे चरणां विच वसीआं, वास्ता अवर ना कोए रखाईआ। उसे दे ढोले गावां जसीआं, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। जिस मेरी रैण अन्धेरी मेटणी मस्सीआ, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे जिस वेले मेरा साहिब स्वामी पुज्जे, पूजण योग सीस निवाईआ। मेरे भाग होणे उग्घे, उग्घण आथण मिले वड्याईआ। मैनूं भेव दस्से गुज्झे, जो चार जुग ना कोए समझाईआ। मेरे भाउ मिटणे दूजे, दुवैती रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं इक्को दुआरा सुझे, जिस गृह मिले धुर दा माहीआ। मेरी आशा नच्चे टप्पे उछले कुद्दे, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं फिरां उत्ते बसुधे, आपणा कदम टिकाईआ। मेरा लेखा मुक जाए कलयुगे, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। मैं खुशीआं नाल उठावां भुजे, बहीआ दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। गंगा कहे गोदावरी उन्ह आउणा पहलां मेरे घाट, आपणी खुशी बणाईआ। तुसां ढोले गाउणे बण के भाट, सवईए धारां वाले प्रगटाईआ। नाले वेखणे दीन दुनी दे कंचन काया माट, मटके फोल फुलाईआ। मेरी इक्को खुशीआं वाली बात, बातन दयां समझाईआ। जिस ने निरगुण धार जोड़ना नात, रिश्ता

आपणे नाल रखाईआ। मैं वेखां बैठ इकांत, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उह बख्शे बूँद स्वांत, अमृत रस चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप समझाईआ। यमुना कहे मैं वी रखीआं वड्डीआं आसा, असल दयां जणाईआ। मैनूं साहिब उत्ते भरवासा, जो भरम दए मिटाईआ। जो मालक सर्ब गुणां गुणतासा, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। मेरे पूरे करे पवण स्वासा, साह साह जो उस दा नाम ध्याईआ। मैनूं याद करावे पूरब काहन वालीआं रासा, गोपीआं गोपाल आपणा रंग रंगाईआ। जिस दीन दुनी दा बदल देणा पासा, पासा जगत जुगत उलटाईआ। मैं खुशीआं नाल करां हासा, हस्ती तक धुरदरगाहीआ। फिर इशारा देवां शंकर कैलाशा, कलाधारी दयां दृढ़ाईआ। आह तक निरगुण नूर जोत प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दीआं असीं सारीआं (साखां), वहिणा वाले पाणी रूप बदलाईआ। उह देवणहार आप दिलासा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा अन्तर होण ना देवे उदासा, चिन्ता ग़म रहिण ना पाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ प्रेमी देवी दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे मेरीआं गल्लां सुणो करारीआं, इकरारनाम्यां वाल्यो दयां जणाईआ। तुसीं किस बिध प्रभ दे आउण ते करो तैयारीआं, त्रैगुण दा पन्ध मुकाईआ। कवण रूप तन करो श्रृंगारीआं, सोहणा रंग रंगाईआ। कवण रस्ते फेरो बहारीआं, राह सुथरा साफ़ बणाईआ। कवण कुम्भ फड़ो बण घुम्यारीआं, पनघट डेरे लाईआ। मैनूं दस्सणा नाल हुशियारीआ, सहिज नाल सुणाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला जिस दा अन्त ना पारावारीआ, बेअन्त इक अख्वाईआ। तुसीं जुग जुग खेल खेलया नाल संसारीआं, साधां सन्तां ब्राह्मणां संग बणाईआ। तुहानूं पता नहीं किस बिध घर आवे शहिनशाह सिक्दारीआ, पातशाह धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे तुहाडा केहड़ा होवे लबास, लबां नाल बोल के दयो जणाईआ। केहड़ा होवे प्रकाश, कवण नूर रुशनाईआ। कवण होवे स्वास, साह साह ढोले गाईआ। कलयुग आशा होवे तुहाडे पास, मैनूं दयो समझाईआ। मैनूं तुहाडे उत्ते अजे नहीं विश्वास, सच सच दयां सुणाईआ। तुहाडा अमृत जगत भरदा रिहा विच ग्लास, कलसां वंड वंडाईआ। तुहाडा वधदा रिहा हवास, हवस विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप

खिलाईआ। नारद कहे सुण गंगी तूं सब तों दिसें लम्बी, तेरा तन वजूद सोभा पाईआ। आपणी पिछली तक लै संधी, कौल इकरारां नाल मिलाईआ। तेरे उत्ते की पाबन्दी, पुरख अकाला हुक्म की दृढ़ाईआ। तेरे उत्ते तट किनारे तीर्थ पंझी, पंजां वालीए दयां दृढ़ाईआ। तेरे कोल केहड़ी खूबी चंगी, चंगी तरह दे समझाईआ। मैं कलयुग निगाह मारी तेरे सीस मेंढी दिसी नंगी, ओढण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आपणा भेव चुकाईआ। नारद कहे यमुना सरस्वती तुहाडा केहड़ा होवे वेस, मैनूं दयो समझाईआ। तुसां केहड़े मिलणा देस, दिशा केहड़ी सोभा पाईआ। किस बिध तकणा नर नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जो साजण रहे हमेश, सतिगुर शब्द शब्द अख्वाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी कलेश, मल मूत्र डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे गोदावरी गोबिन्द आउणा केहड़े रूप, भेव देणा चुकाईआ। की तकें सति सरूप, दर्शन करें धुर दे माहीआ। अगों गोदावरी हो गई चुप, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। मैं वेख ना सकां उस दा बुत, बुतख़ानयां विच नज़र ना आईआ। उहदा मेला होणा नाल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। जो मेरी सुहञ्जणी करे रुत, दर आवे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। नारद कहे प्रभू दे आउण दी सब नूं तांघ, तृष्ना हवस जगत रखाईआ। सब दी प्रेम प्यार दी मांग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तुहाडी तड़फदी पाणी वाली कांग, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। उच्ची कूक के मारे चांघ, देवे सच दुहाईआ। कवण वेस करके आवे माही आपणा स्वांग, स्वांगी रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडा लहिणा देणा लेखा वेखे बिन सूर्या चांद, चन्द चांदना आपणा इक चमकाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ जलन्धर सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मेरा जीअ करदा तुहाडे नाल मारां गप्पां, कलयुग दा रंग दयां वखाईआ। तुसीं पुरख अकाल दीन दयाल नाल वअदा कर लओ पक्का, पक्की तरह दृढ़ाईआ। एह वल छल धारी कुझ नहीं लगदा पता, पतणां ते बैठीओ तुहानूं समझ कुछ ना आईआ। एहदा पता नहीं किड्डा लारा ते किड्डा लप्पा, लारयां विच जुग चौकड़ी

दए लँघाईआ। बाहरों बाहरों सब नूं कहि दिन्दा अच्छा, अच्छी तरह दृढ़ाईआ। तुसीं ऐंवे खुशीआं विच ना मारो कच्छां, नच्चो कुद्दो टप्पो थांउँ थाँईंआ। इक वेरां फेर कर लओ पता, पतिपरमेश्वर अगे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे नी एस दे आउंण दे अनेक राह, तुहानूं दयां समझाईआ। तुसीं ऐवें ना अन्दर रखयो चाअ, चाउ घनेरा घर बणाईआ। पहलों मैथों लओ सलाह, मशवरा सच दयां समझाईआ। प्रभ अगे बेनन्ती फेर करो सीस निवा, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रभू सच दस्स किस बिध जावें आ, आपणा फेरा पाईआ। एह बड़ा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जे एस दा दिल कीता ते एस शब्द विच आपणा खेल देणा वरता, ततां वाला शरीर नज़र कोए ना आईआ। तुहानूं रातीं सुतीआं नूं नाल भगत दए वखा, सोहणे आपणे संग रखाईआ। जे नेत्र खोल्ह़ोगीआं ते तुहानूं दिसणा कुझ नांह, फेर चारों कुण्ट हैरानी हैरानी विच्चों नज़री आईआ। मैं ब्राह्मण पुराणा सब कुछ जाणदा हां, हां विच हां मिलके हां ना कदे रखाईआ। मैनूं सोहे उह कपला गाँ, जिस दी कपल मुनी आशा गया रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जानणहारा थांउँ थाँ, थान थनंतर देवणहार वड्याईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पुन्नू राम दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे प्रभू नूं खुशीआं नाल मनाओ, मनसा मन दी दूर कराईआ। मस्तक ज़िमीं उत्ते घसाओ, आप आपणा माण मिटाईआ। नक रगढ़ के सीस झुकाओ, डण्डावत आपणी इक रखाईआ। धूड़ी बुल्ल्ह़ां नाल छुहाओ, सुरखी लोड़ रहे ना राईआ। साह साह आपणे अन्दर ध्याओ, स्वासां विच समाईआ। नेत्र नैणां नीर वहाओ, छहबर दयो लगाईआ। गल पल्लू पा के वास्ता पाओ, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। तूं आउणा साडे सच ग्रांउ, गृह मन्दिर देणी वड्याईआ। असीं तेरा जपीए नाउँ, नर निरँकार तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। नारद कहे सारीआं अन्दरों छडो माण, निमाणीआं हो के सीस निवाईआ। बिना नेत्रां चरण करो ध्यान, बिन अक्खां अक्ख बदलाईआ। बिन मुखो कहो श्री भगवान, हरि करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं बाली बुद्ध अंञाण, साडी चले ना कोए चतुराईआ। असीं पाणी दा वहिण टिल्यां टिब्बयां वाला गाहण, भज्जीए वाहो दाहीआ। तूं मालक स्वामी साडा इक महान, महिमा तेरी वड वड्याईआ। साडी बेनन्ती कर परवान, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। नारद कहे परम पुरख नूं खुशीआं विच रुझाओ, रीझां पूर जो अख्वाईआ। तन मन सीस खुशी बणाओ, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। दुतीआ भाउ दूर कराउ, दुवैत रहिण कोए ना पाईआ। बेनन्ती चरणां विच टिकाओ, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। इक्को मंनो पिता मांउ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नाले ढोला गाउ वाहो वाहो, वाहिगुरु तेरे हथ्थ वड्याईआ। बेशक असीं पाणी दा वहिण दुनिया सानूं कहे दरयाओ, थल अस्गाहां विच आपणा झट लँघाईआ। तूं अन्त कन्त भगवन्त सानूं पकड़ना बाहों, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त तेरे हथ्थ न्याउँ, अदल इन्साफ़ देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा अगम्म अथाहो, अलख अगोचर कहिण किछ ना पाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रोशन लाल दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे सतिगुर शब्द दी लओ गवाही, शहादत गोबिन्द धार भुगताईआ। तुहाडे दर आवे धुर दा माही, महबूब अगम्म अथाहीआ। तुसीं मिलणा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। असीं आपणी आसा मनसा चरण देणी टिकाई, सहिज नाल रखाईआ। उह मेहरवान होवे मेहर नज़र तकाई, नैण नैण नाल बदलाईआ । तुहाडी ख़ाली झोली दए भराई, भृष्टाचार विच्चों बाहर कराईआ। जलधारा करे सफ़ाई, सफ़ा हस्ती रंग रंगाईआ । तुसां गुण गाउणा चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सच स्वामी दया कमावेगा। दीन दयाल खेल खिलावेगा। गुर गोपाला वेख वखावेगा। भगत रखवाला फेरा पावेगा। दर सुहञ्जणा इक सुहावेगा। तट किनारे सोभा पावेगा। घाटां पतणां पड़दा लाहवेगा। तुहाडा भण्डार भरे सखणा, वस्त अमुल आप वरतावेगा। तुसां वक्त सुहञ्जणा याद रखणा, भुल विच ना कदे भुलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा दर इक वडयावेगा। साचा दर इक वडयावेगा। पुरख अबिनाशी चरण टिकावेगा। घट निवासी सोभा पावेगा। मण्डल रासी खेल वखावेगा। पृथ्मी आकाशी पन्ध मुकावेगा। धुर दा सोहणा छन्द दृढ़ावेगा। नूरी चन्द चन्द रुशनावेगा। तुहाडा बन्द बन्द वेख वखावेगा। निझरों आपणा दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटावेगा। ज़रूर मार के आवे पन्ध, पाँधी हो के फेरा पावेगा। जगत जहान दी मंज़ल लँघ, दर दुआरा इक वडयावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संगी हो के धुर दा संग निभावेगा।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे सतिगुर शब्द हभ आशा करनीआं पूरीआं, दर तेरे मंग मंगाईआ। राह तकण चन्न सूर्या, मण्डल अक्ख उठाईआ। तूं आउणा गृह ज़रूरीआ, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। तेरा प्रकाश होवे नूरीआ, नूर नुराना डगमगाईआ। तूं सर्ब कला भरपूरीआ, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द तेरे हथ्थ वड्याई, वड वड्डा इक अख्वाईआ। लेखा सब दा पूर कराई, परम पुरख हुक्म वरताईआ। पन्ध मार के आउणा थल अस्गाही, अगे हो ना कोए अटकाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती तेरी बणत बणाई, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ । अमृत धारा जिस ने वहिण वहाई, आपणा रंग रंगाईआ। अन्त उह मेटणवाला शाही, दुरमति मैल मैल धुआईआ । तूं सब दा बणना हक गुसाँईं, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द करनी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। साडी आशा तक पुराणी, जुग चौकड़ी पूरब वेख वखाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती करे की निमाणी, निम्रता विच बहि बहि सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादी जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। तैनूं पैग़म्बरां मन्नया पिता असमानी, दरगाह साची सोभा पाईआ। तूं साडा लेखे लाउणा आवण जाणी, जो दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द सब दा मेटणा भरम, भाण्डा भरम विच्चों भनाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। सारीआं तेरी आईआं सरन, ओट तेरी इक तकाईआ। अन्दरे अन्दर तैथों डरन, भय विच बैठीआं सीस झुकाईआ। तूं लेखा जाणें चोटी जड़न, चेतन तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं मालक घाड़न घड़न, भन्नणहार आप हो जाईआ। दर आईआं साची देणी सरन, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाउणा साचे घरन, गृह गृह आप सुहाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भगवान सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं सूरबीर सुल्तान, योद्धा दो जहान अख्वाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। सति सच दा देवणहारा दान, वस्त अनमुल अतुल वरताईआ। सचखण्ड निवासी बण प्रधान, दीन दुनी खेल खिलाईआ। मेरा सब तों वखरा विधान, जिस दी तरमीम ना कोए कराईआ। मैं आदि अन्त दा इक हुक्मरान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर ज़िमीं असमान, अवतार पैग़म्बर गुर निव निव लागण पाईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरा देण ज्ञान, सिफ्ती बण के सिफ्ती ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती देणा दस्स, दहि दिशा बाहर ध्यान लगाईआ। कलयुग मेटां रैण अन्धेरी मस, मसल देवां ख़लक खुदाईआ। सच दुआर आवां नस्स, भज्जां वाहो दाहीआ। अमृत भण्डारा देवां रस, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब दा आदि जुगादी कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। निरगुण धार बणावां बणत, घड़न भन्नणहार होवां बेपरवाहीआ। मेरा आदि जुगादी इक्को मंत, इक्को सिख्या सच समझाईआ। मेरे रूप अनूप अगणत, अवतार पैग़म्बर गुरु गए समझाईआ। अन्त सब तों वखरी बणाई आपणी बणत, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तूं निगाह मार लै नारद बणके बोध अगाधा पंडत, ब्राह्मणा ब्रह्म तों बाहर ध्यान लगाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल जीव जंत, लख चुरासी विच समाईआ। अन्त सब दी मंनां मिन्नत, आशा वेखां थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरयण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी मेटणहार चिन्त, चिन्ता चिखा रहिण कोए ना पाईआ।

६३२ ६३२
२४ २४

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ खेम कौर दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहानूं प्रभू दी धार मिल गई सस्ती, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। खुशीआं विच चढ़ी मस्ती, मस्त दीवाने रूप बदलाईआ। तुहाडे अन्दर वसदी गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती, बाहर खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाडी आशा उस नाल हसदी, जो हस्ती दा मालक नूर अलाहीआ। तुहानूं ख़बर अगम्मी दस्सदी, दहि दिशा तों बाहर सुणाईआ। हुण घड़ी नहीं रहिणी वख दी, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडी लो होणी निज नेत्र अक्ख दी,

प्रकाश प्रकाश प्रकाश विच्चों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडा धर्म धार दा प्यार, प्रेमीउ प्रीतम नाल मिल के वजी वधाईआ। तुहाडा अन्दर अमृत रस ठंडा ठार, तट्टां तीर्थां खोजण कोए ना जाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तुहाडी पावे सार, मेहरवान हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। तुसीं निरगुण धार जोती जाते करना दीदार, पुरख बिधाते मिलणा थांउँ थाँईंआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी तुहाडा लहिणा देणा देवे विच संसार, लोकमात दीन दुनी रहिण किछ ना पाईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहार, अक्ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। सो स्वामी तुहाडा मीत मुरार, मित्र प्यारयो दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडे अन्दर पवण पाणी, बसन्तर मिल के वजे वधाईआ। तुहाडे अन्दर सतिगुर शब्द बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। तुहाडे अन्दर तुहाडी महिमा अकथ कहाणी, कथनी कथ ना सके राईआ। तुहाडे अन्दर तुहाडी सच निशानी, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। तुहाडे घर तुहाडी मंज़ल रुहानी, रूह बुत मिल के वजे वधाईआ। तुहाडे गृह तुहाडा पिता असमानी, परम पुरख बैठा आसण लाईआ। जो लहिणा देणा जाणे दो जहानी, निरगुण हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सब दा बानी, बाण अणयाला तीर आपणा हुक्म चलाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ राजा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

जन भगतो तुहाडी मंज़ल हक रुहानी, राम प्यार विच राम विच समाईआ। तुहाडा लेखा नहीं नाल ज़मीन असमानी, तन वजूद ना वंड वंडाईआ। तुहाडा मालक ख़ालक तुहाडे उत्ते करे मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तुहाडा लहिणा देणा मुके चारे खाणी, चारे बाणी आपणा हुक्म सुणाईआ। लोड़ ना रहे किसे तीर्थ अठसठ पाणी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती आस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। जन भगतो अमृत रस तुहाडी निझर धार, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। तुहाडा जन्म मरन दए सुआर, पैज रखे थांउँ थाँईंआ। सच समझा के धर्म दुआर, धर्म दी धार नाल बंधाईआ। तुहानूं करके ख़बरदार, सुत्तयां ल्या उठाईआ। दे के नाम अधार, उदर दा लेखा दिता मुकाईआ। तुहाडा लहिणा देणा अन्त नाल करतार, कुदरत दा कादर आपणे अंग लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। जन भगतो तुहाडा जन्म कर्म दा लहिणा गया उतर, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वंड ना कोए रखाईआ। तुसीं उस प्रभू दे पुत्तर, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस तुहानूं चुक्कया कुच्छड़, गोदी गोद ल्या टिकाईआ। तुहाडा भाउ रिहा ना दुत्तर, दुतीआ दिता मुकाईआ। कौल इकरार करके जाए ना मुकर, वायदा सच सच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरयण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दो जहानां वेखे कुतर, कुतब दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

६३४

२४

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बेला सिंघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो तीर्थ तटां तों भगती हो गई भगौड़ी, आपणा आप आई बदलाईआ। ख़ाली हो गई हरि की पौड़ी, हरी हरि रंग ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी दी आशा दिसे कौड़ी, कुड़त्तण भरी लोकाईआ। होका देवे बौहड़ी बौहड़ी, तेरा नाम दुहाईआ। तेरी मंज़ल बड़ी लम्मी चौड़ी, चार कुण्ट पन्ध ना कोए मुकाईआ। मेरी आयू बीती थोड़ी, बहुती नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं तेरी लोड़ी, लुड़ींदे साजण देणी वड्याईआ। सतिगुर शब्द किहा तेरी भगतां नाल बणावां जोड़ी, सोहणा संग बणाईआ। जेहड़े चढ़े प्रेम दी घोड़ी, वागां सतिगुर हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। भगती कहे प्रभू दे भगत सदा हुन्दे भोले, भली गल्ल इक्को उन्हां दे अन्दर आईआ। उह सुत्ते जागदे गाउँदे सोहले, सुरती शब्द विच समाईआ। उन्हां दे दुनिया नालों वखरे ढोले, गीत गाउँदे धुर दे माहीआ। मैं सदा उन्हां दे वसदी कोले, इकल्ली बैठी नज़र किसे ना आईआ। मैनूं व्याहया नहीं किसे दीन दुनी दे डोले, कहारां पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं जदों वसी वसी भगतां काया चोले, अन्दर वड़ के आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। भगती कहे मैं भज्जी नाल ज़ोर, जोरू ज़र दोवें आई तजाईआ। मेरे अन्दर फुरना फुरया फोर, फुरती नाल दिता सुणाईआ। नी तीर्थ तटां उत्ते बैठे ठग चोर, कूड़ कुड़यार डेरा लाईआ। एथे रीती बण गई होर दी होर, होर दा होर रूप बदलाईआ। पाणी दीआं धारां विच होया अन्ध घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। भगतीए तेरी प्रेम विच बन्ने कोई ना डोर, कन्नी गंढु ना कोए रखाईआ। जा एस वेले जन भगत सुहेले लोड़, जो प्रभ दे विच समाईआ। मैं

आपणी मनसा जगत किनारयां वलों लई मोड़, भज्जी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। भगती कहे भगतां अन्दर नहीं विद्या राग, विदित रूप ना कोए बणाईआ। नहीं दीन दुनी दा समाज, समग्री जगत ना कोए रखाईआ। मैं अक्खीं वेख्या आज, भज्जी वाहो दाहीआ। हैरान हो गई जिन्हां दी प्रभू रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उन्हां दे अन्दरों इक्को प्रेम दी निकले आवाज़, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। मैं सुत्ती गई जाग, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। खुशीआं विच हो गई बाग़ बाग़, बाग़ बाग़ीचा भगत सुहेले तके धुर दा माहीआ। मेरी जगत कूड़ तृष्ना दी बुझ गई आग, सांतक सति सति आपणा आप कराईआ। वड्डी दे वड्डे होए भाग, वड वड्डा पाया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं प्याए हयाते आब, अमृत रस बिन रसना रस चखाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बंती देवी दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

६३५ भगती कहे जन भगतो मेरा सुणो फ़रमान, प्रभू दे फ़रमाबरदारो दयां जणाईआ। आपणा कायम करो धर्म ईमान, कूड़ी ६३५

२४ क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। पंजां ततां वाल्यो पंचम आपणे घर करो प्रधान, पंचम मिल के वजे वधाईआ। तुसीं सारे मानव ज़ाती २४

मानस रूप इन्सान, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। तुहाडा मालक इक्को धुर दा काहन, जो काहन कान्हा हुक्म सुणाईआ। मैं इक बेनन्ती दस्सां खुशीआं नाल गा के गाण, ढोला धुर दा दयां दृढ़ाईआ। तुसीं भगत सुहेले आपणे मुख विच्चों आपणे नक नाल लाउ आपणी ज़बान, ज़बान दा रस रसना विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भगती कहे जन भगतो हो जाउ सुन्न, समाधी तुहाडी नज़र किसे ना आईआ। रसना वाल्यो बण जाओ मुन, जगत बोलण दी लोड़ रहे ना राईआ। अवाज़ां सुणन वाल्यो आपणे अन्दर सुणो धुन, अनादी धुन करे शनवाईआ। आपणे आप नूं लओ चुण, आपणा आप लओ प्रगटाईआ। आपणे विच प्रगट करो साचे गुण, गुण निधान मिलो चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग दए रंगाईआ। भगती कहे जन भगतो आपणे अन्दर मार लओ झाकी, झाका रहिण कोए ना पाईआ। पर्दा खोल्ह के वेखो ताकी, कुण्डा बजर कपाट खुल्हाईआ। अमृत जाम पीओ बण के साकी, प्याला नाम हथ्थ उठाईआ। कूड़ अन्धेरा मिटाउ राती, निज नेत्र लओ चमकाईआ। साचा राम वसाउ विच सीने छाती, शत्रु पंज विकार अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ।

तुहाडी धर्म दी होवे प्रभाती, सरघी सँध्या वंड ना कोए वंडाईआ। दर्शन पाओ उस कमलापाती, जो पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल सदा बहुभांती, वेस अनेका आपणा रूप बदलाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे भगतीए तूं किथ्थों आई शताबी, जल्दी जल्दी आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे नंगे पैर तेरी किधर गई गुरगाबी, पब्ब नज़र कोए ना आईआ। क्यों तीर्थ तटां किनारयां उत्ते करके आई इनकलाबी, आपणी करवट आप बदलाईआ। मैनूं लहिणा देणा लेखा दस्स शताबी, भेव अभेद खुल्हाईआ। झट भगती ने नारद दे हथ्थ मारया उत्ते नाभी, सहिज नाल सुणाईआ। सुरती रही किसे ना जागी, सोई सर्ब लोकाईआ। मैं तीर्थां उत्तों भागी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं भगतां नूं मिलण दी वादी, आदत पिछली दयां समझाईआ। जिन्हां दी प्रभू चरण आबादी, बैठे डेरे लाईआ। मेरी मुहब्बत विच उन्हां नाल शादी, जो शादिआने रहे वजाईआ। मैं शब्द संदेशा सुणां बोध अगाधी, बुद्धी तों परे परे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे भगतीए तेरा भगवन केहड़ा, मैनूं दे जणाईआ। वसे केहड़ा खेड़ा, कवण गृह सुहाईआ। किस बिध बन्न्हे बेड़ा, नईया नौका आप चलाईआ। भगती किहा नारदा जिस दा आदि जुगादी खुल्हा वेहड़ा, दो जहानां इक्को रंग रंगाईआ। नारद किहा हस के कमलीए मेरा दिल करदा तैनूं मार दयां थपेड़ा, ज़ोर नाल लगाईआ। उह प्रभू बदल गया तेरा, तैनूं दयां समझाईआ। जिस भगती दे थाँ दीन दुनी विच पा देणा झेड़ा, झगड़े विच दिसे दीन दुनी लोकाईआ। अन्तिम देण वाला उलटा गेड़ा, लख चुरासी दए भुआईआ। भगतीए तूं सुख माण ल्या बथेरा, आपणा खेल खिलाईआ। हुण कलयुग तक अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जिंनां चिर प्रभू करे ना मेहरा, उनां चिर भगत बणन कोए ना पाईआ। बेशक तेरा दुनिया दे विच फेरा, भज्जें वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां इक्को वखाए सञ्झ सुवेरा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू भाईआ देवी दे गृह ✪

नारद कहे जन भगतो भगती चंगी कि भगवन्त, मैनूं दयो समझाईआ। नाम चंगा कि मंत, शब्द दयो दृढ़ाईआ। गुरसिख चंगा कि सन्त, सति दा भेव खुल्ह्राईआ। नार चंगी कि कन्त, कन्तूहल की वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। नारद कहे जन भगतो तुहाडा केहड़ा सच्चा मीत, मित्रो दयां जणाईआ। कवण वसे तुहाडे चीत, अन्दर सोभा पाईआ। केहड़ा गावो गीत, ढोला कवण अलाईआ। किस दी अन्दरों साफ़ होई नीत, मैनूं दयो समझाईआ। ठगौरी रही ना चीत, ठग्गी मन रही ना राईआ। झगड़ा रिहा ना हस्त कीट, ऊँच नीच ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभू दा केहड़ा रंग, रंगत दयो जणाईआ। केहड़ी तुहाडी मंग, मैनूं दयो जणाईआ। केहड़े लाओ अंग, कवण तत वड्याईआ। कवण दुआरा आवे लँघ, कुण्डी खिड़की कवण खुल्ह्राईआ। कवण नूर होवे चन्द, कवण नूर करे रुशनाईआ। किस बिध मेटे पन्ध, पाँधी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। सच दस्सो किस नूं प्रभू दा आया अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। किस किस ने रसना कूड़ कुड़यारा दा छड्डुया गंद, विख रसन ना कोए लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। जन भगतो मैं पुछणी इक्को बात, नारद रिहा सुणाईआ। किस नूं सच दी मिली दात, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। किस दा भरोसा उत्ते कमलापात, पतिपरमेश्वर कवण मनाईआ। किस दा चरण प्रीती जुड़या नात, रिश्ता सके ना कोए तुड़ाईआ। आपणा डूंग्घा कढुके वेखो खात, की लहिणा नज़री आईआ। किस बिध प्रभू नूं मिलो विच लोकमात, मता आपणा आप पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे जन भगतो आपणा सोहणा तक लओ अन्दर, नव दुआर ध्यान लगाईआ। आपणा निराला तक लओ मन्दिर, जिस दा रूप रंग नज़र कोए ना आईआ। आपणा खोल्ह के वेखो जंदर, कुन्जी नाम वाली लगाईआ। प्रकाश कर के तक लओ अन्धेरी कंदर, अन्ध अन्धेरा आप मिटाईआ। मनुआ मन वेखो जो दहि दिशा भौंदा बन्दर, उठ उठ भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा करता इक अख्वाईआ। नारद कहे जन भगतो तुसीं अन्दर वेखो चढ़ के, बिन पौड़ी डण्डे पन्ध मुकाईआ । साचे मन्दिर वेखो वड़ के, बिन सीस धड़ सोभा पाईआ। निरअक्खर धार वेखो पढ़ के, पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। सच दुआर तको हरि के, हर हिरदे विच समाईआ। जेहड़ी मंज़ल मिलदी

नहीं मर के, उह जीवदयां लैणी अपनाईआ। नारद कहे जन भगतो तुहानूं लोड़ नहीं रहिणा डर के, भय सारे देणे चुकाईआ। तुहाडी मंज़ल विच रहे कोई ना खटके, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तुहाडी धार कदी ना भटके, भावना जगत ना कोए जणाईआ। तुसीं सचखण्ड पुजणा इक्को झटके, जिथ्थे झटके हलाली वाला पुज्जण कोए ना पाईआ। तुसां गृह साचे जाणा आपणा रूप वट के, गुरमुख हँस रूप बणाईआ। हरिजन मात गर्भ फेर ना लटके, उलटा बिरख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हाए आपणे घर दे, घर घराना इक्को इक वखाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ देवा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे सुण नीं लिखण वालीए कलमे, कमलीए तैनूं दयां जणाईआ। उह तक गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती धारा जल में, जलमीन वांग कुरलाईआ। जो भज्जीआं फिरदीआं जंगल जूहां थल में, टिल्यां पन्ध मुकाईआ। उन्हां दा लेखा मुकाउण लग्गी पल में, पारब्रह्म दा हुक्म सुण के चाँईं चाँईंआ। वेखीं तूं वी ना आवीं छल में, अछल छलधारी आपणा खेल खिलाईआ। तूं होणा आपणे बल में, बलधार लैणी अंगड़ाईआ। की खेल वरतणा कलयुग कल में, कलि कल्की की कराईआ। नीं तूं की भेव लुकाया नानक दी इक गल्ल में, जिस दी समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे कलमे नूं लिखण दी तूं कर ना शताबी, भज्ज ना वाहो दाहीआ। तूं साडी बण इमदादी, सगला संग वखाईआ। बेशक तेरे लेख नाल प्रभ नूं जुग बदलण दी वादी, वअदे तेरे लिखे मोड़ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे कलमे तूं मेरे वल पेख, आपणी लै अंगड़ाईआ। नी तेरी बदल सके कोई ना रेख, जो लाईन देवे बणाईआ। तेरी धार ने मेट देणे मुल्ला शेख़, शरीअत नज़र कोए ना आईआ। नी तेरे हुक्म दा हुक्म प्रभू दा अवलड़ा भेस, भेखाधारी आपणा रूप बदलाईआ। जे तूं लेख ना लिखदी ते किस बिध आउँदा सम्बल देस, देस देसन्तरां पन्ध मुकाईआ। हुण वी लिख लिख देई जावें संदेश, संदेशे थांउँ थाँईंआ। जे तूं ना लिखें ते क्यों कलयुग अन्तिम पए कलेश, कूड़ी क्रिया नाल करे ना कोए लड़ाईआ। कानी हस के किहा नारदा मैं उस दे होई पेश, पेशीनगोईआं गया समझाईआ। मैं सच दस्सां जिस वेले मैनूं हथ्थ विच फड़या दस्मेश, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। फेर आपणे खुल्हड़े करके केस, कसम खा के दिता

६३८
२४

सुणाईआ। नी कलमे तेरा प्रभ दे हुक्म दा लिख्या सदा रहे हमेश, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे दर दी होई दरवेश, दरवेशण हो के सीस निवाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती कहिण नारद असीं अनभोल, बहुमत ना कोए रखाईआ। असीं कन्ढी घाट आईआं सानूं सारे करदे मख़ौल, हासी बुढ्ढे नढ्ढे रहे कराईआ। असीं शर्म दीआं मारीआं कुझ ना सकीआं बोल, रसना कहि ना कुछ सुणाईआ। साडे वेख लै कुझ नहीं कोल, ख़ाली हत्थ दईए जणाईआ। साडी हालत तक लै उत्ते धौल, धर्म नाल सुणाईआ। साडा भुख नाल अन्दर कालजा रिहा हौल, हौकयां विच दुहाईआ। सानूं अंग्रेज़ सिँघ ने पुछिआ नहीं तुसीं वी खा लओ चौल, भुखीआं रह के की दईए सुणाईआ। साडा जी करदा एथे इक नवां भण्डारा देईए खोल्ह, अमृत रस प्रभ चरण वखाईआ। जो सब दे अन्तर जावे मौल, मौला रूप नज़री आईआ। वे नारदा तूं मृदंगा वजा दे ढोल, डौरु डंका हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साडी आशा वेख वखाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती जे तुसां खाधा नहीं भोजन, भुजां हत्थ दोवें दयो उठाईआ। तुसां पन्ध मारया कितने योजन, गिणती दयो गिणाईआ। सारीआं लग्गीआं सोचण, समझ किछ ना पाईआ। नारद किहा खोल्हो आपणे लोचन, नैण लओ तकाईआ। जन भगत सुहेले तको बिना वरन गोतन, ज़ात पाती नज़र कोए ना आईआ। चढ़ के वेखो आपणी सिख़र चोटन, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। प्रभू प्यारा भगत मिलदा विच्चों कोटी कोटन, गणती गणत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जे तुसीं चार जुग दीआं भुखीआं, भुखड़ो दयो जणाईआ। मैं चाहुंदा भगतां दुआर तुहानूं रोटीआं खुआवां रुखीआं, टुकड़े हत्थां विच फड़ाईआ। तुहाडे उत्ते पता नहीं कितनयां ब्राह्मणां पंडतां पदार्थां दीआं सुखणा सुखीआं, जो तुहाडी जलधारा विच रुढ़ाईआ। उह खा गईआं मच्छीआं डड्डीआं हो के पुट्ठीआं, तुहाडे हत्थ किछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। गंगा कहे नारद असीं आईआं करके फुरती, फुरतीलीआं हो के दईए जणाईआ। साडा लहिंगा वेख लै कुड़ती, अंगी तन ना कोए सुहाईआ। साडी सूरत वेख लै मूर्ती, मुरदयां वाली नज़री आईआ। की खेल दस्सीए

हज़ूर दी, करता हुक्म की वरताईआ। जिस दी आशा सदा भरपूर दी, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ। असां मेहनत लैणी बण सच्चे मज़दूर दी, जो जुग जुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे जे खाण पीण दा चाउ, तृष्ना अन्दर रखाईआ। पहलां भगतां दे दर्शन पाओ, जो बैठे आसण लाईआ। फेर झुक झुक सीस निवाउ, निव निव लागो पाईआ। फेर इक्को ढोला गाओ, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर ख़ाली हथ्थ मंग मंगाओ, भिच्छया देवे धुर दा माहीआ । आपणा पिछला लहिणा देणा हिस्सा जणाओ, पड़दा ओहला लओ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सारे कहिण नारदा साडा तेरे नाल ग़ुस्से वाला नहीं हनोरा, गिला नज़र कोए ना आईआ। असीं भगत भण्डारयों डिग्गा ढठ्ठा खा के भोरा, भौरयां वांग आपणा आप भुआईआ। साडा पूरब जन्म जावे सौरा, सौहरे पेईए वजदी रहे वधाईआ। साडा खेल प्रभू दे नाल अवर का औरा, अवर की अवर कार कमाईआ। तूं निगाह नाल तक लै करके ग़ौरा, गहर गवर की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। चारे कहिण साडा साहिब इक गुसईंआ, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द नज़री आईआ। जिस दी सरन सरनाई पईंआ, सिर सर भेंट कराईआ। जो साडीआं पकड़े बहींआ, आप आपणे गले लगाईआ। असीं चाउ नाल गाईए थईआ थईआ, थिर घर वासी तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडीआं जुग चौकड़ी लँघीआं कईआं, कोटन जुग गए विहाईआ। सानूं दीन दुनी दे जिज्ञासू कहिंदे रहे गंगा मईआ, सरस्वती यमुना कहि के गाईआ। सानूं संदेशा दे के गया दशरथ बेटा जो राम राम राम रम्ईआ, रमता रमता रमता आपणा हुक्म सुणाईआ। सानूं इशारा दिता यमुना कहे मेरे घाट घनईया, गवर्धन धारी गया दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम गोबिन्द दा पूरा होया ढईआ, ढौंका ला के आपणी लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह्हाईआ। नारद कहे मेरे अन्दर आउँदी जांदी खरमस्ती, सच सच दयां सुणाईआ। मैं तक्कया नूर नुराना अगम्मी जिस दी हस्ती, हस्त कवलां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस ने लहिणा देणा सब दा पूरा करना दस्ती, अगे उधार ना कोए जणाईआ। उस दी भगतां वाली सब तों अगम्मी बस्ती, नगर खेड़ा इक्को सोभा पाईआ। जिस नूं वेख के गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती वेख के हसदी, हस हस खुशी बणाईआ। वे नारदा उथे जेठ दी अग्नी भखदी, झक्खड़ अन्धेर रिहा वगाईआ। नारद किहा उहदी कीमत नहीं करोड़ी लख दी, जगत सुल्तान सके ना कोए चुकाईआ। नी तुहाडी धार वहिणां विच टपदी, भजे वाहो दाहीआ। जन भगतां आशा वेखो तूं मेरा

मैं तेरा जपदी, अन्तर अन्तर ढोले गाईआ। इन्नां दी कमाई वेखो आपणे पसीने रत्त दी, जो रती रती रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। गंगा कहे नारदा मेरी इक्को इक आस, आसा दयां जणाईआ। जे भगत भण्डारे विच्चों मिल जाए पाणी दा इक ग्लास, आपणे सीने लवां लगाईआ। सदा रखां पास, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। फेर जा के दस्सां शंकर कैलाश, शम्भू अगे वास्ता पाईआ। साडा अमृत होया नास, रस रहिण किछ ना पाईआ। तूं बैठा उत्ते आकाश, मण्डलां बाहर डेरा लाईआ। धरनी उत्ते कवण देवे धरवास, धीरज नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम होया फ़ाहश, फ़ाहिश होई लोकाईआ। परम पुरख दी करे ना कोए तलाश, खोजणवाला रहिण कोए ना पाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसे लाश, लशकर फ़ौजां रोवण मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गंगा कहे जे भगत दुआरयों निर्मल मिल जाए पाणी, पाहनां पत्थरां मिले वड्याईआ। मेरी एकँकार सोहँ सति सच दी होवे बाणी, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ । मैं भज्जां नठ्ठां वेखां चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। बेनन्ती करां हो निमाणी, निव निव सीस झुकाईआ। मेरे तीर्थ तट विरोलीं करीं आप मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं सच दी बख़्शीं सच निशानी, निशाना कूड़ कुड़यार बणाईआ। मैं तेरी गावां कथ कहाणी, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। तूं मेरा बणना जीअ प्राणी, पूरन सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। मैं भगतां घर अज्ज खुशीआं नाल खा के जावां महिमानी, भोरा भोरा आपणे मुख विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जाण जाणी, जानणहार तेरी ओट रखाईआ।

३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड हँसा ज़िला जम्मू

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती जे आईआं घत वहीरा, आपणा पन्ध मुकाईआ। राह विच तुहाडा लहिंगा पाटया चीरा, कानयां बेल्यां विच दुःख उठाईआ। नी तुहाडी केहड़ी गल्लों होई माढ़ी तकदीरा, मैनूं दयो समझाईआ। किधर गया तुहाडा तीर्थां तटां खाण वाला सीरा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। केहड़ी धार भोग लगदा रिहा खीरा, पाणी दुद्ध विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चारे कहिण नारदा साडे उत्ते तक लै पंडत पांधे, पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। साडे नाँ दा भोग लगा के आपे रहे खांदे,

साडे हथ्थ किछ ना आईआ। नाले कूड़ कुड़यार दे ढोले रहे गांदे, रसना जिह्वा नाल सुणाईआ। नाले मंनता विच लैंदे रहे भाण्डे, बरतनां वंड वंडाईआ। साडे सीने मूल होए ना ठांडे, अग्नी तत तपाईआ। साडे तीर्थ तट किनारे काहदे, की दईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चारे कहिण सानूं इशारयां वाले लगदे रहे भोग, थाल परोस अगे ना कोए टिकाईआ। जगत जिज्ञासू हो के माणदे रहे मौज, जगत माणस हो के माणसां रहे खाईआ। एह लेखा तकदीआं रहीआं रोज़ रोज़ रोज़, वेख्या थाउँ थाँईआ। साडा चलया कोई ना जोग, जुगती हथ्थ कोए ना आईआ। एसे विच बौहड़ी साडी लँघ गई औध, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा अगा पिच्छा देवे सोध, शुद्ध आपणे हुक्म नाल कराईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

६४२
२४

गंगा कहे नारदा असीं हुण करीए की, किछ समझ देणी समझाईआ। साडा एथे ना कोई पुत्तर ना कोई धी, मात पित भाई भैण नज़र कोए ना आईआ। सानूं किसे नहीं किहा आयां जी, जी कहि के कोल ना कोए बहाईआ। जन भगत सुहेले इकल्ले मिट्ठा पाणी गए पी, साडी प्यास ना कोए बुझाईआ। सानूं उह गल्ल चेते आ गई जो गुरदास ने कही वीह इकीह, बीस इकीस नाल वड्याईआ। साडा जीअ करदा असीं नवीं चला के जाईए लीह, प्रभ दे कोलों मंग मंगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे पिच्छे जन भगतां दी पीड़ हटा के रीह, दर्दां दर्दां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साडी प्यास दे पिच्छे इन्नां उत्ते बरसा के मींह, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। सति सच दा आपणा रसना ला दे घी, जगत तृष्ना लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म की सुणाईआ। यमुना कहे गंगा जे तैनूं पुछिआ नहीं किसे ने पाणी, बुढ्ढीए तेरे वल अक्ख ना कोए उठाईआ। तेरी सार पाउण नूं बैठा बाबा लक्ष्मण सिँघ तेरा हाणी, जिस दी आयू चार जुग समझ किसे ना आईआ। एह उह खतरेटा जिस नूं कसीरा दिता चमरेटा अन्दरों बण के जाण जाणी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इंन हथ्थ जोड़ के किहा मैं तेरा जीउ प्राणी, प्रान अधारी तेरी ओट रखाईआ। बिना कीमत तों कसीरा सुट्टया तेरे वल कर ध्यानी, बिन नैणां नैण उठाईआ । तूं उस नूं सच प्यार विच दिती कंगण निशानी, हथ्थ बांह आपणी बाहर कढ्ढाईआ। नी तेरे नाल एहदी मुहब्बत पुराणी, जीव जगत भेव ना कोए चुकाईआ। जे एथे पुज

गई हुण हो जा निमाणी, निव निव सीस निवाईआ। झट सरस्वती बोली एथे सुण लै अगम्मी बाणी, जो बाण अणयाला तीर लगाईआ। गोदावरी कहे तूं बणी ना चंगी सवाणी, सोहणीए तैनूं दयां समझाईआ। एह शहिनशाह सुल्तानी, दो जहानां मालक इक अख्वाईआ। जे मेहरवान कर देवे मेहरवानी, सब दी तृष्ना भुख दए मिटाईआ। जन भगतां दे रिहा मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा मालक इक अख्वाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रमेश सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

कंगण कहे मैं पुराणा नहीं कोई कंगला, मेरी कीमत जगत कोए ना पाईआ। मेरा रूप नहीं कोई गंदला, खोट विच ना कोए मिलाईआ। मेरा नेत्र नहीं कोई अन्धला, वेख सकां ना ख़लक खुदाईआ। मेरा धाम न्यारा सब तों बंगला, जिथ्थे वसे मेरा माहीआ। उथे चार दीवारी नहीं कोई जंगला, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं इक्को साहिब नूं करां बन्दना, निव निव लागा पाईआ। जो देवे सब अनन्दणा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । जन भगतो उसे कोलों सब ने मंगणा, देवणहार गुसाईंआ। जिस दी सरन सरनाई सब ने लग्गणा, लग मातर डेरा ढाहीआ। उसे दा दीपक जगणा, जोती जाता करे रुशनाईआ। उसे दा डंका वजणा, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग कूड़ा भजणा, भज्जे वाहो दाहीआ। धरनी उत्ते अन्त नहीं लभणा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। सतिगुर साचा सज्जणा, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। कंगण कहे गंगा लक्ष्मण वेख लै जोबनवन्त, जवानी अन्दरे अन्दर नज़री आईआ। जिस नूं बुद्धिवान समझ सके कोई ना पंडत, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ । दुनियादार भावें साध कहिण भावें सन्त, सतिगुर शब्द आपणा रंग रंगाईआ। जो बणावणहारा भगतां बणत, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। जे एह लहिणा बाकी ना हुन्दा एस दा हो जाणा सी अन्त, तन वजूद रहिण कुछ ना पाईआ। अगे प्रभू किरपा कर के बणाए नवीं बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। कंगण कहे मैं बणां विचोला दलाल, पिछली यारी दयां दृढ़ाईआ। वेखां आपणे मित्र दा हाल, बिन नैणां नैण उठाईआ। जे प्रभू तूं बचाया इस नूं अन्त कोलों काल, काल महाकाल आपणे हुक्म विच रखाईआ। किरपा कर के इस नूं आयू बख्श दे पंज सत्त दस साल, गिणती आपणे हथ्थ रखाईआ। भगतां

दा भगत दुआरे गोदावरी कहे जे मैनूं पाणी नहीं प्याया मेरे प्रभू नूं दयो प्याल, साडी तृष्ना रहे ना राईआ। तुसीं जीउँदे रहो जगत विच तुहाडी सब तों वखरी होवे मिसाल, मिसल विच मिसल प्रभ आपणी दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले गुर सतिगुर आपे लए भाल, भालणहारा एकँकारा आपणी दया कमाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सुरगवासी बाबू राम दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे प्रभू जन भगतां बणया रहिणा सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिन्हां इक वार तेरा ला ल्या जैकारा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै सुणाईआ। उन्हां दा दीन दुनी विच्चों करना पार किनारा, लोकमात लेखा कुछ रहिण ना पाईआ। जन्म लैणा पए ना जगत फेर दुबारा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सद वसदे रहिण सचखण्ड दुआरा, थिर घर साचे लैणा टिकाईआ। जुग चौकड़ी तेरा लेखा अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त तेरा नाउँ कलि कल्की अवतारा, निहकलंक तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। नारद कहे प्रभू भगतां सदा कटणी फाँसी, फ़ैसला राय धर्म ना कोए सुणाईआ। आवण जावण मेटणी उदासी, चिन्ता जगत ना कोए रखाईआ। तेरे सचखण्ड दुआर वसण खुशीआं नाल करन हासी, मस्ती विच तेरे विच समाईआ। तूं पातशाह शहिनशाह पुरख अबिनाशी, करते तेरी वड वड्याईआ। तेरे हुक्मे अन्दर शंकर कैलाशी, दर ठांडे बैठा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर देणा सुहाईआ। नारद कहे प्रभू तूं मालक बणना सब दा, भगत सुहेले लैणे गल लाईआ। तैनूं गुरमुख फिरे कोई ना लभ्भदा, घर मिलणा चाँई चाँईआ। कूड़ विछोड़ा मेटणा जग दा, जागरत जोत करनी रुशनाईआ। नाम प्याला प्याउणा अमृत मदि दा, बिन रसना रस चखाईआ। तेरा मेला होया सबब दा, सतिगुर देणी माण वड्याईआ। जो तेरी सरन सरनाई होवे लगदा, धूड़ी चरणां ख़ाक रमाईआ। उह पन्ध मुकावे आवण जावण वाली हद्द दा, हद्दूदां डेरा ढाहीआ। सच दुआर होवे वसदा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे तेरा दीपक जोती जगदा, नूर नुराना नज़री आईआ। झगड़ा अगे ना रहे अलग दा, जोती जोत विच रलाईआ। माण देणा अमरापद दा, दरगाह साची सच सुहाईआ। मेरा बचन आसा वाला पूरा करना अज्ज दा, आजज़ हो के मंग मंगाईआ। तुध बिन भगतां पड़दा कोए ना कजदा, सिर सिर हथ्थ ना

कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे घर देणी वड्याईआ। नारद कहे प्रभू तेरा बच्चा नन्हा बाबू राम, राम प्यारे देणी वड्याईआ। अमृत रस दे हकीकी जाम, बिन रसना रस चखाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा मेट तमाम, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। राय धर्म दा बणना ना पए गुलाम, हुक्म विच ना हुक्म भुआईआ। तूं आदि जुगादी भगतां करन वाला इंतज़ाम, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ । मैं चाहुंदा तेरे चरण कवल सचखण्ड करन विसराम, सिँघासण इक्को देणा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा आप सहाईआ। नारद कहे प्रभू जन भगत तेरी चरण दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं पन्ध मुकाउणा पृथमी आकाशी, गगन गगनंतरां डेरा ढाहीआ । जन्म दी जन्म विच्चों मेटणी उदासी, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। मानस जन्म करना रहिरासी, रस्ता आपणा इक दरसाईआ। जिथ्थे तेरा नूर जोत प्रकाशी, जोती जाते नज़री आईआ। तेरा भगत सुहेला सचखण्ड दा होवे वासी, दरगाह साची सोभा पाईआ। नारद कहे प्रभू मेरी बेनन्ती मेरी अरदासी, अरज़ोई तेरे चरण टिकाईआ। जन भगत परवार नाम देणा शब्द स्वासी, साह साह रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल सदा पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ इन्द्र राम दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मेरे नाल करो मिलाप, मेला हरि जगदीश मिलाईआ। प्रभ नूं कहीए भगतां बणना बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। आवण जावण लख चुरासी मेटणा ताप, त्रैगुण पन्ध मुकाईआ । आत्म परमात्म बख्शदे रहिणा जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हदे रहिणा ताक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। निगाहबान हो के सदा लैणा झाक, लोकमात ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती सारे बणीए मंगते, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। साडा साथ दयो साची संगते, संगी सब अख्वाईआ। प्रभ नूं कहीए गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। जिन्हां भोजन खाधा बैठ के इके पंगते, सारे इक्को रंग समाईआ । वेखो किन्ने जुग चौकड़ी जांदे लँघदे, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे सारे मांगत हो के

डाहीए झोली, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। प्रभू साडी धार तेरे दर दी गोली, सेवक चाकर रूप बदलाईआ। साडा प्रेम प्यार मुहब्बत विच तोलीं, जगत तराज़ू हथ्थ ना कोए उठाईआ। असीं बेनन्ती करीए हौली हौली, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। साडा मालक हो के साडे अन्दर मौलीं, मौला आपणा रूप प्रगटाईआ। तेरी चरण प्रीती साडी आत्म होवे घोली, घोली घोल घुमाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना नौजुआना साडी कंध्याँ उत्ते उठा लै कर्मा वाली डोली, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडी लेखे लाउणी सुरत अनभोली, भुल्ले भटके दर आपणे लैणे टिकाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बंसो देवी दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर शब्द कहे जन भगतो कदे ना जाणा डोल, अडुल देवणहार वड्याईआ। सदा सुहेला इक इकेला वसे तुहाडे कोल, काया मन्दिर अन्दर आपणा डेरा लाईआ। जगत जहान तुसीं बणे ना रहिणा अनभोल, भुल्यो रुल्यो तुहानूं लए जगाईआ। धर्म दुआरा साचा देवे खोल्ह, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। आत्म परमात्म धार हो के जावे मौल, मौला आपणा रंग चढ़ाईआ। तुहाडा वअदा पूरा करे कौल, इकरार आपणे हथ्थ रखाईआ । जो पन्ध मार के आ गया उपर धौल, धरत दा मालक इक अख्वाईआ। तुहानूं फड़ उठाए शब्द वजा के ढोल, सोई सुरत रहिण ना पाईआ। नाम निधाना दस्स के बोल, शब्द अगम्मा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखाईआ। नारद कहे जन भगतो लोकमात मूल ना डरना, भय प्रभू रिहा मुकाईआ। जिस ने तुहाडे गृह वड़ना, घर मन्दिर डेरा लाईआ। तुहाडा अन्तष्करन फड़ना, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। तुहाडा गीत संगीत ढोला पढ़ना, आत्म परमात्म राग जणाईआ। तुहाडी मंज़ल महबूब चढ़ना, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर दए सुहाईआ। नारद कहे जन भगतो तुहाडा वेखे आप महल, महल आपणा लए बणाईआ। जो वसे सदा अटल, अटल दा मालक इक अख्वाईआ। उह सच संदेशा निरगुण धार देवे घल, बिन रसना रसन पढ़ाईआ। तुहाडा अन्दर बणा के आपणा निहचल धाम सिँघासण लए मल्ल, आसण इक्को इक वखाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के आत्म जाए रल, परमात्म मिल के खुशी बणाईआ। तुहाडा विछोड़ा होण ना देवे पल, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडा विछोड़े वाला मेट के सल्ल, सतिगुर आपणी धार विच रखाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सन्तोख सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे प्रभू तेरीआं भगतां नाल यारीआं, यार यारां दे यार होणा सहाईआ। निगाह मार के तक ख्वारीआं, घर घर वेख वखाईआ। तन वजूदां लग्गीआं कट बीमारीआं, रोग सोग गंवाईआ। वेरवा रखणा नहीं पुरख नारीआं, बृद्धां बालां होणा सहाईआ। जुग चौकड़ी बाद आई तेरी वारीआ, वारस होणा सभनी थाँईंआ। तेरे नाम तों बिना होर दिसे कोए ना दारीआ, दारू अवर ना कोए रखाईआ। इक बेनन्ती हमारी आ, हम साजण दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। नारद कहे प्रभू नौ सौ नड़िनवे बीमारी हर घट शरीर, समें समें आपणा रूप बदलाईआ । की कोई करे साध फ़कीर, भेव सके ना कोए पाईआ। हकीम डाकटर किस किस नूं रखण चीर, किस किस दी करन सफ़ाईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, नज़रां तों ओहले तेरी बेपरवाहीआ। बेशक साढे तिन्न हथ्थ मानस तेरी जगीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। नारद कहे प्रभू दु:ख रोग मेट दे सर, सिर सिर आपणा ध्यान लगाईआ। जिस विच दस्म दुआरी तेरा घर, ब्रह्मण्ड खण्ड रचना लई रचाईआ। जिथ्थे तेरा सरोवर सर, सच वस्तू दिती टिकाईआ। जिथ्थे तेरा शब्द अनादी तूं ही तूं ही रिहा कर, करनी दे करते तेरे ढोले गाईआ। जिथ्थे दीपक जोती निराकार टिकाया आपणे घर, घर घर विच आपणी कीती रुशनाईआ। तिस सिर उत्ते किरपा कर, किरपन हो के वेख वखाईआ। दर्द पीड़ ना आवे दर, दर दुआरयों बाहर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। नारद कहे प्रभू मेरी मिन्नत इक्को मंन, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। जन भगतां पवित्र कर दे मुख नाक अक्खां कन्न, कायनात दे मालक आपणी दया कमाईआ। दर्दी हो के सब दा बेड़ा बन्नृ, बन्नृणहार आप अख्वाईआ। एह भगत सुहेले तेरे चन्न, चरण कवल बैठे सीस निवाईआ। सच प्यार दा दे दे धन, वस्तू नाम वाली वरताईआ। सदा सदा बणा लै आपणे जन, धुर दी बण जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा सच होणा सहाईआ। नारद कहे प्रभू जन भगतां दुखड़े कदे ना होण, सिर सिर देणी माण वड्याईआ। पवित्र करना स्वासी पौण,

साह साह विच समाईआ। जिस नाल तेरा ढोला गाउण, गोबिन्द तेरे रंग रंगाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम दुक्खां विच आएयों तरसौण, तरसदयां आपणे गले लगाईआ। क्यों ग़रीब निमाणयां आएयों रवाउण, रोंदयां आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। नारद कहे प्रभू तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्दन, मदद तेरी इक रखाईआ। जो इशारा कीता गोपीआं नाल पर्वत गवर्धन, गदा भीम वाली नाल मिलाईआ। जो संदेशा दे के गया अर्जन, घनईया आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त धर्म दी धार चुक्के कोई ना गरदन, गरदश विच होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म अगे कोई पा सके ना अड़चन, अगे हो जन भगतां दुःख रोग ना कोए सताईआ।

६४८
२४

मैं निमाणी गौरजां, गुमनाम गुमराह। मेरा झगड़ा जगत जहान रोज़ दा, नित नवित देणा सुणा। मेरा खेल आपणी मौज दा, दुद्धां दहीआं वंड वंडा। मेरा चोला धुर दे जोग दा, जुगीशरां वाली बैठी बणत बणा। मेरा वेला अन्तिम मुक्कया औध दा, मैं देवां सच सुणा। मेरा अन्तष्करन कोए ना सोधदा, अवतार पैग़म्बर गुरुआं अगे वास्ता ल्या पा। मेरा मेला अन्त पुरख अकाल नाल संजोग दा, जो संजोगी धुर दरगाह। मेरा रिश्ता छुट्टया अज्ज तों रोग दा, गृह रोगी सब नूं होए शफ़ा। मेरा मालक स्वामी मैनूं समां बख्शे मौज दा, सचखण्ड दुआरे लए बुला। जिस नूं जगत जहान खोजदा, सो पकड़े मेरी बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी चरण कवल कवल चरण निरगुण धार निरगुण मैनूं बख्शे सच्चा थां।

६४८
२४

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे सुण यमुना सरस्वती गोदावरी गंगा, गंगोत्रीए सच दयां सुणाईआ। प्रभ दे कोलों मिल के मंगीए मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। जन भगतां सति सच दा चाढ़ के रंगा, रंगत आपणी इक वखाईआ। ग़रीब निमाणयां दुखण ना देवीं जंघां, दीना दर्द देणा मिटाईआ। क्यों दर्शन करन आउँदे तुर के नाल टंगां, मेहरवान मेहर नज़र देणी कराईआ। सब दा सीना करना ठण्डा, कलयुग दुःख ना लागे राईआ। जे तूं आएयों अन्तिम कन्ढी वाले कन्ढा, घाटां पन्ध देणा मुकाईआ।

सच प्यार दा देणा अनन्दा, रस आपणा नाम चखाईआ। प्रभू सच दस्स तैनूं भगतां नालों केहड़ा चंगा, पूत सपूता कवण गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। नारद कहे सारे प्रभ ते पाईए ज़ोर, ज़ोर प्यार वाला वखाईआ। प्रभू निगाह मार लै नाल ग़ौर, गौरव तेरे उत्ते साडा नज़री आईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा तक घोर, अन्ध अज्ञान देणा मिटाईआ। साडा तुध बिन अवर ना होर, होका दे के दईए सुणाईआ। सानूं खुशीआं नाल आपणे दर ते तोर, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे दर देणी वड्याईआ। नारद कहे प्रभू साडीआं सिध्धीआं कर दे मत्तां, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। जन भगतां मूल दुखण ना लत्तां, गोडे गिटे रोग ना लागे राईआ। तूं किरपा करनी रता, रत्न अमोलक हीरे लैणे बणाईआ। आपणे नाम दी बख्श दे सत्ता, सति सतिवादी विच टिकाईआ। असीं चाहुंदे दुःख रोग दी आपणे हुक्म नाल करदे हत्ता, हथियार नाम वाला उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं सर्ब गुणा समरथा, समरथ अकथ तेरी वड वड्याईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे भगतो तुहाडा मेरे नाल क्यों नहीं प्यार, प्यारयो सच दयां जणाईआ। मैं वी प्रभू दा पुराणा यार, मित्रां विच्चों मित्र इक अख्वाईआ। सदा रहिवां सच सच्चे दरबार, चरण कवल सोभा पाईआ। धरनी उत्ते आउँदा रहां वारो वार, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। मैं खेल तके तेई अवतार, बिन नैणां वेख्या चाँईं चाँईआ। पैग़म्बरां नाल कीता इज़हार, मैनूं शैतान कहि के सारे गए सुणाईआ। गुरुआं नाल माणी बहार, भज्जया वाहो दाहीआ। अन्त मेला करके नाल कल्की अवतार, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। खेल वेखां सतिगुर शब्द दा आपणी बुद्धी तों बाहर, बेअन्त हो के रिहा कराईआ। मैं दूर दुराडा जन भगतो पन्ध आया मार, भज्जया वाहो दाहीआ। पर तुसां मेरे गल विच कोई पाया नहीं हार, माण विच ना दिती वड्याईआ। झट गंगा बोली पुकार, यमुना सरस्वती गोदावरी नाल मिलाईआ। वे नारदा तूं निगाह मार धुर दा शाहो भूप तक सिक्दार, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। उहदे चरणां उत्ते कर निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। उहदी धूड़ी ला छार, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। भगतां कोलों पुछ प्रभू दा प्यार सदा गल दा हार, आदि जुगादि जुग चौकड़ी उतर कदे ना जाईआ। झट नारद नैण ल्या उग्घार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरे नालों भगत सुहेले बैठे वड्डे वड्डे सरदार,

जिन्हां दे सिर प्रभ आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दुआर इक वखाईआ। नारद कहे जन भगतो अज्ज खुशीआं नाल दिहाढ़ा लँघया, मैनूं पुछो चाँईं चाँईंआ। पर मैनूं ऐं जापदा असां प्रभू दे कोलों अजे कुछ नहीं मंगया, मांगत हो के झोली डाहीआ। उह वेखो साडा लेखा दो जहान तों बाहर टंगया, जगत डोरी ना कोए बंधाईआ। मैं सच दस्सां तुहानूं पुराणा पंडया, पंडत हो के दयां समझाईआ। जन भगतो तुहानूं प्रभू ने बिना भगती तों चाढ़ दिता आपणे डंडया, जिथ्थे डण्डावत बन्दना वाला पुज्जे कोए ना राईआ। उथे ना कोई भेख ना पखंडया, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई तीर्थ तट किनारा कंढया, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रूप ना कोए वखाईआ। उह इक्को शहिनशाह सूरा सरबंगया, हरि बैठा आसण लाईआ। मैं हैरान हो गया सचखण्ड दा निवासी किस बिध बहि गया आ के तुहाडे उत्ते मंजया, सिँघासण आपणा आप बणाईआ। झट गंगा ने किहा जा वे परे नारदा गंजया, आपणी बोदी लै हिलाईआ। तैनूं पता नहीं प्रभू ने भगतां नालों वख नहीं कुछ वन्डया, भगत भगवान मिलके इक्को घर झट लंगाईआ। पंडता हुण शुकर कर दिवस बीतया आई रैण हो गई सँध्या, सिर सर आपणा दे निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो सच दुआर एकँकार हो के भगतां दर लँघया, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आपणा आप खुल्हाईआ।

✪ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ११ कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो भगती दा केहड़ा रंग, मित्रो मैनूं दयो जणाईआ। केहड़ी सेज सुहावे पलँघ, आसण कवण वड्याईआ। केहड़ा नाद वजाए मृदंग, करे की शनवाईआ। केहड़ी धार जाए लँघ, आपणा रूप बदलाईआ। किस बिध करे खुशी बन्द बन्द, बन्दगी की समझाईआ। केहड़ा गावे छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। जिस नाल ना बुल्ल्ह हिलण ना दन्द, रसना दी लोड़ रहे ना राईआ। घर प्रकाश करा के बिन सूर्या चन्द, नूर नुराना इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। गंगा कहे नारदा भगती दी केहड़ी लोड़, लुड़ींदे साजण ध्यान लगाईआ। अन्तर निरंतर नाल प्रभू दे जोड़, जुगती जगत ना कोए वखाईआ। बिना कदमां तों प्रेम दी आशा नाल दौड़, भज्जणा वाहो दाहीआ। बिना मंज़ल तों तक अगम्मी पौड़, बिन कदमां कदम टिकाईआ। उह लेखा पूरा करन आया जिस नूं वेद व्यासे किहा ब्राह्मण गौड़, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ। जो हर घट अन्दर जावे बौहड़,

मेल मिलावा करे चाँईं चाँईंआ। जो वेखणहारा रीठा मिट्ठा कौड़, हर घट अन्दर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे भगती आदि जुगादी विच जग, जग जीवण दाते दिती वड्याईआ। भगतां नालों होवे ना कदे अलग, वखरा गृह ना कोए बणाईआ । जगत तृष्ना मेटे अग्ग, माया ममता मोह चुकाईआ। कूड़ कुड़यार दी पार कराए हद्द, नव नव दा डेरा ढाहीआ। सति सच सुणाए सद, ढोला इक्को धुर दा माहीआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले सच दुआरे लए सद्द, सद्दे देवे थांउँ थाँईंआ। प्रेम प्यार प्रीती धार प्यावे मधु, मधुर धुन करे शनवाईआ। मेल मिलाए शब्द अगम्मी नद, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। जिस दे प्यार विच दीपक जोती जाए जग, काया माटी तन वजूद करे रुशनाईआ। मेल मिलाए सूरा सरबग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। गंगा कहे नारदा जिन्हां नूं मिल जाए प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। उन्हां नूं लोड़ नहीं कोई जाप, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। ठाकर बंक दुआर सुहाए बण के धुर दा बाप, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। लहिणा देणा पूरा कराए लोकमात, धरनी धरत धवल धौल आपणा रंग रंगाईआ।
६५१ मेल मिलावे हो के कमलापात, पतिपरमेश्वर मिल के वजे वधाईआ। मेहरवान महबूब हो के अमृत जाम प्याए बूँद स्वांत, तृष्ना ६५१
२४ तृखा दए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। २४
नारद कहे मैं की दस्सां भगती बात, बातन भेव चुकाईआ। गंगोत्री कहे खेल वेख अज्ज दी रात, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। जिस दी भगत सुहेले अगम्मी ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला देवणहारा दात, वस्त अनमोल अमुल आप वरताईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां जन भगतां अन्दर रिहा झाक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अमृत दे के बूँद स्वांत, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। सख़ा सुहेला हो के पुछे वात, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे जन भगतो मैनूं आ गई याद पुराणी ख़बर, बेख़बरो दयां सुणाईआ। बिना कन्नां तों सुणो धुन मधुर, जो मध सूदन दा मालक रिहा सुणाईआ। ज़रा निगाह मारो आपणे अन्दर बदन, ततव ततां फोल फुलाईआ। तुहाडा आत्मा निरगुण धार अनमुल्ला रत्न, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। जिस दा इक्को घाट इक्को पतण, तट इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती मिल के चारे वसण, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं हुक्म हकीकी आया दस्सण, सच सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे

आप तराईआ। हरिजन साचे जुग जुग तारदा, तारनहार निरँकार। पूरब जन्म वेख विचारदा, वेखे विगसे पावे सार। फड़ फड़ बाहों पैज संवारदा, हरि करता एकँकार। जिस दा लेखा धुर दरबार दा, दरगाह साची खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक एकँकार। एकँकार मालक स्वामी, हरि करता इक अख्वाईआ। आदि जुगादी सब दा अन्तरजामी, घट घट वेखे चाँईं चाँईआ। जिस दी अक्खरां तों बाहर अगम्मी बाणी, निरअक्खर धार धार प्रगटाईआ। जिस दा लेखा नाल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताईआ। उह तुहानूं देवे धुर दा नाम निधानी, गुणवन्ता झोली पाईआ। सब दे उत्ते करे मेहरवानी, मेहरवां मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सच मालक हरि गुसईआ, गहर गम्भीर अख्वाईआ। नाम निधान जिस दी नईया, दो जहान आप चलाईआ। जन भगतां बण के मित्र प्यारा सईआ, साजण आपणा रंग रंगाईआ। जिस लेखे लाया गोबिन्द वाला ढईआ, साल बसाला खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडा लहिणा देणा आज, आजज़ां मिले वड्याईआ। परम पुरख परमात्म सब दी रखे लाज, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडी बेनन्ती सुणे अवाज़, आसा धुर दे चरण रखाईआ। जिस दा दीन दुनी तों वखरा इक समाज, समग्री नाम वाली वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ । सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडा आउणा जाणा मन्ज़ूर, मर्ज़ी जगत ना कोए रखाईआ। भगत उधारना प्रभू दा दस्तूर, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। तुसीं नाम भगती दे मज़दूर, सेवक चाकर इक अख्वाईआ। तुहाडा लहिणा देणा नाल उस हज़ूर, जो हज़रतां दा मालक अगम्म अथाहीआ। जो जन्म जन्म दे दुखड़े करे दूर, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे अज्ज दिवस दिहाढ़ा तीस, हरिजन मिले माण वड्याईआ। लेखे लाए गाया नाम दन्द बतीस, बत्ती धार नाल बख्शाईआ। अगली दस्से हक हदीस, हज़रतां तों बाहर पढ़ाईआ। किरपा करे आप जगदीश, जगदीश्र अगम्म अथाहीआ। भगतां भगतां नाल होवे प्रीत, प्रीतम मिल के वजे वधाईआ। काया सब दी होवे ठांडी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। मानस जन्म ल्या जीत, मरन दी लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि हरिजन लेखा रखे त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी आपणी दया कमाईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा उदै करना कर्म, निकर्मण हो के मंग मंगाईआ। सति सच प्रगटा दे धर्म, धर्म दे मालक दया कमाईआ। कूड़ कुड़यार मिटा दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सृष्टी दी दृष्टी रहे ना चर्म, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। सतिजुग सच करा दे जरम, लोकमात मात टिकाईआ। तूं मालक ख़ालक इक्को पुरख परम, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। मेरी लज्जया रख लै शर्म, शरअ दे मालक होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दुःख दलिद्र कट, हउमे कलयुग कूड़ मिटाईआ। सति धर्म खोल्ह दे हट्ट, वस्त नाम अगम्म वरताईआ। मेरी बेनन्ती मंन लै झट, झटके हलाली वाला रहिण कोए ना पाईआ। मज़्बां वाला मेट दे फट्ट, दुवैती नज़र कोए ना आईआ। तेरे चरण कवल रही ढठ, ढहि ढहि सीस निवाईआ। लेखा पूरा कर दे तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती सीस निवाईआ। आसा पूरी कर दे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, गुरुदुआर चर्चा संग बणाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म दा मेट दे भठ, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब कुछ तेरे हथ्थ, सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। तूं सर्ब कला समरथ, शाह पातशाह नूर अलाहीआ । मेरे सगल वसूरे जाण लथ, दुरमति मैल देणी धुआईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउँदे होण गथ, सोहँ सच सच पढ़ाईआ। धर्म दा धर्म चला दे रथ, रथवाही आपणा हुक्म वरताईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, कथनी कहिण किछ ना पाईआ। आसा पूरी कर दे राम बेटे दशरथ, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर दे सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कर्म कांड दा तक लै वेस, कूड़ी क्रिया नज़री आईआ। पवित्र रिहा कोई ना देस, दहि दिशा खोज खुजाईआ। मेरे घर घर प्या कलेश, नौ खण्ड सत्त दीप रहे कुरलाईआ। मैं तेरे होई पेश, पेशतर आपणा हाल सुणाईआ। मैनूं दस के गया दस दस्मेश, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। कलयुग आउणा इक नरेश, अन्तिम फेरा आपणा पाईआ। जो रहे सदा हमेश, हम साजण धुरदरगाहीआ। तूं उस दा सुणना संदेश, जो सुणावे चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप समझाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे कट दे दुःख दलिद्र, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। मेरे उत्तों मेट दे छल छिद्र, कूड़ी क्रिया नाल बाहर कढ्ढाईआ। मेरी आशा पूरी कर दे जो रख के गया बिदर, भगत भगतां ध्यान लगाईआ। मैं तैनूं लभ्भां किधर, खोजां केहड़ी थईआ। तूं पूरी कर दे सिधर, सध्धरां तेरे अगे रखाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते जे तूं निरगुण धार आएयों इधर, एथे लहिणा देणा मुकाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हथ्थ आदि जुगादी बिधन, जुग चौकड़ी दे मालक आपणा हुक्म देणा वरताईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सवरनो देवी दे गृह पिण्ड सेई कला ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श दे धर्म दा सति, सतिगुर शब्द शब्द नाल वड्याईआ। परम पुरख परमात्म मेरी कलयुग रख लै पत, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। नव सत्त मेरी उबले रत, अग्नी ततव तत जलाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी जीवां जंतां पवित्र कर दे मति, मनसा कूड़ बाहर कढ्ढाईआ। तूं निरगुण धार मेरे उत्ते आएयों वत, वतनां दे मालक होणा आप सहाईआ। मैं तेरे चरण कवल वास्ता रही घत, सीस जगदीश आपणा भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे कलयुग क्रिया कूड़ी, कुकर्म रहिण कोए ना पाईआ। चतुर सुघड़ बणा दे दीन दुनी मूर्ख मूढ़ी, मुगधां आपणा भेव खुल्हाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी चरण कवल बख्श दे धूड़ी, टिक्के धर्म ख़ाक रमाईआ। श्री भगवान नौजुआन आपणी रंगत चाढ़ दे गूढ़ी, निरगुण सरगुण उतर कदे ना जाईआ। मैं बेनन्ती करां तेरी विच हज़ूरी, हज़रतां दे मालक होणा आप सहाईआ। मेरी वाट तक लै पूरब पिछली दूरी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। मैं जिधर तकां मनुआ पाई फिरे फ़तूरी, मनसा मोह नाल हल्काईआ। तेरी सृष्टी अन्दरों होई ग़रूरी, गुरबत सके ना कोए कढ्ढाईआ। मेरे अन्दर आई मजबूरी, मजबूर हो के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उत्तों कलयुग कूड़ कढ ज़रूरी, ज़रूरत आपणी तेरे चरण टिकाईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू बचन सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा सुहञ्जणा करदे वक्त, कलयुग वक्त अख़ीरी सीस निवाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते घर घर होण तेरे भगत, निरगुण सोहला ढोला तेरा गाईआ। धर्म दी धार बणा दे जगत, सृष्टी आपणा रंग रंगाईआ। मानव ज़ाती रहे कोई ना फ़र्क, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। पिछला लेखा कर दे तरक, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी रही भटक, सत्त दीप रही कुरलाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे चटक, बहुती देर ना कोए लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते हरिजन गाउँदे होवण गीत, हर हिरदे वजदी रहे वधाईआ। परम पुरख तेरी बणी होवे प्रीत, प्रीतम तेरे रंग समाईआ। तूं वस्या होवें चीत, ठगौरी चित ना कोए रखाईआ। सब दी पवित्र कर दे नीत, बुध बिबेक आप बणाईआ। एका रंग रंगा दे हस्त कीट, राउ रंक वंड ना कोए वंडाईआ। सच नाम दा रंग चाढ़ मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मेहरवान हथ्थ रखणा मेरी पीठ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा धाम होवे सुहञ्जणा, सद वजदी रहे वधाईआ। किरपा कर दर्द दु:ख भय भंजना, दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। आत्म धार सब नूं दे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरी नाम कलम्यां वाली इक्को होवे बन्दना, इक्को सीस जगदीस झुकाईआ। इक्को ढोला होवे छन्दना, इक्को तेरी सिफ्त सलाहीआ। धरनी कहे मैं सतिजुग तेरे चरणां विच्चों मंगणा, कलयुग कूड़ कुड़यार देणा मिटाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले लाउणा अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर सूरे सरबंगणा, सूरबीर बेनज़ीर तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ देवा सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे जन भगतो प्रभ साची दया कमावेगा। दीन दयाल दर्द दु:ख भय भञ्जण, आपणा खेल खिलावेगा। तुहाडा बण के धुर दा सज्जण, साचा संग निभावेगा। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरे कर के बचन, लेखे सब दे झोली पावेगा। तुहानूं बणा के आपणे हीरे रत्न, कीमत आप चुकावेगा। किसे नूं करना पए कुछ ना यतन, यथार्थ आपणा खेल खिलावेगा। तुसीं पुज गए उस पतण, जिथ्थे नईया नौका नाम चढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा राह इक दरसावेगा। सतिगुर साची दया कमाएगा। कलयुग क्रिया कूड़ मिटाएगा। सतिजुग सति धर्म उपजाएगा। निहकर्मी आपणा कर्म कमाएगा। नौ खण्ड दा इक्को धर्म वखाएगा। धरनी कहे जिथ्थे जिथ्थे मेरे छोहे चरण, सो भूमिका थान वडयाएगा। चार जुग तुहाडे ढोले दीन दुनी वाले पढ़न, रसना सब दी आप चलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताएगा। धरनी कहे जन भगतो प्रभू मेरा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जो

घर घर गृह गृह सब नूं देंदा फिरदा माण, निमाणयां होए सहाईआ। वस्त अगम्मी झोली पाए दान, अमुल अतुल आप वरताईआ। जिस दा राह तकदे सीता राम, कृष्ण काहन अक्ख उठाईआ। पैग़म्बर वेखण निगाहबान, नूरी नूर नूर चमकाईआ। गुरु गुरदेव करन ध्यान, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख वेख वखाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मेरे उत्ते नवां बणाए विधान, जिस दी तरमीम ना कोए कराईआ । जन भगतो जिथ्थे जिथ्थे तुहाडे गृह उथे सतिजुग धर्म बणे निशान, पूजण योग तुहाडी धरती दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं धरती खुशीआं ढोले गावां, गा गा खुशी बणाईआ। उन्हां राहां दे बलि बलि जावां, जिस राहे आए धुर दा माहीआ। लम्मीं पै पै सीस निवावां, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। पा औंसीआं काग उडावां, सुनेहे देवां चाँईं चाँईंआ। इक्को कन्त सुहाग हंढावां, दूजा वर ना कोए वखाईआ। जन भगतो मैं सब दी कथा सच सुणावां, तुसां सुणनी थांउँ थाँईंआ। सतिजुग अन्दर तुहाडा घर रहे ना कोए निथावां, थान थनंतर मिले माण वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्तिम तुहाडा तोल तोल के सावां, कंडा तराज़ू इक्को दए वखाईआ। हुण तुसीं वसदे विच पिण्डां गरावां, फेर सचखण्ड पुजणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। धरनी कहे जन भगतो तुहाडा लहिणा बड़ा उधार, लैणा चाँईं चाँईंआ। तुहाडे पिच्छे संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, ढोले सोहले रसना जिह्वा गाईआ। कलयुग अन्तिम आए कलि कल्की अवतार, निहकलंका रूप बदलाईआ। अमाम अमामा हो सिक्दार, वेख वखाए ख़लक ख़ुदाईआ। जन भगत सुहेले लए उठाल, फड़ बाहों आप जगाईआ। जिस कोल लेखा नहीं शाह कंगाल, अमीर ग़रीब वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता हो के करे संभाल, सम्बल बहि के आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ मान कौर दे गृह सतवारी अशोक नगर ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे जन भगतो मैं जुग जुग रही उडीकदी, नव नव चार जुग पन्ध मुकाईआ। आपणे हिरदे अन्दर ख़ाके रही उलीकदी, बणतरां आपणीआं आप बणाईआ। बिरहों विछोड़े विच रही चीकदी, दरोही दरोही कर कुरलाईआ। प्यासी बणी रही अगम्मे मीत दी, मित्र प्यारा वेखां नैण उठाईआ। मैं वणजारन रही इक्को गीत दी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ।

मैनूं मुहब्बत नहीं किसे मन्दिर मसीत दी, काअब्यां संग ना कोए रखाईआ। मैं प्यारी नहीं ऊँच नीच दी, दीनां मज़्बां विच कदे ना आईआ। मैं प्यारी इक प्रभू दी प्रीत दी, जो प्रीतम धुरदरगाहीआ। मैं खेल तकणी उस दी रीत दी, जो रीतीवान आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। जन भगतो मैं जुग जुग आशां रखीआं, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। मेरीआं बन्द ना होईआं अक्खीआं, नैण नैण ना सकी बदलाईआ। मैं पुछदी रही काहन दीआं कोलों सखीआँ, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। किस वेले आवे धुर दा कमलापातीआ, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। उन्हां कथा कहाणीआं अगलीआं होर दस्सीआं, सहिज नाल समझाईआ । असीं कृष्ण प्यार विच रसीआं, कान्हा दा काहन पता नहीं की आपणा हुक्म वरताईआ। फेर मैं खुशीआं विच नस्सी आं, भज्जी वाहो दाहीआ। जां मैं निगाह मारी दीन दुनी बध्धी विच दीन मज़्ब दीआं रस्सीआं, शरअ कलमे गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी सरन सरनाई ढठ्ठी आं, ढईआ गोबिन्द वाला नाल रखाईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरा खुशीआं सीना टपदा, टापू सारे रिहा हिलाईआ। मैं दर्शन पाया परमेश्वर पति दा, पतिब्रता हो के सीस निवाईआ। जिस माण रख्या मेरे सति दा, धीरज आदि जुगादि रखाईआ। रिश्ता बणाया चरण प्रीती नत दा, मेला मेलया सहिज सुभाईआ। लेखा जाणे मेरी गति मित दा, गहर गम्भीर हो के वेख वखाईआ। वक्त सुहञ्जणा करे आपणी थित दा, घड़ी पल नाल मिलाईआ। मेरा लहिणा पूरा कीता आदि जुगादी नित दा, निरवैर होया सहाईआ। जो रूप धर के आया धुर दे पित दा, पारब्रह्म अगम्म अथाहीआ । जो भरया भगत प्यार हित दा, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जो हरिजन हिरदा फिरे जितदा, मनसा मन ना कोए वड्याईआ। जग नेत्र वेख्या किसे नहीं दिखदा, नज़री नज़र ना कोए टिकाईआ। उह लहिणा देणा पूरा करे गोबिन्द वाले सिख दा, जो सिख सिख्या विच समाईआ। धरनी कहे मैं इहो जेहा समां कदे नहीं वेख्या प्रभू भगतां दे लेख घर घर होवे लिखदा, लेखणी कलम शाही नाल मिलाईआ। वणजारा बणया नहीं कदे नाम भण्डारा देवणहारा भिख दा, जो बिन मंग्यां दौलत झोली देवे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मैं बहु पुराणी धरत, धवल हो के दयां सुणाईआ। धन्नभाग

जे मेरे उत्ते आया परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। मेरी पूरी होई हरस, हवस दिती गुआईआ। जन भगतो तुहाडे उत्ते ज़रूर करेगा तरस, रहमत विच अमृत मेघ बरसाईआ। खुशीआं वाला सुहावणा सम्मत शहिनशाही ग्यारां बरस, इक इक मेले चाँई चाँईंआ। तुहाडी जन्म जन्म दी मेटे तड़प, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। जो गोबिन्द आसा रख के गया विच देस दड़प, गुरमुखां गुर गुर ध्यान लगाईआ। सो पूरी करनहारा शर्त, शरअ दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर इक सुहाईआ। धरनी कहे मेरा गृह होया सुहञ्जणा, प्रभ दिती माण वड्याईआ। मेरे नेत्र चरण धूड़ पाया अंजना, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। धुर संदेश सुणाया बचना, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। मेरा माटी ख़ाक शरीर होया कंचना, कंचन गढ़ मिली वड्याईआ। मैं खुशीआं दे विच नचणा, आप आपणा पैर बदलाईआ। जन भगतो तुहानूं नवां संदेशा दस्सणा, दहि दिशा तों बाहर सुणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले हर हिरदे अन्दर वसणा, घट घट आपणा डेरा लाईआ। जो कौल इकरार गोबिन्द धार कीता विच पटना, पाटल हो के आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा नाम निधान दो जहान रटणा, रिटन दा लेखा रुटीन विच आपणा दए समझाईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ फ़रंगी राम दे गृह पिण्ड त्रेवा ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे पुरख अकाले किरपा कर, कृपाल कृपानिध दया कमाईआ। मेहरवान महबूब मेरा हिरदा हर, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। तूं मालक ख़ालक नरायण नर, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। मैं दरवेशण हो के आई तेरे दर, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेरा नौ खण्ड पृथमी सत दीप पवित्र कर दे घर, घराना इक्को इक वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे मूल ना डर, भय भउ ना कोए जणाईआ। अमृत धार बणा दे सरोवर सर, सच सच नाम प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा गृह वेख लै लोकमात, निरगुण धार नैण उठाईआ। नव सत्त अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। तूं पतिपरमेश्वर कमलापात, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम पुछ मेरी वात, वास्ता तेरे चरण रखाईआ। धर्म दी धार तुट्टया नात, कलयुग क्रिया कूड़ हल्काईआ। साची बख्शे कोई ना दात, भण्डारा नाम ना कोए वरताईआ। बातन पुछे कोई ना बात, बैतुल

६५८
२४

मुक्दस नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा नव सत्त वेख घराना, दर मन्दिर ध्यान लगाईआ। लोकमात देस होया बेगाना, सच दी वजे ना कोए वधाईआ। मैं सदी चौधवीं वेख होई हैराना, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। चारों कुण्ट शरअ रूप दिसे शैताना, सति विच ना कोए समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोई ना गाणा, पारब्रह्म ब्रह्म तेरे रंग ना कोए समाईआ। सुरती शब्द सुणे ना कोए तराना, तुरीआ तों परे तेरा दर्शन कोए ना पाईआ। तूं मालक ख़ालक गुण निधाना, गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। निगाह मार श्री भगवाना, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल तेरा बाल निधाना, बुद्धी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे उत्ते सति धर्म दा सच वखा निशाना, निशाना कूड़ कुड़यार बदलाईआ। जुग जुग तेरे हुक्म नाल बदलदा रिहा ज़माना, ज़िमीं ज़मां दे मालक होणा आप सहाईआ। मेरा तेरे उत्ते माणा, निमाणी हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा घर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा गृह कर सुहञ्जणा, चरण कवल दे सरनाईआ। नूर ज़हूर तकां आदि निरञ्जणा, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा नूर देणा चमकाईआ। तुध बिन ठाकर स्वामी मेरा पर्दा किसे ना कजणा, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना शरअ दीन दी मेट दे हद्दना, हदूद आपणी इक दरसाईआ। मैं चरण कवल उपर धवल करां बन्दना, निव निव लागां पाईआ। तूं मालक जेरज अंडना, उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा लेखा पूरा कर दे विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्डां दे मालक होणा सहाईआ । साचा सुख दे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल सदा बख़्शंदना, बख्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ।

३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ राजो देवी दे गृह पिण्ड सेई कलां ज़िला जम्मू

धरनी कहे प्रभू मेरी लेखे ला लै ख़ाक, मिट्टी तेरे चरण टिकाईआ। सब दा पूरा कर दे वाक, भविख्त आपणे रंग रंगाईआ। धर्म दी धार खोल्ह दे ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं तेरी सेवक चाक, चाकरी विच झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी दुरमति मैल धो, निर्मल आपणा आप जणाईआ। मैं तेरे दुआरे आ के पई रो, बिन नैणां नीर वहाईआ। तूं मालक ख़ालक

स्वामी आपे हो, होका दे के दयां दृढ़ाईआ। तूं नाम निधाना बख्श सोहँ सो, सो पुरख निरञ्जण तेरे विच समाईआ। दीन दुनी नालों तोड़ मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। बिन नेत्रां बख्श दे लो, लोयण तीजा आप खुल्हाईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती चो, नाभी कवल कवल उलटाईआ। पंज विकार मेट दे गरोह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आत्म परमात्म तेरे नाल जावे छोह, छोहर बांके तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे चरण जावां छूह, मस्तक मस्तक ख़ाक रमाईआ। तूं मेरा लहिणा देणा कलयुग अन्त वेखणा शुरू, शरअ दे मालक ध्यान लगाईआ। मेरे उत्ते तक लै पता नहीं कितने बण गए गुरु, गुरु गुरदेव कहि के आपणा इष्ट बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द गुरदेवा, देव देवा तेरी सरनाईआ। साचा अमृत नाम बख्श दे मेवा, अंमिओं रस आपणा आप चुआईआ। कौस्तक मनी धार मस्तक ला दे थेवा, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। तेरा नाम गाईए रसना जिह्वा, बत्ती दन्दां सिफ्त सलाहीआ। तूं वसणहारा सचखण्ड धाम निहकेवा, निहचल आपणा आसण लाईआ। तूं स्वामी करता वड देवी देवा, देवत सुर सब तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादी अलख अभेवा, अगोचर कहिण किछ कोए ना पाईआ।

६६०
२४

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह नांगा कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे सो पुरख निरञ्जण मेरे उत्ते होणा दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरञ्जण मेरी कर संभाल, साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। एकँकार साची वस्त दे धन माल, नाम निधाना नौजवाना मेरी झोली पाईआ। आदि निरञ्जण नूरी जोत जगा महान, अन्ध अज्ञान दो जहान दे मिटाईआ । अबिनाशी करते हो मेहरवान, महिबान बीदो तेरी आस रखाईआ। अबिनाशी करते देणा अगम्मा दान, वस्त अमोलक मेरी झोली पाईआ। पारब्रह्म मेरी बेनन्ती करनी परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द योद्धा सूरबीर भेज बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। नाल विष्णूं वखा खेल महान, महिमा अकथ अकथ दृढ़ाईआ। ब्रह्मे करना सवाधान, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। शंकर हलूणा देणा आप श्री भगवान, आपणा हुक्म वरताईआ। तेई अवतार कराउणा निगाहबान, नर नरायण आपणा रंग रंगाईआ। पैग़म्बरां

बाकी लेखा रिहा ना विच जहान, दो जहानां मालक होणा सहाईआ। गुरु गुरदेव होणा परवान, परम पुरख तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरे नौ खण्ड सत्त दीप सारे कुरलाण, कूक कूक सुणाईआ। धर्म दा धर्म ना रिहा निशान, सच सच विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कवण करे कल्याण, अकल कलधारी कल आपणी देणी वरताईआ।

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ पूरन चन्द दे गृह नांगा कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख भगवन्त, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तूं स्वामी आदि जुगादी जुगा जुगन्त, नित नवित तेरा राह तकाईआ। नाम निधाना दे दे धुर दा मणीआ मंत, मनसा मेरी पूर कराईआ। दर दरवेश हो के करां मिन्नत, भिखारन हो के मंग मंगाईआ। मेरी कूट वेख लै लोकमात वाली सिम्मत, सतिगुर आपणा फेरा पाईआ। नव सत्त दिसदे निन्दक, निंदयां विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कलयुग दुःख दलिद्र कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सच धर्म दा खोल्ह दे हट्ट, हटवाणा बणना धुर दे माहीआ। मैं तेरे चरण कवल आई नठ, बिन कदमां कदम उठाईआ। दर ठांडे जावां ढठ, निव निव लागां पाईआ। निगाह मार लै धर्म रिहा ना किसे मन्दिर मस्जिद मठ, शिवदुआले गुरुदुआर देण गवाहीआ। फिरनी दरोही तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रही कुरलाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली हो गए काया भाण्डे माटी मट्ट, सच वस्त नज़र कोए ना आईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश नज़र ना आवे लट लट, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। धरनी कहे मैं रो रो दर तेरे ते दस्सदी, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दी धार हो के नस्सदी, ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं पन्ध मुकाईआ। मेरी ख़ाहिश भरी तेरे जस दी, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सृष्टी सार ना आवे सीआं साढे तिन्न हथ्थ दी, जो रवीदास चमारा गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं आशा रखी तेरी पुरख समरथ दी, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

६६२
२४

✪ ३१ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ भगवान चन्द दे गृह नांगा कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मैं रो रो मारां आह, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। सो पुरख निरञ्जण मेरा बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। हरि पुरख निरञ्जण निरगुण धार पकड़ लै बांह, बहीआ तेरे रंग रंगाईआ। एकँकार देणी सच सलाह, मशवरा तेरे नाल रखाईआ। आदि निरञ्जण कर रुशना, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। अबिनाशी करते हो सहा, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। श्री भगवान मेरी कबूल करीं दुआ, दो जहानां मंग मंगाईआ। पारब्रह्म मेरा बणना दिलरुबा, रहमत आपणी हक कमाईआ। तूं मेहरवान नूरी अलाह खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ । दरोही मैनूं अन्त ना करीं जुदा, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। तेरे कदम होवां फ़िदा, आप आपणा भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैं दुक्खां नाल रही सड़, कलयुग अग्नी तत तपाईआ। कूड़ कुड़यारा मेरे उत्ते बणया गढ़, हउमे हंगता नाल मिलाईआ। दरोही अग्नी लग्गी सीस धड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। निगाह मार लै चोटी जड़, चेतन दे मालक पड़दा आप उठाईआ। मैं सच दुआर एकँकार गई खड़, दर ढांडे सीस निवाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना तेरा निरअक्खर धार ढोला रही पढ़, बिना ज़बां तेरा नाम सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेहरवान दया कमावेगा। नूर नुराना नूर रुशनावेगा। जोती जाता डगमगावेगा। सतिगुर शब्द शब्द जगावेगा। लोकमात वेख वखावेगा। गुर अवतार पैग़म्बर नाल मिलावेगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध, अन्तिम आप चुकावेगा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, सो पुरख निरञ्जण आप पढ़ावेगा। मेरी धार नूं दे अनन्द, अनन्द अनन्दपुर वासी नाल मिलावेगा। बिना सूर्या चाढ़ के चन्द, जोती जाता डगमगावेगा। कर प्रकाश अन्धेरे खण्ड, ब्रह्मण्ड आप रुशनावेगा। दर दुआर एकँकार मेरा आवे लँघ, पाँधी हो के पन्ध मुकावेगा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण बैठे साढे तिन्न हथ्थ पलँघ, सम्बल नगर आप वडयावेगा। शब्द अनादी नाद वजा मृदंग, अनहद आपणी धुन समझावेगा। मेरा भाग होण ना देवे मंद, मंदभागी गले लगावेगा। दीन दुनी शरअ दी ढाह के कंध, कन्त कन्तूहल वेख वखावेगा। जो धरनी कहे मेरी आशा मनसा पूरी करे मंग, वस्त अमोलक आप वरतावेगा। मेरा साहिब सूरा सरबंग, हरि करता इक अख्वावेगा। जुग बदलणा जिस दा अगम्मा ढंग, जुगती हथ्थ ना किसे फड़ावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चुकावेगा। लेखा जाणे विच वरभण्ड, भंडी सब दी मेट मिटावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी मिटा के झूठ पाखण्ड, सच सच रटावेगा। लहिणा देणा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखावेगा।

धरनी कहे मैनूं धर्म दी धार देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटावेगा। मेरा शरीर नहीं कोई तत पंज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दा पन्ध मुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आसा वेख वखावेगा। धरनी कहे मेरे साहिब सतिगुर सुल्ताना, तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै विच जहाना, जहालत भरी तेरी लोकाईआ। तूं वसें उत्ते असमाना, इस्म आज़म तेरी बेपरवाहीआ। मेरा तक लै कलयुग वाला कूड़ निशाना, चारों कुण्ट नज़री आईआ। तेरा आत्म तेरे नालों होया बेगाना, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। तेरा शब्दी सुणे ना कोए तराना, सुरती सच ना कोए समाईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट होई वैराना, वैरी घर घर नज़री आईआ। किरपा कर गुण निधाना, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना, महाबली इक अख्वाईआ। मैं मिट्टी ख़ाक तेरी चरण धूड़ मेरा धर्म निशाना, धर्म दी धार दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा लेखा कलयुग अन्तिम पूर कराना, परम पुरख परमेश्वर पति पतिवन्ते तेरी आस रखाईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रसाल सिँघ दे गृह घाहपोत कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू सतिजुग धर्म कर आबाद, नव सत्त आपणा रंग रंगाईआ। सृष्ट सबाई हिरदा साध, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। हर हिरदे होवे तेरी याद, हरिजन गावण चाँईं चाँईंआ। सच शब्द सुणा नाद, अगम्मी धुन कर शनवाईआ। तूं मोहण माधव माध, मेहरवान इक अख्वाईआ। तेरा संदेशा होवे बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। निरगुण धार नवीं साजणा साज, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। मानव ज़ाती इक होवे रिवाज, रस्ता इक्को इक वखाईआ। मेरा कोझी कमली दा संवार काज, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। शहिनशाह स्वामी सीस ते होवे ताज, तख्त निवासी इक्को नज़री आईआ। अन्त कन्त भगवन्त रखणी लाज, निमाणी हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा चार कुण्ट प्यार होवे इक्को, एकँकार देणी वड्याईआ। तेरे हुक्म दा शब्दी धार होवे सिको, दीन दुनी नज़री आईआ। मेहरवाना श्री भगवाना सतिगुर शब्द धार मेरा लेख लिखो, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतो साची सिख्या इक्को सिखो, दूजी नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी तक लै चार दीवारी, अन्त नज़र किसे ना आईआ।

मेरे हिस्से कर के गए जगत संसारी, खण्डां दीपां विच वंड वंडाईआ। मेरा भेव पाया नहीं किसे लिखारी, कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा नकशा सक्या ना कोए उसारी, अन्त कहिण कुछ ना पाईआ। मैं तेरे चरणां दी धूड़ छारी, शहिनशाह तेरे रंग समाईआ। कलयुग अन्त होई दुख्यारी, रो रो दयां दुहाईआ। चारों कुण्ट रैण अँधयारी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तूं किरपा कर जोत निरँकारी, निरवैर तेरी सरनाईआ। मानस ज़ाती दे अधारी, धीरज धीर आप धराईआ। तेरे प्यार दे मानव होण पुजारी, पाहन पूजण कोए ना पाईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक इक होवें सिक्दारी, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। मेरी नमो नमो निमस्कारी, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा लेखा कलयुग अन्तिम आप विचारीं, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ गुरदित सिँघ दे गृह किशनपुर कैंप ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगा तूं किधरों आ गई भज्जी, टिल्ले पर्वत नदी नाले पार कराईआ। झट यमुना बांह उच्ची करके सज्जी, ज़ोर ज़ोर नाल सुणाईआ। सरस्वती कहे मेरे अन्तर धार अगम्मी वजी, हलूणा दे के दिता जगाईआ। गोदावरी कहे मेरे अन्तर तृष्ना लगी, प्यास प्रेम वाली नज़री आईआ। नारद कहे तुसीं निगाह मारो सभी, सबब नाल इक्ठीआं होईआं चाँईं चाँईंआ। पहलों जगत जहान दी वेखो गद्दी, शाह पातशाह शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। फेर मुहम्मद दी बीतदी वेखो सदी, चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। ईसा धार भार जांदी लद्दी, पल्लू मूसा यार फड़ाईआ। अवतारां ख़ाहिश वेखो वड्डी, की अन्तिम रही जणाईआ। गुरु गुरदेव सब कुछ रहे छडी, हौका सुणे चाँईं चाँईंआ। नी तुहाडे विच चार जुग दे मुरदयां दिसे हड्डी, तन नज़र कोए ना आईआ। नैण खोल्हो निरगुण धार जोत वेखो जगी, जो जगह जगह करे रुशनाईआ। जिस दी भगतां धार वेखो बग्गी, बग बपड़े आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा पूरा करे हदूद हद्दी, हद्दां आपणे रंग रंगाईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सरदार सिँघ दे गृह किशनपुर कैंप ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे गंगोत्री तूं क्यों मारया लम्बा पन्ध, बिखड़े राह जगत चलाईआ। छड के तट किनारयां वाला अनन्द, बेल्यां

विच भज्जी वाहो दाहीआ। तेरा रूप सोहणा वांग चन्द, किरण किरण तेरी रुशनाईआ। तेरे बिना मुख तों सोहणे दिसदे दन्द, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। तेरे केहड़े कारन भाग हो गए मंद, आपणा आप ल्या बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। नारद कहे गंगोत्री वेख लै लहिंदा चढ़दा, चढ़दा लहिंदा ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दुआरा तक हँकार गढ़ दा, गढ़ी आपणे नाल मिलाईआ। तेरे उत्ते पंडत पांधा शास्त्र सच कोए ना पढ़दा, उस्तत हक ना कोए सुणाईआ। माया पिच्छे यातरूआं नाल लड़दा, दिवस रैण करे लड़ाईआ। तेरा रूप क्यों नहीं उन्हां फड़दा, फड़ के दए सजाईआ। उठ वेख लै की हाल होया तेरे तट किनारे दर दा, घाटां पई दुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गंगा कहे नारदा मैनूं कम्म बड़ा ज़रूरी, ज़रूरत भगतां दयां जणाईआ। बेशक दीन दुनिया कसूरी, कसम खा के दयां सुणाईआ। परम पुरख तों हो गई दूरी, घर स्वामी मिलण कोए ना पाईआ। नाद शब्द सुणे कोए ना तूरी, तुरत प्रभ दा मेल ना कोए कराईआ। जल्वा जोत तके कोए ना नूरी, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। मैं चार जुग दी
६६५ मंगण आई मज़दूरी, दर ठांडे सीस निवाईआ। मैनूं इशारा देवे सूली चढ़या होया मनसूरी, ऐहनुलहक हक सुणाईआ। मूसा ६६५
२४ कहे मेरी आवाज़ सुण कोहतूरी, कुदरत दा कादर की दृढ़ाईआ। ईसा कहे सृष्टी तक लै कूड़ी, कूड़ कुटम्ब लोकाईआ। २४
मुहम्मद कहे चारों कुण्ट दिसे कसूरी, सच विच ना कोए समाईआ। झट नानक गोबिन्द धार किहा कमलीए प्रभ दे चरणां विच्चों आपणी लै लै मन्ज़ूरी, दर ठांडे वास्ता पाईआ। जे तेरे गृह आ के तैनूं बख्श दए चरण धूड़ी, धूड़ी तेरे मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरी, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ।

३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ ईश्र सिँघ दे गृह पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू

नारद कहे गंगा नाल मिला लै गोदावरी यमुना सरस्वती, सुतीआं लै जगाईआ। फेर तक लै परम पुरख दी हस्ती, जो आदि जुगादि दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दे पिच्छे आई नसदी, भज्जी वाहो दाहीआ। उह तेरी धार वेखे अमृत रस दी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ओहदी खेल अलखणा अलख दी, अलख अगोचर दा भेव समझ कोए ना पाईआ। जिस दी जोत निरँकारी सचखण्ड दुआरे वसदी, दरगाह साची आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एह खेल तेरी पुरख समरथ दी, दूसर नज़र कोए ना आईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ हरबंस सिँघ दे नवित पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ✪

गंगा कहे यमुना सरस्वती सारीआं निमस्कार लईए कर, गोदावरी तूं वी निउँ के सीस निवाईआ। नारदा तूं वी ख़ुशीआं नाल दुआउणा सानूं वर, खुशी साडे नाल बणाईआ। असीं जगत जहान प्रभ दी सरनी गईआं पर, पारब्रह्म निव निव लागीए पाईआ। किरपा कर श्री भगवान साडे वल निगाह कर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे आउणा घर, गृह अन्दर डेरा लाईआ। तेरे चरण कवल साचा होवे सर, सरोवर इक्को सोभा पाईआ। साडे ख़ाली भण्डारे देणे भर, भरपूर आप कराईआ। नारद किहा गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती घुट्ट के चरण कवल लओ फड़, बिन हथ्थां हथ्थ लगाईआ। नाले तूं मेरा मैं तेरा ढोला लओ पढ़, सोहँ सच पढ़ाईआ। आपणे आंचल पल्लू गंढु लओ कन्नी लैणी फड़, कन्नां नूं हथ्थ ला के वास्ता पाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल तेरा खेल चेतन चोटी जड़, चेतन तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे गंगा सतिगुर शब्द अगे पा लओ वास्ता, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तुहाडा लेखा लहिणा पूरा कर देवे आहिस्ता आहिस्ता, आपणा पन्ध मुकाईआ। तुहानूं सति सच दा दस्से रास्ता, रैहबर इक्को इक अख्वाईआ। तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे रसन स्वास दा, साह साह वखाईआ। तुहाडा लेखा जाणे अन्दर वाली आस दा, आशा आपणे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे नारदा तूं बड़ा प्रेमी इशारती, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। तूं बड़ा पुराणा भारती, भारदुआज तेरी दए गवाहीआ। तूं बड़ा पुराणा शरारती, जुग जुग आपणी खेल वखाईआ। नारद कहे प्रभू तूं साहिब मेरा बड़ा तजारती, जुग जुग आपणे नाम कलम्यां हट्ट चलाईआ। तूं बड़ा प्यारा घृत दीपक आरती, खुशीआं राग जणाईआ। तेरा खेल न्यारा सदारती, सद * झोली पाईआ। तेरा लेखा सतिगुर शब्द सदा इबारती, सानूं लिख के दे वखाईआ। तेरी खेल महिमा अपर अपार दी, अपरम्पर तेरे हथ्थ वड्याईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती वेख पुकारदी, कूक कूक दए दुहाईआ। सम्मत शहिनशाही बारां खुशी होवे तेरे दीदार दी, नेत्र नैण नैणां नाल मिलाईआ। सेज सुहञ्जणी सोहणी गोबिन्द वाले सथर यार दी, यारड़े आपणा रंग रंगाईआ। घड़ी सुलखणी

दस्स दे थित वार दी, परम पुरख आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे नारदा हुण खेल नहीं उधार दी, लहिणे देणे सब दे झोली पाईआ। पंदरां अस्सू सोहणी रुत होवे सची सरकार दी, सोहणा आपणा रंग रंगाईआ। गंगा तूं आशा रखणी इंतज़ार दी, नैण नैणां विच्चों खुल्हाईआ। हरि की पौड़ी तूं ही तूं ही होवे पुकारदी, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। अगे थित सुहञ्जणी होणी वारो वार दी, यमुना सरस्वती लहिणा देणा देणा लहिणा थांउँ थाँईआ। गोदावरी तूं ख़बर सुणनी ख़बरदार दी, बेख़बरे ख़बर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहानूं धीरज देवे एतबार दी, अछल छल विच छल ना कोए कराईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे सो पुरख निरञ्जण मेरे मेहरवाना, महिबान बीदो तेरी इक सरनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण नौजवाना, निराकार तेरी ओट तकाईआ। एकँकार शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि निरञ्जण नूर जोत महाना, मेहरवान इक अख्वाईआ। अबिनाशी करते नौजवाना, सूरबीर दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान वड बलवाना, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पारब्रह्म खेल खेलणा आप महाना, महिमा अकथ अकथ समझाईआ। सतिगुर शब्द दीन दुनी दा वेख ज़माना, निरवैर हो के ध्यान लगाईआ। धरनी कहे मेरा नव सत्त सच दा रिहा ना कोए विधाना, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण कलयुग कूड़ होया प्रधाना, भज्जे वाहो दाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर मेरा दयो ब्याना, शहादत हक भुगताईआ। किरपा करे शाह सुल्ताना, हरि करता धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी बेनन्ती करे परवाना, परम पुरख प्रभ आपणी दया कमाईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द बलकारी, जोधे सूरबीर तेरी इक सरनाईआ। किरपा कर कलयुग अन्तिम वारी, वास्ता तेरे चरण टिकाईआ। लेखा तक लै दीन दुनी जगत संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। करोड़ तेतीसा करे कोए ना दारी, सति रंग ना कोए रंगाईआ। तीर्थ तट सरोवर अमृत मिले ना ठंडा ठारी, अग्नी तत ना कोए

बुझाईआ। चारों कुण्ट रैण अँधयारी, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ारी, बिन नैणां नीर वहाईआ। धुर दे राम मेरी पाउणी सारी, काहनां दे काहन तेरी ओट तकाईआ। कलयुग जीव मेरी करन ख्वारी, ख़ालक रंग ना कोए रंगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ रहे पुकारी, कूक कूक सुणाईआ। चार जुग दे शास्त्र रोवण ज़ारो ज़ारी, बिन हंझूआं वहिण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे कूड़ कुड़यारा जग, जग जीवण दाते दे वड्याईआ। मैं परसां तेरे पग, धूड़ी चरण ख़ाक रमाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी रहिण ना देणी कग, बग बपड़े रंग रूप लै बदलाईआ। नाम खुमारी जाम प्या दे मदि, मधुर धुन कर शनवाईआ। नौ दुआरे पन्ध मेट दे हद्द, पंच विकार ना कोए हल्काईआ। शब्द अनादी सुणा दे नद, अनहद नादी नाद वजाईआ। दर्शन दे उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। सच दुआर एकँकार आपणे सज, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग अन्तिम मेरी रखणी लज, कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धुआईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी मैं तैनूं रही सद्द, घट निवासी पुरख अबिनाशी होणा आप सहाईआ। मैं दर्शन कर के खुशीआं विच होवां गद गद, दो जहान नौजुआन श्री भगवान भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख परमात्म धुर दे ख़ालक, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। मैं आदि जुगादी तेरी धार संचालक, सच स्वामी तेरी ओट तकाईआ। मेरे उत्ते आपणे भगत सुहेले तक लै बालक, बाल अंञाणे वेख वखाईआ। उन्हां दा बणना आप आप प्रितपालक, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते हरिजन रूप बणाउणे ख़ालस, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जगत तृष्ना कूड़ मेट दे आलस, असल वसल यार देणा समझाईआ। सतिगुर शब्द मेरे उत्ते तेरा होवे सालस, अदल इन्साफ़ इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ । धरनी कहे प्रभू मैं निमाणी हो के मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैनूं कलयुग कीता भुखी नंगी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मैं सीस तों हो गई गंजी, ओढण नज़र कोए ना आईआ। मेरे दुक्खां दी धार हाथ ना आवे वञ्झी, वञ्झ मुहाणे हथ्थ किसे ना आईआ। माण रिहा ना किसे सवेर सञ्झी, सँध्या सरघी खुशी ना कोए बणाईआ। नौ खण्ड पृथमी मेरी होवे भंडी, वरभण्ड रही कुरलाईआ। मेरी दुहाई विच ब्रह्मण्डी, ब्रह्मांड दे मालक दयां सुणाईआ। सति रिहा ना जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज तेरा संग ना कोए वखाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म धार टुट्टी फेर गंढ्ढी, गंढ्ढणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साची

सच वखा दे डण्डी, डण्डावत दीन दुनी बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट पाखण्डी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना दो जहानां जंगी, जंगजू इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ विकार मेट फ़रंगी, फ़ैसला आपणा हक कराईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी मैनूं अन्तिम आई तंगी, तंग दस्त हो के दयां दुहाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाली तक लै संधी, जो कौल इकरार तेरे नाल रखाईआ। वेखीं कलयुग आयू होर करीं ना लम्बी, लम्मीं पै के सीस निवाईआ। तूं गगन रहाया बिना थम्ही, प्रभू तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दुनी दी कूड़ी धार मेट दे चम्मी, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। आत्म धार समझा दे ब्रह्मी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। मेरी चिन्ता मेट दे ग़मी, ग़मखार होणा आप सहाईआ। मेरे उत्ते धार चला दे नवीं, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा इक्को ढोला गाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर बेड़ा मेरा बन्ही, बन्हणहार तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सति सच चला दे धर्म, अधर्म रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग जीवां उदय कर दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। साचा भेव खुल्हा दे आपणे ब्रह्म, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सतिजुग साचे दे दे जरम, जन्म कलयुग
६६८ पार कराईआ। मेरा अन्तष्करन मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मैं तेरी आई सरन, सरनगति इक रखाईआ। ६६८
२४ तूं मालक भन्नण घड़न, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा २४
वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि करनी करन, करता पुरख पुरख इक अख्वाईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान चन्द दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे धरनीए धर्म दीए धारे मैं तैनूं दस्सां अहिवाल, आदि जुगादि दा खेल समझाईआ। बेशक तूं जुग जुग प्रभ सेवा घाली घाल, घायल हो के सेव कमाईआ। मैं हैरान हो गया प्रभू दा खेल बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए बणाईआ। मैं मज़ल मार के तेरे उत्ते पहुँचया मनवाल, मनसा अवर ना कोए रखाईआ। जिथ्थे प्रभू दे भगत सुहेले बाल, बाली बुध वड्याईआ। उन्हां दा अन्तष्करन तक्कया जिन्हां दे सदा सदा हरि नाल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। नी मैं तेरे उत्ते करना इक सुआल, सहिज सहिज नाल सुणाईआ। सच दस्स किस बिध कलयुग अन्तिम तेरे उत्ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाईआ। की खेल करे महाकाल, मैनूं दे समझाईआ। की प्रभू दी होवे चाल, अवल्लड़ी आप चलाईआ। नी

उठ के सुरत संभाल, सम्बल दा मालक की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी सारे रहे भाल, खोजण थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेटणहारा तेरे उत्ते कूड़ जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ खोजू राम दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे धरनीए मैं पन्ध मार के आया दूरी, कदम कदम नाल बदलाईआ। इक्को तकां पुरख अकाल दी हज़ूरी, जो हज़रतां तों बाहर डेरा लाईआ। जिस दा जल्वा अलाह नूरी, दो जहानां सोभा पाईआ। बेशक तूं उस दी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग कीती मज़दूरी, सेवक हो के सेव कमाईआ। उह समरथ अकथ सर्ब कला भरपूरी, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ। उह वेखणहारा सृष्टी दृष्टी कूड़ी, कूड़ क्रिया फोल फुलाईआ। मानस मानुख मानव वेखे बुद्धी मूर्ख मूढ़ी, चतुर सुजाना ध्यान लगाईआ। नी तेरी छोह दी धार उस दी चरण धूड़ी, टिक्के ख़ाक लैणे रमाईआ। जो तेरे उत्ते भगतां रंगत चाढ़ी गूढ़ी, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए तक लै प्रभू दे भगत मीत, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। जिन्नां दी अन्तष्करन चों बदली नीत, नीतीवान होया सहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, गोबिन्द मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। नाता तोड़ के हस्त कीट, इक्को रंग दिता रंगाईआ। आत्म परमात्म बख्श प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। सति सच समझा के रीत, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। काया काअबा मन्दिर दस्स के हक मसीत, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। मन कल्पणा काया अन्तर जीत, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। तन वजूद कर के ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खेले त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रोहलू राम दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे नारदा मैं खुशीआं खुशी मनावांगी। गीत गोबिन्द इक्को गावांगी। जिस दा अमृत सागर सिन्ध, रस पी तृखा मिटावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दे मालक सीस निवावांगी।

सच दा मालक दरस दिखाएगा। मेरी जुग जुग हरस मिटाएगा। जिस दर्शन नूं रही तरस, सो रहमत आप कमाएगा। उह अर्श दा मालक आवे उत्ते फ़र्श, फ़ैसला हक सुणाएगा। मेरी मन्ज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे चरण टिकाएगा। उस दा खेल तकां असचरज, अचरज लीला जो वरताएगा। भगतां मिलण दी जिस नूं ग़रज़, उह गोबिन्द धार फेरा पाएगा। आपणा पूरा करे फ़र्ज़, फ़ाज़ल हो के वेख वखाएगा। मेरी निमाणी दी वंडे दर्द, दुखियां दर्द गंवाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेल आप मिलाएगा। नारद कहे उह आया गहर गम्भीर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जेहड़ा तैनूं अमृत बख्शे सीर, रस रसना बाहर चखाईआ। तेरी बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी नाल रखाईआ। लेखा मुकाए शाह हकीर, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां दे के जावे धीर, धीरज धीर दृढ़ाईआ। उह मालक पीरां दा पीर, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जिस दीन दुनी दी बदल देणी ज़मीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे उत्ते सच धर्म दी सच करे तामीर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा हुक्म आप वरताईआ।

✪ ३२ जेठ शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत सिँघ दे गृह मूसेचक ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे जे नारदा आया विच मनवाल, मनसा मेरी पूर कराईआ। मैं वसां सदा भगतां नाल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। प्रभू नूं कहिणा सच दा दे दे सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना इक वरताईआ। एह बच्चे नढ्ढे तेरे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे नारदा मैं भगत सुहेले तकदी, बिन नेत्र नैण उठाईआ। मैं मंगती होवां हक दी, दर ठांडे वास्ता पाईआ। मेरी आशा होवे सच दी, सच सच दयां दृढ़ाईआ। मेरी प्रीती जन भगतां अन्दर होवे नचदी, कदम कदम नालों बदलाईआ। बेशक इन्हां दी काया माटी कच्च दी, साढे तिन्न हथ्थ वंड लई वंडाईआ। मैं खेल दस्सां उस कमलापति दी, जो पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। मैं उसे दे चरणां हेठ वसदी, मैनूं सारे कहिंदे धरनी धरत धवल धौल अगम्मी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल रिहा खिलाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरी तुहानूं अशीश, सिर सिर मिले माण वड्याईआ। तुहाडा मालक इक जगदीस, जगदीश्र धुरदरगाहीआ। जिस दा लहिणा देणा बीस इकीस, बीस बीसा आप हो जाईआ। जिस दा इक्को नाम कलमा होवे हदीस, इक्को करे सच पढ़ाईआ। उह तुहाडा

अन्तर निरंतर बणया मीत, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जिस ने सतिजुग सति धर्म चलाउणी रीत, मार्ग इक्को इक प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बिना भगतां तों गाए कोई ना गीत, रसना जिह्वा रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरी धरनी लग्गा भाग, भगवन दिती माण वड्याईआ। मेरी सुती दी खुल्ही जाग, नेत्र लोचन नैण लई अंगड़ाईआ। मेरे अन्तष्करन उपज्या वैराग, वैरी नज़र कोए ना आईआ। तुसां मेरी करनी इमदाद, मिल मिल के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरे कोल चिठ्ठी पुराणी लिखी, बिन अक्खरां दयां लिखाईआ। एसे प्यार दी धार विच आए सी सप्तस ऋषी, भारदुआज नाल वड्याईआ। उन्हां निरगुण धार जोत निरँकार उस वेले देखी, बिन जगत नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस कलयुग अन्तिम बणना भेखी, रूप अनूप आप प्रगटाईआ। जगत जहान हो परदेसी, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा खेल तकणा विष्न ब्रह्मा शिव महेषी, महिखासुर ध्यान लगाईआ। उस दा सुणना इक संदेशी, जो जगत विद्या बाहर सुणाईआ। उह मालक होवे नर नरेशी, दो जहानां डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरा सुहाया दुआरा बंक, लोकमात मिली वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग एस दा बणया रहिणा इक्को अंक, अंकड़े जगत ना कोए रखाईआ। धर्म दी धार वजणा सदा डंक, डोरू सतिगुर शब्द सुणाईआ। जिथ्थे सीस निवाणगे राउ रंक, जगदीश देवणहार सरनाईआ। जिस दी आप बणाए प्रभू बणत, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। बत्ती जेठ जिस दी सम्मती वाली होवे सनद, सम्मत शहिनशाही ग्यारां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरे नाल करो मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। दोहां दा सांझा होवे जाप, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। आदि जुगादी इक्को साडा बाप, जम्मण वाली अवर कोए ना माईआ। ना रोग रहे ना संताप, दु:ख दर्द ना लागे राईआ। परम पुरख प्रभ किरपा करे आप, आप आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती जोड़े नात, चरण कवल सरनाईआ । खुशीआं वाली सुहञ्जणी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। धरनी कहे जन भगतो धन्न भाग जे तुसीं मेरी पुछी वात, बण के आए पाँधी राहीआ। मैं प्रभू नूं कहिणा चार जुग एह बणी रहे गाथ, दीन दुनी ढोले गाईआ। सारे इक दूजे नूं खुशीआं नाल टेकीए माथ, मस्तक मस्तक नाल छुहाईआ। बेनन्ती करीए अगे पुरख समराथ, हरि करते तेरी वड वड्याईआ। असीं बाल अंञाणे अनाथां अनाथ, दीनन तेरी ओट तकाईआ।

निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साडा सगला देणा साथ, संगी बहुरंगी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी स्वामी सब कुछ तेरे हाथ, अन्तरजामी होणा आप सहाईआ।

✪ पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे सतरंगया तूं क्यों बैठा लुक, लोक परलोक ध्यान लगाईआ। मित्रा आपणा भार आपे चुक, निरगुण आपणे कंध उठाईआ। नाल खुशीआं ढोला गा तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। मैं तेरे चरण कवल रिहा झुक, निव निव लागां पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार पैंडा जावे मुक, पाँधी पन्ध ना कोए रखाईआ । निगाह मार लै नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप होया अन्धेरा घुप, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सति दा प्रकाश गया छुप, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली होए बुत, बुतख़ाने रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे सतरंगया सतिगुर शब्द दी बण जा धार, धर्म धर्म दृढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलकार, बल आपणा आप प्रगटाईआ। दो जहानां निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। मेरी तेरे अगे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। डण्डावत बन्दना करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। उह सखे सुहेले मेरे मीत मुरार, मित्रा लै अंगड़ाईआ। कलयुग तक लै धुंआंधार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे सतरंगया तेरा सतिगुर रूप अगम्म, अगम्मढ़ी खेल खिलाईआ। निरगुण धारों आपे जम्म, जम्मण वाली दिसे कोए ना माईआ। तेरा नाता होवे नाल ब्रह्म, पारब्रह्म खेल खिलाईआ। जगत जहान तों वखरा होवे तेरा कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। दीन दुनी तक लै काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी वेख वखाईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ात पात वरन बरन, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। शरअ दी धार विच नाम कलमे लड़न, नव खण्ड रही कुरलाईआ। जगत जहान हँकार वेख लै गढ़्न हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। भय सीस रखे कोई ना डरन, जगदीश सीस ना कोए निवाईआ। तूं सब दा घाड़न घड़न, भन्न्णहार इक हो जाईआ। तेरा लेखा नाल चोटी जड़न, चेतन आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। सत्त रंग कहे सुण नारद मेरे मीता, मित्रा

दयां जणाईआ। तेरा प्यार मेरे चीता, चित वित ठगौरी नज़र कोए ना आईआ। मैं वेखणहारा जुग जुग जगत दी रीता, रीतीवान दिती वड्याईआ। उह निगाह मार लै की कृष्ण इशारा कीता विच गीता, अठारां ध्याए नाल मिलाईआ। प्रभू दा प्यार अन्तिम रहिणी नहीं प्रीता, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। झगड़ा होणा मन्दिर मसीतां, काअबे रोवण मारन धाहीआ। पवित्र रहिणीआं नहीं किसे दीआं नीतां, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतरंगा कहे नारदा मेरा शाहो भूप सुल्ताना, हरि करता धुरदरगाहीआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना, बेपरवाह नूर अलाहीआ। सचखण्ड वसणहारा सच मकाना, दरगाह साची सोभा पाईआ। शब्दी धार देवणहार फ़रमाना, संदेशा देवे अगम्म अथाहीआ। उस ने अचरज खेल रचाना, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतरंगा कहे नारदा मेरा मित्रा आउंदा जांदा समां, सहिज नाल समझाईआ। मेरे प्रभू ने खेल रचणा नवां, नवखण्ड ध्यान लगाईआ। मैं संदेश नरेश हो के इक्को कहवां, कहि कहि दृढ़ाईआ। हुण वक्त नहीं बहुता लम्मा, पाँधी पन्ध रिहा मुकाईआ। झगड़ा पैणा काया
६७४ माटी चम्मा, दीन मज़्हब मज़्हब टकराईआ। औह तक लै भज्जा फिरदा ब्रह्मा, बिन कदमां कदम उठाईआ। जोती जोत ६७४
२४ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतरंगा कहे नारदा मैं अज्जे २४
कुछ नहीं कूणा, जिह्वा ज़बान ना कोए हलाईआ। मैनूं सतिगुर शब्द दए हलूणा, सुत्तयां रिहा उठाईआ। तेरा सम्मत शहिनशाही ग्यारां बल करना दूणा, दोहरा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच दा खेल वरताईआ। सतरंगा कहे नारद मैं हुक्म रिहा उडीक, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मैनूं केहड़ी मिले तरीक, कवण थित सुहाईआ। मेरा मार्ग बड़ा बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं पिछली उत्ते मारनी लीक, अग्गा ऐन ऐन समझाईआ। मेरे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े देवां दीन दुनी ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे सतरंगया मित्रा मेरा इक्को हाढ़ा, हौकयां विच जणाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी वेखणा चाहुंदा अखाड़ा, सत्तां दीपां नाल मिलाईआ। तूं बणना धुर दा सच्चा लाड़ा, दो जहानां तेरी वजे वधाईआ। तेरी थित सुहञ्जणी होवे मैं संदेशा देवां पहली हाढ़ा, हाढ़ा कढ्डके दयां सुणाईआ। दीन दुनी अग्ग लगणी बहत्तर नाड़ा, ततव तत तत तपाईआ। फिरनी दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्वत रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतरंग

कहे सुण नारद मुनी, मुनीशरा ध्यान लगाईआ। मेरा मालक कुन कुनी, हरि करता इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी वड गुण गुणी, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ । मैं उस दी ख़बर अगम्मी सुणी, जो अणसुणत रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। सतरंगा कहे प्रभू मेरा वक्त सुहाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। मुरीदां हाल वेख वखाएगा। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखे लाए घाल, आपणा हुक्म आप वरताएगा। जुग चौकड़ी नालों वखरी चले चाल, जिस दा भेव कोए ना पाएगा। सम्बल बहि के करे संभाल, सतिगुर हो के आपणा हुक्म वरताएगा। दीना बंधप हो के दीन दयाल, दया निध आप अख्वाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाएगा। सतरंगा कहे नारदा पहली हाढ़ कोलों पुछ, सच मंग मंगाईआ। धुर दे साहिब ने करना की कुछ, की करता कार कमाईआ। निगाह मार लै वल उस, जिस दी उस्तत करे लोकाईआ। जो सब नूं देवणहारा सुख, सुख सागर रूप समाईआ। मेटणहारा दुःख, कलेशां डेरा ढाहीआ। मात गर्भ रहिण ना देवे उलटा रुक्ख, चुरासी फंद कटाईआ। जन भगतां मेटे तृष्ना भुख, आत्म परमात्म तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पहली हाढ़ कहे मित्रो मेरे नाल करो सलाह, सज्जणो दयां जणाईआ। सतरंग दा लेखा नाल दो जहां, एथे ओथे वजे वधाईआ। जिस दे थल्ले इक्को इष्ट सब ने लैणा मना, पुरख अकाल इक सरनाईआ। इक्को ढोला नाम कलमा लैणा गा, इक्को शब्द शब्द शनवाईआ। किसे ने सूर नहीं खाणा गाँ, हत्या गऊ ना कोए कराईआ। किसे दी बुद्धी रहिणी नहीं वांग काँ, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब दी फड़नी बांह, फड़ बाहों आप उठाईआ। जन भगतां बण के पिता माँ, गोदी गोद लए सुहाईआ। मैं सच संदेशा देवां आ, अक्ल बुद्धी तों बाहर दृढ़ाईआ। पहली हाढ़ कहे मेरा सुहञ्जणा होवे जहां, जगत जहान मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। पहली हाढ़ कहे मैं निरअक्खर अक्खर पढ़या, जगत विद्या दी लोड़ रही ना राईआ। मैं मंज़ल हकीकी चढ़या, लोक परलोकां पन्ध मुकाईआ। मैं सचखण्ड दुआरे खड़या, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे ना कोई सीस ना कोई धड़या, जोती जाता डगमगाईआ। मैं चरण कवल सरन सरनाई पड़या, आपणा आप मिटाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले किरपा निध मैनूं फड़या, फड़ बाहों गले लगाईआ। सतरंग तूं की चाहुंदा अड़या, जोत निरँकार दिता जणाईआ। मैं पहलों भय विच आ के डरया, भउ आपणे सीस रखाईआ। फिर झट सरन सरनाई परया, निउँ निउँ लागा पाईआ। मैं आया तेरे

घरया, दर देणी माण वड्याईआ। सच हुक्म बन्ना दे मेरे लड़या, पल्लू गंढु बंधाईआ। जेहड़ा दो जहान कदे ना झड़या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतरंग कहे पहली हाढ़ प्रभ ने दिती दात, दयावान आप वरताईआ। मैं वेख्या बैठ इकांत, इक इकल्ला नज़री आईआ। जिस सच प्रीती जोड़या नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। बातन मेरे नाल कीती बात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उह तक लै बच्चू अन्धेरी रात, कलयुग चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। भगतां पुछे कोई ना वात, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। दरोही फिरी लोकमात, धरनी धरत धवल धौल रही कुरलाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्ब दए दुहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जो भविख्त गए आख, बिन अक्खरां अक्खर लिखाईआ। निरगुण धार हो के एकँकार हो के वाच, वाचक हो के फोल फुलाईआ। बेशक अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मेरी खोल्ही बरांच, हिस्से दीन दुनी दे पाईआ। सतरंगया तेरा वड्डा करां प्रताप, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं सुत दुलारा मैं पुरख अकाला तेरा बाप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा जपाउणा जाप, दो जहानां करनी हक पढ़ाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव सारे लैण झाक, आप आपणा नैण उठाईआ। लोकमात खोल्ह दे ताक, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। तूं सेवक बणना चाक, चाकरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक गुसाँईंआ। पहली हाढ़ कहे सतरंगया मेरे नालों हाढ़ सतारां चंगा, चंगी प्रभ दिती वड्याईआ। मैं ते आदि जुगादी भुखा नंगा, ख़ाली झोली दयां वखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग मेरा एसे तरह लँघा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। अगला खेल की करे सूरा सरबंगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतरंगा कहे मैं खुशीआं नाल पुच्छां हाढ़ सतारां, सज्जणूआ दे जणाईआ। नाल रलावां शहिनशाही सम्मत ग्यारां, एका एके नाल मिलाईआ। बिरहों प्रेम दी हिलावां सितारा, सुत्तयां आप जगाईआ। बिना बुद्धी तों करां विचारा, विचर के दयां सुणाईआ। की खेल करे सची सरकारा, हरि करता धुरदरगाहीआ। निरगुण धार कर दे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर भेव खुल्हाईआ। तेरा इक्को काफ़ी इशारा, इशारा आपणा देणा दृढ़ाईआ। आह तक लै कलयुग अन्त किनारा, कन्ढी घाट बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतरंगया हरिजन हाढ़ सतारां मनाउणगे। दर दुआरा इक सुहाउणगे। नाम जैकारा इक्को गाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा दरस अगम्मी पाउणगे। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो मैं आया इक इक तों बाद,

६७६
२४

आपणा पन्ध मुकाईआ। तुसां मैनूं मैं तुहानूं रख्या याद, जगत जहान भुल कदे ना जाईआ। तुसीं मेरा मैं तुहाडा बणना नाद, अनादी धुन शनवाईआ। तुसीं मैनूं मैं तुहानूं ल्या लाध, खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। सब दे वड वड होए भाग, भगवन दिती माण वड्याईआ। सारे खोल्हीए इक्ठी जाग, जगत आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। हँस बुद्धी बणाईए काग, दुरमति मैल धुआईआ। आप आपणा लईए साध, सच सच रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडीआं आशां चंगीआं, सज्जणो दयां जणाईआ। सतारां दा रूप होवे प्रेमीआं भंगीआं, मस्ती नाम वाली चढ़ाईआ। सतारां तलवारां कढ्ढीआं होण नंगीआं, तिक्खी धार धार प्रगटाईआ। सतारां सज्जे हथ्थ ते पगड़ीआं होवण टंगीआं, लाल रंग रंगाईआ। सतारां कन्नीआं होवण गंढ्ढीआं, पल्लू गंढ्ढ पुआईआ। सतारां अमृत दीआं बोतलां भरनीआं पाणी ठण्डीआं, खब्बे हथ्थ उठाईआ। सतारां उंगलां नाल करदे आउणा वंडीआं, इक दूजे दी वंड वंडाईआ। सतारां रूप बणाया होवे पाखण्डीआं, आपणा भेस बदलाईआ। सतारां बीबीआं कन्नीं पाईआं होवण डण्डीआं, डण्डावत विच सीस निवाईआ। सतारां वाहीआं होवण कंघीआं, पुट्ठे सिधे वाल बणाईआ। सतारां पहनीआं होवण अंगीआं, साड़ीआं नाल सुहाईआ। सतारां हिलाउँदीआं आवण कंधीआं, आपणा बल प्रगटाईआ। सतारां रंगीआं होवण दन्दीआं, दन्दासिआं नाल सुहाईआ। सतारां अन्दर रोवण रंजीआं, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा धर्म इक समझाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो सतारां गाउँदे होवण ढोले, धुर दा राग अलाईआ। सतारां बणे होवण गोले, प्रभ चरणी सीस निवाईआ। सतारां बोरीआं दे पाए होवण चोले, बटन तन ना कोए छुहाईआ। सतारां मुख होवण खोल्हे, दन्दी दन्दी ना कोए छुहाईआ। सतारां खेलदे आवण होले, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। सतारां पाउँदे आवण रौले, कूक कूक सुणाईआ। सतारां बणे होवण भाले भोले, आपणी बुद्ध ना कोए वखाईआ। सतारां बीबीआं मलदीआं आवण हथ्थां, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। सतारां करदीआं आवण कथा, कथनी नाल सिफ्त सलाहीआ। सतारां नीला कीता होवे मथ्था, मस्तक रंग रंगाईआ। सतारां दा कृपानां वाला होवे जथ्था, सोहणी वंड वंडाईआ। सतारां इक दूजी नूं करदीआं आवण ठठ्ठा, मखौल जगत उडाईआ। सतारां दा आंचल होवे इक्ठा, इक्को गंढ्ढ पुआईआ। सतारां कोल होवे काचा मट्ठा, मटकी नाल मिलाईआ। सतारां कोल होवे दहीं खट्टा, काहन कृष्ण आस बुझाईआ। सतारां गाउँदीआं आवण इक्को टप्पा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतारां कोल होवे ढाई साल दा इक इक बच्चा, गोदी गोद गोद टिकाईआ। सतारां दे लूं लूं अन्दर होवे रचा, रचना आपणी दए वखाईआ। सतारां

गुरमुख जैकारा बोल दे आवण फ़तृा, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ । सतारां करदे आवण मता, मशवरा इक दूजे नाल रखाईआ। सतारां कोल पाणी होवे तत्ता, कलयुग अग्नी नाल मिलाईआ। सतारां दे अन्दर धर्म दी होवे सत्ता, सतिगुर चरण ध्यान रखाईआ। सतारां कोल इक इक होवे ताश दा पत्ता, इक दूजे नाल मेल ना कोए रखाईआ। सतारां हथ्थ विच फड़या होवे वट्टा, पत्थर पाहन सोभा पाईआ। सतारां कोल होवे इक इक टका, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। सतारां सीने लिख के लाया होवे वाह वाहवा उह जट्टा, तेरी बेपरवाहीआ। सतारां चीथड़ पाया होवे फटा, लीरो लीर वखाईआ। सतारां बीबीआं कोल होवे सूत दा अट्टा, रविदास चमारा वेख वखाईआ। सतारां लिख के फड़या होवे ज़ीरो नाल ज़ीरो कीता बटा, अन्त नज़र कोए ना आईआ। सतारां बीबीआं उडाउँदीआं आवण घट्टा, धूड़ी ज़िमीं असमान वखाईआ। सतारां लिख्या होवे पूरन उत्ते पत्ता, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। सतारां दी बौरी होई होवे मता, सुध जगत ना कोए रखाईआ। सतारां गुरमुख इक्को रंग दरसण प्रभू समरथा, समरथ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतरंगया मेरीआं तक लै वंडीआं, सोहणी वंड वंडाईआ। सतारां गुरमुखां भेख बणाया होवे पाखण्डीआं, सूसे काले रंग रंगाईआ। सतारां कोल फड़ीआं होवण फंदीआं, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतरंगा कहे हाढ़ सतारां मित्रा मैं की तैनूं दस्सां, दस्सण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं खुशीआं दे विच हस्सां, धुर दे ढोले गाईआ। मेरे साहिब ने वक्त ल्यांदा मसां, मस्सया रैण अन्धेरी वेखां थांउँ थाँईंआ। बिन कदमां तों नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। आपणा तीर निशाना कसां, कसम खा के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतरंगया मैं तैनूं करां आदाब, निव निव सीस निवाईआ । मैं तेरी तकां महिराब, जिथ्थे वसे महबूब नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। सतरंगा कहे सतारां हाढ़ा मैं होणा बड़ा राज़ी, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। सतारां गुरमुख बणे होवण काज़ी, तसबीआं हथ्थां विच उठाईआ। सतारां कोल लेखा कढुया होवे धरनी अराज़ी, हथ्थो हथ्थ उठाईआ। सतारां लेखा फड़या होवे पिछला माज़ी, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ । सतरंगा कहे मेरया मित्रा मेरे दो जहान दे होके, हुक्म धुर दा दयां सुणाईआ। मेरे साहिब दा खेल कोई ना रोके, ना कोई मेट मिटाईआ। जिस दे हुक्म वरतणे इक दो के, दो जहानां दए सुणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतरंगा कहे मेरे प्यारयो, प्रेमीओ दयां जणाईआ। मेरे सतिगुर दे दुलारयो, दूहलयो दयां जणाईआ। तुसीं आपणा आप शिंगारयो, सोहणा रंग रंगाईआ। सतारां गुरमुख बणना सोहणे लाड़िओ, सेहरे मुख उत्ते लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतरंगा कहे सतारां हाढ़ मेरा होर कुछ इरादा, इरादिउँ दयां जणाईआ। किस बिध सति धर्म दा होवे वाधा, वायदे पिछले फोल फुलाईआ। जां मैं लेख तक्कया मैनूं नज़र आया की संदेशा देवे पुरख अकाल सब दा दादा, दहि दिशा तों बाहर जणाईआ। पता नहीं उस दे कोलों किस भगत नूं होणा फ़ायदा, फ़ाकयां विच दिसे लोकाईआ। मैं सच आखां उन्ह् निगाह मारनी दो जहान दा लैणा जाइज़ा, वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडे अन्दर वजदी होवे रबाब, रबीउलसानी तुहाडी दए गवाहीआ। मैं वी तुहाडी करां इमदाद, सज्जणो तुहाडा संग निभाईआ। एह फ़ैसला देणा किस तरह जोत शब्द दी धार तों ततां विच्चों खेल हुन्दा बाद, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जिस विच रसना दा नहीं कोई स्वाद, मुख दन्द ना कोए वड्याईआ। कोई लेखा नहीं बोध अगाध, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। इक खेल भेद खोल्हणा किस बिध सम्बल नगर तों नगर सम्बल दा दुआरा होया आबाद, चार जुग दे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं शहादत देणी भुगताईआ। किस बिध नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों गोबिन्द दे हथ्थ ते उडया बाज़, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। भगतां याद रखणा कलयुग विच्चों किस तरह बदलणा सतिजुग दा रिवाज, सति धर्म लए अंगड़ाईआ। तूं प्यार विच मुहब्बत विच दीन दुनी तों फिरना आज़ाद, आज़ादी विच भज्जणा वाहो दाहीआ। सतारां हाढ़ कहे सतारां गुरमुखो तुसीं भगत दुआर दे अगे दरवाज़े तों बाहर ज़रूर जगाउणी आग, साढे तिन्न हथ्थ जिस दी होवे लम्बाई चौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडीआं लग्गीआं होण सुरतीआं, सुरती शब्द विच समाईआ। सतारां बीबीआं कोल मिट्टी दीआं फड़ीआं होवण मूर्तीआं, जिस दा वेरवा जगत ना कोए वड्याईआ। फेर खेलां दस्सणीआं सतिगुर शब्द ने अनन्दपुर दीआं, जो गोबिन्द आपणे विच गया छुपाईआ। प्रभू दीआं खेलां आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना मुड़दीआं, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतारां हाढ़ कहे सुणो प्यारे पंज, पंजां प्यारयो प्यारयो प्यारयो गुरमुखो तुहानूं नाल सुणाईआ। किसे दे अन्दर मूल ना होवे रंज, रंजश विच भगत

दुआरे कोए ना आईआ। सारे गुरमुख ते गुरमुखो तुहाडे हथ्थ विच निशाना होवे तारा चन्द, चन्द चांदनी देणी चमकाईआ। गोबिन्द लिख के सज्जे हथ्थ उत्ते आउणा बन्नृ, बन्दगी करके सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे दरबारीओ तुहाडे हथ्थां विच होवे कवल फुल्ल, खब्बे हथ्थ वड्याईआ। तुसां नाम तराज़ू जाणा तुल, आपणी कीमत करते हट्ट विकाईआ। सच बचन कदे ना जाणा भुल, जो अभुल रिहा जणाईआ। तुहाडी अगे वास्ते सब दी इक्को हो गई कुल, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सतारां हाढ़ कहे लिखारीउ तुहाडीआं सुहाउंदीआं होवण रुतीआं, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। तुहाडीआं आसां उठण सुतीआं, सुतीआं लैण अंगड़ाईआ। प्रभू दे प्यार होवण विच रुचीआं, रचना वेखण धुर दे माहीआ। तुहाडा लेखा कोई कढुण नहीं आया बुतीआं, बुतख़ानयां अन्दर वजदी रहे वधाईआ। सतारां हाढ़ कहे सब दे पैरां अन्दर होवण चिट्टीआं जुत्तीआं, नोक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतरंगा कहे सतारां हाढ़ तूं दस्सया बहु कुझ विचार, आपणा भेव चुकाईआ। सतारां भगत उह होण जिन्नृां दा किसे नाल कदी नहीं होया प्यार, झगड़े विच आपणा झट लँघाईआ। सतारां गुरमुख उह होण जेहड़े आपणे घर विच मुख्त्यार, हुक्म आपणा आप चलाईआ। सतारां बीबीआं उह होण जिन्नृां दे गल विच पुट्ठे पाए होण हार, सोना चांदी वंड ना कोए वंडाईआ। सतारां बीबीआं उह होण जेहड़ीआं कूक कूक करन पुकार, तेरा तेरा नाम दुहाईआ। वक्त सुहञ्जणा सोहणी होवे थित वार, वजदी रहे वधाईआ। नौ गुरमुख सत्त रंगा निशान झुलाउंदे आउण सोहँ शब्द बोलदे आउण जैकार, जै जै कार करके आपणी खुशी बणाईआ। सम्मत ग्यारां कहे मैं सतारां हाढ़ ते बड़ा करांगा इज़हार, भेव अभेदा आप खुलृाईआ। नाले दस्सांगा किस बिध दीन दुनी दा बदल जाणा समाज, समग्री सतिगुर आप वरताईआ। नाले भगतो तुहाडा किस बिध संवारेगा काज, करनी करता मेहर नज़र उठाईआ। अज्ज पहली हाढ़ किसे हो के जाणा नहीं नराज़, खुशीआं नाल सब नूं दिता सुणाईआ। सतरंगा कहे मेरा भगतो तुहानूं अदाब, निव निव लागां पाईआ। किरपा करे आप महाराज, सतिगुर दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा बदल देवे मज़ाज, अन्तर निरंतर निराकार निरँकार आपणा रंग रंगाईआ।

✪ २ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ सुरैण सिँघ, सवरन सिँघ, दलीप सिँघ, तेजा सिँघ, गुलज़ार सिँघ, सन्तोख सिँघ, जरनैल सिँघ, सुरैण सिँघ दे गृह पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर ✪

हाढ़ सतारां कहे सतारां बीबीआं बणीआं होवण गोपीआं, सोहणा रंग रंगाईआ। सतारां हथ्थ विच फड़ीआं होवण जोतीआं, घृत दीप नाल रुशनाईआ। सतारां बध्धीआं होवण धोतीआं, तन वजूद छुहाईआ। सतारां गल हार पाए होवण मोतीआं, सोहणी खुशी बणाईआ। सतारां कुच्छड़ चुकीआं होवण पोतीआं, नंन्हीआं गोद उठाईआ। सतारां सीस गुंदे होवण चोटीआं, मेंढी पंज पंज बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन भेव चुकाए रंग रंगाए इक्को गोतीआ, गौतम दी धार नाल मिलाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगत सतारां बणे होण फ़कीर, फ़िकरे ढोले गाईआ। सतारां हथ्थ विच फड़ के आउण ज़ंजीर, कड़ी कड़ी नाल बदलाईआ। सतारां दे कोल होवे बच्चा इक इक खंजीर, आयू वंड ना कोए वंडाईआ। सतारां हथ्थ विच फड़या होवे निर्मल नीर, अमृत रस रस वखाईआ। सतारां कोल लिख्या होवे कबीर, कबरां बाहर जणाईआ। सतारां दे सोहणे होवण चीर, चिरी विछुन्ने वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हथ्थ धर्म धार शमशीर, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ।

सतारां हाढ़ कहे कल्ल लेखा जाणा मुक, मुकम्मल प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं सीस सब दा जाणा झुक, सिर सके ना कोए उठाईआ। उस दी अगम्म निराली सब ने पढ़नी तुक, दो जहान करे शनवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जाण झुक, निव निव लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरा हुक्म प्यारा, प्रेमीउ प्रेम नाल जणाईआ। पहलों प्रभ नूं करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। फेर वेखां नैण उग्घाड़ा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मैं कूक कूक फेर दस्सां पुकारा, दो जहान सुणाईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरवैर धुरदरगाहीआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त कहे लोकाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं दस्सां बिना जगत विचारा, बुद्धी संग ना कोए रखाईआ। सतिजुग अन्दर भगतो एथे ज़रूर बणेगा भगत दुआरा, भगवन देवे माण वड्याईआ। जिस दी इक सौ इक इक दी होवे चार दीवारा, चार कुण्ट समझाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखे विगसे पावे सारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडी सदा जीउँदी रहिणी जोती, तन वजूदां नाम वड्याईआ। तुहाडा रूप धुर दे माणक मोती, कलयुग कच्च ना कोए वखाईआ। तुहाडी आत्म उठी सोती, सुत्तयां लई अंगड़ाईआ। तुहाडी आत्मा बण गई प्रभ दी गोती, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दो जहानां सोच सोची, सोचणहारा एकँकारा एका इक अख्वाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगतो सतारां करदे आवण हासीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। सतारां पांवदे आवण रासीआ, आपणा स्वांग बदलाईआ। सतारां कोल लिख्या होवे शंकर कैलाशीआ, अकल कलधारी ध्यान लगाईआ। सतारां लैंदे आवण उबासीआ, ख़ाली पेट दुहाईआ। फिर इशारा करना शंकर कैलाशीआ, सैनत नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त पन्ध मुकावे मदिरा मासीआ, मधुर धुन आप सुणाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहानूं चढ़ीआं होवण लालीआं, लाल प्रभ दे सोभा पाईआ। मेरीआं मेट के आउणीआं घटा कालीआं, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सतारां मुख विच पाईआं होवण नालीआं, वड्डी छोटी वंड ना कोए वंडाईआ। सतारां मोढे चुक्कीआं होवण पंजालीआं, पंचम रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं खुशीआं देवे बाहलीआं, वस्त नाम नाम वरताईआ।

नारद कहे जन भगतो सतारां हाढ़ करनी तैयारी, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। तुहानूं मस्ती चढ़ी होवे खुमारी, धुर दा नाम रंग रंगाईआ। सतारां बणे होण पुजारी, तिलक ललाट नज़री आईआ। सतारां बणे होवण जुआरी, ठग्गी चोरी मन रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां

६८२
२४

हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडा वक्त सुहञ्जणा होवे रुत दा, रुतड़ी प्रभ मेरे नाल महकाईआ। खेल वखा के अबिनाशी अचुत दा, चेतन सुरती आप कराईआ। पन्ध मुका के काया बुत दा, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। प्यार विच किसे पता रहे ना प्यो पुत दा, पिता पूत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस शब्द सुणाया सो   हँ ब्रह्म आपणा रूप बदलाईआ।

सतारां हाढ़ कहे जन भगतो सतारां रंगे होवण पल्ले, लाल रंग रंगाईआ। सतारां कोल चने होण दले, तोले ढाई ढाई रखाईआ। सतारां गुरमुख करदे आवण हल्ले, ज़ोर ज़ोर नाल दबाईआ। सतारां सच सिँघासण बैठे होवण मल्ले, दर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा कर्म आप कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडा सोहणा तकां मुखड़ा, मुख शृंगार ना कोए बणाईआ । मैं दरस प्यास दा भुखड़ा, तृष्ना कूड़ी पार लगाईआ। भाग लगाउणा काया माटी बुतड़ा, बुतख़ानयां रंग रंगाईआ। मेरा मालक ख़ालक पारब्रह्म अबिनाशी अचुतड़ा, चेतन सब नूं दए कराईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा सुहञ्जणी होणी रुतड़ा, रुतड़ी आपणे नाल मिलाईआ। जो निरगुण धारों होवे उतरा, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडी भगती होण लग्गी पूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। जो सर्ब कला भरपूर, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। भगत उधारना जिस दा दस्तूर, रीती आदि जुगादी चली आईआ। उह तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे अख़ीर, अख़ीर अकशर अक्खरां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,   । नारद कहे सतारां हाढ़ जी मैं दे के आया ढंडोरा, जगत जहान दीन दुनी सुणाईआ। मैं खण्डां दीपां फिरदा रिहा वांग चोरा, चोरी चोरी आपणा हुक्म वरताईआ। दुनियादारो मेरे प्रभू दा खेल होणा दोहरा, दोहरा हुक्म आप वरताईआ। उस दा शब्द शब्द दी धार बांका छोहरा, नौजवान इक अख्वाईआ। जिस दी सब नूं दिसे लोड़ा, लोड़वंद दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। उस दा रूप बाहर अवर ते औरा, अवर अवरी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। जन भगत कहिण साडीआं लग्गीआं होण प्रीतां, प्रीतम मिल के वजे वधाईआ। साडीआं बदलीआं होवण नीतां, कूड़ क्रिया ना वंड वंडाईआ। साथों छुटीआं होवण मन्दिर मसीतां, काअबा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो प्रभू दे प्यारयो उस दीआं जुग जुग वखरीआं

६८३ २४

रीतां, रीतीवान इक अख्वाईआ। जिस दा हुक्म पेचीदा, पेशतर समझ कोए ना आईआ। तुसीं साहिब सतिगुर उत्ते करो अकीदा, अक्ल बुद्धी दा डेरा ढाहीआ। तुहाडा लहिणा देणा सचखण्ड दुआर वांग अज़ीज़ा, बच्चे दुलारयां गोद उठाईआ। निरगुण एकँकार सतिगुर तुहाडीआं करे रीझां, सिर सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच सच सति सब नूं इक्को वेखणवाला दीदा, दीदा दानिस्ता पड़दा आप उठाईआ।

✪ १४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर दरबार निवासी संगत नवित ✪

सम्मत शहिनशाही ग्यारां कहे मेरी पुकार, कूक कूक दो जहान सुणाईआ। मैं शब्द संदेशा देणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। प्रेम प्रीती विच दस्सां पैग़म्बर गुर अवतार, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। चार जुग दे
६८४ शास्त्रां नाल करां गुफ़तार, गुफ़त शनीद दिता दृढ़ाईआ। मेरा वक्त सुहेला मैनूं खुशी बेअन्त अपार, अपरम्पर स्वामी दए ६८४
२४ वड्याईआ। भेव अभेदा खोल्हे एकँकार, अकल कलधारी की दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द की संदेशा देवे आपणी धार, धरनी २४
धरत धवल धौल जणाईआ। वक्त सुहेला सतारां हाढ़ होवे अगम्म अपार, भिन्नड़ी रैण नाल वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला पावे सार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। हुक्म संदेशा धुर फ़रमाना आवे वारो वार, वारता जुग चौकड़ी नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ ततां वाला फोटो लाया होवे बाहर, सिँघासण संग संग समझाईआ। हरिसंगत खुशीआं भेंट करे नैण मीट करे निमस्कार, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। वक्त सुहञ्जणा करे आप करतार, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। फोटो कहे मेरा तन वजूद नहीं शरीर, पवन स्वास नज़र कोए ना आईआ। मेरा रूप अनूप गहर गम्भीर, गवर विच समाईआ। मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर, आख़र आपणा पड़दा लाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दे के धीर, धर्म दी धर्म धार समझाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के घत वहीर, खेल खेलया वाहो दाहीआ। जिस नूं समझे ना कोए पैग़म्बर पीर, फ़िकरयां विच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी करनी कार कमाईआ। फोटो कहे मेरा तन वजूद नहीं माटी ख़ाकी, हड्ड मास नाड़ी नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धार निरवैर मेरी चाल रखी बांकी, दो

जहानां आपणा खेल खिलाईआ। शब्दी धार शब्दी अस्वार शब्द चढ़ावे राकी, राकब आपणा खेल वखाईआ। अमृत रस अंमिओं जाम प्या के साकी, साख्यात आपणा खेल वखाईआ। तन वजूद शरीर बेनज़ीर करके पाकी, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरीआं खुशीआं वालीआं होण बहारां, सोहणी वजे वधाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै होवे जैकारा, हरिसंगत ढोले गाईआ। गुरमुख खड़े हो के सतारां सतारां, सतारां सतारां वंड वंडाईआ। वेरवा नहीं कोई पुरख नारां, बाल बृद्ध जुआन हिस्सा ना कोए रखाईआ। चरण कवल करन सर्ब निमस्कारा, पंज प्यारे डण्डावत विच सीस निवाईआ। पंज दरबारी इक्की लावण जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। पंज लिखारी मस्तक धूड़ी ला के छारा, लेखा लिखण थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फोटो कहे मेरा लेखा होवे निराला, निराकार दए वड्याईआ। अगला भेव दस्सणा सुखाला, सहिज सहिज सहिज नाल जणाईआ। कलयुग कूड़ा कर्म मेट के काला, कुदरत कादर रंग रंगाईआ। जन भगतां काया मन्दिर वेख सची धर्मसाला, दर ठांडा इक सुहाईआ। जो
६८५ इशारा दे के गई अष्टभुज जवाला, शस्त्र धारी सीस निवाईआ। जिस कारन गोबिन्द जैकारा लाया पुरख अकाला, अकल ६८५
२४ कलधारी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक दृढ़ाईआ। २४
सतारां हाढ़ कहे हरिजन हरिभगत खुशीआं नाल सीस निवाउणगे। अन्तर अन्तर ढोले गाउणगे। परम पुरख पतिपरमेश्वर दर्शन पाउणगे। धर्म दी धर्म धार रीती सच दरसाउणगे। वस्त अमोलक हरिजन हरि दर भेंट कराउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाउणगे। फोटो कहे मैं आख़र देवां संदेशा, जन भगतां दयां जणाईआ। तुहाडा मालक इक नरेशा, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जिस दा वखरा हो गया वेसा, अवल्ला रूप बदलाईआ। अन्दर वड़ के गोबिन्द दस दस्मेसा, बैठा डेरा लाईआ। जिथ्थे अगे सदा रहे हमेशा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए संदेशा, धुर दा राग दृढ़ाईआ। सतिजुग दीन दुनी सृष्ट सबाई होवे धारी केसा, मूंड मुण्डाया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। शेर सिँघ कहे मैं हो के दस्सणा शेर, शरअ धर्म धार दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द बण दलेर, हुक्म देणा दृढ़ाईआ। गोबिन्द धार वस के नेरन नेर, सिँघ पूरन विच समाईआ। पूरन सिँघ दा लेखा ना ज़बर रहे ना ज़ेर, जोती जाता इक्को रंग रंगाईआ। धर्म दी धार होवे केहर, भबक इक्को नाम लगाईआ। नव सत नूं करे ढेर, ढेरी ख़ाक मिलाईआ। जन भगतां करे मेहर,

मेहर नज़र उठाईआ। एका रंग रंगाए गुरु गुर चेर, चेला गुर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। खुशीआं नाल कहे मेरा दिवस सुहावणा होणा सतारां हाढ़ा, ढोले गीत गाईआ। मैनूं चाढ़ना अगम्मी रंग गाड़ा, उतर कदे ना जाईआ। दर्शन करां सतिगुर शब्द लाड़ा, निरगुण धार वेख वखाईआ । जिस पूरब लहिणा चुकाउणा जो इक रुपईआ दे के आया माछूवाड़ा, पूरब रंग रंगाईआ। सो भगतां कोलों मंगे अख़ीरी वाड़ा, धर्म दी धार झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। माछूवाड़ा कहे मैं रख्या इक इक रुपईआ संभाल, सम्मत शहिनशाही पूरब नाल मिलाईआ। मैं दिवस रैण घालदा रिहा घाल, भज्जया वाहो दाहीआ। मैनूं समझ ना आई अवलड़ी चाल, की खेल करे धुरदरगाहीआ। मैं बेनन्ती कीती पुछिआ इक सवाल, निव निव सीस निवाईआ। सच दस्स मेरे स्वामीआ कवण होवे तेरे नाल, की तेरी वड्याईआ। शब्दी फ़रमाना मिल्या उह तक लै की संदेशा देंदा सिँघ पाल, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। फेर निगाह मार लै जोती जाता जिस दा इक अगम्मा लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। जिस दे हथ्थ शब्द शब्द दी ढाल, खण्डा गोबिन्द गया बदलाईआ। हुक्मे अन्दर रख काल महाकाल, संदेशा देवे थांउँ थाँईंआ। जो इशारा दिता गोबिन्द धार सर रवाल, रवालसर दा लहिणा झोली पाईआ। धर्म दा धर्म करे बहाल, कुकर्म दा कुकर्म डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। माछूवाड़ा कहे मैनूं इक रुपईआ मिल्या दाद, बिन झोली झोली पाईआ। मैं भेव खुल्हावां सतारां हाढ़ दी रात, रुतड़ी प्रभ दे नाल मिलाईआ। बिना ज़बान तों करांगा बात, बातन भेव खुल्हाईआ। जन भगतो की तुहाडा नात, की रिश्ता जगत रखाईआ। की लहिणा देणा कमलापात, पतिपरमेश्वर की देवे माण वड्याईआ। की ज़िंदगी होवे हयात, जीवण कवण रंग समाईआ। की लहिणा देणा लेखा काग़ज़ात, कलम शाही की चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरी बेनन्ती इक अरदास, प्रभ सरन सरन सरनाईआ। मेरी जुग चौकड़ी पुराणी आस, आहिस्ता आहिस्ता पूर देणी कराईआ। मैं संदेशा देवां ख़ास, ख़ालस धुर दा हुक्म समझाईआ। जन भगतो मेरे उत्ते रखणा विश्वाश, विश्व दा रंग इक रंगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा फोटो धरया होवे उत्ते पृथ्मी उत्तों वेखण सारे आकाश, गगन गगन गगन ध्यान लगाईआ। हरिजन भेंटा करन लग्गे करन अरदास, तूं ही पिता तूं ही माईआ। पंच लिखारी लिखण पात, संदेशा धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार

६८६
२४

कमाईआ। पंजां लिखारीआं कोल दो पासिउँ कलम होवे इक इक घड़ी, मुखी तिक्खी धार बणाईआ। तिन्नां उंगलां विच होवे फड़ी, सोहणी वंड वंडाईआ। कोल रखी होवे इक इक पाणी दी घड़ी, मटकी जगत जणाईआ। नाम खुमारी होवे चढ़ी, मस्ती विच समाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू चवां दी बणी होवे इक इक लड़ी, सतारां सतारां सोभा पाईआ। पंजवीं धार इटारसी दिल्ली पूना कानपुर होवे खड़ी, आपणा रंग वखाईआ। एह संदेशा ओह होणा जेहड़ा गोबिन्द दिता चमकौर गढ़ी, इक रुपईआ आपणी जेब विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। फेर वी हस के किहा मेरे पुरख अकाला तेरी किरपा बड़ी, अतोट अतुट तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गढ़ी चमकौर कहे जन भगतो इक रुपईआ गोबिन्द वाली दात, पुरख अकाल झोली पाईआ। जेहड़ी माछूवाड़े पुज्जी सुग़ात, जोती जाता आया टिकाईआ। उस दा लहिणा देणा तुहानूं मिलणा सतारां हाढ़ दी रात, रुतड़ी प्रभ आपणे नाल महकाईआ। तुहाडा होण ना देवे घाट, घाटे पिछले पूर कराईआ। तुहाडी पन्ध मेट के वाट, अगला लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन पुछे आपे वात, वारस हो के वेख वखाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात वेले ✪

सतारां हाढ़ कहे मैं खुशीआं करां इज़हार, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। शब्द संदेश सुणावां पैग़म्बर गुर अवतार, निरगुण निरगुण रंग जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करां ख़बरदार, धुर दा हुक्म हुक्म समझाईआ। दो जहानां संदेशा देवां आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल नाम सति सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर करां ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। चारे खाणी कर हुशियार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सेव कमाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा मातलोक विच संसार, ज़िमीं असमान वेखण चाँईं चाँईंआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां मेरा करे सतिकार, सति दा मालक देवे माण वड्याईआ। मेरे अन्तर निरंतर बख्शी अगम्म विचार, बिना ज़बान दिती सुणाईआ। मैं उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण निगाह लई मार, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। जिधर तकां वेखां धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दा दिसे ना कोई मीत मुरार, साजण संग ना कोए निभाईआ। मानव ज़ाती वेखी हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। फिर बिन नेत्रां

मैं निगाह लई मार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। खेल वेख्या अगम्म अपार, अलख अगोचर की दृढ़ाईआ। मैं बिना बुद्धी तों होया हुशियार, बिना अक्ल लई अंगड़ाईआ। बिना सरवणां सुणी पुकार, बिन नेत्रां राह तकाईआ। मेरे अन्तर निरंतर आया अगम्म प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला सब दा मीत मुरार, साजण सजणूआ इक अख्वाईआ। मैं उस नूं निव निव करां निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। झट सतिगुर शब्द मैनूं हलूणा दिता मार, ज़ोर नाल हिलाईआ। सतारां हाढ़ उठ वेख खेल उस करतार, जो करनी दा करता इक अख्वाईआ। जिस तेरा लहिणा देणा पूरा करना उदार, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जुग चौकड़ी सब दे कर्ज रिहा उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। जिस तेरा दुआर सुहञ्जणा कीता बख्श्या सच प्यार, प्रीतम हो के प्रेम बणाईआ। उस दे दर बण भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। उह देवणहार दातार, धुर दरगाही इक अख्वाईआ। जिस ने भगत सुहेले कीते तैयार, त्रैगुण अतीते आपणी दया कमाईआ। इक्खे कर वरन बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चूड़े चम्यार, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। अन्तष्करन वेखे निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा ग्रन्थ शास्त्रां बाहर, भेव अभेद आप चुकाईआ। इक्को रंग रंगाए पुरख नार, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को गृह बख्श दरबार, धुर दरबारा इक सुहाईआ। इक्को नाम शब्द जैकार, कलमा इक दृढ़ाईआ। इक्को धाम सुहञ्जणा कर तैयार, त्रैगुण अतीता वेख वखाईआ। सो पुरख अकाला पावणहारा सार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं मस्तक धूड़ी लावां छार, टिक्का ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सतारां हाढ़ जगत बणीं ना मूल निमाणा, बलहीण ना रूप वखाईआ। तेरा मालक शाहो इक्को भूप राणा, दो जहानां इक अख्वाईआ। जिस दा नाम संदेश कलमा फ़रमाना, धुर दी धार धार प्रगटाईआ। उह वेखे खेल महाना, ख़ालक ख़लक ध्यान लगाईआ। जिस दा सब तों वखरा गाणा, चार जुग तों बाहर आपणी खेल खिलाईआ। सो तैनूं आपणे दर करे परवाना, दरे दरबार दए वड्याईआ। सतारां हाढ़ होए प्रधाना, जुग चौकड़ी तेरी वजे वधाईआ। तेरा मालक इक नुराना, नूर नुराना नज़री आईआ। मस्ती विच करे दीवाना, खुमारी आपणी नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। हाढ़ सतारां कहे सतिगुर शब्द मैं ध्यान धरया, धरनी उत्ते वेख वखाईआ। मेरा सतिगुरु कदे ना मरया, मरन विच कदे ना आईआ। जिस दा चरण सरोवर सरया, अमृत मेघ बरसाईआ। जिस ने खेल अगम्मा करया, करनी दा करता कार कमाईआ। मैं भय विच रिहा डरया, भउ आपणे सीस जणाईआ। तेरे सच

दुआरे खरया, कहि के दयां सुणाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना सद वसे आपणे घरया, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जिस ने लख चुरासी आत्म परमात्म वरया, परमात्म आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा वक्त सुहावा कीता, करते पुरख दिती वड्याईआ। मैं की दस्सां पिछला कीता, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। मेरीआं साहिब नाल लग्गीआं प्रीतां, प्रीतम दिती माण वड्याईआ। त्रैगुण तों हो अतीता, त्रैभवण धनी नाल मिल के वजे वधाईआ। मेरा अन्तष्करन होया ठांडा सीता, अग्नी तत तत बुझाईआ। मैं हैरान होवां किस बिध मेरा साहिब नवीं चलाए रीता, जिस दी समझ किछ ना आईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीता, काअब्यां वंड ना कोए वंडाईआ। अठारां बरनां दी इक्को धर्म धार दी होवे रीता, गोबिन्द ढोला सहिज सुभाईआ। सब दी अन्दरों बदले नीता, नीतीवान इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं इक सत्त दी धार, सतिगुर दिती माण वड्याईआ। मैं वेख्या जगत संसार, संसा अन्दर रिहा ना राईआ। मैं खुशीआं विच करां इज़हार, भेव खुल्हावां चाँईं चाँईंआ। किरपा करनी आप करतार, कुदरत दे कादर देणी वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा जगत तों बाहर, दीन दुनी ना संग रखाईआ। मेरा मेला होवे हरि भगतां हरि भगत दुआर, दूजा संग ना कोए निभाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा लेखा इक सत्त, सति सतिवादीउ दयां जणाईआ। प्रभ ने दिती ब्रह्म मति, मन मति दा डेरा ढाहीआ। सच प्रीत जोड़ के नत, नातवां आपणा रंग रंगाईआ। बीज बीजे धर्म दे वत्त, पत्त टहणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म प्रेम फ़रमान, फुरनयां बाहर जणाईआ। सुणना ला के कान, हाढ़ सतारां रिहा समझाईआ। मेरा रूप सदा नौजवान, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल लख चुरासी गोपी जगत जहान, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप सुणाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं खुशीआं ढोले गावां, गुण भगतां नाल मिलाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा भरया चावां, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। मैं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं राह तकावां, वेखां नैण उठाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती इशारा देवां बिना बाहवां, सैनत नज़र किसे ना आईआ। इक्को गीत गोबिन्द गावां, दूसर अवर ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतारां हाढ़ नौ सौ चरानमे चौकड़ी जुग पिछला कर लै चेता, चेतन हो के वेख वखाईआ। जिस विच मन्नया इक्को नेता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां खोल्ह दे भेता, पर्दा रहे ना राईआ। उह वक्त सुहावा दस्स दे जिस वेले ब्रह्मे तेरे नाल कीता हेता, शंकर ख़ुशी बणाईआ। विष्नूं प्यार विच लेटा, सिँघासण जगत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतिगुर शब्द तैथों बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। धन्न भाग जे मेरी आई वारी, वारस हो के प्रभू दए वड्याईआ। मेरी इक्को कूक पुकारी, बिन रसना दयां सुणाईआ। मेरे शाहो भूप सिक्दारी, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कुण्डा खोल्ह दे बन्द किवाड़ी, पर्दा रहिण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआर तेरा निक्की जेही वाड़ी, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। की खेल करना अगे अगाड़ी, मैनूं दे समझाईआ। जो इशारा कीता दुर्गा अष्टभुज विच उजाड़ी, सिँघ शेर शेर अस्वार हो के गई सुणाईआ। शंकर कूक कहे उत्ते पहाड़ी, धुर दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतिगुरु, गुरदेव मेरे प्यारया। किथों मेरा हाल हुन्दा शुरू, शहिनशाह दे आप उच्चारया। किस बिध अगला मार्ग तुरू, तुरत आप समझा ल्या। कवण धार मोड़ा मुड़ू, मोहर नाम वाली लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमा ल्या। सतिगुर शब्द किहा सतारां हाढ़ तेरा लेखा दस्सां खोल्ह, बिन ग्रन्थ शास्त्र जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा विष्न ब्रह्मे शिव पहली वार संसार विच बोलया बोल, थित तेरी नाल वड्याईआ। ब्रह्मे अमृत धारा कढुके आपणे विच्चों नाभ कौल, कवल कवल कवल दरसाईआ। विष्न बण के पांधा रौल, भेव दिता समझाईआ। शंकर लम्मा पै के उत्ते धौल, धरनी ख़ाक रमाईआ। पुरख अकाल फेर आ गया कोल, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ । जोती धारा गया मौल, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतारां हाढ़ तेई अवतारां तेरा दिवस मनाया, मन मनसा दूर कराईआ। सब ने इक्को ढोला गाया, तूं मेरा मैं तेरा राग दृढ़ाईआ। पुरख अकाले आपणा भेव चुकाया, जुग जुग समझाईआ। सोहणा रंग रंगाया, उतर कदे ना जाईआ। रूप अनूप वखाया, बिन ततां डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतिगुर शब्द मेरी केहड़ी आस, मैनूं दे समझाईआ। झट शब्दी धार आई उठ वेख अगम्मी प्रकाश, नूर

नुराना नूर अलाहीआ। निगाह मार पृथ्मी आकाश, दो जहानां खोज खुजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण त्रैगुण माया दी खेलण लग्गे ताश, पत्ता पत्ता वख वख वखाईआ। झट कोल आया पुरख अबिनाश, आप आपणा रूप दरसाईआ। फेर हलूणा दिता शंकर उत्तों कैलाश, धरनी उत्तों सुटाईआ। ब्रह्मे आउणा कोल बिना स्वास, बिन रसना रस हिलाईआ। विष्नूं तूं वी सुण लै ख़ास, ख़ाहिश दयां दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द होवे धरवास, दो जहानां रंग रंगाईआ। जो बिना तन वजूद रहे लाश, लशकर संग ना कोए रखाईआ। जिस नूं कर सके ना कोए तलाश, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। उह मेरा खेले खेल तमाश, दो जहानां खेल खिलाईआ। मैं उहनूं सदा देवां शाबाश, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ सतारां विष्न ब्रह्मा शिव तिन्नां दा प्रभू नाल होया मिलाप, फिर तेरी वजी वधाईआ। चौहां ने इक्को गाया जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। उस वेले वक्त दुनी दा सतारां हाढ़ दी रात, रुतड़ी बिना जगत महकाईआ। चारे बैठ जोत धार इकांत, विष्न ब्रह्मा शिव संग बणाईआ। निगाह मार लोकमात, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। फेर सतिगुर शब्द कहे मैं निक्की
६६१ जेही पुछी बात, सहिज नाल सुणाईआ। मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरा खेल दिसे बहुभांत, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। ६६१
२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव २४
तिन्नां कीती अरदास, प्रभ अगे सीस निवाईआ। तूं साहिब साडा अबिनाश, करनी दा करता इक अख्वाईआ। बेशक मेरा लहिणा देणा उत्ते कैलाश, पर्वतां सोभा पाईआ। जो उपजे सो करना नास, दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। विष्नूं कहे मैं देवणहारा धरवास, घर घर वेख वखाईआ। ब्रह्मा कहे मैं पाउँदा रहवां रास, उतपती जगत वाली कराईआ। झट सतिगुर शब्द किहा की मेरा खेल तमाश, मैनूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण परम पुरख साडी केहड़ी धार, निरवैर दे सुणाईआ। जोती जाते कीता ख़बरदार, भेव अभेद खुलाईआ। तुसीं हुक्मे अन्दर रहिणा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। मैं खेल खेलां वारो वार, जोती जाता हो के वेस वटाईआ। रूप धरां आपणा अपर अपार, अपरम्पर आपणी खेल खिलाईआ। तन वजूद करां शृंगार, अवतार तेई रूप प्रगटाईआ। पैग़म्बरां नूर करां उज्यार, मूसा ईसा मुहम्मद संग बणाईआ। सतिगुर शब्द कर प्यार, नानक गोबिन्द खेल खिलाईआ। अन्तिम सब दे लहिणे देणे लवां विचार, विचरण दी लोड़ रही ना राईआ। पंजां ततां वंड वंडा विच संसार, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। मेरा आदि अन्त ना पारावार, बेअन्त

कहि के सारे गाईआ। नाम कलमे दस्स विच संसार, ग्रन्थ शास्त्रां रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी करके पार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी खेल वखाईआ। निहकलंका लए अवतार कलि कल्की रूप प्रगटाईआ। हाढ़ सतारां तेरी वेखां गुलशन बहार, पत्त टहणी फोल फुलाईआ। नव सत्त होणा धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मानस मानव मानुख सारे करन विभचार, कुकर्मा भरी लोकाईआ। चार जुग दे शास्त्र पावणहार सार, कूड़ क्रिया ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मिले ना कोई विच संसार, सति दुआर ना कोए दरसाईआ। दीन मज़्ब वरन बरन नव सत्त होवे हँकार, हँकारी गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। उस वेले खेल करां अपार, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतारां हाढ़ तेरा इक इक दा होवे मेला, शहिनशाही सम्मत नाल मिलाईआ। जोत धार दा सतिगुर शब्द होवे चेला, जगत तत ना वंड वंडाईआ। सम्बल वसे धाम नवेला, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। उस वेले पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां बणे सज्जण सुहेला, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। झट सतिगुर शब्द ने सतारां हाढ़ तेरे प्यार दीआं निशानीआं लाईआं, जगत प्यार नज़र किसे ना आईआ। बिना शहादतां शहादतां पाईआं, आप आपणा हुक्म वरताईआ। बिना इकाईआं बदल दितीआं दहाईआं, आपणे रंग ना कोए रंगाईआ। बिना अक्खीआं तों अक्खीआं उठाईआं, बिना नैणां नैण तकाईआ। फेर खुशी विच दितीआं दुहाईआं, बिना बोल बोल सुणाईआ। केते जुग चौकड़ीआं होईआं पराईआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ दा खेल होणा दाई दाईआं, सोहणी वंड वंडाईआ। लख चुरासी होणीआं रुशनाईआं, नूर नुराना डगमगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मिलणीआं वधाईआं, खुशीआं ढोले गाईआ। नाम कलम्यां होईआं चतुराईआं, अक्खरां नाल अक्खर सिफ्त सलाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बण रुतां लँघणीआं वाहो दाहीआं, पाँधी पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम होणीआं अन्धेरीआं छाईआं, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सब ने ढेरीआं होणीआं ढाहीआं, हौसला सके ना कोए रखाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा करे मेरा माहीआ, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दीआं शहादतां अवतार पैग़म्बर गुर देवण थांउँ थाँईआ, तेरे दुआरे आप दरसाईआ। उस वेले सब दीआं वस्तूआं होण पराईआं, मालक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द किहा मेरा खेल होणा अपार, अपरम्पर रिहा जणाईआ। तेरा तत होणा उज्यार, पंचां रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया भरां भण्डार, सोहणी खेल खिलाईआ। रूप धरां तेई अवतार, अवतर हो के अन्दर डेरा लाईआ। जोत नूर करां उज्यार, पैग़म्बरां विच

समाईआ। गुरुआं दे शब्द दी धार, धरनी उत्ते वड्याईआ। अन्तिम हो के आवां कलि कल्की अवतार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तन वजूदा करां ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। मेरा रूप ना पुरख ना नार, स्त्री मर्द ना वंड वंडाईआ। चार जुग दे शास्त्र करके जाण इज़हार, सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। पेशीनगोईआं करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मेरा खेल होवे अपार, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव बिन तन वजूदों जाणा लेट, लिटां नज़र कोए ना आईआ। नाले ख़ाली वजाओ पेट, बिन हथ्थां हथ्थ लगाईआ। इक पुरख अकाल दी रखो टेक, तुहानूं दयां समझाईआ। तुहाडा लेखा होणा पता नहीं केते केत, केते रूप बदलाईआ। मेरा सतिगुर शब्द दा करना हेत, हितकारीओ दयां समझाईआ। मैं शहिनशाह होवां कि सब दा नेत, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। संसारीआं भण्डारीआं सँघारीआं मैं सब नूं करां खेत, खेत्र मेरा समझ कोए ना आईआ। थोड़ा जेहा तुहानूं दस्सां भेत, अन्तर वड़ के दयां समझाईआ। मैं ना किसे दा बेटा ते ना होवां बेट, गोदी चुक ना कोए खिडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। झट विष्न ब्रह्मा शिव गए लिट, लिटां नज़र कोए ना आईआ। क्यों इक्को धार विच गए टिक, धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। झट सतिगुर शब्द ने बिन अक्खरां तों दिती चिट, चिट्ठे उत्ते काला नज़र कोए ना आईआ। तिन्ने वेखण बिट बिट, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव होवो ख़बरदार, आपणी लओ अंगड़ाईआ। मेरा खेल तकणा विच संसार, सतिगुर शब्द शब्द जणाईआ। मैं रूप बदलां वारो वार, निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ। आपणा नाम समझा के पैग़म्बर गुर अवतार, ततां रंग रंगाईआ। शब्द दी महिमा कर अपार, ग्रन्थ शास्त्र दयां बणाईआ। दीनां मज़्हबां दे खोल्ह हट्ट बाज़ार, तूं मेरा मैं तेरा नाम कलमे ज़बानां उत्ते विकाईआ। खण्डे खड़ग फड़ तलवार, तीर कमानां नाल करां लड़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेरी पावे कोई ना सार, दीन दुनी समझ किछ ना पाईआ। आपे अन्दर आपे होवां बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणी खेल खिलाईआ। नाले सतिगुर शब्द ने इक दो तिन्न चार वार किहा ललकार, चारों कुण्ट सब नूं दिता भुआईआ। बिना अक्खीआं तों नूर जोत होया दीदार, सनमुख सब दे नज़री आईआ। तन वजूद सारे दिसण छार, अवतार पैग़म्बर गुर अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट विष्न ब्रह्मे शिव मंगीआं मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। सतिगुर शब्द

किहा सो पुरख निरञ्जण जिस दी मंज़ल कोई ना लँघा, हरि पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। एकँकारा जो देवणहार अनन्दा, आदि निरञ्जण नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता सूरा सरबंगा, श्री भगवान अगम्म अथाहीआ। पारब्रह्म आप आपणे संगा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। फेर हस के किहा विष्न ब्रह्मा शिव उए बच्चू मेरा जदों अन्त होया ते कोल होएगा सत्तरंग दा डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। ना कोई भेख रहे ना पाखण्डा, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। जगत जहान वेखे दीन दुनी दीआं कंधां, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। उस वेले जोत दी धार शब्द दा स्वांग तन वजूद होवेगा ततां पंजां वाला बन्दा, बन्दगी विच मुशंदगी ना कोए रखाईआ। जिस दा प्यार होवे ठंडा, अग्नी तत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। झट विष्न ब्रह्मा शिव बिन हथ्थां हथ्थ जोड़े, बिन सीस सीस निवाईआ। बिन अक्खरां गाए दोहरे, बिन रसना ढोले गाईआ। बिन अस्व चढ़े घोड़े, भज्जे वाहो दाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी आकाश सारे दौड़े, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। जिधर तक्कया उधर प्रभू दी लोड़े, बिना प्रभू तों सृष्टी कम्म किसे ना आईआ। फेर तिन्ने बिन कदमां तों प्रभू दे चरण ते झाड़न जोड़े, आपणी सेव
६६४ कमाईआ। सतिगुर शब्द किहा उह नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग बचूओ तुहाडे वास्ते थोड़े, थोड़ा समां थोड़े विच्चों दयां ६६४
२४ लँघाईआ। उह वेखो जगत जहान धार दी विद्या ते सस्से उत्ते होड़े, होड़े नाल हाहे दी टिप्पी, टिप्पी दे विच्चों टीका २४
टिपणी वाले सारे दयां मिटाईआ। फेर मेरी धार होवे आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा दी इक्को पट्टी होवे लिखी, अन्त पटने वाला लेखा देवे पाईआ। पर याद रखयो सब नूं भरनी पैणी चट्टी, पुरातन चेटक रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव किहा सतिगुर शब्द की करदा अज्ज दी लई वार थित, पर बग़ैर कलम शाही लेख बणाईआ। नाले पई तूं साडा बणया रहीं मित, मित्रा तेरी आस रखाईआ। साडा केहड़ा चित, चित ठगौरी रहे ना राईआ। असीं चाहुंदे असीं सदा इक्ठे रहीए नित, नवित खेल खेलीए चाँईं चाँईंआ। क्यों साडा सब दा इक्को पित, पुरख अकाल कहि के जिस नूं लईए गाईआ। पर इक गल्ल याद आउँदी जे उस ने अगे जांदयां जांदयां दीन दुनी विच मज़्बां दी पा देणी विथ, वितकरे विच करनी ख़लक खुदाईआ। किसे नूं पत्थरां उत्ते किसे नूं पूजा ला देणी इट्ट, पाहिनां उत्ते सीस देणे रगढ़ाईआ। झट सतिगुर शब्द ने उसे वेले विष्न ब्रह्मा शिव नूं बिन अक्खरां तों लिख के दिती चिट, बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। तुसीं सावधान हो के जाणा टिक, टिकटिकी इक्को विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव सतिगुर शब्द दे अगे कीती अरज़ोई, बेनन्ती दिती सुणाईआ। सतिगुर शब्द ने किहा ओ मित्रो एस वक्त नूं जाणे कोई, समझण वाला समझ कोए ना आईआ। जिस दी धार इक तों होणी दोई, निरगुण सरगुण रूप जणाईआ। जिस दे प्यार विच तुहाडी आशा जाणी मोही, मुहब्बत विच तुसीं सारे जाओ समाईआ। उस दी लड़ी विच आत्म धार जाए परोई, परमात्म आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द किहा जिस वेले मैं धरया रूप तेई अवतार, त्रैगुण अतीता हो के खेल खिलाईआ। ग्रन्थ शास्त्र मेरी महिमा दे गुण कलम शाही दए उच्चार, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। पर फेर वी मैं सब तों वसां बाहर, जोती जाता हो के आपणे आसण डेरा लाईआ। मेरा नूर मेरा ज़हूर जो किसे दे आवे ना अख्त्यार, मुख्त्यार वेखण कोए ना पाईआ। उह विष्न ब्रह्मा शिव तुसीं तिन्ने मेरी निक्की जेही गुलज़ार, ते गुलशन दे बूटे दिते लगाईआ। त्रैगुण माया दी दात तुहाडी झोली देणी डार, रजो तमों सतो तुहाडे नाल मिलाईआ। पंज तत तुहानूं बख्श देणी बहार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोहणा संग बणाईआ। चारे खाणी दे अधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। फेर लख चुरासी दा तुसीं आपणा तैयार करयो घर बाहर, सोहणा रंग रंगाईआ। फेर मैं इक होर खेल दस्सां मैं रूप धरां अपार, अपरम्पर हो के वेस वटाईआ। जोत दी धार शब्द दा प्यार ततां दा साकार, खेल खेलां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव जुग केते जाणे बीत, भज्जण वाहो दाहीआ। किसे दा कोई नहीं रहिणा मीत, दुनिया विच दुनीदार नज़र कोए ना आईआ। मेरे नाम दे ढोले बदलदे रहिणे गीत, कलमे नाम सिफ्तां वाली सलाहीआ। पर मेरी किरपा तों बिना किसे दा अन्तर नहीं होणा ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। झट विष्न ब्रह्मा शिव दी निकल गई चीक, हाए उफ़ तेरे नाम दुहाईआ। सतिगुर शब्द ने बिना लाईन तों मारी लीक, निशान दिता वखाईआ। मेरी धार तों बिना करे ना कोए तस्दीक, शहादत सके ना कोए भुगताईआ। तिन्नां ने अक्खां लईआं मीट, सुन्न समाधी विच समाईआ। फेर चारों तरफ़ बदल के पीठ, वेखण थांउँ थाँईंआ। सतिगुर शब्द किहा खेल वखाया अनडीठ, बिन नैणां दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द किहा ब्रह्मा जी की करोगे कार, करता की दृढ़ाईआ। की उतपत करोगे संसार, तन वजूदा खेल खिलाईआ। पंज तत बणाउगे मनार, त्रैगुण रंग चढ़ाईआ। पर सच दस्सो केहड़ी वस्त अन्दर रखोगे जिस नाल होवे उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। तिन्ने कहिण सतिगुर शब्द एह साडे वस्स तों

बाहर, साडी चले ना कोए चतुराईआ। असीं बरखुरदार तेरे सेवादार, तेरे हुक्म विच सीस निवाईआ। पर इक बचन दस्स किस बिध सब दा होवे अन्त किनार, लेखा कवण चुकाईआ। सतिगुर शब्द किहा ना मैं बुढा ना मैं जवान मेरा रूप अगम्म अपार, एह मेरी बेपरवाहीआ। जदों हुक्म मिले आवांगा बण सची सरकार, शहिनशाह हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। उह दिवस सतारां हाढ़ दा पुरातन, ग्रन्थ शास्त्र भेव कोए ना पाईआ। उह खुशीआं वाली रातन, रुतड़ी विष्न ब्रह्मा शिव रिहा महकाईआ। जिस दे विच भेव कोई ना बातन, पर्दा दिता उठाईआ। जिस नूं सके ना कोई वाचन, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। झट सतिगुर शब्द किहा सतारां हाढ़ तेरे नाल मेरा जुड़या नातन, रिश्ता ल्या बणाईआ। तेरी मंज़ल वेखां घाटन, जुग चौकड़ी पौड़ी डण्डे फोल फुलाईआ। आह वेख लै लँघदी जांदी वाटन, पाँधी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। तेरा कल कलेश आवां काटन, कटाकश आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरे शहिनशाह भूप, भूपत भूप तेरी सरनाईआ। तेरा केहड़ा होवे सरूप, मैनूं दे समझाईआ। केहड़ा केहड़ा होवे पूत, पिता पूत गोद उठाईआ। तूं आवें केहड़ी कूट, कवण कुटीआ सोभा पाईआ। केहड़ा धागा होवे सूत, सूत्र धारी दे समझाईआ। झट सतिगुर शब्द ने किहा मेरा गृह ऊचो ऊच, अगम्म अथाह मेरा माहीआ। जिस दा लेखा सूचो सूच, सुच संजम आपणे रंग रंगाईआ। जिस वेले नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग कर गए कूच, धरनी उत्तों भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। हाढ़ सतारां कहे सतिगुर शब्द कुछ मेरी पा दे झोली, झलक आपणी दे वखाईआ। धुर दे हुक्म दी सुणी बोली, अनबोलत दिती जणाईआ। जिस वेले दीन दुनी कूड़ दी खेले होली, कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रीती सके कोई ना घोली, घोली घोल ना कोए घुमाईआ । धर्म दी चुक्के कोई ना डोली, सच कहार कंध ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप माया ममता पावे रौली, हाहाकार करे लोकाईआ। उस वेले ज़रूर आवांगा उपर धौली, धर्म दा धर्म धर्म विच्चों प्रगटाईआ। पर एह मेरा खेल बड़ा होवेगा हौली हौली हौली, आहिस्ता आहिस्ता आहिस्ता आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सतारां हाढ़ किहा सतिगुर शब्द कुछ होर दे दे वस्त, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। मेरे ख़ाली वेख लै हस्त, झोली तेरे अगे डाहीआ। मैनूं खुशीआं विच कर दे मस्त, मस्ताना दे बणाईआ। पर कौल कर लै जिस वेले आवें उत्ते फ़र्श, फ़ैसला अर्शां वाला मुकाईआ। मेरे उत्ते ज़रूर करीं तरस, रहमत

देणी कमाईआ। मैं तेरा सनमुख करां दरस, दीदा दानिस्ता इक्को नज़री आईआ। भावे नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग लँघ जाण पर मेरी ज़रूर पूरी करीं हरस, हवस देणी गुआईआ। झट सतिगुर शब्द ने बिना काग़ज़ कलम तों लिख दिती शर्त, बिन शरअ तों समझाईआ । मैं निरगुण धार हो के सरगुण हो के फेर आवां परत, पतिपरमेश्वर हो के आपणा भेव खुल्हाईआ। हाढ़ सतारां तैनूं वी भेज के उत्ते धरत, धरनी दा लेखा दयां चुकाईआ। झट विष्न ब्रह्मा शिव सोचां विच गए लटक, बैठे ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द ने दिता झटक, हलूणा दिता लगाईआ। मैं साहिब सुल्तान नौजुआन मेरा मालक श्री भगवान मेरी अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दी धार ते शब्द दी सब तों वखरी मटक, चाल निराली इक रखाईआ। मेरे हुक्म दा हुक्म विच्चों चढ़ जाए कटक, बेअन्त बेअन्त बेअन्त खेल वखाईआ। सच दा भाणा उह विष्न ब्रह्मा शिव कदे ना सके अटक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इक दूजे वल वेख के मलण अक्खीआं, सज्जे खब्बे ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द ने केहड़ीआं धारां आपणे अन्दर रखीआं, सानूं समझ कुछ ना पाईआ। जिस दा खेल होणा कोटन कोटि लख लखीआं, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। किस बिध लख चुरासी हंढाउणीआं सखीआँ, आत्मा परमात्मा हो के वेख वखाईआ। जिस दीआं लम्मीआं आसा रखीआं, अन्त सके ना कोए समझाईआ। कितनीआं जुग चौकड़ीआं जाणीआं नस्सीआं, भज्जणीआं वाहो दाहीआ। झट तिन्नां दे अन्दर विचारां आईआं अच्छीआं, अच्छी तरह वेख वखाईआ। पता नहीं एह सतिगुर शब्द ने ततां वाले रूप धरने ते कदे बण जाणा मछ ते मछीआं, कच्छां मच्छां आपणा खेल खिलाईआ। फेर तिन्नां दीआं आशां खिड़ खिड़ के हसीआं, खुशीआं दे ढोले गाईआ। झट सतिगुर शब्द ने अगम्मी ख़बरां दस्सीआं, बिन अक्खरां कीती पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बच्चू मेरे हुक्म दीआं लिखो पट्टीआं, बिना अक्खर अक्खर दृढ़ाईआ। तुहानूं सब नूं अन्तिम भरनीआं पैणीआं चट्टीआं, बचया रहिण कोए ना पाईआ। ओ जुग चौकड़ी दे मनवन्तरां वालीआं तुहाडीआं हट्टीआं, हटवाणिउ तुहानूं दयां समझाईआ। चुरासी लख जूनी दीआं खट लओ खट्टीआं, ततां वाले शरीर लओ बणाईआ। पर याद रखयो आत्मा मेरे बिना किसे अन्दर नहीं जाणीआं रखीआं, जोत नूर करे ना कोए रुशनाईआ। मेरे नाल उस विहार विच किसे दीआं होणीआं नहीं हिस्से पत्तीआं, इक्को मालक सब दा नज़री आईआ। तुहानूं वड्याईआं दितीआं तोल्यां विच्चों रतीआं, रत्न अमोलक हीरे दयां बणाईआ। पर याद करयो अन्त सब दीआं रहिणीआं ख़ाली हथ्थीआं, हथेलीआं मार के दिता दृढ़ाईआ। तुसां धारा बदलदे रहिणा इक्ट्ठीआं, जुग जुग एह मेरी बेपरवाहीआ। पता नहीं कितनी वार सृष्टीआं बणीआं ते कितनी वार ढठ्ठीआं, ढाह ढाह ढेरी ख़ाक मिलाईआ ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण ओ हाढ़ सतारां तूं अज्ज किथों सतिगुर शब्द नूं दिता सद्दा, सदके वारी घोल घुमाईआ। हाढ़ सतारां कहे मित्रो मैं वी हुक्म दा बध्धा, बन्दना विच एसे नूं सीस निवाईआ। दो जहान जिस दी सारे जगह, जिधर वेखो उधर नज़री आईआ। पर निगाह मारो पिच्छा पिच्छे लँघ जाए ते की हाल होणा अगा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तों बाद की आपणी खेल खिलाईआ। पता नहीं एह किहो जेहा सूरा सरबगा, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द किहा उह दोस्तो प्रेमीओ प्यारयो विष्नूं ब्रह्मा शिव तुहानूं पता नहीं मैं प्यार करदा मैं यार बणदा मैं एतबार दस्सदा पर फेर वी सब नूं दे जांदा दग़ा, मेरा भेव कोए ना पाईआ। जदों मैं किरपा करां ते बड़ी मेहर दे नाल वसां उपर शाहरगा, नौ दुआरे दे उत्ते आपणा डेरा लाईआ। पर मेरी अज्ज तक समझी नहीं किसे ने तबा, अन्तर समझ कुछ ना आईआ। मैं कदी बोलया नहीं नाल लबां, जिह्वा ज़बान ना कोए हिलाईआ। पर मेरा खेल हुन्दा हुन्दा जुग चौकड़ी बाद सबब्बा, सतिगुर शब्द कहे एह मेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे सतिगुर शब्द कुछ मेरी झोली पा दे दान, दातिआ तेरी इक सरनाईआ। सतिगुर शब्द ने किहा सुण लै बिना कान, बिन सरवणां दयां सुणाईआ। मेरा मालक श्री भगवान, भगवन इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा नाल दो जहान, दोहरा आपणा हुक्म वरताईआ। बेशक मेरा रूप बेपहचान, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस वेले मैं धरती उत्ते होया प्रधान, मेहरवान हो के आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण तों सरगुण होवां ततां वाला जुआन, जोबन जोत धार हंढाईआ। हुक्म संदेशे धुर दे देवां आण, शब्दी शब्द शब्द कर शनवाईआ। अक्खर अक्खर मेरा देण ब्यान, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं पता नहीं राम बणां कि काहन, काहनां दा खेल खिलाईआ । पता नहीं पैग़म्बरां दा पैग़म्बर होवां कि अमामां दा अमाम, जल्वागर नूर अलाहीआ। सतिगुर शब्द ते शब्द दा होवां बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। हाढ़ सतारां पर तैनूं इक दे के जावां ब्यान, बिन सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणन तों पहले दयां समझाईआ। जिस वेले जुग चौकड़ी लँघ गए विच जहान, आपणा रूप बदलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दे के चले गए ज्ञान, ग्रन्थ शास्त्र वेद पुराणां अञ्जील कुरानां सिफ्त सलाहीआ। तीर्थ तट वेखणे सरोवर महान, जलधारा वहिण वहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ बणन निशान, गुरुदुआरयां वंड वंडाईआ। कोटन नाम होणे प्रधान, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। ततां वाले तत वंड करन इन्सान, आप आपणा खेल खिलाईआ। मेरी समझ ना आवे विच जहान, दीन दुनी भेव कोए ना पाईआ। योद्धा सूरबीर बणां बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। सति दे हुक्म दा करां फ़रमान, सचखण्ड

निवासी नाल करां सलाहीआ। धरनी उत्ते धर्म दा झुला के निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। मेरा खेल तकण ज़िमीं असमान, लोक परलोक तबकां सबक दयां सिखाईआ। एह लेखा आउणा नहीं विच विधान, सिख्या विच ना कोए सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ सतारां तेरी रख दिती मुनिआद, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जिस ने साडी रचना रची आदि, विष्न ब्रह्मा शिव दिती वड्याईआ। जिस ने खेल खेलया विच ब्रह्मांड, ब्रह्मांड विच आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा शब्द दा अगम्मी नाद, ज़िमीं आसमानां करे शनवाईआ। जिस ने अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं देणी दाद, हुक्म संदेशे काया मन्दिर इक दृढ़ाईआ। जिस नूं सब ने मन्नणा वाहिद, नूर अलाह कहि के सीस निवाईआ। जिस नूं सब ने करना याद, यादाशत विच भुल कदे ना जाईआ। उह बण के मोहण माधव माध, मधुर धन्न दए सुणाईआ। जिस दा हुक्म होणा बोध अगाध, बुद्धी तों बाहर करे पढ़ाईआ। सतारां हाढ़ याद रखीं उसदा जिस वेले होया अन्त अख़ीर उह बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह बेपरवाह भगतां दा होवे मददगार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभू उह मेरे सतिगुरु मेरा झुक लैण दे सीस, बिन सीस सीस निवाईआ। उह सतिगुर शब्द तूं मेरा जगदीश, जगदीश्र धुरदरगाहीआ। मैं जुग चौकड़ी तेरे हुक्म दे पीसण लवां पीस, पीस पीस सेव कमाईआ। झट अन्दरों आवाज़ आई एह तेरा निशाना ठीक, ठाकर हो के दयां दृढ़ाईआ। पर याद रख लै मेरी तरीक, तारीक अन्धेरा दीन दुनी वेख वखाईआ। जिस दी पैग़म्बरां करनी पैणी तबलीक, वाहिद अल्ला कहि के सारे जाण सुणाईआ। मेरा खेल होणा लाशरीक, शरअ तों बाहर करां पढ़ाईआ। तैनूं वेखणा ला के नीझ, बिन नैणां नैण उठाईआ। तेरी पूरी करां रीझ, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। उस वेले इक होवे तमहीद, सिख्या दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द किहा सतारां हाढ़ तूं किड्डा वड्डा सूरबीर, मेहरवान अख्वाईआ। मेहरवाना मेहर दा मार के तीर, अणयाला इक चलाईआ। जे मेरा अन्त वेखणा ते मेरे विच नवीं करीं तामीर, पिछला लेखा रहे ना राईआ। शरअ दे सारे कट देणे ज़ंजीर, चार जुग दा झगड़ा देणा मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दे के धीर, धर्म दी धार देणी समझाईआ। तेरे भगत तेरी मंज़ल चढ़न अख़ीर, आख़र मेला मेलणा चाँई चाँईआ। भावें सतिगुर शब्द तूं रख लवीं पंजां ततां वाला शरीर, तन वजूद आपणा डेरा लाईआ। पर मैनूं नहीं पता तूं शाह होवें कि हकीर, शहिनशाह होवें धुरदरगाहीआ। मेरी इक मंग मेरी बदल देवीं तकदीर, तदबीर आपणे नाल

बणाईआ । मैं तेरे दर दा मंगता दरवेश भिखारी फ़कीर, फ़िकरा ढोला तेरा रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणां सहाईआ। सतिगुर शब्द किहा हाढ़ सतारां दया कमावांगा। सो पुरख निरञ्जण हो के खेल खिलावांगा। हरि पुरख निरञ्जण हो के वेख वखावांगा। एकँकारा हो के वेस वटावांगा। आदि निरञ्जण हो के नूर रुशनावांगा। अबिनाशी करता हो के सोभा पावांगा। श्री भगवान हो के खेल खिलावांगा। पारब्रह्म हो के पड़दा आप उठावांगा। सतिगुर शब्द हो के शब्दी डंक वजावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सारे जोह के, हलूणे नाल हिलावांगा। अवतार पैग़म्बर गुरु मुहब्बत विच मोह के, तेरे नाल मिलावांगा। निरगुण तों सरगुण रूप हो के, सोहणा खेल खिलावांगा। सरगुण तत विचार चाल जोह के, जोती जोत विच समावांगा। जोती जाता आप हो के, आप आपणा वेस वटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरतावांगा। हाढ़ सतारां सतिगुर दया कमाएगा। दीन दयाल वेस वटाएगा। जोती जाता डगमगाएगा। बंक दुआरा इक सुहाएगा। तन वजूद सोभा पाएगा। तन विभूत इक हंढाएगा। महबूब आपणा रंग रंगाएगा। अन्त माटी ख़ाक नेस्तो नाबूद कराएगा। जगत जहान विच्चों झूज, दो जहानां पन्ध मुकाएगा। संसारी भण्डारी सँघारी तुहाडी दिशा करके कूच, कूचा गली सारे पन्ध मुकाएगा। अगली फेर दस्सके सूझ, समझ समझ विच्चों बदलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताएगा। सच दा हुक्म इक वरतावांगा । जुग चौकड़ी पन्ध मुकावांगा। कलयुग अन्तिम वेख वखावांगा। सतारां हाढ़ा तेरा दिवस सुहावांगा। भगत सुहेले नाल मिलावांगा। भगत दुआर बंक वडयावांगा। राउ रंक रंग चढ़ावांगा। साध सन्त संग निभावांगा। आदि अन्त भेव चुकावांगा। आत्म बण के धुर दा कन्त, कन्तूहल इक अख्वावांगा। तेरी सोहणी सुहा के रुत बसन्त, पत्त टहणी फुल्ल गुरमुख आप महकावांगा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझावांगा। लहिणा देणा मुका के बहिश्त जंनत्त, स्वर्गां भगतां चरणां हेठ रखावांगा। सति दी फेर बणा के साची बणत, सतिजुग लोकमात लगावांगा। उस वेले फेर होणा इक्को इहो मंत, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकावांगा । सतिगुर शब्द कहे सुण सतारां हाढ़ा, हाढ़े कढण वाल्या तैनूं दयां जणाईआ। उठ निगाह मार लै तक लै भगतां दा अखाड़ा, किस बिध बैठे सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द तक लै लाड़ा, दो जहानां नज़री आईआ। तैनूं चाढ़े रंग गाड़ा, जुग चौकड़ी उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ सतारां सम्मत आ गया

शहिनशाही ग्यारां, यारां मित्रां नाल वड्याईआ। भगतां नाल तक लै बहारां, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जिथ्थे वेरवा नहीं पुरख नारां, नर नरायण देवणहार सरनाईआ। नाले सतारां सतारां दीआं तक लै कतारां, हरिजन सोहणे सोभा पाईआ। तिक्खीआं धार वेख तलवारां, त्रैगुण दा पन्ध मुकाईआ। तन श्रृंगार वेख लै हारां, जिन्हां हिरदे वस्या धुर दा माहीआ। रसना जिह्वा सुण लै जैकारा, इक्को ढोला गाईआ। जिस दा लहिणा हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तों बाहरा, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। जिस दा सारे दे के गए इशारा, पेशीनगोईआं विच सुणाईआ। सब ने किहा आवे दोबारा, जोती जाता नूर अलाहीआ। अमाम अमामा होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं सब ने किहा चवीआं अवतारा, जगदीशा इक अख्वाईआ। कलि कल्की पावे सारा, महासार्थी वेस वटाईआ। सम्बल होवे उस दा दुआरा, वेद व्यासा गया सुणाईआ। दुआरका वासी कीता इशारा, सैनत सतिगुर शब्द लगाईआ। मूसा मुसलसल कीता इज़हारा, कलमा अक्खरां नाल सलाहीआ। ईसा भेव खोल्ह्या सारा, अन्त आवे मेरा अब्बा धुरदरगाहीआ। मुहम्मद कहि के गया चार यारा, सदी चौधवीं अन्त वेख वखाईआ। नानक निरगुण धार भेव खोल्ह्या सारा, सहिज सहिज समझाईआ। गोबिन्द किहा सतिगुर धार आवे दुबारा, दुहरा आपणा वेस वटाईआ। जिस ने सब दी पाउणी सारा, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतारां हाढ़ सतिजुग तेरी सदा होवेगी पूजा, नौ खण्ड पृथ्मी ध्यान लगाईआ। इस तों वड्डा दिवस होर होए कोई ना दूजा, दो जहान नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान महबूब तेरा वक्त सुहञ्जणा बूझा, लेखा दए मुकाईआ। अगला भेव खोल्हे गुज्झा, गोबिन्द रंग रंगाईआ। जो इशारा दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों बाहर सुणाईआ। मेरा नूर स्वामी आवे उत्ते वसुधा, धरनी धरत धवल धौल वड्याईआ। जिस मेटणा अन्तिम कलयुगा, सतिजुग रंग रंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणाउणा इक्को झुग्गा, सत्तां दीपां रंग रंगाईआ। नाम कलमा लए कोई ना भुग्गा, माया वंड ना कोए वंडाईआ। पर फेर खुशी नाल हस के किहा सतारां हाढ़ सतिजुग तों पहलां इक्को वार घोर होएगा युद्धा, उह वी तेरा दिवस सुहञ्जणा नज़री आईआ। जगत जहान कूड़ी क्रिया विच होवेगा खुभ्भा, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। झट हाढ़ सतारां रोया मार के भुब्बा, दरोही दरोही दरोही कर सुणाईआ। मेरे साहिब सतिगुर मेरे विच जन भगतां कर उँघा, उगण आथण दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतारां हाढ़ तेरे उत्तों सतिजुग होणा शुरू, शरअ दीन मज़्हब रहिण कोए ना पाईआ। सब दा इक्को होणा शब्द सतिगुरु, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। एह उह इशारा दिता नरायण ने ध्रू, धरनी उत्ते गया

सुणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम मोड़ा मुड़, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। उस वेले बृद्धां बालां नौजवानां आत्म धार परमात्म जुड़, जोड़ी सतिगुर शब्द बणाईआ। उह धुर दा नाम कदे ना थुड़, अतोट अतुट वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। सतिजुग कहे मैं जिस वेले प्यार कीता नाल हाढ़ सतारां, सतह बुलंदी ज़िमीं असमान वेख वखाईआ। इक संदेशा देणा धुर दे परवरदिगारा, दो जहानां आप सुणाईआ। इक्को मानव ज़ाती होणा नाअरा, इक्को इष्ट देव सुणाईआ। इक्को मन्दिर होणा इक्को होवे दुआरा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को गृह होवे घरबारा, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। इक्को पावणहारा होवे सारा, महासार्थी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतारां हाढ़ सुण लै बिना कन्न, कायनात दयां जणाईआ। पहलों आपणा धीरज बन्न्ह, मनसा मूल ना कोए हल्काईआ। तेरा वजूद नहीं कोई तन, ततव नज़र कोए ना आईआ। हरख़ सोग नहीं कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जणाईआ। सारी सृष्टी मानव ज़ाती वेख लै ब्रह्म, पारब्रह्म खेल खिलाईआ। तेरे विच इक्को होणा धर्म, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं दा अन्त अख़ीर ते तेरे विच सतिजुग दा होणा जरम, धरनी ने गोदी चुकणा चाँईं चाँईंआ। फेर ना कोई ज़ात रहे ना वरन, बरन दी वंड ना कोए वंडाईआ। ज़रूर पुरख अकाल दे बिना चरण तों पूजे जाणगे चरण, पाहन पत्थरां सीस ना कोए निवाईआ। मन्दिर मसीतां चर्चां चरागाहां गुरदवारयां मूल ना वड़न, सारे भज्जण वाहो दाहीआ। सतिगुर शब्द दा पल्लू फड़न, तूं ही पिता तूं ही माईआ। तूं ही हार भन्न्हण घड़न, तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं आत्मा तेरा नूर अलाही तूं करता करनी करन, कादर करीम इक अख्वाईआ। तेरी साहिब इक्को सरन, सरनगति इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभू इक इक ग्यारां दा वेख लै आपणा साल, साल बसाले ध्यान लगाईआ । सृष्टी दृष्टी तक लै हाल, हालत तक ख़लक ख़ुदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तक लै काल, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। सच प्रीती तेरी घाले कोई ना घाल, प्रीतम प्रेम विच ना कोए समाईआ। फल रिहा ना किसे काया डाल्ह, पत्त टहणी गए कुमलाईआ। तूं आ के पुछ लै मुरीदां हाल, मुर्शद तेरे अगे वास्ता पाईआ। सतिगुर शब्द बण दलाल, विचोला इक्को नज़री आईआ। जनभगतां आ के सुरत संभाल, सम्बल दे मालक हो सहाईआ। साची वस्त दे धन माल, अतोट अतुट वरताईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों कर बहाल, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उह वायदा पूरा कर दे शब्द गोबिन्द जो इशारा

दिता सिँघ पाल, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। पूरन जोत पूरन विच संभाल, समग्री सच सच टिकाईआ। तेरा वसल होवे वसाल, विश्व दे मालक आपणा रंग रंगाईआ। तेरा जल्वा होवे जमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ सतारां जुग चौकड़ी गए बीत, आपणा पन्ध मुकाईआ। अगे धर्म दी सुण लै रीत, धर्म धार दृढ़ाईआ। पुरख अकाले करनी प्रीत, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। निरगुण निरँकार वसाउणा चीत, ठगौरी मन रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गीत, सोहँ ढोला सिफ्त सलाहीआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबे होए रुशनाईआ। मानस जन्म जाणा जग जीत, जग जीवण दाते मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल इक खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे वक्त आया सुहञ्जणा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, निरवैर नूर अलाहीआ। उह दाता दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। चरण धूड़ करा के मजना, दुरमति मैल धुआईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग वञ्जणा, भज्जे वाहो दाहीआ। सतिजुग साचा लगणा, धरनी धरत धवल सुहाईआ। त्रैगुण बुझाए अग्ना, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। हिरदे नाम जपाए रसना, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। हर हिरदे अन्दर सतिगुर वसणा, शब्दी शब्द शब्द डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे हरि आदि जुगादी मेहरवाना, मेहरवान अख्वाईआ। जो जुग जुग धारे बाणा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जाता हो प्रधाना, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। जन भगतां वेखे मार ध्याना, बिन नैणां नैण उठाईआ। कलयुग अन्तिम कर पहचाना, बेपहचान रिहा मिलाईआ। आत्म दे के ब्रह्म ज्ञाना, पर्दा कूड़ उठाईआ। सुरत मिल के शब्दी कान्हा, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। घर बंक सुहा मकाना, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। शाहो भूप बण सुल्ताना, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे सतिगुर शब्द मेरा मेट कूड़ कुड़यार, कुटम्ब कलयुग रहिण ना पाईआ । सच वस्त दे अधार, धुर धुर दा नाम वरताईआ। मेरी खुशीआं वाली मौले बहार, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ । मैं बणया दर भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं देवणहार सिक्दार, सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा वेखो खेल बेनज़ीर, नज़रीए सब दे दयां बदलाईआ। मैं शाहो भूप पीरां दा पीर, पैग़म्बरां दा पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जो आसा रख के गया कबीर, कबरां तों बाहर ध्यान लगाईआ। जिस दी

आशा रखी गोबिन्द अख़ीर, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। उह मालक ख़ालक गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। जिस दा जगत नाता बणया पंजां ततां वाली तस्वीर, तसव्वर आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं करनवाला मेहर, मेहरवान अख्वाईआ। वसणहारा नेरन नेर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी मेरा फेर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग अन्तिम ल्या घेर, चारों कुण्ट घेरा पाईआ। ततां वाला शरीर नाम रखा के सिँघ शेर, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। फेर लेखा आप नबेर, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैनूं होर आ गया चेता, पूरब भेव चुकाईआ। रवालसर जांदयां जांदयां ओ गोबिन्द लेट गया विच खेतां, बिना आसण आसण लाईआ। पुरख अकाल नूं मस्तक टेका, बिन टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। फेर आपणा आप करके भेंटा, धूड़ धूड़ां विच समाईआ। नाले हस के किहा तूं पिता मैं तेरा बेटा, बेशक मैनूं जम्मण वाली गुजरी माईआ। मैं सतिगुर तेरा शब्द तेरा मेरे नाल होवे ठेका, वअदा पूरा देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द खेतां विच लेटया रवालसर, सोहणा रूप बणाईआ। नाल किहा उह पुरख अकाले दीन दयाले मेरा तन वजूद आ के वर, मालक हो के वेख वखाईआ। मैं सदा वसणा तेरे घर, दूजा दुआर रहिण कोए ना पाईआ। ना कोई शरअ होवे ना शर, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मालक मेरा नरायण नर, नर हरि इक्को इक अख्वाईआ। झट प्रभू ने किरपा दिती कर, हुक्म संदेशा दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। झट गोबिन्द सतिगुरु लाई बिना सिँघासण समाधी, बिना सुरत तों सुरत विच समाईआ। बिना रसना तों ल्या अराधी, जिह्वा मुख दन्द ना कोए हिलाईआ। बिना आवाज़ तों सुणया अनादी, नाद धुन शनवाईआ। खेल तक ब्रह्मादी, ब्रह्मांड वेख वखाईआ। बिना सुरती तों सुरती जागी, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। बिना वैराग तों आया वैरागी, आपणा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द तेरा प्यार वड वडभागी, भगवन दए वड्याईआ। तेरे अन्दर मेरा नूर जोत ज़रूर जगेगा चराग़ी, चरागाहां करे रुशनाईआ। इस शरीर दी उह बाज़ां वाल्या खेड जाणी बाज़ी, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। गोबिन्द हस के किहा मैं तेरे हुक्म विच राज़ी, राज़क रिज़क रहीम तेरी सरनाईआ। फेर हुक्म दी वजी आवाज़ी, धुन धुन विच्चों प्रगटाईआ। तेरे नाल लडावांगा लाडी, लाड आपणे नाल रखाईआ। उह तेरी ज़रूर ततां वाली होवेगी बाडी, तन वजूद जगत नज़री आईआ। मैं अन्दर वड़ के बण जावां गाडी,

जिस नूं गॉड वाहिद नूर कहे ख़लक खुदाईआ। गोबिन्द हस के किहा एथे ना कोई सवाल ना जवाबी, जवाब तल्बी ना कोए समझाईआ। एह मेरे उत्ते किरपा करीं शताबी, बहुती देर ना कोए लगाईआ। झट हुक्म होया तेरा ढईआ लँघणा ते फेर बणना कन्त सुहागी, सोहणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। हस के कहे रवालसर दी धरती, मिट्टी ख़ाक रही सुणाईआ। जो साहिब आवे निध परती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी गोबिन्द नाल शरती, शरअ दीन दुनी बदलाईआ। उह खेल समझाए आपणे घर दी, गृह मन्दिर इक वखाईआ । सृष्टी भिखारन रहे ना दर दर दी, चारों कुण्ट भज्जे ना वाहो दाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को तुक होवे पढ़दी, कलमा कायनात इक समझाईआ। आत्म परमात्म मंज़ल होवे चढ़दी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। ताकत रहे ना हँकार गढ़ दी, हउमे हंगता दए मिटाईआ। जगत तृष्ना मूल रहे ना सड़दी, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कल दी, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। खेल खिलाए अछल अछल दी, वल छलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। किसे नूं समझ ना आवे घड़ी पल दी, की पलकां दे ओहले बहि के खेल खिलाईआ। जिस सार पाउणी जल थल दी, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। उस आशा पूरी करनी बावन धार बलि दी, पूरब लहिणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण उए सतारां हाढ़ा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ । निगाह मार लै विच माछूवाड़ा, आप आपणा बल प्रगटाईआ। जिस वेले गोबिन्द सुत्ता विच झाड़ा, जंडी धार दए गवाहीआ। कलयुग खुशीआं लाया अखाड़ा, नच्चे टप्पे वाहो दाहीआ। धरनी तक के धुर दा लाड़ा, ढोले खुशीआं वाले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। गोबिन्द माछूवाड़े उत्ते धरती आपणी लाई छाती, सीना सीने नाल छुहाईआ। तलवार दी नोक नाल लिखी अगम्मी पाती, जिस दा अक्खर नज़र कोए ना आईआ। नी तेरे उत्ते आउणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दे हथ्थ सब दी ज़िंदगी हयाती, आदि जुगादि आपणा हुक्म वरताईआ। उह अन्तिम मेटे कलयुग अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। मानव ज़ाती होवे इक जमाती, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को कलमा होवे सफ़ाती, जज़बाती आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को सरघी होवे प्रभाती, इक्को आपणा रंग रंगाईआ। इक्को मज़्हब होवे ज़ाती, इक्को कलमा पढ़े खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर गोबिन्द सिँघ कीता इशारा, सैनत अगम्म लगाईआ। वाह मेरे परवरदिगारा, तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं तक किनारा, मुहम्मद बैठा पन्ध मुकाईआ।

चारों कुण्ट धूंआँधारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झट हस के कहे चन्द सितारा, प्रभ दा खेल बेपरवाहीआ। उह सब दा मीत मुरारा, मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। माछूवाड़ा कहे मेरी धरती पवित्र होई ख़ाक, माटी सोभा पाईआ। मेरे अन्तष्करन दा खुल्ह्या ताक, पर्दा रिहा ना राईआ। मैनूं याद गोबिन्द दा भविख्त वाक, वाक्कया दयां सुणाईआ। जिस वेले उस ज़िमीं असमान ल्या झाक, बिन नैण नैण तकाईआ। ना दिवस रही ना रात, घड़ी पल ना कोए समझाईआ। ना मज़्हब रिहा ना ज़ात, ना कलमा वंड वंडाईआ। ना झगड़ा काग़ज़ात, ना अक्खरां कोई लड़ाईआ। झट गोबिन्द ने अगला तक्कया वाकयात, वाक्यात वेख्या चाँईं चाँईंआ। धर्म ईमान पा जाणी वफ़ात, मढ़ीआं गोर रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं सुणया शब्द अगम्म संदेशा, सँध्या सरघी ना कोए वड्याईआ। की खेल करे नर नरेशा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा अवलड़ा होणा वेसा, जोती जाता डगमगाईआ। हुक्म सुणाए दस दस्मेसा, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम आवे नर नरेशा, नर हरि करता इक अख्वाईआ। जेहड़ा सदा रहे हमेशा, जन्म मरन ना रूप बदलाईआ। जिस अन्तिम झगड़ा मेटणा मुल्ला शेख़ा, दीनां मज़्बां पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे गणपति गणेशा, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। उस दा लहिणा देणा होणा माझे देसा, सम्बल रुत सुहाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर गोबिन्द किहा कलयुग अन्त सतिगुर शब्द होवे उज्यारा, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धार वड्याईआ। सम्मत शहिनशाही साल होवे ग्यारां, इक इक नाल मिल के वजे वधाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया कुकर्म कढ्ढे बाहरा, धर्म दी धार इक समझाईआ। माण देवे सतारां हाढ़ा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतारां सतारां दा ला अखाड़ा, सोहणा आपणा नाच वखाईआ। प्रेम दा रंग चाढ़ के गाड़्हा, दुरमति मैल धुआईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़ा, जन भगतां करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा सम्मत ग्यारां होवे वक्त, सोहणी खेल खिलाईआ। मालक मालक बण के जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हरिजन बणा के आपणे भगत, भगवन देवे माण वड्याईआ । अन्तर आत्म बख्शे शक्त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत कहे शहिनशाही ग्यारां आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। नाल संदेशा सुणे पात, पत्रिका की दृढ़ाईआ। जन भगतां

हरि जू पुछे वात, वारस हो के वेख वखाईआ। पिछला लहिणा देणा पूरा करे पुरात, पुरातन लेखा झोली पाईआ। अगे बख्श के साची दात, दाता दानी दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द संदेशा दिता शब्दी धार, शब्द शब्द शनवाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल कल्की अवतार, निहकलंका संग रखाईआ। इक इक दा होए प्यार, प्रेम प्रेम विच समाईआ। कलयुग दोहरी होवे धार, दोहरा आपणा रूप बदलाईआ। सिँघ शेर शेर दा लेखा विच संसार, तत ततां नाल वड्याईआ। जिस दे अन्तर दीपक जगिआ चराग़, जोती जाता डगमगाईआ। उस दी खुशीआं वाली बहार, सम्मत शहिनशाही ग्यारां वजे वधाईआ। माछूवाड़ा लेखा मंगे उधार, सम्मत शहिनशाही सत्त नाल मिलाईआ। हरिजन प्रेम विच करन निमस्कार, अन्तर अन्तर ढोले गाईआ। पंज प्यारे होवण ख़बरदार, पंज दरबारी लैण अंगड़ाईआ। पंज लिखारी करन विचार, कानी कलम हथ्थ उठाईआ। हाढ़ सतारां कहे सब तों पहलां करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल अगम्म अपार, अथाह मेरी वड्याईआ। पूरन जोत पूरन उज्यार, जोती जाते विच समाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडा पिछला लेखा लगा लग्गण, प्रेमीओ दयां जणाईआ। तुहाडा पैण लगा सगन, मंगणी नाल धुरदरगाहीआ। तुहाडा दीपक लगा जगण, अन्ध अन्धेर होए रुशनाईआ। तुसीं सारे होवो मग्न, सुत्तयो लओ अंगड़ाईआ। सतिगुर चरण दा करना मजन, दुरमति मैल धुआईआ। सोहँ शब्द दा होवे भजन, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। दो जहान नगारे वज्जण, नाम डंक करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडे पवित्र करे बदन, बदनीती रहिण कोए ना पाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो अन्दरों उठाओ सुती *सुरती, जगत दलिद्र रहे ना राईआ। दरस करो अकाल मूर्ती, निरगुण निरवैर वेख वखाईआ। तुहानूं सार होवे धुर दी, धुर मस्तक लेख बणाईआ। अज्ज तों प्रण कर लओ इक्को ओट रखणी शब्द सतिगुर दी, बिना सतिगुर शब्द तों दूजा गुरु नज़र कोए ना आईआ। एह सिख्या सिक्खां नूं गोबिन्द धार अनन्दपुर दी, पुर अनन्द गया समझाईआ। उस सतिगुर दी गद्दी नहीं किसे ठग चोर दी, चोर यार लुट कोए ना जाईआ। हुण वेख्यो खेल होणी होर होर दी, होर दा होर रूप बदलाईआ। सतिगुर शब्द अस्वारी होणी आपणे घोड़ दी, अस्व दो जहान दौड़ाईआ। जिस दी अवाज़ सुणनी पहले पौड़ दी, पौड़ी डण्डे सब दे वेख वखाईआ। हुण सब नूं मूर्त सूरत नज़र आउणी शेर सिँघ दे थाँ ब्राह्मण गौड़ दी, दोहरी आपणी कल वरताईआ। वड्याई रहिणी नहीं किसे तलाब जौहड़

दी, सतिगुर शब्द शब्द सरनाईआ। उह वेखो गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती आउँदी दौड़दी, खुल्ले वाल देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर करो तैयारीआं, त्रैगुण अतीता हुक्म वरताईआ। आपणे दीनां मज़्बां वेखो क्यारीआं, लोकमात फोल फुलाईआ। शरअ शरीअत तको यारीआं, यरानेदार कवण अख्वाईआ। नाम कलमे वेखो हट्ट बज़ारीआं, कीमत कवण चुकाईआ। निगाह मारो पंजां ततां अन्दर मास हड्ड नाड़ीआं, लहू मिझ वेख वखाईआ। बोदीआं टिक्के वेखो आपणे मुरीदां सिक्खां दाढ़ीआं, कवण तुहाडी लज्जया रिहा रखाईआ। सतिगुर गोबिन्द किहा उह मैं सतिगुर शब्द गुरसिखो तुहाडे पिच्छे सुत्ता माछूवाड़े दीआं विच झाड़ीआं, मात पिता पूत सपूते तुहाडी भेंट चढ़ाईआ। आपणीआं छड के प्रेम वालीआं लाड़ीआं, नाता तुहाडे नाल रखाईआ। उह गुरसिखो तुहाडीआं देहां करके प्यारीआं, तुहाडे अन्दर डेरा लाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम हिम्मतां हारीआं, बैठे हरि भुलाईआ। वेखो छेवें साल नूं डूँघीआं खालीआं, टोए टिब्बे नज़री आईआ। माण रहिणा नहीं किते पुजारीआं, पूजस पाहन ना कोए वड्याईआ। बिना सतिगुर शब्द तों सब नूं होणीआं ख्वारीआं, ख़ालसा ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। बिना सतिगुर तों देवे ना कोए खुमारीआं, ग़मख़ार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे शेर शेर शेर शरीर, तन तन तन वड्याईआ। तत तत तत दा धीर, धीरज धीरज धीरज जणाईआ। अमृत रस रस दा नीर, बिन रसना रस चखाईआ। जिस विच खेल खेलया साल बवजा बणके पीरां दा पीर, पैग़म्बर नूर अलाहीआ। अन्त नाता तोड़ अख़ीर, आख़र दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं भगतो बड़ा मस्कीन, ग़रीब निमाणा कोझा कमला नज़री आईआ। मैं तुहाडा होवां अधीन, तुहाडे अगे वास्ता पाईआ। मैं तुहाडा मुक्ता बणां गमीन, जे तुसीं भगत ते प्रभू ते ज़रूर करो यकीन, जो यके बाद दीगरे लोकमात आवे चाँईं चाँईंआ। उह जिस ने वखरी बदल दिती तालीम, उह तुलबे तुहानूं रिहा बणाईआ। मालक शहिनशाह अज़ीम, आलीज़ाह नूर अलाहीआ। फेर वेखो ते उह सदा सदा ते सदा दा कदीम, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। जो अर्शां दा मालक फर्श उत्ते खेल खेले नूर नुराना आप ज़मीन, ज़िमी ज़मा वेख वखाईआ। जिस दी यादाशत पुराणी प्राचीन, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो पंजां प्यारयां खुशी नाल करनी डण्डावत, लम्मे पै के सीस निवाईआ। सतिगुर प्यार दी देवे निआमत, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ।

७०६ २४

नौ खण्ड दी फेर वेखे बग़ावत, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो तुहाडी जुग जुग दी सांभ के रखी अमानत, अज्ज सहिज नाल तुहाडे अन्दर देणी टिकाईआ। तुहाडे नाल पक्का वायदा तुहानूं सचखण्ड खड़ना सही सलामत, सुत्तयां जागदयां आपणी गोद विच टिकाईआ। अगे कोई कर ना सके ममानत, रोकण वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। शेर सिँघ कहे जो इक वार मेरे चरण गया छोह, छोहर बांका गया दृढ़ाईआ। उस दे अन्दर नाम देवां सोहँ सो, बिना जगत नेत्रां बख्शां लो, लोयण तीजा दयां खुल्हाईआ। पूरा करां सतिगुर गोबिन्द ने किहा जो, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। अगे सतिगुर शब्द दी धार इक ते हुण शब्द जोत दी धार हो गए दो, दोहां दी मिल के वजे वधाईआ। फेर उन्हां दोहां दा सम्बल नगरी नाल बण गया मोह, मुहब्बत विच साढे तिन्न हथ्थ अन्दर डेरा लाईआ। इस दा भेव जाणे कोअ, बुद्धिवान ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैनूं वखाउ सारे सज्जे हथ्थ दी हथेली, रेखा पिछली नाल मिलाईआ। मैनूं इयों जापदा तुहाडा सतिगुर शब्द पुराणा मेली, जुग जुग दा नजरी आईआ । की हो गया जे कलयुग इक नवीं खेल खेली, ख़लक दा ख़ालक हो के वेस वटाईआ। भावे एस नूं जट्ट समझो ते भावे सतिगुर शब्द बेली, उह बेल्यां विच तुहाडा होए सहाईआ। तुहाडी आत्मा सतिगुर शब्द दा वअदा कदे ना रहवेगी अकेली, इकल्ले इकल्ले दे नाल मिल के आपणा रंग वखाईआ। तुहाडी जगह मैं सब तों रखी नवेली, वखरे घर देवां वसाईआ। जिस तरह गोबिन्द दे बाज़ ने बाज़ी पेली, उह बाज़ां वाला तुहानूं उसे घर दए पुजाईआ। जिथ्थे धर्म राय दी कदे ना होवे जेली, चित्रगुप्त लेखा मंगण कोए ना आईआ। पर तुहानूं इक गल्ल दस्सां तुसीं बड़े चंगे सोहणे सुंदर सरूप उए लाड़िओ तुहाडी जोत अकालण इक्को सहेली, जेहड़ी विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मेल आप मिलाईआ। हथेली कहे सतिगुरु उह मेरे विच वेख लकीरां, निक्कीआं वड्डीआं नज़री आईआ। मैं फिरदी वांग फ़कीरां, फ़िकरे तेरे ढोले गाईआ। ओ मैनूं बन्ह ल्या शरअ दीआं ज़ंजीरां, कड़ी सके ना कोए तुड़ाईआ। उह मेरा पंजां ततां वाला शरीरा, ते तूं परमात्मा मेरे विच वसें मेरा माहीआ। ओ मेरीआं बदल दे तकदीरां, तदबीर आपणी इक समझाईआ। की हो गया जे कलयुग दा अन्त तूं करना अख़ीरा, आख़र आपणा हुक्म सुणाईआ। मैनूं ऐउँ जापदा तेरे हुक्म दी इक्को होणी शमशीरा, जो शरअ दे लेखे दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। हथेली कहे भगतो जे तुहाडे उत्ते छोह जावे सत्त रंग दा

डण्डा, तुहाडी पिछली कीती दए बदलाईआ। तुहाडा सीना होवे ठण्डा, अग्नी तत गंवाईआ। तुहाडा आत्म ना होवे रंडा, सदा वजदी रहे वधाईआ। तुहानूं याद होणा तुहाडे सतिगुर ने तुहाडे घरों खाधा सी इक इक गंढ्ढा, ओ गंढ्ढे खुवाउण वाल्यो तुहाडी की वड्याईआ। तुसीं फेर वी चंगे माछूवाड़े जिस वेले गोबिन्द सुत्ता सी विच जंडां, उस वेले कोई गंढ्ढा खुवाउण वाला नज़र कोए ना आईआ। तुहानूं अज्ज मैं वी कुछ वंडां, जो चाहो सो तुहाडी झोली दयां टिकाईआ। पर मैं कोई पंडत नहीं जे ना कोई पंडा, ना कोई मुल्ला शेख़ काज़ी ना कोई उगराहुण वाला चन्दा, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा जीअ करदा अज्ज मैं तुहाडे चरणां दे थल्लों दी वहा देवां गंगा, यमुना सरस्वती गोदावरी तुहाडे कदम चुम्म के खुशी बणाईआ। ओ कोई भगत रह ना जावे गंदा, गंदगी सब दी आपणे चरणां हेठ दबाईआ। तुहाडा हुण सफ़र रहिण नहीं देणा लम्बा, लम्मे पैण वाल्यो पन्ध देणा मुकाईआ। पर अगे वेख्यो खेल होणा इक अचम्बा, हैरानी विच सारे देण दुहाईआ। क्यों उह इशारा दिता सी सतिगुर गोबिन्द ने जिस वेले छड्डया पुरी अनन्दा, सहिज नाल माता गुजरी दे कन्न विच सुणाईआ। माता जी मैं मुड़ के कदे नहीं आउणा विच जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। मैं जदों आवांगा सचखण्ड विच्चों

७१० सच दी धार बणके शब्द गुरु हो के ते समावांगा विच परमानंदा, परम पुरख दा रूप इक्को वेख वखाईआ । ते जदों मेरा ७१०

२४ दिल करेगा मैं सतिगुर शब्द हो के दो जहानां विच मचा दयांगा दंगा, खण्डा हथ्थ ना कोए उठाईआ । जोती जोत सरूप २४

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हथेली कहे सतिगुर मेरे वल मार लै झाती, झाकीआं देण वाल्या आपणे नैण बदलाईआ। मैं चाहुंदी सारयां दी बदल दे हयाती, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। अठ्ठे पहर हर हिरदे रहे प्रभाती, तेरे नाम दी वजदी रहे वधाईआ। तेरा होर किते टिकाणा नहीं ते भगतां दी ज़रूर सेजा बणा लै छाती, छत्रधारीआं दा पन्ध मुकाईआ । जे तूं बणना कमलापाती, नौ दुआरे धक्क के दसवें विच आपणा डेरा लाईआ। आपे बजर कपाटी जाऊ पाटी, पटने वाल्या तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। उह आपणी जोत जगा दे ललाटी, लाटां वालीआं तेरे अगे पिच्छे फिरना चाँईं चाँईंआ। हुण केहड़ा वक्त ते केहड़ी घाटी, आपणा लेखा दे समझाईआ। तेरे भगत सुहेले तेरी मंज़ल चढ़न घाटी, घाटे पूरे दे कराईआ। अज्ज दी लेखे ला लै राती, रात सौण वाल्यां नालों जागदयां नूं दे वड्याईआ। पर इक बेनन्ती इन्हां मुड़ के जन्म ना देवीं लोकमाती, बिना सचखण्ड तों दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। जे तूं आप आवें फेर भावें नाल ल्यावीं पिछली होर दे देवीं बाकी, बाकायदा आपणा रंग रंगाईआ । तूं मालक होवें ते एह होवण तेरे साथी, गवईए हो के तेरा राग गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा आपणा

हुक्म वरताईआ। सतारां हाढ़ दी रैण कहे जन भगतो मेरी वेखो रुती, घड़ी पल ध्यान लगाईआ। मैं कोई कटण नहीं आई बुती, ओ बुतां वाल्यो बुतख़ानयां करो सफ़ाईआ। तुहाडे प्यार विच मैं वी नहीं सुती, सुत्तयो लओ अंगड़ाईआ। तुहानूं पता नहीं लिखारीआं दे पैरां विच चिट्टी धार दी जुत्ती, एह बवन्जा कवीआं नूं गोबिन्द गया समझाईआ। उस वेले सारे ग्रन्थां शास्त्रां नूं दे देणी छुट्टी, छुटकारा होवे ख़लक ख़ुदाईआ। कोई प्रभू दा नाम गाए ना बुल्ल्हीं बुट्टीं, हिरदे विच भगत लैण वसाईआ । सब दी प्रीत होणी टुट्टी, बिना सतिगुर शब्द तों टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। दुनियादारो दुनिया जाणी लुट्टी, कलयुग लुटेरा लुट्टे थांउँ थाँईंआ। सब दी चोग जाणी निखुटी, शाह सुल्तान नज़र कोए ना आईआ। की बहुता समां वेखो चौथे साल नूं दुनिया इक दूजे नाल जाणी जुटी, उफ़ हाए दुहाई तेरी बेपरवाहीआ। सब दी जड़ जाणी पुट्टी, पटने वाला शब्द इशारे नाल उखड़ाईआ। एह कोई खेल रहिणी नहीं लुकी, लुक्या खेल ना कोए रखाईआ। बेशक तुहाडी धार दो तुकी, ते दो जहानां वजे वधाईआ। जन भगतो अज्ज वड्याई मिलदी सुक्की, मुफ्त सतिगुर रिहा वरताईआ। सारे सज्जे हथ्थ दी हथेली दी वट लओ मुक्की, पंजे उंगलां लओ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग बणाईआ। मुक्की कहे पंजां दा हो गया मेल, अन्दर बाहर नज़र कुछ ना आईआ। प्यार दा वेख्या खेल, मुहब्बत विच समाईआ । दीवा बले बिन बाती तेल, बिन घृत होवे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द आत्म परमात्म गुरु गुर चेल, चेला गुर इक्को रूप समाईआ। दो जहानां नालों करके विहल, विहल्यो तुहानूं दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे किड्डा सोहणा शरीर प्यारा, प्यार प्यार प्यार विच्चों नज़री आईआ। जिस दा शब्द गुरु नूं बवन्जा साल लैणा प्या सहारा, चुप चुपीता आसण विच लगाईआ। हिलदा हिलाउँदा रिहा संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी समझ कोए ना आईआ। अन्दरे अन्दर करदा रिहा गुफ़तारा, बिन कलम्यां कलाम सुणाईआ। वाहिद ला के गया नाअरा, अल्ला हू अन्ना हू जणाईआ। फेर करके पार किनारा, भज्जया वाहो दाहीआ। चढ़या सचखण्ड चुबारा, बिन पौड़ी डण्डे कदम टिकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कीता इशारा, दरगाह साची सच सुणाईआ। आपणा भविख्त वेखो पेशीनगोईआं तको की कीता इज़हारा, सोहला ढोला की दृढ़ाईआ। सब ने किहा तेरा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल किहा मैं जोत दी धार शब्द रूप फेर जाणा दुबारा, उसे वेले भज्जा वाहो दाहीआ। मातलोक आ के सम्बल लगाया नगारा, ढोला ढोला दिता दृढ़ाईआ। निहकलंक कलि कल्की अवतारा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। मेरा अमाम अमामा नूर अलाही परवरदिगारा, सांझा यार इक अख्वाईआ। उस

दा संदेशा दो जहान सुणन इक्को वारा, एकँकार करे पढ़ाईआ। जन भगतो भगती दे प्यार विच शब्द दे हितकार विच करनी निमस्कारा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पूरब लहिणा पिछला उधारा, पूरब सब दी झोली पाईआ। तुहानूं दर आयां नूं सब नूं मिले प्यारा, प्यार मुहब्बत विच सतिगुर आपणी गोद टिकाईआ। तुसीं उस प्रभू दे बरखुरदारा, जिस दी बरखुरदारी विच अवतार पैग़म्बर गुरु बैठे सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो वेख्यो अज्ज दा वक्त, भिन्नड़ी रैण नाल वड्याईआ। की लेखा होवे नाल जगत, जग जीवण दाता की आपणी खेल खिलाईआ। जिस ने तुहानूं बिना भगतीउं बणाया भगत, भगवन हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुसां इक्को सीस निवाउणा पलक, सिर झुकाउण नाल दो जहानां पन्ध मुकाईआ। तुहाडी लेखे लावे बूँद रक्त, तन वजूद माटी ख़ाक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा संग आप निभाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा अख़ीरी संदेश, सतिगुर शब्द नाल सुणाईआ। मैं अवाज़ां सुणदा की ख़बर दए शेष, सहँसर मुख दो सहँसर जिह्वा रिहा हिलाईआ। जिस कारन पंज तत दा फ़ोटू होया पेश, पेशीनगोईआं दी आसा पूर कराईआ। एह शब्दी धार सुनेहड़ा दिता गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संगी इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडा आया होया परवान, परवानिउँ तुहानूं मिले वड्याईआ। तुहाडा मन्जूर होया दान, दानिओ दानशमंदी तुहाडी झोली पाईआ। तुहाडा खुश होया भगवान, भगतां वेख खुशी बणाईआ। तुहाडा सुफल होया आउणा विच जहान, जहालत कूड़ दिती मिटाईआ। तुहाडी भगती बड़ी महान, जो दूर दुराडे चल के आए ते दर्शन पाया धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे हरिजन करो तैयारी, त्रैगुण अतीता खेल खिलाईआ। सतारां सतारां दी वेखो वारी, सतारां सतारां गंढु पुआईआ। सतारां सतारां करो निमस्कारी, निव निव सीस झुकाईआ। जन भगतां खेल लगे प्यारी, प्रेम प्रीती विच तके धुर दा माहीआ। सतारां हाढ़ कहे इक होर खेल दस्सां न्यारी, निराकार रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतो कदे ना होइउ दिलगीर, चिन्ता ग़मी ना कोए रखाईआ। सतिगुर मेहर करदा बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस बिध कीती किरपा उत्ते कबीर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तन श्रृंगार कर ज़ंजीर, शरअ ज़ंजीर दिते कटाईआ । जिस दे अन्त दे पीले वस्त्र आए चीर, धर्म दी धार धर्म चन्द दए

गवाहीआ। एह खेल बेनज़ीर, नज़ीर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतो तुहाडी कदे ना भुल्ले तस्वीर, तस्वीर वेखण वाल्यो तुहानूं तसव्वर आपणा आप दए कराईआ।

✪ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर शादीआं दे समें सवेरे ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरी निमस्कारा, सो पुरख निरञ्जण तेरी इक सरनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण अगम्म सची सरकारा, शाहो भूप तेरी वड्याईआ। एकँकार तेरा सहारा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अबिनाशी करते तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। आदि निरञ्जण नूरी नूर जोत उज्यारा, चार पंच रूप बदलाईआ। अबिनाशी करते तेरा दवारा, दर ठांडा इक सुहाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तूं साहिब इक सिक्दारा, सिक्दारी नूर अलाहीआ। मैं तेरा सुत दुलारा, जिस दी अवर कोए ना माईआ। तूं बख्शणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तेरा आदि जुगादी सुत, तन वजूद माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। तूं मेहरवान महबूब अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार नूर अलाहीआ। मेरी सुहञ्जणी सदा सदा करीं रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा पंज तत काया वाले बुत, बुतख़ानयां खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तेरा अगम्म दुलारा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तेरे धर्म दा धर्म पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव रंग रंगाईआ। त्रैगुण तेरा भर भण्डारा, पंचम तत तत समाईआ। खेल खेलया अगम्म अपारा, अलख अगोचर तेरी रचन रचाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वेखणहार निरँकारा, निरवैर तेरी सरनाईआ। मैं भिक्खक भिखारी तेरा भिखारा, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैनूं याद आउँदा जदों रचया नहीं सी कोई संसारा, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर नूर उज्यारा, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तेरा बालक सुत निधाना, निरवैर तेरी सरनाईआ। तूं आदि जुगादी अगम्म कान्हा, बिन रूप रंग रेख सोभा पाईआ। तेरा गृह मन्दिर दर दवार सचखण्ड मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि दो जहानां, दुहरी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। पुरख अकाल कहे

सुण सुत दुलारे बच्चे, तेरा बचपन दयां दृढ़ाईआ। तेरा वजूद नहीं काया माटी कच्चे जगत गढ़ ना कोए रखाईआ। तेरे अन्तर निरंतर मेरी धार सचे, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां इक्को धार नूर जगे, जागरत जोत जोत वड्याईआ। जिस दी सरन सरनाई तेरा रूप लग्गे, लग मातर डेरा ढाहीआ। उठ खेल तक लै जो निरगुण धार करे सबब्बे, सहिज सहिज आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे स्वामी तूं मेरा मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मैं तेरा सेवक सेवादारा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। मेरा विष्न ब्रह्मा शिव बरखुरदारा, बाला नढ्ढा नज़री आईआ। जिन्हां नूं दिता तेरा नाम सहारा, निरगुण निरगुण रूप समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बोल जैकारा, सो पुरख निरञ्जण दिता समझाईआ। हँ ब्रह्म करना पसारा, नव सत्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्मे शिव दिती अगम्म सलाह, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। सब दा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस दा लहिणा देणा अगम्म अथाह, अलख अगोचर कहिण किछ ना आईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता आपणा जणाए नाँ, नाउँ निरँकारा इक सुणाईआ। जो वसे हर घट थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। जो सब दा पिता माँ, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। उस नूं सीस देणा निवा, बिन सीस सीस झुकाईआ। जिस दी मंज़ल हक गराँ, दरगाह साची सचखण्ड सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्मा शिव दिती दात, धुर दी दात दात वरताईआ। संसारी भण्डारी सँघारी तुहाडी इक जमात, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। तुहाडा लहिणा देणा निरगुण सरगुण होवे लोकमात, धरनी धरत धवल धौल रंग रंगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता आपणा बख्शे नात, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दा लेखा लिख सके ना कोए कलम दवात, शाही काग़ज़ वंड ना कोए वंडाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला नित नवित तुहाडी पुछे वात, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। इक अगम्मी अनोखी निराली सतिगुर शब्द दस्सी बात, बातन भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द शब्द जणाया, भेव अभेदा खोल्ह। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, निरगुण आपणा तोलया तोल। वस्त अगम्म वरताया, मेहरवान आप हो के अडोल। विष्न ब्रह्मा दस्सया भेत अवल्ला ... ... दिता जणाईआ। सतिगुर शब्द शब्द अटला, सतिगुर रूप नूर अलाहीआ। जिस दो जहान वसाउणा महला, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान हो मेहरवान गृह मन्दिर

रंग रंगाईआ। आप वसे निहचल धाम अटला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। लेखा जाणे धरनी धरत धवल धौल जल थला, समुंद सागर महीअल आपणा रंग रंगाईआ। बिन तेल बाती कमलापाती दीपक जोती होवे बला, शब्द संदेश निराकार निरँकार करे रुशनाईआ। शब्द संदेश नर नरेश इक्को होवे घल्ला, दूजा कलमा कायनात ना कोए सुणाईआ। उह स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी तुहानूं फड़ाउणा पल्ला, पल्लू अपाणी गंढु बंधाईआ। जो एथे उथे दो जहान आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद होवे अछल अछल्ला, वल छल धारी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द किहा उह विष्न ब्रह्मा शिव आदि जुगादि रहिणा तैयार, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। तुसां बणना सेवादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म करना पसार, विष्न विश्व धार दृढ़ाईआ। शंकर सँघारी होणा हुशियार, एका एक हुक्म दृढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पाउणी सार, त्रैगुण मेला पंज तत सोहणा रंग चढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेरा खेल होवे अपार, अपरम्पर स्वामी भेव चुकाईआ। धरनी धरत धवल धौल कर पसार, वेखणा चाँईं चाँईंआ। फिर जोती जाता हो के होवां ज़ाहर, निरगुण सरगुण आपणा खेल खिलाईआ। सतिगुर शब्द लए अवतार, तेई अवतारां रंग रंगाईआ। हज़रत मूसा ईसा पैग़म्बरां कर ख़बरदार, कलमा धुर दा इक दृढ़ाईआ। गुर सतिगुर पावे सार, नानक गोबिन्द वजे वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तुहानूं नाल रलाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग खेले खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। केते लद जाण आपणा चुक चुक भार, भज्जण वाहो दाहीआ। ग्रन्थ शास्त्र अक्खरां नाल करन पुकार, तूं ही तूं ही राग दृढ़ाईआ। शब्द शब्द दी धार लेखा जाणे आप करतार, कुदरत दा कादर धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव तुहाडी जुग जुग होवे सिक्दारी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडा लहिणा देणा जीव जंत नाल संसारी, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। आप आपणा नूर जोत कर उज्यारी, उजाला करे थाांउँ थाईंआ। तुसां सेवा करनी नाल हुशियारी, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। तुहाडा साहिब इक बलकारी, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस दे सब ने बणना पुजारी, बिन सीस सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव धरना ध्यान इक इक ग्यारा, सम्मत शहिनशाही नाल रलाईआ। नाल संदेशा देणा पैग़म्बर गुर अवतारा, की अवतरी हुक्म जणाईआ। धरनी धरत धवल धौल तकणा नज़ारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिस दा आदि

अन्त ना पारावारा, की बेअन्त खेल खिलाईआ। सो पुरख निरञ्जण होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण सुहाए बंक दुआरा, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। एकँकारा बण के मीत मुरारा, वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि निरञ्जण नूर कर उज्यारा, अबिनाशी करते नाल मिलाईआ। श्री भगवान लगाए अगम्मी नाअरा, नर नरायण आप सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव खोल्ह के सारा, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। सतिगुर शब्द करे प्यारा, पिता पूत मेल मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तुसां वेखणा अन्त नज़ारा, नज़रीआ दीन दुनी बदलाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी बाद जोती जाता आवे आप करतारा, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव तक लओ हाढ़ अठारां, एका आठा नाल मिलाईआ। सम्मत शहिनशाही संग ग्यारां, इक इक नाल मिल के वजे वधाईआ। उह वेखो लेखा दस्सदे तेई अवतारा, आपणा भेव खुल्हाईआ। वेद व्यासा बोल जैकारा, कूक कूक सुणाईआ। मेरा अकशर निरअक्खर धार होए उज्यारा, जिस दी समझ ना आईआ। मेरा संदेशा अगम्म अपारा, अलख अगोचर दिती वड्याईआ। मेरे सलोक चार लख हज़ार सतारां, सतह बुलंदी रहे सुणाईआ। कलयुग अन्तिम होवे अन्ध अँधयारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पैग़म्बर कहिण असां उसे दा कीता इज़हारा, उसे दी सिफ्त सालाहीआ। जो सब दा परवरदिगारा, जल्वागर नूर आलाहीआ। जो आवे दीन दुनी तों बाहरा, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। दरगाह साची सच दा दस्से इक नज़ारा, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं कलमा कायनात अज़ू मवज़े ज़वी नूरे ज़वा ज़ामिस्तो ज़मी नज़ीशो शुवा फ़ज़ीउल जमींउल कूज़ेज़हू कुमबा ज़म्बाए महू अर्शे ज़मा जकुखतो दुआ मेरे खुदा मालक ख़ालक तेरी बेपरवाहीआ। ज़मनाउ वदूआ वदीआ मंज़ल ज़मी यदूअल ज़खुसतो नखुसती उल ज़म्बाए मंदी दोज़ी बिज़ीआल मुबज़ला यकुशी ज़मिस्ते या आऊ ज़मीन मेरे मेहरवान नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा नानक गोबिन्द रूप न्यारा, निरगुण निरवैर दिती वड्याईआ। धुर दा हुक्म संदेशा अक्खर धार तों बाहरा, निर अक्ख शर इक वड्याईआ। जिस दा लेख लिखे ना कोई बण लिखारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। जिस दा ग्रन्थ शास्त्र वेद पुराण अञ्जील कुरान पा सके ना कोई सारा, पर्दा परदयां विच्चों ना कोए उठाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती जाता इक्को होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। जिस नूं सभने मन्नणा चौबीसा हरि जगदीसा अमाम अमामा नूर नुराना नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। उह सतिगुर

शब्द शब्द दए हुलारा, दो जहानां दए हिलाईआ। उस दा लहिणा देणा लेखा... ... ... , इक इक दी गंढु पुआईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा होवे हाढ़ अठारां, अठ दस दा मेल मिलाईआ। भगत सुहेला इक अकेला देवे नाम अधारा, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। अठारां हाढ़ कहे मैं भज्जा आया, परम पुरख दिती वड्याईआ। मैं दो जहानां इक्को ढोला गाया, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाया, सोहँ वजदी रही वधाईआ। अल्ला हू अन्ना हू दा नाअरा लाया, पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। जल्वागर दा दर्शन पाया, जोती जाता डगमगाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखदा आया, आपणा पन्ध मुकाईआ। चार जुग दे शास्त्र मैनूं रहे सुणाया, भविश भविख्त पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। उह तक लै पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती जाते वेस वटाया, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दो जहानां डगमगाया, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। जिस ने सम्बल डेरा आया, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जन भगतां होए सहाया, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। फड़ फड़ अन्दरों मेल मिलाया, बाहरों समझ कोए ना पाईआ। नौ दुआरे पन्ध चुकाया, जगत वासना कूड़ मिटाईआ। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती जाम प्याया, नाभी कवल कवल उलटाईआ। दर मन्दिर इक सुहाया, घर दसवें वजे वधाईआ। बिन रसना जिह्वा शब्द दृढ़ाया, अनहद नादी नाद धुन करे शनवाईआ। दीपक जोती जोत जगाया, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जिस पूरब लेखा जन भगतां आण चुकाया, जुग चौकड़ी पिछला लेखा झोली पाईआ। अगे आवण जावण पन्ध मुकाया, लख चुरासी फंद कटाईआ। राय धर्म ना दए सज़ाया, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे मैं जुग जुग रिहा उडीकदा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी ध्यान लगाईआ। दो जहानां ख़ाके रिहा उलीकदा, लाईन लाईन विच्चों बदलाईआ। खेल वेखदा रिहा हक तौफ़ीक दा, की करे धुरदरगाहीआ । कवण वेला मेरा वक्त सुहञ्जणा होए नीच दा, देवे माण वड्याईआ। मेरा मेल मिलाए सच प्रीत दा, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जो झगड़ा मेटे मन्दिर मसीत दा, काया काअबा इक समझाईआ। जिस दा नाम कलमा होवे इक्को गीत दा, सोहँ करे सच पढ़ाईआ। भउ चुकाए भय भीत दा, भाण्डा भरम भनाईआ। भेव चुकाए कूड़ी नीत दा, नीतीवान आप हो जाईआ। लेखा जाणे ठांडे सीत दा, अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरा वक्त सुहञ्जणा चंगा, प्रभ चंगी दए वड्याईआ। उह वेखो दूर दुराडी यमुना सरस्वती

गोदावरी आ गई गंगा, आपणा पन्ध मुकाईआ। नारद मुनी आ गया सिरों नंगा, बोदी आपणी रिहा हिलाईआ। दूजी धार वेखो गोबिन्द वाला पंजा, जो पंचम दए वड्याईआ। धरनी वल तके जो नेत्र रोवे अंझा, नैणां नीर वहाईआ। विचारां तको जो आसा रख के गए कवी बवन्जा, बावन आपणी खेल खलाईआ। जगत सिँघासण वेखो मंजा, पावे चूल फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तको दंगा, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। निगाह मारो जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। सच रिहा ना विच ब्रह्मण्डा, ब्रह्मांड रिहा कुरलाईआ। मैनूं इयों जापदा मेरे पुरख अकाले दीन दयाले दो जहानां शब्दी फड़ना खण्डा, जिस दी बणत तरखाण लुहार ना कोए बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्तिम मेटे पन्धा, धरनी धरत लोकमात रहिण ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर अन्तष्करन इक्को सुणाए छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। हरिजन धर्म दी धार बणाए बन्दा, बन्दगी इक्को इक दृढ़ाईआ । जिस दा पन्ध अगे नहीं लम्बा, मुसाफ़र बैठे आपणा पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम तक लओ कन्ढा, मुहम्मद बैठा नैण उठाईआ। मूसा खोलृण वाला आपणीआं गंढां, ईसा आस इक जणाईआ। गोबिन्द करन वाला जंगा, शब्द शस्त्र रिहा चमकाईआ। पिछला वक्त पिच्छे लँघा, अगला भेव दयां खुलृाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो मेरी बोदी वेखो हिलदी, उनन्जा पवण नाल वड्याईआ। मेरी आशा वेखो अगम्मे दिल दी, जिस दी घाड़त वेखण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म वेखो मिलदी, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। हुण घड़ी नहीं जे ढिल दी, गया वक्त हत्थ ना आईआ। हुण खेल नहीं बजर कपटी सिल दी, रातीं सुत्तयां पड़दे दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द उह वेख लै गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती आवण गांदीआं, गा गा खुशी बणाईआ। शृंगार ला के सोने चांदीआं, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। हत्थ बन्नृ के कहिण तेरीआं बांदीआं, जगत हँकार ना कोए जणाईआ । चारों कुण्ट कूड़ दीआं चढ़ीआं आंधीआं, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। तेरयां मानसां गऊआं खाधीआं, सूरां खल्ल लुहाईआ। विद्या रही ना विच पांडीआं, पंडत रोवण मारन धाहीआ। मुहब्बत रही ना विच गुआंढीआं, सज्जणां संग ना कोए निभाईआ। छातीआं होवण किसे ना ठांडीआं, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। बिन तेरे प्रभू सब दीआं पत्तां जांदीआं, पतिपरमेश्वर तेरे अगे दुहाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार असीं अन्तिम थक्कीआं मांदीआं, बलहीण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे आस रखाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द तेई अवतार वेख लै सजे, साजण मीत नज़री आईआ। सचखण्ड दुआरयों आए भज्जे, बिन चरणां चरण टिकाईआ। तेरे दीपक

नाल दीपक जोत जगे, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। इन्हां दा लेखा वेख लै की हाल होणा अगे, पेशीनगोईआं फोल फुलाईआ। सब ने अगों हथ्थ बद्धे, निव निव सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द असीं तेरे आए सद्दे, लोकमात डेरा लाईआ। सानूं हुक्म संदेशा दे दे अज्जे, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तुध बिन पड़दा कोए ना कज्जे, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। साडे दीन मज़्हब तेरा प्यार गए तजे, धर्म दी धार ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। नारद कहे पैग़म्बरो तुसीं वी आपणा दयो ब्यान, हाज़र हो के सीस निवाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहिण साडा कायम ना रिहा ईमान, अमलां विच ना ख़लक खुदाईआ। चारों कुण्ट कूड़ शैतान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। असीं तेरे बाले बच्चे इक नादान, बाली बुद्ध इक अख्वाईआ। तूं मालक ख़ालक इक रहमान, तेरी रहमत विच समाईआ। साडा रिहा ना कोए निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। साडे अक्खर वेख लै अञ्जील कुरान, तुरैत तुरत नाल मिलाईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक इक नौजवान, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। साडी तेरे कदमां विच सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। असीं बरदे तेरे ग़ुलाम, सेवक हो के सेव कमाईआ। सदी चौधवीं वक्त पहुंचिआं आण, बीसवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे नानक गोबिन्द आपणा दस्सो अहिवाल, पुरख अकाले अगे टिकाईआ। की खेल करे दीन दयाल, दयानिध ठाकर की आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द हस के किहा मैं आदि जुगादी एसे दा बाल, दूजा पिता नज़र कोए ना आईआ। बिना गोदीउँ गोदी विच रहिवां नाल, लाल लालन रंग चढ़ाईआ। मैनूं पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए चतुराईआ । मेरा गृह मन्दिर सची धर्मसाल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल सिँघ पाल, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। मेरा तेग़ बहादर दुनिया वाला दलाल, गुजरी जम्मण वाली तन माईआ। मेरा जोती नूर बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए समझाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग घाली घाल, अवतार पैग़म्बर गुर रूप वटाईआ। अन्तिम आपणा दस्सणा इक अहिवाल, भेव अभेद चुकाईआ। मैं सतिगुर शब्द पुरख अकाला मेरे नाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शब्द मेरा खण्डा शब्द मेरी ढाल, शस्त्र अवर ना कोए हथ्थ उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वेख लै अन्त कहाणीआं, कहाणी जगत ना कोए रखाईआ। जिन्हां तेरीआं मौजां माणीआं, लोकमात मिली वड्याईआ। तेरी महिमा दीआं गाईआं बाणीआं, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। तेरीआं बणीआं सुघड़ सवाणीआं, स्वामी मंन के सीस

निवाईआ। तूं देवणहारा अमृत रस ठण्डा पाणीआं, जलधारा वहिण वहाईआ। इन्हां दा लेखा तक लै नाल चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। मंज़लां तक रुहानीआं, रूह बुत बाहर ध्यान लगाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती ना एह मर्द ना एह जनानीआं, भज्जीआं फिरन वाहो दाहीआ। गोदावरी कोल गोबिन्द दीआं निशानीआं, गंगा दी धार रवीदास दा कसीरा रही वखाईआ। सरस्वती बैठी हो निमाणीआं, निव निव लागे पाईआ। यमुना कहे मेरे उत्ते कृष्ण ने मौजां माणीआं, गोपीआं संग निभाईआ। तूं शहिनशाह शाह पातशाह सुल्तानीआ, नूर नुराना इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे तूं सुण लै गंगा मईआ, अम्मढ़ीए तैनूं दयां जणाईआ। लेखा वेख लै आपणी कढुके वहीआ, वरका वरके नाल बदलाईआ। की लहिणा देणा तेरा नाल साचे सईआ, साहिब की समझाईआ। नाता तक लै भैणां भईआ, जगत खोज खुजाईआ। उह बांह वखा दे आपणी निरगुण बहीआ, जो रवीदास चमारे रंग रंगाईआ। जिस कारन बुल्ले गाया थईआ, ढईआ गोबिन्द गया समझाईआ। राम दशरथ बेटे कहि के तैनूं रम्ईआ, बाल्मीक रमायण नाल वड्याईआ। जिस कारन कलयुग अन्तिम चलणी नईया, नौका कवण रखाईआ। उह वेख लै हज़रत मुहम्मद दी सदी चौधवीं गईआ, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो इक्को दयो सलाह, बहुती कथा ना कोए जणाईआ। सतिगुर शब्द बणाओ गवाह, शहादत इक भुगताईआ। सब दा वक्त अख़ीरी गया आ, आपणा आपणा पन्ध मुकाईआ। आपणे भविख्त लओ उठा, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। नाले वेखो की हुक्म दिता नूर अलाह, आलमीन की जणाईआ। चौदां तबकां दयो सुणा, चौदां लोक लोक शनवाईआ। नाले कूक के मारो धाह, हाए उफ़ तेरी दुहाईआ। तूं वाहिद इक खुदा, नूर नुराने नूर अलाहीआ। तेरे हथ्थ तेरी वडया, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ । जो नाम कलमे दीन दुनी आए दृढ़ा, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ। सो सृष्टी दृष्टी अन्दर गई भुला, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभू असीं चलीए तेरी विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। असीं चाहुंदे तेरे नाम दा सब नूं इक्को होवे मज़ा, मज़ाक मिटे ख़लक खुदाईआ। तेरे पूजण दी इक्को होवे जगह, दूजा धाम नज़र कोए ना आईआ। तेरे शब्द दा इक्को होवे सद्दा, संदेशा देणा धुरदरगाहीआ। साडा प्यार तेरे चरण होवे बध्धा, बन्दगी सजदयां विच डण्डावत बन्दना करके सीस निवाईआ। सानूं हरि भगत दवारा अन्तिम कलयुग चंगा लग्गा, लग मातर डेरा ढाहीआ। जिस दी समझे कोई ना वजह,

वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी सरनाईआ। असीं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे बणे सेवादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। नाम कलमे आए उच्चार, दहि दिशा नाल वड्याईआ। दीनां मज़्बां कर पसार, मानस वंड वंडी थांउँ थाँईंआ। शरअ दी शरअ नाल मार लकार, लाईन लाईन नाल बदलाईआ। तूं सब दा परवरदिगार, सांझा यार इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम वेख लै धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्ब होण ख्वार, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। साडी तेरे चरण कवल निमस्कार, सयदे विच सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अँधयार, सतिजुग सच कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म तेरी इक्को होवे धार, धरनी धरत धवल धौल वजे वधाईआ। इक्को तेरा होवे जैकार, ढोला नाम गीत इक्को कलमा गाईआ। इक्को सोहे हरि भगत दवार, मन्दिर मसीतां लेखा देणा मुकाईआ। खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड रहे ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्म शिव साडी देण गवाहीआ। नारद कहे मैं वी करदा रिहा इंतज़ार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गोदावरी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ।
७२१ मैनूं गोबिन्द दिता प्यार, प्रेम प्यार विच जणाईआ। सरस्वती कहे मैं घुम्मण घेरी विच सदा अधविचकार, भज्जां वाहो दाहीआ। ७२१
२४ यमुना कहे मैनूं कहि के गया कृष्ण मुरार, काहन कान्हा इक समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कलि कल्की लए अवतार, २४
निहकलंका रूप बदलाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता होवे ज़ाहर, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस ने लहिणा देणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सब दा कर्ज़ा देणा उतार, मकरूज आपणा आप समझाईआ। सो सज्जण सुहेला इक इकेला बण के परवरदिगार, सांझा यार आपणा हुक्म वरताईआ। धर्म दवार एकँकार कर तैयार, त्रैगुण अतीता रंग चढ़ाईआ। पंचम तत कर के ख़बरदार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा हुक्म वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द कर जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा नाअरा लाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा आ गया अठारां हाढ़ कहे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जन भगतो बिना भगतीउँ तुहाडे बेड़े करे पार, नईया नौका आपणे नाम चढ़ाईआ। जिस मालक दे सब कुछ अख्त्यार, देवणहारा इक गुसाईंआ। उह तुहाडा बण जाए मित्र मुरार, साजण हो के संग निभाईआ। जिस दीनां मज़्बां विच्चों कढुया बाहर, ज़ात पात ऊँच नीच दा डेरा ढाहीआ। सतिगुर शब्द दा दे अधार, सोई सुरत लई जगाईआ। उठो होवो ख़बरदार, ग़फ़्लत विच्चों लओ अंगड़ाईआ। अजे वक्त सुहेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। अठारां हाढ़ कहे मेरा दिवस सुहञ्जणा, प्रभू देणी माण वड्याईआ। तूं आदि जुगादी इक निरञ्जणा,

निरवैर तेरी सरनाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागरा पार कराईआ। निज नेत्र आपणे प्यार दा पा दे अंजणा, लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। तेरा नाम नगारा इक्को दो जहान वजणा, नाद अनादी देणा सुणाईआ। भाण्डा कूड़ कुड़यार हँकारी गढ़ दा भज्जणा, हउमे हंगता देणी मिटाईआ। तूं गोपाल मूर्त मध मदना, मधसूदन तेरी खेल नज़र किसे ना आईआ। इक्को जेहा माण देणा आहला अदना, अमीर ग़रीब वंड ना कोए वंडाईआ। जो इशारा दे के गया भगत सदना, सदके वारी घोल घुमाईआ। कबीर किहा उह कबरां तों बाहर लभणा, मसीतां हथ्थ किसे ना आईआ। गोबिन्द किहा उह होवे बिना शरीर बदना, मुहम्मद किहा तन वजूद ना कोए रखाईआ। नारद किहा जिस दा इक्को दीपक जगणा, जोती जाता डगमगाईआ। ईसा किहा मेरा नूर अलाही रब्बना, मूसा मुसल्लम गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मैनूं आ गया अगम्मी संदेश, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दे अगे होए पेश, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। जिन्हां विच्चों सुत दुलारा गोबिन्द दस दस्मेश, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। शब्दी धार नर नरेश, सूरबीर अगम्म अथाहीआ। जिस दा होया अवल्लड़ा वेस, अवल्लड़ी कार कमाईआ। उहदा लहिणा देणा लेखा पूरब नाल माझे देस, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिस कलयुग क्रिया कूड़ मेटणा कलेश, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। सो भगतो भगत दुआरे बणना दरवेश, दर दवारा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा बंक इक वड्याईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरी इक बेनन्ती, बिनै दयां जणाईआ। गढ़ तोड़ो हउमे हंगती, हँ ब्रह्म विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़ो पंगती, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। कल्पना मेटो अन्तर मन दी, मनसा कूड़ ना होए हल्काईआ । मुहब्बत करो गोबिन्द सूरे चन्न दी, चन्द सितार निशान देण गवाहीआ। चुगली रहे ना किसे कन्न दी, कायनात दा पन्ध मुकाईआ। कोई लोड़ नहीं झूठे धन दी, सच नाम विच वड्याईआ। घड़ी आवे ना कोई ग़म दी, ग़मखार दए मिटाईआ। तुहानूं सुरती देवे तुहाडे ब्रह्म दी, पारब्रह्म भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तुहाडी दृष्टी मेटे चम्म दी, सम दृष्टी आप दृढ़ाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरा तुहाडे नाल नाता, रिश्ता जगत ना कोई रखाईआ। सब दा इक्को पिता इक्को माता, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। आत्म धार जिस दी तुसीं ज़ाता, अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। सो मेटण आया कलयुग अन्धेरी राता, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी

करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे मेरा संदेशा इक अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। सतिजुग चले धर्म दी चाल, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। दीन मज़्ब रहे ना कोई विच संसार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा होवे इक्को दवार, जो द्वारका वासी गया जणाईआ। हक हकूक छडण पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो कलयुग अन्तिम घट जाणीआं आबादीआं, आबाद रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया होणीआं बर्बादीआं, बादे सहर ना कोए वड्याईआ। उस वेले जन भगतां रूहा होणीआं जागीआं, सूफ़ीआं मिले वड्याईआ। दीनां मज़्बां दा लाग लै लैणा अन्तिम लागीआं, शरअ दा डेरा ढाहीआ। सति धर्म विच बिना ग्रन्थां शास्त्रां तों होणीआं सब दीआं शादीआं, पंडत पांधा मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक नज़र कोए ना आईआ। नानक दादक कोई ना आवे गांदीआं, जगत ढोले कोए ना गाईआ। खुल्ले वाल होए सीस दिसणीआं ना परांदीआं, मेंढी जगत ना कोए गुंदाईआ। प्यार रहिणा नहीं अन्तिम आंढीआं गुआंढीआं, कलयुग अन्तिम खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अठारां हाढ़ कहे चार जुग दे शास्त्र देण ब्यान, ग्रन्थ अक्खर अक्खर रहे दृढ़ाईआ। साडा लेखा नहीं नाल दीन दुनी जहान, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं बोलया नाल ज़बान, बत्ती दन्दां सिफ्त सालाहीआ। सो इशारा कीता वल उस महबूब रहमान, जो रहमत हक कमाईआ। उह कोई ततां वाला नहीं इन्सान, वजूदां वंड ना कोए वंडाईआ। चारे लावां वेखो मार ध्यान, खोजो चाँईं चाँईंआ। चौथी मंज़ल आत्म परमात्म भगत मिले भगवान, दूसर वंड रहिण कोए ना पाईआ। मेला तको सीता राम, सुरती शब्द विच समाईआ। निगाह मारो राधा काहन, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। नेत्र खोल्हो वेखो शरअ दा कलाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। रूहे रूहां नाल निगाहबान, निराकार * रिहा रंगाईआ। चार जुग दा जगत रीतीआं वाला विधान, आत्म दी धार परमात्म संग वखाईआ। दुनियादारां खेल कीता विच जहान, जगत जुगत रंग रंगाईआ। सच दे थाँ तन झूठा कर प्रधान, शादीआं जगत वालीआं रचाईआ। अन्तर अन्तर मिले किसे ना माण, बाहरों रंग ना किसे चढ़ाईआ। सतिजुग अन्दर नवां बणना विधान, वाधा इक इक्को रखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सारे बैठण इक अस्थान, जगह इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे मेरा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस ने जुग जुग चलाए राह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल खलाईआ।

७२३ २४

जिस अवतार पैग़म्बर गुर लए पहुंचा, सरगुण रूप प्रगटाईआ। नाम कलमे दीन दुनी दृढ़ा, कायनात समझाईआ। शरअ अन्दर शरीअत वंड वंडा, हद हदूदां रंग रंगाईआ। अन्तिम सब दा लहिणा देणा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस विच ओहला रहे ना कोए लुका, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पैग़म्बरां कबूल करे दुआ, जो दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुरुआं लहिणा देणा लेखे देवे ला, दर आपणे आप समझाईआ। अवतारां अवतरी दए समझा, शब्द संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा लहिणा देणा झोली देवे पा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दए वखा, रस्ता इक्को इक दृढ़ाईआ। मानस ज़ाती मानव ज़ाती मानुख ज़ाती आत्म परमात्म निरगुण धार ततां दा तत स्त्री मर्द होवे जगत ब्याह, वाहवा कहि के सारे ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। हाढ़ अठारां कहे जन भगतो तुहाडीआं शादीआं जगत दा मूल, नौ खण्ड पृथ्मी राह तकाईआ। सत्तां दीपां दा इक्को होवे असूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आत्मा दा परमात्मा कन्त कन्तूहल, स्वामी अन्तरजामी इक अख्वाईआ। ततां नूं तत कदे ना जावण भूल, पंचम पंचम कहि के वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। अठारां हाढ़ कहे सतिजुग ज़रूर चलणी एह रीती, रीतीवान आप चलाईआ। जिस दे हुक्म विच अनक जुग चौकड़ी बीती, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दी खेल सदा त्रैगुण अतीती, त्रैभवण धनी आपणी कार कमाईआ। जिस दीनां मज़्हबां दी लाई बगीची, अवतार पैग़म्बर गुर माली धरनी धरत धवल धौल वखाईआ। उह अगली खेल करे अनडीठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे रीठी, अमृत रस दए भराईआ। जन भगतां काया करके ठांडी सीती, अग्नी तत तत बुझाईआ। तन वजूद हक महबूब सच ईमान दी चला के रीती, रीतीवान आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा आपणा रंग रंगाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडा ततां वाला जोड़ा, जोड़ी सतिगुर शब्द बणाईआ। तुसां तक्कया सस्से उपर होड़ा, जो निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। हँ ब्रह्म हाए टिप्पी रूप हो के बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी करदी वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दा निरगुण धार अगम्मी घोड़ा, दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। उह तुहाडा भाग करे मथोरा, बाकी मिथ्या दिसे लोकाईआ। जिस दा अगला खेल होणा अवर का औरा, होर दी होर कार भुगताईआ। जिस ने रूप बदल ल्या दोहरा, दुहरा आपणा रूप जणाईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा नवां नकोरा, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार

कमाईआ। झट नारद कहे भगतो प्रभ दी वेख लओ चाल, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। तुहानूं दीनां मज़्बां विच्चों करके बहाल, ज़ंजीरां शरअ दितीआं कटाईआ। भगत बणा के आपणे लाल, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। तुसीं उस प्रभू दे बाल, जो बाली बुद्ध सब नूं दए समझाईआ । तुहाडा तोड़े जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जन भगतो तुहाडे भगतां दी जमात, इहो सची धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद इहो नज़री आईआ। सचखण्ड विच किसे इट्टां पत्थरां दी करनी नहीं भाल, पाहना सीस ना कोए झुकाईआ। पाणी दे लभणे नहीं ताल, अन्तर आत्म सरोवर दए वखाईआ। जिथ्थे शब्द दी धार नाल दए नुहाल, दुरमति मैल धुआईआ। आपणा मार्ग सच्चा दए सुखाल, औझड़ राह ना कोए भुआईआ। सतिजुग दी सति धर्म दी अवल्लड़ी होणी चाल, चाल निराली आपणी विच्चों प्रगटाईआ। कोई पंडत पांधा होणा नहीं दलाल, बिना सतिगुर शब्द तों विचोला रहिण कोए ना पाईआ। जो तुहाडी दिने जागदयां रातीं सुत्तयां दी सुरत लए संभाल, सम्बल विच बैठा घर घर नज़री आईआ। जिस दे पिच्छे जुग चौकड़ी घाली घाल, उह तुहाडी घाल लेखे लवे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मैं तुहाडे सथर लथ्था, गोबिन्द यारड़े सेज हंढाईआ। मैं बिना सीस तों टेकां मथ्था, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। बिना हथ्थां तों जोड़ां हथ्थां, हथेली हथेली नाल टकराईआ। पर तुसीं अन्तर अन्तर निरंतर निरंतर तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा दी गाउणी गथा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तुहाडा स्वामी तुहानूं ज़रूर मिले यथार्थ यथा, यदी यदप आपणा दरस दिखाईआ। जो दीन दुनी दी उलटी गेड़नहारा लठा, मन का मणका दए भुआईआ। जिस ने लहिणा देणा तुहाडा पूरा कीता अज्ज इक्को दिन इक्ट्ठा, इकट्ठयां नूं सचखण्ड दए पहुंचाईआ। सतिगुर शब्द इक पुरख अकाल दा पठ्ठा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर गुरु फिरदा नठ्ठा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हीर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहानूं केहड़ी करां सख़ावत, बख़्शिश धुर दी झोली तुहाडी काया मन्दिर दयां टिकाईआ। तुहाडे अन्दरों बाहर कढ्ढां कूड़ी बग़ावत, बग़लगीर आपे लवां बणाईआ। तुहानूं बख़्शां उह निआमत, जो रवीदास कबीर बिना रसना रहे खाईआ। तुहानूं रखां सदा सही सलामत, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पर याद रखयो सदी चौधवीं अन्तिम मुहम्मद दी आसा मुताबिक ज़रूर आवेगी क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। उस वेले किसे पैग़म्बर गुरु अवतार देणी नहीं ज़मानत, शहादत सच ना कोए भुगताईआ। फेर सारयां नूं इक वार इक्ठी देणी दावत, आओ मेरे प्यारयो महिमानो तुहानूं नाम दा

भण्डारा दयां खुआईआ। फेर किसे नूं सिर ते करनी पैणी नहीं हजामत, रोम रोम ना कोए कटाईआ। बेशक अजे सरस्वती बणी अणजाणत, भरमे भुल्ली कूड़ लोकाईआ। प्रभू मेहरवान महबूब अगली बणावण वाला बनावट, घड़न भन्नृणहार रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच भेव चुकाईआ। नारद कहे मैं वी पंडत पुराणा आ गया बोधी, बुद्धीवानो दयां सुणाईआ। बेशक तुसीं कोशां दे बणे खोजी, चार जुग दे ग्रन्थ शास्त्रां नूं फोल फोल के पढ़ पढ़ के आपणा झट लँघाईआ। मै हैरान हो गया कोई नाथ बण गया कोई जोगी, वेस ततां वाला बदलाईआ। कोई भेख धर के बहि गया वास्ते रोज़ी, नव सत भज्जे वाहो दाहीआ। पर जदों मैं निगाह मारी मेरा ठाकर स्वामी बड़ा मौजी, मजलस भगतां विच रखाईआ। जिस नूं सतिगुर गोबिन्द किहा चोजी, उह चोजी प्रीतम तुहाडा माहीआ। उह तुहाडे प्यार दा बणया लोभी, लोभीओ तुहाडा कूड़ विकार दा लालच आपणे चरणां विच लिआईआ। तुहानूं जन्म दा रहिण नहीं देणा रोगी, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ । तुहाडा धर्म दी धार ते धर्म दा संजोगी, जुग जन्म दयां विछड़यां मेल मिलाईआ। सेजा आत्मा भोग रिहा भोगी, भस्मड़ हो के तुहाडे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं बिना शास्त्रां तों दस्सां कहाणी, विद्या जगत ना कोए रखाईआ । मैं बिना कलम शाही दे लेख तों बिना बोलां बाणी, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। जन भगतो बिना परमात्मा तों आत्मा दा नहीं कोई हाणी, सदा दा संग ना कोए निभाईआ। एह खेल उस दी जिस ने रच दिती चार खाणी, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा दिता लगाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे के नाम निधानी, लोकमात डंक वजाईआ। तन वजूद तत शरीर दे प्राणी, प्राण अधारी आप हो जाईआ। जोत नूर कर नुरानी, जोती जाता डगमगाईआ। जिन्हां ने चार जुग ग्रन्थ शास्त्र वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ साहिब दी लिखी उह निरमाण बाणी, जो अणयाला तीर चलाईआ। पर हाए नारद कहे मैं केते जुग चौकड़ी वेखे उह भगतो अन्त किसे दी रही ना कोई निशानी, बिना पुरख अकाल तों नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द भगतां दा बण जा मीता, उह मित्रा माण दे वड्याईआ। की होया जे कृष्ण अठारां ध्याए लिखा दिती गीता, अक्खर अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। तूं सब दीआं परखणहारा नीता, वेखणहारा थांओं थाईंआ। आत्मा परमात्मा दी बण जाए प्रीता, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। तेरा भगत सदा रहे ठांडा सीता, कलयुग अग्न ना कोए तपाईआ। पिच्छे दा पिच्छे वक्त बीता, अज्ज तों नवां जन्म दे दवाईआ। तेरे दर उत्ते कोई ना रहे ऊँच

नीचा, नीच ऊँच दा डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद दा बचन सुण के कलयुग आया हो के लाचार, भज्जा वाहो दाहीआ। नाल आपणा काला वेस रिहा संवार, सोहणा रूप दृढ़ाईआ। नाले रो के करे गिरयाज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नाले खिच के खण्डा कटार, खड़ग रिहा चमकाईआ। नाले करके प्रभू नूं निमस्कार, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। उह मेरे मालका मेरे स्वामीआं मैं तेरा बरखुरदार, बच्चा छोटा नज़री आईआ। जे तूं गोबिन्द दी पैज दिती संवार, क्यों ना मेरे सिर हथ्थ रखाईआ। मैं योद्धा सूरबीर तेरा बलकार, बलधारी तूं दिती वड्याईआ। वेख लै मैं दुनिया नूं दीनां मज़्हबां विच्चों फड़ फड़ कीता ख्वार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। माण रहिण नहीं दिता किसे पैग़म्बर गुर अवतार, ग्रन्थ शास्त्रां चले ना कोए चतुराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठां गुरुदुआरयां विच हुंदा विभचार, स्त्री पुरुष नारी मर्द कूड़ी क्रिया विच हल्काईआ। साधां सन्तां आई हार, जीवां जंतां करन ख्वार, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। चार जुग दा लेखा पूरब लहिणा सब दा दे उधार, नविरती विच प्रकृती दे बदलाईआ। तेरा इक धर्म दा होवे जैकार, धर्म दी धार दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं साची रुत सुहावांगा। अबिनाशी अचुत इक मनावांगा। लख चुरासी वेख बुत, बुतख़ाने फोल फुलावांगा। जो कलयुग कूड़ कुड़यारे पाई लुट, लुटेरा फड़ के बाहर कढावांगा। दीन दुनी विच जेहड़ी फुट्ट, फुटकल रूप ना कोए दरसावांगा। जिस वेले मेहर कीती ते सतिजुग दे विच सतारां हाढ़ नूं छेवें साल नूं इक्को अमृत जाम प्या के घुट, घुट्टके सीने नाल लगावांगा। पिछली प्रीती सब दी जावे टुट, टुटयां अगे जोड़ जुड़ावांगा। मैं किसे फड़ना नहीं हथ्थों गट्ट, अन्तर आत्मा परमात्मा रंग रंगावागा। कूड़ी क्रिया अन्दरों बाहर कढ्ढां कुट, काया कुटीआ अन्दर डेरा लावांगा। दीपक जगा के आपणी निरगुण जोत, जोती जाता हो के डगमगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखावांगा। हाढ़ अठारां कहे भगतो मैनूं चढ़दीआं आउंदीआं लालीआं, खुशीआं दे ढोले गाईआ। मैं वेखदा चारों कुण्ट रातां कालीआं, कलयुग कूड़ रिहा वखाईआ। फल रिहा नहीं किसे डालीआं, पत्त टहणी गए कुमलाईआ। बाग़ संभाले नहीं गए मज़्हब दे मालीआं, पाणी देवे ना कोए चाँईं चाँईंआ। उह गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती दीआं धारां होईआं ख़ालीआ, ख़ाली रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे प्रभू उह वेख लै ग्रन्थ शास्त्र सारे घती आउंदे वहीर, भज्जण वाहो दाहीआ । उह साडे मालका स्वामीआं साडे

उत्तों लथ गए चीर, उह चिरी विछुन्नया सानूं आपणे लड़ लैणा लगाईआ। साडा कोई माण नहीं रिहा ते साथी रिहा ना पैग़म्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे रोवण मारन धांहीआ। उए बौहड़ी सानूं बन्नू ल्या शरअ दी ज़ंजीर, कड़ी कड़ी सानूं ल्या बंधाईआ। उह वेख की इशारा दिन्दा कबीर, रवीदास की सुणाईआ। हाए हाए हाए कलयुग अन्तिम साडे अक्खां विच्चों बिना नेत्रां तों वगे नीर, नैण नैण ना कोए बरसाईआ। जिधर वेखीए उधर दिसे भीड़, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। सब तों उच्ची कूक के कहे गुरु ग्रन्थ साहिब दी बीड़, चौदां सौ तीह अंक दी समझ किसे ना आईआ। उह साडी टुट गई हडी रीड़, उफ़ तेरे अगे दुहाईआ। हुण ते आ जा साडया मालका कलयुग दा होया अख़ीर, खुल्ले झाटे धरनी रही कुरलाईआ। मैं हो गई दिलगीर, मेरी धीरज दे धराईआ। ना कोई मेरी शरअ रही ना कोई मेरी जगीर, बिन जागरत जोत मेरा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे मेरा प्रभू धौला हो गया झाटा, जुग चौकड़ी तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा पीसण पीस के आया घाटा, वस्त अन्त हथ्थ किछ ना आईआ । मैनूं पता नहीं तेरी किधर चली गई जोत वाली लाटा, सिँघ सवार आपणा मुख छुपाईआ। अवतारां केहड़ी मल्ली खाटा, सुता लए ना कोए अंगड़ाईआ। पैग़म्बर केहड़ी कूटे नाठा, चौदां तबक वेखण नैण उठाईआ। गुरु गुरदेव केहड़े सथर लाथा, यारड़े देणा समझाईआ। एस वेले कोई सहाई होए ना नाथ अनाथां, दीन दुनी रही कुरलाईआ। ग्रन्थ साशतर बथेरे पढ़ पढ़ थक्के गाथा, दिवस रैण ढोले गाईआ। कलयुग कूड़ा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मारे वाटा, भज्जे वाहो दाहीआ, धर्म दा निशान कोई रिहा ना कूड़ विक गया घर घर दे हाटा, हटवाणा कलयुग इक्को नज़री आईआ। पता नहीं किथे चला गया गोबिन्द वाला बाटा, अमृत रस ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे उए मेरया अब्बा, मैं तेरा राह तकाईआ। पैग़म्बर कहिण हाए साडया रब्बा, असीं आमीन यामबीन कहि के सीस निवाईआ। साडा ईमान तेरे हुक्म विच फसा, बन्दगी विच सीस निवाईआ। पता नहीं तेरा किथे आसण लग्गा, चौदां तबक ख़ाली रोवण मारन धाहीआ। पवित्र रही कोई ना जगह, काअबे रंग ना कोए रंगाईआ । जिधर वेखीए मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक तेरे कलमे नाल करन दग़ा, दग़ा फ़रेब विच वेखी ख़लक ख़ुदाईआ। सानूं हुण ते दस्स दे सदी चौधवीं दे विच फेर की होणा अग्गां, उह आगमन विच तैनूं सीस निवाईआ। सानूं दस्स फेर किस दा करांगे हज्जा, दर केहड़ा वेखण पाईआ। उह केहड़ा साडी रखूगा लज्जा, परवरदिगार तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

७२८
२४

कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। धरनी कहे उह मेरे माही प्यारे गोबिन्द, आ जा मीत मुरार। जे तेरा वक्त सुहञ्जणा होणा हिन्द, भारत कर उज्यार। मेरी सुत्ती दी खोल्ह दे निंद, मेरा नैण दे उग्घाड़। मैं चाहुंदी मेरे तों पूजा मिट जाए लिंग, इक्को इष्ट होवे करतार। नौ खण्ड पृथ्मी डेरा दिसे मैनूं सिँघ, ते शब्द शस्त्र होवे धार। तेरी सुणी नहीं जांदी मैथों निंद, निंदया वेख सर्ब करे संसार। वेख लै तेरे तेरे नालों गए खिण्ड, प्रेम विच मिले ना कोई मीत मुरार। मैं अज्ज निगाह मारदी प्रभ दे वेखां काया जीउ पिण्ड, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मुनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे होई भिखार। धरनी कहे वे मेरया कान्हा, कृष्णा किधर मुख भुआईआ। क्यों भुल्लया मैनूं मेरया रामा, रम्ईआ तेरे अगे वास्ता पाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी शामा, शमअ नूर ना कोए रुशनाईआ। पैग़म्बरो कोई मैनूं दयो पैग़ामा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाहर सुणाईआ। मुहम्मदा मैनूं वखा दे आपणा अमामा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। गोबिन्द दस्स दे जिस ने पहनया जोती जामा, जोती जाता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी तेरा लहिणा देणा जिस चुकाउणा, चुकन्नी तैनूं रिहा कराईआ। जिस जुग जुग खेल खेलया महाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी वंड वंडाईआ। उह शाहो भूप सुल्ताना, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए उह जोती जाता, हरि करता इक अख्वाईआ। नी उह पुरख बिधाता, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जो तेरे नाल जोड़े नाता, नातवां आपणा रंग रंगाईआ। बेशक तैनूं सारी सृष्टी कहिंदी माता, मातृ भूमीए तेरी की वड्याईआ। दस्स तेरे कोल केहड़ा खाता, की वस्त रही वरताईआ। नी तेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरां गुरुआं क्यों बणाईआं ज़ातां, ज़ातां पातां दीनां मज़्हबां वंड वंडाईआ। क्यों शस्त्रां नाल कीता इक दूजे दा घाता, सीस तन वजूद कटाईआ। क्यों नहीं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग प्रभ अगे कीता अरदासा, बेनन्ती विच सुणाईआ। दन्दीआं कढुके करे हासा, नक रिहा चढ़ाईआ। फेर वेख्या वल शंकर कैलाशा, बिन नैणां नैण तकाईआ। ब्रह्मे आवाज़ मारी तूं वी आ जा पासा, आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्नूं तक लै खेल तमाशा, की कला कल वरताईआ। नारद कहे धरनीए नी तूं वी मल लै दन्दां नूं दन्दासा, आपणा रूप लै बदलाईआ। शायद फिर किरपा कर देवे पुरख अबिनाशा, हरि करता धुरदरगाहीआ। नाले उंगल पा के विच नासां, नारद सहिज नाल समझाईआ। नी माईए धरनीए कोझीए कमलीए मरनीए तेरे उत्ते चौथे साल नूं चढ़ जाणी लाश उत्ते लाशा, लशकर नज़र कोए ना आईआ। उह वेख लै नचदा टपदा कलयुग बदमाशा, बदीआं आपणे नाल मिलाईआ। पुरख अकाले दीन दुनी दा उलटा देणा पासा,

पेशीनगोईआं गुर अवतार पैग़म्बर रहे वखाईआ। धरनी निउँ के किहा मेरा साहिब मेरीआं पूरीआं करे आसां, आसा आपणे नाल मिलाईआ। मैनूं दे के गए भरवासा, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। जन भगतां देवे शाबाशा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच रंग रंगाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं होई भागां वाली, मेरे भाग मिली वड्याईआ। मेरे उत्ते किरपा कीती जोत अकाली, अकल कलधारी दिती वड्याईआ। हुण कलयुग दी उमर ना रह गई बाहली, समां थोड़ा दिता समझाईआ। तुसां भगत बणना ते आपणी बणाउणी चाल निराली, वखरी जगत वंड वंडाईआ। तुहाडा भगत दवार ते इहो धर्मसाली, धर्म दवारा इक्को सोभा पाईआ। दीनां मज़्बां तों आपणीआं झोलीआं कर लओ ख़ाली, आत्म परमात्म भण्डारा लओ भराईआ। सतिगुर शब्द दी मंनो इक दलाली, दूजा विचोला रहिण कोए ना पाईआ। तुसीं जल्वा तको जमाली, नूर नुराना दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेरी अन्त अख़ीरी अरज़ोई, अर्ज़ तमंना प्रभ चरणां विच टिकाईआ। प्रभू तेरा नाम दरोही, दो जहानां दयां सुणाईआ। तेरी किरपा तों बग़ैर भगत बणे ना कोई, भगवन्त मिलण कोए ना जाईआ। कलयुग अन्तिम मेरी पत गई खोही, लज्जया दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं किसे कूट नहीं मिलदी ढोई, उत्तर पूरब दक्खण पश्चिम रहे कुरलाईआ। मेरे धन्नभाग अज्ज तेरे चरण छोही, *शौहर बांके तैनूं मिल के वजे वधाईआ। तेरी मुहब्बत विच गई मोही, मोहण माधव तेरे रंग समाईआ। पता कर लै याद कर लै जो इशारा दिता कबीर ने लोई, लोइनां तों पिच्छे लोइन लोइन विच्चों खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। हाढ़ अठारां कहे जन भगतो प्रभू दा तुहाडे उत्ते रहे हथ्थ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। किरपा करे सदा समरथ, समरथ आपणा रंग रंगाईआ। धूड़ी ख़ाक रमाए तुहाडे मस्तक मथ, दुरमति मैल मैल धुआईआ। तुसीं ओस दे प्यार दे सथर जाणा लथ, उह यारड़ा तुहाडी सेज लए हंढाईआ। तुहाडा लेखा मुके अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध धार अठ्ठ, नौ दर दा डेरा ढाहीआ। दस्म दुआर एकँकार कर इक्ठ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो प्रभू दी खुशीआं वाली बहार, प्रेम प्रीती विच रखाईआ। तुहाडा पूरा होया विहार, विवहारीउ तुहानूं दयां सुणाईआ। तुहाडा प्रसिद्ध होणा भगत दुआर, नौ खण्ड पृथ्मी वजणी वधाईआ। तुसां घर दे करदे रहिणा कारो बार, खुशीआं दे ढोले गाईआ। तुहानूं ज़रूर आ के मिल्या करेगा तुहाडा यार, यराने तुहाडे तोड़ निभाईआ। जागदयां ते सुत्तयां

दोहां रूपां विच देंदा रहेगा दीदार, सनमुख हो के नज़री आईआ। पूरन जोत ते पूरन होवे सिक्दार, पूरन पूरे रंग रंगाईआ । तुहाडी प्रीती तुसीं प्रीती दे हकदार, प्रीतम कोलों आपणी वस्त लैणी चाँईं चाँईंआ। तुसीं जुग चौकड़ी दे बरखुरदार, बच्चे नन्हे रूप बदलाईआ। तुहाडा मालक इक एकँकार, अकल कल धारी जो अख्वाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरी तुहाडे अगे अरदास, निव निव सीस झुकाईआ। तुहाडा सोहणा वेख के सजया दरबार, मेरे अन्दर वजी वधाईआ। मैं वी तुहाडे नाल बोलांगा जैकार, ढोला धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद जिस दा अन्त ना पारावार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार इक इकल्ला सच सोहला सच सच सच दए सुणाईआ।

✪ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात वेले ✪

अठारां हाढ़ कहे प्रभ दा नाम होवे इक्को टप्पा, टापूआं दा बापू आपणा हुक्म सुणाईआ। जो आदि आदि विष्न ब्रह्मा
७३१ शिव जपा, अन्त अन्त गुरदेव गए समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा बाहर होवे मन मता, सतिगुर शब्द शब्द वड्याईआ। ७३१
२४ जिस विच भेव रहे ना रता, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया करे हता, हतिआ वेखे ख़लक खुदाईआ। २४
जो निरगुण निरगुण मेल मिलाए नता, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी सब तों वखरी होणी सता, सतिगुर देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अठारां हाढ़ कहे प्रभ इक्को होवे नाम, भगती भगवान दए दृढ़ाईआ। इक्को होवे जाम, नाम खुमारी मस्त प्याला दए प्याईआ। इक्को होवे काम, करनी दा करता आप समझाईआ। इक्को होवे ग्राम, नगर खेड़ा इक्को सुहाईआ। इक्को करनहार इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ वखाईआ। इक्को मेटे अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। इक्को खेल खेले रम्ईआ राम, राम रामा धुरदरगाहीआ। इक्को सजदा कबूल करे कलाम, कायनात तों बाहर वेख वखाईआ। इक्को शरअ मेटे कूड़ गुलाम, बन्धन जगत रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। अठारां हाढ़ कहे प्रभ दा इक्को होवे नाँ, नर निरँकार दए दृढ़ाईआ। इक्को होवे गराँ, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। इक्को सुहाए थाँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। इक्को पकड़नहार होवे बांह, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। इक्को बणे पिता माँ, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। तिस साहिब दे बलि बलि जां, आप आपणा घोल घुमाईआ। जो कलयुग विच्चों सतिजुग

बदले राह, रैहबर इक अख्वाईआ। पन्ध मुकाए थल अस्गाह, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। अठारां हाढ़ कहे प्रभ इक्को होवे तेरा नाम निधाना, निरवैर तेरी सरनाईआ। इक्को होवे शब्द तराना, तुरीआ तों बाहर सोभा पाईआ। एका होवे साचा गाना, बिना रसना जिह्वा ढोला गाईआ । इक्को मन्दिर होवे मकाना, दरगाह साची सोभा पाईआ। इक्को हुक्म होवे इक्को देवणहारा दाना, दाता दानी इक अख्वाईआ। इक्को राम इक्को होवे कान्हा, घनईया इक्को सोभा पाईआ। इक्को पैग़म्बर होवे नूर अलाही जो सच दए कलामा, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। सो अन्तिम मेटे अन्धेरी शामा, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। जो पैग़म्बरां दए पैग़ामा, धुर संदेशा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। अठारां हाढ़ कहे प्रभ दा इक्को होवे इष्ट, इष्ट देव इक अख्वाईआ। नाता जोड़े सर्ब सृष्टी, सर्ब श्रेष्ट आपणा हुक्म वरताईआ। जो इशारा कीता राम वशिष्ट, विषयां तों बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । सतारां हाढ़ कहे जन भगतो प्रभ दा जपणा इक्को नाउँ, नर निरँकार रिहा दृढ़ाईआ। भाग लगाउणा काया माटी ग्राउँ, तन वजूद सोभा पाईआ। बिन रसना जिह्वा अन्तर निरंतर करना वाहो वाहो, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ । सज्जण सुहेला इक अकेला सतिगुर शब्द मनाओ, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। जो फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाईआ। तिस साहिब दे बलि बलि जाओ, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो प्रभ दा इक्को होवे दुआर, सति सच मिल के वजे वधाईआ। इक्को होवे जैकार, ढोला इक्को गाईआ। इक्को होवे निमस्कार, निव निव लागे पाईआ। इक्को खेल करे करतार, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। जिस तुहाडी रुत बसन्त कीती बहार, पत्त टहणी नाम नाल महकाईआ। सो वेखणहारा आपणी गुलज़ार, गुलशन तके चाँईं चाँईंआ। जिस नूं सारे कहिंदे परवरदिगार, जल्वागर नूर अलाहीआ। उह बणके भगतां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ । जिस दा सारे करदे इंतज़ार, बैठे राह तकाईआ। उह आवे आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। जिथ्थे सतिगुर शब्द दए इशार, बिन सैनत दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो प्रभ दा इक्को कलमा होए कायनात, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। इक्को वेखणहारा होए प्रांत, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। इक्को साचा जोड़े नात, रिश्ता आपणे नाल रखाईआ। इक्को भेव खोल्हे बातन बात, पर्दा परदयां

विच्चों चुकाईआ। जन भगतो तुहाडी सुहञ्जणी होई रात, खुशीआं ढोले गाईआ। तुसीं चार वरन दी इक जमात, जुग चौकड़ी लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे भगतो तुसां पाया नाम रस, बिन रसना रस चखाईआ। जिस दे सारे होणे वस, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस कलयुग मेटणी रैण अन्धेरी मस, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। उस दा मेला करना हस हस, दर्शन करके खुशी बणाईआ। सिफ्तां नाम ढोले गाओ जस, राग रागणी नाल समझाईआ। बिन रसना लवो रस, रसक रसक बूँद स्वांती नाभी कवल टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। जन भगतो प्रभ दा गाउणा इक्को गीत, गोबिन्द देवणहार वड्याईआ। अन्दरों पवित्र करनी नीत, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। अन्तश करना ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गीत, गोबिन्द तेरा नाम दुहाईआ। तूं सदा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी ओट रखाईआ। मैं दिवस विचारा अज़ीज़, आज़म तेरे अगे आस रखाईआ। सति धर्म दी दे तमीज़, तबीअत अन्दरे अन्दर बदलाईआ। मैनूं जन भगतां मिलण दी रीझ, सच संदेश्यां
७३३ विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ७३३
२४ अठारां हाढ़ कहे जन भगतो परम पुरख दे लागो एका चरणां, चरणोदक जाम दए प्याईआ। झगड़ा मेटे वरना बरना, शरअ २४
संग ना कोए रखाईआ। जिस कलयुग अन्तिम सब कुछ करना, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। उस दा ढोला सब ने पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा राग समझाईआ। सब ने चोटी मंज़ल चढ़ना, दरगाह सच सच वड्याईआ। इक्को नाम सब ने पढ़ना, इक्को रंग दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो सारे आपणी वेखो मनसा, मन ममता दूर कराईआ। हरिजन सुहेले बणो हँसा, गोबिन्द गुर गुर वेख वखाईआ। धर्म दी धार बणाउ बंसा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तुसीं उस प्रभू दी अंसा, जुग जुग जिस दे ढोले गाईआ। शब्दी धार देवणहारा बंका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ । अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरी बेनन्ती इक अख़ीरी, अक्खरां बाहर जणाईआ। साडा मालक जिस दे चरणां हेठ मीरी पीरी, चार जुग दे शास्त्र जिस दी देण गवाहीआ। उस दा खेल तको तकदीरी, की धुर दा हुक्म वरताईआ। जिस दे कोल अमीरी फ़कीरी, फ़िकरे ढोले गीत धुर दे रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो

प्रभ चरण करनी सेवा, सेवा सतिगुर विच समाईआ। इक्को नाम जपणा जिह्वा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला देणा सुणाईआ। इक्को मस्तक मणीआ लाउणा थेवा, थिर घर वासी वेख के खुशी बणाईआ। साचा नाम होवे तुहाडी उत्ते रसना जिह्वा, दिवस रैण ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खलाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडा मालक श्री भगवान, हरि करता इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी धुर दा काहन, रम्ईआ हो के राम राम विच समाईआ। जिस ने लख चुरासी बरदे बणाए गुलाम, गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। फेर बण के धुर अमाम, चोला आपणे तन सजाईआ। फेर खेल करे भगवान, भगवान देवणहार वड्याईआ। इक दूजे दी करो पहचान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। किस बिध जन भगतां प्रभ करे कल्यान, कायनात दा पन्ध मुकाईआ। जो सब कुछ जाणी जाण, देवणहारा वेखणहारा धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहाडा आउणा जाणा लेखे जाए लग, थित मेरी वजे वधाईआ। साचा माण मिले जग, जागरत जोत रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बुझाउणी अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। अमृत रस प्याला भरना मदि, मुगध मूर्खां डेरा ढाहीआ। तुहाडे नालों कदे ना होवे अलग, जोड़ा सतिगुर आप सुहाईआ। तुसीं उस वांग बगले बपड़े रहिणा नहीं बग, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। तुहाडी आशा मनशा पूरी करे सभ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस धार नूं सारे कहिंदे नूर अलाही रब्ब, जल्वागर ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो मेरी खुशी वाली खुशहाली, खुशख़बरी दयां जणाईआ। परम पुरख दी अवल्लड़ी चाली, चाल निराली आप रखाईआ। जगत जहान दा बण के माली, लख चुरासी बूटे वेखे थांउँ थाँईंआ। दीन दुनी दी शरअ मेटे लेखा मुके रैण अन्धेरी काली, कला आपणी इक वरताईआ। जिस दी आयू नहीं रह गई बाहली, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। मैं तुहाडे अगे बणां सवाली, ख़ाली झोली दयां वखाईआ। वेख्यो कलयुग दी धार कोई बणिउ भगत ना जाहली, क्रिया कूड़ ना रंग रंगाईआ। तुहाडा भगत दुआरा नवखण्ड दी होवे धर्मसाली, धर्म दुआर इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अठारां हाढ़ कहे जन भगतो तुहानूं खुशीआं नाल देवे दान, दाता दानी दया कमाईआ। तुहाडा लेखे लाया आवण जाण, सिर सिर हथ्थ उठाईआ। तुसां ढोला गाया विष्नूं भगवान, जै जैकार दिती सुणाईआ। तुहाडा लेखा रिहा ना विच जहान, जागरत जोत डगमगाईआ। तुसीं खुशीआं ढोले गाउणा गान, गा गा शुकर मनाईआ। किरपा

करे मेरा भगवान, मेहरवान दया कमाईआ। मैं वी उसे दे चरण रखां ध्यान, निव निव सीस झुकाईआ। सो सतिगुर शब्द हो बलवान, बलधारी फेरा पाईआ। जो लेखा जाणे गोपी काहन, रम्ईआ राम राम खोज खुजाईआ। जिस दा रूप अलाही अमाम, अमलां तों बाहर इक अख्वाईआ। सो तुहाडे दुखड़े मेटे तमाम, तरह तरह नाल समझाईआ। जगत शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, गुरबत दा डेरा ढाहीआ। आप बण के धुर अमाम, नूर नुराना करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडी एथे ओथे दो जहानां इक्को रखे शान, शान शौकत नाल सचखण्ड दुआर जाणा चाँईं चाँईंआ।

✪ ३१ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर सुभाग वन्ती दे नवित ✪

हाढ़ कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा इक्ती, सम्मत शहिनशाही यारां मिल के वजे वधाईआ। मेरा मालक ख़ालक पतिपरमेश्वर कमलापती, परवरदिगार सांझा यार नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्दी धार देवणहारा मती, धुर संदेशा नर नरेशा आप जणाईआ। जिस दा नाम निधाना दो जहानां भेव पाए कोई ना रती, कीमत कहिण किछ ना पाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी कलयुग अग्न बुझाए तती, पवण पवणां आपणी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव खोल्हे निरँकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी पावे सार, ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाईआ। शब्द अनादी बोल जैकार, दो जहान करे शनवाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती डगमगाईआ। दो जहानां वेखणहार, ब्रह्मण्डां खण्डां ध्यान लगाईआ। रवि शशि जिस दे सेवादार, धरनी धरत धवल धौल निव निव लागे पाईआ। सो करनी दा करता खेल करे आप करतार, कुदरत कादर नूर अलाहीआ । जिस दी आशा रख के गए पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेटणहारा धूंआँधार, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नूर करे रुशनाईआ। मैं उस दे चरण कवल उपर धवल जाणा बलिहार, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जो वसणहारा सचखण्ड दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। हाढ़ कहे मैं जुग जुग गया लँघदा, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त इक्को मंग मंगदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्रभू तेरा खेल तकां सूरे सरबग

दा, हरि करते तेरी धार वेख वखाईआ। प्यार बख्श दे भगतां संग दा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। निशान मेट दे तारा चन्द दा, सदी चौधवीं वेखे नैण उठाईआ। झगड़ा रहे ना तत पंज दा, पंचम मीते देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। हाढ़ कहे सदी चौधवीं फिरदी नठी, बिन कदमां कदम उठाईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरे कदमां ढठी, नेत्र लोचण नैण मज़ुब नज़र किसे ना आईआ। मालक ख़ालक उलटी गेड़नहारा लठी, दो जहान श्री भगवान दए बदलाईआ। झगड़ा तक लै मन्दिर मठी, दीन दुनी दे काअबे रहे कुरलाईआ। निगाह मार लै अठ्ठ सठ्ठी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे अग्न तपाई भठ्ठी, भठिआरा हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बिन कदमां तों नसदी, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। खुशीआं दे ढोले गावां सिफ्तां वाले जस दी, बिन रसना रसन सुणाईआ। उम्मत नबी रसूलां वेख के हसदी, ख़ुशीआं ढोले गाईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरी खेल तकां प्रतख दी, पारब्रह्म प्रभ पर्दा देणा खुल्हाईआ। मैं वणजारन होई तेरे लोचन नैण अक्ख दी, आख़र

मेला लैणा मिलाईआ। मुहम्मद आशा तक लै जो तेरा राह तकदी, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। आपणी वहिदत वेख लै पक्क दी, कलमा कलमे नाल बदलाईआ। की खेल होई अन्तिम यक दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मालक नूर अलाह, अलिफ़ ये तों बाहर देणा समझाईआ। तूं मालक ख़ालक बेपरवाह, बेऐब नूर अलाहीआ। मेरी कबूल करीं दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। संग मुहम्मद चार यार मेरे गवाह, शहादत कलमे वाली भुगताईआ। निगाह मार मेरे महिबां, मेहरवान महबूब नूर अलाहीआ। तेरे कदमां बलि बलि जां, कुदरत दे कादर देणी वड्याईआ। मैं उच्ची कूक के कहां बांह, ज़िमीं असमानां दयां वखाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी बुद्धी होई वांग काँ, हँस रूप नज़र कोए ना आईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी गाँ, पशू मानसा खल्ल लुहाईआ। मेरे परवरदिगार साझे यार अन्त करीं हक न्याँ, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मुहम्मद नाल वायदा, लाशरीक दयां जणाईआ। तूं आपणा हुक्म वरत बाकायदा, कायदा आपणे हथ्थ रखाईआ। मैनूं कदे ना करीं अलाहिदा, वखरा जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मैनूं कलमे धार देणा फ़ायदा, मुफ़ाद तेरे चरण कवल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक सति दे मालक दया कमाईआ। सदी

चौधवीं कहे मेरे मालक वज़ी ज़मा ज़ोकू ज़विद नुखसते गुमा ज़ूके जुमम ज़नी ज़वा ज़ोशे अरज़ा खफ़नी यद ज़ूकु ज़मद शाहे शवी अर्शे नवी नूरे अलाह मेरे बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं अन्त अखीर होई भिखारन, भिक्ख्या धुर देणी वरताईआ। निरगुण धार तेरे प्यार बणी वणजारन, दूसर हट्ट कदे ना जाईआ। तूं शाहो भूप मेरी सरकारन, शहिनशाह नूर अलाहीआ। मैं कूक कूक लगी पुकारन, चौदां तबक तबक सुणाईआ। मुहम्मद अवाज़ां लग्गी मारन, रसूल रसम नाल मिलाईआ। चार जुग लग्गी पुकारन, तूं ही तेरा नाम खुदाईआ। कुराने मजीद दए उदाहरण, उदय असत तेरी वड्याईआ। मेरे मालक ख़ालक किस बिध नवां घड़ना घाड़न, घड़न भन्नणहार देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं याद दिवस इक्ती हाढ़ा, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। जिस दिन मुहम्मद शरीअत लाया अखाड़ा, शरअ तेरा नाम कलमा नज़री आईआ। काअब्यां बाहर फिरया विच उजाड़ा, जंगल जूह प्रभास देण गवाहीआ। लूं लूं रिहा पुकारा, दरोही कीती बहत्तर नाड़ां, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। मेरे शाहो भूप परवरदिगारा, नूर नुराने नूर अलाहीआ। मेरे अमाम अमामे होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करना रुशनाईआ। धुर पैग़ाम आया ज़बराईल सुणाया नाअरा, हक हक दिता दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं तेरा होवे अन्त किनारा, पाँधी तेरा पन्ध मुकाईआ। तूं निरगुण धार सुण गुफ़तारा, गुफ़त शनीद दए सुणाईआ। उह तक लै तेरा झगड़ा छिड़न वाला विच काहिरा, कहर वरते ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा भेव आप चुकाईआ। इक्ती हाढ़ कहे मुहम्मद बिना स्वास तों भरी आह, हथ्थ पेशानी उत्ते टिकाईआ। बिन नैणां नैण उठा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। बिन हथ्थां कर दुआ, बिन सयदे सीस झुकाईआ। तूं मालक मेरा जल्वागर खुदा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। मेरा लहिणा देणा समझा, धरनी धरत धवल दृढ़ाईआ। झट जबराईल पैग़ाम दिता पहुंचा, संदेशा सहिज सुभाईआ। आपणी उम्मत तक लै राह, नबी रसूल वेख वखाईआ। तेरा लहिणा देणा मुकणा मुकावे आप महिबां, महिबान बीदो आपणा हुक्म वरताईआ। तेरे तेरे नालों होण जुदा, संगी संग ना कोए निभाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तकणा नूर अलाह, आलमीन आप समझाईआ। जो दो जहानां होवे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। तेरा लहिणा देणा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। अमाम अमामा वेस वटा, नूर नुराना डगमगाईआ। नाले बिना कलम तों लेखा दिता लिखा, काग़ज़ शाही रंग ना कोए रंगाईआ। जिस नूं दीन दुनी विच समझे कोई ना, आलम फ़ाज़ल भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे हुण खेल

ना रहिणी लुक दी, लुकमान मैनूं रिहा दृढ़ाईआ। प्रभू दी धार कदे ना रुकदी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अन्त इक्को आवाज़ होणी इक्को नाम कलमे वाली तुक दी, दो जहान करे सनवाईआ। माण वड्याई नहीं किसे जनणी कुक्ख दी, भगत जन्मे कोए ना माईआ। सदी चौधवीं मेरा अन्त अख़ीर खेल वेखीं नंग भुख दी, मुहम्मद शहादत रिहा भुगताईआ। मुहब्बत रहिणी नहीं माँ पुत दी, पिता पूत ना गोद टिकाईआ। खेल वेखणी कलयुग कूड़ कुड़यारी रुत दी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। एह खेल नहीं कोई छुप दी, छप्पर छन्नां सारे वजे वधाईआ। मेरी सदी अख़ीरी आख़र कार होणी लुट्ट दी, धर्म दी धार धार ना कोए जणाईआ। सब दी औंध वेखो निखुटदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा खेल बेनज़ीरी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरे कोल पैग़म्बरां वाली तहरीरी, जिस दा अक्खर सके ना कोए बदलाईआ। मेरे विच शरअ वाली ज़ंजीरी, जिस दी कड़ी सके ना कोए खुल्हाईआ। मेरे विच झगड़ा वेखणा ग़रीब अमीरी, अमरापद दा मालक वेख वखाईआ। मेरे विच खेल तकण शाह हकीरी, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। मेरे विच अन्त नौ खण्ड पृथ्मी होणी दिलगीरी, सत्त दीप सांतक सति ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं कहे पंजवें साल नूं कोई रहिणी नहीं मीरी पीरी, पीरे गौस कुतब बैठण सीस निवाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार नवीं धार करनी तामीरी, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जिस दीन दुनी दी अन्तर निरंतर बदल देणी ज़मीरी, जुग जुग वेख वखाईआ। लेखा जाणे तन वजूद शरीरी, शरीअत डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। इक्ती हाढ़ कहे मेरी नमों नमों डण्डावत, बन्दना विच सीस निवाईआ। मेरे साहिब करनी सख़ावत, वस्त नाम वरताईआ। प्रेम प्यार दी देणी निआमत, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर तेरी ख़ुशीआं वाली होवे क्यामत, कयामगाह रहिण कोए ना पाईआ। तूं मालक ख़ालक इक्को रहें सही सलामत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी मानव ज़ाती होई अणजाणत, परम पुरख परमात्म तेरा भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। इक्ती हाढ़ कहे मैं संदेशा देवां आप, आप आपणा भेव चुकाईआ। पुरख अकाला सब दा माई बाप, पूत सपूते हरिजन आपणे गोद टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जिस दा जाप, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। सो मेटणहारा तीनों ताप, त्रैगुण अतीता आप अख्वाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरुआं संदेशा दिता पात, पत्रका शब्द गुरु शनवाईआ। जो कलयुग अन्त मेटणहारा अन्धेरी रात, सतिजुग सच दे चमकाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ज़ात पात, दीन दुनी आत्म परमात्म समझाईआ। सो पुरख अकाला

७३८
२४

दीन दयाला बणे कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। इक्ती हाढ़ कहे मेरी खुशीआं वाली रात, भिन्नड़ी रैण मिल के वजे वधाईआ। मेरा साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां चरण प्रीती बख्शे नात, मेला मेले सहिज सुभाईआ। नाम निधान श्री भगवान नौजवान बख्शे दात, दाता हो के आप वरताईआ। दर्शन देवे इक इकांत, इक इकल्ला एकँकार नज़री आईआ। अमृत बख्शे बूँद स्वांत, अग्नी तत तत बुझाईआ। लहिणा देणा मुकावे लोकमात, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां पुछणहारा वात, वातावरन वेखे ख़लक खुदाईआ।

✪ पहली सावण शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

नारद कहे मैं वेखण आया प्रविष्टा पहली सावण, की सांवरीआ आपणा खेल खिलाईआ। मैनूं याद आउंदी की संदेशा दे के गया बलि दुआरे बावन, बिन अक्खरां निरअक्खर धार धार विच्चों जणाईआ। की इशारा दिता सीता सति धर्म दी रामन, रम्ईआ आपणा भेव चुकाईआ। की खेल जणाया कृष्णा काहन, घनईया आपणा पड़दा लाहीआ। किस बिध पैग़म्बरां पकड़या दामन, दामनगीर की जणाईआ। किस धार विच्चों गुरु गुरदेव सुणाया नामन, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। चार जुग दा खेल तक्कया जो वखाया श्री भगवानन, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। मेरे अन्तर निरंतर निराकार निरँकार दिता चानन, अन्ध अन्धेर नज़र कोए ना आईआ। बिना शब्दां तों शब्दी धार दिता ज्ञानन, बिना अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। बिना हरफ़ हरूफ़ दस्सया कलमा कलामन, कायनात बाहर समझाईआ। नारद निगाह मार लै कलयुग अन्त अन्धेरा शामन, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। की खेल करे पतित पावन, पारब्रह्म की आपणा हुक्म वरताईआ। भाग लगावे खेड़ा कवण ग्रामन, गृह मन्दिर कवण सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे सुण सावण मित्रा मीत, प्रेमीआ प्रेम विच जणाईआ। मैनूं ढोला दस्सदे गीत, गोबिन्द धार धार समझाईआ। जिस नाल मेरा तन वजूद होवे ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काअब्यां पन्ध देणा मुकाईआ। सति सच दी दस्स प्रीत, प्रीतम मिले चाँईं चाँईआ । ठगौरी रहे कोई ना चीत, चेतन सुरती देणी कराईआ। मेरा मेला होवे नाल त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ। नारद कहे सावणा मेरा पूरब तक लै अरसा, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। जो इशारा दे गया गोबिन्द उत्ते सरसा, जलधारा वहिणां नाल वड्याईआ। जिस वेले सम्मत शहिनशाही इक इक दा आवे बरसा, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निराकार निरँकार देवे दरसा, दीद ईद ईद दीद होवे रुशनाईआ। सूरबीर मर्दाना होवे मरदा, मेहरवान महबूब अगम्म अथाहीआ। जो भगत सुहेला ग़रीब निमाणयां वंडे दर्दा, दुःख भय भञ्जण हो के आपणी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ कत्ल करदा, कातिल मक्तूल दा पन्ध ना कोए मुकाईआ। उस दा दो जहान इक्को नाम निधान दा होवे पर्चा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं भविख्तां विच कीती चर्चा चरागाहां करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे सावणा मेरी वेख लै भिज्ज गई बोदी, बुद्धीवान समझ कोए ना पाईआ। मेरा लेखा तक लै जो नाल वेदी सोढी, सोहणया तैनूं दयां दृढ़ाईआ। निगाह मार लै मेरा लहिणा देणा नाल दीन दुनी दे जोगी, जुगीशरां भेव चुकाईआ। मैं प्रेमीआं प्यारयां बणया नहीं अन्त लोभी, लालच विच ना कोए रखाईआ। मैनूं इयों दिसदा बिना पुरख अकाल तों भगतां चकणा किसे नहीं गोदी, गोदावरी दा कन्ढा गोबिन्द नाल दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे सावण जी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दीआं वेखो धारां, धर्म धर्म धर्म नाल दृढ़ाईआ। नित नवित दीआं वेखो बहारां, रुतड़ी रुतड़ी रुत नाल महकाईआ। की खेल करे करनी दा करता विच संसारा, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। कवण रूप होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। कवण नाम होवे नाअरा, नर नरायण करे शनवाईआ। जिस दा भेव अभेदा गहरा, गहर गवर आपणा पड़दा दए उठाईआ। जिस दा इक्को वसणा खेड़ा, दो जहानां सोभा पाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा बन्न्हणहारा बेड़ा, नईया नौका इक्को नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सावण कहे सुण नारद मीत, सज्जणा दयां जणाईआ। मेरे प्रभू दी सब तों वखरी रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। जिस ने मैनूं कीता ठांडा सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। धुर दी बख्श इक प्रीत, प्रीतम मेला मेलया चाँईं चाँईंआ । मेरी निराकार ने बदली नीत, नीतीवान दिता समझाईआ। जिस दा लेखा नहीं हस्त कीट, कीट कीटां रिहा समाईआ। उसे दे हुक्म विच मेरा वक्त रिहा बीत, बीतिआ हाल दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। सावण कहे नारदा मैं आदि जुगादी ठण्डा, अग्नी

तत ना कोए तपाईआ। मेरा भेव पाए कोई ना पंडा, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ । मेरा लहिणा देणा लेखा जुग चौकड़ी विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। मैं सच दस्सां मेरे दिवस गोबिन्द पहली वार म्यान चों खिच्चया खण्डा, खड़ग जगत नेत्रां जणाईआ। नाले खुशीआं विच तूं मेरा मैं तेरा गाया छन्दा, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। मेरे प्यार विच पहले दिन माधो बैरागी प्रभू दी याद विच लग्गा बन्दा, बन्धन दीन दुनी तुड़ाईआ। सावण कहे नारदा मेरा लहिणा देणा लेखा नाल पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। मैं सच दस्सां मेरे दिवस रवीदास दा कबूल होया कसीरा विच गंगा, कीमत कौडीआं वाली पाईआ । मेरे दिवस सतिगुर नानक निराकार निरँकार छुहाया पंजा, पंज आब दी धार नाल वड्याईआ। मेरे दिवस तूं मेरा मैं तेरा गीत गाया परी अरम्भा, चौदां रत्नां विच्चों मिली माण वड्याईआ। मेरे त्योहार विच मुहम्मद याद कीता नूर अलाह यक शंभा, शबे रोज़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। सावण कहे नारदा मैं आदि जुगादि प्रभू प्यार विच तरसदा, प्रेमीआ तैनूं दयां जणाईआ। मैं वणजारा जुग चौकड़ी इक्को बरस दा, अगे वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे साहिब स्वामी मेरे अमृत अन्तर बरसदा, मेघ मेघला नाम जणाईआ। मेरा लेखा मुके जगत जहान हरस दा, हवस अगे ना कोए बणाईआ। मेरा इक्को इशारा जुग चौकड़ी कलयुग अन्तिम वाली ग़रज़ दा, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। प्रभू तेरा खेल तकणा जोद्धे सूरबीर मर्दाने मर्द दा, बलधारी तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा लेखा वेखणा नव सत्त ग़रीब निमाणयां दर्द दा, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। खेल तकणा शरअ छुरी वाली करद दा, करनी दे करते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। नारद कहे सावणा मेरे अन्तर आई भाख, भाख्या दयां जणाईआ। बेशक मैं पंडत पुराणा बड़ा गुस्ताख़, गुस्से अन्दर आपणी लवां अंगड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग प्रभ दी धार बणया रिहा शाख़, नित नवित आपणा फेरा पाईआ। सच संदेशा बिन अक्खरां देणा आख, सहिज नाल दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे नाल वेख लै रास, नव सत्त नच्चे टप्पे वाहो दाहीआ। धर्म रिहा ना किसे पास, पासा दीन दुनी गई बदलाईआ। पवित्र रिहा ना पवण स्वास, साह साह ना प्रभू ध्यान लगाईआ । बिन हरि नामे ख़ाली दिसे लाश, सच रंग ना कोए रंगाईआ। मेरा अन्तष्करन होया उदास, हैरानी विच मेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे सावणा दीन दुनी वेख लै तपदी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। प्रभू दा नाम रसना बुल्ह्लां नाल सृष्टी जपदी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जगत माया रूप बणी सप्प दी, मोह विकारा डंग चलाईआ।

मुहब्बत रही ना किसे परमेश्वर पति दी, पारब्रह्म प्रभ मिलण कोए ना पाईआ। सृष्टी प्यासी हो गई पिता पूत रत दी, प्रेम रंग ना कोए रंगाईआ। वड्याई रही ना धीरज जत दी, साध सन्त सति विच ना कोए समाईआ। मैथों ख़बर सुण लै इक सतिगुर शब्द वाले ख़त दी, जो बिन अक्खरां रिहा दृढ़ाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं होणी टपदी, टापूआं विच पए दुहाईआ। मुहम्मद दी उम्मत होणी छपदी, चन्द सितार देण गवाहीआ। नव खण्ड पृथ्मी बेड़ी चढ़नी पप दी, शौह दरया पार ना कोए कराईआ। सब दी झोली दिसणी सख दी, सच वस्त ना कोए टिकाईआ। उस वेले खेल करनी प्रभू प्रतख दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सावण कहे नारदा मैं खुशीआं दे विच चढ़या, चढ़दा लहिंदा वेख वखाईआ। मैं शब्द दा निरअक्खर धार अक्खर पढ़या, बिन जगत विद्या दयां समझाईआ। जो लेखा जाणे चोटी जड़या, चेतन आपणा भेव जणाईआ। जो सति सरूप शाहो भूप निरगुण धार दिसे खढ़या, जोती जाता पुरख बिधाता नज़री आईआ। जिस निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा पल्लू आपे फड़या, दूजा संग ना कोए बणाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग अन्तिम तोड़नहारा हँकार गढ़या, हउमे हंगता दूर कराईआ। मैं उसे दी सरन सरनाई परया, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सावण कहे नारदा मैं अक्खर वेख्या अनडिठ, जगत पट्टी नज़र कोए ना आईआ। जिस दी लम्बाई सवा गिठ, जगत बालिशत वंड ना कोए वंडाईआ। जिस विच पुरख अकाला दीन दयाला बदल के बैठा पिठ, करवट आपणी आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अपणी पूरब हथ्थ विच लै के चिट, सनमुख हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खलाईआ। सावण कहे नारदा मेरी वेख लै बूँदा बांदी, प्रभू दिती माण वड्याईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी पाँधी, बिन कदमां चलां चाँईं चाँईंआ। मेरी आशा तूं मेरा मैं तेरा रही गांदी, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। मेरी आशा प्रभ दे दर दी रही बांदी, बन्दना विच सीस निवाईआ। मैं खेल तकां दुनिया विच सूर गाँ दी, ग़रीब निमाणयां ध्यान लगाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई काँ दी, हँस रूप नज़र कोए ना आईआ। पत रही नहीं किसे माँ दी, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। वड्याई रही ना किसे बांह दी, बाहू बल ना कोए चतुराईआ। शहिनशाही नज़र ना आए कोई न्याँ दी, इन्साफ़ हक ना कोए कमाईआ। वड्याई रही नहीं प्रभू दे नाँ दी, नर निरँकार मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ। सावण कहे नारदा मेरा वक्त

सुहञ्जणा आया, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। जिस निरगुण धार रंग रंगाया, अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ। मेरा मेला मेलया सहिज सुभाया, सतिगुर शब्द नाल जुड़ाईआ। जिस आपणा भेव चुकाया, पर्दा चार कुण्ट उठाईआ। मैं निव निव लागां पाया, कदम बोसी विच सीस निवाईआ। मेरा मालक ख़ालक धुरदरगाहया, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस ने सीतल धार अमृत मेघ बरसाया, मेरी अग्नी तत बुझाईआ। मैं उसे दा शुकर मनाया, मनसा उसे चरण टिकाईआ। जो शब्द संदेशा रिहा सुणाया, अणसुणत रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खलाईआ। सावण कहे नारदा प्रभ संदेशा देवे हक, हकीकत विच्चों जणाईआ। जिस विच नहीं कोई शकवा शक, शकूक रिहा मिटाईआ। उठ के बिना नैणां तों तक, बिन अक्खीआं अक्ख खुल्हाईआ। की खेल करे परमेश्वर पति, पारब्रह्म की आपणी कार भुगताईआ। जिस दीन दुनी दी वेखणी मन मति, मन बुद्धी खोज खुजाईआ। किस बिध नव सत्त उबले रत, ततव तत तत तपाईआ। उह जानणहारा मित गत, सब दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे सावणा मैं प्रभ दी तकी शक्त, जगत शख़्सीयत समझ कुछ ना आईआ। जिस ने तेरा सुहञ्जणा कीता वक्त, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। उस ने हरिजन उधारने भगत, भगवन हो के दया कमाईआ। जिस दा सुहञ्जणा होया वक्त, सोहणा रंग रंगाईआ। उह मालक ख़ालक बण के वाली अर्श, अर्शी प्रीतम हो के वेख वखाईआ। किरपा करे मेहरवान हो के उत्ते फ़र्श, फ़र्शे ख़ाकी रंग रंगाईआ। हरिजन दे के आपणा दरस, नूरी चन्द दए चमकाईआ। जिस दा ख़ुशीआं वाला होवे बरस, दिवस रैण आपणा रंग वखाईआ। तेरे उत्ते करे तरस, रहमत सच सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सावण कहे नारदा मेरा प्रभू धुर दा माई बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। उस अगे बेनन्ती कर तूं आप, आप आपणा सीस निवाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी सृष्टी दृष्टी अन्दर दस्स दे इक्को जाप, दूसर अक्खर ना कोए वड्याईआ। मेहरवाना श्री भगवाना त्रैगुण माया मेट दे ताप, अग्नी तत तत बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म तेरा होवे जाप, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन दुनी मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी लेखे ला लै अज्ज दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। लेखा लिख दे धुर दे शब्द नाल शाही कलम दुआत, कायनात दे मालक आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा भगत तेरा प्रेम होवे नात, रिश्ता अवर ना कोए रखाईआ। अमृत बूँद बिन रसना दे दे स्वांत, निझर झिरनिउँ आप झिराईआ। सच स्वामी हरिजन कर दे आप इकांत,

इक इकल्ले आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। सावण कहे नारदा प्रभू बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मनसा आपणे नाल रखाईआ। जो आदि जुगादी हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दा जोत अगम्मी नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। निरगुण सरगुण खेल खेलणा जिस दा दस्तूर, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। उस लहिणा देणा पूरा करना जो मूसा आसा रख के गया उत्ते कोहतूर, तुरीआ दी धार वेख वखाईआ। जो ख़्वाहिश रखी अन्त सूली चढ़न लगे मनसूर, मनसा प्रभ दे चरण टिकाईआ। जो ईसा पैग़ाम दिता मेरा बाप आवे ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। मुहम्मद ज़मींउल ज़ुवा जवले अज़ कहि के कीता मशहूर, मशवरा कलमा नाम जणाईआ। नानक गोबिन्द धार खेल तक के चरण हज़ूर, चरणोदक बिन रसना मुख चुआईआ। सो मस्ती देवणहारा नाम सरूर, सुरती शब्द विच मिलाईआ। जन भगतां आशा मनसा करे पूर, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। अन्दरों गढ़ तोड़े ग़रूर, गुरबत कूड़ बाहर कढ्ढाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, घर घर विच करे रुशनाईआ। मनुआ मन ना पाए फ़तूर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सावण कहे नारदा पुरख अकाल दया कमावेगा। भगत सुहेले वेख वखावेगा। गुर चेले मेल मिलावेगा। सज्जण सुहेले रंग रंगावेगा। अचरज खेल अगम्मा खेले, सतिजुग सति सति प्रगटावेगा। जो वसणहारा धाम नवेले, सो धरनी धरत धवल धौल डेरा लावेगा। जिस दा लहिणा लेखा समुंद सागर टिले पर्वत जंगल बेले, जूहां जगत जहान फोल फुलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साचा संग निभावेगा। हरि साचा संग निभाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। भगत सुहेले वेख वखाएगा। जन्म जन्म दे लेख बदलाएगा। मस्तक ला के आपणी मेख, नूरी चन्द चन्द रुशनाएगा। जिस झगड़ा मेटणा मुल्ला शेख़, मुसायकां आपणा हुक्म वरतावेगा। सो वस के सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाएगा। कलयुग अन्त बण के नर नरेश, नर नरायण हुक्म वरताएगा। जिस लहिणा देणा पूरा करना विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, गणपति आपणी गंढु बंधाएगा। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दर ते होणे पेश, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखाएगा। जिस कलयुग अन्त मेटणा कूड़ कलेश, कलाधारी आप हो जाएगा। जो इशारां दे के गया दस दस्मेश, दहि दिशा फोल फुलाएगा। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हमेश, हम साजण इक अख्वाएगा। जिस दी सिफ्त वड्याई करदा सहँसर मुख शेष, दो सहँसर जिह्वा संग रखाएगा। उस दा अवल्ला सब तों तक लै भेस, भेखाधारी इक अख्वाएगा। जिस दीन दुनी तकणी मलेछ, नव सत्त फोल फुलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाएगा। मेरी सुहञ्जणी तक लै रुत, रुतड़ी प्रभ दिती महकाईआ। मैं बेनन्ती करां अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म दर तेरे सीस निवाईआ । किरपा निधान श्री भगवान भगत सुहेले बणा लै आपणे सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। आत्म धार तेरे दुलारे पुत, पिता पूत लै गल लाईआ। कूड़ी क्रिया इन्हां दे अन्दरों जड़ पुट्ट, पटने वाल्या आपणा खेल खलाईआ। आत्म धार परमात्म तेरे नालों जाए ना टुट्ट, टुटयां आपणी गंढु पुआईआ। लख चुरासी आवण जाण विच्चों जाण छुट, जम की फाँसी देणी कटाईआ। राय धर्म लए ना पुछ, चित्रगुप्त दा लेख मुकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले सब कुछ तेरे कोल आपणा नाम दे दे कुछ, कछ मछ दी धार देवे गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। सावण कहे प्रभू मेरी बेनन्ती वाली अगम्मी बोली, बिन रसना जिह्वा दयां सुणाईआ। मेरी आशा तेरे दर दी गोली, सेवक चाकर हो के सेव कमाईआ। तूं परम पुरख परमात्म सच कंडे तराज़ू तोलीं, अतोल अतुल तेरे हथ्थ वड्याईआ। अमृत धार अंमिओं रस आपणा भण्डारा खोल्हीं, ख़ालक ख़लक देणा वरताईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती बख़्शणा नाभी कवली, नाभ कवल कवल खुल्हाईआ। नौ दुआरयां तों बाहर आपणी धार विच मौलीं, मौला हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सावण कहे मेरे प्रभू जन भगतां पकड़ लै दामन, दामनगीर आप अख्वाईआ। दर्शन दे दे आहमन साहमन, आत्म परमात्म मिलके वजी वधाईआ। सुरती शब्दी तेरा नाद होवे धुन कानन, अनहद नादी नाद जणाईआ। तृष्ना रहे ना कामनी कामन, पंच विकार ना रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे शामन, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। तूं साहिब स्वामी मेरा गौड़ ब्राह्मण, ब्रह्म विद्या तेरी होवे पढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी पतित पावन, पतित पुनीत हरिजन देणे कराईआ। मैं बेनन्ती करदा पहला प्रविष्टा सावण, निव निव सीस निवाईआ। उह आसा पूरी कर दे जो रख के गया बावन, शुकर प्रोहत पंडत नाल मिलाईआ। जन भगतां नाम संदेशा सुणा दे बिना कानन, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। अन्तर निरंतर तेरा सुख माणण, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। दर दुआरे एकँकारे तेरा जानण, जानणहार देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। सावण कहे प्रभू जन भगतां चोले रंग दे, नाम मजीठी रंग चढ़ाईआ। जो तेरे दर दे मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्यारे बणा लै आपणे अंग दे, अंगीकार आप अख्वाईआ। अमृत सरोवर बख़्श दे धारा गंग दे, निझर झिरने आप झिराईआ। पड़दे लाह दे ब्रह्म हँ दे, हँ ब्रह्म आप समाईआ। पैंडे रहिण ना चुरासी वाले पन्ध दे, आवण जावण गेड़

देणा चुकाईआ। जन भगत सुहेले वणजारे बणा लै आपणे छन्द दे, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाईआ। घर नज़ारे बख्श दे अनन्द दे, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सुख दे दे काया माटी बन्द बन्द दे, बन्दगी इक्को नाम जणाईआ। किरपा निधान जन भगतां टुट्टी गंढु दे, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। सावण कहे मेरे पुरख अकाले हर हिरदे नाम ठण्ड दे, कलयुग आपणी अग्न बुझाईआ। झगड़ा मेट दे तत पंज दे, पंचम शब्द कर शनवाईआ। लेखे रहिण ना ग़मी रंज दे, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। लहिणे पूरे कर दे नेत्र नीर वाले हंझ दे, हंझूआं वेखणा थांउँ थाँईंआ। विछोड़े रहिण मूल ना आत्म धार रंड दे, कन्त सुहागी लैणा परनाईआ। मेहरवान हो के सावण कहे जन भगतां आपणा प्रेम प्यार वंड दे, काया मन्दिर अन्दर आप टिकाईआ। उह तक लै मैनूं इशारे मिलदे की लेखे होणे दीन दुनी जंग दे, चार कुण्ट कुण्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सावण कहे प्रभू जन भगतां मेट दे तृष्ना तृख, हरिजन तृप्त दे कराईआ। सब दा बदल दे भविख, पेशतर आपणा हुक्म सुणाईआ। धुर दा हुक्म दे लिख, जिस नूं मेट सके कोए ना राईआ। चार वरन अठारां बरन आत्म धार बणा लै सिक्ख, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। मेहरवान हो के पा दे भिक्ख, भिच्छया आपणा नाम वरताईआ। नव नव दी धार पैणा दिस, दहि दिशा कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सावण कहे प्रभू जन भगतां वेख लै काया मन्दिर, साढे तिन्न हथ्थ ध्यान लगाईआ। बजर कपाटी तोड़ दे जंदर, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। प्रकाश कर दे डूँग्घी कंदर, जोती जाता डगमगाईआ। मनुआ दहि दिशा ना धावे बन्दर, मनसा कूड़ ना होए हल्काईआ। तेरे चरण कवल इक्को होवे बन्दन, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। शरअ कूड़ कट दे फंदन, रस्सी तन्द ना कोए बंधाईआ। चरण धूड़ मस्तक ला दे चन्दन, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। तेरे भगत सुहेले दरगाह साची तेरा दुआरा लँघण, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग अन्तिम लाउणा अंगण, अंगीकार आप हो जाईआ। उह लेखा तक लै जो गोबिन्द इशारा दिता कवी बवंजन, बावन आपणी खेल खलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत सुहेले जननी कुख फेर ना जम्मण, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। सावण कहे जन भगतो मेरा साहिब स्वामी सच, सच सच दृढ़ाईआ। जो लूं लूं अन्दर जाए रच, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ। जो शब्दी धार हो के पए नच, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। जो भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ देवे सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सावण कहे जन भगतो प्रभ बदलण वाला रुख़, करवट लए बदलाईआ। आत्म अन्तर अन्तर सब नूं दे दे सुख, सुख सागर विच समाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के दुःख, दलिद्रां डेरा ढाहीआ। सुफल कराए जनणी कुख, भेव चुकाए थांउँ थाँईआ। जिस दी धार नाल पूरब जन्म गए रुठ, रुस्सयां लए मनाईआ। तुहाडे उपर रिहा तुठ, मेहरवान हो के होए सहाईआ । तुहानूं खोजे धरनी वाली चारे गुठ, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण फोल फुलाईआ। मेल मिला के शब्दी शब्दी धार फड़ के गुट, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। सच प्रीती निरगुण ना जाए तुट, टुटयां मेल मिलाईआ। तुहाडा भाग ना जाए निखुट, खोटे खरे आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। सावण कहे जन भगतो तुहाडा कटे हउमे रोग, हंगता कूड़ दए चुकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के साचा जोग, जुगती शब्द शब्द समझाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच साडी सेजा वेखे भोग, भस्मड़ आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण नाल निरगुण मिल के मानणी मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ । मेहरवान हो के तुहानूं दर्शन देवे रोज़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां करे चोज, चोजी प्रीतम हो के वेख वखाईआ। भेव खुल्हाए गोझ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तुहाडा चुरासी वाला चुक के बोझ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। दर्शन देवे आप अमोघ, आप आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। सावण कहे जन भगतो तुहाडी वेखणहारा सुरती, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। उह मालक अकाल मूर्ती, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। उह नाद सुणा दए तूरती, तुरीआ तों बाहर करे शनवाईआ। जिस दी खेल हाज़र हज़ूर दी, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन आशा लेखे लावे मूर्ख मूढ़ दी, चतुर सुघड़ सुचज्जे सुजान श्री भगवान आप बणाईआ।

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत ११ हरजीत सिँघ दे नवित हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा आप प्रभ, हरि करता एका एकँकार। जन भगत सुहेले लए लभ, जुग जुग खेल सची सरकार । लहिणा देणा दीन दुनी जाणे अब, सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखे वेखणहार। मेल मिलावा करे शब्द सबब, दूजा समझे ना कोई विच

संसार। अमृत झिरना झिराए कवल नभ, बूँद स्वांती बख्शे ठण्डी ठार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साजण मीत मुरार। सतिगुर साचा आप प्रभ, परम पुरख करतार। जन भगत सुहेले दर लए सद्द, शब्दी नाद दे धुन्कार। दीन दुनी पार कराए हद्द, गृह मन्दिर अन्दर कर उज्यार। आत्म परमात्म बणाए आपणी यद, बंस सरबंस देवे आप अधार। शब्द अगम्मी सुणाए नद, धुन आत्मक राग मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक एकँकार। सतिगुर साचा साहिब आप, हरि करता धुरदरगाहीआ। शब्द अगम्मी जिस दा जाप, नाद नाद करे शनवाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी प्रताप, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। जो मेटणहारा ज़ात पात, दीन मज़्ब पन्ध मुकाईआ। आत्म ब्रह्म जणाए साची ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नाम निधाना बख्शे दात, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। बिन रसना जिह्वा करे बात, बातन पड़दा दए खुल्हाईआ। लहिणा देणा वेखे लोकमात, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। हरि जू बख्शे बूँद स्वांत, अमृत रस रस चखाईआ। देवे दरस इक इकांत, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरा हरि साहिब स्वामी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, घर घर बैठा सोभा पाईआ। निरगुण धार सदा निहकामी, निरवैर नूर अलाहीआ। शब्द अगम्मी जिस दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। अमृत रस सरोवर बख्शे ठण्डा पाणी, अंमिओं रस जाम आप प्याईआ। चार जुग दे शास्त्र जिस दी कथा कहाणी, अक्खर अक्खर मिल के ढोला गाईआ। शाहो भूप उह सुल्तानी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो भगतां उत्ते करे मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ । पन्ध मुकावे चारे खाणी, चारे बाणी रंग रंगाईआ। मंज़ल दे के इक रूहानी, रूह बुत करे रुशनाईआ। सच दुआर चरण कवल देवे माणी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादी एक, दूसरा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां बख्शणहारा टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। बुद्धी करनहारा बिबेक, दुरमति मैल धुआईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत गुआईआ। जन्म जन्म दी बदल के रेख, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। सति सच दा दे संदेश, सुत्तयां लए उठाईआ। मालक हो के नर नरेश, नर नरायण दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द सदा सदा दातार, देवणहार इक अख्वाईआ। पूरन गुर लए अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जन भगतां अन्तर पावे सार, सृष्टी दृष्टी अन्तर वेख वखाईआ। जिस दा लहिणा देणा

७४८
२४

सदा जुग चार, चौकड़ी आपणा रंग रंगाईआ। सो कलयुग अन्तिम वेखे वेखणहार, बिन नैणां नैण उठाईआ । हरि भगत सुहेले लए उभार, फड़ बाहों आप जगाईआ। चरण कवल दे अधार, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। किरपा करे बख्शणहार, बख्शिश रहमत झोली पाईआ। भगत सुहेले बणा के मीत मुरार, मित्र प्यारा हो के वेख वखाईआ। लहिणा देणा पूरा करे पुरख नार, नर नरायण आपणे रंग रंगाईआ। भगत वछल बण गिरधार, गिरवर हो के वेख वखाईआ। सो भगतन मीता आदि जुगादी ठंडा ठार, अग्नी तत बुझाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन फड़ फड़ लए तार , पार किनारा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरा सदा सदा मेहरवाना, मेहरवान इक अख्वाईआ। जुग जुग भगतां देवे दाना, नाम निधाना झोली पाईआ। सति धर्म दा बख्श निशाना, मार्ग इक्को इक वखाईआ। भाग लगाए काया मन्दिर हक मकाना, काअबा धुर दा वेख वखाईआ। मेहरवान महबूब होए मेहरवाना, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। हरिजन मेला मेले विच जहाना, जहालत कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। साचा बख्श के नाम निधाना, निरगुण धार दए समझाईआ। चरण कवल कर प्रणामा, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। सो शाहो भूप सुल्ताना, हरि करता इक अख्वाईआ। जो भगत सुहेले करे परवाना, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सदा सदा सद बख्शे चरण धूड़ इश्नाना, दुरमति मैल आदि जुगादी दए गुआईआ।

७४६
२४

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत ११ सुरिंदर सिँघ करनाल वाले दे नवित
हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मैं निगाह मारी उत्ते गगन, गगनंतर परे तकां जोत नूर नूर अलाहीआ। जिस दे प्यार विच सति सरूप होई मग्न, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप आपणा रंग रंगाईआ। जां निगाह मारी भगत सुहेले मेरे उत्ते दीपक जगण, जोती जाते पुरख बिधाते दिती माण वड्याईआ। मेरी खुशी विच बुझ गई अन्तर अग्न, अन्तष्करन अंमिओं रस दिता चुआईआ। मेरा तन वजूद माटी ख़ाक पवित्र होया बदन, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नर नरायण निराकार निरँकार मेल मिल्या इक्को सज्जण, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हरि करता धुरदरगाहीआ। मैं मूर्ख मूढ़ चरण धूड़ कीता मजन, दुरमति मैल नव सत्त लई धुआईआ। मेरे अन्दर अगम्मी नाद लगे वजण, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। बिन रसना

जिह्वा नाम लग्गी जपण, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फेर निगाह मारी गुरमुख सन्त सुहेले वेखे रत्न, अमोलक हीरे सोभा पाईआ। जिन्हां दा इक्को घाट दुआरा पतण, दूजा तट किनार ना कोए रखाईआ। मैं खुशीआं नाल लग्गी नठण, दिवस रैण भज्जी वाहो दाहीआ। झट सतिगुर शब्द बिन रसन सुणाया बचन, धुर संदेशा इक जणाईआ। कलयुग काया माटी वेख लै कंचन, अन्त रहिण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं विच होई खुशहाल, खुशी प्रभ ने दिती वरताईआ। हरि भगत सुहेले धुर दे तके लाल, गुर चेले इक्को रंग रंगाईआ। सति सच धर्म दी वेख धर्मसाल, धर्म दुआरा सोभा पाईआ। जिथ्थे जोती जाता वसे पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणा डेरा लाईआ। जिस दे हुक्म विच मेरे उत्ते फिरदे काल महाकाल, दिवस रैण आपणा पन्ध मुकाईआ। उह वेखणहारा दीन दुनी शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा भेव चुकाईआ। जो मेरी सुरत लए संभाल, सम्बल दा मालक नूर अलाहीआ। मेरा दीना बंधप दीन दयाल, दया निध ठाकर इक अख्वाईआ। मेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी लेखे लावे घाल, घायल हो के सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरा करे सवाल, आसा मनसा सब दी आपणे चरण टिकाईआ। मैनूं कूड़ी क्रिया विच्चों करे बहाल, माया ममता मोह दा डेरा ढाहीआ। चरण कवल सरोवर अमृत वखाए अगम्मा ताल, जिस दी जल थल महीअल वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी बेनन्ती मंने हल्ल करे सवाल, सिर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं दे विच हसदी, हस्ती तकां धुरदरगाहीआ। बिना कदमा तों नसदी, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी आशा भरी जस दी, बिन रसना ढोले गाईआ। जिस रैण मेटणी अन्धेरी मस दी, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। मैं भगतां फिरां दस्सदी, ढोले सुणावां थांउँ थाँईंआ। मेरे साहिब दी महिमा अकथ दी, कथनी कथ ना कोए जणाईआ। जिस खेल मुकाउणी कलयुग कूड़े रथ दी, रथवाही रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग जीवां आसा पूरी होणी सीआं साढे तिन्न हथ्थ दी, रविदास चमारा दए गवाहीआ। कला वरतणी पुरख समरथ दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वड्याई रहिणी नहीं तीर्थ अठसठ दी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रही कुरलाईआ। आसा पूरी होणी मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दी, गुरुदुआर चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ। मैं परम पुरख परमात्म चरण कवल ढठदी, निव निव लागां पाईआ। मेरे उत्ते वड्याई बख्श देवे मानव ज़ाती इक्ठ दी, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। खेल वखा दे आपणी उलटी लठ दी, जगत जहान दे भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा इक रखाईआ। धरनी

कहे मैं खुशीआं गावां ढोले, बिन रसना जिह्वा दो जहान सुणाईआ। मेरे धर्म धार दे सोहले, दीनां मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं संदेशा देवां मेरा स्वामी हर घट मौले, मौला रूप नूर अलाहीआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरे करने कौले, वायदे पिछले वेख वखाईआ। सो सच स्वामी अन्तरजामी पूरा तोल तोले, कंडा नाम तराज़ू इक उठाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणे रौले, रौल पांधा समझ किछ ना आईआ। खुशी नाल हस के कहे धौले, धरनी धरत नाल वड्याईआ। सच दुआर एकँकार मेरे उत्ते पुरख अकाला खोल्ले, ख़ालक खलक आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं विच होई मस्तानी, मस्ती नज़र किसे ना आईआ। मेरी आशा अगम्म पुराणी, पुराण वेद समझ किछ ना पाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा दो जहानी, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक नुरानी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो मेहरवान महबूब मेरा बणे बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस दी मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत दए समझाईआ । उह मालक ख़ालक आलमे जावदानी, दो जहानी आपणा रंग रंगाईआ। जो मेरी मंज़ल करे आसानी, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे तुग्यानी, शाह सुल्तान दा डेरा ढाहीआ। सति धर्म दी मैनूं देवे निशानी, निशाने कलयुग कूड़ बदलाईआ। जिस नूं ईसा किहा मेरा बाप आवे असमानी, इस्म आज़म इक दरसाईआ। मुहम्मद पढ़ के कलमा कलामी, कायनात रिहा दृढ़ाईआ। नानक निरगुण सरगुण धार कीती परवानी, परम पुरख भेव चुकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मेरे उत्ते करे मेहरवानी, मेहरवान दया कमाईआ। जन भगत सुहेले सतिगुर शब्द करे पहचानी, बेपहचान आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं गावां गीत, ढोला इक्को गोबिन्द माहीआ। मैनूं भगत सुहेले मिल गए मीत, मित्र प्यारा इक्को धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी बदले नीत, नीतीवान इक अख्वाईआ। जो हरिजन वस्या सदा चीत, चित वित ठगौरी दए गुआईआ। जिस झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काया काअबे करे रुशनाईआ। मैं तक के त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी सीस निवाईआ। मेरी काया काया होई ठांडी सीत, अग्नी तत तत गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा दिसदा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। जो निरगुण धार हो के भगतां लेखे लिखदा, जगत कलम शाही ना कोए चतुराईआ। जिस भगत सुहेला रूप प्रगटाया गोबिन्द धार सिख दा, सतिगुर आप रंग रंगाईआ। जगत नेत्र लोचन नैण किसे ना दिसदा, जगत अक्खीआं नज़र कोए ना आईआ। उह रूप अनूपा धार

अगम्मे पित दा, पतिपरमेश्वर हो के होए सहाईआ। जो भगतां दी आत्म सेजा लिटदा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जिस झगड़ा मिटाया पत्थर इट्ट दा, पाहनां करी सफ़ाईआ। धरनी कहे मैनूं सहारा उसे इक दा, जो एकँकार नूर अलाहीआ। जिस दी चरण सरन अवतार पैग़म्बर टिकदा, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। उह मेरा मालक ख़ालक स्वामी अन्तरजामी नित दा, नवित आपणा हुक्म समझाईआ। जो मेरा लहिणा देणा लेखा जाणे वार थित दा, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां अन्तर निरंतर आपणे अमृत धार नाल सिंच दा, अमृत मेघ आप बरसाईआ। आपणा भेव चुकावे विच दा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सतिगुर शब्द हो के भरया होवे प्रेम हित दा, हितकारी इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल खेले अगम्मे पित दा, पतिपरमेश्वर हो के आपणा हुक्म समझाईआ।

✪ २४ सावण शहिनशाही सम्मत ११ अर्जन सिँघ दे गृह पिण्ड सलीम पुर ज़िला कपूरथला ✪

सावण कहे मेरा प्रविष्टा चवी, चौबीसा हरि जगदीशा देवे माण वड्याईआ। सच दी धार एकँकार ब्रह्मा सुत दुलारे गवी, सन्त कुमार सोहला ढोला धुरदरगाहीआ। मेरी याद विच प्रभू दा दरस पाया रवीदास रवी, बिन जगत नेत्र लोचन नैणां वेख वखाईआ। मेरी आशा विच खेल कीता बवन्जा कवी, गोबिन्द धार धार वड्याईआ । मैं भेव अभेदा खोल्हां ख़बर दस्सां इक नवीं, नव सत्त दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सावण कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा चंगा, चारों कुण्ट खुशी बणाईआ। मेरी अमृत धार तके गंगा, यमुना सरस्वती गोदावरी नाल मिलाईआ। मेरा भेव अभेदा खोल्हे सूरा सरबंगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरा आदि जुगादी पिछला पन्ध रिहा ना लम्बा, लमह लमह प्रभ दे लेखे लाईआ। मेरे अन्तष्करन निझर धारों आए अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मेरा प्रकाश बिना सूर्या चन्दा, जोती जाता दए चमकाईआ। मैं दीन दुनी जगत जहान दी मंज़ल लँघा, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। मैं दर्शन पावां शाहो भूप सूरा सरबंगा, पुरख अबिनाशी घट निवासी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। सावण कहे मेरा खेल वेखो चौबीसा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरा लहिणा देणा बिन जगत धार हदीसा, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा रंग कूड़ी क्रिया कलयुग नहीं उनीसा, इक नौ संग ना कोए बणाईआ। मैं भेव अभेदा खोल्हां राग छतीसा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सावण कहे सच दा मालक एकँकारा इक गोबिन्द, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धार समाईआ । मेरी आदि जुगादी मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा रहिण कोए ना पाईआ। मेरा मालक ख़ालक स्वामी होए गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर बेनज़ीर गवर इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादी जुग चौकड़ी लख चुरासी निरगुण सरगुण धार जिस दी बिन्द, चारे खाणी सोभा पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मेहरवाना बण बख़शिंद, बख़्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेटे चिन्द, मेहरवान सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । सावण कहे मेरा पर्दा चुक्कया अन्तष्करन, भेव अभेद दिता जणाईआ। सच स्वामी तकी अगम्मी सरन, सरनगति इक रखाईआ। मेरा खुल्ल्ह्या हरन फरन, बिन नैणा नेत्र होई रुशनाईआ। मैं बिन अक्खरां लग्गा पढ़न, बिन हरफ़ हरूफ़ पढ़ाईआ। बिन कदमां मंज़ल लग्गा चढ़न, पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। मेरा लहिणा देणा बिन सीस धड़न, तन वजूद ना कोए रखाईआ। मैं सच दुआर लग्गा वड़न, जगत दरवाज़ा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

७५३ कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चवी सावण कहे मैं सुणावां अगम्म सलोक, सोहला धर्म धार ७५३

२४ दृढ़ाईआ। मैं निगाह मारी चौदां लोक, परलोक भेव रिहा ना राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अवतार पैग़म्बर गुर संदेशे देंदे कोटी २४

कोट, कोटन कोटि रहे जणाईआ । सतिगुर शब्द शब्द नगारे लावे चोट, चोटी चढ़ के धुर दा माहीआ। जिस दा मेला नाल निरगुण धार जोत, जोती जाता वेख वखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी एकँकारा इक्को बहुत, दो जहानां श्री भगवाना नज़री आईआ। जिस दी आत्म धार अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी गोत, दूसरा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सावण कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा लोकमाती, मेहरवान दए वड्याईआ। मेरी भिन्नड़ी रैण खुशीआं वाली राती, रुतड़ी भगतां नाल महकाईआ। मैं प्रभू दा खेल तकां बहु भांती, बहु बिध आपणा रंग रंगाईआ। रूप अनूपा वेखां कमलापाती, पतिपरमेश्वर रिहा दृढ़ाईआ। बिन नेत्र नैणां मारां झाती, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। सच धर्म दी दिसे ना कोए प्रभाती, प्रभू रंग ना कोए समाईआ। नव सत्त दीपक दिसे ना कोए जोती जाती, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सावण कहे मेरा पुरख अकाला धुर दा संगी, सगला संग निभाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जो साहिब सुहेला इक इकेला जन भगतां लाए

अंगी, अंगीकार इक अख्वाईआ। पुश्त पनाह पिठ होण ना देवे नंगी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दे प्यार विच जुग चौकड़ी लँघी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जया वाहो दाहीआ। उह साहिब सुल्ताना नौजवाना सूरा सरबंगी, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जिस दी सतिगुर शब्द नाल संधी, लेखा लिख्या धुरदरगाहीआ। उह कलयुग अन्त दीन दुनी मेटे शरअ पाबन्दी, मज़्बी वंड ना कोए रखाईआ। लहिणा देणा जाणे प्रकृती पंझी, पंचम तत रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सावण कहे मेरा साहिब सतिगुर ठण्डा, पुरख अकाला नज़री आईआ। जिस ने जुग चौकड़ी पाईआं वंडां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी वंड वंडाईआ। सो कलयुग अन्त भगवन्त सदी सदीवी वेखणहारा कन्ढा, धरनी धरत धवल धौल खोजे चाँईं चाँईंआ। जिस दा सतिगुर शब्द हुक्म फेरे विच ब्रह्मण्डा, ब्रह्मांड आपणा हुक्म वरताईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज आपणा खेल खलाईआ। उह शाहो भूप शहिनशाह सूरा सरबंगा, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सावण कहे मेरा सतिगुर पुरख स्वामी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी अन्तरजामी, दो जहानां वेखे थांउँ थाँईंआ। जो निरगुण धार सचखण्ड निवासी सदा निहकामी, निहचल आपणा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी सारे कटदे रहे ग़ुलामी, हुक्मे अन्दर हुक्मी सेव कमाईआ। उह शाहो भूप सुल्तानी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस ने पैग़म्बरां दिते पैग़ामी, धुर कलमा नाम दृढ़ाईआ। उह खेले खेल जगत जहान तमामी, तमअ आपणी ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। सावण कहे मेरा सतिगुरु करे गृह सुहञ्जणा, सोहणी बणत बणाईआ। दीन दयाल बण दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर वेख वखाईआ। नेत्र नाम निधान पावे अंजणा, दुरमति मैल अन्तर निरंतर बाहर कढ्ढाईआ। घर स्वामी ठाकर बणे सज्जणा, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जिस एथे उथे पड़दा दो जहानां कजणा, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। जिस लेखे लाउणा आहला अदना, राउ रंकां इक्को रंग रंगाईआ। उह गोपाल धार मूर्त मदना, मधसूदन इक अख्वाईआ। जिस शरअ दे तोड़ने बन्धना, बन्दगी इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस दा निरगुण धार दीपक जोती जगणा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। जिस दा नाम डंका डौरु वजणा, ज़िमीं असमान करे शनवाईआ। उह मालक ख़ालक स्वामी सभना, धरनी धरत धौल जिस नूं सीस निवाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ क्रिया हर हिरदे विच्चों कढणा, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। सुरती शब्द धार कराउणा मजना, धूड़ी बिन चरण ख़ाक रमाईआ। सति सति दए अनन्दना,

अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक वड्याईआ। सावण कहे मेरी नमों नमों नमस्ते, निरगुण धार सीस निवाईआ। मैं शब्द संदेशे सुणे हसदे हसदे, हस्ती धुर दी दिती दृढ़ाईआ। मैं चार जुग दे मार्ग वेखे रस्ते, दीनां मज़्बां खोज खुजाईआ। ग्रन्थ शास्त्र वेखे बसते, नाम कलम्यां नाल पढ़ाईआ। अक्खर अक्खर तके भरे जस दे, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। सच भण्डारे वेखे रस दे, अमृत रस नाम जणाईआ। अगे खेल वेखणे उस अलख दे, जो अलख अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे नूर ज़हूर होणे प्रतख दे, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहीआ। जन भगतां प्यार रहिण नहीं देणे अक्ख दे, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। दर्शन देवे साख्यात प्रतख दे, सनुमुख हो के सोभा पाईआ। सावण कहे मेरे विचार बिन कदमां तों नसदे, भज्जण वाहो दाहीआ। सच स्वामी चरणां ढठदे, अठसठ दा डेरा ढाहीआ। जिस खेल खिलाउणी उलटी लठ दे, गेड़ा दीन दुनी जणाईआ। जिस भेव चुकाउणे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दे, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां मेल मिलाउणे इक्ठ दे, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। सावण कहे जन भगतो मेरी धर्म धार दी सिख्या, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। सतिगुर शब्द पावणहारा भिक्ख्या, वस्त नाम अतोट अतुट वरताईआ। जिस आदि जुगादी बिन अक्खरां लेखा लिख्या, कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। सो साहिब स्वामी निज नेत्र लोचन दिस्या, नैण करे रुशनाईआ। जन भगतां बणे मात पितिआ, पतिपरमेश्वर आपणी गोद टिकाईआ। इथे उथे सचखण्ड निवासी करे हितिआ, हितकारी हो के खोज खुजाईआ। जिस दा खेल सदा नित नवितिआ, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी सब तों उत्तम श्रेष्ट होवे अगम्मी थितिआ, जगत घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। उस दा रूप सदा सदा अनडिठिआ, अनडिठ आपणी कार भुगताईआ। जिस दा नाम निधान दो जहान कदे ना मिटया, मेटणहारा ख़लक खुदाईआ। जिस दा सस्से उत्ते होड़ा हाहे उत्ते लाउणा टिप्पा, टीका टिपणी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सावण कहे जन भगतो मेरी अन्तर निरंतर अरदास, बेनन्ती प्रभू सरन सरनाईआ । पुरख अकाले दीन दयाले सद वसणा भगतां पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। भेव चुकाउणा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर भेव रहे ना राईआ। नाम समाउणा स्वास स्वास, रसना जिह्वा आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोत काया अन्दर मन्दिर करना प्रकाश, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। अमृत बूँद देणी स्वांत, नाभी कवल निझर झिरनिउँ आप झिराईआ। सच प्रीती चरण कवल बख्शणी दात, दाते दानी वस्त

अमोलक आप वरताईआ। जन भगतां सच दुआर एकँकार दरगाह साची सचखण्ड लेखे लाउंणी अज्ज दी रात, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। सावण कहे मेरा प्रविष्टा चवी विच लोकमात, चौबीसे तेरी सरन सरन सरनाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना जन भगतां तुट्टे कदे ना नात, नाता विधाता आपणा लैणा जुड़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पुछणी वात, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शब्द अनादी आत्म धार वेखणी आपणी ज़ात, अज़ाती रूप रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा रस हो गया कौड़ा, अमृत अंमिओं रस ना कोए चुआईआ। धर्म दी धार मार्ग हो गया सौड़ा, सच स्वामी अन्तरजामी मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। हक हकीकत नज़र आए किसे ना पौड़ा, कदीम दे मालक कदम सके ना कोए टिकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं अन्तिम तेरी लोड़ा, दो जहान श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। किरपा कर दे मेहरवान महबूब मेरे ब्राह्मण गौड़ा, ग़रीब निमाणे हो के मंग मंगाईआ । सचखण्ड निवासी निरगुण धार आ दौड़ा, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरे शब्दी घोड़ दा मेरे उत्ते वज्जा पौड़ा, पारब्रह्म आपणा खेल देणा खलाईआ। मैं बिन नेत्र लोचन नैण तेरा दर्शन लोड़ा, लुडींदे साजण देणी माण वड्याईआ। मैनूं नज़री आवे तेरा इक्को सस्से उत्ते होड़ा, होका दे के दयां जणाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म हँ जोड़ लै जोड़ा, दूसर संग ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त वक्त रह गया थोड़ा, सदी चौधवीं भज्जे वाहो दाहीआ। तेरी आसा विच जुग चौकड़ी लँघ गए लख करोड़ा, करोड़ी गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक अन्धेरा, अन्ध अज्ञान ख़लक ख़ुदाईआ। धर्म दी धार दिसे ना कोए सवेरा, सँध्या रूप बणी लोकाईआ। प्यार विच रिहा ना कोए गुरु गुर चेरा, चेला गुर संग ना कोए निभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर अन्तर लाया डेरा, तन वजूदां आपणा आसण लाईआ। तेरा प्यार रिहा ना मेरा तेरा, निरगुण सरगुण मिल ना वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते वेख लै अन्धेरा अन्ध, सति सच नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा

मैं तेरा गाए कोई ना छन्द, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों ना कोए प्रगटाईआ। जोती धार चमके कोई ना चन्द, नूर नुराना नज़र कोए ना आईआ। भरमां ढाहे कोई ना कंध, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। आवण जावण मुके किसे ना पन्ध, चुरासी फंद ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी वेख लै हालत, हाहाकार विच मेरी दुहाईआ। नव सत्त होई जहालत, सच विच ना कोए समाईआ। मनुआ मन करे बग़ावत, नव सत्त जगत धार लड़ाईआ। भेव खुल्ले ना ब्रह्म मति, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। नाड़ बहत्तर घर घर उबले रत, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। फिरी दरोही पंज तत, कलयुग अग्नी रही जलाईआ। सच प्रीती जुड़े किसे ना नत, प्रीतम प्यारे तेरा दरस कोए ना पाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते आउणा वत, बेवतनां दे मालक आपणी दया कमाईआ। तूं स्वामी सब दा परमेश्वर पति, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा घर कर सुहञ्जणा, दीन दुनी दे वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। चरण धूड़ बख़्श दे मजना, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। नेत्र नाम निधान पा दे अंजणा, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। मेरा ठाकर स्वामी बणना सज्जणा, मीत मुरारे तेरा राह तकाईआ। तेरा दीपक जोती इक्को जगणा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मैं कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर तैनूं सद्दणा, सदके वारी घोल घुमाईआ। मेरे उत्ते लेखे ला लै आहला अदना, अमीर ग़रीबां वंड ना कोए वंडाईआ। चरण छुहा दे मेरी मिट्टी ख़ाक बदना, पतित पुनीत देणी वड्याईआ। जगत शरअ दी मेट दे हद्दना, शरीअत आपणी इक दरसाईआ। तेरी सरन सरनाई साहिब स्वामी लगणा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। तेरा नाम डंका दो जहानां इक्को वजणा, शाह पातशाह शहिनशाह कर शनवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भाण्डा भज्जणा, ठीकर माया ममता मोह रहिण ना पाईआ। तेरी किरपा नाल प्रभू मेरे उत्ते सतिजुग लगणा, लग मातर डेरा ढाहीआ। तूं साहिब मेरा सूरा सरबगणा, हरि करता इक अख्वाईआ। तैनूं पैग़म्बरां किहा नूर अलाही रब्बना, यामबीन तेरी सरनाईआ। तेरा इक्को इक बिना काअब्यां तों होणा हज्जना, हाजत सब दी पूर कराईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले तेरे प्यार विच कूड़ कुड़यार सब ने तजणा, तख़्ता दीन दुनी उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सति प्रकाश मेरे अगम्मी मोहन माधव मदना, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत ११ पाल सिँघ दे गृह पिण्ड दाऊदपुर ज़िला कपूरथला ✪

पंझी सावण कहे मेरी खुशीआं वाली राती, हरिजन भगत सुहेले वेखां चाँईं चाँईंआ। चार जुग दी ज़िंदगी नालों मेरी बदल गई हयाती, कर्म कांड दा लेखा रिहा ना राईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला मेहरवान मेहर करे लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल आपणी दया कमाईआ। मैं खुशीआं विच आपणी ठोक वजावां छाती, शहिनशाह अगे सीस निवाईआ। तूं मेहरवान महबूब मेरा कमलापाती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सच दुआर एकँकार मेरी बेनन्ती मंन अगम्मी बाती, बातन पड़दा दे खुल्ह्ईआ। अन्त कन्त भगवन्त जन भगतां पुछ वाती, वातावरन वेख ख़लक खुदाईआ। जो आत्म धार परमात्म तेरे जमाती, दूसर विद्या संग ना कोए निभाईआ। अमृत बूँद बख्श स्वांती, मेहरवान मेघ आप बरसाईआ। तेरा खेल सदा बहुभांती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा संग आप बणाईआ। पंझी सावण कहे मेरा सुण संदेशा अगम्म, अगम्मड़े दयां जणाईआ। मेरा ना कोई पवण स्वासी दम, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। मेहरवाना नौजवाना मेरा वेख कर्म, कर्म कांड दा पन्ध मुकाईआ। सति सच दा बख्श दे धर्म, धर्म दी धार इक समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर नूर दरसा दे ब्रह्म, पारब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां लेखे लाउणा आपणा जन्म, धुर दी बणे जणेंदी माईआ। झगड़ा मेटणा काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। एकँकार बख्श दे सरन, सरनगति इक रखाईआ। झगड़ा रहे ना वरन बरन, ज़ात पाती इक अख्वाईआ। तूं करता पुरख करनी करन, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे मालक होणा सहाईआ। सावण कहे प्रभू मेरी आदि अन्त दी आसा, आशा तेरे चरण टिकाईआ। तूं देवणहार भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मैं सेवक तेरा दासी दासा, सतिगुर साची सेव कमाईआ। मेरे गृह मन्दिर पाउणी रासा, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। मेरा लेखे लाउणा बिना पवण स्वासा, साह साह तेरी ओट तकाईआ। जन भगतां अन्तर निरंतर करीं वासा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। तेरा खेल तक्कां पृथ्मी उत्ते आकाशा, गगन गगनंतरां खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। पंझी सावण कहे प्रभू मैनूं हक दी दे तौफ़ीक, तोहफ़ा नाम नाम वरताईआ। मैं तेरे हुक्म दी करां तबलीक, रहमत नाल रहीम देणी दृढ़ाईआ। मैनूं नज़र ना आए दीन दुनी विच शरीक, शिकरत कूड़ी देणी मिटाईआ। साचे हुक्म नाल कर तस्दीक, शहादत आपणा नाम भुगताईआ। पूरब लहिणयां उत्ते जन भगतां मार दे लीक, लाईन अगली दे वखाईआ। बेशक तेरा मार्ग बड़ा बारीक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मैनूं तेरे उत्ते उम्मीद, आसा तेरे चरण

टिकाईआ। तूं मेरा मेहरवान बीदो बीद, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा गृह इक सुहाईआ। सावण कहे प्रभू मेरा कर दे वड्डा भाग, भगवन देणी माण वड्याईआ। तेरा दीपक जोत जगे चराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। एथे उथे दो जहानां श्री भगवाना मेरी बुझा दे आग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। सच प्रीत अन्तर बख्श दे वैराग, वैरी कूड़े बाहर कढ्ढाईआ। सति सच दा दे स्वाद, बिन रसना रस चखाईआ। बिना तन्द सितार वजा रबाब, बिना शब्द धुन नाद कर शनवाईआ। उह मालक स्वामी मेरा इक अहिबाब, मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जोती जाते पुरख बिधाते जन भगतां करनी इमदाद, सिर सिर आपणे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक देणी माण वड्याईआ। सावण कहे मेरे पुरख अकाले मेरे उत्ते तुठ, मेहरवान महबूब मेहर नज़र उठाईआ। निगाह मार लै सृष्टी दृष्टी अन्दर चारे गुठ, कोना कोना खोज खुजाईआ। कोटां विच्चों तेरे जन भगत सुहेले श्री भगवान इक्को मुठ, बहुती वंड नज़र कोए ना आईआ। नव सत्त दी धार एकँकार तेरे नालों गई रुठ, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। किरपा निधान नौजवान श्री भगवान जन भगत सुहेले बणा लै सुत, पिता पूत गोद उठाईआ। सावण कहे मेरी सुहञ्जणी कर दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तूं मालक अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा लहिणा पूर कराईआ। पंझी सावण कहे मेरे सतिगुर मेरी खोल्ह दे अक्ख , नेत्र लोचन नैण बदलाईआ। मेरा भण्डारा भर दे सति, सति सतिवादी मैनूं दरस दिखाईआ। तूं साहिब स्वामी कमलापति, पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ पुरख अगम्म अथाहीआ। मैं तेरे चरण कवल जोड़ के हथ्थ, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। जन भगतां कूड़ी क्रिया अन्तर निरंतर देणी मथ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। जो तेरे लथ्थे सथ, सथर यारड़े सेज हंढाईआ। जिन्हां पन्ध मुकाया नठ नठ, भज्जे वाहो दाहीआ। सच दुआर होया इक्ठ, मिल मिल के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह वजदी रहे वधाईआ। पंझी सावण कहे प्रभू तेरे चरण कवल अरदास, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ । मेरी निरगुण सरगुण पूरी करनी आस, तृष्ना दीन दुनी जगत जुगत ना कोए जणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले सच बख्शणा जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। जन भगतां अन्तर पाउणी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। मैं खुशीआं नाल तेरी वेखां रास, किस बिध तेरी वजे वधाईआ। तूं मालक ख़ालक शहिनशाह शाहो शाबाश, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

मालक होणा सहाईआ। सावण कहे प्रभू मेरी सुरत संभाल, सम्बल दे मालक दया कमाईआ। जन भगतां लेखे ला लै घाल, जो घायल हो के तेरी सेव कमाईआ। आपणी गोदी चुक लै लाल, कलयुग आलणयों डिग्गे लै उठाईआ। आत्म परमात्म हो के देणा सतिनाम सच्चा धन माल, वस्त अतोट अतुट वरताईआ। फल लगाउणा काया वाले डाल, पंज तत देणी वड्याईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद मालक धुरदरगाहीआ । बाल्मीक दा इक सवाल, रविदास देवे गवाहीआ। दाऊद पुर विच तेरा भगत वसे सिँघ पाल, पालणा करनी चाँईं चाँईआ। सच दुआर वसाउणा सची धर्मसाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। त्रेते जुग दी लेखे लाउणी घाल, जो घायल हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द शब्दी धार बणाए दलाल, विचोला अन्तर निरंतर आत्म परमात्म इक्को नज़री आईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड ढिलवीं ज़िला कपूरथला ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं वसां अन्तष्करन, कर्म कांड जगत क्रिया विच कदे ना आईआ। जोती धारों आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद मेरा होवे जन्म, तन वजूद माटी ख़ाक जम्मण वाली कोए ना माईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात मेरा नहीं कोई बरन, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रंग ना कोए रंगाईआ। जगत विद्या अक्खर मैं विद्या कदे ना लग्गा पढ़न, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। सच दुआर एकँकार मैनूं बख़्शी आपणी सरन, सरनगति ब्रह्म मति तों परे आप समझाईआ। निरगुण निराकार निरँकार दा पकड़या लड़न, पल्लू इक्को गंढु बंधाईआ। बिना मंज़ल तों मंज़ल हकीकी सदा लग्गा चढ़न, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा फ़रमाना रसना जिह्वा मुख दन्द, दीन दुनी जगत वड्याईआ। तन वजूद ढोले गाउँदे छन्द, सिफ्तां सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। मेरा सरगुण धार लेखा नाल जगत खेल तन वजूद बन्द बन्द, बन्दगी दीन दुनी दृढ़ाईआ। मेरा मेल मिलावा जगत दाअवा तत पंज, पंचम आपणा खेल खलाईआ। मेरा नेत्र नीर जगत धार वगे हंझ, हंझूआं खेल वखाईआ। मैं ग़मी विच मन कल्पणा नाल होवां रंज, रंजश विच भुल्ले मालक ख़लक खुदाईआ। जिस वेले काम क्रोध लोभ मोह हँकार अन्तर करे जंग, बुल्ल्हां वाला जाप रसना उत्ते रहिण कोए ना पाईआ। जिधर वेखां होवे अन्धेरा अन्ध, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सुरती डोरी बन्न्हे कोई ना तन्द, तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा नाम नाम न्यारा, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। मैं सदा वसां काया बंक दुआरा, घर घर अन्दर आपणा डेरा लाईआ। मेरा सुरती तों बाहर मुशाहरा, मशवरा आपणे नाल रखाईआ। मेरा घर गृह गम्भीर गहरा, जगत नेत्र वेखण नज़र किसे ना आईआ। मेरा साढे तिन्न हथ्थ तों बाहर दायरा, दाइम मुकाम इक्को इक अख्वाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होया बहिरा, अनबोलत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नाम कहे मैनूं बुल्ल्हां नाल जपदा जग, जगत तृष्ना नाल मिलाईआ। अन्तष्करन बुझाए कोई ना अग्ग, अग्नी तत ना कोए मुकाईआ। सच पुछो मेरा वसेरा उपर शाहरग, नौ दुआरयां थल्ले कदे ना आईआ। बुल्ल्हां जप्या कदे पवां ना लभ्भ, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। मेरी दीन दुनी तों बाहर हद्द, हदूद आपणे विच रखाईआ। मेरा उच्चा लम्मां नहीं कोई कद, कुदरत दे कादर दिती वड्याईआ। मैं बैखरी बाणी विच परा पसन्ती नालों हो के अड्ड, जगत ढोले दयां सुणाईआ। जे कोई दु:ख दर्द भय आवे बुल्ल्हां नाल जपण वाले मैनूं उसे वेले देण छड, पुत मरे पिता भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। शब्द कहे मैं डूँग्घा सागर, रसना रस ना कोए वखाईआ। मेरा मालक करीम कादर, कुदरत करता नूर अलाहीआ। मैं आदि जुगादी सूरबीर बहादर, महाबली इक अख्वाईआ। जिस दे अन्दर वस्या उस दा निर्मल कर्म करां उजागर, दीन दुनी मिले वड्याईआ । मेरा भेव खुल्हाया सतिगुर तेग़ बहादर, खण्डा सीस सीस छुहाईआ। मैं निमाणा दीन दुनी तों बाहर इक्को दर दा आजज़, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मेरा प्यार मुहब्बत वाला वाजब, वजह सक्या ना कोए समझाईआ। मेरा लेखा लिख सके ना कोए कातब, शायर शरअ विच ना कोए जणाईआ। मैं जदों होया सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर नाल मुख़ातब, अवतार पैग़म्बर गुर मैनूं अन्तर निरंतर रख के दीन दुनी गए समझाईआ। मैं नौवां दुआरयां दे बाहर कदे नहीं आया जानब, जनाबे आली कहि के सीस ना कदे निवाईआ। मेरा लहिणा देणा निरगुण जोत नाल सिर्फ़ बाबत, दूसर अवर संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। जाप कहे मैनूं बुल्ल्हां नाल जपदे अक्खरी अक्खर, रसना रसना नाल हिलाईआ। मेरा वसेरा सच पुछो ते परे बजर कपाटी पत्थर, उरार घाट ना कोए बणाईआ। मैं जदों लथ्था ते लथ्था इक्को यार दे सथर, दूसरी सेज ना कोए हंढाईआ। मेरी महिमा रसना जिह्वा बत्ती दन्द जुग चौकड़ी कथन, सिफ्तां विच सिफ्त सलाहीआ। मैं दीन दुनी दे कदे नहीं आया हथ्थण,

फड़ बाहों ना कोए वखाईआ । मेरा लहिणा देणा लेखा पार अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध अठ्ठण, अठ्ठां संग ना कोए रखाईआ। बुल्ह्आं नाल जपण वाले सारे तन वजूद अन्तिम ढठ्ठण, ख़ाक ख़ाक विच समाईआ। जिन्ह्आं हिरदे वसाया उह भगत सुहेले प्रभू दे बण गए रत्न, गुरमुख गुर गुर गोबिन्द विच समाईआ। रसना जिह्वा बुल्ह् कहिण साडा कूक पुकारन वाला यतन, यथार्थ दईए दृढ़ाईआ। अजपा जाप विच प्रभू दा मिलदा साचा वतन, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। उथे माया विच मूल ना टप्पण, कलयुग कल्पणा ना कोए हल्काईआ। दीन दुनी दीआं हद्दां टप्पण, हदूद इक्को वेख वखाईआ। उथे इक्को तूं मेरा मैं तेरा होवे बचन, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा गृह सच टिकाणा, मन्दिर अगम्मा सोभा पाईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगे महाना, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। चार जुग दे शास्त्र गाए कोई ना गाणा, अक्खर अक्खर ना कोए वड्याईआ। ना कोई राग नाद सुणाए तराना, राग नाद ना कोए शनवाईआ। मेरा खेल सदा महाना, महिमा आपणी आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मेरा ततां वाला नहीं कोई बाणा, वजूद ख़ाकी ना कोए हंढाईआ। मैं शाहो भूप सतिगुर शब्द शहिनशाह पुराणा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी चलया आईआ। मेरा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गाया गाणा, धुर दे हुक्म हुक्म नाल बणाईआ। मैं वसां बाहर ज़िमीं असमानां, दो जहानां आपणा आसण लाईआ। मेरा गृह मन्दिर महल अटल अगम्म मकाना, जिस दी छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे रसना बुल्ह् जगत दी धार, धरनी धरत धवल धौल दिती वड्याईआ। मार्ग ला विच संसार, अक्खर अक्खरां नाल कीती पढ़ाईआ। विखम विद्या गुण दिता कर्मी कर्म कर विचार, विचरके आपणा हुक्म सुणाईआ। सतिगुर शब्द शब्द दा प्यार, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। रसना नाल जपण वाले सतिगुर शब्द नूं भुल जांदे जे वेख लैण वेसवा नार, विश्व दा आपणा माण गुआईआ। मन कल्पणा विच होण ख्वार, बुद्धी बिबेक ना कोए जणाईआ। रातीं सुफ़नयां विच फ़िरन आपणा छड घर बाहर, गृह मन्दिर वेखण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं हिरदे वसां आप, आपणी दया कमाईआ। अनबोलत मेरा जाप, रसना रस ना कोए वड्याईआ। मेरा मेला नाल कमलापात, पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। जो निरंतर निराकार हो के पुछे वात, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। बिना ज़बान तों करे बात, बातन पड़दा आप खुल्ह्आईआ। बिन अक्खीआं मारे झात, बिन नैणां वेख वखाईआ। बिना सूर्या चन्द तों मेटे अन्धेरी रात, जोती जोत डगमगाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखाईआ। रसना कहे मैं ढोले गावां गीत, सति सच सुणाईआ। मेरी जगत जिज्ञासुआं वाली रीत, मन मनसा विच वड्याईआ। जिस वेले दुनियादारां जगत कूड़ दी मिले प्रीत, सच दा नाता जाण तुड़ाईआ। छड जाण मन्दिर मसीत, भज्जण वाहो दाहीआ। जिन्हां दे सतिगुर शब्द प्रभू दी धार हो के वस्या चीत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी उह सदा ठण्डे सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। इक्को एकँकार नाल उन्हां दी प्रीत, प्रीतम नाल मिलके आपणी खुशी वखाईआ। मानस जन्म लख चुरासी विच जाण जीत, आवण जावण पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि निरगुण सरगुण सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सच स्वामी सदा सदा सद लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ चरण कौर दे गृह पिण्ड ढिलवीं ज़िला कपूरथला ✪

७६३ खुशीआं नाल हस्सी बसुधा, धरनी धरत आपणी खुशी बणाईआ। मेरा भाग होया उदा, उदै असत प्रभ देवे माण वड्याईआ। ७६३
२४ मैनूं इशारा दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। भेव अभेदा खोल्ह्या गुज्झा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। २४
हस के किहा जिस वेले कलयुग कूड़ होवे जुगा, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ । धरनी कहे मेरी पवित्र होई मिट्टी ख़ाक, धूड़ हो के मिट्टी ख़ाक नूं प्रभू चरण मिली सरनाईआ। पूरब पूरब पूरा करे भविख्त वाक, वाकया बुध्ध रिहा समझाईआ। सतिगुर शब्द दी धार आया नाल इत्फिाक, इत्फिाकीआ आपणा खेल खलाईआ। भगत सुहेले तके चाक, चाकरी सब दी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वड्याईआ। धरनी कहे मेरा दर होवे पवित, पतित पुनीत दए वड्याईआ। जन भगतां करे हित, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। सद दर्शन देवे नित, निज लोचन नैण नैण उठाईआ। जन भगतां वसे काया विच, अमृत आपणा आप सुहाईआ। सुरती शब्द लाए खिच, प्रेम प्रीती विच बंधाईआ। मेहरवान बण के पित, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू दे भगत सुहेले चंगे, हरि देवे माण वड्याईआ। जिन्हां नूं मेरे उत्ते लावे अंगे, अंगीकार इक अख्वाईआ। साहिब सतिगुर बण सूरा सरबंगे, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

ओढण बिन रहिण ना देवे नंगे, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जिस दी याद विच पूरब वक्त लँघे, भज्जे बण के पाँधी राहीआ। उस ने मेरे सफ़र मेटे लम्मे, लमह लमह आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त आया उस ब्यास दे कन्ढे, कन्ढी बहि के आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी गोबिन्द वंड के गया वंडे, निशाना चिल्ला तीर कमान रखाईआ। लीक मारी शब्दी धार खण्डे, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। मेरा मालक ख़ालक स्वामी सतिनाम सच जन भगतां आप वंडे, वंडणहार आप अख्वाईआ। जिस दा खेल सदा ब्रह्मण्डे, पुरी लोअ खोजे चाँईं चाँईंआ। हरिजन साचे चाढ़े नाम दे डण्डे, डण्डावत आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म धार निरगुण निरगुण आपे गंढे, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड ढिलवां ज़िला कपूरथला ✪

सावण कहे प्रभू मेरा दिवस दिहाढ़ा छब्बी, शबे रोज़ तेरी ओट तकाईआ। मेरे निरगुण धार नूर अलाही रब्बी, रहीम रहमान तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी हुन्दा सबबी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। मेहरवाना श्री भगवाना आपणी सृष्टी तक लै लबी, लोभ लालच विच हल्काईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पापां भार दब्बी, सिर सके ना कोए उठाईआ। अन्त वेख लै मुहम्मद वाली चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। तेरे प्यार विच सुरती दिसे किसे ना बध्धी, बन्दना विच सीस ना कोए निवाईआ। शाह सुल्तानां कूड़ कुड़यार दी दिसे गद्दी, गदागर होई लोकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले दीन दुनी कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढी, फड़ बाहों पार लँघाईआ। शरअ शरीअत ममता मोह विकार धार वढी, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। निगाह मार लै पंज तत वजूद काया माटी हड्डी, मास नाड़ी ध्यान लगाईआ। तेरी दीन दुनी वहिंदी धार डिग्गी डूँघी खड्डी, सच किनारा नज़र कोए ना आईआ। तेरा दर्शन पाए कोए ना उपर शाहरगी, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं जिधर वेखां मोह विकारा अग्नी लग्गी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। सावण कहे प्रभू मेरा तेरे अगे हाढ़ा, हो निमाणा सीस निवाईआ। दरोही फिरी जंगल जूह विच उजाड़ा, पहाड़ टिल्ले पर्वत रोवण मारन धाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलयुग कूड़ कुकर्म लग्गा अखाड़ा, माया ममता मोह नाच नचाईआ। तेरा सतिगुर शब्द स्वामी सच नज़र ना आए लाड़ा, लाड़ी मौत सब नूं रही परनाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच रंग चाढ़े ना कोए गाड़ा, दुरमति

मैल ना कोए धुआईआ। फिरी दरोही मानस मानव मानुख विच बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। छब्बी सावण कहे प्रभू मेरा वेख लै प्रविष्टा, परम पुरख ध्यान लगाईआ। सच धर्म दा रिहा कोई ना इष्टा, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। अन्दरों खुल्ह्ले ना किसे दृष्टा, अनुभव पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। मनमुख जीव कलयुग भरया विख दा, विस रूप ना कोए बदलाईआ। साचा रूप दिसे ना कोए सिख दा, सिख्या गोबिन्द गए भुलाईआ। भगत सुहेला दीन दुनी कोई ना दिसदा, जो भगवन मिलके खुशी बणाईआ। जन भगत जिज्ञासू भरया मोह विकारे हित दा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। सावण कहे प्रभू मेरा दिवस दिहाढ़ा तक लोकमात, मातृ भूमी ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होई अन्धेरी रात, सत्त दीप सति चन्द ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म सुरती शब्द टुट्टा नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। तुध बिन अन्त कन्त भगवन्त पुछे कोई ना वात, मेहरवान प्रभू सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सति धर्म दी देवे कोई ना दात, वस्त अगम्म ना कोए वरताईआ। तेरा दरस पाए ना कोई इकांत, इक इकल्ले तेरा रूप अनूप नज़र किसे ना आईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार अन्तिम दीन दुनी दी पुछ वात, वारस हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आस रखाईआ। सावण कहे मेरा दिवस तक लै लोकमाती, मता तेरे नाल पकाईआ। तेरा खेल सदा बहुभांती, निरगुण सरगुण तेरी बेपरवाहीआ। मैं मंगां इक्को अगम्मी दाती, दयावान झोली देणी भराईआ। जन भगतां अमृत बख्श दे बूँद स्वांती, निझर झिरना कवल नाभ विच्चों चवाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पाती, पतिपरमेश्वर आपणा भेव खुल्हाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को जोड़ लै नाती, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर रखाईआ । तूं मालक ख़ालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कमलापाती, बेऐब परवरदिगार नूर अलाहीआ। तेरा लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां बणे सदा साथी, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ। तूं मालक ख़ालक अनाथ अनाथी, दीनन आपणी गोद टिकाईआ। मेरे पतिपरमेश्वर सर्ब कला समराथी, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जीवां जंतां दे दे गाथी, गहर गम्भीर बेनज़ीर पर्दा आपणा आप उठाईआ। कलयुग विच सतिजुग सति धर्म चला दे राथी, रथ रथवाही इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्त अमोलक जन भगतां दे दे हाथो हाथी, जगत उधार रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड ढिलवां ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे जन भगतो प्रभ दे परसो चरण, चरणोदक धुर दा जाम प्याईआ। परम पुरख परमात्म इक्को तको सरन, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जो झगड़ा मेटे ज़ात पात वरन बरन, ऊँच नीच धुर दा रंग रंगाईआ। शब्दी धार फड़ाए आपणा लड़न, पल्लू पलकां दे पिच्छे गंढु बंधाईआ। त्रैगुण माया हरिजन मूल ना सड़न, अग्नी तत तत मिटाईआ। मंज़ल महबूब वाली हकीकी चढ़न, बिन कदमां कदम उठाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते दर्शन करन, बिन लोचन नैण अक्ख नज़री आईआ। जो आदि जुगादी आत्म परमात्म साचा सज्जण सैण, साक तन माटी ख़ाक आपणा दए दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुर सिफ्तां विच सारे करदे गाइन, अक्खरां अक्खरां नाल जुड़ाईआ। सो साहिब सतिगुर कदे ना होवे तरफ़ैन, तरफ़दारी दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक रखाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा मांगो इक्को दरस, बिन जगत नेत्र दर्शन पाईआ। जो अन्तष्करन मन वासना मेटे हरस, हवस कूड़ी दए मिटाईआ। रहमत विच करे तरस, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती नाभी कवल कवल टपकाईआ। देवे वड्याई उत्ते फ़र्श, अर्शी प्रीतम होए सहाईआ। उस दा खेल तको असचरज, अचरज आपणा रंग रंगाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, लोकमात जन भगतां वेखे चाँईं चाँईंआ। सब दी मन्ज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे चरण टिकाईआ। मन कल्पणा मेटणहारा अन्धेरा गरद, गरदश कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे जन भगतो सदा पूजो इक भगवन्त, भगवन इक्को नज़री आईआ। जो आदि जुगादी आत्म धार साचा कन्त, कन्तूहल नूर अलाहीआ। जो काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दो जहान एथे उथे उतर कदे ना जाईआ। सति सच कर्म कांड तों बाहर बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आपणा रंग रंगाईआ । जिस दी महिमा सदा अगणत, कथनी कथ ना कोए समझाईआ। सो बोध अगाधा बणे पंडत, बुद्धी तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गाया मंत, शब्दी शब्दी ढोला कलमा गाईआ। उह तोड़नहारा गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। लेखा मुकाए दोज़ख़ बहिश्त जन्नत, स्वर्गां पन्ध मुकाईआ। इक्को इक एकँकार वखाए बंक, दुआरा सचखण्ड सोभा पाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं राउ रंक, शाह सुल्तान ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। धरनी कहे जन भगतो इक्को प्रभ दा रखो इष्ट, देव देवा आत्म इक्को नज़री आईआ। जिस दा लहिणा देणा

नाल दीन दुनी सृष्ट, चारे खाणी लख चुरासी बन्धन पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जिस दा भेव खुल्ाया राम रामा वशिष्ट, विषयां तों बाहर गया दृढ़ाईआ। उह जोती जाता कदे ना होवे निष्ट, नास्तक रूप ना कोए दरसाईआ। जो आत्म धार लख चुरासी जीव जंत भोगे गृिहस्त, भगवन आपणा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच बंक इक वड्याईआ। धरनी कहे जन भगतो परम पुरख दी रखो टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जो अन्तष्करन करे बिबेक, पतित पुनीत दए बणाईआ। त्रैगुण माया मेटे सेक, अग्नी तत तत गुआईआ। धुर दा शब्द देवे संदेश, शब्द अनादी नाद करे शनवाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, गणपति करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। सो वसणहारा सचखण्ड साचे देश, दरगाह साची मुकामे हक सोभा पाईआ। उह निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तुहाडे अन्तर करे प्रवेश, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। नाम खुमारी मस्ती दए हमेश, हम साजण हो के सगला संग निभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कलेश, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जिस दी धार गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा सोभा पाईआ । उह कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर परवरदिगार बदल के भेस, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। सच दुआर आसण सिँघासण सुहाए सम्बल देस, देस देसन्तरां पिछला पन्ध मुकाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां आदि जुगादि रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी महिमा गाए सहसर मुख शेष, दो सहंसर जिह्वा नाल मिलाईआ।

७६७
२४

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड फतू चक ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे जन भगतो मस्तक लाओ सची धूड़, टिक्के धर्म धार ख़ाक रमाईआ। काया चोली रंग अगम्मा चाढ़ो गूढ़, आदि जुगादि जुग चौकड़ी उतर कदे ना जाईआ। नाता तोड़ो पंच विकारा कूड़, मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। चतुर सुघड़ बणो मूर्ख मूढ़, अन्ध अज्ञान दा डेरा ढाहीआ। पन्ध मुकाउ नेड़ा दूर, आवण जावण रहे ना राईआ। सतिगुर दर्शन करो हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे जन भगतो परम पुरख बणाओ धुर दा संगी, सगला साथी इक अख्वाईआ। देवे वस्त नाम अनमंगी, दात धुर दी झोली पाईआ। पिठ होण ना देवे नंगी, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत

सरोवर धार नुहाए गंगी, गंगोत्री बैठी सीस निवाईआ। तुहाडे नाल पूरी करे पूरब संधी, चार जुग दा लहिणा झोली पाईआ। दीन मज़्ब तोड़े पाबन्दी, शरअ छुरी शरीअत बणे ना कोए कसाईआ। आत्म धार देवे सच सुगंधी, परमात्म आपणा संग निभाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी कटे तंगी, आवण जावण गेड़ रहे ना राईआ। पीआ प्रीतम परम पुरख हरिजन बणाए आपणे भुजंगी, भुजंगम हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा मेला करो काया मन्दिर, तन, माटी ख़ाक सोभा पाईआ। प्रकाश तको आपणे अन्दर, साढे तिन्न हथ्थ होवे रुशनाईआ। बजर कपाटी तोड़ो जंदर, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। जगत अन्धेरा मिटे खण्डर, नूर नुराना डगमगाईआ। मनुआ दहि दिश उठ ना धाए बन्दर, मनसा जगत ना कोए हल्काईआ। सच प्रेम दा माणो अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ । चरण धूड़ी ख़ाक रमाओ चन्दन, मस्तक टिक्के आप लगाईआ। सच दुआर करो बन्दन, बन्दगी विच सीस झुकाईआ । तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे तत पंजण, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे रंग रंगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि सदा भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नाम निधाना निज नेत्र पाए अंजन, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। एथे ओथे सदा सुहेला बणे सज्जण, सख़ा सहाई इक अख्वाईआ। जिस दी मंज़ल सन्त सुहेले लँघण, हरिजन बैठण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच धुर दा नाम आया वंडण, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत ११ दौलत सिँघ दे गृह कपूरथला ✪

नारद कहे सुण उए छब्बी सावणा, सोहणयां सज्जणा आपणा नैण उठाईआ। पिछली चार जुग दी तक लै कामना, आशा तृष्ना संग रलाईआ। की संदेशा दिता तेरी धार बावना, हुक्म हुक्म विच्चों दृढ़ाईआ। की इशारा दे के गया राम रामना, रम्ईआ हो के भेव चुकाईआ। की निशाना दस्सया कृष्ण काहनना, घनईया पर्दा की उठाईआ। किस बिध पैग़म्बरां जणाई सुबह शामना, शबे रोज़ वेख वखाईआ। किस बिध रसूलां पकड़या दामना, दामनगीर भेव चुकाईआ। कवण धार गुरु गुरदेव जणाया नामना, नाम सति सति सुणाईआ। कवण कूट खेल खेले श्री भगवानना, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। निगाह मार लै चारो कुण्ट तेरे विच अन्धेरी शामना, अन्ध अज्ञान ना कोए गुआईआ। मेरया मित्रा मेरी पुछ लै अन्तष्करन

दी भावना, भय भउ सिर ना कोए रखाईआ। मैं इक्को इक एकँकार दा ढोला गावणा, गा गा दो जहान करां शनवाईआ। इक्को पुरख अकाल दी चरणी सीस झुकावणा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। इक्को मन्नणा पतित पावना, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ । जिस कलयुग अन्त आपणा हुक्म वरतावणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उह शाहो भूप सुल्तानना, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जिस दा सतिगुर शब्द शब्द बलवानना, बलधारी नज़री आईआ। उह लहिणा देणा तकणा वेद पुराणना, परा पसन्ती मद्धम बैखरी नाल मिलाईआ। हरफ़ हरूफ़ वेखे अञ्जील कुराननाा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जिस दा हुक्म वरते दो जहानना, निरगुण सरगुण हो के आप वरताईआ। उस दा प्रकाश तक लै ज़िमीं असमानना, जोती जाता डगमगाईआ। नारद कहे छब्बी सावण की तैनूं देवे फ़रमानना, फुरनयां तों बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक हुक्म की वरताईआ। नारद कहे सावणा मेरा भेख धर लै धर्मी धार पखण्डी, बवरा नज़री आईआ। जगत जहान वेख लै डण्डी, डण्डावत सारे गए बदलाईआ। निगाह मार लै जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। टुट्टी प्रीत प्रीतम नाल सके कोई ना गंढी, गंढुणहार गोपाल स्वामी नज़र किसे ना आईआ। चारों कुण्ट कूड़ चमकावे चण्डी, चण्डालका आपणा रूप बदलाईआ। मानस मानव मानुख आत्म हो गई रंडी, हरि हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। अन्त वसेरा सब दा दिसे वनखण्डी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत समुंद सागर रोवण मारन धाहीआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मित्रा धार हो गई अन्धी, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सच वस्त किसे दुआरयों मिले मूल ना मंगी, नाम निधान झोली कोए ना पाईआ। मनुआ कूड़ कुड़यार बणया फ़रंगी, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। फिरी दरोही प्रकृती पंझी, सच रंग ना कोए चढ़ाईआ। उह वेख लै कलयुग बाणा पहन के जंगी, जंगजू हो के आपणा रूप बदलाईआ। जिस ने सब नूं देणी तंगी, तंग दस्त होवे लोकाईआ। किसे नूं लाए कोई ना अंगी, अंगीकार नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट मिटे किसे ना पन्धी, पाँधी पन्ध ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे सावणा मैनूं वेख के आउँदा हासा, बिन रसना जिह्वा बुल्ल्हां दयां वखाईआ। ज़रा निगाह मार लै पृथमी आकाशा, गगन गगनंतरां ध्यान लगाईआ। की हुक्म वरते पुरख अबिनाशा, करनी दा करता की आपणी कार कमाईआ। जो दीन दुनी दा बदलण वाला पासा, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखाईआ। मैं उस दा खोल्ह के दस्सां खुलासा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उस प्रभू दी शब्द धार दी सुण लै अगम्मी भाखा, जगत अक्खरां संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। नारद कहे सावणा मेरा अन्तष्करन कम्बदा, कमलया तैनूं दयां जणाईआ। उह वेख लै मुहम्मद दा समां जांदा लँघदा, सदी चौधवीं भज्जे वाहो दाहीआ। ईसा खुशीआं नाल आपणे हथ्थ रंगदा, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। गोबिन्द खेल तके पंज दा, पंचम पंचम पंचम पर्दा आप उठाईआ। मैनूं बचन याद आउंदा जो गोबिन्द हुक्म कीता पुरी अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। मैं निगाह मारी की हाल होणा ब्रह्मण्ड दा, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। की लेखा होणा चण्ड प्रचण्ड दा, नव खण्ड पृथ्मी आपणा रंग रंगाईआ। की खेल होणा कूड़ पखण्ड दा, कलयुग कूड़ी क्रिया आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे सावणा इक बचन अगम्मा सुण, अणसुणत दयां जणाईआ। तेरे मेघ च कया गुण, मित्रा दे जणाईआ। मैं हुक्म संदेशा सुणया तेरे दिवस हुण, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। तूं आवाज़ सुण लै की देवे शब्दी धुन, धुन आत्मक राग जणाईआ। जो मालक खालक कुन, कुल मालक नूर अलाहीआ। उस ने भगत सुहेले लोकमात लए चुन, चारों कुण्ट आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा नाम कलमा मन्त्र फुंन, फुरनयां तों बाहर दए समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे सावणा मेरी बोदी दए इशारा, सैनत जगत बाहर लगाईआ। जिस दी करे ना कोई विचारा, विचरके सके ना कोए समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा लेखा कागद कलम शाही तों बाहरा, कातब लेख ना कोए दृढ़ाईआ। उह खेल खेले विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जिस दा मेला नाल निरगुण धारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा शब्दी शब्द जैकारा, नाद धुन धुन शनवाईआ। उह शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस नूं कहिंदे कलि कल्की अवतारा, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। उस दा हुक्म तक लै जिस नूं समझे कोए पुरख ना नारा, नर नरायण दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सावण कहे नारदा मेरा साहिब स्वामी आदि, जुग जुगादी सोभा पाईआ। जिस दा हुक्म वरते ब्रह्माद, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप वरताईआ। मैं उस दा सुणया अगम्मा नाद, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस मेरे अन्दरों खोल्ल्ह्या राज़, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। मैं सवाधान हो के गया जाग, जागरत जोत जोत कर रुशनाईआ। मेरे होए वड वड भाग, भगवन दिती माण वड्याईआ। मैं फिरदा नाल मजाज़, आप आपणा रूप वटाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल नहीं किसे समाज, दीनां मज़्हबां संग ना कोए रखाईआ। मैं प्रभू दा सति सच दा दस्सणा इक रिवाज, रवाइत जगत

ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। सावण कहे नारदा मेरा परम पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे सब कुछ हथ्थ, कथनी कथ सके ना राईआ। उह दीन दुनी दी धार एकँकार हो के देवे मथ, मथन करे ख़लक खुदाईआ। जिस दे गोबिन्द गया सथर लथ, यारड़े सेज हंढाईआ। उस ने मेरे प्रविष्टे विच जन भगतां कीता इक्ठ, सोहणी खुशी बणाईआ। प्यार विच मित्रा साहिब दी सरनी ढठ, निव निव लागां पाईआ। जिस ने खेल खेलया बिना मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, काअब्यां लहिणा देणा दिता मुकाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा कीता नठ नठ, बण बण पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सावण कहे नारदा खुशीआं गा लै गौण, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सलाहीआ। खुशी करदी तक लै उनन्जा पौण, पवण स्वासी नाल मिलाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर गुरु तन छड समाउण, आपणा आप भेंट कराईआ। उस दा भेव जाणे कौण, गत कहिण किछ ना पाईआ। जिस खेल खलाया रामा रौण, रावण आपणा हुक्म वरताईआ । सो नाम निधाना श्री भगवाना जन भगतां आया आप वरताउण, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण आया सौण, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। पूरब लहिणा देणा आया मुकाउण, मुकम्मल आपणा रंग रंगाईआ। सच दुआर एकँकार दरगाह साची मुकामे हक सचखण्ड आया बहाउण, थिर घर आपणा संग बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आया मिटाउण, मिट्टी ख़ाक निशाना रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म आया लाउण, लग मातर डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आया दबाउण, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। शरअ शौह दरयाए आया रुढ़ाउण, अगे हो ना कोए अटकाईआ। इक्को नाम आया जपाउण, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दए सुणाईआ। जन भगतां अन्तर सच आया वसाउण, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। लख चुरासी फंद आया कटाउण, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आया मिलाउण, छब्बी सावण कहे मेरा प्रविष्टा दए गवाहीआ। चार जुग दे रुठड़े आया मनाउण, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। नाम निधाने नाल आया प्रचाउण, प्राचीन दा लेख मुकाईआ। अमृत मेघ आया बरसाउण, नाम निधाना आप बरसाईआ। साचे मार्ग आया लगाउण, पंथ मार्ग इक्को इक समझाईआ। मंज़ल हकीकी आया चढ़ाउण, जगत पौड़ी डण्डा हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। अमृत जाम आया प्याउण, अंमिओं रस आप चुआईआ। शब्द नाद धुन आया सुणाउण, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। जोती जाता आया जोत जगाउण, जोती जाता डगमगाईआ। हरिजन भगत सुहेले थिर घर आया बहाउण, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। दरगाह साची सचखण्ड आया टिकाउण, टिक्के धूड़ी मस्तक चरण ख़ाक रमाईआ।

आवण जावण लख चुरासी पन्ध आया मुकाउण, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। सावण कहे नारदा धुर दी खेल आया खलाउण, ख़ालक ख़लक धुर दा माहीआ। नारद कहे सावणा उस दा रल के गाईए गाउण, गा गा ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म मेल आया मिलाउण, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म रंग आपणा आप रंगाईआ।

✪ पहली भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

नारद कहे मैं बिन लत्तां बाहवां दो जहान नठ्ठा, तन वजूद माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द मेरे अन्तष्करन बख़्श्या हठ्ठा, धीरज धर्म धर्म धार दृढ़ाईआ। सचखण्ड दुआर अवतार पैग़म्बर गुर मैनूं संदेश देवण इक्ठ्ठा, चार जुग दे भविख रहे दृढ़ाईआ। नारदा तूं फिरना मन्दिर मस्जिद शिवदुआले गुरुदुआर मठ्ठा, काअबे काया वाले फोल फुलाईआ। निगाह मारनी जल धार वाले अठ्ठ सठ्ठा, गंगा गंगोत्री यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अग्नी तपदा वेखणा भठ्ठा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप फोल फुलाईआ। माया ममता मोह विकार सिर ते भार वेखणा चक्कया गठ्ठा, जीवां जंतां साधां सन्तां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं घुम्मया बिना कदमां तों उत्ते धौल, धरनी धरत धवल भज्जया वाहो दाहीआ। मैनूं आदि जुगादी याद अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाला कौल, इकरारनामा भुल कदे ना जाईआ। मैं चार जुग दे शास्त्रां दे सुणदा रिहा बोल, अक्खर अक्खरां नाल मिल के करन शनवाईआ। मैं जगत विद्या जाणदा रिहा पंडत पांधा रौल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी अक्ख खुल्ल्हाईआ। मैं नव सत्त दीन दुनी मानस ज़ाती तकदा रिहा घोल, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वेख वखाईआ। मैं नाम कलम्यां दे सुणदा रिहा वजदे ढोल, अवतार पैग़म्बर गुर धुर दा हुक्म जणाईआ। मेरे कोल परम पुरख दा इक्को हुक्म अनमोल, जिस दी कीमत जगत ना कोए जणाईआ। जिस दा भेव अभेदा दो जहान सके कोई ना खोल्ल्ह, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जे मैं सच दस्सां मैनूं चार जुग दे शास्त्र करन मख़ौल, मसख़री जगत जिज्ञासू लैण उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खलाईआ। नारद कहे मैं बण पाँधी रिहा दौड़, मंज़ल मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं जगत जहान दे तके पौड़, पौड़ी डण्डा नव सत्त वेख वखाईआ। मैं लहिणा देणा तक्कया कलयुग अन्त ब्राह्मण गौड़, गोबिन्द धारा एकँकारा नाल मिलाईआ। मैं चार जुग दे सरोवर तके जौहड़,

जल थल महीअल वेख वखाईआ। मैं दीन दुनी दी आशा तकी कौड़, अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांत ना कोए टपकाईआ। पंच विकार सके कोई ना होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। आत्म परमात्म मेला सके कोई ना जोड़, हँ ब्रह्म पारब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। जिधर तक्कया सति धर्म दा मार्ग होया सौड़, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। सचखण्ड दुआर कोई सके ना बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करके सारे रोवण मारन धाहीआ। जां निगाह मारी सतिगुर शब्द चढ़या अगम्मे घोड़, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं बिन आपणी आसा नट्ठया भज्जया, भजन बन्दगी वेखी थांउँ थाँईंआ। अगा पिच्छा तक्कया खब्या सज्जया, साजण मीत नज़र कोए ना आईआ। सत्त दीप नौ खण्ड पृथ्मी धरनी उत्ते पवित्र दिसे कोई ना जगिहा, जागरत जोत बिन वरन गोत नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट कलयुग कूड़ कुड़यारा अँगयार मघिआ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। किसे मेल ना मिले सूरा सरबगिआ, शाह पातशाह शहिनशाह दरस कोए ना पाईआ। दीपक जोत किसे नज़र ना आए उपर शाहरगिआ, नव दुआर डेरा कोए ना ढाहीआ। कलयुग जीव बुद्धी होई वांग कग्गया, हँस रूप
७७३ गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखां पंच विकारा वहिण वग्गया, धर्म दी धार रिहा रुढ़ाईआ। मैं ब्रह्मण्ड खण्ड ७७३
२४ पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर पार कीती हद्दया, हदूदां पन्ध मुकाईआ। साचा दीपक जोत किते ना दिसे जगया, २४
बिन तेल बाती कमलापाती करे रुशनाईआ। मैं हैरान हो के किहा की हाल होवे अग्गया, भविख पिछला नाल मिलाईआ। झट शंकर मेरे कोल पुज्जया पैर दब्बया , आहट सुणन कोए ना पाईआ । मैं प्रेम नाल पुछी वजया, सच सच देणा दृढ़ाईआ। अगों शंकर जटा जूट आपणी धार विच्चों गज्जया, कूक कूक सुणाईआ। मैं वी हुक्म विच आदि जुगादि बज्झया, हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। मेरा मालक ख़ालक नूर अलाही रब्बया, महिबान बीदो इक अख्वाईआ। जिस दा आदि जगुादि जुग चौकड़ी कोई ना जाणे कदिआ, वड्डा छोटा समझ किछ ना आईआ। उस दा संदेशा सतिगुर शब्द देवे जिस अगे लग्गे कोई ना पज्जया, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। सुण बचन अगम्मा नारद नढुया, बालया तैनूं दयां दृढ़ाईआ। झट नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा लेखा कढुया, जिस दा अक्खर समझ कोए ना पाईआ। फेर धर्म दी धार निशाना गड्डया, त्रिशूल त्रैलोकी धार वखाईआ। नाल इशारा कीता दीन दुनी तक लै विच पई डूँग्घी खड्डया, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर करे कोई ना लड्डया, नाम रस ना कोए चखाईआ। उह तक लै सृष्टी दृष्टी अन्दर इक दूजे नाल करे दग़िआ, फ़रेबां विच ख़लक खुदाईआ। तेरा मेरा मेल होया सबब्या, सहिज नाल दयां जणाईआ। तूं खुशीआं विच होवीं गद गदिआ,

आप आपणी लै अंगड़ाईआ। मैं वक्त उडीकदा कदीम कदिआ, कुदरत दे कादर दिती वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे नूर अलाही रब्या, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। जिस दी सच खुमारी विच मध्या, मस्त मस्ताना रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप दृढ़ाईआ। नारद कहे मैं झट शंकर अगे कीती नमस्ते, बिन सीस सीस निवाईआ। मैनूं भेव आपणा दस्स दे, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं जुग चौकड़ी केते वेखे नसदे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर केते वेखे नाम कलमा जपदे, सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। दीन मज़्हब वेखे तपदे, जगत माया अग्न तपाईआ। की हुक्म वरतणे शंकरा अगे परमेश्वर पति दे, पारब्रह्म की दृढ़ाईआ। किस बिध झगड़े मुकणे मन मति दे, मन मनसा रहे ना राईआ। शंकर हस के किहा नारदा तक लै मानस मानस प्यासे इक दूजे दी रत दे, रत्न अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द संदेशे दिते मूल ना मैनूं बिना अक्खरां खुशख़त दे, जिस दा हरफ़ हरूफ़ नज़र कोए ना आईआ। उह वेख लै गोबिन्द धार सच प्यार जो सथर घतदे, यारड़े सेज हंढाईआ। उस दे हुक्म संदेशे आपणे वतन वत दे, बेवतनां रिहा जणाईआ। जिस दे नूर ज़हूर बिन तेल बाती जोत लट लट दे, नूर नुराना डगमगाईआ। हुण लेखे सुण लै घट घट दे, गहर गम्भीर की सुणाईआ। जिस झगड़े मेटणे दीन मज़्हब दी वट दे, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। उस दे तीर अणयाले कलयुग अन्तिम जाण फटदे, बचया रहिण कोए ना पाईआ। उह वेख लै अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे कौल जांदे टपदे, सदी चौधवीं बीसवीं नाल मिलाईआ। चन्द सितार निशान वेख लै छपदे, जगत नज़र कोए ना आईआ। चार जुग दे कलमे वास्ता घतदे, बिन सीस सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं भज्ज नठ के पुजया सच भूमिका अगम्म अस्थान, जिथ्थे धरनी धरत धवल धौल ज़िमीं असमान नज़र कोए ना आईआ। जां निगाह मारी इक्को सतिगुर शब्द शब्द बलवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस हुक्म संदेशा कीता फ़रमान, फ़ुरनयां बाहर दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। इशारा कीता बिना नेत्रां तक श्री भगवान, बिन ततां वेख वखाईआ। उह बिन अक्खरां सुण ज्ञान, बिन शास्त्रां शब्द पढ़ाईआ। निगाह मार लै ज़िमीं असमान, दो जहानां वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दा ढोला गाण, उह मालक धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी नौजवान, बृद्ध बाल रूप ना कोए बदलाईआ। एथे ओथे सचखण्ड निवासी हुक्मरान, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच विष्न ब्रह्मा शिव कहे असीं सारे सीस निवाण, बिन हथ्थां हथ्थ बंधाईआ। उह हुक्म संदेशा साहिब स्वामी देवे आण,

आनन फ़ानन आपणा हुक्म जणाईआ। पंडता सुण के हो ना जावीं हैरान, हैरानी विच कुरलाईआ। उठ वेख लै अवतार पैग़म्बरां गुरुआं अन्तिम आपणे ला निशान, निशाने दीन दुनी तजाईआ। जिस दा पैग़म्बरां पैग़ाम दिता महान, संदेशा धुरदरगाहीआ। उह वेखणहारा खेल महान, महिमा आपणी आप प्रगटाईआ। जिस दी सिफ्त कर सके ना कोई ज़बान, मुख दन्द ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे शंकर सुण मेरी इक बेनन्ती, बिनै कहि के सीस निवाईआ। मैनूं याद सतिगुर शब्द दी इक्को पंगती, जिस दा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भेव गया दृढ़ाईआ। एह विद्या अक्खरां वाली नहीं कोई पंगती, शास्त्रां गंढु ना कोए रखाईआ । इस विच हँकार नहीं कोई हउमे हंगती, हँ ब्रह्म ना कोए चतुराईआ। इस विच शनवाई नहीं कोई कन्न दी, सरवणां रंग ना कोए रंगाईआ। इस विच आशा नहीं कोई मन दी, मनसा जगत ना कोए प्रगटाईआ। इस विच लोड़ नहीं कोई धन दी, माया ममता मोह ना कोए हल्काईआ। इस विच धार नहीं कोई कर्म दी, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। इस विच आशा नहीं कोई भरम दी, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। इस दी माता जनणी नहीं कोई जन्म दी, ना कोई बणे जणेंदी माईआ। इस दी तन वजूद माटी ख़ाक नहीं कोई चर्म दी, चम्म दृष्टी ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। शंकर कहे नारदा सुण ख़बर अगम्मी आज, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। आदि तों सतिगुर शब्द प्रभू दा समाज, विष्न ब्रह्मा शिव जिस आपणी खेल बणाईआ। सो सतिगुर सूरा हो के गया जाग, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। पंडता तेरे वड्डे वड्डे होए भाग, भगवन देवे माण वड्याईआ। मैनूं इक वेरां प्यार विच पुछ लै नाल वैराग, वैरागी मित्रा तैनूं दयां जणाईआ। मैं शंकर मैं शम्भू भोला नाथ मैनूं सतिगुर शब्द किहा उए बच्चू पंजां सालां तक किसे घर जगदा रहिण ना देवीं चराग़, चरागाहां विच रोवे ख़लक खुदाईआ। मातलोक दा फेर पंडता उजड़या वेखीं बाग़, पत्त टहणी फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। नारद हस के किहा शंकर की तेरे हथ्थ प्रभू फड़ाई वाग, डोरी तेरे नाल बंधाईआ। शंकर किहा नारदा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं संदेशा दिता साथों साडा मालक आवे बाद, आप आपणा रूप बदलाईआ। जिस दा इक्को कलमा वाहिद, वजह सके ना कोए समझाईआ। नारदा तूं सारी सृष्टी विच वजा दे नाद, डोरू डंका बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ । झट नारद हथ्थ मारया आपणी उत्ते बोदी, अगा पिच्छा वेखण कोए ना पाईआ। फेर आपणी आशा अन्दरों सोधी, सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ। फेर आपणा आप बणाया अगम्मा जोगी, जुगीशरां बाहर खेल खलाईआ। फेर

जगत धार दा बणया लोभी, लालच विच आपणा आप करे हल्काईआ। फेर दीन दुनी दी धार विच पै गया सोची, समझ समझ विच्चों उलटाईआ। झट याद आ गया की इशारा दे के गया रवीदास चमारा मोची, रम्बी आर नाल गंढु पुआईआ। की पर्दा उठाया बाल्मीक बजवाड़े जिस दा भेव जाणे ना कोई कोश कोशी, विद्या जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे मैं फेर आपणी बोदी उत्ते मारया धप्पा, बिना हथ्थां पंजा दिता छुहाईआ। जां नेत्र खोल्ल्या मैनूं अक्खर नज़र आया पप्पा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस दे विच समाईआ। जां अक्ख खोल्ही मैनूं निरगुण धार नज़र आया सरगुण धार तपा, सति सरूपी शाहो भूपी इक्को वेख वखाईआ। जिस भेव अभेदा खोल्ह के अगला दस्सया पता, पत्तीदार नज़र कोए ना आईआ। जिस दा इक्को होवे जाप अजपा, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ाईआ। इक्को हुक्म दा होवे ठप्पा, जगत मोहर ना कोए लगाईआ। इक्को खाना होवे नौ खण्ड पृथमी इक्को होवे खता, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को जानणहारा होवे सब दी मित गता, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। इक्को अन्तिम डंका वजणा फ़तह, फ़ातिहा करे ख़लक खुदाईआ। इक्को दा हुक्म संदेश फ़रमान होणा मता, मति मतातरां डेरा ढाहीआ। इक्को दा सथर गुर अवतार पैग़म्बरां गुरुआं होणा घता, इक्को यारड़ा होवे धुर दा माहीआ। इक्को छप्पर छन्न छुहाई होणी छता, छत्रधारी इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर दए वड्याईआ। झट शंकर किहा नारदा वेख लै अगला कांड, की कलयुग हिस्सा रिहा वंडाईआ। की लहिणा देणा सतिगुर शब्द नाल ब्रह्मांड, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर की समझाईआ। नारद कहे मैं निगाह मारी दीन दुनी विच झगड़ा तक्कया दीन मज़्हब आंढ गवांढ, हमसाया साचा नज़र कोए ना आईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां अन्तर पए कोई ना ठांढ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। नारद कहे शंकरा कुछ आपणा खोल्ह दे भेव पर्दा, ओहला मित्रा रहिण ना पाईआ। मैनूं कोई संदेशा दस्स दे प्रभू दे घर दा, गहर गम्भीर की दृढ़ाईआ। कुछ लहिणा तक लै की लेखा नरायण नर दा, की आपणी वंड वंडाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुर बणया रिहा बरदा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जो निरगुण हो के सरगुण रूप रिहा धरदा, धरनी धरत धवल धौल वड्याईआ। जो आपणे नाम कलमे सिफ्ती ढोले रिहा पढ़दा, जगत विद्या नाल सलाहीआ। जो जुग चौकड़ी नित नवित सब दे पल्लू रिहा फड़दा, जुग चौकड़ी आपणी कन्नी गंढु बंधाईआ। जो खण्डा खड़ग तलवार तीर तरकश फड़ के रिहा लड़दा, शत्रु खत्री ब्राह्मण शूद्र

वैश वैश बणाईआ। जो सन्तां भगतां सूफ़ीआं अन्दर हकीकी मंज़ल रिहा चढ़दा, कामल मुर्शद धुरदरगाहीआ। जो लेखा मुकाउँदा रिहा हँकार गढ़ दा, हँ ब्रह्म आप दृढ़ाईआ। जिस दा हिसाब किताब जुग चौकड़ी चोटी जड़ दा, चेतन आपणा हुक्म जणाईआ। जेहड़ा अग्नी अग्ग कदे ना सड़दा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। शंकर कहे नारदा सुण अगम्मी तबलीक, ताब्यादारी विच सीस निवाईआ। जिस दा आदि जुगादि ना कोए शरीक, शरक्त विच कदे ना आईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े घर घर दए पहुंचाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बर गुरु करन तस्दीक, शहादत शब्द सतिगुरु भुगताईआ। जिस दी सब ने रखी उडीक, बिन नेत्रां नैण उठाईआ। जिस दा मार्ग बड़ा बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो मेटणहारा अन्धेरा तारीक, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जो हर घट वसे करीब, घर घर सोभा पाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दिती तरतीब, तबीअत आपणी ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। झट भाद्रों कहे नारदा मैं वी पुराणा प्रभू दा भगत, जुग चौकड़ी चलया आईआ। मैं वी नित नित वेख्या जगत, दीन दुनी संग रखाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तकी शक्त, शख़सीअत वेखी थांउँ थाँईंआ। मानस ज़ाती खेल वेख्या बूँद रक्त, तन वजूदां खोज खुजाईआ। पेशीनगोईआं दा हुक्म सुणदा रिहा सख़्त, जिस दा भेव ना कोए दृढ़ाईआ। मित्रा हुण उस समें दा आ गया वक्त, घड़ी पल जिस दी दए गवाहीआ। मेरे कोल सब दी पुराणी लिखी होई शर्त, शरअ तों बाहर जणाईआ। कलयुग अन्तिम जोती जाता पुरख बिधाता आवे उत्ते धरत, धरनी आपणा खेल खिलाईआ। जोती शब्दी वेस वटाए परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो सब दी पुठ्ठी करे नरद, नर नरायण नूर अलाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ मेटे करद, कातिल मक्तूल दा पन्ध मुकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां जन भगतां वंडे दर्द, दर्द दुःख भय भंजन दया कमाईआ। उस दा खेल होणा असचरज, अचरज लीला दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। भाद्रों कहे सुण लै शंकर कैलाशी, कलाधारीआ तैनूं दयां जणाईआ। तेरा मालक इक्को पुरख अबिनाशी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा सतिगुर शब्द लख चुरासी अन्दर करे तलाशी, ख़ाना ख़ाना खोज खुजाईआ। बेशक कलयुग कूड़ करे बदमुआशी, आप आपणा रंग रंगाईआ। सच धर्म दी धार दूध हो गया छाछी, मक्खण नज़र कोए ना आईआ। उह वेख लै अवतार पैग़म्बर गुरु ऐस समें दे सारे अभिलाशी, आपणी आशा नाल मिलाईआ। जिन्हां दे प्यार विच निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाश करे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा धर्म इक प्रगटाईआ। शंकर कहे सुण भाद्रों मेरे मित्र मीत, सज्जणूआं दयां जणाईआ। मेरे साहिब दी जुग जुग अवलड़ी रीत, जगत जिज्ञासू समझ कोए ना आईआ। जिस दे हुक्म दा इक्को होवे गीत, तूं मेरा मैं तेरा ढोला धुरदरगाहीआ। उह हुक्म संदेशा देवे पतित पुनीत, पारब्रह्म प्रभ आप दृढ़ाईआ। जो सब दे वसणहारा चीत, अन्दर घर घर डेरा लाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, पाहन पाथर सीस ना कोए निवाईआ। उह खेल करे त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दे हुक्म विच होया भय भीत, आपणा बल ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर रंग आप रंगाईआ । सतिगुर शब्द कहे सुण शंकर शम्भू, शिव शिवै दयां जणाईआ। उठ निगाह मार लै विच देस जम्बू, की जम्बक आपणी कार कमाईआ। जिस दे भय विच विष्न ब्रह्मा कम्बू, सिर सके ना कोए उठाईआ। देवत सुर करोड़ तेतीसा जिस दे कोलों मंगू, ख़ाली झोलीआं अगे डाहीआ। उह साहिब सूरा सरबंगू, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो जगत जहान दी मंज़ल लँघू, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जिस दे हुक्म विच धरती उत्ते छेड़ना जंगू, जगह जगह पए दुहाईआ। दीन मज़्हब होवे तंगू, तंग दस्त दिसे लोकाईआ। जिस दा खेल कुछ होण वाला विच खटमंडू, खण्डा जगत धार चमकाईआ। जिस ने शरअ शरीअत करनी रंडू, मुहम्मद महबूब रिहा समझाईआ। जिस ने ईसा लेखा वेखणा अन्तिम कन्ढू, मूसा मुसलसल रिहा समझाईआ। जिस ने नानक निरगुण धार कीता संधू, संनद पिछली दए खुलाईआ। जिस गोबिन्द गोबिन्द लगाया अंगू, अंगीकार इक अख्वाईआ। उहदा अन्त ना आवे जगत मुहाणे वञ्झू, गहर गम्भीर समझ कुछ ना पाईआ। उस दा नाम निधाना दो जहानां इक्को होवे छन्दू, शहिनशाह करे पढ़ाईआ। जिस नूं सब ने मन्नणा दीना बंधू, बन्दना आपणी दए दरसाईआ। जिस ने भगत सुहेले चुकणे आपणे कंधू, कन्ढी घाट पार किनारे दए टिकाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी गंदू, अमृत रस रस चखाईआ। उह दीन दयाल ठाकर स्वामी सब दा होए बख़्शंदू, बख़्शिश रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। नारद कहे शंकर मेरी इक्को इक बेनन्ती, बिनै कहि के दयां दृढ़ाईआ। की हालत होणी जगत जन दी, भेव देणा खुलाईआ। शंकर किहा विष्नूं वेख लै नारदा जिस धार मुकाउणी अन्न दी, अन्त समझ किछ ना आईआ। ब्रह्मे प्यार दी धार रहिण नहीं देणी ब्रह्म दी, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। अन्त निशानी मिटणी तारा चन्द दी, सदी चौधवीं आपणा आप सुहाईआ। उह वेख लै ईसा कहिंदा सब ते घड़ी आउणी ग़म दी, चिन्ता सके ना कोए मिटाईआ। वड्याई रहिणी नहीं किसे हुनर फ़न दी, अक्ल

बुद्धी ना कोए चतुराईआ। अन्त कीमत पैणी इक्को गल्ल दी, जो गल फाँसी सब दी दए कटाईआ। इक्को धार होणी दीन दुनी दे जल दी, जल थल महीअल इक्को रंग रंगाईआ। फेर आशा पूरी होणी राजे बलि दी, जो बावन गया दृढ़ाईआ। कला मिटणी अन्तिम कलयुग कल दी, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। ज़ात पात दीन दुनी आत्म धार वेखणी रलदी, मज़्बां रंग ना कोए रंगाईआ। उह एह खेल अनोखी होणी प्रभू अछल दी, अछल छल आपणी खेल खिलाईआ। उह वेख लै जोत अकालण की शब्द संदेशा घलदी, सुनेहड़े की सुणाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं रहिणी अगले पल दी, पलकां दे पिच्छे बहि के की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा साहिब इक गुसाँईंआ। शंकर कहे नारदा मेरी वेख लै तन ख़ाकी मिट्टी भबूत, चम्म दृष्टी बाहर तकाईआ। सतिगुर शब्द प्रभू दा इक्को अगम्मा दूत, जो संदेशे रिहा सुणाईआ। असीं उस दे सारे पूत, पिता इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को धागा इक्को सूत, इक्को गंढु रिहा पुआईआ। इक्को जिस दी होवे रुत, रुतड़ी इक्को इक महकाईआ। इक्को होवे अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दए कराईआ। जिस ने धार बदलणी विच्चों काया माटी बुत, बुतख़ानयां करे सफाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। शंकर कहे नारदा मेरे कोल पुराणे हुक्मनामे, जिस दा लेख नज़र कोए ना आईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पाए जामे, तन वजूद पंज तत मात प्रगटाईआ। जिस दे हुक्म संदेशे पैग़ाम सुणे नामे, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। जो वसे सचखण्ड ग्रामे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो सब दा मालक ख़ालक अन्तरजामे, भेव अभेदा आपणे विच रखाईआ। जिस दे विष्न ब्रह्मा शिव गुलामे, सिर सिर सिर सिर सारे सीस निवाईआ। उस दे डंके सुणो दमामे, जो दो जहान करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वड्याईआ । झट सतिगुर शब्द कहे सुण शंकर शहाने, सहिज नाल दृढ़ाईआ। तेरे उत्ते पुरख अकाल होया मेहरवाने, मेहरवान दया कमाईआ। जिस दे सब ने मन्नणे भाणे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे आदि जुगादि सारे हुक्मराने, हुक्मे विच सेव कमाईआ। जिस ने तख़्तों लौहणे राजे राणे, सीस ताज ना कोए सुहाईआ। जिस गोद बिठाउणे ग़रीब निमाणे, कोझे कमल्यां गोद उठाईआ। उस दा भेव कोए ना जाणे, बेअन्त कहि के सारे गाईआ। उह बण के शाह सुल्ताने, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जो जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण धार आए विच मैदाने, नव सत्त आपणा भेव चुकाईआ। जिस ने शरअ दे उखेड़ने शाम्याने, शबे रोज़ इक्को रंग रंगाईआ। जिस ने मूसा मुहम्मद ईसा रख्या विच दरम्याने, दर दर दा भेव चुकाईआ। कलमा कायनात

दस्से गाने, शरअ शरीअत विच्चों प्रगटाईआ। उस दा खेल होणा आपणे हुक्म वाले बहाने, दूसर समझ किछ ना आईआ। जिस ने पिच्छे सतिजुग त्रेता द्वापर बदल दिते ज़माने, कलयुग अन्तिम दए बदलाईआ। शंकर कहे वाहवा सतिगुर शब्द मेरे विच वेख लै आपणे ख़ाने, पर्दा सके ना कोए अटकाईआ। मैनूं ऐं जापदा सारे इक दूजे तों हो जाणे बेगाने, संगी रहिण कोए ना पाईआ। जिस वेले किरपा कीती श्री भगवाने, आपणा खेल वखाईआ। मानस मानव मानुख सारे तकणे दरम्याने, अमीरी ग़रीबी वंड ना कोए वंडाईआ। झट शंकर कहे मैनूं इयों दिसदा सारी दुनिया भरन वाली जुरमाने, जुरम मुआफ़ ना कोए कराईआ। पिच्छों रह जाणे अफ़साने, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। उह वक्त याद आउँदा जिस वेले रवीदास ने आपणे आप नूं मिणया ते लम्बाई होई साढे तिन्न हथ्थ काने, सब नूं गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। झट शंकर कहे नारदा मेरे कोल वेख लै धर्म राय दी दरख़ासत, दसख्त चित्रगुप्त नाल मिलाईआ। उन प्यार विच लिख्या शम्भू जी सृष्टी हो गई नास्तक, नाम वाला नज़र कोए ना आईआ। फेर इशारा कीता विष्नूं तूं वी वेख लै उत्ते बैठा बाशक, सेज सांगोपांग तजाईआ। ब्रह्मया निगाह मार लै आपणी चुरासी वाली काश्त, चारे खाणी फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द कलयुग दी क्रिया नूं कर ना सके हुण बरदाशत, धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। दरोही किसे दी सुणनी नहीं सिफ़ारिश, अपील दलील नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट कूड़ दी रहिण नहीं देणी इमारत, फ़सील वेखण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी अन्त दी इक्को ज़िआरत, ज़र्रे ज़र्रे दयां जणाईआ। पैग़म्बर कहिण साडी कलम शाही वाली इबारत, हरफ़ हरफ़ां नाल लिखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे शब्द दी कलम्यां वाली होई तजारत, सौदा दीन दुनी हट्ट विकाईआ। झट इशारा दिता धुर अमाम मैं जदों आवां ते आवां विच भारत, मुहम्मद दी शहादत बिन कलम्यां दए गवाहीआ। मेरा सतिगुर शब्द करे शरारत, शरअ दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। शंकर कहे नारदा उह लेखा तक लै राय धर्म, धर्म दी धर्म धार जणाईआ। जिस दे कोल सब दा कर्म, कांड गोदी विच रखाईआ। उह मेटणहारा भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। चित्रगुप्त कहे मैनूं ना कोई हया ना शर्म, शरअ वाल्यां दयां समझाईआ। मैं इक्को प्रभू दी लोड़ी शरन, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। इक्को धूड़ी लावां चरण, बिन टिक्के ख़ाक रमाईआ। मेरा साहिब स्वामी खेल खेले उत्ते धरन, धवल दा लेखा वेख वखाईआ। जो मालक करनी करन, करता पुरख नूर अलाहीआ। जिस दे भय विच सारे डरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। राय धर्म कहे मैं उस दे हुक्म नाल सब नूं लग्गा फड़न, लेखा

लेखे विच्चों प्रगटाईआ। लहिंदा चढ़दा कूटां लग्गा चढ़न, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। नारद कहे शंकरा की संदेशा प्रभू भगवन्त, भगवन की दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, अन्त कहिण कुछ ना पाईआ। जिस नूं आदि जुगादि गाउँदे सन्त, जुग चौकड़ी ढोले गाईआ। जिस ने तेरी बणाई बणत, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। की उस दा लेखा नाल जीव जंत, मेहरवान हो के मैनूं दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। शंकर कहे नारदा सो पुरख निरञ्जण खेल खिलावेगा। हरि पुरख निरञ्जण वेख वखावेगा । एकँकारा रंग रंगावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता भेव खुल्हावेगा। श्री भगवान पड़दा लाहवेगा। पारब्रह्म आप समझावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। सचखण्ड साचा आप सुहावेगा। दरगाह साची नूर रुशनावेगा। मुकामे हक हट्ट विकावेगा। थिर घर आपणा भेव चुकावेगा। विष्नूं विश्व धार समझावेगा। ब्रह्मा ब्रह्म पड़दा आप उठावेगा। शंकर तेरी शरअ दृढ़ावेगा। हुक्म संदेशा इक सुणावेगा। गणपति गणेशा नाल मिलावेगा। करोड़ तेतीसा गंढु पुआवेगा। गण गंधर्ब राग सुणावेगा। किन्नर यशप नाच नचावेगा। त्रैगुण माया मेल मिलावेगा। पंजां ततां वंड वंडावेगा। चारे खाणी हुक्म सुणावेगा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप उठावेगा। चारे बाणी राग दृढ़ावेगा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोले गावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश आप हिलावेगा। धरनी धरत धवल धौल रंग चढ़ावेगा। तेई अवतारां संग रलावेगा। मूसा ईसा मुहम्मद जोड़ जुड़ावेगा। नानक गोबिन्द गंढु पुआवेगा। कलयुग आपणा भेव खुल्हावेगा। देवी देव आप अख्वावेगा। आत्म परमात्म संग निभावेगा। पारब्रह्म ब्रह्म संग रखावेगा। ईश जीव ना वंड वंडावेगा। जगत जगदीश हुक्म वरतावेगा। बीस इकीस रंग रंगावेगा। इक्को कलमा इक हदीस, इक्को नाम दृढ़ावेगा। इक्को छत्र झुले सीस, दूजा इष्ट ना कोए रखावेगा। इक्को माण बख्शे हस्त कीट, कीट कीटां आपणे रंग रंगावेगा। इक्को स्वामी बण के बीठलो बीठ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकावेगा। कलयुग कौड़ा भन्ने रीठ, सतिजुग अमृत अमृत अमृत मेघ बरसावेगा। आपणा खेल करे अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आवेगा। दीन दुनी नालों करवट बदल के पीठ, सनमुख भगतां सोभा पावेगा। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा खेल खिलावेगा। शंकर कहे प्रभ खेले खेल अगम्मा, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जिस नूं सीस निवाए विष्न नाल ब्रह्मा, शंकर लागे पाईआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता जरमा, सोहणा रंग चढ़ाईआ। जिस ने आत्म परमात्म दस्सया धर्मा, धर्म धार समझाईआ। उह परम पुरख परमात्म परमा, पारब्रह्म

नूर अलाहीआ। जिस ने अन्तिम सब कुछ करना, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। झगड़ा मेटे वरना बरना, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। इक्को इक सब नूं बख़्शणी सरना, सरनगति इक रखाईआ। जन भगतां खोल्हे हरना फरना, निज लोचन नैण रुशनाईआ। जिस दी मंज़ल बिन पौड़ीउँ हरिजन जन हरि चढ़ना, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जिन्हां तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़ना, सोहँ शब्द सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक सुहाईआ। झट भाद्रों कहे शंकरा मेरा दिवस दिहाढ़ा चंगा, मैं चंगी तरह जणाईआ। आह निगाह मार लै जटा जूट धारी किस दुआरे बैठी गंगा, यमुना सरस्वती गोदावरी नाल मिलाईआ। जिन्हां दा प्रभू दे हुक्म विच वक्त लँघा, लोकमात दयां वड्याईआ। उह कुछ मंगण आ गईआं मंगां, दर ठांडे झोली डाहीआ। कुछ उन्हां नूं दस्सदे ढंगा, सहिज नाल समझाईआ। शंकर किहा नारदा तूं वी पुराणा पंडा, कुछ पर्दा दे उठाईआ। नारद किहा भाद्रों मैं घर घर देवण आ गया गंढ्ढां, संदेश्यां नाल सुणाईआ। उह तक लै सतिगुर शब्द दा सतरंग दा डण्डा, जो डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। उह तुहाडा पवित्र करे तट किनारा कन्ढा, घाटां वेख वखाईआ। गोदावरी रो पई मैनूं याद आउँदा गोबिन्द वाला खण्डा, जो खड़गां करे सफ़ाईआ। सरस्वती कहे मैं हैरान हो गई अचंभा, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। यमुना कहे मैनूं कृष्ण दा समां नहीं दिसदा लम्बा, लमह लमह खोज खुजाईआ। झट कलयुग आ गया मोढे हिलावे नाले हलूणे कंधा, भुजां भुजां तों बिना हिलाईआ। नी चारे दस्सो तुहाडे विच्चों किस दा अमृत रह गया ठंडा, जल धारा नाल वड्याईआ। केहड़ा पवित्र रह गया पंडा, गायत्री मन्त्र कवण सुणाईआ। तुहाडे कन्ढे घाटां उत्ते तुहाडे साहमणे लैंदे चन्दा, जगत माया नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भाद्रों कहे मैं इक्को पुछण आया सलाह, शंकरा मशवरा देणा जणाईआ। केहड़ी मंज़ल केहड़ा सच्चा राह, रैहबर कवण अख्वाईआ। शंकर कहे भाद्रों उह मेरा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणे मलाह, बेड़े सब दे कंध उठाईआ। जिस नूं सारयां किहा वाह वाह, वाहिगुरु कहि के सीस निवाईआ। उह लहिणा देणा जाणे थांउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलाईआ। जिस दी आशा रख के बैठी धरनी माँ, ममता विच रही कुरलाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी अन्तिम पकड़ लै बांह, बाज़ू तेरे हथ्थ फड़ाईआ। मेरे उत्तों मेट दे गुनाह, गुरबत रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी ना रहे काँ, काग हँस दे बणाईआ। ना कोई सूर खाए ना गाँ, पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। तूं अमाम अमामां पैग़म्बरां दा रहिनुमा, कदम बोसी विच सीस निवाईआ। मेरे नूर अलाह ज़मनू ज़वी कुनिसते दुआ जम्बा इसती ज़ऊ नूरे खुदा, खुद मालक तेरे हथ्थ

वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग इक दरसाईआ। भाद्रों कहे मेरे सतिगुर शब्द साजणा, मित्रा तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे शाहो भूप राज राजना, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। तूं कलयुग अन्तिम संवारीं काजना, करता पुरख जो दृढ़ाईआ। वेखीं किते वणज ना करीं वांग महाजनां, सूद असल नाल वड्याईआ। मेरे सतिगुर शब्द तेरी किरपा बिना किसे नहीं जागणा, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तूं अन्तर निरंतर बिन रसना जिह्वा मारनी आवाज़ना, सुरती शब्द शब्द नाल उठाईआ। सच प्यार दा बख्शीं वैरागना, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। तेरी किरपा नाल कलयुग कूड़ कुड़यार त्यागणा, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। तूं आत्म परमात्म बणना कन्त सुहागणा, सेज सुहञ्जणी देणी वड्याईआ। मेरे मोहण माधव माधना, मधुर धुन देणी सुणाईआ। मेरा अन्त संवारीं काजना, करनी दे करते तेरी ओट तकाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों बदल समाजना, इक्को आपणा रंग रंगाईआ। चारों कुण्ट ना फिरे भाजना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द किहा सुण भाद्रों तेरी पूरी करां सध्धर, सदके वारी घोल घुमाईआ। तेरे प्यार दी होवे कदर, कुदरत दा कादर दए वड्याईआ। तूं सुणनी धुन मधुर, मध सूदन हो के दयां जणाईआ। पर याद रखीं भाद्रों जदों तिन्नां देशां दा शुरू होया ग़दर, तेरा प्रविष्टा सोहणा नज़री आईआ। फेर हाढ़ सतारां अगे लग्गे वधण, दोहां ने भज्जणा वाहो दाहीआ। बेशक तुहाडा दिसदा नहीं बदन, तन वजूद ना कोए रखाईआ। दोवें इशारा दे दयो की खेल होवे विच अदन, मुहम्मद लै रिहा अंगड़ाईआ। किस बिध मूसा धार आपणा प्रेम आवे छडण, धरनी धरत धवल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द किहा भाद्रों कर लै सबर, सावरीआ दए वड्याईआ। जो आदि जुगादी गहर गवर, गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जिस दी आशा रख के बैठी मुहम्मद दी लाश विच कबर, मकबरयां बाहर नैण उठाईआ। उह अन्त आवे करन अदल, इन्साफ़ आपणा दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे बदल, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ। शरअ दी धार शरअ करे कत्ल, कातिल मक्तूल समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच आप प्रगटाईआ। भाद्रों कहे मेरा सतिगुर शब्द अगे हाढ़ा, निव निव लागां पाईआ। मेरा खुशीआं वाला दिहाढ़ा, लोकमात वजी वधाईआ। जन भगतां लग्गा अखाड़ा, दर ठांडे सोभा पाईआ। जिन्हां दा पुरख अकाल अगम्मी लाड़ा, दूजा कन्त ना कोए हंढाईआ। जो आत्म अन्तर रंग चाढ़े गाढ़ा, आदि जुगादि उतर कदे ना जाईआ। जो होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्वत समुंद सागराँ वेख

वखाईआ। जो प्रकाश देवे बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। भाद्रों कहे मेरी आशा इक्को तमंना, जन भगतो दयां जणाईआ। उह लेखा पूरा होणा जो गोबिन्द लाया कन्ना, कायनात समझ कोए ना आईआ। जिस कारन सतिगुर शब्द दा हुक्म मंना, मनसा जगत ना कोए जणाईआ। जिस धार विच्चों परगटया नूरी चन्द चन्ना, गोबिन्द धुर दा माहीआ। उह मेटण आया हद्द बंना, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा वसेरा बिना छप्पर छन्ना, जगत महल ना कोए रखाईआ। उह वसणहारा भगतां तनां, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। जिस दा मार्ग इक्को नवां, नवखण्ड पृथ्मी रिहा समझाईआ। इक्को जोत जगावे शमअ, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दी धार विच्चों सतिजुग होया रवां, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। उसे दे गुण गवां, गा गा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो मेरा खेल आदि जुगादि नित नवित, प्रभ दा भेव चुकाईआ। जो सब दे नाल करे हित, हितकारी धुरदरगाहीआ। ठगौरी रहिण ना देवे चित, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। धुर दा बण के परमेश्वर पित, पूत सपूते गोद उठाईआ। उस दी किरपा नाल मानस जन्म जाणा जित, चुरासी फाँसी ना कोए लटकाईआ। साची सेजा जाणा लिट, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जिथ्थे ना कोए पत्थर इट्ट, पाहना सीस ना कोए झुकाईआ। ना कोई बूँद ना कोई रित, रक्त वेखण कोए ना जाईआ। ना कोई वार ना कोई थित, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला जो सब दे वसे विच, विचोला सतिगुर शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर इक वड्याईआ। भाद्रों कहे मेरा सोहणा चढ़या महीना, महिफ़ल भगतां वेख वखाईआ। मैं निगाह मारी लोक तीना, त्रैलोकी वेख वखाईआ। धरती उत्ते वेख्या किस बिध कलयुग जीवां जीणा, जीवण जुगती हथ्थ किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चारों कुण्ट वजे हँकारी बीना, बेनन्ती विच सीस ना कोए निवाईआ। शाह सुल्तान राज राजान होया कमीना, कूड़ी क्रिया ना कोए तजाईआ। जगत जिज्ञासुआं मुश्किल हो गया जीणा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी ना कोए बदलाईआ। काया चोली चाढ़े रंग कोई ना भीना, भिन्नड़ी रैण ना ख़ुशी बणाईआ। ठांडा होए किसे ना सीना, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मारूथल तपे ज़मीना, सच मेघ नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म चारों कुण्ट गया छीना, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। भाद्रों कहे जन भगतो दोवें संवारो भुजां, भुयंगीओ तुहानूं दयां सुणाईआ। प्रभू दा खेल जुगो

७८४
२४

जुगा, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। कलयुग अन्तिम जोती धार होया उग्घा, उग्घण आथण करे रुशनाईआ। जिस दे नाम दा लए कोई ना भुग्गा, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। मानव ज़ाती इक्को धर्म दा दिसे मुद्दा, मुदतां दा डेरा ढाहीआ। खेल करे उत्ते वसुधा, धरनी धरत धवल धौल रुशनाईआ। धर्म दा दीपक फेर जगाए बुज्झा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा स्वामी इक अख्वाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो मेरी सब दे अगे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सब दा इक्को मित्र मुरार, मीत मुरारा इक अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे सांझा यार, यारड़ा नूर अलाहीआ। उस दे सब कुछ अख्त्यार, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेखे चाँईं चाँईंआ। सो कलयुग अन्त जोती जाता हो के दए दीदार, निरगुण निराकार निरँकार दया कमाईआ। तुहाडी सब दी मन्ज़ूर करे निमस्कार, डण्डावत बन्दना आपणे लेखे पाईआ। सब दे रोग सोग दुःख दए निवार, चिन्ता चिखा ग़मी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। लख चुरासी विच्चों करे पार, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। तुसीं उस प्रभू दे बण गए यार, जिस दा यराना सके ना कोए तुड़ाईआ। तुसीं उस दे प्रेम दी आत्म धार, धर्मीउँ तुहानूं दयां जणाईआ। तुहाडा सति सरूप ना पुरख ना नार, स्त्री मर्द ना वंड वंडाईआ। इक्को जोत जोत दी धार, दूसर रूप ना कोए दरसाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तुहाडी पावे सार, पुरख अबिनाशी हो के वेख वखाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो प्रभू दे नाल काहदा तकरार, झगड़ा कम्म किसे ना आईआ। जेहड़ा वेंहदयां वेंहदयां हो जावे फ़रार, चारे कूटां नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा खुशीआं नाल करे इज़हार, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। इस दा मेला मित्रा कोई साल दो कि चार, चौथा जुग दए गवाहीआ। एह विछड़न वाला संसार, सगला संग ना कोए निभाईआ। उह वेखो काअब्यां उडदी छार, मक्का मदीना रहे कुरलाईआ। चढ़दा रोवे ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। दक्खण पहाड़ रहे पुकार, साडी चले ना कोए चतुराईआ। रूसा चीना रहे वंगार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सृष्टी विच खेल होणा अपार, अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच आप प्रगटाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो मेरीआं दुनिया वालीआं नहीं दलीलां, जिज्ञासुआं वाली ना कोए पढ़ाईआ। प्रभू दे दुआरे हुन्दीआं नहीं अपीलां, वुकला नज़र कोए ना आईआ। बिना सतिगुर शब्द तों होर नहीं वसीला, जगत विशा कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच आप प्रगटाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो मेरा बचन मित्रो सचा, सच दयां जणाईआ। मैनूं दस्स के गया गोबिन्द पुरख अकाल दा बच्चा, जिस

नूं जन्मे कोए ना माईआ। कलयुग अन्तिम भाण्डा दिसदा कच्चा, ठीकर भन्ने बेपरवाहीआ। जेहड़ा कूड़ विकार हो के घर घर अन्दर नच्चा, वेसवा धार खेल खिलाईआ। माया ममता रूप हो के लूं लूं रचा, तन वजूदां गया समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक खेल खिलाईआ। कलयुग कहे भाद्रों तूं क्यों मेरी करें बदनामी, सोहणया दे समझाईआ। मैं प्रभू दा पुत अनामी, चौथा जुग अख्वाईआ। मैनूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिती सलामी, दूरों वेखी चाँईं चाँईंआ। मेरा तक लै अन्धेरा शामी, नूरी जोत ना कोए रुशनाईआ। दुनिया तक लै मैं शरअ दी बणाई ग़ुलामी, ज़ंजीर बिन तन्दां तन्द छुहाईआ। मेरी सब तों वखरी कहाणी, कहावत दयां दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते पुरख अकाल कीती मेहरवानी, मेहरवां होया बेपरवाहीआ। मेरी गुरुआं अवतारां पैग़म्बरां सारयां दिती निशानी, अवतारां निशाने दिते वखाईआ। सतिगुर शब्द मैनूं संदेशा दिता ज़बानी, बिन कागज़ कलम शाही लिखाईआ। कलयुग तेरी चढ़दी होवे जवानी, चढ़दे लहिंदे तेरी वजे वधाईआ। तेरे विच अन्त मंज़ल रहे ना कोए रूहानी, रूह बुत सारे रोवण मारन धाहीआ। कलयुग कहे भाद्रों मैं वेखी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब दया कमाईआ। कलयुग कहे भाद्रों मैनूं प्रभ ने दिता माण, जो निमाणयां होए सहाईआ। मैं उसे दा गावां गाण, उसे दा ढोला तैनूं दयां सुणाईआ। मैं कोई बाल नहीं अंञाण, बुधहीण ना कोए अख्वाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर नालों शैतान, जिस शरअ दी शरअ नाल कीती लड़ाईआ। मेरा भेद पा सके ना कोए इन्सान, बुद्धी मति ना कोए चतुराईआ। मैं पिता पूत कीते इक दूजे तों बेईमान, बेवा कीती ख़लक ख़ुदाईआ । आपणे मालक नूं सके ना कोई पछाण, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं सारयां दे काया मन्दिर वड़या विच मकान, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर डेरा लाईआ। मेरे हुंदयां बेशक सारी सृष्टी गाए नाल ज़बान, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। क्यों मैं कलयुग कूड़ कुड़यार सति दा बणया महिमान, घर घर अन्दर आपणा डेरा लाईआ। मैं जूठ झूठ दा जीवां जिज्ञासुआं दिता दान, भिच्छया बिना इच्छया दिती वरताईआ। उह मेरे हुंदयां किसे दी सुरत जुड़े ना नाल सीता राम, राधे काहन नज़र किसे ना आईआ। हकीकी पी सके कोई ना जाम, धुर अमाम वेखे कोए ना चाँईं चाँईंआ। मेरा खेल मिटा ना सके सतिनाम, सति सच नाल मेरा झूठ लए अंगड़ाईआ। मैं फ़तिह दा डंका वजाया विच जहान, आप आपणा बल प्रगटाईआ। ज़रा सुणना ला के कान, आपणा लेखा दयां समझाईआ। मैं सारे इन्सान बणाउणे हैवान, इन्सान हैवान इक दूजे दा भेव कोए ना आईआ। चार साल तों बाद पता नहीं किसे देश दा कोई नहीं रहिणा प्रधान, वाग डोर हथ्थ ना कोए उठाईआ। कलयुग कहे फेर मैं बैठांगा

नाल आराम, घट घट दे अन्दर आपणा आसण लाईआ। नाले रूह दा प्यावांगा जाम, जमां नूं सद्दा देवां उए आओ चाँईं चाँईंआ। उस वेले राय धर्म मैनूं मंनेगा भगवान, वाह कलयुग तेरी वजी वधाईआ। लाड़ी मौत मेरे चरणां विच आण करे प्रणाम, बिना धूड़ीउँ ख़ाक रमाईआ। मढ़ी गोर मैं सब दे बणावां अस्थान, सोहणी सेजा दयां लिटाईआ। इहो आशा रखी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं सदी चौधवीं देवे ब्यान, बिन रसना ढोले गाईआ। कलयुग कहे मैं सब तों चंगा जिस दे वास्ते धरती उत्ते आप आए भगवान, भगवन आपणा रूप बदलाईआ। उसे नूं पैग़म्बरां किहा अमाम, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उसे नूं सयदे कीते सलाम, कदम बोसी विच आपणा शुकर मनाईआ। उसे नूं कलि कल्की कहि के अवतारां कीता परवान, निहकलंका आपणा डंक वजाईआ। कलयुग कहे भाद्रों मैनूं वी उसे ने दिता दान, जो दाता दानी धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी करनी दा करता कुदरत दा कादर निरगुण आपणा हुक्म आप वरताईआ।

✪ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर हरिसंगत नवित ✪

७८७
२४

शंकर कहे मेरा हुक्म चले उत्तों कैलाशी, कल आपणी आप प्रगटाईआ। दीन दुनी दी अन्तर धार तकी बदमुआशी, बदी वेखी थांउँ थाँईंआ। धुर दे हुक्म नाल सतिगुर शब्द लई तलाशी, नव नव दा कोना कोना खोज खुजाईआ। सच प्यार मुहब्बत दी दिसे ना कोए आब पाशी, बूँद स्वांती रस ना कोए चुआईआ। नौ खण्ड पृथमी जगत विद्या वेखी भाशी, प्रकृती संसर्किती विच ध्यान लगाईआ। जां निगाह मारी सरगुण दिसे लाश ते लाशी, लशकरां आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। शंकर कहे मैं बण के धर्म शुकीन, शौंक आपणा पूर कराईआ। मेरा मालक ख़ालक इक प्रवीन, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस दा मार्ग जुग चौकड़ी महीन, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कीती तकसीम, हिस्से आपणे हथ्थ रखाईआ। उस दा लहिणा देणा उत्ते ज़मीन, ज़मीं ज़मां वजे वधाईआ। मेरा अन्तष्करन कदे ना होए ग़मगीन, ग़मी विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। शंकर कहे मैं दो जहान तकी महिराब, महबूब वल ध्यान लगाईआ। मैनूं मालक ख़ालक मिल्या अगम्मा अहिबाब, मित्र प्यारा दोस्त धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि दो जहान नवाब, नौबत आपणा नाम खड़काईआ। जिस नूं ना कोए पुन्न ना सुआब, इक्को रंग वसे

धुर दा माहीआ। जिस ने रचना रची निरगुण धार आदि, अन्त वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस दा सतिगुर शब्द फिरे विच ब्रह्माद, भज्जे वाहो दाहीआ। सच संदेशा सुणे नाद, धुन अनादी आप प्रगटाईआ। जो जन भगतां रखे सदा याद, यादाशत आपणे विच छुपाईआ । उहदा लेखा तक्कया विच पंज आब, पंचम दा मालक रूप वटाईआ। जिथ्थे ना कोई सवाल ना जवाब, जुआब तल्बी नज़र कोए ना आईआ। उह देवणहारा आप ख़ताब, मुख़ातब हो के दए दृढ़ाईआ। तन वजूद वजाए रबाब, सितार नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। शंकर कहे मेरा सब दे नाल तअलुक, तरफ़दारी नज़र कोए ना आईआ। मैं नूर नुरानी निरगुण धार दी वेख झलक, ख़ालक ख़लक रूप दरसाईआ। निगाह मारां उत्ते फ़लक, असमानां खोज खुजाईआ। फेर तकां दीन दुनी जगत दी ख़लक, ख़ालक आपणे रंग रंगाईआ। मैं परत के वेखां आपणी पलक, अक्खीआं अक्खीआं विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। शंकर कहे मैं शक्क रखां ना शकूक, शिकवा रहिण कोए ना पाईआ। मैं प्रभ तों मंगां इक हकूक, जो हिकमत नाल दए समझाईआ। मेरा जगत जहान खेल जाए ना चूक, चुकन्ना सब नूं दए बणाईआ। सतिगुर शब्द इशारा मारे फूक, बिन पवण स्वास स्वास हिलाईआ। दीन दुनी दा बदलां सलूक, साजण मीत रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा मार्ग सदा बारीक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नेत्र लोचन नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां लोकमात आप करे तस्दीक, शब्द शहादत नाल भुगताईआ। जिस दी सारे करन उडीक, उह मालक धुरदरगाहीआ। उस दा नाम कलमा हक तौफ़ीक, तोहफ़े नाम दए वरताईआ। उस दी टुट्टे ना कदे प्रीत, प्रीतम हो के मिले चाँईं चाँईंआ। शंकर कहे मैं पिछले लेखे ते मारां लीक, लाईन अगली वेख वखाईआ। जिस ने दीन दुनी दी बदल देणी तारीख, तवारीख दए उलटाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला ना मांगे कोई भीख, भिखक नज़र कोए ना आईआ। हरिजन सन्त सुहेले *बणन सीख, सिख्या सतिगुर संग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा स्वामी इक अख्वाईआ। शंकर कहे मैं सब दी जाणदा शकल, तन वजूदां वेख वखाईआ। मेरे तों परे नहीं कोई अक्ल, आकलां दयां भेव चुकाईआ। जिस दा राह तके लाड़ी मौत मलकल, आपणा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। शंकर कहे मैं तक्कया नाल आपणी शक्त, शख़सीअत सब दी वेख वखाईआ। सन्त सुहेले वेखे भगत, हरिजन साचे सोभा पाईआ। जिन्हां दा धर्म धार दा वक्त, थित वार दए गवाहीआ। उह लेखा जाणे सब दा फ़कत, फ़िकरे नाम वाले दृढ़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। शंकर किहा सति करां अरदास, अरज़ोई दयां जणाईआ। मेरा लेखा नाल शंकर कैलाश, अकल कलधारी हो के दयां दृढ़ाईआ। मेरा परम पुरख परमात्म मेरी पूरी करे आस, हिस्सा वंड रहिण कोए ना पाईआ। शंकर कहे मेरा हुक्म संदेशा ख़ास, ख़ासीयत दयां समझाईआ। जन भगतो प्रभू नूं काया मन्दिर अन्दर करयो तलाश, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के देवां प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। जन भगतां काया मन्दिर अन्दर पावां रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। मैनूं प्रभू देवे शाबाश, सिर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। शंकरा तूं रहिण वाला विच प्रभास, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तेरे धर्म दी तैनूं मिले शाबाश, विशा अवर ना कोए जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आवे तेरे पास, पासा दीन दुनी उलटाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे उत्ते कैलाश, कलधारी हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच सारे हुन्दे नास, उत्तर भजी विच भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां वसे स्वास स्वास, साह साह आपणा रंग रंगाईआ।

✪ ४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ केहर सिँघ दे नवित हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

शंकर कहे मैं प्रभ दा बड़ा श्रद्धालू, श्रद्धा मेरी समझ किसे ना आईआ। मेरा मेहरवान महबूब बड़ा कृपालू, किरपा निध धुरदरगाहीआ। जो जुग चौकड़ी वक्त संभालू, सम्बल बहि के खुशी बणाईआ। जन भगतां लहिणा देणा पूरा करे जो संदेशा दे के गया नानक सुत कालू, कलयुग कूड़ी क्रिया आप खपाईआ। भगत सुहेले साजण मीत आपे भालू, खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। शंकर कहे मैं वेख वेख के हसदा, हस्ती बेपरवाहीआ। मेरा अन्तष्करन भरया जस दा, जस वेद पुराणी अन्त कहिण किछ ना पाईआ। प्रभू दा खेल अखलणा अलख दा, अगोचर आपणी कार भुगताईआ। अन्तिम लहिणा देणा पूरा करे हथ्थो हथ्थ दा, दुरमति मैल मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। शंकर कहे मैं खेल नहीं करदा सुणी, सति सच दृढ़ाईआ। मैं सृष्टी वेखी विच दीन दुनी, दो जहानां दयां सुणाईआ। गुरमुखां चोटी जाए कदे ना मुन्नी, मुनीश्र रंग ना कोए समाईआ। ओढण सीस दिसे किसे ना चुन्नी, पर्दा सके ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

शंकर कहे मैं वेखी दीन दुनी दी धार, नाता धर्म दा धर्म नाल ना कोए जुड़ाईआ। प्रभ दी सुणे ना कोए गुफ़तार, गुफ़त शनीद रिहा जणाईआ। जो सब दा पालणहार, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। उह लेखा लहिणा जाणे नौजुआन, जुग जुग दा पर्दा आप चुकाईआ। पुरख अकाला होवे मेहरवान, महबूब आपणा संग निभाईआ। जो एथे उथे दो जहान देवणहारा दान, दाता दानी इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। शंकर कहे मैं दीन दुनी नूं तक्कया, बिन नेत्र लोचन नैण उठाईआ। फिरी दरोही मदीना मक्कया, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। शरअ दी कीमत दिसे कोई ना टकया, धर्म दा ईमान बैठा गुआईआ। मेरा गोबिन्द नाल वअदा पक्कया, इकरार दिता समझाईआ। मैं जगत जहान नस्सया, सृष्टी दृष्टी अन्तर दिती जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सब दा होए सहा, सहायक नायक निरगुण दाता पुरख बिधाता एका एक अख्वाईआ।

७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर

भाद्रों सत्त कहे मैं सति सतिवादी, सति सच प्रभ देवे माण वड्याईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला रिहा अराधी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। जो मालक ख़ालक आदि जुगादी, दो जहानां नूर अलाहीआ । जिस दे प्यार विच सति धर्म जाए साधी, जगत विकार नज़र कोए ना आईआ। सो धुर फ़रमाना देवे बोध अगाधी, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जिस दा नाम शब्द नाद धुन अनादी, बिन सरवणां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सच दा मालक इक गुसईंआ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी नित नवित निरगुण धार चले नईया, नौका दो जहान चलाईआ। जो आत्म परमात्म बणे धुर दा सईआ, सज्जण सज्जणूआ इक अख्वाईआ। जिस नूं सब ने किहा राम रम्ईआ, रूप रंग रेख नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। सति कहे मेरा लेखा नाल सतिवन्त, सतिगुर शब्द देवे वड्याईआ। जो मालक ख़ालक अगम्मी कन्त, कन्तूहल इक्को नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादी बणाउण हारा बणत, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस दा इक्को नाम निधाना मंत, बिन रसना जिह्वा ढोले दए सुणाईआ । जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। आदि जुगादी बणे बोध अगाधा पंडत, निरअक्खर धार करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ । सति कहे मेरा लेखा आदि जुगादी एक, एकँकार दिती वड्याईआ। सतिगुर शब्द दी रखी टेक, बिन धूड़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। जिस ने मेरा अन्तष्करन कीता बिबेक, दुरमति मैल रही ना राईआ। त्रैगुण माया ला सके ना सेक, अग्नी तत तत बुझाईआ। जिस दे रूप अनूप अनेक, अवतार पैग़म्बर गुरु खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ । सति कहे मैं आदि जुगादी सति, सति सति विच समाईआ। मेरी धार ब्रह्म मति, पारब्रह्म दिती वड्याईआ। मेरा एकँकार नाल नत्त, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर रखाईआ। सो मेरी रखणहारा पत्त, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ । जो लोकमात आवे वत, बेवतनां वेख वखाईआ। जिस दा हड्ड मास नाड़ी दिसे कोई ना रत, तन वजूद वेखण कोए ना पाईआ। जिस दा वसेरा बिना छप्पर छन्न छत, चार दीवारी संग ना कोए रखाईआ। उह जानणहारा मेरी मित गत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। जिस दी याद विच आदि जुगादि जुग चौकड़ी सथर बैठा घत, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सति कहे
७६१ मेरा आदि जुगादी इक्को नाम, नर निरँकार दिती वड्याईआ। अमृत रस प्या के जाम, जगत तृष्ना भुख दिती मिटाईआ। ७६१
२४ अन्तर मेट अन्धेरा शाम, नूरी चन्द चन्द रुशनाईआ । जगह दस्स मुकाम, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मेरा पूरा करे २४
काम, कामना अवर ना कोए जणाईआ। जो आदि जुगादि सब दा करे इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। सो अन्त कन्त भगवन्त कलयुग अन्त वेखे नाम, कलमे कायनात फोल फुलाईआ। शरअ दी शरअ वेखे गुलाम, गुरबत तके थांउँ थाँईआ। इस्म आज़म वेखे इस्लाम, नूरे चश्म चश्म खुदाईआ। जिस दा सब तों वखरा इक काम, कदम कदम नाल बदलाईआ। सो देवणहार पैगाम, पैग़म्बरां बाहर करे शनवाईआ। जिस नूं कहिंदे धुर अमाम, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सति कहे मैनूं मुहम्मद किहा वज़ीउल ज़मा नूरे यश ज़ख़मीउल ज़मां वज़ी असतम ताविज़ले खुदा, खुद मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सति कहे मेरा सच दे नाल रिश्ता, दीन दुनी तों बाहर नाता देणा जणाईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरा संग निभाउण आहिस्ता आहिस्ता, जुग जुग पल्लू गंढु बंधाईआ। मेरी तमहीद कीती जबराईल फ़रिश्ता, फ़र्शे ख़ाकी ज़िमीं ज़मां गया दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते सब ने कीता निस्चा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मैं करनी दे कारन करके दिसदा, करतब आपणा दयां दृढ़ाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब तको भगत

सुहेले नाल जिस दा, जिस्म ज़मीर बाहर समझाईआ। सति कहे काग़ज़ कलम शाही मेरा लेख धर्म धार विच लिखदा, जिस नूं मेट सके कोए ना राईआ। मेरा रूप अनूपा गोबिन्द धार साचे सिख दा, सिक्खी सिख्या विच्चों प्रगटाईआ। मेरा भेव अभेदा आदि जुगादि कदे ना मिटदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं बणया नहीं कोई पत्थर इट्ट दा, पाहनां रंग ना कोए रंगाईआ। मेरा रूप नहीं कोई बूँद रित दा, रक्त बूँद ना गंढु पुआईआ। मेरा सच प्यार अबिनाशी अचुत दा, जो चेतन सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग अगम्म रंगाईआ। सति कहे मैं सब दा मित मीत, मित्रो दयां जणाईआ। मेरी आदि जुगादी प्रभ चलाई रीत, सतिगुर शब्द दिती वड्याईआ। मैं निरगुण धार पतित पुनीत, पावन हो के दयां सुणाईआ । मेरा इक्को ढोला इक्को गीत, इक्को मालक गोबिन्द धुर दा माहीआ। जिस मैनूं कीता ठांडा सीत, आदि जुगादि अग्नी तत बुझाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल नहीं मन्दिर मसीत, काअब्यां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं हर घट वसां चीत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले सच बणा के प्रीत, प्रीतम मेलां धुरदरगाहीआ। धार वखावां अगम्म अनडीठ, जिथ्थे जोती जाता पुरख बिधाता सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साचा संग बणाईआ। सति कहे जन भगतो मेरा मंनो कहिणा, बिन रसना जिह्वा दयां जणाईआ। इक्को मालक ख़ालक तको नर नरायणा, जो निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। इक्को मंनो साक सज्जण धुर दा सैणा, आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। इक्को हुक्म संदेशा मंनो कहिणा, दूसर शब्द ना कोए शनवाईआ। इक्को दे चरण कवल सच सरनाई पैणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। इक्को दे धाम अवल्लड़े निरगुण धार हो के बहणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक गुसाँईआ। सति कहे जन भगतो दीन दुनी दा वेखो धर्म, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। आत्म धार दा एथे आ के वेखो जरम, बिन ततां तको जगत जणेंदी माईआ। अन्तष्करन विच्चों मेटो भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पारब्रह्म दी धार वेखो ब्रह्म, ईश जीव की आपणा खेल खिलाईआ। दृष्टी कूड़ मिटाओ चर्म, चम्म दृष्टी रहिण ना पाईआ। इक्को पुरख अकाल दे पूजो चरण, चरणोदक इक्को जाम प्याईआ। जो दिने जागदयां खोल्हे हरन फरन, रातीं सुत्तयां नैण नैण विच्चों बिघसाईआ। जिस दा आदि जुगादि अवतार पैग़म्बर गुर ढोला पढ़न, विष्न ब्रह्मा शिव बिन रसना रस गाईआ। उस दी मंज़ल जन भगत सुहेले चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सति कहे मैं साचा घाड़न आया घड़न, घड़न भन्नणहार दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, सच दा संग इक बणाईआ। सति कहे सत्त भाद्रों धर्म धार प्रविष्टा, दो जहान श्री भगवान नौजआन मर्द मर्दान रिहा जणाईआ। अन्तर निरंतर निराकार निरँकार सति सति दी खोल्ह्रे दृष्टा, दृष्टी सृष्टी अन्तर पर्दा आप चुकाईआ। उह लेखा पूरा करे जो राम संदेशा दिता वशिष्टा, विश्व दी धार धार नाल मिलाईआ। जिस दा लेख काग़ज़ कलम शाही नाल कोई ना लिखदा, अक्खरां रंग ना कोए रंगाईआ। उह भेव अभेदा खोल्ह्रे जुग चौकड़ी भविख दा, पेशीनगोईआं आपणा हुक्म जणाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा नित नवित दा, एथे ओथे दो जहान करे शनवाईआ। जिस दी धार लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लिटदा, आसण सिँघासण इक्को इक सुहाईआ। सति धर्म कहे मैं उस दे चरणां विच लिटदा, टिक्का बिन धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मैं प्यासा इक्को प्रीतम प्यारे इक दा, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। सच गृह करे सुहञ्जणा, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेहरवान होवे आदि निरञ्जणा, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। किरपा करे दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म बणे धुर दा सज्जणा, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ। नेत्र नाम निधान पावे अंजणा,
७६३ निज लोचन करे रुशनाईआ। जन भगतो जिस ने एथे ओथे दो जहानां पड़दा कजणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ७६३
२४ उह खोजयां दीन दुनी विच किसे ना लभणा, भरमे भुले जगत लोकाईआ। जिस ने लहिणा देणा पूरा करना अन्त सभना, २४
साहिब स्वामी अन्तरजामी इक अख्वाईआ। जिस नूं नूर अलाही पैग़म्बरां किहा रब्बना, नूर नुराना नौजवाना डगमगाईआ। जिस नूं कहिंदे गोपाल मूर्त मदना, मधसूदन इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को दीपक जोत जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अग्ना, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। मन मति गुआए कगना, हँस गुरमुख आप प्रगटाईआ। भाग लगाए काया माटी बदना, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जिस माण रखाउणा आहला अदना, ऊचां नीचां इक्को घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। सति कहे मैं वड वडभागी, भगवन दिती माण वड्याईआ। मेरे अन्तष्करन बख्श वैरागी, बिरहो विछोड़ा तीर चलाईआ। मेरी सुरती सुती उठी जागी, निरगुण धार लई अंगड़ाईआ। सच सरनाई बेपरवाही लागी, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मनुआ मन रहे ना बाग़ी, तन वजूद वजे वधाईआ। सतिगुर शब्द होवे इमदादी, सिर सर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा नाम इक दरसाईआ। सति कहे मैं ख़बर अगम्मी दस्सां, दहि दिशा तों बाहर ध्यान लगाईआ। बिना मुख ज़बान तों हस्सां, हस्ती तकां धुरदरगाहीआ। बिन कदमां तों नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ।

लेखा तकां मछां कछां, जलां थलां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सति कहे मेरे सतिगुर शब्द बन्नाई गंढु, आदि जुगादि ना कोए खुल्हाईआ। मैं विष्न ब्रह्मा शिव पाई ठण्ड, बिन ततां तत दृढ़ाईआ। तेई अवतारां नंगी होण ना दिती कंड, सगला संगी इक अख्वाईआ। पैग़म्बरां मैनूं नूरी समझया चन्द, चन्द चांदनी वेख वखाईआ। नानक गोबिन्द धार माण अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मेरा आदि जुगादी इक्को ढोला छन्द, तूं मेरा मैं तेरा रिहा गाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरा ख़ुशी रिहा बन्द बन्द, प्रभ दी बन्दगी विच आपणा आप टिकाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ीआं गए लँघ, पाँधी बण के भज्जे वाहो दाहीआ। मैं साची सेज सुता बिना पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी बणत ना कोए बणाईआ। मेरा भाग ना होया मंद, भागहीण ना कदे अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता धुरदरगाहीआ। सति कहे मेरा सति समाज, सतिगुर शब्द नाम वरताईआ। कलयुग अन्तिम पूरा करां काज, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। नव सत्त बदलां राज, रईयत तकां थांउँ थाँईंआ। इक्को धर्म सुणावां आवाज़, इक्को कलमा नाम शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर जाए जाग, जागरत जोत डगमगाईआ। साचे मार्ग जावे लाग, लग मातर डेरा ढाहीआ। घट घट अन्दर दीपक जोत जगे चराग़, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। जन भगतां काया मन्दिर अन्दर लगावां भाग, सिँघ भाग मिले वड्याईआ। सतिजुग मेरा साचा महके बाग़, पत्त टहणी फूल आप महकाईआ। इक्को धर्म दी धार वजे रबाब, निरगुण सरगुण नानक धार दए गवाहीआ। इक्को अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती मिले आब, बिन रसना रस चखाईआ। पंज तत नूर नुराना श्री भगवाना खेल करे विच पंज आब, पंचम आपणी गंढु पुआईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा आली जनाब, जनाबे आली कहि के सीस निवाईआ। जिस नूं सारयां दिता ख़िताब, मुख़ातब हो के सब नूं दए समझाईआ। उह ख़ालक इक्को वाहिद, वअदे सब दे पूर कराईआ। जोती जाता हो के खेले खेल शायद, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा सब दे अन्तिम पूरा होवे अहिद, अहिदनामे वेख वखाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सचखण्ड वसे अलाहिद, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा हुक्म वरते कवायद, कायदा इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्म संदेशा धर्म दी धार सतिगुर शब्द देवे महज़, महिफल भगतां सन्तां सूफ़ीआं संग आप रखाईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ गुरदित सिँघ दे गृह पिण्ड तले ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरी लेखे लग्गी मिट्टी ख़ाक, ख़ालस प्रभू देवे माण वड्याईआ। गृह मन्दिर खुल्ह्या अगम्मा ताक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मेरे होए पाक, पतित पुनीत दिता बणाईआ। मैं सेवक बरदी बणां चाक, चाकर हो के भज्जां वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ क्रिया छडे सज्जण साक, रिश्ता फ़रिश्तयां नालों तुड़ाईआ। मैं लकीरां कढ्ढां बिना नाक, निव निव लागां पाईआ। मेरे नाल हज़रत ईसा करके गया टाक, इशारा ज़िमीं असमान जणाईआ। मुहम्मद कायम कीता इख़लाक, ख़ालक ख़लक गया समझाईआ । धुर दा कलमा कवण वेला दए तलाक, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। मेरा रूप अनूप मेरी मिट्टी वाली पोशाक, पोशीदा आपणा आप रखाईआ। मेरा मित्र प्यारा अहिबाब, महबूब नूर अलाहीआ। जिस ने मेरे उत्ते सब तों मंगणा जवाब, जुआब तल्बी विच ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दे कोल लख चुरासी जीव जंत तादाद, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस दीनां मज़्बां दी कीती इमदाद, अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव रंग रंगाईआ। उह शब्दी शब्द सुणाए अगम्मा नाद, दो जहान करे शनवाईआ। धरनी कहे उस दा हुक्म सुणया बोध अगाध, बुद्धी तों परे रिहा दृढ़ाईआ। मैं चारों कुण्ट रही भाग, भज्जां वाहो दाहीआ। कवण वेला किरपा करे मेरा कन्त सुहाग, हरि स्वामी नूर अलाहीआ। मेरा अन्तष्करन बिन सुरती जाए जाग, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट भज्जी दौड़ी, बिन कदमां कदम टिकाईआ। मेरी मंज़ल हथ्थ ना आए कोई डण्डा पौड़ी, सहारा वेखण कोए ना पाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी धार होई कौड़ी, अमृत रस ना कोए रखाईआ। जगत विकार सके कोई ना होड़ी, हिरदे हरि ना कोए टिकाईआ। मन मनसा सके कोए ना मोड़ी, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। सति धार दिसे ना कोई कोरी, सच सच ना कोए जणाईआ। जगत जिज्ञासू साध सन्त करदे चोरी, ठग्गी चारों कुण्ट नज़री आईआ। आत्म दरसी दिसे कोए ना घोरी, अन्ध घोर ना कोए गुआईआ। हक मंज़ल दा बणे कोए ना मोहरी, अगे कदम ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म बन्ह्े कोए ना डोरी, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ । सतिगुर शब्द चढ़े कोए ना घोड़ी, वाग नाम हथ्थ ना कोए उठाईआ। सच वस्त किसे हथ्थ ना आवे लोड़ी, लुड़ींदा सज्जण मिलण कोए ना पाईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट करां बौहड़ी बौहड़ी, दरोही तेरा नाम खुदाईआ । उह तक लै कलयुग अन्तिम आयू रह गई थोड़ी, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट तक्कया, बिन

नेत्र लोचन नैण नैण उठाईआ। आत्म परमात्म नाता दिसे किसे ना पक्कया, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सुरती शब्द नाता कोई जोड़ ना सक्या, साजण मीत मित्र ना कोए बणाईआ। दरोही वेखी मदीना मक्कया, काअबे रहे कुरलाईआ। धर्म धार पै गई विच टकया, कीमत दीन दुनी जणाईआ। अमृत रस निझर धारों बूँद स्वांत किसे ना छकया, रसना रस ना कोए तजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ कुड़यार दा दिसे हट्टया, सच धर्म ना कोए विकाईआ। धरनी कहे मेरे कोल लेख अगम्मा गोबिन्द वाला पटया, जो पटने वाला गया समझाईआ। अन्त सदी चौधवीं सति धर्म जाणा कटया, कटाकश कलयुग क्रिया कूड़ रखाईआ। दीन दुनी पूजे पाहन पत्थर वट्टया, भज्जे वाहो दाहीआ। सतिगुर नाम शब्दी लाए कोई ना ठप्पया, मोहर शौहर ना कोए जणाईआ। दीन दुनी रुलणी विच ख़ाक मिट्टी घट्टया, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पैणा रट्टया, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट वेखां बिना नैण, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। की इशारा दिता बाल्मीक विच रमायण, राम रामा की समझाईआ। की खेल समझाया कृष्ण अर्जन विच हिन्दवायण, भाग भगवत नाल वड्याईआ। की पैग़म्बरां दिता देण, धुर कलम्यां नाल शनवाईआ । की गुरुआं भेव खुल्हाया ऐन दा ऐन, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। किस बिध कलयुग काली होणी अन्धेरी रैण, सतिजुग सच चन्द ना कोए चमकाईआ। नाता टुटणा भाई भैण, पिता पूत गोद ना कोए सुहाईआ। माया ममता जगत विभचारन होई डैण, नव सत्त आपणे अंग लगाईआ। आत्म परमात्म गाए कोए ना गायण, गोबिन्द मिले किसे ना माहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होई त्रफ़ैण, दूई दुवैती आपणा संग बणाईआ। चार वरन अठारां बरन आए ना चैन, छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रोवन मारन धाहीआ। मोह विकारा धरनी कहे मेरे उत्ते वहिन्दा वहिण, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सति धर्म दा नुक्ता लभ्भे किसे ना ग़ैण, ग़फ़्लत सके ना कोए मिटाईआ। दरोही फिरी पंच पंचाँइन, पंचम शब्द ना कोए शनवाईआ। धरनी कहे मैं बिन नेत्रां पावां वैण, रो रो सुणावां धुर दे माहीआ। आह तक लै दीन मज़्हब तेरे इक दूजे नाल खहण, ख़तरा दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। उच्च मुनारे सारे मेरे उत्ते ढहण, महल अटल रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन सहायक नायक दिसे कोए ना सैण, साजण मीत पतित पुनीत नज़र कोए ना आईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी इक बेनन्ती, बिनै कर के सीस निवाईआ। दीन दुनी गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म आत्म पड़दा दे चुकाईआ। प्यार मुहब्बत बणा दे धर्म धार दी संगती, चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाईआ। विद्या बख़्श दे सतिगुर शब्द अगम्मे पंडती, निरअक्खर अक्खर धार समझाईआ। मनसा कूड़ कुड़यार मुका दे मन दी, ममता मोह रहिण कोए ना पाईआ। वड्याई कर दे भगत सुहेले आपणे जन दी, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। आवाज़ सुणा दे शब्द नाद धुन बिना कन्न दी, कायनात दे मालक आपणा हुक्म वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरे उत्ते आवाज़ आवे धन्न धन्न दी, वाहिगुरु तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते हो कृपाल, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। दीनां बंधप धुर दे दीन दयाल, दया निध ठाकर तेरे अगे वास्ता पाईआ। चारों कुण्ट कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, पंच विकारा मेरे उत्ते रहिण ना पाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां काया मन्दिर वखा सची धर्मसाल, सच दवारा इक्को सोभा पाईआ। सच प्रीती बख़्श दे शाह कंगाल, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा सतिगुर शब्द विचोला होए दलाल, सुरती सतिगुर तेरे नाल मिलाईआ। जोती जल्वा दे जलाल, अन्ध अज्ञान दे गुआईआ। मेरी जुग चौकड़ी लेखे ला लै घाल, कोटन कोटि जुग तेरी सेव कमाईआ। मेरे कन्त भगवन्त अन्त मेरी कर संभाल, सम्बल दा मालक हो के वेख चाँई चाँईआ। तेरा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं शब्दी धार दिता अहिवाल, नाम कलम्यां कीती शनवाईआ। तूं मालक ख़ालक वाहिद इक्को पुरख अकाल, एकँकारा निराकारा नज़री आईआ। फल लगा धर्म दा धर्म दे मेरे डाल, पत्त टहणी दीन दुनी मानव ज़ाती दे महकाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले मेरे उत्ते उपजा आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता सब दी करनहार संभाल, प्रितपाला प्रितपालक ख़ालक मालक इक्को नज़री आईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद मेरे तेरे अगे मेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू मेरे उत्ते कलयुग क्रिया मिटा दे कूड़, कल्पना मोह रहिण ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी चतुर सुघड़ बणा दे मूढ़, मूर्ख मुगध नज़र कोए ना आईआ। चरण कवल उपर धवल बख़्श दे आपणी धूड़, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तेरे नाम झूल लैण सर्ब पंघूड़, हुलारा दो जहान जणाईआ। मेरी नौ खण्ड पृथ्मी कलयुग अन्त होई मजबूर, सत्त दीप रोवण मारन धाहीआ। किरपा निधान नौजवान श्री भगवान हो हज़ूर, हाज़र हो के वेख वखाईआ। मैं तकणा चाहुंदी तेरा अगम्मा नूर,

नूर नुराने देणा चमकाईआ । जगत शरअ मेट दे गाँ सूर, कातिल मक्तूल दा लेखा दे मुकाईआ। जो आशा रख के गया तेरी मनसूर, मनसा भगतां संग रलाईआ। जो कूक के किहा मूसा उत्ते कोहतूर, तुरीआ तों बाहर ध्यान रखाईआ। जो आसा रखी सूली चढ़न लगिआं ईसा ज़रूर, ज़रूरत वेखणी थांउँ थाँईंआ। जो मुहम्मद मवज़ी कुज़ा नुरे रुशना ज़ाविस्तो ज़मी ज़लहिकम ज़वा नूरे खुदा ख़ज़ीउल ज़मी ज़मीने ज़ज़ख नूरे प्रतख शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरे महबूब मेरा लहिणा देणा मेरी झोली पा दे हक, हकीकत दे मालक हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान निरगुण धार सर्ब कला समरथ, समरथ तेरी ओट तकाईआ।

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे निगाह मार पुरख अकाला, नव सत्त मैं बैठी ध्यान लगाईआ। धर्म दी धार रिहा ना कोए उजाला, नूर नुराने शाह सुल्ताने तेरा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। चारों कुण्ट होया अन्धेरा काला, कूड़ी क्रिया काली रैण ना कोए मिटाईआ। मेहरवान महबूब नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी मेरी पूरी कर दे घाला, घायल हो के तेरे अगे वास्ता पाईआ। सति धर्म दी साची दिसे ना कोए धर्मसाला, धर्म दुआर एकँकार तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। जिधर तकां सृष्टी दृष्टी अन्दर माया ममता प्या जंजाला, जागरत जोत बिन वरन गोत तेरा दरस कोए ना पाईआ। धरनी कहे मेरी हालत होई बेहाला, बहिबल हो के तेरे अगे वास्ता पाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी जुग जुग बदलणहारा चाला, चाल अवल्लड़ी दे समझाईआ। इक्को ओट तेरे उत्ते रखी शाला, शहिनशाह तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे मेरे भगवान, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं मालक खालक नौजुआन, शहिनशाह नूर अलाहीआ। आदि जुगादी हुक्मरान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। मैं कोझी कमली हो के मंगां दान, दाते दानी देणी दया कमाईआ। मेरी नव सत्त दहि दिशा होई हैरान, हैरत विच मेरी दुहाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए निशान, निशाना धर्म ना कोए झुलाईआ। चार जुग दे शास्त्रां भुलया ज्ञान, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मिलण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआरा एकँकारा तेरा दिसे ना किसे मकान, मुकामे हक मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर कलयुग कूड़ होया प्रधान, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। मन मनुआ होया शैतान, शरअ जगत करे लड़ाईआ । इन्सान

रूप दिसे हैवान, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। तेरा अमृत रस बूँद स्वांती मिले ना किसे पीण खाण, निजर झिरना ना कोए झिराईआ। शब्द नाद सुणे ना कोए धुन्कान, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। आत्म जोती दीपक जगे ना कोए महान, बिन तेल बाती नूर नुराना नूर ना कोए चमकाईआ। धरनी कहे मेरे मेहरवान, मेरे उत्ते इक्को दे ज्ञान, सृष्टी दृष्ट इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं कलयुग अन्तिम रुली, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। भाग लग्गे ना मेरी कुल्ली, मन्दिर सच ना कोए सुहाईआ। दीन दुनी तेरा नाम जपदी बुल्लीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तेरे उत्तों आत्मा कोए घोल ना घुली, घायल हो ना कोए वखाईआ। सब दी बूँद स्वांती अमृत धार डुली, बिन रसना रस ना कोए चखाईआ। सच तराज़ू तेरे कन्ढे तेरी सृष्टी मूल ना तुली, तोलणहारे वेखणा थांउँ थाँईंआ। सच प्यार चरण लाए कोए ना धूली, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। जिधर तकां दीनां मज़्हबां होई बे असूली, असल वसल यार तेरा ना कोए रखाईआ। मेरे उत्तों जुग बदलणा प्रभ तेरी खेल मामूली, कूड़ी क्रिया कर सफ़ाईआ। सति धर्म दी धार मेरे उत्ते फली फूली, पत टहणी आप महकाईआ। जो इशारा दे के गए अवतार पैग़म्बर रसूली, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। तूं जल्वागर शहिनशाह जलूली, नूरे निज़ा नूर अलाहीआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादि कन्त कन्तूहली, काहनां दा काहन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मिहबान निरगुण निरगुण सरगुण बख्श दे आपणी बिना ख़ाक तों धूली, धूड़ी ख़ाक लख चुरासी तेरी लए रमाईआ।

७६६ २४

✪ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगढ़ा ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी दुहाई, दो जहानां मालक ख़ालक तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा लेख तक इकाई, इक इकल्ले सच महले बहि के ध्यान लगाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मैं तैनूं रही ध्याई, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार नूर अलाही, आलमीन यामबीन तेरे हथ्थ वड्याईआ। ज़रा निगाह मार लै मेरे उत्ते थल अस्गाही, जल थल महीअल वेख वखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा हो गया शाही, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरे पंथ दा मार्ग पन्ध चढ़े कोए ना राही, रैहबर की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा नेत्र वगे नीर, बिन नैणां छहबर लाईआ। तूं

शहिनशाह गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरी तक जगीर, आपणा ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म ने कीता अख़ीर, आख़र तेरे अगे वास्ता पाईआ। उह वेख इशारा करदा तेरी दरगाह विच्चों कबीर, कबरां तों बाहर रिहा जणाईआ। धरनीए धवले तेरा कोई लेखा नाल नहीं ग़रीब अमीर, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। बिना पुरख अकाल तों तेरी बदल सके ना कोई तकदीर, तदबीर नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन देवे कोए ना धीर, धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। मेरे उत्ते संदेशा दे गए पैग़म्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोल्यां नाल गाईआ। तूं मालक ख़ालक शाह हकीर, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। बेशक तेरी नज़र नहीं आउँदी तस्वीर, तसव्वर करके तेरा लेखा सारे गए समझाईआ। मैं कोझी कमली तेरे दर दी दरवेशण होई फ़कीर, फ़िकरा ढोला तेरा इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सीस निवाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वेख लै दुःख, दर्दीआ दर्द लैणा वंडाईआ। पवित्र रही कोई ना कुक्ख, भगत जणे कोए ना माईआ। तैनूं भुल गए तेरे मानव मानुख, मानस तेरे रंग ना कोए समाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी मेरी तृष्ना मेट दे भुक्ख, शाह कंगाले दया कमाईआ। निरगुण धारों निरवैर हो के उठ, जोती जाते डगमगाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर हो के तुठ, मेहरवान महबूब सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चतर्भुज तेरी बेपरवाहीआ। मेरी पवित्र रही ना बुद्ध, बुद्धीहीण हो के दयां दुहाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी लै सुध, वसुधा हो के तेरे अगे वास्ता पाईआ। आपणा लहिणा देणा पूरा कर दे कलयुग, जगत जुगत दे मालक लेखा पूरब देणा चुकाईआ। उह वेख लै धर्म दी औध गई पुग, पूजणयोग तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वेख लै चीथड़ पाटा, पीतम्बर सीस ना कोए सुहाईआ। मंज़ल मार के आ जा वाटा, धुर दे मालक बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। मेरी सेज सुहञ्जणी कर दे खाटा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नव नव चार दा पूरा कर दे घाटा, वस्त अमुल नाम अतुट वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। झट नारद आ गया संदेशा देवे एक, इक इकल्ला की दृढ़ाईआ । धरनीए धवले जिस दी रखी टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। उह करनहारा बुध्ध बिबेक, पतित पुनीत नूर अलाहीआ । जिस तेरे उत्तों कलयुग अग्नी मेटणा सेक, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। जिस दे प्यार विच सतिगुर शब्द सृष्टी बणाउणी नेक, निक्के वड्डे इक्को रंग रंगाईआ। उस दे रूप अनूप आदि जुगादि अनेक, कलयुग आपणा वेस वटाईआ। जिस दे हुक्म विच तेरे उत्ते जुग बीत गए केते केत, केते आपणा पन्ध मुकाईआ। सो पुरख अकाला

दीन दयाला तेरे नाल करे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मैं उस दा खोल्हां भेत, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त वसणहारा सम्बल देस, देस देसन्तरां पन्ध मुकाईआ। जिस तेरे उत्तों मेटणा कलेश, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जिस दा योद्धा सूरबीर बहादर सुत दुलारा गोबिन्द दस दस्मेश, सतिगुर शब्द शब्द अख्वाईआ। जो आदि जुगादि दो जहानां नर नरेश, हुक्मरान धुरदरगाहीआ। तेरी बेनन्ती आरज़ू उस दे चरणां विच होई पेश, आप आपणा गई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे धरनीए बिन नेत्र लै तक, तकवा इक्को उत्ते रखाईआ। जो सब दे पूरे करन वाला हक, हकीकत दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल वअदा पक्क, बिना लेख लिख्त लिख्त गया समझाईआ। उह तेरे उत्ते जोती जाता पुरख बिधाता हो के आवे वत, बेवतनां दा मालक दया कमाईआ। क्यों तेरे उत्ते गोबिन्द सथर यारड़ा गया घत, माछूवाड़ा सेज सुहाईआ। उस दा लहिणा देणा तेरी झोली देवे घत, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान, ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द निशान, धर्म निशाना श्री भगवाना दो जहानां धरनीए धवले तेरे उत्ते आप झुलाईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत सम्मत ११ कारज सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगढ़ा ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती नहीं कोई लुक दी, लोक परलोक दे मालक दयां जणाईआ। मैं बिना सीस तों तेरे कदमां झुकदी, निव निव निरँकार लागां पाईआ। मेरी मनसा कहिणो मूल ना रुकदी, आशा तेरे चरण टिकाईआ। मैं वी वणजारन होई तेरी इक तुक दी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। तेरी लख चुरासी सृष्टी दा भार चुकदी, सीने छाती उत्ते टिकाईआ। मैं प्यासी प्यार वाली रुत दी, ममता मेरे अन्दर हल्काईआ। तेरा खेल तेरी धार अबिनाशी अचुत दी, पारब्रह्म की आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी गोदी बिना भगतां ख़ाली दिसे माँ पुत दी, पिता पुरख अकाल तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। मैं हालत तकी काया माटी पंज भुत दी, तन वजूदां ध्यान लगाईआ। मेरी कथा कहाणी कलयुग अन्तिम इक्को दुःख दी, दुखियां दे मालक दयां दृढ़ाईआ। वड्याई रही किसे ना कुक्ख दी, जनणी जन ना कोए उपजाईआ। रसना पवित्र रही किसे ना मुख दी, मानस मानव तैनूं गए भुलाईआ। पता नहीं मेरे उत्ते की हालत होणी उलटे रुक्ख दी, धरनी कहे रो रो दयां

दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा सुण अगम्मड़ा दुखड़ा, दर्दीआ दयां जणाईआ। पवित्र रिहा ना किसे दा मुखड़ा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जगत जहान कलयुग कूड़ी क्रिया कीता भुखड़ा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सति सति विच दिसे ना कोए मुखड़ा, मानस मानव तेरे रंग ना कोए समाईआ। दीन दुनी जगत कसाई बणी बुच्चड़ा, बुतख़ानयां पए दुहाईआ। तेरा संसार मेरे निरँकार मेरे उत्ते दिसे उजड़ा, बस्ती नज़र कोए ना आईआ। तेरा लहिणा देणा सति धर्म दा वेख लै उखड़ा, जड़ चोटी गई कुमलाईआ। मेरा जोबन होया बुढ्ड़ा, जवानी आपणा रंग बदलाईआ। मेरे उत्ते नव सत्त तक लै गुंझलां, नव नव चार दे मालक ध्यान लगाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरा राह तकदी रही समां गिण के उत्ते उंगलां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पोटयां उत्ते रखाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना धर्म दी चोटी आप गुंद ला, मेरी मेंढी सीस दे वड्याईआ। कन्नी धार तक लै कुण्डला, बुंदा धर्म ना कोए रखाईआ। तूं आदि जुगादी होणहार हुन्दला, धुर दा मालक नूर अलाहीआ। मेरे गहर गम्भीर मनोहर कुंदला, गवर तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे खुल्ह्ड़े वेख लै केस, केशव आपणा ध्यान लगाईआ। की संदेशा देवे बाशक सहँसर मुख शेष, शेष आपणा ढोला गाईआ। की आशा रखी विष्न ब्रह्मा शिव महेष, महिख़ासुर की गया दृढ़ाईआ। मैं सुणदी रही अवतार पैग़म्बरां दे संदेश, गुरु गुरदेव ढोले गाईआ। मेरे नाल वअदा कीता गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा दे मालक दया कमाईआ। प्रभू दा अन्त अवलड़ा होवे भेस, निरगुण आपणा रूप बदलाईआ। धरनीए तेरे उत्ते वसे सम्बल देस, सच दुआरे सोभा पाईआ। जो मालक होवे अगम्म नरेश, नर नरायण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो लहिणा देणा तेरा लेखा जाणे हमेश, जो हम साजण हो के तेरा लहिणा देणा पूर कराईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ बीबी गुरबचन कौर, बीबी छिन्दो दे गृह पिण्ड धनोए ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे निरँकार, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। मेरे शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ । मैनूं संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। धरनीए रखीं कलयुग अन्तिम इंतज़ार, आप आपणा ध्यान लगाईआ। जिस वेले नव सत्त होया धूंआँधार, धर्म दी धार रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग भरे हँकार, हउमे

हंगता गढ़ नाल मिलाईआ। तन वजूद झूठा करन श्रृंगार, सति धर्म रहिण कोए ना पाईआ। दीनां मज़्बां होवे धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। ग्रन्थ शास्त्र चार जुग दे करन इज़हार, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रोवे ज़ारो ज़ार, बिन नेत्र लोचन नैणां नीर वहाईआ। अमृत रस बूँद स्वांती किसे मिले ना ठण्डी ठार, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। उस वेले तेरे उत्ते कलि कल्की आवे अवतार, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। अमाम अमामा नूर करे उज्यार, उजाला दो जहान वखाईआ। पैग़म्बरां गुफ़त शनीद कीती गुफ़तार, बिन अलिफ़ ये पढ़ाईआ। जिस दे नाल नहीं कोई तकरार, मुतस्सब शरअ ना कोए रखाईआ। तूं उस नूं बिन सीस करीं निमस्कार, सजदा करके खुशी बणाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता वेखे विगसे पावे तेरी सार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। धरनी कहे मैं प्रभू दिवस रैण करां गिरयाज़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी इक अगम्मी मंग, जगत वासना ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी केते गए लँघ, ब्रह्मे मनवन्तर आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरी सेज सुहञ्जणी करे ना कोए पलँघ, सुख आसण पुरख अबिनाशण डेरा कोए ना लाईआ। निगाह मार लै मेरे उत्ते दीन दुनी शरअ दी होई कंध, शरीअत आपणी वंड बणाईआ। मैं निरगुण धार तेरा सुणना चाहुंदी छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। मेहरवाना श्री भगवाना नौजुआना मेरे उत्ते आ जा मार के पन्ध, सचखण्ड निवासी आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरी सिफ्त वड्याई करां बिन रसना जिह्वा दन्द, बिन अक्खरां अक्खर मिलाईआ। पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ब्रह्मण्ड खण्ड आउणा लँघ, रवि शशि सूर्या चन्द तेरे निव निव लागण पाईआ। मेरा खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्धन दीन दुनी जुड़ाईआ । मेरे उत्ते बख्श अगम्मा अनन्द, अनन्दपुर वासी गोबिन्द मिल के वजे वधाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया करदे भंग, भावना तेरे अगे रखाईआ। जो आसा रख के गया साधू सरबंग, सोहले ढोले तेरे चरण टिकाईआ। मेरे मालक स्वामी ठाकर मेहरवाना मेरा भाग होण ना देवीं मंद, मंदभागण कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कर दे मेहर मेहरवान, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। सच धर्म झुला निशान, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। तूं आदि जुगादी मेरा राम, काहन कान्हा नूर अलाहीआ। मैं तेरे चरण कवल करां प्रणाम, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। मेरे उत्तों कूड़ी क्रिया कढ दे जगत जुगत हराम, हिरदे आपणा नाम दरसाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, ज़ंजीर बेनज़ीर देणी तुड़ाईआ। मेरी आसा मनसा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी वेख तमाम, तमअ लालच ना कोए रखाईआ। नव सत्त मेट अन्धेरा शाम, शमअ

नूर जोत कर रुशनाईआ। जल्वा वखा दे सदी चौधवीं आपणा अमाम, नूर नुराने धुरदरगाहीआ। मैनूं संदेशा दे दे बिन अक्खरां अगम्म पैग़ाम, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। मेरा पूरन होवे काम, कामना तेरे चरण रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा धर्म तेरा ईमान, तेरी सृष्टी तेरा इन्सान, कायनात दे मालक ख़ालक तेरे अगे वास्ता पाईआ।

✪ ६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड काउँके ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे सुण धरती माता, अम्मीए अम्मढ़ीए तैनूं दयां जणाईआ। की खेल पुरख बिधाता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर की आपणा हुक्म वरताईआ। आदि जुगादी शब्दी धार जिस दा तेरा नाता, नातवाने तैनूं दयां दृढ़ाईआ। उह नव सत्त दा तेरा वेख रिहा खाता, गहर गवर भेव अभेद आप चुकाईआ। उह सब दी पुछणहारा वाता, वातावरण तके ख़लक खुदाईआ। क्यों तेरे उत्ते होई अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उस दा लेखा तक लै जो होणा बहु बिध भांता, अनक कल आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे धरनीए हो जा सावधान, की सावरीआ खेल कराईआ। हुक्म संदेशा सुण श्री भगवान, की भगवन रिहा दृढ़ाईआ। कमलीए रहीं ना मूल निधान, बालीए आपणी लै अंगड़ाईआ। तेरे उत्ते पुरख अकाला दीन दयाला बदलण वाला विधान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। नी तूं सुण लै बिना तन वजूद कान, कायनात दा मालक की आपणा खेल कराईआ। आपणे उत्ते तक लै मानस ज़ाती पंज तत इन्सान, प्रकिती पंझी वेख वखाईआ। लख चुरासी कर ध्यान, चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भेव रहे ना राईआ। तेरे उत्ते नव सत्त धर्म दा रिहा ना कोए ईमान, सच सुच ना कोए चतुराईआ। कूड़ी क्रिया होई प्रधान, नव खण्ड भज्जे वाहो दाहीआ। मन मनसा फिरे शैतान, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारदा मैनूं उसे दी उडीक, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, जल्वागर नूर अलाहीआ। जो मेरे उत्ते मेटे अन्धेरा तारीक, निरगुण नूरी चन्द करे रुशनाईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कीती तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। भविख्तां विच पेशीनगोईआं विच जिस दी सब ने रखी उडीक, आमद विच खुशी विच उसे दा राह तकां चाँईं चाँईंआ। जिस ग़फ्लत विच्चों सब दी खोल्हणी नींद, सवाधान करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए सो पुरख निरञ्जण आवेगा। हरि पुरख निरञ्जण वेस वटावेगा। एकँकार रूप धरावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। श्री भगवान सोभा पावेगा। अबिनाशी करता खेल वखावेगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरतावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। दो जहानां वेख वखावेगा। शाह पातशाह शहिनशाह आपणी कार भुगतावेगा। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल जगावेगा। चार जुग दे शास्त्र फोल फुलावेगा। नाम कलम्यां पर्दा लाहवेगा। सृष्टी दृष्टी अन्तर आपणा ध्यान लगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणावेगा। सच दा हुक्म इक दृढ़ाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। कलयुग अन्तिम वेस वटाएगा। नर नरेशा नाउँ धराएगा। कल कलेशा आप मिटाएगा। गोबिन्द दस दस्मेशा नाल रखाएगा। जो शब्द दी धार जाणे लेखा, लिख्त भविख्त संग रखाएगा। जो वसे सम्बल देसा, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाएगा। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना केसा, रूप रंग ना कोए जणाएगा। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, हम साजण इक अख्वाएगा। जिस लहिणा देणा पूरा करना विष्न ब्रह्मा शिव गणपति गणेशा, करोड़ तेतीसा वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाएगा। साचा भेव आप चुकावेगा। पर्दा परदयां विच्चों उठावेगा। गृह मन्दिर इक सुहावेगा। साचे मन्दिर जोत रुशनावेगा। शब्द नाद अनादी आप जणावेगा। ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणावेगा। संदेशा दे के बोध अगाधी, अलख अगोचर कार कमावेगा। धुर दा ठाकर बण के मौज़ी, मजलस भगतां नाल रखावेगा। सूफ़ीआं सन्तां दे के सोझी, सुरती शब्द नाल जुड़ावेगा। सति धर्म दा बणके खोजी, लख चुरासी फोल फुलावेगा। गुरमुखां हिरदे जावे सोधी, वदी सुदी वंड ना कोए वंडावेगा। दुरमति मैल धोवे बणके धोबी, कलयुग कूड़ी क्रिया दाग़ चुकावेगा। लख चुरासी दा भगत रहे कोए ना रोगी, आवण जावण फंद कटावेगा। दीन मज़्हब दा जिस नूं होइ कोए ना लोभी, लालच आपणा नाम दृढ़ावेगा। धरनीए हरिजन सन्त सुहेले तेरे उत्ते चुक्के आपणी गोदी, गोदावरी दा कन्ढा गोबिन्द धार नाल समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मार्ग इक दृढ़ावेगा। धरनी कहे नारदा मेरा साहिब होवे अलख, अलख अलखणा इक्को अख्वाईआ। धन्न भाग मेरे उत्ते होवे प्रतख, पारखू बणे ख़लक खुदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे वख, माया ममता मोह मिटाईआ। मेरी ख़ाली झोली भरे सक्ख, नाम निधाना इक वरताईआ। निज नेत्र घर स्वामी खोल्हे अक्ख , लोचन धुर दे नज़री आईआ। सच प्रेम दा मैनूं देवे रस, अमृत अगम्मा आप बरसाईआ । मैं खुशीआं विच पवां हस, हस्ती तकां धुरदरगाहीआ। दिवस रैण जिस दे हुक्म विच रही नस्स, आदि जुगादि भज्जां वाहो

८०५
२४

दाहीआ। उह मेरा लहिणा देणा रखे मेरे हथ्थ, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मेरा साहिब पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। उस दे कदमां जावां ढठ, निव निव लागां पाईआ। जो धर्म दी धार एकँकार उलटी गेड़े लठ, गेड़ा समझ किसे ना आईआ। कलयुग लेखा मेरे उत्तों करे भठ, सतिजुग सति सच वरताईआ। जन भगतां भगत दुआर होवे इक्ठ, इक्को गृह मिलके वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे सिर स्वामी हो के रखे हथ्थ, जगत हथेली नज़र कोए ना आईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ जगमोहण सिँघ दे गृह पिण्ड बोपाराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरी अगम्मी पुकार, दो जहान श्री भगवान नौजवान सुणे चाँईं चाँईंआ। निमाणी हो के ना कर गिरयाज़ार, नव सत्त बिन नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी पावणहारा सार, ब्रह्म ब्रह्मादी वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा लहिणा देणा ल्या विचार, कलयुग लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दे हुक्म विच विष्न ब्रह्मा शिव सद रहिंदे ख़बरदार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण सीस निवाईआ। जिस दे सच संदेशे दे के गए तेई अवतार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा पैग़म्बरां कीता इज़हार, सिफ्तां विच सिफ्ती ढोले गाईआ। जिस दा गुरुआं बोल जैकार, डंका फ़तिह दिता वजाईआ। सो साहिब स्वामी सब दा सांझा यार, मीत प्यारा मित्र इक अख्वाईआ । जिस नूं कहिंदे परवरदिगार, जल्वागर नूर अलाहीआ। उह एथे उथे वेखे विगसे वेखणहार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। तूं उस दी बिना आशा कर इंतज़ार, जो तेरा लहिणा देणा तेरी झोली दए टिकाईआ। जिस दी ख़ादम हो के बणी ख़िदमतगार, चाकर हो के सेव कमाईआ। उस नूं सब ने किहा कलि कल्की अवतार, निहकलंक नूर अलाहीआ। अमाम अमामा बणे सिक्दार, चौदां लोक चौदां तबक जिस नूं सजदयां विच सीस झुकाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना तेरे उत्ते होए ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तूं सति सति दी रखी आस, आशा प्रभ दे उत्ते रखाईआ। उह मालक ख़ालक पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी पावे रास, जुग चौकड़ी बिन गोपी काहन खेल खिलाईआ। जो लहिणा देणा जाणे पवण स्वास, साह साह

आपणा भेव चुकाईआ। उह वेखणहारा धरनी धरत धवल धौल आकाश, आकाश आकाशां आपणा पड़दा दए चुकाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी बणी रही दासी दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। उह हुक्म संदेशा देवणहारा शंकर उत्ते कैलाश, ब्रह्मा विष्न नाल मिलाईआ। तूं होवीं ना अन्त उदास, हैरानगी विच ना कोए दुहाईआ। उह कूड़ कुड़यारा एकँकारा तेरे उत्तों करे नास, नास्तक रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म दा सच करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। उह लेखा याद कर लै जो आशा रख के गया भगत रवीदास, रवि शशि तों बाहर आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण वेख वखावेगा। एकँकारा वेस वटावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान संग निभावेगा। पारब्रह्म पर्दा आप उठावेगा। सतिगुर शब्द डंक वजावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलावेगा। त्रैगुण माया भेव खुल्हावेगा। पंज तत तत दरसावेगा। जोती जाता डगमगावेगा। हुक्म संदेशा इक दृढ़ावेगा। नर नरेशा फेरी पावेगा। गोबिन्द दस दस्मेशा वेख वखावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया कलेश मिटावेगा। जो आदि जुगादि रहे हमेश, सो साहिब स्वामी दया कमावेगा। भाग लगावे सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगावेगा। तूं उस दे होणा पेश, पेशतर तेरा वेख वखावेगा। जिस नूं सब ने मन्नया नर नरेश, नर नरायण रूप बदलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक हुक्म वरतावेगा। प्रभ सच हुक्म वरताएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। काल महाकाल आप उठाएगा। धरनीए तेरी वेखे पवित्र धर्मसाल, धवले तेरा भार चुकाएगा। त्रैगुण माया तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत डगमगाएगा। तेरी लेखे लावे पूरब कीती घाल, पिछला लहिणा झोली पाएगा। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाएगा। तूं आपणा आप लैणा संभाल, सम्बल बहि के रंग रंगाएगा। जिस दा सतिगुर शब्द इक होए दलाल, विचोला दूजा नज़र कोए ना आएगा। सतिजुग साचा आप उठा के बाल, बाली बुद्ध आप समझाएगा। चरण प्रीत बख्श अगम्मे लाल, लालन आपणी गोद टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाएगा। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं निव निव करां निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरा परम पुरख परमात्म मेरी पावे सार, महासार्थी हो के दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेरा लाहे भार, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मैनूं संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, शब्दी शब्द नाद कर शनवाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी मेरी पैज दए संवार, हरि करता करता पुरख धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ कल्पना मेरे उत्तों कढ्ढे बाहर, धरनी धरत धवल धौल रहिण कोए ना पाईआ।

मैं उसे दा करदी इंतज़ार, दिवस रैण बैठी राह तकाईआ। कवण वेला मेरा आवे मीत मुरार, सांझा यार नूर अलाहीआ। ठाकर स्वामी मिले जो सब दा परवरदिगार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं चरण धूड़ी लावां छार, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। हाज़र होवे दरे दरबार, सनमुख हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरगुण शाहो भूप सची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड बोपाराए ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे मालक आदि जुगादी परम, पुरख पुरखोतम तेरी इक सरनाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सतिजुग साचे दे दे जरम, धुर दा बण आप जणेंदी माईआ। मेरा उतम श्रेष्ट करनी दे करते कर दे कर्म, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। ज़ात पात रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सृष्टी दी दृष्टी बदल दे चर्म, चम्म दृष्टी रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुका दे दीन मज़्हब वरन बरन, आत्म परमात्म भेव खुल्हाईआ। मानव ज़ाती इक्को तेरी लग्गे सरन, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। जन भगतां खोल्ह दे नेत्र हरन फरन, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। तूं करनी दा करता सब कुछ करन, कुदरत दे कादर तेरी बेपरवाहीआ। मैं चाहुंदी तेरा नाम निधान श्री भगवान सारे पढ़न, ढोला सोहला अगम्म अथाहीआ। तेरी मंज़ल हकीकी लाशरीकी नव सत्त चढ़न, बिन कदमां कदम टिकाईआ। सच दुआर एकँकार तेरी दरगाह वड़न, सचखण्ड साचे देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले बेपरवाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। धर्म दी धार एकँकार बण मलाह, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। मेरी निर्धन निमाणी दी पकड़ बांह, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैनूं सति सच दी कहे कोई ना माँ, ममता कूड़ कलयुग होई हल्काईआ । उठ वेख लै झगड़ा प्या सूर गाँ, मानस मानव मानुख पशूआं खल्ल लुहाईआ। हिरदे अन्तर निरंतर रिहा किसे ना नाँ, नाउँ निरँकार तेरा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई वांग काँ, काग वांग सर्ब कुरलाईआ । पवित्र रिहा कोए ना थाँ, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआर देण गवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर जो संदेशा गए सुणा, सतिगुर साचे तेरा हुक्म हुक्म जणाईआ। मेरी फिरी दरोही विच थल अस्गाह, टिल्ले पर्वत समुंद सागर नेत्र नैणां नीर रहे वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, सच वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू सति धर्म दा ला दे जुग, जुगती सतिगुर शब्द नाल बणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दी औंध जावे पुग, अगे अवर ना कोए वधाईआ। मैनूं वसुधा नूं आपणी साची दे सुध, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं इयों दिसदा अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरे हुक्म दा होण वाला युद्ध, युधिष्टर दा लेखा कृष्ण काहन नाल पूर कराईआ। पवित्र दिसे किसे ना बुद्ध, बिबेकी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते मार ध्यान, निरगुण निरवैर निराकार वेख वखाईआ। तूं आदि जुगादी मेहरवान, महबूब तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी कोझी कमली दी कर कल्याण, कलमा कायनात समझाईआ। मानव ज़ाती दे दे इक ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव रहे ना राईआ। साची शब्द दे धुन्कान, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। अमृत रस निझर झिरनिउँ बख्श पीण खाण, जगत तृष्ना भुख रहे ना राईआ। भाग लगा दे साढे तिन्न हथ्थ मकान, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा पर्दा दे चुकाईआ। तूं मालक ख़ालक रहीम रहमान, महिबान बीदो तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं मांगत हो के तेरे दर ते डिग्गी आण, ख़ाली झोली देणी भराईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख परमात्म तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते इक दुआरा खोल्हीं, ख़ालक ख़लक देणी वड्याईआ। तेरे नाम दी इक्को होवे बोली, अनबोलत, भेव देणा चुकाईआ। सच तराज़ू मानव ज़ाती सारी तोलीं, कंडा तराज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। मैं दर दुआर एकँकार तेरे होई गोली, मेरी गोलक ख़ाली देणी भराईआ। सतिजुग अन्तर मेरे अन्दर मौलीं, मौला हो के वेख वखाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी धरनी धरती धौली, धवल हो के मंग मंगाईआ। मेरा वायदा तक लै पूरब इकरार कौली, कवल नैण तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेहरवाना श्री भगवाना मेरा पड़दा मूल ना खोल्हीं, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तेरे चरण कवल मैं आपा घोल घोली, दूसर वंड ना कोए रखाईआ। जुग बदलणा तेरी खेल मामूली, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठण पन्ध मुकाईआ। तूं मेरा महबूब असूली, असल वसल यार देणा वखाईआ। तूं बणना सब दा कन्त कन्तूहली, काहनां दे काहन तेरी वड्याईआ। धर्म दी धर्म धार देणी धूली, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। कलयुग अन्त लहिणा देणा मेरे पुरख अकाले दीन दयाले लख चुरासी कोलों वसूलीं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी वेख वखाईआ। मेरा प्यार एकँकार भगती धार कदे ना भूलीं, अभुल तेरे अगे वास्ता पाईआ। उह वेख लै इशारा देंदा शंकर आपणी नाल त्रशूली, त्रिलोकी आपणी कल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी सच कार

समझाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे कूड़, क्रिया कूड़ रहिण ना पाईआ। साची बख्श अगम्मी धूड़, धर्म दी धार नाल वड्याईआ। चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़, दुरमति मैल मैल धुआईआ। नाम खुमारी चाढ़ दे गूढ़, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। तेरे सच दा पंघूड़ा सारे लैण झूल, झलक आपणी देणी वखाईआ। तूं मालक स्वामी इक कन्तूहल, हरि करता नूर अलाहीआ । मेरा असल नाल चुका दे मूल, मकरूज लहिणा मेरी झोली पाईआ। जुग बदलणा तेरा आदि जुगादी असूल, कलयुग लहिणा देणा देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं सतिजुग दे दे आपणा पूत, पिता पुरख अकाल दया कमाईआ। जिस दी धार एका धागा होवे सूत, सूत्रधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी सुहञ्जणी करे रुत, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। तूं मेरा स्वामी अबिनाशी अचुत, मैं चात्रक वांग रही बिल्लाईआ। प्यार बख्श दे दीन दुनी काया माटी पंज तत बुत, बुतख़ानयां वजदी रही वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन सुहञ्जणी करे कोई ना रुत, रुतड़ी तेरे रंग ना कोए रंगाईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ नरायण सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुर ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव आवो, निरगुण निरवैर हो के आपणा फेरा पाईआ। दीन मज़्ब सिख मुरीद आपणे आप समझावो, मन मति बुद्ध तों बाहर करो पढ़ाईआ। हरि हिरदे अन्तर निरंतर आपणा नाम वसावो, वसल यार कराओ धुर दे माहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्धेर मिटावो, सति धर्म सच चन्द कर रुशनाईआ। मेरे उत्ते वेखो थल अस्गाहो, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। मैं कूक पुकारां उच्ची करके बाहों, दो जहानां बाहर सुणाईआ। जीवां जंतां सिर रखो ठण्डी छाउँ, अग्नी अग्न ना लागे राईआ। मेरे उत्ते हकीकत दा हक करो न्याउँ, अदल इन्साफ़ इक समझाईआ। मैं जिधर तकां साचे नाम दी होए वाहो वाहो, वाहवा कहि के सारे खुशी बणाईआ। दीन दुनी आपणी तको मार्ग घुथ्थी राहों, रैहबरो पन्ध देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरो मेरे उत्ते करो मेहरवानी, मेहरवान हो के दया कमाईआ। आ के वेखो जगत जिस्म जिस्मानी, ज़मीर तको ख़लक खुदाईआ। मार्ग तको काया मन्दिर अन्दर रुहानी, रूह बुत ध्यान लगाईआ। आपणा नूर वेखो असमानी,

बिन सूर्या चन्द चन्द रुशनाईआ। चार जुग दे शास्त्र तको तको शब्द धार दी बाणी, बानी हो के वेख वखाईआ । क्यों मेरे उत्ते झगड़ा प्या दीनां मज़्बां शाह सुल्तानी, शरअ शरअ करे लड़ाईआ। आपणे भविक्खत तको जो लिख के गए नाल कलम कानी, कातब हो के कलम शाही रंग रंगाईआ। बिना नेत्रां तको चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। क्यों तुहाडी याद धरनी उत्ते हो गई पुराणी, पूरन ब्रह्म ना कोए जणाईआ। आ के वेखो अठसठ तीर्थ तट किनारे पाणी, जल धारा खोज खुजाईआ। मेरी दुक्खां भरी कहाणी, रो रो दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे सुणो गुर पैग़म्बर अवतारा, अवतरी हो के वेख वखाईआ। सो पुरख निरञ्जण हो के मैनूं दए सहारा, सिर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। हरि पुरख निरञ्जण करे प्यारा, प्रीतम मेरा धुरदरगाहीआ। एकँकारा दए अधारा, इक इकल्ला होए सहाईआ। आदि निरञ्जण कर उज्यारा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। अबिनाशी करता मेरी पावे सारा, साहिब सुल्तान नूर अलाहीआ। श्री भगवान हो के ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। पारब्रह्म मेरा वेखणहारा किनारा, तट्टां घाटां फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द बणे वणजारा, वणज करे थांउँ थाँईंआ। तुसीं आपणे आपणे मज़्बां दा तको हदूद दाइरा, शरअ खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं अन्त रहे कोई ना बहिरा, अनसुणत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड निवासी हुक्म आपणा सुणाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरो तुसीं मेरे महबूब, मुहब्बत विच दयां जणाईआ। तुसीं वसो उत्ते आलीशां ऊच अरूज, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेरे उत्ते हाज़र हो के वेखो मौजूद, जोती धार आउणा चाँईं चाँईआ। तुहाडा नाम धर्म ईमान होया नेस्तो नाबूद, चोटी जड़ नज़र कोए ना आईआ। आ के तको ख़ाकी तन वजूद, पंज तत पुतले फोल फुलाईआ। प्यार रिहा ना किते सति सरूप, सति सतिवादी रंग ना कोए रंगाईआ। जिधर तकां दीनां मज़्बां होया अन्ध कूप, अन्ध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। सति सच दा दिसे ना कोए सपूत, पिता पूत गोद ना कोए सुहाईआ। आ के वेखो मेरी दहि दिशा वाली कूट, कूक कूक के दयां सुणाईआ। तुहाडे सिख मुरीद तुहाडे प्यार नालों गए छूट, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तुध बिन सुहञ्जणी करे कोए ना रुत, रुतड़ी तेरे नाम नाल ना कोए महकाईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुर ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर निगाह मारो मेरी ख़ाकी मिट्टी उत्ते ज़िमीं ज़मीन, ज़िमीं ज़मां मेहरवान हो के वेख वखाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण धार सके कोई ना चीन, चरण कवल प्रभ सीस ना कोए निवाईआ। झगड़ा तको माया त्रैगुण तीन, रजो तमो सतो की आपणी खेल खिलाईआ। सति दा मार्ग दीन दुनी दा होया महीन, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब नूं कीता अधीन, माया ममता मोह विकार नाल मिलाईआ। मानस मानव काया चोली रंग चढ़े ना किसे रंगीन, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मन मनसा सति धर्म ल्या छीन, सच वजे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरो मेरे उत्ते होया ग़ज़ब, दो जहानां दयां सुणाईआ। निगाह मारो आपणे आपणे दीन विच मज़्हब, धर्म दी धार रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मैनूं कीता तअजुब, परेशानी विच कुरलाईआ। सति सति चुक्के कोए ना कदम, सच दुआर मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। तन माटी ख़ाक आपणे सिक्खां मुरीदां दे वेखो बदन, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। मिले मेल ना किसे गोपाल मूर्त मदन, मधसूदन वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप घर घर लग्गी अग्न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। दीपक जोती बिन तेल बाती दीए मूल ना जगण, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। अनहद शब्द अनादी सुणे कोई ना नदन, अनहद नादी राग ना कोए दृढ़ाईआ । मैं कलयुग अन्त दुखी हो के तुहानूं लग्गी सद्दण, होका देवां चाँईं चाँईंआ। मेरी धरनी धरत धवल धौल नव सत्त लग्गी अग्न, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मेरी बेनन्ती मंनज़ूर करो बन्दन, बन्दगी विच सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरो आपणे आ के वेखो सिख मुरीद, मुर्शद हो के ध्यान लगाईआ। सति सच दी रही कोई ना दीद, दीदा दानिस्ता निरगुण दरस कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म धार होए ना कोई शहीद, शहादत सच ना कोए भुगताईआ। तुहाडे हुक्म दी रही ना कोए ताकीद, सिर सर ना कोए झुकाईआ। मेरी आशा भरी इक उम्मीद, तृष्ना तुहाडे अगे टिकाईआ। जो धर्म दा मेरे उत्ते बीज के गए बीज, पत्त टहणी फुल फुलवाड़ी आ के वेखो चाँईं चाँईंआ। तुहाडे मिलण दी मेरे अन्तष्करन आउँदी रीझ, खुशीआं विच बैठी राह तकाईआ। मेरा दुआरा बिन कदमां लँघो दहलीज़, बिन चरणां चरण टिकाईआ। तुसीं परम पुरख परमात्म दे जोती शब्दी धार सुत अज़ीज़, तुहानूं जम्मण वाली कोई ना माईआ। आपणे दीनां मज़्बां दी आ के वेखो तामीज़, की दीन दुनी तबा गई बदलाईआ। झगड़ा वेखो ऊँच नीच, राउ रंक रोवण

मारन धाहीआ। आत्म धार सके ना कोए पतीज, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। गफ्लत विच्चों खोल्हे कोए ना नींद, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी बेनन्ती करो मन्ज़ूर, मंज़ल पिछला पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्ते होवो हाज़र हज़ूर, हज़रतो भज्जणा वाहो दाहीआ। पन्ध मुकाउणा नेड़ा दूर, दो जहानां वाट ना कोए रखाईआ। आपणयां दीनां मज़्हबां तको ज़रूर, ज़रूरत सब दी दयां समझाईआ। शरअ शरीअत तको कसूर, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैनूं कलयुग कूड़ी क्रिया कीता मजबूर, कामना तृष्ना रही सताईआ। जिधर वेखो तुहाडे दीनां मज़्हबां पाया फ़तूर, फ़तवा लग्गा थांउँ थाँईंआ। हर हिरदे अन्दर वड़या कूड़, तन वजूद वजे ना कोए वधाईआ। चतुर सुघड़ बण गए मूर्ख मूढ़, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। चरणी लाए ना कोए मस्तक धूड़, टिक्के ख़ाक ना कोए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त इक सुहाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मैनूं आ के दयो दिलासा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ । सति सच दयो भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पन्ध मुकाओ पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां डेरा ढाहीआ । मेरे उत्ते आ के पाओ रासा, बिन गोपी काहन खेल खिलाईआ। दीन दुनी दा बदलो पासा, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरे अन्तर निरंतर निरगुण धार करो वासा, वास्तक आपणा भेव चुकाईआ। नाल इशारा दयो की खेल करे शंकर कैलाशा, कलधारी की आपणी कल वरताईआ। भेव चुकाओ की हुक्म वरते पुरख अबिनाशा, धुर करता की दृढ़ाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरो गुरुओ सच नाम दी करो भाषा, इक्को कलमा वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरे उत्ते आओ जल्दी, बिन तन वजूद फेरा पाईआ। खेल वेखो कलयुग कल दी, कलकाती रिहा कराईआ। नव सत्त अग्ग वेखो बलदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। धार तको पंच विकारे दल दी, नौ खण्ड पृथ्मी भज्जे वाहो दाहीआ। माया ममता फिरे छलदी, मानव बचया रहिण कोए ना पाईआ। मेरी आशा पूरी करो बावन बलि दुआरे जो दो जहानां सल दी, सलल आपणी कार भुगताईआ। वक्त सुहञ्जणी घड़ी होवे नानक वाली इक गल्ल दी, जगत जहान दा लेखा देणा मुकाईआ। मैं वणजारन तुहाडे प्यार दी घड़ी पल दी, पलकां दे पिच्छे बहि के दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। मेरी दरोही वेखो जल थल दी, महीअल हो के रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर दीनां मज़्हबां अन्दर मारो झाकी, बिन नेत्र लोचन नैण नैण उठाईआ। काया मन्दिर अन्दर

पाड़ के वेखो बजर कपाटी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ । किसे दे अन्दर अमृत नाम दिसे ना बूँद स्वांती, निझर झिरना कवली नाभ ना कोए चुआईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा अन्धेरी राती, सतिगुर नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। नाम कलम्यां झगड़ा प्या लोकमाती, दीन मज़्हब करन लड़ाईआ। धुर दा इलम समझे ना कोए सफ़ाती, सफ़ा सफ़े विच्चों बदलाईआ। दीन दुनी दी ज़िंदगी तको हयाती, जीवण जीवण विच्चों वेख वखाईआ। साची मंज़ल तुहाडा सिख मुरीद चढ़े कोए ना घाटी, घाटे विच ख़लक खुदाईआ। किसे हथ्थ ना आवे अमृत रस बाटी, धुर दा मेघ ना कोए बरसाईआ। मंज़ल पन्ध मुके ना वाटी, चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी बैठी रही इकांती, इक इकल्ली आपणा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी वेखदी रही खेल तमाशी, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। धरनी कहे सदी चौधवीं अन्त अख़ीर घर घर वधी बदमुआशी, बदी विच ख़लक खुदाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहानूं मख़ौल हुन्दा नाल हुन्दी हासी, हस्ती बेपरवाह नज़र किसे ना आईआ। कूड़ कुड़यारां कोलों मेरी करो खुलासी, ख़ालस आपणा रंग वखाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी परम पुरख दी दासन दासी, नित नवित साची सेव कमाईआ। मेरे दुआर मेरे मण्डल मेरे गृह आपणी जोत धार दी पावो रासी, शब्दी शब्दी शब्द नाच वखाईआ। मैं अन्त मिट्टी ख़ाक सब दे चरण कवल बलि बलि जासी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। मैनूं कुछ संदेशा दे के गया चमार रवीदासी, रवी आपणा भेव खुल्हाईआ। बाल्मीक बटवारे मैनूं कराई शनासी, शनाख़त प्रभ दी गया दृढ़ाईआ। धरनीए कलयुग अन्त तेरा लहिणा देणा पूरा करे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद पुरख अकाला दीन दयाला शहिनशाह शाहो शाबाशी, शाह पातशाह एका एक एक अख्वाईआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुर ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे पुरख अकाल अतीते, त्रैभवण धनी तेरी ओट तकाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर जुग चौकड़ी केते बीते, अणगिणत आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरी तकदी रही रीते, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। मेहरवान मेरे मालक स्वामी पतित पुनीते, पारब्रह्म प्रभ देणी माण वड्याईआ। मेरा अन्तष्करन कर ठांडा सीते, अग्नी तत बुझाईआ। दीन दुनी दी बदल दे मेरे उत्तों रीते, रीतीवान आपणा रंग रंगाईआ । झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीते, काया काअबे कर रुशनाईआ।

तेरा इक्को नाम कलमा होवे हदीसे, हज़रतां तों बाहर दे समझाईआ। मेरे मालक ख़ालक मेहरवान प्रगट हो अवतार चौबीसे, चौबीसे जगदीसे आपणी कल वरताईआ । एका छत्र झुल्ले तेरे अगम्मड़े सीसे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाल दीना बंधू, बन्दना तेरे चरण टिकाईआ। मेरे गहर गम्भीर सागर संधू, सुख सागर रूप तेरा वेखां चाँईं चाँईआ। मेरे नव सत्त दे धर्म अनन्दू, अनन्दपुर वासी नाल मिलाईआ। मेरे बिना ततां तों अन्तर पा ठण्डू, वस्त अगम्म देणी वरताईआ। झगड़ा मेट दे विकार पंजू, पंचम शब्द धुन कर शनवाईआ। झगड़ा रहे ना दूई दुवैत विकार जंगू, शरअ शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। दूई दुवैती ढाह दे कंधू, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तूं दीन दयाल सद बख़्शंदू, बख़्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ। मैं निमाणी भिखारन हो के तेरे दर तों मँग्गूं, मांगत हो के झोली डाहीआ । दीन दुनी दा नेत्र रहिण ना देवीं अन्धू, अन्ध अज्ञान देणा मिटाईआ। बिन तेरी किरपा मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मंज़ल हक कोए ना लँघू, सच दुआर मिलण कोए ना आईआ। बिन तेरी किरपा सतिजुग सति धर्म ना कोए अरंभू, कलयुग कूड़ी क्रिया ना कोए मिटाईआ। तूं मेरा सवै शक्त तेरे हुक्म दी धार शिवै शम्भू, शंकर आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख अकाले, अकल कलधारी तेरी सरनाईआ। दीनां बंधू दीन दयाले, दया निध तेरी वड्याईआ। किरपा निध होणा कृपाले, किरपन हो के मंग मंगाईआ। बेनन्ती करां सच दुआर तेरी धर्मसाले, धर्म दुआर आस रखाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दाग़ काले, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। आ के वेख मुरीदा हाले, मेरे मुर्शद धुरदरगाहीआ। मेरे उत्तों त्रैगुण माया तोड़ जंजाले, जागरत जोत कर रुशनाईआ। हरिजन भगत सुहेले उठा आपणे बाले, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। अन्तर निरंतर आपणे नाम दी बख़्श माले, मन का मणका दे भुआईआ। तेरे प्यार विच मैं जुग चौकड़ी घालन घाले, घायल हो के रही सुणाईआ। फल रिहा ना मेरे उत्ते धर्म दे डाले, पत्त टहणी गई कुमलाईआ। निरगुण दीआ बाती कमलापाती जोत कोए ना बाले, शब्द नाद ना कोए शनवाईआ। मेरी इक बेनन्ती इक सवाले, इक्को आस तेरे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे नूर अलाही परवरदिगार, यामबीन तेरी सरनाईआ। मेरे नूर नुराने सांझे यार, जल्वागर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा कादर एकँकार, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। मैं सईयदयां विच करां निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। मेरे अमाम अमामे नूर अलाह मेरी

पाउणी सार, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। मैं धूड़ी ख़ाक मंगदी छार, शहिनशाह मस्तक ख़ाक देणी रमाईआ। तूं निरगुण धार आउणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तेरी आस रखाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरा करके गए इज़हार, सिफ्तां विच सिफ्त सलाहीआ। मैं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरा कर रही इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते होणा ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करनी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाले दीन दयाले गम्भीर गहर गवर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भोजीआं ज़िला अमृतसर ✪

हरिसंगत वेखणी प्रभू साची श्रद्धा, सरधन निर्धन ध्यान लगाईआ। जन भगत सुहेला बणाउणा आपणा बरदा, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। भेव चुकाउणा आपणे गृह घर दा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। इश्नान कराउणा अन्तर आत्म साचे सर दा, दुरमति मैल मैल धुआईआ। नूर ज़हूर वखाउणा नरायण नर दा, नर निरँकार दया कमाईआ। आत्म परमात्म तेरा नाम होवे पढ़दा, कलमा कायनात सिफ्त सलाहीआ। लेखा रहे ना चोटी जड़ दा, चेतन सुरती देणी कराईआ। सन्त सुहेला तेरी मंज़ल जाए चढ़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तेरे प्यार विच लेखा रहे ना हँकार गढ़ दा, माया मोह ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। हरिसंगत कहे प्रभू साडी पूरी करनी इच्छया, श्री भगवान दया कमाईआ। नाम निधाना नौजवाना पाउणी भिच्छया, वस्त अमोल अतुल आप वरताईआ। एथे ओथे दो जहानां करनी रच्छया, रक्षक हो के वेख वखाईआ। लख चुरासी विच हरिजन रहे मूल ना फसिआ, फाँसी जम्म देणी कटाईआ। निझर धार अंमिओं बूँद स्वांती देणा रसिआ, बिन रसना रस चखाईआ। अन्ध अन्धेर अन्दरों मेटणी अन्धेरी मस्सया, जोती नूर चन्द कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया मूल डस्से ना डसणी डस्सया, ज़हिर कहर ना कोए वरताईआ। नौ दुआर मन मनुआ फिरे ना नस्सया, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ । हरिसंगत साहिब स्वामी दर तेरा इक्को मंगदी, मांगत हो के झोली डाहीआ। तन वजूद ख़ाकी माटी रंगदी, रंगत आपणा नाम वखाईआ। प्रीती जोड़ीं धुर दे अंग दी, अंगीकार होणा धुरदरगाहीआ। मंज़ल मुकाउणी जेरज अंड दी, उत्भुज सेत्ज पन्ध रहे ना राईआ। वासना रहे

ना कूड़ विकारे धन दी, पंचम शब्द देणी सची शनवाईआ। मुहब्बत रहे वासी पुरी अनन्द दी, गोबिन्द मिलके वजदी रहे वधाईआ। वड्याई रहे ना बत्ती दन्द दी, अजपा जाप विच सुरत शब्द देणी समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। हरिसंगत कहे प्रभू तेरा दरस होवे अगम्म, बिन जग नेत्र नज़री आईआ। साचा भेव खुल्हा दे ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा आप उठाईआ। निहकर्मी साडे उत्ते कर दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। अन्तष्करन विच्चों मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। साडी दृष्टी रहे ना चर्म, चम्म दृष्टी देणी गंवाईआ। इक्को बख्शणी पुरख अकाले सरन, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। निज नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, लोचन आपणे कर रुशनाईआ। बिन अक्खरां तेरे सन्त सुहेले तेरी विद्या पढ़न, निरअक्खर धार देणा दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म जोती जाते तेरा पल्लू फड़न, सतिगुर शब्द शब्द देणी वड्याईआ । साडा लेखा चुक्के आवण जावण लख चुरासी मरन, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तरनी तरन, तारनहारा इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। हरिसंगत कहे सूरे सरबंगणा, परवरदिगार
८१७ तेरी वड्याईआ। महिबान बीदो तेरा दुआरा इक्को मंगणा, दूसर गृह कदे ना जाईआ। तूं शाहो भूप सूरा सरबंगणा, नूर ८१७
२४ नुराना नूर अलाहीआ । तेरा सच दमामा दो जहानां वजणा, डंका फ़तिह फ़तिह शनवाईआ। तेरे चरण धूड़ जन भगत २४
सुहेले करन मजना, अठसठ लेखा रहे ना राईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तेरा नूरी दीपक इक्को जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ । तूं लेखे लाउणा आहला अदना, शाह सुल्तानां आपणा रंग रंगाईआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना इक्को होवे भजना, भजन बन्दगी तेरा रूप सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दुआर इक दरसाईआ। हरिसंगत कहे प्रभू हभ आशा कर दे पूरी, परम पुरख प्रभ दया कमाईआ । पन्ध मुका दे नेड़ा दूरी, दो जहान चरण सरन सरनाईआ। कलयुग क्रिया मेट दे कूड़ी, कूड़ कुड़यार मिटाईआ । शाहो भूप हाज़र हो हज़ूरी, हज़रतां दे मालक धुरदरगाहीआ। आपणा दरस दिखा दे नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। तूं सर्ब कला भरपूरी, समरथ इक गुसाँईंआ। कलयुग अन्तिम सब दी कट मजबूरी, मुश्किल दीन दुनी हल कराईआ। हरिसंगत बिन चरण बख्श दे धूड़ी, धूली टिक्के ख़ाक रमाईआ। मनसा मूल रहे ना कूड़ी, क्रिया कर्म कांड दा लेखा आप चुकाईआ। तेरे प्यार दी रंगत चढ़े गूढ़ी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। हरिसंगत कहे प्रभू तेरा इक्को होवे दरस, बिन नेत्र नैणां नज़री आईआ। आत्म परमात्म मिटे

हरस, हवस अवर रहे ना राईआ। अमृत मेघ देणा बरस, जिस दा मेघला नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां उत्ते करना तरस, रहीम रहमत रहमान आप कमाईआ। तूं वाली मालक ख़ालक आलीज़ाह अर्श, शाह सुल्तान तेरी वड्याईआ। निगाहबान निगाह मारनी उत्ते फ़र्श, फ़र्शे ख़ाकी वेख वखाईआ। तेरे दरस नूं तेरे सन्त सुहेले रहे तरस, दिवस रैण बैठे ध्यान लगाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना इक्को मर्द, मेहरवान महबूब इक अख्वाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार हो के वंड दर्द, दरदवंद तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। हरिजन ख़ुशी कर बन्द बन्द, बन्दगी सब दी आपणे लेखे लाईआ। उह वअदा पूरा कर दे जो गोबिन्द कहि के गया पुरी अनन्द, अनन्द दे मालक अनन्द अनन्द विच्चों वरताईआ। हरिसंगत आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द जपा दे छन्द, छंत दी बणत आप बणाईआ। जन भगतां सेज सुहा दे आप पलँघ, बिन पावा चूल आसण लाईआ। सब दी अन्तर निरंतर निरगुण धार तक लै मंग, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी शाहो भूपी बिन रंग रूपी आत्म धार लगा लै आपणे अंग, अंगीकार एकँकार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर सचखण्ड दुआरयों मार के आओ वाटां, दो जहान नौजुआन मर्द मर्दान पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्ते दीनां मज़्हबां अन्दर वेखो आया घाटा, सति सच धर्म दी वस्त गए डुल्हाईआ। चारों कुण्ट कलयुग खेल बाज़ीगर नाटा, नटुआ हो के आपणा स्वांग वरताईआ। अमृत रस बिन गोबिन्द भरे ना कोए धर्म दे बाटा, अंमिओं रस जाम ना कोए प्याईआ। आत्म सेजा सुंञी वेखो तुहाडे सिक्खां मुरीदां होई खाटा, सिँघासण आसण नज़र कोए ना आईआ। सब दा काया माटी पंज तत दा चीथड़ वेखो पाटा, तन श्रृंगार रहिण कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सति सच दा प्या सनाटा, कलयुग कूड़ कूके थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरी वेखो हालत, हाए उफ़ कर सुणाईआ। धर्म दी रही ना कोए अदालत, इन्साफ़ सच ना कोए कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होई जहालत, प्रेम प्रीती रंग ना कोए रंगाईआ। तुहाडे धर्म दी दीनां मज़्हबां कोलों खुस गई अमानत, वस्त संभल ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं सब ने कीती ख़िआनत, ख़िज़ां

रुत्त गई बदलाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी शामत, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्ते ल्यांदी क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरा वेखो दु:ख, दुखी हो के रही जणाईआ। मेरी सुफल रही ना कुख, भगत जन्मे कोए ना माईआ। दरोही फिरी विच मानस मानुख, मानव सारे तुध नूं गए भुलाईआ। दीन दयालो वड कृपालो मैनूं आण के लओ पुछ, पुश्त पनाह मेरी हथ्थ टिकाईआ। तुहाडे सिख मुरीद तुहाडे नालों गए रुस, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर शब्दी धार बोलण इक्ठे, सचखण्ड दुआर जणाईआ। असीं बिन कदमां आईए नठे, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। पहलों वेखीए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती फोल फुलाईआ। निगाह मारीए मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठे, गुरुदुआर चर्चा फोल फुलाईआ। साडे कोल धरनीए पुरख अकाल दे धर्म दे पिछले वेख लै पटे, पटने वाला रिहा जणाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी टपे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दे सतिगुर शब्द नाल मते, जगत मशवरा सलाह ना कोए रखाईआ। जिस दा इशारा दिता निरगुण सरगुण धार नानक तप्पे, गुर गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। उह माण देवणहारा इक्को अक्खर पप्पे, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को हुक्म वरताईआ। जिस दे कौल इकरार दो जहानां पक्के, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरु एका धार बणाउणे सके, दीनां मज़्हबां शरअ वंड ना कोए रखाईआ। सानूं सब कुछ दिसदा साडा नाम कलमा विकदा विच टके, ग्रन्थ शास्त्र हट्टो हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनी धरत धवल धौल निरगुण धार आवांगे। जोती जाता पुरख बिधाता, सो पुरख निरञ्जण नाल मिलावांगे। आदि जुगादी पित माता, हरि पुरख निरञ्जण वेख वखावांगे। एथे उथे दो जहान जिस दा नाता, एकँकार आपणी गंढु पुआवांगे। आत्म परमात्म लख चुरासी जो होए जोती जाता, आदि निरञ्जण दर्द दु:ख भय भंजन आपणी गंढु रखावांगे। अबिनाशी करता जो सुणाए अगम्मी गाथा, श्री भगवान धुर दा जोड़ जुड़ावागे। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जो तेरे उत्तों मेटे अन्धेरी राता, नूरी चन्द चन्द चमकावांगे। सतिगुर शब्द जो खेले खेल बहु बिध भांता, रूप अनूप उसे दा वेख वखावांगे। तूं आपणा खुल्ह्ला रखीं खाता, सत्तां दीपां पर्दा आप चुकावांगे। निगाह मारीए विच ज़ातां पातां, दीनां मज़्हबां फोल फुलावांगे। तेरा नव सत्त दा तक्कीए इक अहाता, समुंद सागराँ टिल्ले पर्वतां जंगल जूहां वेख वखावांगे। तेरा मालक ख़ालक साडे नाल होए पुरख

बिधाता, वसुधा तेरा लेखा तेरी झोली पावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी सदा सुहेला सगला साथा, अनाथ अनाथां वेखणहारा थांउँ थाँईंआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ वरयाम सिँघ दे गृह पिण्ड मल्लीआं ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल कहे सुण धरनी धवल धौल धरत, माटी ख़ाक बिन तन वजूद हक महबूब बण के तैनूं दयां समझाईआ। निरगुण धार एकँकार सांझा यार हो के आवां परत, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म हो के आपणा खेल खिलाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हो के गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करां शर्त, शरअ शरीअत जगत जहान नौजुआन हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। मैं नूर नुराना शाह सुल्ताना वाली दो जहान प्रीतम अर्शी अर्श, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी इक अख्वाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के आवां उत्ते धरत, धवले तेरा हौला भार दयां कराईआ। तूं निरगुण धार दी सदा उडीक रखीं मेरी आमद दे बहुते नहीं बरस, पंज चार साल तों वध्ध वक्त ना कोए रखाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणां मर्द, बलधारी इक अख्वाईआ। कोझीए कमलीए तेरी आण के वंडां दर्द, दुखियां दर्दीआं तेरे नाल मिलाईआ। शरअ छुरी किसे करे ना कत्ल करद, कातिल मक्तूल दा पन्ध दयां मुकाईआ। तेरी बेनन्ती मन्ज़ूर होवे अर्ज़, अर्शी प्रीतम हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। कलयुग नूं मेटणा मेरा धुर दा बणदा फ़र्ज़, फ़ाज़ल हो के आपणा हुक्म वरताईआ। मैं सब दी आशा पूरी करां ग़रज़, मनसा तकां हो के बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। धरनीए सो पुरख निरञ्जण हो के आवांगा। हरि पुरख निरञ्जण हो के वेख वखावांगा। एकँकारा हो के हुक्म वरतावांगा। आदि निरञ्जण हो के डगमगावांगा। अबिनाशी करता हो के सोभा पावांगा। श्री भगवान हो के डंक वजावांगा। पारब्रह्म हो के भेव खुल्हावांगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावांगा। सचखण्ड दुआर इक सुहावांगा। थिर घर आपणा पर्दा लाहवांगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप हिलावांगा। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द नैण अक्ख खुल्हावांगा। गण गंधरव आप जगावांगा। त्रैगुण माया पंज तत वेख वखावांगा। अवतार पैग़म्बर गुर जोती धार संग बणावांगा। बिन कदमां धरनीए तेरे उत्ते आवां तुर, बिन ततां वेस वटावांगा। मेरा इक्को मन्त्र नाम जाए फुर, फुरने मन दे बन्द करावांगा। इक्को ताल तलवाड़ा होवे इक्को वजे अनादी सुर, सुरती शब्द नाल जुड़ावांगा। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द अनन्द पुर, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां बाहर

वेख वखावांगा। तेरे उत्तों मेटां अन्धेरा घोर, नूरी चन्द चन्द चमकावांगा। कलयुग कूड़ कुड़यार ना पावे शोर, शौहर बांका हो के हुक्म सुणावांगा। तूं तकणा नाल ग़ौर, गहर गम्भीर हो के खेल खिलावागा। तेरे उत्ते दीन दुनी दी आशा कर देवां अवर दी और, और दा और रूप बदलावांगा। मानस ज़ाती मानव जन्म जाए सौर, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म भेव खुल्हावांगा। सब दी आपणे हथ्थ विच फड़ के डोर, दो जहानां आपणी कल वखावांगा। सतिजुग नाल तेरा नाता देवां जोड़, कलयुग कूड़ कुड़यार, बाहर कढावांगा। प्रभू प्यार दी रहे कोई ना थोड़, भण्डारा अतोट अतुट वरतावांगा। निरगुण हो के चढ़ां शब्द अगम्मी घोड़, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चरणां हेठ रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हो के जावां बौहड़, दूर दुराडा दो जहानां निरगुण हो के आपणा पन्ध मुकावांगा।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे सुण मेरे श्री भगवाना, भगवन कन्त भगवन्त दर तेरे मंग मंगाईआ। मेरे आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी नौजुआना, शब्द अनादी तेरी बेपरवाहीआ। तूं शाहो भूप बिन रंग रूप योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, महाबली अगम्म अथाहीआ। नित नवित आदि जुगादि तेरा झुलदा रिहा निशाना, ज़िमीं ज़मां महिबां आपणा रूप दरसाईआ। निगाह मार लै मेरे निरवैर निराकार निरँकार बिन ततां वाले कान्हा, राम रामा वेख वखाईआ। मेरे भगवन्त क्यों मेरा प्यार होया बेगाना, प्रीतम हो के प्रीत गयों तुड़ाईआ। मेरे शहिनशाह शाहो भूप सुल्ताना, राज राजान तेरी वड्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पहरने वाला जामा, जुग चौकड़ी आपणा खेल बणाईआ। कलयुग अन्त मैं हो गई हैराना, हैरानगी विच मेरी दुहाईआ। तेरे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं हुंदयां क्यों मेरे उत्ते बदल गया ज़माना, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ कुड़यार होया प्रधाना, पंच विकारा भज्जे वाहो दाहीआ। मैं संदेशा सुणना चाहुंदी तेरा इक फ़रमाना, फ़रमाबरदार हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले मीता, साहिब सतिगुर साजण दर तेरे वास्ता पाईआ। मेरा अन्तष्करन कर दे ठांडा सीता, अग्नी तत तत बुझाईआ। तूं आदि जुगादी जुग चौकड़ी बदलण वाला रीता, रीतीवान इक अख्वाईआ। उह वक्त याद कर ला जो संदेशा दिता राम सीता, बनवासी हो के गया दृढ़ाईआ। जो भेव खुल्हाया कृष्ण घनईया अर्जन लिखवाण लग्गे गीता, अठारां ध्याए

बाहर समझाईआ। की पैग़म्बरां शरअ तों बाहर दस्सी हदीसा, हज़रतां दे मालक कीती पढ़ाईआ। की लहिणा देणा गुरू गुरदेव बीस इकीसा, गुरदास की गया समझाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं जुग चौकड़ी तेरा पीसण पीसा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी वस्त अगम्म वरताईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले, अकल कलधारी तेरी आस रखाईआ। निगाह मार लै विच्चों सचखण्ड सची धर्मसाले, बिन नैणां नैण उठाईआ। की संदेशा दे के गए तेरे अवतार पैग़म्बर गुर निक्के नढ्ढे बाले, बाली बुध्ध की जणाईआ । तुध बिन कलयुग अन्त ना कोए संभाले, सम्बल दे मालक तेरी आस रखाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाले, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। मैं नहीं चाहुंदी मेरे उत्ते ततां वाले गुरु होण बाहले, इक्को सतिगुर शब्द तेरा मेरा होए सहाईआ। जो फल लगावे धर्म दे डाले, पत्त टहणी दए महकाईआ । घट घट अन्तर निरंतर जोती जाता हो के दीप अगम्मा बाले, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। भाग लगावे काया माटी खाले, पंज तत वजदी रहे वधाईआ। जल्वागर आपणा दे दे नूर जमाले, ज़हूर आपणा इक दरसाईआ। मेहरवाना मेहरवाना मेरी झोली रहे ना ख़ाले, वस्त अतोट अतुट देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन करे ना कोई प्रितपाले, प्रितपालक ख़ालक तेरी ओट तकाईआ।

८२२
२४

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं तकीआं तेरीआं चारे खाणीआं, लख चुरासी जूनी ध्यान लगाईआ। तेरे हुक्म संदेशे सुणे शब्द अगम्मी बाणीआं, शास्त्रां खोजया थांउँ थाँईंआ। आपणे उत्ते तेरे वेखे अठसठ तीर्थ पाणीआं, जल धारा खेल खिलाईआ। सुरती शब्दी तकदी रही हाण हाणीआं, निरगुण निरगुण तेरा रंग वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुर गाउँदे रहे सिफ्तां वालीआं बाणीआं, ढोले सोहले रागां नादां विच दृढ़ाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणी रही बाल अंञाणीआं, बाली बुद्ध बुधि जणाईआ। तूं मेरा शाहो भूप अधार प्राणीआं, प्रणाम कहि के सीस निवाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले अन्तष्करन दे जाण जाणीआं, जानणहार वेखणा नैण उठाईआ। तेरे प्यार विच जो निरगुण सरगुण मौजां माणीआं, सुख सागराँ विच रखाईआ। कलयुग अन्त मेरे भगवन्त मैं होई अन्त निथावीआं, थान थनंतर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ। धरनी कहे प्रभू जुग जुग मेरे उत्ते हुन्दी रही

मेहर, मेहरवान दया कमाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम लाई देर, दूर दुराडे धुरदरगाहीआ। मेरे उत्तों कलयुग पन्ध मुका दे नेरन नेर, लेखा अगे रहे ना राईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह अगम्मा शेर, भबक दो जहान सुणाईआ । सतिगुर शब्द भेज दलेर, भय भउ दे चुकाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेर, अन्ध आत्म रहे ना राईआ। जीवां जंतां मनसा मन करे ना हेर फेर, बुध बिबेक देणी कराईआ। इक रंग रंगा दे गुरु गुर चेर, चेले गुर आपणे रंग समाईआ। कूड़ कुड़यारां मिट्टी ख़ाक ढाह के करदे ढेर, ममता मोह महल अटल रहिण कोए ना पाईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी ज़बर ज़ेर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब देणी माण वड्याईआ। धरनी कहे मैं जुग जुग तेरा माणदी रही रंग, रंग रंगीले धुर दे माहीआ। कलयुग अन्तिम दे दे संग, सगले संगी बहुरंगी आपणी दया कमाईआ। नव सत्त मेरा खेड़ा होण ना देवीं भंग, वरभंड वजदी रही वधाईआ। मैं हैरानी विच होई दंग, परेशानी विच कुरलाईआ। मेरे नेत्र लोचन नैणां वगे अंझ, हंझू आपणी धार बणाईआ । मेरे साहिब सूरे सरबंग, तेरे अगे वास्ता पाईआ। तूं लोकमात जगत जहान आउणा लँघ, सचखण्ड निवासी आपणा फेरा पाईआ। मेरी सेज सुहञ्जणी सुहा दे पलँघ, आसण सिँघासण अबिनाशण इक वड्याईआ। मेरी सदी सदीवी दी पूरी कर दे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। अमृत धार नर निरँकार वहा दे गंग, गंगोत्री बैठी सीस निवाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मैं तेरा माणां अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों देणा वखाईआ। धर्म दा मेरे उत्ते नूरी चाढ़ दे चन्द, चन्द चांदना इक चमकाईआ। मेरा खुशी होवे बन्द बन्द बन्दगी विच तेरे चरण सीस निवाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला सदा बख़्शंद, रहमत आपणी देणी कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी अन्दर भेव चुका दे ब्रह्म हँ, पारब्रह्म प्रभ पड़दा आप उठाईआ।

८२३ २४

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू कलयुग कूड़ कुड़यार नाल गई सल्लीआं, अणयाला माया ममता तीर रिहा चलाईआ। किसे कम्म नहीं आउंदीआं मेरे उत्ते दितीआं बलीआं, शहादतां रंग ना कोए रंगाईआ। चरागाहां विच नज़र नहीं आउँदीआं तेल दीआं पलीआं, मकबरे रोवण मारन धाहीआ। जो संदेशे दिते रसूलां अलीआं, अल्ला तेरा हुक्म सुणाईआ। साडा महबूब मेहरवान आवे धरनीए तेरी नव सत्त दी गलीआं, कूचा कूचा फोल फुलाईआ। निगाह मारे जल थलींआं, महीअल खोज खुजाईआ। मेरे मेहरवाना

श्री भगवाना कलयुग अन्त मैं इक्को इक इकल्ली आं, दूजा संगी नज़र कोए ना आईआ। तेरे वैराग विच जोती जाते होई झल्ली आं, झलक आपणी देणी वखाईआ। मैं तेरा दर्शन करके पावां जल्लीआं, जलां थलां दे मालक देणी माण वड्याईआ। मेरीआं आशां प्यार वालीआं रहिण ना ठल्लीआं, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। मेरे उत्ते कूड़ कुड़यार दीआं वजदीआं टल्लीआं, मन्दिर मठ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक लै कहर, नव सत्त ध्यान लगाईआ। तूं मेहरवान गम्भीर गहर, गवर तेरी वड्याईआ। दीन दुनी दे अन्तष्करन कूड़ कुड़यार भरया ज़हिर, अमृत रस ना कोए चखाईआ। तेरे नाम कलम्यां बणया वैर, शत्रु घर घर नज़री आईआ। मेहरवाना मेरी झोली आपणे प्यार दा पा दे ख़ैर, ख़ैरीअत आपणी वस्त वरताईआ। नव सत्त दा कर लै आ के सैर, पृथ्मी पृथम तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे देवणहारे सच सलाह, साहिब सुल्तान देणी सरनाईआ। मेहरवाना बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। मेरा निथावीं दा रिहा ना कोई थाँ, थान थनंतर रोवण मारन धाहीआ। कलयुग अन्तिम पकड़ बांह, बलधारी होणा सहाईआ। मैनूं प्यार दी बणाए ना कोई माँ, धरत माता कहि के सीस ना कोए निवाईआ। मेरे उत्ते मानव मानस मानुख शरअ शरीअत विच खाए सूर गाँ, पशूआं ढोरां खल्ल लुहाईआ। हरि हिरदिउँ भुलया तेरा नाँ, नाउँ निरँकार ना कोए दृढ़ाईआ। जीवां जंतां बुद्धी होई काँ, गुरमुख रूप ना कोए दरसाईआ। तुध बिन देवे कोई ना ठण्डी छाँ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं तेरे मिलण दा चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। दरस दिखा दे निरगुण निरवैर आप आ, जोती जाते फेरा पाईआ। मैं खुशीआं विच करां वाह वाह, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मेरे आदि जुगादि गवाह, शहादत तेरे नाम वाली भुगताईआ। धरनीए कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता आवे वेस वटा, पुरख बिधाता फेरा पाईआ। मेरे मेहरवाना नौजुवाना श्री भगवाना मैं बिना नेत्रां तकां तेरा राह, मेरे रैहबर आउणा धुर दे माहीआ। मेरा दुखड़ा दीन दुनी दा देणा गुआ, सुख आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम हकीकत दे मालक करना हक न्याँ, अदल इन्साफ़ आपणा देणा जणाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे निरँकारे, निरवैर होणा आप सहाईआ। सति सच दे भर भण्डारे, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ । मैं जुग चौकड़ी तेरे सहारे, ओट अवर ना कोए तकाईआ। संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारे, अवतरी तेरा भेव चुकाईआ। पिछले जुग चौकड़ी वेखे सारे, बिन नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तेरा दर्शन पाउणा चाहुंदी कलि कल्की अवतारे, तेरा नूर तकां थांउँ थाँईंआ। अमाम अमामा हो ज़ाहरे, ज़ाहर ज़हूर देणी वड्याईआ। मैं सदा सदा तेरे सुणदी रही इशारे, बिन सरवणां कन्नां ध्यान लगाईआ। अछल छलधारी वेखीं हुण देवीं ना लारे, वल छल आपणा खेल खिलाईआ। मैनूं कलयुग रिहा ललकारे, आपणा भय दृढ़ाईआ। मैं नव सत्त कूड़ कुड़यार दे लाउणे जैकारे, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। माया ममता मोह लग्गे अखाड़े, कूड़ी क्रिया नाच नचाईआ। अग्ग लगाउणी बहत्तर नाड़े, मानस मानव देणे तपाईआ। दुहाई फेरनी जंगल जूह उजाड़ पहाड़े, टिल्ले पर्वत रोवण मारन धाईंआ। मेरे भगवन्त मेरे मंन लै हाढ़े, मिन्नतां कर कर सीस झुकाईआ। मेरे उत्ते धर्म दे रंग चाढ़ दे गाड़े, दुरमति मैल दे धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर साचे साहिब सईआं, स्वामी अन्तरजामी तेरी आस रखाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते मेरी पकड़ लै बहीआं, काहन कान्हा श्री भगवाना धुर दे रामा आपणे अंग लगाईआ। मेरा लेखा तक लै बिन अक्खरां वाली कढुके बहीआ, जिथ्थे वही नाज़ल हो के दयां सुणाईआ। मैं सरन सरनाई पुरख समरथ तेरी पईआं, पारब्रह्म प्रभ तेरी धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मेरी शौह दरया डुब्बण ना देवीं नईया, नौका जगत जहान पार कराईआ। जिस कारन बुल्हे गाया थईआ थईआ, दहि दिशा दे मालक होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। धरनी कहे मेरे मालक निगाह मार लै उत्ते धवल, मेरा धवला झाटा वेख वखाईआ। मेरी बुद्धी होई बवल, पाग़लां वांग रही कुरलाईआ। तूं नूर अलाही अवल, आलमीन तेरी सरनाईआ। आपणा वअदा तक लै कवल, कौल इकरारां ध्यान लगाईआ। मेरे मेहरवाना मेरे उत्ते सति सरूप हो के मवल, मौला हो के फेरा पाईआ। तेरा रूप अनूप तकां सुंदर साँवल सवल, सावरीआ आपणा पड़दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक वड्याईआ। धरनी कहे मेरे धर्म धार दे पिता, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। मैं निर्धन नाल करना हिता, हितकारी हो के ध्यान रखाईआ। तूं स्वामी मेरा अबिनाशी अचुता, चतर्भुज तेरी बेपरवाहीआ। धर्म दी धार मेरी सुहा दे रुता, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ। हुक्म संदेशा दे दे आपणे सतिगुर

शब्द दुलारे सुता, पूत सपूतां लै उठाईआ। जो वेख वखाए लख चुरासी काया माटी बुता, बुतख़ानयां फोल फुलाईआ। मेरा अन्त कन्त भगवन्त मेट दे दुखा, दुःख दलिद्र रहिण कोए ना पाईआ। सति सच धर्म दा दे दे सुखा, सतिजुग साचा नाल मिलाईआ। मेरी पवित्र कर दे कुक्खा, मैं धर्म दी बणां जणेंदी माईआ। तेरे दरस नाल मेरा उजल होवे मुखा, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मेरा अन्तष्करन तेरे प्यार दा भुखा, भुख तृष्ना देणी गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे मालक स्वामी अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं दे कराईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी मेट उदासी, चिन्ता ग़मी दे गुआईआ। मेरी शुद्ध कर दे रासी, मण्डल मण्डप आपणे रंग रंगाईआ। धुर संदेशा दे दे शंकर कैलाशी, कलाधारी आप सुणाईआ। जगत विकारी मेरे उत्ते रहिण ना देवीं लाशी, कूड़ विकारां पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी विच्चों करें तलाशी, हरिजन साचे लएं बचाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना सति धर्म नूं दे शाबाशी, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। कलयुग कोलों मेरी होए खुलासी, खुल्ही मेंढी सीस दयां दुहाईआ। तूं सचखण्ड निवासी, दरगाह साची सोभा पाईआ। मैं धरनी तेरे हुक्म दी प्यासी, तृष्ना विच रही कुरलाईआ। मेरे अन्तष्करन इक्को आशा भासी, भावना तेरे चरण टिकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मानव करे ना कोए बदमुआशी, बदी दा लेखा देणा चुकाईआ। तुध बिन सच करे ना कोए शनासी, शनाख़त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब धुर गुसाँईंआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख कृपालू, किरपा निध वेख वखाईआ। कलयुग अग्नी रेत तपे बालू, सति सच ना कोए वरताईआ। तुध बिन मेरा वक्त ना कोए संभालू, सम्बल दे मालक लहिणा देणा देणा चुकाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते सति धर्म होवे चालू, कलयुग चाली देणी पाईआ। मेरी आशा पूरी कर दे जो नानक कहि के गया पुत कालू, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। आपणा सति धर्म दा वसल दे वसालू, विश्व दे मालक होणा सहाईआ। तुध बिन पंच विकार मानव अन्दरों सके ना कोए निकालू, तन वजूदां करे ना कोए सफ़ाईआ। तूं स्वामी ठाकर घर घर अन्दर सदा समालू, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ । मेरे दुक्खां दा तुध बिन बणे कोए ना झालू, झलक सके ना कोए वखाईआ। मेहरवाना मेरा तोड़ दे जगत जंजालू, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मेरा कूक पुकारे पर्वत हिमालू, कोह कोहां

ध्यान लगाईआ। फल लगा दे साचे डालू, फुल्ल आपणा नाम महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे ठाकर स्वामी सिधू, सद सद तेरी सरनाईआ। मैनूं बख्श दे धर्म धार दी नव निधू, नौ अठारां पन्ध मुकाईआ। सच प्रेम दी दे दे बिधू, बिधाते बिधना लेख मिटाईआ । तेरा रूप मुस्लिम सिख इसाई मूल दिसे ना हिन्दू, अक्खरां रंग ना कोए रंगाईआ। मेरी स्वामी मेट दे चिन्दू, चिन्ता नज़र कोए ना आईआ। दीन दयाल हो के बण बख़शिंदू, रहमत आपणी आप कमाईआ। भाग लगा दे काया माटी पिण्डू, इंड ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरे दीन दयाल दर्द दुःख भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। मैनूं धूड़ी बख्श दे मजन, ममता मैल धुआईआ। प्रेम धार पा दे अंजण, बिन लोचन कर रुशनाईआ । तेरे नाम दे नाद अगम्मी वजण, बिन सरवणां कर शनवाईआ। नव सत्त तेरे दीपक जोती जगण, भगत सुहेले डगमगाईआ। तेरे प्यार विच होवां मग्न, मस्ती विच ख़ुशी बणाईआ। बिन रसना नाम लगा दे सगन, गंढु आपणे नाल रखाईआ। मैं तैनूं किते ना जावां लभ्भण, घर स्वामी आउणा चाँईं चाँईंआ। मेरा माटी ख़ाक दा बदन, जगत वजूद ना कोए जणाईआ। दो जहानां पार कर के आ जा हद्दन, हदूद मेरी वेख वखाईआ । तूं गोपाल स्वामी मूर्त मदन, मधसूदन तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आ जा कढ्ढण, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचा आ जा छडण, मेरे गृह देणा टिकाईआ। जन भगतां भाग लगाउणा साढे तिन्न हथ्थ काया माटी हड्डण, नाड़ी नाड़ी कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म आपणी धार बणा लै यद्दण, यदी यदप आपणा हुक्म वरताईआ। तूं नूर अलाही धुर दा रब्बण, रहमत आपणी देणी कमाईआ। मेहरवाना नौजवाना सति सच दी चाढ़ दे रंगण, रंगत इक्को इक वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त लग्गी मंगण, कलयुग अन्तिम झोली डाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दृष्टी अन्दर सुणा दे छन्दन, सोहला ढोला इक्को नाम समझाईआ। इक्को तेरे चरण कवल होवे बन्दन, सीस जगदीश अवर ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति सति दा बख्श अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों आप प्रगटाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मुख्त्यार सिंघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मनी सिंघ मेरे उत्ते मारीआं लकीरां, पुट्ठी कलम नाल खिचाईआ। धरनीए तेरे उत्ते कायम रहिणीआं

नहीं किसे दीआं जगीरां, मालक नज़र कोए ना आईआ। दुनिया अन्तिम होणी वांग फ़कीरां, फ़िकरा सच सके ना कोए गाईआ। झगड़ा पैणा शाह हकीरां, अमीर ग़रीब करन लड़ाईआ। राज राजानां बदल जाणीआं तकदीरां, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खड़कणीआं शमशीरां, खण्डा खण्डे नाल टकराईआ। किसे ने किसे नूं देणीआं नहीं धीरां, धीरज नज़र कोए ना आईआ। शरअ दीआं कटीआं जाणीआं ज़ंजीरां, ज़मीर दीन दुनी बदलाईआ। माण दा किसे दे सीस रहिणा नहीं चीरा, दाग़ लग्गे ख़लक खुदाईआ। अमृत रस पीए कोई ना सीरा, ठंडक ठंड ना कोए वरताईआ। तेरे उत्ते धवले सब दा बदल जाणा वतीरा, वर्तमान दा लेखा रहे ना राईआ। तेरा प्यार होणा ख़मीरा, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। जो गोबिन्द माण दिता छींबिआं झीरां, कोझयां कमल्यां रंग रंगाईआ। अन्त बेनज़ीर पाउणीआं भीड़ां, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। तेरे सीस सुहागणे रहिणा मूल नहीं लीड़ा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार ने चुकणा बीड़ा, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे मनी सिँघ ने मेरी छाती दिती विंनू, कलम तिक्खी नोक नाल खुभाईआ। मैनूं नज़ारा वखाया भिन्न, भिन्नड़ी रैण नाल वड्याईआ। प्रभू दा खेल अन्तिम होणा ना घड़ी पल ना जगत वाले छिन्न, पलकां दी धार विच आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दा लेखा कमलीए तेरे उत्तों मुकणा विच दिन तिन्न, तीन लोक दा लहिणा दए चुकाईआ। सब दे कोलों सब कुछ जाणा छिन्न, ख़ाली हथ्थ दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे मनी सिँघ ने मेरे उत्ते कलम रखी तिक्खी, त्रैगुण अतीते नाल मिलाईआ। प्रभू दे प्यार बिना कायम रहिणी नहीं कोई सिक्खी, सिख्या विच सिख ना कोए समाईआ। फेर उंगली नाल अगम्मी पट्टी लिखी, हरफ़ हरूफ़ मिट्टी उत्ते दरसाईआ। फेर प्रभ दे अगे झोली डाह के मंगी भिक्खी, कूक कूक सुणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले वस्त अगम्मी आपणे प्यार वाली सिट्टीं, अतोट अतुट देणी वरताईआ। झट इशारा होया आह वेख लै हाहे वाली टिप्पी, हँ ब्रह्म नाल वड्याईआ। जेहड़ी पुरख अकाल दे चरणां विच लिटी, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जिस दी जगत धार तों बाहर दी मिती, मित्रा वेखणा चाँई चाँईआ। झट मनी सिँघ ने इक्को मंग मंगी तेरे शब्द दी इक्को होवे लिपी, दूजी विद्या वंड ना कोए वंडाईआ। धरनी कहे मैं झट दुहथ्थड़ मार के पिट्टी, कूक कूक सुणाईआ। एह की ख़बर सन्ता दस्सें अनडिठ्ठी, भेव अगम्म जणाईआ। झट बिना अक्खरां तों वखाई मैनूं चिठ्ठी, जिस दी इबारत समझ कोए ना आईआ। धरनीए तेरी खेल बिना पुरख अकाल तों जाणी नहीं नजिठ्ठी, बिना सम्बल दे मालक तों संभल सके कोए ना

राईआ। एह प्यार दी धार धरनी कहे मैनूं लग्गी मिट्ठी, बिन रसना रस चखाईआ। जां ग़ौर नाल तक्कया नूर नुरानी खेल दिसी चिट्ठी, काला हरफ़ हरूफ़ ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे नित नविती, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल खिलाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड झांमके ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर दर्शन काया अन्दर, साढे तिन्न हथ्थ अन्तर निरंतर वजे वधाईआ। करे प्रकाश अन्धेरी डूँघी कंदर, काया काअबा दो दो आबा डगमगाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता बजर कपाटी तोड़े जंदर, रजो तमो सतो दा लेखा आप मुकाईआ। मनुआ मन दहि दिश उठ धावे ना बन्दर, सुरती शब्द शब्द बंधाईआ। गृह प्रकाश देवे बिना सूर्या चन्द्र, जोती जाता डगमगाईआ। दया कमाए तन वजूद अन्धेरे खण्डर, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा साहिब इक गुसाँईंआ । सतिगुर दर्शन तन वजूद, माटी ख़ाक मिले वड्याईआ। भेव खुल्हाए आलीशान अर्श अरूज, अर्शी प्रीतम धुरदरगाहीआ। मंज़ल देवे हक मकसूद, दरगाह साची पड़दा आप उठाईआ। मन कल्पना कूड़ी क्रिया करे नेस्तो नाबूद, जड़ चोटी रहिण कोए ना पाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले महबूब, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा दरस दिखाईआ। नौ दुआरे पन्ध रहे ना हदूद, ईड़ा पिंगल सुखमन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर दर्शन काया माटी, मटका वेखे चाँईं चाँईंआ। जोत जगाए नूर ललाटी, नूर नुराना डगमगाईआ। नाम वखाए आपणी हाटी, जगत वणजारा ना कोए जणाईआ। अमृत रस देवे निझर बाटी, बूँद स्वांती नाभी कवल विच्चों पलटाईआ। सतिगुर शब्द सुरत चढ़ाए आपणी घाटी, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। लेखा रहे ना तीर्थ अठ साठी, सर सरोवर इक नुहाईआ। दुरमति मैल जाए काटी, सतिगुर दरस वडी वड्याईआ। मनुआ मन फिरे ना नाटी, नटुआ आपणा रंग रंगाईआ। जोत जगाए बिना तेल बाती, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सतिगुर दरस देवे बिना अक्खां, जग नेत्र लोड़ रहे ना राईआ। घर स्वामी ठाकर मिले सख़ा, सुख़न आपणे पूर कराईआ। जिस दी कीमत पा सके ना कोई करोड़ी लखां, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। उह खेले खेल अगोचर अलखणा अलखा, अगम्म अथाह

बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि पुरख समरथा, साहिब सुल्तान नूर अलाहीआ। जिस दा नित नवित जुग चौकड़ी बणदा रथा, रथ रथवाही हो के वेख वखाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सतिगुर शब्द सुणावे कथा, आत्मक राग राग दृढ़ाईआ। जिस दा खेल यथार्थ यथा, यदी यदप आपणा भेव चुकाईआ। उह जोत जगाए दया कमाए जन भगत सुहेले मस्तक मथ्था, टिक्के धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। लहिणा देणा चुकाए तत अठ्ठां, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध आपणे रंग रंगाईआ। सतिगुर दरस दीदारी निरगुण धार हरिजन प्यार अन्तर आवे नठा, बिन कदमां भज्जे नठे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर दरस लोड़े सर्ब जग, जागरत जोत ध्यान लगाईआ। जो बुझावणहारा कूड़ कुड़यारी अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। भेव चुकाए उपर शाह रग, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। हँस बणाए बपड़े बग, माणक मोती चोग चुगाईआ। जगत विकार दी मेटेहद्द, हदूद आपणी दए दरसाईआ। बिना जगत साज़ सुणाए नद, अनहद नादी नाद धुन करे शनवाईआ। अमृत रस सच प्याए मदि, मधुर धुन नाल शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर दरस हरिजन करन दा चाउ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए वाहो वाहो, वाहवा वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। सो सतिगुर पूरा बिन हथ्थां पकड़े बाहों, बिन ततां गोद उठाईआ। अन्तर निरंतर बिन रसन जपाए नाउँ, नाउँ निरँकार आप दृढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां देवे ठण्डी छाउँ, अग्नी तत ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, काग हँस रूप बदलाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे होए जणेंदी माईआ। दीन दयाला दर्शन देवे थाँईं थाओं, थान थनंतर आपणे रंग रंगाईआ। आदि जुगादी सद करनहार न्याउँ, न्याँकार इक अख्वाईआ। जन भगतां दर्शन देवे साढे तिन्न हथ्थ ग्राउँ, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वखाईआ। जिस नूं दर्शन देवे पूरा सतिगुर, गोबिन्द गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। लहिणा देणा आदि जुगादी वेखे धुर, धुर मस्तक लहिणा देणा दए चुकाईआ। अन्तर आत्म परमात्म शब्द नाद सुणाए सुर, सुरती शब्दी नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेर घोर, पंच विकार हँकार दए मिटाईआ। मनुआ मन पाए ना शोर, शौहर बांका हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। पंच परपंच रहे ना अन्दर चोर, ठग्गी ठग ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। सतिगुर दरस सदा अगम्मा, जग नेत्र लोचन वेखण कोए ना पाईआ। जो बिना तेल बाती दीप जगाए शमअ नूर नुराना जोती जाता डगमगाईआ। जो आदि जुगादी मेटे

८३०
२४

सगली तमा, लालच रहिण कोए ना पाईआ। लेख मुकाए राय धर्म लख चुरासी जमां, जम की फाँसी दए कटाईआ। सच सुहञ्जणा चरण कवल बणाए अगला समां, पूरब लहिणा लहिणे विच झोली पाईआ। लेखा जाणे पवण स्वासी दमां, दामनगीर आप हो जाईआ। हरख सोग चिन्ता मेटे ग़मां, ग़मखार हो के वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार सच दुआर सदा नवां, बृद्ध बाल बुढेपा जुग चौकड़ी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर हुक्म संदेश नर नरेश हो के देवे नाल चवां, चाउ घनेरा इक्को इक जणाईआ।

१२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ गंडा सिँघ दे गृह पिण्ड दराजके ज़िला अमृतसर

धरनी कहे प्रभू मनी सिँघ ने लिख्या पत्र, हरफ़ उंगलां नाल बणाईआ। उह सम्मत बिक्रमी उन्नी सौ चुहत्तर, दूसर संग ना कोए रखाईआ। फेर आपणे चोले दी पाड़ के निक्की जेही कतर, उस दे नाल दिती लटकाईआ। फेर नक रगड़या आपणी उत्ते तीजी सतर, त्रैगुण तों बाहर वेख वखाईआ। फेर आपणे हथ्थां दा बणा के छत्र, सीस सीस उत्ते दिता टिकाईआ। फिर निगाह मारी हस के आपणे आप नूं लग्गा दस्सण, धुर दा हुक्म जणाईआ। संगरूर जेल विच बिना खुशी तों लग्गा हसण, रैण नव दस दा वक्त सुहाईआ। फेर बालिशतां नाल लग्गा कच्छण, पैमानां हथ्थां वाला बणाईआ। फेर सुरती धार विच लग्गा हसण, बिन कदमां कदम उठाईआ। फेर आपणे प्यार विच प्रीती लग्गा कसण, गंढु बिन तन्द तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मनी सिँघ मैनूं लाईआं उंगलां तीन, कलम हथ्थ ना कोए उठाईआ। अन्दरों प्रभ दे हो अधीन, बैठा सीस झुकाईआ। फेर ख़ाका खिच्चया मेरी उत्ते ज़मीन, वंड आपणी आप वंडाईआ। नाल इशारा दिता की लहिणा देणा होणा रूसा चीन, चैन विच नज़र कोए ना आईआ। फेर मार्ग तक महीन, बैठा नैण दबाईआ। फेर बण के बुद्धीहीन, आपणा आप गया तजाईआ। मस्तक हथ्थ मारया मेरे साहिब ने सब कुछ लैणा छीन, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। फेर झगड़ा होया ग़मगीन, ग़मी समझ कोए ना आईआ। फेर निगाह मारी मेरे परम पुरख दा लेखा बड़ा प्राचीन, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग देण गवाहीआ। मैं कोई शोहदा नहीं कमीन, कोझा कमला ना रूप बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते झट मनी सिँघ लाया पंजा, पंजा पंजे नाल दबाईआ। फेर

हिन्दसा लिख्या बवन्जा, पांजा दूआ जोड़ जुड़ाईआ। फेर अक्खर बणाया चंगा, कीती उंगलां नाल लिखाईआ। फेर इशारा दिता गंगा, मईआ भज्जणा वाहो दाहीआ। फेर निगाह मारी पुरी अनन्दा, अनन्दपुर वासी वेख वखाईआ। झट नेत्र खोल्ह्या पुरख अकाले रूप धरया बन्दा, पंजां ततां विच समाईआ। झट उसे वेले सन्त मनी सिँघ तूं मेरा मैं तेरा गाया छन्दा, रसना जिह्वा ज़बान ना कोए हिलाईआ। फेर खलो गया इक टंगा, हथ्थ मस्तक उत्ते रखाईआ। फेर फड़ के बिना लकड़ी तों डण्डा, डण्डावत आपणी लई बदलाईआ। फेर आपणा करके पिण्डा नंगा, पिठ्ठ ज़िमीं नाल रगढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे जिस वेले सन्त मनी सिँघ मेरे उत्ते रगढ़ी आपणी पिठ्ठ, पासा आपणा ना मूल बदलाईआ। मैनूं नज़री आया इक्को धार सवा गिठ्ठ, मारू डण्ड दा पन्ध चुकाईआ। अगे सिँघासण दिस्या नूर नुराना अनडिठ, जिस दी पावा चूल घड़त ना कोए घड़ाईआ। फेर आवाज़ सुणी अगम्मी मिठ, बिन रसना जिह्वा होई शनवाईआ। जां फेर तक्कया मेरे उत्ते मिली बिना अक्खरां तों चिट, चिट्टे उत्ते काला हरफ़ ना कोए लिखाईआ। मैं वेंहदी रह गई बिट बिट, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। धरनी कहे फेर मनी सिँघ हो गया चुप, मुख दन्द रसना ना कोए हिलाईआ। बुक्कल विच कर अन्धेरा घुप्प, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। फेर गुस्से विच किहा क्यों मेरे साहिब गयों छुप, शेरा आपणा मुख छुपाईआ। बेशक मैं बुढ्ढा तन दा ते अन्दरों तेरा पुत, नूर नुराना तेरा नज़री आईआ। झट संदेशा मिल्या मैं सुहञ्जणी करां अगम्मी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, खेले खेल हो के अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा भेव खुल्हाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मिलखा सिँघ समुंद सिँघ दे घर
पिण्ड माढ़ी ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द दे सहारा, सहायक नायक तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के बण मीत मुरारा, मित्र प्यारे आपणा रंग रंगाईआ। मेरे उत्तों कलयुग अन्त मेट धूंआँधारा, कूड़ी क्रिया नव सत्त रहिण ना पाईआ। सति सच नाम कलमे दा दस अगम्म जैकारा, जिस दी दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। अनादी शब्द दी दे धुन्कारा,

अनहद नादी नाद कर शनवाईआ। अमृत रस बख्श ठण्डी ठारा, अंमिओं रस धुर दा आप चुआईआ। जोती नूर कर उज्यारा, दो जहानां डगमगाईआ। मेरी डण्डावत बन्दना सजदयां विच निमस्कारा, कदम बोसी करके सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त सति वरताईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द प्यारे मीता, मित्रा तेरी ओट तकाईआ। मेरे उत्तों कूड़ी क्रिया बदल दे रीता, रीतीवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्टी दी दृष्टी अन्दरों बदल दे नीता, अन्तष्करन विच कर सफ़ाईआ। पतित पापी कर पुनीता, दुरमति मैल दे गंवाईआ। मेरी आशा पूरी कर दे जो राम संदेशा दे के गया सीता, सुरती सीता राम शब्द विच समाईआ। उह लहिणा देणा वेख लै जो संदेशा दिता काहन घनईया अर्जन लिखण लग्गयां गीता, अठारां ध्याए हरफ़ हरूफ़ वड्याईआ। जो पैग़म्बरां वायदा कौल इकरार कीता, कीमत करते देणी पाईआ। जो गुरु गुरदेव स्वामी रख्या चीता, चेतन हो के देणा दृढ़ाईआ। धरनी कहे मेरा पूरब वक्त पिछला बीता, अगे पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरे उत्तों कूड़ बुझा दे अग्ग, त्रैगुण अतीते दया कमाईआ। अमृत मेघ बरस दे उत्ते जग, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। कूड़ी क्रिया नालों दीन दुनी कर अलग, माया ममता मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। तूं साहिब सूरा सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी मूल रहे ना कग, काग हँस रूप दरसाईआ। भेव खुल्ला दे आपणा उपर शाहरग, नौ दुआरयां डेरा ढाहीआ। अमृत जाम प्या दे मदि, नाभी कवल कवल उलटाईआ। कूड़ कुड़यार शरअ दी मेट दे हद्द, हद्द हदूद महबूब आपणी इक वखाईआ। आत्म धार सति बणा लै आपणी यद, यदी यदप आपणा रंग रंगाईआ। मैं खुशी नाल होवां गद गद, तेरा ढोला सोहला इक्को इक गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं तेरी रखी ओट, ओड़क ध्यान लगाईआ। मेरे उत्ते जुग लँघ गए कोटी कोट, अणगिणत आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं तेरा भण्डारा तकदी रही अतोट, अतुट देणा वरताईआ। साचे नाम नगारे ला दे चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। दीन दुनी सृष्टी अन्दरों कढ दे खोट, मानस मानव पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। आत्म परमात्म जोती धार बख्श दे जोत, नूर नुराना डगमगाईआ। नव नव पर्दा खोल्ल दे सोया रहे कोई ना सोत, सोई सुरती आप जगाईआ। मेरे उत्ते कल्पणा वध गई बहुत, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द आदि जुगादी निहकलंका, कलकातीआं डेरा देणा

ढाहीआ। एका नाम शब्द दो जहान वजा दे डंका, पुरीआं लोआं कर शनवाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरा सुहा दे बंका, बंकदुआरी एकँकारी इक्को नज़री आईआ। लहिणा देणा मुका दे राउ रंका, शाह हकीर फ़कीर इक्को घर बहाईआ। सति धर्म सतिजुग बणा दे बणता, घड़न भन्न्णहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा देणा उठाईआ। झगड़ा रहे ना जगत वासना मनूए मन दा, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। लेखा रहे ना सरवण कन्न दा, धुन आत्मक शब्दी राग देणा सुणाईआ। मेरा लेखा मुक जाए हरख़ सोग़ ग़म दा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। आपणा मानव रूप बणा लै आपणे ब्रह्म दा, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। मेरा नव सत्त रंग्गया होवे तेरे सच धर्म दा, धर्म दी धार इक दरसाईआ। लहिणा मुका दे कूड़ कर्म दा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। इष्ट रहे ना कोए दृष्टी चर्म दा, चम्म दृष्टी लेखा देणा मुकाईआ। इक्को सहारा बख़्श दे आपणी सरन दा, सरनगति इक्को नज़री आईआ। लहिणा देणा रहे ना वरन बरन दा, चार वरन अठारां बरन इक्को रूप समाईआ। तूं मालक ख़ालक स्वामी तारन तरन दा, तारनहार तेरी वड्याईआ। मैनूं शौक नौ खण्ड पृथ्मी इक्को तेरा नाम कलमा पढ़न दा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मेरे उत्ते मार्ग होवे तेरी हकीकी इक्को मंज़ल चढ़न दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरे उत्ते हो कृपाल, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। तूं दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध नूर अलाहीआ। मैं निमाणी कोझी कमली कंगाल, तूं शहिनशाह शाह पातशाह नूर अलाहीआ। मैं चाहुंदी सति धर्म दी मेरे उत्ते इक्को होवे धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को सोभा पाईआ। तूं आ के वेख मुरीदां हाल, मेरे मुर्शद धुरदरगाहीआ। मेरा त्रैगुण माया कट जंजाल, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरी घालण लई घाल, घायल हो के सेव कमाईआ। तूं मेरा मधुसूदन मुकन्द मनोहर लखमी नरायण गोपाल, गोबिन्द तेरे हथ्थ वड्याईआ। फल लगा दे मेरे डाल, पत टहणी धर्म धर्म नाल महकाईआ। मैं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार होई बेहाल, बहिबल हो के रही सुणाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मेरी आ के सुरत संभाल, सम्बल दे मालक सम्बल आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेरी कर प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक तेरी आस रखाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ रघुबीर सिँघ दे गृह पिण्ड डलीकी ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द मैनूं बख्श दे इक्को सति, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी दया कमाईआ। तेरे चरण कवल वास्ता रही घत, निव निव निरवैर निराकार निरँकार लागां पाईआ। कलयुग अन्त मेरी रखणी पत, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै नौ खण्ड पृथ्मी उबले रत, सांतक सति ना कोए कराईआ। धीरज धर्म रिहा ना यति, सति सन्तोख विच ना कोए समाईआ। मेरा सुनेहड़ा बिना कलम शाही तों लिख्या होया ख़त, बिन हरफ़ हरूफ़ करे शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों कूड़ कुड़यार बदल दे मति, मति मतांतरां डेरा ढाहीआ। माया अग्नी कोई ना जावे तप, तपीशरां बाहर दे समझाईआ। निगाह मार लै तेज वाए पृथ्मी आकाश अप, पंचम पंजां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द मेरा तक लै अन्तष्करन, अन्तरजामी हो के ध्यान लगाईआ। मेरे नाल वायदा आदि जुगादी परन, कौल इकरार गुर अवतार पैग़म्बर गए जणाईआ । मैं तेरी धर्म दी धार लई सरन, सरनगति इक्को इक जणाईआ। तूं निरगुण धार किरपा आ जा करन, करनी दा करता हो के वेख वखाईआ। दरोही मैं
८३५ कूड़यारां हथ्थों लग्गी सड़न, कलयुग काती अग्नी तत तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ८३५
२४ देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द आदि जुगादी सज्जण, मीत मुरारा इक अख्वाईआ। २४
तैनूं कहिंदे दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। मेरे गोपाल मूर्त मदन, नूर नुराने तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरी धार लग्गी सद्दण, सदके वारी घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक प्रगटाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेट कलेश, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। तूं मालक ख़ालक इक्को नर नरेश, नर निरँकार दिती माण वड्याईआ। मैं दर तेरे होई पेश, पेशीनगोईआं आपणे हथ्थ उठाईआ । उह तक की इशारा दिन्दा सहँसर मुख शेष, बाशक तशका की रिहा दृढ़ाईआ। की बिन रसना कहि के गया गणेश, गणपति आपणा भेव खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं की लेखा जणाया की सुनेहड़ा दिता निगाह मार लै सम्बल देस, देस देसांतरां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरे उत्ते आपणी कर मेहरवानी, महबूब हो के दया कमाईआ। सति धर्म दी बख्श दे निशानी, निशाना कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। तूं मालक ख़ालक आलमे जावदानी, दो जहानां तेरी वजदी रहे वधाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्म दी दिन्दी रही कुरबानी, करबले दा लेखा वेखणा चाँई चाँईआ। मेरे उत्ते निगाह मार लै जगत जिस्म

जिस्मानी, रूह बुत फोल फुलाईआ। प्रेम रिहा ना किसे इन्सान इन्सानी, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। प्रेम रिहा ना तेरे नाम कलमे बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। झगड़ा तक लै चारे खाणी, ख़ालस रंग ना कोए समाईआ। तेरी मख़लूक तेरे नालों होई बेगानी, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। अक्ल बुद्धी जिज्ञासुआं होई निधानी, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैं राह तकां तेरा हथ्थ रख के उत्ते पेशानी, पेशतर दे लहिणे नाल मिलाईआ। मेरे स्वामी ठाकर मेरे उत्ते बख्श दे मंज़ल इक रुहानी, रूहे रवां आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मैं होई निताणी, निमाणी हो के ओट तकाईआ। मेरा पवित्र रिहा ना अठसठ तीर्थ पाणी, पुनह पुनह तैनूं सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादी करनी दा करता जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेरे सिर कर एहसानी, एहसान मेहरवान मेहर नज़र नाल मेरी झोली देणा टिकाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ बीर सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

८३६ २४

धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं तेरी निमाणी नंन्ही बच्ची, बचपन पिता पतिपरमेश्वर तेरी झोली पाईआ। बेशक मेरी धार माटी कच्ची, कंचन गढ़ नज़र कोए ना आईआ। मैं आपणी कथा कहाणी दस्सां सची, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। मेरा अन्तष्करन कलयुग अग्नी नाल रिहा मच्ची, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। निगाह मार लै प्रकृती विच पच्ची, पंजां दे मालक फोल फुलाईआ। लूं लूं तेरी धार दिसे ना रची, रचना वेखण कोए ना पाईआ। ममता घर घर वेसवा हो के नच्ची, नेत्र नैण ना कोए शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा साहिब इक्को नज़री आईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं तेरी इक्को नढ्ढी बाली, बाली बुद्ध दयां जणाईआ। तूं मेरी सुरत संभाली, सम्बल बहि के आपणी खुशी बणाईआ। तेरा लहिणा देणा नाल जोत अकाली, अकल कलधारी तेरे रंग समाईआ। मेहरवान हो के मेरी करीं दलाली, विचोला इक्को सोभा पाईआ। मेरी झोली तक लै ख़ाली, ख़ालक रंग ना कोए रंगाईआ। सति धर्म दी वस्त मेरे उत्तों लभ्भे ना भाली, खोजयां हथ्थ कोए ना आईआ। बिना धुर दे हुक्म तों कलयुग होई रैण अन्धेरी काली, कला कूड़ दिती वरताईआ। सच रिहा ना कोए धर्मसाली, धर्म दुआर ना कोए चतुराईआ। जिधर तकां जगत गुरु दिसदे जाहली, धुर दा सतिगुर बिना शब्द तों नज़र कोए ना आईआ। तेरे बिना स्वामीआं मेरा बाग़ उजड़या दिसे कोए ना माली,

मानव बूटे हरे सिंच ना कोए कराईआ। मेहरवाना मेरे उत्ते किरपा कर दे शाली, शहिनशाह हो के दया कमाईआ। मैं मंगती तेरे दर दी होई सवाली, सवालण हो के मंग मंगाईआ। तूं किरपा निध मेरी अन्तिम सुरत संभाली, सतिगुर शब्द तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं कोझी कमली नंन्ही, जगत रेख समझ कोए ना पाईआ। मेरी इक बेनन्ती मंनीं, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। मैनूं जम्मण वाली नहीं कोई जनणी, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। मेरा साक सज्जण नहीं कोई तनी, सगला संगी नज़र कोए ना आईआ। मैं कोई ख़बरां सुणदी नहीं कन्नीं, कायनात ना कोए शनवाईआ। मैं इक्को लाडली तेरी धर्म धार दी चन्नी, चन्द चांदना मेरे उत्ते देणा चमकाईआ। मैनूं आपणी बिन हथ्थां फड़ा दे कन्नी, लोकमात सके ना कोए छुडाईआ। मैं नेत्रहीण रवां ना अन्न्ही, अन्ध अज्ञान देणा मुकाईआ। तेरे दर ते आई भन्नी, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं बाली बुद्ध अंञाण, मूर्ख मुगध मूढ़ अख्वाईआ। तूं देवणहारा चतुर सुजान, सुघड़ तेरी बेपरवाहीआ। तेरे चरण कवल करां ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरे स्वामीआं मेरी झोली पा दे दान, दाते दानी आपणी दया कमाईआ। मैनूं संदेशा दे के गया बावन धुर फ़रमान, फ़ुरनयां बाहर जणाईआ। मैनूं राम ने राम दे राम दा दिता निशान, निशाने दीन दुनी उलटाईआ। संदेसे विच आख्या कृष्ण काहन, काहनां दा काहन तेरा रंग रंगाईआ। पैग़म्बरां इशारा दिता तेरे उत्ते आए धुर अमाम, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जिस दा कलम्यां तों बाहर होए पैग़ाम, बिन अलिफ़ ये पढ़ाईआ। जिस दा इक्को होवे इस्लाम, इस्म आज़म इक समझाईआ। जिस दा निरगुण सरगुण धार गुरुआं मन्त्र दिता सतिनाम, नाम नामा रंग रंगाईआ। उह धरनीए तेरा वेखे नगर ग्राम, खेड़ा नौ खण्ड ध्यान लगाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं एसे करके बैठी कर ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। कवण वेला मेरा आवे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। मैं चरण कवल धवल हो के करां प्रणाम, नमो नमो कहि के सीस निवाईआ। जो मेरे उत्ते आ के मेटे अन्धेरा शाम, शमअ नूर जोत चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा एको एक धुर दी धार सुणां पैग़ाम, हुक्म संदेशा इक्को इक करे शनवाईआ।

८३७ २४

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ बेबे मंनी दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द मैनूं हलूणा दिता गुट दा, फड़ बाहों दिता हिलाईआ। सैनत नाल जणाया उह तक सन्त मनी सिँघ चूरी कुटदा, टुकड़े हथ्थां नाल दबाईआ। नाले अन्तर ढोला गाए इक्को तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा रिहा ध्याईआ। नाले हस के कहे कलयुग कूड़ा पैंडा जांदा मुकदा, अगे पन्ध ना कोए वधाईआ। फेर बिना ज़बानों रुकदा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। फेर ज़िमीं असमानां बाहर झुकदा, अन्तर अन्तर लागे पाईआ। फेर आपणा रूप अनूप दस्से सतिगुर सुत दा, दुलारा हो के खुशी बणाईआ। फेर वक्त सुहेला तके साहिब दी रुत दा, रुतड़ी जगत नाल महकाईआ। जिस वेले वक्त सुहञ्जणा होया अबिनाशी अचुत दा, चेतन सब नूं दए कराईआ। लहिणा देणा वेखे काया माटी पंज भुत दा, तन वजूदां फोल फुलाईआ। जिस खेल तकणा माटी ख़ाक बुत दा, बुतख़ानयां वेख वखाईआ। उह जोती जाता हो के निरगुण धारों उठदा, तन वजूद पन्ध मुकाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना नौ खण्ड पृथ्मी चारे कूटां गुठ दा, दहि दिशा फोल फुलाईआ। जिस इशारा दिता मैनूं सन्ता उह तक लै की नज़ारा दुनिया वाली लुट दा, लुटेरा कलयुग नाल मिलाईआ। शाह सुल्तानां भण्डारा ख़ाली होणा ठुठ दा, धन दौलत नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द हो के वेख लै कुठदा, दो जहानां सके ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे सन्त मनी सिँघ चूरी कुट्टे उंगलां नाल पाए विच घिउ, घृत आपणा रंग रंगाईआ। फेर इशारा देवे वेखो धुर दा दयो, देवतिआं दा देव नज़री आईआ। जो जोती जाता पुरख बिधाता हो के सभनां बणे पिउ, पिता पुरख इक अख्वाईआ। जो भगतां सन्तां आत्म धार बणाए नेहु, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर जणाईआ। पहलों लेखा पूरा करे आपणे साढे तिन्न हथ्थ सीउँ, रवीदास चमारा गंढु पुआईआ । जिस दे खेल नूं कोई कहि ना सके क्यों, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ। मेहरवान हो के जन भगतां उत्ते बरसे मेंहों, मेघला आपणा नाम बरसाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कलयुग अन्तिम तोड़े विहों, विकार हँकार लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे सन्त मनी सिँघ ख़ुशीआं नाल चूरी गुंन्ह्दा, उंगलां दसां नाल दबाईआ। नाले लेखा तकी जाए पाप पुन्न दा, नौ खण्ड पृथ्मी ध्यान लगाईआ। नाले हुकम सुणे मालक कुन दा, कुल मालक की जणाईआ। नाले धरनी दी धूड़ बिना ख़ाक तों चुम्मदा, रसना रस नाल वड्याईआ। फेर चुप चपीता गृह वेखे धुर दी सुन्न दा, समाधी विच आपणा आप टिकाईआ। फेर संदेशा शब्द अगम्मा सुणदा, जो ढोला देवे धुरदरगाहीआ। सन्ता लेखा तक

लै हुण दा, सहिज सहिज नाल समझाईआ। फेर भगत सुहेले हरिजन साचे वेखीं चुणदा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरा लेखा होणा गुण अवगुण दा, गुणवन्ता हो के दया कमाईआ। मेरा नाम निधाना मन्त्र होणा फ़ुंन दा, फ़ुरनयां बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते सन्त ने कुट्टी चूरी, चोरी चोरी नज़र किसे ना आईआ। मेरे स्वामीआ मैं तेरी करां मज़दूरी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। नाल शब्द करां मशहूरी, मशवरा तेरे नाल रखाईआ। मेरा पन्ध रहे ना दूरी, मंज़ल देणी मुकाईआ। मेरी कलम तेरी भरे हज़ूरी, हाज़र हो के सेव कमाईआ। तूं तन वजूदों बाहर मेरा मालक होणा नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ । तूं साहिब सर्ब कला भरपूरी, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। मैनूं तुध बिन दुनिया दिसदी कूड़ी, कूड़ क्रिया नज़री आईआ। मैं सच दस्सां तूं जोती जामा पहनणा ज़रूरी, ज़रूरत मेरे नाल मिलाईआ। उह तक लै की आसा रख के गया मूसा कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर ध्यान लगाईआ। की याद कीता ईसा चढ़न लग्गयां सूली, सुल्हकुल तेरी ओट तकाईआ। की आसा रखी मुहम्मद रसूली, बिन कलम्यां अक्ख उठाईआ। किस बिध नानक धार गोबिन्द लाई धूली, टिक्के ख़ाक रमाईआ। सन्त

८३६
२४

मनी सिँघ किहा मैं ते सेवक तेरा मामूली, तेरे हुक्म विच भज्जां वाहो दाहीआ। साडी आशा तों बाहर तेरा होणा इक असूली, असल समझ कोए ना समझाईआ। मैनूं ऐउँ जापदा तूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कोलों करनी वसूली, बचया रहिण कोए ना पाईआ। धरनी कहे मैं उस वेले रही भूली, समझ विच्चों समझ ना कोए बदलाईआ। मैं तकदी रही कोई पंजां ततां वाला मेरे उत्ते रिहा झूली, सिँघ शेर नाम रखाईआ। हुण पता लगा उह मेरा स्वामी कन्त कन्तूहली, धुर दा मालक नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी मिन्नत बेनन्ती करे कबूली, मेहरवान हो के सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मोता सिँघ, दलीप सिँघ, रणजीत सिँघ, फुमण सिँघ, प्रताप सिँघ, गुलाब कौर डल दे नवित पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी पूरी कर दे आस, तृष्ना कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। चरण कवल बणा लै दासी दास, चाकर हो के तेरी सेव कमाईआ। निरगुण धार बख्श प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। जन भगत सुहेले सद्द लै आपणे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। नाम निधान जपा दे स्वास स्वास, साह साह तेरे रंग समाईआ। तूं मालक पृथ्मी आकाश, गगन

गगनंतर तेरी सरनाईआ। मेरे मण्डल उत्ते पा दे आपणी रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर आप सुहाईआ। धरनी कहे जन भगत सुहेले बणा दे मेरे सज्जण, सगले साथी आपणी दया कमाईआ। सब दे पर्दे आ जा कज्जण, दो जहानां मालक पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्तों विकारी हँकारी गढ़ भाण्डे भज्जण, तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। नव सत्त तेरे सन्त सुहेले दीपक जगण, जोती जाते करनी आप रुशनाईआ। तेरी नाम खुमारी विच हरिजन होवन मग्न, अग्नी तत ना लागे राईआ। पवित्र कर दे साढे तिन्न हथ्थ दा बदन, तन वजूद दुरमति मैल मैल धुआईआ। कूड़ कुड़यारा कलयुग मेरे अन्दरों आ जा कढण, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ । शरअ कूड़ मिटा दे हद्दन, गृह आपणा इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लख चुरासी गावे छन्दन, मानव ज़ाती इक्को नाम ध्याईआ। इक्को सीस जगदीस तेरे चरण कवल होवे बन्दन, दूसर इष्ट रहिण कोए ना पाईआ। आपणी धूड़ी मेरे मस्तक ला दे चन्दन, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। सच वस्त श्री भगवान आ जा वंडण, अमोल अमुल अतुट आप वरताईआ। मेरा अन्त अख़ीरी वेख लै कन्ढुण, पतण घाट बैठी तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ । धरनी कहे प्रभू हरिजन बणा दे धर्म दे साथी, सगले संगी आपणा रंग रंगाईआ। मस्तक रेख बदल दे माथी, पूरब लेखा रहे ना राईआ। तूं साहिब सुल्तान सर्ब कला समराथी, हरि करता अगम्म अथाहीआ। मैं निमाणी अनाथ अनाथी, दीनन हो के मंग मंगाईआ। मेरा लहिणा देणा दे दे हथ्थो हाथी, जगत उधार वंड ना कोए वंडाईआ। मैं तेरा इक्को ढोला गावां गाथी, बिन रसना जिह्वा कथनी दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां मेरे उत्ते बख्श दे बुद्धी, बुध्ध बिबेक दे कराईआ। तेरे चरण कवल दी होवे सुधी, वदी सुदी दा डेरा ढाहीआ। मैं आदि जुगादि तेरे प्यार विच नच्ची टप्पी कुद्दी, कुदरत दे मालक भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं सारयां किहा धरनी धरत धवल धौल बसुधी, बेसुध हो के अन्तिम दयां जणाईआ। मेरी कल्पणा वेख लै चौकड़ी जुग जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। अन्तिम कूड़ कुड़यार दी औध दिसदी पुग्गी, अगे अवर ना होर वधाईआ। मैं कलयुग डूँघे चिक्कड़ खुभी, फड़ बाहों बाहर लैणा कढ्ढाईआ। मैं रोवां साह उभी, हाए उफ़ तेरी दुहाईआ। मैनूं रमज़ लगा दे गुज्झी, शब्द संदेश सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां मार्ग दे दे एक, एकँकार दया कमाईआ। तेरी सब नूं होवे टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कर दे बुध बिबेक, दुरमति मैल रहे ना राईआ।

कलयुग त्रैगुण लाए ना सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। हरिजन बणा लै आपणे नेक, निक्के वड्डे आपणे रंग रंगाईआ। सच सच दे नेत्र लैणा पेख, नैण नैण नैण खुल्हाईआ। मेरे उत्तों जन्म कर्म दी बदल दे रेख, धर्म धर्म दी धार प्रगटाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे मुल्ला शेख़, मुसायकां अगला पन्ध मुकाईआ। तेरा जोती जामा तकां अगम्मड़ा भेख, भेखाधारी पर्दा देणा उठाईआ। मैनूं सब ने जोती जाते तेरा दिता संदेश, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग अन्तिम आवे नर नरेश, नर नरायणा नूर अलाहीआ। जिस दा सूरा सुत दुलारा नाल संगी होवे दस दस्मेश, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। धरनीए उह तेरा आ के कटे कलेश, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म दा सुणां इक्को सच संदेश, दूजा नाद सुणन कोए ना पाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ सज्जण सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे चौदां भाद्रों प्रभ दे अगे पा लै वैण, मित्रा बिन नैणां नीर वहाईआ। चक्रवर्ती हो के आया तैनूं कहिण, हुक्म सुणावां चाँईं चाँईंआ। वेख लै मेरे नाल ग़रीब निमाणा नाई सैण, भज्जया वाहो दाहीआ। बाल्मीक हथ्थां उत्ते चुक्की फिरे रामायण, राम रामा ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाला तक महायण, इक्त्ठे हो के की सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मूल ना आवे चैन, नव सत्त वेखण थांउँ थाँईंआ। की खेल करे करनी दा करता आप नरायण, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। जो सब दे नालों होण लग्गा तरफ़ैन, तरफ़दारी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दीन दुनी दा नुकता मेटणा ग़ैन, ऐन दा ऐन आपणा रूप दरसाईआ । तेरे उत्ते नाता तोड़ना भाई भैण, सगला संगी संग ना कोए रखाईआ। जिस कलयुग कूड़ वहाउणा अगम्मा वहिण, धर्म दी धार दए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे भाद्रों प्रभ अगे घत लै कीरना, सच दयां सुणाईआ। बेनन्ती सुण लै मेरे वीरना, सज्जणा दयां सुणाईआ। दीन दुनी नूं वज्जण वाला अनोखा तीरना, तिक्खी मुखी समझ कोए ना पाईआ। तेरे दिवस लख चुरासी घर घर पाउणा कीरना, धीरज धीर ना कोए धराईआ। माण रहिणा नहीं किसे पीर फ़कीरना, फ़िकरा सच ना कोए सुणाईआ। जगत जहान दीन दयाल दो फाड़ चीरना, दो धड़ करे लोकाईआ। नव सत्त आउण वाली भीड़ना, भार सके ना कोए वंडाईआ। एह सतिगुर शब्द ने चुकणा बीड़ना, भार आपणे कंध टिकाईआ। झगड़ा वेखणा शाह हकीरना,

हकीकत दा मालक आप वखाईआ। किसे नज़र नहीं आउणी सति सच तस्वीरना, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। खण्डा खड़के नाल शमशीरना, तिक्खी धार धार दरसाईआ। नव सत्त घत्ते वहीरना, वैरी दिसे ख़लक खुदाईआ। सुहागी हथ्थ बन्ने ना कोए कलीरना, मैहन्दी रंग ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी दी बदलण वाली तकदीरना, तकदीरी आपणा हुक्म वरताईआ। शरअ दी टुट्टण वाली ज़ंजीरना, कड़ी कड़ी दए बदलाईआ। मित्रा वक्त तक लै अख़ीरना, आख़र दयां सुणाईआ। किसे नूं अमृत रस मिले ना सीरना, दुधीं थण ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब धुरदरगाहीआ। नारद कहे भाद्रों परम पुरख अगे मार लै तरला, त्रैलोआं बाहर ध्यान लगाईआ। कुछ आपणी हिम्मत कर ला, निरगुण धार लै अंगड़ाईआ। सच स्वामी कोलों अगम्मा वर ला, देवणहार होए सहाईआ। अन्त अखीरी वक्त जर ला, जोरू ज़र जगत रहिण कोए ना पाईआ। खेल करे नरायण नरना, निराकार निरँकार अगम्म अथाहीआ। जिस झगड़ा मेटणा वरनां बरनां, बरे आज़मां खोल्ह खुल्हाईआ। जिस दे हुक्म विच सतिगुर शब्द धार हो के लड़ना, शस्त्र हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जिस दा हुक्म अनोखा दल चढ़ना, चढ़दिउँ लहिंदे लहिंदिउँ चढ़दे आपणा हुक्म वरताईआ। उस ने हथ्थो हथ्थी बिन हथ्थां सब नूं फड़ना, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दा नाम निधान सब ने पढ़ना, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जिस ने घाड़न अगम्मा घड़ना, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। तोड़नहार हँकार गढ़ना, हउमे हंगता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने खेल अगम्मा करना, करनी दा करता करता पुरख इक अख्वाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मनी राम दे गृह पिण्ड सिधम ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे नव खण्ड रहे रो, बिन अक्खीआं नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्तों धार मेट दे दो, दुतीआ भाव भेव रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म सच बख्श दे लो, लोयण बिन अक्खीआं आप खुल्हाईआ। कूड़ कुड़यार मिटा दे गरोह, जगत जुगत वेखण कोए ना पाईआ। एका नाम सुणा दे सो, हँ ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। तुध बिन मालक दिसे अवर ना को, कूड़ कूड़ दयां जणाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना मेरी आशा कल्पणा नालों कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल मिलाईआ। जो वस्त सति धर्म दी कलयुग लई खोह, साची झोली देणी टिकाईआ। मैं धरनी हो के तेरे चरण कवल रही छोह, बिन धूड़ी मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। मैनूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं संदेशा दिता आवे उह,

वाहिगुरु कहि के जिस नूं सीस निवाईआ । सति धर्म दा बीज पुरख अकाले बो, हर हिरदे अन्तर निरंतर दे टिकाईआ। मैं तेरे कोलों कुझ नहीं सकीआं लको, सब कुछ तेरे भेंट कराईआ। मैं तेरा इक्को नाम निधाना लैणा चाहुंदी ढोआ ढो, दर ठांडे देणा वरताईआ । बेशक तूं जोती जाता पुरख बिधाता बणया छब्बी पोह, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे मेहरवाना मेरी ख़ाली झोली भरीं, भगवन तेरी आस रखाईआ। तूं किरपा निधान इक्को हरी, विष्न ब्रह्मा शिव तेरे रंग समाईआ। मैं सचखण्ड दुआर एकँकार खरी, दरगाह साची मंग मंगाईआ। तूं निगाह मार लै ज़री, ज़र्रा ज़र्रा खोज खुजाईआ। की विकार प्या साढे तिन्न हथ्थ काया घरी, मन्दिर अन्दर वेखणा थांउँ थाँईंआ। मैं कलयुग कूड़ी क्रिया कोलों फिरदी डरी, डरपोक हो के रही सुणाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़यार दी बणी गढ़ी, हँकार सके ना कोए मिटाईआ। मेरे उत्ते प्रभू धर्म दी धार बण गई गढ़ी, गोरां रूप दरसाईआ। मैं सनमुख तेरे खड़ी, उच्ची कूक कूक जणाईआ। मेरी मुश्किल वाली मेट दे घड़ी, घड़याल ईसा वाला दए गवाहीआ। बिन तेरी किरपा तेरी दुनिया मंज़ल कोए ना चढ़ी, सचखण्ड दुआर एकँकार मिलण कोए ना आईआ। मैं जगत जहान दी अक्खरां वाली विद्या पढ़ी, पुस्तकां वेख वखाईआ। अन्त त्रैगुण माया विच सड़ी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तूं आदि जुगादी जुग चौकड़ी बदलणहारा लड़ी, लुड़ींदा सज्जण इक अख्वाईआ। मैं शौह दरयाए जांदी हड़ी, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। मेरी पवित्र रही कोए ना थड़ी, तट किनारे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे सत्त दीप वेख लै तपदे, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। तेरा नाम निधाना अन्तष्करन जीव मूल ना जपदे, अजपा जाप विच ना कोए समाईआ। मैं तेरे खेल वेखणे परमेश्वर पति दे, पारब्रह्म देणे दृढ़ाईआ। उह वेख लै वअदे कौल इकरार सब दे जांदे टपदे, भज्जण वाहो दाहीआ। तेरे निशाने जांदे छपदे, जगत जहान ना कोए रुशनाईआ। मानस प्यासे हो गए मानस रत दे, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ । आपणे हरफ़ हरूफ़ तक लै जो मैनूं लेख जणाए बिना खुशख़त दे, अक्खरां संग ना कोए बणाईआ। धरनी कहे मेरे नव सत्त तेरे अगे वास्ता घतदे, निव निव लागण पाईआ। कूड़ कुड़यार शरअ ज़ंजीर कट दे, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। भण्डारे खोल्ह दे शब्द अगम्मे हट्ट दे, नव सत्त ब्रह्म मति आप वरताईआ। तेरे हुक्म संदेशे हर हिरदा जाण फटदे, तीर अणयाला देणा चलाईआ। मेरे उत्तों झगड़े मेट दे हदूदां वट दे, नव सत्त इक्को रंग रंगाईआ। मानव मानस मानुख तेरा नाम निधाना श्री भगवाना इक्को होवण जपदे, इक्को इष्ट देव मनाईआ। प्यारे होवण तेरे वतन

वत दे, बेवतनां देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हा दे आपणी ब्रह्म मति दे, मति मतांतर जगत जहान श्री भगवान रहिण ना पाईआ।

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड बासरके ज़िला अमृतसर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण निरगुण धार करीए तैयारी, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता पुरख अकाल नाल मिलाईआ। सलाह मशवरा करीए सचखण्ड दुआरी, मनसा दूसर संग ना कोए रलाईआ। निरगुण जोत नूर करीए उज्यारी, उजाला दो जहान वखाईआ। शब्द नाद सुणाईए धुन्कारी, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल वेखीए कलयुग अन्तिम वारी, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण उठाईआ। नौ खण्ड पृथमी निगाह मारीए सारी, सर सरोवरां ध्यान लगाईआ। कलयुग रैण तक्कीए अन्ध अँधयारी, अन्ध कूप खोज खुजाईआ। नाल शरअ जगत दे वेखीए पुजारी, दीनां मज़्हबां फोल फुलाईआ। अठसठ तीर्थां तक्कीए ख्वारी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती पर्दे मात उठाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ तक्कीए की आशा पुरख नारी, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। दीन मज़्हब तक्कीए आत्म परमात्म वेखीए यारी, पारब्रह्म ब्रह्म रंग कवण रंगाईआ। मन मनसा कूड़ वेखीए कुड़यारी, ममता मोह मोह हल्काईआ। शाह सुल्तानां तक्कीए दर दरबारी, अदल इन्साफ़ कवण कमाईआ। जुग चौकड़ी ग्रन्थ शास्त्र वेखीए जो ग्रन्थां लेख लिख्या सतिगुर शब्द लिखारी, कलम शाही काग़ज़ रंग रंगाईआ। धरनी धरत धवल धौल तक्कीए जो रोवे ज़ारो ज़ारी, बिन नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सारे इक्ठे जाईए नठ, बिन कदमां कदम उठाईआ। दीन दुनी दा धीरज वेखीए हठ, सति सन्तोख फोल फुलाईआ। धर्म दी धार तक्कीए मठ, शिव शिवा नाल मिलाईआ। इक्को दुआर करीए इक्ठ, हरि भगत दुआरे सोभा पाईआ। क्यों कलयुग कूड़ी क्रिया उलटी गेड़ी लठ, नव सत्त रही भुआईआ। क्यों धर्म धार दा बुरज गया ढठ, जड़ चेतन चोटी वेखण कोए ना पाईआ। क्यों साडे दीन मज़्हब दा खेड़ा होया भठ, कलयुग भठियाला अग्नी रिहा डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण लोकमात निरगुण धार चलीए, सरगुण रूप ना कोए दरसाईआ । सच दुआर जा के मल्लीए, सिँघासण इक्को इक वड्याईआ। फेर फिरीए जल थलीए,

महीअल वेख वखाईआ। जगत मन्दिर मठां आवाज़ सुणीए टल्लीए, घड़यालां की शनवाईआ। जगत दरवेशां फ़कीरां तक्कीए जल्लीए, मस्तक खुमारी नाम साधां सन्तां वेख वखाईआ। फेर दीपक जोती वेखीए बलीए, कवण गृह होवे रुशनाईआ। कवण प्रभू प्यार विच सीस रख के बैठा तलीए, आप आपणा आप मिटाईआ। निरगुण धार हो के दीन दुनी विच रलीए, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। अछल छल हो के मानव ज़ाती छलीए, वल छल समझ किसे ना आईआ। नव सत्त धरनी धरत धवल दी फिरीए गलीए, कूचा कूचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर धरनी उत्ते जाईए दौड़, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। साडा इक्को होवे डण्डा पौड़, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ीए घोड़, वागां आपणे हथ्थ उठाईआ। दीन दुनी तक्कीए रस मिट्ठा कौड़, विख अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। मार्ग तक्कीए धर्म दा किस बिध होया सौड़, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। मनुआ मन ग्रन्थ शास्त्र सके कोई ना होड़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सुरती सतिगुर शब्द नाल जुड़े कोई ना जोड़, मणका मन ना कोए भुआईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया क्यों सब नूं रही रोड़, शौह दरया वहिण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडी आसा मनसा सच दर करे परवान, परम पुरख परमात्म धुर दा हुक्म हुक्म नाल सुणाईआ।

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ जीतो दे गृह पिण्ड बासरके ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरी अन्तर निरंतर तको छाती, आ के खुशीआं ध्यान लगाईआ। मेरी बिरहों वैराग दी सुणो बाती, बातन भेव दयां खुल्हाईआ। नव सत्त तको अन्धेरी राती, अन्ध कूप ख़लक खुदाईआ। तन वजूद वेखो ज़ाती, मज़्बां फोल फुलाईआ। आपणे हुक्म दी पढ़ो पाती, पत्रका तुहानूं दयां वखाईआ। क्यों मेरे उत्ते सारे बणे घाती, घाउ रहे लगाईआ। मैं विछोड़े विच बैठी इकांती, इक इकल्ली डेरा लाईआ। मैनूं कवण वेला बख्शो बूँद स्वांती, आ के मुख चुआईआ। मेरे साहिब दा खेल दस्सो बहु भांती, किस बिध आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा डूँग्घा तको खाती, ख़तरे विच ख़लक खुदाईआ। निगाह मारो विच निबाताती, बनसप्ती फोल फुलाईआ। तुसीं इक्को नाम कलमे दे बण के आयो जमाती, इक्को सिख्या नाल लिआईआ। इक्को संदेश दस्सणा सफ़ाती, सभा इक्को देणी लगाईआ। मेरे उत्ते करो प्रभाती, अमृत वेला देणा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच दा साहिब बेपरवाहीआ।

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणा पूरा करो इकरार, इकल्ली हो के मंग मंगाईआ। मेरा किसे नाल नहीं तकरार, झगड़ा जगत ना कोए रखाईआ। तुसीं नव सत्त दे शाहकार, शहिनशाह तुहानूं दिती वड्याईआ। आपणे दीनां मज़्बां निगाह लओ मार, आ के तको थांउँ थाँईंआ। नाम कलम्यां करो विचार, जो संदेश्यां विच दृढ़ाईआ। शरअ धर्म दी वेखो कार, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, नेत्र नेत्र नेत्र नीर वहाईआ। मेरा अन्तष्करन होया बेकरार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मैनूं शरअ ने कीता शरमसार, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। मैं वेखां विगसां तुहाडा करां इंतज़ार, राह तकां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर आपणा पूरा करो वायदा, वाहिद रूप इक दरसाईआ। मेरे नालों ना होवो अलाहिदा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। धर्म दा धर्म तको फ़ायदा, ईमान ईमान विच्चों समझाईआ। इक्को कानून होवे इक्को होवे कायदा, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ दा लओ जाइज़ा, वेखो थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी आपणा पूरा कर मुआहदा, मेहरवान हो के आपणी दया कमाईआ।

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड सुगा ज़िला अमृतसर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनीए आईए निरगुण धार, जोती जाता पुरख बिधाता देवे माण वड्याईआ। साडा रूप रंग रेख नज़र ना आए कोई विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण कोए ना पाईआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं पन्ध आईए मार, धवले तेरे उत्ते आपणा खेल खिलाईआ। साडा हुक्म संदेशा सुणना अगम्मी धार, जगत अक्खर विद्या वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा कागज़ कलम शाही कातब बणे ना कोए लिखार, लेखा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। तेरा आदि जुगादी मालक ख़ालक एकँकार, अकल कलधारी नूर अलाहीआ । असीं जुग चौकड़ी उसे दे सेवादार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द सब दा ज़ुमेवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती नूर नूर दए उज्यार, उजाला करे बेपरवाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला साडा मददगार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। असीं तेरे उत्ते आईए बिन कदमां कदम उभार, निरगुण निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। निगाह मारीए नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप विच संसार,

सृष्टी दृष्टी अन्दर ध्यान लगाईआ। चार जुग दे शास्त्र तक्कीए जो सिफ्तां नाल करन इज़हार, ढोले सोहले राग नाद शब्द शनवाईआ । अठसठ तीर्थ तक्कीए गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती धार, जल थल महीअल वेख वखाईआ। शिवदुआले मठ चर्च मसीतां वेखीए गुरुदुआर, काया काअब्यां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनीए असीं आईए नाल चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। साडा सब दा इक्को होवे राह, मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सुहञ्जणा होवे थाँ, थान थनंतर इक सुहाईआ। इक्को संदेशा होवे धुर दा नाँ, नाउँ निरँकार इक दृढ़ाईआ। लेखा रहे सूर ना गाँ, ढोरां खल्ल ना कोए लुहाईआ। इक्को दरसाईए सब दा पिता माँ, पुरख अकाला नूर अलाहीआ। जिस नूं सारयां कहिणा वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। जो हक दा हक करे न्याँ, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। असीं उसे दी हां विच करनी हां, आपणा बल ना कोए प्रगटाईआ। तेरा नगर खेड़ा नौ खण्ड पृथ्मी तक्कीए गराँ, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग बुद्धी तक्कीए काँ, जो काग वांग कुरलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ।

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण तेरे उत्ते आईए नाल खुशी, खुशीआं ढोले गाईआ। तूं प्रेम प्यार नाल पुछीं, बिन रसना जिह्वा मुख हिलाईआ। तेरी धार वेखीए दुखी, दर्दी हो के फोल फुलाईआ। निगाह मारीए तेरी नव सत्त दी धार कुक्खीं, बिन नैणां नैण उठाईआ। जे प्रभू प्यार दी भुखी, भोलीए तेरी झोली देईए भराईआ। तूं धर्म दी धार नाल उठीं, सति सच नाल लैणी अंगड़ाईआ। असीं फिरीए तेरी चारे गुठीं, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण पुजीए चाँईं चाँईंआ। आलस निंद्रा विच रहीं ना सुती, सवाधान आपणा आप लैणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडा वक्त सुहञ्जणा आउणा, खुशीआं ढोले गाईआ। धरनीए तेरा दर सुहाउणा, सोहणी वजे वधाईआ। पर्दा अगम्म उठाउणा, ओहला रहे ना राईआ। नव सत्त वेख वखाउणा, तट किनारे फोल फुलाईआ। दर दरवाज़ा इक खुल्हाउणा, ग़रीब निवाज़ा नाल मिलाईआ। धुर दा ढोला अगम्म सुणाउणा, तूं मेरा मैं तेरा लैणा गाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं एका खेल खिलाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुर शब्द नाल मिलाउणा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जोती जाता नाल रलाउणा, दो जहानां वजे वधाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मिटाउणा, क्रोध विकार रहिण ना पाईआ। सब दा हिरदा सोध वखाउणा, वदी सुदी ना वंड वंडाईआ। मानव ज़ाती इक्को रंग रंगाउणा, दुरमति मैल धुआईआ। अमृत आत्म निझर रस बूँद स्वांती आप टपकाउणा, तृष्ना तृप्त कराईआ। शब्द अनादी राग जणाउणा,

धुन आत्मक राग सुणाईआ। दीआ बाती कमलापाती हो के जोत जगाउणा, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। सच सिँघासण तेरे उत्ते आसण लाउणा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ निशान मेट मिटाउणा, मिट्टी ख़ाक देणी उडाईआ। सतिगुर साचा मार्ग इक दरसाउणा, दहि दिशा वजे वधाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी इक्को इक मनाउणा, इष्ट देव इक्को इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म सब ने नाअरा लाउणा, ढोला सोहला राग जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनीए तेरे उत्ते वक्त सुहञ्जणा आउणा, सो पुरख निरञ्जण होए सहाईआ। हरि पुरख निरञ्जण इक वेख वखाउणा, एकँकारा रंग रंगाईआ। आदि निरञ्जण डगमगाउणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सोभा पाउणा, सच दुआर इक सुहाईआ। श्री भगवान वेस वटाउणा, रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुर शब्द शब्द इक प्रगटाउणा, तेरे परगणे नौ खण्ड वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हुक्म विच जोत धार हो के तेरा दर्द वंडाउणा, दुख्यारने तेरा दुःख रहिण ना पाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ केशो राम दे गृह पिण्ड जंडो की सरहाली ज़िला अमृतसर ✪

सो पुरख निरञ्जण कहे धरनीए तूं मेरी अगम्मी धूल, धूड़ी ख़ाक जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हो के चुकावां मूल, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार तेरी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, दरगाह साची मुकामे हक तेरी आसा आपणे कदम टिकाईआ। जोती जाता हो के वेखां ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप कराईआ। तूं निरगुण धार मेरा जल्वा तकणा नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा पन्ध मुकावां नेड़े दूर, दूर दुराडा आवां धुर दा माहीआ। नव सत्त हर घट वेखां कसूर, पर्दा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जो कलयुग कुकर्म पाया फ़तूर, फ़तवा देवां थांउँ थाँईंआ। तेरी आशा होण ना देवां मजबूर, मुश्किल तेरी हल कराईआ। नाम खुमारी देवां सरूर, ग़फ्लत निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। शब्द अनादी दे के तूर, तुरीआ बाहर करां शनवाईआ। मैं शाहो भूप शहिनशाह तेरी आसा मनसा करां पूर, पूरन ब्रह्म दयां दृढ़ाईआ। सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जुग बदलणा मेरा आदि जुगादी दस्तूर, धवले तैनूं दयां सुणाईआ। तेरे उत्ते शरअ मेटां कूर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। मनुआ मन ना रहे ग़रूर, गुरबत सब दी बाहर कढ्ढाईआ। सति धर्म दा रूप दरसावां अगम्मा कपूर, जो कपलमुन आशा

गया रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनीए अन्तष्करन दी मारीं आह, उफ़ हाए ना कोए दुहाईआ। मैं वेखणहार मेहरवां, मिहबान बीदो नूर अलाहीआ। दरगाह सच वसां गराँ, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। हुक्म संदेशा आदि जुगादी देवां आ, निरगुण सरगुण आपणी खेल खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरा बणावां गवाह, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। लहिणा देणा वेखां थांउँ थाँ, थान थनंतर धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। जो कलयुग जीवां बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। हिरदे वसे किसे ना नाँ, नर निरँकार मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। पुरख अकाल कहे धरनीए तूं आपणी सुरत संभाल, सम्बल दा मालक हो के दयां जणाईआ। मैं तेरी लेखे लावां घाल, नव नव चार दा पन्ध मुकाईआ। फल लगावां तेरे डाल, पत्त टहणी आप महकाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले उपजावां धुर दे लाल, लालन हो के धुर दा रंग रंगाईआ। झगड़ा मेटां शाह कंगाल, दीन मज़्ह़ब दा लेखा दयां चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं जो मेरा दिता अहिवाल, शब्द संदेश्यां विच सुणाईआ। मैं जोती जाता पुरख बिधाता हो के खेल करां कमाल, कामल मुर्शद हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। कूड़ी क्रिया त्रैगुण मेटां कूड़ जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत करां रुशनाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना हो के देवां धन माल, ख़ज़ाना अतोट अतुट वरताईआ। सतिजुग सति सच तेरे उत्ते आवे खुशहाल, खुशबख़री सतिगुर शब्द शब्द शनवाईआ। जो संदेशा दे के गया सतिगुर गोबिन्द इक रवाल, सर सरोवरां बाहर बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग अगम्म रंगाईआ। पुरख अकाल कहे धरनीए तेरे उत्ते प्रगटावां धर्म, धवले तैनूं दयां जणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखां कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। दृष्टी किसे दी रहिण ना देवां चर्म, चम्म दृष्टी लेखा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग साचे साचा दयां जन्म, धुर दी बणां आप जणेंदी माईआ। झगड़ा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। मालक ख़ालक बणां करनी करन, करता पुरख इक हो जाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब नूं बख़्शां सरन, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलां सहिज सुभाईआ। सुरती शब्द मेरी मंज़ल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। पंच विकार तन वजूद मूल ना लड़न, माटी ख़ाक करन सफ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, निरअक्खर अक्खर धार विच देवां बदलाईआ। भाग लगा के तेरे नव सत्त दे घरन, गृह दुआरा इक सुहाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं वायदा कीता परन, परम पुरख हो के पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी निरगुण निरगुण सदा सदा हार भन्नूण घड़न, समरथ पुरख अकथ आपणा भेव दए चुकाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे धरनीए आपणीआं खोलू के रखीं अक्खां, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण उठाईआ। धुर मालक ख़ालक प्रितपालक आवे सखा, सतिगुर अन्तरजामी निहकामी आपणा फेरा पाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघ गए लखां, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार तेरी कीमत पाए विच्चों कक्खां, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुलूाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तूं खुशीआं विच होवीं खुशहाल, ग़मी ग़मखार दए मिटाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दया निध होवे आप सहाईआ। तेरी जुग जुग दी लेखे लावे घाल, लहिणा देणा तेरी झोली पाईआ। तेरा सहारा गोबिन्द बणे अगम्मा लाल, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरी धर्म दी धर्मसाल, दूजा बंक नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे झुकणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा नूर नूर जोत करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरी सुरत लए संभाल, सम्बल दा मालक हो के आपणी कल वरताईआ। उह तक लै जिस कलयुग विच सतिजुग बदल देणी चाल, चार जुग दे शास्त्र निरगुण सरगुण देण गवाहीआ। जिस दे हुक्म विच ना कोई जुआब ना कोई सुआल, जुआब तल्बी नज़र कोए ना आईआ। उह आपे वेखणहार मुरीदां हाल, मुर्शद मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तूं धर्म दी धार गाउणे गीत, गोबिन्द ढोला धुर दे माहीआ। तेरा मालक ख़ालक आवे पतित पुनीत, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। तेरा लहिणा देणा वेखे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी आपणा हुक्म वरताईआ। तेरी काया माटी करे ठांडी सीत, कलयुग अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। सतिजुग साची धर्म सच दी लावे रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक दरसाईआ। झगड़ा मेटे हस्त कीट, कीट कीटां रंग रंगाईआ। जिस दा हुक्म वरते अनडीठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उह साहिब स्वामी बीठलो बीठ, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया भन्ने कौड़ा रीठ, अमृत रस निझर धार दए चुआईआ। हथ्थ रखे तेरी पुश्त पनाह पीठ, मेहरवान हो के मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरा होवे प्रभू सहायक, सगला संगी धुरदरगाहीआ। निरगुण धार बणे नायक, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा झगड़ा नहीं त्रैगुण मायक, माया ममता मोह मिटाईआ। हरिजन भगत सुहेले बणाए लायक, मन मनसा कूड़ दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी तूं सुण अगम्मी बोली, अनबोलत की दृढ़ाईआ। जिस तेरी ख़ाली भरनी झोली, झलक आपणा नाम वरताईआ। तूं उस दी सेवक बणना गोली, चाकर रूप अख्वाईआ। उह निरगुण धार तोल रिहा तोली, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। सति सच दी हट्टी रिहा खोल्ही, ख़ालक खलक आप वरताईआ। जिस दी धार हर घट अन्दर मौली, मौला रूप नूर अलाहीआ। उह अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरी करे कौली, कौल आपणा नाल निभाईआ। तूं बेवस हो के पा ना रौली, रहमत मेरे उत्ते कमाईआ। अन्तिम अन्त मूल ना डोलीं, धीरज धीर दयां धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरा मीता परवरदिगार, नूर अलाह इक अख्वाईआ। जो जल्वागर आपणा खेल करे अपार, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। जिस संदेशा दिता पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के गया दृढ़ाईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता कलि कल्की लए अवतार, नूर नुराना धुर अमामा आप बदलाईआ। जिस दा संदेशा सुणदी रही वारो वार, वारस हो के तैनूं जाए सुणाईआ । उह तेरे उत्तों मेटे धूंआँधार, कलयुग अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। तूं रहिणा ख़बरदार, बेख़बरे ख़बर सुणाईआ । उह पुरख अकाला दीन दयाला वेखे विगसे पावे सार, वेखणहार इक अख्वाईआ। जिस दी काग़ज़ कलम शाही बण सके ना कोए लिखार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वेखणहार धरनीए धरत धवले तेरा भार, धुर दा मालक खालक इक्को नूर अलाहीआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा होए मददगार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। ना करीं बिन नेत्र नैणां रो रो गिरयाज़ार, हंझूआं हार ना कोए बणाईआ। तूं जिस दी ताब्यादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर दा कर इंतज़ार, जो निरगुण आवे धुर दा माहीआ। जो दीनां मज़्हबां ज़ातां पातां वसे बाहर, बिन रूप रंग रेख आपणा भेव दए चुकाईआ। धरनी हस के कहे सतिगुर शब्द मैं बलि बलि जावां बलिहार, मेरे उत्ते आवे मेरा माहीआ। मैं निव निव डण्डावत बन्दना कर के धूड़ी लावां छार, सजदयां विच कदम बोसी कर के सीस निवाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां करां दरस दीदार, सनमुख हो के वेख वखाईआ। जो मेरे उत्ते धर्म दा गुलशन महकाए बसन्त करे बहार, कलयुग ख़िज़ां रुत दए बदलाईआ। सो मालक

स्वामी मेरा होवे मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। अगों सतिगुर शब्द बोल कहे ललकार, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। उह दीनां बंधप दीन दयाला सब कुछ करनेहार, कुदरत दा कादर अगम्म अथाहीआ। जिस दा रूप अनूप अपार, अपरम्पर स्वामी इक अख्वाईआ। जो सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, मकरूज़ आपणा लेख मुकाईआ। धरनीए धवले तेरा लहिणा देणा तेरी झोली देवे डार, वस्त अगम्म अथाह अतोल अतुल वरताईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं उसे प्रभू नूं करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो करनहारा मेहर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान अगम्म अथाहीआ।

१७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मोहण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर

सतिगुर शब्द कहे धरनीए आपणीआं खोल्ह के रखीं अक्खां, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण उठाईआ। धुर मालक ख़ालक प्रितपालक आवे सखा, सतिगुर अन्तरजामी निहकामी आपणा फेरा पाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघ गए लखां, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार तेरी कीमत पाए विच्चों कक्खां, आप आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तूं ख़ुशीआं विच होवीं ख़ुशहाल, ग़मी ग़मखार दए मिटाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दया निध होवे आप सहाईआ। तेरी जुग जुग दी लेखे लावे घाल, लहिणा देणा तेरी झोली पाईआ। तेरा सहारा गोबिन्द बणे अगम्मा लाल, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरी धर्म दी धर्मसाल, दूजा बंक नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे झुकणे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा नूर नूर जोत करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरी सुरत लए संभाल, सम्बल दा मालक हो के आपणी कल वरताईआ। उह तक लै जिस कलयुग विच सतिजुग बदल देणी चाल, चार जुग दे शास्त्र निरगुण सरगुण देण गवाहीआ। जिस दे हुक्म विच ना कोई जुआब ना कोई सुआल, जुआब तल्बी नज़र कोए ना आईआ। उह आपे वेखणहार मुरीदां हाल, मुर्शद मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तूं धर्म दी धार गाउणे गीत, गोबिन्द ढोला धुर दे माहीआ। तेरा मालक ख़ालक आवे पतित पुनीत, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ।

तेरा लहिणा देणा वेखे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी आपणा हुक्म वरताईआ। तेरी काया माटी करे ठांडी सीत, कलयुग अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। सतिजुग साची धर्म सच दी लावे रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक दरसाईआ। झगड़ा मेटे हस्त कीट, कीट कीटां रंग रंगाईआ। जिस दा हुक्म वरते अनडीठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उह साहिब स्वामी बीठलो बीठ, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया भन्ने कौड़ा रीठ, अमृत रस निझर धार दए चुआईआ। हथ्थ रखे तेरी पुश्त पनाह पीठ, मेहरवान हो के मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरा होवे प्रभू सहायक, सगला संगी धुरदरगाहीआ। निरगुण धार बणे नायक, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा झगड़ा नहीं त्रैगुण मायक, माया ममता मोह मिटाईआ। हरिजन भगत सुहेले बणाए लायक, मन मनसा कूड़ दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी तूं सुण अगम्मी बोली, अनबोलत की दृढ़ाईआ। जिस तेरी ख़ाली भरनी झोली, झलक आपणा नाम वरताईआ। तूं उस दी सेवक बणना गोली, चाकर रूप अख्वाईआ। उह निरगुण धार तोल रिहा तोली, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। सति सच दी हट्टी रिहा खोल्ही, ख़ालक ख़लक आप वरताईआ। जिस दी धार हर घट अन्दर मौली, मौला रूप नूर अलाहीआ। उह अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरी करे कौली, कौल आपणा नाल निभाईआ। तूं बेवस हो के पा ना रौली, रहमत मेरे उत्ते कमाईआ। अन्तिम अन्त मूल ना डोलीं, धीरज धीर दयां धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरा मीता परवरदिगार, नूर अलाह इक अख्वाईआ। जो जल्वागर आपणा खेल करे अपार, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। जिस संदेशा दिता पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के गया दृढ़ाईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता कलि कल्की लए अवतार, नूर नुराना धुर अमामा आप बदलाईआ। जिस दा संदेशा सुणदी रही वारो वार, वारस हो के तैनूं जाए सुणाईआ । उह तेरे उत्तों मेटे धूंआँधार, कलयुग अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। तूं रहिणा ख़बरदार, बेख़बरे ख़बर सुणाईआ । उह पुरख अकाला दीन दयाला वेखे विगसे पावे सार, वेखणहार इक अख्वाईआ। जिस दी काग़ज़ कलम शाही बण सके ना कोए लिखार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वेखणहार धरनीए धरत धवले तेरा भार, धुर दा मालक खालक इक्को नूर अलाहीआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा होए मददगार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। ना करीं बिन नेत्र नैणां रो रो गिरयाज़ार, हंझूआं हार ना कोए

बणाईआ। तूं जिस दी ताब्यादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर दा कर इंतज़ार, जो निरगुण आवे धुर दा माहीआ। जो दीनां मज़्बां ज़ातां पाता वसे बाहर, बिन रूप रंग रेख आपणा भेव दए चुकाईआ। धरनी हस के कहे सतिगुर शब्द मैं बलि बलि जावां बलिहार, मेरे उत्ते आवे मेरा माहीआ। मैं निव निव डण्डावत बन्दना कर के धूड़ी लावां छार, सईयदयां विच कदम बोसी कर के सीस निवाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां करां दरस दीदार, सनमुख हो के वेख वखाईआ। जो मेरे उत्ते धर्म दा गुलशन महकाए बसन्त करे बहार, कलयुग ख़िज़ा रुत दए बदलाईआ। सो मालक स्वामी मेरा होवे मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। अग्गों सतिगुर शब्द बोल कहे ललकार, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। उह दीनां बंधप दीन दयाला सब कुछ करनेहार, कुदरत दा कादर अगम्म अथाहीआ। जिस दा रूप अनूप अपार, अपरम्पर स्वामी इक अख्वाईआ। जो सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, मकरूज़ आपणा लेख मुकाईआ। धरनीए धवले तेरा लहिणा देणा तेरी झोली देवे डार, वस्त अगम्म अथाह अतोल अतुल वरताईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं उसे प्रभू नूं करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो करनहारा मेहर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान इक अख्वाईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

धरनीए तेरे नेत्र नीर विच नरायण, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो तेरा पूरब देवे लहिणा देण, ख़ाली झोली आप भराईआ। तेरा सगला संगी बणे सैण, साजण इक अख्वाईआ। आसा पूरी करे जो राम संदेशा दिता बाल्मीक रमायण, सीआ सतिगुर शब्द नाल वड्याईआ। आसा मनसा तेरी वेखे जो गंगा यमुना सरस्वती किहा त्रिबैण, त्रिबैणी तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा मालक ख़ालक खेल खेले विच हिन्दवैण, हिन्द भारत आपणा रंग रंगाईआ। तूं बैठणा नाल चैन, चीना दा लेखा तेरे नाल रलाईआ। बेशक तेरे उत्ते दीन मज़्ब खहण, नाम कलमा करे लड़ाईआ। लाड़ी मौत बणे डैण, लख चुरासी घर घर खाईआ। तूं धीरज नाल रहिणा बणना नहीं त्रफैण, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। मानव ज़ाती समझणी नहीं परायण, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर वेख वखाईआ । तेरा निशाना श्री भगवाना करे ऐन दा ऐन, जो ऐनुलहक हक कहि के गया सुणाईआ। उह मनसा तक लै जो रिखप देव कीती उजैन, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा

तेरे उत्तों मेटे वहिण, वञ्झी धार ना कोए वड्याईआ। दाढ़ां हेठ पृथ्मी आए चबायण, चतर्भुज आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण दाता पुरख बिधाता तेरा देवे देण, देवणहार एकँकार इक अख्वाईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ निरञ्जण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

धरनीए तूं आदि जुगादि सुघड़ सुचज्जी स्याणी, सति सच नाल मिल के तेरी वजे वधाईआ। प्रभू दी बख़्शिश तेरे उत्ते चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। तेरे सीने दी धार अठसठ तीर्थ सर सरोवर पाणी, जल धारा मिल के खुशी बणाईआ। चार जुग दे ग्रन्थ शास्त्र तेरे उत्ते प्रभू हुक्म दी बाणी, गुर अवतार पैग़म्बरां संग रखाईआ। तूं कलयुग अन्त क्यों चार कुण्ट होई निमाणी, बलहीण हीण अख्वाईआ। तेरा मालक ख़ालक इक सुल्तानी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस दी सदा जोबन वाली जवानी, बृद्ध रूप ना कोए जणाईआ। उह तेरी जाणे कथा कहाणी, कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। उह धुर दा बाप असमानी, इस्म आज़म इक अख्वाईआ। जिस दा जिस्म नहीं जिस्मानी, ज़मीर जगत ना कोए जणाईआ। उह आदि जुगादी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बानी, मालक ख़ालक नूर अलाहीआ। जिस दे कोल मंज़ल हक रुहानी, रूह बुत दए वड्याईआ। उह तेरी कलयुग अन्तिम मेटे परेशानी, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सति धर्म दी सतिजुग दए निशानी, निशाना कलयुग कूड़ मिटाईआ। मेहरवान हो के करे मेहरवानी, महबूब इक अख्वाईआ। तूं उस दे चरण कवल करीं ध्यानी, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जाण जाणी, जानणहार एकँकार इक अख्वाईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ अनोख सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

धरनीए प्रभ वेखे तेरे दुक्खां वाला खरड़ा, खड़ग खण्डे दी धार बाहर ध्यान लगाईआ। मन कल्पणा दूई दुवैती शरअ दा तके झगड़ा, नव सत्त पर्दा आप उठाईआ। तेरा लहिणा देणा वेखे जो लिख्या विच पुराण गरड़ा, वेद व्यासा की गया समझाईआ। जिस दे नाल दो जहान लगणा रगढ़ा, चोटी जड़ बचया रहिण कोए ना पाईआ। तूं पुरख अकाल दीन दयाल

दा इक्को चरण कवल पकड़ा, पगडण्डीआं रस्ता वेखण कोए ना पाईआ। जो झगड़ा मेटे कलयुग जीव बग बप बगढ़ा, खोल्णहारा थांउ थाँईंआ। जिस लहिणा देणा खेल मुकाउणा गोर मरड़ा, मढ़ी गोर ध्यान लगाईआ। उस दा हुक्म संदेसा फ़रमान अगम्मा करड़ा, दो जहान सके ना कोए बदलाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार जो नेत्र बदले दरड़ा, अक्ख अक्ख विच्चों उलटाईआ। माया ममता मोह विकार जाए जरड़ा, बन्धन धुर दा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, जहालत तके थांउँ थाँईंआ।

✪ १७ भाद्रो शहिनशाही सम्मत ११ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

धरनीए तूं क्यों रोंदी कुरलांदी, हाहाकार विच करें हाल दुहाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्द गुरु दी बांदी, बन्दना विच बहि के इक्को सीस निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला रहिणा गांदी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरे उत्तों कलयुग कूड़ कुड़यार प्रभ मिटावे अन्धेर आंधी, अन्ध कूप दा लेखा रहे ना राईआ। झगड़ा रहिण ना देवे सोना चांदी, धन्न दौलत मिट्टी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। तूं लोकमात मूल ना रहिणा पछतांदी, पश्चाताप ना कोए रखाईआ। खुशीआं नाल सच दा रस रहिणा पींदी खांदी, ख़ाका दुनिया ना कोए जणाईआ। जे तेरी साहिब बिना पत जांदी, पुरख अकाला होए सहाईआ। तैनूं सुगंदड़ी आदि जुगादि गुरां दी, गुरु गुरदेव देण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी अवाज़ सुणे दुक्खां वाली सुरां दी, सुरती अकाल मूर्ती अकल कलधारी आपे वेख वखाईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ दीदार सिँघ दे गृह रात नूं पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे आदि जुगादी सन्बंधीआ, बन्दना डण्डावत सजदा करके सीस निवाईआ। निरगुण निराकार निरँकार मेरे उत्ते तक लै संधीआ, जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल गया कराईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना शरअ दीआं मेट दे पाबन्दीआं, शरीअत इक देणी समझाईआ। मैं तेरा सुख माणां अगम्म अनन्दीआ, अनन्द अनन्द दे मालक देणा वरताईआ।

दूई दुवैत मिटा दे कूड़ कुड़यार दीआं ढाह दे कंधीआं, मानस मानव मानुख इक्को दर सुहाईआ। महबूब हो के ला लै अंगी आ, अंगीकार इक हो जाईआ। जगत विकार तन वजूद वासना कढ दे गंदीआं, माटी ख़ाक तेरे नाम दी वजे वधाईआ। जुग चौकड़ीआं केते मेरे उत्तों लँघीआं, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर आप रखाईआ। धरनी कहे प्रभू किरपा कर गुरु महाराज, साहिब सतिगुर सीस निवाईआ। आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अन्दर बणा समाज, समग्री नाम सति वरताईआ। मेहरवान हो के मेरे संवार काज, करनी दे करते दया कमाईआ। सति धर्म दा सति सतिवादी बख़्श राज, रईयत आपणे रंग रंगाईआ। तेरा धर्म लंगड़ा लूल्हा होया अपाहज, नव सत्त वेखणा थाउँ थाँईंआ। परम पुरख परमात्म मेरी बेनन्ती मंन लै आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तैनूं निरगुण दाते कहिंदे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणयां होणा सहाईआ। मैं बेनन्ती करदी नव सत्त विच्चों पंज आब, पंचम दे मालक देणी माण वड्याईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा रहे ना दो दो आब, दो जहानां आपणा पर्दा देणा खुल्हाईआ। मेरा लहिणा देणा तकीं ना पुन्न सुआब, सतिगुर हो के दया कमाईआ। तूं निरगुण दाता पुरख बिधाता खेल करें अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी धार निमाणी, निम्रता विच सीस निवाईआ। मेरा एको एक बख़्श दे हाणी, सतिगुर शब्द शब्द मिलाईआ। तेरे कलमे दी नाम निधान दस्से बाणी, अणयाला तीर चलाईआ। मेरे उत्ते पवित्र हो जाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दुरमति मैल धुआईआ। तूं शाहो भूप सुल्तानी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। आदि जुगादी मेरे उत्ते कर मेहरवानी, महबूब तेरी ओट तकाईआ। अमृत मेघ बरस दे अगम्मा पाणी, जगत सरोवरां लोड़ रहे ना राईआ। शब्दी नाद दे अगम्म धुन्कानी, अनहद नादी नाद वजाईआ। जोती जाते तेरा चमके नूर नुरानी, नव सत्त कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मेरे मालक ठाकर हक महबूब, तेरी मुहब्बत विच सीस निवाईआ। मेरे उत्ते हाज़र हो मौजूद, मजलस भगतां नाल रखाईआ। शरअ शरीअत मेट हदूद, हद्द इक्को इक दरसाईआ। तेरी आलीशान आलीज़ाह तकां अरूज, अर्श फर्श दे मालक तेरा नूर नज़री आईआ। तेरी मंज़ल इक्को होवे हक मकसूद, दूजा गृह नज़र कोए ना आईआ। बेशक मेरा माटी ख़ाक तन नहीं वजूद, धरनी धरत धवल धौल हो के आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते कर मेहरवानी, मेहरवान दया कमाईआ। मेरी बाली बुद्ध अंञाणी, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ।

मेरी पूरब पूरब रही जवानी, जोबनवन्ते अगे देणी माण वड्याईआ। मेरी कथा कहाणी ना तक पुराणी, पुनह पुनह कहि के सीस निवाईआ। मैं नव सत्त कलयुग कूड़ी क्रिया कीती निमाणी, निमाणी हो के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक प्रगटाईआ। धरनी कहे परम पुरख मेरे पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी वड्याईआ। मेरे उत्ते हो दयाल, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। सच भण्डारा दे अगम्मा माल, नाम निधान इक वरताईआ। नव सत्त मेरी बणा सची धर्मसाल, धर्म दुआर इक वखाईआ। जोती जाता हो के सुरत संभाल, सम्बल आपणा आसण लाईआ । लेखा मुका दे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। मेरी इक्को बेनन्ती इक्को सुआल, अर्ज़ आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर ज़वाल, ज़ाहर ज़हूर आपणा नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पूरी कर दे आसा, तृष्ना जगत दे बुझाईआ। तेरे उत्ते रख्या भरवासा, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह शाबाशा, आदि जुगादि तेरी सरनाईआ। मेरे मण्डल मण्डप खुशीआं वाली पा दे रासा, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। मानस मानव मानुख अन्तर निरंतर निरगुण नूर कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। नाम जपा दे स्वास स्वासा, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। निज गृह अन्दर जोती जाते हो के वेख तमाशा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा सच आप अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे सुण धरनी धवल, धरती दयां जणाईआ। मेरा आदि जुगादी अलाही नूर अवल, आलमीन इक अख्वाईआ। मैं हर घट अन्तर जावां मवल, मौला हो के संग निभाईआ। मेरा सब दे नाल इकरार कवल, आदि जुगादी दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। धरनीए तूं धवले मूल ना डर, डरपोक रूप बणाईआ। तेरा मालक ख़ालक इक्को हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस जुग चौकड़ी बख्शे वर, दाता हो के झोली पाईआ। उह दूर दुराडा निरगुण धार आए तेरे घर, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। नव सत्त दी धार तके सरोवर सर, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। तूं साहिब सुल्तान दी सरनाई जाईं पर, बिन परा पसन्ती मद्धम बैखरी खुशीआं ढोले गाईआ। उह मालक ख़ालक नरायण नर, नर हरि आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा भाणा जुग चौकड़ी रही जर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर दए वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू तक लै अन्तष्करन, बाहर वेखण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं इक्को पूजां तेरे चरण, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ।

मैं चाहुंदी मेरे उत्तों झगड़ा मेट दे वरन बरन, चार अठारां वंड ना कोए वंडाईआ। दीन मज़्हब तेरे नाम कलमे उत्तों मूल ना लड़न, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। सुरती धार एकँकार तेरा शब्दी पल्लू फड़न, बिन हथ्थां देणा फड़ाईआ। बिन कदमां मंज़ल चड़न, भज्जण वाहो दाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला पढ़न, धुर दी सिख्या इक सिखाईआ। त्रैगुण माया मूल ना सड़न, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरे सच दुआर एकँकार धुर दरगाह वड़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू निगाह मार लै आपणे जगत, जगत जिज्ञासुआं वेख वखाईआ। की खेल रचाया बूँद रक्त, तन वजूदां पंज तत मिल के वजे वधाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते प्रगट कर दे आपणे भगत, भगवन पर्दा देणा चुकाईआ। मेरा सुहञ्जणा कर दे वक्त, घड़ी पल तेरा राह तकाईआ। तेरी आदि जुगादी इक्को शक्त, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म दी मेरे उत्ते बणा दे बणत, घड़न भन्नणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन मेरे उत्ते होण सन्त, सतिगुर शब्द शब्द दा ढोला गाईआ। तूं परम पुरख परमात्म बणना अगम्मा कन्त, कन्तूहल हो के आपणा रंग रंगाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते धर्म दी बहार होए बसन्त, पत्त टहणी फल फूल आप महकाईआ। नव सत्त गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप जणाईआ। मेरी भूमिका सति धर्म बणा दे बहिश्त जंनत्त, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर हटाईआ। मेरे उत्ते मेहरवाना तेरा रहे कोई ना निन्दक, चुगली सरवण सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर हिरदे अन्तर आपणे प्यार दी दे हिम्मत, हौसला प्यार वाला वधाईआ।

✪ १७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड उसमा ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे सुण नी धरनीए मईआ, मम्मीए अम्मीए तैनूं दयां जणाईआ। की खेल करे तेरे उत्ते अगम्मा सईआ, साजण राजन शाहो भूप की दृढ़ाईआ। की आसा रख के गया राम रम्ईआ, राम रामा की भेव चुकाईआ। की संदेशा दिता निरगुण सरगुण धार घनईया, काहन कान्हा की दृढ़ाईआ। नी आपणा लहिणा देणा खाता कढ्ढके तक लै वहीआ, वाहिद इक्को हुक्म जणाईआ। की पैग़म्बरां तेरे उत्ते पाई सहीआ, शहादत की भुगताईआ । केहड़ी धार गुरुआं चलाई नईया, नौका वेखणी थांउँ थाँईंआ। निगाह मार लै नव सत्त तेरी पत गईआ, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। नाता रिहा ना भैणां भईआ, पिता

पूत ना कोए चतुराईआ। उह वेख लै लँघ गया गोबिन्द वाला ढईआ, ढौंका आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए तूं निगाह मार लै जल्दी, जगत समाज संग ना कोए रखाईआ। की कीमत पैणी तेरे उत्ते नानक वाली इक गल्ल दी, जिस नूं कथनी कथ सके ना राईआ। धार तक लै कलयुग कल दी, की कातीआं रिहा लगाईआ। की ख़बर सुणी महीअल जल थल दी, समुंद सागर टिल्ले पर्वत की दृढ़ाईआ। की आशा कहिंदी राजे बलि दी, बावन धार की समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड वड्याईआ। नारद कहे धरनीए धवले आपणा तक लै रूप अनूप, की रिहा जणाईआ। तेरा सति दा रिहा ना कोए सपूत, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। मैं तेरे कोलों पुछणा चाहुंदा इक सबूत, सहिज नाल देणा सुणाईआ। की तैनूं इशारा दिता मुहम्मद वाले महबूब, नूर नुराना शाह सुल्ताना की दृढ़ाईआ। केहड़ी मंज़ल हक तेरी अर्श अरूज, आलीशान कवण गया समझाईआ । मेरा इशारा बिना रमज़ तों बूझ, जगत बुद्धी नाल मिलाईआ। तैनूं सब ने किहा बसुध, बसुधे तैनूं दयां सुणाईआ। कवण कूटे तेरा होणा युद्ध, युधिष्टर दा लेखा पिछला देणा दृढ़ाईआ। उह तक लै धर्म तेरे उत्तों गया उड, निशाना नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा गृह इक दरसाईआ। नारद कहे धरनीए आदि जुगादि दी माता, ममता तों बाहर दयां जणाईआ । की ख़बर संदेशा देवे धुर दा दाता, दो जहानां वाली की रिहा दृढ़ाईआ। मैनूं आपणा खोल्ह वखा दे खाता, ख़तरे तों बाहर दयां जणाईआ। मैनूं इयों दिसदा तेरे उत्ते होई अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं कलयुग दीआं सब तों वखरीआं सुणीआं बातां, जो बातन भेव खुल्हाईआ। मैं तेरा नव सत्त दा लुटणा हाता, बचया रहिण कोए ना पाईआ। उस दा पूरा होवण वाला घाटा, घाटे विच दिसे तेरे उत्ते ख़लक खुदाईआ। अमृत रस रिहा ना गोबिन्द धार बाटा, धुर दा जाम ना कोए प्याईआ। नी तेरी सुहञ्जणी ख़ाली होई खाटा, खटीआ सिँघासण आसण पुरख अबिनाशण ना कोए लगाईआ। नारद कहे मैं मार के आया वाटा, धुरदरगाहों भज्जा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दुआर इक प्रगटाईआ। नारद कहे धरनीए तैनूं धुर दी सुणावां ख़बर, बेख़बरे दयां जणाईआ। तूं करके बैठीं सबर, धीरज धीर नाल वड्याईआ। इक अवाज़ सुणनी मधुर, धुन धुन विच्चों शनवाईआ। तेरे उत्ते पैण वाला ग़दर, गदागर होवे लोकाईआ। तेरी आसा पूरी होवे सध्धर, सदके वारी घोल घुमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला करनवाला अदल, इन्साफ़ आपणा दए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे बदल, बदला चुकावे थांउँ थाँईंआ। शरअ छुरी

किसे ना करे कत्ल, कातिल मक्तूल दा पन्ध मुकाईआ। तेरा निरगुण धार आ के वेखे वतन, बेवतने तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तूं इक इकल्ली कर लईं आपणा यतन, यथार्थ दयां समझाईआ। जिस दा सम्बल साडे तिन्न हथ्थ होणा पतण, घाट इक्को इक वखाईआ। जो तेरे उत्तों भगत सुहेले गुरु गुर चेले रत्न, अमोलक हीरे आप प्रगटाईआ। आत्म परमात्म जगत विद्या तों बाहर देवे मतन, मति मतांतर डेरा ढाहीआ । निरगुण हो के वसे घट घटण, हर घट आपणा डेरा लाईआ। उह तक लै पैग़म्बरां दा वक्त लग्गा टप्पण, अगे होर ना कोए वधाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरा लग्गा छपण, सतिजुग सति करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द सब नूं लग्गा फट्टण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। धुर दे हुक्म नाल डोरी लग्गा कटण, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। दीन दुनी दा बुरज लग्गा ढट्ठण, ढेरी ख़ाक ख़ाक मिलाईआ। तेरा लेखा मुके अट्ठ सट्ठन, जलधारा वेखणा चाँईं चाँईंआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मठन, शिवदवाल्यां मन्दिरां पन्ध मुकाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाश होवे लट लटण, दो जहानां डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा समरथण, समरथ अकथ एका एक एक अख्वाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ दरबारा सिँघ दे गृह पिण्ड वरयां ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा सोहे दुआरा इक्को बंक, बंक दुआरी हो के देणी वड्याईआ। जिथ्थे माण ताण मिले राउ रंक, ऊँच नीच ज़ात पात दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे नाम निधान दा श्री भगवान वजे डंक, नव सत्त ब्रह्म मति करे रुशनाईआ। मेरी आशा पूरी कर दे जो आशा रखी जनक, जनक सपुत्री सीआ नाल मिलाईआ। जो संदेशा दिता राम मैनूं चुक्कण लग्गयां धनुष, बिन बाहू बल समझाईआ। धरनीए तेरे उत्ते खेल होणा वार अनक, अनक कलधारी आपणा रूप बदलाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा वेखणा पुरी घनक, घनईया आपणा स्वांग वखाईआ। जिस विच रहे कोई ना शंक, सहिसा अन्दर ना कोए जणाईआ। सच प्रेम दी जन भगतां लाए तनक, खिच्ची जाए वाहो दाहीआ। मन का मणका फेरे आप मनक, जगत तसबीआं लोड़ रहे ना राईआ। तृष्ना मेटे कामनी कनक, कुदरत दा कादर होए सहाईआ। जो इशारा कीता ब्रह्मे पुत सनक, सन्त कुमार जिस दी दए गवाहीआ। जो पुरख अकाला दीन दयाला तेरी बणाए नवीं बणत, घड़न भन्नणहार हो के रंग रंगाईआ। तेरा गुलशन महके रुतड़ी होवे बसन्त, पत्त टहणी फल फुल गुरमुख गुरसिख

सोहणे बूटे लाईआ। मालक बण के धुर दा कन्त, कन्तूहल हो के वेख वखाईआ। बिना भगतीउँ बणा के भगत सन्त, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। देवे माण वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपणा भेव खुल्हाए अगणत, महिमा कथ सके ना राईआ। इक्को नाम कलमा देवे मंत, मंतव तेरा हल कराईआ। तूं धुर दा ढोला गाउणा छंत, सोहँ सति सच पढ़ाईआ। तेरे उत्तों गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनीए तेरा लहिणा देणा पूरब पुराणा, चार जुग दे शास्त्र कहिण किछ ना पाईआ। तेरा मालक स्वामी ठाकर इक भगवाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस चरण कवल तैनूं बख्श्या अगम्म टिकाणा, आदि जुगादि दिता टिकाईआ। तूं उसे दा ढोला गीत गाणा, गुण गहर गम्भीर सुणाईआ। जो तेरा लहिणा देणा लेखा जाणे जाणी जाणा, जानणहार इक हो जाईआ। उह तेरे उत्ते कमलीए जोत सरूपी पहर बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस तख्तों लाहया राजा राणा, रईयत आपणा हुक्म वरताईआ। उह शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। उस दा सतिगुर शब्द दए फ़रमाना, फ़ुरनयां बाहर सुणाईआ। उह वाली बण के दो जहानां, जहालत तेरे उत्तों दए मिटाईआ। सति दा सच करे प्रधाना, प्रधानगी आपणा हुक्म समझाईआ। जन भगतां देवे ज्ञाना, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। चरण प्रीत बख्श के दाना, वस्त अतोल अतुल झोली दए टिकाईआ। तूं उस दा मन्नणा भाना, जिस दे भाणे विच सद समाईआ। जिस कलयुग अन्तिम नव सत्त करना वैराना, वैरी घर घर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त खेले खेल महाना, जुगा जुगन्त आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड तरनतारन ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते मार के वेख लै फेरी, नव सत्त आपणा फेरा पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होवे कूड़ अन्धेरी, फल फुल्ल पत्त टहणी सति धर्म दे वखाईआ। मोह विकारा जगत मैनूं रिहा घेरी, घिरना विच मेरी दुहाईआ। मैं आदि जुगादि मालक स्वामी तेरी, तुध बिन इष्ट ना कोए मनाईआ। किसे अवतार पैग़म्बर गुरु दी बणी नहीं चेरी, सिर सर ना किसे निवाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी बैठी रही नाल दलेरी, हौसला हिम्मत संग बणाईआ। मेहरवाना मेरे उत्ते करीं आपणी मेहरी, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। कलयुग अन्त करीं ना देरी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक लै आपणी धार, धवल हो के दयां सुणाईआ । निगाह मार लै विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। नव सत्त रिहा ना कोई धर्म दुआर, दुआरका वासी नज़र कोए ना आईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ार विच कुरलाईआ। तूं मेरे मालक मेरी पाउणी सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। तैनूं सब ने मन्नया कलि कल्की अवतार, निहकलंक तेरी वड्याईआ। अमाम अमामा नूर कर उज्यार, जोती जाता हो के डगमगाईआ। मैं तेरी सदा सदा सद सेवादार, बरखुरदार हो के सेव कमाईआ। तूं बख्शणहारा एकँकार, इक इकल्ला धुरदरगाहीआ। मेरी बेनन्ती सुण पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मेरे उत्ते रहिण ना देणा अन्ध अँधयार, कूड़ कुड़यारा देणा गुआईआ। मैं मंगती तेरे दर भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। सति सच वस्त देणी डार, करते कीमत कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोए सिक्दार, शहिनशाह सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ।

८६३
२४

८६३
२४

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ तरिपत सिँघ दे गृह पिण्ड पंडोरी ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी नव नव चार दी आशा कर दे तृप्त, तृखा तृष्ना जगत जहान रहिण ना पाईआ। आदि जुगादी शब्दी धार वेख लै लिख्त, निरगुण दाते पुरख बिधाते आपणा डेरा लाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना लेखा तक लै आपणी सृष्ट, दीन दुनी जगत जहान नौजवान वेख वखाईआ। तन वजूद अन्तर निरंतर तक लै दृष्ट, नव सत्त ब्रह्म मति ध्यान लगाईआ। कलयुग कुड़यार विच संसार सर्ब कीता भृष्ट, भावना सति रहिण कोए ना पाईआ। उह लहिणा देणा पूरा कर दे जो राम इशारा दे के गया गुरु वशिष्ट, जगत विषयां तों बाहर बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू पूरब वेख लै मेरा लेखा, चार जुग दे शास्त्रां नाल मिलाईआ। मेरे अन्तर निरंतर रिहा नहीं कोई भुलेखा, भाण्डा भरम भउ दिता भनाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान अलखणा अलेखा, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म दी तक लै रेखा, ऋषीआं मुनीआं अन्दर खोज खुजाईआ। शरअ दी धार तक लै मुलां शेखां, मुसायकां अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। मैनूं सुणा दे आपणा धुर संदेशा, धुर दे मालक हुक्म जणाईआ। तेरा लेखा मुक जाए कलयुग क्रिया कूड़ कलेशा, कलकातीआं करनी आप सफ़ाईआ। तूं मेहरवान महबूब

नर नरेशा, निराकार निरँकार अगम्म अथाहीआ। आ के वेख लै धरनी वाले परदेसा, परदेसी हो के फेरा पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणा अवलड़ा रखीं भेसा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जो संदेशा दे के गया सतिगुर गोबिन्द दस दस्मेशा, दहि दिशा दा भेव देणा चुकाईआ । तूं आदि अनादी जुग जुगादी रहे हमेशा, हम साजण नूर अलाहीआ। जुग बदलणा साहिब स्वामी तेरा पेशा, पेशीनगोईआं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे मेरे मालक कन्त कन्तूहल, स्वामी अन्तरजामी तेरी वड वड्याईआ। धर्म दी धार मेरे उत्ते बख्श अगम्मा असूल, असल वसल यार देणा चाँईं चाँईंआ। मैं निरगुण दाते पुरख बिधाते तेरे चरण कवल दी लावां धूल, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना मेरी बख्शणी भूल, अभुल अतुल तेरी वड वड्याईआ। भगत उधारना तेरा आदि आदि दा असूल, सन्तां देवें माण वड्याईआ। तूं मेहरवान महबूब तेरा हुक्मनामा माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरे उत्ते तेरे धर्म दा पंघूड़ा हरिजन लैण झूल, झूला आपणा नाम जणाईआ। धरनी कहे मैं तेरे चरण कवल आपणी श्रधा चढ़ावां फूल, कवलां विच कवल नैण तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा गृह मन्दिर कर सुहञ्जणा, चार कुण्ट दे वड्याईआ। मेरे आदि अन्त दे सज्जणा, जुग जुगादी तेरी ओट तकाईआ। प्रेम प्यार दा दे दे मजना, बिन धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मेरे धुर दे गोपाल मूर्त मदना, मधुसूदन तेरा दर्शन पाईआ। मैनूं इक्को चाढ़ दे रंगणा, आदि जुगादि उतर कदे ना जाईआ। मेरे पुरख अकाले मैं इक्को दुआरा तेरा मंगणा, दूजा गृह ना वेखण पाईआ। हक महबूब हो के मैनूं दे अनन्दना, महबूब आपणा भेव चुकाईआ। लेखे ला लै मेरे उत्तों आहला अदना, शाह हकीर इक्को घर बहाईआ। तेरे नाम निधान दा श्री भगवान वजे नदना, अनादी धुन कर शनवाईआ। जोती जाते तेरा इक्को दीपक निरगुण धार जगणा, बिन तेल बाती कमलापाती डगमगाईआ। मेरा पवित्र कर दे तन माटी ख़ाक बदना, धूड़ी आपणे चरण छुहाईआ। नूर नुराने अलाही रब्बना, यामबीन तेरी ओट तकाईआ। तूं खोजयां किसे नहीं लभणा, भाल्यां हथ्थ किछ ना आईआ। बेनन्ती कर के मेरे परवरदिगार तैनूं सद्दणा, सद्दा देवां चाँईं चाँईंआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ कुड़यारा आ के कढणा, पंच विकार कुकर्म दा डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचा तेरे हुक्म नाल लग्गणा, धरनी कहे मेरे उत्ते धर्म दी धार दे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा पल्लू कदे ना छडणा, कन्नी गंढु ना कोए छुडाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे किरपा कर मेरे जगदीशे, जगदीशवर ईश्वर तेरी आस रखाईआ। मेरे उत्ते निगाह मार लै निरगुण धार बीस इकीसे, एकँकार परवरदिगार आपणा ध्यान लगाईआ। शाहो भूप मैनूं इक सुणा दे हदीसे, हज़रतां तों बाहर कर शनवाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरे पीसण पीसे, नित नवित सेव कमाईआ। मैं वेखणा चाहुंदी इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीसे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी मालक, ठाकर स्वामी तेरी ओट तकाईआ। निगाह मार लै आपणी विच ख़लक ख़ालक, मख़लूक वेखणी चाँईं चाँईंआ। तुध बिन दीन दुनी रिहा कोई ना पालक, प्रितपालक नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर शब्दी धार तक लै अगम्मे बालक, मेहरवान हो के ध्यान लगाईआ। मैनूं ऐउँ दिसदा तेरा आउणा होवे अचानक, अचनचेत आपणा फेरा पाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा समां तक भयानक, भय भीत हो के रही सुणाईआ। मैं निमाणी बुध्धहीण अन्जाणत, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले साहिब, सच सुल्तान तेरी वड्याईआ। निगाह मार लै सति धर्म होया ग़ाइब, चार कुण्ट नज़र कोए ना आईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना तेरा सब दे नाल अहिद, अहिदनामे वेखणे थांउँ थाँईंआ। तूं मालक ख़ालक इक्को वाहिद, लाशरीक नूर अलाहीआ। मेरे उत्ते हुक्म वरतणा जाइज़, नजाइज़ मंग ना कोए मंगाईआ। सति धर्म कर राइज, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम मैं वेखणा चाहुंदी तेरा नताइज, नतीजा ख़ुशीआं नाल देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर इक प्रगटाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आशा कर दे पूरी, पूरन ब्रह्म ब्रह्म समझाईआ। तेरे नाम दी मेरे उत्ते होए मशहूरी, मशवरा सतिगुर शब्द रखाईआ। सब दे अन्दर दे दे सच सरूरी, सरोवर इक्को ताल नुहाईआ। कूड़ी क्रिया कर दे दूरी, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मैं तकणा चाहुंदी तेरा इक्को अगम्मा चन्द नूरी, नूर नुराने देणा चमकाईआ। मैं मांगत हो के खड़ी दर हज़ूरी, हज़रतां दे मालक तेरे अगे झोली डाहीआ। मेरे उत्तों क्रिया मेट दे कूड़ी, कूड़ कुटम्ब देणा गुआईआ। दरे दरबार बख़्शणी चरण धूरी, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। उह आशा वेख लै मूसा वाली कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर की जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा रिहा कोई ना सका, मीत साजण नज़र कोए ना आईआ। तूं इक्को वाहिद नूर अलाही यका, यके बाद दीगरे

आपणा खेल खिलाईआ। तेरा सब दे नाल वायदा पक्का, कच्ची गंढु ना कोए जणाईआ। उह संदेश याद कर लै जो मुहम्मद दिता विच मक्का, काअब्यां बाहर असमाईद नाल मिलाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना अन्तिम देवीं मूल ना धक्का, फड़ बाहों ना बाहर धकाईआ। तुध बिन मेरी कीमत पए ना टका, कौडीआं जगत विकाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्तों शरअ दा मेट दे रट्टा, झगड़ा मानव ज़ात ना कोए जणाईआ। उह वेख लै मेरे कोल नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा पटा, जिस दा हरफ़ हरूफ़ सके ना कोए बदलाईआ। उत्ते सतिगुर शब्द दा अगम्मा ठप्पा, मोहर नेत्र लोचन नैण ना कोए जणाईआ। जिस दे विच्चों नज़री आउंदा इक्को पप्पा, पतिपरमेश्वर जिस नूं दए वड्याईआ। मेरा तेरे नाल अगम्मी मता, मति मतांतरां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे धर्म दी धार मेरी सता, सति सतिवादी देणी माण वड्याईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे मालक दो जहानां ज़बरू, ज़बरदस्त उदै असत तेरी सरनाईआ। मेरे आदि जुगादि जुग चौकड़ी दे गभरू, नौजवान श्री भगवान तेरी बेपरवाहीआ। मेरी आसा मनसा तक लै सध्धरू, सदके वारी घोल घुमाईआ। तुध बिन मेरा रिहा कोई ना कदरू, कुदरत दे कादर देणी वड्याईआ। मेरी इज्ज़त माण रुल गई आबरू, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख आदि जुगादी शक्ती शाली, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। मैं नित नवित तेरी घाल घाली, घायल हो के सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी तेरी बणी रही पुत्तरी बाली, नढ्ढी हो के मंग मंगाईआ। मेरे साहिब सुल्ताना मेरी झोली वेख लै ख़ाली, धर्म दी वस्त रहिण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी होई काली, कलयुग आपणी कल वरताईआ। एस वक्त मेरी सुरत संभालीं, सम्बल दे मालक दया कमाईआ। मेरे उत्ते जगत गुरु रहे कोई ना जाहली, जागरत जोत इक्को कर रुशनाईआ। मैं तेरे नाम बिन होई कंगाली, जग शाह वस्त सके ना कोए वरताईआ। उह लेखा तक लै जो राम दी धार लहिणा चुकाया बाली, बलधारी तेरी वड वड्याईआ। मेरी फल लगा दे सति सच दी डाली, पत्त टहणी दे महकाईआ। मैं तेरे दर होई सवाली, मांगत हो के मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी लँघ गए कीती मूल ना काहली, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे दर देणी वड्याईआ। धरनी

कहे प्रभू मेरा ख़ाली भण्डारा कर भरपूर, ऊणता नज़र कोए ना आईआ। मैं मांगत खड़ी हज़ूर, दर ठांडे सीस निवाईआ। मेरा लहिणा दे ज़रूर, ज़रूरत पिछली नाल रलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ ग़रूर, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मन मनसा मेट कूर, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जगत वासना ना रहे फ़तूर, फ़तवा देणा थांउँ थाँईंआ। इक्को तेरा नाम कलमा मेरे उत्ते होए मशहूर, मशवरा सतिगुर शब्द जणाईआ। तूं आदि जुगादी जल्वागर नूरो नूर, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि , आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं नित नवित तेरी मज़दूर, मज़दूरी विच तेरी सेव कमाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी पत आएयों रखण, रखशिश रख्या करनी थांउँ थाँईंआ। बिन नेत्र निगाह मार लै उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण, चार कुण्ट बैकुण्ठ निवासी ध्यान लगाईआ। धर्म दी धार एकँकार मेरे उत्तों होई सक्खण, सति वस्त दस्त हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मैं आपणा दुखड़ा आई दस्सण, दहि दिशा दा लेखा दयां जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दी मेरे उत्ते होई अन्धेरी मस्सण, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं बिरहों वैरागण हो के आई नस्सण, भज्जी वाहो दाहीआ। निगाह मार लै दीप विच लखण, करौच पुष्कर आपणा भेव खुल्हाईआ। सान सलमल किस बिध होवे हत्तण, जम्बू करनी की कमाईआ। कुशा तेरे ते केहड़ी धार होवे लट लटण, जोती जाते देणी दृढ़ाईआ। तूं वासी घट घटण, लख चुरासी रिहा समाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरा धर्म दी धार वेखीं पतन, पत्रका पिछली फोल फुलाईआ। तेरा धर्म मेरे उत्तों होया बेवतन, वतनां दे मालक सच रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मैं कर कर थक्की यतन, यथार्थ मेरा लेखा कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं आ के वखा दे झलक, झल्ली कोझी कमली तेरी ओट तकाईआ। तूं मालक वाली दो जहानां ख़लक, मख़लूक तकणी थांउँ थाँईंआ। निगाह मार लै उत्तों फ़लक, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। मेरी दुक्खां विच निकले कलक, नेत्रां रो रो दयां दुहाईआ। सुख चैन किसे आवे घड़ी ना पलक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धीरज धीर ना कोए धराईआ। उह निगाह मार लै जो संदेशा दे के गया जनक, जनक सपुत्री सीआ नाल मिलाईआ। मेरे अन्तष्करन विच्चों मेट दे शंक, सहिसा अन्तर रहे ना राईआ। मेरा सुहा दे अगम्मा बंक, बंक दुआरी हो के फेरा पाईआ। मैं निर्धन

तेरी आशा विच बैठी रहां अटंक, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी मेट दे हवस, तृष्ना कूड़ जगत मिटाईआ। मेहरवान हो के कर तरस, त्रैगुण अतीते आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधाना इक्को मेघ बरस, नव सत्त मेरी अग्नी दे बुझाईआ। मेरा लेखे ला लै खुशीआं वाला बरस, शहिनशाह शाह सुल्तान दर तेरे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव अभेद खुल्हाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर स्वामी माई बाप, पिता पुरख अकाल तेरी ओट तकाईआ। मेरे उत्तों मेट दे कलयुग कूड़ा पाप, कुकर्म दा लेखा दे मुकाईआ। जगत जीवां जंतां रहे ना कोए संताप, सति सतिवादी होणा आप सहाईआ। नव सत्त दी मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन मज़्ब ना वंड वंडाईआ। इक्को नाम कलमा दे सफ़ात, सफ़ा हस्ती कूड़ क्रिया दे चुकाईआ। तेरे गुण निधान दी कोई अक्खरां नाल जाण ना सके लुगात, हरफ़ हरूफ़ ना कोए चतुराईआ। मेरे कोल तेरा संदेशा अगम्मी बिन अक्खरां वाली पात, पतिपरमेश्वर आपणे विच टिकाईआ। जिस विच लेखा कलयुग अन्त तेरे कन्ढे आए घाट, दो

जहानां पतण चरणां हेठ दबाईआ । तूं पन्ध मार के आ जा वाट, निरगुण दाते धुरदरगाहीआ। मेरी सुहञ्जणी कर दे खाट, सच सिँघासण आसण लाईआ। मैं तेरे गुण गावां बण के भाट, भटनागर तेरी सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उत्ते ईसा मूसा वाली पूरी कर दे टाक, बिन टंग रसना जिह्वा जो हरफ़ां हरूफ़ जणाईआ।
८६८
२४

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ दारा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे मालक गुणी गहीर, गहर गवर तेरा ध्यान लगाईआ। मेरे सिर तों धर्म दा लथ्था चीर, ओढण उपर ना कोए टिकाईआ। सहायता करे ना कोई अवतार पैग़म्बर पीर, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। मेहरवाना मेरे नेत्र वगे नीर, नैणां छहबर लाईआ। कलयुग क्रिया मेरी बदल दिती तकदीर, तक्ब्बर विच ख़लक खुदाईआ। नव सत्त शरअ ज़ंजीर, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। झगड़ा प्या शाह हकीर, नीच ऊँच करे लड़ाईआ। धर्म दा रिहा ना कोई वीर, भैणां संग ना कोए निभाईआ। मात पित रस रिहा किसे ना सीर, पिता पूत रहे कुरलाईआ। मेरा अन्तष्करन होया दिलगीर, चिन्ता विच मेरी दुहाईआ। मेरे उत्तों कट दे आ के भीर, दुक्खां दर्दां डेरा ढाहीआ। तेरे कोल सर्ब तकदीर, तरीका आपणा लैणा

वरताईआ। मैनूं संदेशा दे के गया भगतां दा भगत कबीर, काअब्यां बाहर कर शनवाईआ। धरनीए तेरे उत्ते पुरख अकाला फेर नवीं करे तामीर, पूरब लेखा रहे ना राईआ। शब्दी खण्डा लै शमशीर, शरअ दे लहिणे दए मुकाईआ। झगड़ा रहे ना गाँ ख़ंजीर, पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। इक्को रंग रंगाए हस्त कीर, कीट कीटां दए वड्याईआ। मानव ज़ाती अन्दरों बदल दए ज़मीर, अन्तष्करन करे सफ़ाईआ। अमृत दे के ठंडा सीर, अग्नी तत तत बुझाईआ। शब्द अनादी देवे धीर, धीरज धर्म धार जणाईआ। जोती जाता आए घत वहीर, बिन कदमां कदम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरे गुरु गुरु गुरदेवा, देव देवा तेरी वड्याईआ। तूं साहिब अलख अभेवा, अगोचर अगम्म भेव खुल्हाईआ। की सिफ्त करे तेरी कोई जिह्वा, कथनी कथ ना सके राईआ। तूं आदि जुगादि सदा निहकेवा, सचखण्ड निवासी नूर अलाहीआ। मेरे मस्तक ला दे अगम्मी थेवा, कौस्तक मणीआ लोड़ रहे ना राईआ। तूं ख़सम स्वामी मेरा दूजा करां ना कोए करेवा, करनी करते तेरी आस रखाईआ। मैनूं अमृत फल लगा दे मेवा, अंमिओं रस आपणा आप चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेरी कबूल कर लै सेवा, सेवक याचक हो के मंग मंगाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ अज़ैब कौर दे गृह पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे तों धार मुक गई धर्म दी, सति सच तेरे रंग ना कोए समाईआ। पंज तत वजूद काया माटी वस्त नज़र ना आए किसे ब्रह्म दी, पारब्रह्म तेरे रंग ना कोए समाईआ। सृष्टी वणजारी हो गई कूड़ कुड़यारे कर्म दी, माया ममता मोह विच हल्काईआ। सब दी दृष्टी हो गई चम्म दी, चम्म दृष्टी विच ख़लक खुदाईआ। मेरे उत्ते घड़ी तक लै ग़म दी, ग़मखार हो के वेख वखाईआ। चुगली सुण लै क्रिया कूड़ वाले कन्न दी, शब्द अनादी धुन ना कोए शनवाईआ। रोशनी रही ना तेरे नाम कलमे चन्न दी, कलयुग अन्ध अज्ञान अन्धेरा गया छाईआ। वासना वध गई मानस मानव मानुख मन दी, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते होया कहर, दीन दुनी रही कुरलाईआ। किरपा निधान हो के कर दे मेहर, मेहरवान महिबान आपणी दया कमाईआ। मानव ज़ाती तेरे नालों बणे कोई ना ग़ैर, आत्म परमात्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विख अन्दरों कढ दे ज़हिर, ज़ाहर ज़हूर आपणा नूर कर रुशनाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना सदी चौधवीं

अन्त लाईं ना देर, बीस बीसे हरि जगदीसे तेरी ओट तकाईआ। नव सत्त मेरे उत्तों मेट दे मन मनसा वाला हेर फेर, फ़ुरने मन दे बन्द कराईआ। एका रंग रंगा दे गुरु गुर चेर, चेला गुर इक्को रंग समाईआ। पंच विकारा ढाह के कर दे ढेर, सति सच तन वजूद दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू निरगुण धार खोल्ह दे भेव, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। तूं मालक ख़ालक सचखण्ड निवासी निहकेव, निहचल तेरी वजे वधाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला अलख अभेव, अगोचर तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। सति सच दा अमृत रस दे दे मेव, बिन रसना रस चखाईआ। तेरी सिफ्त कर सके ना कोई रसना जिह्वा, बुद्धी मति ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मैं मंगां तेरा इक दीदारा, बिन नेत्र लोचन नैणां दर्शन पाईआ। तेरा वेखां सतिगुर शब्द शब्द दुलारा, दूलहा धुर दा सोभा पाईआ। जोती धार तकां तेई अवतारा, अवतर तेरे संग समाईआ। पैग़म्बरां वेखां नूर उज्यारा, मूसा ईसा मुहम्मद संग लैणे मिलाईआ। नानक गोबिन्द दहि दिशा तेरी धार सुणां जैकारा, दूजी आवाज़ ना कोए दृढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल ते आ के पा सारा, सार्थी तेरी आस रखाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया मेट अँधयारा, नव सत्त कर रुशनाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मेरी तेरे चरण कवल उपर धवल निमस्कारा, निव निव लागां पाईआ। मैं बसुधा हो के रोवां ज़ारो ज़ारा, दर तेरे आस रखाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तैनूं सब ने किहा कलि कल्की अवतारा, अमाम अमामा तेरा नाम सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे निहकलंका भूप, भूपत भूप तेरी सरनाईआ। मैं तेरा तकणा चाहुंदी सति सरूप, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आईआ। तेरा शब्द दुलारा एकँकारा इक्को होवे दूत, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना फिरे वाहो दाहीआ। मेरे नव सत्त वेखे चारे कुण्टां कूच, कोना कोना फोल फुलाईआ। मेरे कोल तेरे हुक्म दा आदि जुगादी अगम्म सबूत, जिस दी जगत अक्खर कर सकण ना मूल पढ़ाईआ। मैं चाहुंदी तूं हर वक्त मेरे उत्ते दिसें मौजूद, मौजूदा हो के आपणा भेव देणा चुकाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह वाली अर्श अरूज, आलीजाह तेरा इक्को नूर नज़री आईआ। मेरे मेहरवाना मेरे तों शरअ दी मेट हदूद, दीनां मज़्बां इक्को रंग रंगाईआ। मानव ज़ाती भाग लगा दे तन वजूद, काची माटी आपणा भेव चुकाईआ। इक्को मंज़ल हक दस्स मकसूद, दरगाह साची सच समझाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया कर नेस्तो नाबूद, जुग चौकड़ी रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म सब नूं दे सूझ, बुध बिबेक दे कराईआ। मैं तेरे दर ते निरगुण

धार एकँकार बैठी नैण मूंद, लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैनूं अमृत स्वांती बख्श दे बूँद, कलयुग कूड़ी अग्न ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे नेत्र निरगुण धार हंझू आपे पूंझ, अथ्थर सथ्थर दर तेरे ते रही वहाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ फिनो दे गृह पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे ख़ाली भर भण्डार, भावनी पूरब पूर कराईआ। वस्त अगम्मी निरगुण डार, अमोल आपणी आप वरताईआ। तूं देवणहार करतार, कुदरत कादर अगम्म अथाहीआ। मैं मांगत बणी भिखार, भिच्छया देणी वरताईआ। बिन नैणां निगाह मार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सति दा रिहा ना कोए उज्यार, चन्द नूर ना कोए रुशनाईआ। कूड़ दा होया धूंआँधार, धवल हो के दयां सुणाईआ। माया ममता करे ख्वार, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मेरे उत्ते जीवां जंतां तेरे नाम दा कीता वपार, कलयुग वणज वणज वखाईआ । सति दी वजे ना कोए सितार, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। जिधर तक्कां उधर पंच विकार, भज्जे वाहो दाहीआ । तेरा प्रेम हर हिरदिउँ होया फ़रार, तन वजूदां नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा आदि जुगादी परवरदिगार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। निरगुण दाते धुर दे यार, मित्रा मेरा हो सहाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, बिन नेत्र नीर वहाईआ। मेरी साहिब सुणी पुकार, दूर दुराडे आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त धरनी कहे मेरी पावीं सार, महासाथीं हो के दया कमाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे प्रभ कन्त सुहागण, दूलहो दूलह तेरी वड्याईआ। मैं तेरे प्यार दी होई वैरागण, प्रेम विच रही कुरलाईआ। मेरे कर दे वड वड भागण, भगवान हो के हो सहाईआ। मेरे तों कूड़ी क्रिया मेट दे दाग़ण, दुरमति मैल धुआईआ। मानस मानव मानुख तेरे मेरे उत्तों जागण, आलस निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ । मेरे भगवन्त धर्म दी धार साज दे साजण, साजण साज तेरी आस रखाईआ। मेरा कलयुग अन्त संवार काजण, करते पुरख दे वड्याईआ। तूं शाहो भूप राज राजन, शहिनशाह नूर अलाहीआ। मेरी बेनन्ती सुण आवाज़ण, अणसुणत दयां सुणाईआ। मैं दिवस रैण तैनूं लग्गी आराधण, दूजा इष्ट ना

कोए मनाईआ। तूं मेरा स्वार्थ आपे आप आपे साधन, सतिगुर तेरी नाम वड्याईआ। मैं होवां वड वडभागण, भगवन सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। दीन दुनी हँस बणा दे कागण, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ सर्ब त्यागण, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणा समाजण, समग्री सच वरताईआ। तूं सब दा ग़रीब निवाज़ण, ग़रीब निमाणयां वेख वखाईआ। खेल खिला दे देस माझण, मधुर धुन कर शनवाईआ। तेरा लहिणा देणा दो दो आबण, दो जहान दे वाली तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे ते निगाह मार लै मक्का काअबण, मकबरयां फोल फुलाईआ। तूं मालक बोध अगाधण, बुद्धी तों परे तेरी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे धर्म दा तेरा चरण होवे प्यार, मुहब्बत इक्को इक रखाईआ। तूं ठाकर स्वामी रहिणा सद मददगार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं मांगत हो के मंगां मंग भिखार, दरवेशण हो के झोली डाहीआ। तूं देवणहार करतार, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। मेरे उत्ते जुग चौकड़ी केते लँघ गए विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे तके सेवादार, संसारी भण्डारी सँघारी हो के सेव कमाईआ। तेरे नाम संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। भविख्तां विच कहि के गए कलयुग अन्त आए कलि कल्की अवतार, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले मेरी पैज संवार, सिर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं तेरे चरण कवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। तेरी धूड़ी लावां छार, टिक्का जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब मेरी झोली देणा डार, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। मैं अर्ज गुज़ारश तेरे अगे रही गुज़ार, बेनन्ती कहि के मंग मंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरे उत्ते रहे ना धूंआँधार, कूड़ कुड़यार दा डेरा ढाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरे नाम दा होए जैकार, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी साहिब इक सिक्दार, शहिनशाह इक्को इक नज़री आईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड माल चक्क ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे नूरे नविंन नाज़ख़से वज़ू तानुख़तो ज़वां कज़ीउल ग़मी नज़ूमे ज़वा उलज़ू चख़मी मेरे ख़ुदा नज़ल ज़विन ज़मुंदे मुहम्मद रज़ी ख़सी कबू ज़वी मावलाए सोंहुरे मफ़ज़ मेरे अलाह मुर्शदे दुआ ज़मीने ख़ाकी कलअल लवी ज़मूतो

८७२
२४

जगन अर्शे निज़ा फ़र्शे दुआ दो जहां मालक तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी राम, रम्ईआ तेरी आस तकाईआ। मेरे ततां तों बाहर काहन, काहन काहनां दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे पैग़म्बरां दे अमाम, नूरे नुरान तेरा तकां नूर अलाहीआ। मेरे गुरु गुरदेवा तेरा वेखां खेल महान, दरगाह साची भेव चुकाईआ। मेरी मंज़ल कर आसान, हकीकत दे मालक होणा सहाईआ। बिन अक्खरां दे ज्ञान, धुर दा शब्द शब्द शनवाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। तेरा सतिगुर शब्द बलवान, बलधारी बेपरवाहीआ। मैं बेनन्ती करदी बाली बुद्ध अंञाण, मेरी चली ना कोई चतुराईआ। तूं मालक ख़ालक वाली दो जहान, ज़िमीं ज़मां असमां तेरी ओट तकाईआ। तूं मेरा परम पुरख मेहरवां महिबान, बीदो तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ । धरनी कहे भगवन मेरी कर दे दारी, दीन दयाल दया कमाईआ। मैं मंगणहारी तेरी भिखारी, भिखक झोली देणी भराईआ। तूं निरगुण नूर जोत उज्यारी, मैं मिट्टी ख़ाक नज़री आईआ। जुग चौकड़ी तेरी चाकरी करदी रही विच संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी मेरी देण गवाहीआ। मेरा लहिणा देणा नाल तेई अवतारी, चार जुग दे शास्त्र संदेशे रहे सुणाईआ। पैग़म्बरां लेखा जाणां वारो वारी, अलिफ़ ये नाल जिन्हां दिती वड्याईआ। गुरु गुरदेव तके मीत मुरारी, साजण मीत जो अख्वाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले तेरे चरण कवल जावां बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दारी, दो जहानां हुक्म वरताईआ। मेहरवाना नौजवाना मेरी सुण पुकारी, पुनह पुनह कहि के सीस निवाईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल कलयुग अन्तिम होई दुख्यारी, दुखी हो के रही सुणाईआ। मेहरवाना मेरी पा सारी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरे उत्ते क्रिया रहिण ना देवें कलयुग कुड़यारी, कुकर्म दा लेखा दे मुकाईआ। सतिजुग सच धर्म कर उज्यारी, सच सुच नाल वड्याईआ। मैं तेरी आदि जुगादि पनहारी, पनघट बैठी वेख वखाईआ। तेरा लहिणा देणा निरगुण सरगुण धार दोबारी, दो जहानां पर्दा आप उठाईआ। मैं तेरे चरण धूड़ लावां मस्तक छारी, बिन टिक्के ख़ाक रमाईआ। धरनी कहे मेरे भगवन्त धुर दे कन्त मेरी पैज संवारी, कलयुग देवीं माण वड्याईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी बणी रही पुजारी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं कलि कल्की निहकलंक जोत शब्द दी धार अगम्म अवतारी, अमाम अमामा धुर दे रामा तेरे हथ्थ वड्याईआ।

धरनी कहे मेरे पुरख अकाल अगम्मी नूरा, नूर नुराने शाह सुल्ताने दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द योद्धा भेज अगम्मी सूरा, सो पुरख निरञ्जण मेरा हो सहाईआ। जिस दा नाद अगम्मी दो जहानां सुणी जाए तूरा, तुरीआ दा लेखा अवर रहे ना राईआ। सो सर्ब कला होए भरपूरा, एथे ओथे दो जहान वजे वधाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया करे दूरा, सति धर्म दए प्रगटाईआ। तेरी नाम खुमारी मस्ती दए सरूरा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। इक्को तेरा नाम करे मशहूरा, इक्को ढोला सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा सतिगुर शब्द होए बलवान, दो जहानां वेख वखाईआ। जिस दा हुक्म वरते दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका नाम दृढ़ाईआ। जो धर्म दा धर्म झुलाए निशान, नौ खण्ड पृथ्मी दए वखाईआ। जिस नूं सत्त दीप करन परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों मेटे शरअ शैतान, माया ममता मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। मानस मानव मानुख सारे तेरा इक्को ढोला गाण, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। तूं आदि जुगादी शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा सतिगुर शब्द मेरी पूरी करे मनसा, ममता जगत रहे ना राईआ। गुरमुख सन्त बणाए हँसा, काग बुद्धी दए बदलाईआ। सति सच धर्म दी चाल बणाए सहँसा, अगणत आपणा हुक्म वरताईआ। आत्म परमात्म तेरा होवे बंसा, यद यदी यदप इक्को नज़री आईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को बणाए संगता, इक्को घर दए वड्याईआ। बुद्धी तों परे बोध अगाधी होवे पंडता, निरअक्खर करे पढ़ाईआ। झगड़ा मेटे मनुआ मन का, मणका दए भुआईआ। लेखा रहे ना तन वजूद शरीर तन का, माटी ख़ाक सोभा पाईआ। भेव खुल्ावे निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पर्दा लाहवे ब्रह्म का, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। मेरा लेखा मेटे दीन दुनी विच ग़म का, ग़मखार हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा सतिगुर शब्द होवे मेहरवान, मेहर नज़र नाल तराईआ। जिस दी आशा रख के गए रम्ईआ राम, काहन घनईया हो के ओट तकाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा अमाम, रसूलां दा रसूल नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म संदेशा धुर दा मन्त्र सतिनाम, सति सति दा डंका दए वजाईआ। जिस दा फ़तिह नगारा एथे ओथे सारे सुणन बिना कान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश

पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान करे शनवाईआ। उह सतिगुर पूरा शब्दी शब्द नौजवान, बृद्ध बाल रूप ना कोए वटाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ा कढ्ढे बाहर शैतान, सतिजुग सति धर्म दए प्रगटाईआ। इक्को इष्ट पुरख अकाल तेरा मानव सर्ब मनाण, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। तेरा धर्म दा धर्म झुल्ले निशान, गोबिन्द मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। मेरी बेनन्ती दरगाह साची सचखण्ड पुरख अकाले दीन दयाले करनी परवान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार दी धार विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी जोती जाते पुरख बिधाते मेरा लहिणा देणा पूरा करना विच जहान, जहालत कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ नरायण सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे मालक ख़ालक कुदरत कादर करीम, बेऐब ग़ैब जल्वागर नूर अलाहीआ। मेहरवाना नौजवाना मेरे उत्ते तक लै नाम कलम्यां वाली तकसीम, दीनां मज़्हबां हद्दां ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर सतिगुर शब्द नाल कर तरमीम, दरुस्ती दो जहान दे मालक देणी कराईआ। तूं सचखण्ड निवासी शहिनशाह आलीज़ाह अज़ीम, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। तेरा लहिणा देणा मेरे नाल कदीम, कुदरत दे कादर वेखणा चाँईं चाँईंआ। बेशक तेरे अवतार पैग़म्बर गुरु शब्द शब्द शब्द धार मुनीम, लेखा करन थांउँ थाँईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी कुदरत कादरा, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। दो जहानां नौजवाना वड बहादरा, बेअन्त बेऐब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्टी दीन दुनी दे कादरा, कुदरत दे मालक नूर अलाहीआ। मैं निमाणी धरनी जिस नूं सारे कहिंदे मादरा, मईआ कहि के खुशी बणाईआ। मेरे उत्ते कर दे सच्चा आदला, इन्साफ़ इक कमाईआ । कलयुग सतिजुग नाल कर तबादला, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। मैनूं सुणा दे अगम्मा इक्को रागला, नाद अनादी धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे मालक अगम्म अथाह महिबान, निव निव कदम बोसी विच सीस निवाईआ। मेरी सिफ्त कर ना सके ज़बान, अक्खरां विच ना कोए चतुराईआ। बिना बुद्धी तों देवण वाले ज्ञान, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ मेरे उत्तों मेट निशान, निशाना धर्म धर्म झुलाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, बिनै कहि के पुरख अकाल सीस निवाईआ। तूं निरगुण

नूर शाह सुल्तान, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। मेरे उत्ते निगाह मार लै मेरे भगवान, भगवन तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे मेरे नूर अलाह परवरदिगार, परवरश मेरी करनी चाँईं चाँईंआ। तुध बिन अवर ना कोए मददगार, सजण सखा नज़र कोए ना आईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी तल्बगार, बिन नेत्र लोचन नैणां तेरा राह तकाईआ। तूं आ के मेरी पाउणी सार, महासार्थी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं निमाणी तेरी बरखुरदार, याचक हो के सीस निवाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी पैज देणी संवार, सिर सर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तेरी चरण धूड़ी लावां छार, टिक्के मस्तक राम नाम छुहाईआ । तूं कुदरत कादर सब कुछ करनेहार, करता पुरख इक अख्वाईआ। मैं निमाणी दा लेखा मुका दे विच साल दो चार, चौथे जुग दे मालक तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर बंक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं आदि जुगादी सब दा ख़ालक, मख़लूक तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे बालक, चार जुग दे संदेशे दे के गए चाँईं चाँईंआ। तूं सब दा बणना कलयुग अन्त अन्त प्रितपालक, सिर सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना सदी चौधवीं करीं ना आलस, ग़फ्लत नजर कोए ना आईआ। मैं तेरा नूर ज़हूर तकां ख़ालस, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त मेरी कूड़ क्रिया दी लौहणी कालख, कलकातीआं लहिणा देणा देणा मुकाईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ सुखदेव सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख प्यारे मित्र, मीत मीते तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते दीन दुनी दा वेख चलित्र, मानव मानस ज़ाती ध्यान लगाईआ। तेरा सति सरूप शाहो भूप किसे नज़र ना आवे चित्र, चारे कुण्टां तकणा थांउँ थाँईंआ। उह लेखा तक लै जो इशारा दे के गया विश्वा मित्र, विश्व दा भेव खुल्हाईआ। निरगुण धारों निरवैर हो के नितर, जोती जाता डगमगाईआ। तेरा ना कोई मात ना कोई पित्र, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धार वेख लै आपणी, आप आपा वेख वखाईआ। सति धर्म रिहा ना किसे पति पत्नी, पतिपरमेश्वर तेरा भय सिर ना कोए रखाईआ। रसना पवित्र रही ना जो तेरा नाम जपनी, सति सति सति ना कोए वड्याईआ। तेरी सृष्टी मेरे उत्ते होई बेवतनी, वतनां दे मालक वेखणा चाँईं चाँईंआ। मन दी

आशा हो गई कलयुग नागणी डस्सणी, घर घर डंग लगाईआ। बिन तेरी किरपा तेरी मंज़ल किसे नहीं टपणी, टापूआं पन्ध ना कोए मुकाईआ। सच दुआर दी खोल्ह़े कोई ना हट्टणी, सच नाम ना कोए वरताईआ। तेरी वस्त अमोलक बिन तेरी किरपा किसे नहीं खटणी, खटके विच लोकाईआ। ख़ाली तक लै काया मट्टणी, तन वजूद तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। जे तेरी धार अनोखी निरगुण सरगुण धार जटनी, जटा जूट पन्ध मुकाईआ। मैं वी तेरे प्यार विच परम पुरख करवट वटदी, पासा दीन दुनी नालों बदलाईआ। तूं अन्त खेल मुकाउणी दीन मज़्ह़ब दी वट्ट दी, झगड़ा शरअ रहे ना राईआ। आह तक लै सदी चौधवीं जांदी टपदी, भज्जे वाहो दाहीआ। तेरी खेल तकणी पुरख अकाले समरथ दी, समरथ देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी महिमा आदि जुगादि अकथ दी, कथनी कथ सके ना राईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे सुण लै दुखड़े, दुखी हो के दर्दीआ दयां जणाईआ। निगाह मार लै मानस मानव मानुख उलटे रुखड़े, तन वजूदां ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीते भुखड़े, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ । भाग लग्गा किसे ना कुखड़े, मेरी चार कुण्ट दुहाईआ। उजल रिहा ना कोई मुखड़े, दुरमति मैल धोए कोई ना शाहीआ। मेरे उत्तों धर्म दे बूटे अन्तिम उखड़े, जड़ रहिण किछ ना पाईआ। विकार हँकार मानस मानव कुठड़े, तन वजूद रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साची आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तपदी बिना अग्ग, बिन काष्ट सड़ां थांउँ थाँईंआ। तेरी सरन सरनाई मूल ना सकां लग, लग मातर दे मालक वेखणा थांउँ थाँईंआ। तेरी सृष्टी मैनूं कीता तेरे नालों अलग, धार वखरी वंड वंडाईआ। मेरी विचार हो गई वांग कग, हँस रूप गई बदलाईआ। मेरी तृष्ना बगढ़ा बप, सति चोग ना कोए चुगाईआ। धीरज रिहा कोई ना तप, सति सन्तोख ना कोए धराईआ। पवित्र रही कोए ना मति, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। मेरी बिना ख़ून तों उबले रत, रत्न अमोलक हीरा मेरा वजूद रिहा ना राईआ। मैनूं विसरया तेरा जप, नाम निधान ना कोए शनवाईआ। मेरी मात रही ना पत, पतिपरमेश्वर दयां दुहाईआ। क्यों मेरे उत्ते कलयुग जीवां चुकी अत्त, नव सत्त कूड़ कुकर्म रहे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं होई जगत निमाणी हीणी, सीस ताज ना कोए

८७७
२४

टिकाईआ। मैं नेत्र होई नाबीनी, तेरा दरस मूल ना पाईआ। मेरी तृष्ना होई कमीनी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मेरी वस्त धर्म दी गई छीनी, कलयुग लुटेरा लुट्टे थांउँ थाँईंआ। नव सत्त वजे हँकारी बीनी, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। मैनूं इयों दिसदा मेरे ते झगड़ा पैणा रूसी चीनी, चार कुण्ट दा लेखा मेरे उत्ते रिहा कुरलाईआ। प्यार रहिणा नहीं किसे नर मदीनी, स्त्री पुरुष संग ना कोए निभाईआ। मैं खेल तकणा त्रैगुण माया तीनी, त्रैभवण धनी की तेरी बेपरवाहीआ। पवित्र रहिणी नहीं कोई मेरी ज़मीनी, ख़ाक उडणी थांउँ थाँईंआ। मुश्किल होणा मानस मानुख ज़िंदगी जीणी, जीवत रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा हाल हो गया ख़सता, खुल्ही मैंढी दयां दुहाईआ। पवित्र रिहा कोई ना रस्ता, रैहबर रंग ना कोए रंगाईआ। तेरा नाम कलमा टकयां नालों होया सस्ता, कलयुग हट्टो हट्ट विकाईआ। मैं चाहुंदी अन्तिम मेरे उत्तों सब दा बन्न्हू दे बसता, बस्ती आपणी लै टिकाईआ। जिधर वेखां तेरा सतिगुर शब्द होवे नसदा, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा संदेश होए तेरे भण्डारे जस दा, सिफ्तां ढोले गाईआ। नाल अवतार पैग़म्बर गुरु होवे हसदा, हस्ती तेरी इक्को नज़री आईआ। मेरा नौ खण्ड खेड़ा तेरी किरपा नाल फेर वसदा, सत्त दीप तेरा रंग तकाईआ। तूं मालक ख़ालक तेरा खेल अलखणा अलख दा, अगोचर तेरा भेव कोए ना आईआ। तुध बिन स्वामी मेरी पैज कोई ना रखदा, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अगे लेखा मुका दे मानव ज़ाती वख दा, आत्म परमात्म इक्को रंग वखाईआ। तेरा दर्शन होवे साख्यात प्रतख दा, नूर नुराने शाह सुल्ताने आपणा ज़हूर देणा वखाईआ। धरनी कहे मैं प्यार चाहुंदी इक्को तेरा परमेश्वर पति दा, पति पतिवन्ते होणा आप सहाईआ। तूं आदि जुगादी मालक सब दी मित गत दा, गति मित तेरे चरणां हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन साची वस्त मेरी झोली कोई ना घतदा, अतोट अतुट नाम ना कोए वरताईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ कर्म सिँघ, सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे धुर दे कमलापातीआ, पतिपरमेश्वर होणा आप सहाईआ। मेरे कोल तेरीआं आदि जुगादि दीआं पातीआं, बिन कागद शाही कलमां देण गवाहीआ। जिस कारन नौ खण्ड पृथ्मी तेरीआं होईआं अन्धेरीआं रातीआं, सत्त दीप सति सतिवाद नज़र कोए ना आईआ। मेरा सीना पाड़ के वेख लै छाती आ, छत्रधारी तैनूं गए भुलाईआ। अमृत रस निझर झिरने तेरी

मूल रही ना दाती आ, वस्त अमोलक काया गोलक नज़र कोए ना आईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ कुड़यारा मारे कातीआ, मोह विकारे तीर चलाईआ। चारे कुण्ट वेखे मार झातीआ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। किरपा कर दे मेरे धुर दे कमलापातीआ, पतिपरमेश्वर होणा आप सहाईआ। निरगुण धार निरवैर तेरे चरण कवल इक्को मेरा नातीआ, रिश्ता अवर ना कोए जणाईआ। निगाह मार लै लोकमातीआ, धरनी हो के तेरे अगे मंग मंगाईआ। तेरा सति सच मेरे उत्तों पा गया वफ़ातीआ, कलयुग कूड़ आपणा रंग रंगाईआ। धर्म दी रही ना कोई प्रभातीआ, तेरे नाम ना कोए समाईआ। जिधर वेखां कलयुग कूड़ कुड़यार दीआं खुल्ल्हीआं हाटीआं, मोह विकार रिहा वरताईआ। पवित्र रहीआं ना काया चाटीआं, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए रुशनाईआ। तेरी मंज़ल चढ़े कोए ना घाटीआ, सचखण्ड पुज्जण कोए ना पाईआ। तेरी सृष्टी बैठी दृष्टी अन्दर अधवाटीआ, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। सब दे तन वजूद चीथड़ वेख लै पाटीआ, लीरो लीर नज़री आईआ। आवण जावण लख चुरासी ज़ंजीरां जावण ना काटीआं, धर्म राय दा फंद ना कोए कटाईआ। मेरे उत्ते खेल कूड़ी क्रिया कीता बाज़ीगर नाटीआ, स्वांग आपणा रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा रंग अगम्म रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन तक, हकीकत दे मालक ध्यान लगाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना मेरी झोली पा दे पूरबला हक, जुग चौकड़ी लेखा पिछला रिहा ना राईआ। उह इशारा तक लै जो दे के गया ऐनुलहक, बिन रसना जिह्वा तेरा ढोला गाईआ। हज़रत ईसा रहिण ना दिता शक्क, मूसा शकवे गया मिटाईआ। मुहम्मद लकीरां कढ्ढ के नाल नक, चौदां तबकां ध्यान लगाईआ। पैग़म्बरां कीती सिफ्त तेरी अनथक, नूर अलाह तेरी वड वड्याईआ । अवतार तेरा संदेशा दे के गए यक, हरफ़ हरफ़ां नाल मिलाईआ। गुरुआं किहा अन्त धरनीए तेरा पर्दा लए ढक, ढाकनकोपत इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे पक्क, पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। उह वेख लै की इशारा देंदा सलीब दी धारा वाला कलक, वक्त वक्त विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी मेरा लेखा बिन नैणां तक, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं तेरी पुत्तरी सपुत्री शहिज़ादी, शहिनशाह आदि दी आदि इक अख्वाईआ। मेरी बेनन्ती अवर काहदी, की दयां सुणाईआ। तूं आदि जुगादि अनादी, सद तेरी ओट तकाईआ। तूं मोहण माधव माधी, मुदतां दा मालक इक अख्वाईआ।

मेरे श्री भगवाना नौजवाना मेरी किसे नाल होई ना शादी, शादिआने ना कोए वजाईआ। ना कोई मेरी मईआ ना कोई पिता ना दादा दादी, कुल नज़र कोए ना आईआ। ना मेरे सीस सुहाग दी दिसे परांदी, मींढी नज़र कोए ना आईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे गुण गांदी, तूं मेरा इक्को धुर दा माहीआ। तेरे प्यार हुक्म विच बांदी, बन्दना कहि के सीस निवाईआ। मेरी भेंट तेरे चरणां ना सोना ना चांदी, जगत माया ना कोए चढ़ाईआ। चारों कुण्ट मेरे स्वामीआं मेरे उत्ते तक लै अन्धेरा आंधी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दुनिया पशूआं ढोरां खांदी, कागां मुख रखाईआ। कूड़ कुड़यारीआं धारां हेठ नहांदी, तेरे सरोवर गए भुलाईआ। इज्जत रही ना मेरी दीन दुनिया वाली माँ दी, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। बेपरवाह मेरे उत्ते कलयुग कूड़ दी वधी आबादी, नव सत्त तकणा थांउँ थाँईंआ। मैं कलयुग अन्तिम थक्की मांदी, दर तेरे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड्याई रही ना मेरे उत्ते किसे थाँ दी, थनंतर रंग ना कोए रंगाईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ सरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरी तक ज़िंदगी ज़िंदगानी, ज़िंदा दिल हो के दयां सुणाईआ। मेरी दर्दां भरी कहाणी, कहावत जगत ना कोए जणाईआ। मेरे उत्ते तेरी सृष्टी होई बेगानी, साचे रंग ना कोए समाईआ। तेरी मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रैहबर मिलण कोए ना पाईआ। तूं किरपा कर मेरे परम पुरख असमानी, नूर नुराने धुरदरगाहीआ। तेरा कलमा भुल्लया कलामी, कायनात गई भुलाईआ। आपणा लेखा तक लै संग मुहम्मद नाल इस्लामी, इस्म आज़म ध्यान लगाईआ। तेरी शरअ दी कटे ना कोए गुलामी, गुरबत सब दे अन्दर आईआ। तेरे कलम्यां होई बदनामी, बदी विच तेरी ख़लक खुदाईआ। मंज़ल मिले ना किसे रुहानी, सच दर ना कोए वड्याईआ। मेरे उत्ते आ गई ख़ामी, ख़ालस रंग ना कोए समाईआ। तूं सब दा अन्तरजामी, घट घट वेखणा चाँईं चाँईंआ। मेरे मेहरवाना स्वामी, समां अगला तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी आदि जुगादी रखी ओट, सहारा निरँकारा इक जणाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी दा तक लै खोट, खटीआ काया माटी वेख वखाईआ। तेरे मानव तेरे आलणयों डिगे बोट, फड़ फेर ना कोए टिकाईआ। मैनूं दुक्खां ने लाई चोट, पट्टी धर्म ना कोए बंधाईआ। मेरा लहिणा देणा तेरे नाल जुग चौकड़ी कोटी कोट, अणगिणत दे मालक तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति भण्डार देणा अतोट, अतोट अतुट दे मालक आप वरताईआ।

✪ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे निगाह मार लै अन्तर, अन्तष्करन दे मालक ध्यान लगाईआ। निरगुण धार तक लै चारे कुण्ट लग्गी बसन्तर, सच मेघला नज़र कोए ना आईआ। कूक पुकार सुण लै उत्ते गगन गगनंतर, गहर गम्भीर दयां दुढ़ाईआ। मेरी आशा पूरी कर दे जो कहि के गया धनवन्तर, धर्म धार सुणाईआ। इक्को तेरा नाम निधाना होवे मन्त्र, मंतव मेरा हल्ल कराईआ। बिना शरअ तों दे दे जंतर, जीवां जंतां गंढु पुआईआ । धर्म दी धार बणा दे बणतर, घड़न भन्नूणहार तेरी बेपरवाहीआ। नाले लेखा तक लै की खेल करे कैलाशी शंकर, शरअ जगत की जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन अन्तिम फोल, पर्दा रहिण कोए ना पाईआ। तेरी सृष्टी मेरे उत्ते सुती अनभोल, सच नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। धर्म दी वस्त रही किसे ना कोल, ख़ाली दिसे लोकाईआ। मैं एसे करके रही डोल, धीरज धीर ना कोए जणाईआ। मेरे नाल वाहिदे पूरे कर दे कौल, इकरारनाम्यां रंग रंगाईआ। बेशक मेरा वजूद दुनिया मंने गोल, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। तूं मेरे उत्ते आपणे हुक्म दा कर दे रोल, रैहबर हो के दया कमाईआ। मैं आपा तेरे उत्ते देवां घोल, घोली घोल घुमाईआ। सच दुआरा एका खोल्ह, दर दरवाज़ा दो जहान वखाईआ। तेरे नाम दा इक्को वजे ढोल, डंका दो जहान करे शनवाईआ। सद आ के वसणा मेरे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी अन्दर जाणा मौल, मालक हो के आपणा रूप दरसाईआ। मैं कोझी कमली निमाणी तेरी धौल, धौले झाटे नाल रही कुरलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पूरी कर तमंना, तामस जगत दे मिटाईआ। शरअ दा रहे कोई ना बंना, हदूदां पन्ध मुकाईआ। लेखे ला लै गोबिन्द वाला कन्ना, कायनात रूप बदलाईआ। जो इशारा दे के गया धन्ना, जट्टां दे वड्याईआ। जिस दा लेख लिख्या शब्दी धार चौदां सौ तीस अंक दा पन्ना, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे अन्तर तक लै कामना, जगत वासना ना कोए रखाईआ। जन भगतां फड़ा दे आपणा दामना, दामनगीर इक्को नज़री आईआ। सतिगुर

शब्द हो के होणा ज़ामना, तुध बिन विचोला रहिण कोए ना पाईआ। उह आशा मेरी की संदेशा मैनूं देवे बावना, सचखण्ड विच्चों इशारे रिहा दृढ़ाईआ। की हस हस आखे रामना, रम्ईआ रिहा जणाईआ। नैण उठा के तके काहनना, घनईया आपणा नैण चुकाईआ। की पैग़म्बर देण पैग़ामना, संदेशे नूर अलाहीआ। गुरु गुरदेव की सच संदेश सुणावणा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। धरनीए तेरा लहिणा देणा कलयुग अन्त श्री भगवन्त आप मुकावणा, दूजे हथ्थ ना किछ फड़ाईआ। जिस जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वावणा, निहकलंका कलि कल्की रूप बदलाईआ। जिस दा भेव कोई पा ना सके पंडत पांधा ब्राह्मणा, शास्त्र अन्तर कहिण किछ ना पाईआ। उह तेरी पूरी करे भावना, तृष्ना कूड़ जगत चुकाईआ। तूं उस दे बलि बलि जावणा, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। जिस धुर दा हुक्म सुणावणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, अन्तिम मेटे अन्धेरी शामना, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ।

✪ २१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ उत्तम सिंघ दे गृह पिण्ड वैरोवाल ज़िला अमृतसर ✪

८८२ २४

धरनी कहे प्रभू मैनूं नाम दृढ़ा दे सो, हँ ब्रह्म पारब्रह्म भेव रहे ना राईआ। सति प्रकाश निरगुण धार कर अगम्मी लो, बिन नेत्र लोचन नैणां कर रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी कूड़ कुड़यारी माया नालों कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। मानस मानव मानुख सरगुण धार निरगुण नाल जाण छोह, वखरा रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं तुध बिन दिसे अवर ना को, कूक कूक दयां जणाईआ। मेरे तों पंच विकार मेट दे गरोह, गोबिन्द धार शब्द समझाईआ। दुतीआ भाव रहे ना दो, एकँकार एका रंग देणा रंगाईआ। कलयुग कूड़ विकारा निरगुण धार हो के लए खोह, घट घट अन्तर वेखणा थांउँ थाँईंआ। नाम निधाना श्री भगवाना एका एक बीज अगम्मा बो, बोध अगाध तों परे कर पढ़ाईआ। सति वस्त सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मैनूं ढोआ दे दे ढोअ, गहर गम्भीर बेनज़ीर बिन जगत नेत्रां दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते संदेशा दे दे हँ ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सति सतिवादी सति पुरख निरञ्जण इक जणा दे धर्म, धर्म दी धार एकँकार दे दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म दीन दुनी लख चुरासी जीव जंत दा बदल दे कर्म, कर्म कांड दा लेखा पूरब रहे ना राईआ । इक्को ओट तेरी सब नूं होवे सरन, सरनगति इक जणाईआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ।

निज नेत्र बिन अक्खीआं खोल्ह दे हरन फरन, अनुभव आपणा भेव चुकाईआ। तूं सब कुछ करनी करन, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। मैं चाहुंदी नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा इक्को नाम कलमा पढ़न, इक्को होवे बिन हरफ़ हरूफ़ पढ़ाईआ। लाशरीक तेरी हक हकीकत मंज़ल चढ़न, दरगाह साची सचखण्ड सोभा पाईआ। ग़रीब निवाज़े दर दरवाज़ा खोल्हणा सच घर दा दरन, भीत बन्द ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं दे दे नाम निराला, निराकार दया कमाईआ। तूं किरपा निध पुरख अकाला, परवरदिगार नूर अलाहीआ । सति धर्म दी इक बणा धर्मसाला, धर्म दी धार धार प्रगटाईआ। जिथ्थे बैठण शाह कंगाला, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नाम निधान तेरा होए उजाला, दो जहान करे रुशनाईआ। मेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी लेखे लाउणी घाला, घायल हो के सीस निवाईआ। हर हिरदे अन्दर मन का मणका फेर बणा दे माला, बाहर मणके फेरन दी लोड़ रहे ना राईआ। तैनूं पैग़म्बरां किहा नूर अलाही तुआला, तअलुक्क सब दे नाल रखाईआ। तेरी धार निरँकार काहन घनईया बण ग्वाला, गोपाल आपणा खेल खिलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त फल लगा दे मेरे धर्म

८८३ २४ धार दे डाला, पत्त टहणी आप महकाईआ । मेरी आशा तक लै जो अष्टभुज रख के गई जवाला, सुम्ब निसुम्ब दी धार ८८३ २४

नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा इक्को होवे कलमा कलाम, कायनात देणा जणाईआ। मैं तेरा नूर अलाह तकां अमाम, अमाम अमामे तेरा दर्शन पावां चाँईं चाँईंआ। तूं मेरा नगर सुहाउणा ग्राम, धरनी धरत धवल धौल बैठी आस तकाईआ। सदी चौधवीं मैनूं पैग़म्बरां दिता पैग़ाम, हरफ़ हरूफ़ां नाल मिलाईआ। हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद दे के गए बनाम, वही नाज़िल हो के जो जबराईल गया जणाईआ। अन्त लेखा तक लै दीन दुनी अवाम, वेखणा थांउँ थाँईंआ। बिन रैण तों मेरे उत्ते होई शाम, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। ईमान दा रिहा ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत कूड़ कूड़ हल्काईआ। धर्म दा दिसे ना कोए निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन तेरी ओट रखाईआ। निगाह मार अगम्मे राम, रम्ईआ हो के वेख वखाईआ। मेरी आसा तक लै निरगुण सरगुण काहन, जोती जाते वेख वखाईआ। पैग़म्बरां दे पैग़म्बर रहीम रहमान, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। गुरुआं दे गुरदेव स्वामी नौजवान, पुरख अकाल तेरी ओट तकाईआ। धरनी कहे मैनूं निरगुण दाते सति सच दा देणा दान, दयावान हो के दया देणी कमाईआ। मैं निर्धन सरधन तेरे चरण करां ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परा पसन्ती

मद्धम बैखरी तों बाहर रही दृढ़ाईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरी गवाही निरगुण धार भुगताण, शहादत देवण चाँईं चाँईंआ। तूं निगाह मार लै उत्तों असमान, असमानी बाप तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरगुण निरगुण आदि जुगादी जाणी जाण, जुग जुग भेव अभेद आप खुल्हाईआ।

✪ २१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं दिवस रैण लावां चकर, चक्रवर्ती नज़र कोए ना आईआ। मंज़ल हकीकी दा मिले कोई ना फ़क्कर, फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। जिधर जावां कूड़ कुड़यारे नाल लग्गे टक्कर, सति धर्म वेखण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती अन्तष्करन तक्कया कूड़ अपराधण होई मकर, फ़रेबां विच खेल खिलाईआ। मैं बिना नैण तों नव सत्त लग्गी तकण, लोचण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पीआ प्रीतम तेरा मीत मुरारा दिस्या कोई ना सकण, साजण संगी साथ ना कोए निभाईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ कुड़यारी माया लग्गी नचण, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा नाच वखाईआ। तेरी दीन दुनी बिना अग्नी लग्गी मचण, पंच विकार रिहा जलाईआ। मैं सति सच दा स्वामीआ दस्सां बचन, कथा कहाणी दयां दृढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा भगत सुहेला दिसे कोई ना रत्न, अमोलक हीरा वेखण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती मेरे उत्ते पंज तत धार होई बेवतन, साचे गृह ना कोए टिकाईआ। मेरा अन्तिम चले कोई ना यतन, यथार्थ तैनूं दयां सुणाईआ। मेरा कूड़ कुड़यारा दाग़ा आ जा कटन, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सति धर्म दा खोल्ह दे हट्टन, इक्को नाम देणा चाँईं चाँईंआ। भाग लगाउणा साढे तिन्न हथ्थ काया मटन, तन वजूदां रंग रंगाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश होवे लट लटन, शब्द नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा इक रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा रंग बणा लै आपणा रूप, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। तूं मेरा शहिनशाह शाहो भूप, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। मेहरवाना नौजुआना मेरी सुहञ्जणी कर दे रुत, रुतड़ी आपणे प्यार नाल महकाईआ। पवित्र कर दे काया माटी पंज तत दे बुत, बुतख़ानयां कर सफ़ाईआ। नव सत्त तेरे धर्म दे उपजण सुत, दुलारे हरिजन लै प्रगटाईआ। तूं मालक अबिनाशी अचुत, चेतन हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच

दा दर इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा चुक के वेख लै पर्दा, पर्दानशीं ध्यान लगाईआ। जगत जहान वेख लै सड़दा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। दीन मज़्ब वेख लै लड़दा, तेरी शरअ करे लड़ाईआ। सच मंज़ल कोए ना चढ़दा, तेरा दरस कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा ढोला कोए ना पढ़दा, जगत अक्खरां गा गा तेरी करन शनवाईआ। तूं मालक ख़ालक चोटी जड़ दा, आदि जुगादि तेरे हथ्थ वड्याईआ । किला तोड़ हँकारी गढ़ दा, हउमें हंगता दे मिटाईआ। भेव खुल्हा दे मानव जाती आपणे घर दा, गृह मन्दिर इक वखाईआ। जिथ्थे दीपक जोत अगम्मी बलदा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। जिस धारों सतिगुर शब्द दो जहानां घलदा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस गृह अमृत सागर नीर अगम्मा उछलदा, आदि जुगादि मुक कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैं मंगदी अगम्मी वस्त, इक्को एकँकार देणी वरताईआ। मैनूं फड़ाउणी बिना दस्त, बिन हथ्थां मेरी झोली देणी रखाईआ। नाम खुमारी बख्शणी मस्त, मस्त मस्तानी रूप दरसाईआ। मेरा लेखा रखणा नाल कीट हस्त, राउ रंकां रंग रंगाईआ। तूं मालक ख़ालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच मुहब्बत मेघ बरस, बूँदा बांदी नाम प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे हरस, हवस विकार रहे ना राईआ। मेरे उत्ते करना तरस, रहमत आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी बेनन्ती सुणनी उत्ते फ़र्श, धरनी धरत धवल धौल मिट्टी ख़ाकी हो के मंग मंगाईआ।

✪ २१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड ऐकलगडा ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू सुण मेरे प्रितपाल, परम पुरख परमात्म तेरी ओट तकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार मेरी कर संभाल, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दया कमाईआ। मैं आदि जुगादी जुग चौकड़ी तेरी घाली घाल, नित नवित साची सेव कमाईआ। सम्बल दे मालक मेरी सुरत संभाल, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। बिन तेरे नामे होई कंगाल, ख़ाली झोली दयां वखाईआ। नाम भण्डारा दे दे अतोट अतुट धन माल, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा आदि जुगादी, जुग चौकड़ी

दयां जणाईआ। तूं मालक ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। मैं बिन रसना जिह्वा निरगुण तैनूं रही अराधी, बिन अक्खरां ढोले गाईआ। बिन हथ्थां होई बांदी, बिन सीस जगदीश झुकाईआ। मैं वणजारन पुरख अकाले तेरे नाँ दी, नाउँ निरँकार इक दृढ़ाईआ। मेरी वड्याई रही नहीं धरनी माँ दी, कलयुग ममता कूड़ रही कुरलाईआ। मेरे उतों शरअ मेट दे सूर गाँ दी, ढोरां पशूआं पंखीआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। दीन दुनी दी पवित्र बुद्धी कर दे काँ दी, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। मैं इक्को आशा रखी परवरदिगार सच्चे रहिनुमा दी, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभ मैनूं प्यार दा बख्श दे साथ, रहमत निरगुण आप कमाईआ। मैं इक्को ढोला तेरा गावां गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैं कोझी कमली अनाथां अनाथ, तूं मालक ख़ालक धुरदरगाहीआ। तूं साहिब स्वामी सर्ब कला समराथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा पूरा कर दे मस्तक माथ, टिक्के धूड़ी तेरे ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी सगले संगी, सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। वस्त दे अगम्मी मंगी, जग वासना ना कोए जणाईआ। मेरी पुश्त पनाह होण ना देवीं नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों कढ फ़रंगी, फ़ैसला धुर दा आप सुणाईआ। किसे दी अन्तष्करन दी धार एकँकार रहे ना नंगी, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। सच प्रकाश दे दे नूर अलाही चन्दी, चन्द चांदना कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दी पूरी कर दे संधी, कौल इककार तोड़ *तोड़ निभाईआ। कलयुग आयू होर करीं ना लम्बी, लम्मी पै के सीस निवाईआ। मेरे तों दीन मज़्ब शरअ दी तोड़ पाबन्दी, सतिगुर शब्द शब्द दे वड्याईआ। तेरा इक्को सच दुआर धर्म दी होवे डण्डी, डण्डावत बन्दना सयदे धार सब दी दे बदलाईआ। श्री भगवाना नौजवाना मेरे उत्ते तन वजूद शरीर रहे ना कोए पखण्डी, भेखाधारी भेख ना कोए वटाईआ। निगाह मार लै उत्भुज सेत्ज जेरज अंडी, चारे खाणी खोज खुजाईआ। सुरत स्वामी सतिगुर शब्द हाणी बिन रहे कोई ना रंडी, कन्त सुहाग बणना धुर दे माहीआ। धरनी कहे प्रभू मेरा खेल खिला दे विच वरभंडी, ब्रह्मण्डां आपणा संग बणाईआ। नाम सति अनमोल बिना कीमत तों वंडीं, करते पुरख देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा तेरे चरण, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। मेरा नव नव चार दा पूरा कर दे परन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर तेरी शनवाईआ। बिन लोचन नैण निज खोल्ह दे हरन फ़रन, दीद ईद कर रुशनाईआ। मेरे उत्ते तेरे मानस मानव मानुख तेरी मंज़ल चढ़न, अगे

हो ना कोए अटकाईआ। सब दे अन्तर किला तोड़ हँकारी गढ़न, हउमे हंगता रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म ढोला सारे पढ़न, परमात्म तेरे नाम दी वजे वधाईआ । सुरती शब्द लगा लै आपणे लड़न, विछोड़ा जगत रहे ना राईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक घाड़न घड़न, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे उत्तों लेखा मेट दे चोटी जड़न, चेतन सुरती सब दी दे कराईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला करनी करन, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, ज़ात पात खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। मैं आदि जुगादी निरगुण सरगुण धार तेरी मंगां सरन, सरनगति इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरे उत्ते भेव चुका दे सीस धड़न, तन वजूद हक महबूब एको रंग रंग देणा रंगाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड ऐंकलगडा ज़िला अमृतसर बूटा सिँघ सुरगवासी दे नवित ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द बड़ा मेहरवान, मेहरवाना श्री भगवाना आपणी दया कमाईआ। जो लहिणा देणा लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा भेव चुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत देवे पीण खाण, जीवण ज़िंदगी आपणे हुक्म विच रखाईआ। नाम रसना धुर दा ढोला दस्से गाण, सिफ्तां नाल सिफ्त वड्याईआ। घर स्वासी दर्शन देवे आण, ठाकर धुरदरगाहीआ। पूरब जन्म लए पहिचाण, पर्दा ओहला रहे ना राईआ । सुरती शब्द करे परवान, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। नाम दृढ़ाए बिना कान, तन अन्तर दए वसाईआ। सति सच दा बख्श ज्ञान, बुध्ध बिबेक बणाईआ। बिन मंग्यां देणा दान, दाता दानी होए सहाईआ। चरण धूड़ बख्श इश्नान, दुरमति मैल धुआईआ। दर घर साचे देवे माण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेख मुकाए आवण जाण, लख चुरासी फंद कटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खुशी करन महान, गुर अवतार पैग़म्बर रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द जिस जन करे परवान, प्रीतम हो के देवे माण वड्याईआ। धरनी कहे मैं वेखदी रही नाल ध्यान, जुग चौकड़ी बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। प्रभू दा भगत मेरा बणदा रहे निशान, निशाना जगत जहान वखाईआ। धन्न भाग सतिगुर शब्द परवान कीता बूटा सिँघ पहलवान, पहली वार एकँकार बख्श सचखण्ड दुआर जोत जोत जोत विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बिना भगतीउँ दिता दान, भगवन हो के आपणे चरण टिकाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड धारड़ ज़िला अमृतसर बलवन्त कौर दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करते दे माण वड्याईआ। निरगुण धार मेरे मण्डल पा रासी, मेहरवान आपणी खुशी बणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारी मेरे अन्दरों कढ उदासी, चिन्ता ग़मी रहे ना राईआ। तूं मालक स्वामी घनकपुर वासी, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। तेरा भेव पा सके ना कोई पंडत काशी, अयोध्या धार ना कोए दृढ़ाईआ। मैनूं तेरा खेल तक के आउंदी हासी, हस हस के दयां सुणाईआ। की तेरा प्यार जगत मदिरा मासी, मधुर धुन वाल्या देणा समझाईआ। झट हस के शंकर कहे कैलाशी, धरनीए तैनूं दयां सुणाईआ। उह वेख लै राय धर्म हथ्थ फड़ के बैठा फाँसी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तेरे उत्ते सृष्टी दृष्टी रूप बण गई छाछी, मक्खण नज़र कोए ना आईआ। कोटां विच्चों जन भगत प्रभू मिलण दा अभिलाशी, ख़ाहिश अन्तर अन्तर जणाईआ। उन्हां दा लेखे लावे पवण स्वासी, साह साह आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कर दे रहमत, रहमान दया कमाईआ। मेरी आशा नाल हो जा सहिमत, सहिम अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ । कलयुग कूड़ क्रिया मेट दे ज़हमत, दुक्खां दर्दां पन्ध देणा मुकाईआ। मेरी लेखे ला लै चार जुग दी मेहनत, दिवस रैण तेरी सेव कमाईआ। सति सच दी बख्शिश दे दे निआमत, नाम निधान वरताईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जो मेरे प्यार विच तेरे कोल रखी अमानत, साहिब मेरी झोली देणी पाईआ। कूड़ कुड़यार कर ममानत, नव सत्त रहे ना राईआ। मेरी आशा कर दे सही सलामत, तृष्ना आपणे रंग समाईआ। की होया पैग़म्बरां किहा अन्तिम आउणी क्यामत, नव सत्त सत दुहाईआ। तूं साहिब मेरे सुल्तान जन भगतां रखणा सही सलामत, सुल्हकुल तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन साफ़ कर थोथा, पवित्र मिट्टी ख़ाक बणाईआ। मैनूं भेव खुल्हा दे बिन अक्खरां वाले पोथा, पुस्तक पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरा विचार रहे ना होछा, बुध बिबेक देणी कराईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग रही ख़ामोशा, तेरे अगे ना वास्ता पाईआ। कलयुग अन्त मेरे मेहरवाना कोई दुःख ना सहे बेदोषा, दोषीआं ज़रूर देवीं सज़ाईआ। जन भगतां नाम खुमारी दे मदहोशा, मधुर धुन कर शनवाईआ। मेरी इक्को मनसा इक्को लोचा, आसा तेरे चरण टिकाईआ। मैं दिवस रैण पई रहिंदी विच सोचां, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे अन्तष्करन निगाह मार लै विच खिट्टा, सति सति ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दा रूप रिहा

ना चिट्टा, कलयुग कालख टिक्के गया लगाईआ। जिधर वेखें सृष्टी मंने पत्थर इट्टां, पाहनां सीस निवाईआ। तेरे उत्ते मनुआ किसे ना टिका, टिक्के धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। तैनूं सब ने जाणया बेनज़रां तों निक्का, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी लँघ गए तेरा चलाया नहीं किसे ने सिक्का, नाम आपणा आपणा गए जणाईआ। तूं किरपा कर दे मेरे मेहरवाना इक्का, एकँकार तेरी वड्याईआ। दीन दुनी दे अन्दरों रस कूड़ा कढ दे फिका, अमृत रस दे भराईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त मेरे नाल कर हिता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। दीन दुनी ठगौरी कढ दे विच्चों चित्ता, चेतन सुरती दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा दरस आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार अनडिठ्ठा, जग नेत्र जग जीवण दाते नज़र किसे ना आईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड शफ़ी पुर ज़िला अमृतसर ✪

धरनी रहे प्रभू मैनूं आपणा बख्श प्रेम, जगत प्राणी आपणे प्यार विच बंधाईआ। नाम दा हर हिरदे बख्श दे नेम, निम्रता विच तेरे विच समाईआ। मेरी आसा तक लै जो वायदा कीता गोबिन्द नाल कुंड हेम, पूरब लहिणा नाल मिलाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा वेख लै सेम, समां आपणा रूप बदलाईआ। की आशा रखी चौदां रत्नां विच्चों काम धेन, धर्म दी धार नाल सुणाईआ। की निगाह मार के वेख्या भगत सैन, सैणी की जणाईआ । पूरब तृष्ना वेख लै जो बाल्मीक कीती विच रमायण, राम राम दे रामा आपणी दया कमाईआ। जो संदेसा अर्जन दस्सया धुर फ़रमान बणाया कहिण, घनईया गया दृढ़ाईआ। जो पैग़म्बरां हरफ़ बणा के इशारा कीता ऐन, एसे वक्त ध्यान लगाईआ। जो गुरुआं लहिणा देणा दे दे देण, तेरे अगे वास्ता पाईआ। निगाह मार लै सचखण्ड निवासी मेरे उत्ते बिना नैण, कवल नैणां वाल्या तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी कलयुग आशा होण ना देवीं परायण, परा पसन्ती मधम बैखरी तों बाहर रही सुणाईआ। मैं मिट्टी ख़ाक धरनी आसा रखी तेरी विच हिन्दवायण, हिन्द बिन्द दे मालक होणा आप सहाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले सब दा पूरब दे दे लहण देण, आपणी किरपा नाल झोली देणी भराईआ। मेरे उत्तों कूड़ी क्रिया कलयुग मिटा दे वहिण, सति धर्म ना कोए रुढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन नाता जोड़ के भाई भैण, हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई इक्को रंग रंगाईआ। तेरे नाम कलम्यां उत्तों मानस मानुख मूल ना खहण, जगत शरअ ना करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं वस्त दे अनमुली, नाम निधाना झोली पाईआ। तेरी दात होवे अतोल अतुली, निखुट कदे ना जाईआ। मैं तेरे चरण कवलां घोल घुली, आप आपणा घोल घुमाईआ। मेरी तृष्ना लोकमात वेख लै रुली, चारों कुण्ट मेरी दुहाईआ। दीन दुनी दा जाप वेख लै बुल्ल्हीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भाग लग्गे ना काया कुल्ली, साढे तिन्न हत्थ ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट कूड़ अन्धेरी झुल्ली, मानस मानव रही हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी लेखे ला लै सेव, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं आदि जुगादि मेरा गुरदेव, देव देवा तेरे हत्थ वड्याईआ। पूरब लहिणा देणा पूरा कर दे महादेव, शंकर कैलाशी नाल मिलाईआ। तूं दाता अलख अभेव, अगोचर तेरे हत्थ वड्याईआ। तूं वसणहारा धाम निहकेव, निहचल बैठा सोभा पाईआ। तेरी सिफ्त कर सके कोई ना जिह्वा, कथनी कथ ना कोए दृढ़ाईआ। मैनूं नाम निधाना अमृत दे दे मेव, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं दे दे वस्त अनडिठी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दी धार अगम्मी होवे मिट्ठी, रसना रस ना कोए चखाईआ। मेरी लेखे ला लै नौ खण्ड पृथ्मी मिट्टी, सत्तां दीपां रंग चढ़ाईआ। मैं तेरे चरण कदमां विच लिटी, लिटां खोल्ह के दयां दुहाईआ। मेरे तों पूजा मिटा दे पत्थर इट्टी, पाहनां सीस ना कोए निवाईआ। सब दी आशा तेरे चरण होवे टिकी, धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। इक्को माण दे दे हाहे वाली टिप्पी, हँ ब्रह्म आप बणाईआ। सब दे अन्दर आत्म धार कर दे चिट्टी, कलयुग कूड़ी कालख दे मिटाईआ। मैं आसा इक्को तेरे उत्ते सिट्टी, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा जाप कर दे अक्खर दो, दो जहानां मालक दया कमाईआ। तूं मालक स्वामी धुर दा सो, हँ ब्रह्म तेरा रूप नज़री आईआ। बिन नेत्रां दे दे लो, लोचन तीजा आप खुल्हाईआ। पंच विकार मेट दे गरोह, माया ममता मोह मिटाईआ। आपणा भेव खुल्हा सो, सो पुरख निरञ्जण तेरे हत्थ वड्याईआ। मानव ज़ाती तेरे जोगी जाए हो, होका देणा थांओं थाईंआ। कूड़ कुड़यारा कलयुग मेरे उत्तों लै खोह, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म तेरे नाल जावे छोह, छौहर बांके आपणे रंग लैणा रंगाईआ।

२२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर
कर्म सिँघ दे गृह

धरनी कहे प्रभू मेरी मेट अन्धेरी राती, कलयुग कालख शाही दाग़ मिटाईआ। सति वस्त बख़्श दे दाती, अमोल अनमुल नाम वरताईआ। तूं साहिब स्वामी मेरा कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जुग चौकड़ी पूरब मेरे कोल तेरी पाती, बिन अक्खरां दयां वखाईआ। कलयुग अन्त तेरा वक्त सुहाउणा धुर दे कमलापाती, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट दीन दुनी शरअ ज़ात पाती, पति पतिवन्ते होणा आप सहाईआ । मानस मानव इक दूजे दा रहे कोई ना घाती, दुवैत नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म मानस मानव बणा लै धुर दे जमाती, जगत विद्या वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दुआर इक वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कर प्रकाश, बिन दीआ बाती डगमगाईआ। मेरी जुग पुराणी आस, चौकड़ी पूरब दए गवाहीआ। कवण वेला आवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। तेरा लहिणा देणा लेखे लावे सति धर्म दी वेखे रास, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मैं निगाह मारदी रही उत्ते आकाश, आकाश आकाशां वेख वखाईआ। कवण वेला मेरा परम पुरख आवे मेरे प्रभास, जंगल जूहां उजाड़ां फेरे पाईआ। मैनूं इशारा देवे शंकर उत्ते कैलाश, कैलाशधारी रिहा सुणाईआ। धरनीए जिस उत्ते तूं रख्या विश्वाश, विषयां तों बाहर आपणा खेल वरताईआ। उह तेरे जन भगतां देण आया शाबाश, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सखा सुहेला हो के हरिजन वसे पास, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। उस दी सम्बल करीं तलाश, नव सत्त दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दुआर इक वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तैनूं तकां शरकण गरबण, कूड़ कूड़ा वेख वखाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मरदन, मदद तेरी इक्को नज़री आईआ। की तेरा लहिणा देणा नाल देश अरबन, अरबां खरबां दे मालक देणा समझाईआ। मैं आशावंद मंगदी हो के निर्धन, सरधन देणी माण वड्याईआ। मैनूं लेखा याद आउंदा जिस वेले कृष्ण उंगली उठाया गवर्धन, ग्वाले धार आप समझाईआ। नाल इशारा दिता धरनीए तेरे उत्ते प्रभ आप आवे पैज संवारे हरिजन, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जिस वेले पवित्र ना रिहा कोई तन, जिस्म ज़मीर सके ना कोए बदलाईआ। धीरज धरे ना कोए मनुआ मन, मनसा कूड़ होवे हल्काईआ। उस वेले परम पुरख परमात्म तेरे उत्ते भगत सुहेले उपजाए साचे चन्न, चन्द चांदना आपणा नूर रुशनाईआ। अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के सुरती शब्द धार देवे बन्न्ह , मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। तूं कहिणा धन्न धन्न, धन्न धन्न प्रभू तेरी बेपरवाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, करे वसेरा बिन छप्परी छन्न, बिन जगत मन्दिरां आपणी सोभा पाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर बुढ्ढा सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी सुण अगम्मी पुकार, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द जगत विद्या बाहर सुणाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते निगाह मार विच संसार, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी वेख वखाईआ। लहिणा देणा तक लै पैग़म्बर गुर अवतार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा भेव खुल्हाईआ। चार जुग दे शास्त्रां तक इज़हार, किस बिध तेरे नाम ढोले कलमे करन शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखणी निगाह मार, पंज तत मानस मानव मानुख खोज खुजाईआ। कवण वक्त सुहञ्जणा घड़ी पल पाउणी सार, दिवस रैण वेखणा थांउ थाँईंआ। सति धर्म दीन दुनी दीपक रिहा ना कोए उज्यार, उजाला नज़र कोए ना आईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते होया धुआँधार, दीआ बाती कमलापाती तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। किरपा कर दे मेरे परवरदिगार, सांझे यार तेरी ओट तकाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां अन्दरों मेट दे खार, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। तेरा नाम निधाना दो जहान लैण उच्चार, सोहला ढोला इक्को राग दृढ़ाईआ। तेरा सोहे इक्को बंक दुआर, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ लोड़ रहे ना राईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरे नाँ दी होवे जै जै कार, इक्को सोहला ढोला देणा प्रगटाईआ। मेरे मेहरवाना मेरे उत्तों कलयुग कूड़ मेट कुड़यार, कलकाती रहिण ना पाईआ। मेरी मंज़ल हक महबूब ना रहे दुष्वार, दूती दुश्मण नज़र कोए ना आईआ। मैं परम पुरख परमात्म तेरे चरण कवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। तूं अन्त कन्त भगवन्त मेरी पाउणी सार, सतिगुर शब्द शब्द नाल वड्याईआ। मैं धरनी माटी ख़ाक तेरी छार, जुग जुग चरण छोह के खुशी बणाईआ। मेरे उत्ते सब दा लहिणा देणा कर्ज़ा दे उतार, मकरूज वेखणा थांओं थाँईंआ। सब दा पूरा कर कौल इकरार, भविख्तां आपणे रंग रंगाईआ। तूं कलि कल्की जगदीसा चौबीसा निरगुण धार अवतार, निहकलंका आपणी कल प्रगटाईआ। नूर अलाही परवरदिगार, अमाम अमामा धुरदरगाहीआ। मैं तेरे चरण कवल करदा निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। तूं सृष्टी दृष्टी वेखणी बिन नेत्र लोचन निगाह मार, काया मन्दिर अन्दर ध्यान लगाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां वध्या विकार, विभचार नाल भरी ख़लक खुदाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरा चुक्कया गया एतबार, बेएतबारी विच ख़लक खुदाईआ। सचखण्ड निवासी आ जा

धुर दे यार, मित्र प्यारे नूर अलाहीआ। धरनी धरत धवल धौल मेरी सुण लै गिरयाज़ार, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं शाहो भूप मेरा सिक्दार, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। तूं मालक खालक सदा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर भज्जण वाहो दाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर सके ना कोए इनकार, अवतार पैग़म्बर गुर बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेहरवाना मेहरवाना मेहरवाना मेरी पाउणी सार, महासार्थी हो के वेखणा चाँईं चाँईंआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर किरपा सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां चाढ़ दे रंग, रंगत तन वजूद माटी ख़ाक आप रंगाईआ। आत्म परमात्म सच बख़्श दे संग, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। शब्द नाद वजा मृदंग, धुन आत्मक राग सुणाईआ । अमृत धार वहा दे गंग, निझर झिरनयो आप झिराईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, बिन छप्पर छन्न दे वड्याईआ । सति दुआर एकँकार आपे लँघ, मंज़ल तक चाँईं चाँईंआ। निरवैर हो के ला लै अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ । मैं निर्धन हो के रही मंग, धरनी कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां मेरे उत्ते बख़्श प्यार, प्रीतम हो के दया कमाईआ। तन माटी ख़ाकी कर उज्यार, दीआ बाती कमलापाती इक जगाईआ। साचे नाम दी दे धुन्कार, नाद अनादी धुन कर शनवाईआ। अमृत बख़्श दे ठंडा ठार, बिन रसना जिह्वा दे प्याईआ। पन्ध मुका दे कूड़ कुड़यार, माया ममता मोह मिटाईआ। अन्दर रहे ना धुआँधार, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, देवणहार इक अख्वाईआ। मैं मांगत तेरी भिखार, दर ठांडे झोली डाहीआ। धरनी कहे मैं रो रो करां गिरयाज़ार, हौकयां विच सीस निवाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कुकर्म मेरे विच्चों कढ बाहर, धरनी धरत धौल रहिण ना पाईआ। सतिजुग सच कर उज्यार, नौ खण्ड पृथमी तेरा रूप दरसाईआ। तेरे भगत सुहेले गुरु गुर चेले मेला मेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी जिस दी देण गवाहीआ। तूं कलि कल्की अवतार, निहकलंका तेरे हथ्थ वड्याईआ। अमाम अमामा धुर सिक्दार, दरगाह साची तेरा नज़री आए नूर अलाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी पैज संवार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरी आसा मनसा पूरी कर पूरब लहिणा दे उधार, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर जसवन्त दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा कलयुग कूड़ दा कट दे रोग, चिन्ता दुःख रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म दा सृष्टी अन्दर दे दे जोग, जुगती आपणा नाम समझाईआ। कूड़ वासना मेट दे भोग, तृष्ना तृखा ना कोए हल्काईआ । इक्को आपणा देणा दरस अमोघ, निरगुण हो के नज़री आईआ। आत्म परमात्म कर संयोग, मेल मिलाउणा धुरदरगाहीआ। जगत विकारे नालों कर वियोग, विछोड़ा देणा थांओं थाँईंआ। सृष्ट सबाई हिरदा सोध, सुदी वदी दा लेखा दे मुकाईआ। नाम निधाना दे अगाध बोध, बुद्धी तों परे नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सच बख्श दे जुगती, जुगीशरां बाहर दे वड्याईआ। बिना प्यार मुहब्बत तेरी मंज़ल नहीं मुकदी, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैनूं वड्याई दे दे इक्को तुक दी, तूं मेरा मैं तेरा सृष्ट सबाई इक्को ढोला गाईआ। मैं चरण कवल तेरे जगत जगदीस झुकदी, निव निव लागां पाईआ। मेरी आशा कहिणो मूल ना रुकदी, रुकमणी दा लेखा कृष्ण कृष्ण नाल दृढ़ाईआ। हुण खेल रहे ना तेरी लुक दी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तेरी शब्दी धार शेर वांग होवे बुक्कदी, भबक इक्को नाम लगाईआ। मेरे उत्तों खेल मुका दे कलयुग लुक दी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। उह वेख लै माया ममता सब नूं फिरे कुटदी, अन्दर वड़ के दए सज़ाईआ। दीन दुनी दी चोग जाए निखुटदी, ख़ाली भण्डारे ना कोए भराईआ। मैं इक्को ओट तेरे उत्ते सुटदी, दूसर आस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरे उत्ते हालत तक लै मानस मानव मानुख दी, पंजां ततां अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ।

८६४
२४

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर तरलोक सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तपदी तेरी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज शांत ना कोए कराईआ। माण ताण रिहा ना तेरे चार जुग दे शास्त्र नाम कलमे बाणी, अक्खर अक्खर देवणहार सच गवाहीआ। पवित्र रिहा ना अठसठ तीर्थ जल सरोवर पाणी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रोवे मारे धाहीआ। पवित्र रिहा नहीं आत्म ब्रह्म जीव प्राणी, मानस मानव मानुख धर्म धर्म ना कोए रखाईआ। साधां सन्तां जीवां जंतां मंज़ल रही ना कोए रुहानी, रूह बुत अबिनाशी अचुत पतित पुनीत ना कोए कराईआ। बिरहों अणयाला नाम दा तीर मारे कोए ना कानी, कायनात दा पर्दा ना कोए उठाईआ। मेरे भगवन्त

धुर दे कन्त मेरी होई कलयुग अन्त हैरानी, हैरत विच कुरलाईआ। चार जुग दे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं हुंदिआ घर घर वध गई बेईमानी, सति सच विच ना कोए समाईआ। जिधर तकां मन कल्पणा सब नूं कीता ग़ुलामी, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआर एकँकार तेरी मंज़ल पाए ना कोए अनामी, आवण जावण लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ । प्रभू जिधर तकां तेरे सति सच दी होई बदनामी, बदी विच ख़लक खुदाईआ। तूं आदि जुगादि सदा निहकामी, निरगुण तेरी ओट तकाईआ। पवित्र रिहा ना कोई धर्म दीन इस्लामी, शरअ शरीअत साचे रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक लै चारों कुण्ट कूड़ कुटम्ब, साचा मीत मित्र नज़र कोए ना आईआ। माया ममता मोह विकारे नाल रही मैं कम्ब, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा समां रिहा लँघ, सदी चौधवीं कूक कूक सुणाईआ। अन्त कूड़ कुड़यार हँकार दी ढहण वाली कंध, बुरज नज़र कोए ना आईआ। निशान मिटाणा तारा चन्द, मुहम्मद वेखे नैण उठाईआ। लहिणा देणा मुकणा तत पंज, अप तेज वाए पृथमी आकाश रिहा कुरलाईआ। हर घट अन्दर दीन दुनी विच आउंदा रंज, रंजश सके ना कोए मुकाईआ। कलयुग वहिण डूंघा सागर हाथ ना आवे वञ्झ, जगत मुहाणे कम्म किसे ना आईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्तों कूड़ कुड़यार दा मेट दे पन्ध, मुसाफ़िर सफ़र विच ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला तेरा इक्को होवे छन्द, दो जहान करनी हक पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मेरा खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी विच सीस निवाईआ। धरनी कहे मेरे स्वामी अन्तरजामी घट निवासी मैनूं बख्श दे अगम्मा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। बिन जल धारा मेरे अन्तष्करन पा दे ठंड, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। सति सतिवादी हो के नाम अगम्मा वंड, मानस ज़ाती इक्को कलमा झोली पाईआ। तूं दीन दयाला साहिब सर्ब कला बख्शंद, बख्शणहार तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान मेरी सेज सुहा दे माटी ख़ाक पलँघ, सुख आसण अबिनाशण इक्को इक वड्याईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंडाली ज़िला अमृतसर सन्तो दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मैं निरगुण धार तैनूं सद्दां उच्चेचा, उच्ची चढ़ के कूक कूक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मैनूं बंधाया नेहचा, निहचल धाम दा मालक तेरा लेखा दए मुकाईआ। निरगुण सरगुण धार स्वामी मेरा कर लै मेचा, नौ खण्ड

सत्त दीप लम्बाई चुड़ाई समझ किसे ना आईआ। चार जुग मानस ज़ाती अछल छलधारी हो के जो पाया कलमे नाम दा पेचा, पेचीदा आपणा आप रखाईआ। निगाह मार लै उठ के सचखण्ड निवासीआ तेरा धर्म हट्ट बाज़ारां वेचा, करनी दे करते तेरी कीमत जगत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू निरगुण धार हो के उतरीं, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। मेरी खेल तक लै जगत जहान विच दुतरी, दुवैत विच सर्ब लोकाईआ। सति रिहा किसे ना पुत्तरीं, पिता पूत तेरी गोद ना कोए सुहाईआ। दुहाई फिर गई चारे नुकरी, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण रहे कुरलाईआ। मेरे वायदे कौल इकरार कोलों मूल ना मुकरीं, मुकरर आपणा हुक्म वरताईआ। मैं तेरी कदे ना होवां नाशुकरी, शुकराने विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे दर देणी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा रख लै आपणे आप नाल, आप आपी दा भेव खुल्हाईआ। मैं निर्धन हो गई कंगाल, नाम धन माल वस्त नज़र कोए ना आईआ । अवतार पैग़म्बर गुर कर ना सकण संभाल, सम्बल दे मालक तेरे अगे वास्ता पाईआ। जिधर तकां नौ खण्ड माया ममता प्या जंजाल, जागरत जोत नज़र कोए ना आईआ। मेरे दीप खण्ड सच दी रही ना कोए धर्मसाल, धर्म दुआर ना कोए वड्याईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मैं तैनूं रही भाल, दिवस रैण तेरा ध्यान लगाईआ। आ के वेख मेरा कोझी कमली दा हाल, मुरीदां दे मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। मेरी बेनन्ती मंन सुआल, अर्ज़ आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। फल लगा दे मेरे तन माटी वाले डाल, पत्त टहणी जीव जंत आपणे नाम नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेरा दुखी हो के दस्से वाल वाल, वाली दो जहान सिर मेरे हथ्थ देणा टिकाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पखो के ज़िला अमृतसर शंगारा सिंघ दे गृह ✪

धरनी कहे मैनूं बख्श दे धुर दा नाम, नाम निधाना श्री भगवाना अगम्म अथाह वरताईआ। किरपा कर मेरे शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। मैनूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण तेरे उत्ते माण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। तूं सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक अगम्मा काहन, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। मेरी भूमिका सुहा दे सच ग्राम, चरण कवल कवल चरण आप टिकाईआ। मैनूं संदेसा दे के गए दशरथ बेटा राम, रम्ईआ तेरा लहिणा देणा दए

मुकाईआ। मैनूं पुरख बिधाते पैग़म्बरां दिता पैग़ाम, धुर फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। गुरु गुरदेव समझांदे गए तेरा लेखा अन्त हथ्थ भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। मेहरवाना मेरी तेरे चरण कवल प्रणाम, निव निव लागां पाईआ। सतिगुर शब्द धार कर प्रधान, प्रधानगी इक्को इक वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मेट निशान, निशाना धर्म धार झुलाईआ। मानस ज़ाती बुद्धी बिबेक कर इन्सान, इन्सानीअत हर हिरदे अन्दर दे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा मेट त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी सरनाईआ। ठाकर स्वामी बण मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। धुर दा ढोला दस्स दे गीत, गोबिन्द मेला होवे सहिज सुभाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बदल दे नीत, नीतीवान तेरे हथ्थ वड्याईआ । कलयुग जीव कर दे पतित पुनीत, पावन हो के वेख वखाईआ। मैं चाहुंदी झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा कर रुशनाईआ। तेरा इक्को नाम कलमा होवे हदीस, हज़रतां तों बाहर करनी पढ़ाईआ। तेरी सब तों वखरी होवे तबलीक, ताब्यादारी विच दिसे ख़लक खुदाईआ। दूर दुराडे मेरे नेरन नेरे हो नज़दीक, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग झगड़ा मेट शरअ शरीक, लाशरीक आपणा रंग देणा रंगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार तेरे विच हक तौफ़ीक, सांझे यार होणा अन्त सहाईआ। मैं कोझी कमली धरनी धरत धवल धौल तैनूं रही उडीक, आसा आपणी चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। मैं मांगत दर भिखार, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। सच वस्त अगम्मी देणी डार, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती बख्श प्यार, मानव एका रंग रंगाईआ। पंज तत वेखणा निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। लेखा रहे ना नौ दुआर, जगत तृष्ना कूड़ मिटाईआ। नाता तोड़ दे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता ना कोए ललचाईआ। अमृत बख्श दे ठंडा ठार, निझर झिरना बूँद स्वांती नाभी कवल टपकाईआ । शब्द अनादी दे सची धुन्कार, अनहद नादी नाद कर शनवाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोती जोत कर उज्यार, बिन तेल बाती डगमगाईआ। घर स्वामी ठाकर मिलणा धुर दे सांझे यार, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच दुआर एकँकार आपणा वखाउणा घरबार, दरगाह साची मुकामे हक पर्दा आप उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा आप सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरे होवण सन्त फ़कीर, फ़िकरा ढोला तेरा नाम ध्याईआ। चार वरन अठारां बरन शरअ दे कट ज़ंजीर, शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग धार कर तामीर, महल अटल इक सुहाईआ।

जिथ्थे बैठण शाह ग़रीब, मानस वंड ना कोए वंडाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां निरगुण सरगुण दे तरतीब, हुक्म आपणा इक समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत तेरे सारे होण अज़ीज़, आज़म इक्को तैनूं सीस निवाईआ। धरनी कहे मैं चाहुंदी मानव ज़ाती अन्दर तेरे प्यार दी होए तमीज़, गुरबत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा दरस नूर नुराना बिना होवे जगत दी दीद, दीदा दानिस्ता निरगुण निरगुण नज़री आईआ।

✪ २२ भदारों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड ठठीआं ज़िला अमृतसर बंसो दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे धुर दे माही, मेहरवान महबूबा तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी सची शहिनशाही, शाह सुल्तान दो जहान तेरी वड वड्याईआ। मैं मांगत हो के ख़ाली झोली तेरे अगे डाही, वस्त अतोल अतुल देणी वरताईआ। धरनी कहे प्रभ किरपा करनी मेरे अगम्मे माही, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण धार सतिगुर मेरी कट जुदाई, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे उत्ते निरगुण दाते आउणा चाँईं चाँईं, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। मैं निर्धन हो के रही ध्याई, ध्यान तेरे चरण रखाईआ । मेरे उत्ते निगाह मारनी थल अस्गाही, समुंद सागराँ फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चार कुण्ट अन्धेरा गया छाई, सति सच नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। मेरे परम पुरख मानस तैनूं गए भुलाई, भय विच नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ बणी कसाई, धर्म दी धार कायम रहिण कोए ना पाईआ। अज निगाह मार लै दिवस दिहाढ़ा तक लै बाई, बाईबल विच यसूह गया समझाईआ। मुहम्मद किहा मेरा आवे नूर अलाही, अमाम अमामा अगम्म अथाहीआ। जिस दी याद विच सदी चौधवीं भज्जे वाहो दाही, दिवस रैण आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन तक ख्याल, बुद्धी जगत ना कोए रखाईआ। मैं चार जुग दी सेवा करदी होई बेहाल, बहिबल हो के रही कुरलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे अवतार पैग़म्बर गुरु रहे मेरे नाल, सरगुण आपणा रूप वखाईआ। शस्त्र तीर कमान खण्डे चुकदे रहे ढाल, शत्रूआं वाला रूप बदलाईआ । मैं खेल तेरा तकदी रही कमाल, कामल मुर्शद की तेरी बेपरवाहीआ। अन्त मेरा इक सवाल, सवालण हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। धरनी कहे चार जुग मैं रखदी रही तेरी उडीक, निरगुण दाते ध्यान लगाईआ। अन्त वेख कलयुग

रैण अन्धेरी तारीख, नव सत्त ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु रिहा ना कोई नज़दीक, दरगाह साची सचखण्ड तेरे आसण गए लगाईआ। मेरी बिरहों विछोड़े विच बिन रसना जिह्वा निकले चीक, रो रो दयां दुहाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी मेरी आ के कर तस्दीक, शहादत अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू मैं आदि जुगादि तेरे सथर लथ्थी, सेज सुहञ्जणी इक हंढाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी कथा कहाणी कथी, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मैनूं कूड़ी क्रिया रही मथी, मथन कलयुग रिहा कराईआ। कूड़ कुड़यारा जगत जहान चले रथी, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। तूं किरपा निधान पुरख समर्थी, साहिब स्वामी इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे हथ्थो हथ्थी, जो गुर अवतार पैग़म्बर गए जणाईआ। मेरा लेख बदल दे मस्तक मथ्थी, करवट आपणी लै बदलाईआ। तेरी पिछली कहाणी मैथों जाए ना कथी, कथनी कथ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा बण जा संगी सगला, साहिब इक अख्वाईआ। मैनूं भेव खुल्हा दे अगला, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तूं स्वामी धुर दा रंगला, तेरा रंग नूर अलाहीआ। कलयुग जीव जहान वेख लै कंगला, वस्त नाम हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। दो नेत्र वेख लै अन्धला, निज नैण ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी आपणे अंग ला, अंगीकार एकँकार इक अख्वाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर सवरन सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे मालक कन्त कन्तूहल, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी बेपरवाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरा असल चुका दे मूल, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते सच धर्म दा बख्श असूल, असलीअत काबलीअत मानव ज़ाती विच टिकाईआ। उह लहिणा देणा पूरा कर दे जो पैग़म्बर दे के गए रसूल, सिफ्ती ढोले अलिफ़ ये नाल गाईआ। तूं निरगुण दाता मेरा कन्त कन्तूहल, करनी दा करता इक अख्वाईआ। सति सतिवादी मेरी तृष्ना जाईं ना भूल, अभुल तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मैं तेरे प्यार मुहब्बत वाला नौ खण्ड सत्त दीप पंघूड़ा लवां झूल, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हुलारा देणा लगाईआ। साचा नाम धुर संदेशा देणा मअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त अगम्म वरताईआ। धरनी कहे प्रभू गुर अवतार पैग़म्बरां रखी इच्छया, निरगुण निरगुण तेरी ओट तकाईआ। सचखण्ड निवासी सति धर्म सति वस्त दी पा दे भिच्छया, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। मेरा पल्लू नौ खण्ड सत्त दीप तेरे कदमां विच विछिआ, जिस दी कन्नी नज़र कोए ना आईआ। दो जहान श्री भगवान जग नेत्र किसे ना दिस्या, लोचन वेखण कोए ना आईआ। जिस सृष्टी नूं तूं आदि जुगादि बणाया मिथ्या, आपणा खेल खिलाईआ। मेरा चौथे जुग कलयुग लहिणा देणा पूरा कर दे हिस्सया, हस्ती दे मालक तेरे अगे वास्ता पाईआ। आह वेख लै धुर फ़रमाना गोबिन्द वाला मेरे कोल लिख्या, जिस दा हरफ़ हरूफ़ नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल होणा अनडिठिआ, अनडिठ आपणा पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप समझाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं शहिनशाह सूरा सरबग, दर तेरे आस रखाईआ। मेरी धार कूड़ कुड़यार नालों कर अलग, डोरी तन्द रहिण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी बदल दे दीन दुनी दे जग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया त्रैगुण अतीते बुझा दे अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। तेरी सरन सरनाई सच स्वामी जावां लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। कलयुग जीव वेख लै बपड़े बग, बगढ़े बैठे मुख भुआईआ। मैं चाहुंदी मेरे पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां दर्शन दे उपर शाहरग, शहिनशाह आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू दिवस दिहाढ़ा तक लै आज, निर्धन हो के मंग मंगाईआ। तूं मालक ख़ालक ग़रीब निवाज़, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। सो पुरख निरञ्जण तेरा एको एक समाज, दूसरी वंड ना कोए वंडाईआ। हरि पुरख निरञ्जण मेरा अन्त संवार काज, करनी दे करते तेरी बेपरवाहीआ। एकँकार मेरी रखणी लाज, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। आदि निरञ्जण जोती जाते जाणा जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। अबिनाशी करते मेरे उत्ते ला दे भाग, श्री भगवान हो के दया कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरा दीपक बुझया जगा दे चराग़, बिन तेल बाती कमलापाती कर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द हथ्थ फड़ा दे वाग, विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे हुक्मे अन्दर बैठण सेव कमाईआ। अवतार पैग़म्बर तेरा इक्को गावण राग, राग रागणीआं इक्को ढोला गाईआ। धरनी कहे मेरे पतिपरमेश्वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सरन सरनाई जावां लाग, दूसर इष्ट सृष्टी दृष्ट विच नज़र कोए ना आईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर सुरैण सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म दी धार दे प्रशादि, किरपा निधान हो के दया कमाईआ। जेहड़ी वस्त सति सतिवादी तेरी अगम्म आदि, अन्त मध मेरी झोली पाईआ। चार जुग तों वखरी बख्श दे दाद, अणमुली आप वरताईआ। मैं तैनूं रही अराध, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जन भगतां अन्दर हो विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। जन भगतां हिरदिउँ विसरे कदे ना तेरी याद, विछोड़ा जगत ना कोए रखाईआ। तूं मालक आएयों अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, दोहरी कल वरताईआ। मैनूं देणी सच इमदाद, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे तेरा प्रशादि धार इक दी दो, दो जहान खुशी मनाईआ। आपणा नाम भण्डार बख्श दे सो, हँ ब्रह्म आप जणाईआ । जन भगतां बख्श लै धुर दा मोह, मुहब्बत आपणे नाल मिलाईआ। निरगुण दाता आपे हो, जोती जाते होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ । घृत कहे मेरा लेखा नाल अलाही नूर, नूर नुराना दए वड्याईआ। जो आसा मनसा सब दी करे पूर, पूर रिहा सर्ब ठांईआ। जो वसणहारा नेड़े दूर, घर मन्दिर बैठा सोभा पाईआ। मेरी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, आरज़ू आपणे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप वड्याईआ। प्रशादि कहे मेरी दो दो धारा, सोहणा रंग रंगाईआ। प्रभ दा निरगुण सरगुण खेल अपारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा शब्दी शब्द ललकारा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। जिस दा अमृत रस ठण्डा ठारा, अंमिओं रस आप चुआईआ। जो जोती जाता खेल करे अपारा, अपरम्पर स्वामी इक अख्वाईआ। कलि कल्की लए अवतारा, निहकलंका डंक वजाईआ। जिस दा बावन नाल खेल अपारा, दो सेर घृत दए समझाईआ। जिस दा तेरां सौ सतासी रिषीआं कीता इशारा, आटा दो सेर मिलाईआ। मिट्ठा रस बलि प्रेम दी धारा, निरगुण सरगुण नाल जुड़ाईआ। इशारा दिता चार वेद तों बाहरा, हुक्म संदेशा इक सुणाईआ। जिस वेले कलयुग होया अन्ध अँधयारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए भण्डारा, वस्त सति ना कोए वरताईआ। उस वेले निहकलंक कल आए चवीआं अवतारा, चौबीसा धुर दरगाहीआ। जोती जाता ज़ाहर होवे दुबारा, दोहरा डंक वजाईआ। उस दा लेख समझे ना कोए विच संसारा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। उस दा सम्मत शहिनशाही लेखा होणा विच ग्यारां, प्रविष्टा बाई भाद्रों नाल मिलाईआ। इस दा बण के वेद व्यास लिखारा, गरड़

६०१
२४

पुराण विच गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहिणा चुकाए आप उधारा, अगला लेखा आपणे चरण रखाईआ।

✪ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर हरिसंगत जंडयाला नवित ✪

नारद कहे धरनीए मैं तेरे कोल पुज्जा, जगत जहान दा पन्ध मुकाईआ। क्यों धर्म दा दीपक तेरे उत्ते बुज्झा, कलयुग कूड़ अन्धेरा गया छाईआ। धर्म दी धार वसदा दिसे कोई ना झुग्गा, गृह मन्दिर ना कोए वड्याईआ । धरनीए तेरे नाम दा मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पंथी लैंदे भुग्गा, टकयां कीमत रहे पाईआ। परम पुरख दा नाम करे कोई ना उग्घा, उग्घण आथण पई दुहाईआ। सति धर्म दा सुझे किसे ना मुद्दा, मुदतां दा मालक नज़र किसे ना आईआ। तूं निगाह मार लै सवाधान हो वसुधा, सुध आपणी लै प्रगटाईआ। उह तक लै जो संदेशा दे के गया महात्मा बुध्धा, आप आपणा ध्यान रखाईआ। कलयुग अन्त दीन दुनी शरअ दा होणा धर्म युद्धा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग इक रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा जगत अनोखा अवल्लड़ा, करनी दे करते दयां जणाईआ। मेरा ख़ाली वेख लै पलड़ा, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। मेरा प्यार एकँकार तेरे दर दुआरे खलड़ा, दरगाह साची आसण लाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त फड़ा दे आपणा पलड़ा, पल्लू गंढु देणी बंधाईआ। बेशक तेरा मार्ग चार जुग तों होवे अवल्लड़ा, अवल्लड़ी कार कमाईआ। मेरा विछोड़ा होवे घड़ी ना पलड़ा, पलकां दे पिच्छे बहि के दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा सब तों वखरी, वखरयां दयां जणाईआ। माण रिहा ना तेरी विद्या अक्खरी, अक्खर अक्खर देण गवाहीआ। पूजा तक लै पाहनां पत्थरी, इट्टां सीस निवाईआ। गोबिन्द धार दिसे लथ्थी कोए ना सथरी, यारड़े तेरी सेज हंढाईआ। मैं नेत्र रोवां निरगुण धार बिना अथ्थरी, हंझूआं हार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। झट नारद कहे धरनीए क्यों रो रो मारें चीकां, दो जहान रही सुणाईआ। वेख लै तेरे पिछले उत्ते प्रभू मारन वाला लीकां, पूरब लहिणा रहे ना राईआ। जिस दीआं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं रखीआं उडीकां, भविख्तां विच आसा गए रखाईआ। उह मालक ख़ालक नीकन नीका, निरवैर हो के तेरा लहिणा देणा दए चुकाईआ। बेशक धर्म दा फल हो गया फीका, कलयुग कूड़ा रीठा दए भनाईआ। उस दे विच हक तौफ़ीका,

धुर दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दीआं आदि जुगादि टुट सकण ना कदे प्रीतां, प्रीतम इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे धरनीए उह तक लै अगम्मा बाप, पिता पुरख अकाल वेख वखाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ मेटणा पाप, पतित पुनीत तैनूं दए कराईआ। जिस आत्म परमात्म इक्को दस्सणा जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। उह खेल खिलाए दया कमाए लोकमात, मातृ भूमीए तेरा लेखा दए चुकाईआ। तूं हुक्म संदेशा याद रखणा अज्ज दी रात, रैण भिन्नड़ी नाल मिलाईआ। एह कोई जगत जहान दी नहीं बात, बातन पर्दा दिता खुल्हाईआ। नारद कहे मैं उस दा खेल तक्कया इक इकांत, इक इकल्ला रिहा कराईआ। जिस ने नव सत्त वंडे प्रांत, हिस्से दीन दुनी पाईआ। उह देवणहारा अमृत बूंद स्वांत, अंमिओं रस अगम्मा आप चुआईआ। सो अन्त धरनीए तेरी पुछे वात, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे धरनीए निगाह मार लै शाहो भूप इक राजा, जिस दी रईयत दो जहान नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बरां मारीआं आवाज़ां, सुनेहड़े नाम कलमे वाले सुणाईआ। तेरी आशा कहिंदी कल्गीधर अगम्मे आ जा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं शाहो भूप ग़रीब निवाज़ा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सो पुरख अकाला धरनीए तेरा पूरा करन वाला काजा, करनी दा करता नूर अलाहीआ। उस दा नूर ज़हूर कमलीए तक लै सम्बल देस देस विच माझा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा लहिणा देणा निरगुण सरगुण धार दो दोआबा, दुहरी आपणी कल वरताईआ । जिस नूं मुहम्मद किहा उह अमाम नूर अलाह अन्त आवे सदी चौधवीं विच पंज आबा, आबे हयात देवे चाँईं चाँईंआ। जिस दा लहिणा देणा नाल नहीं शरअ वालीआं किताबां, कुतबख़ान्यां बाहर आपणा हुक्म सुणाईआ । उस दा इक्को जल्वा इक्को होवे महिराबा, महबूब इक्को सोभा पाईआ। इक्को सजदा होवे इक्को होवे अदाबा, सीस जगदीस इक निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए कलयुग अन्तिम बण जा मंगती, मांगते आपणी झोली डाहीआ। पिछला लेखा छड दे पंडती, जगत नछत्तर ना कोए चतुराईआ। अगली मंज़ल जाणी लँघदी, अगे हो ना कोए अटकाईआ । इक्को नाम निधाना जावीं मंगदी, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। तैनूं बख्शे धार अगम्मे गंग दी, गंगोत्री जिस नूं सीस निवाईआ। तेरी कार मुके रसना जिह्वा वाले दन्द दी, मुख दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मालक इक गुसांईआ। नारद कहे धरनीए आपणी बदल विचार, विचरके दयां सुणाईआ। ज़रा उठ के निगाह मार, नव

सत्त वेख वखाईआ। खेल तक सची सरकार, साहिब की आपणी कल वरताईआ। जोती जाता हो के होया ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं सयदे करदे पैग़म्बर गुर अवतार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। उह भगत सुहेला बण के मीत मुरार, मित्र प्यारा आपणा रूप बदलाईआ। सच दुआर एकँकार दीआ बाती कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ। हरि भगत सुहेले कर तैयार, त्रैगुण अतीता आपणा रंग रंगाईआ। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आपे अन्दर आपे बाहर, निरगुण सरगुण आपणा खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म सुणाईआ। नारद कहे धरनीए धुर दा हुक्म सुणावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। भेव अभेद आप खुल्हावेगा। देवी देव रूप बदलावेगा। रसना जिह्वा ना मूल हिलावेगा। शिव शवै आप अख्वावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावेगा। अवतार पैग़म्बर गुरु नाल मिलावेगा। जोती जाता डगमगावेगा। पुरख बिधाता नाउँ रखावेगा। सतिगुर शब्द शब्द जगावेगा। तेरा नव सत्त दा पर्दा लाहवेगा। जम्बू दीप आप वडयावेगा। भारत खण्ड नूर रुशनावेगा। सम्बल बहि के सोभा पावेगा। दीआ बाती आपणा आप जगावेगा। कमलापाती नूर चमकावेगा। जन भगतां पुछे वाती, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकावेगा। तूं निगाह मारीं बाई भाद्रों राती, माझा देस आप सुहावेगा। कमलीए बिन अक्खां तों नौ खण्ड मारीं झाकी, तेरा लहिणा देणा पूरब देवे बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म वरतावेगा। बेशक तेरा तन वजूद ख़ाकी, कंचन गढ़ आप सुहावेगा। नारद कहे धरनीए मैं उस दी सुणावां बाती, जो बातन आपणा भेव चुकावेगा। तेरा लहिणा देणा पूरा करे लोकमाती, मिरतू लोक वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेव सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम तेरी पुछे वाती, वातावरन सृष्टी दृष्ट वेख वखावेगा।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर सन्तोख सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मैनूं पा दे अगम्मी भिक्ख्या भिक्खी, भीख्या आपणी दया कमाईआ। आसा मनसा पूरी कर दे जो रखी सप्तस ऋषी, अत्री अन्तर ध्यान लगाईआ। तेरी शब्द दी धार सतिजुग जाए लिखी, लेख अगला दे बणाईआ। नव सत्त तेरे प्यार दी होवे सिक्खी, ज़ात वंड ना कोए रखाईआ। जिस दी धार होवे तिक्खी, शस्त्र घायल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा प्यार आप बंधाईआ। धरनी कहे मेरे नरेश, नर नरायण तेरी वड्याईआ। मेरे उत्ते धर्म दा दे उपदेश, उपनिशदां दा लेखा रहे ना राईआ। तेरा दो जहानां इक्को होवे संदेश,

सँध्या सरघी इक्को नाम ध्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कलेश, कलि कल्की आपणा नाउँ प्रगटाईआ। तेरा शब्द दस दस्मेश, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ । मैं धर्म दी धार दर तेरे होई पेश, पेशीनगोईआं पूरब हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे बंक दुआर सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे धर्म गुसाँईंआ, गहर गवर तेरी सरनाईआ। मैं तकीआं तेरीआं बेपरवाहीआं, बेपरवाह तेरी वड वड्याईआ। मेरीआं चारों कुण्ट दुहाईआं, दो जहानां दयां सुणाईआ। मेरे ते कलयुग धार मानव ज़ाती बणी रूप कसाईआं, शरअ शरअ संग रलाईआ। तेरा नाओं भुल गया हिन्दसा इक इकाईआं, ज़ीरो सिफ़रा कम्म किसे ना आईआ। सच प्रीत मुहब्बतां दिसण मूल ना लाईआं, प्यार विच ना कोए समाईआ। मैं कूक सुणावां कढ उच्चीआं बाहींआं, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दुआर इक वड्याईआ । धरनी कहे प्रभू मेरा बंक दुआरा तेरा होवे चरण, हट बाज़ार इक्को नज़री आईआ। जगत जहान मिले सरन, स्वामी देणी माण वड्याईआ। सति सच दा मेरा होवे प्रन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी मिल के वजे वधाईआ। मैं तेरा मंगया इक्को दरन, दर्दी हो के दर्द लैणा वंडाईआ। मैं कलयुग कूड़ी क्रिया नाल लग्गी सड़न, अग्नी अग्ग देणी बुझाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण धार लाउणा आपणे लड़न, कन्नी कन्नी नाल बंधाईआ। मेरी आशा तूं मेरा मैं तेरा तेरा ढोला लग्गी पढ़न, सोहँ शब्द शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उत्ते लेखा पूरा करना सीस धड़न, तन वजूदां वेखणा चाँईं चाँईंआ।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर दलीप सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श अगम्म प्यार, प्रीतम हो के दया कमाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती डगमगाईआ। साचे शब्द दी दे धुन्कार, अनहद नादी राग सुणाईआ। धुर दा अमृत बख्श दे ठंडा ठार, अग्नी तत तत बुझाईआ। रातीं सुत्तयां दे दीदार, दिने जागदयां लैणा मिलाईआ। अठ्ठे पहर रखणा ख़बरदार, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरा नाम लैण उच्चार, ढोले गावण थाउँ थाँईंआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सिक्दार, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे दरे दरबार, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। जन भगत सुहेले जो तेरे पिच्छे पिच्छे फिरदे, दिवस रैण भज्जे

वाहो दाहीआ। माण दे दे घर थिर दे, सचखण्ड निवासी होणा आप सहाईआ। निझर झिरने रहिण झिरदे, अमृत रस जाम प्याईआ। माण बख़्शणे धुर दे पिर दे, पीआ प्रीतम हो के वेख वखाईआ। तेरे नाल आदि जुगादि रहिण मिलदे, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। पर्दे लौहणे बजर कपाटी सिल दे, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू भगत सुहेले तेरे साजण, जुग जुग रीती चली आईआ। तूं शहिनशाह ग़रीब निवाज़ण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दाता दानी धुर दा राजन, वस्त अमोलक देणी वरताईआ। अन्त संवारना सब दा काजन, करनी करते आपणा संग निभाईआ। दीनां दर्दां दुखियां सुणीं अवाज़ण, सचखण्ड निवासी लै अंगड़ाईआ। वेखीं जन भगतां नाल सौदा करीं ना वांग महाजन, धर्म दी धार धर्म लैणा प्रगटाईआ। दिवस रैण बिन रसना जिह्वा तैनूं सारे अराधण, हिरदे आपणा आप देणा टिकाईआ। तूं साहिब स्वामी मोहण माधव मादन, मधुर धुन देणी दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान जन भगतां दुरमति मैल धोणा दाग़ण, दग़ा फ़रेब अन्तर रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर तेजा सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे जन भगतो प्रभ चरण करो निमस्कार, सति धर्मीओ सच दयां सुणाईआ। बिना धूड़ी तों मस्तक लाओ छार, टिक्के अगम्म नाम रमाईआ। अन्तष्करन करो प्यार, हिरदे हरि वसाईआ। मानस जन्म लओ संवार, चुरासी फाँसी गल लओ कटाईआ। जन्म जन्म दा कर्ज़ा लओ उतार, लेखा अवर रहे ना राईआ। सच दुआर मंगो घर बाहर, गृह इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ अगे करो अरदास, बेनन्ती धर्म धार जणाईआ। सद रहिणा साडे पास, प्रभ मनसा पूर कराईआ। पंच विकार करना नास, दु:ख दलिद्रां डेरा ढाहीआ। लेखे लाउणा स्वास स्वास, पवण पवणां विच समाईआ। साडा लेखा रहे ना पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। इक्को जल्वा तक्कीए तेरा नूर प्रकाश, जोती जाता नज़री आईआ। साडा बणया रहे विश्वाश, जगत विषयां विच ना कोए रुढ़ाईआ। मनुआ मन ना होवे बदमुआश, बदी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम साडी लेखे लाउणी लाश, तन वजूद आपणे रंग रंगाईआ। साडा लेख चुकाउणा शंकर नालों कैलाश, कलाधारी कलि कल्की आपणे गृह देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग

आप बणाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द जन भगतां वल मार लै झाकी, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। मेरा सुनेहड़ा बिना कलम शाही दी पाती, अक्खरां रंग ना कोए रंगाईआ। तूं शाह सुल्ताना कमलापाती, पतित पावन इक अख्वाईआ। हरिसंगत तेरा संग रखाया सोलह राती, सोलह कला कृष्ण दए गवाहीआ। आत्म धार बणे तेरे जमाती, सोहणा सगला संग बणाईआ। सब दा सीना ठंडा रखणा छाती, कलयुग अग्न ना कोए तपाईआ। तूं आदि जुगादि पित माती, हरिजन आपणी गोद टिकाईआ। अमृत बख्शणा बूंद स्वांती, अंमिओं रस आप चुआईआ। इक्को रंग रंगाउणा ज़ात पाती, ऊँच नीच ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द जन भगतां बख्श दे खुशीआं, खुशहाली विच वड्याईआ। मंज़लां दस्स दे उच्चीआं, उच्च अगम्म भेव खुल्हाईआ। तेरे नाल लग्गीआं रहिण रुचीआं, प्रीती सके ना कोए तुड़ाईआ। आत्मा अन्तर रहिण सुच्चीआं, सुच संजम इक समझाईआ । जो तेरे प्यार विच कटदे आए बुतीआं, बुतखानयां करीं सफ़ाईआ। सच दीआं सुहञ्जणीआ होण रुतीआं, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। पूरब प्रीतां गंढ्णीआं टुट्टीआं, अगे सके ना कोए तुड़ाईआ। सब नूं खुशीआं विच्चों खुशी प्यार विच्चों देणीआं छुट्टीआं, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरीआं पूरीआं करनीआं जन भगतां नाल मिला तरुटीआं, तोट रहिण कोए ना पाईआ।

६०७
२४

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मूधल ज़िला अमृतसर गुरदयाल सिँघ दे गृह ✪

भाद्रों कहे मेरा दिवस दिहाढ़ चौबीसा, चार जुग तों बाहर एकँकार दए दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मैं खेल वेखदा रिहा बीस बीसा, सरगुण सरगुण वजदी रही वधाईआ। मैं लहिणा देणा तकदा रिहा इक नौ दी धार उनीसा, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगंवत की खेल करे जगदीसा, जगदीश्र धुरदरगाहीआ । जिस दे सचखण्ड दुआर छत्र झुले अगम्मी सीसा, दो जहान नौजवान श्री भगवान आपणा हुक्म वरताईआ। उस दा इक्को नाम अगम्मी इक्को हुक्म हदीसा, बिन अक्खरां हरफ़ हरूफ़ां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। भाद्रों कहे मेरा सतिगुर साहिब स्वामी आदि, पुरख अकाला दीन दयाला आप अख्वाईआ। जो खेले खेल जुग जुगादि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा शब्द अगम्मी नाद, बिन तन्द सितार सुणाईआ।

जिस दा हुक्म वरते ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी कार कमाईआ। सो देवणहार निरगुण धारा आपणी दाद, वस्त अमोलक अगम्म अथाह आप वरताईआ। जिस कारन धरनी धरत धवल धौल रही अराध, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले गाईआ। सो साहिब स्वामी कुदरत कादर तेरे अन्तष्करन होए विस्माद, बिस्मिल हो के आपणा खेल खिलाईआ। जिस नूं सब ने किहा मोहण माधव माध, आदि निरञ्जण दर्द दुःख भय भञ्जण हरि करता इक अख्वाईआ। धरनीए तेरा वड वड करे भाग, भगवन देवे माण वड्याईआ। जिस दी सरन सरनाई इक्को गई लाग, लग मातर डेरा ढाहीआ। मानव ज़ाती अन्तष्करन शब्दी धार दए वैराग, वैरी पंच परपंच अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। हँस बुद्धी बणाए फड़ फड़ काग, माणक मोती नाम चोग चुगाईआ। आत्म जोती बले चराग़, बिन तेल बाती डगमगाईआ । निरगुण धार हो तेरा दुरमति मैल धोवे दाग़, नव सत्त करे सफ़ाईआ। कलयुग साड़ ना सके तैनूं त्रैगुण माया आग, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भाद्रों कहे धरनीए पुरख अकाला अगम्मड़ा तक, बिन नेत्र लोचन नैणां ध्यान लगाईआ। जो तेरा जोती जाता हो के देवे हक, हकीकत दा मालक बेपरवाहीआ। दीन दुनी दे अन्दरों मन कल्पणा मेटे शक, शकवे सारे दए चुकाईआ। जिस दी आशा इक्को रख के गया ऐनुलहक, हक हक दी अवाज़ उठाईआ। उह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सद अणथक, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। तेरा कूड़ कूड़यारा कलयुग धागा देवे कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सति धर्म दा खोल्हे हट्ट, हटवाणा बणे धुरदरगाहीआ । तूं सति सच दा लाहा लैणा खट, खटका अवर रहे ना राईआ। जो ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं गगन गगनंतरां तेरे उत्ते आवे टप, टापूआं दा डेरा देवे ढाहीआ। तेरा सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तके तप, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा लेखा नाल मिलाईआ। तूं खुशीआं विच इक्को ढोला गाउणा जप, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । भाद्रों कहे धरनीए पुरख अकाल होए सहाई, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। जो मालक ख़ालक नूर अलाही, परवरदिगार हक गुसांईआ। तेरा लहिणा देणा दए चुकाई, चौथे जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुर करके गए शनवाई, लेखा जाणे थांओं थाँईआ। सो ख़ालक हो के वेखे बण बण माही, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। तूं कूक पुकार कर करके उच्चीआं बांही, जगत जहान बाहर सुणाईआ। उह अमाम अमामा शाह शहाना अगम्म अथाही, खुद मालक इक अख्वाईआ। जो तेरी अन्त कन्त भगवन्त कटणहार जुदाई, विछोड़ा कलयुग नालों कराईआ। सतिजुग मेला मेले सहिज सुभाई, आप आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण नूर जोत करे रुशनाई, अन्ध

अन्धेरा दए मिटाईआ। भगत सन्त सूफ़ी गुरमुख गुरसिख लए उपजाई, धरनीए धवले तेरे उत्ते दए वड्याईआ। तूं उस साहिब दे चरण धूड़ ख़ाक रमाईं, टिक्के लावीं चाँईं चाँईंआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सरगुण सब ने मन्नया माही, महबूब इक अख्वाईआ। उह लहिणा देणा पूरा करे थाउँ थाँईं, थान थनंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सच हुक्म इक सुणाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। पुरख अकाल वेख वखाएगा। काल महाकाल आप हिलाएगा। तेरी पूरी करे घाल, कीती सेवा झोली पाएगा। कलयुग कूड़ फल झाड़ के डाल, पत्त टहणी सतिजुग आप महकाएगा। धर्म दी धार तैनूं बणाए धर्मसाल, सच दुआरा इक वखाएगा। मानव ज़ाती चाढ़ के रंग लाल, लाल गुलाले आप रंगाएगा। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाएगा। जिस दा लहिणा देणा नाल शाह कंगाल, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाएगा। तैनूं वस्त अमोलक देवे नाम धन माल, अतोल अतुल तेरी झोली पाएगा। तूं धरनीए रखणी आप संभाल, सम्बल बहि के खेल खिलाएगा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत जोत रुशनाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती जाता पुरख बिधाता तेरी सुरत लए संभाल, सिर सिर तेरे हथ्थ टिकाएगा।

६०६
२४

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर अजीत सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे शाहो सूरे सरबंगी, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी मेरे उत्तों लँघी, कोटन कोटि धार आपणा पन्ध मुकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरे धुर दे संगी, सगले साथी हरि रघुनाथी दयां दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी पुश्त हो गई नंगी, सीस जगदीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पवित्र जल रिहा ना यमुना सरस्वती गोदावरी गंगी, गोबिन्द धार की तेरी बेपरवाहीआ। मोह विकार कलयुग माया दाग़ लगाया मेरी अंगी, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। जगत नेत्रहीण तेरी सृष्टी होई अन्धी, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। आह तक लै मेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाली संधी, वायदे भविख्तां वाले वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । धरनी कहे प्रभू अवतार पैग़म्बर गुरुआं दिता संदेस, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। उह मालक नर नरायण नरेश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, देवत सुर बैठण सीस निवाईआ।

सो स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्तिम वसे सम्बल देस, देस देसन्तरां पन्ध मुकाईआ। जो कूड़ी क्रिया तन माटी मेटे कलेश, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। जिस दा योद्धा इक गोबिन्द दस दस्मेस, दूलहा दुलारा इक्को नज़री आईआ । जिस नूं सब ने मन्नया केशव केश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे प्रभू गुर अवतार पैग़म्बरां वालीआं तक लै संधीआं, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। आपणीआं दीनां मज़्बां वालीआं वेख पाबन्दीआं, शरअ शरअ वंड वंडाईआ। आपणीआं जुग चौकड़ी धार सदी सदीवीआं वेख लै लँघीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। मैं भिखारन हो के इक्को मंग मंगीआ, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले कूड़ कुड़यार दीआं मेरे उत्तों मेट तंगीआं, माया ममता मोह विकार रहिण ना पाईआ। मन मनसा तन वजूदां रहिण ना गंदीआं, अमृत मेघ देणा वरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जणा के छन्दीआ, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। दूई दुवैत ढाह दे कंधीआ, मानव एका रंग रंगाईआ। प्रकाश कर दे नूर अलाही चन्दीआ, अन्ध अज्ञान देणा मिटाईआ । सचखण्ड दुआर एकँकार सिध्धीआं कर दे पगडण्डीआं, डण्डावत बन्दना इक्को इक सरनाईआ। जुग जन्म दीआं प्रीतां जन भगतां टुट्टीआं जाण गंढीआं, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। मेरा लहिणा देणा तक लै सत्त दीप नौ खण्डीआं, ब्रह्मण्डां दे मालक ध्यान लगाईआ। तेरी धार तों बाहर पूजा होवे करीरां जंडीआं, पाहनां पत्थरां दीन दुनी सीस झुकाईआ। पंज तत विकारे भेख वखाया जगत पखण्डीआं, नौ दुआरे वासना नाल रखाईआ। निझर झिरना बूंद स्वांती धारां मिलण किसे ना ठण्डीआं, नाभी कवल ना कोए उलटाईआ। सति प्यार बिना प्रभू आत्मा होईआं रंडीआं, हरि कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी किनारा तक लै कलयुग कन्ढी आ, पतण घाट दीन दुनी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू अवतार पैग़म्बर गुर मैनूं दस्स के गए निशानीआं, निशाना दीन दुनी तों बाहर लगाईआ। तेरे उत्ते पुरख अकाल करे मेहरवानीआं, महिबान बीदो जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दितीआं सलामीआं, निव निव डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। उह खेले खेल अगम्म अथाह निहकामीआ, नेहकामी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दीआं आदि जुगादि चार जुग दीआं कथा कहाणीआं, रसना जिह्वा ढोले सारे गाईआ। जिस दा शब्द संदेसा चारे बाणीआं, परा पसन्ती मद्धम बैखरी सोहले रही दृढ़ाईआ। जो लेखा जाणे चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जो आत्म परमात्म हो के करे मेहरवानीआं, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। जो सुरत शब्द करे परवानीआ, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। सो

धरनीए कलयुग अन्त तेरे उत्ते खेले खेल महानीआ, महिमा कथ कथ रखाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के देवे दात महानीआ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। लहिणा देणा मुकाए तेरे उत्ते जीव प्राणीआ, लख चुरासी वेख वखाईआ। उह कलयुग अन्त प्रगट होवे दाता गुण निधानी आ, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जो एका नाम कलमा करे प्रधानीआ, नव सत्त वजदी रहे वधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि शाह सुल्तानीआ, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर हरनाम कौर दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे भगवान, भगवन्त कन्त तेरी ओट तकाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मेरी बेनन्ती करीं परवान, दरगाह साची सचखण्ड दुआरे आस रखाईआ। मेरे आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शाहो भूप सुल्तान, शाह पातशाह तेरा अन्त कहिण किछ ना आईआ। मैं भिखक भिखारन हो के मंगां दान, दाते दानी मेरी झोली देणी भराईआ। परवरदिगार सांझे यार मेरा तेरे उत्ते ईमान, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदी कलयुग अन्त जन भगत सुहेले मेरे उत्ते कर परवान, परम पुरख परमात्म आत्म दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां लेखे लाउणा तन, माटी ख़ाक देणी वड्याईआ। वसेरा रखणा बिन छपरी छन्न, सचखण्ड दुआर देणा टिकाईआ। वासना मूल ना तकीं मन, ममता मोह जगत देणा चुकाईआ। वस्त अमोलक नाम निधाना देणा धन, अतोल अतुल आप वरताईआ। मानस जन्म चुरासी विच्चों बेड़ा देणा बन्नृ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार चाढ़ना चन्न, जोती जाते आपणी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे गृह आप टिकाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख़्शणा सचखण्ड दुआर, दरगाह साची देणी वड्याईआ। चरण प्रीत दे अधार, उदर दा लेखा देणा मुकाईआ। मानस जन्म पैज देणी संवार, आवण जावण लख चुरासी गेड़ कटाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी सति मेलणा जोत जोत निरँकार, निराकार आपणे रंग रंगाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जुग जुग भगत सुहेले देणे तार, तारनहार तेरी वड्याईआ। मैं धरनी धवल धौल मांगत हो के मंगां मंग दर तेरे भिखार, भिखक झोली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां आत्म पुज्जे तेरे गृह, मन्दिर इक्को

६११
२४

सोभा पाईआ। जिथ्थे त्रैगुण अतीता निरगुण धार रहे, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो सति सरूप है, दूसर रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। धरनी कहे मैं भगतां ख़ाहिशां नाल प्यारी, प्रीतम तैनूं दयां जणाईआ। तूं बख़्शणहार एकँकारी, निरँकार तेरी सरनाईआ । तूं शाहो भूप सिक्दारी, परवरदिगार नूर अलाहीआ। मेरी कलम्यां तों बाहर पुकारी, पुनह पुनह करके सीस निवाईआ। मेरे शहिनशाह शाह सुल्तान तूं दाता वड संसारी, भण्डारी सँघारी तेरे हुक्मे सेव कमाईआ। सच वस्त देणी बण दातारी, दाता हो के देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि , आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां होवे तेरा मेल, मिलणी हरि जगदीस लैणी कराईआ। मेरे आदि जुगादी सज्जण सुहेल, साचे संगी धुरदरगाहीआ। सद वसणहारा धाम नवेल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। तेरा आदि जुगादि अचरज खेल, जुग जुग रीती चली आईआ। तेरा दीपक जगे बिन बाती बिन तेल, जन भगतां अन्दर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां लेखे लाउणा जन्म, मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। उजल करना कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जन भगतां मेटणा भरम, भाण्डा भरम भनाईआ । आपणी रखणा सरन, चरणोदक जाम प्याईआ। तूं दाता करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। सन्त सुहेले लगाउणे आपणे लड़न, कन्नी गंढु नाम वाली पुआईआ। उह तेरी मंज़ल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ । दरगाह साची सचखण्ड दुआरे वड़न, थिर घर मिले माण वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा बिन रसना जिह्वा ढोला पढ़न, आत्म परमात्म मिल के वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान आदि जुगादि करनी करन, करता पुरख पुरखोतम इक अख्वाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर करतार सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू कलयुग जीवां बुद्धी कर बिबेक, ममता मोह विकार हँकार दे मिटाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्को बख्श टेक, टिक्के धूड़ी खाक खाक रमाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा रूप अनूपा एक, अनक कलधारी आपणा रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया लाए मूल ना सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। आदि जुगादी बणना खेवट खेट, बेड़ा आपणे

कंध उठाईआ। लख चुरासी तेरे बेटी बेट, पिता पूत लैणा गोद उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू कलयुग जीवां दे दे शब्द बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। हर हिरदा तैनूं लए अराध, रसना जिह्वा ढोले गाईआ। तूं मेटणहारा वाद विवाद, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए नाद, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। मेरे मोहण माधव माध, दर ठांडे मंग मंगाईआ। हरिजन भगत बणा लै आपणे साध, साधना विच दिसे ख़लक खुदाईआ। जोती जाते मोहण माधव माध, मधुर धुन देणी सुणाईआ। मेरे उत्ते सति धर्म कर आबाद, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू कलयुग कूड़ बुझा दे अग्ग, त्रैगुण अतीते दे वड्याईआ। जीव जंत हँस बणा कग, दुरमति मैल मैल धुआईआ। नौ खण्ड सत्त दीप जग, जागरत जोत जोत कर रुशनाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाहरग, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। तूं शाहो भूप सूरा सरबग, शाह पातशाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू कलयुग जीवां दे दे नाम निधान, निरअक्खर धार जणाईआ। शास्त्रां तों बाहर दे ज्ञान, अलिफ़ ये तों बाहर दए सुणाईआ। धुन आत्मक नाद सुणा सची धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। निझर झिरना बूंद स्वांत बख्श पीण खाण, जगत तृष्ना भुख रहे ना राईआ। दीआ बाती कमलापाती हर हिरदे जोत जगा महान, अन्ध अज्ञान अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मनुआ मन ना रहे शैतान, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। नौ दुआर किरपा करनी महान, महिमा कथ कथ सुणाईआ। सचखण्ड निवासी मेरे धुर दे काहन, राम रामा मंग मंगाईआ। नूर नुराने अलाही अमाम, अमलां तों रहित तेरी बेपरवाहीआ। सति धर्म दा हकीकी सच प्या दे जाम, मस्ती नाम खुमारी दे चढ़ाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते तेरा इक्को नाम कलमा होए कलाम, कायनात इक्को इक पढ़ाईआ। इक्को दीन मज़्ह्ब होए इस्लाम, इस्म आज़म इक समझाईआ। शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। पैग़म्बरां दा पूरा कर पैग़ाम, जो संदेशा दिता चाँईं चाँईंआ। धरनी कहे प्रभू मेरी नमो नमो प्रणाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान मेरा अन्त कन्त नव सत्त कर इंतज़ाम, दूसर तुध बिन नज़र कोए ना आईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर गुरनाम सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे किरपा निधान शाहो भूप वड राजन, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी निरगुण धार साजण, सगले संगी बहुरंगी तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव ग़रीब निवाज़ण, निवाज़श विच सब नूं सीस झुकाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर धर्म दी धार बण गई महाजन, सति विच ना कोए समाईआ। माया डसणी डस्सी जाए नागण, अमृत विख रूप बदलाईआ । सच दा सच सुणे कोई ना नादन, धुन आत्मक राग ना कोए दृढ़ाईआ। पृथ्मी कहे मेरा संवारे कोई ना काजन, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। गूढ़ी सुते नींद कलयुग जीव मूल ना जागण, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ । मेरे अन्तष्करन आए वैरागण, वैरी बाहर ना कोए कढ्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू साची बख़्श दे धूड़ा, धूल लवां रमाईआ। मैनूं चाढ़ दे रंग गूढ़ा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। तेरे प्यार विच मानव रहे कोए ना मूढ़ा, मूर्ख मुगधां डेरा ढाहीआ। साचा बख़्श दे नाम सरूरा, सुरती शब्द विच मिलाईआ। मेरी आसा पूरी कर दे जो मूसा रख के गया उत्ते कोहतूरा, तुरत आपणी दया कमाईआ। जिस कारन ईसा बेनन्ती कीती मन्ज़ूरा मेहरवान हो के वेख वखाईआ। जो मुहम्मद ने तैनूं तसव्वर कीता हज़ूरा, हज़रतां दे मालक नूर अलाहीआ। जो संदेश सुणा के गया नानक धार सूरा, सो पुरख निरञ्जण देणी माण वड्याईआ। मैं चाहुंदी तेरा इक्को जोत दा होवे नूरा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। मनुआ मन मानव ज़ाती ना पावे फ़तूरा, बुध बिबेक देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख़्श दे नाम ख़ुमारी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां प्रीती प्रेम बख़्श दे यारी, यारड़े सथर तेरी सेज हंढाईआ। इक्को रंग रंगा दे पुरख नारी, नर नरायण आपणा नैण उठाईआ। मैं चरण कवल धवल हो के करां निमस्कारी, निव निव लागां पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ना करे ख्वारी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। तैनूं सब ने मन्नणा निहकलंक कलि कल्की अवतारी, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। मैं तेरे चरण धूड़ मस्तक लावां छारी, टिक्के धर्म धार रमाईआ। सच इष्ट दी बणां पुजारी, पूजणयोग तेरी ओट तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मानव चाढ़ अगम्मा रंग, मानस मानुख आपणा भेव खुल्हाईआ। निरगुण धार हो के अन्दर लँघ, नूर नुराने आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्द नाद जणा दे बिन रसना जिह्वा दन्द, सरवणां लोड़ रहे ना राईआ। जोती प्रकाश दे दे बिना सूर्या चन्द, अन्ध अन्धेरा

दे मिटाईआ। दूई दूवैती शरअ शरायती अन्तष्करन विच्चों ढाह दे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक समझाईआ। आत्म परमात्म बख्श अनन्द, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। सुरती शब्द इक्को ढोला होवे छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए सुणाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी निरगुण धार हो के पा ठंड, अग्नी तत तत बुझाईआ। जुग चौकड़ी मेरी पिछली टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। निगाह मार लै मेरे नव खण्ड, सत्तां दीपां पर्दा आप चुकाईआ। मेरा खेल तक लै विच वरभण्ड, वरभण्डी मेटे कूड़ लोकाईआ। मैं इक्को आशा विच रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी सेज सुहञ्जणी माटी ख़ाक कर पलँघ, सुख आसण पुरख अबिनाशण आपणा इक लगाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार मार के आ जा पन्ध, दूर दुराडे आपणा पैंडा आप मुकाईआ। सति सतिवादी सतिगुर शब्द निरगुण धार बणा सन्बंध, नाता बिधाता हो के आप जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कर दे पवित्र घर, गृह सुहञ्जणा दे बणाईआ। अमृत धार वहा दे सर, सरोवर इक्को इक जणाईआ। तूं मालक नरायण नर, हरि करता इक अख्वाईआ। मैं मांगा ठांडा दर, भिखक हो के झोली डाहीआ। तेरी सरन सरनाई जाणा पर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा लेखा देणा मुकाईआ । मेरे स्वामी अन्तरजामी मैनूं दे दे आपणा अगम्मा वर, वर दाते होणा सहाईआ। किरपा निधान हो के किरपा कर, मैं किरपन हो के झोली अगे डाहीआ। तेरी सरन सरनाई लग के जावां तर, तारनहार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी अगम्मे हरि, हर हिरदे अन्तर निरंतर निरगुण नूर ज़हूर जोत कर रुशनाईआ।

✪ २८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड रूपोवाली ज़िला अमृतसर गुलज़ार सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए मैं धुर दा आया हल्कारा, पाती पत्रका बिन अक्खरां नाल लिआईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अगम्म अथाह दिता इशारा, बिन नेत्र लोचन नैण सैनत दिती लगाईआ। सतिगुर शब्द गुरदेव कीता हक प्यारा, हकीकत विच्चों हकीकत दिती समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खुशीआं विच कीता मुज़ाहरा, संसारी भण्डारी सँघारी ढोले दिते गाईआ। तेई अवतारां इक्को मिलके लाया नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। पैग़म्बरां बिन कलम शाही लेख वखाया

अपारा, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। गुरु गुरदेव दस्सया नज़ारा, बिन रसना रस दिता चखाईआ। मैं हस के किहा की खेल होए विच संसारा, दीन दुनी की वड्याईआ। झट सतिगुर शब्द किहा तूं धरनी धरत धवल धौल वेखणा चार दीवारा, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण अक्ख खुल्हाईआ। नव खण्ड भज्जणा वारो वारा, सत्तां दीपां पन्ध मुकाईआ। सम्बल निवासी निरगुण दाता पुरख बिधाता तेरा बणया रहे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नारद कहे मैं ख़ुशीआं विच सब नूं कीती निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं सचखण्ड विच्चों होया रवाना, बिन कदमां कदम उठाईआ। जल्वागर तक नूर नुराना, दो जहान वेख्या थांउँ थाईंआ। थिर घर बहि के गाया तराना, चरण कवल तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द अगम्म सुणाया गाणा, जिस दी आदि जुगादि करे ना कोए शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होया मस्ताना, ख़ुशीआं विच ढोले गाईआ। मैं हस के किहा लोकमात मैं वेखां जगत जहाना, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे मैं चलया बिना तन वजूद, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। मेरा मालक इक महबूब, महिबान बीदो नूर अलाहीआ। जिस दी मंज़ल हक मकसूद, शाह शहाना डगमगाईआ। मैं लोआं पुरीआं करके पार हदूद, पूरब पन्ध ल्या मुकाईआ। लोकमात आ के वेख्या मौजूद, मौजूदा तक्कया धुरदरगाहीआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया करनी नेस्तो नाबूद, कल कलेश देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मैं पुज्जा तेरी धरत, धवले दयां दृढ़ाईआ। आह तक लै अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाली शर्त, बिन शरअ दयां वखाईआ। जिस कारन पुरख अकाल दीन दयाल आवे परत, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। तेरा आदि जुगादि पूरब लाहवे कर्ज़, मकरूज़ लहिणा दए चुकाईआ। तेरी मन्ज़ूर करे अर्ज़, बेनन्ती आपणे कदम रखाईआ। जुग बदलणा जिस दा फ़र्ज़, कलयुग कूड़ा दए मिटाईआ। उस दा खेल होणा असचरज, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। तेरी ज़रूर वंडे दर्द, दुखियां होए आप सहाईआ। शरअ छुरी कत्ल करे कोए ना करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। योद्धा सूरबीर बणे मर्द, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। नारद कहे धरनीए आह वेख अगम्मी रुक्का, बिन अक्खरां लेख जणाईआ। जिस विच कलयुग कूड़ी क्रिया पैंडा मुका, अगे अवर ना कोए वधाईआ। इक्को प्रभू दा नाम कलमा होणा दो तुका, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला गाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम वेला ढुका,

मुहम्मद नैण रिहा उठाईआ। ईसा लेखा वेख लै चुका, चारों कुण्ट कुरलाईआ। मूसा तके पंज तत काया बुता, बुतख़ानयां ध्यान लगाईआ। गोबिन्द धार कहे मेरे प्रभू सुहाउणी रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। कलयुग खेले खेल अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं दए कराईआ। कलयुग जीव रहे कोई ना सुता, जिज्ञासुआं दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए चिट्ठी दा अगम्मा लेख, लिखारी कातब नज़र कोए ना आईआ। जिस विच परम पुरख दा अगम्मा भेख, भेखाधारी वेस वटाईआ। जिस दा रूप रंग ना कोए रेख, ततव तत नज़र कोए ना आईआ। उस दा अहिवाल लिख सके ना कोए लेख, वरनण कर ना कोए दृढ़ाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा करे सम्बल देस, देस देसांतरां डेरा ढाहीआ। दो जहानां बणे नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा नाल गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा वेख वखाईआ। जिस नूं झुकणे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा बैठण सीस निवाईआ। उह आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। धरनीए तूं उस दे चरण कवल होणा पेश, पेशीनगोईआं पिछलीआं गोद उठाईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया तेरे उत्तों मेटणा कलेश, कलकातीआं करे सफ़ाईआ। उह शाहो भूप शहिनशाह नरेश, नर नरायण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे धरनीए एह चिट्ठी बड़ी अजीब, जगत विद्या समझ कोए ना पाईआ। इस दे विच नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी तरतीब, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द दी सारे करन दीद, दीदा दानिस्ता वेख के ख़ुशी बणाईआ। उह तेरी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना आपणे रंग रंगाईआ। तेरी ग़फ़लत विच्चों लख चुरासी खोल्हे नींद, सोया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। नारद कहे धरनीए एह रुक्का अगम्म अथाह, अगम्मड़े दिती वड्याईआ। जो मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जो तेरा लहिणा देणा वेखे थांउँ थाँ, थान थनंतर ज़िमीं असमान फोल फुलाईआ। उच्चे टिल्ले पर्वत वेखे थल अस्गाह, जूहां जंगलां पर्दा दए उठाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां वेखे हँस बुद्धी काँ, अन्तर निरंतर आपणा फेरा पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले सिफ्त सलाही वेखे नाँ, नाउँ निरँकार कौण ध्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वेखे गराँ, घट घट अन्दर डेरा लाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तेरा हक करे न्याँ, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। सति धर्म दा मार्ग देवे ला, सतिजुग सच रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा मेटे सूर गाँ, पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सारे रसना जिह्वा बत्ती दन्द करन

वाह वाह, वाहवा वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता आप करे न्याँ, निराकार निरँकार आपणा हुक्म वरताईआ। तेरी अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक पकड़े बांह, परवरदिगार सांझा यार होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे थल अस्गाह, ज़िमीं ज़मां तेरा ध्यान रखाईआ।

✪ २८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर सुरजन सिँघ, महिंदर सिँघ, बचन सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए मैं गया दीप लखण, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। जगत जहान दी धारा वेखी सक्खण, सति सरूप नज़र कोए ना आईआ। तत विरोले कोई ना नाम मधाणे मक्खण, छाछ भरी दिसी लोकाईआ। मैं झट हथ्थ उत्ते मारया हथ्थन, ताली दिती लगाईआ। बिन रसना जिह्वा कथा लग्गा कथन, ढोले अगम्म अथाहीआ। पुरख अकाल नूं लग्गा दस्सण, संदेशा देवां चाँईं चाँईंआ। चारों कुण्ट लग्गा नस्सण, भज्जया वाहो दाहीआ। जगत अन्धेर दिस्या मस्सण, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं गया दीप करौच, कलाधारी की खेल वखाईआ । बिन सहारे गया पहुंच, पंजां ततां बिन आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरी अक्ल बुद्धी दी रही कोई ना सोच, समझ विच ना कोए समझाईआ। झट फ़ुरनयां विच मेरी अन्तष्करन प्रगटी अगम्मी लोच, लोचन नैण दिता खुल्ह्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए मैं पहुंचया देस पुष्कर, अगा पिच्छा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धारों आया उतर, जम्मण वाली कोए ना माईआ। पुरख अकाल दा बण के पुत्तर, पिता इक्को इक जणाईआ। मैं मार के चकर कीता शुकर, शुकराने विच सीस निवाईआ। जां निगह मारी चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ नुक्कर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ । उह सारे प्रभ दे नालों मानव हो गए नमुकर, प्रीती विच ना कोए समाईआ। झगड़ा तक्कया अन्न दाणा टुक्कर, टुकड़यां विच दिसी ख़लक ख़ुदाईआ। मानव ज़ाती रूप धरया बुच्चड़, कसाई कत्लगाह आपणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए

मैं आया देस जम्बू, दीप दीपां ध्यान लगाईआ। मानस ज़ाती अन्तष्करन लग्गया वेख्या लम्बू, कलयुग अग्नी अग्ग तपाईआ। झट मैनूं इशारा दिता कैलाश उत्तों शंकर शम्भू, शिव जी रिहा दृढ़ाईआ। मेरा हुक्म संदेशा अगम्मड़ा जिस नूं सुण के नव सत्त सृष्टी दृष्टी अन्दर कम्बू, थर थराहट विच दिसे लोकाईआ। किसे नज़र ना आए दीन दयाल दीना बंधू, बन्दगी विच सच ना कोए समाईआ। जिधर तक्कया भरम दा दिस्या कंधू, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। झट मैनूं याद आ गया की भारत विच लहिणा देणा सतिगुर अर्जन नाल चन्दू, चन्द सितार निशान मुहम्मद दए गवाहीआ। भारत खण्ड की हुक्म संदेशा धुर दा शब्द वंडू, वस्त कवण वरताईआ। किस बिध पुरख अकाला दीन दयाला दीन दुनी नूं दंडू, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। जन भगतां कवण धार आत्म परमात्म गंढू, सुरती शब्द शब्द जुड़ाईआ। जोती जाता हो के पावे ठंडू, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध संदू, गहर गम्भीर होए सहाईआ। हरिजन सन्त लगाए अंगू, अंगीकार आप अख्वाईआ। की लहिणा देणा माता गुजरी नाल गंगू, गोबिन्द की हुक्म समझाईआ। केहड़ा ढोला गीत कवण गाए छन्दू, कवण नाम वड्याईआ। किस बिध झगड़ा मुकणा बोदी धार जञ्जू, जगत आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे मेरा बिन नेत्रां वग गया हंझू, नैणां छहबर लाईआ। मैं निगाह मारी मानव ज़ाती तत पंजू, पंचम शब्द ना कोए शनवाईआ। बिन सतिगुर किरपा पार कवण लँघू, वञ्झ मुहाणा हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। फेर वेख्या सदी चौधवीं अन्त अख़ीर दिस्या कन्ढू, कन्ढी घाट बैठे सारे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं पुज्जया देस सलमल, दीप दीपां ध्यान लगाईआ। निगाह मारी घड़ी पल पल, पलकां दे पिच्छे ध्यान लगाईआ। समुंद सागर तके जल थल, महीअल वेख्या चाँईं चाँईंआ। कूड़ कुड़यार विच संसार गया रल, तन वजूदां अन्दर डेरा लाईआ। माया ममता सब नूं रही छल, कलयुग अछल छल रूप बणाईआ । काया खेड़ा तक्कया बणया झल्ल, सच रंग ना कोए रंगाईआ। भाग लग्गा दिसे ना काया माटी खल्ल, तन वजूद वजे ना कोए वधाईआ। जिधर तक्कया पंच विकारा दल, दलिद्री दिसी ख़लक ख़ुदाईआ। बिना पुरख अकाल तों एह मसला हो सके ना हल्ल, हालत सके ना कोए बदलाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार वेख लै कल, कलकाती आपणा रूप बदलाईआ। जिस ने बिना शक्ती तों धारया आपणा बल, बलधारी हो के खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसांईआ। नारद कहे धरनीए मैं पुज्जया दीप सान, सतिगुर शब्द दिती वड्याईआ। मैं वेख्या जीव जगत इन्सान, अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट शरअ होई शैतान, रूप आपणा गई बदलाईआ। किसे

नज़र ना आए गोपी काहन, राम रामा रूप ना कोए समाईआ। धर्म रिहा ना कोई ईमान, अमलां विच ना ख़लक खुदाईआ। सच करे ना कोए कलाम, कायनात पई दुहाईआ। मैनूं फेर इशारा दिता धुर अमाम, बिन जबराईल वही दिता सुणाईआ। नारदा वेख लै खेल तमाम, तमअ लालच विच दिसी लोकाईआ। कूड़ी क्रिया कीती ग़ुलाम, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसांईआ। नारद कहे धरनीए मैं तक्कया दीप कुशा, कुछ तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मैं चार जुग दा पुराणा पंडत मैथों पुछ लै पुछां, भेव अगला दयां चुकाईआ। बेशक जगत जहान धर्म नालों रुस्सा, सच संग ना कोए रखाईआ। मेरे अन्तर वेख नीं आया ग़ुस्सा, ग़ुरबत नज़र कोए ना आईआ। मैं सब दा तक्कया अन्दरों बाहरों जुस्सा, ज़मीर वेखी चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे धरनीए तेरे वेखे दीप सत्त, सति सतिवादी दिती वड्याईआ। प्यार मिल्या ना किते ब्रह्म मति, पारब्रह्म रंग ना कोए समाईआ। झगड़ा प्या पंज तत, ततव तत करे लड़ाईआ । नव सत्त उबले दीन दुनी दी रत, रत्न अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। कायम रही किसे ना पत, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। धीरज रिहा कोई ना यत, सति सन्तोख विच ना कोए समाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दी जानणहारा मित गत, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। नारद कहे धरनीए मैं दीपां तेरयां वेख्या नठ, भज्जया वाहो दाहीआ। सति सच मुनारा गया ढठ, चोटी जड़ नज़र कोए ना आईआ। मैं मानव तके अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध अठ्ठ, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीता इक्ठ, चारों कुण्ट आपणे नाच नचाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, चर्च चरागाहां रहे कुरलाईआ। धर्म दा रिहा कोई ना हट्ट, वणजारा वणज ना कोए कराईआ। जोत प्रकाश होए ना लट लट, अन्ध अज्ञान ना कोए चुकाईआ। नारद कहे धरनीए तूं आपणी करवट वट्ट, पासा दीन दुनी नालों बदलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार तेरे उत्ते आवे झट, झटके हलाली वाले वेखे थाउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दी डोरी देवे कट, टुट्टी फेर ना कोए गंढाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दूई दुवैती मेटे फट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा घट घट, गृह अन्तर निरंतर आपणा आसण लाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर चरण सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए मैं सत्त दीप पुज्जा, पूजण योग परम पुरख दिती वड्याईआ। जिधर निगह मारी भाओ अन्दरों दिस्या दूजा, दुवैत विच ख़लक खुदाईआ। नेत्र खोल्ह के तक्कया मैनूं नज़र आया कलयुग चौथा जुगा, आपणी लए अंगड़ाईआ। फेर हुक्म सुणया सतिगुर शब्द भेव समझ लै गुझा, जिस दा राज़ अवर ना कोए खुल्हाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता होवे उग्घा, दो जहान नौजवान आपणा हुक्म वरताईआ। संदेशा सुण लै जो दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों बाहर दृढ़ाईआ। जो इशारा कीता कृष्ण युधिष्टर कलयुग कूड़ी क्रिया दा होवे युद्धा, यदी आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे फेर मैं खुशी विच टप्पया कुद्दा, कुदरत दा मालक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए मैं सत्त दीप आया तक, तकवा हक ना कोए रखाईआ। मैं हुक्म सुणया वाहिद यक, लाशरीक परवरदिगार की दृढ़ाईआ। मैंनूं दीन दुनी उत्ते अन्तर प्या शक, शकवा होया ख़लक खुदाईआ। किसे नूं मालक महबूब मिल्या नहीं हक, हकीकत दा राज़ ना कोए खुल्हाईआ। मैं फेर फड़ के आपणा नक, लकीर ज़िमीं उत्ते खिचाईआ। जां निगह मारी मैनूं लेख दिस्या जो मुहम्मद वायदा पक्क, सदी चौधवीं नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । नारद कहे धरनीए सत्त दीप करन गिरयाज़ारी, बिन नैणां नीर वहाईआ। उच्ची कूकण करन पुकारी, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। साडी तक लै बेकरारी, करारां वाल्या ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरा दे के गए सहारी, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। श्री भगवन्त साडी पा सारी, महासार्थी वेखणा थांउँ थाँईंआ। तूं योद्धा सूरबीर बली बलकारी, बलधारी इक अख्वाईआ। साडे उत्तों सफ़ा मेट कुड़यारी, कूड़ कुटम्ब दा डेरा ढाहीआ। तेरा इक्को नाम होवे जैकारी, ढोला सोहला इक दृढ़ाईआ। इक्को शब्द होवे तेरा सिक्दारी, दूसर सीस ताज ना कोए वखाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारी, पुरख अकाला नूर अलाहीआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों कलि कल्की तेरी आई वारी, कल कलेश मेरा देणा गंवाईआ। सत्त दीप कहिण साडी पुनह पुनह निमस्कारी, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। तूं निरगुण नूर जोत उज्यारी, अमाम अमामा आपणा रूप दरसाईआ। साडे उत्तों कूड़ी क्रिया मेट ख्वारी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरे चरण कवल बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर अजीत सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए सत्त दीप वेखे मैं आप, बिन नेत्र लोचन नैणां ध्यान लगाईआ। सारे दु:ख विछोड़े विच रहे कांप, कलयुग कूड़ी क्रिया कीती दुहाईआ। बिरहों विच कहिण साडा लेखा मुका अगम्मी बाप, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। माया ममता मोह विकार मेट दे ताप, अग्नी तृष्ना ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म सब दा इक्को कर दे जाप, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। नव सत्त मेट दे पाप, पतित पुनीत कर लोकाईआ। तेरा खेल तक्कीए बहु भांत, अनक कलधारी आपणी कल वरताईआ। साडे उत्तों मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। आपणा लेखा पूरब वेख लै खात, खातिआं विच्चों फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। नारद कहे धरनीए सत्त दीप रहे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। पुरख अकाले पाउणी सार, महासाथी तेरी सरनाईआ। असीं होए बड़े दुख्यार, दुखी हो के रहे जणाईआ। धर्म दा रिहा ना प्रचार, प्राचीन दा लेखा सारे गए मुकाईआ। जिधर तक्कीए हाहाकार, हौकयां भरी लोकाईआ। कलयुग कूड़ करे विभचार, कुकर्मा विच ख़लक खुदाईआ। तेरा नाम सुणीए ना सति जैकार, सच विच ना कोए समाईआ। असीं तेरे अगे करीए गिरयाज़ार, रो रो दईए सुणाईआ। तूं कलि कल्की अवतार, निहकलंका नूर अलाहीआ। तेरे चरण कवल निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पा सार, सतिगुर हो के हो सहाईआ। तेरे सब कुझ अख्त्यार, मुख्त्यार गुर अवतार पैग़म्बर नाल मिलाईआ । जोती जाते पुरख बिधाते दे दीदार, नूर नुराने कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। नारद कहे धरनीए सत्त दीप मारदे कूक कूक हाकां, उँची उँची रहे सुणाईआ। सति धर्म दा खोल्ह प्रभू ताका, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सतिगुर शब्द प्रसिध्ध कर दे काका, कायनात दा मालक इक बणाईआ। तेरे नाम कलमे नूं मार सके कोई ना डाका, चोरी नज़र कोए ना आईआ। तेरे कोल साडा आदि आदि दा ख़ाका, सत्त दीप रहे सुणाईआ। तूं मालक ख़ालक छौहर बांका, बाकायदा हुक्म वरताईआ। रूह बुत तन वजूद कर दे पाका, पतित पुनीत आप बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया साडे उत्ते रहे ना साता, सति धर्म देणा प्रगटाईआ। उह वेख लै ईसा धार की कहे कलाका, कल आपणी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन पर्दा सके कोई ना ढाका, ओढण सीस जगदीस ना कोए टिकाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मैणीआं कहारां ज़िला अमृतसर जगीर सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए सत्त दीप मारन चीकां, चीक चिहाढ़ा दो जहान रहे सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे उत्तों दीन मज़्ह्ब मेट दे लीकां, शरअ शरीअत माटी ख़ाकी पंज तत वंड ना कोए वंडाईआ। मेहरवाना नौजुआना श्री भगवाना तेरे विच हक तौफ़ीका, तरफ़दारी एकँकारी इक इकल्ले देणी मिटाईआ। निगह मार लै मेरे उत्ते झगड़ा प्या मन्दिर मसीता, शिवदुआले मठ काअबे रहे कुरलाईआ। मैं चाहुंदा सतिजुग दीआं धर्म धार चला दे रीतां, रीतीवान धुरदरगाहीआ। आदि जुगादि पतित पुनीता, पावन बावन रूप अलाहीआ। मेरे उत्ते संदेशा दे के गया राम नूं सीता, सुरती सति सतिवाद दृढ़ाईआ। कृष्ण राधा किहा की खेल करे त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी की दृढ़ाईआ। की इशारा कीता अर्जन लिखण लगिआं गीता, गोबिन्द भेव अभेद खुल्हाईआ । की पैग़म्बरां दितीआं नसीहतां, मूसा ईसा की वड्याईआ। की नानक गोबिन्द कीतीआं ताकीदां, हुक्म हुक्म नाल जणाईआ। कलयुग अन्त सब ने इक्को पुरख अकाल दीआं रखणीआं उम्मीदां, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए तेरे सत्त दीप पाउंदे रौला, उॅची कूक कूक सुणाईआ। साडा परवरदिगार सांझा यार आवे मौला, मेहरवान महिबान बीदो नूर अलाहीआ। निरगुण धार पूरा करे इकरार कौला, कवल नैणां आपणा भेव खुल्हाईआ। तेरा लहिणा देणा धरनी धरत धवल धौला, धर्म दी धार इक समझाईआ। मानव ज़ाती भेव खुल्हाए पर्दा ओहला, तन वजूदां आपणा खेल समझाईआ। शब्दी धार सच सच सुणाए बोला, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। इक दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा सति सच दा होवे खोल्हा, नव सत्त वजदी रहे वधाईआ। मनुआ मन पाए ना रौला, बुद्धी काग वांग ना कोए कुरलाईआ। सब दा मालक स्वामी इक्को होवे ढोला, ढोल माही इक्को नज़री आईआ। जिस दा अवतार पैगम्बर गुरु बणया रिहा गोला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए सत्त दीप करदे हाहाकार, हौकयां विच दुहाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। मेहरवान धुर दे परवरदिगार, यामबीन तेरी बेपरवाहीआ। नव सत्त साडी वेख धार, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ना कोए रुशनाईआ। मानव ज़ाती होई विभचार, कुकर्मा विच कूड़ लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा नाम रहे उच्चार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर पाए कोई ना सार, महासाथी नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट वध्या कूड़ कुड़यार, कलयुग आपणी कल वरताईआ। धर्म दा दिसे ना कोए सहार,

सति नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। निझर झिरना अमृत रस देवे ना कोई ठंडा ठार, बूँद स्वांती नाभी कवल ना कोए उलटाईआ। शब्द अनादी सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद ना कोए शनवाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोत नूर ना कोए उज्यार, उजाला दो जहान वेखण कोए ना पाईआ। धरनी कहे मेरी पुनह पुनह निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। मेरे सत्तां दीपां पैज संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैनूं नारद किहा धरनीए वेख लै कलयुग अन्तिम वार, वारता पिछली नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर एकँकार परवरदिगार मेरी सुणी पुकार, पुनह पुनह दर तेरे सीस निवाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड निज़ामपुर ज़िला अमृतसर गुरा सिँघ, सरमुख सिँघ दे नवित ✪

नारद कहे धरनीए सत्त दीप रहे उडीक, आसा दीन दुनी बाहर रखाईआ। दूर दुराडा साडा मालक आवे नज़दीक, सचखण्ड निवासी धरनी धवल डेरा लाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया साडे उत्ते मेटे लीक, लाईन आपणी इक जणाईआ। धर्म दा मार्ग इक प्रसिद्ध कराए बारीक, पन्ध इक्को इक दरसाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरा तारीक, अन्ध अज्ञान दए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। नारद कहे धरनीए सत्त दीप ख़ुशीआ नाल देण इशारा, बिन सैनत जगत जणाईआ। किरपा कर कर करतारा, कुदरत कादर दया कमाईआ। प्रगट हो चवीआं अवतारा, चौबीसा आपणा हुक्म वरताईआ। असीं तेरी कर कर थक्के इंतज़ारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। अन्त कलयुग वेख किनारा, सदी चौधवीं भेव चुकाईआ। दरगाह साची सच परवरदिगारा, महबूब तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। सत्त दीप कहिण सुण नारद मुनी, मुनीश्रा दईए जणाईआ। धर्म दी रही कोई ना गुणी, गुणवन्त नज़र कोए ना आईआ। सीस ओढण दिसे धर्म ना चुन्नी, पर्दा परदयां विच्चों ना कोए उठाईआ। सब दी चोटी गई मुन्नी, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। निगाह मार लै लख चुरासी जूनी, चारे खाणी फोल फुलाईआ। तूं जुग चौकड़ी पंडत बड़ा कानूनी, शरअ दा रंग वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। सत्त दीप कहिण नारद तूं निगाह मार ध्यान, नव सत्त वेख वखाईआ। सच दा दिसे ना कोए ज्ञान, विद्या हक ना कोए

पढ़ाईआ। चारों कुण्ट वध्या अभिमान, हउमे विच ख़लक ख़ुदाईआ। झगड़ा दिसे शरअ शैतान, शरीअत बणी रूप कसाईआ। कवण वेला किरपा करे श्री भगवान, मेहरवान होए सहाईआ। साडी बेनन्ती करे परवान, दर ठांडे मंग मंगाईआ। असीं बाले नढ्ढे निधान, सत्त दीप हो के सीस निवाईआ। साडा लहिणा देणा वेखे जगत जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सानूं इक्को नाम दा देवे दान, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को इष्ट होवे महान, इक्को ढोला सिफ्त सलाहीआ। इक्को होवे शब्दी गान, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। इक्को साहिब होवे सुल्तान, हरि करता धुरदरगाहीआ। सत्त दीप कहिण असीं उस दे बाल निधान, बच्चे नन्हे नज़री आईआ। नारद तूं पंडत बड़ा विद्वान, विद्या दे भेव देणे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडी बेनन्ती करे परवान, परम पुरख परमात्म आपणी दया कमाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड निज़ामपुर ज़िला अमृतसर प्रीतम सिँघ दे गृह, ठाकर सिँघ, करतार सिँघ, जसवन्त सिँघ, बलवन्त सिँघ, इन्द्र कौर बोहड़ ✪

६२५
२४

नारद कहे धरनीए मैं सत्त दीप आर पार गया लँघ, धवले बिन कदमां कदम उठाईआ। जिधर तक्कया मानव ज़ाती सीस जगदीस धार विच्चों होई नंग, ओढण नज़र कोए ना आईआ। धर्म दी धार संसार होई भंग, भाण्डा भरम भउ ना कोए भनाईआ। मैनूं इयों दिस्या शरअ शरीअत इक दूजे नाल करन वाली जंग, ममता मोह दए मिटाईआ। कलयुग नटुआ नच्चे वांग मलंग, डौरु डंका कूड़ रिहा वजाईआ। मैं नव सत्त दा प्यार करना भंग, मुहब्बत विच रहिण कोए ना पाईआ। मैनूं इयों दिसदा सब दा हाल होया मंद, मंदभाग दिसे लोकाईआ। उह तक लै निशान तारा चन्द, उम्मत उम्मती नज़र कोए ना आईआ। की खेल करे सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जुग बदलणा जिस दे कोल अनोखा ढंग, तरीका समझ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसांईआ। नारद कहे धरनीए सत्त दीप वेखे अन्दर वड़, बिन तन वजूद माटी ख़ाक ध्यान लगाईआ। निगाह मारी चोटी जड़, चेतन हो के खोज खुजाईआ। कूड़ विकारे अन्दर सारे रहे सड़, सांतक सति ना कोए वरताईआ। झगड़ा वेख्या सीस धड़, तन वजूद रहे कुरलाईआ। आत्म परमात्म ढोला लए कोए ना पढ़, रसना जिह्वा सारे रहे गाईआ। प्रकाश दिसे ना बहत्तर नड़, तन वजूद ना कोए रुशनाईआ। मैं लखण करौंच पुष्कर जम्बू दीप वेख्या धड़, सान सलमल कुशा ध्यान

लगाईआ। चारों कुण्ट माया ममता मोह विकार दा वगे हड़, हउमे सब नूं रही रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे धरनीए सत्तां दीपां अन्दर धरया ध्यान, बिन नेत्र नैण उठाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए निशान, निशाने दीन दुनी गई बदलाईआ। किसे नूं मिले ना सुरती अन्दर सीता राम, शब्दी रंग ना कोए रंगाईआ। नाता तुट्टया साचे काहन, घनईया संग ना कोए बणाईआ। नूर नज़र ना आए अगम्मे अमाम, अमलां तों रहित नज़र कोए ना आईआ। गुरु गुरदेवा करे ना कोए प्रणाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोले सारे गाईआ। मैं वेख के होया हैरान, हैरानी मेरे अन्दर आईआ। की खेल करे भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। की लहिणा देणा जीव जगत जहान, मानव ज़ाती की आपणा हुक्म वरताईआ। नव सत्त सुंञ मसाण, बीआबान दिसे ख़लक खुदाईआ। मैनूं इयों दिस्या पुष्कर होणा पहला युद्ध दा मैदान, सोहणा आपणा खेल खिलाईआ। फेर करौच लग्गणा निशान, निशाना सके ना कोए बदलाईआ। एह हुक्म वरते वाली दो जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए सत्तां दीपां होणा युद्ध, युधिष्टर दा लेखा काहन कृष्ण पूर कराईआ। पवित्र रहिणी नहीं किसे दी बुद्ध, बुध्ध महात्मा जो गया समझाईआ। उम्मत उम्मती शरअ शरीअत विच जाणी कुद्द, सदी चौधवीं अन्त अख़ीर लए अंगड़ाईआ। ईमान धर्म दा निशाना जाणा उड, उग्घण आथण रहिण कोए ना पाईआ। आ वेख लै सब दी औध गई पुग, अगे अवर ना कोए वधाईआ। लहिणा देणा मुकणा अन्तिम कलयुग, जुगती प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म गुसांईआ। सत्त दीप कहिण नारद साडा अन्तष्करन रिहा रो, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साडे उत्ते झगड़ा होणा धार दो, दो धड़ दिसे लोकाईआ। धर्म दी धार अधर्म ने लैणी खोह, सच रंग ना कोए समाईआ । सच प्रकाश दी रहे कोई ना लो, अन्ध अन्धेरा जाणा छाईआ। पंचां पंचां देशां बणे गरोह, नाता जगत जुगत जुड़ाईआ। हुक्म वरते पुरख अकाला सो, साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणी खेल खिलाईआ। दीन दुनी दी धार इक दूजे नालों करे निर्मोह, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। अमृत रस निझर झिरना देवे कोई ना चो, बूंद स्वांती कवल नाभी ना कोए टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी आपे हो, ब्रह्म ब्रह्मादी हो के वेख वखाईआ।

धरनी कहे प्रभू नारद की मैनूं संदेशा दिता अज्ज, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। मैं वेख्या जगत जहान सृष्टी जग, तन वजूदां फोल फुलाईआ। सब दे अन्तर कलयुग कल्पना लग्गी अग्ग, सांतक सति ना कोए कराईआ। प्रभू दा दर्शन मिले ना किसे उपर शाहरग, नौ दुआर दा डेरा ढाहीआ। शब्द नाद सुणे ना कोए अनहद, नादी नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारद मैं सुणया अगम्म फ़रमाना, जो फ़ुरनयां बाहर जणाईआ। की कलयुग अन्तिम वरते भाणा, भावी आपणा खेल वरताईआ। जिस तख्तों लौहणा राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे वैराना, वैरी घर घर नज़री आईआ। एह हुक्म वरते श्री भगवाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा अन्तिम सति सति दा झुल्ले निशाना, निशाना अवर ना कोए रखाईआ। उह सुरती शब्द बणे अगम्मी कान्हा, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। मेरे उत्ते पहरे अगम्मी बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। मैं उस दे चरण कवल करां ध्याना, बिन नैणां नैण उठाईआ। उह शहिनशाह शाहो भूप सुल्ताना, पातशाह अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी बेनन्ती करे परवाना, परम पुरख पुरखोतम आपणी दया कमाईआ।

✪ ३० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर दरबार निवासी दलीप सिँघ, रत्न सिँघ, कश्मीर सिँघ, सुलखण सिँघ, प्रीतम सिँघ, भजन सिँघ, ईश्र सिँघ, जोगा सिँघ, भान सिँघ दे नवित ✪

धरनी कहे नारदा मेरे उत्ते तक प्रभू दे भगत, भगवन देवणहार वड्याईआ। जिन्हां नूं माण देवे विच्चों जगत, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखे ला के बूँद रक्त, तन वजूद आप वड्याईआ। सति धर्म दी बख्श शक्त, सेवक सेवा साची सच समझाईआ। जिस दा सुहञ्जणा होया वक्त, व्यक्तिआं आपणे रंग रंगाईआ। जो भगत उधारे फ़कत, फ़िकरा इक्को नाम सुणाईआ। उह मेरी सुहञ्जणी करे धरत, धवल दए वड्याईआ। निरगुण दाता हो के आया परत, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। पूरब पिछली पूरी करे शर्त, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कौल दए निभाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणे मर्द, मेहरवान इक अख्वाईआ। जन भगतां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। नारद कहे धरनीए मैं वेखे भगत रंगीले, प्रभ दिती माण वड्याईआ।

उह जुग चौकड़ी वसदे रहिणे कबीले, दीन दुनी ना कोए भुलाईआ। जिन्हां दे सतिगुर शब्द बणाए वसीले, मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। उन्हां नूं अगे करने पैण ना हीले, जगत यतन दी लोड़ रहे ना राईआ। उन्हां दी मंज़ल प्रभ ने रखणी उपर अम्बर नीले, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। जन भगत बणाऊ छैल छबीले, सोहणा आपणा रंग रंगाईआ। तन वजूद सुहा के वस्त्र पीले, पारब्रह्म प्रभ देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड दुआर चढ़ना अगम्मे टीले, पर्वत चोटीआं पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारदा मैं दस्सां सच पुकार, बिन रसना ढोला गाईआ। मेरा प्रभू मेरा निरँकार, निरवैर इक अख्वाईआ। जिस जुग चौकड़ी खेल खेलया विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। ततां वाले भेज अवतार, पैग़म्बर गुर शब्द संदेशे ढोले रिहा सुणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मेरी पावे सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। जो मानव ज़ाती देवे इक अधार, दीन मज़्हब शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जिस आत्म परमात्म नूर कीता उज्यार, उजाला करे थांउँ थाँईंआ। सो मैनूं देवणहार अधार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सति सति दा बणा के भगत दुआर, हरि भगत लए गल लाईआ। बेशक एह मंजल बड़ी दुष्वार, बिन सतिगुर किरपा चढ़न कोए ना पाईआ। मेरा साहिब भगत वछल गिरधार, जोती जाता इक अख्वाईआ। जो कलयुग अन्त जन भगतां पैज रिहा संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण हो के सरगुण देवे दरस दीदार, जोती जाता नज़री आईआ। हरिजन बणा के सारे सेवादार, सेवा सच कमाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा दे के उधार, अगला लेखा आपणे नाल रखाईआ। दीन दुनी विच्चों कढुके बाहर, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के सच जैकार, सोहँ ढोला दिता दृढ़ाईआ। हरिजन सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख बख्श के सहार, सदा सदा सद आपणे रंग रंगाईआ। मैं उस प्रभू दे चरण कवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जो भगतां बणया मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चार, चौकड़ी आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी आपणा खेल खिलाईआ। सो भगतन मीता धुर दा यार, यारड़ा सथर सेज अगम्म हंढाईआ। कलि कल्की लए अवतार, कलयुग लहिणे दए मुकाईआ। तिस साहिब नूं डण्डावत बन्दना सईयदयां विच निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। जो भगत सुहेले गुरु गुर चेले दर ठांडे जाए तार, तारनहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहार सदा सहार, सहायक नायक इक्को इक अख्वाईआ।

✪ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

अस्सू कहे सो पुरख निरञ्जण मेरी आसा कर दे पूरी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरञ्जण आपणा पन्ध मुका दे नेड़ दूरी, दो जहान नौजुआन मर्द मर्दान इक्को रंग वखाईआ। एकँकार तेरा दरस मंगां हाज़र हज़ूरी, शाह पातशाह शहिनशाह दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि निरञ्जण दर्द दुःख भञ्जण प्रकाश दे अगम्मी नूरी, निरवैर निराकार आपणा रंग रंगाईआ। अबिनाशी करते मेरी तक लै मजबूरी, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुलाईआ। श्री भगवान नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी मेरी झोली पा दे मज़दूरी, नित नवित तेरी सेव कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरे अन्तष्करन आशा रहे ना कूरी, कूड़ी क्रिया बाहर कढाईआ। सतिगुर शब्द योद्धे सूरबीर बलवान सूरी, बलधारी होणा आप सहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आदि जुगादी मेरे सगले साथी मेरी मनसा ना रहे अधूरी, हाज़र हो के वेखणा चाँई चाँईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु मेरी आसा मनसा तकणी जो इशारा दिता मूसा उत्ते कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर वेख वखाईआ। मेरा लहिणा तक लओ जिस कारन नानक सतिगुर मोढे रखी भूरी, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। अस्सू कहे मेरे साहिब स्वामी मैं निरगुण धार आसां रखीआं, तृष्ना जगत ना नाल मिलाईआ। मैं तेरा दर्शन करना चाहुंदा बिन अक्खीआं, जग नेत्र लोचन दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरी आशा पूरन कर दे जो संदेशा दिता काहन ने सखीआँ, राधा रुकमनी नाल मिलाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान सर्ब कला समर्थीआ, बेपरवाह अगम्म अथाहीआ। केते जुग चौकड़ीआं पिच्छे तेरीआं गईआं नट्ठीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। मैं चार जुग दीआं गुर अवतार पैग़म्बरां दीआं ख़ाहिशां कीतीआं इक्ट्ठीआं, दर तेरे दयां टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। अस्सू कहे प्रभू मैं आदि जुगादी मंगता, भिखारी एकँकारी तेरा नज़री आईआ। मेरे अन्तर निरंतर गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं बोध अगाधा पंडता, बुद्धी तों बाहर तेरी पढ़ाईआ। मैं चाहुंदी नौ खण्ड पृथमी तेरी इक्को होवे संगता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरे प्यार विच लख चुरासी दिसे जीव जंता, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तेरा नूर ज़हूर नज़री आवे तेरे भगतां सन्तां, गुरमुख गुरसिख लै उठाईआ। तूं ठाकर स्वामी मेरा बेअन्ता, बेऐब नूर अलाहीआ। झगड़ा मेट दे काया अन्दर कूड़ कुड़यारे मन दा, मनसा मोह गंवाईआ। प्रकाश करदे आपणे नूरी चन्न दा, बिन तेल बाती डगमगाईआ। लालच रहे ना किसे माया धन दा, धर्म दी धार इक समझाईआ। वणजारा रहे ना कोई चुगली कन्न दा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा मिटाईआ। प्रीतम प्यारा बणना आपणे जन दा, आपे

होवे जणेंदी माईआ। घर सुहाउणा बिन छपरी छन्न दा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरी आशा बहु पुराणी, पुराण अठारां कहिण कुछ ना पाईआ। मेरा लेखा ना जाणे चार जुग दी बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी अगम्म अथाह अकथ कहाणी, काग़ज़ शाही लिख सके ना राईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह मेरा इक नूर नुरानी, जोती जाता डगमगाईआ। तेरे चरण कवल निमस्कार करीं परवानी, परम पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा याद कर लै जिस वेले संदेशा दिता दुर्गा अष्टभुज भवानी, सुम्ब निसुम्ब दैतां घात कराईआ। राम ने किहा मेरा राम खेले खेल महानी, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। कृष्ण किहा उह काहनां दा काहन शहिनशाह उपर असमानी, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। पैग़म्बरां तेरा जल्वा नूर कीता परवानी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर तेरे ढोले गाईआ । नानक निरगुण सरगुण दिती सतिनाम निशानी, निशाने दो जहान बदलाईआ। गोबिन्द शस्त्र खण्डा तीर कमानी, चिल्ला ज़िमीं असमान चढ़ाईआ। फेर शब्द बोलया बिन रसना जिह्वा कलामी, कायनात बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरा प्रविष्टा पहला, परम पुरख दयां जणाईआ। तूं वसणहारा सचखण्ड दुआर अगम्मे महला, महल अटल इक सुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेखीं हो ना जावीं अणगहिला, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा ध्यान रखाईआ । कूड़ कुड़यार विच संसार नौ खण्ड पृथ्मी तक लै फैला, सत्त दीप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरा तक लै नव नव चार दा लहिणा, पूरब पिछला वेख वखाईआ। तूं स्वामी ठाकर मेरा अन्तिम लेखा देणा, देवणहार तेरी वड्याईआ। मैं चाहुंदा धरनी उत्ते तेरा दर्शन करां अगम्मे नैणां, बिन जगत लोचन दर्शन पाईआ। मैनूं याद आउंदी जो इशारा दिता बाल्मीक विच रमायणा, राम राम तेरी दुहाईआ। जिस कारन कृष्ण दा अर्जन मन्नया कहिणा, भगत भगवान मिल के वजे वधाईआ। जिस धार विच मूसा तेरी सरन सरनाई ढहणा, तन माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। जिस हुक्म विच ईसा सलीब तन पाया गहिणा, फाँसी आपणे गल लटकाईआ। जिस हुक्म विच मुहम्मद चार यारी नाल मिल के तेरा मन्नया भाणा सहणा, निव निव सीस निवाईआ। नानक गोबिन्द धार तेरे नालों ना होई तरफ़ैणां, तरफ़दारी नज़र कोए ना आईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले सदा सदा सद सचखण्ड विच नहीं बहणा, लोकमाती आपणा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा नाम किसे नहीं लैणा, रसना जिह्वा सब दी

होई हल्काईआ। माया ममता मोह विकार नव सत्त वहे वहिणा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। अस्सू कहे मेरे पुरख अकाले मैं तेरी सरन सरनाई ढहणा, ढहि ढहि धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे मेरे परम पुरख अगम्म, अगम्मड़े तेरी सरनाईआ। दीन दयाल मेरे मेट दे भरम, भाण्डा भरम भनाईआ। दीन दुनी दी दृष्टी बदल दे चर्म, चम्म दृष्टी रहिण कोए ना पाईआ। सब दा सांझा कर दे कर्म, निहकर्मी आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा रहे ना कोई ज़ात वरन, बरनां लेखा देणा मुकाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सारे तेरा ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर दाते शब्दी धार बन्ह्‌ा लै लड़न, पल्लू गंढु ना कोए खुल्ह्‌ाईआ। हरिजन सन्त सुहेले तेरी मंज़ल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरे वड़न दरन, मुकामे हक निरगुण धार सोभा पाईआ। मेरे मेहरवाना नौजुआना श्री भगवाना लेखा मुका दे सीस धड़न, मिट्टी ख़ाक तन वजूदां कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। अस्सू कहे मेरे पुरख अकाले, अकल कलधारी देणी वड्याईआ। तुध बिन मेरी सुरत

६३१ ना कोए संभाले, सम्बल दे मालक होणा आप सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दाग़ मेट दे काले, कलकातीआं डेरा ढाहीआ। ६३१

२४ सति धर्म इक घर बणा सची धर्मसाले, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को रंग रंगाईआ। तेरे नाम दी आत्म परमात्म होवे माले, मन २४

का मणका देणा भुआईआ। साचा मार्ग दस्स सुखाले, अगे हो ना कोए अटकाईआ। अस्सू कहे मैं जुग चौकड़ी बथेरी घालण लई घाले, सेवक हो के सेव कमाईआ। अन्त मेरी तेरे चरण कवल इक बेनन्ती इक सवाले, अर्ज़ अरज़ोई इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह्‌ाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरा आदि अन्त दा अगम्म प्यार, प्रीती निरगुण धार रखाईआ। तूं देवणहार दातार, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं मांगत बणां भिखार, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। तूं भरना सच भण्डार, अतोट अतुट आप वरताईआ। साचा नाम कलमा कर उज्यार, दो जहान वजे वधाईआ। इक्को इष्ट तेरा होवे सची सरकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को शब्द होवे जैकार, इक्को डंका वजे थांउँ थाँईआ। इक्को गृह होवे निमस्कार, इक्को सजदा सीस निवाईआ। इक्को होवे सब दा परवरदिगार, सांझा यार नूर अलाहीआ। तूं देवणहार आप दातार, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव तेरा दे के गए इशार, सैनत शब्द वाली लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आए कलि कल्की अवतार, निहकलंका आपणा रूप बदलाईआ। अमाम अमामा खेल करे अपार, अपरम्पर हो के आपणा वेस वटाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता सचखण्ड निवासी सिरजणहार,

सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अस्सू कहे मैं मंगता तूं देवणहार अतुट भण्डार, भण्डारी सँघारी तैनूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त आप वरताईआ। पुरख अकाल कहे सुण अस्सू मीत, आदि जुगादी हो के दयां जणाईआ। नित नवित जुग चौकड़ी मेरी बदलदी रहे रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम रिहा बीत, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं सच संदेशा रखणा चीत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। मैं झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीत, काया काअबा हक करां रुशनाईआ। मैं मालक ख़ालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरा इक्को होवे गीत, तूं मेरा मैं तेरा सारे लैण गाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां अन्तर निरंतर करां ठांडा सीत, कलयुग अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन भगतां साचे सन्तां बख्श के सच प्रीत, प्रीतम हो के मिलणा चाँईं चाँईंआ। मेरा खेल सदा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरे कोल जुग चौकड़ी पुराणीआं चिठ्ठीआं, कातब लिखारी नज़र कोए ना आईआ। जिस विच ख़बरां जगत नेत्रां अनडिठ्ठीआं, रसना जिह्वा पढ़ ना कोए सुणाईआ। जुग चौकड़ी दीआं धारां अवतारां जो लाईआं हाहे उत्ते टिप्पीआं, सस्सा होड़े नाल मिलाईआ। उन्हां दीआं धारां वेख लै चिट्टीआं, कालख टिक्का ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरे कोल अगम्मा लेख, बिन अक्खरां दयां लिखाईआ। जिस विच सतिगुर शब्द दिता संदेश, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा मुछ दाढ़ी ना केस, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जिस दा सुत दुलारा गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा वेख वखाईआ। जिस संदेशा दिता उह कलयुग अन्त आवे सम्बल देश, जोती जाता पुरख बिधाता फेरा पाईआ। जिस दे दर अवतार पैग़म्बर गुरु होणे पेश, पेशीनगोईआं आपणा फेरा पाईआ। नाल लहिणा देणा तकणा कलयुग क्रिया कूड़ कलेश, कलकातीआं नाल मिलाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा मुसायक मुल्ला शेख़, शरअ शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। उस दा लेखा होणा देस बदेस, नव सत्त आपणा हुक्म वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरे कोल बिन अक्खरां तों अगम्मी तहरीर, जो पैग़म्बरां दिती जणाईआ। जिस विच तेरा लेखा लिख्या उह मालक बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दे कोल अगम्मी तदबीर, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। जिन सदी चौधवीं अन्त शरअ दी कटणी ज़ंजीर, शरीअत

वंड ना कोए वंडाईआ। पैग़म्बरां जिस नूं दस्सया लातस्वीर, तसव्वर कर ना कोए वखाईआ। गुरु गुरदेवां किहा गहर गम्भीर, गवर वड वड्याईआ । सो लहिणा देणा लेखा जाणे अन्त अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरे कोल लेख दिसे बिना सतरा, अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। काग़ज़ दिसे कोई ना पत्रा, शाही रंग ना कोए चढ़ाईआ। जद हुक्म सुणां अगम्मी ते आवे सत्त दो दी धार बहत्तरा, भेव सके ना कोए जणाईआ। जां हुक्म सुणां ते संदेशा मिले चुहत्तरा, चार जुग तों बाहर पढ़ाईआ। जां नीचे तकां की बणत बणाई सत्तरां, गोबिन्द वेख वखाईआ। अस्सू कहे मैं मार मार के थक्कया टक्करां, आप आपणी पत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। दर साचे अलख जगाउंदा हां। सो पुरख निरञ्जण सीस निवाउंदा हां। हरि पुरख निरञ्जण राह तकाउंदा हां। एकँकारा वेख वखाउंदा हां। आदि निरञ्जण नूर चमकाउंदा हां। श्री भगवान सर्ब गुण गाउंदा हां। अबिनाशी करते रंग रंगाउंदा हां। पारब्रह्म भेव चुकाउंदा हां। सतिगुर शब्द इक्को मंग मंगाउंदा हां। निमस्कार करां नाल अदब, सजदयां विच सीस झुकाउंदा हां। धरनी विच होया ग़ज़ब, हैरानी विच आप सुणाउंदा हां। आ के तक लै दीन दुनी दे मज़्हब, शरअ दे पर्दे आप फुलाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाउंदा हां। अस्सू कहे प्रभू मेरी आसा चार जुग दी वड्डी, वडया तेरे अगे रखाईआ। तूं प्यार मुहब्बत विच लडाउणी लड्डी, प्रेम रंग रंगाईआ। उह गल्ल याद कर लै जेहड़ी कबीर सुणाई चलाउंदयां खड्डी, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। प्रभू दी धार गाउणी नहीं किसे प्यार वाली ढड्डी, सारंग सार कोए ना पाईआ। सच प्रीती अन्दरों सब ने जाणी कढ्ढी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। फेर इशारा दिता उह खेल होणी अन्त चौधवीं सदी, सदमा होवे थांउँ थाँईंआ। सरसे दी थाँ फ़रात दी ख़ून दी वहिणी नदी, गोबिन्द दा लेख ना कोए मिटाईआ। इक जोत सम्बल देस होणी जगी, कबीर बेनज़ीर गया समझाईआ। उस नूं सब ने कहिणा नूर अलाही रब्बी, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। उह खेल करे जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी अन्दर अग्ग होणी लग्गी, जगत जुगत सके ना कोए बुझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मानस मानव मानुख करन बदी, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ। उस वेले कायम रहिणी नहीं किसे बादशाह दी गद्दी, गदागर रोवण मारन धाहीआ। पिछली कीती जगत जिज्ञासुआं दी जांदी रद्दी, संसारीआं संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसांईआ। अस्सू कहे प्रभू मैनूं बख्श दे सति सच बहारां, खुशीआं ढोले तेरे तेरे गाईआ।

मेरे शहिनशाही सम्मत ग्यारां, इक इक नाल मिल के वज्जे वधाईआ। तेरा रूप अनूप दो जहान होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा नूर देणा चमकाईआ। पर मैनूं ऐउँ दिसदा मुहम्मद दी याद विच जदों झगड़ा छेड़ना ते छेड़ना विच्चों काहरा, कहर वरते ख़लक खुदाईआ। उम्मत नबी रसूल कोई ना रहे बाहरा, बहिरहाल सब दा लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। धरनी उत्तों कलयुग कूड़ मेट अँधयारा, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। निरगुण निराकार निरँकार सच नाम दे धुन्कारा, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत रस निझर झिरनिउँ बख्श दे ठण्डा ठारा, बूँद स्वांती जाम प्याईआ। जन भगतां मेल मिला विछड़या रहे ना कोई विच संसारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता निहकलंक कलि कल्की अवतारा, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। तेरा हुक्म वरते सची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अस्सू कहे प्रभू हरि भगत सुहेले तेरे खड़े दुआरा, दर ठांडे अलख जगाईआ। पूरब लहिणा देणा लेखा रहे ना जगत दी धारा, वासना कूड़ ना कोए हल्काईआ। सति सच बख्श दे नाम अधारा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सोहँ शब्द तेरा आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक जैकारा, दो जहान करे शनवाईआ। अस्सू कहे मेरी डण्डावत बन्दना तेरी चरण धूड़ मस्तक लावां छारा, शहिनशाह टिक्के ख़ाक रमाईआ। तूं नूर अलाह बेपरवाह मेरा परवरदिगारा, महबूब महिबान बीदो इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूसर अवर ना कोए सहारा, सहायक नायक नज़र कोए ना आईआ।

✪ २ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड हेरां ज़िला अमृतसर कुलवन्त सिँघ दे गृह ✪

अस्सू कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा दो, दो जहानां श्री भगवाना नौजुआना ध्यान लगाईआ। इक्को जल्वा तकां पुरख अकाला सो, अन्तरजामी इक्को वेख वखाईआ। हँ ब्रह्म जो आपे जावे हो, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। आदि जुगादी बणाउणहारा मोह, मुहब्बत आपणा नाम प्रगटाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म बर्षहिमादी हो के बख्शे लो, बिन लोचन नैण अक्ख करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे मेरा दूजा प्रविष्टा, निरगुण सरगुण ध्यान लगाईआ। मेरा बिना ततां तों दिसे इष्टा, इष्ट देव इक मनाईआ। मेरा लेखा नाल राम

वशिष्टा, विश्व दा भेव जो खुल्हाईआ। बिन नेत्र लोचन नैण जो निरगुण धार दिसदा, सरगुण वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। दो अस्सू कहे उह तक लओ सतिगुर शब्द देवे संदेशा, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। निरगुण धार तक अगम्मा नरेशा, नर नरायण नूर अलाहीआ । जिस दा सुत दुलारा गोबिन्द दस दस्मेसा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। उह आदि जुगादि रहे हमेशा, जुग चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। जो कलयुग अन्त धारे अगम्मा भेसा, भगवन्त आपणा रूप बदलाईआ। जिस दा फ़रमान कलम्यां बाहर होए संदेसा, निरगुण निरगुण दए जणाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके सहसर मुख शेषा, दो सहिसर जिह्वा ना कोए चतुराईआ। जुग चौकड़ी जिस दा समझ सके कोई ना भेसा, भेखाधारी अगम्म अथाहीआ। उह कलयुग अन्तिम वसे सम्बल देसा, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म कांड दा मेटे कलेशा, कलकातीआं करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मैं आया विच्चों सचखण्ड दुआर, सतिगुर शब्द दिती वड्याईआ। मार्ग पन्ध मार के पुजया विच संसार, ब्रह्मण्ड खण्ड लेखा रहे ना राईआ। नव सत्त दीन दुनी दी तक धार, धरत धवल धौल वेख वखाईआ। आत्म परमात्म सति सच सुणे ना कोए जैकार, बिन रसना जिह्वा ढोला कोए ना गाईआ। जगत विद्या कूक कूक करे पुकार, नव नव नव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द दस्सया हुक्म अपारा, बिन काग़ज़ कलम शाही दिता लिखाईआ। नौ खण्ड पृथमी तकणा जीव जंत संसारा, बिन नेत्र लोचन नैण नैण उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणा धूंआँधारा, टिल्ले पर्वत फोलणे थांउँ थाँईंआ। किस बिध खेल होवे धरनी उत्ते दोबारा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। नारद कहे मैं पन्ध मारया सारा, भज्जया वाहो दाहीआ। लखण दीप तक्कया हाहाकारा, करौच रो रो रिहा वखाईआ। पुष्कर देवे ना कोए सहारा, जम्बू रंग ना कोए रंगाईआ। सलमल होया धूंआँधारा, सान नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। कुशा माया ममता लग्गा अखाड़ा, मोह विकारा नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे सुण दो अस्सू, सज्जणा तैनूं दयां जणाईआ। क्यों तेरे विच कलयुग अन्धेरा होया रैण मस्सू, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। अस्सू कहे मैं सच संदेशा दस्सू, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिछला लेखा वेख वखाईआ। नारदा मेरे दिवस संदेशा दिता मसीह यसूह, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। अन्त अख़ीर मेरी उम्मत एसे दिन बेमुहाणी नस्सू, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा गॉड अगम्मा राड इक्को

कसू, कसम खा के गया सुणाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर धुर दे हुक्म नाल सब नूं डस्सू, तीर अणयाला इक चलाईआ। जिस दा खेड़ा हकीकत वाला साढे तिन्न हथ्थ दा इक्को वसू, जिथ्थे वसल मिले यार खुदाईआ। दुनिया दी धार होणी ढोर पशु, पंछी वेखण कोए ना पाईआ। नाले दोहथ्थड़ मारी डिग्ग प्या धरनी उत्ते खा के गशू, आपणी सुध ना कोए रखाईआ। पता नहीं उस वेले केहड़ा मानस मानव मानुख बचू, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पुष्कर दा अँगयार भठियाला तपू, तात पात समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे नारदा मेरा सुण विचार, विचरके दयां सुणाईआ। की संदेशा दिता मुहम्मद चार यार, बिन अलिफ़ ये दृढ़ाईआ। की हुक्म होया परवरदिगार, सांझा यार की समझाईआ। जबराईल किस बिध हलाए तार, तरह तरह दृढ़ाईआ। दो अस्सू कहे नारदा मेरा प्रविष्टा लै विचार, विचर के लै सुणाईआ। मुहम्मद कदम बोसी विच नूर अलाही नूं किहा इसतगुफ़ार, गुफ़त शनीद तेरी बेपरवाहीआ। यम ज़ू अलाह बिसमिले कूज़ा नूज़े सवां ज़सवे मुवा ज़मीउल ज़मी नवलजू शक्ती ज़मा अर्शे नवां फ़र्शे खुदा खुद तेरी बेपरवाहीआ। अस्सू कहे नारद मुहम्मदे दुआ दस्ते ज़वू यक मुम्बाए यकी फ़र्शे नज़ू यख़त्म बाई ज़वीउल जमुसतो मविस्ता नज़ूअ नवज़ी कोज़ा कम बंसतम मेरे महिबान बीदो तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दो अस्सू कहे नारदा मेरी की सिफ्त सलाह, वड्याई कहिण किछ ना पाईआ। मूसे याद कीता इक अलाह, आलमीन कहि के सीस निवाईआ। बिन हथ्थां कीती दुआ, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं मेरा मालक रैहबर इक खुदा, खुद मालक अगम्म अथाहीआ। मेरे नालों ना होईं जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। मैं तेरे उत्तों होया फ़िदा, फ़ितरत तेरे चरण टिकाईआ। तूं मेरा नूरी अब्बा, अब्बाजान कहि के आपणी खुशी बणाईआ। मैनूं इक्को लालच इक्को लबा, इक्को मंग मंगाईआ। तेरे हुक्म विच अन्तिम जगत जहान होवे बज्झा, डोरी अवर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। कोहतूर उत्ते जो तेरा जल्वा तक्कया रब्बा, रब्बे रहीम तेरी सरनाईआ। वेखीं अन्त देवीं मूल ना दग़ा, फ़रेब विच ना खेल देणा खिलाईआ। झट इक्को नूर नज़र आया जिस दा ना पिच्छा ना अगा, हद हदूद वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दो अस्सू कहे नारदा मेरे प्रभ दा खेल बेनज़ीरा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। उह लेखा जाणे शाह हकीरा, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। उह रूप अनूप जाणे दीन दुनी फ़कीरा, फिकरे ढोले आप सुणाईआ। उह तक लै आह तक लै उह आदि जुगादि बदलण वाला तकदीरा तदबीरा, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दी नज़र आए ना कोई

तस्वीरा, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जिस ने शब्द संदेशा दिता भगवन धार कबीरा, कबरां बाहर दृढ़ाईआ। मेरा लेखा आदि जुगादि गहर गम्भीरा, गवर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो के कटे राह भीरा, तंगदस्त वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस दा ना कोई वस्त्र ना कोई होवे चीरा, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। नाम खण्डा धुर दा कलमा होवे शमशीरा, जगत शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा मालक अगम्म अथाहीआ। अस्सू कहे नारदा मेरे दिवस मुहम्मद पढ़ी इक तकबीर, जिस दी तहरीर नज़र कोए ना आईआ। बिना शरअ तों शरअ दी वेखी ज़ंजीर, कड़ी कड़ी ना कोए बंधाईआ। बिना नेत्रां वहाया नीर, बिन नैणां छहबर लाईआ। मेरा मालक ख़ालक पीरां दा पीर, पैग़म्बरां दा पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जिस लहिणा तक्कया सदी चौधवीं अन्त शाह हकीर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। नाले सीने उत्ते खिच्ची लकीर, बिन कलम शाही दिती लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। दो अस्सू कहे नारदा मेरे दिवस जबराईल कीती तस्दीक, मुहम्मद रसूल दिता जणाईआ। उस दी रखणी उडीक, जो नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े देवे थांउँ थाँईंआ। जिस दा मार्ग बड़ा बारीक, बिन रहमत चढ़न कोए ना पाईआ। उह मालक लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ । नेड़े वसे दूर वसे वसे सदा नज़दीक, बिन नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दो अस्सू कहे नारदा मेरा दिवस दिहाढ़ा रखणा याद, यादाशत विच भुल कदे ना जाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं आवे बाद, निरगुण निरवैर आपणा वेस वटाईआ। जिस ने दीनां मज़्हबां तों सब नूं करना आज़ाद, शरअ दी वंड रहिण कोए ना पाईआ। उस दा इक्को शब्द ढोला सुणना नाद, कलमा इक दृढ़ाईआ। उसे दे प्यार विच होणा विस्माद, बिसमिल आपणा आप लैणा कराईआ। उह किसे दी लवे ना कोई इमदाद, आमद आपणी ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। दो अस्सू कहे नारदा मेरा दिवस दिहाढ़ा होणा लोकमात, मातृ भूमी दए वड्याईआ। जिस विच खेल खिलाउणा कमलापात, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। भगत भगवान जोड़ के नात, नाता बिधाता वेख वखाईआ। दर्शन देवे इक इकांत, इक इकल्ला नज़री आईआ। सति सच दी बख्शे दात, सच भण्डारा झोली पाईआ। जिस दा सब तों वड्डा होणा खात, खाता समझ किसे ना आईआ। उह कलयुग अन्त मेटे रैण अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जिस दा सम्बल होणा सच प्रांत, परम पुरख आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दो अस्सू कहे नारद दीन दुनी दा तक नज़ारा, नजर नज़रीए तों बाहर दयां सुणाईआ। मेरे कोल लेख लिख्या तेई अवतारा, पैग़ाम पैग़म्बरां दयां दृढ़ाईआ। जो गुरुआं दिता इशारा, बिन सैनत सैनत गए जणाईआ। मेरा तक लै भरया भण्डारा, अतोट अतुट दयां वखाईआ। मैनूं सब ने बख्श्या सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। शब्द संदेशा दिता कलि कल्की होए अवतारा, निहकलंका नूर अलाहीआ। अमाम अमामा प्रगट होवे परवरदिगारा, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। जिस दा खेल होणा जिस नूं समझे ना कोए विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी भेव ना कोए खुल्हाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता सरगुण धार आए दुबारा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जिस दा रूप ना पुरख ना नारा, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप समझाईआ। अस्सू कहे उह धुर दा संगी, सगला साथी इक अख्वाईआ। जिस दे कोलों सब ने मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। धरनी किहा मेरी पुश्त होण ना देवीं नंगी, ओढण सीस देणा टिकाईआ। नेत्र धार रोवे यमुना सरस्वती गोदावरी गंगी, बिन नैणां नीर वहाईआ। नव सत्त कहिण साडी मेटणी तंगी, दुःख दलिद्र डेरा ढाहीआ। पैग़म्बर कहिण साडी सदी जांदी लँघी, बीसवीं चौधवीं वेख वखाईआ। तत कहिण साडा लहिणा मुकाउणा प्रकृती पंझी, पंचम लेखा देणा चुकाईआ। तूं शाहो भूप सूरा सरबंगी, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । अस्सू कहे नारद अज्ज दिहाढ़ा तक सुलखणा, सोहणयां सच मिले वड्याईआ। प्रभ दवारयों कोई रहे ना सक्खणा, जो हिरदे हरि हरि वसाईआ। अमृत रस अंमिओं देवे रसना, बिन रसना रस चखाईआ। घर स्वामी भगतां वसणा, ठाकर हो के मिले चाँईं चाँईंआ। अन्ध अज्ञान मेटे करे प्रकाश बिना रवि शशिना, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। मेहरवान महबूब किरपा करे अलख अलखणा, अगोचर देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। हरि गुसांई इक भगवन्त, भगवान इक अख्वाईआ। जिस नूं गाउंदे जीव जंत, आदि जुगादि ध्यान लगाईआ। उह बणावणहारा बणत, घड़न भन्नूणहारा धुरदरगाहीआ। जो ठाकर बणे स्वामी कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। नाम निधाना देवे मनुआ मंत, मनसा मन दी दए मिटाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। साचा गृह करे सुहञ्जणा, हरि करता मीत मुरार, आदि जुगादी

दर्द दुःख भय भञ्जणा, शाहो भूप सची सरकार। जन भगतां चरण धूड़ कराए मजना, दुरमति मैल दए उतार। स्वामी हो के पर्दा कजणा, सिर सिर हथ्थ रखे करतार। जिस दा नाम निधाना डंका वजणा, दो जहान करे निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप इक सिक्दार। शाहो भूप इक सिक्दारा, हरि करता इक अख्वाईआ। जो भगतां करे प्यारा, भगवन हो के वेख वखाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ । जिस दा आदि जुगादी खेल न्यारा, निरगुण आपणी कार कमाईआ। चौबीसा जगदीसा होए अवतारा, कलि कल्की रूप बदलाईआ। जिस दा शब्दी शब्द होए जैकारा, दो जहान दए सुणाईआ। दीनां मज़्बां वसे बाहरा, ज़ात पात विच कदे ना आईआ। एका नाद करे धुन्कारा, धुन अनादी नाद करे रुशनाईआ। एका जोत नूर होवे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा सब तों वखरा घर बारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सो लेखा जाणे आदि जुगादी आपणी धारा, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। भेव कहे मैं आदि जुगादी खुल्हदा, सतिगुर शब्द दए खुल्हाईआ। मैं वणजारा नहीं किसे कीमत मुल दा, कौडीआं हट्ट ना कोए विकाईआ। जगत तराज़ू किसे नहीं तुलदा, कंडा हथ्थ ना कोए लटकाईआ।
६३६ २४
मैनूं सहारा नहीं किसे कुल दा, ज़ात अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। जगत माया विच कदे नहीं रुलदा, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। मैं वणजारा नहीं रसना बुल्ल्ह दा, सिफ्तां संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। दो अस्सू कहे नारदा प्रभ तक लै अगम्मी कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। जो लोकमात बणा के रुत बसन्त, नाम फुलवाड़ी आप महकाईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, गणती गणत ना कोए वखाईआ। उहदा रूप अनूप अनन्त, अनक कलधारी अगम्म अथाहीआ। जो लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी होए सहाईआ। जन भगतां बणाए बणत, भगवन हो के वेख वखाईआ। नाम निधाना देवे मंत, अन्तष्करन आप टिकाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, निवण-सु-अक्खर इक समझाईआ। दो अस्सू कहे नारद जिस प्रभू ने तारना सिँघ कुलवन्त, कुल कुल मालक दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी निरगुण निरुगण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ ३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर हरिसंगत नवित ✪

अस्सू कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा तीजा, त्रैभवण धनी देणी माण वड्याईआ। सति धर्म दा जन भगतां अन्दर बीज जाए बीजा, पत्त टहणी तन वजूद आप महकाईआ। गुरमुखां गुरसिखां पूरीआं करनीआं रीझां, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पूरब आशा तकणीआं उम्मीदां, ख़ाहिशां सगला संग रखाईआ। ग़फ्लत विच्चों खोलणीआं नींदां, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अस्सू कहे मेरा दिवस आया लोकमात, प्रविष्टा तीजा मिले वड्याईआ। पुरख अकाले देणी दात, ख़ाली झोली देणी भराईआ। मेरी सुहञ्जणी करनी रात, भिन्नड़ी आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां सच जोड़ना नात, रिश्ता धुर दा आप बणाईआ। लेखा लिखणा नाल कलम दवात, शहिनशाही शाही तेरा रंग रंगाईआ। गुरमुखां पुछणी वात, गुर गुर आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अस्सू तिन्न कहे प्रभू जन भगतां वअदे पूरे कर दे पक्के, कच्ची गंढु ना कोए रखाईआ। जिन्हां नूं अवतार पैग़म्बर गुरु रहे तके, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। नाता जोड़ना भैण भाई सके, सगला संगी आप हो जाईआ। नाम ख़ुमारी विच होण रते, रत्न अमोलक हीरे लैणे बणाईआ। कलयुग अग्नी तत मूल ना तपे, तामस तृष्ना देणी मिटाईआ। हरिजन तेरा नाम इक्को जपे, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। प्यार मुहब्बत विच सेवक धार कदे ना थक्के, थकावट विच कदे ना आईआ । आवण जावण लख चुरासी लहिणे जाण कटे, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। दीन दुनी दे जन्म कर्म दे मेटे रट्टे, झगड़ा वेखणा थांउँ थाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिन्हां नाल पुराणे पटे, पाटल हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ । ग़रीब निमाणयां देणी पैज सुआर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच नेत्र देणा दरस दीदार, लोचन आपणे रंग रंगाईआ। जो सोहण बैठे तेरे भगत दुआर, भगवन मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। अस्सू तिन्न कहे मेरी नमों नमों निमस्कार, जन भगतो डण्डावत विच सीस झुकाईआ। अज्ज दा दिवस ख़ुशीआं वाला प्रेम विच बोलणा जैकार, जै जैकारा सिफ्त सलाहीआ। तुहाडा भरया रहे भण्डार, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। झट नारद आ के आवाज़ लई मार, ज़ोर नाल सुणाईआ। अस्सू तिन्न होणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दयां जणाईआ। उह तक हुक्म सची सरकार, की करता रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे अस्सू तिन्न उठ के निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। पंज अस्सू राह तके मीत मुरार, चारों कुण्ट ध्यान

लगाईआ। किस बिध किरपा करे आप निरँकार, नर नरायण धुरदरगाहीआ। सतिगुर अर्जन सैनत रिहा मार, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। रावी कन्ढा रोवे ज़ारो ज़ार, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं तेरी अन्त इंतज़ार, राह वेखां थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू पंज कहे जन भगतां धारां होवण गांदीआं, गा गा खुशी बणाईआ। सीस किसे ना होण परांदीआं, खुल्ही मेंढी खुशी बणाईआ। अन्दरों बण प्रभू दीआं बांदीआं, गुरमुख गुरसिख सतिगुर विच समाईआ। जगत शृंगार कर सोने चांदीआं, आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंज अस्सू कहे नौ गुरमुख पग्गां बन्हूण टेढीआं, पुठ्ठा सिध्धा पेच समझ किछ ना आईआ। नौ बीबीआं अगे बन्हूण मेंढीआं, सज्जे खब्बे ना कोए वखाईआ। अक्खां मीट के होण वेंहदीआं, अन्दर तकण धुर दा माहीआ। नौ ढोला होवण कहिंदीआं, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौ इक दूजे दे पिच्छे होवण बहिंदीआं, सोहणा संग रखाईआ। नौवां हथ्थीं लाईआं होवण मैहन्दीआं, पोटे पंज पंज रंगाईआ। नौ गुरमुखां धारा सतिगुर चरण होवण ढहन्दीआं, मुख असमान वल उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
६४१ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पंज अस्सू कहे नौ गुरमुखां डण्डे फड़े होवण ६४१
२४ वांग वागीआं, नौ खण्ड ध्यान लगाईआ। नौ गुरमुखां रूप बणाया होवे रागीआं, सुरंगी सारंगां कानयां वंड वंडाईआ। नौवां २४
बध्धीआं होवण तड़ागीआं, बच्चे नन्हे सोभा पाईआ। नौ लडाउँदे होवण लाडीआं, इक दूजे नाल आपणा हथ्थ मिलाईआ। नौवां ने वस्त्र धारा रखीआं होवण सादीआं, जगत रंगत रंग ना कोए रंगाईआ। एह सारा लेखा लहिणा देणा शुरू होणा कोलों आदीआं, अग्गा पिच्छा नज़र कोए ना आईआ। पंज अस्सू कहे पता नहीं फेर शायद रहिणीआं नहीं आबादीआं, निशाने धुर दे नज़री आईआ। अगे जगत बुद्धी दलीलां काहदीआं, कुदरत दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। बेशक भगतां दीआं रसमां होवण सादीआं, दो जहानां देण हिलाईआ। नौ पोते कुच्छड़ चुक्के होवण दादीआं, उंगली फड़ ना कोए तुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, नाम सुणाए धुर दा नादीआ, जगत आवाज़ संग ना कोए बणाईआ।

✪ ५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड आदी ज़िला गुरदास पुर धुस्सी ते शाम नूं ✪

धरनी कहे मेरा सीना होया ठंडा, सतिगुर सरन मिली सरनाईआ। खुशी विच नच्चे टप्पे रावी दा कन्ढा, सतिगुर

अर्जन बिन नेत्र लोचन नैण वेख वखाईआ। जो इशारा दे के गया गोबिन्द सरसे धार खण्डा, खड़गां बाहर जणाईआ। मैं निगाह मार के वेख्या विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। खुशी नाल तक्कया विच जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। मैनूं इशारा देवे सूर्या चन्दा, चन्द सितार खुशीआं नाल जणाईआ। नी धरनीए निरगुण दाता निरवैर जोती जाता सति सरूप अगम्मी बन्दा, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। जो सन्त सुहेले गुरमुख आदि जुगादि लाए अंगा, अंगीकार इक अख्वाईआ। हरिजन सदा पूरीआं करे उमंगां, तृष्ना आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरा रावी दा कन्ढ्ढा घाट, बेले काही मिले वड्याईआ। जिथ्थे कलयुग दी अन्तिम मुकणी वाट, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सति धर्म दा साचा होवे थाट, थानंतर इक्को नज़री आईआ। जो लेखा पूरा करे हरिजन जो धन्ने धन्ना जाट, धनाढ आपणा रंग रंगाईआ। जिन्हां कारन दूर दुराडा पन्ध मार के आए वाट, बिन कदमां कदम टिकाईआ। मेहरवान हो के अन्तर निरंतर खोल्हे बजर कपाट, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। जोत जगाए सति ललाट, नूर नुराना कर रुशनाईआ। भाग लगाए काया माटी माट, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। सच सुहञ्जणी सेजा करे आत्म खाट, परमात्म हो के मिले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैनूं खुशीआं विच चढ़ी रंगत, रंग रंगीले माही दिती वड्याईआ। मैं सोहणी वेखी संगत, भगत सुहेले गुरमुख बैठे आसण लाईआ। हर हिरदा बोध अगाधा पंडत, सच विद्या नाम वाली पढ़ाईआ। सतिगुर कूड़ विकारा अन्दरों करे खण्डत, खण्डा खड़ग नाम चलाईआ। जो निरगुण धार आया आपणी सिम्मत, दिशा कूट अवर ना कोए रखाईआ। प्रेमीआं दा प्रेम सच दी हिम्मत, हौसला सतिगुर आप बंधाईआ। मनुआ मन गुरमुखो कदे ना करे इलत्त, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। सतिगुर शब्द दा देवे साचा ख़िल्लत, ओढण इक्को नाम रखाईआ। धरनी कहे मैनूं हरिजन गुरमुख गुरसिख प्रेम प्यार विच अन्तर निरंतर इक दूजे दी धार विच होए मिलत, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। मैं चाहुंदी मेरे साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल दा धरनी कहे कोई ना होवे निन्दक, निंदया चुगली वाला मुख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे गुरमुखो प्रभ चाढ़्नहारा रंग, रंगत इक्को इक रखाईआ। तुहाडी आसा मनसा पूरी करे मंग, तृष्ना अगे रहे ना राईआ। भावें कितने होवण जंग, झगड़ा दिसे जगत लोकाईआ। गुरमुखां दा धाम कायम रहे निशंग, धरनी कहे मैं प्रभ अगे वास्ता पाईआ। एह निशान धुसी दा बंध, बन्दगी वाल्यां दए समझाईआ। जो एथों चल के फेर अगे आउणा

अनन्द, अनन्दपुर वासी पर्दा दए उठाईआ। फेर नूर तकणा बिना सूर्या चन्द, जोती जाता डगमगाईआ। जो प्यार विच मुहब्बत विच गुरमुखो तुहाडे अन्दर दुआरे आया लँघ, अगला पिछला पिछला अगला दो जहान दा लेखा रिहा ना राईआ। एह जगत सिँघासण नहीं पलँघ, सचखण्ड दुआर दी धार नज़री आईआ। जिस गृह विच सदा सदा सदा सब दा खुशीआं विच रहे बन्द बन्द, बन्दगी विच वड्डे छोटे बृद्ध बाल सारे लए जगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा होवे छन्द, बिन रसना जिह्वा ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सदा संग, सगला संगी बहु रंगी आपणा खेल खिलाईआ।

✪ ५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर हरिसंगत नवित ✪

नारद कहे अस्सू पंज केहड़ा तेरा तत, ततव भेव देणा खुल्हाईआ। कवण नाड़ी दिसे तेरा हड्ड मास रत, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। केहड़ी बुद्धी केहड़ी मति, मनसा आपणी देणी समझाईआ। केहड़ा धीरज केहड़ा यत, सति सन्तोख कवण वखाईआ। केहड़ी प्रीती केहड़ा नत, सगला संगी कवण बणाईआ। कवण दुआरा सथर बैठा घत, सति सच देणा समझाईआ। किस कारन नव नव चार बाद आए वत, बेवतनां दा भेव देणा खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अस्सू कहे मेरा पंजवां दिवस दिहाढ़ा, दो जहान खुशी बणाईआ। मेरा इक्को अगे बिन रसना जिह्वा हाढ़ा, मुख बोल ना कोए सुणाईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार अगम्मी लाड़ा, लख चुरासी नार कन्त परनाईआ । जिस दा एथे ओथे दो जहान अखाड़ा, चारे खाणी चारे बाणी बिन जगत शस्त्रां करे लड़ाईआ। जो वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां, टिल्ले पर्वत फोल फुलाईआ। उह जन भगतां चाढ़नहारा रंग गाड़ा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अस्सू कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा चंगा, पंचम पंच मिले वड्याईआ। मेरा पूरब जुग चौकड़ी खुशीआं नाल लँघा, कलयुग अन्तिम वेखां थाउँ थाँईआ। धर्म दी धार कलयुग कीता नंगा, ओढण नजर कोए ना आईआ। उह तक लै दुहाई देंदी फिरे गंगा, गोदावरी यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। की संदेशा दे के गया साधू सरबंगा, सरबंग की दृढ़ाईआ। किस बिध मानस ज़ाती होणी भंगा, फली भूत ना कोए कराईआ। की इशारा कीता परी अरम्बा, चौदां रत्नां विच्चों दृढ़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अस्सू पंज कहे मेरा सजदा इक भगवन्त, भगवन सीस निवाईआ । जिस दा शरअ तों बाहर मंत, बिन अक्खरां निरअक्खर धार समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल जीव जंत, चुरासी आपणा खेल खिलाईआ। उह साहिब सूरा भगवन्त, हरि भगवन इक अख्वाईआ। जिस बणाई मेरी बणत, घड़न भन्नणहार धुरदरगाहीआ। उस दी महिमा सदा अगणत, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। उह तोड़नहारा गढ़ हंगत, हउमे दए चुकाईआ। मानव ज़ाती इक बणाए संगत, सगला संग इक रखाईआ। बिना शास्त्रां बणे पंडत, बिन अक्खरां दए समझाईआ। जिस दा लेखा नहीं नाल बहिश्त जंनत्त, स्वर्गां वंड ना कोए वंडाईआ। उह आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मालक धुर दा कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। जो काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अस्सू कहे मैनूं जुग चौकड़ी याद करदे, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ । मैं भेव खुल्हावां अगम्मे घर दे, जिथ्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जिथ्थे अवतार पैग़म्बर गुरु इक्को खेल करदे, दूसर रूप ना कोए बदलाईआ। मैं सब दे खोल्हां पर्दे, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। की हुक्म वरते अगे नरायण नर दे, नर निरँकार की जणाईआ। इश्नान मिलणे नहीं किसे सरोवर सर दे, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। उह वेख लै खेल हँकार गढ़ दे, हउमे हंगता मिली वड्याईआ। निगाह मार लै दरोही फिरनी लहिंदे चढ़दे, मुहम्मद धार दए गवाहीआ। शरअ शरीअत वहिण वेख लै हड़दे, सदी चौधवीं दए गवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अस्सू पंज कहे मेरा लहिणा देणा आदि जुगादी रावी, रवीदास दए गवाहीआ। मेरा पैग़म्बरां लेख जणाया मुसावी, मुसलसल गए दृढ़ाईआ। अर्जन किहा एह लहिणा देणा नाल दीन दुनी दी भावी, भय भउ सिर ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होणी निथावीं, महल अटल वजे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अस्सू पंज कहे मेरा लहिणा देणा नाल राजे बलि, बावन धार समझाईआ। जिस वेले कूड़ कुड़यार कलयुग अन्तिम धर्म नूं देवे सल, सति रहिण किछ ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होवे छल, कपट विच दिसे खलक खुदाईआ। पवित्र रहे कोई ना जल, अठसठ रोवण मारन धाहीआ । भाग लग्गा दिसे ना किसे काया माटी खल्ल, ख़ालक ख़लक रंग ना कोए रंगाईआ। मंज़ल मिले ना निहचल धाम अटल, सच दुआर ना कोए सुहाईआ। दरोही फिरे जल थल, महीअल रोवण मारन धाहीआ। किसे नूं समझ ना आए घड़ी पल, पलकां दे पिच्छे दिसे ना धुर दा माहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पंज अस्सू कहे मेरा प्रविष्टा लेखा रखे संग रवीदास, रमता रमता रिहा जणाईआ। बाल्मीक जो लेखा लिख्या ख़ास, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। मैनूं उस उत्ते विश्वाश, भरोसिआं विच सीस निवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जो वसे उत्ते आकाश, धरनी धरत धवल धौल करे रुशनाईआ। जन भगतां मानस जन्म करे रास, रस्ता आपणा इक समझाईआ। नाम जपाए स्वास स्वास, बिन बुल्ह्लां करे पढ़ाईआ। बूँद स्वांती नाल बुझाए प्यास, नाभी कवल कवल उलटाईआ। अनादी शब्द दए धरवास, धर्म धार समझाईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन भगतां वसे सदा पास, सगला संग निभाईआ। रावी कहे मेरे अन्दर आया इक क्यास, सहिज नाल समझाईआ। की इशारा दे के गया वेद व्यास, बेआस नाल वड्याईआ। मेरा साहिब मैनूं दए शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस विच कूड़ कुड़यारी धार दा लेखा मुकणा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां वजे वधाईआ। सो दीन दयाला आपणा खेल करे तमाश, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अस्सू पंज कहे प्रभू भगतां नूं दात देणी दोहरी, दुहरा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द बणाउणा मोहरी, मोहर आपणा नाम समझाईआ। निरगुण धार बणना घोरी, अन्तष्करन तकणा थांउँ थाँईंआ। गुरमुखां भेव खुल्ह्लाए होर दा होरी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सब दा मानस जन्म जाए सौरी, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। आपणे चरण बंधाए डोरी, पल्लू गंढु पुआईआ। जन भगतां भाग करे मथोरी, मिथ्या दस्से ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंज अस्सू कहे प्रभू तेरा वक्त होवे सुहावा, सोहणी ख़ुशी बणाईआ। जन भगतां तेरे उत्ते दाअवा, दाअवेदार देणे समझाईआ। आपणे नाल सब दा वज़न कर लै सावां, वध घट ना कोए कराईआ। दर आयां दा आपणे दरगाह ला लै नांवां, नर निरँकार सके ना कोए तुड़ाईआ। बेशक एह वसदे वख वख ग्रांवां, सचखण्ड साचे दर इक्को सोभा पाईआ। बेशक इन्ह्लां नूं जन्म दिता वख वख मावां, तूं आत्म धार बणना सब दी जणेंदी माईआ। बुद्धी रहे ना किसे दी वांग कावां, गुरमुख हँस देणे बणाईआ। तेरा प्यार करन बिन जगत ख़ाहिश तों नाल चावां, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां फड़ उठाउणा भुजां बाहवां, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। अस्सू पंज कहे मेरा मालक स्वामी रहे हमेश, हम साजण इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल दस दस्मेस, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धारा इक्को रंग रंगाईआ। जिस ने प्यार विच सतिकार विच जन

भगतां खुल्ले रखाए केस, केस गढ़ दा लेखा नाल मिलाईआ। जिन्हां दी महिमा करे सहर्स मुख शेष, दो सहर्स जिह्वा नाल मिलाईआ। उह चार जुग दे विछड़े पंचम अस्सू कहे सतिगुर शब्द दे होए पेश, पेशी अगे रहे ना राईआ। अज दा फ़ैसला सतिगुर शब्द दा हुक्म जन भगतो जन्म मरन रहे ना कोए कलेश, मात गर्भ दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। तुहाडा इक्को दिहाढ़ा खुशीआं वाला विशेष, विषयां तों बाहर लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। पंज अस्सू कहे मेरा प्रविष्टा शहिनशाही सम्मत नाल ग्यारा, जिस दा भेव ना कोए पाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां बख्श दे सच बहारा, परवरदिगार सांझे यार आपणा रंग रंगाईआ। इक्को खुशी बख्श दे पुरख नारा, नर नरायण दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी मनसा पूरी होवे जो दस्सदे गए तेई अवतारा, अवतर तेरा खेल वेखणा चाँईं चाँईंआ। जो पैग़म्बरां दिता इशारा, बिन सैनत सैनत गए समझाईआ। जो गुरु गुरदेव दिता अधारा, धीरज धर्म धार वखाईआ। सो मेरा लेखा पूरा कर दे गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर तेरी ओट तकाईआ। तेरा भगत सुहेला जगत विच ना होए ख्वारा, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। अज्ज खुशीआं वाला बिन जगत ख़ाहिश तों दिहाढ़ा, सतिगुर शब्द तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी पिछला पूरब करदे लारा, अगे अवर ना किछ रखाईआ। तूं करनहार करतारा, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। हरि भगत प्रभू तेरा सदा दा परवारा, बंस सरबंस विछड़ कदे ना जाईआ। बिना अक्खीआं तों ज़रूर इन्हां नूं देंदा रहीं दीदारा, बिन लोचन नैण नज़री आईआ। इन्हां दा शरीर ते सतिगुर शब्द तेरा होवे घरबारा, नौ दुआरयां तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। जदों गुरमुख याद करे ते अन्दरों दईं इशारा, बिन सैनत सैनत देणी समझाईआ। क्यों तूं जोती जाता पुरख बिधाता कलि कल्की अवतारा, चौबीसा जगदीसा नूर अलाहीआ। अमाम अमामा परवरदिगारा, पड़दा पड़दयां विच्चों देणा उठाईआ। पंज अस्सू कहे प्रभू मैं तेरे चरणां दी धूड़ लावां बिना मस्तक तों छारा, शहिनशाह ख़ाक तेरी अगम्म रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण तेरा भरया रहे भण्डारा, अतोट अतुट देणा वरताईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर हज़ारा सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां लेखे लाउणी मिट्टी ख़ाक, ख़ाक छार हो के जो तेरी आस रखाईआ। रूह बुत दोवें करने

पाक, पतित पुनीत देणी वड्याईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह के ताक, गृह मन्दिर आपणा इक वखाईआ । आत्म परमात्म बणा धुर दा साक, दरगाह देणी साची थाँईंआ। शब्द घोड़ चढ़ा दे राक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाईआ। पूरब लहिणा देणा पूरा करना वाक, पूरन सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां लेखा रहे ना मढ़ी गोर, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। शब्दी धार आपणे नाल लैणा तोर, तुरत आपणा मेल मिलाईआ। अन्तष्करन दा अन्तर इक्को होवे फ़ुरना फ़ोर, दूसर आस ना कोए रखाईआ। पार करना विच्चों लख चुरासी घोर, आवण जावण पन्ध देणा मुकाईआ। जन भगतां मानस जन्म जावे सौर, जो सिर तेरे चरण छोह विच आपणी खुशी बणाईआ। सति सच दी बन्न्हणा नाल डोर, शब्दी तन्द गंढ्ढाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं भगतां दी सदा लोड़, लुड़ींदे साजण तेरे हथ्थ वड्याईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोई होर, दूजा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान जन भगतां सचखण्ड दुआर भाग होवे मथोर, मिथ्या छड्डी जगत लोकाईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड अलड़्ह पिण्डी ज़िला गुरदासपुर किशन सिंघ दे गृह ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मैं सुणदी रही तुहाडीआं तकरीरां, चार जुग आपणा ध्यान लगाईआ। तुहाडे लेख वेखदी रही तहरीरां, जो हरफ़ हरूफ़ नाल वड्याईआ। नाम संदेसे सुणदी रही जो दिते विच शरीरां, तन वजूदां विच टिकाईआ। शरअ शरीअत दीआं वेखदी रही लकीरां, हद्दां दीन मज़्हब रंग रंगाईआ। दीन दुनी लेखा तकदी रही शाह हकीरां, ऊचां नीचां पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। तुसां मानव ज़ाती मेरे उत्ते बध्धी नाल ज़ंजीरां, शरअ बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग अन्त मैनूं तुहाडा लेखा दिसे अख़ीरा, आख़र दयां सुणाईआ। वेखो की कूक कूक के कहिंदा कबीरा, दरगाह सच सच विच्चों करे शनवाईआ। धरनीए तेरे उत्ते सतिजुग सच होणा ताअमीरा, कलयुग कूड़ रहिण कोए ना पाईआ। करे खेल धुर दा बेनज़ीरा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दे कोल नाम खण्डा शमशीरा, जगत शस्त्र संग ना कोए रखाईआ। उस लहिणे देणे तकणे अठसठ तीर्थ नीरा, जलधारा खोज खुजाईआ। चार जुग दे ग्रन्थ शास्त्रां तकणीआं तदबीरां, तरीका नीकण नीका हो के वेख वखाईआ। तुसीं निरगुण धार सरगुण आपणीआं वखाईआं तस्वीरां, ततां वाला रूप बणाईआ। की खेल करे मेरा शाहो भूप पीरां दा पीरा, पीरन पीर नूर अलाहीआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहान जगीरा,

दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जिस लेखे लाया रवीदास चमारे इक कसीरा, कीमत धर्म धार चुकाईआ । उह अन्त मेरी धार वेखे दिलगीरा, चिन्ता ग़मी खोज खुजाईआ। मेरे उत्ते सीस देवे चीरा, वस्त्र सति सच पहनाईआ। दीन दुनी दी अन्दरों बदलण वाला ज़मीरा, ज़र्रा ज़र्रा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरे अन्तष्करन दए धीरा, धीरज धर्म धार रखाईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदासपुर सुलखणी, वीरो दे गृह ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणीआं चार जुग दीआं तको रीतां, रीतीवान हो के ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द वेखो मीता, मित्र प्यारा की समझाईआ। शास्त्र संग बणाओ वेद पुराणां गीता, राम रामा भेव चुकाईआ । लहिणा देणा वेखो मन्दिर मसीता, मसला मसल्यां विच खोज खुजाईआ। आत्म धार परमात्म तको प्रीता, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। इष्ट वेखो राम सीता, राधे कृष्ण की वड्याईआ। पैग़म्बरो इशारा वेखो जो अगम्मा कीता, वाहिद अल्ला इक दृढ़ाईआ। गुरु गुरदेव आपणे हुक्म दा वेखो तरीका, जो धर्म धार दृढ़ाईआ। लहिणा देणा जाणो जीव जीअ का, नव सत्त फोल फुलाईआ। मेरे उत्ते अन्तर निरंतर अमृत रस होया फीका, अंमउँ रस ना कोए चुआईआ। धर्म दी रही ना कोई तौफ़ीका, कलयुग कूड़ रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसांईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आत्म धार दे बणो वसली, वसल इक्को यार खुदाईआ। आपणे गुरमुख गुरसिख मुरीद मुर्शद लभ्भो असली, असलीअत विच्चों असल लओ प्रगटाईआ। आत्म धार परमात्म वेखो नसली, दूजा संग ना कोए बणाईआ। तुहाडी प्रीती कलयुग कूड़ी क्रिया हेठों गई मसली, मुसलसल रंग ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी दी धारा होई दोफ़सली, सच झूठ समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणी वेखो हकीकत हक, हुक्म प्रभ दा नाल मिलाईआ । मेरे उत्ते लओ तक, तरीका दीन दुनी बदलाईआ। मेरा आ के मेटो शक्क, शिकवा दयो गंवाईआ। मैं कलयुग कूड़ी क्रिया नाल गई थक्क, थकावट विच मेरी दुहाईआ। मेरी पत लओ रख, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। मेरी धर्म धार दी झोली होई सख, सखणी सके ना कोए भराईआ। मेरी हालत आ के वेखो आपणी अक्ख , अक्खरां वाली चले ना कोए चतुराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कूड़ दे लाउँदे भक्ख, धुर भाख्या सुणे ना कोए ख़लक खुदाईआ । आत्म परमात्म धार तुहाडे नालों होई वख, सुरती

शब्द ना कोए समाईआ। दीन दुनी दी कीमत रही ना कौडी कक्ख, कलयुग हट्टो हट्ट विकाईआ। तुसीं सर्ब कला समरथ, पुरख अकाला देवणहारा वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा दयो हथ्थो हथ्थ, अगे उधार ना कोए बणाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तुहाडा चलदा वेख्या रथ, रथवाही हो के आपणी सेव कमाईआ। नाम कलम्यां सुणी गथ, जो सोहले ढोले गए दृढ़ाईआ। अन्त सब दे ख़ाली होए हथ्थ, सच वस्त नज़र कोए ना आईआ। धर्म कलयुग कूड़ी क्रिया दिता मथ, मथुरा दे काहन तेरे रंग ना कोए समाईआ। आ के वेख लै राम बेटे दशरथ, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। पैग़म्बर आपणी कहाणी वेखो अकथ, की कलमे गए समझाईआ। नानक गोबिन्द जिस धार विच सथर गए लथ, जगत यारड़ा सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणीआं पूरब कढो कापीआं, बिन अक्खरां लेख ध्यान लगाईआ । आपणीआं आपणीआं शरअ दीआं तको पातीआं, पत्रका लओ उठाईआ। लहिणे देणे वेखो वातीआं, की संदेसे धुरदरगाहीआ। की झगड़ा दिसे ज़ात पातीआं, दीनां मज़्बां की लड़ाईआ। की कलयुग कूड़ी क्रिया मारे कातीआ, कत्लगाह दिसे लोकाईआ। सचखण्ड दुआरे तको मार के झातीआं, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरे उत्ते होईआं अन्धेरीआं रातीआं, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। अमृत मिले ना बूँद स्वांतीआ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मेरी पुछे कोए ना वातीआ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मारे कातीआ, तीर अणयाला रिहा लगाईआ। मानस मानव मेरे उत्ते इक दूजे दा करन घातीआ, घाउ सके ना कोए मिटाईआ। प्रकाश दिसे ना किसे बिन तेल बातीआ, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा तक लओ लोकमातीआ, मातृ भूमी हो के रही सुणाईआ। तुहाडा दीन मज़्ब पाउँदा जाए वफ़ातीआ, कायम मुकाम नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान हो के पुछणी वातीआ, वातावरन तेरे चरण टिकाईआ।

६४६ २४

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ओगरा हरिसंगत नवित ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर परम पुरख करो निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। प्रेम नाल करो गुफ़तार, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। उच्ची कूक करो पुकार, सोहले सुणाओ थांउँ थाँईंआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडे दीन मज़्ब साथों होए बाहर, सच प्यार विच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट सृष्टी दृष्टी अन्दर वध्या विकार,

विभचार सके ना कोए मिटाईआ। मनुआ मन करे हँकार, निवण सु अक्खर ना कोए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होया धूंआँधार, सत्त दीप सच ना कोए रुशनाईआ। जिधर तक्कीए साडा नाम कलमा होया ख्वार, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। मानस मानव मानुख बण गए ठग चोर यार, हकीकत विच हक ना कोए समाईआ। साडी बेनन्ती तेरे दर सच्चे दरबार, दरगाह साची मंग मंगाईआ। जोती जाते हो ज़ाहर, पुरख बिधाते पर्दा लाहीआ। दीन दुनी तक संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। सच दा रिहा ना कोए दुआर, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ रहे कुरलाईआ। नवखण्ड रोवे ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। निगाह मार परवरदिगार, सांझे यार नूर अलाहीआ। असीं तेरी करदे इंतज़ार, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। तूं दो जहानां हो ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। तेरी शब्दी सुणीए गुफ़तार, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। तूं निरगुण दाता सब दा सांझा यार, यामबीन इक अख्वाईआ। तेरे सब कुछ अख्त्यार, मुख्त्यार गुर अवतार रहे सुणाईआ। तूं चार जुग दा सिक्दार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी वजदी रही वधाईआ। लख चुरासी तेरे चरण कवल पनिहार, दासी हो के सेव कमाईआ। तूं वेखणहारा एकँकार, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। साडी बेनन्ती सुणनी नाल प्यार, प्रेम प्रीती विच जणाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जाता हो के डगमगाईआ। तूं निहकलंक कलि कल्की अवतार, कलकातीआं कर सफ़ाईआ। दर तेरे बेनन्ती रहे गुज़ार, गुज़ारश विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर प्रभ तों पुछो सलाह, मशवरा दीन दुनी बाहर जणाईआ। पुरख अकाले तेरा खेल बेपरवाह, अगम्म अथाह तेरी वड्याईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। तूं वाली दो जहां, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा लहिणा देणा ज़िमीं असमां, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां वजदी रहे वधाईआ। निगाह मार लै माण रिहा ना किसे कलमे नाँ, कायनात रही कुरलाईआ। झगड़ा तक लै सूर गाँ, मानस मानव मानुख पशूआं खल्ल लुहाईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे खेड़े गराँ, साढे तिन्न हथ्थ वजे ना कोए वधाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरा गया छा, शहिनशाह तेरे रंग ना कोए समाईआ। दीन मज़्हब तेरी मंजल भुल्ले राह, रैहबर रंग ना कोए रंगाईआ। ढोला गाए कोई ना साह साह, स्वास स्वास ना कोए ध्याईआ। दुखी हो के पुकारे धरती माँ, मेरी मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। मानस ज़ाती कलयुग कूड़ी क्रिया करे गुनाह, पतित पुनीत नजर कोए ना आईआ। मेरे मेहरवाने श्री भगवाने कलयुग अन्त मेरे उत्ते चरण छुहा, शहिनशाह आपणा भेव चुकाईआ। तैनूं सारे गए गा, ढोले सिफ्तां विच राग दृढ़ाईआ। अन्तिम आवे बेपरवाह, पुरख अकाला नूर अलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां

कीती दुआ, सिर सर कदमां विच झुकाईआ। तूं मालक अगम्म अथाह, जल्वागर नूर अलाहीआ। मेरे उत्तों धरनी कहे कलयुग कर अलविदा, सतिजुग सति धर्म प्रगटाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर बैठण इक्को थाँ, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ चर्च गुरुदुआर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तेरा नाउँ निरँकारा जप्या जाए नाँ, तेरी सिफ्त सलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार हो के पकड़नी बांह, निरवैर हो के आपणी दया कमाईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड नआ साला ज़िला गुरदासपुर स्वर्गवासी कर्म सिँघ दे नवित ✪

धरनी कहे जन भगतो परम पुरख दी रखो याद, यादाशत भुल कदे ना जाईआ। जो सब दी सुणनहारा फ़रयाद, दो जहानां मालक नूर अलाहीआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिती अगम्म इमदाद, वस्त अमुल अतुल वरताईआ । उस स्वामी नूं दिवस रैण लैणा अराध, हिरदे अन्दर लैणा वसाईआ। बिस्मिल धार होणा विस्माद, जगत विशा ना कोए जणाईआ। जिस ने रचना रची तुहाडी आदि, अन्त होए आप सहाईआ। उह मालक ख़ालक मोहन माधव माध, मधुर धुन दए सुणाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां करे इमदाद, सदा होए सहाईआ। जो बणावणहारा सन्त साध, सूफ़ीआं सन्तां नाल मिलाईआ। जिस दा खेड़ा धर्म होवे आबाद, जड़ सके ना कोए उखड़ाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना सति सच दा महाराज, महबूब अगम्म अथाहीआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया नालों करना आज़ाद, जगत शरअ बन्धन ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर मिले वड्याईआ। धरनी कहे जन भगतो परम पुरख दी रखो ओट, ओड़क ध्यान रखाईआ । काया मन्दिर अन्दरों कढणी खोट, खोटे खरे रूप बदलाईआ। नाम निधान श्री भगवान लगाए अगम्मी चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग अगम्म देणा रंगाईआ। धरनी कहे जन भगतो परम पुरख नूं करो सलाम, सजदयां विच सीस निवाईआ। उह मालक ख़ालक धुर अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस दी जबराईल दस्से कलाम, पैग़ाम अगम्म अथाहीआ । उह देवणहार हकीकी जाम, बिन रसना रस चखाईआ। उस दा आदि अन्त दा इक्को इस्लाम, इस्म आज़म इक वखाईआ। जिस दे सारे होण ग़ुलाम, बरदे बण के सीस निवाईआ। जो शरअ दे झगड़े मेटे तमाम, तमंना कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। जिस दा लहिणा ज़िमीं उत्ते असमान, नूर नुराना नूर अलाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला खेले खेल महान, परवरदिगार

सांझा यार आपणी कल वरताईआ। जिस नूं आदि जुगादि झुकदे अवतार पैग़म्बर गुर तमाम, तमंना दीन दुनी ना कोए रखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त जन भगतां करे इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शरअ दे लेखे मुकाए तमाम, तमंना दीन मज़्ब रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड भूमली ज़िला गुरदासपुर करतार सिंघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मानस मानव मानुख कर पतित पुनीत, परम पुरख परमात्म आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण आत्म परमात्म दस्स अगम्मी रीत, रीतीवान श्री भगवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जाते पुरख विधाते आत्म परमात्म दस्स गीत, पारब्रह्म ब्रह्म ढोला गावण चाँईं चाँईंआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर अमृत रस बख्श ठांडा सीत, अग्नी ततव तत ना कोए तपाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले वसणा हर घट चीत, ठगौरी चित मन रहे ना राईआ। तूं मालक ख़ालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी सरनाईआ। झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मानव ज़ाती बख्श प्यार, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ । घर मन्दिर अन्दर कर उज्यार, साढे तिन्न हथ्थ कर रुशनाईआ। साची बख्श शब्द धुन्कार, अनहद नादी नाद कर शनवाईआ। अमृत बख्श अगम्मा ठांडा ठार, बिन रसना जिह्वा दे चखाईआ। जीवां जंतां पा सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक इकल्ला एकँकार, वाहिद तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा कर दे मेरे परवरदिगार, सांझे यार नूर अलाहीआ। मैं मंगती दर भिखार, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। तूं वस्त अमोलक मेरी झोली देणी डार, अतोट अतुट आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा इक रखाईआ। धरनी कहे प्रभ मानव ज़ाती कर दे बुध बिबेक, पतित पुनीत आप बणाईआ। आत्म परमात्म दे टेक, ईश जीव जगदीश आपणे रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया लाए ना सेक, कलयुग कूड़ अग्न ना कोए तपाईआ। सति सतिवादी हो के खोल्ह दे भेत, भेव अभेदा दे जणाईआ । सुरती शब्द करा दे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। दर्शन दे दे नेतन नेत, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। मेरे उत्ते रुत सुहञ्जणी मौले चेत, पत्त टहणी लख चुरासी जीव जंत आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे

मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मानव तेरे चरण कवल होण पुजारी, पूजा पाथर पाहन रहिण कोए ना पाईआ। एका इष्ट होवे जोत नूर उज्यारी, जोती जाते पुरख बिधाते तेरी आस रखाईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारी, अवतरी हो के वेख वखाईआ। मेरे उत्ते लहिणा देणा पूरा कर दे विष्न ब्रह्मा शिव संसारी भण्डारी सँघारी, सतिगुर शब्द नाल वड्याईआ। मेरी नमो नमो निमस्कारी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दारी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। मेरी अन्त कन्त भगवन्त पैज देणी संवारी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे मैं बिन नेत्र रोवां ज़ारो ज़ारी, ज़ाहर ज़हूर तेरे अगे वास्ता पाईआ। तूं मेहरवान महबूब ख़ालक ख़लक जल्वागर चौबीसा जगदीसा इक अवतारी, अवतर हो के वेखणा थांउँ थाँईंआ। मेरे अमाम जल्वागर नूर नुराना करना ज़ाहरी, ज़ाहर ज़हूर मेरा पर्दा दे उठाईआ। मेरी बेनन्ती सुण पुकारी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण कवल जावां बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे कलयुग अन्तिम वारी, वारस हो के आपणी दया कमाईआ।

✪ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर गहिणा सिँघ ✪

गहिणा सिँघ तन खुशीआं पाउणा गहिणा, पंज तत मिले माण वड्याईआ। तेरा लेखा बाल्मीक रिषी लिख्या विच रमायणा, राम दे राम नाल वड्याईआ। प्रभास विच तेरा हुन्दा सी रहिणा, पंचबटी दए गवाहीआ। तेरा नाउँ हुन्दा सी नैणा, नैणू कहि के सारे बुलाईआ। वैरागीआं नाल हुन्दा सी बहणा, आपणी खुशी रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म गुसांईआ। गहिणा सिँघ आ गया बाल्मीक, आपणा पन्ध मुकाईआ। जेहड़ी तैनूं बख्शी तरीक, तरीके नाल पाल सिँघ दा मेल मिल्या चाँईं चाँईंआ। जिस दी कलम विच तौफ़ीक, तेरा पूरब लेख समझाईआ। जिस दा लहिणा बड़ा बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। परम पुरख परमात्म वेखे नज़दीक, दूर दुराडा आपणा पन्ध मुकाईआ। पिछले जन्म दी शहादत वेख तारीख़, तवारीख़ धुर दी आप समझाईआ। जगत कर्म दे लेखे मार लीक, भुलेखा अन्दरों दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। नैणू तक लै नाल नैण अक्ख , अक्खरां बाहर समझाईआ। त्रेता द्वापर कलयुग रिहा वख,

अन्त मेला मिल्या चाँईं चाँईंआ। अगे झोली रहिण ना देवे सख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिउं भावे तिउं लए रख, एह प्रभ दी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गहिणा सिँघ गौहु नाल करना विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा पूरबला जन्म वेख विच संसार अन्तिम कलयुग बन्नी धार, धरनी धरत धवल धौल दिती वड्याईआ। जन्म विच्चों जन्म मिल्या अपार, अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरब दए उतार, कर्ज़ा जगत रहे ना राईआ। दुःख दलिद्र दए निवार, सुख सागर रूप समाईआ। भूत प्रेत कोई हो ना सके संवार, जिंन खुवीस ना कोए चुतराईआ। किरपा करे आप करतार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण प्रीती दए इक अधार, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ।

६५४ पाल सिँघ तेरी प्रभ करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। दीना बंधप बणे दीन दयाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धर्म दी धार बणा के लाल, लालन धुर दा रंग चढ़ाईआ। साचा मार्ग बख्श सुखाल, सुख सागर विच रखाईआ। ६५४
२४ जगत रोग घालणी पए ना घाल, दिल दलिद्र दूर कराईआ। उह अन्तर आत्म परमात्म हो के वसे नाल, मेला रखे चाँईं चाँईंआ। सच बेनन्ती धर्म सवाल, कर्म आपणे रंग रंगाईआ। जगत सोग विच्चों कर बहाल, रोग दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तन वजूद शरीर करे आप संभाल, सम्बल दा मालक हो के वेख वखाईआ। २४

✪ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर स्वर्ग वासी गुरबचन कौर कल्ला दे नवित ✪

धरनी कहे मैनूं कलयुग अन्तिम खुशी बड़ी, खुशहाली विच गुर गोपाल ध्यान लगाईआ। मैं निरगुण धार परम पुरख दी सरनी पड़ी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरे उत्ते पुरख अकाले कीती सुहञ्जणी घड़ी, पल पलकां दे पिच्छे वेख वखाईआ। सति धर्म दी धार मेरे उत्ते दिसे गढ़ी, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। मैं सच दुआर एकँकार दर खड़ी, दरगाह साची सीस निवाईआ। आदि जुगादि प्रभ तेरी भगतां नाल बणी रही लड़ी, तन्द सितार ना कोए तुड़ाईआ।

मैनूं खुशी मेरे मेहरवाना मेरे उत्ते तेरे भगतां तन वजूद बणे मढ़ी, ख़ाकी ख़ाक रंग रंगाईआ। जिन्हां दी जीवण ज़िंदगी शौह दरया कदी ना हड़ी, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। उन्हां भाग लग्गा हड्ड मास नड़ी, तन वजूद खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। मढ़ी कहे मैं भगतां तन वजूद कीता ख़ाक, तन माटी नज़र कोए ना आईआ। आत्म धार तक्कया प्रभू दा साक, अन्त सतिगुर विच समाईआ। जिस दा खुल्हा सदा ताक, सचखण्ड दुआर बन्द ना कोए कराईआ। सो शब्द घोड़े चढ़ के राक, हरिजन भज्जण वाहो दाहीआ। मैनूं याद आउंदा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाला वाक, भविख्त भविख्तां विच्चों समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां बणे सज्जण साक, सुहेला इक्को नज़री आईआ। ईसा कहे मेरा इशारा देवे कलाक, जगत घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार मेल करना नाल इत्फ़िाक, इत्फ़िाकीआ आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। मढ़ी कहे मेरे विच तन वज़ूद होया सुआह, माटी नज़र किछ ना आईआ। एह खेल बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ । जो आदि जुगादि भगतां बणे मलाह, खेवट खेटा धुरदरगाहीआ। शब्द दए सलाह, मशवरा इक्को नाम दृढ़ाईआ । निरगुण धार हो के पकड़े बांह, फड़ बाहों आप उठाईआ। निथाव्यिाँ देवे साचा थाँ, थान थनंतर इक सुहाईआ । नाम निधान बख्श के नाँ, नाउँ निरँकार रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआर सुहा के गराँ, गृह मन्दिर इक वड्याईआ । जिथ्थे आपे पिता आपे बणे माँ, आप आपणी गोद टिकाईआ। आवण जावण लख चुरासी लहिणा रहे ना विच जहां, जूनी जून ना कोए भुआईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए आप आपणे गराँ, सचखण्ड साचे सच समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। मढ़ी कहे तन वजूद मिट्टी ख़ाक होया कंचन, तन नज़र किछ ना आईआ। अग्नी अग्ग लग्गा मच्चण, धूंआँधार धार बणाईआ। आत्मा खुशीआं विच लग्गा नच्चण, धुर दे ढोले गाईआ। प्रभू प्यार विच लग्गा रचण, लूं लूं दा लेखा जाए चुकाईआ। सति सरूपी बण के हीरा रत्न, दरगाह साची सच सुहाईआ। जो आदि जुगादी भगतां वतन, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। सो धाम न्यारा जिथ्थे प्रभ भगतां करे प्यारा प्रीतम हो के लेखा तोड़े ततन, ततव तत रहिण किछ ना पाईआ। जिस कारन योगी यती सती सारे करदे यतन, यथार्थ मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। बिना सतिगुर शब्द तों दरगाह साची पुज्जे कोए ना पतण, घाट किनारा वेखण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआर किरपा कीती आप निरँकार आत्म धार मिलाया गुरबचन, गुरबचन कौर आपणे रंग समाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी दीन दुनी दा रिहा कोए

ना हट्टण, जगत वणज ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत नाम निधान रस देवे रसन, बिन रसना रस चखाईआ।

✪ २२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बंगा ज़िला लुध्याणा नाज़र सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे नेत्र वगे नीर, लोचन नैण छहबर लाईआ। निगाह मार लै बेनज़ीर, नर नरायण नूर अलाहीआ। उह संदेशा सुण लै जो दे के गया कबीर, कबरां तों बाहर जणाईआ। अन्त कन्त श्री भगवन्त बदले तेरी तकदीर, तक्बर दीन दुनी मिटाईआ। जिस दे कोल आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनादि शमशीर, जगत शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। जो लहिणा देणा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह हो के वेख वखाईआ । तेरी आसा रख के गए पैग़म्बर पीर, परम पुरख परमात्म तेरी ओट तकाईआ। तुध बिन अन्त देवे कोए ना धीर, धीरज नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले मीता, मित्रा तेरी दुहाईआ। मेरा अन्तष्करन ना होवे ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। आ के वेख लै कलकातीआं वाली रीता, तन वजूदां अन्दर हक महबूब हो के वेख वखाईआ। प्यार रिहा ना मन्दिर मसीता, काअबे जगत रहे कुरलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वक्त वेख लै बीता, पूरब लेखा लेखे नाल मिलाईआ। मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी मेरे अन्तष्करन वसजा चीता, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी परवरदिगार, सांझे यार नूर अलाहीआ। मेरा पूरब लहिणा दे उधार, मकरूज़ कर्ज़ा दे चुकाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरा करदी रही इंतज़ार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। मैनूं संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी तेरा भेव चुकाईआ। मैं मिट्टी ख़ाक हो के रही हुशियार, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। तूं देवणहार मेरा दातार, दयानिध इक अख्वाईआ। सति सच दे मालक मेरी पाउणी सार, ख़ालक ख़लक मख़लूक वेख वखाईआ। मेरे उत्ते तेरे नाम कलमे दा होया तकरार, झगड़ा दीन दुनी जणाईआ। शरअ दी शरअ नाल होई खार, मज़्हब मज़्हब नाल टकराईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बिन नैणां निगाह मार, बिन नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। मेरे उत्ते चारों कुण्ट होया अँधयार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। चार जुग दे शास्त्र रहे पुकार, बिन रसना कूक कूक सुणाईआ। कलि कल्की साडी पावे सार, निहकलंका तेरे हथ्थ वड्याईआ। अमाम अमामा नूर अलाही परवरदिगार, यामबीन

तेरी ओट तकाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मैं दरवेशन तेरे दर भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। धरनी कहे मेरे धर्म दी सुणीं पुकार, कूक कूक दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरी आसा पुरख अकाले अगम्म, जगत बुद्धी समझ किसे ना आईआ। मेहरवाना श्री भगवाना सति दा सच चला दे धर्म, अधर्म दा डेरा ढाहीआ। दीन दुनी नूं भेद खुला दे ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा आप चुकाईआ। मेरे उत्तम कर दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। मैं तेरी इक्को तकां सरन, सरनगति इक रखाईआ। तूं करता पुरख करनी करन, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। मेरा पल्लू बिन हथ्थां आ जा फड़न, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। तूं मालक भन्नण घड़न, समरथ अकथ इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। धुर दा भेव मेरे स्वामीआं जाए चुक, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म तेरी इक्को होवे तुक, तुख्म ताअसीर, बेनज़ीर देणा बदलाईआ। बिन तन वजूद हक महबूब सृष्टी दृष्टी अन्दर तैनूं जाए झुक, कायनात बिन काअब्यां सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे मेरे उत्तों पैंडा जाए मुक, सतिजुग
९५७ सच सच दे वड्याईआ। उह तक लै वक्त सुहञ्जणा गुर अवतार पैग़म्बरां वाला रिहा ढुक, बीस बीसे हरि जगदीसे आपणी ९५७
२४ अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। २४
धरनी कहे प्रभू प्रविष्टा तक लै अस्सू बाई, बाईबल विच यसूह की गया समझाईआ। की गोबिन्द इशारा दिता बूटा पुट्टण लग्गयां काही, कायनात की दृढ़ाईआ। की निरगुण सरगुण तेरी अक्खरां हिन्दसिआं वाली ज़ीरो सिफ़रा बणे दहाई, लेखा लेखयां विच्चों चुकाईआ। तूं मालक ख़ालक इक गुसांई, गहर गम्भीर तेरी वड्याईआ। मैं परम पुरख परमात्म इक्को तैनूं रही ध्याई, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धो दे शाही, दाग़ रहिण किछ ना पाईआ। लेखा तक लै धुर दे माही, महबूब नूर अलाहीआ। मैनूं सतिजुग सति धर्म दी बख्श दे शहिनशाही, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताईआ। तूं पुरख अगम्मड़ा सब दा इक गुसांई, गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। मेरे महबूबा आपणी तक लै दीन दुनी वाली खुदाई, खुद मालक हो के खोज खुजाईआ। मैं चरण कवल धरनी धरत धवल धौल कहे धूड़ी ख़ाक रही रमाई, मस्तक टिक्के लावां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाते पुरख बिधाते तुध बिन दूजा अवर कोए नाहीं, खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड रजोवाल ज़िला लुध्याणा गुरचरण सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख परमात्म धुर दे मौला, यामबीन निरगुण धार तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी पूरब वेख लै इकरार कौला, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। मैं कूक पुकारां मिट्टी ख़ाक धौला, धर्म दी धर्म नाल दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरा भार कर दे हौला, कलयुग क्रिया कूड़ कूड़ मिटाईआ। प्रेम प्यार विच मेरे उत्ते रिहा कोई ना पंडत पांधा रौला, मुल्ला शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता साँवल सौला, सर्ब कला समरथ अगम्म अथाहीआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मैनूं सुणा दे आपणा बोला, अनबोलत धुर दा राग दृढ़ाईआ। जिस दे विच सति धर्म दुआरा होवे खोल्हा, वस्त नाम सति सति वरताईआ। मेहरवाना निरगुण धार बिन ततां बदल के आ जा चोला, चोजी प्रीतम आपणा वेस वटाईआ। मेरे कर्म कुकर्म आपणे शब्दी धार जोह लै, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। सच प्यार मुहब्बत विच मानव ज़ाती आपे मोह लै, आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट मेरे उत्तों खोह लै, नव सत्त नज़र कोए ना आईआ। हरिजन सन्त सुहेले आपणे नाम प्यार विच परो लै, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। मानस मानव तेरे दर दा हो जाए गोला, दूसर इष्ट ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दृष्टी अन्दर गावे ढोला, ढोलक छैणे दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा सतिगुर शब्द निरगुण धार होए विचोला, ततां लेखा दए चुकाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हर घट दिसणा घोल घोला, काया मन्दिर अन्दर भेव चुकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरे उत्ते कर्म कांड दा बण जा तोला, नाम कंडा तराज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणे नाल छोह ला, छौहर बांके तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं तेरे चरण आप आपा घोला, घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते वेख लै बिन जगत अक्खीआं धार, लोचन नैण ना कोए वड्याईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सिक्दार, आदि जुगादी इक अख्वाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर पैग़म्बर गुर अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। मैं निमाणी रोवां ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ारी विच कुरलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीता ख्वार, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। जिधर तकां होया विभचार, माया ममता मोह हल्काईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए दुआर, दुआरका वासी कृष्ण दए गवाहीआ। राम रामा करे ना कोए सतिकार, सति सतिवादी सति विच ना कोए समाईआ। पैग़म्बर दए ना कोए अधार, शरअ शरीअत रोवे थांउँ थाँईंआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी तेरी दरगाह बणां भिखार, मुकामे हक झोली डाहीआ। मैं ख़ादम

तेरी ख़िदमतगार, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। तूं मेरा अमाम अमामा परवरदिगार, जल्वागर नूर अलाहीआ। मैं मिट्टी ख़ाक बण के ताब्यादार, लख चुरासी आपणे कंध उठाईआ। तूं देवणहार अगम्म भण्डार, अतोट अतुट सदा वरताईआ। मेरी बेनन्ती इक इकल्ले एकँकार, दर तेरे कूक सुणाईआ। जोती जाते मेरी पा सार, महासार्थी आपणा रंग रंगाईआ। लहिणा देणा पूरा कर पैग़म्बर गुर अवतार, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। वक्त सुहञ्जणा आदि निरञ्जणा मैनूं आ के दे दीदार, दीदा दानिस्ता तेरा दर्शन पाईआ। तूं नूर अलाह बेपरवाह सब दा सांझा यार, हक हकीकत दा पर्दा देणा खुल्हाईआ। तेरा संदेशा सुणां बिन अक्खरां बोल जैकार, सरवणां लोड़ रहे ना राईआ। मैं धरनी मिट्टी ख़ाक तेरी छार, चरण छोह के ख़ुशी बणाईआ। तूं कलि कल्की अवतार, निहकलंका बेपरवाहीआ। अमाम अमामा मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सजदयां विच करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। तूं बख्शणहार सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त तेरी ओट तकाईआ। धरनी कहे परम पुरख परमात्म मैनूं देणा आप अधार, सिर सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं भिखारन बणी तेरे दर, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। मेहरवान हो के किरपा देणी कर, किरपा निधान तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी दे दे वर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। मेरा धर्म ख़ज़ाना दे भर, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। हर हिरदे तेरा होवे डर, भय भउ आपणा इक समझाईआ। तूं स्वामी नरायण नर, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। मेरा सुहञ्जणा कर दे घर, नौ खण्ड पृथमी इक्को रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट शरअ शर, दीन मज़्हब करे ना कोए लड़ाईआ। मानव मानस मानुख तेरे दर जायण तर, तारनहार समरथ आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त अगम्म वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरी दीन दुनिया होई दुखी, दर्दीआं दर्द लैणा वंडाईआ। मानव ज़ाती तक लै भुक्खी, भुक्खयां भुख ना कोए गंवाईआ। भगत जन्मे कोए ना कुक्खी, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। भाग लग्गे ना उलटा रुक्खी, तन वजूद ना कोए चतुराईआ । तूं निरगुण धार हो के उठी, जोती जाते वेस वटाईआ। किरपा निधान हो के तुट्ठी, मेहर नज़र उठाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण मेरीआं चारे वेखीं गुठ्ठी, चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ फोल फुलाईआ। मेरी पत मेरे भगवान गई लुट्टी, कलयुग लुटेरा बणया थांउँ थाँईंआ। सब दी प्रीत तेरे चरण कवल टुट्टी, टुटयां सके ना कोए जुड़ाईआ। तूं मेहरवान मेहरवान मेहरवान मैं तेरी आदि जुगादि करदी बुत्ती, बुतख़ानयां आपणे विच टिकाईआ। मेरी जाग खोल्ह दे सुरत रहे ना सुती, हलूणा शब्द नाम लगाईआ। तूं पुरख पुरखोतम अबिनाशी अचुती, चेतन

देणा कराईआ। मेरे उत्ते सुहञ्जणी कर दे रुती, रुतड़ी आपणा नाम महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी अचुत्ती, चेतन हो के चित ठगौरी दे चुकाईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड महौण ज़िला लुध्याणा उजागर सिँघ दे गृह ✪

अस्सू कहे प्रभू मेरा प्रविष्टा तेई, अवतार तेई खुशी मनाईआ। की इशारा दिता सतिगुर नानक उत्ते वेईं, बहिबल हो के दयां सुणाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा लिख के गए कई, केते तेरे हुक्म विच गुण गाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी तेरी सब तों निराली देही, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरा तेई दिवस दिहाढ़ा लोकमात, मातृ भूमी नाल मिलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं बख्शणी सच दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। ठाकर स्वामी हो के मार झात, परवरदिगार सांझे यार अक्ख उठाईआ। मेरे अन्त कन्त भगवन्त पुछ वात, वारस हो के खोज खुजाईआ। नव सत्त अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म सुणे कोई ना बात, बातन पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सच दा भेव खोल्ह दे आप, हरि करते दया कमाईआ। तूं धुरदरगाही अगम्मी बाप, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। निज घर वासी आपणा दे दे जाप, बिन रसना जिह्वा कर पढ़ाईआ। कलयुग त्रैगुण माया मेट दे ताप, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। पूरब लेखा लहिणा मेरा तक लै खात, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। आसा कहे मैं जुग जुग आस इक्को रखी, रक्षक तैनूं दयां जणाईआ। निगाह मारीं बिना नेत्र लोचन नैण अक्खी, दीन दयाल दया कमाईआ। तूं सर्ब स्वामी मेरी पैज अन्तिम रखी, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मेरी कीमत कोई रही ना कक्खी, कलयुग कूड़े हट्ट विकाईआ। मैं दो जहान दुहाई दे दे नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। कलयुग माया ममता विच फसी, तन्द सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरा लहिणा देणा बाकी, बाकायदा दयां जणाईआ। तूं पुरख अकाला मेरा साथी, सगला संगी इक अख्वाईआ । मेरा पर्दा खोल्ह के वेख लै ताकी, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। मेरा तन वजूद नहीं कोई ख़ाकी, अप तेज वाए पृथ्मी

आकाश रंग ना कोए रंगाईआ। तेरी चरण प्रीती मेरा नाती, दूसर संग ना कोए जणाईआ। अन्त पुछ मेरी वाती, वातावरन तेरे चरण टिकाईआ। धुर दी बख्श दे बूँद स्वांती, मेरी अग्नी तत बुझाईआ। तेरी सब तों वखरी ज़ाती, अज़ाती नूर नूर अलाहीआ। मेरा लहिणा देणा चार जुग दे शास्त्र नहीं काग़ज़ाती, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे कोल सतिगुर शब्द दी अगम्मी पाती, पत्रका जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो लिखी नहीं नाल कलम दवाती, हरफ़ हरूफ़ां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अस्सू कहे प्रभू निगाह मार लै काया माटी भाण्डे कुम्ब, चार जुग दे मालक ध्यान लगाईआ। की संदेसा दिता अष्टभुज सुम्ब निसुम्ब, धुर दा हुक्म हुक्म दृढ़ाईआ। की लहिणा देणा गोबिन्द धार हेम कुंड, कुंडी खिड़की बाहर रखाईआ। की आशा रख के गया काग भसुण्ड, कलयुग अन्तिम दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। अस्सू कहे प्रभू मेरा संदेशा बिन पाणी पौण, पवण बसन्तरां रंग ना कोए रंगाईआ। तेरा भेव पा सके कौण, कथनी कथ सके कोए ना राईआ। मैं पूरब कथा आया सुणाउण, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ।
६६१ जो लहिणा देणा राम दा लेखा राम रावण रौण, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उह संदेसा दर ठांडे आया घलाउण, बिन ६६१
२४ रसना जिह्वा गाईआ। जो भगत सुहेला तेरा आदि जुगादी तूं उस दा अन्तर आत्म आयों प्रचाउंण, पर्चा दीन दुनी तों बाहर २४
पाईआ। कुछ लेखा तक लै की तेरा नाता विच महौण, मोहर आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तेई अस्सू कहे उह नारद आउंदा नट्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस नूं कलयुग करे ठठ्ठा, मसख़री रिहा उडाईआ। पंडता धर्म दा बुरज वेख लै ढठ्ठा, महल वेखण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द दा रिहा कोई ना पठ्ठा, चेला गुर ना कोए समाईआ। दरोही फिर गई मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठा, गुरुदुआर ध्यान लगाईआ। सब दा लेखा मुकणा इक्ठ्ठा, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे कोल पुरख अकाल दा पटा, पटने वाला दए गवाहीआ। जिस दा लहिणा देणा अन्तिम धार होणा जट्टा, जटा जूटां करे सफ़ाईआ। उह सूरबीर नौजवान हट्टा कटा, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस सब दा मेटणा रट्टा, लेखा जाणे ख़लक ख़ुदाईआ। उह भेव खुल्हाए काया मट्टा, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। उस दा वेस बाज़ीगर नट्टा, जगत जीअ समझ सके ना राईआ। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग टप्पा, अगला पन्ध मुकाईआ। उह वसणहारा घट घटा, लख चुरासी रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक वखाईआ। नारद कहे अस्सू

भाण्डे मिट्टी दे तक लै चार, चारे जुग सरनाईआ। बिन रसना करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। सतिजुग बोले आपणी धार, घृत विच समाईआ । त्रेता कूक कूक करे पुकार, बलि बावन वेख वखाईआ। चावल तेरा रूप अपार, समग्री बेपरवाहीआ। द्वापर कूक बोले ललकार, नव सत्त सत वड्याईआ। कान्हा कृष्णा तेरा सहार, अर्जन मिल के वजे वधाईआ। मोहण माधव हो सिक्दार, गहर गम्भीर खेल खिलाईआ। अन्न दाणा विच संसार, देवणहार इक गुसांईआ। जो वेखे विगसे पावे सार, आदि जुगादि धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। चौथा भाण्डा कहे मैं कलयुग कूड़ा कच्चा, ख़ाली अन्दरों नज़री आईआ । मेरे विच गुण रिहा ना सचा, सच मिले ना कोए वड्याईआ। मेरा अन्तष्करन कूड़ी क्रिया नाल मच्चा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मैं नव दुआरे भज्जा, भज्जया वाहो दाहीआ। प्रभू नाम मूल ना जपा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मैनूं मिले कोई ना पता, पतिपरमेश्वर नज़र कोए ना आईआ। मेरा ख़ाली दिसे खटा, वस्त हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मैनूं इशारा दे के गया नानक तपा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। जिस वेले वेईं दे विच छपा, बिन छप्पर छन्नां डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। ख़ाली भाण्डा कहे मैं निक्का जेहा कुज्जा, कुम्भ नालों रूप बदलाईआ। मेरे अन्तर आत्म जगत विकार मूल ना बुज्झा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मैनूं अन्तिम अन्त इक्को दुआरा सुज्झा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला मेरा भेव जाणे गुज्झा, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। जिस दे अगे वास्ता पावे धरनी वसुधा, धरनी रो रो देवे दुहाईआ। उस दा कलयुग हुक्म दा होण वाला युद्धा, युधिष्टर दा लेखा लेखे विच्चों कढ्ढाईआ। अन्त वक्त सुहञ्जणा पुज्जा, पूजणयोग इक अख्वाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल इक खिलाईआ। भाण्डा कहे मेरा रूप मिट्टी ख़ाक तन, वजूद वेख वखाईआ। मेरा समझे कोई ना मन, मनसा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा रुपा नहीं कोई धन, धनाढ रंग ना कोए रंगाईआ। मेरा सरवण नहीं कोई कन्न, कायनात दयां जणाईआ । मेरा नूर नहीं कोई चन्न, प्रकाश ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त इक वरताईआ। भाण्डा कहे मैं अन्दरों ख़ाली, चौथा दयो वखाईआ। मेरी सतिगुर शब्द करे दलाली, विचोला इक्को नज़री आईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल जोत अकाली, अकल कलधारी नाल मिल के वजे वधाईआ। जो सब दी सुरत रिहा संभाली, सम्बल बहि के आपणा खेल खिलाईआ। सो आदि जुगादि वाली, वारस इक्को इक अख्वाईआ। जो मेरा लेखा पूरा करे हाली, हालत तिस नूं दयां

सुणाईआ। कलयुग फल रिहा किसे ना डाली, पत्त टहणी गए कुमलाईआ। कूड़ी क्रिया खेल होई निराली, अचरज लीला रही वखाईआ। प्रभू प्रीती मिले कितों ना भाली, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। भाण्डा कहे प्रभू मैनूं दे दे प्रेम दाद, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। मैनूं भर सके ना कोई सन्त साध, फ़कीर फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। मैं फिर फिर वेखे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ ततां वाले समाध, समग्रीआं खोजीआं चाँई चाँईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द अक्खरां वाले सुणदा रिहा नाद, ढोले सिफ्तां वाले सिफ्त सलाहीआ। मैं निगाह मारी विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। जिधर तक्कया दिस्या वाद विवाद, विख अमृत रूप ना कोए बणाईआ। तूं मेरा मोहण माधव माध, मेहरवान अगम्म अथाहीआ। आदि जुगादि बोध अगाध, बुद्धी तों परे तेरी पढ़ाईआ। माटी ख़ाली काचा भाण्डा तैनूं रिहा अराध, गुण तेरे ढोले गाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणी किरपा दा मेरे अन्दर पा प्रशादि, प्रशादी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरे अन्तष्करन रहे ना वाद विवाद, अमृत रस बिन रसना देणा चखाईआ।

६६३ २४

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड महौण ज़िला लुध्याणा जरनैल सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे वड्डे होवण भाग, भगवन देवे माण वड्याईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ दी बुझे आग, त्रैगुण तत ना कोए तपाईआ। सति दीपक जोत जगे चराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। जन भगतां अन्दर बख्शे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। हरिजन हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, पतित पुनीत आप अख्वाईआ। साचा इश्नान कराए अगम्मी धूड़ मजन माघ, ममता मोह विकार चुकाईआ। सन्त सुहेले जावण जाग, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेरा होया वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जिस दे चरण धूड़ करां मजना, मेरे पापां करे सफ़ाईआ। सदा सुहेला होवे सज्जणा, सख़ा इक अख्वाईआ। जिस मेरा पर्दा कज्जणा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस मेरा पर्दा कजणा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जिस दा नाम निधाना डंका वज्जणा, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। जिस दे हुक्म विच लख चुरासी जीव जंत बज्झणा, सिर सके ना कोए उठाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं गावां गीत, सतिगुर गोबिन्द धार दए वड्याईआ । जो जन भगतां करे सच प्रीत, प्रीतम हो के मेला मेले चाँईं चाँईंआ। मेरा धाम सुहाए बिना मन्दिर मसीत, बिन काअब्यां करे रुशनाईआ। मैनूं स्वामी मिल्या त्रैगुण अतीत, त्रैभगण धनी नूर अलाहीआ। मेरा खुशी होया चीत, चित वित ठगौरी रही ना राईआ। मैं आपणा आप ल्या जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दर इक सुहाईआ। धरनी कहे मैं इक्को मंग मंगदी, मांगत हो के झोली डाहीआ। परम पुरख जगत घड़ी होवे लँघदी, पल पल तेरा नाम ध्याईआ। मेरे उत्तों खेल मुका दे भुख नंग दी, जगत दलिद्र डेरा ढाहीआ। खुशी दे दे आपणे अनन्द दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। वड्याई तकां तेरे भगत चन्द दी, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। वड्याई होवे तेरे इक्को छन्द दी, सो पुरख निरञ्जण दए वड्याईआ। मेरी आशा पूरी कर दे बन्द बन्द दी, बन्दगी तेरे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आशा पूरी करनी तत पंज दी, पंचम मीते ठांडे सीते दर आपणे देणी वड्याईआ।

✪ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सरहंद शहर गुरदर्शन सिँघ दे गृह राम सरूप सुखराम दास कृष्ण कुमार देवी दयाल ✪

धरनी कहे मेरे परवादिगार नूर अलाह, यामबीन तेरी सरनाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते अगम्म अथाह, सो पुरख निरञ्जण तेरी ओट तकाईआ। जल्वागर खुदी तों बाहर मेरे खुदा, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। मेरे श्री भगवान नौजवां, मर्द मर्दाने तेरी ओट रखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले बिन हथ्थां मेरी पकड़ लै बांह, बिन ततां तत जणाईआ। तूं मालक ख़ालक दो जहां, निरगुण निरवैर अगम्म अथाहीआ। मैं धर्म दी धार रही ना धरनी माँ, मईआ सईआ रंग ना कोए रंगाईआ। मेरे उत्ते झगड़ा तक लै सूर गाँ, पंछी पशू सारे रोवण मारन धाहीआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई वांग काँ, काग वांग सर्ब कुरलाईआ। हिरदे वस्या दिसे किसे ना नाँ, नाउँ निरँकार तेरे रंग ना कोए रंगाईआ। मेरे मालक ख़ालक पवित्र रिहा कोई ना थाँ, थनंतर वेखण कोए ना पाईआ। आ के वेख लै मेरा गराँ, गृह मन्दिर पर्दा आप चुकाईआ। तेरे चरण कवल धवल हो के बलि बलि जां, एका सरन देणी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाल अगम्मड़े, बेअन्त बेऐब तेरी वड्याईआ । निगाह मार लै काया माटी मानव चंमड़े, चम्म दृष्टी वेख वखाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी दे हाल होणे मंदड़े, मंदभागी दिसे लोकाईआ। तेरी कीमत रही ना कौडी दमड़े, दामनगीर तेरा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे दर जगावां अलख, अलख अगोचर तेरी ओट तकाईआ। निरगुण धार हो प्रतख, पतिपरमेश्वर आपणा रूप बदलाईआ। मेरा भाण्डा वेख लै ख़ाली सख, सच वस्त रहिण ना पाईआ। ज्यों भावे मेरी पैज लैणी रख, रक्षक हो के होणा सहाईआ। सच प्रीती खेड़ा होया भक्ख, भठ दिसे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक देणी वड्याईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू मेरी बेनन्ती तेरे अगे अरदास, अरज़ोई इक सुणाईआ। तूं शहिनशाह शाहो शाबाश, पातशाह बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तक लै तन वजूद माटी ख़ाक लाश, शरीर अन्दर ध्यान लगाईआ। कुछ लहिणा देणा मेरे नाल मिला दे शंकर कैलाश, कलाधारी दे वड्याईआ। मेरी जुग चौकड़ी पुराणी पूरब आस, तृष्ना तेरे चरण टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप
६६५ आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं धुर दा मीत मुरार, मित्र ६६५
२४ प्यारा इक अख्वाईआ। सो पुरख निरञ्जण पाउणी सार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एकँकार देणा अधार, दूसर २४
ओट ना कोए रखाईआ। आदि निरञ्जण कर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करते करना प्यार, मुहब्बत आपणा नाम समझाईआ। श्री भगवान मेरा कर्ज़ा देणा उतार, मकरूज तेरे दर ते मंग मंगाईआ। पारब्रह्म हो जा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। सतिगुर शब्द बोल जैकार, संदेशा दो जहान दृढ़ाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म कर उज्यार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। विष्नूं विश्व भर भण्डार, ख़ाली झोली रहिण ना पाईआ। शंकर कूड़ी क्रिया कर दे पार, सति त्रिशूल इक चमकाईआ । नौ खण्ड पृथमी तूं वेखणी आपणी धार, जगत अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, ज़र्रा ज़र्रा रिहा कुरलाईआ । तूं मालक स्वामी मेरा कन्त भतार, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। निहकलंका कलि कल्की बण इक अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। अमाम अमामा पाउणी सार, सिक्दार नूर अलाहीआ। मैं तेरी तल्बगार, सन्त कुमार रिहा जणाईआ। बराह ने दिता अगम्म इशार, सैनत अक्ख ना कोए दृढ़ाईआ। यगे पुरुष कीती विचार, बिन बुद्धी बोध कराईआ। हावग़रीब किहा तूं पावणहारा सार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नर नरायण तेरे सब कुछ अख्त्यार, हुक्मे अन्दर आपणा हुक्म वरताईआ। दत्ता त्रै कूक गया पुकार, दो जहान सुणाईआ । रिखप आसा रखी दीन दुनी तों बाहर,

भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। पृथू कर कर निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। मत्तस तेरे चरणां धूड़ी ला के छार, टिक्के ख़ाक रमाईआ। कछप हो के आपे ज़ाहर, मिन्दिरा आपणे पिठ उठाईआ। धनंतर तेरा खेल न्यार, खेल खेलया चाँईं चाँईंआ। हँसा बावन पा के सार, पारब्रह्म प्रभ आपणा रूप जणाईआ। हरी हर हो के आप ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। दूतां दुष्टां आप सँघार, मोहण माधव आपणी कल वरताईआ। बावन तेरा रूप अगम्म नेत्र दिसे ना विच संसार, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। नर नरायण हो उज्यार, उजाला कीता थांउँ थाँईंआ। तेरा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। राम रामा रूप धर अपर अपार, खेल खेलया चाँईं चाँईंआ। कान्हा कृष्णा त्रैलोकी तेरे चरण भिखार, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण तेरी वड्याईआ। परस राम दी खत्री बाहमण तों बाहर दी धार, जगत शस्त्र ना कोए लड़ाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लेख लिख्या चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी लँघदे गए पार, पारब्रह्म तेरी सेव कमाईआ। पैग़म्बरां पैग़ाम दिता दस्सया विच्चों निरअक्खर धार, मूसा ईसा मुहम्मद कर शनवाईआ। नानक गोबिन्द दे अधार, जै जै कार करावे ख़लक ख़ुदाईआ। अन्तिम परम पुरख परमात्म धरनी कहे तेरी आई वार, वारस हो के वेख वखाईआ। सम्बल नगरी तेरा धाम न्यार, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। शब्दी शब्द तेरा जैकार, बिन कन्नां सरवणां कर शनवाईआ। तेरा रूप अनूपा शाहो भूपा दिस ना आवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी तेरे ढोले गाईआ। मैं अन्त कन्त भगवन्त तेरा करदी इंतज़ार, बिन नैणां राह तकां चाँईं चाँईंआ। तूं शाह सुल्ताने नौजवाने मर्द मर्दाने मैनूं बख़्श दे धूड़ी छार, टिक्के ख़ाक ख़ाक रमाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे दर पुकार, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जीवां जंतां अन्दरों कढ्ढके बाहर, साधां सन्तां रंग रंगाईआ। इक्को नाम कलमा सृष्ट सुबाई अन्तर निरंतर तेरा होवे प्यार, मुहब्बत आपणी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे मेरे स्वामी अन्तरजामी निहकामी मेरी इक अरज़ोई, जगत ख़ाहिश तमंना संग ना कोए रखाईआ। तुध बिन मेरी सार पाए ना कोई, कूक कूक दयां दुहाईआ। नव सत्त तेरे नाम मिले ना ढोई, ढोलक छैणे कम्म किसे ना आईआ। मानव ज़ाती सुरत शब्द सके ना कोए परोई, परोहत सके ना कोए समझाईआ । मेरे मालक ख़ालक परवरदिगार नूर अलाह मेरी दरोही, दो जहानां दयां सुणाईआ। आत्म परमात्म तेरे नाल किसे ना छोही, मिल के वजे ना कोए वधाईआ। जिधर तकां घर घर काया मन्दिर अन्दर पंज गरोही, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। सुरती उठे किसे ना सोई, सवाधान ना कोए कराईआ। अमृत बूँद स्वांत कोए ना चोई, सांतक सति ना कोए वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पत गई खोही, पतिपरमेश्वर

ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लेखे ला के भविख्तां वाली पेशीनगोई, पेश हो के पेशतर तैनूं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे प्यार मुहब्बत तेरी सृष्टी दृष्टी अन्दरों गई मोही, नाता बिधाता इक्को इक लैणा जुड़ाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सरहंद शहर विच गुरदर्शन सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सदा बख्शंद, बख्शणहार आदि जुगादि अख्वाईआ। जन भगतां देवणहार सदा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। अन्तर निरंतर चाढ़नहारा नूरी चन्द, जोती जाता हो के डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से छन्द, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्धन कूड़ रहे ना राईआ । भाण्डा भरम भुलेखा ढाहे कंध, अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। सच दुआर निरगुण धार हो के जावे लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। आत्म
६६७ सेज सुहाए पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। पंज विकार मेट के जंग, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। मानस जन्म होवण ६६७
२४ ना देवे भंग, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, दुरमति मैल मैल धुआईआ। लेखा जाणे तत पंज, २४
पंचम मीता हो के खोज खुजाईआ। मन कल्पणा रहिण ना देवे रंज, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। इक्को रंग रंगाए सवेर सञ्झ, सँध्या सरघी मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । सतिगुर शब्द सदा मेहरवान मेहरवान मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। आदि जुगादि नौजवान, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी धरत धवल धौल हुंदा प्रधान, अवतार पैग़म्बर गुर आपणा खेल खिलाईआ। धुर संदेशा देवे नाम निधान, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जगत जुगत शास्त्रां दे ज्ञान, विद्या विद्दत रूप दरसाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आण, अनक कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। जिस दा खेल ज़िमीं असमान, दो जहान रचन रचाईआ। सो भगत वछल भगवान, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जो लहिणा देणा देवणहार नबी नूह इन्सान, लख चुरासी पर्दा आप उठाईआ। जिस नूं सब ने धुर दा मन्नया राम, काहन कान्हा आप हो जाईआ। जिस उत्ते पैग़म्बरां आउंदा ईमान, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस ने नानक दात दिती सतिनाम, नाम निधाना झोली पाईआ। जिस दा डंका फ़तिह महान, गोबिन्द गया गाईआ। सो पुरख अकाला नौजवान, दीन दयाल इक अख्वाईआ। जो देवणहार ग़रीब निमाणयां माण, सिर सिर आपणा

हथ्थ टिकाईआ। जिस दे प्यार विच रोग सोग सर्ब मिट जाण, दुःख दलिद्र रहे ना राईआ। अन्तर आत्म निझर झिरना मिले पीण खाण, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। शब्द अनादी दए धुन्कान, अनहद नादी राग सुणाईआ। आत्म जोती जोत जगाए महान, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। घर ठाकर स्वामी मिले आण, नूर नुराना धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर आप सुहाईआ। सतिगुर शब्द लेखा जाणे काया मन्दिर, साढे तिन्न हथ्थ खोज खुजाईआ। बजर कपाटी तोड़नहारा जंदर, कुंजी नाम आपणी आप लगाईआ। भाग लगाए डूंघी खण्डर, अन्ध अन्धेरा वेख वखाईआ। मनुआ मन दहि दिशा उठ ना धाए बन्दर, दिवस रैण भज्जे नाँ वाहो दाहीआ। देवे प्रकाश बिना सूर्या चन्द्र, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा महबूब, महिबान इक अख्वाईआ। जिस दा आलीशान अरूज, अर्श फर्श दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दी दो जहानां बाहर आवाज़, शब्दी धार करे शनवाईआ। तिस सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीन दुनी चलाया जहाज़, बेड़ा चप्पू आपणा नाम रखाईआ। सो भगतां पूरे करनहारा काज, करता पुरख इक अख्वाईआ। जिस नूं सब ने मन्नया गुरु महाराज, शाह पातशाह शहिनशाह नूर अलाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी दुरमति मैल धोवणहारा दाग़, पतित पुनीत आप कराईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ । काया मन्दिर अन्दर सुरती जावे जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझा के आग, सांतक सति सति वखाईआ। जो सच सरनाई जावे लाग, सतिगुर देवे माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द ग़रीब निमाणयां करे वड वड भाग, भगवन हो के वेख वखाईआ। घर दीपक जगा चराग़, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। बिना करनी करतब अन्तष्करन उपजाए वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मन कल्पणा होए त्याग, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान , जन भगत सुहेले पकड़नहारा आपे वाग, डोरी अवर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड रौणी ज़िला लुध्याणा सरदारा सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सदा सुखदाई, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अखवांयदा। जुग जुग खेले खेल हो के बेपरवाही, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा रंग रंगांयदा। भगत सुहेले आदि जुगादि लए उठाई, जगत आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढांयदा।

देवे नाम निधाना बण के धुर दा माही, महबूब हो के आपणा भेव चुकांयदा । सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी बख्शे सच्चा थाँई, थान थनंतर इक वड्आइंदा। जोती जाता हो के पकड़े बाहीं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमांयदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादी, निरगुण आपणी कार कमांयदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म संग निभांयदा। सति सति दा बण के रूप सदा सतिवादी, सति रंग रंग रंगांयदा। आपणी अवाज़ सुणाए धुन अनादी, अनहद आपणा राग दृढ़ांयदा। बिस्मिल धार होई विस्मादी, जग नेत्र नज़र किसे ना आंयदा। जिस दा हुक्म बोध अगाधी, मन मति बुद्ध तों परे समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभांयदा। सतिगुर शब्द सदा कुलवन्त, कुल भगतां वेख वखाईआ। जिस दा नाम निधाना अगम्मी मंत, मंतव हरिजन पूर कराईआ। जिस दी धार चार जुग दे सन्त, सतिगुर देवणहार वड्याईआ। सो गढ़ तोड़नहारा हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। निरगुण धार बण के पंडत, जगत विद्या बाहर पढ़ाईआ । जिस दा लेखा आदि अन्त, जुगा जुगन्त खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सतिगुर शब्द सदा संगी, आदि जुगादि संग निभांयदा। काया माटी चोली देवे रंगी, रंगत दो जहान वखांयदा। जन भगतां पुश्त होवण ना देवे नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आत्म धार देवे अनन्दी, प्रमानंद विच रखांयदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्से छन्दी, सोहँ ढोला इक दृढ़ांयदा। बजर कपाटी तोड़े जंदी, ज़िंदगी आपणे नाल मिलांयदा। लख चुरासी कटे फंदी, जम की फास ना कोए वखांयदा। नूरी चन्द चाढ़ के चन्दी, अन्ध अज्ञान गवांयदा। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघी, सो कलयुग अन्तिम फेरा पांयदा। जन भगतां सद कटणहारा तंगी, दुःख दलिद्र डेरा ढांयदा। मनुआ मन ना रहे फ़रंगी, फ़ैसला इक्को हक सुणांयदा। आत्म परमात्म नाल करे संधी, नाता बिधाता आप जुड़ांयदा। झगड़ा मुके जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज डेरा ढांयदा। अन्त कन्त भगवन्त हरिजन लै के जावे सचखण्डी, दुआरा एकँकारा इक वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा बंक इक वड्आइंदा। सतिगुर शब्द भगत सुहेला मीता, मित्र इक अख्वाईआ। जो निरगुण वसे चीता, ठगौरी चित रहे ना राईआ। तन वजूद करे ठांडा सीता, अग्नी तत बुझाईआ। भाग लगाए दया कमाए दरस दिखाए काया मन्दिर मसीता, काअबा इक्को इक नजरी आईआ। जिथ्थे वसे त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी धुर दा माहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर आप सुहाईआ। सतिगुर शब्द सदा सुहेला, संगी इक अख्वाईआ। जन भगतां करे आपणा मेला, मिलणी हरि जगदीश रखाईआ।

बंक दुआर इक सुहाए गुरु गुर चेला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादि अचरज खेल खेला, ख़ालक ख़लक हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। जो वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सो जन भगतां कलयुग अन्तिम बणे सज्जण सुहेला, सगला संगी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आवण जावण पतित पावन कटणहारा धर्म राय दी जेला, मेहरवान हो के आपणी दया कमाईआ।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड हरबंस पुरा ज़िला लुध्याणा गुरनाम सिँघ, जसवन्त सिँघ, प्रेम सिँघ, शमशेर सिँघ, राज सिँघ, करनैल सिँघ, इन्द्र सिँघ ✪

धरनी कहे मेरे श्री भगवान, भगवन भगवन्त तेरी ओट तकाईआ। मेरे आदि जुगादी काहन, निरगुण धार तेरी सरनाईआ। जोबनवन्ते नौजवान, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा तक लै हो के निगाहबान, बिन नैणां नैण उठाईआ। नव सत्त मार ध्यान, वेखणा थांओं थाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होई प्रधान, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। मन कल्पणा होई शैतान, शरअ कूड़ करे लड़ाईआ। तेरा प्रेम प्यार रिहा ना किसे विच इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। मैं भिखारन हो के मंगां दान, मंगती हो के झोली डाहीआ। वस्त अमोलक एका देवे नाम निधान, निरवैर निराकार निरँकार आप वरताईआ । मैनूं तेरे उत्ते माण, अभिमान दीन दुनी देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेरे भगवन्त, भगवन तेरी ओट तकाईआ। मेरे आदि जुगादी कन्त, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। मेरे उत्ते इक्को नाम दे दे मणीआ मंत, मन मनसा कूड़ दे गंवाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। तूं बोध अगाधा पंडत, जगत शास्त्रां बाहर तेरी पढ़ाईआ। कलयुग लेखा वेख लै अन्त, अन्तष्करन तक ख़लक ख़ुदाईआ। मेरी तेरे दर ठांडे इक बेनंत, अरज़ोई कर के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख कुदरत दे कादर करनेहार, करीम बेऐब नूर अलाहीआ। तुध बिन अवर ना कोए मददगार, सांझा यार नज़र कोए ना आईआ। मैं आदि जुगादि तेरी ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख लै जुग चार, चारे कुण्ट चारे खाणी ध्यान लगाईआ। मेरा नव सत्त रिहा पुकार, उच्ची कूक कूक दुहाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते कलयुग अन्त

पा सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। मेरे उत्तों पापां लाह भार, पतित पुनीत दे बणाईआ। मेरी अन्तष्करन दी सुण लै गिरयाज़ार, गिरवर गिरधार गोबिन्द तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले दीन, दीनन दया कमाईआ। मैं तैनूं रही चीन, दूसर इष्ट ना कोए रखाईआ। तूं निगाह मार लै लोक तीन, त्रैगुण अतीते वेख वखाईआ। मैं निमाणी कोझी कमली मस्कीन, बल आपणा ना कोए जणाईआ। तेरी दीन दुनिया तेरी रही ना मूल अधीन, भय भाओ सिर ना कोए रखाईआ। सब दी मनसा आसा होई कमीन, कामल मुर्शद तेरा दरस कोए ना पाईआ। तूं शाह पातशाह रहीम, रहमत इक कमाईआ। जिस बिध मानस ज़ाती कीती तकसीम, अन्त लेखा देणा मुकाईआ। तूं मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मर्द मर्दाना कदीम, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कर दे रहमत, मेहर नज़र उठाईआ। तेरे चरण कवल मेरी आसा होवे सहिमत, दूसर राह ना कोए तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढ दे ज़हिमत, जहां तहां हो सहाईआ। चार जुग दी लेखे ला लै मेहनत, दर ठांडे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे सुण धरनी धरत धवल धौल, धर्म धार जणाईआ। आपणे वायदे तक लै कौल, इकरारनामे खोज खुजाईआ। जो इशारा दिता कृष्ण काहन साँवल सौल, त्रैलोकी धार दृढ़ाईआ। मैं हर घट अन्दर जावां मौल, मौला हो के वेख वखाईआ। तेरा अक्खर धार निरअक्खर विच जणावां बोल, अनबोलत आप समझाईआ। सदी चौधवीं अन्त ना रहिणा अनभोल, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। नाम कंडे शब्द तराज़ू दो जहान तोलां तोल, लख चुरासी आप उठाईआ। पृथ्मी पृिथम तेरे उत्ते दीन दुनी दा वेख घोल, तूं घोली जाणा आपणा आप घुमाईआ । अन्त कन्त भगवन्त तेरा दर्द दुःख वंडे उत्ते धौल, धर्म धर्म धर्म धार समझाईआ। लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले लए विरोल, निरगुण सरगुण आपणे रंग रंगाईआ। सति धर्म दा दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा सतिजुग देवे खोल्ह, कुंडी खिड़की बन्द ना कोए कराईआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता एका देवे नाम अनमोल, अनमुलड़ी वस्त आप वरताईआ। सच स्वामी घट निवासी सद वसे तेरे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। इक्को नाम निधाना नौजवाना वजाए अगम्मा ढोल, जिस दी आवाज़ सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनीए तेरे उत्ते धर्म कमावांगा। निहकर्मी हो के कर्म दृढ़ावांगा। भाण्डा भरम भरम भन्नावांगा। सतिजुग सच सच प्रगटावांगा। काया माटी भाण्डा कच्च, कूड़ी क्रिया बाहर

कढावांगा। मनुआ मन पए ना नच्च, दहि दिशा दा पन्ध मुकावांगा। साची दे के इक्को मति, ब्रह्म मति आप समझावांगा। मानव ज़ाती बख्श के इक्को तत, ततव तत भेव खुलावांगा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अमृत मेघ नाम बरसावांगा। तेरे उत्ते ज़रूर आवां वत, बेवतनां वेख वखावांगा। जिस कारन तूं वास्ता रही घत, तेरा सथर सेज लेखे लावांगा। निरगुण धार जोड़ के नत, सरगुण आपणी गंढु पुआवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धर्म दी धार तैनूं बख्श के यति, सति तेरी गोद टिकावांगा।

✪ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड दोराहा ज़िला लुध्याणा नछत्र सिँघ दे गृह ✪

दोराहा कहे जन भगतो जगत धार विच ना रहिणा दो, दूआ एका एका रूप समाईआ। धुर संदेशा नर नरेशा सुणो अगम्मा सो, सो पुरख निरञ्जण आप दृढ़ाईआ। आत्म धार निरगुण सारे जाओ हो, हाहा टिप्पी आपणा रंग वखाईआ। बिना पुरख अकाल दूसर इष्ट दिसे ना को, सीस बिन जगदीस ना कोए निवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाओ सच मुहब्बत मोह, विकार हँकार जगत ना कोए जणाईआ। अमृत रस बूँद स्वांती निझर झिरना कवल नाभी लैणा चो, जगत तृष्ना कूड़ रहे ना राईआ। पंच विकारा विच संसारा मेटणा गरोह, गृह मन्दिर अन्दर तन वजूद वजे वधाईआ। बिन नेत्र लोचन नैण घर वेखो अगम्मी लो, लोयण आपणा आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। दोराहा कहे जन भगतो जगत धार छडणी दो धड़, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। एका अक्खर निरअक्खर धार जाणा पढ़, रसना जिह्वा होए ना कोए हल्काईआ। इक दुआर जाणा खड़, सच महल अटल सोभा पाईआ। इक्को मंज़ल जाणा चढ़, जिथ्थे मिले धुर दा माहीआ। सचखण्ड दुआर बिन कदमां जाणा वड़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दोराहा कहे मेरा दोहरा इक संदेश, सँध्या सरघी बाहर जणाईआ। सब दा मालक इक नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। जो आदि जुगादी रहे हमेश, हम साजण धुरदरगाहीआ। जिस दा लहिणा देणा कलयुग अन्तिम नाल दस दस्मेश, दहि दिशा वेख वखाईआ। उह मेटणहारा कलयुग क्रिया कूड़ मलेछ, ममता मोह विकार गंवाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के हर घट अन्तर करे प्रवेश, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार ना कोए दृढ़ाईआ। उह वसणहारा एकँकारा सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ आपणा रंग रंगाईआ। जिस दे अगे अवतार पैग़म्बर

गुरु होए पेश, पेशीनगोईआं आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दोराहा कहे जन भगतो दीन दुनी दी तक लओ दोहरी धार, धर्म विच ना कोए समाईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के मात दृढ़ाईआ। जो कातब बण के बणे लिखार, लेखा लिख्या चाँईं चाँईंआ। जो हुक्म संदेशा दिता आप करतार, कुदरत कादर गया दृढ़ाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप रिहा विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ । जिस नूं सब ने किहा कलि कल्की अवतार, निहकलंका डंक वजाईआ। अमाम अमामा हो सिक्दार, हुक्म संदेशा देवे धुरदरगाहीआ। जो लहिणा देणा पूरब सर्ब लए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। दोराहा कहे जन भगतो दीन दुनी दी वेखो मंडी, मण्डल मण्डपां विच ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होई पखण्डी, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। बिना प्रभू तों आत्मा सब दी होई रंडी, कन्त सुहाग ना कोए हंडाईआ। दीन दुनी ओझड़ पै गई डण्डी, डण्डावत बन्दना सारे गए भुलाईआ। मेरा मेहरवान श्री भगवान करनहार खण्ड खण्डी, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। नव सत्त दी धार जाए वंडी, वंडणहारा इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच चलणी चण्डी, चण्ड प्रचण्ड रूप बदलाईआ । उह जन भगतां सदा पवण देवे ठण्डी, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। पिछली टुट्टी जाए गंढी, गंढ्णहार गोपाल स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दोराहा कहे जन भगतो जगत दे दोवें राह देणे छड, क्रिया कूड़ ना कोए परनाईआ। माया ममता नालों होणा अड्ड, हउमे हंगता संग ना कोए रखाईआ। कूड़ निशाना जगत जहान देणा वढ, तन्दी तन्द नज़र कोए ना आईआ। इक नाम निधाना तन वजूद अन्दर देणा गड्ड, जिस दी जड़ ना कोए उखड़ाईआ । लेखे लाउणे आपणे मास नाड़ी हड, तन वजूद वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। दोराहा कहे मेरे उत्ते सप्तस ऋषीआं लाया डेरा, पूरब दयां जणाईआ। बाल्मीक तिन्न दिन कर के गया वसेरा, राम तीर्थ दए गवाहीआ। राम ने नेत्र नाल तक्कया विच अन्धेरा, लोचन नैण उठाईआ। बलि दा फिर के गया वछेरा, अश्वमेध यग दुहाईआ। निगाह मार के तकदा रिहा सतिगुर शब्द धरनी उत्ते केहड़ा चेरा, चेला गुर कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। दोराहा कहे मेरे उत्ते त्रेता युग बीता, बीती कहाणी दयां सुणाईआ। मैं आदि जुगादि सब दी वेखदा नीता, नीतीवान इक हो आईआ। मेरे धाम उत्ते

राम विछोड़े विच रह के गई सीता, सत्त दिन आपणी सेज हंढाईआ। एह खेल जगत दीआं अक्खीआं बाहर अनडीठा, नेत्र लोचन नैण वेखण कोए ना पाईआ। जन भगतो इथों इक दी धार मिले ते जगत दी दूजी छडणी रीता, मन्दिर मसीतां रंग ना कोए रंगाईआ। घर स्वामी मिले त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी दए वड्याईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीका, तोहफ़े देवे नाम खुदाईआ। तुहाडीआं आसा मनसा पूरीआं करे उम्मीदा, जो आमद विच आए चल के राहीआ। तुहाडी आसा कामना वेखे पोशीदा, परदयां विच्चों पर्दे आप फुलाईआ। तुहानूं दर्शन देवे सनमुख ते सिधा रखे दीदा, दीदा दानिस्ता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। दोराहा कहे मेरा आदि आदि दा पुराणा भविख्त, चार जुग दे शास्त्र अक्खरां नाल जणाईआ। पुराण गरड़ विच वेद व्यास ने लिखी लिख्त, कांड अठारवां नाल मिलाईआ। किस बिध पुरख अकाले दीन दयाले ब्रह्मण गौड़ दी धार दीन दुनी दी खोल्ह्णी दृष्ट, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। फेर संदेशा दे के गया राम नूं गुरु वशिष्ट, विषयां बाहर समझाईआ। पैग़म्बरां बिन शाही तों लिखी लिस्ट, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। नानक निरगुण धार सतिनाम दी दिती किशत, सोहणा आपणा खेल खिलाईआ। गोबिन्द पुरी अनन्द विच पहले दिन इक प्यार दी बन्न्ही शिसत, निशाना ज़िमीं असमान बणाईआ। दोराहा कहे ना मेरा लेखा स्वर्ग ना नाल बहिश्त, दोज़ख़ां वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं आदि दा प्यार मेरा प्रभू दे नाल इश्क, मशूक आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दखाए इक अगम्मा दृष, दिशा जगत वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ दोराहा शहर ज़िला लुध्याणा गज्जण सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे बेपरवाह, बेपरवाही तेरी नज़री आईआ। चार जुग दे शास्त्र बणे गवाह, शहादत देवण थांउँ थाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणा, संदेशा दे के चाँईं चाँईंआ। बिना परम पुरख तों पकड़े कोई ना बांह, सगला संग ना कोए निभाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले अन्तिम कर न्याँ, दर तेरे वास्ता पाईआ। कलयुग जीव बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। मैं धर्म दी धरती रही ना माँ, सच सीर ना कोए रखाईआ। मेरा नौ खण्ड नगर खेड़ा वेख गराँ, सत्तां दीपां पर्दा लाहीआ। सन्त सुहेले इक इकेले तुध बिन देवे कोई ना ठण्डी छाँ, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वेख लै जगत

६७५
२४

जहान दा वक्त, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। झगड़ा प्या बूँद रक्त, दरोही दिसे ख़लक खुदाईआ। तेरा फ़िकरा ढोला गाए कोई ना फ़कत, फ़कीर नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी विच तक लै आपणे भगत, भगवन आपणी दया कमाईआ । बिन तेरी किरपा सति दिसे कोई ना शक्त, शख़सीअत रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दे दे नाम अनमुल्ला, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। तूं मालक ख़ालक कुलसुलह, सगला संगी इक अख्वाईआ। तेरा सहारा अगम्मी मिले तुल्ला, कलयुग नईया नौका हो के पार लँघाईआ। सच सरोवरां विच्चों मेरे पार अमृत धार डुल्ला, सच रस ना कोए रखाईआ। तेरा जीव जगत फिरे भुल्ला, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। मानव ज़ाती सति धर्म दा फुल्ल हुल्ला, फुल्ल टहणी सके ना कोए महकाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना आपणा दुआरा कर दे खुल्ला, ख़लक दे ख़ालक आपणा पड़दा दे खुल्लाईआ। निगाह मार लै कलयुग कूड़ अन्धेरा झुल्ला, पवण ठंड ना कोए वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर इक सुहाईआ। धरनी कहे मैनूं बख्श अगम्मा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। मेरा पवित्र कर दे घर, गृह मन्दिर वजे वधाईआ। अमृत भण्डारा भर दे सरोवर सर, जलां थलां रंग रंगाईआ। तूं मालक नरायण नर, हरि करता इक अख्वाईआ। मेरा भय भओ चुका दे डर, धीरज धीर देणा धराईआ। तेरा भाणा लवां जर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। तेरी सरनी जावां पर, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। तूं मेहरवान मेरा नरायण नर, हरि करता नूर अलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सरनी लाग जावां तर, तारनहार तेरी वड्याईआ।

२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ दोराहा शहर ज़िला लुध्याणा भाग सिँघ दे गृह

धरनी कहे मेरे आदि जुगादी संगी, परम पुरख परमात्म तेरी ओट तकाईआ। बिन तेरी किरपा मेरी चोटी होई नंगी, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। मैं निमाणी हो के वस्त रही मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी कट दे तंगी, तंगदस्त ना रहे लोकाईआ। अमृत रस रिहा ना किसे धार गंगी, गंगोत्री रंग ना कोए रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरंतर मनुआ मन होया फ़रंगी, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। तेरी पूरब धार दीन दुनी दी लँघी, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा तक लै कन्धी, तट किनारे खोज खुजाईआ। मैं शरअ दी होई पाबन्दी, ज़ंजीर

सके ना कोए तुड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी ओझड़ होई डण्डी, डण्डावत दीन दुनी ना कोए दृढ़ाईआ। बिन तेरे मेरे पुरख अकाल मैं सुहागण हो गई रंडी, कन्त सन्त नज़र कोए ना आईआ। जगत जिज्ञासुआं वासना होई पाखण्डी, भेख घर घर सोभा पाईआ। तेरे नाम दी पवण देवे कोई ना ठण्डी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मानव ज़ाती पूजा करके करीरां जंडी, जोती जाता तेरा इष्ट ना कोए मंनाईआ। मेहरवान हो के इक नाम वंडीं, वस्त अतोल अतुल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख मेरे उत्ते मार ध्यान, बिन नेत्र नैण उठाईआ। मेरे साहिब श्री सुल्तान, हरि करते धुरदरगाहीआ। मेरे शाहो भूप मेहरवान, महिबान बीदो नूर अलाहीआ। मेरा लेखा तक लै विच जहान, दीन दुनी खोज खुजाईआ। दरोही फिरी ज़िमीं असमान, हाहाकार सुण ख़लक खुदाईआ। मैं नेत्र नीर लग्गी वहाण, हंझूआं हार बणाईआ। पवित्र रिहा ना कोए अस्थान, धर्म दुआर ना कोए चतुराईआ। मैं धरन निमाणी दर ठांडे मंगां दान, दाते देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे बेनज़ीर, नज़रीआ दीन
६७६ दुनी दे बदलाईआ। लेखा तक शाह हकीर, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। मेरे शरअ दे कट ज़ंजीर, शरीअत आपणी इक दृढ़ाईआ। ६७६
२४ तेरे कोल हक तकबीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। तूं शाह पीरां दा पीर, पैग़म्बर नूर अलाहीआ। मेरे उत्तों दीन २४
दुनी बदल दे ज़मीर, ज़ामन हो के वेख वखाईआ। कलयुग कीता अन्त अख़ीर, आख़र तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मेरी बंधाए कोई ना धीर, धीरज नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुर घत के गए वहीर, लोकमात विच्चों भज्जे वाहो दाहीआ। बिन तेरे नाम खण्डा शस्त्र दिसे ना कोए शमशीर, शाह सुल्तान नज़र कोए ना आईआ। मेरा अन्तष्करन होया दिलगीर, दिल दी धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे स्वामी धुर दे कन्त, कन्तूहल तेरी वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादि बेअन्त, बेपरवाह नूर अलाहीआ। तेरा नाम निधाना इक्को मंत, मंतव सब दे हल्ल कराईआ। कलयुग अन्त सति दा रिहा ना कोए सन्त, सति विच ना कोए समाईआ। दरोही फिरी विच जीव जंत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। मेरे उत्ते मेहरवान गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। सतिजुग सच बणा बणत, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। दरोही मेरी तेरे अगे मिन्नत, निव निव लागां पाईआ। तूं आ जा मेरी सिम्मत, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वंड ना कोए वंडाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार मेरी मंन मिन्नत, निमाणी हो के मंग मंगाईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड कुड़यारे मेट

दे निन्दक, चुगली सरवण सुणन कोए ना पाईआ। मेरा हौसला बणा दे नाल रला दे हिम्मत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव सत्त निरगुण धार मिटा दे चिन्त, चिन्ता रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ दोराहा शहर ज़िला लुध्याणा गुरनाम कौर दे गृह ✪

कलयुग कहे धरनीए धवल हो ना दे दुहाई, चार कुण्ट कुरलाईआ। मैं चौथा जुग परम पुरख दा राही, मुसाफ़र दो जहान अख्वाईआ। चारे वेद मेरी देण गवाही, अथर्बण कूक कूक सुणाईआ। तेई अवतारां कीती लिखाई, लिख्या लेख धुर दे माहीआ। पैग़म्बरां मेरे नाम दी कीती रसाई, रस्ता कायनात जणाईआ। नानक गोबिन्द मैनूं धर्म दी फड़ाई साई, सौदा हको हक समझाईआ। मैं कूड़ कुड़यारा विच संसारा भज्जा वाहो दाही, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला सिर मेरे हथ्थ टिकाई, पुश्त पनाह आप हो जाईआ। मेरा मालक ख़ालक जल्वागर नूर अलाही, आलमीन इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच मैं दीन दुनी दे अन्तर निरंतर कूड़ कुड़यार दी लाई शाही, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मैं फिरां जलां थलां अस्गाही, समुंद सागराँ टिल्ले पर्वतां वेख वखाईआ। मेरे हुक्म दी धरनी तेरे उत्ते पए दुहाई, दोहरी आपणी कल वरताईआ । मैं नौ खण्ड पृथ्मी ख़ाक देणी उडाई, ख़ाका दीन दुनी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साचा इक गुसांईआ। कलयुग कहे धरनीए मेरा मालक इक ख़ावंद, महिबान बीदो नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म विच पाबन्द, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। जिस दा खेल वेखणा तारा चन्द, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा लहिणा देणा गोबिन्द धार पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । उस निरगुण धार मैनूं सुणाया अगम्मा छन्द, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जिस कारन दीन दुनी दिती वंड, दीनां मज़्बां आपणा हुक्म वरताईआ। उह अन्त कन्त भगवन्त मेरे हथ्थ फड़ा चण्ड प्रचण्ड, खण्डा खड़्ग कूड़ चमकाईआ। जिस दा लहिणा देणा मेरे नाल होवे खण्ड ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड खोजां थांउँ थाँईआ। मेरे हुक्म विच तेरे सीने पै सके ना ठंड, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सब सुते दे कर कंड, करवट सके ना कोए बदलाईआ। उठ निगह मार लै मैं साधां सन्तां जीवां जंतां जिज्ञासुआं अन्तर आत्म कीती रंड, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण मेरा कूड़ फिरे पाखण्ड, विकार हँकार नच्चे टप्पे कुद्दे चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

६७७ २४

वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं सूरबीर बलवाना, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर बदल दिता ज़माना, ज़िमीं असमान वेखण थांउँ थाँईंआ। मेरे कोल लहिणा देणा सीआपत राम रामा, रम्ईआ की जणाईआ । की इशारा दे के गया घनईया कान्हा, काहन कान्हा की समझाईआ। की पैग़म्बरां दिता पैग़ामा, जबराईल की दृढ़ाईआ। की नानक निरगुण सरगुण सतिनाम बोल के नामा, भेव अभेदा भेव चुकाईआ। किस बिध गोबिन्द फ़तिह डंक वजाया दमामा, दोहरी धार समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता पुरख बिधाता हो के पहरे जामा, तन वजूद माटी ख़ाक जगत नज़र कोए ना आईआ। जिस दे हुक्म नाल मैं मानव मानस मानुख नव सत्त कीता ग़ुलामा, सिर सके ना कोए उठाईआ। हिरदे रहिण दिता नहीं किसे नामा, नाउँ निरँकार रंग ना कोए रंगाईआ। जिधर तके तेरे उत्ते कीती अन्धेरी शामा, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। प्रकाश रिहा किसे ना भाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा संग रखाईआ । कलयुग कहे धरनीए क्यों जगत मचावें शोर, कूक कूक सुणाईआ। ज़रा निगह मार लै कर के ग़ौर, गहर गम्भीर की सुणाईआ। जिस अगे चले ना किसे दा ज़ोर, जोरू ज़र सारे सीस निवाईआ। उह खेल करन वाला होर दा होर, अवर दा अवरा रूप बदलाईआ। जिस नूं सारे कहिंदे निरगुण धार अगम्मा चोर, आदि जुगादि अछल छल अख्वाईआ। उह आपणे हुक्मे अन्दर मैनूं रिहा तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। मैं सुत दुलारा उस दा जिस मेरा भाग कीता मथोर, मिथ्या दस्सी लोकाईआ। मेरे हुक्म विच दीन दुनी खांदी पशू ढोर, पंछीआं खल्ल रहे लुहाईआ। सति धर्म सके कोई ना होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। आत्म परमात्म सके कोई ना जोड़, जोड़ी जगदीस ना कोए रखाईआ। मैं सब दा अन्तष्करन कीता कौड़, मिट्ठा रस ना कोए चखाईआ। तूं धरनी कोझी कमली हो के मूल ना दौड़, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं चढ़ाया आपणे शब्द अगम्मे घोड़, वाग मेरे हथ्थ फड़ाईआ। मैं दीनां मज़्बां जीवां जंतां सीस मारना पौड़, पौड़ी डण्डा हथ्थ किसे ना आईआ। मेरा लहिणा देणा अन्तिम नाल ब्राह्मण गौड़, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे कारन निहकलंका कलयुग अन्तिम जावे बौहड़, कलि कल्की फेरा पाईआ। अमाम अमामा मेरा मार्ग वेखे भीड़ा सौड़, कूचा गली फोल फुलाईआ। एह वक्त अन्त रह गया थोड़, जिस दा भेव ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे धरनीए क्यों प्रभ दे अगे करें पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। उह शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जिस दे हुक्म विच असीं फिरदे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जीए वाहो दाहीआ। जो मेरा लहिणा देणा वेखे विच

संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। मैं माण रहिण दिता नहीं तेई अवतार, पैग़म्बरां रंग ना कोए समाईआ। गुरु गुरदेव दरस होए ना किसे दीदार, दीद ईद चन्द ना कोए रुशनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठां कीता हाहाकार, गुरुदुआर रहे कुरलाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रोवे ज़ारो ज़ार, अठसठ तीर्थ धीरज धीर ना कोए धराईआ। साध सन्त जिज्ञासू मंज़ल चढ़े ना कोए दुष्वार, सचखण्ड वेखण कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द कथनी कथ कथ सारे रहे उच्चार, ढोले दीन दुनी विच गाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेल मिले ना किसे सिरजणहार, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं तेरे उत्ते आपणे जुग दा सिक्दार, दूजा शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को एक एकँकार, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जो मेरा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ दए उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। मैं उस दे चरण कवल करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला मैनूं दे अधार, उदर दा लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस दा हुक्म सदा जुग चार, आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कोई मेटे मेट मिटाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मकसूदड़ा ज़िला लुध्याणा श्री राम दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभ चरण मेरी लग्गी धूड़ी, ख़ाकी मिटी हो के ख़ाक रमाईआ। मेरे अन्तष्करन रंगत चढ़ गई गूढ़ी, आदि जुगादि उत्तर कदे ना जाईआ। मैं चतुर सुघड़ बण गई मूर्ख मूढ़ी, प्रभ देवे माण वड्याईआ । मेरे उत्तों कलयुग कल्पना मेटे कूड़ी, जूठ झूठ दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरा परम पुरख देवणहार पैग़ाम, संदेशा अगम्म दृढ़ाईआ। धरनीए तेरा पूरा करां काम, करनी करता हो के वेख वखाईआ। जगत अन्धेरा मेटां शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। तेरा नगर खेड़ा तक ग्राम, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जिस दी कीमत कोई दे ना सके दाम, दामनगीर नज़र कोए ना आईआ। अन्त करां आप इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरा लहिणा देणा जुग चौकड़ी जो लेखा लिख्या श्री राम, राम रामा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मालक इक गुसाईंआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते भगत रहिण सुहंदे, सोहणी मिले वड्याईआ। तेरी धार विच रहिण बन्दे, बन्दगी तेरी विच समाईआ। तूं निरगुण धार तोड़ने जंदे,

बजर कपाट आप खुल्हाईआ। अन्तष्करन रहिण ना देवीं गंदे, पतित पुनीत करीं सफ़ाईआ। जो दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा तेरा लँघे, फड़ बाहों गले लगाईआ। आत्म देणा परमानंदे, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जो गावण सोहँ छन्दे, सो पुरख निरञ्जण होणा आप सहाईआ। निगाह मार लै कलयुग आया अन्तिम कन्ढे, घाट पतण बैठा डेरा लाईआ। तुध बिन जन भगतां टुट्टी कोए ना गंढे, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा गृह कर सुहञ्जणा, सच दे वड्याईआ। तूं मालक आदि निरञ्जणा, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। तेरी धूड़ी होवे मेरा मजना, दुरमति मैल धुआईआ। जन भगतां बणना साक सज्जणा, सगला संग आप बणाईआ। कलयुग अन्तिम पर्दा कजणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं गोपाल मूर्त मदना, मध सूदन इक अख्वाईआ। सब दा लेखे लाउणा काया माटी बदना, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ । दर बहाउणा आहला अदना, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। मेरा लेखा पूरा कर दे जो इशारा दे के सदना, सदके वारी घोल घुमाईआ। तेरा इक्को नाम निधाना सुणां नदना, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। तेरा दीपक जोती दो जहान श्री भगवान अगम्मा जगणा, जागरत जोत बिन वरन गोत दे रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा तेरी सरन किसे नहीं लग्गणा, चरण कवल उपर धवल मिले ना कोए वड्याईआ। तूं अन्त कन्त भगवन्त सब दा पर्दा कज्जणा, ओढण नाम सीस टिकाईआ। धरनी कहे मेरे मालक ठाकर स्वामी जोती जाते मैं तैनूं इक्को सद्दणा, सदके वारी घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम नगारा दो जहान वजणा, वजह समझ सके कोए ना राईआ।

६८०
२४

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड अजनौध ज़िला लुध्याणा हरबंस सिँघ, जगदीस सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह ✪

कलयुग कहे मैं प्रभू दा पुत्तर सका, चौथा जुग खुशीआं नाल जणाईआ। मेरा निरगुण धार एकँकार नाल वायदा पक्का, जुग चौकड़ी जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। मेरा लहिणा देणा जगत जहान हका, हकीकत दा मालक देवे चाँईं चाँईंआ। मैं सति धर्म दी कीमत रहिण दिती नहीं टका, कौडी कौडी हट्टो हट्ट विकाईआ। मेरा नौ खण्ड पृथमी अगे वज्जण वाला धक्का, सृष्टी दृष्टी अन्दरों गया हिलाईआ। साचा खेल कराउणा मदीना मक्का, काअब्यां लेखा दयां मुकाईआ। जोती

६८१ २४

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मैनूं सच संदेशा देवे यका, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं सूरबीर बहादर, प्रभ दिती माण वड्याईआ। मेरा मालक ख़ालक करता कदीम कादर, कुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। जिस मैनूं तेरे उत्ते दिता आदर, सिर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। बेशक तूं आदि जुगादी पूरब धरनी माँ बणी रही मादर, दीन दुनी आपणा रंग रंगाईआ। अन्त तेरे उत्ते मेरा लेखा होणा मक्तूल कातिल, सीस धड़ वंड वंडाईआ। धाम मुकद्दस रहे कोई ना बातुल, पवित्र नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं नौ खण्ड पृथ्मी करनी अन्धेरी रातन, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। प्रभू दा दरस पा सके ना कोई बातन, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं सच संदेशा आया आखण, धुर दा हुक्म नाम दृढ़ाईआ। की खेल खेले अलखणा अलाखण, अलख अगोचर की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं योद्धा सूरबीर बली, बलधारी इक अख्वाईआ। मैनूं इशारा दे के गया संग मुहम्मद नाल यार अली, अल्ला हू नाअरा नाल लगाईआ। जिस पिच्छे पैग़म्बरां दिती बली, तन वजूद शहीद कराईआ। उस साहिब दी तकणी गली, जिस दा मार्ग पन्ध मुकाईआ। जिस दी ख़ातर गोबिन्द किहा सीस धरना तली, तल्ब अवर ना कोए जणाईआ। उह वसणहारा जली थली, महीअल आपणा खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं योद्धा बड़ा बलवन्त, बलधारी इक अख्वाईआ। मेरा मालक इक्को कन्त, नूर नुराना नूर अलाहीआ । जिस दा लहिणा देणा नाल जीव जंत , लख चुरासी विच समाईआ। उस बणाई मेरी बणत, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। कुछ लहिणा याद कर लै जो राम इशारा दिता सी हनवन्त, सहिज सहिज नाल दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वधे बेअन्त, सति रहिण कोए ना पाईआ। धर्म दा दिसे कोई ना सन्त, सच विच ना कोए समाईआ । दरोही फिरनी विच जीव जंत, नव सत्त सति कुरलाईआ। गढ़ बणाए हउमें हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए दृढ़ाईआ । बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, बुद्धी तों परे ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कहे धरनी मैनूं प्रभ ने दिती थापी, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। मेरे कोल उस दी बिन अक्खरां वाली कापी, जिस दे अक्खर नज़र कोए ना आईआ। मैं लोकमात बणया प्रतापी, जगत जहान आपणा बल प्रगटाईआ। मैं दीन दुनिया कीती पापी, पुनीत नज़र कोए ना आईआ। मैं तेरे उत्ते करनी अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा पाउणा ज़ात पाती, दीन मज़्ब देणे लड़ाईआ। मेरी वेख लै तेरे उत्ते कूड़ कुड़यार दी आउण

वाली वाटी, पूरब पन्ध मुकाईआ। तूं आपणी संवार के रखीं खाटी, आसण सिँघासण नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे तेरे तट किनारे घाटी, मंज़ल मंज़ल लेखा दए मुकाईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड साहनेवाल ज़िला लुध्याणा गुरवन्त कौर दे गृह ✪

कलयुग कहे धरनी मेरी जगत वेख वड्याई, वड वड्डा हो के दयां जणाईआ। चारों कुण्ट खेल खेलां हो के बेपरवाही, बेपरवाही विच समाईआ। मैं महाबली योद्धा हो के धर्म दी जड़ दयां उखड़ाई, पत्त फुल टहणी नज़र कोए ना आईआ। मेरा डंका वजे थल अस्गाही, समुंद सागराँ टिल्ले पर्वतां हुक्म वरताईआ। मैं नौ खण्ड पृथमी फिरां चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। मेरा हुक्म वरते ना कोई मेटे मेट मिटाई, मेटणहारा नज़र कोए ना आईआ। मेरी ख़ातर पुरख अकाल दीन दयाल तेरे उत्ते आया वाहो दाही, भज्जया बिन कदमां चरण उठाईआ। सब तों उत्तम श्रेष्ट मेरी कीती लिखाई, जिस दी कातब सार कोए ना पाईआ। मेरी शहादत देवण अवतार पैग़म्बर गुर शब्दी धार गवाही, धुर संदेश्यां नाल सुणाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल गोबिन्द ढईआ ढाई, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे धरनीए मेरा हुक्म संदेशा एक, एका दिती वड्याईआ । मैं उसे दी रखी टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मैं दीन दुनी दी बुद्ध रहिण नहीं दिती बिबेक, सति विच ना कोए समाईआ। कूड़ कुड़यार दा बदलया भेख, भेखाधारी कीती ख़लक ख़ुदाईआ। माण रिहा ना किसे मुल्ला शेख़, मुसायक रोवण मारन धाहीआ। मेरा सुण लै अगम्म संदेश, संदेशा देवां चाँईं चाँईंआ। मेरी वड्याई रही सहँसर मुख शेष, दो सहँसर जिह्वा नाल गाईआ। मैनूं इशारा दे के गया गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा दा मालक इक समझाईआ। कलयुग तेरा पुरख अकाला दीन दयाला मेटे कलेश, कलधारी आप हो आईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। उह मेरा नर नरायण नरेश, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुण्डाया रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा हुक्म वरते अगम्मा विशेष, विषयां तों बाहर आपणी कार भुगताईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड नत ज़िला लुध्याणा भाग सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे उत्तों मेट रोग संताप, कलयुग कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया अग्नी मिटा दे ताप, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते अमृत मेघ नाम वरसाईआ। कलयुग जीवां अन्दरों कूड़ी क्रिया कढ दे पाप, पतित पुनीत आप कराईआ। हरि हिरदे अन्दर तेरा उपजे जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे गाईआ। चरण प्रीती मानव ज़ाती जोड़ना नात, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर जणाईआ। तूं मालक खालक आदि जुगादि आप, करता पुरख इक अख्वाईआ। मेरा नौ खण्ड कूड़ क्रिया नाल रिहा कांप, सत्त दीप देण दुहाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन दुनी इक्को रंग रंगाईआ। कलयुग अन्ध अन्धेर मिटा दे रात, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ । सतिजुग सति धर्म दा थापण थाप, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। मेरा डूँग्घा वेख लै धवल वाला खात, धरती हो के दयां सुणाईआ। मेरे कोल संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार लेखा वेख लै बिन चिठ्ठीआं वाले पात, पत्रका तेरा नाम दृढ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त स्वामी पुछ मेरी वात, सदी चौधवीं तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों कलयुग मेट दे कूड़ कुड़यारा, सच धर्म दे प्रगटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तक लै हाहाकारा, सृष्टी दृष्टी अन्दर रोवे मारे धाहीआ। सच स्वामी किसे मिले ना मीत मुरारा, परम पुरख परमात्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट वध्या पंच विकारा, माया ममता मोह नाल मिलाईआ। तूं देवणहार इक दातारा, दयानिध इक अख्वाईआ। साचे नाम दा आप बण इक वरतारा, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। मेरा ख़ाली भर भण्डारा, अतोट अतुट झोली पाईआ। तूं निरगुण नूर जोत निहकलंक अवतारा, अवतरी तेरी आस रखाईआ। तेरा संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, चार जुग दे शास्त्रां बाहर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ । धरनी कहे किरपा कर मेरे अकाल, अकल कलधारी दया कमाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरी लेखे ला लै चार जुग दी घाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सेव कमाईआ। हरिजन भगत सुहेले प्रगट कर दे आपणे लाल, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। मेरा सच दुआर सुहा दे सची धर्मसाल, गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ इक्को घर बणाईआ। नाद धुन शब्द अगम्मी वजा दे ताल, तलवाड़ा इक्को इक दरसाईआ। फल लगा दे मेरे उत्ते धर्म दे डाल, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह मैनूं दे दे सच्चा धन माल, वस्त अमोलक इक वरताईआ। तूं सम्बल विच बहि के मेरी सुरत संभाल, सिर सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। लहिणा देणा लेखा

पूरा कर दे शाह कंगाल, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते प्रगट कर दे सति धर्म, धर्म धर्म दी धार जणाईआ। सतिजुग साचे दे दे जरम, आप बण जणेंदी माईआ। मेरा उत्तम कर दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। हर हिरदे मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। दीन दुनी दी दृष्टी रहे ना चर्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ । तूं सब किछ करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। मैं तेरी लागा सरन, निव निव लागां पाईआ। तूं मालक भन्नृण घड़न, समरथ इक अख्वाईआ। मैनूं आपणा फड़ा दे लड़न, पल्लू साची गंढु बंधाईआ। मैं चाहुंदी सन्त सुहेले सतिगुर शब्द तेरी मंज़ल चढ़न, अधविचकार ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, बिन रसना रस देणा चखाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दर ठांडे तेरे खड़न, दरगाह साची सोभा पाईआ । हरिजन तेरे दुआरे धुर दे वड़न, दरगाह साची मिल के खुशी मनाईआ। तूं मालक स्वामी तारन तरन, तारनहार इक अख्वाईआ। मैं भिखारन हो के मंगां तेरा दरन, दर दरवेशण रूप वखाईआ। धरनी कहे प्रभू लेखा मुका दे मेरे उत्तों सीस धड़न, चोटी जड़ आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ कुड़यार भउ चुका दे डरन, भय तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर शिमलापुरी बग्गा सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करते वेख वखाईआ। निगाह मार लै आपणी जूनी विच चुरासी, लख लख वार सीस निवाईआ। हर घट अन्तर आई उदासी, खुशीआं रंग ना कोए रंगाईआ। मैनूं वेख के आवे हासी, हस्ती तकां दीन दुनी खलक खुदाईआ। पवित्र पंडत पांधा रिहा कोई ना विच काशी, मक्के काअबे रहे कुरलाईआ। सच दुआर पाए कोई ना रासी, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ रहे कुरलाईआ। आत्म अन्तर रिहा ना कोई पवण स्वासी, साह साह तेरा नाम कोए ना गाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों हो गई मदिरा मासी, मानस तेरा रंग गए गंवाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान की तेरा खेल तमासी, निरगुण दाते देणा दृढ़ाईआ। किस बिध मेरी अन्त कलयुग कोलों होवे खुलासी, ख़ालस आपणा गृह बणाईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा की नाल शंकर कैलाशी, कलाधारी देणा दृढ़ाईआ। तूं शाहो भूप सचखण्ड निवासी, दरगाह साची सोभा पाईआ। तेरा नूर जोत इक प्रकाशी, प्रकाशवान होया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी वेखां अगम्मी हस्ती, बिन हस्त कवलां सेव कमाईआ। मेरी धर्म धार दी तक लै बस्ती, ग़रीबख़ाने ध्यान लगाईआ। खेल रही ना कलयुग अन्तिम मेरे वस दी, वास्ता तेरे अगे पाईआ। मैं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं फिरी दस्सदी, भज्जी वाहो दाहीआ। वड्याई रही ना नाम कलमे जस दी, सिफ्तां सच ना कोए सलाहीआ। खेल तक लै कलयुग रैण अन्धेरी मस दी, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पूजा रही ना किसे रवि शशि दी, सूर्या चन्द रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरा वेखां अगम्मा नज़ारा, अगम्मड़े तेरी बेपरवाहीआ। तूं सब दा परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। तूं आदि जुगादी एकँकारा, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। तूं देवणहारा दातारा, दाता दानी इक हो आईआ । मेरा ख़ाली भर भण्डारा, भरपूर दे कराईआ। मैं मांगत खड़ी तेरे दुआरा, दरे दरबार सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप कलि कल्की अवतारा, निहकलंका तेरी वड्याईआ। तेरे चरण धूड़ लावां छारा, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। तैनूं सब ने मन्नणा चवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा तेरी वड्याईआ। मैं निव निव करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सीस झुकाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी लेख रहे ना राईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण धार आयों दोबारा, दोहरी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरे हथ्थ हथ्थ वड्याईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर हरभजन सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू चारे खाणी दे ज्ञान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा इक्को ढोला गाईआ। तेरा नाम उच्चारन बिना ज़बान, मुख दन्द दी लोड़ ना कोए रखाईआ। तूं मालक ख़ालक श्री भगवान, हरि करता इक अख्वाईआ। शब्दी धार बख़्श ध्यान, बिन नेत्र दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। तूं आत्म धार सब दा राम, रम्ईआ इक अख्वाईआ। तूं आदि जुगादी लख चुरासी काहन, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरी वड वड्याईआ । तूं सब नूं देवणहारा माण, निमाणयां होएं सहाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख प्रभ तेरी ओट तकाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तूं सचखण्ड निवासी धुर दा हुक्मरान, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू चारे खाणी बख्श प्यार, मुहब्बत आपणा नाम दृढ़ाईआ। इक्को सीस झुके तेरे दुआर, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। इक्को ढोला सारे लैण उच्चार, इक्को नाम शब्द शनवाईआ। इक्को मन्दिर होवे तेरा गुरुदुआर, धर्मसाल इक दृढ़ाईआ। इक्को नूर ज़हूर तेरा होवे उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। इक्को भूप शाहो सिक्दार, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। इक्को रूप रंग तेरा होवे मेरे निरँकार, निराकार देणा वखाईआ। तूं दीनां मज़्बां वसणहारा बाहर, लख चुरासी मालक धुरदरगाहीआ। मानव ज़ाती वेख विचार, मानस आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू आपणी तक लै चारे खाणी, ख़ानदान तेरा आत्म धार नज़री आईआ। लहिणा देणा वेख लै जुग चौकड़ी पुराणी, पुराण अठारां शास्त्र वेदां नाल मिलाईआ। चार जुग दे नाम कलमे समझ लै सिफ्तां वाली बाणी, ढोले सोहले सिफ्त सलाहीआ। तेरी महिमा आदि जुगादि अकथ कहाणी, कथनी कथ सके ना राईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सुल्तानी, सतिगुर इक्को नूर अलाहीआ। मेरे उत्ते परम पुरख परमात्म कलयुग अन्तिम कर मेहरवानी, महबूब आपणी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशानी, निशाना तारा चन्द रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सच बख्श दे दानी, वस्त अमोलक इक वरताईआ। निगह मार लै आपणी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी मंज़ल दस्स इक असानी, असल वसल आपणा आप कराईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर महिंदर सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक वसेरा, चारे खाणी आसण लाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लाया डेरा, सुख आसण बैठी सोभा पाईआ। मेरे अन्तर निरंतर चाउ घनेरा, खुशीआं विच तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तूं मेहरवान मेहरवान मेरे उत्ते कीती मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिँघ शेरा, भय भबक तेरी इक्को नज़री आईआ। तूं लहिणा देणा लेखा मेरा तक लै केरां, इक इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। निगाह मार लै कलयुग अन्तिम वक्त दिसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेरे उत्ते नव सत्त होण वाला अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं धरत निमाणी बैठी कर के वड्डा जेरा, हौसला तेरा नाम जणाईआ। मेहरवाना मेहरवाना मेहरवाना मैनूं कलयुग कूड़ ने पाया घेरा, घिरना विच वेखी ख़लक

६८६
२४

खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू चारे खाणी मेरे उत्ते वसदी, दिवस रैण आपणी खुशी बणाईआ। मैं वणजारन बण गई तेरे जस दी, सिफ्त सलाही ढोले गाईआ। जन भगतां फिरां दस्सदी, भज्जां वाहो दाहीआ। आओ खेल तको अलखणा अलख दी, अलख अगोचर की दृढ़ाईआ। जिस ने दीन दुनी कीमत रहिण देणी नहीं कौडी कक्ख दी, हट्टो हट्ट विके सर्ब लोकाईआ। उस दी जोत धार वेखो प्रतख दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा रूप बदलाईआ। मेरे अन्तर चाउ घनेरा मैं दो जहानां नसदी, भज्जां वाहो दाहीआ। तूं पुरख अकाले दीन दयाले आपणी खेल खिला प्रतख दी, पर्दा उहल्यां विच्चों उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी चारे खाणी मेरे उत्ते लाया टिकाणा, जगत सिँघासण डेरा लाईआ। तूं निगाह मार मेरे मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। नव सत्त कर ध्याना, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मेरा चीथड़ वेख होया पुराणा, ओढण सीस ना कोए सुहाईआ। मैनूं चार जुग दे शास्त्रां तेरा भुलाया गाणा, जुग जुग दे कलमे तेरी वंड वंडाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह इक अख्वाईआ। मैं तेरी मस्ती विच आपणा रूप कीता दीवाना, भज्जां वाहो दाहीआ। तूं मालक मेरा अगम्मी कान्हा, काहन कान्हा नूर अलाहीआ। मैं चाहुंदी चारे खाणी तेरी चढ़ी रहे विच बबाणा, शब्दी शब्द आप उठाईआ। इक्को नाम निकले जगत रसन ज़बाना, ढोला इक्को गीत दृढ़ाईआ। इक्को तेरा इष्ट होवे महाना, इक्को सीस जगदीस सर्ब निवाईआ। इक्को शाह सुल्तान होवे नौजवाना, दूसर शहिनशाह रंग ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरे चरण कवल चारे खाणी होए ध्याना, धवल हो के दर तेरे मंग मंगाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर कुलदीप कौर दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू चारे खाणी तेरी बणत, घाड़न घड़नहार तेरी वड वड्याईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, गिणती गिण ना कोए वखाईआ। तूं सब दा स्वामी कन्त, कन्तूहल नूर अलाहीआ। सब तेरे जीव जंत, चुरासी तेरा रंग रंगाईआ। अन्त लहिणा देणा तेरे हथ्थ मेरे भगवन्त, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तैनूं पुकारदे गए चार जुग दे सन्त, कूक कूक गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू चारे खाणी तेरा दिसे रंग, रंग रतड़े तेरी वड वड्याईआ। तूं सब दे वसें संग, सगला संगी इक हो जाईआ। मैं

निमाणी हो के मंगां मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ । मेरे मेहरवाना चुरासी आपणे लाउणा अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। अमृत धार वहाउणी गंग, सर सरोवर इक्को इक नुहाईआ। मेरे उत्ते मानव कोई रहिण ना देवीं तंग, तंग दस्ती देणी कटाईआ। पिछले जुग पूरब गए लँघ, कलयुग अन्तिम भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा मुकणवाला पन्ध, पाँधी बैठा आपणा डेरा लाईआ । मैं तेरा सुणना चाहुंदी इक अगम्मा छन्द, सोहला ढोला देणा दृढ़ाईआ। जिस नाल खुशी खुशी होवे मेरा बन्द बन्द, बन्दगी आपणी देणी समझाईआ। किस बिध कलयुग धार संसार विच्चों जाए लँघ, पारब्रह्म बेड़ा पार देणा कराईआ। मैं धरत निमाणी मेरी सेज वेख पलँघ, सिँघासण आसण आपणा लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि जुग चौकड़ी चारे खाणी आपणा चाढ़नहारा रंग, रंगत सति सच नाम देणी रंगाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाह सम्मत ११ लुध्याणा शहर फूला राणी दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू चारे खाणी तेरा भरवासा, आदि जुगादि तेरी ओट तकाईआ। तूं शहिनशाह शाहो शाबासा, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। नित नवित सब दी पूरी करनहारा आसा, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। हर घट अन्तर रख के आपणा वासा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। तेरा नूर ज़हूर लख चुरासी होवे प्रकाशा, घट घट अन्दर सोभा पाईआ। साचे मण्डल साची तेरी रासा, रस्ता तेरा इक्को नज़री आईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां तेरी वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू चारे खाणी तेरी रख के बैठी ओट, ओड़क तेरा ध्यान लगाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग लँघे कोटी कोट, अणगिणत आपणा पन्ध मुकाईआ। उह कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निरगुण धार जोत, जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस दा ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। ख़सम स्वामी बणे खौंत, मालक धुरदरगाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू चारे खाणी तैनूं रही उडीक, बिन गिणतीआं गणत गिणाईआ। सो वेला वक्त पहुँचया नज़दीक, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं इक इकल्ला लाशरीक, शरीकत सब दी दएं गंवाईआ। तेरे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े देणे थाउँ थाईंआ। तेरी अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीती तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना आपणे चरण टिकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब दी ग़फ़लत विचों खोल्ह नींद, आलस दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ।

२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर हरबंस कौर दे गृह

धरनी कहे प्रभू चारे खाणी तेरा राह तकदी, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। सब दी आसा वेख हकीकत हक दी, हक दे मालक तेरे अगे वास्ता पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेल वेख जगत वाले नक दी, बिन नेत्रां नैण उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं आसां वेख पक दी, जो पक्की तेरे नाल गए पकाईआ। मैं वी तैनूं उडीकदी कद दी, कदीम दे मालक ध्यान लगाईआ। एसे वेले चारे खाणी तैनूं सद्द दी, होका देवे थांओं थाँईंआ। मेरे उत्ते कूड़ी क्रिया जांदी वधदी, धीरज धर्म ना कोए धराईआ। मेरी खुशी रही ना गद गद दी, ग़मी ग़मख़ार मेरे अन्दरों ना कोए कढ्ढाईआ। उह वेख सदी वीहवीं चौधवीं जांदी लद दी, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी चारे खाणी होई चकना चूर, चार कुण्ट कुरलाईआ। तूं मालक हो हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा लेखा पूर कराईआ। तेरा इक्को चमके नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लगाईआ। दीनां मज़्हबां वेख कसूर, बचया रहिण कोए ना पाईआ। तैनूं आउणा प्या ज़रूर, जरूरत तेरे चरण टिकाईआ। मेरे उत्ते सब दा गढ़ तोड़ ग़रूर, विकार हँकार दे मिटाईआ। साचे नाम दी मस्ती दे सरूर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। आपणा पन्ध मुका दे दूर, दूर दुराडा नेरन नेरा हो के फेरा पाईआ। मैं चार जुग दी तेरी मज़दूर, सेवक हो के सेव कमाईआ। चारे खाणी तेरा आदि जुगादी नूर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब दी आसा मनसा पूर, पूरब लहिणा दे चुकाईआ।

२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर शिमला पुरी जसवन्त सिँघ दे गृह

नारद कहे प्रभू मैं आया थक्का टुट्टा, पाँधी हो के भज्जया वाहो दाहीआ। तेरा ढोला गावां बिना बुल्ल्हां बुट्टां, रसना जिह्वा ना कोए हलाईआ। मैं जगत जहान वेख्या कलयुग पाई लुट्टा, लुटेरा बणया थांओं थाँईंआ। सच प्यार तेरे नालों दीन

दुनी दा टुट्टा, साचे रंग ना कोए समाईआ। सब दा भाग दिसे निखुट्टा, भागहीण लोकाईआ। मैनूं सतिगुर शब्द हलूणा दिता फड़ के गुट्टा, ज़ोर नाल हिलाईआ। उह वेख लै किस बिध पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां उत्ते तुठा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अणगिणतां विच्चों मेल मिला के इक्को मुट्ठा, आप आपणा भेव चुकाईआ। लुक्या रहिण ना देवे किसे गुठ्ठा, चारे कुण्ट फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे प्रभू जे भगत बणाए आपणे सुत, अपराधी लै तराईआ। भाग लगा दे काया बुत, बुतख़ानयां कर सफ़ाईआ। सच सुहञ्जणी बख़्श दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे प्रभू मैं वेखे तेरे भगत सुहेले जग, जागरत जोत ध्यान लगाईआ। मैं चढ़ गया उपर शाह रग, नव दुआरयां पन्ध मुकाईआ। जो आत्म धार तेरी सरनाई गए लग, परमात्म मिल के वजे वधाईआ। उथे पोह सके ना कूड़ अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। इक्को परसे जाण तेरे पग, दूसर इष्ट ना कोए जणाईआ। जगत धार नालों होए अलग, दीनां मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुख बणे बगले बपड़े बग, हँस आपणा रूप वटाईआ। वासना रही ना मूल कग, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। नारद कहे प्रभू जे भगतां चाढ़या रंग, अनडिठड़ा आप रंगाईआ। इन्हां दी पूरी कर दे मंग, तृष्ना कूड़ जगत बुझाईआ। सच दुआरे आवें लँघ, नौ दुआर दा डेरा ढाहीआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सुख आसण सोभा पाईआ। प्रकाश दे दे बिना सूर्या चन्द, जोती जाता हो के डगमगाईआ। शब्द धुन सुणा दे अनहद, जगत राग दा लेखा रहे ना राईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे प्रभू मैं तेरे अगे करां बेनन्तीआं, बिनय बिनय दयां सुणाईआ। मैं कोई चार जुग दे शास्त्रां दीआं पढ़नीआं नहीं पंगतीआं, अक्खरां हरफ़ां संग ना कोए रखाईआ। मैं विद्या दस्सणी नहीं कोई पंडतीआ, ब्राह्मणां वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मेरा इक्को सुहाग कन्तीआ, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। तेरीआं जुग जुग खुशीआं वालीआं हुन्दीआं रहीआं जंतीआं, अवतार पैग़म्बर गुरु ढोले गाईआ। तेरीआं खेलां वेखदा रिहा जिस कारन गढ़ तोड़दा रिहा हउमे हंगतीआ, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। अन्त इक्को संदेशा सुणया तेरा नाम निधान छंतीआ, धुर दा राग जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक हो के देणी वड्याईआ। नारद कहे प्रभू जन भगतां दे दे चरण प्रीती जोग, जुगती जगत

ना कोए जणाईआ। दूई दुवैती अन्दरों कढ दे रोग, दुःख संताप रहिण ना पाईआ। घर स्वामी दर्शन दे अमोघ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द बख़्श दे चोग, भस्मड़ हो के आपणी खेल खिलाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों कट वियोग, वैरी रहिण कोए ना पाईआ। सच दुआर एकँकार कर संजोग, जुग चौकड़ी विछड़े मेल मिलाईआ। तेरी धार दी तेरे भगत सुहेले मानण मौज, मजलस तेरे नाल रखाईआ। तेरा दर्शन होवे रोज़, रुज़ीना आपणा रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे प्रभू जन भगतां दुक्खां ढाह दे डेरा, डेरा आपणे चरण रखाईआ। तूं मालक ख़ालक सिँघ शेरा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तेरा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों फेरा, फिरत फिरत वेखणा चाँई चाँईआ। हरिजन अन्दरों कढ अन्धेरा, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। बिना बेनन्तीआं कर दे मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। हरिजन ग़रीब निमाणा बणा लै आपणा चेरा, चिरी विछुंनयां लै मिलाईआ। पिछला वक्त विछोड़े वाला लँघ गया बथेरा, अगे अवर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभ अगे बेनन्ती करीए इक्ट्ठे, अन्तर आत्म धार जोड़ जुड़ाईआ। सरन सरनाई बिन शरीरों जाईए ढठ्ठे, तन वजूद वेखण कोए ना पाईआ। सच दुआर तक्कीए इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठे, गुरुदुआर इक्को नज़री आईआ। इक्को गृह वेखीए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती इक्को धार वहाईआ। इक्को नूर नुराना नूर तक्कीए लट लटे, जोती जाता डगमगाईआ । जिस दे गुर अवतार पैग़म्बरां नाल पटे, पटने वाला दए गवाहीआ। उह अन्त तुहाडे वसे घट घटे, गृह मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जो जुग चौकड़ी पिच्छों आया अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे वट्टे, वटांदरा समझ कोए ना आईआ। जिस नूं याद कीता धन्ने जट्टे, जटा जूटां बाहर वेख वखाईआ। उह ज़रूर मेहरवान हो के तुहाडे दुःख दलिद्र कटे, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। भाग लगा के काया मट्टे, मटकी आपणी रंग वखाईआ। तुहाडे तन वजूद रहिण ना देवे फटे, सच सिँघासण आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो अज्ज खेलां वेखीए महानीआं, मोहणी दा मोहणी रूप ध्यान लगाईआ। ख़बरां सुणीए अगम्मी बाणीआं, जो बाण अणयाले तीर चलाईआ। नज़ारा तक्कीए चारे खाणीआं, की आपणा भेव समझाईआ। असीं धर्म धार दीआं निरगुण धार बणीआं राणीआं, जगत रंग ना कोए वखाईआ। सच सरनाई लग्गीए बण सवाणीआं, आप आपणा रूप बदलाईआ। अमृत रस पीईए ठण्डा पाणीआं, बूंद स्वांती नाभ कवल टपकाईआ। शब्द नाद सुणीए अकथ कहाणीआं, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ।

जो मालक ख़ालक सब दा जाण जाणीआं, जाणनहार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो होवे ताण निताणीआं, निमाणा आपणा माण आप रखाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाह सम्मत ११ कौर दे गृह पिण्ड संगो वाल लुध्याणा ✪

हरिसंगत अज्ज मेला होया सबब्बी, छब्बी अस्सू प्रविष्टा दए गवाहीआ। गृह नूर अलाही वेखो रब्बी, यामबीन धुरदरगाहीआ। जिस दा संदेशा दे के गए रसूल नबी, पेशीनगोईआं विच जणाईआ। उस दी जोत निराकार हो के जगी, जागरत जोत डगमगाईआ। जो सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखे अग्ग लग्गी, नौ खण्ड पृथ्मी ध्यान लगाईआ । जिस दा लहिणा देणा नहीं सुदी वदी, घड़ी पल जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा मेल हुन्दा कदी कदी, अवतार पैग़म्बर गुर गए समझाईआ। जो देवणहारा इक्को दुआर धुर दा पदी, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ । जो मन कल्पणा मेटणहारा यदी, यदप आपणा गृह वखाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी जांदी लँघी, कलयुग अन्तिम भज्जे वाहो दाहीआ। सो भगतां नाल शब्द धार नाल कढण वाला बदी, पंच विकारां डेरा ढाहीआ । भाग लगाया काया माटी डूंघी खड्डी, साढे तिन्न हथ्थ खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। जन भगतो जुग जुग वड्डे होवण भाग, कलयुग अन्तिम ख़ुशी बणाईआ। सतिगुर शब्द अन्तर आत्म दए वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। हँस बुद्धी दीन दुनी बणे ना काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। जगत सुत्तयो ग़फ्लत विच्चों जाणा जाग, निज लोचण नैण नैण रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी करनी करता देवणहारा दाद, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जिस नूं सारे कहिंदे मोहन माधव माध, मधुर धुन करे शनवाईआ। सो स्वामी अन्तर निरंतर लैणा अराध, रसना जिह्वा मुख बत्ती दन्द ना कोए हलाईआ। उह शब्द सुणाए बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। हरिसंगत काया मन्दिर अन्दर मार के वेखो झाती, बिन नेत्र नैणा नैण उठाईआ। की खेल करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ । जो सब दा होवे मालक ख़ालक घर जगाए दीआ बाती, कमलापाती इक अख्वाईआ। उह देवणहारा नाम सच्चा सौग़ाती, बिन अक्खरां निरअक्खर धार रिहा वरताईआ। जिस दी मंज़ल दीन दुनी नालों वखरी घाटी, पौड़ी डण्डा इक्को इक वखाईआ। सो भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया माटी,

मटका वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा लहिणा देणा नाल नहीं किसे ज़ाती पाती, बरनां वरनां वंड ना कोए वंडाईआ। उह दर्शन देवणहारा इक इकांती, इक इकल्ला नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। सच वस्त सतिगुर दाता देवे आप, आप आपणी दया कमांयदा। जुग जन्म दे मेटे पाप, दुरमति मैल अन्तर निरंतर आप धुआंयदा। रूह बुत करे पाक, पतित* पुनीत आप अखवांयदा। बजर कपाट खोल्ह के ताक, त्रैगुण अतीता आपणा पर्दा लाहइंदा। बिन अक्खीआं वेखे मार के झाक, निज नेत्र लोचन अक्ख खुल्हांयदा। आत्म परमात्म बणाए धुर दा साक, साजण मीत आप अखवांयदा। निज घर बहि के करे बात, बातन पर्दा आप खुल्हांयदा। लहिणा देणा चुकाए लोकमात, लख चुरासी डेरा ढांयदा। अन्त कन्त भगवन्त हो के पुछे वात, सतिगुर आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमांयदा। साची करनी करदा आया, हरि करता धुरदरगाहीआ। भगत सुहेले जुग जुग आपणा मेल मेलदा आया, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेख वखाया, पर्दा ओहला रहे ना राईआ। छब्बी प्रविष्टा अस्सू आपणे रंग रंगाया, रंगत नाम वाली चढ़ाईआ। दीन दयाल दया निध होए सहाया, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जन रसना गाया, तिस आवण जावण पतित पावन दए कटाईआ। सचखण्ड दुआर दए बहाया, दरगाह साची मेल मिलाईआ। सो पुरख निरञ्जण होए सहाया, हरि पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। एकँकार रंग रंगाया, आदि निरञ्जण डगमगाईआ। अबिनाशी करता वेख वखाया, श्री भगवान दए वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणे घर टिकाया, सतिगुर शब्द होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल रचाया, रचणहार एकँकार परवरदिगार सांझा यार अगम्म अथाह बेपरवाह इक अख्वाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर हरबंस सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे वेद नदम वेमच मदम तवच सदम कुवच यदम महिबान तेरी वड्याईआ। परविज़ली मुवा यानुख़ते दुआ राफ़िसते खुदा नूर ज़हूर इक अलाहीआ। पुराणे परस्त कुराने वनसत अञ्जीले जवस्त वेदे बवस्त रमायणे सवस्त गीता दुवास्त शास्त्रे शबब कलमाए जबब, नूरे रुशना शहिनशाह बेपरवाह इक अख्वाईआ। बारां अकशरे प्रसिध्ध दुर्गाए नविद बुधाए सविद

मनुआए चविद रसनाए खविद आशाए बविंद ज़वनी ज़वा मंज़ी मवा ज़ूखो ज़मी असमाने नवी शरफ़ुल खुदा मारफ़त रुवा ज़ीबे ज़नी कुंनिंदे मवी शरफ़ुल शरफ़ नूजे हरफ़ बेकफ़नी नुवा ज़मिंदी जुवा अवतारे अदा पैग़म्बरे दुआ गुरुए नवा ज़मीनो ज़मा असमाने रहिनुमा शोफ़ू शफ़िस नीज़ो खुमू पमज़ी ज़मा हस्ते बदस्ते जिस्मो जमंन नूरे चवंन हस्ती अज़ू बस्ती रज़ू दामने दविद शहिनशाहे शविद अर्शे अवी फ़र्शे जवी नूरे नुज़ा मेहरवाना मेहरवाना मेहरवाना मेहरवान इक अख्वाईआ। साबते सवी दुवजली जवी तुख़सते नवी जुमउल ज़ुमा अर्शे उलखुदा कमीकुल कमा रुमज़े नुमा यूने यशूह फ़र्शे मशू मूसा मवी ईसा जवी मुहम्मदे कवी नानके ज़वी गोबिन्दे शवी कृष्णे मुज़ा रामे रज़ा बावने नजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक तेरी वड्याईआ। नारद कहे ब्रह्मणे गौड़ा गोशे कमंद शाहो शनीदा अर्शे फर्जंद नूरे ज़मू हज़रते नूह कफ़नो बज़ी शाहो ज़वी यारे चवंद अवतारे दवंद गुरुआए वफंद सहिमन जऊ फ़र्शे मज़ू नूज़े नवा कूज़े गुवा मुजसते मुवफ़ तोज़ीने कुवफ़ बहिश्ते रफ़ी अर्शे फ़ज़ी सवरगे सनू काले ज़वू मुशताए मुहम्मद तारीफ़े खुदा ज़ाईफ़े जुवा जरदे ज़रूह चौदीसे दवू बीसे वहू जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ।
६६४ नारद कहे बज़रते नादम पुचंते बादम युगंते सीदम नुगंते बीदम अमीनन अमाए कमीए कमाए जोते ज़वीदा अर्शे नवीदा खोमो ६६४
२४ खोसानी अर्शे नुरानी यवीआ पैग़ामी नूरे रुहानी ज़बीउल ज़विद शामाने ख़विद आकाशे अज़ू फ़र्शे तलू तालबे ज़वा गालबे गुवा २४
नज़ीरे नवू जाहिदे जवू ताज़ीरे तज़ा मुबीरे मुवा मुहबते महुव दीमाए ज़बा कमीउल कविद दवील दविद शाहे शफ़ा अर्शाए दुआ ज़मीनाए ज़वा ख़ाकाए गुवा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे भैयो बावरूम आदि भेव नूम जुगिंद धार सोहँ मरगिंद धार ओअँ प्रभू प्रेम अंग सोई रूप सरबंग जोग जुगाते जुगंग त्रैनाद नादम ब्रहम ब्रह्मादम अवतारे वज़ी पैग़म्बरे ज़वी गुरुए दवी शब्दे शवी नूरे रवी आमे अमू ज़माने ज़वू दमाने दवू गोबिन्दे रज़ू तल्बाए हहू मकुसता मुविज़ अर्शाए ख़विज़ दुनिसता देवो मुहबते रवो कुनिंदा मविन शाहे शविंन यकीने उरबा इलमे उरफ़ा तालमीए शरफा शाहे नबी नुराने तबी मालकाए खबी मज़ीउज़मा मुसताफ़े नुमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं प्रभू दी हुण थोड़ी थोड़ी करन लग्गा तारीफ़, तोहफ़े घर घर दयां पहुंचाईआ। बेशक मेरी आयू जुग चौकड़ी दी ज़ाईफ़, बृद्धां विच्चों बृद्ध नज़री आईआ। मैं चार जुग दे ग्रन्थां शास्त्रां नालों शरीफ़, शुरफ़ा कहि के मैनूं सारे रहे बुलाईआ । मैं नित नवित प्रभ दा बणया रिहा रहीफ़, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो मैं प्रभू दीआं दस्सया करूँ कहाणीआं, सम्मत बारवां राह तकाईआ। पुरख अकाल दीआं कितनीआं सहेलीआं कितनीआ राणीआं, कितनीआं गोलीआं बण बण सेव कमाईआ। कितनीआं पढ़न वालीआं बाणीआं, कितनीआं रसना ढोले गाईआ। कितनीआं नहाउंदीआं विच पाणीआं, तारीआं रहीआं लाईआ। कितनीआं बणीआं जगत दीआं शाहणीआं, धन दौलत संग रखाईआ। कितनीआं हो गईआं अक्खों काणीआं, नेत्र नैण ना कोए मटकाईआ। कितनीआं मिल्या मेल अगम्मे हाणीआ, हम साजण हो के खेल खिलाईआ। कितनीआं लाशां होणीआं बिन प्राणीआं, स्वास नज़र कोए ना आईआ। कितनीआं फल रहिणा नहीं टाहणीआं, सिम्मल रुक्ख वांग सर्ब लहराईआ। कितनीआं जगत पीसण पीसदीआं होवण वांग दाणयां, दाता दानी की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभू दा भेव खोल्ह्दा रहिवां अगला, पिच्छे दी लोड़ रही ना राईआ। मैं बेशक चार जुग बणया रिहा कंगला, बिना धोती बोदी तों वस्त हथ्थ कोए ना आईआ। मैनूं सारे कहिंदे रहे पग़ला, मैं भज्जया वाहो दाहीआ। मैं फिरया जूहां पहाड़ां विच जंगलां, टिल्यां पर्वतां ध्यान लगाईआ। मेरे कोल लहिणा देणा लेखा सगला, सब नूं दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो प्रभू दा हुक्म कामीका को कुनिसता कीना कज़ू कवले ऊ जुसता आ शाने ज़ू जुवस्ते राह मुविस्ते खुदा खुद मालक बेपरवाहीआ। जन भगतो मैं दस्सां भेव उस ख़ावंद करीम, जो कर्म कांड दा लेखा वेख वखाईआ। जिस नूं सारे मन्नण अज़ीम, आलीशां आलीज़ाह नूर अलाहीआ। जिस दी सब तों वखरी तालीम, तारीफ़ विच ख़लक खुदाईआ। उह किस बिध दीन दुनी नूं दए तरमीम, तरतीब आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत शरअ दी रहिण नहीं देणी तकसीम, हिस्से वंड ना कोए वंडाईआ। उस नूं इशारा देवे जो डण्डा बणाया मीम, दीन दुनी दुनी समझाईआ। तुसीं उस उत्ते करना यकीन, जो यके बाद दीगरे आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा मार्ग होणा महीन, मार्ग वेखण कोए ना पाईआ। मुहम्मद जिस दे होया अधीन, सजदयां विच सीस झुकाईआ। पैग़म्बरां उस नूं किहा मालक कदीम, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। ना उह नर ना उह मदीन, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। ना उह फर्श वसे ना उह अर्श वसे ना बन्द होया उत्ते ज़मीन, दो जहानां मालक इक अख्वाईआ । मैं तैनूं भेव दस्सांगा जो जुग चौकड़ी प्राचीन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाहर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो तुहानूं सुणावां वड्डीआं वड्डीआं बातां, बातन भेव खुल्हाईआ। तुहाडीआं चार जुग नालों

खुशीआं वालीआं बणावां रातां, रुतड़ीआं तुहाडे नाल महकाईआ। तुहाडे लेख लिख सकणगीआं नहीं कलम दुआतां, कागज़ां चले ना कोए चुतराईआ। तुहाडे धर्म दुआरयां दीआं सब तों वखरीआं होवणगीआं छातां, छत्तीं ब्रह्मण शूद्र वैश समझ कोए ना पाईआ। तुहाडा झगड़ा रहिण नहीं देणा ज़ातां पातां, दीनां मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं सच दस्सां परम पुरख सम्मत शहिनशाही पहली चेत नूं नवां खोल्ह देणा खाता, पिछला खाता रहिण कोए ना पाईआ। सब दा बण जाणा आपे पिता आपे माता, पूत सपूते लैणे गोद उठाईआ। आत्म परमात्म जोड़ लैणा नाता, जुग जन्म दे विछड़यो लैणा मिलाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार आपणा चरण कवल समझाउणा अहाता, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। मेहरवान महबूब हो के सब दा पूरा करे घाटा, वाधा आपणा नाम जणाईआ। आवण जावण लख चुरासी सब दी मेटे वाटा, वटणा इक्को वार चढ़ाईआ। नारद कहे मैं वी वेखणा चाहुंदा उस प्रभ दी तुहाडे अन्दर सुहञ्जणी खाटा, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हरिजन हरि सन्त भगत सुहेले वेखे आप मार के वाटा, दूर दुराडा आपणा पन्ध मुकाईआ।

६६६ २४

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर मदन सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे जन भगतो प्रभू प्रविद सूर अरबा जूखूने ज़मम कविलज़ी ज़वा ताखुस महम बाविज़ली दुवा चुनारे चम्मम शाने मुदा मुफ़सले मदम्म करीमे कर्ज़ू रहीमे ज़वा ज़ोनू ज़बब मदीनाए शबब मक्काए मुविज़ काअबाए ज़विज़ धरनीए ख़ाक आविज़ली ज़ुवाक चश्मे नुरां फ़र्शे मुवा अर्शे कुज़ा नूरे खुदा खुद मालक इक अख्वाईआ। नारदे नवू जुवारदे मदू ज़खनीन ज़वी मूज़ूहल ज़मी चकसाए अवा आदमे दुआ धवले दज़ू करबलाए कज़ू शमुउल शमअ मज़ूउल मज़ा नूरे नज़द फ़र्शे ख़वंद, ख़सीनो कमा ज़मीनो ज़मा जबराईले ज़वी असराईले फवी हमज़ी मुमम मनकीज़ी मकक ज़कहू ज़मी हकीकते रवी वज़ीहते तम तममम दुवा मुहम्मदे नुवा ख़दीउल ख़विद ज़बीउल ज़विद ज़ाख़म ज़ख़ी कोने गज़ी करबलाए कविद अलीए नविद हुसैने ज़विद शाहे शविद अबासाए रवू तनफ़े ज़वू हरफ़े हरीफ़ अखरी तारीफ़ सिफ्ते सलाह दुवस्ते दुआ रैहबरे नुवा शरीउल मलाह शरक्ते शकिद बरक्ते नविज़ नूरे नुवा वाली दो जहां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि लेखा जाणे थांउ थाँ, थान थनंतर गगन गगनंतर ज़िमीं असमाना नौजुवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना एका एक एकँकार वेख वखाईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर गुरदेव सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे प्रभू जन भगतां लाह उदासीआं, चिन्ता ग़मी बाहर कढ्ढाईआ। अमृत जाम दीआं दे ग्लासीआं, धुर दा अमृत हथ्थ फड़ाईआ। मेहर कर दे सचखण्ड निवासीआ, सच दी करनी कार कमाईआ। हर हिरदे होण तेरीआं रासीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। लेखा मुका दे मदिरा मासीआ, मस्त खुमारी नाम चढ़ाईआ। संदेसा दे दे शंकर कैलाशीआ, कला आपणी इक जणाईआ। जगत शरअ दीआं दे दे फाँसीआं, फ़ैसला आपणा हक सुणाईआ। तेरा लहिणा देणा सम्मत शहिनशाही पंद्ररां होणा नाल मद्रासीआं, मधुर धुन देणी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे प्रभू जन भगतां दे दे अगम्मा जाम, जामावन्त जिस दी आस रखाईआ। रस चखा दे धुर दे राम, हनवन्त दा लहिणा पूर कराईआ। तृष्ना मुका दे धुर दे काहन, युधिष्टर दा लेखा रहे ना राईआ। सति आब दी ला सके ना कोए मीज़ान, हिसाब विच ना कोए रखाईआ। किरपा कर गुण निधान, गुणवन्त तेरी वड्याईआ । निगाह मार लै विच जहान, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। हरिजन तेरा राह तकान, बिन नैणां नैण उठाईआ । तूं शाहो भूप सुल्तान, श्री भगवान इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे प्रभू जन भगतां चाढ़ दे मस्तीआं, मस्तक लेख दे बदलाईआ। आपणीआं मेहरां बख्श दे सस्तीआं, बहुती कीमत ना कोए लगाईआ। नौ खण्ड पृथमी तेरे भगत होवण तेरीआं हस्तीआं, हस्त कीटां इक्को रंग रंगाईआ। बिना शरअ तों धारा होवण वसदीआं, वसेरा इक्को गृह रखाईआ। खेलां मुका दे रैण अन्धेरी मस दीआं, मस्त दीवाने दे बणाईआ। किरणां बख्श दे धुर दे रवि शशि दीआं, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। ढोले गावण तेरे जस दीआं, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरीआं धारा होवण अलखणा अलख दीआं, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर निरवैर सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे जन भगतो प्रभू दे नाम दी पीओ मदि, मधुर धुन दए सुणाईआ। आत्म धार बणो उस दी यद, यदी यदप आपणा भेव खुलाईआ। धुर दे हुक्म दा सुणो नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। खुशीआं विच होवो गद गद, आप आपणी लओ अंगड़ाईआ। कूड़ी क्रिया अन्दरों कर बध, बिधना दा लेखा लओ चुकाईआ । जगत वासना मुकाओ हद्द, कूड़ हदूदां

डेरा ढाहीआ। घर स्वामी सतिगुर शब्द लओ सद्द, होका देवो चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । नारद कहे जन भगतो प्रभू दा सदा सदा करो शुकर, शुक्कर प्रोहत बलि दुआर बावन गया दृढ़ाईआ। जो जोती जाता हो के आपणी धारों आवे उतर, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। जो सन्त सुहेले बणाए आपणे पुत्तर, पिता हो के पूत गोद उठाईआ। उस दे हुक्म विच कदे ना होवो नमुकर, आप आपणा आप तजाईआ। उहदा लेखा नहीं कोई भाव दुत्तर, दुतीआ लेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं संदेशा देणा सभना, सब्ब नाल दयां जणाईआ। परम पुरख नूं लोकमात किते नहीं लभणा, सम्बल मिले धुर दा माहीआ। बाहरों तक्कयो ना काया माटी बदना, अन्दर बैठा धुर दा माहीआ। इसे दा इशारा दिता जिस नूं कहिंदे कसाई सधना, छुरी शरअ वाली सुटाईआ। इसे दी याद कीती रवीदास चमारा जो होया अदना, आहला इक्को इक वखाईआ। जिस दा नूर ज़हूर प्रकाश दीपक जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उस स्वामी दी इक्को सरन लगणा, जिस दे चरण कवल सके ना कोए बदलाईआ। जिस दी इक्को मंज़ल इक्को हदूद इक्को पदना, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जेहड़ा वसे मण्डल मण्डप उपर गगना, गगन गगनंतरां आपणा खेल वखाईआ। उस दे प्यार विच होणा मघना, मस्ती नाम खुमारी वाली चढ़ाईआ। जो बुझावणहारा कलयुग अग्ना, अग्नी तत तत गंवाईआ । जिस दे कोलों सब ने मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। उह चाढ़नहारा आदि जुगादि रंगणा, रंगत इक्को इक वखाईआ। जिस ने रवीदास चमारा दिता कंगणा, आप आपणी गंढु पुआईआ। उह तुहाडा लेखा मुकाए तत पंजना, पंचम मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस दा अगम्म अथाह बेपरवाही वाला छन्दना, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ जबद्दी लुध्याणा शहर लाल सिंघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते ला सतिजुगा, सति धर्म दी धार एकँकार दे प्रगटाईआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवान दो जहान कर उग्घा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा ढोला गाईआ। तेरे नाम दा लए कोई ना भुग्गा, जगत कीमत कोए ना पाईआ। मैं दुहाई दे के कहां वसुधा, सिर सर तेरे चरण निवाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाश कर उग्घा, अन्ध अन्धेरा

दे मिटाईआ। उह लहिणा लेखा पूरा कर दे जो इशारा दे के गया बुध्धा, महातम तेरी धार दृढ़ाईआ। कलयुग जीव कूड़ी क्रिया दे विच खुभ्भा, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। मैं रोवां मार के भुब्बा, हौकयां विच सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे इष्ट दा सब नूं भुल गया मुद्दा, मुदतां दे मालक होणा आप सहाईआ। मैनूं इउं दिसदा चार कुण्ट दहि दिशा मेरे उत्ते होण वाला युद्धा, झगड़े विच ख़लक खुदाईआ। कूड़ विकार हँकार रिहा कुद्दा, कुदरत दे मालक वेखणा थांउँ थाईंआ। दीनां मज़्बां अन्दर आई दुबधा, सच मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। धर्म दुआर धर्म गया उडा, नव सत्त रहिण किछ ना पाईआ । कलयुग कूड़ कूड़यार मेरे उत्ते आपणा आप चढ़ाया गुड्डा, गॉड तेरा भेव सके ना कोए समझाईआ। तूं आदि जुगादि नौजवान कदे ना होया बुढ्ढा, बुढापे विच कदे ना आईआ। उह लेखा पूरा कर दे जो इशारा कीता दुर्गा, अष्टभुज भुज जणाईआ। की लहिणा देणा तेरे नाल गोबिन्द गुर दा, गुरदेव स्वामी देणा समझाईआ । मेरा लेखा तक लै नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग धुर दा, धुर मालक पर्दा रिहा उठाईआ। माण रिहा ना किसे देवत सुर दा, गणपति गणेश सीस ना कोए निवाईआ। अठसठ तीर्थ वेख लै रुढ़दा, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआर

मंज़ल कोए ना चढ़दा, हकीकत संग ना कोए रखाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी अन्दर खेल तक्कया हँकार गढ़ दा, हउमे हंगता विच लोकाईआ। आत्म परमात्म तेरा नाम कोए ना पढ़दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला कोए ना गाईआ। मानस मानव मानुख दूई दुवैती दे विच सड़दा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। तूं भेव खुल्हा दे मेहरवाना चोटी जड़ दा, चेतन पर्दा आप उठाईआ। मैनूं सहारा बख़्श दे सतिगुर साचे लड़ दा, कन्नी इक्को गंढु पुआईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा अन्त मेरे उत्ते जावे तैथों डरदा, भज्जे वाहो दाहीआ। रस बख़्श दे अमृत सरोवर सर दा, थल अस्गाहां आपणा रंग रंगाईआ। तेरा रूप अनूप निरगुण धार नरायण नर दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं मालक ख़ालक ठाकर मेरे घर दा, नौ खण्ड वेख वखाईआ। साचा मार्ग दस्स दे निरगुण धार आपणे दर दा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। धरनी कहे हरि भगत सुहेला तेरा भाणा होवे जरदा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा खेल होवे करदा, कुदरत दे कादर देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान तुध बिन आदि जुगादि जुग चौकड़ी सरगुण धार कोए ना तरदा, तारनहार एकँकार निराकार निरँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर ज़बद्दी सुरजन सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनी धुर दा पतीआ आयो री। नाम रतीआ खेल खिलायो री। धुर दा सतीआ सति वरतायो री। शब्दी नाता नाता बिधाता जोड़ जुड़ायो री। तेरी अन्तिम पुछे वाता, भेव अभेदा आप खुल्हायो री । तेरा लेखा जाणे चार जुग दी माता, भूमीए पर्दा आप उठायो री। तेरा वेखणहारा खाता, नवखण्ड फोल फुलायो री। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वेस आप वटायो री। साचा वेस वटाया हू, हकीकत हक जणाईआ। तेरा लहिणा देणा वेख वखाया हू, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ । सच संदेसा इक जणाया हू, होका हक दिता दृढ़ाईआ। धुर दा कलमा नाम पढ़ाया हू, हरि आपणा रंग रंगाईआ। सच पल्लू आप फड़ाया हू, सोहणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच लेखा पूर कराया हू। धरनी कहे नारदा मेरा पतीआ अगम्मा आयो रे। गोबिन्द सतीआ नाल मिलायो रे। मेरी अग्नी तत्तीआ आप बुझायो रे। सच संदेसा नाम इक रतीआ आप दृढ़ायो रे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हायो रे। भेव खुल्हावणहारा आपू, आपणी दया कमांयदा। खेले खेल लोकमातू, मता आपणे नाल रखांयदा। बातन सदा करे बातू, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकांयदा। वेखणहारा रैण अन्धेरी रातू, कलयुग आपणा फेरा पांयदा। जो संदेसा दे के गया गोबिन्द दादू, देहुरे आपणा हुक्म वरतांयदा। उस दा लहिणा देणा पूरा करे जिस नूं सब ने मन्नणा धुर दा बापू, पिता पुरख अकाल आपणा खेल खिलांयदा। सब दी पुछणहारा बातू, वातावरन आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमांयदा। नारद कहे धरनीए चावनीआ का चोला मू राम ज़मू मीना सीना तख्तों जी जादी शाहे शाह शहीना हू। आबे ज़ादी शब्दे नादी गोबिन्द धार रहीना हू। तख्ते सूधम शाहे मूदन दो जहानां वाली ऊ। नीमा ज़ीना पानो वीड़ी कसते मूज़ा मेरा शाह शवीना ऊ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग रंगीना ऊ। रंग रंगीना मतीआ ई। शाहो भूप सतीआ ई। नौजुआना यतीआ ई । मर्द मर्दाना फ़तीआ ई। लोकमात प्रधाना सोया अगम्मी खटीआ ई। शाह सुल्ताना प्रकाश बिन तेल वटीआ ई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मीत नतीआ ई। नाता मीता ज़ीको ज़मा जोहू ज़बरा ज़ाती ऊ। खेले सीना बिन माटी चीना जोबन ज़ीना रत्ना ऊ। काया काअबा कुदरत कादर शाहो शहीना सतना ऊ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मालक सच दुआरे वतना ऊ। धरनी कहे नारद मोको कांकी ज़ीना

बू ताना मिस्ते आना ऊ। चाना चीका छीऊ सीका सने रंग रंगाना ऊ। काज़ी उलवा जन्मे ज़ीवा शाहो भूप सुल्ताना ऊ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादी इक भगवाना ऊ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर निरञ्जण सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए सच दी दस्स कहाणी, कहावत जगत नाल ना कोए मिलाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पड़दा रहे ना राईआ। शब्द सुणा दे बोध अगाधा चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। बेख़बरे ख़बर सुणा दे अठसठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। भेव रहे ना सतिगुर शब्द अगम्मे हाणी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। नाल लेखा दस्स दे की लहिणा तेरा नाल शाह सुल्तानी, शहिनशाह की आपणा हुक्म वरताईआ। की आसा तेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी पुराणी, पुराण अठारां जिस दा भेव कोए ना पाईआ। तूं कोझीए कमलीए बोलणा बिना ज़बानी, बिन रसना जिह्वा बुल्ह्ह हिलाईआ। धरनी कहे नारदा मेरा लेखा तक लै नाल शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तानी, पुरख अकाले हथ्थ वड्याईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिती निशानी, पेशीनगोईआं भविख्तां विच गए सुणाईआ । उह जल्वागर इक्को नूर नुरानी, दो जहानां सोभा पाईआ। जो कलयुग अन्तिम तेरे उत्ते करे मेहरवानी, मिहबान बीदो नूर अलाहीआ। जिस दा तत नहीं जिस्म जिस्मानी, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। जिस दा लेख लिख सके कोए ना कानी, कातबां चले ना कोए चतुराईआ। उह मालक ख़ालक दो जहानी, परवरदिगार इक अख्वाईआ। जो लहिणा देणा वेखणहारा ज़िमीं असमानी, मण्डल मण्डप खोज खुजाईआ। उह दाता गुणी गहीर गुण निधानी, गहर गवर इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिती कुरबानी, काया आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे नारदा मेरा मालक इक महबूब, महिबान नूर अलाहीआ। जिस दी समझे ना कोए हदूद, कन्ढी घाट नज़र कोए ना आईआ। उह वसणहारा हर घट मौज़ूद, लख चुरासी डेरा लाईआ। उस दा चार जुग दे शास्त्र देण सबूत, कलमे कायनात विच जणाईआ। उहदा बिना ततां तों लेखा नाल जगत कलबूत, काया काअबे सोभा पाईआ। जिस दा हिसाब किताब अञ्जील कुरान तुराइत तबूत, तोबा तोबा करके पैग़म्बर बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा मेरा मालक अगम्म अथाह, दो जहानां मालक इक अख्वाईआ। जो

जुग जुग बदलणहारा राह, रैहबर बणे नूर अलाहीआ। जिस दे संदेसे सुणां नाल चाअ, शब्दी शब्द शनवाईआ। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरा बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणाए मलाह, शहादत शब्द सतिगुर शब्द भुगताईआ। मेरी नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाँ, सत्तां दीपां खोज खुजाईआ। इक प्रगटाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकार इक समझाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होए वेखे काँ, काग वांग कुरलाईआ। उह लहिणा देणा लेखा जाणे सूर गाँ, पशू पंछीआं फोल फुलाईआ। जन भगतां पकड़े बांह, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। जिस नूं सब ने कहिणा वाह वाह, वाहवा वहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। उह धरनीए अन्त तेरे उत्ते करे न्याँ, अदालत हक हक कमाईआ। तेरा नगर खेड़ा वेखे गराँ, धरनी धरत धवल धौल फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। नारद कहे धरनी मेरा मालक की कुछ कहिंदा, जिस दी सार किछ ना आईआ। मैं बिना सीस तों उस दी चरणी ढहन्दा, बिन चरणां सीस टिकाईआ। उस दी सरन सरनाई बहिंदा, दर साचे सोभा पाईआ। जिस दा लख लख आदि जुगादि जुग चौकड़ी गाह गहिन्दा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। उह खेल खेलण वाला अन्तिम दिशा

१००२ लहिंदा, आशा मुहम्मद आपणे नाल मिलाईआ। ईसा जिस दा भाणा सहिंदा, लहिणा सलीब वाला वखाईआ। मूसा जिस १००२

२४ दी धार विच मूँह दे भार ढहन्दा, कोहतूर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा २४

वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारदा मेरा स्वामी अगम्म अगम्मड़ा, तन माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। जिस दा ना तन वजूद माटी चमड़ा, चम्म दृष्टी ना कोए जणाईआ। ना धन दौलत कोल रखे दमड़ा, माया ममता ना कोए वड्याईआ। जो एका एक शब्द संदेश सुणंदड़ा, जुग जुग निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। जो चार जुगां दे शास्त्र कलम शाही नाल लखंदड़ा, अक्खर अक्खरां मेला मेले सहिज सुभाईआ। उह अन्त कन्त भगवन्त मेरा होण ना देवे भाग मंदड़ा, मंद भागण लए तराईआ। उह लहिणा देणा जाणे कलयुग जीव अन्धड़ा, निज नेत्र लोचन वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस दा इक्को शब्द अनादी छन्दड़ा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। उह जन भगत सुहेले चुक्के आपणे कंधड़ा, कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सच हुक्म दा हो पाबन्दड़ा, सति सरूप हो के खेल खिलाईआ। दीन दयाल बण बख़्शंदड़ा, बख़्शिश रहमत आपणे हथ्थ रखाईआ। उह देवणहारा साचा अनन्दड़ा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने निशान मिटाउणा तारा चन्दना, सदी चौधवीं डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान ज़िंदगी ज़िंदगानी इन्सानी सब दी वेख वखाईआ।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर हरचरण सिँघ दे गृह सराभा नगर ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो खेल कलयुग कल दा, कायनात कलम्यां बाहर ध्यान लगाईआ। की हुक्म वरते महीअल जल थल का, समुंद सागर की वड्याईआ। दीप खण्ड आपणा आपणा वेखो मज़्बां वाला हल्का, जगत हदूदां ध्यान लगाईआ। अगे पता नहीं लगदा की खेल होणा घड़ी पल का, पलकां दे पिच्छे बहि के की आपणा हुक्म वरताईआ। नज़ारा तको महीअल रूप थल का, अस्गाहां खोज खुजाईआ। की हुक्म वरते सतिगुर शब्द अटल का, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बावना नाले लेखा वेख लै राजे बलि का, बल आपणा आप प्रगटाईआ। की खेल धरनी उत्ते होवे अछल अछल्ल का, धीरज धार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणीआं हदूदां, जगत हद्दां दी लोड़ रहे ना राईआ। की खेल वरते धरनी उत्ते मौजूदा, मौजूद हो के ध्यान लगाईआ। केहड़ी मंज़ल हक रही मकसूदा, कवण महल अटल मिले वड्याईआ। निगाह मार लओ सिख मुरीदां तन वजूदां, काया माटी काचे भाण्डे फोल फुलाईआ। कवण दुआरे स्वामी ठाकर मिले महबूबा, मुहब्बत विच महव आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दे के आए सबूता, सति सति जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणीआं पुराणीआं कढ्ढो कापीआं, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। जिस विच सतिगुर शब्द शब्द दीआं पातीआं, पत्रका समझ कोए ना पाईआ। नाल इशारा दिता कलयुग अन्धेरी रातीआ, रुतड़ी हक ना कोए महकाईआ। नाले सतिगुर शब्द दीआं सुणो बातीआं, की बातन भेव खुल्हाईआ। किस बिध सब दीआं पुछे वातीआं, वातावरन तके ख़लक खुदाईआ। मानस मानव मानुख खोजे हयातीआं, जीवन जीवन विच्चों फोल फुलाईआ। आपणीआं मंज़लां तको घाटीआं, हद हदूदां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि सगला साथीआ, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ।

१००३

२४

१००३

२४

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड गुड़े ज़िला लुध्याणा अजैब सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे अवतार पैग़म्बर वेखो धरत धवल धौल दी धार, धर्म दुआरउं ध्यान लगाईआ। जीवां जंतां पावो सार, साधां सन्तां वेख वखाईआ। क्यों काया मन्दिर अन्दर होया विभचार, कूड़ी क्रिया नाल हल्काईआ। मनुआ मन नव नव चार रिहा

झख मार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट धरनी कहे नारदा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दे दस्स, दस्तगीर नाल मिलाईआ। मेरे रिहा किछ ना वस, वास्ता सब दे अगे पाईआ। हर हिरदे अन्दरों साचे नाम दा गया रस, रसना कूड़ होई हल्काईआ। कोई मेट सके ना रैण अन्धेरी मस, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म गाए कोई ना जस, सिफ्तां दी भरी जगत लोकाईआ। बिना कदमां जाणा नस्स, भज्जणा वाहो दाहीआ। झट नारद ने धोती लई कस, बोदी सिर उत्ते हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं सो पुरख निरञ्जण आप जणाउंदा हां। हरि पुरख निरञ्जण भेव खुल्हाउंदा हां। एकँकारे पर्दा लाहुन्दा हां। आदि निरञ्जण नूर वेख वखाउंदा हां। श्री भगवान संग निभाउंदा हां। अबिनाशी करता आपणी वंड वंडाउंदा हां। पारब्रह्म मेल मिलाउंदा हां। सतिगुर शब्द शब्द उठाउंदा हां। कलयुग अन्तिम वेला वक्त समझाउंदा हां। निरगुण धार तक लै आपणी शक्त, शक्तीशाली तेरे अगे वास्ता पाउंदा हां। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर तक लै वक्त, बेनज़ीर आप दृढ़ाउंदा हां। बिन तेरी किरपा कोई बणे
१००४ ना भगत, खेड़ा सब दा भठ वखाउंदा हां। चार जुग दा वायदा आपणी पूरब तक लै शर्त, शरीअत दे मालक तैनूं सुणाउंदा हां। १००४
२४ हां। जोती जाते आ जा परत, पतिपरमेश्वर वास्ता पाउंदा हां। भाग लगा दे उत्ते धरत, धरनी धवल धौल तेरे चरण टिकाउंदा हां। २४
हां। शरअ छुरी कातिल मक्तूल मेट दे करद, कत्लगाह दा पन्ध मुकाउंदा हां। अन्त कन्त भगवन्त दीनां दुखियां वंड दर्द, दुःख भंजन तेरी सरन तकाउंदा हां। मेरी इक्को इक अर्ज़, आरज़ू तेरे अगे टिकाउंदा हां। तेरा खेल तकां असचरज, अचरज तेरा रूप वखाउंदा हां। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना इक मर्द, मदद तेरी इक रखाउंदा हां। कलयुग कूड़ अन्धेरा मेट दे गर्द, सच नूर नूर रुशनाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान मेरा होण ना देवीं हर्ज, हरजाने तेरे कदम टिकाउंदा हां।

✪ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मस्ताक गंज ज़िला लुध्याणा सरदार सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए प्रभू अगे पा लै वास्ता, धुर दा वसल मंग मंगाईआ। सच धर्म दा मंग लै रास्ता, रैहबर हो के दए वखाईआ। हुण आ गया खुदा नख़ासता, खुद आपणा फेरा पाईआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी आहिस्ता आहिस्ता, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। अगे खेल करदा रिहा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाले बरास्ता, शब्दी शब्दी डंक सुणाईआ। हुण

रूप धरया पुरख अकाले आपणा अबिनाश दा, जल्वागर नूर अलाहीआ। उह मालक ख़ालक सर्ब गुणतास दा, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। जिस कोल लहिणा देणा पृथ्मी आकाश दा, धरनीए तेरा दुःख वंडाईआ। उस दा खेल तक लै आपणी अगम्मी रास दा, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। जल्वा तक लै जल्वागर प्रकाश दा, जोती जाता डगमगाईआ। हुण वक्त सुहेला तेरे विश्वाश दा, विषयां दे बाहर दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे नारदा मैं मंगणहारी मंगती, जुग जुग झोली डाहीआ। मैनूं इक्को दे दे आपणे नाम दी पंगती, बहुती लोड़ रहे ना राईआ। प्यार बख्श दे मानव ज़ाती संगती, दीनां मज़्हबां डेरा ढाहीआ। खेल समझा दे काया पंज तत तन दी, ततव तत तत दृढ़ाईआ। तृष्ना कूड़ी मेट दे मन दी, मनसा मोह ना कोए हल्काईआ। चुगली मेट दे सरवण कन्न दी, जगत करे ना कोए शनवाईआ। तृष्ना रहे ना भुख अन्न दी, तृप्त तृप्त तृप्त कराईआ। वड्याई बणा दे आपणे जन दी, आप बणें जणेंदी माईआ। खेल वखा दे छप्पर छन्न दी, महल अटल ना कोए चतुराईआ। मेरे उत्ते धार प्रगटा दे गोबिन्द धुर दे चन्न दी, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। नव सत्त आवाज़ आवे धन्न धन्न दी, तूं ही

१००५ तूं ही सारे राग अलाईआ। किसे नूं भुल ना रहे ब्रह्म दी, पारब्रह्म दए समझाईआ। खेल खलाए आपणे कर्म दी, कर्म १००५

२४ कांड दा डेरा ढाहीआ । दीन दुनी दी दृष्टी बदले चर्म दी, चम्म दृष्टी रहे ना राईआ। खेल मुकाए ज़ात पात वरन दी, २४

बरनां डेरा ढाहीआ। इक्को ओट बख्शे पुरख अकाला आपणे सरन दी, सरनगति इक अख्वाईआ। आपणा मार्ग दस्से मंज़ल चढ़न दी, बिन पौड़ी डण्डे आप चढ़ाईआ। इक्को शब्दी तुक दस्से अगम्मी पढ़न दी, बहुती लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ । नारद कहे धरनीए मेरा मालक अल्ल अज़हू ज़मा नूज़े रवा अर्शे फ़िज़ा कूनी ज़ाकमू दुविस्ते दऊ जामउल कुज़ल ज़ाकमम्बाए आवीज़ो नूरे निज़ा अर्शे खुदा खुद मालक तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस दे अगे आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण बिन हथ्थां दस्तां अगम्म दुआ, दो जहानां मालक ख़ालक एकँकार परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर सवित्री देवी दे गृह ✪

सतिगुर शब्द दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार करांयदा। नाम निधाना नेत्र पावे अंजण, अन्ध अज्ञान मिटांयदा।

आत्म धार बणे साचा सज्जण, परमात्म आपणा जोड़ जुड़ांयदा। भाग लगाए काया माटी बदन, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पांयदा। हरिजन गुरमुख हीरे बणाए चन्दन, नाम सुगंधी विच महकांयदा। निजानंद देवे आपणा सच अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों वखांयदा। आदि जुगादि जन भगतां टुट्टी आए गंढुण, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। कूड़ विकारा आए खण्डण, खण्डा खड़ग नाम चमकांयदा। साची वस्त आए वंडण, नाम निधाना झोली पांयदा। पन्ध मुकाए दो जहान ब्रह्मण्डण, आवण जावण फंद कटांयदा। दीन दयाल बणे बख्शंदन, बख्शिश रहमत आपणे हथ्थ रखांयदा। ग़रीब निमाणयां चुक्के आपणे कंधन, दरगाह साची सच बहांयदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्से छन्दन, सोहँ ढोला अगम्म पढ़ांयदा। इक्को डण्डावत होवे बन्दन, इष्ट देव इक वखांयदा। लहिणा देणा मुकाए विच वरभण्डण, भंडी जगत ना कोए जणांयदा। देवे प्रकाश बिना सूर्या चन्दन, चन्द चांदना नूर चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखांयदा । सतिगुर शब्द सदा सदा कृपालू, किरपा निध अख्वाईआ। आदि जुगादि दयालू, दया निध धुरदरगाहीआ । जन भगतां सुरत संभालू, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवे नाम सच्चा धन मालू, वस्त अमोलक इक वरताईआ । जिस लेख

१००६ बणाया नानक धार ततां वाले कालू, पिता पूत खुशी बणाईआ। सो सुहावणहारा सच दुआर सची धर्मसालू, सचखण्ड इक १००६

२४ वड्याईआ। जो जन भगतां बणया रहे सदा पालू, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। जिस दी घाल आदि जुगादि गुर अवतार २४

पैग़म्बर घालू, घायल हो के देणा वखाईआ। उह फल लगावणहारा भगतां डालू, पत्त टहणी आप महकाईआ। जिस दा धर्म धर्म दा खेल होणा चालू, चाल निराली इक रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जाहलू, जंजाला रहिण कोए ना पाईआ। सो श्री भगवाना नौजवाना इक्को इक शाहलू, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जो भगतन मीत बणे कृपालू, किरपा निध वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द आदि जुगादि बणाए दयालू, विचोला इक्को इक नज़री आईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर चन्दा सिँघ कालोनी मलकीअत सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द आदि जुगादी पूरा, पूरन धार इक अख्वाईआ। एथे ओथे दो जहान सूरा, सूरबीर वड वड्याईआ। नित नवित हाज़र हज़ूरा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। सुणाउणहार अगम्मी तूरा, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं करे पढ़ाईआ। बख्शणहारा साचा नूरा, अन्ध अज्ञान जगत मिटाईआ। देवणहारा हक सरूरा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जन भगतां जन्म

रहिण ना दए अधूरा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे बण सर्ब कला भरपूरा, समरथ आपणा खेल खिलाईआ। आदि जुगादि धुर दा नाम करे मशहूरा, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दे मज़दूरा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द सदा सदा निहकर्मी, कर्म कांड विच ना आईआ। दो जहानां साचा धर्मी, धर्म दी धार इक समझाईआ। लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव ब्रह्मी, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी आदि जुगादि सारे लगदे सरनी, सीस सके ना कोए उठाईआ। उह मालक करना करनी, कुदरत दा रूप दरसाईआ। जिस खेल मेटणी वरनी बरनी, झगड़ा मुकाए ख़लक खुदाईआ। जिस दी इक्को तुक सब ने पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जिस दी मंज़ल हकीकी सब ने चढ़नी, दरगाह सच सच सुहाईआ। सो हरि भगत सुहेले आपणे बंधाए लड़नी, पल्लू गंढु ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लेख मुकाए सीस धड़नी, धड़ा दीन मज़्हब जगत नज़र कोए ना आईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर मग्घर सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द देवणहारा सच सुगंधी, रस आपणा आप जणाईआ। मेटणहारा कूड़ दुर्गन्धी, विख अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। सुरत नाल करे संधी, लेखा लिखे चाँईं चाँईंआ। पंच विकार करे पाबन्दी, सिर सके ना कोए उठाईआ। नेत्र अक्ख रहिण ना देवे अन्धी, सच प्रकाश दए चमकाईआ। त्रैगुण माया तोड़े फंदी, जगत जंजाल ना कोए जणाईआ। साचा ढोला सुणाए छन्दी, धुर दा राग सुणाईआ। हरिजन चुक्के आपणे कंधी, खेवट खेटा आपणा रूप बदलाईआ। जिस दी आयू आदि जुगादि लम्मी, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द सदा सदा बहुरंगी, रंगत नज़र किसे ना आईआ। सुहावणहारा सेज पलँघी, सुखआसण डेरा लाईआ। कूड़ी कढ्ढे वासना गंदी, अन्तर करे सफ़ाईआ। प्रकाश देवे धुर दा चन्दी, सूर्या चन्द दी लोड़ ना कोए रखाईआ। हरिजन लावे आपणे अंगी, अंगीकार आप हो जाईआ। जिस दी धार यमुना सरस्वती गोदावरी गंगी, गोबिन्द आपणा खेल खिलाईआ। सो शहिनशाह सूरा सरबंगी, धुर मालक इक अख्वाईआ। जिस दे कोल जुग चौकड़ी वखरा ढंगी, तरीका समझे कोए ना राईआ। उह वेखणहारा कलयुग अन्तिम कन्ढी, घाट पतण फोल फुलाईआ। जो मेटणहारा कूड़ पखण्डी,

माया ममता मोह गंवाईआ। सति धर्म दी लावणहारा डण्डी, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। गढ़ तोड़नहार घमंडी, हउमे हंगता दूर कराईआ। चमकावणहारा धर्म दी चण्डी, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्मण्डी, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। लहिणा देणा पूरा करे जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। जन भगतां आदि जुगादि टुट्टी आपे गंढ़ी, गंढुणहार गोपाल स्वामी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दीन दुनी सदा बणे बख्शंदी, बख्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लुध्याणा शहर मलकीअत सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सच्चा सिक्दारा, सिर सिर आपणा हुक्म चलांयदा। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दा सेवादारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाउँ प्रगटांयदा। जिस दा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखांयदा। जिस दा नाम सति जैकारा, जुग जुग आप जणांयदा। जिस दा रूप तेई अवतारा, अवतरी हो के खेल खिलांयदा। जिस दा पैग़म्बरां लाया नाअरा, हकीकत हक हक दृढ़ांयदा। जिस दा गुरुआं कीता इशारा, बिन सैनत सैनत समझांयदा। जिस दा लख चुरासी विच पसारा, घट घट अन्दर सोभा पांयदा। जिस दा त्रैगुण जगत भण्डारा, रजो तमो सतो आप वरतांयदा। जिस दा पंज तत आकारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलांयदा। जिस दा नूर जोत उज्यारा, दीआ बाती कमलापाती आप जगांयदा। जिस दा शब्द नाद धुन्कारा, अनहद नादी नाद दृढ़ांयदा। जिस दा अमृत रस ठंडा ठारा, बूंद स्वांती आप टपकांयदा। जो वसणहारा सब तों बाहरा, सचखण्ड साचे सोभा पांयदा। जिस नूं कहिंदे परवरदिगारा, सांझा यार नूर चमकांयदा। उह खेले खेल अपारा, अपरम्पर हो के वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणांयदा। सतिगुर शब्द शब्द सतिगुर, सति सतिवादी इक अखवांयदा। जिस दा लेखा आदि जुगादी धुर, धुर मस्तक लेख सर्ब बणांयदा। जिस नूं झुकदे अवतार पैग़म्बर गुर, निव निव सीस निवांयदा। जिस दी ख़ाक रमाउंदे विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर, धूड़ी टिक्कयां नाल वड्आइंदा। जिस दा मन्त्र जाए फुर, फुरने सब दे बन्द करांयदा। जो मातलोक बिन कदमां आए तुर, तुरत आपणा पन्ध मुकांयदा। सुरती नाल जाए जुड़, शब्दी आपणा रंग रंगांयदा। जिस दी आदि जुगादि सब नूं लोड़, लुड़ींदा साजण इक हो जांयदा। जो चढ़े सदा अगम्मे घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखांयदा। जिस दी मंज़ल इक्को अगम्मा पौड़, पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आंयदा। जो कलयुग कूड़ी क्रिया

पावणहारा मोड़, सतिजुग सच धर्म प्रगटांयदा । तिस दे अगे लख चुरासी हथ्थ रही जोड़, सिर सर ना कोए उठांयदा। सो पुरख अकाला दीन दयाला सतिगुर शब्द धार आया दौड़, भज्जया वाहो दाहीआ। जिस नूं कहिंदे ब्राह्मण गौड़, सो आपणा रूप वखाईआ। वेखणहारा लख चुरासी मिट्टा कौड़, फल दीन दुनी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान जिस दा मार्ग आदि जुगादि बड़ा सौड़, बिन किरपा मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड सनेत ज़िला लुध्याणा मोहण सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द बेपरवाही, आदि जुगादि बेपरवाही विच समांयदा। निरगुण धार बणे रथवाही, जुग जुग आपणा रथ चलांयदा। शब्द संदेशा देवे चाँईं चाँईं, नाम निधाना लोकमात प्रगटांयदा। निरअक्खर धार अक्खरां विच लए प्रगटाई, चार जुग दे शास्त्रां गंढु पुआंयदा। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं देवे नाम सच्चा सुखदाई, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। आत्म परमात्म
१००६ मेला मेले सहिज सुभाई, जुग जुग आपणा रंग रंगांयदा। भगत सुहेले लए उठाई, लख चुरासी विच्चों फोल फुलांयदा। १००६
२४ वस्त अमोलक देवे थांओं थाँईं, आप आपणी दया कमांयदा। हकीकत हक दा बणे गुसांई, गहर गम्भीर आप अखवांयदा। २४
जिस नूं सब ने मन्नया धुर दा माही, मेहरवान हो के वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभांयदा। सतिगुर शब्द आदि जुगादी डूंघा सागर, गहर गवर इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। मेल मिलाए करीम कादर, कुदरत आपणा हुक्म सुणाईआ। दो जहानां बण के सूरबीर बहादर, भय भाउ देवे थांओं थाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे आदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया करे तबादल, सति सच लए प्रगटाईआ। लेखा मुकाए मक्तूल कातिल, धर्म दी धार इक जणाईआ। सच दुआर वखाए बातुल, मुक्दस इक्को इक समझाईआ । जन भगतां भेव चुकाए बातन, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रातन, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। ग़रीब निमाणयां पुछे वातन, होए आप सहाईआ। आपणा दस्से आप महातम, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। हुक्म सुणाए धुर परमात्म, संदेशा देवे चाँईं चाँईंआ। जिस दी शरअ मज़्हब नहीं कोई धार सनातम, सनातम रंग ना कोए रंगाईआ। उह लख चुरासी पुछणहारा वातन, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द शब्दी रूप अपारा, तन वजूद ना कोए रखाईआ। रसना जिह्वा ना कोए बुलारा, मुख दन्द ना कोए वड्याईआ। गीत गाए ना कोए संसारा, वासना जगत ना कोए रखाईआ। आपे वसे सब तों बाहरा, सच दुआरा इक सुहाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर अवतारा, मेला मेले चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम मेटे अन्ध अँधयारा, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सतिजुग सच बोले जैकारा, सतिगुर शब्द करे पढ़ाईआ। मानस ज़ाती देवे इक सहारा, नौ खण्ड पृथमी आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जिस दा अगम्म जैकारा, जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल कल्की अवतारा, निहकलंका आपणा डंक वजाईआ। अमाम अमामा हो उज्यारा, रूप अनूपा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शाहो भूप सची सरकारा, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड झमट ज़िला लुध्याणा महिंदर सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, महिबान बीदो इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि दो जहान, लोक परलोक आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे ढोले गाण, सिफ्तां वाली सिफ्त सलाहीआ। त्रैगुण माया देवणहारा दान, रजो तमो सतो आपणा रंग रंगाईआ। पंज तत करन वाला प्रधान, अप तेज वाए पृथमी आकाश आपणी खेल खिलाईआ। लख चुरासी लेखा जाणे जीव जहान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी वंड वंडाईआ। जोती जाता हो के दयावान, दयानिध इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म देवे दान, कमलापाती जोती जाता हो के डगमगाईआ। शब्द अनादी दए सची धुन्कान, अनहद नादी राग सुणाईआ। अमृत आत्म बख्शे पीण खाण, बूंद स्वांती नाभी कवल टपकाईआ। लेख मुकाए नौ दुआरे जीव जहान, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। भगत सुहेले करे परवान, प्रीतम हो के आपणा मेल मिलाईआ। साचे सन्तां देवे माण, अन्तर निरंतर आपणा रंग चढ़ाईआ। गुरमुख वेखे मार ध्यान, गुरसिख आपणी गोद टिकाईआ। धुर दा नाम कलमा करे प्रधान, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। चार जुग दे शास्त्रां दए ज्ञान, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहार श्री भगवान, भगवन हो के हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम होवे जाणी जाण, जानणहार नूर अलाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरु गाउंदे गान, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने शरअ शरीअत दीन दुनी कीती प्रधान, परम पुरख आपणा रूप दरसाईआ। सो

मालक ख़ालक नौजुआन, नूर नुराना नूर अलाहीआ। सचखण्ड निवासी सच संदेसा जुग जुग देवे आण, पैग़ाम नूर अलाहीआ। जो सुणया जाए बिना कान, सरवणां लोड़ रहे ना राईआ। बोलया जाए बिना ज़बान, मुख दन्द ना कोए चतुराईआ। उह शाहो भूप सुल्तान, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के हरिजन साचे करे परवान, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सतिगुर शब्द सहिज सुखदाई, रोग सोग विच कदे ना आंयदा। चार जुग दा निरगुण बणे माही, दो जहानां आपणा खेल खिलांयदा। सच संदेशा नव सत्त रिहा सुणाई, ब्रह्मण्डां खण्डां आप दृढ़ांयदा। जिस दा भेव अभेदा लोकमात कोई जाणे नाहीं, पड़दा पड़दा ना कोए उठांयदा। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटणहारा कूड़ी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म वरतांयदा। जिस कारन गोबिन्द बूटा पुटया काही, कलयुग कूड़ कुड़यारे जड़ पुटांयदा। छोटयां बाल्यां नीहां हेठ दबाई, धरनी धरत धवल धौल हौला भार करांयदा। सो सतिगुर शब्द आदि जुगादि खेले खेल चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा आपणा इक प्रगटांयदा। कलयुग अन्त लेखा जाणे थांउ थाँईं, थान थनंतर फोल फुलांयदा। जिस दा रूप रंग रेख दिसे कोई नाहीं, तन वजूद
१०११ पंज तत वंड ना कोए वंडाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना इक अलाही, अलाह आलमीन अखवांयदा। जिस नूं सारे १०११
२४ मंनदे धुर गुसांई, गोबिन्द आपणा मेल मिलांयदा। सो सतिगुर शब्द निरगुण निरगुण दो जहानां बण के राही, रैहबर हो २४
के भेव चुकांयदा। जिस दा लेखा नाल ख़लक खुदाई, ख़ालक मख़लूक आपणे रंग रंगांयदा। सो पुरख अकाला दीन दयाला एका डंका फ़तिह रिहा वजाई, दो जहान आलस निंद्रा आप खुल्हांयदा। भगत सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख रिहा जगाई, सुरती शब्द नाल उठांयदा। घर स्वामी मिले चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पावे सार जल थल महीअल अस्गाही, समुंद सागर टिल्ले पर्वत धरनी धरत धवल धौल वेख वखांयदा।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड भनहौड़ ज़िला लुध्याणा भगवान सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सदा सुहेला, आदि अन्त इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म मिलाए मेला, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, चेला गुर आपणा संग निभाईआ। इथे ओथे दो जहानां निरगुण धार बण के सज्जण सुहेला, सगला संगी बहुरंगी नूर अलाहीआ। जो कटणहारा लख चुरासी राय धर्म दी जेला, फाँसी जम की दए कटाईआ। उह

वसणहारा धाम नवेला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां अन्दर वसदा, बाहर खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस दे कोल भण्डारा धुर दे जस दा, सिफ्ती सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। प्याला देवे अंमिओं रस दा, बिन रसना रस चखाईआ। साचा मार्ग आत्म परमात्म आपणा दस्सदा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। तीर अणयाला इक्को कसदा, बिन चिल्ले कमान उठाईआ। जिस दा लहिणा देणा पुरख समरथ दा, सो पुरख निरञ्जण वेख वखाईआ। उह लेख मुकाए हथ्थो हथ्थ दा, जगत उधार ना कोए जणाईआ। जुग चौकड़ी कूड़ी क्रिया सदा मथदा, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द भगतां वेखे भगती, भगवन धार धार जणाईआ। लेखे लावे चुरासी विचो हरिजन व्यक्ति, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। अन्तर आत्म बख्शे साचे नाम दी शक्ती, शख्सीयत इक्को इक दृढ़ाईआ। निरगुण धार वखाए हस्ती, हस्त कीटां विच समाईआ। जिस दी सचखण्ड दुआर बस्ती, दरगाह साची सोभा पाईआ। चार जुग दी बाणी भरी उसे दे जस दी, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ।
 उह कलयुग रैण खेल मिटाए अन्धेरी मस दी, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १०१२
 कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सतिगुर शब्द भगतां सदा साथी, साजण इक अख्वाईआ। होए २४
सहाई अनाथ अनाथी, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। वस्त अगम्मी निरगुण धार देवे दाती, दयावान हो के झोली पाईआ। भेव चुकाए लोकमाती, धरनी धरत धवल पड़दा रहे ना राईआ। ज़िंदगी विच्चों जीवण जीवण विच्चों बदले हयाती, पवण स्वासा आपणा खेल खिलाईआ। घर प्रकाश करके बिन दीआ तेल बाती, जोती जाता हो के डगमगाईआ। अमृत बख्शे बूंद स्वांती, निझर झिरनओं आप झिराईआ। जन भगतां अन्त पुछे वाती, निरगुण धार होए सहाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार मुकाए पिछला पन्ध वाटी, अगे अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां सचखण्ड दुआर चढ़ाए आपणी घाटी, अधविचकार दीन दुनी ना कोए रखाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड दाखा ज़िला लुध्याणा महिन्दर सिँघ जुगिदर सिँघ दे गृह ✪

आत्मा कहे मेरे शाहो भूप सुल्ताना, सो पुरख निरञ्जण तेरी बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरञ्जण तेरा नूर महाना, जोती

जाते नज़री आईआ। एकँकार तेरा निशाना, लोकमात सोभा पाईआ। आदि निरञ्जण तेरा दाना, दाते दानी दया कमाईआ। अबिनाशी करते मेरे मेहरवाना, महबूब तेरी वड्याईआ। श्री भगवान गुण निधाना, गुणवन्त देणी सरनाईआ। पारब्रह्म बिन नेत्रां वेखणा मार ध्याना, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। मैं सतिगुर शब्द तेरा सुणां तराना, तुरीआ तों परे देणा दृढ़ाईआ। तूं निरगुण धार मैनूं त्रैगुण माया पंज तत विच कीता प्रधाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो नाल जोड़ जुड़ाईआ। मेरा सुहा के नगर ग्रामा, खेड़ा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं तेरा आदि जुगादी नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। लोकमात तेरा लहिणा देणा मेरे नाल ज़रूर, ज़रूरत तेरे नाल रखाईआ। तेरा पन्ध ना नेड़े ना दूर, गृह मन्दिर इक्को इक वखाईआ। तेरी मस्ती मेरा सरूर, तेरी ख़ुमारी मेरी ख़ुशी बणाईआ। तूं शहिनशाह हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। आत्मा कहे प्रभू तूं मेरा पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। तेरा मण्डल तेरी
१०१३ रासी, तेरा मण्डप वेख वखाईआ। तेरा खेल तेरी तमाशी, सद तेरे रंग विच समाईआ। मेरा लहिणा देणा रख्या नाल १०१३
२४ लख चुरासी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। मेरा प्यार करदे शंकर कैलाशी, कलाधारी तेरी सरनाईआ। आदि २४
जुगादि जुग चौकड़ी मेरे अन्तर आई ना कदे उदासी, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। मैं जगत चढ़या नहीं किसे फाँसी, सलीव गल ना कोए लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं तेरा रूप अगम्म, अगम्मड़े दे वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा जुड़या नाल काया माटी चम्म, पंजां ततां संग मिलाईआ। तेरा खेल वेख्या पारब्रह्म धार ब्रह्म, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। ईश जीव मेरा होया कर्म, कर्म कांड तेरे चरण टिकाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त मैं लोड़ां तेरी इक्को सरन, सरनगति इक रखाईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा तरनी तरन, तारनहार धुरदरगाहीआ। तेरी किरपा नाल तेरे भगत सुहेले तेरी मंज़ल चढ़न, दरगाह साची जावण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। आत्मा कहे प्रभू मेरा तेरे नाल जोड़ा, जोड़ी आदि जुगादि बणाईआ। निगाह मार लै सस्से उत्ते होड़ा, हाहे टिप्पी नाल मिलाईआ। मैं सदा फिरदा तेरे शब्द अगम्मी घोड़ा, भज्जां वाहो दाहीआ। चुरासी विच मेरा खेल बड़ा थोड़ा, चारे खाणी रंग रंगाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां धार हो के तेरा गावां दोहरा, नाम नामा इक जणाईआ।

इक्को घर वेखां पेका सौहरा, दो जहानां खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं सन्तां सूफ़ीआं आदि जुगादि साथी, सगला संगी अख्वाईआ। तूं सर्ब कला समराथी, बेपरवाह नूर अलाहीआ। मेरा लहिणा देणा मुकदा रिहा हाथो हाथी, जगत उधार ना कोए जणाईआ । मन कल्पणा जिन्हां दे अन्तर उन्हां कोई पुछे ना वाती, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जीव जंत वेखण अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मारे काती, जगत शस्त्र नज़र कोए ना आईआ । चारे खाणी आवण जावण फेर मेरा खेल तमाशी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान निरगुण धार एकँकार तूं मेरा मालक शाहो शाबाशी, शाह पातशाह शहिनशाह आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरे रंग समाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मुंडयाणी ज़िला लुध्याणा पूरन सिंघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द कहे धरनीए रखीं यकीन, भरोसा पुरख अकाल जणाईआ। बेशक जीव जंत कलयुग होए अधीन, माया ममता बैठी आपणा रंग रंगाईआ। परवरदिगार सांझा यार जिस नूं कहिंदे यामबीन, नूर नुराना शाह सुल्ताना इक अख्वाईआ। जिस दा मार्ग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बड़ा महीन, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस ने दीनां मज़्हबां दी कीती तकसीम, मानव ज़ाती ज़ात पात विच वंड वंडाईआ। उह कुदरत दा कादर इक करीम, करता पुरख नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा नाल नर मदीन, लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । सतिगुर शब्द कहे धरनी प्रभ करनहार करतारा, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ मेटे अँधयारा, तेरे उत्ते नव सत्त रहिण ना पाईआ। एका नूर जोत करे उज्यारा, चारे कुण्टां डगमगाईआ। तूं उस दे चरण कवल करीं निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। उह तेरा लेखा जाणे सब दा सांझा परवरदिगारा, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। जिस दा इक्को नाद शब्द धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जो मानव ज़ाती अमृत रस देवे ठंडा ठारा, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। तेरा पवित्र करे दुआरा, गृह इक्को इक सुहाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ गुरुदुआरा, चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ । उह साहिब स्वामी अन्तरजामी सब दा बणे सांझा यारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस नूं सब ने कहिणा कलि कल्की अवतारा, निहकलंका अगम्म

अथाहीआ। तिस नूं पैग़म्बरां किहा नूर अलाही परवरदिगारा, अमाम अमामा इक अख्वाईआ। उह तेरा लहिणा देणा सदी चौधवीं रिहा विचारा, बीस बीसा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ । सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरा मिट जाए कलयुग कूड़ कुड़यारा अन्ध, अज्ञान दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब ने गाउणा छन्द, सोहँ ढोला वजदी रहे वधाईआ। जिस लेख मुकाउणा अन्त अख़ीर बेनज़ीर तारा चन्द, सूर्या आपणा पन्ध मुकाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला एथे ओथे सदा बख्शंद, रहमत आपणी आप कमाईआ। तेरा ख़ुशी कराए बन्द बन्द, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणा रंग चढ़ाईआ। तेरे सीने पावे ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। तेरा भाग होण ना देवे मंद, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सेज सुहाए नव सत्त इक पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी बणत ना कोए बणाईआ।

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड रकबा ज़िला लुध्याणा नाहर सिँघ दे गृह ✪

१०१५

२४

जन भगतो प्रभू दा रखो इक सहारा, सहायक नायक जो इक अख्वाईआ। जो निरगुण सरगुण लए अवतारा, पैग़म्बर गुर आपणा खेल खिलाईआ। नाम निधाना बोल जैकारा, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोती जाता अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटणहार अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। जिस झगड़ा मेटणा ज़ाता पाता, दीनां मज़्बां लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म जन भगतां जोड़े नाता, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। अमृत आत्म बूंद स्वांती बख्शे आप सुवाता, अग्नी तत तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो कलयुग क्रिया कूड़ जाए नठ, धरनी धरत धवल धौल रहिण कोए ना पाईआ। माया ममता पंच विकारा खेड़ा होवे भठ, त्रैगुण अग्नी तत ना कोए तपाईआ । लहिणा देणा मुके तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती दर घर बैठे सीस निवाईआ। इक दुआर वखाए मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ, गुरुदुआरा चर्चा इक्को रंग रंगाईआ। जन भगतां मेल मिलाए नठ नठ, आत्म अन्तर भज्जे वाहो दाहीआ। सति सन्तोख धीरज देवे हठ, कलयुग तृष्ना कूड़ मिटाईआ। मन मनुआ उलटी गेड़े लठ, दहि दिशा ना उठ उठ धाहीआ। घर प्रकाश जोत करे लट लट, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द नाद सुणाए अनहद, धुन आत्मक

राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगतां मेल मिलाईआ। साचे भगतां मेलणहारा, हरि करता धुरदरगाह। सन्त सुहेले वेखणहारा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। गुरमुख गुर गुर रंग रंगावणहारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह। हरिजन साचे चरण धूड़ी मस्तक लावे छारा, जोती जाता हो के बणे मलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां लेखा जाणे थल अस्गाह। थल अस्गाह वेखे प्रभू आप, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। जन भगतां करे वड प्रताप, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के जाप, तूं मेरा मैं तेरा करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द करे रुशनाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ज़ात पात, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा इक्को होवे माई बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। इक्को चरण प्रीत जोड़े नात, सगला संग आप हो जाईआ। कलयुग अन्तिम पुछे वात, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। जिस दी सब तों वखरी गाथ, धुर दा ढोला सच पढ़ाईआ। उह मालक ख़ालक अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणयां दया कमाईआ। लेखा जाणे सर्ब कला समराथ, समरथ अकथ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग अन्तिम धरनी उत्तों जावे नाठ, धवल उत्ते रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले रखणहारा सिर दे कर हाथ, पुश्त पनाह आपणी दया कमाईआ।

१०१६ २४

✪ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बुढेल ज़िला लुध्याणा गुरनाम सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द अगम्मे मीता, मित्र प्यारे तेरी आस रखाईआ। मेरा अन्तष्करन कर दे ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मानव ज़ाती मेरे उत्तों बदल दे रीता, मानस मानस आप समझाईआ। तूं साहिब सुल्तान त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी तेरी वड्याईआ। तूं लख चुरासी परखणहारा नीता, चारे खाणी विच समाईआ। निगाह मार लै हर घट चीता, चित वित ठगौरी भेव रहे ना राईआ। मेरे उत्ते झगड़ा प्या मन्दिर मसीता, काया काअबा ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैनूं दे दे नाम वस्त अनमुली, दो जहानां आप वरताईआ। तूं मालक ख़ालक सुल्हकुली, बेऐब परवरदिगार नूर अलाहीआ। बेशक सृष्टी तेरी तैनूं भुल्ली, अभुल तेरी बेपरवाहीआ। भाग लगा दे मेरी नव खण्ड दी कुल्ली, सत्तां दीपां आपणा चरण

टिकाईआ। कलयुग दी कूड़ कुड़यारा दी फुलवाड़ी वेख लै फुल्ली, माया ममता मोह विकार नाल महकाईआ । तेरी चरण प्रीती आत्मा दिसे कोई ना घुल्ली, घोली घोल ना कोए घुमाईआ। तेरी सृष्टी पुरख अकाले तेरा नाम जपदी बुल्ल्हीं, हिरदे सके ना कोए वसाईआ। बूंद स्वांती अमृत धार निझर झिरनओं सब दी डुल्ही, नाभी कवल ना कोए उलटाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरी आशा वेख लै रुली, धीरज धीर ना कोए धराईआ । तेरी चुरासी तेरे नाम बिना हुल्ली, सिम्मल वांग फल फुल नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द मेहरवान मेहरवाना, महव महबूब तेरी सरनाईआ। मैनूं इक्को बख्श दे नाम निधाना, गुण निधान तेरी बेपरवाहीआ। सत्त दीप तेरा झुलदा होवे इक निशाना, जोती जाते पुरख बिधाते डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा होवे गाणा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। तूं मालक शाहो भूप ज़िमीं असमाना, लोक परलोक चौदां तबक तेरी वजदी रही वधाईआ। मेरी बेनन्ती इक्को करीं परवाना, परम पुरख तेरी सरनाईआ। तूं दाता दानी गुण निधाना, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द दीन दयाल, दया निध तेरी सरनाईआ। दीनां बंधप हो कृपाल, किरपा निध दे वड्याईआ। भगत सुहेले आपणे भाल, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। सन्त सुहेले खोज लै लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख गुरसिख अन्दर वड़ के सुरत संभाल, सम्बल दे मालक होणा आप सहाईआ। तेरा लेखा रहे ना शाह कंगाल, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण अवलड़ी चाल, चाल निराली इक रखाईआ। मेरी बेनन्ती मंन सुआल, दर ठांडे दयां दृढ़ाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी घालण रही घाल, सतिगुर शब्द तेरी सरनाईआ । मेरे उत्तों कलयुग कूड़ तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर मानव भाग लगा दे काया माटी खाल, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। तेरा अन्तर आत्म इक्को सरोवर सुहाए साचा ताल, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मेरे मुर्शद धुरदरगाहीआ। फल रिहा किसे ना डाल, पत्त टहणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा खेल आदि जुगादि कमाल, कमलापति ब्रह्म मति पंज तत आप दृढ़ाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बोपा राय ज़िला लुध्याणा गुरदयाल कौर दे गृह ✪

धरनी कहे सो पुरख निरञ्जण कर मेहरवानी, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। हरि पुरख निरञ्जण धर्म दी धार बख्श निशानी, लोकमात आपणा रंग रंगाईआ। एकँकार बण अगम्मा दानी, वस्त अमोलक इक वरताईआ। आदि निरञ्जण नूर बख्श नुरानी, जोती जाते कर रुशनाईआ। अबिनाशी करते आपणा खेल दरस्स महानी, महिमा अकथ अकथ दृढ़ाईआ। श्री भगवान लहिणा देणा तक लै ज़िमीं असमानी, दो जहानां खोज खुजाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को बख्श चरण ध्यानी, इष्ट देव इक्को इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द मेरी कर कल्याणी, कलमा कायनात समझाईआ। मैं जुग चौकड़ी खेल तकदी रही भगवानी, की भगवन आपणी कार कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द निगाह मार लै विच तत पंज, पंचम मीते ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दे अन्दर वेख लै रंज, रंजश विच ख़लक ख़ुदाईआ। पंच विकारा दिवस रैण करे जंग, मनुआ मनसा नाल लड़ाईआ। किसे भेव ना आए ब्रह्म हँ, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। सब दा ओढण सीस होया नंग, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। लख चुरासी भाग दिसे मंद, मंदभागी होई ख़लक ख़ुदाईआ। दीन दुनी दा निज नेत्र होया अन्ध, लोयण करे ना कोए रुशनाईआ। नौ दुआरे मुके कोए ना पन्ध, जगत वासना कूड़ ना कोए गंवाईआ। आत्म परमात्म गाए कोई ना छन्द, साचा ढोला ना कोए दृढ़ाईआ। किसे मिले प्रकाश ना सूर्या चन्द, नूर नुराना नूर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी तृष्ना पूर कराईआ । धरनी कहे प्रभू दीन दुनी दा वेख लै अन्तष्करन, बिन नेत्र लोचन नैणां ध्यान लगाईआ। किसे दा खुल्ल्ह्या नहीं हरन फरन, तेरा नूरी दरस कोए ना पाईआ। तेरी मंज़ल मूल ना चढ़न, दरगाह साची हक पन्ध ना कोए मुकाईआ। तूं मालक ख़ालक घाड़न घड़न, समरथ तेरी बेपरवाहीआ। मैं कलयुग कूड़ी क्रिया नाल लग्गी सड़न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। दरोही फिर गई सीस धड़न, तन वजूद अग्नी तत तत तपाईआ । किसे नूं समझ ना आवे चोटी जड़न, चेतन तेरे रंग ना कोए समाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार मूल तेरे ना वड़न, दरगाह साची सच ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द दीनां मज़्हबां मार लै झाकी, नव सत्त ध्यान लगाईआ। मानस मानव बन्दे तक लै ख़ाकी, ततव तत खोज खुजाईआ। सब दे अन्दर होई अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। अमृत मिले ना बूंद स्वांती, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। बिना पड़दयां पड़दा खोल्ह के मार लै झाकी, नव नव दा डेरा

ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द मेरी पूरन कर दे आसा, आसू तेरे चरण टिकाईआ। मैनूं तेरे उत्ते भरवासा, दूसर अवर ना कोए रखाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह शाबाशा, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। तेरी दो जहानां मण्डल रासा, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। मेरे उत्ते तेरा नूर होवे प्रकाशा, नव सत्त डगमगाईआ। तूं लहिणा देणा वेखणहारा पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां फोल फुलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरा भेव खोल्ल्या खुलासा, ख़ालस रूप गए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरीआं आसां तेरे चरण रखीआं, चरणोदक देणा जाम प्याईआ। तूं मालक ख़ालक अलख अलखीआ, अलख अगोचर तेरी वड वड्याईआ । बेशक लख चुरासी तेरीआं सख़ीआँ, आत्म धार सोभा पाईआ। तूं लहिणा देणा मुकाउणा हथ्थो हथीआ, जगत उधार ना कोए जणाईआ। मेरे मालक स्वामी सर्ब कला समर्थीआ, समरथ अकथ महिमा देणी दृढ़ाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित नठी आं, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरीआं उच्च महल अटारीआं धर्म वालीआं ढठ्ठीआं, मन्दिर साचा नज़र कोए ना आईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते उलटी गेड़ दे लठीआ, कलयुग अन्दर सतिजुग दे बदलाईआ। मैं तेरी चरण सरन इक्को एकँकार ढठ्ठीआं, बिन धूड़ी तेरी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक अगम्म अथाहीआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द तेरीआं आदि जुगादि उडीकां, बिन नेत्रां राह तकाईआ। तेरा किसे नाल नहीं शरीका, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते आउण दा अगला आपणा दस्स तरीका, कल कवण कवण वरताईआ। तेरा नूर ज़हूर तकां नीकन नीका, बेअन्त अगम्म अथाह तेरा दर्शन पाईआ। तूं मालक ख़ालक लख चुरासी जीव जीअ का, जीवां जंतां साधां सन्तां वेखणहारा थांओं थाँईंआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्ते तेरे प्यार दा रस हो गया फीका, रसना रस ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं तेरा तकदी राह, मेरे रैहबर नूर अलाहीआ । जोती जाते पुरख बिधाते बिन ततां फेरा पा, तन वजूद दी लोड़ रहे ना राईआ। सच स्वामी अन्तरजामी हो के बण मलाह, खेवट खेटा इक्को नज़री आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चप्पू नाम वाला लगा, नईया नौका बेड़ा इक्को इक वखाईआ। मेरी तेरे अगे दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मेरे स्वामी अगम्म अथाह, अमाम अमामा तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग बदलणा तेरी अदा, आदत धुर दी चली आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटा, कपट कुकर्म रहिण ना पाईआ। सतिजुग सच धर्म दे लगा, लग मातर डेरा ढाहीआ। सृष्टी दृष्टी

अन्दर रंग चढ़ा, दुरमति मैल दे धुआईआ। अमृत आत्म सरोवर इक्को गंग वहा, जल थल महीअल आपणा खेल खिलाईआ। मर्द मर्दाने हो सहा, महबूब आपणा फेरा पाईआ। मैं तेरे चरण सरन सीस रही निवा, निव निव लागां पाईआ। तूं मेरा आदि जुगादि रहनुमा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं सीस जगदीस रही झुका, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। तेरे उत्तों होवां फ़िदा, आप आपणा भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरे उत्तों दीन दयाले वड कृपाले कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म मिटा, सतिजुग सति सति धर्म धर्म उपजाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मुल्लां पुर ज़िला लुध्याणा हरचन्द सिँघ दे गृह ✪

कलयुग कहे धरनीए क्यों मैथों रही डर, डरपोक हो के प्रभ अगे वास्ता पाईआ। मैं वी चौथा जुग आया तेरे घर, घराने वालीए आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं खुशीआं नाल आपणा खोल्ह के रख दरवाज़ा दर, कुण्डी खिड़की बन्द ना कोए
१०२० कराईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को नरायण नर, जिस ने तैनूं दिती वड्याईआ। उह स्वामी अन्तरजामी मेरे सिर ते हथ्थ १०२०
२४ रिहा धर, धरनीए मेरी पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। हुण उस साहिब दे हुक्म दा भाणा जर, क्यों तेरा ज़र्रा ज़र्रा रिहा कुरलाईआ। २४
तूं मेरे हुक्म दी वेख लै शरअ शर, की शरीअत दिती वखाईआ। मैं प्यार विच इक्वा रहिण दिता नहीं नारी नर, गुरु चेला मुर्शद मुरीद प्रीत ना कोए कमाईआ । पवित्र रहिण दिता नहीं कोई जल, सर सरोवरां रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा संग निभाईआ। कलयुग कहे धरनीए क्यों प्रभ दे अगे करें पुकार, कूक कूक सुणाईआ। क्यों रोवें ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वखाईआ। क्यों निमाणी हो के धरनीए धूड़ी लावें छार, टिक्के ख़ाक रमाईआ। मैं वी उसे दा तेरे उत्ते बणया सिक्दार, आपणा हुक्म मनाईआ। मेरा लेखा नाल पैग़म्बर गुर अवतार, सच दे नाल मेरी वड्याईआ। मैं तेरे उत्ते आ के कूड़ दा कीता प्रचार, प्राचीन दा लेखा दिता मुकाईआ। तूं कमलीए मेरे उत्तों जा बलिहार, जिस मानस ज़ाती दिती भुलाईआ। हिरदे वस्या रहिण दिता नहीं किसे निरँकार, परवरदिगार सीस ना कोए झुकाईआ। कूड़ी माया विच फसा के संसार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच कीता हल्काईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हर घट अन्दर वध्या हँकार, निम्रता अन्दरों दिती चुकाईआ। जिधर वेखें उधर धुआँधार, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। मैं वी प्रभू दा लाडला बच्चा कलयुग बरखुरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। कलयुग कहे धरनीए क्यों प्रभू दे अगे पावें वास्ता, रो रो दएं दुहाईआ । मेरा समां आया आहिस्ता आहिस्ता, सतिजुग त्रेता द्वापर तेरे उत्ते गए फेरीआं पाईआ। वेख लै आ के मैं अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे धर्म दा बदल दिता रास्ता, साचे मार्ग चलण कोए ना पाईआ। मानस मानव मानुख वणजारा कीता पशूआं पंछीआं मास दा, अमृत रस रसना लगे किसे ना राईआ। अन्दर भरोसा रहिण नही दिता किसे विश्वाश दा, विषयां विच कीती ख़लक खुदाईआ। नूर ज़हूर दिसे ना कोए प्रकाश दा, चारो कुण्ट अन्ध अन्धेरा छाईआ। धरनी हुण तेरा वेला मैनूं कहिण शाबाश दा, शाबा कहि के मैनूं दे वड्याईआ। मैं तेरे उत्ते अजे खेल कराउणा मानस मानस वाली लाश दा, लशकर जगत जहान रहिण कोए ना पाईआ। मैं प्रभू दा भगत कोई रहिण नहीं देणा स्वास स्वास दा, साह साह सके ना कोए ध्याईआ। तेरा घर बणाउणा भरवास दा, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। कुछ लेखा तक लै जो इशारा भाई गुरदास दा, वीह इकीह की दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कलयुग कहे धरनीए क्यों प्रभ दे अगे कढें हाढ़ा, हाए उफ़ कर कुरलाईआ। नी मैं तेरे उत्ते कूड़ कर्म

१०२१ दा लाया अखाड़ा, तूं वेखणा चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी पंज विकार बणाई धाड़ा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। अग्नी १०२१

२४ तत लगाई हाढ़ा, जगत जहान रही जलाईआ। प्रभू दा प्यार किसे उत्ते रहिण नहीं दिता गाड़ा, साचे रंग ना कोए रंगाईआ। २४

मैं हँकार विकार विभचार भरया नाड़ी नाड़ा, रोम रोम विच दिता टिकाईआ । सति धर्म नूं मैं चबा दयां आपणीआं थल्ले दाढ़ां, धरनीए तेरे उत्ते नज़र कोए ना आईआ। मैं जूठ झूठ दा बण के सोहणा लाड़ा, कूड़ कूड़यार ममता मोह विकार ल्या परनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। कलयुग कहे धरनीए तूं मेरी पिठ ते मार दे थापी, थपक थपक मैनूं दे वड्याईआ। मैं तेरे उत्ते प्रभू दे प्यार दा रहिण दिता नहीं कोई जापी, बिन रसना जिह्वा अजपा जाप ना कोए जपाईआ। सति सच दा रहिण दिता नहीं कोई प्रतापी, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट जिधर वेखें सारी सृष्टी दिसे पापी, पतित पुनीत रहिण कोए ना पाईआ। चारे कुण्ट तक लै मेरी ज़ाती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा वेख लै दीन मज़्हब ज़ात पाती, मानव मानव रहे कुरलाईआ। अमृत वेला पवित्र रिहा ना कोई रही प्रभाती, सँध्या रंग ना कोए रंगाईआ। नी धरनीए मेरा मालक इक्को कमलापाती, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। आह वेख लै उस दे हुक्म दी मेरे कोल बिन अक्खरां वाली चिट्ठी पाती, जिस नूं जगत विद्या समझ सके ना राईआ। उह लिखी नहीं नाल किसे कलम दवाती, काग़ज़ वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा खेल तेरे उत्ते होणा लोकमाती,

मातृ भूमीए दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान खेले खेल इक इकांती, इक इकल्ला जगत महला जलां थलां वेखणहारा थांउ थाँईंआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मोही ज़िला लुध्याणा पाखर सिँघ दे गृह ✪

कलयुग कहे धरनीए मेरी कूड़ दी तक लै शाही, शहिनशाह पुरख अकाल मैनूं दिती वड्याईआ। मैनूं खुशीआं नाल दे वधाई, प्रेम प्रेम नाल दृढ़ाईआ। मैं तेरे उत्ते खेल कीती अगम्म अथाही, जो सतिजुग त्रेता द्वापर कर सक्या मूल ना राईआ। मैं हर हिरदे अन्दरों प्यार कढया धुर दे माही, मुहब्बत विच रहिण कोए ना पाईआ। जगत पंथ दा प्यार अन्दरों कढया धुर दे माही, मुहब्बत विच रहिण कोए ना पाईआ। हर हिरदे अन्दर कूड़ कूड़यार दी अग्नी लाई, सति धर्म दिता जलाईआ। मनुआ दहि दिश उठ उठ भज्जे वाहो दाही, रोक सके कोए ना राईआ। माया ममता कीती हल्काई, मोह विच

१०२२ ख़लक खुदाईआ। मेरा हुक्म वरत्या थल अस्गाही, टिल्ले पर्वत सीस निवाईआ। कोई सहारा धर्म देवे ना फड़ के बांही, १०२२

२४ बाहू बल ना कोए जणाईआ । मेरे अन्दर चाउ घनेरा गोबिन्द दा लँघ गया ढईआ ढाई, रोकण वाला नज़र कोए ना आईआ। २४

मैं नव सत्त फिरां चाँईं चाँईं, भज्जां वाहो दाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला सिर मेरे हथ्थ रिहा टिकाई, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। मैं मानव ज़ाती अन्तर निरंतर दिती भुलाई, बुद्धी बिबेक ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। कलयुग कहे धरनीए क्यों नेत्र वहाए नीर, रो रो प्रभ नूं रही वखाईआ। आपणे अन्तर धर लै धीर, धीरज नाल दिता दृड़ाईआ। मैं चौथा जुग जलां थलां दा तेरा पीर, पीरां दे पीर मैनूं दिती वड्याईआ। मेरा खेल वेखीं अखीर, आख़र तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जिस नव खण्ड दीन दुनी शरअ दे पाए ज़ंजीर, संगल सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। कलयुग कहे धरनीए क्यों अन्तष्करन मारें आह, हौकयां विच रहीं कुरलाईआ। उह तक लै खेल बेपरवाह, परम पुरख की जणाईआ। जिस ने मैनूं कूड़ कुकर्म दा बणाया शाह, वस्त अनमोल अतुल वरताईआ। मैं फिरां थाँ थाँ, नवखण्ड बचया रहिण कोए ना पाईआ। जे मैं कलयुग ना हुंदा किथ्थों सृष्टी खांदी सूर ते गाँ, पशूआं खल्ल कौण लुहाईआ। कौण भुलाउँदा प्रभू दा नाँ, नाउँ निरँकारा याद किसे ना आईआ। कौण हँस बुद्धी बणाउंदा काँ,

काग वांग सर्ब कुरलाईआ। तूं खुशी नाल मैनूं कहि दे वाह वाह, वाहवा वाहवा कलयुग तेरी वड वड्याईआ। जिस दरोही फेरी थल अस्गाह, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। प्यार रहिण दिता नहीं पुत्तर माँ, पिता पूत कोलों कत्ल कराईआ। पवित्र रहिण दिता नहीं कोई थाँ, गुरुदुआरे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ रोवण मारन धाहीआ। मैनूं खुशीआं नाल धरनीए चढ़दा चाअ, चाउ घनेरा इक समझाईआ। जिस कारन मैं तेरे उत्ते गया आ, आया आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा परम पुरख परमात्म होए सहा, सहायता करे थांउ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे धरनीए तूं मेरा कर शुकर, शुक्रिए शुकराने विच खुशी मनाईआ। मैं आपणे वायदे उत्तों नहीं जाणा मुकर, जो इकरारनामा लिख्या धुर दे माहीआ। मैं वेखणीआं चारे कूटां उत्तर, पूरब पश्चिम दक्खण बचया रहिण कोए ना पाईआ। मैं परम पुरख दा लाडला चौथा पुत्तर, जिसनूं जन्मे कोए ना माईआ। मैं दीन दुनी नूं रज्ज के खाण नहीं देणा टुकर, टुकड़े मंगदी फिरे लोकाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम सारे होणे भुखड़, हाए उफ़ करके देण दुहाईआ। किसे दा पवित्र रहिण नहीं देणा मुखड़, रसना जिह्वा ढोले कोए ना गाईआ । जनणी सुफल रख सके कोए ना कुखड़,
१०२३ भगत जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। १०२३
२४ कलयुग कहे धरनीए मैं आया तेरे उत्ते, खुशीआं फेरा पाईआ । जगत जहान जीव मेरी नींदे सुते, जगत सुत्तयां ना कोए उठाईआ। २४
माया ममता विच विगुत्ते, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। दीन दयाल नालों सारे रुस्से, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। मैं कूड़ विकार भरया सब दे जुस्से, जिस्म ज़मीर दिती बदलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बात किसे ना पुछे, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। कलयुग कहे धरनीए मैनूं प्रभ ने दिती दात, दाते दानी दिती वरताईआ। मैं लै के आया लोकमात, भज्जया वाहो दाहीआ। तूं कमलीए मेरे वल झाक, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरा खेल तक तमाश, की खेलां खेल थांओं थाँईंआ। मेरा हुक्म वरते विच पृथ्मी आकाश, धवले तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मैं तेरे उत्ते खुशी दी पैण दिती नहीं कोई रास, ढोले सच कोए ना गाईआ। सति धर्म नूं कीता नास, नास्तक रूप कीती लोकाईआ । अमृत दी थाँ मुखां विच पा के गऊ दा मास, कूड़ कुड़यार कीती दीन दुनी हल्काईआ। मैनूं प्यार नाल दे शाबाश, जिस पिछली रीती सब दी दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेरी पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड ढहि पई ज़िला लुध्याणा धन्ना सिंघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए मैं धुरदरगाहों आया नट्ठा, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पतालां गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। मैनूं विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा देवत सुर सारे करन ठट्ठा, गण गधंरब हासीआं रहे उडाईआ । नारदा की कलयुग वेखण चलया कलयुग कूड़ी क्रिया तपदा भट्ठा, नव सत्त अग्नी रिहा जलाईआ। पहलों निगाह मारीं अठ्ठ सठ्ठा, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती वेख वखाईआ। फेर वेखीं मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठा, गुरुदुआरे चर्चा ध्यान लगाईआ। फेर तक लईं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्ठ्ठा, बिन नेत्र लोचन नैण उठाईआ। नारद कहे मैं रस्ते विच अनेक वारी ढठ्ठा, फेर उठ उठ भज्जया वाहो दाहीआ। जां दूर दुराडी निगाह मारी मानव ज़ाती अन्दर दिस्या रट्टा, झगड़े विच दिसी ख़लक खुदाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर ज़ीरो नाल ज़ीरो हो गई बटा, अंक नज़र कोए ना आईआ। मैं शब्द संदेशा फेर सुणया सतिगुर शब्द फेर सुणाया टप्पा, टापूआं बाहर दिता दृढ़ाईआ। कलयुग सब दे उत्ते पाया छप्पा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जो संदेशा दे के आया सतिगुर नानक तपा, तपीशर मुनीशर ऋषीशर सारे गए भुलाईआ। जो गोबिन्द डंक वजाया फ़तह, तन वजूदां उत्ते गुरमुख फ़तिह कोए ना पाईआ। दीन दुनी अन्दरों हो गई मन मता, गुरमति रंग ना कोए रंगाईआ। धर्म धार दी रही कोई ना सता, सति विच ना कोए समाईआ। दीन मज़्ह्ब दा लेखा वेख्या तता, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे नारदा जे तूं पुरीआं लोआं लँघया, पिछला पन्ध मुकाईआ। क्यों मेरे कोलों संगया, नज़र रिहा बदलाईआ। झट नारद मार के आपणे कंध्या, हलूणा दिता वखाईआ। धरनीए मैं हैरान हो गया तेरे उत्ते तक के झूठा धंदिआ, धवले की तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मानस मानव मानुख अन्दरों हो गया अंध्या, निज नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। बजर कपाटी तोड़े कोए ना जंदिआ, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। अमृत धार मिले किसे ना ठण्डया, बूंद स्वांती नाभी कवल ना कोए उलटाईआ। आत्म परमात्म नाता किसे ना गंढया, पारब्रह्म ब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। जिधर वेख्या कलयुग कूड़ कुड़यार दा चमके खंडया, नव सत्त पृथ्मी रिहा वखाईआ। धर्म दी धार ना कोई पौड़ी ना कोई डंडया, डण्डावत प्रभ दी सारे गए भुलाईआ। मैं तेरा अन्त अख़ीर वेख के आया कंढया, सत्तां दीपां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे धरनीए मैं धुरदरगाहों आया, सतिगुर शब्द दिती वड्याईआ। धौले तेरे उत्ते फेरा पाया, धर्म दी धर्म धार नाल जणाईआ। खेल तक्कया सृष्ट सबाया, दृष्टी अन्दरों वेख वखाईआ। नव

सत्त अन्धेरा छाया, चार कुण्ट ना कोए रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखी माया, ममता मोह विच सर्ब हल्काईआ। जिस ने दीन धर्म तों अन्त सब नूं गिराया, कायम नज़र कोए ना आईआ। मानस हो के कलयुग विच सूर गाँ मानसां खाया, पशूआं ढोरां खल्ल लुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणा ठाकर भुलाया, भरमे भुल्ली कूड़ लोकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए मेरे अन्दर आई हैरानी, हैरत विच दयां जणाईआ। मैं सृष्टी वेखी जिस्म जिस्मानी, ततव तत खोज खुजाईआ । मैं भेव रख्या नहीं कोई मर्द नार ज़नानी, बाल बृद्ध वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वेखे तन शरीर करन वाले इश्नानी, पूजा तकी थांओं थाँईंआ। मैं हैरान हो गया सारे प्रभ दे नाल करदे बेईमानी, बेवा होई ख़लक खुदाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रूह बुत मिल के वजे ना कोए वधाईआ। अमृत रस मिले ना किसे ठंडा पाणी, आबेहयात ना कोए प्याईआ। धर्म दी धार होई बदनामी, कलयुग कूड़ कुड़यारा नच्चे टप्पे थांओं थाँईंआ। झगड़ा वेख्या जगत खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे नारदा
 तूं आया धुर हल्कारा, पाती धर्म धार लिआईआ। तैनूं भेजणवाला इक निरँकारा, निरवैर पुरख नूर अलाहीआ। जिस दी
 धार विच तेई अवतारा, पैग़म्बर गुर रूप दरसाईआ। जिस दा नाम कलमा उज्यारा, चार जुग दा खेल खिलाईआ। जिस
दा संदेशा हुक्म लिखारा, निरअक्खर धार अक्खरां विच प्रगटाईआ। तूं संदेशा लै के आयों सब तों बाहरा, बहिरहाल देणा जणाईआ। की खेल कुदरत दा कादर इक करतारा, करनहार की हुक्म वरताईआ। झट नारद रो प्या ज़ारो ज़ारा, बिन नेत्रां नीर वहाईआ। धरनीए मैं की दस्सां की हुक्म वरते मेरा परवादिगारा, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो वायदा कौल कीता इकरारा, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। उह कलि कल्की लए अवतारा, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। अमाम अमामा होए ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं सब ने मन्नणा चवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। उह नौ खण्ड पृथमी तेरे उत्ते पावे सारा, सत्तां दीपां वेखे चाँईं चाँईंआ। सतिगुर शब्द इक्को करे ज़ाहरा, हुक्म संदेशा इक दृढ़ाईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया कढ्ढे बाहरा, धरनीए तेरे उत्तों लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग सति धर्म दए अधारा, सिर आपणा हथ्थ दए टिकाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों आपणा बदल देवे शब्द धार दा नाअरा, नर नरायण इक हुक्म वरताईआ। तूं उस दे चरण कवल करीं निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदा कर के सीस झुकाईआ। धूड़ी मस्तक चरण लाईं छारा, मिट्टी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। उस दा रूप अनूप होणा सब तों न्यारा, नर हरि आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। धरनी कहे नारदा मैं लख लख शुकर गुज़ारां, गुज़ारिश विच सीस निवाईआ। जो मेरा पन्ध मेरे कलयुग बरस हज़ारां, कूड़ी क्रिया दूर कराईआ। मैं ज़रूर मन्नां उस नूं कलि कल्की अवतारा, चौबीसा जगदीसा कहि के सीस निवाईआ। उहदा धर्म दा जैकारा, जो हर हिरदे दए वसाईआ। उस दा धर्म निशाना वेखां विच संसारा, जिस नूं संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। जिस दा हुक्म मन्नण पैग़म्बर गुर अवतारा, भगत सुहेले खुशीआं खुशीआं ढोले गाईआ। उह मेरा महबूब जल्वागर नूर करे उज्यारा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जिस दा कलमा वाहिद ज़मीउल कुज़ा ज़मने ज़ऊ शरफ़े ज़ुआ ज़ामिस्ते ज़नू दुवज्ज़ा मवी कुल जम्बाए शऊ शबे रोज़ नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस दा हुक्म चले सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ ।

१०२६ १०२६

२४ २४

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड महिमा सिँघ वाला ज़िला लुध्याणा हरी सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए मैं तेरा वेख्या दीप लखण, अलख अलखणे मैनूं दिती वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों वेखी सक्खण, सति सच धर्म दी धार विच ना कोए समाईआ। मानव ज़ाती पैज आवे कोई ना रखण, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मन कल्पणा विच जीव जहान सारे नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। कूड़ कुड़यार कथा कहाणी सारे दस्सण, सति धर्म ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग सब नूं करी जाणा मथण, छाछ विरोले थांओं थाँईंआ। किसे दा चले कोई ना यतन, यथार्थ समझ किसे ना आईआ। पवित्र घाट रिहा कोई ना पतण, पत्रका लै के तैनूं दयां फड़ाईआ। धर्म दा रिहा कोई ना हट्टण, वणजारा वणज ना कोए कराईआ। मन मनुआ फिरे नट्टण, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। सब दा खेड़ा होया भठ्ठण, साढे तिन्न हथ्थ कलयुग कूड़ी क्रिया दिता जलाईआ। औह वेख लै हँकारी बुरज अन्त लग्गा ढठ्ठण, ढहि ढेरी ख़ाक बणाईआ। सतिगुर शब्द तीर अणयाला लग्गा कसण, बिन चिल्ले तीर कमान चलाईआ। जो रैण अन्धेरी मेटे मस्सण, नूरी चन्द चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे धरनीए मैं तेरे गया दीप विच करौच, कुरह कायनात फोल फुलाईआ। जिथ्थे सचखण्ड दुआरे सके कोई ना पहुंच, दरगाह साची मुकामे हक चढ़न कोए ना पाईआ। सति धर्म दी सब दे अन्दरों गई सोच, समझ बुद्धी नाल चले ना कोए

चतुराईआ। परम पुरख परमात्म मिले ना किसे ख़सम ख़समाना खौंत, परवरदिगार सांझा यार नूर अलाही मिलण कोए ना पाईआ। नाम कलम्यां तकी अदौत, अदावत विच ख़लक खुदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पंच विकारे वाले चलाई रौंस, रीती दीन दुनी रही अपनाईआ। नाले डरावे दे के धौंस, धौंसा जूठ झूठ वजाईआ। मैं सब दा वड्डा पीर वली गौंस, दस्तगीर इक अख्वाईआ। मेरी हद्द हदूद इक्की सौ कोस कोस, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। किसे नूं आउण ना देवे होश, हुशियारी चले ना कोए चतुराईआ। विद्या वड्याई रहिण दिती नहीं किसे कोश, जो कुशल्लया बेटा राम गया दृढ़ाईआ। माया ममता नाल दीन दुनी कीती मधहोश, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। पवित्र रहिण दिता नहीं कोई काया पोश, ततव तत रंग ना कोए चढ़ाईआ। उस प्रभू दे उत्ते काहदा किसे दा रोस, जो जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । नारद कहे धरनीए मैं पुष्कर दीप मारया फेरा, बिन लत्तां बाहवां भज्जया वाहो दाहीआ। जिधर वेख्या चारो कुण्ट अन्धेरा, अन्ध आत्म पड़दा कोए ना लाहीआ। माया ममता मोह विकारे सब नूं पाया घेरा, घेरे विच ख़लक खुदाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला किसे तन वजूद दिसे ना
१०२७ नेरा, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। प्यार रिहा ना किसे गुरु गुर चेरा, चेला गुरु संग ना कोए बणाईआ। आप मैं वेखदा १०२७
२४ रिहा चार कुण्ट बथेरा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मैं जिधर तक्कया कलयुग कूड़ कुड़यार ने लाया डेरा, डेरे दयोहरे २४
ख़ाली नज़री आईआ। दीनां मज़्बां पाया झेड़ा, झेड़े विच ख़लक खुदाईआ। मैनूं इउं दिसदा सब दा रुढ़दा जांदा बेड़ा, बिन पुरख अकाले बन्ने कोए ना लाईआ। तेरा नौ खण्ड पृथ्मी उजड़न वाला खेड़ा, ख़बरदार तैनूं दयां कराईआ। तेरे उत्ते सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर आपणा देणा गेड़ा, नव सत्त सत्त नव उलटी लठ गिढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । नारद कहे धरनीए मैं जम्बू दीप तक्कया आप, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिथ्थे इक्को प्रभू परमात्म मिले धुर दा बाप, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जिस दा इक्को धर्म धार दा होवे जाप, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ । त्रैगुण तेरा मेटे ताप, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। आह लै मेरे कोल जिस दी चिठ्ठी पत्रिका पात, बिन हरफ़ हरूफ़ लिखाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल कायनात, दीन दुनी आपणा हुक्म वरताईआ। तूं इक वार निगाह मार लै झात, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाईआ। उह तेरे उत्तों मेटणहारा अन्धेरी रात, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। जिस दी दीन मज़्ब वरन बरन नव सत्त होणी इक जमात, दूसरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ। नारद कहे धरनीए

मैं पहुँचया दीप सान, सहिज नाल ध्यान लगाईआ। मानस मानव मानुख प्रभ नूं भुल गया इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। इष्ट रिहा ना गोपी काहन, सीआ राम ना कोए चतुराईआ। अल्ला हू नाअरा करे ना कोई परवान, गॉड गुड्ड कहि के सीस ना कोए निवाईआ। सति नाम हर हिरदे दिसे ना कोए प्रधान, फ़तिह फ़ातिहा वाला डंका वजदा नज़र किसे ना आईआ। मैं वेख वेख लग्गा पछताण, की खेल बणया विच ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मैं भज्जया गया दीप सलमल, सुल्हकुल दिती वड्याईआ। मैं वेखे महीअल जल थल, समुंद सागर टिल्ले पर्वत फोल फुलाईआ। मैनूं दुआरा नज़र आ गया राजा बलि, बलख कहि के जिस नूं सारे गाईआ। जिथ्थे धर्म नाल हो गया कपट छल, कलमा बैठा आपणा रूप बदलाईआ। खेल तक्कया कलयुग कल, की कलकाती कार कमाईआ। मैनूं याद आ गई सतिगुर नानक वाली इक गल्ल, जिस दी अज तक समझ किसे ना आईआ। जां मैं निगाह मारी प्रभ दे हुक्म विच दो जहान रहे हल, ज़िमीं असमान भज्जण वाहो दाहीआ। फेर शब्द संदेशा सतिगुर शब्द ने दिता घल, अणसुणत आप दृढ़ाईआ। फल रिहा नहीं किसे पत्त टहणी डल, बिरख सच रंग ना कोए रंगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब नाल कीता छल, अछल अछल्ल हो के खेल खिलाईआ।
१०२८
२४
जिस दा बावन दस्स गया हल्ल, हालत वेख दीन दुनी दृढ़ाईआ। उस दा भाणा कदे ना जावे टल, अटल आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे धरनीए मैं दीप पुज्जा कुशा, कुछ कहिण दी लोड़ रही ना राईआ। ना उथे दाढ़ी दिसी ते ना दिसीआं मुच्छां, मुशकिल मेरे वास्ते आईआ। मैं किस नूं प्रभ दा भेद पुछां, पड़दा सके कौण खुलाईआ। बाहरों चिट्टा ते अन्दरों कूड़ कुड़यार दा जुस्सा, जिस्म ज़मीर सारे गए बदलाईआ। सच प्यार हर हिरदे अंरदों खुस्सा, वस्त सच नज़र कोए ना आईआ। मैनूं इउं दिसदा जगत मानव प्रभ दे नालों रुस्सा, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। मैनूं फेर चढ़ गया गुस्सा, आप आपणा बल प्रगटाईआ। मैं दोवें मीट के आपणीआं मुठां, ज़ोर नाल दबाईआ। मेरे प्रभू जे मेरे उत्ते तुठा, मेहर नज़र इक उठाईआ। मैं चाहुंदा पहलां जे कलयुग बदलणा ते बदलणा एसे गुड्डा, जिथ्थे तेरा प्यार तेरे विच विच ना कोए रखाईआ। झट सतिगुर शब्द मैनूं हलूणा दिता बिना बाहवां गुट्टा, सहिज नाल सुणाईआ। नारदा औह वेख कलयुग जगत डोरी नालों टुट्टा, टुट्टयां गंढु ना कोए पुआईआ। कूड़ कुड़यारा जावे पुट्टा, पटनेवाला देवे जड़ उखड़ाईआ। जिस नूं पुरख अकाल बणाया आपणा सुता, सुत अपराधां अपराधीआं करे सफ़ाईआ। उहदे नाल अबिनाशी अचुता, चितवित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जो

धरनी उत्ते कलयुग दी धार बदल के लाए सतिजुगा, जुग चौकड़ी दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा भेव जाणे कोई ना गुज्झा, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ।

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड गुज़रवाल ज़िला लुध्याणा बलवन्त सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए मैं धुर दा अगम्मा डाकीआ, बिन तन वजूद हक महबूब मैनूं दिती वड्याईआ। मैं दो जहानां पन्ध मुकाया चढ़ के शब्द अगम्मी राकीआ, जगत तन वजूद संग ना कोए रखाईआ। मेरे कोल आदि जुगादि दीआं पुराणीआं कापीआं, जो अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दितीआं फड़ाईआ। मेरी पिठ ते मारीआं थापीआं, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। अन्दर वड़ के वेख लै वातीआ, बिन नैणां नैण तकाईआ। डूंघे तक लै खातीआ, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। तूं फेरा पाउणा विच लोकमातीआ, मातृ भूमी ध्यान लगाईआ। क्यों सब दे हुंदयां होईआं अन्धेरीआं रातीआं, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों झगड़ा प्या ज़ात पातीआं, नाम कलमा सारे गए भुलाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा किस बिध मारे कातीआ, तीर अणयाला रिहा चलाईआ। जीवां जंतां साधा सन्तां विंन्ी जाए छातीआं, छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। साची मंज़ल सब नूं भुल्ली घाटीआ, सच दुआर चढ़न कोए ना पाईआ। आत्म सेजा वेख लै खाटीआ, तन वजूदां अन्दर ध्यान लगाईआ। क्यों सब दीआं तन वजूद कफ़नीआं पाटीआं, पटनेवाला की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे नारद लै के जा धुर संदेश, जिस दा अक्खर समझ किसे ना आईआ। हुक्म देवे नर नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, हमसाजण इक अख्वाईआ। जिस दा संदेशा दे के गया गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। उह किस बिध वसे सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। कवण धार मेटे कलयुग कलेश, कल कातीआं करे सफ़ाईआ । जिस नूं झुकणे विष्न ब्रह्मा शिव गनेश, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मैं धर्म दी धार कदम चुक्कया, बिन कदमां कदम टिकाईआ। मेरा इरादा कीता पक्कया, मुहम्मद सहिज नाल समझाईआ। मेरी सदी चौधवीं अन्त वेख लै मेरा कलमा कायनात थक्कया, थकावट विच ख़लक खुदाईआ। फिरी दरोही मदीना मक्कया, काअबे कूक कूक जणाईआ । बिन परवरदिगार सांझे यार पड़दा किसे ना ढकया, जिस दा ऐहनलहक

नाअरा लाईआ। जो मूसा धार बणया सक्या, कोहतूर रंग रंगाईआ। जिस हज़रत ईसा गल सलीब पाई पटया, फाँसी जगत वाली लटकाईआ। नारद खिड़ खिड़ा के हस्सया, बिन रसना ढोले गाईआ। सतिगुर शब्द उठ वेख लै होई अन्धेरी मस्सया, जिस नानक सतिगुर धार दिती बदलाईआ। जिस दे हुक्म विच गुर अर्जन अग्नी लोह तप्या, आप आपणा भेंट कराईआ। जिस दी धार विच गुर तेग़ बहादर सीस कटया, कटाकश धुर दा नाम लगाईआ। जिस दे हुक्म विच नीहां हेठ दब्या बच्चयां, बाले आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा खेल सदा समरथया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो माछूवाड़े कलयुग नाल होया इकट्ठया, धरनी धरत धवल धौल नाल मिलाईआ। मेरे ढईए तों बाद दीन दुनी होणी ज़ीरो नाल बटया, बाकी नज़र कोए ना आईआ। उम्मत दा लेखा जाणा कटया, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। नारद कहे मैं सच ख़बरां सुण के नट्ठया, भज्जया वाहो दाहीआ। धर्म दा बुरज मनारा वेख लै ढट्ठया, चोटी जड़ समझ कोए ना पाईआ। जिधर तकां कलयुग कूड़ कुड़यार पाया रट्टया, रट्टा सके ना कोए मुकाईआ। बिन भगतां लाहा किसे ना खट्टया, खटके विच कूड़ लोकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सतिगुर शब्द भेजे तन वजूदां वटया, जोती जाता आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा प्रकाश होवे लट लटया, निरगुण धार डगमगाईआ। मैं उस उत्ते आपणी आशा इक्को वार सिटया, जो सिट्टेबाज़ी वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर गया नट्ठया, कलयुग अन्तिम धरनी धरत धवल धौल ज़िमीं असमान रहिण कोए ना पाईआ।

१०३० २४

✪ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा मंगल सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए प्रभ करे खेल अवल्ला, आदि जुगादि धुरदरगाहीआ। जो वेखणहारा तेरा नव सत्त इक महल्ला, पड़दा पड़दयां विच्चों चुकाईआ। पावे सार जला थला, महीअल खोज खुजाईआ। जो आत्म परमात्म रूप सब दे अन्दर रला, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उस अगम्मड़े इक हुक्म संदेसा घल्ला, बिन अक्खरां दिता लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । नारद कहे धरनीए प्रभ दा सुण फ़रमाना, जगत फ़ुरनयां बाहर जणाईआ। की खेले खेल विच जहाना, दो जहानां मालक धुरदरगाहीआ। जिस दा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गाया तराना, तुरीआ तों बाहर दृढ़ाईआ। उस दा खेल ख़ालक मख़लूक दी धार होए महाना, महिमा अकथ कथ

समझाईआ। उह खेल करे ज़िमीं असमानां, ज़िमीं ज़मा ध्यान लगाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां कीता सलामा, सजदयां विच सीस निवाईआ। जिस दा शब्दी डंक वज्जा दमामा, दो जहान शनवाईआ। उह निरगुण धार पहर के जामा, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। जिस दा इशारा दे के गया सीआ नूं रामा, रघुपति हो के गया समझाईआ। जिस दा भेव खुल्हाया कृष्णा कान्हा, घनईया सईआ हो के बूझ बुझाईआ। जिस दा सतिगुर नानक गाया सतिनामा, नाम निधाना इक जणाईआ । उह शाहो भूप सुल्ताना, निरवैर पुरख इक अख्वाईआ। जिस तेरे उत्तों दीन दुनी बदल देणा ज़माना, ज़िमीं ज़मां दो जहान वेख वखाईआ। तूं उस दा खुशीआं नाल गाईं गाणा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए प्रभ संदेशा दिता अगम्म, जगत विद्या समझ किसे ना आईआ। जिस दा भेव पा सके कोई ना ब्रह्म, ब्रह्मवेता धार ना कोए दृढ़ाईआ। जिस विच दीन दुनी दा नहीं कोई कर्म, कर्म कांड ना कोए जणाईआ । जिस विच शरअ नहीं कोए धर्म, मज़्हबी वंड ना कोए वंडाईआ। लेखा नहीं कोई वरन बरन, ज़ात पात ना कोए समझाईआ। उह मालक ख़ालक करनी करन, करता पुरख
१०३१ नूर अलाहीआ। जिस दी सरन सरनाई सारे परन, निव निव लागण पाईआ। जिस दी मंज़ल सूफ़ी सन्त फ़कीर चढ़न, १०३१
२४ भगत भगवान मिल के वजे वधाईआ । उह तेरा फड़न वाला लड़न, पल्लू आपणी गंढु रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २४
आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल धुर शब्द दीआं तहरीरां, जगत विद्या अक्खरां बाहर जणाईआ। जिस दा लहिणा देणा तन वजूद नाल शरीरां, माटी ख़ाक वेख वखाईआ । उहदा खेल होणा नाल ग़रीब अमीरां, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने सब दीआं अन्दरों बदल देणीआं ज़मीरां, ज़िमीं ज़मां वेखे चाँईं चाँईंआ। लहिणा देणा तके जल थल महीअल नीरां, टिल्ले पर्वतां खोज खुजाईआ। उह तेरे उत्ते घत्त के आए वहीरां, वाहिद मालक धुरदरगाहीआ। कलयुग क्रिया कूड़ कटे ज़ंजीरां, शरअ छुरी रहे ना कोए कसाईआ। उह मालक ख़ालक बणे पीरां दा पीरा, पीरन पीर इक अख्वाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा दस्तगीरा, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। जो नूर अलाही बेनज़ीरा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पड़दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए हुक्म सुण श्री भगवान, भगवन की दृढ़ाईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि विच जहान, दीन दुनी वेख वखाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर खेलया खेल महान, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। उह योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी आपणा आप अख्वाईआ। उह अन्त धरनीए तेरे उत्ते आए धर्म

दे विच मैदान, शरअ दी वंड ना कोए वंडाईआ। इस नूं झुकणे ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक निव निव लागण पाईआ। जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव करन कल्याण, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला तेरे उत्ते होए प्रधान, प्रधानगी आपणी इक वखाईआ। कूड़ कुड़यार विकार दा तेरे उत्ते बदल दए विधान, सति धर्म सच दए प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे शैतान, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। मानस ज़ाती इक्को रंग रंगे इन्सान, इन्सानीअत सब दे अन्दर टिकाईआ। धुन शब्द सुणाए बिना कान, अनहद नादी धुन उपजाईआ। दीपक जोती जोत जगे महान, बिन तेल बाती डगमगाईआ। तूं वेखणा खेल उस नौजवान, जो जोबनवन्ता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए की खेल करे मेरा भगवन्त, भगवन की वड्याईआ। जो मालक ख़ालक लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। नी जिस तेरी आदि जुगादि बणाई बणत, अन्त वेखे चाँईं चाँईंआ। तेरी ख़िज़ां दी रुत बदल देवे ते आए बहार बसन्त, पत्त टहणी फल फुल्ल आप महकाईआ। उह स्वामी ठाकर धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को नाम फ़ुरना
१०३२ मंत, मंतव तेरा हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साचा रंग १०३२
२४ रंगाईआ। नारद कहे धरनीए सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। जोती जाता वेस वटावेगा। पुरख बिधाता इक्को आवेगा। २४
कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़े नाता, सतिजुग सच चन्द चमकावेगा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथा, सोहँ शब्द सच पढ़ावेगा। खेल खेले पुरख समराथा, समरथ पुरख आप हो जावेगा। होए सहाई नाथ अनाथा, ग़रीब निमाणयां गोद उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप चुकावेगा। सच पड़दा आप चुकाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जोती जाता डगमगाएगा। निरवैर निराकार वेस वटाएगा। साकार आपणे रंग रंगाएगा। शब्द नाद इक दृढ़ाएगा। अमृत जाम आप प्याएगा। नूरी नूर जोत जोत रुशनाएगा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर आप वडयाएगा। नव दुआरे डेरा ढाएगा। जगत वासना बाहर कढाएगा। सुरती शब्द शब्द मिलाएगा। नाभी कवल कवल उलटाएगा। बजर कपाटी खोल्ह खुल्हाएगा। ईड़ा पिंगल सुखमन पन्ध मुकाएगा। सच दुआरा इक सुहाएगा। आत्म परमात्म मेल मिलाएगा। आपणा महातम इक समझाएगा। कलयुग मेटे अन्धेरी रातन, रुतड़ी सतिजुग नाल महकाएगा। आपणा भेव खुल्हा के बातन, पड़दा पड़दयां विच्चों उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताएगा । साचा हुक्म इक वरतावेगा। सतिगुर शब्द शब्द प्रगटावेगा। धर्म दी धार मार्ग अगम्म वखावेगा। जोती

जाता हो के खेल खिलावेगा। पुरख बिधाता हो के वेख वखावेगा। तेरी कलयुग क्रिया कूड़ रेख मिटावेगा। साची बख्श के चरण धूड़, टिक्के मस्तक नाम रमावेगा। सच स्वामी धर के आपणा भेख, कलयुग कूड़ा भेख मिटावेगा। वासा करे सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगावेगा। दो जहानां बण के नर नरेश, नर नरायण नूर चमकावेगा। जिस दी महिमा करे सहँसर मुख शेष, दो सहँसर जिह्वा नाल रलावेगा। उस दा सुण लै अगम्मा संदेश, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडावेगा। तेरे उत्तों मेटे कल कलेश, कातीआं डेरा ढावेगा। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द दस दस्मेश, सो पूरा आप करावेगा। तूं उस दे होणा पेश, पेशतर तेरा खेल खिलावेगा। जो आदि जुगादि रहे हमेश, जुग चौकड़ी आपणी कल वरतावेगा। उह वेखणहारा धरनीए तेरा लोकमात दा विदेश, विदेशी हो के आप आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान इक्को हुक्म देवे सति विशेष, विषयां तों बाहर आपणी कार कमावेगा।

१०३३ ✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा कर्म सिँघ दे गृह ✪ १०३३

२४ सतिगुर सच्चा जाणीए, जो निज नेत्र देवे दरस दीदार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अमृत रस बख्शे ठंडा ठार। २४
सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखा मुकाए नौ दुआर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो चरण प्रीती देवे छार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो मानस जन्म दए संवार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो पतित पापी देवे तार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सचखण्ड वखाए सच दुआर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो मेल मिलाए आपणे नूर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक करतार। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो लाए प्रभ शरनाई। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो अन्तर हरि लिव लाई। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो चले शब्द रज़ाई। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो माया ममता मोह तजाई। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो एका ओट ओट रखाई। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो कूड़ी क्रिया दए तजाई। गुरमुख सच्चा जाणीए, जो सतिगुर प्यार विच समाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांई। सतिगुर गुरमुख एका धार, दूजा रूप नज़र कोए ना आंयदा। आदि जुगादि शब्द प्यार, जगत तृष्ना ना कोए रखांयदा। काया मन्दिर इक दवार, सच सिँघासण सोभा पांयदा। अमृत रस इक्को ठंडा ठार,

बिन सरोवरां आप प्रगटांयदा। दीआ बाती घर उज्यार, बिन तेल बाती डगमगांयदा । एका हुक्म संदेशा सुणे सुणाए सुणनेहार, दूजा नज़र कोए ना आंयदा। दोहां निवास इक दुआर, आत्म परमात्म मिलके खुशी बणांयदा। आपे मेला नार कन्त भतार, सुहागी आपे आप अखवांयदा। आपे मंज़ल मंज़ल पौड़ी डण्डे चढ़े दुष्वार, दूती दुश्मन नज़र कोए ना आंयदा। सतिगुर गुरमुख सोहे एका बंक दुआर, दूजा दर ना कोए वड्आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमांयदा। गुरमुख सतिगुर सतिगुर गुरमुख, भेव कोए ना राया। आदि जुगादि साचा सुख, बिन कर्म कांड रखाया। मात गर्भ होए ना उलटा रुक्ख, जनणी कुक्ख ना कोए वड्याआ। दो जहानां मेटे तृष्ना भुख, त्रैगुण अतीता रंग रंगाया। मेला मेले पिता पुत, पूत सपूता गोद उठाया। खेल खिलाए अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा रंग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहया। सतिगुर सच्चा मंनीए, मानस जन्म दए संवार। सतिगुर सच्चा धन्न धन्नीए, देवणहार दातार। सतिगुर साचा वसेरा रखे बिन छप्पर छन्नीए, सुहावणहारा महल अटार। सतिगुर साचा सरन लग्ग बेड़ा बन्नीए, जो आदि जुगादि करे पार। जोती
१०३४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान १०३४
२४ सतिगुर पूरा गुरमुखां देवे आत्म नूरा, नूर नुराना आपे होए उज्यार। २४

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा सरदारा सिँघ दे गृह ✪

धन्न वड्याई भगत जन, आदि जुगादि गाए प्रभ दे गीत। धन्न वड्याई भगत जन, आत्म परमात्म नाता जोड़े, छडे मन्दिर मसीत। धन्न वड्याई भगत जन, अमृत रस निझर झिरना चखे, काया करे ठण्डी सीत। धन्न वड्याई भगत जन, माया ममता मोह तजाए रहे त्रैगुण अतीत। धन्न वड्याई भगत जन, एका साचा ढोला गाए तूं मेरा मैं तेरा धुर दा गीत। धन्न वड्याई भगत जन, मन ममता हंगता दूर कराए अन्तर दृष्टी पवित रखे नीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बख्शे अगम्म प्रीत। धन्न वड्याई भगत जन, गृह इक वखंदा। धन्न वड्याई भगत जन, ममता दूर करंदा। धन्न वड्याई भगत जन, जगत शरअ ना कोए रखंदा। धन्न वड्याई भगत जन, अन्तर आत्म रहे ना अन्धा। धन्न वड्याई भगत जन, शब्द अनादी सुणे अन्तर लए अनन्दा। धन्न वड्याई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत सदा बख्शंदा। धन्न वड्याई भगत जन, प्रभ

सरनी लागे। धन्न वड्याई भगत जन, चरण धूड़ मजन करे अगम्मे माघे। धन्न वड्याई भगत जन, बिन आलस निंद्रा जागे। धन्न वड्याई भगत जन, अन्तर उपजे इक वैरागे। धन्न वड्याई भगत जन, दुरमति मैल धोवे दाग़े। धन्न वड्याई भगत जन, हँस बणे कागे। धन्न वड्याई भगत जन, प्रभ पाए कन्त सुहागे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां हाज़र हज़ूर दिसे सदा आगे। धन्न वड्याई भगत जन, गाउंदे गोबिन्द गीत, इक्को नाम ध्याईआ। हरिजू हरि हरि रखदे चीत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जगत अवलड़ी चलदे लोकमात रीत, रीती आपणी आप बणाईआ। झगड़ा मुकाउंदे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। इक्को चढ़ाउंदे रंग बसीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। आत्म रस बिन रसना चखदे मीठ, जिह्वा चले ना कोए चतुराईआ। प्रभ ठाकर मिलके बीठलो बीठ, आपणी ख़ुशी बणाईआ। घर वेख अगम्मड़ा बीठ, बैठण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अनडीठ। धन्न वड्याई भगत जन, हरि पाउंदे गहर गम्भीर। धन्न वड्याई भगत जन, लेखे लाउंदे आत्मा तन शरीर। धन्न वड्याई भगत जन, इक्को मुर्शद धुर दा मंनदे अल्ला पीर। धन्न वड्याई भगत जन, अन्दरों बदल लैंदे ज़मीर। धन्न वड्याई भगत जन, दूई दुवैती रहिण ना देवण ख़मीर। धन्न वड्याई भगत जन, हरि नाम रस पींदे अगम्मा सीर। धन्न वड्याई भगत जन, दीन दुनी विच धराउंदे धीर। धन्न वड्याई भगत जन, तन वजूद सच हंढाउदय आपणा वस्त्र चीर। धन्न वड्याई भगत जन, मेल मिलाउंदे नाल बेनज़ीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणा देणा सब दा वेखे अन्त अख़ीर। धन्न वड्याई भगत जन, सच सरनाई ढठदा। धन्न वड्याई भगत जन, लेखा मुकावे तीर्थ अठसठ दा। धन्न वड्याई भगत जन, सहारा लए ना मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दा। धन्न वड्याई भगत जन, जो बिन कदमां प्रभ चरण दुआरे नठदा। धन्न वड्याई भगत जन, सच सरनाई एकँकार अगम्मे ढठदा। धन्न वड्याई भगत जन, जो लहिणा देणा मुकावे आपणे काया मट्ट दा। धन्न वड्याई भगत जन, जो दीन दुनी दी शरअ टपदा। धन्न वड्याई भगत जन, आदि जुगादि इक्को सोहँ नाम जपदा। धन्न वड्याई भगत जन, उह प्रेमी प्यारा बणे परमेश्वर पति दा। धन्न वड्याई भगत जन, वणजारा रहे ना बूंद रक्त रत दा। धन्न वड्याई भगत जन, उह मालक होवे धीरज सन्तोख सति दा। धन्न वड्याई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग जन भगतां पैज रखदा।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा साधू सिँघ दे गृह ✪

धन्न वड्याई सन्त जन, इक्को पुरख अकाल ध्याउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, इक्को साहिब सुल्तान सीस निवाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, इक्को निरगुण धार दर्शन पाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, इक्को अन्तर आत्म परमात्म वेख वखाउंदे। धन्न वड्याई भगत जन, इक्को शब्द अनाद अनादी धुन अलाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, इक्को निझर झिरना अमृत रस चख वखाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन कूड़ी क्रिया मोह तजाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, भाण्डा भरम भउ भन्नाउँदे। धन्न वड्याई सन्त जन, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, निज घर आपणा आप सुहाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, जगत वासना दूर कराउंदे। धन्न वड्याई भगत जन, मानस जन्म सुफल कराउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, काया कुफ़ल आप खुल्ह़ाउंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साजण वेख वखाउंदे। सन्त जन हरि वड वड्याई, पावण परम पुरख करतार। आत्म घर वजे वधाई, ख़ुशी होवे अगम्म अपार। तन मन्दिर अन्दर होए रुशनाई, मिटे अन्ध अँधयार। वजदी रहे सदा शनवाई, नाद सुणन शब्द धुन्कार।
१०३६ अमृत रस पीवण ठंडा ठार। जगत तृसना भुख मिटाई, निज नेत्र लोचन करन दरस दीदार। घर ठाकर स्वामी मिले धुर १०३६
२४ दा माही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धन्न २४
वड्याई सन्त जन घर पाया पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता दए वड्याईआ। धन्न वड्याई सन्त जन घर मन्दिर होई रहिरासी, बिन गोपी काहन ख़ुशी बणाईआ। धन्न वड्याई सन्त जन निरगुण धार जोत प्रकाशी, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ। धन्न वड्याई सन्त जन आवण जावण होए ख़लासी, जन्म मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। धन्न वड्याई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेल मिलाए आप अबिनाशी, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। सन्त जन हरि नाम ध्यावण, इक्को इष्ट मनाईआ। परम पुरख परमात्म पावण, दूजा संग ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण, सोहँ वजदी रहे वधाईआ। कन्त भतार इक्को रावन, शाहो भूप इक सरनाईआ। घर स्वामी अगम्मा पावण, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जो अन्तर आत्म फड़ाए दामन, दामनगीर आप अख्वाईआ । जगत तृष्ना मिटे कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए गुआईआ। कूड़ कुड़यारी मेटे अन्धेरी शामन, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। साचा दर्शन देवे आहमण साहमण, सनमुख हो के नज़री आईआ। जो करनहारा पतित पावन, पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां एथे ओथे बणे ज़ामन, सगला संगी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। सन्त जन हरि प्रभ दी धारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज तत तन पहन विच संसारा, जगत जिज्ञासुआं खेल खिलाईआ। अन्दर सुण नाद धुन्कारा, धुन आत्मक राग जणाईआ। गृह मन्दिर घर जोती जाता होए उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जो पावणहारा सारा, गुप्त ज़ाहर आपणा खेल खिलाईआ। इक्को नाम निधाना दे के नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा दए जपाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाके कराए मुज़ाहरा, मुशकिल अगली हल कराईआ। शरअ दा रहिण देवे कोई ना दाइरा, हदूदां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान खेले खेल गम्भीर गहरा, गवर हो के आपणा मेल मिलाईआ।

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पखोवाल ज़िला लुध्याणा सरवण सिँघ दे गृह

धन्न वड्याई जन भगत, भगवन मिले चाँईं चाँईंआ। खेल मुके दीन दुनी जगत, जागरत जोत विच समाईआ। लेखे
१०३७ लग्गे बूंद रक्त, मिले माण जणेंदी माईआ। आत्म परमात्म बख़्शे साची शक्त, तन वजूद करे शनवाईआ। इक्को इक इष्ट १०३७
२४ दस्से फ़कत, फ़िकरा ढोला इक्को गाईआ। मानस जन्म सुफला होए वक्त, घड़ी पल प्रभ दे रंग रंगाईआ। आवण जावण २४
लेखे लग्गे उत्ते धरत, धरनी धवल धौल वजदी रहे वधाईआ। घर आपणे फेर जावे परत, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। जोती जाते करे दरस, पुरख बिधाते विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। भगत जनां वड्याई बहु वड्डी, वड वड्डा दए वड्याईआ। जिन्हां दीन दुनी कुड़यारी छड्डी, नाता तोड़या कूड़ लोकाईआ। धर्म निशाने सतिगुर चरण इक्को गड्डी, दूजा निशान नज़र कोए ना आईआ। दूई दुवैत अन्दरों कढ्ढी, सच भावना लई प्रगटाईआ। नेड़ आवण ना देण बदी, बदी दा लेखा देण मुकाईआ। आत्मा प्रभू प्यार विच होवे मधी, मधुर धुन सुण के खुशी बणाईआ। घर दीपक जोत होवे जगी, नूर नुराना डगमगाईआ। जगत तृष्ना बुझी होवे अग्गी, तन वजूद ना कोए जलाईआ। साची धार दिसे दस्म दुआरी बग्गी, बग्गे अस्व दा मालक मिले धुर दा माहीआ। नूर नुराना नूर तकण रब्बी, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दी इक्को मंज़ल इक्को पदी, हक हकीकत दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धन्न वड्याई भगत जन प्रभ दा रखण भउ, भय विच सीस निवाईआ। बिन रसना जिह्वा करन वाहो वाहो, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ।

सदा मिलण दा रखण चाउ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। बणा के रखण पिता माउं, पूत सपूते हो के सेव कमाईआ। भाग लगावण आपणे खेड़े गराउं, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जिथ्थे पुरख अकाला दीन दयाला बिन हथ्थां पकड़े बाहों, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसांईआ। धन्न वड्याई भगत जन घर पाउंदे ठाकर स्वामी, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। मेल मिलदा नाल अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखे चाँईं चाँईंआ। जो जगत अन्धेरा मेटे शामी, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म रिश्ता जोड़े बाहमी, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। आवण जावण लख चुरासी कटे गुलामी, ज़ंजीर नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स कलामी, कलमा कायनात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा बणया रहे स्वामी, मालक ख़ालक हो के आपणे रंग रंगाईआ।

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुध्याणा जसवन्त सिँघ दे गृह

सतिगुर साहिब एक है, आदि जुगादी एकँकार। जिस दी अवतार पैगम्बरां गुरु रखी टेक है, दो जहानां सिरजणहार। आदि जुगादी करे बुध बिबेक है, पतित पुनीत शाहो भूप सची सरकार। जिस दा सब तों अगम्मा लेख है, कातब समझे ना कोए लिखार। हर घट अन्दर रिहा वेख है, वेखणहार सर्ब संसार। कलयुग अन्तिम धरया भेख है, निहकलंका कल अवतार। जो वसे सम्बल देस है, साढे तिन्न हथ्थ कन्त भतार। जोती जाता नर नरेश है, शाहो भूप सिरजणहार। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश है, ज़िमीं असमान करन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हर, सच दा मालक अगम्म अपार। सतिगुर साचा आप प्रभ, दूसर अवर ना कोए। जन भगत सुहेले लए लभ, नाम धागे विच प्रोए। सच खुमारी दए मदि, अन्दर बाहर आपे होए। सुरती शब्दी लए सद्द, दर घर साचे दए ढोए। जगत विकारे मेटे हद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचा बख्शे लोए। लो बख्शे हरि करतारा, लोयण अक्ख खुलाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, भेव अभेद खुलाईआ। नित नवित दए अधारा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख गुरसिख लए उधारा, सन्त भगत आपणे रंग रंगाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले एकँकारा, अकल कलधारी आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर सच्चा शाहो भूप, हरि करता अगम्म अथाह। जिस दा रेख रंग ना कोई रूप, वसणहारा

हर घट थां। जिस दा शब्द दुलारा पूत, पिता पुरख अकाल बणया पिता मां। जो दो जहानां बणया दूत, शब्द संदेश सुणाए नां। वसणहारा चारे कूट, धरनी धरत धवल धौल वेखे हर ग्रां। खोजणहारा काया माटी पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखा। सुहावणहारा साची रूत, रुतड़ी आपणे नाम नाल महका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाह। सतिगुर साचा साहिब सुल्तान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा आदि जुगादी धर्म निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहारा दान, वस्त अमुल अतुल वरताईआ। जो अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बेनन्तीआं करे परवान, परवानगी सतिगुर शब्द हथ्थ फड़ाईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी दो जहानां बदल देवे विधान, रीती नीती दीन दुनी बदलाईआ। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो प्रधान, हुक्म सतिगुर शब्द शब्द वरताईआ। लख चुरासी करना पए परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए हैरान, हैरत विच होए खलक खुदाईआ। की लेखा लहिणा देणा कलयुग कूड़ शैतान, की शरअ करे लड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्को हुक्मरान, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द सहिज सुखदाई, दाता दानी इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी बणदा राही, रैहबर हो के वेख वखाईआ। नाम निधाना जगत जहान ल्यावे चाँई चाँई, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जिस दीनां मज़्बां खेल खिलाई, ख़ालक ख़लक वंड वंडाईआ। उह अन्तिम लहिणा देणा पूरा करे थांउँ थाईं, थान थनंतर वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मेटे शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। झगड़ा मुके थल अस्गाही, जल थल महीअल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादी बेपरवाही, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ।

१०३६ २४

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड डांगो ज़िला लुध्याणा नाहर सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे जन भगतो प्रभ दी लागो सरन, ओट इक तकाईआ। जो आदि जुगादी सब कुछ हार करन, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जो खोल्हणहारा नेत्र हरन फरन, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। जो झगड़ा मेटे वरन बरन, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। जो इक्को नाम निधाना फड़ाए लड़न, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। जिस दा ढोला नाम सारे पढ़न, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। उस दी मंज़ल जुग जुग भगत सुहेले चढ़न, बिन भगतां मंज़ल पार ना कोए कराईआ।

उह पुरख अकाला दीन दयाला तोड़नहार हँकार गढ़न, हउमे हंगता दए मिटाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़न, चेतन आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ बिन अवर ना कोए, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादी होए, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां अन्दरों दुरमति मैल धोए, पतित पुनीत बणाईआ। साचे नाम दे दए ढोए, वस्त अमोल अतुल वरताईआ। हरिजन करे नवें नरोए, आत्म धार बल प्रगटाईआ। अन्तर आत्म रस चोए, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ बिन अवर ना कोई सहाई, सखा सुहेला नज़र कोए ना आईआ। मेरी कूक कूक दुहाई, दो जहानां दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ दी वेखो शाही, की शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। सारे भुलाए पाँधी राही, मार्ग पन्ध चलण कोए ना पाईआ। फिरी दरोही थल अस्गाही, टिल्ले पर्वत रहे कुरलाईआ। साचा मिले ना कोए न्याई, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। सिर दए ना कोई ठण्डीआं छाईं, कलयुग अग्नी तत तपाईआ। बिन प्रभ किरपा मेल मिले ना किसे धुर दे माही, महबूब मिलण कोए ना पाईआ। मैं सच संदेशा सति सति रही सुणाई, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ गहर गम्भीर अगम्मा सागर, अथाह रूप दरसाईआ। जो भाग लगाए तुहाडी काया माटी गागर, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। तुसीं उस दे दर दे बणो सौदागर, वणज नाम करना चाँईं चाँईआ। तुहाडा निर्मल कर्म होवे उजागर, दुरमति मैल रहे ना राईआ। एथे ओथे दो जहानां देवे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। उह करता करीम कादर, कुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे आदल, इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा करे तबादल, तबदीली विच दिसे ख़लक खुदाईआ।

१०४० २४

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ खुशीआ सिँघ दे गृह पिण्ड डांगो ज़िला लुध्याणा ✪

जन भगत कहिण धरनीए असीं प्रभ दी रखीए ओट, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। जो साडे अन्दरों कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। नाम निधान दी लावे चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। प्रकाश करे आपणी निर्मल जोत, जोती

जाता हो के डगमगाईआ। देवे वड्याई उत्ते धरनीए तेरे मातलोक, मातृ भूमीए तैनूं दईए सुणाईआ। जिस दा इक्को कलमा इक्को नाम होवे सलोक, सोहला ढोला गाईए चाँईं चाँईंआ। जिस दे मार्ग उत्तों सके कोई ना रोक, रुकावट रहिण कोए ना पाईआ। जिस प्रभू नूं खोजदे कोटी कोट, अणगिणत ध्यान लगाईआ। उह भगत सुहेले तेरे उत्तों आलणयों डिगे उठाए बोट, फड़ बाहों गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत कहिण धरनीए सानूं प्रभू दा इक सहारा, दूजा कन्त ना कोए हंढाईआ। जो आदि जुगादी मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो देवणहारा नाम अधारा, नाम निधाना झोली पाईआ। जिस दा चरण कवल दिसे सच दुआरा, जगत दुआरयां वंड ना कोए वंडाईआ। जो साजण मीत हमारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दे चरण कवल करीए निमस्कारा, डण्डावत करके सीस झुकाईआ। धूड़ी लाईए मस्तक छारा, टिक्के ख़ाक रमाईआ। उह धुर दा परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस दा आत्म परमात्म सच जैकारा, जुग जुग दए दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम लए अवतारा, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक
 नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सच सिक्दारा, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड डांगो लुध्याणा हरचरण सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मैनूं रातीं सुत्तयां आया ख्वाब, जिस नूं दो जहान समझ सके कोई ना राईआ। मैनूं निरगुण धार सतिगुर नानक सुणाई रबाब, रबीउल कहि के दिता जणाईआ। मुहम्मद इशारा दिता आपणे हक अहिबाब, महबूब दिता दृढ़ाईआ। अवतारां कीता ऐहलाद, इक्को राग सुणाईआ। गुरुआं मारी आवाज़, भेव अभेद खुल्हाईआ। गण गंधर्बा वजाए साज, किन्नर यशप नाच नचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे अराध, कूक कूक सुणाईआ। धरनीए तेरे उत्ते पुरख अकाला दीन दयाला आवे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, नूर नुराना शाह सुल्ताना आपणा फेरा पाईआ। तूं मिट्टी ख़ाक बिन हिरदिउँ रखणा याद, बिन सुरती सुरत लगाईआ। जो तैनूं देवे अगम्मढ़ी दाद, वस्त अमोलक इक वरताईआ। उह वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ । जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। उह शब्द अगम्मा तेरे उत्ते वजाए नाद, दो जहान करे शनवाईआ। जिस नूं प्रभ दी किरपा बिन कोई सुण सके ना जिज्ञासू साध, जीवां जन्तां साधां सन्तां समझ किसे ना आईआ। उस विच संदेशा होणा बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। उह मालक ख़ालक मोहण

माधव माध, मधुर धुन दए सुणाईआ। जिस नूं अक्खरां विच सारे रहे अराध, निरअक्खर धार वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सच दा हुक्म इक वरतावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। सो पुरख निरञ्जण वेस वटावेगा। हरि पुरख निरञ्जण फेरा पावेगा। एकँकारा रंग रंगावेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान डंक वजावेगा। पारब्रह्म भेव खुल्हावेगा। सतिगुर शब्द इक प्रगटावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। अवतार पैग़म्बर गुरु खेल खिलावेगा। जोती जाता हो के वेख वखावेगा। दो जहानां पर्दा ओहला आप उठावेगा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलावेगा। लहिणा देणा तके सूर्या चन्दा, चन्द सितार अन्तर आपणा भेव चुकावेगा। तेरा भाग होण ना देवे मंदा, सिर तेरे हथ्थ टिकावेगा। जिस दी धार गोबिन्द शब्द अगम्मा खण्डा, जगत खण्डा नास करावेगा। जिस आदि जुगादि सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पाईआं वंडां, वंडणहारा हो के वेख वखावेगा। जो मेटणहारा भेख पखण्डा, कूड़ी क्रिया दूर करावेगा। तेरा सीना करे ठंडा, अमृत मेघ इक बरसावेगा। ना कोई पूजे करीर जंडा, इक्को पुरख अकाल इष्ट समझावेगा। तूं मेरा मैं तेरा सब दा होणा छन्दा,
१०४२ साची सिख्या इक प्रगटावेगा। दुवैती विच रहिण देवे कोई ना बन्दा, बन्दगी आपणी विच जणावेगा। सब दा भार उठाए १०४२
२४ आपणे कंधा, बलधारी आपणा बल प्रगटावेगा। हिरदे अन्दरों मानव रहिण देवे कोई ना गंदा, कलयुग कूड़ी दुरमति मैल २४
धुआवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरतावेगा। सच हुक्म इक वरताएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जोती जाता वेस वटाएगा। पुरख बिधाता इक्को आएगा। नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाएगा। सत्तां दीपां पर्दा लाहेगा। मानव ज़ाती भेव चुकाएगा। खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश लेखा जाणे कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा खेल खिलाएगा। तेरे उत्ते तके कलयुग अन्धेरी राती, चारे कुण्ट ध्यान लगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाएगा। धरनी कहे मेरे पुरख अकाल किरपा करनी आप, आप आपणी दया कमाईआ। मेरा त्रैगुण मिटे ताप, त्रैभवण धनी तेरी सरनाईआ। तूं आदि जुगादी माई बाप, पिता पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। निगाह मारनी लोकमात, मातृ भूमी हो के दयां दुहाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी अन्दरों हो गई नार कमज़ात, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना आ के पुछ वात, वातावरन तक ख़लक खुदाईआ। आत्म परमात्म सब दा तुट्टया नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। ईश जीव करे कोई ना बात, बातन पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गाउँदे गाथ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तूं सर्ब कला समराथ, तेरे हथ्थ

वड्याईआ। मैं निमाणी अनाथां अनाथ, दीनन हो के मंग मंगाईआ। मेरे पुरख अकाले मेरा देणा साथ, सगले संगी तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आशा तेरे चरण कवल, कवल नैण दयां दृढ़ाईआ। तूं मालक ख़ालक बण के आ जा उत्ते धवल, धवल दा हौला भार दे कराईआ। तूं नूर अलाही अवल, यामबीन तेरी सरनाईआ। हर हिरदे अन्दर जा मवल, मौला रूप इक्को बण ख़लक खुदाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे दर दी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैनूं बख्श दे इक्को नाम दी पंगती, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वरन बरन दीन मज़्ब आपणी बणा लै संगती, साचा संग आप रखाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म दे दृढ़ाईआ। लड़ाई रहे ना काया तत पंज दी, पंचम मीते होणा आप सहाईआ। मेरे उत्ते कलयुग ने घड़ी कीती बड़ी रंज दी, दुखी हो के रही कुरलाईआ। कूड़ कुड़यारे हाथ ना आवे मुहाणे वञ्झ दी, डूँघे सागर रिहा रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे आ जा पुरख स्वामीआं, कुदरत दे कादर नूर अलाह। आदि जुगादी अन्तरजामीआं, दो जहानां बेपरवाह। आपणे नाम कलमे शब्द वेख लै बाणीआं, ग्रन्थ शास्त्र फोल फुला। झगड़ा तक लै जगत दीआं खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरला। आत्म परमात्म हाण मिले किसे ना हाणीआं, साची नार साचा कन्त कोई ना रही हंढा। लेखे लग्गे ना किसे स्वास प्राणीआं, परम पुरख तेरा मेला मिले किसे ना। मैं चार जुग दीआं सुणदी रही तेरीआं कहाणीआं, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए दृढ़ा। जोती जाते पुरख बिधाते तेरीआं दस्सदे गए निशानीआं, निहकलंकी कलि कल्की अमाम अमामा आए रूप वटा। हुण मेरे उत्ते कर दे मेहरवानीआं, मेरे परवरदिगार नूरी खुदा। मैं तेरे उत्तों आपणा आप करां कुरबानीआं, बिन तन शरीर होवां फ़िदा। तूं शाहो भूप सुल्तानीआं, क्यों निरगुण धार होइउँ जुदा। मेहरवाना तेरीआं सदा मंज़लां अगम्म रुहानीआं, मेरा बण जा दिलरुबा। क्यों कलयुग कूड़ कुड़यारा मैनूं मारे कानीआं, अणयाले तीर चला। क्यों शरअ करे शैतानीआं, छुरीआं कलयुग हथ्थ उठा। मैं तेरा तकां इक्को चरण ध्यानीआं, इक्को इष्ट लवां मना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी कहे मेरी निरगुण निरगुण निरगुण तेरे अगे इक दुआ।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिंघ दे गृह पिण्ड शाह पुर ज़िला लुध्याणा ✪

धरनी कहे ब्रह्मया वेख लै आपणा ब्रह्म, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। तन वजूदां अन्दर रिहा कोई ना धर्म, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। सब दी दृष्टी हो गई कूड़ कुड़यारी चर्म, चम्म दृष्टी सके ना कोए बदलाईआ। हर हिरदे अन्दर वस्या भरम, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। हक दा करे कोई ना कर्म, कर्म कांड दी समझ कोए ना पाईआ। निगाह मार लै वरन बरन, ज़ाती पाती खोज खुजाईआ। मानस मानवां नाल लड़न, झगड़ा करे ख़लक खुदाईआ। आत्म परमात्म ढोला मूल ना पढ़न, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए समाईआ। त्रैगुण माया दे विच सड़न, पंज तत होया हल्काईआ। नव खण्ड बणया हँकारी गढ़न, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। तूं निरगुण धार किस दा फड़या लड़न, सच दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे विष्नूं विश्व दी तक लै धार, ब्रह्मण्ड खण्ड ध्यान लगाईआ। धर्म दा रिहा ना तेरा भण्डार, क्यों भण्डारी बैठा मुख भुआईआ। मेरे उत्ते रोवे सारा संसार, संकट विच दए दुहाईआ। भुक्खयां भुख सके ना कोए निवार, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ।

१०४४ निगाह मार लै जेरज खाणी होई ख्वार, मानव ज़ाती रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १०४४

२४ करे खेल साचा हरि, की सच हुक्म वरताईआ। धरनी कहे शंकरा मेरे उत्ते मार लै झाकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। चारों २४

कुण्ट तक अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ । किसे तन वजूद जगे ना दीवा बाती, कमलापाती वेखण कोए ना पाईआ। ना कोई पीवे अमृत रस बूँद स्वांती, निझर झिरना सके ना कोए झिराईआ। हर हिरदे अन्दर मनुआ करे बदमुआशी, बदी दा लेखा दिता मुकाईआ । जे तूं शम्भू वसणवाला उत्ते कैलाशी, कलाधारी इक अख्वाईआ। मैं चाहुंदी कूड़ कुड़यार दा लेखा मेरे उत्ते रहे ना लाशी, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। मढ़ीआं गोरां अन्दर कर वासी, वास्ता दीन दुनी नालों तुड़ाईआ। जिन्हां दे अन्दर भुल गया पुरख अबिनाशी, तन वजूद ख़ाली नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। धरनी कहे विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने मारो ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। किस बिध कूड़ी क्रिया होई प्रधान, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। तुसीं संसारी भण्डारी सँघारी तिन्ने नौजुआन, बलधारी इक अख्वाईआ। प्रभ दा हुक्म करो परवान, परवानगी प्रभ देवे चाँईं चाँईंआ। लेखा तको ज़िमीं असमान, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। तुसीं पुरीआं विच बैठे क्यों हैरान, हैरानी तुहाडे अन्दर आईआ। मैनूं इयों जापदा कलयुग वक्त पहुँचया आण, अवतार पैग़म्बर गुरु देण गवाहीआ। जिस दा सदी चौधवीं बीसवीं पुरख अकाल भुगताउणा भुगताण,

ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। धरनी कहे विष्न ब्रह्मा शिव तुसीं तको मेरी लाचारी, लाचार हो के दयां जणाईआ। जे तूं शंकरा बणयों सँघारी, सृष्टी सँघार के दे वखाईआ। लिहाज करीं ना किसे पुरख नारी, जो प्रभ नूं गए भुलाईआ। शंकरा तेरी कलयुग अन्तिम आए वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे विष्नूं विश्व दी धार लै तक, विषयां तों बाहर ध्यान लगाईआ। किसे दा मिले ना पूरा हक, हकीकत समझ कोए ना पाईआ। भण्डारीआ तेरे उत्ते पै गया शक्क, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। तूं क्यों आपणा ख़ाली वखावें हथ्थ, हथेलीआं मैनूं रिहा जणाईआ। मैं पुरख अकाल दे अगे सथ्थर रही घत, यारड़ा गोबिन्द नाल मिलाईआ। जेहड़ा सब दी रखे पत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। मेहरवान हो के मेरे उत्ते आए वत, बेवतनां दा मालक दया कमाईआ। ते आपणा राह वेखे डूँग्घा खत, खिते खिते फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे शंकरा मेरी बेनन्ती कर कबूल, सहिज नाल दृढ़ाईआ। क्यों वक्त रिहा भूल, अभुल रिहा सुणाईआ।

किधर गई तेरी त्रिशूल, त्रैलोकी वेख वखाईआ। मेरा लहिणा देणा असल नाल चुका दे मूल, दूसर मंग ना कोए मंगाईआ। तूं किस कारन तन वजूद भबूती लाई धूल, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। आपणा वायदा याद कर लै जो कीता नाल कन्त कन्तूहल, कुदरत दे कादर नाल रखाईआ। जिस दे इवज़ विच सदी चौधवीं वीहवीं लहिणा देणा सब तों करना वसूल, बचया रहिण कोए ना पाईआ। धुर दा हुक्म मन्नणा माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि जुगादी सति असूल, असल दा असल इक्को इक समझाईआ।
१०४५ २४

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड लताला ज़िला लुध्याणा ✪

धरनी कहे प्रभू सतिजुग मेरे उत्ते कर प्रगट, प्रगट सतिगुर शब्द नाल वड्याईआ। जो पवित्र करे तन वजूद शरीर हर घट, माटी ख़ाक करे सफ़ाईआ। इक्को सर सरोवर दरसाए तीर्थ तट, इक्को किनारा एकँकारा दए समझाईआ। इक्को नाम दा खोल्हे हट्ट, दूजा गृह नज़र कोए ना आईआ। इक्को धार प्यार नाल कलयुग कूड़ी क्रिया देवे कट, कटाकश इक्को नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। धरनी

कहे प्रभू सतिजुग मेरे उत्ते ला, नव सत्त दे वड्याईआ। सतिगुर शब्द बणा मलाह, खेवट खेटा इक अख्वाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर बदल दे राह, रैहबर बण नूर खुदाईआ। आत्म परमात्म भेव खुल्हा, पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा दे उठाईआ। सुरती शब्द शब्द मिला, मेला मेल सहिज सुभाईआ। जगत वासना दूर करा, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। शब्द अनादी धुन सुणा, आत्मक राग दृढ़ाईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती आत्म जाम प्या, नाभी कवल कवल उलटाईआ। मेरा मालक ख़ालक तूं इक्को इक खुदा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेख वखा, वायदा पिछला संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिजुग मेरे उत्ते सति बख़्श दे धर्म, अधर्म दा लेखा दे मुकाईआ। निहकर्मी मेरे उत्ते कर आपणा कर्म, कलयुग कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर प्यार बख़्श दे आपणा चरण, चरणोदक इक्को जाम प्याईआ। झगड़ा मेट दे वरन बरन, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म तेरा ढोला गीत सारे पढ़न, इक्को सिख्या देणी समझाईआ। इक्को मार्ग तेरी मंज़ल चढ़न, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। दर दुआरे तेरे अगम्मे खड़्हन, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती
१०४६ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिजुग १०४६
२४ मेरा बणा दे मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म सब दा कर दे गीत, गीत गोबिन्द ढोला इक्को गाईआ। २४
दीन दुनी दी अन्दरों बदल दे नीत, नीतीवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। हर हिरदे वस जा चीत, चितवित ठगौरी रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द दस्स प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। तूं मालक ख़ालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी नूर अलाहीआ। तेरे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए बीत, अन्त होणा आप सहाईआ। करवट बदल लै आपणी पीठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। मेरे उत्तों कूड़ी क्रिया कलयुग भन्न दे रीठ, अमृत रस आपणा नाम चखाईआ। तूं मोहण माधव बीठलो बीठ, परम पुरख पुरखोतम तेरी इक सरनाईआ। तेरा लेखा लहिणा देणा आदि जुगादि सदा अनडीठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिगुरु सतिजुग दोहां दा दे दे संग, शब्दी धार धार वड्याईआ। मेरे उत्ते सच प्रेम दा चाढ़ दे रंग, कसुंभड़ा रूप रहिण कोए ना पाईआ। मैं निमाणी हो के रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबग, हरि करता इक अख्वाईआ। तेरे हुक्म विच जुग चौकड़ीआं मेरे उत्ते केते गए लँघ, पाँधी बण के भज्जे वाहो दाहीआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी दर्द वंड, दुखी हो के वास्ता पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिजुग साचा आपणा भेज दे बच्चा, बचपन मेरे नाल मिलाईआ। जिस दे अन्दर तेरा प्यार होवे सच्चा, सच सच विच समाईआ। भाग लगा दे काया माटी पंज तत कच्चा, कंचन गढ़ दे बणाईआ। लूं लूं अन्दर होवे रचा, रचना तेरी दए समझाईआ। सच्चे सतिगुर इक्को तेरी होवे मता, मन मति दा डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेटे तता, ततव तत दए बदलाईआ। सति सच दी प्रगटावे सत्ता, सति सतिवादी तेरे रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नता, मेला मेले सहिज सुभाईआ। बीज बीजे काया माटी साचे वता, नाम निधाना इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी होवे फ़तह, फ़ातिहा होवे कलयुग कूड़ लोकाईआ।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ भान सिँघ दे गृह पिण्ड लताला ज़िला लुध्याणा ✪

धरनी कहे मेरे साहिब पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करते तेरी ओट तकाईआ। मेरे सच दुआरे पा दे आपणी रासा, निरगुण धार आपणा खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर विनासा, नव सत्त रहिण कोए ना पाईआ। मेरी तेरे चरण कवल इक्को अगम्मी आसा, आशावंद हो के दयां जणाईआ। सति धर्म घर घर अन्दर होवे प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेल आप मिलाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख भगवन्त, भगवन तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान स्वामी कन्त, कन्तूहल तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै विच जीव जन्त, लोकमात ध्यान लगाईआ। बुद्धी तों परे दिसे कोई ना पंडत, जगत विद्या सारे होई हल्काईआ। अनुभव दृष्टी खोले कोई ना सन्त, सतिगुर शब्द रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग कूड़ी माया पाई बेअन्त, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। दृष्टी अन्दर सब दे बणया गढ़ हंगत, हउमे सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख आदि निरञ्जण, आदि अनादी तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी दर्द दुःख भय भञ्जण, कलयुग सागर बेड़ा पार देणा कराईआ। दीन दुनी दे अन्दर नाम ज्ञान पा दे अंजण, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। साची धूड़ करा दे मजन, दुरमति मैल धुआईआ। आत्म परमात्म बण सज्जण, सगला संग रखाईआ। नाम निधाना सुणा दे नदन, अनहद नादी नाद वजाईआ। इक्को तेरे प्यार दी हर हिरदे होवे लग्न, लग मातर

१०४८
२४

कूड़ी दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच घर वजदी रहे वधाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे परम पुरख सुल्ताना, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। मेरे आदि जुगादी कान्हा, राम रामा नूर अलाहीआ। कलयुग अन्तिम मार ध्याना, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। सति सच दा तेरा दिसे ना कोए निशाना, कलयुग क्रिया कूड़ हल्काईआ। पंच विकार होया बलवाना, नाम कलमे दी चले ना कोए चतुराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ होए वैराना, सति वस्त विच ना कोए टिकाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए नूर नुराना, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मालक ख़ालक आदि जुगादि वाली दो जहाना, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल खिलाईआ।

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड शाहजहान पुर ज़िला लुध्याणा

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण होईए सर्ब तैयार, सचखण्ड दुआर लईए अंगड़ाईआ। परम पुरख नूं कर निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदा करके सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द दा लईए प्यार, जो सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। निरगुण हो जाईए विच संसार, तन वजूद ना कोए रखाईआ। धरनी दी सुणीए कूक पुकार, जो देवे दरोही नाल दुहाईआ। दीनां मज़्बां वेखीए की कर्म कीता मनमति दी धार, गुरमति गए भुलाईआ। किस बिध वध्या विभचार, कूड़ कुकर्म की खेल खिलाईआ। किस बिध कलयुग रिहा ललकार, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, की साचा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ कोलों लईए मन्जूरी, मनसा अगे आपणी इक जणाईआ। बेनन्ती करीए सचखण्ड हज़ूरी, दरगाह साची सीस निवाईआ। असीं दीन दुनी दी वेखण चले मजबूरी, धरनी धरत धवल धौल फेरा पाईआ। नाले आशा वेखणी जो मूसा रखी उत्ते कोहतूरी, ईसा आपणा हाल जणाईआ। मुहम्मद कहे मेरा लहिणा देणा सदी चौधवीं उम्मत वाली मज़दूरी, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। अवतार कहिण आपणी धर्म दी धार वेखणी कूड़ी, की कुकर्म करे लोकाईआ। गुरु गुरदेव कहिण असीं तकणा किस बिध रंग चढ़या गूढ़ी, तन वजूदां वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द दे सलाह, मशवरा साडे नाल पकाईआ। असीं लोकमात तक्कीए राह, भज्जीए वाहो दाहीआ। पन्ध मुकाईए दो जहां, पुरीआं लोआं कदमां हेठ दबाईआ। जा के वेखीए धरनी धरत धवल दा थाँ, नव सत्त फेरा पाईआ। क्यों

सृष्टी दृष्टी अन्दर रही कुरला, कूक कूक दए दुहाईआ। क्यों मानस बुद्धी होई हँस रूप काँ, काग वांग कुरलाईआ। क्यों मानस खांदे सूर गाँ, झगड़यां विच पई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बरो मेरे वल करो ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। पहलों आपणा दयो ब्यान, बिन हरफ़ हरूफ़ दयो लिखाईआ। तुहाडा ना कोई दीन ना कोई मज़्ब, ना कोई हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे एका नूर जोत महान, तन वजूद संग ना कोए रखाईआ। तुसीं नौ खण्ड पृथ्मी फिरना बणके नौजवान, भज्जणा वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणी शैतान, की आपणा खेल खिलाईआ। क्यों दीनां मज़्बां अन्दर आया अभिमान, हंगता कूड़ विच लोकाईआ। क्यों सब नूं भुलया कलमा नाम, नाम निधान नज़र किसे ना आईआ। क्यों विछड़या सब तों श्री भगवान, भगवन मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेई अवतार पैग़म्बर गुर सहिबानो अस्सू दा महीना वेखो अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। तुहाडे कोल शरअ दा नहीं कोई ज़ंजीर, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा तन वजूद नहीं कोई शरीर, जोती

१०४६ जाता इक्को नूर करे रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार सब दा शहिनशाह अगम्मा पीर, पारब्रह्म १०४६

२४ पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी गहर गम्भीर, अगम्म अथाह नूर अलाहीआ। जिस दी नज़र आवे ना किसे २४

तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए दृढ़ाईआ। जो सब दी बदलणहार ज़मीर, हर घट अन्दर डेरा लाईआ। जिस दा नाम खण्डा अगम्मी शमशीर, शरअ दे लेखे दए मुकाईआ। जिस कलयुग अन्दर सतिजुग करना तामीर, सति धर्म दा मार्ग दए लगाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म बख्शे आपणा सीर, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ । अवतार पैग़म्बर गुरु साहिबानो जे जाणा लोकमात विच जग, सतिगुर शब्द रिहा जणाईआ। तुसां बिन कदमां जाणा भज्ज, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। मानव ज़ाती खेल तकणा उपर शाहरग, नव दुआरयां पन्ध मुकाईआ। तन वजूदां अन्दर तकणी अग्ग, कवण अग्नी तत तपाईआ। की करे खेल सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ । दीनां मज़्बां छडणी हद्द, हदूद इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर जाओ लोकमात, जोती जाते हो के रूप बदलाईआ। कलयुग वेखो अन्धेरी रात, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खोज खुजाईआ। झगड़ा तको दीन मज़्ब जात पात, की दीन दुनी करे लड़ाईआ। आपणे नाम कलम्यां दा वेखो डूँग्घा खात, जो सिक्खां मुरीदां हथ्थ आए

फड़ाईआ। आपणे ग्रन्थ शास्त्रां दा हिस्सा तको जो लिखे नाल कलम शाही दवात, धुर फ़रमाना आए दृढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल दे तको हालात, हालत वेखो थांउँ थाँईंआ। रूह बुत तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत रिहा कोई ना पाक, पतित पुनीत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द तूं बणना साचा साथी, सगला संग बणाईआ। तेरा लहिणा देणा साडे होवे मस्तक माथी, पूरब आपणा रंग रंगाईआ। तूं निरगुण धार सर्ब कला समराथी, समरथ अकथ इक अख्वाईआ। जिस ने जुग जुग चलाया राथी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी तकी अनाथ अनाथी, ग़रीब निमाणयां खोज खुजाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो सारे होवो इक्ठे, इक्को जोत धार समाईआ। कदम चुकणा मठे मठे, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। नाल आपणे आदि जुगादि दे लै के पटे, जो पुरख अकाल दिते लिखाईआ। जिस दे हुक्म विच तुहाडे जुग चौकड़ी टपे, कलयुग अन्तिम गया आईआ। तुसीं भविख्तां वाले नाल लै के पते, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ।

१०५० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर १०५०

२४ कहिण असीं करनी इक्ती अस्सू दी रैण तैयारी, त्रैगुण अतीते सीस निवाईआ । रूप धरना अगम्म अपारी, जग नेत्र वेखण २४

कोए ना पाईआ। साडा सब दा इक्को होवे जैकारी, गीत इक्को गाईआ। इक्को दर होवे दुआरी, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। इक्को करीए सति श्रृंगारी, दूसर रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण लोकमात जावांगे। निरगुण नूर जोत जोत रुशनावांगे। वरन गोत समझ किसे ना आवांगे। जीव जंत तक्कीए कोटी कोट, कोटन कोटां फोल फुलावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्को इक मनावांगे। साचा मालक इक मंनावांगे। पुरख अकाले सीस निवावांगे। सो पुरख निरञ्जण इष्ट बणावांगे। हरि पुरख निरञ्जण सृष्ट सबाई इक्को इक दृढ़ावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक समझावांगे। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जो मालक ख़ालक आदि जुगादि निरञ्जणा, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। लोकमात सदा होवे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। उस दे बिना चरणां तों धूड़ी लाओ मजना, बिन धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दा इक्को डंका धरनी उत्ते वजणा, नव सत्त करे शनवाईआ। इक्को दीपक जोती जगणा, दो

जहानां डगमगाईआ। जिस लेखे लाउणा आहला अदना, शाह कंगाल, वंड ना कोए वंडाईआ। जिस झगड़ा मेटणा काया माटी बदना, तन वजूदां लेखा दए चुकाईआ । जिस शरअ दी मेटणी हदना, हदूद आपणी इक वखाईआ। उह नूर अलाही रब्बना, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर जे धरनी उत्ते जाणा, बिन कदमां कदम उठाईआ। सब ने इक्को ढोला गाउणा, इक्को नाम सिफ्त सलाहीआ। इक्को बंक दुआर सुहाउणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को रंग सर्ब रंगाउणा, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सब ने मन्नणा भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को बिन नेत्र करना ध्याना, बिन नैणां नैण तकाईआ। लख चुरासी जीव जंत तकणा जहानां, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द असीं तेरा रूप अगम्म, अगम्मड़े देणी माण वड्याईआ। तेरी धारों लोकमात जाईए जम्म, जम्मण वाली दिसे अवर कोए ना माईआ। तूं मालक साडा आदि जुगादी परम, परम पुरख तेरे रंग रंगाईआ। तेरे हुक्म दा साडा इक्को होया धर्म, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को ढोला गीत कलमा नाम सारे पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अलाईआ। इक्को दर दवार सारे वड़न, जिथ्थे मिले सम्बल धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा धुर दा हुक्मनामा, बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। जिस दा इशारा दे के आया रम्ईआ रामा, सईआ हो के आप जणाईआ। जिस दा लेख लिख्या घनईया शामा, शबे रोज़ करे शनवाईआ। जिस दा संदेश फ़रमान दिता पैग़ामा, पैग़म्बरां कीती शनवाईआ। जिस दा गुरु गुरदेव मन्त्र दस्सया सतिनामा, नाम नाम जिस दी वजदी रही वधाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेले खेल महाना, खालक खलक समझ कोए ना पाईआ। जिस दा नूर ज़हूर प्रधाना, जोती जाता हो के डगमगाईआ। इक्को शब्द होए तराना, इक्को राग दए सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को होए प्रधाना, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। इक्को धर्म झुलाए निशाना, सति रंगत रंग रंगाईआ। इक्को रूप होए गोपी कान्हा, आत्म परमात्म मिल के खुशी बणाईआ। एका शाहो भूप होए सुल्ताना, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर जे दीन दुनी दे विच जाणा, लोकमात ध्यान लगाईआ। खेल तकणा श्री भगवाना, की भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जो आदि जुगादी सूरबीर बली बलवाना, बलधारी नूर अलाहीआ। जिस

दा तन वजूद नहीं कोई जिस्म जिस्माना, ज़मीर जगत ना कोए रखाईआ। जो वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकाना, दरगाह साची मुकामे हक सोभा पाईआ। जो जल्वागर नूर नुराना, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जो लेखा जाणे ज़िमीं असमाना, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणा आपणा वेखणा मज़्ब, इक्ठे हो के ध्यान लगाईआ। क्यों कलयुग अन्दर होया ग़ज़ब, हैरानी विच ख़लक खुदाईआ। धरनी हो रही तुअजब, धीरज धीर ना कोए धराईआ। तुहाडा रिहा लोकमात नहीं कोई अदब, अदाब विच सीस ना कोए निवाईआ। तुहाडी सिख्या उत्ते चले कोई ना कदम, कदीम दा मालक की खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे लोकमात वेखणी धरनी धरत, धवल ध्यान लगाईआ। नाल आपणी आपणी तकणी शर्त, शरअ दा लेखा जोड़ जुड़ाईआ। जिस कारन निरगुण धार पतिपरमेश्वर आउणा परत, पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। आपणा वायदा कौल इकरार तकणी शर्त, शरतीआ आपणा लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा
१०५२ साचा वर, सच दा रंग ना कोए रंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द साडा इक्को इक विचार, बिना विचरयां १०५२
२४ दईए जणाईआ। साडे अगे धरनी करे पुकार, कूक कूक सुणाईआ। आ के वेखो आपणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी २४
नाल ल्याउणा चाँईं चाँईंआ। आपणे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ वेखो गुरदुआर, चर्चा फोल फुलाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान ग्रन्थ शास्त्रां पाओ सार, अक्खर अक्खरां ध्यान लगाईआ। आपणे आपणे मुरीदां सिक्खां दे अन्तष्करन करो विचार, मन मति बुद्धी खोजो थाँईं थाँईंआ। क्यों तुहाडे हुंदयां धरती उत्ते वध्या विभचार, कलयुग क्रिया कूड़ हटाईआ। क्यों मन कल्पणा आई विच हँकार, हउमे हंगता गढ़ बणी लोकाईआ। क्यों नव सत्त होया अन्ध अँधयार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीआ बाती कमलापाती नज़र ना आए विच संसार, जोती जाता रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर जिस वेले धरनी उत्ते पुजणा, बिन कदमां कदम उठाईआ। तुहाडा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को दुआरा सुझणा, शरअ हदूदां वंड नज़र कोए ना आईआ। तुसां फिरना आथण उगणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। बिन मेरे हुक्म तों किसे नहीं रुकणा, ना कोई रोके रोक रुकाईआ। किसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ अन्दर नहीं लुकणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ क्रिया दी वेखणी रुतना, रुतड़ी माया ममता मोह नाल महकाईआ। निगाह मारनी पंज तत वजूद बुतना, बुतख़ानयां फोल

फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा हुक्म आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद दो जहान कदे ना मुकणा, देवणहार एकँकार परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ।

✪ ३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ जगजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कालसा ज़िला लुध्याणा ✪

धरनी कहे मेरे पुरख अकाल दया कमावीं, मेहरवान महबूब तेरी इक सरनाईआ। सति धर्म दा मार्ग सच लगावीं, लग मातर डेरा ढाहीआ। मेरा बंक दुआर सुहावीं, महल अटल इक वड्याईआ। सम्बल नगर इक सुहावीं, सोभावन्त तेरी सरनाईआ। दीआ बाती कमलापाती इक जगावीं, दो जहानां नज़री आईआ। शब्द अनादी धुन वजावीं, निरगुण सरगुण करनी आप शनवाईआ। अमृत आत्म जाम प्यावीं, निझर झिरना आप झिराईआ। मेरे परम पुरख परमात्म मैनूं कलयुग कीता अन्त निथावीं, घराना नज़र कोए ना आईआ। मेरा सति धर्म मैनूं फेर झोली पावीं, सतिजुग साचा नाल मिलाईआ। मैं कूक पुकारां उच्ची कढुके बाहीं, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। तूं आदि जुगादी मेरा धुर दा माही, महबूब इक्को इक गुसांईआ। मेरी तेरे चरण कवल दुहाई, दर ठांडे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श दे खुशीआं, खुशहाली कर खलक खुदाईआ। सब दीआं अन्दरों बदल दे रुचीआं, रचना आपणी दे समझाईआ। तन वजूदां अन्दर रूहां कर दे सुच्चीआं, दुरमति मैल रहे ना राईआ। भाग लगा दे काया बुतीआं, बुतखानयां कर सफ़ाईआ। मेरे उत्ते रूहां रहिण ना सुतीआं, सुत्तयां लै जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं दे दे वस्त अनमोल, अनमुलड़ी आप वरताईआ। सति सतिवादी सब कुछ तेरे कोल, अतोल अतुल देणा वरताईआ। आपणे नाम दा सच वजा दे ढोल, ढमक्कया लोड़ रहे ना राईआ। तेरा सुणां अगम्मा इक्को बोल, नाम कलमे तेरे चरण टिकाईआ। सच दुआर एकँकार मेरे उत्ते खोल्ह, नव सत्त दे सरनाईआ। हर घट अन्दर जा मौल, मौला हो के वेख वखाईआ। मेरे पूरब लहिणे पूरे कर दे कौल, इकरार तेरे चरण टिकाईआ। मैं कोझी कमली निमाणी धौल, धरत धवल हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श दे आपणे चरणां धूल, धूड़ी टिक्के खाक रमाईआ। मेरे ते चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़, मुगध रहिण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती

अन्तर निरंतर रंग चाढ़ दे गूढ़, एथे ओथे उतर कदे ना जाईआ। आत्म परमात्म धार तेरा झूटण नाम पंघूड़, सच सुख आसण देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा कर दे पूरी, पूरन ब्रह्म दे दृढ़ाईआ । दर्शन दे दे आपणा नूरी, नूर नुराने कर रुशनाईआ। कलयुग क्रिया मेट दे कूड़ी, कूड़ कुटम्ब दे खपाईआ । जिस कारण सूली चढ़ गया मनसूरी, मनसा तेरे अगे रखाईआ। मेरी दे दे पूरब पिछली मज़दूरी, दर ठांडे मंग मंगाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म मेरे उत्ते आई मजबूरी, मजबूर हो के तैनूं दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं इक्को नाम निधाना मंगदी, बहुती आस ना कोए रखाईआ। अमृत धार बख्श दे आपणे गंग दी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती लोड़ ना कोए रखाईआ। प्रीती बख्श दे आत्म परमात्म संग दी, संगल शरअ दे कटाईआ। मेरे उत्ते ताकत रहे ना विकारे पंज दी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा गंवाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते घड़ी आई रंज दी, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मैं वैरागण प्यासण तेरे सच अनन्द दी, अनन्द अनन्द विच्चों देणा वखाईआ। भेव दस्स दे किस बिध निशानी मिटणी तारे चन्द दी, चन्द चांदने की तेरी बेपरवाहीआ। की खेल वरते सूरे सरबंग दी, मर्द मर्दाने देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उत्तों रैण मेट अन्धेरी अन्ध दी, अन्ध अज्ञान दे चुकाईआ।

१०५४ २४

३१ अस्सू शहिनशाही सम्मत ११ निहाल कौर दे गृह पिण्ड कामलपुरा ज़िला लुध्याणा

धरनी कहे मैं प्रभ दे पावां दरस, बिन अक्खां नैण उठाईआ। जिस मेरे उत्ते कीता तरस, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। मेरी अन्तर मेटी हरस, हवस दिती गुआईआ। अमृत मेघ बरस, अग्नी तत गंवाईआ। वड्याई दे के उत्ते फ़र्श, फ़रसां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरा खुशीआं वाला त्योहार, प्रभ देवे माण वड्याईआ। मैं वेख जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जो भगतां करे सच प्यार, प्रीतम धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया उतारे भार, दुरमति मैल धुआईआ। मैं उस नूं करां निमस्कार, जो आया धुर दा माहीआ। जिस भगतां पैज देणी संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, मेहरवान मेहर नज़र तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे मैं खुशीआं विच होई खुशहाल, मेरे अन्तर वजी वधाईआ। किरपा कीती दीन दयाल, दयानिध धुरदरगाहीआ। मेरी धर्म बणाई सची धर्मसाल, दुआरा इक्को इक वड्याईआ। फल लगावे मेरे डाल, चार कुण्ट कुण्ट महकाईआ। जो आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। मेरी बेनन्ती मंने सवाल, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन भगत उधारे कर निहाल, निहचल आपणा धाम जणाईआ।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जग्राउँ ज़िला लुध्याणा मेहर सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मैं साचा कर्म कमावांगी। पुरख अकाले दीन दयाले अगे झोली डाहवांगी। ग़रीब निमाणी हो के मंग मंगावांगी। सतिगुर शब्द सीस झुकावांगी। अवतार पैग़म्बर गुर नाल मिलावांगी। विष्न ब्रह्मा शिव सब उठावांगी। बिन रसना जिह्वा कूक कूक दृढ़ावांगी। प्रभू दरोही फिरी मेरी चारे कूट, होका हक हक सुणावांगी। नौ खण्ड पृथ्मी वध्या जूठ झूठ, दर
१०५५ ठांडे अलख जगावांगी। धर्म दा रिहा कोई ना पूत, पतिपरमेश्वर अगे वास्ता पावांगी। दरोही फेरी कलयुग अवधूत, जोती १०५५
२४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची आस इक रखावांगी। धरनी कहे मैं रखां आस २४
इक्को, एकँकार चरण टिकाईआ। अबिनाशी करते मेरे पितो, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। मेरा खेल तकण वाले नित नवितो, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम कर हितो, हितकारी हो के वेख वखाईआ। प्रगट होया बिना दिवस दिहाढ़ी थितों, जगत पल वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग कूड़. क्रिया कढ दे दीन दुनी दे चितों, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। मेरे उत्ते कलेश वध गया मेरे वितों, वितकरे विच ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा तेरे चरणां हेठ, धूली ख़ाक रमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे रेठ, सतिजुग आपणा नाम अमृत रस भराईआ। माया ममता मिटा दे सेठ, ग़रीब निमाणयां हो सहाईआ। मैं तेरे चरण कवलां रही लेट, लिटां खोल्ह के दयां दुहाईआ। मैनूं इक्को तेरे उत्ते टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी दी कर दे बुध बिबेक, पतित पुनीत कर सफ़ाईआ। सच धर्म दी फुलवाड़ी मौले चेत, पत्त टहणी आप महकाईआ । ग़रीब निमाणयां नाल कर हेत, हितकारी हो के मंग मंगाईआ। तूं मालक स्वामी नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाईआ। मैनूं आदि जुगादी तेरा भेत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं

मेरा खेड़ा हुंदा खेत, धीरज सके ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं आदि जुगादी धुर दा लाड़ा, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। मैं जुग जुग तेरे अगे कढ्ढां हाढ़ा, कलयुग अन्तिम निव निव लागा पाईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ रहिण ना दे अखाड़ा, पंच विकार ना कोए लड़ाईआ। शरअ छुरी जगत दुःख देवे कोई ना धाड़ा, धरनी धरत धवल धौल हो के सीस निवाईआ। मानव ज़ाती प्रकाश बख्श बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। सच प्रीती रंग चाढ़ दे गाड़ा, अन्दर बाहर उतर कदे ना जाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैं मंगण आई तेरे वाड़ा, आजिज़ हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैं अज्ज खुशीआं विच तेरी कीती ज़िआरत, बिन सजदयां सीस झुकाईआ। मैनूं पिछली तेरी अक्खरां वाली याद इक इबारत, अलिफ़ ये रही समझाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरी कीती सिफ़ारिश, सहिज सहिज नाल जणाईआ। जिस वेले नाम कलमे साडे रूप बण गए तजारत, धर्म ईमान रहिण कोए ना पाईआ। उस वेले परवरदिगार सांझा यार आवे विच भारत, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। मानव ज़ाती सब दा बणे वारस, वारस हो के वेख वखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कर सके ना कोए सिफ़ारिश, सब दा इक्को होवे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं खुशीआं दे दीदार, सांझे यार नूर अलाहीआ । मैं तेरी ख़ादम ख़िदमतगार, जुग जुग सेव कमाईआ। मैनूं संदेशा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता वारो वार, भविख्तां विच गए सुणाईआ। कलयुग अन्त कलि कल्की आए अवतार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। मैं पुरख अकाले दीन दयाले तेरा करदी अज्ज इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। किरपा निधान हो के फेरा मेरे उत्ते मार, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी चरण धूड़ी लावण छार, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। तूं खुशीआं नाल मेरे महबूब दर्शन देणे भगत दुआर, हरि भगतां संग रलाईआ। मैं वी कोझी कमली बिन सीस करां निमस्कार, बिन हथ्थां लागा पाईआ। तूं मेरा लहिणा देणा पूरब कर्म लैणा विचार, कर्म कांड तेरे चरण टिकाईआ। मैं खुशीआं विच जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण नूर करना उज्यार, नूर नुराने शाह सुल्ताने श्री भगवाने तेरा दर्शन पाईआ।

✪ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर रात दे समें पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

कारतक कहे धरनीए मेरी तैनूं वधाई, खुशहाले खुशीआं ढोले गाईआ। तेरे उत्ते नूर नुराना आया धुर दा माही, महबूब अगम्म अथाहीआ। जिस दा नूर ज़हूर करे रुशनाई, दो जहानां डगमगाईआ। उह तक लै अवतार पैग़म्बर गुर बण के आ गए पाँधी राही, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक्ठे होए एका थाँईं, हरि भगत दुआर वजे वधाईआ। तूं आपणा बिन अक्खां नैण उठाईं, चारे कुण्ट फिराईआ। बिन रसना ढोले गाईं, आया धुर दा माहीआ। झट धरनी आवाज़ सुणी चाँईं चाँईं, बिन सरवणां होई शनवाईआ। नव सत्त सुती पई लई अंगड़ाई, आप आपणा ल्या जगाईआ। नाले हस के किहा मेरे बेपरवाही, तेरी बेपरवाहीआ। मैं कद दा राह तकाई, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। मैं संदेसा दिता आपणे थल अस्गाही, समुंद सागराँ समझाईआ। टिल्ले पर्वतां आख्या चाँईं चाँईं, सोया रहिण कोए ना पाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण दिता उठाई, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तुसां निगाह रखणी जिस वेले जोती जाता आवे धुर दा राही, बिन कदमां कदम उठाईआ। नारदा मैं उस प्रभू दे सगन रही मनाई, सोहणी खुशी बणाईआ। आपणी मेंढी सीस गुंदाई, सोहणा रंग रंगाईआ। दुरमति मैल धो के शाही, पापां करी सफ़ाईआ। सोहणया नारदा मैं सब तों वखरी चार जुग दी अगम्मी सेज विछाई, जिस नूं सम्बल कहि के गोबिन्द गया गाईआ। मेरे धन्न भाग जे उस दी होई आवाजाई, आया पन्ध मुकाईआ। मेरा इक सुनेहड़ा उस नूं देणा सुणाई, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। मैं निमाणी धरनी धरत धवल धौल तेरी धार दी जाई, जिस दा मात पित नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी अन्तिम पकड़ी बाहीं, बिन हथ्थां हथ्थ छुहाईआ। नारद किहा धरनीए मैं वास्ता देवां पाई, निव निव लागां पाईआ। नी उह जल्वागर नूर नुराना खुदाई, खुद मालक इक अख्वाईआ। सदा आपणी चले रज़ाई, राज़क रिज़क रहीम बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्म विच दो जहान खुदाई, खुद मालक इक अख्वाईआ। नी जिन्ह गोबिन्द नाल कीती सी जुदाई, अन्त मिलावा होया सहिज सुभाईआ। हुण पिछला झगड़ा रिहा नहीं ढईआ ढाई, ढौंका ला के गया वाहो दाहीआ। उस अगली नवीं खेल रचाँईं, रचना समझ किसे ना आईआ। निरगुण जोत रिहा चमकाई, जोती जाता बणया धुर दा माहीआ। शब्द संदेशा रिहा सुणाई, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। झट धरनी दोवें उठा के बाहीं, बिन हथ्थां ताली लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कत्तक कहे धरनीए मैं तेरे नाल हसदा, खुशीआं विच जणाईआ। मैं नव सत्त नसदा, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे कोल भरया भण्डारा जस दा, सिफ्तां ढोले गाईआ। मेरे कोल पन्ध नहीं कोई अक्ख दा, नेत्र ना कोए चतुराईआ।

मैं खेल वेख्या समरथ दा, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। नी उह तेरे उत्ते जोती जाता हो के सम्बल दे विच वसदा, संभाल करे थांउँ थाँईंआ। जिस दे कोल भण्डारा अंमिओं रस दा, बिन रसना दए चखाईआ। नी उह शब्द अणयाला तीर कसदा, बिन चिल्ले कमान चलाईआ। धरनीए मैं हैरान हो गया भगतां दे अन्दर वसदा, होर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जे किसे बाहरों लभणा ते रूप वेखणा जट्ट दा, सिध्धा साधा नज़री आईआ। जे प्रकाश तकणा लट लट दा, नूर नुराना डगमगाईआ। नी तेरे उत्ते ओस ने संसार वणजारा बणाउणा इक्को हट्ट दा, वस्त इक्को नाम वरताईआ। मैनूं इयों जापदा उह इक इकल्ला बैठा पिछलीआं डोरीआं सारीआं कटदा, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। मैं ओसे दी ख़ुशी विच टपदा, टापूआं तेरयां उत्ते भज्जां वाहो दाहीआ। मैं उस दा इक्को नाम जपदा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं किसे तप दा, साधनां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । कारतक कहे धरनीए मैं तैनूं खुशीआं नाल दस्सां कहाणी, कहावत समझ किसे ना आईआ। नी उहदी मंज़लां तों बाहर दी बाणी, बाण अणयाले तीर चलाईआ। जिथ्थे पुज ना सके चारे खाणी, अण्डज

१०५८ जेरज उत्भुज सेत्ज चले ना कोए चतुराईआ। उह शहिनशाह सुल्तानी, दो जहानां मालक इक अख्वाईआ। उह दाता गुण १०५८

२४ निधानी, गहर गम्भीर नूर अलाहीआ। नी जुग बदलना उहदी आदत पुराणी, पूरन सतिगुर हो के आपणा खेल खिलाईआ। २४

जो अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं भगतां सन्तां ग्रन्थां शास्त्रां दिती निशानी, उह निशाना लै के आया धुरदरगाहीआ। एह कोई लेखा नहीं धरनीए ज़बानी, कलम शाही शहादतां रही भुगताईआ। एह कोई मंज़ल नहीं रुहानी, अद्ध विच बैठे रोवण मारन सारे धाहीआ। एह कोई धार नहीं जिस्मानी, पंजां ततां वंड वंडाईआ। एह इक ते इक्को एहदी मेहरबानी, मेहरबान होवे ते होर किसे दी लोड़ रहे ना राईआ। ना झगड़ा ज़िमीं रहे ना रहे असमानी, ज़मीं असमानां तों बाहर सचखण्ड आपणे चरण दुआर लए टिकाईआ। पर इक एहदे विच वाधा एन तारन लग्गयां एह नहीं वेखणा एह मर्द कि जनानी, बृद्ध बाल बच्चा नौजवान इक्को रंग रंगाईआ। एन एह नहीं वेखणा एहदा मस्तक लेख की है पेशानी, जिसदी पुश्त पनाह हथ्थ टिकाया दरगाह साची विच पहुंचाईआ। ओ ना एह कोई लैण आया कुरबानी, करबले वाल्यां दा लेखा दए भुगताईआ। नारद कहे धरनीए मैं हैरान हो गया एहदी सब तों वखरी ते सब तों निराली जवानी, जोबनवन्ता आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ । नारद कहे कत्तक जी, तुसीं वी गाओ खुशीआं ढोले, पहला प्रविष्टा नाल मिलाईआ। नाले पुराणयां जुगां दे याद कर लओ बोले, जो अणबोलत गया

सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तक लओ जेहड़े धर्म दे बणे तोले, नाम कंडे तराज़ू हथ्थ उठाईआ। जिस दे गा गा गए सोहले, रागां नादां विच जणाईआ। जो निरगुण निराकार निरँकार हो के मौले, मौला आपणा रूप बदलाईआ। उह ज़रूर सृष्टी दी दृष्टी अन्दर वड़ के बोले, बाहरों वेख ना खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। कत्तक कहे धरनीए मैं सुणया तूं धर्म माता, धर्म दी दातीए किथे बैठी धर्म गुआईआ। निगाह मार लै तेरे उत्ते होई अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। विष्नूं भण्डारी दा वेख लै खाता, कोई भुखा मरे किसे दे भण्डारे रिहा भराईआ। ब्रह्मे दी धार नूं वेख लै ब्रह्म नूं वंड दिता विच ज़ाता पाता, ततां नाल तत दिते टकराईआ। शंकर नूं वेख लै किथे बहि रिहा उत्ते कैलाशा, आपणी कल ना कोई वखाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी कलयुग कूड़ कुड़यार आपणा करे तमाशा, सत्तां दीपां कूड़ कुड़यार रंग रंगाईआ। नारद कहे मैं वेख के होया उदासा, उदासी मेरे अन्दर आईआ। मैं कहवां उह शंकरा जे इहो जेही सृष्टी ए क्यों नहीं चाढ़ देंदा लाश उत्ते लाशा, प्रभ तों भुल्लयां दी धरती उत्ते लोड़ ना कोए वखाईआ। जे तूं बच्चू नहीं बदलेंगा पुरख अकाल तैथों हुक्म नाल बदला देवेगा पासा, करवट
१०५६ लैणी पए थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। १०५६
२४ धरनी कहे कत्तक मैं केहड़ा कर्म कमावां, सच दे समझाईआ। कत्तक कहे मैं इक्को बोल दृढ़ावां, जगत बुद्धी ना कोए चतुराईआ। २४
पहलों दोवें भुजा उठा लै बाहवां, हथ्थ हथ्थां नाल मिलाईआ। फेर अज्ज तों पिछला सारा छड दे दाअवा, हक हथ्थ ना कोए रखाईआ। प्रभू नूं कहि दे मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मैं इक्को तेरा संग रखावां, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। ते मंग मंगीं नाल चावां, ख़ुशीआं नाल झोली डाहीआ। नारद नाल कत्तक कहे मैं वी कहि दऊं वाहवा, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। अगे दा लेखा ते कुछ आपणा एहदी झोली पा दे नावां, ऐसा नाम पाईं जिस नूं चार जुग दे शस्त्र समझ सकण ना राईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह तेरा शुकर मनावां, झुक झुक लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद आ गया, आंहदा ओए कत्तका, बड़ीआं मारदा एं डींगां, उह पंजाब विच आ के पंजाबीआं वाली आकड़ लई बणाईआ। उह वेख लै जुग चौकड़ीआं दीआं लटकदीआं बिना रस्सीआं वालीआं पींघां, हुलारा समझ किसे ना आईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दीआं धारां सुतीआं बिना नींदां, बिन आलस आपणा आप आपणे विच समाईआ। मैनूं एह दस्स एस वेले कौण मरया ते कौण जिउँदा, ते दोहां तों बाहर केहड़ा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। नारद कहे कत्तक चार

जुग विच केहड़ा कीता कर्म, आपणा कर्म कांड दे समझाईआ। केहड़ा वेख्या चंगा धर्म, धर्मी हो के भेव खुल्हाईआ। केहड़ा सोहणा लग्गा वरन, कवण बरन वजे वधाईआ। उह केहड़े सब तों श्रेष्ट तैनूं लग्गे चरण, अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे उत्ते गए फेरीआं पाईआ। दस्स तूं केहड़ी सिख्या लग्गा पढ़न, कवण सच गया समझाईआ। केहड़ी मंज़ल लग्गा चढ़न, कवण राह भज्जें वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग इक वखाईआ। कत्तक कहे नारदा मैं बहुता कुछ नहीं दस्सणा, सब कुछ तैनूं दयां समझाईआ। मैं अजे इक साल चुप्प चुप्प रह के वसणा, फेर हौली हौली पर्दा दयां उठाईआ। तूं मेरे वल्ले मैं तेरे वल्ले नस्सणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। कलयुग दे कंडयां विच शायद सानूं दोहां नूं पै जाए फसणा, राह नज़र कोए ना आईआ। ओधरों कलयुग दी हो जाणी रैण अन्धेरी मसणा, सूर्या चन्द जोत ना कोए डगमगाईआ। फेर तूं मेरे वल्ले मैं तेरे वल्ले वेख के हसणा, पर दोहां दा चारा चले कोए ना राईआ। हां याद कर लै बावन ने पहली कत्तक वाले दिन किहा सी ओए भगतो हज़ारां सालां दी तपस्या करन वाल्यो रिषीओ जदों कलयुग अन्तिम आप आया इक्को सोहँ जाप पएगा जपणा, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। ना कोई बेड़ी लभणी पए ना कोई
१०६० लभणा पए पतणा, इक्को मलाह बेपरवाह सब नूं बन्ने दए लगाईआ। नारद कहे वाह कत्तका वाह, ओसे दी बेपरवाहीआ। १०६०
२४ नाले खुशीआं नाल बोदी दिती हिला, पवण पवणां विच्चों चलाईआ । नारद कहिंदा ए जे कत्तका मेरी बोदी ना हिल्ले ते २४
उनन्जा पवण दा नहीं कोई वसाह, केहड़े वेले बन्द होवे केहड़े वेले भज्जे वाहो दाहीआ। कत्तक कहिंदा नारदा एह की दिता सुणा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। नारद कहिंदा मेरी बोदी बड़ी शरारतण, बिन अक्खरां तों इबारतण, बिना वस्तूआं तों तजारतण, पर एहदे विच गुण, इहने सारे वेखे जेहड़े सूर खांदे ते गाँ, बचया रहिण कोए ना पाईआ। नारद कहे कत्तका मैं ज़रूर सारे प्रभू नूं देणे वखा, नवां खण्डां सत्तां दीपां विच जा जा फेरीआं पाईआ। नाले अवतार पैग़म्बर गुरु बणाउणे मलाह, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। मैं कोई पंडत नहीं मैं कोई जिस्म नहीं ज़मीर नहीं तन नहीं वजूद नहीं माटी ख़ाक नहीं मेरा मन्त्र नहीं कोई सोहँ सुअहा, ओअँग सोहँ मैं नूर ते नूर दा रूप अलाह, ते मेरा मालक बेपरवाह सतिगुर शब्द सदा सहा, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। पर मैं कदे किसे दे अगे मिन्नतां नाल कीती नहीं दुआ, दुआरका वासी मैनूं बथेरे गए समझाईआ। मैनूं राम वशिष्ट ने सद्द के आख्या नारदा सानूं इक्को राग दृढ़ा, खुशीआं दे ढोले गाईआ। झट मैं पिठ लई बदला, मुख ल्या भुआईआ। मैं कदे किसे शरीर दे ढोले नहीं गाए ते ना किसे नूं वेख के होया रज़ा, मैं जोती नूर दा प्रकाश ते प्रकाश नूं वेख के उसे दे गुण गाईआ। मेरे उत्ते कोई ना पाइउ दबा, दबदबे विच कदे ना आईआ। क्योंकि मैनूं इक्को

मेरा परमात्म लभ्भा, जिस आपणा रंग दिता रंगाईआ। ओ बाकी, मित्रो दोस्तो राम जी तुहाडी ते धरती उत्ते चार दिन दी सभा, ते फेर सभा लाउण वाल्यो तुहाडा निशान रहिण कोए ना पाईआ। मेरा मालक परमात्म जिस नूं मैं कहिंदा अब्बा, अम्मीजान ओसे नूं कहि के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव चुकाईआ। नारद कहे कत्तक जी मैं कदे नहीं पाया कुड़ता, जुग चौकड़ी ठरूं ठरूं करके आपणा झट लँघाईआ। कत्तक कहे नारद जी मैनूं वी नहीं आया मुड़्का, पसीना रंग ना कोए रंगाईआ। नारद कहे कत्तका मैं कदे कोई नहीं पढ़या गुटका, अक्खरां ढोले कोए ना गाईआ। कत्तक कहे नारदा मैं कदे रूप नहीं धरया काया बुत दा, ते आदि जुगादि मैनूं सारे कहि कहि गाईआ। नारद हस के कहिंदा, साडा प्यार अबिनाशी अचुत दा, दूसर मेल ना कोए मिलाईआ। कत्तक कहे नारद जी साडा वक्त सुहञ्जणा रुत दा, रुतड़ी प्रभ आपणे नाल महकाईआ। अगला वक्त दिसदा कुछ समां चुप दा, चुप चुपीते रह के झट लँघाईआ। क्यों हुण खेल होणा पुरख अकाल दुलारे सुत दा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। नारद कहे कत्तका मैं नक्षत्र गृह वेखां की उह समां ठीक ढुकदा, संगली सुट के ध्यान लगाईआ। जां निगाह मारी नारद की तकदा,
१०६१ प्रभू दा प्यार ज़िमीं असमान सब दे नालों जाए टुट्टदा, टुटयां सके ना कोए गंढाईआ। फेर वेख्या शब्द दा तीर अणयाला १०६१
२४ छुटदा, जो दो जहानां विंन्हे थांउँ थाँईंआ। जिस झगड़ा मिटाउणा काया माटी बुत दा, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। जन २४
भगतां घर घर फिरे पुछदा, गृह गृह मन्दिर वेखे चाँईं चाँईंआ। कत्तक कहे नारदा उस दा खेल अगे कुछ दे अगे कुछ दा, अवर दा अवर हुक्म वरताईआ। एह ते भगतां नूं समां सब तों वखरा दिता लुट्ट दा, लुटेरे हो के लुट्टण चाँईं चाँईंआ। क्यों प्रभू दा प्रकाश हुण छुपाया नहीं छुपदा, उगण आथण इक्को करे रुशनाईआ। जिस उत्ते असर होणा नहीं किसे छाया धुप्प दा, गर्मी सर्दी वंड ना कोए वंडाईआ। जेहड़ा वणजारा नहीं किसे रुत दा, बारां मास इक्को खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेस वटाए अबिनाशी अचुत दा, चेतन हो के चेतन सब नूं दए कराईआ।

✪ १८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल दीवाली दी रात किरपा कीती ज़िला अमृतसर ✪

नारद कहे राम वेख लै आपणी दुनिया वाली दीवाली, दिवाला निकलया ख़लक खुदाईआ। अन्तर निरंतर सब दी धार होई काली, बाहर दीपकां करन रुशनाईआ। घर मन्दिर सोहे ना कोए धर्मसाली, पवित्र गृह नज़र कोए ना आईआ। फल

रिहा ना किसे पत्त डाली, टहणी टहणी रंग ना कोए रंगाईआ। मैं वैरागण हो के बणां सुआली, दर तेरे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दीवाली कहे सुण मेरे राम रम्ईआ, रमता रमता दयां जणाईआ। संदेशा देवां साचे सईआ, की सुनेहड़ा रिहा दृढ़ाईआ। लेखा वेख लै कढुके आपणी वहीआ, बिन अक्खरां अक्खर ध्यान लगाईआ। जो इशारा कीता माँ मतरेई कैकेईआ, दशरथ संग ना कोए रखाईआ। की धार होणी कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यार दी नईया, मोह विकारा हड़्ह वगाईआ। की आशा रख के गई दुर्गा अष्टभुज मईआ, सिँघ अस्वार ध्यान लगाईआ। की संदेशा दे के गया काहन घनईया, घनी शाम की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे राम जी बाहरों जगदे वेख लै दीवे, तेल बाती नाल दीन दुनी वड्याईआ। तेरी नाम मस्ती विच कोई ना खीवे, साचा रंग ना कोए चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरयों वेख लै हो के नीवें, धरनी उत्ते ध्यान लगाईआ। सच प्यार कोई ना जीवे, कूड़ क्रिया जगत हल्काईआ। सब दा लहिणा तक लै अन्तिम साडे तिन्न हथ्थ सीवें, शाह पातशाह बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे राम जी दीवा बाती केहड़े कार, तेल बत्ती की वड्याईआ। जिन्हां दे अन्तर वस्या नहीं निरँकार, हिरदे हरि ना कोए टिकाईआ। उह फिरदे विच अन्ध अँधयार, जगत लोचन ना कोए रुशनाईआ। कलयुग दा तक लै विवहार, की विवहारी कार कमाईआ। जिस ने सृष्टी मानव ज़ाती कीती बेकार, बेरुज़गार होई लोकाईआ। आत्म परमात्म किरत करे ना कोए संसार, साची करनी ना कोए कमाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ रोवण धाहां मार, कूक कूक सुणाईआ। हरि भगत दुआरा करे गिरयाज़ार, हाए उफ़ कर जणाईआ। प्रभू दी धार तों जगत जहान होया बाहर, प्यार विच ना कोए समाईआ। दीआ बाती जगत मन्दिरां उत्ते करे उज्यार, काया अन्धेरा दूर ना कोए कराईआ। नाले राम नूं कीती निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। झट राम ने कीता इशार, सहिज नाल सुणाईआ। नारदा सतिजुग कूक रिहा पुकार, दो जहान सुणाईआ। मेरा मार्ग होवे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। कोई दीवा बत्ती अगे जगाए ना भगत दुआर, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। जो बुझ जाए फिर हो ना सके उज्यार, जगावण वाला नज़र कोए ना आईआ। हरि भगत दुआरे अन्दर हरि भगत उह होण जिन्हां दे अन्दर प्रभू दा दीप सदा रहे तैयार, दिवस रैण इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे राम जी आपणा पुराणा वेखो हिसाब, जगत अंकड़यां बाहर ध्यान

लगाईआ। आपणी कढ्ढके वेखो किताब, बिन हरफ़ हरूफ़ लिखाईआ। सम्मत शहिनशाही बारां दा रिवाज, सहिज नाल समझाईआ। हुक्म देवे ग़रीब निवाज़, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जो हुक्म वरतणा देस माझ, लेखा लिखणा कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। शहिनशाही सम्मत बारां कहे मेरे अन्तर आए अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दीवाली वाले दिन भगत दुआरे वज्जा होवेगा जंद, जंदरा कुंजी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। नौ दिन फेर रहेगा बन्द, अन्दर वड़ दरस कोए ना पाईआ। एह खेल करे सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। ढाई साल तक जेठूवाल दी संगत प्रशाद सके कोई ना वंड, भोग घर ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ।

✪ १६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरमीत कौर दे गृह पिण्ड पहू विंड वाड़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

१०६३ धरनी कहे प्रभू मेरे अन्तष्करन खोल्ह दे ताक, पर्दा परदयां विच्चों पर्दानशीन देणा उठाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी १०६३

२४ अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरा करदे वाक्, वाकिफ़कार एकँकार परवरदिगार आपणी दया कमाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर २४

चेले मेरे बणा दे सज्जण साक, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सगला संग जणाईआ। मनुआ कूड़ कल्पना मनसा विच रहे ना आक, निरगुण धार एकँकार मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ । मैं आदि जुगादी तेरी सेवक चाकर चाक, धरनी धरत धवल धौल हो के सेव कमाईआ। मेरे उत्ते मानव ज़ाती तन वजूद माटी ख़ाक कर दे पाक, पतित पुनीत आपणा रंग रंगाईआ। मेहरवाना नौजुवाना श्री भगवाना मेरे वल झाक, बिन नेत्र लोचन नैण नैण अक्ख उठाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी पूरब पूरी कर दे घाट, लेखा अवर रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों मुका दे पन्ध वाट, सतिजुग साचा कर रुशनाईआ। मेरी सेज सुहञ्जणी सोहे खाट, आसण सिँघासण पुरख अबिनाशण लैणा बणाईआ। पवित्र कर दे हर हिरदा तन माटी ख़ाक, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म इक्को मंज़ल दस्सदे घाट, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म दा चाढ़ दे रंग, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मेरे दर दुआरे लँघ, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाईआ । मेरी सेज सुहञ्जणी कर पलँघ, बिन पावा चूल आपणा आसण

लाईआ। तेरा सतिगुर शब्द वजाए मृदंग, नाद अनादी कर शनवाईआ। मैं निमाणी हो के मंगां रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार मेरे उत्ते कट दे भुख नंग, दीन दयाल दीनां अनाथां हो सहाईआ। आत्म अमृत धार वहा दे गंग, गंगा गंगोत्री दी लोड़ रहे ना राईआ। पंच विकार करे ना जंग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए लड़ाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक आप वंड, बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। निगाह मार लै उत्भुज सेत्ज जेरज अंड, चारे खाणी फोल फुलाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्तों मेट दे भेख पाखण्ड, कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। मैं उच्ची कूक पुकारां पावां डण्ड, डण्डावत विच लम्मी पै के सीस निवाईआ। सति धर्म दी धार सतिजुग मेरे नाल गंढ, कलयुग नाता कूड़ तुड़ाईआ। मेरा प्यार होण ना देवीं रंड, कन्त सुहागी देणी माण वड्याईआ। करवट बदल आपणी कंड, सनमुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। धरनी कहे प्रभू सति धर्म चला दे रीत, धवल हो के मंग मंगाईआ। आत्म परमात्म बख्श प्रीत, प्रीतम मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दा होवे इक्को गीत, इक्को ढोला देणा दृढ़ाईआ। मानव ज़ाती अन्दरों बदल दे नीत, नीतीवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां कर लै पतित पुनीत, पतित पावन तेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कलयुग अन्तिम मेट दे दुःख, दुखड़ा तेरे चरण टिकाईआ। माया ममता वाली मेट दे भुख, तृष्ना तृप्त कराईआ। जन भगतां धार बख्श दे सुख, सुखसागर विच समाईआ। हरिजन बणा लै ततां वाले मनुख, मानस आपणी गोद टिकाईआ। मेरी सुफल करदे कुक्ख, भगत सुहेले वेखां चाँईं चाँईंआ। मेरा उजल होवे मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निगाहबान हो के निरगुण धार आपे पुछ, जोती जाते पुरख बिधाते आपणी दया कमाईआ।

१०६४
२४

✪ २० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा पूरा कर दे घाटा, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी आसा पूर कराईआ। अमृत रस भर दे निरगुण धार गोबिन्द वाले बाटा, अंमिओं रस अगम्म अथाह आपणा अगम्म चुआईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दा लेखा जाए काटा,

१०६५
२४

कटाकश आपणा नाम लगाईआ। कूड़ी क्रिया खेल मेट बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। सच दुआर एकँकार सतिजुग खोल्ह दे हाटा, वस्त नाम निधान श्री भगवान आप वरताईआ। भाग लगा दे मानव ज़ाती साढे तिन्न हथ्थ काया माटा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी पूरी कर दे कमी, कामला आशा तेरे चरण टिकाईआ। मेरे अन्दरों कढ दे कलयुग कूड़ कुड़यार दी ग़मी, ग़मखार हो के होणा सहाईआ। ममता मोह लालच रहे ना तमी, तृष्ना कूड़ ना कोए हल्काईआ। सब दी बदल दे दृष्टी चम्मी, चम्म दृष्टी रहिण ना पाईआ। आपणा नाम जपा दे स्वास दमी, दामनगीर आप अख्वाईआ। मेरे उत्ते सतिजुग धार दे नवीं, नव खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। उह लहिणा पूरा कर दे जो संदेशा दिता गोबिन्द धार बवन्जा कवी, बावन अक्खरी संग मिलाईआ। तूं मालक ख़ालक जोती जाता अवतार चवी, चौबीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा परवरदिगार सांझे यार ज़रूर दवीं, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा दे हिसाब, लहिणा पूरब झोली पाईआ। तूं मालक मित्र मेरा अहिबाब, मीत मुरारा इक अख्वाईआ। मैं निव निव सजदयां विच करां अदाब, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। सच दुआर एकँकार आपणा वखा अगम्म महिराब, महबूब पर्दा आप उठाईआ। मेरा हकीकत वाला बदल मज़ाज, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक बणा समाज, समग्री नाम हक वरताईआ। सोई सुरती तन वजूदां अन्दर जाए जाग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। कलयुग जीव हँस बणा फड़ फड़ काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर तेरे प्रेम दा उपजे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म तेरी चरणी जाए लाग, लग मातर डेरा ढाहीआ। बिन तेल बाती कमलापाती जगा चराग़, बिन सूर्या चन्द कर रुशनाईआ। मेरी कोझी कमली दे वड वड कर दे भाग, मंदभागण हो के मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आदि जुगादी तेरे अगे अरज़ोई, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वेख पेशीनगोई, भविख्तां आपणी गंढ्ढ बंधाईआ। कलयुग अन्तिम सति सच विच रहे ना कोई, सूफ़ी सन्त फ़कीर नज़र कोए ना आईआ। दीनां मज़्बां चारों कुण्ट फिरी दरोही, दरोही दरोही करे ख़लक खुदाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते अणहोणी होई, होका दे के दयां जणाईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण मेरी पत गई खोही, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। जगत दुआरे मैनूं मिले किते ना ढोई, मन्दिर

मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआरे रहे कुरलाईआ। तेरी दुनिया तेरे नालों होई निर्मोही, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म सके कोई ना छोही, छौहर बांके तेरा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा देणा कलयुग अन्तिम जग, जोती जाते पुरख बिधाते दयां दृढ़ाईआ। मेरे उत्तों कूड़ कुड़यार बुझा अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। नव सत्त तती वाअ ना जाए वग, पवण पवणां रूप बदलाईआ। जन भगत सुहेले कर अलग, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण धार दर्शन दे उपर शाहरग, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। तूं शहिनशाह सूरा सरबग, हरि करता इक अख्वाईआ। हँस रूप बणा लै कग, काग हँस रूप वखाईआ। धुन अनादी शब्द वजा दे नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत रस प्या दे मध, निझर झिरना बूँद स्वांती कवल नाभ टपकाईआ । तेरा दीपक दीआ जोती जाते जाए जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैं धरनी धरत धवल धौल तेरी सरन सरनाई गई लग्ग, वखरा रूप ना कोए दरसाईआ। मेरे उत्तों कलयुग लेखा

मुका दे बगला बपड़ा बग, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब अगम्म गुसाँईंआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श अगम्मी धूड़, टिक्का मस्तक नाम रखाईआ। मेरे उत्तों कलयुग मेट दे कूड़, कूड़ कुड़यार रहिण ना पाईआ। जीव जंत चतुर सुघड़ बणा लै मूढ़, मूर्ख आपणे रंग रंगाईआ। नाम निधान चाढ़ दे रंग गूढ़, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। उह आसा तक लै जो रख के गया मनसूर, ततां वाली खल्ल लुहाईआ। मुहम्मद दी बेनन्ती कर मन्जूर, जो बन्दगी विच सीस झुकाईआ। लहिणा तक लै मूसा वाला उत्ते कोहतूर, नैण मूंद की दृढ़ाईआ। जिस बिध ईसा तेरा होए मशकूर, शुक्रिया कहि के सीस निवाईआ। निरगुण धार सरगुण नानक किहा तेरा लहिणा देणा ज़रूर, लोकमात वेख वखाईआ। जिस गोबिन्द मंन के हाज़र हज़ूर, हज़रतां तों बाहर दिता समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तक लै अगम्मा नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा आदि जुगादि इक दस्तूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । धरनी तेरी आसा मनसा पूरी करे पूर, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। इक्को नाम करे मशहूर, कलमा इक्को इक सुणाईआ। दूई दुवैती करे दूर, शरअ शरीअत पन्ध मुकाईआ। जन भगतां बख्श दे जन्म कर्म कसूर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भण्डारा दे नाम भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। तैनूं होणा ना पए मजबूर, मुश्किल तेरी हल कराईआ। कलयुग पन्ध रहे ना दूर, नेरन नेरा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं दे दे मज़दूरी, जुग चौकड़ी तेरी सेव कमाईआ। तूं मालक मेरा हज़ूरी,

हर हिरदे वेखां चाँईं चाँईंआ। मेरी तक लै सबर सबूरी, साबर हो के ध्यान लगाईआ। मैं कलयुग अन्तिम तेरी आसा रखी ज़रूरी, ज़रूरत अवर ना कोए दृढ़ाईआ। मेरे मेहरवाना नौजुआना श्री भगवाना नव सत्त इक्को बख्श अगम्मी धूड़ी, बिन चरणां टिक्के ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणी बख्श अगम्मी शक्त, शख़सीअत दीन दुनी बदलाईआ। कलयुग वेस वेख लै अन्तिम वक्त, घड़ी पल तेरे चरण टिकाईआ। निगाह मार लै विच जगत, दीन दुनी खोज खुजाईआ। बिन तेरी किरपा बणे कोई ना भगत, भगवन भगती विच ना कोए समाईआ। लेखे लगे ना किसे बूँद रक्त, हड्ड मास नाड़ी पंज तत कम्म किसे ना आईआ। मेरी इक्को बेनन्ती फ़कत, फ़िकरा ढोला इक्को दयां सुणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आ जा परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। मैं निमाणी कोझी कमली तेरी धरत, धवल हो के मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी कर दे शर्त, जो शरीअत असलीअत विच तेरा लेखा गए समझाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मदद तेरी इक रखाईआ। मेरा दुख्यारन दा वंड दर्द, दर्दी हो के वेख वखाईआ। मेरे उत्तों शरअ छुरी मेट दे करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। इहो बेनन्ती
१०६७ इहो अर्ज़, आशा तेरे अगे रखाईआ। जुग बदलणा तेरा फ़र्ज़, कलयुग सतिजुग लहिणा देणा झोली पाईआ। अन्त अख़ीर १०६७
२४ बेनज़ीर लाशरीक मेरी इहो ग़रज़, ख़ाहिश आपणी दयां दृढ़ाईआ। मैं तेरा खेल वेखणा चाहुंदी असचरज, अचरज लीला २४
देणी वखाईआ। इक्को तेरा नाम निधाना श्री भगवाना दो जहाना मारे गरज, भबक इक्को इक सुणाईआ। मेरे उत्ते सति धर्म दी सिधी कर दे नरद, जो नर सिँघ हो के प्रहलाद गया दृढ़ाईआ। बावन धार मेट दे गरद, बलि दुआरा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा होण ना देवीं हरज, श्री भगवाना आपणे चरणां विच लैणा टिकाईआ।

✪ २० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ बलवन्त सिँघ दे गृह
पिण्ड तलवंडी जलो के ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों कूड़ दीआं मेट पाबन्दीआं, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों वासना कढ गंदीआं, अमृत रस अंमिओं आप चुआईआ। निज धार एकँकार दे निज अनन्दीआ, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स दे छन्दीआ, सो पुरख निरञ्जण हँ ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। साचा नूर प्रकाश कर दे चन्दीआ, चन्द

चांदना इक्को डगमगाईआ। कूड़ कुड़यार दीआं अन्दरों ढाह दे कंधीआं, गढ़ हँकार देणा मिटाईआ। लेखे तक लै अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वालीआं संधीआं, सँध्या कलयुग नाल मिलाईआ । मेरे पुरख अकाले दीन दयाले आपणे ला लै अंगीआ, अंगीकार आप हो जाईआ। दर भिखारन हो के मंगां मंगीआं, मांगत हो के झोली डाहीआ। केते जुग चौकड़ी मेरे उत्तों लँघीआं, कलयुग अन्तिम होणा आप सहाईआ । मनुआ खेल करे वांग फ़रंगीआं, दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ कुड़यार दीआं आयू होईआं लम्बीआं, पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना छन्दीआ, सोहला ढोला राग ना कोए दृढ़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार दीनां मज़्बां तक लै डण्डीआं, डण्डावत तेरी विच ना कोए समाईआ। तेरीआं धारां तेरे विछोड़े विच होईआं रंडीआं, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जगत जहान बणया रूप पाखण्डीआं, भेखाधारी होई सृष्ट सबाईआ। लहिणा देणा कूड़ कुड़यारा मेट दे डम्बीआ, विभचारां लेखा दे मुकाईआ। तूं शाहो भूप सूरा सरबंगीआ, शहिनशाह नूर अलाहीआ। कलयुग किनारा वेख लै अन्तिम कन्ढीआ, घाट पतण फोल फुलाईआ। विद्या रही ना पांधे पंडीआ, मुल्ला शेख़ मुसायक ना कोए चतुराईआ। तेरीआं प्रीतां जाण किसे ना गंढीआं, विछोड़ा जगत ना कोए मुकाईआ। सति धर्म होया खण्ड खण्डीआ, नौ खण्ड रोवण मारन धाहीआ। दीन दुनी पूजे करीरां जंडीआं, शाह पातशाह तेरा इष्ट ना कोए मनाईआ। मानव ज़ाती तक लै वंडीआं, मानस मानव मानुख तेरे रंग ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरी हालत तेरे तरसयोग, युगती आपणी नाल बदलाईआ। सति दा रिहा कोई ना जोग, जुगती हथ्थ किसे ना आईआ। हउमे घर घर लग्गा रोग, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे संयोग, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सुरती शब्द करे कोई ना भोग, भस्मड़ रूप ना कोए लोकाईआ। नव सत्त होया वियोग, विछोड़े विच सर्ब कुरलाईआ। शब्द दा होवे कोई ना बोध, बुद्धी तों परे ना कोए पढ़ाईआ। हिरदा सके कोई ना सोध, वदी सुदी ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं अन्त अख़ीर तेरा सहारा, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। तूं परम पुरख मेरा कुदरत कादर करतारा, करीम रहीम नूर अलाहीआ। जल्वागर परवरदिगारा, सांझा यार इक अख्वाईआ। तेरी कदम बोसी विच करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। तूं चरण धूड़ मूर्ख मूढ़ बख़्शणी छारा, टिक्के धर्म धार रमाईआ। मेरे आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा खेल तकां अँधयारा, निरँकार देणा वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अध्यारा, अन्ध आत्म कर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे कूक कूक पुकारां,

१०६८
२४

पुनह पुनह तेरे चरणां सीस निवाईआ । मेरे मेहरवाना नौजवाना मैनूं दे अधारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं कलि कल्की निहकलंक चवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा इक अख्वाईआ। अमाम अमामा जल्वागर नूर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। तेरा शब्द नाद धुन्कारा, अनहद नादी राग शनवाईआ। तेरा बूँद स्वांती अमृत रस ठंडा ठारा, नाभी कवल कवल टपकाईआ। मैं मांगत हो के दर तेरे बणी भिखारा, ख़ाली झोली अगे ढाहीआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं वस्त दे दे थारा, थिर घर वासी आपणी दया कमाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब दे दे विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी एकँकारा, अकल कल धारी इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तुध बिन अवर ना कोए सहारा, सीस बिन जगदीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरी बेनन्ती मन्ज़ूर करीं निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। धरनी कहे मैं रो रो करया गिरयाज़ारा, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं मेरा शाहो भूप सिक्दारा, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को मंगां तेरा दुआरा, दूसर दर मंगण कोए ना जाईआ।

★ २१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड शाह बुक्कर ज़िला फ़िरोज़पुर ★

धरनी कहे प्रभू एका नाम दृढ़ा दे सो, सो पुरख निरञ्जण आपणी दया कमाईआ। मेरे उत्ते दुतीआ भेव रहे ना को, दूआ एका एका रंग समाईआ। सृष्टी दृष्टी जगत विकारे नालों कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। जीवां जंतां अन्तष्करन दुरमति मैल धो, पतित पुनीत आपणी दया कमाईआ। कूड़ कुड़यारा पंज विकारा अन्दरों मेट दे गरोह, माया ममता मोह देणा चुकाईआ। आत्म परमात्म तेरे नाल सब दी जाए छोह, छौहर बांके मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। कूड़ी क्रिया कलयुग मेरे उत्तों खोह, सति सच वस्त दे वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी मेरे निगाहबान, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं समरथ पुरख वाली दो जहान, परवरदिगार अगम्म अथाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्ते होई प्रधान, नव सत्त आपणा हुक्म वरताईआ। धर्म दा रिहा ना कोए निशान, निशाना धर्म ना कोए झुलाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे ज्ञान, जगत विद्या दीन दुनी वड्याईआ। सुरती शब्द मिले कोई ना काहन, राम रामा रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

धरनी कहे प्रभू मेरे नेत्रां वगदा नीर, नेत्र लोचन अक्ख रही शरमाईआ। तूं वड दाता गुणी गहीर, गहर गवर धुरदरगाहीआ। मालक ख़ालक पीरां दा पीर, पैग़म्बर नूर अलाहीआ। आदि जुगादी दस्तगीर, साजण मीत इक अख्वाईआ। मेरे उत्ते कलयुग कूड़ी क्रिया कर अख़ीर, आख़र तेरे अगे वास्ता पाईआ। जो फ़िकरयां विच तेरा संदेशा दे के गए फ़कीर, अलिफ़ ये नाल वड्याईआ। मेरी बदल दे तकदीर, तक्बर दीन दुनी मिटाईआ। मैं दरवेशण होई हकीर, निमाणी हो के मंग मंगाईआ। मेरा लेखा पूरा कर दे जो कहि के गया कबीर, कामल मुर्शद तेरी ओट तकाईआ। शरअ शरीअत तोड़ ज़ंजीर, तन वजूदां कर सफ़ाईआ। तूं मालक मेरा बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। दीन दुनी दा अन्तष्करन बदल ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेहरवान हो के आ जा, आजज़ हो के सीस निवाईआ। दो जहान बण राजा, रईयत वेख ख़लक खुदाईआ। मेरा धर्म संवार दे काजा, करनी दे करते देणी माण वड्याईआ। उह लेखा तक लै जो इशारा दे के गया खिज़र ख्वाजा, सूह आपणी धार दृढ़ाईआ। मैं बिना ज़बान तों तैनूं मारां आवाज़ा, चौदां तबकां बाहर रही सुणाईआ।
१०७० तेरा ज़हूर बेनज़ीर तकणा देस माझा, मजलस भगतां संग बणाईआ। तेरा सतिगुर शब्द इक्को होवे जागा, दूसर लोड़ रहे १०७०
२४ ना राईआ। ठाकर स्वामी मेरे गृह आ जा भागा, बिन कदमां कदम उठाईआ। मेरे अन्तर उपजे इक वैरागा, वैरी अन्दरों २४
बाहर कढ्ढाईआ। कलयुग जीव हँस बणा दे कागा, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। मानव जाती आत्म परमात्म मेल मिला लै कन्त सुहागा, नार कन्त आपणा नूर कर रुशनाईआ। जो इशारा दे के गया कृष्ण नूं राधा, रैहबर हो के वेख वखाईआ। सीता धार जिस राम भेव खुल्हाया बोध अगाधा, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। तूं मोहण माधव माधा, मधुर धुन दे सुणाईआ। मेरे उत्ते नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा गुलशन खिड़या होवे बाग़ा, पत्त टहणी फल फुल देणी महकाईआ। बिन तेल बाती कमलापाती दीपक जोत जगा चराग़ा, चरागाहां कर रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी इक्को इक पारब्रह्म ब्रह्म बख्श देस माझा, समग्री सच सच वरताईआ। इक्को तार सितार वजाए रबाबा, रब्बे आलमीन यामबीन तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बादा, बेआबाद आबाद देणा कराईआ।

✪ २१ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ बगीचा सिँघ दे गृह पिण्ड फ़तिह गढ़ ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे दुनियादारो जगत जीवण जीउ इन्सानी, तन वजूद माटी ख़ाक अन्दर रखाईआ। कूड़ी क्रिया मन कल्पना ममता मोह कढ्ढो बेईमानी, प्यार मुहब्बत विच सति सति सरूप समाईआ। वस्त अमोलक हक प्रीती बणो दानी, जीव जहान नौजवान मर्द मर्दान हो के दयो वरताईआ। अन्तर आत्म परमात्म आपणी मंज़ल तको रुहानी, रूहेरवां आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा छडो प्राणी, पूरब लेखा रहे ना राईआ। नवें जुग दी नवीं चढ़ो जवानी, जोबनवन्ते हो के लओ अंगड़ाईआ। सति सच दी बणा कमान ते तीर अणयाला मारो निशानी, निशाने जगत जुगत बदलाईआ। उह लेखा लहिणा पूरा कर लओ जो इशारा दिता दुर्गा आदि शक्ति भवानी, अष्टभुज सिँघ शेर शेर गई समझाईआ। जिस दी धार विच बावन दस्सी अगम्म कहाणी, बलि बलि गया जणाईआ। राम ने हथ्थ धर के मस्तक उत्ते पेशानी, पेशतर पर्दा दिता खुल्हाईआ। काहन हो के जाण जाणी, घनईया सईआ भेव रिहा खुल्हाईआ। मूसा जल्वा तक अगम्म नुरानी, कोहतूर संग रलाईआ। ईसा दीन दुनी समझ के फ़ानी, गल सलीब लई लटकाईआ। मुहम्मद चार यारी नाल भेव खोल्ह कुरानी, काया काअबा इक दृढ़ाईआ। नानक निरगुण धार कर मेहरवानी, सरगुण सच सच समझाईआ। गोबिन्द अमृत धार बख्श के ठंडा पाणी, अग्नी तत तत बुझाईआ। मानव ज़ाती इक्को रंग इक्को गृह लैणा पहचानी, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। लेखा मुके चार जुग दी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी, ख़ाना इक्को इक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। धरनी कहे जिज्ञासूओ मेरे उत्ते जीउ सच दा धर्म, धरनी धरत धवल धौल हो के दयां दृढ़ाईआ। तुसीं निरगुण धार प्रभू दा वरन, पारब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। पिछला कूड़ा बदलो आपणा कर्म, करनी दा करता रंग रंगाईआ। जे तुहाडा जननी दी कुखों होया जरम, माण दयो जणेंदी माईआ। तुहाडी दृष्टी रहे ना चर्म, चम्म दृष्टी लओ बदलाईआ। प्रभू दे प्यार दा रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भउ लैणा भनाईआ। झगड़ा रखो ना वरन बरन, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। इक्को पुरख अकाले रखो सरन, सरनगति इक जणाईआ। जो निज नेत्र खोल्हे हरन फरन, लोयण आपणा आप वखाईआ। जगत अँगयार कूड़ी क्रिया विच मूल ना सड़न, ततव तत ना कोए तपाईआ। सति सच दी इक्को विद्या सारे पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। शरअ शरीअत विच मूल ना लड़न, नाम कलमा कातिल मक्तूल ना रूप वखाईआ। मंज़ल हकीकी सचखण्ड दुआरे साचे चढ़न, पाँधी बणो थांउँ थाँईंआ। हर हिरदे प्रभू दा भय होवे डरन, मन हंगता दूर कराईआ। लेखा वेखो चोटी जड़न, जड़ चेतन खोज खुजाईआ। लहिणा

तको सीस धड़न, हड्ड मास नाड़ी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे सच्चा मार्ग इक अपार, अपरम्पर स्वामी दए समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर करो विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ । सच मुहब्बत मानव मानव वेखो विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेख खुशी बणाईआ। अन्तर आत्म आत्म बणो मित्र यार, यारड़ा सेज सर्ब हंढाईआ। आपणी मनसा बणाओ बरखुरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। तन वजूद अन्दर रहे ना कोई विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप समझाईआ। धरनी कहे मानव ज़ाती इक्को बणो कबीला, कामल मुर्शद ध्यान लगाईआ। सच प्यार बणाओ वसीला, वसले यार इक रखाईआ। आपणीआं आपणीआं बदलो दलीलां, मन बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। परम पुरख परमात्म इक्को धार सब दा होए वसीला, वसल यार इक रखाईआ। आपणीआं आपणीआं बदलो कूड़ कुकर्म दीआं लीकां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। मानव ज़ाती इक्को धार बणो मनुख, मानव आपणे रंग रंगाईआ। दुनीदार हो के दयो किसे ना दुःख, दर्दी हो के दर्द लैणा वंडाईआ। सब नाल सांझी करो आपणी भुख, जगत माया ना कोए हल्काईआ। आत्म परमात्म माणो साचा सुख, जगत दर्द ना लागे राईआ । सुफल कराओ जनणी कुक्ख, धन्न होए जणेंदी माईआ। प्रभू प्यार दा मार्ग प्रेमीआं कोलों लओ पुछ, मुहब्बत मुहब्बत विच्चों प्रगटाईआ। जगत वासना कीमत समझो तुछ, कल्पना कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। धरनी कहे जिज्ञासूओ आपणी वेखो ज़ात, अज़ाती डेरा ढाहीआ। आपणा रूप तको पारज़ात, पारब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। कलयुग वेखो अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मन कल्पना छडो कमज़ात, कुलखणी संग ना कोए रखाईआ। मानव मानव मानस इक दूजे नाल प्यार दा जोड़ो नात, रिश्ता जग ना कोए वड्याईआ। इक्को सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखो कायनात, नव सत्त आपणा ध्यान लगाईआ। प्रेम प्यार दी सब नाल करो बात, बातन आपणा रंग वखाईआ। बिना नेत्रां तों आपणे अन्दर मारो झात, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। आपणा गृह वेखो प्रांत, हिस्सा साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। जिस विच बैठा इक इकांत, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जो देवणहारा अमृत बूँद स्वांत, अग्नी तत तत बुझाईआ। जिस दा लेखा सदा बहु बिध भांत, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। इक दूजे दी प्यार मुहब्बत विच पुछो वात, वारस हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक नूर अलाहीआ। दीन

दुनिया दी नवीं बणाओ बणत, मानस मानव मानुख आपणा प्रेम बणाईआ। सब दा इक्को सांझा होवे कन्त, कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। आपणा अन्तर आत्म बणाओ सन्त, सतिगुर सिख्या विच समाईआ। गढ़ तोड़ो हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पर्दा लैणा उठाईआ। सच विद्या बणो पंडत, जगत अक्खरां लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। धरनी कहे नवें जुग दी बणाओ रीती, रीतीवान आप अख्वाईआ। सारे अन्दरों बदलो आपणी नीती, नीतीवान दए वड्याईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे करो प्रीती, प्रीतम इक्को सब दा धुर दा माहीआ। पिछली कहाणी पिच्छे गई बीती, अगला मार्ग इक्को सोभा पाईआ। झगड़ा छडो हसष्त कीटी, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। तन वजूद चाढ़ो रंग मजीठी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ । अगली खेल करो अनडीठी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। रसना बोली करो मीठी, क्रिया कूड़ ना कोए हल्काईआ। त्रैगुण तपो ना मूल अंगीठी, रजो तमो सतो ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा राह इक दरसाईआ। धरनी कहे जिज्ञासूओ दीन दुनी दा बदलो राह, रैहबर इक्को वेख वखाईआ। जो अन्तर आत्म सब दा
१०७३ बणे मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ । जिस दे अगे सारे करन दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। उह मालक १०७३
२४ ख़ालक नूर अलाह, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जो पूरब लहिणे देणे सब दे दए चुका, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। २४
दीन मज़ब दे झगड़े दयो गुआ, गवाह सतिगुर शब्द बणाईआ। प्रभू दा इक्को नाम कलमा लओ ध्या, धर्म दी धार इक रखाईआ। जगत नेत्रां गुआओ ना मूल हया, लोचन नैण नैण बिगसाईआ। हँस बुद्धी ना बणाओ काँ, काग वांग ना कोए कुरलाईआ। मानस ज़ाती मुहब्बत विच कोई ना खाओ सूर गाँ, पशूआं वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला सब दी इक्को माँ, दूजी दिसे ना कोए जणेंदी माईआ। सचखण्ड दुआर इक्को सब दा थाँ, थनंतर साचे वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ । नवें जुग दा रस्ता बड़ा अजीब, अजब निराला नज़री आईआ। जिस नूं मन्नण ग़रीब अमीर, वड्डा छोटा रहिण कोए ना पाईआ। जिस विच दीनां मज़बां मिलणी तरतीब, तरीका प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस विच आसा मनसा पूरी होए उम्मीद, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। मानस मानस इक दूजे नूं सिध्धे रखो दीद, नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए बदलाईआ। दीन मज़ब दी शरअ विच होए ना कोए शहीद, कातिल मक्तूल रूप ना कोए बणाईआ। ग़फ्लत विच्चों आपणी खोलो नींद, सोई आपणी सुरती लओ जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वड्याईआ। सच दा मार्ग वेखो

सस्ता, कीमत जगत ना कोए जणाईआ। प्रभू प्यार दा लभ्भो रस्ता, रैहबर तको नूर अलाहीआ। जेहड़ा आदि जुगादी हर घट अन्दर वसदा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जो अमृत भण्डारा देवे अगम्मे रस दा, बिन रसना जिह्वा दए चखाईआ। जिस दा खेल अलखणा अलख दा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। उह मार्ग निराला एकँकारा हो के दस्सदा, दहि दिशा दा पन्ध मुकाईआ। तीर अणयाला दो जहानां आपणा कसदा, बिन चिल्ले कमान खिचाईआ। जिस दे प्यार विच जुग चौकड़ी फिरे नसदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। उह जुग जुग जन भगतां पैज रखदा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिज्ञासूओ हुण अगे वेला नहीं रहिणा वख वख दा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते वसणवाली सुणो मनुख ज़ाती, मानुखता वाल्यो दयां दृढ़ाईआ। इक संदेशा सुणो बिना अक्खरां वाली पाती, जिस पत्रका दा लेख ना कोए जणाईआ। नाल तको कलयुग अन्धेरा राती, अन्ध अन्धेरा ना कोए गंवाईआ। तुसीं सारे जन्म ल्या लोकमाती, मानस आपणा रूप बदलाईआ। तुहाडा दीन मज़्ह‌ब वख वख भांती, बहु भांती वंड ना कोए वंडाईआ।
१०७४ तुहाडा आत्म इक इकांती, इक इकल्ला नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। दुनिया जपे प्रभू दा नाम, नाम निधाना इक अख्वाईआ। जिस विच मेला होए रम्ईआ राम, काहन कान्हा मिल के वजे वधाईआ। जल्वा दिसे अगम्म अमाम, नूर नुराना मिले नूर अलाहीआ । जिस विच उपजे सतिनाम, सति सति विच समाईआ। जिस दी धार फ़तिह डंक दो जहान, जगत हिस्से वंड ना कोए वंडाईआ। उस मार्ग नूं लओ पहिचाण, जिस मार्ग नूं सके ना कोए बदलाईआ। उस दे उत्ते चलो नाल आराम, जगत औकड़ वेखण कोए ना पाईआ। फेर निगाह मारो आपणे काया अन्दर मकान, खेड़ा साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। जिस विच निरगुण धार करे बिश्रराम, जोती जाता आसण लाईआ। ओसे दा मार्ग इक असान, जो मुशिकल सारी हल कराईआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र देण ब्यान, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे बोलो बिना ज़बान, रसना रस ना कोए चखाईआ। झगड़ा होवे ना किसे कलाम, कायनात वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी जो करनेहारा इंतज़ाम, बन्दोबस्त उदय असत जुग चौकड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ २२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड कादर वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणीआं आपणीआं कढ्ढो भविख्त बाणीआं, बिन अक्खरां जगत विद्या ध्यान लगाईआ। बिन नैणां वेखो अठसठ तीर्थ पाणीआं, जल थल महीअल फोल फुलाईआ। सिख मुरीद तको आपणे धर्म धार दीआं सुआणीआं, सुघड़ सुचज्जे खोज खुजाईआ। अन्तर निरंतर वेखो कर ध्यानीआं, धर्म दी धार नाल सुणाईआ। कवण मिल्या सुरती धार शब्द साचे हाणीआं, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। निगाह मारो जीवत जीव प्राणीआं, प्रीतम प्यारे हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणीआं वेखो पेशीनगोईआं, पेशतर सब नूं दयां दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते खेलां अणहोणीआं होईआं, होका दे के दयां दृढ़ाईआ। तुहाडीआं प्रेम दीआं धारां हर हिरदिउँ गईआं खोहीआं, सति सच संग ना कोए रखाईआ। जिधर वेखो मेरे उत्ते पईआं दरोहीआं, दरोही दरोही करे ख़लक ख़ुदाईआ। धर्म दुआर मिले किसे ना ढोईआं, सिर सिर हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ । धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरी वेखो आण के हालत, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। तुहाडे प्यार दी रही ना कोए अबादत, नाम रस हथ्थ किसे ना आईआ। बुद्धी विच ना रही सच ल्याकत, क्रिया कूड़ कूड़ हल्काईआ । प्रेम दी लुट्टी गई अमानत, अमल विच ना ख़लक ख़ुदाईआ। आत्मा दिसे ना कोए सही सलामत, सच रंग ना कोए समाईआ। पैग़म्बरो अन्त वेखो आउण वाली क्यामत, कायम मुकाम नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु आपणीआं वेखो अन्त निशानीआं, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। मेरीआं जुग जुग रीतां आदि जुगादि पुराणीआं, पूरब लेखा दयां दृढ़ाईआ। कोटन वार उतपत होईआं चारे खाणीआं, अन्त रहिण कोए ना पाईआ । तुसीं निगाह मारो मेरे उत्ते करो मेहरवानीआं, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल निमाणीआं, निम्रता विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनीए निगाह मारीए उत्ते तेरी धरत, धवले ध्यान लगाईआ । निरगुण धार आईए परत, पतिपरमेश्वर संग मिलाईआ। तेरी आसा मनसा पूरी करीए शर्त, कौल इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। बेशक साडा वसेरा उत्ते अर्श, फर्श वेखीए चाँईं चाँईंआ। निरगुण धार निराकार निरँकार नाल देवे दरस, आदर्श आपणा दए वखाईआ। तेरी नव नौ चार दी मेटे हरस, हवस पिछली दए मुकाईआ। नाम निधाना अमृत

मेघ देवे बरस, जगत तृष्ना अग्न बुझाईआ। तेरा पूरब लहिणा जोती जाता लाहवे कर्ज़, मकरूज़ हो के तेरी झोली पाईआ। तूं खेल वेखणा असचरज, अचरज लीला दए वखाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणे मर्द, मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। शहिनशाही सम्मत बारां तेरा वंडे दर्द, दर्दी हो के वेख वखाईआ। शरअ छुरी कत्ल करे कोई ना करद, कातिल मक्तूल दा डेरा ढाहीआ। तेरी बेनन्ती मन्ज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे चरण रखाईआ। जुग बदलणा जिस दा आदि जुगादी फ़र्ज़, फ़ाज़ल हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनीए तेरा वेखीए आ के धर्म, धर्म दी धार नाल जणाईआ। नव सत्त दा तक्कीए कर्म, कर्म कांड खोज खुजाईआ। तेरा चौथे जुग दा मेटीए भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। धर्म दी धार सतिजुग तेरे उत्ते लए जरम, पुरख अकाल दए माण वड्याईआ। तेरे उत्ते इक्को ज़ात इक्को होवे बरन, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला बख्शे सरन, सरनगति इक जणाईआ। इक्को नेत्र लोचन खोल्हे हरन फरन, लोचन इक्को करे रुशनाईआ। इक्को विद्या ढोले गीत नाम निधान सारे पढ़न, पुस्तक इक्को सोभा पाईआ। इक्को मंज़ल हकीकत हक वाली सारे चढ़न, पौड़ी डण्डा इक्को नज़री आईआ। इक्को सच दुआर एकँकार सारे वड़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती

१०७६

२४

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनी ना कर गिरयाज़ारी, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे शाहो भूप सिक्दारी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी रही इंतज़ारी, बिन जगत आसा मनसा राह तकाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता योद्धा सूरबीर बलकारी, महाबली इक अख्वाईआ। जिस जुग जुग जन भगतां पैज संवारी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उह आवे कलयुग अन्तिम आपणी वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। तेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया दए निवारी, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। तूं इक्को इष्ट दी बणीं पुजारी, पुजारन हो के सीस निवाईआ। इक्को नाम दा लईं अधारी, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। इक्को शब्द सुणी धुन्कारी, अनहद नादी नाद करीं शनवाईआ। इक्को अमृत रस पीणा ठंडा ठारी, निझर झिरनिउँ दए झिराईआ। इक्को दीपक जोत करे उज्यारी, कमलापाती डगमगाईआ। धरनीए तूं जाईं उस साहिब दे बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जिस नूं सब ने मन्नया निहकलंक अवतारी, कलि कल्की अगम्म अथाहीआ। अमाम अमामा नूर नुराना शाह सिक्दारी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जो लहिणा देणा कर्ज़ सब दे दए उतारी, बाकी रहिण किछ ना पाईआ। सदी चौधवीं जिस दी चरण धूड़ लाउणी छारी, संग मुहम्मद चार यार सीस निवाईआ। ईसा मूसा जिस नूं

वेखण नैण उग्घाड़ी, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। उह लहिणा देणा तेरा पूरा करे लेखा वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वत समुंद सागर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल सदा जुग चारी, जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण आपणा खेल खिलाईआ।

✪ २२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ मल सिँघ दे गृह रजीवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे मेरे पुरख अकाले दीना बंधू, बंधप हो के बन्धन मेरे दे तुड़ाईआ। आदि जुगादि दीन दयाल सद बख्शंदू, बख्शिश रहमत निरगुण धार आप कमाईआ। अमृत धार अमोलक रस संधू, सिन्ध सागर एका एक देणा वहाईआ। मेरे ठाकर स्वामी अन्तरजामी मैं तेरा गावां छन्दू, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। परवरदिगार सांझे यार इक संदेशा दे दे शंकर शिव शम्भू, शबे रोज़ दे दृढ़ाईआ। मेरी धार तक लै निरगुण निराकार देश जम्बू, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरा भार उठा लै आपणे कंधू, दो जहानां आपणे कंध उठाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर आपणा कुफ़ल तोड़ दे जंदू, कुंजी इक्को इक लगाईआ। निगाह मार लै मेरे नव नौ खण्डू, सत्त दीप ध्यान लगाईआ। पर्दा लाह दे ब्रह्म धार ब्रह्मण्डू, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप चुकाईआ। तेरी धार एकँकार मैनूं लग्गे चंगू, चंगी तरह देणी समझाईआ। किस बिध कलयुग अन्त अख़ीर समां लँघू, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं मेरा ठाकर स्वामी दीना बंधू, बन्दना विच मंग मंगाईआ। उह तक लै मेरे उत्ते त्रैगुण माया लाया लम्बू, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सब दा भाग होया मंदू, मंदभाग दिसे लोकाईआ। तुध बिन पाए कोए ना ठंडू, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी संगीआ, सगले साथी तेरी सरनाईआ। मैनूं ला लै आपणे अंगीआ, अंगीकार इक अख्वाईआ। मैं निमाणी हो के मंग मंगीआ, मांगत हो के झोली डाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों मेट शाह फ़रंगीआ, फ़ैसला आपणा हक सुणाईआ। मेरा सीस चोटी होई नंगीआ, ओढण उपर ना कोए रखाईआ। तूं दीन दयाल सदा बख्शंदीआ, रहमत आपणी देणी कमाईआ। ओह वेख लै सदी चौधवीं जांदी लँघीआ, मुहम्मद संग चार यार नैण उठाईआ । ईसा दी धार सदी बीसवीं चौथा साल पक्ख पंझीआ, पंझी प्रकृती दए दुहाईआ। मूसा नेत्र नीर वहाए अंझीआ, कोहतूर तूर दुहाईआ। शंकर धार बाणा पहन के दस्से जंगीआ, शस्त्र तेरा नाम जणाईआ। नव सत्त तेरे

हुक्म दीआं दिसण वंडीआ, वंडणहारा इक्को होवे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी निमाणी धवल, धौल हो के सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादी मेरा मालक इक्को अवल, एकँकार तेरी वड्याईआ। तेरा रूप अनूपा जिस नूं ना कोई जाणे सुंदर सवल, सांवरीआ भेव कोए ना आईआ। की लेखा जाणे तेरी धार जो ब्रह्मा उपज्या विच्चों कवल, नैण तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना मेरे उत्ते जा मवल, मौला आपणा खेल वखाईआ। तेरा नूर अलाही इक्को तकां सलल, साहिब स्वामी पर्दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे मालक मेरे उत्ते कर दे रहमत, रहीम रहमान दया कमाईआ। मेहरवान मेरे नाल हो सहिमत, सति सच दे मालक दे वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों मिटा दे ज़हिमत, माया ममता दुःख रोग रहे ना राईआ। मेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी झोली पा दे मेहनत, दर तेरे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे धरनी धवल धौले ना कुरला, बिन रसना कूक कूक सुणाईआ।
१०७८ मैं आदि जुगादी मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जोती जाता एकँकारा नूर अलाह, परवरदिगारा सांझा यारा धुरदरगाहीआ। १०७८
२४ एथे ओथे दो जहानां रहिनुमा, रैहबर हो के वेख वखाईआ। सच संदेशा धुर फ़रमाना देवां सुणा, पैग़ाम इक्को इक जणाईआ। २४
तेरा हिस्सा वंड रहे ना कोई गुणां, वखरी धार ना कोए रखाईआ। तेरी पुकार दातार हो के आप सुणां, निरँकार हो के वेखां थांउँ थाँईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती छाणां पुणां, घट घट अन्दर वेखां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी ना कर गिरयाज़ारी, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं आदि जुगादी एकँकारी, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। धवले तेरी पावां सारी, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बाद मेरी आई वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। तूं नेत्र लोचन नैण अक्ख उग्घाड़ीं, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मेरा रूप अनूपा ना कोई मुच्छ ना कोई दाढ़ी, केस नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी हो के फिरां तेरे पिच्छे अगाड़ी, दो जहानां वेखां चाँईं चाँईंआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करां जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वतां लेखे लाईआ। तेरी किस्मत होण ना देवां माढ़ी, माढ़ी मण्डप रहिण कोए ना पाईआ। मैं इक्को हुक्म संदेशा देवां शंकर धार जो लेखा जाणे राय धर्म नाल मौत लाड़ी, चित्रगुप्त आपणी गंढु पुआईआ। उह नव सत्त तेरे उत्ते वेखे अखाड़ी, दीन दुनी दुनी दा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म

इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे धरनी ना रो वहा अथ्थर, हंझूआं हार बणाईआ। नी तेरे उत्ते मेरा गोबिन्द लथा सथर, यारड़ा सेज हंढाईआ। मैं पूजा मिटाउणी पाहन पत्थर, सिल सिलसला रहिण ना पाईआ। दीन दुनी नूं करना मथन, लख चुरासी रिड़कां थांउँ थाँईंआ। तेरे उत्ते इक चलाउणी कथन, वारता इक्को इक समझाईआ। इक्को ढोला गीत आवां दस्सण, इक्को सिख्या सच पढ़ाईआ। इक्को धर्म चलावां रथन, रथ रथवाही इक अख्वाईआ। कलयुग मेटां अन्धेरी मस्सन, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सारे वेख वेख हस्सण, विष्न ब्रह्मा शिव ढोले गाईआ। तूं वी इक्को प्यार दा लैणा रसन, बिन रसना रस बणाईआ। साचा ढोला गाउणा जसन, सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सर्ब कला समरथण, अकथ आपणा हुक्म जणाईआ।

✪ २३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड गालब रण सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं सदा अनादी, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। एथे ओथे दो जहानां मेरा लेखा ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मांड वेखां चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी रिहा विस्मादी, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरी धार रहे अराधी, अक्खरां नाल मिल के सिफ्तां ढोले गाईआ। मेरा भेव अभेदा बुद्धी तों परे बोध अगाधी, जगत अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। मेरी मंज़ल हद हदूद समझे कोए ना हादी, वंडण वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा खेल सदा तन वजूदां विच बाडी, हड्ड मास नाड़ी आपणा रंग रंगाईआ। मेरी खेल आपणे आप विच्चों सदा जागी, जागरत जोत विच समाईआ। मेरा ताल तलवाड़ा बिना साजां तों अनरागी, अनहद मेरी धुंन बेपरवाहीआ। मैं लत्तां पैरां वाला बणया कदे नहीं पाँधी, कदमां कदमां कदम ना कोए उठाईआ। मेरी आशा अक्खरां विच निरअक्खर धार आपणा आप गांदी, दूसर समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । शब्द कहे मैं अनहद अगम्मी धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। सरवणां नाल मैनूं सके कोई ना सुण, अणसुणत दयां समझाईआ। मेरा मुख दन्द जिह्वा नहीं, मैं बिना रसना तों मुन, मुनीश्रां भेव ना कोए जणाईआ। मेरा जगत कांड तों बाहर गुण, अवगुण नज़र कोए ना आईआ। मेरा लेखा आदि जुगादी एथे ओथे अगे पिच्छे हुण, घट घट आपणा खेल खिलाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को कुंन, कुल मालक नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। अनहद शब्द कहे मेरी धुन्कारी, बिन ताल तलवाड़े सोभा पाईआ। मेरी मंज़ल जगत नेत्रां तों बाहरी, अक्खीआं वेखण कोए ना पाईआ। मेरा भेव खुल्हाया पुरख अकाले जोत निरँकारी, नर नरायण दिती वड्याईआ। मेरी मंज़ल हक दुष्वारी, काया मन्दिर अन्दर सोभा पाईआ। मैनूं कोटन कोटि लभदे फिरन पुजारी, पूज पूज ध्यान लगाईआ। अणगिणत काया रहे ठारी, जलधारा सीस कराईआ। कोटन वसे जंगल जूह पहाड़ी, टिल्ले पर्वतां फेरीआं पाईआ। कोटन कोटि मूंड मुण्डा के मुच्छ दाढ़ी, भज्जे वाहो दाहीआ। कोटन कोटि घर छड के गए लाड़ी, वैरागी त्यागी हो के फिरन वाहो दाहीआ। मेरी खेल शब्द कहे सब तों न्यारी, निराकार दिती वड्याईआ। बिन साजां तों आवाज़ बिन सितारां तों धुन्कारी, बिन हथ्थां हथ्थ शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। अनहद ख़ुशीआं दे नाल हस्सया, हस हस के रिहा जणाईआ। जन भगतो मैं नौ दुआर कदे नहीं वस्या, जगत वासना ना कोए रखाईआ। मेरा लेखा नहीं नाल रैण अन्धेरी मस्सया, कूड़ कुड़यारा वंड ना कोए वंडाईआ। मैं मोह विकारे विच कदे नहीं फसिआ, जगत तृष्ना ना कोए हल्काईआ।
१०८० मैनूं कूड़ क्रिया किसे नहीं डस्सया, जगत रंग ना कोए रंगाईआ। मैं बिना कदमां तों फिरां नस्सया, भज्जां वाहो दाहीआ। १०८०
२४ मेरा इक्को मालक ख़ालक पुरख समरथया, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ । जो मेरा लहिणा देणा रखे आपणे हथ्थया, २४
दूसर डोरी ना कोए फड़ाईआ। मैं हुक्म सुणावां आदि जुगादि इकठ्ठयां, जो एकँकार दए दृढ़ाईआ। मेरा गृह मन्दिर टिकाणा साढे तिन्न हथ्थ काया मठिआ, शिवदुआले साचे सोभा पाईआ । जिथ्थे मेरे प्यार दी धार जोत जगे लट लटया, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। अनहद शब्द कहे मेरी अगम्म निशानी, जगत निशाना नज़र कोए ना आईआ। मेरी मंज़ल अगम्म रुहानी, रूह बुत नाल मिल के वजे वधाईआ। मेरी आशा आदि जुगादि नहीं कोई बेगानी, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। मैं जद वसां पहली धार पेशानी, पेशतर दयां जणाईआ। मेरी सब तों वखरी जवानी, जोबनवन्त इक अख्वाईआ। मेरी आवाज़ बिन जिह्वा ज़बान तों धुन्कानी, धुनी आपणी दयां प्रगटाईआ। जिस नूं जगत विद्या ना समझे ना कोए जाणे अनुभव दृष्टी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। अनहद शब्द कहे नौ दुआरे वासना ढाह, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। दुरमति मैल मैल धुआ, पतित पुनीत कराईआ। फेर पर्दा आप उठा, ओहला अन्दरे अन्दर उठाईआ। फेर नच्चां टप्पां कुदां नाल चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। रूप अनूपा लवां बदला, सति सरूपी

इक अख्वाईआ। जन भगत सुहेले लवां जगा, गुरमुख मेले मेलां चाँईं चाँईंआ। सुरत सवाणी नाल लवां रला, हाणी हो के संग बणाईआ। फिर आपणी मंज़ल दयां वखा, जिथ्थे दूजा चढ़न कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर बाहरों कहे मस्तक ते मेरा अन्दर नूर रुशना, नूर नुराना डगमगाईआ। फेर मेरे शब्द दी शब्द दए गवाह, शहादत पंचम पंच शब्द भुगताईआ। सब दा मेला होवे सहिज सुभा, सो पुरख निरञ्जण आप कराईआ। हँ ब्रह्म जोड़ जुड़ा, जुगती आपणी दए समझाईआ। पहली मंज़ल पहला राह, रैहबर हो के दयां वखाईआ। दूजे दूई दुवैत चुका, दोहरा आपणा ताल वजाईआ। तीजे तीजा नेत्र नैण खुल्हा, घर घर करां रुशनाईआ। चौथे चौथी मंज़ल आप पहुंचा, पूजण योग इक समझाईआ। पंचम मीता बण के रहिनुमा, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। मेरा शब्द अनादी अनहद जिस नूं अक्ल बुद्धी जाणे कोए ना, विद्या विद्दत विच ना कोए समझाईआ। सन्त भगत सुहेले जिन्हां पल्लू दिता फड़ा, उह मैनूं मिल के जगत गए सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मेरी कीती सिफ्त सलाह, अक्खरां नाल कीती वड्याईआ। चार जुग दे शास्त्र होए गवाह, शहादत मेरी रहे भुगताईआ। मैं कोई जगत रबाब नहीं तन साज नहीं ना कोई मैनूं उंगला नाल सके वजा, वजह सके ना कोए समझाईआ। मैं आपणी धुन आपणी धार विच्चों लवां प्रगटा, आप आपणे विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। अनहद शब्द कहे मेरी धार अनमुली, कीमत जगत कोए ना पाईआ । मेरा लेखा जाणे मालक खालक सुल्हकुली, कुल मालक वेख वखाईआ। मैं गाया जावां ना कदे किसे बुल्ल्हीं, रसना जिह्वा चले कोए ना चतुराईआ। मैं जदों उपज्या प्रगट होया ते होया भगतां दी काया कुल्ली, काअबे आपणा रंग रंगाईआ। हरिजन मेरी फल फुलवाड़ी फुल्ली, लोकमात महके टहिके चाँईं चाँईंआ। मेरी धार कदे ना रुली, जुग जुग मेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। अनहद शब्द कहे मैनूं सारे कहिंदे शब्द, शब्द शब्द रूप समाईआ। मेरा सब तों वखरा मज़्हब, ज़ात वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा सब तों वखरा अदब, अदाब विच सारे सीस निवाईआ। मेरा भेव निराला अनोखा दिसे ग़ज़ब, हैरानी विच दयां जणाईआ। जिन्हां मैनूं अन्दरों सुणया उह बाहर होए ना कदे तुअजब, परेशानी विच कदे ना आईआ। मैं जदों करां ते करां भगतां दी मदद, अन्दर मिल के खुशी बणाईआ। मेरे प्यार विच रहे ना कोए तशदद्, झगड़ा कूड़ ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। अनहद शब्द कहे मैं सच दस्सां ना मेरी चोटी ना मेरी जड़, चेतन आपणा रूप जणाईआ। ना मैं अन्दर ना मैं बाहर ना मैं दरवाज़े अगे सकां खड़्ह, इक्को गृह बैठा डेरा

लाईआ। ना कोई अक्खर ना कोई इलम ना कोई विद्या लवां पढ़, आदि जुगादि मेरी अगम्म पढ़ाईआ। ना ततव तत हो के अग्नी जावां सड़, गोरां विच ना डेरा लाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले ऐसा घाड़न दिता घड़, मैनूं जम्मण वाली कोए ना माईआ। ना मेरा कोई सीस ना कोई धड़, तन वजूद ना कोए रखाईआ। जन भगतो सच पुछो अनहद शब्द कहे मैं हर हिरदे अन्दर बैठा वड़, अन्दर बैठा नज़र किसे ना आईआ। मेरा ताल सितार बिन तालां वजे कड़ कड़, आप आपणी आवाज़ सुणाईआ। जे मेरा सति सरूप तकणा ते मस्तक दी धार तों उपर जाओ चढ़, जिथ्थे चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ नजर कोए ना आईआ। इक्को वेखो सति पुरख दा टिकाणा अगम्मी गढ़, जिस दी चार दीवार समझ कोए ना पाईआ। अनहद शब्द कहे ना कोई भय ना कोई डर, भउ सिर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी निरगुण धार जिस ने मैनूं निरगुण धार दिता वर, पुरख बिधाता इक्को मेरा धुर दा माहीआ।

१०८२
२४

✪ २३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरतेज सिँघ दे गृह पिण्ड घल कलां ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

नारद कहे धरनीए आ वेख हाहे उत्ते टिप्पी, जिस दी टीका टिपणी समझ किसे ना आईआ। वैरागणे त्यागणे आपणीआं संवार के वेख लिटीं, मेंढी सीस ना कोए रखाईआ। दीन दुनी दी धार तक लै पूजदी पत्थर इट्टीं, पाहनां सीस निवाईआ। प्रभ दी धार दिसे किसे ना चिट्टी, चौथे जुग ध्यान ना कोए रखाईआ। तेरी खेल कमलीए किसे कोलों ना जाए नजिठ्ठी, बिन सम्बल दे मालक संभाल सके कोए ना राईआ। झट धरनी दोहथड़ मार के पिट्टी, मेरी पटने वाले अगे दुहाईआ। मैं मिट्टी ख़ाक उत्ते लिटी, लम्मी पै के दयां सुणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी जगत तों बाहर वेख लै मिती, मित्र प्यारे खोज खुजाईआ। मेहरवाना नौजवाना तेरी मानव ज़ाती दी विगड़ी असथिती, थित वार रंग ना कोए रंगाईआ। मन कल्पणा सब नूं रही जित्ती, हार विच ख़लक खुदाईआ। प्रेम भावना रही कोई ना मिठ्ठी, कुड़ावे रस भरी लोकाईआ। जगत खेल होई अनडिठ्ठी, नेत्र वेखण कोए नाँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं नारद की कुछ कहिंदा, की भेव रिहा खुल्हाईआ। झट नारद कहे धरनीए तूं संभाल लै आपणा लहिंगा, ओढण सीस सीस टिकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार वेख लै धर्म नाल खैहन्दा, दिवस रैण

करे लड़ाईआ। उह झगड़ा तक लै दिशा लहिंदा, ईसा मूसा मुहम्मद रहे टकराईआ। शरअ दा बुरज जांदा ढहन्दा, अगे हो ना कोए बचाईआ। प्रभ दा भाणा अवतार पैग़म्बर सहिंदा, गुरु गुरदेव वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ । नारद कहे धरनीए सदी चौधवीं कर होश, हुशियारी नाल जणाईआ। मैं जुग चौकड़ी रिहा ख़ामोश, रसना बचन ना कोए दृढ़ाईआ। उह वेख लै दीन दुनी दा तन वजूदां लथ्थण वाला पोश, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर कलयुग कूड़ ने लाया दोष, दोषी होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे धरनीए मैनूं ख़बर आई अणहोणी, बेख़बरे दयां जणाईआ। तेरी दुरमति मैल प्रभ ने धोणी, पतित पुनीत करे सफ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हर हिरदे अन्दरों खोहणी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जो इशारा दे के गया अवतार मोहणी, मोहण माधव की आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए प्रभ पावणहारा भिख, भिखारने तेरी झोली दए भराईआ। जो इशारा दे के गया देव रिख, रिखव देव

१०८३ अठवां अवतार दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम बिना पुरख अकाल बदले ना कोए भविख, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। साची १०८३

२४ सिख्या विच बणाए कोई ना सिक्ख, साख्यात नज़र कोए ना आईआ । बिना कलम शाही तों आपणे सीने उत्ते गया लिख, २४

काग़ज़ रंग ना कोए रंगाईआ। अन्दर प्रगटा के अगम्मी इच्छ, आशा आपणी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे, नारद, किरपा करे अगम्मा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरी आसा मनसा लए वर, ख़ाहिश आपणे नाल रखाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करे जो कहिके गया सिँघ नर, नर सिँघ हो के प्रहलाद गया समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सच भण्डार देवे भर, वस्त नाम अतोल अतुल वरताईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के आवे तेरे दर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। दीआ बाती कमलापाती सम्बल नगरी देवे धर, धरनी धरत धवल धौल करे रुशनाईआ। तूं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त भाणा लैणा जर, सिर सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। करनी दा करता कुदरत दा कादर आपणी करनी लए कर, दूसर संग ना कोए बणाईआ। तेरा भय भउ चुकाए डर, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़े हँकार गढ़, हउमे हंगता दए मिटाईआ। निरगुण धार तेरे अन्तर जाए वड़, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। तूं साची सिख्या धुर दी विद्या लैणी पढ़, बिन अक्खरां दए समझाईआ। तेरा लहिणा देणा मेटे बिना सीस धड़, धरनी धरत धवल धौल धुर दा रंग रंगाईआ। तूं दर्शन करना सच दुआर खड़, सनमुख

हो के सोभा पाईआ । सरन सरनाई बेपरवाही जाणा पड़, सीस जगदीश इक निवाईआ। तेरे उत्ते सतिजुग नवां घाड़न लए घड़, घड़न भन्न्हणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ कुड़यारा तोड़े हँकारी गढ़, हउमे हंगता हँकार विकार रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सीतल सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़रीदकोट ✪

नारद कहे धरनी सुण मेरी अगम्मी मम्मी, ममता वालीए तैनूं दयां जणाईआ। तेरे उत्ते जोत प्रकाश नूर रिहा किसे ना शमी, शमांदान विच जहान नज़र कोए ना आईआ। साचा नाम कलमा नज़र ना आए पवण स्वासी दमी, दामनगीर शाह हकीर संग ना कोए बणाईआ। ओह तक लै तेरे उत्ते आउण वाली ग़मी, ग़मखार हो के दर्द सके ना कोए वंडाईआ। दीन दुनी दी धार तक लै दृष्टी वाली चम्मी, चम्म दृष्टी सके ना कोए बदलाईआ। कोझीए कमलीए सदी चौधवीं गूढ़ी नींद मूल
१०८४ ना सवीं, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। तैनूं ख़बर अगम्मी सुणावां नवीं, नव सत्त दयां दृढ़ाईआ। नी बिन तन १०८४
२४ वजूदां सवाधान हो के बहवीं, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। ओह तक लै की खेल करे जोती जाता पुरख बिधाता अवतार २४
चवी, चौबीसा जगदीसा आपणा हुक्म वरताईआ। तूं उस दे बिन सीस चरणी ढहवीं, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। उह लेखा याद कर लै जो संदेशा दे के गया रवीदास रवी, पानहे गंढु की दृढ़ाईआ। जिस दी धार विच एका तुक गा के बवन्जा कवी, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द शब्द शब्द शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे धरनीए मैं तैनूं की देवां पैग़ाम, पैग़म्बरां बाहर जणाईआ। की खेल करे अगम्म अमाम, अमलां तों बाहर नूर अलाहीआ। जिस नूं सजदयां विच सारे करन सलाम, सलामालैकम कहि के सीस निवाईआ। उहदा खेल अनोखा, जिस नूं जाणे ना कोए इन्सान, अक्ल आकलां चले ना कोए चतुराईआ। उह परवरदिगार सांझा यार आपणा करन वाला इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरे उत्तों शरअ दे झगड़े मेटे तमाम, तमंना कूड़ रहिण ना पाईआ। मज़्ह़बां दा रहिण ना देवे कोए गुलाम, ग़ुरबत सब दे अन्दरों बाहर दए कढ्ढाईआ। इक्को प्रगट करे अगम्मा नाम, नर नरायण आप प्रगटाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी शाम, शाह पातशाह इक्को नूर जोत करे रुशनाईआ। तूं उस दे चरण कवलां करनी प्रणाम, कदम बोसी विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए मैनूं आई ख़बर हज़ूरी, हज़रतां तों बाहर दृढ़ाईआ। उह मालक खालक जल्वागर नूरी, नूर नुराना अगम्म अथाहीआ। जो निरगुण सरगुण धार सदा दस्तूरी, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। जो सब दी आसा मनसा करे पूरी, पूरब लहिणे दए चुकाईआ। उस दी अवाज़ जिस धार विच मूसा सुणी उत्ते कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर जणाईआ। मूसा मुसलसल जिस दी कीती मशहूरी, ईसा आपणी गंढु पुआईआ। मुहम्मद मंज़ल दस्सी नेड़े दूरी, चौदां तबकां खेल खिलाईआ। नानक निरगुण सरगुण धार मोढे रख के भूरी, ज़मीं असमानां पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द अमृत रस चाढ़ सरूरी, सुरती सुरत शब्द समाईआ। उह तेरी धार वेखे हज़ूरी, दर ठांडे ध्यान लगाईआ। कलयुग क्रिया मेटे कूड़ी, कूड़ कुटम्ब दए गंवाईआ। तेरे उत्ते आपणे चरण छुहाए धूड़ी, धूड़ी टिक्के खाक रमाईआ। मानव ज़ाती चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ी, मुगधां आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए मेरी हिलदी वेख लै बोदी, दो जहानां की जणाईआ। जो इशारा दे के गए वेदी सोढी, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वासना होणी लोभी, माया ममता सर्ब हल्काईआ। भगत जन जनणी दिसे किसे ना गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर होणी कमली कोझी, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। सति धर्म दी रही किसे ना सोझी, सुदी वदी भेव ना कोए खुल्हाईआ। पंच विकार सब नूं करे रोगी, शफ़ा हथ्थ किसे ना आईआ। मन वासना सब दी होणी भोगी, भस्मड़ रूप ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म मिले मेल ना धर्म संयोगी, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए तूं खेल वेख लै आपणे जग, जग जीवन दाता इक दृढ़ाईआ। की हुक्म देवे सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। तेरे उत्ते मानव जाती होई कग, हँस रूप ना कोए बदलाईआ। ओह तक लै नौ खण्ड पृथमी लग्गण वाली अग्ग, सत्त दीप ना कोए बुझाईआ। बिन पुरख अकाले दीन दयाले दर्शन मिले ना किसे उपर शाहरग, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। बिन सतिगुर शब्द नाम निधाना जाम प्याए कोए ना मध, सच खुमार ना कोए चढ़ाईआ। बिन ठाकर स्वामी परवरदिगार शरअ दी मेटे कोई ना हद्द, हदूदां डेरा कोए ना ढाहीआ। बिन परम पुरख पुरखोतम आत्म परमात्म बणाए कोई ना यद, यदी यदप आपणा रंग रंगाईआ। तूं एकँकार इक इकल्ले धुर दे माही सद्द, सद्दा देणा चाँईं चाँईंआ। जिस दे हुक्म विच केते जुग चौकड़ीआं गए लद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। उह मालक खालक नूर नुराना शाह सुल्ताना तेरा माही आवे

रब्ब, रब्बे आलमीन कहि के जिस नूं सारे गाईआ। तेरी सार पाए झब, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। शब्द अगम्म सुणाए नद, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। तूं खुशीआं विच होणा गद गद, खुशी आपणे विच प्रगटाईआ। तेरे उत्ते सभा मलेछां मेटे सभ, सभ्यता इक्को दए प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे बध्ध, बधक दा लेखा कृष्ण नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण निराकार निरवैर निरँकार आपणा आप बणाए सबब, दूसर आस ना कोए रखाईआ।

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जगदीश दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा रखो भरवासा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जो लेखे लावे मानव ज़ाती पवण स्वासा, साह साह आपणा रंग रंगाईआ। काया मन्दिर अन्दर भेव खुल्हाए पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर पर्दा ओहला दए चुकाईआ। सच दुआर एकँकार पाए रासा, सुरती शब्दी गोपी काहन खेल खिलाईआ। अन्तर निरंतर निरगुण धार करे वासा, वास्ता आपणे नाल जणाईआ। जोती नूर नूर करे प्रकाशा, अन्ध अज्ञान दए गुआईआ। लेखे लावे तन वजूद हड्ड नाड़ी मासा, रक्त बूँद लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ आदि जुगादी जगदीस, जगदीश्वर इक अख्वाईआ। जिस दे छत्र झुले अगम्मी सीस, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ । जिस दा इक्को नाम कलमा हदीस, इक्को ढोला सिफ्त सलाईआ। जो लहिणा देणा मेटे कलयुग अन्तिम बीस, इकीसा आपणा खेल खिलाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर लख चुरासी जाए पीस, सिर सर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वखाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दी इक्को रखो सरन, सरनगति इक जणाईआ। जो मेटणहारा जन्म मरन, मर जीवत रूप दए दरसाईआ । जो आत्म धार परमात्म बन्ने आपणे लड़न, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जिस दी मंज़ल सूफ़ी सन्त फ़कीर चढ़न, दूसर नज़र कोए ना आईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला हार भन्नण घड़न, समरथ अकथ इक अख्वाईआ। जो तुहाडा लेखा जाणे चोटी जड़न, जड़ चेतन वेख वखाईआ। जिस दे ढोले आदि जुगादि सारे पढ़न, सिफ्तां नाल सिफ्त सलाहीआ। उह निरगुण धार हो के पीआ प्रीतम आया फड़न, फड़ बाहों गले लगाईआ। जिस दा झगड़ा नहीं कोई ज़ात बरन, वरन वंड ना कोए वंडाईआ। मेहरवान हो के खोल्हणहारा नेत्र हरन फरन, निज लोचन करे रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा इक्को मंगो दरस, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। जो अमृत मेघ देवे बरस, दीन दुनी दी तृखा बुझाईआ। मेहरवान हो के करे तरस, रहमत आपणी सच कमाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस पिछली दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दे चरण कवल करो डण्डावत, नमो नमो कहि के सीस निवाईआ। तुहाडे अन्दरों कूड़ी क्रिया कढ्ढे बग़ावत, बग़लगीर इक अख्वाईआ। नाम निधान दए निआमत, रस अनडिठ्ठा आप चखाईआ। तुहानूं एथे ओथे दो जहान रखे सही सलामत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेटणहारा अन्ध अन्धेर अन्धेरी शामत, शमअ नूर नूर जोत करे रुशनाईआ।

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ धन्ना सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे मेरे मालक निगाह मार नबी नूह इन्सान, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा भेव चुकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सृष्टी कायनात तेरा ख़ानदान, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जोती जाते पुरख बिधाते कर पहचान, बेपहचान आपणा भेव खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची कर परवान, मुकामे हक आपणा पर्दा लाहीआ। साचा कलमा धुर दा नाम दे दान, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां अक्खीआं मार ध्यान, जोती जाते हो के वेख वखाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी अन्दर होई सुन्नसान, सच वस्त नज़र कोए ना आईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सुल्तान, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। पिता पूत कर परवान, परम पुरख आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे परवरदिगार मेरी दुआ, दस्त बदस्त सीस निवाईआ। मुहम्मदे ज़बी अर्शे नवा फ़र्शे मज़ी तोज़ूने खुदा ज़बलो ज़विग मोज़ीने शवा ज़कीतुल ज़मू शमीउल शवय कमुसतो नज़ू वज़ीअते वज़ा जगमे नगिद दीनाए फ़ज़िग नूरे ज़हा रुशनाए ज़वा कुज़ीने कमू ज़मीने ज़विद धरतीए ख़ाक अलाही पाक पतित पुनीत आपणा रंग रंगाईआ। हज़रते मूसा मुविद ज़कूअम ज़विद सनीअल ज़वी अर्शे तवी ज़ोकू ज़ुमा नूरे रहिनुमा मुर्शदे बदू मुरीदे दुआ परवरदिगारे खुदा खुद मालक तेरी बेपरवाहीआ। हज़रते मसीहे मविंन यसूहे कविंन जामअलू मविस्ते रज़ा अगसते दुवा ज़मीउल ज़विद अर्शे कविद अज़ीअन अता तज़ीउल

जपा ज़कवी ज़वू चश्मे नरू जाहिदे मविद जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। ईसाए सलीब तख्ताए नजीब नौज़ाने शवी फ़र्शाने वसीह दो जहाने तबी तज़लो ज़म्बू फ़ज़लो वज़ू किंशमाए कबू कुनिंदाए दवू बरस्ते बराह जुनहा दुवा जकमी ज़वी जोज़ू समी अकीजउल पिताए पिदर दूज़ाए पिसर नूराए बरदर शहाए ज़वदर ज़मीउल जमा चीने ज़वी रुहीने मज़ी मकबराए वज़ू मौजूदे शबू नूरे नूर नुराने ज़मक्क शहिनशाहे शफ़क्क शफ़ते शफ़ी मुजेतजाने रवी वज़ीउल वज़द नज़ूने खज़ुद हज़रते कुज़ा बशरते दुवा दुसरते वज़ा फ़ितरते मुदा मुबीउल मवी कुज़ाने कवी चाज़ूज़मा नूरी खुदा गॉडे गज़ू गजीउल गुमम मुजतामे जुममाजुनीआ जगी ज़ाहू ज़बी जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कमज़न कमू ज़मज़न नवी शाने शबद्द दो जहाने ज़बद ज़ीकी ज़वा फ़र्शे दुवा नूरी खुदा खादमे ख़िदमत खुद मालक लेखे आप लखाईआ।

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़रीदकोट ✪

१०८८
२४

धरनी कहे प्रभू मेरे दुःख भञ्जण, भव सागराँ पार देणा कराईआ। मेरे शाहो भूप आदि जुगादी निरञ्जण, जोती जाते देणी माण वड्याईआ। जन भगतां धूड़ करा दे आपणे मजण, दुरमति मैल देणी धुआईआ। साचा नाम नेत्र पा दे अंजण, अन्ध अज्ञान रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणा लै सज्जण, साजण हो के मेल मिलाईआ । तेरे सन्त सुहेले कूड़ी क्रिया मात तजण, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। शब्दी धार हो के गज्जण, भय भाओ सिर ना कोए रखाईआ। घर घर तेरे नाम निधानी नाद वजण, बिन ढोलक छैणे कर शनवाईआ। बिन तेल बाती दीपक जगण, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सच प्यार विच करना मग्न, मस्ती नाम खुमार चढ़ाईआ। पवित्र करना गुरमुखां बदन, तन वजूद दुरमति मैल धुआईआ। लख चुरासी विच्चों आया कढण, फड़ बाहों पार कराईआ। लेखे लाउणा नाड़ी मास हड्डण, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ दी मेटणी हद्दण, हदूद आपणी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दर्शन देणा उपर शाह रगण, नौ दुआर एकँकार पन्ध देणा मुकाईआ।

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गहिणा सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे जन भगतो परम पुरख दा माणो रंग, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। अमृत धार वहाए काया गंग, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। आत्म परमात्म बख्शे संग, सगला साथी आप हो जाईआ। जगत तृष्ना मेटे भुख नंग, वस्त सति सच वरताईआ। जगत विकार करे ना तंग, पंच विकार रहिण ना पाईआ। मनुआ मनसा नाल करे ना जंग, झगड़ा कूड़ दए मिटाईआ। किरपा करे आप सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ । तुहाडी मंज़ल तुहाडे अन्दर वेखे लँघ, नौ दुआर दा डेरा ढाहीआ। तुहानूं सति सरूप आपणा दरसाए हँ, पारब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब होए सहाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दी सरन मंगो सरना, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जो लहिणा देणा दए चुका, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। भाण्डा भरम दए भना, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। साचा मार्ग दए समझा, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। अगम्मी रमज़ दए लगा, नाम इशारा इक समझाईआ। प्रेम दा रस दए चखा, बिन रसना रस जणाईआ। तुहाडी बेनन्ती कबूल करे दुआ, दो जहानां मालक होए सहाईआ। जोती

१०८६ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, १०८६

२४ जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को इक सदा, सदके वारी जिस तों सारे घोल घुमाईआ। २४

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सुंदर सिँघ दे गृह पिण्ड फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे प्रभू दीन दुनी उठा दे सुती, सोया जगत रहिण कोए ना पाईआ। मेहरवान हो के धर्म धार सुहा दे रुती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग लगा दे काया पंज तत बुतीं, बुतख़ानयां कर रुशनाईआ। दीन दुनी मेरे उत्ते रहे कोई ना दुखी, दुखियां दर्द देणा मिटाईआ। मानव ज़ाती कर सुखी, सुख सागराँ विच्चों प्रगटाईआ। प्यार बणा दे मानस मानुखी, मानव आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगा दे काया कुक्खी, भगत जन्म देवे धर्म धार दी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते इक्को जगा दे दीआ बाती, जोती जोत कर रुशनाईआ। मेहरवान हो कमलापाती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। आपणा खेल वखा बहुभांती, बिधाते आपणा भेव चुकाईआ। निगाह मार लै लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। अमृत बूँद बख्श दे स्वांती, अंमिओं रस आप चुआईआ। मेरी कलयुग अन्तिम पुछ

वाती, वारस हो के हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू दीन दुनी दा अन्तष्करन कर शुद्ध, पवित्र तन वजूद कराईआ। निर्मल सब दी करदे बुद्ध, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सच दुआरा एकँकारा तेरा जाए सुझ, दूसर नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा दीपक जाए बुझ, सति सच जोत कर रुशनाईआ। कलयुग वक्त अन्तिम रिहा पुज, पूजण योग तेरी सरनाईआ। आपणा भेव खुल्हा दे गुझ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं रो पुकारां निमाणी बसुध, बेसुधा हो के दयां दुहाईआ। मेरे उत्ते तेरे हुक्म दा होणा युद्ध, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। तूं आ के वेखणा खुद, खुद मालक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी सहायता करे ना कोई बिन तुध, तुध बिन संगी नज़र कोए ना आईआ।

✪ २४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड बस्ती तेगा सिँघ वाली ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

१०६० धरनी कहे चौदां लोक मेरे बणो हामी, हमसाजण हो के संग बणाईआ। चौदां तबक मेरा सुणो पैग़ामी, पैग़म्बरां दी १०६०
२४ धार नाल मिलाईआ। बेअन्त कन्त भगवन्त लेखा वेखो दो जहान तमामी, तमअ लालच जगत ना कोए रखाईआ । मेरा २४
घर मन्दिर वेखो मिट्टी ख़ाक ग्रामी, गृह गृह पर्दा आप चुकाईआ। मेरे चार कुण्ट होई अन्धेरी शामी, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। माण रिहा ना किसे कलमे नाम कलामी, कायनात गई भुलाईआ। तूं शाहो भूप निरगुण धार आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखणा थांउँ थाँईंआ। मैं निव निव सजदयां विच दयां सलामी, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्ते नाता जोड़ दे बाहमी, ब्राह्मण गौड़े आपणा रंग रंगाईआ। मेरी मुशिकल कर आसानी, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। तूं मेरा शाहो भूप सुल्तानी, शहिनशाह जल्वागर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते वखा दे अगम्मी झलक, झाकी दीन दुनी बदलाईआ। तूं दो जहानां मालक, मेहरवान इक अख्वाईआ। दीन दुनी तेरा इशारा वेखे पलक, पलकां दे ओहले पर्दा देणा उठाईआ। की लहिणा देणा तेरा नाल मौत मलक, शंकर राय धर्म की समझाईआ। उह लेखा तक लै जो संदेशा दिता बदेही जनक, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। बेशक तेरा खेल वार अनक, अनक कल धारी तेरी बेपरवाहीआ। तेरा वसेरा वासी पुरी घनक, घनईया तेरा ढोला गाईआ। जोती नूर ला दे तनक, जोती जाते हो सहाईआ। मेरा अन्तष्करन

दा मेट दे शंक, शंका कूड़ देणा मिटाईआ। मेरा सुहा दे दुआर बंक, बंक दुआरी आउणा चाँईं चाँईआ। इक्को रंग रंगा दे राउ रंक, ऊँच नीच ना वंड वंडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणा खेल दस्स दे गहरा, गहर गम्भीर भेव चुकाईआ। जगत जहान रहिण देवीं कोई ना बहिरा, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ दीन दुनी बदल दे लहरा, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। तेरे नाम दा इक्को होवे मुशाहरा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे ढोला गाईआ। जोती जाते हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी इक्को सतिगुर शब्द दा ला के पहरा, दूसर संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप समझाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी इक्को सुहा दे बस्ती, दूसर नज़र कोए ना आईआ। नाम खुमारी चाढ़ दे मस्ती, मस्त मस्ताना रूप वखाईआ। धार बख्श दे आपणे रस दी, बिन रसना रस चखाईआ। सृष्टी वणजारन हो जाए तेरे जस दी, सिफ्त सलाही तेरे ढोले गाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेट दे मस दी, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। मैं खुशीआं विच फिरां नसदी, नव सत्त भज्जां वाहो दाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं
१०६१ फिरां दस्सदी, तेरा खुशीआं ढोला गाईआ। तूं खेल वखा दे आपणी प्रतख दी, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप चुकाईआ। सतिजुग १०६१
२४ धार चला दे धर्म धार दे रथ दी, रथवाही हो के सोभा पाईआ। मैं यारड़े तेरा सथर घतदी, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। २४
दीन दुनी वणजारन हो जाए गुरमति दी, मन मति अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। झट नारद कहे धरनीए तूं की मंगें मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरा केहड़ा साचा संग, संगी कवण अख्वाईआ। उठ वेख लै सतिगुर शब्द दा अगम्मी तुरंग, जो परा पसन्ती मद्धम बैखरी तुरीआ दी धार तों परे दृढ़ाईआ। दो जहानां पार लँघ, पुरीआं लोआं चरणां हेठ दबाईआ। नाल नाम निधान वजाए मृदंग, निरगुण धार करे शनवाईआ। जिस नूं कहिंदे सूरा सरबंग, उह करता धुरदरगाहीआ । जिस ने अन्तिम लेखा मुकाउणा यमुना सरस्वती गोदावरी गंग, गंगोत्री भेव रहे ना राईआ। उस दे कोल अनोखा निराला ढंग, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। उह साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्म नाल तेरे उते होणा जंग, जंगजू बणे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए सुण लै धुर दा ढोल ढमक्का, ढईआ गोबिन्द वाला नाल मिलाईआ। जिस दा सदी चौधवीं वायदा इकरार पक्का, संग मुहम्मद चार यार देण गवाहीआ । जो मूसा धार बणया सका, सगला संग रखाईआ। जिस ईसा भेव चुकाया यका, वाहिद इक्को

नूर अलाहीआ। जिस ने निरगुण धार सरगुण नानक वल तका, गोबिन्द पर्दा आप उठाईआ। उहदा अन्तिम लेखा नाल होणा बूरा कक्का, कायनात हुक्म वरताईआ। शरअ दा लेख मुकाउणा लेखा वेखे मदीना मक्का, काअबा इस्माईल नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ । नारद कहे धरनीए की रो रो करें पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरे उत्ते बदलण वालीआं बहारां, पत्त टहणी रहे कुमलाईआ। करे खेल हरि अगम्म अपारा, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस आशा पूरी करनी तेई अवतारा, त्रैगुण अतीता होए सहाईआ। पैग़म्बरां वायदा जाण कौल इकरारा, करनी दा करता नूर अलाहीआ। जिस गुरुआं लेखा पूरा करना विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यारा, दो जहान श्री भगवान करे रुशनाईआ। एका शब्द नाद वजाए नगारा, निरगुण धार आप दृढ़ाईआ। तेरे उत्ते नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप शब्दी धार होवे घलूघारा, घायल हुन्दी वेखणी ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एकँकारा, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ राम सिँघ दे गृह ग्वाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे उत्तों मेट कूड़ अन्धेरा, अन्धआत्म परमात्म दे मिटाईआ। इक्को रंग रंगा दे सञ्झ सवेरा, सति सच मिल के वजे वधाईआ। आत्म परमात्म सब नूं नाम जणा दे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा राग नाद ना कोए दृढ़ाईआ। हर घट अन्तर निरंतर प्रेम प्रीती कर दे चाउ घनेरा, चार कुण्ट दहि दिशा आपणी ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे भगवन्त, भगवन तेरी आस रखाईआ। नाम निधाना बख़्श अगम्मा मंत, मंतव सब दा हल्ल कराईआ । निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लेखे लाउणा जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादि बेअन्त, परवरदिगार सांझे यार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन कर पवित, पतित पुनीत कर ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जाते सब दा बण मित, मित्र प्यारे दया कमाईआ। मानव ज़ाती कर हित, हितकारी

हो के वेख वखाईआ। तेरा लेखा वेखां नित नवित, निव निव लागां पाईआ। तूं आदि जुगादी मेरा पित, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। मेरी सुहञ्जणी लोकमात करदे थित, दिवस रैण आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कर मेहरवानी, मेहर नज़र नज़र टिकाईआ। मेरा लेखा बदल मस्तक विच पेशानी, पेशीनगोईआं पूरब नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट तुग्यानी, नव सत्त रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी सति धर्म दी बख्श निशानी, निशाना जगत जहान बदलाईआ। सब दी मंज़ल इक्को होवे रुहानी, रूह बुत आपणा भेव चुकाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता नाम दा दाता दानी, वस्त अमोलक इक वरताईआ। चार जुग तों वखरी बोध अगाधे आपणी दस्स दे बाणी, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्हाईआ। जल्वागर नूर बख्श नुरानी, दो जहानां कर रुशनाईआ। तैनूं ईसा मन्नया बाप असमानी, मूसा मूँह दे भार ध्यान लगाईआ। मुहम्मद तेरी गाई कलामी, कायनात सुणाईआ। नानक निरगुण सरगुण धार शब्द जणाया सतिनामी, सति सति तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा शाहो भूप अनामी, सचखण्ड वासी इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी शरअ दी कट ग़ुलामी, ज़ंजीर
१०६३ रहिण कोए ना पाईआ। मानव जाती तक तमामी, तमअ लोभ कूड़ हँकार वेख वखाईआ। मेरे अन्तष्करन कट परेशानी, १०६३
२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभ २४
मैनूं बख्श दे इक्को सति, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। मानव ज़ाती कूड़ क्रिया विच ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे दे बणाईआ। हर हिरदे बख्श दे ब्रह्ममत, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्हाईआ। आत्म परमात्म जोती धार जोड़ दे नत, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। सच दुआर एकँकार वास्ता रही घत, निव निव लागां पाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू बख्श दे इक्को धर्म, धर्म धार इक प्रगटाईआ। सतिजुग साचे दे दे जरम, कलयुग जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों कढ दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ । झगड़ा मेट दे ज़ात पात वरन बरन, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। इक्को सति सतिवादी तेरी होवे सरन, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म तेरा ढोला सारे पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा वजदी रहे वधाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी घाड़न घड़न, समरथ पुरख इक अख्वाईआ। लहिणा देणा एकँकार विच संसार मेट दे सीस धड़न, पंज तत इक्को रंग रंगाईआ। मानव ज़ाती आप बन्ह लै आपणे लड़न, पल्लू गंढु ना कोए

छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादी करनी करन, करनी दा करता इक अख्वाईआ।

✪ २५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरचरण कौर दे गृह हीरा मंडी गेट फ़िरोज़पुर शहर ✪

नारद कहे धरनीए मैं सचखण्ड दुआरयों आया, बिन कदमां आपणा कदम उठाईआ। सतिगुर शब्द दरगाह साची मुकामे हक इक हुक्म जणाया, निरअक्खरां निरअक्खर धार सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं इक्को राग दृढ़ाया, बिन जगत विद्या नाम कलम्यां बाहर सुणाईआ। खुशीआं नाल विष्न ब्रह्मा शिव भेव खुल्हाया, भेव अभेदा दिता समझाईआ। फिर सतिजुग त्रेता द्वापर निउँ निउँ सीस झुकाया, निरमाणता विच रहे दृढ़ाईआ। नारदा जे धरनी धरत धवल धौल उत्ते जाणा खेल वेखणा बेपरवाहया, बेपरवाह की आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे झट मैनूं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा पिछला चेता आया, चेतन हो के दिता सुणाईआ । मेरा पुरख अकाला दीन दयाला लहिणा देणा जाणे सर्ब सबाया, बचया रहिण कोए ना पाईआ। झट मैं पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार बिन सीस सीस झुकाया, बिन हथ्थां धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे धरनीए मैं दूर दुराडा आया नठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। मेरे अन्तष्करन सतिगुर शब्द ने दिता हठ, धीरज धीर धर्म धार दृढ़ाईआ। मैं तेरे उत्ते तक के आया तीर्थ अठसठ, जल धारा अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। मैं फिर के आया मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, गुरुदुआरे चर्चा चरागाहां फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सति धर्म दा दिस्या ना किते इक्ठ, दीन मज़्हब प्रेम प्रीती विच ना कोए समाईआ। धर्म दा बुरज तेरे उत्तों गया ढठ, निशाना नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा अग्नी लाई फिरे भठियाला भठ, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म की वरताईआ। नारद कहे धरनीए मैं सचखण्ड दवारयों आया दौड़ा, दो जहान नौजवान मर्द मर्दान हो के पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं मैं पन्ध मुका के आया सौड़ा, भीड़ी गली भज्जया वाहो दाहीआ। जां तेरे उत्ते निगाह मारी जीव जहान जगत होया कौड़ा, अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती रस ना कोए टपकाईआ। झट मैनूं हुक्म संदेशा दिता जोती जाते पुरख बिधाते की खेल करे ब्रह्मण गौड़ा, गोबिन्द धार एकँकार आपणी कल वरताईआ। फेर निगाह मारी मैनूं सरसे उपर नज़र आया होड़ा, सो पुरख निरञ्जण आपणा भेव चुकाईआ। हँ ब्रह्म आत्म परमात्म धार

१०६४ २४

किस बिध होवे जोड़ा, हाहे टिप्पी भगत भगवान मिल के वजे वधाईआ। झट अगम्मी धार विच मैं शब्दी सुणाया इक्को दोहरा, दो जहानां श्री भगवाना आप सुणाईआ। जां निगाह मारी जोती जाता पुरख बिधाता मैनूं नज़री आया इक्को बांका शौहरा, शौहर जिस नूं कहि के सारे सीस निवाईआ। फेर की तक्कया नौ खण्ड पृथ्मी दिसे अन्ध घोरा, अन्ध अज्ञान सके ना कोए मिटाईआ। कलयुग जीवां जगत जिज्ञासुआं मन कल्पणा हो गई वांग चोरा, सति सति विच ना कोए समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए मैं आ के तेरे उत्ते तक्कया की, कामल मुर्शद की वखाईआ। पवित्र रिहा कोई ना जी, जीवण जुगती सारे गए भुलाईआ। प्यार रिहा किसे ना पुत्तर धी, पूत गोद ना कोए सुहाईआ। अन्त वासा दिसदा सब दा साढे तिन्न हथ्थ सीं, रवीदास चमारा दए गवाहीआ। धर्म धार दा बीजे कोई ना बी, पत्त टहणी फल फुल नज़र कोए ना आईआ। उह लेखा पूरा होणा जो गुरदास ने किहा वीह इकीह, बीस इकीसा हरि जगदीसा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मैं तेरे उत्ते धर्म धार कोई ना तक्कया, तकवा हक ना कोए रखाईआ। साजण मीत दिसे कोई ना सक्या, सगला संग ना कोए निभाईआ। निगाह मारी मदीना मक्कया, काअब्यां फोल फुलाईआ। झगड़ा वेख्या बूरे कक्कया, ईसा इस्म आपणे विच जणाईआ। सति प्यार रिहा ना जिन्हां गोबिन्द अमृत छकया, प्रीती विच ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा आपणा खेल करे जगत हथ्थो हथ्थया, लहिणा समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे नारदा जे तूं आएयों दूर दुराडा, निरगुण हो के पन्ध मुकाईआ। निगाह मार लै दीन दुनी पंज तत नाड़ी मास हाडा, तन वजूदां फोल फुलाईआ। हुण भरम भुलेखा काहदा, भाण्डा भरम देणा भनाईआ। सति सच दा सुणे कोए ना नादा, धुन आत्मक राग ना कोए दृढ़ाईआ। शब्द सुणे ना कोए बोध अगाधा, बुद्धी विच जीव जंत भज्जण वाहो दाहीआ। की मेरे उत्ते खेल वरते पुरख पुरखोतम मोहण माधव माधा, मालक ख़ालक की आपणी कार कमाईआ। उह वक्त याद कर लै जो संदेशा दे के गया कृष्ण राधा, राधका कहि के भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए बेशक तूं प्रभ तों मंगां मंगीआं, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरे उत्ते केते जुग चौकड़ीआं लँघीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। कितने अवतार पैग़म्बर गुरु बणाए संगीआ, तन वजूदां वेख वखाईआ। कितनीआं कथां कहाणीआं सुणीआं चंगीआं, चार जुग दे शास्त्र रहे दृढ़ाईआ।

हुण निगाह मार लै प्रकृती पंझीआं, रजो तमो सतो वेख वखाईआ। तेरे उत्ते किसे नूं पता नहीं कितनीआं धारां मंदीआं चंगीआं, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। जगत जिज्ञासुआं नेत्र अक्खीआं होईआं अन्धीआं, निज नेत्र लोचन नैण ना कोए खुल्ह्राईआ। अन्तर निरंतर मंज़लां मुक ना जावण पन्धीआं, नौ दुआरे डेरा कोए ना ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणे कोए ना छन्दीआं, अनहद नादी राग ना कोए शनवाईआ। ओह वेख लै मेरे कोल जुग चौकड़ी पुराणीआं संधीआं, जिस दी जगत विद्या सार ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता शाह पातशाह सूरा सरबंगीआ, करनी दा करता इक अख्वाईआ।

✪ २५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सरदूल सिंघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

धरनी कहे प्रभू दीन दुनी दी पवित्र कर बुद्ध, पतित पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। मन कल्पना कूड़ी क्रिया कर शुद्ध, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। पंच विकार एकँकार घर घर करे ना युद्ध, तन वजूद हक महबूब आपणा भेव खुल्ह्राईआ। मैं
१०६६ रो रो पुकारां धरत निमाणी बसुध, बेसुध हो के तेरे अगे वास्ता पाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ कुड़यारा मेट दे जुग, सतिजुग १०६६
२४ सति धर्म धर्म प्रगटाईआ। एस दी अन्त अख़ीर बेनज़ीर औध गई पुग, पूजणयोग तेरे अगे वास्ता पाईआ। सच दुआर सर्ब २४
संसार तेरा एका जाए सुझ, आत्म परमात्म मेल मेलणा चाँईं चाँईंआ। दो जहानां नौजवाना श्री भगवाना आपणा भेव खोल्ह् दे गुझ, पर्दा ओहला तन वजूद रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म धार दा चाढ़ दे रंग, रंगत कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। जो संदेशा दे के गया साधू सरबंग, सर्ब दे मालक देणी माण वड्याईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां तेरा भेव खुल्ह्राया भुजंग, भुजंगीआं लहिणे देणे पूर कराईआ। मेरे उत्तों कलयुग अन्ध अन्धेरा मेट दे अन्ध, सति सच कर रुशनाईआ। सतिजुग सच चाढ़ दे चन्द, जोती जाते कर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया सृष्टी दृष्टी अन्दरों कढ दे गंद, मनसा मन होए ना कोए हल्काईआ। हर घट अन्दर जगत दुआर वेखणा लँघ, जोती जाते पुरख बिधाते पन्ध मुकाउणा चाँईं चाँईंआ। मेहरवान हो के आत्म धार परमात्म आपणे ला लै अंग, अंगीकार इक वखाईआ। अमृत सोमा निझर धार वहा दे गंग, बूँद स्वांती नाभ कवल टपकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले तूं मेरा मैं तेरा दीन दुनी गाए छन्द, सोहला ढोला इक समझाईआ। मेरा खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा

आप उठाईआ । धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सतिजुग कर प्रकाश, प्रकाश होवे ख़लक ख़ुदाईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा इक अबिनाश, अबिनाशी करता नूर अलाहीआ। धर्म दी धार मेरे उत्ते पुआ दे रास, आत्म परमात्म गोपी काहन मिल के वजे वधाईआ। मेरा अन्तष्करन ना रहे उदास, चिन्ता ग़मी ग़मखार देणी मिटाईआ। नाम जपाउणा आपणा स्वास स्वास, साह साह आपणी धार प्रगटाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे मालक पृथ्मी आकाश, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिजुग मेरे उत्ते होवे प्रगट, परगणा मेरा दे सुहाईआ। प्रकाश कर दे तन वजूद हर घट, मानस मानव मानुख आपणा भेव चुकाईआ। तेरा नूर ज़हूर दिसे लट लट, जोती जाते पुरख बिधाते एका नूर देणा चमकाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात मेरे उत्ते रहे ना वट्ट, मानव ज़ाती एका रंग रंगाईआ। शरअ शरीअत जगत धार दी डोरी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सति धर्म दा खोल्ह दे हट्ट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दीन मज़्ब इक्को वस्त वरताईआ। आत्म सेज सृष्टी सुहा दे खट, सिँघासण आसण सोभा पाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर आपणी करवट वट, पासा दीन दुनी बदलाईआ । नाम निधाना अमृत अंमिओं रस चट, धुर दा मेघ आप बरसाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ कुड़यार दा मेट दे फट्ट, शरअ छुरी कसाई नज़र कोए ना आईआ। इक्को नाम कलमा तेरा सृष्ट सबाई लए रट, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे गाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सर्ब कला समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। मैं धरत निमाणी तेरे कोलों मंगां ख़ाली हथ्थ, वस्त अगम्म अथाह देणी वरताईआ। मित्र प्यारे तेरे सथर गई लथ, यारड़े तेरी सेज हंढाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ पुरख अगम्म अथाहीआ। मैनूं सच धर्म दी दे दे वथ, वास्ता तेरे अगे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ क्रिया कुड़यार मथ, मथन कर क्रिया कूड़ ख़लक ख़ुदाईआ।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ ब्रह्म कुमारीआं दे आश्रम विच फ़िरोज़पुर शहर ✪

ब्रह्म कुमारी आत्म धार तृप्त, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता एकँकार परवरदिगार वेख वखाईआ। किस मंज़ल गृह टिकाणे होई असथित, आसण सिँघासण कवण डेरा लाईआ। ब्रह्म वेता अन्तर नेता शवै शिव किस दुआरे मिल्या मित, मित्र प्यारा

एकँकारा मिल के वजे वधाईआ। कवण प्यार विच संसार मन कल्पणा रहे ना विच चित, चितवित ठगौरी तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। कवण वेला कवण घड़ी झट वक्त केहड़ी थित, घड़ी पल कवण रंग रंगाईआ। सच दुआर केहड़ा गृह केहड़ा मन्दिर जिथ्थे परमात्म आत्म करे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल नित, नित नवित जीव जंत साध सन्त वेखणहारा साचा चाँई चाँईआ। उह आदि धार एकँकार शिव शिवै सब दा मात पित, पिता पूत आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। तृप्त धार जो मेटणहारा तृष्ना, त्रैगुण अतीता बेपरवाहीआ। जिस दी याद विच शंकर शिव ब्रह्मा विष्ना, विश्व दा मालक अगम्म अथाहीआ। जिस दा आदि जुगादि नित नवितना, कलम शाही शाही कागज़ां अक्खरां नाल लेख लिखणा, चार जुग दे शास्त्र सिफ्त सलाहीआ। जिस दे कोल जुग बदलण दी धार आपणी बिधना, अनक कलधारी आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। तृप्त निगाह मारनी कत्तक दिवस दिहाढ़ा छब्बी, प्रविष्टा सोहणा रंग रंगाईआ। जल्वागर
१०६८ नूर नुराना तकणा रब्बी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा खेल वखाईआ। सब दा मालक धुरदरगाही तबी, जगत रोग सोग दए मिटाईआ। १०६८
२४ जिस नूं सीस झुकाउँदे सभी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच लागण पाईआ । जेहड़ा मिलदा कदी कदी, कदीम दा मालक २४
इक अख्वाईआ। उह सच दुआरे आ गया अभी, सचखण्ड निवासी आपणा नूर जोत कर रुशनाईआ। जेहड़ा भगतां मिलण दा सदा लबी, लालच मुहब्बत वाला रखाईआ। जिस दी ज़िमीं असमानां बाहर गद्दी, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया धरनी धरत धवल धौल उत्तों रिहा कढ्ढी, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप रहिण कोए ना पाईआ। माया ममता मोह विकार विभचार हँकार लैण देवे किसे ना वढी, रिशवत कूड़ ना कोए जणाईआ। उस दी अन्त अख़ीर दो चार दी सब दे वास्ते सदी, सदमे वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस ने हर तन वजूद शरीर अन्दरों नाम शब्द दी धार नाल कढणी बदी, बदकारी दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तृप्त निगाह मारनी बिन नेत्रां जगत संसार, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता तकणा अगम्म अपार, अलख अगोचर नूर अलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा परवरदिगार, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस नूं झुकदे रहे तेई अवतार, रामा कृष्णा ढोले गाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द कीता सतिकार, सतिनाम कहि के सिफ्त सलाहीआ। उह कलयुग अन्तिम आ गया जोती जाता हो के ख़बरदार, बेख़बरां रिहा उठाईआ। उठो वेखो नेत्र खोल्हो जीवो जंतो साधो

सन्तो वेखो शाह पातशाह सची सरकार, सच स्वामी इक्को नज़री आईआ। जिस कलयुग कूड़ा दीन दुनी दे अन्दरों कढणा बाहर, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। उह अगले साल विच होण वाला ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप कराईआ। दूजे साल जोती जोत करे उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। तीजे साल नौ खण्ड पृथ्मी मारे मार, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी सारे रोवण धाहां मार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा धरती उत्ते उडे छार, मिट्टी ख़ाक देवे दुहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ काअबे रोवण ज़ारो ज़ार, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती करे पुकार, तीर्थ संग ना कोए निभाईआ। ग्रन्थ शास्त्र वेद पुराण अञ्जील कुरान बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ अक्खर अक्खर वेखण नैण उग्घाड़, कवण दुआर एकँकार पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दीन दुनी दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा देणा उतार, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। उह आ गया जोत जगा गया शब्द सुणा गया डंक वजा गया सति सरूप हो के विच संसार, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जिहनूं तकदे रहे जुग चार, आसा रखदे गए अवतार, पैग़म्बर झुक के सजदयां विच कहिंदे गए परवरदिगार, गुरु गुरदेव

१०६६ चरण धूड़ी लाउँदे रहे छार, चार जुग दे शास्त्र आस रखाईआ। जिस नूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अमाम अमामा नूर अलाह १०६६

२४ सब ने मन्नया परवरदिगार, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता निहकलंका कलि कल्की अवतार, २४

कल कलेश दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। उह आ गया निरगुण दाता शिव शवै शक्ती, जिस नूं आदि शक्ति सीस निवाईआ । उह भगतां भगवन वेखे काया मन्दिर अन्दर सति सति दी भगती, भगवन हो के खोज खुजाईआ। जो लहिणा देणा तन वजूदां जाणे बूँद रक्ती, हड्ड मास नाड़ी भेव रहे ना राईआ। ओह परम पुरख परमात्म सर्ब आत्मा दा मालक इक्को व्यक्ति, जिस दी गत कहिण किछ ना पाईआ। ओह धरती उत्ते धवल उत्ते धर्म दी धार दा मालक आ गया शरती, शरतीआ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं सारयां मन्नणा निधपरती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। उस दी इक दो तिन्न साल दी सोहणी बरसी, बरस बरस दा लेखा दए मुकाईआ। जिस ने सब दी मेटणी हवस हरसी, तृष्ना कूड़ी दए गंवाईआ। उह अमृत मेघ नाम निधाना श्री भगवाना बूँद स्वांती काया मन्दिर अन्दर नाभी कवल उलटा के रिहा बरसी, सांतक सति सति वरताईआ। जिस दी आत्मा निरगुण धार परमात्म होवे दरसी, बिन जगत नेत्रां आपणा दरस दिखाईआ। उस दी किसे गुरमुख विरले कोल सति सच दी पर्ची, प्राचीन दे लेखे वेख वखाईआ। जिस दे कोल सब दी आदि जुगादि दी अर्ज़ी, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को

अगम्म अथाहीआ। उह कलयुग बदलण दा बड़ा ग़रज़ी, ग़रज़ आपणी आपणे विच्चों प्रगटाईआ। पर हुण उस ने बग़ैर किसे दी इच्छया तों वरत लैणी आपणी मर्ज़ी, मरीज़ वेखे ख़लक ख़ुदाईआ । उहदा खेल होणा असचरजी, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ओह शाहो भूप ओह सुल्तान नौजवान श्री भगवान मर्द मर्दान खेल जाणे आपणे घर दी, गृह बैठा वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस दी धार आदि जुगादि चोटी जड़ दी, चेतन आपणा भेव चुकाईआ। जिस दी विद्या ग्रन्थ शास्त्रां दी धार नाल जगत मन मति बुद्धी विच पढ़दी, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। उह अन्तिम सृष्टी खेल करे सीस धड़ दी, दृष्टी अन्दर आपणा पर्दा लाहीआ । उह शाहो भूप सुल्तान वड्डा वशिष्टी, विशेषता विच आपणा गुण दए समझाईआ। जिस दी प्यार दी धार बिन अक्खरां तों निरअक्खर धार सब कुछ लिखदी, लेख लेखराज गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। कुमारी तृप्त वेखणी त्रैगुण दी धार, त्रैगुण अतीता दए वखाईआ। जो प्रगट होवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव आपणा संग बणाईआ। जिस नूं पूजदे रहे सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे नैण उठाईआ। जिस दी आसा रख के गए तेई अवतार, पैग़म्बर गुरु बैठे ध्यान लगाईआ। सो आ गया जोत जगा गया डगमगा गया भेव खुल्हा गया पर्दा लाह गया शब्द वजा गया नाद सुणा गया आप आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल उत्ते आपणा रंग रंगाईआ। उस विश्व दे मालक नूं बिना अक्खां तों वेखणा जो सब दे अन्दर आपणा करे प्यार, प्रीतम हो के आपणा रंग रंगाईआ। उह मित्रां दा मित्र ते यारां दा यार, सज्जणां दा सज्जण इक अख्वाईआ। जदों वसे तन दे अन्दर काया मन्दिर, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। तृप्त ब्रह्म कुमारी, कुमार वेखणा शब्द अनादी धुरदरगाहीआ। जिस दी आत्मा नाल सदा यारी, विछोड़े विच कदे ना आईआ। जेहड़ा प्रेम दा सदा वपारी, वणज इक्को इक कराईआ। जेहड़ा वेखणहारा नौ दुआरी, घर घर अन्दर खोज खुजाईआ। जिस दी मंज़ल नहीं दुष्वारी, दुश्मण पंजे अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। ओह देवणहारा अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती ठण्डी ठारी, अंमिओं रस जाम आप प्याईआ। ओह बख़्शणहारा शब्द अगम्मी नाद धुन्कारी, धुन आत्मक राग सुणाईआ। जेहड़ा जोती जाता पुरख बिधाता जगावे दीप जोत उज्यारी, बिन तेल बाती डगमगाईआ। ओह मंच उत्ते बैठा शाहो भूप शहिनशाह सुल्तान जिस दी आदि जुगादि सिक्दारी, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। ओह निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परवरदिगार सांझा यारी, मीत मीता इक अख्वाईआ। ओह ब्रह्म दी धार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल करे अगम्म अपारी, अलख अगोचर

इक अख्वाईआ। जिस नूं शवै शक्ती कहि के सारे करन निमस्कारी, नमो नमो कहि के सारे सीस निवाईआ। ओह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परम पुरख पुरखोतम सर्ब कला जिस दा खेल कलयुग अन्तिम वारी, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस दा एथे ओथे दो जहानां लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सरगुण निरगुण अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी खेल करे बण वड संसारी, संसार दा स्वार्थ आकारथ आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरदीप सिंघ दे गृह पिण्ड तूतां वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते पुकार करदे अस्गाह थल, महीअल तेरा ध्यान लगाईआ। आशा रख के गए बैठे समुंद सागर जल, जलधारा ध्यान लगाईआ। पूरब लहिणा तक लै जो कौल कीता नाल बलि, बावन हो के गया दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त किसे टाहण रिहा ना फल, पत्त टहणी गए कुमलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरे उत्ते वध्या छल, कपट विच ख़लक खुदाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सच संदेशा मैनूं घल, शब्दी शब्द शब्द दृढ़ाईआ। मैं होवां तेरे वल, तेरा संग इक बणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटां कल, कल कातीआं करां सफ़ाईआ। पंच विकार रहे ना दल, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। दूई दुवैती मेटां सल, आत्म परमात्म मेला मेलां सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे जन्म कर्म दी टुट्टी गंढ्ढीं, कलयुग अग्नी तत तत बुझाईआ। नाम भण्डारा इक्को वंडीं, चारे कुण्टां आप वरताईआ। मेरी आशा होण ना देवीं रंडी, कन्त सुहाग तेरी सरनाईआ। लेखा रहिण ना देवीं करीर जंडी, इक्को इष्ट देणा प्रगटाईआ। मानस रहे ना कोए पाखण्डी, भाडां भरम भउ देणा भनाईआ। तेरे मिलण दा मार्ग इक्को होवे डण्डी, डण्डावत सब नूं इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों कलयुग अग्न मेट दे तत, ततव तत इक समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर बदल दे मति, मनमति दा लेखा दे मुकाईआ। जगत विकार ना उबले रत, रक्त बूँद लेखे लैणी लाईआ। आत्म धार बणा दे नत, परमात्म मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। तूं निरगुण धार मेरे उत्ते आएयों वत, बेवतनां दे मालक दया कमाईआ। तेरे अगे वास्ता रही घत, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों कूड़ कुड़यारा कढ भृष्ट, भाण्डा भरम भउ भनाईआ।

एका मार्ग दस्स दे सृष्ट, श्रेष्ट आपणा नाम समझाईआ। जोती जाते इक्को तेरा होवे इष्ट, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। लहिणा पूरा कर दे राम वशिष्ट, विषयां तों बाहर संग निभाईआ। तेरी आदि जुगादी भविख्तां वाली लिख्त, अवतार पैग़म्बर गुरु गए दृढ़ाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ कर दे निष्ट, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म समझा दे आपणी ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पुछ वात, वातावरन तक ख़लक ख़ुदाईआ। मेरे उत्तों झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नूर ज़हूर आपणा बख़्श दे कमलापात, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। निगाह मार लै धरनी कहे मेरे उत्ते लोकमात, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत जाम बख़्श दे बूँद स्वांत, स्वांती इकांती आपणी इक वरताईआ।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सुलखण सिँघ दे गृह पिण्ड रुकना मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

११०२

२४

नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते तक्कया अन्ध घोर, घोरी हो के ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दी अन्तष्करन दी धारा हो गई होर दी होर, अवर दा अवर दीन दुनी रूप बदलाईआ। मानस मानव इक दूजे नाल करदे खोर, झगड़े विच दिसी ख़लक ख़ुदाईआ। सच दा मन्त्र फुरना फुरे किसे ना फोर, नाम निधाना नादी नाद ना कोए वजाईआ। मानस जन्म जगत जिज्ञासुआं जाए मूल ना सौर, सतिगुर सच संग ना कोए रखाईआ। मैं हैरान हो गया धर्म दी चारों कुण्ट कटी गई डोर, तन्दव तन्दी तन्द ना कोए बन्हाईआ। झट मैनूं पंच विकारे पै गए चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आपणी लै अंगड़ाईआ। मैं उच्ची कूक पाया शोर, दरोही दिती थांउँ थाँईंआ। मेरा कोई ना चलया ज़ोर, बलहीण हो के दयां दृढ़ाईआ। क्यों दीन दुनी खाण वाली हो गई पंछी ढोर, पशूआं खल्लां रहे लुहाईआ। किसे दा भाग ना दिसे मथोर, मथुरा दा काहन रिहा जणाईआ। मैं प्रभू दा संदेशा देण आया बतौर, आप आपणा फेरा पाईआ। तूं निगाह मार लै कर के ग़ौर, की गहर गम्भीर हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए प्रभू प्यार विच पा गलवकड़ी, बिन बहीआं बाहू उठाईआ। जिस दी मुहब्बत विच आदि जुगादि जकड़ी, ज़ंजीर सक्या ना कोए तुड़ाईआ। तूं होवीं ना दीन दुनी नाल मनमतिड़ी, मनसा कलयुग नाल रलाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान

इक्को तोल तोलणा अगम्मी तकड़ी, जिस दा तराज़ू नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे धरनीए तूं आपणे वेख लै वाल धौले, धवले बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै इकरार कौले, वायदे पिछले वेख वखाईआ। किस बिध पुरख अकाला तेरे उत्ते मौले, मौला आपणा रूप प्रगटाईआ। अमृत रस तैनूं बख्शे अगम्मी कवले, कवल दी धार ब्रह्मा की समझाईआ। दीन दुनी दे मानव तके पग़ले, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे तके बगले, बपड़े वेखे थांउँ थाँईंआ। नी तेरे लहिणे देणे मुकाए सगले, सगला संगी होए सहाईआ। जिन्ह लेखे लाउणे कोझे कमले कंगले, ग़रीब निमाणयां आपणी गोद टिकाईआ। जो कलयुग अन्त आया गुर अवतार पैग़म्बरां पीरां बदले, जोती जाता हो के फेरा पाईआ। उस दी वेखणी हदूद हक मंज़ले, मंज़ल मंज़ल सारे पन्ध मुकाईआ। जिस दा इक्को ढोला होणा नाम निधान अगम्मी ग़ज़ले, गाइन गा गा आप सुणाईआ। जिस दे शब्द अगम्मी साज़ खड़कणे बिन ढोलक छैणे तबले, तबलीग़ सब नूं दए जणाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला तेरा पर्दा अन्तिम कज्ज लए, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नारद कहे धरनीए तूं खुशीआं दे विच भज्ज लै, बिन कदमां कदम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरे उत्तों आपे लभ लए, जन भगतां खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ संपूरन सिँघ दे गृह पिण्ड चक निधाना ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

कलयुग कहे धरनीए मेरा गा लै ढोला, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्दां सिफ्त सलाहीआ। मैं चौथा जुग परम पुरख दा बण के आया गोला, गोलक धर्म धार दी तेरे उत्तों ख़ाली दिती कराईआ। मैं माण रहिण दिता नहीं किसे अवतार कला चौदां सोलह, आपणी कल दिती वरताईआ। नौ खण्ड पृथमी माया ममता मोह दा पा के रौला, धीरज धर्म दिता हिलाईआ। कूड़ कुड़यार विच संसार हट्ट अगम्मा खोल्ह, ख़लक दे मालक मैनूं दिती माण वड्याईआ। मैं झूठ वणजारा बण गया तोला, दीन दुनी तोलां थांउँ थाँईंआ। मैं किसे दे अन्दर भेव रहिण दिता नहीं पर्दा ओहला, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नी तेरे उत्ते सदी चौधवीं अन्त मैं खेलण वाला खून दा होला, हौली हौली आपणा खेल प्रगटाईआ। तूं वायदा तक लै चार जुग दा इकरार कौला, कवल नैणां की तैनूं रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे कलयुगा मेरा परम पुरख भगवन्त, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस

नूं जुग चौकड़ी गाउँदे भगत सन्त, सूफ़ी सोहले ढोले रहे सुणाईआ। जिस दा नाम निधाना अगम्मा मंत, मंतव मेरा हल कराईआ। जो लेखा जाणे जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उह तेरे कूड़ कुड़यार दा करनहारा अन्त, अन्तष्करन वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के बणावे बणत, घड़न भन्नणहार धुरदरगाहीआ। जिस दी महिमा एथे ओथे दो जहान अगणत, कथनी कथ सके ना राईआ। उह तेरा तोड़नहारा गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म सब नूं दए समझाईआ। बुद्धी तों बाहर बोध अगाधा बण के पंडत, तूं मेरा मैं तेरा सिख्या सच दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसाँईंआ। कलयुग कहे धरनीए मैं सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। मेरा मालक ख़ालक वाली दो जहान, जोबनवन्ता श्री भगवन्ता नूर अलाहीआ। जिस ने निरगुण धार मैनूं दिता दान, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। मैं फेरी दरोही विच जहान, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा हुक्म वरताईआ। धर्म रहिण दिता नहीं विच ज़मीं असमान, धवले वेखणा नैण उठाईआ। जिधर तकें मानव ज़ाती तैनूं दिसे बेईमान, बेवा होई ख़लक ख़ुदाईआ। साबत रहिण दिता नहीं किसे दा धर्म ईमान, अमल तकणे थांउँ थाँईंआ। मेरा कूड़
११०४ होया प्रधान, नव सत्त भज्जे वाहो दाहीआ। तूं हो ना जाईं हैरान, हैरानी विच कुरलाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल शरअ ११०४
२४ शैतान, शरीअत आपणा संग निभाईआ। मैं योद्धा सूरबीर बली बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २४
आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे कलयुगा ना ऐवें पा शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ज़रा तक लै नाल ग़ौर, गहर गम्भीर की हुक्म वरताईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया तेरी दफ़न होवे विच गोर, मढ़ी मसाण रोवण मारन धाहीआ। तेरी सति धर्म दी कटी जाणी डोर, कटाकश प्रभ आपणा नाम लगाईआ। जिस लेखा रहिण नहीं देणा ठग चोर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ । तेरा मेटे अन्धेरा घोर, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। दीन दुनी दा लेखा कर देवे अवर का और, अवर दा अवर रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। कलयुग कहे धरनीए मैं प्रभ दा पुत नापाक, पाक रहिण कोए ना पाईआ। सब दी मिट्टी उडावां ख़ाक, धूड़ी ज़मीं असमान वखाईआ। मैं चौथा जुग बण के आया चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर मनुआ कीता आक, मन का मणका आप भुआईआ। सच दुआरे खोल्ह सके कोई ना ताक, पर्दा ओहला ना कोए उठाईआ। मैं जगत अस्व चढ़ के पूरे करां तेरे वाक्, वाकिफ़कार बणया ख़लक ख़ुदाईआ । धर्म दा रहिण दिता नहीं कोई सज्जण साक, मीत प्यारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे कलयुगा मेरा मालक अगम्म स्वामी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस तेरे उत्ते निरगुण धार कीती मेहरवानी, मेहरवान महिबान बीदो नूर अलाहीआ। उस ने तेरी मेटणी कूड़ निशानी, निशाना सतिजुग सच झुलाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा अन्तिम दिसे फ़ानी, फ़नाफ़िल्ला दिसे ख़लक खुदाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार झगड़ा मेटणा जिस्म जिस्मानी, रूह बुत अबिनाशी अचुत आपणे रंग रंगाईआ। उह वेस वटाए दया कमाए जोत जगाए जिस नूं पैग़म्बरां किहा बाप असमानी, इस्म आज़म इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा हकीकत वाला कलमा होवे कलामी, कायनात करे पढ़ाईआ। तेरी मेटे रैण अन्धेरी शामी, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। उह शाहो भूप सुल्तानी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मालक ख़ालक दो जहानी, दोहरी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल वखाईआ।

११०५ ✪ २७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ करनैल सिँघ, इकबाल सिँघ, राज सिँघ अजैब सिँघ, ११०५

२४ नछत्तर सिँघ दे नवित फ़रीदकोट ✪ २४

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते किरपा कर, किरपा निधान नौजवान श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेरा सुहञ्जणा कर दे घर, अबिनाशी करते परवरदिगार सांझे यार तेरी सरनाईआ। दीन दयाल मैनूं दे दे इक्को अगम्मा वर, वारस हो के वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धर्म धार मेरा बणा दे सरोवर सर, दुरमति मैल कलयुग कूड़ कुड़यार धुआईआ। दीन दयाले माया ममता मोह विकार चुका दे डर, हउमे हंगता रहिण ना पाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी मैं तेरा भाणा रही जर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निव निव सीस झुकाईआ। मेहरवाना नौजुआना मेरा ख़ाली भण्डारा भर, नाम निधान वस्त अगम्म अथाह आप वरताईआ। दर दरवेशण हो के तेरे दुआरे गई खड़्ह, भिखारन हो के झोली डाहीआ। मेरे उत्तों तोड़ हँकारी गढ़्ह, निम्रता आपणी दे वरताईआ। झगड़ा मुका दे चेतन जड़, चोटी इक्को रंग समाईआ। मैं तेरा पल्लू इक्को ल्या फड़, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मेरे उत्ते सति धर्म दा घाड़न देणा घड़, सतिजुग सच सच देणा वरताईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा एकँकार तेरे हुक्म विच जाए हड़्ह, धरनी धरत धवल धौल उत्ते रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । धरनी कहे प्रभू

मेरे उत्ते निगाह मार लै जल्दी, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। धार वेख लै कलयुग कल दी, कल काती आपणा फेरा पाईआ। सार पा लै महीअल जल थल दी, थल अस्गाह रोवण मारन धाईआ । मेरी आशा पूरी कर दे बावन धार बलि दी, तृष्ना तेरे चरण टिकाईआ। बेशक तेरी खेल अछल अछल्ल दी, वल छल आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। मैं सच दुआर एकँकार दरगाह साची तेरा मलदी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म धार उपजा दे जुग, युगती आपणी नाल रलाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा लेखा जाए पुग, पूजणयोग तेरी सरनाईआ। दीन दुनी दी अन्तष्करन उजल कर दे बुद्ध, बिबेक आपणा रंग रंगाईआ। मन कल्पणा दहि दिशा ना जाए कुद्द, कुदरत दे कादर होणा आप सहाईआ। निगाह मार लै टिल्ले थल अस्गाह सागर समुंद, महीअल आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिजुग साचा धर्म दुआरा ला, धर्म दी धार धार वड्याईआ। पुरख अकाले बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणा गवाह, शहादत चार जुग भुगताईआ। ग्रन्थ शास्त्र नाल मिला, सगला संग इक रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठा, त्रैगुण अतीते दया कमाईआ। करोड़ तेतीसा दे हिला, सोया रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्दी आपणा डंक वजा, दो जहानां कर शनवाईआ। राउ रंकां फोल फुला, बचया रहिण कोए ना पाईआ। तूं आदि जुगादी बेपरवाह, रैहबर इक्को नूर अलाहीआ। तूं मालक वाहिद इक खुदा, गॉड कहि के सीस निवाईआ। काहन कान्हा इक्को रिहा अख्वा, राम रामा रूप समाईआ। मूसा तैनूं रिहा ध्या, ईसा बिन लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। मुहम्मद ढोले रिहा गा, चार यारी मिल के वजे वधाईआ। नानक निरगुण सरगुण सति सति नाम रिहा दृढ़ा, डंका गोबिन्द फ़तिह रिहा वजाईआ। अन्त सब ने धरनी कहे मैनूं दिता सुणा, बिन रसना जिह्वा शब्द सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आवे बेपरवाह, बेपरवाह नूर अलाहीआ। जो कलयुग कूड़ी क्रिया दए गुआ, धरनी धरत धवल धौल तेरे उत्ते रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचे जन्म दए दुआ, सति सति विच्चों प्रगटाईआ। एका नाम कलमा दए पढ़ा, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ गुरुदुआर दए वखा, इक्को गृह वजदी रहे वधाईआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवाना दए दृढ़ा, दूसर अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। धरनीए तूं लख लख लैणा शुकर मना, शुकराने विच सीस निवाईआ। उह खेल करे मालक ख़ालक अलाही नूर खुदा, खुदी दा डेरा अन्तिम देवे ढाहीआ। मिट्टी ख़ाके तेरे नालों कदे ना होवे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को फ़रमान

संदेशा देवे सदा, हुक्म इक्को इक जणाईआ। तूं उस नूं सीस देणा निवा, निव निव लागणा पाईआ। तेरी अन्त कन्त भगवन्त कलयुग पकड़े बांह, सिर सर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी रहिण ना देवे वांग काँ, दुरमति मैल देवे धुआईआ । इक्को एकँकारा सारे जपण नाँ, तूं मेरा मैं तेरा कहि के ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख मेरी आ के पा लै सार, सरगुण निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेरा लहिणा देणा कर्ज उतार, मकरूज लेखा अवर रहे ना राईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा खेल अपर अपार, अलख अगोचर आपणा पर्दा दे खुल्हाईआ। मैं मांगत हो के खड़ी तेरे दुआर, दुआरका वासी काहन कृष्ण आपणे नाल मिलाईआ। राम रामा दे सहार, दशरथ बेटा मेरी दए गवाहीआ। बावन बिन अक्खरां बण लिखार, शहादत धुर दी दए भुगताईआ। पैग़म्बर तेरा करन इंतज़ार, मूसा ईसा मुहम्मद बैठे नैण उठाईआ। गुर गुर तेरा वेखण नूर उज्यार, जोती जाते कर रुशनाईआ। धरनी कहे मैं रो रो करां गिरयाज़ार, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सम्बल दे मालक जोती जाते हो जा ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर आपणी कर रुशनाईआ। मेरा हौला कर दे अन्त कन्त
११०७ भगवन्त कलयुग कूड़ कुड़यार दा भार, माया ममता मोह नज़र कोए ना आईआ। मैं दुख्यारन तेरे अगे करां पुकार, पुनह ११०७
२४ पुनह सीस निवाईआ। तूं वेखणहारा इक इकल्ला एकँकार, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। मैं चाहुंदी तेरी चरण कवल २४
धूड़ी लावां छार, टिक्के सति सच रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी मेहरवाना, महबूब की तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै आदि जुगादि नौजवाना, निरगुण हो के वेख वखाईआ। मेरे शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं हुंदयां क्यों बदल गया ज़माना, ज़मीं ज़मां दोवें रोवण मारन धाहीआ। तूं मालक ख़ालक वसणहार उत्ते असमाना, इस्म आज़म आपणा दे समझाईआ। तेरा संदेशा दे के गए कृष्णा कान्हा, घनईया सईआ पर्दा गया उठाईआ। पैग़म्बरां दिता हक पैग़ामा, यूवी जवां अर्शे नवां फ़र्शे ख़ुदा नूर अलाहीआ। गुरु गुरदेव तेरा वजा के गए दमामा, डंका जगत जहान सुणाईआ। सतिगुर शब्द पहरना बाणा, रूप रंग रेख वेखण कोए ना पाईआ। तेरा इक्को नाम होवे तुरीआ तों बाहर तराना, सुखन सुखोपत जगत समझ कोए ना पाईआ। चारे बाणी तेरा सुणन नाम निधाना, परा पसन्ती मधम बैखरी वेखण नैण उठाईआ। चारे खाणी तैनूं करन परवाना, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सीस निवाईआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर पुरख बलवाना, बल धारी तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशाना, सतिजुग सच

धर्म प्रगटाईआ। तूं मेरा रहीम रहमतां वाला रहमाना, रूह बुतां कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्त अमोलक मेरी झोली पाउणा अगम्मा दाना, जिस नूं दानशवर समझ सके कोए ना राईआ।

✪ २७ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ खेम सिँघ दे गृह कोटकपूरा शहर ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा दीन दुनी दा तक लै कोट, नव नव चार दे मालक ध्यान लगाईआ। मानस मानव मानुख तेरा नूर अलाही अगम्मी जोत, जोती जाते पुरख बिधाते सति सरूप नज़री आईआ। निरगुण निरवैर निरँकार सब दे अन्दरों कढ दे खोट, मूर्ख मूढ़ अज्ञान आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा समां बीत गया बहुत, सृष्टी दृष्टी अन्दर लेखा लहिणा देणा चुकाईआ। नौ दुआरे जगत वासना धर्म दी धार खोल्ह दे सोत, सोई सुरत अकाल मूर्त आप उठाईआ। परम पुरख परमात्म आत्मा तेरी गोत, दूसर वरन बरन नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
११०८ एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू मैं मांगत खड़ी हज़ूर, हाज़र हो के सीस निवाईआ। ११०८
२४ अमृत रस बख्श दे कपूर, पवित्र आपणा नाम प्रगटाईआ। जोती जाते उजाला दे दे नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। मेरा २४
पन्ध मुका दे नेड़ा दूर, दो जहानां वाट रहे ना राईआ। मेरी बेनन्ती बिनय कर मन्ज़ूर, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। जो आसा रख के गया मूसा उत्ते कोहतूर, तुरत वेखणा थांउँ थाँईंआ। जो संदेशा दिता सूली चढ़न लग्गयां मनसूर, मनसा तेरे रंग रंगाईआ। मैं दुक्खां विच होई मजबूर, मेहरवान मेरा लहिणा देणा देणा चुकाईआ। मेरे तों कलयुग क्रिया मेट दे कूड़, कूड़ कुटम्ब दे मिटाईआ। मैं चाहुंदी तेरी इक्को धूड़, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। दीन दुनी चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़, दुरमति मैल धुआईआ। काया माटी तन ख़ाकी रंग चाढ़ दे गूढ़, दो जहानां नौजुआना उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा इक्को वजे डंका, डौरू जगत नज़र कोए ना आईआ। मेरा सति दुआर सुहा दे बंका, गृह मन्दिर दे वड्याईआ। माण बख्श दे राउ रंका, शाह कंगालां इक्को संग बणाईआ। उह लेखा लहिणा पूरा कर दे जो संदेशा दे के गया जनका, त्रेता जुग दए गवाहीआ। दीन दुनी दा अन्दरों फेर दे मन का मणका, मनसा मनसा विच्चों बदलाईआ। तूं मालक ख़ालक वासी पुरी घनका, अकल कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं बोध अगाधा

पंडता, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को बणा दे संगता, सगला संगी आप हो जाईआ। झगड़ा मुका दे पंज तत तन का, ततव तत इक्को भेव खुल्हाईआ। लेखा रहे ना खुशी ग़म का, ग़मखार लहिणा देणा देणा मुकाईआ। वणजारा रहे ना कोई दृष्टी चम्म का, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जगत जहान वणजारा होवे इक्को धर्म का, धर्म दी धार देणी प्रगटाईआ। रूप अनूप वखाउणा इक्को ब्रह्म का, पारब्रह्म पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते भेव खोल्ह दे आप, आप आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी मेरे उत्तों मेट संताप, सगले संगी हो सहाईआ। कलयुग कूड़ कुकर्म रहे ना पाप, दुरमति मैल देणी धुवाईआ। जगत अन्धेरा मेट दे रात, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी पुछ वात, वातावरन तक ख़लक ख़ुदाईआ। चरण प्रीती इक्को बख्श दे आपणा नात, दूसर संग ना कोए बणाईआ। मेरा कूड़ कुकर्म दा लेखा मुका दे खात, पिछला लहिणा रहे ना राईआ। लेखा लिख दे नाल कलम दुआत, शाही आपणा रंग रंगाईआ। प्रगट हो के विच लोकमात, मातृ भूमी दे वड्याईआ। तूं मेरा स्वामी कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। बिन नैणां
११०६ मेरे वल झाक, झाकी मिट्टी ख़ाकी उत्ते आपणी आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ११०६
२४ देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सो पुरख निरञ्जण कहे धरनी निरगुण दाता हो के आवांगा, हरि पुरख निरञ्जण २४
हो के वेस वटावांगा। एकँकार हो के भेव चुकावांगा। आदि निरञ्जण हो के डगमगावांगा। अबिनाशी करता हो के फेरा पावांगा। श्री भगवाना हो के वेख वखावांगा। पारब्रह्म आपणा पर्दा आप चुकावांगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावांगा। अवतार पैग़म्बर गुरु संग बणावांगा। जोती जाता पुरख बिधाता हो के डगमगावांगा। चार जुग दा लहिणा देणा तेरी झोली पवावांगा। चार जुग दे शास्त्र फोल फुलावांगा। अक्खर अक्खर लेख लिखावांगा। पत्र पत्र गंढु पुआवांगा। जो गोबिन्द यारड़ा लथ्था सथर, सेज सुहञ्जणी सोभा पवावांगा। धरतीए मूल वहा ना अथर, तेरे हंझूआं हार बणावांगा। मेरी महिमा सदा अकथण, अकथ कथा आप दृढ़ावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया करके मथन, सतिजुग सच चन्द आप चमकावांगा। तेरी पैज आवां रखण, निरगुण हो के वेस वटावांगा। इक्को ढोला मेरा नाम सारे जपण, तूं मेरा मैं तेरा राग दृढ़ावांगा। इक्को घाट होवे पतण, सृष्टी इक्को घर सुहावांगा। किसे दा चले कोई ना यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरतावांगा। तेरा पवित्र करके लोकमात दा वतन, बेवतनां आपणा खेल खिलावांगा। सच दुआर दा खोल्ह दे हट्टण, सच नाम इक वरतावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया डोरी आवां कटण, कटाकश आपणा हुक्म समझावांगा। अमृत आत्म निझर

झिरनिउँ बूँद स्वांती आवां झट्टण, बजर कपाटी पर्दा आप खुल्हावांगा। शब्द अनादी नाद घर घर सुणावां नदन, अनहद नादी नाद वजावांगा। जोती दीपक काया मन्दिर अन्दर जगण, नूर नुराना हो के डगमगावांगा। भाग लगा के सृष्टी काया माटी बदन, तन वजूदां वेख वखावांगा। तूं खुशीआं नाल फेर लग्गीं भज्जण, भजन बन्दगी सब दी आप बदलावांगा। इक्को चरण धूड़ करा के मजन, सर सरोवर इक वखावांगा। तेरे पर्दे आवां कज्जण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकावांगा। तेरा लेखा रहिण ना देवां अद्धण, वखरी वंड ना कोए वंडावांगा। मैं नूर अलाही नज़र इक्को आवां रब्बन, जल्वा जल्वागर आप प्रगटावांगा। जिस नूं कहिंदे गोपाल मूर्त मदन, मोहणी आपणा खेल खिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावांगा। धरनी कहे प्रभू मैं तेरा शुकर मनावांगी। जोती जाते पुरख बिधाते तेरे गुण गावांगी। दीन दयाल दया निध ठाकर, तेरी धूड़ी ख़ाक रमावांगी। अगम्म अथाह मेरे गहर गम्भीर सागर, सरोवर तेरे विच नहावांगी। मेरा निर्मल कर्म करना उजागर, दुरमति मैल मैल धुआवांगी। इक्को नाम दी बणा सौदागर, वणज इक्को इक रखावांगी। तूं मेरा करीम कादर, कुदरत दे मालक तेरी ओट तकावांगी। जो इशारा दे के

१११० गया गुर तेग़ बहादर, उह वस्त तेरे कोलों मंग मंगावांगी। तूं मेरा पिदर मादर, मात पित तैनूं इक रखावांगी। मेरी आलस १११०

२४ खोल्हणी निंदर, सवाधान हो के तेरा शुकर मनावांगी। मेरे गृह दा कुफ़ल तोड़ना जिंदर, ज़िंदगानी तेरे चरण टिकावांगी। २४

जो आशा रख के गया काहन वासी मथुरा बन बिन्दर, बिन्दू तेरा राह तकावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के झोली डाहवांगी। पुरख अकाल कहे धरनी निरगुण जोत जोत रुशनावांगा। जोती जाता हो के वेस वटावांगा। पुरख बिधाता करनी कार कमावांगा। कलयुग मेट अन्धेरी राता, सतिजुग सति चन्द चमकावांगा। तैनूं बणा के फेर धर्म दी माता, धरनीए तेरा दर्द वंडावांगा। अन्तिम आ के पुछां वाता, वारस हो के खेल खिलावांगा। मैनूं सब ने किहा जोती जाता, जागरत जोत इक प्रगटावांगा । तेरा भेव खुल्हावां बातन अगम्मी सुणावां बाता, जगत विद्या ना कोए दृढ़ावांगा। चरण प्रीती जोड़ के नाता, रिश्ता फ़रिशतिआं बाहर समझावांगा। तेरी कलयुग कूड़ दी मेट के वाटा, अगला मार्ग इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावांगा। धरनी कहे प्रभू जद मेरे उत्ते आउगे। दीन दयाल वेस वटाउगे। जोती जाते जोत जगाउगे। शब्द अनादी नाद सुणाउगे। बोध अगाधी आप पढ़ाउगे। मोहण माधव माधी दरस दिखाउगे। मैं निमाणी कमली कोझी तैनूं रही अराधी, अराधना मेरी लेखे पाउगे। मैं चार जुग दी सिध्धी सादी, सदके वारी तेरे उतों घोली घोल घुमाउगे। मेरे

प्रभू परमात्म जुग बदलण दी तैनूं वादी, की मेरा वायदा पूर कराउगे। उह वेख लओ कलयुग दी कितनी वधी आबादी, जन संख्या केहड़ी खाट सुहाउगे। तेरी खेल प्रभू किस बिध वरतणी डाहढी, भेव अभेद आप जणाउगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाउगे। पुरख अकाल कहे धरनी रूप अनूप प्रगटावांगा। शाहो भूप अखावावांगा। सति सरूप दरसावांगा। सतिगुर शब्द दुलारा पूत, इक उठावांगा। जो फिरे तेरी चारे कूट, दहि दिशा आप दृढ़ावांगा । जो हर हिरदे वेखे जूठ झूठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वेख वखावांगा। जिस दा चार जुग दे शास्त्र देण सबूत, सो मालक हो के कार कमावांगा। निगाह मार के विच काया बुत, बुतख़ानयां पर्दा लाहवांगा। तेरे उत्ते सुहञ्जणी करां रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकावांगा। खेल करां बण अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा हुक्म जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरतावांगा । धरनी कहे प्रभू मैं तेरी रखां उडीक, आमद विच ध्यान लगाईआ। मैनूं शब्दी दस्स तरीक, तारीख दे दृढ़ाईआ । किस बिध मेरे उत्तों मेटें अन्धेरा तारीक, कलयुग क्रिया कूड़ दएं गंवाईआ। किस बिध साचे नाम कलमे करे तबलीग़, दीन दुनी दुनी पढ़ाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी करें उम्मीद, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। किस धार नाल चार जुग दा लेखा करें तस्दीक, शहादत आपणा नाम भुगताईआ। तूं सचखण्ड दा वसनीक, मैं धरनी लोकमात तेरा राह तकाईआ। कवण कूटे आएं मेरे नज़दीक, मैनूं सहिज नाल समझाईआ। तूं मालक लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। मैनूं साची दस्स प्रीत, प्रीतम हो के दे समझाईआ। मेरी काया कर दे ठांडी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। मेरे उत्तों झगड़ा मिटाउणा मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल दे रीत, रीतीवान तेरी बेपरवाहीआ। तूं हर घट वसणा चीत, मन ठगौरी दे चुकाईआ। झगड़ा रहिण ना देवीं हस्त कीट, ऊचां नीचां गंढु पुआईआ। बेशक तेरा रूप सदा अनडीठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मैनूं चाढ़ दे रंग बसीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मेरे वल करवट बदल लै पीठ, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। कलयुग जीव रहिण देणे नहीं कौड़े रीठ, अमृत रस अन्दर देणा भराईआ। हर रसना नाम बख्शणा मीठ, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। तूं मालक ख़ालक पतित पुनीत, पावन बावन तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे धरनीए मैं कलयुग कूड़ मिटावांगा। मूर्ख मूढ़ सुघड़ बणावांगा। तैनूं बख्श के चरण धूड़, टिक्के सच ख़ाक रमावांगा। कलयुग तोड़ के गढ़ ग़रूर, हउमे हंगता मेट मिटावांगा। साचे नाम दा दे सरूर, सुरती शब्द नाल जुड़ावांगा। सनमुख हो के हाज़र हज़ूर,

हज़रतां दे लेखे पूर करावांगा । कलयुग पाए ना तेरे उत्ते फ़तूर, फ़तवा इक्को वार लावांगा। एह जुग मेरे मज़दूर, मज़दूरी सब दी वेख वखावांगा । साची वस्त नाम दे भरपूर, तेरी ऊणता तेरी झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावांगा। धरनी कहे प्रभू निरगुण मेरे उत्ते आएगा। सति अमोलक वस्त इक वरताएगा। मेरी काया गोलक आप टिकाएगा। दीन दुनी खुशी नाल वरताएगा। तेरा लहिणा देणा बीस बीसे एका नाया अवतार उन्नी, उनीसे की आपणी खेल खिलाएगा। तूं वड दाता गुण गुणी, गहर गम्भीर की आपणा हुक्म वरताएगा। तूं लख चुरासी छाणी पुणी, किस बिध सब दे लेखे झोली पाएगा। मैं इक्को सुणनी चाहुंदी तेरी धुनी, धुन आत्मक राग की दृढ़ाएगा। तूं मालक कुंन कुंनी, कुल मालक की हुक्म वरताएगा। मैं तैनूं वेखां किस बिध होवें सुल्हकुली, सब दा साचा संग निभाएगा। झगड़ा मेट के जाप बुल्ल्हीं, अजपा जाप आप जपाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाएगा। पुरख अकाल कहे धरनी मैं आपणा खेल खिलावांगा। जोती जोत नूर रुशनावांगा। भगत सुहेले आप उठावांगा। गुर चेले मेल मिलावांगा। सज्जण सुहेले रंग रंगावांगा। सब नालों
१११२ वखरे कर नवेले, आपणा भेव दृढ़ावांगा। सज्जण सुहेले संग सुहावांगा। आत्म परमात्म करके मेले, पारब्रह्म ब्रह्म विच रखावांगा। १११२
२४ आवण जावण कट के धर्म राय दी जेले, चुरासी पन्ध मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा २४
साचा वर, सद पर्दा आप उठावांगा। धरनी, पर्दा आप चुकावांगा। भगत भगवान मेल मिलावांगा। बण के जगत सुहेल संग रखावांगा। दीप जगा के बिन बाती तेल डगमगावांगा। आपणी कल वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वावांगा। धरनी कहे प्रभू मेरी नमो नमो डण्डावत, बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। मेरे उत्तों कलयुग क्रिया कूड़ मेट बग़ावत, बग़लगीर कर ख़लक खुदाईआ। साचे नाम दी दे सख़ावत, सुख़न अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूर कराईआ। धुर दे नाम दी दे अमानत, हक हक मेरे उत्ते टिकाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रैण शामत, सतिजुग सच कर रुशनाईआ। मैं मूर्ख मूढ़ अन्जाणत, तूं देवणहार गुसाँईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार सही सलामत, सदा सदा दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआर आपणे दे मानत, माण निमाणयां आपणे अंग लगाईआ।

✪ २८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ मग्घर सिँघ दे गृह पिण्ड बरगाड़ी ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे वेख लै डूँग्घे सागर, समुंद सरोवरां ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै साढे तिन्न हथ्थ काया माटी गागर, तन वजूदां फोल फुलाईआ। तेरे नाम दा बणे ना कोए सौदागर, वणज हक ना कोए कराईआ। निर्मल कर्म होए ना किसे उजागर, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। सच दुआर एकँकार मिले किसे ना आदर, दरस तेरा वेखण कोए ना पाईआ। तूं करता करीम कादर, कुदरत दा मालक इक अख्वाईआ । आदि जुगादी सूरबीर बहादर, महाबली नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक धुरदरगाहीआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरणा मेरी कदम बोसी, बिन रसना जिह्वा मुख रस आपणे अन्दर टिकाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी होई दोषी, दोष वेखणा थांउँ थाँईंआ। मैं बेहाल होई विच बेहोशी, सुरती सच रही ना राईआ। माण गया जगत विद्या कोशी, कुशलता विच दिसे ना ख़लक ख़ुदाईआ। सच प्यार विच रहे ना कोई मधहोशी, मधुर धुन सुणन कोए ना पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सारे कर गए ख़ामोशी, नाअरा डंक शब्द ना कोए वजाईआ। दुनिया कूड़ कुड़यार दी धार हो गई पोशी, पेशीनगोईआं
१११३ तेरीआं समझ किसे ना आईआ। पर्दा लाह ना सके कोई पंडत पांधा जोशी, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत १११३
२४ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मैं मस्तक लावां २४
तेरी धूल, धर्म धार वड्याईआ। मेरे उत्तों कूड़ दा मेट असूल, असल वसल दे यार ख़ुदाईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर रसूल, रसना जिह्वा जगत सुणाईआ। सो पुरख अकाले कर कबूल, कामल मुर्शद हो के वेख वखाईआ। मेरा असल चुका दे मूल, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं धुर दा कन्त कन्तूहल, स्वामी ठाकर इक अख्वाईआ। इशारा दे दे शंकर धार त्रिशूल, त्रैगुण अतीते आप दृढ़ाईआ । तेरा हुक्म होवे माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण कवल मेरा होवे सिर सर, तन ख़ाकी माटी तेरी भेंट कराईआ। तूं किरपा निधान किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों जाए हड़, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। पवित्र कर दे नारी नर, नर नरायण दया कमाईआ। मैं मांगत होई तेरे दर, दरगाह साची सीस झुकाईआ। तूं पुरख अकाल किरपा मेरे उत्ते कर, करनहार तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग साचा धरनी धरत धवल उत्ते धर, धौल हो के वास्ता पाईआ। इक्को विद्या सृष्टी दृष्टी अन्दर तेरी जाए पढ़, नाम कलमा इक समझाईआ। झगड़ा मुका दे सीस धड़, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। हउमे किला तोड़ हँकारी गढ़, हँ ब्रह्म दे समझाईआ।

जगत जहान अग्नी अग्ग जाए ना सड़, अमृत मेघ देणा वरसाईआ। परमात्म बंधा लै आपणे लड़, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। मैं सच दुआर एकँकार तेरे ढोले रही पढ़, दरगाह साची सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू तूं आदि जुगादी देवण योग, युगती तेरी बेपरवाहीआ। मेरा सतिजुग नाल कर संयोग, मेला मेल सहिज सुभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कट दे रोग, हउमे हंगता दूर कराईआ। आपणा दरस दे अमोघ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। नाम निधान बख्श दे चोग, चुगली निंदया रहे ना राईआ। चरण प्रीती दे दे जोग, जुगीशरां आपणे रंग समाईआ। आत्म परमात्म तेरा होवे भोग, भस्मड़ हो के खेल खिलाईआ। जगत शरअ पा ना सके वियोग, विछोड़ा अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मेरे उत्ते तेरी मानव ज़ाती माणे मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ। तेरे शब्द दी बिन तेरी किरपा ना होवे खोज, खोजत खोजत थक्की सर्ब लोकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले सति धर्म दा मेरे उत्ते कर दे चोज, चोजी प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जन भगत सुहेले तेरा दर्शन करन रोज़, रोज़ाना आपणा रंग रंगाईआ। आपणा भेव खुल्हा दे गोझ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म शब्द नाम निधाना अगाध बोध, बुद्धी तों परे भेव देणा जणाईआ।

१११४ २४

✪ २८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड वांदर ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे सो पुरख निरञ्जण मेरे राजन, शाह सुल्तान नौजवान तेरी सरनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण आदि जुगादी साजण, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरी ओट तकाईआ। एकँकार वजावणहार अगम्मी नादन, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी शनवाईआ। आदि निरञ्जण हो मेहरवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अबिनाशी करते देणा दान, दाते दानी आप वरताईआ। श्री भगवान किरपा करनी महान, किरपन हो के मंग मंगाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेरी करीं पहचान, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी नौजवान, सूरबीर बलवान आपणी लै अंगड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दस्सणा खेल महान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बेनन्ती करो परवान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर रही सुणाईआ। मेरे उत्ते सतिजुग त्रेता द्वापर बीतिआ कलयुग होया मात प्रधान, नव सत्त आपणा खेल खिलाईआ। माया ममता क्रिया कूड़ होई शैतान, शरअ शरीअत आपणी कल वरताईआ। सति धर्म दा नव खण्ड सत्त दीप रिहा ना कोए निशान,

निशानी दीन दुनी बदलाईआ। मैं सदी चौधवीं होई अन्त हैरान, हैरानी विच मेरी दुहाईआ। चार कुण्ट होवीं निगाहबान, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेखणा चाँईं चाँईंआ। चार जुग दे शास्त्र कूक कूक सुणाण, दरोही दरोही कर सुणाईआ। अठसठ तीर्थ जल धारा सांतक सति दिसे ना कोए विच जहान, अमृत मेघ मेघ ना कोए बरसाईआ । मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ फिरदे बेईमान, गुरुदुआरे चर्चा चरागाहां खोज खुजाईआ। फिर गई दरोही मेरे विच ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक संग ना कोए बणाईआ। सचखण्ड निवासीओ सारे इक्ठे हो के आओ मेरे धर्म वाले मैदान, दूर दुराडे आपणा पन्ध मुकाईआ। आपणे नाम कलमे मन्त्र अक्खरां वाले वेखो कलाम, कायनात अन्दर ध्यान लगाईआ। जो संदेशा दे के गए पेशीनगोईआं विच पैग़ाम, पेशतर पर्दा दयो खुल्हाईआ । निगाह मार लओ आपणे दीन मज़्हब विच ईमान, अमल वेखो ख़लक खुदाईआ। हिरदे वसे ना किसे भगवान, रसना जिह्वा बुल्हां नाल सारे गाईआ। अमृत रस मिले ना किसे पीण खाण, जगत तृष्ना भुख ना कोए मिटाईआ। शब्द अनादी सुणे ना कोए धुन्कान, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। दीपक जोती काया मन्दिर नज़र ना आए महान, बिन तेल बाती डगमगाईआ। मेरा नव खण्ड दुआरा होया सुंञ मसाण, साचा संग ना कोए निभाईआ। धरनी कहे मैं रो रो के चार जुग तों वखरा दयां ब्यान, जिस नूं कलमबन्द सके ना कोए कराईआ । कोई कातब लेख लिखारी लिख सके ना जगत जहान, कलम शाही चले ना कोए चतुराईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा देण लग्गी ब्यान, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी इक्को इक अलख, अलख अगोचर दयां दृढ़ाईआ। निरगुण धार हो प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। जिउँ भावे मैनूं लैणा रख, रक्षक हो के होणा सहाईआ। धर्म धार दी मेरी झोली वेख लै सख, वस्त नाम नज़र कोए ना आईआ। मैं सच सुनेहड़ा इक्को रही दस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। लख चुरासी जीवां जंतां तेरा रिहा प्रेम ना रस, रस्ता दीन दुनी गई भुलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी शब्द अणयाला तीर मार कस, कसम खा के रही दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा धर्म निशाना गया मिट, मिट्टी ख़ाक हो के दयां दुहाईआ । तेरे चरण कवल धवल हो के रही लिट, लिटां खोल्ह के मेरी दुहाईआ। दुनिया दा इष्ट हो गया पत्थर इट्ट, पाहनां पूजे ख़लक खुदाईआ। तेरे शास्त्र सति धर्म दे ग्रन्थ टकयां उत्ते रहे विक, कीमत हट्टो हट्ट पुआईआ । तेरे नाम निधान दी सुरती विच रही किसे ना सिक, शब्दी शब्द ना कोए समाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरा लेख अगे आपे

११९५
२४

लिख, भविख पिछले नाल मिलाईआ। साचा रिहा ना कोए मुरीद सिक्ख, पंडत पांधा तिलक ललाटी जोत ना कोए रुशनाईआ। आह वेख लै मेरे कोल अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाली चिट, जिस दा हरफ़ हरूफ़ समझ कोए ना पाईआ। धरनीए तेरे उत्ते कलयुग अन्तिम पुरख अकाला तेरा होणा मित, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो निरगुण हो के करे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जगत ठगौरी कढ्ढे चित, मनसा मन दूर कराईआ। तेरी सुहञ्जणी करे थित, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। तेरा वक्त सुहञ्जणा आपे लए नजिठ्ठ, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। आपणा रूप प्रगटाए अनडिठ्ठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। नाम निधाना रस देवे मिठ, अनरस आपणा आप चखाईआ। जुग बदलणा जिस दी धार आदि जुगादि नित, नवित तेरे आवे चल के धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि शाहो भूप पुरख अकाला अबिनाशी अचुत, परवरदिगार सांझा यार एकँकार अकल कलधारी आपणी कल लए प्रगटाईआ।

✪ २८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सतिनाम सिँघ दे गृह पिण्ड दबड़ी खाना ज़िला फ़रीदकोट ✪

१११६ २४

धरनी कहे प्रभ बख्श दे अमृत बूँद स्वांती, सतिगुर दाते पुरख बिधाते दया कमाईआ। आत्म परमात्म दीन दुनी समझा दे आपणी ज़ाती, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुलाईआ। निझर झिरना अमृत रस बख्श दे बूँद स्वांती, नाभी कवल कवल उलटाईआ। मैं तेरा खेल तकदी रही सदा बहु भांती, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या चाँईं चाँईंआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग मेरे उत्तों मेट क्रांती, क्रिया कूड़ रहिण कोए ना पाईआ। मेरा पवित्र सीना कर दे कर दे ठण्डी छाती, छत्रधारीआ तेरे अगे मंग मंगाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप निरगुण जोत जगा दे बाती, बिन तेल बाती डगमगाईआ। सति धर्म दी मेरे उत्ते होवे प्रभाती, प्रभू आपणा रंग देणा रंगाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरी पुछ वाती, लाशरीक तेरे अगे वास्ता पाईआ। माया ममता मोह विकार कूड़ कुड़यार रहिण देणी कोई ना हाटी, झूठा वणज जगत ना कोए कराईआ। सच दुआर एकँकार आपणी मंज़ल दस्स दे घाटी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे मेरा शंक, सहिसा अन्तर रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड सुहा दे मेरा बंक, सत्त दीप तेरे नाम दी वजे वधाईआ। इक्को रंग रंगा दे राउ रंक, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। सच प्यार दी हर हिरदे ला दे तनक, जगत जिज्ञासुआं सोई सुरती दे जगाईआ। मानस

ज़ाती अन्दरों फेर दे मन का मणक, मनसा कूड़ ना होए हल्काईआ। तूं परमात्म आत्म धार सब दा कन्त, कन्तूहल इक्को इक अख्वाईआ। सतिजुग साची सति धर्म मेरे उत्ते बणा दे बणत, घड़न भन्नणहार तेरी ओट तकाईआ। तेरा भविख्तां विच इशारा दे के गए अवतार पैग़म्बर गुरु धुर दे सन्त, भगत भगवन्त तेरी ओट तकाईआ। मेरे उत्ते तेरा इक्को नाम निधाना होवे मंत, पुरख अकाल इक्को तेरा इष्ट मनाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेहर कर दे आपणी धारा वखा दे निहकलंक, कलि कल्की आपणी कल वरताईआ। मेहरवान महबूब अमाम अमामा मेरा सुहा दे बंक, बंक दुआर मिले वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा हर हिरदे उपजे छंत, साचा ढोला इक्को इक गाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब सब होवे तेरी धर्म दी संगत, सगले संगी बहुरंगी आपणी खेल वखाईआ। दीन दुनी दा गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म सब नूं दे दृढ़ाईआ। मैं तेरे दुआर परवरदिगार सांझे यार एकँकार होई मंगत, दर ठांडे ख़ाली झोली रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले मेरी आसा वेख बहु पुराणी, पुनह पुनह करके सीस निवाईआ। तूं शहिनशाह शाहो भूप सुल्तानी, सचखण्ड निवासी अगम्म अथाहीआ। मेरी
१११७ कलयुग अन्तिम दुक्खां वाली कहाणी, धर्म निशानी नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म मेल मिले किसे ना हाणी, सुरती १११७
२४ शब्द ना कोए समाईआ। मनुआ कूड़ मनसा विच करे शैतानी, शरीअत शरअ चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। तूं मालक २४
ख़ालक दो जहानां नूर अलाह असमानी, इस्म आज़म आपणा दे दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरे अन्दरों कढ हैरानी, हैरत विच तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दो जहानी, दो जहानां मालक ख़ालक तेरी आस रखाईआ।

✪ २८ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ हरचन्द सिँघ दे गृह पिण्ड हरिराए पुर ज़िला बठिंडा ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते किरपा कर, किरपा निधान श्री भगवान दया कमाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरे अगम्मे हरि, करते पुरख कुदरत दे कादर तेरी इक सरनाईआ। मेहरवाना नौजवाना मेरा सुहञ्जणा कर दे घर, गृह मन्दिर नव सत्त अन्दर वजे वधाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी मेरा पवित्र कर दे सर, सरोवर इक्को इक वखाईआ। तूं मेरा मालक ख़ालक नरायण नर, दो जहानां वाली धुरदरगाहीआ। मेरा कलयुग कूड़ कुड़यारे चुका दे भय डर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरा भाणा रही जर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरा धर्म दुआरा एका खोल्ह, वस्त सति सच वरताईआ। शब्द अगम्मा इक्को बोल, अनबोलत दे दृढ़ाईआ। दो जहानां वजा दे धुर दा ढोल, डंका इक्को कर शनवाईआ। हभे वस्त तेरे कोल, हमसाजण देणी वरताईआ। जिस दा भेव पा सके ना कोई पंडत पांधा रौल, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। हर घट अन्दर अन्तष्करन जा मौल, मौला हो के आपणा खेल वरताईआ। चार जुग दा लहिणा देणा मेरा पूरा कर दे कौल, इकरार तेरे चरण टिकाईआ। मैं मिन्नतां करदी दीनन हो के धौल, दयाल देणी माण वड्याईआ। परम पुरख परमात्म तेरे उत्तों आपा आप देवां घोल, हउँ घोली घोल घुमाईआ। मेरे उत्तों आ के कूड़ दा तत विरोल, बाबल हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा धर्म दुआरा कर दे उजला, उगण आथण तेरी वजे वधाईआ। मेरा भेव खुल्हा दे आदि जुगादि मुढला, मध दा पर्दा रहे ना राईआ। नव नव चार दे मालक खोल्ह दे गुंझला, गोबिन्द पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तूं मोहण माधव अकाल मूर्त मधसूदन इक अगम्मी मुंदरा, मुदतां दा मालक नज़री आईआ। मेरा कोना गोशां वेख लै कुंदरा, समुंद सागराँ फोल

११९८ फुलाईआ। मेरा लेखा जगत धार नहीं कोई उंगला, हिन्दसिआं गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ११९८

२४ आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख पुरखोतम दया निध, २४

ठाकर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सुदी वदी दा लेखा नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख परमात्म तेरे कोल अनोखी बिध, बिधना दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा तक लै अगम्म, अगम्मड़े तेरे चरण टिकाईआ। मेरा रूप नहीं ततां वाला ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा देणा उठाईआ । मेरा हड्ड मास नाड़ी नहीं चर्म, चम्मदृष्टी ना कोए रखाईआ। मेरा दीन दुनी वाला नहीं कोई कर्म, कर्म कांड ना कोए जणाईआ। मेरा दीनां मज़्हबां वाला नहीं धर्म, हिस्से दीन दुनी रखाईआ। मैनूं इक्को तेरी ओट सहारा तेरे चरण, चरणोदक तेरा लै के खुशी बणाईआ। मैनूं आदि जुगादि तेरे नाल वायदा तेरे नाल प्रण, परम पुरख परमात्म दयां दृढ़ाईआ। जोबनवन्ते श्री भगवन्ते मेरा आपे फड़ लै लड़न, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ । मैं सच दुआर एकँकार तेरी मंज़ल लग्गी चढ़न, चौथे जुग दे मालक होणा आप सहाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी हार भन्नूण घड़न, समरथ पुरख तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्तों झगड़ा मुका दे सीस धड़न, धड़ेबाज़ी दीन दुनी नज़र कोए ना आईआ। जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म तेरा ढोला पढ़न, परम पुरख तेरा नाम ध्याईआ। मेरे उत्ते ना कोई

ज़ात ना कोई पात ना कोई होवे वरन बरन, दीन मज़्ब तेरा नूर नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं आदि जुगादि रहें हमेश, हमसाजण इक अख्वाईआ। मेरे उत्तों कलि कल्की हो के मेट कलेश, कल कातीआं कर सफ़ाईआ। गोबिन्द सूरे तेरा संग होवे दस दस्मेश, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। मैं सुणदी की महिमा तेरी करे सहँसर मुख शेष, दो सहँसर जिह्वा नाल मिलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैं तेरा दर्शन करना चाहुंदी सम्बल देश, साढे तिन्न हथ्थ वजदी वेखां वधाईआ। तूं शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना जोती जाता इक नरेश, नर नरायण तेरी वड वड्याईआ। मैं तेरे दुआरे निरगुण दाते होई पेश, पेशीनगोईआं तेरे चरण टिकाईआ। तेरा इक्को हुक्म सुणना चाहुंदी विशेष, विषयां तों बाहर देणा दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर तेरे ठांडे दरगाह साची निरगुण धार होई पेश, पिछला लेखा नाल मिलाईआ।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ बसंत कौर दे गृह पिण्ड समालसर ज़िला बठिंडा ✪

धरनी कहे प्रभू मैं तेरी घालण रही घाल, घायल हो के जुग जुग सेव कमाईआ। जोती जाते मेरी आ के सुरत संभाल, सम्बल निवासी आपणी दया कमाईआ। सति वस्त मैनूं दे दे आपणा धन माल, अमोलक इक्को इक वरताईआ। मेरी बेनन्ती मंन सवाल, आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। धर्म दा फल लगा दे दीन दुनी दे डाल, पत्त टहणी मानस ज़ाती आप महकाईआ। निरगुण दाते आत्म परमात्म हो के सब दे वस नाल, इक इकल्ले आपणा मेल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दीनां बंधप हो दयाल, दीन दुनी दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं अन्त अख़ीर होई बेहाल, बेहबल हो के वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी कलयुग अन्त मेट बेचैनी, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। नव खण्ड रहे ना रात अन्धेरी रैणी, कलयुग कूड़ कुड़यार मिटाईआ। तूं मेरा आदि जुगादि साक सैणी, सज्जण इक अख्वाईआ। ओह आशा तक लै जो इशारा दिता गंगा यमुना सरस्वती त्रबैणी, त्रैगुण अतीते तेरे चरण टिकाईआ। कलयुग अन्तिम नदी कूड़ दी वहिणी, सति धर्म जाए रुढ़ाईआ। जो कूक के किहा भगत सैणी, आप आपणा हाल सुणाईआ। तूं मालक नर नरायणी, हरि करता धुरदरगाहीआ। साडी बेनन्ती इक्को इक कहिणी, धरनी धरत धवल धौल हो के दयां सुणाईआ। मेरे उत्तों तेरे हुक्म नाल कलयुग कूड़ कुड़यार

कंध ढहणी, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन उठा दे सोता, सुती लै जगाईआ। मेरा दुरमति पाप कलेवर जाए धोता, पापां होए सफ़ाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरा अन्तष्करन तेरे चरण रोता, रो रो दयां दुहाईआ। ओह लेखा याद कर लै जिस वेले नानक धार मारया गोता, गौतम दी धार की दृढ़ाईआ। मैं पै गई कलयुग अन्तिम विच सोचां, सोच समझ चले ना कोए चतुराईआ। मैं इक्को सतिजुग सच सच नूं लोचां, लोचन नैण आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं निरगुण धार तैनूं तकदी, तकदीर दे मालक ध्यान लगाईआ। मैं खेल वेखणा चाहुंदी इक्को यक दी, जो यके बाद दीगरे आपणा ध्यान लगाईआ। मेरी आशा आदि जुगादि पक्क दी, कूड़ा रंग ना कोए रंगाईआ। मैं कथा कहाणी दस्सां सच दी, सुनेहड़ा सच सच दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी कलयुग अग्नी दे विच मचदी, अमृत मेघ सके ना कोए बरसाईआ। मैं तेरी धार वेखणा चाहुंदी परमेश्वर पति दी, पारब्रह्म प्रभ होणा आप सहाईआ। तेरे चरण कवल धवल हो के वास्ता घतदी, निम्रता
११२० विच सीस झुकाईआ। तूं इक्को धार बख्श दे ब्रह्म मति दी, पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ११२०
२४ आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग २४
चौकड़ी तेरी खेल सदा सति दी, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ।

२६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जसवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड राजेआणा ज़िला फ़रीदकोट

नारद कहे धरनीए मैं सचखण्ड दुआरयों आया दौड़ा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सच संदेशा सुण लै की देवे ब्राह्मण गौड़ा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा एथे ओथे निरगुण सरगुण इक्को पौड़ा, पौड़ी डण्डा जगत नज़र किसे ना आईआ। जिस दा मार्ग रस्ता दीन दुनी तों सौड़ा, जगत जिज्ञासू लँघ सके कोए ना राईआ। जिस मैनूं इक्को वस्त दिती सस्से उपर वखाया होड़ा, सो पुरख निरञ्जण भेव खुल्हाईआ। हाहे उपर टिप्पी हँ ब्रह्म बणाया जोड़ा, जोड़ी जगत जगदीस बणाईआ। जिस दी कोझीए कमलीए तैनूं अन्तिम लोड़ा, लुड़ींदा साजण धुरदरगाहीआ। ओन हस के किहा मेरा वक्त रह गया थोड़ा, थुड़ीए थिड़कीए तेरा लेखा दयां मुकाईआ। इक्को बोध अगाधा याद कर लै शब्दी धार गोबिन्द वाला दोहरा, दो अक्खरां जिस दी वंड वंडाईआ। उह पारब्रह्म पति परमेश्वर जोती जाता बांका छोरा, शौहर सब दा

नूर अलाहीआ। जिस तेरा कलयुग अन्त लेखा मुकाउणा अन्ध घोरा, घोरी हो के वेखे थांउँ थाँईंआ। लहिणा देणा मुकाए ठग चोरा, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ । तेरे उत्ते जन भगतां भाग करे मथोरा, मिथ्या दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। उस दा वेस होणा अवर दा औरा, होर दा होर रूप वटाईआ। जिस दा हुक्म फ़रमान संदेश चार जुग तों बाहर वखरा कोरा, जगत मिलावट नज़र कोए ना आईआ। जिस दा शब्द अगम्मी दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां बिना तन वजूद फिरे दौड़ा, आदि जुगादी भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए मेरा दरगाह साची दा सुण पैग़ाम, पैग़म्बरां तों बाहर दयां दृढ़ाईआ। जिस विच सजदा नहीं कोई सलाम, सलामअलैकम कहि के सीस निवाईआ। नी उह मालक ख़ालक नूर अलाह अगम्म अमाम, ममता मोह ना कोए जणाईआ। जिस तेरे उत्ते दीन दुनी वेखणी अवाम, आम भेव समझे कोए ना राईआ । जो कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरी रैण शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। चौदां तबकां लेखा रहिण ना देवे तमाम, तमअ लालच वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा इक्को कलमा कायनात होणा नाम, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। ओसे दे गीत ढोले सारे गाण, गा गा शुकर मनाईआ।
११२१ जो मालक ख़ालक होवे दो जहान, वाली ज़मीं असमान अख्वाईआ। जो शरअ मेटे जगत जुगत शैतान, शरीअत आपणे ११२१
२४ रंग रंगाईआ। मुहम्मद लहिणा देणा करे परवान, चार यारी बैठी सीस निवाईआ। सदी चौधवीं मेट निशान, निशाना धर्म २४
धार झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे धरनीए मैनूं ख़बर अगम्मी दिती निहकलंक, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। जिस दा इक्को नाम दमामा वजणा डंक, फ़तिह गोबिन्द रंग रंगाईआ। जिस तेरा सुहाउणा दुआर बंक, नव सत्त वेखे चाँईं चाँईंआ। भेव खुल्हाए राउ रंक, ऊँच नीच गंढु पुआईआ। तेरे अन्दरों कढ्ढे शंक, संसा रहिण कोए ना पाईआ। इक्को नाम दी लाए तनक, चारों कुण्ट खिच्चे वाहो दाहीआ। दीन दुनी दा मन का मणका फेरे मनक, मनसा मनसा विच्चों बदलाईआ। जिस दा शब्द अणयाला तीर समझ सके ना कोए धनुष, कमान वेखण कोए ना पाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी गाउंदे साध सन्त सहस, अगणत बैठे ध्यान लगाईआ। उस ने तेरे उत्ते चार वरन अठारां बरन दीन दुनी बणाए इक्को बंस, बंसाँवली आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए मैनूं ख़बर दिती अगम्मे कल्गी, जिस नूं कल्की कहि के सारे गाईआ। जिस दी खेल नहीं किसे वरगी, वरग सके कोए ना लाईआ। उहदी धार आपणे अगम्मे घर दी, घराना वेखण कोए ना पाईआ। जिस दी धार आदि जुगादि हभ कुछ करदी,

करता पुरख नूर अलाहीआ। उस दे कोलों लख चुरासी डरदी, सिर सके ना कोए उठाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं आशा ओसे कोलों पढ़दी, निरअक्खर दए समझाईआ। ओसे दी खेल तन वजूद सीस धड़ दी, पंज तत आपणा रंग रंगाईआ। उह लहिणा देणा अन्त तेरी झोली पाए बाकी रहे ना चेतन जड़ दी, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। नारद कहे धरनी सुण लै शब्द सतिगुरु संदेश, शब्द सतिगुर की जणाईआ। मैं आदि जुगादी नर नरेश, नर नरायण दिती वड्याईआ। मेरा ना मुच्छ ना दाढ़ी केस, मूंड मुण्डाया ना रूप बणाईआ। मेरा नाता गोबिन्द धार नाल दस दस्मेश, दहि दिशा खेल खिलाईआ। मैं आदि जुगादि रहां हमेश, जीवण मरन ना रूप बदलाईआ । मेरा अन्तिम वासा होणा सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाईंआ। धरनी कहे नारदा मैं सुणया सर्ब अहिवाल, जो निरगुण धार दिता दृढ़ाईआ। तूं निक्का नन्हा नढ्ढा बाल, जुग जुग भज्जें वाहो दाहीआ। तेरे अगे करां सुआल, जवाबतल्बी विच मंग मंगाईआ। सच दस्स किस बिध प्रभ लेखा मुकावे शाह कंगाल, पातशाह आपणा लेख चुकाईआ। धरनी उत्ते मेरी करे संभाल, किस बिध सम्बल सोभा पाईआ। किस बिध अवतार पैग़म्बर गुरु रखे नाल, विष्न ब्रह्मा शिव जोड़ जुड़ाईआ। किस बिध हुक्म जणाए काल महाकाल, राय धर्म चित्रगुप्त लए उठाईआ। लाड़ी मौत किस बिध करे हाल हाल, भज्जे वाहो दाहीआ। कवण वक्त सुहञ्जणा केहड़ी थित आ के वेखे मुरीदां हाल, मेरा मुर्शद धुरदरगाहीआ। कवण कूटे पहलों करे ज़वाल, ज़ाहर हो के दए दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर किस बिध आपणा भविख्त देण वखाल, पेशीनगोईआं बिन हथ्थां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए सो पुरख निरञ्जण रूप बदलावेगा। हरि पुरख निरञ्जण वेस वटावेगा। एकँकारा नूर दरसावेगा। जोती जाता डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान हुक्म वरतावेगा। पारब्रह्म आप सुणावेगा। शब्दी शब्द डंक वजावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावेगा। धुर दा हुक्म संदेश इक्को इक दृढ़ावेगा। एका जोत एका धार एका शब्द गंढु पुआवेगा। एका रूप आप निरँकार, दूसर वेस ना कोए वटावेगा। जोती जाता हो के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणावेगा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करके पार, धरनी धरत धवल धौल तेरा दुआरा बंक वडयावेगा। साढे तिन्न हथ्थ वेख मन्दिर अपार, सोहणा आपणा रूप जणावेगा। सम्बल बहि सची सरकार, साचा सोहला ढोला राग जणावेगा। तूं कोझीए कमलीए करीं निमस्कार, तेरा सीस जगदीस आपणे लेखे लावेगा। उस दे चरण जावीं बलिहार, बलिहारी

११२२
२४

तेरा दर्द दुःख मिटावेगा। कलयुग कूड़ा तेरे विच्चों कढ्ढे बाहर, धवले तेरा भार दूर करावेगा। जो आसा रख के गया रवीदास चमार, चम्मदृष्टी सब दा डेरा ढावेगा। इक्को रंग रंगावे पुरख नार, नार कन्त आपणी खेल खिलावेगा। तेरे उत्ते बसन्त करे बहार, भगत सुहेले गुलशन बाग़ आप महकावेगा। तूं वेखणा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एका दीप होए उज्यार, जोती जाता डगमगावेगा। एको अमृत रस देवे ठंडा ठार, तेरी तृष्ना भुख मिटावेगा। इक्को शब्द देवे धुन्कार, अनहद नादी नाद सुणावेगा। इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ होए गुरुदुआर, इक्को पुरख अकाला दीन दयाला इष्ट इष्ट सुहावेगा। तूं मेरा मैं तेरा सब ने करना जैकार, दूजा राग ना कोए अलावेगा। नारद कहे धरनीए मेरी डण्डावत बन्दना सजदयां विच निमस्कार, सो स्वामी अन्तरजामी तेरे उत्ते आपणा हुक्म वरतावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी निरगुण सरगुण सद पावणहारा सार, महासार्थी हो के तेरा संग निभावेगा।

✪ २६ कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़रीदकोट ✪

सतिगुर नानक जणाई इक गल्ल, होर हउमे झखणा झाख। जो बावन दस्सी दुआरे बलि, बिन अक्खरां निरअक्खर धार आख। राम जणाई लंका धार विच जल, हनूवन्त समझाया साख। कृष्ण भेव खुल्हाया पल, अर्जन पर्दा लाह पराताख। मूसा ओसे धार विच गया रल, जिस गल्ल दी होर नहीं कोई शाख़। ईसा ओसे मंज़ल प्या चल, जेहड़ी गल्ल अन्दरों गई भाख। मुहम्मद ओहो दुआरा ल्या मल, जिथ्थे इक गल्ल दा यवले ज़ू जमता ज़वी अर्शे नविज़ योज़ू ज़मा रहमते ख़ुदा नूरे निज़ा इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नानक गल्ल जगत धार अगम्मी, अक्खर लेख ना कोए बणाईआ। गाई जाए ना किसे पवण स्वामी दमी, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। किसे कलम शाही दी धार विच्चों नहीं जम्मीं, काग़ज़ां रंग ना कोए रंगाईआ। जिस दी जोबन जवानी पुराणी नहीं नवीं, नव नौ चार समझ कोए ना पाईआ। ओह लिखी जाए ना कदी शास्त्रां वाले पंनी, हरूफ़ां वंड ना कोए वंडाईआ। बद्धी जाए किसे ना कन्नी, हथ्थो हथ्थ ना कोए टिकाईआ। वसे कदे ना किसे छप्पर छन्नी, जगत दुआरयां डेरा कदे ना लाईआ। उहदा लेखा नहीं वजूद तत तनी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना वेस वटाईआ। ओह सुणी जाए कदे ना कन्नी, सरवणां चले ना कोए चतुराईआ। ओह जगत माया वाली नहीं कोई धनी, धनाढ रूप ना कोए दरसाईआ।

११२४ २४

शरअ विच जाए कदे ना डंनी, मज़्हबां संग ना कोए रखाईआ। ना घड़ी जाए ना भन्नी, दोहां तों बाहर आपणा रूप दरसाईआ। ओह बणी नहीं किसे दी वंनी, नार हो के कन्त ना कोए हंढाईआ। किसे दी दुख़तर बणी नहीं चन्नी, गोदी गोद ना कोए उठाईआ। ओहदी धार नहीं कोई उच्ची लम्मी, नीकण नीका नज़र कोए ना आईआ। ओह आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होए निकम्मी, निहकर्मण रूप ना कोए अख्वाईआ। ओह गगन गगनंतर ज़िमीं असमान दे सके ना थम्ह्मी, सहारे दी लोड़ ना कोए रखाईआ। ओह हथ्थ ना आवे किसे विद्या वाली गल्लीं, बुद्धी नाल चले ना कोए चतुराईआ। ओह छल विच किसे कोलों जाए ना छली, अछल अछल्ल आपणी खेल खिलाईआ। ओहनूं खोजदे गए कोटन कोटि पैग़म्बर पीर वली, वलीऐहद ध्यान लगाईआ। ओह इशारा दे के गया मुहम्मद धार अली, अबूबकर नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ओहदा सीस कदे किसे रखया नहीं तली, तल्बां दी वंड ना कोए वंडाईआ। नानक दी इक गल्ल जदों आवे ते आवे भगतां दी साची गली, नौ दुआरयां दे उत्ते आपणा हुक्म सुणाईआ। जिथ्थे जोत दी धार आपे फुली आपे फली, पत्त टहणी वंड ना कोए वंडाईआ। उह गल्ल सतिगुर शब्द दी इक प्रेम धार दी कली, कलम्यां तों बाहर आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। इक गल्ल नानक धार सदा नादन, अनाद अनादी धुंन जणाईआ। ब्रह्म धार सदा ब्रह्मादन, ब्रह्मण्डां वेखे सदा चाँईं चाँईंआ। जिस दी ख़बर आदि जुगादिन, जुग चौकड़ी मेटण कोए ना पाईआ। ओह इक गल्ल अवतार पैग़म्बर गुरु सदा अराधण, बिन मन मनसा ढोले गाईआ। ओह भगतां नाल सदा भगती धार दस्से साधन, सिदक सबूरी आपणा संग जणाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द मार के अवाज़न, सोई सुरती लए उठाईआ। ओह वेखो नूर नुराना शाह सुल्ताना शाहो भूप राज राजन, नर निरँकारा नूर अलाहीआ। जिस ने आदि जुगादि साची साजी साजन, साजणहार इक अख्वाईआ। उस दा भेव इक्को बातन, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। साची गल्ल अगम्म अथाह, सतिगुर नानक नाम विच्चों दृढ़ाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द सदा मलाह, जुग जुग बेड़ा आपणे कंध उठाईआ । जिस दी अक्ल बुद्धी दे सके ना कोए सलाह, मशवरे विच कदे ना आईआ। ओह हथ्थ ना आवे थल अस्गाह, महीअल खोजण चाँईं चाँईंआ। उस दा मालक इक्को बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। जिस उत्ते सतिगुर दया देवे कमा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बिना जगत शास्त्रां तों इक गल्ल दए समझा, गल्ल गल्ल विच्चों प्रगटाईआ। जिस गल्ल विच्चों नज़री आवे नूर अलाह, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। भेव खुल्ह्ाए पर्दा लाह, ओहला रहिण कोए ना पाईआ।

ओह गल्ल कहे वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच दा संग आप निभाईआ। गल्ल कहे मैं नानक धारा, धर्म धर्म जणाईआ। मेरा लहिणा देणा विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी समझ ना पाईआ। मेरा नाता नाल निरगुण जोत जोत निरँकारा, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जिस दी शब्द आवाज़ बिन रसना जिह्वा ते राग सुणाए बिन तन्द सितारा, आप आपणा नाद दृढ़ाईआ। उस दा खेल अपर अपारा, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त कहि के सारे सीस निवाईआ। धुर दे शब्द दी धुर दी सिख्या जिस दा अक्खरां नाल नहीं तकरारा, झगड़ा दीन दुनी ना कोए जणाईआ। उस गल्ल दा मालक इक्को एकँकारा, जो जुग जुग जन भगतां दए समझाईआ। काया मन्दिर अन्दर खोल के बन्द किवाड़ा, त्रैगुण अतीता पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । नानक धार इक गल्ल सुणी सन्त कुमार, ब्राह सुण के खुशी बणाईआ। यगै पुरुष होया ख़बरदार, हावग़रीव गा गा ढोले गाईआ। नर नरायण बिन रसना दए उच्चार, कपलमुन कहि कहि आपणा रंग रंगाईआ। पृथू पृथम गल्ल सुण के अपर अपार, मत्तस
१९२५ मिल के खुशी बणाईआ। कच्छप ने पाई इक गल्ल दी सार, समुंद सागर रिड़के चाँईं चाँईंआ। धनंतर सुण के अपर अपार, १९२५
२४ खेल खिलाया ख़लक खुदाईआ। बावन हो के आप हुशियार, प्रहलाद इक गल्ल दिती समझाईआ। हरी हरि २४
खेल कीता अपार, धरू दा पर्दा अन्दरे अन्दर उठाईआ। गज दा लहिणा देणा दिता उतार, तन्दवा तन्द तन्द कटाईआ। राम हनूवन्त इक्को गल्ल ते कर विचार, गलवकड़ी लई पाईआ। इक गल्ल दा खेल अपार, वेद व्यासा सुण सुण खुशी बणाईआ। कृष्ण इक गल्ल अर्जन दिती प्रेम नाल आधार, उदर दा लेखा दिता मुकाईआ। चार जुग दे शास्त्र इक गल्ल उत्ते करन इज़हार, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। सतिगुर नानक दी इक गल्ल जिस गल्ल विच मिल जाए इक एकँकार, इक इकल्ला मिले धुर दा माहीआ। दूजी लोड़ रहे ना विच संसार, सतिगुर शब्द जिस दी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । इक गल्ल सतिगुर नानक दी अंगद सुणी नाल प्यार, प्रीती विच समाईआ। अमरदास पाई सार, बिन सरवणां वजी वधाईआ। रामदास कीता ख़बरदार, राम रामा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर अर्जन इक गल्ल दा बण के लेख लिखार, गुरु ग्रन्थ गुरदेव दिता बणाईआ। गुरु हरि गोबिन्द इक गल्ल सुण के हो तैयार, शस्त्र आपणे तन पहनाईआ। हरिराए गल्ल सुणी बिन रसना जिह्वा अन्तर आई धुन्कार, जगत नादां बाहर वजी वधाईआ। हरिकृष्ण सुण के अगम्मी गल्ल छड गया संसार, बाल अवस्था इक्को गल्ल विच समाईआ।

जिस गल्ल नाल गुर तेग़ बहादर आपणा सीस दिता वार, जगदीश नाल मिल के वजी वधाईआ। इक गल्ल दा गोबिन्द बणया पहरेदार, खण्डा आपणे हथ्थ उठाईआ। इक गल्ल पिच्छे धर्म दी रख्या कीती बण आप करतार, कुदरत दा कादर हो के वेख वखाईआ। इक गल्ल दा भेव खुल्हाया आपणे पंज प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों जणाईआ। इक गल्ल सुण के पुरख अकाल, पंथ ख़ालसा दिता रचाईआ। सतिगुर दी इक गल्ल जे कोई मंने ना उह डुब्बे विच संसार, चुरासी विच कदे ना आईआ। उह इक गल्ल एह सदा सदा उस प्रभू नूं करो निमस्कार, डण्डावत विच ओसे नूं सीस निवाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी अनेक अनन्त अगणत नाम कलम शाही काग़ज़ां नाल लिखे बण लिखार, कातब हो के कलम दिती चलाईआ। उस इक नाम तों आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई नहीं बाहर, जिस गल्ल विच्चों दो जहान सतिगुर नानक धार दिते प्रगटाईआ। सो इक गल्ल सिक्खां दे हिरदे अन्दर गुर गोबिन्द रख के गया आप नाल प्यार, बंस सरबंस दीन दुनी विच जगत भेंट कराईआ। अकसर अख़ीर कलयुग दी धार विच उस गल्ल नूं मंनेगा सर्ब संसार, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ओसे गल्ल दी कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि जुग चौकड़ी खेल शब्द शब्द दी धार, सति सति दा सति आपणा खेल खिलाईआ।

✪ ३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे प्रभू तूं वसणहारा घट घट, लख चुरासी आपणा डेरा लाईआ। नूर नुराने शाह सुल्ताने मेरे उत्ते हो प्रगट, परगणे दीन दुनी मज़्हब मज़्हब वेख वखाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते आपणी जोत कर लट लट, नूर नुराने शाह सुल्ताने आपणा रंग वखाईआ। मेरे उत्तों शरअ शरीअत मेट फट्ट, दुवैती रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दी डोरी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। भाग लगा के काया पंज तत, बुतख़ानयां कर सफ़ाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा एका वेखां हट्ट, हटवाणे आपणा पर्दा देणा उठाईआ । इक्को सरोवर इक्को वखा दे तीर्थ तट, किनारा इक्को नज़री आईआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवाना सृष्टी तेरा लए रट, कलमा कायनात इक समझाईआ। इक्को अमृत रस निझर झिरनिउँ देणा झट्ट, झटके हलाली दा लेखा देणा मुकाईआ। दीन मज़्हब दी धार एकँकार रहे कोई ना वट्ट, मानस मानव मानुख इक्को रंग रंगाईआ । मैं तेरे चरण कवल धवल हो के रही ढठ, निव निव लागां पाईआ। निगाह मार लै मेरे उत्ते मन्दिर

मस्जिद शिवदुआले मठ, चर्चा गुरुदुआरयां फोल फुलाईआ। दरोही फिर गई तीर्थ अठसठ, जलधारा बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं मेरा कुदरत दा कादर, रहीम करीम इक अख्वाईआ। सच दुआरे बख्श दे आदर, अदल इन्साफ़ मेरी झोली पाईआ। सचखण्ड निवासी योद्धा सूरबीर बहादर, बलधारी तेरी ओट तकाईआ। झगड़ा मेट दे जगत मक्तूल कातिल, शरअ दी वंड ना कोए रखाईआ। आपणा गृह वखा दे धाम मुक्दस बैतुल, बेवतनां आपणे संग रखाईआ। कलयुग मेट रैण अन्धेरी रातन, सतिजुग नूरी चन्द चन्द चमकाईआ । मैं इक्को बेनन्ती दर तेरे आई आखण, बिन रसना जिह्वा दयां सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं बख्श दे साचा साथन, सगला संगी आप हो जाईआ। दया कमा दे नाथ अनाथन, दीनन हो के तेरे अगे वास्ता पाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात अज़ातन, मानव इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा पूरन होवे जग, युगती आपणी दे दृढ़ाईआ। कलयुग जीव हँस बणा लै कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। त्रैगुण माया साड़ सके ना
११२७ अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाहरग, शहिनशाह आपणा पर्दा दे उठाईआ। नाम खुमारी ११२७
२४ बख्श दे मदि, मधुर धुन दे सुणाईआ। जगत वासना मेट के हद्द, हद्द हदूद आपणी इक वखाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर २४
चेले होवण गद गद, गदागर दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी धार होवे ना कदे अलग, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ ३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श दे अमृत रस, निझर झिरना निरँकार आप प्रगटाईआ। मनुआ मन सब दा होवे वस, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। शब्द अणयाला तीर मार कस, तन वजूदां पार कराईआ। अन्दर रहे ना रैण अन्धेरी मस, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। तेरा मेला होवे हस हस, हस्ती वेखण नूर अलाहीआ । सद भगत भगवान दा इक्को होवे जस, सिफ्त सलाही ढोले गाईआ। मैं वी वेखां नस्स नस्स, नौवां खण्डां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श सच प्रीत, प्रीतम हो के दया कमाईआ। आत्म परमात्म सब दा होवे गीत, ढोला गावण चाँईं चाँईंआ। अन्दरों पवित्र कर दे नीत, नीतीवान

हो के वेख वखाईआ। काया माटी कर दे ठांडी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। मानस जन्म लैण जीत, जग जीवण दाते होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श दे टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। अन्दरों कर दे बुध बिबेक, पतित पुनीत दुरमति मैल धुआईआ। तूं आदि जुगादी एकँकारा एक, इक इकल्ला धुरदरगाहीआ। त्रैगुण माया लग्गण ना देणा सेक, ततव तत ना कोए तपाईआ। दर्शन देणा नेतन नेत, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तन वजूद अन्दर खोल्ह दे भेत, भाण्डा भरम भरम भनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं मंगती होई वैरागण, बिरहों विच कुरलाईआ। मैनूं कर दे वड वड भागण, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां नाल होवां सुहागण, रंडेपा मात रहे ना राईआ। हरिजन सन्त सुहेले तेरे मेरे उत्ते जागण, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दे हिरदिउँ सुणां
रागण, दूसर अवर ना कोए शनवाईआ। हरिजन हँस बणा लै कागण, कुदरत दे कादर आपणा रंग रंगाईआ। तूं शाहो
११२८ भूप वड राज राजण, शहिनशाह शाह पातशाह इक अख्वाईआ। तूं आदि जुगादि ग़रीब निवाज़ण, ग़रीब निमाणयां हो सहाईआ। ११२८
२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं २४
भगवान, हरिजन आप संवारने काजन, करनी दे करते तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ ३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे एकँकार, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। दर ठांडे अर्ज़ रही गुज़ार, गुज़ारिश विच सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादी बख्शणहार, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जोती जाते तूं देवणहार दातार, दयानिध इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरे अन्तष्करन आई विचार, बिन रसना जिह्वा दयां सुणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले चरण कवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जुग जुग जन भगतां रिहा पैज सुआर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निगाह मार लै विच संसार, सति सतिवादी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मेहरवान हो के गुरदयाल सिँघ दा तारना सब परवार, गुरु दे लाल आपणी गोद टिकाईआ । जिस गृह विच सतिजुग साचे दीआ बाती होणा उज्यार, कमलापाती तेरी खुशी दी वजे वधाईआ। सो गृह मन्दिर सोहे बंक दुआर, खुशी खुशी दे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू तूं करनहारा करतारा, मेरा मालक इक अख्वाईआ। मैं मांगत खड़ी तेरे दुआरा, दर ठांडे झोली डाहीआ। तूं भरना सच भण्डारा, सति सतिवादी वस्त नाम वरताईआ। मैं तेरे चरण जावां बलिहारा, सिर सर तेरी भेंट चढ़ाईआ। तूं बख्शणा इक्को नाम अधारा, उदर दा लेखा रहे ना राईआ। जन भगतां बणना मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। अन्दरों मेटणा अन्ध अँधयारा, अन्ध अज्ञान देणा चुकाईआ। घर सुहञ्जणा फेर बणाउणा दोबारा, दोहरा आपणा खेल खिलाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी सति सहारा, सहायक इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी निमाणी वसुधा, बिहबल हो के दयां दुहाईआ। तूं जन भगतां पवित्र कर दे बुद्धा, बुध बिबेक आप बणाईआ। सच प्यार दा मार्ग कर दे सिध्धा, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मन कल्पणा मेट दे बुध्धा, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। आपणा भेव खोल्ह दे गुझा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तेरे प्यार दा इक्को होवे मुद्दा, मुदतां दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ ।

११२८ २४ धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा वेख पुराणा, सहिज सहिज नाल जणाईआ। रावी दा कन्ढा तक टिकाणा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जिथ्थे सुरजीत दा लेखा लिख्या ते लिख्या लेख महाना, महिमा अकथ अकथ सुणाईआ। ओस शब्द नूं किसे नहीं पहचाना, पर्दा सक्या ना कोए उठाईआ। ओसे हुक्म विच बदल गया ज़माना, ज़िमीं ज़मां दए गवाहीआ। अगला शब्द होर फ़रमाना, फ़ुरनयां तों बाहर समझाईआ। फेर ओहो मंज़ल ओहो हक ओहो टिकाणा, घर सच मिले वड्याईआ। माण ताण रहे विच ज़हाना, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती करीं परवाना, परम पुरख प्रभ तेरी आस रखाईआ। तेरा भगत सन्त गुरमुख गुरसिख एथे ओथे होए ना कदे बेगाना, दूसर रूप ना कोए बदलाईआ। चरण कवल उपर धवल आपणा बख्श दे इक ध्याना, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। सच परवार होवे परवाना, परम पुरख तेरी शमअ जोत आप आपणे विच जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी मेहरवान मेहरवाना, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। ११२८ २४

✪ ३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड रामूवाला ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे पुरख अकाले हथ्थ मेरे सीस टिकाउणा, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरा लहिणा देणा पूर कराउणा, करनी दे करते कुदरत दे कादर तेरी सरनाईआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार हो के डंक वजाउणा, दो

जहानां नौजवाना आप सुणाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा अगम्म अथाह आप खुल्हाउणा, मन मति बुद्ध चले ना कोए चतुराईआ। परवरदिगार सांझे यार एका जल्वा नूर चमकाउणा, नूर अलाह आपणा आप प्रगटाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं लहिणा देणा सब दा वेख वखाउणा, भविख्त पेशीनगोईआं पर्दे परदयां विच्चों खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा किस बिध अन्त हटाउणा, नव सत्त रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा मेरी गोदी गोद कवण वार थित टिकाउणा, सम्मत सम्मती भेव चुकाईआ। मानव ज़ाती कवण वक्त सुहञ्जणा मेरे उत्ते वखाउणा, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। कवण नाम निहकाम हो के इक्को इक जपाउणा, बिन रसना जिह्वा ढोला सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी नज़र आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू किस बिध देवें वस्त अगम्म अथाह, अतोट अतुट वरताईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा बेपरवाह, बेऐब नूर अलाहीआ। मैं नौ सत्त फिरां नाल चा, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे भाग लगाउणा टिल्ले थल अस्गाह, जल थल महीअल रंग रंगाईआ। मैं दीन दुनी दी भागां वाली फेर बणां माँ, ममता कूड़ ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते झगड़ा रहे ना सूर गाँ, पशू पंछीआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। सारी सृष्टी दृष्टी अन्तर तेरा इक्को उपजे नाँ, नाउँ निरँकार देणा दृढ़ाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी रहे ना काँ, हँस गुरमुख लैणे बणाईआ। मेरे मेहरवाना नौजुवाना श्री भगवाना मैं तेरा तकदी राह, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण उठाईआ। तूं सच स्वामी मेरा बणना अन्त मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे अन्तष्करन अगम्मे तक, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मेहरवाना मेरा कलयुग अन्तिम दे दे हक, हकीकत दे मालक होणा सहाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों मेट दे शक्क, शिकवा दीन दुनी रहिण ना पाईआ। तूं मेरा ठाकर स्वामी परमेश्वर पति, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। तेरे चरण कवल धवल हो के वास्ता रही घत, धरनी धरत धौल हो के मंग मंगाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना जोती जाते मेरे उत्ते आ जाणा वत, बेवतनां दे मालक आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले बिन कदमां आ जा मेरे उत्ते, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेखण कोए ना पाईआ। सति स्वामी मेरे भाग जगा दे सुते, आलस निंद्रा दीन दुनी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मेरे परम पुरख अबिनाशी अचुते, चेतन सब नूं दे कराईआ। सति धर्म दी सुहा दे रुते, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तेरा सतिजुग सुत दुलारा पहला जुग तेरी धारों उठे, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। तेरा सतिगुर शब्द साहिब स्वामी तुठे, मेहरवान हो के मेरा लहिणा दए चुकाईआ। भाग

लगा दे मेरी चारे कूटे गुट्टे, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण तेरी वजदी रहे वधाईआ। अमृत जाम रस प्या दे आपणा इक्को घुट्टे, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे कोलों मेरा पल्लू छुट्टे, बन्धन अगे ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। दर साचे अलख जगावांगी । सो पुरख निरञ्जण वास्ता पावांगी। अबिनाशी करते सीस निवावांगी। श्री भगवान धूड़ी ख़ाक रमावांगी। पारब्रह्म वेख वेख बिगसावांगी। सतिगुर शब्द शब्द आपणे अंग लगावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा तेरे चरण टिकावांगी। साची आशा इक रखावांगी। चरण भरवासा मंग मंगावांगी। मेरे उत्ते पाउणी अगम्मी रासा, एको तृष्ना तेरे चरण टिकावांगी। तूं मालक पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर तेरा खेल वेख वखावांगी। सतिजुग सति धर्म मेरा तेरे उत्ते होवे भरवासा, कलयुग अन्ध अन्धेरा तेरे कदम टिकावांगी। तूं मेरा शहिनशाह शाहो शाबासा, शाह पातशाह तेरे दुआरे आपणी ख़ाली झोली भरावांगी । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा तेरे अगे टिकावांगी। धरनी कहे प्रभ मेरा अन्त अख़ीरी समां, कलयुग धार धार जणाईआ। मैनूं लालच नहीं कोई तमा, मोह जगत ना कोए रखाईआ। खुशी नहीं कोई ग़मा, तेरे भाणे विच समाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते कलयुग बदल दे नवां, नव सत्त दा पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दी धार होवे रवां, रैहबर होवे इक्को नूर अलाहीआ। जोती जोत जगा दे इक्को शमअ, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। उह लेखा लहिणा पूरा कर दे जो भेव खुल्हाया चौदां सौ तीह अंक दा पन्ना, पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लाहीआ। जो इशारा दे के गया जट्ट धन्ना, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। जो रवीदास किहा पानहा गंढुण वाले चम्मा, चम्मदृष्टी बाहर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी मंग इक मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा सतिजुग सुत दुलारा आवेगा। अबिनाशी अचुत तेरा ढोला गावेगा। मेरी सुहञ्जणी होवे रुत, रुतड़ी तेरे नाल महकावेगा। जिस दा मालक तेरा गोबिन्द दुलारा सुत, दूजा संग ना कोए रखावेगा। जो भाग लगावे काया माटी पंज तत बुत, बुतख़ानयां वेख वखावेगा। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों जावे छुप, लहिंदे चढ़दे दक्खण पहाड़ नज़र ना आवेगा। मेरे उत्ते रहे ना मूल अन्धेरा घुप, नूरी चन्द चन्द इक रुशनावेगा। मेरी चार जुग दी तृष्ना मेटे भुख, ममता मोह अवर ना कोए जणावेगा। तूं आत्म परमात्म सृष्ट सबाई देणा सुख, सुख सागर इक्को वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाउणा मानस मानव मानुख, मानुखता आपणा धर्म धर्म समझावेगा।

✪ ३० कत्तक शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृहपिण्ड चड़िक ज़िला फ़रीदकोट ✪

नारद कहे धरनीए मैं तैनूं करन आया मख़ौल, मसख़री मसख़रा हो के दयां उडाईआ। नी मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रभ दा पांधा रौल, पंडत बोध अगाधा इक अख्वाईआ। तूं मिट्टी ख़ाक धरत निमाणी धौल, धवले तैनूं दयां सुणाईआ। मेरे कोल चार जुग दा गुर अवतार पैग़म्बरां वाला कौल, इकरारनामा आपणे विच छुपाईआ। जिस नूं दुनीदार सके कोई ना फोल, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। उस विच इक्को अगम्मा प्रभू दा बोल, शब्द दी शब्द धार दृढ़ाईआ। तूं धरनी धवल रहिणा अडोल, अडुल हो के दयां जणाईआ। परम पुरख परमात्म दा इक्को सुणीं अगम्मा बोल, जो अनबोलत दए सुणाईआ। नी तेरे उत्ते दीन दुनी दा होवण वाला घोल, नव सत्त लए अंगड़ाईआ। दीनां मज़्हबां शरअ दी धार इक दूजे नाल करना कलोल, कलमा नाम नाल टकराईआ। जगत दुआरा जगत जगदीश्र देणा खोल्ह, ख़ालक ख़लक इक वखाईआ। जिथ्थे जोती जाता हो के जाए मौल, मौला आपणा भेव चुकाईआ। तूं उस दे उत्तों आपणा आप देवीं घोल, घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद

११३२ कहे धरनीए मैं आया बण के पाँधी राही, बिन कदमां कदम टिकाईआ। नी तूं दोवें भुजा उठा लै बाहीं, बिन बाहवां लै ११३२

२४ अंगड़ाईआ। उच्ची कूक के दे दुहाई, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरा होणा सहाई, सहायक २४

नायक इक्को नज़री आईआ। मेरी कलयुग कूड़ कुड़यार दी धोणी शाही, शहिनशाह आपणा इक्को रंग रंगाईआ। लहिणा देणा पूरा करदे गोबिन्द दा लँघ गया ढईआ ढाई, ढौंके विच आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं तेरा खेल वेखणा चाहुंदी थल अस्गाही, जल धारा पर्दा देणा उठाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह अगम्म अथाही, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। मेरी सतिगुर शब्द दए गवाही, शहादत तेरे नाम भुगताईआ। मेहरवान हो के मेहर निगाह उठाई, बिन नैणां नैण तकाईआ। मैं तेरा जल्वा तकां नूर नुराने जिस दा नूर होवे अलाही, आलमीन कहि के सीस निवाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना, मैनूं दस्स दे किस बिध कलयुग अन्तिम होवे तबाही, तोबा तोबा करे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप चढ़ाईआ। नारद कहे धरनीए नी तेरे उत्ते कत्तक महीना लँघया, कर्म कांड दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। सच दस्स तूं की प्रभू तों मंगया, मांगत हो के झोली डाहीआ । की संदेशा देवे सूरा सरबंगया, शाह पातशाह आपणा हुक्म जणाईआ। किस बिध तेरा मेटे ग़म रंजया, रंजश अन्तर रहिण ना पाईआ। जिस लहिणा देणा मुकाउणा तारा चंदिआ, सदी चौधवीं लेखा लेखे विच्चों वखाईआ। जिन ईसा मूसा मुहम्मद मुकाउणा पन्ध्या,

मुसाफ़िर दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। जिस दे हुक्म विच सब ने लाउणा आपणा पंजया, पंचम दा मालक की आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। औह वेख लै कलयुग मुसाफ़िर आपणा पन्ध मुका के तेरे उत्तों लँघया, भज्जे वाहो दाहीआ। नी वेख लै प्रभ तों पुछ लै तेरी केहड़ी कूटे होणा जंगया, झगड़ा होवे ख़लक खुदाईआ। गुर अवतारां पैग़म्बरां दा हुक्म बिन जगत दुआर तों वेख लै टंगया, जगत सहारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए तूं की कुझ कीता दिन तीस, मैनूं दे दृढ़ाईआ। केहड़ा पीसण ल्या पीस, सेवक हो के सेवा की कमाईआ। की हुक्म संदेशा सुणया हरि जगदीश, जगदीश्र की दृढ़ाईआ। किस बिध छत्र झुलणा अगम्मे सीस, जिस दा धड़ नज़र कोए ना आईआ। जिस लहिणा देणा मेटणा बीस बीस, इक इकीस आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे धरनीए कत्तक दिवस दिहाढ़ा अखीरी अज्ज दा, आजज़े तैनूं दयां सुणाईआ। जो पुरख अकाला दीन दयाला जुग जुग पर्दे कजदा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओहदा नाम दमामा दो जहानां वजदा, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। नी
 तेरा वेला मिट्टी ख़ाके साचे हज्ज दा, हज़रतां दा मालक तक लै नूर अलाहीआ। जिस दा दीपक जोती इक्को जगदा, दो
 जहानां करे रुशनाईआ। ओह खेल खेलणवाला तेरे उत्ते कलयुग कूड़ कुड़यारी अग्ग दा, ततव ततां दए जलाईआ। जिस
नूं अवतार पैग़म्बर गुरु गया सददा, होके शब्द वाले दृढ़ाईआ। ओहदा नूर नुराना वेख लै रूप सूरे सरबग दा, कुदरत दा कादर की आपणा वेस वटाईआ। जिस दे हुक्म विच आदि जुगादि जुग चौकड़ी बझदा, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। जिस नूं जगत जहान फिरे लभदा, टिल्ले पर्वत वेखण थांउँ थाँईंआ। ओहदा मेला कलयुग अन्त सबब दा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे धरनीए कत्तक कोलों लै लै हक सलाह, हकीकत आपणा भेव चुकाईआ। नी तेरा पर्दा ओहला दए उठा, मुख घूँगट रहिण कोए ना पाईआ। तेरा मेल मिलाए नाल उस बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा ख़ुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। जिस दे अगे सजदयां विच करदे गए दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। ओह नूर नुराना शाह सुल्ताना अमाम अमामा गया आ, जिस दी आमद विच सारे सीस निवाईआ। नी तैनूं केहड़ा चढ़या चा, चाउ घनेरा दे समझाईआ। उच्ची कूक सुणा दे नाल बांह, बाहूबल आप प्रगटाईआ। मेरा परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह, आलमीन इक अख्वाईआ। जो मेरी आसा मनसा पूरी दए करा, तृष्ना जगत जुगत मिटाईआ। मेरे कर्म कांड दा डेरा देवे ढाह, कत्तक

दा कर्म मेरे लेखे पाईआ। मैनूं इक्को नाम दए सुणा, बिन रसना रसन समझाईआ। मैं चरण कवल हो निमाणी धवल सीस दयां टिका, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी निरगुण निरगुण मेरा रहिनुमा, रहमतां दा मालक ख़ालक इक्को नज़री आईआ।

✪ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ रणजीत कौर दे गृह पिण्ड चड़िक ज़िला फ़रीदकोट ✪

सतिगुर सच्चा शाहो है, आदि जुगादी एक। वड दाता बेपरवाहो है, बख्शे चरण सरन सच टेक। मेहरवान अगम्म अथाहो है, खेले खेल वार अनेक। हुक्म संदेशा देवे धुरदरगाहों है, जन भगतां करे बुध बिबेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, त्रैगुण माया मेटे सेक। सतिगुर सच्चा शाहो भूप, हरि करता धुरदरगाह। खेले खेल बिन रंग रूप, मालक हो के दो जहां। भाग लगाए काया पंज भूत, जन भगतां होए सहा। वेखणहारा चारे कूट, निरगुण निरवैर आपणा भेव लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमा। सतिगुर साचा आदि है, आदि निरञ्जण पुरख अबिनाश। जो वसे ब्रह्म ब्रह्माद है, जुग जुग खेल खेले तमाश। वजावणहारा साचा नाद है, लेखा जाणे पवण स्वास। मेटणहारा वाद विवाद है, जन भगत सुहेले करे आपणे दास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मानस जन्म करे रास। सतिगुर साचा आदि निरञ्जण, निरवैर इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। चरण धूड़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धुआईआ। नेत्र नाम निधाना पाए कजल, नूर नुराना कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संगी आप अख्वाईआ। सतिगुर साचा एकँकारा, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जो वेखणहार सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जन भगतां देवणहार दातारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण प्रीती बख्श प्यारा, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती कर उज्यारा, उजल आपणा आप कराईआ।

११३४
२४

✪ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कपूर सिँघ दे गृह मोगा शहर ज़िला फ़रीदकोट ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां होवे गृह सुहञ्जणा, जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण सरगुण देणी माण वड्याईआ । मेहरवान नौजवान श्री भगवान दीपक धार जगाउणा नूर दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर काया गागर विचों पार कराईआ। निज नेत्र नाम निधान पाउणा अगम्मा अंजणा, अन्ध अज्ञान विच जहान रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा सच स्वामी अकाल मूर्त मदना, मधसूदन इक अख्वाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पवित्र करना बदना, शरीर बेनज़ीर आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन लेखे लाउणा आहला अदना, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी चरण धूड़ी इक्को होवे मजना, दुरमति मैल देणी धुआईआ। तूं आदि जुगादी एथे ओथे दो जहानां सगला सज्जणा, सगला संगी बहुरंगी नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे भगत मेरा सुहाउण दुआरा बंक, गृह मन्दिर मेरे वजे वधाईआ। तेरे शब्द दी धार लग्गे तनक, सुरती शब्द विच समाईआ। तेरा खेल वेख्या वार अनक, अनक कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा लहिणा देणा मेरे नाल जो संदेशा दिता जनक, देह बदेह आपणा हुक्म दृढ़ाईआ।
११३५ जो आशा रखी कुमार सन्त, ब्रह्मा बेटा भेव गया चुकाईआ। उस बिध मेरी बणाउणी बणत, घड़न भन्नणहार तेरी वड्याईआ। ११३५
२४ मैं सुणना चाहुंदी भगतां अन्तर इक्को मंत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं बोध अगाधा शब्दी धार अगम्मा २४
पंडत, निरअक्खर अक्खर धार विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे भगत सुहेले आदि जुगादी मित, मित्र प्यारा हो के वेख वखाईआ। तेरा लहिणा देणा जुग चौकड़ी नित, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। परवरदिगार सांझे यार हो के करना हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ । ठगौरी रहे ना कोए मन चित, चेतन सुरती देणी कराईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित, निरगुण सरगुण तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते सुहञ्जणी कर दे मग्घर दी पहली थित, थित वार आपणे रंग रंगाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म सचखण्ड निवासी धुर दे पित, पिता पुरख अकाल तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत सुहेले तेरे होवण उग्घे, उगण आथण मिले वड्याईआ। मैं करां पुकार हो बेसुधे, वसुधा हो के दयां जणाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर भेव खोल्हणे गुज्झे, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। भाउ रहिण नहीं देणे एका दूजे, दूआ एका एके विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आपणे नाल रखाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी

आदि जुगादी जन भगतां नाल प्रीत, प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाई अगम्मी रीत, रीतीवान तेरी बेपरवाहीआ। तेरा इक्को ढोला तूं मेरा मैं तेरा गीत, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। जिथ्थे लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नज़री आईआ। मेहरवान हो के मिले त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी आपणा भेव चुकाईआ। जन भगतां काया रखणी सदा ठण्डी सीत, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सदी सदीवी रही बीत, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। तूं मालक ख़ालक त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी वड्याईआ। मेरा तेरे कदमां झुके सीस, जगदीस तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा बीस इकीस, वीह इकीह तेरा रंग जन भगतां अन्तर निरंतर नज़री आईआ।

ममां कहे मेरी सच धर्म दी धार विच्चों प्रगटे ओह, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। ओह प्रीतम हो के भगतां करे मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। नाम जणा के सोहँ सो, सतिगुर हो के वेख वखाईआ । जिस दा
११३६ लेखा अगे रहे ना दो, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां नाम निधाना काया मन्दिर अन्दर ढोआ देवे ढो, वस्त ११३६
२४ अमुल अतुल वरताईआ। जिस नूं एथे ओथे सके कोई ना खोह, ठग चोर यार ना कोए चुराईआ । गृह गृह अन्दर बख़्शे २४
लो, लोयण आपणा इक खुल्हाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, जन भगतां दए समझाईआ । आत्म परमात्म जावे छोह, निरगुण निरगुण वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। घग्घा कहे जन भगत प्रभू दा बणे घराना, गृह गृह आपणा आसण लाईआ। हरिजन कदे ना करे बेगाना, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। दिवस रैण देवे नाम तराना, तुरीआ दी धार विच्चों प्रगटाईआ। आपणा भेव खुल्हा दे नौजवाना, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। वस्त अमोलक देवे दाना, धुर दी दात आप वरताईआ। नाम प्रीती प्रेम भगती ते नाम धन्न दौलत दा देवे ख़ज़ाना, जगत विच निखुट कदे ना जाईआ। जिस दे नाल जगत दी सृष्टी दृष्टी विच्चों भगतां दा बदल जाए ज़माना, जिस दी ज़मीं ज़मां दोवें देण गवाहीआ। अवतार पैग़म्बर वेखण उत्तों असमाना, सचखण्ड दुआरयों बिन नैणां नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे प्रणामा, निव निव सीस झुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां संग निभाणा, सगला संगी इक हो आईआ। जिस ने दीन दुनी विच्चों दर्द दुःख मिटाणा, मिट्टी ख़ाक देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। रारा कहे मेरा भगतां नाल प्रभू

बणाया रिश्ता, रिश्तेदारी नज़र कोए ना आईआ। जिस दा भेव पा सके ना जबराईल फ़रिश्ता, मेकाईल असराफ़ील बैठण सीस निवाईआ। जेहड़ा पुरख अकाला दीन दयाला जग नेत्र किसे नहीं दिसदा, उह भगतां अन्दर मिल मिल आपणी खुशी बणाईआ। जो सच स्वामी अन्तरजामी हो के लेखा फिरे लिखदा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले गोबिन्द धार गुरमुख बणना रूप साचे सिख दा, जिस सिक्खी विच्चों सिख्या साची लए प्रगटाईआ। भगत भगवान दा वेरवा नहीं कोई दूर नेड़े विथ दा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। साचा बचन शब्द सतिगुर याद रखणा पहली मग्घर दी थित दा, थित वार जिस नूं सारे सीस निवाईआ। एह हुक्म अगम्मा ओस अबिनाशी अचुत दा, जो चेतन सब नूं दए कराईआ। भगत भगवान दा आत्म परमात्म अगे दा मेला जिउँ नाता पिता पुत दा, पूत सपूते आपणी गोद उठाईआ। जिस मेहरवान दा भण्डारा देंदयां कदे नहीं मुकदा, देवणहार धुरदरगाहीआ। उस दा लाया बूटा भगत कदे नहीं सुकदा, चार जुग दे शास्त्र ओसे दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। मग्घर कहे प्रभू तेरे सतिगुर शब्द दा कौल इकरार, इकरारनामे चार जुग दे नाल मिलाईआ। दीन दुनी तों वखरी तेरी सति
११३७ सच दी धार, धर्म दी धार तेरी बेपरवाहीआ। हरिजन सन्त सुहेले लैणे तार, तुरत आपणा भेव चुकाईआ। रातीं सुत्तयां ११३७
२४ देणा दीदार, दिने जागदयां आपणे रंग रंगाईआ। घर घर गृह गृह ग़रीब निमाणयां सति सच दे भरीं भण्डार, देंदयां तोट २४
कदे ना आईआ। तूं देवणहारा एकँकार, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। ग़रीब निमाणयां पैज देणी संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धार उत्ते शब्द दी धार हो के रहिणा बरकरार, ऊणता विच ऊणता जगत ना कोए रखाईआ।

जन भगतो तुहाडे नाल नहीं होवेगा छल, सृष्टी छल विच सारी लैणी फसाईआ। तुहाडे नाल नहीं होवेगा वल, वलवल्यां विच दीन दुनी दए दुहाईआ। तुहाडे अन्दर जावे रल, झगड़ा वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। तुहाडा होवे ना विछोड़ा पल, पलकां दे पिच्छे नज़र आवे धुर दा माहीआ। एह अज्ज दी घड़ी सुलखणी कपूर सिँघ दे घर दी गल्ल, गलवकड़ी सब नाल लए पाईआ। भावें कोई जल वसे भावें वसे विच थल, जंगल पहाड़ां उत्ते वेखे चाँईं चाँईंआ। सम्राटा एह ओह वायदा ओह कौल इकरार जेहड़ा कीता सी नाल राजे बलि, बलि दा लहिणा फेर चौथे जुग झोली पाईआ। ओह लाल वस्त्र पहनण वाल्या ज़रा हुण बदल के वेख केहड़ा निहचल धाम अटल, तैनूं सुत्तयां सुत्तयां सब कुछ देणा वखाईआ। जिस दे नाल ज़िमीं

असमान रहे हल, थरथराहट विच ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ना छल रिहा ना छिद्र, शहिनशाह पूरब लेख चुकाईआ। भगतो ओह माण मिलणा, जेहड़ा तुहानूं अगे लगा दए बिदर, जिस दी सुदामा दए गवाहीआ। अगे प्रभू इधर जांदा सी उधर जांदा सी हुण आ गया तुहाडे प्यार वाली विच सिध्धर, सिध्धा हो के आपणा मार्ग दए वखाईआ। जिस दे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी अनक कला दी बिधन, बिधां दा मालक धुरदरगाहीआ। भगतां दे तन वजूद सीने नाम निधाने नाल आए विधन, विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। छल कहे प्रभू तेरी अछल अछल्ल दी आदि जुगादी धार, तेरी बेपरवाहीआ। पर अज्ज तों असीं तेरे भगत नूं करांगे निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। तेरे प्रेम दा हर हिरदे आवेगा प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। खुशीआं दी खुशहाली वेखांगे बहार, पत्त टहणी फल फुल महकाईआ। जिस दा विछोड़ा झलया पिछले जुग विच संसार, उह कलयुग अन्तिम लहिणे दए मुकाईआ। भगतां दा भगती विच तेरे दर ते होवे अधिकार, दरगाह साची मिल के वजे वधाईआ। प्रमार्थ स्वार्थ दोहां विच पैज देणी संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सब दा धर्म ते धर्म दा जैकार, जै जैकार धुन वजदी रहे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, छल वल कलयुग कल भगतां विच्चों वखरा दिता घल्ल, जो सृष्टी विच जा के जाए रल, महल गुरमुखां दे रहिण कोए ना पाईआ।

ओ यसू, ओ मसीह, आ के आपणा वेख लिबास, लबरेज़ वेख ख़लक खुदाईआ। यौरोशलम दी धार विच्चों कर क्यास, बिना अक्ल बुद्धी तों खोज खुजाईआ। जिस धार विच तेरे गल विच पई फास, सलीब सलीब विच्चों प्रगटाईआ। उस नूं समझ ना सके शंकर कैलाश, कलाधारी की कल आपणे हथ्थ रखाईआ। की हुक्म देवे तेरा बाप उत्ते आकाश, असमानां दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस दे उत्ते तैनूं विश्वास, विश्व दा पर्दा दिता खुल्हाईआ। ओह मसीह, जिस वेले तेरी सलीब तों अलग कीती सी लाश, तैनूं इहो चिट्टा वस्त्र दिता पहनाईआ । तूं हस के किहा मेरी वीहवीं सदी दे अन्त एह खेल होवेगा ख़ास, योरप दी धरती दए गवाहीआ। जिस दा लेख लिख्या सी बलगारीआ युगोसलावीआ दे पास, जुगती अक्खरां विच छुपाईआ। नाल लहिणा देणा सी बलि दा जिस दे यग विच ओथों वस्तू आई सी ख़ास, अस्वमेद यग विच टिकाईआ।

उस वेले बराड़ सी सम्राट, सूरबीर बहादुर योद्धा आपणा बल प्रगटाईआ। एह अज्ज दा नहीं एह चार जुग दा इतिहास, जुग चौकड़ी खेल धुर दी चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चिट्टा कहे मैं चिट्टा ते भगत लाल, लाल चिट्टा इक दूजे विच समाईआ। जिन्हां दा इक्को दुआरा ते इक्को धर्मसाल, गृह इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे जल्वा जोत ते नूर जलाल, जग वेखण नेत्र ते नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दा बिना सतिगुर शब्द तों कोई होर नहीं दलाल, विचोला भेव ना कोए चुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दुआर इक सुहाईआ। चिट्टा कहे मैं कोई वस्त्र कपड़ा नहीं धागा सूत, सच सच दयां जणाईआ। मेरा नाता नहीं कोई तन वजूद कलबूत, हड्ड मास नाड़ी मिल के खुशी बणाईआ। मैं ते सिर्फ़ भगत भगवान दा देण आया सबूत, पूरब लेखा लेखे विच्चों समझाईआ। भगवान नालों सदा भगत हुन्दा मज़बूत, जो दीन दुनी विच समाज राज दीआं टक्करां खा खा आपणा आप फेर लए उठाईआ। प्रभू जदों किरपा कीती भगतां दे सिर ते रख्या ताज, निरगुण बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जदों मेहर कीती ते अन्दर मारी अवाज़, सुत्तयां ल्या जगाईआ। जदों
११३८ किरपा कीती ते नवीं साजणा लई साज, साजण हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। गुरमुखो गुरसिखो सूफ़ीओ सन्तो भगत भगवान ११३८
२४ कदे नहीं हुन्दे नाराज़, जगत दे विहार विच आपणा खेल खेलण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा २४
कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। चिट्टा वस्त्र कहे मैं बिन बाहवां वाला चोगा, जिस नूं अल्फ़ी कहि के सारे गाईआ। मेरा रूप प्रगटया विच मोगा, मेरे जन्म नूं जन्म विच्चों मिली वड्याईआ। मैं हो गया उस दे जोगा, जिस दी जुगती समझ कोए ना पाईआ। मेरा लहिणा रिहा नहीं चौदां लोका, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। धन्न भाग पहली मग्घर मैनूं मिल गया मौका, जो मसीह अक्खरां तों बिना निर अक्खर धार गया समझाईआ। एह किसे नूं दस्सया नहीं सुणाया नहीं समझाया नहीं अन्दरों प्रभू दी धार दे प्यार ने पैदा कीता शौका, जो शौक ते सोग दोवें खेल वखाईआ। एस मंज़ल ते बिना भगतां तों होर कोई नहीं पहुँचा, दुआर नज़र किसे ना आईआ। इहो इशारा दिता गोबिन्द ने जिस वेले मेरा बीत गया ढईआ ते मैं ला के उठया ढौंका, आप आपणी लै अंगड़ाईआ। मेरा किसे नूं पता नहीं लगणा केहड़ा पटणा ते केहड़ा पौंटा, कवण दुआर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण आपणी खेल खिलाए आपणे मार्ग दी आप चलाए रैंसा, रीती रीती रीती आपणे विच्चों प्रगटाईआ।

✪ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

धरनी कहे चार जुग दे शास्त्रो मैनूं दस्सो आपणी कथा, कहाणी खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। पर्दा लाहवो यथार्थ यथा, यदी यदप दयो समझाईआ। की लहिणा देणा दीन दुनी दा तुहाडा हथ्थो हथ्था, लेखा कवण दर रखाईआ। क्यों दीन दुनी तुहानूं टेकदी मथ्था, मस्तक लेख की समझाईआ। की तुहाडी धार दा चलदा रथा, रथवाहीओ दयो समझाईआ। झट नारद आ के ज़ोर दी हस्सा, ताली बिन हथ्थां दिती वजाईआ। धरनीए मैं पुज्जा पन्ध मुका के मसां, मस्सया रैण अन्धेरी कलयुग नाल मिलाईआ। बिन कदमां आया नस्सा, भज्जया वाहो दाहीआ। मैं इक्को धार तकी होड़ा उत्ते ससा, सतिगुर शब्द शब्द वड्याईआ। हाहा टिप्पी तकी नाल अक्खां, सति नेत्र इक खुल्हाईआ। मैनूं भुल गया किशना शुक्ला पक्खा, इक्को नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे चार जुग दे शास्त्रो मैनूं दस्सो आपणी कहाणी, कहावत जगत ना कोए जणाईआ। केहड़ा अक्खर केहड़ी बाणी, बाण अणयाला तीर लगाईआ। लहिणा देणा मुकाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लेख रहे ना राईआ। सुरती

११४० शब्द मिलाए हाणी, मेल मिलाणा सहिज सुभाईआ। लेखा रहे ना जीव प्राणी, आवण जावण गंढु ना कोए पुआईआ। जोती ११४०

२४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । धरनी कहे चार जुग २४

दे शास्त्रो तुसीं अक्खरां वाले ग्रन्थ, पूजण योग नज़री आईआ। तुहाडा सब दा केहड़ा केहड़ा पंथ, पंथीओ मैनूं दयो समझाईआ। तुहाडा खेल केहड़ी धार विच बहु गिणती अगणत असंख, पर्दा पर्दा दयो उठाईआ। तुहाडा केहड़ा चिल्ला तीर कमान धनुख, जो अणयाला दिउँ चलाईआ। केहड़ा नाम निधाना शंख, जगत जुगत करे शनवाईआ। केहड़ा प्रेम प्यार वाला बंस, बंसाँवली कवण हो जाईआ। केहड़ी धार होवे हँस, काग हँस रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे चार जुग दे शास्त्रो आपणा खुशीआं वाला दस्सो हाल, हालत बीती दयो दृढ़ाईआ। केहड़ा तुहाडा वजे ताल, कवण राग करे शनवाईआ। केहड़ी घालण रहे घाल, सेवक हो के सेव कमाईआ। केहड़ा मन्दिर सुहाया धर्मसाल, कवण बंक दिती वड्याईआ। कवण शाह बणाया कंगाल, भुक्खयां भुख मिटाईआ। कवण फल लगाया डाल, पत्त टहणी कवण महकाईआ। आपणी आपणी दस्सो चाल, किस बिध भज्जे वाहो दाहीआ। केहड़ी वस्त सच्चा धन माल, कवण दुआर दयो वरताईआ। किस बिध पोह ना सके काल, महाकाल ना भय रखाईआ। किस बिध मुर्शद हो के मुरीदां पुछो हाल, हालात वेखों थांउँ थाँईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। शास्त्र कहिण धरनीए असीं पुरातन पुराणे चार जुग, युगती नाल प्रभ ने दिता प्रगटाईआ। अन्त साडी औध रही पुग, पूजणयोग आपणा हुक्म वरताईआ। सानूं पढ़ के कलयुग जीवां पवित्र होवे ना बुद्ध, बिबेक नज़र कोए ना आईआ । सति विच दिसे किसे ना सुध, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। मनुआ मन रिहा कुद्द, भज्जे वाहो दाहीआ। पंच विकारा करे युद्ध, घर घर वेख लड़ाईआ। सानूं आपणी रही ना सुध, वसुधा तैनूं दईए समझाईआ। साडा धर्म दा दीपक गया बुझ, जोती नूर नूर ना कोए चमकाईआ। धर्म निशाना गया उड, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ । साडी सब दी दीन दुनी नूं मारनिंग ईवनिंग गुड्, गॉड दे हुक्म विच सीस निवाईआ। असीं बेशक सड़ना नहीं नाल किसे वुड, तन वजूद ना कोए वखाईआ। साडा लहिणा देणा इक्को पुरख अकाल नाल शुड, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए असीं की दस्सीए आपणी सध्धर, सदमे विच दईए दुहाईआ। साडी रही कोई ना कदर, कुदरत दे कादर दईए सुणाईआ। साडी सुणे धुन कोए ना मधर, आत्मक नाद सुणन कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे पाया ग़दर, नव सत्त आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए तूं साडा अन्तष्करन चार जुग चीना, खोज कीती चाँईं चाँईंआ। साडे विच्चों दिसे ना कोए कमीना, कोझा कमला नज़र कोए ना आईआ। साडा सब दा मालक इक्को राम रहीमा, मेहरवान श्री भगवान इक अख्वाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कीती तरमीमा, तकसीम कीती ख़लक ख़ुदाईआ। उह अन्त श्री भगवन्त आ गया आपणी उत्ते सीमा, हद हदूदां वेख वखाईआ। जिस दा मार्ग जगत नज़र ना आवे महीना, महीना मग्घर दए गवाहीआ। उस दा हुक्म वरतणा लोक तीना, त्रैलोकी आपणा हुक्म वरताईआ। उस दा इक्को रंग चढ़दा भीना, भिन्नड़ी रैण दए गवाहीआ। उस दे प्यार विच सब दा होवे मरना जीणा, दूजी लोड़ ना कोए रखाईआ। जिस ने आत्मा करनी आपणे अधीना, परमात्मा हो के हुक्म सुणाईआ। नी साडा लहिणा देणा पूरबला प्राचीना, पिछला चार जुग दा चलया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए असीं प्रभू अगे करन वाले अरज़ोई, सच दईए सुणाईआ। सानूं मिले कोए ना ढोई, ढोलकीआं छैणयां नाल सानूं रहे परचाईआ। सानूं पढ़ के प्रभू तेरा प्यारा बणे कोई कोई, कोटां विच्चों कोई भगत सुहेला नज़री आईआ। साडी तेरे सचखण्ड दुआर दरोही, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। साडी पत गई खोही, ख़लक दे ख़ालक होणा आप सहाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए उह तक लै मग्घर महीना चढ़या, चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ आपणी खुशी बणाईआ। उस दे विच जन भगतां इक्को अक्खर पढ़या, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सब दे अन्दरों तुटे हँकारी गढ़या, हउमे हंगता रहे ना राईआ। त्रैगुण अग्न कोए ना सड़या, ततव तत ना कोए तपाईआ। आत्म धार हरिजन सन्त सुहेला जाए फड़या, परमात्म आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए साडी इक्को इक अरदास, बिन हथ्थां सीस सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सानूं सद्द लै आपणे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। साडे उत्ते रिहा ना किसे विश्वास, विषयां विच ख़लक ख़ुदाईआ। साडा प्यार होया पाश पाश, टुकड़े टुकड़े दीन दुनी वखाईआ। साडे विच्चों प्रभू नूं करे ना कोए तलाश, खोजण वाला नज़र कोए ना आईआ। बिन हरि नामे सब दी ख़ाली दिसे लाश, लशकर पंच विकारा नज़री आईआ। तेरे नाल प्रेम नाल करीए बचन बलास, भावना तेरे अगे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि

११४२ करता धुरदरगाहीआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण असीं कहीए धर्म नाल, सति सच जणाईआ। साडी प्रभू लेखे ला लै घाल, ११४२

२४ जो घायल हो के सेव कमाईआ। असीं नढ्ढे चार जुग दे ओहदे बाल, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। साडी सुरत कलयुग २४

अन्त लै संभाल, सम्बल दा मालक हो के वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार लै जा आपणे नाल, लोकमात दी आस ना कोए रखाईआ। इक्को सतिगुर शब्द सब दा सांझा होवे बहाल, जिस नूं शरअ बन्द ना कोए रखाईआ। नौ खण्ड तेरे उत्ते वजावे ताल, तलवाड़ा इक्को इक समझाईआ। जन भगत सुहेले प्रगटाए आपणे लाल, लालन आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनी साडा रिहा कोई ना धर्म, धर्म दुआरयां वेख वखाईआ। साडा रिहा कोई ना कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। साडा ना कोई तन वजूद माटी चर्म, हड्ड मास नाड़ी संग ना कोए रखाईआ। साडे उत्ते दीन दुनी नूं पै गई भरम, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। प्यार रिहा ना वरन बरन, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे लड़ाईआ। असीं वी चाहुंदे अगे इक्को पुरख अकाल दी होवे सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक्को ढोला मानव ज़ाती सारे पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। इक्को मंज़ल गृह घर स्वामी चढ़न, बाहर खोजण दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए प्रभू दे भगत सुहेले मित, मित्र

प्यारे आप प्रगटाईआ। अन्तर निरंतर करे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। सति स्वामी वसे चित, चित वित ठगौरी रहिण मूल ना पाईआ। धुरदरगाही बणे पित, पति परमेश्वर इक अख्वाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि नित, निरगुण सरगुण रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए परम पुरख खेल खिलावेगा। जोती जाता डगमगावेगा। दीन दुनी आप बदलावेगा। जन भगतां सोहँ चोग आप चुगावेगा। आत्म दरसी दस्स के जोग, जुगीशर इक्को इक अख्वावेगा। हउमे हंगता कट के रोग, निवुण-सु-अक्खर इक दृढ़ावेगा। जगत मोह विकारा मेट के सोग, चिन्ता ग़म दूर करावेगा। आत्म रहे ना किसे विजोग, विजोगी विछड़े जोड़ जुड़ावेगा। जन भगतां दर्शन देंदा रहे अमोघ, सोई सुरत सुरत उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकावेगा। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए प्रभ सुणाए इक्को गाथा, गहर गम्भीर आप सुणाईआ। तूं वी टेकणा उस नूं माथा, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। उह सर्ब कला समराथा, अकल कलधारी नूर अलाहीआ। जो लहिणा देणा देवे हाथो हाथा, उधार नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां लेख बणाए
११४३ मस्तक माथा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ११४३
२४ सच दा संग आप प्रगटाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण धरनीए साडी चले ना कोए दलील, दिलदार आपणा हुक्म वरताईआ। २४
साडी सुणे ना कोए अपील, भेव सके ना कोए जणाईआ। साडा वुकला नहीं कोई वकील, वकालतां वंड ना कोए वंडाईआ। साडा शाहो भूप सुल्ताना कलयुग क्रिया कूड़ करे तबदील, तबदीली आपणे हथ्थ रखाईआ। उह शाह पातशाह शहिनशाह छैल छबील, नूर नुराना इक अख्वाईआ। जिस नूं ख्वार कर ना सकण ख़लील, ख़ादम हो के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच दा रंग रंगाईआ। मग्घर कहे चार जुग दे शास्त्रो प्रभू दा नाम होणा उच्चेरा, ऊचो ऊच दए वड्याईआ। जिस दा इक्को साजण होणा सईआ, सनमुख हो के वेख वखाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना गोबिन्द वाले ढईआ, ढौंका लावे चाँईं चाँईंआ। जिस ने प्रेम विच गाउणा थईआ थईआ, दईआ दईआ कर के ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा भेव कोए ना पईआ, निहकलंक आपणी कल वरताईआ।

✪ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ आत्मा सिँघ मलूवाल वाले दे नवित
हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां प्रभ तारदा, जुग जुग बेपरवाह। जन्म मरन संवारदा, चुरासी पन्ध मुका। आत्म परमात्म पैज संवारदा, जोती जाता आपणे विच मिला। जो मालक बणे सच्चे घरबार दा, सच दुआरा इक सुहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाह। भगत जनां प्रभ काया चोली रंगदा, चाढ़े रंग निरँकार। प्यार बणे साचे संग दा, दो जहानां पावे सार। प्रीतम होवे अंगीकार अंग दा, आपणा आप मेल मिलाए संसार। वणजारा होवे नाम शब्द मृदंग दा, सुणाए धुन आप करतार। जिस लेख मुकाउणा काया माटी तत पंज दा, पंचम पर्दा दए उतार। वक्त सुहाए सुवेर सञ्झ दा, अठ्ठे पहर पावे सार। वक्त रहे ना ग़मी रंज दा, खुशीआं दस्से आप बहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक एकँकार। जन भगत प्रभ जुग जुग मेले, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। नित नवित आपणा खेल खेले, जुग जुग वेखे चाँईं चाँईंआ। सति सच बणा सुहेले,
११४४ सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीन दुनिया नालों करके वेहले, सचखण्ड साचे दए टिकाईआ। नाता रहे ना धर्म राय ११४४
२४ दी जेले, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा संग आप बणाईआ । २४
जन भगतां प्रभ मेटणहारा रंजा, रंजश रहिण कोए ना पाईआ। भेव खुल्हाए शब्द अनादी पंजा, पंचम देवे माण वड्याईआ। नेत्र वगण ना देवे अंझा, हंझूआं हार बणाईआ। माया धार लेखा मूल ना जाणे कारू गंजा, गणती गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। जन भगतां मेले हरि आप, आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती जोड़े नात, नातवां हो के वेख वखाईआ। सच सुहञ्जणी करे रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। प्रेम प्रीती विच मिले कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा निरगुण सरगुण लहिणा देणा विच लोकमात, मातृ भूमी उत्ते आपणा हुक्म वरताईआ।

जन भगतां प्रभ लेखे लाए जीवण, जीवण सिँघ मिली वड्याईआ। नाता तुट्टया साढे तिन्न हथ्थ सीवण, सीआं वंड ना कोए वंडाईआ। प्यार मिल्या निरअक्खर धार नीवण, सति सच वड्याईआ। नाम रस सचखण्ड दुआर, गुरमुख गुरमुखां नाल रल के पीवण, बिन रसना रस चक्खण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतां प्रभ नेत्र वगण ना देवे अंझा, हंझूआं हार ना कोए बणाईआ। चिन्ता ग़म मेटे रंजा, रंजश अन्दरों दए कढ्ढाईआ । सति धर्म दा एका दए अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। एका नाम सुणाए छन्दा, साचा ढोला धुरदरगाहीआ । जिस दी मस्ती विच खुशी होवे बन्दा, बन्दगी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। संन बिक्रमी उन्नी सौ अठवंजा, जगत जुगत मिली वड्याईआ । जो जगत दिहाढ़ा भगतां वाला चंगा, साचा दर इक्को इक सुहाईआ। जिस दी जनणी हर कौर आपणे लाया अंगा, सिर आपणे हथ्थ टिकाईआ। हीरा सिँघ माणया अनन्दा, पिता पूत एका रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। जीवण सिँघ कहे मैनूं जीवण मिल गया सुख दा, नाता तुट्टया जगत लोकाईआ। मेरा तन वजूद धरनी उत्ते दिसदा मुर्दा, मैं मुरीद मुर्शद विच मिल के आपणी खुशी बणाईआ। मैं प्यारा होया इक्को शब्द सतिगुर दा, सतिगुर शब्द विच मिल के वजे वधाईआ । मेरा लेखा रिहा ना देवत सुर दा, सुरती जगत ना कोए भुआईआ। मेरा लहिणा देणा मुक्कया दीन दुनी अन्ध घोर दा, सच दुआर

एकँकार दिती वड्याईआ। जो आदि जुगादि जन भगतां सदा लोड़दा, लुड़ींदा साजण अगम्म अथाहीआ। ओह अन्त कन्त

भगवन्त हो के बौहड़दा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। शाह अस्वार बणाए आपणे शब्दी घोड़ दा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ।

आदि जुगादि जन भगतां फिरे लोड़दा, लुड़ींदा साजण धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। जीवण सिँघ कहे मैनूं मिल्या घर पुराणा, पूरब लेखा नाल मिलाईआ। मैं वेख के होया हैराना, चारे कुण्टां इक्को इक रुशनाईआ। झट चेत सिँघ ने मैनूं पहचाना, हस के दिता सुणाईआ। दस्स अमलीआ, अमली कोलों की पीणा खाणा, केहड़ी वस्त दयां टिकाईआ। झट पाल सिँघ ने दोहां दा इक्को रंग वखाणा, दूसर रूप ना कोए बदलाईआ। एह घर सुहञ्जणा जिथ्थे वसे श्री भगवाना, जगत तृष्ना रहे लोड़ ना राईआ। जन भगतां नाल मिल के इक्को गाउणा तराना, दूजा राग ना कोए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच समाणा, तन वजूदां लेखा रहे ना राईआ। किरपा करी आप भगवाना, मेहरवान हो के दया कमाईआ। सचखण्ड दुआर दिता टिकाणा, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। दीन दुनी मुक गया आवण जाणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहानां, दोहरी धार एकँकार आपणी खेल खिलाईआ।

✪ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुवर जेठूवाल ज़िला अमृतसर प्यारो जेठूवाल वाली दे नवित ✪

आदि जुगादि खेल प्रभू अलख दा, लख सके कोए ना राईआ। निरगुण सरगुण रूप धरे प्रतख दा, पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लाहीआ। आत्म परमात्म भेव चुकाए वख दा, सगला संगी इक हो जाईआ। मालक बणे शाह सुल्तान कौडी कक्ख दा, कीमत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। भगत जनां प्रभ तारनहारा, आदि जुगादी आप। सन्त जनां प्रभ उधारनहारा, एक जपाए जाप। गुरमुखां भेव खुल्लावणहारा, सच संदेशा देवे नाम अगम्मा पात। गुरसिखां हरि रंग चढ़ावणहारा, सच प्रीती एकँकारा बख्शे दात। सूफ़ीआं संग निभावणहारा, जल्वागर हो के पुछे वात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सरन सच स्वामी जोड़े नात। जन भगतां प्रभ मेलदा, निरगुण सरगुण खेल अपार। साचे सन्तां संग खेल दा, सुरती शब्द देवे धुन्कार। गुरमुखां धाम वखाए नवेल दा, जिथ्थे वसे आप शहिनशाह निरँकार। गुरसिखां खेल
११४६ खिलाए गुरु गुर चेल दा, सुरती शब्द शब्द अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा ११४६
२४ वर, हरिजन साचे पैज संवार। भगत जनां प्रभ वेखदा, बिन नेत्र लोचन नैण उठा। सन्त जनां लेखा मुकाए पूरब लेख २४
दा, लहिणा झोली पा। गुरमुखां पर्दा लाहे आपणे भेख दा, जोती जाता कर रुशना। गुरसिखां गृह गृह आपे वेखदा, वेखणहार नूर अलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वा। भगत जनां प्रभ आदि जुगादी पित, पतिपरमेश्वर इक अख्वा। सन्त जनां करे साचा हित, हितकारी हो के आपणे अंग लगा। गुरमुखां दर्शन देवे नित, निज लोचन नैण कर रुशना। गुरसिखां आत्म परमात्म धार बणे मित, मेल मिलावा सहिज सुभा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वा। जन भगत जुग जुग रखदे ओट, ओड़क इक ध्यान लगाईआ। साचे सन्त नाम नगारा लावण चोट, चोटी चढ़ के ध्यान लगाईआ। गुरमुखां साचा बंक दुआरा तक कोट, किला एकँकारा आपणा वेख वखाईआ। गुरसिख आलणयों डिग ना सके बोट, फड़ बाहों सतिगुर चरण आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जन भगतां प्रभ देवे नाम निधान, निरअक्खर विच्चों पढ़ाईआ। साचे सन्तां बख्शे अमृत रस अगम्मा पीण खाण, जगत तृष्ना भुख रहे ना राईआ। गुरमुखां सच संदेशा देवे आण, जुग जुग साची सेव कमाईआ। गुरसिखां लहिणा देणा

पूरा करे विच जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत आप दरसाईआ। सतिगुर शब्द हो के देवे दान, दाता दानी इक अख्वाईआ। जन भगत सुहेले होण परवान, सन्तन संग आपणी गंढु पुआईआ। गुरमुख गुरसिख सच भूमिका दस्स अस्थान, गृह इक्को इक वेख वखाईआ। जिस घर वसे शाहो भूप सुल्तान, हरि करता धुरदरगाहीआ। उह वेखणहारा नौजवान, नौ खण्ड पृथ्मी नौबत नाम जणाईआ। जुग जुग लोकमात हो प्रधान, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा खेल खिलाईआ। सो पुरख बिधाता कलयुग मेटे अन्धेरी राता सतिजुग सच करे परवान, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत सुहेले सति सति विच मिल जाण, जोती जाते मिल के वजे वधाईआ। मानव ज़ाती फेर लेखा रहे ना आण जाण, पाँधीआं पन्ध देणे मुकाईआ। सचखण्ड दुआरे एकँकार होवे आप मेहरवान, महिबान आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग भगत सन्त गुरमुख गुरसिख लए पहचान, पंचम तत लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ।

१४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ स्वर्गवासी निरञ्जण कौर दे नवित
पिण्ड जलालाबाद नथ्थू वाली खूही ज़िला अमृतसर

धरनी कहे चौदां लोक धरो ध्यान, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। चौदां तबक हो सवाधान, आलस निंद्रा ग़फ्लत रहिण कोए ना पाईआ। चौदां रत्न वेखो आपणा आपणा निशान, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ । चौदां विद्या सुण लओ बिना कान, बिन सरवणां शब्द जणाईआ। चौदां मग्घर खेल महान, हरि करता आप कराईआ। आदि जुगादी हो मेहरवान, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बरां देवे दान, गुरुआं वस्त अमुल अतुल झोली आप भराईआ। सति सतिवादी दे के नाम निधान, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता वड बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जन भगत सुहेले कर परवान, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे मैं वेख्या धर्म दुआर, प्रभ मेरे उत्ते दिती माण वड्याईआ। मैं निव निव करां निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। धूड़ी मस्तक लावां छार, टिक्के सच ख़ाक रमाईआ। निरगुण धार करां दीदार, बिन नेत्र लोचन नैण दर्शन पाईआ। खुशीआं विच ढोले गा करां इज़हार, सिफ्तां विच सिफ्त सलाहीआ। तूं बख़्शणहार इक करतार, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। मेरे उत्ते लहिणा देणा जुग चौकड़ी लए विचार, विचरण

दी लोड़ रहे ना राईआ। जुग जुग जन भगत सुहेले देवे तार, तारनहार तेरी बेपरवाहीआ । मैं मांगत दर भिखार, भिखक हो के झोली डाहीआ। सन्त साजन लाउणे पार, गुरमुख गुरसिख गोद उठाईआ। तेरा हक दा हक होवे दरबार, मंज़ल सच सच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा आपणा दर वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे कोल तेरी तहरीर, सिफ्त सलाही ढोले गाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल करे अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। जगत शरअ दी तोड़ ज़ंजीर, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। जन भगत सुहेले आपे देवे धीर, धीरज धीर आप धराईआ। अमृत रस निझर दे के सीर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के शाह हकीर, अमीर ग़रीब ना वंड वंडाईआ। भेव खुल्हा के बेनज़ीर, नज़रां तों ओहले पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे प्रभू तेरी शक्ती आदि जुगादि शवै, शबेरोज़ सीस निवाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला नित नवित है, होसी भी तेरा नाम इक्को इक जणाईआ। जन भगत सुहेले तेरा रखण भय, भउ अवर ना कोए जणाईआ। मैं खुशीआं नाल सब नूं रही कहि, बिन रसना जिह्वा रही दृढ़ाईआ।

११४८ जन भगतो जिस ने इक वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी बोली जै, जै जै कार दो जहान कराईआ। उहदा ११४८

२४ झगड़ा दीन दुनी मिटे दुवै, दुवैत रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म विच होवे लै, नूर नूर विच समाईआ। सच दुआर २४

सचखण्ड जावे आपणे गृह, मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा हुक्म संदेशा सच, साजणूआ सच तेरी वड्याईआ। मेरे लूं लूं अन्दर गया रच, तेरी रचना तकां चाँईं चाँईंआ। मैं जन भगतां काया माटी भाण्डे वेखण वाली कच्च, कंचन गढ़ तेरा प्यार नज़री आईआ। जिस दी धार विच इक्को इक मिले सच, सच समिग्री नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं नाल पावां शोर, छोहर बांके की तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते दीन दुनी दा मार्ग बदल दिता होर दा होर, अवर दी अवर खेल खिलाईआ। जन भगतां प्रेम प्यार विच दिता तोर, मुहब्बत आपणी विच समाईआ । झगड़ा मुका के मढ़ी गोर, गहर गवर आपणा रंग रंगाईआ। जो जन पंखी पंछी ना खाए ढोर, पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। उस दा मानस जन्म तेरे चरण कवल जाए सौर, साचे दर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे जन भगतो भगत सुहेला कदे ना होवे मुर्दा, मुर्दा मुरीद मुर्शद विच समाईआ। जिस हुक्म मन्नया साचे सतिगुर

दा, गुर की कहिणी चले शब्द रज़ाईआ। उह मालक बणे सचखण्ड दुआरे धुर दा, दरगाह साची चले चाँईं चाँईंआ। शौह दरया कदे ना रुढ़दा, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। उहदा लेखा मुके अन्ध घोर दा, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते जन भगत सूफ़ी नाता रहे ना गोर मड़्ह, जल धार ना कोए वड्याईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा ढोला गए पढ़, सोहँ अक्खर बेपरवाहीआ। उह नाता छड के सीस धड़, तन वजूद डेरा ढाहीआ। साची मंज़ल आत्म धार गए चढ़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर शब्द फड़ के लड़, सचखण्ड भज्जण वाहो दाहीआ। दरगाह साची जाण खड़्ह, सो पुरख निरञ्जण मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतां आत्म करे हासी, हस हस खुशी बणाईआ। लोकमात होवे बन्द खुलासी, नाता शरअ ना कोए जणाईआ। लहिणा देणा मुके लख चुरासी, चारे खाणी ना कोए भुआईआ। मानस जन्म होवे रहरासी, रस्ता मिले धुरदरगाहीआ। लेखे लग्गे गाया शब्द स्वासी, साह साह प्रभ दे विच समाईआ। पन्ध मुके पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ । सच
११४६ दुआर होवे वासी, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत प्रकाशी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लेखा ११४६
२४ रहे ना नाल शंकर कैलाशी, शम्भू शंकर भय ना कोए रखाईआ। धरनी कहे जन भगत आत्मा आपे करे तलाशी, खोजे २४
थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। आत्मा कहे मेरा घर सचखण्ड पुराणा, पुराण अठारां भेव कोए ना पाईआ। मेरा मालक ख़ालक शाह सुल्ताना, शहिनशाह नूर अलाहीआ। मेरा पिता पुरख अकाल नौजवाना, बृद्ध बाल ना रूप वटाईआ। मेरा सचखण्ड सच्चा सच टिकाणा, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। मेरा बिस्तर बिन लेफ़ तलाई सिराणा, खटीआ खाट नज़र कोए ना आईआ। मेरा प्यार नाल श्री भगवाना, जो भगवन अगम्म अथाहीआ। जिस आपणे दर कीता परवाना, परम पुरख हो के दिती वड्याईआ। मैं खुशीआं नाल करां बिश्रामा, सुखआसण सोभा पाईआ। मेरे परवार दा मेरे प्यार विच्चों शुकराना, खुशीआं ढोले गाईआ। जिस दा मातलोक दा बदल गया ज़माना, दरगाह साची मिली माण वड्याईआ। मेरा चुक्कया आवण जाणा, लेखा धरत रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, घर वखाया इक महाना, महिमा अकथ कथनी कथ सके ना राईआ।

✪ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ स्वर्गवासी दातो दे नवित पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ✪

पंज तत कहिण सानूं मिली अगम्मी दात, दीन दयाल दिती वड्याईआ। मेहरवान होया लोकमात, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द हो के पुछी वात, वारस हो के वेख वखाईआ। सच प्रीत जोड़ के नात, रिश्ता धुर दा आप समझाईआ। जुग चौकड़ी पिछला लेखा वेख खात, लहिणा पूरब नाल मिलाईआ। नाम निधाना रस दे बूँद स्वांत, अनरस आपणा दिता चखाईआ। सुरती अन्दर दर्शन देंदा रिहा इकांत, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। खेल वखाउँदा रिहा बहु बिध भांत, भावना आपणे नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण साडे उत्ते कीता तरस, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साडी जन्म जन्म दी मेटी हरस, हवस पूरब रही ना राईआ। इकताली साल दी सेवा ला के पूरे कीते बरस, दिवस रैण आपणी खुशी बणाईआ। चिन्ता ग़म मिटा के हरख़, सोग अन्दरों दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा
११५० वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। पंज तत कहिण साडा लेखा रिहा ना जग, जगजीवण दाते दिती वड्याईआ। बेशक ११५०
२४ दुनिया विच सानूं साड़या नाल अग्ग, लकड़ी काठ गंढु पुआईआ। साडा मालक इक सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। २४
जिस ने ततां नालों तत कर अलग, अप तेज वाए पृथमी आकाश धरनी लेखा रहिण दिता ना राईआ। जिस गृह आत्मा दीपक गया जग, ओसे घर मिले वड्याईआ। मेहरवान होया सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिथ्थे दीपक नूर नुराना बिन तेल बाती रिहा जग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण साडा पंजां दा इक्को नाम दातो, दाता मिल के खुशी बणाईआ। जिस अन्तिम पुछी आपे वातो, मेल मिलाया चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मुका के लोकमातो, सचखण्ड सच दिती सरनाईआ। लेखा लिखा के नाल कलम दवातो, शाही शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। पन्ध मुकाया अधवाटो, चुरासी वंड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। सचखण्ड दुआर पंज तत कहिण गए समा, लेखा चार जुग तों पहला नज़री आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां वास्ते चलाया नवां राह, रैहबर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। तत आत्मा होण ना दिती जुदा, सचखण्ड सच दिती वड्याईआ । दोहां इका दर बहा, एका गृह सोभा पाईआ। इका नूर नूर मिला, एका जोत जोत समाईआ। एका दर दुआर टिका, टिक्का धूड़ी

बिन ख़ाक मस्तक लाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द गवाह, शहादत आपणा नाम भुगताईआ। धर्म दा मार्ग दिता जणा, जागरत जोत आप समझाईआ। जन भगतां पंजां ततां लेखा आत्मा नाल दए मुका, ततां विच तत फेर मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज तत कहिण सानूं मिल्या घर टिकाणा, गृह मन्दिर मिली वड्याईआ । साडा मुक्कया आवण जाणा, चुरासी वंड ना कोए वंडाईआ। जोत नूर तक्कया महाना, जिस विच अप तेज वाए पृथ्मी आकाश हो के गए समाईआ। रूप रंग रेख रिहा ना विच जहाना, मिट्टी ख़ाक वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा मुक्या ज़िमीं असमाना, गगन मण्डलां पन्ध रिहा ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कीता परवाना, परम पुरख दिती सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण बेशक दातो नाम शरीर, पंज तत जगत वड्याईआ। जिस दे अन्दर नूर नुरानी इक तस्वीर, जिस नूं तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जेहड़ी हथ्थ ना आवे किसे फ़कीर, जो फ़िकरयां वाले ढोले गाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल गहर गम्भीर, जो गवर हो के गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। दातो कहे मैनूं याद सम्मत बिक्रमी वीह सौ अठ्ठ, जेठ महीना नज़री आईआ। मैं साहिब सतिगुर चरणी गई ढठ, निव निव सीस झुकाईआ। मेरे हिरदे अन्दर रिहा ना हठ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कल्पना अग्नी लग्गी मठ, जगत बिरहों अन्तर अन्तर आपणा रंग बदलाईआ। झट सतिगुर मेरे पुश्त पनाह ते मारया हथ्थ, सहिज नाल समझाईआ। तूं सुण शब्द अकथ, बिन रसना दयां सुणाईआ। जगत वासना जगत दी वथ, जिज्ञासुआं नाल रखाईआ। तेरा नूर तेरा आत्मा रूप पुरख समरथ, समरथ विच मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। तत कहिण अन्तर निरंतर आया धरवास, जगत ममता ना कोए रखाईआ। इक्को नाम इक विश्वास, इक्को शब्द विच समाईआ। जिस दी धार विच्चों पूरी होई आस, तृष्ना जगत दिती मिटाईआ। अन्त लेखा रिहा ना नाल शंकर कैलाश, कलाधारी ना कोए चतुराईआ। चित्रगुप्त लेख वखा सक्या ना कोए ख़ास, राय धर्म ना वेखण पाईआ। लाड़ी मौत फिरे उदास, ख़ुशी ग़मी नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द कर आप तलाश, हरिजन खोजया चाँईं चाँईंआ। जोती धार हो के आया पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। आत्म धार लेखा ला पवण स्वास, साह साह आपणे रंग रंगाईआ। पन्ध मुका पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां चरणां हेठ दबाईआ। सच दुआर दरगाह साची सचखण्ड टिकाया चरण पुरख अबिनाश, दूसर दर नज़र कोए ना आईआ। नाल लेखा मुका

ततां वाली लाश, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, जगत नाता मात तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मालक इक गुसाँईआ। आत्मा कहे मेरा दर कर सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। दीपक जगे आदि निरञ्जणा, नूर नुराना डगमगाईआ। इक्को प्रेम प्यार प्रीती होवे मजना, दूसर लोड़ रही ना राईआ। घर स्वामी दिसे सज्जणा, हरि करता नूर अलाहीआ। जिस दा रूप अनूप गोपाल मूर्त मदना, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दी धार विच मिल के ना कोई बन्दगी रही ना भजना, सिमरन दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जिथ्थे इक्को रूप आहला अदना, वड्डा छोटा वंड ना कोए वंडाईआ। जिथ्थे धन्ना जट्ट सैन नाई फिरे सदना, रवीदास आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा बंक इक सुहाईआ। आत्मा कहे मैं भगतां मिल्या जा, जाणकारी कीती चाँईं चाँईंआ। सब ने खुशीआं विच कीता वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। पाल सिँघ ने आवाज़ मारी लै के नाँ, बिन रसना दिता सुणाईआ। चेत सिँघ हस के ताड़ी दिती ला, दोहां हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। बिशन कौर किहा दातो तूं किथों गई आ, केहड़ा पन्ध मुकाईआ। तेजा सिँघ हस के कहे ना मैं तेरा पुत बणया ना तूं मेरी बणी माँ, पैंती

११५२ साल लारयां विच लँघाईआ। उस प्रभू दा खेल वेख लै जिस ने तेरा घर दिता वसा, पुत पोतरयां नाल सोभा पाईआ। ११५२

२४ सोहण सिँघ दा सोहणा रह जाए दुनिया विच नाँ, नाम निधाना प्रभ वस्त झोली दिती टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २४

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले अगे पिच्छे सारे सचखण्ड देवे पुचा, जगत दे विछड़े दरगाह साची लए मिलाईआ।

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जगजीत सिँघ दे गृह जम्मू शहर ✪

नारद कहे धरनीए अज्ज खुशीआं नाल मैनूं आई हासी, हसमुख हो के तैनूं दयां जणाईआ। चार जुग दी मेरे अन्दरों निकली उदासी, हैरानी परेशानी आपणा रूप बदलाईआ। फेर बिना मुख तों आई खांसी, बिन ज़बान तों स्वास तों आपणा रूप बदलाईआ। झट मैनूं इशारा दिता शंकर कैलाशी, कला आपणी अगम्म प्रगटाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म धार दवाया विश्वाशी, विषयां तों बाहर समझाईआ। विष्नूं आपणी धार कर प्रकाशी, मेरा पर्दा दिता चुकाईआ। सतिगुर शब्द इशारा दिता नारदा तक लै बावन वाले रिषी तेरां सौ सतासी, सतह बुलंदी धरनी धरत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए धवले खोलू लै अक्खीआं, बिन

नेत्र नैण उठाईआ। तेरे उत्ते खेल होणा अलखणा अलखीआ, अलख अगोचर की आपणी कार कमाईआ। नाले हस के किहा मैं तैनूं ख़बरां अगम्मीआं दस्सीआं, दहि दिशा समझ कोए ना पाईआ। जेहड़ीआं आशा जुग चौकड़ी मेरे अन्दर वसीआं, वास्ता निरगुण नाल रखाईआ। ओह बध्धीआं गईआं नहीं किसे नाल तारां रस्सीआं, गंढु सके ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे धरनीए सतिगुर शब्द कोलों कर जाणकारी, अणजाणे तैनूं दयां जणाईआ। जिस दी खेल आदि जुगादि न्यारी, निरगुण सरगुण हो के आपणा हुक्म वरताईआ। उह सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सद पावणहारा सारी, महासार्थी हो के आपणा खेल खिलाईआ। उह शाहो भूप शहिनशाह सिक्दारी, राज राजाना नौजवाना इक अख्वाईआ। जो लहिणा देणा जाणे सदा जुग चारी, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं बावन धार लग्गी प्यारी, बलि दुआर सोभा पाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना जोती जाता एकँकारी, अकल कल आपणी खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए आह वेख पुराणीआं कापीआं, कपल मुन की गया जणाईआ। जेहड़ीआं
११५३ बिन अक्खरां तों छापीआं, शाही वंड ना कोए वंडाईआ। बिन अक्खां मार लै झाकीआं, बिन नैणां नैण तकाईआ। एहदे ११५३
२४ विच्चों दिसण अगम्मीआं पातीआं, पत्रका गुर अवतार पैग़म्बर जो जणाईआ। कलयुग होणीआं अन्त अन्धेरीआं रातीआं, साचा २४
चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा पैणा ज़ात पातीआं, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। नाम कलमा इक दूजे मारे कातीआं, शरअ शरीअत संग बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेल होणा डूँघे खातीआ, ख़तरा होवे ख़लक ख़ुदाईआ। उस वेले पुरख अकाला दीन दयाला पुछे वातीआ, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे नारद तूं बहु पुराणा पांधा, पंडता दयां समझाईआ। किधरों आया थक्का मांदा, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। क्यों तूं मेरा मैं तेरा ढोला गांदा, बिन अक्खरां सिफ्त सलाहीआ। नारद कहे धरनीए मैं वणजारा बणया इक्को नाँ दा, नाउँ निरँकार इक सुणाईआ। जिस झगड़ा मेटणा कलयुग अन्तिम सूर गाँ दा, ढोरां पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। नी तेरा लहिणा देणा पूरा करना धरनी माँ दा, ममता वालीए तैनूं दयां सुणाईआ। उहदा वक्त सुहञ्जणा खुशीआं वाला चा दा, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। जिस दा गोबिन्द ढोला गाया वाह वाह दा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। ओह ख़सम ख़समाना अगम्म अथाह दा, अलख अगोचर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए मेरे कोल बेख़बरां दीआं ख़बरां, बेख़बरे तैनूं दयां

जणाईआ। जिस नूं सुण के रहे नाँ कोए बेसबरा, सबर सबूरी इक दरसाईआ। जिस विच दीन दुनिया दीआं धारां मेटे ग़दरां, झगड़ा रहे ना ख़लक खुदाईआ। आत्म परमात्म पावे कदरां, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। तेरीआं पूरीआं करे सधरां, सदमे तेरे दए मिटाईआ। मेहरवान हो के मेहर दीआं करे नज़रां, नज़रीआ आपणा इक जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप तेरा इक्को वेखे शजरा, शहिनशाह हो के ध्यान लगाईआ। तूं याद कर लै जो मुहम्मद नूं संदेशा दिता ईलजबरा, जबराईल की जणाईआ। सदी चौधवीं नूर नुराना उतरे उत्तों अम्बरा, ज़मीं ज़मां ध्यान लगाईआ। आवाज़ सुणाए अगम्मे मम्बरा, महिराबां वंड ना कोए वंडाईआ। निगाह मारे जूहां कंदरां, काया काअबे फोल फुलाईआ। दीन दुनी शरअ दा तोड़े जंदरा, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। मनुआ दहि दिशा ना उठ उठ धावे बन्दरा, बन्दगी आपणी इक वखाईआ। झगड़ा मेट मसीतां मन्दिरां, दुआरा इक्को इक दरसाईआ। मानव ज़ाती झगड़ा रहे ना पशूआं डंगराँ, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पर इक गल्ल याद रख जिस खेल वेखणा जूहां जंगलां, टिल्ले पहाड़ां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे धरनीए, आह वेख लै लाइनां दो चार, चार

११५४ जुग दा भेव खुल्हाईआ। तेरां सौ सतासी रिषीआं दी पुकार, पुनह पुनह करके सीस निवाईआ। बावन खुशीआं नाल सुणे ११५४

२४ सुणनेहार, आप आपणी खुशी बणाईआ। नाले चरणां नाल धूड़ उडा के छार, सब दे उत्ते दिती सुटाईआ। नाले अक्खर २४

अक्खर दस्स के वेद चार, ब्रह्मा दा लेखा पूर कराईआ। अथर्बण उत्ते हथ्थ फेरया नौ वार, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। रिषीओ होणा ख़बरदार, आलस निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम कलि कल्की होए अवतार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। तुहाडा लहिणा देणा उस दे नाल होवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। जुग जुग विछड़े आपे मेले मेलणहार, विछोड़ा पूरब दए चुकाईआ। नाल हस के किहा तुसां सम्मत शहिनशाही वेखणा इक इक दी धार, एका एके नाल मिलाईआ। सम्बल दा मालक हो के पावे तुहाडी सार, सतिगुर शब्द शब्द वड्याईआ। नाले खुशीआं नाल बावन कीता इशार, सैनत दिती लगाईआ। जिस भोजन दा तुसीं वेख के आए भण्डार, अन्न खा खा खुशी बणाईआ। उन्हां विच्चों खुशीआं विच बहुतयां किहा पुकार, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। बावन फेर ख़ुशीआं नाल तेरां सौ सतासी धार तकी, रिषी ऋषीशरां वेख वखाईआ। सब नूं हुक्म दिता आपणे हिरदे करो पक्की, कच्ची गंढु ना कोए रखाईआ। अक्खां मीटो ध्यान धरो केहड़ी रोटी खाधी पक्की, पकवान केहड़ा नज़री आईआ। जां सब ने ध्यान धरया यूगोसलावीआ दी नज़र आई मक्की, जो नौ

दाणे ल्यांदे चाँईं चाँईंआ। जिस दा रस प्यार विच सब ने ल्या छकी, शिकवा अवर रिहा ना राईआ। झट बावन ने आवाज़ दिती हकी, हकीकत दिती दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। तेरां सौ सतासी रिषी होए ख़ामोश, मुख दन्द जिह्वा ना कोए हिलाईआ। सब ने आपणी आपणी बदली होश, मनसा मन दी दूर कराईआ। फेर हत्थ मारया आपणे काया माटी वाले पोश, तन वजूद वेख वखाईआ। फेर बिना बुद्धी तों पै गए विच सोच, समझ जगत ना कोए जणाईआ। झट बावन ने अन्दरों भावना बदली लोच, आसा आसा विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। झट नौ दाणे हस के लग्गे कहिण, रिषीआं अन्दर ढोले गाईआ । तुहाडा कुछ लेखा लिख्या जाणा विच रमायण, बाल्मीक दए गवाहीआ। तुहाडा काहन ने बणना सैण, सज्जण इक अख्वाईआ। पैग़म्बरां बणना मुहायण, सोहणा संग बणाईआ। गुरुआं देणा देण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया वहिणा वहिण, नव सत्त आपणा रूप बदलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तुहाडा लेखा लहिणा आवे देण, दीन दुनी विच्चों खोज खुजाईआ। तुसां बैठणा नाल चैन, खोजण
११५५ दी लोड़ रहे ना राईआ। झट इशारा दिता उठके चौदां रत्नां विच्चों कामधेन, ऐराप्त हाथी की सुणाईआ। की लहिणा देणा ११५५
२४ तुहाडा विच हिन्दवायण, भारत भावना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा २४
हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नौ दाणे कहिण रिषीओ प्रभू ने तुहाडे उत्ते करनी मेहर, मेहरवान हो के दया कमाईआ। तुहानूं मानस जन्म मिलणा फेर, फेरी कलयुग नाल मिलाईआ। लेखा जाणे सतिगुर शब्द हो के शेर, सिँघ आपणा हुक्म बदलाईआ। तुहाडा चुरासी वाला मूल ना होवे गेड़, जूनी जून ना कोए भुआईआ। अन्तिम लहिणा देणा दए नबेड़, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां हिसाब रहे ना ज़बर ज़ेर, हिन्दसा हिन्दसा ना कोए बदलाईआ। उस वेले तुहाडा पकवान तेरां सौ सतासी होवे सेर, मक्की मक्का काअबा धार बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। तेरां सौ सतासी सेर कहे असीं सच रूप बदलावांगे। रूप अनूप आप दरसावांगे। शाहो भूप संग रखावांगे। अंग अंग नाल मिलावांगे। भुजंग हो के ढोले गावांगे। मृदंग धुर दा नाम सुणावांगे। माझा मालवा दुआबा लँघ, जम्मू आपणी गंढु पुआवांगे। चार जुग दी डोरी इक पतंग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जोड़ जुड़ावांगे। आत्म परमात्म धार होवे ब्रह्म हँ, हँ ब्रह्म आपणा खेल खिलावांगे। जो पिछली पिच्छे गई लँघ, अगला लहिणा जन भगतां झोली पावांगे। साडा लहिणा देणा लेखा होवे नाल पंज, पंचम पर्दा आप उठावांगे। ना

कोई हरख सोग रंज, रंजश विच कदे ना आवांगे। फेर खुशीआं नाल दीन दुनी दा वेखीए जंग, झगड़े विच आपणी खुशी मनावांगे। छब्बी पोह दी साडी वंड, अन्तिम लोहां उत्ते आपणा आप तपावांगे। फेर खेल वेखणा विच नवखण्ड, सत्तां दीपां पर्दा लाहवांगे। चारे कूट पवे डण्ड, डण्डावत सब दी फोल फुलावांगे। फिरे दरोही विच वरभण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमावांगे। छब्बी पोह कहे मैं शहिनशाही सम्मत ग्यारां, इक इक नाल मिल के वजे वधाईआ। मेरे एके नाल एका एके नाल मिलके तिन्नां दी होवे इक कतारा, त्रैलोकी धार जणाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव नाल दए इशारा, बिन सैनत सैनत समझाईआ। रजो तमो सतो नाल रोवे ज़ारो ज़ारा, बिन नैणां नीर वहाईआ। त्रैलोकी करे पुकारा, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे इक सौ ग्यारां गुरमुख फड़ के आवण सोटीआं, सज्जे खब्बे हथ्थ फड़ाईआ। इक सौ ग्यारां बध्धीआं होवण लंगोटीआं, ऋषी रखीशर आपणी कार कमाईआ। इक सौ ग्यारां पाईआं होवण सीस टोपीआं, मस्तक टिक्के लाल लगाईआ। इक सौ ग्यारां बणीआं होवण गोपीआं, बिन काहन खुशी बणाईआ।
११५६ इक सौ ग्यारां कुच्छड़ चुकीआं होवण पोतीआं, सत्त साल तों वध उमर ना कोए जणाईआ। इक सौ ग्यारां जगाईआं होवण ११५६
२४ जोतीआं, दीपक चार मुख सुहाईआ। इक सौ ग्यारां तुरीआं आवण ना जागण ना सोतीआं, अक्ख अक्ख विच्चों बदलाईआ। २४
इक सौ ग्यारां कोल ग्यारां ग्यारां होवण रोटीआं, सीस सीस उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे इक सौ ग्यारां पाउंदे आवण भंगढ़ा, कपड़यां वंड ना कोए वंडाईआ। इक सौ ग्यारां रूप बणया होवे अन्धड़ा, डंगोरीआं हथ्थां विच फड़ाईआ। इक सौ ग्यारां गुरमुख बणया होवे लंगड़ा, सिध्धा पैर ना कोए रखाईआ। इक सौ ग्यारां करदा आवे झगड़ा, हथ्थों हथ्थ लड़ाईआ। इक सौ ग्यारां दे कोल कलयुग दा होवे खरड़ा, लेखा पिछला नाल मिलाईआ। इक सौ ग्यारां गुरमुख रूप बणया होवे बगला बपड़ा, अन्दरों होर बाहरों होर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। छब्बी पोह कहे इक सौ ग्यारां बीबीआं होवण गांदीआं, गीत धुर दे माहीआ। इक सौ ग्यारां लाल पाईआं होवण परांदीआं, सिंदूर मथ्थे विच छुहाईआ। इक सौ ग्यारां मिठ्ठा रस होवण खांदीआं, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। इक सौ ग्यारां छल्ले पाए होवण चांदीआं, उंगल छोटी जगत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। छब्बी पोह कहे मेरा वक्त दिहाढ़ा सोहणा होवे जग, मैनूं सोहणी मिले

वड्याईआ। ग्यारां लोहां हेठ बलेगी अग्ग, ग्यारां ग्यारां गुरमुख सेव कमाईआ। ग्यारां विच इक पाड़ के सुट्टी जाएगी पग्ग, पूरब लेखे लेख मुकाईआ। ग्यारां मार के कोल रखे जाणगे कग, नौ नौ फुट उच्चे देणे बंधाईआ। नौ नौ गुरमुख माझा मालवा दुआबा जम्मू बैठणगे अलग अलग, सोहणा रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैनूं लेखा याद आ गया जो राम दी धार कीता नाल कैकेई, सहिज नाल समझाईआ। जिस दा लेखा जगत धार मतरई, मता समझ कोए ना पाईआ। जिस दा विशा लिख्या नहीं किसे उत्ते वही, काग़ज़ चले ना कोए चतुराईआ। नाले राम संदेशा दिता भरत भई, भईआ दयां दृढ़ाईआ। नाले हथ्थ नाल पाए सही, सहिज नाल सुणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम सब दी पत गई, लज्जया नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द दा लँघणा ढईआ ढई, ढौंका जगत लगाईआ। उस वेले खेल होणा जो इशारा कीता दुर्गा अष्टभुज मई, मईआ हो के गई समझाईआ। छब्बी पोह शहिनशाही सम्मत ग्यारां जन भगतां लंगर पक्के मकई, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे पंजां प्यारयां आपणा आप लैणा संभाल, सम्बल दा वासी खेल खिलाईआ। सज्जे गुट नाल लाल रंग दा बध्धा होवे रुमाल, गंढां पंज पंज बंधाईआ। पंजां लिखारीआं आपणे खुल्ल्हे रखणे वाल, पगड़ीआं सीस उत्ते टिकाईआ। पंजां दरबारीआं इक कोल रखणी ढाल, पूरब लहिणा गोबिन्द संग बणाईआ। फेर कलयुग आ के करे सुआल, आपणा संग बणाईआ। किस बिध मेरा होवे ज़वाल, मैनूं दयो समझाईआ। सतिगुर शब्द बणे दलाल, विचोला धुरदरगाहीआ। भेव खुल्हाए पुरख अकाल, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मैं खुशीआं नाल आया, जन भगतां दयां जणाईआ। जिस मेरा वक्त सुहाया, सोहणी दिती वड्याईआ। मैं कूड़ कुड़यारी गुरमुखां अन्दरों कढाउणी माया, ममता मोह विकार रहिण कोए ना पाईआ। इक संदेश नर नरेश दए सुणाया, काया मन्दिर अन्दर दृढ़ाईआ। सुरती शब्द मेल मिलाया, शब्द सुरत विच मिलाईआ। जिस ने अगला लेख देणा बदलाया, बदली करे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जो आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल रिहा खिलाया, खेलणहार एकँकार अगम्म अथाहीआ।

११५७ २४

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ उत्तम जीत सिँघ दे गृह जम्मू शहर ✪

नौ दाणे कहिण साडा लेखा नाल नव खण्ड, नवां खण्डां विच्चों किंपुरख मिले वड्याईआ। हरवरख साडी होई वंड, भारत मेला ल्या मिलाईआ। असीं फिरना विच वरभण्ड, भज्जणा वाहो दाहीआ। दीन दुनी दा वेखणा कूड़ पाखण्ड, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जन भगतां अन्तर पाउणी ठण्ड, कलयुग अग्नी बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म बंधाउणी गंढु, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। लेखा वेखणा सूर्या चन्द, मण्डल मण्डप ध्यान लगाईआ। साडा खुशी होणा बन्द बन्द, बन्दगी सच विच समाईआ। साडा लेखा नाल गोबिन्द पुरी अनन्द, अनन्दपुर छडण लग्यां गया समझाईआ। साडे अन्तर निरंतर उह मंग, जो मांगत हो के दईए सुणाईआ। जो आशा रखी रवीदास दी धार सच किनारे गंग, गंगोत्री नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नौ दाणे कहिण साडा नाता नाल नौ गृह, ब्रहस्पत आपणा रंग रंगाईआ। शनी सानूं रिहा कहि, कूक कूक सुणाईआ। मंगल हस के मंगे अगम्मी सैअ, शहिनशाह अगे झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले दीन दुनी उत्तों मेट दुवै, दुवैश रहिण कोए ना पाईआ। तेरा हर थाँ होवे भय, भय विच ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। तेरा इक्को नाम निधाना श्री भगवाना दो जहानां रहै, रस्ता इक्को देणा वखाईआ। जगत दे मार्ग पूरब तकणे ग्रह, ग्रहां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नौ दाणे कहिण परम पुरख प्रभ सानूं बख्श दे नव निध, नव नव दा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां कारज कर दे सिध, सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे कोल अगम्मी बिध, बिधना दा लेखा दे चुकाईआ। अन्तर आत्म निरगुण धार हो के विध, विद्या दा लेखा रहे ना राईआ। अमृत धार वहा दे सागर सिन्ध, सिन्धू आपणी दया कमाईआ। मस्तक धूड़ रमा दे इंज, जो वृंदावन दा काहन गया समझाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता लहिणा देणा पूरा कर दे विच हिन्द, भारत खण्डी आपणा रंग रंगाईआ। असीं आदि जुगादी तेरी बिन्द, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेहरवान बख़शिंद, रहमत आपणी आप दरसाईआ। जन भगतां अन्दरों मेटणी चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर गवर तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बागो देवी दे नवित जम्मू शहर वज़ारत रोड ✪

धरनी कहे मेरा भाग होणा उदा, उदै असत मिले वड्याईआ। मैं खुशीआं विच फिरां धवल हो वसुधा, बेसुध वेखां ख़लक खुदाईआ। जो इशारा दे के गया समाधी विच बुध्धा, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। उस दा वक्त सुहञ्जणा पुज्जा, घड़ी पल थित वार दए गवाहीआ। कलयुग अन्तिम मेरे उत्ते क्रिया कूड़ दा उजड़ना झुग्गा, जगत दुआर नज़र कोए ना आईआ। इक्को धुर दा हुक्म होवणा उग्घा, चारों कुण्ट वजे वधाईआ। जिस विच्चों सति धर्म पवित्र निकलणा दुद्धा, निरगुण सरगुण आपणा भेव चुकाईआ। मेरा लेखा लहिणा पूरा होणा जो सतिगुर अर्जन इशारा दिता बाबा बुड्ढा, बिन बुढेपओं गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरा होणा वड वड भाग, भगवन दए वड्याईआ। जन भगत सुहेले जगणे चराग़, चारों कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। मेरे अन्तर उपजे इक वैराग, बिरहों नाल सुणाईआ। प्रभू ने सब तों वखरा धर्म दा दस्सणा इक त्याग, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ। जिस नाल हँस बणना काग, दुरमति मैल रहे ना राईआ। भगत फुलवाड़ी बगीचा महकणा बाग़, गुलशन आपणे रंग रंगाईआ। जो इशारा कीता विष्नूं बहि के बाशक शेषा नाग, बिन रसना ढोले गाईआ। प्रभ दा खेल होणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, जोती जाता हो के खेल खिलाईआ। मानस मानव करे आज़ाद, मानुख आपणे रंग रंगाईआ। सच वस्त दे के दाद, ख़ाली झोली आप भराईआ। सचखण्ड दुआर कर अबाद, दरगाह सच सच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चुरासी विच होण ना देवे बर्बाद, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह जम्मू शहर वज़ारत रोड ✪

धरनी कहे मैनूं याद औंदा वक्त पुराणा, पुनह पुनह करके सीस निवाईआ। जो संदेशा दे के गया नर नरायणा, पंचम पंचम गंढु पुआईआ। कपल मुन दा याद इक कहिणा, जो बिन रसना गया सुणाईआ। दत्तात्रै वेखे प्रेम धार दे नैणा, नेत्र नेत्र विचों बदलाईआ। रिखव इशारा कीता विच हिन्दवायणा, भारत आपणी गंढु पुआईआ। पृथू किहा साक सज्जण सैणा, सतिगुर पुरख इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पृथू कहे मैं धरनी कीता मथन, धुर दे हुक्म मिली वड्याईआ। धवल दी झोली भरी सक्खण, वस्त सच प्रगटाईआ।

धौल नूं दान दिता हथ्थन, खुशीआं झोली पाईआ। धरत दी पैज आया रखण, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पृथू कहे मैं धरनी विच्चों कढ्ढुया अन्न, जगत धार धार समझाईआ। सृष्टी बेड़ा दिता बन्नृ, सोहणा संग बणाईआ। जगत तृष्ना पूरी कीती मन, मनसा संग रखाईआ। जिस नूं खा के सारे कहिण धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अन्न कहे मैं आया विच जग, प्रभ दिती माण वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा नाल अग्ग, अग्नी मेरा तत तपाईआ। मैं रह ना सकां अलग, वखरा गृह ना कोए जणाईआ। मैनूं हुक्म दिता सूरे सरबग, हरि करते दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी मेरी रखी कोई ना हद्द, हदूदां वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ राम कौर दे गृह जम्मू शहर वज़ारत रोड ✪

अन्न कहे मेरा बिना बुद्धी तों इक ध्यान, धर्म धार जणाईआ। मेरा अक्खरां वाला नहीं कोई ज्ञान, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। मैनूं सब ने कीता परवान, मानस मानव आपणा संग बणाईआ। पशू पंछी जीव जंत सारे खाण, खा खा खुशी बणाईआ। मैनूं सतिजुग विच राजे बलि कीता प्रधान, प्रधानगी मेरे अशवमेध यग विच मेरा पहली वार पक्कया पकवान, नव सत्त मेरी खुशी बणाईआ। जगत जिज्ञासू तपस्सवी मुनी रिषी मैनूं देवण माण, मेरा साचा संग बणाईआ। मैं प्रसिद्ध होया विच जहान, दीन दुनी वजे वधाईआ। मेरे कारन बावन प्रगट होया भगवान, बालां बृद्धां आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी दिता दान, दयावान हो के दया कमाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ फुम्मण सिँघ दे गृह जम्मू शहर वज़ारत रोड ✪

पकवान कहे मैं अन्न हो के पकदा, भोजन मेरा नाम वड्याईआ। मैं सेवक बणया इक्को मालक यक दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी मूल ना अकदा, ग़ुस्सा गिला ना कोए रखाईआ। मैनूं अमीर ग़रीब छकदा, बृद्ध बाल जवान मेरा संग रखाईआ। मैं संदेशा देवां इक्को हक दा, हकीकत विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पकवान कहे मेरा नाता नाल जिज्ञासू, जगत धार दृढ़ाईआ। मेरा लेखा पवण स्वासू, साह साह आपणा रंग रंगाईआ। मेरा वासा विच पृथ्मी आकासू, दोहां विच रह के आपणी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। पकवान कहे मैं पक्कण वाली रोटी, अग्नी तत तत जलाईआ। सड़ के मेरी वासना रहे ना खोटी, ख़ाहिश दीन दुनी बदलाईआ। मैं मंज़ल हकीकी वेखां अगम्मी चोटी, चोटा हो के ध्यान लगाईआ। मैनूं बावन सहिज नाल लाई सोटी, सुत्तयां दिता उठाईआ। नाल इशारा कीता तेरां सौ सतासी वेख रिषी जिन्हां बध्धी तेड़ लंगोटी, वस्त्र तन ना कोए रखाईआ। इक्को अन्न दी रख के आए ओटी, भगवन संग ना कोए रखाईआ। नवीं धार सोचणी सोची, सच सच सुणाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा होणा नाल रविदास चमारे मोची, चमरेटा आपणी गंढु बंधाईआ। फेर वट्टणी पए ख़ामोशी, मुख बचन ना कोए सुणाईआ। अन्तर रखणी पए मधहोशी, मधुर धुन ना कोए शनवाईआ। जिस दा लेखा लभ्भे किसे ना कोशी, कुशलता कहि ना कोए दृढ़ाईआ। उह खेल करे बण के अगम्मा ख़ानाफ़रोशी, फ़रिश्तयां बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने दीन दुनी तकणी दोषी, दोष आपणा ना किसे समझाईआ। जिसदा भेव पाए कोए ना जोशी, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। उह दो जहानां बणे रूपोशी, पोशीदा आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी अन्तर निरंतर वेखणहार बेहोशी, होश हवस दीन दुनी वेख वखाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ भागने देवी दे गृह जम्मू शहर ✪

धरनी कहे मैं हो के भागां भरी, धरत धवल धौल खुशी मनाईआ। परम पुरख परमात्म किरपा करी, करनी दा करता कुदरत दा मालक होए सहाईआ। जो मेरा लहिणा देणा पूरा करे घर घरी, गृह मन्दिर अन्तर वेखे चाँईं चाँईंआ। मेरी अन्तष्करन धार ठरी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मैं इक स्वामी परम पुरख दी सरनी परी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर ढोले गाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान होया मेरा हरी, जो हर हिरदे वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरे अन्तर रस मिल्या अगम्मा भोग, भगवन देवे माण वड्याईआ। मेरा पूरन पूरा पिछला होया जोग, जुगती जगत नाल वड्याईआ। घर ठाकर मेला कीता

११६१ २४

संजोग, जुग विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। दर्शन दे आप अमोघ, अमृत रस दए चुआईआ। जन भगतां अन्तर निरंतर कट दे रोग, चिन्ता दुःख दए मिटाईआ। कर्म दा रहे ना कोए सोग, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख कृपाल, किरपा निध इक अख्वाईआ। आदि जगादी दीन दयाल, दया निध अगम्म अथाहीआ। जुग जुग जन भगत सुहेले वेखे आपणे लाल, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। सब दी पूरी करे घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। दीननां मंन के बेनन्ती दर सवाल, आशा आपणे नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सतिगुर हो के करे संभाल, सम्बल दा मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। दुःख कहे मैं गृह मन्दिर जाणा छड, दलिद्र नज़र कोए ना आईआ। पवित्र करां सब दे हड, नाड़ी मास वंड ना कोए वंडाईआ। भाग लग्गे अन्धेरी खड्ड, सति सच होए रुशनाईआ। धर्म दी धार धर्म निशाना सतिगुर शब्द देवे गड्ड, कूड़ कुड़यारा रहिण कोए ना पाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा दिवस दिहाढ़ा अज्ज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सदा सदा सद पर्दे लए कज्ज, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन लहिणा देणा लेखा पूरा करे जग, जागरत जोत बिन वरन गोत आपणी इक दरसाईआ।

✪ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ ओम प्रकाश अम्बा राय अखनूर ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मैं खुशीआं ढोला गावना, बिन रसना जिह्वा राग दृढ़ाईआ। मैनूं संदेशा दे के गया बावना, बलि दुआर अगम्म जणाईआ। तेरे उत्ते लहिणा देणा होणा राम रावना, रम्ईआ आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा तक लै कृष्णा काहन्ना, घनईया की वड्याईआ। किस बिध पैग़म्बरां पकड़ना दामना, दामनगीर अख्वाईआ । गुरुआं मन्त्र जणाउणा सतिनामना, सति सति समझाईआ। अन्त कलयुग होणा अन्धेरा शामना, शमअ नूर ना कोए रुशनाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया वधणी कामना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। दीन दुनी अन्धेरा होवे शामना, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। भाग लग्गे ना किसे ग्रामना, गृह मन्दिर ना कोए वड्याईआ। उस वेले किरपा करे श्री भगवानना, हरि करता नूर अलाहीआ। जिस दा दीपक जोत होवे रुशनानना, दो जहानां डगमगाईआ। जन भगतां हिरदे बख्शे चानना, चन्द सितार भेत चुकाईआ। धर्म दी धार

पूरी करे कामना, हिरस हवस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते किरपा कीती आप भगवन्त, भगवन गया समझाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा पूरा होवे कलयुग अन्त, अन्तष्करन तक ख़लक खुदाईआ। साचा नाम निधाना देवे मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। नूर नुराना आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार वेख वखाईआ। हरिजन उपजाए आपणे सन्त, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सके छंत, संसा अन्दरों दए गुआईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। सतिजुग सच बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरा लहिणा देणा करे पूर, पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। मेरा मालक ख़ालक बणे हज़ूर, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ । चार जुग दा पिछला बख्श कसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। सतिजुग सच दस्स दस्तूर, सिख्या देवे थांउँ थाँईंआ। मन मनसा मेट मग़रूर, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। साचे नाम दा बख्श सरूर, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। जन भगत आसा मनसा करे पूर, तृष्ना दीन दुनी ना कोए रखाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरा मालक आदि निरञ्जणा, निरवैर पुरख अख्वाईआ। आदि जुगादी साक सज्जणा, सगला संग बणाईआ। चरण धूड़ कराए मजना, दुरमति मैल धुआईआ। मेरा पवित्र करे बदना, तन माटी ख़ाक रंग चढ़ाईआ। मेरे उत्ते लेखे लावे आहला अदना, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। कलयुग शरअ दी मेटे हद्दना, हदूद आपणी इक दृढ़ाईआ। जिस दा दीपक जोत जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ। जिस जन भगतां सच दुआरे सद्दणा, सचखण्ड साचे दए टिकाईआ। उहदा नाम दमामा डंका अगम्मी वजणा, जिस नूं जगत सरवण सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रहिण ना देवे अलगणा, फड़ फड़ बाहों मेल मिलाईआ।

✪ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सोमनाथ दे गृह पिण्ड अम्बाराए अखनूर ज़िला जम्मू ✪

धर्म यग दी अगम्मी रुती, रुतड़ी सतिगुर शब्द नाल वड्याईआ। घृत दी देणी पए ना कोई अहूती, पवण संग ना कोए मिलाईआ। तन रमौणी पए ना ख़ाक भबूती, तिलक ललाट ना कोए वखाईआ। सति दी धार संदेशा देवे बण के

दूती, दो जहान हुक्म जणाईआ। जो भाग लगाए काया पंज तत कलबूती, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाईआ। जिस दी धार विच जोत निरँकार होवे छूती, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धर्म यग दी धर्म दी होवे क्रिया, जुगती भगतां नाल बणाईआ। भगत दुआरा प्रेम नाल होवे खिरया, मुहब्बत चारों कुण्ट सोभा पाईआ। अमृत रस सब दे अन्दर होवे सिरया, बिन रसना रस चखाईआ। सतिगुर शब्द वेखणहारा होवे घर थिरया, थिर घर देवे माण वड्याईआ। हरिजन मेल मिलावा होवे विछड़यां चिरया, चिरी विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धर्म यग्ग दी भगतां नाल होवे रीती, जगत शरअ ना कोए रखाईआ। परम पुरख दी धार होवे प्रीती, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। अन्तष्करन काया होवे ठांडी सीती, अग्नी तत ना कोए तपाईआ । हर हिरदे अन्दर तूं मेरा मैं तेरा होवे गीती, सोहँ ढोला सच पढ़ाईआ। मन मनसा त्रैगुण नालों होवे अतीती, त्रैभवन धनी नाल मिल के वजे वधाईआ। जन भगतां इक इक खून दा तुपका कढणा आपणी चीची, दस्त दाइआं खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
११६४ किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चीची कहे मेरा सुहागी छाप छल्ला, कन्त भगवन्त दए ११६४
२४ वड्याईआ। मेरा पूरब लहिणा जिस वेले पहली वार याद कीता मुहम्मद अल्ला, अल्ला हक हू दा नाअरा लाईआ। बिन २४
तेल बाती दीपक जोती बला, बलि बावन धार नज़री आईआ। चौदां तबकां तक्कया इक इकल्ला, नूर नुराना नज़री आईआ। जो वसे जल थला, महीअल रिहा समाईआ। जो हुक्म संदेशा रिहा घल्ला, पैग़ाम बेपरवाहीआ। जो वसणहारा धाम अटला, दरगाह साची सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। उह सम्बल सिँघासण इक्को मल्ला, अबिनासण हो के डेरा लाईआ। जिस दा खेल अछल अछल्ला, वल छल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। यग कहे मेरा खाण दा सब तों वखरा होणा तरीका, जगत शास्त्र कहिण किछ ना पाईआ। मेरा असूल होणा नीकन नीका, निक्कयां वड्डयां इक्को रंग चढ़ाईआ। मेरा प्यार होणा जीव जीअ का, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी बणाईआ। मैं लहिणा देणा मुकाउणा साढे तिन्न हथ्थ सीअ का, जो रविदास चमारा गया जणाईआ। मैं लेखा पूरा करना गुरदास दी धार वीह इकीह दा, एकँकारा आपणे संग रखाईआ। मैं देण देणा मुहम्मद रोज़े तीह दा, बतीस आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप निभाईआ। यग कहे मेरा चार जुग तों वखरा होणा जोग, जुगती प्रभ देणी समझाईआ। मेरा भगतां नाल होणा संयोग, दूसर संग

ना कोए बणाईआ। मेरा निरगुण धार लाउणा भोग, भोगीआं रस ना कोए चखाईआ। जिस नाल साचे सन्तां मिटणा वियोग, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। हर हिरदा अन्तर देणा सोध, सुदी वदी दी वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुखां अन्तर आत्म करना बोध, बुद्धी तों परे परे जणाईआ। गुरसिखां भेव खुलाउणा गोझ, सुरती शब्दी संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता हो के देवे दरस अमोघ, आदर्श आपणा दए जणाईआ।

✪ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड झमां अखनूर ज़िला जम्मू जीवण सिँघ दे गृह ✪

छब्बी पोह कहे मेरे यग दी वखरी होणी तासीर, जिस दा रस समझ सके कोए ना राईआ। जिस जन भगतां अन्दरों बदल देणी ज़मीर, ज़िमीं असमान दोवें वेख वखाईआ। जिस दी आशा रख के गया कबीर, भोजन साधूआं वाला दृढ़ाईआ। जिस दी अमरदास कीती तामीर, जगत जुगत नाल वड्याईआ। जिस नूं चार जुग दे शास्त्रां वन्डया विच खण्ड खीर, भोजन
११६५ भगवान दिती वड्याईआ। जिस दी बलि नूं बावन दस्सी तदबीर, तरीका गया समझाईआ। कलयुग अन्त वेखणा अन्त अख़ीर, ११६५
२४ बिन नेत्र नैण उठाईआ। दीन दुनी शरअ दी चलणी उत्ते लकीर, मानव ज़ाती वंड वंडाईआ। फ़िकरयां विच वंडे जाण फ़कीर, २४
फ़ाकयां विच ख़लक खुदाईआ। शरअ दी बज्झ जाए ज़ंजीर, जगत सके ना कोए तुड़ाईआ। उस वेले किरपा करे बेनज़ीर, नज़रां तों ओहले बेपरवाहीआ। जो दो जहानां पैंडा आवे चीर, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह जन भगतां प्रेम दा होवे लंगर भोजन, यग जुगती वाला दृढ़ाईआ। काग भसुण्ड वेखण आवे अठाई हज़ार छड के योजन, ज़िमी असमानां विच ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तकण मौजन, बिन तन वजूद खुशी बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बिन तन वजूद सोचण, जगत बुद्धी ना संग बणाईआ। करोड़ तेतीसा वेखे आपणे लोचन, नेत्र नेत्र विच्चों बदलाईआ। ब्रह्मे दा लेखा पूरा करना जो लहिणा कपाल मोचन, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। जो आशा रख के गया भगत त्रिलोचन, तुरीआ तों बाहर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मेरीआं सब तों वखरीआं होणीआं बलीआं, बलीदान समझ किसे ना आईआ। जो आशा रखीआं पैग़म्बरां वलीआं, वलीअहिद धुर दे हो के गए जणाईआ। जिन्हां नाल अन्तर निरंतर रूहां जाण सल्लीआं, आर पार तीर अणयाला नाम लगाईआ।

बिन बाग़ां तों महकण कलीआं, बिन फल फुल्ल महकाईआ। जिस कारन मन्दिरां विच वजदीआं रहीआं टल्लीआं, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। जिस धार विच जन भगतां तकीआं प्रभ दीआं गलीआं, कूचे धर्म धार फोल फुलाईआ। जिस लहिणे विच सूफ़ीआं पाईआं जल्लीआं, नच्चे टप्पे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। जिस प्यार विच आत्मां होईआं झल्लीआं, झलक तक नूर अलाहीआ। उस दीआं खेलां जुग जुग अवल्लीआं, अवल अल्ला हो के खेल खिलाईआ। जिस ने सच दी धार विच साचीआं जगह मल्लीआं, सिँघासण आसण इक वड्याईआ। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जगदीआं जोतां लोकमात घल्लीआं, शब्दी शब्द नाल कुड़माईआ। साचे प्रेम नाल फलीआं, फलीभूत दिता कराईआ। उह खेल खेले जल थलीआं, महीअल वेख वखाईआ। जन भगतां आत्मा रहिण ना देवे इकल्लीआं, दिवस रैण मिल के वजे वधाईआ। जिस दे प्यार विच नौ सौ चौरानवे ल्याउँदीआं होवण मक्की दीआं छल्लीआं, गिणती दाणे ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दीन दुनी पावणहार तरथल्लीआं, थल अस्गाहां आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ केसर सिँघ दे गृह पिण्ड झमां तहिसील अखनूर ज़िला जम्मू ✪

छब्बी पोह कहे जन भगतो चड़ीआं होवण खुमारीआं, मस्ती नाम वाली रखाईआ। आत्मा दीआं परमात्मा नाल लग्गीआं होवण यारीआं, यराना सके ना कोए तुड़ाईआ। जिथ्थे वंड नहीं पुरख नारीआं, निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। एह लहिणे देणे सतिजुग दे अधारीआ, कलयुग अन्त पूर कराईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तुहाडी आई वारीआ, वारस हो के वेखे धुरदरगाहीआ। जेहड़ीआं रूहां अज्ज तक रहीआं कँवारीआं, छब्बी पोह सब नूं लए परनाईआ। फेर फिरना पए ना बंक दुआरीआं, चुरासी घर रहिण कोए ना पाईआ। लोड़ रहे ना विष्णूं भण्डारीआ, शंकर भय ना कोए जणाईआ। ब्रह्मे करनीआं ना पैण उसारीआं, ब्रह्म धार ना कोए वड्याईआ। जन भगतो तुसां करके आउणा हुशयारीआं, आप आपणी लै अंगड़ाईआ। तुहाडीआं प्रेम दीआं प्रेम विच्चों प्रगट होवण धारीआं, धरनी धरत धवल धौल वेख खुशी बणाईआ। तुहाडा रूप अगम्मा होणा उस प्रभू दीआं लाड़ीआं, जो कन्त सुहाग आदि जुगादि अख्वाईआ। जिस पार कराउणा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां वालीआं खाड़ीआं, थल अस्गाहां पार कराईआ। प्रकाश देणा नाड़ नाड़ीआं, अन्ध अन्धेरा अन्दरों दए गुआईआ। जिस लेखे लाउणा जंगल जूहां वालीआं झाड़ीआं, पाहनां पत्थरां दए गवाहीआ। ओह वेखणहारा तुहाडे तन वजूद शरीर काया

वालीआं माढ़ीआं, अन्दर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो चढ़ीआं होवण खरमस्तीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। सब दीआं रूहां प्रभू दे प्यार विच होवण हसदीआं, हस्त कीट ना कोए वड्याईआ। अन्तर ख़ाहिशां भरीआं होवण जस दीआं, सिफ्तां नाल सलाहीआ। संगतां खुशीआं नाल आवण हसदीआं, धुर दे ढोले गाईआ। सदा भगत दुआरे रहिण वसदीआं, वसल यार बख्शे नूर अलाहीआ। प्यार मुहब्बत विच फिरन नस्सदीआं, भज्जण वाहो दाहीआ। प्यासीआं होवण अमृत रस दीआ, बिन रसना रस दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सरन सरनाई होवण ढठदीआं, ढहि ढहि धूड़ी ख़ाक रमाईआ।

२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जीवण सिंघ दे नवित पिण्ड झमां तहसील अखनूर ज़िला जम्मू

११६७
२४

जीवण सिंघ सदा जग जीउ, जीवत जी मरन तों बाद वी दए वड्याईआ। तेरा परम पुरख परमात्म बणया धुर दा पिउ, पुत पोतरयां दी थाँ तेरा नाम करे रुशनाईआ। तेरे प्रेम दा रस मिट्ठा ते सब तों वखरा घृत घिओ, जगत मधाणीआं तों बाहर नज़री आईआ। चार जुग तक तेरा नाम रहेगा त्यो दा त्यो, त्रैगुण अतीता होए सहाईआ। जे कोई पुछे तारया क्यों, केहड़ी कीती कमाईआ। तूं फ़रीद दा उह साथी जिस वेले बरसदा सी मिउँ, हथ्थ जोड़ के प्रभ दे अगे वास्ता पाईआ। जे इस दे नाल निहों, क्यों मैनूं विछोड़या बेपरवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। झट आवाज़ आई एह ततां वाला फ़रीद, अन्तर मेरा ध्यान लगाईआ। जे तूं वी मेरी करनी दीद, दीदा दानिस्ता दर्शन देवां चाँईं चाँईंआ। पर वड्डी आशा रखणी पैणी उम्मीद, तृष्ना तों बाहर समझाईआ। नाले हुक्म विच कीती ताकीद, खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा भेव खुल्लाईआ। शब्द किहा सुण वैरागी, वैरागीआ दयां दृढ़ाईआ। हुण दुनिया जाणी त्यागी, छडणी ख़लक खुदाईआ। फेर किरपा करे तेरा कन्त सुहागी, मालक धुरदरगाहीआ। तेरा वड वड होवे भागी, भागवान तैनूं दए बणाईआ। तेरी आत्मा फेर होवे जागी, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। तेरे अन्दर उपजाए आपणा अगम्मा रागी, जगत रागां तों बाहर शनवाईआ। तेरा जीवण ज़िंदगी जगत होवे सादी, साधना तेरे विच रखाईआ। जिस वेले भारत दी भारत नालों बदली आबादी, कन्धी घाट ते तेरा कन्धा दए बदलाईआ । इहो खेल प्रभू दी होणी डाहढी, जिस नाल पाक हिन्द वंड दिती वंडाईआ।

उस वेले फ़रीद ने आपणा रूप बणा के इक बांदी, बन्दना विच सीस निवाईआ। झट संदेशा मिल्या एह खेल मेरे घरां दी, घराना मेरा धुरदरगाहीआ। इस दे पिच्छे मैं ज़रूर बणांगा पाँधी, पन्ध मुकाए मेला मिल्या चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दुआर फेर वसावां जिथ्थे जा के आत्मा फेर कदे नहीं आंदी, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। उह आशा पूरी ते पूरन सतिगुर कीती धुरां दी, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो धार जाणे अन्तर आत्म ख़ाहिशां वाले सुरां दी, सुरती तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ शांती देवी दे गृह पिण्ड अम्बा राय तहसील अखनूर ज़िला जम्मू ✪

छब्बी पोह कहे मेरा लेखा अकथ कहाणी, कथनी कथ सके ना राईआ। मेरा लहिणा देणा नाल चार जुग दी बाणी, अक्खरां अक्खरां मिल के खुशी बणाईआ। मेरा नाता जुड़या नाल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज मिल के वजे वधाईआ। मेरी जुग चौकड़ी आशा दिसे पुराणी, पुराण अठारां जिस दा राह तकाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल सुरत शब्द हाणी, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ। मैं संदेशा देवां हो के जाण जाणी, खुशीआं ढोले गाईआ। जो भगत दुआर छब्बी पोह नूं व्याही आए सुआणी, आपणी खुशी बणाईआ। गृह दुध रिड़क के आए नाल मधाणी, अगे दुध दी तोट रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा कलमा पढ़े कल्याणी, सोहँ ढोला साचा गाईआ। आत्मा प्रभू दे नाम दी बणे शाहणी, घाटा दीन दुनी चुकाईआ। जो निरगुण धार नानक ढोला गाया पठाणी, अठ्ठतरे सतानवे आपणा खेल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। छब्बी पोह कहे जन भगत घरों करके आवण बन्दन, बन्दगी विच सीस निवाईआ। मस्तक ला के आवण चन्दन, बिन्दी सोहणी सोभा पाईआ। अन्तर आत्म होवे अनन्दन, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। कल्पणा छडी होवे भेख पखण्डण, क्रिया कूड़ ना कोए हल्काईआ। जगत विकारा अन्दरों कढण, सति सतिवादी रंग चढ़ाईआ। खेल वेखण ब्रह्म ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण छन्दन, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जगत जहान रिहा हद्द लँघण, शरअ मज़्हब ना कोए अटकाईआ। सतिगुर शब्द दे लागण अंगण, अंगीकार इक हो जाईआ। बिन रसना जिह्वा वस्तू मंगण, आशा आशा विच्चों बदलाईआ। इक इक छुहारा सब ने ल्याउणा जिस नाल लग्गे सगन, संगी करता आपणा रंग बणाईआ। जिस दा लहिणा देणा तत पंजण, पंचम मेला मेले

सहिज सुभाईआ। जन भगत धार होवे नाल बवंजण, बावन आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्त सच आवे अगम्मी वंडण, दानी हो के दया कमाईआ।

✪ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बंती देवी दे गृह पिण्ड अम्बाराए तहिसील अखनूर ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो तुहानूं ब्रह्मण्ड खण्ड देण वधाईआं, खुशीआं वाले ढोले गीत राग सुणाईआ। तुसां चार वरन अठारां बरन रूप बणना भाई भाईआं, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। चार जुग दीआं पिछलीआं धोणीआं शाहीआं, कालख टिक्का रहिण कोए ना पाईआ। ग्रन्थ शास्त्र तुहाडीआं देण गवाहीआं, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। तुहाडा इक्को रूप होवे जट्ट झीवर छींबे नाईआं, कमीना वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा इक अंकड़ा बदल जाए विच दहाईआं, एके नाल ज़ीरो सिफ़रा मिल के वजे वधाईआ। तुहाडीआं लेखे लग्गणीआं तूं मेरा मैं तेरा तुकां गाईआं, आत्म परमात्म संग बणाईआ।
११६८ तुहाडीआं प्रीतां प्रीतम आपणे नाल लाईआं, लावणहारा इक अख्वाईआ। एथे ओथे ना होवण जुदाईआं, जुज़ वखरा वंड ११६८
२४ ना कोए वंडाईआ। सब ने आपणीआं भुजां संवार के आउणीआं बाहींआं, बाहू बल प्रगटाईआ। निमस्कारां करके आउणा २४
आपणीआं माईआं, जो भगतां जन्म देवण बणन धन्न जणेंदी माईआ। तुहाडीआं लेखे लग्गणीआं कीतीआं वाहीआं, वायदे पूरबले पूर कराईआ । तुसां लाल करके आउणीआं कलाईआं, कलम्यां वाल्यां दा लेखा देणा मुकाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू खेल खिलाउणा ढाई ढाईआं, ढईआ गोबिन्द वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ, थान थनंतर जगत निरंतर हो के वेख वखाईआ।

✪ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ किशन लाल दे गृह पिण्ड बम्मभड़वा तहिसील अखनूर ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे धरनीए मैं फिर के आया शरकन गरबी, मशरक मग़रब ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दी हालत वेखी अन्दरों दरभी, माया ममता मोह विच हल्काईआ। मैं हिन्दस्यां नाल देंदा रिहा ज़रबी, अंकड़े अंकड़यां नाल मिलाईआ। फेर आवाज़ सुणी विच अरबी, अरब अरबानीआं की सुणाईआ। जिस विच रिहा किसे दा नहीं कोई दर्दी, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ।

जगत शरअ धार होई करदी, कत्लगाह दिसे लोकाईआ। दीन दुनी वेखी मरदी, मुर्दा मुरीद मुर्शद विच ना कोए समाईआ। इक होर ख़बर दस्सां कल दी, कलयुग की आपणी कला वरताईआ। जिस खेल बदलणी जल थल दी, महीअल पर्दा दए उठाईआ। जिस नाल आशा रली बलि दी, बावन हुक्म वरताईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां दे पिच्छे की आपणा हुक्म वरताईआ। मैं खेल तकी अगम्मी झल्ल दी, झलक तकी नूर अलाहीआ। जो सब नूं फिरे छलदी, अछल छल हो के खेल खिलाईआ। जन भगतां प्यार विच रलदी, रल मिल आपणा संग बणाईआ। जिस दी झौंपड़ी पंज तत काया माटी खल्ल दी, ख़ालक हो के आपणा डेरा लाईआ। उस दी मंज़ल हकीकी अटल दी, उच्च अगम्म अथाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे धरनीए मैं सच करां अदाब, बिन सजदयां सीस दयां झुकाईआ। मैं सुणी अगम्मी रबाब, जो बिन तन्द सितार करे शनवाईआ। मैनूं संदेशा दिता इक चनाब, चन्द तारयां विच्चों बाहर शनवाईआ । मेरा वहिणा विच वहिन्दा आब, जल धारा रूप प्रगटाईआ। मेरा पूरब लहिणा तक हिसाब, ख्वाजा खिजर नाल मिलाईआ। जिस दा पहला तीजा बाब, भाग दूजा सोभा पाईआ। जिस विच्चों इक्को पुरख अकाल दी मंगी अमदाद, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जो मालक हो के वाहिद, वाजिअ करे ख़लक खुदाईआ। जिस दी बहुती नहीं तादाद, इक इकल्ला धुरदरगाहीआ। जिस दी सति सच जायदाद, मालक इक्को नूर अलाहीआ। उह सब दा मंगण वाला जुआब, जुआब तल्बी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए तूं सुण लै अगम्मी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। निगाह मार लै चारे खाणी, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। अमृत रस तक लै पाणी, जलधारा खोज खुजाईआ। सुघड़ सुचज्जी बण सवाणी, लोकमात लै अंगड़ाईआ। तेरी पिछली कथा होई पुराणी, अगला पर्दा दयां उठाईआ। पुरख अकाला बणया जाण जाणी, जानणहार इक हो आईआ। तूं उस दे बणना दर सुआणी, निम्रता विच सीस निवाईआ। उह वसुधा तेरी करे पहचानी, पश्चाताप दए बणाईआ। जिस लहिणा देणा तकणा अञ्जील कुरानी, कुला खण्ड दा मालक हो के वेख वखाईआ। तूं उस दा नूर ज़हूर तकणा इक नुरानी, जोती जाता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए चनाब की कुछ कहिंदा, कहि कहि की दृढ़ाईआ। की इशारा देवे दिशा लहिंदा, लहिणा पूरब नाल मिलाईआ। किस बिध चार यार संग मुहम्मद नाल बहिंदा, मक्का काअबा वंड ना कोए वंडाईआ। मक्का काअबा केहड़ी धार ढहन्दा, अगे हो

ना कोए अटकाईआ। ईसा मूसा केहड़ी धार खहन्दा, जगत लेखा लेख ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चनाब कहे मेरी नारद सुण अगम्मी पुकार, बिन रसना ढोले गाईआ। तूं आदि जुगादी मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सति सतिवादी सांझा यार, मेल मिल्या चाँईं चाँईंआ। मेरा लहिणा देणा वेख उधार, पूरब लेखा दे समझाईआ। मैनूं पृथू ने कीता स्वीकार, खुशीआं रंग रंगाईआ। संदेसा दिता जिस वेले आवे चवीआं अवतार, जोती जाता डगमगाईआ। भगतां दी पैज देणी संवार, लहिणा तेरे नाल रखाईआ। तूं होणा ख़बरदार, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। वेखणा नैण उग्घाड़, बिन लोचनां राह तकाईआ। उह आवे जंगल जूहां विच्चों पहाड़, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। चवी मग्घर खुशीआं नाल कीती निमस्कार, चरण छोह के खुशी बणाईआ। नाल आपणा करीं इज़हार, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। झट झनां रो प्या ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। मेरा मीत मुरारा एकँकार, इक इकल्ला इक अख्वाईआ। जिस चवी मग्घर पूरा कीता हरि भगत दुआर, थित वार सोहणी वंड वंडाईआ। भगतां दिता प्यार, प्रेम विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,
११७१ सच दा मालक इक गुसाँईंआ । चनाब कहे मेरा इक्को मालक नूर अलाही चन्ना, जो चन्न-आब विच्चों नज़री आईआ। मेरा ११७१
२४ हद्द नहीं कोई बंना, वंडण वंड ना कोए रखाईआ। मेरा संदेशा दे के गया जट्ट धन्ना, पत्थर पाहना नाल सुणाईआ। जिस २४
वेले गोबिन्द लाउणा इक्को कन्ना, कायनात तों बाहर पर्दा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चनाब कहे मेरी इक्को इक अरदास, बेनन्ती सच सुणाईआ। मैं जाणा चाहुंदा भगतां पास, खुशी खुशी पन्ध मुकाईआ। चवी मग्घर नौ गुरसिख मेरे विच्चों नौ भरन ग्लास, पाणी जिस नूं कहे लोकाईआ। छब्बी पोह नूं मेरा अमृत बणा के सतिगुर भगतां दी पावे विच रास, जल जल विच समाईआ। चन्न वेखे उत्तों आकाश, सूर्या आपणी अक्ख उठाईआ। शंकर खुशी नाल तके बहि कैलाश, कल धारी आपणी कल वरताईआ। ब्रह्मा चल के आवे पास, ब्रह्म वेता हो के वेख वखाईआ। विष्नूं विश्व दी धार पावे रास, खुशीआं राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा पूरा करे विश्वाश, विश्व दा मालक हो के साचा संग बणाईआ।

✪ २४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ शिव राम दे गृह अखनूर ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे उत्ते बेनन्ती कहे झनां दा आब, आबे हयात देणा ख़लक ख़ुदाईआ। मेहरवान मेहर करनी मित्र अहबाब, मित्र प्यारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस विच लेखा रहे ना पुन्न सवाब, शरअ शरअ नज़र कोए ना आईआ। सति सतिवादी तेरी इक अमदाद, दूसर लोड़ ना कोए रखाईआ। तूं नूर नुराना शाह सुल्ताना मालक इक वाहिद, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा आदि जुगादि तेरे नाल अहद, अहदनामा वेखणा चाँईं चाँईंआ। उह वक्त सुहञ्जणा चवी मग्घर दा पुजया शायद, भुलेखा जगत ना कोए रखाईआ। जिस विच सति हुक्म होणा राइज, संदेश मिलणा धुरदरगाहीआ। भेव खुल्हाउणा आपणा आप सहिज, महव पर्दा आप चुकाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा होवे जाइज़, जाइज़ा लैणा ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी धवल दी धार वेख अखनूर, नूर नुराने ध्यान लगाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। तेरे शब्द नाद दी तूर, तुरीआ तों बाहर ढोले रही गाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी करनी मेरे मालक हक हज़ूर, हज़रतां दे हज़रत तेरी

११७२ ओट तकाईआ। जो आशा रख के गया मनसूर, मनसा दीन दुनी बाहर बदलाईआ । जो इशारा दिता मूसा उत्ते कोहतूर, ११७२

२४ कुदरत दे कादर वेखणा चाँईं चाँईंआ। तेरा जल्वागर इक्को होवे नूर, नूर नुराने नज़री आईआ। मेरा पन्ध रहे ना दूर, २४

दूर दुराडे लहिणा देणा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। आब कहे मेरे ख़ुदा वलीउल ज़मू जुनुख़ते दुवा चश्मे चमी हरफ़े दवी मुनसफ़े अज़ा कुदरते ख़ुदा कुदरते कादर करीम तेरी बेपरवाहीआ। आब कहे मैं पर्वत चोटीआं वाला वहिण, जलधारा रूप बणाईआ। इक संदेशा धुर दा आया कहिण, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। सब दा मालक ख़ालक इक्को सज्जण सैण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दा देवे लहण देण, देवणहार इक गुसाँईंआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना जन भगतां दर्शन दिखाए आपणे नैण, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस दे हुक्म विच आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे बहण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दा लेखा विश्व दी धार बाल्मीक लिख्या विच रमायण, राम रामा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। चनाब कहे मेरा लेखा नाल सन्त कुमार, ब्रह्मा सुत सुत वड्याईआ। बराह दे के गया इशार, बिन सैनत सैनत जगत समझाईआ। यज्ञ पुरुष कीता प्यार, हावग़रीब दिती वड्याईआ। नर नरायण दिता अधार, मेहर नज़र इक उठाईआ। कपल मुन बोल जैकार,

सांख योग दिता समझाईआ। दत्तात्रै खोल्ह किवाड़, मेरा पर्दा गया खुल्हाईआ। रिखव बख्श के धूड़ी छार, मस्तक टिक्का दिता रमाईआ। पृथू अमृत रस बणा के ठंडा ठार, जल धारा रूप समाईआ। मत्तस दूर दुराडा कहि के गया पुकार, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। कछप निगाह लई मार, मिन्दिरा आपणी पिठ उठाईआ। धनंतर मेरा कीता इज़हार, बिन सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। हँस हो के खेल कीता करतार, कुदरत मालक भेव खुल्हाईआ। बावन मेरा ल्या के जल धार, राजे बलि दिती वड्याईआ। मोहणी रूप मैनूं कीता ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। नर नरायण हरि हरी सच हुक्म दस्स सरकार, सहिज सहिज नाल समझाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब लेखा मैं दस्सां नाल प्यार, प्रीतम तेरे अगे वास्ता पाईआ। शंकर कैलाशी मैनूं संदेशा दे के गया आपणी वार, वारस हो के गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चनाब कहे मैं आदि जुगादी झल्ला, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरा रूप नहीं इकल्ला, पाहन पाथर मेरा संग बणाईआ। मैं फिरां विच थलां, अस्गाहां रंग रंगाईआ। मेरा इक्को इक स्वामी पकड़या पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। गहर गम्भीर विच रला, रूप आपणा ल्या बदलाईआ। जिस ने शब्द संदेशा
११७३ इक्को घल्ला, सुनेहड़ा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा ११७३
२४ मालक इक अख्वाईआ। चनाब कहे मेरे पुकारदे इट्टां पत्थर, पाहना ध्यान लगाईआ। नेत्र वरोलण अथ्थर, हंझूआं हार २४
बणाईआ। बिन रसना जिह्वा कथन, ढोले गावण धुर दे माहीआ। साडी पैज आवीं रखण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिउं वृंदावन वासी गोकल दी धार जमन किनारे खादा मक्खण, मक्खण मोहण माधव आपणा खेल खिलाईआ। असीं वी तेरा यारड़े बणना सथ्थर, सोहणी सेज बणाईआ। साडा लहिणा देणा देणा हथ्थो हथन, हथेलीआं तेरे अगे डाहीआ। तेरे दीपक भगत सुहेले मेरे कन्ढीं घाट जगण, आर पार करन रुशनाईआ। मैं तेरी मस्ती विच होणा मग्न, सच खुमारी देणी चढ़ाईआ। जिस वेले मेरे उत्तों लग्गा लँघण, लग मातर डेरा ढाहीआ। मैनूं इयों जापदा दो चार साल विच लग्गण वाली अग्न, बिना तेरे आब तों प्रभू सके ना कोए बुझाईआ। तूं गोपाल मूर्त मोहण माधव मदन, मधसूदन इक अख्वाईआ। तेरे नाम दमामे नव खण्ड पृथ्मी वज्जण, बिन डंकयां होए शनवाईआ। मैं जल दी धार जोती जाते पुरख बिधाते सति सरूप तैनूं आवां सद्दण, सदके वारी घोल घुमाईआ। झट निगाह मार लै कुझ झगड़ा छिड़न वाला विच अदन, इन्साफ़ हथ्थ किसे ना आईआ। चीना रूसा सारे भज्जण, पतालीं वंड दिती वंडाईआ। इंगलैंड हालैंड इक दूजे नाल गज्जण, गज दा लेखा सतिजुग वाला पूर कराईआ। जो बावन बलि दुआरे शुकर प्रोहत किहा कलयुग अन्तिम वेले मानस मानव कूड़ी क्रिया नाल

होवे दजण, अग्नी अग्नी अग्ग तपाईआ। किसे दा पवित्र नहीं रहिणा बदन, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चनाब कहे सुण मित्र प्यारे मग्घरा, तेरा प्रविष्टा चौबीसा नज़री आईआ। मेरीआं आदि आदि पुराणीआं सधरां, सजदा तैनूं दयां सुणाईआ। मेरीआं जगत आशकां पाईआ कदरां, कुदरत दा कादर अन्त मेरा लेखा पूर कराईआ। जो इशारा दिता मुन्ना बदरा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पर मैं हैरान हो गया मेरे आर पार कन्ढी पैण वाला ग़दरा, गदागर दिसे जगत लोकाईआ। उह वेख लै कलयुग सब दा कढुके बैठा शजरा, लैंड मारक ध्यान ध्यान विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। चनाब कहे जन भगतो भगती मार्ग सदा अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सफ़र पन्ध मुका सके कोई ना सवा गिठ्ठ, मारूडण्ड जिस दी दए गवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हथ्थ रखे आप तुहाडी पिठ्ठ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। नाम निधाना अन्तर रस देवे मिठ, बिन रसना जिह्वा देवे चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्को मात इक्को पित, पतिपरमेश्वर दूजा नज़र कोए ना आईआ।

२४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बारी राम दे गृह पिण्ड देई पुर तहसील अखनूर ज़िला जम्मू

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सच प्रगटा दे धर्म, सति दे मालक होणा सहाईआ। दीन दुनी दा बदल दे कर्म, कर्म कांड दा लेखा पूरब पूर कराईआ। अन्तर दृष्टी रहे किसे ना चर्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ । दीन मज़ूब दा मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात बरन, वरनां वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पारब्रह्म ब्रह्म तेरी होवे सरन, सरनगति इक्को इक रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर पूजे तेरे चरण, कायनात कदम बोसी करके शुकर मनाईआ। जन भगतां खोलृ दे नेत्र हरन फरन, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। सचखण्ड निवासी तेरी मंज़ल चढ़न, दरगाह साची मेल मेलणा चाँईं चाँईआ। मैं कलयुग अन्त बेनन्ती आई करन, करते पुरख होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुलृाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते लग्गे जुग सति, कलयुग कूड़ कुड़यार मिटाईआ। हर हिरदे उपजे ब्रह्म मति, पारब्रह्म पर्दा देणा उठाईआ। दीन मज़ूब शरअ दी धार ना उबले रत, मुतस्सब नज़र कोए ना आईआ। दीन

दयाल मेरी रखणी पत, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जाते आ जा वत, बेवतनां दे मालक फेरा पाईआ। मैं सदी चौधवीं वास्ता रही घत, निव निव सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कलयुग मेट कूड़ कुड़यारा, माया ममता मोह मिटाईआ। चार कुण्ट रहे ना धूंआँधारा, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण इक्को रंग रंगाईआ। शरअ दा रहे ना कोए वणजारा, दीन मज़्हब वंड ना कोई वंडाईआ। तेरा इक्को नाम होवे जैकारा, जै जैकार करे ख़लक खुदाईआ। तेरा इक्को होवे दुआरा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई जिथ्थे बैठ के सीस निवाईआ । तेरा इक्को नाम होवे भण्डारा, वस्त अमोलक इक टिकाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह नूर अलाहीआ। नौ खण्ड सत्त दीप पा सारा, आकाश पतालां आपणा ध्यान लगाईआ। तेरे हुक्म तों होए कोई ना बाहरा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जाते होणा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ मेट पसारा, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू

११७५ कलयुग वेख लै कन्ढी घाट, पत्थरां उत्ते ध्यान लगाईआ। जिस दी मुकदी दिसे ना वाट, अगला पन्ध ना कोए रखाईआ। ११७५

२४ औह वेख लै हज़रत ईसा करदा टाक, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। सब दा पूरा करना भविख्त वाक्, पेशीनगोईआं मुहम्मद नाल मिलाईआ। जो वेद व्यासा गया आख, कलि कल्की तेरी बेपरवाहीआ। जो नानक गोबिन्द भाख्या गई भाख, भेखाधारी आपणा पर्दा देणा उठाईआ। कलयुग अन्तिम मेरी पत राख, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। साचा दर्शन दे साख्यात, सुख़न पिछला पूर कराईआ। दीन दुनी दा झगड़ा मेटे काग़ज़ात, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तेरा दो जहानां होवे जाप, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सतिजुग साचा जावे आ, आमद विच खुशी बणाईआ। जिस नूं सारे कहिण वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणन गवाह, शहादत नाम कलमे वाली भुगताईआ। कलयुग अन्ध अन्धेरा दे गवा, सतिजुग सच कर रुशनाईआ। आशा पूरी कर दे जो रख के गया बाबा आदम नाल माई हवा, आदम हवा आपणे रंग वखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा दे मिटा, रैण अन्धेरी रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दा डेरा ढा, मिट्टी ख़ाक विच मिलाईआ। सतिजुग सच धाम उपजा, उपमा तेरी करे ख़लक खुदाईआ। तूं मालक ख़ालक वाहिद इक खुदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। मैं चरण कवल सीस रही निवा, २४

निव निव लागां पाईआ। अन्त अख़ीर मेरा गवाह बणे झना, चन्न-आब आपणा रूप वखाईआ। जेहड़ा वहिणां विच वहिण वाला दरया, दरे दर तेरे सीस निवाईआ। तूं रहमतां वाला इक खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। तेरे अगे वास्ता रही पा, दर ठांडे मंग मंगाईआ । सति धर्म दा साचा जुग मेरे उत्ते दे टिका, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक नाम रमाईआ। मैं कोझी कमली धरत निमाणी मेरी पकड़ लै बांह, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर हक हकीकत वाला कर न्यॉं, अदल इन्साफ़ आपणा देणा कराईआ। मैं तेरे चरण कवल धवल हो के बलि बलि जां, धरनी हो के लागां पाईआ। तूं आदि जुगादी पुरख अकाला पिता मॉं, मात पित इक्को इक अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरा नगर खेड़ा वसा दे गरॉं, गृह गृह वजदी रहे वधाईआ। तेरे चरण कवल सदा सदा सद बलि बलि जां बलि बलि आपणा आप कराईआ। तूं मेरा मालक ठाकर स्वामी रहिनुमा, रैहबर इक्को नज़री आईआ। मेरा अन्तष्करन चिन्ता दुःख मेट दे ग़मा, ग़मखार हो के आपणा रंग रंगाईआ। मैं बेज़बान हो के निरगुण दाते तेरे अगे कहां, कहावत जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे

११७६ उत्ते निरगुण जोत जगा अगम्मी शमअ, शमअ दीप जोत इक्को करे रुशनाईआ। ११७६

२४ २४

✪ २४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कुलदीप राज दे गृह पिण्ड मुठी तहसील अखनूर ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे सुण मेरे प्रभू बेपरवाह, बेअन्त कन्त भगवन्त तेरी वड वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक जोती जाता अगम्म अथाह, नूर नुराना नौजवाना श्री भगवाना इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणनहार मलाह, खेवट खेटा दो जहान श्री भगवान इक हो आईआ। मैं आदि जुगादी धरनी धरत जिस नूं चुरासी जूनी कहे साडी मॉं, ममता विच दो जहान भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे नौ खण्ड सत्त दीप बणन गवाह, शहादत दिवस रैण भुगताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मेरे नाल देण सलाह, मशवरा सतिगुर शब्द शब्द जणाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना मेरी मन्ज़ूर करनी इक दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं रैहबर रहीम मालक इक नूर अलाह, आलमीन तेरा लेखा तेरे विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे दर दी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेहरवाना नौजवाना गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं बोध अगाधा बिन अक्खर धार पंडती, विद्या सति सति धार दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे कल्पना रहे ना जीवां मन की, मनसा

ममता वाली दूर कराईआ। चुगली निंदया मेट दे सरवण कन्न दी, कायनात दे मालक होणा आप सहाईआ। तन वजूदां अन्दर आपणी धार जणा दे ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप उठाईआ। साची रीती दस्स दे आपणे धर्म दी, धरनी हो के तेरे अगे वास्ता पाईआ। दृष्टी रहे ना किसे चर्म दी, चम्म दृष्टी दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे नाल कर लै हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेरा स्वामी बण जा नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं आपणा दस्स दे भेत, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। मेरे उत्ते रुत करदे बसन्ती चेत, चेतन कर ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे जग जहां दे कन्ढी, कन्ढी घाट बैठी ध्यान लगाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरी वंड वंडी, हिस्से हिस्सयां विच्चों जणाईआ। मेरे उत्ते इक्को मार्ग पा दे सिध्धी डण्डी, डण्डावत सब दी दे बदलाईआ। किसे दी आत्म परमात्म रहिण ना देवीं रंडी, कन्त सुहाग हो के लै परनाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट पाखण्डी, माया ममता मोह ना होए हल्काईआ। जीवां
११७७ जंतां अन्दरों वासना कढ दे गंदी, अमृत रस बूँद स्वांती जाम प्याईआ। सच प्रकाश नूर नुराना चाढ़ दे आपणा चन्दी, जगत ११७७
२४ जहान डगमगाईआ। शरअ दी रहे ना कोए पाबन्दी, दीना मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग आयू मेरे उत्ते बथेरी २४
लँघी, अगे अवर ना कोए वधाईआ। सतिजुग साचा मेरे उत्ते दे अरंभी, जो अरंभा परी चौदां रत्नां विच्चों गई आस रखाईआ। मैं चाहुंदी जीव जंत तेरा नाम कलमा तूं मेरा मैं तेरा गावण छन्दी, सोहला ढोला इक्को राग दृढ़ाईआ। नेत्र लोचन नैण किसे दी अक्ख रहे ना अन्धी, अन्ध अज्ञान श्री भगवान देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी धार वेख लै भगवत, भगवन तेरे अगे वास्ता पाईआ। मेरे उत्तों मेट अदावत, अदल इन्साफ़ आपणा दे समझाईआ। साचे नाम दी दे नयामत, बिन रसना रस चखाईआ। लख चुरासी जीव जंत तेरी मेरे उत्ते अमानत, ईमानदारी नाल तेरे चरण टिकाईआ । मेहरवाना तूं हर हिरदिउँ कढ बग़ावत, बग़लगीर कर ख़लक ख़ुदाईआ। साचे कलमे दी कर सख़ावत, सुख़न अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक हो के होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे नाल कर लै कौल इकरार, वायदा इक्को इक रखाईआ। दूसर रहे ना कोए तकरार, झगड़ा वेखण कोए ना पाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता सब कुछ करनेहार, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। मैं मांगत हो के मंगां तेरा दुआर, दुआरकावासी

नाल मिलाईआ । मैनूं राम रम्ईआ हो के संदेशा दे के गया विच संसार, सहिज सहिज नाल दृढ़ाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लेख लिख्या चाँईं चाँईंआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा कादर चौबीसा जगदीसा निहकलंक कलि कल्की अवतार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सांझा परवरदिगार, यामबीन महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे खुदावंद मालक खुद खनसे ज़ू अर्शे वज़ू चशनाए वजुद दुआए बसुध जखमीउल ज़वी नूरे तवी ज़म्बाउल ज़मा मेरे रहनुमा नूर नुराने तेरी बेपरवाहीआ। मेरे मवज़ले ज़ुहक शाहे फक कलमाए तुवक दस्ते दुआ मन्जूरे खुदा, खुद मालक तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे भगवाना, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तूं मेरा मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। वस्त अमोलक मेरी झोली पा दे दाना, दाते आपणी दया कमाईआ। तूं निरगुण जोत आदि जुगादी नौजवाना, मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते कलयुग बदल जाए ज़माना, ज़मीं ज़मां दे मालक वेखणा चाँईं चाँईंआ। तूं मेरा ख़सम ख़समाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ।
११७८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तैंडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख ११७८
२४ मैं दर तैंडे मंगदी, आसा इक्को इक रखाईआ। अवतार पैग़म्बर सदी * वेख लओ जांदी लँघदी, बिन कदमां भज्जे २४
वाहो दाहीआ। दीन दुनी दी धार वेख लओ भुख नंग दी, घर घर रिज़क ना कोए सबाईआ। खेल वेख लओ काया तत पंज दी, पंच विकार करे लड़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी मेरे उत्ते पुरख अकाले दीन दयाले तैयारी होई जंग दी, झगड़ा दिसे ख़लक खुदाईआ। पता नहीं की हालत होणी ब्रह्मण्ड दी, वरभण्ड हो के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे मेरे धर्म दे पिता, पात्र हो के वेख वखाईआ। मेरे नाल करना हेता, हितकारी तेरी वड वड्याईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अचुता, परवरदिगार इक अख्वाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरी सुहा दे रुत्ता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। झट नारद आ गया, कहे धरनीए किस अगे पावें रौला, कूक कूक सुणाईआ। नी उह बेपरवाह परवरदिगार अगम्मी मौला, जो मौलया हर घट थाँईं नज़री आईआ। तूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा वायदा तक लै इकरार कौला, कवल नैण की जणाईआ। की इशारा दे के गया कान्हा कृष्णा सुंदर सौला, सावरीआ की जणाईआ। की भेव चुकाया गोबिन्द जिंन अमृत धार छकाई पहुला, बिन रसना रस चखाईआ। उह अन्त कन्त भगवन्त तेरे उत्तों भार

करे हौला, हौली हौली आपणा हुक्म वरताईआ । नी जिस दा जोती जामा ते नज़र नहीं आउणा किसे चोला, चोजी प्रीतम हो के खेल खिलाईआ। तूं उसे दा इक्को गाउणा ढोला, जो ढोल माही दो जहान नज़री आईआ। जिस ने सच दुआरा तेरे उत्ते होणा खोल्ा, ख़लक दा ख़ालक हो के पर्दा दए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म उस दा सुणना बोला, अनबोलत दए सुणाईआ। जिस दा सतिगुर शब्दी शब्द होए विचोला, विचला पर्दा दए चुकाईआ। लख चुरासी निरगुण धार बणे तोला, नाम कंडा ब्रह्मण्डां विच इक्को इक उठाईआ। जिस दा नानक सतिगुर बणया गोला, उह तेरी गोलक वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्दी धार शब्द शब्द दा सोहला, सो पुरख निरञ्जण आपणा भेव दए खुल्ाईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ झण्डू राम दे गृह जिउड़ीआं शहर ज़िला जम्मू ✪

११७६ धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते दीन दुनी पाए बौहड़ीआं, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। हर हिरदे अन्दर वासना तक लै कौड़ीआं, ११७६
२४ कूड़ी क्रिया जगत तृष्ना नाल हल्काईआ। तेरी मंज़ल हकीकी चढ़े कोई ना पौड़ीआं, पौड़ी डण्डा हत्थ किसे ना आईआ। २४
धर्म दीआं गलीआं होईआं सौड़ीआं, सच मार्ग नज़र किसे ना आईआ। मैं दिवस रैण फिरदी दौड़ी आं, भज्जां वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यारां प्रीतां तेरे नालों छोड़ीआं, सच प्रेम ना कोए रखाईआ। मन कल्पना सके कोई ना होड़ीआ, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। आत्म परमात्म मिलण मूल ना जोड़ीआं, साचा संग ना रखाईआ। तूं निगाह मार लै मेरे विच अन्ध घोरीआं, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार करदे चोरीआं, ठग्गी तेरे नाल कमाईआ। मानस जन्म रूहां किसे ना सौरीआं, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। दीनां मज़्बां वधीआं खोरीआं, झगड़े विच ख़लक खुदाईआ। बिन तेरी किरपा भाग होण ना किसे मथोरीआ, मथन हुन्दी दिसी लोकाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म मैं तेरे उत्ते सुट्टीआं डोरीआं, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण तेरी साची लोड़ीआ, लुड़ींदे सज्जण देणी माण वड्याईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सधरो देवी दुमाना नवित जिउड़ीआं शहर जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे धर्म धार दे माही, महबूब तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी निरगुण सरगुण राही, रैहबर तेरी ओट तकाईआ। निगाह मार लै मेरे उत्ते थल अस्गाही, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। टिल्ले पर्वत समुंद सागर वेखणे चाँईं चाँईं, बिन नेत्र लोचण नैणां अक्ख खुल्लाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते अन्धेरा गया छाई, शहिनशाह साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरी तेरे अगे सचखण्ड दुआर दुहाई, दरगाह साची मंग मंगाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब दे चुकाई, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं खुशीआं नाल देवां सद्दा, सदके वारी आपणा आप घोल घुमाईआ। मेरे उत्ते अवतार पैग़म्बर गुरुआं वालीआं वेख लै हद्दां, हदूदां दीन दुनी फोल फुलाईआ। मानव ज़ाती बदलीआं वेख लै यदां, यदी यदप आपणा फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप तेरे हुक्म विच बध्धा, दूसरा नज़र कोए ना आईआ। एस वेले मानव ज़ाती करे दग़ा, धोखे विच कूड़ लोकाईआ। धर्म दा वधे कोई ना अग्गा, झूठ आपणा डंक वजाईआ। कलयुग जीव बपड़ा हो गया बग्गा, गुरमुख हँस नज़र कोए ना आईआ। धर्म दी सीस रही किसे ना पग्गा, ओढण हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तेरा दरस किसे नूं होवे ना उपर शाहरगा, नौ दुआर पन्ध ना कोए रखाईआ। शब्दी नाद सुणे ना कोए अनहदा, धुन आत्मक राग ना कोए शनवाईआ। दीपक जोत किसे गृह ना दिसे जगा, तन वजूद ना कोए रुशनाईआ। तूं साहिब सुल्तान सूरा सरबगा, हरि करता इक अख्वाईआ। मैं तेरे चरण कवल धवल हो के आपणा हथ्थ बध्धा, बन्दगी विच सीस निवाईआ। मेरे उत्ते कलयुग क्रिया कूड़ मेट दे धब्बा, दाग़ मोह विकार रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा पिता प्रीतम धुर दा अब्बा, अम्मीजान तूं ही नज़री आईआ। मैं तेरी सरन सरनाई इक्को लग्गा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा मेरे नाल हुन्दा जुग चौकड़ी कदी कदा, कदीम दे मालक देणी माण वड्याईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ यशपाल रजवाल जिउड़ीआं शहर जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा लै लै मिट्टी ख़ाक वजूद, माटी हो के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। तूं मेहरवान हक महबूब, मुहब्बत तेरी विच समाईआ। तेरा आलीशान अरूज, आलीज़ाह तेरी वड वड्याईआ। मैं चाहुंदी शरअ दी मेट मेरे उत्तों हदूद, मुतस्सब

रहिण कोए ना पाईआ। दूई दुवैत कर दे नेस्तो नाबूद, जड़ लोकमात उखड़ाईआ। मानव ज़ाती भाग लगा दे काया माटी पंज भूत, ततव तत आपणा रंग रंगाईआ। पवित्र कर दे जगत विकारे वाले कलबूत, काया काअबा इक समझाईआ। सच प्रीती विच कर महिदूद, हद दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते दीन दुनी दी बदल दे आदत, अदल इन्साफ़ आपणा इक जणाईआ। हर हिरदिउँ सच प्यार दी प्रगटा अबादत, अवल अल्ला तेरा नाम नज़री आईआ। सच प्यार बख्श सदाकत, सदा सदा आपणा हथ्थ टिकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट जहालत, तन वजूदां अन्दर रहिण कोए ना पाईआ। साचा नाम बख्श इक अमानत, ईमान धर्म आपणा इक समझाईआ। तूं मालक ख़ालक सही सलामत, सुल्हकुल नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते लेखा बणा दे सति सतिवाद, सच धर्म नाल मिलाईआ। तूं स्वामी मेरा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी तेरी बेपरवाहीआ। सच दी वस्त बख्श दे दाद, दाते दानी झोली पाईआ। तेरे नाम दा इक्को सुणां नाद, नादी धुन देणी प्रगटाईआ। लहिणा

११८१ देणा वेखां विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड वजदी रहे वधाईआ। तूं मेरा मोहण माधव माध, मधुर धुन देणी सुणाईआ। तेरा संदेशा ११८१

२४ होवे बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। हरिजन सन्त सुहेले हर घट अन्दर आपणी बख्श दे याद, यादाशत पूरब २४

नाल मिलाईआ। मेरी कोझी कमली दी कर इमदाद, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं मालक ख़ालक इक्को वाहिद, वाहवा तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरा धर्म दा खेड़ा नौ खण्ड पृथ्मी कर अबाद, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। जगत जिज्ञासू तेरे विच होण विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। हर हिरदे उपजे तेरी याद, सोहला ढोला तेरा नाम सुणाईआ। मेरा खेड़ा उजड़या कर आबाद, हरिजन साचे मात प्रगटाईआ। दीन दुनी दी सुरती अन्दरों जाए जाग, जुगती आपणी नाल जगाईआ। माया मोह ना डस्सणी डस्से नाग, विस अन्दरों बाहर देणी कढ्ढाईआ। हँस बुद्धी रहिण ना काग, कागों हँस बणाईआ। दुरमति मैल धो दे दाग़, पापां कर सफ़ाईआ । घर स्वामी कर दे वड वड भाग, ठाकर तेरी वजदी रहे वधाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले तेरा इक्को नाम लैण अराध, दूजा रस ना कोए चखाईआ। तूं मेरा मोहण माधव माध, मधुर धुन करें शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी कहे मेरा पूरबला धो दे दाग़, पतित पुनीत देणी माण वड्याईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ रत्न सिँघ दे गृह पिण्ड हमीरपुर कोना ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरे गुरदेवा, देव आत्मा परमात्मा हो के देणी माण वड्याईआ। अमृत रस निझर धार शब्दी बख्श अगम्मा मेवा, बिन रसना रस अनरस देणा चखाईआ। तूं वसणहारा दरगाह साची सचखण्ड धाम निहकेवा, निहचल आपणा आसण लाईआ। तेरी सिफ्त कर सके ना कोई रसना जिह्वा, मन मति बुद्ध चले ना कोए चतुराईआ। निरगुण धार आदि जुगादी अलख अभेवा, अगोचर तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द तेरा खेल वेखां अगम्मा, अगम्मड़े देणी माण वड्याईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी दा लहिणा देणा मेटणा दृष्टी चम्मा, चम्म दृष्टी रहिण कोए ना पाईआ। नव सत्त मेटणा चिन्ता ग़मा, ग़मखार हो के वेखणा थांउँ थाँईंआ। माया ममता रहे कोए ना तमअ, लालच विच ना कोए हल्काईआ। इक्को नूर जोत जगाउणा शमअ, बिन तेल बाती डगमगाईआ। इक्को हुक्म संदेश सुणाउणा बिना कन्नां, अन्तर निरंतर करनी आप शनवाईआ। इक्को नाम जपाउणा बिन रसना जिह्वा पवण स्वामी दमा, आत्म परमात्म आपणी गंढ पुआईआ। दीन मज़्ब शरअ दा रहे कोई ना बंना, जगत हदूदां पन्ध मुकाईआ। कलयुग अगला वक्त करीं ना लम्मा, लमहा लमहा आपणे लेखे लाईआ। मैं धरनी धरत धवल धौल निमाणी हो के कहवां, कहि कहि सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा मेरे उत्तों बदल दे समां, समझ समझ विच्चों बदलाईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ केसरी देवी दे नवित जम्मू शहर ✪

धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द अगम्मड़े मीता, मित्र प्यारे सीस निवाईआ। दीन दुनी दी मेरे उत्ते बदल दे रीता, रीतीवान तेरी सरनाईआ। तूं मालक ठाकर त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी तेरी बेपरवाहीआ। मानव ज़ाती अन्दरों बदल दे नीता, बाहरों कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मेट दे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ मसीता, गुरुदुआर चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ। अन्तष्करन सब दा कर दे ठांडा सीता, कलयुग अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे आपणी प्रीता, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। इक्को हुक्म नाम कलमा दरस हदीसा, हज़रतां तों बाहर कर पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द तूं आदि जुगादि मेरे उत्ते एहसान कीता, अवतार पैग़म्बर गुर मेरा संग बणाईआ। हुण निगाह मार लै कलयुग अन्तिम बीता, पूरब लेखा

रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ।

✪ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बचनो देवी सरवाल जम्मू शहर ✪

धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द दयालू, दयानिध तेरी वड्याईआ। मेहरवान महिबान बीदो कृपालू, कृपानिध तेरी सरनाईआ। तुध बिन मेरा वक्त ना कोए संभालू, सम्बल दे मालक होणा सहाईआ। उह लेखा लहिणा पूरा कर दे जो नानक कौल कीता नाल लालू, लालो गया दृढ़ाईआ। मेरे उत्ते कलयुग दी धार मेट के सतिजुग कर दे चालू, चार जुग दा लेखा दे मुकाईआ। तुध बिन मेरा दुखड़ा कौण घालू, घायल हो के सीस निवाईआ । तेरा हुक्म आदि जुगादि बेमिसालू, मिसल सके ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरीआं अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं नाल आशां, आशा दयां जणाईआ। मैनूं सब ने दिता भरवासा, भाण्डा
११८३ भरम भनाईआ। पेशीनगोईआं विच दिता धरवासा, भविख्तां विच जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवे पुरख अबिनाशा, जिस ११८३
२४ नूं जन्मे कोए ना माईआ। खेल खेले पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां वेख वखाईआ। दो जहानां पावे रासा, बिन गोपी २४
काहन नाच नचाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तके तमाशा, तमाशबीन बण बेपरवाहीआ। मानव ज़ाती बिन हरिनामे ख़ाली वेखे लाशा, लशकर शाही खोज खुजाईआ। नाल संदेशा देवे शंकर कैलाशा, कलाधारी आपणी कल वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द अवतार पैग़म्बर गुरुआं पूरीआं कर दे बाणीआं, बाण अणयाले तीर चलाईआ। चार जुग दीआं लेखे ला लै कथा कहाणीआं, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। लहिणा देणा तक लै जीव प्राणीआं, तन वजूदां फोल फुलाईआ। निगाह मार लै चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहीआ। फल रिहा किसे ना टाहणीआं, फुल्ल सके ना कोए महकाईआ। सब दीआं ख़ाहिशां प्यासीआं होईआं बिना अमृत पाणीआं, तृष्ना सके ना कोए बुझाईआ। रूहां आत्मा नाम दीआं रहीआं मूल ना शाहणीआं, ख़ाली हथ्थ रहीआं कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द अवतार पैग़म्बर गुर जो मेरी भर के गए हामीं, हमाइत सतिगुर शब्द नाल रखाईआ। तूं वेखणहारा अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखणा चाँईं चाँईंआ। की हालत होई मेरे उत्ते नाम कलम्यां वाली कलामी, कायनात खोज खुजाईआ।

सति धर्म दी दिसे ना कोई निशानी, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। मेरे उत्ते मेहरवान हो के करनी मेहरवानी, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट तुग़यानी, ममता मोह गढ़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त इक वरताईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द गुर अवतार पैग़म्बर मैनूं मारदे हाकां, धुर दा हुक्म की दयां जणाईआ। मेरे उत्तों दीन दुनी दा मेट दे साका, साख्यात आपणा हुक्म वरताईआ। धर्म दी धार खोलू दे ताका, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मेरा चार जुग दा पूरा कर दे घाटा, ख़ाली झोली दे भराईआ। पिछला पन्ध मुका दे वाटा, अगला मार्ग इक दरसाईआ। कलयुग खेल मुका दे स्वांग बाज़ीगर नाटा, सतिजुग सच दे उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे तूं सर्ब कला समराथा, समरथ अकथ तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रभात सिँघ दे गृह पिण्ड हमीरपुर कोना ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो तुहानूं दयां वधाईआं, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं पन्ध मार के आया विच्चों बेले काईआं, भज्जया वाहो दाहीआ। मेरीआं चार जुग दीआं सति शब्द नाल साईआं, वायदा कौल इकरार पूर कराईआ। जो भगतां मेल मेले भाई भाईआं, सगला संगी आप हो जाईआ। मेरीआं कूक कूक दुहाईआं, दो जहान शनवाईआ। प्रभ इक्को सब दा धुर दा माहीआ, महबूब इक अख्वाईआ। जिस ने भगतां नाल प्रीतां लाईआं, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। तुहाडीआं मेटण आया शाहीआं, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो मैं दस्सां खेल अपारी, अपरम्पर की जणाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी पिच्छों आई वारी, वारता आपणी दए बदलाईआ । शब्द संदेशा देवे धुर दी धारी, सचखण्ड दुआर जणाईआ। धरनी धरत धवल धौल करे ख़बरदारी, सोया रहिण कोए ना पाईआ। जिस दी आसा रखी जुग चारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। ओह करनी दा करता कुदरत दा कादर कलि कल्की अवतारी, निहकलंक नाउँ प्रगटाईआ। अमाम अमामा निरगुण जोत कर उज्यारी, उजाला दो जहान वखाईआ। उहदा लहिणा देणा चन्न आब दे आर पारी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। जो लेखा वेखणहारा सृष्टी दृष्टी अन्तर सारी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। उह मालक ठाकर स्वामी नर नारी, नर नरायण अगम्म अथाहीआ। जो भगत सुहेले जावे तारी, तारनहार इक अख्वाईआ । एह कोना कन्ढी घाट जिथ्थे

नाम दा हुन्दा सी पुजारी, पूजा आपणे अन्तर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप बणाईआ। नारद कहे भगतो एस धरनी उत्ते मूसा कीता ध्यान, बिना ख़ाब तों अक्ख उठाईआ। हज़रत ईसा आपणे सीने उत्ते लाया निशान, निशानी दीन दुनी वखाईआ। हज़रत मुहम्मद आपणी लिख्या विच कुरान, चन्न जे ज़ू कहि के गया सुणाईआ। जिस दा भेव अज तक कढ सक्या नहीं इस्लाम, आलमां चली ना कोए चतुराईआ। एसे धार नानक आपणयां पऊआं विच लाया निशान, खब्बी उंगल नाल लगाईआ। गोबिन्द खिच के तीर कमान, चिल्ला गया उठाईआ। नाले हस के किहा वाह मेरे भगवान, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। जो सब दे लहिणे देणे बेनन्ती करे परवान, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द हस के किहा एह खेल बड़ा महान, महिमा अकथ कथ समझाईआ। गोबिन्द कलयुग अन्त करे खेल आप नौजवान, जोबनवन्त बेपरवाहीआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के आवे विच मैदान, बलधारी हो के आपणा बल प्रगटाईआ। सब दे लहिणे देणे लेखे पूरब पूरे करे मेहरवान, करनी दा करता हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे मैनूं
११८५ पुराणीआं याद औदीआं रीतीआं, बिन अक्खरां दयां जणाईआ। जो पुराण अठारां विच वेद व्यासे धुर दे शब्द दीआं गल्लां ११८५
२४ कीतीआं, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। मुहम्मद किहा जिस दे हुक्म विच चौदां सदीआं बीतीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। २४
गोबिन्द किहा जिस कारन भगतां खून कढणा आपणीआं विच्चों चीचीआं, चीक चिहाढ़ा पए विच ख़लक खुदाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी उजड़नीआं बगीचीआं, बिन बाग़बान तों राखा नज़र कोए ना आईआ। एह हस के दस्सण झनां दीआं निक्कीआं निक्कीआं गीटीआं, खुशीआं ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि बदलणहारा रीतीआं, रीतीवान इक अख्वाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ करोड़ सिँघ दे गृह पिण्ड हमीरपुर कोना ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो तुहानूं केहड़ी देवां सलाह, मशवरा की जणाईआ। सब दा मालक इक मलाह, बेड़ा दो जहान चलाईआ। जो वेखणहारा थल अस्गाह, महीअल खोज खुजाईआ। जो तुहाडा होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सब दी कबूल करे दुआ, नमस्ते आपणे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं धुर दा दस्सां भेत, भेव अगम्म खुल्हाईआ। जिस दीन दुनी

दी धार बदलणी ते भगतां वेखे नेतन नेत, निज नेत्र ध्यान लगाईआ । उह नौ खण्ड पृथ्मी जानणहार खेत, खित्ता खित्ता ध्यान लगाईआ। उह सुणो की पुकारदी चनाब वाली रेत, आपणा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो अज्ज खुशीआं वाला दिवस, दीपक दीवाली प्रभ दी नज़री आईआ। सब दी पूरी होवे हिवस, हिरस अगे रहे ना राईआ। वेद मदमम चनशतम दुमस्ते दुमम्म तमोला ज़वीअल चाने ज़ी अलकविलज़ कलूनाए मवल्लल फ़र्शाए अवल्ल अर्शाए अवश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्तर आत्म देवे रस, अंमिओं रस आपणा नाम चवाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ ईश्र सिँघ दे गृह दड़ ज़िला जम्मू ✪

चन्न-आब यदम जलधार सदम पाहन कार कदम पुराणे पवस्तम नमुसतवंग नमुसतवंग नमुसतवंग बेदे बविली अर्शे ज़विली कज़ूहू नुवा जूने ज़वा ज़कमममम ज़न फेउमै दीज़ो गोअंग तुख्मम कुऊ ज़म ज़म ज़खवीउल अर्शाने ज़विद ज़मतू जुमाऊ कुनिंदे रज़ू शरफ़े शवाऊ तुखलमम्बाई जस गोबिन्द दाइम दाइम दाइम दवीए ज़मू चनाबे रज़ू ज़खलीअ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। आबे चन्न चवंनीआ, जोबनगी मलवा, ज़ख़मे ज़ू जवंनीआ, कूज़े रंग मज़ा। शाहो वस्त जमंनीआ ज़हीउल ज़हा। ज़वा चौदां तबक चुखंनीआ, चारों कुण्ट बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। चन्नआब कहे मेरीआं जुग चौकड़ी दीआं खुआबां, ख़बर ख़बर विच्चों जणाईआ। मेरीआं कोटन कोटि वार अदाबां, निव निव सीस झुकाईआ। मेरा लेख वेखणा चार जुग दे शास्त्रां विच किताबां, कुतबख़ान्यां बाहर खोज खुजाईआ। मेरा हरफ़ हरूफ़ां नाल शरअ दा बणया इक महिराबा, महबूब दिती माण वड्याईआ। मेरा जुग जुग दा लहिणा ते लेखा अन्तिम पंज-आबा, पंचम दी धार हो के दयां सच सुणाईआ। जो नानक इशारा कीता दजले दे कन्ढे बहि के विच बग़दाद वजा के रबाबा, बिन सितार तों सितार हिलाईआ चौदां लोकां तों बाहर सुणी गई अवाज़ा, त्रैभवण सुणन चाँई चाँईआ। जिस विच संदेशा दिता कलयुग अन्त श्री भगवन्त जदो आया आवेगा शहिनशाह राजां दा राजा, राज राजान इक अख्वाईआ। जदों रूप धरया अनूप धरया शाहो भूप धरया हरया वेद व्यास लिख्या हम सवती मस्तवी मज़ू मस्ते वज़ा आवे ते आवे देस माझा, दूजा नज़र कोए ना

आईआ। उस वेले मानव ना सोया ना जागा, आलस निंद्रा ग़फ्लत विच दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। उह बेपरवाह बेपरवाही दा रूप सब तों वड्डा बणना पांधा, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दा इक्को खेल ते इक्को धार जन भगतां दे गुण होवे गांदा, गा गा ख़ुशी मनाईआ। सतिजुग बणाउंदा होवे ते कलयुग होवे ढांदा, चनाब कहे मैं उस वेले खलोता होवां दोवें हथ्थ बांधा, बन्दगी विच सीस निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा कन्ढी घाट उत्ते होवे गांदा, गा गा ख़ुशी प्रगटाईआ। जिस झगड़ा मिटाउणा सूर गाँ दा, पशूआं खल्ल ना कोए लुहाईआ। अगे इक्को मार्ग लाउणा ते प्यार बणाउणा धरती माँ दा, ममता पिछली दए मिटाईआ । इक्को जैकारा होणा धुर दे नाँ दा, नाउँ निरँकारा सारे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चनाब कहे भगतो मैं कोई पाणी नहीं जे वगदा, वहिणां विच आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं जुग चौकड़ी उस प्रभू नूं रिहा लभदा, जिस मेरी बणत बणाईआ। धन्नभाग हुण वेला बणया सबब दा, घर आया धुर दा माहीआ। जिन्ह झगड़ा मेटणा दीन मज़ुब दी हद्द दा, हदूद आपणी दए वखाईआ। जिस ने इक्को कलमा कायनात प्रगट करना अलाही नूर रब्ब दा, यामबीन कहि के जिस नूं सारे सीस निवाईआ।
११८७ मैनूं इयों जापदा चनाब कहे चार जुग तक ज़रूर लेखा याद रहेगा अज्ज दा, अगला सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिषी मुनी ११८७
२४ एसे दा ढोला गाईआ। क्यों पुरख अकाल दा डंका सदा रहिणा वजदा, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत २४
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चनाब कहे ओ जन भगतो की तुसीं बहुते नहीं थक्के, थकावट मैनूं दयो समझाईआ। तुहानूं पता नहीं की खेल होणा मदीने मक्के, काअब्यां विच पए दुहाईआ। चारों कुण्ट इक दूजे नूं मिलणे धक्के, धक्को धक्की होवे ख़लक ख़ुदाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार ने सारी सृष्टी लँघा देणी विच्चों सूई दे नक्के, नाकाबन्दी अगे पिच्छे दोवें थाँ कराईआ। किसे दी कीमत नहीं रहिणी जगत वाले टके, लख करोड़ी ख़ाक विच मिलाईआ। तुहानूं हौली हौली हौली सारे दस्स देणे पते, पतिपरमेश्वर की आपणा हुक्म वरताईआ। किस कारन गोबिन्द ने बोलया डंका फ़तिह, फ़ात्या होवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। चनाब कहे जन भगतो ख़ुशी वाली दयोहारी, दोहरा ताल बणाईआ। चौदां तबकां विच फिरे मुहम्मद नाल संग चार यारी, भज्जे वाहो दाहीआ। अली कूक कूक के किहा पुकारी, ढोला इक्को इक सुणाईआ। सदी चौधवीं आवाज़ रही मारी, होका देवे थांउँ थाँईंआ। आओ कलम्यां दे वपारी, वणज करो चाँईं चाँईंआ। उह नूरी अलाह परवरदिगार सब दा सांझा यारी, यराने सब नालों रिहा तुड़ाईआ। मैनूं इयों दिसदा

धरती उत्ते आउण वाली ख्वारी, ख़ामख़ाह हुन्दी वेखी लोकाईआ। किसे दी पत नहीं रहिणी पग ते दाढ़ी, लजयावान नज़र कोए ना आईआ। चनाब ने किहा सब ने लुकणा जंगलां ते मेरी कंढिआं वाली विच झाड़ी, झाड़ी झाड़ी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग इक रखाईआ। धरनी कहे वे चनाब मैनूं कोई गल्ल दस्स सुचज्जी, मेरे उत्ते वहिण वाल्या आपणा भेव खुल्हाईआ। मैं वी उस प्रभू दे हुक्म विच बज्झी, जो बन्धन सब नूं रिहा पाईआ। चनाब कहे धरनी अम्मा उस दी जोत वेख अगम्मी जगी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नी तेरे उत्ते बुझाउण आया अग्नी लग्गी, लग मातर दा डेरा ढाहीआ। ओह नौ खण्ड पृथ्मी फिरदा अज्जी पज्जी, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ । झट नारद आ के कहे ओए झनाऊ, झल्लां विच फिरन वाल्या कुझ मैनूं दे समझाईआ। तैनूं दिसदे नहीं किथे फिरदे केतू ते राहू, आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ गृह रोवण वाहो दाहू, नेत्रां तों बिना नीर वहाईआ। तैनूं पता नहीं क्यों तूं अजे पंज साल दस्सण डहि प्या अगाहू, अगे पता नहीं किहो जेहा वक्त आवे किस बिध रोवे ख़लक ख़ुदाईआ। तूं सहिज नाल दस्स आपणी धरती माऊ, अम्मी नूं दे जणाईआ। ओह मालक ख़ालक बेपरवाहू, अगम्म अथाह नूर अलाहीआ। जो कलयुग उजाड़ के ते सतिजुग तेरे उत्ते वसाऊ, वसले यार देवे चाँईं चाँईंआ । जिस नूं हज़रत मुहम्मद किहा मुरदे मकबरयां विच्चों जगाऊ, उह जोती जाता हो के वेख वखाईआ। जिस दी आसा रखी उह आबेहयात पलाऊ, जाम इक्को हकीकी नाल मिलाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला पिछली कीती सब दी आपणे लेखे पाऊ, अगे आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे नारदा तूं किधरों आ गया पंडा, फिरदा फिरदा आपणा पन्ध मुकाईआ। नारद कहे मैं वेखण आया तेरे झनां दा कन्ढा, झल्लीए तैनूं दयां सुणाईआ। बेशक इस दे वगण वाला पाणी ठण्डा, एस दे आर पार अग्नी लग्गे थांउँ थाँईंआ। मैं बोदी वाला पंडा सिरों नहीं गंजा, सब कुझ तैनूं दयां समझाईआ। आह वेख लै कलयुग अन्त सदी चौधवीं अख़ीर मुहम्मद ने बिना अक्खरां हरफ़ां लाया पंजा, पंजां दरयावां दे अन्दर आवे मेरा माहीआ। मेरा अमाम अमामा नूर अलाही जेहड़ा किसे दी कुक्ख विच्चों नहीं जम्मा, जनणी गोद ना कोए उठाईआ। जिस नूं लालच नहीं कोई तमअ, तामस मेटे ख़लक ख़ुदाईआ। उस ने मार्ग लाउणा नवां, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को रंग रंगाईआ । चौदां तबक सुहाउणा समां, सोहणी देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सदी कहे धरनीए मैं वी चौधवीं आई, आहिस्ता

आहिस्ता आपणा पन्ध मुकाईआ। मैनूं संदेशा दे के गया बाबा आदम हवा माई, सहिज सहिज नाल सुणाईआ। बिना अक्खीआं तों बैठी नैण उठाई, बिन नैणां राह तकाईआ। उह परवरदिगार सांझा यार किस बिध आवे नूर अलाही, अल्ला बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ । जिस ने पिछल्यां दी पिछल्यां नालों करनी जुदाई, विछोड़ा वेखे थांउँ थाँईंआ। आब तके थल अस्गाही, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे धरनीए धरते धवले धौले आपणा वेख लै हाल, हालत वेख जगत लोकाईआ। औह तक लै की इशारा देवे काल, महाकाल की समझाईआ। चित्रगुप्त की लेखे रिहा वखाल, राय धर्म अंकड़े की समझाईआ। लाड़ी मौत किस बिध पाए धमाल, नच्चे टप्पे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। किस तरीके ढंग नाल सम्बल विच बहि के तेरी करे संभाल, सम्बल दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द दुलारा होवे नाल बाल, दूलहा इक्को इक प्रगटाईआ। तेरी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी पूरी करे घाल, जो घालणा लई घाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरा करे सवाल, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। आपणा अगे दस्से जमाल, जोती जाता हो के डगमगाईआ। जिस दा खेल बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। मैं
११८६ उस दा देण आया अहिवाल, सच नाल सुणाईआ। जो भगत सुहेले गुरसिख गुरमुख हरिजन सद रखे आपणे नाल, मेला ११८६
२४ मेले चाँईं चाँईंआ। तेरे उत्तों कलयुग क्रिया कूड़ दा मेटे जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २४
आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्त तेरी करनहारा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेखे थांउँ थाँईंआ।

✪ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश सिँघ दे गृह दड़ ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे रैण सबाई मैनूं पैंदीआं रहीआं हाकां, हुक्म संदेश मिलदा रिहा माहीआ। उठ वेख बिना नेत्रां तों आपणा ख़ाका, ख़ाक मिट्टी हो के ध्यान लगाईआ। नी तेरा चौथे जुग दा पिछले समें नालों वखरा साका, सतिजुग त्रेता द्वापर जिस दी देण गवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेख लै आपणा इलाका, अक्ल बुद्धी तों बाहर ध्यान लगाईआ। की खेल करे सतिगुर शब्द पुरख अकाल दा निक्का काका, कायनात दा पर्दा आप उठाईआ। उस तों लहिणा देणा आपणी झोली पा लै बाका, जो बकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। आपणे गृह दा खोल्ह दे ताका, पर्दा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा लेखा मुहम्मद दी धार सदी चौधवीं होणा ढाका, सपारे पूरब देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए आपणा पिछला वेख हिसाब, अंकड़े जगत ना कोए मिलाईआ। बिन अक्खरां तक किताब, जो कुतबख़ान्यां विच ना कदे टिकाईआ। बिना इट्टां पत्थरां तों वेख महिराब, जिथ्थे वसे धुर दा माहीआ। बिन सीस जगदीस कर आदाब, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जो तैनूं कलयुग कूड़ी क्रिया नालों करे आज़ाद, आज़ादी आपणे हथ्थ रखाईआ। तूं उस नूं मन्नणा मोहण माधव माध, मधुर धुन तैनूं दए सुणाईआ। बिन रसना जिह्वा लैणा अराध, हिरदे अन्तर लैणा वसाईआ। उस दा शब्द संदेश सुण लै बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बर गुरुआं कोलों लैणा जवाब, जवाब तल्बी मंगे थाउँ थाँईंआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला अन्त कन्त भगवन्त तेरी करे इमदाद, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । धरनी कहे मैं रैण सबाई तकदी रही बिना अक्खीआं, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैनूं इशारा देवण काहन दीआं सखीआँ, सख़ा सुहेला तक लै धुर दा माहीआ। जिस दे सथर विच आदि जुगादि अवतार पैग़म्बर गुरु धारां लथ्थीआं, यारड़ा इक्को सेज सुहाईआ। जो वसणहारा घट घटीआ, घट घट रिहा समाईआ। भाग लगाए काया मटीआं, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जिस दे कोलों जन भगतां खट्टीआं खट्टीआं, लाहा देवे चाँईं चाँईंआ। उहदा रूप अनूपा वांग बाज़ीगर नटीआ, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। हुक्म विच जुग चौकड़ीआं टप्पीआं, सदी चौधवीं बीसवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दे हुक्म विच दीनां मज़्हबां अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं रखीआं पत्तीआं, हिस्सेदार मानव ज़ाती अख्वाईआ। जिस दे भाणे विच अर्जन धार बैठी लोहां ततीआं, ततव तत संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक नूर अलाहीआ। धरनी कहे मैं वी रैण सबाई फिरी भज्जदी, भजन बन्दगी तकी ख़लक ख़ुदाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे मैनूं हाथ ना आई मुहाणे वञ्झ दी, जल थल महीअल वेख वखाईआ। मैं लड़ाई तकी तिन्हां अन्दर विकार पंज दी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार लड़दे थाउँ थाँईंआ। दीन दुनी दी आशा तकी रंज दी, रंजश विच ख़लक ख़ुदाईआ। शाह सुल्तानां वासना वेखी जंग दी, नव सत्त आपणा नैण उठाईआ। पता नहीं की खेल वरतणी अगे सूरे सरबग दी, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ। मेरे उत्ते खेल होई रैण अन्धेरी अन्ध दी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैनूं इयों दिसदा इक्को धार शब्द रहिणी हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दी दृष्टी बदलणी चम्म दी, चम्म दृष्टी दा लेखा दए चुकाईआ। सूझ देणी आपणे ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खेले दीन दुनी दे कर्म दी, कर्म कांड दा लेखा सब दी झोली पाईआ।

✪ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रताप सिँघ दे गृह दड़ ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे जन भगतो मेरा कलयुग नाल जुट्ट, जोड़ीदार चौथा जुग संगी नज़री आईआ। मैं खुशी नाल झनां ते फिरदे नूं फड़ ल्यांदा सज्जे गुट, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। एह मुखों बोलदा नहीं हौली हौली हलावे बुट, अन्दरे अन्दर आपणे ढोले गाईआ। मैनूं इशारे करदा नारदा मैं चारों कुण्ट पाउणी लुट, लुटेरा बणां थांउँ थाँईंआ। नव सत्त धर्म दी जड़ देणी पुट, बिन पटने वाले सके ना कोए बचाईआ। उम्मत उम्मतीआं वेख लओ भाग गए निखुट, सदी चौधवीं रूप बदलाईआ। सिख मुरीद गुरुआं पैग़म्बरां नालों गए टुट, टुटयां गंढु ना कोए पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। कलयुग कहे भगतो तुसीं मेरा करो आगमन, खुशीआं नाल ढोले गाईआ। मैं नारद दा फड़ के आया दामन, बिन पल्लू गंढु बंनाईआ। मेरी अन्तिम वेखो कामन, कामना तुहानूं दयां समझाईआ।
११६१ २४ ११६१ २४

मैं प्रवाह नहीं करदा रामा रामन, कृष्णा कान्हा भय ना कोए रखाईआ। मैं लेखा नहीं जाणदा पैग़म्बरां वाली कलामन, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। मैनूं डर नहीं रिहा सतिनामन, सति विच नज़र कोए ना आईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा किस बिध होया नाल ब्राह्मण, ब्रह्मण की जणाईआ। साडा सनमुख आहमण साहमण, पिठ सके ना कोए बदलाईआ। बिन अक्खीआं होवे चानण, बिन नैणां नैण रुशनाईआ। की हुक्म संदेशा देवे श्री भगवानन, भगवन आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। कलयुग कहे भगतो तुसीं मेरा करो शुकराना, शुक्रिए विच ढोले गाईआ। मैं तुहाडा दर्शन पाणा, पा पा खुशी बणाईआ। क्यों तुहाडा प्रभ दे नाल यराना, यारी सके ना कोए तुड़ाईआ । तुहाडा मालक इक श्री भगवाना, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। तुहाडा सब दा इक्को गाणा, तूं मेरा मैं तेरा दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा इक्को मन्दिर मकाना, भगत दुआरा सोभा पाईआ। तुहाडा इक्को धर्म निशाना, सत्तां दीपां सति जोत करे रुशनाईआ। तुहाडा इक्को इष्ट महाना, इष्ट देव स्वामी इक्को सोभा पाईआ। तुहाडा इक्को तुरीआ तों बाहर तराना, त्रैगुण अतीता मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। कलयुग कहे जन भगतो हुण उडीकां काहदीआं, कुदरत

कादर खेल खिलाईआ। जुग बदलणा जिस दीआं वादीआं, वायदे सब दे वेख वखाईआ । मेरीआं उजड़न वालीआं आबादीआं, आबादकार रहिण कोए ना पाईआ। पोतरे कुच्छड़ चुकणे मिलणे नहीं दादीआं, पिता पूत होवे जुदाईआ। माँ पुत लडा सके ना लाडीआं, गोदी गोद ना कोए वड्याईआ। राग गाउणे मिलणे नहीं ढाडीआं, सुरंगे कम्म किसे ना आईआ। राह लभणे नहीं गाडीआं, गॉड आपणा हुक्म वरताईआ। झनां दे आस पास रुलणीआं हाडीआं, गंगा गंगोत्री वेखे नैण उठाईआ। जिस दा इशारा दिता हज़रत ईसा वीहवीं सदी की हालत होणी बाडीआं, बिना लकड़ी वुडन तों सड़े ख़लक खुदाईआ। सब ने लहिणे देणे देणे जिन्हां ने सूरां नाल गऊआं खाधीआं, बचया रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग जीवां कलयुग कहे मैं तकण वाला उपाधीआं, जो मिल के कीतीआं चाँईं चाँईंआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठां चर्चां विच होणीआं नहीं किसे दीआं शादीआं, चरागाहां विच फिरे ख़लक खुदाईआ। लाग लैणे नहीं किसे लागीआं, लग मातर दा डेरा ढाहीआ। इष्ट रहिणा नहीं हकीकी मजाजीआं, मज़ा सब नूं देवे चखाईआ। तसबीआं हथ्थ नहीं रहिणीआं काज़ीआं, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। सिर झुकणे नहीं सयदे विच निमाज़ीआं, रोज़े वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग कहे जन भगतो मेरा ज़ोर नहीं कोल पंजाबीआं,
११६२ जिन्हां दा मालक धुरदरगाहीआ। मैं निउँ निउँ करां आदाबीआं, झुक झुक लागां पाईआ। दीन दुनी दा मेल होण नहीं देणा ११६२
२४ देवरां नाल भाबीआं, भैण भईआ नज़र कोए ना आईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग कहे मेरे हथ्थ फड़ाईआं २४
चाबीआं, राय धर्म नाल मिलके दोज़ख़ां दे बूहे देणे खुल्हाईआ। पर एह खेल उदों शुरू होणा जदों जगत किरसाणा पाउणीआं वाढीआं, कलयुग कहे मेरी फ़सल मानव ज़ाती नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, इक्को शब्द सुणाए नाद अनादीआ, अनहद अनाहत आपणा हुक्म दृढ़ाईआ।

✪ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ हयात मुहम्मद दे गृह पिण्ड सरोट तहिसील अखनूर ज़िला जम्मू ✪

ज़मीन ख़ाकी कहे मेरा मालक इक खुदा, नूर नुराना शाह सुल्ताना नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादि ना होए जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। मैं उस दे कदमां होवां फ़िदा, फ़ितरत ओसे दी झोली पाईआ। जिस ने कूड़ क्रिया कायनात विच्चों करनी अलविदा, मार्ग रस्ता अगला इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरा नूर नुराना इक मलाह, खेवट खेटा इक अख्वाईआ। जो वसणहारा

सच दरगाह, मुकामे हक सोभा पाईआ। जिस नूं सारे कहिण नूर अलाह, आलमीन इक अख्वाईआ। मैं उस नूं बिना सजदयां सिर देवां झुका, कदमबोसी करके आपणी खुशी बणाईआ। मेरी कबूल करे दुआ, मन्ज़ूरी आपणे हथ्थ वखाईआ। मेरे उत्ते प्रगट करे अलल सुबह, शब दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरा मालक ख़ालक इक कदीम, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। जो वसणहारा दरगाह साची आलीशान अज़ीम, सच दुआरे सोभा पाईआ। जिस दी सच मुहब्बत वाली तालीम, तहज़ीब आपणी दए समझाईआ। ओह देवणहारा आप तनज़ीम, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। निगाह मारे उत्ते ज़मीन, ज़मीं ज़मां वेख वखाईआ। मैं शुकराने विच कहां यामबीन, मेहरवान मेरे नूर खुदाईआ। जिस दे हुक्म विच सारे अधीन, सिर सर सके ना कोए उठाईआ। मेरे कोल ओस दी गोईपेशीन, पेशतर हज़रत गया सुणाईआ। जिस दा इक्को कायदा इक्को कुवानीन, कानून इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरी दुआए ज़वी अर्शे मज़ू ख़वज़ने ज़विद जमम्बाए मज़ू ज़खमल ज़वीउल जकुसताए खुदा खुद मालक नूर अलाहीआ।
११६३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे हज़रते ११६३
२४ नवी ज़िलीउल गोशे कम्मबाज़ी ज़वुल जमिस्ते मवी हज़रते नबी नसूले मवल ज़ूए जंगमम मविस्ती फ़र्शे जगाए अर्शे दुआ दस्ते २४
जख़मम दनिलू नलीलू मेरे वजंज़ी महुव महुसल मज़हफ़ताए ज़ऊ रस्तू जख़मम मविस्ती नविस्ती अज़ीमे अज़ा मेरे रहिनुमा रैहबर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरा मालक इक इकल्ला, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जो वसे दरगाह साची सच महला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस ने नाम कलमा कायनात घल्ला, पैग़ाम संदेशा देवे धुरदरगाहीआ। उह अन्त कन्त भगवन्त नूर अलाही हो के फड़े पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। उह वेखणहारा जलां थलां, समुंद सागराँ टिल्ले पर्वतां पहाड़ चोटीआं फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरा मालक इक महबूब, महिबान बीदो नूर अलाहीआ। जो वसे सति सच अरूज, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो सब नूं रखे महफ़ूज़, वेखणहारा थांउँ थाँईआ। जो जानणहारा काया कलबूत, तन वजूदां पर्दे आप उठाईआ। जो लहिणे देणे पूरे करे ख़ान्यां बुत, बुतख़ाने वेख वखाईआ। जो आपणी सोहणी करे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे परवरदिगार

सांझा यार मुरीदां देवे सच तमीज़, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। ज़िंदगी हयाती विच्चों जिस बिध हयात बणाया आपणा अज़ीज़, अज़ल दा लेखा दिता मुकाईआ। नूर नुराना पूरी करे रीझ, बिन नैणां नेत्र आपणा नूर कर रुशनाईआ। जिस नाल रूह बुत दोवें जाण पतीज, मेला होवे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरा सुहञ्जणा होवे महिराबा, महबूब मिले नूर अलाहीआ। जो लेखा मुकाए दो दो आबा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जो आशा पूरी करे चन्नआबा, चनाब आपणी खुशी बणाईआ। जिस ने सब दा वेखणा पुन्न सुआबा, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। ओस दा भरम भुलेखा काहदा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जिस दा पैग़म्बरां नाल मुआयदा, कौल इकरार तोड़ निभाईआ। बिना सूफ़ीआं भगतां तों कोई लै सके ना फ़ायदा, नुकसान विच ख़लक खुदाईआ। ओस दा किसे ना आवे जाइज़ा, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते कमावे रहमत, रहीम रहमान दया कमाईआ। मेरे नाल होवे सहमत, मेरी आशा पूर कराईआ। जिस झगड़ा मेटणा धोती तहिमत, इक्को रंग
११६४ दए रंगाईआ। मेरी लेखे लावे मेहनत, सदी सदीवी जो बैठी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा ११६४
२४ कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैं सजदा करां सही सलामत, धुरदरगाही सीस २४
निवाईआ। जिस दी उम्मत मेरी नयामत, अमानत आपणे उत्ते रखाईआ। जिस दी कलमा दे के गया ज़मानत, शहादत रसूलां वाली पाईआ। उस दा लहिणा देणा धुर दे हुक्म दा जाण सके ना कोए अणजाणत, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। पता नहीं किस बिध आपणी ल्यावे क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। क्यामत कहे मेरा लहिणा देणा लेखा नाल रोज़े हशर, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। मैं खुशीआं नाल आपणा वक्त कीता बसर, बशरते आपणा पर्दा दयां उठाईआ। पता नहीं की दीन दुनी दा होणा हशर, हासल ज़रब नज़र किछ ना आईआ। किस बिध लहिणा देणा मुकणा नाल इशारीए कसर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। धुर दे हुक्म दा मेरा होणा जशन, खुशीआं ढोले गाईआ। जिस कारन शहादत होई हुसैन हसन, अबास दए गवाहीआ। फ़रिश्ते आपणी धार नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। चन्द सितार मिल मिल हसण, निशाना उम्मती उम्मत दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरे मालक हथ्थ आपणी तदबीर, तरीका समझ कोए ना पाईआ। चार जुग दे शास्त्र जो करके गए तहरीर, अक्खर

अक्खरां नाल मिलाईआ। नाम कलम्यां विच होई तकरीर, रसना जिह्वा ढोले सिफ्त सलाहीआ। किस बिध सदी चौधवीं होणा अन्त अख़ीर, आख़र हुक्म वरते धुरदरगाहीआ। जो वाहिद बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आईआ। जिस दी खिच सके ना कोए तस्वीर, तसव्वर कर मुसव्वर सके ना कोए समझाईआ । ओह परवरदिगार पीरां दा पीर, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस शरअ तोड़ने ज़ंजीर, रस्ता रैहबर इक्को इक वखाईआ। जिस दा आबेहयात अमृत रस होणा सीर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। उह इक्को रंग रंगाए शाह हकीर, ग़रीब निमाणयां अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो सति सच ईमान करे तामीर, कामल मुर्शद हो के वेखे चाँईं चाँईंआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ भगत सिँघ दे गृह पिण्ड कीर ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे कोल भविख्तां दा खरड़ा, जिस दी गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। जिस दा इशारा दिता वेद व्यास
११६५ विच पुराण गरड़ा, अक्खर अक्खरां नाल अल्लाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दा समां आउणा करड़ा, दीन दुनी चले ना कोए ११६५
२४ चतुराईआ। सृष्टी पूजे कबरां मरड़ां, मसाणा सीस निवाईआ। दीन मज़्हब होणा झगड़ा, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जोती २४
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते सप्तस ऋषीआं दस्सीआं साखीआं, सुख़न बिना रसना जिह्वा बोल जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेले खेल अलखणा अलाखीआ, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जिस नूं सब ने कहिणा पुरख समराथीआ, हरि करता धुरदरगाहीआ। उह लेखा जाणे अनाथ अनाथीआ, ग़रीब निमाणयां वेख वखाईआ। सब दा लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथीआ, पूरब वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण जोत प्रकाश करे जोत ललाटीआ, नूर नुराना डगमगाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे वाटीआ, पैंडा पन्ध रहे ना राईआ। साडी इक्को आवाज़ साता सातीआ, सहिज सहिज नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस झगड़ा मेटणा ज़ाती हमज़ातीआ, अजाती आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे मैनूं इशारा दिता अगम्मी राम, राम बेटा दशरथ नाल मिलाईआ। उठ निगाह मार तमाम, तमअ लालच ना कोए रखाईआ। तन वजूद वेख माटी चाम, पंजां ततां ध्यान रखाईआ। किस बिध शरअ दे होणे गुलाम, दीनां मज़्हबां वंड वंडाईआ। नाम कलमा बणे इस्लाम, इस्म आज़म आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे मैनूं काहन

ने मारीआं कानीआं, अणयाला तीर चलाईआ। अगम्मी सुणाईआं बाणीआं, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। कलयुग दस्सीआं अन्त निशानीआं, निशाना दीन दुनी समझाईआ। मंज़लां रहिणीआं नहीं रुहानीआं, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। आत्मा होणीआं बेगानीआं, परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। ग्रन्थ शास्त्र बण जाणे दीन दुनी दीआं कहाणीआं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दरोही फिरनी चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ । धरनी कहे मैनूं पैग़म्बरां कीते इशारे, हज़रत हज़रतां संग संग बणाईआ। की हुक्म वरतणे परवरदिगारे, पैग़ाम दिते थांउँ थाँईंआ। सदी बीसवीं चौधवीं तकणे नज़ारे, नज़रीआ आपणा इक बणाईआ। दीन दुनी दी नईया पुजणी अन्त किनारे, साहिल समझ कोए ना पाईआ। नव सत्त होणे ख्वारे, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। तन वजूदां अन्दर होणे हाहाकारे, हौकयां विच ख़लक खुदाईआ। खेले खेल परवरदिगारे, सांझा यार नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैनूं संदेशा दिता सतिगुर नानक, निरगुण सरगुण धार जणाईआ। तेरे उत्ते होणा
११९६ वक्त भय भयानक, अन्ध अन्धेरा जावे छाईआ। सति धर्म दी रहे ना कोए अमानत, कलयुग कूड़ी क्रिया आपणा रूप बदलाईआ। ११९६
२४ मानव ज़ाती दृष्टी विच्चों होए अणजाणत, सृष्टी बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। उस वेले परम पुरख प्रभ तेरे उत्ते खेल करे २४
अचानक, अचनचेत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरे वल्ले तीर अणयाला खिच्चया गुर गोबिन्द, सिँघ आपणा रूप बदलाईआ। सच प्यार दी दिसे कोए ना बिन्द, प्यार विच नज़र कोए ना आईआ। धरनी तेरी मेटे कोए ना चिन्द, चिन्ता दूर ना कोए कराईआ। इक दूजे दी दीन दुनी करे निंद, निंदया विच ख़लक खुदाईआ। उस वेले शब्द धार मेरा खेल होणा विच हिन्द, भारत आपणी गंढु पुआईआ। जोती जाता होवे नाल पुरख अकाला मरगिंद, सूरबीर इक अख्वाईआ। जिस दा अमृत रस दो जहानां होवे सागर सिन्ध, बिन वहिणां वहिण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैनूं सतिगुर शब्द सुणाया तराना, तुरीआ तों बाहर सुणाईआ। मैं हो गई हैराना, हैरानी विच आपणा नैण उठाईआ। झट सुणया अगम्मी गाणा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला सोहला होणा थांउँ थाँईंआ। किरपा करे श्री भगवाना, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशाना, सतिजुग सच दए प्रगटाईआ। नौ खण्ड पृथमी तेरा वक्त सुहाना, सत्तां दीपां वजे नाम वधाईआ। धरनी कहे मैं आपणे अन्तष्करन कीता परवाना, परम

पुरख सीस निवाईआ। कदमबोसी विच करां सलामा, सयदे विच आपणा सिर झुकाईआ। मेरे शहिनशाह सुल्ताना, अमाम अमामा तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे मालक आदि जुगादी दो जहानां, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण दोहरी आपणी खेल खिलाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जसवंत कौर दे गृह पिण्ड कोठे निहालपुर सिम्बल ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मैं सुण के शब्द संदेश, आपणे नाल लई अंगड़ाईआ। मेरा मालक इक नरेश, नर नरायण इक अख्वाईआ। जिस दा सुत दुलारा दस दस्मेश, गोबिन्द सूरा इक अख्वाईआ। जो मेरे उतों मेटे कलेश, कलकातीआं करे सफ़ाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। मैं उस नूं करां आदेस, निव निव लागां पाईआ। जो सदा रहे हमेश, हमसाजण इक हो आईआ। मैं उस दे होणा पेश, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। जिस झगड़ा मेटणा मुल्ला
११९७ शेख़, मुसायकां आपणे रंग रंगाईआ। भाग लाउणा सम्बल देस, साढे तिन्न हथ्थ वजे वधाईआ। जिस दी सिफ्त करे सहँसर ११९७
२४ मुख शेष, दो सहँसर जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच २४
दुआर दए वड्याईआ। धरनी कहे मैं धुरदरगाह दी सुणी ख़बर अपारी, अपरम्पर दिती सुणाईआ। मेरे अन्तष्करन आई हुशियारी, आलस निंद्रा दिती गुआईआ। मैं बिना नेत्रां वेख्या नैण उग्घाड़ी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं नज़री आया जोती जाता निरँकारी, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जिस दे हुक्म विच पैग़म्बर गुर अवतारी, सीस जगदीस बैठे झुकाईआ। उह सारे खुशीआं विच तूं मेरा मैं तेरा रहे उच्चारी, दूसर राग ना कोए दृढ़ाईआ। इक्को धुन होवे धुन्कारी, इक्को नाद करे शनवाईआ। इक्को रस मिले ठंडा ठारी, अंमिओं रस इक्को सोभा पाईआ। इक्को जोत होवे उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। इक्को शाह पातशाह शहिनशाह सिक्दारी, पुरख अकाला सोभा पाईआ। इक्को सच सिँघासण सोहे दरबारी, जिस दी पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार बैठा धुरदरबारी, दो जहानां मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे जिस मेरे उत्ते मेटणी कलयुग रैण अँधयारी, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। मैं उस दे चरण कवल करां निमस्कारी, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी मुश्किल दूर करे दुष्वारी, दो जहानां रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सेवा सिँघ दे गृह कीर पिण्ड ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू साचे नाम दी ला दे चोट, चोटी चढ़ के अन्दर वड़ के वेख वखाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया अन्दरों कढ्ढ दे खोट, हउमे हंगता रहिण कोए ना पाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना बख्श अतोट, अतुट आपणी दया कमाईआ। तन वजूद नगारे आपणी ला दे चोट, सोई सुरती आप उठाईआ। भाग लगा दे पंजां ततां वाले कोट, किला गढ़ बंक दुआर इक सुहाईआ। प्रकाश करदे निर्मल जोत, जोती जाते अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। तेरा आत्मा तेरे उत्ते होवे मोहत, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। प्रकाश कर दे मेरे उत्ते मातलोक, परलोक दे मालक आपणा पर्दा लाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तेरा गावण सलोक, सोहला ढोला इक्को देणा समझाईआ। नाम खुमारी दे मधहोश, मधुर धुन नाद कर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू साची बख्श दे नाम खुमारी, दीन दुनी दे अन्तर ध्यान लगाईआ। इक्को तेरा चरण कवल सब दा होए उधारी, उदर दा लेखा दे मुकाईआ। चार वरन अठारां बरन पैज दे संवारी, दीन मज़्बां वंड दे वंडाईआ। मेरे उत्ते जो आसा
११६८ रख के गए पैग़म्बर गुर अवतारी, अवतर हो के वेख वखाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी तेरी सदा पनहारी, जुग जुग तेरी ११६८
२४ सेव कमाईआ। मेरे सति पुरख सत्त दीप रहे पुकारी, कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग मेट रैण २४
अँधयारी, अन्ध अज्ञान दे गुआईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों आपणी कर पुजारी, इष्ट इक्को इक वखाईआ। तूं शाहो भूप निरँकारी, निरवैर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी नव खण्ड सुहा दे बस्ती, गृह इक्को सोभा पाईआ। सच प्यार दी दे दे मस्ती, मस्त मस्ताने जीव जंत लै बणाईआ। सब नूं इक्को नज़र आवे तेरी हस्ती, हस्त कीट आपणा रंग रंगाईआ। मेरा लहिणा देणा दे दे दस्ती, हथ्थो हथ्थ देणा फड़ाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरे हुक्म विच रही नसदी, भज्जां वाहो दाहीआ। वणजारी बणी रही तेरे जस दी, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। हुण मेरे उत्ते रैण अन्धेरी मस दी, कलयुग कूड़ कुड़यार दे चुकाईआ। लो दे दे आपणे निज नेत्र अक्ख दी, बिन अक्खीआं आपणा नूर चमकाईआ। मेरी मंग मेरे परवरदिगार सांझे यार हक दी, हकीकत दे मालक देणी झोली पाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग रही तकदी, वेखदी रही थांउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श दे अगम्म प्यारा, प्रेम प्रीती विच होवे सृष्ट सबाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख लै अन्त किनारा, नईया नौका कन्ढी

बैठी डेरा लाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए अधारा, सच विच ना कोए समाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़यारा, नौ खण्ड पृथ्मी आपणा डंक वजाईआ। धर्म दा धर्म रिहा ना कोए दुआरा, धरनी धरत धवल धौल हो के रोवां मारां धाहीआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दारा, पातशाह तेरी बेपरवाहीआ। मेरे उत्ते तक लै धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीनां मज़्बां लग्गा अखाड़ा, दिवस रैण करे लड़ाईआ। पंजां ततां अन्दर झगड़ा पाया लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, हड्ड मास शांत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक हो के वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू की धरनी रही पुकार, सच दे सुणाईआ। मैं वीं तेरा बरखुरदार, चौथा जुग बाला नढ्ढा नज़री आईआ। मेरा लहिणा देणा विचार, विचरके दयां सुणाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी करना धूंआँधार, धर्म दी धार रहिण कोए ना पाईआ। मैं अठसठ तीर्थ वेखणे विच संसार, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती ध्यान लगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ फिरना गुरुदुआर, भज्जणा वाहो दाहीआ। चार जुग दे शास्त्रां ग्रन्थां पाउणी सार, अक्खर अक्खर ध्यान लगाईआ। तूं साहिब सुल्तान मेरा सिक्दार, हरि करता इक अख्वाईआ । मेरा वायदा कौल इकरार, गोबिन्द नाल दयां समझाईआ।
११६६ माछूवाड़े जिस नाल कीता तकरार, खुशीआं दा खुशीआं ढोला गाईआ। ओन संदेश दिता जिस वेले मेरा ढईआ होया अन्त ११६६
२४ किनार, आर पार समझ किसे ना आईआ । धरनी धरत धवल धौल उत्ते दीन दुनी होवे ख्वार, ख़ालस रंग ना कोए समाईआ। २४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे प्रभू दे दे नाम सति, सति सतिवादी सब दी झोली पाईआ। हर हिरदे उपजे ब्रह्म मति, पारब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। ईश जीव झगड़ा रहे ना तत, ततव तत दे समझाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे हरिजन लै बणाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों मथ, मथन कर कूड़ लोकाईआ। मेरे ख़ाली वेख लै हथ्थ, हथ्थीं ख़ाली झोली डाहीआ। वस्त अमोलक किरपा निधान हो के घत, अतोट अतुट दे वरताईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरी रखणी पत, पतिपरमेश्वर तेरे अगे वास्ता पाईआ। मेरे कोल अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाले ख़त, जो हरफ़ हरूफ़ नज़री आईआ। एसे कारन तेरे चरण कवल धवल हो के वास्ता रही घत, धरनी धरत आपणा सीस निवाईआ। तूं मेरे उत्ते आउणा वत, बेवतनां दे मालक आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखणे टहणी पत्त, फल फुल फोल फुलाईआ। तूं मेरी जानणी मित गत, गति मित तेरी आस रखाईआ। धरनी कहे आपणा वायदा तक लै जिस कारन गोबिन्द हंढाया तेरा सथर सथ, यारड़े सूलां सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कर लै धुर संजोग, सतिजुग विछड़ी कलयुग लै मिलाईआ। अन्तर आत्म दे के साचा भोग, बिन रसना रस चखाईआ। मेरा तेरा इक्को होवे जोग, जुगती जगत देणी समझाईआ। मेरे अन्दरों कढ दे चिन्ता सोग, ग़मी ग़मखार हो के दे मिटाईआ। तेरा नाम कलमा होवे अगाध बोध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। आपणी सृष्टी दृष्टी विच्चों लै सोध, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं सूरबीर बहादर योद्धन योद्ध, युधिष्टर दा लेखा पूर कराईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ी क्रिया लाह दे बोझ, माया ममता मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। एकँकार इक्को तेरी रखी ओट, ओड़क तेरे चरण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनादि पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार साहिब स्वामी अन्तरजामी इक्को तेरा सतिगुर शब्द बहुत, बहुते गुरु मेरे कम्म किसे ना आईआ।

✪ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ तेजभान दे गृह सई कला ज़िला जम्मू ✪

१२०० २४

धरनी कहे सो पुरख निरञ्जण मेरे अधारीआ, आदि जुगादी तेरी आस रखाईआ। हरि पुरख निरञ्जण पाउणी सारीआ, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। निगाह मार लै एकँकारीआ, अकल कलधारी ध्यान लगाईआ। आदि निरञ्जण निरगुण जोत कर उज्यारीआ, उजाला होवे थांउँ थाँईंआ। अबिनाशी करते मेरी पाउणी सारीआ, साजण हो के संग बणाईआ। श्री भगवान सुण पुकारीआ, पुनह पुनह सीस निवाईआ। पारब्रह्म प्रभ तेरे अगे मेरीआं गिरयाज़ारीआं, बिन नेत्र लोचन नैणां नीर वहाईआ। सतिगुर शब्द मेरीआं तक लै ख्वारीआं, दुखी हो के रही सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मेरे लहिणे देणे तकणे की हुक्म सची सरकारीआ, हरि करता इक दृढ़ाईआ। अवतारो वेखो किस बिध परम पुरख दी आउणी वारीआ, वारस हो के ध्यान लगाईआ। पैग़म्बरो उस महबूब दीआं दस्सो यारीआं, जो यराने तोड़ निभाईआ। गुरु गुरदेव परदयां विच्चों पर्दा लाहो की खेल धुर दरबारीआ, हरि करता की सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मेरे उत्ते खेलां होईआं न्यारीआं, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त दहि दिशा रातां अन्धेरीआं कालीआं, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। की आशा रखी अष्टभुज जवालीआ, सिँघ शेर की जणाईआ। मानव ज़ाती फल रिहा किसे ना टाहणीआं, पत्त फुल्ल गए कुमलाईआ। मैं कोझी कमली होई निमाणीआं, निम्रता विच सीस निवाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म आपणीआं तक लै चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख

वखाईआ। निगाह मार लै चारे बाणीआं, परा पसन्ती मद्धम बैखरी वेख वखाईआ। चौथे जुग दर तेरे बणी सवालीआ, भिखारन हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे मेरा दर्दीआ वंड लै दर्द, दीन दुनी वेख वखाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे उत्तों शरअ छुरी मेट दे करद, कत्लगाह दा पन्ध मुकाईआ। मेरी चरण कवल धवल निमाणी दी अर्ज़, आरज़ू तेरे अगे टिकाईआ। जुग बदलणा तेरा फ़र्ज़, फ़ाज़ल हो के वेख वखाईआ। तेरा खेल तकणा असचरज, अचरज लीला देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर साहिब गुसईंआ, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेरी पकड़ लै बहींआ, बाहू बल आपणा नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया डोब दे नईया, नौका नाम आपणी इक चलाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा तक लै कढ्ढके आपणी वहीआ, हिसाब अंकड़यां नाल मिलाईआ। मैं सरन सरनाई इक्को तेरी पईआं, पारब्रह्म तेरी धूड़ी ख़ाक रमाईआ। गोबिन्द दी धार लँघ गया ढईआ, ढोला तैनूं रही सुणाईआ। मेरे उत्ते तेरा सतिगुर शब्द इक्को होवे
१२०१ गवईआ, गाइन करे थांउँ थाँईंआ। मैं धरन निमाणी जगत जिज्ञासुआं मईआ, ममता विच दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप १२०१
२४ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते खोल्ह दुआरा २४
धर्म, धर्म धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। जिथ्थे दृष्टी रहे मूल ना चर्म, चम्म दृष्टी देणी मुकाईआ। मानव ज़ाती मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मेरा पवित्र करना कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचे दे दे जरम, आप बण जणेंदी माईआ। मेरे सीने टकाउणा आपणा चरण, चरणोदक जाम देणा प्याईआ। नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। तूं सतिगुर तारन तरन, तारनहार तेरी वड्याईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्ते तेरे जीव जंत साध सन्त तेरा इक्को ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा* राग ना कोए जणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी मंज़ल चढ़न, परवरदिगार सांझे यार तेरा दर्शन पाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची वड़न, साचे धाम मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। झट कलयुग आ गया की धरनीए मंगें मंगां, मैनूं दे जणाईआ। मेरे नालों तैनूं केहड़ा समां मिलेगा चंगा, चंगी तरह दे दृढ़ाईआ। औह वेख लै की खेल होया यमुना सरस्वती गंगा, गंगोत्री रही सुणाईआ। नारी पुरुष जिन्हां विच नहाउँदा नंगा, पर्दा उपर ना कोए टिकाईआ। पंडतां पांध्याँ हाल हो गया मंदा, शास्त्र विद्या ना कोए वड्याईआ। जगत जिज्ञासुआं नेत्र हो गया अन्धा, एह मेरी बेपरवाहीआ।

ममता लालच बणाया धन्दा, धर्म दी धार रहिण कोए ना पाईआ। मनुआ मन वासना विच कीता गंदा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ । साची मंज़ल चढ़ सके कोई ना पौड़ी डण्डा, डण्डावत सब दी दिती बदलाईआ। आत्मा परमात्मा नालों कीता रंडा, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। कलयुग कहे धरनीए जिधर वेखें तेरे उत्ते खेल खिलाया भेख पाखण्डा, मेरे वरगा खिलाड़ी नज़र कोए ना आईआ। जे तूं मेरा अन्त कराउणा चाहुंदी ते वेखण वाली कन्ढा, कन्ढी घाट दयां जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खड़के खण्डा, खण्डर दिसे तेरी ख़लक खुदाईआ। सोहणीआं पावण वाला वंडां, हिस्से धुर दे हुक्म नाल जणाईआ। आपणा लहिणा देणा हिसाब अगला कढ्ढां, कढ्ढके दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। कलयुग कहे धरनीए मेरा सब तों वखरा असूल, असल दयां जणाईआ। मेरी करनी नूं कोई ना जावे भूल, अगले जुग गावण चाँईं चाँईंआ। मैं माण रहिण नहीं दिता शंकर वाली त्रिशूल, त्रैलोकी रंग ना कोए रंगाईआ। मिलण दिता नहीं कन्त कन्तूहल, आत्म परमात्म संग ना कोए बणाईआ। शब्द पंघूड़ा सके ना कोई झूल, हुलारा हक ना कोए रखाईआ। सतिगुर चरण दी मस्तक ला सके कोई ना धूल, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ।
१२०२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। कलयुग कहे धरनीए १२०२
२४ जे मेला वेखणा अन्त अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। तेरे नेत्र वगणा नीर, नैण हंझूआं हार बणाईआ। मेरे कोल बड़ी अनोखी २४
तदबीर, तरीका समझ किसे ना आईआ। जो पिछली कीती उत्ते मारनी लकीर, पिछला लेखा पूर देणा मुकाईआ। आपणे कूड़ दा मारना तीर, अणयाला इक वखाईआ। जिस लहिणा देणा मुकाउणा पैग़म्बर पीर, शरअ शरीअत विच्चों मिटाईआ। मानव ज़ाती मिले कोई ना धीर, धीरज सके ना कोए रखाईआ। किसे हथ्थ नहीं आउणा नीर, जल थल वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। कलयुग कहे धरनीए मैं बड़ा चालाक, चालाकी समझ किसे ना आईआ। तूं मिट्टी दिसण वाली ख़ाक, ख़ाके तैनूं दयां दृढ़ाईआ। ज़रा मेरे वल झाक, नेत्र नैण अक्ख मटकाईआ। पंच विकारा मेरा मित्र प्यारा साक, सज्जण कूड़ कुड़यारा नाल मिलाईआ। मैं माया ममता नाल करां टाक, दूसर अक्ख ना कदे मिलाईआ। मेरा सब दे नाल वायदा वेख लै भविख्तां नाल वाक, वाकफ़िकार हो के दयां जणाईआ। मैनूं याद कीता हज़रत ईसा आपणे उत्ते कलाक, कलाधारी कलयुग की आपणी कल वरताईआ। जिस दीन मज़्ब दा पैग़म्बरां नालों करना तलाक, अगला संगी नज़र कोए ना आईआ। रूह बुत रहिण देणा नहीं कोई पाक, पलीत करां ख़लक खुदाईआ। मेरे हुक्म दे सारे होणे चाक, चाकर करां ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । कलयुग कहे धरनीए मैनूं वेख लै मैं सूरबीर बहादर, योद्धा इक अख्वाईआ। जिस नूं माण दिता करीम कादर, कुदरत दा कादर दए वड्याईआ। तूं मैनूं दे आदर, आदर्श तैनूं आपणा दयां वखाईआ। मेरा कर्म होया उजागर, कूड़ी क्रिया वजी वधाईआ। मैं सारी सृष्टी कीती आपणे विकार वाली सौदागर, घर घर कूड़ वस्त दिती वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ । धरनी कहे कलयुग क्यों कूड़ दा पावें रौला, कूक कूक सुणाईआ। आपणा तक लै इकरार कौला, कवल नैण की जणाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा मौला, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह मेरे उत्ते तेरा भार करे हौला, नौ खण्ड सत्त दीप रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा सच दुआर इक्को ते इक्को होणा ढोला, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। उह दीन दुनी विच जोती जाता आपणा बदले चोला, चोजी आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरु बणया गोला, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे कलयुग तेरा वक्त रह गया थोड़ा, थुड़या थिड़कया तैनूं दयां जणाईआ। कूड़

नाल तेरा नहीं रहिणा जोड़ा, जोड़ी गंढ ना कोए बंधाईआ। औह तक लै सस्से वाला होड़ा, सो पुरख की समझाईआ। जो हँ ब्रह्म दा मालक हो के बौहड़ा, दो जहानां वेख वखाईआ। तेरा रस रहिण ना देवे कौड़ा, कूड़ी क्रिया बाहर कढाईआ। जोती जाता बणके ब्राह्मण गौड़ा, वेद व्यासा लेखा पूर कराईआ । तेरा मार्ग अगे रहे ना सौड़ा, भीड़ी गली दए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे कलयुग तेरा वक्त गया लँघ, सदी चौधवीं बीसवीं दए गवाहीआ। तेरे टुटण वाले अंग, अंगीकार नज़र कोए ना आईआ। तेरा बदलण वाला रंग, कूड़ी क्रिया रंगत दए मिटाईआ। तेरा अन्तिम होण वाला जंग, जंगजू होया धुरदरगाहीआ। कुझ अन्त अख़ीरी उस तों लै मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जेहड़ा तेरी कटे भुख नंग, कूड़ी तृष्ना दए मिटाईआ। तेरा भाग होण ना देवे मंद, मंद भागिआं लए तराईआ। उस निशान मेटणा तारा चन्द, उम्मत नबी रसूल दी दए गवाहीआ। धरनी कहे मेरा ख़ुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी दीन दुनी बदलाईआ। दीन मज़्ह़ब दी रहिण ना देवे कंध, शरअ शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। जगत जहान होए कोई ना अन्ध, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ । जिस दे हुक्म विच सारे होण पाबन्द, सिर सके ना कोए उठाईआ। उस ने सब दा ढोला गाउणा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। तूं मेरे उत्तों जाणा वंञ, वञ्झ मुहाणयां हाथ कोए ना आईआ। अन्त विछड़न लग्गयां कलयुगा करीं मूल ना रंज, रंजश आपणे विच रखाईआ। आपणी

झोली पा के लै जाणा विकारा पंज, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे कलयुग प्रभ खेले खेल न्यारा, निराकार निरँकार बेपरवाहीआ। जिन्ह सतिजुग सच प्रगटाउणा दुबारा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। मेरे उत्ते भगत सुहेले मेले नाल शब्द इशारा, सोई सुरती आप उठाईआ। तेरा अन्ध अन्धेरा मेटे अँधयारा, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। शब्द अनादी दे धुन्कारा, धुन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत रस बख़्श के ठण्डा ठारा, जगत तृष्ना कूड़ बुझाईआ। भगत सुहेले बणा आपणा परिवारा, परम पुरख प्रभ वेखे चाँई चाँईआ। दीन दयाल हो के देवे चरण सहारा, चरण कवल इक सरनाईआ। साचे नाम दा दे जैकारा, जै जैकार कराईआ। भगत वछल बण गिरधारा, गिरवर आपणा रंग रंगाईआ। भेद खुल्हा के पुरख नारा, नर नरायण हो के वेख वखाईआ । जोती जाता हो के होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस नूं सब ने मन्नया कलि कल्की अवतारा, निहकलंक इक अख्वाईआ। अमाम अमामा होया ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। उह तेरा लहिणा देणा रिहा विचारा, छुप्या रहिण कुछ ना पाईआ। हुक्म संदेशा देवे आपणी धारा, धर्म दी धार नाल सुणाईआ। कलयुग कहे धरनीए मैं वीं उस दे हुक्म दी करां इंतज़ारा, बैठा राह तकाईआ। किस वेले आवे मेरा परवरदिगारा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरी पावे सारा, पुरख अकाला दीन दयाला दया कमाईआ । मैं उस दी चरण धूड़ मस्तक लावां छारा, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। भगत भगतां नाल मिलके तूं मेरा मैं तेरा लावां जैकारा, जै जै कार विच आपणा आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। झट नारद आ गया कहे कलयुग की धरनी नाल करें बात, मित्रा दे समझाईआ। तूं की कर्म कीता लोकमात, मातृ भूमी दए गवाहीआ। निगाह मार लै अज्ज दी रात, बिन नेत्र नैणां नैण उठाईआ। की हुक्म संदेशा देवे कमलापात, पतिपरमेश्वर की समझाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां मार लै झात, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जो लेखा लिख्या जाए नाल कलम दवात, शाही शहादत दए भुगताईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला अन्त भगतां पुछे वात, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कहे नारदा, मेरा वी ओहो बाप, पिता इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा बिन रसना करां जाप, ढोला धुरदरगाहीआ। मैं बड़ा खुश, मेरी बदली परम पुरख ने करनी आप, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं संग ना कोए बणाईआ। मेरा मालक हो के पुछे बात, स्वामी हो के दए वड्याईआ। मैं वी सचखण्ड सतिजुग त्रेता द्वापर नाल मिल के आपणा सुहावां प्रांत, सोहणे दर मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक

१२०४
२४

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवणहारा बूँद स्वांत, अमृत अंमिओं रस अनरस आपणा आप प्याईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ शिव सिँघ दे गृह सई कलां ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे धुर दा पतीआ आया हू, उहां ईहां आपणा खेल खिलायो री। जोगीआ यतीआ जोबनवन्तीआ वेस वटाइउ ऊ, ज़मने ज़ू नूरे निज़ा नूर नूर रुशनायो री। भगवन शाहो बेपरवाहू आपणा खेल खिलाइउ ऊ, परवरदिगार मविज़ली ज़ू ज़हका ज़ही जुहीना ही शब्दी सईआ मोको बीना पर्दा आप उठाइउ री। मुर्शद महिबाने महबूब नूर रुशनाइउ री। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाइउ री। करनी कार कमावत रे। भेव अभेद खुल्लावत रे। दो जहानां वेख वखावत रे। शब्द अनादी नाद वजावत रे। जोती नूर नूर रुशनावत रे। ज़ाहर ज़हूर पर्दा आप उठावत रे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरतावत रे। काकू कापितीआ मतरे इस्मे ज़कवे ज़ो जहाना ए। जोबनवन्ता शाह शविज़ी नदमे असत नूर नुराना ए। मेका मीता तेही दीनो इस्मे चश्मा

चश्मा चश्मा चोमस रूह ज़मानो रे। नानक मितीआ गोबिन्द रतीआ शाहो भूप सुल्तानो रे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाहो भूप नौजवानो रे। नव जोबन का मीता ईहू, इस्मे नूर चुशाना ए। शाहे शविदा अल्फ़ल जुगा मस्त रूप मस्ताना ए। दो जहानां वाहिद वजूदा, पैग़म्बरां हुक्म सुनाना ए। शाहे शवीजा राहो महवी अवतर खेल खलाना ए। वेद अदम भेव मदम मविस्ती मुलासत हज़वे हू, हज़रत शाह सुल्ताना ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा हुक्म वरताना ए।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ भगवान सिँघ दे गृह सई कलां ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरा धवला धईआ, रैहबर नूर अल्लाहतूआ। साँवल सुंदरीआ सरनी पईआ, कोमल नैण महातूआ । राम रम्ईआ जोत जगईआ, शाहो भूप अफ़लातू आ। नानक गोबिन्द खेल खलईआ, भेव कोए ना पातू आ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साहिब इक वधातूआ। धरनी कहे मोको मीता मित्रे मीआ आयो

१२०६
२४

री। जोती जाता ठांडा सीता, अग्नी अग्ग बुझाइउ री। त्रैभवण धनी त्रैगुण अतीता, तरीआ खेल खिलाइउ री। चार चवंनी दस्स खवंनी खेले खेल आपणी रीता, भेव अवल्ला आपणा आप छुपाइउ री। जो सीता राम इशारा कीता, कान्हा कृष्णा आपणा नाम प्रगटाइउ री। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाइउ री। धरनी कहे मेरा पर्दा काजू, ऊहां चीकन का चिकआया ई। दोवें नैण नीर ते वाझूं, छहबर बेपरवाहया ई। मानव ज़ाती पीर सब दा सांझू, गोबिन्द खेल खिलाया ई। इस दे अगे हस्त बांधू, बन्दना विच सीस झुकाया ई। मेरा ठाकर स्वामी सर्ब बख़्शांदू, बख़्शणहारा इक्को नज़री आया ई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर नरायण नूर प्रगटाया ई।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान चन्द मनवाल कैंप सई कलां ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे परगटिओ भवईआ, भावना मेरी पूर कराईआ। मेहरवान मेरा मीआं सईआ, साजण इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म खेल खलईआ, गोबिन्द बाले नीहां हेठ दबाईआ। आ उह लेखा मंगू काढो वहीआ, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरा महबूब अवज़ी अवल नूर अलाहीआ। जगले मिज़ली शोहू शाना दोज़ख़ बहिश्त नविजली आहला चश्मे दीद चश्मे जोदू चश्मे अध चश्मे मद, चश्म चश्म चमकाना ऊ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाना ऊ। धरनी कहे मेरा धर्म दयालू, धुर दा माही आया ए। परम पुरख मेरा बण कृपालू, कृपानिध वेख वखाया ए। मेरे सिर ते देवे धर्म दा सालू, ओढण इक्को नाम टिकाया ए। जिस नूं दीन दुनी नौ खण्ड पृथ्मी भालू, भाल्यां हथ्थ किसे ना आया ए। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर गुरु घालणा घालू, घायल हो के सेव कमाया ए। उह अन्त कन्त भगवन्त कलयुग अन्तिम आप संभालू, सम्बल दा मालक हो के वेख वखाया ए। मेरे उत्तों त्रैगुण माया मेटे जंजालू, जागरत जोत करे रुशनाया ए। सतिजुग सच धर्म करे उजालू, कलयुग अन्ध अन्धेर गुआया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाया ए। धरनी कहे मैं नमो नमो करां निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। किरपा करे मेरे उत्ते मेरा निरँकार, निरवैर हो के वेख वखाईआ। नूर नुराना बण के परवरदिगार, सांझा यार आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा चार जुग दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण बाकी

रहिण कुछ ना पाईआ । मैं खुशीआं विच ढोले गावां तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दी धार, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वजे वधाईआ । मेरे नौ खण्ड सत्त दीप करन जै जै कार, जै जै कार करे ख़लक खुदाईआ। धरनी कहे मैं धवल हो के जावां बलि बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सच सिक्दार, सदा सदा सद सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सोभा सिँघ दे गृह धंगाली ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे साहिब मीको अलज़ीज़ल ज़ूख़मते ज़ू अर्शे वज़ी अर्शे तज़ी फ़र्शे तज़ी नूरे नविज़ शाहे शविज़ शहिनशाह इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरा परम पुरख परमात्म, पूरन ब्रह्म जणाईआ। जिस दा समझे ना कोए महातम, भेव सके ना कोए समझाईआ। उहदा लहिणा देणा मानव ज़ाती सारी जातम, मानस मानुख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१२०७ आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे मेरा मालक मीतो, मितीआ धुरदरगाहीआ। १२०७
२४ शाहो भूप हरि ठांडा सीतो, अग्नी तत बुझाईआ। जुग जुग बदलणहारा रीतो, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म २४
वरताईआ। जीवां जंतां परखणहारा नीतो, वेखणहारा धुरदरगाहीआ। जो झगड़ा मेटे मन्दिर मसीतो, काअब्यां पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे साहिब हमारो, मीतो मीता इक अख्वाइउ रे। जोती जाता नूर उज्यारो, दो जहानां डगमगाइउ रे। जिस दा खेल सर्ब संसारो, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव आप जगाइउ रे। जो लहिणा देणा जाणे पैग़म्बर गुर अवतारो, त्रै लोअ बाहर त्रैभवन हो के धनी आपणा हुक्म वरताइउ रे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाइउ रे। धरनी कहे मेरा वेखे धर्म दुआरा, कलयुग अन्त ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप पावे सारा, चार कुण्ट दहि दिशा पर्दा दए उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर तके धूंआँधारा, पंज विकारा वेखे ख़लक खुदाईआ। दीनां मज़्हबां तके शरअ शरीअत वाली खारा, दूई दुवैती खोज खुजाईआ। मन मनसा कूड़ी क्रिया वेखे अखाड़ा, मोह विकारा खोजे चाँईं चाँईंआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना जिस नूं सब ने मन्नया धुर दा लाड़ा, गहर गम्भीर बेनज़ीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ।

धरनी कहे मेरा परम पुरख परमात्म इका बंधू, बन्धन मेरे दए कटाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी गहर गम्भीर सागर संधू, अमृत मेघ आपणा नाम बरसाईआ। कलयुग अन्त अन्ध अज्ञान अन्धेरा मेटे अन्धू, अन्ध आत्म करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा निरगुण निरगुण सुणाए छन्दू, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जो आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म देवणहार अनन्दू, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग अन्त अख़ीर जगत जहान विच्चों लँघू, धरनी धरत धवल धौल रहिण मूल ना पाईआ। सतिजुग साचा मेरे नाल करे सबंधू, सगला संग वखाईआ। मेरे अन्तष्करन सीने पावे ठंडू, अग्नी अग्ग अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरा मालक इक स्वामी, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादी अन्तरजामी, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग कूड़ी क्रिया होई प्रधानी, नव सत्त आपणा बल प्रगटाईआ। सति धर्म दी मिटदी गई निशानी, निशाना नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु अन्दर होई हैरानी, सिख मुरीद साचा संग ना कोए निभाईआ। मनुआ मन मनसा नाल मिल के करे शैतानी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। माण रिहा ना शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानी,
१२०८ खाणी बाणी सगला संग ना कोए निभाईआ। जलधारा रोवे अठसठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती रही कुरलाईआ। १२०८
२४ प्यार रिहा ना मानव ज़ाती जेरज वाली खाणी, प्रीतम दी प्रीती विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी २४
किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक ख़ालक आदि जुगादी दो जहानी, नूर नुरानी नूर नूर जोत करे रुशनाईआ।

२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ लक्ष्मण सिँघ दे गृह अन्दर वड़दयां ही धंगाली कैंप ज़िला जम्मू

धरनी कहे प्रभू चाढ़ो रे मस्ती, मसल मसल लए अंगड़ाईआ। धार बख्श आपणे रस दी, बिन रसना रस चखाईआ। मैं वणजारन होवां तेरे जस दी, सिफ्तां ढोले गाईआ। बिन कदमां होवां नसदी, भज्जां वाहो दाहीआ । खुशीआं होवां हसदी, हरिजन वेख खुशी बणाईआ। मेरी आशा नहीं कोई रवि शशि दी, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। मेरे उत्तों मेट रैण अन्धेरी मस दी, अन्ध अज्ञान दे गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे मोहे काहो करो सख्ती, सुख़न अगम्म जणाईआ। मेरा लहिणा पूरब वेखो लखती, लिख लिख गुर अवतार पैग़म्बर की जणाईआ। जिन्हां दी आशा नाल मेरे उत्ते आउणी कम्मबख़ती, कमीनी हो के दयां सुणाईआ।

दरोही मेरया स्वामीआं, मेरे उत्ते तेरी सृष्टी नहीं रहिणी वसदी, वसल यार तेरा करन कोए ना पाईआ। कलयुग आशा नागण सब नूं फिरे डसदी, गृह गृह डंग चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं खुशीआं नाल झूमां, झूम झूम खुशी बणाईआ। बिन रसना जिह्वा साहिब दे चरण चूम्मां, बिन लबां लब छुहाईआ। जिस ने खेल तकणा मेरे उत्ते मज़्बां वाले हजूमां, लेखे जाणे थांउँ थाँईंआ। पर इक खुशी उस ने ज़रूर रच्छया करनी आपणयां भगतां बच्चयां मासूमां, नंन्हिआं बाल्यां आपणी गोद उठाईआ। पर उस दा खेल होणा नामालूमा, समझ विच ना कोए समझाईआ। जिस मेरे उत्तों कलयुग दा बदल देणा कानूना, कायदा कवायद पिछला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते भगतां सेज सुहाई गद्दी, सुखआसण इक बणाईआ। जिस दे हुक्म विच बीतदी जांदी सदी, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं उसे दे हुक्म विच बध्धी, दर ठांडे सीस निवाईआ। सप्तस ऋषीआं दी आशा कारन जुग चौकड़ी दा मालक आवे कदी कदी, कदीम दा लेखा पूर कराईआ। एथे उन्नां दी धूणी दी राख दब्बी, जिथ्थे तीजी वार आसण चरणां वाला छुहाईआ । जल दी धारा कदी हुन्दी सी निक्की जेही डिग्गी, जिस नूं तलाब कहि के रसना वाले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नवां खेल धरनी कहे जन भगतो मेरे उत्ते बैठा विढी, जो विडो वेखे ख़लक खुदाईआ।

१२०६ २४

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ लक्ष्मण सिँघ दे गृह रात नूं सई धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादि समरथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, महिमा जुग जुग अकथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, निरगुण सरगुण चलाए रथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम निधाना देवे वथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, कूड़ विकारा देवे मथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दर्शन सगल वसूरे जाण लथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी जिस दी महिमा सदा अकथ। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी गहर गम्भीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो निरगुण निरवैर बेनज़ीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शहिनशाह पीरां दा पीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी खिच्च ना सके कोए तस्वीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर निरंतर देवे धीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अमृत बख्शे सीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो झगड़ा मेटे शाह हकीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच दा मालक गुणी गहीर। सतिगुर सच्चा जाणीए, एका एक श्री भगवन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी धुर दा कन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम निधाना मंत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी महिमा सदा अगणत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो हरिजन बणाए सन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो मेल मिलाए भगतां संगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बोध अगाधा होए पंडत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी तोड़े हउमे हंगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख कृपाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, दीनां बंधप दीन दयाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, सचखण्ड वखाए सची धर्मसाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोत जगाए बेमिसाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आपणी गोदी लए सुवाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाता तोड़े काल महाकाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरमुख उठाए आपणे बाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी विच्चों करे बहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन सच करे प्रितपाल। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे घर सुहञ्जणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, चरण धूड़ कराए मजना। सतिगुर सच्चा जाणीए, नेत्र नाम
१२१० पाए अंजणा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दर्द दुःख होए भय भञ्जणा । सतिगुर सच्चा जाणीए, जो देवे सच अनन्दना। सतिगुर १२१०
२४ सच्चा जाणीए, जो इक जणाए छन्दना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच २४
कराए बन्दना। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो इक जणाए इक इकल्ला धुर दा साकी। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लहिणा देणा देवे बाकी। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बन्द किवाड़ा खोल्हे ताकी। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भाग लगाए काया माटी ख़ाकी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को पुछे वाती। सतिगुर सच्चा जाणीए, धाम वखाए निहचल। सतिगुर सच्चा जाणीए, बेड़ा पार कराए जल थल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी आप। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जन भगतां होए माई बाप। सतिगुर सच्चा जाणीए, त्रैगुण मेटे ताप। सतिगुर सच्चा जाणीए, रोग सोग गुआए संताप। सतिगुर सच्चा जाणीए, लेखा रहिण ना देवे पाप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सच जपाए जाप। सतिगुर सच्चा जाणीए, अबिनाशी अचुत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखा जाणे काया पंज भुत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस सचखण्ड टिकाया बचन सिँघ लक्ष्मण सिँघ दा सुत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुहञ्जणी करे रुत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखे

लाए काया बुत। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि शहिनशाह शाबाश। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगतां पूरी करे आस। सतिगुर सच्चा जाणीए, गुरमुख सचखण्ड दुआर दए निवास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो हरिजन सन्त सुहेले भेजे पाल सिँघ दे पास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गुरमुख पन्ध मुकाए पृथ्मी आकाश। सतिगुर सच्चा जाणीए, मानस जन्म कराए रहिरास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगतां बदले लोकमात आवे ख़ास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो बंस सरबंस होण ना देवे उदास। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लहिणा देणा मेटे शंकर कैलाश। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वखाए आपणा सच्चा घर बार, जिथ्थे इक्को पए रास।

२६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ गूढ़ा राम दे गृह सई कलां ज़िला जम्मू

सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आदि जुगादी एक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां देवे साची टेक। सतिगुर सच्चा
१२११ जाणीए, जो बुद्ध करे बिबेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुरती शब्दी नाल करे नेक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आत्म १२११
२४ परमात्म कराए हेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कूड़ी क्रिया करे खेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो दर्शन देवे नेतन नेत। २४
सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर अन्तष्करन खोल्हे भेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचा लए चेत। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी एकँकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, ब्रह्म ब्रह्माद जो वेखणहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, दो जहानां पावे सारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, लख चुरासी वेखे वेखणहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां करे प्यारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम जैकारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा अवतार पैग़म्बर गुर देण सहारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा नूर जोत उज्यारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शब्दी नाद दए धुन्कारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा आदि जुगादि पसारा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा अवतारा।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ रोशन लाल दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख सुल्तान। सतिगुर सच्चा जाणीए, वाली दो जहान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा सतिगुर शब्द बलवान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अवतारां देवे दान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो पैग़म्बरां कलमा दए महान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो गुरु गुरदेव करे परवान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वेखणहारा ज़िमीं असमान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो त्रैगुण पंज तत करे प्रधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लख चुरासी करे ध्यान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा इक्को नाम निधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा रूप अनूप महान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जुग जुग करे कल्याण। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कलयुग अन्त होवे प्रधान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कूड़ी क्रिया मेटे निशान। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजुवान।

✪ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कृष्णा देवी धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा जाणीए, सो पुरख निरञ्जण मीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरि पुरख निरञ्जण त्रैगुण अतीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, एकँकारा ठांडा सीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि निरञ्जण धुर दा मीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, अबिनाशी करता बदलणहारा रीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, श्री भगवान पतित पुनीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणा कीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, सतिगुर शब्द सदा सदा अनडीठा । सतिगुर सच्चा जाणीए, जो देवे नाम रस मीठा। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि अन्त दए ना पीठा। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सड़या नहीं गोबिन्द वाले अंगीठा। उह सतिगुर कलयुग अन्त पछाणीए, जो भगतां चाढ़े रंग मजीठा। आत्म परमात्म मेल मिलावे हाणीए, मिट्ठा करे कौड़ा रीठा। दो जहानां बण के शाह सुल्तानीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी धुर दा मीता। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द गुरु गुरदेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी निहकेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वसे निहचल धाम निहकेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जुग जुग भगतां करे सेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो देवे नाम रस मेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

आदि जुगादी अलख अभेव। सतिगुर सच्चा जाणीए, नूर नुराना नूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सदा सदा हज़ूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, सर्ब कला भरपूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी योद्धा सूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आसा मनसा करे पूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वसे कदे ना नेड़े दूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी मस्ती दए सरूर। सतिगुर सच्चा जाणीए, योद्धा सूरबीर बलवन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी अगम्मा कन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख भगवन्त । सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दी महिमा सदा अनन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच चाढ़े रंग बसन्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कलयुग अन्त सुहाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो जोती जाता वेस वटाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो शब्द नाद दृढ़ाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगत सुहेले मात उठाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जुग विछड़े मेल मिलाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, फड़ बाहों गोद टिकाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो घर घर होए सहाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लहिणा देणा पूरब झोली पाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कन्ढी घाटां वेख वखाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो ग़रीब निमाणयां गले लगाए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सतिजुग लेखा कलयुग पूर कराए। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के आपणे रंग रंगाए।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ खेमो देवी दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जाता आदि जुगादि। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वसणहारा ब्रह्म ब्रह्माद। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम सुणाए अनहद नाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, सति सच देवे साची दाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, कूड़ विकार मेटे विवाद। सतिगुर सच्चा जाणीए, तन वजूदां देवे साध। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेहरवान मोहण माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जो वसणहार बाहर सुन्न समाध। सतिगुर सच्चा जाणीए, धुर दा परवरदिगार। सतिगुर सच्चा जाणीए, नूर अलाही सांझा यार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सूफ़ी बणाए बरखुरदार। सतिगुर सच्चा जाणीए, रैहबर होवे विच संसार। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेल मिलाए आपणी धार। सतिगुर सच्चा जाणीए, कलमा दए अपर अपार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो कढे बाहर विच्चों डूँग्घी ग़ार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप सची सरकार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा आदि जुगादी धर्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भेव खुल्हाए ब्रह्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखा जाणे कांड कर्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोबनवन्ता इक जो भाग लगाए काया माटी चर्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन भगतां लेखे लाए जरम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी मालक धुर परम। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो प्रेम प्रीती बख्शे सिक। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो निरगुण धारा करे हित। सतिगुर सच्चा जाणीए, पारब्रह्म अबिनाशी अचित। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो खेले खेल नित नवित। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो भगतां करे सुहञ्जणी थित। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी पित। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए तन वजूदी रित।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ कुलवन्त सिंघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

१२१४ सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे सति सन्तोख। सतिगुर सच्चा जाणीए, बख्शे साची मोख। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेटे १२१४

२४ हरख़ सोग़। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम चुगाए धुर दी चोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेटे जन्म कर्म विजोग। सतिगुर २४

सच्चा जाणीए, आत्म परमात्म करे संजोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे दरस अमोघ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी रसीआ होवे आत्म भोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, परम पुरख बिधाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, आत्म परमात्म जोड़े नाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, अमृत बूँद प्याए स्वांता। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे दरस इक इकांता। सतिगुर सच्चा जाणीए, जन्म कर्म दा लेखा मेटे खाता। सतिगुर सच्चा जाणीए, अन्तिम अन्त पुछे वाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, देवणहारा बूँद स्वांता।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बिशन सिंघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा जाणीए, होवे सतिगुर धुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जाता बणे गुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द नाद सुणाए सुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, प्रकाश करे अन्धेर घुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो अन्तर आत्म नाल

पए तुर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक मन मनसा मेटे सुर। सतिगुर सच्चा जाणीए, देवे साची बुद्ध। सतिगुर सच्चा जाणीए, हरिजन निर्मल करे दुद्ध। सतिगुर सच्चा जाणीए, माण दुवाए उत्ते बसुध। सतिगुर सच्चा जाणीए, पंच विकारा मेटे युद्ध। सतिगुर सच्चा जाणीए, जिस दा दुआरा जाए सुझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे आथण उग। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी शक्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो वेखे आपणी धार भगत। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो सुहञ्जणा करे वक्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेखे लावे बूँद रक्त। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो पार कराए दीन दुनी विच्चों हरिजन साचे फ़कत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे बूँद रक्त।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जलन्धर सिँघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

१२१५ सतिगुर सच्चा आप प्रभ, इक इकल्ला एकँकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सचखण्ड निवासी परवरदिगार। सतिगुर १२१५

२४ सच्चा आप प्रभ, दो जहानां पावे सार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, धरनी धरत करे पसार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लख २४

चुरासी दए अधार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग लए अवतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आत्म परमात्म मेला मेले कन्त भतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शब्द अनाद दए धुन्कार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत बख्शे ठंडा ठार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगत सुहेले लए उभार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लोकमात बणे मीत मुरार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सच्चा सिक्दार।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ देवा सिँघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता कमलापाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, खेले खेल लोकमाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, देवणहारा धुर दी दाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां अमृत बख्शे बूँद स्वांती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दर्शन देवे इक इकांती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वेस वटाए बहु बिध भांती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा मेटे ज़ात पाती। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, निरगुण गहर गम्भीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए शरीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो सब नूं करे तामीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो अमृत रस बख्शे ठंडा सीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग देवणहारा सीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दुनी दी बदलणहारा ज़मीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खण्डा नाम वखाए इक्को शमशीर।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ पूरन सिँघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, पूरन पुरख अबिनाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शहिनशाह शाहो भूप शाबाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता सचखण्ड निवासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो खेले खेल पृथ्मी आकाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो मण्डल मण्डप पावे रासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो आत्म धार करे प्रकाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो भगतां मेटे जन्म जन्म उदासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो जुग जुग सेवक होवे दास दासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहारा बन्द खुलासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आदि जुगादि तोड़े बन्धना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अन्तर देवे सुख अनन्दना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नूर नुराना चाढ़े चन्दना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सच शब्द सुणाए छन्दना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, तन वजूद चाढ़े रंगणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मानस जन्म होण ना देवे भंगणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाहो भूप सूरा सरबंगणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जिस भगत दुआरे भगतां अन्दर लँघणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो नाता तोड़े विकार पंजणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नेत्र नाम निधाना पावे अंजणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दयाल सदा बख्शंदणा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, देवणहारा परमानंदना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो उठाए आपणे कंधना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खिलाए विच वरभण्डणा।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बचनो देवी दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बेअन्त अगम्म अथाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, निरगुण निरवैर नूर अलाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आदि जुगादी बेपरवाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग चौकड़ी बणे मलाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं देवे शब्द सलाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सिफ्तां विच कराए वाह वाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे थल अस्गाह। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां होए सहा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बिन रूप रंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाहो भूप सूरा सरबंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नाम निधाना वजाए मृदंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत धार वहाए अगम्मी गंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां अन्दर जाए लँघ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आत्म सेज सुहाए पलँघ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कटणहारा भुख नंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन लगाए आपणे अंग। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक
१२१७ नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता सूरा सरबंग। १२१७

२४ २४

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सवरनो देवी दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, चौकड़ी जुगा जुगन्तर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सति सति बणाए बणतर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, खेले खेल गगन गगनंतर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नाम निधान जणाए मन्त्र। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां वसे सदा निरंतर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्दा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दयाल सदा बख्शंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, गहर गवर गुणी गहिन्दा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वस्त अमोलक नाम देंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां रखे सदा ज़िंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर सदा रहिंदा। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मेहरवान महबूब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वसे अर्श अरूज। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हर घट दिसे मौजूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मंज़ल हक दस्से मकसूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग कूड़ी क्रिया करे नेस्तो नाबूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नौ खण्ड पृथमी दस्से इक हदूद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग मेटणहारा दूज। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सचखण्ड निवासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत नूर प्रकाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो अन्तर घट निवासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो लेखा जाणे शंकर कैलाशी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगतां अन्दरों मेटे उदासी। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आपे होए नाम स्वासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह शाहो शाबासी।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बलबीर सिँघ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नित नवित सदा बख्शंदू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, ठाकर स्वामी सागर सिन्धू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जीव जंत वेखे आपणी बिन्दू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो खेल खिलाए मुस्लिम हिन्दू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साहिब गुणी गहिन्दू। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नौजवाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाह सुल्ताना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मर्द मर्दाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वाली दो जहानां। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग पहरे बाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलयुग अन्त होए प्रधाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन वेखे विच जहाना । सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगत सुहेले बख्शे चरण ध्याना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आत्म जोती बणे कान्हा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बिन मंग्यां देवे दाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शमअ नूर जोत रुशनाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, खेले खेल सदा बिधनाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दुनी बदले ज़माना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे ज़मीं असमाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी करता करता पुरख भगवाना। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, चोटी चढ़ के वेखे सिख़र। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, पर्दा लाहे बजर कपाटी पत्थर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नेत्र विरोलण ना देवे अथर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भगतां सेज हंढाए सथर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा शब्द जणाए अकथी कथन। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बिन ततां तत शरीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शाह पीरां दा पीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दर दरवेशी फ़कीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नज़रीए बाहर दिसे बेनज़ीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, जन भगतां बदल देवे तकदीर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, एका एक बेपरवाहया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे थांउँ थांया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, रचन रचाए त्रैगुण माया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां होए आप सहाया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन गोदी लए उठाया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलयुग अन्तिम लए तराया। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहान शाहो भूप भूप सुल्तान, करनी दा करता इक अखवाया।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ वकील सिँघ दे गृह धंगाली कैंप ज़िला जम्मू ✪

सतिगुर सच्चा आप प्रभ, मालक ब्रह्मण्ड खण्ड त्रै भवण। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे लख चुरासी स्वास पवण। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत मेघ निराला बख्शे सवण। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जो वसे कूटे चारे चवन। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा देणा मेटे ज़ात वरन। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां वाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, फल वेखणहारा चुरासी लख डाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, त्रैगुण माया तोड़े जगत जंजाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भेव खुल्हाए पुरख अकाला आप हाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलयुग मेटे रैण अन्धेरी काली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जिस दा लहिणा देणा मशरक मग़रब जनूबण दिसे शमाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे रिहा भाली। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, निरगुण निराकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, वसणहार सच सच्चे दरबार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलयुग अन्तिम होवे ज़ाहर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलि कल्की लए अवतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, नाम शब्द करे जैकार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच वस्त देवे आप करतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कुदरत कादर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां देवे दरगाह आदर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां बणे पिदर मादर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरिजन करे जगत उजागर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, भाग लगाए काया गागर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाहो भूप दाता दानी वणज कराए धुर दा बण सौदागर। सतिगुर सच्चा जाणीए,

जिस दिता तन वजूद। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो असल नाल चुकाए सूद। सतिगुर सच्चा जाणीए, सुत्तयां जागदयां देवे सूझ। सतिगुर सच्चा जाणीए, पर्दा लाह के बुझाए आपणी बूझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेख मुकाए अन्तष्करन गूझ। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता अगम्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जनणी कुक्ख पए कदे ना जम्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, तन वजूद ना रखे काया माटी चम्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, लेखा जाणे आत्म धार ब्रह्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग प्रगटाए धुर दा धर्म। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दीन दुनी दा मेटणहारा भरम। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा जाणे साचा कर्म। सतिगुर सच्चा जाणीए, कारज करे सिध। सतिगुर सच्चा जाणीए, मेल मिलाए आपणी बिध। सतिगुर सच्चा जाणीए, घर देवे नौ निध। सतिगुर सच्चा जाणीए, तन मन अन्तर दए विध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन बणाए आपणे साचे रिंद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, बेअन्त बेऐब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां सतिगुर साहिब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अवतार पैग़म्बर गुर भेजे आपणे
१२२० नाइब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, आपणा खेले खेल अजाइब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जुग जुग पूरा करे वायद। सतिगुर १२२०
२४ सच्चा आप प्रभ, हरिजन रहिण ना देवे अलाहिद। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जन भगतां लख चुरासी कटे कैद। सतिगुर २४
सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा पूरा करे फ़राइज़। सतिगुर पूरा जाणीए, सतिगुर साचा शब्द। सतिगुर पूरा जाणीए, जो सब नूं देवे अदब। सतिगुर पूरा जाणीए, जो हर घट होवे जज़ब। सतिगुर पूरा जाणीए, जो झगड़ा मेटे दीन मज़्हब । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीन दुनी कलयुग अन्तिम करे तअजुब। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जगत विद्या बाहर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, शब्दी शब्द होवे ज़ाहर। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, दो जहानां पावे सार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जाता लए अवतार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, कलयुग मेटे अन्ध अँधयार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, हरि भगत सुहेले जावे तार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, गुरमुख गुरसिख बख्शे चरण प्यार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, अमृत रस देवे ठंडा ठार। सतिगुर सच्चा आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लाए पार किनार। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो धुर दा साचा सईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, आदि जुगादी पित मईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, नाम चढ़ाए साची नईया। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लेख मुकाए राय धर्म दी वहीआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो लोकमात

पकड़े बहीआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जो आया गोबिन्द बाद ढईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत नूर रुशनईया। सतिगुर सच्चा जाणीए, शब्द नाद बजईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, अमृत रस जाम पीवईआ। सतिगुर सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो सई विच आ के भगतां दे लेख उत्ते पाए सहीआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ बाबू राम दे गृह पिण्ड दीवान गढ़ ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख करतार, कुदरत दे कादर बेऐब नूर अलाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले पा सार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा नैण उठाईआ। मैनूं संदेशे दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, शब्द अनादी धुन कर शनवाईआ। मैं जुग चौकड़ी करदी रही इंतज़ार, सतिजुग त्रेता द्वापर राह तकाईआ। कलयुग अन्तिम दे अधार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तक लै धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। सत्त दीप हाहाकार, धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। जल
१२२१ थल महीअल कर रहे इज़हार, धुर दे माही तेरे ढोले गाईआ। अठसठ तीर्थ तक लै आप आपणी विच्चों धार, महीअल १२२१
२४ पर्दा आप उठाईआ। चारे कुण्ट हाहाकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच २४
दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा वेख लै कलयुग काती, कत्लगाह बणी लोकाईआ। नव सत्त अन्धेरा राती, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म दिसे ना कोए जमाती, तेरा संगी संग ना कोए बणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मारे काती, जगत अणयाला तीर चलाईआ। जिस सति धर्म दी विंन्ह दिती छाती, छत्रधारी बचया रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रेम दी दिसे कोए ना ललाटी, उजाला नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा पया लोकमाती, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह सच देणी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक लै कलयुग कूड़ कुड़यारा, सति सच धर्म नज़र कोए ना आईआ। जीव जंत होया दुख्यारा, साध सन्त देण दुहाईआ। जगत शास्त्रां रिहा ना कोए प्यारा, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। अक्खर अक्खर करे पुकारा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। तूं मेहरवान महबूब सच्चा सिक्दारा, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द दए इशारा, हुक्म हुक्म विच्चों जणाईआ। जो दीन दुनी वेखे सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा तक लै जगत जुग अख़ीरी, आख़र दयां दृढ़ाईआ। मेरे अन्तष्करन आई दिलगीरी, चिन्ता दुःख विच मेरी दुहाईआ। काया रही ना किसे दी पीरी, मुरीद मुर्शद संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट वझया शरअ ज़ंजीरी, संगल मज़्हब ना कोए तुड़ाईआ । अन्तष्करन बदल सके ना कोए ज़मीरी, मनसा मन ना कोए मिटाईआ। तूं मालक ख़ालक बेनज़ीरी, नज़रीआ मेरे उत्तों बदलाईआ। सति धर्म दी कर तामीरी, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार वस्त्र लाह दे चीरी, तन वजूद रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते वेख पाबन्दी, शरअ शरीअत ध्यान लगाईआ। मैं फस गई दीन मज़्हब दी विच फंदी, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मेरे नाल कीती संधी, कौल इकरार गए तुड़ाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाल होवे सूरा सरबंगी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्म विच बीसवीं चौधवीं सदी जावे लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। उह धरनीए तेरी कटे तंगी, तंगदस्त वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना जगत फ़रंगी, फ़ैसला आपणा हुक्म समझाईआ। नाता तकणा प्रकृती पंझी, पंचम तत खोज खुजाईआ। उहदा सतिगुर शब्द इक्को होणा दुलारा जंगी, दूलहा इक्को सोभा पाईआ। तेरी पुश्त पनाह होण ना देवे नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी अन्तर आशा करे ठण्डी, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ माया देवी दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू मैं तेरे अगे सवालीआ, निर्धन हो के मंग मंगाईआ। धर्म दी धार मेरी झोली होई खालीआ, सति वस्त रहिण कोए ना पाईआ। मेरे मस्तक चढ़ीआं रहीआं ना लालीआं, प्रेम रंग ना कोए रंगाईआ। तूं मालक ख़ालक धुर दा वालीआ, वारस हो के वेखणा चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड मेरी होई रैण अन्धेरी कालीआ, कलयुग कूड़ अन्धेरा छाईआ। पत्त रिहा ना किसे डाली आ, फल फुल्ल नज़र कोए ना आईआ। मैं जुग जुग तेरीआं घालां घालीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम कर रखवालीआ, रक्षक हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं जुगा जुगन्तर मंगदी, झोली तेरे अगे डाहीआ। मेरे उत्ते सदी सदीवी वेख लै लँघदी, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दी तैयारी होई जंग दी, जंगजू दिसे लोकाईआ।

नौ खण्ड पृथ्मी घड़ी आउणी तंग दी, तंगदस्त दिसे तेरी ख़लक ख़ुदाईआ। वड्याई रहिणी नहीं यमुना सरस्वती गोदावरी गंग दी, अठसठ तीर्थ रोवण मारन धाईआ। अन्त निशानी मिटणी तारा चन्द दी, उम्मत नबी रसूल संग मुहम्मद दए गवाहीआ। इक्को आवाज़ आउणी तूं मेरा मैं तेरा छन्द दी, दूसर सरवण सुणन किछ ना पाईआ। मेरे उत्ते कला मेटणी अन्धेरे अन्ध दी, अन्तर निरंतर आपणी कर रुशनाईआ। दीन दुनी दी वासना मन दी रहे ना गंद दी, बुध बिबेक देणी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दुबिदा, नफ़रत रहिण कोए ना पाईआ। इक्को मार्ग आपणा दस्स दे सिध्धा, दीन मज़्ब दी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे कोल आदि जुगादी शब्द गुरु दी बिधा, बिधना दा लेखा आपणे चरण टिकाईआ। तेरे प्यार नाल हर हिरदा जाए विध्धा, तन मन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे गृह वजे वधाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा सति धर्म दा वजे डंका, डौरु तेरा नाम ख़ुदाईआ। मेरा इक्को सुहा दे बंका, बंक दुआरा तेरा नज़री आईआ। इक्को माण बख्श दे राउ रंका, अमीर ग़रीब दा डेरा देणा ढाहीआ । कुछ लेखा लहिणा याद कर
१२२३ लै भगत सुहेले जनका, की कहि के गया दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्तिम खेल करे विच पुरी घनका, घनकपुर १२२३
२४ वासी आपणी कल वरताईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मेरा मेट दे शंका, शंकर ब्रह्मा विष्न नाल मिलाईआ। २४
तेरा रूप अनूप मैं तकदी रही वार अनका, अनक कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सतिजुग मेरे उत्ते बणा दे बणता, घड़न भन्नणहार आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बिना अक्खरां जगत जहान बण पंडता, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना मूल मन का, मनसा कूड़ देणी मिटाईआ। भण्डारा दे दे नाम सच्चे धन का, माया ममता ना होए हल्काईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे आपणे भगत जन का, धुर दी बण जणेंदी माईआ। ओहला रहे ना पारब्रह्म ब्रह्म का, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। इक्को सहारा होवे तेरे चरण का, चरणोदक जाम प्याईआ। लेखा रहे ना वरन बरन का, दीन मज़्ब ना वंड वंडाईआ। सब दा मार्ग होवे तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न का, सोहँ शब्द सच पढ़ाईआ। मार्ग होवे तेरी मंज़ल चढ़न का, दरगाह साची सोभा पाईआ। प्यार होवे तेरे दर्शन करन का, निज नेत्र लोचन नैण देणी रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक भन्नण घड़न का, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। धरनी कहे मेरा ग़म मुका दे डरन का, भय भउ चुकाईआ। मेरा प्यार बणा दे आपणा पल्लू फड़न का, बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। झगड़ा मिटा दे चोटी चढ़न का, चेतन आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मालक करनी करन का, करता पुरख इक अख्वाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश सिँघ दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे मेरे मालक धुर दे आदि, पुरख पुरखोतम तेरी सरनाईआ। तेरा खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरी बेपरवाहीआ। मैं तेरे हुक्म दी सुणदी रही नाद, ढोले धुरदरगाहीआ। दीन दुनी दे तकदी रही फ़साद, झगड़े अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वेख वखाईआ। मेरे कोल सब दी गिणती अंकड़यां वाली तादाद, हिन्दसिआं विच दयां जणाईआ। नाले झुक झुक करां आदाब, सीस सीस निवाईआ। मेरे सब तों आहला जनाब, आलीज़ाह तेरी वड्याईआ। मेरा अन्तिम वेख मज़ाज, तबीअत अन्दरों फोल फुलाईआ। धर्म दा रिहा कोए ना राज, हकूमत सच ना कोए कराईआ। धर्म दा रिहा ना कोए समाज, सच विच ना कोए समाईआ। मेरी बेनन्ती सुण लै आज, आजज़ हो के दयां दृढ़ाईआ। मेरी अन्त कन्त भगवन्त रख लै लाज,
१२२४ सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं शहिनशाह गुरु महाराज, मेहरवान धुरदरगाहीआ। मैनूं दे ना देवीं जवाब, मेहरवान हो के १२२४
२४ होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी मनसा पूर कराईआ। २४
धरनी कहे प्रभू मेरी सच दी पूरी कर दे मनसा, मानव आपणे रंग रंगाईआ। दीन मज़ूब इक्को बणा दे बंसा, बंसाँवली इक्को इक समझाईआ। साचे रूप प्रगटा दे हँसा, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। मनुआ मन मार दे कंसा, धुर दे काहन दया कमाईआ। तेरा खेल अनेक अनक कलधारी सहँसा, सहँसर मुख बाशक ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कर दे दर पवित, पतित पुनीत बणाईआ। हर हिरदे वसणा चित, ठगौरी मन रहे ना राईआ। जन भगतां दर्शन देणा नित, निज नेत्र कर रुशनाईआ। तेरा खेल सदा नवित, निरगुण वेखणा चाँईं चाँईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा पित, पति परमेश्वर इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम करना हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेरी सुहञ्जणी करनी थित, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। तेरे चरणां जावां लिट, लिटां खोल्ह के दयां दुहाईआ। मेरे उत्तों कूड़ा लेखा मेट दे पत्थर इट्ट, पाहनां सीस ना कोए निवाईआ। तेरे ग्रन्थ शास्त्र टकयां विच जाण ना विक, कीमत जगत कोए ना पाईआ। मेरा ठंडा कर दे सीना शांत करदे अन्दरों हिक, हिकमत आपणी नाल कराईआ। तूं मालक ख़ालक सब दा इक, एकँकार तेरी सरनाईआ। तेरे चरण कवल धवल हो के

जावां टिक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी आसा मनसा ख़ाहिश सब तों वड्डी सब तों निक, निक्की निकम्मी हो के तेरे चरण टिकाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ देवी सिँघ दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा धर्म ना रिहा सुहाग, सति नज़र कोए ना आईआ। मेरे कलयुग अन्त निखुट्टे भाग, भगवन तेरे रंग ना कोए समाईआ। निज नेत्र लोचन नैण खुल्ले किसे ना जाग, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ । अन्तष्करन ना उपजे वैराग, वैरी पंज बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। माया ममता करे ना कोए त्याग, त्रैगुण अतीते तेरे रंग ना कोए समाईआ। सच जोत जगे ना कोए चराग़, बिन तेल बाती ना कोए रुशनाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई काग, काग वांग रहे कुरलाईआ। सच सरनाई एकँकारे तेरी जाए कोए ना लाग, लग मातर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तिम वेख लै दुखड़ा, दुख्यारन हो के दयां जणाईआ। उत्तम रिहा किसे ना मुखड़ा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। जगत जिज्ञासू उलटा दिसे रुखड़ा, दस दस मास पन्ध ना कोए मुकाईआ। माया ममता होया भुखड़ा, जगत तृष्ना ना कोए मिटाईआ। मेरे अन्दर प्यार रिहा ना किसे मनमुखड़ा, मानव संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दुःख दलिद्र कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों कढ वट, वटणा आपणा नाम छुहाईआ। शरअ शरीअत मेट दे फट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। तूं वसणहारा घट घट, घट घट रिहा समाईआ। मैं तेरे सथर वास्ता रही घत, निव निव लागां पाईआ। दीन दुनी दी बदल दे मति, बुध बिबेक आप कराईआ। सति सच रंग रंगा दे पंज तत, ततव आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू तुध बिन मेरा दूजा नाही कोए, सगला संगी नज़र कोए ना आईआ। दुरमति मैल कोए ना धोए, पापां करे ना कोए सफ़ाईआ। मैं कलयुग अन्तिम रही रोए, बिन नैणां नीर वहाईआ। मेंढी सीस रही खोहे, सुहागी रूप ना कोए बणाईआ। मैं वास्ता पावां हथ्थ जोड़ के दोए, दो जहानां मालक होणा सहाईआ। सच वस्त नाम मैनूं दे दे ढोए, अगम्म अथाह मेरी झोली आप भराईआ। मेरे उत्ते सति धर्म दी होए लोए, लोयण भगतां निज नेत्र

अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन भगत सुहेले उठा सोए, सुरती विच अकाल मूर्त सोया रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह दरवाज़े अन्दर वड़दयां पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

मग्घर कहे मेरा प्रविष्टा तीस, तीस बतीसा देण गवाहीआ। खुशीआ ढोले गावण राग छतीस, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रहे सुणाईआ। जिस दा लहिणा बीस इकीस, इक इकल्ला इक अख्वाईआ। जिस दे छत्र झुल्लणा सीस, सो पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को नाम कलमा होणा हदीस, हर हिरदे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। मग्घर कहे मेरा तीसवां प्रविष्टा, प्रीशद राजा ध्यान लगाईआ। निगाह मारे राम धार वशिष्टा, विषयां तों बाहर खोज खुजाईआ। किस बिध दीन दुनी दा इक्को होणा इष्टा, इष्ट देव इक मनाईआ। जन भगतां पूरा करना निस्चा, निहचल धाम दए वड्याईआ। लहिणा देणा मुकाउणा जिस जिस दा, जिस्म ज़मीर वेख वखाईआ। जेहड़ा पुरख अकाला जग नेत्र नहीं दिसदा, सो लोचन नैण निज करे रुशनाईआ। जिस भेव चुकाउणा कलयुग कूड़ी क्रिया विस दा, विश्व दा पर्दा आप उठाईआ। उस दा अमृत सोमा इक्को रिसदा, रिसक रिसक आपणा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ । मग्घर तीस कहे मेरा महीना जांदा मुकदा, मुकम्मल दयां जणाईआ। मैं बिना प्रभू तों आदि जुगादि किसे ना झुकदा, सीस अवर ना किसे निवाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग वणजारा बणया रिहा इक्को तुक दा, सोहँ ढोला गावां चाँईं चाँईंआ। जिस दा शब्द अगम्मा बब्बर हो के बुकदा, दो जहान करे शनवाईआ। उस दा भेव नहीं हुण लुक दा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग पैंडा जांदा मुकदा, भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ कुड़यारा बूटा जांदा सुकदा, हरा सिंच ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला आपणी रुत दा, रुतड़ी आपणे हुक्म विच महकाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे मेरे आशा आई अन्तरी, अन्तष्करन ध्यान लगाईआ। मैं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी प्रभ दे चरणां विच्चों

१२२७
२४

चुराई जंतरी, जिस दा हरफ़ हरूफ़ समझ कोए ना आईआ। झट मैनूं सतिगुर शब्द पुछदा धुर दा मन्त्री, हुक्म हुक्म विच्चों दृढ़ाईआ। नारदा इहनूं हथ्थ ना ला एहदे विच जुगां जुगां दी बसन्तरी, जिस नूं अग्नी कहि के सारे गाईआ। किते लै ना जावीं गगन गगनंतरी, मण्डल मण्डपां नाल रखाईआ। इस दा भेव पा सक्या नहीं धनवन्तरी, समझ किछ ना आईआ। एह बड़ी गुण निधान गुणवन्तरी, गुण कहिण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं पुछिआ सतिगुर शब्द मंत्राले, मंतव मैनूं दे समझाईआ। एह रखणी केहड़े विद्याले, कवण विद्यार्थीआं देणी पढ़ाईआ। केहड़े दस्सणे हरफ़ हरूफ़ सुखाले, अक्खरां नाल मिलाईआ। केहड़े मन्दिर सुहाउणी धर्मसाले, गुरुदुआर किस टिकाईआ। केहड़ा सिख्या एहदी सिखाले, करे सच पढ़ाईआ। झट सतिगुर शब्द दिता अहिवाले, अहिल नाल जणाईआ। नारदा एहदे हरफ़ नहीं नीले काले, शाही कलम ना कोए लिखाईआ। एह जुग जुग घालणा घाले, नित नित सेव कमाईआ। जिस नूं परम पुरख परमात्म आपणे चरणां हेठां डाले, दूसर जगह ना कोए टिकाईआ। इस दे हुक्म विच पिच्छे जुग बीत गए बाहले, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कर गए खेल निराले, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इस दी सार आपे पा लए, पावणहार इक अख्वाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

नारद कहे सतिगुर शब्द एह जंतरी काहदी, मैनूं दे समझाईआ। सतिगुर शब्द किहा एहदे विच वड्याई वाह वाह दी, वाहवा कहि के खुशी बणाईआ। एह वणजारन जुग चौकड़ी राह दी, रस्ता वेखे चाँईं चाँईंआ। एह खेवट थल अस्गाह दी, महीअल खोज खुजाईआ। एह ख़बर संदेशे देंदी की वड्याई होणी प्रभू दे नाँ दी, की नाम निधान दए समझाईआ। एह सुरती वेखे दीन दुनी दी धरनी माँ दी, ममता विच खोज खुजाईआ। एह उस वेले ख़बर दस्सदी जिस वेले दीन दुनी दी दृष्टी हुन्दी काँ दी, पशू पंछीआं खल्ल लुहाईआ। एह ख़बर देवे सचखण्ड सच्चे गराँ दी, दरगाह साची भेव खुल्हाईआ। एहदी मिसल आपणी सलाह दी, मशवरा संग ना किसे रखाईआ। पर इस दी खेल आपणे दाअ दी, जुग चौकड़ी आपणा दाउ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे जंतरीए तूं आपणा खोल्ह दे भेव, कुछ मैनूं दे समझाईआ। मैं वी कर लां सेव, सेवक हो के सेव कमाईआ।

जंतरी कहे नारदा मेरा मालक जो वसे धाम निहकेव, निहचल आपणा आसण लाईआ। जिस दी ना रसना ना जिह्वा, बत्ती दन्द ना सिफ्त सलाहीआ। उह ठाकर मेरा जो सब दा देवी देव, देवा इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाईआ।

३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू

जंतरी कहे नारदा मेरा लेखा नहीं कोई वाधू, विद्या वाला समझ कोए ना पाईआ। भेव मेरा पा सके कोई ना साधू, सुरती विच ना कोए लिआईआ। मेरा लहिणा देणा बोध अगाधू, बुद्धी तों परे मेरी पढ़ाईआ। मैनूं नारदा उह समझे जेहड़ा मेरे परम पुरख दी सरनी लागू, दूजा भेव कोए ना पाईआ। वेख मैं कोई वसण वाली नहीं पंजाबू, पंचम गंढु ना कोए पुआईआ। मैं कीता नहीं किसे नूं कदे अदाबू, सजदयां विच सीस ना कोए निवाईआ। मैनूं कर सके ना कोए काबू, बिन
१२२८ कामल मुर्शद मेरा संग ना कोए रखाईआ। मेरा सतिगुर शब्द आदि जुगादी इक्को आगू, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती १२२८
२४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। नारद कहे मैं झट पत्री २४
खोल्ही, बिन वरकयां दिता उलटाईआ। अन्दरों अगम्मी सुणी बोली, अनबोलत दिती जणाईआ। मैं पंडता उस प्रभू दी गोली, जिस दी गोलक वेखण कोए ना पाईआ। मैनूं जगत विच ना कोई रोलीं, रौला पा के दयां सुणाईआ। मैं इक्को दे चरणां घोल घोली, आपणा आप घोल घुमाईआ। इक्को दी प्रीत विच मौली, जो मेरा मौला धुर दा माहीआ। मेरा लहिणा देणा अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाल कौली, वायदे सब दे वेख वखाईआ। मेरा उस वेले वक्त सुहञ्जणा हुन्दा जिस वेले भार चुक सके ना धौली, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे मैं पुराणा पंडत मेरी बोदी वेख लै हिलदी, बिन पवण हुलारे खाईआ। नी तूं मैनूं आशा दस्सदे आपणे दिल दी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। किस बिध बिन अक्खरां वालीए मिलदी, मिलणी कवण कराईआ। जंतरी किहा नारदा मेरी खेल अगम्मे छिन दी, जिस दा वक्त ना कोए समझाईआ। मेरा भेद ना पुछ कमलया कोझया मूर्खा एह सृष्टी दा अन्तिम लेखा ते मेरी लेखणी दिन तिन्न दी, तिन्नां दिनां विच त्रिलोकी रहिण कोए ना पाईआ। ज़रा अक्ख तक मेरी निशानी वेख लै चिन्ह्न दी, चिन्ता अन्दर ना कोए रखाईआ। मेरी खेल इंन बिंन दी, वृंदावन दे

काहन मेरी समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हुक्म विच मैं दो जहानां मिणदी, मिणती आपणे विच छुपाईआ।

✪ ३० मग्घर शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ, सन्तोख सिँघ, सोहण सिँघ, जगदीश सिँघ दे नवित पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ✪

जंतरी कहे मेरा जगत नहीं विधान, कायदा कानून नज़र कोए ना आईआ। मेरा लेखा दो जहान, ज़मीं असमान आपणे विच बन्द कराईआ। मेरे विच छुप के बैठे नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दे राम काहन, पैग़म्बर ईमान नाल आपणा डेरा लाईआ। गुरु गुरदेवां अन्दर छुपा के सतिनाम, सति सति आपणा रंग रंगाईआ। मेरी कर सके ना कोई पहचान, बेपहचान हो के प्रभ चरणां हेठा आसण लाईआ। मैं कदे नहीं विकी विष्न ब्रह्मा शिव वाली दुकान, हट्टो हट्ट ना कोए भुआईआ। मेरी सिख्या सुणी नहीं किसे ने कान, कायनात ना कोए जणाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल श्री भगवान, भगवन आपणे रंग रंगाईआ।
१२२६ मेरे विच इक्को हुक्म जो सदा सदा बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १२२६
२४ करे खेल साचा हरि, हरि साचा धुरदरगाहीआ। नारद कहे मैं वी पंडत पुराणा आदीआ, आदि पुरख दिती वड्याईआ। २४
मैं वी जोत दी धार शब्दी बोध अगाधीआ, अक्खरां वाली करां ना कोए पढ़ाईआ। जुग जुग वेखणा मेरी बण गई आदीआ, आदत प्रभ ने दिती बणाईआ। मेरी मनसा अनसा सादीआ, सिधा साधा नज़री आईआ। मेरे कोल शर्म हया काहदीआ, पर्दा दे उठाईआ। मेरा वी मालक इक्को अनादीआ, अनाद अनादी जो अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। जंतरी कहे नारदा पहलों मेरे प्रभ दे चरण चुम्म, बिन रसना रस चखाईआ। फिर चारों कुण्ट घुम्म, निव निव लागा पाईआ । फेर उस दे वेख गुण, जो अवगुण दए मिटाईआ। फेर सतिगुर शब्द दा हुक्म सुण, जो सुनेहड़े रिहा घलाईआ । मैं वी ओसे दी जाणां धुन, जो धुनी नाद वजाईआ। जो मालक ख़ालक कुंन, कुल मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। नारद कहे धरनीए मैं धुर दी जंतरी दा वेख्या लग्न, लग मातर डेरा ढाहीआ। मेरा वेख लै नंगा हो गया बदन, ओढण तन ना कोए रखाईआ। मैं फिरे मण्डल गगन, भज्जया वाहो दाहीआ। की खेल हुक्म वरतणा मूर्त मदन, मध सूधन की दृढ़ाईआ। नौ खण्ड वेख लै आपणी हद्दन, हदूदां ध्यान लगाईआ। बिन अक्खरां तों जो जंतरालया

तक्कया उह साफ़ कहे तेरे उत्ते लग्गण वाली अग्न, अग्नी सके ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी हाए उफ़ कर लै ल्या हावा, हौकयां विच जणाईआ। वे नारदा पंडता मैं किधर नूं जावां, कवण कूटे आपणा पन्ध बणाईआ। झट नारद किहा धरनीए नी मैं वी अजे निथावां, घर नज़र कोए ना आईआ। आ दोवें उच्चीआं कढ्ढीए बाहवां, वास्ता प्रभू दे अगे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब बेपरवाहीआ। झट जंतरी कहे नारदा तूं क्यों मेरीआं करें बातां, बातन भेव ना कोई समझाईआ। मेरे विच पहली सतर वेख लै जिस विच हिस्सा वन्डया ज़ातां पातां, आख़र दीनां मज़्बां वंड वंडाईआ। फेर अगला वेख लै खाता, ख़तरे विच ख़लक खुदाईआ। दूजी लाईन विच धरनी धरत धवल दा इक्को अहाता, चार दीवारी नज़र कोए ना आईआ। ना कोई छप्पर छन्न ना कोई रहिणी छाता, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। फेर वेख लै सब दा इक्को होणा दाता, दाता दानी इक अख्वाईआ। जिस लहिणा देणा लेखा पूरा करना लोकमाता, लोकमात आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां देवे नाम सौगाता, वस्त सच सच झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जंतरी कहे नारदा मैं तैनूं आई समझाउण, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। मेरा भेव पा ना सके पाणी पौण, उनन्जा पवण रही कुरलाईआ। मेरे विच लेखा वेख लै लिख्या राम रौण, बिन अक्खरां अक्खर लेख बणाईआ। काहन कृष्ण लहिणा लिख्या जो तैनूं आई सुणाउण, संदेशा देवां चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्त जो सब दा लेखा आए मुकाउण, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले आए मिलाउण, विछड़यां मेल मिलाईआ। इक्को नाम निधान आए समझाउण, सिख्या सच समझाईआ। आपणा आप हिरदे आए वसाउण, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। दीन दुनी विच सुते आए उठाउण, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। पत्री कहे नारदा तूं आपणे सिर ते चुक लै चार जुग दी बीड़, अक्खरां वाले ग्रन्थ उठाईआ। नारद किहा मेरी ते पीड़ करदी हड्डी रीड़, बल नज़र कोए ना आईआ। मैं मातलोक विच जाणा राह विच बड़ी भीड़, देवत सुर करोड़ तेतीसा बैठे झुरमट पाईआ। मैं छेती छेती पुजणा पन्ध मुकाउणा पिण्ड सीड़, सीढ़ी पौड़ी डण्डा चढ़न कोए ना पाईआ। जिथ्थे लहिणा देणा मुकदा हस्त कीड़, कीट कीटां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं भज्जा नठा आया मेरी बोदी नूं लग्गी हवा, ठण्डी ठार हो के मैनूं रही सुणाईआ। प्रभू दे अगे कुछ मेरी कर दुआ, दोए जोड़

१२३० २४

१२३१
२४

वास्ता पाईआ। किस बिध जुग बदलणा नवां, नव नव चार दा पन्ध मुकाईआ। मैं ख़ुशीआं दे विच कहवां, कहि कहि रही सुणाईआ। नारद कहे बोदी हिला के पहलां उस दी चरणी ढवां, ढहि के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मैं फेर पुछां प्रभू जिन्हां भगतां दे कोलों रोटी खाधी सी जवां, कच्चे गंढिआं भोग लुवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। बोदी कहे नारदा सुण मेरी अगम्मी गल्ल, अनोखी दयां जणाईआ। परम पुरख सब दे नाल खेड रिहा छल, अछल छल धारी हो के आपणा छल कमाईआ। मानव ज़ाती होया भगतां वल, वलवले सब दे वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए विच्चों कलयुग कल, कलमा नाम आपणा इक पढ़ाईआ। जिस लहिणा देणा लेखा पूरा करना राजे बलि, बावन दी धार दए गवाहीआ। जिन्हां दा अशवमेध यग दी धार लंगर जाणा चल, चलदी फिरदी वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जुग चौकड़ी दा पूरब मिलणा फल, अगे फलीभूत दए बणाईआ। जन्म मरन दा मेटणा सल्ल, आवण जावण रहे ना राईआ। बोदी कहे नारदा अन्त भगवन्त भगवन दी धार विच बृद्ध बाल जवान सारे जाणे रल, वखरा कहिण कोए ना पाईआ। एथे हुण निमस्कार कर ते आपां जाईए चल, भज्जीए वाहो दाहीआ। जम्मू संगत नूं दस्स जा झनां दे नौवां ग्लासां दा भुल नहीं जाणा जल, ल्याउणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेला भगतां होया आप वल, वलवले सब दे वेख वखाईआ।

✪ पहली पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

पोह कहे मैं महीना दसवां, दस दस मास मात गर्भ रहिण वाल्यो सब नूं दयां जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरे प्रभ दीआं बदलदीआं रसमां, असूल माकूल आपणा आप प्रगटाईआ। जिस दे प्यार विच अवतार पैग़म्बरां गुरुआं खाधीआं कसमां, सौगंदीआं विच जणाईआ। जिस झगड़ा मेटणा जगत ज़मीर जिस्मां, तन वजूदां वेख वखाईआ। जिस दा अक्ल बुद्धी तों बाहर होणा करिशमां, विद्या विच विद्त समझ किछ ना आईआ । जिस दा लेख निराला सतिगुर शब्द अगम्मे लिखणा, लेख दृढ़ाए धुरदरगाहीआ। जिस दीन दुनी जणाई मिथना, मिथ्या दस्से खलक ख़ुदाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला बण के धुर दा पितना, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। जिस कलयुग अन्त नजिठ्णा, मालक ख़ालक आपणे हथ्थ रखे

वड्याईआ। सतिजुग सति धर्म दा रस देखे मिठणा, अनरस आप चखाईआ। जिस दे प्यार विच दो जहान विकणा, दीन दुनी कीमत रहे ना राईआ। जो आत्म परमात्म करे हितना, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस दा खेल नित नवितना, जुग जुग वेस वटाईआ। सो वेखणहारा मेरी थितना, पहला प्रविष्टा ध्यान लगाईआ। मैं उस दे चरणां विच लिटना, आप आपणा दयां मिटाईआ। जिस झगड़ा मेटणा पत्थर इट्टणा, पाहना सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक हो आईआ। पोह कहे मेरा प्रविष्टा आया, दस्म धार मिले वड्याईआ। मैं इक्को नूर नुराना वेख वखाया, जोती जाता धुरदरगाहीआ । जो नाम निधान श्री भगवान हो के रिहा सुणाया, अनहद नादी नाद जणाईआ। अमृत अंमिओं रस रिहा जाम प्याया, बिन रसना रस चखाईआ। जो दीपक जोती जोत रिहा जगाया, बिन तेल बाती डगमगाईआ। ओह पतिपरमेश्वर मेरा वक्त दए सुहाया, सोहणी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पोह कहे मेरा लोकमात आया वक्त, व्यक्तिआं दयां जणाईआ। मेरे साहिब दी वेखो शक्त, शक्तीशाली इक अख्वाईआ। जो माण देवे हरिजन सुहेले भगत, भगवन

१२३२ आपणे रंग रंगाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां होए सहाईआ। लेखे लाए बेनन्ती अर्ज़, आरज़ू सब दी फोल फुलाईआ। १२३२

२४ कलयुग बदलणा जिस नूं ग़रज़, गर्ज के आपणा हुक्म दए वरताईआ। दीन दुनी दी पुठ्ठी सिधी वेखे नरद, नर नरायण २४

हो के फेरा पाईआ। नवखण्ड पृथ्मी मेटे अन्धेरा गर्द, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। पोह कहे बेशक मेरा महीना दिसदा सरद, ठंडक जगत ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। पोह कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, निरवैर भेव खुल्हाईआ। जिस दा दीपक इक्को जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ। सब दा बणे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। मैं वी ओसे कोलों मंगणा, भगतो सब नूं दयां जणाईआ। जिस तुहाडे तन वजूद चाढ़नी रंगणा, दुरमति मैल धुआईआ। नाम निधाना पावे कंगणा, जगत धात वंड ना कोए वंडाईआ। मालक बणके मूर्त गोपाल मदना, मधसूधन हो के वेख वखाईआ। जिस इक्को रंग रंगाया आहला अदना, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा इक्को डंका राउ रंकां अन्दर वजणा, नव सत्त करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे मैं आया दीन दुनी दी विच धार, धरनी धरत धौल फेरा पाईआ। सो पुरख निरञ्जण मैनूं दए अधार, बिन सीस हथ्थ टिकाईआ। हरि पुरख निरञ्जण मेरी पावे सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। एकँकारा दए अधार, उदर दा

१२३३
२४

लेखा रहे ना राईआ। आदि निरञ्जण जोत करे उज्यार, बिन तेल बाती डगमगाईआ। अबिनाशी करता करे ख़बरदार, धुर संदेशा इक जणाईआ। श्री भगवान चरण धूड़ी बख्शे छार, टिक्के सति नाम लगाईआ। पारब्रह्म वेखे वेखणहार, बिन नैणां नैण उठाईआ। सतिगुर शब्द मेरा करे शृंगार, सोहणी वंड वंडाईआ। मैं हो के ख़बरदार, होका देवां थांउँ थाँईंआ। दुनियादारो जगत जिज्ञासूओ नींदर ग़फ्लत विच्चों होवो बाहर, आलस रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता होया ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर हो के डगमगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दे सब कुछ अख्त्यार, मांगत हो के झोली कदे ना डाहीआ। ओह लेखा लहिणा देणा जाणे सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची वेख वखाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना बिन तेल बाती आपणा दीप करे उज्यार, दो जहानां डगमगाईआ। उस नूं करनी सर्ब ने निमस्कार, डण्डावत बन्दना सईयदयां विच सीस झुकाईआ। जिस नूं सब ने मन्नया कलि कल्की अवतार, अमाम अमामा आपणा खेल वखाईआ। जो वेखे विगसे वेखणहार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। पोह कहे मेरा पहला दिवस दिहाढ़ा, दयोहड़ी सीस निवाईआ। मैं वेखां पुरख अकाल अगम्मी लाड़ा, जो लख चुरासी आत्म धार रिहा परनाईआ। जिस दा पुरीआं लोआ ब्रह्मण्डां खण्डां बाहर अखाड़ा, गगन गगनंतर वेखण कोए ना पाईआ। ओह अन्त कन्त भगवन्त जन भगतां रंग चाढ़े गाड़ा, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। धरनी धरत धवल धौल वेखे अखाड़ा, नव सत्त ब्रह्म मति फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक अख्वाईआ। पोह कहे मेरा दिवस सुहावणा लोकमात, मता गुर अवतार पैग़म्बरां नाल पकाईआ। जो चार जुग दे के गए दात, दानी हो के जगत वरताईआ। जिस दा हुक्म संदेशा देंदे गए नाल कलम दुआत, कागद शाही जोड़ जुड़ाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम प्रगट होया आप, आप आपणा वेस वटाईआ। जिस दा तूं मेरा मैं तेरा जाप, जग जीवण दाता हो के दए वड्याईआ। त्रैगुण मेटे तीनो ताप, अग्नी तत दए गुआईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। जन भगतां चरण प्रीती जोड़े नात, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पोह कहे मेरा दिवस सुहावणा पहला, पहली वार जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सचखण्ड वसे अगम्मे महला, महल अटल वेखण कोए ना पाईआ। जो आदि जुगादि कदे ना होवे अनगहिला, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। ओह दो जहानां श्री भगवाना हो के करे सैला, सैरगाह बणाए ख़लक खुदाईआ। जो भगतां अन्दर वेखे पहलां, चहिल पहल आपणा

रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट नारद आ गया कहे सुण लै पोह प्यारया, मित्रा तैनूं दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी तूं फिरया विच संसारया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जया वाहो दाहीआ। आपणा लहिणा देणा तक पैग़म्बर गुरु अवतारया, तन वजूदां संग बणाईआ। जिन्हां खेलया खेल विच संसारया, संसारी भण्डारी सँघारी संग रखाईआ। हुण कलयुग अन्तिम उस प्रभू दी वारया, जो वारस होवे धुर दा माहीआ। जिस कूड़ी क्रिया मेटणा अन्ध अंध्यारया, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। लहिणा देणा सब दा कर्ज दए उतारया, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। जिस लेखा इक दो तिन्न चार पंज दी धार विचारया, छे सत्त अठ्ठ नौ दस रहिण कोए ना पाईआ। दस दस बीस दा भेव निआरया, बीस बीसा आप समझाईआ। इक इकीसा एकँकारया, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जो तेरा मेटे अन्ध अंध्यारया, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना चन्द सितारया, सतह बुलंदी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा इक उठाईआ। नारद कहे सुण पोह प्यारे ठंडया, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तेरा लेखा धरनी धरत धवल तों बाहर टंगया, ज़मीं असमानां वेखण कोए ना पाईआ। तूं मैथों पुछ नाले मैनूं कहि पुराणे पंडया, पंडता मैनूं दे दृढ़ाईआ। मैं फेर भेव खोल्हां कोटन कोटि कोट ब्रहमंडया, ब्रह्मण्डां खण्डां पर्दा दयां उठाईआ। नाल लेखा दस्सां की लहिणा गोबिन्द वाले खंडया, खड़गां धार की चतुराईआ। किस बिध हुक्म वरतणा सत रंग डंडया, डण्डावत सब दी दयां बदलाईआ। लेखा मुकावे जेरज अंडया, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। पोह कहे सुण नारद पांधे, बोदी वाल्या तैनूं दयां जणाईआ। मेरे उत्ते एहसान बड़े ने धरती माँ दे, ममता विच वेखे नैण उठाईआ। क्यों कलयुग जीव अन्दरों रूप बण गए काँ दे, काग वांग कुरलाईआ। वणजारे रहे ना प्रभू दे नाँ दे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सुहागी चूड़े लाल नहीं रहे बांह दे, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। जगत वणजारे बण गए विच हां दे, सच झूठ समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे पोह जी, औह वेख लओ नूर अलाही रब्बी, महिबान बीदो कहि के सीस निवाईआ। जिस दा मेल होया सबब्बी, समझ विच ना कोए समझाईआ। जिस दे हुक्म विच बीतदी जांदी वीहवीं चौधवीं सदी, सदमे विच ख़लक खुदाईआ। उह वेखणहारा जगत विकार दी नदी, वहिणां खोज खुजाईआ। बेशक धरनी उत्ते आउँदा कदी कदी, कदीम दा मालक नूर अलाहीआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा नूर अलाही रब्बी, रबेआलमीन

कहि के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरा वक्त सुहाए पोह छब्बी, शहिनशाह हो के रंग रंगाईआ। पोह कहे मेरा छब्बी प्रविष्टा किस बिध होवे चंगा, पंडता मैनूं दे जणाईआ। की मैं पवित्र जल मंगावां विच्चों गंगा, गोदावरी यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। की मैं खुशीआं विच वजावां मृदंगा, बिन सारंग साज़ खड़काईआ। की मैं नौ खण्ड पृथ्मी लँघां, भज्जां वाहो दाहीआ। नारद किहा मित्रा उस दे कोलों मंग अगम्मी मंगा, मांगत हो के झोली डाहीआ। जेहड़ा सच प्रेम दा रंगे रंगा, दो जहान उतर कदे ना जाईआ ओह भेव खुल्हाए ब्रह्म हंगा, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। जिस दे हुक्म विच पिछला वक्त लँघा, अगे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा दिवस आवेगा। सुहञ्जणा प्रभू सुहावेगा। साचा नेत्र अंजणा आप पावेगा। धूड़ी मजणा ख़ाक रमावेगा। लेखे लावे आहला अदना, अदल इन्साफ़ आप कमावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमावेगा। छब्बी पोह कहे मेरा इक्को होणा इरादा, इष्ट देव इक मनाईआ। इक्को शब्द होवे बोध अगाधा, बुद्धी तों बाहर पढ़ाईआ।
१२३५ मेरा तन वजूद होवे सादा, सादगी इक समझाईआ। जो इशारा दे के गया कृष्ण राधा, राधका गया समझाईआ। कलयुग १२३५
२४ अन्त श्री भगवन्त बण के मोहन माधव माधा, मधुर धुन दए सुणाईआ। जिस दे प्यार विच सतिगुर नानक वजाई रबाबा, २४
सितार सितार विच्चों बदलाईआ। ओह शाहो भूप बिन रंग रूप धुर दा नवाबा, नबी रसूलां वेख वखाईआ । जिस नूं सजदयां विच करदे आदाबा, निव निव सीस झुकाईआ। जिस दी सिफ्त विच चार जुग दे ग्रन्थ शास्त्र लिखीआं गईआं किताबां, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। ओह आपणा ज़रूर पूरा करे वायदा, वाहिद आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे विष्न ब्रह्मा शिव आउणगे। संसारी भण्डारी सँघारी फेरा पाउणगे। आ के वेखण बंक दुआरी, भगत दुआरे सीस झुकाउणगे। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, उजाला वेख के खुशी मनाउणगे। करोड़ तेतीस करे निमस्कारी, धूड़ी ख़ाक सर्ब रमाउणगे। अवतार तेई वेखण नाल हुशियारी, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाउणगे। पैग़म्बर धूड़ी लाउण छारी, कदमबोसी करके आपणा शुकर मनाउणगे। गुरु गुरदेव बोल जैकारी, तूं ही तूं ही ढोला राग अलाउणगे। सतिगुर शब्द आपणा खेल खेले आपणी वारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाउणगे। पोह कहे सुण नारदा मेरी आशा पुराणी, पुराण अठारां समझ ना आईआ। जगत विद्या बाहर कहाणी, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। समझ सके ना कोए विद्वानी,

विद्या जगत ना कोए वड्याईआ। जिस दा भेव दस्सया पुरख अकाले शाह सुल्तानी, शहिनशाह गया दृढ़ाईआ। जिस वेले अन्ध अन्धेरा होया ज़िमीं असमानी, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पवित्र रिहा कोई ना पाणी, आबेहयात जाम ना कोए प्याईआ। मंज़ल हक ना रही रुहानी, रूह बुत रोवण मारन धाहीआ । पिता पुरख अकाल किसे ना मिले उत्ते असमानी, इस्म आज़म वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे जन भगतो छब्बी पोह नूं आउणा नाल दलेरी, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सब दी आशा इक्को होणी मैं निरगुण धार तेरी, दूजा संगी नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला करे आपणी मेहरी, मेहर नज़र उठाईआ। आत्मा बणाए आपणी चेरी, चिरी विछुंनयां लए मिलाईआ। जिस दी नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों फेरी, फिरत फिरत आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे जन भगतो आपणीआं आपणीआं दस्सणीआं जवानीआं, जोबनवंतिओ दयो वखाईआ। सतिजुग दीआं प्रगट करन आउणीआ निशानीआं, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। अन्दरों कढ्ढके आउणीआं बेईमानीआं, कूड़ी क्रिया संग ना

१२३६ कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़दे आउणा बाणीआं, बाण अणयाला तीर प्रभू दए चलाईआ। हस हस के कहिंदे आउणा १२३६

२४ साडा झगड़ा मुक्कया चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। असीं उस प्रभू दीआं बणीआं सवाणीआं, २४

जो आदि जुगादी धुर दा माहीआ। जो सचखण्ड दुआर एकँकार देवे माणीआं, निमाणयां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे जन भगतो ख़सम बणो कि सुवाणी, सहिज नाल दयो सुणाईआ। सुरत बणो कि शब्द हाणी, मेला सहिज सुभाईआ। अमृत रस बणो कि जल धार पाणी, भेव दयो खुल्हाईआ। चरणां विच रहिणा कि वसणा चार खाणी, पर्दा देणा उठाईआ। पिछली कीती तुहाडी पिच्छे होई पुराणी, अगे नवां रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे जन भगतो आपणीआं चढ़ के वेखो मंज़लां कोटीआं, कोटां विच्चों ध्यान लगाईआ। निगाह मारो आपणीआं चोटीआं, चोटे बणके वेख वखाईआ। तुहाडे अन्दर वासना रहिण ना खोटीआं, खोटे खरे रूप बदलाईआ । तुहाडीआं दुरमति मैलां जाण धोतीआं, पतित पुनीत आप बणाईआ। तुहाडीआं आत्मा रहिण ना सोतीआं, सुतीआं लए जगाईआ। सब ने याद रखणा तुहाडीआं धारां प्रभ दीआं गोतीआं, आत्म परमात्म दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सत्त रंगा कहे भगतो तुहाडा वक्त सुहावणा

१२३७
२४

लक्की, खुशीआं ढोले गाईआ। तुहाडी प्रभू दे नाल पक्की, वायदा भुल कदे ना जाईआ। तुहाडा पैग़म्बरां नाल लेख हकी, हकीकत दा मालक दए समझाईआ। तुहाडे प्यार विच आपणी धार नाल रिहा तकी, तकवा तुहाडा रिहा बणाईआ। तुहाडा लहिणा देणा जे बावन दी धार मक्की, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतरंगा कहे मैं वी वेखां खेल शाह नवाबे, की करता कार कमाईआ। जो लहिणा देणा चुकाए जल जल आबे, आबेहयात दए प्याईआ। जिस दा खेल होणा देस माझे, मजलस भगतां नाल रखाईआ। फेर निगाह मारनी विच काअबे, कबरां विच मुरीद मुर्शद सारे वेख वखाईआ। फेर सजदयां वाले तकणे आदाबे, उम्मत उम्मती फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। भगतो नारद कहे मैनूं गल्लां नहीं आउँदीआं बाहलीआं, बहुता शोर ना कोए मचाईआ। तुहाडे अन्दर चढ़ीआं होवण लालीआं, लालन मिल के वजे वधाईआ। तुहाडीआं झोलीआं होवण ख़ालीआं, ख़ाली झोली प्रभ दे अगे डाहीआ। तुहाडीआं आशां बणीआं होवण सवालीआं, सवाल इक्को इक जणाईआ। प्रभू पहलों साडे अन्दरों रातां मेट अन्धेरीआं कालीआं, कुल मालक हो के वेख वखाईआ। असीं नहीं वेखणा चाहुंदे जगत दीआं दीवालीआं, दीपक साडे अन्तर दे जगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे जन भगतो मंगदे मंगदे ना जाणा थक, थकावट विच कदे ना आईआ। प्रभू कोलों मंगणा तुहाडा हक, हकीकत दे मालक अगे वास्ता पाईआ। पता नहीं किस वेले मेहरवान हो के नाम वस्तू तुहाडी झोली अन्दर देवे रख, रक्षक हो के रच्छया करे थांउँ थाँईंआ। तुहाडा विछोड़ा मेटे रहिण ना देवे वख, वखरा गृह ना कोए रखाईआ । उह मेहरवान हो के निज नेत्र दिभ नेत्र खोल्ह के अक्ख , बिन अक्खरां तों आपणा नाम दए समझाईआ। सदा सदा सद प्रभू भगतां दा करदा आया पक्ख, जगत हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे भगतो प्रभू ने नवीं दस्सणी डण्डावत, बन्दगी बन्दगी विच्चों बदलाईआ। प्रेम प्यार दी करनी सख़ावत, सुख़न अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूर कराईआ। गुरसिखो गुरसिख नाल करे ना कोए अदावत, झगड़ा अन्दरों देणा मुकाईआ। प्रभू दा प्यार ते गुरसिखां दी निआमत, गुरसिखो गुरसिखां विच वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे जन भगतो मेरी आह पई तसबी ते औह सुट्टी माला, इक्को मालक नूं सीस निवाईआ। जिस ने सब दा कढ दिता दवाला, धन दौलत नज़र कोए ना आईआ। कलयुग दा कर्म कुकर्म मेटणा काला, कालख टिक्के सब

दे दए गुआईआ। त्रैगुण माया मेटणा जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सब दा हल करे सवाला, जो सवाली हो के मंग मंगाईआ। नारद कहे मेरा जी करदा जन भगतो छब्बी पोह नूं हरि भगत दुआर ते नौ सौ चौरानवे दीपकां दी वेखां दीप माला, दीआ बाती कमलापाती आपणे हथ्थ जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिजन हरि भगत सन्त सुहेल्यां करे आप संभाला, सम्बल दा मालक हो के वेख वखाईआ।

✪ २ पोह शहिनशाही सम्मत ११ दिलबाग सिंघ दे नवित हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे अन्तर आए वैराग, वैरागण हो के दयां जणाईआ। मैं चाहुंदी प्रभू तेरयां भगतां दा टहक्या रहे बाग़, बाग़ीचा गुलशन तेरा नज़री आईआ। दुरमति मैल सब दा धोवणा दाग़, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। दीपक जोत जगाउणा चराग़, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। जगत तृष्ना त्रैगुण मेटणी आग, अग्नी तत बुझाईआ। गुरमुख हँस बणाउणे फड़ फड़ काग, कागों हँस उडाईआ। तेरी सरन सरनाई हरिजन जावण लाग, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत १२३८
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे भगतां मंगदी २४
जीवण, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी देणी बदलाईआ। तेरे प्यार विच सारे थीवण, हउमे हंगता गढ़ देणा तुड़ाईआ। बिन सीस जगदीस सारे तैनूं नीवण, निव निव लागण पाईआ। तूं झगड़ा मेटणा साढे तिन्न हथ्थ काया सीवण, सईआ हो के वेख वखाईआ। मैं चाहुंदी चरण चरणोदक सारे तेरा पीवण, अनरस आपणा देणा चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे भगतां रही लोड़, लुड़ींदे साजण देणी वड्याईआ। मेरी जगत तृष्ना पूरी करनी थोड़, बहुती मंग ना कोए मंगाईआ। तूं दो जहानां श्री भगवाना फिरन वाला अगम्मे घोड़, जो भज्जे वाहो दाहीआ। मेरी आसा मनसा जन भगतां अन्दरों विख कढणी कौड़, कुड़त्तण रहिण कोए ना पाईआ। पंज विकारा एकँकारा देणा होड़, होका देवे थांउँ थाँईआ। सच दस्स दे किस बिध तेरे शब्द दा वजणा मेरे सीने पौड़, पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। किस बिध खेल करे ब्राह्मण गौड़, ब्रह्मा भेव भेव की जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरयां भगतां रहां पूजदी, पूजणयोग देणी वड्याईआ। मैनूं सुरती देणी साची बूझ दी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। हर हिरदयो वासना

कढणी दूज दी, दुत्तीआ भाउ ना कोए रखाईआ। मैं खेल तकां तेरे शब्द गुरु अवधूत दी, जो दो जहानां हुक्म वरताईआ। मैं वणजारन तेरी पंज तत काया भूत दी, पंचम मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां चाढ़ना आपणा रंग, रंगत अगम्म रंगाईआ। जो बिन पैसे धेले तेरा देवे संग, सगले संगी तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी केते मेरे उत्ते गए लँघ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले अगे होई नहीं मैं कदे तंग, तंगदस्त ना कदे रखाईआ। अगे हरिजन साचे नाम धारा नाल रंग, रंगत कूड़ रहिण ना पाईआ। सदा सदा सच तेरा नाम वजे मृदंग, धुन अनादी नाद करे शनवाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा होवे नाल पंज, पंचम मीते देणी माण वड्याईआ। ना कोई हरख़ सोग ना रंज, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां लेखे ला लै तन वजूद मिट्टी, ख़ाक आपणे रंग रंगाईआ। मैं तेरे चरण कवल धवल हो के लिटी, लिटां खोल्ह के दयां दुहाईआ। तेरी खेल अगम्म अथाह दी प्रभू मेरे उत्ते धर्म चला दे हट्टी, हटवाणा हो के वेख वखाईआ।
१२३८ अन्त अख़ीर बेनज़ीर जन भगतां भरनी पए ना चट्टी, चेटक आपणा नाम देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १२३८
२४ किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पिछले लहिणे देणे पूरब दिते २४
कटी, अगे कटाकश हरिजन आपणा नाम लगाईआ।

✪ ५ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर
निहाल बाई बटाला दे नवित परलोक सिधारन उप्रांत ✪

भगत उधारे आप प्रभ, हरि करता धुरदरगाहीआ। सन्त उधारे आप प्रभ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ । गुरमुख उधारे आप प्रभ, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। गुरसिख उधारे आप प्रभ, निरगुण निरवैर आपणी कल वरताईआ। हरिजन उधारे आप प्रभ, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। भगत उधारे आप प्रभ, उधारनहारा एकँकार। सन्त उधारे आप प्रभ, वेखे विगसे पावे सार। गुरमुख उधारे आप प्रभ, लोकमाती खेल न्यार। गुरसिख उधारे आप प्रभ, वेखणहारा काया माटी बंक दुआर। हरिजन उधारे आप प्रभ, जुग जुग खेल सची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सच दा मालक इक गुसाँईआ। भगत उधारे आप प्रभ, आदि जुगादी इक इकल्ला। सन्त उधारे आप प्रभ, वेखणहारा सचखण्ड सच महला। गुरमुख उधारे आप प्रभ, पार लँघाए महीअल जल थला। गुरसिख उधारे आप प्रभ, देवे महल अटला। हरिजन उधारे आप प्रभ, दीन दुनी मेटे सल्ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वसणहारा नेहचल धाम अवल्ला। भगत उधारे आप प्रभ, देवे नाम निधान। सन्त उधारे आप प्रभ, बख्शे सच अस्थान। भगत उधारे आप प्रभ, गृह मन्दिर वेखे आण। भगत उधारे आप प्रभ, नाम सुणाए सची धुन्कान। भगत उधारे आप प्रभ, लोकमाती कर पहचान। भगत उधारे आप प्रभ, वेखणहारा वाली दो जहान। भगत उधारे आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । भगत उधारे आप प्रभ, दीन दयाल सदा बख्शंद। भगत उधारे आप प्रभ, खुशी रखाए बन्द बन्द। भगत उधारे आप प्रभ, अन्तर आत्म दए अनन्द। भगत उधारे आप प्रभ, सोहँ शब्द जपाए छन्द। भगत उधारे आप प्रभ, दूई द्वैती ढाहे कंध। भगत उधारे आप प्रभ, आवण

१२४० जावण मेटे पन्ध। भगत उधारे आप प्रभ, सच दुआरा आपे लँघ। भगत उधारे आप प्रभ, वेखणहारा सेज पलँघ। भगत उधारे आप प्रभ, आदि जुगादी चाढ़नहारा रंग। भगत उधारे आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १२४०

२४ देवणहारा साचा वर, सच दुआर निभाए आपणा संग। भगत उधारे आप प्रभ, मंज़ल चुकाए वाटी। भगत उधारे आप प्रभ, पार कराए आवण जावण घाटी। भगत उधारे आप प्रभ, जन्म मरन मेटे पन्ध वाटी। भगत उधारे आप प्रभ, सच सेज सुहाए आपणी खाटी। भगत उधारे आप प्रभ, लेखे लाए काया पंज तत माटी। भगत उधारे आप प्रभ, जिस मईआ जन्म दिता अमीर सिँघ गुलाटी। भगत उधारे आप प्रभ, दुरमति मैल देवे काटी। भगत उधारे आप प्रभ, आपे लेखे लाए जीवण ज़िंदगी हयाती। भगत उधारे आप प्रभ, आपणे गृह दीप जगाए कमलापाती। भगत उधारे आप प्रभ, लहिणा देणा लेखा रहे ना लोकमाती। भगत उधारे आप प्रभ, दरगाह साची अमृत देवे बूँद स्वांती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेटणहार अन्धेरी राती। भगत उधारे आप प्रभ, जुग जुग खेल अपार। सन्त उधारे आप प्रभ, फड़ फड़ लाए पार। गुरमुख उधारे आप प्रभ, लख चुरासी विच्चों करे बाहर। गुरसिख उधारे आप प्रभ, जम की फाँसी रखे बाहर। हरिजन उधारे आप प्रभ, गृह देवे दरस अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा मीता एकँकार। भगत उधारे आप प्रभ, आदि जुगादी खेल। भगत उधारे आप प्रभ, धुर दा सज्जण सुहेल। भगत उधारे आप प्रभ, मेले संजोगी मेल। भगत उधारे आप प्रभ, वखाए धाम नवेल। भगत उधारे आप प्रभ,

राय धर्म दी कटे जेल। भगत उधारे आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद, निरगुण सरगुण बणे सज्जण सुहेल।

✪ २१ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर
दरबार निवासी निहंग सिँघ, प्रीतम सिँघ, दलीप सिँघ,
रतन सिँघ ईश्र सिँघ, भान सिँघ, कश्मीर सिँघ,
जोगा सिँघ, जगीर सिँघ ✪

नारद कहे सुण धर्म धार वसुधा, धवले तैनूं दयां जणाईआ। निगाह मार की इशारा दे के गया बुध्धा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा भाग करे उदा, जिस दी उदै असत होवे रुशनाईआ । जो कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणहारा मुद्दा, मुदतां दा मालक दया कमाईआ। जिस सतिजुग सति प्रकाश करना उग्घा, चार कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। तेरी जवानी जोबन फेर होवे युवा, बुढेपा कल रहे ना राईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर दिसे अललसुबह, अमृत रस इक्को इक भराईआ। दीपक प्रकाश करे जोत धार बुज्झा, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर गुरु रिहा रुझा, रुझेवां दीन मज़्ब जणाईआ। ओह बदलणहारा तेरे उत्तों कलयुगा, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे सुण धरनी धरत, धवले दयां जणाईआ। आपणा वायदा कौल इकरार तक लै शर्त, शरअ तों बाहर ध्यान लगाईआ। तेरा स्वामी ठाकर बेपरवाही आया परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा खेल सदा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम धुरदरगाहीआ। सति प्यार मुहब्बत मेघ रिहा बरस, नाम निधाना रस टपकाईआ। उस दा खुशीआं वाला बरस, बरसी छब्बी पोह वड्याईआ। जन भगतां उत्ते करे तरस, रहमत आपणा नाम दरसाईआ। सब दी पूरब मेटे हरस, जन्म जन्म दा लेखा झोली पाईआ। माण देवे उत्ते फ़र्श, फ़र्शे ख़ाकी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए धवले लै सुण, अणसुणत दयां जणाईआ। साचे साहिब दे तक लओ गुण, गुण निधान बेपरवाहीआ। जो लख चुरासी करे छाण पुण, खोजे थांउँ थाँईंआ। वेख वखाए रिख मुन, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। उस दा भेव जाणे कवण गुण, कहिण किछ ना पाईआ। जो उपजावणहारा साची धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे तैनूं सारे कहिंदे धौल, धर्म धार जणाईआ। तूं आपणा तक लै कौल, इकरारनामा वेख वखाईआ। किस बिध जन भगतां अन्तर रस मिले पाहुल, बिन रसना रस चखाईआ। किस बिध परम पुरख हिरदे जाए मौल, मौला आपणा खेल खिलाईआ । जिस दा भेव कोई पा सके ना रौल, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। ओह तेरा लहिणा देणा कलयुग कूड़ा भार करे हौल, हौली हौली आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा इशारा दे के गया कृष्णा साँवल सुंदर सौल, सांवरीआ हो के भेव खुल्हाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला तेरा खेल वेखे अडोल, अडुल डुल कदे ना जाईआ। तूं कोझी कमली रहीं ना मूल अनभोल, सुतीए लै अंगड़ाईआ। ओह सच तराज़ू तेरे उत्ते तोले तोल, नाम कन्ढा हथ्थ उठाईआ। जिस ने सच दुआरा ल्या खोल्ह, भगत दुआरे सोभा पाईआ। जिस दा आत्म परमात्म धुर दा साचा बोल, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां करे चोहल, चोला काया माटी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए खेल तक पुरख समराथा, की करता खेल खिलाईआ। जिस दा
१२४२ लहिणा देणा जुग जुग हथ्थो हाथा, जगत उधार ना कोए रखाईआ। उह सदा सुहेला जन भगतां देवे साथा, सगला संगी १२४२
२४ इक अख्वाईआ। जो सदा सदा सहायक होवे अनाथ अनाथा, ग़रीब निमाणयां दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा २४
राथा, रथ रथवाही धुरदरगाहीआ। सो साहिब स्वामी छब्बी पोह जन भगतां देवे साथा, सगला संगी इक हो आईआ। जिस दा संदेशा दे के गया त्रैलोकी नाथा, कान्हा काहन काहन वड्याईआ। जिस दी शब्दी धार अगम्मी गाथा, लिखण पढ़न विच कदे ना आईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला देवे दरस हरिजन सगल वसूरे जाए लाथा, संताप रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे धरनीए आपणे गृह तक भगत दुआर, जन भगत सुहेले सोभा पाईआ। जिन्हां दा पूरब लहिणा देणा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग संग बणाईआ। ओह सति सच दे बणके सेवादार, दिवस रैण सेव कमाईआ। अन्तर अन्तर सच प्रीती करन प्यार, प्रीतम मिल के ख़ुशी बणाईआ। मैं चाहुंदा, धरनी, तूं उन्हां दे जावीं बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। ख़ुशीआं नाल करीं इज़हार, सोहणे ढोले गाईआ। नारद कहे मैं वी करां जै जैकार, ढोला इक सुणाईआ। धरनी कहे नारदा, उन्हां दी धूड़ी मेरी छार, मेरे मस्तक वजे वधाईआ। मैं चाहुंदी हरि भगत दुआर रहिण वाले भगतां दे गल विच इक इक होवे हार, छब्बी पोह आपणी रुत सुहाईआ। मस्तक खण्डे दी छोही होवे धार, खड़गां वंड ना कोए

वंडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बोलदे होण जैकार, तूं ही तूं ही ढोला गाईआ। हरिसंगत दे होवण विच अधकार, अध विच आपणा खेल खिलाईआ। नारद कहे धरनीए मैं वीं वेखां ज़रूर विवहार, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। धरनी कहे मैं वी करां इंतज़ार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। दोहां दा वायदा इक इकरार, कौल छब्बी पोह जणाईआ। एह वेला सोहणा होवे वक्त चार, चार चार दा संग बणाईआ। वंड नहीं कोई पुरख नार, बृद्ध बाल हिस्सा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहार सच प्यार, प्रीतम हो के आपणा रंग रंगाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात दे समें ✪

छब्बी पोह कहे मेरी भिन्नड़ी रैण आई शब, शबेरोज़ जन भगतां दयां वड्याईआ। मेहरवान नौजवान श्री भगवान मेरे उत्ते किरपा कर दे हभ, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी दया कमाईआ। तूं नूर अलाह अगम्म अथाह बेपरवाही रब्ब, पारब्रह्म
१२४३ पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। मैं जुग चौकड़ी पूरब वेखे सभ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। तेरा नूर १२४३
२४ ज़हूर तकदा रिहा जल्वागर नाल सबब, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, २४
एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ । पुरख अकाल कहे सुण पोह छब्बी मेरे दुलारे सुत, सुत्तया लै अंगड़ाईआ। ज़रा खेड तक अबिनाशी अचुत, चेतन दो जहान कराईआ। जिस दी धर्म धार दी मौलणी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जिस इक्को उठाणा बिन ततां तों शब्द दुलारा सुत, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जो लख चुरासी वेखे ख़ाना बुत, तन वजूदां फोल फुलाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल अबिनाशी अचुत, निरगुण आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे मेरे शब्द दुलारे दूले, बिन ततां लै अंगड़ाईआ। हुक्म सुणना कन्त कन्तूहले, हरि करता की सुणाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी कदे ना भूले, नव नव चार दए गवाहीआ। जिस दा आदि जुगादि इक असूले, दूसर हुक्म ना कोए बदलाईआ। ओह मालक कन्त कतूहले, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जिस तैनूं झुलाए आपणे झूले, बिन जननी गोद टिकाईआ। जिस दे हुक्म विच विष्न ब्रह्मा शिव फूले, महक आपणे विच्चों महकाईआ। साची बख़्श चरण दी धूले, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। धुर दा खेल दस्स माकूले, सच फ़रमाना इक सुणाईआ। उन्हां किरपा नाल त्रैगुण माया पंज तत वसूले, बख़्शिश रहमत धुर दी झोली पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। छब्बी पोह कहे मेरे परम पुरख जे सतिगुर तेरा शब्द दुलारा, शब्दी शब्द इक अख्वाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त रूप अलाहीआ । जिस दा इक्को तूं ही कन्त भतारा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जो वसे निहचल धाम न्यारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा नूर तेरी जोत उज्यारा, ज़हूर इक्को इक प्रगटाईआ। जिस दा लहिणा देणा अगम्म अपारा, अपरम्पर एह तेरी बेपरवाहीआ। जिस ने तैनूं मित्र बणाया यारा, साजण सच सुणाईआ। ओह खेले खेल विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी दए गवाहीआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी तेरी चलदी रही धारा, लख चुरासी खेल खिलाईआ। रूप धरदा रिहों पैग़म्बर गुर अवतारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। नाम शब्द दा देंदा रिहों सहारा, कलम्यां नाल वड्याईआ। ग्रन्थ शास्त्रां करदा रिहों मज़ाहरा, सिफ्तां सिफ्त वड्याईआ । अक्खरां नाल बोल जैकारा, ढोले राग दृढ़ाईआ। आप फेर वस के सब तों बाहरा, भेव अभेदा इक छुपाईआ। छब्बी पोह कहे मैं करां निमस्कारा, निव निव सीस झुकाईआ। अज्ज मेरा उत्तम श्रेष्ट नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग तों बाद त्योहारा, दिवस आपणा रंग रंगाईआ। इक हुक्म संदेशा दे दे बिन रसना

जिह्वा कर इशारा, बिन लोचण नैण नैण समझाईआ। तूं शाहो भूप मेरा निरँकारा, निरवैर पुरख अलाहीआ। जिस तरह आदि जुगादि जुग चौकड़ी तूं बदलदा रिहों दोबारा, दोहरी आपणी खेल खिलाईआ। मैं निव निव करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। छब्बी पोह कहे मेरे भगवाना, भगवन तेरी बेपरवाहीआ। मैं खुशीआं नाल मंगां दाना, दाते दानी देणा वरताईआ। तूं मालक रहीम रहमाना, नूर नुराना नूर अलाहीआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना, भय सब नूं रिहा जणाईआ। लख चुरासी तेरा खेल महाना, महिमा कथ कथ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। छब्बी पोह कहे मेरे परम पुरख समरथ, साहिब तेरी सरनाईआ। मेरे वेख लै ख़ाली हथ्थ, वस्त नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ दा चलदा रथ, रथवाही तेरा हुक्म मंने चाँईं चाँईआ। जो तेरे प्यार विच तेरे सथर गया लथ, यारड़े सेज हंढाईआ। ओस दी ओस नूं दे दे वथ, वस्त आपणी आप वरताईआ। मैं तैनूं खुशीआं नाल टेकां मथ्थ, मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। नेत्र नीर वहावां अथ्थ, हंझूआं हार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक धुरदरगाहीआ। छब्बी पोह कहे प्रभू मैं दर दा बणया भिखारी, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आई तेरी वारी, वाहवा

तेरी बेपरवाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु कर के गए इशारी, सैनत तेरा नाम लगाईआ। भेव अभेदा खोल्ह के गए तूं कल्की अवतारी, अकल कल आपणी खेल खिलाईआ। लहिणा देणा जुग चौकड़ी सब दा देवे वारो वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। मैं तेरे चरण धूड़ लावां छारी, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। मेरी इक बेनन्ती इक्को वार निमस्कारी, डण्डावत कहि के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आस रखाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू मेरी इक्को इक अरज़ोई, अर्ज़ आरज़ू तेरे चरण टिकाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोई, दुतीआ भाओ नज़र कोए ना आईआ। दो जहान मिले ना ढोई, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सारे तेरे नाम दी पा के गए दरोही, दो जहानां वेख वखाईआ। तुध बिन मेरी आसा पूरी कदे ना होई, होका दे के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचे दिवस खुशी बणाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू विष्न ब्रह्मा शिव दे दे सद्दा, सदके वारी घोल घुमाईआ। तेई अवतार तेरे हुक्म विच आवे बध्धा, सिर सके ना कोए उठाईआ। पैग़म्बरां इक आवाज़ देणी इक्को सुणाउणा नद्दा, धुन धुनीउँ बाहर जणाईआ। गुरु गुरदेव आउण सच दुआरे आपणी जगह, बिन कदमां

१२४५ कदम उठाईआ। देवत सुर तेरी सरनी होवे लग्गा, इन्द इन्द्रासण सर्ब तजाईआ। इक्को शब्द नगारा सब दा होवे वजा, १२४५

२४ दूजा नाद ना कोए शनवाईआ। जुग चौकड़ी जो तेरी कर के गए गजा, दर दर मंग के खुशी बणाईआ। तेरे हुक्म दी २४

मंनदे रहे रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरी बेपरवाहीआ। मैं अज्ज ओनां दे बचनां दा लैणा चाहुंदा मज़ा, बिन रसना रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। पुरख अकाल कहे छब्बी पोह सतिगुर शब्द मेरा सूरबीर, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस दे कोल मेरे नाम दा अणयाला तीर, दो जहान चलाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर पीर, गुरु गुरदेव सेव कमाईआ। जो सब नूं देवणहारा धीर, धीरजवान इक अख्वाईआ। जिस दे कोल हक तदबीर, तरीका समझ कोए ना पाईआ। मैं उस नूं इक्को वार दे छडी वाद अशीर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस ने कलयुग करना अन्त अख़ीर, आप आपणा खेल खिलाईआ। सति सच करना तामीर, महल अटल इक वड्याईआ। दीन दुनी बदलणी ज़मीर, अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। जिस दे कोल मेरे हुक्म दी शमशीर, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। जिस दी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर जगीर, जगह जगह आपणा हुक्म वरताईआ। ओह सब दी बदलणहारा तकदीर, तक्ब्बर दीन दुनी मिटाईआ। जिस ने पिछली कीती उत्ते मारनी लकीर, लाइन ऐन देणी वखाईआ। धरनी धरत धवल धौल रहिण नहीं देणा ख़मीर, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा

इक्को प्रेम दा वस्त्र होणा चीर, चिरी विछुंनयां लए मिलाईआ । छब्बी पोह कहे मैं आपणे नक्क नाल कढ्ढां लकीर, बिन मिट्टी ख़ाक दयां वखाईआ। मेरे नूर नुराने शाह सुल्ताने मैनूं बिना अक्खीआं तों सतिगुर शब्द दी वखा तस्वीर, जिस नूं मुसव्वर तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु विष्न ब्रह्मा शिव सुणो हुक्म अपारा, अपरम्पर की जणाईआ। जो निरगुण सरगुण खेले खेल विच संसारा, जोती जाता हो के वेस वटाईआ। जो नूर अलाही परवरदिगारा, शाहो भूप अगम्म अथाहीआ । सो धरनी धरत धवल धौल जोती जाता पुरख बिधाता हो के होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल वरताईआ। जिस दा छब्बी पोह दा ख़ुशीआं वाला त्योहारा, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। जिस दा सुहञ्जणा हरि भगत दुआरा, भगवन हो के हुक्म वरताईआ। इक्ट्ठे हो के चलो पैग़म्बर गुर अवतारा, आपणा पन्ध मुकाईआ। सारे इक्ट्ठे लावो इक्को नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा भविख्तां विच दे के आए इशारा, पेशीनगोईआं विच जणाईआ। ओह अमाम अमामा निहकलंक कलि कल्की अवतारा, अकल कलधारी इक अख्वाईआ। जिस दा खेल होणा

१२४६ चार जुग तों बाहरा, भेव सके कोए ना पाईआ। ओस दे दर ते बिना सीस तों करीए जा निमस्कारा, बिन सजदयां सीस १२४६

२४ निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर २४

शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर सचखण्ड विच्चों लओ अंगड़ाई, बिन ततां ख़ुशी बणाईआ। इक दूजे नाल बिना ज़बान तों करो सलाही, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ । चार जुग दे शास्त्र तुहाडी देण गवाही, शहादत इक्को वार भुगताईआ। ख़ुशीआं दा दिवस दिहाढ़ा बिना कदमां तों बणो राही, भज्जो वाहो दाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ अगे लओ लाई, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सुरप्त राजा इन्द पिच्छे आवे चाँईं चाँईं, करोड़ तेतीसा संग मिलाईआ। गण गंधर्ब किन्नर यच्छशप ढोले सोहले गाण बिन हथ्थां उठावण बाहीं, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। नाले बिना शरीर तों बण अगम्मे राही, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर तुसीं सारे इक जोत दी धार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई मन्दिर ना दुआर, घरबार ना कोए रखाईआ। ना कोई नाम कलमा ना रसना वाली जै जै कार, अक्खरां वाली ना कोए लिखाईआ। ना कोई दीन मज़्हब शरअ दी कटार, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई मूंड मुण्डाया ना सीस बन्न्हे दस्तार, तन वजूद वंड ना कोए वंडाईआ। सारे इक्को वार होवो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर पहुंचाईआ। तुहाडा लोकमात हुन्दा इंतज़ार, छब्बी पोह

उडीके चाँईं चाँईंआ। सारे इक दूजे वल करन इशार, बिन सैनत सैनत लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सारे इक्ठे नस्सीए, भज्जीए वाहो दाहीआ। खुशीआं दे विच हसीए, हस्ती तक बेपरवाहीआ। जन भगत दुआरे वसीए, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरा अगम्म संदेशा, बिन अक्खरां दयां दृढ़ाईआ। सब दा इक्को माही महबूब नर नरेशा, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा ना मुच्छ दाढ़ी कोई केसा, मूंड मुण्डाया नज़री कोए ना आईआ। जो आदि जुगादी बदले भेसा, भेखाधारी इक अख्वाईआ। जिस दा अन्त अख़ीरी बेनज़ीरी लहिणा देणा नाल गोबिन्द दस दस्मेसा, दहि दिशा बाहर समझाईआ। तुसां ओस नूं लभना सतिगुर शब्द कहे, ते लभणा विच्चों सम्बल देसा, दूजा धाम नज़र कोए ना आईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं विच आए समझाईआ। उह आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन ना कोए जणाईआ। जिस कलयुग अन्त मेटणा कलेशा, कलि कल्की नूर अलाहीआ। उहदा लहिणा देणा दो जहान देस परदेसा, ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ।
१२४७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे १२४७
२४ छब्बी पोह तेरी पूरब की सलाह, मशवरा दे जणाईआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां कहे वाह वाह, वाहवा प्रभू दी बेपरवाहीआ। २४
जिस ने वक्त सुहञ्जणा दिता सुहा, सोहणी दिती वड्याईआ। चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुरु दीन दुनी दे मलाह, बेड़ा जगत वाला चलाईआ। नाम कलमा गए अलाह, अक्खरां विच सुणाईआ। मुखों कहि के गए ओह मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे अज्ज दिवस दिहाढ़ा लोकमात, सोहणी खुशी बणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु तुहाडी इक्को दिसे जमात, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल दी सुहञ्जणी होई रात, भिन्नड़ी रैण खुशी बणाईआ। सारयां इकठ्यां इक्को वार दस्सणी बात, बातन पर्दा देणा खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासीओ धरती उत्ते वेखो मार झात, भगत दुआरे ध्यान लगाईआ। जिथ्थे भगत सुहेले बैठे जिन्नां दा इक्को पिता ते इक्को मात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिन्नां दी साहिब स्वामी पुछण आया वात, वारस हो के वेख वखाईआ । नाले ख़सम बणे स्वामी बणे नाले होवे कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जिस दा कदे ना होवे दिहांत, जम्मण मरन विच ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कदे करे पश्चाताप, चिन्ता ग़मी ना कोई रखाईआ । जिस दा दो जहानां इक्को जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१२४८
२४

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु इक्को नूर जोत अगम्म, तन माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। बिन जनणी छब्बी पोह प्रभू दे दुआरे प्रभू दी धारों पए जम्म, जनणी इक्को नज़री आईआ। जिस ने सब नूं वखाउणा आत्म धार तको सृष्टी दा अन्तष्करन ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। नव सत्त मेटणा भरांत वाला भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सति सच दा सतिवादी हो के दस्सणा कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। आदि जुगादी जिस दा इक्को धर्म, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी करता, करनहार अख्वाईआ । ज़िंदगी विच जीवण विच कदे ना मरता, जन्म मरन ना कोए रखाईआ। मैं सब दे दु:ख कलेश हरता, नित नित वेख वखाईआ। मैं इक्को वणजारा धुर दे दर दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे भय विच जगत जहान डरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मेरा कलमा नाम संदेश पढ़दा, अक्खरां विच सिफ्त सलाहीआ। मैं नित नित जुग जुग नवां घाड़न घड़दा, घड़नहार इक अख्वाईआ। मैं मालक दो जहानां गढ़ दा, एह मेरी बेपरवाहीआ । मेरा लहिणा देणा लेखा चोटी जड़ दा, चेतन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतारो भगत दुआर वेखो नाल चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। सन्त कुमार कहे मैं गया आ, सोहणी खुशी बणाईआ। बराह कहे मैं वेख्या बेपरवाह, यगा पुरुष नाल मिलाईआ। हावगरीव कहे मैनूं सोहणा लग्गा थाँ, नर नरायण सिफ्त सलाहीआ। कपल मुन कहे मैं ढोला लवां गा, दत्तात्रे सीस निवाईआ। रिखव कहे इहो पिता ते इहो माँ, पृथू कहे एसे दी बेपरवाहीआ। मत्सय कहे एह वसे थल अस्गाह, कच्छप कहे आपणा रंग रंगाईआ। धनंतर कहे सब दे लहिणे देणे दए मुका, मोहणी आपणा रूप वटाईआ। हँसा कहे एसे दे गुण बिन रसना जिह्वा रहे गा, सिफ्तां सिफ्त सलाहीआ। हरी हरि कहे मेरा लेखा जाणे कोई ना, नरसिँघ हो के आपणी खेल खिलाईआ। नर नरायण सके ना कोई वडया, भेव सके ना कोए जणाईआ। बावन कहे मैं सब तों निक्का वड्डा रूप बणा, छोटा आपणा आप रखाईआ। बलि दे नाल नाता ल्या जुड़ा, बलि दुआरे आया वाहो दाहीआ। जिस दा अश्वमेध यग दा लहिणा नौ खण्ड पृथ्मी अस्व दिता दुड़ा, भज्जया वाहो दाहीआ। रिषीआं मुनीआं ल्या मंगा, तप्पसवीआं संग बणाईआ। भांत भांत दा पकवान ल्या पका, सोहणी खुशी बणाईआ । प्रेम प्रीती विच ल्या छका, खुशीआं ढोले गाईआ। सारे बलि दे दुआरे कहिण वाह वाह, वाहवा राजन तेरे हथ्थ वड्याईआ। अग्गों बावन बोल के रिहा सुणा, चार वेद जिस दी देण गवाहीआ।

ओ ऋषीओ मुनीओ किस दा भोग आए लवा, सच दयो सुणाईआ। किस बिध प्रभू नूं प्रगट ल्या करा, परगणा बलि दा सोभा पाईआ। सारे हो गए हैरां, हैरानी विच वेखण थाँईं थाँईंआ। झट बावन ने इशारा कीता जब तक हँस बुद्धी ना होवे काँ, काग हँस ना रूप बदलाईआ। ओनां चिर ना आवे बेपरवाह, जोती जाता फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे ओह ऐहो दिवस दिहाढ़ा, चार जुग दे शास्त्र समझ सके ना राईआ। बलि बावन अगे कढे हाढ़ा, हौकयां विच दुहाईआ। बावन बिना नाच तों ला के अखाड़ा, छोटा वड्डा आपणा रूप बदलाईआ। ना उह बाल ते ना उह लाड़ा, बुड्डा सोहणा रूप वखाईआ । ना मुख दन्द ना दिसण दाहड़ां, मुच्छ दाढ़ी ना कोए वधाईआ। जां बलि ने फेर तक्कया ना जिस्म दिसे ना नाड़ां, हड्ड मास वेखण कोए ना पाईआ। बावन ने फेर रूप धर ल्या दोबारा, सोहणा खेल खिलाईआ । नाले ख़ुशी नाल दिता इशारा, कलयुग दिता वखाईआ। औह वेख लै अन्ध अँधयारा, नूर नुराना नूर ना कोए रुशनाईआ। मेरा खेल होणा दोबारा, दोहरी कल वरताईआ। जिस दा भेव पाए ना कोए संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने लए बुलाईआ। नाले हथ्थ ते हथ्थ मारया मेरा
१२४६ खेल सब तों न्यारा, निराकार निरँकार हो के दयां वखाईआ। मैं चाहुंदा ऐ राजन तेरा वड्डा होवे दरबारा, सोहणी वजे वधाईआ। १२४६
२४ पर मैनूं वसण लई इक धाम बख्श दे जिस विच करां गुज़ारा, कर्म ढाई मंग मंगाईआ। नाले पंडत हो के गावां तेरीआं २४
वारां, सोहणे ढोले दयां सुणाईआ। क्यों नाले रिषीआं वल वेख्या ना एह पुरख ते ना एह नारां, स्त्री मर्द रूप ना कोए वखाईआ। इहनां दे हुंदयां इहनां दे प्यार विच प्रगट नहीं होया करतारा, करनी दा करता आपणा रूप बदलाईआ। मैं ते बुड्ढा ब्राह्मण बण के भिखारा, भज्जआं वाहो दाहीआ। मैं अन्न पाणी तेरा मुख नहीं लाया ना रसन छुहाया ना कीता प्यारा, प्रेम प्रीती विच दयां सुणाईआ। झट बलि रो प्या ज़ारो ज़ारा, नैणां नीर वहाईआ। मैं भगत उस प्रभू दा प्यारा, जो भगवन धुरदरगाहीआ। जिस दे नाम दा मेरे अन्दर धुन्कारा, धुन नादी नाद सुणाईआ। एह घरबार सब तुमारा, मेरा कुछ नज़र ना आईआ। ढाई करमां सारी धरत जिथ्थों चाहों आपणा बणा लओ दुआरा, सोहणी वंड वंडाईआ। बावन प्रेम नाल जल मंगाया चूली छुडाई शुकर परोहत नूं किहा आ जा मित्रा यारा, ओ तेरी तेरी तेरे नाल गंढु पुआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। शुकर परोहत ने सत्त चूलीआं छडीआं पाणी, हथ्थां उत्तों रुढ़ाईआ। उस वेले बावन ने बोली इक अगम्मी बाणी, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। नाले आत्म किहा नाले परमात्म किहा दोहां दी धार सके ना कोए पछाणी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। फेर किहा मैं ही राजा

ते मैं ही राणी, दूजा कन्त ना कोए हंढाईआ। फेर किहा मैं ही ज़मीं ते मैं असमानी, दो जहानी आपणी खेल खिलाईआ। फेर किहा मैं ही फ़कीर दरवेश भिखारी मैं ही शाह सुल्तानी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। फेर बोलया एह रसना नहीं ज़बानी, काया कलमा कायनात ना कोए जणाईआ। ओह नहीं एह कोई मंज़ल नहीं रुहानी, रूह बुत ना कोए वड्याईआ। एह जोत ओह जिस नूं निराकार निरँकार कहे जिस दा खेल महानी, महिमा कथ कथ वड्याईआ। फेर इशारा दिता ओए बलि ज़रा निगाह मार लै सतिजुग गया त्रेता गया द्वापर गया औह कलयुग दी निशानी, निशाना धर्म नज़र कोए ना आईआ। नाले लख चुरासी जीव जंत सारे पुणीं छाणीं, खोजणा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। छब्बी पोह फेर इक दम बावन टेक लए आपणे गोडे, बलि अगे ध्यान लगाईआ। फेर हलूण के बलि दे मोढे, इशारा दिता कराईआ। झट बलि ने आपणे अन्तष्करन हिरदे सोधे, सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई लालच रख्या ना कोई लोभे, ममता जगत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। बलि कहे हाए हाए हाए उह पुराणयां पंडया, पंडता दयां जणाईआ। मैं प्रेम दा पकवान सत्तां रंगां विच बन्नृ के वन्डया, जिस दी तोट रही ना राईआ। मैं इक्को पौड़ी तकी इक्को मंज़ल वेखी इक्को चढ़या डंडया, जिस ने मेरी डण्डावत दिती बदलाईआ। बावन इशारा कीता बलि नूं लफ्फड़ मारया खेल वखाया औह वेख कलयुग विच गोबिन्द दा खण्डया, जो खड़गां करे सफ़ाईआ। नाले प्रेम प्यार दा अमृत अगम्मा वन्डया, बिन रसना दिता चखाईआ। झट बलि ने आपणे घुट्ट के दंदिआ, दन्दां हेठां जीभ लई रखाईआ। झट बावन ने इशारा कीता बलि औह वेख लै कलयुग विच निशान होणा तारा चंदिआ, कुदरत दा कादर की आपणा खेल कराईआ। शरअ दे नाल शरअ टकराउणी प्रभ दा नाम कलमा ढाल बणे तलवार बणे ते मारे बन्दगी वाले बंदयां, धर्म दी धार रहिण कोए ना पाईआ। ओसे वेले फेर बावन ने किहा ऐ बलि मैं तैथों सिरफ ढाई कदमां थाँ मंगया, बहुती मंग ना कोए मंगाईआ। ओसे वेले बलि ने खुशीआं दे विच मन्नया, आपणी मनसा दिती रखाईआ। बावन किहा आह मेरी लाइन ऐन इहो गोबिन्द दा अन्तिम होणा कन्नया, गुरु ग्रन्थ जिस दी दए गवाहीआ। उस तों अगे ना कोई दीन चले ना मज़्हब चले ना शरअ रहे ना हद्द रहे ना बन्नया, लेखा सब दा दए मुकाईआ। जो सृष्टी होणी खंन खंनयां, हिस्सयां विच वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। बलि किहा ऐ बावन मेरे भगवान, मेरी तेरे चरण दुहाईआ। मेरा परवान कर पकवान, जो तेरे अगे रखाईआ। बावन ने ज़िमीं वेखी फेर वेख्या

असमान, असमान ज़िमीं तों बाहर आपणे अन्दर ध्यान लगाईआ। फेर कीता ध्यान, दो जहानां परे खोज खुजाईआ । फेर बोलया बिना ज़बान, शब्द दा शब्द दिता सुणाईआ। ऐ बलि तेरी धार विच मैं आया ते सतिजुग दा अन्त करान, करनी दा करता हो के दयां दृढ़ाईआ। त्रेते वास्ते आउणा राम, राम दी राम पाए दुहाईआ । फेर आ जाणा कृष्ण काहन, घनईया हो के खेल खिलाईआ। फेर पैग़म्बरां नूं देणा पैग़ाम, संदेशे धुर सुणाईआ । फेर नानक नूं दे के सतिनाम, मन्त्र देणा जणाईआ। गोबिन्द नूं वाहिगुरु दी फ़तिह दा डंका देणा विच जहान, जो बिन हथ्थां जाए खड़काईआ। सच पुछें जदों सारे ही लँघ गए फेर आप हो के आवां भगवान, भगतां दा मेला सहिज सुभाई लवां कराईआ। उस नूं सके कोई ना जाण, जो जाणी जानणहार इक्को धुर दा माहीआ। जिस दी अक्खर कर ना सकण कल्याण, कलमे समझ ना कोए समझाईआ। उस वेले मेरा ऐसा होणा विधान, जिस नूं जगत विद्या समझ सके कोए ना राईआ। ऐसा होणा फ़रमान, जो बिना अक्खरां तों बिना विद्या तों दयां दृढ़ाईआ। पर उस नूं मेरी किरपा तों बग़ैर कोई नहीं करेगा परवान, परवाना हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। झट बलि चरणी डिग्गा आण, चरणां उत्ते सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप उठाईआ। बलि किहा मेरे साहिब स्वामीआं, साजण साचे मीत। मेरे अन्तष्करन दे अन्तरजामीआ, तेरी वेखां अगम्मढ़ी रीत। धुर दे शब्द दे नाम दे बानीआ, मैनूं कर दे ठांडा सीत। एह सब तेरीआं खाणीआं पकाणीआं, जुग जुग दी चली रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक त्रैगुण अतीत। बावन किहा, बलि, पहलों आपणा पूरा कर इकरार, करमां ढाई मंग मंगाईआ। बलि ने मुख चों बचन दिता उच्चार, खुशी नाल सुणाईआ। बलख दी धरती करन लग्गी पुकार, तूं ही तूं ही तेरी वड वड्याईआ। झट बावन ने कीता आकार, आपणा आप बदलाईआ। पहला कदम चुक्कया डोवर रख्या जिस दी ग्रन्थ शास्त्र पाइन ना सार, गरड़ पुराण दए गवाहीआ। दूसरा कदम टरांनटो दी धार, अगे लेखा समझ किछ ना आईआ। पता नहीं केहड़ा रूप बणा के वखा दिता बलि नूं जिस विच कई कोट छुप गए संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे चरणी डिग डिग सीस निवाईआ। ओस फड़ के कदम कीती पुकार, पुनह पुनह पुनह सीस निवाईआ। झट बावन ने आपणा आप संकोच ल्या ते आ गया गिठमुठ दा रूप बणा के फेर दूजी वार, दोहरी आपणी खेल खिलाईआ। नाले हस के किहा, ऐ बलि, प्रभू दा लहिणा देणा सदा जुग चार, जुग चौकड़ी खेल चलया आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आवे आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल आपणा फेरा पाईआ। तेरे प्यार विच नाम कलमे दए उच्चार, सोहणे ढोले सोहले राग सुणाईआ। राग नाद उस दा करन

१२५१
२४

इज़हार, आप आपणी सुर बणाईआ। पर तैनूं सच दस्सां जिस वेले बण के आया कलि कल्की अवतार, निहकलंक आपणी कल प्रगटाईआ। अमाम अमामा नूर उज्यार, जोती जाता नूर अलाहीआ। पहलों उन वड्डा होणा ते फेर एडा छोटा बणना कि लभणा नहीं विच किसे संसार, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। जेहड़ा मैं तैनूं पहलों दस्सया गोबिन्द दा ओह बणना मित्र मुरार, माछूवाड़े दी सेज हंढाईआ। फेर दोबारा होवे ज़ाहर, सम्बल आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द शब्द गुरु ते जोत दा जोत होवे उज्यार, जोती जाता सोभा पाईआ। आपणा हुक्म करे सब तों बाहर, जिस दा अक्खर अक्खर समझे ना कोए समझाईआ। झट बलि ने ध्यान धर के अन्दर कीती पुकार, आपणा स्वास मस्तक तों उपर ल्या खिचाईआ। सवा गिठ दे विच करके उज्यार, अगे पिच्छे वेख वखाईआ। मारू डण्ड नूं किहा तेरा वी नहीं कोई विहार, तेरा संग ना कोए चतुराईआ। दसम दुआरी नूं किहा ओह तूं वी अधविचकार, बैठी आसण लाईआ। मेरा महबूब मेरा स्वामी मालक बैठा आपणे सच्चे दरे दरबार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। झट प्रेम विच बिना नेत्रां तों निगाह लई मार, बिना अक्खीआं दर्शन पाईआ। बिना रसना तों सुणी शब्द दी धार, अणसुणत दिती दृढ़ाईआ। ओए बलि, हुण मैं तेरे आया इक दे दुआर, तेरे दुआर नूं दवां वड्याईआ । पर कलयुग विच जिस वेले सति धर्म तों दूर हो गया संसार, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मेरे शब्द नाम दा रंग ना कोए चढ़ाईआ । उस वेले जोती जाता पुरख बिधाता हो के होवां ज़ाहर, ज़ाहर हो के आपणा खेल खिलाईआ । चार जुग दे नहीं नौं सौ चौरानवे चौकड़ी जुग जन्म दे विछड़े इक्ठे कर लवां एका वार, एह मेरी बेपरवाहीआ । मैं कोई शास्त्र ते सिमरत ते वेद पुराणां दा दस्सणा नहीं विवहार, रसना जिह्वा ना कोई करां पढ़ाईआ। जिस नूं चाहवांगा ओसे नूं देवांगा तार, एह मेरी बेपरवाहीआ। क्यों मैं मालक ख़ालक दो जहानां दा मुख्त्यार, मुख़तार सब कुछ आपणे हुक्म विच चलाईआ। बलि किहा प्रभू मैं तेरी भगती दा आपणे अन्दर भरया भण्डार, दिवस रैण तेरे ढोले गाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरे चरणां उत्तों दिती वार, भेंटा तेरे अगे टिकाईआ। भगत बणना बड़ा दुष्वार, बिन भगतीउँ कोई प्रभू नूं मिलण कदे ना पाईआ। झट बावन किहा ओ बलि जिस ने मेरा रूप बणाया साकार, ते ततां खेल खिलाईआ। ओह शहिनशाह सब दा सिक्दार, पातशाह अगम्म अथाहीआ। जदों चाहवे जिस नूं चाहवे बिना भगतीउँ ला देवे पार, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। ओहदे चरणां दी धूड़ ते सचखण्ड दा दुआर, दोवें इक्को रूप दए वखाईआ। बावन फेर वेख्या ओ बलि, बेशक ओस वेले कलयुग ने करना धूंआँधार, धुर दे हुक्म विच कलयुग सेव कमाईआ। फिर वी भगत सुहेला हो के फड़ बाहों लवां उबार, कोझयां कमल्यां आपणे गले लगाईआ। पर इक गल्ल याद रखीं एह वक्त ओदों सुहाउणा होवेगा, जदों नामे दी धार दा

बणेगा भगत दुआर, जिस दी सत्तर बहत्तर चुहत्तर ते पंज पंज देण गवाहीआ। इहनां अक्खरां दा चार जुग दे शास्त्र कर नहीं सकदे विसथार, जगत दे विद्या वाले भेव ना कोए पाईआ। पर याद रखीं बलि नौ सौ चरानवे चौकड़ी जुग प्रभू दे नाम दे डंक वजदे रहे संसार, ओसे दे गुण गाईआ। पर कलयुग अन्त भगतां दा ऐसा बणना मीत मुरार, मित्र प्यारा हो के आपणी गोद टिकाईआ। आप भावें मातलोक विच कुछ करे पर भगतां नूं ज़रूर सचखण्ड ल्यावेगा आपणी गोद उठाल, बिना लत्तां बाहवां तों भज्जे वाहो दाहीआ। पर ओह वक्त याद रखीं ओह लेखा ओदों मुकणा जिस वेले सम्मत शहिनशाही इक इक नूं मिला के ते आउणा ग्यारां दा साल, साल बसाला आपणी खेल खिलाईआ। क्यों प्रभू दे भगत ते प्रभू दे लाल, ते लालन हो के आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे बावन ने बलि नूं वर दिते अतुट, बिना लेख लेखणी दिती वड्याईआ। शब्द सुणाए बिना बुल्लां बुट, जिह्वा रसना ना कोए हलाईआ। लेख लिखे बिना कलम शाही ते उंगलां हथ्थां गुट, लाल रंग दिता चढ़ाईआ। नाले इशारा कीता भगत भगवान प्रीती कदे ना जावे टुट, टुटयां आपणी गंढु पुआईआ। आत्म परमात्म नाता
१२५३ कदे ना जावे छुट, छुटकी लिव फेर लए लगाईआ। पर इक प्रभू विच वड्डा गुण, जदों चाहे लोकमात दे बूटे पुट्ट, ते १२५३
२४ सचखण्ड आपणे दर लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब २४
आपणा हुक्म वरताईआ। छब्बी पोह कहे औह वेखो गुरु अवतार पैग़म्बर किड्डे सोहणे बैठे अस्थान, आपणा आसण लाईआ। नाले नूर नाले जोत नाले प्रकाश नाले सति सरूप भगवान, भगवन विच समाईआ। नाले दाते नाले भिखारी नाले मंगते नाले मंगण दान, आपणी झोली डाहीआ। नाले वेखण ज़िमीं असमान, दो जहानां राह तकाईआ। नाले तकण आपणे फ़रमान, जो भविख्तां विच आए लिखाईआ। नाले सुणाउण सीता राम, की रम्ईआ करे धुरदरगाहीआ। नाल संदेशे देवण काहन, काहन तेरे काहन दी की वड्याईआ। पैग़म्बर कहिण साडा अमाम, जल्वागर नूर अलाहीआ। गुरु गुरदेव कहिण असीं ओसे दे रूप विच्चों होए प्रधान, जिस ने मातलोक दिती वड्याईआ। जिस दा संदेशा सुणया बिना कान, अनादी धुन विच शनवाईआ। ओह शाहो भूप अन्त आवे सुल्तान, मालक धुरदरगाहीआ। जिस नूं सारे करन परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। सानूं इयों जापदा सब नूं ओह मालक ख़ालक वाली दो जहान, दोहरी आपणी कल वरताईआ । जिस ने आपणा हुक्म सुणाउणा बिना कान, शब्दी शब्द शब्द करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू मेरा पुराणा तेरे नाल लहिणा, सतिजुग दए गवाहीआ। तैनूं ज़रूर पएगा

देणा, मुकर कदे ना जाईआ। मैं चाहुंदा जे तूं सतिगुर हैं ते भगतां नूं दर्शन देवीं दिने जागदयां ते रातीं सुत्तयां आपणे नैणां, साख्यात नज़री आईआ। फेर मैं चाहुंदा तूं इहनां दे अन्दर वड़ के बहणा, काया मन्दिर सोभा पाईआ। फेर मैं चाहुंदा इन्हां अन्दर बल बख्श दे हर हिरदे विच जिन्हां तेरा भाणा सहणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। होर किरपा कर दे आपणे प्यार दा अन्तर निरंतर पा दे गहिणा, दो जहान सके ना कोए चुराईआ। मेहरवान हो जा एन्हां नूं लाड़ी मौत ना खाए डैणा, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। कृपालू होर किरपा कर दे चुरासी विच ना पए पैणा, जम की फाँसी देणी कटाईआ। होर मेहरवान हो जा एह तेरे भगत नहीं तरफ़ैणां, सुत दुलारे तेरे नज़री आईआ। छब्बी पोह कहे मैं चाहुंदा जन भगतो जे भगत जे ते बण जाओ भाई भैणां, बुरी अक्ख ना कोए उठाईआ। वेख लओ तुहाडे वेंहदयां जगत जहान किस वहिण विच वहिणा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जगत जहान धुर दे हुक्म दे नाल खहणा, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। ओह बाल्मीकी याद रख किस तरीके नाल लिखी सी रमायणा, ओह चम्यारा किस तरीके नाल प्रभ दे नाल गंढु पुआईआ। तुसीं केहदे साक केहड़ा तुहाडा सज्जण केहड़ा तुहाडा सैणा, किस दे नाल मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१२५४ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब हुक्म वरताईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो ओए अगे १२५४
२४ लड़ाईआं झगड़े हुन्दे रहे तीर कमानां ते खण्डे, जगत शरअ विच लड़ाईआ। अवतार पैग़म्बरां नूं वंड दितीआं वंडे, हिस्से २४
थोड़े थोड़े पाईआ । नाम दे चढ़ा के निक्के निक्के डण्डे, पौड़ीआं उत्ते लमकाईआ। आपणे आपणे धर्म ते मज़्हब दे झुला के झण्डे, दीन दुनी गए वखाईआ। पर फेर वी प्रभ ने सब नूं जणाया कलयुग अन्तिम आउणा कन्ढे, कन्ढी घाट सारे बैठे आसण लाईआ। अन्त अख़ीर इक्को गाउणा सब ने छन्दे, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। पिछल्यां जुग पिच्छे बड़े लम्मे लम्मे लँघे, आपणा पन्ध मुकाईआ। पर याद रखयो, जिस वेले गोबिन्द दी धार बणी ते शब्द दी धार विच्चों आवाज़ आई, गोबिन्द, दो इक दी धार मेरी इक्की ते तेरे इक्की होवणे कंघे दे दन्दे, दन्दीआं पीहण वाला नज़र कोए ना आईआ। जिंनां चिर मैं दोबारा ना आया ओनां चिर निशान मिटणा नहीं तारा ते चन्दे, चन्द सितार वेखण राह तकाईआ। उह खेल ऐसा होणा प्रभू दे नाम उत्तों लड़ने बंदयां नाल बन्दे, बन्दगी वाला रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल होणे तुहाडे वेंहदयां वेंहदयां बड़े अचंभे, अचानक आपणा हुक्म देणा वरताईआ। मुहम्मद ने आस रखी एह जदों शुरू होवे ते होवे मेरे यक शम्बे, यके बाद दीगरा हुक्म ना कोए सुणाईआ। पता नहीं भगतो केहड़ा वेला केहड़ी सुलखणी घड़ी ते तुहाडा प्रभू आपणा खेल अरंभे, अरंभा परी चौदां रत्नां वाली गई समझाईआ। एह कोई खेल तुहाडा नहीं भगवान दी धार ते जिस ने कराउणे दीन दुनी

दे दंगे, दगिआं विच आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। छब्बी पोह कहे ओए नारदा तूं क्यों लुक्या, ओह मेरे दूर दूर बोदी हिलाईआ। नारद कहे ओए मित्रा मैनूं ऐ दिसदा जिवें पिछल्यां दा पैंडा मुक्कया, अगे राह खेड़ा नज़र कोए ना आईआ। प्रभ नूं मिलण वास्ते सब ने बथेरयां लाए तुक्कया, तोड़ा ला के गए समझाईआ। पर ब्राह्मण कहिंदा मैं उह बुढ्ढा उह पुराणा पंडा जेहड़ा आदि जुगादि इक्को प्रभू नूं झुकया, दूजे सीस ना कदे निवाईआ। ना मैं हरया ना मैं सुक्कया, आपणा आप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल इक वखाईआ। नारद कहे छब्बी पोह मित्रा मैं सुणीआं बड़ीआं गल्लां, दूरों दूरों ध्यान लगाईआ। मैं जाणदा घड़ी घड़ी पल पलां, पलकां दे पिच्छे बैठा वेख वखाईआ। जेहड़ा फिरदा जंगलां जूहां ते विच झल्लां, झल्ला हो के भज्जे वाहो दाहीआ। जिस नूं मुहम्मद वरगिआं रसूलां किहा अल्ला, आलमीन तेरी बेपरवाहीआ। मैनूं एउँ जापदा उह फेर इक इकल्ला, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जिस दा हुक्म वरतणा जलां थलां, महीअल आपणा फेरा पाईआ। ओह ऐउँ जापदा जिवें आपणयां भगतां दा मेटण आ गया सल्ला, सलल

१२५५ २४ हो के आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब धुरदरगाहीआ। १२५५ २४

नारद कहे भगतो, ओ मित्रो, ओ प्यारयो सज्जणो ओ संगीओ साथीओ मैं सच दस्सां एह प्रभू बड़ा धोखेबाज़, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। आपणे नाम दी वड्याई वास्ते आपणी बदल देंदा आवाज़, अक्खरां नाल अक्खर दए बदलाईआ। फेर नवीं तों नवीं साजणा लए साज़, एह एहदी बेपरवाहीआ। कदी सतिजुग नूं कदी त्रेते नूं कदी द्वापर नूं दे के राज, रईयत लख चुरासी संग बणाईआ। कदी कलयुग दी खोल्ह के जाग, कूड़ी क्रिया पल्लू दए फड़ाईआ। सोहणा माया ममता मोह दा लगा के बाग़, कूड़ कुड़यारा बूटा लाया थांउँ थाँईंआ। पर याद रखयो, एह उस वक्त इशारा होया सी जिस वेले गोबिन्द ने पहले दिन उडाया सी बाज़, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। ओ मेरे तों बाद आवेगा मेरा महाराज, चौबीसा धुरदरगाहीआ। जिस ने सब तों लैणा जवाब, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जो पेशीनगोईआं विच पैग़म्बरां ल्या ख्वाब, सब दे लेखे वेखे थांउँ थाँईंआ। जिस नूं जुग जुग सारयां कीता आदाब, सजदयां विच सीस निवाईआ। ओन इक गल्ल करनी बिना किसे करनी तों आपणयां भगतां दी ज़रूर करनी इमदाद, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाले दुरमति दे धोणे अन्दरों दाग़, पापां करे सफ़ाईआ। गुरमुखां दे पिच्छे आपणी खोल्ह के जाग, राती सुत्तयां घर घर दरस वखाईआ। फेर वड्डे वड्डे करने भाग, भागां वाले देणे बणाईआ। जगत दीआं दीप मालां नूं छड के ते भगत दुआरे उत्ते जगा के चराग़,

ओह नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दे विछड़े होए चराग़ो तुहाडी कर देणी रुशनाईआ। तुसीं बेशक धर्म राय दे अगे फिरना नाल मजाज, आकड़ नाल जाणा चाँईं चाँईंआ। कहिणा, ओए असीं नहीं सन्त असीं नहीं साध, असीं नाम जपण दा कलमे पढ़न दा कोई नहीं रख्या रिवाज, असीं किसे ग्रन्थ शास्त्र दे नहीं मुहताज, साडा कोई नहीं नुवाब, साडा इक्को शहिनशाह पातशाह, जिस ने सब दी साजणा लई साज, साजण हो के मिल्या धुर दा माहीआ। ओह आया सब तों बाद, आपणा फेरा पाईआ। हुण सानूं की लोड़ ते केहड़ी पढ़ीए किताब, ते कुतबख़ान्यां नूं फोलण काहनूं जाईआ। क्यों इक्को महबूब मिल्या इक्को साहिब मिल्या जिस दा सब तों वखरा हिसाब, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आह कहिंदा, नारद, मैं छब्बी पोह बणया बुढ्ढा ओए बड़ा पुराणा मैं नौ खण्ड वेखे, सत्त दीप वेखे, अवतार वेखे, पैग़म्बर वेखे, भगत वेखे, सन्त वेखे, पुरी वेखे खेल वेखे, मैं नहीं तक्कया की खेल होणा, पर मेरी अज्ज जाग खुल्ह गई, अक्खां खुल्ह गईआं ते मैनूं नज़र आया विच पंजाब, जो पंजां ततां दे लेखे दए मुकाईआ। क्यों जिस दिन सतिगुर नानक ने पहले दिन वजाई सी रबाब, तन्द सितार सितार विच्चों हिलाईआ। ओसे दा मर्दाने नूं आया सी ख्वाब, जो बग़दाद आया समझाईआ। उस रबाब दी धार विच होणा फ़साद, झगड़ा ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक वड्याईआ। नारद कहे छब्बी पोह, भई किड्डा सोहणा दिहाढ़ा तेरा चंगा, चंगा नज़री आईआ। औह तक लै दूर दुराडे यमुना सरस्वती गोदावरी ते नाल खलोती गंगा, गऊ माता हथ्थ विच फड़ के वेखण नैण उठाईआ। नाले सोचण किस बिध भगत दुआरा जाए लँघा, आपणा कदम उठाईआ। पर मैं पंडत अगों सिरों दिस्या नंगा, बोदी रिहा हिलाईआ। फेर निगाह मारी इक सुणाया छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। नाले उन्हां नूं सहिज नाल किहा कमलीओ जे बाहरों वेखोगीआं ते ततां वाला बन्दा, अन्दर वेखोगीआं उह मालक धुर दा माहीआ। जिस नूं सयदे करदे तारा चन्दा, सूर्या आपणा आप छुपाईआ। जिस दा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी दा सफ़र लम्बा, लमह लमह लमह करके दिता मुकाईआ। नी हुण हैरान हो जाओगीआं उस दा खेल बड़ा अचंभा, हैरानी विच सब नूं रिहा पाईआ। तुहानूं वेखो चंगी तरह उस दीआं हिलदीआं दो टंगां, दो टंगां वाला हो के दो जहान रिहा भवाईआ। एह उस बड़ा चंगा सोचिआ ढंगा, जेहड़ा तरीका चार जुग ना किसे समझाईआ। ना कोई तीर ना कोई भथ्था ना कोई हथ्थ विच फड़े खण्डा, ना कोई फ़ौज ते लशकर शाही नज़री आईआ। मैं हैरान हो गया इक्को बणा के सत्त रंग दा डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक वखाईआ। गंगा कहे सुण वे पंडता पांध्या, साडी इक

१२५६
२४

अरदास। भगत दुआरे औंदे जांदयां, तैनूं दईए शाबास। बिन रसना पींदिआ खांदिआ, जीवत बिना स्वास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहणया तूं आ जा साडे पास। झट नारद कहे मैं बोदी रिहा संवार, मथ्थे तिऊड़ी ना कोए रखाईआ। नी मैं पुजया भगत दुआर, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक्को मन्नया धुर दा यार, जो नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो जुग जुग खेल करे अपार, अपरम्पर स्वामी इक अख्वाईआ। पहलों बाहरों उस नूं करो निमस्कार, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। फेर धूड़ी लाओ छार, क्यों चन्दन दे टिक्के भगत सुहेले ला के गए चाँईं चाँईंआ। फेर बणो भिखार, ख़ाली झोलीआं अगे डाहीआ। किरपा कर साडे करतार, कुदरत दे कादर धुरदरगाहीआ। साडा कलयुग दा लहिणा देणा अन्तर लै विचार, विचरके दईए सुणाईआ। दीन दुनी होई विभचार, कुकर्मां भरी लोकाईआ। साडे तीर्थ तट किनार होए ख्वार, जगत रही ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती चारे जोड़न हथ्थ, भगतो भगत दुआरे सीस निवाईआ। नाले कहिण प्रभू तूं पुरख समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। जिस तरह तूं भगतां नूं देंदा एं वथ, एसे तरह साडी झोली दे भराईआ।
 क्यों तूं बेपरवाह अगम्म अथाह तेरे गोबिन्द गया सथर लथ, ओह सोहणी तेरी सेज हंढाईआ। जे हुण तूं कलयुग अन्त भगतां
 वल कीती आपणी अक्ख , ओ अक्खीआं वाल्यां नूं आपणीआं अक्खीआं विच मिलाईआ। सानूं ऐं दिसदा तूं सब तों निराला
ते वखरा एन्हां दा कीता पक्ख, सिर इहनां दे हथ्थ टिकाईआ। एसे करके छब्बी पोह दा दिहाढ़ा ते भगतां नाल रिहा वस, भगतां तों बिना दूजा नज़र कोए ना आईआ। एह भगत सुहेले चंगे जिन्हां दा प्रभू हो के गावे जस, सिफ्तां दे ढोले गाईआ। मेहरवान हो के बिना मंग्यां एहनां दे अन्दर देवे रस, अन्तर आत्म आपणा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । गंगा कहे नी यमुना सरस्वती, सुतीओ लओ अंगड़ाईआ। नी गोदावरी उह गोबिन्द दी धार तक अगम्मी हस्ती, बिन नेत्रां वेख वखाईआ। नारद कहे ओ चौखट्टीओ औह भगतां दी वेखो बस्ती, जिथ्थे भगत सुहेले आसण लाईआ । ओथे वेखो प्रभू दी धार किड्डी सस्ती, बिना स्वासां ते नामां तों झोली पाईआ। इक्को वड्याई ते इक्को खेल जस दी, सिफ्तां नाल सालाहीआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर आत्मा परमात्मा दे प्यार विच हसदी, बिना बुल्लां तों रही मुसकराईआ। दुनिया दी धार विच नहीं फसदी, दीनां मज़्बां दा लेखा रहे मुकाईआ। एह आशा पूरी होई एस धरती उत्ते लव ते कुश दी, बाल्मीक दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दे लेखे रिहा मुकाईआ। नारद कहे छब्बी पोह कुछ अवतार पैग़म्बरां

गुरुआं दी लै दलील, जो बिना ज़बान तों देण सुणाईआ। जिन्हां दी दरगाह विच मन्ज़ूर होई अपील, जो आसा रख के गए धुरदरगाहीआ । ओ मालक जिन्हां दा छैल छबील, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। वाहवा वाहवा वाहवा आशा औण लिटदीआं, पल्लू गल विच पाईआ। बिन हथ्थां तों औण पिटदीआं, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। हंझू अक्खां दे विच्चों सिटदीआं, नैणां नीर वहाईआ। क्यों ओह वणजारीआं सतिगुर शब्द अगम्मी चिट दीआं, जो चिट्टे उत्ते काला रिहा पाईआ । हुक्म विच कोटन कोटि जुग चौकड़ीआं टिकदीआं, जो टिक्के गुरमुखां दे मस्तक रिहा लगाईआ। अनक वार भगतां दीआं ख़ाहिसां उस दे प्यार विच विकदीआं, जिस दी कीमत करता आपे पाईआ। कोटन कोटि उसे दे प्यार विच सिकदीआं, आपणा आप सुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त इक वड्याईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मैनूं इयों लगदा तुसां अज्ज खाधी मकई दी रोटी, दन्दां दाहड़ां हेठ दबाईआ। पर याद करयो एस दे पिच्छे तुहाडा लहिणा देणा मुक गया जन्म कोटन कोटी, कोटन कोटी जन्म दा लेखा दिता मुकाईआ। तुसीं फेर माता गर्भ विच नहीं बणना बोटी,

१२५८ रक्त बूँद जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। तुहाडे अन्दर रहिण नहीं देणी वासना खोटी, खोटिउँ खरे देणा बणाईआ। उस जिस १२५८

२४ कारन तुहानूं बन्ना दिती लंगोटी, धर्म दी धार विच देणा जुड़ाईआ। जिस प्यार विच हथ्थ विच फड़ा दिती सोटी, बलधारी २४

देणे वखाईआ। तुहानूं बिना भगती तों चाढ़ के धुर दी चोटी, ओ अन्दर दे चोटिओ तुहानूं आपणे नाम दी चोट देणी लगाईआ। बेशक तुहाडी आयू कलयुग विच बहुत छोटी, हज़ारां बरसां तप्सया ना कोए कमाईआ। फिर वी तुहानूं मिला के आपणी ओस अगम्मी जोती, जिस जोत विच्चों तुहाडी जोत दिती प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे भगतो भगत दुआरे आ के ना रहिणा सुते, सुत्तयो लओ अंगड़ाईआ। जिस ने भाग लगाउणा तुहाडे काया बुते, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। उस नूं अज्ज कहि दयो जां भगत बणा लै जा आपणे बणा पुते, जां सुत दुलारे बणा के आपणी गोद टिकाईआ। तुहाडी आत्मा दी धार एथे ओथे दो जगत वासना कोई ना लुट्टे, प्रभू लुटेरया लुटेरया लुटेरया सानूं लुट के लै जा आपणी धुरदरगाहीआ। जिथ्थे फेर राय धर्म मूल ना कुट्टे, मार कुट्ट दा लेखा रहे ना राईआ । आवण जाण गेड़ा चुक्के, चुकन्ने हो के सुणना चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दुआर इक वड्याईआ। सतरंगा कहे कुछ मेरे अन्दर विचारा, जन भगतो ओ तुहानूं दयां सुणाईआ। तुसीं दस्सो की खेल करे करतारा, कुदरत दा कादर की आपणी कार कमाईआ । किस बिध प्रगट

हो गया चवीआं अवतारा, चौबीसा जगदीसा आपणा रूप बदलाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर अवतारा, गुरु गुरदेव आपणा रंग रंगाईआ। शब्दी शब्द दा ला के नाअरा, नर नरायण रिहा सुणाईआ । बिना ततां तों हो के ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा वेस वटाईआ। बिना भगतीउँ तुहानूं करे प्यारा, प्रीतम हो के आपणी गोद टिकाईआ। पर तुसीं सच दस्सो, प्रभू दे प्यार विच आत्मा दी धार विच धर्म दीआं बणोगे नारां, स्त्री पुरुष जगत वंड ना कोए वंडाईआ। सारे भगत जन आपणे आपणे हथ्थ विच फड़न इक इक छुहारा, छोहरो बांकिओ आपणे मुख नूं सगन लओ लगाईआ। पर याद रखयो अज्ज तों वायदा तुहाडे नाल कौल इकरारा, जिस नूं कोई मेट ना सके विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव तुहाडी देण गवाहीआ । तुसीं जदों जाउगे ते जाउगे विच सचखण्ड दुआरा, राह विच ना कोए अटकाईआ। एसे तरह तुहाडे नाल चलांगा ते तुहाडे उत्ते देवांगा पहरा, आहहहआ करके सब नूं रिहा सुणाईआ। क्यों मैं महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दा खेल कीता अपारा, अपरम्पर हो के आपणी कार दयां भुगताईआ। मैं कोई बन्दा नहीं इन्सान नहीं, शब्द गुरु ते गुरु दा खेल अपारा, अपरम्पर हो के दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक वड्याईआ। छब्बी पोह कहे प्रभू ला दे आपणी छहबर, सोहणा रंग रंगाईआ। तूं मेहरवान मेहरवान मेहरवान इक रैहबर, नूर नुराना नूर अलाहीआ। इक अक्खर इक वरड जिहनूं कहि देंदे आलटूगैदर, वाहवा आलमीन तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे आपणा वर, वाग दूजयां हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे, भगतो, दूसर हथ्थ ना वाग फड़ावांगा। शाह अस्वार इक अख्वावांगा। दो जहानां बिन ततां अस्व दौड़ावांगा। श्री भगवाना हो के खेल खिलावांगा। नौजवाना हो के रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणावांगा। नारद सारीआं पुराणीआं कढ्ढी औंदा चिट्ठीआं, बिना चिट्ठी रसैण तों पन्ध मुकाईआ। ख़बरां दस्सी जांदा मिठ्ठीआं मिठ्ठीआं, बिन रसना ढोले गाईआ। संदेशे देवे जिन्हां दीआं आसां इक प्रभू उत्ते टिकीआं, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। उहनां दा रूप बण गया जो हाहे उत्ते टिप्पीआं, हँ ब्रह्म पारब्रह्म विच समाईआ। धारां हो गईआं चिट्टीआं, काला रंग ना कोए रखाईआ। अन्त उहनां नूं गिणनीआं नहीं पैणीआं गिट्टीआं, बिना सोचण समझण तों सचखण्ड दुआर जाणा चाँईं चाँईंआ। जिन्हां दीआं सदा बहारां खुशीआं वालीआं होणीआं मितीआं, दिवस वार वंड ना कोए वंडाईआ। अज दा दिहाढ़ा ते अज दीआं थित्तीआं, ते अज्ज दी रैण तुहाडी दए गवाहीआ। भावें जुग चौकड़ीआं पिच्छे लँघ गईआं कितीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

१२५६ २४

साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। सच दुआरा कहे ओ प्रभू केहड़े तेरे भगत, भगवन दे वखाईआ। असीं तक्कीए विच जगत, जगजीवन दाते ध्यान लगाईआ। जिन्हां नाल तेरा वायदा कौल इकरार शर्त, धुर दा संग बणाईआ। जिन्हां पिच्छे आएयों परत, पतिपरमेश्वर रूप बदलाईआ। जो प्रगटा के उपर धरत, धवल दए वड्याईआ। भाग लगा के वाली अर्श, अर्शी प्रीतम खेल खिलाईआ। माण दे के ग्यारां शहिनशाही सम्मत बरस, बरसी भगतां रिहा मनाईआ। मेहरवान हो के कीता तरस, रहमत आप कमाईआ। जन्म जन्म दी मेटी हरस, अगे हवस रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। दुआर कहे मैं आदि जुगादी मंगता, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना प्यार बख्श दे साची संगता, संगल शरअ वाला कटाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे जणाईआ। तूं बोध अगाधा बुद्धी तों बाहर दा पंडता, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। प्रकाश दे दे आपणे नूर अगम्मी चन्न का, अन्ध अन्धेर गुआईआ। झगड़ा रहे ना मनूए मन का, ममता मोह देणा मिटाईआ। मार्ग दस्सणा आपणे धर्म का, धरनी धरत धवल सुहाईआ । अगला लेखा पिछला लेखा वेखणा भगतां जरम का, जन्म जन्म
१२६० दा पन्ध मुकाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा काया माटी चर्म का, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। पन्ध मुका दे वरन बरन १२६०
२४ का, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। एका नाम निधाना तेरा होवे पढ़न का, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। २४
इक्को मार्ग होवे तेरे मंज़ल चढ़न का, अगे हो ना कोए अटकाईआ। इक्को दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा तेरा होवे सचखण्ड वड़न का, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सहारा एकँकारा परवरदिगारा तेरा होवे सरन का, सरनगति इक अख्वाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। साचा संगी बण जा आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दा मेट दे पाप, पतित पुनीत दे कराईआ। झगड़ा रहे ना त्रैगुण तीनो ताप, रजो तमो सतो ना कोए लड़ाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी बण जा धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल गोद उठाईआ। तुध बिन दूजा दिसे ना कोए लोकमात, मातृ भूमी दए गवाहीआ। जन भगतां लेखे लाउणी अज्ज दी रात, छब्बी पोह जगत वड्याईआ। दिवस दिवस दिवस वधदी जाए जमात, सोहणा संग बणाईआ। तूं दर्शन देंदे रहिणा आप इकांत, इक इकल्ले मिलणा चाँईं चाँईंआ। हरिजन अन्तर रखणा शांत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आपणा बणाउणा प्रांत, सत्तां दीपां इक्को गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे साहिब होणा सहाईआ। धुर दे साहिब होणा सहायक, आपणी दया कमा। आदि जुगादी धुर दे नायक,

मेहरवान मेहरवान मेहरवां। जन भगतां करनी हमाइत, सिर सिर आपणा हथ्थ टिका। झगड़ा मेटणा शरअ शरायत, अन्तर पर्दा देणा खुल्हा। साचे नाम दी करनी अनाइत, बख़्शिश करनी नूर अलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सब दी कबूल कर दुआ। छब्बी पोह कहे मैं आपणा वक्त करां सुहञ्जणा, सोहणी रुत सुहाईआ। किरपा कर मेरे निरञ्जणा, नर नरायण तेरी सरनाईआ। दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। जन भगतां नेत्र पा दे नाम अञ्जणा, अज्ञान अन्ध देणा मिटाईआ। आत्म परमात्म बणना धुर दा सज्जणा, सगला संग रखाईआ। बिना चरणां तों करा दे आपणा मजना, प्रेम धूड़ी ख़ाक रमाईआ। लेखे ला लै आहला अदना, ग़रीब निमाणयां हो सहाईआ। तूं गोपाल मूर्त मदना, मध सूधन इक अख्वाईआ। जो इशारा दे के गया तेरे दुआरे सधना, कसाई कसम खा के छुरी सुटाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी किरपा बिना किसे नहीं मूल तूं लभणा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। हुण लहिणा देणा पूरा कर दे सभना, सभा भगतां वेख वखाईआ। तैथों रहे कोई ना अड्डना, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। अज्ज वायदा कौल इकरार कर ला जो भगत बणया इस नूं मूल नहीं छडणा, विछोड़े विच कदे ना आईआ। अन्दरों आत्मा ते बाहरों प्रेम
१२६१ कराउणा बदना, तन वजूदां रंग चढ़ाईआ। नौ खण्ड विच भगतां दीपक जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। दर्शन १२६१
२४ देवे उपर शाहरगणा, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। इक्को मंज़ल बख़्शणी इक्को बख़्शणा पदना, पद यात्रा रहिण कोए ना २४
पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त नाम वरताईआ। सच वस्त दे दे अगम्मा दान, नाम निधाना आप वरताईआ। बिन रसना प्या दे जाम, हकीकी इक वरताईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, शरक्त अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। धुर दा बण आप अमाम, अमल वेखणे ख़लक खुदाईआ। तेरी रसूलां तों परे दी होवे कलाम, कायनात दृढ़ाईआ। तूं मालक ख़ालक इक अमाम, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। सूफ़ीआं दा कर लै इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। झगड़ा मेट के काया चाम, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। मनसा पूरी करनी जो संदेशा दे के गया राम, बनवासी हो के ध्यान लगाईआ। जो इशारा दिता अर्जन नूं काहन, घनईया हो के गया सुणाईआ। जो मूसा ने किहा मेरा साहिब मेटे अन्धेरी शाम, शमअ नूर कर रुशनाईआ। ईसा इस्म दस्सया सब नूं तमाम, तरह तरह नाल दृढ़ाईआ। मुहम्मद इशारा दिता नाल चार यारी अवाम, निरअक्खर अक्खरां धार जणाईआ। नानक निरगुण सरगुण दस्सके मन्त्र सतिनाम, नाम नाम विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द मार्ग दस्स दे आसान, असल गया समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल करे महान, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगत सुहेले लए पहचान, गुर चेले वेख वखाईआ। रातीं

१२६२
२४

सुत्तयां दर्शन देवे आण, आनन फ़ानन आपणा पर्दा लाहीआ। अन्तर अन्तर देवे ज्ञान, अन्तष्करन करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक वखाईआ। भगत दुआर कहे जन भगतो प्रभू बणाउणा मीत, मित्र इक अख्वाईआ। जिस दी आदि जुगादी रीत, रीतीवान धुरदरगाहीआ। जो वेखणहारा सब दी नीत, अन्दर बैठा धुर दा माहीआ। जिस तुहाडी काया करनी ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। झगड़ा मेट के मन्दिर मसीत, काया काअबा इक वखाईआ। सारे तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला गाउणा गीत, जो गोबिन्द गया समझाईआ। जिस नाल सब नूं करे पतित पुनीत, दुरमति मैल धुआईआ। सद वसे तुहाडे बीच, बाहर रहिण कोए ना पाईआ। जिस दे घर गृह कोई नहीं ऊँच ते नीच, ज़ात पात दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ । उह माण देवणहारा हस्त कीट, शाह सुल्तानां आपणा हुक्म वरताईआ। पर ओस दा खेल कलयुग अन्त अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी वल्ल सुता दे कर पीठ, करवट आपणी ना कोए बदलाईआ। जन भगतां अन्तर रस बख़्श के मीठ, अनरस रिहा चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वखाईआ। सच दर वखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। शाह कंगाल रंग रंगाएगा। जल्वा नूर जमाल प्रगटाएगा। दीपक जोती बाल, अन्धेर चुकाएगा। काया वखा के सची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वडयाएगा। भगत सुहेले आपे भाल, आपणा संग बणाएगा। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, कोझे कमले गोद टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा पूर कराएगा। सच लेखा पूर करावांगा। हाज़र हज़ूर हो के दरस दिखावांगा। जो आसा रखी मूसा उत्ते कोहतूर, सो लहिणा सब दी झोली पावांगा। जिस नूं ईसा किहा हज़ूर, हज़रतां दा मालक हो के रंग रंगावांगा। जिस नूं मुहम्मद किहा ग़फ़ूर, ग़फ्लत सब दी दूर करावांगा। जिस नूं नानक कीता मन्ज़ूर, मन्ज़ूरी सब दी वेख वखावांगा। जिस नूं गोबिन्द पिता मन्नया ज़रूर, ज़रूरत सब दी झोली पावांगा। बेशक प्रभू दा खेल अगम्मा नूर, नूर नुराना हो के डगमगावांगा। कलयुग लेख मिटा के कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकावांगा। सतिगुर शब्द भगत सुहेले तारने, बण के जगत मलाह। सब दे काज संवारने, पूरब लहण चुका। पूरब कर्म ना मूल विचारने, लहिणा हथ्थो हथ्थ फड़ा। जो संदेशे दिते गोबिन्द यार ने, सथर सेज हंढा । ओह पक्के वायदे कौल इकरार ने, जिस नूं सके ना कोए मिटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल दए खिला। सतिगुर शब्द जन भगत वेखणे जग, जगजीवण दाता दए सुणाईआ। अन्तर वड़

के बुझाउणी तृष्ना अग्ग, ततव तत ना कोए तपाईआ। हँस बणाउणे फड़ फड़ कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दर्शन देणा उपर शाहरग, शहिनशाह मेलणा चाँईं चाँईंआ। कोई रहिण नहीं देणा अल्पग, सरबग नाल मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब दा बणां संगी, सगला साथी इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी आसा मनसा पूरी करां जो पूरब मंग मंगी, लेखा अवर रहे ना राईआ। जन्म कर्म दी मेटां तंगी, तंगदस्त दा डेरा ढाहीआ। सब नूं करां कार अंगी, आपणे अंग लगाईआ। नूर नुराना नूर चमकावां चन्दी, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दीन मज़्हब तोड़ पाबन्दी, शरअ दा लेखा दयां मुकाईआ। जन भगतां निज नेत्र लोचन नैण अक्ख रहिण ना देवां अन्धी, अन्ध अज्ञान दयां गुआईआ। पिछली जो पिच्छे लँघी, अगे आपणा संग बणाईआ। झगड़ा रहिण ना देवां प्रकृती पंझी, पंज तत देवां माण वड्याईआ। मनुआ झगड़ा करे ना बण के जंगी, शस्त्र हउमे वाला दयां सुटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा हर हिरदे दस्सणा छन्दी, सोहँ ढोला सिफ्त सालाहीआ। सब दा भार चुकणा आपणे कंधी, सिर बोझ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा

१२६३ वर, धुर दा संगी इक हो आईआ। धुर दा संगी बण के आया, हरि करता बेपरवाह। जन भगत सुहेले लए तराया, आदि १२६३

२४ जुगादी हो मलाह। साचा संग आप रखाया, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ा। भेव अभेदा दए खुल्हाया, बजर कपाटी पर्दा २४

आप तुड़ा। अमृत आत्म जाम प्याया, निझर झिरना आप झिरा। जोती दीपक दए जगाया, बिन तेल बाती कर रुशना। दर्शन देवे थांउँ थांया, दूर दुराडा पन्ध मुका। जिन्हां खुशी नाल छब्बी पोह मनाया, मनसा मन पूरन पूरी दए करा। रोगां सोगां डेरा ढाया, दर्दीआं दर्द लए वंडा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा साहिब हो सहा। छब्बी पोह कहे जन भगतो तुहाडा लहिणा देणा नाल पुरख अकाल, अकल कलधारी गंढ पुआईआ। जो आदि जुगादी दीन दयाल, दया निध इक अख्वाईआ। जो नाता तोड़े काल महाकाल, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरि भगत सुहेले बणा के आपणे लाल, गोदी गोद लए उठाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द हो के करे संभाल, सम्बल विच बहि के आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जल्वा दे जलाल, नूर नुराना कर रुशनाईआ। जन्म जन्म दी लेखे लाए घाल, कीती घाल झोली पाईआ। अगे जन्म मरन दा रहे ना कोए सवाल, कर्म कर्म दा पन्ध मुकाईआ। फल लगावे जन भगतां काया डाल, पत्त टहणी रोम रोम महकाईआ । लहिणा देणा पूरा करे लख चुरासी विच्चों भाल, खोजे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए

मिलाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो तुहाडे अन्तर चाउ घनेरा, खुशीआं ढोले गाईआ। तुसां दिवस दिहाढ़ा सुहाया मेरा, मैं निव निव लागां पाईआ। तुसां ढोला गाया तूं मेरा मैं तेरा दयोरा, दो जहान वजी वधाईआ। तुहाडा मित्र प्यारा सतिगुर शब्द बांका छोरा, शौहर मिल्या धुर दा माहीआ। जिस दा खेल अवर दा औरा, अवर दी अवरी कार कमाईआ। उह तुहानूं वेखण वाला तके नाल ग़ौरा, गहर गम्भीर हो के खोज खुजाईआ। जिस नूं प्यार नाल तुसीं करदे चौरा, चार जुग दे लेखे दए मुकाईआ। तुहाडा मानस जन्म आवण जावण सौरा, कर्म दा लेखा रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। छब्बी पोह कहे मेरा दिवस अज्ज दा त्योहार, सोहणा रूप बणाईआ। जिस विच भगतां खिड़ी गुलज़ार, गुलशन सोहणा नज़री आईआ। बसन्त दिसे बहार, पत्त टहणी रही महकाईआ। इक्को रूप दिसे नारी नार, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। सति शब्द सच सुण धुन्कार, अनहद नादी राग दृढ़ाईआ। अमृत रस पीवण ठंडा ठार, अमिउँ रस आप प्याईआ। जोती जाता पुरख बिधाता दीआ बाती कमलापाती करे उज्यार, उजाला देवे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संगी इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो तुहाडा मिटे धुँदूकारा, अन्ध अज्ञान दए गुआईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरवैर होए सहाईआ । जिस दा आदि जुगादि पसारा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। साचे नाम दा दए भण्डारा, अतोट अतुट आप वरताईआ। जिस दा लेख अगम्म अपारा, अगोचर रिहा सुणाईआ। सो तुहाडी पावणहारा सारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस ने आपणा रूप धरया दोबारा, दोहरा सब नूं रंग चढ़ाईआ। घर घर ठाकर बण के होवे ज़ाहरा, ज़ाहर जहूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग इक रखाईआ। छब्बी पोह कहे जन भगतो मेरी सब नूं डण्डावत, बिन सयदे सीस निवाईआ। प्रेमीओ भगतां नाल करयो ना कोए अदावत, मुहब्बत विच समाईआ। प्रभू दुआरयों मिले नाम निआमत, अणमुली दात वरताईआ। जो आदि जुगादी सही सलामत, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच आउण वाली क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी शामत, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों भगतो तुहानूं अज दिती तुहाडी अमानत, तुहाडी झोली पाईआ। लेखा अगे ना रहे कोई बनावट, सोहणी आपणी गंढु रखाईआ। बिना मंग्यां कीती सख़ावत, रहमत रहीम झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक वखाईआ। सच दुआर अगम्मड़ा, जन भगत दुआरा एक। जिथ्थे झगड़ा नहीं माटी चम्मड़ा, बुद्धी करे बिबेक। सब दा इक्को नज़री आए अम्मी अम्मड़ा, इक्को बख्शे

चरण टेक। लालच रखाए ना कोई दमढ़ी दमड़ा, त्रैगुण माया मेटे सेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा टेक। जन भगतां टेक बख्शदा, आदि जुगादी आप। जोती जाता हो के परतदा, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार करे वेस अनेक। जो वणजारा आपणे पूरब लहिणे लेखे शर्त दा, आदि जुगादी धारे भेख। जिस दे हुक्म विच भाणा वरतदा, ना कोई सके मेट। उह कलयुग अन्तिम लहिणा देणा लेखा पूरा करे धरनी धरत दा, जो करे साचा हेत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा प्यारा होवे भगतां हेत दा, हितकारी एकँकारी हो के वेख वखाईआ।

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात दे समें ✪

सताई पोह कहे दो सत्त दा मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। इक्को रूप हो गया गुरु गुर चेला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेल मिल्या हरि धुर दे सज्जण सुहेला, साजण मीत इक अख्वाईआ। जिस दा वक्त कदे ना होए दुहेला, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी अगम्म अकेला, अकल कलधारी नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। मेला कहे मेरा दो सत्त दा होया मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। मेरे अन्तष्करन रिहा ना पाप, पवित कीता धुरदरगाहीआ। मेहरवान हो के बख्श्या जाप, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दिता सुणाईआ। मेरे अन्तष्करन रिहा ना कोए संताप, सति सच दिता प्रगटाईआ। मेहरवान हो के पुछी वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मेरी सुहञ्जणी कीती रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोड़ जुड़ाया भगतां वाली जमात, अक्खर इक्को इक समझाईआ। लेख लिखाया कलम दुआत, शाही मेटण कोए ना पाईआ। निरगुण हो के मारी झात, धुरदरगाही भज्जया वाहो दाहीआ। कलयुग अन्तिम पुछी वात, वातावरन तक ख़लक ख़ुदाईआ। साचा वक्त सुहञ्जणा कीता लोकमात, धरनी धरत धवल धौल वजी वधाईआ। सताई पोह कहे मैं हो गया आप इकांत, इक इकल्ला आपणा रूप वखाईआ। फेर वेखे चार जुग दे खात, खाते डूँघे फोल फुलाईआ। जां निगाह मारी चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन दुनी दा खेल बहु बिध भांत, दीनां मज़्बां रंग रंगाईआ। हिरदा किसे ना दिस्या शांत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मैं खोजे नौ प्रांत, दीपां सत्तां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक वेख वखाईआ। सताई पोह कहे मेल मिलाया मेरे प्रभू मीते, मित्र प्यारे दिती वड्याईआ। मेरा अन्तष्करन होया ठांडा सीते, अग्नी तत तत बुझाईआ। मैं निगाह मारी किस बिध पिछले जुग बीते, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग वास्ते की कौल इकरार पैग़म्बरां गुरुआं कीते, वायदे वाअदयां विच्चों वेख वखाईआ। किस बिध लेखा तक्कया दीन दुनी मन्दिर मसीते, काअब्यां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सताई पोह कहे मेरा लेखा अजब, अजीब दयां दृढ़ाईआ। दीन दुनी दा लहिणा वेखां ते होण वाला ग़ज़ब, हैरानी विच सुणाईआ। नाले पुरख अकाल नूं करां अदब, कदमां विच सीस निवाईआ। किस बिध लहिणा देणा मुकणा दीन मज़्हब, ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती तेरे विच होणी जज़ब, जगह वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले किस बिध उठावें आपणा कदम, कुदरत दे कादर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। दो सत्त कहिण असीं दोवें होए इक्ठे, मेल मिलाया धुरदरगाहीआ। प्रभ दे प्यार विच बण गए पठ्ठे, मुरीद मुर्शद वंड ना कोए वंडाईआ। बिन कदमां फिरीए नठे, भज्जीए वाहो दाहीआ। सानूं सारे करदे ठठ्ठे, मख़ौल रहे उडाईआ। असीं इक्को हुक्म नूं बन्ह्या आपणी गठ्ठे, गंढु सके ना कोए खुल्हाईआ। नाले तक्कीए उस प्रभू दे पटे, जो पटने वाला गया समझाईआ। जिस दी कीमत रुपा सोना चांदी नहीं कोई टके, हट्टो हट्ट ना कोए वकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सताई पोह कहे दो सत दा मेरा इक गरोह, सोहणा संग बणाईआ। इस दा लेखा नाल सोहँ सो, सो पुरख निरञ्जण होए सहाईआ। आत्म परमात्म धार रहे ना दो, दूआ एका एका दूए विच समाईआ। जो सति सतिवादी हो के बख्शे लो, लोयण आपणा आप खुल्हाईआ । अमृत रस निझर झिरना देवे चोअ, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। सति सतिवादी आपे हो, होका देवे थांउँ थाँईंआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां ते दिवस दिहाढ़ा सताई पोह, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। उह भगतां जोगा गया हो, हौके विच वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। आत्म परमात्म बख्शे मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म नाल जावे छोह, शौहर बांका सोहणा नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया जन भगतां अन्दरों लए खोह, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। सच नाम दा ढोआ देवे ढो, वस्त अगम्म आप वरताईआ। बिन जगत नेत्रां देवे लो, लोचन नैण आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सताई पोह कहे

१२६६ २४

मेरे प्रभू दी अगम्मी सतिआ, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। जो प्रेम प्रीती अन्दर मत्या, मत्तस जिस दा लेखा गया समझाईआ। जो सच खुमारी विच रत्या, रत्न अमोलक हीरे हरिजन लए बणाईआ। जिस दे अगे सब ने वास्ता घत्या, सथर गोबिन्द यार हंढाईआ। जिस खेल खिलाया लोहां ततीआं, तवी रवी आपणा हुक्म वरताईआ। जो घर घर जगावणहारा बत्तीआ, बातन पर्दा दए उठाईआ। बीज बीजे साचे वत्तीआ, नाम निधाना इक प्रगटाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना जुग छतीआ, छती राग देण गवाहीआ। जो लेखा जाणे घट घटीआ, लख चुरासी फोल फुलाईआ। ओहला रहिण ना देवे काया मट्टीआ, मटके सब दे फोल फुलाईआ। जिस दा लहिणा देणा कोई समझ ना सके विच चौदां लोक हट्टीआ, चौदां तबक ना भेव खुल्हाईआ। उस उत्ते बिना भगतां डोरां किसे ना सट्टीआ, आसा जगत ना कोए रखाईआ। जोत दीप जगाए बिना वट्टीआं, बिन तेल बाती डगमगाईआ। ओह खेल करे कलयुग बाज़ीगर नटीआ, स्वांगी आपणा स्वांग बदलाईआ। जिस दे प्यार विच जन भगतां रूहां गईआं फटीआं, अणयाला तीर चलाईआ। जिन झगड़ा मुकाया दीन मज़्हब ज़ात पात खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चूहड़े चम्यार जट्टीआं, जटा जूट वंड ना कोए वंडाईआ। ओह इक्को पढ़ावणहारा पट्टीआ, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ।
१२६७ जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विछड़ीआं आत्मा कीतीआं इक्ट्ठीआं, मेला मिल्या सहिज सुभाईआ। दूर दुराडिउँ जो १२६७
२४ भज्ज भज्ज आईआं नट्ठीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। उन्हां लेख मुकाया तीर्थ अठ्ठ सठ्ठीआ, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती २४
लोड़ रहे ना राईआ। उन्हां जगत जहान दीआं हद्दां टप्पीआं, टापूआं पन्ध मुकाईआ। उन्हां दीआं प्रभ दे नाल पै गईआं हिस्से पत्तीआं, धुर दी गंढु बन्हाईआ। जिस दा वज़न ना तोले ना रतीआं, जगत तराज़ू कंडा ना कोए तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। दो सत कहे असीं दोवें गए जुड़, जोड़ी हरि जगदीश बणाईआ। जन भगतो तुहाडे प्यार दी रहे ना थुड़, थुड़े थिड़किओ दए वड्याईआ । जो सचखण्ड दवारयों आया मुड़, मुड़ के आपणा रूप बदलाईआ। चढ़ के शब्द अगम्मे घोड़, वेखे थांउँ थाँईंआ । कलयुग अन्त ओस प्रभू नूं तुहाडी पै गई लोड़, लुड़ींदे सज्जणो तुहानूं ल्या मिलाईआ। दीन दुनी दिती होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। तुसीं करके वेख्यो ग़ौर, गहर गम्भीर की आपणा खेल खलाईआ। जेहड़ा लख चुरासी अन्दर वड़ के बैठा चोर, चोरी चोरी आपणी खेल खिलाईआ। तुहाडे साहमणे जोती जाता अवर का और, अवरा खेल खिलाईआ। प्रीतम हो के आपणे नाल लए तोर, तुरीआ तों परे आपणा हुक्म सुणाईआ। बेशक धरती उत्ते अन्धघोर, घोरी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। तुहाडे सब दे भाग मथोर, जिन्हां मिल्या धुर दा माहीआ । आपणे हथ्थ फड़ के डोर, दो जहानां रिहा उडाईआ। औह

वेखो राय धर्म कूक पुकारे पावे शोर, शहिनशाह रिहा सुणाईआ। तेरे अगे नहीं मेरा ज़ोर, ताकत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता अगम्म अथाहीआ। दो सत्त कहिण साडा वेखो इक्को रूप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साडा मालक शाहो भूप, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस दा आदि जुगादि सति सरूप, सति सतिवादी वड वड्याईआ। जिस दा इक्को शब्द दुलारा पूत, पिता पुरख अकाल सोभा पाईआ। उस दा हुक्म संदेशा अगम्मा दूत, दो जहान भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर गए कूच, कूचा गली रहिण कोए ना पाईआ। ओह कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल करे मज़बूत, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। जो वख वख रूप बणाए काया कलबूत, दीनां मज़्हबां खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। दो सत कहिण असां पुरख अकाला इक मनाउणा, निव निव सीस झुकाईआ। इक्को दा ढोला गाउणा, जो मालक धुरदरगाहीआ। इक्को दा नाद वजाउणा, जिस दा सुर ताल समझ कोए ना पाईआ। इक्को दा डंक वजाउणा, जो दो जहान करे शनवाईआ। इक्को दा दर्शन पाउणा, जो जोती जाता
१२६८ नूर अलाहीआ। इक्को मालक वेख वखाउणा, जो मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १२६८
२४ कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। दो सत कहिण असीं रूप बणाया हाहा सस्सा, सतिगुर शब्द दिती २४
वड्याईआ। जिन्हां मिल के मेटणी रैण अन्धेरी मस्सा, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। दीन दुनी शरअ दा कटणा रस्सा, रस्ता इक्को देणा वखाईआ। सच दुआर एकँकार वखाउणा वस्सा, वास्ता भगतां नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। दो सत्त कहिण साडा जगत हिन्दसा बणदा सताई, सति सतिवादी दिता समझाईआ। असीं सच संदेशा रहे सुणाई, सुणना चाँईं चाँईंआ। जिस दा लेखा अगे लिख्या किते नाहीं, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा मालक बेपरवाही, बेपरवाही विच समाईआ। जो जुग जुग खेल रिहा खिलाई, खेलणहार आप हो जाईआ। जिस नूं कहिंदे आदि जुगादि वड्डा दाई, दाउ आपणा रिहा लगाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी बदलदी शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म सुणाईआ। ओह जोती जाता पुरख बिधाता सचखण्ड दा माही, महबूब नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा नाल सच्चे शहिनशाही, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। सब दा नाता जोड़े भैणां भाई, पिता पूत गोद उठाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा कीता गोबिन्द ढईआ ढाई, ढौंके दा मालक नूर अलाहीआ। सो शब्द संदेशा रिहा सुणाई, अणसुणत आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत कर रुशनाई, नूर नुराना रिहा

चमकाईआ। भरम भुलेखा रहे ना राई, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जो पूरन सतिगुर पूरन विच समाई, पूरन रूप नज़री आईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा तत वजूद तन शरीर जगत अथाही, अथाह आपणा रंग रंगाईआ। सताई पोह कहे एस तन वजूद दा लेखा बणया चक्क सताई, दूआ निरगुण सरगुण साता सति नाल मिल के वजी वधाईआ। जे पूरन ना हुन्दा शेर सिँघ नूं ततां वाली करनी ना पैंदी जुदाई, जुज़ आपणा वंड ना कोए वंडाईआ। भावें आदि तों लै के अन्त तक एस दी समझी नहीं किसे लम्बाई, लम्मा चौड़ा वेखण कोए ना पाईआ। उह रूप अनूपा शाहो भूपा बणया अलाही, अलहिदा आपणा हुक्म वरताईआ। नाले मित्र दोस्त साजण भगतो नाले तुहाडा माही, महबूब इक अख्वाईआ। जे एस दा लेखा सुणना फेर अक्खीआं लओ खुल्ह्ाई, नैण बन्द ना कोए रखाईआ। औह तक लओ जिस दे प्यार विच गोबिन्द खण्डा गया उठाई, खड़गां डेरां ढाहीआ। उह धुर दा मालक गोबिन्द नाल उहदा गुसाँई, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी ना कोई ज़ात ना कोई पात ना कोई वंड वंडाई, हिस्सा नज़र कोए ना आईआ। पता नहीं किस बिध सचखण्ड निवासी भगतो तुहाडे नाल यारी लाई, यराना तुहाडे नाल निभाईआ। बेशक एह करन वाला दो जहानां दी वाही, जिस नूं वाहिगुरु कहि के सारे गाईआ। एह तन वजूद जिस दा लहिणा देणा नाल सताई, सत्या सब नूं दए समझाईआ। जिस अन्दर सतिगुर धार शब्द समाई, समां आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। दो सत्त कहे मैं अक्खरां वाला अंक, कलम शाही मेरा रूप बणाईआ। मेरा इक्को दुआरा ते इक्को बंक, गृह इक्को नज़री आईआ । मेरा अन्तर अन्तर रिहा कोई ना शंक, सहिसा दिता चुकाईआ। मैनूं याद आ गया जो वायदा कौल इकरार कीता राम दुआरे जनक, सीता सच सच दृढ़ाईआ। नी सईआ मईआ ओह खेल खेले वार अनक, राम दा राम अगम्म अथाहीआ। निगाह मार लै जिस दा जुग जुग वजणा डंक, डौरु आपणा नाम जणाईआ। जिस अन्त इक दुआरा सुहाउणा बंक, बंक दुआरी आप हो जाईआ। जिस लेखे लाउणे राउ रंक, ग़रीब निमाणयां दए वड्याईआ। सच नाम दी ला के तनक, सोई सुरती लए उठाईआ। पता नहीं उह किस बिध प्रगट होणा विच पुरी घनक, घनईए दा लेखा दए चुकाईआ। फेर नवीं बणा के बणत, आपणा रूप बदलाईआ। जिस नूं समझे ना कोई साध ना सन्त, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। दो सत कहे भगतो मैं खोल्हणा लग्गा पर्दा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं ध्यान धरया लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ वेख वखाईआ। दीन दुनी दा खेल वेख्या हँकार गढ़ दा, हउमे विच लोकाईआ। जीव जंत वेख्या सड़दा, कलयुग माया

रही जलाईआ। जगत जिज्ञासू वेख्या ढोले गीत नाम कलमे पढ़दा, अक्खरां वाले सिफ्त सलाहीआ। मैं हैरान हो गया बिना भगतां तों प्रभू अन्दर किसे नहीं वड़दा, गृह मन्दिर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट नारद कहे पोह सताई सज्जणा ओए ना मार तूं शेख़ीआं, मैं सहिज नाल जणाईआ। वेख पुराणीआं लेखीआं, बिन अक्खरां दयां वखाईआ। जेहड़ीआं जगत नेत्रां नाल किसे नहीं वेखीआं, रसना नाल ना कोए पढ़ाईआ। उस विच लहिणा देणा दो जहान देस परदेसीआं, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म जणाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा दिता गुर अवतार पैग़म्बरां लोकमात दे विदेशीआं, जगत जहान जहान दृढ़ाईआ। जिस दा लहिणा देणा गोबिन्द नाल दस दस्मेशीआं, दहि दिशा वेख वखाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशीआ, हमसाजण इक अख्वाईआ। जिस दे अगे सब ने भुगतणीआं पेशीआं, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। लहिणे मुकणे गणपति गणेशीआं, देवत सुर ना कोए चतुराईआ। कलयुग कूड़ क्रिया तकणी जिस कलेशीआ, कल काती आपणा रूप जणाईआ। जिस लहिणा देणा दीन दुनी चुकाउणा मलेछीआ, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। दो सत कहे मेरा मालक नूर नुरानी, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दी शब्द अगम्मी बाणी, जुग जुग बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस दा आदि जुगादि खेल महानी, महिमा अकथ कथ समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा वेद पुराणी, शास्त्र सिमरत रंग रंगाईआ। सो संदेशा देवे अञ्जील कुरानी, अक्खर अक्खरां नालों बदलाईआ। जिस दा नाम निधाना सतिनामी, सति सतिवादी हो के दए दृढ़ाईआ। जो देवणहारा सतिगुर शब्द शब्द पैग़ामी, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। उस दी करे ना कोए पहचानी, बेपहचान इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त भगतां उत्ते करे मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पता नहीं क्यों बण के आ गया दाता दानी, दयावान आप हो जाईआ। सब दा बण के जाण जाणी, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जन भगतां बख्श के मंज़ल रुहानी, रूह बुत मेला मेलया सहिज सुभाईआ। जिस नूं ईसा किहा मेरा बाप आवे असमानी, दरगाह साची सोभा पाईआ । जिस दी मुहम्मद सुणी कलामी, कायनात गया दृढ़ाईआ। ओह बण के धुर अमामी, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ । जन भगतां लहिणा देणा मुकावे जिस्म जिस्मानी, जिस्म ज़मीर बेनज़ीर अन्दरों दए बदलाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल चारे खाणी, चारे बाणी संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सताई पोह कहे जन भगतो तुहाडा किड्डा वड्डा भाग, भगवन दए वड्याईआ । तुहाडा किड्डा वड्डा वैराग, प्रेम प्रीती रिहा प्रगटाईआ। तुहाडा किड्डा वड्डा त्याग, जगत दीन दुनी आए तजाईआ। तुहाडा

किड्डा वड्डा चराग़, बिन तेल बाती डगमगाईआ। तुहाडा किड्डा वड्डा कन्त सुहाग, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रैण कहे मैं भिन्नड़ी भिन्नी, भगतो दयां जणाईआ। तुहाडी भगती जुग जन्म दी मैथों जाए ना गिनी, दो सत्त दा मालक जो आपणे विच छुपाईआ। जिस दा लहिणा कोई जाण सके ना लोक तिन्नी, त्रैलोक भेव ना कोए खुल्हाईआ। तुहाडी पूरबली वस्त वेखो इंनी, जिस दा भार ना कोए उठाईआ। तुहाडे अन्दर नाम खुमारी प्रभू दी प्रीती ते मस्ती भिन्नी, भिन्नड़ी रैण नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त आप वरताईआ। रैण कहे मैं भागां भरी, मेरा भरम रिहा ना राईआ। पुरख अकाले किरपा करी, किरपन हो के सीस निवाईआ। जो भगतां मीता इक्को नरायण नरी, नर नरायण इक अख्वाईआ। आत्म धार जिस ने वरी, कन्त कन्तूहल धुर दा माहीआ। मैं वी उस दी सरनी परी, निव निव लागां पाईआ। जिस दी ख़बर सतिगुर शब्द सुणाए खरी, सहिज सिहज दृढ़ाईआ। भिन्नड़ीए कलयुग मूल ना डरीं, अन्ध अन्धेर वेखणा थांउँ थाँईंआ। प्रभू दा भाणा सिर ते जरीं, सिर प्रभ चरणां विच टिकाईआ। उस ने कोई रहिण नहीं देणा शरई, शरीअत दा लेखा देणा मुकाईआ। नाल फ़ैसला कीता अज्ज तों जन भगत कीते बरी, ज़मानत किसे दी लोड़ रहे ना राईआ। जिन्हां इक वार गाया ओन्हां दी आत्मा लई वरी, वर दाता इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा रूप अलाही नरायण नरी, नर हरि करता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। दो सत्त कहे असीं खुशीआं दे विच हसदे, हस्ती तक बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले सचखण्ड दुआरे खुशीआं दे विच नसदे, भज्जण वाहो दाहीआ। जो वणजारे प्रभू दे जस दे, सिफ्ती ढोले गाईआ। जिन्हां दे इशारे नहीं कोई अक्ख दे, सैनत तत ना कोए समझाईआ। उह प्यारे हो गए प्रभू प्रतख दे, साख्यात वेख के खुशी बणाईआ। उह वसेरे छड के रहिणे वख दे, घर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सताई पोह कहे भगतो तुहाडा प्रभू जगत दा स्वामी, सम्बल बैठा सोभा पाईआ। प्रेमीआं दा अन्तरजामी, चुरासी दा खेल खिलाईआ। जिस नूं सारयां दिती सलामी, सजदयां विच सीस झुकाईआ। अक्खरां नाल कहि के गए अनामी, इनाम लैण वाला नज़र कोए ना आईआ। ओह मालक दो जहानी, दोहरा आपणा वेस वटाईआ। तुहाडी भगती भगतो कई जुग दी पुराणी, पुराण अठारां दे ना सकण गवाहीआ। किसे दे कोल नहीं कोई निशानी, निशाना सके ना कोए वखाईआ। की विचारी लिखे कलम ते कानी, जो हुक्म दे अन्दर भज्जे वाहो दाहीआ। जदों तुहाडा वायदा

होया अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल होया बिना ज़बान तों शब्द दी कलामी, शब्द शब्द नाल समझाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम रैण अन्धेरी होई शामी, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। उस वेले खेल करे पुरख अकाला अगम्म अमामी, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। जिस झगड़ा मेटणा सर्ब तमामी, तमअ लालच ना कोए रखाईआ। मानस ज़ाती कट ग़ुलामी, ग़ुरबत अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सताई पोह कहे जन भगतो मैं सब नूं रिहा झुक, निव निव सीस झुकाईआ। धन्न भाग मेरे जिस विच तुसां तूं मेरा मैं तेरा गाई सोहँ तुक, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। तुहाडे अन्तर ओहला रिहा कोई ना लुक, पर्दानशीं पर्दा दिता उठाईआ। तुहाडा लेखा लहिणा देणा आवण जावण गया मुक, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड दुआर जांदयां किसे नहीं जाणा रुक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सच पुछो सतिगुर शब्द दे हुक्म नाल एह तुहानूं आपणी हथ्थीं खड़ेगा चुक, चुकन्ने हो के अन्त समें वेखणा चाँईं चाँईंआ। तुहाडा प्यार वाला एथे रह जाणा मुख, शरीर संग ना कोए रखाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दे भुक्खयो तुहाडी मिटाउणी भुख, तृष्ना अगे ना कोए रखाईआ। मात गर्भ दी थाँ तुहाडा सचखण्ड बूटा लाउणा रुक्ख, रुक्खीआं सुक्कीआं खाण वाल्यो आपणे विच लैणा मिलाईआ। जिस दे वास्ते सारे अवतार पैग़म्बर गुरु सुखणा गए सुख, पंजाबी बोली सुखी सांदी तुहाडे घर आ गया तुहाडा माहीआ। हुण वेख्यो किधर नूं बदल जांदा रुख़, अगा पिच्छा समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सताई पोह कहे जन भगतो मैनूं आया बड़ा अनन्दना, अनन्द तुहाडे अन्तर वेख वखाईआ। जो इक्को प्रभू नूं करदे बन्दना, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। ओसे दी चरण धूड़ दा टिक्का ला के मस्तक चन्दना, चन्द सूर्या दा लेखा दिता मुकाईआ। जिस ने जुग जन्म दे विछड़यां नूं आपणे नाल गंढणा, अगे सके ना कोए तुड़ाईआ। तुहाडे प्यार विच साचा प्यार तुहानूं वंडणा, तुहाडे काया मन्दिर अन्दर देणा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो तुहाडी भगती प्रभ दी याद, जो हर हिरदे दिती टिकाईआ। तुहाडा तन वजूद खेड़ा कर आबाद, सोहणा नगर सुहाईआ। नाम सति दी दे के दाद, अतोट अतुट वरताईआ। भेव खुल्हा के बोध अगाध, बुद्धी तों परे दिता समझाईआ। तुहाडा मालक स्वामी तुहाडे विच होया विस्माद, रूप अनोखा आपणे विच रखाईआ। जो आया सब तों बाद, आप आपणा फेरा पाईआ। उस दा सुणाउ खुशीआं वाला नाद, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। जदों मिल्या करेगा ते बच्चयां वांग करेगा लाड, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। सताई पोह कहे प्रभू तूं दो सत दा मालक, मिहबान बीदो इक अख्वाईआ। नूर अलाही अगम्मा ख़ालक, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर शब्द तेरा बणे सालस, विचोला अवर ना कोए रखाईआ। जिस दे हुक्म विच जन भगत निकलणे ख़ालस, ख़ालसा रूप वखाईआ। जिन्हां नूं मज़्हब दा नहीं कोई लालस, लालच विच कदे ना आईआ। ओह आदि जुगादी तेरे बालक, बच्चे नन्हे नज़री आईआ। तूं सही सलामत उन्हां दा बणना प्रितपालक, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दे मालक होणा आप सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण नी कलमे कानीए, कोझीए कमलीए लै अंगड़ाईआ। आपणे अन्दर कर सावधानीए, सति सरूप विच समाईआ। तूं समझ ना सकी निरअक्खर धार बाणीए, अक्खरां नाल आपणी खुशी बणाईआ। तैनूं की पता भगतां दी केहड़ी मंज़ल रुहानीए, ज़मीं असमानां विच वेखण कोए ना पाईआ। नी तेरा लहिणा देणा नाल ज़िमी असमानीए, उंगलां विच वड़ के आपणी खुशी बणाईआ। ज़रा निगाह मार लै ओह मालक तक जिस नूं सारयां किहा बेपहचानीए, पहचान विच पहचान ना कोए समझाईआ। ओह लेखा वेखण आ गया चारे खाणीए,
१२७३ ख़ालस आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक १२७३
२४ अगम्म अथाहीआ। कलम कहे मेरे मालका मैं की लिखणयोग, मेरी की चतुराईआ। जदों किरपा कीती सतिगुर शब्द आपणे २४
प्रेम दा दिता संजोग, मेला ल्या मिलाईआ। मेरा ना हरख रिहा ना सोग, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मैं लिखण जोगी नहीं तेरे नाम प्यार दी काग़ज़ां उत्ते नठ नठ चुगदी चोग, जिह्वा आपणी विच्चों कढाईआ। मैनूं तेरे प्यार दे अक्खरां विच्चों प्रेम दी मिले मौज, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। चार जुग विच गुर अवतार पैग़म्बरां जितनी जितनी तेरी कीती खोज, खोजी बण के तेरा उतना उतना लेखा गए लिखाईआ। मैनूं कोई नहीं आई सोझ, सोझी विच ना कोए अंगड़ाईआ। मैनूं ते इयों जापदा प्रभू तेरे हुक्म दा बड़ा वड्डा बोझ, सिर सके ना कोए उठाईआ। भावें मैं कोटन कोटि जुग चौकड़ी लिखदी रव्हां रोज़, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। पर फेर वी मैनूं पता नहीं लगदा तेरा अगला केहड़ा चोज, चोजी प्रीतम की आपणी खेल खिलाईआ। मैं आदि अन्त दी कर ना सकी सोच, समझ विच चली ना कोए चतुराईआ। मैनूं पता नहीं की हुण खेल कीता विच जम्बू दीप ते अगे की खेल हो जाणा करौच, की कला देणी वरताईआ। मेरी दुहाई तेरे हुक्म तक मेरी नहीं कोई पहुंच, वेखण कुछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। कानी कहे प्रभू मैं वेखे बड़े बड़े तेरे रूप सरगुण धार तेरे कातब, कुदरत दे कादर तेरे

ढोले गाईआ। मैं पर अज्ज तेरे साहमणे हो के कहां मुख़ातब, बिना मुख तों दयां सुणाईआ। ओए मालका स्वामीआं ओए ठाकरा अन्तरजामीआं मैं जदों भज्जी ते भज्जी तेरी जानब, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं हैरान हो गई मेरे नाल लेख लिखण वाला कोई नहीं रिहा ते इक तूं रिहा सही सलामत, साहिब सूरा मेरा नज़री आईआ। हुण अन्त कन्त भगवन्त मैं हो गई तेरी तालब, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मैं चाहुंदी एन्हां भगतां वास्ते आपणा हुक्म लिखा दे वाजब, जिस दा लेखा सके ना कोए मिटाईआ। सचखण्ड निवासीआ पुरख अबिनाशीआ जे तूं एन्हां दे पिच्छे पिच्छे आपणा कीता तआकुब, भज्जया वाहो दाहीआ। मेरी निमाणी दी लाज रखीं ते भगतां दी वेखीं शराफ़त, शरअ विच्चों सब नूं बाहर कढ्ढाईआ। मैं कोई विद्वान नहीं आरफ़, इलम विच ना कोए चतुराईआ। मैं भगतां नूं इक गल्ल दस्सणी इस प्रभू नाल खुशीआं नाल आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा इक दूजे दा कर लओ तुआरफ़, दूसरे दी लोड़ रही ना राईआ। प्रभू मैं कोटन जुगां दी थक्की टुट्टी मांदी अज पहली वार आपणी ज़बान तों जेहड़ी विच्चों कटाई इन्हां ग़रीबां दी करन लग्गी सिफ़ारिश, निव निव सीस निवाईआ। मेरे तों लिखी होई भगतां दी कदी ना बदल जाए इबारत, अक्खर अक्खर देण गवाहीआ। मैं कोई प्रभू तेरे घरों करनी नहीं तजारत, सौदागराँ वाली नीती ना कोए रखाईआ। अवतारां किहा पैग़म्बरां किहा गुरुआं किहा जदों आवेगा ते आवेगा विच भारत, भार भगतां दा आपणे सिर टिकाईआ। झट नारद कहिंदा कुछ मैं वी कर लवां शरारत, कलमे तैनूं दयां सुणाईआ। चल ज़रा उस दे चरणां दी कर ज़िआरत, जो ज़र्रे ज़र्रे विच आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ । नारद कहे कलमे तूं बड़ा सोहणा लिखदी, लिख लिख आपणी खुशी बणाईआ। पर सच दस्स की वड्याई सिख दी, जो गोबिन्द गया समझाईआ। कलम कहे नारदा मैनूं कुझ नहीं दिसदी, दीदे जगत दे कम्म किसे ना आईआ । मैं की करां सृष्टी भर गई अन्दरों विख दी, विस भरी लोकाईआ। मैं ते उस साहिब दे चरणां उत्ते लिटदी, लम्मी पै के दयां दुहाईआ। ओह प्रभू ओह मेरया मालका स्वामीआं तैनूं छड के दुनिया वणजारी हो गई पत्थर इट्ट दी, मन्दिर मस्जिदां सीस निवाईआ। कलम कहे मैं दो मूँह बणा के पिटदी, पटने वाल्या मेरी आ के वेख लै हालत ते नैणां नीर नीर वहाईआ। झट नारद ने इक निशानी कढ लई चिट दी, चिट्टा हरफ़ चिट्टे उत्ते सोभा पाईआ। नी कलमे नी कानीए तूं की कहें जिंनां चिर प्रभू दी किरपा ना होवे उनां चिर भगतां दी सुरती कदे नहीं टिकदी, मथ्थे टिक्के लाउण वाला वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। कलम कहे सुण लै पंडता ब्राह्मणा, ओए नारदा तैनूं दयां सुणाईआ। ज़रा

१२७४
२४

मेरे वल मुख तां कर साहमना, साहमणे हो के अक्खां लै उठाईआ। जे मैं ना हुन्दी किसे नूं की पता लग्गणा सी केहड़ा अवतार ते केहड़ा पैग़म्बर केहड़ा बणया ज़ामना, ज़ामन कवण अख्वाईआ। मैं ओह विचोली जेहड़ी अक्खरां नाल अक्खर मिला के सतिगुर शब्द दा फड़ावां दामना, दामनगीर सब नूं इक्को गया समझाईआ। जिस ने अन्त सब दी मेटणी कामना, कामल मुर्शद हो के आवे धुर दा माहीआ। मैं उस दा गीत ते उस दा ढोला गावना, उसे दी सिफ्त सलाहीआ। पर सच दस्सां उह प्रभू बिना भगतां तों किसे नहीं रावणा, राम दा राम जो आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे, कलमे नी तूं कानी बड़ी चालाक, चालाके तैनूं दयां जणाईआ। मूधे मूँह चलण वालीए ज़रा मेरे वल झाक, बिन नैणां नैण उठाईआ। आपणा खोल्ह के वेख ताक, पर्दा परदयां विच्चों आप चुकाईआ। नीं सच दस्स तेरा केहदे नाल साक, सज्जण किस नूं ल्या बणाईआ। जेहड़ा अवतार पैग़म्बर गुरु आया तूं उस दी चढ़ गईउँ ढाक, ओसे दे हुक्म विच भज्जी वाहो दाहीआ। धुर दे नाम कलमे लिख लिख तूं दुनिया विच रहिण नहीं दिता इत्फिाक, शरअ दे हिस्से वख वख समझाईआ। पर याद रख जिस वेले हज़रत
१२७५ ईसा उस नूरी अल्ला दा इक वेख्या कलाक, उस दी कला कुदरत दे विच नजरी आईआ। फेर उस ध्यान धरया अवतार १२७५
२४ पैग़म्बर गुरु बैठे विच निक्के निक्के बलाक, बरैकट विच आसण दिते वखाईआ। फेर हैरान हो के तक्कया सारे दिसे मिट्टी २४
ख़ाक, तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। फेर किहा तूं मेरे गॉड तूं ही इक्को पाक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। कलम कहे नारदा मेरे बिना कोई कर ना सके तहरीर, तकरीर निशान ना कोए रखाईआ। सतिगुर शब्द मेरा पातशाह ते मैं हुक्म मन्नण वाला उस दा वज़ीर, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। मैं ना जे होवां फिर चार जुग दे शास्त्रां दी करे ना कोए तामीर, दीन दुनी विच वेखण कोए ना पाईआ। मेरे लेख विच सब दा हुन्दा रिहा अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। मैनूं इक्को मिट्ठा रस मिलदा रिहा प्रभू दे नाम दा सीर, जो नित नित जुग जुग पी पी खुशी बणाईआ। जुग चौकड़ीआं बीत गए मेरी बदली नहीं किसे तकदीर, तदबीर अवर ना कोए समझाईआ। सारे चाहुंदे रहे पीर फ़कीर, मेरे वल ध्यान लगाईआ । जे धुर दा पैग़ाम आवे इलहाम होवे असीं वी एस प्यार विच आपणा लहिणा प्रगटाईए विच्चों शरीर, शरअ शरअ संग रखाईआ। पर कलम कहे इक दिन लिखदयां लिखदयां लिखदयां मैनूं इक शब्द उत्ते नौ वार चुक्कया कबीर, चुक्कके मस्तक नाल ठुकराईआ। नी कलमे नी कानीए नी जोबन वालीए जवानीए जे तूं लेख ना लिखें ते किसे नूं पता ना लग्गे कि दीन दुनिया

विच केहड़ी आउण वाली भीड़, भविख्तां भेव ना कोए खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक्को हुक्म वरताईआ। कलम कहे मैं करां ना कदे गुस्ताखी, गुस्से विच कदे ना आईआ। जदों मेहरवान मेहर करे ते मेरा बणे साथी, सगला संग बणाईआ। उस दी मंनां आखी, अक्खरां गंढु रखाईआ। जिस दा लहिणा देणा अलखणा अलाखी, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे कलमे जे तूं आदि जुगादी लिखण वाली, लिख लिख लेख बणाईआ। जे तूं सिफ्त करें जोत अकाली, जुग जुग सेव कमाईआ। तैनूं इक ख़बर दस्सां सुखाली, सहिज नाल सुणाईआ। निगाह मार लै कलयुग फुल्ल रिहा किसे ना डाली, पत्त टहणी गए कुमलाईआ। दीन दुनिया तेरे सच्चे लेख लिखे तों हो गई ख़ाली, सति वस्त अन्दर ना कोए टिकाईआ। कलयुग नूं तक किस बिध चढ़ी लाली, जोबनवन्ता भज्जे वाहो दाहीआ। जे तूं हुण सुरत ना संभाली, आपणा आप आपणे विच्चों प्रगटाईआ। किस बिध रैण मिटे अन्धेरी काली, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। कलम किहा वे नारदा मैं हो गई बेहाली, बहिबल हो के दयां सुणाईआ। मेरे लेख ने दस्सया अन्त आउणा
१२७६ सब दा माली, मालक इक अख्वाईआ। जिस दा जल्वा जोत नूर जलाली, दो जहानां करे रुशनाईआ। उस दी घालण १२७६
२४ रही घाली, नित नित सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा २४
पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे कमलीए तेरी सेवा होवे परवान, सच दयां दृढ़ाईआ। सुण संदेशा श्री भगवान, हरि करता की जणाईआ। जिस जुग जुग कीता खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा हुक्म वरताईआ। ओह कलयुग होया प्रधान, योद्धा सूरबीर नूर अलाहीआ। जिस भगत सुहेले कीते परवान, परवाने आपणे लए बणाईआ। नी ओह तेरे लेख विच्चों सब नूं देण लग्गा दान, दाता हो के दया कमाईआ। कलम कहे कानी मैं नारदा बणी अंञान, आपणी चले ना कोए चतुराईआ। जे सतिगुर शब्द किरपा कीती मैं वी नच्चां टप्पां काग़ज़ां उत्ते विच जहान, सोहणा आपणा नाच वखाईआ। जे ओह मेहरवान हो गया ते मैं वी उस नूं कहि देणा जजमान, एह पंजाबी बोली पंजाबीआं विच्चों मैनूं नज़री आईआ। कलम कहे मैं अज्ज लिख देणा ओ प्रभू जे तूं वसदा उत्ते असमान, ज़रा इहनां भगतां वल मार ध्यान जो तेरा राह तकाईआ। एथे ओथे लेखा रहे ना किसे दा आपणे गृह करीं परवान, परम पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा कादर रहमतां दा रहमान, नूर नुराना इक अख्वाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी वस्त आप वरताईआ। सताई पोह कहे मेरे साहिब सति सतिवादीआ, सतिगुर शाहो भूप। मेरे मालक आदि जुगादीआ,

तेरा खेल बिना रंग रूप। जुग बदलणा तेरी वादीआ, मेरे मालक हक महबूब। हुण वेख लै कलयुग कूड़ अबादीआं, निगाह मार लै विच पंज भूत। आत्म परमात्म होईआं किसे ना शादीआं, झगड़ा दिस्या चारे कूट। जन भगतां तेरे नाल प्रीतां डाढीआं, एका धागा इक बणा लै सूत। सतिगुर शब्द हो के लडा लै लाडीआं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वखाउणा अर्श अरूज। पुरख अकाल कहे सुण शब्दी सुत दुलारे, दूलिआ दयां जणाईआ। मेरे भगत ना रहिण कँवारे, मेल मेलणा चाँईं चाँईंआ। जिन्हां रसना लाए छुहारे, सोहणा सगन बणाईआ। ओन्हां दे परवार तारने सारे, बचया रहिण कोए ना पाईआ। दर्शन देणा हो के ज़ाहरे, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। वंड रखणी नहीं पुरख ते नारे, बृद्ध बालां हिस्सा ना कोए जणाईआ। वड्डे छोटे भगत मेरे दुलारे, बच्चे सोहणे नन्हे नज़री आईआ। जिन्हां नूं प्रेम दे देणे हुलारे, दो जहानां पार कराईआ। जिथ्थे ना कोई मण्डल मण्डप ना कोई सूर्या चन्द सितारे, विष्न ब्रह्मा शिव नज़र कोए ना आईआ। ना कोई कातब ना लिखारे, ना कोई रसना शब्द उच्चारे, ना कोई कन्नी सुणे धुन्कारे, राग नाद ना कोए वड्याईआ। ना कोई तत पंज पसारे, ना कोई ब्रह्म मति दए अधारे, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। इक्को नूर
१२७७ जोत उज्यारे, जिथ्थे बैठा शाहो भूप सरकारे, नूर नुराना सोभा पाईआ। जन भगतां खड़ना ओस दुआरे, जिथ्थे ना कोई १२७७
२४ मंज़ल ते ना कोई चुबारे, जिथ्थे चोटी दा मालक चोटा इक्को सोभा पाईआ। जेहड़ा आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणयां २४
भगतां ना कदे विसारे, विसरयां आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को नज़री आईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे पुरख अकाले पिता, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मेरा भगतां दे नाल हिता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। ऐसी किरपा करनी अगे रहिण नहीं देणा कोई दोचिता, चित वित ठगौरी अन्दरों देणी कढ्ढाईआ। सब नूं प्रेम विच बणा के आपणा मिता, मित्र प्यारे तेरे विच मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरा निक्का जेहा खिता, जो कोटन कोटि ब्रह्मण्डां खण्डां विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो एस जन्म दी नहीं कोई भगती, भगती दी लोड़ ना कोए रखाईआ। तुहाडा पूरबला लहिणा ते देणा प्या शर्ती, क्यों शर्त अवतार पैग़म्बर गुरु प्रभू नाल गए लगाईआ। धुर दे नाम ते धुर दे हुक्म नाल तुहानूं कीता भरती, वड्डा छोटा कद ना कोए वखाईआ । तुहानूं संभालण वाला इक्को निध परती, जिस नूं परमेश्वर कहि के सारे गाईआ। सतिगुर शब्द कहे पता नहीं क्यों दयालू हो गया ते क्यों भाग लगा दिता एस आ के धरती, धरनी धरत धवल धौल दा लेखा पूर कराईआ। जिस ने खेल दरसाया मालक बण के अर्शी,

अर्शी प्रीतम अगम्म अथाहीआ। सम्मत शहिनशाही ग्यारां इक इक दी धार आत्मा परमात्मा दी मनाउण आ गया बरसी, बरसां दी उमर वाल्यो तुहाडा लेखा आपणे नाल मिलाईआ। मेहरवान हो के कीता तरसी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आवण जावण जन्म कर्म मरन दी मेटे हरसी, हवस जगत ना कोए रखाईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दवार जेठूवाल ज़िला अमृतसर सवेरे शादीआं दे समें ✪

सम्मत शहिनशाही ग्यारां कहे इक इक दा होया मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। आत्म परमात्म बणया जाप, जगत अवर ना कोए पढ़ाईआ। जन भगतां होए वड प्रताप, प्रतापी देवे माण वड्याईआ। जिन्हां दा लेखा नाल अगम्मी बाप, पिता पुरख अकाल गोद टिकाईआ। कोटन कोटि जन्म उतार के पाप, पतित पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। इक इक दा होया संग, हरि संगी
१२७८ इक अख्वाईआ। आदि जुगादी जुग चौकड़ी जिस पूरी कीती मंग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तृष्ना पूर कराईआ। भगत १२७८
२४ भगवान बणा के संग, सगला संगी हो के वेख वखाईआ। मर्द मर्दाना हो के वजाए मृदंग, सोई सुरती आप उठाईआ। २४
सच सिँघासण पुरख अबिनाशण निरगुण धार आपे लँघ, मंज़ल बैठा सोभा पाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, हरि करता धुर दरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग इक बणाईआ। इक इक कहे साडा इक्को घर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच स्वामी इक्को अगम्मा वर, जो जन्म मरन ना कोए रखाईआ। जिस दा सुहञ्जणा होए दर, दरगाह साची सोभा पाईआ। भय भउ चुकाए डर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो किरपा रिहा कर, हरि करता धुरदरगाहीआ। निरगुण धार नरायण नर, नूर नुराना इक अख्वाईआ। जिस दी सरन सरनाई सारे गए पर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी जिस दे ढोले गाईआ। ओह वसणहारा बाहर शरीअत शर, बन्धन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। इक इक कहे इक इक दा मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो जुग जुग बदलणहारा रीता, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। जोती धार त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी आप हो आईआ। जो भगतां अन्तर करे ठांडा सीता, अग्नी जगत ना कोए जलाईआ। सच धार बख्श के सच प्रीता, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीता, गुरदवार इक्को इक दरसाईआ। जिथ्थे

धर्म धार हदीसा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मेहरवान होए जगदीशा, जगदीश्र दया कमाईआ। पूरब लहिणा सब दी झोली पावे जो पूरब कर्म कीता, करनी दा करता हो के वेख वखाईआ। जो इशारा दे के गया घनईया काहन विच गीता, ध्याए अठारां देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवार इक सुहाईआ। इक इक कहे मैं एका अक्खर पढ़या, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। इक्को मंज़ल चढ़या, जिथ्थे मिले धुर दा माहीआ। इक दुआरे खढ़या, सच गृह सोभा पाईआ। जिथ्थे परम पुरख परमात्म मेरा पल्लू फड़या, इक नाल मिल के वजी वधाईआ। मेरा लहिणा देणा आत्म परमात्म धार जगत नाता सीस धड़या, तन वजूद खेल खिलाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी निरगुण हो के पल्लू फड़या, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। मैं उस साहिब स्वामी चरण कवल सरनाई परया, धूड़ी ख़ाक रमाईआ। जिस नाल इक इक दा कारज सरया, अगला लेखा रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। इक कहे मेरा इक्को रूप एका, एकँकार दिती वड्याईआ। जिस ने बख्शी धुर दी टेका, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। मेरा अन्तष्करन कर बिबेका, पतित पुनीत बणाईआ। त्रैगुण ला ना सके सेका,
१२७८ अग्नी तत ना कोए जलाईआ। मैनूं इक्को घर वखाया सौहरा पेका, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। जिस घर सतिगुर शब्द १२७८
२४ शब्द दा ठेका, दूजा संग ना कोए रखाईआ। मैनूं पुरातन नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा चेता, चेतन हो के दयां दृढ़ाईआ। २४
कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा इक्को होणा नेता, जो निज नेत्र वेख वखाईआ। जिस धर्म धार दा अगला खोलणा भेता, सतिजुग सच दए वड्याईआ। सच सिँघासण होणा लेटा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जाता हो के बणे खेवट खेटा, मलाह बेपरवाह इक अख्वाईआ। जिन भगत सुहेला बणाउणा बेटी बेटा, पिता पूत गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। इक कहे मैं एका इक्को, इक इक नाल मिल के वजी वधाईआ। जन भगतो भगत दुआरे टिको, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। चरण कवल इक प्रभू दे विको, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जो इशारा दे के गया गोबिन्द सिखो, सिख्या आपणे अन्दर लैणी टिकाईआ। मानव ज़ाती दीन मज़्हब ज़ात पात रूप दिसे इक्को, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। सच प्यार दा सगनां वाला दिहाढ़ा इक्को मिथो, बहुती लोड़ रहे ना राईआ। पोह अठाई उतम श्रेष्ट चार जुग दी थितो, थित वार आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म धार प्यारे मितो, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। तुसीं भगत सुहेले बणना हितों, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जो तुहाडा नाता जोड़े तुहाडे चितो, चितवित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। इक कहे मैं इक्को एका चंगा, चंगी तरह जणाईआ। मैं इक्को भिक्ख्या मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं इक इक रंगण रंगां, आदि जुगादी उतर ना जाईआ। मैं इक्को मंज़ल लँघां, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। मैं कदे गया नहीं गोदावरी गंगा, गंगोत्री वेखण पाईआ। मैं बणया नहीं कदे कोई पंडा, डण्डावत विच सीस झुकाईआ। मैं फिरदा विच ब्रह्मण्डां, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं वेखां जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तकीआं वंडां, मानव ज़ाती खोज खुजाईआ। अन्त निगाह मारी कलयुग दिस्या अन्तिम कन्ढा, कन्ढी घाट वेख वखाईआ। जां गहु करके तक्कया जगत संसार अन्तर निरंतर आत्म परमात्म धार रंडा, सुहागी कन्त ना कोए हंढाईआ। किसे कम्म ना आवे हलवा खीर मंडा, जगत रसना रस ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। इक कहे मैं इक इकल्ला, अकल कलधारी दिती वड्याईआ । मैं वसां सदा सच महला, गृह इक्को सोभा पाईआ। मैं वेखां जलां थलां, महीअल खोज खुजाईआ। मैं जाणां घड़ी पलां, थित वारां पर्दा लाहीआ। मैं लहिणा देणा तकां राम काहन नूर अलाही अल्ला, आलमां तों बाहर दयां जणाईआ। मैं नाम सति वाहिगुरु फड़या वेख्या पल्ला, पलक पलक खोज खुजाईआ। मैं फिरया नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दे झल्ला, जंगल जूहां पन्ध मुकाईआ। जिधर तक्कया कूड़ विकार दा दला, दलिद्री दिसी लोकाईआ। सति धर्म दा किसे हथ्थ ना दिस्या छल्ला, जगत कंगण कम्म किसे ना आईआ। मैनूं चेता आ गया की गोबिन्द इशारा दिता डल्ला, थल मारू देण गवाहीआ। कलयुग अन्त आपणा बोलणा हल्ला, हालत विगड़े ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। इक कहे मैं इक दा मंगता, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्रेम बख्श दे साची संगता, सतिगुर हो के हो सहाईआ। लेखा मुका दे भुखा नंगता, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्रेम प्यार बख्श दे काया माटी तन का, तन वजूदां रंग रंगाईआ। हँकार मेट दे मनसा मन का, मनुआ दे बदलाईआ। प्रकाश कर दे आपणे चन्न का, नूरी चन्न चन्न रुशनाईआ। लालच रहे किसे ना धन का, धन दौलत आपणा प्यार देणा वरताईआ। वणजारा रहे कोई ना कन्न का, कायनात दा लेखा देणा मुकाईआ। वसेरा वखा दे आपणे छप्पर छन्न का, जो बिन बाडीआं बणत बणाईआ। मैं इक्को आस रखां इक इक कहे तूं स्वामी होणा साचे जन का, भगतां देणी माण वड्याईआ। लेखा रहे ना धर्म राय दे डंन का, डंका आपणा नाम देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा दर इक वखाईआ। इक कहे मेरा इक दा इक इशारा, जो सैनत सब

नूं इक समझाईआ। जो खेले खेल विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी जिस दी सेव कमाईआ। उह निरगुण धार निहकलंक अवतारा, कलि कल्की बेपरवाहीआ। अमाम अमामा बण सिक्दारा, धुर अमाम इक अख्वाईआ। जोती नूर नूर चमत्कारा, दो जहान करे रुशनाईआ। शब्दी धार दए धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत रस बख्शे ठण्डी ठारा, अग्नी तत बुझाईआ। जो जन भगतां करे प्यारा, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। सो स्वामी प्रगट हो के आप दोबारा, दोहरी कल वरताईआ। सतिजुग सच चलाए विवहारा, विवहारी आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को माण देवे पुरख नारा, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ। इक कहे मेरा इक इक दे नाल रिश्ता, दूजा संगी ना कोए बणाईआ। जिस दा इशारा देंदा गया जबराईल फ़रिश्ता, पैग़ाम मुहम्मद महबूब दिता सुणाईआ। उस दा लेखा लहिणा आहिस्ता आहिस्ता, सहिज सहिज आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर इक्को जिस दा होणा इष्टा, इष्ट देव इक समझाईआ। जो लेखा जाणे दीन दुनी सृष्टा, श्रेष्ट आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा लेख जणाया राम चन्द्र वशिष्टा, विषयां तों बाहर समझाईआ। उस दा धर्म दी धार होणा गृहस्ता,

गृह आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां अन्दर बख्शणा निस्चा, साची देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। इक कहे मैं इक नूं रिहा अराधी, भगतो दयां जणाईआ। मेरी आदि जुगादि दी वादी, वायदे पिछले पूर कराईआ। सतिगुर शब्द बण अनादी, धुर दा हुक्म सुणाईआ।

... ...

२६ पोह शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर लोहड़ी वाली रात

जन भगतां सदा लोहड़ी, लुड़ींदा साजण दए वड्याईआ। चरण प्रीती बख्शे गुड़ दी रोड़ी, बिन रसना रस चखाईआ। शब्दी धार चढ़ा के घोड़ी, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत भगवान बणा के जोड़ी, सोहणा धुर दा रंग रंगाईआ। जगत विकारा अन्दरों होड़ी, होड़ा सस्से वाला दए वखाईआ। मन मनसा आपणे वल्ल मोड़ी, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जन

भगतां जुग जुग वस्त एह दिती थोड़ी, थोड़ा थोड़ा रस झोली पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आप गया बौहड़ी, आप आपणी दया कमाईआ। विकार मध अन्तर रहिण ना देवे कौड़ी, रस अमृत नाम भराईआ। पार करा दे भीड़ी गली सौड़ी, मार्ग इक्को इक वखाईआ। रागां विच्चों राग उपज्या गौड़ी, लोहड़ी दे दिन दी इहो वड्डी वड्याईआ। नानक धार जो शब्द जणाया पौड़ी, एसे दिवस कीती सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ । लोहड़ी कहे मैं जुग जुग लोड़दी, आशा आपणे अन्दर रखाईआ। भगत भगवान नाल जोड़दी, जुग जुग दी रीती चली आईआ। मेरा दिवस ओह जिस विच सब तों पहलां पूजा होई बोहड़ दी, पिपलां सीस निवाईआ। यगै पुरुष दी धार हावगरीव दे मोड़दी, पर्दा परदयां विच्चों खुल्हाईआ। बावन दी धार जिस दी खेल ब्राह्मण गौड़ दी, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। मेरी आदि जुगादी धार सदा दौड़दी, भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा दिवस दिहाढ़ा उह जिस विच पूजा चली पहली वार तलाब जौहड़ दी, जल धारा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। लोहड़ी कहे मैं जुग जुग लोड़दी साजण, सजणूआं धुरदरगाहीआ। जो दो जहानां
१२८२ राजन, शाहो भूप नूर अलाहीआ। मेरा दिवस उह जिस विच जगत दा लहिणा देणा देणा लहिणा बणया नाल महाजन, जगत १२८२
२४ हट्टां खेल खिलाईआ। मेरे दिवस पहली वार कपल मुन मारी आवाज़न, खुशीआं नाल सुणाईआ। सांख योग दस्सया आपणी २४
मातन, रीती दीन दुनी बदलाईआ। मेरे दिवस जगत दन्दासा शुरू होया सी दातन, कुदरत दे रंग नूं जगत रंग विच बदलाईआ। मेरे दिवस विच मत्तस जल धार कीता उदघाटन, मछ कछ संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। लोहड़ी कहे मेरे दिवस भगतां भगवान नाल मिल्या मेल, मेला हरि जगदीश कराईआ। दीन दुनी नूं कल्पणा दा चढ़या तेल, हउमे हंगता संग रखाईआ। प्यार तुट्टया सज्जण सुहेल, साचा संग ना कोए बणाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतां प्रभ दे प्यार विच वधी वेल, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। लोहड़ी कहे मेरे दिवस रिड़कया गया सागर, सगली सृष्टी जणाईआ। अमृत भरया गया अगम्मी गागर, जिस नूं वेखण कोए ना पाईआ। वणजारे बणाए धर्म सौदागर, सोहणी वस्त वखाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, देवे माण माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। लोहड़ी कहे समुंद सागर लेखा मुकाया अद्ध, हिस्सा वंड आपणे हथ्थ रखाईआ। इक पासे अमृत ते इक पासे मदि, वेखणहारा बेपरवाहीआ। राक्षश देवत दोवें लए सद्द, प्रेम

नाल बुलाईआ। दोवें इक दूजे नालों अगे बहण वध, आपणी खुशी वखाईआ। लोहड़ी कहे मेरा दिवस सुहावणा जिस विच कलस जग राक्षश मदि विच लपटाईआ। दोहां दी धार दिती वंड, प्रभ आपणी खेल वखाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी रहे हंढ, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। लोहड़ी कहे जन भगतां मिले दीन दयाला, अमृत रस चखाईआ। राक्षशां मिले मदि प्याला, मिट्टी ख़ाक सिर विच छाहीआ। सरगुण दी धार निरगुण दा खेल खेल निराला, दोवें रंग मेरे दिवस विच रखाईआ। मैं ग़मी खुशी दोहां विच होई बेहाला, आप आपणा गई भुलाईआ। परम पुरख परमात्म आपणा खेल कीता भगतां मार्ग दे सुखाला, सच रंग रंगाईआ। मूर्ख मुगध कर बेहाला, जगत वासना विच हल्काईआ। लोहड़ी कहे जन भगतो तुहाडे धन्नभाग जिन्नां अन्तर प्रभू प्रेम दी माला, जगत मणके फेरन दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाडा घर गृह मन्दिर शरीर प्रभू दी धर्मसाला, दुआरा साचा सोभा पाईआ। लोहड़ी कहे लुड़ींदा साजण मिल्या घर गोपाला, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। मेरा निक्का जेहा अहिवाला, अहिल नाल दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो वेखणहारा शाह कंगाला, पातशाह आपणा रंग रंगाईआ।

✪ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात दे समें ✪

धवल कहे जन भगतो खुशीआं वाला दिहाढ़ा माघ, पहला प्रविष्टा दए वड्याईआ। हर हिरदा अन्तर अन्तर होवे बाग़ बाग़, रोम रोम कली कली महकाईआ। अन्तर निरंतर उपजे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, पापां करे सफ़ाईआ। घर जोत जगाए चराग़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। हरि भगत सुहेले साजण जावण जाग, निज नेत्र लोचन नैण नैण खुल्हाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवण वड वड भाग, भगवन देवे माण वड्याईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मिटाए आग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे जन भगतो सच माघ दा करो मजन, दुरमति मैल रहे ना राईआ। धुर स्वामी तको सज्जण, हरि करता धुर दरगाहीआ। जिस दे नाम दमामे वज्जण, दो जहानां करे शनवाईआ। नौ खण्ड पृथमी दीपक जोती जगण, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। जिस दा लहिणा देणा जन भगतां साचे बदन, तन वजूदां वेख वखाईआ। जो नाम दीपक देवे सदन, सदा सद आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ चरण धूड़ करो इश्नान, इष्ट देव इक मनाईआ। पवित्र वेखो इक अस्थान, जो पतित पुनीत दए कराईआ। इक्को नाम ढोला सुणो कान, गीत गोबिन्द इक अलाहीआ। एका मन्दिर तको मकान, गृह इक्को इक सुहाईआ। इक्को चरण कवल करो ध्यान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक्को शाहो भूप सुल्तान, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। माघ कहे जुग जुग जन भगत सुहेला धुर दा नहावण नहावे, जगत मजना लोड़ रहे ना राईआ। दुरमति मैल निरंतर गवावे, पापां करे सफ़ाईआ। चरण कवल इक्को सीस निवावे, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जगत तीर्थ तट किनारे ना वेखण पावे, पाँधी बणे जगत ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणी दया कमावे, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। घर स्वामी वेख वखावे, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। माघ कहे जन भगतो मेरा दिवस सुलखणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। हरि भगत सुहेले वरोले लख चुरासी विच्चों मक्खणा, नाम मधाणा इक
१२८४ टिकाईआ। किरपा करे अलख अलखणा, अगोचर दया कमाईआ। जो जुग जुग चलावे रथना, रथवाही बणे धुर दा माहीआ । १२८४
२४ जिस ने जगत जहान मथणा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। उह जन भगत कदे ना मोड़े सखणा, सच वस्त नाम वरताईआ। २४
धूड़ी चरण छुहाए मथना, मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। माघ कहे जन भगतो प्रभ चरण धूड़ सच्चा नहाउणा, आदि जुगादि मिले वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणा, आत्म परमात्म मिल के ख़ुशी बणाईआ। घर स्वामी ठाकर इक मनाउणा, निव निव सीस झुकाईआ। मेहरवान महबूब इक ध्याउणा, दर इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । मालक कहे मेरा जन भगतां नाल संग, सगला संगी पुरख अकाल जणाईआ। जो नाम निधाना चाढ़े रंग, रंगत उतर कदे ना जाईआ। शब्द धार वजाए मृदंग, दीन दुनी सुणाईआ। ओह साहिब सूरा सरबंग, हरि करता आप अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी गए लँघ, भज्जण वाहो दाहीआ। उह आत्मा सेज सुहाए पलँघ, सुखआसण सोभा पाईआ। भाग होण ना देवे कदे मंद, मंदभागीआं लए उठाईआ। जिस लेखे लाउणा निशान तारा चन्द, सूर्या खोज खुजाईआ। उह भगतां देवणहार अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम बण बख़्शंद, बख़्शिश रहमत रिहा वरताईआ। भगतां आवण जावण मेट के पन्ध, लेखा अगला आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रंग आप रंगाईआ। माघ कहे मेरा धर्म धर्म पैग़ामा, सृष्टी दृष्ट जणाईआ। जो संदेशा दे के गया सीआ नूं रामा, राम रामा भेव चुकाईआ। जो इशारा दिता घनईए राधा, राधा खेल तकणा श्री भगवाना, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा वेस होणा ज़िमीं असमाना, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा रूप रंग रंगाईआ। पैग़म्बरां किहा धुर अमामा, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। गुरु गुरदेवां किहा साहिब सुल्ताना, पुरख अकाला वड वड्याईआ। जोती धार पहन के जामा, जोती जाता इक अख्वाईआ। लहिणा देणा जाणे ज़िमीं असमाना, दो जहानां खोज खुजाईआ। जन भगत सुहेले करे परवाना, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच बेनन्ती करे परवाना, परम पुरख प्रभ आपणी दया कमाईआ।

✪ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ प्यारे लाल दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड दुसांझ ज़िला जलन्धर ✪

१२८५ धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श प्यार, पीआ प्रीतम हो के दया कमाईआ। घर स्वामी दर्शन दे दीदार, निज गृह १२८५
२४ पर्दा आप उठाईआ। मेरे आदि जुगादी एकँकार, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। मैं मांगत हो के मंगां भिखार, दर २४
तेरे अलख जगाईआ। तूं देवणहार दातार, दाता दानी धुरदरगाहीआ। मेरी आशा पूरी कर दे सचखण्ड निवासी धुर दे यार, मित्र प्यारे होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणी दस्स अगम्मी बोली, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले अन्तर आत्म जावण मौली, मौला आपणा रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी लहिणे तक लै इकरार कौली, कवल नैण बिन नैणां नैण उठाईआ। कोझी कमली मैं निमाणी धरत धवली, धवल हो के आस रखाईआ। मेरी बेनन्ती मंन लै मैं कोझी कमली, कमलापति तेरी ओट रखाईआ। तूं मोहण माधव मेरा साँवल सवली, सावरीआ अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां अन्तर दे दे आपणा दरस, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। निजर धारों बूँद स्वांती अगम्मी बरस, जगत तृष्ना प्यास मिटाईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे हरस, हवस अवर ना कोए रखाईआ। मेहरवान हो के कर दे तरस, रहमत आप कमाईआ। मेरा सुहञ्जणा होवे तेरा बरस, बरसी प्रीतम आपणे रंग रंगाईआ। निगाह मार लै मेरे उत्ते फ़र्श, फ़र्शे ख़ाकी ध्यान लगाईआ। तूं वसणहारा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम तेरी

वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श अगम्मढ़ी प्रीत, प्रीतम हो के दया कमाईआ। काया माटी तन वजूद कर दे ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावण गीत, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। ठगौरी जगत कूड़ी क्रिया रहे मूल ना चीत, चेतन सुरती देणी कराईआ। लख चुरासी विच परखणहारे नीत, नीतीवान तेरी वड वड्याईआ। जन भगतां झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक दरसाईआ। किरपा कर दे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी ओट तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे साजण मीत महबूब, मेहरवान तेरी वड्याईआ। जन भगतां गृह हो मौजूद, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दी छड हदूद, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। तेरा आलीशान दिसे अरूज, नूर नुराना डगमगाईआ। मेल मिला मंज़ल हक मकसूद, बातन पर्दा आप चुकाईआ। लेखा रहे ना हज़ारा दरूद, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। प्रेम प्रीती तेरा होवे सबूत, साबत आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा दे काया कलबूत, काअबा इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१२८६ आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां कर दे वड वड भाग, १२८६
२४ भगवन तेरे हथ्थ वड्याईआ। घर दीपक जोत जगा चराग़, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। सच प्रीती बख्श वैराग, वैरी अन्दरों २४
बाहर कढ्ढाईआ। गुरमुख हँस बणा काग, काग हँस रूप बदलाईआ। दुरमति मैल धो दे दाग़, पतित पुनीत आप जणाईआ। सोई सुरती जन भगतां जाए जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया आप बुझा दे आग, त्रैगुण अतीते दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर स्वामी होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू भगतां अन्तर कर निवास, निज घर आपणा डेरा लाईआ। साची जोत दे प्रकाश, अन्ध अज्ञान दे मिटाईआ। पन्ध मुका दे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर लेख रहे ना राईआ। साचे मण्डल वखा दे रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। सतिगुर शब्द दा दे धरवास, धीरज धर्म धार समझाईआ। लेखे लाउणा स्वास स्वास, साह साह तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू दर्द दुःख भय भञ्जणा, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। जन भगतां नेत्र नाम निधान पा दे अंजणा, दुरमति मैल देणी धुआईआ। किरपा कर स्वामी सज्जणा, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तुध बिन पर्दा किसे ना कज्जणा, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। लेखे ला लै आहला अदना, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाईआ। सति सच आपणी वखा दे रचना, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ।

भाग लगा दे काया माटी कच्चना, कंचन गढ़ आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच गृह वजदी रहे वधाईआ। धरनी कहे सदा भगत प्यासा प्यार, प्यारे लाल दए गवाहीआ। दर्शन सिँघ मांगे दरस दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। दोहां दा इक्को घर होवे तेरा चरण दुआर, बंक दुआर मिले वड्याईआ। शब्द नाद दे धुन्कार, धुन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत रस बख्शणा ठंडा ठार, निझर झिरना बूँद स्वांती कवल नाभ टपकाईआ। आत्म जोती कर उज्यार, बिन तेल बाती डगमगाईआ। घर सुहञ्जणा कर आप करतार, कुदरत कादर दया कमाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दार, करता पुरख इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां अन्तर निरंतर चाढ़ दे रंग, रंगत आपणी इक प्रगटाईआ । सच दुआर वेखणा लँघ, नव दुआर दा डेरा ढाहीआ। नादी शब्द सुणा मृदंग, धुन आत्मक इक दृढ़ाईआ । आत्म सेज सुहा पलँघ, बिन पावा चूल सोभा पाईआ। भेव चुका दे ब्रह्म हँ, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप उठाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे संग, सगला संगी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच वस्त नाम

१२८७ वरताईआ। धरनी कहे प्रभू तूं देवणहार समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, जुग जुग ढोले गाईआ। १२८७

२४ जन भगतां बख्श अगम्मी वथ, वस्त अतोल अतुल वरताईआ। खाली रहे कोई ना हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, आप २४

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू अज दिवस दिहाढ़ा माघ चार, चार जुग दा लेखा दे मुकाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगत सुहेले फड़ बाहों दे तार, तारनहार दया कमाईआ। आपणे मित्र बणा लै यार, यारड़े आपणी गंढु पुआईआ। इक वखाउणा सचखण्ड दुआर, दरगाह साची सच टिकाईआ। जिथ्थों आउणा पए ना दूजी वार, जनणी जन्म देवे कोए ना माईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लहिणा देणा रहे ना विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग बणाईआ। तूं निरगुण निरवैर कलि कल्की अवतार, कल कातीआं कर सफ़ाईआ। मैं निमाणी मंगती तेरे दर भिखार, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर वजदी रहे वधाईआ। माघ कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा चौथा, चौथे जुग जणाईआ। जन भगतां प्रभू मार्ग दस्सया सौखा, भीड़ी गली ना कोए रखाईआ। पढ़ना पए किसे ना पोथा, पुस्तक बग़ल ना कोए उठाईआ। हरिजन रहे कोए ना सोता, सुत्तयां लए जगाईआ। सच दुआर मारन वाला गोता, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस ने भगतां दुरमति मैल पाप कलेवर धोता, कलयुग क्रिया कूड़ करे सफ़ाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां सिर रख हथ्थ, कलयुग ध्यान लगाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, बेपरवाह अगम्म अथाहीआ। सच प्रेम दी दे दे वथ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। तेरी महिमा गावण अकथ, धुर दे ढोले गाईआ। तेरे सर्ब चरण जावण ढठ, कवल नैण अक्ख अक्ख देणी खुल्हाईआ। सब दे लेखे लाउणे जगत धार तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध संग रलाईआ। जन भगतां बख्शणा अन्तष्करन हठ, सति सन्तोख विच समाईआ। सब दा इक्को दुआर होवे इक्कु, दूजा दर वेखण कोए ना पाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं चरण कवल धवल निमाणी हो के जावां ढठ, बिन धूड़ी तेरी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दरस दिखाउणा नठ नठ, बिन कदमां भज्जणा दो जहान वाहो दाहीआ।

✪ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सन्तोख सिंघ सोढ्ढीआं दे नवित पिण्ड दुसांझ ज़िला जलन्धर ✪

माघ कहे मेरी बेनन्ती कर परवान, प्रविष्टा पंज पंज नाल मिलाईआ। निगाह मार श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी धुर दे काहन, राम रामा नूर अलाहीआ। जोती जाते कर पहचान, बेपहचान पर्दा आप उठाईआ। तैनूं झुकदे ज़िमीं असमान, दो जहान लागण पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे ढोले गाण, पुरी लोअ वजदी रहे वधाईआ। सच दुआर इक्को मंगां दान, दाता हो के झोली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। माघ कहे प्रभ जन भगतां तरस कमाणा, रहमत आपणी आप कमाईआ। जगत जगदीश हो के वेख वखाउणा, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाउणा, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। अमृत आत्म जाम प्याउणा, रस निझर अगम्म झिराईआ। शब्द अनादी नाद वजाउणा, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। दीपक जोती डगमगाउणा, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। जन भगत सुहेला गोद उठाउणा, फड़ बाहों गले लगाईआ । अन्तर आत्म पर्दा लौहणा, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। माघ कहे प्रभू जन भगतां दे दे दात, दाते दानी दया कमाईआ । कलयुग अन्तिम पुछ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। बिना ज़बान तों कर बात, बातन पर्दा दे उठाईआ। अमृत बख्श बूँद स्वांत, अग्नी तत गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

जन भगत कहिण प्रभू पंचम प्रविष्टा आया, आपणी खुशी बणाईआ। हरिजन चरण धूड़ी दे नुहाया, दुरमति मैल रहे ना राईआ। त्रैगुण लेखा मेट माया, ममता मोह हँकार गुआईआ। सच स्वामी बख्श आपणी साची साया, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे नाम खुमारी, मस्त मस्ताने आप बणाईआ। तेरे नाम दे होईए अधारी, उदर दा लेखा रहे ना राईआ। साडी पैज देणी संवारी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वंड रहे ना पुरख नारी, नर नरायण इक्को रंग रंगाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारी, शहिनशाह इक अख्वाईआ। साडी तेरे चरण कवल निमस्कारी, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। तेरे दर ते बणीए पुजारी, पूजा सिल रहिण कोए ना पाईआ। तूं किरपा करीं अपारी, अपरम्पर देणी माण वड्याईआ। साची प्रीती निभ जाए तोड़ यारी, यराने सके ना कोए तुड़ाईआ। हरिजन करे ना कोए ग़द्दारी, गुरु गुरदेव लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। जन भगत कहिण साडे अन्दरों मेट तारीकी, अन्धेरा रहिण किछ ना पाईआ। तेरे विच हक तौफ़ीकी, ताकतवर नूर अलाहीआ। साडी काया
१२८६ कर ठांडी सीती, अग्नी तत ना कोए तपाईआ । कलयुग विच सतिजुग बदल रीती, रीतीवान हो सहाईआ। लेखा रहे १२८६
२४ ना मन्दिर मसीती, काअबा इक्को इक वखाईआ। तेरे चरण उपर धवल मिलदी रहे प्रीती, प्रीतम मिलणा चाँई चाँईआ। तूं २४
वाहिद लाशरीकी, वाहिद नूर अलाहीआ। तेरे विच हक तौफ़ीकी, तोहफ़े देणे थांउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन तेरी भुल जाण ना रीती, रीतीवान आपणा रंग देणा रंगाईआ।

✪ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड बताला ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे मेरे साहिब सूरे सरबंग, हरि करते तेरी ओट तकाईआ। मेरे मेहरवान नौजवान श्री भगवान मेरे उत्तों बुझा दे अग्ग, नव सत्त ततव तत ना कोए तपाईआ। निरगुण धार सृष्टी दृष्टी अन्दर वेख लै जग, जागरत जोत बिन वरन गोत नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीव बगले बण गए बप, काग हँस रूप ना कोए बदलाईआ। आत्म धार तेरे नालों होए अलग, सगला संग ना कोए बणाईआ। मेहरवान महबूब तेरा दर्शन पाए ना कोए उपर शाहरग, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी

कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे कलयुग कूड़, क्रिया कुकर्म रहिण कोए ना पाईआ। जीव जंत चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, अन्ध आत्म कर रुशनाईआ। नाम निधान रंग चाढ़ दे गूढ़, दुरमति मैल अन्तर निरंतर दे धुआईआ। सति सतिवादी जन भगतां बख्श आपणी धूड़, चरण चरणोदक मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दुआरा कर पवित, पतित पुनीत हो सहाईआ। तेरा खेल आदि जुगादी नित, नवित आपणा खेल खिलाईआ। ठाकर स्वामी मेरे धुर दे पित, पति परमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान कर हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जगत जिज्ञासुआं ठगौरी रहिण ना देवीं चित, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। मेरी सुहञ्जणी सुहावणी कर दे थित, प्रविष्टा पंज माघ वड्याईआ। निरगुण सरगुण तेरा खेल खेल गए अवतार पैग़म्बर गुर कित, केते आपणा खेल खिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। मेरे उत्ते वेख अन्धेरी रात, कलयुग अन्ध अन्धेरा छाईआ। अमृत मिले ना किसे बूँद स्वांत, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। झगड़ा
१२६० तक ज़ात पात, दीन मज़्ह़ब करे लड़ाईआ। तेरा दरस निज नेत्र ना होवे किसे इकांत, इक इकल्ले तैनूं मिलण कोए ना १२६०
२४ पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक मेरी पुछ बात, परवरदिगार सांझे यार हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २४
आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरीआं अन्त अन्त उडीकां, बिन नैणां नैण उठाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं दस्सीआं तरीकां, तवारीखां बाहर जणाईआ। तेरा खेल हक हकीकत कीं का, कलम्यां बाहर पढ़ाईआ। तेरे विच अगम्म तौफ़ीका, तोहफ़ा देणा चाँईं चाँईंआ। आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अन्दर दे प्रीतां, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती तेरा इक्को ढोला गाए गीता, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अलाईआ। अन्तष्करन सब दा कर दे ठांडा सीता, अग्नी तत तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं दर भिखारन मंगती, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। दीन दुनी गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। प्यार बणा दे चार वरन अठारां बरन इक्को संगती, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। तृष्ना कूड़ रहे ना मन दी, मनसा मोह ना कोए हल्काईआ। अन्त निशानी मेट दे तारा चन्न दी, मुहम्मद आसा नाल मिलाईआ। मेरे उत्ते घड़ी रहे ना ग़म दी, ग़मखार खुशी देणी प्रगटाईआ। सृष्टी वणजारन रहे ना दृष्टी चम्म दी, चम्म दृष्टी दा लेखा देणा मुकाईआ। तेरी इक्को धार होवे

आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दी, परम पुरख प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। सब नूं इक्को ओट होवे तेरी सरन दी, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। खेल मुका दे काया माटी धड़न दी, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंज़ल दस्स दे आपणी चढ़न दी, नाम पौड़ी डण्डा इक्को इक वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे आदि जुगादी राम, रम्ईआ तेरी बेपरवाहीआ। मेरे सति सतिवादी शाम, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। मेरे शाहो भूप अमाम, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। तेरे चरण कवल प्रणाम, बिन सीस सीस झुकाईआ। मैं चाहुंदी दीन मज़्ह्ब दा झगड़ा मेट तमाम, शरअ दी वंड ना कोए वंडाईआ । इक्को नाम कलमा दे पैग़ाम, पैग़म्बरां बाहर कर शनवाईआ। आत्म परमात्म तेरा होवे इस्लाम, इस्म आज़म इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा इक रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तेरा इक्को होवे जाप, दूसर रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे ताप, त्रैगुण अतीते आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी अन्दरों कढ संताप, झगड़ा शरअ रहे ना राईआ । पुरख अकाले दीन दयाले बण कमलापात, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। परवरदिगार सांझे यार मार झात, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुछ वात, वातावरन तक ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे कूड़ कुड़यार, कल काती रहिण ना पाईआ। नव सत्त ब्रह्म मति कर उज्यार, जोती जाते पुरख बिधाते तेरे अगे मंग मंगाईआ। नव सत्त तेरा होवे जै जैकार, जीव जंत साध सन्त तेरा इक्को ढोला गाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरी होवे धार, धरनी धरत धवल धौल चारों कुण्ट वजे वधाईआ। भगत वछल मेरे गिरधार, भगवन मेरी आसा पूर कराईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले देणे तार, तारनहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा करदी रही इंतज़ार, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। कवण वेला कलि कल्की आवे अवतार, निहकलंका आपणा फेरा पाईआ। अमाम अमामा होवे सिक्दार, दो जहानां वेख वखाईआ। लहिणा देणा जाणे पैग़म्बर गुर अवतार, भविख्तां पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझे यार तेरा खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। मैं कोझी कमली मिट्टी ख़ाक तेरी चरण धूड़ी लावां छार, शहिनशाह तेरे रंग विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेहरवान हो के तुठ, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरी गोदी विच्चों जाए उठ, सतिजुग सच दे वड्याईआ। जो तेरे तेरे नालों गए रुठ,

१२६१
२४

आत्म मेला मेल सहिज सुभाईआ। अमृत जाम प्या दे घुट, बिन रसना रस चखाईआ। जिन्हां दी लिव गई छुट, छुटकी लिव लै लगाईआ। नाम भण्डारा दे अतुट, अतोट आप वरताईआ। तेरे उत्ते इक्को ओट, ओड़क दर तेरे वास्ता पाईआ। शब्द नगारे ला दे चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे अन्तष्करन विच्चों कढ दे खोट, खोटे खरे लै बणाईआ। तूं सच स्वामी पुरख अकाला सतिगुर इक्को बहुत, बहुते गुरुआं लोड़ रहे ना राईआ। मैं प्रकाश तकां तेरा निर्मल जोत, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरी आवे ना किसे सोच, सोच समझ अक्ल बुद्धी जगत चले ना कोए चतुराईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

भगत जनां हरि मीतड़ा, परम पुरख करतार। सन्त जनां मिलाए मेल अनडीठड़ा, धुर दरगाही कन्त भतार। गुरमुखां
१२६२ रंग चाढ़े मजीठड़ा, उतर ना जाए विच संसार। गुरसिखां मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, विख अन्दरों कढ्ढे बाहर। हरिजन वखाए १२६२
२४ धाम अनड़ीठड़ा, पर्दा परदयां विच्चों उतार। जुग जुग वेखणहारा काया चीथड़ा, जोती जाता अगम्म अपार। जोती जोत २४
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप सची सरकार। भगत जनां सद रंगदा, रंगत अगम्म अथाहीआ। साचे सन्तां अन्दर आपे लँघदा, बिन कदमां कदम उठाईआ। गुरमुखां वणज कराए साचे संग दा, सगला संगी आप हो जाईआ। गुरसिखां इश्नान कराए चरण धूड़ गंग दा, गंगोत्री लेखा रहे ना राईआ। हरिजन भेव खुल्हावे आत्म सेज पलँघ दा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। भगत जनां प्रभ मेलदा, मेलणहार करतार। सन्त जनां खेल खिलाए सज्जण सुहेल दा, आदि जुगादी एकँकार। गुरमुखां भेव खुल्हाए बिन बाती तेल दा, जोती जाता डगमगाए। गुरमुखां गुरसिखां धाम वखाए आपणा नवेल दा, पर्दा ओहला अन्त उठाए। हरिजन लेख वखाए गुरु गुर चेल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाए। भगत जनां प्रभ सज्जणा, सतिगुर दीन दयाल। सन्त जनां कराए मजना, बणाए धुर दे लाल। गुरमुखां बणे पर्दा कजणा, नाम निधाना दए दुशाल। गुरसिख साचे चरण कवल देवे जग्हना, धर्म दुआर दए वखाल। हरिजन नाम खुमारी करे मग्ना, करनी दा करता पुरख अकाल। खेल खिलाए मूर्त गोपाल मदना,

। मोहन माधव धुर दा सज्जणा, । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव चुकाए आहला अदना, अदल इन्साफ़ आप कमाए।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

भगत सुहेला आप प्रभ, आदि जुगादी मीत। भगत सुहेला आप प्रभ, जुग जुग चलाए रीत। गुरमुख सुहेला आप प्रभ, कराए पतित पुनीत। गुरसिख सुहेला आप प्रभ, सद वसणहारा चीत। हरिजन सुहेला आप प्रभ, अन्तर परखणहारा नीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच इक प्रीत। भगत जनां प्रभ तारदा, तारनहारा एक। साचे सन्तां पैज संवारदा, नित नित बख्शे आपणी टेक। गुरमुखां पन्ध निवारदा, त्रैगुण जगत लाए ना सेक। गुरसिख आपणे आप उभारदा, इक इकल्ला एकँकार एक। हरिजन रोग सोग निवारदा, अन्तष्करन करे बुध बिबेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक जो खेल करे अनेक। भगत जनां प्रभू सुणाए अगम्मी बोला, अनबोलत आप जणाए मीत । साचे सन्तां इक्को सुणाए ढोला, बिन रसना जिह्वा गीत। गुरमुखां बणे आप विचोला, झगड़ा मुकाए मन्दिर मसीत। गुरसिखां करे भार हौला, मेहरवान त्रैगुण अतीत। हरिजन वसे सदा कोला, चरण प्रीती बख्शे प्रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग सच चलाए रीत। भगत जन प्रभ चरण कवल सुहाउँदे, सोहणी मिले वड्याईआ। सन्त सुहेले निव निव सीस निवाउँदे, बिन चरणां धूड़ी ख़ाक रमाईआ । गुरमुख इक्को ढोला गाउँदे, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख निव निव सीस झुकाउँदे, चरण कवल कवल सरनाईआ। हरिजन आपणा आप भेंट चढ़ाउँदे, माण ताण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जन भगतां प्रभ लेखा मेटे जन्म दा, एथे ओथे पन्ध मुकाईआ। साचे सन्तां लहिणा रहे ना कोई कर्म दा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। गुरमुख रहे कोई ना भरमदा, भरांत दा लेखा नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख वणजारा रहे ना कोई वरन बरन दा, ज़ात अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रंग आप रंगाईआ। साचे सन्त होण परवाना, परम पुरख दए वड्याईआ। गुरमुखां लेख मुकाए दो जहानां, निरगुण सरगुण आपणी दया कमाईआ। गुरसिख साचे चरण धूड़ी इक इश्नान कराना, दुरमति मैल रहे ना राईआ। हरिजन

बिन मंगयां देवे दाना, वस्त अमुल इक वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान । जिस दी आशा रख के गया रम्ईआ रामा, घनईया शाम गया जणाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा धुर अमामा, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस दा गोबिन्द डंक वजाया दमामा, दो जहान करे रुशनाईआ। उह शाहो भूप सुल्ताना, हरि करता इक अख्वाईआ। जल्वागर नूर नुराना, बिन ततव तत डगमगाईआ। कलयुग अन्त पहर के जामा, वेस अवलड़ा आप वटाईआ। जन भगत सुहेले कर परवाना, परम पुरख दए वड्याईआ। साचा मन्त्र दृढ़ा के नामा, तूं मेरा मैं तेरा दिता दृढ़ाईआ। जो कलयुग अन्त मेटे अन्धेरी शामा, शमअ नूर करे रुशनाईआ। सो भगत सुहेला इक इकेला भाग लगाए नगर खेड़ा ग्रामा, गृह आपणा इक सुहाईआ। हरिजन साचे माण दवाए सचखण्ड सच्चे मकाना, गृह इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, भगवन हो के आपणी कल वरताईआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह बटाला शहर ज़िला गुरदासपुर ✪

पूरन सतिगुर आप प्रभ, सब किछ करन करावण योग। पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादि आत्म परमात्म मेले सच संयोग। पूरन सतिगुर आप प्रभ, अन्तर निरंतर कटण वाला हउमे रोग। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गृह मन्दिर अन्दर निज नेत्र देवे दरस अमोघ। पूरन सतिगुर आप प्रभ, एथे ओथे दो जहानां मेटे वियोग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देवे दरस अगम्म अमोघ। सतिगुर पूरन आप है, आदि पुरख अगम्म। पूरन सतिगुर आप है, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म। पूरन सतिगुर आप है, जो आदि जुगादी मेटणहारा भरम। पूरन सतिगुर आप है, जो लेखा जाणे जीव जंत कर्म। पूरन सतिगुर आप है, जो निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण जणाए धर्म। पूरन सतिगुर आप है, जिस दा जननी कुक्खों होए कदे ना जरम। पूरन सतिगुर आप है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को परम। पूरन सतिगुर आप प्रभ, बिन तत वजूद शरीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो सतिगुर शब्द करे ताअमीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव तस्वीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो निरगुण निराकार निरँकार बेनज़ीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा आदि अन्त ना जाणे कोए अख़ीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो आदि जुगादी जन भगतां देवणहारा धीर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो शरअ शरीअत कटणहार ज़ंजीर।

पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आदि जुगादी जुग जुग बदले ना कोए ताअमीर।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुरजीत सिँघ दे गृह बटाला शहर ज़िला गुरदासपुर ✪

पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादी इक इकल्ला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो वसणहारा जला थला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो आत्म धार परमात्म हो के रला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो भाग लगाए भगतां साढे तिन्न हथ्थ महला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो दूई दुवैती मेटणहारा सल्ला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जो सच संदेसा नाम निधाना रिहा घल्ला। पूरन सतिगुर आप प्रभ, नूर नुराना नूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो हर घट हाज़र हज़ूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो मस्ती देवे नाम सरूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हउमे हंगता गढ़ तोड़े ग़रूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो शब्द अनादी देवे तूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जन
१२६५ भगतां आसा मनसा करे पूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो पन्ध मुकाए नेड़े दूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जन्म जन्म दे १२६५
२४ बख्श देवे कसूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा नाम कलमा अवतार पैग़म्बर गुरुआं कीता मशहूर। पूरन सतिगुर आप २४
प्रभ, चार जुग दे शास्त्र जिस दे मज़दूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाहो भूप सर्ब कला भरपूर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरि शाहो शहाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, सो पुरख निरञ्जण नौजवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरि पुरख निरञ्जण शाह सुल्ताना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, एकँकार बली बलवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि निरञ्जण डगमगाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, अबिनाशी करता वाली दो जहाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, श्री भगवान नौजवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, पारब्रह्म खेले खेल महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो सचखण्ड सुहाए सच टिकाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा थिर घर चरण कवल महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो सुत दुलारा शब्द करे प्रधाना । पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाए निशाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो त्रैगुण माया पंज तत खेल खिलाए जगत जहाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो चारे खाणी लख चुरासी देवे दाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड गगन गगनंतर सुहाए अगम्म अस्थाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस दा लहिणा देणा त्रैभवण ज़िमीं असमाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो अवतर हो के पहरे बाना। पूरन

सतिगुर आप प्रभ, जो शब्दी शब्द सुणाए तराना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो अमृत रस प्रगटाए महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो दीपक जोत जगाए बिन तेल बाती खेले खेल महाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस पैग़म्बरां दिता धुर कलमा अगम्म पैग़ामा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस गुरु गुरदेव दस्सया नामा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जिस चार जुग दे शास्त्र अक्खरां नाल कीते प्रधाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो जुग जुग जन भगतां देवे माना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, साचे सन्तां वेखे मार ध्याना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरमुख आपणी गोद उठाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरसिखां देवे दरस गुण निधाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, मुरीद मुर्शद करे परवाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जुग चौकड़ी बदलदा जावे निशाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो कलयुग अन्तिम संदेशा देवे धुर फ़रमाना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार नौजवाना, मर्द मर्दाना आपणा हुक्म वरताईआ।

१२६६ ✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ११ मोहण सिँघ दे गृह पिण्ड तारा चक जिला गुरदासपुर ✪ १२६६

२४ सतिगुर शब्द कहे मैं साचा मीत, मित्र प्यारा आदि जुगादि अख्वाईआ। बिना तन वजूद तों ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। बिन रसना जिह्वा अगम्मी गीत, बिन अक्खरां करां शनवाईआ। बिन वसां दिउरे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठां हथ्थ किते ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरी अवलड़ी रीत, रीतीवान हो के दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दस्स के सच प्रीत, हकीकत हक कलमा नाम समझाईआ। जुग बदलणा मेरे प्यार दी साची रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरा सिफ्ती ढोला गीत, अक्खरां नाल अक्खर मिल के सोहले गाईआ। मैं सदा सुहेला पुनीत, पतितां करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। दो जहानां बणां मलाह, खेवट खेटा इक्को नज़री आईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं देवां सलाह, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। जिस दी सिफ्त विच सारे कहिण वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। मेरा खेल थल अस्गाह, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी पकड़नहारा बांह, चारे खाणी फोल फुलाईआ। वसणहार अगम्मे थाँ, हर घट अन्तर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी जाता, जोती

जाते दिती वड्याईआ। मेरा मालक पुरख बिधाता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस अगम्मढ़ी अगम्मी दिती दाता, वस्त अमोलक इक वरताईआ। मेरा खेल सदा सद लोकमाता, धरनी धरत धवल धौल वेखां चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम भेव अभेदा खोल्हां जिस दी अगम्मी होवे गाथा, की अगम्मड़ा कार कमाईआ। संदेशा देवे पुरख समराथा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो होवे सहाई अनाथ अनाथा, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। लहिणा देणा चुकाए सब दा पूरब मस्तक माथा, लेखा लेखे विच्चों खोज खुजाईआ। मैं ओस दा बण के दासी दासा, नित नित सेव कमाईआ। कलयुग अन्त उसे दा रख भरवासा, निव निव सीस झुकाईआ। जिस दा खेल होणा पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां वेख वखाईआ। जो वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत तमाशा, तमाशबीन धुरदरगाहीआ। जिस दा नूर जोत प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ। मैं उस दी जुग चौकड़ी रख के बैठा आसा, नौ सौ चौरानवे जुग चौकड़ी देण गवाहीआ। जिस दी याद विच राह तके शंकर उत्ते कैलाशा, कलाधारी बिन नैणां नैण उठाईआ। ब्रह्मा बदल के आपणा पासा, करवट करवट विच्चों बदलाईआ। विष्नूं विश्व दा तके खुलासा, बिन अक्खरां फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब नूं देवणहार दिलासा, सिर सिर

१२६७ आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, १२६७

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शाहो शाबासा, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को इक एकँकार सब दा माहीआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ११ विरसा सिँघ दे गृह पिण्ड श्री हरि गोबिन्दपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

चमुखीआ कहे मेरी चारों कुण्ट लो, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं बख्शी लो, लोयण अगम्मा इक खुल्हाईआ। मैं बिना सरवणा तों शब्द सुणया सो, बिन अक्खरां ढोला गाईआ। हँ ब्रह्म रूप गया हो, होका दे के दयां सुणाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, कोट ब्रह्मण्ड दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दी आदि जुगादी धार दो, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। साचा रस अगम्मा देवे चो, बिन रसना रस चखाईआ। प्रीतम हो के करे मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस दे नाल जावे छोह, शौहर बांका आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चमुखीआ कहे मेरी बहु पुराणी आस, आशा अन्तर अन्तर जणाईआ। मेरा तेल बाती नाल प्रकाश, जगत जुगत नाल वड्याईआ। की मेरा लहिणा देणा उपर कन्ढे ब्यास, जल धार वहिण की सुणाईआ । की आसा रख के गया वेद व्यास, पुराण अठारां दा मालक आपणा भेव जणाईआ। की

इशारा दिता शंकर उत्तों कैलाश, कलाधारी की समझाईआ। ब्रह्मे किस बिध धरवाया धरवास, धर्म धर्म नाल समझाईआ। विष्नूं विश्व दा भेव खोल्ह खुलास, ख़ालक पर्दा दिता उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचे कन्ढे आवे पुरख अबिनाश, घाट पतण वेख वखाईआ। जिस दी आत्म परमात्म पैणी रास, भगत भगवान मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चमुखीआ कहे मेरे विच्चों पुकारन बत्तीआं, कूक कूक सुणाईआ। चार जुग अवतार पैग़म्बरां गुरूआं धरनी धरत धवल ते रखीआं पत्तीआं, हिस्से मज़्हबां वाले वंड वंडाईआ। प्रभ दा नाम निधाना जगत वरताया विच रतीआं, जिस दी कीमत ना कोए चुकाईआ। भेव अभेदा खुल्हाया राग छतीआं, ढोले सोहले सिफ्त सालाहीआ। गुण गाया दन्द बत्तीआं, बतीसे मिल के वजे वधाईआ। वड्याई दिती मन मतीआं, अक्ल बुद्धी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चमुखीआ कहे वेद व्यास मैनूं दिती सिख्या, जगत विद्या समझ किछ ना आईआ। जिस दा लेखा कानी पुठ्ठी करके लिख्या, शाही शरअ धार ना कोए जणाईआ। बिना नेत्रां तों सब कुछ दिस्या, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। फेर प्रेम दी पाई भिच्छया, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा जिस वेले सच किते ना दिस्या, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। हउमे हंगता घर घर कूड़ी होवे विस्या, विख भरी होवे लोकाईआ। सच सिंघासण बिन प्रभू किरपा कोए ना होवे लिटया, अबिनाशण मिलण कोए ना पाईआ। मनुआ किसे ना होवे टिकया, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। जगत पूजा होणी पत्थर इट्टया, ग्रन्थ शास्त्रां रंग रंगाईआ। उस वेले कलयुग अन्त खेल करे परम पुरख समरथया, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो भगतां लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थया, पूरब लेखा झोली पाईआ। दीपक कहे मैं खिड़ खिड़ा के हस्सया, खुशीआं ढोले गाईआ। उह कवण वेला जिस वेले आए माही नस्सया, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। कलयुग रैण मेटे अन्धेरी मस्सया, सतिजुग सच चन्द करे रुशनाईआ। चारों कुण्ट इक्को नाम चलाए गथ्थया, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां मालक ख़ालक प्रितपालक बेपरवाहीआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अवतार सिंघ दे गृह पिण्ड माढ़ी पनूंआ ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा, पुरख अकाल दीन दयाल सोहणी दए वड्याईआ। मेरा दीआ दीपक दो जहान

जगणा, बिन तेल बाती कमलापाती करे रुशनाईआ। मेरा नाम निधाना डंका वजणा, नव सत्त ब्रह्ममत आप समझाईआ। मैं मीत मुरारा बणना सज्जणा, सतिगुर साचा इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म नाल कलयुग कूड़ कुड़यारा भज्जणा, भज्जे वाहो दाहीआ। धर्म नगारा इक्को वजणा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। जन भगतां पर्दा कजणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखे लाउणा काया माटी बदना, तन वजूदां रंग रंगाईआ। भेव मिटाउणा आहला अदना, ग़रीब निमाणयां गोद सुहाईआ। जगत शरअ दी मेटणी हद्दना, दीनां मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। हरि सन्त सुहेले साचे लभणा, गुरमुख गुर गुर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं योद्धा सूरबीर बलवाना, बलधारी इक अख्वाईआ। निरगुण धार मर्द मर्दाना, बेऐब नूर अलाहीआ। मेरा जुग जुग खेल महाना, नित नित आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणा जीव जहाना, जागरत जोत करां रुशनाईआ। धुर दा देवां नाम निधाना, धर्म निशाना इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं जुग जुग खेल खिलंदड़ा, वड खिलाड़ी बेपरवाह। गुर अवतार पैग़म्बर
१२६६ हुक्म वरतन्दड़ा, नाम संदेशा इक सुणा। काग़ज़ कलम शाही लेख लिखंदड़ा, ग्रन्थ शास्त्र रंग रंगा। नाम कलमे जगत १२६६
२४ पढ़ंदड़ा, अक्खर अक्खरां जोड़ जुड़ा। सच संदेशे सद सुणंदड़ा, सुख सागर रूप बेपरवाह। जन भगत सुहेले उठावां २४
आपणे कंधड़ा, दो जहानां बणां मलाह। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्दड़ा, सोहँ ढोला वड वड्डुया। आत्म परमात्म देवां अनन्दड़ा, बजर कपाटी पर्दा आप उठा। शब्दी धुंन नाद सुणंदड़ा, अनहद राग दृढ़ा। अमृत आत्म जाम पिलंदड़ा, नाभी कवल कवल उलटा। दीपक जोती जोत जगंदड़ा, बिन तेल बाती कर रुशना। दीन दयाल बण बख्शंदड़ा, बख्शिश रहमत आप कमा। भगत सुहेले वेख वखंदड़ा, लख चुरासी फोल फुला। साचा ढोला इक सुणंदड़ा, नाम निधाना आप उपा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बण बेपरवाह। सतिगुर शब्द कहे मैं दाता दानी, दयावान अख्वाईआ। मेरा नाउँ गुण निधानी, गुणवन्ता वड वड्याईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं उत्ते करां मेहरवानी, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। मस्तक भाग बणावां पेशानी, पेशतर आपणा रंग रंगाईआ। तन वजूद मंज़ल देवां रुहानी, रूह बुत मिल के वजे वधाईआ। मेरा खेल उपर असमानी, इस्म आज़म वेखण कोए ना पाईआ। मैं मालक दो जहानी, दोहरी आपणी कल वरताईआ। मैनूं झुकदे ज़मीं असमानी, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां मंज़ल देवां इक रुहानी, रहमत आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सब दा जाण जाणी, जानणहार एकँकार परवरदिगार सांझा यार अगम्म अथाहीआ।

✪ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ११ रणधीर सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी पनूंआ ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं सुत दुलारा हरि दा, आदि अन्त जुगा जुगन्त धुर दी सेव कमाईआ। मैं मालक सचखण्ड दुआरे साचे घर दा, गृह मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। थिर घर आपणा आसण धरदा, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेरा संग नरायण नर दा, दूसर मीत ना कोए जणाईआ। जुग जुग साचे घाड़न घड़दा, विष्न ब्रह्मा शिव दए वड्याईआ। बिन अक्खरां अगम्मी विद्या आपे पढ़दा, निरअक्खर धार आप समझाईआ। मेरा लहिणा देणा चोटी जड़ दा, चेतन आपणा रंग रंगाईआ। मैं लख चुरासी अन्दर जोती जाता हो के वड़दा, सच स्वामी हो के सोभा पाईआ। निर्भय हो कदे ना डरदा, भय सब नूं आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी आदि जुगादि मेहरवानी, मेहरवान हो के दयां जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणा दानी, दयावान हो के वस्त अगम्म वरताईआ। लख चुरासी रजो तमो सतो पंज तत प्रगटा निशानी, निशाना दीन दुनी वखाईआ। जोती नूर जगा महानी, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्दी शब्द सुणा बाणी, अनहद आपणा राग सुणाईआ। अमृत रस बख्श ठण्डा पाणी, अंमिओं रस आपणा आप प्रगटाईआ। सरगुण उत्ते करां मेहरवानी, निरगुण हो के वेख वखाईआ। अवतर रूप धरां जगत जहानी, भेव अभेदा आप चुकाईआ। नाम निधाना कर प्रधानी, सच संदेशा इक सुणाईआ। आत्म परमात्म दे ज्ञानी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला शाह सुल्तानी, शहिनशाह हो के वेख वखाईआ। ईश जीव वखावां खेल महानी, महिमा अकथ कथ समझाईआ। धरनी धरत धवल धौल धर्म दी धार करां प्रधानी, सति सति आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी धुर दी वंड वंडानी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल वखाईआ। पैग़म्बरां बख्श पद निरबानी, कलमा हक हक समझाईआ। गुरुआं बख्श नाम गुण निधानी, नाम सति सति दृढ़ाईआ। मेरा खेल बहु बिध भानी, बहु भांती आपणा रंग रंगाईआ। योद्धा सूरबीर वड बलवानी, बलधारी इक अख्वाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ वेखां मार ध्यानी, बिन नैणां नैण उठाईआ। जन भगत सुहेले करां परवानी, परम पुरख नाल मेलां सहिज सुभाईआ। मेरी आदि जुगादि इक जवानी, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लहिणा देणा लेखा दो जहानी, दोहरी आपणी कल वरताईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ मोहन सिँघ दे गृह पिण्ड कादीआं ज़िला गुरदासपुर

सतिगुर शब्द कहे मैं सदा सदा धनवन्त, धनाढी धुर दा इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरा सिफ्तां वाला मंत, ढोले सोहले रागां नादां विच समझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर गाउँदे रहिण सन्त, सूफ़ी फ़कीर फ़िकरयां विच जणाईआ। मैं जुग जुग दीन दुनी बणाउंदा रहवां बणत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल खिलाईआ। मेरा लेखा जाणे कोए ना आदि अन्त, बेअन्त हो के आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा लहिणा देणा नाल चुरासी जीव जंत, चारे खाणी चारे बाणी आपणा भेव चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणाउँदा रहवां बणत, घड़न भन्नणहार हो के वेख वखाईआ। मेरी सदा सदा महिमा बेअन्त, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण किछ ना पाईआ। मैं इक इकल्ला दो जहानां पंडत, जगत विद्या बाहर मेरी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। जिस दा दो जहान झुल्ले निशान, निशाना सके ना कोए बदलाईआ। जो निरगुण सरगुण सब दा बणे प्रधान, प्रधानगी आपणा हुक्म प्रगटाईआ। खेलां खेल ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म वरताईआ। धर्म दा धर्म झुलावां निशान, जगत जहान सोभा पाईआ। नाम कलम्यां दा देवां दान, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं झोली जगत भराईआ । बिन अक्खरां दे ज्ञान, अक्खरां नाल करावां सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मैं महाबली जग सूरा, सूरबीर इक अख्वाईआ। मेरा रूप अगम्मी नूरा, तन वजूद ना कोए रखाईआ। दो जहानी हाज़र हज़ूरा, हज़रतां तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ। चार जुग मेरे सर्ब मज़दूरा, चाकर हो के भज्जण वाहो दाहीआ। मेरा हुक्म सर्ब कला भरपूरा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं अन्त कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म मेटणा कूड़ा, जगत जुगत रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां साची चरण बख़्शणी धूड़ा, टिक्के मस्तक ख़ाक नाम रमाईआ। चतुर सुघड़ बणाउणा मूर्ख मूढ़ा, अन्ध अज्ञान देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी करता, करता पुरख दए वड्याईआ। जीवत रूप कदे ना मरता, जीवण मरन संग ना कोए रखाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा नरायण नर दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी सब कुछ करदा, कुदरत कादर दिती वड्याईआ। जिस अवतार पैग़म्बर गुरु बणाया आपणा बरदा, बन्दगी विच सारे सीस निवाईआ। भेव खुल्हा के साचे घर दा, सचखण्ड पर्दा दिता चुकाईआ। शब्द अनादी धुन अगम्मी घलदा, बिन सरवणा करां शनवाईआ। अमृत रस भण्डारा देवां बूँद स्वांती जल दा, जल थल महीअल लोड़ रहे ना राईआ। मेरा

लेखा आदि जुगादी अछल अछल्ल दा, वल छल आपणा खेल खिलाईआ। किसे नूं पता नहीं घड़ी पल दा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। अन्त लेखा पूरा करना कलयुग कल दा, कल कातीआं करां सफ़ाईआ। मुल पाउणा नानक वाली इक गल्ल दा, जिस दी शब्द शब्द शनवाईआ। लहिणा देणा वेखणा राजे बलि दा, बावन पर्दा भेव उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता हो के आत्म परमात्म धार भगतां विच रलदा, रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप आपणा आप दृढ़ाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड ठीकरी ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी राजन, शाहो भूप बिन रंग रूप इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित साजां साजन, रचनहार एकँकार दिती वड्याईआ। दीन दयाल बणां ग़रीब निवाजन, दीनन आपणा रंग रंगाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं खोल्ह्रां जागन, नाम कलमा कर शनवाईआ। बिन रसना जिह्वा मारां आवाज़न, मुख दन्द बिन तेरे ढोले दयां दृढ़ाईआ।
१३०२ लोकमात करां वड वड भागन, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सदा सदा मैनूं अराधन, सिफ्ती १३०२
२४ सिफ्ती सिफ्ती राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार २४
कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं शाहो भूप सुल्ताना, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़मीं असमान आपणा हुक्म चलाईआ। मेरा हुक्म संदेशा नाम गुण निधाना, गहर गम्भीर बेनज़ीर हो के दयां दृढ़ाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान मेरा सिफ्ती गावण गाणा, अक्खरां नाल अक्खर मिला के ढोला राग सुणाईआ। मैं अन्तर निरंतर लख चुरासी होवां जाणीजाणा, चारे खाणी चारे बाणी आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा रूप अनूपा जग नेत्र सके ना कोए पहचाना, बेपहचान हो के आपणा खेल खिलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर मेरे हुक्म दा सुण फ़रमाना, संदेशा देवण थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सर्ब कला समरथ, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। मेरी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ। जुग चौकड़ी चलावां रथ, रथवाही बण के धुर दा माहीआ। नाम कलम्यां दस्सां गथ, जगत विद्या नाल वड्याईआ। जन भगत सुहेले सिर रखां आपणा हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। मेरे प्यार विच गोबिन्द सथर बैठा घत, यारड़ा सेज हंढाईआ। मेरा खेल जुगा जुगन्त वत, बेवतनां वेखां

चाउ चाँईंआ। मेरा स्वामी इक्को परमेश्वर पति, दूसर नज़र कोए ना आईआ। मैं कलयुग अन्तिम लख चुरासी वेखणहारा उबलदी रत, घट घट अन्दर ध्यान लगाईआ। लहिणा देणा मुकावां त्रैगुण माया पंज तत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद इक्को मति, मन मति दा लेखा रहे ना राईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भूमली ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं शहिनशाह अगम्म, अगम्मड़े दिती माण वड्याईआ। जनणी कुक्खों कदे ना पवां जम्म, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। हरख सोग ना होए कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मेरा नाता नहीं नाल हड्ड मास नाड़ी चम्म, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। मेरा आदि जुगादी इक्को कर्म, कर्म कांड तों बाहर दयां समझाईआ। मेरा नाता आत्म धार सदा परम, परम पुरख दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तन वजूद नहीं ख़ाकी, माटी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को नूर अलाही पाकी, पतित पावन धुरदरगाहीआ। जो मेहरवान हो के सदा रिहा झाकी, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। नौजवान श्री भगवान खोल्ह वखाई ताकी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं शब्दी शब्द धार चढ़ अगम्मे राकी, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी सब तों वखरी चाल बांकी, बकायदा जुग जुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं शाहो शाह शहाना, भूपत भूप इक अख्वाईआ। राजस राज राजाना, दो जहानां वड वड्याईआ। योद्धा सूर मर्द मर्द मर्दाना, महाबली वड वड्याईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त हुक्मराना, संदेशे धुर दे धर्म सुणाईआ। खेलां खेल ज़िमीं असमाना, ब्रह्मण्डां खण्डां रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच हो प्रधाना, घट घट अन्तर सोभा पाईआ। साचा नाम संदेशा सुणावां बिना काना, अनहद नादी नाद जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां तन वजूद बणा निशाना, निशाना दीन दुनी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी एक, एकँकार रूप समाईआ। सो पुरख निरञ्जण बख़्शी टेक, हरि पुरख निरञ्जण टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। एकँकार

कीता बिबेक, आदि निरञ्जण जोती नूर नूर कर रुशनाईआ । अबिनाशी करता खोल्ह आपणा भेत, श्री भगवान पर्दा रिहा उठाईआ। पारब्रह्म वसे नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध ना कोए वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल जिस दा पावे कोई ना भेत, पर्दा परदयां विच्चों ना कोए उठाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां करदा सदा हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला रुत करां बसन्ती चेत, चेतन सुरती शब्द नाल कराईआ। जगत विकारा अन्तष्करन करां खेत, हउमे हंगता गढ़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दो जहानां मालक, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा साहिब स्वामी एकँकारा इक्को ख़ालक, जिस दी वजदी रहे वधाईआ। जिस दी धार विच होवां प्रितपालक, सृष्टी दृष्टी अन्दर वेख वखाईआ। मैं नौजवान परम पुरख दा बालक, आयू आदि जुगादि समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा लहिणा देणा जणाए धर्म धार दे सालस, साहिब सतिगुर हो के दयां सुणाईआ।

१२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुखजिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड माने पुर ज़िला गुरदासपुर

कलयुग कहे सतिगुर शब्द मेरे दीन दयाल, दया निध ठाकर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मेरी लेखे लाउणी घाल, घायल हो के लोकमात धरनी धरत धवल धौल तेरी सेव कमाईआ। मेहरवान महबूब सच मुहब्बत रखणी चरणां नाल, चरणोदक धुर दा जाम देणा प्याईआ। सच दुआर एकँकार बख़्शणा अगम्मी धर्मसाल, दो जहानां बाहर पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण कलयुग मीते, मित्र प्यारे तेरी वड्याईआ। मैनूं याद तेरे कौल इकरार कीते, वायदे भुल कदे ना जाईआ। बेशक तेरे साल थोड़े बीते, चार लख बत्ती हज़ार वेखण चाँईं चाँईंआ। तूं खेल अगम्मड़े कीते, अवतार पैग़म्बर गुरु तेरी देण गवाहीआ। तूं पवित्र रहिण दिती नहीं किसे दी नीते, बुध बिबेक ना कोए रखाईआ। हर घट अन्दर वस्या चीते, चित ठगौरी मन नाल मिलाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक रहिण नहीं दिते पुनीते, पतित कीती ख़लक ख़ुदाईआ। झगड़े पाए मन्दिर मसीते, मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआर रोवण मारन धाहीआ। दीन दुनी खेल खिलाया ऊँच नीचे, ज़ात पाती रंग रंगाईआ। दीन मज़्हब जगत वेखे बाग़ बाग़ीचे, पत्त टहणी ना कोए महकाईआ। तेरा कूड़ कुड़यार नव खण्ड पृथमी

फिरया इक हदीसे, हज़रतां तों बाहर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। कलयुग कहे, सतिगुर शब्द, मेरा नाम कल काती, कलूआ हो के दयां जणाईआ। तेरे प्यार दी मैनूं मिली बूँद स्वांती, बिन रसना रस चखाईआ। तेरे हुक्म दी मेरे कोल अगम्मी पाती, जिस दी बिन हरफ़ हरूफ़ लिखाईआ। जिस उत्ते मोहर लाई कमलापाती, पतिपरमेश्वर दिती वड्याईआ। बेशक मेरी थोड़ी जेही हयाती, हयाती दीन दुनी दिती बदलाईआ । ज़रा निगाह मार लै साख्याती, सनमुख हो के वेख वखाईआ। मैं सृष्टी दृष्टी अन्दर वेख्या मार के झाती, घट घट अन्दर फोल फुलाईआ। धर्म दी रहिण दिती नहीं प्रभाती, जूठ झूठ दिती वड्याईआ। झगड़ा पाया दीन मज़्हब शरअ कागज़ाती, अक्खर अक्खरां नाल लड़ाईआ। मेरा रूप तक लै बहु बिध भाती, नव सत्त वेख वखाईआ। मैं पवित्र रहिण दिती नहीं किसे दी छाती, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। मेरा खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी हो के आपणा स्वांग रचाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जो संदेशा दिता पेशीनगोईआं विच सो वेख लै खेल तमाशी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। साचे मण्डल पावे कोए ना रासी, रस्ता राम रहीम वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ । सतिगुर शब्द कहे कलयुग तूं बड़ा सूरबीर सुल्तान, बलधारी इक अख्वाईआ। तेरा कूड़ कुड़यारा वड बलवान, नौ खण्ड पृथ्मी भज्जे वाहो दाहीआ। तेरी माया ममता धरया रूप शैतान, मनसा दीन दुनी भरमाईआ। तन वजूदां अन्दर कर घमसान, मन मति बुद्ध दिती टकराईआ। साचा रस मिले ना किसे पीण खाण, जगत तृष्ना ना कोए मिटाईआ। जगत विद्या होई हैरान, हैरानी विच कुरलाईआ। होका देवण शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अंजील कुरान रही सुणाईआ। अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती नेत्र नैणां नीर वहाण, बिन हंझूआं छहबर लाईआ। सारे बेनन्ती करन निगाह मार श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे हर हिरदा कीता बेईमान, बेवा रूप होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। कलयुग कहे प्रभू मेरी पुश्त दे दे थापी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं सदी चौधवीं बणां वड प्रतापी, बीसवीं वेखां थांउँ थाँईंआ। धर्म दा रहिण देणा नहीं जापी, तेरा नाउँ ना कोए वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करां पापी, पतित पुनीत सके ना कोए बणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों बदलां हयाती, जीवण समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब होणा सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग मेरा शब्दी शब्द प्यार, बिन हथ्थां सीस टिकाईआ। तूं होणा ख़बरदार, जगत जहान लै अंगड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा

भज्जणा वारो वार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बोल जैकार, ढोला सोहला इक सुणाईआ। जीवो जंतो साधो सन्तो प्रभ दा खेल होणा अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जिस ने लहिणा देणा पूरा करना संग मुहम्मद चार यार, सदी चौधवीं लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ। जिस दे अगे ईसा करी पुकार, सदी बीसवीं नैण उठाईआ। उह वेखे विगसे पावे सार, वेखणहारा नूर अलाहीआ। जिस दी याद विच वेद व्यासा बण लिखार, भविख्त भविख्तां विच्चों दृढ़ाईआ। गोबिन्द ढईआ दे अधार, शब्द संदेशा इक सुणाईआ। कलयुग तेरा अन्त होणा अन्ध अँधयार, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। सतिगुर शब्द तेरा बणे सहार, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। तूं चरण कवल कर निमस्कार, डण्डावत बन्दना सयदे विच सीस झुकाईआ। उह मालक ख़ालक तेरा सांझा यार, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जिस दा लहिणा देणा मकरूज़ कर्ज़ा देणा उतार, पंजां सालां तों मुनिआद वध ना कोए कराईआ। झगड़ा कलयुग वेख्या नैण उग्घाड़, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस
१३०६ लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहान वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत समुंद सागराँ फोल १३०६
२४ फुलाईआ। २४

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरदीप कौर दे गृह पिण्ड फ़तूनंगल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा शाहो, भूपत भूप सति सरूप दिती वड्याईआ। आदि जुगादी अगम्म अथाहो, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी बेपरवाहो, बेपरवाही विच समाईआ। दो जहानां बणां मलाहो, खेवट खेटा रूप बदलाईआ। लहिणा देणा जाणा थल अस्गाहो, ज़मीं ज़मां खोज खुजाईआ। सति सतिवादी हो के बख़्शां नाउँ, नाउँ निरँकारा इक सुणाईआ। रसना जिह्वा सिफ्त सलाही करां वाहो वाहो, ढोला सोहला अगम्म जणाईआ। आत्म परमात्म खेल खिलावां रूप दरसावां पिता माउँ, पूत सपूता इक उठाईआ। जुग जुग जन भगत सुहेले हँस बणावां काउँ, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी यार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मेरा रूप ना पुरख ना नार, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी अवाज़ बिना तन्द सितार, बिना मुख ज़बान दयां सुणाईआ। मेरा हुक्म सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरा खेल पैग़म्बर गुर

अवतार, धरनी धरत धवल धौल प्रगटाईआ। सच संदेशा देवां देवणहार, नर नरेशा हो के आप जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा आदि जुगादी वक्त सुहञ्जणा, सोहणा रंग रंगाईआ। खेल खिलावां हो के दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर हरिजन पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पावां अंजणा, लोचन अक्ख अक्ख खुल्हाईआ। घर स्वामी ठाकर मिलां सज्जणा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। लेखे लावां आहला अदना, एह धुर दी बेपरवाहीआ। खेल खिलावां तन माटी शरीर बदना, वजूदां अन्दर सोभा पाईआ। जिस दा डंका कलयुग अन्तिम वजणा, जगत जहान करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा शब्दी इक्को डंक, बिन सरवणां करे शनवाईआ। सुहावणहारा इक्को दुआरा बंक, बंक दुआरी इक्को सोभा पाईआ। फेरनहारा मनका मनक, मनसा मनसा विच्चों बदलाईआ। सो लेखा पूरा करां जो दे के गया जनक, भगत भगवान खेल खिलाईआ। जिस बिध रूप धरां अनक, अनक कलधारी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।
१३०७ सतिगुर शब्द कहे मैं जुग जुग पर्दा चुकदा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। नाम जणावां अगम्मी तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला १३०७
२४ गाईआ। जिस नाल लेखा दो जहानां मुकदा, पाँधी पन्ध ना कोए भुआईआ। हरिजन मीत मुरारा झुकदा, निव निव सीस २४
निवाईआ। मंज़ल पौड़ी अगे कोई ना रुकदा, बिन कदमां भज्जे वाहो दाहीआ। मेहरवान महबूब हो के सन्त सुहेले गोदी चुकदा, बिन हथ्थां हथ्थ छुहाईआ। मेरा रूप नहीं कोई ततां वाले मानस मनुख दा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पर्दा लाहे ओहले लुक दा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक्को नज़री आईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड डडवां ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं निरगुण धार गहर गम्भीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादी शाहो भूप लातस्वीर, तसव्वर मुसव्वर सके ना कोए कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शरअ दी रखी ना कोई ज़ंजीर, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। एथे ओथे दो जहानां मेरे हुक्म दी अगम्मी तदबीर, तरीका आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ । सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल अपारा, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। मेरा मालक शाहो भूप निरँकारा, निरवैर नूर अलाहीआ। जिस दे गृह करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जो देवे वस्त अपारा, आप आपणी आप वरताईआ। मैं खुशीआं विच लावां नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जिस नूं समझ सके ना कोए विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। सच संदेशा इक सुणाउणा, दो जहान करे शनवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर सवाधान कराउणा, सति सतिवादी हो के आप दृढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरा इक सुहाउणा, दरगाह साची इक सुहाईआ। थिर घर आपणा रंग रंगाउणा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सच नाम दृढ़ावांगा। बोध अगाधा भेव खुल्हावांगा। जोधन जोध इक अख्वावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख
१३०८ जगावांगा। दर साचे अलख जगाएगा। सतिगुर शब्द मंग मंगाएगा। दर ठांडे झोली डाहेगा। पुरख अकाला दया कमाएगा। १३०८
२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा भेव आप खुल्हाएगा। सतिगुर शब्द कहे मेरी इक्को होवे मंग, २४
दूसर ओट ना कोए तकाईआ। मेरे साहिब सूरे सरबग, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। केते जुग चौकड़ीआं गए लँघ, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे ढोले सोहले राग नाद गाउँदे रहे नाल मृदंग, सुर ताल नच्चण टप्पण वाहो दाहीआ। तूं शाहो भूप बिन रंग रूप सूरा सरबंग, हरि करता इक अख्वाईआ। मैनूं इक्को बख्श दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं चाहुंदा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा इक्को गावे छन्द, इक्को ढोला अगम्म अथाहीआ। इक्को आवाज़ आए बिना रसना जिह्वा बत्ती दन्द, बन्दना तेरी विच सीस सर्ब झुकाईआ। इक्को नूर नुराने शाह सुल्ताने तेरा चढ़या होवे चन्द, बिन चन्न सितार करे रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्धन शरअ वाले तुड़ाईआ। घट स्वामी अन्तरजामी गृह मन्दिर आपणा वेखणा लँघ, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर डेरा लाईआ। आत्म सेज सुहा सच पलँघ, बिन पावा चूल जो सोभा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू सतिजुग धर्म खोल्ह दे हट्ट, हटवाणा इक्को नाम रखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे डोरी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को होवे कनारा तट, तीर्थ इक्को इक दरसाईआ। सदी

चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक करवट वट, परवरदिगार सांझे यार लै अंगड़ाईआ। औह तक लै अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तेरे दर ते होया इक्ट्ठ, सचखण्ड दुआरे सारे बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी आसा पूर कराईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुरु दर तेरे जोत रुशनाउँदे ने। जोती जाते पुरख बिधाते सचखण्ड खण्ड सुहाउंदे ने। सब दी पेशीनगोईआं वाली सुण बाते, भविख्तां तेरे चरण टिकाउंदे ने। कलयुग अन्तिम होई अन्धेरी राते, चारों कुण्ट वेख वखाउंदे ने। सति धर्म दी सुणे कोए ना गाथे, रसना जिह्वा जगत जहान जीव सारे गाउंदे ने। भाग उदै होण ना मस्तक माथे, तिलक ललाटी बाहरों सर्ब लगाउंदे ने। किरपा कर पुरख समराथे, दर तेरे अलख जगाउंदे ने। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा दे दे हाथो हाथे, पिछला उधार तेरी झोली पाउंदे ने। जो संदेशे दे के गया त्रैलोकी नाथे, कान्हा कृष्णा संग रलाउंदे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाउंदे ने। सतिगुर शब्द कहे प्रभ देवणहार स्वामी, साहिब तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, कलयुग वेखणा चाँईं चाँईंआ। नाम सदेशा सुणे ना कोए कलामी, पैग़म्बर रहे कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सति धर्म दी होई बदनामी, क्रिया कूड़ कूड़ वड्याईआ। दीन मज़्ह़ब शरअ दी होई गुलामी, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती पीए कोए ना पाणी, अंमिओं रस हथ्थ किसे ना आईआ। शब्द नाद धुन सुणे कोए ना बाणी, धुन आत्मक राग ना कोए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेल ना होवे शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरे रंग ना कोए समाईआ। मेरे मेहरवाना नौजुआना श्री भगवाना कलयुग अन्त कर मेहरवानी, महबूब मुहब्बत आपणी दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शाह सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह शाहो भूप तेरी सरनाईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ११ जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरा लेखा बहु बिध भांती, जुग चौकड़ी रीती धुर दी चली आईआ। कलयुग अन्त वेखां अन्धेरी राती, नव सत्त बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। किस बिध झगड़ा मेटे ज़ात पाती, दीन मज़्ह़ब रहे ना कोए लड़ाईआ। मालक ख़ालक सब नूं नज़र आए इक इकांती, इक इकल्ला धुरदरगाहीआ। जो देवणहारा अमृत बूँद स्वांती, निझर झिरनिउँ अंमिओं रस आप चुआईआ। जो भगतां पुछणहारा वाती, वातावरन तके ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादि रहां हमेश, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। दो जहानां बण के नर नरेश, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं भज्जां वाहो दाहीआ। जिस दा अन्तिम लहिणा देणा नाल गोबिन्द दस दस्मेस, दहि दिशा तों बाहर वेखां चाँईं चाँईंआ। जिस दा इशारा सहँसर मुख दे के गया शेष, दो सहँसर जिह्वा सिफ्त सलाहीआ। जिस कलयुग कूड़ कुड़यारा अन्त मेटणा कलेश, कल काती धुरदरगाहीआ। जिस नूं सब करन आदेस, निव निव लागण पाईआ। ओह वसणहारा सम्बल देस, देस दसन्तरां पन्ध मुकाईआ। जिस दे अगे चार जुग दे शास्त्र होवण पेश, पेशीनगोईआं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा मालक इक अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। लेखा जाणां लख चुरासी जीव ब्रह्म, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। दीन दुनी दा इष्ट तकां दीनां मज़्ह़बां वेखां धर्म, धर्म दी धार खोज खुजाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं कौल इकरार वेखां परन, जो बिन रसना जिह्वा ढोले गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर
१३१० शब्द कहे मेरा खेल आदि जुगादि अवल्ला, अवल्लड़ी कार कमाईआ। मैं वेखणहारा जलां थलां, महीअल खोजां चाँईं चाँईंआ। १३१०
२४ जो निरगुण निरवैर हो के शब्द संदेशा रिहा घल्ला, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। जिस नूं हज़रत मुहम्मद नूर अलाही २४
किहा अल्ला, आलमीन यामबीन कहि के सीस निवाईआ। ओह अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार हो के फड़नवाला पल्ला, दस्तगीर हो के आपणा दस्त उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा कलमा अगम्म कलाम, कायनात समझ किछ ना आईआ। मैं सब नूं देवणहारा पैग़ाम, बिन अलिफ़ ये करां पढ़ाईआ। जल्वागर नूर नुराना शाह सुल्ताना तको अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस नूं सारे करन सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। ओह कलयुग अन्त सदी चौधवीं सब दा करनवाला इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ उठाईआ। जिस शरअ दे झगड़े मेटणे तमाम, तमंना आपणी ना कोए रखाईआ। मज़्ह़ब दा रहिण नहीं देणा कोए गुलाम, शरअ ज़ंजीर देणे कटाईआ। इक्को कलमा दस्स के नाम, कायनात देणा समझाईआ। इक्को धर्म वखा निशान, निशाना तारा चन्द मिटाईआ। इक्को मन्दिर सुहा मकान, बंक दुआरा इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा होणा वक्त सुहावणा, सोहणी मिले वड्याईआ। मानव ज़ाती इक्को दोहरा गावणा, इक्को इष्ट होवे धुर दा माहीआ। मानस

मानुख इक्को इष्ट मनावणा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। इक्को पुरख अकाले सब ने पकड़ना दामना, दामनगीर इक हो जाईआ। जो मेटणहारा कलयुग अन्ध अन्धेरी शामना, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं सब ने कहिणा गौड़ ब्राह्मणा, ब्रह्म विद्या आपणी इक दृढ़ाईआ। दीन दुनी दे अन्तर निरंतर कूड़ी क्रिया मेटे तामना, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवान हो के भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ दारा सिँघ दे गृह पिण्ड ग़ज़नीपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

जन भगतां प्रभ पूरी करे मंग, सतिगुर शब्द शब्द दए वड्याईआ। आत्म परमात्म बख्शे धुर दा संग, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। तन वजूद काया माटी अन्दर जावे लँघ, सच स्वामी हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। साची सेज सुहञ्जणी सुहाए पलँघ, सुखआसण बैठे धुर दा माहीआ। नाम निधान वजाए मृदंग, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। अमृत धार
१३११ वहाए अगम्मी गंग, गंगा गंगोत्री जिस नूं सीस निवाईआ। बिन सरवणां तूं मेरा मैं तेरा जणाए छन्द, बिन अक्खरां अक्खर १३११
२४ पढ़ाईआ। गृह मन्दिर अन्दर देवे आप अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। करे प्रकाश बिन सूर्या चन्द, जोती जाता २४
हो के डगमगाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दगी आपणी विच रखाईआ। आवण जावण लख चुरासी तोड़े फंद, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। भगत जनां प्रभ तारनहारा, जुग जुग देवे माण वड्याईआ। निरगुण हो के सरगुण पावे सारा, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे थांउँ थाँईंआ। उह सन्त सुहेला बणाए मीत मुरारा, मित्र प्यारा बणे धुर दा माहीआ। गुरमुखां देवे नाम अपारा, अन्तर निरंतर इक्को नाम जणाईआ। गुरसिखां दे के हक इशारा, सैनत धुर दी इक समझाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले करतारा, कुदरत कादर धुरदरगाहीआ। आत्म परमात्म दस्स जैकारा, सोहँ ढोला इक दृढ़ाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। भगत जनां प्रभ वेखण योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण निरगुण करे संयोग, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जगत जुगत दा कटे वियोग, सुरती शब्द शब्द समाईआ । बग़ैर रस तों देवे आपणा भोग, भस्मड़ आपणी खेल खिलाईआ। हउमे हंगता कट रोग, माया

ममता मोह चुकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के जोग, जुगती पारब्रह्म ब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। भगत जनां प्रभ वेखे लोकमात, वेखणहारा बेपरवाहीआ। नाम निधाना देवे अगम्मी दात, वस्त अमोलक इक वरताईआ। अन्तर अन्तर बख्श के बूँद स्वांत, रस इक्को इक चखाईआ। तन वजूद करे शांत, अग्नी तत तत बुझाईआ। जोती जाता हो के दर्शन देवे आप इकांत, इक इकल्ला मिले धुर दा माहीआ। बिन रसना जिह्वा करे बात, बातन पर्दा दए खुल्हाईआ। जन भगतां पुछणहारा वात, वेखे विगसे थांउँ थाँईंआ। सच प्रीती जोड़े नात, रिश्ता इक्को इक वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पुछणहारा वात, मेहरवान महबूब आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। जन भगतां प्रभ तारदा, तारनहारा एक। जुग जुग जन्म संवारदा, बख्शे धुर दी टेक। लख चुरासी विच्चों उभारदा, त्रैगुण माया ना लाए सेक। प्रकाश देवे जोत उज्यार दा, नज़री आए नेतन नेत। शब्द सुणाए आपणी धुन्कार दा, अन्तर बुद्धी करे बिबेक। घर वखाए सचखण्ड दुआर दा, परमात्म हो के आत्म करे हेत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा
१३१२ वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी भगतन मीता ठांडा सीता अनक १३१२
२४ कलधारी परवरदिगारी खोल्हणहारा आपणा भेत। २४

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुलखणी दे गृह पिण्ड ग़ज़नीपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

जन भगत कहिण प्रभ अन्तर आत्म दे दे सुख, सुख सागर विच समाईआ। जगत तृष्ना मेट दे भुख, माया ममता हउमे हंगता दूर कराईआ। पंज तत तेरे मानस मानव मानुख, रजो तमो सतो मिलके खुशी बणाईआ। मात गर्भ दा लोकमाती रुक्ख, उलटा दीन दुनी जणाईआ। सानूं आपणी गोदी चुक, नव नव दा लेखा रहे ना राईआ। साडा आवण जावण पतित पावन पैंडा जावे मुक, लख चुरासी फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। असीं तेरा नाम ढोला इक्को गाउणा चाहुंदे तुक, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साडा मेट दे अग्नी तत, ततव तत ना कोए जलाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे लै बणाईआ। अन्तष्करन दे ब्रह्म मति, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा रूप दिसे सति, सति सतिवादी हो के ध्यान लगाईआ। चरण प्रीती आपणे नाल जोड़ लै नत, नातवां तेरे अगे वास्ता

पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरे प्यार नूं तरसदे, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। अठ्ठे पहर तन वजूद भटकदे, मन मनसा तेरे चरण लगाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना अमृत मेघ नाम बरस दे, बूँदा बांदी चरण प्रीती इक जणाईआ । साडे लेखे मुका दे सोग हरख़ दे, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। भगत कहिण प्रभ दे दे नाम अधारा, उदर दा लेखा रहे ना राईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। वस्त अमोलक दे दे थारा, थिर घर वासी आपणी दया कमाईआ। साडा ख़ाली भर भण्डारा, अतोट अतुट बेपरवाहीआ। हर हिरदिउँ निकले तेरा नाम जैकारा, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। शब्दी नाद दे धुन्कारा, धुन आत्मक राग दे दृढ़ाईआ। अमृत रस बख़्श ठण्डी ठारा, अग्नी तत तत गंवाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोती जाता हो के डगमगाईआ। तेरे चरण कवल उपर धवल करीए निमस्कारा, निव निव धूड़ी ख़ाक रमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां पाउणी सारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को दर मंगीए तेरा सच दुआरा।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरबंस कौर दे गृह पिण्ड ग़ज़नीपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे प्रभू मैं दूर दुराडा आया दौड़ा, बिन कदमां कदम उठाईआ। दो जहान श्री भगवान तेरा तक्कया अगम्मी पौड़ा, जिस दी जगत वंड ना कोए वंडाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां मैनूं मार्ग दिसदा रिहा सौड़ा, आकाश पाताल गगन गगनंतर गली कूचिआं पन्ध मुकाईआ। तेरा लहिणा देणा तकणा चाहुंदा ब्राह्मण गौड़ा, वेद व्यासा मेरी आसा पूर कराईआ। दीन दुनी दा फल वेख्या नौ खण्ड पृथ्मी कौड़ा, कुड़त्तण भरी ख़लक ख़ुदाईआ। जां निगाह मारी मैनूं सरसे उपर दिस्या होड़ा, सो पुरख निरञ्जण की तेरी बेपरवाहीआ। जां अक्ख खोल्ही हैं ब्रह्म पावण वाला मोड़ा, आत्म परमात्म पर्दा रिहा उठाईआ। मैं तेरा आदि जुगादी बाल बांका छोहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी देणी माण वड्याईआ। नारद कहे मैं भज्जा नठा आया मुका के पन्ध, जगत जहान बिन चरणां चरणां हेठ दबाईआ। मैनूं कूक पुकारन तारा चन्द, निशान उम्मत वाला दए दुहाईआ। पंडता औह निगाह मार लै जो संदेशा गोबिन्द दे के गया पुरी

अनन्द, बिन रसना जिह्वा ढोला धुर दा नाम जणाईआ। जिस विच इक्को तूं मेरा मैं तेरा छन्द, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे मैं दूर दुराडा आया, बणया पाँधी राहीआ। मेरा मालक बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। जिस दे दुआरे इक्को अलख जगाया, इक्को सीस निवाईआ। सो संदेशा रिहा सुणाया, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ । दीन दुनी तकणा वेखणा ख़लक सबाया, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मैं नौ खण्ड पृथ्मी तक्कया, बिन नेत्र लोचन नैण उठाईआ। साजण मीत रिहा कोए ना सक्या, मित्र प्यारा दिसे कोए ना ख़लक खुदाईआ। फिरी दरोही मदीना मक्कया, काअबे रहे कुरलाईआ। मैं झट गुर अवतारां पैग़म्बरां वाला कढया पटया, जिस उत्ते लेखा लिख्या बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त दीन दुनी दी कीमत रहिणी नहीं टकया, चार कुण्ट दहि दिशा खेले खेल अगम्म अथाहीआ। दृष्टी सृष्टी होणी वणजारी पाहन पत्थर वट्टया, पुरख अकाले दीन दयाले सीस सके ना कोए झुकाईआ। प्रभू दा नाम वेचण हट्टो हट्टया, ग्रन्थ शास्त्र टकयां उत्तों आपणा रंग लैण बदलाईआ । जोती
१३१४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मैं बण बण १३१४
२४ आया राही, धुर रैहबर दिती वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर देण सलाही, मशवरा इक्को इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव २४
संदेशा देवण चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। तूं पंडत ब्राह्मण नूर नुराना नूर अलाही, ज़हूर इक्को इक वखाईआ। तेरा लेखा लिख सके ना चार जुग दी शाही, कलम कागद ना कोए वड्याईआ। तेरा मालक प्रितपालक धुरदरगाही, दो जहानां वाली इक अख्वाईआ। जिस लोकमाती खेल रचाँई, रचना आपणी आप जणाईआ। तूं पंडता पहुंचणा ओसे थाँईं, भज्जणा वाहो दाहीआ। इक संदेशा देणा सुणाई, तैनूं सहिज सहिज दृढ़ाईआ। नारद हस के किहा पहलों दोवें उठाओ बाहीं, बिन हत्थां हत्थ वखाईआ। सारे इष्ट मंनो इक्को माही, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर सारे मेरी शहादत दयो गवाही, इक्को नाम भुगताईआ। मैं लोकमात संदेशा देवां अगम्म अथाही, अलख अगोचर दयां जणाईआ। नाले निगाह मार लओ गोबिन्द दा बीत गया ढईआ ढाई, ढौकयां विच्चों आपणी लै अंगड़ाईआ। जिस उत्ते लेखा लिख्या कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटणी कूड़ी शाही, शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना रूप अलाही, अल्ला वाहिगुरु कहि के जिस नूं सारे गाईआ। उस दा इक्को हिन्दसा इक्को निरअक्खर धार इकाई, एकँकार दए वड्याईआ। नारद कहे मैं उस दा लहिणा देणा देणा समझाई, बिन विद्या जगत जुगत नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा आदि जुगादि निरगुण सरगुण थांउँ थाँईं, दो जहान थान थनंतर वेखे चाँईं चाँईंआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड शोहण ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे की संदेशा दिता बाबा आदम माई हवा, पवण पाणी तों बाहर भेव जणाईआ। खेल करे परवरदिगार सांझा यार इक नवां, नव सत्त दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस दे पैग़म्बर अवतार गुरु होणे गवाह, शहादत नाम कलम्यां वाली भुगताईआ। उस दीन दुनी दा बदल देणा समां, जगत समझ तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ । झगड़ा मिटाउणा काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी सब दी दए बदलाईआ। धरनी धरत धवल धौल सब दी दरसाउणी अम्मा, अम्मीजान इक समझाईआ। नारद कहे मैं झट विच आ गया ग़मी नाल ग़मा, आप आपणा रूप बदलाईआ। नेत्र नीर वहाया बिन अक्खीआं छम्म छम्मा, छहबर दिती लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ।
१३१५ नारद कहे मैं बिन अक्खरां कीती अरदास, बिन रसना जिह्वा दिती जणाईआ। निगाह मार पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते १३१५
२४ ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दा तेरे उत्ते रिहा ना कोई विश्वास, विषयां भरी लोकाईआ। झगड़ा तक पृथ्मी आकाश, नव २४
सत्त ध्यान लगाईआ। सच प्रेम दी पावे कोई ना रास, गोपी काहन बैठे मुख छुपाईआ। मेरा अन्तष्करन होया उदास, हैरानी विच मेरी दुहाईआ। नाम कलमा तेरा रिहा किसे ना पास, चार जुग दे शास्त्र रहे दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा इक प्रगटाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं वेखी तेरी दीन दुनी, दो जहानां दे मालक ध्यान लगाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए गुणी, अवगुण भरी जगत लोकाईआ। तेरी शब्द आवाज़ किसे ना सुणी, धुन आत्म ना कोए दृढ़ाईआ। मैं जो देख्या तैनूं दस्सां हुणी, अभी दयां सुणाईआ। पूरब लेखा याद आ गया जिस वेले द्वापर लेखा चुक्कया अठारां अकशूणी, काहन कृष्ण दए गवाहीआ। एस वेले दीन दुनी दी जन संख्या वध गई बहु गुणी, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब हुक्म वरताईआ । नारद कहे प्रभू मैं चार कुण्ट तेरा फिर के वेख्या जग, जग जीवण दाते दयां जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तन वजूदां अन्दर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ तेरा नाम ना कोए बरसाईआ। साची संगत सन्त साध वेखे कोई ना उपर शाहरग, नव दुआर दा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया काम वासना सारे कीते अल्पग, पतिपरमेश्वर

तेरे रंग ना कोए समाईआ। तूं स्वामी शहिनशाह सरबग, हरि करता अगम्म अथाहीआ। मैं तेरी सरन चरण ख़ुशीआं नाल रिहा लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। दीन दुनी आत्म धार परमात्म तेरे नालों होई अलग, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए चढ़ाईआ। बिना पवण तों तती वा रही वग, तन वजूदां रही जलाईआ । सच दुआर एकँकार मेरी इक्को मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी लोकमात दा दर दरवाज़ा लँघ, ग़रीब निवाज़ा हो के फेरा पाईआ। इक्को नाम शब्द वजा मृदंग, मर्द मर्दाने दे सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम कर भंग, भावना सति सच निरगुण धार आप प्रगटाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ भजन सिँघ दे गृह पिण्ड जीउ जलाई ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरा वज्जण वाला मृदंगा, मर्द मर्दाना नौजुआना हो के दयां वजाईआ। संदेश सुणाउणा जो सुणाए सूरा सरबंगा, पुरख अकाला दीन दयाला धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर लँघा, कलजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जगत जहान जीव होवण वाला दंगा, झगड़े विच दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। बिन भगतां आत्म परमात्म होवे किसे ना रंगा, रंगत नाम ना कोए चढ़ाईआ। नेत्र रोवे यमुना सरस्वती गोदावरी गंगा, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। सति सतिवादी सच लाए कोई ना अंगा, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। धर्म दा सीस हो गया नंगा, ओढण सच ना कोए टिकाईआ। जगत जिज्ञासू कूड़ कुड़यार वेख लै धन्दा, धर्म दी धार वेखण कोए ना पाईआ। बन्दगी विच दिसे कोई ना बन्दा, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। अन्तर निरंतर मिले ना किसे अनन्दा, सति सच संग ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोई ना छन्दा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द जगत जहान ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल होणा अणहोणा, दो जहानां समझ कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धीरज धीर ना किसे धराउणा, धर्म दी धार वेखण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं वीहवीं अन्त कराउणा, अन्तष्करन तक ख़लक ख़ुदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाउणा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरां भविख्त लेखा झोली पाउणा, पेशीनगोईआं हुक्म नाल जणाईआ। सतिजुग सति धर्म प्रगटाउणा, परगणा नौ खण्ड समझाईआ। इक्को नाम नाम दृढ़ाउणा, जगत जहान सच सुणवाईआ। इक्को इष्ट देव वखाउणा, बिन

१३१६
२४

पुरख अकाल दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को मन्दिर दुआर सुहाउणा, बंक इक्को वजे वधाईआ। दीन मज़्हब दा पन्ध मुकाउणा, शरअ शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। ज़ात पात दा डेरा ढाउणा, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म ब्रह्म भेव खुल्हाउणा, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल होणा अपारा, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। कलयुग मेटणा अन्ध अँधयारा, अज्ञान रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म करना उज्यारा, सति सच नाल मिलाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता दए सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग साचा धरनी धरत धवल धौल प्रगट होवे आपणी धारा, धर्म दी धार नाल मिलाईआ। चार वरनां एको सरना, प्रभ बख्शे एकँकारा, परवरदिगार दए सरनाईआ । सब दा इक्को होवे नाअरा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अन्दर ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा होवे अगम्म फ़रमाना, फ़ुरनयां तों बाहर जणाईआ। किस बिध पुरख अकाला दीन दयाला वरते आपणा भाणा, जगत जहान नौजुआन श्री भगवान बेपरवाहीआ। तख़्तों
१३१७ लाहे राजा राणा, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को हुक्म दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप गृह मन्दिर मिले ना किसे टिकाणा, १३१७
२४ जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत फिरे ख़लक ख़ुदाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले जिन्हां प्रभ बख्शे चरण ध्याना, २४
निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। आत्म दृष्टी देवे नाम निधाना, गुणवन्ता आपणी दया कमाईआ। सच दुआर एकँकार वखाए अगम्म मकाना, जिस दी छप्पर छन्न वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी नौजुआना, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड शोहण ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे सतिगुर शब्द धुर दा हुक्म दस्स अपार, अपरम्पर हो के भेव चुकाईआ। जिस नाल सचखण्ड अवतार पैग़म्बर गुर होवण ख़बरदार, जोत धार लैण अंगड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होवण हुशियार, हुशियारी आपणे विच्चों प्रगटाईआ। देवत सुर होवण ख़बरदार, आलस निंद्रा नज़र कोए ना आईआ। इक्को तेरा हुक्म संदेशा होवे शब्द दी धार, निरअक्खर धार विच्चों समझाईआ। भेव अभेदा खोल्ह की लहिणा देणा कलयुग जीव जंत अन्त संसार, नव सत्त आपणा ध्यान लगाईआ।

किस बिध मिटे धूंआँधार, धर्म दी धार करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे सतिगुर शब्द किस बिध करावें अदल, इन्साफ़ की जणाईआ। किस बिध कलयुग देवें बदल, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। कवण धारा कलयुग कूड़ी क्रिया करें कत्ल, मक्तूल दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। ज़रा निगाह मार लै धरनी वाले वतन, बेवतनां दी धार खोज खुजाईआ। की पैग़म्बरां लेखा सदी चौधवीं वाले पतण, कन्ढी घाट खोज खुजाईआ। किस बिध भगत सुहेले वेखें रत्न, अमोलक हीरे आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच की आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द की तेरा होवे फ़रमाना, जगत फ़ुरनयां बाहर दृढ़ाईआ। किस बिध अन्त अख़ीर वरते भाणा, भावी केहड़ा रंग रंगाईआ। तख़्त निवासी कोई रहे ना राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सच मिले ना किसे खाणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्वत रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, की करनी कार कमाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द मैं वी पंडत पुराणा तेरा आदि जुगादी, जुग जुग सेव कमाईआ।
१३१८ मैं खेल तकणा तेरा ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। मैनूं सुणा दे अगम्म नादी, अनुरागी आपणा राग दृढ़ाईआ। १३१८
२४ तैनूं जुग बदलण दी सदा वादी, कलयुग अन्तिम लेखा देणा चुकाईआ। सच दस्स नौ खण्ड पृथ्मी कितनी रहे अबादी, अंकड़े २४
सहिज नाल समझाईआ। सतिजुग सति धर्म दी कवण धार होवे साधी, सहिज सहिज आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण नारद पंडे, बिन तन वजूद दे ब्राह्मणा तैनूं दयां जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मैं शब्दी धार वंडे, जगत हिस्सा समझ किसे नाँ आईआ। आपे जाणां मंज़ल पौड़ी डण्डे, डण्डावत वेखां थांउँ थाँईंआ। मेरा हुक्म वरतदा भय हुन्दा शब्द धार दे खण्डे, जगत शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर वेख लै कन्ढे, सदी चौधवीं बैठी अक्ख खुल्हाईआ। दरोही फिरनी विच वरभण्डे, भंडी होणी थांउँ थाँईंआ। चार कुण्ट चमकणी चण्ड प्रचण्डे, चण्डालका आपणा रूप बदलाईआ। आत्म धार परमात्म नाल कोई ना गंढे, विछोड़े विच दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। यसूह दी आशा धार कहे जदों एह खेल वरत्या मुहम्मद दा यक सम्बे, ते मसीह दा दिन होवे संडे, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। फेर तूं ख़ुशी मनाउणी पंडत पंडे, पांध्या तैनूं दयां दृढ़ाईआ। नारद हस के किहा किस बिध जन भगतां सीने करे ठण्डे, अग्नी तत बुझाईआ। सतिगुर शब्द किहा नारदा जो तूं मेरा मैं तेरा गाउँदे छन्दे, तिन्हां मेला मेलां सहिज सुभाईआ। बिना सूर्या चन्द तों देवां प्रकाश अगम्मी चन्दे,

नूर नुराना हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार सदा बख्शंदे, बख्शिश रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ।

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ दीपो दे गृह पिण्ड दोस्तपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं करन वाला मेहरवानी, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। लहिणा देणा वेखां दीन दुनी दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ लोकमात ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तकां सृष्टी दृष्टी अन्दर बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। किसे नूं नज़र आवे ना बाप असमानी, इस्म आज़म वेखण कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या तत जिस्मानी, ज़मीर सके ना कोए बदलाईआ। नव खण्ड पृथमी कलयुग कूड़ होया प्रधानी, सत्त दीप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां दीन दुनी दी हालत, बिन नेत्र लोचन नैणां ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे जहालत, सति विच ना कोए समाईआ।
१३१८ धर्म दी रही ना कोए अदालत, इन्साफ़ हक ना कोए कमाईआ। अन्तर निरंतर करे ना कोए अबादत, रसना जिह्वा सारे ढोले गाईआ। धर्म दी धार दिसे ना कोए इमारत, महल अटल ना कोए सुहाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ कीती तजारत, जगत जहान आपणा हट्ट चलाईआ। जीआं जंतां साधां सन्तां निरअक्खर धार दिसे ना कोए अगम्मी इबारत, बिन हरफ़ हरूफ़ां हुक्म सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म होणा इक्को एक, इक इकल्ला दयां दृढ़ाईआ। जिस दी सब ने रखणी टेक, टिक्के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मानव ज़ाती करनी बुध बिबेक, पतित पुनीत आप बणाईआ। त्रैगुण माया ला सके ना सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के साढे तिन्न हथ्थ खोल्हणा भेत, भेव अभेद देणा जणाईआ। दरस दिखाउणा नेतन नेत, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म दरसणा साचा हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। धर्म दी धार मौले रुत बसन्ती चेत, पत्त टहणी फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा संग आप रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल होवे अवल्ला, अवल्ल इक्को नूर जणाईआ। सचखण्ड जणावां हक महला, दरगाह साची इक समझाईआ। जिथ्थे निरगुण निरगुण जोती जाता हो के आपणी धार रला, दूसर संग ना कोए बणाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार सुहाए आपणा महला, महल अटल इक्को

सोभा पाईआ। जिस दा लहिणा देणा लख चुरासी जीव जंत जला थला, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। उस दा दीपक जोती सच दुआर इक्को बला, बिन तेल बाती कमलापाती डगमगाईआ। जिस नाम निधाना विच जहान शब्दी धार इक्को घल्ला, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सिख्या सच दृढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला वसणहारा निहचल धाम अटला, सच दुआरे सोभा पाईआ। जिस दे हुक्म नाल कलयुग अन्तिम इक्को बोलणा हल्ला, हालत वेखणी ख़लक खुदाईआ। दीन दुनी पकड़नहारा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी अछल अछल्ला, वल छलधारी एकँकारी परवरदिगारी आप आपणा हुक्म वरताईआ।

१३२०
२४

१३२०
२४

✪ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ११ किशन सिँघ दे गृह पिण्ड अलड़्पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे जन भगतो सोच सोचो उंगल रख के आपणी ठोडी, अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। फिर हथ्थ लगाओ आपणे आपणे गोडीं, सतिकार नाल आपणा आप लओ उठाईआ। मैं वी तुहाडा साथी प्रभू दा भगत पुराणा मोढी, मोढयां तों फड़ के दयां हिलाईआ। मैनूं सच दस्सो सुबहा प्रभू दे कोल रहोगे कि घर दी करोगे गोडी, लेखा पिछला दयां जणाईआ। मैं वी पल्ले बन्नृ के रखी रवीदास चमारे वाली कौडी, कसीरा आपणे कोल रखाईआ। नाले हथ्थ फेर के आपणी बोदी, बुद्धी वाल्यो दयां जणाईआ। अन्दरों काया कर लओ आपणी सोझी, समझ समझ नाल समझाईआ। उह वेखो गंगा गंगोत्री आउंदी गौंदी, धुर दे ढोले गाईआ। सरस्वती जिस दी याद विच औंसीआं पाउंदी, गिटीआं गिणे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे मैं किहा पीर ख्वाजे, खिजरा लै अंगड़ाईआ। निगाह मार लै तक लै धुर दे राजे, जो शाहो भूप नूर अलाहीआ। उस वेस वटाया कमलया देस माझे, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिन्हृ इन्द्र नाल तेरे रिश्ते करने सांझे, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दे हुक्म विच मेघ बरसणे झांजे, कणी कणी दए टपकाईआ। तूं आपणे कासे वेख लै किस बिध भरे गांजे, कलस इन्द्रा हथ्थ उठाईआ। मेरे उस प्रभू दे अगे हथ्थ बांधे, बन्दना विच सीस निवाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु सारे गांदे, गा गा शुकर मनाईआ। ओह लहिणे देणे तके चार जुग दे जो भगत थक्के मांदे, बण बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जिस गीत सोहले दृढ़ाए अगम्मे नाँ दे, नाउँ निरँकार इक दृढ़ाईआ। ओहदे खेल तकणे थल अस्गाह दे, गहर गम्भीर जो गवर इक हो आईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक देवे वड्याईआ। नारद कहे खुवाजया वेख लै खिजरा, खिलत्त आपणे ध्यान लगाईआ। जिस कारन मुहम्मद ने कीता हिजरा, हुजरा वेखणा बेपरवाहीआ। जिस दे नाल लोक परलोक चौदां तबक सुधरा, सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ। उह मालक ख़ालक कादर कुदरा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे जन भगतो मैं प्रभू दा नूर नुराना बचड़ा, बच्चयां वाल्यो दयां जणाईआ। बुद्धीवानो मैं बड़ा खचरा, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। मेरा लेखा लिख्या नहीं गया किसे विच सतरां, हरफ़ां वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा प्रभू ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी सफ़ैद रखया पत्रा पत्रा, पत्रका हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मैनूं ऐउँ जापदा अगे कोई होण वाला ख़तरा, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैशां दयां जणाईआ। भावें मैं बहु पुराणा पंडत मैनूं कहिंदे सत्तरा बहत्तरा, सत्तरां दी धार बहत्तर ते बहत्तरां दी धार दा गोबिन्द माही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब वड वड्याईआ। नारद कहे भगतो तुहानूं पता गोबिन्द ने केहड़ी लिखी चिठ्ठी, हथ्थ मस्तक उत्ते पुट्ठा दिता टिकाईआ।

१३२१ केहड़ी इबारत बणाई मिट्ठी, जिस नूं रसना जिह्वा मुख बत्ती दन्द पढ़ ना कोए सुणाईआ। केहड़ी कलम शाही उठाई अनडिठ्ठी, १३२१

२४ जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दी इक्को सतर ते लम्बाई सवा गिठी, मारूडण्ड दए गवाहीआ। ओसे नूं तक २४

के दो जहान दी धार धरनी धरत धवल धौल धरती निमाणी हो के पिट्टी, दुहथ्थड़ दुहथ्थड़ दो हथ्थां वाली लाईआ। फेर अक्खीआं मलीआं निगाह मारी नज़र आई हाहे वाली टिप्पी, जिस दा रूप ना कोए बदलाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र ग्रन्थ विद्या विच दस्स ना सकण लिपी, जुगत जगत ना कोए चतुराईआ। ओहले विच इहो धार जो भगतो मैं लई विचार भगत भगवान भगवान भगत दी होवे हिती, हितकारी हो के वेख वखाईआ। ओहनां ने इक्को वार इक्को मंज़ल होवे मिथी, मिथ्या छड जगत लोकाईआ। मैनूं इयों जापदा कि अज्ज दा प्रविष्टा माघ तेरां ते उत्तम दिसी थिती, थित वार आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब बेपरवाहीआ। नारद कहे भगतो मैं तुहाडे अन्दर बाहर घुम्मदा, भज्जां वाहो दाहीआ। प्रभू दुआरे आउण वाल्यो तुहाडे चरण चुम्मदा, मिट्टी ख़ाक आपणी रसना नाल छुहाईआ। तुहानूं पता नहीं केहड़ा समां हुण दा, हुणे हुणे हुणे दयां दृढ़ाईआ। किस कारन तुहानूं भगतो शब्द पढ़न वाल्यां नूं रिहा चुणदा, चुण चुण के रिहा उठाईआ। एह इशारा सी सतिगुर शब्द दा नगारा सी ओहदी धुन दा, जगत दी धुनीउँ बाहर वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग

आप बणाईआ। पर मैं तुहानूं इक गल्ल दस्सणी तुहाडे घर दी, आपणे घर विच रहिण वाल्यो आपणी लैणी अंगड़ाईआ। मेरे कोल तुहाडी पिछली कहाणी पर दी, पुराणयो तुहानूं नवीं होर दयां सुणाईआ। सच पुछो भावें तुसीं कोझे ते कमले तुहाडे कोलों धर्म राय दी धार डरदी, भय आपणे सीस रखाईआ। बेशक तुहाडी मन कल्पणा जगत वासना विच लड़दी, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। पर प्रभू दी किरपा नाल तुहाडी आत्मा सचखण्ड दी मंज़ल चढ़दी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तुहाडी खेल वेखी तन वजूद धड़ दी, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर फोल फुलाईआ। तुहाडा एसे करके लेखा लहिणा वड्डा, तुहाडी आत्मा तूं मेरा मैं तेरा पढ़दी, सोहँ अक्खर वखर तुहानूं दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे भगतो मैं पिच्छे भुल आया आपणी बग़ली, ठंड ने मैनूं दिता भुलाईआ। मैं सवेरे तुहानूं होर गल्ल सुणावांगा अगली, अगे दा अगे पर्दा लाहीआ। भावें मैं पंडत पुराणा फिरन वाला विच जंगली, जूहां भज्जां वाहो दाहीआ। पर मैं सवेरे नवीं आपणी होर सुट्ट देणी संगली, सगले संगीओ तुहानूं दयां समझाईआ। बेशक मेरी आशा बड़ी कंगली, कोझा कमला हो के भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१३२२ किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे मेरी पिच्छे रह गई किताब, जो बिन अक्खरा १३२२

२४ दए समझाईआ। जिस दा इक्को हिस्सा इक्को बाब, बाबत इक्को इक समझाईआ। मैं उह रख के आया प्रभू दे चरणां २४

वाली विच महिराब, जगत कुतबख़ान्यां ना कदे टिकाईआ। बेशक मैं फिरदा फिरदा आ गया धरनी उत्ते पंज आब, पंजां ततां वाल्यो सच दयां दृढ़ाईआ। जो अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं लए ख्वाब, जगत सुफ़नयां बाहर ध्यान लगाईआ। सुबह उन्हां दा सच सच दयांगा जुआब, संदेशे धुर दे नाल मिलाईआ। नाले मेरी बोदी तन्द सितार वजाए रबाब, सोहणा ताल बणाईआ। तुसीं वी थोड़ी जही मैनूं देणी इमदाद, मांगत हो के मंग मंगाईआ। जे भगत बणे ते प्रभू नूं रख्या करो याद, लोक लाज रहिण कोए ना पाईआ। क्यों एह आ गया अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दे बाद, जोती जाता आपणा वेस वटाईआ। जिस ने तुहाडा खेड़ा सदा रखणा आबाद, दो जहानां विच उजड़ कदे ना जाईआ। जिस दा नाम अगम्मा ख़ुशीआं नाल सुणना नाद, अनादी धुन दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा जाणे इक्को वाहिद, वायदे सब दे पूर कराईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ✪

पूरन सतिगुर आप प्रभ, आदि जुगादी परवरदिगार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, इक इकल्ला एकँकार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, निरगुण सरगुण सांझा यार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत करे उज्यार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, शब्द नाद दए धुन्कार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, अमृत बख्शे ठंडा ठार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, पन्ध मुकाए नौ दुआर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जगत तृष्ना दए मार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, नाम निधाना दए खुमार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लेखा जाणे अन्दर बाहर। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जुग जुग भगतां दए अधार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लख चुरासी लेखा दए निवार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, दरगाह साची सचखण्ड बख्शे चरण प्यार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी आपणी बन्ने धार। पूरन सतिगुर आप प्रभ, अलख लखीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, शाहो शाबास वड प्रवीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो होए सहाई दीनन दीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जो जन के लेखे लाए भगतां माघ महीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, प्रभ सच प्रीती दस्से मरना जीणा। पूरन सतिगुर आप प्रभ, झगड़ा मुकाए लोक तीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, हरिजन ठांडा करे सीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, गुरमुख प्यास बुझाए जिउँ जल मीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, लोकमात प्रगटाए अगम्म नगीना। पूरन सतिगुर आप प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी हरिजन लेख मुकाए लोक तीना, त्रैगुण माया पंज तत आपणे लेखे लाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

पूरन सतिगुर मन्नणा, पारब्रह्म करतार। जिस जुग जुग बेड़ा बन्नणा, बन्नणहार सची सरकार। जन भगतां बख्शे सच अनन्दना, चरण प्रीती अगम्म प्यार। निम्म महकाए वास चन्दना, हरिजन साचे लए उबार। इक्को दस्से धुर दी बन्दना, इष्ट देव आप करतार। घर स्वामी बणे सज्जणा, हरि ठाकर मीत मुरार। जिस दा अगम्मी वजे नदना, आत्म दए सची धुन्कार। जिस दा रूप मोहन मदना, रंग रेख तों बाहर। जो लेखे लाए आहला अदना, हरिजन बणे मीत मुरार। जो भाग लगाए काया माटी बदना, पंज तत करे श्रृंगार। जिस दा इक्को दीपक जगणा, जगत जहान होए उज्यार। उह मेटणहार शरअ दी हद्दना, आप वसे हदूदां बाहर। जिस दा कीता किसे ना रद्दना, जुग जुग पावणहारा सार। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो लहिणा देणा लेखा पूरा करे जन भगतां तत पंजना, पंचम मीता ठांडा सीता आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ दविंदर सिँघ दे नवित पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

पूरन सतिगुर जाणीए, हरि दाता बेपरवाह। जिस दी महिमा अकथ कहाणीए, कलम शाही चले ना कोए चतुरा। जो लेखा जाणे दो जहानीए, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड थल अस्गाह। तिस दा करीए इक चरण ध्यानीए, जो सदा सदा होए सहा। तूं मेरा मैं तेरा गाईए बाणीए, जो लहिणा देणा दए मुका। पन्ध रहे ना चारे खाणीए, आवण जावण लहिणा दए चुका। सो साहिब स्वामी जो देवणहारा अमृत रस पाणीए, पतिपरमेश्वर नूर अलाह। आत्म परमात्म बणे हाणीए, धुर संजोगी मेल मिला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह। पूरन सतिगुर जाणीए, आदि अन्त भगवन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, निरगुण धार जोती कन्त। पूरन सतिगुर जाणीए, जो अन्तर
१३२४ आत्म देवे आपणा मंत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो गढ़ तोड़े हउमे हंगत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो मेल मिलाए साची १३२४
२४ संगत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो बोध अगाधा होवे पंडत। पूरन सतिगुर जाणीए, जो हरिजन लेखे लाए आपणे सन्त। २४
पूरन सतिगुर जाणीए, जो बणाए साची बणत। पूरन सतिगुर जाणीए, जिस दी महिमा सदा अगणत। पूरन सतिगुर जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मेरा मैं तेरा, निरगुण निरगुण दस्से आपणा छंत।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सन्ता सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

पूरा सतिगुर खोजदा, आदि जुगादी आप। प्रेम दस्से आपणे जोग दा, धुर दा नाम जपाए जाप। लेखा मेटे हउमे रोग दा, ममता मोह ना रहे संताप। रस देवे अगम्मे भोग दा, दीन दुनी दा मेट संताप। मेल मिलाए धुर संजोग दा, निरगुण बण के माई बाप। झगड़ा मेटे जगत विजोग दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन लेखे लाए आप। पूरन सतिगुर पाईए, सतिगुर पूरन मीत। सदा सदा गुण गाईए, हिरदे रखीए चीत। नित नित दर्शन पाईए, तन करे ठांडा सीत। रसना ढोले गाईए, होईए पतित पुनीत। चरण धूड़ी ख़ाक रमाईए, त्रैगुण

नालों करे अतीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद वसणहारा चीत। पूरन सतिगुर पेखीए, नेत्र लोचन नैण अपार। जो वसे देस परदेसीए, दो जहानां पावे सार। जिस नूं झुकदे ब्रह्मा विष्न शिव महेषीए, करोड़ तेतीसा करे निमस्कार। जो जुग जुग देवे नाम संदेशीए, धुन आत्मक राग वजाए सितार। जो कलयुग अन्तिम धरे भेखीए, कलि कल्की रूप अपार। जो वसे सम्बल देसीए, साढे तिन्न हथ्थ महल मुनार। जिस दा ना मुच्छ दाढ़ी ना केसीए, मूंड मुण्डाए ना विच संसार। जो जन भगतां कढ्ढे भरमां भरम भुलेखीए, भाण्डा भरम भउ निवार। जिस लहिणा देणा पूरा करना मुल्लां शेख़ीए, वेखणहार सर्ब संसार। जिस दा लहिणा देणा नाल गोबिन्द दस दस्मेशीए, कलि कल्की होवे ज़ाहर। जो आदि जुगादी रहे हमेशीए, दरगाह साची सचखण्ड दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी धुर दा साजण मीत मुरार।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

१३२५
२४

नारद कहे मेरे पूरन सतिगुर देवा, देव देवा तेरी ओट तकाईआ। मेहरवाना मैनूं दस्स दे धर्म दी धार सेवा, सति सच नाल कमाईआ। अमृत रस बख़्श दे अगम्मा मेवा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। तेरी सिफ्त करां बिन रसना जिह्वा, ढोले नौ सत्त सुणाईआ। तूं मालक मेरा अलख अभेवा, अगोचर इक अख्वाईआ। वसणहारा धाम निहकेवा, निहचल आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द आपणा प्यार दे दे अनडिठ्ठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस विच रस होवे अगम्मी मिट्ठा, रसना चक्खण कोए ना पाईआ। कलयुग जीव कर दे कौड़ा रीठा मिट्ठा, अंमिओं रस आप चुआईआ। मैं तेरे दुआरे पिट्टां, पटनेवाला नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द, दीन दुनी पूजा करदी पत्थर इट्टां, पाहनां सीस निवाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए किसे चिट्टा, सति सतिवादी तेरे रंग ना कोए समाईआ। सति धर्म कलयुग कूड़ी क्रिया नाल फिटा, नौ खण्ड पृथमी आपणा रूप बदलाईआ। मैं इक्को डोरी तेरे उत्ते सिट्टां, आशा तेरे चरण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। नारद कहे सतिगुर शब्द साची दे दे नाम निशानी, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। धर्म दी धार दस्स ईमानी, अमल इक्को इक समझाईआ। जगत झगड़ा मेट जिस्मानी, दीन मज़्ब वंड ना

कोए वंडाईआ। तूं मालक नूर नुरानी असमानी, दरगाह साची सोभा पाईआ । शरअ दा लेखा मुका जिस्मानी, जिस्म ज़मीर सब दी दे बदलाईआ। तूं मालक ख़ालक गुण निधानी, गहर गम्भीर तेरी वड वड्याईआ। तूं देवणहारा दाता दानी, दयानिध अख्वाईआ। नारद कहे मेरी चार जुग दी आशा पुराणी, पुनह पुनह कहि के सीस निवाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा बाहर शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, अञ्जील कुरानी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं देवणहार जोती जाता नूर नुरानी, अल्ला आलमीन इक अख्वाईआ। तेरा दिसे कोई ना सानी, लाशरीक परवरदिगार तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैनूं बख्श दे पद निरबानी, निरबाण आपणा हुक्म सुणाईआ। तूं आदि जुगादी जाण जाणी, जानणहार इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मंज़ल दस्स आसानी, असल वसल यार आपणा देणा कराईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

१३२६ सतिगुर पूरन सद बख़शिंद, बख्शणहार अख्वाईआ। जन भगत सुहेले बणाए आपणी बिन्द, वृंदावन दे काहन दा लेखा १३२६
२४ दए मुकाईआ। दाता दानी बणे गुणी गहिन्द, गहर गवर आपणी कार कमाईआ। अन्तष्करन मेटे सदा चिन्द, चिन्ता चिखा २४
ना कोए जलाईआ। मेहरवान होवे दाता गुणी गहिन्द, गहर गवर आपणा रंग रंगाईआ। अमृत धार बख्शे सागर सिन्ध, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। प्यार मुहब्बत बख्शे आपणा छिन्द, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर इक वखाईआ। पूरन सतिगुर तारदा, तारनहारा आप। जन भगतां पैज संवारदा, कलयुग मेट अन्धेरी रात। दर्शन देवे आप निरँकार दा, बिन नेत्र नैणां मार झात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे लोकमात। पूरन सतिगुर दीन दयाला, दयानिध अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम बणे रखवाला, रख्या करे थाँईं थाँईंआ। चरण कवल बख्शे सच सची धर्मसाला, सच दुआर इक जणाईआ। त्रैगुण माया तोड़े कूड़ जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म गल पाए अगम्मी माला, तूं मेरा मैं तेरा मणका मन का दए भवाईआ। जन भगतां सदा चलाए आपणी चाला, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को रंग रंगाए शाह कंगाला, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। निर्धन सरधन बणे दलाला, विचोला इक बेपरवाहीआ। हरिजन लेखे लाए घाला, कीती घाल लेखे पाईआ। गुरमुख उठाए आपणे बाला, बचपन आपणी गोद वखाईआ। गुरसिखां करे आप संभाला, सम्बल दा मालक

हो के वेख वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरु देण अहिवाला, सो मालक बणे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि बणे सदा प्रितपाला, प्रितपालक हो के वेखे चाँईं चाँईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं निमाणी मिट्टी, ख़ाक धूड़ चरण लैणी बणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे चरणां विच लिटी, लिटां खोल्ह के सीस निवाईआ। मैनूं दर दवारयों बाहर ना सिट्टीं, सच गृह देणी वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ीआं गिणदी रही गिट्टी, गिणती गणत ना कोए समझाईआ। मेरी आसा सब तों वेख लै निक्की, निक्की हो के दयां जणाईआ। मेरी तृष्ना होण ना देवीं फिक्की, अमृत रस देणा भराईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरे प्यार विच विकी, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। तूं मेरा लहिणा देणा कलम शाही धार नाल लिखी, लेखा अगला आपणे नाल बणाईआ। मैं चाहुंदी धर्म दी धार मेरे उत्ते इक्को होवे सिक्खी, जो साख्यात तेरा दर्शन पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी झोली पा दे भिक्खी, भिखक हो के मंग मंगाईआ। उह लहिणा पूरा कर दे जो आसा रख के गए सप्तस ऋषी, ऋषीशर हो के ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दी अन्दरों कूड़ कुड़यारी मेट दे विसी, विख रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां बख्श दे सच प्रीती हिस्सी, हिस्सेदार लै बणाईआ। पर मैं हैरान हो गई तेरा दरस हुन्दा कोटां विच्चों किसे किसी, किस बिध आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मैनूं चार जुग दे शास्त्रां किहा ख़ाक, ख़ाकसार हो के सीस निवाईआ। मेरा तन वज़ूद कर दे पाक, पतित पुनीत आपणी दया कमाईआ। नाले लेखा तक लै अवतार पैग़म्बरां वाले वाक्, गुरु गुरदेव गए बणाईआ। बिना तेरे तों मेरा नहीं कोई सज्जण साक, सख़ा सख़ाई नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान हो के मेरे उत्ते सति धर्म दा खोल्ह दे ताक, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मैं तेरी सेवक दासी चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। मेरी आसा मूल रहे ना आक, निवण-सु-अक्खर देणा दृढ़ाईआ। मेरा नौ खण्ड पृथ्मी तेरे चरणां दा होवे बलाक, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म धार सब दा कर मिलाप, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। दीन दुनी दा इक्को होवे जाप, इक्को तेरा ढोला गाईआ। इक्को सब दा बण माई बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ मेट दे पाप, पापीआं कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१३२७
२४

आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी चिन्ता मेट रोग संताप, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ आसा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे मेरे प्रभू कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। किरपा कर लोकमाती, निगाहबान हो के वेख वखाईआ। चरण छुहा दे मेरे सीने छाती, छत्रधारीआ तेरी वड वड्याईआ। मैं दर्शन करना चाहुंदी इक इकांती, इक इकल्ले पर्दा देणा उठाईआ। मैनूं सहिज नाल संदेशा दे के गया नारद पंडा, धरनीए मैं तेरे उत्ते आवां अज्ज दी राती, पूरब लेखा नाल मिलाईआ। खेल दस्सां बहु बिध भांती, भांत भांत दा पर्दा दयां उठाईआ। भावें किसे नूं दिस ना आए मेरी जाती, रूप रंग रेख वेखण कोए ना पाईआ। मेरा लहिणा देणा लिख्या जावे नाल कलम दवाती, काग़ज़ां वजी वधाईआ। मैं प्रकाश करां प्रभू दा बिना तेल बाती, बिन दीपकां डगमगाईआ। जिस ने पुछणी तेरी वाती, वारस हो के वेख वखाईआ। कलयुग
१३२८ कूड़ी क्रिया तेरे उत्तों कढणी नार कमज़ाती, जूठ झूठ रहिण कोए ना पाईआ। सच धर्म दी बणाउणी सच प्रभाती, प्रभू आपणा १३२८
२४ रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज २४
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी बदल देवे हयाती, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे मेरे नूर अलाही रब्बा, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। मेरे आदि जुगादी अब्बा, मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा आउणा हुन्दा नाल सबब्बा, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। मेरे उत्तों कलयुग कूड़ क्रिया मेट दे धब्बा, दुरमति दाग़ रहिण कोए ना पाईआ। जिस कारन हज़रत मुहम्मद कटाईआं लबां, उस दा लेखा पूरा देणा कराईआ। मैं तेरे चरण कवल आपणा हथ्थ बधा, बन्दगी विच सीस निवाईआ। तेरा हुक्म मंनदी सदा, सदके वारी घोल घुमाईआ। मैं राह तकदी कदा, कदीम दी ध्यान लगाईआ। मेरी पवित्र कर दे जगह, थान थनंतर सोभा पाईआ। धर्म दी धार मेरा होवे अगा, सच नाल मिल के वजे वधाईआ। तेरा सति सरूप प्रेम दी धार दिसे बग्गा, बग बपड़े गुरमुख हँस लै बणाईआ। कलयुग जीव तक अल्पगा, सरबग हो के वेख वखाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाहरगा, शहिनशाह पर्दा आप चुकाईआ। मैं तेरी सरन

सरनाई लग्गा, लग मातर डेरा ढाहीआ। तेरा गृह मन्दिर इक्को होवे चंगा, चारों कुण्ट देणा समझाईआ। तेरी छोह साची धार होवे गंगा, गंगोत्री बैठी सीस झुकाईआ। मैं इक्को बेनन्ती करके वस्त मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। परम पुरख तेरा भगत रहे कोई ना भुखा नंगा, ग़रीब निमाणयां होणा सहाईआ। आप आपणे लाउणा अंगा, अंगीकार आप हो जाईआ। तेरा नाम वजे मृदंगा, मर्द मर्दाने देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं सदा चाहुंदी तेरी संगा, सगले संगी बहु रंगी आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं जुग जुग बिन कदमां तों भज्जी, सेवक हो के सेव कमाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी सेवा कर मूल ना रज्जी, तृष्ना तेरे प्यार रखाईआ। मेरे मेहरवाना तूं मेरे उत्ते जुग जुग आउँदा नाल सबब्बी, सबब नाल आपणा फेरा पाईआ। आपे खेल खिलावें अवतार पैग़म्बर गुरुआं धार गद्दी, दीन दुनी रंग रंगाईआ । मैं तेरा खेल तकदी रही सुदी वदी, अमावस पूनम नाल मिलाईआ। अन्त तैनूं सारे गए सद्दी, सद्दे दिते चाँईं चाँईंआ। जिस वेले कलयुग क्रिया कूड़ वदी बदी, बन्दा पुनीत नज़र कोए ना आईआ। माया वासना होणी गंदी, सच विच ना कोए समाईआ। दीन दुनिया नेत्र अक्ख होणी अन्धी, निज नेत्र तेरा दरस कोए ना पाईआ। उस वेले सदी बीसवीं जांदी होणी लँघी, चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द दे कंघे दी सिक्खां सिर विच फेरनी नहीं कंघी, गुरमति जाण भुलाईआ। झगड़ा पैणा प्रकृती पंझी, पंजां ततां प्रेम ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार फिरना मेरे उत्ते जंगी, बल आपणा आप प्रगटाईआ। सच मुहब्बत कितों मिलणी नहीं मंगी, ख़ैर बीख़ैर या अल्लाह झोली कोए ना पाईआ। उस वेले तेरा इक्को सुत दुलारा उठे भुजंगी, बिना भुजां तों शब्द नूर अलाहीआ। जिस ने खेल करनी चंगी, चंगी तरह दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले तेरे लाउणे आपणे अंगी, अंगीकार आप हो जाईआ। जिस दे चरणां विच यमुना सरस्वती गोदावरी फिरनी गंगी, भज्जे चाँईं चाँईंआ। उस मन मनुआ वेखणा फ़रंगी, गृह गृह अन्तर ध्यान लगाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन चुक के आपणे कंधी, कन्ढी घाट पार लँघाईआ। चुरासी वाली कट के बन्दी, बन्दना इक्को नाम समझाईआ। जिन्हां ने तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्दी, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म देणा सच अनन्दी, अनन्द दे मालक अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

✪ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ११ दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मैनूं बड़ी मुश्किल किताब लभ्भी, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं बाहर ध्यान लगाईआ। जिस विच लेखा लिख्या ओह नूर अलाही रब्बी, नूर नुराना शाह सुल्ताना अगम्म अथाहीआ। जिस दे हुक्म विच पैग़म्बर फिरन नबी, रसूल भज्जण वाहो दाहीआ। उस दा खेल होया सबब्बी, साहिब आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच सृष्टी दृष्टी बध्धी, बन्दना विच सारे सीस निवाईआ। ओह अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेखणहारा चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा फ़रमान मिलण वाला यदी, यदी यदप दए दृढ़ाईआ । उस धरनी पापां थल्लउँ कढणी दब्बी, भार हौला दए कराईआ। जिस दे प्रेम प्यार दी धार अगम्मी मधी, मधसूदन हो के वेख वखाईआ। जिस दी प्रीत आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां नाल लग्गी, लग मातर डेरा ढाहीआ । ओह वेखणहारा कलयुग अग्नी लग्गी, नव सत्त ध्यान लगाईआ। शाहो भूप सूरा सरबगी, हरि करता इक अख्वाईआ। नारद कहे उस दी बिना तेल बाती जोत जगी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जो हरिजन बणावे हँस कगी, कागों हँस उडाईआ। जन भगतां दर्शन देवे उपर शाहरगी, पर्दा बजर कपाट खुल्हाईआ। अमृत धार वहाए अगम्मी नदी, जगत सरोवरां लोड़ रहे ना राईआ। जिस कायम रहिण देणी नहीं किसे दी गद्दी, गदागर करे ख़लक खुदाईआ। उह वेखणहारा दीन दुनी दी बदी, बदला चुकावे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसाँईंआ। नारद कहे मेरी किताब दिसे बिन अक्खरां, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। ओहदा लहिणा देणा नहीं इट्टां पत्थरां, पाहना रंग ना कोए रंगाईआ। उस दा इशारा दिता गोबिन्द यारड़े वाले सथरा, सोहणी सेज बणाईआ। जिस दा नीर वहाउंदे बिन अक्खीआं वालीआं अथ्थरां, बिन हंझूआं हार बणाईआ। जिस दी याद करके गया कृष्णा कान्हा विच मथुरा, गोकल गोपाल ध्यान लगाईआ। उस दा भेव अभेदा मुश्किल होवे कथना, कथनी कथ सके ना राईआ। जिस नूं याद करके गया राम सुत दशरथना, त्रेता दए गवाहीआ। उस ने कूड़ कुड़यारा कलयुग मथना, मथन करे ख़लक ख़ुदाईआ। सब दा लहिणा देणा चुकावे हथ्थो हथना, जगत उधार ना कोए जणाईआ। भगत सुहेला अन्तर आत्म रहिण देवे कोई ना सखणा, सतिगुर दाता हो के नाम दए वरताईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग कूड़ कुड़यारा नठणा, भज्जे वाहो दाहीआ। लेखा मुके अठ्ठ सठ्ठना, तीर्थ तट रंग रंगाईआ। लहिणा जाणे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठना, गुरुदुआरे चर्चा वेख वखाईआ। उह साहिब स्वामी इक समरथणा, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जिस भगत सुहेला लोकमात रखणा, रख्या करे थांउँ थाँईंआ। साचे सन्तां अन्तर वसणा, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। गुरमुखां

मार्ग इक्को दस्सणा, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। गुरसिखां देवे नाम निधाना रसना, बिन रसना रस चखाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी मसना, सतिजुग नूर चन्द करे रुशनाईआ। जिस दी याद विच अवतार पैग़म्बर गुर खुशीआं दे विच हसणा, हस्ती तक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक दरसाईआ। नारद कहे मेरी किताब किसे हथ्थ ना आवे विच्चों मकतब, कुतबख़ान्यां नज़र कोए ना आईआ। अक्ल बुद्धी नाल उस दा कढ्ढे कोई ना मतलब, जगत विद्या ना कोए जणाईआ। जगत जिज्ञासू बणे ना कोए मुनसफ़, इन्साफ़ सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी किताब दा कोई ना जाणे वरका, सफ़ा समझ कोए ना पाईआ। जिस विच भेव इक्को नरायण नर दा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। ओहदा लहिणा देणा सचखण्ड साचे घर दा, थिर घर आपणा रंग रंगाईआ। ओहदा हिसाब अवतार पैग़म्बर गुरु कोई ना करदा, अंकड़यां गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नारद कहे मेरी किताब बड़ी पुराणी, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग जिस दे ढोले गाईआ। चार
१३३१ जुग दे शास्त्रां विच्चों लभ्भे ना निशानी, निशाना सके ना कोए जणाईआ। किसे अवतार पैग़म्बर गुरु लिखी नहीं कहाणी, १३३१
२४ कागद दीन दुनी ना कोए बणाईआ। ओह सिफ्तां वाली नहीं बाणी, शरअ संग ना कोए जणाईआ। ओहदा लहिणा देणा २४
पुरख अकाले नाल दो जहानी, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे मेरी किताब बड़ी निराली, निराकार दिती वड्याईआ। उह बिना अक्खरां तों ख़ाली, लाइन वेखण कोए ना पाईआ। ओह किसे ने लोकमात नहीं संभाली, बिना सम्बल दे मालक वेखण कोए ना पाईआ । उस दी सब तों वखरी चाली, चाल निराली इक दृढ़ाईआ। जिस विच सतिगुर शब्द करे दलाली, विचोला दो जहान अख्वाईआ। जिस दे प्यार विच नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग घालन घाली, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाया चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे मेरी किताब दा की कहिणा, कहि के की जणाईआ। किस बिध भगतां भगवान वेखे धुर दे नैणां, जग नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। किस धार विच्चों बणे साक सज्जण सैणा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। किस मुहब्बत विच देवे देणा, लहिणा पिछला लए प्रगटाईआ। अगे नाता रहिण ना देवे त्रफैणां, तरफ़दारी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी याद विच बाल्मीक लिखी रमायणा, राम राम दी दए दुहाईआ। जिस दी याद विच अर्जन कृष्ण दा मन्नया कहिणा, गीता

आपणा संग बणाईआ। ओसे दी धार विच सब ने वहिणा, वखरा रहिण कोए ना पाईआ। नारद कहे कलयुग अन्त बुरज हँकारी ढहणा, ढहि ढहि खाक बणाईआ। मेरी किताब कहिंदी ज़रूर झगड़ा होवे रूसा चाँइना, चैन विच बैठा नज़र कोए ना आईआ। क्यों इस विच लिख्या खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी कलयुग कूड़ क्रिया दा ज़रूर पावेगा गहिणा, तन श्रृंगार माया ममता वाला रखाईआ। हउमे हंगता कूड़ कुड़यार दा वहिण वहिणा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे मेरी किताब विच लिख्या आ जा नी जल्दी जल्दी गंगीए, गोदावरी यमुना सरस्वती नाल मिलाईआ। शुभ दिहाड़ा वक्त सुहञ्जणा प्रभ कोलों कुछ मंगीए, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर कोलों कदे ना संगीए, नेत्र नैण ना कोए शरमाईआ। जो कटणहारा सब दी फंदीए, शरअ ज़ंजीर रिहा तुड़ाईआ। गंगा कहे, वे नारदा, तूं बड़ा पुराणा ढंगीए, तरीका अवर दे दृढ़ाईआ। की खेल होणी रावी कन्ढीए, कन्ढा घाट की जणाईआ। अज्ज दी पवन वेख लै ठण्डीए, अग्नी तत बुझाईआ। किस बिध प्रभ दे नाल नाता गंढीए, गंढ सके ना कोए खुल्हाईआ। नारद किहा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिस दा नूर चन्द नौचन्दीए, चन्द चांदना इक रुशनाईआ। गंगा कहे, वे नारदा, केहड़ी मंग मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। वे पंडया, गंजया, मेरा ओढण बिना सीस नंगा, खुल्ही मेढी दयां दुहाईआ। मेरीआं राह विच भज्जदयां नठदयां डिग्गके टुट्ट गईआं वंगां, तन श्रृंगार रहिण कोए ना पाईआ। मेरा लहिंगा मूल रिहा ना चंगा, चंगी तरह समझाईआ। मैं बाहवां चुक्कके दस्सां, वे रावी दे आर पार होण वाला दंगा, दगे बाज़ी विच दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। पंडता पुराणयां, कुझ आपणा ग़म दस्स दे रंज़ा, रंजश दे जणाईआ। नारद कहे नी कमलीउ मैं की करां जिथ्थे सतिगुर शब्द ने लाया पंजा, पंजां दरयावां दा लेखा आपणे चरणां हेठ दबाईआ। एसे नूं मुहम्मद ने किहा सी मेरा खेल होवे होवे यक शम्बा, सदी चौधवीं संग बणाईआ। उस वेले बन्दगी वाला रहे कोई ना बन्दा, बन्धन विच दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे मेरी किताब की कुछ कहिंदी, सुणन वाल्यो बिना कन्नां तों रही सुणाईआ। जिस विच लेख लिख्या प्रभ दी धार वरतणी ते वरतणी दिशा लहिंदी, अगे हो ना कोए अटकाईआ। ऐउँ दिसदा, इक दूजे दे पिच्छे उम्मत नाल उम्मत खहन्दी, खहि खहि आपणा रंग बदलाईआ। ईसा दी धार अगे हो हो डहिन्दी, साल इहो नज़री आईआ। जिस कारन मुहम्मद ने हथ्थां नाल लाई मैहन्दी, रंगले रंग रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गंगा कहे नारदा काहनूं मारें दाबे, दबदबियां विच सुणाईआ। औह वेख लै शंकर कैलाश विच्चों झाके, बिन नैणां नैण उठाईआ। सतिगुर शब्द जिस खेल खेलणा ते पूरे करने पैग़म्बरां वाले वाके, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबकां खोल्ह्ण वाला ताके, खिड़की आपणे हथ्थ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी किताब विच बिना कलम शाही तों वजीआं लीकां, लाइन लाइन लाइन लाइन लाइन विच्चों मिलाईआ। जिस विच होणीआं हक तौफ़ीकां, ताकतवर इक्को नूर अलाहीआ। जिस ने दीन दुनिया दीआं बदलणीआं तबीअतां, साबत रहिण कोए ना पाईआ। भावें कितने कलमे शरअ दीआं देण नसीहतां, सुणन वाला रहिण कोए ना पाईआ। सदी बीसवीं चौधवीं अन्त सब दीआं पूरीआं होईआं वसीअतां, वसल यार दा सके ना कोए हंढाईआ। सारे ख़ाली दिसणे मन्दिर मसीतां, काअब्यां पैणी दुहाईआ। नारद कहे भगतो बिना प्रभू तों तोड़ निभणीआं नहीं किसे दीआं प्रीतां, बिना प्रीतम तों मिलण कोए ना पाईआ। सब ने भरना आपणा कीता, करनी तों सके ना कोए बचाईआ। सतिजुग कलयुग विच्चों बदल जाणीआं रीतां, रीतीवान दए वड्याईआ। जोती

१३३३ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी किताब १३३३

२४ ना निक्की ना वड्डी, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ना किसे नूं लभ्भी ना किसे ने छडी, हथ्थां विच ना कोए उठाईआ। २४

ना किसे तहख़ान्यां विच दब्बी, अन्दर सक्या ना कोए छुपाईआ। इस विच लेख लिख्या जिस वेले कलयुग दुनिया होई लबी, लबां कटाउण वाला साबत नज़र कोए ना आईआ। उस वेले मालक नूर अलाही आए रब्बी, यामबीन कहि के जिस नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। किताब कहे मैनूं पढ़े ना कोए, कूक कूक मेरी दुहाईआ। अन्दर वड़ ना मैनूं कोए जोहे, ताकत समझ किसे ना आईआ। मेरा लेखा नाल नहीं कोए त्रैलोए, त्रैलोकी नाथ गया दृढ़ाईआ । मैं कदी ज़िमीं असमानां आई नहीं उत्ते भोएं, भोएं तलवंडी विच नानक गया जणाईआ। मैनूं प्यार मुहब्बत विच दुनीदार कोए ना मोहे, मुहब्बत विच ना कोए फसाईआ। मैं आदि जुगादी जुग चौकड़ी वेखां जहान दोए, दोज़ख़ बहिश्तां तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे जन भगतो मेरी किताब दी सब तों पहली कतार, कुदरत कादर भेव खुल्हाईआ। जेहड़ा बणे तुहाडा यार, यराने भगतां नाल रखाईआ। कलयुग अन्तिम कलि कल्की अवतार, अवतर हो के वेख वखाईआ। अमाम अमामा नूर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। निहकलंका हो के पावे सार, महासार्थी

इक अख्वाईआ। सब दा बणे कन्त भतार, कन्तूहल इक अख्वाईआ। फड़ बाहों जाए तार, तारनहार इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा तुहाडे नाल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। ओह उतर के आवे आपणी धार, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। एका नाम कलमा दए जैकार, ढोले धुर दे आप सुणाईआ। तुसां जपणा सिर्फ़ पंज वार, पंजां ततां दा लेखा दए मुकाईआ। फेर जन्म नहीं लैणा दूजी वार विच संसार, चुरासी फाँसी ना गल लटकाईआ। राय धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। राय धर्म कहे भगतो मेरी किताब दी पहली वेखो निक्की जेही कतार, जो कुदरत कादर दा भेव खुल्हाईआ। सच पुछो जिस ने इक वार कर दिती निमस्कार, दो जहान दा लेखा दए मुकाईआ। सच्चा गृह घर बख्शे सचखण्ड दुआर, जिथ्थे वसे धुर दा माहीआ । जिथ्थे सदा खुशीआं वाली बहार, ख़िज़ां रूप ना कोए वखाईआ। नारद कहे भगतो मैं तुहाथों जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। भावें तुसीं अन्दर बैठे रहे मैं भिज्जदा रिहा बाहर, मैनूं प्रेम नाल आवाज़ ना किसे लगाईआ। मैं पिछली रातीं करके गया सां ख़बरदार, अगली रातीं
१३३४ ज़रूर आवां चाँईं चाँईंआ। भावें इन्द्र देवता मेरे प्यार विच आपणीआं बूँदां रिहा वार, खुवाजा खुशी नाल आपणी दाढ़ी रिहा हलाईआ। मैं वी हस के किहा ओए यार, यारां दे यार की तेरी वड वड्याईआ। मेरे नाल संगी साथी गंगा गंगोत्री गोदावरी १३३४
२४ यमुना सरस्वती जिन्हां दी गिणती चार, चौथे जुग आईआं पन्ध मुकाईआ। जे ओहनां दे नाँ मदीनां वाले, पर उह है नहीं २४
नार, प्रभ दी धार धार धार विच्चों सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे जन भगतो तुसीं अन्दर, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती बाहर वेखो गांदीआं, धुर दे ढोले गाईआ। नाले कहिण भगतो साडीआं बारश विच भिज्ज गईआं परांदीआं, ओढण सीस दए दुहाईआ। साडे हथ्थीं छल्ले रहे ना सोने चांदीआं, टकयां रंग ना कोए रंगाईआ। असीं दूर दुराडीआं प्रभू दे हुक्म दीआं बांधीआं, बन्दना विच सीस निवाईआ। चार जुग दीआं थक्कीआं मांदीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। हुण जगत हया शरमां काहदीआं, कदम बोसी करके आपणी खुशी बणाईआ। असीं छड के आईआं तीर्थ अठ्ठ सठ्ठीआं, तट्टां आईआं तजाईआ। असीं जुग चौकड़ी बथेरीआं भरीआं चट्टीआं, चेटक जगत वाला रखाईआ। वे प्रेमीओ प्यारयो, साडे विच मुरदयां दीआं हडीआं सट्टीआं, सट्टां साडे सीने विच लगाईआ। साडे वहिणां दयां धारां विच फिरदे टट्टीआं, टकयां टकयां तों पाणी साडा पंडत रहे विकाईआ। असीं प्रभू दे प्यार विछोड़े विच फटीआं, पट्टी प्यार ना कोए बंधाईआ। तुहानूं पता नहीं किस तरह अज्ज मींह विच आपणयां वहिणां दीआं धारां आईआं टप्पीआं, बिन कदमां कदम उठाईआ। क्यों साडीआं प्रभू नाल प्रीतां पक्कीआं, कच्ची गंढु ना कोए रखाईआ।

असीं भावें चारे भैणां नहीं सकीआं, इक दूजे नाल मिल के खुशी बणाईआ। सानूं उस वेले याद कीता सी जिस वेले अर्जन बैठा सी लोहां ततीआं, रावी रो के वास्ता पाईआ। नी मेरीओ सहेलीओ तुहाडीआं मेरे नाल कदों होणगीआं हिस्से पत्तीआं, पतणां ते आ के मिलणा चाँईं चाँईंआ। मैं केहड़ी सिफ्त करां की सुणावां राग छतीआं, प्रेम प्यार किस बिध वखाईआ। सारीआं हस के किहा रावी असीं ओसे दा सथर बैठीआं घतीआं, जिस दी सेज बिना प्यार ना कोए हंढाईआ। जिस वेले साडी कीमत रहिणी नहीं तोले रतीआं, जगत संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे भगतो मेरी किताब दी निक्की जेही लकीरी, निक्कयो निक्कयो निक्कयो तुहानूं दयां जणाईआ। सतिगुर दा हुक्म मन्नणा सब तों वडी फ़कीरी, इके फ़िकरे विच दो जहान दा लेखा दए मुकाईआ। शरअ दी गलों कट देवे ज़ंजीरी, जगत संगल दए तुड़ाईआ। घर दर्शन देवे बेनज़ीरी, नज़रां तों ओहले आपणा पर्दा दए उठाईआ। प्रेमीओ जदों मिलदा भगतां नूं मिलदा तकदीरी, तकदीर पिछली दए बदलाईआ। क्यों उहदे हथ्थ साची तदबीरी, बिना भगतीउँ पार कराईआ। क्यों ओहदी मंज़ल इक अख़ीरी, बिना अक्खरां तों दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१३३५ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक सुहाईआ। नारद कहे भगतो इक मेरा निका जेहा इशारा, १३३५
२४ ऐशो इशर्त करन वाल्यो तुहानूं दयां जणाईआ। बेशक एह रावी दा किनारा, कन्ढ्ढा घाट जगत वाला अख्वाईआ। एस दा २४
नाँ रहिणा सदा जुग चारा, चार जुग एसे दा ढोला गाईआ। तुहाडीआं कथा कहाणीआं सिफ्तां दीआं वारां, सतिगुर शब्द शब्द शब्द सुणाईआ। एह पूरब वायदा अज्ज दा कौल इकरारा, अगला लेखा फेर दए समझाईआ। तुहाडा सब दा आउणा जाणा मन्ज़ूर होया ते सतिगुर सिर ते दए प्यारा, धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। भगतो तुहाडे अन्दर सदा सदा सदा प्रभू दे प्यार दीआं रहिण बहारां, रोम रोम पत्त टहणीआं वांग महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहान देवण वाला अधारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे जन भगतो मैं पुराणा पंडू, जगत विद्या बाहर मेरी पढ़ाईआ। मैं फिरदा आया विच ब्रह्मण्डू, ब्रह्मण्डां पन्ध मुकाईआ। मैं निगाह मारी विच नवखण्डू, नव नव खोज खुजाईआ। मेरे अन्तर आई ठंडू, सांतक सति सोभा पाईआ।

मेरा साहिब स्वामी जन भगतां वस्त अगम्मी वंडू, नाम निधाना झोली पाईआ। जुग जन्म दे विछड़े नाल गंडू, गंढुणहार आपणी दया कमाईआ। जिन्हां दा लेखा मुकाउणा करीर जंडू, इष्ट आपणा इक समझाईआ। नाता तोड़ भेख पाखण्डू, सति सच रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया डण्डू, डण्डावत आपणी दए दरसाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे कन्डू, कन्ढा घाट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं पुराणा पांधा, जगत तिलक ना कोए लगाईआ। इक्को ढोला गांदा, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। इक्को इष्ट मनांदा, सीस जगदीस निवाईआ। इक्को पींदा खांदा, बिन रसना रस चखाईआ। इक्को दुआरे जांदा, प्रभू चरण सची सरनाईआ। इक्को तीर्थ नहांदा, मजन चरण धूड़ समझाईआ। इक्को सिँघासण सुहांदा, प्रभ नाल मिल के खुशी बणाईआ। इक्को राग अलांदा, सिफ्तां ढोले गाईआ। मैं पुत्तर बणया नहीं किसे माँ दा, पिता पुरख अकाल गोद टिकाईआ। मेरा लहिणा देणा नहीं सूर गाँ दा, मज़्हबां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वणजारा इक्को नाँ दा, नाउँ निरँकारा दयां समझाईआ। कलयुग अन्तिम रूप वेख्या काँ दा, चारों कुण्ट कुण्ट हल्काईआ। सहारा दिसे कोई ना बांह दा, बाज़ू बल ना कोए प्रगटाईआ। दीन दुनी दा लेखा तक्कया दाअ दा, धोखे विच ख़लक खुदाईआ। हुण वक्त सुहञ्जणा होणा मुहम्मद वाले खुदा दा, खुद मालक आपणा खेल खिलाईआ। जिस वक्त मुकाउणा जुदा दा, जुज़ वक्खरा वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा प्रेम होणा इक्को फ़िदा दा, फ़ितरत जगत ना कोए रखाईआ। उस दा हुक्म वरतणा आपणी अदा दा, अदालत सच सच कमाईआ। कलयुग लेखा पूरा करना अलविदा दा, सतिजुग आमद विच ख़ुशी बणाईआ। पैग़म्बरां लहिणा मुकाउणा दुआ दा, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। अगे लहिणा देणा होणा इक्को रहनुमा दा, रैहबर इक्को नज़री आईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा होणा चा दा, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। जन भगतां माण वधणा भगत दुआरे थाँ दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका हुक्म सुणाए धुर दे नाँ दा, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सवरनी दे गृह पिण्ड आधी ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे जन भगतो मैं ब्राह्मण पुराणा बुड्ढा, बुढापे विच दयां जणाईआ। मेरा शरीर हो गया डुड्डा, अंगहीण हो के दयां जणाईआ। मैनूं चारों कुण्ट वजदा ठुड्डा, ठोकरां मारे ख़लक खुदाईआ। मेरा होश हवास उडा, सुरती सुरत ना कोए

रखाईआ। मैं वड़ गया कलयुग दी अन्धेरी खुड्डा, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। मैनूं याद आ गया इक संदेशा दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों बाहर सुणाईआ। नारदा जिस वेले परम पुरख आया उत्ते बसुद्धा, निरगुण हो के फेरा पाईआ। तिस दीन दुनी मेटणी दुबधा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। उहदा अस्व शब्द इक्को होवे कुद्दा, कुदरत दा कादर खेल खिलाईआ। जिस दे हुक्म विच नव सत्त दा होणा युद्धा, योद्धा आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को हुक्म नाम होणा उग्घा, उग्घण आथण वजे वधाईआ। जिस दे नाम कलम्यां दा लैण नहीं देणा भुग्गा, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। अन्तिम लहिणा देणा पूरा करना कलयुगा, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। सति धर्म वरोलणा पाणी विच्चों दुद्धा, छाछ दा लेखा रहे ना राईआ। भगतां सच सुहाउणा झुग्गा, गृह मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जिन्हां दा वक्त सुहञ्जणा पुग्गा, पूजण योग दए बणाईआ । सच प्रीती प्यार दस्से लुग्गा, लोयण नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, इक्को आपणा नाम करे उदा, उदै असत डंका दए वजाईआ।

१३३७ ✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ गुरबख्श सिंघ दे गृह पिण्ड नुशहरा ज़िला गुरदासपुर ✪ १३३७

२४ सतिगुर सच्चा साख्यात, धुर दरगाही मीत। हरिजन बणाए पारजात, किरपा कर त्रैगुण अतीत। आत्म परमात्म जोड़े २४
नात, काया करे ठांडी सीत। लोकमात पुछे बात, परम पुरख पतित पुनीत। निरगुण धार सरगुण रस देवे बूँद स्वांत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक हरिजन उत्तम रखे ज़ात। सतिगुर सच्चा मीतड़ा, मित्र प्यारा एक। जो भगत सुहेले करे पतित पुनीतड़ा, देवणहारा धुर दी टेक। चुरासी विच्चों बदले नीतड़ा, त्रैगुण माया ना लाए सेक। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, निज नेत्र आपे वेख। घर वखाए इक अनडीठड़ा, जिथ्थे वसे साहिब विसेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक नरेश। सतिगुर सच्चा नर नरेश है, आदि जुगादी एक। वसे सचखण्ड साचे देश है, रूप अनूप धरे अनेक। जिस दा लहिणा देणा विष्न ब्रह्मा शिव गणेश है, अवतार पैग़म्बर गुरुआं दए संदेश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक अगम्म विशेष। सतिगुर सच्चा सति सतिवन्त है, सति सतिवादी आप। आत्म परमात्म धुर दा कन्त है, तूं मेरा मैं तेरा दस्से जाप। हरिजन बणाए साची बणत है, त्रैगुण मेटे तीनो ताप। जिस दी महिमा सदा अगणत है, हरिजन मिटावणहारा रोग संताप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी

धुर दा बाप। सतिगुर साचा अगम्म है, अलख अगोचर आदि। जिस दा लेखा नाल ब्रह्म है, लहिणा जाणे सर्ब ब्रह्माद। जन भगतां लेखे लावे पवण स्वासी दम है, शब्द अनादी सुणावणहारा नाद। भाग लगा के काया माटी चम्म है, भेव खुलाए बोध अगाध। हरिजन उत्तम करे कर्म है, हिरदा अन्तर अन्तर साध। माया ममता मेटे भरम है, अन्तर विख गंवाए वाद विवाद। सच प्रीती बख्शे चरण है, सन्त सुहेले आपे लाध। नेत्र खोले हरन फरन है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिभगत हरिजन सदा लेखा जाणे आदि जुगादि।

१३३८
२४

१३३८
२४

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अतर सिँघ, चतुर सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द अगम्मा चोजी, जुग जुग आपणा चोज कराईआ। जन भगतां देवे आपणी सोझी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। चरण प्रीती बख्शे रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम हो के वेख वखाईआ। आत्म परमात्म बणे मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। बुद्धी तों परे दा बणे गोझी, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। हरिजन हरि जावे सोधी, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी प्रेमी, प्यार मुहब्बत विच वड्याईआ। नाम निधान दा बण के नेमी, निम्रता जुग जुग समझाईआ। जिस लहिणा देणा रख्या कुण्ट हेमी, गोबिन्द संग बणाईआ। जो इशारा दिता कामधेनी, रत्न रत्नां विच्चों समझाईआ। जो भेव खुलाया भगत सैनी, बिन सैनत गया समझाईआ। जो भेव चुकाया बाल्मीक रमैनी, रम्ईआ राम राम वड्याईआ। जो घनईए अर्जन दस्सी कहनी, कहि कहि गया सुणाईआ। जो इशारा नानक धार दिता त्रैबैनी, त्रैलोकां बाहर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर आप वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं प्रभ दा प्यारा बलू, बालक इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा जुग जुग मेरा हुक्म संदेशा घल्लू, लोकमात मात वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां फड़ाए पल्लू, गंढु इक्को नाम जणाईआ। उस दा भाणा भगत सुहेला कोई झल्लू, झलक वेखे चाँईं चाँईंआ। उह सब तों वड्डा अछल अछल्लू, वल छल धारी आपणी खेल प्रगटाईआ। जो सच सिँघासण सम्बल मल्लू, मालक हो के सोभा पाईआ। जिस दा नाम निधाना भल्लू, निशाना इक्को इक अख्वाईआ। जिस कलयुग अन्तिम मेटणा कल्लू, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म रलू, रल मिल आपणा खेल खिलाईआ। कूड़ कुड़यारी क्रिया सल्लू, अणयाला

आपणा तीर चलाईआ। सार पावे थल जलू, महीअल वेखे चाँईं चाँईंआ। जो सुहावणहारा निहचल धाम अटलू, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया दलू, दलिद्र विकार दए गंवाईआ।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञान सिँघ, तरलोक सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मैं रावी आर पार लँघा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा खब्बा पैर वेखो नंगा, कंडे ख़ार मैनूं रहे सताईआ। दूर दुराडी भज्जी फिरे गंगा, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। मैं झट रूप बदलया कलयुग जीवां वरगा बण गया बन्दा, बन्दगी वाला रूप दरसाईआ। अक्खां मीट के हो गया अन्धा, डंगोरी हत्थ विच उठाईआ। टक्करां मारां नाल कंधा, कन्ढी घाट वेख वखाईआ। नाल निशान उठा ल्या तारा चन्दा, चन्द सितार नाल मिलाईआ। फेर गाउण डह प्या तूं मेरा मैं तेरा छन्दा, सोहला ढोला गाईआ। झट गंगा कहे तूं किधरों आ गया पंडा, पंडता मैनूं दे समझाईआ। मैं इशारा दिता
१३३८ औह वेख लै गोबिन्द वाला खण्डा, जो खण्डर करे लोकाईआ। जिस दा रूप सत्तरंग दा डण्डा, डण्डावत दीन दुनी बदलाईआ। १३३८
२४ जिस दा लेखा होणा विच ब्रह्मण्डां, नवखण्डां खोजे चाँईं चाँईंआ। लेख वखाए जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज संग बणाईआ। २४
जिस मेटणा भेख पखण्डा, कलयुग क्रिया कूड़ करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मैं रावी दी वेखी इक छल, उछल उछल रही जणाईआ। वे पंडता कुछ लेखा याद कर लै लहिणा राजे बलि, बावन की गया दृढ़ाईआ। कलयुग दा अन्तिम तक लै फल, फली भूत होई लोकाईआ। नानक दी सुण लै इक गल्ल, जो दो जहानां गया जणाईआ। ज़रा मेरे होर अगे चल, आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर वेखणा कलयुग कल, कलूआ कन्ढी बैठा डेरा लाईआ। जो इशारा देंदा अरब वाले थल, काअब्यां नैण उठाईआ। फेर मेरी पार कर झल्ल, सरकड़े काहीआं पन्ध मुकाईआ। अगे वेख ईसा वाला दल, आपणी लै अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। रावी कहे नारदा मेरे वल वेख लै बिना अक्खीआं, नेत्र लोचन दी लोड़ रहे ना राईआ। की यमुना उत्ते इशारा दिता काहन सख़ीआँ, गोकल की समझाईआ। सीता राम दे कहिणे आशा रखीआं, वनवासी की समझाईआ। की ईसा ख़बरां सचीआं दस्सीआं, यूहना गया दृढ़ाईआ। किस बिध मुहम्मद बन्नीआं रस्सीआं, चार यारां संग बणाईआ। कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं ओसे दे विच फसी आं, फंद सके

ना कोए कटाईआ। मैं वहिणां विच जांदी नस्सी आं, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे अन्दर पैंदीआं गशीआं, हाए उफ़ मेरी दुहाईआ। मेरे विच तड़फण जल होड़े मच्छीआं, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। नाले सतिगुर अर्जन दीआं आसा तपीआं, बिना अग्नी तत जलाईआ। रावी कहे नारदा मेरे आर पार तपण वालीआं भठ्ठीआं, भठियाला कलयुग नज़री आईआ। सब दीआं आशा होईआं इक्ठ्ठीआं, कहि कहि रहीआं दृढ़ाईआ। मैं वाहो दाही फिरां नठी आं, बिन कदमां कदम उठाईआ। मेरा लहिणा देणा हथ्थ पुरख समर्थीआ, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ। जो मालक ख़ालक कलयुग रथीआ, रथवाही हो के वेख वखाईआ। मैं उसे दे सथर लथ्थी आं, यारड़े इक्को सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरीआं शरअ दीआं कटण वाला रस्सीआं, रस्ता बावस्ता हो के आपणा दए समझाईआ।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ तरलोक सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

रावी कहे मेरे घाट फिरे मुहम्मद दी ख़ाहिश, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। मकबरयां करदी फिरे तलाश, भज्जे वाहो दाहीआ। कूक कूक पुकारे मैं वेखणा चाहुंदी लाश ते लाश, लशकर नज़र कोए ना आईआ। नाले इशारा देवे शंकर उत्ते कैलाश, सहिज नाल दृढ़ाईआ। मैनूं तेरे उत्ते भरवास, भरोसे विच जणाईआ। मेरा लहिणा देणा तक लै ख़ास, भेव अभेदा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। रावी कहे मैनूं पवणां आ गईआं ठण्डीआं, सांतक सति सति वरताईआ। मैनूं याद आ गईआं रवीदास दीआं जुत्तीआं गंढीआं, पानहीआं संग बणाईआ। जिस इशारा दिता मेरे कन्ढीआं, सहिज सहिज सुणाईआ। जिस वेले प्रभू प्यार तों आत्मा होईआं रंडीआं, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। दीन दुनी दीआं धारा जाणीआं वंडीआं, मज़्ह्बां नाल टकराईआ। सैनतां मारन मेरीआं आरां रम्बीआं, बिन अक्खां अक्ख जणाईआ। उस वेले लेखा मुकणा जगत पखण्डीआं डम्बीआं, भेखाधारी वेखे थांउँ थाँईंआ। सदी बीसवीं चौधवीं जांदीआं होणीआं लँघीआं, आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दीआं पिठ्ठां होणीआं नंगीयां, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सुहागणां सीस नहीं वाहुणा नाल कंघीआं, साचा संग ना कोए बणाईआ। एह आशा रखी गोबिन्द धार कवी बवंजीआं, बावन बलि नूं गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे मुहम्मद दी आशा इशारा देवे सदी चौधवीं गोली, दूर दुराडी रही जणाईआ। मेरा

मालक ख़ालक परवरदिगार सांझा यार खेलण वाला होली, हौली हौली आपणा हुक्म वरताईआ। जो अमाम अमामा बदल के आ गया चोली, वेस अवेसा आपणा आप बदलाईआ। मैनूं इक्को बिना अक्खरां तों दस्सी उस ने बोली, अनबोलत राग जणाईआ। कलयुग अन्त सच दुआरा रिहा खोल्ही, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। रावी कहे गोलीए, मेरीआं सुण लै हाकां, आसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। शरअ दा जगत जहान इलाका, वंडण वंड ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दे कोल सब तों वखरा ख़ाका, ख़ाकसार करे लोकाईआ। ओह लहिणा देणा पूरा करे सब दा बाका, हिसाब अगला ना किसे जणाईआ। जिस दा हुक्म वरतणा ते खेल शुरू होणा ख़ाका, ढहि ढहि ख़ाक बणाईआ। उह पन्ध मार के वेखे आपणीआं वाटां, बिन कदमां कदम उठाईआ। चौदां तबकां खोल्ह के वेखे हाटा, चौदां लोकां ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं दा सब तों वखरा होवे साका, अन्त अख़ीर बेनज़ीर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े अस्व चढ़े अगम्मे राका, राकब हो के दो जहान वेखे चाँईं चाँईंआ।

१३४१ १३४१

२४ २४

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मैं रूप धर ल्या अगम्मे सिख दा, सिख्या सच सच समझाईआ। वणजारा बण गया प्रभू दी भिख दा, भिक्ख्या नाम मंग मंगाईआ। नैण उठाया तक्कया, की लेखे सतिगुर लिखदा, लहिणे की समझाईआ । नाले हिस्सा कढया भविख दा, भविख्तां फोल फुलाईआ। जेहड़ा स्वामी किसे नहीं दिसदा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। ओह प्रीतम बणया किस किस दा, किस नूं आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। नारद कहे मैं निगाह मारी पार उरार, रावी रमता रमता खोज खुजाईआ। मैनूं नज़र आया भगत वछल गिरधार, गिरवर आपणा खेल खिलाईआ। जो भगत सुहेला बण के मीत मुरार, मित्र प्यारा सखा सखाईआ। हरिजन साचे रिहा तार, तारनहार दया कमाईआ। जन्म जन्म दी पैज रिहा संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। एह खेल करे करतार, कुदरत कादर नूर अलाहीआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना संग मुहम्मद चार यार, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। अमाम अमामा हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा लेखा रविदास ने लिख्या नाल रम्बी आर, बिन अक्खरां अक्खर

बणाईआ। जिस लहिणा देणा कर्ज़ा देणा उतार, उत्तर पूरब वेख वखाईआ। पश्चिम दक्खण पाउणी सार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप वड सिक्दार, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ हरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मेरी किताब दा अगम्मा कन्ना, कायनात भेव खुल्हाईआ। जिस विच निशान तारा चन्ना, चन्न सितार दए वड्याईआ। जिस विच शरअ दा हद्द बंना, हदूदां रिहा वखाईआ। जिस विच खेल मनसा वाला मंना, ममता नाल वड्याईआ। जिस विच लहिणा जट्ट धन्ना, सहिज सहिज समझाईआ। जिस विच देहुरा नामे दा छप्पर छन्ना, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे इस विच अगम्मी इक सिहारी, पूरब लेख जणाईआ। जिस विच प्रभ दी जोत निरँकारी, निरवैर नज़री आईआ। जो सब दा

मीत मुरारी, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दा शब्द नाम जैकारी, ढोला दो जहान सुणाईआ। जो शाहो भूप सिक्दारी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जो जुग चौकड़ी लए अवतारी, निरगुण सरगुण रूप बदलाईआ। सो खेले खेल न्यारी, निरवैर धुरदरगाहीआ। भगतन मीता ठांडा ठारी, अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मेरी किताब विच तको बिहारी दा मूल, सोहणा भेव खुल्हाईआ । जिस विच धर्म दा अगम्म असूल, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा नाता नाल शंकर वाली त्रिशूल, त्रैलोकी धार दृढ़ाईआ। जिस दा मालक कन्त कन्तूहल, हरि करता इक अख्वाईआ। जो कदे ना जाए भूल, अभुल धुरदरगाहीआ। जो मालक कन्त कन्तूहल, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा पैग़म्बर नाल रसूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मेरी किताब दा अनोखा तको औंकड़, ओड़क दयां जणाईआ। जिस विच लहिणा चारे जुग चौकड़, चौकड़ी गंढु पुआईआ। उहदा अन्त अखीरी लहिणा पछोकड़, पिछला दए दृढ़ाईआ। उहदा हिस्सा तक्कया बिना वही खाते तों रोकड़, उधार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे मेरी किताब दा वेखो दुलैंकड़ा, दोवें धारा समझाईआ। जिस दी गिणती नहीं इकाई दहाई सैंकड़ा, हिन्दसिआं वंड ना कोए वंडाईआ। उह जुग

जुग बदलण वाला पैंतड़ा, दीन दुनी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दीआं वेखणहारा हैंकड़ा।

✪ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ११ मुखत्यार सिँघ दे गृह पिण्ड ममीआं ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे मेरी किताब दी की कहाणी, कहि कहि की जणाईआ। जिस दा रूप नूर नुरानी, नूर नुराने विच समाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली नहीं कोई बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। ओहदा इक्को मालक ख़ालक जाण जाणी, जानणहार धुरदरगाहीआ। जिस दे सदा सदा रखां चरण ध्यानी, बिन चरणां ख़ाक रमाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा बाप असमानी, इस्म आज़म नूर अलाहीआ। जो लहिणा देणा लेखा जाणे जिस्म जिस्मानी, ज़मीर बेनज़ीर वेख वखाईआ। मैं उस दे चरण कवल करां ध्यानी, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मेरी किताब दी निरअक्खर धार कथा, कथनी कथ ना कोए सुणाईआ। जिस विच इक्को हुक्म फ़रमान यथार्थ यथा, जो यादव काहन गया दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल करे पुरख समरथा, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। जिस दा धर्म दी धार सतिजुग चलणा रथा, रथवाही बणे बेपरवाहीआ। सब दा लहिणा देणा पूर कराए हथ्थो हथ्था, उधार रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां देवे नाम निधाना वथा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मेरी किताब हुक्म अनोखा दस्सदी, दो जहान जणाईआ। बिन मुख दन्दां तों हसदी, हस्ती तक नूर अलाहीआ। उह बणी वणजारी इक साहिब दे जस दी, सिफ्ती ढोले गाईआ। प्रेमण हो गई अगम्मे रस दी, बिन रसना रस चक्खे चाँईं चाँईंआ। एह कथा कहाणी नहीं किसे दे वस दी, वास्ता प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। ओहदा लेखा अगम्मा जिस विच खेल कलयुग रैण अन्धेरी मस दी, चन्द चांदना नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया जगत जहान फिरे डसदी, अगे ना कोए बचाईआ। निगाह साबत रहिणी नहीं किसे अक्ख दी, निज नेत्र खोल्ूण कोए ना पाईआ। दीनां मज़्बां धारा होणी वख दी, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल प्रभू दे चरणां होणी ढठ्ठदी, निव निव सीस झुकाईआ। मेरे उत्ते वड्याई रही नहीं मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दी, गुरुदुआर चर्च रहे कुरलाईआ। खेल वेख लै कलयुग कूड़ कुड़यारे हट्ट दी, कूड़ी क्रिया नाल हट्ट खुल्हाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले तेरी धार होवे ते होवे अनोखे जट्ट दी, जटा जूट समझ

कोए ना पाईआ। जिस दे हुक्म विच सदी चौधवीं जांदी टपदी, भज्जे वाहो दाहीआ। उह कला वरतणी उस समरथ दी, जिस नूं सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी किताब कहे मैं सथर लथदी, सेज यारड़ा अगम्म हंढाईआ।

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सन्तोख सिँघ दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪

कलयुग कहे मेरा रूप अगम्मा कल काती, कलूआ हो के सीस निवाईआ। तेरे प्यार विच नौ खण्ड पृथमी कीती अन्धेरी राती, सत्त दीप सच चन्द ना कोए चमकाईआ। किसे दा पर्दा खुल्ल्हे ना बातन बाती, अन्तर निरंतर भेव कोए ना पाईआ। मैं दीन दुनी दी ज़िंदगी विच्चों बदली हयाती, जीवन जीवन विच्चों दिता बदलाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी निगाह मार लै लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। मैं झगड़ा पा के अक्खरां वाला काग़ज़ाती, दीन दुनी दिती टकराईआ। धर्म दी कूड़ कुड़यार नाल विंन दिती छाती, छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। धर्म दी जगे कोए ना बाती, कमलापाती
१३४४ तेरी बेपरवाहीआ। तन वजूदां अन्दर सब दे बणया घाती, घाउ ममता मोह लगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी अन्तिम १३४४
२४ पुछ वाती, वारस हो के वेख वखाईआ। मेरी निक्की जेही बेनन्ती छोटी जेही बाती, सहिज सहिज नाल दृढ़ाईआ। जोती २४
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत सब तों वखरा अवल्ला, आलमीन देणी सरनाईआ। मैं नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धरनी वाला वेख्या महल्ला, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। निगाह मारी जला थलां, महीअल भज्जया वाहो दाहीआ। तेरे प्यार दा मेरे अन्तर आया बला, बलधारी हो के सेव कमाईआ। जिस कारन मुहम्मद तैनूं किहा अल्ला, यवले ज़ू फ़र्शे तलूह ज़खमम मुवा नूरे रुशना तेरी बेपरवाहीआ। मेरी कबूल कर दुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। कलयुग कहे मेरे मालक ख़ालक मेरे वल झाक, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। निगाह मार लै कलम्यां वाले विच कायनात, दो जहानां नौजुवाना श्री भगवाना पर्दा आप उठाईआ। मेरी सब तों वखरी निराली दीन दुनी दे मालक बात, बातन भेव अभेद आपणा दिता खुल्ल्हाईआ। जिस दी सूरत अकाल मूर्त रहिण नहीं दिती इकांत, अक्ल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। अमृत बूँद पीए ना कोए स्वांत, आबेहयात हथ्थ किसे ना आईआ। मेरे स्वामीआं अन्तरयामीआं मेरे खेल तक लै बहुभांत, अनक कल धारीआ अनक रूप आपणा आप वखाईआ। मैं झगड़ा पा के ज़ात पात, दीन दुनी

दिती लड़ाईआ। हिरदा किसे दा रहिण नहीं दिता शांत, सति विच ना कोए समाईआ। मेरा सब तों वखरा डूँग्घा तक लै खात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक बेपरवाहीआ। कलयुग कहे मेरे सतिगुर शब्दी शब्द दूलहे, दो जहान मालक तेरी सरनाईआ। मैनूं तेरे कौल इकरार अजे नहीं भूले, अभुल तेरी बेपरवाहीआ। मैं धर्म दे कायम रहिण नहीं दिते असूले, असल वसल तेरा यार ना कोए रखाईआ। सच प्यार दे लवे कोए ना झूले, मंज़ल हक चढ़न कोए ना पाईआ। तेरी चरण शरन दी किसे लैण ना देवां धूले, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा बच्चा नन्हा, नव नौ चार दे मालक देणी वड्याईआ। मेरे विच गोबिन्द ने इक्को तेरे हुक्म दा लाया कन्ना, कायनात समझ किछ ना आईआ। जिस विच दीन दुनी दा अन्त अख़ीरी दस्सया बंना, जगत हदूदां डेरा ढाहीआ। जिस नूं पुरख अकाले दीन दयाले तूं किहा आपणा चन्ना, जोती जाते आपणा नूर नूर चमकाईआ। जिस दा वसेरा बिना छप्पर छन्ना, जगत महल डेरा कदे ना लाईआ। मेरा उस बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार नूं फड़ा दे पल्ला, पल्लू इक्को गंढु बंधाईआ। जेहड़ा
१३४५ आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धार अछल अछल्ला, वल छल धारी आपणा खेल खिलाईआ। जिस ने अवतार पैग़म्बरां १३४५
२४ गुरुआं निरगुण सरगुण धार लोकमात घल्ला, तन वजूदां दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा २४
कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा इक्को सुत दुलारा, बिन ततां नज़री आईआ। तेरी रज़ा दा मंनदा रिहा इशारा, राज़क रिज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। जोती जाते तेरे चरण कवल रखदा रिहा सहारा, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। तेरा नाम कलमा बिन अक्खरां पढ़दा रिहा ते लाउंदा रिहा जैकारा, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। तूं मेरा साहिब स्वामी परवरदिगारा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। तेरा रूप अनूपा शाहो भूपा कलि कल्की अवतारा, अनक कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। तूं अमाम अमामा होवें ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप करें रुशनाईआ। जिस दा खेल दो जहान होवे दोबारा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। मैनूं तेरे चरण कवल सहारा, चरणोदक लै के ख़ुशी बणाईआ। लेखा तक लै पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी हो के ध्यान लगाईआ। जिस दा मूसा ईसा मुहम्मद दए इशारा, बिन सैनत सैनत लगाईआ। उस दा अन्त तक किनारा, घाट पतण फोल फुलाईआ। उह सांझा मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। बेशक मेरा चार कुण्ट अँधयारा, अन्ध अज्ञान विच रखी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ । कलयुग कहे प्रभू मेरे विच की अनहोणीआं होईआं, मैनूं

समझ कुछ ना आईआ। ज़रा वेख लै पैग़म्बरां वालीआं पेशीनगोईआं, जो पेशतर गए दृढ़ाईआ। भविख्तां नाल अवतारां आसां तक परोईआं, प्रेम प्रेम नाल दृढ़ाईआ । कलयुग अन्त सुरतीआं उठणीआं नहीं सोईआं, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। धर्म दीआं प्रीतां जाणीआं खोहीआं, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। नौ खण्ड पृथमी फिरनीआं दरोहीआं, बिन नेत्र लोचन रोवे ख़लक खुदाईआ। आत्मा परमात्मा नाल जाणीआं नहीं छोहीआं, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त इक्को मंग मंगाईआ। कलयुग कहे प्रभू तैनूं मेरा इक्को सजदा सलाम, सलामां लैण वाल्या दयां जणाईआ। मेरे कोल तेरा अगम्मी कलाम, जिस नूं कायनात विच समझ कोए ना पाईआ। जिस दी शरअ विच सारे होए ग़ुलाम, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं नूर नुराना शाह सुल्ताना इक अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिन सदी चौधवीं संग चार यार मुहम्मद लेखा मेटणा तमाम, तमअ लालच रहिण कोए ना पाईआ। जिस मेरा अन्त कन्त भगवन्त हो के करना इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। बेशक मेरी रैण अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

१३४६ वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे प्रभू मेरीआं वेख मेहरवानीआं, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। मेरे हुक्म १३४६

२४ नाल नौ खण्ड पृथमी अन्दर भरीआं बेईमानीआं, बेवा होई ख़लक ख़ुदाईआ। धर्म दीआं रहीआं ना कोए निशानीआं, निशान २४

तारा चन्द दए गवाहीआ । मैं कूड़ कुड़यार दीआं घर घर मारीआं कानीआं, जूठ झूठ अणयाला तीर चलाईआ। प्रेम रहिण नहीं दिता रसना वालीआं बाणीआं, जिह्वा ढोले सारे गाईआ। माण रिहा नहीं अठसठ पाणीआं, सरोवरां रंग ना कोए रंगाईआ। मुहब्बत रही नहीं जीव प्राणीआं, पुराण अठारां देण गवाहीआ। तेरे नाम दीआं सुरतीआं मूल रहीआं ना शाहणीआं, कौडी कौडी आपणे हट्ट विकाईआ। तूं पुरख अकाले दीन दयाले हर घट जाण जाणीआं, जानणहार वेखणा चाँईं चाँईंआ। मैं झगड़ा पाया विच चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज बचया नज़र कोए ना आईआ। भेव खोल्हे कोए ना चारे बाणीआं, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रंग ना कोए समाईआ। मंज़ल हक मिले ना मूल रुहानीआं, रूह बुत करे ना कोए सफ़ाईआ। जिस दा ईसा किहा लेखा मेरा बाप असमानीआं, मुहम्मद इस्म आज़म ओसे नूं कहि के गया सुणाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा बाहर जिस्म जिस्मानीआं, तन वजूदां वंड ना कोए वंडाईआ। ज़रा निगाह मार लै मजीद कुरानीआं, कुरा काया काअब्यां वाला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं अलख जगाउँदा हां। लख चुरासी विच्चों आपणे भगत सन्त सूफ़ी कढ लै ख़ालस, ख़ालस तेरे दर

ते वेख वखाउंदा हां। दीन दुनी दे मालक मंग मंगाउंदा हां। किरपा करनी ख़लक दे ख़ालक, दर ठांडे सीस निवाउंदा हां। जिन्नां दे अन्दर मेरे प्यार दा लालच, लोभीआं राय धर्म हथ्थ फड़ाउंदा हां। मैं तेरे हुक्म नाल नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लाउण वाला माचिस, अग्नी तत तत जलाउंदा हां। तेरे नाल मेरा लेखा तूं मेरा मालक इक्को वास्तक, वास्ता तेरे अगे पाउंदा हां। तेरी दीन दुनी तेरे नालों कीती नास्तक, बिन तेरी किरपा आस्तिक वेखण कोए ना पाउंदा हां। मैं धर्म दी किसे कोल रहिण नहीं दिती विरासत, ख़ाली हथ्थ सर्ब दरसाउंदा हां। मैं चाहुंदा प्रभू भुल्लण वाल्यां अन्तिम सतिगुर शब्द दी दे विच हिरासत, अगे हो ना जिथ्थों कोई छुडाउंदा हां। तेरे अगे मेरे मेहरवाना किसे दी चले की सिआसत, बुद्धी वाल्यां मैं भरांत भुलेखयां विच भुलाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्को देणा दान, मेरे साहिब श्री भगवान, करनी दे करते कुदरत दे कादर दर तेरे वास्ता पाउंदा हां।

 ✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪ १३४७ २४

सतिगुर शब्द कहे सुणो हुक्म धुर निरँकारी, सो पुरख निरञ्जण अगम्म अथाह की दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरञ्जण भेव अभेदा की दस्से खेल अपारी, अपरम्पर स्वामी अन्तरयामी भेव की जणाईआ। एकँकार शाह सिक्दार की संदेशा देवे आपणी धारी, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आपणा हुक्म वरताईआ। आदि निरञ्जणा जोती जाता किस बिध नूर जोत करे उज्यारी, उजाला हरि गोपाला आपणा आप प्रगटाईआ। अबिनाशी करता दुःख हरता की खेले खेल दो जहानां बाहरी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर की आपणा हुक्म वरताईआ। श्री भगवान नौजवान किस बिध पर्दा रिहा उतारी, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण नव सत्त आपणा भेव चुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चारी, कलयुग अन्त श्री भगवन्त की आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द योद्धा सूरबीर बली बलकारी, बलधारी की आपणी कार कमाईआ। किस बिध विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर पावे सारी, गण गंधरव रिहा हिलाईआ। धरनी धरत धवल धौल वेखे विगसे किस बिध होवे ख्वारी, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा वेखे तेई अवतारी, रामा कृष्णा भेव रहे ना राईआ। पैग़म्बरां देवणहार हुलारी, रसूलां नबीआं रिहा जगाईआ। गुर गुरदेव पावे सारी, गुर गुर आपणी खेल खिलाईआ। परम पुरख परमात्म निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, उजाला करे थांउँ थाँईआ। नाद शब्द जणाए धुन्कारी, अनहद नादी

नाद सुणाईआ। अमृत रस बख्श के ठण्डा ठारी, अंमिओं रस आप चुआईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पावणहारा सारी, महासार्थी आपणा पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा लेखा दो जहान, दोहरी आपणी कल वरताईआ। की हुक्म संदेशा देवे श्री भगवान, भगवन हो के की दृढ़ाईआ। नवखण्ड लेखा मार ध्यान, बिन नेत्र नैणां नैण उठाईआ। किस बिध शरअ होई शैतान, शरीअत आपणा रूप बदलाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए विधान, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। इष्ट दिसे ना सीता राम, कृष्ण काहन संग ना कोए निभाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, पैग़म्बरां रंग ना कोए चढ़ाईआ । सति सच दा देवे कोए ना दान, गुर गुरदेव मन्त्र अंग ना कोए लगाईआ। जिधर वेख्या ओधर फिरे शैतान, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं दो जहानां हुक्मरान, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म करारा, कुदरत कादर दए वड्याईआ। मैं लहिणा देणा वेखणा सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। लहिणा देणा तकणा तेई अवतारा, अवतर हो के वेख वखाईआ।
१३४८ पैग़म्बरां दस्सणा अगम्म इशारा, जगत सैनत बाहर समझाईआ। गुर गुरदेव दस्स भेव न्यारा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। १३४८
२४ चौथे जुग करां खेल न्यारा, न्यॉंकारी हो के वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया किस बिध मेटां अँधयारा, अन्ध आत्म रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग सच सति किस बिध होए उज्यारा, लोकमात धरनी धरत धवल लए अंगड़ाईआ। किस बिध इक्को इष्ट होए निरँकारा, बिना पुरख अकाल सीस ना कोए निवाईआ। इक्को नाम कलमा होए जैकारा, रसना ढोला इक्को गीत गाईआ। इक्को मन्दिर मसीत होवे गुरुदुआरा, चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को परम पुरख होवे निमस्कारा, इक्को कदमबोसी विच सारे लागण पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म होणा अगम्मा, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। मैं संदेशा देवणहारा विष्नूं नाल ब्रह्मा, ब्रह्मांड दयां दृढ़ाईआ। शंकर रहे कोई ना भरमा, शम्भू दयां जणाईआ। तिन्ने वेखो दीन दुनी दा कर्मा, कर्म कांडा खोज खुजाईआ। लहिणा देणा तको काया माटी चर्मा, चम्म दृष्टी ध्यान लगाईआ। निगाह मारो वरनां बरनां, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश खोज खुजाईआ। दीनां मज़्बां वेखो धर्मा, धरनी धरत धवल धौल पर्दा लाहीआ। अगला हुक्म पुरख अकाले आप करना, करनी दा करता की दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव मानस मानुख आपणा कीता भरना, भाण्डा भरम भउ ना कोए भनाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर दा भाणा सब ने जरना, अवतार पैग़म्बर गुर सीस २४

सके ना कोए उठाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार जगत हँकार माया ममता अग्नी सड़ना, ततव तत तत जलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार नवां घाड़न घड़ना, घड़न भन्नृणहार इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म नाल तूं मेरा मैं तेरा सब ने इक्को ढोला पढ़ना, आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। सच दुआर एकँकार सब ने धाम अगम्मे वड़ना, जिथ्थे दीन मज़्ह्ब ज़ात पात ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। साची मंज़ल हक हकीकी लाशरीकी आत्म धार चढ़ना, पारब्रह्म ब्रह्म मिलके वजे वधाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी इक्को दुआरे खड़ना, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं इक्को धुर दा संगी, आदि जुगादि अख्वाईआ। मेरा खेल सदा बहुरंगी, भेव सके ना कोए पाईआ। जिस दे हुक्म विच कोटन कोटि जुग चौकड़ी लँघी, नव नव चार दा डेरा ढाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वस्त देवां अनमंगी, धुर दा नाम कलमा झोली पाईआ। शरअ दी धार चलावां चंगी, जुग जुग धुर दी बेपरवाहीआ। सच प्रेम दा देवां अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दीनां मज़्ह्बां ला पाबन्दी, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। निरअक्खर धार प्रगटा के छन्दी,
१३४६ नाम कलमे दयां दृढ़ाईआ। जो रसना जिह्वा गावण बत्ती दन्दी, मुख होठां नाल सलाहीआ। विच हुक्म दी रख के कंधी, १३४६
२४ हिस्से दीन दुनी वखाईआ। फेर शब्द धार सब नाल कीती संधी, बिन हरफ़ हरूफ़ लिखाईआ। आपणे हुक्म दी रख विच २४
पाबन्दी, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं हुक्म दृढ़ाईआ। जगत दी धार मज़्ह्ब दी डण्डी, डण्डावत दिती समझाईआ। अन्तिम सब ने लेखा जाणा छडी, सगला संग ना कोए निभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि सच निशान नौजवान दो जहान रिहा गड्डी, गॉड हो के आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ तरलोक सिँघ दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर सच्चा तारदा, तारनहारा एक। जुग जुग पैज संवार दा, बख्शे धुर दी टेक। बाण अणयाला तीर मारदा, करे बुध बिबेक। रस देवे अमृत धूड़ी छार दा, त्रैगुण माया लाए ना सेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन बणाए सुत दुलारे नेक। सतिगुर सदा रंगदा, काया चोली मीत। प्यारा बणे धुर दे संग दा, साची सच चलाए रीत। प्यार मुहब्बत विच अन्दर लँघदा, झगड़ा मिटा मन्दिर मसीत। नाम सुणाए आपणे मृदंग

दा, त्रैगुण हो अतीत। पर्दा लाहे दूई दुवैती कंध दा, खेल वखाए आप अनडीठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन कौड़े मिट्ठे करे रीठ। सतिगुर शब्द सदा बख्शंदड़ा, बख्शणहार स्वामी। भेव अभेद खुलंदड़ा, पर्दा लाहे अन्तरजामी । सच धाम सुहंदड़ा, गृह मन्दिर दिसाए अनामी। इक्को रंग चढ़ंदड़ा, उतरे ना दो जहानी। भेव अभेद खुलंदड़ा, मंज़ल दस्से अगम्म रुहानी। साचा संग निभंदड़ा, पर्दा लाहे मस्तक पेशानी। शब्दी नाद सुणंदड़ा, बिन रसना सुणाए बाणी। जोती जोत जगंदड़ा, बिन तेल बाती दीआ करे नुरानी। घर गुरमुख मेल मिलंदड़ा, पन्ध मुकाए दो जहानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत नेत्र हरिजन रहिण देवे ना अन्धड़ा, नूर नुराना कर उज्यार।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुरजन सिँघ दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर साचा सदा बेअन्त, परवरदिगार सांझा यार अगम्म अखवांयदा। आदि जुगादी दो जहानां बणे धुर दा कन्त,
१३५० कन्त कन्तूहल इक अखवांयदा। नाम निधाना श्री भगवाना देवे मंत, मन्त्र निरंतर इक्को इक दृढ़ांयदा । हरिजन भगत १३५०
२४ बणाए आपणे सन्त, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हो के भेव खुलांयदा। मानस जन्म बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार २४
आपणा हुक्म समझांयदा। माया ममता मोह विकार लेखा रहे ना अगणत, गिणती गणत ना कोए जणांयदा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझांयदा। मेल मिला के साची संगत, वरनां बरनां डेरा ढांयदा। बोध अगाधा दीन दुनी दा बणके पंडत, निरअक्खर आप पढ़ांयदा। भेव खुला के बहिश्त जंनत्त, दरगाह साची सचखण्ड टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा खेल खिलांयदा। सतिगुर पूरा परम पुरख परमात्म, परमेश्वर इक अख्वाईआ। जो मेल मिलाए निरगुण धार आत्म, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। पर्दा ओहला रहिण ना देवे काया अन्दर बातन, पोशीदा आपणा खेल खिलाईआ। अन्तर निरंतर मेटे अन्धेरी रातन, नूरी जोत चन्द करे रुशनाईआ। भगत सुहेला ठांडा सीता हरिजन आपे पुछे वातन, वारस हो के वेख वखाईआ। मानस जन्म पैज संवारे विच लोकमातन, धरनी धरत धवल धौल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द जन भगत सुहेला मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दी जगत निराली रीत, रीतीवान आपणा भेव चुकाईआ। पर्दा लाह के त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी आपणा भेव खुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बिन रसना

जिह्वा दस्सके गीत, गोबिन्द मेला मेले सहिज सुभाईआ। दिवस रैण वसे चीत, चितवित ठगौरी मन ना कोए जणाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले करे पतित पुनीत, दुरमति मैल अन्तर निरंतर दए धुआईआ। एका रंग रंगाए दया कमाए हस्त कीट, ऊँच नीच दा डेरा ढाहीआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। धाम वखाए इक अनडीठ, सचखण्ड दुआरा एकँकारा आप दरसाईआ। जा के वसे बीठलो बीठ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी गोबिन्दा, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रूप समाईआ। एथे ओथे दो जहानां गुणी गहिन्दा, गहर गवर गम्भीर बेपरवाहीआ। जो नाम निधाना निरगुण धार दिन्दा, देवणहारा एकँकारा इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण हो के सद बख़शिंदा, रहमत रहीम आपणी आप कमाईआ। हरिजन सद मेटणहारा चिन्दा, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। गुरमुख गुरसिख आपणी बणाए बिन्दा, वृंदावन दे काहन दा लेखा दए मुकाईआ। अमृत धार वहाए काया अन्दर सागर सिन्धा, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। बजर कपाटी तोड़ के जिंदा, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। भगत सुहेला दीन दयाल सदा बख़शिंदा, बख्शणहारा धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीउ पिण्डा, इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरी अगम्मी सिख्या, काग़ज़ कलम शाही खेल ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां पावां भिच्छया, भिक्खक भिखारीआं झोली दयां भराईआ। मेरी जगत जहान तों बाहर दी सिख्या, सच स्वामी अन्तरजामी हो के पर्दा दयां उठाईआ। जगत जहान दस्सां मिथ्या, लोकमात सद रहिण कोए ना पाईआ। अगला मार्ग दस्सां अनडिठ्ठया, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। अमृत रस चखावां निझर मिठ्ठया, बिन रसना रस बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भेव अगम्मा खोल्हदा, नाम निधाना इक जणाईआ। डंक वजावां अगम्मे ढोल दा, जगत सुरंगा हथ्थ ना कोए उठाईआ। पर्दा लाहवां आत्म परमात्म कोल दा, काया काअबा इक समझाईआ। जिथ्थे जोत सरूपी पुरख अकाला मौल दा, मौला हो के नज़री आईआ। ओह वायदा पूरा करे इकरार कौल दा, कुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। जेहड़ा बजर कपाटी पर्दे खोल्हदा, त्रैकुटी पन्ध रहे

ना राईआ। लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले विरोलदा, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोलदा, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। बिन तकड़ तराज़ू तोलदा, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां चोली रंगदा, रंगणहारा मीत मुरार। मालक बणे धुर दे संग दा, विछोड़ा रहे ना विच संसार। अमृत जाम प्याए अगम्मी गंग दा, बिन रसन जिह्वा ठण्डा ठार। नाद सुणाए धुर मृदंग दा, अनहद नादी धुन दए धुन्कार। गुरसिखां अन्तर निरंतर लँघ दा, जोती जाता हो उज्यार। सुख देवे सच अनन्द दा, अनन्दपुर वासी दए अधार। लेखा मुकाए भरमां वाली कंध दा, कुदरत दा कादर दिसे सांझा यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक एकँकार। सतिगुर शब्द कहे बख़ज़म नाविज़ली ज़मू नज़ुख़ते ज़वा अर्शे दुआ गुल मज़ीउल ज़कुम ज़हू वज़ी ज़माए ज़कल वुज़ल वख़मम ज़गू अर्शे ज़विती फ़र्शे मज़ू कुदरते कादर करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म चानूचसती अमज़े वरी ज़फतो ज़वी, नूरे कवी

१३५२ गोशाए ख़विद मुहम्मदे ज़विद ज़मीने ज़ख़न असमाने ज़वन चौदां तबके तलूह फ़र्शे वज़ू अर्शे नज़ू नूर नुराना नूर अलाहीआ। १३५२

२४ सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्म गहर गम्भीरा, गवर गवर गवर दृढ़ाईआ। मेरा लेखा बेनज़ीरा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। २४

मेरा हुक्म शब्द शमशीरा, शरअ दे लेखे दए मुकाईआ। जो संदेशा दे के गया कबीरा, कबरां तों बाहर सुणाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां किहा लातस्वीरा, जिस नूं तसव्वर मुसव्वर कर ना कोए समझाईआ। ओह शाहो भूप दीन दुनी दी बदलण वाला तकदीरा, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। सतिगुर शब्द कहे वेद मद्धम ज़विस्ते ज़दम नाख़लसे ज़वा रहिनुमाए खुदा यदीउम ज़वी ज़म्बा ज़विल ज़कम नूरे ज़वी ज़ख़त्म ज़ख़त्म ज़खू कमल वज़नज़ी बेनज़ी लाशरीक शरक्त तों बाहर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दे हुक्म दा हुक्म होवे शुरू, शरअ शरीअत जगत जुगत समझ कोए ना आईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ ज्ञानो दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर सदा ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणयां दए वड्याईआ। जुग जुग संवारनहारा काज, करनी दा करता इक अख्वाईआ। सति धर्म दा सीस पहनाए ताज, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। सृष्टी विच्चों मार उठाए आवाज़, सोई सुरत जगाईआ। जन्म जन्म दा लेखा दए विच समाज, समग्री धुर दा नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक दया कमाईआ। सतिगुर पूरा जन भगतां करे उत्तम भाग, भगवान हो के दया कमाईआ। अन्तर उपजाए इक वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, दुरमति मैल धुआईआ। सोई सुरती जाए जाग, शब्द नाद करे शनवाईआ। हरिजन वड्डे वड करे भाग, भगवन सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण माया ना डस्से नाग, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। घर दीपक जगाए चिराग़, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ । सतिगुर मेला होवे कन्त सुहाग, विछोड़ा जगत रहे ना राईआ। अन्त कन्त भगवन्त आत्म आपणे हथ्थ पकड़े वाग, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया बुझावणहारा आग, अमृत मेघ मेघला अगम्म बरसाईआ। १३५३ १३५३

२४ २४

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड सिम्मल सकोल ज़िला गुरदासपुर ✪

जन भगतो तुहाडा प्यार बड़ा अनमुला, कीमत सतिगुर दए चुकाईआ। सच प्रीती दा गफ्फ़ा देवे खुल्ला, अतोट अतुट वरताईआ। जिस दी कीमत कोई चुका सके ना मुल्ला, गिणती गणत विच ना कोए लिआईआ। मुहब्बत विच हकीकी बख़्शे सुल्ला, सुल्हकुल दए वड्याईआ। जो चरण दुआरे आ गया भुल्ला, भुल्लयां भटकयां फड़ फड़ पार कराईआ। इक इक दे पिच्छे तार के जाणा कुला, कुलवन्ता हो के दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। जन भगतो तुहाडा प्यार बहुता वड्डा, अन्त कहिण किछ ना पाईआ। इक्को रंग रंगाए बुढ्ढा नढ्ढा, जवानां आपणा संग रखाईआ। धर्म दी धार निशाना तुहाडे हिरदे अन्दर गड्डा, सकोल दी कोयल कूक कूक सुणाईआ। तुहाडा भाग मथोर सतिगुर धर्म दुआर बणाए अड्डा, अड्डी चोटी तक रंग दए रंगाईआ। बेशक तुसीं वसदे काहीआं कानयां विच खड्डा, आपणा आसण लाईआ। तुहाडे नाल रातीं सुत्तयां दिने जागदयां लडावे लड्डा, फड़ फड़ बाहों गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

जन भगतो तुहाडा प्यार किड्डा सोहणा, सोहणिउं सोहणा नज़री आईआ। तुहानूं सतिगुर आपणी मुहब्बत विच मोहणा, मोह इक्को इक रखाईआ। तुहाडा जन्म जन्म दा पाप धोणा, दुरमति करे सफ़ाईआ। तुहाडे काया मन्दिर अन्दर सौणा, सच सिँघासण आसण लाईआ। तुसां प्रेम नाल आत्म सेजा पलँघ विछाउणा, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। कानयां कंडयां विच तुहाडे गृह गृह भाग लगाउणा, भागां वाल्यो वड भाग दए बणाईआ। चार जुग दे शास्त्रां तुहाडे बच्चयां दा नाँ गाउणा, नंन्हिआ दए वड्याईआ। तुसां सुख दी नींदे सतिगुर दी गोदी सौणा, जिथ्थों सुत्तयां ना कोए उठाईआ। धर्म राय नूं धक्के मार के परे हटाउणा, चित्रगुप्त तुहानूं वेखण कदे ना पाईआ। जदों चाहोगे दर्शन घर घर आ दिखाउणा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तुहाडा प्यार दा गाया सतिगुर प्यार विच लेखे लाउणा, अगला लेख होर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। जन भगतो तुहाडी रसना जिह्वा बड़ी खुशहाली, खुशीआं ढोले गाईआ। सतिगुर तुहाडी करे दलाली, विचोला इक्को सोभा पाईआ। जल्वा नूर बख्शे लाली, लालन हो के आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडी प्यार मुहब्बत धार बाहली, बहु आपणा रूप दरसाईआ। जेहड़ी सच दी घाल
१३५४ घाली, लेखे तुहाडे लए लगाईआ। फल लगावे पत्त डाली, टहणी टहणी आपणे रंग महकाईआ। तुहाडीआं झोलीआं भरे १३५४
२४ ख़ाली, वस्त अमुल अतुल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी २४
करनी कार कमाईआ। सकोल दी धरती कहे प्रभू मेरी इक अरदास, बेनन्ती दयां जणाईआ। साढे तिन्न दिन बाल्मीक ने एथे रख्या सी वास, आशा राम लव कुश कुश वड्याईआ। नाले बचन बोल्या ख़ास, सहिज नाल सुणाईआ। जिस वेले आवे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। भगतां नाल मिल के खुशी दी पावे रास, आत्म परमात्म गोपी काहन नाच नचाईआ। किसे नूं होण ना देवे उदास, चिन्ता ग़मी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। ओसे दे लहिणे पिच्छे सब दी करके जाए बन्द खुलास, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सदा सुहेला इक इकेला निज नेत्र लोचन आपणा नूर करे प्रकाश, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो मैं तुहानूं खुशीआं नाल देवां शाबाश, सिर सिर तुहाडे हथ्थ टिकाईआ। तुहाडी बेनन्ती मन्जूर होई अरदास, अरदासा सोधण दी फेर लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ संसार सिँघ पिण्ड हेम राज पुर तहसील हीरा नगर डाकखाना पंनू कोट ज़िला कठूआ ✪

भगतां अन्दर हरि वसदा, नूर नुराना कर उज्यार। आत्म परमात्म मार्ग दस्सदा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले कन्त भतार। सिफ्ती ढोला इक्को दस्सदा, तूं मेरा मैं तेरा शब्द उच्चार। भण्डारा देवे अंमिओं रस दा, बूँद स्वांती आप निरँकार। मनुआ दहि दिशा ना होवे नसदा, सुरती शब्द पावे सार। तीर अणयाला इक्को कसदा, कूड़ी क्रिया मारे मार। मेटे वक्त दुहेला रैण मस दा, जोती जाता होए आप उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक एकँकार। जन भगतां हरि मेलदा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। नाता जोड़े सज्जण सुहेल दा, सचखण्ड वासी दया कमाईआ। जुग जुग खेल अगम्मा खेलदा, निरगुण सरगुण लए मिलाईआ। नाता तोड़े जगत नवेल दा, धुर संजोगी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। भगत जनां प्रभ निज नेत्र खोल्हे अक्ख, लोचन नैण जगत ना कोए वड्याईआ। शाहो भूपी सति सरूपी दरस देवे प्रतख,
१३५५ सनमुख हो के नजरी आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों लए रख, रक्षक हो के दया कमाईआ। माया ममता मोह विकार १३५५
२४ नालों करे वख, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। भण्डारे ख़ाली भरे सख, वस्त नाम नाम वरताईआ। इक जैकारा दस्से २४
अलख, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। जन भगतां प्रभ दस्से अगम्मी प्रीत, प्रीतम हो के दया कमाईआ। काया करे ठण्डी सीत, जगत अग्नी ना कोए तपाईआ। बिन रसना जिह्वा दस्से गीत, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। झगड़ा मेटे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक वखाईआ। जिथ्थे वसे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी हो के आसण लाईआ। जन भगतां हथ्थ रखे पुश्त पनाह पीठ, जुग जुग आपणी दया कमाईआ। काया मिठ्ठा करे कौड़ा रीठ, रस अमृत नाम भराईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। जन भगतां प्रभ काया चोला रंगदा, रंगणहार करतार। साथ बख्शे धुर दे संग दा, आत्म परमात्म मेला नाल कन्त भतार। अमृत रस धार वहाए अगम्मी गंग दा, झिरना झिराए अपर अपार। आसण सुहाए आत्म सेज पलँघ दा, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। नाम सुणाए शब्द अनादी मृदंग दा, धुन आत्मक दए धुन्कार। अमृत मेघ बरसाए ठण्ड दा, कवल नाभी उलटी कर बूँद बख्शे धुर दी धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सच दा मालक इक अख्वाईआ। भगत जनां प्रभ वेखणयोग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। सति सतिवादी इक्को बख्शे योग, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म होए संजोग, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। अन्तर निरंतर हउमे हंगता कढ्ढे रोग, माया ममता ना कोए हल्काईआ। सति सच दी बख्शे चोग, चुगली निंदया बाहर रखाईआ। बिन रसना जिह्वा आत्म रस दा देवे भोग, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दा मेटे वियोग, संजोगी मेला सहिज सुभाईआ। कर्म कांड दा रहे कोए ना रोग, इक्को रंगत आपणी दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। साचा संग निभावणहारा, हरि करता इक अख्वाईआ। आदि जुगादी देवणहारा, जोती जाता धुर दा माहीआ। भगत सुहेले मेलणहारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरंतर खोलूणहारा, पर्दा बजर कपाट तुड़ाईआ। नाद धुन सुणावणहारा, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। दीपक जोती जोत जगावणहारा, बिन तेल बाती डगमगाईआ । भगत सुहेला इक इकेला आदि जुगादी वेखणहारा, वेखे विगसे थांउँ थाँईंआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त भगवन हो के पावे सारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता
१३५६ होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा १३५६
२४ हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि अन्त ना पारावारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त २४
कहि के सारे रहे गाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ११ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड अन्तोर ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां कलयुग अन्त, अन्तष्करन तकां ख़लक खुदाईआ। मेहरवान श्री भगवान किरपा करे अनन्त, अनक कलधारी आपणी दया कमाईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर वेखां धर्म धार दा मंत, मंतव आपणा हल्ल कराईआ। कवण काया चोली रंग चढ़ाए बसन्त, पत्त टहणी फल फुल्ल मात महकाईआ। कवण बणाए साची बणत, साचे रंग कवण समाईआ। गढ़ वेखां हउमे हंगत, हँ ब्रह्म खोज खुजाईआ। दीन दुनी दे वेखां पंडत, जगत विद्या फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां जगत जहान सृष्टी, श्रेष्ट आपणा पर्दा लाहीआ। धर्म दी धार तकां अन्तर निरंतर इष्टी, इष्ट देव कवण मनाईआ। नाल लेखा वेखां जो राम दिता वशिष्टी, विषयां तों बाहर समझाईआ। जिस दा लेखा नहीं टाक जिसती, हिन्दसे अंकड़े वंड

ना कोए वंडाईआ। जिस नूं समझ सके ना कोए गृहस्ती, मन मति बुद्ध ना कोए चतुराईआ। जिस दी धार नेत्र नहीं दिसदी, लोचन वेखण कोए ना पाईआ। ओह खेल अगम्मी पुरख अकाले पित दी, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । सतिगुर शब्द कहे मैं पर्दा देणा चुक, चौथे जुग भेव खुल्हाईआ। ओहला रहे कोए ना लुक, भेव अभेदा दयां जणाईआ। जिस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया पैंडा जावे मुक, अगे पन्ध ना कोए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दी होवे तुक, ढोला सोहला इक्को राग दृढ़ाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार सारे जावण झुक, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता हो के आपणी गोदी लए चुक्क, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिस दी मंज़ल विच हरिजन कोई ना जावे रुक, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा होवे खेल निराला, निराकार दृढ़ाईआ। दीपक जगा जोत अकाला, अकल कलधारी खेल खिलाईआ। सति सरूप बण दीन दयाला, दीनन वेखां चाँईं चाँईंआ। सम्बल दा मालक

१३५७ हो के सब दी करां संभाला, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हुक्मे विच रख काल महाकाला, आपणी कार कमाईआ। १३५७

२४ अवतार पैग़म्बर गुर जो संदेशा दे के गए सति सच दी धर्मसाला, दरगाह साची सच जणाईआ। तिन्हां दी बेनन्ती वेखां २४

नाल सवाला, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सच करनी कार कमाएगा। सो पुरख निरञ्जण खेल खिलाएगा। हरि पुरख निरञ्जण हुक्म वरताएगा। एकँकार आप सुणाएगा। आदि निरञ्जण डगमगाएगा। अबिनाशी करता सोभा पाएगा। श्री भगवान भेव चुकाएगा। पारब्रह्म पर्दा आप उठाएगा। सतिगुर शब्द नाद जणाएगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाएगा। दो जहान वेख वखाएगा। त्रैलोकी पर्दा आपे लाहेगा। सच सलोकी इक समझाएगा। अवतार पैग़म्बर गुर नाल मिलाएगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाएगा। भेव अभेदा अछल अछेदा आप चुकाएगा। चार वरनां अठारां बरनां आपणा संग रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाएगा। साचा संग आप निभावेगा। शब्द नाम मृदंग वजावेगा। दो जहानां आपे लँघ, पुरीआं लोआं वेख वखावेगा। भगत सुहेले लावे अंग, अंगीकार आप हो जावेगा। सृष्टी तके भुख नंग, नव सत्त आपणा भेव चुकावेगा। जगत दी धारा वेखे गंग, गंगोत्री आपणा संग जणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वंड आप वंडावेगा। साची वंड आप वंडाएगा।

ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाएगा। पुरीआं लोआं पर्दा लाहेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाएगा। सच करनी कार कमावेगा। सो पुरख निरञ्जण वेख वखावेगा। पर्दा ओहला आप उठावेगा। धुर दा ढोला डंक वजावेगा। धार रूप आपणा मौला, मालक हो के वेख वखावेगा। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं तक के कौला, इकरार सब दे तोड़ निभावेगा। धरनी धरत धवल धौल भार सब दा करके हौला, सतिगुर साचा सच प्रगटावेगा। जो संदेशा दे के गया कृष्ण काहन सुंदर सौला, सावरीआ आपणा संग बणावेगा। जो हर घट अन्दर मौला, मालक हो के वेख वखावेगा। जिस नूं सारे कहिंदे नूर अलाही अवला, आलमीन हो के रंग रंगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहावेगा। साचा दर सुहावे सुहञ्जणा, सोभावन्त करतार। जोत जगाए आदि निरञ्जणा, जोती जाता होवे उज्यार। किरपा करे दीन दयाल दर्द दुःख भय भञ्जणा, पतिपरमेश्वर रूप अपार। जिस दा इक्को दीपक जगणा, दो जहानां करे उज्यार। जिस दा नाम निधाना डंका वजणा, लख चुरासी करे ख़बरदार। जिस दा चरण दुआरा इक्को होवे मजणा, देवणहारा धूड़ी छार। सृष्टी दृष्टी अन्दर बणे सजणा, पीआ प्रीतम एकँकार। जो जन भगतां चाढ़नवाला रंगणा, रंगे रंग अपर अपार। जिस नूं कहिंदे गोपाल मूर्त मदना, मध सूदन खेल करे अपार। जिस लेखे लाउणा आहला अदना, ऊचां नीचां भेव देवे निवार। जिस कलयुग कूड़ कुड़यारा धरनी उत्तों कढणा, हर हिरदिउँ कढणा बाहर। सति धर्म निशान गडणा, दो जहानां दए सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाहो भूप सची सरकार। सतिगुर सच्चा शाहो भूप, करनहार करतारा। खेले खेल सदा बिन रंग रूप, इक इकल्ला एकँकारा। शब्द दुलारा जिस दा पूत, दो जहानां वेखणहारा। आदि जुगादी बणे दूत, धरनी धरत धवल धौल आवे जावे वारो वारा। चार जुग दे शास्त्र उस दा देवण सबूत, जो लिख्या लेख विच संसारा। जिस दा लहिणा देणा चारे कूट, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा। कलयुग अन्तिम मेटे जूठ झूठ, सति धर्म सति करे उज्यारा। जन भगतां उत्ते जावे तुठ, मेल मिलावे आपणी धारा। भाग लगावे काया माटी बुत, जोती जाता हो उज्यारा। सतिजुग सुहञ्जणी करे रुत, साची रुतड़ी दए हुलारा। किरपा करे अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार एकँकार इक इकल्ला सांझा यारा।

१३५८ २४

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ बचन सिँघ दे गृह पिण्ड पहाड़ू चक्क ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे कलयुग लोकमात विच्चों कर तैयारी, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप तेरी घर घर वधी ख्वारी, ख़ालस रूप तेरा नज़र कोए ना आईआ। जूठ झूठ अपराध कुकर्म नाल लगाए यारी, मित्र प्यारा सच्चा नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चारे कुण्ट रैण होई अँधयारी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीना मज़्हबां अन्दर पई हाहाकारी, सांतक सति ना कोए कराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआर चर्चा करे ना कोई हितकारी, प्यार मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। जिधर वेखां धूंआँधारी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म मेला मिले ना किसे कन्त भतारी, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। मन कल्पणा तन वजूदां अन्दर करे ग़द्दारी, धर्म दी धार निरंतर रहिण कोए ना पाईआ। चौथे जुग तूं धरनी धरत धवल धौल उत्तों होणा बाहरी, जीवां जंतां अन्दर रहिण मूल ना पाईआ। एह हुक्म संदेशा इक इकल्ला देवे एकँकारी, परवरदिगार सांझा यार नूर अलाहीआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं खेल दस्सी बण लिखारी, कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। अमाम अमामा नूर नुराना शाह सुल्ताना कलि कल्की अवतारी, अवतर हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा धर्म इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग दीन दुनी दा छड दे लेखा, ततव रंग ना कोए रंगाईआ। मनसा मन ना रहे भुलेखा, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। औह तक लै लेखा मुकण वाला उम्मत शरअ रसूलां शेख़ा, नबीआं गंढु ना कोए पुआईआ। तेरा गृह गृह वध्या कलेशा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द दस दस्मेशा, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। ओहदा हुक्म वरतणा लोकमात विशेषा, विषयां तों बाहर दयां सुणाईआ। औह तक लै की इशारा देंदा विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, गणपति आपणी धार प्रगटाईआ। तेरा लहिणा देणा अन्त कन्त भगवन्त वेखे जो रहे सदा हमेशा, हम साजण हो के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग तेरा लोकमात रहे ना कूड़, कूड़ क्रिया रहिण ना पाईआ। सतिगुर देवणहारा साची चरण धूड़, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणावे मूर्ख मूढ़, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। अन्तर निरंतर देवे दरस जन भगतां आप हज़ूर, हज़रतां तों बाहर पर्दा दए चुकाईआ। जोती जाता हो के बख़्शे नूर, नूर नुराना दो जहानां डगमगाईआ। नाम खुमारी मस्ती देवे सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। मन मनसा कूड़ी क्रिया पाए ना तन फ़तूर, फ़तवा देवे थांउँ थाँईंआ। जिस मुहम्मद दा लहिणा देणा पूरा करना सदी चौधवीं ज़रूर, ज़रूरत तेरे नाल

रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे, कलयुग लोकमात विच्चों जा, जल्दी जल्दी आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सीस निवा, चरण कवल कवल चरण लै सरनाईआ। चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुरु बणा गवाह, शहादत इक्को वार भुगताईआ। नाम कलम्यां नाल लै रला, बचया रहिण कोए ना पाईआ। ग्रन्थ शास्त्र अक्खरां दा लेख दे दृढ़ा, भेव अभेदा भेद चुकाईआ। की खेल करे बेपरवाह, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द लहिणा देणा देणा चुका, तेई अवतारा लेखा झोली पाईआ। पेशीनगोईआं सब दीआं वेखे थांउँ थाँ, भविक्खतां बिन नैणां नैण तकाईआ। जिस सब दा लहिणा देणा देणा चुका, चुकन्नी करे ख़लक खुदाईआ। जिस नूं सब ने वाहिद मन्नया नूर अलाह, आलमीन कहि के सीस निवाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण नूर करे रुशना, दो जहानां डगमगाईआ। जो भगत सुहेले लए प्रगटा, भगवन हो के वेख वखाईआ। जिस मानव ज़ाती चार वरन अठारां बरन हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई इक्को नाम देणा जपा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला दए दृढ़ाईआ। इक्को इष्ट सृष्टी दृष्ट अन्दर दए सुणा, अणसुणत आपणा हुक्म दए वरताईआ।
१३६० इक्को अमृत रस निझर झिरना जाम दए प्या, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। इक्को संदेशा देवे हो के शहिनशाह, शाह पातशाह १३६०
२४ आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे लोकमात तक लै राह, रैहबर हो के वेख वखाईआ। धरनी उत्ते जाणा नाल चाअ, २४
चाउ घनेरा इक रखाईआ। प्रभ चरण कवल धूड़ी लाउणी मस्तक छाह, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सति सति तेरा गवाह, शहादत इक्को नाम भुगताईआ। कलयुग अन्ध अन्धेर मिटा, लोकमात रहिण ना पाईआ। साचा दीप कर रुशना, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतिजुग लोकमात आवेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण खेल खिलावेगा। एकँकारा हुक्म सुणावेगा। आदि निरञ्जण जोत रुशनावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान डगमगावेगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकावेगा। सतिगुर शब्द डंक वजावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलावेगा। अवतार पैग़म्बर गुर संग रखावेगा। शब्द अनादी वजा मृदंग, दो जहानां आप दृढ़ावेगा। पुरीआं लोआं आपे लँघ, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणावेगा। निशान मेट के तारा चन्द, नूरी चन्द चन्द रुशनावेगा। कलयुग तेरा मेट के पन्ध, सतिजुग सच सच उपजावेगा। जिस विच इक्को होणा तूं मेरा मैं तेरा छन्द, आत्म परमात्म राग दृढ़ावेगा। इक्को कटणहारा फंद, बन्धन बन्द ना कोए रखावेगा। सो दीन दयाल होया बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी आप कमावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, सच दा मालक वेख वखावेगा। सतिगुर शब्द कहे सतिजुग सच चलाए धर्म, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। अन्तर भेव खुल्हाए आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा दए चुकाईआ। दीन दुनी दा बदल देवे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। लेखा मुकाए वरन बरन, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर बहाईआ। सच प्रीती मंज़ल हकीकी देवे चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ । जन भगत सुहेले अन्तर आत्म आवे फड़न, फड़ बाहों पार कराईआ। उह मालक ख़ालक घाड़न घड़न, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। जो लेखा जाणे चोटी जड़न, चेतन आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी विद्या चार जुग दे शास्त्र पढ़न, अवतार पैग़म्बर गुर सिफ्ती ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग तेरा लेख मुकाए सीस धड़न, तन वजूद माटी ख़ाक ततव तत वंड ना कोए वंडाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ महिन्दर सिँघ, सवरन सिँघ, भजन सिँघ, लाल सिँघ,
बावा सिँघ, बलकार सिँघ दे गृह दीना नगर ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे कलयुग छड दे जगत जहान, दीन दुनी आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कहे मेरे सतिगुरु मेहरवान, मेहरवान तेरी सरनाईआ। मैं प्रभ दा योद्धा सुत नौजवान, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखां मार ध्यान, मानस मानव मानुख खोज खुजाईआ। जूठ झूठ संदेशा देवां फ़रमान, फ़ुरने मन दे नाल कराईआ। माया ममता मोह विकार अन्दर धरां शैतान, धीरज धीर रहिण कोए ना पाईआ। हिरदे वसण देवां ना किसे ज्ञान, अज्ञानता विच कीती ख़लक खुदाईआ। मैं बोलदा नहीं नाल ज़बान, आपणी करनी दा करतब दयां वखाईआ। मैं साबत रहिण दिता नहीं किसे दा ईमान, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। मैं सेवा कीती महान, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी बेनन्ती करीं परवान, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे सीस निवाईआ। कलयुग कहे सतिगुर शब्द मेरे वल्ल मार लै झाकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरा लहिणा देणा दस्स दे बाकी, की लेखा रिहा जणाईआ। पर्दा चुक के तक लै ताकी, मैं तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मैं साबत रहिण दिता नहीं बन्दा कोई ख़ाकी, ख़ाकसार कीती लोकाईआ। मनुआ घर घर करके आकी, कूड़ी मनसा नाल मिलाईआ। जिधर वेखें ओधर कीती अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरी तेरे चरणां विच बिन अक्खरां तों अगम्मी पाती, पत्रका दयां टिकाईआ। जिस

विच तकीं मेरी चार लख बत्ती हज़ार साल दी हयाती, कलम शाही काग़ज़ मेरी दए गवाहीआ। तूं मेरा मालक ख़ालक कमलापाती, दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण कलयुग सज्जणा, तैनूं दिआ जणाईआ। तेरा अन्तिम कूड़ कुड़यार दा ठीकर भज्जणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। इक्को योद्धा सूर गोबिन्द नाम दमामा वजणा, डंका नव सत सुणाईआ। जिस दे प्रकाश दा इक्को दीपक अगम्मा जगणा, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। जिस दे प्यार विच होणा आहला अदना, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। ओहदा किसे नूं नज़र नहीं आउणा बदना, तन वज़ूद वेखण कोए ना पाईआ। उस ने सब दा पर्दा कजणा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग तैनूं होणा पैणा वख, धरनी धरत धवल संग ना कोए जणाईआ। इक्को हुक्म सुण धुर जैकारा अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह की जणाईआ। गोबिन्द धार जो पुरख अकाल दे सथर गया लथ, यारड़े दी सेज यारड़ा बण हंढाईआ। जिस नीहां हेठ बाले दिते रख, बाली बुद्ध मिली वड्याईआ। तेरी आयू उमर उह
१३६२ घटा गए हज़ारां लख, लखीनया तेरा लेखा आपणे नाल रखाईआ। हुण वेख लै तेरा चारों कुण्ट कूड़ दा हट्ट, हटवाणया १३६२
२४ नज़री आईआ। धर्म दा किनारा रहिण दिता नहीं कोई तट, तीर्थ सारे देण दुहाईआ। धर्म दा निशाना विच जहानां दिता २४
पट, पटनेवाला तेरा लेखा अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। बेशक तेरा रूप नटुआ नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। हुण आपणा लेखा संभाल लै झट, जल्दी जल्दी आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द योद्धा सूरबीर होण वाला प्रगट, प्रगट हो के आपणा बल प्रगटाईआ। जिस तेरी कूड़ कुड़यार दी डोरी देणी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग सुण लै धुर फ़रमाना, जगत फ़ुरनयां बाहर जणाईआ। की खेल करे धुर दा राणा, शाह पातशाह शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिस दा जुग जुग खेल महाना, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा हुक्म वरताईआ। उस ने अन्तिम तेरा लहिणा देणा चुकाउणा, चुकन्ना हो के वेखणा थांउँ थाँईंआ। जिस नूं कहिंदे शाहो भूप सुल्ताना, हरि करता धुरदरगाहीआ। उह लेखा जाणे जगत जहाना, जीवां जंतां साधां सन्तां वेख वखाईआ। जिस तैनूं धरनी धरत धवल धौल उत्ते दिता माणा, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। अन्त उस दा तैनूं मन्नणा पैणा भाणा, सदी चौधवीं बीसवीं दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग तेरे पूरब लेखे बीते, वेखणा ध्यान लगाईआ। अगले

खेल होणे त्रैगुण अतीते, त्रैभवण धनी की जणाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी बदले रीते, रीतीवान इक अख्वाईआ। जिस ने फ़रमाने शब्द अगम्मी धार कीते, निरअक्खर धार विच्चों दिते प्रगटाईआ। जो सब दा सांझा बणे मीते, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो जुग बदलणहारा गीते, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धुर दा माहीआ। जिस तेरे विच्चों अन्त झगड़े मेटणे मन्दिर मसीते, काया काअबा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कलयुग कहे मेरे सतिगुर शब्द मेरी नमों नमों निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरी इक बेनन्ती दरगाह साची सचखण्ड सच्चे दरबार, दर दरवेश हो के दयां जणाईआ। जो लेखा दे के गए पैग़म्बर अवतार, लोकमात मात दृढ़ाईआ। मेरा लहिणा देणा हथ्थ कलि कल्की अवतार, निहकलंका वेखे चाँईं चाँईंआ। अमाम अमामां होए इक सिक्दार, सिर सिर आपणा हुक्म वरताईआ। मैं उस दे अगे निव निव करां निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस दा योद्धा सूरबीर इक्को सुत दुलार, बलधारी इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच असीं जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सारे सीस निवाईआ। जे उस ने मेरा लेखा मुकाउणा अन्तिम वार, अन्तष्करन तक ख़लक ख़ुदाईआ। मैं कदमबोसी करके धूड़ी मस्तक लावां छार, टिक्के बिन ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जिस दे हुक्म नाल सृष्टी दृष्टी अन्दरों होवां बाहर, धरनी धरत धवल धौल दा पन्ध मुकाईआ। पर मेरा अन्त अख़ीर दीन दुनी नूं ज़रूर करेगा ख्वार, नव सत्त बचया रहिण कोए ना पाईआ। नवखण्ड होवेगा धूंआँधार, सति प्रकाश ना कोए कराईआ। खण्डा खड़ग चमके तलवार, तीर तरकश कमान ख़ुशी बणाईआ । लाड़ी मौत बणे नचार, चारे कुण्ट नच्चे चाँईं चाँईंआ। चित्रगुप्त वेखे खेल अपार, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। राय धर्म बणे लिखार, लेखा लिखे चाँईं चाँईंआ। शंकर ने होणा ख़बरदार, त्रसूल आपणी हथ्थ उठाईआ। पता नहीं मेरे अन्त विच कौण बचेगा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी समझ किछ ना आईआ। एह हुक्म वरतणा मेरे पुरख अकाल, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आदि जुगादि अवलड़ी चाल, चाल निराली जोत अकाली अकल कलधारी आपणी आप रखाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ बलकार सिँघ दे गृह दीना नगर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे भगतो मेरा सुण लओ गाउणा, गा गा दयां सुणाईआ। जे तुसां प्रभ नूं पाउणा, मैं वी भज्जां वाहो दाहीआ।

जे तुसां मैनूं नहीं बुलाउणा, फिर वी दयो सुणाईआ। मैं सतिगुर शब्द नूं कहिणा मींह अजे नहीं हटाउणा, एह मेरी बेपरवाहीआ। तुहानूं खुशीआं दे विच हसाउणा, एह मेरी रीती चली आईआ। तुसीं वी करयो जो मन भाउणा, मैं वी आपणी खेल खिलाईआ। पर मैनूं इक दुःख मैनूं किसे नहीं बणाया कदी आपणा पराहुणा, खुशीआं नाल ना कोए बहाईआ। पर मेरा वी खेल अनोखा, किधरे बणाउणा ते किधरे ढाउणा, गल्लां बातां नाल आपणा दिल परचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे भगतो मेरी कहाणी वखरी, वखरयो दयां जणाईआ। मैनूं गंगा ने कीती मसखरी, मखौल दिता उडाईआ। मैं वी बचन कीता सरसरी, सहिज नाल सुणाईआ। जे तूं मेरे नाल चल्लणा औह वेख लै बारश बरस रही, बूँदा बांदी सोभा पाईआ। उह कहे मैं प्रभू दे दर्शन नूं तरस रही, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। मैं किहा गंगीए चल चलीए प्रभू दुआर, भज्जीए वाहो दाहीआ। उह सोचां करन लग्गी विचार, उंगल ठोडी उत्ते टिकाईआ। बाहर तक लै, पंडता, बरखा पैंदी मूसलाधार, मेघला आपणा रंग रंगाईआ । किस बिध होईए बाहर, चलीए वाहो दाहीआ।
१३६४ मैं झट सैनत दिती मार, इशारे नाल जणाईआ। ज़रा वेख लै नैण उग्घाड़, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। नी कमलीए १३६४
२४ औह तक प्रभ दे मीत मुरार, जो भज्जे फिरन चाँईं चाँईंआ। बुढ्ढे बाल होए हुशियार, जवानां लई अंगड़ाईआ। एह लहिणा २४
देणा उह जो गोबिन्द ने कीता सी सरसे दे आर पार, सरासर इक्को हुक्म जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस वेले मोहे दए प्यार, गुरमुखां रंग रंगाईआ। उन्हां नूं पोह ना सके सर्दी तन ना सके ठार, सीतलता नज़र कोए ना आईआ। नी गंगीए तूं वी उठ के गा दे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान दी जै जैकार, जै जैकार करन वालीए दुःख नेड़ कोए ना आईआ। नी ओह शाहो भूप सुल्तान जेहड़ा सब दा मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जे मुहब्बत पाई ते निभा लै तोड़ उस नाल यार, जिस दा यराना सके ना कोए तुड़ाईआ। इन्द्र देवता की करे आपणी विचार, सोच समझ दी लोड़ ना कोए रखाईआ। हुक्म दा बध्धा बरखा करे आपणी विच्चों धार, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। भगतां नूं बिना भगती तों प्रभ ने बणा दिती अगम्मी बहार, जिस बहार दी सार कोए ना पाईआ। मैनूं बड़ी खुशी मैं खुशी वेखी भगत सुहेल्यां अन्दर पुरख नार, बृद्ध जवान इक्को रंग बैठे सोभा पाईआ । चल नी गंगीए आपां करके एथे निमस्कार, पिच्छे भज्जीए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, देवणहारा सदा अधार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ भजन सिँघ दे गृह दीना नगर ज़िला गुरदासपुर ✪

नारद कहे गंगोत्रीए कुझ आपणा सुणा दे गीत, लहिंगे वालीए लहर नाल जणाईआ। कवण तेरे वसदा चीत, चेतन हो के दे दृढ़ाईआ। तेरी किस दे नाल प्रीत, प्रीतम कहि के किस नूं सीस निवाईआ। किस दी मुहब्बत विच जुग चौकड़ी गए बीत, आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण करे तैनूं ठण्डी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। गंगा कहे नारदा इक्को पुरख अकाला वस्या मेरे चीत, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जिस कीता त्रैगुण नालों मैनूं अतीत, त्रैभवण धनी दिती वड्याईआ। मेरी सति सच दी बदल गई रीत, रीतीवान दिती वड्याईआ। मैं सब कुछ ल्या जीत, हार दा लेखा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गंगा कहे नारदा मेरे अन्दर वस्या इक्को स्वामी, साहिब सतिगुर इक अख्वाईआ। जो सदा सदा सद अन्तरजामी, अन्तष्करन वेख वखाईआ। मैं ओसे दी धार निमाणी, निमाणी हो के सीस निवाईआ। बेशक मेरा वहिणा वाला धार पाणी, जलधारा जगत नज़री आईआ। मेरा रूप अनूप महानी, मूर्त वेखण कोए ना पाईआ। भावे जिस्म नहीं इस्मानी, तन वज़ूद ना कोए रखाईआ। मैं इक्को जोत

१३६५ नुरानी, नूर नुराने दिती वड्याईआ। मेरी सध्धरां भरी जवानी, जोबनवन्ती इक अख्वाईआ। मैं सदा रहां मस्तानी, मस्ती १३६५

२४ प्रभ दी विच समाईआ। मेरी कथा किसे गाई नहीं ज़बानी, जिह्वा गुण ना कोए दृढ़ाईआ । मेरा प्रीतम वसदा उत्ते असमानी, २४

अर्शां दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने मेरी बेनन्ती मानी, मनसा पूरी रिहा कराईआ। मैं ओसे दे करां चरण ध्यानी, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, शाहो भूप सच सुल्तानी, हरि करता इक अख्वाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ११ लाल चन्द अते शांती देवी दे गृह पिण्ड भीमपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

हरि भगत सुहेला धन्न है, जिस पाया हरि हरि राम। हरि सन्त सुहेला धन्न है, जिस मिल्या धुर दा शाम। गुरमुख सुहेला धन्न है, जिस प्याए अगम्मा जाम। गुरसिख सुहेला धन्न है, जिस पूरन करे काम। हरिजन सुहेला धन्न है, जिस नाम निधाना देवे दाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच करे परवान। भगत सुहेला धन्न है, सति सतिवादी लाल। हरि सन्त सुहेला धन्न है, आदि जुगादी बाल। गुरमुख सुहेला धन्न है, प्रभ वसे सदा नाल। गुरसिख सुहेला धन्न है, जिस देवे नाम सच्चा धन्न माल। हरिजन सुहेला धन्न है, जिस करे सदा प्रितपाल।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे शाह कंगाल। भगत सुहेला धन्न है, हरि मिले कन्त भतारा। सन्त सुहेला धन्न है, गृह पाए इक दुआरा। गुरमुख सुहेला धन्न है, जिस देवे पवण नाम हुलारा। हरिजन सुहेला धन्न है, जो निव निव करे निमस्कारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शाहो भूप सिक्दारा। भगत सुहेला धन्न है, हरि मेले धुर संजोग। सन्त सुहेला धन्न है, अन्तर मिटे हउमे रोग। गुरमुख सुहेला धन्न है, जिस नाम निधाना मिली साची चोग। गुरसिख सुहेला धन्न है, जिस जन्म जन्म दा मिटे विजोग। हरि भगत सुहेला धन्न है, जिन्हां देवे दरस अमोघ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन कटणहारा रोग। हरि भगत सुहेला धन्न है, जुग जुग मिले माण। हरि भगत सुहेला धन्न है, बिन अक्खरां देवे ज्ञान। हरि भगत सुहेला धन्न है, घर मन्दिर वखाए निशान। हरि भगत सुहेला धन्न है, सतिगुर बणे जाणी जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शाहो भूप सुल्तान। हरि भगत सुहेला धन्न है, मिले मीत मुरारा। हरि सन्त सुहेला धन्न है, गृह दीपक जोत होए उज्यारा। गुरमुख सुहेला धन्न है, जिस दी पावणहारा सारा। गुरसिख सुहेला धन्न है, जिस दा लहिणा देणा देवे कर्ज उतारा। हरिजन सुहेला धन्न है, जिन्हां मिल्या शाहो भूप सिक्दारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौबीसा हरि जगदीसा बीस इकीसा इक अवतारा।

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ बलदेव सिँघ कृष्णा राणी दे नवित पिण्ड भीमपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर पूरा सेवीए, आदि पुरख करतार। दाता अलख अभेवीए, जोती जाता हरि निरँकार। वड वड्डा देवी देवीए, शाहो भूप सची सरकार। जो निरगुण धार सदा निहकेवीए, वसे निहचल धाम न्यार। जिस दे गुण गाईए रसना जेहवीए, मुख सिफ्ती सिफ्त सलाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती इक अधार। सतिगुर सच्चा मंनीए, परम पुरख अगम्म। वड दाता सूरा धन्न धन्नीए, जो हरिजन बणाए कर्म। शब्द सुणाए बिना कन्नीए, भाग लगाए काया माटी चर्म। करे प्रकाश जोती चन्नीए, नेत्र खोल्हे हरन फरन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साहिब इक गुसंनीए। सतिगुर पूरा भेंटीए, शाहो भूप सुल्तान। जो आदि जुगादी खेवट खेटीए, मालक ख़ालक दो जहान। जो हरिजन बणाए बेटी बेटीए, देवणहारा साचा मान। जिस दा हुक्म चले जुग

केतीए, करता पुरख नौजुआन। जन भगतां करे हेतीए, देवणहारा साचा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक श्री भगवान। सतिगुर पूरा गाईए, गुणवन्ता गुण मीत। घर स्वामी धुर दा पाईए, सद वसे अन्तर चीत। निज नेत्र दरस जणाईए, जो अन्तर बदलणहारा नीत। चरण कवल बिगसाईए, बख़्शे हक प्रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईए। सतिगुर साचा पूजीए, इक्को पूजण योग। भरम चुकाए एका दूजीए, देवे दरस अमोघ। घर स्वामी साचा सूझीए, जो झगड़ा मेटे हरख़ सोग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दाता मधसूदन सूधीए, मेटणहारा हरख़ सोग। सतिगुर सच्चा जाणीए, दीना बंधप दीन दयाल। घर इक्को इक वखाणीए, सचखण्ड सची धर्मसाल। जिथ्थे दीपक जोत जगे महानीए, बिन तेल बाती करे खेल कमाल। शब्द सुणाए अगम्मी बाणीए, जिस दा समझे ना कोई सुर ताल। अमृत बख़्शे ठण्डा पाणीए, सच सरोवर सुहाए ताल। गुरमुखां बख़्शे चरण ध्यानीए, लेखे लाए आपणे हरिजन साचे लाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरिसख गोद उठाए आपणे बाल।

१३६७ २४

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कतोवाल ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरा मालक अगम्म अथाहो, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा यार इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी वसे सचखण्ड अगम्मे थाओं, थान थनंतर इक्को सोभा पाईआ। जिस दा नाम निधाना नौजवाना फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, काग हँस आपणे रंग रंगाईआ। भगतन मीता ठांडा सीता हरिजन बणे पिता माउँ, सुत दुलारे आपणी गोद उठाईआ। एथे ओथे दो जहानां निथाव्याँ देवे आपणा सच्चा थाओं, चरण प्रीती साची रीती आप जणाईआ। अन्तर निरंतर रसना जिह्वा सिफ्त सलाह कराए वाहो वाहो, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला हरिजन पकड़नहारा बाहों, फड़ फड़ आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा लहिणा देणा थल अस्गाहो, महीअल खोजे चाँईं चाँईंआ। तिस स्वामी अन्तरजामी घट निवासी चरण धूड़ी मस्तक लाओ, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा मालक स्वामी हरि गम्भीरा, जग नेत्र लोचन नैण नज़र किसे ना आईआ। जिस दी ततव तत वेख सके ना कोए तस्वीरा, तसव्वर कर ना कोए जणाईआ।

जो आदि जुगादी बेनज़ीरा, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस भेव खुल्हाया भगत कबीरा, पर्दा कबरां बाहर उठाईआ। जिस लेखे लाया रवीदास कसीरा, चम्यारे दिती वड्याईआ। सो कटणहारा शरअ ज़ंजीरा, तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। जो लेखा मुकाए ग़रीब अमीरा, दीनां मज़्हबां लहिणा दए चुकाईआ। उस दा नाम खण्डा शमशीरा, दो जहानां भय वखाईआ। उस दी अगम्म अथाह तदबीरा, तरीका समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब गुणवन्त, गुणकारी इक अख्वाईआ। जिस ने आदि आदि बणाई आपणी बणत, अन्त अन्त आपणे विच समाईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, लेखा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा इक्को नाम निधाना मंत, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दए समझाईआ। बोध अगाधा बणे पंडत, बुद्धी तों बाहर दए पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जिस नूं खोजदे कोटन कोटी सन्त, सति सतिवादी हो के ध्यान लगाईआ। उह लेखा जानणहारा जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ । सतिगुर शब्द

१३६८ कहे मेरा मालक परवरदिगारा, बेऐब नूर अलाहीआ। जिस नूं सब ने मन्नया सांझा यारा, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। १३६८

२४ ओह नूर नुराना होए उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा इक्को कलमा होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। २४

उस दा लेखा अन्तिम दीन दुनी दा झगड़ा दिसे विच काहिरा, कहर वरते ख़लक खुदाईआ। जिस दा इक्की सौ कोस दा होणा दाइरा, दोहरी आपणी वंड वंडाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद मिल के करना मुशायरा, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। उम्मत नबी रसूलां रहे कोई ना बाहरा, बहिरहाल दए जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे हुक्म दा लग्गण वाला पहरा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक अख्वाईआ । सतिगुर शब्द कहे मेरा लेखा नाल गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द, गुर गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। जिस दा मालक इक बख़शिंद, रहमत रहीम रहमान कमाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी बिन्द, वृंदावन दा काहन गया समझाईआ। जिस दा अमृत रस सागर सिन्ध, गहर गम्भीर गवर आप प्रगटाईआ। जिहनूं सीस निवाए करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द, इन्द इन्द्रासन रिहा तजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी धार विच्चों धार लेखा जाणे जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी निहकर्मा, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। जननी कुक्ख कदे ना जरमा,

जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जुग जुग लख चुरासी मेटणहारा भरमा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। झगड़ा चुकावणहारा वरना बरनां, चारे खाणी फोल फुलाईआ। इक समझावण वाला प्रभू प्रभ दी सरना, सरनगति इक दृढ़ाईआ। धूड़ी लावणहारा ख़ाक अगम्मे चरणा, बिन मिट्टी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जिस पुरख अकाले दीन दयाले कलयुग अन्तिम आपणा खेल करना, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ। अन्त अख़ीर ओसे दा पल्ला फड़ना, पल्लू आपणी गंढु पुआईआ। जिस दी मंज़ल हकीकी सचखण्ड दुआरे चढ़ना, अधविचकार ना कोए अटकाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिस दे हुक्म नाल बिन खण्डे खड़ग तलवारां मैनूं पए लड़ना, दो जहानां धुर दा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सब दा मालक पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। जो शहिनशाह शाहो शाबाशी, शाह पातशाह नूर अलाहीआ। जो वेखणहारा लख चुरासी, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। जिन धरनी धरत धवल दी लौहणी उदासी, चिन्ता ग़मी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार कोलों कराउणी खुलासी, बन्दी छोड़ आप हो जाईआ। साचे मण्डल पाउणी रासी, रस्ता दीन दुनी इक समझाईआ। हर हिरदे बणना विश्वाशी, विषयां तों बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करना शंकर नाल कैलाशी, कलाधारी आपणी कल वरताईआ। जन भगतां लेखे लाउणा स्वास पवण स्वासी, साह साह आपणा नाम जपाईआ। इक्को नूर जोत जोत होवे प्रकाशी, प्रकाश करे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शाहो शाबाशी, शाह पातशाह शहिनशाह एकँकारा इक इकल्ला परवरदिगारा सांझा यारा नूर नुराना नूर अलाहीआ।

१३६८ २४

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ जवंद सिंघ दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर पूरा प्यारा होवे लड दा, प्रीती चरण कवल जणाईआ। वसेरा दसे आपणे गृह अड दा, घर घर विच भेव चुकाईआ। लेखा जणाए नाड़ी मास हड्ड दा, तन वजूद फोल फुलाईआ। सच नाम निशाना गडदा, धुन नाद कर शनवाईआ। भगत सुहेले कदे ना छडदा, फड़ बाहों मेल मिलाईआ। रस छुडा के मच्छी डड्ड दा, अमृत रस दए चखाईआ। कूड़ी क्रिया सदा वढदा, तन वजूद रहिण ना पाईआ। लेखा मुका अन्धेरी खड्ड दा, दीआ बाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर पूरा ना कदे विछोड़

दा, विछड़ कदे ना जाईआ। धुर संजोगी मेल जोड़दा, जोड़ी आत्म परमात्म इक समझाईआ। ख़ज़ाना पूरा करे थोड़ दा, नाम अतुट वरताईआ। भगतां लेखा वेखे लोड़ दा, वस्त अमुल झोली दए भराईआ। कूड़ी क्रिया शौह दरयाए रोड़दा, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। जुग जुग निरगुण सरगुण हो के आपे बौहड़दा, हरिजन वेखे थांउँ थाँईंआ। रस गंवाए फिका कौड़ दा, अमृत रस आप चुआईआ। नहावण मुकाए तीर्थ तट जौहड़ दा, चरण धूड़ इश्नान कराईआ। जो रूप धरे ब्रह्मण गौड़ दा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। अगे मार्ग रहिण ना देवे सौड़ दा, भीड़ी गली पार कराईआ। डण्डा दस इक्को अगम्मे पौड़ दा, दो जहानां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर पूरा सच्चा सच खुदावंद, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच सारे पाबन्द, सिर सके ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म दस्सणहारा छन्द, सोहँ ढोला दए समझाईआ। निज घर आपणा देवे अगम्म अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दूई दुवैती ढा के कंध, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बिना सूर्या चन्द चाढ़ के चन्द, जोती जाता करे रुशनाईआ। दीन दयाल बण बख्शंद, भगत सुहेले आपणी गोद टिकाईआ। भाग होण ना देवे मंद, मंद
१३७० भागां लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज १३७०
२४ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच सति दा करे पाबन्द, विछोड़े विच विछड़ कोए ना जाईआ। २४

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ भगविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड रणजीत बाग़ ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर विसरे ना कदे स्वास, साह साह जन भगतां अन्दर समाईआ। काया मन्दिर वसे सदा पास, साढे तिन्न हथ्थ अन्तर निरंतर आपणा डेरा लाईआ। दीआ बाती कमलापाती करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा अन्दरों दए कढ्ढाईआ। शब्द अनादी धुन दए धरवास, धर्म दी धार आप समझाईआ। निझर झिरना बूँद स्वांती जाम प्याए बिना ग्लास, नाभी कवल कवल उलटाईआ। मानस जन्म सति सतिवादी हो के करे रास, रस्ता बावस्ता हो के आपणा इक समझाईआ। जगत विषयां तों बाहर दए विश्वाश, विश्व दा मालक हो के वेख वखाईआ। सच दुआर एकँकार पावे रास, सुरती शब्द गोपी काहन नाच नचाईआ। झगड़ा मेट के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां लेखा दए मुकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक देवणहार धरवास, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द ना कदे विछोड़दा, विछड़यां मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़दा, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। पंच विकारा

अन्दरों होड़दा, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। मनुआ दहि दिशा तों आपे मोड़दा, चार कुण्ट ना उठ उठ धाईआ। शाह अस्वार बणाए हरिजन आपणे घोड़ दा, दो जहानां आप दौड़ाईआ। लेखा वेखे जन्म कर्म दी लोड़ दा, लुड़ींदा साजण होए सहाईआ। नाम सिमरन दा लेखा पूरा करे थोड़ दा, अनमुली दात आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। साचा नाम ना विसरे तन वजूद, माटी ख़ाक मिले वड्याईआ। दीन दयाला मिले अगम्म महबूब, मुहब्बत वाला नूर अलाहीआ। जिस दी मंज़ल हक मकसूद, जगत जहान दा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्दरों करे नेस्तो नाबूद, जड़ चेतन आपणे रंग रंगाईआ। लेखा जाणे काया माटी पंज तत भूत, ततव तत ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। साचा नाम ना विसरे जग, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। जिस दा लहिणा देणा उपर शाहरग, नव दुआर दा पन्ध मुकाईआ। मेहर करे आ सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। त्रैगुण माया साड़ सके ना अग्ग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दीन दुनी दी धार विच्चों करे अलग, आत्म परमात्म आपणा

१३७१ खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। स्वास १३७१

२४ स्वास जपो हरिनाम, हरि हिरदे ध्यान रखाईआ। जिस दा सब तों वखरा जाम, जगत नश्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। २४

अन्ध अन्धेरा मेटे शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। दर्शन देवे आप श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो वेखणहारा दीन दुनी तमाम, खोजणहारा थांउँ थाँईंआ। जिस नूं सयदे करदे सलाम, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नाम जपणा रसना जिह्वा बत्ती दन्द, मुख होठ सिफ्त सलाहीआ। दीन दयाल सदा बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आप कमाईआ। अन्तर निरंतर देवे अगम्म अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, संसे सारे दए चुकाईआ। खुशी करके बन्द बन्द, बन्दगी धुर दे लेखे पाईआ। करे प्रकाश बिना सूर्या चन्द, जोती जाता डगमगाईआ। आवण जावण मेटे पन्ध, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। साचा नाम जपो हरि एका, एका एक देवे वड्याईआ । जिस दी सब ने रखी टेका, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। सो दीन दयाला पुरख अकाला करे बुध बिबेका, पतित पुनीत आप कराईआ। हरिजन सन्त सुहेले भेव चुकाए एकँकार एका, इक इक नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप

बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा नाम अगम्मड़ा, आदि जुगादी अगम्म। जिस दी कीमत ना कोई पैसा दमड़ा, ना कोई लेख चुकाए मानस ज़ाती विच जरम। दीन दयाल होवां बख्शंदड़ा, जुग जुग जन भगतां मेटां भरम। निरगुण हो के रंग रगंदड़ा, सरगुण सच दस्सां धर्म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी, जोती जाता पुरख बिधाता एकँकारा परवरदिगारा बख्शणहारा साची सरन।

१६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ सरूप सिँघ दे गृह सुखे शाह फ़कीर दे नाल शहर गुरदासपुर

हूतल हू मुकामे यक यदीउम ज़वी अर्शे नज़ी ज़ुववले मुज़ा नुराने नुरा वाहिदे खुदा यक ज़मी हवज़ू शवसे ज़वा ज़कुम्माबाए वज़ू ज़नुसतो ज़नुसती ज़मी ज़वी ज़खतू यमसी ज़वा ज़वाए खुदा मुहम्मदे रज़ू गोशे ज़विद शाहे नविद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। चश्मे नुराना नखुसतों ज़वी ज़मम दुवाउ
१३७२ ज़न ज़म चाए ज़वू नसते मुवाए दस्ते दुवाए फ़र्शे अदाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा १३७२
२४ वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। बैतुल धाम हूतल हू, हक हक जणाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं बुत रूह, बुत तों बाहर २४
आपणा हुक्म जणाईआ। जिथ्थे इक्को आवाज़ अज़ां तूं ही तूं, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओह मालक ख़ालक अल्ला हू अन्ना हू, दो जहानां बाहर आपणा भेव चुकाईआ। जिथ्थे ना कोई हद्द ना कोई हदूद ना कोई जंगल ना कोई जूह, महिबान बीदो बीखैर या अलाह, इक्को नूर नूर अलाहीआ। ज़फ़ती अल्ला मुफ्ते जू दस्ते दू हशरे नविश पेशीन पेशानी रूपोश नज़रे नज़ा नेरन नेरा नज़र किसे ना आईआ। हूतल हू हक हकीकत जिथ्थे ना कोई शिकवा ना कोई शक, शकूक रहिण कोए ना पाईआ। बिन नेत्र लोचन नैण जिस वेख्या उस किहा ऐनुलहक, हकीकत दा मालक भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

कहिण सुणन दीआं दोवें बातां, बातन भेव खुल्हाईआ। अज्ज खुशीआं वालीआं प्रेम दीआं रातां, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। जिस विच भगतां मिलणीआं अगम्मी दातां, दाता हो के आप वरताईआ। सनमुख बैठयां दे अन्दर वड़ के मारनीआं झातां, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। बजर कपाट खोल्ह के ताका, ओहला ओहले विच्चों चुकाईआ। सतिगुर शब्द मार

के हाकां, होका हक हक सुणाईआ। उठ सुत्तया आत्मा मेरया निक्कया जेहा काका, ओ कुकू बच्चू तैनूं लवां जगाईआ। जे तैनूं जननी नहीं चुक्कया सतिगुर चुक लए आपणी ढाका, फड़ बाहों गोद उठाईआ। तेरा मेरा आदि अन्त दा साका, रिश्ता फ़रिशत्यां बाहर समझाईआ। कुछ मेरे कोलों लहिणा देणा लै लै बाका, बाकायदा झोली देवां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गल्ल विच्चों गल्ल जाए लभ, लबां विच्चों निकली आपणा रंग बदलाईआ। शब्द शब्द दा मेला हुन्दा नाल सबब, वक्त सुहञ्जणा दए गवाहीआ। जिस नूं आशक माशूक रहे दोवें लभ, बिन नैणां नैण उठाईआ। नाले कहिण पता नहीं केहड़ा नूर अलाही रब्ब, यामबीन कहि के जिस नूं सीस निवाईआ । ओह बेपरवाह अगम्म अथाह परवरदिगार सांझा यार केहड़े वेले आपणा नूर प्रगट करे झब, काया मन्दिर अन्दर पर्दा आप उठाईआ। पीआ प्रीतम हो के जगत जहान तों बाहर आपणी दस्से हद्द, हदूद आपणी इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा बिना साज़ां वजे नद, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। दीपक बिन तेल बाती रिहा जग, जोती जाता करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गल्ल कहे मेरा गल्ल विच्चों निकले रूप, सोहणी बणत बणाईआ। मैं वेखां इक्को सति सरूप, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जो सब दा शहिनशाह भूप, पातशाह नूर अलाहीआ। जिस दा सतिगुर शब्द दुलारा दूत, दो जहान करे शनवाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला जदों लभ्भे लभ्भे भगतां वाली कूट, काया कुटीआ अन्दरों आपणा पर्दा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गल्ल कहे मैं ना वड्डी ना छोटी, मेरा आकार नज़र किसे ना आईआ। मेरा भेव पा सके ना कोटन कोटी, अणगिणत ढोले गए गाईआ। मैं सब तों नेड़े सब तों दूर चढ़ के बैठी अगम्मी चोटी, जिथ्थे बिन सतिगुर तों वेखण कोए ना पाईआ। बेशक मैं बैखरी बाणी विच बोली जांदी नाल होठीं, पर मेरी धार सब तों बाहर नज़री आईआ। मैं कदे ना होई खोटी, खोट्टयां खरे दयां बणाईआ। मेरा नाता नाल उस परम पुरख दी जोती, जो जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ।

१३७३
२४

सतिगुर सच्चा परी पूरन, पूरन सतिगुर इक अख्वाईआ। जो सब दे वसे नेड़े दूरन, निज घर बैठा आसण लाईआ। जिस नूं कहिंदे हाज़र हज़ूरन, हज़ूर इक्को धुरदरगाहीआ। जो दाता योद्धा सूरबीर सूरन, शक्तीशाली बेपरवाहीआ। जो

देवे नाद शब्द अगम्मी तूरन, तुरीआ दा भेव चुकाईआ। जन भगतां बख्श के चरण धूड़न, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़न, आप आपणे रंग रंगाईआ। लख चुरासी कटके जूड़न, फाँसी धर्म राय ना कोए रखाईआ। काया चोली चाढ़ के रंग गूढ़न, आप आपणे विच मिलाईआ। नाता तोड़ के कूड़ कूड़न, कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ।

वाहवा कहे मैं आदि जुगादी वाह, वाहवा कहि के सारे प्रभू दा गुण गाईआ। मेरा मालक बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। आदि जुगादी बणे मलाह, जुग जुग खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जदों चाहे आपणा बदल देवे नाँ, नाउँ निरँकारा आप हो जाईआ। आपे पिता आपे माँ, आपे बणे जणेंदी माईआ। ग़रीब निमाणयां निथाव्याँ देवणहारा थाँ, थान थनंतर इक सुहाईआ। जन भगत सुहेले फड़ के बांह, इक्क्ठे कीते चाँईं चाँईंआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर बुद्धी रहिण ना देवे काँ, हँस रूप लए बदलाईआ। सदा सुहेला हो के देवे ठण्डी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भाग लगाए
१३७४ साढे तिन्न हथ्थ खेड़े गराँ, काया माटी फोल फुलाईआ। हरिजन जिस नूं कहिंदे वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। १३७४
२४ ओह पुरख अकाला दीन दयाला जुग जुग जन भगतां कोल जावे आ, धुर दा बण के पाँधी राहीआ। भेव अभेदा दए खुल्हा, २४
पर्दा ओहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। वाह कहे जो वाहवा कहिण, कहि कहि ख़ुशी बणाईआ। उन्हां दा नाता जुड़या नाल नरैण, नर हरि वेखे चाँईं चाँईंआ। बिन जगत नेत्रां तों दर्शन पाण अगम्मे नैण, जगत लोचन दी लोड़ रहे ना राईआ । घर स्वामी ठाकर मिल जाए साक सैण, सज्जण इक्को सोभा पाईआ। जिस दे प्यार विच भगतां नूं भुल जाण भाई भैण, मात पित नज़र कोए ना पाईआ। सृष्टी सारी दिसे त्रफ़ैण, बिना पुरख अकाल तों संगी संग ना कोए निभाईआ। वाहवा कीत्यां बिना ओहनां नूं ना आवे चैन, वाहवा कहि के प्रभू दे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ।

सतिगुर शब्द कहे बख्श दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। नूर नुरानिआ नूरी चाढ़ दे चन्द, जोती जाते कर रुशनाईआ। बिना रसना जिह्वा तों तूं मेरा मैं तेरा शब्दी धार गाईए छन्द, ढोला सोहला इक दृढ़ाईआ। ख़ुशी होवे

बन्द बन्द, बन्दगी तेरी विच समाईआ। दूई दुवैती अन्दर रहे ना कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। मानस जन्म भाग होण ना देवीं मंद, मंद भागी लैणा तराईआ। तेरे दुआरयों इक्को मंगां मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तन वजूद काया माटी रंग, रंगत इक्को इक रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। साचा अनन्द बख्श दे पुरख अकाले, परम पुरख तेरी सरनाईआ। दीना बंधप दीन दयाले, दया निध तेरी वड्याईआ। फल ला के काया पंज तत दे डाले, पत्त टहणी दे महकाईआ। दीआ बाती जोत जगा निराले, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। तेरी मंज़ल राह मिले सुखाले, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सच्चा अनन्द सतिगुर सेवा, सेवा सच सच वड्याईआ। मेहरवान होवे वड देवी देवा, देव आत्मा वेख वखाईआ। किरपा करे जो वसे धाम निहकेवा, अटल महल सोभा पाईआ। सच प्यार दा अन्तर लावे थेवा, कौस्तक मणीआ रूप बदलाईआ। पवित्र करे रसना जिह्वा, स्वास स्वास विच समाईआ। नाम पदार्थ दे के अगम्मा मेवा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अनन्द देवे प्रभू तन माटी साचे मन्दिर, ततव तत तत दृढ़ाईआ। प्रकाश करके डूँगघी कंदर, अन्ध अन्धेर दए चुकाईआ। त्रै धातू तोड़ के जंदर, रजो तमो सतो दा लेखा दए चुकाईआ। मनुआ दहि दिशा ना धाए बन्दर, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। प्रकाश दे के बिना सूर्या चन्द्र, नूर नुराना करे रुशनाईआ। निज घर वासी वसे सदा संगण, सगला संग बणाईआ। जगत विकार तोड़ के फंदन, डोरी शब्द तन्द बंधाईआ। जिन्हां नूं लाए आपणे अंगण, अंगीकार आप हो जाईआ। तिन्हां नूं देवे सच अनन्दन, अनन्दपुर वासी होए आप सहाईआ। जो आदि जुगादी टुट्टी आवे गंढुण, विछड़यां मेल मिलाईआ। उस नूं इक्को डण्डावत इक्को बन्दन, इक्को सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

ना कोई एका ना कोई दो, दूआ एके विच समाईआ। एका दूआ इक्को गए हो, बिन एके दूए तों आपे होका देवे थांउँ थाँईंआ। जोती धार बण निर्मोह, नूर नुराना नूर करे रुशनाईआ। जिस नूं कहिंदे निरञ्जण पुरख सो, सो साहिब बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरञ्जण आपणी करके लोअ, बिन लोयणां करे रुशनाईआ। निरँकार निरँकार भेव मिटा के दोआ दो, दुतीआ लेखा दए चुकाईआ। आदि निरञ्जण आपे करके आपणी लो, बिन एके दूए वेखे थांउँ थाँईंआ। अबिनाशी

करता जिस दा भेव ना जाणे को, बेअन्त कहि के सारे गाईआ। श्री भगवान आपणा आप आपे लए जोह, दूसर संग ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म एके दूए नालों हो निर्मोह, मुहब्बत मुहब्बत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ।

इक तों होवे दो, दो इक रूप समाईआ। इक दूजे तों करन खोह खोह, एह खेल बेपरवाहीआ। जिस वेले इक दूजे नाल जाण छोह, मिल मिल के इक दूजे विच समाईआ। आप आपे आपणा आप हो, आप आपणा लैणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर सच्चा श्री भगवान, हरि करता इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा नौजवान, बाल बृद्ध ना रूप बदलाईआ। सतिगुर सच्चा मेहरवान, महबूब नूर अलाहीआ। सतिगुर सच्चा देवे दान, वस्त नाम निधान वरताईआ। सतिगुर सच्चा वखाए धर्म निशान, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। सतिगुर सच्चा देवे अगम्म ज्ञान, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। सतिगुर सच्चा भाग लगाए
१३७६ साढे तिन्न हथ्थ ग्राम, महल अटल इक सुहाईआ। सतिगुर सच्चा दीपक जोत जगाए महान, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। १३७६
२४ सतिगुर सच्चा शब्द नाद सुणाए धुन्कान, अनहद नादी राग दृढ़ाईआ। सतिगुर सच्चा अमृत रस देवे पीण खाण, निझर २४
झिरना बूँद स्वांती आप टपकाईआ। सतिगुर सच्चा घर स्वामी मिले आण, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर सच्चा चरण प्रीती बख्शे ध्यान, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सतिगुर सच्चा जिस दा आदि जुगादी इक विधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतिगुर सच्चा श्री भगवन्त, हरि करता इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी कन्त, कन्तूहल धुरदरगाहीआ। जिस दा नाम निधाना मंत, मंतव दो जहान हल कराईआ। जिस दा मेल मिलावा नाल साचे सन्त, साजण हो के वेख वखाईआ। आपणी महिमा दस्से अगणत, गिणती गणत ना कोए समझाईआ। धर्म धार दी बणाए बणत, घाड़त आपणी घाड़न लए घड़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। मेल मिलावा साची संगत, आत्म परमात्म साचा संग जणाईआ। लेखा मुका के बहिश्त जंनत्त, चरण कवल बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर सच्चा परम पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। जिस दी मण्डल मण्डप रासी, दो जहानां खेल खिलाईआ। जो सचखण्ड निवासी, दरगाह साची सोभा

पाईआ। जो शाहो भूप शाबाशी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस दी लख चुरासी दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं दए विश्वाशी, विशा आपणा नाम समझाईआ। जो तन वजूदां निरगुण जोत करे प्रकाशी, प्रकाशवान इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा विष्न ब्रह्मा शिव शंकर नाल कैलाशी, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। ओह भगतां सन्तां मेटणहार उदासी, चिन्ता ग़म ग़मखार दए गंवाईआ। नाम जपाए बिना पवण स्वासी, अजपा जाप विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाला, अकल कलधारी इक अखवांयदा। आदि जुगादी दीन दयाला, दया निध भेव उठांयदा। वसणहार सचखण्ड सची धर्मसाला, दरगाह साची सोभा पांयदा। जिस दा शब्द दुलारा लाला, लालन इक्को रंग रंगांयदा। जो जुग जुग खेले खेल निराला, निराकार साकार रूप वटांयदा। धरनी धरत धवल धौल लोकमात बणे दलाला, विचोला हो के वेख वखांयदा। नाम निधान नौजुआन हो के दए सुखाला, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक वरतांयदा। सतिगुर पूरा नाम देवे सोहँ सो, सो पुरख निरञ्जण दया कमाईआ। आत्म परमात्म आपे जाए हो, हरि पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। भेव चुकाए दोअँ दो, एकँकार वड्डी वड्याईआ। सच प्रकाश करे लो, आदि निरञ्जण कर रुशनाईआ। आप आपणा आपे लए जोह, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। आपणा आपणे नाल बंधाए मोह, श्री भगवान खेल खिलाईआ। पारब्रह्म आपणा लेखा आपणे विच रखे ना इक ना दो, दूआ एका आपणा खेल खिलाईआ। सतिगुर शब्द ढोआ देवे ढो, सच वस्त वस्त वरताईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सोहँ सो आदि दी धारा, विष्न ब्रह्मा शिव दिती वड्याईआ। शब्दी शब्दी खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। जिस दा खेल त्रैगुण बाहरा, पंचम तत ना कोए वड्याईआ । जो लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी आपणी सेव लगाईआ। जिस दा आदि जुगादी संदेशा एका इक्को वारा, इक इकल्ला दए दृढ़ाईआ। जिस लख चुरासी त्रैगुण माया पंज तत कीता पसारा, रजो तमो सतो अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणी खेल खिलाईआ। आत्म परमात्म दे अधारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अपंरपर स्वामी ला के नाअरा, सोहँ सति सति समझाईआ। हँ ब्रह्म दा पार किनारा, पतिपरमेश्वर भेव चुकाईआ। अन्त जोत जोत विच एका रूप निराकारा, साकार संग ना कोए रखाईआ । जिस दा वसेरा सचखण्ड दुआरा, दरगाह साची मुकामे हक सोभा पाईआ। जिस दा रूप अवतार पैग़म्बर गुरु होए साकारा,

तन वजूदां खेल खिलाईआ। जोती जाता हो के ज़ाहरा, पुरख बिधाता वेख वखाईआ। नाम शब्द दे सची धुन्कारा, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। अमृत बख्श अगम्मा ठंडा ठारा, सति सतिवादी बिन रसना जिह्वा जाम प्याईआ। लोकमात दए अधारा, उदर दा लेखा दिता मुकाईआ। जिन्हां रसना जिह्वा ढोला गाया गीत सुणाया मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण होए ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सोहँ धार आदि जुगादी, अक्खरी वंड ना कोए वंडाईआ। प्रभ दा खेल ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मंड आपणा हुक्म चलाईआ। आत्म परमात्म सदा अनादी, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। एह हुक्म संदेशा बोध अगाधी, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। जेहड़ी रसना नाल ना जाए अराधी, स्वासां नाल कोए ना गाईआ। जोती धार जोत विस्मादी, विश्व दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सोहँ अक्खरी जाप जगत दा गाउणा, सिफ्ती ढोले गाईआ। भगतां सोहँ रूप सरूप विच समाउणा, आपणा आप मिटाईआ। घर परमात्म इक्को बहाउणा, सेज सुहञ्जणी जो सुहाईआ। बिन अक्खीआं दर्शन पाउणा, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। बिन सीस सीस झुकाउणा, निव निव लगणा पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सच प्रीती विच मनाउणा, प्यार मुहब्बत विच मंग मंगाईआ । जिस ने दस्म दुआरी पर्दा लौहणा, भेव अभेद रहे ना राईआ। भगत भगवान इक्को घर वसाउणा, सद वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर सच्चा आत्म परमात्म जोड़ जोड़े, जोड़ी हरि जगदीश कराईआ। नाम अगम्मे चाढ़े घोड़े, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। बिन कदमां चरणां दौड़े, भज्जे वाहो दाहीआ। पन्ध मुकाए भीड़े सौड़े, अगे हो ना कोए अटकाईआ। फल छडे मिट्ठे कौड़े, जगत रस ना कोए चखाईआ। अन्त इक्को चढ़े सतिगुर सच्चे पौड़े, पौड़ी डण्डा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी आपे बौहड़े, फड़ बाहों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जिन्हां नूं सतिगुर सोहँ सो जाप दस्सया, लोकमात कीती पढ़ाईआ। दिवस रैण अन्तर निरंतर आपे वस्या, रोम रोम विच समाईआ। साढे तिन्न करोड़ दी मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। बिन रसना जिह्वा जपाए कथया, कथनी चले ना कोए वड्याईआ। किरपा करे पुरख समरथया, हरि करता धुरदरगाहीआ। जन भगतां लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थया, जगत उधार ना कोए रखाईआ। जो प्रेम प्रीती विच सथर लथ्थया, यारड़ा सेज दए सुहाईआ। लहिणा देणा पूरब लेखे लाए मस्तक मथ्थया, जन्म जन्म दा लेखा झोली पाईआ।

जो निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दो जहानां फिरे नस्सया, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस सस्से उत्ते होड़ा लाया ते आपणा भेव दस्सया, हँ ब्रह्म भेव आप खुल्हाईआ। अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के करे प्रकाश बिना रवि शशिया, बिन सूर्या चन्न डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। निरगुण धार पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ वखाईआ। जो होए जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नाता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। ईश जीव दस्स के गाथा, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द हो के देवे साथा, संगला संग निभाईआ। जो तन वजूदां चलावणहारा राथा, रथ रथवाही धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द जिस नूं देवे दान, दयावान दए वरताईआ। भाग लगाए काया मन्दिर मकान, मक्का काअबा इक्को इक सुहाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले आण, परवरदिगार फेरा पाईआ। जिस दे ढोले सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत सुहेले गाण, गा गा शुकर मनाईआ। ओह जोती जाता पुरख बिधाता किरपा करे श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले करे परवान, परम पुरख प्रभ देवे माण
१३७९ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर १३७९
२४ सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी लेखा जाणे दो जहान, दोहरी आपणी कल वरताईआ। २४

✪ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ११ कर्म सिँघ दे नवित पिण्ड नया शाला ज़िला गुरदासपुर ✪

कर्म सिँघ दा कर्म होया निहकर्मी, प्रभ देवे माण वड्याईआ। जिस दी आत्मा फेर लोकमात कदे ना जन्मी, जन्म विच कदे ना आईआ। इक्को जगह मिली ते मिली पुरख अकाल दी चरणी, जिथ्थे जगत वाला चरण वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर दए वड्याईआ। आत्मा कहे मैं पुज्जी सचखण्ड, बिन कदमां कदम उठाईआ। पन्ध मुका के ब्रह्मण्ड खण्ड, भज्जी वाहो दाहीआ। मेरा लेखा रिहा ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नाता गई तुड़ाईआ। सतिगुर शब्द ने आपणे नाल पाई गंढ, जिस नूं सक्या ना कोए खुल्हाईआ। राय धर्म वेख के पाउंदा रह गया डण्ड, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। शंकर ने किहा एह नहीं तेरी वंड, सँघारी हो के दयां सुणाईआ। क्यों इस नूं सतिगुर शब्द ने पाई ठण्ड, जगत दी अग्नी ना कोए तपाईआ। एह सदा दी सुहागण विछोड़ा चुक्कया रंड, रंडेपा रहिण कोए ना पाईआ। इस दा निवास अस्थान होणा विच सचखण्ड, थिर घर बहि के आपणा आसण

लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर दए वड्याईआ। आत्मा कहे मेरा सच घर होया वसेरा, सोहणी मिली वड्याईआ। ना एथे सूर्या चन्द ना कोई जगत प्रकाश ना अन्धेरा, सद इक्को रंग वेख वखाईआ। मैं जिधर तकां भगतां दा डेरा, बिना भगतां तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर वेखां अवतार पैग़म्बर गुरु एथे मारन फेरा, जोत जोत जोत विच्चों प्रगटाईआ। मेरे साहिब ने मेरा कीता हक नबेड़ा, हकीकत दे मालक ने हक मेरा मेरी झोली पाईआ। धन्नभाग मैं आ के आण के वेख्या प्रभू चरण दा खेड़ा, जिथ्थे खिड़की कुण्डी वेखण कोए ना पाईआ। मैं हैरान हो गई एथे कोई नहीं किसे दा झेड़ा, झगड़े वाला नजर कोए ना आईआ। सारे इक दूजे नूं कहिण तूं मेरा मैं तेरा, मैं तेरा तूं मेरा, इक्को रूप विच इक्को रूप गए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सद वसे नेड़न नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध ना कोए रखाईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ सुंदर सिँघ दे गृह पिण्ड रोसे ज़िला गुरदासपुर ✪

१३८०
२४

सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर होवो सवाधान, जोती जाते पुरख बिधाते इक्को लओ अंगड़ाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां निगाह मारो ज़िमीं असमान, धरनी उत्ते वेखो चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धर्म दी धार वेखो विधान, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म रिहा ना कोए ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। शब्द अनादी सुणे ना कोए धुन्कान, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस निझर झिरना मिले ना किसे पीण खाण, बूँद स्वांती नाभी कवल ना कोए टपकाईआ। मन कल्पणा फिरे शैतान, शरअ शरीअत करे लड़ाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले किसे ना आण, निज नेत्र लोचन नैण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर लोकमात मारो झाती, दरगाह साची पर्दा आप उठाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां होई अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। क्यों झगड़ा प्या काग़ज़ाती, अक्खर अक्खर वेख वखाईआ। सब दा लहिणा तको बहु बिध भांती, भेव अभेद देणा जणाईआ। किसे हिरदे वस्या नहीं कमलापाती, पति परमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। सब दी ज़िंदगी तको हयाती, जीवण जीवण विच्चों वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ । सतिगुर शब्द कहे अवतार

पैग़म्बर गुर निगाह मारो आपणे दीन मज़्हब, मशवरा मेरे नाल बणाईआ। किसे दा रिहा कोई ना अदब, आदाब विच सीस ना कोए झुकाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ कीता ग़ज़ब, हैरानी विच सर्ब कुरलाईआ। धर्म दी धार माया ममता विच होई जज़ब, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। नव खण्ड पृथ्मी तको तशदद्, झगड़ा दीन दुनी समझाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत सुहेले कोटां विच्चों दो चार अदद, बहुती गणत ना कोए गिणाईआ। तुसीं जीवां जंतां क्यों नहीं करदे मदद, हर हिरदे अन्दर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर धरनी धरत धवल धौल वेखो खेल अगम्म, अगम्मड़े हो के ध्यान लगाईआ। किसे भेव ना चुक्के आपणे ब्रह्म, पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सब दी दृष्टी होई चर्म, चम्म दृष्टी डेरा कोए ना ढाहीआ। कूड़ कुड़यारा बणया कर्म, कर्म कांड दा लेखा समझ कोए ना पाईआ। सच दा रिहा कोई ना धर्म, धरनी धरत धवल धौल रही कुरलाईआ। आपणा वायदा कौल इकरार तको परन, जो पेशीनगोईआं विच आए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द

धुर दयालू, दीना बंधप तेरी बेपरवाहीआ। तूं मालक ख़ालक सचखण्ड सची धर्मसालू, दरगाह साची मुकामे हक सोभा पाईआ। असीं लाडले तेरे सुत नन्हे बालू, बचपन तेरे चरण टिकाईआ। असां सब कुझ तक्कया दीन दुनी दा हालू, हालत बिगड़ी ख़लक खुदाईआ। तुध बिन कलयुग अन्त ना कोए संभालू, सम्बल दे मालक होणा आप सहाईआ। ओह लहिणा देणा लेखा पूरा कर दे जो सतिगुर नानक दे के गया पुत कालू, कल काती डेरा ढाहीआ। सति धर्म तेरे हुक्म नाल होवे चालू, चौथे जुग दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण सतिगुर शब्द धुर दे खेवट खेटे, दो जहान दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। असीं जुग चौकड़ी तेरे बेटे, बचपन तेरे चरण टिकाईआ। सदा सुखआसण तेरी सेजा लेटे, सति सरूप विच समाईआ। सानूं याद वायदे कौल इकरार कीते, जो करता पुरख दए दृढ़ाईआ। साडे अन्तिम सब दे समें बीते, पिछले बैठे पन्ध मुकाईआ। हुण अगे तेरे हुक्म दी चले रीते, रीतीवान तेरी सरनाईआ। झगड़े मुका दे मन्दिर मसीते, काया काअबा इक जणाईआ। आत्म परमात्म सब दा होवे मीते, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द हर हिरदे वसणा चीते, चितवित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी दी पवित्र कर दे नीते, नीतीवान तेरी सरनाईआ। तेरा इक्को हुक्म होवे हदीसे, हज़रतां तों बाहर कर पढ़ाईआ। साडे लेखे मुका बीस बीसे, इक इकीसे तेरी ओट तकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीसे, जगत जगदीश

१३८२
२४

तेरी वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर धुर दा हुक्म दृढ़ावांगा। सो पुरख निरञ्जण सगला संग रखावांगा। हरि पुरख निरञ्जण मेल मिलावांगा। एकँकारा जोड़ जुड़ावांगा। आदि निरञ्जण नूर रुशनावांगा। अबिनाशी करता वेख वखावांगा। श्री भगवान भेव चुकावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म संग रखावांगा। सतिगुर शब्द हो के डंक वजावांगा। धरनी धरत धवल धौल, सम्बल इक्को बंक सुहावांगा। धुर दा बणके पंडत पांधा रौल, फ़ुरने फ़ुरनयां विच्चों प्रगटावांगा। सब दे वायदे पूरे करां कौल, करनी दा करता आप हो जावांगा । जो आशा रख के गया कृष्णा कान्हा साँवल सौल, सावरीआ हो के वेख वखावांगा। हर घट अन्तर निरंतर जावां मौल, मौला हो के भेव चुकावांगा। आप सदा रहां अडोल, अडुल हो के खेल खिलावांगा। कलयुग अन्त पूरा तोलां तोल, तराज़ू कंडा नाम हथ्थ उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरतावांगा। सतिगुर शब्द कहे धुर हुक्म अगम्म वरताएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। लहिणा देणा सच दा वेख वखाएगा। चार जुग दे शास्त्र नाल मिलाएगा। अक्खर अक्खर फोल फुलाएगा। भेव अभेदा आप चुकाएगा। अछल अछेदा हो के वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाएगा। साचा हुक्म इक दृढ़ावेगा। दो जहानां आप सुणावेगा। श्री भगवान खेल खिलावेगा। गुर अवतार पैग़म्बरो, लेखा सब दी झोली पावेगा। जो वसणहारा देस परदेसा, दो जहानां वेख वखावेगा। जो वायदा कीता गोबिन्द दस दस्मेसा, दहि दिशा आपणा रंग रंगावेगा। जो वसे सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची आप सुहावेगा। जिस दा नाम गाए सहँसर मुख शेषा, दो सहँसर जिह्वा नाल वडयावेगा। जुग बदलणा उस दा पेशा, पेशीनगोईआं सब दीआं फोल फुलावेगा। ओह मालक ख़ालक नर नरेशा, नर नरायण नूर रुशनावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावेगा। सतिगुर शब्द कहे अवतार पैग़म्बर गुर सुणो हुक्म गुरदेवा, देव आत्मा धार जणाईआ। सब दी लेखे लावे सेवा, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। जिस दे गुण गाए नाल रसना जिह्वा, बत्ती दन्द सिफ्त सलाहीआ। ओह मालक ख़ालक अलख अभेवा, अगोचर अगम्म अथाह इक अख्वाईआ । जो वसणहारा सचखण्ड धाम सच्चे निहकेवा, निहचल आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा मेहरवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान अगम्म अथाहीआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ धिरता सिँघ दे गृह पिण्ड कलानौर ज़िला गुरदासपुर ✪

जन भगतां प्रभ बख्शे दात, नाम निधान झोली पाईआ। काया मन्दिर अन्दर पुछे वात, निरगुण हो के वेख वखाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां मारे झात, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। सच प्रीती जोड़े नात, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। दर वखावे अगम्म इकांत, नूर नुराना नज़री आईआ। तन वजूद करे शांत, अग्नी तत बुझाईआ। लहिणा देणा वेखे लोकमात, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे अंग लगाईआ। भगत जनां प्रभ साचा मीतड़ा, मित्र प्यारा एक। जो वसे धाम अनडीठड़ा, सचखण्ड दुआरे दए टेक। नाम जणाए अगम्म मीठड़ा, बुद्धी करे बिबेक। अग्नी तत ना लाए सेकड़ा, नज़री आए नेतन नेत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जन भगतां सद प्यारदा, प्रीतम धुरदरगाहीआ। आदि जुगादि ना कदे विसारदा, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। नाम संदेशा देवे राग सुणाए अगम्मी सितार दा, बिन किंग सितार हिलाईआ। शब्द सुणाए अनादी धुन्कार दा, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। प्रकाश होवे जोत उज्यार दा, नूर

१३८३ नुराना सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। १३८३

२४ भगत जनां भगवन रंगदा, काया चोली नाम मजीठ। मेल बख्शे धुर दे संग दा, लेखे लाए कौड़े रीठ। नाम सुणाए धुर २४

मृदंग दा, पुरख अकाला बीठलो बीठ। रस देवे अनोखे अनन्द दा, गृह मन्दिर वखा अनडीठ। झगड़ा मेटे विकार पंज दा, शब्द सुहागी सुणाए गीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां वेखणहारा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलि कल्की लए अवतारा, कल कातीआं पन्ध मुकाईआ। भगत सुहेला वेखां मीत मुरारा, मित्र प्यारा लवां जगाईआ। राती सुत्तयां करां दीदारा, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ह्राईआ। नज़री आवे परवरदिगारा, सांझा यार नूर अलाहीआ। जिस दा सब ने दिता इशारा, ग्रन्थ शास्त्र कूक कूक दृढ़ाईआ। ओह आवे कलि कल्की अवतारा, निहकलंका धुर अमाम इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां रंगां चोली, तन वजूद धुर दा रंग चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सां बोली, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलां सहिज सुभाईआ। सरगुण धार हो के खेलां होली, हरि करता हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां उधारां, उदर दा लेख मुकाईआ। मानस जन्म जन्म सुधारां,

सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग अन्तिम तकां किनारा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साचे रंग रंगाईआ। भगत जनां सतिगुर शब्द कहे मैं मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो वस्या हरघट चीता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। जेहड़ा ना मरया ना जीता, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस घर घर सति सच बख़्शणी प्रीता, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। ओह बदलणहारा नीता, नीतीवान वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा अन्तष्करन करे ठांडा सीता, अग्नी तत तत बुझाईआ।

१३८४
२४

२० माघ शहिनशाही सम्मत ११ बलकार सिंघ दे गृह पिण्ड रसूलपुर ज़िला गुरदासपुर

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ साडे अन्तष्करन आई हैरानी, हैरत विच तेरे अगे सीस निवाईआ। साडे दीनां मज़्बां अन्दर आई बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोए निशानी, कलयुग क्रिया कूड़ हल्काईआ। झगड़ा तक लै चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। प्यार रिहा ना किसे अक्खरां वाली बाणी, नाम कलमे रंग ना कोए रंगाईआ। दीन मज़्ब दी शरअ होई शैतानी, शरीअत बैठी आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे धुर दे कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै लोकमात, निरगुण हो के सरगुण वेख वखाईआ। साडे नाम कलमे ग्रन्थ शास्त्र लेखा तक लै काग़ज़ात, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। झगड़ा मिटे ना दीन मज़्ब ज़ात पात, अज़ाती रूप ना कोए दरसाईआ। इक दूजे दा करन घात, घाउ कूड़ी क्रिया रहे लगाईआ। सति दी रही ना कोए जमात, विद्या हक ना कोए पढ़ाईआ। जिधर तक्कीए होई अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्तिम साडी पुछ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। सच दुआर एकँकार इक्को मंगीए दात, इक्ठे हो के सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडे नाम कलम्यां रिहा कोए ना रस, रस्ता दीन दुनी गई बदलाईआ। मनुआ होए किसे ना वस, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। प्रकाश मिले ना किसे रवि शशि, सूर्या चन्द पन्ध ना कोए मुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार करते पुरख मार्ग

अगम्मा दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर तेरा होवे जस, आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। अणयाला तीर मार कस, नाम निधाना इक चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ धुर दा इक्को दे दे जाप, जग जीवण दाते दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट संताप, सति सन्तोख इक समझाईआ। जीवां जंतां दुरमति मैल धो पाप, पतित पुनीत आप कराईआ। लोकमात प्रगट हो आप, जोती जाता हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दुआरे अलख जगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ आ जा उत्ते धरत, धवल धौल दा लेखा दे मुकाईआ। नूर नुराने शाह सुल्ताने निगाह मार लै आपणी धरत, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जेहड़ी पेशीनगोईआं विच साडे नाल कीती शर्त, भविख्तां विच आपणा हुक्म वरताईआ। बेशक तूं मालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम नूर अलाहीआ। अन्त निगाह मार लै उत्ते फ़र्श, फ़र्शे ख़ाकी ज़मीं ज़मां ध्यान लगाईआ । जोती जाता हो के दे दरस, बिन नेत्र नैणां कर रुशनाईआ। साडी चार जुग दी हरस, सतिजुग त्रेता द्वापर तेरे ढोले रहे गाईआ। मेहरवाना मेहरवाना मेहरवाना आपणा कर दे तरस,
१३८५ रहमत आपणी आप कमाईआ। हर हिरदे अन्दर मेघ दे बरस, बूँद स्वांती कवल नाभ विच्चों टपकाईआ। जोती जोत सरूप १३८५
२४ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ किरपा २४
कर करतार, कुदरत कादर दया कमाईआ। प्रगट हो विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। मेहरवान हो के पा सार, महासार्थी आपणा वेस वटाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा नाल होवे कलि कल्की अवतार, निहकलंक आपणा डंक वजाईआ। सम्बल सुहा आपणा धाम न्यार, त्रैगुण अतीते आपणा आसण लाईआ। अमाम अमामा हो सिक्दार, नूर अलाह निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा सांझा यार, बेऐब इक अख्वाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण असीं भविख्तां विच आए उच्चार, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। मुहम्मद लेखा मुकणा सदी चौधवीं नाल चार यार, ईसा बीसवीं आपणा अंक बणाईआ। गोबिन्द दा ढईआ वेख विच संसार, घड़ी पल आपणी खोज खुजाईआ। वेद व्यासा जिस दा बणया लिखार, कातब हो के कलम चलाईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सची सरकार, हरि करता इक अख्वाईआ। दीन दुनी बिन नेत्र निगाह मार, बिन नैणां नैण उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप होया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दे उतार, मकरूज़ तेरे अगे मंग मंगाईआ। तेरे चरण कवल डण्डावत बन्दना सजदयां विच करीए निमस्कार, बिन सीस जगदीश निउँ निउँ लगीए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी तेरा अन्त ना पारावार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाह तेरी बेपरवाही विच समाईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड फ़तूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे परवरदिगार मेरे निरँकारा, निराकार तेरी सरनाईआ। मेरी बेनन्ती सुण पुकारा, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द तेरा दुलारा, दूलहा दो जहान सोभा पाईआ। जिस दे हुक्म विच आए तेई अवतारा, अवतर हो के खेल खिलाईआ। जिस पैग़म्बरां दिता इशारा, सैनत कलम्यां वाली लगाईआ। गुरुआं गुरदेव दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार जुग दे शास्त्रां बण लिखारा, सिफ्त सलाही ढोले गाईआ। नाम कलमा कर उज्यारा, अक्खर अक्खरां नाल वड्याईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ारा, धरनी कूक कूक सुणाईआ। मेरे अन्तष्करन दी सुण लै हाहाकारा, हौकयां विच मेरी दुहाईआ। कलयुग वध्या कूड़ कुड़यारा, कलकाती नज़री आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अन्ध अँधयारा, सत्त दीप दीप ना कोए रुशनाईआ। मैं जिधर तकां धूंआँधारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पवित्र रिहा नहीं कोई धर्म दुआरा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरुदुआर चर्च रहे सुणाईआ। तीर्थ तट रोवण ज़ारो ज़ारा, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती बिन नैणां नीर वहाईआ। तेरे नाम दा दिसे ना कोए प्यारा, पीआ प्रीतम तैनूं मिलण कोए ना पाईआ। दीआ बाती तेरे गृह ना होए उज्यारा, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। तेरा नाम शब्द अगम्मा सुणे ना कोए धुन्कारा, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस किसे मिले ना ठण्डा ठारा, बूँद स्वांती नाभी कवल ना कोए टपकाईआ। मन मनसा विच होया हँकारा, गढ़ कूड़ बैठा बणाईआ। तृष्ना सब नूं करे ख्वारा, पंच विकार नाल मिलाईआ। त्रैगुण चारों कुण्ट आपणा कीता वरतारा, वर्तमान वेख ख़लक खुदाईआ। तेरा प्यार रिहा ना विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। मैनूं कहि के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, संदेशा भविख्तां विच जणाईआ। कलि कल्की आवे आपणी धारा, निहकलंका रूप अलाहीआ। अमाम अमामा होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। मैं तेरी करनी इंतज़ारा, राह तकां चाँईं चाँईंआ। कवण वेला मेरा साहिब स्वामी मैनूं दए सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं चरण कवल धवल हो के करां निमस्कारा, धरनी हो के सीस निवाईआ। तेरा लहिणा देणा मेरे नाल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग संग रखाईआ। मैं तेरी धूड़ मस्तक लावां छारा, टिक्के शहिनशाह रमाईआ। तूं सति धर्म सतिजुग मेरे उत्ते कर उज्यारा, उजरत कलयुग दए चुकाईआ।

तेरा इक्को इष्ट दीन दुनी दा होए प्यारा, दीन मज़्ब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे नाम दा दो जहान होवे इक जैकारा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला सारे लैण गाईआ। तेरा इक्को होवे धुरदरगाही सच दरबारा, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। डण्डावत बन्दना सजदयां विच तैनूं इक्को गृह होवे निमस्कारा, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ वंड ना कोए वंडाईआ। तूं पंजां ततां देवणहार अधारा, त्रैगुण आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी सुण लै गिरयाज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सम्बल दे मालक हो जा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल प्रगटाईआ। तेरा सतिगुर शब्द दो जहान तेरा लाए नाअरा, ढोला गीत इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरा लेखा आदि अन्त जुगा जुगन्त श्री भगवन्त मेरा लहिणा देणा दे उधारा, मांगत हो के ख़ाली झोली अगे डाहीआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ गुलज़ार सिँघ दे गृह पिण्ड फ़तूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

सतिगुर शब्द धुर दा माही, मेहरवान इक अखवांयदा। जुग जुग दो जहान बणे राही, रैहबर हो के खेल खिलांयदा। वेखणहारा थल अस्गाही, टिल्ले पर्वत फोल फुलांयदा। लख चुरासी पर्दा रिहा उठाई, भेव अभेदा आप खुलांयदा। नाम संदेशा इक सुणाई, अणसुणत आप सुणांयदा। हरिजन उठाए फड़ फड़ बाहीं, पल्लू आपणी गंढु बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमांयदा। सतिगुर शब्द दो जहानां पाँधी, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। जिस दी धार तूं मेरा मैं तेरा गांदी, ब्रह्म ब्रह्मांड दए सुणाईआ। जिस दे बिना सब दी पत जांदी, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ । करे खेल कलयुग कूड़ी क्रिया काँ दी, जीवां जंतां अन्दर ध्यान लगाईआ। वड्याई वेखे धुर दे नाँ दी, नाम निधाना की जणाईआ। रहमत वेखे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं छाँ दी, किस बिध सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तृष्ना तके धरनी धवल माँ दी, मातृ भूमी हो के की जणाईआ। जगह वेखे आपणे पवित्र थाँ दी, थनंतरां खोज खुजाईआ। पुकार सुणे सूर गाँ दी, पशू कूक कूक की सुणाईआ। वड्याई वेखे आपणे सतिगुर शब्द वाह वाह दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप निभाईआ। सतिगुर शब्द वेखणहारा आदि जुगादी, जुग जुग ध्यान लगाईआ। जिस दी धार सदा सादी, बुद्धी विच समझ किसे ना आईआ। उह वेखणहारा लख चुरासी आबादी, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जो अवतार पैग़म्बर गुरुआं कोलों हुक्म पुछे जवाबी, जवाबतल्बी इक

रखाईआ। आपणे आपणे भगत सन्त सिख मुरीद पूरे मैनूं दस्सो शताबी, जल्दी जल्दी हुक्म सुणाईआ। जो वेखणहारा सच दुआर महिराबी, महबूब नूर अलाहीआ। सो भगतां दी मंज़ल दी दए आज़ादी, आज़ाद आपणा नाम जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस नूं आदि जुगादि सारे रहे अराधी, अराधना विच आपणा झट लँघाईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड अठवाल ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे प्रभू हर हिरदे बख्श दे आपणा नाम, अन्तर निरंतर आप टिकाईआ। अमृत रस हकीकी प्या दे जाम, अनरस आपणा आप चखाईआ। अन्धेर मिटा दे साढे तिन्न हथ्थ अन्तर शाम, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। भाग लगा दे पंज तत ग्राम, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। मन मनसा कूड़ी क्रिया तेरे चरण करे प्रणाम, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे कलयुग कूड़ कुड़यारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा कर उज्यारा, नव सत्त करे रुशनाईआ। इक्को इष्ट देव होवे निरँकारा, जो सब दा पिता माईआ। इक्को नाम कलमा तेरा होवे नाअरा, आत्म परमात्म ढोला सारे गाईआ। तूं पुरख अकाला सांझा परवरदिगारा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। मैनूं तेरे चरणां दा सहारा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। तेरा संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, शब्द शब्दी शब्द जणाईआ। तूं ठाकर मेरा कलि कल्की अवतारा, निहकलंका अगम्म अथाहीआ। मेहरवाना श्री भगवाना मेरी पा सारा, महासार्थी आपणा वेस वटाईआ। मेरी डण्डावत बन्दना तेरे चरण कवल निमस्कारा, निव निव लागां पाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता जगत जगदीसा चौबीसा अवतारा, अवतरी हो के वेख वखाईआ। मेरे उत्तों मेट दे धूंआँधारा, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाते पुरख बिधाते तेरे चरण धूड़ बिन मस्तक लावां छारा, शहिनशाह मेरी दुरमति मैल देणी धुआईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ महिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड शिकार माछीआं ज़िला गुरदासपुर ✪

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ साडी अगम्म डण्डावत बन्दना, सजदयां विच सीस निवाईआ। निरगुण दाते पुरख

१३८८ २४

बिधाते आदि जुगादी धुर दे सज्जणा, साहिब स्वामी तेरी ओट तकाईआ। धरनी धरत धवल धौल कूड़ी क्रिया तोड़ दे फंदना, जगत जंजाल दे गुआईआ। तेरे हुक्म विच कलयुग कूड़ कुड़यारा अन्तिम लँघणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। इक्को दुआर एकँकार परवरदिगार तेरा मंगणा, दूसर इष्ट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण कलयुग मेट जगत अँधयार, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तक विभचार, सत्त दीप खोज खुजाईआ। साची सिख्या रही ना विच संसार, अन्तर आत्म तेरा भेव कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोलदे सर्ब जैकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होया धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। साडे भविख्तां लैणा विचार, पेशीनगोईआं तेरे चरण टिकाईआ। असीं तेरा कलि कल्की करदे इंतज़ार, निहकलंक तेरी ओट रखाईआ। अमाम अमामा धुर दे परवरदिगार, सांझे यार नूर अलाहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर आण के पैज संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं निगाह मार, चौदां तबक खोज खुजाईआ। बीस बीसे हो ख़बरदार, हज़रत ईसा नैण उठाईआ। मूसा कूक कूक करे पुकार, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द दए इशार, गोबिन्द ढोला इक सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब दा लहिणा देणा कर्ज उतार, मकरूज लेखा दे चुकाईआ। तेरे दर ते सारे होए भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। चार जुग दे शास्त्र बिन अक्खीआं रोवण ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। साचा रिहा ना कोए सतिकार, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। सानूं पढ़ पढ़ थक्का संसार, परम पुरख तेरे रंग ना कोए रंगाईआ। मन कल्पणा दीन दुनी अन्दर वध्या हँकार, विभचार सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त अगम्म वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साहिब सूरे सरबग, हरि करते धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यार बदल दे जग, जुगती आपणी नाल बदलाईआ। त्रैगुण माया बुझा दे अग्ग, पंज तत ना कोए तपाईआ। सृष्टी दृष्टी जो तेरे नालों होई अलग, मेला मेल सहिज सुभाईआ। दर्शन दे उपर शाहरग, शहिनशाह पर्दा आप उठाईआ। तेरी सरन सरनाई आत्म धार दीन दुनी जाए लग्ग, परमात्म मिलके वजे वधाईआ। तूं आदि जुगादी नूर अलाही रब्ब, मिहबान बीदो इक अख्वाईआ। धुर दे राम काहन तैनूं रहे सद्द, सद्दे दईए चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब नूं कर गद गद, खुशीआं आपणा रंग रंगाईआ। मानव ज़ाती इक्को बणा लै यद, दीन मज़्हब दा लेखा रहे ना राईआ। सदी चौधवीं अन्तिम शरअ दी मेट दे हद्द, शरीअत इक्को दे वखाईआ। तेरा नाम निधाना दो जहानां वजे नद, ब्रह्मण्डां खण्डां कर शनवाईआ। ज़ात पात मेट दे हद्द, हदूद इक्को इक वेख वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण साडी इक्को इक अरदास, अर्ज़ अरज़ोई तेरे चरण टिकाईआ। तूं शहिनशाह शाहो शाबाश, हरि करता नूर अलाहीआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा तक लै ख़ास, ख़ालस सृष्टी वेख ख़लक खुदाईआ। परम पुरख परमात्म तेरे उत्ते रिहा ना किसे विश्वाश, विश्व दा भेव ना कोए चुकाईआ । तन वजूदां अन्दर होए ना कोए प्रकाश, अन्ध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। नाम रमया दिसे ना किसे स्वास, साह साह ना कोए ध्याईआ। मनुआ मन होया बदमाश, बदी करे थांउँ थाँईंआ। संदेशा दे दे शंकर कैलाश, कला धारी दे दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम धरनी उत्तों कर विनाश, विश्व दे मालक होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सर्ब गुणतास, गुणवन्ते श्री भगवन्ते आदिन अन्ते तेरी ओट तकाईआ।

✪ २० माघ शहिनशाही सम्मत ११ काशी राम दे गृह सनय्यीआ ज़िला गुरदासपुर ✪

१३६० धरनी कहे प्रभू मेरा लेखे ला लै चर्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी प्रगट कर दे साचा धर्म, १३६०
२४ धर्म दी धार एकँकार दे प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी हर हिरदिउँ कढ दे भरम, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा २४
रंग रंगाईआ। निहकर्मी निहकामी मेरा श्रेष्ट कर दे कर्म, कुदरत दे कादर आपणी दया कमाईआ। सतिजुग मेरे उत्ते दे दे जरम, आप बण जणेंदी माईआ। झगड़ा मुका दे ज़ात वरन, बरनां लेखा रहे ना राईआ। इक्को ओट होवे तेरे चरण, चरणोदक जाम देणा प्याईआ। नव सत्त तेरी होवे सरन, सरनगति इक रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाले दीन दयाले सारे मंज़ल तेरी चढ़न, पौड़ी डण्डा इक्को इक वखाईआ। दीन मज़्ह्ब दी धार विच ना लड़न, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तेरे भय विच जीव जंत साध सन्त मेरे उत्ते डरन, भय भाउ सब दे सिर रखाईआ। तूं आदि जुगादी भन्नृण घड़न, घड़न भन्नृणहार इक अख्वाईआ। झगड़ा मेट दे तन वजूद धड़न, आत्म परमात्म दे समझाईआ। सच दुआर एकँकार तेरे सारे वड़न, दरगाह साची पाँधी लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे सो पुरख निरञ्जण, परमात्म तेरी बेपरवाहीआ। किरपा कर दे हरि पुरख निरञ्जण, निरवैर तेरी सरनाईआ। एकँकारे मेरे दर्द दु:ख भय भञ्जण, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। प्रकाश कर दे आदि निरञ्जण, नूर नुराने नूर कर रुशनाईआ।

अबिनाशी करते बण सज्जण, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। श्री भगवान तेरी किरपा नाल कूड़ कुड़यारे भाण्डे भज्जण, लोकमात रहिण ना पाईआ। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म तेरे नूरी दीपक जगण, बिन तेल बाती कर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द दमामे वजण, दो जहानां कर शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे उठ उठ भज्जण, सेवा करन चाँईं चाँईंआ। देवत सुर करोड़ तेतीसा आसण सिँघासण तजण, जोती जाते पुरख बिधाते तेरे चरण कवल लैण सरनाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना मेरे उत्तों कलयुग कूड़ बुझा दे अग्न, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर आत्म परमात्म दे दे भजन, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। कूड़ी क्रिया सृष्टी दृष्टी अन्दरों कढण, तन वजूद माटी ख़ाक पतित पुनीत दे कराईआ। तूं आदि जुगादी नूर अलाही रब्बण, यामबीन तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे परवरदिगारा, नूर अलाह तेरी सरनाईआ। मैं आदि जुगादी तेरी ख़िदमतगारा, ख़ादिम हो के सेव कमाईआ। तूं नूर नुरानी शाह सुल्तानी भूपत भूप सच्चा शाह सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी बीते कोटन विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी केते गए सेव कमाईआ।
१३६१ आदि अन्त जुगा जुगन्त तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी डण्डावत बन्दना बिना सीस तों निमस्कारा, १३६१
२४ जगदीस तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हर हिरदयों कढ दे बाहरा, मानस मानव मानुख अन्तर निरंतर कर सफ़ाईआ। २४
सृष्टी दृष्टी विच मेट दे धूंआँधारा, नूरी चन्द चन्द चमकाईआ। मेरा पूरब लहिणा तेरे नाल उधारा, कुदरत दे कादर दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। तूं आदि जुगादी दीना बंधप दीन दयाल, दया निध आप अख्वाईआ। सद वसें सचखण्ड सची धर्मसाल, दरगाह साची सोभा पाईआ। तेरा इक्को दूलहा दुलार सुत बाल, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाईआ। जो जुग चौकड़ी सब दी करे संभाल, सम्बल दे मालक अन्त मेरा लेखा देणा चुकाईआ। तूं वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद धुरदरगाहीआ। सति धर्म दा फल रिहा ना मेरे डाल, पत्त टहणी गई कुमलाईआ। तेरे नाम बिना मैं मातलोक होई कंगाल, कोझी कमली हो के मंग मंगाईआ। तेरा मानव होया बेहाल, बिहबल हो के रिहा कुरलाईआ। मैनूं इयों जापदा सब दे सिर ते कूकदा काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। चित्रगुप्त राय धर्म नूं लेखे रिहा वखाल, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। लाड़ी मौत पाए धमाल, नच्चे कुद्दे टप्पे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं आदि तों मिट्टी ख़ाक, ख़ाकी रूप समाईआ। तूं मेरे

उत्ते कलयुग जीवां अन्तर खुल्ा दे ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। आत्म परमात्म बण जा सज्जण साक, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेल चाँईं चाँईंआ। शब्द अगम्मे घोड़े चढ़ राक, जगत जहान वेख वखाईआ। हथ्थ फड़ लै बिन अक्खरां भविख्तां वाले वाक्, जो अवतार पैग़म्बर गुर गुरदेव जणाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना हर हिरदा कर दे पाक, पतित पुनीत दे बणाईआ। निगाह मार बिन अक्खां झाक, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। मैं धरत निमाणी आदि जुगादी तेरी चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब मेरी झोली पा दे बाकी बाक, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ । धरनी कहे मैं बेनन्ती करां हज़ूर, हज़रतां दे मालक सीस निवाईआ। तेरा सति सच दस्तूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरी आसा मनसा पूर, परम पुरख बेपरवाहीआ। मेरे उत्तों कलयुग कढ दे क्रिया कूड़, कूड़ कुटम्ब दे मिटाईआ। निरगुण जोत दा बख्श दे नूर, हर हिरदे कर रुशनाईआ। साचे नाम दी दे दे तूर, तुरीआ दी धार दे प्रगटाईआ। अमृत रस दा दे सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। उह लहिणा पूरा कर दे जो आसा रख के गया मूसा उत्ते कोहतूर, कुदरत दे कादर वेख वखाईआ।
१३६२ ईसा लहिणा मंगे ज़रूर, ज़रूरत तेरे चरण टिकाईआ। मुहम्मद तैनूं कहि के याह ग़फ़ूर, सजदयां विच सीस झुकाईआ। १३६२
२४ तूं सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। तेरा लेखा नहीं नेड़े दूर, दूर दुराडे धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप २४
हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करते बेपरवाहीआ। मैनूं तेरे चरण कवल भरवासा, निव निव लागां पाईआ। तूं मालक ख़ालक पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर तेरी वड्याईआ। तूं दो जहानां पावणहारा रासा, लख चुरासी आत्म परमात्म गोपी काहन नाच नचाईआ। मैं तेरी जुग जुग दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। तेरा हुक्म संदेशा की सुणना चाहुंदा शंकर कैलाशा, कलधारी दे दृढ़ाईआ। किस बिध कलयुग अन्तिम होणा तमाशा, तमाशबीन बणना धुर दे माहीआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले मैनूं इयों जापदा जिवें मेरे उत्ते चढ़नी लाश ते लाशा, लशकर ख़ाक रूप समाईआ। तूं दीन दुनी दा बदलण वाला पाशा, पुश्त पनाह मेरी हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे दर दी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। दीन दुनी दा गढ़् तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। आपणे नाम दी इक्को दसदे पंगती, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्ब बणा दे साची संगती, सगले संगी आपणा संग निभाईआ। कूड़ी क्रिया अन्दरों कढ दे मन दी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ।

उह आशा पूरी कर दे गोबिन्द सुत दुलारे चन्द दी, जो चौथे जुग दा लेखा दए मुकाईआ। मैं चाहुंदी सृष्टी लोभी ना रहे धन्न दी, माया ममता विच ना कोए हल्काईआ। वणजारी रहे ना चुगली कन्न दी कायनात दा पर्दा देणा खुल्हाईआ। इक्को सिख्या दे दे सतिगुर शब्द धार ब्रह्म दी, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। मैं आशावंद सतिजुग दे जरम दी, जन्म जन्म विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे उत्ते चला दे धार साचे धर्म दी, एकँकार आपणा नाम दृढ़ाईआ।

✪ ३० माघ शहिनशारी सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर मांगे संगत दे नवित ✪

सतिगुर पूरन पूरन उपदेशे, आदि जुगादि शब्द जणाईआ। जिस दी सिख्या सुणन विष्न ब्रह्मा शिव महेषे, महिखासुर आपणी खुशी बणाईआ। जिस दे अवतार पैग़म्बर गुर सुणन संदेशे, बिन सँध्या सरघी रिहा दृढ़ाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशे, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जो निरगुण सरगुण बदलणहारा भेसे, भेखाधारी अगम्म अथाहीआ। जो वसणहारा
१३६३ सचखण्ड साचे देसे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो तन वजूदां मेटणहार कलेशे, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जिस १३६३
२४ दा मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसे, तन वजूद ना कोए रखाईआ । जिस दा शब्द सतिगुर दस दस्मेसे, दहि दिशा वेख वखाईआ। २४
जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्म नर नरेशे, नर हरि इक अख्वाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह करे सहँसर मुख शेषे, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जुग बदलणा जिस दा पेशे, पेशीनगोईआं अवतार पैग़म्बर गुर गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरन पूरन बोल, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। स्वामी हो के वसे कोल, घर बैठा सोभा पाईआ। नाम निधान दए अनतोल, अतुल आप वरताईआ । सच दुआरा देवे खोल्ह, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। शब्द अनादी वजा के ढोल, सोई सुरत दए जगाईआ । बजर कपाटी पर्दा खोल्ह, भेव अभेदा दए समझाईआ। निरगुण हो के निरगुण करे चोहल, चोजी प्रीतम रंग रंगाईआ। स्वामी हो के जाए मौल, मौला हो के आपणा खेल खिलाईआ। पंच विकार करे ना घोल, तन वजूद करे ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरन पूरा, पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। आदि जुगादी धुर दा नूरा, जोती जाता अगम्म अथाँईंआ। शब्द अनादी अगम्मी तूरा, तुरीआ बाहर दृढ़ाईआ। नित नवित हाज़र हज़ूरा, हज़रतां बाहर धुरदरगाहीआ। इशारा देवणहारा मूसा उत्ते कोहतूरा, कुदरत कादर नूर

अलाहीआ। जिस दी मस्ती नाम सरूरा, सुरती शब्द विच समाईआ। उह जन भगतां लहिणा देणा पूरा करे ज़रूरा, ज़रूरत वेखे चाँईं चाँईंआ । जिस दा नाम कलमा मशहूरा, सतिगुर शब्द नाल सलाहीआ। जिस दा पन्ध नहीं नेरन दूरा, दूर दुराडा इक्को रंग समाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला करनहारा मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरन पूरन एक, एकँकार रूप समाईआ। आदि जुगादी देवणहारा टेक, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। करनहारा बुध बिबेक, पतित पुनीत कराईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। हरिजन सन्त सुहेले बणाए नेक, निक्का वडा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर पूरन पूरन देवे जाप, जग जीवण दाता दया कमाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी प्रगट होए आप, आप आपणा पर्दा लाहीआ। त्रैगुण माया मेटे ताप, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जन भगत बणा के आपणी ज़ात, आत्म परमात्म संग बणाईआ। अमृत बख्श के बूंद स्वांत, झिरना निझर दए झिराईआ। दरस दिखाए आप इकांत, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जन भगतां पुछे अन्तिम
१३६४ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मेहरवान हो के लेखे लावे प्रेम प्यार दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाम १३६४
२४ निधाना देवे दात, अमुल आप वरताईआ। जन भगतां पुछे वात, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण प्रीती जोड़ २४
के नात, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शणहारा अमृत बूंद स्वांत, तृष्ना तृखा मेटे सहिज सुभाईआ।

✪ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात नूं ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरी रुत बसन्त, फुल फुलवाड़ी जगत भगत महकाईआ। जिन्हां दा मालक ख़ालक इक्को कन्त, नर हरि नरायण नूर अलाहीआ। जो सब दी बणावणहारा बणत, घड़न भन्नणहार अगम्म अथाँईंआ। आदि जुगादी सदा बेअन्त, बेऐब नूर अलाहीआ। जिस दा नाम निधाना अगम्मा मंत, मंतव सब दे हल कराईआ। ओह आदि जुगादी जुग चौकड़ी वेखणहारा आपणे सन्त, सति सतिवादी हो के ध्यान लगाईआ। अन्तर निरंतर तोड़नहारा हउमे गढ़ हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। मानव ज़ाती वेखणहारा इक्को पंगत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। दो जहानां श्री भगवाना बणे अनादी पंडत, सिख्या साख्यात समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी भगतां नाल बहार, पत्त टहणी फल फुल महकाईआ। जिन्हां दा मित्र प्यारा इक्को यार, नर निरँकार नज़री आईआ। जो अन्तर निरंतर निरगुण हो के पावे सार, वेखणहारा बेपरवाहीआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह देवणहार अधार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दे नाम दी रुत मौली बणी रहे गुलज़ार, गुलशन लोकमात वेख वखाईआ। उस दे चरण कवल कवल बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतार, बिन सीस सीस निवाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला जुग जुग पावणहारा सार, महासार्थी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी सब तों अवल्लड़ी रुत, रुतड़ी इक्को धार महकाईआ। जिस नूं वेखणहारा अबिनाशी अचुत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस साहिब स्वामी मैनूं बणाया दुलारा सुत, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। ओह लेखा जाणे काया माटी बुत, बुतख़ानयां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी रुतड़ी अगम्मी मौली, मौला मालक दए वड्याईआ। ख़ुशी होई उपर धौली, धरनी धरत
१३६५ धवल लई अंगड़ाईआ। मैं लेखा तक्कया अवतार पैगम्बर कवली, गुरु गुरदेव नाल मिलाईआ। जिस दी धार सब तों अलाही १३६५
२४ अवली, आलमीन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा २४
आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण फल्गुण सज्जण मीत, मित्रां दयां जणाईआ। इक संदेशा सुण लै धुर दा गीत, जो गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द धार दृढ़ाईआ। जिस दे नाल लख चुरासी होवे पतित पुनीत, दुरमति मैल गुवाईआ। तन वजूदां करे ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काअबा इक्को इक वखाईआ। त्रैगुण नालों करे अतीत, त्रैभवण धनी नाल मिलाईआ। सदा सुहेला वसे चीत, चितवित ठगौरी रहे ना राईआ। आत्म परमात्म होवे प्रीत, प्रीतम मिले धुर दा माहीआ। मानस जन्म लए जीत, हार विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मेरा वक्त सुहञ्जणा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, निरवैर नूर अलाहीआ। जिस नूं कहिंदे दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। उस दा चरण धूड़ नेत्र पावां अंजणा, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। घर स्वामी मिले सज्जणा, ठाकर अगम्म अथाहीआ। जिस सच दा पर्दा कज्जणा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। दर ठांडे अवतार पैग़म्बर गुर सजणा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। जिस दा इक्को डंका वजणा, नाद अनादी धुन वजाईआ। जिस दा अमृत पी पी सब ने रज्जणा, बिन

रसना रस चखाईआ। जिस दा इक्को नूर दीपक जोत जगणा, दो जहान करे रुशनाईआ। ओह स्वामी गोपाल मूर्त मदना, मधसूदन इक अवखाईआ। जिस शरअ दी मेटणी हद्दना, हदूदां लेखा दए मुकाईआ । एका रंग रंगाउणा आहला अदना, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नाम कलमा होवे धुर दा भजना, बन्दगी बन्दगी विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मेरी फुल फुलवाड़ी तक, हरिजन लोकमात ध्यान लगाईआ। जिन्हां दा लेखा नाल हकीकत हक, लाशरीक दए वड्याईआ। जगत मार्ग प्यार विच जाण ना थक, पाँधी हो के भज्जण वाहो दाहीआ। जिन्हां दा आत्म परमात्म कौल इकरार पक्क, वायदा सके ना कोए भुलाईआ। उहनां दा मालक इक्को नूर नुराना यक, वायदे वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मेरी वेख लै धरनी धरत, धवल धौल ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै निरगुण धार परत, पतिपरमेश्वर रूप बदलाईआ। कौल तक लै गुर अवतार पैग़म्बरां वाली शर्त, शरअ तों बाहर खोज खुजाईआ। बिन नेत्रां निगाह मार लै उत्तों अर्श, अर्शी प्रीतम तेरे अगे वास्ता
१३९६ पाईआ। मेहरवान महबूब हो के मेरे उत्ते करदे तरस, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। मेरा खुशीआं वाला शहिनशाही १३९६
२४ इक इक बरस, बरसी तेरे प्रेम विच रखाईआ। जुग चौकड़ी मेरी पूरब मेट दे हरस, हवस अगे रहे ना राईआ। जोती २४
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मेरे वल्ल कर ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। तूं योद्धा सूरबीर नौजुवान, मर्द मर्दान इक अख्वाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, शाहो भूप सहिज सुखदाईआ। मेरे उत्ते होणा मेहरवान, मेहर मेहर मेहर नज़र उठाईआ। मैं कलयुग अन्तिम मंगां दान, दाता हो के देणा वरताईआ। मैनूं संदेशा दे के गया काहन, घनईया हो के गया दृढ़ाईआ। पैग़म्बरां दिता पैग़ाम, बिन अलिफ़ ये सुणाईआ। साडा मालक ख़ालक इक अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ । जो अन्त सब दा करे इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को कलमा दए कलाम, कायनात इक पढ़ाईआ । इक्को सजदा दसे सलाम, सीस जगदीश इक निवाईआ। इक्को प्यार मुहब्बत बणाए विच अवाम, आम दा लेखा दए मुकाईआ। शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, ज़ंजीर मज़्बां दए तुड़ाईआ। नाम हकीकी प्याए जाम, अमिउँ रस आप चखाईआ। जगत अन्धरा मेटे शाम, शमा जोत नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण फग्गणा, सोहणयां दयां जणाईआ। सो पुरख निरञ्जण चाढ़े रंगणा, रंगणहार इक अख्वाईआ। हरि पुरख

निरञ्जण तेरा मनाए सगना, सोहणा संग रखाईआ। एकँकार वजाए नदना, नादी धुन सुणाईआ। आदि निरञ्जण दीपक जगणा, जोती जाता करे रुशनाईआ। अबिनाशी करते मेल मिलाउणा सज्जणा, साजण मीत धुरदरगाहीआ। श्री भगवान लेखे लावे आहला अदना, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के गज्जणा, दो जहान करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द दा इक्को डंका वजणा, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे हुक्म विच विष्न ब्रह्मा शिव भज्जणा, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे फल्गुण अवतार पैग़म्बर गुर आउणगे, बिन कदमां कदम उठाईआ। तेरा लहिणा देणा वेख वखाउणगे, जगत अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। पिछला हिसाब सर्ब मुकाउणगे, सतिजुग त्रेता द्वापर नाल मिलाईआ। पुरख अकाले अगे सीस निवाउणगे, निव निव लागण पाईआ। धुर दे हुक्म हुक्म वखाउणगे, पर्दे परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक अन्तर निरंतर आप वसाउणगे। सतिगुर शब्द कहे फल्गुण वेख लै धुर दा वक्त, जगत घड़ी पल समझ कोए ना पाईआ। की लहिणा देणा प्रभू दा नाल जगत, जगदीश
१३८७ की आपणी खेल खिलाईआ। किस बिध लेखा जाणे धरत, धवल दी धार पर्दा आप उठाईआ। जोती जाता हो के आवे १३८७
२४ परत, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। भाग लगावे उत्ते फ़र्श, मिट्टी ख़ाक दए वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां करे तरस, रहमत २४
आपणी आप कमाईआ। सच प्यार दा मेघ देवे बरस, अमृत आपणा जाम प्याईआ। पूरब जन्म दा लाहवे कर्ज़, मकरूज हो के आप चुकाईआ। ग़रीब निमाणयां पूरी करे ग़रज़, आपणी ग़रज़ ना कोए रखाईआ। एह प्रभू दा खेल होणा असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्को इक गुसाँईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मेरे उत्ते कर मेहरवानी, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सति धर्म दी नज़र आवे निशानी, निशाना क्रिया कूड़ मिटाईआ। सच प्यार दा बण दानी, दाता हो के दे वरताईआ। झगड़ा मेट जिस्म जिस्मानी, तन वजूद नफ़रत ना कोए रखाईआ। तैनूं हज़रत ईसा किहा बाप असमानी, इस्म आज़म इक्को दे समझाईआ। मुहम्मद कूक के किहा मेरा मालक नूर नुरानी, अल्ला अलाह इक अख्वाईआ। ज़बतो ज़वा अर्शे नवा मविस्ती ज़मो अर्शे ज़वू फ़र्शे दुआ मेरे खुदा चकिसती मववज़ा नज़ू कम्मबा वज़ी यकम बेअज़ल ज़मतो ज़खी नूरे निज़ा मेहरवान इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मैं की दस्सां कहाणी, कहावत की जणाईआ। मेरी जुग जुग दी रुत पुराणी, बसन्त कहि के सारे गाईआ। मैं अगे मंगां नवीं नवीं निशानी, निशाना आपणा देणा समझाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी विच ना रहे

बेगानी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सब नूं सति धर्म दे ईमानी, अमल इक्को इक समझाईआ। झगड़ा रिहे ना जगत जिस्मानी, ज़मीर अन्दरों देणी बदलाईआ। तेरी मंज़ल इक रुहानी, रूह बुतां कर सफ़ाईआ। दीनां मज़्बां दा झगड़ा मेट दीवानी, अन्तिम फ़ैसला हक सुणाईआ। तूं शहिनशाह सुल्तानी, पातशाह इक अख्वाईआ। वसणहारा सचखण्ड मुकामी, मुकामे हक तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द मेरी इक बेनन्ती, बिनै विच सीस निवाईआ। इक्को आपणे नाम दी दस्स दे पंगती, बहु विद्या लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणे पंडती, सिख्या साख्यात समझाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म भेव चुकाईआ। कल्पणा रहे ना किसे मन दी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। निशानी तक लै तारे चन्न दी, चन्द सितार वेखण नैण उठाईआ। तेरी वड्याई होवे धन्न धन्न दी, नव सत्त वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी आसा इक रखाईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द तेरा इक्को होवे नाउँ, नाउँ निरँकार देणा दृढ़ाईआ । इक्को बणना पिता माउँ, परम पुरख रूप दरसाईआ। इक्को नगर खेड़ा वखाउणा गाउँ, सचखण्ड साचा सोभा
१३६८ पाईआ। इक्को प्यार विच फड़ना बाहों, पूत सपूते आप उठाईआ। आपणे मिलण दा हर हिरदे बख्शणा चाउ, चाउ घनेरा १३६८
२४ इक प्रगटाईआ। बेशक तेरे मानस मानुख भुल्ले राहों, मानव राही आपणे लै बणाईआ। हँस बणा लै फड़ फड़ काउं, कागों २४
हँस उडाईआ। झगड़ा मेट दे सूर गांउ, पशूआं पंछीआं खल्ल ना कोए लुहाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरे नाम दी होए वाहो वाहो, वाहवा वाहिगुरु तेरी वजे वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर न्याँउ, इन्साफ़ आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण फल्गुण धुर दा हुक्म अपार, अपरम्पर की जणाईआ । जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चार, चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। उह कुदरत दा कादर एकँकार, इक इकल्ला नूर अलाहीआ। जिस दा जुग चौकड़ी पसार, वेखणहारा धुरदरगाहीआ। मैं उस दा बरखुरदार, नन्हा इक्को नज़री आईआ। जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त बेअन्त अख्वाईआ। उस दा हुक्म संदेशा प्रगट होणा विच्चों मेरी धार, धरनी धरत धवल धौल दृढ़ाईआ। जिस दे हुक्म विच विष्न ब्रह्मा शिव होए ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जोत विच्चों जोत कर उज्यार, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। फल्गुण कहे सतिगुर शब्द बेशक तेरा हुक्म मिट्ठा, सद भाणे विच समाईआ। मैनूं खेल दस्स सद अनडिठा, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर

शब्द कहे सब दा लेखा वेख लै चिट्टा, काली धार बाहर दृढ़ाईआ। सति धर्म दा दुद्ध फिट्टा, कलयुग कूड़ नाल वड्याईआ। जिस दा अन्तिम निकलणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी वेखे ख़लक खुदाईआ। किसे दा इष्ट रहिणा नहीं पत्थर इट्टां, पाहनां सीस ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा पहला आया, सोहणी खुशी बणाईआ। दर ठांडे मंग मंगाया, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। किरपा कर बेपरवाहया, बेपरवाहे दया कमाईआ। मेरी आसा वेख वखाया, चार जुग दी पिछली नाल मिलाईआ। की बावन संदेशा गया सुणाया, बलि दुआर दुआर दृढ़ाईआ। सप्तस ऋषीआं ढोला की गाया, शब्द अनादी धुन जणाईआ। भीलणी राम की समझाया, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। बिदर दा लेखा वेख वखाया, सुदामे कृष्ण नाल वड्याईआ। मूसे जल्वा इक्को पाया, परवरदिगार सीस निवाईआ। ईसा सलीव गल लटकाया, संदेशा दिता चाँईं चाँईंआ। मुहम्मद चार यारी मेल मिलाया, परवरदिगार खेल खिलाईआ। नानक मन्त्र सति दृढ़ाया, सति सति विच्चों समझाईआ। गोबिन्द डंका फ़तिह वजाया, फ़ात्या पढ़े ख़लक खुदाईआ। सतिगुर शब्द इक्को वड्याआ, जो आदि जुगादि सब दा पिता माईआ। जो जुग जुग वेस वटाया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। फल्गुण कहे मेरा धर्म संदेशा, सति सच विच्चों जणाईआ। मेरा मालक इक्को नर नरेशा, नर नरायण इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, हम साजण इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्मे विच ब्रह्मा शिव महेषा, गणपति गणेशा बैठे सीस निवाईआ। उस दा दो जहान दा मालक इक्को गोबिन्द दस दस्मेशा, दहि दिशा वेख वखाईआ। जो कलयुग अन्तिम मेटे कूड़ कलेशा, कलधारी हो के वेख वखाईआ। जिस दी सिफ्त वड्याई करे सहँसर मुख शेषा, दो सहँसर जिह्वा गुण गाईआ। उह अन्तिम लहिणा देणा पूरा करे मुल्ला शेख़ा, मुसायकां वंड ना कोए रखाईआ। जुग बदलणा जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर इक सुहाईआ। सच दर सुहावणहारा, हरि करता मीत मुरार। जोती जोत जगावणहारा, परम पुरख पुरख करतार। अनादी नाद वजावणहारा, कुदरत कादर परवरदिगार। जुग जुग वेस वटावणहारा, आदि निरञ्जण नूर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी पावणहारा सार। साची सार समालदा, जुग जुग आदि निरँकार। खेल करे कमाल दा, कुदरत कादर हो उज्यार। लेखा मुकाए त्रैगुण जंजाल दा, रजो तमो सतो दए निवार। खेल खेले काल महाकाल दा, आदि जुगादी रूप अपार। प्रकाश देवे जो जमाल दा, जागरत जोत जोत

उज्यार। लहिणा देणा पूरा करे गोबिन्द लाल दा, शाहो भूप वड सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक आप परवरदिगार। परवरदिगार नूर अलाह, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। निरगुण निरगुण बण मलाह, बेड़ा सरगुण सरगुण आप चलाईआ। नाम निधाना दे अगम्म अथाह, अलख अगोचर आप वरताईआ। जुग जुग हुक्म संदेशा दए सुणा, अवतार पैग़म्बर गुर शब्द शब्द सुणाईआ। मार्ग दीन दुनी लगा, दीनां मज़्बां रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सच करनी कार कमाउँदा ए। सो पुरख निरञ्जण खेल खिलाउँदा ए। हरि पुरख निरञ्जण वेख वखाउँदा ए। एकँकारा वेस वटाउँदा ए। आदि निरञ्जण नूर रुशनाउँदा ए। श्री भगवान सोभा पाउँदा ए। अबिनाशी करता डंक वजाउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ पर्दा लाहुन्दा ए। सतिगुर शब्द हुक्म वरताउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाउँदा ए। अवतार पैग़म्बर गुर भेव खुल्हाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग आप बदलाउँदा ए। कलयुग अन्तिम अनक कलधारी आपणी कल प्रगटाउँदा ए। अछल छल बण के वड संसारी, वल छल आपणी कार कमाउँदा ए। जिस नूं समझे ना कोए जीव संसारी, अक्ल बुद्धी विच कदे ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच पर्दा आप उठाउँदा ए। सच पर्दा आप उठाएगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमाएगा। हरि पुरख निरञ्जण भेव चुकाएगा। एकँकारा पर्दा आप उठाएगा। आदि निरञ्जण नूर रुशनाएगा। अबिनाशी करता वेख वखाएगा। श्री भगवान खुशी बणाएगा। पारब्रह्म प्रभ आपणी वंड वंडाएगा। सतिगुर शब्द शब्द हुक्म जणाएगा। जिस अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दिता अदब, आदाब सब दा वेख वखाएगा। जिस दी चार जुग सारे लैंदे रहे मदद, मुदतां दा मालक भेव चुकाएगा। जिस दीन दुनी दा मेटणा तशदद्, शरअ दा लेखा पूर कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाएगा। सच करनी कार कमावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। कृपाल हो के वेख वखावेगा। हरिजन भगत सुहेले लाल आप उठावेगा। देवे नाम सच्चा धन माल, अमुल अतुल आप वरतावेगा। कलयुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक वखावेगा। मर्द मर्दाना डेरा लावेगा। नौजवाना नज़री आवेगा। श्री भगवाना रूप दरसावेगा। शाह सुल्ताना हुक्म वरतावेगा। कलयुग लेखा तक जीव जहाना, जागरत जोत जोत रुशनावेगा। जिस दे हुक्म विच वरतणा भाणा, भावी आपणे हुक्म रखावेगा। फल्गुण कहे मैं उस प्रभू दे चरण कवल करां ध्याना, जो चरणोदक जाम प्यावेगा। भगत सुहेला बण के भगतां देवे माना, अभिमान अन्दरों बाहर कढावेगा। उस दी चरण धूड़ करां इश्नाना, जो दुरमति मैल धवावेगा। जो लेखा मुकाए पत्थर इट्टां पाहनां, जगत

शरअ ना वंड वंडावेगा। जिस दा इक्को इष्ट होवे ज़िमीं असमाना, गगन गगनंतरां इक्को रूप दरसावेगा। जिस नूं मण्डल मण्डप पुरी लोअ आकाश पताल गगन गगनंतर करन परवाना, परम पुरख इक अख्वावेगा। जो कलयुग अन्तिम जोती जाता पहर के बाणा, बाण अणयाला तीर चलावेगा। जिस नूं पैग़म्बर करन सलामा, सयदे सब दे वेख वखावेगा। जिस दा मन्त्र गाउँदे सतिनामा, सति सतिवादी भेव खुलावेगा। जिस दा इष्ट जणाया सीता रामा, राम वशिष्ट मेल मिलावेगा। ओह शाहो भूप सुल्ताना, सुरती शब्द खोज खुजावेगा। जन भगतां अन्तर निरंतर वखाए अगम्म निशाना, निशाना दीन दुनी बदलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी जाणी जाणा, जानणहार एकँकार परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ।

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ स्वर्गवासी दरबारा सिँघ दे संस्कार समें पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ✪

१४०१ तत कहिण साडा नाउँ सिँघ दरबारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मिल के खुशी बणाईआ। आत्मा कहे मेरा प्रीतम १४०१

२४ इक्को प्यारा, परम पुरख परमात्म धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा मीत मुरारा, विछोड़े विच विछड़ २४

कदे ना जाईआ। जिस दा इक्को एक सचखण्ड सच्चा दुआरा, जोती जाता हो के सोभा पाईआ। मेरा उस दे नाल कौल इकरारा, वायदा पिछला दयां जणाईआ। अर्जन गुर दिता जगत सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेरा नूर दा नूर पसारा, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। रावी कन्ढ्ढा दए हुलारा, बिन पवणां पवण झूले रहे झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। रावी कहे मैं निमाणी मैनूं सारे कहिंदे रावी, वहिण पाणी वाले जणाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा जिस दा तोल तोलया इक्को सतिगुर सावीं, सांवरीआ आपणी कार कमाईआ। जिस दे प्यार विच कुरलाउँदी फिरदी भावी, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दे हुक्म विच आदि जुगादि जुग चौकड़ी बदल जांदी शाही, शहिनशाह हो के आपणा हुक्म वरताईआ। ओसे दे प्यार विच आत्मा कहे मैं निरगुण हो के बणी रही राही, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप भज्जी वाहो दाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मेरी देणी गवाही, शहादत शब्द शब्द नाम भुगताईआ। चार जुग दे शास्त्र मेरे ढोले रहे गाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। आत्मा कहे मैं बड़ी सुहागण, कन्त कन्तूहल मेरा इक्को नज़री आईआ। मैं जुग जुग बणी रही वडभागण,

भागांवाली हो के दयां सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरे अन्तर उपजदा रिहा वैरागण, वैरी अन्दरों नज़र कोए ना आईआ। मैं दीन दुनी दी बणी रही त्यागण, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। मेरे परम पुरख ने मैनूं इक्को बख्श्या आपणा साथन, सति सच समझाईआ। मैं तेरा मोहण माधव माधन, महबूब इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तत कहिण साडा नाल नाता माई बाप, पूत कहि के सानूं गाईआ। अन्दर वेखे कोई ना मार झात, आत्म धुर दा नूर अलाहीआ। जिस दा इक्को मालक कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी नूर नुराना ज़ात, अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। जिस मानस जन्म दिती दात, दाता हो के वेख वखाईआ। की हो गया जे उन किरपा कर दिती अज्ज दी पिछली रात, पहली फल्गुण दए वड्याईआ। दूजे प्रविष्टे मेरी पुछी वात, आत्म परमात्म आपणे रंग रंगाईआ। मैं बैठ गई इकांत, जगत तृष्ना ना कोए रखाईआ। मेरा अन्तष्करन हो गया शांत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। पंज तत जगत दी पाए खात, हिस्सा दीन दुनी तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पंज तत कहिण बेशक असीं
१४०२ ततां वाला शरीर, मिट्टी ख़ाक नज़री आईआ। तूं मालक गहर गम्भीर, गवर तेरी सरनाईआ। तूं दाता बेनज़ीर, जग नेत्र १४०२
२४ नज़र किसे ना आईआ। साडी आशा पूरी कर दे जो कहि के गया कबीर, कबरां तों बाहर सुणाईआ। कलयुग अन्तिम २४
पुरख अकाला दीन दयाला साचा मार्ग करे ताअमीर, भगत भगवन्त आपणे रंग रंगाईआ। तेरे हथ्थ सब दी तकदीर, तदबीर आपणी नाल जणाईआ। की हो गया तन वजूद वस्त्र लथ्था चीर, जगत आपणा आप बदलाईआ। आत्मा घत के गई विच्चों वहीर, भज्जी वाहो दाहीआ। अमृत रस मिल्या अगम्मा सीर, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। आत्मा कहे मैं बड़ी खुशहाली, खुशीआं ढोले गाईआ। मेरा नाता जुड़ गया नाल जोत अकाली, अकल कलधारी दिती वड्याईआ। मैं वेख्या सचखण्ड सची धर्मसाली, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे परम पुरख मेरी करे रखवाली, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। मैं निमाणी नढ्ढी ओसे दी बाली, ओसे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। आत्मा कहे मेरा सतिगुर होया दयाल, परम पुरख दिती वड्याईआ। मैनूं आपणे आप ल्या संभाल, सम्बल दा मालक हो के वेख वखाईआ। मेरा नाता तुटा काल महाकाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लेखा अगे ना कोए बणाईआ। शंकर वेख के होए बेहाल, शम्भू आपणा नैण बदलाईआ। ब्रह्मा खुशीआं विच वजाए ताल,

विष्नूं ढोला इक्को गाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर प्रेम नाल पुछण मेरा हाल, प्यार मुहब्बत विच्चों प्रगटाईआ। मैं हस के किहा मैं उस प्रभू दा नूर नुराना आत्मा लाल, जो लालन इक अख्वाईआ। जिस दा सचखण्ड दुआर सची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जां मैं पन्ध मुका के पहुंची ते मैनूं मिल गया सिँघ पाल, आप आपणी खुशी बणाईआ। झट बसन्त कौर ने मारी छाल, बिन ततां लई अंगड़ाईआ। बिशन कौर ने किहा आ जा मेरे लाल, तैनूं गोदी लवां टिकाईआ। गुरबख्श सिँघ कहे मेरा वी इहो गृह इहो दुआर इक्को करे संभाल, जो नूर नुराना नज़री आईआ। जीवण सिँघ कहे वेख लै सब तों वखरा वजदा एथे ताल, जगत तलवाड़ा नज़र कोए ना आईआ। धन्न भाग जे फल लग्गा पुत पोते हीरा सिँघ दे डाल, पत्त टहणी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। तत कहिण असीं दरबारा सिँघ दा वजूद, जगत नेत्र नज़री आईआ। असीं छड दिती दुनिया वाली हदूद, घर बाहर आए तजाईआ। साडी इक्को मंज़ल हक मकसूद, बेपरवाह दिती वखाईआ। जो मालक ख़ालक सदा मौजूद, मजलस भगतां नाल रखाईआ। सानूं ज़रूर रखे महफ़ूज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साडी आशा अन्तर लए बूझ, दस्सण दी लोड़ रहे ना राईआ। साडा भेव खोले गूझ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। आत्मा कहे मैं दरबारा सिँघ दे ततां नूं वेख के हसदी, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ। जिस विच रही सां वसदी, उस दा नाता आई तुड़ाईआ। हुण लाश बण गई रैण अन्धेरी मस दी, बिन आत्मा नूर ना कोए चमकाईआ। जेहड़ी भरी सी जगत वड्याई जस दी, सिफ्तां विच सिफ्त सलाहीआ। उहदी अन्तिम खेल होणी माटी ख़ाक भस दी, भस्म आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। आत्मा कहे सुणो प्रभू भगत जगत संसार, जिज्ञासूओ दयां जणाईआ। संदेशा देवां सर्ब परवार, बंस सरबंस आप समझाईआ। तुहाडा मेरे नाल नहीं कोई तकरार, झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। मेरा सतिगुर शब्द नाल कौल इकरार, वायदे पिछले दयां समझाईआ। जिस किरपा कीती अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दिती वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दे अन्तर अधार, निरंतर मेला मेलया सहिज सुभाईआ। मैनूं खुशी होई मैथों जगत झूठा छुट्टया संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव मेरी देण गवाहीआ। मेरी बसन्त सचखण्ड मौली बहार, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। मैं संदेशा देवां अन्तिम वार, बिन रसना जिह्वा ढोला दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। आत्मा कहे मेरे सुणो साक सज्जण सैण, सन्बंधीओ दयां

जणाईआ। बेशक तुसीं ततां वाले भाई भैण, मात पित नार पुत्तर धी नज़री आईआ। मैं सब नूं सचखण्ड दुआरयों आई कहिण, कहि कहि दयां दृढ़ाईआ। मेरे वैराग विच कोए ना पावे वैण, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ । मैं कोई हो नहीं गई त्रफैण, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। मैं इक्को छड्डुया ते अगे मैनूं मिल गया सच्चा महैण, जिथ्थे मिल के आपणी खुशी बणाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार मैनूं दिता बहण, थिर घर बैठी आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। आत्मा कहे सुणो तन वजूद दे पुत्तर धीआं, नार दुहागण सुहागण नज़र कोए ना आईआ। मेरा लहिणा देणा साढे तिन्न हथ्थ दी सीआ, रवीदास चमारा दए गवाहीआ। मेरा दीन दुनी नालों निर्मल होया जीआ, जीवण दाते दिती वड्याईआ। प्रेमीओ प्यारयो तुसीं वी मेरे मगर आऊण दा करो हीआ, हीले नाल पुज्जणा चाँईं चाँईंआ। जिस धर्म दी धार किहा गोबिन्द ने बच्चयां दी धार विच रखाईआ नीआं, नींह गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द गया बंधाईआ। ओसे दे प्यार विच आत्मा कहे मैनूं मिल गया उह पीआ, जिस नूं परम पुरख परमात्म कहि के सारे गाईआ। जिस दा खेल ओसे ने कीआ, करनी दा करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१४०४ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी वजदी रहे वधाईआ। पंज तत कहिण गुरमुखो भगतो मैनूं रख दयो १४०४

२४ उत्ते सीढ़ी, खुशीआं नाल देणा टिकाईआ। सदा बंस सरबंस चलदी रहे प्रभू प्यार विच पीढ़ी, अगे दा लेखा अगे लैणा २४

बणाईआ। सारी सृष्टी कहिंदी अगे गली भीड़ी, बिन सतिगुर पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं हकीकत वाली मंज़ल चढ़ गई अख़ीरी, आख़र मिल्या धुर दा माहीआ। मेरी दीन दुनी दी टुट गई ज़ंजीरी, कड़ी नाल कड़ी ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। आत्मा कहे मेरे वल वेख के किड्डी मनजीत नूं वधी हरस, हवस विच ढोले रिहा गाईआ। तूं जगत दा मेरा चाचा ते मैनूं मेघ लैण दे बरस, बूंदा बांदी तेरे उत्ते टपकाईआ। बेशक तेरा आसण उत्ते फ़र्श, मैं अर्श विच बैठा कोल धुर दे माहीआ। पर प्यार करना भगतां दा सदा फ़र्ज़, प्रभ ने रीती दिती चलाईआ। मनजीत कहे मैं छोटयां छोटयां वीरां नूं कहांगा तुसीं बण जायो सूरबीर बहादर, दविंदर महिन्दर रोण कोए ना पाईआ। एस शरीर दी नहीं आत्मा दी सी प्रभू नूं ग़रज़, आपणी ग़रज़ पिच्छे दरबारा सिंघ नूं लै के गया चाँईं चाँईंआ। एह कोई खेल नहीं असचरज, आदि जुगादी रीती धुर दी चली आईआ। पर प्यार विच रहिणा इहो तुहाडा साचा दर्द, दर्दीओ तुहानूं दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। तत कहिण जिस वेले सानूं अग्नी लाउणी अग्ग, आगू इक्को वेख वखाईआ। असीं

भावें परवार नालों होण लग्गे अलग, वखरा आपणा घर ल्या बणाईआ। छडण लगे जग, दीन दुनी नालों नाता ल्या तुड़ाईआ। साडी बेनन्ती अगे साहिब सूरे सरबग, सीस चरणां विच टिकाईआ। साडी वी धार सचखण्ड लै जाणी अज्ज, आत्मा नाल तत मिल के तेरे घर विच सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। सीढ़ी कहे मैनूं प्रेम नाल बणाउणा, सोहणी बणत बणाईआ। दरबारा सिँघ नूं मेरे विच टिकाउणा, टिक्का मस्तक वाला दए गवाहीआ। सारे परिवार सरबंस ने शुकर मनाउणा, खुशी खुशी खुशी विच ढोले गाईआ। एह आपणे घर नूं चलया जो लोकमात दा पराहुणा, महिमानी खा के भज्जया वाहो दाहीआ। जिस धरती उत्ते सौणा ते आसण लाउणा, दरगाह साची प्रभ चरण मिले सरनाईआ। पहला मुआता प्रीतम सिँघ ने आपणे हथ्थ उठाउणा, फौजा सिँघ प्यारा सिँघ तिन्ने सेवा लैण कमाईआ। हरनाम सिँघ पंज मुड्डां कक्खां दीआं आपणे हथ्थ विच भुआ के प्यार विच सुटाउणा, प्रेम दी रीती अन्दर अन्दर दी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लाल आपणी गोद सुवाउणा, जिथ्थों सुत्तयां ना कोए उठाईआ।

१४०५

२४

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ जसवन्त सिँघ दे नवित हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द सदा सूरबीर, बीरता आपणे विच छुपाईआ। सति धर्म करनहारा ताअमीर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जन भगतां देवणहारा धीर, धीरज धर्म धार वखाईआ। अमृत बख्शे साचा सीर, अंमिओं रस आप चखाईआ। जल धारा दे के ठांडा नीर, अग्नी तत तत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जिस दी आदि जुगादि प्रीत, प्रीतम हो के तोड़ निभाईआ। भगत सुहेला ठांडा सीत, सति सतिवादी धुरदरगाहीआ। आत्म परमात्म बणे मीत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गीत, ढोला गोबिन्द इक जणाईआ। जन भगतां वसे सदा चीत, ठगौरी अन्दर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर सच दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द सदा बलवन्त, बलधारी इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म बणे कन्त, कन्त कन्तूहल धुरदरगाहीआ। नाम निधाना देवे मंत, मंतव आपणा इक समझाईआ। हरिजन प्रगटाए साचे सन्त, साजण हो के वेख वखाईआ। धर्म दी धार बणाए

बणत, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन नाम जणाए सिँघ जसवन्त, जस इक्को नाम जणाईआ।

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ बख्शीश सिँघ दे गृह
पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे मेरे पुरख अकाले, अकल कलधारी एकँकारी तेरी इक सरनाईआ। आदि जुगादी दीना बंधप दीन दयाले, ठाकर स्वामी तेरी ओट तकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते वसणहारे सचखण्ड सची धर्मसाले, दरगाह साची मुकामे हक आपणा आसण लाईआ। परम पुरख परमात्म तुध बिन सुरत कवण संभाले, सम्बल दे मालक होणा आप सहाईआ। त्रैगुण
१४०६ अतीते ठांडे सीते नव सत्त तोड़ जगत जंजाले, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ । दीन दुनी दा झगड़ा मेट १४०६
२४ शाह कंगाले, ऊँच नीच राउ रंक दा लेखा दे मुकाईआ। नाम निधान श्री भगवान इक्को मार उछाले, अछल छलधारी आपणा २४
खेल खिलाईआ। फल लगा मानस मानव मानुख वाले डाले, पंज तत ब्रह्म मति आप दृढ़ाईआ। सच स्वामी सदा सुहेले हर घट चलणा नाले, बिन कदमां कदम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। फल्गुण कहे मेरे शाहो भूप सुल्तान, सति सतिवादी तेरी बेपरवाहीआ। आदि जुगादी मेहरवान, महबूब तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुण निधान दे दे दान, दाता हो के आप वरताईआ। मैं तेरा बाल नादान, अक्ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। तूं शहिनशाह वाली दो जहान, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। सच प्रीत बख्श दे नाम, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। अमृत रस प्या दे जाम, निझर झिरनिउँ आप प्याईआ। कलयुग कूड़ रैण मेट दे शाम, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ । दीन दुनी दा लेखा ना रहे तमाम, तमअ लालच नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। फल्गुण कहे मेरे ठाकर स्वामीआ, निरगुण दाते अगम्म अथाह। आदि जुगादी अन्तरजामीआ, बेपरवाहां दे बेपरवाह। सच बख्श दे चरण ध्यानीआ, इक्को इष्ट दे दृढ़ा। शब्द निराला तीर मार कानीआ, कायनात दा पर्दा दे चुका। तूं हर घट जाण जाणीआ, जानणहार अगम्म अथाह।

साची बख्श दे मंज़ल रुहानीआ, रहिमत रहीम आप कमा। कलयुग क्रिया कूड़ मेट निशानीआं, सति धर्म दे प्रगटा। लेखा रहे ना चारे खाणीआं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखा। संदेशा दे दे चारे बाणीआं, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दे सुणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरे साचे शाह सुल्तानीआ । फल्गुण कहे मेरे महबूबा, महिबान बीदो तेरी इक सरनाईआ। तेरा वेखां आलीशान अरूजा, मुकामे हक देणा दृढ़ाईआ। जिस नाल भेव चुक्के दूजा, दुतीआ रहिण कोए ना पाईआ। मंज़ल मिले हक मकसूदा, मुश्किल पिछली हल कराईआ। भाग लगा दे उत्ते वसुधा, धरनी धरत धवल धौल रही कुरलाईआ। जिस दे उत्ते सदी चौधवीं अन्तिम होण वाला युद्धा, नव सत्त आपणी लए अंगड़ाईआ। ओह लेखा तक लै जो इशारा दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों परे समझाईआ। इक्को नूर नुराना शाह सुल्ताना होवे उग्घा, उगण आथण वजे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कलयुगा, दुवैत रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म भेव खुल्ावे गुज्झा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। फल्गुण कहे मेरे सति पुरख निरञ्जण, निरवैर तेरी सरनाईआ। चरण
१४०७ धूड़ बख्श दे मजन, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। सच स्वामी बणना सज्जण, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। मेरी १४०७
२४ कबूल करनी बन्दन, निरमाणता विच सीस झुकाईआ। सच दुवारिउं देणा अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । लेखा २४
मिटाउणा तारा चन्दन, चन्द सितार वेखण नैण उठाईआ। तेरा इक्को दीपक जोत प्रकाश होवे मूर्त मदन, गोपाल स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे नूरी शमअ जगण, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। फल्गुण कहे मेरी इक्को इक अलख, अलख अगोचर दयां जणाईआ। जोती जाते हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो के रख, रक्षक बणना थांउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणयां करना पक्ख, कोझयां कमल्यां गोद उठाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ पुरख अगम्म अथाहीआ। सति सच दी देणी वथ, वस्त अतोट अतुट वरताईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे जो कहि गया बेटा दशरथ, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। फल्गुण कहे मेरे सति सतिवादी जगत जगदीश, जगदीश्र तेरी बेपरवाहीआ। मैं चाहुंदा इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीस, पिच्छे नज़र कोए ना आईआ। सब दा लहिणा देणा तक लै बीस इकीस, बीस इकीसे पर्दा आप उठाईआ। राग नाद वेख लै छतीस, छत्रधारी हो के भेव चुकाईआ। इक्को आपणे नाम दी दे हदीस, हज़रतां बाहर दे समझाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण प्रीती बख्श बख्शीश, बख्शीश सिँघ आपणे रंग रंगाईआ।

✪ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे प्रभ भगतां बख्श दे चरण छोह, चरणामत इक्को जाम प्याईआ। सच मुहब्बत बख्श दे मोह, मेहरवान आपणे रंग रंगाईआ। आपणा भेव चुका दे सो, हँ ब्रह्म पर्दा दे उठाईआ। निज नेत्र बख्श दे लो, लोयण आपणा इक खुल्हाईआ। तेरे जोगे जावण हो, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दुरमति मैल दे धो, पतित पुनीत दे बणाईआ। पंच विकार मेट दे गरोह, गुर सतिगुर तेरी सरनाईआ। हरिजन लेखा रहे ना दो, दुतीआ भाव देणा मिटाईआ। अमृत रस निझर धारों देणा चो, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे को, कोट ब्रह्मण्ड दे ठाकर आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
१४०८ नाम धागे सतिगुर भगत सुहेले लैणे परो, जगत परोहितां लोड़ रहे ना राईआ। १४०८

✪ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे प्रभ जन भगतां बख्श आपणा मेल, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। अपरम्पर स्वामी बण सज्जण सुहेल, सगला संगी बहुरंगी आपणा रूप दरसाईआ। आदि जुगादी शब्द अनादी दस्स आपणा खेल, ख़ालक मख़लूक दे मालक देणा दृढ़ाईआ। धार जणा दे अगम्मा अगम्म नवेल, निरगुण पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। फल्गुण कहे प्रभू जन भगतां अन्दर सुणा दे धुन अनादि, शब्दी शब्द दृढ़ाईआ। तूं मालक आदि जुगादि, जुग चौकड़ी तेरी बेपरवाहीआ। हर हिरदा तैनूं लए अराध, तेरे तेरे विच समाईआ। किरपा कर दे मोहण माधव माध, मधुर तेरी मंग मंगाईआ। कोझयां कमल्यां बणा लै सन्त साध, भगत सुहेले आपणी गोद टिकाईआ। अन्तष्करन मेट वाद विवाद, विख अमृत रूप जणाईआ। भेव खुल्हा दे बोध अगाध, बुद्ध मति दा लेखा दे चुकाईआ। सदा सुहेले सद तेरी आवे याद, यादाशत विच भुल कदे ना जाईआ। जन भगतां खेड़ा कर आबाद, सदा सद वजदी रहे वधाईआ। नाम निधान श्री भगवान बख्श दे दाद, वस्त अमुल अतुल आप वरताईआ। तेरा लहिणा देणा

अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, कलयुग अन्तिम दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति प्रेम वजा रबाब, मालक रबी नूर अलाहीआ।

✪ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे प्रभू चढ़ के वेख अगम्मे घोड़, नव सत्त ध्यान लगाईआ। मैं बेनती करां बिना हथ्थ जोड़, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरी पई लोड़, लुड़ींदे सज्जण वेख वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्तिम बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करके दयां सुणाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आपणे नाल जोड़, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मेरे परम पुरख परमात्म मेरी बहार विच धरनी उत्ते फल फुल्ल नौ करोड़, वख वख आपणा रूप बदलाईआ। जिन्हां तेरे उत्ते रखी डोर, आसा तेरे चरण टिकाईआ। आ के भेव चुका दे मोर, पर्दा दे उठाईआ । मेरी रुत बसन्ती जावे सौर, सांवरीआ आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग लेखा तक अन्धेर घोर, घोरी हो के ध्यान लगाईआ। मेरे कर दे भाग मथोर, मथन
१४०६ कर कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज १४०६
२४ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेले हरिजन आपणे नाल तोर, तुरीआ दे मालक देणी माण वड्याईआ। २४

✪ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे प्रभ मेरे कन्त कन्तूहल, कुदरत कादर तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी तेरा सच असूल, असल दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। जन भगतां बख्श दे आपणी धूल, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। तेरा नाम निधाना कर वसूल, वसल यार देणा खुदाईआ। तेरा प्यार जाए ना भूल, अभुल देणी वड्याईआ। तैनूं इशारा करके गए पैग़म्बर रसूल, कलम्यां विच कायनात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। फल्गुण कहे प्रभू धुर दे दे नाउँ निधाना, निरगुण आपणी दया कमाईआ। तूं शहिनशाह शाहो भूप सुल्ताना, सचखण्ड निवासी इक अख्वाईआ। थिर घर तेरा अगम्म टिकाणा, मुकामे हक तेरा नूर नूर रुशनाईआ। मैं लोकमाती तेरा बाल अंञाणा, बाली बुद्ध बुद्ध अख्वाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक्को बख्श दे दाना, दाते दानी दया कमाईआ। जन भगतां नाद सुणा सची धुन्काना, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत रस बख्श दे पीणा खाना, जगत तृष्ना भुख मिटाईआ। मेहरवान महबूब

तेरा नूर प्रकाश होवे महाना, जोती जाते कर रुशनाईआ। फल्गुण कहे प्रभू मेरी बेनन्ती कर परवाना, परम पुरख प्रभ तेरे चरण कवल टिकाईआ। जन भगतां अन्तर निरंतर दे ज्ञाना, बाहर पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादी खेल महाना, महिमा अकथ अकथ वड्याईआ।

✪ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे प्रभू आपणा महका दे बाग़ीचा बाग़, बाग़बां हो के वेख वखाईआ। जन भगतां अन्दरों खोल्ह दे जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दुरमति मैल धो दे दाग़, पापां कर सफ़ाईआ। जगत तृष्ना बुझा दे आग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। माया डस्से ना डस्सणी नाग, ममता लेखा रहे ना राईआ। फड़ फड़ हँस बणा दे काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। हर हिरदे उपजा दे वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। कूड़ी क्रिया जाण त्याग, त्रैगुण अतीते
१४१० तेरे विच समाईआ। घर दीपक जोत जगा चराग़, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। परमात्म आत्म आपणे हथ्थ पकड़ लै वाग, १४१०
२४ दूसर नज़र कोए ना आईआ। सच दा बण कन्त सुहाग, कन्त सुहागी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगतां होण वड वड २४
भाग, भगवन तेरे रंग रंगाईआ। सब तों उत्तम श्रेष्ट तेरे होण फुल्ल गुलाब, महक देणी चाँईं चाँईंआ। तूं मालक हक जनाब, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। तेरे चरण कवल मेरा आदाब, निउँ निउँ सीस निवाईआ। उह लहिणा पूरा कर दे जो नानक कहि के आया विच बग़दाद, बग़लगीर आपणे लै बणाईआ। तेरा मेला होया विच पंज आब, पंजां ततां दा लहिणा दे चुकाईआ। रसना बख्श दे आपणा दो दो आब, आबे हयात देणा प्याईआ। दरगाह सच दा दे ख़ताब, ख़ता पिछली मुआफ़ कराईआ। मेरे परवरदिगार सच अहिबाब, मित्र प्यारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगतां अन्दर नाम वजा रबाब, जगत तबूंरयां लोड़ रहे ना राईआ। लेखा मुका रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़नी किताब, आत्म परमात्म आपणा भेव देणा चुकाईआ। तुध बिन दूजा लै सके ना कोए हिसाब, राय धर्म चित्रगुप्त दा लहिणा देणा चुकाईआ। इक्को गृह सुहञ्जणा तेरा धुर दी दिसे महिराब, महबूब मेला मेलणा चाँईं चाँईंआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी महाराज, शहिनशाह इक अख्वाईआ। दो जहानां मालक इक्को सीस तेरे ताज, तख्त निवासी इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्त भगतां पूरन कर दे काज, पूरन सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। फल्गुण कहे मेरी कर इमदाद, मदद विच तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरण कवल भगतां दी प्यार दी रहे तादाद, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ।

✪ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ महिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ✪

फल्गुण कहे प्रभू जन भगतां उत्ते अमृत मेघ बरस, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर तरस, रहमत सच सच कमाईआ। जगत वासना मेट दे हरस, तृष्ना कूड़ ना कोए हल्काईआ। निज आत्म दे दे दरस, लोचन आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे प्रभू जन भगतां अन्दर बख़्श दे बूँद स्वांती, तृष्ना तृखा दूर कराईआ। दरस दिखा दे इक इकांती, इक इकल्ला नज़री आईआ। झगड़ा मुका दे लोकमाती, मित्र प्यारे दया कमाईआ। अन्ध अन्धेर मेट दे राती, अज्ञान रहिण कोए ना पाईआ। साजण हो के पुछ वाती, सतिगुर हो के दया कमाईआ। बिन लोचन नैणां मार लै झाती, बिन अक्खीआं
१४११ अक्ख उठाईआ। तूं साहिब कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। अन्त कन्त पुछ लै वाती, भगवन आपणा फेरा १४११
२४ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर २४
सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपणे लेखे ला लै हयाती, जीवण ज़िंदगी आपणे चरण टिकाईआ।

✪ ८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्यारो जेठूवाल नवित सन्तोख सिँघ अमर सिँघ दलीप सिँघ प्यारा सिँघ, हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

फल्गुण कहे भगत सुहेले प्रभ दे फुल्ल, फुल फुलवाड़ी मात महकाईआ। जो सच प्रीती चरण कवल गए घुल, आप आपणा घोल घुमाईआ। नाम कंडे तराज़ू गए तुल, जगत तकड़ वंड ना कोए वंडाईआ। उत्तम श्रेष्ट करके आपणी कुल, कुल मालक नाल मिलके वजे वधाईआ। जिस नूं सृष्टी गाउँदी रसना जिह्वा नाल बुल्ल्, हरिजन हिरदे सदा वसाईआ। जिस दा सच दुआरा गया खुल्ल्, ख़ालक ख़लक हो के वेख वखाईआ। जन भगत सुहेला कदे ना जावे रुल, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। मानव बूटा ना जाए हुल, पत्त टहणी आप महकाईआ। अन्तर दीपक जगत ना होवे गुल, दो जहान करे रुशनाईआ। सच निशाना जाए झुल, जगत जहान वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। फल्गुण कहे जन भगत प्रभू दे मीत, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। जो करनहारा पतित पुनीत, पतित पावन धुरदरगाहीआ। त्रैगुण नालों कर अतीत, त्रैभवण धनी दए वड्याईआ। काया करे ठण्डी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। मानस जन्म हरिजन जाए जीत, हार विच कदे ना आईआ। आत्म परमात्म ढोला गाए गीत, तूं मेरा मैं तेरा कहि के खुशी बणाईआ । सति धर्म दी हरि भगत चलाए रीत, भगवन वेखे चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मुकणा मन्दिर मसीत, काया काअबे करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। फल्गुण कहे जन भगत प्रभू दे दुलारे, बचपन आपणे चरण रखाईआ। आत्म धार करे प्यारे, परमात्म हो के वेख वखाईआ। नाम शब्द दए धुन्कारे, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत बख्श के ठंडा ठारे, अमिउँ रस आप चवाईआ। अन्तर मेट अन्ध अँधयारे, अन्ध अन्धेरा दे चुकाईआ। मेल मिलाए हरि जू हरि हरि कन्त भतारे, कन्तूहल मिल के वजे वधाईआ। लोकमात पैज संवारे, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। परपंच मेट पंच बणाए आपणे प्यारे, परम पुरख देवे सरनाईआ। जिस नूं सदा सदा निमस्कारे, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप
१४१२ हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। फल्गुण कहे जन भगत आदि जुगादी १४१२
२४ प्रभ जोगे, जुगती जगत ना कोए जणाईआ। आत्म धार होवे संजोगे, परमात्म मिल के वजे वधाईआ। आत्म रस बिन २४
रसना रस भोगे, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। भेव अभेद आपणे खोल्हे गोझे, पर्दा पदर्यां विच्चों चुकाईआ। भगत सुहेला पावे सोझे, अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। फल्गुण कहे जन भगतां शुभ दिहाढ़ा लोकमात, मातृ भूमी खुशी बणाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल अज्ज दी रात, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। भगतां नाल मेरी बातन बात, बेवतनां वतन दे मालक नाल मिलाईआ। जन भगतो भगतां दी सदा इक जमात, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को चरण प्रीती नात, दूसर संग ना कोए रखाईआ। इक्को पीआ प्रीतम कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। इक्को दी इक्को ज़ात, मज़्बी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नाम कलमा इक्को मिले दात, दाता दानी आप वरताईआ। इक्को बख्शे अमृत बूँद स्वांत, झिरना निझर आप झिराईआ। इक्को इक कराए इकांत, इक इकल्ला धुर दा माहीआ। जिस दा खेल बहु बिध भांत, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। फल्गुण कहे उह लहिणा देणा दए लोकमात, धरनी धरत धवल धौल रंग रंगाईआ। जन भगत सुहेले वेखे मार झात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

फल्गुण कहे मेरा दिहाढ़ा दिवस सुहञ्जणा अठ्, अठ्ठां ततां वाल्यां मिले वड्याईआ। मैं वी खुशीआं नाल आया नठ, पाँधी बण के पन्ध मुकाईआ। प्रभू दा दुआरा बाहर वेख्या तीर्थ अठसठ, जिथ्थे गोदावरी यमुना सरस्वती सीस निवाईआ। लेखा नहीं किसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, गुरुदुआरां चर्चां वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगत सुहेले बैठे कर इक्ठ्ठ, इक्ठ्ठे मिल के खुशी बणाईआ। मैं वी चरण कवल प्रभ दे जावां ढठ, निव निव लागां पाईआ। जिस कलयुग अन्तिम उलटी गेड़ी लठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। अठ्ठ तत कहिण सुण मित्र प्यारे फल्गुण, मित्रा दईए जणाईआ। असीं इक्को प्रभू दी सुणदे धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। जिस भगत सुहेले लोकमात लए चुण, फड़ बाहों मेल मिलाईआ। उस दा भेव जाणे कौण, गत कहिण किछ ना पाईआ। ओहनूं चवर करे उनन्जा पवण, पौण पाणी सीस निवाईआ। जिस दी सेजे हरि भगत सुहेले सवण, जुग जुग इक्को सेज हंढाईआ। उह लेखा मुकावणहारा अवण गवण, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जिस दे पवित्र सुहञ्जणे कवल चरण, चरणोदक जाम दए प्याईआ। ओह लेखा मुकावण आया उत्ते धरन, धवल दी धार खोज खुजाईआ। अमृत मेघ
१४१३ बरसे सवन, जाम भगतां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट अन्तर निरंतर आपे रवण, राम रहीम रहमान दया कमाईआ। १४१३

✪ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ चरण सिँघ दे गृह, हज़ारा सिँघ, हज़ारा सिँघ फत्तू चक, ज्ञान सिँघ सुरखपुर दे नवित पिण्ड ढिलवां ज़िला कपूरथला ✪

जन भगतां प्रभ बणाए धीगी मूर्त, निरगुण सरगुण देवे माण वड्याईआ। जोती जाता हो के बख्शे नूर नुराना नूरत, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। शब्द अनादी देवे तूरत, तुरीआ दा भेव चुकाईआ। सुरती शब्द करावे महूरत, मोहर आपणा नाम लगाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़त, कूड़ कुटम्ब दए मुकाईआ। मस्तक बख्श के चरण धूड़त, टिक्के ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़त, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। पन्ध मुका के नेड़ दूरत, घर घर विच मेल मिलाईआ। हाज़र होवे हाज़र हज़ूरत, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा जल्वा सब तों खूबसूरत, जल्वागर इक अख्वाईआ। जन भगतां सदा आसा मनसा पूरत, पूरन सतिगुर पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। जगत तृष्ना विच कदे ना झूरत, कामना होवे ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

भगत सुहेले धीगी मूर्ती जाण बण, बन खण्ड दा लेखा रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द सुणाए बिना कन्न, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। अन्दरों मणका फेर के मन, मनसा मोह दए चुकाईआ। वस्त दे के नाम धन, सच भण्डारा झोली पाईआ। भाग लगा के काया माटी तन, वजूद करे सफ़ाईआ। जोती नूर चाढ़ के चन्न, अन्ध अन्धेरा दए मुकाईआ। लेखा रहे ना खुशी ग़म, चिन्ता अन्तर कोए ना आईआ। भाण्डा भन्ने अन्तर भरम, भय इक्को दए जणाईआ। लेखा मुका के ज़ात वरन, बरन पन्ध दए मुकाईआ। एका बख्शे साची सरन, सरनगति इक समझाईआ। मस्तक छोह दे के चरण, चारों कुण्ट लेखा दए मुकाईआ। साची मंज़ल दस्से चढ़न, पौड़ी डण्डा इक्को नाम समझाईआ। आपणे घर विच दस्से वड़न, कुण्डी खिड़की आप खुल्हाईआ। अग्गों सतिगुर शब्द हो के आवे फड़न, बिन हत्थां हत्थ छुहाईआ। जोती धार लाए लड़न, पल्लू जगत नालों छुडाईआ। ओह भगत सुहेले रसना जिह्वा मूल ना पढ़न, जिन्हां दे अन्दर वस्या धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। मूर्ती कहे मेरा मालक होवे इक स्वामी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादी हर घट अन्तरजामी, घट निवासी बेपरवाहीआ। जो एथे ओथे
१४१४ दो जहानां जाण जाणी, जानणहार अगम्म अथाहीआ। मैं ओसे दा नाम कलमा ओसे दी पढ़ां बाणी, जो बाण अणयाला तीर १४१४
२४ चलाईआ। ओसे दी मंज़ल ओसे दी तकां निशानी, जो निशाने दीन दुनी बदलाईआ। ओसे दा चरण ओसे दा करां ध्यानी, २४
ध्यान विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। मूर्ती कहे मेरा स्वामी इक्को एक, एकँकारा नज़री आईआ। जिस ने सतिगुर शब्द दी धार बख्शी टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मेरा अन्तर निरंतर करके बिबेक, बुद्धी तों परे कीती पढ़ाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, रजो तमो सतो संग ना कोए बणाईआ। जिस दा इक्को इक सुहञ्जणा देस, देस दसन्तरां डेरा ढाहीआ। जो मेरा सगला संगी बणे हमेश, हमसाजण इक अख्वाईआ । ठाकर स्वामी धुर नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जो मन कल्पणा अन्तर निरंतर कढ्ढे कलेश, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। उस दा सुण के अगम्म संदेश, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। मूर्ती कहे मेरी जगत निराली धार, एका दूआ तीआ त्रैगुण माया विष्न ब्रह्मा शिव सोहणा संग बणाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल उस यार, जो प्रीतम प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दा सचखण्ड सच्चा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो देवणहारा शब्द अनाद सची धुन्कार, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा नहीं कोई बाहर, बैखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी चार जुग सारे करदे इंतज़ार, आसा विच आपणा

आप रखाईआ। उह कृपानिध ठाकर स्वामी सदा सदा जन भगतां करे प्यार, प्यारा हो के वेख वखाईआ। जो बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाए अगम्म जैकार, जगत पढ़न सुणन कोए ना पाईआ। उस दी सब तों वखरी गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धीगी मूर्ती कहे मैं सुणया अगम्मी ढोला, सतिगुर शब्द दिता जणाईआ। जिस दा रसना वाला नहीं कोई बोला, जिह्वा चले ना कोए चतुराईआ। जिस ने मेरे अन्तष्करन पर्दा खोल्हा, बजर कपाट लेखा रिहा ना राईआ। मेरा स्वामी ठाकर घर मन्दिर वस्या कोला, गृह आपणा भेव चुकाईआ। जिस भाग लगाया साढे तिन्न हथ्थ काया माटी चोला, चोजी प्रीतम हो के वेख वखाईआ। मैं ओसे नूं परम पुरख कहां ते कहां नूर अलाही मौला, जो मौलया अन्तर निरंतर आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। मूर्ती कहे मेरा लेखा कोई ना जाणे साहित, जगत कहाणी समझ कोए ना आईआ। मेरी सब तों वखरी रहित, असूल माकूल प्रभ दए समझाईआ। मैं निरगुण धार नाल मिल के होई लायक, सरगुण हो के आपणा रंग रंगाईआ। मेरा नाता तुटा मायक,
१४१५ ममता मोह ना कोए हल्काईआ। मेहरवान मेरे उत्ते कीती रयाइत, निगाह मेहर नाल तराईआ। सतिगुर शब्द ने इक्को कीती १४१५
२४ हदाइत, हुक्म धुर दा दिता सुणाईआ। मुहब्बत विच कीती अनाइत, वस्त सच दिती वरताईआ। जिस दे विच होर नहीं २४
किफ़ायत, कुफ़ल इक्को वार खुल्हाईआ। बोलण दी रही कोई ना शकाइत, शिकवे अन्दरों दिते कढ्ढाईआ। परमात्मा हो के आत्मा दी करे हमाइत, हमसाजण दिसे नूर अलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। मूर्ती कहे जिस वेले सतिगुर शब्द दी इक्को सुणी आवाज़, आप आपणा गई तजाईआ। मेरे अन्तर खुल्ह गया राज़, राज़क रिज़क रहीम दिती वड्याईआ। मैनूं भुल गया जगत वाला रोज़ा निमाज़, अक्खरां वाली गई पढ़ाईआ। घर सतिगुर ठाकर गया लाध, बाहर खोजण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं ओस विच होई विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। बिना रसना दन्द करां याद, होंट बुल्ल्हां दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जो खुशीआं नाल तन वजूद अन्दर सुणाए नाद, अनादी धुन आप प्रगटाईआ। मैं ओसे नूं कहां, तूं मेरा मालक स्वामी तूं ही मेरा गॉड, अल्ला कहि के ओसे नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दर इक सुहाईआ। मूर्ती कहे बेशक मेरा नाता नाल त्रैगुण माया, त्रैगुण अतीता दए वड्याईआ। जिस पंजां ततां खेल खिलाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश संग बणाईआ। मैं ओसे दा शुकर मनाया, शुक्रिए विच ढोले गाईआ। तूं मालक खालक बेपरवाहया, बेपरवाही तेरी मैनूं

भाईआ। जिन नाम संदेशा इक्को इक सुणाया, बिन रसना जिह्वा दिता दृढ़ाईआ । मेरे अन्तर निरंतर दिता वसाया, बाहर कढुण दी लोड़ रही ना राईआ। मेरा मन मनुआ उठ ना दहि दिश धाया, चार कुण्ट ना भज्जया वाहो दाहीआ। नूर नुराने शाह सुल्ताने तेरा इक्को दर्शन पाया, दीद कीती रुशनाईआ। मैं निव निव लागां पाया, चरण धूड़ी ख़ाक रमाईआ। तूं मेरा मालक ख़ालक आदि जुगादी दाई दाया, दो जहानां नौजवाना मेरे भगवाना इक तेरी शरनाईआ। जिस ने मेरी बणत बणाया, घड़न भन्नणहार इक अख्वाईआ। धीगी मूर्ती कहे विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने मेरा संग रखाया, सँघारी भण्डारी संसारी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरा राह तकाईआ। मूर्ती कहे मेरा सतिगुर सच्चा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दी सब तों वखरी रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। जो सब दे वसे भीत, भीतर बैठा डेरा लाईआ। मन ठगौरी कढे चीत, चेतन सुरती दए कराईआ। मैं ओसे दा सुणया गीत, जो गोबिन्द धुर दा माहीआ। मेरी अन्दरों बदल गई नीत, नीतीवान दिता समझाईआ। मैं हो गई ठांडी सीत, अग्नी तत रिहा ना राईआ। मैनूं बाहर दे भुल गए गीत, अन्दर इक्को दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। मूर्ती कहे मैं सतिगुर दे परसां चरण, चरण कवल मिले वड्याईआ। मेरा लेखा मुक जाए जन्म मरन, मर जीवत रूप बदलाईआ। अन्तर खुल्ह जाए हरन फरन, निज लोचन होए रुशनाईआ। मैं साची मंज़ल लग्गां चढ़न, बिन कदमां कदम उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लग्गां पढ़न, सोहँ शब्द मेरे अन्तर निरंतर वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी जन भगतां सद आए लड़ फड़न, पल्लू आपणा गंढु नाम जणाईआ।

✪ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड ढिलवां ज़िला कपूरथला ✪

मांह सरस्वती कहे मेरा प्यार लूं लूं विच रचा, साढे तिन्न करोड़ आपणा अंक बणाईआ। जन भगत जो बणे धर्म दा बच्चा, शक्ती धार बणां जणेंदी माईआ। मेरा शरीर नहीं कोई भाण्डा कच्चा, तन वजूद जगत ना कोए वड्याईआ। मेरा मन नहीं जो मनसा विच नच्चा, जगत टप्पे कुद्दे थांउँ थाँईंआ। आदि शक्ति कहे मेरा आदि दा पता, पतिपरमेश्वर दए दृढ़ाईआ। निगाह मारो आपणे अन्दर रता, बाहर वेखण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच दुआर विच सति दी सता, सति

सतिवादी हो के डेरा लाईआ। जिस दा रिश्ता सदा पक्का, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। दुर्गा कहे मैं अष्टभुज भवानी, भुज्जां अठ्ठां नाल वड्याईआ। बग्गा शेर मेरी निशानी, शेरां दा शेर धुर दा माहीआ। जिस दी मस्ती दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड खुशी बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी गावण गाणी, गा गा रहे सुणाईआ। सति सरूप निराकार ओह नूर नुरानी, जोती जाता इक अख्वाईआ। जो भगतां संग खेले खेल जिस्म जिस्मानी, तन वजूदां रंग रंगाईआ। अन्तर निरंतर होवे निगाहबानी, निज घर वेखे चाँईं चाँईंआ। आदि शक्ति कहे मेरी सूरत नहीं कोई पुराणी, जुग चौकड़ी इक्को रंग समाईआ। जन भगत मेरा सति सरूप वेखे अन्दर कर ध्यानी, जोती जोत जोत विच समाईआ। भगतां नाल मेरी धार नहीं कोई बेगानी, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा दरस प्यार मुहब्बत दी धार विच आसानी, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। मांह सरस्वती कहे जो मेरा बण गया सुत, जगत अपराधां जाए तजाईआ। बाहरों पंजां ततां दा होए बुत, अन्दरों मेरा जोत नूर रुशनाईआ। रसना जिह्वा हो
१४१७ जाए चुप्प, बोलण दी लोड़ रहे ना राईआ। मेल मिले अन्धेरे घुप्प, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जिस काया विच मेरा १४१७
२४ नूर बैठा लुक, लुकवां आपणा खेल वखाईआ। आदि शक्ति कहे उस दी आदि दी इक्को तुक, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। २४
मन अन्तर भगत सुहेला जाए झुक, सीस दी लोड़ रहे ना राईआ। सरस्वती कहे मैं नेड़े रही ढुक, मन्दिर बैठी सोभा पाईआ। सदा सदा मेरा भगतां नाल जुट, जोड़ी अवर ना कोए रखाईआ। मैं सीने नाल आपणे लावां घुट्ट, गलवकड़ी लवां पाईआ। मेरे सीर दी धार पए फुट्ट, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। अष्टभुज कहे मेरा दरस अपार, अन्तर अन्तर वजे वधाईआ। भगतां भगती वाला होवे प्यार, भगत भगती विच समाईआ। जिस दे मुख विच्चों मेरा लगे जैकार, मैं ओसे दा पिता ओसे दी माईआ। जिनां चिर मेरी किरपा ना होवे ओनां चिर कोई कर ना सके सतिकार, जगदम्बा कहि के सीस ना कोए निवाईआ। मेरा लेखा विच संसार, जगत दी धार चली आईआ। कलयुग अन्तिम वेखां विगसां पावां सार, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मेरा नूर जोत उज्यार, नूर नूर करे रुशनाईआ। जिस दा सब तों वखरा दरस दीदार, बिन नेत्र लोचन नैणां वेखां चाँईं चाँईंआ। भगतां दी धार विच भगती दे अधार, भगवन हो के भाग दयां बणाईआ। मेरा दरस रात दे बारां तों बाद ते पहलों वजण दो? चार, इक चार दा चौथे जुग दा पन्ध मुकाईआ। अष्टभुज कहे मेरा भगतां दा सदा सदा दीदार, जिन्हां दे हिरदे वसां

ओहो मेरा रूप ओहो मेरा रंग, संग सदा सदा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणी कार कमाईआ।

✪ १० फल्गुण शहिनशाही सम्मत ११ दौलत सिँघ, गुरदयाल सिँघ, करतार सिँघ, अमर कौर, मनजीत कौर नूर पुर, करतार कौर माही जीत पुर दे नवित कपूरथला शहर ✪

फल्गुण कहे प्रभू मेरा प्रविष्टा दस, दहि दिशा वेखणा चाँईं चाँईंआ। पन्ध मुकाउणा नस्स नस्स, दो जहानां बिन कदमां कदम टिकाईआ। मैं खुशीआं नाल खेल तकां हस हस, हस्ती दे मालक देणी माण वड्याईआ। लहिणा देणा अन्तिम रवि शशि, सूर्या चन्द की दृढ़ाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा ढोला गावां जस, बिन सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। तेरा इक्को नूर जोत तकां प्रकाश, जोती जाते वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका
१४१८ देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। प्रविष्टा कहे मेरा दसवां दिवस दिहाढ़ा, सति सच नाल जणाईआ। पुरख १४१८
२४ अकाले दीन दयाले तेरे अगे अगम्मी हाढ़ा, जिस नूं दीन दुनी समझे कोए ना राईआ । तूं मालक ख़ालक दो जहानां लाड़ा, २४
साहिब सुल्तान नूर अलाहीआ। नौ खण्ड सत्त दीप वेख अखाड़ा, कलयुग क्रिया कूड़ नाच नचाईआ। पंच विकार घर घर मारे धाड़ा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मेरा गृह तक लै जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्वत समुंद सागराँ फोल फुलाईआ। निगाह मार लै मानव ज़ाती बहत्तर नाड़ा, हड्ड मास ध्यान लगाईआ। तूं मालक ठाकर स्वामी आदि जुगादी एकँकारा, इक इकल्ला नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे प्रभू मेरा प्रविष्टा दसवां आया लोकमात, मातृ भूमी नाल मिलाईआ। निगाह मार लै कमलापात, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। सति वस्त बख्श अगम्मी दात, दाता हो के झोली दे भराईआ। निगाह मार लै दीन दुनी विच ज़ात पात, मज़्ब शरअ फोल फुलाईआ। झगड़ा तक लै काग़ज़ात, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। तूं ठाकर स्वामी एकँकारा सब दा कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। मेरी हकीकत वाली हक दे मालक सुण लै बात, बातन पर्दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ । प्रविष्टा कहे मेरा दस्म दिहाढ़ा मेरे महबूब, मेहरवान मेहरवान मेहरवान देणी वड्याईआ। आपणा गृह वखाउणा आलीशान अरूज, अर्श फर्श

१४१६
२४

दे मालक पर्दा देणा उठाईआ। परवरदिगार सांझे यार मैनूं बख्शणी सूझ, भेव अभेदा देणा चुकाईआ। ठाकर स्वामी तेरी आवे सूझ, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। सच दुआर एकँकार बख्श आपणी हदूद, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। मेरे गृह ठाकर हो के हो मौजूद, मजलस भगतां नाल रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह इक सुहाईआ। फल्गुण कहे मेरे पुरख अकाले दाते दीन, दयानिध तेरी सरनाईआ। मैं बिन रसना जिह्वा निरगुण तैनूं रिहा चीन, सिफ्त सालाही तेरे ढोले गाईआ। तूं निगाह मार लै उत्ते ज़मीन, धरती धवल धौल वेख वखाईआ। मैं निरगुण निराकार निरँकार तेरे होया अधीन, निव निव लागां पाईआ। तेरा प्यार, दीन दुनी विच रिहा ना कोए प्राचीन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। फल्गुण कहे प्रभू मैनूं बख्श दे इक्को दात, दाते दानी आप वरताईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणा नाम महकाईआ। चार वरन बणा इक जमात, दूसर वंड ना कोए वखाईआ। दर्शन बख्श दे साख्यात, सनमुख हो के सोभा पाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन दुनी इक्को रंग वखाईआ। सदी चौधवीं वेख हालात, मुहम्मद बैठा नैण उठाईआ। ईसा फोले आपणे कागज़ात, बीस बीसा पर्दा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा जुगादि आदि, आदि जुगादि तेरा हुक्म वरते थांउँ थाँईंआ।

✪ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरमीत सिँघ दे गृह पिण्ड फिआली ज़िला कपूरथला ✪

फल्गुण कहे जन भगतो प्रभ दी बणो फुलवाड़ी, तन वजूद माटी ख़ाक धुर दे रंग रंगाईआ। अन्तर निरंतर गीत ढोला गाओ बहत्तर नाड़ी, रोम रोम इक्को रंग चढ़ाईआ। हक प्रीती रंगण चाढ़ो गाड़ी, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। सच महल अटल मंज़ल वेखो माढ़ी, जिथ्थे महबूब मिले धुर दा माहीआ। सतिगुर शब्द सुहेला तुहाडे फिरे पिच्छे अगाड़ी, निरगुण सरगुण सेवा सच कमाईआ। तुहाडा लहिणा देणा मुके लख चुरासी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्वत समुंद सागर लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे फल्गुण दी वेखो रुत, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। एकँकार इक इकल्ले दे बण जाओ सुत, दुलारे दूलहे हो के आपणा रंग रंगाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती सब दी दए कराईआ। भाग लगाए काया माटी

बुत, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप निभाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो गाओ गुण गहर गम्भीर, गवर देवणहार वड्याईआ। जो मालक ख़ालक बेनज़ीर, जग वेखण कोए ना पाईआ। जिस दी खिच्च सके ना कोए तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। उह शहिनशाह शाह पातशाह पीरां दा पीर, पैग़म्बरां दा पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जिस दे कोल आदि जुगादि दो जहानां तदबीर, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्दर सतिजुग बदलण वाला तकदीर, तक्बर दीन दुनी मिटाईआ। ओहदा नाम खण्डा अगम्मा शमशीर, शरअ दे लेखे दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो प्रभ दा करो साचा हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जो आत्म धार सब दा मित, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादी नित, नवित आपणी खेल खिलाईआ। एथे ओथे बणे पित, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। ठगौरी अन्दरों कढ्ढे चित, चेतन सुरती दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ । जन भगत कहिण फल्गुण साडा इक्को

१४२० इक मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दी सब तों वखरी रीत, रीतीवान धुरदरगाहीआ। अन्तष्करन दी बदले नीत, १४२०

२४ मनसा मन ना कोए हल्काईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गीत, सोहला ढोला इक समझाईआ। पापीआं करे पतित पुनीत, पतित २४

पावन इक अख्वाईआ। काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। जन भगत कहिण फल्गुण परम पुरख प्रभ साचा इक्को इष्ट, इष्ट देव इक अख्वाईआ। जिस साडी अन्दरों खोल्ही दृष्ट, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जिस दा लहिणा देणा दो जहानां नाल सृष्ट, दीन दुनी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी आशा रख के गया राम नाल वशिष्ट, जगत विषयां बाहर अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। फल्गुण कहे जन भगतो मेरा दस्म दिहाढ़ा अज्ज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तुहाडे अन्दर नाम निधाना शब्द रिहा गज्ज, बिन जगत तन्द सितार आपणी आवाज़ प्रगटाईआ । दीपक जोती रिहा जग, जोती जाता करे रुशनाईआ। ज़रा निगाह मार लओ उपर शाहरग, नौ दवारयां डेरा ढाहीआ। प्रभ दा मेला हुन्दा नाल सबब, जुग जन्म दयां विछड़यां दयां समझाईआ। जो किरपा निधान हो के हरि भगत सुहेले आपे लए लभ्भ, खोजण दी

लोड़ रहे ना राईआ। उलटी करके कवल नभ, अमृत जाम दए प्याईआ। निज नेत्र आपणा दए झब, लोयण इक्को इक खुल्ह्राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि भगत सुहेला इक इकेला अकल कलधारी एकँकारी, परवरदिगारी सांझा यारी दर ठांडे लए सद्द, सद्दा सतिगुर शब्द लगाईआ।

✪ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ रेशम सिँघ दे गृह पिण्ड खैहरा ज़िला कपूरथला ✪

फल्गुण कहे धुर दा हुक्म अगाध बोधी, निरगुण धार सरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जो जन भगतां अन्तर निरंतर हिरदे रिहा सोधी, सुदी वदी दी वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म चुक्के आपणी गोदी, गोदावरी दा कन्ढ़ा गोबिन्द धार दए गवाहीआ। सच प्यार मुहब्बत दे बणा के लोभी, लालच दीन दुनी बाहर कढ्ढाईआ। दुरमति मैल धोवे बण के धोबी, धब्बा जगत रहिण कोए ना पाईआ। सति सच दी बख्शे सोझी, भेव अभेद खुल्ह्राईआ। रमज़ आपणी मारे गोझी, गोबिन्द मेला
१४२१ चाँईं चाँईंआ। हरिजन होए ना कदे विजोगी, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेल मिलाए १४२१
२४ धुर संजोगी, सति सच आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच २४
दा मालक इक गुसाँईंआ। फल्गुण कहे जन भगत प्रभ सुहंदड़े चरण, चरण कवल मिले सरनाईआ। नेत्र खुल्ह्रे हरन फरन, निज नेत्र लोचन नैण होए रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला पढ़न, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल चढ़न, बिन पाँधीआं पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द शब्दी धार पल्लू फड़न, सुरत अकाल मूर्त विच समाईआ। जगत अग्नी मूल ना सड़न, ततव तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो प्रभ चाढ़नहारा रंग, रंगत नज़र किसे ना आईआ। शाहो भूप सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को नाम निधान वजे मृदंग, दो जहान करे शनवाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, आसण सिँघासण इक वड्याईआ। सच दुआर एकँकार आए लँघ, बिन कदमां कदम उठाईआ । प्रकाश देवे बिना सूर्या चन्द, जोती जाता डगमगाईआ। अमृत धार निझर देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । धर्म दी धार दस्स के छन्द, शाहो भूप वेख वखाईआ। जन भगतां भाग होण ना देवे मंद, मंदभागी लए तराईआ। जगत अन्धेरा मेट के अन्ध, अन्ध आत्म करे रुशनाईआ। खुशी कराके बन्द बन्द, बन्दगी आपणी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। फल्गुण कहे जन भगतो परम पुरख दा माणो रस, बिन रसना रस चखाईआ। जो हिरदे अन्तर जावे वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। मार्ग अगम्मड़ा देवे दस्स, दहि दिशा तों बाहर समझाईआ। पन्ध मुकाउणा नस्स नस्स, भज्जणा वाहो दाहीआ। लेखा रहे ना अन्धेरी मस, चन्द चांदना करे रुशनाईआ। चुरासी विच ना जाणा फस, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो अज्ज दी तक लओ राती, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। चार जुग दे शास्त्रां बाहर तक लओ पाती, पत्रका की समझाईआ। की लहिणा देणा पुरख अकाले लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल की समझाईआ । की लेखा जाणे सब दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस दा वेस सदा बहु भांती, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। सो मेहरवान नौजुवान आपणा प्रेम दा जोड़े नाती, रिश्ता भगतां नाल बणाईआ। झगड़ा रहे ना काग़ज़ाती, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म धार बणा जमाती, परमात्म हो के वेख वखाईआ। इक्को दस्स के इलम सफ़ाती, सतिगुर हो के वेख वखाईआ। निगाह मारे तके आपणी झाती, झाकी जगत
१४२२ ना कोए जणाईआ। वारस हो के पुछे वाती, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १४२२
२४ देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो जगत धारों जाणा जाग, जागरत जोत जोत २४
रुशनाईआ। प्रभ बख्शणहारा इक वैराग, वैरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। कूड़ कुड़यारा कराए त्याग, त्रैगुण अतीता होए सहाईआ। तुहाडे करे वड वड भाग, भगवन हो के वेख वखाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, पतित पुनीत कराईआ । घर दीपक जोत जगाए चराग़, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। मेल मिलावा होवे कन्त सुहाग, ठाकर स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। लहिणा देणा तक लओ विच दुआब, दोहरी धार धार जणाईआ। जिस दे प्यार विच नानक वजाई रबाब, सितार जुग जुग जणाईआ। उह लहिणा देणा तुहाडा पूरा करे विच पंज आब, पंचम दा मालक इक अख्वाईआ। जो आसा निरगुण सरगुण धार नानक रखी विच बग़दाद, बग़लगीर भगतां लए बणाईआ। सो स्वामी साजण मीत लैणा अराध, जो हिरदे वसे चाँई चाँईंआ। जिस दा लहिणा देणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, आख़र आपणा संग बणाईआ। शब्द सुणाए अनादी अनाद, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। जिस दा भगत सुहेले समाज, समग्री नाम वाली वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो प्रभ चरण करो निमस्कार, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। जो सब दा मित्र प्यार, पीआ

प्रीतम इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच पैग़म्बर गुर अवतार, जुग जुग सेव कमाईआ। जिस दा नाम कलमा जगत दए अधार, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सब दे कर्ज़े दए उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, कोझयां कमल्यां आपणे गले लगाईआ। आत्म परमात्म दे अधार, मेला मेले सहिज सुभाईआ। सो स्वामी ठाकर तुहाडी पावे सार, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। जिस दी खुशी विच ईसा ढोले गाए दिवस सुहञ्जणा ऐतवार, प्रविष्टा दसवां नाल मिलाईआ। फल्गुण कहे जन भगतो भगवन दी तुहाडे नाल बहार, भगत भगवान मिलके वजे वधाईआ। मैं उस दा होवां शुकरगुज़ार, गुज़ारिश विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे करन इंतज़ार, बिन आसा जगत आसा विच्चों प्रगटाईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरबचन सिँघ, फुमण सिँघ, अजीत सिँघ, अवतार सिँघ पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ★

१४२३ २४

धरनी कहे प्रभू तेरे चरण दी छोही तली, तल्ब अवर रही ना राईआ। धन्नभाग महबूब तूं आएयों मेरी गली, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब तजाईआ। मैं आपा आप तेरे उत्तों करां बली, बलि बावन दी धार जो गया दृढ़ाईआ। ओह लेखा पूरा कर लै जो इशारा दिता मुहम्मद नाल ऐली, बिन रसना जिह्वा सिफ्त सलाहीआ। मैं बिना सीस तों आपणा सीस धरां तली, तरफ़दारी नज़र कोए ना आईआ। मेरे स्वामी ठाकर तेरे प्यार विच होवां झल्ली, झलक आपणी देणी वखाईआ। मैं आदि जुगादी जुग चौकड़ी इकल्ली, अकल कलधारी तेरी सेव कमाईआ। नित नवित तेरे प्यार विच रली, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मैनूं मूल ना छलीं, अछल छलधारी तेरी ओट तकाईआ। मैं बेख़बर तूं ख़बर आपणी अगम्मी घल्लीं, सुनेहड़ा देणा चाँईं चाँईंआ। मैं खुशीआं विच सुण सुण पावां जल्ली, नच्चां टप्पां कुद्दां चाँईं चाँईंआ। तेरे प्यार दी महक मेरी धार होवे कली, कलमे दे मालक कायनात देणी वड्याईआ। मेरा अन्तष्करन नाम निशाने नाल सल्लीं, सलल तीर अणयाला इक चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच देणी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी तली मेरे सीने गई छोह, छोहर बांके तेरी सरनाईआ। मेरे नव सत्त आई लो, बिन लोयणा होई रुशनाईआ। मैं नाम संदेशा सुणया तेरा सो, सो पुरख निरञ्जण दिती वड्याईआ। हँ ब्रह्म तेरी धार गई हो,

होका दे के दयां दृढ़ाईआ। दीन दयाल दया निध ठाकर मेरे अन्तर अमृत रस चो, झिरना अगम्म अथाह झिराईआ। मेरा लेखा रहे इक ना दो, दूआ एका इक्को रंग रंगाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों खोह, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां अन्दरों दुरमति मैल धो, पतितां कर सफ़ाईआ। माया ममता नालों दीन दुनी कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। सच वस्त दा ढोआ दे दे ढो, भण्डार अतोट अतुट वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरे रहे रो, रोम रोम दए दुहाईआ। तुध बिन सार पाए ना को, कूक कूक दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी धूल मस्तक गई लग, लग मातर डेरा ढाहीआ। तेरी जोती कमलापाती गई जग, जागरत जोत कीती रुशनाईआ। मैनूं लेखे लाउणा मैं कोझी कमली अल्पग, कूड़ कुकर्म नाल हल्काईआ। तूं साहिब मेरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरे अन्तष्करन बुझाउणी अग्ग, अग्नी तत तत गंवाईआ। दीन दुनी हँस बुद्धी होई कग, कागों हँस आप बणाईआ। नाम निधान श्री भगवान प्याउणी मध, मधुर धुन देणी सुणाईआ। सच दुआर एकँकार आपणे लैणा सद्द, सदके वारी घोल घुमाईआ। परम पुरख
१४२४ प्रभ मैनूं कलयुग पापां ल्या दब्ब, भार मेरे उत्ते पाईआ। मोह विकारा गया वध, अगे हो ना कोए अटकाईआ। आत्म परमात्म १४२४
२४ तेरी धार समझे कोए ना यद, यदी लेखा देणा मुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार मैं तैनूं रही सद्द, होका देवां चाँई चाँईआ। २४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण कवल दी तली मेरे लग्गी सीने, सोहणी दिती वड्याईआ। मैं वेखां लोक तीने, त्रैगुण पर्दा दिता उठाईआ। दीन दुनी दी धार तक जगत नेत्र होए नाबीने, लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मानव ज़ाती बिरथा दिसदे जीणे, जीवण ज़िंदगी तेरे भेंट ना कोए कराईआ। झगड़ा तक लै मज़्ह़ब दीने, शरअ शरअ रही टकराईआ। सति धर्म दे कर्म गए छीने, कलयुग क्रिया कूड़ कूड़ हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर इक खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण कवल दी तली मैनूं रही दस्स, दहि दिशा रही जणाईआ। धरनी खुशीआं नाल हस, ढोले गा धुर दे माहीआ। जिस ने भगतां कीता वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। अमृत जाम पींदे रस, रस्ता दीन दुनी तजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउँदे जस, सोहँ शब्द सच पढ़ाईआ। पन्ध मुकांदे नस्स नस्स, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। जिन्हां दा दर्शन पाउँदे रवि शशि, सूर्या चन्द वेखण नैण उठाईआ। उन्हां अन्तर मिटी रैण अन्धेरी मस, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक

सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण दी तली मेरे छोही मुख, मुखड़ा दिता बदलाईआ। मेरा जन्म जन्म दा मिटया दुःख, दुखड़ा जगत रिहा ना राईआ। मेरी तृष्ना गई भुख, तृप्त दिता कराईआ। मेरी सुफल होई भगतां जनणी वाली कुक्ख, बिन तन वजूद तेरे अगे सीस निवाईआ। धन्न भाग सचखण्ड निवासी तूं मेरे वल कीता रुख़, करवट आपणी आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा कदे ना जावे रुक, रोक विच जगत जुगत जोग ना कोए जणाईआ।

✪ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ, अजीत कौर, हरदयाल सिँघ, नगीना सिँघ जलन्धर शहर, मल सिँघ, पाल सिँघ लल्लीआं, सवरन सिँघ बामूनीआ नवित पिण्ड हेरां ज़िला जलन्धर ✪

धन्न भाग भगत गृह आए सप्तस ऋषी, यारां प्रविष्टा फल्गुण खुशी मनाईआ। जेहड़े वखावण आए बिन हरफ़ां चिट्ठी लिखी, जगत विद्या लेख ना कोए बणाईआ। जिस विच लहिणा देणा कलयुग अन्तिम धर्म धार दी तकणी सिक्खी, शरअ

१४२५ तों बाहर फोल फुलाईआ। जिस दी सब तों वखरी होणी थिती, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ । सच प्रेम दी होई १४२५

२४ मिती, मित्र प्यारा हो के वेख वखाईआ। जिस दा खेल सदा निती, नवित आपणी कार भुगताईआ । किस बिध प्रभू बणे २४

भगतां दा हिती, हितकारी हो के वेख वखाईआ। चिट्ठी कहे मेरी सब तों वखरी लिपी, जगत अक्खर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सप्तस रिख कहिण असीं दूर दुराडे आए दौड़े, बिन कदमां कदम उठाईआ। सच दुआर आ के बौहड़े, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। साडे मार्ग रहे ना सौड़े, भीड़ी गली ना कोए जणाईआ। असां नूर तक्कया ब्राह्मण गौड़े, वेद व्यासा दए गवाहीआ। जिस दी मंज़ल सब ने चढ़ना पौड़े, पौड़ी डण्डा अवर ना कोए रखाईआ । जो अन्तर निरंतर भगतां अन्दर बौहड़े, निरगुण हो के वेख वखाईआ। फल तके मिट्ठे कौड़े, लख चुरासी फोल फुलाईआ । शाह अस्वार बणे अगम्मे घोड़े, रासां आपणे हथ्थ उठाईआ। मेल मिलाए भगत भगवान जोड़े जोड़े, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सप्तस रिख कहिण साडा नहीं तन वजूद, शरीर नज़र कोए ना आईआ। साडी मंज़ल जगत नहीं हदूद, वंडण वंड ना कोए रखाईआ। असीं परम पुरख परमात्म जिथ्थे तक्कया मौजूद, मजलस भगतां नाल लगाईआ। ओह आलीशान तक अरूज, अर्श फर्श दा मालक वेख्या चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। फल्गुण कहे सप्तस ऋषी की इशारा देवे अत्री, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। कलयुग धार वेखो भगत बहत्तरी, जैदयो नामा दए गवाहीआ। जिस दा लेखा नहीं नाल ब्राह्मण क्षत्री, शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। उहदा नाम निधाना इक्को मन्त्री, मातृ भूमी दए जणाईआ। जिस खेल तकणी दीन दुनी दी अन्तरी, अन्तष्करन तके ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। सप्तस ऋषी कहिण सानूं सोहणा लग्गा गृह, घर घर विच वजी वधाईआ। जिथ्थे भगत सुहेला गुरमुख रहे, तन वजूद रंग रंगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आ के बहे, सच सिँघासण सोभा पाईआ। दोहां दे प्यार दी वगदी नैं, जगत वहिणां बाहर वखाईआ । जो आदि जुगादी इक्को है, अन्त अन्त आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। झट नारद आ के कहे सुणो ऋषी सत्त, सत्तां दीपां ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दी तको ब्रह्म मति, पारब्रह्म की भेव खुल्हाईआ। सच सति सन्तोख धीरज जाणो यत, काया अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। घट घट मेला वेखो परमेश्वर पत, पारब्रह्म प्रभ
१४२६ मिल के किस दर खुशी बणाईआ। लख चुरासी उबलदी वेखो रत, तन वजूदां खोज खुजाईआ। कूड़ कुड़यारा कलयुग १४२६
२४ दा चलदा वेखो रथ, किस बिध चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। की हुक्म संदेशा देवे पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। २४
जिस दे गोबिन्द सथर गया लथ, यारड़ा कहि के सेज हंढाईआ। उह लहिणा देणा देवणहारा हथ्थो हथ्थ, अन्त लेखा की जणाईआ। किस बिध सृष्टी देवे मथ, मथन करे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सप्तस रिख कहिण नारद असीं दस्सणा की, कहिण किछ ना पाईआ। जो मालक ख़ालक जगत जीआ, आदि जुगादी धुरदरगाहीआ। उस लेखा पूरा करना रविदास चमारे साढे तिन्न हथ्थ सीं, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। लहिणा देणा वेखणा गुरदास वीह इकीह, एकँकारा हो के खोज खुजाईआ। जिस कलयुग अन्तर धर्म दा बीजणा बी, क्रिया कूड़ जगत अक्ख खुल्हाईआ। अमृत नाम अगम्मा बरसणा मींह, अग्नी तत तत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सप्तस रिख कहिण नारद परम पुरख होया दयाल, दयानिध दया कमाईआ। भगतां गृह वेखे धर्मसाल, धर्म दुआरा इक जणाईआ। हरिजन वेख आपणा लाल, लालन लाल रंग रंगाईआ। पूरब जन्म दी लेखे पावे घाल, घायल आपणे चरण टिकाईआ। नूरी जल्वा दे जलाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग खेल कीता कमाल, कमलापाती वेस वटाईआ। जन भगतां फल लगाए

डाल, पत्त टहणी आप महकाईआ। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद मालक धुरदरगाहीआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत जोत करे रुशनाईआ। लेखा रहे ना काल महाकाल, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। सच प्रीती चरण कवल लए भाल, दर इक्को इक वखाईआ। आत्म परमात्म सद रखे आपणे नाल, नाता जगत जुगत तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे सप्तस ऋषी वेखो हरिजन मीत, मित्रो ध्यान लगाईआ। जिस दे अन्तर इक प्रीत, प्रीतम मिलके खुशी बणाईआ। त्रैगुण नालों हो अतीत, त्रैगुण अतीते नाल मिलके वजे वधाईआ । मानस जन्म जन्म जग जीत, जग जीवण दाते विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के गीत, गोबिन्द मेला मेलया सहिज सुभाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग चला के अगम्मी रीत, रीतीवान दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। सप्तस रिख कहिण सुण नारद मुनी, मुनीश्रा दईए जणाईआ। हरि भगत सुहेला वड गुण गुणी, गहर गम्भीर रंग समाईआ। जिस दे अन्दर प्रेम दी धुनी, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। उस दी पुकार पुरख अकाल आपे सुणी, अणसुणत दिती दृढ़ाईआ। उह लहिणा देणा चुकावणवाला हुणी,
१४२७ बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं कहिंदे मालक कुंनी, कुल मालक नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १४२७
२४ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे सप्तस ऋषी आओ इक्ट्ठे मारीए झाकी, २४
बिन नैणां नैण उठाईआ। प्रभ दुआर दी खुल्ही वेखीए ताकी, किस बिध पर्दा आप चुकाईआ। कवण धार जन भगतां लहिणा देवे बाकी, बाकायदा लेखा चुकाईआ। लेखे लावे तन ख़ाकी, माटी तत संग निभाईआ। पूरा करे भविख्त वाकी, वाकिफ़कार आप हो आईआ। नाम निधान दा बण के साकी, जाम प्याला अगम्म प्याईआ। मेहरवान हो के पुछे वाती, वारस हो के वेख वखाईआ। जो भगतां लेखे लावे ग्यारां फग्गण दी राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। एह कथा कहाणी साची, सति सच नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां वस्त देवे जो अन्दरे अन्दर गवाची, गुम रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरचरण कौर दे नवित पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✪

सप्तस ऋषीआं विच्चों बोले भारद्वाज, बिन रसना जिह्वा खुशीआं ढोला गाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा आया आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। श्री भगवान भगतां संवारे काज, जुग जुग दए वड्याईआ। झगड़ा मेट दीन दुनी समाज,

समग्री सति सच वरताईआ। नाम निधाने चढ़ा जहाज़, लेखा दो जहान बणाईआ। जिस दी याद विच अवतार रहे अराध, सेवक हो के सेव कमाईआ। ओह पुरख पुरखोतम मोहण माधव माध, मोहणी मोहण इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच हरि भगत सुहेले होए आबाद, धरनी धरत धवल धौल डेरा लाईआ। दिवस रैण करन याद, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सो स्वामी सुणनहारा फ़रयाद, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भारद्वाज कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा चंगा, पुरख अकाल दीन दयाल दए वड्याईआ। मेरा पूरब लेखा पिच्छे लँघा, अगे भगतां नाल मिल के वजे वधाईआ। जिन्हां दी चरण छोह विच फिरे गंगा, गंगोत्री भज्जे वाहो दाहीआ। जिथ्थे इक्को शब्द नाम मृदंगा, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। लेखा जाणे सूरा सरबगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। मैं उस दे कोलों वस्त अगम्मी मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा भगत सीस रहे ओढण ना नंगा, ओढण नाम निधाना देणा पाईआ। नेत्र नैण रहे ना अन्धा, निज नेत्र देणा खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए छन्दा, सोहँ वजदी रहे वधाईआ। अन्तष्करन ना रहे गंदा, पतित पुनीत देणा बणाईआ। तेरा खेल वेखां अचंभा, अचरज लीला
१४२८ देणी दृढ़ाईआ। सेवादार वेखां परी अरम्बा, चौदां रत्नां खोज खुजाईआ। मेरा कौल इकरार तेरे संधा, सरघी सँध्या बाहर १४२८
२४ वेख वखाईआ। जन भगतां भार उठा लै आपणे कंधा, कन्ढीं बैठे पार लँघाईआ। लेखा पूरा कर दे गोबिन्द वाले खण्डा, २४
खड़गां भेव रहे ना राईआ। बोध अगाधी बण के पंडा, आत्म परमात्म प्रभ विद्या देणी समझाईआ। जन भगतां अन्तर रहे ना भेख पाखण्डा, क्रिया कूड़ ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मंज़ल चढ़ा दे आपणे पौड़ी डण्डा, डण्डावत आपणे चरण रखाईआ।

✪ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रकाश कौर दे गृह पिण्ड सुनड़ा ज़िला जलन्धर ✪

खुशीआं नाल बोले सप्तस ऋषीआं विच्चों अत्री, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। की लहिणा देणा शूद्र वैश ब्राह्मण खत्री, ज़ातां पातां भेव चुकाईआ। की नारद निरगुण धार खोल्ह के दस्से पत्री, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। सच प्यार विच्चों दीन दुनी होई निखत्री, ख़तरे विच ख़लक खुदाईआ। कलयुग आयू होई बहत्तरी सत्तरी, अगे वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। अत्री

कहे प्रभू मैं वेखां उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। दीन दुनी दा हिरदा होया सक्खण, हिरदे नाम ना कोए वसाईआ। मैं निगाह मारी पुष्कर करौच दीप लखण, जम्बु आपणा ध्यान लगाईआ। तुध बिन लज्जया कोई ना आवे रखण, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरा इशारा दस्सण, बिन सैनत जगत लगाईआ। पुरख अकाला इक्को आवे जगत समरथण, समरथ अकथ आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे मथण, मिथ्या वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जन भगतां लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थण, पूरब जन्म दा झोली पाईआ। शब्द नाद सुणाए नदन, अनहद नादी नाद जणाईआ। घर स्वामी आवे सद्दण, सुत्तयां लए जगाईआ। किरपा करे गोपाल मूर्त मदन, पारब्रह्म प्रभ धुरदरगाहीआ। जो दीन दुनी दी मेटे हद्दन, दर दुआर इक्को इक वखाईआ। जिस दे प्यार विच भगत सुहेले भज्जण, जगत सके ना कोए छुडाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पर्दे आवे कज्जण, करनी दा करता नूर अलाहीआ। सतिगुर धार बणे सज्जण, स्वामी हो के वेख वखाईआ। चरण धूड़ कराए मजन, दुरमति मैल धुआईआ। इक्को इक समझाए बन्दन, बन्दगी बन्दगी विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतां भाग होण ना देवे मंदन, मंदभागयां लए तराईआ। निज आत्म दे अनन्दन,
१४२६ अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सूरा सरबगण, सरबग अल्पग जीवां लए तराईआ। १४२६

२४ २४

✪ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सरवण सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरी जुग जुग वेख लै घाला, घायल हो के जुग जुग सेव कमाईआ। धरत धवल धौल वेख सची धर्मसाला, धर्म दे मालक ध्यान लगाईआ। मेरी हालत होई बेहाला, बिहबल हो के दयां जणाईआ। कलयुग वखरी चली चाला, चाल निराली इक प्रगटाईआ। जगत जिज्ञासू मणकयां वाली फेरदे माला, मन का मणका ना कोए भुआईआ। सब दा हिरदा अन्दरों दिसे काला, कालख सके ना कोए धुआईआ। त्रैगुण वध्या कूड़ जंजाला, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत सुहेले वेख जन, जनणी बण धुर दी माईआ। मन मनसा वेख लै मन, ममता मोह खोज खुजाईआ। जगत वासना तक लै धन, तन वजूदां ध्यान लगाईआ। वासना तक लै सरवण कन्न, तेरा नाम सुणन कोए ना पाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना सति नूर दा चाढ़ दे चन्न, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। हरिजन नेत्र रहे कोई ना अन्न्ह, अन्ध अज्ञान देणा

मिटाईआ। दरस दिखा दे आपणा बिन छप्परी छन्न, शहिनशाह आपणा पर्दा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बण जणेंदी माँ, ममता मोह विकार मिटाईआ। हँस बुद्धी बणा दे काँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। इक्को तेरा उपजे नाँ, नाउँ निरँकारा तेरे ढोले गाईआ। चरण कवल दस्स दे थाँ, अस्थान इक्को इक सुहाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़ लै बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। तेरे चरण कवल बलि बलि जां, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार कर दे हां, ना दा लेखा रहे ना राईआ।

✪ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ प्रीतम सिँघ, गुरनाम सिँघ, महिन्दर कौर नवित पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ✪

नारद कहे प्रभू मैं गया विच काअबा, मकबरयां अन्दर ध्यान लगाईआ। मैं तक्कया माई हवा दे नाल आदम बाबा, बावा आदम कहि के जिस नूं सारे गाईआ। उस मैनूं प्यार विच मारया दाबा, ज़ोर नाल सुणाईआ। पंडता दीन दुनी नूं आउण वाला अज़ाबा, अगे हो ना कोए बचाईआ। झट मैनूं नज़र आया नानक वाला छाबा, तकड़ धुर दा नज़री आईआ। फेर नूर तक्कया ज़हूर तक्कया मैं कीती झट आदाबा, नमों नमों कहि के सीस निवाईआ । जिथ्थे ना कोई सवाल ना जवाबा, जवाबतल्बी विच सारे चरण धूड़ी ख़ाक रमाईआ। झट इशारा मिल्या नारदा ज़रा वेख लै विच दुआबा, दोहरी खेल प्रभ आपणी आप कराईआ। जिस दी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं मंगी अमदादा, आमद विच बैठे नैण उठाईआ। उहदा रूप अनूप सति सरूप सादा, सादगी विच समझ किसे ना आईआ। उहदा हुक्म संदेश फ़रमान बोध अगाधा, बुद्धी तों परे रिहा दृढ़ाईआ। जिस दी याद विच कृष्ण संदेशा दिता राधा, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। उस काहन दा कलयुग अन्त भगतां नाल होणा वाधा, वायदे पिछले पूर कराईआ। उहदा सति सरूप होणा मोहण माधव माधा, मधुर धुन दए सुणाईआ। जिस चार जुग दे शास्त्रां दी सुणनी फ़रयादा, अक्खर अक्खर बैठण सीस निवाईआ। जन भगतां दुरमति मैल धोवे दाग़ा, पतित पुनीत दए कराईआ। उसे दी धार ओसे दे प्यार विच सगला संगी होवे वाला बाज़ां, बाज़ी दीन दुनी वेख वखाईआ। शाहो भूप बण राजन राजा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कलयुग अन्त संवारना काजा, करनी दा करता नूर अलाहीआ।

जिस दा ज़हूर होणा देस माझा, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिस दे प्यार विच नानक सितार वजाई रबाबा, जनक दी धार दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे मैनूं वेख होई मदहोशी, होशो हवास ना कोए रखाईआ। मेरे अन्तर आई ख़ामोशी, रसना कहिण किछ ना पाईआ। मैं निगाह मारी चार जुग दे वेखे कोशी, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। फेर तक्कया दीन दुनी होई दोषी, दोस्त मित्र संग ना कोए निभाईआ। जां होर जाणयां सृष्टी कामना होई पोशी, पोशीदा भेव ना कोए खुल्हाईआ। मैं झट पै गया सोचीं, सोच सोच विच्चों प्रगटाईआ। झट इशारा दिता मैनूं रविदास चमारे मोची, रम्बी आर रिहा हिलाईआ। औह तक खेल प्रीतम चोजी, जो चोला आया बदलाईआ। जन भगतां बणके खोजी, खोज करे थांउँ थाँईंआ। जो नाम निधान देवणहारा रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम नूर अलाहीआ। उह भगत सुहेला इक इकेला लोकमात बणा के मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। दुरमति मैल धोवे बण के धोबी, धब्बे जन्म जन्म दे रिहा मिटाईआ। अन्दर वड़ वड़ के हिरदे रिहा सोधी, सुध आपणा नाम समझाईआ। नारद कहे मैं हैरान हो गया ग़रीब निमाणयां चुक्की फिरे गोदी, गोदावरी दा कन्ढा गोबिन्द दी धार आपणे नाल रखाईआ। एसे खुशी विच मेरी हिलदी दिसे बोदी, बुध्ध दे इशारे रही समझाईआ। जिस प्रेम विच आख्या बिना प्रभू दी किरपा किसे नूं आउणी नहीं सोझी, समझ जगत चले ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला हरिजन मेल करे संजोगी, जुग जुग विछड़े आपणा मेल कराईआ। आत्म धार दर बणे भोगी, भस्मड़ आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दी धार वेखे विरोधी, शुद्ध हरिजन आप कराईआ।

१४३१
२४

✪ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरदयाल सिंघ चीमां कलां, प्रेम सिंघ, महिन्दर पिण्ड खेड़ा ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभ मैनूं बख्श दे साचा धर्म, धवल धौल धरत हो के मंग मंगाईआ। दीन दुनी दा अन्तर निरंतर बदल दे कर्म, निहकर्मी आपणा रंग रंगाईआ। धार ना रहे किसे दी माटी चर्म, चम्म दृष्टी डेरा देणा ढाहीआ। ज़ात पात दा मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। पर्दा लाह दे आपणे ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाईआ। सतिजुग साचे मेरे उत्ते दे दे जरम, आपे बण जणेंदी माईआ। तूं आदि जुगादी सब कुछ करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। मैं तेरा

आई लड़ फड़न, पल्लू आपणी गंढु पुआईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला सारे पढ़न, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। पतिपरमेश्वर तेरी मंज़ल हकीकी चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। झगड़ा मेट दे चोटी जड़न, जड़ चेतन खोज खुजाईआ। कलयुग जीवां गढ़ तोड़ दे हँकारी गढ़न, हँ ब्रह्म पारब्रह्म भेव चुकाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सब किछ करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। जन भगतां निज नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, जगत नेत्र दी लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैं तेरी आई सरन, सरनगति देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म दा खोल्ह अगम्म दुआरा, एकँकार इक्को इक जणाईआ। सब दा सांझा बण परवरदिगारा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। मैं तेरे दर मंगती बणां भिखारा, भिक्खक झोली देणी भराईआ। तूं जगत जगदीश चौबीसा अवतारा, अवतरी तेरी ओट तकाईआ। मैनूं संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी तेरी राह तकाईआ। तूं जोती जाता पुरख बिधाता इक इकल्ला परवरदिगारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। मैं धौल तेरी चरण धूड़ लावां छारा, धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। मेरे उत्ते निरवैर हो के हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति वस्त सच दे वरताईआ। धरनी कहे प्रभू आपणा बख्श दे नाम निधान, निरगुण हो के दया कमाईआ। आत्म परमात्म दे ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। ईश जीव कर कल्याण, कलमा कायनात समझाईआ। बीस बीसे हो मेहरवान, महबूब तेरी ओट तकाईआ। मैं बाली बुद्ध नादान, अक्ल चले ना कोए चतुराईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरे चरण कवल टिकाईआ। मेरे आदि जुगादी भगवान, भगवन तेरी ओट तकाईआ। सति सच दा मेरे उत्ते झुला निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। तेरा इक्को हुक्म वरते ज़िमीं असमान, ज़िमीं ज़मां दे मालक होणा आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते प्रगटा दे सति, सति सतिवादी दया कमाईआ। मानव ज़ाती बख्श ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। अग्नी उबले मूल ना तत, ततव इक्को इक तत समझाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रत्न अमोलक हीरे लै प्रगटाईआ। धीरज सति बख्श दे यत, सन्तोख सब दी झोली पाईआ। तूं परमेश्वर कमलापति, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। निरगुण धार मेरे उत्ते आएयों वत, बेवतनां लै तराईआ। आह वेख लै मेरे कोल तेरा बिन अक्खरां वाला ख़त, ख़तूतां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी

१४३२
२४

कहे प्रभू मैनूं धर्म दी बख्श निशानी, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। ओह आशा पूरी कर दे जो रख के गई दुर्गा अष्टभुज भवानी, भावना तेरे नाल रखाईआ। जो इशारा दिता रावण राम खेल होवे महानी, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। जो तेरा भविख लिख्या वेद व्यास नाल कानी, शाही काग़ज़ रंग चढ़ाईआ। जो काहन कृष्ण हुक्म दिता फ़रमानी, फ़ुरनयां बाहर सुणाईआ । जो इशारा दे के गया ईसा मेरा बाप आवे असमानी, इस्म आज़म नूर अलाहीआ। जिस नूं मुहम्मद किहा मेरा खुदा अलवज़ू नूरे नज़ा दुवस्ते ज़मू अर्शे करे फ़रमानी, ज़िमीं ज़मां दए वड्याईआ। नानक निरगुण धार कर ध्यानी, सरगुण तत तत समझाईआ। गोबिन्द हस के किहा उह पुरख अकाल करे मेहरवानी, मिहबान बीदो इक अख्वाईआ। जिस झगड़ा मेटणा तन वजूद जिस्मानी, ज़मीर बेनज़ीर अन्दरों दए बदलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती पुराणी, पुनह पुनह कहि के सीस निवाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा नहीं ज़बानी, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मार ध्यानी, बिन नैणां नैण उठाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख सुल्तानी, शाहो भूप शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। मानव ज़ाती मंज़ल रही ना कोए रुहानी, रूह बुत दोवें रोवण मारन धाईआ। अमृत रस निझर झिरना बून्द स्वांती मिले किसे ना पाणी, अग्नी तत ना कोए गंवाईआ । मैं इक्को इक तेरे चरण कवल करां ध्यानी, एकँकार तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म सतिजुग साचा बख्श दे गुण निधानी, गुणवन्ते साचे कन्ते श्री भगवन्ते आदिन अन्ते तेरी ओट तकाईआ।

✪ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड रुढ़का ज़िला जलन्धर गुरमेज़ सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे जन भगतो खेल तको पवण पाणी, खुशीआं विच्चों आपणी खुशी बणाईआ। अन्तर निरंतर सुणो शब्द अगम्मी बाणी, अनहद नादी नाद शनवाईआ। परम पुरख दी दस्से अकथ कहाणी, जिस नूं कथनी कथ सके ना राईआ । जो लेखा मुकावे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध रहे ना राईआ। सच दुआर एकँकार देवे माणी, चरण कवल उपर धवल बख्श सरनाईआ। सुरत शब्द मिलाए साचा हाणी, घर घर विच मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत रंग रंगाईआ। तुहाडे हिरदे वसे जिस नूं ईसा किहा बाप असमानी, इस्म आज़म इक अख्वाईआ। उह लहिणा देणा चुकाए जिस्म जिस्मानी, ज़मीर बेनज़ीर अन्दरों दए बदलाईआ। जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सब दा जाण

जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सच प्यार दा बणया दानी, मुहब्बत तुहाडे अन्दर टिकाईआ। चरण धूड़ कराए अगम्म इश्नानी, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। धरनी कहे प्रभू हर हिरदा कर पवित, हरिजन पतित पुनीत बणाईआ। आत्म परमात्म बण मित, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जन भगतां दर्शन दे नित, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। सदा सुहेले वसणा चित, ठगौरी चित रहे ना राईआ। बजर कपाट खोल्ह दे भित, पर्दा अन्दरे अन्दर चुकाईआ। निज नेत्र पैणा दिस, दहि दिशा कर रुशनाईआ। जगत विकार अन्दरों कढणी विस, विशा आपणा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू किरपा कर दे दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आप संभाल, सम्बल दे मालक बेपरवाहीआ। मेरी पूरब लेखे ला लै घाल, घायल हो के सीस निवाईआ। फल लगा दे मेरे डाल, नौ खण्ड पृथ्मी पत्त टहणी दे महकाईआ। मेरी बेनन्ती इक सवाल, सवालण हो के झोली डाहीआ। सतिगुर शब्द विचोला होवे तेरा इक दलाल, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। जिस दे भय विच दिसे

१४३४ काल महाकाल, राय धर्म ना सीस उठाईआ। चित्रगुप्त ना लेखा सके वखाल, लाड़ी मौत नैण नैण शरमाईआ। तूं शाहो १४३४

 भूप शहिनशाह तेरा जल्वा तकां जलाल, नूर नुराने करना नूर रुशनाईआ । भाग लगा दे जीवां जंतां काया माटी खाल, २४

ख़लक दे ख़ालक दया कमाईआ। मेरे उत्ते सति सच बणा धर्मसाल, दर सच दुआरा इक वखाईआ। सच वस्त दे धन माल, नाम निधान इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभु तेरे चरण कवल निमस्कारा, निव निव सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तेरा सोहे बंक दुआरा, सचखण्ड वजे वधाईआ। तेरा दूलहा सतिगुर शब्द दुलारा, दो जहानां मालक इक अख्वाईआ। जिस दा विष्न ब्रह्मा शिव पसारा, त्रैगुण लेखा नाल मिलाईआ। पंजां ततां देवणहार अधारा, पंचम मीता इक अख्वाईआ। तेरा संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतारा, अवतरी ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, मेरी पा सारा, महासार्थी आपणा खेल खिलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मेट दे धन्दूकारा, अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। निर्मल जोती कर उज्यारा, जोती जाते आपणा रंग रंगाईआ। मैं सदा सदा सद जावां बलिहारा, बलि बलि आपणा आप कराईआ। तूं परम पुरख पुरखोतम सब दा सांझा यारा, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जोती जाते हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणा आप वखाईआ। धरनी कहे मेरी तेरे अगे पुकारा, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोए सहारा, सहायक नायक एकँकार इक इकल्ला तूं ही नज़री आईआ।

✪ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ केहर सिँघ, दलीप कौर, दर्शन सिँघ, सुरजीत सिँघ, गेजो, छिबो, भजन कौर, गिरदावर सिँघ, जुगिंदर सिँघ, ऊधम कौर, हरी पुर भजन कौर पिण्ड रुढ़का ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे जन भगतो मेरा सीना होया ठंडा, भगवन मेरे अन्तर निरंतर ठंडक दए वरताईआ। मैं ख़ुशीआं नाल तुहानूं प्रभ दी चरण धूड़ी वंडां, बिन हथ्थां झोली सब दी दयां टिकाईआ। तुसां सच प्रेम दीआं देणीआं गंढ्ढां, जिस नूं जगत जहान सके ना कोए खुल्ह्लाईआ। क्यों एह लेखा लहिणा कलयुग अख़ीरी कन्ढ्ढा, कन्ढ्ढी घाट सारे वेखण थांउँ थाँईंआ। जगत
१४३५ जिज्ञासुआं कूड़ कुकर्म चुकीआं पंडां, भार सके ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा १४३५
२४ साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो मैनूं बड़ी लगदी सर्दी , सति सच दयां जणाईआ। उठो २४
वेखो खेल नरायण नर दी, की नर हरि आपणी कार भुगताईआ । जिस सार पाई तुहाडे घर दी, गृह गृह वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस आसा तृसना सब दी मेटणी ज़र दी, जोरू ज़र ना कोए चतुराईआ। खेल रहिण नहीं देणी शरअ शर दी, शरीअत पैंडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। धरनी कहे जन भगतो बाहर तको नारद पंडत पांधा, किस बिध बोदी रिहा हिलाईआ। तूंही तूंही ढोला गांदा, गा गा ख़ुशी बणाईआ। वणजारा बण के इक्को नाँ दा, तुरीआ पन्ध मुकाईआ। हथ्थ लेखा फड़या सूर गाँ दा, जगत जहान रिहा जणाईआ। नाल वखावे रूप कलयुग कूड़ कुड़यारे काँ दा, जो काग वांग कुरलाईआ। नाले इशारा देवे बांह दा, दो जहान रिहा हिलाईआ। फेर ढोला गाए वाह वाह दा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। तूं मालक थल अस्गाह दा, जंगल जूहां तेरी बेपरवाहीआ। मैं पाँधी बणया तेरे राह दा, रैहबर तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं तुहाडे कोलों इक्को प्रीती मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं आया बिना लत्तां टंगां, बिन तन वजूद शरीर पन्ध मुकाईआ। मेरा सीस वेख लओ

नंगा, ओढण वेखण कोए ना पाईआ। मेरी पिठ ते सतिगुर शब्द ने लाया पंजा, पंज आब विच जाणा चाँईं चाँईंआ। मेरे कोल लेखा जो गोबिन्द दस्सया धार बवन्जा, जिस दा लहिणा बावन गया दृढ़ाईआ । बेशक मैं चार जुग दा पंडा, बिन अक्खरां करां पढ़ाईआ। सच दस्सां नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग रिहा रंडा, नारी नर नरायण हिस्से कोए ना पाईआ। मैं फिरदा रिहा विच ब्रह्मण्डां, पुरीआं लोआं भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं निगाह आउँदा गोबिन्द वाला खण्डा, जो खड़गां बाहर सोभा पाईआ। जिस इशारा दिता सति धार दी धार विच्चों प्रगटे सत्त रंगा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। जिस दीन दुनी दा मेटणा भेख पंखडा, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे सुण धरनीए, धवले तैनूं दयां जणाईआ। की खेल प्रभू ने करनी ए, करता पुरख की दृढ़ाईआ। की तुक अगम्मी सब ने पढ़नी ए, बिन विद्या करे पढ़ाईआ। केहड़ी मंज़ल सृष्टी दृष्टी अन्दर चढ़नी ए, चौथे जुग भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ । धरनी कहे नारदा मैनूं खोल्ह दे भेद, अभेव दे जणाईआ। नारद कहे धरनीए इक्को ढोला गा लै जेहव, इक्को सिफ्त सलाहीआ। इक्को रस चख लै मेव, बिन रसना रस बणाईआ। इक्को परम पुरख वड देवी देव, देव आत्मा जिस दी सरनाईआ। नी ओह वसणहारा सचखण्ड धाम निहकेव, निहचल आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे सुण नारद ब्राह्मणा, पंडया दयां जणाईआ। मैनूं दस्सदे उस दी भावना, की भाव रिहा समझाईआ। किस बिध पकड़ाया आपणा दामना, दामनगीर इक अख्वाईआ। जिस वायदा पूरा करना बलि बावना, बलधारी वेस वटाईआ। जो लेखा लेखे लाए राम रावना, रम्ईआ बणे धुरदरगाहीआ। जिस मनसा पूरी करनी कृष्णा काहनना, घनईया आपणा संग जणाईआ। जिस पैग़म्बरां पकड़ावणा दामना, दस्तगीर बेनज़ीर आप अख्वाईआ। जिस नानक गोबिन्द खेल खिलावना, उह ख़ालक ख़लक वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस इक्को डंका शब्द वजावणा, दो जहान करे शनवाईआ। धरनी कहे जिस नूं सब ने सीस निवावणा, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जगत तृष्ना मेटे तामना, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। जिस ने सतिजुग मार्ग लावणा, कलयुग क्रिया कूड़ चुकाईआ। उस दे बलि बलि सब ने जावणा, निव निव लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए ओह मालक इक जगदीस, जगदीश्र धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकणे सारे सीस, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना बीस बीस, बीस बीसा इक अख्वाईआ। जिस

१४३६
२४

दा इक्को कलमा होए सच हदीस, हज़रतां बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दा नाम संदेशा बाहर राग छतीस, छतीसा बतीसा सिफ्त ना कोए सलाहीआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी पीसण रिहा पीस, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणी कार कमाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला जिस दी करे कोए ना रीस, दूसर रूप ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे नारदा मैं वेख लै कोझी कमली, आपणी सुध ना कोए रखाईआ। अगला भेव दस्सदे गोझी, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नारद कहे धरनीए मैं नहीं कोई कलयुग वाला जोगी, तन वजूद शृंगार बणाईआ। मैं कोई वासना वाला नहीं भोगी, तृष्ना जगत ना कोए रखाईआ। मैं नहीं कोई विछोड़े वाला विजोगी, विछड़ के आपणा झट लँघाईआ। मैं ते प्रभू दा भगत मौजी, मजलस भगतां संग रखाईआ। मैनूं सतिगुर शब्द बणाया खोजी, खोज कढ़ुया चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे वस्या मेरा प्रीतम चोजी, चोजी आपणा वेस वटाईआ। जो बण के अगाध बोधी, बुद्धी तों परे दए समझाईआ। दुरमति मैल धोवे बण के धोबी, दुबधा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे धरनीए जे परम पुरख

१४३७ नूं पाउणा, पवण पाणी नाल मिलाईआ। पहलों आपणा आप उठाउणा, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। फेर सति शृंगार कराउणा, १४३७

२४ वेस अवेसा रूप धराईआ । नेत्र नाम निधाना कज्जल पाउणा, जगत अक्ख ना कोए वड्याईआ। बिन मेंढी सीस गुंदाउणा, २४

सोहणा रूप धराईआ । सच प्यार दा ओढण इक्को उपर टिकाउणा, टिक्का धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। फिर दीन दुनी तजाउणा, जगत रिश्ता ना कोए जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी आपणा हिस्सा वेख वखाउणा, सत्त दीप खोज खुजाईआ। लख चुरासी ध्यान लगाउणा, धरनी धरत धवल धौले धर्म नाल समझाईआ। सब तों पहलों मेरे परम पुरख परमात्म जिस दा दर्शन पाउणा, दीद ईद करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे नारद मैं प्रिथम रूप बणावांगी। एका एकँकार इष्ट मनावांगी। दूजा एका भाउ चुकावांगी। तीजा तिन्नां लोकां बाहर वेख वखावांगी। चौथा चौथी मंज़ल चढ़, नैण उठावांगी। पंचम पंजवां पल्लू इक्को फड़, साची गंढु बंधावांगी। छेवां वेख अगम्मा दर, दर दुआरा इक खुल्लावांगी। सत्तवां सति सतिवादी मिलके हरि, हिरदे आपणे आप वसावांगी। अठ्ठवां अठ्ठां ततां रहे ना डर, डण्डावत बदंना विच सीस निवावांगी। नौवें वासना रहे कोई ना घर, गृह मन्दिर इक्को सोभा पावांगी। दसवें मिलके आपणे नरायण नर, नर हरि विच समावांगी। झट नारद हस के किहा धरनीए हुण होर दा भाणा जर, ज़र्रा ज़र्रा तेरा खेल तूं बिन रसना कहि मैं उसे दे हुक्म विच सीस निवावांगी। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक मनावांगी। धरनी कहे नारदा मैं कूकां मारां, आ जा मेरे कमलापातीआ। मैनूं तेरे नाल बहारां, अन्तिम मेरी पुछ वातीआ। मैं तन वजूद श्रृंगारां, बिन नैणां मारां झातीआ। मेरीआं वेख लै सिम्मल वालीआं तारां, पर्दा लाह दे विच्चों रैण अन्धेरी रातीआ। तेरी धूड़ी लावां छारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा कर दे लोकमातीआ। नारद कहे धरनीए ओह लोकमात विच आया, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ । जोती नूर नूर रुशनाया, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द अनादी नाद सुणाया, सोहला ढोला धुरदरगाहीआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुरुआं दर्शन पाया, बिन नैण नैण बिगसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव शुकर मनाया, खुशीआं विच ढोले गाईआ। जिस ने चार जुग दा लेखा आपणे चरणां हेठ दबाया, दो जहानां वेख वखाईआ। जिस नूं सब ने मन्नया दाई दाया, दो जहानां मालक होए सहाईआ। नी उस ने सम्बल आपणा डेरा लाया, बंक दुआरे डेरा लाईआ। जिस भेव अभेद खुल्हाया, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। कोटां विच्चों कमलीए कोई विरला उस ने भगत सुहेला जगाया, जागरत जोत करी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ।
१४३८ धरनी कहे नारदा की खेल श्री भगवाने, भगवन की जणाईआ। नारद कहे सुण धरनी धरत धवल धौल रकाने, जोबनवन्तीए १४३८
२४ तैनूं दयां सुणाईआ। ओह परम पुरख शहिनशाह सुल्ताने, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा जुग जुग खेल महाने, चौकड़ी २४
आपणा हुक्म वरताईआ। जो वसे सचखण्ड मकाने, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दे नाम दे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं गाए तराने, तुरीआ विच बहि के ढोले गाईआ। जिस ने लख चुरासी जीव जंत कीते बेगाने, तेरे उत्ते खेल खिलाईआ। उस दा खेल अवल्ला जो लेखा जाणे दो जहाने, दोहरी आपणी कल प्रगटाईआ। नी पता नहीं अज्ज आ गया केहड़े बहाने, जन भगतां विच बैठा सोभा पाईआ। जिस दे सच सच दे यराने, यराना आत्म परमात्म नाल रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स कलामे, कलमा काएनात दृढ़ाईआ। जिस दे हुक्म विच बदल गए ज़माने, जुग चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त खेल करे महाने, महिमा कथ कथ दृढ़ाईआ। जिस दे प्यार विच हरिजन होए दीवाने, मस्ती विच भज्जण चाँई चाँईंआ। इन्द्र देवत सुर मेघ बरसाने, खुवाजा खिजर खुशी बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उस दे चरण दबाने, बिन हथ्थां हथ्थ लगाईआ। उठ बिना अक्खीआं अक्खीआं खोल्ह जे उस दे दर्शन पाणे, दर्शन तैनूं दयां कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे धरनीए खोल्ह अक्खीआं, जगत नेत्रां बाहर जणाईआ। जिस जुग जुग तेरीआं लाजां रखीआं, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस खेल खिलाया काहन नाल सखीआँ, सखावत

कीती चाँईं चाँईंआ। ओह मालक अलख अलखीआ, अगोचर अगम्म अथाहीआ। जिस दे सथर लथीआं, यारड़ा सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे नारदा मेरा प्रभ नूं इक आदेस, निव निव सीस निवाईआ। मै हैरान हो गई केहड़ा कीता अवलड़ा वेस, वेस अवेस आपणा ल्या बदलाईआ। वे ना मुच्छ दाढ़ी ना केस, जोती जाता हो के सोभा पाईआ। जेहड़ा सदा रहे हमेश, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जिस दुआरे दे अवतार पैग़म्बर गुरु दरवेश, भिक्ख्या मंगण थांउँ थाँईंआ। जिस दे गुण गावे सहँसर मुख शेष, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ। जिस सुत दुलारा बणाया गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा दा भेव आप चुकाईआ। ओह मालक नर नरेश, नर हरि इक्को नजरी आईआ। मैं ओसे दे चरण कवल होई पेश, पेशीनगोईआं पिछलीआं हथ्थ उठाईआ। मेरे स्वामी ठाकर मेरे उत्तों मेट कलेश, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। उस सुणा दिता जणा दिता मेरा सतिगुर शब्द देवण वाला संदेश, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक समझाईआ। नारद कहे धरनीए प्रभू बड़ा छलीआ, अछल छलधारी इक अख्वाईआ। आदि जुगादी
१४३८ बड़ा बलीआ, बलधारी धुरदगाहीआ। उस दे हुक्म विच कितने फिरदे अवतार पैग़म्बर गुरु वलीआ, वलीअहद नजर कोए १४३८
२४ ना आईआ। जिस दा लहिणा देणा जल थल महीअल समुंद सागर रलीआ, टिल्ले पर्वत चोटीआं बैठा आसण लाईआ। नी २४
उह तेरीआं नौ खण्ड दीआं वेखण वाला गलीआं, कूचा कूचा फोल फुलाईआ। सत्तां दीपां तक किस बिध कलयुग पाए जल्लीआं, नच्चे टप्पे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा नेहचल धाम अटलीआ, अटल महल इक्को इक सुहाईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ बंत सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों बुझा दे बसन्तर, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। इक्को नाम निधाना दे दे मन्त्र, कलमा सच सच दृढ़ाईआ। लेखा पूरा कर दे जुगा जुगन्तर, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। तेरा लहिणा देणा निरगुण धार निरंतर, निरवैर तेरी सरनाईआ। पर्दा ओहला रहे ना गगन गगनंतर, ज़िमीं असमान दो जहान भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों कलयुग कूड़ बुझा

दे अग्ग, आगमन तेरे विच राह तकाईआ। किरपा कर सूरे सरबग, हरि करते धुरदरगाहीआ। दीआ बाती कमलापाती मेरा नूर जाए जग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। जन भगत सुहेले दीन दुनी नालों कर अलग, गृह वखरा इक वखाईआ। दर्शन दे उपर शाहरग, शहिनशाह पर्दा दे उठाईआ। हँस रूप बणा लै कग, कागों हँस माणक मोती चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर आप सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट दे धुँदूकारा, धवल हो के सीस निवाईआ। तूं मेरा एकँकारा, अकल कल तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं सांझा परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। तेरा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव संग रखाईआ। मेरे उत्तों कूड़ी क्रिया लाह दे भारा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। सतिजुग सच कर उज्यारा, सति सति दया कमाईआ। तेरे नाम दा इक्को सुणां नाअरा, नर नरायण दयां दृढ़ाईआ। इक्को घर होवे सच दुआरा, भगत वछल देणा वखाईआ। इक्को चरण कवल होवे निमस्कारा, डण्डावत बन्दना इक्को वेख वखाईआ। इक्को इष्ट होवे संसारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी
१४४० कहे प्रभू मेरे उत्तों मेट अन्ध अँधयार, अन्ध आत्म कर रुशनाईआ। सच प्रीती दे प्यार, परम पुरख तेरी ओट तकाईआ। १४४०
२४ भाग लगाउणा मेरे नौ खण्ड दुआर, सत्तां दीपां सोभा पाईआ। मैं खुशीआं विच धूड़ी लावां छार, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। २४
बिन नेत्र लोचन करां दीदार, बिन अक्खीआं दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सुहञ्जणा इक वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते जन भगतां मेलणा आप, आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म बख़्शणा जाप, जग जीवण दाते होणा सहाईआ। कूड़ कुकर्म रहे कोई ना पाप, जन्म दा लेखा देणा चुकाईआ। सचखण्ड निवासी आप बणना धुर दा बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। झगड़ा मेट कूड़ संताप, संसा दीन दुनी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा अन्तर निरंतर क्रिया कूड़ जगत मेट संताप, सति सतिवादी सति आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड नवां पिण्ड ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां चाढ़ दे रंग, रंगत निरगुण धार आप चढ़ाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते ला लै अंग, अंगीकार एकँकार परवरदिगार आप हो जाईआ। नाम निधान श्री भगवान मर्द मर्दान सूरे सरबंग, करनी दे करते कुदरत

दे कादर तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं निमाणी कोझी कमली सच दुआरे रही मंग, मांगत हो के दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां काया मन्दिर अन्दर लँघ, नौ दुआर दा पन्ध मुकाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। शब्द अगम्मा वजा मृदंग, ताल तलवाड़ा समझ किसे ना आईआ। निझर झिरना अमृत सोमा बूँद स्वांती वहा आपणी गंग, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती जिस नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत सुहेले बणा लोकमात, धवल हो के वास्ता पाईआ। नाम निधान बख्श दे दात, अगम्मढ़ी अनमुल आप वरताईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेट दे रात, नूरी चन्द कर रुशनाईआ। मेहरवान हो के पुछ वात, महबूब हो के पर्दा आप उठाईआ। झगड़ा मेट दे दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊँच नीच शरअ ना कोए लड़ाईआ। चरण प्रीती नव सत्त जोड़ दे नात, रिश्ता रिश्तयां बाहर बणाईआ। तेरा दरस निरगुण सरगुण करे इक इकांत, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। मेरे मेहरवाना मेरे उत्ते धर्म दी धार बख्श दे शांत, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

१४४१ दे मालक मेरी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां मेल मिलाउणा साचे गृह, मन्दिर इक्को इक सोभा पाईआ। १४४१

२४ जिथ्थे आदि जुगादी निरगुण धार रहे, नूर नुराना नौजवाना सोभा पाईआ। जगत दूई मेटणी दुवै, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। २४

जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए कहि, हुक्म संदेशा तेरा नाम दृढ़ाईआ। तूं सब नूं देवणहारा भय, भाउ आपणा आप इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां अन्तर खोल्ह दे दृष्टी, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ । नाता तोड़ दे कूड़ी नालों सृष्टी, श्रेष्ट आपणा मेल मिलाईआ। लहिणा तक लै जो राम संदेशा दिता वशिष्टी, विषयां बाहर दृढ़ाईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि बाहर स्वर्ग बहिश्ती, कसुंभड़ा रंग ना कोए रंगाईआ। तेरी धार एकँकार किसे ना दिसदी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। मैं खेल तकणा चाहुंदी, कलयुग अन्तिम कल इक दी, इक इकल्ले मेरा पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां रुत वखा दे बसन्ती, बिसमिल आपणे विच कराईआ । तेरे नाम दी पढ़न इक्को पंगती, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। अन्तर गढ़ रहे ना हउमे हंगती, हँ ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। तृष्ना कूड़ मेटणी मन दी, मनसा उठ ना दहि दिश धाईआ। चुगली निंदया छुडाउणी कन्न दी, कायनात दा लेखा देणा मुकाईआ। इक्को ख़बर दस्सणी जोती जाते आपणे ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ।

करनी रहे ना किसे कर्म दी, कर्म कांड दा लेखा देणा चुकाईआ। मंज़ल दस्सणी हकीकी धर्म दी, जिथ्थे अगे हो ना कोए अटकाईआ। वड्याई देणी आपणी शरन दी, चरण कवल इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू दे दे अगम्मा नाम, निरअक्खर धार विच्चों प्रगटाईआ। बिन रसना जिह्वा प्या दे जाम, बत्ती दन्द ना कोए चतुराईआ। आत्म परमात्म मेल मेल दे राम, राम दे राम तेरी दुहाईआ। अन्तर अन्धेरा चुका दे शाम, शाम सुंदर आपणा पर्दा लाहीआ। भाग लगा दे भगतां साढे तिन्न हथ्थ ग्राम, नगर खेड़ा इक सुहाईआ। पवित्र कर दे काया माटी चाम, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। तूं मेहरवान मेहरवान मेहरवान रहीम रहमान, रहमत आपणी देणी कमाईआ । मालक ख़ालक जिमीं असमान, ज़िमीं ज़मां दा लेखा देणा मुकाईआ। हरि भगत सुहेले दरगाह साची सचखण्ड कर परवान, परम पुरख प्रभ आपणा संग बणाईआ। लोकमात मार ध्यान, धरनी धरत धवल धौल हो के वास्ता पाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ वेख शैतान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। आत्म परमात्म रिहा ना किसे ज्ञान, अन्तर निरंतर तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक
१४४२ नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सदा मेहरवान, महिबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। १४४२

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड डलेवाल ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे प्रभू फल लगा दे मेरी पत्त टहणी, भगत मीते आपणी दया कमाईआ। हरिजन बख़्श दे साची रहिणी, रहमत रहमान आप कमाईआ। सतिगुर शब्द दी सारे मन्नण कहिणी, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरा दर्शन करन निज नैणी, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। मैं चरण कवल निरगुण धार तेरे ढहणी, ढहि ढहि धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मैनूं दिवस रैण ना आवे चैनी, चिन्ता ग़म रही जलाईआ। क्यों, सृष्टी मेरे उत्ते इक दूजे नाल खहणी, ख़तरा दिसे ख़लक खुदाईआ। मेरी जल दी धार पवित्र रहिणी नहीं त्रिबैणी, त्रैगुण अतीते तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ क्रिया नदी उम्मत वहिणी, दीनां आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी सुण लै अगम्मी साखी, सखे सखाए दयां जणाईआ। याद कर लै शब्द धार जो मैनूं गल्ल आखी, बिन अक्खरां दिती सुणाईआ। ओह लहिणा चेते कर लै, जिस कारन गोबिन्द सिक्खी बणाई बैसाखी, वसाह के आपणा हुक्म वरताईआ। तुध बिन अन्त करे कोई ना राखी, रक्षक नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी बख़्श

दे गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला तेरे चरण टिकाईआ। मैं निरगुण हो के मंगण आई मुआफ़ी, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं शहिनशाह बण इन्साफ़ी, अदल आपणा इक कराईआ। मैनूं याद आउँदी बुल्ले वाली उह काफ़ी, जो काफ़ले दीन दुनी गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख प्रभ धर्मू, धवल दे मालक दया कमाईआ। मेरा नव सत्त बदल दे कर्मू, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों खुल्ला दे भरमू, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। झगड़ा रहे ना माटी चर्मू, चम्म दृष्टी दे गंवाईआ। तेरा नूर ज़हूर नज़र आवे इक्को परमू, ब्रह्मण्ड खण्ड दे मालक पर्दा देणा खुल्लाईआ। चरण धूड़ नुहा दे मैं तेरी आई सरनू, सरनगति इक रखाईआ। तूं सब कुछ करनी करता करनू, कुदरत दा कादर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं इक्को दे दिलासा, जगत चिन्ता रहे ना राईआ। मैं खुशीआं विच करां हासा, हस्ती तक बेपरवाहीआ। भेव अभेदा खोल्ह खुलासा, पर्दा परदयां विच्चों खुल्लाईआ। किस बिध तेरा नूर होवे प्रकाशा, जोती जाते नज़री आईआ। की हुक्म वरते शंकर कैलाशा, कलाधारी देणा दृढ़ाईआ। मैनूं

तेरे उत्ते विश्वाशा, विश्व दे मालक देणा समझाईआ। मैं आदि जुगादि तेरी दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मण्डल सच तेरी वेखां रासा, सति सतिवादी बिन गोपी काहन देणी वखाईआ।

१४४३ २४

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ संसार सिँघ दे गृह पिण्ड जजे ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे मेरी आसा पूरी कर दे बावन धार बलि दी, बलधारी एकँकारी परवरदिगारी तेरी ओट तकाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मेरे उत्तों कला मेट दे कलयुग कल दी, कलकातीआं डेरा देणा ढाहीआ। मन कल्पणा नौ खण्ड पृथमी मानव ज़ाती फिरे छलदी, अछल छलधारी होणा आप सहाईआ। तेरी खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी जल थल दी, महीअल तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। धरनी कहे मेरे भगवन्ता, भगवन तेरी ओट तकाईआ। मेरे आदि जुगादी कन्ता, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। सतिजुग सच धार बणा दे बणता, घड़न भन्नृणहार तेरी बेपरवाहीआ। मानव ज़ाती गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बुद्धी तों परे दा एकँकार इक्को पंडता, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन मेरी साची बणा दे संगता, दीन

मज़ब शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक झगड़ा रहे कोई ना मन दा, मनसा सब दी वेख वखाईआ। भेव खुल्हा दे आपणे ब्रह्म दा, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप चुकाईआ। निशाना दस्स दे साचे धर्म दा, धरनी धरत धवल धौल हो के वास्ता पाईआ। सहारा बख़्श दे आपणी सरन दा, सरनगति इक दृढ़ाईआ। नाम जणा दे इक्को ढोला पढ़न दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा मार्ग होवे इक्को सचखण्ड दुआरे चढ़न दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर दूलहा प्यारा होवे अग्गों फड़न दा, निरगुण निरगुण मेला मेले सहिज सुभाईआ। तूं मालक ख़ालक करनी करन दा, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी नमो नमो नमो डण्डावत, बन्दना कहि कहि सीस निवाईआ। सच प्यार दी दे निआमत, नाम निधाना झोली पाईआ। तूं स्वामी ठाकर सही सलामत, सतिगुर दाता अगम्म अथाहीआ । नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दी मेरी पूरब झोली पा निआमत, वस्त अमोलक आप वरताईआ। कलयुग कूड़ क्रिया मेट अन्धेरी शामत, शमअ नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।
१४४४ धरनी कहे मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। दो जहानां सांझे यार, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। मैं मांगत खड़ी तेरे चरण दुआर, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। तूं देवणहार शाह सिक्दार, भूपत भूप इक अख्वाईआ। नव सत्त ब्रह्म मति पा सार, पृथम पृथ्मी उत्ते ध्यान लगाईआ। मेरे उत्तों मेट दे धूंआँधार, धर्म दी धार इक वखाईआ। सतिजुग साचा कर उज्यार, उजाला होवे थांउँ थाँईंआ। हर हिरदे उपजे तेरे नाम दा जैकार, जै जैकार करे ख़लक ख़ुदाईआ। निगाह मार लै निरवैर हो के विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते मेरी पाउणी सार, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू साची बख़्श दे चरण धूड़ी, टिक्के मस्तक ख़ाक नाम रमाईआ। रंगत जगत चाढ़ दे गूढ़ी, दो जहान उतर ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणा लै मूर्ख मूढ़ी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तूं जोती जाता इक्को नूरी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। वायदा चेते कर लै जो मूसा कीता उत्ते कोहतूरी, तुरीआ तों बाहर जणाईआ। जो आशा ईसा रखी चढ़न लग्गयां सूली, सलीब गल विच लटकाईआ। मुहम्मद चार यारी संग तेरी शरअ कबूली, कुदरत दे कादर वेखणा नैण उठाईआ। कलयुग बदलणा तेरे वास्ते खेल मामूली, मुश्किल मेरी हल कराईआ। नानक गोबिन्द कौल कदे ना भूलीं, अभुल तेरी वड्याईआ। लहिणा देणा लख चुरासी कोलों वसूलीं, वसल यार वेखणा भगतां चाँईं चाँईंआ। तूं मालक

ख़ालक कन्त कन्तूहली, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू हरिजन बख़्श दे चरण प्यार, प्रीतम प्रीती इक जणाईआ। तेरी धूड़ी लावां मस्तक छार, शहिनशाह टिक्के नाम रमाईआ। निज नेत्र बख़्शणा दरस दीदार, लोचन अक्ख अक्ख खुल्हाईआ। नाद शब्द देणी धुन्कार, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ । अमृत बख़्शणा ठण्डा ठार, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। तूं देवणहार निरँकार, निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगतां पैज संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरे भगत वछल गिरधार, गिरवर तेरी वड वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सद रखणा आपणे चरण दुआर, चरणोदक धुर दा जाम प्याईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करना लोकमात विच सिँघ संसार, सतिगुर हो के दया कमाईआ। आवण जावण पतित पावन लख चुरासी गेड़ देणा निवार, जम की फाँसी रहिण मूल ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोए सहार, सहायक नायक दूजा नज़र कोए ना आईआ।

१४४५ ✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ हज़ूरा सिँघ, नछत्र कौर पिण्ड गुराइआं ज़िला जलन्धर ✪ १४४५

२४ धरनी कहे प्रभ निगाह मार लै मेरे दीप लखण, अलख अलखणे नैण उठाईआ। गृह गृह सति वस्त तों होया सक्खण, सच नाम नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन लज्जया आवे कोए ना रखण, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ । कलयुग रैण अन्धेरी तक लै मसण, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरे मेहरवाना मैं तैनूं आई दस्सण, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। बिन कदमां आई नस्सण, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू पुष्कर दीप तक, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मेरा लहिणा देणा झोली पा दे हक, हकीकत दे मालक हो सहाईआ। तेरा नूर ज़हूर भुलया सब नूं यक, जोती जाते तेरा दरस कोए ना पाईआ। मैं नव सत्त तेरा रूप हो के गई थक, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे विच मानव ज़ाती प्या शक्क, तेरा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दीप वेख लै करौच, कुरह कायनात खोज खुजाईआ। जिथ्थे मेरी चले कोई ना पहुंच, ताकत नज़र कोए ना आईआ। तेरी सृष्टी दी सति सच रही ना सोच, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। निगाह खुल्हे ना किसे लोचन लोच, नेत्र नैण नैण ना कोए शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा

सहाईआ। धरनी कहे प्रभू जम्बू दीप दा वेख किनारा, जगत घाट देणे तजाईआ। चारों कुण्ट हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नेत्र रोवे पुरख नारा, स्त्री मर्द देण दुहाईआ। किरपा कर दे सांझे यारा, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। तूं शाहो भूप शहिनशाह सिक्दारा, हुक्मरान धुरदरगाहीआ। तेरे चरण कवल सहारा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दीप तक लै सान, सतिगुर हो के वेख वखाईआ। मेरा रिहा किते ना माण, अभिमान भरी तेरी लोकाईआ। धर्म दा दिसे ना कोए निशान, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। क्रिया कूड़ होई प्रधान, नच्चे टप्पे कुद्दे थांउँ थाँईंआ। मुहब्बत विच रिहा ना कोए इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। मैं वेख के होई हैरान, हैरत विच दयां सुणाईआ। किरपा कर मेरे श्री भगवान, भगवन तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा दीप वेख लै सलमल, सालस हो के ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै महीअल जल थल, अस्गाहां खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म तेरे नाल सके कोई ना रल, सुरती शब्द ना कोए समाईआ। धर्म दा रिहा कोई
१४४६ ना फल, पत्त टहणी ना कोए महकाईआ । निगाह मार लै कलयुग कूड़ी क्रिया कल, कल कातीआं वेख वखाईआ। जोती १४४६
२४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा तक २४
लै दीप कुशा, कुछ कहिण दी लोड़ रही ना राईआ। जिस दी धार विच कटाईआं लबां मुच्छां, मुश्किल हल ना कोए कराईआ। ओह दीन दयाले तेरे नालों मानव रुस्सा, रुस्सयां सके ना कोए मनाईआ। ओन्हां दे अन्दर शरअ धार दा ग़ुस्सा, गिला तेरे उत्ते जणाईआ। सब दा कूड़ कुकर्म दा तक लै जुसा, जिस्म ज़मीरां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे दीप सत्त वेख लै वखरे वखरे, वखरी धार जणाईआ। चोटी चढ़ के तक लै सिख़रे, सतिगुर हो के पर्दा आप चुकाईआ। मैं तेरे ढोले गावां फ़िकरे, सोहले राग जणाईआ। तूं मेरा कर ज़िकरे, ज़िकर आपणे नाल रखाईआ। मेरी आशा तेरी धारों नितरे, दूसर नज़र कोए ना आईआ। इक्को बण जाएं प्यारा मित्रे, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। मेरे कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेट दे फ़िकरे, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। निगाह मार लै दीप जितने, जेते केते तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कोई ना खोल्हे भेते, भेव अभेदा बाहर चार वेदां आप देणा दृढ़ाईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ बंती दे अन्तिम संस्कार समें हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

आत्मा कहे मैं ना जन्मी ना मरी, मरन विच कदे ना आईआ। मैं सदा सदा प्रभ चरण लग्ग तरी, तारनहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले किरपा करी, करते पुरख दिती वड्याईआ। मैं अठारां दिवस रही ठरी, नौ अठारां पन्ध मुकाईआ। मेहरवान होया मेरा महबूब हरी, हिरदे मेरे आसण लाईआ। मैं खुशीआं विच रही भरी, जगत वासना ना कोए रखाईआ। संदेशा सुणदी रही नर हरी, नरायण की दृढ़ाईआ। किस बिध आउणा सचखण्ड दुआरे घरी, घराने सोभा पाईआ। मैनूं खुशी होई बारां फग्गण मेरी आत्मा गई वरी, वारस मिल्या इक्को धुर दा माहीआ। जिस लख चुरासी विच्चों कीता बरी, फ़ैसला हक सुणाईआ। मैं सब नूं ख़बर सुणावां खरी, सच सच दृढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे खुशी बड़ी, दुःख नज़र कोए ना आईआ। मैं परम पुरख दी मंज़ल चढ़ी, पौड़ी डण्डा जगत ना कोए रखाईआ। सच दुआर इक्को इक खड़ी, संदेशा देवां चाँईं चाँईंआ। जिस प्रभू ने मेरे अन्त प्यार विच लाई झड़ी, ठंडक सब नूं देवे पाईआ। मेरा नाता तुट्टया पंज तत साढे तिन्न हथ्थ दी गढ़ी, जगत बूँद रक्त लेखा रिहा ना राईआ। मैं परम पुरख दे प्यार विच सेवा कीती बड़ी, आप
१४४७ आपणा भेंट कराईआ। मेरा परवार मेरे पिच्छों सोग करे ना ज़री, ज़र्रे ज़र्रे विच वस के दयां जणाईआ। मैं बज्झ गई उस १४४७
२४ इक प्रभू दी लड़ी, जिथ्थों लड़ ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा २४
वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर वसाया बठाया थिर घरी, बंती कहे मेरी बणत आप बणाईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ संतोख सिँघ दे गृह पिण्ड सोढ्ढीआं ज़िला जलन्धर ✪

फल्गुण कहे प्रभू मेरा प्रविष्टा पंदरां, इक पंज दे मालक देणी वड्याईआ। भाग लगा दे जन भगतां काया मन्दिरा, धुर दे मालक दया दे कमाईआ। लेखा तक लै सति सतिवादी आपणे अन्दरा, अन्तष्करन दे मालक होणा सहाईआ। बजर कपाट तोड़ दे जंदरा, त्रैगुण अतीते वेख वखाईआ। भाग लगा दे डूँग्घी कंदरा, बिन तेल बाती दीआ दीपक कर रुशनाईआ। मनुआ दहि दिश उठ ना धावे बन्दरा, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। फल्गुण कहे प्रभू मेरा पंदरां प्रविष्टा आया अज्ज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां पर्दे कज्ज, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जाते निरगुण सरगुण

दर्शन दे रज्ज, रजो तमो सतो दा लेखा देणा मुकाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी जो तेरे चरण कवल आए भज्ज, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। सोढ्ढीआं पिण्ड बैठे सज, सन्तोख मोख नाल मिल के वजी वधाईआ। बिना काअब्यां कराउणा हज्ज, हाजत सब दी पूर कराईआ। तेरा नाम निधाना डंका हर हिरदे जाए वज, वजह समझ कोए ना आईआ। प्रभू भगतां ते किरपा करन दा कोई बणा लै पज्ज, पंजां पगड़ीआं बन्न्हाउण वाल्यां सद्द लेखा देणा मुकाईआ। तूं नूर अलाही एकँकारा इक्को रब्ब, रब्बे आलमीन कहि के सारे तैनूं गाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरा मेला होया नाल सबब, सब दा लेखा आपणे लेखे लाईआ। मैं खुशीआं नाल होवां गद गद, गहर गम्भीर तेरे ढोले गाईआ। जन भगत सुहेले आत्म धार परमात्म तेरी दिसण यद, यदी यदप आपणा मेला लैणा मिलाईआ। नाम खुमारी चाढ़ दे मध, मधुर धुन इक सुणाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात रहे कोई ना हद्द, हदूद इक्को देणी समझाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सूरा सरबग, करनी दा करता नूर अलाहीआ। कलयुग क्रिया कूड़ बुझा दे अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते आपणा दर्शन दे दे उपर शाहरग, नौ दुआरयां लेखा रहे ना राईआ। बेशक हरिजन तेरे जीव अल्पग, तूं तारनहार इक
१४४८ गुसाँईंआ। कलयुग अग्नी तत्ती वा रही वग, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १४४८
२४ कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ । फल्गुण कहे प्रभू मेरा प्रविष्टा इक पंज दी धार, अंक अंक नाल २४
मिलाईआ। तूं परवरदिगार सांझा यार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। शाहो भूप मेरा सिक्दार, सति सतिवादी अगम्म अथाँईंआ। तेरा लहिणा देणा सदा जुग चार, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। भगत उधारना तेरा खेल अपार, अपरम्पर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। मैं डण्डावत बन्दना विच करां निमस्कार, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। पंदरां फल्गुण कहे मैं दस्सां आपणी कहाणी, धुर दे हुक्म नाल जणाईआ। मेरी आशा बहु पुराणी, पुराण अठारां भेव कोए ना आईआ। किसे अगे दस्सी नहीं नाल ज़बानी, अक्खरां रंग ना कोए रंगाईआ। मेरा लहिणा देणा नहीं नाल चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा नाता नहीं जगत जीव प्राणी, पवण स्वासी संग ना कोए बणाईआ। मेरा मालक ख़ालक शाह सुल्तानी, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस मेरे उत्ते करनी मेहरवानी, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दा जिस्म नहीं जिस्मानी, तन वजूद ना कोए रखाईआ। ओह जोती जाता जल्वागर नूर नुरानी, ज़हूर आपणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। पंदरां फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा आया लोकमात, मातृ भूमी खुशी बणाईआ। पुरख

अकाले दीन दयाले मेरी पुछणी वात, वारस हो के वेख वखाईआ। एह छोटी जेही बलि दुआरे दी बात, जो बावन गया समझाईआ। कलयुग अन्त झगड़ा पैणा ज़ात पात, दीन दुनी करे लड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अन्धेरी होई रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म मिले ना कोए जमात, जुमला अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाला पुछे किसे ना वात, वारस नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आया घाट, घायल होए ख़लक ख़ुदाईआ। साजण मीत दए कोई ना साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। अन्तर निरंतर प्रभू दी सुणे कोए ना गाथ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लहिणा देणा मुके ना किसे मस्तक माथ, पूरब लेख ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। इक पंज कहे साडा दोहां दा अगम्म मिलाप, मेला हरि जगदीस कराईआ। इक पंज दा इक्को जाप, पंज तत देण गवाहीआ। जिन्हां दा इक्को माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। जो मेटणहारा रोग संताप, जगत दुखड़े दूर कराईआ। जन्म जन्म दा लाहे पाप, पतित पुनीत बणाईआ। जिस दे भय विच सारे रहे कांप, सिर सके ना कोए उठाईआ। उस दा सब तों वड्डा प्रताप, परम पुरख आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप
१४४६ हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। इक पंज कहे साडा लेखा नाल बलि, १४४६
२४ बलि दुआरा दए गवाहीआ। जिथ्थे बावन आया चल, ब्राह्मण बृद्ध रूप प्रगटाईआ। बिन शास्त्रां करे कोई ना गल्ल, वेद २४
चारे रिहा सुणाईआ। हथ्थ विच अमृत फड़ के जल, कलस ज़िमीं असमान भुआईआ। झट आपणा रूप बदले पल पल, जिस दी समझ किछ ना आईआ। पवण पाणी जाए रल, तन वजूदां भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंदरां फल्गुण कहे मैनूं याद पिछला लहिणा, सच दयां जणाईआ। बलि दुआर बावन दा कहिणा, कहि के गया सुणाईआ। नाल लेख दस्सया बाल्मीक वाली रमायणा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। राम राम दा खेल दस्सया जिस नूं समझे ना कोए त्रफ़ैणां, वेद व्यासा वंड वंडाईआ। कृष्ण काहन की हुक्म संदेसा देवे नर नरायणा, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। किस बिध पैग़म्बरां भाणा सहणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। कवण दुआरे गुरुआं देवे देणा, देवणहार आप हो जाईआ। शब्दी धार संदेशा दिता, बलि, उठ वेख लै आपणे नैणां, बिन अक्खीआं अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया वहिण वहिणा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साजण मीत दिसे कोई ना सैणा, सगला संग ना कोए निभाईआ। नाता तुट्टे भाई भैणां, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। सच दुआर किसे ना बहणा, सांतक सति ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया तन शृंगार माया ममता सब ने पाउणा गहिणा, तन वजूद

वेखण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बावन किहा, बलि, कलयुग अन्तिम आवेगा। अछल अछल्ल आपणी खेल खिलावेगा, जल थल महीअल भेव चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावेगा। बलि, कलयुग दी वेख निशानी, निशाने तैनूं दयां जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी होए हैरानी, हैरत सब दे अन्दर छाईआ। चार जुग दी सिख्या होणी पुराणी, परम पुरख दे रंग ना कोए समाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जो दीन दुनी दे बणके बानी, बाण अणयाला नाम तीर चलाईआ। ओनूां दा हुक्म होवे शाह सुल्तानी, शहिनशाह नाल मिल के देण सुणाईआ। कलयुग अन्त आपणी चढ़े जोबनवन्ती जवानी, बलि बलि आपणा लए प्रगटाईआ। हर हिरदे भरे बेईमानी, बेवा रूप होवे ख़लक खुदाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दिसे परेशानी, पश्चाताप घट घट आपणा डेरा लाईआ। आत्मा परमात्मा नालों होवे बेगानी, सगला संग ना कोए रखाईआ। उस वेले जोती जाता पुरख बिधाता मेहरवान हो के करे मेहरवानी, महबूब आपणी कल प्रगटाईआ। लोकमात निगाह मारे जिस नूं पैग़म्बरां मन्नया बाप असमानी, इस्म आज़म इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

१४५० साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। बावन किहा, बलि, कलयुग अन्तिम आवेगा। नव सत्त अन्धेरा छावेगा। जोत १४५०

२४ नूर ना कोए रुशनावेगा। शब्द तूर ना कोए सुणावेगा। नाम सरूर ना कोए चढ़ावेगा। जो मूसा कहि के गया कोहतूर, २४

कुदरत दा कादर की आपणा हुक्म वरतावेगा। जिस ईसा कीता मन्ज़ूर, सूली सलीब आपणे रंग रंगावेगा। जिस मुहम्मद दस्सया दस्तूर, काया काअबा इक दृढ़ावेगा। जिस नानक निरगुण सरगुण नाम सति करना भरपूर, भाण्डा भरम भउ भनावेगा। जिस गोबिन्द धार होणा हाज़र हज़ूर, सति दुआरा इक वखावेगा। ओह कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल करे ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर हो के वेस वटावेगा। जिस दा इक्को इक होवे नूर, नूर नुराना डगमगावेगा। कलयुग क्रिया मेटे कूड़, कूड़ी क्रिया शौह दरयाए रुढ़ावेगा। चतुर सुघड़ बणावे मूर्ख मूढ़, अन्ध अज्ञान अन्दरों बाहर कढावेगा। मानव ज़ाती इक्को बख़्श के चरण धूड़, टिक्के ख़ाक ख़ाक रमावेगा। आत्म परमात्म चाढ़ के रंग गूढ़, दुरमति मैल आप धुआवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलावेगा। बावन किहा बलि, निगाह मार लै कलयुग धार जगह, भूमिका अस्थान वेख वखाईआ। जिथ्थे खेल करे सूरा सरबगा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। ओहनूं सब ने कहिणा मालक धुर दा रब्बा, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। जोती जाता मंन के अब्बा, अम्मीजान कहि के ओसे नूं सीस झुकाईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बरां देणा सद्दा, सद्द सद्द के खुशी बणाईआ। जिस सब

दीआं मेटणीआं हद्दां, हदूद इक्को इक वखाईआ। उस दे हुक्म विच दो जहान होणा बध्धा, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को हुक्म संदेश फ़रमान सब ते होणा लग्गा, लग मातर डेरा ढाहीआ। जिस कलयुग नव सत्त वेखणी अग्गा, ततव तत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। बलि किहा सुण बावन भगवन्त, भगवन्त दे दृढ़ाईआ। ओह किस बिध लेखा वेखे जीव जंत, लहिणा कलयुग झोली पाईआ। बावन किहा ओह बोध अगाधा होवे पंडत, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। आत्म धार गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। इक्को नाम दस्स के मणीआं मंत, मनसा सब दी हल कराईआ। आत्म धार परमात्म होवे कन्त, कन्तूहल इक अख्वाईआ। उह वक्त सुहावणा रुत होवे बसन्त, इक पंज फल्गुण दए गवाहीआ। जो जन भगतां लेखा मुकाए स्वर्ग बहिश्त जंनत्त, सचखण्ड दुआरा एकँकारा आपणे गृह रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। बलि कहे बावन प्रभ किस बिध लावे अंगीआ, अंगीकार भगत अख्वाईआ। आसा मनसा पूरीआं करे मंगीआं, देवणहार धुरदरगाहीआ। जिस दे नाल आदि जुगादि प्रीतां लगीआं, प्रेमी प्रीतम नूर अलाहीआ। उस दा मेला सदा
१४५१ सुहेला आत्म धार संगीआ, सगला संग इक बणाईआ। जिस दे चरण छोहे गोदावरी यमुना सरस्वती गंगीआ, चरण छोह १४५१
२४ के खुशी बणाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघीआं, सतिजुग त्रेता दुवापर भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ी २४
क्रिया पुश्तां करे नंगीआं, ओढण सीस नज़र कोए ना आईआ। वेखणहार शरअ दीआं वंडीआं, मानस मानव मानुख खोज खुजाईआ। जिस दीआं सब दे नाल संधीआं, कौल इकरारां फोल फुलाईआ। ओह चाढ़े नूर चन्द नौचन्दीआ, जोती जोत करे रुशनाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना प्रकृती पंझीआं, पंजां ततां अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे रंग रंगाईआ। ओन भगतां सिर पग्गां रखीआं रंग बरंगीआं, गुलशन लोकमात वाला दए महकाईआ। जिस कारन तलवारां करावे नंगीआं, खड़ग खड़ग नाल खड़काईआ। दीन दुनी दे मार्ग औझड़ राह होणे डण्डीआं, रस्ता हथ्थ किसे ना आईआ। फेर सब दा तोड़े माण घुंमडीआ, शाह सुल्तानां ख़ाक रमाईआ। जिस दे हुक्म विच चारे कुण्टां होणीआं रंडीआं, साचा कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ । लेखा मुकणा दीन दुनी दे पखण्डीआं, बिना प्रभू दे भगतां अन्तिम रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर दे भुल्लयां सब दीआं वढ्ढीआं जाणीआं कंडीआं, कन्ढ्ढा घाट हथ्थ कोए ना आईआ। बिन सतिगुर शब्द तों विछड़ीआं रूहां नहीं जाणीआं गंढ्ढीआं, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। बिना सतिगुर गोबिन्द तों चुकणा नहीं किसे आपणे कंधीआं, दीन दुनी दा भार ना कोए वंडाईआ। बलि कहे बावन ने शब्दी धार कीतीआं संधीआं, जगत लिख्त लेख कलम शाही कानीआं

वंड ना कोए वंडाईआ। जिस लेखे पूरे करने जेरज अंडीआ, उत्भुज सेत्ज वेखे चाँईं चाँईंआ। पंदरां फल्गुण कहे मैं खुशी विच उस प्रभू दे गावां छन्दीआ, जो शहिनशाह इक अख्वाईआ। जो लख चुरासी देवणहार अनन्दीआ, अनन्द दा मालक अनन्दपुर वासी नाल मिल के अनन्द दए बणाईआ। दीन दुनी दीआं अन्दरों वासना कढे गंदीआं, नाम रस अनरस आप चखाईआ। कलयुग दीआं उमरां रहिणीआं नहीं लम्बीआं, लांबू सतिगुर शब्द रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हुक्म विच पुरीआं लोआं रहीआं कम्बीआं, थरथराहट विच दिसे ख़लक खुदाईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ मिलखा सिँघ, महल गिला प्रीतम कौर पिण्ड सैला खुरद ज़िला हुशियारपुर ✪

धरनी कहे मेरे आदि जुगादी राम, रम्ईआ सईआ तेरी ओट तकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार अगम्मड़े शाम, शाह सुल्तान श्री भगवान तेरी ओट तकाईआ। नूर नुराने नौजवाने मेरे इक अमाम, अमलां तों रहित तेरी बेपरवाहीआ। दीन दयाल
१४५२ दया निध ठाकर इक्को सब नूं प्या हकीकी जाम, बिन रसना रस चखाईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर तेरा उपजे इक्को १४५२
२४ नाम, नाम निधाना इक प्रगटाईआ। शाहो भूप मेरे सुल्तान, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परम २४
पुरख प्रभ तेरी ओट तकाईआ। तूं दीन दुनी दा मेरे उत्तों बदल दे विधान, हुक्म इक्को इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म सब दा होवे धर्म ईमान, ईश जीव जगदीश आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे ढोले गाण, निरगुण निरगुण मिलके वजे वधाईआ। वक्त सुहञ्जणा अन्त मेरा पहचान, बेपहचान पर्दा आप उठाईआ। मैं बाली बुद्ध अंञान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेरे उत्तों शरअ मेट शैतान, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणे ना जगत कसाईआ। सति सतिवादी बख्श अगम्मा दान, दाता हो के आप वरताईआ। तूं अन्तर निरंतर सब दा जाणी जाण, जानणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू साचे नाम दी बख्श दे वस्त, वास्तव आपणी दया कमाईआ। नाम खुमारी चाढ़ दे मस्त, मस्त मस्ताने जीव लै बणाईआ। मेहरवान महबूब हो के सब दा फड़ दस्त, दस्तगीर आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मेट दे कीट हस्त, ऊँच नीच ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। तूं सचखण्ड निवासी वाली अगम्मी अर्श, अर्शी प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं मांगत हो के मंगां धवल तेरी फ़र्श, फ़ैसला हक हक देणा

सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते बख्श दे नाम निधाना, दयानिध दया कमाईआ। तूं शाहो भूप सुल्ताना, शाह पातशाह नूर अलाहीआ। मेरी बेनन्ती करीं दर परवाना, परम पुरख तेरे अगे वास्ता पाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट निशाना, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। इक्को कलमा धुर पैग़ाम दे मेरे अमामा, तेरी आमद विच बैठी राह तकाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार मेरे उत्ते हो प्रधाना, प्रधानगी तेरी सोभा पाईआ। नव सत्त तेरा झुल्ले इक्को धर्म निशाना, दूसर नजर कोए ना आईआ। उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण हर हिरदा गावे तेरा गाणा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरे भगवन्त धुर दे कन्त मेरी कलयुग अन्तिम कर कल्याणा, कल कातीआं डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा इक्को नाम निधाना होवे गीत, नव सत्त वजे वधाईआ। आत्म परमात्म बणा दे प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। नाम निधाना नौजवाना सुणा दे गीत, ढोला सोहला इक सुणाईआ। जोती जाते हर घट वस जा चीत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। मानव ज़ाती पवित्र शुद्ध कर दे नीत, नीतीवान
१४५३ आपणा रंग रंगाईआ। काया मन्दिर अन्दर पर्दा खोल्ह दे भीतर भीत, ओहला उहल्यां विच्चों उठाईआ। तन वजूद कर दे १४५३
२४ ठांडे सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। झगड़ा मिटा दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप २४
हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणा दस्स दे मार्ग अगम्म, अगम्मड़े दे जणाईआ। भेव खुल्हा दे आपणे ब्रह्म, पारब्रह्म पर्दा रहे ना राईआ। सति सतिवादी सति धार बख्श दे जर्म, जन्म जन्म दा डेरा ढाहीआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट दे कर्म, कुटम्ब रहिण कोए ना पाईआ। हर हिरदे बाहर कढ दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। किसे दी दृष्टी सृष्टी विच रहे ना चर्म, चम्म दृष्टी दा लेखा देणा मुकाईआ। झगड़ा मुका दे जात वरन, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए रखाईआ। दीन मज़्हब मूल ना लड़न, झगड़ा रहे ना ख़लक खुदाईआ। इक्को ढोला तेरा पढ़न, सोहँ अक्खर आत्म परमात्म देणा समझाईआ। इक्को मंज़ल मानव ज़ाती तेरी हकीकी चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। चुरासी फाँसी वाला मेटणा डरन, भय भउ आपणा इक रखाईआ। सुरती शब्द फड़ाउणा लड़न, कन्नी आपणी गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी नमो नमो डण्डावत, सजदयां विच बिन सीस सीस निवाईआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना मेरे उत्तों मेट बग़ावत, बग़लगीर कर ख़लक खुदाईआ। साचे नाम दी बख्श सख़ावत, महिबान बीदो आपणा रंग रंगाईआ।

इक्को नाम कलमा तेरी होवे निआमत, अनरस आपणा देणा चखाईआ। तूं स्वामी ठाकर सही सलामत, परवरदिगार नूर अलाहीआ। तन वजूद शरअ रहे ना कोए बनावट, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी धार तेरा हुक्म होवे हक क्यामत, कुदरत कादर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं आदि जुगादी सही सलामत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक अख्वाईआ। धरनी कहे मैं बाली बुध्ध अणजाणत, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी वस्त आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कर दे वक्त सुहञ्जणा, सोहणी लोकमात दे वड्याईआ । पुरख अकाले आदि निरञ्जणा, निरवैर तेरी सरनाईआ। मेरे दुक्खां दूर कर दे मेरे धुरदरगाही सज्जणा, सजणूआ तेरी ओट तकाईआ। तैनूं कहिंदे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। तूं गोपाल मूर्त मदना, मध सूदन तेरी वड वड्याईआ। मैं तैनूं इक इकल्ले आपणे महल्ले सद्दणा, नव खण्ड सत्त दीप तेरे चरणां हेठ टिकाईआ । तूं कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी रखणी लजणा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सच प्यार दी इक्को सब नूं दस्सणी बन्दना, बन्दगी विच सारे सीस निवाईआ। जग नेत्र कोई रहिण ना देवीं अन्धना, अन्ध आत्म देणा मिटाईआ। तेरा इक्को नाद अनादी
१४५४ वजणा, दो जहान करीं शनवाईआ। तेरा इक्को दीपक जगणा, जोती जाते नज़री आईआ। तेरे हुक्म विच कलयुग मेरे १४५४
२४ उत्तों भज्जणा, बिन कदमां कदम उठाईआ। सतिजुग तेरी धार विच्चों लगणा, धरनी धवल धौल कहे मेरे उत्ते देणा टिकाईआ। २४
मैं खुशीआं वाली तेरी चरण धूड़ मनावां सगना, सगले संगी तेरे हथ्थ वड्याईआ। निराकार निरवैर निरँकार सति नाम चाढ़ दे रंगणा, रंगत आपणी इक चढ़ाईआ। दर ठांडा इक्को तेरा मंगणा, मांगत हो के झोली डाहीआ। धरनी कहे प्रभू मेरी कबूल करीं बन्दना, बन्दगी विच तेरे चरण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लाउणा आहला अदना, अदल इन्साफ़ आपणा हक कमाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरपाल सिँघ दे गृह पिण्ड सकरूली ज़िला हुशियारपुर ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख प्रभ सच्या, सति सतिवादी तेरी ओट रखाईआ। किरपा कर दे भगतां आपणयां बच्चयां, बचपन आपणी गोद टिकाईआ। लूं लूं अन्दर होवें रचया, रचना आपणी इक समझाईआ। भाग लगाउणा काया माटी भाण्डे कच्चया, कंचन गढ़ बणाईआ। मनुआ दहि दिशा फिरे ना नच्चया, मनसा मोह देणी मिटाईआ । तेरे नाम निधान विच

हरिजन होवे रत्या, रत्न अमोलक हीरा लैणा बणाईआ। सच प्रीती विच होवे मत्या, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। आत्म धार बख्श दे सत्या, सति सतिवादी दया कमाईआ। चरण कवल जोड़ लै नत्या, प्रीती प्रीतम इक वखाईआ। कूड़ विकार हँकार अन्दरों कर दे हत्या, तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणे वेख लै भगत सुहेले बच्चे नन्हे, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार ध्यान लगाईआ। जो मेरे उत्ते धर्म दी धार चढ़े चन्ने चन्न चन्द नूर रुशनाईआ। तिन्हां दे अन्तर निरंतर शब्द सुणा दे बिना कन्ने, सरवणां दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्तर आत्म परमात्म धार तैनूं मंने, मन मनसा रहिण कोए ना पाईआ। जगत जहान वलों बेड़ा करना बन्ने, बिन वञ्झ मुहाणयां पार कराईआ। लहिणे देणे लेखे पूरे करने भाग लगाउणा बिना छप्पर छन्ने, ततव तत तत देणी वड्याईआ। बाहर कढणा विच्चों चिन्ता ग़मे, ग़मखार हो के वेखणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत सुहेले लभ्भ लै आपणे मित, मित्र प्यारे दया कमाईआ। जिन्हां दे अन्तर तेरा इक्को हित, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सोहँ रहे
१४५५ गाईआ। घट निवासी पुरख अबिनाशी वसणहारे चित, ठगौरी चित देणी गुआईआ। त्रैगुण नालों कर अतीत, त्रैभवण धनी १४५५
२४ बख्शणी इक सरनाईआ। अन्तर निरंतर परमात्म तेरी होवे प्रीत, पतिपरमेश्वर तैनूं सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों २४
बदलणी नीत, नीतीवान होणा सहाईआ। काया करनी ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां कर हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। निरवैर हो के दर्शन देणा नित, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। कोई वेखीं ना वार थित, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी धुर दी दया कमावांगा। जोती जाता हो के वेख वखावांगा। जन भगतां आत्म परमात्म जोड़ के नाता, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलावांगा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथा, साची सिख्या इक समझावांगा। सति धर्म चला के राथा, हरिजन उपर आप टिकावांगा। लहिणा देणा दे के पूरब मस्तक माथा, जन्म जन्म दा झोली आप टिकावांगा। सहाई हो अनाथ अनाथा, ग़रीबां गोद उठावांगा। बण के सर्ब कला समराथा, समरथ हो के वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगा। सच करनी कार कमाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। हरिजन साचे वेख वखाएगा। फड़ बाहों मेल मिलाएगा। रंग नवेल इक चढ़ाएगा। सज्जण सुहेल

सगला संग रखाएगा। जोत जगा के बिन बाती तेल, अन्ध अन्धेर मिटाएगा। लहिणा देणा मुका के गुरु गुर चेल, सुरती शब्द शब्द समाएगा। एथे ओथे बण के सज्जण सुहेल, सगला संग रखाएगा। अचरज करके आपणा खेल, ख़ालक ख़लक पर्दा उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगत सुहेले पर्दा लाहेगा। सच पर्दा आप उठावेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा । हरि पुरख निरञ्जण मेल मिलावेगा। एकँकारा वेख वखावेगा। आदि निरञ्जण नूर चमकावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान संग निभावेगा। पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप उठावेगा। सतिगुर शब्द नाद सुणावेगा। अवतार पैग़म्बर गुरु नाल मिलावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावेगा। धरनी धरत धवल धौल तेरा हौला भार करावेगा। बण के नूर अलाही अवल, वाहिद आपणी कल वरतावेगा। जो गुर अवतार पैग़म्बरां नाल कीता कवल, इकरार सब दे वेख वखावेगा। जन भगतां अन्दर जाए मवल, मौला हो के आपणा भेव चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे धुर दी धार सुंदर साँवल सवल, सावरीआ आपणी कार कमावेगा।

१४५६ २४

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ जीत सिँघ, नसीब कौर पिण्ड डविड्डा रिहाणा ज़िला हुशियारपुर ★

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरे सगले संगी, बहुरंगी आपणा फेरा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मैनूं सीस तों कीता नंगी, ओढण जगत जहान वेखण कोए ना पाईआ। आपणी धार तक लओ जिस विच सदी सदीवी जांदी लँघी, पाँधी हो के भज्जे वाहो दाहीआ। दीन दुनी आशा अन्तर निरंतर होई गंदी, गहर गम्भीर बेनज़ीर मिलण कोए ना पाईआ। निज नेत्र नैण अक्ख जिज्ञासुआं होई अन्धी, लोचन सके ना कोए खुल्ह़ाईआ। सब दे उत्ते कलयुग कूड़ कुड़यारे लाई पाबन्दी, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा सके कोए ना छन्दी, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। मन मनुआ जगत विकार फिरे कूड़ दी डण्डी, डण्डावत हक हक ना कोए कमाईआ। नव सत्त होया पाखण्डी, पर्दा सके ना कोए चुकाईआ। आत्म धार सब दी परमात्म नाल सके कोए ना गंढी, टुट्टयां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर मेरे उत्ते मारो झाती, बिन नेत्र लोचन नैणां अक्ख उठाईआ। लेखा तको लोकमाती, मातृ भूमी हो के दयां जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हर हिरदे होए अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जीवण विच्चों जीवण प्रेम दी रही ना कोए हयाती,

ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी साचे रंग ना कोए रंगाईआ। सीता सुरती परमात्म दे साथी, सगले संगी नज़री आईआ। मैं बेनन्ती करां बिना जोड़ के हाथी, बिन सीस सीस झुकाईआ। आपणा आपणा नाम कलमा तको गाथी, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कुदरत दा कादर बेपरवाहीआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बरों आपणे आपणे तको सिख मुरीद, मुर्शद बिन नैणां नैण उठाईआ। सति धर्म दी रही कोए ना दीद, दीदा दानिस्ता प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। आपणे हुक्म दी बिन अक्खरां तको रसीद, शरअ तों बाहर करो पढ़ाईआ। जिस विच धुर हुक्म नाल करके गए ताकीद, संदेशा हक हक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दी पूरी कर दे उम्मीद, आसा तृष्ना दीन दुनी वेख वखाईआ। मैं ओसे दी कर रही उडीक, राह तकां चाँईं चाँईंआ। जिस बिध मेरा अन्धेरा मिटे तारीक, जगत जहान होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी निरगुण धार हो के आवांगे। सो पुरख निरञ्जण नाल ल्यावांगे। हरि पुरख निरञ्जण संग बणावांगे। एकँकारा गंढु पुआवांगे। आदि निरञ्जण नूर रुशनावांगे। अबिनाशी करता जो बिठाए आपणे कंध,
१४५७ कुदरत कादर वेख वखावांगे। श्री भगवान जो मेटणहारा पन्ध, सो स्वामी संग रखावांगे। पारब्रह्म जो सदा सदा बख्शंद, १४५७
२४ दीन दयाल आपणी गंढु रखावांगे। सतिगुर शब्द जिस दी सब ने खाधी सुगंद, सो सूरबीर इक उठावांगे। जिन चार जुग २४
साडी पाई वंड, हिस्से ओसे दे चरण टिकावांगे। जो चार वरनां अठारां बरनां दीनां मज़्बां पावणहारा ठण्ड, ठण्डक इक्को इक वखावांगे। धरनीए तैनूं देवण आईए अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों वखावांगे। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणा इक्को छन्द, सोहला राग इक सुणावांगे। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग उसे दे चरण टिकावांगे। तेरा भाग होण ना दईए मंद, मंदभागणे तेरा रंग रंगावांगे। साडा मालक ख़ालक साहिब सूरा सरबंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल इक खिलावांगे। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आओ जल्दी, अगे वंड ना कोए वंडाईआ। खेल तको कलयुग कल दी, की कातीआं रिहा चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी अग्ग वेखो बलदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मैनूं याद आउँदी नानक वाली इक गल्ल दी, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। मेरे उत्तों धुर दे हुक्म दी घड़ी कदे ना टल्दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी खेल आदि जुगादि निहचल धाम अटल दी, दरगाह साची मुकामे हक साची जोत रिहा जगाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ राम सिँघ, मुणशा सिँघ, चरण कौर, गुरदीप कौर पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ✪

नारद कहे जन भगतो अज्ज दी तको तारीख़, तवारीख़ पूरब चार जुग दी नाल मिलाईआ। जगत शरअ दी टप्प के वेखो लीक, जिथ्थे लाइन नज़र कोए ना आईआ। प्रभ दा मार्ग जाणो बारीक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। नारद कहे मैं हैरान हो गया अगे तुसीं करदे ते अज्ज सतिगुर तुहाडी कीती उडीक, खेल निराली नज़री आईआ। नाले कूक के मारी चीक, दरोही दरोही कर सुणाईआ। असलीअत भेव दस्सां हकीक, हकीकत विच दृढ़ाईआ। जेहड़ा साहिब लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। उह अगे तों तुहाडे वसे सदा नज़दीक, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। उस दे विच हक तौफ़ीक, ताकतवर नूर अलाहीआ। जिस दीन दुनी दी बदल देणी रीत, रीतीवान धुर दा माहीआ। तुहाडा बणया रहे मीत, मित्र प्यारा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप रखाईआ। नारद कहे मैं की दस्सां खुलासा, भेव अभेद जणाईआ। मेरा ख़ुशीआं विच निकले हासा, हस हस के दयां जणाईआ। मैं फिर के आया पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां पन्ध मुकाईआ। मैं तकदा रिहा भगतां वाली रासा, रस्ते सारे खोज खुजाईआ। ध्यान धरदा रिहा पवण स्वासा, स्वास स्वासा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे भगतो आह वेखो मेरे कोल वजी लकीर, जगत नज़र किसे ना आईआ। एह इशारा दे के गया कबीर, कबरां तों बाहर दृढ़ाईआ। तूं साहिब मेरा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ । जे मैं झाड़ीआं विच लुक्या ओहला रखया करीर, जंडीआं वंड वंडाईआ। मेरी सुण लै तकरीर, बिन अक्खरां दयां सुणाईआ। मेरी वेख लै तहरीर, बिन कलम शाही लिखाईआ। तूं साहिब पीरां दा पीर, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ । निगाह मार लै कलयुग अख़ीर, पर्दा आख़र आप उठाईआ। आपणी बदल लैणी तदबीर, तरीका आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जिस वेले जन भगतां दी बदलण आएयों तकदीर, तक्ब्बर दीन दुनी तजाईआ। तूं उन्हां दे दूर दुराडे बिन जगत अक्खां तों वेखीं शरीर, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। कबीर किहा सुण मेरे बेपरवाह, वड तेरी बेपरवाहीआ। मेरा प्यार दा लेखा सहिज सुभा, सुबह शाम वंड ना कोए वंडाईआ। मैं तेरे प्यार दी सेवा लई कमा, कमाला लोई नाल मिलाईआ। तूं फिर वी लाउँदा रिहा दाअ, अछल छल आपणी कार भुगताईआ। तूं बेशक परवरदिगार बेपरवाह, नूर नुराना नूर अलाहीआ। मैं वीं तेरा भगत रिहा अख्वा,

भगवन तेरी ओट रखाईआ। मैं धरनी उत्ते दो अक्खर रिहा पा, उंगलां आपणीआं नाल छुहाईआ। धौल बणाउणी सच गवाह, शहादत मेरी दए भुगताईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम गया आ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं बण के आउणा सच मलाह, खेवट खेटा इक अख्वाईआ। तेरा लहिणा देणा होणा विच जहां, दीन दुनी संग रलाईआ। मैं धर्म संदेशा दयां सुणा, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। मेरा भगतां नाल पैणा वाह, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। सोलह प्रविष्टा फग्गण दा जिस दा रहिणा नाँ, जगत मिलणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कबीर किहा सुण मेरे सच स्वामी, समां तेरे चरण सुहाईआ। सदा सुहेले अन्तरजामी, अन्त तेरी ओट तकाईआ। हुण मैं भगत बण के तेरी करां गुलामी, दिवस रैण तेरा ध्यान लगाईआ। फेर संदेशा दयां पैग़ामी, सतिगुर शब्द नाल मिलाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आएयों बण अवामी, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। उस वेले खेल तकणी तमामी, तमअ लालच नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्धेरा होणा शामी, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। तेरा भगतां नाता जुड़ना बाहमी, जिस नूं सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। कबीर किहा मैं तैनूं करदा याद, यारड़े तेरा ध्यान लगाईआ। तूं मित्र प्यारा आदि, आदि पुरख इक अख्वाईआ । तेरा लहिणा देणा जुग जुगादि, चौकड़ी आपणा संग बणाईआ। जगत वेखणहारा वाद विवाद, चुरासी लख फोल फुलाईआ। तेरा हुक्म संदेशा इक्को वजे नाद, जगत जहान करे शनवाईआ। तेरा खेल होणा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बाद, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। कोई समझ सके सन्त ना साध, साधना विच दिसे ना ख़लक ख़ुदाईआ। बणना मोहण माधव माध, मधुसूदन तेरी बेपरवाहीआ। मैनूं ऐं जापदा तेरा लेखा होणा विच दोआब, दो धारां जल देण गवाहीआ। उस वेले तूं भगतां नूं आप करना आबाद, तेरी इक याद नाल नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग जन्म दे लेखे रहिण ना राईआ। भगत सुहेला बण के देणी दाद, जो दादू दे दयोहरे गोबिन्द गया सुणाईआ। भगत सुहेले आपणे चरणां विच करीं आबाद, दूजा खेड़ा नज़र कोए ना आईआ। जिस कारन तैनूं हज़रत ईसा मूसा मन्नया गॉड, गॉड कहि के सीस निवाईआ। सो पुरख निरञ्जण आपणा लडाउणा लाड, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। दीन दुनी दे विच्चों बाहर काढ, चरण कवल देणी सरनाईआ। रंग रंगाउणा काया माटी हाड, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सोलह फल्गुण कहे मैनूं याद गल्ल पुराणी, पूरन सतिगुर दयां जणाईआ। तेरा खेल बड़ा महानी, महिमा कहिण कुछ ना पाईआ। तूं आदि जुगादी

जुग जुग दा बानी, मालक ख़ालक इक अख्वाईआ। दो जहानां तेरी खेल नुरानी, नूर नुराने नज़री आईआ। तेरे चरण कवल करां ध्यानी, धूड़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। तेरा लहिणा वेख उत्ते असमानी, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। फल्गुण कहे प्रभू तेरा खेल तक्कया बाकायदा, बाकायदगी इक्को नज़री आईआ। तेरा पूरा तक्कया वायदा, वाहिद तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगतां नालों होया ना कदे अलायदा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। खुशीआं नाल अज्ज सब नूं दे दे फ़ायदा, जुग जन्म दे घाटे पूर कराईआ। एथे इशारा नहीं किसे दी राय दा, मता सके ना कोए जणाईआ। तूं मालक बण के भगतां गृह दा, घर घर वेखें चाँईं चाँईंआ। जिन्हां नाअरा लगाया तेरी जै दा, जै जैकार सचखण्ड कराईआ। सोलह फल्गुण कहे मैनूं इयों जापदा जन भगतो तुहाडा चार जुग नाँ रहे गा, चौकड़ी सके ना कोए मिटाईआ। जिथ्थे जिथ्थे भगत सुहेला ओथे ओथे सतिगुर उन्हां दे अन्दर बहेगा, सिँघासण आपणा आप लगाईआ। जिस वेले वक्त अन्तिम आया लैअ दा, लहिणे सब दे झोली पाईआ। बिन भगतां प्रभ दे चरण कोए ना ढहेगा, धूड़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा
१४६० साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। नारद कहे जन भगतो बड़ी सुहञ्जणी दिहाढ़ी लँघी, खुशीआं ढोले गाईआ। मन १४६०
२४ विच मंनयो कोए ना तंगी, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। एह वक्त विछोड़े दा थोड़ा समां इशारा गोबिन्द दिता जिस वेले २४
शस्त्र पहनया जंगी, तन वजूद सुहाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले साचे भगतां प्रेम विच रंगीं, जगत धार दी लोड़ रहे ना राईआ। निराकार हो के उन्हां अन्दर लँघीं, आपणा पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। नारद कहे जन भगतो इक नवीं दस्सो बात, प्रभू दे बच्चयो प्रभू नूं दयो सुणाईआ। सच दस्सो तुहाडा केहड़ा मज़्हब ते केहड़ी ज़ात, केहड़ा पिता ते केहड़ी माईआ। केहड़ा लेखा ते केहड़ा खात, हिसाब किस दे हथ्थ फड़ाईआ। केहड़ा प्रीतम किस नाल जोड़या नात, रिश्तेदार कवण अख्वाईआ। कौण तुहाडी पुछणहारा वात, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। निगाह मारो आपणे अन्दर झात, बिन झाकीआं झाकी लओ बदलाईआ। पर्दा खोल्ह के वेखो ताक, ओहला नज़र कोए ना आईआ। जो तुहाडी पुछणहारा वात, वारस हो के वेख वखाईआ। ओह लहिणे देणे पूरे करे अज्ज दी रात, रुतड़ी तुहाडे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं आया इक गल्ल करन, कर्मां वाल्यो दयां सुणाईआ। पहलां झगड़ा छडो ज़ात पात वरन बरन, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। फेर सारे इक्को तको परम पुरख दी सरन,

दूजी ओट ना कोए तकाईआ। फेर सारे मिल के इक्को करो परन, परम पुरख साडा इक्को पिता इक्को माईआ। इक्को सतिगुर शब्द दा फड़ो लड़न, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोले लग्गो पढ़न, आत्म परमात्म इक्को वजे वधाईआ। इक्को मंज़ल लग्गो चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सतिगुर दे लेखे ला दयो सीस धड़न, हउमे हंगता दूर कराईआ। जो सचखण्ड दुआरयों तुहानूं आया फड़न, जोती जाता हो के मेल मिलाईआ। नारद कहे मैं अज्ज तुहाडे नाल आया लड़न, लड़न वाल्यो तुहानूं दयां सुणाईआ। सतिगुर शब्द दी शरन लै के तुहाडा टुट जाए हँकारी गढ़न, हउमें हंगता रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी वस्त नाम वरताईआ। नारद कहे जन भगतो इक्को सतिगुर शब्द दा मन्नणा कहिणा, जो कहि कहि रिहा सुणाईआ। इक्को सति सतिवादी वेखणा आपणे नैणां, इष्ट देव इक्को इक जणाईआ। इक्को सरन सरनाई ढहणा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। धाम सुहञ्जणे थान बहणा, सतिगुर चरण मिले सरनाईआ। इक दूजे दे बण जाओ भाई भैणां, नेत्र अक्ख ना कोए बदलाईआ। जो इशारा कीता बाल्मीक ने विच रमायणा, राम रम्ईआ सब दा मालक होवे धुर दा माहीआ। जिस ने तुहाडे प्यार विच देण
१४६१ देणा, प्रेम विच आपणी खुशी बणाईआ। तुसां सिर्फ़ इक्को नाम लैणा, इक्को दा ढोला गाईआ। तुहानूं लोड़ रहे ना किसे १४६१
२४ ढोलक छैणां, सुरंगे मृदंगे हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा २४
हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा भाणा सब ने सहणा, सिर सर सके ना कोए उठाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ गुरमीत सिँघ दे गृह पिण्ड हरदोफराला ज़िला जलन्धर ✪

धरनी कहे मेरे परम पुरख करतार, कुदरत दे कादर करनी दे करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सांझे यार, सदा सुहेले इक इकेले तेरा खेल बेपरवाहीआ। आदि जुगादी मैं मांगत हो के बणां भिखार, भिच्छया इच्छया धार देणी पाईआ। कलयुग अन्तिम निगाह लै मार, बिन नेत्र नैणां अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट धुआँधार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। शब्द नाद सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूंद स्वांती मिले ना ठण्डा ठार, अग्नी तत तत ना कोए बुझाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले कमलापाती कर उज्यार, निरगुण नूर नूर कर रुशनाईआ। मेरी एथे ओथे दो जहानां सुण पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जन भगतां बख्श दे आपणा

प्यार, प्रीतम हो के प्रेम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां दे दे प्यार अनोखा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। किसे नाल करे कोई ना धोखा, जगत फ़रेब ना कोए वड्याईआ। चरण प्रीती बख्श दे परे मोखा, मुक्ती दी लोड़ ना कोए रखाईआ। तेरे कोल मुहब्बत भण्डारा चोखा, चार जुग दे मालक देणा वरताईआ। आपणे मिलण दा मार्ग दस्स दे सौखा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। पढ़ना पए कोए ना पोथा, पुस्तक संग ना कोए जणाईआ। मेहरवान हो मेहरवाना आप बहुता, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां प्यार बख्श दे अनन्द, अनन्द आपणा इक जणाईआ। सच हुक्म विच कर पाबन्द, बन्धन शरअ वाले तुड़ाईआ। बिन जगत मण्डल मण्डप प्रकाश दे दे नूरी चन्द, चन्द चांदनीआं कर रुशनाईआ। लेखा किसे दा रहे ना बत्ती दन्द, रसना जिह्वा आपणे रंग रंगाईआ। सति सच आत्म परमात्म गावण छन्द, ढोला सोहला गोबिन्द माहीआ। तन वजूद माटी ख़ाक खुशी कर दे बन्द बन्द, बन्दगी आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा प्यार जन भगतां होवे एका, इक इकल्ले देणी माण वड्याईआ। तेरी सरन होवे टेका, चरण धूड़ी ख़ाक रमाईआ। बुद्ध कर बिबेका, दुरमति मैल रहे ना राईआ। त्रैगुण अग्ग ना लाए सेका, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा कर दे लेखा, लख करोड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां भरांत ना रहे भुलेखा, भाण्डा भरम भरम भनाईआ। सच वखा दे निरगुण धार आपणा देसा, दहि दिशा पर्दा आप उठाईआ। जिथ्थे वसे नर नरेशा, नर हरि आपणा आसण लाईआ। जो धाम रहे हमेशा, हम साजण हो के देणा वखाईआ। जो संदेशा दे के आया गोबिन्द दस दस्मेशा, दो जहान सुणाईआ। भगत उधारना प्रभू दा आदि जुगादि पेशा, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी कलयुग कूड़ कुड़यार मेट कलेशा, कल काती कलूआ अन्त रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड हरदोफराला ज़िला जलन्धर चरण कौर दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू सच प्यार बणा दे बणत, घड़न भन्नणहार तेरी बेपरवाहीआ। जन भगतां इक्को दृढ़ा दे आपणा मंत, नाम कलमा धुरदरगाहीआ। आत्म धार हो जा कन्त, कन्तूहल आपणा रंग रंगाईआ। बहार कर दे खुशीआं वाली बसन्त,

बसन बनवारी हो सहाईआ। सति सच जणा दे छंत, संसा अन्दर रहे ना राईआ। मालक ख़ालक किरपा कर बेअन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा प्यार होवे निराला, निराकार देणा दृढ़ाईआ। तूं मालक दीन दयाला, दया निध इक अख्वाईआ। जन भगतां बणी सदा रखवाला, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग दाग़ मेटणा काला, कालख टिक्का रहे ना राईआ। जल्वा देणा जोत जलाला, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां बणना गोपाला, गोपाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदा सदा सद रखणा आपणे नाला, चरण कवल देणी सरनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सब दी लेखे ला लै घाला, जो सेवक हो के सेव कमाईआ। जे सेवकां दा मंगण थोड़ा आप प्यार दे दे बाहला, बहु आपणी दया कमाईआ। हरिजन काया बणा लै सची धर्मसाला, दर दुआरा इक वड्याईआ। तेरी जुग जुग सद अवलड़ी चाला, चाल निराली इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म सोहँ सब दी होवे माला, जगत मणकयां दी लोड़ रहे ना राईआ।

१४६३ २४

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड जलपोता ज़िला हुशियारपुर जीत कौर दे गृह आदम पुर हरभजन सिँघ, सगवाल जरनैल सिँघ ✪

धरनी कहे पुरख अकाले किरपा कर, किरपा निधान श्री भगवान आपणी दया कमाईआ। सच स्वामी निरगुण मैनूं दे दे वर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे चरण सीस निवाईआ। भगतन मीते ठांडे सीते हरिजन सुहा दे घर, गृह अन्दर काया मन्दिर आपणा रंग रंगाईआ। तूं अबिनाशी करता नरायण नर, श्री भगवान अगम्म अथाहीआ । किरपा निधान भय भउ चुका दे डर, सीस जगदीस आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू जगदीस, जगदीश्र तेरी ओट तकाईआ । इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीस, दो जहानां वजे वधाईआ। मैं जुग जुग तेरा पीसण ल्या पीस, नित नित सेव कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां गृह तेरा होवे दुआरा, दो जहानां मालक देणी वड्याईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट पसारा, पसर पसारी ध्यान लगाईआ। किरपा निधान किरपा कर दे सति धर्म सच दी धारा, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरी तेरे चरण कवल निमस्कारा,

डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा परवरदिगारा, बेऐब नूर अलाहीआ। जन भगत सुहेले अन्तर निरंतर दे अधारा, उदर दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचा रंग रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां पवित्र कर काया कलबूत, बिन नेत्र वेखणा चाँईं चाँईंआ। लेखा रहे ना किसे जिंन भूत, खवीस जगदीस देणा चुकाईआ। पिछला रिश्ता तोड़ना पिता पूत, अगला लहिणा आपणे नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म एका धागा मेलणा सूत, सूत्रधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगत दुआरे तेरे प्यारे पिछले कर जाण कूच, कूचे गली जाण तजाईआ। हरिजन साची बख्श दे सूझ, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। सति विरोल दे दूध दा दूध, छाछ दा लेखा दे मुकाईआ। तूं मालक स्वामी हो मौजूद, मजलस भगतां नाल बणाईआ। हरिजन साचे रख महफ़ूज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा रहे ना तन वजूद, काया माटी कर सफ़ाईआ। कूड़ी जड़ कर नेस्तोनाबूद, चेतन आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू सच गृह विच्चों लेखा मेट दे पूरब पित, पित्रां दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म कर साचा हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। तेरा दर्शन होवे नित, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। अज्ज दी सुहञ्जणी कर दे थित, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन मानस जन्म तेरे दर ते जाए जित्त, हार विच कदे ना आईआ। जिस दी याद विच जुग लँघ गए कित, केते भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले काया अन्दर इक्को खोल्ह दे भित, भीतर पर्दा दे चुकाईआ। जन भगतां नज़री आए विच, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच नाम दी मार दे खिच्च, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां भाग लगा दे काया माटी डूंग्घी खड्ड, खण्डरां वाल्यां दे माण वड्याईआ। पवित्र कर दे मास नाड़ी हड, ततव तत ध्यान लगाईआ। दूई दुवैती सारयां अन्दरों दे कढ, काया माटी कर सफ़ाईआ। धर्म निशाना दे गड्ड, सति सतिवादी आप झुलाईआ। तेरा भगत तेरे नालों होवे कदे ना अड्ड, वखरा गृह ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धवले, धर्म धार जणाईआ। मेरे सब दे नाल इकरार कवले, काएनात दा मालक हो के दयां दृढ़ाईआ। मेरा नूर तक लै अलाही अवले, आलमीन हो के सब दे विच समाईआ। कुछ लेखे याद कर लै कृष्ण काहन सवले, सांवरीआ कहि के की गया समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला हर घट अन्दर आपे मवले, मौला हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां गृह बरस दे अमृत मींह, मेघला आपणा नाम बरसाईआ। पवित्र कर दे सब दा जीअ, जीवण दाते आपणा रंग रंगाईआ। लेखा मुका दे साढे तिन्न हथ्थ सीं, जिस दी रविदास चमारा दए गवाहीआ। धर्म दा बीज बीजणा सच दी चलाउणी लीह, लाईन ऐन देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां हिरदा कर दे शुद्ध, पतित पुनीत आप बणाईआ। निर्मल करदे बुद्ध, दुरमति मैल रहे ना राईआ। अन्तर अन्तर आपा सब नूं जाए सुझ, सोझ समझ देणी दृढ़ाईआ। अगला लेखा बणा दे कुझ दा कुझ, कुदरत दे कादर दया कमाईआ। जिन्हां दी पिछली औध गई पुग्ग, उन्हां दा आत्म आपणे विच समाईआ। जिन्हां ने ऐसे घर विच बच्चयां नूं पिलाउणा दुद्ध, सीर धार मुख लगाईआ। फड़ बाहों निरगुण हो के आप चुक, चारों कुण्ट दा पन्ध मुकाईआ। किसे घर गृह दरख़त चोटी बहे कोए ना लुक, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। उह तेरे नाम दी गावण तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। अगे पर्दा रहे ना ओहला लुक, भुलेखा भरांत देणा कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

१४६५ करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी भगतां मीत, मित्र प्यारे १४६५

२४ तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं सब दी वेखणहारा नीत, नीतीवान इक गुसाँईआ। मैं सच बेनती करां तेरा ढोला गावां गीत, गोबिन्द २४

गोबिन्द तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेहरवाना श्री भगवाना सारा परिवार बख्श दे नाल बख़्शी जाए जीत, जीवण दाते आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनीए मैं पिछले पित्रां देवां सद्दा, सहिज नाल सुणाईआ। आओ छडो पिछलीआं हद्दां, अगला घर दयां वखाईआ। दो जहान जिस दा हुक्म कदी कदा, कदीम दा मालक धुरदरगाहीआ। तुहाडे नाल कदे करे ना दग़ा, फ़रेबां विच कदे ना आईआ। शाहो भूप सूरा सरबगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो तुहाडे प्यार विच भगतां दे घर बणावे जगह, जगह जगह आपणा हुक्म वरताईआ। तुहाडा अगे दा संवार के अग्गा, अगला लेखा दए मुकाईआ। कल्पणा जगत रहे ना कग्गा, वासना कूड़ ना कोए हल्काईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार शब्दी धार प्रेम नाल तुहानूं बध्धा, बिन भगतीउँ पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं धरत निमाणी, मिट्टी ख़ाक हो के सीस निवाईआ। तूं मालक मेरा गुण निधानी, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। सब दी पुराणी वेख लै निशानी, निशाने आपणे वेख वखाईआ। तूं मालक ख़ालक शाह सुल्तानी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मेरी

बेनन्ती तेरे चरण कवल ध्यानी, बिन नैणां नैण तकाईआ। किरपा करके दर आए तारने जीव सर्ब परिवार प्राणी, पूरन आसा सब दी पूर कराईआ। दुखड़े मेट जिस्म जिस्मानी, तन वजूदां आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि जाण जाणी, जानणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड रूपोवाली ज़िला हुशियारपुर सुरिंदर सिँघ सराईं अमरीक सिँघ मेला सिँघ बैरम पुर मलिहार सिँघ खुरदा तरसेम सिँघ कंधाला शेख़ गुरदेव कौर दे नवित ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी खुशीआं वाली कर बहार, बिहबल हो के बेअन्त तेरी ओट तकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप भगतन खिड़े गुलज़ार, गुलशन बाग़ीचा मानव ज़ाती देणा महकाईआ। एका रंग रंगा लै पुरख नार, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म बण के सांझा यार, मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे सच सच्चे दरबार, दरगाह
१४६६ साची मंग मंगाईआ। निरगुण निरवैर हो के दे आधार, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेरे उत्तों नवार, १४६६
२४ निरगुण हो के आपणी दया कमाईआ। परम पुरख परमात्म जन भगतां पैज संवार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धरनी २४
कहे मेरे स्वामीआ मेरे उत्ते रहे ना धुआँधार, धवल हो के मंग मंगाईआ। तेरा लहिणा देणा सदा जुग चार, चौकड़ी लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे परवरदिगारा, महिबान तेरी सरनाईआ। शाहो भूप अगम्म सिक्दारा, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं मांगत बणी भिखारा, दरवेशण रूप बदलाईआ। तूं कलि कल्की अवतारा, निहकलंक तेरी बेपरवाहीआ। मेरा पूरब लहिणा दे उधारा, लेखा पिछला हथ्थ फड़ाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ारा, बिन नैणां नीर वहाईआ। तूं कुदरत दा कादर बेऐब परवरदिगारा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। पतिपरमेश्वर मेरी पा सारा, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी वेख लै मिट्टी ख़ाक, ख़ाकी हो के मंग मंगाईआ। मेरा पर्दा खोलृ दे ताक, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। मैं आदि जुगादी तेरी चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। मेहरवाना नौजवाना दीन दुनी दा अन्तष्करन कर दे पाक, पतित पुनीत कर लोकाईआ। अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं पूरे होवण वाक्, वाकिफ़कार होणा ख़लक ख़ुदाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बणा दे सच्चा साक, सज्जण सैण इक्को नज़री

आईआ। वक्त सुहञ्जणा तक ईसा वाले कलाक, कलधारी आपणा पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच मिले वड्याईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख परमात्म अलाही नूर, नूर नुराने शाह सुल्ताने श्री भगवाने तेरी बेपरवाहीआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर ज़रूर, ज़रूरत तेरे चरण टिकाईआ। तूं सदा सदा भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। मेरी बेनन्ती बेपरवाह करनी मन्ज़ूर, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। ओह लेखा पूरा कर दे जो मूसे नाल कीता उत्ते कोहतूर, तुरीआ तों बाहर दिता समझाईआ। जो नाअरा ला के गया मनसूर, हक हक तेरा हुक्म दृढ़ाईआ। सो मीत मुरारे लहिणा दे दे ज़रूर, ज़रूरत तेरे चरण टिकाईआ। दीन दुनी दा अन्तष्करन गढ़ तोड़ ग़रूर, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। मनुआ मन ना पाए फ़तूर, फ़तवा देणा थांउँ थाँईंआ। इक्को तेरा नाम नौ खण्ड होए मशहूर, मशवरा तेरे नाल जणाईआ। मैं मेहरवाना तेरी होवा मशकूर, शुकराने विच सीस जगदीस निवाईआ। कलयुग कूड़ा पन्ध रहे ना दूर, दूर दुराडे लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं दे दे अगम्मी दात, दाते दानी आप वरताईआ। तूं आदि जुगादी मेरा पित

मात, पति परमेश्वर इक अख्वाईआ। निरगुण निरवैर वसणहारे इकांत, इक इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। निगाह मार लै
१४६७

मेरे नौ प्रांत, नव नौ दा डेरा ढाहीआ। अमृत बूंद मिले ना किसे स्वांत, सांतक सति ना कोए वरताईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, सूर्या चन्द ना कोए चमकाईआ । झगड़ा मुके ना ज़ात पात, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। कलयुग अन्त मेरी पुछ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। झगड़ा मेट दे काग़ज़ात, अक्खरां नाल अक्खर ना करे लड़ाईआ। तेरा खेल बहु बिध भांत, जुग जुग रीती चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे मेरे मालक ग़रीब निवाज़ा, महिबान बीदो मेहरवान मेरी आसा पूर कराईआ। जिस आदि मेरा साजण साजा, जुग जुग देवणहार वड्याईआ। कलयुग अन्त संवार दे काजा, कुदरत दे कादर वेखणां चाँईं चाँईंआ। वक्त सुहञ्जणा कर दे देस माझा, मजलस भगतां नाल लगाईआ। हरिजन अन्तर निरंतर शब्द अनादी धुन वजा दे नादा, अनहद आपणा राग दृढ़ाईआ। भगत सुहेला तेरा होवे जागा, आलस ग़फ्लत निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ। सच नाम सितार वजा दे रबाबा, बिन तन्दी तन्द हिलाईआ। तैनूं जुग जुग सारे करन आदाबा, सीस निव निव जगदीस इक निवाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी सच कर इमदादा, तेरी आमद विच बैठी नैण उठाईआ। उह लेखा पूरा कर दे जो नानक संदेसा दे के आया विच बग़दादा, जो दजला दरया दए गवाहीआ। जिस दे हुक्म नाल बदलणा समाजा, समग्री सच सच

वरताईआ। ओहदा लहिणा देणा लेखा होणा अन्तिम पंज आबा, पंचम दा मेला मेले सहिज सुभाईआ। हुक्म संदेसा देवे बोध अगाधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे किरपा कर मेरे भगवन्ते, भगवन तेरी आस रखाईआ। आदि जुगादि धुर दे कन्ते, कन्तूहल तेरी वड वड्याईआ। भेव खुल्हा दे आपणे साचे सन्ते, सतिगुर साजण हो के वेख वखाईआ। हरिजन गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म आप जणाईआ। बुद्धी तों परे बण पंडते, जगत अक्खरां लेख रहे ना राईआ। विषे मेट दे मनसा वाले मन दे, ममता कूड़ ना कोए हल्काईआ । पाप धो दे वजूद तन दे, ततव तत ना कोए तपाईआ। भेव खुल्हा दे आपणे ब्रह्म दे, पारब्रह्म पर्दा दे चुकाईआ । भगत सुहेले वेख लै जन्म दे, पूरब जन्मां लहिणा नाल मिलाईआ। लेखे रहिण ना बाकी कर्म दे, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। हरिजन वणजारे बणा लै साचे धर्म दे, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। वणजारे रहिण ना काया माटी चर्म दे, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। झगड़े रहिण ना वरन बरन दे, तन वजूदां कर सफ़ाईआ । सहारे बख्श दे आपणी इक्को सरन दे, सरनगति इक दृढ़ाईआ। इशारे दे दे आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न दे, विद्या धुर दी आप जणाईआ। मार्ग दस्स दे इक्को सचखण्ड दुआरे चढ़न दे, जिथ्थे अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव दस्स दे हरि भगत सुहेले सचखण्ड दुआरे खड़न दे, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप आपणा रंग रंगाईआ।

१४६८
२४

✪ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड दसूहा ज़िला हुशियारपुर खिआल सिँघ कुलीआ धन्ना सिँघ कराला गुरमीत कौर ✪

धरनी कहे प्रभू निगाह मार लै मेरी चारे गुठ, कूट दिशा नव सत्त ध्यान लगाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी अन्दरों गई रुठ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा मेल ना कोए रखाईआ। कोटां विच्चों तेरे भगत सुहेले थोड़े मुठ, मुट्ठी भर मेरे उत्ते नज़री आईआ। तूं मेहरवान हो के श्री भगवान तुठ, परवरदिगार सांझे यार आपणी दया कमाईआ। निगाह मार लै मानव ज़ाती काया बुत, बुतख़ानयां फोल फुलाईआ। सति धर्म दा तेरा रिहा कोई ना सुत, अपराधी दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। तूं परमेश्वर स्वामी अचुत, चेतन सब नूं दे कराईआ। सति धर्म दी मेरे उत्ते सुहावे रुत, रुतड़ी मेरे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी दीन दुनी भुल्ली, अभुल तेरे रंग ना कोए समाईआ।

कलयुग माया ममता विच रुल्ली, मोह विकार ना कोए तजाईआ। तूं मालक ख़ालक सुल्हकुली, नूर नुराना नूर अलाहीआ। भाग लगा दे साढे तिन्न हथ्थ कुल्ली, कलमा कायनात जणाईआ। नाम निधान वस्त दे अनमुली, कीमत दीन दुनी चुकाईआ । तेरा जाप रसना जिह्वा रहे ना बुल्ल्हीं, हिरदे वसणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी सृष्टी तेरे नालों हो गई दूर, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। दूर दुराडे शाह सुल्ताने हो जा हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे मालक बेऐब नूर अलाहीआ। हर घट अन्तर निरंतर नाम खुमारी दे सरूर, सोई सुरती दे जगाईआ। शब्द अनादी सुणा दे तूर, तुरीआ दा लेखा दे उठाईआ। जोती धार बख़्श दे नूर, अन्ध अँधयार रहे ना राईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग क्रिया मेट दे कूड़, धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। सति सच दी बख़्श दे चरण धूड़, धूड़ी टिक्के ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा लै मूर्ख मूढ़, काग हँस रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ । धरनी कहे प्रभू तेरा रिहा कोई ना मीत सज्जण, सतिगुर तेरे विच ना कोए समाईआ।
१४६९ हिरदे वसे ना किसे तेरा भजन, बन्दगी हक ना कोए कमाईआ। नाम निधाने नाद मूल ना वज्जण, अनहद नादी नाद ना १४६९
२४ कोए दृढ़ाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तूं आ जा सब दे पर्दे कज्जण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बिन काअब्यां २४
वखा दे हज्जन, हुजरा हक हक जणाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग जीव जहान तज्जण, विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ । आत्म परमात्म बख़्श अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। टिक्के मस्तक ला दे चन्दन, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ । इक्को तेरे चरण कवल होवे बन्दन, बन्दे बन्दगी विच समाईआ। शरअ शरीअत कट दे तन्दन, तार सितार इक हिलाईआ। तेरी मंज़ल सारे लँघण, जगत हदूदां पन्ध मुकाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंगण, हरि करता इक अख्वाईआ। इक्को तेरा ढोला होवे नाम छन्दन, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। झगड़ा मिटा दे तत पंजन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश इक्को रंग देणा रंगाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना नेत्र नाम पा दे अंजन, अन्ध आत्म परमात्म कर रुशनाईआ। तेरा दीपक जोत भगत सुहेले घर घर जगण, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। तूं गोपाल मूर्त मदन, मधसूदन तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दुनी झगड़ा रहे ना काया माटी बदन, तन वजूदां लेखा रहे ना राईआ। मेहरवान हो के मेरे पर्दे आवीं कज्जण, सच स्वामी सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तूं शाहो भूप आदि निरञ्जण, निरवैर पुरख अगम्म अथाहीआ। मैं तेरा राह उडीकदी कदन, सतिजुग त्रेता दुवापर कलयुग वेखां लैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू आपणी दीन दुनी वेख लै मेरे उत्ते, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण ध्यान लगाईआ। भरोसा किसे रिहा ना तेरे उत्ते, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। नव खण्ड पृथ्मी गूढ़ी नींद सुते, सत्त दीप लए ना कोए अंगड़ाईआ। तूं मालक ख़ालक अबिनाशी अचुते, चेतन हो के ध्यान लगाईआ । मेरी जगत बहार तक लै रुत्ते, ख़िज़ां आपणा रूप वखाईआ। जगत जिज्ञासू तेरा मार्ग घुथ्थे, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। सच स्वामी तेरे प्यार विच रुस्से, रस्ता नज़र किसे ना आईआ। बिन तेरी किरपा वात कोई ना पुछे, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे अन्त कन्त भगवन्त भाग ना जाण निखुट्टे, खोटे खरे निरगुण हरी हरे, हरि करते देणी आप माण वड्याईआ।

✪ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड शरीहपुर ज़िला हुशियारपुर वतन सिँघ दे गृह ✪

१४७० धरनी कहे परम पुरख प्रभ तेरी इक्को टेका, धूड़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना १४७०
२४ तेरा खेल तक्कया वार अनेका, अवतार पैग़म्बर गुर निरगुण सरगुण तेरा रूप नज़री आईआ। दीन मज़्ब दा तेरे हुक्म दा २४
जगत जहान ठेका, ठाकर स्वामी अन्तरजामी तेरी वड वड्याईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार मेरे उत्ते आत्म धार करा दे एका, इक इकल्ले सच महल्ले जल थले दे माण वड्याईआ। त्रैगुण माया तन वजूद ला सके ना सेका, अग्नी तत ततव सके ना कोए तपाईआ। हरिजन तन वजूद माटी ख़ाक अन्तर निरंतर कर दे बुध बिबेका, मन कल्पणा कूड़ क्रिया अन्दरों बाहर कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों भाउ चुका दे दूजा, दुतीआ रहिण कोए ना पाईआ। आपणा भेव खुल्ह दे गूझा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तेरा दुआर एकँकार सब नूं होवे सूझा, परवरदिगार सांझे यार तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। लेखा रहे ना ज़ात पात नीच ऊचा, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह देणी माण वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरा ख़ुशहाल करदे कूचा, कूचा गली आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते मेहरवान हो के वट्ट करवट, पासा दीन दुनी बदलाईआ। धर्म दी धार सच खोल्ह दे हट्ट, वस्त अमुल अतुल विच टिकाईआ। तूं वसणहारा निरगुण धार घट घट, गृह गृह आपणा आसण लाईआ।

आपणा भेव खुल्हा दे इक समझा दे तीर्थ किनारा तट, जगत घाटां लोड़ रहे ना राईआ। तीर अणयाले नाम नाल हर हिरदा सतिगुर फट, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ खेल मेट बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग दे जणाईआ। दुरमति मैल हर हिरदिउँ देणी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। शरअ दीन दुनी दी रहे कोए ना वट्ट, वटणा धर्म धार देणा मलाईआ। तेरा अमृत रस निझर धार सारे लैण चट्ट, चेटक आपणा इक दृढ़ाईआ। हउमे हंगता अन्दरों जड़ पट, पटने वाला सतिगुर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले दीन, दयाल दया निध तेरी सरनाईआ। आपणा मार्ग दस्स महीन, पंथ इक्को इक जणाईआ। झगड़ा रहे ना लोक तीन, त्रैगुण अतीते एका रंग देणा रंगाईआ। मैं निमाणी हो के होई मस्कीन, आजज़ हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू लेखा वेख लै मेरे घर दा, गृह मन्दिर कुंडा आप खुल्हाईआ। तेरा आत्मा तैनूं नूर कोए ना वरदा, पतिपरमेश्वर तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। भय विच दिसे मूल कोए ना डरदा, भउ सिर ना कोए रखाईआ। नव सत्त किला बणया
१४७१ हँकार गढ़ दा, हउमें सके ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म ढोला कोए ना पढ़दा, पारब्रह्म ब्रह्म विच ना कोए समाईआ। १४७१
२४ निगाह मार लै उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण लहिंदा चढ़दा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ । साची मंज़ल महबूब हकीकत वाली २४
तेरे दर कोए ना वड़दा, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं बख्श दे इक्को सरनगति, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। मेरे देस परदेसीआ आ जा वत, बेवतनां दा लेखा वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तक लै उबलदी रत्त, अमृत मेघ सच ना कोए बरसाईआ। धर्म दी रही किसे ना मति, मनमति चार कुण्ट होई हल्काईआ। धीरज सन्तोख रिहा ना सति, सति सतिवादी तेरे रंग ना कोए समाईआ। मैं तेरे अगे वास्ता रही घत, निव निव लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते तक लै आपणी मानव धार मनुख, माणस खोज खुजाईआ। अन्तर निरंतर रिहा किसे ना सुख, सांतक सति ना कोए कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर दिता दुःख, कलेशां विच रोवे तेरी ख़लक ख़ुदाईआ। उजल होया किसे ना मुख, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। ग़रीब निमाणयां कटे कोई ना भुख, सांतक सति नज़र कोए ना आईआ। मैं धरत निमाणी लख चुरासी वेखणहारी वल आपणी कुक्ख, बिना जन्म तों बणां जणेंदी माईआ। तूं परवरदिगार सांझे यार एकँकार अमृत जाम

प्या दे घुट, अंमिओं रस आपणा आप चवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे प्रभ आ के तक इकल्ला, अकल कल धारी वेस वटाईआ। नव सत्त मेरा वेख महल्ला, जल थल महीअल फोल फुलाईआ। फिरना जंगल जूह उजाड़ां विच झल्लां, टिल्ले पर्वत चोटीआं पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत तकणा तेरे नालों छुटया सब दा पल्ला, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मेरे उत्ते बोलया हल्ला, हालत बदली ख़लक खुदाईआ। तूं नूर अलाही आलमीन अल्ला, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे निगाह मार मेरे महबूबा, बेऐब ध्यान लगाईआ। पर्दा चुक दे आलीशान अर्श अरूजा, मुकामे हक ओहला रहे ना राईआ। आपणा भेव दस्स दे गूझा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मैं निमाणी कुरलावां धरनी धवल धरत धौल वसुधा, बेसुध हो के दयां दुहाईआ। उह लेखा तक लै जो इशारा दे के गया बुध्धा, बुद्धी तों परे दृढ़ाईआ। जिस बिध कलयुग अन्तिम होणा युद्धा, युगती तेरे विच नज़री आईआ। सति धर्म कर दे उदा, उदै असत कर रुशनाईआ। आपणे नाम दा सब नूं दस्सदे मुद्दा, मुदतां दे मालक भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म विच कलयुग अन्तिम समां होवे पुग्गा, अगे लेखा जगत नज़र कोए ना आईआ।

✪ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पंजढेरा ज़िला हुशियारपुर लाल सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए सतिगुर शब्द दस्स दे आपणा घाटा, लेखा दीन दुनी मंग मंगाईआ। कूड़ कुड़यार नव सत्त वखा दे हाटा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। नाल लेखा दस्स दे कलयुग नटूए नाटा, की स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। अमृत रिहा ना गोबिन्द धार बाटा, रस रस ना कोए चखाईआ। ख़ाली हो गया तन वजूद काया माटा, मटकी सति रंग ना कोए रंगाईआ। पुरख पुरखोतम नज़र आए ना आत्म सेज खाटा, खटीआ रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक की हुक्म जणाईआ। धरनी कहे नारदा मेरा वेख लै डूंघा खाता, ख़तरे विच ख़लक ख़ुदाईआ। सतिगुर शब्द दीआं सुण लै बातां, जो बिना रसना जिह्वा ढोले रिहा सुणाईआ। जिस मेरा लहिणा देणा मुकाउणा कलयुग मेटणी अन्धेरी राता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ज़ातां पातां, दीनां मज़्हबां इक्को रंग चढ़ाईआ। ओह पुछणहारा एकँकारा मेरी वाता, वारस हो के ध्यान लगाईआ। जन भगतां जोड़नहारा

चरण नाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। नारद कहे धरनीए उस दे अगे दस्स दे आपणा हाल, हालत दीन दुनी जणाईआ। जो सम्बल विच बहि के करे संभाल, सतिगुर दाता इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच काल महाकाल, राय धर्म बैठा सीस निवाईआ। ओह तेरा लहिणा देणा वेखे हरि गोबिन्द बण गोपाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द विचोला इक दलाल, दो जहानां हुक्म वरताईआ। जो तेरी लेखे लावे घाल, घायल हो के दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक होए सहाईआ। धरनी कहे नारदा मैं की दस्सां हालत, कहिण किछ ना पाईआ। दीन दुनी दे अन्दर होई जहालत, सच रंग ना कोए रंगाईआ। धर्म दी दिसे ना कोए अदालत, कलयुग क्रिया कूड़ हल्काईआ। साचा नाम मिले ना किसे निआमत, अमृत रस ना किसे चखाईआ। मेरे उत्ते आउण वाली क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं अन्धेरा होणा शामत, शमअ दीप नूर ना कोए रुशनाईआ। इक्को हुक्म वरतणा परवरदिगार सही सलामत, सांझा यार रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। नारद कहे धरनीए प्रभ दे अगे दस्स दे बिन नेत्र नैणा रो, भेद अभेद जणाईआ। ओह जानणहारा दो जहाना सो, सो पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। जो झगड़ा मेटे दीन दुनी दा दो, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। उस दा चरण कवल धरनीए तेरे उत्ते जाए छोह, छोहर बांका इक्को नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नव सत्त लए खोह, धौल धवले तेरा लेखा पूर कराईआ। सति धर्म नाल सब दा बख्शे मोह, मुहब्बत इक्को नाम जणाईआ। निझर धारों अमृत रस देवे चो, बूंद स्वांती अगम्म टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। धरनी कहे नारद मैं रो के मारां धा, हाए, उफ़ मेरी दुहाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्ते आ, आगमन विच तेरा राह तकाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण धार कर रुशना, दो जहानां नूर नुराना नज़री आईआ। मैं कूक पुकारां उच्ची कढ्ढ के बांह, बहिरहाल दयां सुणाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी तक लै कॉँ, काग वांग सर्ब कुरलाईआ। तेरे प्यारे हो के प्रभू किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी गाँ, पशूआं खल्ल लुहाईआ। हर हिरदिउँ निकलया तेरा नाँ, नाउँ निरँकारा ढोला कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं निमाणी धरत सदा रख ठण्डी छाँ, सदा सुहेले इक इकेले मेरी आसा पूर कराईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुशियारपुर करतार सिँघ दे गृह ✪

नारद कहे धरनीए प्रभ दा खेल तक अवल्ला, अवल अल्ला की आपणी कल प्रगटाईआ। जोती धार खेल करे इकल्ला, शब्दी शब्द जणाईआ। सम्बल बहि गया सच महला, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाईआ। वेखणहारा जलां थलां, असगाहां फोल फुलाईआ। आत्म सिँघासण इक्को मल्ला, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। पूरन हो के पूरन विच रला, रल मिल आपणी खुशी बणाईआ। भगतां फड़ाउण आ गया पल्ला, पलक विच आपणा मेल मिलाईआ। जिस दा दीपक सब तों निराला जला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उस ने ख़बर संदेसा इक्को घल्ला, सुनेहड़ा की जणाईआ। मेरा हुक्म सदा रहे अटला, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे प्यार विच विष्न ब्रह्मा शिव फिरे झल्ला, झलक तके नूर अलाहीआ। मुहम्मद पुकार के किहा अल्ला, आलमीन तेरी वड्याईआ। उह मेहरवान हो के भगतां नाम देवे सुखल्ला, सावरीआ कीमत नाँ कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे धरनीए उतांह वेख उठा के मुख, नैण नैणां विच्चों बदलाईआ। जिस दीआं सारे सुखणां गए सुख, सुखीं सांदी आ गया धुर दा माहीआ। जो ग़रीब निमाणयां वंडे दुःख, दलिद्रीआं दया कमाईआ। सच नाम दी तेरे उत्तों मेटे भुख, वस्त अगम्म वरताईआ। भाग लगा के तेरी कुक्ख, हरिजन साचे दए सुहाईआ। कुछ लेखा अगला उस प्रभू तों पुछ, जो पुश्त पनाह सब दे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे धरनीए ओह आ गया पीरां दा पीर, पैग़म्बरां दा पैग़म्बर नूर अलाहीआ। जिस दी सब तों वखरी तासीर, भेव सके कोए ना पाईआ। जिस दा इशारा दिता बिन रसना जिह्वा कबीर, काअब्यां तों बाहर सुणाईआ। ओह आ गया तेरी बदलण तकदीर, जिस देणी वड्याईआ। शरअ दे तोड़े ज़ंजीर, शहिनशाह हो के वेख वखाईआ। उस नूं लभ सके ना कोए फ़कीर, फ़िकरयां वाले ढोले गाईआ। उहदा नूर बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उह आया बेतस्वीर, जिस नूं तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। जिस लहिणा तेरा देणा अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। जिस लेखे लाया रवीदास चमारे कसीर, कौडी आपणे हट्ट विकाईआ। ओह बदलणवाला दीन दुनी ख़मीर, भगतां भगवन आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा नाम खण्डा शरअ तों बाहर शमशीर, धार दो धार आप प्रगटाईआ। जिस वेखणा जल थल महीअल नीर, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। जिस धरनी धौल तेरे कलयुग कूड़ दे बदलणे चीर, चिरी विछुंनीए तेरा लहिणा

तेरी झोली पाईआ। सतिजुग सच करे तामीर, तमा लालच ना कोए रखाईआ। इक्को माण देवे शाह हकीर, पातशाह धुरदरगाहीआ। भगतन मीता भगतन देवे धीर, धीरज धर्म धार समझाईआ। मालक हो के गुणी गहीर, गहर गवर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सब दा मालक सब दा मुदीर, मुदतां दे लेखे सब दी झोली पाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड गालड़ीआं ज़िला हुशियारपुर राम सिँघ, दरबारा सिँघ, मंगल सिँघ, ज्ञान चन्द ते आत्म चन्द तलवाड़ा ✪

धरनी कहे मेरे पुरख अकाल बापा, पतिपरमेश्वर बेपरवाह तेरी इक सरनाईआ। त्रैगुण मेरे अन्तष्करन मेट दे तापा, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दे अन्दरों कढ दे पापा, पतित पुनीत आप कराईआ। मेहरवान महबूब मेरी अन्तिम पुछ वाता, वास्ता तेरे अगे पाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट दे राता, सतिजुग सच चन्द कर रुशनाईआ।
१४७५ आत्म परमात्म जोड़ दे नाता, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पाता, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। आपणा १४७५
२४ डूंघा दस्सदे खाता, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तूं मेरा आदि जुगादी पित माता, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती २४
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू किरपा कर सूरे सरबंग, बग बपड़े कलयुग जीव वेख वखाईआ। मेहरवान मेरे उत्तों बुझा दे अग्ग, अग्नी ततव तत ना कोए जलाईआ। निगाह मार लै सृष्टी दृष्टी अन्दर जग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाहरग, नौ दुआर लेखा आप मुकाईआ। हरिजन हँस बणा लै फड़ के कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दीन दुनी दी धार विच्चों कर अलग, वखरा आपणा रंग रंगाईआ। हरिजन रहे ना कोई बपुड़ा बग, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते अन्तष्करन कर पवित, पतित पुनीत होवे तेरी ख़लक खुदाईआ। हरिजन हिरदे वस चित, चेतन सुरती सब दी आप कराईआ। निज नेत्र दर्शन होवे नित, नूर नुराने आपणा नूर कर रुशनाईआ। भगत सुहेला तेरा इक्को होवे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। निमाणयां बण जा मात पित, पतिपरमेश्वर हो के आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आशा तेरे चरण, चरणोदक जाम

देणा प्याईआ। इक्को बख्श धुर दी सरन, सरनगति इक समझाईआ। मैं लग्गी तेरे लड़न, पल्लू तेरा गंढु बंधाईआ। तूं सब दा लेखा मुकाउणा सीस धड़न, वजूदां वंड ना कोए वंडाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर तेरा ढोला इक्को पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। मंज़ल हकीकी सचखण्ड दुआरे एकँकारे तेरे चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआर परवरदिगार सांझे यार तेरे वड़न, दरगाह साची आपणा आसण लाईआ। जिथ्थे दीआ बाती कमलापाती पतिपरमेश्वर तेरा होए उज्यार, उजाला दो जहान कराईआ। तूं किरपा करनी भगत वछल गिरधार, गिरवर तेरे उत्ते ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सति सच कर प्रधानी, महबूब तेरी सरनाईआ। लेखे ला लै जीव प्राणी, पूरब लहिणे झोली पाईआ। सब दा शहिनशाह बण सुल्तानी, सुती सृष्टी दृष्टी अन्दर लै उठाईआ। नाम निधान दी मार कानी, काएनात दे हिलाईआ। लेखा मुका दे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखणा थाउँ थाँईंआ। जन भगतां अमृत रस निझर होवे बूंद स्वांत देणा पाणी, नाभी कवल कवल उलटाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी सुणाउणी धुर दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। काया मन्दिर अन्दर दीपक जोत जगाउणी महानी, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। हरिजन अन्दर रहे ना मूल परेशानी, पश्चाताप देणा मिटाईआ। इक्को दस्स के मंज़ल रुहानी, रूह बुत मेलणा मेला सहिज सुभाईआ। तूं जोती जाता सब दा जाण जाणी, जानणहार इक अख्वाईआ। मेरे कोल अवतार पैग़म्बर गुर दे के गए निशानी, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवंत जोती जाता पुरख बिधाता होवे प्रधानी, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं कोझी कमली निमाणी, निव निव तेरे चरण कवल सीस निवाईआ। मेरा लहिणा देणा मुका दे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरे चरण टिकाईआ। किरपा निधान मेरे उत्ते किरपा कर महानी, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा नाल जिमीं असमानी, दो जहानां मालक ख़ालक प्रितपालक तेरी बेपरवाहीआ।

१४७६
२४

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पिण्ड मकेरीआं महल्ला बाणीआं मकान नम्बर ४४ जिला हुशियारपुर रेशम सिँघ दे गृह ✪

धरती कहे प्रभ मेरे धुर दे संगी, सगले साथी हरि रघुनाथी पुरख समराथी तेरी वड वड्याईआ। सच वस्त अमोलक अन्तर दे दे मंगी, रसना जिह्वा मुख बचन ना कोए सुणाईआ। तेरे हुक्म विच जुग चौकड़ी मेरे उत्ते लँघी, कलयुग अन्तिम वेखणा चाँईं चाँईंआ। जन भगत सुहेले ला लै आपणे कार अंगी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। पुश्त होण ना देवीं नंगी, पिठ आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म कर्म दी कटणी तंगी, दुखियां दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा सुहा दे सुहञ्जणा खेड़ा, नव सत्त दे वड्याईआ। दीन मज़्ह़ब चुका दे झेड़ा, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। सति सच दा खुल्ल्ह़ा कर दे वेहड़ा, धर्म दी धार इक समझाईआ। जन भगतां बन्न्ह़ दे बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ कर निखेड़ा, सति सच सच प्रगटाईआ। अन्त अख़ीर आपणे हुक्म दा दे दे गेड़ा, नव सत्त दे भुआईआ। मेहरवान हो के किरपा निधान कर
१४७७ मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। हरिजन तेरे चरण होवे डेरा, डण्डावत बन्दना विच सीस निवाईआ। इक्को नाम गाए तूं १४७७
२४ मेरा मैं तेरा, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। दरस दिखा दे निज नेत्र नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध रहे ना राईआ। २४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा ना रहे अधूरी, अन्तर निरंतर वेखणा चाँईं चाँईंआ। कलयुग तक मेरी मजबूरी, दुखी हो के रही सुणाईआ। नव सत्त क्रिया होई कूड़ी, कूड़ कुटम्ब दिसे लोकाईआ। तेरी ख़ाक मस्तक चरण लाए कोए ना धूड़ी, टिक्के सच ना कोए रमाईआ। निरगुण जोत आपणा कर नूरी, नूर नुराने कर रुशनाईआ। मैं बेनन्ती करां सचखण्ड तेरे हज़ूरी, हज़रतां दे मालक देणी माण वड्याईआ। जन भगत सुहेले तेरा राह तकण ज़रूरी, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत तेरा तकदे राह, रैहबर देणी माण वड्याईआ। निरगुण धार बण मलाह, सरगुण बेड़ा लै तराईआ। नाम शब्द धुर कलमा दे सलाह, मशवरा इक्को इक दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दे बख्श गुनाह, कर्म कर्म दा लेखा दे मुकाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा पिता माँ, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां जोती जाते पकड़ बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। निथाव्याँ बख्श दे साचा थाँ, चरण कवल दे सरनाईआ। फड़ फड़ हँस बणा काँ, कागों हँस बणाईआ। इक्को तेरा अन्तर निरंतर उपजे

नाँ, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। तेरे चरण कवल धवल हो के बलि बलि जां, आप आपा तेरे भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी करां वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड डडवां ज़िला हुशियारपुर ✪

धरनी कहे प्रभ हो जा भगतां जोगा, जुगती आपणी दे समझाईआ। रंग चाढ़ दे काया माटी चोगा, तन वजूद रंगत अगम्म रंगाईआ। अन्तर निरंतर दर्शन दे अमोघा, निज लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर अन्तिम संजोगा, जुग जन्म दे विछड़े नाल मिलाईआ। माया ममता हउमे कट दे रोगा, जगत विकार रहिण ना पाईआ। चिन्ता ग़म चुका दे सोगा, हरख सोग ना कोए रखाईआ। सच दा ज्ञान दे दे बोधा, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। हरिजन हिरदा जाए सोधा, शुद्ध आपणा रंग चढ़ाईआ। भगत सुहेला तेरा होवे योद्धा, जगत झगड़े दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१४७८ आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां धुर बणा लै साथी, १४७८
२४ सगले संगी बहुरंगी आपणी दया कमाईआ। निरगुण धार अकल कला समराथी, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। हरिजन वेख अनाथ २४
अनाथी, दीनन आपणे गले लगाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे मस्तक माथी, जोत ललाटी कर रुशनाईआ। तूं साहिब सुल्ताना श्री भगवाना सर्ब कला समराथी, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत सुहेले वेख लै कमले कोझे, कुदरत दे कादर दया कमाईआ। इन्हां अन्तर देदे सोझे, सुध आपणी दे समझाईआ। जन्म जन्म दे भार लाह दे बोझे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा भगत तैनूं मूल ना खोजे, घर घर दर्शन देणा चाँईं चाँईंआ। तेरे प्यार विच शरअ दे रखणे पैण ना रोज़े, राज़क रिज़क रहीम देणी माण वड्याईआ। लालच मोह माया रहे ना लोभे, ममता कूड़ देणी मिटाईआ। हरि भगत सुहेला तेरे चरण दुआरे सोह जे, सुबह शाम वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते बख्श दे मौजे, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे हिरदे दे सोधे, पतित पुनीत पारब्रह्म प्रभ कराईआ।

२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सोमराज सिँघ दे गृह पिण्ड कोटला ज़िला हुशियार पुर

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरा सब नूं डण्डावत बन्दना नाल अदाब, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। सच हज़ूरी मेरे धुर दे जनाब, जनाबे आली कहि के धूड़ी ख़ाक रमाईआ। मेहरवानो नौजवानो मेरी करो इमदाद, मदद विच तशदद् रहिण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दी धारों आ के मेरे उत्ते करो हिसाब, बिन हिन्दसिआं अक्खरां गणत गणाईआ। भविक्खतां वाली खोल्ह के तको किताब, जिस उत्ते अलिफ़ ये ना कोए पढ़ाईआ। मेरा दर दरवाज़ा वेखो महिराब, महबूब आपणे संग रखाईआ। मैं कलयुग अन्त सब दी होई मुहताज, निव निव लागां पाईआ। धर्म दी धार तको आपणा दीन मज़्हब समाज, गृह गृह अन्दर ध्यान लगाईआ। नौ खड्ड सत्त दीप जगत जिज्ञासू वेखो राज, रईयत पर्दा आप चुकाईआ। तुसीं चार जुग दे मेरे गुरु महाराज, महबूब धुर दे नज़री आईआ। उह लेखा पूरा तको जो इशारा दे के आया नानक विच बग़दाद, बग़लगीर तन वजूद सर्ब कराईआ। सति सतिवादी हो के ब्रह्म ब्रह्मादी हो के शब्द अगम्म सुणाओ नाद, धुन अन्दरों आप प्रगटाईआ। दीन दुनी दे अन्तर निरंतर मेटो वाद विवाद, विख रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म दा नौ खण्ड खेड़ा मेरा करो आबाद, उजड़ी बस्ती दयो वसाईआ। इक्को ढोला सोहला सारे लओ अराध, इक्को मिलके एकँकारा वजे वधाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां मोहण माधव माध, मधुर धुन सदा सुणाईआ। सो स्वामी जो सब दे संवारनहारा काज, करनी दा करता इक अख्वाईआ। उस दी आसा मनसा मैनूं दस्स जाओ आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जिस ने सब तों अन्तिम लेखा मंगणा हिसाब, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म अगम्म वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर मेरा वेखो लहिणा, लहिणेदार हो के सीस निवाईआ। नव सत्त तको आपणे निज नैणा, जग नेत्र दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडा सिख मुरीद क्यों तुहाथों होया त्रफ़ैणा, सगला संग ना कोए बणाईआ। क्यों नाम कलमे छड माया ममता पाया गहिणा, तन वजूद कूड़ शृंगार कराईआ। आत्म परमात्म बणे कोई ना साक सज्जण सैणा, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। किस बिध ब्रह्म धार पारब्रह्म नालों होई त्रफ़ैणां, तरफ़दारी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर वेखो मेरे उत्ते होई अन्धेरी राती, चार कुण्ट कलयुग अन्धेरा छाईआ। मेहरवान हो के दयो साची दाती, दीन मज़्हब दी धार वंड ना कोए वंडाईआ। लहिणा तको आपणे नाम कलमे काग़ज़ाती, अक्खर अक्खरां नाल टकराईआ। सब दी ज़िंदगी जीवण तको हयाती, स्वास स्वासां फोल फुलाईआ। पर्दा चुक्क के निगाह मारो बातन बाती, ओहला रहिण

कोए ना पाईआ। क्यों सब दा विछोड़ा होया कमलापाती, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। सच प्रेम दिसे किसे ना नाती, जोड़ी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मैं इक इकल्ली धरनी धरत धवल धौल मेरा लेखा लोकमाती, मातृ भूमी हो के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर मेरे उत्ते आओ जल्दी, जल थल महीअल पन्ध मुकाईआ। नव सत्त कूड़ी अग्ग वेखो बलदी, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। माया ममता हर घट अन्दर आसण मलदी, मोह विकार सके ना कोए तजाईआ। घड़ी सुहञ्जणी होई कलयुग कल दी, कल कातीआं आपणे रंग रंगाईआ। मैनूं गल्ल याद आउंदी बलि दी, जो बावन नाल मिल के गया सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दे हुक्म दी धार कदे ना टल्दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तुहाडी सार कोई ना पावे पल दी, पलकां दे पिच्छे बहण वाल्यो तुहाडा दरस कोए ना पाईआ। जिधर वेखो मन कल्पणा सब नूं फिरे छलदी, धोखे विच ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणे आपणे वेखो मुरीद सिक्ख, साख्यात हो के पर्दा लाहीआ। बिन
१४८० अक्खरां तको पूरब भविख, पेशीनगोईआं आपणे नाल लिआईआ। मैं खुशीआं विच सब नाल करां हित, हितकारी हो के १४८०
२४ वेख वखाईआ। तुहाडा लहिणा देणा लेखा मेरे नाल नित, नवित आउण वाल्यो तुहानूं सीस निवाईआ। जगत जहान दी २४
ठगौरी वेखो चित, चेतन सुरती ना कोए कराईआ। कलयुग क्रिया कूड़ सके ना कोए नजिठ, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर सुणो हुक्म सो, सो पुरख निरञ्जण करनी दा करता की दृढ़ाईआ। की लहिणा देणा जाणे सब दा निरगुण हो, हरि पुरख निरञ्जण निरवैर निराकार निरँकार हो जणाईआ। एकँकारा जो आदि जुगादी निरगुण सरगुण धार दो, दर्द दुःख भय भञ्जण भव सागर किस बिध पार कराईआ। जोती जाता हो के प्रकाश करे लो, आदि निरञ्जण अन्त अन्त आपणा पर्दा लाहीआ। श्री भगवाना नौजवाना किस बिध बंधाए मोह, सज्जण मीत मुरारा इक अख्वाईआ। अबिनाशी करता दीन दुनी दी केहड़ी धारों आवे प्रगट हो, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किस बिध जगत जहान मेटे दुवैत दो, हद हदूद आपणी इक दरसाईआ। सतिगुर शब्द जो करे कराए सब दा सांझा बणाए गरोह, बन्दगी इक्को इक जणाईआ। तुसीं सारे मेहरवान सब नूं दस्सां रो, संदेशा देवां चाँई चाँईआ। उठो काहनो रामो मेरे गोपाल मूर्त मोहण मदन क्यों होए निर्मोह, मधुसूदन हो के वेख वखाईआ। पैग़म्बरो नूरी धार वेखो लग्न जो, लग मातर डेरा ढाहीआ। गुरु गुरदेव

लेखा जाणो उह, जो सूरा सरबगण समरथ अकथ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सब दा मीत त्रैगुण अतीत त्रैभवन धनी आप अख्वाईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ अर्जन सिँघ, मिआणी मुणशी राम, फ़तिहगढ़ जुगिंदर सिँघ दे नवित पिण्ड सलीम पुर ज़िला हुशियारपुर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं मंगां हथ्थ बध्धी, बन्दना डण्डावत सजदयां विच सीस निवाईआ। मेरे मेहरवाना श्री भगवाना तेरा लहिणा देणा हुन्दा कदी कदी, कुदरत दे कादर कदीम दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। निगाह मार लै पुरख अकाले दीन दयाले मैं पापां भार दब्बी, बोझ सके ना कोए उठाईआ। तूं मेरा मेहरवान महिबान बीदो नूर अलाही रबी, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। परवरदिगार सांझे यार एकँकार मेरे उत्तों मेट दे बदी, बदला क्रिया कूड़ चुकाईआ। लेखे ला लै पैग़म्बरां वाली सदी, सदके
१४८१ वारी घोल घुमाईआ। किरपा निधान किरपा कर दे अभी, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। मानव ज़ाती हरिजन बणा लै सभी, १४८१
२४ सभा मलेछां दे मिटाईआ। तूं तन वजूदां दा मालक इक्को तबी, तबीअत सब दी दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २४
आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच दे वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू तूं साहिब मेरा सूरा सरबगा, हरि करता इक अख्वाईआ। नव सत निरगुण धार वेख लै जगह, सरगुण पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। निरगुण धार तक लै आपणी हद्दा, हदूदां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं निमाणी हो के तैनूं देवां सद्दा, सद सद तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे दुखड़े कर दे दूर, दूर दुराडे दया कमाईआ। निरगुण धार मेरे हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं आदि जुगादी सदा सदा भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठांईआ। जुग बदलणा तेरा दस्तूर, रीती जुग चौकड़ी चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू किरपा कर मेरे मेहरवाना, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। सति धर्म झुला निशाना, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। आत्म परमात्म तेरा इक्को होवे ज्ञाना, नाम निधाना इक जणाईआ। शब्दी शब्द धार खेल दस्स महाना, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। मेरा लेखा पूरा कर दे जो इशारा दे के गया राम कान्हा, कान्हा काहन तेरी धार समझाईआ। भेव खुल्ला दे धुर अमामा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ।

तूं शाहो भूप सुल्ताना, हरि करता अगम्म अथाहीआ। मेरे उत्तों दीन दुनी दा बदल ज़माना, ज़िमीं जमां दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू अवतार पैग़म्बर गुर शब्दी धार दे के गए इकबाल, संदेशा नरेशा धुर दा इक जणाईआ। तूं आ के मेरी सुरत संभाल, सम्बल दे मालक आपणी दया कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ । झगड़ा मुका दे शाह कंगाल, मानव ज़ाती इक्को रंग चढ़ाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना साचा दे धन माल, अतोट अतुट वरताईआ। भगत सुहेले आपणे वेख लै लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। मेरी नव नौ चार दी लेखे ला लै घाल, घायल हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर इक खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरा लेखा कर दे पूरा, परम पुरख दे वड्याईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट दे कूड़ा, सतिजुग सच सच प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण बख्श आपणी धूड़ा, टिक्के ख़ाक ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़ा, पतित पुनीत बेपरवाहीआ। आपणा रंग चाढ़ दे गूढ़ा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। धुन आत्मक दे सरूरा, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती
१४८२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभ मानव ज़ाती १४८२
२४ चाढ़ दे रंग, रंगत अगम्म रंगाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे संग, सगले संगी हो सहाईआ। शब्द अनाद वजा मृदंग, २४
धुन अनादी इक दृढ़ाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। लेखा मुका दे तत पंज, पंचम शब्द कर शनवाईआ। चिन्ता ग़मी रहे ना रंज, रंजश अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। तेरा दुआरा एकँकारा वेखां लँघ, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तूं दीन दयाल सद बख्शंद, बख्शणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जाते पुरख बिधाते सृष्टी दृष्टी अन्दर बख्श दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मेरा खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी विच सीस निवाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट दे पन्ध, अगे लेखा रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दीन दुनी गावे छन्द, सोहला ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू इक्को सुणा दे शब्द अनाद, अनादी धुन प्रगटाईआ। भेव चुका दे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड दा लेखा रहे ना राईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादि, अन्त कन्त भगवन्त तेरी ओट तकाईआ। हर हिरदा तैनूं लए अराध, रसना जिह्वा तेरे ढोले गाईआ। हर घट हो विस्माद, बिसमिल हो के आपणी खेल खिलाईआ। तूं मेरा मोहण माधव माध, मधुर धुन दे सुणाईआ। तेरा हुक्म संदेशा होवे बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू इक्को तेरा नाम मेरे उत्ते वजे डंका, डौरु दो जहान सुणाईआ। धर्म दुआर सुहा दे बंका, बंक दुआरी तेरी ओट तकाईआ। इक्को प्यार बख़्श दे राउ रंका, शाह हकीर इक्को दर सुहाईआ। उह आशा पूरी कर दे जो संदेशा दे के गया भगत जनका, बिन रसना जिह्वा ढोले गाईआ। प्रभ दा खेल बार अनका, अनक कलधारी आपणी कल वरताईआ। दीन दुनी दा सृष्टी दृष्टी अन्दरों फेर दे मणका, मनसा मनसा विच्चों बदलाईआ। भेव खुल्हा दे आपणे ब्रह्म का, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप उठाईआ। मार्ग दस्स दे साचे धर्म दा, चार वरन अठारां बरन इक होवे सरनाईआ। रस्ता दस्स दे मंज़ल चढ़न दा, सचखण्ड दुआर एकँकार इक समझाईआ। ढोला दस्स दे आत्म परमात्म तेरा गीत पढ़न का, रसना जिह्वा सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मालक ख़ालक आदि जुगादी घाड़न घड़न का, भन्नृणहार एकँकार तेरी बेपरवाहीआ।

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सूरत सिँघ, सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड डाला ज़िला कपूरथला ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरे उत्ते कर मेहरवानी, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट निशानी, निशाना सच धर्म धर्म प्रगटाईआ। अन्तर आत्म सति सच बख़्श ज्ञानी, अन्ध अज्ञान रहिण कोए ना पाईआ। निरवैर हो के साचा नाम कर प्रधानी, परम पुरख परमात्म तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं धवल धरत तेरे दर मंगां निमाणी, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तानी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे प्रेम प्यार दी तको धार, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। निगाह मारो तेई अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाईआ। नव सत्त होया धुंआंधार, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म होए ना कोई जै जै कार, शब्दी शब्द ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे पैग़म्बरो आपणे आपणे तको कलाम, कलमा कायनात खोज खुजाईआ। आपणा सजदा तको सलाम, बिन नैणां नैण उठाईआ। जिस कारन शरअ विच होए ग़ुलाम, ज़ंजीर बिन तन्द तन्द बंधाईआ। की हुक्म संदेशा देवे धुर अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे मेरे गुरु गुरदेव

स्वामी, सिर सर दोवें दयां निवाईआ। मेरे अन्तष्करन दे अन्तरजामी, निरंतर वेखणा चाँईं चाँईंआ। नव सत्त होई अन्धेरी शामी, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। पवित्र रिहा कोई ना पाणी, पनघट बैठी ख़लक ख़ुदाईआ। मंज़ल रही ना कोए रुहानी, जिस्म जिस्मानी सारे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी दा करता की आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धरत धवल, धवले तैनूं दयां जणाईआ। मेरा नूर अलाही अवल, आलमीन हो के वेख वखाईआ। जो रसूलां नाल कीता कवल, कायनात दयां भुगताईआ। मवज़े नू अर्शे नज़ू गमस्तुअल मुबाए ज़वा ज़ख़मम ज़ू सतिल दज़ू मज़ी नूरे नज़ा फ़र्शे असमां ज़िमीं ज़मां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु रहे आख, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार प्रगट होवे साख्यात, साजण मीत आपणा भेव चुकाईआ। जो लहिणा देणा मेटणहारा दीन मज़्ब ज़ात पात, पतिपरमेश्वर परवरदिगार अगम्म अथाह इक अख्वाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर जोती जाता हो के खोल्हे ताक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा पूरब देवे बाकी

१४८४ बाक, निरगुण हो के झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच १४८४

दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी धवले दया कमावांगा। जोती जाता हो के वेख वखावांगा। शब्द अनादी डंक वजावांगा। दो जहानां आप सुणावांगा। दुआर बंक इक वडयावांगा। राउ रंक अक्ख खुल्हावांगा। मानव ज़ाती मेट के शंक, संसे विच ना कोए रखावांगा। आपणे नाम दा इक्को दस्स के अंक, अंगीकार आप हो जावांगा । शब्दी सुरती ला के तनक, मेला आत्म परमात्म आप करावांगा। जो इशारा दे के गया जनक, जानकारी आपणे हथ्थ रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरतावांगा । साचा हुक्म अगम्म वरताएगा। सो पुरख निरञ्जण भेव खुल्हाएगा। हरि पुरख निरञ्जण पर्दा लाहेगा। एकँकारा वेख वखाएगा। आदि निरञ्जण डगमगाएगा। अबिनाशी करता सोभा पाएगा। श्री भगवाना संग निभाएगा। पारब्रह्म रूप प्रगटाएगा। सच दुआर इक वडयाएगा। दरगाह साची सोभा पाएगा। सतिगुर शब्द शब्द उपजाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाएगा। त्रैगुण अतीता वेख वखाएगा। पंचम ततां खेल खिलाएगा। धरनी धवले तेरे नाल जोड़ अगम्मी नाता, नाता बिधाता आप रखाएगा। अन्तिम पुछे तेरी वाता, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। तेरा लहिणा देणा वेखे पूरब जुग चौकड़ी दा खाता, ख़ातर तेरी फेरा पाएगा। नौ खण्ड पृथ्मी तके इक्को अहाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाएगा।

सतिगुर शब्द कहे धरनी लोकमात ना हो दिलगीर, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला देवणहारा धीर, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे तेरी पीर, पीर पीरां दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा इशारा दे के गया कबीर, कबरां बाहर आपणा हुक्म वरताईआ। उह तेरी बदल देवे तकदीर, तक्बर दीन दुनी मिटाईआ। जिस दे कोल अगम्मी तदबीर, तरीका समझ किसे ना आईआ। उह शरअ दे तोड़े ज़ंजीर, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मिटा के ग़रीब अमीर, अमरापद दा मालक सिर सब दे हथ्थ रखाईआ। जिस लेखे लाया रवीदास कसीर, गंगा गंगोत्री वेखण सीस निवाईआ। उह अमृत रस तैनूं देवणहारा सीर, अंमिओं रस आप चवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी उह देवणहार दिलासा, धर्म दी धर्म धार जणाईआ। जिस दे उत्ते आदि जुगादि सब दा भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। उह लेख मुकाए पृथ्मी आकाशा, गगन गगंनतर वेख वखाईआ। उह हुक्म देवण वाला शंकर कैलाशा, कलाधारी की आपणी कार कमाईआ। जिस विच फ़र्क आवे ना तोला मासा, रतीआं वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी आदि जुगादि इक्को शब्द दी भाषा, जगत विद्या वंड ना
१४८५ कोए वंडाईआ। उह तेरे उत्ते वेखण वाला तमाशा, नव सत्त खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १४८५
२४ कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धरत धवल, धवले दयां जणाईआ। २४
पुरख अकाला दीन दयाला नूर अलाही अवल, अवल अल्ला की खेल खिलाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाल कवल, वायदे सब दे वेख वखाईआ। उह नूर नुराना अलाही रूप साँवल सवल, सुंदरीआ भेव कोए ना पाईआ। उह कलयुग अन्त कन्त भगवन्त खेल करे अछल अछल्ल, वल छल आपणी धार जणाईआ। जिस वायदा पूरा करना बावन बलि, सतिजुग जिस दी दए गवाहीआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी धार हो के तेरे उत्ते आवे चल, बिन कदमां बणे पाँधी राहीआ। भाग लगाए सम्बल सच महल, आसण सिँघासण इक सुहाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता शब्दी जोत धार जाए रल, नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जो कला मेटे कलयुग कल, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तेरा मसला करे हल्ल, जिस दी मिसाल सके ना कोए पाईआ। पावे सार समुंद सागर जल थल, टिल्ले पर्वत पहाड़ महीअल वेख वखाईआ। सो सिँघासण पुरख अबिनाशण लए मल्ल, मालक हो के आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी प्यार विच देवां दलेरी, हिम्मत प्रभ दा नाम जणाईआ। निरगुण हो के मारे फेरी, सरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। तेरे अन्तर

निरंतर ख़ुशी दए घनेरी, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। जो कलयुग मेटे रैण अन्धेरी, अन्ध आत्म करे रुशनाईआ। इक्को रंग रंगाए सञ्झ सवेरी, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे हुक्म विच कलयुग आयू लँघ गई बथेरी, अगे अवर ना कोए वधाईआ। कूड़ी क्रिया ढाह के करे ढेरी, ख़ाकी ख़ाक विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहरवान हो के करे मेहरी, महबूब मुहब्बत आपणी इक जणाईआ।

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ पाल सिँघ दे गृह पिण्ड दाउदपुर ज़िला कपूरथला ✪

फल्गुण कहे मेरा प्रविष्टा दो इक दी धार, इकीसे जगदीसे तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी पाउणी सार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सांझे यार, नूर नुराने शाह सुल्ताने तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं सदा सुहेला इक इकेला जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी ओट तकाईआ। परम पुरख परमात्म निगाह
१४८६ मार विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द इक्को सब नूं करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। १४८६
२४ नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरा लहिणा देणा दए उधार, पूरब लेखा झोली पाईआ। जो संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, २४
भविख्तां लिख्तां विच सुणाईआ। कलि कल्की आवे निहकलंक अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते मार लै झाकी, बिन नेत्र लोचन नैणां नैण उठाईआ । किरपा कर दे मेरे कमलापाती, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी पुछ वाती, नव सत्त नैणां नीर वहाईआ। धर्म दी रही ना कोए प्रभाती, कलयुग अन्ध अन्धेरा छाईआ। झगड़ा तक लै ज़ात पाती, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। सच प्रीती रही ना किसे नाती, तेरे चरण कवल ना कोए सरनाईआ। झगड़ा तक लै ज़ात पाती, दीन मज़्ब रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाले, अकल कलधारी तेरी ओट तकाईआ। किरपा निधान दीन दयाले, दीना नाथ तेरी सरनाईआ। तुध बिन मेरी सुरत ना कोए संभाले, सम्बल दे मालक हो सहाईआ। त्रैगुण मेट दे कूड़ जंजाले, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मेरे उत्तों दाग़ मेट दे काले, क्रिया कूड़ दे चुकाईआ। लहिणा देणा तक लै हाले, हालत विगड़ी ख़लक खुदाईआ। काया मन्दिर सोहे ना कोई सची धर्मसाले, काअबा हक ना कोए जणाईआ। फल

लगे किसे ना डाले, साढे तिन्न हथ्थ पत्त टहणी ना कोए महकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक हो सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे शहिनशाह नवाबा, सति सतिवादी तेरी ओट तकाईआ। अमृत मेघ बख्श दे आबा, आबेहयात दे बरसाईआ। लेखा पूरा कर दे कवल नाभा, बूँद स्वांती खेल खिलाईआ। मेरी आशा वेख लै कार करां विच दोआबा, दोहरी तेरी खेल वेख वखाईआ। तूं सब दा हक जनाबा, पैग़म्बर रसूल तैनूं सीस निवाईआ। सतिगुर नानक निरगुण सरगुण धार वजाई रबाबा, बिन तन्द तन्द शनवाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार जोती जाते हो के आ जा, आजज़ हो के सीस निवाईआ। दो जहानां बण के राजा, राजन राज वेखणा चाँई चाँईआ। भाग लगा दे देस माझा, मजलस भगतां नाल बणाईआ। तेरा समाज होवे सांझा, दूसर वंड ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरा संवार काजा, करनी दे करते कुदरत दे मालक तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे जो संदेशा दे के गया वाला बाज़ां, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तेरी धार दृढ़ाईआ। मेहरवान महबूब तुध बिन करे ना कोए इमदादा, आमद विच तेरा ध्यान लगाईआ। इक्को शब्द सुणा दे धुर अनादा, अनादी धुन दे दृढ़ाईआ। हुक्म जणा

१४८७ दे बोध अगाधा, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। तूं मेरा मोहण माधव माधा, माधो तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप १४८७

२४ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर देणा सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू निगाह मार लै मेरे अन्तष्करन, २४

बाहर वेखण दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को ओट बख्श दे आपणे चरण, चरणोदक जाम देणा प्याईआ। मेरा खुल्ह जाए हरन फरन, निज नेत्र कर रुशनाईआ। इक्को स्वामी बख्श दे सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। इक्को ढोला दस्स दे पढ़न, नाम निधाना इक जणाईआ। इक्को मंज़ल दस्स दे चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मेरे उत्तों किला तोड़ हँकारी गढ़्ह न, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। जगत जिज्ञासू इक्को तेरा लड़ फड़न, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। तूं मालक ख़ालक हार भन्न्हण घड़न, समरथ अकथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी लेखे ला लै घाल, घायल हो के सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द विचोला होए दलाल, दो जहानां वेखे चाँई चाँईआ। फल लगावे मेरे नव खण्ड दे डाल, सत्त दीप दए महकाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद बणे धुरदरगाहीआ। सच स्वामी अन्तरजामी मेरा लहिणा देणा तेरे नाल, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा सुहा दे दुआरा बंक, बंक दुआरी हो के दया कमाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी वार अनक, अनक कलधारी तेरी तेरे हथ्थ

वड्याईआ। मेहरवाना श्री भगवाना दीन दुनी दी अन्तर निरंतर कढ दे शंक, संसा रहिण कोए ना पाईआ। शब्दी धार एकँकार सुरत सुआणी ला दे तनक, बिन तन्द सितार आपणे नाल बंधाईआ। सतिजुग सति सच बणा दे बणत, घड़न भन्नणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अन्दर होए मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। तेरे हुक्मे अन्दर जीव जंत, साध सन्त जुग जुग तेरा नाम ध्याईआ । तेरी महिमा आदि जुगादि सदा अगणत, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेहरवान श्री भगवान मेरी मंन लै मिन्नत, नमों नमों कहि के सीस निवाईआ। सचखण्ड निवासी धरनी धरत धवल धौल कहे मेरी आ जा सिम्मत, बिन कदमां कदम उठाईआ। चौथे जुग मेरी मेट दे चिन्नत, चिन्ता चिखा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू निगाह मार लै फल्गुण दिवस दिहाढ़ा इक्की, प्रविष्टा दूआ एका मिलके वजे वधाईआ। मेरी बेनन्ती सब तों वड्डी सब तों निक्की, निराकार निरँकार तेरे चरण टिकाईआ। तेरयां भगतां दी सुरती तेरे विच होवे टिकी, टिक्के मस्तक धूड़ी ख़ाक तेरी रमाईआ । मेरी लेखे ला लै अज्ज दी मिती, मित्र प्यारा हो के वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण तेरा करां हिती,
१४८८ हितकारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं चरण कवल धवल निमाणी हो के कदमां उत्ते लिटी, लिटां खोल्ह के दयां वखाईआ। मेरे १४८८
२४ पुरख अकाले दीन दयाले मेरी मन्ज़ूर कर लै हाहे वाली टिप्पी, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। सो पुरख निरञ्जण २४
मेरी धार कर दे चिट्टी, दुरमति मैल रहे ना राईआ। तेरी खेल वेखां अनडिठ्ठी, अनडिठड़ी देणी वखाईआ। तेरे कोल अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाली चिठ्ठी, जो बिन अक्खरां हरफ़ हरूफ़ां मेरे अन्तर गए टिकाईआ। जिस दी इक्को बात मिठ्ठी, रसना रस वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू चिठ्ठी दा सब तों वखरा लेख, जगत अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। जिस बिध तेरा होणा अवल्लड़ा भेख, तेरी बेपरवाहीआ। जिस नाल मेरी बदलणी रेख, ऋषी मुनी समझ किसे ना आईआ। जिस विच झगड़ा मेटणा मुल्ला शेख़, मुशायकां पन्ध रहे ना राईआ। तेरा गृह सुहञ्जणा सम्बल देस, देस देसन्तरां वजे वधाईआ। तेरा हुक्म चलणा नर नरेश, नर नरायण तेरी वड्याईआ। जो हुक्म संदेशा दे के गया दस दस्मेश, दहि दिशा दिशा समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटे कलेश, कल कातीआं करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा हमेश, हमसाजण राज राजन ग़रीब निवाजन तेरे हथ्थ वड्याईआ।

१४८६ २४

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ सन्तोख सिँघ जंडयाला नवित हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां चाढ़ दे मस्ती, खुमारी निरँकारी तेरी नज़री आईआ। जोती जाते भेव खुल्ा दे आपणी हस्ती, हस्त कीट दा लेखा रहे ना राईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे दस्ती, उधार अवर ना कोए जणाईआ। चरण प्रीती बख्श दे सस्ती, कीमत करते कोए ना पाईआ। आत्म धार बख्श दे दरसी, अन्तर निरंतर मेल मिलाईआ। जन्म कर्म दी मेट हरसी, हवस कूड़ी देणी मुकाईआ। तूं मेहरवान मालक अर्शी, अर्शी प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं कूक पुकारां धरनी फ़र्शी, मिट्टी ख़ाक हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत आदि जुगादि तेरे, जुग जुग दया कमाईआ। अन्तर निरंतर चाउ बख्श घनेरे, सति सतिवादी हो सहाईआ। सद ढोले गावण मेरे तेरे, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। दीन दुनी दे विच्चों कढु अन्धेरे, सति सच कर रुशनाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले इक्को बख्श दे मेहरे, मेहरवान इक्को रंग रंगाईआ। सद दर्शन देणा सनमुख हो चेरे, चिरी विछुन्ने लैणा मिलाईआ। झगड़े मेट दे अण्डज जेरे, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा आप सहाईआ। धरनी कहे प्रभ जन भगतां लाह दे आलस निंदर, ग़फ्लत रहिण कोए ना पाईआ। बजर कपाटी तोड़ जिंदर, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। भाग लगा दे डूँग्घी कंदर, काया माटी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा साचा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां मेट दुःख संताप, वसूरे सगले दे गंवाईआ। परम पुरख परमात्म इक्को जपण अजपा जाप, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। त्रैगुण माया मेट पाप, त्रैगुण अतीते दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम पुछ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। तूं ठाकर स्वामी कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। निगाह मार लै लोकमात, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बख्श दे बूँद स्वांत, अंमिओं रस निझरों आप चुआईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ११ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

धरनी कहे प्रभ मेरे उत्तों कूड़ कुड़यारा कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सर सरोवर इक वखा दे तट, किनारा

घाट दूजा नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म खुल्हा दे हट्ट, हटवाणे आपणी खेल वखाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना तेरा नाम सारे लैण रट, झगड़ा जगत रहे ना राईआ। शब्द अनादी धुन आत्मक लगा दे सट्ट, सुत्तयां लए जगाईआ। किरपा निधान हो के बदल करवट, पासा दीन दुनी बदलाईआ। मैं वस्त मंगां झट, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे धुर दे राम, रम्ईआ तेरी ओट तकाईआ। निरगुण निरवैर धुर दे काहन, काहन कान्हा तेरी बेपरवाहीआ। नूर अलाही अगम्म मुकाम, मुकामे हक दे मालक इक्को ओट तकाईआ। कलयुग अन्त मेरा कर इंतज़ाम, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरु गुरदेव तेरा लेखा दस्स के गए अवाम, भेव अभेद जगत खुल्हाईआ। निगाह मार लै नव सत्त मेरी अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। नाम हकीकी बिन रसन प्याए कोई ना जाम, अनरस ना कोए चखाईआ। मैं नव सत्त होई हैरान, हैरत विच दयां दुहाईआ। सच धर्म ना रिहा ईमान, सिर सर ना कोए उठाईआ। फिरी दरोही विच जहान, जहालत दिसी विच लोकाईआ। सच झुलाए ना कोए निशान, निशाने दीन दुनी भुलाईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा मेहरवान, महबूब नूर अलाहीआ। मैं निउँ निउँ करां सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरे उत्ते दस्स अगम्मी कलाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ । जगत अन्धेरा मेट दे शाम, बिन अलिफ़ ये समझाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे तमाम, तमअ लालच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आशा पूर कराईआ । धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते प्रकाश दे सच सति, सति सतिवादी दया कमाईआ। आत्म परमात्म बख्श दे नत, रिश्ता फ़रिश्तयां बाहर जुड़ाईआ। धर्म दी धार बख्श दे मति, मति मतांतर डेरा ढाहीआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रत्न अमोलक गुरमुख हीरे लैणे बणाईआ। तूं मेरा स्वामी कमलापति, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ । जन भगतां अन्दर नाम निधाना वस्त घत, अणमुली झोली पाईआ। साचे देस आ वत, बेवतनां दे मालक आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते सुहञ्जणे होण धर्म दे हट्ट, धर्म दी धार धार वड्याईआ। पवित्र करने तट, किनारे सोभा पाईआ। हरिजन लाहा लैणा खट, खटका रहे ना कोए लोकाईआ। मेहरवाना किरपा करनी झट, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तेरा नाम निधाना सारे लैण रट, रट्टा दीन दुनी मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर हिरदा निरगुण तेरा नाम लए रट, सरगुण मिल के सरगुण वजे वधाईआ।

१४६०
२४

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत १२ दविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द सदा कृपाल, किरपा निध अगम्म अथाहीआ। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग चौकड़ी बेपरवाहीआ। हरिजन वेखे आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। एथे ओथे करे संभाल, दो जहानां मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म जन्म दी लेखे लाए घाल, पूरब लहिणा झोली पाईआ। फल लगाए साचे डाल, पत टहणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द सदा बख्शंद, बख्शणहार इक अख्वाईआ। हरिजन देवणहार अनन्द, अनन्द आपणा रूप दरसाईआ। जोती नूर चाढ़ के चन्द, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। आवण जावण पतित पावन मेट दे पन्ध, जगत राही रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा लहिणा नाल भगतां, भगवन दिती माण वड्याईआ। मेरे विच अगम्मी

१४६१ शक्ता, शक्तीशाली इक अख्वाईआ। लेखे लावां बूँद रक्ता, तन वजूद रंग रंगाईआ। संग रखावां धुर दी संगता, सगला १४६१

२४ संगी हो के वेख वखाईआ। सच प्यार दा बणां मंगता, जन भगतां अगे झोली डाहीआ। जन्म जन्म बणावां साची बणता, २४

घड़न भन्नणहार दिती वड्याईआ। हरिजन लेखा जाणां आदिन अन्ता, अन्त अखीर आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां आदि जुगादि सच प्यार, प्रेमी प्रीतम हो के दया कमाईआ। लहिणा देणा तक जगत संसार, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। पूरब लेखा कर विचार, बिन विचरया दए समझाईआ। किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर धुरदरगाहीआ। जिस फल्गुण दी रुति सुहाउणी बहार, फल फुल्ल आप महकाईआ। हरिजन देवे चरण अधार, चरण कवल कवल सरनाईआ। प्रीती बख्श सर्ब परवार, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। हरिजन जाए सच सच्चे दरबार, दरबारा सिँघ दरगाह साची सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। जिस दे संग बंती दा होया अधार, फल्गुण दा महीना दए गवाहीआ। पूरब लहिणा राम वशिष्ट दा उधार, वनवासी राम दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे फल्गुण सच सुणाए सो, पूरब लेख जणाईआ। धर्म दी धार लहिणा पिछला दो, दोहरी खेल खिलाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। वशिष्ट दे चेले राम नाल मोह, मुहब्बत अन्दरे

अन्दर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे राम अन्दर मारी झाकी, चेले वशिष्ट ध्यान लगाईआ। बिन रसना कीती बाती, बातन भेव चुकाईआ। कलयुग अन्तिम आवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। किरपा करे कमलापाती, पतिपरमेशवर धुरदरगाहीआ। तुहाडी फेर पुछे वाती, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जन्म होवे बहुभांती, कर्म इक्को रंग रंगाईआ। इक्को दर होवे खाती, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को जेही होवे हयाती, अन्तर प्रभ दे चरण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। राम शब्दी धार किहा सुणो मेरे मीत, गुरभाई रंग रंगाईआ। तुहाडा लेखा नाल त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी दए वड्याईआ। जिस वेले त्रेता द्वापर गया बीत, कलयुग अन्तिम खेल खिलाईआ। भगत भगवान चलाए रीत, मार्ग इक्को इक दरसाईआ । झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबा इक वखाईआ। साची बख्श चरण प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ । धर्म दी धार वेखे नीत, नीतीवान अगम्म अथाहीआ। फल्गुण कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा ठांडा सीत, चेत्र उसे दा रूप बणाईआ। इन्द्र आपणे गावे गीत, मेला आपणे संग रखाईआ। खुशीआं नाल
१४६२ खुशीआं वाला समां गया बीत, पिछला लेखा रिहा ना राईआ। इक्को स्वामी वस्या चीत, चित ठगौरी दिती गंवाईआ। जोती १४६२
२४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे वशिष्ट २४
मीते जगत धार, तन वजूद मिली वड्याईआ। किरपा करी भगत वछल गिरधार, गिरवर आपणे रंग रंगाईआ। जन्म जन्म दा लेखा दिता उतार, पूरब लहिणा नाल मिलाईआ। फल्गुण खुशीआं वाली मौली बहार, भगत भगवान मिल के वजी वधाईआ। इक्को रंग होया सचखण्ड सच्चे दुआर, दुआरका वासी जिथ्थे बैठे आसण लाईआ। राम वशिष्ट वेखण नैण उग्घाड़, बिन अक्खां अक्ख खुल्लाईआ। पूरब लहिणा पूरब उधार, लेखा इक्को वार मुकाईआ। दोवें मित्र दोवें यार, दोहां दा लहिणा निरगुण धार संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी पावणहारा सार, सतिगुर दाता इक अख्वाईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर रात दे समें ✪

सम्मत शहिनशाही बारां कहे चढ़या अगम्मी चेत, सो पुरख निरञ्जण दए वड्याईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी करे हेत, हरि पुरख निरञ्जण मालक धुरदरगाहीआ। निरगुण हो के लेखा जाणे नेतन नेत, एकँकारा परवरदिगारा अगम्म अथाहीआ।

इक इकल्ला खोलूणहारा भेत, आदि निरञ्जण दर्द दुःख भय भञ्जण पर्दा आप उठाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता अछल
अछेद, अबिनाशी करता हुक्म वरताईआ। जिस दी निरगुण निरगुण धार साची सेध, श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान भेव
चुकाईआ। जो सति सतिवादी हो के खेले खेड, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुलूाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत शहिनशाही कहे मेरा चेत महीना सुहञ्जणी रुत,
रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। जिस दा इक्को शब्द दुलारा सुत, आपे बणे पिता माईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल
लख चुरासी बुत, तन वजूदां संग रखाईआ। उह भेव अभेदा खोलू अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे मैं चढ़या लोकमात,
मता सतिगुर शब्द जणाईआ। धुर संदेशा दिता पात, पत्रका बिन कलम शाही लिखाईआ। निरगुण निरगुण जोड़या नात,
तन वजूद ना कोए वड्याईआ। धुर फ़रमाना आपणी भांत, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ। चेत कहे मैं लोकमात चढ़या, चार जुग दा पन्ध
१४६३ मुकाईआ। बिन अक्खरां शब्द अनोखा पढ़या, जिस दा लेख कलम शाही ना कोए बणाईआ। जिस मेरा आदि जुगादी घाड़न १४६३
२४ घड़या, रूप रंग रेख वेखण कोए ना पाईआ। मैं उसे दी सरनी पड़या, बिन सीस सीस झुकाईआ। जिस लेखा तकणा २४
चोटी जड़या, चेतन पर्दा दए खुलूाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच
दा मालक इक अख्वाईआ। चेत कहे मेरे सतिगुर शब्द मीते, मित्रा तेरी सरनाईआ। मेरे नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग बीते,
सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा रूप बदलाईआ। मैनूं याद वायदे कौल इकरार जो कीते, बिन अक्खरां अक्खर लिखाईआ।
तूं वेखणहारा आदि जुगादी रीते, रीतीवान तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा
धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। चेत कहे मेरे सतिगुर शब्द दयालू, दयानिध तेरी शरनाईआ। आदि जुगादी अगम्म
कृपालू, किरपन हो के सीस निवाईआ। मैं सदा सदा रिहा तेरा श्रद्धालू, श्रद्धा तेरे चरण भेंट कराईआ। मैं हैरान हो गया
कलयुग अन्त कौण संभालू, सम्बल दे मालक वेखणा चाँईं चाँईआ। अवतार पैग़म्बरां दी धार विच मेरा साल हो गया चालू,
चार जुग दे भविख्त देण गवाहीआ । मेरे वास्ते इशारा दे के गया नानक सुत कालू, कलम्यां बाहर दृढ़ाईआ। जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। चेत कहे मेरे सतिगुर शब्द शहिनशाह,
शहिनशाह शाह पातशाह बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। आदि जुगादी अगम्म अथाह, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं

चरण कवल बिना सीस सीस लवां निवा, निव निव लागां पाईआ। बेनन्ती करां मेरे मालक हक खुदा, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। मेहरवाना मेरी मन्ज़ूर कर दुआ, दो जहानां मालक तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। चेत कहे मेरे सतिगुर सज्जण, शब्दी शब्द धार तेरी वड्याईआ। साची धूड़ करा दे मजन, जगत मिट्टी ख़ाक दी लोड़ रहे ना राईआ। बिना अक्खरां तों नाम निधाना पा दे कज्जल, जगत अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। बिन रसना जिह्वा दे दे भजन, बत्ती दन्द ना सिफ्त सलाहीआ। बिना तन शरीर वजूद तों मेरे पर्दे आ जा कज्जण, मालक बण के धुर दा माहीआ। मैं प्रेम प्रीती विच मेरया महबूबा तैनूं आया सद्दण, सदके वारी घोल घुमाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मैनूं दे दे अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सचखण्ड निवासी तेरे चरण मेरी बन्दन, सजदयां विच सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे खण्डन, खण्डा गोबिन्द खड़ग नाम चमकाईआ। जे सच भण्डारा आएयों वंडण, नाम निधाना दे वरताईआ। तेरा लहिणा देणा विच ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड दा लेखा दे चुकाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंगण, हरि करता इक अख्वाईआ। तेरी धूड़ी लावां मस्तक अगम्मी चन्दन, चन्द चांदने कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा होए छन्दन, सोहला ढोला इक समझाईआ। बिना जगत रंग तों चाढ़ दे रंगण, अनडिठ आप रंगाईआ। तूं मालक ख़ालक वरभण्डण, ब्रह्मण्ड तेरी शरनाईआ। निगाह मार लै विच जेरज अंडण, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। दीन दयाल बण बख़्शंदण, रहमत आपणी आप कमाईआ। तेरे दर तों आया मंगण, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ । चेत कहे प्रभू मेरे कोल भविख्तां वाली धार, धरनी उत्ते धर्म नाल जणाईआ। मैनूं संदेशा दे के गया ब्रह्मा सुत कुमार, सन्त सहिज सहिज सुणाईआ। बराह दिता इशार, जगत इशारा ना कोई वड्याईआ। यगैपुरुष दे अधार, उदर दा लेखा गया मुकाईआ। हावगरीव कीती पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। नर नरैण सची सरकार, इष्ट गया समझाईआ। कपलमुन कूक कीती पुकार, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। दत्तात्रे कीता इज़हार, सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। तूं सब दा मीत मुरार, रिखप देव गया दृढ़ाईआ। पृथू धूड़ी ला के छार, शहिनशाह तेरे रंग समाईआ। मत्तस बिन नैणां नीर वहाया जल दी धार, समुंद सागर संग बणाईआ। कच्छप मिन्दिरा चुक के पिठ दे भार, समुंद वरोलया चाँईं चाँईंआ। धनंतर हस के किहा अगम्मा यार, साहिब स्वामी तेरी सिफ्त सालाहीआ। नर सिंघ तेरा खेल रूप अपार, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। नर नरैण हो हुशियार, धू दिता दृढ़ाईआ। बलि बावन कर उज्यार, पर्दा खोल्लया चाँईं चाँईंआ। निउँ निउँ सदा करां निमस्कार, निव निव लागां

पाईआ। हरी हरि पर्दा खोल्ह निराकार, गज दिता दृढ़ाईआ। मेरी बेनन्ती सुण सुणनेहार, अनसुणत दयां दृढ़ाईआ। राम रामा हो के ख़बरदार, रावण भेव गया चुकाईआ। परसे खेल कीता अपार, ब्राह्मण क्षत्री वंड वंडाईआ। वेद व्यासा बण के जगत लिखार, पुराण अठारां चार लख हज़ार सतारां सलोक गया समझाईआ। कृष्ण काहन कीता ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। द्वापर तेरी धार विच्चों साँवल सुंदर होया बाहर, सांवरीआ आपणी कार कमाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तेरा रूप अगम्म अपार, अपरम्पर तेरी वड वड्याईआ। मूसा मूँह दे सुट्टया भार, कोहतूर रंग रंगाईआ। बुद्ध बुद्धी दा लेखा समझे ना कोए संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठण सीस निवाईआ। ईसा सलीब दी चाढ़ के धार, फाँसी गल लटकाईआ। उस संदेशा दिता बिन रसन जिह्वा उच्चार, बिन बुल्ल्हां बुल्ल्ह हिलाईआ। मुहम्मद बणा के बरखुरदार, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। अन्त कूक के किहा पुकार, चार यारी नाल मिलाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे परवरदिगार, बेऐब नूर अलाहीआ। नानक निरगुण सरगुण वजाई सतार, सरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। गोबिन्द खण्डा खड़ग खिच्च कटार, कटाकश दीन दुनी समझाईआ। तेरा खेल सब तों बाहर, ख़लक दे ख़ालक भेव कोए ना पाईआ। पहली चेत कहे प्रभू
१४९५ मेरा चार जुग दा लहिणा पूरब उधार, पूरन सतिगुर दयां दृढ़ाईआ। मेरे प्रविष्टे विच सब ने तेरे अगे कीती पुकार, पुनह १४९५
२४ पुनह सीस निवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा खेल होवे अपार, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जाता २४
हो के होणा ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। नव सत्त तेरा इक्को होए अधार, उदर दा लेखा देणा मुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल तेरी जै जै कार, इक्को ढोला सिफ्त सलाहीआ। सो पुरख निरञ्जण सब नूं करना ख़बरदार, सोया रहिण कोए ना पाईआ। हरि पुरख निरञ्जण पर्दा दीन दुनी दा उतार, उत्तर पूरब पश्चिम दक्खण खोज खुजाईआ। एकँकारे सांझे यार, मित्र प्यारे देणी वड्याईआ। आदि निरञ्जण तेरी मौले अगम्म बहार, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। अबिनाशी करते बणना शाहो भूप सिक्दार, शहिनशाह इक अख्वाईआ। श्री भगवान तेरा खेल होवे अपार, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन दूजा नज़र ना आए कोई संसार, सहिसा जगत रहे ना राईआ। विष्नूं हलूणा दे दे आपणी धार, विश्व दे मालक दया कमाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म दी पावे सार, ब्रह्मवेता हो के वेख वखाईआ। शंकर आपणा चुक लै आपे भार, सँघारी हो के आपणा हुक्म वरताईआ। त्रैगुण माया पर्दा दए उतार, रजो तमो सतो लेखा रहे ना राईआ। पंजां ततां पाउणी सार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। पहली चेत कहे प्रभू मेरी डण्डावत बन्दना सजदयां तों बाहर निमस्कार, बिन सीस सीस निवाईआ। तूं कलि कल्की निहकलंक चौबीसा हरि जगदीसा अमाम अमामा नूर उज्यार,

जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण चेत्र मीता, जगत मित्रा तैनूं दयां जणाईआ। जुग बदलणा आदि जुगादी प्रभ दी रीता, रीतीवान इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच सतिजुग त्रेता द्वापर बीता, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम वेखणहारा नीता, नीतीवान अगम्म अथाहीआ । जिस झगड़ा मेटणा मन्दिर मसीता, काया काअब्यां भेव चुकाईआ। आपणा भाणा दस्सणा सब नूं मीठा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जिस दे हुक्म विच तपण वाला अंगीठा, कलयुग क्रिया कूड़ अग्नी रिहा डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। चेत कहे सुण सतिगुर शब्द प्यारे, प्रेम नाल दृढ़ाईआ। की हुक्म वरते विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी की सेव कमाईआ। की लहिणा देणा तेई अवतारे, अवतरी की की हुक्म जणाईआ। की सतिजुग कलयुग खेल होवे अपर अपारे, अपरम्पर स्वामी की हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी बीते सारे, सिर सके ना कोए उठाईआ। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर करे उज्यारे, जोती जाता वेस वटाईआ।
१४६६ सम्बल बहि के सच चुबारे, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे दोबारे, दोहरी आपणी १४६६
२४ कल वरताईआ। मैं उस दे जावां बलिहारे, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा २४
कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। झट नारद आ के हस्सया, पहली चेत खुशी बणाईआ। मैं दूर दुराडा आया नस्सया, बिन कदमां कदम उठाईआ। मैं वेख्या जगत माया विच फस्या, हैरानी विच दयां दुहाईआ। चारों कुण्ट होई अन्धेरी रैण मस्सया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी धार पै गई गशया, सुरती सुरत ना कोए जगाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां बिना कदमां कछया, कछ मछ दा लेखा पूर कराईआ। मैं हर हिरदा वेख्या पुरख अकाला किथ्थे वस्या, कवण कूटे डेरा लाईआ। किस किस नूं कलयुग माया डस्सणी डस्या, विख आपणा रूप बणाईआ। किस किस दा सगल वसूरा लथ्थया, सथर यारड़ा सेज हंढाईआ। कवण सुणे शब्द अनादी कथया, धुन आत्मक राग राग जणाईआ। कवण दुनिया दी धार टेके मथ्थया, कवण हिरदे हरिजू रिहा वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। नारद कहे चेत जी मैनूं आवे हासी, हस हस के दयां जणाईआ। ब्रह्मे नूं पुछ लै पंडता की तेरी कहिंदी राशी, राशी की जणाईआ। विष्नूं नूं पुछ लै किस बिध दुनिया दी मिटे तृष्ना प्यासी, भुक्खयां भुख गुआईआ। शंकर नूं पुछ लै किस बिध चुरासी विच्चों होवे खुलासी, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। राय

धर्म नूं पुछ लै कवण वेला मिटे उदासी, चिन्ता नज़र कोए ना आईआ। चित्रगुप्त तों लेखा तक लै की लहिणा दस्से हिसाबी, अक्खरां हिन्दस्यां अंकड़यां बाहर जणाईआ। लाड़ी मौत नूं पुछ शताबी, की लेखा दीन दुनी नाल बंधाईआ। की हुक्म देवे हक जनाबी, जनाबेआली की कहि के गया दृढ़ाईआ। कवण कवण कवण होवे अमदादी, इस दा कवण कवण कवण सहाईआ। झट नारद हस के किहा पहली चेत आह तक लै जो नानक संदेशा दे के आया विच बग़दादी, बग़लगीर आपणा आप कराईआ। जिथ्थे ना इश्क हकीकी ना मजाज़ी, जगत शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोए अक्खर विद्या दिसे किताबी, कुतबख़ान्यां दी लोड़ ना कोए वखाईआ। ना कोई सजदा ना बन्दना ना अदाबी, निव निव कोई ना लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म अगम्म वरताईआ। नारद कहे चेत जी मैं चार जुग दा पांधा, बिन अक्खरां विद्या दयां जणाईआ। मैं बिना जिह्वा तों गांदा, ढोले अगम्म अथाहीआ। मैं पुत बणया नहीं कदे किसे माँ दा, जननी गोद ना कोए टिकाईआ। मैं वणजारा नहीं सूर गाँ दा, मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। मैनूं इशारा सतिगुर शब्द दिता इक्को अगम्मे नाँ दा, नाउँ निरँकारा कहि के जिस नूं सारे गाईआ। मैं वणजारा
१४६७ बणया इक्को थाँ दा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। इक्को संदेशा सुण लै जिस दा बोल वाह वाह दा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। १४६७
२४ उह मालक थल अस्गाह दा, महीअल आपणा खेल खिलाईआ। जिस दो जहान वणजारा बणाया आपणे राह दा, रैहबर २४
बणया नूर अलाहीआ। जिस दा कलमा गाया पैग़म्बरां हक खुदा दा, खुद मालक इक अख्वाईआ। उस दा असूल माकूल बदलणा बन्दगी वाली दुआ दा, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। नारद कहे चेता, मैनूं नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग दा चेता, चेता तैनूं दयां कराईआ। कुछ मैथों पुछ लै भेता, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उह वक्त याद कर लै जो सतिगुर अर्जन इशारा दिता जिस वेले सीस पवाई रेता, तती तवी दए गवाहीआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला सब दा होणा नेता, निरवैर निरँकार निराकार हो के आपणा हुक्म वरताईआ। बेपरवाह अगम्म अथाह हो के नौ खण्ड पृथ्मी फिरे आपणयां विच खेतां, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। चेत कहे नारद मुनी, मुनीशरा कुछ अगला हुक्म जणाईआ। कवण हुक्म धुरदरगाह तों सुणी, अणसुणत की दृढ़ाईआ। कवण दाता वड गुण गुणी, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। नारद कहे चेत जी, उस दी अगम्मी धुनी, जगत साध समझ किछ ना पाईआ। उह संदेशा देवे हुण हुणी, यदी यदिप दयां दृढ़ाईआ।

जिस दे हुक्म विच लख चुरासी छाणी पुणी, पुण छाण कर थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। नारद कहे चेत जी, उह वेखो अवतार पैग़म्बर गुरु प्रभू दे दुआर, बंक दुआरी हो के सीस निवाईआ। बिना रसना जिह्वा बिना कलमे नाम तों करन जै जै कार, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिन तन वजूद शरीर झुकण सची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को इक दर्शन पाईआ। जिस दा रूप ना मूंड मुण्डाया ना सीस बध्धी दस्तार, तन वजूद ख़ाकी नज़र कोए ना आईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता सचखण्ड वसे जोत उज्यार, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे चेत जी, आह वेख मेरे कोल पुराणी लिख्त, लेखा चार जुग दे शास्त्र समझ कुछ ना पाईआ। जिस विच उह अगम्मा भविख्त, जिस दीआं पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को होवे इष्ट, इष्टदेव इक्को नज़री आईआ। जो सब दी अन्तर निरंतर खोल्हणहारा दृष्ट, इष्टदेव आत्मा आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा इशारा दे के गया राम वशिष्ट, विषयां तों बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१४६८ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। नारद कहे चेत कुछ लेखा सुण लै अगला, धुर १४६८
२४ दी धार विच्चों जणाईआ। प्रभू भेव खोल्हे सगला, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। उह दीन दुनी दा मानव वेखणहारा बपड़ा २४
बग बगला, बिन नैणां ध्यान लगाईआ । जिस दीन दुनी दी धार वेखणी पहाड़ जूहां जंगलां, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। जिस शरअ दे तोड़ने संगला, सगला संगी बहुरंगी इक्को नज़री आईआ। उह स्वामी ठाकर जग नेत्र कदे ना होवे अन्धला, अन्ध आत्म वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे चेत, सतिगुर शब्द की कुछ कहिंदा, कहि कहि की जणाईआ। जिस दा हुक्म सदा जुग चौकड़ी रहन्दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे हुक्म विच आदि जुगादि जुग चौकड़ी विष्न ब्रह्मा शिव बहन्दा, अवतार पैग़म्बर गुर बैठण सीस निवाईआ। जिस दा प्यार विच जीव जंत भाणा सहन्दा, सिर सके ना कोए उठाईआ। मैनूं इयों दिसदा उस दा झगड़ा पैणा कुछ दिशा लहिंदा, मुहम्मद दी आसा चार यारी नाल पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। नारद कहे चेत जी, मैं तैनूं कुछ दस्सां अगम्मी भाषा, जिस दी लिपी अक्खरां विच समझ किसे ना आईआ। जिस दा भाव जाणे ना कोए ख़लासा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जिस दी लभ्भे किसे ना शाख़ा, शनाख़त विच ना कोए समझाईआ। ना उहदी पहली ते ना उहदी दूजी कलासा, कलास

वन टू दा लेखा रहे ना राईआ। ना उहदा अंक लभ्भे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां वेखण कोए ना पाईआ। जिस दे हुक्म विच शंकर भज्जा फिरे उत्ते कैलाशा, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैनूं इयों जापदा इस सृष्टी उत्ते चढ़नीआं लाशां उत्ते लाशां, लशकर शाही आपणे रंग रंगाईआ। मैनूं उस उत्ते पूरा भरवासा, जो पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। जिस दीन दुनी दा सुभावक ही उलटा देणा पाशा, पेशतर आपणा भेव चुकाईआ। तांहीए चेत जी उहनूं कहिंदे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता कहि के सीस निवाईआ। मैनूं इयों जापदा उस धरनी धरत धवल धौल उत्ते आपणी अगम्मी पाउणी रासा, बिन गोपी काहन आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक वड्याईआ। चेत कहे नारद जी तुसीं बड़े पुराणे पांधे, पाँधीआ मैनूं दे समझाईआ। जुग चौकड़ी थक्के मांदे, बलहीण नज़री आईआ। जुग चौकड़ी आपणे वतन वक्त नाल जांदे, थिर रहिण कोए ना पाईआ। तुसीं वणजारे इक्को नाँ दे, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। क्यों कलयुग जीव रूप बणे काँ दे, काग वांग कुरलाईआ। क्यों वणजारे होए सूर गाँ दे, पशूआं खल्ल लुहाईआ। क्यों माण रहे नहीं किसे थाँ दे, थनंतर रोवण मारन धाहीआ। उहनां मार्ग लभण ना साचे राह दे, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। क्यों नहीं दर्शन हुन्दे उस बेपरवाह दे, जो घट घट रिहा समाईआ। जिस दे खेल थल अस्गाह दे, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे चेत जी, उह मालक अगम्म खुदा, खुदी सब दी वेख वखाईआ। जिस नूं कायनात समझया जुदा, जुज़ वखरा बैठे बणाईआ। निरगुण नूर दिलरुबा, रहमतां दा मालक इक गुसाँईआ। जिस दे अगे मुहम्मद कीती दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। या वज़ू माविस्ती नवा अर्शे ज़वा ज़लअम जगमे नवी फ़र्शे तलूह दो जहानां खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। नारद कहे, चेत्रा, उह स्वामी धुर दा तक, बिन नेत्रां नैण उठाईआ। जिस ने सब दा पूरा करना हक, हकीकत दो जहान नौजवान वेख वखाईआ । लख चुरासी अन्दरों कढणा शक्क, शिकवे सब दे दए गंवाईआ। कलयुग दा लेखा आपणे हुक्म नाल करना फ़क्क, दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। जिस नव सत्त जंगल जूह पहाड़ वेखणे ढक्क, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। उह वाहिद मालक इक्को यक, जो यके बाद दीगरे अवतार पैग़म्बरां गुरुआं आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दा इशारा देवे ईसा वालां कलाक, जगत घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जो बिना अवाज़ तों करे टक टक, टाक आपणी बिन अक्खरां रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। चेत कहे नारद

जी अज्ज बड़ा दिहाढ़ा चंगा, चंगी तरह जणाईआ। मेरा नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छे लँघा, लंगड़ा लूला हो के भज्जया वाहो दाहीआ। मैं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं करदयां वेख्या दंगा, जगत शास्त्रां नाल लड़ाईआ। प्रभ दे हुक्म दा वजदा वेख्या मृदंगा, तन वजूदां जो आपणे ढोले सुणाईआ। मेरा आदि जुगादी जुग चौकड़ी इक्को सतिगुर शब्द नाल संगा, सगला साथी इक्को इक नज़री आईआ। जिस ने भार उठाउणा आपणे कंधा, कन्ढी घाट बैठी वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जिस जुग जुग मानव ज़ाती पाईआं वंडां, हिस्से तन वजूद जणाईआ। दीन मज़्ब दीआं दे के गंढां, मोहर आपणा हुक्म वखाईआ। सब तों परे दस के आपणा दुआर ठण्डा, सचखण्ड साचा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ । झट कलयुग आ गया शताबी, मस्ती विच जणाईआ। दुनियादारो मेरा वेस नहीं कोई पंजाबी, पंजां ततां वाल्यां दयां जणाईआ। मैं करदा नहीं किसे नूं अदाबी, सिर सर ना कोए झुकाईआ। मेरा ना कोई जनाब ना जनाबी, जनाबे आहला कहि ना किसे नूं बुलाईआ। ना कोई घराना ना कोई मेरा महिराबी, चार दीवारी छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई मेरी नार ते ना मैं बणया कन्त सुहागी, दूलहा जगत ना कोए अख्वाईआ। मैनूं शर्म हया काहदी, काअबे वाल्यां देणा रुलाईआ। मैनूं हुक्म मिल गया सचखण्ड तों आदी, आदि पुरख दिता समझाईआ । कलयुग अन्त, बच्चू, सदी चौधवीं कर देणी ज़रूर बर्बादी, बदला चुक्के थांउँ थाँईंआ । ना कोई शाह रहे नवाबी, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। कलयुग कहे मैनूं खुशी होई डाहढी, डण्डावत बन्दना करन वाल्यो तुहानूं दयां समझाईआ । सब दा इक्को पुरख अकाल गाडी, जिस नूं गॉड कहि के मूसा ईसा सीस गए निवाईआ। उह ज़रूर वेखण वाला दीन दुनी दी आबादी, तके थांउँ थाँईंआ। जिस ने चार जुग दी खेल खेली दीन मज़्ब समाजी, समाजवादी इक्को धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ । झट सतिजुग आया सुण ओए कलयुग वीरा, पहला चेत गया आईआ। ओह तेरे विच्चों तेरी बदलण वाली तकदीरा, तदबीर प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। उस प्रभू दी बिना अक्खीआं तों तक लै तस्वीरा, जिस दी तस्वीर तसव्वर मुसव्वर कर ना कोए वखाईआ। जिस दा इशारा दे के गया कबीरा, कबरां तों बाहर दृढ़ाईआ। इक्को स्वामी अन्तरजामी गहर गम्भीरा, गवर इक अख्वाईआ। जिस लेखे लाया रवीदास दा कसीरा, कसम खा के दीन दुनी दए उलटाईआ। जिस प्रेम बणाया जट्ट छींबे नाई झीवर झीरा, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर इक सुहाईआ। नारद कहे चेत जी, उह दर केहड़ा, सज्जणा मैनूं दे दरसाईआ। जिथ्थे मिट जाए जगत शरअ दा झेड़ा, झगड़ा नज़र कोए

१५०० २४

ना आईआ। इक्को परम पुरख दा दिसे वेहड़ा, जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर बैठे इक्को ढोला गाईआ । सुहञ्जणा होवे खेड़ा, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। सारे कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। की हो गया जे सतिगुर शब्द हो गया शेरा, शहिनशाह आपणा रूप बदलाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां उत्ते करे मेहरा, मिहबान बीदो बीखैर या अलाह जिस नूं सजदयां विच सीस झुकाईआ। ज़लवे ज़ू अर्शे वज़हू तुनक्ख़ते ज़मम कलज़माए यज़वीउ नमाए नम्बाए वज़ी वज़ीउल ज़वा कनीउल गज़ा माफ़सते नाखसते जाऊको ज़वी शहिनशाहे अज़ी पातशाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा बंक इक वड्याईआ। चेत कहे नारदा जुग चौकड़ी संगीआ, सगला संग जणाईआ। केहड़ीआं केहड़ीआं मंगां मंगीआं, मैनूं दे सुणाईआ । नारद हस के किहा कई जुग चौकड़ीआं लँघीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। मैं बड़ीआं शरअ दीआं वेखीआं तंगीआं, तंगदस्त वेखी लोकाईआ। चोटीआं वेखीआं नंगीआं, ओढण सीस ना कोए रखाईआ। जलधारां वेखीआं गंगीआं, यमुना सरस्वती गोदावरी भज्जण वाहो दाहीआ। दीन दुनी दीआं अक्खीआं वेखीआं अन्धीआं, निज नेत्र प्रभ दा दर्शन कोए ना पाईआ। तन वजूद नूं शरअ दीआं होईआं कंधीआं, पाँधी बण के पन्ध
१५०१ ना कोए मुकाईआ। आह वेख लै बिना कलम शाही काग़ज़ तों गुरु अवतार पैग़म्बरां निरअक्खर धार पुरख अकाल दीन दयाल १५०१
२४ नाल कीतीआं संधीआं, जिस दा संदेश दे के गया गोबिन्द माहीआ । जिस दे सचखण्ड विच नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग २४
दीआं आशां टंगीआं, वेखणवाला नज़र कोए ना पाईआ। उह ज़रूर कलयुग अन्त खेल करे बहुरंगीआ, बिन रंगत रंग रंगाईआ। जिस लहिणा देणा नाल तारा चन्दीआ, सूर्या आपणा संग जणाईआ। जिस दे प्यार विच जन भगत वहाउँदे अंझीआं, हंझूआं हार बणाईआ। उह देवणहारा परमा नंदीआ, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जो आत्मा परमात्मा प्रीतां टुटीआं देवे गंढीआं, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। जो भगतां अन्तर निरंतर पावे ठण्डीआं, त्रैगुण अग्नी तत तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म हुक्म आप प्रगटाईआ। हुक्म कहे मैं सब दा मालक, बिन हुक्म तों नज़र किछ ना आईआ। आदि जुगादी सब दा ख़ालक, मख़लूक आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण धार पालक, पालणहार अगम्म अथाँईआ। जोती जाता इक्को इक संचालक, सति सच दा हुक्म इक वरताईआ । मेरा इक्को इक पिता मैं इक्को उस दा बालक, इक्को मेरी जणेंदी माईआ। जुग बदलणा मैनूं आदि जुगादी आदत, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। नाम कलम्यां बदलां अबादत, बन्दगी बन्दगी विच्चों प्रगटाईआ। साची वस्त दयां निआमत, बिन रसना रस चखाईआ। मैं सच दस्सां उस दे हुक्म विच आउण वाली क्यामत, कायम मुकाम रहिण कोए ना पाईआ। बिना

पुरख अकाल तों रहे ना कोई सही सलामत, असलामाअलेकम कहिण वाले पता नहीं किधर जावण मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव चुकाईआ। हुक्म कहे मैं धुर दा आया दौड़ा, भज्जया वाहो दाहीआ। पुरख अकाल मेरा इक्को लाया पौड़ा, पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। मैं हुक्म मन्नया ब्राह्मण गौड़ा, जिस दी ज़ात समझ किसे ना आईआ। जिस दा मार्ग सब तों सौड़ा, भीड़ी गली पार ना कोए कराईआ। मैं वेखणहारा फल मिट्ठा कौड़ा, लख चुरासी फोल फुलाईआ । धुर दे हुक्म विच अटका सके कोई ना रोड़ा, रोड़ी सक्खर पत्थरां ते लेट के नानक गया समझाईआ। जिस दा गोबिन्द गाया दोहरा, दादू दे देहुरे आया समझाईआ। जिस दी भेंटा कीता फ़तिह सिँघ ते ज़ोरा, जुझार अजीत रंग रंगाईआ। उस दा सुत दुलारा सतिगुर शब्द बांका छोहरा, नौजवान इक्को रूप दरसाईआ। जो पिच्छे होर अगे हो जाए होरा, होर दा होर रूप बदलाईआ। जिस दा हुक्म लख चुरासी कलयुग अन्तिम इक्को मिलना कोरा, जो कौरवां पांडवां नूं कृष्ण गया समझाईआ। किसे दे सीस उत्ते झुलणा नहीं चौरा, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी दा अन्तर होणा बौरा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

१५०२ खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे मैं धुर दी धार, धरनी वाल्यो तुहानूं दयां जणाईआ। मेरा इक्को १५०२

 पुरख अकाला यार, यारड़ा इक अख्वाईआ। जो सचखण्ड वसे सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस नूं सब २४

ने मन्नया परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। मैं उस दे हुक्म विच हुक्म हो के फिरां सदा जुग चार, जुग चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। जिस दे प्यार विच बद्धे पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी हो के वेख वखाईआ। मैं संदेशा देवण आया दीन दुनी संसार, संसारीओ जिज्ञासूओ सब नूं दयां जणाईआ। ओह कलि कल्की निहकलंका अवतार, अमाम अमामां नूर अलाहीआ। सब दे साहमणे बहि गया सम्बल धाम न्यार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले बणा लए दो चार, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। अन्दर वड़ दे मन्दिर चढ़ के तूं मेरा मैं तेरा दस्स के इक जैकार, जै जै कार दिती कराईआ। वेरवा रख्या नहीं कोई पुरख नार, बृद्ध बाल जवान वंड ना कोए वंडाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जो पावणहारा सार, महासार्थी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच ढोला इक सुणाईआ। चेत कहे जन भगतो इक्को ढोला गाउणा, गा गा खुशी बणाईआ। घर स्वामी ठाकर पाउणा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म सेजा खुशीआं नाल सुहाउणा, सुरती शब्द नाल समाईआ। जगत वासना डेरा ढाउणा, कल्पणा तन रहे ना राईआ। इक्को सतिगुर शब्द मनाउणा, पुरख अकाला इष्ट जणाईआ। पहली

चेत ना दिवस भुलाउणा, भुल्लयां मार्ग दए लगाईआ। जन भगतो तुहानूं सुत्तयां फड़ फड़ उठाउणा, फड़ बाहों गले लगाईआ। चार जुग दयो विछड़यो तुहानूं आप मिलाउणा, मेला हरि जगदीस कराईआ। सतिजुग दा साचा मार्ग लाउणा, सति धर्म दी साची धार प्रगटाईआ। दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाउणा, इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। चेत कहे भगतो आया वक्त सुहञ्जणा, प्रभ सोहणी दए वड्याईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, नर नरायण नूर अलाहीआ। सदा सुहेला दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। दर्शन देवे गोपाल मूर्त मदना, मधुसूदन खेल खिलाईआ। जिस लेखे लाउणा आहला अदना, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाईआ। जो इशारा दे के गया कसाई सधना, सदमे सब दे वेख वखाईआ। जिस झगड़ा मेटणा काया माटी बदना, तन वजूदां डेरा ढाहीआ। सब ने इक्को ढोला गीत गाउणा छन्दना, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नूर तेरा रुशनाईआ। इक्को साहिब करनी बन्दना, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। जो आत्म परमात्म देवे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। झगड़ा मेटे जेरज अंडना, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। माण देवे विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्डां पन्ध मुकाईआ। दुआर बंक वखाए सचखण्डणा, थिर घर आपणा रंग रंगाईआ। जिथ्थे ना कोई सूर्या चन्दना, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। जोती जाता पुरख बिधाता लाए आपणे अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। जिस गोबिन्द धार सब नूं पहनाया कंगणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पहली चेत कहे जन भगतो तन काया माटी रंगो, रंगत प्रभ दए चढ़ाईआ। चरण प्रीती साची मंगो, मांगत हो के झोली डाहीआ। दीन दुनी विच ना संगो, जगत शरअ शरअ ना कोए जणाईआ। भगत बण के दीन मज़्हब दी हद्द लँघो, बिन कदमां कदम टिकाईआ। आपणी जीवन जुआनी प्रभू प्यार विच हंढो, हयाती कमलापाती भेंट चढ़ाईआ। जे पिच्छे टुट गई, पहली चेत कहे, जन भगतो अज्ज गंढो, जो टुटयां गंढु पुआईआ। बिन जल धारा तुहाडे अन्दर देवे ठण्डो, ठण्डक इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। चेत कहे मेरे मित्रो बण जाओ भगत सुहेले, सईआ इक्को नज़री आईआ। सतिगुर शब्द नाल कदी कदी हुन्दे मेले, कदीम दे विछड़यो तुहानूं दयां सुणाईआ। कदी कदी मिल के बैहंदे गुरु चेले, चेले गुरु विच समाईआ। जिस प्रभू नूं भालण ख़ातर फिरदे जंगलीं बेले, टिल्ले पर्वत चोटीआं आसण लाईआ। मात पित भैण भ्रावां कोलों हो के वेहले, तन भबूतीआं ख़ाक रमाईआ। उन्हां नूं पता नहीं कदों मिले ते मिले केहड़े वेले, घड़ी पल समझ किसे ना आईआ। तुसीं इक छिन्न विच हुण अन्दरों इक सकिंट दीन

१५०३
२४

दुनी नालों हो जाओ वेहले, वेहलयो तुहाडा सुहेला तुहाडे अन्दर वड़ के आपणा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दरस इक वखाईआ। नारद कहे प्रभू मेरे कोल इक अर्ज़ी, आजज़ हो के सीस निवाईआ। वेखीं, कलयुग सतिगुरु ना बणीं फ़र्ज़ी, ततां वाला खेल खिलाईआ। निरगुण धार आपणी रखीं कोई ना ग़रज़ी, ग़रज़ भगतां पूर कराईआ। जे पिच्छे नहीं बणया पहली चेत तों बण जा भगतां दा दर्दी, दर्दीआं दर्द लैणा वंडाईआ। किसे नूं पोह ना सके शरअ दी छुरी करदी, कातिल मक्तूल दा डेरा देणा ढाहीआ। तेरी इक्को शरन लई नरायण नर दी, नरां दिआ मालका नरां नूं देणां तराईआ। पर याद कर लै बिना भगतां दी आत्मा तों तैनूं कदे नहीं कोई वरदी, जे भगत ना होण रंडया तेरी कीमत कोए ना पाईआ। वेख लै कलयुग कितनी दुनिया तेरे कोलों मूल नहीं डरदी, अवतार पैग़म्बरां गुरुआं दा भय ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया रूप बणी हड़् दी, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। हँ ब्रह्म धार जाणे ना कोए चेतन जड़ दी, सति दे मालक तेरे विच ना कोए समाईआ। मैं इक ख़बर दस्सां तेरे घर दी, गृह गृह दे मालक पर्दा देणा चुकाईआ। उह गल्ल चेते कर लै पिछला साल चेत पर दी, पुराणयां प्राणां तों बाहर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दर साचे मंग मंगाईआ। १५०४ २४
चेत कहे जन भगतो सुणो अगम्मी सो, सो पुरख निरञ्जण रिहा जणाईआ। इक विच इका रूप जावो हो, एका रंग समाईआ। आत्मा परमात्मा कदे ना समझो दो, दुवैती वंड ना कोए वंडाईआ। जेहड़े प्यार विच सतिकार विच हितकार विच इक वार सतिगुर दी चरण गए छोह, छोहर बांका आपणे रंग रंगाईआ। ओह दुरमति मैल दर आयां दी देवे धो, पापीआं पतित पुनीत बणाईआ। जगत वासना अन्दर वड़ के लए खोह, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जे भगतो तुहाथों नहीं मिटया ते सतिगुर हो के पंजां विकारां दा मेटे आप गरोह, पंजां ततां वाल्यो पंचम शब्द नाल जुड़ाईआ। तुसीं घर सुते होणा ते सतिगुर तुहाडे अन्दर वड़ के देवेगा लो, नैण तीजा आप खुल्हाईआ। तुहानूं इक्को काफ़ी सोहँ सो, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। दुनिया नालों दुनिया वाला तोड़ के मोह, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर दए वड्याईआ। चेत कहे जन भगतो मेरी सलाह अगे कदे नहीं जम्मी, जगत रूप ना कोए वखाईआ। जिस दा लेखा नहीं नाल काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी ना कोए रखाईआ। एह औगुणहार नहीं निकम्मी, निहकर्मण रूप ना कोए बणाईआ। इहनूं खुशी नहीं कोई ग़मी, चिन्ता चिखा ना कोए जणाईआ। इहनूं लालच नहीं कोई तमी, लोभ मोह ना कोए रखाईआ। जदों वेखो नवीं दी नवीं, नवें साल दी सब नूं मिले वधाईआ। फिर तुहानूं पुच्छया करनगे केहड़ा

सी अवतार चवी, चौबीसा जगदीसा कवण अख्वाईआ। पता नहीं नौ सौ नड़िंनवे करोड़ इस दे ज़रूर बणनगे कवी, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। एह पानहे गंढुदयां इशारा दिता सी रवीदास चमारे रवी, रम्बी आर सिर उत्ते रगढ़ाईआ। बिना ज़बान तों इक्को इक्को तुक गवी, गा गा गा आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब बेपरवाहीआ। चेत कहे जन भगतो तुहाडा पता नहीं किधरों साथी लभ्भया, बिन लभ्भयां बिन खोजयां खोजी बण के गया आईआ। मैं हैरान हो गया किस बिध मेल होया सब्बया, सहिज नाल मेला ल्या मिलाईआ। जिस नूं कहिंदे नूर अलाही रब्या, कुदरत दा कादर नूर अगम्म अथाहीआ। जिस ने प्यार विच हरि भगत दुआर विच तुहानूं सद्दया, संदेशे शब्द वाले जणाईआ। नाम खुमारी दे के मध्या, रस इक्को इक वखाईआ। धुन आत्मक राग दृढ़ा के नदया, नादी धुन दिती जणाईआ। जन भगतो अज्ज तों पुरख अकाल दा डंका वज्जया, धुर दे राम दा डौरु काहन हो सुणाईआ। जिस दा पैग़म्बरां बिना मक्के काअबे तों कीता हज्जया, अमाम अमामा नूर अलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक प्रगटाईआ। चेत कहे भगतो मेरा सम्मत शहिनशाही चढ़ गया बारां, इक
१५०५ दो नाल मिलके वजी वधाईआ। भगतो भगवान नाल सब तों वखरीआं बहारां, जगत दी बसन्त दए गवाहीआ। क्यों उह १५०५
२४ मित्र यार यारां दा यारा, यराना अगे ना कोए तुड़ाईआ। जदों वेखो तुहाडीआं आत्मां उस परमात्मा दीआं नारां, दूजा कन्त २४
होर ना कोए हंढाईआ। जगत वड्याई किसे कम्म नहीं आउँदी ना सोहवण तन श्रृंगारा, वस्त्र भूषन प्रेम ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक गुसाँईआ। चेत कहे जन भगतो मैं इक्को दस्सां मंत, मन्त्र दयां जणाईआ। प्रभ तों चंगा केहड़ा कन्त, जो जम्मे ते मर जाईआ। केहड़ा वड्डा पंडत, जगत पंडत अक्खरां करन पढ़ाईआ। तुहाडे नालों केहड़ी चंगी संगत, जिथ्थे चार वरन मिलके बैठे इक्को रंग समाईआ। सच प्यार दी तुहाडी पंगत, नाम रस चखणा चाँईं चाँईंआ। तुहानूं किसे दे अगे करन नहीं देणी मिन्नत, हथ्थ बन्न्ह ना वास्ता पाईआ। राय धर्म चित्रगुप्त कोई कर ना सके इलत, चुरासी सज़ा ना कोए भुगताईआ। तुहानूं लोड़ नहीं हुण करन दी हिम्मत, सतिगुर हो के तुहानूं आपणी गोदी लए टिकाईआ। आवण जावण जन्म मरन चुरासी दी मेटे चिन्नत, जगत दी चिन्ता चिखा विच्चों कढ के सचखण्ड दुआर दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दुआर इक सुहाईआ। नारद कहे भगतो मैं तुहाडे नाल करन वाला हासी, मसखरा हो के मख़ौल दयां उडाईआ। तुहाडी बिना भगती तों भगतो हो गई बन्द खलासी, बन्धन अगे रहिण कोए ना पाईआ। तुहानूं सतिकार

नाल अगे छड के आवे कैलासी, कला प्रभ आपणी दए वरताईआ। तुहाडा मालक ख़ालक इक्को शहिनशाह अबिनाशी, पातशाह धुरदरगाहीआ। जे तुसीं बण नहीं सके विश्वाशी, ते विशा आपणा तुहाडे अन्दर दए टिकाईआ। बेशक तुहाडा तन वजूद रक्त बूंद हड्ड नाड़ी मासी, जगत जहान नज़री आईआ। तुहाडे मन्दिर अन्दर इक जोत परकासी, जिस नूं सूर्या चन्द सीस निवाईआ। जो अन्त सब दी कर देवे बन्द ख़लासी, बिना बन्दगी तों बंदयो बन्धना विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। पहली चेत कहे सम्मत शहिनशाही बारां जी, की बारां रुतड़ी खेल खिलाईआ। सम्मत कहे सुण चेत मित्र प्यारा जी, मित्रा दयां सुणाईआ। जन भगत ख्वारा होणा की, ख्वार होवे ख़लक खुदाईआ । भगत उधारना प्रभ ने अज्ज तों धर्म दी रखी नींह, मार्ग दीन दुनी दृढ़ाईआ। ज़रूर सब दा लेखा मुकेगा साढे तिन्न हथ्थ सीं, रवीदास चमारा दए गवाहीआ। जो इशारा दे के गया गुरदास वीह इकीह, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे औह वेखो चार यार उम्मत दी चुक्की आउँदे डोली, मुर्दा मुरीद विच ना कोए समाईआ। औह
१५०६ वेखो गोबिन्द दी धार खेलदे आउँदे होली, होला खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। औह वेखो राम हनुवन्त कूक के पाउंदे १५०६
२४ आउंदे रौली, दो जहान सुणाईआ। औह तक लओ कौरव पांडव दी धार कृष्ण नाल बैठी उत्ते बौली, जलधारा वेख वखाईआ । २४
की इशारा देवे ईसा हौली हौली, सहिज नाल जणाईआ। मूसा किस बिध तके इकरार कौली, कोहतूर नाल रलाईआ । की कूक पुकारे धवली, धरनी धरत धौल की जणाईआ। सारे कहिण सदी चौधवीं की संदेशा देवे आपणी गोली, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। पहली चेत जन भगतां संग शब्द इक जणाए बोली, धुर दी धार दृढ़ाईआ। वायदा पूरा होवे कौली, इकरार नाल दृढ़ाईआ। सब दी खुशीआं वाली रुत होवे मौली, मौला मिले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा लँघण वाला पंजा, पंजां दरगाहां विच रहिण वाल्यो दयो जणाईआ। लेखा पूरा होण वाला जो गोबिन्द इशारा दिता कवी बवन्जा, बावन अक्खरी नाल मिलाईआ। जो संदेशा दिता कृष्ण सुणाया संजा, द्वापर वड वड्याईआ। जो मंग मंगी कौरव धार अन्धा, बिन नैणां नैण उठाईआ। कान्हा किस बिध कलयुग अन्तिम होवे धन्दा, धन्दूकार की जणाईआ। काहन हस के किहा बन्दगी वाला रहे कोई ना बन्दा, बन्धना विच होवे ख़लक खुदाईआ। अन्तर निरंतर होवे ना अनन्दा, अनन्दपुर वासी गोबिन्द भेव कोए ना पाईआ। निशान समझे ना कोए तारा चन्दा, नबी रसूल पर्दा ना कोए उठाईआ। पुस्तक पढ़ सके कोए ना पंडा, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ।

उस वेले सतिगुर शब्द दा अगम्मी होवे खण्डा, खड़गां तों बाहर चमकाईआ। जो पिछलीआं मेटे वंडां, अगे इक्को रंग रंगाईआ। एह कृष्ण ने खुशी नाल किहा उस दी निशानी सत्तरंग दा होवे डण्डा, डण्डावत सब दी दए बदलाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी होवे हंढा, हाण्डी सब दी फोड़ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाँईआ। पहली चेत कहे जन भगतो मैं सब नूं दयां वधाई, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। धन्नभाग जे तुसीं बण के आए राही, कदम कदम पन्ध मुकाईआ। तुहाडा अगे दा लेखा मुक्कया थल अस्गाही, जगत जहान लहिणा दिता चुकाईआ। जिस कारन गोबिन्द ने बूटा पछुट्टया काही, गुरसिखो तुहाडे अन्दरों कलयुग दी जड़ दिती उखड़ाईआ। तुहाडा इक्को पिता इक्को माई, इक्को सतिगुर शब्द जो सब नूं गोद लए उठाईआ। प्रभू दे प्यारे भगतो खुशी विच उठा दयो बाहीं, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। आत्मा परमात्मा आदि जुगादि सच्चा माही, महबूब हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार वरन अठारां बरन आत्म धार सारे भाई भाई, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। याद रख लओ पहली चेत सतिगुर शब्द प्रीती तुहाडी सुरती नाल लाई, लावां लैण वाल्यो लाइन

१५०७ आपणी लैणी बदलाईआ। तुहाडा प्रेम सतिजुग दी दए गवाही, शहादत सच वाली भुगताईआ। खुशीआं दा दिवस खुशीआं १५०७

२४ दी रैण खुशीआं दे ढोले गाई, गा गा शुकर मनाईआ। पहली चेत कहे जन भगतो प्रभू ने तुहाडी घाल लेखे लाई, जो २४

घायल हो के आए पन्ध मुकाईआ। तुहाडी दुरमति मैल धोवे छाही, शहिनशाह हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। पहली चेत कहे मैं सब दे निव निव लग्गां पाई, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। शहिनशाही सम्मत बारां धूड़ी ख़ाक रिहा रमाई, टिक्का इक्को मस्तक नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा सब दी पूर कराई, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर

मोता सिँघ शाम सिँघ दलीप सिँघ प्रताप सिँघ फुम्मण सिँघ दे गृह ✪

पंचम जेठ कहे जन भगतो सतिगुर सब दी पिठ्ठ ते लावे पंजा, पंजां ततां दा लेखा दए मुकाईआ। जन्म जन्म दा हरख सोग मेटे रंजा, रंजस अन्तर निरंतर दए गंवाईआ। वेखो झट हाज़र हो गया तेजा सिँघ गंजा, मथ्थे तिऊड़ी रिहा

वखाईआ। तेरा खेल तक्कया बिन मुहाणे वञ्झा, अथाह तेरी बेपरवाहीआ। तेरे प्यार विच पूरब पूरब लँघा, अगे लेखा देणा समझाईआ। मैं इक्को वस्त अगम्मी मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरा सिख रहे कोई ना भुखा नंगा, घर घर देणा रिज़क सबाईआ। किसे दा भाग होवे ना मंदा, मंदभागी देणे तराईआ। हरिजन चुकणे आपणे कंधा, कन्ढी घाट पार लँघाईआ। मैं दो जहान तेरा इक्को सुणदा आया छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सिफ्त सलाहीआ। बेशक तेरा तन वजूद बंदयां वरगा बन्दा, तेरी बन्दगी बेपरवाहीआ। मेरे मेहरवाना नौजवाना गुरमुखां अन्दरों तोड़ दे जिंदा, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। तूं मालक गुणी गहिन्दा, गहर गवर इक अख्वाईआ। मैं बेशक तेरी सिफ्त नाल करदा रिहा निंदा, आपणी खुशी बणाईआ। अन्तर आत्म तेरा तेरी बण गई बिन्दा, वृंदावन दा काहन नाल आया चाँईं चाँईंआ। आह वेख लै तेरा भलवान इन्द्र सिँघ छिन्दा, बल तेरे नाल वड्याईआ। साडी सदा लई खुल्ह गई निंदा, आलस रहिण कोए ना पाईआ। बेशक साडा तन वजूद शरीर नहीं कोई पिण्डा, इंड पिण्ड नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। पंचम जेठ कहे मेरा आया दिवस सुहञ्जणा, प्रभ सोहणी दए

१५०८ वड्याईआ। जन भगतां धूड़ कराए मजना, दुरमति मैल गंवाईआ। निज नेत्र निरगुण धार पावे अंजना, जोती नूर कर १५०८

२४ रुशनाईआ । जिस दा शब्द अनादी नाद वजणा, वजह सके ना कोए समझाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला दो जहानां २४

पार करा के हद्दना, हदूद आपणी इक दरसाईआ। जिस नूं कहिंदे गोपाल मूर्त मदना, सो स्वामी अन्तरजामी दया कमाईआ। जिस लेखे लाउणा आहला अदना, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा धरनी उत्तों कढणा, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां आत्म परमात्म नाता गंढणा, टुट्टयां लए जुड़ाईआ। इक्को नाम निधाना वंडणा, अतोट अतुट आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे मेरा सोहणा सुहञ्जणा कौल, इकरार दयां जणाईआ। मेरा जगत जहान तों बाहर दा बोल, अनबोलत राग दृड़ाईआ। मेरा स्वामी मेरे अन्तर गया मौल, मौला आपणा रंग रंगाईआ । जिस दे प्यार विच आ गया सिँघ बहौल, बिन कदमां कदम उठाईआ। उह सच प्रीती आपा गया घोल, घोली घोल घुमाईआ। ओहदा लेखा पूरा होया उत्ते धौल, धरनी हस हस खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। पंचम चेत कहे मैनूं सब दा आदि जुगादी चेता, चेतन सुरती नाल जणाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बरां खोलया भेता, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। साचा स्वामी इक्को होणा नेता, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दीनां मज़्हबां

पूरा करना ठेका, ठाकर हो के वेख वखाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी रूप अनेका, अकल कलधारी नूर अलाहीआ। ओह कलयुग अन्तिम वेखे त्रैगुण माया सेका, अग्नी तत खोज खुजाईआ। जन भगतां खोल्हे आपणा भेता, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पंचम जेठ कहे मेरा दिवस सुहावा, सोहणी खुशी बणाईआ। मैं इक्को पुरख अकाल दा ढोला गावां, गा गा रिहा दृढ़ाईआ। इक्को मालक ख़ालक ठाकर स्वामी रावां, दूसर संग ना कोए बणाईआ। इक्को दे चरण कवल बलि बलि जावां, बलिहारी बलिहार आपणा आप दरसाईआ। इक्को दी आसा आदि जुगादि रखावां, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जो मेरा लहिणा देणा पूरा करे नाल चावां, चाउ घनेरा इक वखाईआ। उसे दे प्यार विच बिना भुजां उठावां बाहवां, बिन हथ्थां हथ्थ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। पंचम जेठ कहे जन भगतो सब ने बणना जेठे सुत, सुत्यो लओ अंगड़ाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। जो भाग लगावे काया माटी बुत, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। जिस दे प्यार दी मौली रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। प्रेमीओ प्यारयो जगत दी धार लुट लओ लुट, लुटेरे बणना थांउँ थाँईंआ। किसे दा भाग ना जाए निखुट्ट, खोट्टयां खरे रिहा बणाईआ। हिरदे याद रखणा कोई लोड़ नहीं हिलाउणे बुल्ल्ह बुट्ट, रसना जिह्वा ना कोए चतुराईआ। तुहाडी प्रीती प्रभ नालों कदे ना जाए टुट्ट, टुटयां रिहा जुड़ाईआ । इक्को वार अज्ज दी रैण अमृत दे के जाए घुट्ट, बिन रसना रस चखाईआ। हर हिरदे प्रेम दी लहर जाए फुट, फुटकल दिसे ना ख़लक खुदाईआ। तन वजूद अन्दरों पए उठ, आपणी लए अंगड़ाईआ। किरपा निधान हो के रिहा तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। तुहाडे वेखे काया काअबे वाली गुठ्ठ, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। बेशक लख चुरासी विच्चों थोड़े मुठ, मुट्ठी आपणी विच बन्द कराईआ। जो पिछले जुगां दे गए रुठ, अज्ज सहिजे लए मिलाईआ। आत्म परमात्म बणा के जुट, जोड़ी हरि जगदीस वखाईआ। पंच विकारा अन्दरों कढ्ढे कुट, काया कुटीआ करे सफ़ाईआ। साची प्रीत बख्श अतुट, अतोट अतुट वरताईआ। सब नूं बन्न्हणे गाने प्रेम दे गुट, मुहम्मद आशा नाल मिलाईआ। पिछली रीती पिच्छे जाए छुट, छुटकी लिव लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। पंचम चेत कहे जन भगतो प्रभ देवणहारा दाता, दयावान अख्वाईआ । आदि जुगादी ब्रह्म ज्ञाता, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। जिस ने आपणा हुक्म पछाता, आपणे प्रेम नाल वड्याईआ । उह लेखा जाणे ज़ाता पाता, दीनां मज़्हबां खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म तके नाता, रिश्ता फरिशत्यां बाहर समझाईआ। जिस दा सब तों वखरा

खाता, अंकड़यां विच नज़र किसे ना आईआ। ओह भगतां पुछण आया वाता, वारस हो के धुर दा माहीआ। राती सुत्तयां करे बातां, बातन पर्दे आप खुल्हाईआ। जन भगतां बण के पिता माता, मातृ भूमी उत्ते दए वड्याईआ। लेखे लाउणी सब दी भिन्नड़ी रैण राता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। पंचम चेत कहे जन भगतो धर्म राय तों अज खुस गया सब दा खाता, भुलेखा अवर रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पंचम जेठ कहे सुण पंचम शब्द प्यारे, साजण सजणूआ दयां जणाईआ। आदि जुगादी तेरा लहिणा देणा सदा जुग चारे, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। तेरे वणजारे बणदे गए पैग़म्बर गुर अवतारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जगत दए गवाहीआ । भगत हुंदे गए तेरे सहारे, सन्तन आपणा रंग रंगाईआ। अगले खेल दस्सणे न्यारे, निरगुण हो के भेव चुकाईआ । जिस कारन तेरे सब ने दिते इशारे, बिन सैनत सैनत लगाईआ। तूं कलि कल्की अवतारे, निहकलंक नूर अलाहीआ । अमाम अमामा परवरदिगारे, पारब्रह्म तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा करनी घट घट अन्तर पाउणी सारे, महासार्थी हो के वेख वखाईआ। जेहड़े भगत तेरे तों बिना रहे कँवारे, आत्म परमात्म हरि करतार लैणी परनाईआ। पंचम चेत सम्मत
१५१० शहिनशाही बारां फेर नहीं आउणा दुबारे, नौ सौ चौरानवे चौकड़ी दा पन्ध अगला नज़री आईआ। मेरी इक्को आशा इक्को १५१०
२४ बेनन्ती मन्ज़ूर कर लै हाढ़े, हर हिरदयों दयां जणाईआ। मेरे स्वामीआं अन्तरजामीआं अज्ज रंगण रंग चाढ़ दे गाड़े, दो २४
जहानां उतर कदे ना जाईआ। जेहड़े अगे चार जुग सचखण्ड नहीं वाड़े, उहनां नूं अगे ला के खड़ना चाँई चाँईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला भगतां ने कीता नहीं कराए भाड़े, तेरे अगे मिन्नतां कर कर सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। जो नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों आ गए तेरे चरण कवल अखाड़े, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरगाह साची मुकामे हक दे हकीकत वाले बणा लए लाड़े, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईआ। पंचम जेठ कहे प्रभू जन भगतां अन्दरों मेट दे ग़मी, ग़मखार देणी मिटाईआ। किसे दी पिछली रहे मूल ना कमी, ऊणताई नज़र कोए ना आईआ। पवण स्वासी प्यारा बणना दमी, दामनगीर आप हो जाईआ। सब दा झगड़ा मेटणा दृष्टी चम्मी, समदृष्टी देणी समझाईआ। ओह आशा हुण पूरी करनी जो रख के गया सन्त मनी, सिँघ सिँघ तेरी ओट तकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दा हो जा तनी, सगले संगी आपणा संग बणाईआ। मैं बहु कुछ सुणदा रिहा चार जुग बिना सरवणां कन्नी, कायनात ध्यान लगाईआ। तुध जेवड अवर दिसे ना कोई धनी, धनाड नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंज

चेत कहे मेरे पंचम मीते, मित्रा दे वड्याईआ। याद कर लै कौल इकरार कीते, वायदे वाअदयां विच्चों नाल मिलाईआ। तेरे हुक्म विच जुग चौकड़ी बीते, जुग जुग गए पन्ध मुकाईआ। तेरे खेल तके त्रैगुण अतीते, त्रैभवण धनी तेरी वड्याईआ। तेरे लेखे वेखे मन्दिर मसीते, काअब्यां खोज खुजाईआ। तेरे सतिगुर शब्द दी धार अवतार पैग़म्बर वेखे जीते, पवण स्वास स्वासां नाल चलाईआ। तेरा नाम कलमा सुणदे पढ़दे रहे हदीसे, सिफ्तां विच सलाहीआ। अन्त इशारा दिता बीस बीसे, इक इकीसे गए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंचम चेत कहे भगतो आई रुत बहार, बसन्त लए अंगड़ाईआ। मिल्या यार यारां दा यार, जिस दी यारी बेपरवाहीआ। जो लहिणा देणा पूरा करे सदा जुग चार, चार जुग दा लेखा झोली पाईआ। उह निरगुण सरगुण खेल करे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी जिस नूं सीस निवाईआ। उह कलि कल्की निहकलंका अवतार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जो सब दी पैज रिहा सुआर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्को नाम ढोला दस्स के नाम जैकार, तूं मेरा मैं तेरा राग दृढ़ाईआ। आवण जावण लख चुरासी विच्चों कढ्ढके बाहर, जम दी फाँसी दए तुड़ाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को बख्शे सच्चा घरबार, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे बिन तेल बाती होए उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता डगमगाईआ। सचखण्ड निवासी सच सिँघासण कर तैयार, सचखण्ड देवे सुहाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला तुहाडी पावण आया सार, महासार्थी हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दे हुक्म विच दीन दुनी लख चुरासी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सारे करन निमस्कार, निव निव लागण पाईआ। उह इक इकल्ला सच महल्ला सम्बल बैठा धर्म दुआर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम चेत कहे जन भगतो किसे दी आशा रहे ना थुड़ी, थुड़े थिड़कयां दए वड्याईआ। साची रंगण चाढ़े गूढ़ी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। प्रभ दुआर भेव नहीं कोई मुण्डा कुड़ी, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। पंचम चेत कहे प्रभ मेरी भगतां नाल इक अरदास, मिल मिल के दयां जणाईआ। सद वसणा सब दे पास, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। बिना बेनन्ती पूरी करनी आस, आलस निंद्रा दूर कराईआ। हरि करनी बन्दखलास, बन्दी तोड़ तेरे हथ्थ वड्याईआ। एका नूर जोत होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। हर हिरदे बख्शणा विश्वाश, जगत विषयां तों बाहर कढ्ढाईआ। शब्दी सुरत पुआउणी रास, गोपी काहन आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां करना आप तलाश, खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। पंचम चेत

१५११
२४

कहे मेरा खुशीआं वाला मास, मस्त खुमारी नाम देणी चढ़ाईआ। तेरा भगत सुहेला कदे ना होए उदास, चिन्ता ग़म रहिण कोए ना पाईआ। इक्को रंग रंगाउणा जंगल जूह टिल्ले पर्वत प्रभास, समुंद सागर जल थल महीअल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम चेत कहे प्रभू मेरी बेनन्ती करनी कबूल, कामल मुर्शद दया कमाईआ। जन भगतां बख़्शीं चरण धूल, धूड़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। सति सच होवे असूल, नियम निरमाणता विच जणाईआ। हरिजन तेरा प्रेम करे कबूल, कबरां दा लेखा रहे ना राईआ। तेरा संदेशा होवे माकूल, मेहरवान देणा जणाईआ। हरिजन कोई ना जाए भूल, भुल्लयां मार्ग लैणा लगाईआ। तूं मालक ख़ालक कन्त कन्तूहल, हरि करता अगम्म अथाँईंआ। तेरा प्रेम पंघूड़ा भगत सुहेले लैण झूल, हुलारा दो जहान जणाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को कन्त कन्तूल, ख़सम ख़समाना नौजवाना श्री भगवाना इक अख्वाईआ। हरिजन उधारना तेरा खेल मामूल, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। पंचम चेत कहे प्रभू मेरी अख़ीरी आसा, आसा दयां जणाईआ। तेरयां भगतां तेरा होवे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। खुशीआं विच सारे करन हासा, हस्ती तक नूर अलाहीआ। तूं सब दा होणा दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जन्म कर्म दी बदलीं रासा, रस्ता आपणा देणा वखाईआ। तूं शहिनशाह शाहो भूप शाबाशा, पातशाह अगम्म अथाँईंआ। मेरी बेनन्ती कबूल करीं अरदासा, दुआ बेपरवाह तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट अन्तर तेरा होवे वासा, निवास अस्थान श्री भगवान जन भगतां गृह आपणा लैणा बणाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ रणजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

पंचम मीता हरि हरि सज्जण, हरि करता धुरदरगाहीआ। आदि जुगादी पर्दे कज्जण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जिस दे नाम दमामे दो जहान वजण, पुरी लोअ नाद नाद शनवाईआ। सो परमात्म आत्म धार कराए मजन, तन वजूद माटी ख़ाक लेखा रहे ना राईआ। जगत शरअ दी पार करे हदन, हद्दूद महदूद इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे नज़र आए कोई ना बन्दन, बन्दगी विच्चों इक्को सीस निवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म धार देवे अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। प्रकाश करे बिन सूर्या चन्दन, जोती जाता हो के डगमगाईआ। नाम सुणाए अगम्मा छन्दन, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र

कोए ना आईआ। हरि भगत सुहेले लाए अंगण, अंगीकार आप अख्वाईआ। दूजे दर जाण ना मंगण, किरपा करे धुर दा माहीआ। आवण जावण मेटे पन्धन, दरगाह साची आप टिकाईआ। जिथ्थे इक्को एकँकारा चाढ़े रंगण, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। हरिजन भाग ना होवे मंदन, मंदभागी लए तराईआ। लेखे ला के तत पंजण, पंचम दा मालक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। पंचम मीता हरि स्वामी, हरि करता धुरदरगाहीआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, घट घट वेखे धुर दा माहीआ। जो एथे ओथे संदेशा देवे सतिनामी, सति सतिवादी अगम्म अथाँईंआ। जिस दी मंज़ल अगम्म रुहानी, रूह बुत रंग रंगाईआ। नाद शब्द दए धुन्कानी, अनहद नादी राग सुणाईआ। अमृत रस निझर देवे ठण्डा पाणी, बूँद स्वांती कवल नाभी टपकाईआ। लेखा जाणे जीव जंत साध सन्त प्राणी, पूरन ब्रह्म पर्दा आप उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लहिणा देणा तके चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखा मुकाए जिस्म जिस्मानी, ज़मीर बेनज़ीर आपणे रंग रंगाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सुरजीत कौर दे नवित पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

पंचम कहे मेरा लेखा जगत अवल्ला, अवल अल्ला की दृढ़ाईआ। मैं वसां चौदां तबक दे बाहर महल्ला, मुहम्मद आशा रही जणाईआ। मेरा नूर ज़हूर इक इकल्ला, अकल कलधारी वड वड्याईआ। लहिणा देणा जाणां जलां थलां, महीअल पर्दा आप उठाईआ। जोती धार हो के अन्तर निरंतर निरगुण नूर रलां, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। शब्दी धार शब्द फड़ावां पल्ला, पलकां दे पिच्छे बहि के आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। पंचम कहे मेरा लहिणा देणा नाल जग, जागरत जोत जोत जगाईआ। मेरा मालक सूरा सरबग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो वसे उपर शाह रग, नव दुआर वेखण कोए ना पाईआ। कूड़ तृष्ना मेटे अग्ग, ततव तत ना कोए जलाईआ। ओहदा मेला हुन्दा नाल सबब, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। खोजयां सके कोई ना लभ्भ, बिन किरपा मिलण कोए ना पाईआ । जिस नूं कहिंदे नूर अलाही रब्ब, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। ओह वसणहारा भगतां दी हद्द, हदूद इक समझाईआ। जिथ्थे चेत सिँघ दी यद, यदी आपणा पर्दा लाहीआ। नाम खुमारी

बख्श के मदि, मधुर धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। पंचम कहे मेरा इक्को सगला संगी, हरिसंगत संग बणाईआ। जो सब तों वखरी रंगत चाढ़े रंगी, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जिस दी नाम सितार अजब सुरंगी, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी लँघी, सतिजुग त्रेता द्वापर बैठे पन्ध मुकाईआ। जो सूरबीर बहादर योद्धा जंगी, शत्रु छत्रधारी दए मिटाईआ। जिस दी नाम कटार कलयुग धार विच्चों होण वाली नंगी, पर्दा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा लेखा लहिणा दिसदा नाल फ़रंगी, फ़ारस दी खाड़ी दए गवाहीआ। जिस दी निरगुण धार ईसा नाल संधी, लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। उस दे हुक्म दी लाउण वाला पाबन्दी, पाबन्द करे ख़लक खुदाईआ। जिस नूं मुहम्मद मन्नया लहिणा देणा देवे यक शम्बी, वायदा आपणा हुक्म वरताईआ। जिस झगड़ा मेटणा प्रकृती पंझी, पंचम आपणा पर्दा लाहीआ। जिस दी हथ्थ ना आवे वञ्झी, मुहाणा सार कोए ना पाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ वासना कढ्ढे गंदी, अन्तर निरंतर करे सफ़ाईआ। प्रभू दा नाम जपाए बिना बुल्ल्हां दन्दी, रसना रस ना कोए चखाईआ। उह शरअ दी मेटण वाला कंधी, कन्ढी घाट बैठा डेरा लाईआ। आत्म
१५१४ परमात्म सब नूं बख्शणहारा अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। पंचम कहे सब ने गाउणा तूं मेरा मैं तेरा छन्दी, दूजा १५१४
२४ राग ना कोए अल्हाईआ। प्रभ दीन दयाल सदा बख्शंदी, रहमत सच देवे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी २४
किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे हुक्म विच आदि जुगादी जुग चौकड़ी लँघी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बीरा सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

पंचम कहे प्रभ मेट दूई दुवैत, पंजां ततां रंग रंगाईआ। वस्त नाम कर अनाइत, बख्शिश रहमत अगम्म कमाईआ। तेरे हुक्म दी इक्को होए रयाइत, सिर सके ना कोए उठाईआ। झगड़ा मेट दे शरअ शरायत, शरीअत आपणी इक समझाईआ। आत्म परमात्म कर हमाइत, हमसाजण हो के वेख वखाईआ। आदि जुगादी जुग चौकड़ी अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे मुताहित, बरदे बरखुरदार नज़री आईआ। सच प्यार दी नौ खण्ड पृथ्मी दस्स दे रहित, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। पंचम कहे प्रभ पवित्र कर दे तन वजूद ख़ाकी, मेहरवान मेहरवान दया कमाईआ । अमृत धार बण साकी, जाम अगम्मा इक प्याईआ। पूरब लेखा मुका

दे बाकी, अगे अवर ना कोए दृढ़ाईआ। चरण प्रीत जोड़ लै नाती, सरन बख्श सरनाईआ। तूं मालक धुर दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग बदल दे हयाती, जीवण ज़िंदगी आपणे विच मिलाईआ। झगड़ा मेट दे काग़ज़ाती, अक्खरां करे ना कोए लड़ाईआ। इक्को इलम दस्स सफ़ाती, सफ़ा हस्ती आपणे लेखे लाईआ। झगड़ा रहे ना दीन दुनी ज़ाती, अज़ाती डेरा देणा ढाहीआ। अठ्ठे पहर कर प्रभाती, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जन भगतां पुछ वाती, वारस हो के वेख वखाईआ। धुर दा नाम अन्तर निरंतर दे दे सौग़ाती, जगत झोली नज़र किसे ना आईआ। तेरी धार एकँकार जग नेत्र ना जावे पछाती, अक्खीआं वेखण किछ ना पाईआ। जन भगतां लहिणा देणा पूरा कर दे लोकमाती, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। अन्तष्करन बदल दे शांती, अग्नी अग्ग बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंच कहे प्रभ अन्तर निरंतर कर दे आपणा बोध, बुद्धी तों परे भेव चुकाईआ। मन मनसा दे सोध, सुदी वदी दा लेखा रहे ना राईआ। तूं ठाकर स्वामी जोधन जोध, सूरबीर इक अख्वाईआ। दूई दुवैत मेट विरोध, कलयुग विषयां बाहर कढ्ढाईआ। कल्पना कूड़ ना रहे क्रोध, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। तूं आदि जुगादी जोधन जोध, सूरबीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां चरण प्रीती बख्श दे साचा लोभ, जगत लालच दा अन्तर लेखा रहे ना राईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सज्जण सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✪

पंच कहे प्रभू जन भगतां अन्दर चाढ़ दे मस्ती, मस्तुआणे दा लेखा सिँघ मनी पूर कराईआ। अमृत धार प्रगटा दे लोड़ रहे ना गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती, तीर्थ तट किनारे वंड ना कोए वंडाईआ। एकँकारे परवरदिगारे सांझे यारे तेरी नज़र आवे हस्ती, हस्त कीटां पर्दा आप उठाईआ। काया धार तेरी भगतां वसदी होवे बस्ती, महल अटल इक जणाईआ। प्रीतम आपणी प्रीती बख्श दे सस्ती, पूजा पाठ लोड़ रहे ना राईआ। मन कल्पणा नौ दर फिरे ना नसदी, दिवस रैण भज्जे ना वाहो दाहीआ। सुरती शब्द नाल फिरे हस्सदी, तूं मेरा मैं तेरा खुशीआं ढोले गाईआ। हर हिरदे वड्याई होवे तेरे जस दी, सिफ्ती सिफ्तां नाल सालाहीआ। धार बख्श दे अंमिओं रस दी, अमृत अगम्मा आप चवाईआ। तेरी जोत अकालण आपणा मार्ग होवे दस्सदी, दिवस रैण भगतां भेव चुकाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ होवे नसदी, तन वजूदां रहिण ना पाईआ।

घड़ी सुहञ्जणी कर दे कलयुग रैण अन्धेरी मस दी, नूर नुराने आपणा चन्द चमकाईआ। तेरी खेल होवे अलखणा अलख दी, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। आपणी धार पगरटा दे प्रतख दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। पंज तत कहिण साडा प्रभ मेला होवे तेरे चरण, पंचम पंचम जोड़ जुड़ाईआ। बोध अगाधी बख्श दे सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। तेरा सोहला ढोला गीत भगत सुहेले सारे पढ़न, राग नाद जणाईआ। सुरती शब्दी पल्लू फड़न, आत्म परमात्म मिलके वजे वधाईआ। बिन पौड़ी डण्डे तेरी मंजल चढ़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तूं हारा भन्नण घड़न, समरथ अकथ तेरी बेपरवाहीआ। जन भगतां लेखा मुका दे चोटी जड़न, चेतन आपणे रंग रंगाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सब तेरे पूजन चरण, दरगाह साची मिलके वजे वधाईआ। जिथ्थे मरन तों बाद फिर ना होवे मरन, मर जीवत रूप बदलाईआ। तूं किरपा निधान करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन तेरी इक्को होवे सरन, सरनगति इक जणाईआ।

१५१६ १५१६

२४ २४

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर फुम्मण सिँघ दे गृह ✪

पंचम कहे मैं खुशीआं मंग मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरा आदि जुगादी पुरख अकाले सदा संगा, भगवन भगतां संग बणाईआ। मैनूं याद आ गया पिछला समां लँघा, बीती धार धार दृढ़ाईआ। जो इशारा दे के गया प्रेम नाल सिँघ रंगा, रंगत तेरी वेख वखाईआ। जिस कारन तेरा लेख लिखाया पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मनी सिँघ ने मन तों बाहर गाया छन्दा, धुर दी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। पंचम कहे प्रभू तेरा आदि जुगादी सच इन्साफ़, सहिज नाल जणाईआ। झट आशा निव के कहे मैनूं कर मुआफ़, हरनाम सिँघ जणाईआ। जो तिन्न वारी बचन कीते गुस्ताख़, गुस्सा जगत जगत जणाईआ। मेरे अन्तष्करन सब कुछ रिहा भाख, भेव रिहा ना राईआ। उह लेखा ख़त्म कर दे जो आखी मुख ज़बान नाल तेई बैसाख, जगत धार नाल दृढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा मेरी लेखे लग्गे ना राख, जगत तन रंग ना कोए चढ़ाईआ। मेहरवाना मैं आपणी ज़िंदगी विच नौ वार तेरे तन दी पाई पुशाक, नौ दर दा लेखा दे मुकाईआ। मेरा लहिणा देणा अगला करना साफ़, नाता भाईआं वाला तुड़ाईआ । क्यों मेरे सुत दुलारे तूं मेरा मैं तेरा करदे जाप, धुर दा ढोला गाईआ। तूं

निरगुण हो के आया आप, आपणा फेरा पाईआ। मेरी पुछ लै वात, वारस हो के हो सहाईआ। त्रैगुण तत रहे ना ताप, त्रैगुण अतीते देवीं माण वड्याईआ। दोहां दा इक्को जगत पिता बाप, इक्को तन वजूद वाली माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। पंचम कहे सतिगुर किरपा कर गुण निधाने, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। बंस सरबंस आप पछाणे, जग जीवण दाते दया कमाईआ। तेरे समें कदे ना होए पुराणे, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तेरा प्यार रूप बणे ना कदे बेगाने, दूई नज़र कोए ना आईआ। चरण कवल साचा दे माणे, सचखण्ड वासी आपणे रंग रंगाईआ। बेनन्ती कर परवाने, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मेरे लेखे ला लै पीणे खाणे, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुध बिन मेरी गत कोई ना जाणे, जानणहार इक हो आईआ। मैं तेरे प्यार दा बणया रिहा पहलवाने, कुशती जगत वाली रखाईआ। मेरी मुख चों बचन निकले नाल ज़बाने, रसना नाल सुणाईआ। उह तीर वजदे रहे काने, काएनात तों बाहर दयां दृढ़ाईआ। जे आ गयों धर्म दी धार कर बहाने, आपणा फेरा पाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरब रहे ना विच जहाने, जगत दा लेखा रहे ना राईआ। सदा मेरे खड़्हा रहीं सरहाणे, सिर तेरे कदम टिकाईआ। थिर घर बख्शणा इक मकाने, मुकाम आपणा देणा वखाईआ। सचखण्ड तेरा नूर तक नुराने, नूर ज़हूर देणा प्रगटाईआ। तुध बिन अन्त कन्त ना कोई पहचाने, बेपहचान होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे पंचम लेखे लगा सिँघ हरनाम, हरि हरि आपणे विच मिलाईआ। लेखा रिहा ना तन वजूद माटी चाम, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। जिस दा लहिणा देणा छुट्टया विच्चों पिण्ड घविंड ग्राम, साचे मन्दिर अन्दर मिले सरनाईआ। पूरब लहिणा झोली पाया तमाम, तमअ लालच ना कोए रखाईआ। किरपा करे आप अमाम, मेहरवान धुरदरगाहीआ। जिस नाम निधान प्याउणा जाम, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी पल्लू फड़ावणहारा दाम, दामनगीर बेनज़ीर इक हो आईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड सिधवां ज़िला अमृतसर मनी राम दे गृह ✪

गुडीआ कहे मेरे जगत नेत्र बन्द, अक्खीआं वाल्यो दयां जणाईआ। मेरे अन्तर उस साहिब दा अनन्द, जो अनन्द दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दा ढोला गावां बिन्हां बुल्ल्हां दन्द, रसना जगत ना कोए हिलाईआ। बिना सूर्या चन्द तों

चाढ़ आपणा चन्द, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस लेखे लाउणा मेरा तन शरीर बन्द बन्द, बन्दगी आपणी विच रखाईआ। मैं जगत कला दी धार विच पाबन्द, आपणी आसा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। गुडीआ कहे मैं चारों कुण्ट देख्या नाल ग़ौर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरा कर्म गया सौर, बिन जन्म तों जन्म मिली वड्याईआ। मेरा लेखा हो गया होर दा होर, अवर दी अवर कार भुगताईआ। भेव चुका के तोर मोर, मूर्ती दा लहिणा देणा मुकाईआ। मैं कूक पुकारां पावां शोर, सहिज सहिज नाल सुणाईआ। जन भगतां सब दी प्रभ दे हथ्थ विच डोर, जो मुरीदो मुर्शद आपणे रंग रंगाईआ। जिधर चाहे चारों कुण्ट विच्चों ओधर देवे तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। मैनूं दीन दुनी दा दिस्या अन्धेरा घोर, चारों कुण्ट चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्बां तक्कया खोर, पंज तत दे पुतले जगत करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ। गुडीआ कहे जन भगतो मैं आपणा सीना खोल्ह वखाया छाती, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिथ्थे वसे सब दा मालक कमलापाती, पतिपरमेश्वर डेरा लाईआ। बेशक तुहाडी स्वासां वाली हयाती, तन वजूदां सोभा पाईआ। मैं लकड़ी धार मेरा लेखा नाल मैटीरीअल धाती, धवल दे उत्ते रंग रंगाईआ। परमात्म मेरा आपणे
१५१८ चरणा जोड़े नाती, रिश्ता आपणे संग वखाईआ। मैं बिना ज़बान तों करां बाती, बातन रही जणाईआ। धन्नभाग मेरी प्रभ १५१८
२४ पुछी वाती, वारस हो के वेख वखाईआ। जिस दा खेल बहु बिध भांती, भेव समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप २४
हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। गुडीआ कहे भगतो मैं इक इक पैर पुट्टदी, सहिज सहिज नाल जणाईआ। ततां वाल्यो एह घड़ी सुहञ्जणी लुट दी, लुटेरयो नाम लुटणा चाँईं चाँईंआ। प्रभ दर्शन नाल जीव जंत धार कदे ना निखुटदी, खोट्टयां खरे दए बणाईआ। जिस कीमत पा लई मेरे बुत दी, बिन तन शरीर दिती वड्याईआ। तुहानूं बख्शिश दिती सच सुत दी, सुत्यो लओ अंगड़ाईआ। अज घड़ी सुहञ्जणी भगत भगवान दी रुति दी, रुतड़ी आपणे रंग वखाईआ। मैं वणजारन हो गई अबिनाशी अचुत दी, चेतन हो के रही सुणाईआ। जिस वेले मैं आवाज़ सुणी तूं मेरा मैं तेरा तुक दी, मेरा अन्तर निरंतर तुख्म ताअसीर गया बदलाईआ । मैं बिना सीस तों उस जगदीस नूं झुकदी, जो सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी धार आप समझाईआ। गुडीआ कहे जन भगतो तत शरीर आपणा तको, प्रभ सोहणी बणत बणाईआ। लोकमात पछाणो हको, हकीकत हकीकत खोज खुजाईआ। आपणा पर्दा प्रभ चरण प्रीती नाल ढक्को, ओढण इक्को सीस रखाईआ। सच सरनाई

बेपरवाह प्रभ दी ढठ्ठो, बिन कदमां कदम उठाईआ। सरनगति सरनाई इक्को ढठ्ठो, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। झगड़ा चुक्क जाए मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठो, गुरुदुआर चर्चा वंड ना कोए वंडाईआ। जो तुहाडे लेखे लावे तत अठ्ठो, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुद्ध आपणा संग बणाईआ। जिस दा नूर ज़हूर प्रकाश लट लटो, नूर नुराना डगमगाईआ। उह वसणहारा घट घटो, घट भीतर सब दे बैठा आसण लाईआ। भाग लगाए काया मट्टो, मटकी साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। उह सब दा मालक ख़ालक छींबे झीवर नाई ब्राह्मण जट्टो, जटा जूट दा लेखा रहिण कोए ना पाईआ। उस दी सरन सरनाई इक्को ढठ्ठो, जो ढहुयां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सर्ब कला समरथो, समरथ अकथ बेपरवाह अगम्म अथाह इक अख्वाईआ।

✪ ११ चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरि भगत दुआर जेठूवाल रात दे समें ज़िला अमृतसर
(कोठी उत्ते विसराम धाम ते) ✪

ग्यारां चेत कहे मैनूं याद बिकरमी उन्नी सौ अठताली, पूरब लेखा दयां सुणाईआ। कोई आयू नहीं बीती बाहली, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। मनी सिँघ प्रभ दे अगे बणया सुआली, बेनन्ती विच सीस निवाईआ। तेरी भगती कीती बाहली, दिवस रैण बिन रसना ढोले गाईआ। आपणा दरस दिखा दे जोत अकाली, पर्दा आप उठाईआ। तेरा घर वेखां सची धर्मसाली, धर्म दुआरा देणा जणाईआ। फल लगाउणा मेरी डाली, पत्त टहणी देणी महकाईआ। मेरा गृह रहे ना ख़ाली, भरपूर देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। ग्यारां चेत कहे मनी सिँघ वैराग विच वहाईआं अंझी, हंझूआं हार बणाईआ। आपणा छड के बिस्तरा मंजी, मिट्टी ख़ाक उत्ते रुल रुल के मारीआं धाहीआ। मैनूं प्यार नहीं प्रकृती पंझी, पंज तत ना कोए वड्याईआ। इक्को प्रीती तेरी लगदी चंगी, भावें मिट्टी ख़ाक विच रुलाईआ । निगहबान हो के लाउणा अंगी, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। मनी सिँघ लेट के उत्ते मिट्टी ख़ाक, आसण सोहणा ल्या बणाईआ। बिना अक्खां तों रिहा झाक, बिन नैणां नैण तकाईआ। आपणे घर दा खोल्ह के ताक, पर्दा दे उठाईआ। झट सतिगुर शब्द दा होया वाक्, वाकिफ़कार दिता कराईआ। नाल टाइम दस्सया ईसा वाले कलाक, कलाधारी तक धुर

दा माहीआ। जिस दे चरणां छुहाउणा आपणा नाक, धूड़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। ओह लहिणा देणा पूरा करे पिछला वाक, लेखा अगला पूर कराईआ। अस्व अगम्मे चढ़े राक, पवण पवणां वेख वखाईआ। बिना पाखर ज़ीन तों मारे पलाक, पलकां विच दो जहानां फिरे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। ग्यारां चेत थित मनी सिंघ नेत्रां वहाया नीर, विछोड़े विच कुरलाईआ। नक्क नाल कढ्ढी लकीर, लाइन दिती बदलाईआ। आपणे वस्त्र पाड़ के चीर, मिट्टी तन उत्ते रमाईआ। मैनूं ज़िबहा कर लै बिना शमसीर, तन वजूद लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। ग्यारां चेत कहे शब्द संदेशा आया पंज पंज दी धार, अंक पचवंजा दिता बणाईआ। पंजां ततां अन्दर पंजां शब्दां कीती धुन्कार, शब्द शब्द शब्द विच्चों सुणाईआ । मनी सिहां उठ वेख लै धुर दा यार, यराना तेरे नाल जणाईआ। जिस आउणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी जिस दी सेव कमाईआ। जिस नूं झुकदे पैग़म्बर गुर अवतार, जुग चौकड़ी सीस निवाईआ। जो सब नूं करे ख़बरदार, बेख़रां ख़बर सुणाईआ। आउण दा पंचम जेठ होणा उज्यार, पुरी घनक वजे वधाईआ। बिना

१५२० तेल बाती दीपक होए ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करे शनवाईआ। पचवंजा दिन करनी इंतज़ार, एह लेखा बेपरवाहीआ। ग्यारां १५२०

२४ चेत कहे मैं खुशीआं विच बण गया नचार, नच्चया टप्पया वाहो दाहीआ। अन्तर अन्तर कीती विचार, बिना विचरयां दयां २४

समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ । ग्यारां चेत कहे झट मनी सिंघ ने आपणे उत्ते होर ला लई मिट्टी, तन वजूद ख़ाक रंग रंगाईआ। जां नेत्र मीटे हाहे उत्ते दिसी टिप्पी, बिन अक्खां नज़री आईआ। जिस दी धार अगम्मी चिट्टी, जगत रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर आप सुहाईआ। ग्यारां चेत कहे मैनूं पंचम जेठ आउण लग्गा याद, मनी सिंघ अन्दरे अन्दर ध्यान लगाईआ। झुक के कीता आदाब, सीस जगदीस निवाईआ। झट अगे रूप दिस प्या सिंघ महताब, जो बिना महताबीआं करे रुशनाईआ। जिन्ह पंजा लाया उह मालक आवे पंजां दा विच पंजाब, पंज पंज नाल मिलाईआ। जिस दे प्यार विच नानक वजाई रबाब, तन्द सितार हिलाईआ। उहदा सब तों वखरा ख़िताब, ख़ता विच कदे ना आईआ। जिस भगतां करनी इमदाद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ग्यारां चेत कहे मैनूं पंज जेठ ने दोबारा दिता आख, आउण तों पहलां दिता सुणाईआ। मैनूं करनां मुआफ़, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। अजे विच्चों लँघणा महीना वैसाख, फिर

मैं आवां वाहो दाहीआ। मैनूं खुशीआं विच आउँदा हास, प्रेम दे ढोले गाईआ। पंचम जेठ कहे चेत जी मेरा जीअ करदा मैं तेरा देवां साथ, दोहां दा मेला इक्को गृह मिल के वजे वधाईआ। चेत किहा, पंज जेठ तुहाडा मालक अनाथां दा नाथ, पुरख समराथ बेपरवाहीआ। उहदे अगे जोड़ीए हाथ, जो अगले लहिणे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। झट मनी सिंहु कीता इशारा, सहिज नाल जणाईआ । मैं तक्कया अगम्म नज़ारा, बिन नेत्रां वेख वखाईआ। जोती नूर दिसे चमत्कारा, बिन तन वजूद रुशनाईआ। उह आवे विच संसारा, पंचम जेठ वाहो दाहीआ। फेर खेल करे अपारा, अपरम्पर आपणा वेस वटाईआ। कलि कल्की लए अवतारा, शब्दी डंक वजाईआ। ग्यारां चेत जिस वेले शहिनशाही सम्मत इक नाल इक मिल के आपणी बदल लई बहारा, भेव आपणा दए खुल्हाईआ। पंज जेठ तेरा चेत नाल पूरा होवे कौल इकरारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एसे कारन पंज चेत पंज चेत दी धार पंज जेठ बणाया लिखारा, लिखारीआं कलम शाही रंग चढ़ाईआ । इन्हां दोहां दे मिलण नाल जगत दी रीती विच बदल जाणी सब दी धारा, धरनी धरत धवल धौल नाल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप
१५२१ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। ग्यारां चेत कहे मेरी उन्नी सौ अठताली वाली रात, १५२१
२४ मनी सिँघ खुशीआं नाल बिताईआ। इक हस के कीती बात, पर्दा परदयां विच्चों खुल्हाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त खेल २४
करे आप, आपणा रंग रंगाईआ। बण के धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल आपणी गोद उठाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी करे लोकमात, मता अवर ना कोए जणाईआ। मेरा पूरब लेखा वेखे खात, बिन अक्खरां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ। मनी सिँघ किहा जिस वेले शहिनशाही सम्मत ग्यारां जावे आ, आपणा पन्ध मुकाए वाहो दाहीआ। शहिनशाही सम्मत बारां नूं चढ़े चा, जिस दा प्रविष्टा आपणी दए गवाहीआ। सब दा लहिणा देणा दए चुका, लेखा रहे ना राईआ। नौ वार इशारा कीता शहिनशाही सम्मत ग्यारां खेले खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। शहिनशाही सम्मत बारां विच पंज चेत पंज जेठ दा लेखा इक्को रंग दिता रंगा, ग्यारां दी धार नाल परनाईआ। मनी सिँघ दा लहिणा देणा दिता चुका, पूरब रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। शहिनशाही सम्मत बारां कहे मेरा प्रविष्टा चेत दा गया आ ग्यारां, इक इक संग लैणा बणाईआ। मैं प्रेम नाल दयां इशारा, सहिज सहिज सुणाईआ। लिखारीउ होणा हुशियारा, मनी सिँघ लिखारी तुहानूं रिहा समझाईआ। इक्ठे उठो सिँघासण ते चढ़ जाओ शब्द दा बोले जैकारा, खुशीआं

ढोले गाईआ। आपणे चरणां दी धूड़ सतिगुर नूं बख्शो छारा, जो टिक्के ला के खुशी बणाईआ। उह तुहाडा बणे भिखारा, भिक्ख्या मंगे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। लिखारीओ, आपणे चरणां दी दयो धूड़ी, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। जन भगतो रंगत चाढ़ो गूढ़ी, उतर कदे ना जाईआ। मनी सिँघ दी लिख्त होवे ना कूड़ी, सति सच देणी बणाईआ। ग्यारां चेत नूं जेहड़ी थल्ले विछाई फूहड़ी, पंज जेठ नूं एह वी हेठों देवे कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। ग्यारां चेत कहे, जन भगतो सतिगुर सतिगुर सतिगुर शब्द सदा ग़रीब, जुग जुग ग़रीबी विच आपणा झट लँघाईआ। जिस दा खेल सदा अजीब, भेव सके कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण देवणहारा तरतीब, तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दर दए वड्याईआ। मनी सिँघ कहे मेरे अन्तर आया वैराग, ग्यारां चेत दयां जणाईआ। परम पुरख वड वड करे भाग, भागहीण लए तराईआ। जोती दीप जगाए चराग़, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। हर हिरदिउँ बुझावणहारा आग, अग्नी तत गंवाईआ। फड़ फड़ हँस
१५२२ बणाए काग, माणक मोती नाम चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, १५२२
२४ सच दर दए वड्याईआ। मनी सिँघ तेरा लेखा हिसाब कीता पूरा, पिछला रिहा ना राईआ। अगे सच दी साची बख्शे तूरा, २४
तुरीआ तों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत दा दे के नूरा, दो जहान पर्दा लाहीआ। जन भगतां नाम करे मशहूरा, सिफ्त सिफ्ती ढोले गाईआ। जो आसा रखी मूसा उत्ते कोहतूरा, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि हाज़र हज़ूरा, हर घट अन्दर आपणा आसण लाईआ।

✪ १२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ लुध्याणा शहर गुरदेव सिँघ दे गृह ✪

बारां चेत कहे मोहे चाउ घनेरा, खुशीआं ढोले गाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले मेरा, मेहरवान महबूब धुरदरगाहीआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। इक्को रंग रंगाए गुरु गुर चेरा, चेला गुर आपणा रूप दरसाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेटे अन्धेरा, अन्ध अज्ञान गंवाईआ। मेहरवान हो के करे मेहरा, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दा नव नव चार पिच्छों होए फेरा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। इक्को रंग रंगाए सञ्झ सवेरा,

भगत वछल धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्तर निरंतर निज आत्म लाए डेरा, आसण सिँघासण पुरख अबिनाशण इक सुहाईआ।

✪ १२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ लुध्याणा शहर जुगिंदर सिँघ बग्गा दे गृह ✪

बारां चेत कहे मेरा संदेशा अगम्मी पात्र, पत्रका बिन अखरीं नज़री आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला धुर दा चातर, चातृक हरिजन वेखे थांउँ थाँईंआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी प्रभ होवे भगतां ख़ातर, ख़तरा दीन दुनी तजाईआ। कलयुग रैण मेटे अन्धेरी रातर, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। नाम निधाना दे के वस्त सच मातर, मन मति बुद्ध दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ, चेत कहे मेरा दिवस दिहाढ़ा बारां, निरगुण सरगुण मिल के वजे वधाईआ। इक दो दी अगम्मी धारा, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। किरपा करे पुरख अकाला परवरदिगारा, सांझा यार अगम्म अथाहीआ। भगत सुहेला बण के मीत मुरारा, साजण हो के

वेखे चाँईं चाँईंआ। लोकमात सति सतिवादी हो के पावे सारा, ब्रह्म ब्रह्मादी पर्दा आप उठाईआ। भगत वछल बण गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर बेनज़ीर धुर दा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप सची सरकारा, पातशाह शहिनशाह अगम्म अगम्मड़ा इक अख्वाईआ।

✪ १२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड कहेरू जिला संगरूर गुरभेज कौर दे गृह ✪

सतिगुर शब्द जन भगतां बख्श नाम खुमारी, अन्तर निरंतर आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बन्नू अगम्मी धारी, धर्म दी धार एकँकार परवरदिगार आप दृढ़ाईआ। भाग लगा महल अटल उच्च अटारी, तन वजूद हक महबूब आपणी दया कमाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, अन्ध अन्धेरा रहिण कोए ना पाईआ। शब्द धुन नाद दे सची धुन्कारी, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत बख्श अगम्मा ठण्डा ठारी, कलयुग अग्नी तत बुझाईआ। तूं शहिनशाह शाहो भूप सिक्दारी, दो जहानां मालक ख़ालक इक अख्वाईआ। तेरे हुक्म दी सारे करन दारी, ताब्यादारी विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

सतिगुर शब्द जन भगतां चाढ़ अगम्मा रंग, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म हो संग, सगले संगी बहुरंगी आपणा पर्दा दे उठाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दी साची मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां बख़्श दे आपणी मस्ती, नाम खुमारी दे चढ़ाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते वखा दे हस्ती, हस्त कीटां पर्दा आप उठाईआ। सच कहाणी जणा दे अकथना अकथ दी, जगत कथन दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरी खेल सदा पुरख समरथ दी, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। हरिजन आसा प्यासी इक्को वथ दी, वस्त अमोलक काया गोलक इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां कर मिलाप, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। भेव चुका दे आपा आप, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। तूं निरगुण निरगुण सब दा माई बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स दे जाप, रसना जिह्वा ढोला कहिण किछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर
१५२४ शब्द जन भगतां बख़्शे चरण धूड़ी, टिक्के धुर दे ख़ाक रमाईआ। अन्तर निरंतर वासना रहे ना कूड़ी, माया ममता मोह १५२४
२४ ना कोए हल्काईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह आदि जुगादि नूरी, नूर नुराना इक अख्वाईआ। सब दी लेखे लहिणे देणे २४
ला मज़दूरी, जो दिवस रैण तेरा नाम ध्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त ग़रीब निमाणयां आसा मनसा कर दे पूरी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, पन्ध मुकाए नेरन दूरी, दूर दुराडा हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ।

✪ १३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ धूरी शहर ज़िला संगरूर माधा सिंघ,
अमरजीत कौर, बलजीत सिंघ दलजीत सिंघ दे गृह ✪

धरनी कहे परवरदिगार मेरी दरोही, दो जहानां मालक ख़ालक तेरी ओट तकाईआ। भगत सुहेला जगत जहान दिसे कोई कोई, कोट कोटी कोटां विच्चों नज़री आईआ। कलयुग सृष्टी दृष्टी माया ममता विच मोही, मेहरवान महबूब तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। ग़रीब निवाज़े सुरती सुरत उठे ना सोई, शाह पातशाह शहिनशाह शब्द सितार ना कोए हिलाईआ। परम पुरख परमात्म मेरी तेरे अगे इक अरज़ोई, आरज़ू ख़ाहिश तम्मना तेरे चरण कवल टिकाईआ। आह तक लै मेरे उत्ते

अवतार पैग़म्बर गुरु दे के गए पेशीनगोई, पेशतर तेरा भेव खुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा मिले किसे ना ढोई, दर दुआर एकँकार सोभा कोए ना पाईआ। चार जुग दे शास्त्र बिन अक्खीआं रहे रोई, बिन नेत्र लोचन नैण नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख सुल्तान, शाहो भूप तेरी सरनाईआ। सचखण्ड निवासी होणा निगाहबान, बिन नैणां नैण उठाईआ। धर्म दा रहे ना कोए निशान, सति विच ना कोए समाईआ। सुरती शब्दी मेला होवे ना धुर दे राम, आत्म परमात्म तेरा रंग ना कोए रंगाईआ । चार कुण्ट कलयुग कूड़ फिरे शैतान, शरअ छुरी जगत हथ्थ उठाईआ। मैं वेख वेख होई हैरान, हैरत अन्दर मेरी तेरे अगे दुहाईआ। जिधर तकां जूठ झूठ फिरे शैतान, बिन कदमां भज्जां वाहो दाहीआ। तूं मालक मेरा मेहरवान, महबूब तेरी ओट तकाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं नाम संदेशे दिते पैग़ाम, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। तेरा लहिणा देणा धरनी धरत धवल धौल चुकावे आण, आप आपणा फेरा पाईआ। जिस नूं झुकणे ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सीस निवाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दे बाल नादान, नन्हे बच्चे निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रंग समाईआ। उह शाहो भूप शहिनशाह सुल्तान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख सुल्ताने, सति सतिवादी तेरी आस तकाईआ। किरपा कर गुण निधाने, गहर गम्भीर गवर मेरा लेखा पूर कराईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट निशाने, निशाना श्री भगवान आपणा इक समझाईआ। सतिजुग सति धर्म कर प्रधाने, नाम अमोलक अगम्म अथाह आप वरताईआ। मानस मानव मानुख आत्म धार तैथों रहिण ना बेगाने, परमात्म हो के आपणा रंग रंगाईआ। साचा मन्दिर काया अन्दर अगम्म दस्स अस्थाने, भूमिका इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे शब्द नाद तेरा सुणन धुन्काने, अनहद नादी नाद जणाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोत जगा महाने, नूर नुराने नूर ज़हूर दे वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा नाम कलमा इक्को गाए तराने, तुरीआ तों बाहर आपणा पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं आदि जुगादि दी तेरी मंगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। मानव ज़ाती गढ़ तोड़ दे हउमे हंगती, हँ ब्रह्म पारब्रह्म देणा समझाईआ। मेल मिलाउणा साची संगती, चार वरन अठारां बरन दीन मज़्ब ज़ात पात राउ रंक नज़र कोए ना आईआ। तूं बोध अगाधा बिना अक्खरां तों पंडती, निरअक्खर धार एकँकार देणी समझाईआ। आसा तृष्ना कूड़

मेटणी मन दी, मनसा मोह ना कोए हल्काईआ। शरअ शरीअत रहे कोई ना तन दी, वजूद महबूब हक देणा समझाईआ। शरन बख्शणी इक्को सतिगुर शब्द गोबिन्द सूरे चन्न दी, चन्द चांदनी कर रुशनाईआ। भेव खुल्लाउणा सृष्टी दृष्टी आत्म धार ब्रह्म दी, पारब्रह्म पर्दा आप उठाईआ। जगत वासना ख़ाहिश रहे ना चम्म दी, चम्म दृष्टी देणी गंवाईआ। पवण स्वास तकणी दम दी, दामनगीर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते किरपा कर महान, महिमा कथ कथ जणाईआ। तेरा इक्को नाम कलमा होए प्रधान, दो जहानां वजे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर ढोले गान, बिन रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। कलयुग क्रिया कूड़ मिटे निशान, मेरे उत्ते नव सत्त रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सच कर प्रधान, प्रधानगी इक्को हथ्थ फड़ाईआ। इक्को तेरी मंज़ल हकीकी चढ़न सिख मुस्लिम हिन्दू इक्को धर्म होवे ईमान, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी घट घट जाणी जाण, जानणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा पूरा करना मांगत हो के मंगां दान, साची भिच्छया धुर दी इच्छया धरनी धरत धवल धौल धर्म दी धार एकँकार परवरदिगार सांझे यार बिन हस्त कवलां बिन दस्त दस्तगीर बेनज़ीर लाशरीक मेरी झोली देणी पाईआ।

✪ १३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बरनाला शहर शाम सिँघ दे गृह ज़िला संगरूर ✪

धरनी कहे प्रभू मैं निमाणी धौल, धरत धवल हो के सीस निवाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पूरा कर दे कौल, इकरारनामा वेखणा चाँईं चाँईंआ। तूं बोध अगाधा बुद्धी तों परे अगम्मा रौल, जिस दी विद्या दो जहान समझ किसे ना आईआ। मैं आप आपणा तेरे चरण कवल घोली रही घोल, घायल हो के सेव कमाईआ । मेरे परम पुरख परमात्म मेरा भार कर दे हौल, सीस जगदीस बोझ रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते मैनूं कर अडोल, सांतक सति सति कराईआ। सच दुआरा एकँकारा अगम्म अगम्मे अगम्मा एका खोल्ह, ख़ालक ख़लक मख़लूक, आपणा रंग रंगाईआ। सति सतिवादी आपणा तोल तोल, तराज़ू नाम कंडा इक्को इक उठाईआ। सच दुआरा मेरे उत्ते खोल्ह, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को नाअरा बोल, अनबोलत देणा समझाईआ। निरगुण हो के सरगुण वसणा कोल, काया कुल्ली आपणा आसण लाईआ। पंच विकारा मेरे उत्ते करे ना घोल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण कोए ना पाईआ।

तूं पीआ प्रीतम मेरा सुंदर साँवल सौल, सांवरीआ तेरे अगे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू निगाह मार लै बिना नैणां, लोचन अक्ख दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं निमाणी जुग जुग तेरा भाणा सहणा, सह सह आपणी खुशी बणाईआ। तेरे हुक्म विच सच स्वामी रहिणा, अन्तरजामी दर तेरे सीस निवाईआ। तेरे चरण कवल धवल हो के बहणा, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। तूं निरगुण दाता मेरा साक सैणा, सज्जण इक अख्वाईआ। उह लेखा पूरा कर दे जो बाल्मीक लिख्या बाहर रमायणा, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। तेरा प्यार ना रहे त्रफ़ैणा, तरफ़दारी वंड ना कोए वंडाईआ। सज्जण सुहेला इक इकेला बणना साक सैणा, मित्र प्यारा मीत इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा तक लै आप, दूसर ओट ना कोए तकाईआ । तूं आदि जुगादी धुर दा बाप, तुध बिन जम्मण वाली कोए ना माईआ। तेरा एथे ओथे दो जहानां प्रताप, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। मैं कूक पुकारां धरनी धवल लोकमात, धौल हो के दयां दुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरे उत्तों मेट अन्धेरी रात,

१५२७ सतिजुग साचा चन्द करना रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, पतिपरमेश्वर होणा आप सहाईआ। इक्को संदेशा फरमाना १५२७

२४ दे दे लोकमात, पत्रका आपणी देणी जणाईआ। मेरे भगवन्त अन्त कन्त पुछ मेरी वात, भगवन हो के वेख वखाईआ। सच २४

प्रीती चरण कवल जोड़ आपणा नात, रिश्ता फ़रिशत्यां बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू निरगुण धार ला लै अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। मेरी सेज सुहा पलँघ, बिना पावा चूल दे वड्याईआ। बिना बाडीआं चाढ़ दे रंग, रंगत उतर कदे ना जाईआ। सदा सुहेले वसणा संग, संगी बहुरंगी आपणी दया कमाईआ। मैं निमाणी हो के मंगां मंग, कोझी कमली ख़ाली झोली देणी भराईआ । मेरे उत्ते सतिजुग त्रेता द्वापर गए लँघ, कलयुग अन्तिम वेला गया आईआ। तेरे कोल सब तों वखरा अनोखा ढंग, तेरा भेव कोए ना पाईआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवाना मेरे उत्ते वजा मृदंग, दो जहानां कर शनवाईआ । कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों कढ मलंग, चार कुण्ट लेखा देणा मुकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे यमुना सरस्वती गोदावरी गंग, गंगोत्री बैठी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे महबूब नौजवान, मिहबान तेरी सरनाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, बेऐब नूर अलाहीआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। मैं बाली बुद्ध अञान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। नौ खण्ड मेरे

वेख शरअ होई शैतान, सति विच ना कोए समाईआ। नव सत्त बेईमान, बेवा रूप दिसे ख़लक खुदाईआ। कायम रिहा ना धर्म ईमान, अमल हक ना कोए कमाईआ । तूं सतिगुर दाता मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरी वड्याईआ। सति धर्म दा मेरी झोली पा दे दान, वस्त अमुल अतुल आप वरताईआ। लहिणे देणे लेखे पूरे कर दे जो सीआ नूं कहि के गया राम, राधा कृष्ण गया समझाईआ। जो पैग़म्बरां दिते पैग़ाम, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। जिस कारन निरगुण निरगुण मन्त्र चलाया सतिनाम, मन्त्र सति सच समझाईआ। जिस धार विच्चों गोबिन्द फ़तिह डंक वजाया आण, फ़ात्या करना ख़लक खुदाईआ। इक्को तेरा हुक्म होवे ज़िमीं असमान, ज़िमीं ज़मा दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं बाल अञ्याणी तेरी चरण धूड़ी ख़ाक आई रमान, बिन मस्तक लवां छुहाईआ। परम पुरख परमात्म मेरी बेनन्ती कर परवान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर रही सुणाईआ। मेरा संदेशा कोई सुण सके ना सरवण कान, तन वजूदां समझ किछ ना पाईआ। तूं आदि जुगादी जाणी जाण, जानणहार तेरी वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक रहीम रहमान, मेहरवान इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
१५२८ तुध बिन मेरी करे ना कोए पहिचाण, बेपहचान मेरा लहिणा पूर देणा कराईआ। १५२८

✪ १३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ संगरूर शहर हरबंस सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सदा दयालू, दीन दयाल दया निध ठाकर इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणे कृपालू, किरपा निध नौजवान श्री भगवान बेपरवाहीआ। जिस दा खेल जुग चौकड़ी बेमिसालू, मिसल असल सके ना कोए समझाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा फ़रमान कलयुग अन्तिम होवे चालू, चार कुण्ट दहि दिशा हो के वेख वखाईआ। जो लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्त संभालू, सम्बल दा मालक इक्को हुक्म वरताईआ। जिस दा संदेशा दे के गया नानक सुत कालू , अकल कल धारी परवरदिगारी सांझा यार नूर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द दयानिध ठाकर, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादि गहर गम्भीर गुणवन्ता वड सागर, तट किनार नज़र कोए ना आईआ। जो नाम निधाना विच जहाना इक वणज कराए बण सौदागर, सच वस्त बिन दस्त आप फड़ाईआ। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दरमत मैल अन्तर निरंतर तन वजूदां करे आप सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ।

दीन दयाल प्रभू सच स्वामी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण होवे अन्तरजामी, अन्तष्करन वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जो आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म नाता जोड़े बाहमी, ईश जीव जगदीश आपणा रंग रंगाईआ। जो नित नवित सदा सदा होवे निहकामी, निहचल बैठा आसण लाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग मेटे रैण अन्धेरी शामी, शमअ नूर नूर जोत करे रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन मानव ज़ाती कूड़ी क्रिया लाहे गुलामी, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। एका बख़्शे गुणवन्ता नाम गुण निधानी, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर खेल करे महानी, महिमा कथ कथ सुणाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूंद स्वांती देवे पाणी, नाभी कवल कवल उलटाईआ। शब्द नाद धुन आत्मक बख़्शे सच धुन्कानी, मधुर धुन आप जणाईआ। दीआ बाती कमलापाती जोत जगाए नुरानी, नूर नुराना नौजवाना शाह सुल्ताना इक्को नज़री आईआ। मेरा लहिणा देणा लेखा वेखे जगत जहानी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी फोल फुलाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवानी, बलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। मेहरवान महबूब हो के सच करे मेहरवानी, महिबान बीदो आपणा खेल खिलाईआ। इक्को मंज़ल हक दस्स रुहानी, रूह बुत दा पर्दा दए चुकाईआ। झगड़ा मेटे जिस्म जिस्मानी, ज़मीर बेनज़ीर अन्दरों दए बदलाईआ। शाहो भूप बण सुल्तानी, सतिगुर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। सतिगुर दीन दयाल सदा दुःख भंजन, भव सागर पार कराईआ। जन भगतां धूड़ी चरण कराए मजन, दुरमति मैल अन्दर बाहर रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म बणे सज्जण, सगला संगी बहुरंगी इक अख्वाईआ। नेत्र नाम निधाना पावे अंजण, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। दीन दुनी दी पार कराए हद्दन, हदूद आपणी इक दरसाईआ। जिथ्थे दीपक जोती बिन तेल बाती जगण, कमलापाती निरगुण धार करे रुशनाईआ। हरि भगत सुहेले सच प्यार विच करे मग्न, नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक वखाईआ। सतिगुर दयाल आदि जुगादि, जुग चौकड़ी दया कमाईआ। जिस दा लहिणा देणा ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड वेखे चाँईं चाँईंआ। जो निरगुण हो के सरगुण देवे दाद, वस्त अमोलक नाम निधान अगम्म वरताईआ। जिस नूं रसना जिह्वा अन्तर निरंतर सारे रहे अराध, सोहले ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला मोहण माधव माध, मधुर धुन दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आदि अन्त जुगा जुगन्त बिन अक्खरां वाली याद, हरफ़ हरूफ जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ।

✪ १४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सुरिंदर कौर दे गृह पिण्ड छोटा कमो माजरा ज़िला संगरूर ✪

सतिगुर शब्द कहे धुर हुक्म सची सरकारा, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद चलया आईआ। सो पुरख निरञ्जण देवणहारा मीत मुरारा, हरि पुरख निरञ्जण पर्दा ओहला आप चुकाईआ। एकँकार सद पावणहारा सारा, आदि निरञ्जण बोध अगाध करे जणाईआ। अबिनाशी करता वेखे विगसे वेखणहारा, श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान आपणा भेव चुकाईआ। पारब्रह्म पष्तिपरमेश्वर पावे सारा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द लहिणा देणा जाणे सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। पूरब लेखा तके पैग़म्बर गुर अवतारा, चार जुग दे शास्त्रां खोज खुजाईआ। शाहो भूप बण वड सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जाता हो के होए ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल वरताईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेटे पसारा, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। सति सच दए अधारा, धर्म दी धार इक समझाईआ। चार वरन अठारां बरन किरपा करे आप निरँकारा, निरवैर हो के वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लेखा जाणे जीव जंत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण लै अवतारा, अवतरी हो के वेख वखाईआ। जिस दा लेख
१५३० कागद कलम ना लिखणहारा, जगत विद्या अक्ल बुद्धी भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १५३०
२४ कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द खेले खेल बहु बिध भांती, भेव अभेद समझ किसे २४
ना आईआ। कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरी राती, रुतड़ी धुर दे हुक्म नाल महकाईआ। सतिजुग साची सच करे प्रभाती, सँध्या लेखा रहे ना राईआ। दीन दुनी झगड़ा मेटे काग़ज़ाती, शरअ शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म जोड़े साचा नाती, ईश जीव जगदीश भेव आप खुल्हाईआ। किरपा करे हरि कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जन भगतां अमृत बख्शे बूँद स्वांती, निझर झिरना आप झिराईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करे लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त निरगुण हो के पुछे वाती, सरगुण आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहार अगम्मी दाती, नाम निधाना नौजवाना श्री भगवाना सृष्टी दृष्टी अन्दर आप टिकाईआ।

✪ १४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ दलीप कौर दे गृह पिण्ड सुनाम ज़िला संगरूर ✪

धरनी कहे धर्म दी धार बख्श दे धूड़ी, टिक्के नाम ख़ाक पाकी पाक दे लगाईआ। दीन दयाल दयानिध मेरे उत्तों

कल्पना मेट दे कूड़ी, कूड़ कुड़यार जगत बुरयार विच संसार रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी चतुर सुघड़ बणा दे मूर्ख मूढ़ी, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म दर तेरे ओट तकाईआ। निरगुण सरगुण साची रंगत चाढ़ दे गूढ़ी, नव सत्त ब्रह्म मति ततव तत उतर कदे ना जाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान सतिगुर शब्द इक्को मेरे उत्ते करे मशहूरी, मशवरा तेरा तेरे नाल रखाईआ। नाम खुमारी एकँकारी परवरदिगारी दे सरूरी, सुरत अकाल मूर्त आपणे नाल मिलाईआ। दीन दयाल दर्द दुःख भय भंजन तेरा दर्शन होवे हज़ूरी, हज़रतां दे मालक खलक दे ख़ालक नूर नुराने नूर देणा चमकाईआ। आत्म परमात्म पन्ध मुका दे नेड़ दूरी, मंज़ल मंज़ल आपणा भेव खुल्हाईआ। मेरी आसा मनसा अन्त कन्त भगवन्त कर दे पूरी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान सर्ब कला भरपूरी, समरथ अकथ अगम्म अथाह इक अख्वाईआ। जल्वागर नूर नुराने आसा मनसा वेख लै जो आशा रखी कोहतूरी, मूसा मुसलसल की गया दृढ़ाईआ। जिस कारन ईसा तेरा जल्वा तक्कया नूरी, बिन नेत्र लोचन नैण दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा तक लै जग, जागरत जोत बिन वरन गोत ध्यान लगाईआ। मेरे शाहो भूप सरबग, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। तेरी सृष्टी दृष्टी विच्चों तेरे नालों होई अलग, आत्म परमात्म तेरे रंग ना कोए समाईआ। मानव ज़ाती हँस बणी कग, क्रिया कूड़ नाल हल्काईआ। पंच विकारा घर घर लग्गी अग, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना मेरी इक्को इक मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। हरिजन भगत सुहेले ला लै अंग, अंगीकार आप इक अख्वाईआ। मानस जन्म होण ना देणा भंग, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सुखआसण इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे तेरे नाम दा वजे मृदंग, अनहद नादी नाद शनवाईआ। अमृत रस मिले बिना सरस्वती गंग, गोदावरी लोड़ रहे ना राईआ। सच दुआरा एकँकारा इक्को लँघ, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मैं कलयुग अन्त श्री भगवन्त होई तंग, तंगदस्त दिसे लोकाईआ। घर घर तेरे नाम दी होई भुख नंग, सच वस्त ना कोए वरताईआ। किसे भेव खुल्ल्हे ना ब्रह्म हँ, पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। मेरे उत्ते सतिजुग त्रेता द्वापर पिच्छे गया लँघ, कलयुग अन्तिम लहिणा दे चुकाईआ। कूड़ कुड़यारा मेरे उत्तों मेट दे जंग, बिन शस्त्रां शत्रुआं कर सफ़ाईआ। तेरे नाम दा नौ खण्ड पृथ्मी वजे इक मृदंग, ढोला सोहला इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरे जगदीसे, जगदीश्र तेरी सरनाईआ। निरगुण धार अवतार चौबीसे, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। लहिणा देणा तक लै बीस इकीसे, अकल कलधारी पर्दा आप उठाईआ। धुर हुक्म

१५३१
२४

दीआं वेख हदीसे, जो हज़रतां गया जणाईआ। लहिणे देणे तक लै राग छतीसे, शहिनशाह हो के वेख वखाईआ। ताज रिहा किसे ना सीसे, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। कलयुग क्रिया कूड़ सब ने नशे पीते, पीत पीतम्बर सीस ना कोए टिकाईआ। सब दे लहिणे देणे पूरे कर जो कौल इकरार कीते, वायदे वाअदयां विच्चों वेख वखाईआ। पैग़म्बरां दे समें मेरे उत्ते बीते, पिछले लेखे रहे मुकाईआ। दीन दुनी दी तक लै निरगुण धार नीते, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मेट दे मन्दिर मसीते, काया काअबा इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दीन दुनी गाए गीते, गीत गोबिन्द इक दृढ़ाईआ। सब दा अन्तर निरंतर पवित कर पतित पुनीते, दुरमति मैल रहे ना राईआ। हरिजन कर दे ठांडे सीते, कलयुग अग्नी अग बुझाईआ। जन भगतां सदा वसणा चीते, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। सति सतिवादी बणना मीते, मित्र प्यारे आपणा भेव चुकाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग विच्चों सतिजुग धर्म दी बदल दे रीते, रीतीवान तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोटि जुग चौकड़ी मेरे उत्ते बीते, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ।

✪ १४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड छांजला ज़िला संगरूर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती चौदां चेत, चौदां लोक चौदां तबक चेतन सब नूं दे कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर अवतार पैग़म्बर गुर इक्को दस्स हेत, हितकारी एकँकारी परवरदिगारी हो के दया कमाईआ। निज आत्म परमात्म नज़र आवीं नेतन नेत, नर नरायण भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। तेरा लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरा खेल वेख लै लख चुरासी खेत, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश फोल फुलाईआ। परवरदिगारे सांझे यारे तुध बिन खोल्हे कोए ना भेत, पर्दा पारब्रह्म ब्रह्म सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख कृपाले, किरपा निधान तेरी सरनाईआ। दीनां बन्दप दीन दयाले, दयानिध तेरी वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरी घालण रही घाले, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणी सेव कमाईआ। पतिपरमेश्वर तुध बिन मेरी सुरत ना कोए संभाले, सम्बल दे मालक सगला संग ना कोए निभाईआ। मेरा लहिणा देणा अवतार पैग़म्बर गुर कर के गए तेरे हवाले, अहिवाल अवर ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरे दुरमति मैल दाग़ धो दे काले, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ।

इक्को नाम निधाना श्री भगवाना दस्स दे सुखाले, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हो के पर्दा लाहीआ। त्रैगुण माया त्रैगुण अतीते त्रैभवण धनी तोड़ जंजाले, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। सच दुआरा विच संसारा इक दिसा सची धर्मसाले, दूसर नज़र कोए ना आईआ। फल लगा दे मेरे चुरासी वाले डाले, पत्त टहणी सर्ब दे महकाईआ। मेरी इक्को बेनन्ती इक सवाले, मनसा इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा पूरा कर दे लेखा, लिख्त भविख्त नाल मिलाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे मुला शेखा, मुसायकां लहिणा देणा चुकाईआ। इक्को इक अगम्म अगम्मड़े मेरे उत्ते दे संदेशा, सँध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मालक नर नरेशा, नर नरायण नूर अलाहीआ। जुग बदलणा तेरा पेशा, पेशीनगोईआं विच अवतार पैग़म्बर गुरु गए दृढ़ाईआ। तूं आदि जुगादि सदा रहें हमेशा, हमसाजण इक अख्वाईआ । तैनूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, गणपति बैठा सीस निवाईआ। मैं चाहुंदी मेरे उत्तों क्रिया मेट कल कलेशा, कलि कल्की तेरे अगे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक होणा सहाईआ।
१५३३ धरनी कहे प्रभू मेरा सुहा दे बंक, नव सत्त आपणा रंग रंगाईआ। जोत नूर चमका दे निहकलंक, कलि कल्की तेरी ओट १५३३
२४ तकाईआ। तेरा नाम निधाना दो जहाना श्री भगवाना वजे डंक, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं २४
असमानां आप जगाईआ। मेरे मेहरवाना मेरे उत्तों झगड़ा मेट दे राउ रंक, मानव मानस मानुख इक्को रंग रंगाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी ला दे तनक, सुरती शब्द नाल उठाईआ। उह वायदा पूरा करदे जो संदेशा दे के गया जनक, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। तेरा लहिणा देणा बार अनक, अनक कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दुनी दा फेर दे मन का मणक, मनसा कूड़ी दे मिटाईआ। हरिजन हरि बणा लै आपणे सन्त, सतिगुर हो के वेख वखाईआ। आत्म परमात्म धार बणा लै जंत, कन्त कन्तूहल इक्को इक अख्वाईआ। तन वजूदां माटी ख़ाक चाढ़ दे रंगत, रंग रंगीले दया कमाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। आत्म परमात्म बणा लै साची संगत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धी तों परे दे समझाईआ। मेरी दर दुआरे एकँकारे तेरे मिन्नत, धरनी कहे मैं निव निव लागां पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरी मेट दे चिन्त, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मेरे विच कलयुग भार चुकण दी रही ना हिम्मत, हौसला आपणा बैठी ढाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आ जा लोकमात दी मेरी सिम्मत, चार कुण्ट दा लेखा दे मुकाईआ। नव सत्त तेरा रहे कोई ना निन्दक, निरगुण निरवैर आपणा रंग लैणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति प्यार निरगुण धार आप आपणा बख्श दे विच हिन्दवैण हिन्दक, हिन्द बिन्द दे मालक नरिंद तेरी बेपरवाहीआ।

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड छाजला ज़िला संगरूर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा पूरा कर दे घाटा, नाम निधान श्री भगवान अतोट अतुट दे वरताईआ। अमृत रस तन वजूदां बख्श अगम्मा बाटा, बूँद स्वांती कवल नाभी निझर झिरना दे झिराईआ। सच दुआर एकँकार नव सत्त खोल्ह दे हाटा, नाम निधान नौजवान श्री भगवान इक वरताईआ। सच सरोवर दीन दयाल दा इक्को तीर्थ होवे ताटा, किनारे घाट इक्को सोभा पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी अन्तिम कलयुग वेख लै वाटा, पाँधी हो के भज्जी वाहो दाहीआ। सेज सुहञ्जणी पवित्र रही कोई ना खाटा, खटीआ मटीआ तेरे रंग ना कोए समाईआ। मैं वैरागण जगत त्यागण मेरा खुल्हा तक लै झाटा, मेंढी सीस जगदीस ना कोए गुंदाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। सति
१५३४ धर्म दा हर हिरदे अन्दर प्या संनाटा, क्रिया कूड़ कूड़ हल्काईआ । तेरा नूर ज़हूर जोती जाते नज़र ना आए विच लिलाटा, १५३४
२४ धूड़ी ख़ाक पाकी पाक मस्तक ना कोए रमाईआ। बिन रसना जिह्वा तेरा रस सके कोई ना चाटा, चेटक विच दिसे जगत २४
लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे मेरे परवरदिगारा, मेहरवान महिबान बीदो तेरी आस तकाईआ। आदि जुगादी सांझे यारा, यख़ममज़ू ज़मे नूर नूर नूर अलाहीआ। मैं धरती मिट्टी ख़ाक तेरी कदमबोसी विच करां प्यारा, प्यार मुहब्बत तेरी इक्को नज़री आईआ। मेरे अलाह अगम्म अथाह अन्त कन्त भगवन्त मेरी आ के पा सारा, महासाथीं तेरे अगे वास्ता पाईआ। नव सत्त बिन नेत्र लोचन नैण तक अँधयारा, अन्ध अन्धेरा सके ना कोए मिटाईआ। चार जुग दे शास्त्र करन पुकारा, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा भार कर दे हौला, धवल हो के सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादी इक्को मौला, मालक ख़ालक प्रितपालक नूर अलाहीआ। तेरा सब दे नाल इकरार कौला, वायदे पूरब तकें चाँईं चाँईआ। जो संदेशा दे के गया कृष्ण साँवल सँवला, सांवरीआ हो के गया दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता हो के बदले आपणा चोला, चोजी प्रीतम आपणा खेल खिलाईआ। अन्तर निरंतर नाम निधान श्री भगवान तूं मेरा मैं तेरा दस्से ढोला, सोहला कलमा कायनात दृढ़ाईआ।

सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी होए विचोला, जुग जन्म दे विछड़यां मेल मिलाईआ। जन भगतां काया मन्दिर अन्दर रहिण ना देवे ओहला, बजर कपाटी पर्दा आप उठाईआ। मन ममता विच मूल पाए ना रौला, मनसा दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। सच स्वामी घट निवासी पुरख अबिनाशी तन वजूदां वसणहारा कोला, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी वेख अन्धेरी राती, अन्ध आत्म ध्यान लगाईआ। तूं परम पुरख परमात्म कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। तेरे हथ्थ मेरी ज़िंदगी हयाती, जीवण तेरे कदम टिकाईआ। अन्त निरगुण निरवैर मेरी पुछ वाती, वारस हो के वेख वखाईआ। सच धर्म दा रिहा कोई ना दीआ बाती, नव सत्त ना कोए रुशनाईआ। प्रेम दी रही ना कोए प्रभाती, कलयुग कूड़ अन्धेरा सँध्या रूप गया बदलाईआ। हिरदा पवित्र रिहा कोए ना छाती, शांती विच दिसे ना ख़लक ख़ुदाईआ । झगड़ा वेख लै लोकमाती, मातृ भूमी हो के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को नाम कलमा निरगुण धार एकँकार बख्श सफ़ाती, सफ़ा हस्ती हस्त कीट एकँकार इक्को रंग रंगाईआ।

१५३५ २४

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ आसा सिँघ दे गृह पिण्ड खांग ज़िला संगरूर ✪

सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धवल धौल धरत, धर्म दी धार विच संसार भेव अगम्म जणाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण निरवैर आवे परत, पति परमेश्वर पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरी करे शर्त, शरअ दा लेखा लहिणा देणा चुकावे थांउँ थाँईंआ। निरगुण धार एकँकार जोती जाते करना दरस, बिन नेत्र लोचन नैण नैण नैण बिगसाईआ। मेहरवान महबूब तेरे उत्ते करे तरस, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। नाम निधाना नौजवाना अमृत मेघ देवे बरस, कलयुग अग्नी तत तत बुझाईआ। ओह वेखणहारा मालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम इक अख्वाईआ। भाग लगावे तेरे फ़र्श, माटी ख़ाक रंग चढ़ाईआ। जिस नूं तेरी पूरी करनी पैणी ग़रज़, आपणी ग़रज ना कोए रखाईआ। उस दा खेल होणा असचरज, अचरज लीला दए वरताईआ। जो सब दे लहिणे देणे पूरे करे पूरब लाहे कर्ज़, मकरूज कर्ज़ा सब दा दए चुकाईआ। निरगुण धार सरगुण मन्ज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू तमंना तेरी आपणे चरण टिकाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखियां दु:ख दए गंवाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मदद

करे थांउँ थाँईंआ। जगत शरअ कत्ल करे किसे ना करद, कातिल मक्तूल दा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी सो पुरख निरञ्जण दया कमावेगा। हरि पुरख निरञ्जण भेव चुकावेगा। एकँकारा पर्दा लाहवेगा। आदि निरञ्जण डगमगावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान वेस वटावेगा। पारब्रह्म प्रभ संग निभावेगा। सतिगुर शब्द शब्द उठावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव हिलावेगा। करोड़ तेतीसा आपणा हुक्म वरतावेगा। गण गंधर्ब किन्नर यशप नाच नचावेगा। धुर दा हुक्म आपणा आप सुणावेगा। त्रैगुण माया लेखा लेख वखावेगा। पंज तत तत दरसावेगा। जो तेई अवतार दे के गए मति, मता सब दा वेख वखावेगा। जो पैग़म्बरां जोड़या नत, रिश्ता फ़रिशितिआं बाहर वेख वखावेगा। जो अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव दस्सी मित गत, गहर गम्भीर हो के वेख वखावेगा। जेहड़ी तेरे उत्ते लख चुरासी उबले रत, रती रत खोज खुजावेगा। जिस दे उत्ते गोबिन्द यारड़ा सथर गया घत, उह धरनी तेरी सोहणी सेज सुहावेगा। जिस दे कोल चार जुग दे बिन हरफ़ हरूफ़ां ख़त, ख़तूतां पढ़ के तैनूं समझावेगा। पुरख अकाला दीन दयाला आवे वत, बेवतने तेरा वतन सुहावेगा। तेरे वेखे पतण तट, घाट

१५३६ किनारे नव सत खोज खुजावेगा। लेखा जाणे काया माटी मट, साढे तिन्न हथ्थ पर्दा लाहवेगा। जिस दा नाम कलमा १५३६

२४ जीव जंत रहे रट, उह रट्टा क्रिया कूड़ मिटावेगा। नाम निधाना नौजवाना शब्द अगम्मी मार के सट्ट, सोई सुरत आप उठावेगा। २४

उह लहिणा देणा तके अठसठ, गंगा गोदावरी यमुना सुरती फोल फुलावेगा। सार पाए मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ, गुरुदुआर चर्चा पन्ध आप मुकावेगा। उह पन्ध अन्तिम मेटे नठ नठ, बिन कदमां कदम उठावेगा। जिस तेरे उत्ते अवतार पैग़म्बरां गुरुआं करना इक्ठ, बिन ततां सोभा पावेगा। उस दे हुक्म विच उलटी गिढ़नी लठ, नव सत्त आप भुआवेगा। कलयुग बुरज हँकारी जाणे ढठ, ढाह ढाह ख़ाक मिलावेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरतावेगा। सतिगुर शब्द कहे धरनीए तेरा मालक स्वामी इक अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जेहड़ा जनणी कुक्खों कदे ना पए जम्म, तन वजूद ना कोए रखाईआ। उह पावे सार लख चुरासी जीव ब्रह्म, पारब्रह्म हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। झगड़ा मेटे दृष्टी चम्म, चम्म दृष्टी लेखा रहे ना राईआ। मेरे अन्तर रहिण ना देवे ग़म, ग़मखार बणे धुर दा माहीआ । जो इशारा दे के गया राम, दशरथ बेटा गया सुणाईआ। जो लेखा बणाया काहन घनईया शाम, नईया गया सुणाईआ। सो खेल खेले श्री भगवान, भगवन मीता बेपरवाहीआ। जिस ने जोती नूर मूसा वखाया चन्न, कोहतूर तूर रुशनाईआ। जिस हज़रत ईसा आपणे इस्म नाल दिता बन्नू, सलीब गल गल लटकाईआ। जिस मुहम्मद नूं संदेशा

दिता मलवज़ी ज़कमे नवू अर्शे तलूह फ़र्शे मुवा नूरी खुदा खुद मालक बेपरवाहीआ। ओह, कोझीए कमलीए तेरी कबूल करे दुआ, दो जहानां मालक ख़ालक हो के वेख वखाईआ। जिस दे हुक्म विच सारे मंनदे उस दी रज़ा, राज़क रिज़क रहीम इक अख्वाईआ। ओह कलयुग कूड़ क्रिया तेरे उत्तों दए गवा, गवाह अवतार पैग़म्बर गुरु नाल मिलाईआ। तूं खुशीआं ढोला लैणा गा, गीत गाउणा गोबिन्द माहीआ। जो लहिणा देणा दए चुका, चार जुग दा लेखा तेरी झोली पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण नूर जोत कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ । अन्दर धुन नाद शब्द अगम्म सुणा, अनहद रागी राग दृढ़ाईआ। अन्तर आत्म निझर झिरनिउँ बूँद स्वांत दए टपका, नाभी कवल कवल उलटाईआ। धरनीए धरते तेरा पवित्र करे थाँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। निरगुण हो के पकड़े बांह, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग साचा देवे ला, मार्ग आपणा इक समझाईआ। जीव जंत सारे करन वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। तेरे उत्ते धर्म दी धार दए चला, मार्ग इक्को इक समझाईआ। ना कोई सूर खाए ना गाँ, ग़रीब निमाणयां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हँस बुद्धी जगत बणाए काँ, फड़ कागों हँस बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नाम दए जणा, आपे बणे जणेंदी माईआ। सिर सिर आपणा हथ्थ दए छुहा, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा नगर खेड़ा नव सत्त वसे गराँ, गृह मन्दिर अन्दर आवे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ कुड़यार विच संसार अन्त अन्त दए सुणा, धरनी धरत धवल धौल मिट्टी ख़ाक रूप नज़र कोए ना आईआ।

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ मोहण सिँघ दे गृह नाभा शहर विखे ✪

धरनी कहे सतिगुर शब्द मैं प्रभ नूं करां प्रीत, प्रीतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक मनाईआ। जो आदि जुगादी मेरे उत्ते बदले रीत, जुग चौकड़ी धुर दा हुक्म आप समझाईआ। जो निरगुण हो के मेरी काया करे ठण्डी सीत, अग्नी तत तत बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, आपणा पर्दा दए उठाईआ। जो जीवां जंतां साधां सन्तां वेखणहारा नीत, नीतीवान श्री भगवान इक्को एकँकार बेपरवाहीआ। जो हर घट अन्तर वस्या भीतर भीत, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा डेरा लाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरुआं किहा त्रैगुण अतीत, सतिजुग त्रेता द्वापर जिस दी दए गवाहीआ। ओह लहिणा देणा पूरा करे हस्त कीट, कीट कीटां वेख

वखाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी आपणा रस देवे मीठ, बिन रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द किरपा करे प्रभू भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। मेरा ठाकर स्वामी बण के कन्त, कन्तूहल हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। एका नाम निधाना देवे मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। हरिजन वेखे धुर दे सन्त, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। सतिजुग सच बणाए बणत, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करे अन्त, अन्तष्करन तके ख़लक ख़ुदाईआ। सहायक नायक बणे जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मेरी कोझी कमली दी मन्ज़ूर करे मिन्नत, निव निव लागां पाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे चिन्त, दु:ख सुख विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच दी मंग आप मंगाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द किरपा करे मेरा स्वामी, सतिगुर देवणहार वड्याईआ। आदि जुगादी बण के अन्तरजामी, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। मेरी रैण अन्धेरी मेटे शामी, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। दीन मज़्ब ज़ंजीर कटे ग़ुलामी, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ । सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी
१५३८ मंज़ल दस्से हक आसानी, असल वसल यार दए कराईआ। झगड़ा मेटे जिस्म जिस्मानी, ज़मीर बेनज़ीर आपणे रंग रंगाईआ। १५३८
२४ चरण कवल धवल बख़्शे इक ध्यानी, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। सति सतिवादी हो के देवे मंज़ल रुहानी, रूह बुत आपणे रंग रंगाईआ। मेरे उत्तों शरअ मेटे पुराणी, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। मैं चरण धूड़ करां अशनानी, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जाण जाणी, जानणहार एकँकार इक अख्वाईआ। २४

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बलवन्त सिँघ दे गृह पटयाला शहर ✪

सतिगुर शब्द कहे धरनी, बिन नैणां नीर वहा ना हंझू, बिहबल हो ना दे दुहाईआ। किरपा निधान श्री भगवान तेरा लहिणा देणा लेखा जाणे चंगू, चार जुग दा मालक ख़ालक नूर अलाहीआ। जिस दी हाथ ना आवे मुहाणे जगत वञ्झू, सागर सार कोए ना पाईआ। उह वेखणहारा जीव जंत तन वजूद पंजू, पंचम मीता ठांडा सीता आपणा पर्दा लाहीआ। जो दीन दुनी दा मेटणहारा रंजू, रंजश तेरे अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जिस दा प्रेम प्यार सागर सिन्धू, गहर गवर इक अख्वाईआ।

जिस दीन दुनिया झगड़ा मेटणा मुस्लिम सिख ईसाई हिन्दू, हिन्दवायण नरायण आपणा रंग रंगाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला जिस दी लख चुरासी बिन्दू, बन्धन तोड़े थांउँ थाँईंआ। जिस नूं जगत जहान रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोई ना निंदू, निंदया विच दिसे ना ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी प्रभ देवणहारा लहिणा, जुग जुग दया कमाईआ। उह वेखे अन्तिम बिना नैणां, नेत्र लोचन नैण ना कोए जणाईआ । जेहड़ा निरगुण धार एकँकार परवरदिगार तेरा बणना साक सैणा, साजण मीत जगत जहान श्री भगवान इक अख्वाईआ । सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता हो के देवे देणा, देवणहार परवरदिगार आपणा हुक्म हुक्म वरताईआ। जिस दा अवतार पैग़म्बर गुर शब्दी धार हुक्म अगम्मड़ा सहणा, सिर सर सके ना कोए उठाईआ। जिस दे चरण कवल उपर धवल नव सत्त सत्त नव पैणा, पवण पाणी बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी करे खेल पुरख समराथी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी लेखा जाणे नाथ अनाथी, ग़रीब निमाणयां दया कमाईआ। जिस ने चार जुग दे अवतार पैग़म्बर गुर तेरे बणाउणे साथी, सगला संगी बहुरंगी आपणा खेल खिलाईआ । तूं मस्तक लहिणा देणा तक लै माथी, पूरब पूरब खेल खिलाईआ। जो कलयुग चलावणहारा राथी, रथ रथवाही धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ । सतिगुर शब्द कहे, धरनी अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे ग्वाह, शहादत बिन अक्खरां देणी भुगताईआ। बिन रसना जिह्वा करन वाह वाह, बत्ती दन्द रंग ना कोए रंगाईआ। जो तेरा लहिणा देणा वेखण थल अस्गाह, जल थल महीअल ध्यान लगाईआ। नव सत्त फिरन वाहो दाह, बिन कदमां कदम टिकाईआ। दीन दुनी दा वेखण पवित्र थाँ, थान थनंतरां खोज खुजाईआ। लहिणा देणा वेखण क्यों झगड़ा प्या सूर गाँ, की पशूआं कल वड्याईआ। उह तेरी तमंना वाली पकड़न बांह, आसा मनसा वाली संग रखाईआ। तेरा वेखण आवण गराँ, नव सत्त खेड़ा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक गुसाँईंआ। धरनी कहे मेरे सतिगुर शब्द आदि जुगादी संगी, सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। मेरे उत्तों नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग पिच्छे लँघी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरे मेहरवाना मैं मांगत हो के मंग कदे ना मंगी, भिखारन हो के झोली कोए ना डाहीआ। तेरे चरण कवल धवल हो के दस्सी कदे नहीं तंगी, दुखी हो के दु:ख ना कोए सुणाईआ। मेहरवाना कलयुग अन्तिम मेरी चोटी हो गई नंगी, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ।

दीन दुनी दी अन्तर निरंतर वासना हो गई गंदी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों ना कोए प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोए ना छन्दी, शहिनशाह मिलण कोए ना पाईआ। सुरती शब्द सके कोए ना रंगी , रंगत हक ना कोए वखाईआ। नव सत्त शरअ दी वेख पाबन्दी, हद हदूदां फोल फुलाईआ। मेरा नाम कलम्यां नाल आदि जुगादि दा लेखा बिना लेख तों संधी, जिस दा भेव ना कोए समझाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त किनारा आया कन्ढी, कन्ढी घाट बैठी ख़लक खुदाईआ। अन्तर निरंतर किसे आत्मा होवे ना ठण्डी, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। नव सत्त होया पाखण्डी, भेखाधारी की तेरी बेपरवाहीआ। दीन दुनी पै गई ओझड़ डण्डी, डण्डावत तेरी गए भुलाईआ। मैं वेखे आपणे बन खण्डी, टिल्ले पर्वत समुंद सागर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धुर दा अगम्म पैग़ाम, पैग़म्बरां बाहर जणाईआ। तेरा लहिणा लेखा पूरा करे नूर अलाही अमाम, अमलां तों रहित वेख वखाईआ। जिस दीन दुनी शरअ दी कीती ग़ुलाम, दीनां मज़्हबां वंड वंडाईआ। नाम कलमे दस्स कलाम, कायनात कीती पढ़ाईआ। लेखा जाणे सर्ब तमाम,
१५४० वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। उह कलयुग कूड़ मेटे अन्धेरी शाम, शमअ नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस ने सब दा पकड़या १५४०
२४ दाम, दामनगीर इक अख्वाईआ। उह झगड़ा मेटे दृष्टी चाम, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। जिस दे हुक्म विच धरनी उत्ते २४
आया इस्लाम, इस्म आज़म इक समझाईआ। उह लहिणा देणा अन्तिम वेखणहारा बण अगम्म अमाम, अल्ला इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी मईआ, मातृ भूमीए दयां जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तेरा सईआ, साजणूआ नूर अलाहीआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा बिना हिसाब वहीआ, खाता जगत ना कोए जणाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा पूरा करन वाला गोबिन्द ढईआ, ढौंका वेखे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धवल धौले कर ध्यान, धर्म नाल जणाईआ। उह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नौजवान, सूरबीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जो तेरा लहिणा देणा चुकाए आन, आनन फ़ानन आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं झुकणे ज़िमीं असमान, दो जहान बैठण सीस निवाईआ। उह तेरा बदल दए विधान, जगत विद्या दा लेखा दए चुकाईआ। इक्को संदेशा देवे धुर फ़रमान, फ़ुरनयां बाहर समझाईआ। जिस दे हुक्म विच तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे गाण, नव सत्त गा गा खुशी मनाईआ। तेरा लहिणा देणा दीन दुनी चुकाए आण, आप आपणा वेस वटाईआ। तेरी बेनन्ती दुआ करे परवान,

आरज़ू ख़ाहिश आपणे चरण रखाईआ। तूं अन्त कलयुग वेख ना होईं हैरान, हैरत तेरी दूर कराईआ । उह योद्धा सूरबीर बली बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। जो कलयुग विच्चों सतिजुग करे प्रधान, नाम निधाना इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शाह सुल्तान, शहिनशाह शाहो भूप भूपत इक अख्वाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ राज सिँघ दे गृह पटयाला शहर ✪

साचा हुक्म धुर फ़रमान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी अगम्म अथाह इक अख्वाईआ। सो पुरख अकाला सो पुरख निरञ्जण देवणहारा नौजवान, जोती जाता हो के आप दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरञ्जण आप आपणा कर परवान, परम पुरख परमात्म आपणी दया कमाईआ। एकँकारा बण के वड बलवान, बलधारी आपणा खेल खिलाईआ। आदि निरञ्जण जोत नूर जगाया
१५४१ महान, कमलापाती करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बण प्रधान, हुक्म फ़रमाना देवे चाँईं चाँईंआ। श्री भगवान लहिणा १५४१
२४ देणा जाणे विच जहान, निरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खेले खेल महान, महिमा अकथ अकथ २४
वड्याईआ। धुर दा हुक्म सतिगुर शब्द करे परवान, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुण फ़रमान, सीस सके ना कोए उठाईआ। जिस दे हुक्म विच माया तत होए प्रधान, लख चुरासी खेल खिलाईआ। चारे खाणी दे के दान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण लेखा जाणे जीव जहान, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म देवे आप निरँकारा, जुग जुग आप जणाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, अवतरी हो के खेल खिलाईआ। शब्द अनादी दे धुन्कारा, अनहद नादी नाद दृढ़ाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल खेलणहारा, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जिस दा हुक्म वरते सदा जुग चारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे हुक्म विच लोकमात संदेशा दे के गए तेई अवतारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नाम संदेश कलमा कायनात होया उज्यारा, नव सत्त ब्रह्म मति वजदी रही वधाईआ। जिस दे हुक्म विच डण्डावत बन्दना सयदे करन निमस्कारा, निव निव लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

साचा हुक्म इक दृढ़ाईआ। साचा हुक्म इक भगवन्त, भगवन आप जणाईआ। आदि जुगादी जिस दा मंत, मंतव दीन दुनी दृढ़ाईआ। भेव अभेदा जो खोल्हणहारा साचे सन्त, सति सतिवादी हो के पर्दा लाहीआ। निरगुण सरगुण आत्म परमात्म बण के कन्त, कन्तूहल हो के वेख वखाईआ। जिस दा लहिणा देणा लख चुरासी नाल जीव जंत, चारे खाणी चारे बाणी आपणा हुक्म वरताईआ। उह मालक ख़ालक निरवैर सद बेअन्त, बेऐब नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। साचा हुक्म वरते आप अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल लख चुरासी ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। जो निरगुण सरगुण नित नवित दो जहानां करे आपणा कम्म, दो जहानां लेखा ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा सति सतिवाद इक्को धर्म, धर्म दी धार इक समझाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बिना जनणी तों देवणहारा जरम, आपे बणे जणेंदी माईआ। जो जुग चौकड़ी खेल खिलावणहारा काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी जगत वंड वंडाईआ। उह आदि जुगादी सब कुछ करनी करन, करता पुरख धुरदरगाहीआ। जिस ज़ात पात बणाई वरन बरन, दीना मज़्बां वंड वंडाईआ। जिस दे हुक्म विच अवतार पैग़म्बर गुर नाम कलमे ढोले गीत पढ़न, अक्खर अक्खरां नाल बदलाईआ। जिस दे हुक्म विच मंज़ल हकीकी चढ़न, बिन कदमां कदम उठाईआ। जिस दे हुक्म विच सचखण्ड दुआरे खड़न, दरगाह साची मुकामे हक इक्को नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दे हुक्म विच खेल होवे शरीर धड़न, जगत जगदीश आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर हुक्म सदा बलवान, बलधारी आप प्रगटाईआ। जिस दे हुक्म विच सतिगुर शब्द होए प्रधान, प्रधानगी इक्को इक जणाईआ। साचा नाम जणाए निशान, निशाना आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दे हुक्म विच ब्रह्मण्ड खण्ड खेल होए ज़िमीं असमान, ज़िमीं ज़मां दा मालक इक्को नज़री आईआ। जिस दे हुक्म विच जुग चौकड़ी बीते विच जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त होए मेहरवान, महिबान बीदो नूर नूर नूर अलाहीआ। जो साचा हुक्म धुर संदेशा दरगाह साची करे फ़रमान, जगत फ़ुरनयां बाहर सुणाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी देवे दान, बोध अगाधी करे पढ़ाईआ। जिस दे हुक्म विच नव सत्त दिवस रैण सेव कमाण, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भज्जण वाहो दाहीआ। उह मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां हुक्मरान, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। जिस कलयुग क्रिया कूड़ धरनी धरत धवल धौल मेटणा निशान, निशाना तारा चन्द दए मिटाईआ। सति सति करे प्रधान, सतिजुग सच सच वड्याईआ। जिस दे हुक्म नाल ढोला गीत मन्त्र नाम सारे गाण, कलमा

१५४२
२४

कायनात समझाईआ। आदि जुगादि इक्को हुक्म सब नूं होवे परवान, परम पुरख देवणहार अगम्म अथाँईआ। जिस दे हुक्म विच दीन दुनी दा बदल जाणा विधान, वायदे पूरब सब दे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ १०१ डी, सतिन्दर पाल दे गृह पटयाला ✪

हरि भगत सदा बाल, बाली बुद्ध दए वड्याईआ। मेहरवान हो के करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ । जन्म जन्म दी पूरी करे घाल, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जाता हो के चले नाल, आदि जुगादी धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्त करे संभाल, सम्बल दा मालक बेपरवाहीआ। देवे वस्त नाम सच्चा धन्न माल, दौलत अतोट अतुट वरताईआ। भाग लगाए काया माटी सची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को इक रखाईआ। दीआ बाती कमलापाती तन अन्दर देवे बाल, बिन तेल बाती डगमगाईआ। सच प्रीती एकँकारा रखे आपणे नाल, भगत मीता आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगा के साढे तिन्न
१५४३ हथ्थ काया डाल, पत्त टहणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, १५४३
२४ सच दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत सदा बाली बुद्ध, सतिगुर देवणहार वड्याईआ। सुरती शब्दी बख्शे सुध, वदी २४
सुदी दा लेखा दए मुकाईआ। घर ठाकर स्वामी जाए सुझ, जगत खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। आपणा दुआरा आपे जावे बुझ, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। परम पुरख परमात्म भेव खुल्हाए गुझ, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। जन भगत हरिजन वेखे आपणे लाल, हरि करता धुरदरगाहीआ। काया मन्दिर अन्दर खेल करे कमाल, कमलापाती धुरदरगाहीआ। नूरी जल्वा बख्श जलाल, जोती जाता हो के नज़री आईआ। फल लगा के काया माटी डाल, पत्त टहणी रोम रोम महकाईआ। सच प्रीती नाद शब्द वजाए ताल, तुरीआ दा लेखा इक दृढ़ाईआ। घर स्वामी सतिगुर ठाकर चले नाल नाल, नित नित आपणा रंग रंगाईआ। लेखा रहिण ना देवे शाह कंगाल, इक्को रंग इक्को गृह दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ। हरि भगत दुलारा प्रभू दा सुत, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए जणाईआ। भाग लगाए काया सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। दया कमाए काया माटी बुत, बुतख़ानयां करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता हो के आपे लए पुछ, पुश्त पनाह बेपरवाह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करता सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ शाम कौर दे गृह पटयाला शहर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा उत्तम कर दे कर्म, निहकर्मी हो के दया कमाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना मेरे उत्ते भगतां दे दे जरम, जन्म कर्म दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सति सतिवादी सति सच बख्श दे धर्म, धर्म दी धार एकँकार इक प्रगटाईआ। सच प्रीती मानव ज़ाती होवे कर्म, कूड़ी क्रिया अन्तर निरंतर बाहर कढ्ढाईआ। झगड़ा मेट दे काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी दृष्टी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दूई दुवैती रहे कोई ना भरम, भरांत भुलेखा तन वजूदां कर सफ़ाईआ। मैं पुरख अकाले तेरी आई सरन, धुर दे राम तेरी सरनाईआ। तूं किरपा निधान किरपा आएयों करन, करनी दे करते धुरदरगाहीआ। मैं
१५४४ चाहुंदी दीन दुनी तेरा नाम ढोला इक्को पढ़न, गीत सुहागी इक्को गाईआ। मंज़ल हकीकी धुर दी चढ़न, चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ वजे सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख्श दे आपणी धूल, टिक्के सच नाम नाम लगाईआ। निरगुण निरगुण निरगुण दरस्स असूल, सरगुण सरगुण सरगुण मिल के वजे वधाईआ। तेरा नाम फ़रमाना कोई ना जाए भूल, अभुल देणी वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक अगम्म कन्तूहल, हरि करता धुरदरगाहीआ। तेरे हुक्म विच मेरे उत्ते पैग़म्बर आए रसूल, लोकमाती वेस वटाईआ। तेरा हुक्म संदेशा देंदे गए माकूल, मुकम्मल तेरा भेव चुकाईआ। सच पंघूड़ा तेरा गए झूल, सच सिँघासण बैठे सोभा पाईआ। तेरा मंनदे गए असूल, असल वसल यार तेरा गए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन तेरा नाम पंघूड़ा लए झूल, झलक ख़लक पलक ओहले देणी वखाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ बिकर्मजीत सिँघ दे गृह पटयाला शहर ✪

भगती कहे जन भगतो मेरे बणो संगी, सगले साथी नज़री आईआ। मेरी पुश्त पनाह हो गई नंगी, ओढण नज़र कोए ना आईआ। मैनूं कलयुग माया कीता भुखी नंगी, वस्त सच रही ना राईआ। जगत वासना प्रभू प्यार विच रही ना

चंगी, रसना रस ना कोए वड्याईआ। मैनूं जगत विद्या कीता तंगी, तंगदस्त हो के दयां सुणाईआ। मेरी पूरब पिच्छे लँघी, अगे दा लहिणा दयां दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा हर घट अन्दर वड़ गया जंगी, शस्त्र काम क्रोध लोभ मोह हँकार हथ्थ उठाईआ। जिस फेरी दरोही विच वरभण्डी, नवखण्डी दए दुहाईआ। दीन दुनी दी आसा हो गई रंडी, हरिजू कन्त ना कोए हंढाईआ। दीन मज़्हब दी रहिण दिती नहीं कोई डण्डी, डण्डावत विच सीस ना कोए निवाईआ। जगत साधू सन्त होए पाखण्डी, जिज्ञासू प्रेम ना कोए बणाईआ। कलयुग दा अन्तिम घाट आ गया कन्ढी, वेला वक्त दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। भगती कहे जन भगतो मेरे नाल करो मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। एका जपो धुर दा जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेटो संताप, ममता मोह रहे ना राईआ। पुरख अकाला मंनो इक्को बाप, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ो धुर दा नात, विछोड़े विच विछड़ कोए ना जाईआ। झगड़ा छडो ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। इक्को मेरे नाल करो सची बात, बातन पर्दा दयां चुकाईआ। बिन पुरख अकाले दीन दयाले पुछे कोई ना वात, वारस नज़र कोए ना आईआ। मेरे कोल चार जुग दा लहिणा जो अवतार पैग़म्बरां लिख्या नाल कलम दवात, शहादत कागत रहे भुगताईआ। बिना भगतां तों धर्म दी रहिणी नहीं कोई जमात, जुमला अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होई अन्धेरी रात, नूर नुराना चन्द ना कोए चमकाईआ। मानस मानुख मानव करे घात, घाउ लग्गा थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक अख्वाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरा मिले ना कोए साथी, संगी बहुरंगी नज़र कोए ना आईआ। मैं दीन दुनी जगत होई अनाथी, दीनन हो के सीस निवाईआ। मंगां मंग कोलों पुरख समराथी, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी बख्श लई गुस्ताख़ी, ग़ुस्सा गिला जगत ना कोए जणाईआ। मेहरवान मैनूं दई मुआफ़ी, मुश्किल मेरी हल कराईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेरे नाल करे बेइन्साफ़ी, अदल सच ना कोए जणाईआ। मैं आदि जुगादी तेरी दासी, दास्तान पिछली दए गवाहीआ। जन भगतां संग मेरी होवे रहिरासी, दोहां मिलके वजे वधाईआ। जन भगतो साडा दोहां दा मालक इक्को पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ । जिस दे हुक्म अन्दर शंकर कैलाशी, कलाधारी बैठा सीस निवाईआ। उह मेटणहारा सर्ब उदासी, चिन्ता ग़मी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप वड्याईआ। भगती कहे जन भगतो धर्म धार दा तको राह, रस्ता बावस्ता आपणे नाल बणाईआ। इक्को सतिगुर शब्द

दी लवो सलाह, मशवरा अवर ना कोए जणाईआ। सतिगुर पूरा बणाओ मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। बिन रसना जिह्वा लओ गा, ढोले सोहले सिफ्त सालाहीआ। जो रैहबर बण के दस्से राह, रस्ता इक्को इक जणाईआ । जिस दा आदि जुगादी अगम्मा नाँ, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। जो देवणहारा निथाव्याँ थाँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। भगती कहे जन भगतो उस प्रभू दी पकड़ो बांह, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जेहड़ा हँस फड़ फड़ बणाए काँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना जोती जाता हो के गया आ, जिस दी आमद विच सीस निवाईआ। मैं वी उसे दी तकां सरन सरना, सरनगति इक्को नजरी आईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं किहा वाह वाह, वाहिद वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेला मेले सहिज सुभा, सुभाविक आपणा रंग रंगाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ अशोक कुमार दे गृह पटयाला शहर ✪

भगती कहे प्रभू जन भगत बणा लै आपणी ज़ात, आत्म धार परमात्म लै परनाईआ। निरगुण निरगुण बणना पिता मात, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी गोद टिकाईआ। झगड़ा मेटणा दीन दुनी ज़ात पात, पति पतिवन्ते तेरे हथ्थ वड्याईआ। चरण प्रीती साची रीती आपणा जोड़ लै नात, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। तेरा दरस अन्तर निरंतर करन इकांत, इक इकल्ले सच महले देणी माण वड्याईआ। निझर झिरना बूँद बख्श दे प्रेम स्वांत, अग्नी तत तत बुझाईआ। बिन नेत्र लोचन नैणां मार झात, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सति सच दी इक्को दस अगम्मी बात, बातन भेव दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। भगती कहे प्रभू जन भगत तेरा गावण गीत, गुण गोबिन्द गाईआ। साची करन प्रीत, प्रीतम मिल के ख़ुशी बणाईआ। पवित्र होए नीत, दुरमति मैल धुआईआ। काया होवे सीत, अग्नी तत बुझाईआ। तेरा दर्शन होवे भीत, भगतां देणा वखाईआ। झगड़ा मिटाउणा मन्दिर मसीत, काया काअबा इक वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण गीत, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। मानस जन्म लैण जग जीत, जीवण दाते देणी वड्याईआ। भगती कहे प्रभू मेरी पिछली पिच्छे गई बीत, अगला लेखा तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन तेरे गुण गावण त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी आपणी दया कमाईआ।

१५४७ २४

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ प्यारा सिँघ दे गृह राजपुरा शहर ज़िला पटयाला ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा तक लै घर दा, गृह मन्दिर अन्दर नव सत्त ध्यान लगाईआ। तेरा रूप अनूपा शाहो भूपा नरैण नर दा, नर हरि तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा अन्तष्करन श्री भगवान कलयुग क्रिया कूड़ कोलों डरदा, मेहरवान महबूब तेरी ओट तकाईआ। साचा रस अमृत रिहा ना किसे सरोवर सर दा, सरस्वती गोदावरी यमुना गंगा रही सुणाईआ। रस अन्तर निरंतर रिहा ना किसे जल दा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मेरा वायदा कौल इकरार तक लै बावन दुआरे राजे बलि दा, पूरब लेखे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरे दर करां अरज़ोई, आरज़ू आदि जुगादि दयां सुणाईआ। तुध बिन दो जहान ना दिसे कोई, मालक ख़ालक सालस नज़र कोए ना आईआ। मेरा अन्तष्करन तेरे नाम दी दए दरोही, दो जहानां मालक तेरी वड वड्याईआ। सति धर्म मेरे उत्ते मिले किसे ना ढोई, पारब्रह्म तेरे रंग ना कोए रंगाईआ। सति वस्त मेरे उत्तों गई खोही, ख़ालक तेरे रंग ना कोए रंगाईआ । मेरे सीने उत्ते बिना हरफां लिखी गई पेशीनगोई, पेशतर अवतार पैग़म्बर गुरु गए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, मनसा तेरे अगे रखाईआ। तूं मालक ख़ालक हाज़र हज़ूर, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह लेखा पूरा कर दे जो आशा रखी कोहतूर, मूसा नैण मूंद जणाईआ। तूं सब दा ठाकर स्वामी हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरा इक्को इक वास्ता, वास्तक दयां जणाईआ। जीव जंत साध सन्त तेरा प्यार दा होवे रास्ता, रस्ता बावस्ता आपणे नाल कराईआ। तेरा खेल तकां आहिस्ता आहिस्ता, सहिज सहिज वेख वखाईआ। तूं मालक ख़ालक पृथ्मी आकाश दा, गगन गगनंतर तेरी वड्याईआ। मेरे उत्ते लहिणा देणा पूरा करदे पवण स्वास दा, साह साह खोज खुजाईआ। तेरा नूर ज़हूर पुरख अबिनाश दा, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। कुछ लेखा तक लै शंकर कैलाश दा, कलाधारी की दृढ़ाईआ। विष्नूं अन्तर निरंतर की कुछ भासदा, विश्व दे मालक देणा समझाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म धार खेल तक लै रास दा, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्तों पर्दा चुक दे, कलयुग क्रिया कूड़ रहिण ना पाईआ। भेव चुका दे ओहले लुक दे, मेहरवान तेरी सरनाईआ। हुक्म जणा दे आपणी अगम्मी तुक दे, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। वायदे गुर अवतार

पैग़म्बरां वेख लै ढुकदे, घड़ी पल देण गवाहीआ। नाले इशारे तक लै सतिगुर शब्द दुलारे सुत दे, जो सुत्तयां रिहा जगाईआ। तेरे खेल वेखां अबिनाशी अचुत दे, पारब्रह्म प्रभ पर्दा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। सो पुरख निरञ्जण कहे धरनी, धर्म धार प्रगटावांगा। हरि पुरख निरञ्जण हो के लावां चरणी, चरणोदक इक्को जाम प्यावांगा। एकँकार बण के बख़्शां धुर दी सरनी, सरनगति इक दृढ़ावांगा । आदि निरञ्जण हो के इक्को मंज़ल चढ़नी, दूजा दर ना कोए दरसावांगा। अबिनाशी करता हो के नवीं घाड़त घड़नी, घड़न भन्नणहार आप हो जावांगा। श्री भगवान हो के धुर दी करनी करनी, कुदरत दा कादर हो के खेल खिलावांगा । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के तेरा लहिणा देणा मुकावां धरनी, धवले तेरा भार चुकावांगा। तोड़ के हउमे हंगती गढ़नी, हंगता दूर करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलावांगा। साची खेल खिलाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। धरनी धवल धौल तेरा भार वंडाएगा। पूरब वेखे कवल, कौल इकरार तोड़ निभाएगा। जो संदेशा दे के गया काहन सुंदर साँवल सवल, सांवरीआ आपणी कार कमाएगा। जो लहिणा देणा मुहम्मद
१५४८ दस्सया नाल नूर अलाही अवल, आलमीन हो के वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा १५४८
२४ साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आशा होण ना देवे बवल, पौहल आपणा नाम २४
इक्को रस चखाएगा।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ करतार सिँघ दे गृह राजपुरा शहर ज़िला पटयाला ✪

धरनी कहे प्रभू मैनूं तेरी इक्को ओट, आदि अन्त दे मालक ओड़क तेरी आस रखाईआ। मेरे उत्ते जुग चौकड़ी लँघ गए कोटी कोट, नित नित आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे नाम नगारे दी सुणदी रही चोट, बिन सरवणां हुन्दी रही शनवाईआ। अन्त श्री भगवन्त दीन दुनी दे अन्दरों कढ दे खोट, जगत विकारा दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप रखाईआ। धरनी कहे प्रभू मानव ज़ाती बणा लै भगत, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। मेरा सुहञ्जणा कर दे वक्त, घड़ी पल मिल के वजे वधाईआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं पूरी होवे शर्त, शहिनशाह देणी माण वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवाना कर दे तरस, रहमत आप कमाईआ। सच प्रीती मेघ बरस, नाम निधाना इक टपकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट हरस, हवस ममता दे मुकाईआ।

निज गृह आपणा दे दरस, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। मेरे उत्ते खुशीआं वाला होवे बरस, शहिनशाह तेरे नाल मिलके वजे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक आप अख्वाईआ। धरनी कहे प्रभू भगत बणा लै आपणे मीत, ग़रीब निमाणे अंग लगाईआ। दिवस रैण वस चीत, चेतन सुरती दे कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण गीत, आत्म परमात्म तेरे रंग समाईआ। काया कर दे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। तूं मेहरवान पतित पुनीत, दुरमति मैल देणी धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू भगत सुहेले वसा दे मेरे घर, गृह देणी माण वड्याईआ । तूं स्वामी ठाकर नरायण नर, हरि करता धुरदरगाहीआ। मैं सरन सरनाई तेरी रही पड़, पारब्रह्म तेरे चरणां धूड़ ख़ाक रमाईआ। मैनूं धुर दा दे दे वर, बख्शिश रहमत मेरी झोली पाईआ। तेरे सन्त सुहेले मेरे उत्ते जावण तर, तारनहार देणी वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख तेरा भाणा लैण जर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा निधान किरपा देणी कर, किरपन तेरी ओट तकाईआ।

१५४६ २४

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ आसा सिँघ, सरैण सिँघ, बंता सिँघ, काला सिँघ दे गृह पिण्ड कलसाणी ज़िला कुरूक्षेत्र ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा अन्तष्करन वेख लै धुखदा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी सांतक सति ना कोए कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा लहिणा देणा तक लै मानव मानस मानुख दा, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते आपणा ध्यान लगाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरे उत्ते वक्त रिहा ना सुख दा, सुख सागर विच ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा वणजारा बणया दु:ख दा, दर्दी हो के दर्द ना कोए वंडाईआ। मानव ज़ाती लहिणा तक लै उलटे रुक्ख दा, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा कर दे पूरा, पूरब नाल मिलाईआ। तूं निरगुण दाता सूरा, सूरबीर इक अख्वाईआ। इक्को अगम्मी तेरे नाम दी तूरा, तुरीआ तों बाहर देणी जणाईआ। तूं सदा सदा सर्ब कला भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं बचन कर दे पूरा, परम पुरख प्रभ तेरी ओट रखाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेट दे कूड़ा, करनी दे करते देणी इक सरनाईआ। सति सतिवादी बख्शणी आपणी चरण धूड़ा, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते

आपणा रंग चाढ़ दे गूढ़ा, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। कलयुग जीव चतुर सुघड़ बणा लै मूर्ख मूढ़ा, पतित पुनीत आप कराईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर गढ़ तोड़ ग़रूरा, ग़ुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। नाम खुमारी मस्ती दे सरूरा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा पा दे मेरी झोली, वस्त अगम्म दे वरताईआ। मैं आदि जुगादी तेरी गोली, चाकर हो के सेव कमाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम शब्द दी सुणदी रही बोली, अनबोलत तेरा राग बिन सरवणां सुणया चाँईं चाँईंआ। तेरी चरण प्रीती साची नीती नाल आपा रही घोली, घोली घोल घोल घुमाईआ। तूं सच तराज़ू नाम कन्ढे मेरा कर्म धर्म तोलीं, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। सति सतिवादी हो के इक्को धर्म दुआरा खोल्हीं, ख़ालक ख़लक देणी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा वेखां दर सुहञ्जणा, सोहणी बणत बणाईआ। स्वामी बणना दर्द दुःख भय भञ्जणा, कलयुग सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधाना पाउणा अंजणा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर स्वामी बणना धुर दा सज्जणा, आत्म परमात्म मिल के वजे वधाईआ। चरण धूड़ कराउणा मजना, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। शरअ दी रहिण देणी कोई ना हद्दना, हदूद आपणी देणी समझाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी बदना, बदला चुकाउणा थांउँ थाँईंआ। कलयुग अन्तिम तूं लेखे लाउणा आहला अदना, ऊचां नीचां वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा मेल मिलावा हुन्दा नाल सब्बना, सति सतिवादी तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा अन्त कन्त भगवन्त पर्दा कज्जणा, बिन हथ्थां हथ्थ सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते खोल्ह धर्म दुआरा, जो दुआरका वासी गया जणाईआ। सति सच दा दस्स जैकारा, जै जै कार करे ख़लक खुदाईआ। जो पैग़म्बरां लाया नाअरा, वायदा सब दा पूर कराईआ। जोती जाता हो ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल वखाईआ। मेरा लेखा वेख लै जो झगड़ा होण वाला विच काहरा, कहर वरते ख़लक खुदाईआ। जगत जिज्ञासू रहे कोई ना बहिरा, बहिरहाल दयां दृढ़ाईआ। तेरा भेव अभेदा गम्भीर गहरा, गवर तेरी सार कोए ना पाईआ। सिफ्त कर सके कोई ना शायरा, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस मानव मानुख तेरे दर रहे कोए ना ग़ैरा, गहर गम्भीर गवर आपणा रंग देणा रंगाईआ।

✪ १७ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिंड ठीकरी ज़िला कुरूक्षेत्र हरबंस सिँघ दे गृह संपूरन सिँघ, लखा सिँघ ठीकरी, सलविंदर सिँघ कौमी फ़ारम, रणधीर सिँघ हरनाया, मोहण सिँघ गढ़ी लांगरी, सौदागर सिँघ भट्ठ माजरा, बीर सिँघ जीत नगर दे नवित ✪

धरनी कहे प्रभू सति धर्म दा घाड़न दे घड़े, बिन जगत ठठिआरां बणत बणाईआ। बेशक मेरे उत्ते जुग बीत गए बड़े, चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया तक लै गढ़े, नव सत्त ध्यान लगाईआ। मानव ज़ाती बणे धड़े, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़्ब तेरे हुक्म विच खड़े, आप आपणी लैण अंगड़ाईआ। जगत शरअ विच सड़े, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरी सरन कोए ना पड़े, कदम बोसी ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया दे विच हड़े, अगे हो ना कोए अटकाईआ। त्रैगुण माया दे विच सड़े, सांतक सति ना कोए कराईआ। झगड़ा तक लै चोटी जड़े, चेतन भेव ना कोए खुलाईआ। तेरा पल्लू नाम ना कोए फड़े, सगला संग ना कोए रखाईआ। सच दवार कोए ना वड़े, किवाड़ बन्द ना कोए तुड़ाईआ। मैनूं इयों जापदा पता नहीं किस वेले पैण लड़े, झगड़े विच खलक खुदाईआ। तेरे हुक्म विच

१५५१ नव सत्त जाण फड़े, राय धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच १५५१

२४ दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे उत्ते मार ध्यान, धवल हो के रही जणाईआ। तेरे नाम दा रिहा ना कोए २४

ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा गया छाईआ। साचा मन्दिर दिसे ना कोए मकान, मुकामे हक दे मालक तेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धर्म दा मिट गया निशान, सति रहिण कोए ना पाईआ। मैं वेख के होई हैरान, हैरत विच दयां दुहाईआ। बुध बिबेक रही ना किसे इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। पता नहीं किथ्थे छुप गए राम, काहन घनईया नज़र कोए ना आईआ। पैग़म्बरां इस्म रिहा ना किसे इस्लाम, आज़म तेरी सार कोए ना पाईआ। किधर धार छुप गई तेरी सतिनाम, डंका फतिह सके ना कोए वजाईआ। प्रकाश रिहा ना किसे भान, रवि शशि नैण शरमाईआ। बिना नेत्रां तों रोवण ज़िमीं असमान, ज़िमीं जमां दे मालक मेरी इक दुहाईआ। मेरी बेनन्ती सुण लै बिना कान, कायनात दे मालक दयां दृढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी सदा सदा मेहरवान, महबूब नूर अलाहीआ। मेरा लहिणा देणा चुका आण, आप आपणी दया कमाईआ। मैं कलयुग अन्त होई परेशान, पश्चाताप विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी बेनन्ती अगम्म, अलख अगोचर दयां जणाईआ। सति धर्म दा मेरा भाण्डा होया सख, वस्त धर्म रहिण कोए ना पाईआ। किरपा निधान श्री भगवान आपणा पर्दा लाह प्रतख,

पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिउँ भावे तिउँ मेरा माण लैणा रख, रखया करनी चाँईं चाँईंआ। मेरे उत्ते तेरा सुत दुलारा सथ्थर गया घत्त, यारड़े सेज हंढाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी सतिगुर शब्द तेरा आवे वत, बेवतनां वतन देणा वखाईआ। निरगुण धार बण के कमलापात, पतिपरमेश्वर वेखणा चाँईं चाँईंआ। तेरे अग्गे निरवैर वास्ता रही घत, घायल हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग अगम्म अथाँईंआ। धरनी कहे प्रभू मैं कलयुग रही तरस, बेतरस वेखणा चाँईं चाँईंआ। मेरी पूरब तक लै हरस, हवस तेरे चरण टिकाईआ। तेरा खुशीआं वाला बरस, सम्मत सम्मती नाल मिलाईआ। जे निरगुण धार किरपा करें फर्श, फर्श देणी वड्याईआ। बेशक तूं वासी अर्श, अर्शी प्रीतम इक्को नज़री आईआ। आउण जाण दा, मेरया मालका, मैथों लै लईं खर्च, सच प्रीती तेरे अग्गे दयां टिकाईआ। मेरे प्रेम विच जावीं परच, प्राचीन दा लेखा देणा मुकाईआ। मेरी बेनन्ती इक किसे मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरदवार आवीं विच ना चर्च, गंगा गोदावरी यमुना सरस्वती आसण कोए ना लाईआ। तेरा खेल वेखां असचरज, अचरज लीला देणी वखाईआ। जे मेरे उत्ते तरस नहीं करना भगत उधारना तेरा फ़र्ज, फाज़ल हो के दया कमाईआ। मेरी
१५५२ मन्ज़ूर कर लै अर्ज, आरज़ू तेरे चरण रखाईआ। जन भगत उधारना एह तेरी तैनूं गर्ज, तुध बिन गरज़मंद नज़र कोए १५५२
२४ ना आईआ। ग़रीब निमाणयां वंड लै दर्द, दीनां दुखियां हो सहाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मांगत हो के झोली २४
डाहीआ। मेरे उत्तों जगत शरअ कातिल मक्तूल दा लेखा मेट दे करद, कुदरत दे कादर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे आपणा रंग रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं सुखणा रही सुखी, सुख दुःख दुःख सुख विच्चों बदलाईआ। तेरा ढोला गावां बिना मुखी, बिन रसना सिफ्त सलाहीआ। आपणा लहिणा देणा तक्क लै जगत धार मनुक्खी, मानस मानव खोज खुजाईआ। नव सत्त दी धार होई दुखी, दुखियां दुःख ना कोए मिटाईआ। बिन तेरी किरपा भाग लगे किसे ना कुक्खी, भगत जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे मंग मंगाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू कृपाले, किरपन दे वड्याईआ। तुध बिन सुरत कवण संभाले, सम्बल दे मालक मैनूं जुग जुग होणा सहाईआ। मैं जुग जुग तेरी घालण रही घाले, घायल हो के सेव कमाईआ। फल लगा दे मेरे डाले, पत टहणी आप महकाईआ। जन भगत सुहेले मेरे उत्तों जगा लै, जागरत जोत कर रुशनाईआ। लेखा रहे ना शाह कंगाले, वरन बरन वंड ना कोए वंडाईआ। साचे मार्ग ला सुखाले, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतां दुरमति मैल धो दाग काले, कलि कल्की तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरे

दे के गए अहिवाले, हालत तैनूं दिती जणाईआ। साची वस्त दे धन माले, दौलत अतोट अतुट वरताईआ। हरिजन भगत सुहेले जिंदगी विच्चों मरे आप जवा ले, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। काया मन्दिर वखा सच्ची धर्मसाले, पर्दा पर्दा आप उठाईआ। बिन तेरी किरपा दीपक जोती जोत कोई ना बाले, तन वजूद होवे ना कोए रुशनाईआ। मेहरवाना श्री भगवाना जन भगतां तोड़ जंजाले, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जेहड़े सदा सद बैठे रहिण चरण दवाले, दो जहानां आपणा संग बणाईआ। इक्को घर वखा दे सचखण्ड सची धर्मसाले, जिथ्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मेरी इक बेनन्ती इक्को इक सवाले, सतिगुर तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सदा सदा प्रितपाले, प्रितपालक मालक ख़ालक दर तेरे मंग मंगाईआ।

✪ १८ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड बलोचपुर ज़िला कुरूक्षेत्र अर्जन सिँघ दे गृह ✪

१५५३ धरनी कहे प्रभू मैं तेरी याद विच बैठी इकांत, अकल कलधारी एकँकारी आपणा आसण लाईआ। पुरख अकाले दीन १५५३
२४ दयाले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैनूं आपणा दस्स सिधांत, सति सतिवादी हो के भेव अभेद खुल्हाईआ। नव सत्त ब्रह्म मति किस २४
बिध बदले विधांत, तरीका ढंग साधन दीन दुनी दुनी जणाईआ। बिन नेत्र लोचन लैणा नव सत्त ब्रह्म मति मार झात, बिन अक्खीआं वेखणा चाँईं चाँईंआ। मेरी दरोही विच लोकमात, हाए उफ मेरी दुहाईआ। मानव ज़ाती अन्तष्करन रिहा ना किसे इकांत, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। तेरा शब्द अनादी अवाज़ सुणे ना कोई बातन बात, बेवतन तक्क लै खलक खुदाईआ। सति सतिवादी मेरी अन्तिम पुच्छ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा बण जा अगम्मी सखा, सुख़न पिछले पूर कराईआ। तेरा भेव समझे ना कोए करोड़ी लखा, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। मैनूं दर्शन दे दे बिना अक्खां, अक्खीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरा वक्त सुहंजणा होए सुलक्खा, सोहणी मिले वड्याईआ। तूं साहिब स्वामी पुरख अकाल समरथा, समरथ तेरी सरनाईआ। आत्म परमात्म इक्को दस दे कथा, जगत कहाणी लोड़ रहे ना राईआ। सीस जगदीस तेरे चरण झुके मथ्था, मस्तक लहिणे सब दे पूर कराईआ। सतिजुग सति धर्म सच चला दे रथा, रथ रथवाही हो के वेख वखाईआ। जिस कारन गोबिन्द तेरे सथ्थर लथ्था, यारड़ा सेज गया हंढाईआ। तेरे चरण कवल आपणा रख के भथ्था, सीस जगदीस

दयां निवाईआ। नाले हस्स के किहा फेर शस्त्र फड़ना नहीं कोई विच हथ्था, क्षत्रु रूप ना कोए दरसाईआ। इक्को सच नाम दी देणी वथा, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वसा दे अगम्मा झुग्गा, जगत झौंपड़ीआं लोड़ रहे ना राईआ। आपणा नाम करदे उग्घा, दो जहानां वजे वधाईआ। मैं प्यार दी धार होई तेरी वसुधा, बेसुध हो के दयां दुहाईआ। उह आशा तक लै जो इशारा करदा बुद्धा, बुद्धी तों परे दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं दी आशा वेख लै मुद्दा, जो मुदतां तों गए समझाईआ। मेरे मालक ख़ालक मेरे उत्ते होण ना देवीं युद्धा, युधिष्टर दी आशा धुर दे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी जिंदगी बदल दे जीणी, जीवत जीवत जीवत तेरी ओट तकाईआ। मेरी आशा कलयुग होण ना देवीं कमीनी, कमलापाती बहुभांती आपणा रंग देणा रंगाईआ। मेरी आशा जगत रहे ना हीणी, सच स्वामी अन्तरजामी सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं किसे अग्गे कलयुग अन्त ना होवां अधीनी, बिन तेरे सीस जगदीस ना किसे निवाईआ। मेरी लज पत कलयुग अन्त जाए ना छीनी, शहिनशाह
१५५४ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे प्रभू ना मैं नर ना मदीनी, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। ना मेरा नेत्र लोचन १५५४
२४ ना मैं नैणहीण नाबीनी, अन्ध अन्धेर विच ना कोए रखाईआ। ना मैं विद्या पढ़ी ना मैं वेखी ताअलीमी, सिफ्तां वाले ढोले २४
कोए ना गाईआ। ना मेरे विच गढ़ हँकार ना दिसे कोए हलीमी, निम्रता नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मालक ख़ालक इक अमीनी, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। तूं मेहरवान महबूब हक करीमी, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। मेरे भगवन्त धुर दे कन्त मेरी आसा पूरी करदे यकीनी, यक वाहिद तेरी ओट तकाईआ। जो मानव जाती सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीनां मज़्बां विच कीती तक्सीमी, हिस्से कलमे नाम नाल पवाईआ। सतिजुग वास्ते नवीं करदे तनज़ीमी, ताअमीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू प्रभू प्रभ मीते, साजण सजणूआ तेरी सरनाईआ। सदा सदा त्रैगुण अतीते, त्रैभवण धनी तेरी वड्याईआ। मेरे पूरबले जुग वेख लै बीले, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। ग्रन्थ शास्त्रां नाम अक्खरां विद्या तक लै रीते, नित नित तेरी सिफ्त सलाहीआ। अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाम कलमे तक लै ठांडे सीते, जगत जगत गए दृढ़ाईआ। जिस विच तेरे मिलण दे तरीके, रस्ते रैहबर हो के गए वखाईआ। दोहरी धार खेल खेले मानस मानव बणाए शरीके, शरक्त सके ना कोए मिटाईआ। तूं लहिणे देणे जाणे जीव जीअ के, लख चुरासी फोल फुलाईआ। मैनूं याद आउँदे तेरे पूरब कौल

इकरार कीते, करनी दे करते ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा बंक इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू निगाह मार लै मेरे नव सत्त बंक दुआरे, चार दीवारी नज़र कोए ना आईआ। छप्पर छन्न दिसे ना कोए विच संसारे, जगत जहानां श्री भगवाना वेखण कोए ना पाईआ। नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग सतिगुर शब्द देंदा रिहा इशारे, बिन नेत्र लोचन नैण सैनत नाम लगाईआ। कूक कूक दस्सदे रहे पैग़म्बर गुर अवतारे, ढोले सोहले रागां विच दृढ़ाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ धरनीए तेरे उत्ते करे पसारे, पशू पंछी पंखी मानव सारे रोवण मारन धाईआ। किसे दा मेल होवे ना नाल मित्र प्यारे, परम पुरख परमात्म आत्म मिलण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी मंज़ल हक पार ना कोए उतारे, उतर पूरब पश्चिम दक्खण नईया पार किनारे घाट ना कोए लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलयुग फिरे कूड़ कुड़यारे बिन कदमां वाहो दाहीआ। सो वक्त सुहेला इक इकेला पुरख अकाला दीन दयाला तेरी पावे सारे, परवरदिगार सांझा यार एकँकार आपणी दया कमाईआ। मेहरवान महबूब जोती जाता पुरख बिधाता तेरी आ के पैज संवारे महासार्थी हो के आपणा खेल खिलाईआ। कोझीए कमलीए तेरे बंक दुआरे भगत गृह सद वसदे रहिण विच संसारे, संसारी भण्डारी सँघारी
१५५५ विष्न ब्रह्मा शिव जिस नूं सीस निवाईआ। तेरा लहिणा देणा जुग चौकड़ी करनी दा करता कुदरत दा कादर कर्ज़ उतारे, १५५५
२४ मकरूज़ हो के लेखा झोली देवे पाईआ। तूं उस दे चरण कवल धवल हो के करीं निमस्कारे, डण्डावत बन्दना सईयदयां २४
विच सीस निवाईआ। जिस कलयुग क्रिया कूड़ कोलों तेरे कराउणे छुटकारे, बन्धन दीन दुनी तुड़ाईआ। इक्को नाम ढोला कलमा आत्म परमात्म दस्से जैकारे, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को भगत सुहेला गुरु गुर चेला जणाए दर दरबारे, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा इक खुल्हाईआ। इक्को इष्ट दृष्ट अन्तर निरंतर मानस मानुख मन्नण सारे, दूसर ओट नज़र कोए ना आईआ। किरपा करे भगत वछल प्रभू गिरवर गिरधारे, गहर गम्भीर बेनज़ीर मेहर नज़र उठाईआ। धरनी धरत धवल धौल तूं निव निव मस्तक धूड़ी लाउणी छारे, टिक्के मस्तक खाक खाक खाक रमाईआ। उह निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आदि जुगादी परवरदिगारे, सांझा यार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब नूं देवणहार सहारे, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ।

✪ १८ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड नानक पुर ज़िला करनाल भान सिँघ ठाकर सिँघ सोहण सिँघ प्रीतम सिँघ जगतार सिँघ नानक पुर निरञ्जण सिँघ गुरमेज़ सिँघ थनेसर ✪

कचा तन्द कहे मैं नानक दी धार प्रेम दी खेसी, ख़ालस सालस इक्को वेख वखाईआ। जिस दे हुक्म ने फेरया देस परदेसी, धरनी धरत धवल धौल रंग रंगाईआ। उह मालक ख़ालक धुर दा नर नरेशी, निरगुण निरवैर निरँकार अगम्म अथाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे अगम्मा वेसी, वेस अनेका आपणा रूप बदलाईआ। जिस दे हुक्म विच फिरदे विष्न ब्रह्मा शिव महेषी, आदि जुगादि भज्जण वाहो दाहीआ। उह मालक ख़ालक नूर नुराना नर नरेशी, नर नरायण इक अख्वाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल गोबिन्द दस दस्मेशी, दहि दिशा तों बाहर वेख वखाईआ। उह कलयुग क्रिया कूड़ मेटे कलेशी, कलमा काएनात समझाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह करदा बाशक तशका शेषी, मुख सहँसर ढोले गाईआ। मेरी उस दे चरण कवल आदेसी, निव निव लागां पाईआ। जिस दे अग्गे कलयुग अन्त सब दी होणी पेशी, पेशीनगोईआं आपणा हाल सुणाईआ। उह स्वामी ठाकर नूर नुराना नर नरेशी, नरायण साक सैण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरा मालक अनक कलधारी, कलमा काएनात जणाईआ। दो जहानां शाहो भूप सिक्दारी, शहिनशाह अगम्म अथाहीआ। जोती जाता हो के निरगुण जोत करे उज्यारी, उजाला दीन दुनी आप कराईआ। जो भगतां पैज रिहा संवारी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं उस दे चरण कवल धवल हो के करां निमस्कारी, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। सति सतिवादी हो के जावां चरण कवल बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। जो अन्त कन्त भगवन्त भगतां पैज रिहा संवारी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं उस दी आदि जुगादि पनिहारी, पटघट बैठी ध्यान लगाईआ। जो निरगुण निरवैर हो के पावे सारी, महासार्थी आपणी दया कमाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी पिच्छों आई वारी, नव नौ चार देण गवाहीआ। उह कलयुग अन्त कलि कल्की अवतारी, अवतर हो के खेल खिलाईआ। मैं उस दी बिन आसा तों होवां पुजारी, पूजनीक कहि के सीस निवाईआ। जेहड़ा मेरी कलयुग अन्त कटे दुष्वारी, दूई द्वैती मेटे थांउँ थाँईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां आत्म परमात्म दसे यारी, यारड़ा सेज आपणी दए वखाईआ। आदि जुगादि जिस दा नूर नूर उज्यारी, जोती जाता डगमगाईआ। जो भगतां देवणहारा नाम खुमारी, मस्ती आपणी हस्ती विच्चों चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरा ठाकर स्वामी सर्ब गुणवन्त, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। जो आदि जुगादि

१५५६
२४

जुग चौकड़ी बणावणहारा बणत, घड़न भन्नणहार एकँकार इक अख्वाईआ। जिस दा नाम निधाना दो जहानां अगम्मा मंत, मंतव सब दे हल कराईआ। जिस नूं आदि जुगादि गाउँदे हरिजन साचे सन्त, सति सतिवादी कहि के सीस निवाईआ। मेरे उत्ते जन भगतां बणावणहारा बणत, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरा पुरख अकाला अलख, अलख अलखणा इक अख्वाईआ। जो निरगुण धार हो प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा दरस दिखाईआ। हरिजन भगत सुहेले करे वक्ख, कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सिर स्वामी ठाकर हथ्थ दे के लए रख, रखया करे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। धरनी कहे मेरा परम पुरख प्रभ प्यारा, प्रीतम इक अख्वाईआ। जो भगतां दए सहारा, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। गृह मन्दिर सुहाए इक दवारा, ठाकर हो के पर्दा लाहीआ। बिन रसना जिह्वा बोल जैकारा, शब्द अनादी धुन दए सुणाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोती जाता हो के डगमगाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूंद स्वांती देवे ठण्डी ठारा,
१५५७ अग्नी तत तत बुझाईआ। भगत सुहेला बण के एकँकारा, अकल कलधारी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १५५७
२४ आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडा इक प्रगटाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां चाढ़ दे रंग, रंगीले २४
माधव दया कमाईआ। निरगुण धार सरगुण ला लै अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। शब्द नाद सुणा मृदंग, अनहद नादी नाद वजाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, बिन पावा चूल वड्याईआ। मेरी आसा पूरी करदे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जन भगतां भेव चुका दे ब्रह्म हँ, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। घर ठाकर स्वामी खुशीआं नाल आउणा लँघ, तन वजूद हक महबूब आपणा फेरा पाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्द, सोहला ढोला इक सुणाईआ। जन भगतां खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी आपणे विच रखाईआ। बिन रसना जिह्वा देणा अनन्द, अनन्द दे मालक आपणी दया कमाईआ। सुरती शब्द समाउणी परमानंद, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत रहीम रहमान देणी कमाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ दिल्ली शहर हरि भगत दवार धीरपुर तरलोक सिँघ , गुरचरण सिँघ, चन्दा सिँघ, हरभजन सिँघ, रुलदा सिँघ, महिन्दर सिँघ, अवतार सिँघ, गुरबलविंदर सिँघ, महिंगा सिँघ, भजन सिँघ, गुरदर्शन सिँघ सरहंद, मल सिँघ फरीदाबाद ✪

धरनी कहे जन भगतो आपणे चरण छुहाओ मेरे सीस, सदके वारी घोल घुमाईआ। तुहाडे अन्तर निरंतर मैनूं दिसे हक जगदीस, जगदीश्र धुर दा माहीआ। जिस दा आदि जुगादि पीसण रही पीस, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरी आदि जुगादी बेनन्ती, सीस जगदीस निवाईआ। मेरा लहिणा देणा नाल संगती, सगले संगी आपणा रंग वखाईआ। मैनूं दूजे दर होण ना देवीं मंगती, भिक्खक हो ना झोली डाहीआ। साचा माण रखाउणा विच संगती, सगले संगी आपणा संग निभाईआ। मैं बगैर आशा इक्को आशा मंगदी, इक्को आस रखाईआ। दर तेरे अलख जगाउँदी मूल ना संगदी, सगले संगी तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म अगम्म वरताईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत बणा दे सुहेले, साजण धुर दे नज़री आईआ। दीन दुनी नालों करदे वेहले, प्रेम प्रीती तेरी विच समाईआ। इक्को रंग रंगां दे गुरु गुर चेले, चेला गुर वड वड्याईआ। लहिणे देणे मेरे तक्क लै मेरे जंगल जूह बेले, उजाड़ पहाड़ टिले पर्वत सागराँ ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे जन भगतो बिना ज़बां करो बेनन्ती, मुक्ख दन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडी मनजूर होवे पंगती, बिन अक्खरां अक्खर सिफ्त सलाहीआ। बुद्धी तों परे बणो पंडती, जगत विद्या लोड़ रहे ना राईआ। आपणी धार तको संगती, सगला संग जणाईआ। जगत तृष्ना मेटो मन दी, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। मुहब्बत तक्को गोबिन्द सूरे चन्न दी, जो चन्द सितार निशाना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा वणज आप कराईआ। धरनी कहे प्रभू, मेरा बण जा दुःख भंजन, भव सागर पार कराईआ। जन भगतां नेत्र पा दे अंजन, निराकार डगमगाईआ। बिना जगत प्रीत बण जा सज्जण, सिर सर तेरे भेंट कराईआ। तेरे दीपक जोती मेरे गृह जगण, घट घट होए रुशनाईआ। मैं सदा सुहेले तेरे विच होवां मग्न, तेरे रंग समाईआ। तूं मेरी मेटणी अग्न, चिन्ता चिखा देणी जलाईआ। मेहरवान लाउणा अंगण, अंगीकार आप हो जाईआ। तेरे दर ते आई मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे लेखे ला लै तत पंजण, पंचम मीते आपणे चरण कवल रखाईआ। आत्म धार परमात्म बख्श दे मजन, दुरमति

१५५८
२४

मैल रहे ना राईआ। नव सत्त ब्रह्म मति तेरे नाम नगारे वज्जण, दो जहान श्री भगवान सुणन चाँईं चाँईंआ। कूड़ कुड़यार मेरे उत्तों कलयुग कल्पणा मेट दे हँ ब्रह्मण, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां अन्दरों चुक्क दे पर्दा, द्वैत जगत रहे ना राईआ। अन्तष्करन किसे रहे ना सड़दा, अग्नी तत तत बुझाईआ। सहारा बख्शणा आपणे पल्लू लड़ दा, दीन दुनी दी गंढु छुडाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सचखण्ड चोटी वेखणा चढ़दा, बिन कदमां कदम टिकाईआ। मैनूं इयों जापदा नौ खण्ड तेरे कोलों मूल ना डरदा, भय सिर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे भगत तेरी करदे होवण याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाईआ। भाग लगावण इक्को तैनूं लैण अराध, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। निरगुण दाते पुरख बिधाते मोहण माधव माध, मधुर धुन देणी सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हरिजन होण ना देवीं बर्बाद, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो
१५५६ मेरे नाल करो मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। दोहां दा सांझा होवे जाप, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। १५५६
२४ तन वजूदां आपणा दूर कराओ पाप, पतित पुनीत करे धुरदरगाहीआ। तुहाडा लहणां देणा लेखा लग्गे आप, आप आपणा २४
रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सब ने जपणा जाप, अजपा जाप आप दृढ़ाईआ। सच प्रीती धरनी धरत धवल धौल खेल वेखणा इक इकांत, कलाधारी की आपणी कल वरताईआ। अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के आपणा आप करो शांत, बाहरों अग्न ना लागे राईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सब दा माई बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे जन भगतो परम पुरख दे वसो नेड़े, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। शरअ शरीअत दे मेटो झेड़े, झगड़ा दिसे ना खलक खुदाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरे खाली दिसण वेहड़े, वस्त नज़र कोए ना आईआ। दिवस रैण तक्को झेड़े, झगड़े विच खलक खुदाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले बिन तेरी किरपा सानूं कोई ना चाढ़े धुर दे बेड़े, बेड़ी नौका कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा इक्को लओ सहारा, समाजक राजक आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ छड्डो पसारा, जग नेत्र लोचन नैण वेखण कोए ना पाईआ। आपणा आपणा बल लओ धारा, धरनी कहि के रही सुणाईआ। पिच्छे जगत वासना लाउँदी नाअरा, जगत

हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला पावणहारा सारा, महासार्थी वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवणहारा दान, दाता दानी शाह सुल्तानी एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा, मेहरवान महबूब इक अख्वाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत १२ दिल्ली शहर हरि भगत दवार धीरपुर
पूरन सिंघ, दर्शन सिँघ, सरूप सिँघ, सुरिंदर कौर, महिन्दर कौर,
रतन सिँघ, करतार सिँघ, श्री नाथ दास दिल्ली ✪

धरनी कहे किरपा कर अल्फ़ बे दे मालक अब, अभी यदी यद्दप आपणी दया कमाईआ। मेरे परवरदिगार सांझे यार नूर अलाही रब्ब, यामबीन कहि के सीस निवाईआ। मेहरवाना नौजवाना श्री भगवाना हरिजन सन्त सुहेले लभ्भ, बिन नेत्र लोचन नैणां वेख वखाईआ। दीन दुनी दी मेरे उत्तों मेट दे हद्द, हदूद महिदूद आपणी इक समझाईआ। आत्म धार परवरदिगार एकँकार आपणी बणा लै यद, यादव दा लेखा पूर कराईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेले रहिण ना तैथों अलग, वक्खरी धार नज़र कोए ना आईआ। तूं शहिनशाह पातशाह सूरा सरबग्ग, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी जगदी वेखां अगम्मी जोती, जोती जाते पुरख बिधाते देणी वड्याईआ। आत्म धार भगत सुहेले बणा लै आपणे गोती, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। हरिजन सुरती अन्तर निरंतर रहे ना सोती, आलस निंद्रा क्रिया कूड़ बाहर कढ्ढाईआ। हरिजन सन्त सुहेले आपणे उठा लै माणक मोती, सोहँ हँसा इक्को चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लेखा तक्क बदहाली, हालत वेख खलक खुदाईआ। फल रिहा ना धुर दी डाली, पत टहणी ना कोए महकाईआ। मेरी लेखे ला लै घाल घाली, घायल हो के सीस निवाईआ। तुध बिन अन्तर निरंतर करे ना कोए दलाली, विचोला रहिण कोए ना पाईआ। आपणा जल्वा दे दे नूर जलाली, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। मेरा भण्डारा एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा भर दे खाली, ख़ालक मखलूक देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत सुहेले मेरे बणा दे मित, मित्र प्यारे दया कमाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कर हित, हितकारी हो के एकँकारी

ध्यान लगाईआ। जगत ठगौरीयों कढ्ढ बाहर जन भगतां वड़ जा विच, तन वजूद हक महबूब आपणा रंग रंगाईआ। मेरी सुहञ्जणी नर नरैण कर दे थित, घड़ी पल दए गवाहीआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी ठाकर स्वामी मेरा मित, मित्र प्यारा अगम्म अथाहीआ। बिन नेत्र लोचन नैणां तेरा दर्शन करां नित, निज नेत्र देणा खुल्हाईआ। काया माटी बज़र कपाटी पर्दा पाड़ खोल्हणा भित, भीतर आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मैनूं कलयुग कीता कमली कोझी, कुदरत दे कादर दयां जणाईआ। मेरे अन्तर निरंतर सति धर्म दी रही कोई ना सोझी, सति सच विच ना कोए मिलाईआ। बुद्धी तों परे दा मिले कोए ना बोधी, अनुभव दृष्ट ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तुध बिन चुक्के कोए ना गोदी, गोदावरी दा कन्ढा गोबिन्द गया समझाईआ। परम पुरख दा खेल होणा कलयुग अन्तिम धार विच संसार जिस दा लहिणा देणा वेदी सोढी, सो पुरख निरञ्जण आपणी कल वरताईआ। जिस दे प्यार विच जन भगत सुहेले बणने जोगी, जुगीशरां आपणा रंग रंगाईआ। जन्म कर्म दे दुःख मेट के रहिण देणा कोई नहीं रोगी, जगत दलिद्दरां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१५६१ कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां आपणी बख्श दे धार, धवल हो १५६१

२४ के वास्ता पाईआ। सो पुरख निरञ्जण कर प्यार, हरि पुरख निरञ्जण जोड़ जोड़ना चाँईं चाँईंआ। एकँकारे दे अधार, आदि २४

निरञ्जण कर रुशनाईआ। अबिनाशी करते पा सार, श्री भगवान आपणा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दे अधार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरा लहिणा देणा रहे ना विच संसार, दीन दुनी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे चरण कवल उपर धवल जावां बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। तेरा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन बणे ना कोए सहार, सहायक नायक लोकमाती पुरख बिधाती नज़र कोए ना आईआ।

✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत १२ दिल्ली शहर यू-१५ गरीन पारक ऐकसटैनशन
महिंदर सिँघ सवरनजीत कौर दे गृह ✪

सतिगुर शब्द कहे मेरी आदि जुगादी धारा, धरनी धरत धवल धौल उत्ते प्रगटाईआ। मेरा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग वेखां चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्त नव सत्त पावां सारा, दहि दिशा वेख वखाईआ। लहिणा देणा तक्कां गुर अवतारा, पैग़म्बरां भेव चुकाईआ। हरिजन वेखां मीत मुरारा, मित्र प्यारा हो के खोज खुजाईआ। लहिणा देणा पूरा करां विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। मेरा मालक ख़ालक चवीआं अवतारा, चौबीआ जगदीसा इक अख्वाईआ। जिस दा सन्त मनी सिँघ दुलारा, दूल्हा शब्द धार वड्याईआ। जिस दा मेल गुप्त ज़ाहरा, अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। बिन रसना जिह्वा बोल जैकारा, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। बिन रसना अमृत रस पीवे ठंडा ठारा, अग्नी तत तत बुझाईआ। सति सच बण अधारा, उदर दा लेखा गया मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी एक, एकँकार दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी सब दी टेक, दो जहानां हुक्म वरताईआ। नाम संदेशा कलमा काएनात देवां नेक, नीकन नीका हो के दीन दुनी वरताईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हो के लवां वेख, वेखणहारा इक अख्वाईआ। मेरा जुग चौकड़ी अवल्लड़ा भेख, वेस अवेसा आप दरसाईआ। मेरा लहिणा देणा गोबिन्द नाल दस दस्मेस, दहि दिशा संग बणाईआ। जो सदा सदा रहे हमेश, सो मेरा रूप अलाहीआ। जिस दा सन्त मनी सिँघ दे के गया संदेश, सोहला ढोला धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे शाह पातशाह राज राजान नरेश, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस कलयुग अन्त मेटणा कलेश, कल कातीआं करे सफाईआ। उस नूं सईयदा इक्को संदेश, धुर फुरमाणा जो फ़रमाणयां विच्चों जणाईआ। जिस दी सिफ्त सलाह वड्याई करे शेष, शाह पातशाह हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी आप, आप आपणा भेव जणाईआ। नाम कलमे सिफ्त सलाह मेरा जाप, अक्खरां ढोले राग दयां दृढ़ाईआ। निरगुण धार सरगुण सब दा माई बाप, पिता पूत गोद टिकाईआ। सच संदेशा सुनेहड़ा देवां पात, पत्रका इक समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा नाल कमलापात, पतिपरमेश्वर की समझाईआ। जो हरिजन भगत सुहेला जोड़े आपणा नात, बिधाता हो के वेख वेखाईआ। जो झगड़ा मेटे ज़ात पात, दीन दुनी दा लहिणा देणा देवे थांउँ थाँईंआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त मेटणहारा अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। वसणहारा सचखण्ड दवार एकँकार इक इकांत, अकल कलधारी एकँकारी आपणा खेल खिलाईआ। सो भगत जनां देवणहारा धुर दी दात, नाम निधाना झोली पाईआ। लहिणा देणा लेखा पूरा करे लोकमात, धरनी धरत धवल धौल उत्ते रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन पुछणहारा वात, वारस हो के वेख वखाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी गहर गम्भीरा, गवर इक अख्वाईआ। तन वजूद ना कोए शरीरा, माटी चम्म ना कोए वड्याईआ। सीस बध्धा ना कोए चीरा, मूंड मुंडाया रूप ना कोए दरसाईआ। जिस दी वेख सके ना कोए तस्वीरा, मुसव्वर तसव्वर कर ना कोए जणाईआ। मेरा खेल कलयुग अन्त अखीरा, आखर दयां सुणाईआ। जो संदेशे दे के गया कबीरा, कुदरत दा कादर की आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने लेखे लाया रवीदास कसीरा, कौडी कीमत आपणे घर पाईआ। उह जन भगतां जिंदगी विच्चों जिंदगी करे ताअमीरा, जीवण विच्चों जीवण दए बदलाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना अमृत रस देवे सीरा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। सति सन्तोख बख्शे धीरा, धीरज धर्म धार दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा संदेशा सिँघ मनी, मुनीश्रं बाहर जणाईआ। जो धुर धार दा बणाया धनी, धरत धवल धौल वड्याईआ। नाम सुणाया बिना कन्नी, काएनात कीती पढ़ाईआ। वसेरा कराया बिना छप्पर छन्नीं, महल्ल अटल इक दृढ़ाईआ। नूर जोत प्रकाश करके चन्नी, चन्द चांदनयां बाहर डगमगाईआ। सच प्रीती इक्को बंनी, बन्दना इक्को इक समझाईआ। आत्म परमात्म प्यार बणया तनी, तन वजूदां
१५६३ लेखा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। १५६३
२४ सतिगुर शब्द कहे सन्त मनी सिँघ खुशीआं विच बोल जैकारा, सहिज नाल दिता समझाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते तेरा २४
खेल होवे न्यारा, निराकार निरँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। तेरा नाउँ नरैण होवे चवीआं अवतारा, अवतरी तेरी बेपरवाहीआ। मैं खुशीआं विच लावां तेरा नाअरा, नर नरैण तेरा ढोला गाईआ। मेरा लहिणा देणा याद रखणा इकरारा, कौल तेरे चरण टिकाईआ। जिस वेले कलयुग होवे अन्ध अँधयारा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरा संगी प्यारा सिख होवे तेरा दुलारा, दो जहानां मालक आपणी गोद उठाईआ। सतिगुर शब्द खुशीआं नाल कीता इज़हारा, सहिज सहिज नाल जणाईआ। तेरा कर्ज़ा मकरूज हो के लाहवां सारा, लहिणा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जिस वेले भगत भगवान दा इक्को होया जैकारा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। झट्ट सन्त मनी सिँघ लाया नाअरा, मैं तेरा बिना ततां तों दुलारा दो जहानां दे मालक सच सरनाईआ। झट सतिगुर गोबिन्द दिता इशारा, जिस वेले सम्मत शहिनशाही आवे बारां, बारां मास दा लेखा रहे ना राईआ। तेरा पूरा कौल होवे विच संसारा, सति सतिवादी हो के पूर कराईआ। झट मनी सिँघ बिना धूड़ तों मस्तक लाई छारा, टिक्के साचे नाम रमाईआ। ओसे दा लहिणा ओसे दे लेखे पाउण आए आप करतारा, कुदरत दा कादर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत पवित्र पवित पुनीत करे घर बारा, गृह मन्दिर अन्दर आप आपणा नाम रंग चढ़ाईआ।

✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत १२ गुड़गांउ शहर सेवा सिँघ दे गृह ✪

प्राइमरी कहे मेरीआं जमातां चार, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। मेरा लहिणा देणा चार कुण्ट दी धार, चार वरनां वेख वखाईआ। चौथे जुग वेखां नैण उग्घाड़, बिन नेत्र अक्ख अक्ख उठाईआ। मेरा मालक ख़ालक इक्को परवरदिगार, सांझा यार इक्को नूर अलाहीआ। सतिगुर शब्द जो संदेशा देवे वारो वार, भेव अभेदा अगम्म खुल्ह्ाईआ। मेरी सिख्या जगत अक्खरां बाहर, विद्या विच विद्अत ना कोए कराईआ। कोटां विचो कोई गुरमुख विरला पढ़े विच संसार, जिस सिर सतिगुर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरी पहली जमात बड़ी दुष्वार, दुश्मण चारों कुण्ट अन्तर निरंतर नज़री आईआ। मेरा लहिणा देणा नाल नौ दवार, जगत वासना संग बणाईआ। दहि दिशा करां विचार, बिना सोच समझ आपणी लवां अंगड़ाईआ। जोती
१५६४ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। प्राइमरी कहे मेरी जमात १५६४
२४ पहली, एका एका वेख वखाईआ। जिस विच होए ना कोए अनगहिली, गफ्लत रूप ना कोए दरसाईआ। जेहड़ी विद्या २४
बिना ज़बान तों कहि लई, बिना सरवणां सुणनी चाँई चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। प्राइमरी कहे गुरमुख विरला मेरी पहली करे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। सतिगुर शब्द उत्ते करे विश्वाश, जगत विषयां डेरा ढाहीआ। तन वजूद लेखा तक्के अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुद्ध नाल रलाईआ। नौ दवारयां निगाह मारे खास, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जिस उत्ते किरपा करे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। प्राइमरी कहे जेहड़ा हरिजन पहली पढ़दा, जगत लेख शरअ ना कोए रखाईआ। धर्म दी धार विच दूजी चढ़दा, चढ़दा लहिदा दक्खण पहाड़ इक्को तक्के धुर दा माहीआ। अन्दरों किल्ह्ा तोड़े हँकारी गढ़ दा, हउमे हंगता दूर कराईआ। लेखा जाणे चोटी जड़ दा, चेतन हो के वेख वखाईआ। लहिणा तक्के बहत्तर नड़ दा, हड्ड मास खोज खुजाईआ। खेल तक्के शरीर धड़ दा, तन वजूद फोल फुलाईआ। जगत दुआरे पार करदा, नव दवार दा डेरा ढाहीआ। राह वेखे आपणे घर दा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा

हुक्म इक वरताईआ। प्राइमरी कहे मेरी दूजी जमात चंगी, पहली नालों मिले वड्याईआ। सतिगुर प्यार विच लावे अंगी, अंगीकार आप हो जाईआ। आसा पूरी करे मंगी, मनसा जगत टिकाईआ। अमृत धार प्याए गंगी, बूंद स्वांती कवल नाभ टपकाईआ। मनुआ दहि दिश ना धाए फरंगी, चार कुण्ट ना उठ उठ धाईआ। साचे प्यार दी दस्से पाबन्दी, नाम बन्धन विच बंधाईआ। सच प्रेम बणा के सन्बंधी, सगला संग जणाईआ। अन्दरों द्वैत दी ढाए कंधी, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। लेखा मुक्के प्रकृती पंझी, पंजां ततां संग बणाईआ। लहिणा मेटे विकार जंगी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना रंग रंगाईआ। जगत वासना करे कोए ना तंगी, तंगदस्ती दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दूजी आपणे रंग रंगाईआ। प्राइमरी कहे जिस मेरी दूजी कर लई पूर, पूरा सतिगुर दया कमाईआ। तीजी जमात दा इक दस्तूर, असूल नियम इक जणाईआ। अन्तर निरंतर रहे ना कोए गरूर, गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। साचे नाम दा दए सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जगत विकारा करे चूर, क्रिया कूड़ बाहर कढ्ढाईआ। अमृत रस नाल करे भरपूर, तृष्ना जगत गंवाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, घर घर विच दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१५६५ किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। तीजी जमात कहे मैनूं गुरमुख वेखे चंगी तरह, तरीका १५६५

२४ सतिगुर दए जणाईआ। जिस विच पाबन्दी नहीं कोई शरअ, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। जगत विद्या अक्खर ना कोई २४

पढ़ा, कागज़ कलम ना कोए चतुराईआ। जगत सरोवर लोड़ रहे ना सरा, तीर्थ तट ना कोए चतुराईआ। तीजी जमात विच मिले अगम्मा वरा, वरदाता हो के दए वड्याईआ। इक्को हुक्म सुणाए खरा, ख़ालस इक्को रंग रंगाईआ। अमृत जाम प्या के ज़रा, ज़रे ज़रे विच्चों आपणा नूर दरसाईआ। अन्तर निरंतर जिस दे नाल ठरा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। तीजी जमात कहे मेरे शब्द दी अगम्मी धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। भगत सुहेला लए सुण, अणसुणत दए जणाईआ। हरिजन आपणे लए चुण, खोजणहारा थाउँ थाँईंआ। जिस दी सिख्या विच वड्डा गुण, अवगुण कूड़े बाहर कढ्ढाईआ। भगत सुहेले सन्त मीत आपे चुण, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। जिस दा लेखा कोई ना जाणे रिख मुन, भेव अभेदा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तीजी जमात कहे मेरी बड़ी सोहणी पढ़ाई, अल्फ़ बे वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा सोहणा हिन्दसा इकाई, एका एक सोभा पाईआ। जिस दी ख़ुशी मेरे अन्तर ना सके समाई, गिणती गणत ना कोए जणाईआ। मेरी बुद्धी नालों होए जुदाई, मति चले ना कोए चतुराईआ।

मनुआ दहि दिश ना उठ उठ धाई, नव भज्जे ना वाहो दाहीआ। इक्को मीता सतिगुर मिले गुसाँईं, गहर गवर इक अख्वाईआ। जो आपणा पर्दा दए उठाई, बजर कपाटी रहिण ना पाईआ। अमृत जाम बूँद स्वांती निझर झिरनयो दए प्याई, नाभी कवल कवल उलटाईआ। सहँस दल नच्चे टप्पे चाँईं चाँईं, खुशीआं ढोले गाईआ। शब्द धुन नाद करे शनवाई, बिन सरवणां दए सुणाईआ। सतिगुर पूरा मेरी प्रीख्या लए चाँईं चाँईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तीजी जमात कहे मैं वी जावां मुक, मुकम्मल दयां दृढ़ाईआ। इस तों अग्गे इक्को होवे तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। आत्म परमात्म रहे कोई ना लुक, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। चौथी जमात विच हरिजन चढ़ के होए खुश, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। इक्को सतिगुर शब्द साची संथा लए पुछ, भेव अभेदा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। प्राइमरी कहे मेरी जो चढ़ जाए चौथी जमात, जुमला अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। सतिगुर आपणी किरपा करे अनाइत, मुफ्त मुफ्त मुफ्त वरताईआ। धुर दा शब्द करे हदाइत, बिन अक्खरां दए समझाईआ। मेहरवान हो के साची करे हमाइत, हमसाजण

१५६६ इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। १५६६

२४ चौथी जमात कहे मेरे उत्ते मेरा साहिब करे मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं कोटां विच्चों पढ़े कोई जीव प्राणी, जिस २४

उपर सतिगुर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उहदा लहिणा देणा मुक्क जाए नालों चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड ना कोए वंडाईआ। चार वरन ना करन परेशानी, बरनां डेरा ढाहीआ। साची मंज़ल इक्को मिले रुहानी, रूह बुत्त तों बाहर वजदी रहे वधाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं जिस्म जिस्मानी, जिस्म जमीर दए बदलाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं कलम कानी, कागज़ शाही वंड ना कोए वंडाईआ। चौथी जमात नूं पढ़ सके ना कोई अक्ल वाला विद्वानी, बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। जिस उत्ते सतिगुर किरपा करे उह मेरी विद्या करे पहचानी, बिन अक्खरां अक्खर वेख वखाईआ। जिथ्थे लहिणा देणा नहीं ज़िमीं असमानी, मण्डलां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। चौथी कहे मेरा लेखा नहीं कोई पंडती, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। मेरा लहिणा देणा नहीं कोई हंगती, हँकार गढ़ ना कोए रखाईआ। मेरी तृष्ना नहीं कोई मन दी, ममता मोह ना कोए जणाईआ। मैं वणजारी नहीं कदे कन्न दी, सरवणां रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। चौथी जमात कहे जन भगतो मेरी इक्को अगम्मी बात, बातन दयां जणाईआ।

मेरी मंज़ल दा लेखा नाल कमलापात, पतिपरमेश्वर मिल के वज्जे वधाईआ। इक्को गृह इक्को दवारा जिथ्थे ना कोई दिवस ना कोई रात, सूर्या चन्द ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। प्राइमरी कहे मेरी पढ़ाई जगत जमातां चार, चारे खाणी चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोल्यां विच सिफ्त सलाहीआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेरा यार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दे हुक्म विच मेरी ख़ुशीआं वाली बहार, रुत्त मौले अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। प्राइमरी कहे मेरी पढ़ाई दी अगम्मी धर्मसाल, मकतब सच हक जणाईआ। जिस दी विद्या बेमिसाल, मिसल सके ना कोए जणाईआ। जिथ्थे मुर्शद मुरीदां पुच्छे हाल, मालक बेपरवाहीआ। ओथे इक्को इक सवाल, बिन अक्खरां जणाईआ। जिस उपर किरपा करे दीन दयाल, दयानिध होए सहाईआ। उस दी सिख्या बड़ी कमाल, कामल मुर्शद हो के दए जणाईआ। जिस विद्या नूं पढ़ के कदे ना होवे ज़वाल, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। चौथी जमात विच्चों चौथी मंज़ल होए बहाल, चौथे पद दा मालक मिले धुर दा माहीआ। जो मास्टर टीचर उस्ताद हो के आपे लए संभाल, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौथी जमात कहे मेरे तों अग्गे कोई ना जांदा, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। चौथे घर दे ढोले हरिजन गांदा, बिन रसना राग दृढ़ाईआ। इक्को संदेशा वाह वाह दा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। तेरा लेखा लहिणा देणा बिना अक्खरां वाले नाँ दा, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। चौथी जमात कहे जरा तक्कणा नाल गौर, गहर गवर जणाईआ। मैनूं ख़ुशीआं नाल पढ़ के विद्या पूरी कीती बलवन्त कौर, लेखा दीन दुनी मुकाईआ। जिस दा मानस जन्म गया सौर, सौहरे पईए इक्को घर मिली वड्याईआ। धुर दा मालक मिल्या बांका शौहर, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादी भगतां जाए बौहड़, जगत जहान वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। जो मिठ्ठे रस करे कौड़, कुड़त्तण अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। जिस दा लेखा नाल ब्राह्मण गौड़, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। उह पहली दूजी तीजी भज्ज के चौथी मंज़ल चढ़ गई पौड़, बिन कदमां कदम टिकाईआ। जिस दा मार्ग रिहा ना सौड़, भीड़ी गली नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। बलवन्त कौर कहे जन भगतो मैं जमात चौथी बिन अक्खरां तों पढ़ी, पढ़न वाल्यो दयां जणाईआ। मेरी विद्या दो जहानां बड़ी, बिन अक्खरां मिली वड्याईआ। जिस ने मेरी सुलखणी कीती घड़ी, वक्त

१५६७ २४

पल नाल वड्याईआ। बिशन सिँघ दे मास्टर सतिगुर शब्द ने मेरी बांह फड़ी, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। प्राइमरी पढ़ के भगतो मैं सचखण्ड दुआरे खड़ी, खड़ी खड़ोती सब नूं दयां समझाईआ। जगत विद्या वाले तन सड़ गए विच तन दी मढ़ी, मसाणां विच आसण लाईआ। मेरी आत्मा परमात्मा नाल मिल के खरी दी खरी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। क्यों सतिगुर शब्द ने किरपा करी, करनी दे करते दिती वड्याईआ। मैं पुज्ज गई आपणे अगम्मे घरी, जिस घराने विच्चों बाहर ना कोए कढ्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। बलवन्त आत्मा कहे मैं चौथी जमात पढ़ के हो गई पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। ढोला गावां बिना पवण स्वास, साह साह ना कोए चतुराईआ। पन्ध मुका के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतरां डेरा ढाहीआ। सति सच दी वेखां रास, बिन गोपी काहन सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत प्रकाश, बिन तेल बाती डगमगाईआ। हरिजन आत्म धार बैठे बिन चरणां चरणां पास, सोहणा संग बणाईआ। मेरा खुशीआं विच निकले हास, हस्स हस्स के दयां जणाईआ। जन भगतो प्रभू दी चरण प्रीती चौथी मंज़ल दी कलास, चौथे पद दा लहिणा जगत दी हद हदूद दए मुकाईआ। जिथ्थे सतिगुर शब्द देवे शाबाश, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखो चौथी जमात पढ़न वाल्यो सब दा अन्तिम सचखण्ड विच होणा निवास, जगत जमातां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक सुहाईआ। आत्मा कहे मैं चौथी जमात पढ़ी निराली, निरगुण निरवैर दिती पढ़ाईआ। बिन अक्खरां विद्या दस्स सुखाली, सोहणी सच्ची दिती वड्याईआ। मेरा लेखा लहिणा तक्क लओ हाली, हर हिरदे दयां जणाईआ। जिथ्थे ना कोई जवाब ना सवाली, तालबइलम बिना इलम तों करे शनवाईआ। किरपा करे पुरख अकाला जोत अकाली, अकल कल धारी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। प्राइमरी कहे जन भगतो मेरे तों अग्गे नहीं कोई प्रेम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी मेरे ढोले गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा आदि जुगादी नेम, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण देवणहारा देण, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चौथी जमात कहे मेरा इक्को चौथा पद, सोहणी वंड वंडाईआ। सन्तो भगतो सूफीओ, तुहाडी मंज़ल दी अगम्मी हद्द, हदूद इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे बिना जगत साज़ तों वज्जे नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। बिना तेल बाती दीपक तों जोत जाए जग, जोती जाता डगमगाईआ। जगत विद्या नालों हो जाण अलग, हरिजन हरिजन हरिजन मिले माण वड्याईआ।

एह विद्या सतिगुर पूरा देवे सरबग्ग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे पढ़न नाल जगत विद्या बुझ जाए अग्ग, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा आपणा हुक्म वरताईआ। प्राइमरी कहे जिस नूं मेरी विद्या पढ़न दा चाउ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। सतिगुर शब्द शब्द मनाओ, मनसा अवर ना कोए दृढ़ाईआ। परम पुरख परमात्म मंनो धुर दा पिता माउँ, दूसर अवर ना कोए जणेंदी माईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग समाओ, जगत रंगत रहिण कोए ना पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी पुरख अबिनाशी आपा भेंट कराउ, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी एथे ओथे दो जहान पकड़े बाहों, मालक ख़ालक प्रितपालक हो के आपणी दया कमाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ हरबंस सिँघ दे गृह गुड़गांउ शहर ✪

१५६८ हरी दा बंस भगवान दा परीवार, भगत सुहेले सोभा पाईआ। जिन्हां दा लहिणा देणा सदा जुग चार, जगत जुगत १५६८
२४ जुग चौकड़ी आपणा रंग रंगाईआ। प्यार मुहब्बत वाली सदा महकदी रहे बहार, पत टहणी फल फुल आपणे रंग रंगाईआ। २४
वेखे विगसे पावणहारा सार, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। लोकमाती गुलशन हक वेखे गुलज़ार, हरिजन नव सत्त ध्यान लगाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर इक जैकार, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। तिन्हां दा मालक मीत मुरार, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दा खेल सदा अपार, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। भगत वछल बण गिरधार, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां पैज देवे संवार, साहिब स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा दए निवार, कर्म कर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक वड्याईआ। हरी कहे मेरा बंस सुहावा, हरिजन साचे सोभा पाईआ। जिन्हां दे उपर प्रेम प्यार दा दाअवा, दाअवेदार इक अख्वाईआ। ओन्हां दा वज़न सच दवार सांवा, कंडा तोल तराज़ू इक्को इक वखाईआ। बिना अक्खरां तों चरण कवल लगाए नांवां, बिन हरफ हरूफ़ पढ़यां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। हरी बंस कहे मेरा धर्म धार दा नावां, नाउँ निरँकार दिती वड्याईआ। मेरीआं प्रेम प्यार दीआं बाहवां, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। बलवन्त कहे मैं हरबंस पुत्त पालया वध के नालों मावां, आप आपणी

गोद टिकाईआ। मेरा सतिगुर स्वामी सिर रखे जिस दे छावां, मेहरवान हो के दया कमाईआ। मैं उसे दे बलि बलि जावां, जिस सचखण्ड दवार मैनूं दिती वड्याईआ। जिस दे प्यार विच हरिभगत रहे ना कोए निथावां, थान थनंतर आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। झट सन्त मनी सिँघ धार रही पुकार, खुशीआं ढोले गाईआ। मेरा पूरब लहिणा चुक्कया उधार, दर सच मिली वड्याईआ। किरपा करी आप निरँकार, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। बिशन सिँघ बिन विष्न ब्रह्मा शिव दिता तार, बिन शंकर लेखा दिता मुकाईआ। खुशीआं विच रख परवार, परम पुरख दए वड्याईआ। जो आदि जुगादी लहिणा देणा देवे विच संसार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरा इक ओढण जो बख्शे बख्शिश वाली कार, रहमत रहमत विच्चों कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सब दा मीत मुरार, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत १२ गुरदेव सिँघ, जेठा सिँघ, बीर सिँघ, बठलाणा
पिण्ड माणक पुर कलर ज़िला अम्बाला ✪

धरनी कहे मेरे उत्ते जुग चौकड़ी जांदी लँघी, पाँधी बण के बिन कदमां कदम उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मैं मंग कदे ना मंगी, कलयुग अन्तिम मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी पिठ हो गई नंगी, पुश्त पनाह बेपरवाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेहरवान श्री भगवान जगत वस्त रही कोए ना चंगी, चार कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। झगड़ा मिटे ना प्रकृती पंझी, पंचम तत ना कोए वड्याईआ। मेरे अन्तष्करन आउँदी रंजी, रंज़श विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा इक सुहाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी हालत वेख लै जगत, दीन दुनी दे मालक ध्यान लगाईआ। सति सुहेले आपणा तक्क लै वक्त, घड़ी पल पल नाल मिलाईआ। तूं साजण मीता ठांडा सीता एकँकारा इक्को फ़कत, फिकरा सोहला ढोला दे जणाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा अवतार पैग़म्बरां गुरुआं नाल शर्त, शहिनशाह हो के वेखणा चाँई चाँईआ। मैं तेरे प्यार विच एकँकार होवां मस्त, मस्त मस्तानी मंज़ल रुहानी विच लैणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वेख लै अन्तष्करन दा दुःख, बिन नेत्र लोचन ध्यान लगाईआ। मानव जाती धार तक्क मानुख, मानस मानस

विच्चों पकड़ उठाईआ। नव सत्त सच प्यार दी मेरे उत्ते पई अगम्मढ़ी भुक्ख, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर सच अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण धरनी धौल जगत धार दी धरत, सति सच दयां दृढ़ाईआ। तेरा मालक ख़ालक ठाकर स्वामी आवे परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी शब्दी धार अगम्मी शर्त, शरअ दे लेखे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी दीन दयाल दया कमावेगा। पुरख अकाला वेस वटावेगा। धुर दा दे अगम्म संदेश, सँध्या सरघी इक्को रंग रंगावेगा। कलयुग मेटे अन्त कलेश, कल कातीआं डेरा ढावेगा। भेव खुल्हाए जो वसे आदि जुगादि हमेश, हमसाजण इक जणावेगा। जो संदेशा दे के गया गोबिन्द दस दस्मेश, दहि दिशा हुक्म आप वरतावेगा। कलयुग क्रिया कूड़ मेटे कलेश, कल कातीआं डेरा ढाहवेगा। अन्तर आत्म देवे धुर संदेश, साची सिख्या सिख समझावेगा। जो आदि जुगादि रहे हमेश, हम साजण इक अख्वावेगा। जिस दे हुक्म अन्दर सारे होए पेश, पेशीनगोई आप दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक
१५७१ हो के दया कमावेगा। सतिगुर शब्द कहे धरनी तेरा पूरा होवे हक, हकीकत दा मालक दए वड्याईआ। तेरा सहिंसा मेटे १५७१
२४ शक, शिकवा अन्दरों दए कढाईआ। तूं बिन नेत्र लोचन नैणां लैणा तक्क, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जोती जोत २४
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी सुण हुक्म श्री भगवन्त, हरि करता की दृढ़ाईआ। जो आदि जुगादी मेरा कन्त, कन्त कन्तूहल नूर अलाहीआ। जो काया चोली रंग चाढ़े अगम्मी रंगत, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे सतिगुर शब्द मेरी बिन रसना जिह्वा पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। मेरा लहिणा देणा तक्क लओ विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी की आपणा हुक्म वरताईआ। धुर दे हुक्म विच नौ खण्ड पृथ्मी होणी जै जैकार, सत्तां दीपां ढोला इक्को लैणा गाईआ। सतिगुर शब्द परम पुरख दा इक्को होणा बरखुरदार, अज़ीज़ तमीज़ आप दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोती जाता देवणहारा दान, वस्त अमोलक अनमुल अतुल दाता दानी हो के जन भगतां धौले धवले धरनी धरत तेरी झोली नाल भराईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड माणक पुर कलर ज़िला रोपड़ ✪

धरनी कहे प्रभू जन भगतां नाता जोड़, दो जहानां मालक ख़ालक तेरी आस रखाईआ। अमृत रस मिठ्ठे बणा दे कौड़, कूड़ी क्रिया तन वजूद बाहर कढ्ढाईआ। मनुआ दहि दिश ना उठ उठ जावे दौड़, चार कुण्ट ना कोए हल्काईआ। घर स्वामी वखा दे आपणा अगम्मा पौड़, बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल देणी चढ़ाईआ। तैनूं अवतारां निरगुण धार मन्नया ब्राह्मण गौड़, गोबिन्द धार तेरा रूप अगम्म अथाहीआ। कलयुग अन्त अखीर बेनज़ीर सच दुआरे आपे बौहड़, गुरमुख गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। मेरी बेनन्ती, बिन हथ्थां हथ्थ रही जोड़, नमों नमों कहि के सीस निवाईआ। दो जहानां ठाकर दर्शन दे चढ़ अगम्मे घोड़, पैंडा दो जहान मुकाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेरे उत्तों दे होड़, होड़ा सस्से वाला दए गवाहीआ। कलयुग अन्तर सति धर्म दा पा दे मोड़, धुर दा हुक्म हुक्म जणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां कदी ना जावीं छोड़, छुटकी लिव लैणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगत बणा लै धुर दे चेले, चेला गुर आपणा खेल खिलाईआ। आत्म परमात्म कर मेले,
१५७२ मिलणी हरि जगदीश कराईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साचे सुहेले, साजण तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा करदे १५७२
२४ आदि जुगादी इक अकेले, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। भेव खुल्ला दे आपणे धाम नवेले, सचखण्ड पर्दा दे उठाईआ। २४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। धरनी कहे किरपा कर मेरे जगदीश, जगदीश्‍र तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण तेरा पीसण रही पीस, जुग जुग साची सेव कमाईआ। तेरे नाम कलमे सुणदी रही हदीस, हज़रत रसूल पैग़म्बर गए जणाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक एकँकारा इक इकीस, इक इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करदे बीस बीस, आदि जुगादी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू हरिजन आपणे बणा लै सन्त, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। आत्म परमात्म धार बण जा कन्त, कन्तूहल तेरे हथ्थ वड्याईआ। जीवण विच्चों जीवण जिंदगी जिंदगी वाली बणा दे बणत, घड़न भन्नणहार आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावण मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं बोध अगाधा अगम्मा पंडत, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणा लै इक्को संगत, सगले संगी बहुरंगी आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे मैं दर तेरे बणी मंगत, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी कबूल करनी बेनन्ती मिन्नत, मेहरवान होणा सहाईआ।

जन भगतां अन्तष्करन कढ्डुणी चिन्नत, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। आपणे मिलण दी बख़्शणी हिम्मत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरे उत्ते मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना रहे कोई ना निन्दक, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दीन दुनी तेरे नाम दे ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लहिणा देणा पूरा कर दे चारे सिम्मत, चार कुण्ट दे मालक आपणी दया कमाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ हज़ारा सिँघ दे गृह
पिण्ड चूनी कलां ज़िला रोपड़ ✪

१५७३ धरनी कहे प्रभ जन भगतां बख़्श दे चरण टेका, टिक्के धूड़ी खाक पाकी पाक तेरे लैण लगाईआ। आत्म परमात्म आपणा प्यार बख़्श दे एका, एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरी सरनाईआ। त्रैगुण माया तन वजूद ला सके ना सेका, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। अन्तर निरंतर बुद्धी मन कर बिबेका, पतित पुनीत कराईआ। हरिजन सन्त सुहेले गुर चेले बणा लै नेका, निक्के वड्डे वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को घर वखा दे सौहरा पेका, सावरीआ हो के आपणा संग बणाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा खेल तक्कया वार अनेका, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां बख़्श नाम अनमुल्ला, जगत कीमत ना कोए लगाईआ। सच दवार एकँकार वखा दे खुल्ला, खलक दे मालक देणी वड्याईआ। धुर दा नाम जपा दे बिन रसना जिह्वा बुल्लां, बत्ती दन्द कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। भाग लगा दे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ कुला, कायनात दे मालक होणा आप सहाईआ। नव सत्त तेरा भगत सुहेला मेरे उत्ते होवे फलया फुल्ला, पत टहणी सच प्रीत वाली महकाईआ। चरण प्रीती साची नीती दस्सणी सुल्हकुला, कुल मालक आपणा भेव खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। धरनी कहे प्रभू जन भगतां करना आप प्यार, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जोती जाता हो के देणा दरस दीदार, बिन नेत्र लोचन नैण आपणा नूर नूर चमकाईआ। सच दवार एकँकार अमृत बख़्शणा ठण्डा ठार, बूँद स्वांती नाभी कवल कवल कवल उलटाईआ। शब्द अनादी बिन रसना जिह्वा सुणाउणी धुन्कार, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। बिन तेल दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, जोती जाते हो के आपणा नूर देणा चमकाईआ।

धरनी कहे मेरी बेनन्ती तेरे सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची मंग मंगाईआ। तूं देवणहारा सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव दर बैठे सीस निवाईआ। तेरा लहिणा देणा मेरे उत्ते सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। तेरा हुक्म संदेशा दे के गए पैग़म्बर गुर अवतार, अवतरी इक्को तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत सुहेले दीन दुनी विच्चों लाउणे पार, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कोए ना पाए सार, महासार्थी नजर कोए ना आईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ शहर चण्डीगढ़ गुरदेव सिँघ निर्मल सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे परम पुरख परमात्म मेरी पाउणी सार, महासार्थी हो के वेखणा चाँई चाँईआ। सो पुरख निरञ्जण तुध बिन दए ना कोए अधार, हरि पुरख निरञ्जण सीस हत्थ ना कोए टिकाईआ। एकँकार लहिणा देणा मेरा लैणा विचार, आदि
१५७४ निरञ्जण बिन नेत्र लोचण नैणां नैण उठाईआ। अबिनाशी करते धुर दा बणना मीत मुरार, श्री भगवान सगले संगी बहुरंगी १५७४
२४ आपणी खेल देणी वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन नेत्र नैणां मैं करां गिरयाज़ार, उफ हाए मेरी दुहाईआ। जोती जाते २४
पुरख बिधाते निरगुण मेरी पाउणी सार, साजण मीत हो के वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मा मेरा संगी बणा दे तेरा सुत दुलार, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। जिस नूं जननी जने ना कोए विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव जिस नूं सीस निवाईआ। तूं बीस बीसा हरि जगदीसा कलि कल्की अवतार, निहकलंक अमाम अमामा इक अख्वाईआ। नव सत्त मेरा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दे उतार, मकरूज हो के लेखा दे मुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मेरे उत्ते होया अँधयार, अन्ध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा दिसे ना कोए मीत मुरार, सांझे यार तेरा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म अगम्म सुणाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर मेरे बणो संगी, सगले संगी इक अख्वाईआ। मेरी धर्म दी धार वेखो होई नंगी, सति सच रहिण कोए ना पाईआ। मेरी पुश्त पनाह जगत जहान होई नंगी, पीठ हत्थ ना कोए टिकाईआ। मेरे वेंदिआ सतिजुग त्रेता द्वापर धार लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त सच प्रकाश किसे रिहा ना मूल नौ चन्दी, चन्द चांदना नज़र कोए ना आईआ। मेरी आशा तृष्ना जगत वासना विच लग्गी पाबन्दी, शरअ जंजीर ना कोए कटाईआ। सब दी नेत्र अक्ख हो

गई अन्धी, अन्ध अन्धेरा सके ना कोए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोए ना छन्दी, शहिनशाह तेरी मंज़ल हक चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुरु मेरा चुक्क के वेखो पर्दा, बिन हथ्थां हथ्थ लगाईआ। दीन मज़्ह़ब जगत जहान वेखो सड़दा, अग्नी तत तत तपाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ विच जावे हड़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। नव सत्त गृह बणया हँकार गढ़ दा, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। मेरा लहिणा देणा तक्को चोटी जड़ दा, जड़ चेतन आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर आपणा आपणा वेखो इष्ट, इष्ट देव की जणाईआ। निगाह मारो विच सृष्टी, स्रेष्ट आपणी सेव कमाईआ। कूड़ वासना सब नूं कीता भृष्ट, भाण्डा भरम ना कोए भनाईआ। लेखा लहिणा तको जो राम इशारा कीता वशिष्ट, वशिष्ट गुरदेव की वड्याईआ। जो पैग़म्बरां लेखा लिख्या नाल अगम्मी लिख्त, कागज़ कलम रंग ना कोए रंगाईआ। आपणा आपणा वेखो भविख्त, पेशीनगोईआं हथ्थ उठाईआ। दीन दुनी जगत धार अन्तिम हुन्दी जांदी निष्ट, चारों कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन धीरज धीर धर्म दी धार देवे कोई ना सिदक, सबूरी नज़र कोए ना आईआ।

१५७५ २४

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ चण्डीगढ़ शहर हरचरण सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर बख्शे साचा नाउँ, नर निरँकारा आप दृढ़ाईआ। जन भगत उठाए फड़ के बाहों, आप आपणी दया कमाईआ। निमाणयां देवे साचा थाओं, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। भाग लगाए काया खेड़ा नगर ग्राउँ, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। सदा सुहेला बख्शे ठण्डी छाउँ, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दो जहानां जन भगतां बणे पिता माउँ, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर लेखा जाणे बेपरवाहो, बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा साहिब बखशिंद, कुदरत कादर इक अख्वाईआ। हरिजन बणाए आपणी बिन्द, पिता पूत गोद टिकाईआ। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, कर्म कर्म दी रेख मिटाईआ। दाता बण के गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गवर हो के आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधाना देवे सागर सिन्ध, अमृत अंमिओं रस जाम प्याईआ। जन भगतां सदा सदा सगली

मेटे चिन्द, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि गुणी गहिन्द, गुणवन्ता धुर दा कन्ता इक अख्वाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ चण्डीगढ़ शहर
स्वर्गवासी कर्म सिँघ दे नवित ✪

आत्मा कहे मेरे पुरख निरञ्जण सो, स्वैम तेरा रूप अनूप नज़री आईआ। हरि पुरख निंरजण तेरी धार नहीं कोई दो, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरी वड वड्याईआ। एकँकार सच प्यार तेरा मैनूं लए मोह, मुहब्बत मेहरवान इक्को तेरे नाल रखाईआ। आदि निरंजन बिना तेल बाती बख्शीं अगम्मी लो, बिन लोयण लोचन नैण वेखां चाँईं चाँईंआ। अबिनाशी करते तुध बिन दिसे ना को, कुदरत दे कादर तेरी बेपरवाहीआ। श्री भगवान मैं तेरा सति सरूप तेरे नाल जावां छोह, छौहर बांके तेरा तेरे विच समाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तूं मेरा मैं तेरा इक्को नूर जावां हो, होका हक हक सुणाईआ। सति
१५७६ वस्त निरगुण रस आपणा अगम्मा चो, जिस नूं रसना जिह्वा समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १५७६
२४ किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं तेरा आदि जुगादी सुत, बिन जनणी २४
लोकमात खेल खिलाईआ। तूं मालक ख़ालक पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, अगम्म अथाह बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। नित नवित मेरी सुहंजणी तेरे नाल होवे रुत्त, रुतड़ी दो जहान नौजवान श्री भगवान तेरे नाल महकाईआ। बेशक मेरा लहिणा देणा तन वजूद माटी खाक पंजां ततां वाले बुत्त, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मिलके ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं तेरा आदि जुगादी नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। तूं साहिब स्वामी मेरा सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। निरगुण निरगुण सद देंदा रहें सरूर, मस्ती आपणी आप चढ़ाईआ। चुरासी विच खेल खिलाया एह तेरा हुक्म ज़रूर, ज़रूरत तेरी नाल वड्याईआ। मैं कदे नहीं होया मजबूर, मुश्किल अग्गे ना कोए रखाईआ। तूं शहिनशाह सुल्ताना श्री भगवाना जुग चौकड़ी तेरा दस्तूर, मर्यादा तेरी तेरे विच्चों नज़री आईआ। मैं अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणीआं विच तेरा बणां मज़दूर, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं आदि जुगादी सदा सद हाज़र हज़ूर, हरिजू आपणा आप लए प्रगटाईआ। मैं तेरा ठाकर स्वामी होवां मशकूर, शुकराने विच सीस निवाईआ। तेरे शब्द अनादी धुन दी सुणां तूर, तुरीआ तों बाहर तेरी शनवाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं आदि जुगादी तेरा सन्बंधी, रिश्ता फरिशतिआं बाहर रखाईआ। तेरे हुक्म दी मेरे उत्ते पाबन्दी, जुग जुग तेरी बेपरवाहीआ। लख चुरासी चारे खाणी नाल साची संधी, शर्त धरत उत्ते लगाईआ। मेरी खाहिश तमंना कदे ना होई मंदी, वासना कूड़ ना कोए हल्काईआ। निरगुण धार तेरा सदा सदा अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरे ज़हूर दा अगम्मा चन्दी, जिस नूं जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं चारे खाणीआं वेखीआं नाल प्यार, प्रीतम बिन नैणां नैण उठाईआ। अण्डज जेरज पाउणी सार, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। मेरा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। मेरा लहिणा देणा नाल पैग़म्बर गुर अवतार, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण तेरे रंग रंगाईआ। मैं सदा सदा वसां काया मन्दिर अन्दर तत्तां वाली दीवार, छप्पर छन्न जगत ना कोए जणाईआ। तेरे हुक्म दा सदा करां इंतज़ार, वेखां बिन नैणां नैण उठाईआ। कवण वेला किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर धुरदरगाहीआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न
१५७७ ब्रह्मा शिव संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। १५७७
२४ आत्मा कहे मैं तेरा सुत दुलारा लाल, दूलो दूल इक अख्वाईआ। मेरी सदा सदा करीं प्रितपालक, प्रितपालक हो के वेख २४
वखाईआ। चारे खाणी मेरी तक्कणी घाल, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। मेरी बेनन्ती इक्को सवाल, चरण कवल दयां जणाईआ। आत्मा कहे प्रभू जे मैं ना हुंदा किथों लख चुरासी तन वजूद शरीर करदा कोई संभाल, साथी संगी नज़र कोए ना आईआ। तूं किस नूं प्रेम नाल कहनो आपणा बाल, नन्नां कहि के ख़ुशी बणाईआ। जुग चौकड़ी लख चुरासी अन्दर वड़ के तेरा खेल खिलाउँदा रिहा कमाल, कामल मुर्शद एह तेरी दिती वड्याईआ। अन्त मेरी बेनन्ती सुण लै हाल, हालत दयां जणाईआ। पता नहीं कोटां वार मेरे जिस्म नूं खा गया काल, लाड़ी मौत तन वजूद परनाईआ। चित्रगुप्त लेखे गया वखाल, राय धर्म देवे जगत सज़ाईआ। मेरा खेल तेरे हुक्म विच जिस नूं सके ना कोए संभाल, सम्बल दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। आत्मा कहे प्रभू मैं सदा सदा निरलेप, निरगुण तेरा तेरा रूप दरसाईआ। बिन तेरे अवर ना कोई मेरा हेत, हितकारी नज़र कोए ना आईआ। तूं मालक स्वामी नेतन नेत, नेरन नेरा धुरदरगाहीआ। मेरी बेनन्ती सुण लै प्रविष्टा वेख लै तेई महीना चेत, चेतन हो के दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ।

आत्मा कहे प्रभू मेरी इक्को आसा जगत, दीन दुनी दे मालक दयां जणाईआ। जदों किरपा करें मैनूं बणावीं आपणा भगत, बिना भगती तों दूसर लोड़ रहे ना राईआ। आदि जुगादी मेरी तेरे नाल नाम शरअ वाली शर्त, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। निरगुण सरगुण हो के जदों आवें उत्ते धरत, धरनी धवल धौल फेरा पाईआ। योद्धा सूरबीर बणे मर्दाना मर्द, मदद मेरी करनी चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। आत्मा कहे जे भगत बणावें लोकमात, मेहरवान दया कमाईआ। चरण प्रीती जोड़ें नात, रिश्ता इक्को इक समझाईआ। निरगुण हो के मेरी पुछें वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मेरा ना कोई दीन ना कोई मज़्हब ना कोई ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वखाईआ। ना सड़ां ना पावां वफ़ात, मकबरयां विच ना कोए दबाईआ। मेरा लेखा लिख ना सके कोई कलम दवात, कागज़ शाही ना कोए चतुराईआ। तूं परम पुरख मेरा पिता मात, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। मेरा लहिणा देणा तेरे अन्तर डूंग्घा खात, जगत खाता वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। आत्मा कहे भगतन बणा देवीं जन्म, आप बणीं जणेंदी माईआ। सच प्रीती बख़्शणा धर्म, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। इक्को परसां तेरे चरण, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। इक्को तेरी होवे सरन, सरनगति इक जणाईआ। इक्को नेत्र खोलूणा हरन फरन, निज लोचन कर रुशनाईआ। भय चुकाउणा मरन डरन, भाउ आपणा इक दृढ़ाईआ। तेरी विद्या तेरे प्यार विच लग्गां पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। साची मंज़ल बिन कदमां लग्गां चढ़न, पौड़ी डण्डा इक्को वेख वखाईआ। निरवैर तेरा फड़ना लड़न, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। जिस वेले लेखा चुक्के शरीर धड़न, पंजां ततां होए जुदाईआ। तूं किरपा करनी करनी दे करते आपणी बख़्शणी सरन, दर देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। आत्मा कहे प्रभू मेरा लेखा तन वजूदां नाल जगत शरीर, माटी ख़ाक मिलके वजे वधाईआ। तूं मालक ख़ालक मेरा पीरां दा पीर, हज़रतां दा हज़रत नूर अलाहीआ। आदि जुगादी दस्तगीर, साजण मीत नूर अलाहीआ। सदा सदा करना आपणे बगलगीर, विछोड़े विच विछोड़ा ना कोए रखाईआ। जन भगत बणा के आपणा नाम प्याईं सीर, बिन रसना रस चखाईआ। मेहर नाल मेहरवान बदलणी तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ाईआ। मैं तेरा नूर ना शाह ना हकीर, पातशाह रूप ना कोए दरसाईआ। तूं मालक ख़ालक बेनज़ीर, नज़रां तों ओहले तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। आत्मा कहे प्रभू मेरा वेखीं ना जगत धार दा कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ।

१५७८ २४

इक्को प्रेम फड़ाउणा लड़न, दूसर नज़र कोए ना आईआ। तूं मालक ख़ालक तरनी तरन, तारनहार तेरी वड्याईआ। मेरा लहिणा मुकाउणा चोटी जड़न, चेतन आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक होणा सहाईआ। आत्मा कहे मैं कर्म सिँघ दी धार, कुदरत दे कादर तेरी वड्याईआ। मैथों छुट्ट गया संसार, जगत नाता कूड़ रिहा ना राईआ। मैं बिना पौड़ी डण्डे मंज़ल पन्ध मुकाया दुष्वार, दूती दुश्मण नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द मैनूं कीता आप प्यार, प्रेमी हो के आपणी गोद उठाईआ। लै के गया सचखण्ड सच्चे दरबार, थिर घर तेरे चरण कवल दिता टिकाईआ। मैं बिन रसना जिह्वा तों गया बलिहार, बोलण दी लोड़ रही नाँ राईआ। अग्गे भगत सुहेले मिले मीत मुरार, मित्र प्यारे सोहणे नज़री आईआ। जेहड़े इक्को नूर जोत उज्यार, जोती जाते विच समाईआ। मैं खुशीआं विच इक्को बोलया बिना रसन जैकार, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर दूले शब्द अगम्मे बिन हथ्थां मैनूं दिता प्यार, बिन सीस दिती वड्याईआ। बिना वजूद कीती निमस्कार, बिन डण्डावत सीस निवाईआ। मैनूं सोहणा मिल्या घर बाहर, सचखण्ड वजी वधाईआ। मेरा संदेशा इक्को इक जगत परिवार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाहर
१५७६ दयां जणाईआ। बिना प्रभू तों चुरासी विच्चों करे कोई ना पार, बिना सतिगुर शब्द ना कोए सहाईआ। जन भगतो दीन १५७६
२४ दुनी विच रहिणा खबरदार, बेखबरां खबर सुणाईआ। गफ्लत निंद्रा दयो उतार, उतर पूरब पश्चिम दक्खण वेखो नैण उठाईआ। २४
पुरख अकाला दीन दयाला सब दा सांझा यार, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दे लहिणे देवे कर्ज उतार, लेखा पूरब नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कल वरताईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ चण्डीगढ़ शहर अमर चन्द दे गृह ✪

जन भगतां प्रभ बख्श दे जोग, जुगती इक्को इक जणाईआ। चिन्ता ग़म मिटा दे सोग, हरख नज़र कोए ना आईआ। तन वजूद रहे ना रोग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण धार दरस दे अमोघ, जोती जाता हो के नज़री आईआ। अन्तर आत्म परमात्म बख्श भोग, बिन रसना रस चखाईआ। जगत विछोड़ा रहे ना कोए विजोग, संजोगी हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वड्याईआ। जन भगतां प्रभ दे दे

दरस निराला, जग नेत्र बाहर जणाईआ। किरपा कर दीन दयाला, दया निध तेरी सरनाईआ। भगत वछल बण रखवाला, रक्षक हो के वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी लेखे ला लै घाला, सतिगुर आपणा संग बणाईआ। सच प्यार दी बिना मणकयां बख़्श दे माला, मन का मणका आप भवाईआ। आपणे मिलण दा मार्ग दस्स सुखाला, जगत ओझड़ राह नज़र कोए ना आईआ। फल लगा दे काया माटी डाला, तन वजूद आपणे रंग ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। जन भगतां प्रभ होणा सदा सहा, सहायक नायक इक्को नज़री आईआ। दीन दयाल दया देणी कमा, कृपानिध किरपन होणा सहाईआ। रख्या करनी थाओं थाँ, थनंतरां देणी माण वड्याईआ। बिन हथ्थां पकड़नी बांह, फड़ बांहों गले लगाईआ। आपे बणना पिता माँ, आत्म परमात्म होणा जणेंदी माईआ। नाम निधाना इक्को देणा दृढ़ा, दृढ़ विश्वास आपणा देणा बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहर नज़र इक टिका, टिक्के धूड़ी मस्तक खाक विच रमाईआ।

१५८०
२४

२३ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड बड़हेड़ी नेड़े चण्डीगढ़ नथ्था सिँघ जगीर सिँघ बंना सिँघ करनैल सिँघ नसीब कौर

धरनी कहे जन भगतो इक्को पुरख अकाल बणाओ सखा, साजण मीत त्रैगुण अतीत त्रैभवण धनी अगम्म अथाहीआ। जो लहिणा देणा निरगुण सरगुण पूरा करे विच्चों लखां, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। जो लहिणा देणा तन वजूद माटी खाक जाणे कक्खां, एथे ओथे दो जहानां वेखे थांउँ थाँईंआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार जो हिरदे अन्दर वसा, वास्तव वसल यार इक जणाईआ। जो बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द अन्तर निरंतर देवणहारा रसा, बिन रसना रस चखाईआ। जिस दा जोत नूर प्रकाश बिन रवि शशा, दीआ बाती कमलापाती गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। जो आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद निरगुण धार फिरे नस्सा, सरगुण लेखा जाणे थांउँ थाँईंआ। उस दी सिफ्त सलाह बिन अक्खरां वाला जस्सा, ढोला सोहला आपणा दए समझाईआ। जो अन्तर निरंतर कलयुग मेटे रैण अन्धेरी मसा, मस्ती नाम ख़ुमारी एकँकारी दए चढ़ाईआ। जिस दे हुक्म विच माण मिलण वाला इक्को सस्सा, होड़ा आपणा अंग बणाईआ। हाहा टिपी नाल फिरे नस्सा, दो जहान भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच

दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दे बणो संगी, सगला संग बणाईआ। देवे वस्त अनमंगी, अतोट अतुट वरताईआ। किरपा करे सूरा सरबंगी, हरि करता धुर दरगाहीआ। जोती जाता हो के लावे अंगी, अंगीकार आप अख्वाईआ। तुहाडी पुश्त पनाह होण ना देवे नंगी, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दी खेल सदा चंगी, चंगी तरह समझाईआ। जिस दे हुक्म विच नौ सौ चौरानवे चौकड़ी जुग लँघी, भज्जी वाहो दाहीआ। उह जन भगतां नेत्र लोचन नैण अक्ख होण ना देवे अन्धी, नूर नूर नूर करे रुशनाईआ। सच प्यार मुहब्बत विच सारे उस दे नाल कर लओ संधी, विचोला सतिगुर शब्द शब्द बणाईआ। जो लहिणा देणा पूरा करे प्रकृती पंझी, पंजां तत्तां आपणा संग बणाईआ। उस दे प्यार विच बिना विछोड़यों वहाओ अंझी, बिन नैणां नीर वहाईआ। जो सुरती तुहाडी आपणे नाल लए गंढी, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। निज आत्म परमात्म धार देवे ठण्डी, अग्नी तत तत बुझाईआ। धरनी कहे जन भगतो अन्दरों वासना कढिओ गंदी, क्रिया कूड़ ना कोए हल्काईआ। घर प्रकाश तकणा चन्द नौ चन्दी, नूर नुराना दए चमकाईआ। नाम गाउणा बिन बत्ती दन्दीं, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। मज़्हब दी रहे ना कोए पाबन्दी, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दे बण जाओ अगम्मे बाले, इक्को समझो पिता माईआ। जो मेहरवान मेहर करे पुरख अकाले, अकल कलधारी परवरदिगारी आपणी दया कमाईआ। झगड़ा छड्डो शाह कंगाले, दीन मज़्हब जात पात वंड ना कोए वंडाईआ। फल लगाओ आपणे काया वाले डाले, पत टहणी लओ महकाईआ। फेर परम पुरख परमात्म जन भगतो आप संभाले, सम्बल दा मालक हो के दया कमाईआ। त्रैगुण मेटे कूड़ ज़ंजाले, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस दा खेल अगम्मा होणा हाले, हालत वेखे खलक खुदाईआ। उह त्रैगुण मेटे कूड़ जंजाले, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप खुल्हाईआ। धरनी कहे जन भगतो गुण गाओ इक गोबिन्द, गोबिन्द गोबिन्द धार समाईआ। अन्तष्करन मिटाओ चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। दर्शन पाओ हरि गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गवर वेख वखाईआ। जिस दी आत्म धार सारे बिन्द, बचया रहिण कोए ना पाईआ। उहदा लहिणा देणा वेखो नाल भारत हिन्द, हिन्दवायण नरायण की दृढ़ाईआ। जिस दा अमृत रस सागर सिन्ध, सिन्धू बिन्दू हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद मेटणहारा चिन्द, चिन्ता चिखा जगत ना कोए जलाईआ।

१५८१
२४

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड बड़हेड़ी नेड़े चण्डीगढ़ महिन्दर सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे किरपा कर पुरख अकाल, अकल कलधारी एकँकारी आपणी दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरी बणा सच्ची धर्मसाल, गुरदवारा गुरदेव इक्को इक जणाईआ। अमृत रस सर सरोवर इक्को दे वखाल, जल थल महीअल आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना दे वस्त सच्चा धन माल, अतोट अतुट दीन दुनी वरताईआ। फल लगा दे मेरे चुरासी वाले डाल, पत टहणी आप महकाईआ। भगत सुहेले मेरे उत्ते भाल, सन्त साजण वेख वखाईआ। गुरमुख तक आपणे लाल, गुरसिख आपणी गोद टिकाईआ। मेरा लेखा पूरा करदे पिछली घाली घाल, घायल हो के सेव कमाईआ। सति सतिवादी सतिगुर शब्द मेरा विचोला बणा दलाल, जगत जहान खुशी बणाईआ। जो वेखणहारा हक हलाल, हकीकत खोजे थांउँ थाँईंआ। तेरा संदेशा देवे बेमिसाल, मिसल आपणी इक जणाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ करे जवाल, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। जोती जल्वा दए जमाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भाग लगाए काया माटी खाल, पंजां तत्तां मानस मानव मानुख दए वड्याईआ। झगड़ा मुकाए शाह कंगाल, अमीर ग़रीब रहिण कोए ना पाईआ। तेरे नाम दा दीन
१५८२ दुनी वजाए इक्को ताल, ताल तलवाड़ा इक दरसाईआ। धरनी कहे मैं खुशीआं विच होवां खुशहाल, खुशखबरी मैनूं दे १५८२
२४ सुणाईआ। उह लहिणा देणा पूरा कीता जो गोबिन्द कीता नाल रवाल, रवालसर दा लेखा दे समझाईआ। मैं नव सत्त खुशीआं २४
विच पावां धमाल, नच्चां टप्पां कुद्दां चाँईं चाँईंआ। मेरे उत्तों त्रैगुण माया मेट जगत ज़ंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी कर संभाल, सम्बल दा मालक हो के वेख वखाईआ। मेरा लहिणा देणा तक्क लै हाल, हालत तक खलक खुदाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलयुग कूड़ नगारा डंक रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन बणे ना कोए प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक बालक हो के तेरे चरण कवल धवल निमाणी सीस निवाईआ।

✪ २४ चेत शशहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड घड़ूआ ज़िला रोपड़ सुरजीत सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे जन भगतो इक्को इष्ट मंनो श्री भगवाने, श्री भगवान नौजवान नज़री आईआ। जिस दे आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल महाने, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हो के हुक्म जणाईआ। जिस दे सतिगुर शब्द नाल लहिणे देणे दो जहाने, निरगुण निरगुण हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जो विष्न ब्रह्मा शिव दस्से खेल महाने, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ।

जिस अवतार पैग़म्बर गुर खेल वखाया ज़िमीं असमाने, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उस दे हुक्म संदेशे पुराणे, पुराण अठारां देण गवाहीआ। जिस दे हुक्म विच बदल जाणे ज़माने, ज़ाहर ज़हूर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा भेव पा सकण ना इलम इलमाने, आलमां चले ना कोए चतुराईआ। उह शहिनशाह शाहो भूप सुल्ताने, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होए दो जहाने, दोहरी आपणी कल वरताईआ। जो भगत सुहेले लख चुरासी विच्चों पहचाने, पेशतर आपणा रंग रंगाईआ। जिन्हा दा इक्को होए गाने, तूं मेरा मैं तेरा राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा कर्म आप कमाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा तक्को दरस, अन्तर निरंतर ध्यान लगाईआ। तुहाडी जन्म जन्म दी मिटे हरस, हवस अगली दए चुकाईआ। मेहरवान हो के करे तरस, रहमत आपणी हक कमाईआ। मेरे उत्ते सम्मत शहिनशाही बारां खुशीआं वाला बरस, जिस दी बरसी चार जुग दे शास्त्र लैण मनाईआ। आपणी जन्म कर्म दी मेटो हरस, हवस कूड़ ना कोए रखाईआ। निगाह मारो उत्ते फ़र्श, बिन नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। धरनी कहे जन भगतो अन्दरो अन्दर बदलो नीता, निरत सुरत इक्को रंग रंगाईआ। पिछला जीवण छड्डो बीता, अग्गे प्रभ दे रंग समाईआ। इक्को स्वामी जाणो मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जो तन वजूद करे ठांडा सीता, अग्नी तत बुझाईआ। जेहड़ा निरगुण धार सदा जगजीता, जग जीवण दाता इक अख्वाईआ। जिस दी सब तों वक्खरी निराली रीता, निरवैर हो के रिहा चलाईआ। सो झगड़ा मटाए मन्दिर मसीता, काया काअबा इक वखाईआ। सति धर्म दी सति सतिवादी हो के करे ताकीदा, धुर दा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दीआं आसां मनसां पूरीआं करे उम्मीदां, तृसना तृखा जगत जुगत बुझाईआ।

१५८३
२४

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड घड़ूआ ज़िला रोपड़ गुरदेव सिँघ दे गृह ✪

सतिगुर शब्द सच्चा गुरदेवा, देव आत्मा आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां जुग जुग लेखे लाए सेवा, सेवक सेवा आपणा अंग बणाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना बख्शे अगम्मी मेवा, अमृत रस आपणा आप चखाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके जिह्वा, रसना गुण ना कोए वड्याईआ। सो स्वामी अलख अभेवा, अलखणा आपणी कार भुगताईआ। जो वसणहारा नेहचल धाम नेहकेवा, सचखण्ड आसण लाईआ। जन भगतां आदि जुगादि दूसरा करन देवे ना कदे करेवा, करनी

दा करता मालक आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवार आप सुहाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां पूरी करे मनसा, आसा तृष्ना आपणे नाल मिलाईआ। सति सतिवादी हो के बख्शे भरवासा, चरण कवल दए वड्याईआ। दीआ बाती कमलापाती कर प्रकाशा, अन्ध अज्ञान दए बुझाईआ। लेखे लाए पवन स्वासा, जो साह साह ध्याईआ। जन्म कर्म दा लहिणा देणा पूरा करे लेखा रहे रती ना मासा, अतोल अतुल आपणी वस्त वरताईआ। अन्तर आत्म निरंतर मिल मिल करे हासा, हस्ती आपणी इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द जन भगतां हिरदा करे शुद्ध, सुदी वदी वंड ना कोए वंडाईआ। निर्मल पवित्र करे बुध्ध, चित्तर चलितर आपणा दए समझाईआ। नाम खुमारी मस्ती विच करे बेसुध, वसुधा उत्ते दए वड्याईआ। पंच विकार अन्तर करे ना युद्ध, जिस नूं मिल्या धुर दा माहीआ। सो लहिणा देणा पूरा करे कलयुग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। हरिजन भाग आपे करे उग्घ, उगण आथण दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो प्रभ प्रीती जगत निराली,
१५८४ निराकार दए जणाईआ। बिना सतिगुर किरपा किसे कोलों जाए ना संभाली, संभल के कदम ना कोए उठाईआ। जिस दी १५८४
२४ किरपा नाल तुट्टे जगत ज़ंजाली, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उह भगतां पिच्छे आपणी घाल रिहा घाली, सेवक हो के २४
सेव कमाईआ। बिना जाण पछाण करे दलाली, विचोला हो के मेल मिलाईआ। भाग लगा के काया धर्मसाली, धर्म दवारा इक दृढ़ाईआ। फल लगा के जन्म कर्म दी डाली, पत टहणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेहकंलक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरि भगत सुहेले नव सत्त निरगुण हो के रिहा भाली, भेव आपणा आपणे विच्चों प्रगटाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड रुढ़की ज़िला रोपड़ सेवा सिंघ दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू मेरा तेरे अगे हाढ़ा, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार वास्ता पाईआ। मैनूं तन वजूद अग्ग लगी बिना नाड़ां, शरीर बेनज़ीर जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलयुग क्रिया कूड़ लाया अखाड़ा, पंच विकारा नच्चे चाँईं चाँईंआ। फिरी दरोही टिले जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर रोवण मारन धाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरे नाम दा मंगण आए कोई ना वाड़ा, सच दवार एकँकार अलख ना कोए जगाईआ। नव सत्त ब्रह्म मति कलयुग

चबा गया आपणीआं थल्ले दाढ़ां, भय भीत कीती खलक खुदाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे अग्गे मेरा लेखे लाउणा अज्ज दा दिहाढ़ा, दयोहाढ़ी तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धरनी कहे प्रभू किरपा कर सूरे सरबग, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। कलयुग जीव हँस बणा कग, कागों हँस रूप वटाईआ। त्रैगुण मेरे उत्तों बुझा दे अग्ग, ततव तत ना कोए जलाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाहरग, शहिनशाह पर्दा आप उठाईआ। साचे नाम दा वजा अगम्मी नद, अनहद नादी नाद कर शनवाईआ। जगत क्रिया कूड़ मेट दे हद, हदूद महबूब आपणी इक समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर तूं मेरा मैं तेरा गावे छन्द, आत्म परमात्म मेला मेलणा सहिज सुभाईआ। बिन रसना जिह्वा जीव जंत आत्म धार बख्श अनन्द, परमानंद विच समाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती मेट दे कंध, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। मानव ज़ाती खुशी करदे बन्द बन्द, बन्दगी आपणी इक दृढ़ाईआ। बिना सूर्या चन्द तों चाढ़ दे चन्द, नूर नुराने आपणा नूर दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी धार तक लै आप, धवल हो के दयां जणाईआ। बिन तेरी किरपा मिटे मूल
१५८५ ना पाप, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मेरे अन्तष्करन अन्तर निरंतर मेट रोग संताप, संसा क्रिया कूड़ दे मिटाईआ। १५८५
२४ तूं मालक खालक मेरा धुर दा कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सच प्रीती जगत रीती बख्श आपणा नात, प्रीतम २४
हो के मेल मिलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुछ वात, वास्ता तेरे चरण रखाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी देवणहारा दात, दाता दानी इक अख्वाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां पुच्छ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। नव सत्त मेरे उत्तों मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। पर्दा खोल्ह दे बातन बात, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी आसा पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते आपणी कर मेहरवानी, महबूब तेरी सरनाईआ। दीन दयाले साची वस्त देणी अगम्म निशानी, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। इक्को मंज़ल दे रुहानी, रूह बुत्त वजदी रहे वधाईआ। झगड़ा मेट जिस्म जिस्मानी, ततव तत दे समझाईआ। धुर दा कलमा नाम दस्स पैग़ामी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी इक्को रंग रंगाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां आपणी मंज़ल दस्स आसानी, असल वसल यार दे कराईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरे प्यार दी होवे हक कुरबानी, करबल्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। आबे हयात अमृत रस प्या दे ठंडा पाणी, निझर झिरनिउँ बूंद स्वांत आप टपकाईआ। चार वरनां अठारां बरनां दीनां मज़्हबां बण जा बानी, वारस हो के वेख वखाईआ। तेरी सिफ्त सलाह बेपरवाह अगम्म अथाह कोई लिख ना सके कलम कानी,

काएनात विच भेव कोए ना पाईआ। मेरी बेनन्ती परवरदिगार सांझे यार इक्को मानीं, मनसा तेरे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा लहिणा कर दे पूरा, पूरन ब्रह्म दे जणाईआ। मालक ख़ालक बण हाज़र हज़ूरा, हज़रतां तों बाहर लहिणा दे समझाईआ। जुग बदलणां तेरा दस्तूरा, आदि जुगादी रीती चली आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मैं धरनी होई मज़बूरा, मुश्किल विच आपणा झट लँघाईआ। उह आसा पूरी कर दे जो संदेशा दे के गया मूसा उत्ते कोहतूरा, तुरीआ तों बाहर गया दृढ़ाईआ। जिस नूं ईसा किहा मेरा बाप असमानी नूरा, नूर नुराना इक अख्वाईआ। मुहम्मद दी आशा धुर अमाम कलमा काएनात दा लेखा ना रहे अधूरा, हदूद महिदूद इक जणाईआ। मैं तेरी परवरदिगार होवां मशकूरा, शुकराने विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सर्ब कला भरपूरा, समरथ अकथ तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड शेख पुर ज़िला रोपड़ हरभजन सिंघ दे गृह ✪

१५८६ २४

शरअ कहे सुण मेरे अन्तरजामी, अन्तर निरंतर जगत जहान ध्यान लगाईआ। मेरी धार विच नव सत्त होई अन्धेरी शामी, शमअ नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। दीन दुनी दा नाता जुड़े मूल ना बाहमी, एका रंग ना कोए समाईआ। दीनां मज़्हबां विच मैं होई नेहकामी, आपणा बल ना कोए धराईआ। शरअ जगत बध्धी गुलामी, बन्धन दीन दुनी वखाईआ। झगड़ा पाया तेरे कलमे नाल कलामी, कायनात दिती लड़ाईआ। मेरे अन्तर कलयुग आई खामी, ख़ामोश बैठी दयां दुहाईआ। मेरा संदेश तेरे चरण कवल पैग़ामी, पैग़म्बरां दे मालक दयां दृढ़ाईआ। धरनी धवल उत्तों झगड़ा मेट असमानी, इस्म आज़म इक समझाईआ। मेरे उत्ते करनी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात झगड़ा रहे ना कोई इन्सानी, मानस मानव मानुस तेरे रंग रंगाईआ। मेरी शरअ शरीअत कर बेगानी, लोकमात रहिण ना पाईआ। तूं शहिनशाह पातशाह सुल्तानी, हरि करता इक अख्वाईआ। मैं जगत कोझी होई निमाणी, निव निव लागां पाईआ। मेरा लहिणा देणा लोकमात चुका आसानी, असल आपणा हुक्म वरताईआ। मेरे प्यार विच अवतार पैग़म्बरां गुरुआं देणी पई कुरबानी, करबला शहादत रिहा भुगताईआ। मैं झगड़ा पाया जिस्मानी, जमीर सब दी अन्दरों दिती बदलाईआ। तूं मेरा मालक एका एक असलामी, इस्म आज़म नूर अलाहीआ। मेरी बेनन्ती करीं परवानी, परम पुरख पुरख दृढ़ाईआ। मेरी अक्खरां वाली नहीं कहानी, शब्दी धार मंग मंगाईआ।

मेरा झगड़ा मुका दे नालों जेरज खाणी, तन वजूद लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर मिले वड्याईआ। शरअ कहे प्रभू मेरा झगड़ा तक्क लै लोकमात, मति मतांरता डेरा ढाहीआ। मेरा लेखा तक्क लै ज़ात पात, दीन मज़्हब फोल फुलाईआ। मेरी इक्को बेनन्ती इक्को बात, बातन भेव देणा चुकाईआ। किरपा कर दे मेरे कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। सच प्रीती मानव ज़ाती आपणा जोड़ लै नात, दीन दुनी दा लेखा आप ना कोए लिखाईआ। चार कुण्ट दा झगड़ा मेट दे कागज़ात, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा पित मात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। लेखा रहिण ना देणा कागज़ात, आत्म परमात्म देणा समझाईआ। अन्त कन्त भगवन्त मेरी पुछणी वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मैं पैग़म्बरां वल रही झाक, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। कवण वेला मेरा लहिणा देणा मुक्के लोकमात, धरनी धरत धवल धौल रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म इक मनाईआ। शरअ कहे प्रभू मेरी शरीअत मुका दे जल्दी, बहुती देर ना कोए लगाईआ। कलयुग कला मेट दे कल दी, कल कातीआं कर सफ़ाईआ। कपट खेल रहे ना छल दी, अछल
१५८७ छल धारी हो सहाईआ। वंड रहे ना पाणी जल दी, तीर्थां रंग रंगाईआ। खेल वेख लै मारूथल दी, काअबे रहे कुरलाईआ। १५८७
२४ शरअ कहे मैं तेरा हुक्म संदेशा रही झलदी, सिर सर निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका २४
देणा साचा वर, सच दर मिले वड्याईआ। शरअ कहे प्रभू मेरा लहिणा देणा मुका जहाना, दीन दुनी वंड ना कोए वंडाईआ। किरपा कर मेरे भगवाना, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तूं सच धर्म दस्स इक निशाना, निशाने दीन दुनी बदलाईआ। धर्म दी धार इक्को वखा धर्म निशाना, जगत जहान कर शनवाईआ। तूं महाबली सुल्ताना, हरि करता धुरदरगाहीआ। शरअ कहे मेरी बेनन्ती कर परवाना, परम पुरख तेरे चरण टिकाईआ। मेरा लेखा लहिणा तक ज़िमीं असमानां, ज़िमीं असमान दे मालक होणा सहाईआ। मैं चाहुंदी तेरा इक्को इष्ट होवे श्री भगवाना, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। तेरे नाम कलमे दा इक्को होवे गाणा, नव सत्त मिलके ढोला गाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा शहिनशाह कर शहाना, शाहो भूप आपणी दया कमाईआ। सृष्टी दृष्टी इक्को बख्श ध्याना, चरण कवल इक सरनाईआ। शरअ हदूद रहे ना कोए विच इन्साना, इन्सानीअत सब नूं देणी दृढ़ाईआ। मेरी धार सतिजुग विच बदले नाल बदल दई ज़माना, ज़िमीं ज़मां आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच दा बख्श दे दाना, दाते दानी दयावान आपणा रंग रंगाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ शेखपुर ज़िला रोपड़ मेहर सिँघ दे गृह ✪

धर्म कहे प्रभू मेरा उग्घा करदे धर्म, धर्म दी धार एकँकार देणी प्रगटाईआ। जन भगतां धरनी धवल धौल उत्ते दे दे जरम, जन्म जन्म दे मालक दया कमाईआ। साचे सन्तां सृष्टी दृष्टी अन्दर बदल दे कर्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। दीन दुनी दा अन्दरों मेट दे भरम, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप इक्को टेक बख्श दे चरण, चरणोदक धुर दा जाम प्याईआ। सति सतिवादी पुरख अकाले तेरी होवे सरन, सरनगति इक रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, इक्को राग सिफ्त सलाहीआ। इक्को मंज़ल महबूब तेरी चढ़न, भज्जण बण के पाँधी राहीआ। इक्को सचखण्ड दुआरे वड़न, दरगाह साची सोभा पाईआ। तूं निरगुण निरवैर लाउणा आपणे लड़न, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। धर्म कहे प्रभू मेरा धर्म धार दा बणा दे जुग, जुगती आपणी नाल बणाईआ। भगत सुहेले लोकमात चुग, चुगली निंदया विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साचा नाम बख्श दे आथण उग, उदय असत तेरी वजदी रहे वधाईआ। हरिजन पवित्र कर बुध्ध, बिबेकी आपणा रंग चढ़ाईआ।
१५८८ निर्मल साफ़ करदे शुद्ध, वसुधा उत्ते दे वड्याईआ। लेखे ला लै जननी वाला दुद्ध, बत्ती धार सीर बख्शाईआ। तूं देवणहारा १५८८
२४ सब कुझ, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। जन भगतां दीपक लोकमात जाए ना बुझ, जोती जोत करनी रुशनाईआ। २४
सगला संगी ना दिसे बिन तुध, साचा माण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दर आप सुहाईआ। धर्म कहे प्रभू मेरा खोल्ह दे धर्म दवारा, धर्म दी धार नाल जणाईआ। सच वस्त नाल अगम्मी दे दे थारा, थिर घर वासी आपणी दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा इक्को होवे दवारा, दीन मज़्हब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरंतर निरगुण धार बण सहारा, सहायक नायक इक्को इक अख्वाईआ। तूं कुदरत कादर बेऐब परवरदिगारा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। आदि जुगादी सांझा मीत मुरारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। धरती उत्तों दीन मज़्हब झगड़ा मेट जगत संसारा, शरअ शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। मानव ज़ाती तेरे चरण कवल करे निमस्कारा, निव निव लागे पाईआ। तूं सब नूं देवणहार दातारा, दयानिध अख्वाईआ। भगत वछल बण गिरधारा, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। भगत सुहेला नज़री आए मीत मुरारा, मित्र प्यारे तेरी बेपरवाहीआ। हरिजन साचे गंढु पा विच संसारा, पिता पूत गोद सुहाईआ। धरनी कहे मैं नमो नमो करां निमस्कारा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। तूं शाहो भूप इक सिक्दारा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तेरा चरण कवल सब दा सांझा होए दवारा, दो जहानां

मालक देणी वड्याईआ। तेरा नूर ज़हूर प्रकाश होवे चवीआं अवतारा, चौबीसे जगदीशे देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अन्त ना कोए सहारा, सहायक जगत जुगत नज़र कोए ना आईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड ध्यान पुर ज़िला रोपड़
बचन सिँघ दे गृह ✪

धर्म कहे प्रभ सति सच दस्स दे राह, मानव जाती इक्को मार्ग लाईआ। दो जहानां श्री भगवाना बण मलाह, खेवट खेटा हो के बोझ आपणे कंध उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा इक्को नाम लैण गा, गोबिन्द सोहला ढोला इक समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों पकड़ लै बांह, आत्म परमात्म मेला मिलाउणा चाँई चाँईआ। धरनी धरत धवल धौल तेरा पूजण होवे इक थाँ, इक्को दवार दे वड्याईआ। खेल तक्क ला जोती जाते हो के थल अस्गाह, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ।
१५८६ कलयुग क्रिया कूड़ दे मिटा, माया ममता मोह ना होए हल्काईआ। साचा मार्ग इक्को इक दरसा, दहि दिशा पर्दा लाहीआ। १५८६
२४ तूं शहिनशाह पातशाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा २४
साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धर्म कहे प्रभ मेरा दीन दुनी नाल कर प्यार, मुहब्बत सतिगुर शब्द बणाईआ। दीन मज़्हब रहे कोई ना खार, दूई द्वैती वंड ना कोए वंडाईआ। ज़ात पात दा करे ना कोई विचार, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। तेरा इक्को इष्ट सृष्टी होवे सर्ब संसार, दो जहानां इक्को रंग वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा नाम होए जै जै कार, सोहला ढोला इक्को गाईआ। इक्को चरण कवल होवे निमस्कार, दूसर नज़र कोए ना आईआ। धर्म कहे मेरा धर्म दवारा धवल उत्ते सब नूं दए अधार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त अगम्म वरताईआ। धर्म कहे मेरा धर्म दवारा अगम्मा खोलृ, ख़ालक खलक दे वड्याईआ। नाम निधाना श्री भगवाना शब्दी धार बोल, दो जहानां कर पढ़ाईआ। धर्म दा धर्म तराज़ू कंडे जगत तोलणा तोल, लख चुरासी आपणे हथ्थ उठाईआ। सच दवारा एकँकारा परवरदिगारा सांझे यारा इक्को खोलृ, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे तेरा ढोला लैण बोल, अनबोलत देणा सुणाईआ। निरगुण सरगुण वसणा सदा कोल, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जगत जिज्ञासू, मेरे सच स्वामी रहे ना मेरे कोल, भुल्लयां मार्ग देणा लाईआ। आपणा

वायदा तक्क लै अवतार पैग़म्बरां गुरुआं वाला कौल, इकरारनामा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। धर्म कहे प्रभू धर्म दी धार बणा दे मानुख, मानस आपणे रंग रंगाईआ। शरअ दा रहे ना किसे दुक्ख, शरीअत वंड ना कोए वंडाईआ। ममता मोह ना कलपे भुक्ख, तृष्ना कूड़ देणी मिटाईआ। सुफल कराउणी जगत जनणी कुक्ख, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। उजल करना लोकमात मुक्ख, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे साहिब मेरे गुसाँईंआ। धर्म कहे प्रभू मेरा धर्म दवारा होवे एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। मानव ज़ाती इक्को होवे टेक, टिक्के धूड़ी मस्तक खाक रमाईआ। हर हिरदे अन्दर कर बुध बिबेक, पतित पुनीत आप कराईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत देणा बुझाईआ। त्रैगुण माया ला सके ना सेक, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। तेरा खेल सदा सद नेक, अकल कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिधर्म धर्म दी धार एकँकार आपणी बख्शणी धुर दी टेक, टिक्के मस्तक धूड़ी खाक खाक रमाईआ।

१५६० २४

✪ २५ चेत शहिनशाही सन्तत १२ पिण्ड धनौरी ज़िला रोपड़ लक्ष्मण सिँघ, दे गृह ✪

धरनी कहे प्रभू सति धर्म प्रगटा दे मात, जगत जुगत आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां दीन दुनी पुच्छ वात, कोझयां कमल्यां हो सहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सति चन्द कर रुशनाईआ। वरनां बरनां सच प्रीती बख्श आपणी दात, वस्त अमुल अतुल आप वरताईआ। तूं सब दा स्वामी ठाकर कमलापात, पतिपरमेश्वर अगम्म अथाहीआ। कलयुग अन्त अखीर बेनज़ीर पुच्छ वात, वारस हो के वेख वखाईआ। मानस ज़ाती अन्दर मार झात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते धर्म दी धार कर उग्घी, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। कलयुग औध वेख लै पुग्गी, आपणा बैठी पन्ध मुकाईआ। मैं रो पुकारां धरत निमाणी बसुधी, बेसुध हो के रही जणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दरों पवित्र कर दे बुद्धी, मन कल्पणा कूड़ मिटाईआ। नाम अणयाले तीर नाल सब दी सुरती जाए विधी, अन्तर निरंतर लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू सतिजुग धर्म दवारा खोल्ह, मिटी खाक दे वड्याईआ। शब्द अनादी अगम्मा बोल, अनबोलत राग दृढ़ाईआ। मानव ज़ाती दीन दुनी धर्म तराज़ू तोल,

कंडा इक्को हथ्थ उठाईआ। बजर कपाटी जीवां जंतां साधां सन्तां पर्दे खोल्ह, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। हर घट अन्तर स्वामी हो के जा मौल, मौला आपणा भेव खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरुआं अन्तिम पूरा करदे कौल, इकरारनामा आपणे रंग रंगाईआ। मैं कोझी कमली जगत निमाणी धौल, धवल हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी कहे प्रभू इक्को बख्श दे धुर दा चरण, चरणोदक साचा जाम प्याईआ। मेरे उत्तों झगड़ा मेट दे ज़ात पात वरन, बरन दा लेखा रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नव सत्त ढोला पढ़न, तन मन्दिर अन्दर सब दे वजदी रहे वधाईआ। तेरी मंज़ल हकीकी लाशरीकी परवरदिगार साचे चढ़न, दरगाह साची मुकामे हक सचखण्ड साचे मिल के वज्जे वधाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हार भन्नृण घड़न, समरथ अकथ तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू धुर दा तेरा होवे नूर उजाला, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स सुखाला, पारब्रह्म ब्रह्म मेला होए सहिज सुभाईआ। सुरत शब्द इक्को दसणी सची धर्मसाला, गुरदवारा इक्को नज़री आईआ। फल लगा दे मेरे उत्ते मानस वाले डाला, साढे तिन्न करोड़ पत्त टहणी रोम रोम महकाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ हर हिरदिउँ कढु ज़ंजाला, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। सति नाम आत्म परमात्म बिन रसना जिह्वा बणा माला, मन का मणका आप भवाईआ। भाग लगा दे साढे तिन्न हथ्थ जीव आपणा घर सुहा ला, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरा इक्को धर्म होवे उजागर, नव सत्त ब्रह्म मति देणी माण वड्याईआ। मेरा निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल मैल धुआईआ। सच दवार एकँकार परवरदिगार दे आदर, आदर्श आपणा इक जणाईआ। इक्को वस्त नाम वणज करा सौदागर, अमुल अतुल मेरी झोली पाईआ। तूं योद्धा सूरबीर बहादर, बलधारी इक अख्वाईआ। करनी दा करता कुदरत दा कादर, करीम रहीम नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। ऊँच नीच मेट दे दु:ख, आत्म ब्रह्म सर्ब समझाईआ। उजल कर सब दा मुक्ख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मेरी पवित्र कर दे कुक्ख, दर तेरे वास्ता पाईआ। मेहरवान हो के तुठ्ठ, श्री भगवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो तेरे तेरे नालों गए रुठ्ठ, शब्दी धार लैणे मिलाईआ। निगाह मारनी मेरी उतर पूरब पश्चिम दक्खण वाली गुठ्ठ, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू

मेरा समां सुहंजणा करदे वक्त, घड़ी पल आपणे रंग रंगाईआ। मैं बिरहों वैरागण विच जगत, जगत जुगत दे मालक देणी वड्याईआ। मानव ज़ाती परम पुरख आपणे बणा लै भगत, भगवान हो के वेख वखाईआ। हर हिरदे अन्तर आपणी बख्श दे शक्त, शक्तिशाली तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब दी लेखे ला लै बूंद रक्त, तन वजूदां कर सफाईआ। शरअ दा रहिण देवीं ना कोई फरक, मज़्बां वंड ना कोए वंडाईआ। आदि जुगादी अवतार पैग़म्बरां वायदे पूरे करदे शर्त, शरेआम आपणा हुक्म वरताईआ। मैं रो रो दुहाई देवां निमाणी धरत, धवल हो के मंग मंगाईआ। किरपा कर दे मेरी मिटी खाक उत्ते फर्श, अर्श दे मालक होणा सहाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण धार एकँकार परवरदिगार सांझे यार दे दरस, बिन नेत्र लोचन नैण आपणा नूर नूर दरसाईआ। नाम निधाना नौजवाना श्री भगवाना नव सत्त आपणा अमृत बरस, मेघ मेघला अगम्म टपकाईआ। मेरी आदि अन्त दी मेट हर्स, हवस कूड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरे उत्ते कर तरस, रहमत आपणी हक कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जाते पुरख बिधाते मेरे उत्ते निगाह मारनी परत, पतिपरमेश्वर मेरी आशा आशा विच्चों पूर कराईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड धनौरी ज़िला रोपड़ दर्शन सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे जन भगतो प्रभू दे बणो बाले, जीवण बचपन प्रभ दी झोली पाईआ। किरपा कर पुरख अकाले, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। निरगुण हो के आप संभाले, सम्बल दा मालक अगम्म अथाहीआ। दिवस रैण करे प्रितपाले, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। तुहाडे मार्ग रखे सुखाले, सुख सागराँ विच समाईआ। जन्म जन्म दे दाग धोवे काले, कालख काली शाही टिक्का दए गंवाईआ। ममता मोह विकार तोड़े ज़ंजाले, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बेसुधां आप संभाले, वसुधा उत्ते देवे माण वड्याईआ। भाग लगावे जन्म कर्म दे डाले, पत टहणी आप महकाईआ। लेखे लावे नाम जपण दी घाले, सेवा आपणे रंग रंगाईआ। सच दवार वखाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाले, दरगाह इक्को नज़री आईआ। जिथ्थे अमीर ग़रीब इक्को दर बहाले, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप सुहाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दे बणो दुलारे सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। इष्ट मंनो अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म मिल के वजे वधाईआ। तुहाडी सुहञ्जणी करे रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तुहाडे लेखे

लाए काया माटी तन पंज भुत, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभू दे बच्चे बणो निधान, आपणी रखो ना कोए चतुराईआ। चरण प्रीती मंगो दान, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। सो देवणहार श्री भगवान, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, दो जहान बैठण सीस निवाईआ। जिस दे हुक्म विच खेल खेलया राम काहन, काहन कान्हा इक अख्वाईआ। जिस पैग़म्बरां कलमा दिता महान, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त वड्याईआ। जो गुरुआं गुर शब्द कर परवान, परम पुरख हो के वेख वखाईआ। सो कलयुग अन्त लहिणा देणा चुकाए आण, आप आपणा फेरा पाईआ। अन्तर आत्म बिन पढ़यां दए ज्ञान, दृष्टी आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन भगत सुहेले लोकमात पहचान, मेला मेले सहिज सुभाईआ। लख चुरासी कर पुण छान, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक अगम्म अथाहीआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभू दा इष्ट मंनों तमाम, तमा लालच जगत नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादी धुर अमाम, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दी अक्खरां वाली सिफ्त सलाही
१५६३ कलाम, कायनात दए दृढ़ाईआ। जिस दे हुक्म विच दीन मज़्हब गुलाम, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी १५६३
२४ देवणहारा साचा पैग़ाम, सुनेहड़ा इक्को इक सुणाईआ। शरअ दा रिहो ना कोए गुलाम, गुरबत अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। नाम २४
हकीकी पीओ जाम, साकी हो के हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा लेखा वेखो इकाई, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जिस दा लहिणा सैंकड़े नाल नहीं दहाई, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। उह देवणहारा दाता अगम्म अथाही, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। जो नाम प्याला जन भगतां देवे बिना जगत सुराही, बिन रसना रस चखाईआ। रिंदो पीणा चाँईं चाँईं, अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। जिस दी प्याई कदे उतरे नाहीं, उतर पूरब पश्चिम दक्खण इक्को रंग रंगाईआ। साकी तक्कणा धुर दा माही, बन्दा खाकी नज़र कोए ना आईआ। मदहोश हो के ढोला गाउणा चाँईं चाँईं, वाहवा तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। उह खेल वखाए थल अस्गाही, असथिल आपणा गृह जणाईआ। सो स्वामी सतिगुर लहिणा देणा लेखे लए लगाई, निरगुण हो के सरगुण मेल मिलाईआ। जगत मुसाफर दो जहानां सतिगुर बण के राही, रैहबर हो के रिहा दृढ़ाईआ। जन भगतो धरनी कहे प्रभ दे मिलण दी सब नूं वधाई, जिस दी जगत विद्या समझ कोए ना पाईआ। धन्न भाग तुसां मस्तक धूड़ी मेरी मिटी प्रभ चरण खाक रमाई, रोम रोम रोम विच समाईआ। जिस सच मुहब्बत विच तुहाडा लेखा लेखे ल्या लाई, आवण

जावण सब दा सुफल कराईआ। मैं उच्ची कूक पुकारां कढ्ढ के बाहीं, बुद्धी तों बाहर दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती देवे तोड़ निभाई, एथे ओथे अगे हो ना कोए तुड़ाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ पिण्ड गोसलां ज़िला रोपड़ अजीत सिँघ दे गृह ✪

धरनी कहे मेरे आदि जुगादी धुर गोबिन्द, गोबिन्द धार एकँकार तेरी सरनाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दयाल वड कृपाल सद बखशिंद, रहमत रहीम रहमान दया देणी कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी मेटणी चिन्द, चिन्ता चिखा ग़मी विच्चों ग़मखार बाहर कढ्ढाईआ। लख चुरासी जीव जंत कुदरत कादर करनी करते तेरी सारे बिन्द, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१५६४ आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरी आसा मनसा वेख लै धरत, १५६४
२४ धवल धौल धरनी हो के सीस निवाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी सतिगुर शब्द धार वेख लै शर्त, जो निरगुण सरगुण २४
अवतार पैग़म्बरां गुरुआं शब्दी गंढु पवाईआ। तूं मालक ख़ालक दो जहाना सति सतिवादी वाली अर्श, अर्शी प्रीतम बेपरवाह तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे अन्त कन्त भगवन्त मिलण दी हरस, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार देणी मिटाईआ। मैं बिना तन वजूद माटी खाक तेरा पाउणा चाहुंदी दरश, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नज़र कोए ना आईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी मेरा खुशीआं वाला लोकमाती बरस, बरसी तेरे चरण चरण मनाईआ। किरपा निधान नौजवान श्री भगवान रहमत विच्चों करना तरस, रहीम रहमान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा वक्त तेरे चरण कवल होए सुहंजणा, धूड़ी खाक खाक रमाईआ। किरपा कर दे कृपाल आदि निरञ्जणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। तूं निरगुण निरवैर सदा सदा दर्द दुःख भय भञ्जणा, परवरदिगार सांझा यार नूर अलाह इक अख्वाईआ। मेहरवाना नाम निधान निज नेत्र साचा पा दे अंजना, अन्ध अज्ञान जीव जहान दे मिटाईआ। जगत शरअ दी मेट दे हदना, हदूद महिदूद इक समझाईआ। जिथ्थे तेरा शब्द अनादी धुन आत्मक राग वजाए नदना, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ।

उह मालक ख़ालक प्रितपालक मध सूदन मदना, अकाल मूर्त तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं चाहुंदी लेखे ला लै आल्हा अदना, ऊँच नीच राउ रंक वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी आसा पूरी कर दे जो संदेसा दे के गया कसाई सधना, सदके वारी घोल घुमाईआ। झगड़ा मानव जाती मेट दे तन वजूद बदना, शरीर बेनज़ीर आपणे रंग रंगाईआ। घर स्वामी ठाकर करा दे इक्को हज्जना, जगत हुजरयां लोड़ रहे ना राईआ। मैं खुशीआं नाल मेरे महबूब तैनूं आपणे गृह सद्दणा, होका देवां चाँईं चाँईंआ। मैनूं अवतार पैग़म्बरां गुरुआं किहा उस दा दीपक जोत इक्को जगणा, बिन तेल बाती कमलापाती करे रुशनाईआ। जिस ने मेहरवान हो के जन भगत सुहेले आपे लभ्भणा, नव सत्त ब्रह्म मति ध्यान लगाईआ। बिना जगत नगारयां दो जहानां डंका वज्जणा, राउ रंक करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेले इक अकेले आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी परवरदिगार सांझे यार एकँकार मेरा अन्त कन्त भगवन्त कलयुग पर्दा कज्जणा, सिर समरथ हथ्थ आपणा इक टिकाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ जगीर सिंघ दे गृह पिण्ड रंगीलपुर ज़िला रोपड़ ✪

१५६५ २४

धरनी कहे किरपा कर श्री भगवान, भगवन भगवन्त हो के दया कमाईआ। आदि जुगादी शब्द अनादी वड मेहरवान, मिहबान महबूब नूर अलाहीआ। सति सतिवादी सति पुरख निरञ्जण नौजवान, जोती जाते तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार तेरा खेल महान, महिमा अकथ कथ समझाईआ। मैं बाली बुध बुध अंजाण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। तूं लहिणा देणा लेखा जाणे दो जहान, दोहरी आपणी कल वरताईआ। सतिगुर शब्द तेरा दूल्हा नौजवान, सूरबीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी सदा हुक्मरान, संदेशा देवे थांउँ थाँईंआ। जिस दा धरनी कहे मेरे उत्ते विधान, धुर दा हुक्म हुक्म प्रगटाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उसे दा सुणदी रही वख्यान, निरअक्खर धार शब्द अक्खरां विच दृढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जिस दा देंदे गए ब्यान, सोहले ढोले राग सुणाईआ। जिस नाम कलमे दीन दुनी कीते परवान, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। उह दाता दानी गहर गम्भीर वड प्रधान, प्रधानगी आपणी इक जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी मंनदे रहे आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। उह महाबली तेरा सुत दुलारा बिन ततां दिसे ना किसे इन्सान, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेरी बेनन्ती करे परवान, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। जिस नूं वेख मैं होई हैरान, हैरत विच जणाईआ। उह किस बिध मेरी करन आया कल्याण, कलमा

कायनात दृढ़ाईआ। तन वजूद ना दिसे कोई मसाण, माटी खाक ना कोए चतुराईआ। जिस दी शब्द अगम्मी धुन्कान, धुर दा हुक्म हुक्म सुणाईआ। उह भगत सुहेला तेरा रूप गुण निधान, गुणवन्त की दृढ़ाईआ। धुर दा शब्द सुणाया बिना कान, कायनात दिता सुणाईआ। फेर हो गया मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां अन्तष्करन दे ज्ञान, बिन रसना जिह्वा करी पढ़ाईआ। मेल मिलाया उत्ते ज़िमीं आण, असमानां पन्ध मुकाईआ। मैं चरण धूड़ी खाक लग्गी रमाण, टिक्के मस्तक बिन मस्तक आप छुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लग्गी गाण, बिन रसना राग अलाहीआ। उस अगम्म दिता फ़रमान, संदेशा इक जणाईआ। धरनीए धवले धौले तेरे उत्ते धर्म दा बदल देणा निशान, सत्तां दीपां इक्को रंग वखाईआ। जिस दी आशा रख के गया बिपर दुआरे काहन, सुदामा सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस नूं राम भीलणी कीता परवान, परम पुरख होए सहाईआ। उह लेखा पूरा करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दे संग भगतां दा बणना विधान, जगत धारा दी लोड़ रहे ना राईआ। उस किरपा कीती आप नौजवान, जोबनवन्ते खेल खिलाईआ। भगत सुहेला आत्म धार ल्यांदा विच मैदान, तन वजूद खुशी बणाईआ। सत्तां रंगां काया मन्दिर अन्दर दिता ध्यान, जगीर सिँघ प्रभ जुगती
१५९६ नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। १५९६
२४ निशान कहे सुण सिँघ जगीर, जागरत जोत ध्यान लगाईआ। आदि जुगादी प्रभ दा खेल बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दी शरअ तों बाहर तस्वीर, जगत तस्व्वर कर ना कोए समझाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता लोकमात आया घत्त वहीर, बिन कदमां कदम उठाईआ। जिस दा संदेशा दे के गया भगतां विच्चों भगत कबीर, कबरां काअब्यां बाहर सुणाईआ। उह शाहो भूप जो दीन दुनी दी बदलण वाला ज़मीर, ज़िमीं ज़मां दा मालक इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी सब दी बदलण वाला तकदीर, तक्ब्बरां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतरंगा कहे जन भगत कदे ना होए विछोड़ा, विछड़ कदे ना जाईआ। भगतन भगतन संग जोड़ा, जोड़ी हरि जगदीश बणाईआ। एह पिछला पूरब थोड़ा जेहा रोड़ा, जो रोड़ां उत्ते सुत्ता नानक हुक्म गया दृढ़ाईआ। राह लँघदयां दोहां ने थोड़ा जेहा बचन बोलया कौड़ा, मुसाफर कहि सुणाईआ। तैनूं किस दी लोड़ा, क्यों पत्थरां सेज हंढाईआ। क्यों बाहर सुत्ता वांग चोरा, आपणा आप छुपाईआ। असीं प्रभू दे प्यारे उह साडा पेका सौहरा, दोवें रंग वखाईआ। साडा इक्को बांका छैहरा, आपणा रंग वखाईआ। पता नहीं तैनूं दरस दिता है थोड़ा थोड़ा, ज़रा ज़रा ज़रा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। झट सतिगुर नानक हस्स

के बोलया, इक्को बचन सुणाईआ। बिना कन्ढे तों तराज़ू तोलया, मुट्ठी आपणी दिती वखाईआ। भेव अगम्मा खोल्ल्या, सहिज नाल समझाईआ। तुसां छड्डुणा इक चोलया, तन वजूद रहिण ना पाईआ। फेर इशारा दिता नाल कीता कौलया, इकरार दिता समझाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ कुड़यारा मौलया, नव सत्त आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाला आवे उपर धौलया, धर्म दी धार समझाईआ। जिस दा इक्को शब्द नगारा होवे अडोलया, दो जहान दए डुलाईआ। सच संदेश रखणा तुसां कौलया, आपणे अन्तर लैणा टिकाईआ। उह शब्द दवारा धरनी उत्ते देवे खोल्ल्या, ख़ालक खलक खलक समझाईआ। तुहाडा मेल सुभावक होवे अनभोलया, सुरती विच समझ किसे ना आईआ। साल अठारां प्रेम वाला रखे ढोलया, डंका डंके नाल वजाईआ। फेर माया दा चाढ़े अगम्म वरोलया, झक्खड़ दीन दुनी वखाईआ। तुहाडा अज्ज दा हासा पूरा करे कौलया, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। झट्ट सतिगुर नानक धर्म दा लाया अखाड़, खुशीआं ढोला गाईआ। वक्त सुहंजणा कीता विच उजाड़, सोहणी मिली वड्याईआ। शब्द संदेशा दिता ताड़ ताड़, धुर दा हुक्म हुक्म दृढ़ाईआ। तुहाडे अग्ग लग्गणी नाड़
१५६७ नाड़, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। तुहानूं ज़रूर विछोड़ा होणा जो बचन बोलया माढ़, मेरा साहिब गुसईं मैनूं विछड़ कदे १५६७
२४ ना जाईआ। जगत विकारा होवे धाड़, डाका मारे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा २४
साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण सतरंग निशानयां, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। धुर दा हुक्म होवे परवानयां, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुख की जानण बाल अंञाणयां, की प्रभ दी बेपरवाहीआ। वड्याई चले ना चतुर सुघड़ स्याणयां, बुद्धी संग ना कोए रखाईआ। जिस दा खेल सदा सदा उह चलावणहारा आपणे विच भाणया, जुग जुग हुक्म वरताईआ। जगत माया खेल चुक्के काणया, जुगती प्रभ दए समझाईआ। जिस दा प्यार रिहा नहीं राजे राणयां, शाह सुल्तानां खाक मिलाईआ। गुर गोबिन्द सुट्ट के सरसा वाले मुहाणयां, गुरमुखां गया दृढ़ाईआ। इक्को रखो सतिगुर चरण ध्यानयां, जो देवणहारा होए सभनी थाँईंआ। जो खाली भरे खज़ानयां, अतोट अतुट वरताईआ। गुरमुख गुरसिख प्यार रहे ना जगत वांग बेगानयां, प्रीती प्रीतम प्रीतम आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतरंगा कहे जगत माया भगतां दे चरण चुम्म, धूली खाक खाक रमाईआ। तूं कलयुग बथेरा ल्या घुंम, घुंमणघेरी विच कीती जगत लुकाईआ। अगला हुक्म सुण, अणसुणत की सुणाईआ। जिस प्रभू दा खेल होणा फुन, फुरने सब दे बन्द कराईआ। जिस चुरासी विच्चों भगत सुहेले लए चुण,

चार कुण्ट दे लेखे दिते मुकाईआ। द्वैत दी थाँ अज्ज तों भगतां दे अन्दर प्रेम दी आ जाए धुन, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। पिच्छे नालों अग्गे बहुता बख्शे गुण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ। सतरंगा कहे, उठ मेरे नौजवान सिँघ जगीर विच जगत दीन दुनी दा निशाना बणया ते जिस दी साया विच बैठे भगत, ब्रह्मण्ड खण्ड जिस नूं सीस निवाईआ। भगतो तुहाडा विछोड़े दा पिछला सारी संगत दा कट दिता बखत, वक्त नाल आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडी लेखे ला के बूंद रक्त, जनणी दा लहिणा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सत्त रंग निशाना कहे भगतो तुसीं उस प्रभू दे सुत्त, जिस दुलारे तुहानूं ल्या बणाईआ। तुसीं कोई पंजां ततां वाले नहीं बुत्त, बुतखानयां दी नहीं कोई वड्याईआ। तुहाडा मालक अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दए कराईआ। भजन सिँघ छेती आ जा दोहां दी इक्को जेही कर दयां रुत्त, रुतड़ी आपणे चरण महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। सत्त रंग कहे जगीर सिँघ मेरा सगला संगी, जिस नूं मिली माण वड्याईआ।
१५६८ चार जुग दी धार जिस मेरे चरणां विच कीती नंगी, मेरा रूप अनूप दिता दरसाईआ। जिस दे प्यार विच मेरी सतिजुग त्रेता १५६८
२४ द्वापर कलयुग वाली चौकड़ी लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दी सिफ्त वड्याई कीती गोबिन्द धार कवी बवंजी, बावन २४
आपणा पर्दा लाहीआ। जिस दी याद विच नीर वहाए यमुना सरस्वती गोदावरी गंगी, अठ सठ बैठे नैण वहाईआ। सो शाहो भूप सूरा सरबंगी, हरि करता अगम्म अथाहीआ। भगतो जिस दा हुक्म मेहरवान हो के अज्ज तों सब दी कट दिती तंगी, तंगदस्त रहिण कोए ना पाईआ। घर प्रकाश देवे नूर जो चन्द चढ़ाए नौ चन्दी, नव दवार दा डेरा ढाहीआ। सब दी अन्तष्करन दी धार करे ठण्डी, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। धुर दी दात दाता हो के रिहा वंडी, अमुल अतुल तुहाडी काया चोली दए टिकाईआ। हरिजन हरि भगत रहिण देवे ना कोए पाखण्डी, भेखाधारी भेख ना कोए दरसाईआ , भगतो भगत भगवान प्रेम दी इक्को डण्डी, जो डण्डावत दीन दुनी बदलाईआ। जगत वासना कलयुग कल्पणा माया वाली मंडी, कूड़ वणज दीन दुनी वखाईआ। जिस ने तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाया छन्दी, संसा जगत वाला चुकाईआ। निरंतर देवणहारा अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। धरनी कहे भगतो मैं बलिहार, बलि बलि आपणा आप कराईआ। मेरा तुहाडे नाल सदा प्यार, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। क्यों, किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर धुरदरगाहीआ। जेहड़ा जुग जुग जन्म

जन्म दे विछड़े मेले यार, मेल मिलावा करे चाँईं चाँईंआ। जिस ने तुहाडा सारयां दा सांझा बणाया इक्को भगत दवार, भगतो तुहानूं दिती वड्याईआ। भगतो उस दा इक्को झुलदा रहे निशान, निशाना दीन दुनी वखाईआ। तुहाडी प्यार मुहब्बत दी धार आप करे परवान, परम पुरख परमात्म हो के आपणी दया कमाईआ। अम्बाला संगत तुहाडे तन वजूद वक्खरे अन्दरों सब दी प्यारी इक्को जान, जिस नूं आत्मा कहि के परमात्मा आपणा रंग रंगाईआ। खुशीआं दे ढोले खुशीआं नाल मिल के सारे गाण, खुशी विच्चों खुशी लैणी प्रगटाईआ। तुसीं कोई तत्तां वाले नहीं इन्सान, भगवन भगवन्त किरपा करके भगत दिते बणाईआ। धरनी कहे हरिसंगत मैं वी खुशीआं विच तुहाडी सारयां दी चरण धूड़ी खाक लग्गी रमाण, अरमान आपणे प्रभ दे चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा जन भगतो तुहाडे उत्ते मेहरवान, मेहरवानी दी निशानी, तुहाडे प्यार दी जिंदगी मुहब्बत दी जिंदगानी, जीवण विच्चों जीवण, हयाती विच्चों हयाती, कमलापती पतिपरमेश्वर हो के अन्दरों दए बदलाईआ।

१५६६ २४

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत १२ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड राजो माजरा ज़िला रोपड़ ✪

धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर मेरी सुणो पुकार, सचखण्ड दवार दरगाह साची पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। तुसीं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी खेल खेलणहारे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव देण गवाहीआ। तुहाडा लहिणा देणा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चार, चौथे जुग रो रो दयां दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होया धूंआँधार, सत्त दीप दीप ना कोए रुशनाईआ। मानव ज़ाती अन्तर निरंतर धर्म दा रिहा ना कोए प्यार, प्रीती विच प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। जिधर तक्कां पंच विकार सब नूं रिहा ललकार, भय भाउ आपणा रिहा जणाईआ। कलयुग कूड़ तन वजूदां कीता शृंगार, माया ममता मोह कपड़ा रंग रंगाईआ। मैं निमाणी बिरहों विछोड़े विच रोवां ज़ारो ज़ार, बिन नेत्र लोचन नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर निरगुण धार सुणो पुकारा, पुनह पुनह सीस निवाईआ। शब्दी धार दयो सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। तुहाडा सब दा कौल इकरारा, वायदा पूरब वेख वखाईआ। दीनां मज़्बां अमृत रस बख्शो ठंडा ठारा, आबेहयात जाम प्याईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेरे उत्ते ना रहे पसारा, निशाना दीन दुनी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर गुर बिन अक्खीआं नेत्रां तक्को लोकमात, नव सत्त ध्यान लगाईआ। मेरी अन्तिम पुच्छे कोई ना वात, वारस रहिण कोए ना पाईआ। मेरी शब्द अगम्मी सुणो बातन बात, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। सति सतिवादी हो के जोड़ो नात, आत्म परमात्म मेल मिलाओ चाँईं चाँईंआ। अन्तर निरंतर दीनां मज़्हबां सुरती करो इकांत, मनूआं दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ। धरनी कहे अवतार पैग़म्बर प्रेम दी पावो भिख, वस्त सति सति वरताईआ। आपणी धार वेखो मुरीद सिक्ख, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जो कागज़ कलम शाही नाल लेखा लए लिख, भविख्तां वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईंआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण, शब्दी धार आवांगे। सो पुरख निरञ्जण नाल ल्यावांगे। हरि पुरख निरञ्जण संग रखावांगे। एकँकारा मेल मिलावांगे। आदि निरञ्जण जोड़ जुड़ावांगे। अबिनाशी करता गौड़ ब्राह्मण भेव खुल्हावांगे। श्री भगवान लगावणहारा जो इक्को पौड़, दो जहानां पन्ध मुकावांगे। पारब्रह्म जिस दा मार्ग कदे ना होवे सौड़, सतिगुर शब्द नाल उठावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगे। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनी धवल धौल कर भरवासा, भाण्डा भरम भनाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाशा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा अन्तर साचा वासा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। उस दा नूर ज़हूर होवे प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ। धर्म दी धार तैनूं दईए दिलासा, धीरज धीर नाल धराईआ। उह खेल करे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे नासा, नास्तक रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण धरनी सुण धवल कर ध्यान, सति सच जणाईआ। किरपा करे श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। तेरी बेनन्ती करे परवान, परम पुरख धुरदरगाहीआ। कलयुग क्रिया कूड़ मेटे निशान, सतिजुग सच सच जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को बख्शे चरण ध्यान, इष्ट देव इक समझाईआ। आत्म परमात्म सारे ढोला गान, दो जहानां वज्जदी रहे वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला किरपा करे महान, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान, जोबनवन्ता श्री भगवन्ता आदिन अन्ता इक अख्वाईआ।

✪ २७ चेत शहिनशाही सम्मत १२ सरजीतम सिँघ दे गृह पिण्ड राजो माजरा ज़िला रोपड़ ✪

धरनी कहे भगतो मैं की दस्सां, सिफ्तां तों बाहर सिफ्त बेपरवाहीआ। मैं खुशीआं विच बिना दन्द मुक्ख जिह्वा तों हस्सां, बिन तन वजूद खुशी बणाईआ। बिन कदमां चारों कुण्ट नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। धन्न भाग प्रभ मिल्या मैनूं मसां, जो मस्सया रैण अन्धेरी दए गंवाईआ। उहदे चरणां हेठां वसां, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक गुसाँईआ। धरनी कहे जन भगतो मैं की करां सिफ्त सलाह, सलाहणजोग बेपरवाहीआ। जो निरगुण हो के बणया मेरा मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जो लेखा जाणे मेरा थल अस्गाह, महीअल खोज खुजाईआ। पर्दा परदयां विच्चों दए चुका, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। उह स्वामी ठाकर मेरा मेहरवां, महबूब नूर अलाहीआ। जिस दे कदमां उत्तों बलि बलि जां, बलि बलि आपणा आप कराईआ। उह सति सतिवादी हो के मेरी पकड़न आया बांह, फड़ बाहों लए उठाईआ। सचखण्ड निवासी हो के करे न्यॉँ, अदल इन्साफ आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन दयाल ठाकर हो के सिर मेरे रखे छाँ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१६०१ आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ दा खुशीआं विच १६०१
२४ करो शुकराना, अन्तर निरंतर ढोले गाईआ। जो आ गया वाली दो जहानां, दोहरी कल वरताईआ। जोती जाता पहर के २४
बाणा, अणयाला तीर चलाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। मैनूं संदेशा देवे फ़रमाना, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। मैं सुण के होई हैराना, हैरत मेरे विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा भेव आप खुलाईआ। धरनी कहे जन भगतो प्रभ तक्को गहर गम्भीर, गवर इक अख्वाईआ। जिस दी दिसे ना कोए तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा नूर बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा जन भगतां तत शरीर, तन वजूदां फोल फुलाईआ। अमृत आत्म निझर बख्शे सीर, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। शब्द अनादी दए , धुन आत्मक राग सुणाईआ। जोती जाता हो के बदले तकदीर, तक्बर रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो भगतां अन्दर रहिण ना देवे खमीर, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म दी अन्तर करे तामीर, आप आपणा हुक्म वरताईआ। शरअ दी कट ज़ंजीर, शरीअत लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे जन भगतो मंनो इक श्री भगवन्त, भगवन इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादी धुर दा कन्त, कन्तूहल बेपरवाहीआ। जिस दा नाम निधाना मंत, मंतव सब दे हल

कराईआ। मानव ज़ाती बणावणहारा बणत, घड़न भन्नणहार धुरदरगाहीआ। सति सतिवादी बणो सन्त, सति सति विच समाईआ। गढ़ तोड़ो हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। जगत विद्या बाहर बणावे पंडत, बुद्धी तों बाहर करे शनवाईआ। लहिणा देणा मुका दे बहिश्त जन्नत, स्वर्ग आपणा गृह वखाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दरसाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब बणा के आपणी संगत, सगला संगी बहुरंगी आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत सुहेला दूजे दर बणे ना मंगत, भिच्छया दीन दुनी मंगण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि अन्त, अन्तष्करन वेखे थांउँ थाँईंआ।